सनाई तर्जुमा
व
मुन्तख़ब हवाशी वाला
हिन्दी
कुरआन मजीद
तर्जुमा
मौलाना सनाउल्लाह अमृतसरी रह०
मुन्तख़ब हवाशी
मौलाना मुहम्मद दावूद राज़ रह०
मकतबा तर्जुमान
4116-अहले हदीस मंज़िल
उर्दू बाज़ार जामा मस्जिद
दिल्ली-6

بِسْـــــمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अस्सलामु अलयकुम व-रहेमतुल्लाही व-बरकातुहू

बाद सलाम के मालुम हो की अल्लाह रब्बुल इज्जत के फजल-व-करम से हदीसों की 6 मोअतबर किताबें सिआ सत्ता / सिआ कुतुब पढ़ने में, समझने में और दावत पहुंचाने में आसानी हो इस नेक मक़सद से उम्मत-ए-मुस्लिमा के ख़िदमात में PDF की शकल में पेश है।

तफसीर ईब्ने क़सीर (8 जिल्द)

1. सहीह बुख़ारी (8 जिल्द)
2. सहीह मुस्लिम (8 जिल्द)
3. सुनन अबु दाऊद (6 जिल्द)
4. ज़ामेअ सुनन तिर्मिज़ी (4 जिल्द)
5. सुनन नसाई शरीफ़ (6 जिल्द)
6. सुनन इब्ने माजह (1 जिल्द)

इन PDF बनाने में हदीस नंबर,पेज नंबर, स्केनींग वगैरा मे कोई भूल हुई हो तो बराए मेहरबानी नीचे लिखे हुए मोबाइल नंबर पर इत्तेला करे।

अल्लाह रब्बुल इज्जत इन तमाम किताबों की PDF बनाने में और इसमे ता'ऊन करने वाले हजरात की ख़िदमात को कुबुल फरमाए ओर लोगों के लिए हिदायत का सबब बनाए।

शेरख़ान (अहमदाबाद-गुजरात) M.: +91 9825 696 131

पारों की सूची

सूरतों की सूची

नाम सूरः	पृष्ठ नं०

*****

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कुरआन का संदेश

यह कुरआन जो हम नाज़िल कर रहे हैं मोमिनों के लिये तो सरासर शिफ़ा और रहमत है, हाँ ज़लिमों को सिवाये नुक़्सान के और कोई ज़्यादती नहीं होती।

(पारः १५, सूरः बनी इस्राईल आयत नं० ८२)

निःसंदेह यह कुरआन वह राह दिखाता है जो बहुत ही सीधा है और ईमान वालों को जो नेक आमाल करते हैं इस बात की खुशख़बरी (शुभ सूचना) देता है कि उन के लिये बहुत बड़ा अज्र है। और यह कि जो लोग आख़िरत पर यकीन नहीं रखते उन के लिये हम ने दर्दनाक (दुःख दाई) दन्ड तय्यार कर रखा है।

(पारः १५, सूरः बनी इस्राईल, आयत नं० ९+१०)

तेरे पर्वरदिगार की क़सम! यह ईमान्दार नहीं हो सकते जब तक कि आपस के तमाम इख़्तिलाफ़ में आप को हाकिम न मान लें, फिर जो फ़ैसले आप उन में कर दें उनसे अपने दिल में किसी प्रकार की तंगी और नाखुशी न पायें, और फ़रमाबर्दारी के साथ कुबूल कर लें

(पारः ५, सूरः निसा, आयत नं० ६५)

*****

प्रकाशकीय

कुरआन करीम अल्लाह तआ़ला का आख़िरी पैग़ाम (संदेश) है जो पूरे विश्व के इन्सानों और जिन्नों की हिदायत (निर्देश) के लिए आख़िरी नबी मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा हम को दिया गया अल्लाह तआ़ला ने इसकी हिफ़ाज़त (सुरक्षा) की ज़िम्मेदारी स्वंय ली है, लिहाज़ा रहती दुनिया तक यह अपनी असली शक्ल (वास्तविक रूप) में सुरक्षित रहेगा और हर युग के मानव समाज के लिये मार्गदर्शक और भलाई का काम देगा अत: प्रत्येक व्यक्ति पर फ़र्ज़ है कि वह इस कलामे इलाही को पढ़े और अल्लाह के बन्दों तक पहुंचाए।

यह कलामे हिदायत अरबी भाषा में है और इन्सानों की बड़ी तादाद (संख्या) अरबी भाषा नहीं जानती, अत: मुसलमानों की धार्मिक ज़िम्मेदारी है कि वह इस कलामे हिदायत को हर भाषा में आम करें, हिन्दुस्तान में हिन्दी भाषा सरकारी भाषा है और यहां की अच्छी ख़ासी तादाद हिन्दी जानने वालों की है। अत: सारे संसार के रब (सृष्टिकर्ता) का संदेश हिन्दी भाषा में प्रकाशित करना समय की आवश्यकता है।

इसके पेशे नज़र शेखुल इस्लाम रह० के सनाई तर्जुमा और अल्लामा दावूद राज़ रहमुहुल्लाह के मुन्तख़ब वहाशी व तफ़सीर को प्रकाशन के लिए चुना गया जिसे हिन्दी के क़ालब (लिपि) में ढालने का सौभाग्य मदरसा अरबिया सलफ़िया हिदायतुल उलूम की कोशिशों से मशहूर साहिबे क़लम (लेखक) जनाब ख़ालिद सिद्दीक़ी साहब को प्राप्त हुआ और इसको प्रकाशित करने का शरफ़ मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द को हुआ था। अब मर्कज़ी जमीअ़त अहले हदीस हिन्द इसे कुछ अहले ख़ैर हज़रात के सहायता से 13 वीं बार प्रकाशित करने जा रही है। अल्लाह तआ़ला इस किताबे हिदायत के प्रसार व प्रकाशन में भाग लेने वालों और दूसरे इन्सानों को दुनिया व आख़िरत में इसके ज़रिये सुरखुरूई (प्रसन्नमुख) और कामयाबी (सफ़लता) अता फ़रमाये-आमीन

असग़र अली इमाम मेहदी अस्सलफ़ी
जनरल सेक्रेट्री
मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

15/09/1435
15/07/2014

अनुवादक की ओर से
दो शब्द

क़ुरआन मजीद, समस्त संसार की हिदायत और राहनुमाई के लिये आज से चौदह सौ वर्ष पूर्व अन्तिम संदेष्टा मुहम्मदुर्रसूलुल्लह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अ़रब की भूमि में नाज़िल हुआ था। इस पुस्तक की भाषा अ़रबी है। इस से केवल वही लोंग लाभपर्द हो सकते हैं जिन की मात्र भाषा अ़रबी है। जो लोग अ़रबी भाषा न जानने के कारण कुरआन मजीद से लाभ नहीं उठा सकते, ऐसे लोगों के लिये उन की अपनी-अपनी भाषाओं में क़ुरआन मजीद के तर्जुमे किये गये हैं। लेकिन वास्तविक्ता यह है कि जो बात अस्ल अ़रबी भाषा में सीधे तौर पर समझने में है, वह दूसरी भाषाओं के तर्जुमे में नहीं हैं। इस का कारण यह है कि तर्जुमा और अनुवाद में संपूर्ण रूप से अ़रबी अर्थ और मफ़हूम का हक़ अदा नहीं हो पाता। यही कारण है कि उर्दू एवं हिन्दी भाषा में बहुत सारे तर्जुमे प्रयाप्त मात्रा में होने के बावजूद, अभी भी तर्जुमों का सिलसिला जारी है और संभवत: यह सिलसिला कभी न थमे गा।

*****

हमारे मुल्क की राष्ट्र भाषा हिन्दी है, अत: बहुत से राज्य ऐसे भी हैं जहाँ अधिकांश रूप से हिन्दी भाषा ही लिखने-पढ़ने और बोलने-चालने में प्रयोग होती है, इस लिये यह आवश्यक था कि ऐसे वर्ग के लाभ उठाने के लिये हिन्दी भाषा में कुरआन मजीद का अनुवाद पेश किया जाये। मेरे ख़याल में हिन्दुस्तान में लग-भग सभी इस्लामी जमाअ़तों के अपने-अपने मस्लक के अनुसार कुरआन के हिन्दी अनुवाद और संक्षिप्त तफ़्सीरें मौजूद हैं, लेकिन दुर्भाग्य से किताब व सुन्नत की दावत देने वाली अपनी जमाअ़त के पास केवल किताब व सुन्नत की रोशनी में कुरआन का कोई हिन्दी अनुवाद और तफ़्सीर नहीं है- इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलैहि राजिऊन- हालाँकि वास्तव में यह जमाअ़त की ज़िम्मेदारी और फ़र्ज़ बनता है कि कम से कम राष्ट्र भाषा में कुरआन के संदेश को जनता तक पहुंचाए। ताकि मुल्क का हिन्दी जानने वाला वर्ग उस से लाभ उठा सके।

*****

इसी आवश्यक्ता के पेशनज़र मुझ गुनहगार के दिल में १९९६ ही से यह इच्छा थी कि और किताबें न सही, कम से कम किताब व सुन्नत की कसौटी पर कुरआन मजीद का एक हिन्दी तर्जुमा और संक्षिप्त तफ़्सीर अवश्य हो, जिस से कम से कम मुल्क का केवल हिन्दी भाषी वर्ग लाभ उठा सके। लेकिन फिर यह ख़याल कर के कि एक भाषा को दूसरी भाषा में बदलना बड़ा कठिन और महत्त्व पूर्ण कार्य है, हिम्मत हार गया और इसी असमंजस में दिन महीनों में और महीने वर्षों में बदलते गये। फिर यह साहस कर के कि यह ज़िम्मेदारी अगर्चे बहुत बड़ी है, लेकिन निय्यत में अगर इख़्लास है और अल्लाह पाक को यह कार्य पसंद है तो वह अवष्य ही अपनी रहमतों और बर्कतों के दर्वाज़े खोल दे गा और तमाम कठिनाइयों को सरल

फ़रमा दे गा, दिल में हिन्दी अनुवाद करने का फ़ैसला कर लिया। अल्लाह पाक के फ़ज़्ल व करम और उस की कृपा ने मेरे दिल व दिमाग़ से असमंजस और पसो-पेश के काँटे निकाल दिये

★★★★★

मैं ने अनुवाद का दृढ़ इरादा तो कर लिया, मगर किताबों के छपवाने में मालियत का बड़ा अमल-दख़ल होता है। बहुत सी बहुमूल्य और अद्भुत पुस्तकें केवल इस लिये प्रकाशित होने से वन्चित रह जाती हैं कि उन पर बड़ी मोटी रक़म ख़र्च आती है। लेकिन अल्लाह पाक ने इस कठिनाई को भी सरल बना दिया और ग़ैब से इस प्रकार सहायता प्रदान की जिस का गुमान तक न था। शहर मकराना, जन्पद नागौर, राज्य राजस्थान की जमाअत के कुछ लोग दिल्ली अपने निजी कार्य से आये हुये थे। उन्हों ने एक मुलाक़ात में "सहीह मुस्लिम" का हिन्दी में तर्जुमा करवाने और इस से मुतअ़ल्लिक़ समस्त ख़र्च बर्दाश्त करने की इच्छा प्रकट की। मैं ने जब अपने प्रोग्राम से आगाह किया तो उन्हों ने सहीह मुस्लिम के स्थान पर हिन्दी क़ुरआन को प्रकाशित करने का इरादा फ़रमा लिया। संभवत: मुझ गुनहगार के दिल के किसी कोने में क़ुरआन मजीद के अनुवाद के तअ़ल्लुक़ से कुछ इख़्लास का पहलू था, जिस के कारण अल्लाह पाक ने कुबूल फ़रमाया और इस से मुतअ़ल्लिक़ सब से बड़ी रुकावट को दूर फ़रमा दिया।

★★★★★

इन तमाम मर्हलों से गुज़रने के पश्चात् यह मसला सामने आया कि क़ुरआन व सुन्नत की कसौटी को सामने रखते हुये किस आ़लिमे-दीन के उर्दू तर्जुमा का अनुवाद किया जाये? इस सिलसिले में स्वंय कई महीनों तक ग़ौर किया और दूसरे उलमा-ए-किराम से भी राय और मश्वरों का दौर चला। अन्ततः आ़म जनता और कम पढ़े-लिखे लोगों की सामने रखते हुये, हज़रत मौलाना सनाउल्लाह साहब अमृतसरी रह० के उर्दू तर्जुमा और मौलाना दावूद राज़ रह० के तर्तीब दिये हुये हाशिये बनाम " सनाई तर्जुमे वाला कुरआन मजीद" के नाम फ़ाल निकला। हज़रत मौलाना रह० ने और दूसरे उर्दू तर्जुमों की मौजूदगी में स्वंय उर्दू तर्जुमा करने का इरादा क्यों फ़रमाया था? इस का उत्तर उन्ही के शब्दों में आइन्दा के पन्नों में पढ़ें। हाशिया के बारे में मेरा अपना ख़याल है कि आ़म जनता की राहनुमाई के लिये यह हवाशी बहुत अधिक लाभदायक हैं। मौलाना राज़ रह० ने १५ उलमा और मुफ़स्सिरों की तफ़ासीर और हाशियों का निचोड़ पेश किया है। इस विषय में और अधिक जानकारी के लिये "हवाशी से मुतअ़ल्लिक़ चन्द बातें" अगले पन्नों में अवश्य मुताला फ़रमायें।

तर्जुमा और हाशिया से मुतअ़ल्लिक़

मौलाना अमृतसरी रह० ने अपने उर्दू तर्जुमा में अपनी एक अलग ही शैली (Style) अपनाई है जो अगर बामुहावरा नहीं तो लफ़्ज़ी भी नहीं है। मौलाना के तर्जुमा में पंजाब की अ़लाक़ाई उर्दू बोली का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज़ाहिर है। अगर मौलाना के तर्जुमा को आज-कल के बामुहावरा उर्दू भाषा की शैली में बदला जाये तो हर जगह शब्दों को आगे-पीछे करना पड़े गा और इस प्रकार मौलाना की अपनी अपनाई गयी शैली समाप्त हो जाये गी। इसी लिये तर्जुमा में किसी भी प्रकार का तनिक भर भी फेर-बदल नहीं किया गया है। हाँ, फ़ारसी और अ़रबी के बहुत कठिन शब्दों को आम हिन्दी बोल-चाल की भाषा में अवश्य बदल दिया है और उस के स्थान पर सरल हिन्दी शब्दों का प्रयोग किया है जिस से माना व मतलब में तनिक भर फ़र्क़ न आने पाये। इस मामले में बड़ी सतर्कता से अमल किया है।

मौलाना ने तर्जुमा में Bracket के ज़रीआ एक आयत को दूसरी आयत से जोड़ दिया है। इस प्रकार एक सूर: की समस्त आयतों को एक-दूसरे से मरबूत कर दिया है। आप ऐसे पहले उर्दू अनुवादक हैं जिन्हों ने यह शैली अपनायी है जो अपने स्थान पर बड़ा ही अद्‌भुत और दुर्लभ है और यही इस तर्जुमा की सब से बड़ी विशेष्ता है। अगर केवल तर्जुमा ही पढ़ें तो आप को ऐसी रवानी मिले गी गोया कोई किताब पढ़ रहे हैं।

बहुत से स्थानों पर मौलाना ने हर दो आयतों का तर्जुमा इस प्रकार जोड़ कर किया है कि उन को अलग-अलग आयत का नंबर देकर जुदा करना असंभव है। यही कारण है कि ऐसे स्थानों पर दो-दो, तीन-तीन आयतों का नंबर एक साथ देना पड़ा है। मैं ने आसानी के लिये हर आयत का तर्जुमा, हर आयत के नंबर के तहत दिया है, लेकिन बहुत से स्थानों पर विवश हो कर यही शैली अपनानी पड़ी है।

हाशिया में बहुत से स्थानों पर अ़रबी, फ़ारसी और उर्दू के कवियों के कलाम को दलील के तौर पर पेश किया गया है जो वास्तव में अपने स्थान पर निहायत ही उचित और फ़िट हैं, लेकिन मैं ने कुरआन और अहादीस के ज़रीआ तश्रीह के दर्मियान इन को स्थान देना उचित न जान कर नक़ल नहीं किया। फिर हिन्दी रोमन में लिखने से उन का वज़न बाक़ी नहीं रह जाता और न ही सही तौर पर पढ़ा ही जा सकता है।

हाशिया में बहुत से स्थानों पर अ़रबी ग्रामर का विस्तार से ज़िक्र है। विशेष कर मौलाना अ़ब्दुल हक़्क़ रह० की तफ़्सीर हक़्क़ानी से लिये गये हवाशी में। चूंकि अ़रबी भाषा से यकदम नावाक़िफ़, केवल हिन्दी भाषा जानने वाले और कम पढ़े-लिखे लोगों के लिये यह चीज़ बिल्कुल ही लाभदायक नहीं थी, इस लिये इन को छोड़ दिया गया है।

जिन तफ़्सीरों से हाशिया का चुनाव किया गया है वह अपने-अपने समय काल की उूर्द भाषा और शैली में हैं। चुनान्चे शाह अ़ब्दुल क़ादिर देहलवी रह० की खड़ी और लफ़्ज़ी उर्दू, मौलाना आज़ाद रह० के फ़सीह-बलीग़ और अ़रबी व फ़ारसी से मिल कर मुसज्जा व मुक़फ़्फ़ा जुम्ले, मौलाना अमृतसरी रह० की मन्तिक़ी पकड़ और मुनाज़िराना अन्दाज़े-बयान, मौलाना अ़ब्दुल माजिद दरिया बादी रह० की फ़लसफ़ियाना गिरिफ़्त, मौलाना हक़्क़ानी की बाल से भी बारीक पकड़ और अ़रबी ग्रामर के ज़रीआ तर्क और सबूत, इन बातों से उलमा भली-भाँति परिचित हैं। इन समस्त तफ़्सीरों के हवाशी अगर हूबहू और जूँ के तूँ उन्हीं के शब्दों और शैली में नक़ल कर दिये जायें तो हिन्दी भाषी तो दूर, आज-कल के उर्दू भाषा के ज्ञान का दावा करने वाले भी पानी भरते नज़र आयें गे। इस लिये मैं ने उन की ज़बान को सरल कर के आसान और सहज शब्दों में पेश करने की चेष्टा की है और इस बात का हमेशा ध्यान दिया है कि माना व मतलब में तबदीली न आने पाये।

मौलाना दावूद राज़ रह० ने बहुत से स्थानों पर विशेष कर सूरतों के फ़ज़ाइल के संदर्भ में बहुत सी ज़ईफ़ और मौज़ूअ़ (मनघड़त) हदीसों को नक़ल कर दिया है। फ़ज़ाइल के तअ़ल्लुक़ से इस प्रकार की हदीसें भले ही बड़ी भली और लुभावनी लगती हैं, लेकिन मुहद्दिसीन के बनाये गये उसूल और सिद्धान्तों के तहत इन्हें कोई स्थान नहीं दिया जा सकता। ऐसी हदीसों को या तो नक़ल ही नहीं किया है, या अगर नक़ल किया है तो नोट की शक्ल में उन अहादीस की कमज़ोरियों को भी बयान कर दिया है। यह कार्य हर स्थान पर इस फ़न के माहिर उलमा की राय और मश्वरों के बाद ही किया है। हम अपनी इस जुरअत के लिये माज़रत चाहते हैं।

उर्दू भाषा के बहुत से शब्द ऐसे हैं जो हिन्दी भाषी भी भली-भाँति लिखते-पढ़ते और बोलते हैं, इन शब्दों को वैसे ही हिन्दी रोमन में नक़ल कर दिया है और निहायत मुश्किल उर्दू और फ़ारसी के शब्दों

को सरल, सहज और आसान हिन्दी में कर दिया है, ताकि पढ़ने वालों को शब्दकोश (Dictionary) की आवश्यक्ता न पड़े। इस के बावजूद भी उर्दू-अ़रबी की अपनी कुछ ऐसी परिभाषायें होती हैं जिन का तर्जुमा नहीं हो सकता, इस लिये इन्हें मजबूरन वैसे ही नक़ल करना पड़ा है।

मौलाना अमृतसरी रह० ने पूरे कुरआन मजीद में 'अल्लाह' का उर्दू तर्जुमा "खुदा" किया है, शब्द "खुदा" के स्थान पर अल्लाह अनुवाद किया है। इसी प्रकार उर्दू हाशिया में हर स्थान पर 'सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम' को मुख़्तसर कर के "स०" लिखा गया है। मैं ने पूरे कुरआन में जहां भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मुबारक नाम आया है वहां पूरा दी दुरूद नक़ल कर दिया है। इस से बहुत बड़ा फ़ाइदा यह है कि पढ़ने वाला इस को पूरा ही पढ़ेगा और इस प्रकार उसे मुकम्मल दरूद पढ़ने का सवाब मिले गा और यह दुरूद सदा के लिये पन्नों पर अमिट हो जाये गा।

सहाबा और ताबेअ़ीन व इमामों के नाम के आगे संक्षिप्त में "रज़ि०" और "रह०" हर स्थान पर लिखने की कोशिश की गयी है, लेकिन संभव है कि लिखने से रह भी गया हो। हम इस चूक के लिये माज़रत चाहते हैं।

उर्दू एडिशन में किताबत और पुरूफ़रीडिंग की बेपनाह ग़लतियाँ हैं, विशेष कर BRACKET लगाने में बड़ी लार्पाही से काम लिया गया है। मैं ने तहक़ीक़ कर के उचित स्थानों पर लगाने का प्रयत्न किया है।

*****

बहरहाल मुझ गुनहगार से जो कुछ, जैसा कुछ और जितना कुछ संभव हो सका, अल्लाह की मदद, उस की सहायता और मेहरबानी से अपनी तरफ़ से भरसक बेहतर से बेहतर शक्ल में पेश करने का प्रयत्न किया है। अपने इस उद्देश्य में मैं कहाँ तक कामियाब हूँ यह तो पढ़ने वाले ही बतायें गे। इन्सान के केवल उन्हीं कामों की क़द्र और क़ीमत है जिन्हें अल्लाह पाक कुबूल फ़रमायें। बस उस पाक ज़ात से प्रार्थना और निवेदन है कि मुझ गुनहगार की इस मामूली और अधूरी चेष्टा को अपने दरबार में कुबूलिय्यत का स्थान अ़ता फ़रमाये-- अल्लाहुम्म तक़ब्बल् मिन्नी इन्न-क अन् तस्समीउल् अ़लीम--- आमीन!

*****

अन्त में मैं उन समस्त हज़रात का अभारी हूँ जिन्हों ने हर प्रकार से मुझे सहायता प्रदान की। विशेष कर जनाब हाफ़िज़ शकील अहमद मेरठी का जो अन्त तक मुझे अपने क़ीमती राय और मश्वरों से नवाज़ते और मेरी ढारस बंधाते रहे और इस राह के मुसाफ़िर को मन्ज़िल तक पहुंचने से पहले तक रुकने न दिया। और मैं आभारी हूँ मकराना की जमाअ़त के समस्त मुख़्लिस भाइयों का जिन के माली सहयोग और सहायता से यह कुरआन मजीद छप कर आप के हाथों तक पहुंच सका। और जनाब बख़्तावर सुल्तान साहब का अभारी हूँ जिन्हों ने अपना क़ीमती समय दे कर बड़ी मेहनत से पुरूफ़ की दो-दो बार रीडिंग फ़रमाई। अल्लाह पाक से प्रार्थना है कि वह इन समस्त सहयोगियों और सहायकों की ख़िदमत को कुबूल फ़रमाने के साथ-साथ मेरी भी इस एक नामुकम्मल और अधोरी कोशिश को कुबूल फ़रमायें और हम सब को क़ुरआन पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमायें। अमीन

*****

अन्त में प्रार्थना है कि इस के हिन्दी तर्जुमा-तफ़्सीर और पुरूफ़ की रीडिंग में सकत भर एहतियात से काम लिया गया है, लेकिन फिर भी पहला एडीशन होने के नाते ग़लतियों से इन्कार नहीं। अतः पढ़ने

वालों से अनुरोध है कि तर्जुमे और तफ़सीर में किसी प्रकार की छोटी-बड़ी ग़ल्ती पकड़ में आये तो उस से तुरन्त अवगत करें, हम आप के आभारी हों गे और दूसरे एडीशन में उस को दुरुस्त करने का परियास करें गे।

आज जबकि महीनों की मेहनत के पश्चात् हिन्दी अनुवाद से फ़ारिग़ हो कर यह अन्तिम चनद सतरें लिख रहा हूँ, आखों से ख़ुशी के आँसू छलक रहे हैं। और यह महसूस कर रहा हूँ कि मेरे जीवन के सब से बेहतरीन दिन-रात वह हैं जो मैं ने तन्हाई में मौन हो कर इस पवित्र कुरआन की तैंयारी में बिताये। अल्लाह पाक जब आख़िरत में कुरआन मजीद के ख़ादिमों पर अपने फ़ज़्ल व करम और रहमत की वर्षा करें तो उन की क़िसी सफ़ (पंक्ति) में मुझ गुनाहगार पर भी उस वर्षा की कुछ छींटें पड़ जाएं, बस पाठकों से केवल इसी दुआ की प्रार्थना है।

इन् उरीदु इल्लल् इस्ला-ह मस्-त-तअ़्तु वमा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाहि. अ़लैहि त-वक्कल्तु वइलैहि उनीब+रब्बना त-क़ब्बल् मिन्ना इन्न-क अन्-तस्समीउल् अ़लीमु वतुब अ़लैना इन्न-क अन्-तत्तव्वाबुर्रहीम+व-सल्लल्लाहु अ़ला ख़ैरि ख़ल्क़िही मुहम्मदिंव्व आलिही व-अस्हाबिही अज-मओ़न+ आमीन! या रब्बल् आ़-लमीन।

मेरे मौला! जो तलब मैं ने किया, तूने दिया
तुझ प कुर्बान! मेरी यह भी दुआयें सुन ले
मुझ गुनहगार की इक कोशिशे-नाकाम है यह
अपनी रहमत की रिदाओं में छुपा कर रख ले
आज **ख़ालिद** प भी हो तेरे करम की वर्षा
देख! नाकाम तेरे दर से न जाये, सुन ले!

ख़ता कार- गुनहगार

ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी (फ़लाही)
मस्जिद अहले हदीस, मोरी गेट

७ अगस्त १९९९, सनीचर
२३ रबीउस्सानी १४२० हि०
8:30 a.m.

*****

हवाशी से मुतअ़ल्लिक़ आवश्यक सूचना

यह तो सभी जानते हैं कि तर्जुमा मौलाना सनाउल्लाह साहब अमृतसरी रह० का है। तर्जुमा और ब्रिकेट में किसी प्रकार की छेड़-छाड़ नही की गयी है। और यह भी जानते हों गे कि इस का हाशिया मौलाना दावूद राज़ साहब रह० का चुना हुआ है। मौलाना ने जिन-जिन तफ़्सीरों से हाशिया या तफ़्सीरी नोट का इन्तिख़ाब किया है उन के नाम निम्न में दिये जाते हैं:

1. **तफ़्सीर सनाई:**— यह तफ़्सीर हज़रत मौलाना अमृतसरी रह० (१८६८-१९४८) की है जो ८ भागों में है। मौलाना ने अपनी यह तफ़्सीर २९ रमज़ानुल् मुबारक सन १३४९ हि० मुताबिक़ १८ फ़रवरी सन १९३१ ई० को मुकम्मल फ़रमाई। इस तफ़्सीर से जो कुछ लिया गया है उस के आगे "सनाई" लिख दिया गया है।

2. **तफ़्सीर मुहम्मदी:**— हज़रत मौलान मुहम्मद जूना गढ़ी रह० (१८९०-१९४१ ई०) के क़लम से पूरी तफ़्सीर "इब्ने कसीर" का बेहतरीन उर्दु तर्जुमा है। इस तफ़्सीर से जो कुछ लिया गया है उस के आगे "मुहम्मदी" या "इब्ने कसीर" दर्ज है।

3. **तफ़्सीर वहीदी:**— हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़माँ हैदराबादी की बेहतरीन सल्फ़ी तफ़्सीर है, जो लाहौर से प्रकाशित क़ुरआन मजीद के हाशिया पर दर्ज है। उस क़ुरआन में तर्जुमा भी मौलाना मर्हूम का है। उस क़ुरआन से जो कुछ लिया है उस के आगे "वहीदी" दर्ज है।

4. **तफ़्सीर हमीदी:**— मश्हूर सल्फ़ी आ़लिम मौलाना हमीदुल्लाह साहब मेरठी की तफ़्सीर है जो "हदीसुत्तफ़ासीर" के नाम से देहली के फ़ारूक़ी कुतुब ख़ाना से प्रकाशिन १३१५ हि० के क़ुरआन मजीद के हाशिया पर दर्ज है। इस के तफ़्सीरी हाशिया से जो कुछ लिया गया है उस के आगे "हमीदी" या "हदीसुत्तफ़ासीर" दर्ज है।

5. **हवाशी सलफ़िय्या:**— इस से मुराद वह तश्रीही नोट हैं जो २० ख़ूबियों वाले क़ुरआन मजीद से लिये गये हैं। इस से जो कुछ लिया गया है उस के आगे "सलफ़िय्या" दर्ज है।

6. **तर्जुमानुल् क़ुरआन:**— यह नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ाँ भोपाली रह० (वफ़ात-१३०७ हि०) की लिखी हुयी बड़ी मुफ़स्सल तफ़्सीर है जो मुस्तनद सल्फ़ी तफ़्सीरों का ज़ख़ीरा है। इस तफ़्सीर से लिये गये हाशिया के आगे तफ़्सीर के नाम के साथ मौलाना का नाम भी लिख दिया गया है।

7. **वाज़िहुल् बयान:**— हज़रत मौलाना मुहम्मद इब्राहीम साहब मीर सियाल कोटी की सूरः फ़ातिहा की तफ़्सीर का नाम है। इस के आगे "वाज़िहुल् बयान" दर्ज है।

8. **तफ़्सीर सूरः कहफ़:**— यह भी मौलाना सियालकोटी (१८७१-१९५६ ई०) ही की लिखी हुयी सूरः "कहफ़" की तफ़्सीर है। सूरः कहफ़ के हाशिया में इस से भी सहायता ली गयी है।

9. **तफ़्सीर अहसनुत्तफ़ासीर:**— डिप्टी अहमद हसन साहब देहलवी रह० (वफ़ात-१३८२ हि०) की लिखी हुयी बेहतरीन तफ़्सीर है। इस को तफ़्सीर इब्ने कसीर वग़ैरह का बड़ा बेहतरीन उर्दू ख़ुलासा कहना

उचित है। इस तफ़्सीर से जो कुछ लिया है उस के आगे "अहसनुत्तफ़ासीर" दर्ज है।

10. अहसनुल् फ़वाइद:— तीन तर्जुमा वाले कुरआन मजीद पर डिप्टी अहमद हसन मर्हूम (वफ़ात-१३८२ हि०) का हाशिया दर्ज है। इस के आगे "अहसनुल् फ़वाइद" दर्ज है।

11 तर्जुमानुल् क़ुरआन:—हज़रत मौलाना अ़बुल कलाम आज़ाद (वफ़ात-१९६० ई०,१३७७ हि०) की बड़ी मशहूर तफ़्सीर है। इस तफ़्सीर से हाशिया में बड़ी मदद ली है। इस के आगे "तर्जुमान आज़ाद" लिख दिया गया है।

12. तफ़्सीर मवाहिबुर्रहमान:— अ़ल्लामा सय्यद अमीर अ़ली बलगरामी, मलीहाबादी,लखनवी (वफ़ात-१३३६ हि०) की लिखी हुयी बड़ी उम्दा तफ़्सीर है। यह तफ़्सीर ३० भागों में है। इस के आगे "मवाहिब" दर्ज है।

13. मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान:— हज़रत मौलाना महमूदुल हसन देवबन्दी मर्हूम (वफ़ात-१३६८ हि०) के तर्जुमा वाले कुरआन मजीद के हवाशी का नाम है। इन का हाशिया जहाँ है उस के आगे "मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान" दर्ज है।

14. तफ़्सीर हक़्क़ानी:— यह तफ़्सीर आ़म ख़ास सभी के दर्मियान बहुत मक़्बूल हैं। इस तफ़्सीर से जो ख़ुलासा लिया गया है उस के आगे "हक़्क़ानी" लिख दिया है। (वफ़ात-१३७० हि०)

15- तफ़्सीर माजिदी हिन्दुस्तान के जाने-माने रोशन ख़याल फ़ल्सफ़ी आ़लिमे-दीन हज़रत मौलाना अ़ब्दुल माजिद साहब दरियाबादी (वफ़ात-१९७७ ई०) की तफ़्सीर है। इस के अगे "माजिदी" लिखा गया है।

16. हवाशी मिर्ज़ा हैरत:— मिर्ज़ा हैरत देहलवी के तर्जुमा कुरआन से जो हाशिया लिया गया है, उस के आगे "मिर्ज़ा हैरत" लिख दिया गया है।

इन के अ़लावा और भी दीगर किताबों से हाशिया में सहायता ली गयी है, वहाँ पर आगे "मुख़्तलिफ़ कुतुब" लिख दिया गया है। इस कुरआन मजीद के तर्जुमा और हवाशी के तर्तीब देने वाले हज़रत मौलाना दावूद राज़ मर्हूम ने भी बहुत से स्थानों पर नोट लिखे हैं वहाँ "राज़" लिखा गया है। जिन किताबों से हवाशी लिये गये हैं वह मुख़्तलिफ़ ज़मानों में लिखी गयी हैं, उन में ख़ास तौर पर अ़लाक़ाई बोली की छाप मौजूद है जिन्हें सरलता से जांचा जा सकता है। इसलिये वह हवाशी हू बहू नक़ल नही किये जा सकते थे। अगर नक़ल कर दिये जाते तो अ़वाम तो अ़वाम, पढ़े लिखे वर्ग को भी समझने में कठिनायी होती, इस लिये उन हवाशी को थोड़ा बहुत सरल कर दिया गया है, लेकिन यह "ग़लती" केवल वहीं की गयी हैं जहाँ वास्तव में बहुत अहम ज़रूरत थी।

हवाशी में जिन-जिन तफ़्सीरों से मदद ली गयीं है, उन्हें पढ़ कर आप अनुमान लगा सकते हैं कि मौलाना राज़ रह० ने तनिक भर भी तअ़स्सुब से काम नही लिया है और उन ग़ैर अहले हदीस उलमा के हवाशी भी नक़ल किये हैं जो कुरआन व हदीस के मुताबिक़ है।

ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी

बिस्मिल्लाहिंमा निर्रहीम

क़ुरआन मजीद की विशेषताएँ

अल्लामा क़ाज़ी, मुहम्मद सुलैमान सल्मान रह० (मंसूर पुरी)

कुरआन मजीद वह पाक किताब है जिसे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने "अल्लाह का कलाम" बता कर अपनी ज़बान से एक-एक हर्फ़ (अक्षर) पढ़ कर सुनाया। इस लिये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सीरत, उन का चरित्र और कैरेक्टर (Character) लिखने वाले की ज़िम्मे-दारी है कि कुरआन मजीद से संबन्धित आवश्यक बातें नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सीरत के साथ-साथ पेश करें। "रहमतुल्लिल्-आ़लमीन" के पहले भाग में इस तअ़ल्लुक़ से कुछ बातें लिखी जा चुकी हैं, इसी तअ़ल्लुक़ से कुछ और बातें यहाँ पढ़ने वालों के लिये पेश की जा रही हैं।

कुरआन पाक के नाम भी अल्लाह तआ़ला के नामों की तरह ९९ तक पहुंच गये हैं, लेकिन उस का सब से प्रसिद्ध और ख़ास नाम "कलामुल्लाह" है और सब से बढ़ कर "अल् कुरआन" है।

इमाम इब्ने क़य्यिम रह० अपनी किताब "अल् माशूक़ इला उलूमिल् कुरआन" में लिखते हैं कि "कुरआन" शब्द "क़रातुल् हौज़" से लिया गया है। इस का अर्थ है "जो हौज़ पानी से पूरा का पूरा भरा हुआ हो"। चूंकि कुरआन पाक में भी हर प्रकार का ज्ञान, हर प्रकार की दीन व दुनिया की भलाई की बातें, कौमों की तरक़्क़ी और तबाही व बर्बादी, उन का अ़क़ीदा और विश्वास, अर्थात यह कि हर प्रकार के उपदेश, नसीहतें, और आदेश मौजूद हैं, इसी कारण इस का नाम "कुरआन" है। अब निम्न में मुख़्तलिफ़ विषयों पर कुछ बातें पेश की जाती हैं।

क़ुरआन की आवश्यक्ता

कुरआन मजीद की आवश्यक्ता का अनुमान लगाना हो तो उस समय जो लोग ज़िन्दा थे उन की हालत को देखना चाहिये।

ईरान:- के मजूसी (आग की पूजा करने वाले) कुफ़्र और शिर्क में डूबे हुये थे, उन के अन्दर मानवता नाम की कोई चीज़ नहीं थी, उन में और जानवरों में कोई अन्तर ही नहीं था। माँ, बहन, बेटी से खुले आ़म शादी विवाह रचाते थे और उन के साथ संभोग करते थे।

रोमा:- चर्च के ई़साई उलमा बुतों की पूजा करते थे और अपने अ़क़ीदे का प्रचार करते थे, और जो भी इन के अक़ीदे से इख़्तिलाफ़ करता उसे मौत के घाट उतार देते थे। चुनान्चे इन्हों ने अपने इस बुत परस्ती

के अक़ीदे को मन वाने में लाखों इन्सानों को क़त्ल कर डाला।

चीन:- के लोग क़ब्रों और भूतों-प्रेतों की पूजा-पाट में मस्त थे और इस पर भी उन्हें घमन्ड था कि वह अल्लाह के बेटे हैं।

हिन्दुस्तान:- की भी हालत कुछ कम ख़राब नहीं थी। यहाँ के लोग भी बुतों की पूजा में मगन थे, शराबें पीते और हर प्रकार की बुराइयाँ करते थे। महिला और पुरुष के नंगे चित्र बना कर मंदिरों में रखते और उन्हीं से सब माँगते थे। लड़कियों को मार डालना, जुवा और सट्टे-बाज़ी को सब से अच्छा समझते थे!

अरब:- के लोगों का तो सब से बुरा हाल था। इन के अन्दर पूरे संसार के बुरे लोगों की बुराइयां मौजूद थीं। दुनिया की कौन सी बुराई है जो इन के अन्दर नहीं पाई जाती थी।

मतलब यह है कि पूरी दुनिया में अंधेरा छाया हुआ था। इन अंधेरों, बुराइयों और गुमराहियों को दूर करने में उस ज़माने की किताबें दूसरी क़ौमों की इस्लाह क्या करतीं, स्वंय जिन पर यह किताबें उतारी गयी थीं, उन्हों ने ही उस को मानने से इन्कार कर दिया और अपनी ही किताब के आदेशों के खिलाफ़ करने लगे। इन हालात में एक ऐसी ठोस और मुकम्मल किताब की आवश्यकता थी जो यकबार्गी पूरी दुनिया को सुधार सके और तमाम आसमानी किताबों के आदेश उस के अन्दर इकट्ठा हों, ऐसी किताब के आ जाने के बाद और किसी किताब की आवश्यकता बाक़ी न रह जाये।

चुनान्चे जिस प्रकार सख़्त गर्मी के प्रकोप और घुटन के बाद वर्षा होती है, जिस प्रकार रात के अंधकार के पश्चात् सूर्य निकलता है, इसी प्रकार समस्त संसार में छायी हुयी तारीकी ही की वजह से लोगों ने कुरआन मजीद के प्रकाश की ज़रूरत को महसूस किया, इस लिये अल्लाह तआला ने हमारी रूहानी आवश्यकता के लिये इस कुरआन को नाज़िल फ़रमाया और इस से साबित कर दिखाया कि दुनिया को इस जैसी किताब की आवश्यकता थी। इसी कारण अल्लाह तआला ने हमारी हिदायत का सामान करते हुये कुरआन मजीद को नाज़िल फ़रमाया।

बड़े दुख की बात है कि हिन्दुस्तान में एक फ़िर्क़ा ऐसा भी मौजूद है जो अल्लाह को तो मानता है, लेकिन कुरआन की आवश्यकता से इन्कार करता है। यह जाहिल इस बात को मानते हैं कि अल्लाह ने अगर आँखें बनाई हैं तो देखने के लिये भिन्न प्रकार के रंग भी बनायें हैं, कान बनायें हैं तो सुनने के लिय भाँति-भाँति की बोलियाँ भी पैदा की हैं, पाँव बनायें हैं तो चलने के लिये ज़मीन बनाई है, मुंह दिया है तो खाने के लिये खट्टे-मीठे फल भी बनाये हैं। यानी इन्सान के अन्दर जो-जो चीज़ें रख दी हैं, उन के लिये दुनिया में उतनी ही चीज़ें पैदा कर दी हैं, ताकि जिस्म का कोई भी भाग लाभ उठाने से वन्चित न रह जाये।

इसी प्रकार इन्सान के जिस्म में एक रूह और जान है, इस को भी तो खाने-पीने की आवश्यकता होती है, इस की भी-तो अपनी एक ज़रूरत है। चुनान्चे इस रूह के खान-पान ही के लिये कुरआन मजीद को नाज़िल फ़रमाया, ताकि जिस प्रकार जिस्म के दूसरे हिस्से लाभ उठा रहे हैं, यह भी उस कुरआन की रोशनी से लाभ उठाये और ग़लत डगर पर न चल पड़े। यह दिल के अन्धे अगर रूह का इन्कार कर देते तो इतने दुःख की बात न थी, जितना इस बात पर दुःख होता है कि रूह का तो इक़रार करते हैं और उस की आवश्यक्ताओं का इन्कार करते हैं।

आज दुनिया की क़ौमों ने इतनी तरक़्क़ी की है वह सिर्फ़ इसी बुनियाद पर की है कि उन्हों ने अपने

क़ानून और नियमों में कुरआन मजीद में बयान किये गये उसूलों को इस्तेमाल किया है। इस बात को आप तस्लीम करें या न करें, लेकिन हक़ीक़त यही है कि १४०० वर्ष से उन्हीं कुरआन के उसूलों को अपना कर अपने-अपने मज़हब में शामिल कर के अलग-अलग धर्म व मज़हब बना लिये है। इन बातों को सामने रख कर हर साहित्यकार इस बात को स्वीकार करे गा कि दुनिया को कुरआन मजीद की कितनी सख़्त ज़रूरत थी।

फ़साहत–बलाग़त

कुरआन मजीद की फ़साहत व बलाग़त का अनुमान लगाने के लिये अ़रबी भाषा का मुकम्मल ज्ञान होना ज़रूरी है। अगर किसी को अ़रबी भाषा, उस के बयान, अन्दाज़े बयान, उस के इस्तेमाल करने के तरीक़ों का ज्ञान हासिल हो जाये तो वह बेइख़्तियार चीख़ पड़े गा कि कुरआन किसी इन्सान का नहीं, बल्कि अल्लाह का कलाम है। अ़रब के कवियों से बढ़ कर किस को अ़रबी भाषा में महारत हो सकती है? एक से बढ़ कर एक उन में अ़रबी भाषा का विद्वान था, लेकिन सभी ने एक अवाज़ हो कर कह दिया कि कुरआन इन्सान का कलाम नहीं हो सकता।

दुनिया की तारीख़ पर नज़र डालिये, साहित्य की पुस्तकों के पन्ने उलट जाइये क्या किसी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तरह किताब को पेश कर के नबुव्वत का दावा किया है? नहीं, हर्गिज़ नहीं! यह तो रसूले खुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इतना अछूता दावा पेश किया है और अपने सच्चा झूठा होने की कसौटी दी है। और इस को न मानने वालों को जहन्नम के अ़ज़ाब का संदेश सुनाया है। और उस ज़माने के बड़े-बड़े अ़रबी भाषी आप के सामने खड़े सिर्फ़ आप का मुंह ताकते रहे।

यहाँ यह बात ध्यान में रहे कि फ़िरदौसी, होमर, शैख़ सअ़दी, शेक्सपियर, वालमीकि, मिल्टन, सहबान, नाबिग़ा, सुसरू, कैस वग़ैरह ने अपनी-अपनी ज़बानों में फ़साहत-बलाग़त के दरिया बहाये हैं, लेकिन इन पर विषय को ले कर कोई पाबन्दी नहीं थी। अपनी-अपनी इच्छा से जिस विषय पर जिस को जो पसन्द आया लिखता गया। लेकिन अगर कुरआन मजीद की तरह कुछ ख़ास विषयों पर लिखने की पाबन्दी होती, तो कोई भी फ़साहत-बलाग़त के जौहर न दिखा सकता। कुरआन मजीद की तरह अगर क़ानून, अख़्लाक़, अक़ीदा, आख़िरत, अल्लाह की ज़ात, पैदाइश वग़ैरा विषयों पर कुछ लिखना होता तो दुनिया देख लेती कि उन की ज़बान कितनी घटिया, अन्दाज़े बयान कितना फीका, अल्फ़ाज़ कितने बेजोड़, वाक्य कितने बेतुके और पूरी किताब कितनी बेमक़्सद हो जाती। यह तो केवल कुरआन का चमत्कार है कि उस में विषय मौजूद है और सभी अपनी-अपनी जगहों पर फ़साहत-बलाग़त से पुर हैं।

'शैख़ सअ़दी' का मैदान अख़्लाक़ और नसीहत है। इन्हों ने अपनी किताब में केवल इसी को मुद्दा बनाया है। इस मुद्दे को छोड़ कर और बाक़ी मुद्दों का कहीं दूर-दूर तक पता नहीं है। पूरी किताब और दूसरे मौज़ू (मुद्दे) को लेकर चटियल मैदान लगती है।

'फ़िरदौसी' की किताब को पढ़ने वाला यह समझता है कि वह थेटर में बैठ कर कोई सनीमा देख रहा है। लेकिन पन्द-नसीहत, अख़्लाक़ और रूहानियत व सच्चाई का कहीं नाम व निशान नहीं है। अ़रब के महारथी कवियों में कैस, अन्तरा, अबू नवास और अबू अ़ताहिया सब का यही हाल है।

जर्मन, फ्राँस, इटली और इन्गलैन्ड के कवियों, नाविलें लिखने वालों एडीटरों, प्रोफ़ैसरों, लेक्चररों की भी किताबों में यही ख़ामियाँ मौजूद हैं..... 'रीनाल्डे' कभी 'गिबिन' नहीं बना सकता, कार्ल लाइल कभी

शेक्सपियर का रूप नहीं धारण कर सकता, हबर्ट और नार्थ बरोक की भाषा और शैली कभी एक जैसी नहीं हो सकती।

अब ज़रा कुरआन मजीद खोल कर पढ़ो! दुनिया व आख़िरत के कितने मुद्दों पर उसे दलीलें देनी पड़ीं हैं। गुज़री हुयी क़ौमों की तरक़्क़ी और उन की तबाही-बर्बादी के कितने कारणों को बताना पड़ा है। दुनिया के तमाम धर्मों और उन के अक़ीदों पर कितने दलाइल के साथ प्रकाश डाला गया है, रूह, माद्दा और अ़मल पर किस प्रकार रोशनी डाली गयी है। सियासत, दीन, अख़्लाक़, समाज और हक़ूक़ वग़ैरह के तअ़ल्लुक़ से कितने क़ानून बताने पड़े हैं। आप को मालूम है कि इन विषयों पर कहाँ-कहाँ और क्या-क्या कैसे रुख़ अपनाया जाता है और कैसी ज़बान का इस्तेमाल किया जाता। लेकिन कुरआन मजीद ही एक ऐसी अछूती किताब है कि उस ने मौक़ा व महल को सामने रख कर हर विषय पर और हर जगह हक़ अदा कर दिया है, कहीं भी किसी प्रकार की कोई कमी नहीं नज़र आ रही है। केवल वही इन बारीकियों को समझ सकता है जिस ने इस मैदान में अपनी पूरी उम्र खपा दी हो।

फ़साहत-बलाग़त का अर्थ यह है कि मुख़्तसर से शब्दों में (संक्षिप्त में) सारी बातें कह दी जायें। अल्फ़ाज़ थोड़े हों और माना व मतलब का सुमंद्र हो और हर विषय पर हो। कुरआन मजीद को ज़रा खोल कर देखो तो सही! हम नीचे चन्द आयतें पेश करते हैं। यह आयतें अलग-अलग विषयों पर आधारित हैं। इन चन्द आयतों पर ही अगर ध्यान दे दें तो इन्हीं से अनुमान लगा सकते हैं कि पूरे कुरआन क़ी ६६६६ आयतों में क्या कुछ और कितना कुछ कह दिया गया हो गा। इन चन्द आयतों के पेश करने से कोई यह समझ लेने की हिमाक़त न करे कि यही चन्द आयतें ही पूरे कुरआन में हैं। अल्लाह की क़सम! हर्गिज़ ऐसी बात नहीं हैं--इस समय तो हमारी मिसाल उस शख़्स की तरह है जो बाग़ की सैर करने को निकला और वापस होते समय दो चार फूल तोड़ कर ले आया। क्या कोई उन दो-चार फूलों को देख कर यह कह सकता है कि अब बाग़ में फूल ही नहीं रह गये? बल्कि देखने वाला तो यह कहे गा कि यह चन्द फूल जब इतने जानदार हैं तो पूरे बाग़ का क्या आ़लम हो गा।

१. अ़िबादत:- "आख़िर क्या वजह है कि मैं उस ज़ात की अ़िबादत न करूँ जिस ने मुझे पैदा किया और जिस की तरफ़ हम तुम को लौट कर जाना है।" (सूरः यासीन-२२)

२. मानवता का शर्फ़:- ''हम ने बनी आदम को अ़िज़्ज़त दी और ख़ुश्की और समुनदर में उन के लिये सवारियां अ़ता कीं और पाकीज़ा वस्तुयें उन को खिलायीं और अपनी बहुत सी मख़्लूक़ों पर उन को सब से बड़ी बड़ाई अ़ता की'' (बनी इस्राईल-७०)

३. न करने के कार्य:- "अल्लाह तआ़ला बेहयाई के कामों से और बग़ावत (विद्रोह) से और नापसन्दीदा कामों से तुम को मना करता है" (सूरः नह्ल-९०१)

४. करने के कार्य:- "अल्लाह तआ़ला का हुक्म यह है कि न्याय और बग़ावत करो और संबन्धियों के साथ बेहतरी का बर्ताव करो" (सूरः नह्ल-९०)

५. हराम कार्य:- ''मेरे परवर्दिगार ने इन बातों को हराम ठहराया है बेहयाई के तमाम सूत्र चाहे खुले हों या छुपे गुनाह-पाप नाहक़ बग़ावत और विद्रोह अल्लाह के साथ शिर्क, जिस के जायज़ होने की कोई भी अक़्ली या लिखित रूप में तर्क मौजूद नहीं अल्लाह के ख़िलाफ़ अपनी बेअ़िल्मी से बातें बनाना'' (   )

६. सहायता और तआ़वुन:- "नेकी और तक़्वा की तमाम क़िस्मों में एक दूसरे को सहयोग दिया करो" (सूरः माइदा-२)

७. असहयोग-मदद न करना:- "गुनाह और सरकशी की तमाम क़िस्मों में किसी की मदद न करो" (सूरः माइदा-२)

८. बदन के समस्त जोड़ अपनी करनी के ज़िम्मेदार हैं:- "कान, आँख और दिल इन सब से प्रश्न किया जाये गा" (बनी इस्राईल २६)

९. आमाला तौले जायें गे:- "जो कोई ज़र्रा बराबर भी नेकी करता है वह उसे देख लेगा और जो कोई ज़र्रा बराबर भी बदी करता है वह उसे भी देख लेगा (सूरः ज़िल्ज़ाल-७,८)

१०. न्याय और रह्म (दया):- "बदी का बदला तो बिल्कुल वैसा ही है, लेकिन अगर जिस किसी ने माफ़ी दी और भलाई की तो उस का अज्र अल्लाह स्वयं देगा (सूरः शूरा-४०)

११. न्याय, दया और क्षमा दान:- (१) "और जो कोई अत्याचार सहने के बाद अपना बदला ले ले उस पर कोई पकड़ नहीं (२) पकड़ तो उन लोगों पर है जो इन्सानों पर अन्याय करते हैं और नाहक़ विद्रोह फैलाते हैं (३) और जो लोग अत्याचार और ज़्यादती पर सब्र करते हैं और माफ़ी देते हैं तो यह बड़े कामों में से है"। (सूरः शूरा- ४१,४२,४३)

१२. आ़म माफ़ी:- "लाज़िम है कि माफ़ किया करो और लाज़िम है कि नज़र-अन्दाज़ किया करो। क्या तुम खुद अपने बारे में यह पसन्द नहीं करते कि अल्लाह तुम को बख़्श दिया करे" (सूरः नूर-२२)

१३. दुश्मन को मित्र बनाने का ढन्ग:- "तुम बुराई को नेकी और अच्छे बर्ताव से रोका करो, फिर तो दुश्मनी करने वाला शख़्स तुम को दिली दोस्त (लंगोटिया यार) नज़र आये गा" (हाम्मीम सज्दा-३४)

१४. धर्म पर आज़ादी:- "दीन के मामलात में किसी शख़्स पर कोई दबाव नहीं। हिदायत और गुमराही को अलग-अलग कर के दिखाया गया है" (सूरः बक़रः २५६)

१५. कथनी कर्नी:- "जब बात ही बात हो और अ़मल उस के साथ न हो तो अल्लाह के हाँ यह बड़ी नाराज़ी की बात है" (सूरः सफ़्फ़-३)

१६. अपने कर्मों की पूरी ज़िम्मे दारी:- "कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे शख़्स का बोझ नहीं उठाये गा" (सूर बनी इस्राईल-१५)

१७. बुराई का प्रचार भी बुरा है:- बुराई का खुला प्रचार अल्लाह को पसन्द नहीं। हाँ, जिस पर अत्याचार किया गया है वह इस बंधन से अलग है" (सूरः निसा १४८)

१८. आदर-सम्मान की शिक्षा:- "रहमान के बन्दे वह हैं जो ज़मीन पर ख़ाकसारी से चलते हैं और जाहिलों के साथ बात-चीत के समय वह जाहिलों को सलाम करते हैं"(सूरः फ़ुर्क़ान-६३)

१९. नापसन्दीदा बातें:- "मक्कार और झूठे फ़ख़्र करने वाले को अल्लाह पसन्द नहीं करता" (सूरः लुक़मान-१८)

२०. चुग़ली से नफ़रत दिलाने वाली मिसाल:- "तुम में से कोई भी दूसरे की चुग़ली न करे। क्या तुम मुर्दा भाई की लाश (शव) का गोश्त खाना पसन्द कर सकते हो"? (चुग़ली की यही मिसाल है) (सूरः हुजुरात-१२)

१२. लाभ की आवश्यकता और महत्व:- "तुम अस्ली नेकी को उस समय तक प्राप्त नहीं कर सकते जब तक अल्लाह की राह में अपनी प्यारी वस्तुओं को ख़र्च न करोगे" (सूरः आले ग़िम्रान-९२)

२२. भाई चारा की तालीम:- "सब ईमान वाले आपस में भाई-भाई हैं, यही पक्की बात है" (सूरः हुजुरात-१०)

२३. महिलाओं का हक़ पुरूषों के समान है:- "दस्तूर के अनुसार जैसे हुकूक़ औरतों पर मर्दों के हैं, वैसे ही औरतों के मर्दों पर हैं" (सूरः बक़रः-)

२४. पति-पत्नी में एका? (सम्भाव):- "औरतें मर्दों के लिये लिबास हैं और मर्द औरतों के लिये लिबास (वस्त्र) हैं" (सूरः बक़रः १८८)

२५. पत्नी को अलग न करने का आदेश:- "अपनी पत्नी को अपने पास रहने दे और अल्लाह से डरा कर" (सूरः अहज़ाब-३७)

२६. शुक्र का हुक्म और फ़ाइदा:- "अगर तुम शुक्र करो गे तो मैं तुम को बढ़ाता रहूँ गा" (सूरः इब्राहीम-७)

२७. परक्षिा की वस्तुएँ:- "माल व दौलत और औलाद में बन्दों का इम्तिहान है" (सूरः तग़ाबुन-१५)

२८. नफ़्स को तोड़ने की शिक्षा:- "मैं नफ़्स को बरी नहीं ठहराता। नफ़्स तो बुराई की तरफ़ बहुत उभारता है" (सूरः यूसुफ़-५३)

२९. जन्ग से बचने का उपाय:- "तुम दुश्मनों से (जंग के लिए) अपनी पूरी शक्ति के साथ तय्यार रहो और सरहदों पर पूरी तय्यारी (चौकसी) रखो। इस उपाय से तुम अल्लाह के और अपने दुश्मनों को रोके रखो गे" (सूरः अन्फ़ाल-६९)

३०. तमाम ख़ूबियों का मालिक हमारा रब ही है:- "अल्लाह तो तमाम मख़्लूक़ का पालने वाला है, वही सब ख़ूबियों का मालिक है" (सूरः फ़ातिहा।)

३१. दीने इलाही की परिभाषा:- "वह शरीअ़ते इलाही जिस पर समस्त इन्सानों को पैदा किया गया है। अल्लाह के पैदा करने में तब्दीली नहीं। यही तो ठोस और सीधा दीन है" (सूरः रूम-३०)

३२. सच्चे दीन का उद्देश्य क्या है और क्या नहीं:- "अल्लाह का यह इरादा नहीं कि तुम पर कोई कठिनाई डाले। उस का तो इरादा यह है कि तुम को पाक-साफ़ बनाये और अपनी नेमत तुम पर तमाम करे ताकि तुम शुक्र अदा करो" (   )

३३. अल्लाह का तअ़ल्लुक़ ईमान वालों के साथ रहमत व मुहब्बत का है:- "तुम्हारे पर्वरदिगार ने अपनी ज़ात पर रहमत को लिख रखा है (जमा कर रखा है)" (सूरः अन्आ़म-१२) "वह तो

बहुत बख़्शने वाला और बहुत मुहब्बत करने वाला है" (सूरः बुरुज-१४) "अल्लाह तो ईमान वालों से मुहब्बत करने वाला है। और उनकी बिगड़ी बनाने वाला है। उन को हर प्रकार के अंधेरों से निकालता है और नूर में लाता है" (सूरः वक़रः २५७)

३४. एक इन्सान की क़ीमत:- "अगर किसी ने एक इन्सान को भी मारा (क़िसास या बल्वा को छोड़ कर) तो गोया उस ने तमाम ही इन्सानों को क़त्ल कर डाला, और जिस किसी ने एक इन्सान को भी हलाकत से बचा लिया गोया उस ने तमाम इन्सानों की ज़िन्दगी को बचा लिया" (सूरः माइदा-३२)

३५. अम्न व शान्ति को भंग करने की मनाही:- "अल्लाह की नेमतों को याद रखो, और मुल्क में फ़साद फैलाने से बाज़ आ जाओ" (सूरः आराफ़-७४)

३६. ख़र्च करने का उसूल:- रहमान के बन्दे वह हैं कि जब ख़र्च करते हैं तो न फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हैं और न बुख़्ल करते हैं और उन हालतों की बीच की हालत पर चला करते हैं" (सूरः फ़ुर्क़ान-६७)

३७. दुनिया के धन-दौलत से आराम भी उठाओ और आख़िरत भी कमाओ:- "जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है उस में आख़िरत भी तलब करो और अपना दुनियावी हिस्सा भी मत भूल जाओ और भलाई किया करो जैसा कि अल्लाह ने तुझ से भलाई की है" (सूरः क़सस-७७)

३८. ग़रीबों और मिस्कीनों की सहायता:- "संबन्धियों, और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों का हक़ अदा कर। यह बातें उन लोगों के लिये बेहतर हैं जो अल्लाह की प्रसन्नता चाहते हैं और यही लोग हैं जो कल्याण पायें गे" (सूरः रुम-३८)

३९. क़सम (शपथ) खाने वाला इन्सान विश्वास खो देता है:- "जो कोई शख़्स बहुत क़समें खाता और ज़लील बनता है उस पर विश्वास न करो" (सूरः क़लम-१०)

४०. अल्लाह से दुआ माँगा करो:- "अल्लाह ही से दुआ माँगा करो, केवल उसी के हो कर और उसी के फ़र्माबरदार बन कर रहो" (हवाला?)

४१. ख़ालिक़ की हम्द और मख़्लूक़ की प्रशंसा:- "हम्द का मालिक अल्लाह है और अल्लाह के बन्दों के लिये सलाम (सलामती) है" (सुरः साफ़्फ़ात-१८१,१८२)

नोटः- इस मुख़्तसर से वाक्य पर जितना भी सोचा जाये कम है। ख़ालिक़ और मख़्लूक़ के दर्मियान किस प्रकार पद और दर्जे को बाँट दिया है और अरबी भाषा का दोनों के लिये "अल्हम्दु" और "सलाम" का शब्द प्रयोग किया है, इस पर जितनी ही प्रशंसा की जाये कम है। इसी का नाम है ?कूज़े में समुन्द्र को रख देना गागर में सागर भरना। इस के अलावा और ग़ौर करें गे तो पायें गे कि इस में तौहीद का सबूत और शिर्क का रद्द है, इस में नेक बन्दों के ऊँचे मर्तबे का बयान है।

४२. संसार पर कट्रोल का बयान:- "तू रहमान की पैदा की हुयी वस्तुओं में कुछ फ़र्क़ न देखे गा। क्या तुझे कभी कोई औब और कमी नज़र आयी?" (सूरः मुल्क-३)

४३. मकड़ी के घर का उदाहरण:- "सब घरों में कमज़ोर मकड़ी का घर होता है अगर लोगों को ज़िल्म हो" (सूरः अन्कबूत-४१)

नोटः- ज़िल्म को मकड़ी के घर से मुतअ़ल्लिक़ जोड़ा है। इस लिये मकड़ा के घर में ज़िल्म वालों के लिये

बड़े-बड़े अ़जूबे हैं। जर्मन साइंस दानों का कहना हैं कि मकड़ी के जाले का हर एक तार चार तारों से मिला हुआ होता है और उन चारों तारों में का हर एक तार एक हज़ार तार से बटा हुआ होता है। यानी एक-एक तार में चार हज़ार तागे होते हैं। आ़लिम लोग ग़ौर करें कि सब से कमज़ोर घर बनाने वाली मकड़ी को अल्लाह तआ़ला ने कितनी बुद्धि और समझ दी है और कितनी बारीक कढ़ाई-बुनाई का ढन्ग अ़ता किया है।

४४. मधु मक्खी का उदाहरण:- "तेरे रब ने शहद की मक्खी को वह्यि की" (सूर: नहल-६८)

नोट:- शहद के छत्ते के अन्दर फ़ौजी व्यवस्था का ठोस विधान और नियम है। फ़ौज और कार्य कर्ताओं के दर्मियान अलग-अलग तक़्सीम है। अलग-अलग ख़ान्दानों के रहने के लिये अलग-अलग स्थान है। बच्चा देने वाली महारानी का शासन। बच्चों की देख-रेख और उन की तर्बीयत, उन का पालन-पोषण करने वाले कारिन्दे, मधु का भन्डार, उन की सुरक्षा और देख-भाल के नियम, मधु बनाने के लिये भिन्न प्रकार के हज़ारों फूलों में से जूस और रस निकाल कर लाना, छत्ते के समस्त घरों को मुसद्दस (पष्टांगी) और बराबर-बराबर ख़ानों का होना...............यह समस्त कार्य इस बात की ओर संकेत करते हैं कि जब रब की वह्यि किसी जान्दार की तकमील की जानिब होती है, तो उसे क्या कुछ बना देती है.......और जब क़ुरआन जैसी वह्यि इन्सान जैसे बुद्धिमान और सोच-समझ रखने वाले की तरफ़ मुतवज्जेह होती है तो उसे किन बुलन्दियों तक पहुंचा दे गी।

४४. चींटी का उधारण:- "चींटियों की रानी ने कहा: ऐ चींटी! तुम अपनी आराम गाहों में दाख़िल हो जाओ, कहीं तुम को सुलैमान और उस की सेना रौंद न डालें और उन को इस की ख़बर भी न हो" (सूर: पमल्-१८)

नोट:- अल्लाह, अल्लाह! चींटियों के पास ऐसे घर मौजूद हैं कि जब वह उन में दाख़िल हो जायें तो हज़रत सुलैमान की सेना भी उन का कुछ न बिगाड़ सके। यह आयत एक कमज़ोर क़ौम को शक्ति शाली क़ौम के सामने जीवित रहने और अपने को बाक़ी रखने के तरीक़ों की शिक्षा देती है। (१) इन में से पहला पाठ यह है कि अपने नेता के राय पर समस्त लोग एक जुट हो कर अमल करें। (२) अपनी सुरक्षा का सामान हर समय तैयार रखना (३) अपने से शक्ति शाली से बेकार का झगड़ा नहीं मोल लेना चाहिये (४) हानि पहुंचने के बाद भी उस पर आरोप नहीं लगाना चाहिये जिस की नीय्यत हानि पहुंचाने की न रही हो (५) जब मुसलमानों की स्तिथि चींटियों की सी हो जाये तो उस को क़ुरआन की सुरक्षा में दाख़िल हो जाना चाहिये (६) आने वाले ख़तरे से आगाह करना क़ौम के अमीर (नेता) का फ़र्ज़ है (७) चींटी की तरह कमज़ोर (दुर्बल) क़ौम भी जीवित रह सकती है अगर वह ज़िन्दा रहना चाहती हो, इस लिये किसी क़ौम का दुर्बल और कमज़ोर होना उस के मिट जाने की दलील नहीं है।

४६. ज़मीन व आकाश की वस्तुओं को देखने का हुक्म:- "आसमान और ज़मीन के अन्दर पैदा की हुई सब चीज़ों को देखो कि वह क्या हैं?" (सूर: यूनुस-१०१)

नोट:- यही आयत है जो समस्त आविष्कारों (ईजाद) की जड़ और बुनियाद है। कुदरत क़ी हर चीज़ को देखना, तहक़ीक़ करना, उस की विशेष्ताओं को जाचना परखना, उस की माहियत को मालूम करना, इन्सान को तरक़्क़ी की बुलन्दी तक पहुंचाने का साधन है। हम लोग इस हुक्म पर अ़मल करने से कितने कोरे और

ग़ाफ़िल हैं।

४७. समुन्द्र से लाभ उठाना:- "अल्लाह वह है जिस ने समुन्द्र को तुम्हारे फ़ाइदे के लिये तुम्हारे तहत कर दिया: उस के फ़ाइदे यह हैं (१) ताज़ा-ताज़ा गोश्त (मछली), समुन्द्र की तिजारत, मछली पकड़ने का हाल, इस आय: को अगर कोई पढ़े तो उसे मालूम हो जाये गा कि आज दुनिया में करोड़ों पौन्ड इसी समुन्द्री तिजारत से क़ौमें कमा रही हैं। और मुसलमान जो इस आयत के अव्वल मुख़ातब थे वह यकदम इस से वन्चित हैं (२) 'गौहर-मोती' जो इन्सानों के लिये बनाव-सिंगार और पहनने की चीज़ है। इस की तिजारत भी करोड़ों पौन्ड की है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के समय काल में समुन्द्रों पर इस्लामी क़ब्ज़ा था जिसे हम खो बैठे। जहाज़ चलाना दुनिया पर शासन करने के लिये प्रथम शर्त है। तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने सर्वप्रथम समुन्द्री बेड़ा क़ाइम किया था और उसी से समुन्द्री दीपों में माल्टा, तराबल्स वग़ैरह को फ़त्ह किया था। मूसा बिन नज़ीर और जनरल तारिक़ ने स्पेन को फ़त्ह किया था, ख़ैरुद्दीन बार बरोसा ने तुर्की की बादशाहत का इक्तिदार पूरे यूरोप से मनवाया और जब मुसलमानों ने इसे इस्तेमाल करना छोड़ दिया तो दुनिया की बादशाहत भी छिन गयी। (४) समुन्द्री तिजारत जिस में बेपनाह फ़ाइदे हैं (५) ऊपर गिनाए गये दुनियावी फ़ाइदों के साथ दीनी फ़ाइदे की अल्लाह कि नेमतों के शुक्र में लगना, इस्लाम का प्रचार और दूर के ज़िलाक़ों में तब्लीग़ और इस्लाम का प्रचार इसी साधन पर निर्भर है।

बनू उमय्या के शासक अ़ब्दुल मलिक के शासन काल में अ़रब के सौदागरों ने ही इस्लाम को हिन्दुस्तान के दक्षिण के तटवर्ती (साहिली) ज़िलाक़ों तक पहुंचाया था। उन्हों ने ही समुन्द्री बेड़ों का प्रयोग कर के आसाम, बर्मा, ईस्ट बन्गाल को मुसलमान बनाया। और दक्षिण-पश्चिम सीमा से महमूद ग़ज़नवी वग़ैरह हिन्दुस्तान से बिल्कुल बेपर्वाह थे।

बुलन्द मआनी और नादिर मज़ामीन

(बहुमूल्य अर्थ-अद्भुत विषय)

किसी भी विषय में दो बातें अवश्य आँकी जाती हैं। (१) उस में फैलाव और कुशादगी हो, यानी सारी बातें उस में आ जायें, पढ़ने के बाद किसी कमी का एहसास न हो (२) विषय का बयान और अन्दाज़े बयान लुभावना और दिलकश हो, ताकि पढ़ने वाला दिल चस्पी के साथ पढ़ता चला जाये।

पहली विशेष्ता और ख़ूबी के बारे में कुरआन मजीद का स्वयं दावा है "इस किताब में हर पहलू पर और हर प्रकार की बातें मौजूद हैं"। इस आयत की रोशनी में पढ़ा-लिखा मुसलमान यह दावा से कह सकता है कि किस विषय में कुरआन ने कुछ नहीं बयान किया है? तहज़ीब, अख़्लाक़, नफ़्स, रूह, दिल की सफ़ाई, नजात का तरीक़ा, जन्नत, दोज़ख़, दुनिया, आख़िरत, कारोबार, लेन-देन, शादी-विवाह, ज़िबादत, अक़ीदा, तौहीद, फ़लसफ़ा, ग़र्ज़ यह कि वह नया से नया विषय हो, या पुराना से पुराना, सब कुछ कुरआन में मौजूद है, मगर शर्त है खोजने वाली आँखों की। कुरआन का इस विषय में खुल कर चेलन्ज है "ऐ रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! यह लोग कैसा ही अ़जीब प्रश्न आप के सामने पेश करें मगर हम उस का ठीक-ठीक उत्तर स्पष्ट शब्दों में उन को दें गे" (सूर: फ़ुर्क़ान-३३) यह बात अपने स्थान पर बिल्कुल अटल है इस विषय में यानी वुस्अ़त, हमा गीरी, फैलाव, कुशादगी और हर विषय को अपने अन्दर समेटने में दुनिया की कोई भी किताब कुरआन का मुक़ाबला नहीं कर सकती।

रही दूसरी विशेष्ता यानी उम्दगी, बेहतरी, बयान व अन्दाज़े बयान का मस्अला तो आप स्वंय देख सकते हैं कि दुनिया में अल्लाह को मानने वाली जितनी भी क़ौमें हैं वह किसी न किसी तरह अल्लाह को अवश्य एक मानती हैं। एक बुत परस्त और नसरानी जो कि मसीह और मर्यम के खुदा होने के मुद्दई हैं, वह भी शिर्क के बावजूद एक अल्लाह को मानते हैं। इन के अलावा और दूसरे धर्मों के मानने वाले भी अगर्चे अल्लाह के साथ शरीक ठहराते हैं लेकिन सुपर पावर, सब से बड़ी हस्ती उसी को मानते हैं और अपनी-अपनी किताबों में अपने तौर पर साबित भी करते हैं......इन की किताबों में साबित करने के बयान और अन्दाज़े बयान को रखा जाये और कुरआन मजीद को दूसरी तरफ़, तो हर कोई यही पाये गा कि कुरआन के सामने उन की हक़ीक़त सूरज के सामने दिये की है, या दरिया और समुन्द्र के पानी के मुक़ाबले में कूज़े की सी है। अगर किसी को यक़ीन न हो तो वह अपनी किताब का तर्जुमा पेश करे और कुरआन में तौहीद का विषय किसी भी स्थान से ले कर तीसरे शख़्स के पास फ़ैसला के लिये भेज दे, तो फैसला करने वाला पुकार उठे गा तौहीद के विषय में सब से मुकम्मल और स्पष्ट बयान कुरआन मजीद का है।

यह बात याद रहे कि कुरआन मजीद का दावा है "आप फ़र्मा दीजिये! अगर तमाम इन्सान और जिन्नात सब के सब इस बात के लिये जमा हो जायें कि ऐसा कुरआन बना लायें, तब भी ऐसा न ला सकें गे" (बनी इस्राईल-८८)

कुरआन मजीद के इस दावे में जहाँ बयान, अन्दाज़े बयान, शब्दों का प्रयोग, फ़साहत, बलाग़त, अल्फ़ाज़ की तर्तीब शामिल है, वहीं इन शब्दों का माना व मतलब भी शामिल हैं जो शब्दों के अन्दर पोशीदा हैं। अ़िल्म और बसीरत की नज़र रखने वाला ही इन की तह में पहंच कर तलाश कर सकता है।

कुरआन मजीद के बयान करने का अन्दाज़ इतना प्यारा है कि हर शख़्स उसे सरलता से समझ सकता है और पढ़ने के बाद कुरआन की बात दिल की गहराई में समाती चली जाती है। एक उदाहरण ले लीजिये कुरआन फ़रमात है।: "क्या यह लोग ऊँट को नहीं देखते कि किस तरह (अजीबोग़रीब) पैदा किया गया है? और आसमान को नहीं देखते कि किस प्रकार बुलन्द किया गया है? और पहाड़ों को नहीं देखते कि किस प्रकार खड़े किये गए हैं? और ज़मीन को नहीं देखते कि किस प्रकार बिछाई गयी है? (सूरः ग़ाशियः-१७,१८,१९,२०)।

कुरआन मजीद यहाँ पर ऊँट, आसमान, पहाड़ और ज़मीन का ज़िक्र कर रहा है। यह चारों चीज़ें ऐसी हैं जिन्हें अ़रब के लोग हर समय देखते थे, लेकिन देखते हुये भी नहीं देखते थे। वह केवल ऊँट देखते थे, उस की बनावट उस का बेडोल बदन, उस की ऊंचाई, लम्बाई गर्दन, चाल-ढाल को नहीं देखते थे। कुरआन इस प्रकार देखने की हिदायत की। इस तौर पर एक नज़र डालते ही उन की आंखें खुल गयीं, उन के दिल के पर्दे हट गये, और उन्हें यक़ीन हो गया कि जिस खुदा ने यह चीज़ें बनाई हैं, वह निःसंदेह सब से शक्ति शाली हस्ती है, वह सब से बुलन्द मर्तबे का मालिक है और वही अ़िबादत व इताअ़त के लाइक़ है। अ़रब का रेगिस्तान जिसे कोई देखना तक गवारा न करता था, उस को देखा तो उस में अल्लाह की कुदरत के करिश्मे नज़र आने लगे।

कुरआन की तासीर (प्रभाव)

कुरआन मजीद दिलों पर किस प्रकार अपना, प्रभाव डालता है, इस का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उमर अपने घर से रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को क़त्ल करने के इरादे से निकलता

है, लेकिन कुरआन की चन्द आयतें सुन कर उस के हाथ से तल्वार छूट कर गिर पड़ती है। अपनी बहन फ़ातिमा के घर से निकल कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हो कर इस्लाम को कूबूल कर लेता है और "फ़ारूक़" के ख़िताब (Title) से नवाज़ा जाता है (रज़ियल्लाहु अ़न्हु)

अस्अ़द बिन ज़रारा मदीना का मश्हूर सर्दार अपने घर से यह इरादा कर के निकलता है कि इस्लाम के पहले मुबल्लिग़ (प्रचारक) मुस्अ़ब बिन उमैर को मदीना से बाहर निकाल दे, लेकिन वहां पहुंच कर आयतें सुन कर उन्हीं के हाथ पर इस्लाम कुबुल कर लेता है (रज़ियल्ला अ़न्हु)

सुमामा बिन उसाल के निकट नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बढ़ कर और मदीन शहर से बढ़ कर कोई क़ाबिले नफ़रत न था। लेकिन वह केवल दो दिन कुरआन सुनता है और खुद ही हाज़िर हो कर इस्लाम कुबुल कर लेते हैं (रज़ियल्लाह अन्हु)

ख़ालिद बिन उक़्बा कुरआन को सुन कर हैरान रह जाता है और बोल उठता है "अल्लाह की क़सम! इस में बड़ी अ़ज़ीब मिठास है, इस में अ़जीब ताज़गी है, इस की जड़ें सैराब हैं, इस की शाखें फल से लदी हुयी हैं, इंसान तो ऐसा कलाम कह ही नहीं सकता" (रज़ियल्लाह अन्हु)

वलीद बिन मुग़ीरा जो कि क़रैश का एक खुराँट बूढ़ा था। उसे इस्लाम से सख़्त दुश्मनी थी। लेकिन इस के बावुजूद कुरआन मजीद के संबन्ध में बोल पड़ता है कि इस कलाम में बड़ी मिठास है, इस में अ़जीब रस है।

जुल बजादीन एक चर्वाहा था। आते-जाते मुसलमानों से कुछ कुरआन की आयतें सुन लेता था। अन्ततः घर-बार, माल जायदाद, माता-पिता को छोड़ कर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थिति हो कर इस्लाम कुबूल कर लेता है (रज़ियल्लाह अ़न्हु)

कुरआन मजीद पढ़ने और सुनने वाले पर क्या प्रभाव डालता है? इस को जानने के लिये उन लोगों के वाक़िआ़त पर नज़र डालें, जो कुरआन पाक समझ सकते थे। जो लोग मामूली लेन-देन के झगड़े में क़त्ल को मामूली खेल समझते, वही आज घर-बार छोड़ कर दीने इस्लाम के घर में शरण ले लेते हैं। जो लम्बे समय तक ३६० बुतों की पूजा करते रहे, वही आज बुतों के ख़िलाफ़ प्रचारक बन गये। जो लोग लावारिस बच्चों और विधुवाओं का माल हड़प जाते थे, आज वही दुनिया को अनाथों से हमदर्दी का पाठ पढ़ाते हैं। जो कभी स्वयं कौम के सर्दार कहलाते थे, आज वही लोग नबी के दास बनने पर फ़ख़्र कर रहे हैं। जो कभी क़ानून अपने हाथों से बनाते- बिगाड़ते थे, आज वही इस्लाम के क़ानून के पाबन्द नज़र आते हैं। जो कभी किसी जुर्म में अदालत में हाज़िर होना अपनी तौहीन समझते थे, आज वही जुर्म कर के खुद हाज़िर हो कर दन्ड का मतालबा करते हैं। उन का आज यह हाल है कि स्वयं गर्दन कटवाने को हाज़िर हैं, ज़िना कर के और शराब पी कर स्वयं कोड़े लगवाने को अदालत में हाज़िर हैं..... क्या किसी धर्म में ऐसे लोग मौजूद हैं? क्या किसी स्थान पर क़ानून का इतना पालन करने वाले दिखाई पड़ते हैं?

कुरआन मजीद की तिलावत का यह प्रभाव हुआ कि बड़े-बड़े दिग्गज कवियों की ज़बानें गूंगी हो गयीं, उन के पिन्डाल सुनसान हो गये, अकाज़ बाज़ार का कवि सम्मेलन उजड़ गया। और हाल यह हो गया कि अगर दिल का बोझ हल्का करना हो तो कुरआन की तिलावत करो, ख़ैर-बर्कत हासिल करनी हो तो कुरआन मजीद से लौ लगाओ। मुख़्तसर यह कि कुरआन मजीद का प्रभाव इन्सान के दिल, दिमाग़, ज़बान

और उस के हवास पर पड़ता है। और जो प्रभाव उस का एक व्यक्ति पर पड़ता है वही समस्त मुल्क पर भी पड़ता है।

शिक्षा का नमूना

कुरआन मजीद की शिक्षा और उस का प्रभाव अगर देखना है तो सहाबा, ताबेअ़ीन और इमामाने दीन को देखा जाये। किस प्रकार उन्हों ने मुसीबतों को सहन किया और सब्र व बर्दाश्त से काम लिया। आचरण, अख़्लाक़, इ़ज़्ज़त, एहतिराम, अल्लाह का ख़ौफ़, सहानुभूति(हमदर्दी), भाईचारा, प्रेम, विश्वास,हिम्मत, बहादुरी, ईमानदारी, पाकदामनी, नेक निय्यती, मेहमान नवाज़ी, वग़ैरह यह सब कुरआन मजीद की शिक्षा ही की देन है।

एज़क टेलर ने जो कप्तान के पद पर था, उसने १२ मई सन १८८७ को अपने एक भाषण के दर्मियान कहा था "अफ़्रीक़ा के जिन वहशी और दरिन्दा क़ौमों पर इस्लाम का साया पड़ा वहां से ज़िना (बलात-कार)चोरी-डकैती, शराब-जुआ, क़त्ल, वहम परस्ती, वादा ख़िलाफ़ी वग़ैरह का हमेशा के लिये सफ़ाया हो गया, मगर जब उसी मुल्क के दूसरे हिस्सा पर दूसरे धर्म ने क़दम जमाया तो उन लोगों के अन्दर यही बुराइयाँ और भी ज़्यादा पैदा हो गयीं (समाचार पत्र SUNDAY TIMES लन्दन, अक़्तूबर १८८७)

कुरआन मजीद अपने नमूना के बारे में स्वँय कहता है "ऐ ईमान वालो! तुम बेहतरीन गरोह हो जो इन्सानों को फ़ाइदा पहुंचाने के लिये बनाये गये हो" (?) इस आयत की रोशनी में कुरआन मजीद की तालीम का प्रभाव देखिये:

हज़रत सुहैब रूमी रज़ियल्ला अ़न्हु मक्का में लोहे का काम करते थे। जब मक्का वालों ने उन्हें हिजरत करने से रोक दिया तो उन्हों ने अपना घर-बार और माल-जायदाद दुश्मनों को दे कर उन्हें अनुमति देने पर राज़ी कर लिया और मदीना शरीफ़ रवाना हो गये। ग़ौर की जिये! अल्लाह की राह में घर-बार तज देने की शिक्षा किस ने दी?

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्ला अ़न्हु को उन के शौहर के साथ हिजरत करने की अनुमति ससुराल वालों ने नहीं दी मैके वालों ने गोद का बच्चा भी उन से छीन लिया मगर वह सब कुछ गवां कर अकेली ही अल्लाह की राह में मक्का से ३०० मील चल कर मदीना हिजरत करने में ज़रा भी न हिचकिचायीं। यह हिम्मत और यह जज़्बा उन के अन्दर किस ने पैदा किया?

ख़त्ताब के बेटे हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्ला अ़न्हु जो बाप के ऊँट चराया करते थे। उन के हाथों खूब पिटते थे, हर समय बाप के डर से घबराये रहते थे। लेकिन यही इस्लाम लाने के बाद २२ लाख़ वर्ग मील पर शासन करते हैं न्याय और परेशान हालों की देख-रेख के लिये रात में मदीना की गलियों में दौरा करते फिरते हैं। यूरोप, अफ़्रीक़ा और एशिया जैसे तीन महादीप उन के क़ब्ज़े में थे। आख़िर हुकूमत करने की सलाहियत और क्षमता इन के अन्दर किस ने पैदा की?

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० ने जन्ग भूता में अपने से पचास गुनी अधिक फ़ौज को धूल चटा दी। हालाँकि रूमियों की फ़ौज जन्ग में महारत रखती थी। ग़ौर कीजिये! इन लोगों में यह हिम्मत, मर्दान्गी,बहादुरी, और कुर्बानी का जज़्बा किस ने पैदा किया था?.....अगर तहक़ीक़ करें तो पता चले गा कि यह सब करम फ़र्माइ उसी कुरआन मजीद की है और सिर्फ़ और सिर्फ़ उसी कुरआन मजीद की है।

क़ुरआन मजीद की क़ुबूलियत

'कुबूलियत' का अर्थ है किसी चीज़ की जान-मान करना, अदब-एहतिराम, आदर-सम्मान और अ़िज़्ज़त देना। आप ग़ौर करें कि इस समय दुनिया में कुरआन मजीद को छोड़ कर कोई एसी किताब नहीं है जिसे २४ घंटे में करोड़ों इन्सान पाँच बार पढ़ते और सुनते हों। आप यह कह सकते हैं कि अ़ीसाइयों ने दौलत की बुनियाद पर इन्जील के नुस्खे कुरआन से अधिक मात्रा में छपवा कर तक़सीम किये हैं और यह सिलसिला जारी भी है। लेकिन मालूम होना चाहिये कि प्रकाशित करना और बात है और उस को बराबर पढ़ते रहना, उसमें ज्ञान-ध्यान देना और उस के अनुसार अ़मल करना और बात है। बाइबल तो नमक मिर्च बेचने वाले जन्रल स्टोरों और पंसारियों के हाँ भी रखी हुयी मिल जाये गी, लेकिन क्या क़भी उसे खोल कर देखता भी होगा? यह सिफ़त, यह विशेष्ता और यह खूबी सिर्फ़ कुरआन मजीद ह़ी की है कि सब से ज़्यादा पढ़ी-पढ़ाई और सुनी- सुनाई जाती है और सब से अधिक अ़िज़्ज़त व एहतिराम की नज़र से देखी जाती है।

मुसलमानों ने जिस समय हब्शा की ओर पहली हिजरत की थी उस समय वहाँ का बादशाह अ़ीसाई धर्म पर था। जिस समय हज़रत जाफ़र तय्यार रज़ियल्ला अ़न्हु ने उसे सूर: मर्यम को पढ़ कर सुनाया तो बेइख़्तियार रोने लगा। उस के दिल व दिमाग़ ने तुरन्त उन आयतों को कुबूल कर लिया और उस की दुनिया ही बदल गयी।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० अपनी ख़िलाफ़त के ज़माना में एक मर्तबा मस्जिदे नबवी के लिये निकले तो रास्ते में बीमार हो गये और ऐसे निढाल हुये कि एक दीवार से टेक लगा कर बैठ गये, फिर घर पहुंचाये गये। लोगों ने उन की खैरिय्यत मालूम करते हुये बीमारी का कारण पूछा तो हज़रत फ़ारूक़ ने बताया कि राह में कोई क़ुरआन मजीद की तिलावत कर रहा था, उस में अ़ज़ाब का जिक्र था, उसे सुन कर दिल घबरा गया। यह है लोगों के दिल व दिमाग़ पर क़ुरआन मजीद की हुकूमत और उस प्रभाव।

हज़रत लबीद इस्लाम लाने से पूर्व अपने ज़माना के बहुत ही सुप्रसिद्ध कवितओं के बारे में यह मश्हूर था कि "उन को अपनी-अपनी गर्दानों पर लिख लो चाहे तल्वारों की नोक से ही लिखनी पड़े" मतलब यह है उन की कविताए सुन कर हर कोई मरने-मारने पर तय्यार हो जाता था। यह हज़रत एक बार ख़लीफ़ा उमर फ़ारूक़ रज़ियल्ला अ़न्हु के मेहमान बन कर आये। उन्हों ने कुछ कवितायें पढ़ने के लिये अनुरोध किया तो लबीद रज़ियल्ला अ़न्हु ने कहा "जब से अल्लाह तआ़ला ने मुझे कुरआन मजीद जैसी किताब दी है, तब से मेरी कविताओं में कुछ मज़ा नहीं रहा"। हज़रत उमर यह सुन कर इतने प्रसन्न हुये कि उन के वज़ीफ़ा में ५०० रूपये की बढ़ोतरी करदी।

हज़रत अबू तल्हा अनसारी रज़ियल्ला अ़न्हु ने क़ुरआन की यह आयत सुनी "नेकी के अस्ल दर्जे तक तुम उस समय तक नहीं पहुंच सकते जब तक कि अल्लाह की राह में अपनी सब से बेहतरीन वस्तु को न ख़र्च करदो" (सूर: आले अ़िम्रान-९२) उन के पास फलों से लदा हुआ एक बाग़ था जिस की वर्षिक आय (सालाना आमदनी)५०००० रूपये थी। उन्हों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हो कर कहा कि यह बाग़ अल्लाह की राह-में पेश कर रहा हूँ।........ इस प्रकार की मिसालें अगर

तलाश की जायें तो पूरी एक पुस्तक तय्यार हो सकती है।

महमूद ग़ज़नवी, सलाहुद्दीन यूसुफ अय्यूबी, अ़ब्दुर्रहमान दाख़िल, मन्सूर अ़ब्बासी जैसे जाह व जलाल के मालिक बादशाहों, कमान्डरों और जन्रलों के जज़्बात को काबू और कन्ट्रोल में रखने वाला यंत्र यही कुरआन मजीद ही है। इन शासकों के गुस्सा को देख कर कोई एक शख़्स किसी कोने से एक आयत पढ़ देता तो इन की हालत यह हो जाती थी कि गोया आग के अलाव में मनों पानी उंडेल दिया गया है। यह चन्द उदाहरण जो यहां पेश किये गये हैं इन की मिसाल खलियान में एक मुट्ठी की सी है।

इन चन्द मिसालों से आप अनुमान लगा सकते हैं कि कितनी जल्दी लोग कुरआन को कुबूल कर लेते थे, कुरआन में कितनी तासीर हे जो लोगों के दिलों में इनती जल्दी घर कर जाती है और इस के अन्दर कितनी विशेष्ता है जिस की बुनियाद पर लोगों के दिलों पर हुकूमत करती है।

क़ुरआन मजीद की ख़ुसूसिय्यत

कुरआन मजीद में ऐसी बहुत सी विशेष्तायें हैं जिन के कारण इस किताब का मर्तबा दूसरी आसमानी-ग़ैर आसमानी तमाम किताबों से बुलन्द है। यहां पर चन्द उदाहरण दे कर एक झलक पेश कर देना उद्देश्य है।

(१)क़ुरआन मजीद की शिक्षा आ़म है और इस में विस्तार है:- यह एक ऐसी विशेष्ता और खूबी है जो केवल कुरआन ही को हासिल है। जो कोई तौरात में पढ़ेगा तो उस में '' बनी इस्राईल का खुदा'' शब्द पायेगा और जो कोई कुरआन मजीद पढ़ेगा वह ''सारे जहान का रब'' (रब्बुल आलमीन) का शब्द पायेगा। बस केवल यही एक उदाहरण ही कुरआन को तौरात पर फ़ज़ीलत अ़ता करता है। कुरआन स्वँय अपनी विशेष्ता बयान करता है '' यह किताब तो हिदायत है और यकदम खुली और स्पष्ट किताब है ताकि जो शख़्स भी साँस ले रहा है उस को उस के अन्जाम से अवगत करा दे'' (सूरः यासीन-आयः ६९,७०) इस में एक श्ब्द ''मन्'' आया है जो इन्सान के लिये बोला जाता है।मतलब यह हुआ कि हर वह इन्सान जो ज़िन्दा कहलाता है या कहला सकता है, कुरआन उस को सूचित करने के लिये आया है। ''मन्'' शब्द ने समस्त संसार को अपने घेरे में ले लिया है, कोई भी इस के संदेश से निकल भाग नहीं सकता। यह कुरआन ने अपने ज़िम्मा लिया है कि वह समस्त संसार के इन्सानों को अल्लाह की याद दिलाये गा, उस के अच्छे-बुरे अन्जाम से सूचित करेगा..... क्या कोई ऐसी किताब है जिस में यह दावा मौजूद हो? आल-कल की बाईबल में लिखा है कि हज़रत मसीह अ़लै० ने तो इन्जील को ''रोटी'' और बनी इस्राईल को ''बेटे'' और दूसरी क़ौमों को ''कुत्ते'' कहा है। और यूँ फ़रमाया है: ''मुनासिब नही कि लड़कों की रोटी ले कर कुत्तों को फेंक दें'' (मती,बाब १५,दर्स २१-२७)

(२)क़ुरआन की शिक्षा का मुख़्तसर होना:- मैं ने तौरात, इन्जील, ज़बूर और बाइबल वग़ैरह को गहराई से पढ़ा है। वेद का तर्जुमा (यंजुर व साम) भी पढ़ा है। यह किताब कब लिखी-पढ़ी गयी हैं इन सब के बारे में तहक़ीक़ कर चुका हूँ। कनफ़्यूशस (चीनियों का रहनुमा) गौतमबुद्ध (बुद्धधर्म का अगुवा) इन दोनों धर्मो के उसूल, ज़ाब्ते और शिक्षा सब दूसरी किताबों से चुराये हुये हैं। मजूसियों की भी किताबों का मुताला किया है। इस में भी कुछ नहीं है। ......आसानी से समझने के लिये आप तौरात पर नज़र डालें! तौरात में अहकाम और ख़बरें हैं, ज़बर में मुनाजात (प्रार्थना) है, इन्जील में नसीहतें और मिसालें हैं। यह तो हैं इन किताबों का हाल। अब कुरआन मजीद की तिलावत कीजिये। इस में आप क़दम-क़दम पर आदेश व अहकाम, समाचार और सूचनायें, धमकी और खुश्ख़बरी का जिक्र मौजूद हैं। अय्यामुल्लाह की तफ़सील,

इन्सान की पैदाइश और मौत का बयान है। अल्लाह की सिफ़तों का ज़िक्र, अल्लाह की ज़ात के मौजूद होने का सबूत बयान है। तौहीद व रिसालत पर ईमान, और जन्नत-जहन्नम का बयान है। इन्सान की पैदाइश और मरने के बाद उस के क़ब्रों से पुन: जी उठने का बयान है। क़ौमों की तरक़्क़ी और उन की तबाही व बर्बादी के हालात मौजूद हैं। अल्लाह की रहमत व मेहरबानी और उस के ग़ैज़ व नाराज़गी का बयान है। ग़रज़ यह कि दुनिया का कौन सा पहलू बाक़ी बचा है जिस पर कुरआन में ज़िक्र नहीं है।

(३) दुनिया व आख़िरत का एक साथ बयान:- आसमानी किताबों में यह विशेष्ता केवल कुरआन मजीद को हासिल है कि दोनों का ज़िक्र साथ-साथ मौजूद है। समझाने का अन्दाज़ इतना प्यारा है कि हर छोटा-बड़ा सरलता से समझ सकता है। यह सिर्फ़ कुरआन मजीद की ख़ूबी है कि अव्वल से लेकर आख़िर तक पढ़ने के बावुजूद तबीअ़त नहीं उकताती। कुरआन को छोड़ कर क्या कोई नस्र (गद्य) की पुस्तक किसी भी भाषा में है जिस के अन्दर भी यह विशेष्ता मौजूद हो?

(४)यह क़ुरआन सारे जहान के लिये हिदायत है:- कुरआन मजीद की चौथी खुसूसिय्यत यह है कि वह जिस तरह पूरब से पश्चिम तक के लोगों के लिये हिदायत है इसी प्रकार उत्तर से दक्षिण के भी लोगों के लिये मुल्की क़ानून है। इस का क़ानून किसी क़ौम और किसी मुल्क की भाषा ही तक सीमित नहीं है। इस का क़ानून इन्सानी फ़ितरत के प्रतिकूल (नामुवाफ़िक़) नहीं। वह यह दियत की तरह जन्नत को एक ही क़ौम की जागीर नहीं बनाता...... वह अल्लाह की खुश्नूदी हासिल करने के लिये किसी एक ख़ान्दान की सेवा का हुक्म नहीं देता.... वह अ़ीसाई धर्म की तरह इन्सान को ताक़त से अधिक अ़िबादत का हुक्म नहीं देता.... वह दौलत-मन्दों को आसमानी बादशाहत से अलग नही करता..... वह अ़िबादत करने वालों के लिये शादी-विवाह को नाजाइज़ नहीं ठहराता। केवल कुरआन ही वह अकेली और अछूती किताब है जिंसने आईन (नियम, विधान)**Constitution** के तौर पर पूरी दुनिया में हुकूमत की है। सब को एक ही क़ानून की सीमा के अन्दर रख कर इन्साफ़ किया है। इन सारी विशेष्ताओं की मालिक अकेली यही किताब है। दुनिया की कोई भी किताब इस का मुक़ाबला नहीं कर सकती।

(५) हर मज़हब की सच्ची तालीम की तस्दीक़ करती है:-कुरआन मजीद की बिशेष्ताओं में से एक विशेष्ता यह है कि हर सच्च धर्म और उस की तब्लीग़ करने वालों की तालीम की प्रशंसा करता है। यह कभी किसी मज़हब की सच्चाई को नहीं झुठलाता। इसी लिये इस किताब ने अपना नाम ही "जो तुम्हारे पास सच्चाई है उस की तस्दीक़ करती है" रखा हुआ है और सच्चे लोग्ों की सच्चाई की तस्दीक़ करना अपना सर्व प्रथम उद्देश्य बतलाया है।

(६) क़ुरआन मजीद "क़ौले-फ़ैसल" है:- यानी वह तमाम मसाइल जिन को इन्सान का दिमाग़ नही हल कर सकता था, या जिन का ज़िक्र दूसरी आसमानी किताबों में नहीं है, उन मस्अलों पर खुल कर रोशनी डालता है। ऐसे मसाइल बहुत से हैं। अल्लाह की ज़ात की पहचान, अल्लाह की सिफ़तें, अल्लाह का हाज़िर-नाज़िर होना, रूह की हक़ीक़त,नजात की कैफ़िय्यत, जन्नत-दोज़ख़ की हक़ीक़त, ख़ालिक़-मख़्लूक़ में फ़र्क़, शफ़ाअ़त, जज़ा-सज़ा, सब्र-शुक्र का दर्जा, तवक्कुल, अ़िबादत-इस्तिआनत की हक़ीक़त, रूहानियत, मुहब्बत, अल्लाह की मदद, गुनाह और तौबा, दुआ और उस की कुबूलियत, रहबानियत, निकाह, तलाक़, मीरास, माँ-बाप के हुक़ूक़, पति-पत्नि के हुक़ूक़, औलाद के हुक़ूक़, बदन के हुक़ूक़, इन्सानियत के हुक़ूक़, जनता के हुक़ूक़, हराम-हलाल के उसूल, लेन-देन के हुक़ूक़, जमहूरी हुकूमत, शराइते-इमामत, फ़साद-अम्न

व सलामती, अद्‌ल-इन्साफ़, क़ानून व क़ाइदा वग़ैरह।

कुरआन मजीद ने उपरोक्त मसाइल में इस प्रकार रोशनी डाली है कि हर शख़्स सरलता पूर्वक उस को समझ सके और उन पर अ़मल कर सके, उस को किसी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े। कुरआन पाक ने इन मामलात में जो फ़ैसले दिये हैं उन का मज़ा उस समय आता है जब फ़ैसले से पूर्व मुख़ालिफ़ों के बयानात भी सुन लिये जायें। आप अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि बिगड़े हुये माहोल में किस प्रकार उन मसाइल पर कुरआन ने लोगों की राह नुमाई की है। यह विशेष्ता केवल कुरआन ही को हासिल है।

(७) क़ुरआन को पेश करने वाला अकेला है:-कुरआन मजीद की एक विशेष्ता यह है कि उस को पेश करने वाला अकेला शख़्स आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)हैं। वेद को उठा कर देखें तो एक साथ पेश करने वालों के तीन-तीन नाम पायें गे। आर्यों की नई तहक़ीक़ से यह बात साबित है कि उन नामों में से एक नाम उस ऋृशी (बुज़ुर्ग) का भी होता है जिस पर वह किताब उतारी गयी थी। इस प्रकार अगर उन नामों की गिन्ती की जाये तो उन की मात्रा सैकड़ों से भी आगे बढ़ जाती है और इस प्रकार यह बात साबित हो जाती है कि वेद पुस्तक को पेश करने वाले सैकड़ों ऋृशी हैं। और ज़माना के एतिबार से उन के दर्मियान सेकड़ों वर्ष का अन्तर है।

आइये अब बाइबल को देखते हैं। यह किताब कम से कम इन लोगों के कलाम का मजमूआ है। (१) मूसा अ़लै०(२) यशूअ़ (३)लेखक क़ाज़बूर(४)समवाऊ़ील(५)लेखक सलातीन(६) लेखक तवारीख़ (७)अ़रज़ (८)नहमियाह (९) लेखक किताब रदत (१०)लेखक किताब अस्तर (११)अ़य्यूब(१२)दावूद (१३)सुलैमान (१४)बाज़िज़ (१५) यसअ़यात (१७)ख़िर्क़ी ऊ़ील (१८) दानीईद (१९)होसीअ़ (२०)बवाईल (२१) आ़मूस (२२) अ़ब्दयाह (२३) यूनह (२४) मेकह (२५)नहूम (२६)जसकूक़ (२७)हतनियाह (२८)हजी (२९)ज़करिया (३०) मलाकी। यह वह हज़रात है जिन के इलहामात या तस्नीफ़ात के मजमूआ का नाम बाइबल है और इन लोगों का किसी न किसी तरह बाइबल में अवश्य अ़मल-दख़ल है।

अब ज़रा इन्जील के बारे में देखा जाये। यह किताब (१)मता मरक़श (२)लूक़ा, आमाल के साथ (३)यूहला (४)पोलोस (५)पत्रस (७) यूहन्ना (८)और मसीह अ़लै० के दूसरे और शार्गिदों के ज़िल्मी कार नामों का नाम है

हिन्दू धर्म की किताब ऋृगवेद, यह मुहताज है यजुर वेद की, इसी प्रकार यजुर वेद, मुहताज है साम वेद की, और अथर्व वेद, इन तीनों की मुहताज है। मतलब यह है कि बग़ैर एक-दूसरे को मिलाये हुये बात नही समझी जा सकती है।

इन्जील में भी नया अ़हद-नामा उस समय तक मुकम्मल नहीं होता है जब तक पुराने अ़हद-नामा को न शामिल किया जाये। मसीह अ़लै० के मुरीदों (शार्गिदों) के पत्र को शामिल किये बिना इन्जील की कोई अहमिय्यत नहीं है। इस से कुरआन मजीद की इन किताबों पर बर्तरी का अनुमान लगाया जा सकता है।

मगर कुरआन मजीद का मुबल्लिग़ और भुअ़ल्लिम (शिक्षा देने वाला) केवल एक है यानी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। इस किताब का उसी ज़ात द्वारा आरंभ और उसी द्वारा समापन हो जाता है। इस के साथ ही अपने विषय में सम्पूर्ण और अपनी तब्लीग़ में कामिल है। अल्लाह की दावत के एरिबार से अकेला और हिदायत में भी तन्हा है। इस के किसी भी विषय को समझने के लिये किसी दूसरी पुस्तक की आवश्यकता नहीं।

(८) कलाम मुहज़्ज़ब और गंभीर है:- कुरआन मजीद की एक विशेष्ता यह है कि उस के कहने का अन्दाज़ बड़ा मुहज़्जब और गंभीर है। वह कभी अश्लील (फ़हश) अनुचित (नामुनासिब) और असभ्य (ग़ैर मुहज़्ज़ब) वाक्य का प्रयोग हर्गिज़ नहीं करता है। अब आइये हम देखते हैं कि और दूसरी किताबों के कहने की शैली और अन्दाज़ क्या है?

खि़रक़ील की किताब 'अल् ख़ज़मा' में अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों को अपनी दो बीवियों अहूला और अहूलिया का क़िस्सा सुनाया है। क्या कोई इन्सान अपनी बीवी की कहानी दूसरों को सुनाता है? और फिर अल्लाह अपनी बीवियों का हाल बन्दों को सुनायें? लाहौ-ल वला कुव्वत!

'ग़ज़लुल्' ग़ज़लात किताब में एक नौजवान (किशोरी) छोकरी अपने प्रेमी पर और कोई छोकरा अपनी प्रेमिका पर मुहब्बत का इज़हार करता है। और अपनी प्रेमिका को " ऐ मेरी बहन! ऐ मेरी बीवी" कह कर पुकारता है (ग़ज़लुल् गज़लात बाब४-९,१०) क्या इस तरह की शैली को कभी किसी ज़माना में पसन्द किया गया है? लेकिन यहूद इस प्रकार आपस में एक दूसरे को कह कर पुकारते थे।

बाइबल की तमाम किताबों में यहूदियों की बदकारी को योरोशलम की बदकारी बतलाया है, फिर योरोशलम को महिला मान कर उस के ख़िलाफ़ इतने गंदे शब्दों का इस्तेमाल किया गया है कि मेरे ख़याल में किसी भी चर्च में उन को महिलाओं के सामने उपदेश के तौर पर पढ़ कर नहीं सुनाया गया हो गा।

ख़िर्क़ीईल बाब २३ का दर्स न०२० पढ़ लीजिये! बहन, भाई, माँ, बेटा, बाप, बेटी, का ज़िक्र नहीं, बल्कि मैं यह पूछता हूँ कि क्या कोई शरीफ़ महिला अपने पति के सामने, या कोई पति अपनी पत्नी के सामने उन शब्दों को पढ़ सकता है? और क्या उन का अर्थ समझ सकता है?

यजुर वेद में अध्याय १९, मन्त्र ७६+अध्याय १९, मन्त्र ८८+ अध्याय ३०, मन्त्र+ अध्याय २५, मन्त्र ७ को कोई गुरू अपनी चेली लड़की के सामने, उनमें बेहयाई की बातें होने के नाते नहीं पढ़ सकता है, और न ही उन का अर्थ समझा सकता है।

इन किताबों के बाद अब कुरआन मजीद को देखिये इस की भाषा कैसी है और बयान कितना मुहज़्ज़ब है। शौच के लिये जाने और निमट कर आने को बयान यूँ करता है: " जब तुम में से कोई "ग़ाइत" से वापस आये"। 'ग़ाइत' उस ढालू ज़मीन को कहते हैं जहां आदमी शौच (पाख़ाना-पेशाब) के लिये लोगों की नज़रों से छुपने के लिये जाता है। देखा आप ने कितने मुहज़्ज़ब तरीक़े से बात समझा दी।

क़ुरआन मजीद का मुसन्निफ़ (संपादक)

कुरआन मजीद उस बादशाहों के बादशाह का कलाम है जिस ने कलाम को पैदा किया, गोश्त के टुकड़े को बोलना, हड्डी को आवाज़ का सुन्ना और दूसरे हिस्सों को उन का समझना सिखाया।

कुछ ईसाई कुरआन मजीद की बहुत सारी विशेष्ताओं को मान लेने के बाद कुरआन पाक को मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का कलाम बताते हैं। ऐसे लोगों से हम पूछते हैं कि (१) क्या कुरआन जैसी किताब का संपादक अपने-आप को बतलाना शर्फ़ और इ़ज़्ज़त व एहतिराम की बात नहीं है? फिर क्या कारण है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने आप को उस का मुसन्निफ़ (संपादक) नहीं कहा। (२) क्या कुरआन जैसी किताब का संपादक कभी झूट बोल सकता है? इन दोनों बातों पर ग़ौर करने के बाद हर कोई कहेगा कि झूट नहीं बोल सकता है।

ईसाइयों की किताब बाइबल से यह हक़ीक़त ज़ाहिर हो जाती है कि दुनिया में अल्लाह का कलाम

भेजे जाने की ख़बर हज़ारों वर्ष पहले दी गयी थी।

(१) मूसा अ़लै० जब अपनी क़ौम के पास दस आदेशों की तख़्ती ले गये तो क़ौम ने उन पर संदेह प्रकट किया।

(२)कौम ने मुतालबा किया कि इस्राईल का खुदा स्वयं उन की उपस्तिथि (मौजूदगी) में मूसा से कलाम करे।

(३) हज़रत मूसा कुछ गिने-चुने लोगों को तूर पहाड़ पर ले जाते हैं। वहां तारीकी छा जाती है, बादल सब को घेर लेते हैं, तेज़ हवायें चलने लगती हैं, बिजलियाँ चमकने लगती हैं, भूकंप आता है और पहाड़ हिलने लगता है।

(४) इन हालात को देख कर बनी इस्राइल चिल्ला उष्ते हैं और मूसा से कहते हैं ''ऐ मूसा! तू ही हम से बोल और हम सुनें, लेकिन खुदा न बोले कहां हम मर न जायें'' (खुरूज-इस्तिसना-१६,१८) उन की यह प्राथना कुबूल करली गयी और सब लोग तूर पर्वत से अपनी-अपनी जानें बचा कर ख़ेमों में पहुंच गये।

(५) बनी इस्राईल इस के बाद यह प्रार्थना करते हैं कि खुदा अपना कलाम मूसा के मुंह में रख दे और वह क़ौम को सुना दिया करे।

(६) इस प्रार्थना को अल्लाह नामन्ज़ूर करता है और सूचना देता है कि खुदा का कलाम एक और नबी के मुंह में रखा जाये गा। वह नबी इस्राईल के भाइयों में से हो गा, वह नबी जो कुछ खुदा से सुनेगा वही लोगों से कहे गा। और ऐसा हो गा कि जो कोई मेरी बातें जिन्हें वह नबी मेरा नाम ले कर कहे गा, न सुने गा, तो उस का हिसाब खुदा लेगा (इस्तिस्ना- बाब १८, दर्स न० १८,१९)

यहूदी और ई़साई ऊपर की बातों को पढ़ लें फिर बतलाएं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अ़लावा और वह कौन सा नबी है जिस के मुंह में अल्लाह का कलाम रखा गया? वह कौन सा नबी है जिस ने यह बतलाया हो कि "उस के मुंह में खुदा का कलाम है"। "हम यहूद व नसारा से कहते हैं कि वह कभी भी ऐसे नबी का नाम न बतला सकें गे जिस की ज़बान से ऐसे जुम्ले इस्तेमाल हों कि उन के मुंह में अल्लाह का कलाम है"---- याद रहे! कलामुल्लाह का सुनाना और बात है और कलाम का मुंह में होना और।

यही वह बात है जो अहले-किताब पर रब्बुल् आ़लमीन की सब से बड़ी हुज्जत (दलील) हो गी। उत्तर देने से पहले'' यसअ़यात्'' का जुम्ला भी याद रखें "देखो उम्मी को किताब दी गयी" यहूदियों और ई़साइयों को बतलाना हो गा कि "उम्मी किताब वाला" और कौन है? तो मालूम हो कि वह तो मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ही हैं जिन का निशान हमेशा "उम्मी नबी" रहा, दुनिया में और किसी नबी का लक़ब या चिन्ह "उम्मी नबी" कभी नहीं हुआ (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)

मुहम्म्द सुलैमान, सलमान, मन्सूर पूरी रह०

बिस्मिल्लाह हिर्रहमा निर्रहीम

क़ुरआन से पहले साहिबे-क़ुरआन को पढ़ें

संक्षिप्त परिचय

साहिबे-क़ुरआन मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)

हसब-नसब (बाप की तरफ़ से) मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बिन (१) अ़ब्दुल्लाह बिन (२) अ़ब्दुल् मुत्तलिब बिन (३) हाशम बिन (४) अ़ब्दे मुनाफ़ बिन (५) क़ुसय्य बिन (६) किलाब बिन (७) मुर्रा बिन (८) क-अ़ब बिन (९) लुवय्य बिन (१०) ग़ालिब बिन (११) फ़हर बिन (१२) मालिक बिन (१३) नज़्र बिन (१४) कनाना बिन (१५) ख़ुज़ैमा बिन (१६) मुद्‌रिका बिन (१७) इल्यास बिन (१८) मु-ज़र बिन (१९) नज़ार बिन (२०) मअ़द् बिन (२१) अ़द्नान..................(५१) शीस बिन (५२) आदम अ़लैहिस्सलाम।

अ़दनान से आगे के शजरा में बड़ा इख़्तिलाफ़ है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपने आप को "अ़दनान" ही तक मन्सूब फ़रमाते थे।

हसब-नसब:- (माँ की तरफ़ से) मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बिन (१) आमिना बिन्त (२) वहब बिन (३) हाशिम बिन (४) अ़ब्दे मुनाफ़................। आप की वालिदा का नसब नामा तीसरी पुश्त पर आप के वालिद के नसब नामा से मिल जाता है।

बुज़ुर्गों के कुछ नाम:- वालिद का नाम अ़ब्दुल्लाह और वालिदा का आमिना। चाचा का नाम अबू तालिब और चची का हाला। दादा का नाम अ़ब्दुल मुत्तलिब, दादी का फ़ातिमा। नाना का नाम वहब, नानी का बर्रा। पर दादा का नाम हाशिम और पर दादी का सल्मा।

पैदाइश:- आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पैदाइश नौ रबीउल अव्वल् एक आ़मुल फ़ील (अब्रहा के ख़ान-ए-काब पर आकर्मण के एक वर्ष बाद) २२ अप्रैल सन ५७१ ई़सवी, पीर (सोमवार) को बहार के मौसम में सुब्ह सादिक़ के बाद और सूरज निकलने से पहले हुयी (साहित्य की किताबों में पैदाइश की तिथि १२ रबीउल् अव्वल लिखी है वह बिल्कुल ग़लत है, दुनिया भर में यही मश्हूर है लेकिन उस तारीख़ के ग़लत होने में तनिक भर संदेह नहीं)

मुबारक नाम:- आप के दादा अ़ब्दुल मुत्तालिब पैदाइश ही के दिन आप को ख़ान-ए-काबा ले गये और तवाफ़ करा कर बड़ी दुआऐं माँगीं। सात्वें दिन ऊँट क़ुर्बानी कर के क़ुरैश वालों की दावत की और "मुहम्मद" नाम रखा। आप की वालिदा ने सपने में फ़रिश्ते के बतलाने के मुताबिक़ "अहमद" नाम रखा। हर शख़्स का अस्ल नाम एक ही होता है, लेकिन यह आप की विशेष्ता है कि आप के दो अस्ली नाम हैं। "मुहम्मद" नाम का सूरः फ़त्ह पारः २६ की अन्तिम आयत मैं ज़िक्र है और "अहमद" का ज़िक्र सूरः सफ़्फ़

पारः २८. की आयत न०६ में है। सुब्हानल्लाह! क्या ख़ूबी है।

दूध पीने का ज़माना:– सीरत की किताबों में लिखा है कि आप ने ८ महिलाओं का दूध पिया। (१) अपनी वालिदा आमिना (२) अबू लहब की लौंडी सुवैबा (३) ख़ौला (४) सादिया (५) आ़तिका (६) आ़तिका (७) आ़तिका (इन तीनों का एक ही नाम था) (८) दाई हलीमा सादिया। वालिदा ने लग-भग एक सप्ताह और इतने ही समय सुवैबा ने दूध पिलाया। इस के बाद दायी हलीमा की गोद में चले गये। और बाक़ी ५ दूध पिलाने वालियों के बारे में तफ़्सील मालूम न हो सकी।

पालन–पोषण:– लग-भग एक माह की आयु में पालन-पोषण के लिये दायी हलीमा की देख-रेख में सौंप दिये गये। आप चार-पांच वर्ष तक उन्हीं के पास रहे। दर्मियान में जब भी मज़दूरी लेने आती थीं तो साथ में आप को भी लाती थीं और माँ को दिखा-सुना कर वापस ले जाती थीं।

वालिद का देहान्त:– जनाब अ़ब्दुल्लाह निकाह के बाद मुल्क शाम तिजारत के लिये चले गये। वहाँ से वापसी में खजूरों का सौदा करने के लिये मदीना शरीफ़ में अपनी दादी सल्मा के ख़ान्दान में ठहर गये। और वहीं बीमार हो कर एक माह के बाद २६ वर्ष की उम्र में इन्तिक़ाल कर गये। और मदीना ही में दफ़्न किये गये। बहुत ख़ूबसूरत जवान थे। जितने ख़ूबसूरत थे उतने ही ख़ूबसीरत भी थे। 'फ़ातिमा' नाम की एक महिला आप पर आशिक़ हो गयी और वह इतनी प्रेम दीवानी हो गयी कि खुद ही १०० ऊँट दे कर अपनी तरफ़ मायल करना चाहा,लेकिन इन्हों ने यह कह कर ठुकरा दिया कि "हराम कारी करने से मर जाना बेहतर है"। जब वालिद का इन्तिक़ाल हुआ तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम माँ के पेट में ही थे।

वालिदा का देहान्त:– वालिदा के इन्तिक़ाल की कहानी बड़ी अ़जीब है। जब अपने शौहर की जुदाई का ग़म सवार हुआ तो उन की ज़ियारत के लिये मदीना चल पड़ीं और ज़ाहिर में लोगों से यह कहा कि मैके जा रही हूँ। मैका मदीना के क़बीला बनू नज्जार में था। अपनी लौंडी उम्मे ऐमन और बेटे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को ले कर मदीना में बनू नज्जार के दारुन्नाबिग़ा में क़ियाम किया और शौहर के क़ब्र की ज़ियारत की। वापसी में शौहर के क़ब्र की ज़ियारत के बाद जुदाई का ग़म इतना घर कर गया कि अब्वा के स्थान तक पहुंचते-पहुंचते वहीं दम तोड़ दिया। बाद में उम्मे ऐमन आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ले कर मक्का आयीं।

दादा–चचा की पर्वरिश में:– वालिदा के इन्तिक़ाल के बाद ७४ वर्ष के बूढ़े दादा ने पाला पोसा। जब आप आठ वर्ष के हुये तो दादा भी ८२ वर्ष की उम्र में चल बसे। इस के बाद चचा "अबू तालिब" और चची "हाला" ने पर्वरिश का हक़ अदा कर दिया। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सब से अधिक पर्वरिश (शादी होने तक) इन्हीं दोनों ने की।

यहाँ यह बात ज़िक्र के क़ाबिल है कि माँ "आमिना" और चची "हाला" दोनों परस्पर चची ज़ाद बहनें हैं। वहब और वहैब दो सगे भाई थे। वहब की लड़की आमिना और वहैब की हाला (चची) हैं। वहब के इन्तिक़ाल के बाद आमिना की पर्वरिश चचा वहैब ने की। वहैब ने जब आमिना का निकाह अ़ब्दुल्लाह से किया तो साथ ही अपनी लड़की हाला का निकाह अबू तालिब से कर दिया। मैके में दोनों चचा जाये बहनें थीं और ससुराल में देवरानी-जेठानी हो गयीं। ज़ाहिर है हाला उम्र में बड़ी थीं तो मैके में आमिना को संभाला और ससुराल में भी जेठानी की हैसियत से तालीम दी, फिर आमिना के देहान्त के बाद इन के लड़के मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को पाला पोसा। आप अनुमान लगा सकते हैं कि चचा और

विशेष कर चची ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पर्वरिश किस आन-बान और शान से की होगी एक तो बहन का बेटा समझ कर, दूसरे देवरानी का बेटा मान कर-सुब्हानल्लाह!

आप का बचपनः— आप ने अपना बचपन और बच्चों से भिन्न गुज़ारा। आप बचपन ही से बहुत शर्मीले थे। आप में आ़म बच्चों वाली आ़दतें बिल्कुल ही नहीं थीं। शर्म व हया आप के अन्दर कूट-कूट कर भरी हुयी थी। काबा शरीफ़ की मरम्मत के ज़माना में आप भी दोड़-दोड़ कर पत्थर लाते थे जिस से आप का कन्धा छिल गया। आप के चचा हज़रत अ़ब्बास ने ज़बर्दस्ती आप का तहबन्द खोल कर कन्धे पर डाल दिया तो आप मारे शर्म के बेहोश हो गये। दायी हलीमा के बच्चों के साथ ख़ूब घुल-मिल कर खेलते थे, लेकिन कभी लड़ाई-झगड़ा न किया। उनैसा नाम की बच्ची से आप की अच्छी जमती थी, उस के साथ अधिक खेलते थे। दाई हलीमा की लड़की शैमा हुनैन की लड़ाई में बन्दी बना कर आप के पास लाई गयी तो उन्हों ने अपने कन्धे पर दाँत के निशान दिखाये, जो आप ने बचपन में किसी बात पर गुस्सा में आ कर काट लिया था।

तिजारत का आरंभः— १२ पर्ष की उम्र में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपना पहला तिजारती सफ़र आरंभ किया जब चचा अबू तालिब अपने साथ शाम के तिजारती सफ़र पर ले गये। इस के बाद आप ने स्वंय यह सिलसिला जारी रखा। हज़रत ख़दीजा का माल बेचने के लिये शाम ले गये तो बहुत ज़्यादा लाभ हुआ। आस-पास के बाज़ारों में भी माल ख़रीदने और बेचने जाते थे।

ख़दीजा से निकाहः— एक बार हज़रत ख़दीजा ने आप को माल दे कर शाम भेजा और साथ में अपने ग़ुलाम मैसरा को भी लगा दिया। अल्लाह के फ़ज़्ल से तिजारत में ख़ूब नफ़ा हुआ। मैसरा ने भी आप की ईमानदारी और अच्छे अख़्लाक़ की बड़ी प्रशंसा की। इस से प्रभावित हो कर हज़रत ख़दीजा ने ख़ुद ही निकाह का पैग़ाम भेजा। आप ने चचा अबू तालिब से ज़िक्र किया तो उन्हों ने अनुमति दे दी। आप के चचा हज़रत हम्ज़ा ने ख़दीज़ा के चचा अ़मर बिन सअ़द से बहैसिय्यत वली बात चीत की। और २० ऊँटनी महर पर चचा अबू तालिब ने निकाह पढ़ा। हज़रत ख़दीजा का यह तीसरा निकाह था। पहला निकाह अ़तीक़ नामी एक शख़्स से हुआ था। जिन से ३ बच्चे हुये। उन के इन्तिक़ाल के बाद अबू हाला से हुआ था। निकाह के समय आप की आयु २५ वर्ष और ख़दीजा की ४० वर्ष थी।

ग़ारे-हिरा में अ़िबादतः— हज़रत ख़दीजा से शादी के बाद आप घरेलू मामलों से बे फ़िक्र हो गये। पानी और सत्तू साथ ले जाते और हिरा पहाड़ी के ग़ार में दिन-रात इबादत में लगे रहते। मक्का शहर से लग-भग तीन मील की दूरी पर यह पहाड़ी पर स्तिथि है और आज भी मौजूद है। हज़रत ख़दीजा बहुत मालदार थीं इस लिये आप की गोशा-नशीनी में कभी दख़ल नहीं दिया और न ही तिजारत का कारोबार देखने पर मजबूर किया। बल्कि ज़ादे-राह तय्यार कर के उन को सहूलत फ़रमाती थीं।

समाज सुधार कमेटीः— हिरा के ग़ार में अ़िबादत के ज़माना में बाअसर लोगों की कमेटी बनाने का मश्वरा आप ही ने दिया था और आप ही की कोशिशों से यह कमेटी अ़मल में लायी थी। इस कमेटी का उद्देश्य यह था कि मुल्क से फ़ित्ना व फ़साद ख़त्म करें गे, यात्रियों की सुरक्षा करें गे और ग़रीबों की मदद करें गे।

सादिक़-अमीन का ख़िताबः— जब आप की उम्र ३५ वर्ष की हुयी तो ख़ान-ए-काबा के निर्माण के बाद हज्रे अस्वद के रखने को ले कर क़बीलों के दर्मियान परस्पर तनाज़ा पैदा हो गया। मक्का के लोग

आप को शुरू ही से अमीन और सादिक़ जानते-मानते थे, चुनान्चे आप ही के हाथों इस तनाज़ा का समापन कराया। और आप ने हिक्मत और दूर-अन्देशी से काम ले कर मक्का वालों को एक बहुत बड़े अ़ज़ाब से नजात दिलाई।

नबुव्वत—रिसालतः— चाँद के साल के हिसाब से चालीस साल एक दिन की आयु में नौ रबीउल अव्वल सन ४१ मीलादी (१२ फ़रवरी सन ६१ ईसवी) दोशंबा के दिन आप पर पहली वह्यि उतरी। उस समय आप ग़ारे-हिरा में थे। नबुव्वत की सूचना मिलते ही सब से पहले ईमान लाने वालों में ख़दीजा (बीवी) अ़ली (भाई) अबू बक्र (मित्र) ज़ैद बिन हारिसा (गुलाम) शालि हैं।

दावत—तब्लीग़ :— तीन वर्ष तक चुपके-चुपके लोगों को इस्लाम की दावत दी। बाद में खुल्लंम-खुल्ला दावत देने लगे। जहाँ कोई खड़ा-बैठा मिल जाता, या कोई भीड़ नज़र आती, वहीं जा कर तब्लीग़ करने लगे।

कुंबा में तब्लीग़ः— एक रोज़ सब रिश्ते-दारों को खाने पर जमा किया। सब ही लोग बनी हाशिम क़बीला के थे। उन की तादाद चालीस के लग-भग थी। उन के सामने आप ने तक़रीर फ़रमाई। हज़रत अ़ली इतने प्रभावित हुये कि तुरन्त ईमान ले आए और आप का साथ देने का वादा किया।

आ़म तब्लीग़ः— आप ने खुले आ़म तब्लीग़ करते हुये "सफ़ा" की पहाड़ी पर चढ़ कर सब लोगों को इकट्ठा किया और नसीहत फ़रमाते हुये लोगों को आख़िरत की याद दिलाई और बुरे कामों से रोका। लोग आप की तब्लीग़ में रोड़े डालने लगे और धीरे-धीरे ज़ुल्म व सितम इन्तहा को पहुंच गये। इस पर आप ने हबश की तरफ़ हिजरत करने का हुक्म दे दिया।

हिज्रत—हबशः— चुनान्चे आप की इजाज़त से नबुव्वत के पांचवे वर्ष रजब के महीने में १२ मर्द और महिलाओं ने हबश की ओर हिजरत किया। इस क़ाफ़िले में आप के दामाद हज़रत उस्मान और बेटी रुक़य्या भी थीं। इन के पीछे ८३ मर्द और १८ औ़रतों ने भी हिजरत की। इन में हज़रत अ़ली के सगे भाई जाफ़र तय्यार भी थे जिन्हों ने बादशाह नजाशी के दर्बार में तक़रीर की थी।

सन ६ नबुव्वत में हज़रत हम्ज़ा और इनके तीन दिन बाद हज़रत उमर इस्लाम लाये। इस के बाद से मुसलमान काबा में जा कर नमाज़ें पढ़ने लगे।

घाटी में क़ैदः— मक्का वालों ने ज़ुल्म-ज्यादती का सिलसिला और बढ़ाते हुये बाई काट का एलान कर दिया। यह सन ७ नबुव्वुत का क़िस्सा है। लोगों ने बात-चीत, लेन-देन बन्द कर दिया, बाज़ारों में चलने-फिरने पर पाबन्दी लगा दी।

चचा का इन्तिक़ालः— नबुव्वत के दसवें वर्ष आप के सब से बड़े सहारा अबू तालिब का इन्तिक़ाल हो गया। इन के इन्तिक़ाल पर आप को बहुत सदमा पहुंचा।

बीवी का इन्तिक़ालः— अबू तालिब के इन्तिक़ाल के ३ दिन पश्चात् आप की प्यारी बीवी हज़रत ख़दीजा रज़ि० भी वफ़ात कर गयीं। इन दोनों साथियों के इन्तिक़ाल के बाद मुश्रिकों की हिम्मत और बढ़ गयी। सर पर कीचड़ और ऊँट की ओझड़ी नमाज़ की हालत में गले में डालने लगे।

ताइफ़ का सफ़रः— नबुव्वत के दसवें वर्ष दावत व तब्लीग़ के लिये ताइफ़ का सफ़र किया। जब आप वहाँ तब्लीग़ के लिये खड़े होते तो सुनने के बजाए लोग पत्थर बरसाते। आप ख़ून से तरबतर हो जाते। ख़ून बह कर जूतों में जम हो जाता और वज़ू के लिये पाँव से जूता निकलना कठिनहो जाता। गालियाँ देते,

तालियाँ बजाते। एक दिन तो इतना मारा कि आप बेहोश हो गये।

मुख़्तलिफ़ स्थानों पर तब्लीग़:— सन ११ नबुव्वत (नबुव्वत के ग्यारहवें वर्ष) आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम रास्तों पर जा कर खड़े हो जाते और आने-जाने वालों को तब्लीग़ करते। इसी वर्ष क़बीला कन्दा, बनू अ़ब्दुल्लाह, बनू आ़मिर, बनू हनीफ़ा का दौरा किया और लोगों को दीन इस्लाम की तब्लीग़ की। सुवैद बिन सामित और अयास बिन मआ़ज़ इन्हीं दिनों ईमान लाये।

मेराज शरीफ़:— नबुव्वत के १२ वें वर्ष २७ रजब को ५१ वर्ष ५ माह की उम्र में आप को मेराज हुआ और पांच वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ हुयीं। इस से पूर्व दो नमाज़ें फ़ज्र और अ़स्र ही की पढ़ी जाती थीं। इन्हीं दिनों तुफ़ैल बिन अ़मर दौसी और अबू ज़र गिफ़ारी ईमान लाये।

घाटी की पहली बैअ़त:— नबुव्वत के ग्यारहवें वर्ष हज्ज के मौसम में रात की तारीकी में छ: आदमियों से मुलाक़ात की और अक़्बा के स्थन पर इन लोगों ने इस्लाम क़ुबूल किया। हर्र और और मिना के दर्मियान एक स्थान का नाम "अ़क़बा" (घाटी) है। इन लोगों ने मदीना वापस जा कर लोगों को इस्लाम की दावत दी। बारहवें नबुव्वत को वहां से १२ आदमी और आये और इस्लाम क़ुबूल किया।

घाटी की दूसरी बैअ़त:— १३ नबुव्वत को ७३ मर्द और दो महिलाओं ने मक्का आ कर इस्लाम क़ुबूल किया। ईमान उसी घाटी पर लाये थे। चूंकि यह दूसरा गुरूप था इस लिये इस को घाटी की दूसरी बैअ़त कहते हैं।

हिजरत:— २७ सफ़र सन १३ नबुव्वत, जुमेरात (१२ सितंबर ६२२ ई़सवीं) के रोज़ काफ़िरों की आंखों में ख़ाक मारते हुये घर से निकले। मक्का से पांच मील की दूरी पर "सौर" नाम के एक ग़ार में ३ दिन ठहरे। वहाँ से मदीना के लिये रवाना हुये। राह में उम्मे मअ़बद के ख़ेमे में बक्री का दूध पिया।

क़ुबा पहुंचना:— ८ रबीउल अव्वल सन १३ नबुव्वत, पीर के रोज़ (२३ सितंबर सन ६२२ ई़सवी) को आप क़ुबा पहुंचे। आप यहाँ ३ दिन तक ठहरे और एक मस्जिद की बुनियाद रखी। १२ रबीउल अव्वल सन एक हिज्री जुमा के दिन क़बीला बनू सालिम में उतरे और १०० आदमियों के साथ जुमे की नमाज़ अदा फ़रमाई। जुमा के बाद मदीना के दच्छिड़ी जानिब से शह्र में दाख़िल हुये। आज से इस शहर का नाम मदीना पड़ गया।

बद्र की लड़ाई:— सन २ हिज्री में नमाज़ के लिये अज़ान का तरीक़ा शरू हुआ। इसी साल बैतुल मुक़द्दस से रुख बदल कर काबा की ओर नमाज़ पढ़ने लगे। इसी साल बद्र की लड़ाई हुयी। यह लड़ाई १७ रमज़ान जुमा के दिन हुयी। सन् ३ हिज्री में ज़कात फ़र्ज़ हुयी। सन ४ हिज्री में शराब हराम हुयी। सन ५ हिज्री में औरतों को पर्दे का हुक्म हुआ।

उहुद की लड़ाई:— ७ शव्वाल सन ३ हिज्री को सनीचर के दिन यह लड़ाई लड़ी गयी। इसी लड़ाई में रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के चन्द सहाबा ने नाफ़र्मानी, की जिस की वजह से कुछ देर के लिये पराजय का सामना करना पड़ा और आप को ज़ख़्म आये थे।

सुलह हुदैबिय्या:— सन छ: हिज्री में आप उम्रा के लिये मदीना से मक्का आये, लेकिन काफ़िरों ने इजाज़त नहीं दी। और चन्द शर्तों के साथ आइन्दा वर्ष आने को कहा। आप ने तमाम शर्तों को मान लिया और

वापस लौट आये।

बादशाहों को दावत:— सन छ: हिज्री में हब्शा, नजरान, अ़म्मान, ईरान, मिस्र, शाम, यमामा और रूम के बादशाहों को दावती और तब्लीग़ी पत्र लिखे। हबश, नजरान, अ़म्मान के बादशाह ईमान ले आये।

सन् 7 हिज्री:— में नज्द का वाली सुमामा, ग़स्सान का वाली जबला वग़ैरह इस्लाम आये। ख़ैबर की लड़ाई भी इस सन् में हुयी।

फ़तह—मक्का:— सन् ८ हिज्री में मक्का फ़तह हुआ। इस की वजह सन् ६ हिज्री में सुल्ह हुदैबिय्या का मुआहिदा तोड़ना था। २० रमज़ान को शहर मक्का के अन्दर दाख़िल हुये और ऊँट पर अपने पीछे आज़ाद किये हुये गुलाम हज़रत ज़ैद के बेटे उसामा को बिठाये हुये थे। इस फ़त्ह में दो मुसलमान शहीद और २८ काफ़िर मारे गये। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने माफ़ी का एलान फ़रमाया।

सन् 8 हिज्री:— मैं ख़ालिद बिन वलीद, उस्मान बिन तल्हा, अ़मर बिन आस, अबू जेहल का बेटा अ़िकरमा वग़ैरह इस्लाम लाये और ख़ूब इस्लाम लाये।

हुनैन की जन्ग:— मक्का की हार का बदला लेने और काफ़िरों को खुश रखने के लिये शव्वाल सन ८ हिज्री में चार हज़ार का लश्कर लेकर हुनैन की वादी में जमा हुये। मुसलमान लश्कर की तादाद बारह हज़ार थी लेकिन सहाबा ने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नाफ़र्मानी की, जिस की वजह से पराजय का मुंह देखना पड़ा। बाद में अल्लाह की मदद से हालत सुधर गयी।

सन् 9 हिज्री:— इस साल हज्ज फ़र्ज़ हुआ। चुनान्चे इस साल हज़रत सिद्दीक़ रज़ि० की क़ियादत में ३०० सहाबा ने हज्ज किया। फिर हज्ज ही के मौक़े पर हज़रत अ़ली ने सूर: तौबा पढ़ कर सुनाई।

अन्तिम हज्ज:- सन् १० हिज्री में आप ने हज्ज अदा किया। आप के इस अन्तिम हज्ज में एक लाख २४ हज़ार मुसलमान शरीक हुये। इस हज्ज का ख़ुत्बा आप का आख़िरी वाज़ था। आप ने अपने ख़ुत्बे में जुदाई की तरफ़ भी इशारा कर दिया था, इस लिये इस हज्ज का नाम "हज्जे विदाअ़" भी कहा जाने लगा।

वफ़ात (देहान्त):— सन् ११ हिज्री में २९ सफ़र को पीर के दिन एक जनाज़ा की नमाज़ से वापस आ रहे थे कि राह ही में सर में दर्द होने लगा। तप की बीमारी लाहिक़ हो गयी। इन्तिक़ाल से पांच दिन पूर्व सात कुओं के सात मश्क पानी से ग़ुस्ल किया। यह बुध का दिन था। जुमेरात को तीन अहम वासेय्यतें फ़रमायीं। एक दिन क़ब्ल अपने चालीस गुलामों को आज़ाद किया। सारी नक़्दी ख़ैरात कर दी। अन्तिम दिन सोमवार का था। इसी दिन १२ रबीउल अव्वल सन् ११ हिज्री चाश्त के समय आप दूसरी दुनिया को तशरीफ़ ले गये। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। चाँद की तारीख़ के हिसाब से उम्र ६३ साल ४ दिन की थी। यह बात ख़ास तौर पर ध्यान में रहे कि आप की नमाज़ जनाज़ा किसी ने नहीं पढ़ाई। बारी बारी, चार-चार, छ:-छ: लोग आइशा रज़ि० के हुज्रे में जाते थे और अपने तौर पर पढ़ कर वापस आ जाते थे। यह तरीक़ा हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने सुझाया था और हज़रत उमर ने इस की ताईद की और सब ने अ़मल किया।

इन्तिक़ाल के लग-भग ३२ घंटा के बाद हज़रत आइशा रज़ि० के कमरे में जहाँ इन्तिक़ाल फ़रमाया था दफ़्न किये गये।

आपने लड़ाइयाँ लड़ी

नोट:- "ग़" से मुराद गज़वा है, जिस में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसलम शरीक रहे। "स" से सरिय्या

मुराद हैं, जिस में आप नहीं शरीक थे।
१. सरिय्या सैफुल् बहर २. सरिय्या राबिग़ ३. सरिय्या ज़रार ४. ग़ज़वा वुद्दान ५. ग़-बवात ६. ग़-बद्रे ऊला ७. ग़-ज़ुल अशीरः ८. स-नख़्लः ९. ग़-बद्र कुबरा १०. स-आलम १२. गु-बनू कयुन्काअ़ १३. ग़-सवीक़ १४. स-कदिर १६. स-मुहम्मद बिन-मस्लमा १७. ग़-ग़ितफ़ान १८. स-कर्वा १९. गु उहुद २०. हमरउल असद २१. स-कुतुन २२. स-अ़ब्दुल्लाह २३. स-रजीअ़ २४. स-बीर मऊना २५. स-अमर बिन उमय्या २६. ग़-बनू नज़ीर २७. ग़-बद्रे उखरा २८. ग़-दौमतुल जन्दल २९. ग़-बनू मुस्तलिक़ ३०. ग़-अहज़ाब ३१. स-अ़ब्दुल्लाह ३२. ग़-बनू कुरैश ३३. स-कुरैज़ा ३४. ग़-बनी लह्यान ३५. ग़-ग़ाबा ३६. स-उकाशा ३७. स-ज़िल्कुस्सः ३८. स-बनू सालबा ३९. स-जमूम ४०. स-तरफ़ ४१. स-वादिल कुरा ४२. स-दौमतुल जन्दल ४३. स-फ़िदक ४४. स-उम्मे क़र्फ़ा ४५. स-अ़ब्दुल्लाह ४६. स-उरैनीन ४७. स-अ़मर ४८. ग़-हुदैबिय्या ४९. ग़-ख़ैबर ५०. ग़-वादिल कुरा ५१. ग़-जातुर्रिक़ाअ़ ५२. स-अ़ीस ५३. स-कदीद ५४. स-फ़िदक ५५. स-हिस्सा ५६. स-तर्य ५७. स-बनू किलाब ५८. स-मुन्क़आ ५९. स-ख़र्बा ६०. स-मुर्रा ६१. स-बशीर ६२. स-इब्ने औजा ६३. स-अत्ला ६४. स-इर्क़ ६५. स-मूता ६६. स-सलासिल ६७. स-सैफुल बह्र ६८. स-महारिब ६९. ग़-फ़त्ह मक्का ७०. स-ख़ालिद ७१. स-अ़मर बिन आ़स ७२. स-सअ़द ७३. स-ख़ालिद ७४. ग़-हुनैन ७५. ग़-ताइफ़ ७६. स-अ़ुयैना ७७. स-क़तबा ७८. स-ज़ह्हाक ७९. स-अ़ब्दुल्लाह ८०. स-बनू तै ८१. ग़-तबूक ८२. स-दौमतुल् जन्दल
नोटः- यह ८२ लड़ाईयाँ हैं। इन में मुसलमान लश्कर की तादाद कम से कम एक और ज़्यादा से ज़्यादा ३०००० है।

घायल, बन्दी, मक़्तूल

इन ८२ जन्गों में कुल मिला कर मुसलमानों में एक बन्दी, १२७ घायल और २५९ क़त्ल हुये। और दुश्मन के लश्करों में ६५६४ बन्दी, घायल नहीं मालूम। और ७५९ क़त्ल हुये। यानी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसललम की हिजरत के बाद १० साल के दौर में ८२ छोटी-बड़ी लड़ाइयों में कुल १०१८ काफ़िर और मुसलमान मक़्तूल हुये।

बीवियाँ (मुसलमानों की माएँ)

हज़रत ख़दीजा :— इन का पहला निकाह "अ़तीक़" से हुआ, इन से तीन लड़के पैद हुये। उन के देहान्त के बाद अबू "हाला" से। इन के बाद ज़ुबैर बिन मुत्अ़िम के बेटे से तीसरा निकाह होना तै पाया था, लेकिन बात नहीं बनी और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से तीसरा निकाह किया। चचा अबू तालिब ने निकाह पढ़ा। २० ऊँट मह्र के मुक़र्रर हुये। निकाह के समय उन की उम्र ४० और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की २५ वर्ष थी। ६५ वर्ष की उम्र में सन् १० नबुव्वत में इन्तिक़ाल किया। इन को दफ़्न करने के लिये आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम स्वंय क़ब्र में उतरे। उस समय तक जनाज़ा की नमाज़ नहीं थी। (रज़ियल्लाहु अ़न्हा)

2. हज़रत सौदाः— इन का पहला निकाह "सक्रान" से हुआ। इन के इन्तिक़ाल के बाद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ५० वर्ष की उम्र में ख़दीजा के इन्तिक़ाल के बाद इन ५० वर्षीय महिला से निकाह किया। इन के पिता हज़रत ज़मअ़ा ने स्वय निकाह पढ़ा और ४०० दिरहम मह्र के मुक़र्रर किये।

७२ वर्ष की उम्र में मदीना में दूसरे ख़लीफ़ा के ज़माना में इन्तिक़ाल हुआ। (रज़ियल्लाहु अ़न्हा)

3. हज़रत आइशाः— यही बीवी कुंवारी थीं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने १० शव्वाल को निकाह किया और एक वर्ष के बाद १० शव्वाल सन एक हि० को रुख़्सती अ़मल में आयी। केवल यही एक बीवी हैं जिन की इस्लामी ख़ून से पैदाइश हुयी। रुख़्सती के वक़्त इन की उम्र ११ वर्ष (एक रिवायत के अनुसार ९ वर्ष) और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ५४ वर्ष थी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के इन्तिक़ाल के वक़्त इन की उम्र १८ साल थी। लग-भग ५० वर्ष बेवा की हैसिय्यत से रहीं। ५७ हिज्री में देहान्त हुआ। इन के पाँच भाई और एक बहन अस्मा नाम की थीं।

4. हज़रत हफ़्साः— हज़रत उमर की बेटी हैं। पहला निकाह ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा रज़ि० से हुआ था, उहुद में घायल हो कर मदीना में वफ़ात पाई। इन के बाद आप से निकाह हुआ। इन के भाई अ़ब्दुल्लाह बिन उमर, वालिदा ज़ैनब और मामूँ उस्मान बिन मज़ऊन सब मुसलमान हैं। २३ वर्ष की उम्र में निकाह हुआ, ८ वर्ष नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से क़रीब रहीं। लग-भग ३० वर्ष विधुवा रह कर स० ४१ हिज्री में ६० वर्ष की आयु में इन्तिक़ाल किया। इन से कुल ६० हदीसें रिवायत हैं। (रज़ियल्लाहु अ़न्हा)

5. हज़रत ज़ैनब बिन्त ख़ुज़ैमाः— इन का पहला निकाह “तुफ़ैल” से, फिर “उबैदा” से हुआ। फिर तीसरा निकाह “अ़ब्दुल्लाह” बिन जहश से हुआ। पहले दोनों शौहर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के चचा ज़ाद भाई हैं और यह तीसरे साहब आप के साले हैं, इस लिये कि हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश के भाई हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सन ३ हि० में निकाह हुआ। ३ माह आप के निकाह में रह कर सन् ३० हिज्री में, ३० वर्ष की उम्र में इन्तिक़ाल किया। आप की उम्र उस समय ५५ वर्ष थी। (रज़ियल्लाहु अ़न्हा)

6. हज़रत उम्मे सल्माः— इन का निकाह “अबू सलमा” से हुआ था। बद्र में शहादत के बाद सन ४ हिज्री में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के निकाह में आयीं। निकाह के वक़्त उम्र २६ वर्ष की थी। सात वर्ष आप की सेवा में रह कर सन् ६० हिज्री में वफ़ात पाई। आप के छः भाई और तीन बहनें थीं और सभी इस्लाम पर मरे। हज़रत उम्मे सल्मा से ३७८ हदीसें मर्वी हैं। (रज़ियल्लाहु अ़न्हा)

7. हज़रत ज़ैनब बिन्त जहशः— इन का पहला निकाह ज़ैद बिन हारिसा से हुआ था (यह वही ज़ैद आप के ग़ुलाम हैं जिन को इस बात का शर्फ़ हासिल है कि क़ियामत तक के लिये इन का नाम सूरः अहज़ाब में दर्ज है। यह शर्फ़ और किसी सहाबी को नहीं हासिल है) इन्हों ने तलाक़ दे दी तब आप ने निकाह किया। यह आप की फूफ़ी ज़ाद बहन हैं। सन् ५ हि० में निकाह के समय इन की आयु ३६ वर्ष और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ५७ वर्ष थी। ५१ वर्ष की उम्र में सन् २० हि० में देहान्त हुआ और मदीना में दफ़न की गयीं। इन के तीन भाई और तीन बहनें थीं। (रज़ियल्लाहु अ़न्हा)

8. हज़रत जुवैरिय्याः— इन का पहला निकाह मुसाफ़ेह बिन सफ़्वान से हुआ था। सन् ५ हिज्री में मुरैसीअ़ की जन्ग में बन्दी बना कर लायी गयीं। यह क़ौम के बहुत बड़े सर्दार की बेटी थीं। यह साबित बिन क़ैस रज़ि० के हिस्से में आयी थीं। आप ने किताबत का माल अदा कर के इन को आज़ाद कर दिया फिर अपने हरम में ले लिया। निकाह के समय इन की उम्र २६ वर्ष और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ५७ वर्ष थी। ७१ वर्ष की उम्र में सन् ५६ हि० में इन्तिक़ाल किया। लग-भग आधी सदी विधुवा रहीं। इन के एक भाई अ़ब्दुल्लाह थे वह भी उसी समय इस्लाम ले आये। (रज़ियल्लाहु अ़न्हा)

9:— हज़रत उम्मे हबीबा:— यह हज़रत अबू सुफ़ियान की बेटी हैं। इन का पहला निकाह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसललम की बीवी हज़रत ज़ैनब के भाई उबैदुल्लाह बिन जहश से हुआ था इस से एक लड़की हबीबा नाम की पैदा हुयी। (यह आप का साल हुआ) इस्लाम ला कर बीवी के साथ हब्शा हिजरत कर गया। बड़ा शराबी था। आख़िर इस्लाम से मुर्तद हो गया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसललम ने इन्हें शादी का पैग़ाम भेजा। बादशाह नजाशी ने ख़ुद निकाह की मज्लिस बुलाई और ख़ुद ही निकाह का ख़ुत्बा पढ़ा और बाद में सब की दावत की। यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान इन के सगे भाई हैं। हज़रत मुआ़विया दूसरी माँ से भाई हैं। इन्हीं के बारे में मश्हूर वाक़िआ है कि अपने बाप अबू सुफ़यान को कुफ्र की हालत में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसललम के बिस्तर पर बैठने से मना कर दिया था। ३६ साल की उम्र में सन् ६ हि० में निकाह हुआ। ६ वर्ष आप की सेवा में रह कर ७२ वर्ष की उम्र में सन् ४४ हि० में इन्तिक़ाल किया (रज़ियल्लाहु अ़न्हा)

10. हज़रत सफ़िय्या:— इन के वालिद का नाम हय्यि और माँ का बर्रा था। पहला निकाह "सलाम" से और दूसरा "कनाना बिन हुक़ैक़" से हुआ। ख़ैबर की जंग में मारा गया और यह बन्दी बना ली गयीं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसललम ने आज़ाद कर के निकाह फ़रमा लिया। इन का इन्तिक़ाल रमज़ान सन् ५ हि० में ५० वर्ष की उम्र में हुआ। आप की ख़िदमत में लग-भग चार वर्ष रहीं (रज़ियल्लाहु अ़न्हा)

11. हज़रत मैमूना:— यह हारिस की बेटी हैं। इन का पहला निकाह हुवैतब से, फिर दूसरा "अबू रहम" से हुआ। जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसललम ने उम्रा किया उस समय यह विधुवा थीं। अपने चचा हज़रत अ़ब्बास के मश्वरे पर निकाह फ़रमा लिया। निकाह के समय इन की उम्र ३६ वर्ष और आप की ६० वर्ष थी। लग-भग ४ वर्ष आप के साथ रहीं, ८० वर्ष की उम्र में सन् ५१ हिज्री में वफ़ात पाई। इन की ८ बहनें थीं। ४ हक़ीक़ी और ४ दूसरे महल से। इन से कुल ७६ हदीसें मर्वी हैं (रज़ियल्लाहु अ़न्हा)

बेटे–बेटियाँ

1. क़ासिम:— यह आप की पहली औलाद हैं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की कुन्नियत "अबुल् क़ासिम" इन्ही के नाम पर है। हज़रत ख़दीजा से पेदा हुये। पाँव-पाँव चलना सीख गये थे कि इन्तिक़ाल कर गये।

2. अ़ब्दुल्लाह:— यह भी हज़रत ख़दीजा से हैं। इन का लक़ब "तय्यब" और "ताहिर" था। नबुव्वत के बाद पैदा हुये। इन्हीं के देहान्त पर सूर: कौसर नाज़िल हुयी। मक्का में बचपन में देहान्त हुआ।

3. इब्राहीम:— हज़रत मारिया क़िब्तिय्या से सन् ९ हि० में मदीना में पैदा हुये। बरा बिन औ़फ़ की पत्नी उम्मे बुर्दा ने इन्हें दूध पिलाया था। १८ माह की आयु सीमा पार कर सन् १० हि० में वफ़ात पाई। जिस रोज़ इन का इन्तिक़ाल हुआ इत्तिफ़ाक़ से उसी दिन सूरज ग्रहन भी लगा था। हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मोटे-ताज़े और भारी बदन के थे।

4. ज़ैनब:— यह हज़रत ख़दीजा से हैं। नबुव्वत से १० वर्ष पूर्व मक्का में पैदा हुयीं उस समय आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उम्र ३० वर्ष थी। यह केवल क़ासिम से उम्र में छोटी थीं। इन का निकाह सगी ख़ाला के लड़के अबुल आ़स से हुआ। हिजरत के सफ़र में हब्बार बिन अस्वद के नेज़ा मारने से गर्भ पात हो गया

था। ३० वर्ष की उम्र में सन् ८ हि० को इन्तिक़ाल किया। शौहर का इन्तिक़ाल १२ हि० में हुआ। एक लड़का अ़ली और लड़की उमामा नाम के पैदा हुये। इन की तफ़्सील नवासों के बाब में देखें।

5. रुक़य्या:— हज़रत ख़दीजा की औलाद हैं। बड़ी बहन ज़ैनब से ३ वर्ष छोटी हैं। यह उस समय पैदा हुयीं जब आप की उम्र ३३ वर्ष की थी। हज़रत उस्मान से निकाह हुआ। अल्लाह की राह में शौहर के साथ हिजरत करने वाली यही पहली ख़ातून हैं। सन् २ हि० में २१ वर्ष की आयु में चेचक की महामारी में देहान्त हुआ। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जंग बद्र को जा रहे थे और यह सख़्त बीमार थीं। बद्र के फ़त्ह होने की बशारत देने वाला मदीना पहुंचा तो इन्हें दफ़्न किया जा रहा था। एक साहब ज़ादे अ़ब्दुल्लाह नाम के पैदा हुये थे। इन की तफ़्सील नवासों के बाब में पढ़ें।

6. उम्मे—कुलसूम:— यह हज़रत ख़दीजा से मक्का में पैदा हुयीं। हज़रत रुक़य्या के इन्तिक़ाल के बाद सन् ३ हि० में हज़रत उस्मान से निकाह हुआ। यह निकाह अल्लाह के हुक्म से हुआ। लग-भग छः वर्ष तक हज़रत उस्मान के निकाह में रह कर सन् ९ हि० में इन्तिक़ाल किया। हज़रत अ़ली, उसामा बिन ज़ैद कफ़न-दफ़्न में शरीक थे। इन्हीं के बारे मे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि इन को क़ब्र में वह शख़्स उतारे जिस ने आज रात अपनी बीवी से हमबिस्तरी न की हो। हज़रत तल्हा अन्सारी ने क़ब्र में उतारा। हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इन की क़ब्र पर बैठे हुये थे और आँखों से आँसू बह रहे थे। इन्हों ने कोई औलाद नही छोड़ी।

7. फ़ातिमा:— हज़रत ख़दीजा के पेट से अन्तिम औलाद हैं। सन् एक नबुव्वत में पैदा हुयीं। उस समय आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उम्र ४१ वर्ष थी (पैदाइश के साल में अधिक इख़्तिलाफ़ है) आप की सब से चहीती बेटी हैं। इन्हें अपनी तीनों बहनों पर इस बात पर फ़ख़्र है कि केवल इन्हीं की नस्ल दुनिया में बाक़ी है। हज़रत अ़ली रज़ि० से जंग बद्र के बाद निकाह हुआ। ३ रमज़ान सन् ११ हि० मन्गल को देहान्त हुआ। इन की क़ब्र जन्नतुल बकीअ़ में है। वसिय्यत के मुताबिक़ शौहर हज़रत अ़ली ने इन्हें स्वंय गुस्ल दिया और इन्हों ने ही जनाज़ा की नमाज़ पढ़ाई। दो लड़के हसन, हुसैन और दो लड़कियाँ उम्मे कुलसूम और ज़ैनब नाम की पैदा हुयीं। इन के बारे में नवासों का बाब पढ़ें।

दादियाँ

१. फ़ातिमा (सगी दादी), २. सफ़िय्या, ३. लुबना, ४. हाला ५. नतीला, ६. मुनज़िम:

चचा

१. हारिस, २. ज़ुबैर, ३. अबू तालिब, ४. अबू लहब, ७. हम्ज़ा, ६. अ़ब्बास, ७. ज़रार, ८. मुक़व्वम, ९. ख़जल, १०. ग़ीदाक़, ११. कुसुम। इन में ज़ुबैर और अबू तालिब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के वालिद अ़ब्दुल्लाह एक महल से हैं (यानी यह तीनों एक ही माँ से हैं)

फूफियाँ

१. उम्मे हकीम, २. उमैमा, ३. आ़तिक़ा, ४. सफ़िय्या (हज़रत हमज़ा की सगी बहन) ५. बर्रा, ६. अर्वा। सभी फूफ़ियाँ सगी हैं।

नवासे—नवासियाँ

1. अ़ली:— हज़रत ज़ैनब से पैदा हुये। फ़तह मक्का के दिन अपने नाना के पीछे ऊँटनी पर यही बैठे थे। १०-१२ वर्ष की उम्र में इन्तिक़ाल कर गये।

2. उमामा:— यह भी हज़रत ज़ैनब से पैदा हुयीं। चौथे ख़लीफ़ा हज़रत अ़ली से निकाह हुआ (फ़ातिमा के इन्तिक़ाल के बाद) फिर मुग़ीरा से। मुग़ीरा के हाँ उमामा से यहया पैदा हुये और बचपन में मर गये। हज़रत उमामा को इस बात पर गर्व है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इन को गोद में ले कर नमाज़ पढ़ी है।

3. अ़ब्दुल्लाह:— यह रुक़य्या के पेट से पैदा हुये। छ: वर्ष की उम्र में एक मुर्ग़ ने इन की आंख में चोंच मार दी। घाव पक गया और उसी बीमारी में अपनी माँ के इन्तिक़ाल के दो वर्ष बाद ख़ुद भी चल बसे।

4. हसन:— हज़रत फ़ातिमा से सन् ३ हि० में पैदा हुये। इन से १२ लड़के, ५ लड़कियाँ पैदा हुयीं। दुनिया में इन की दो औलाद की ही नस्ल बाक़ी है।

5. हुसैन:— यह भी हज़रत फ़ातिमा से सन् ४ हि० पैदा हुये। इन की औलाद की भी नस्ल दुनियां में बाक़ी है।

6. ज़ैनब:— यह हज़रत फ़ातिमा से पैदा हुयीं। अब्दुल्लाह से निकाह हुआ। एक लड़का अ़दी पैदा हुआ जो कर्बला में शहीद हुआ।

7. उम्मे कुल्सूम:— यह भी हज़रत फ़ातिमा से हैं। दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर से चार हज़ार दिरहम महर पर निकाह हुआ, इन से ज़ैद और रुक़य्या पैदा हुये। ज़ैद ने अपनी माँ के साथ ही उसी दिन इन्तिक़ाल किया। हज़रत उमर के देहान्त के बाद फिर दुसरा निकाह औ़न बिन जाफ़र से हुआ

8+9. मुहसिन+रुक़य्या:— हज़रत फ़ातिमा से हैं। बचपन ही में इन्तिक़ाल किया। (कुछ उलमा ने इन का इन्कार किया है)

नोट:- ५ नाती और ४ नातिन। इन में केवल हसन, हुसैन ही की नस्ल दुनियां में जारी है।

दामाद

१. अबुल आ़स बिन रबीअ़ (हज़रत ख़दीजा इन की सगी ख़ाला हैं) शौहर हज़रत ज़ैनब, २. हज़रत उस्मान ग़नी, शौहर रुक़य्या और कुल्सूम, ३. हज़रत अ़ली शौहर हज़रत फ़ातिमा। ४. उत्बा, ५. उतैबा यह दोनों अबू लहब के बेटे हैं। रुक़य्या और उम्मे कुल्सूम का निकाह बचपन ही में लग-भग ७ वर्ष की उम्र में इन दोनों से हुआ था। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जब नबुव्वत का एलान किया तो अबू लहब ने ज़बर्दस्ती दोनों से तलाक़ दिलवा दी। रुख़सती नहीं हुयी थी।

साले—सालियाँ

1. हज़रत ख़दीजा के भाई बहन:— १. हाला, २. रुक़य्या, ३. अ़व्वाम (सभी सहाबी हैं)

2. हज़रत सौदा के भाई बहन:— १. अब्दुर्रहमान, २. अ़ब्दुल्लाह (बाप जाये भाई) ३. कुर्त बिन अ़ब्द (माँ जाये) ४. मालिक बिन ज़म्अ़ा (हक़ीक़ी भाई)

3. हज़रत आइशाः— १. अब्दुर्रहमान (हक़ीक़ी भाई) २. तुफ़ैल (बाप जाए) ३. अस्मा, (ज़ातुन्निताक़ैन) ४. अब्दुल्लाह, ५. मुहम्मद (अ़ल्लती) ६. उम्मे कुल्सूम

4. हज़रत हफ़साः— अब्दुल्लाह बिन उमर। इन के अ़लावा छः भाई और दो बहनें और भी हैं

5. हज़रत ज़ैनब बिन्त खुज़ैमाः— इन के भाई-बहन के हालत नहीं मिले

6. हज़रत उम्मे सल्माः— १. ज़ुहैर, २. आमिर, ३. अ़ब्दुल्लाह, ४. मुहाजिर (हक़ीक़ी भाई)

7. ज़ैनब बिन्त जहशः— १. अ़ब्दल्लाह, २. अबू अहमद (नाबीना थे) ३. उबैदुल्लाह, ४. ज़ैनब ५. हम्ना, ६. उम्मे हबीबा

8. हज़रत जुवैरिय्याः— १. अ़ब्दुल्लाह बिन हारिस, २. अमर बिन हारिस, ३. अम्रा बिन्त हारिस

9. हज़रत उम्मे हबीबाः— १. यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान (हक़ीक़ी भाई) २. हज़रत मुआ़विया (बाप जाए)

10. हज़रत सफ़िय्याः— इन के भाई-बहनों के बारे मे जानकारी नहीं प्राप्त हो सकी।

11. हज़रत मैमूनाः— १. उम्मूल फ़ज़्ल लुबाबा, (हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि की माँ) २. लुबाबा सुग़रा, (हज़रत ख़ालिद सैफुल्लााह की माँ) ३. अस्मा, ४. अ़ज़्ज़ा (हक़ीक़ी बहनें)
५. अस्मा बिन्त उमैस, ६. सलमा बिन्त उमैस, ७. सलामा बिन्त उमैस, ८. ज़ैनब बिन्त खुज़ैमा (नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसललम की पांचवी बीवी) यह चारों अ़ल्लाती हैं।

रज़ाअ़ी भाई-बहन

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के रज़ाअ़ी बहन-भाईयों में से जिन के बारे में मालूमात हासिल हो सकी वह यह हैं:
(१) अ़ब्दुल्लाह (२) उनेसा (३) हुज़ुफ़ा या हुज़ाफ़ा, इन का लक़ब "सैमा" भी था। इन सब में अ़ब्दुल्लाह और सैमा का इस्लाम लाना साबित है। यह सब दाई हलीमा के बेटे-बेटियाँ हैं।
(४) अबू सुफ़ियान बिन हारिसः- यह आप के चचेरे भाई हैं और रज़ाअ़ी भी। इन्होंने भी दाई हलीमा का दूध पिया था।
(५) हज़रत हमज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्तलिबः- यह आप के चचा भी हैं। इन्हें भी दूध पिलाने के लिये क़बीला बनी सअ़द की एक महिला ले गयी थी। यह महिला दाई हलीमा से मिलने आयी तो उस ने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को भी दूध पिलाया। इस प्रकार हज़रत हमज़ा रज़ि० दोहरे रज़ाअ़ी भाई हुये। एक तो सुवैबा के वास्ते से और दूसरे इस औ़रत के वास्ते से।
(६) मस्रूहः- यह हज़रत सुवैबा (अबु लहब की लौंडी) के लड़के हैं। यह भी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के रज़ाअ़ी भाई हैं। सुवैबा के और बच्चों का नाम मालूम न हो सका
(७) अबू सलमाः- यह आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बीवी उम्मे सल्मा के पहले शौहर हैं, इन्होंने भी सुवैबा का दूध पिया था।
नोटः- यह संक्षिप्त परिचय सीरत की प्रसिद्ध किताबों (१) रहमतुल्लिल आ़लमीन (२) सीरतुन्नबी और (३) अर्रहीकुल् मख़्तूम को सामने रख कर तय्यार किया गया है।

मुरत्तिब
ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी

★★★★★

बीवियों के संक्षिप्त हालात

क्र0 न0	बीवियों का नाम	निकाह का साल	बीवी की उम्र	कुल उम्र	वफ़ात का साल	वर्ष निकाह में रही	निकाह के समय आप की आयु
1	ख़दीजा रज़ि0	25 मी0	40	65	10 नबुव्वत	25	25
2	सौदा रज़ि0	10 नुबु0	50	72	19 हिजरी	14	50
3	आइशा रज़ि0	1 हिज0	9	63	57 हिजरी	9	54
4	हफ़सा रज़ि0	3 हिज0	22	59	41 हिजरी	8	55
5	जैनब रज़ि0	3 हिज0	30	30	3 हिजरी	3 माह	55
6	उम्मे सलमा रज़ि0	4 हि0	24	80	60 हिजरी	7	56
7	जैनब रज़ि0	5 हिज0	36	51	20 हिजरी	6	57
8	जुवैरिय्या रज़ि0	5 हिज0	20	71	56 हिजरी	6	57
9	उम्मे हबीबा रज़ि0	6 हिज0	36	72	44 हिजरी	6	57
10	सफ़िय्या रज़ि0	7 हिज0	17	50	50 हिजरी	$3^{3\ 4}$	59
11	मैमूना रज़ि0	7 हिज0	37	80	51 हिजरी	$3^{1\ 4}$	59

"रहमतुल्लिल आलमीन" से लिया गया

अन्तिम हज्ज का ख़ुत्बा

(CHARTER OF HUMAN RIGHTS)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने जीवन के अन्तिम हज्ज के मौक़ा पर लग-भग एक लाख इन्सानों के दर्मियान मक्का के निकट संदेष्टाओं (रसूलों) की भूमि "अ-रफ़ात" में "जबले-रहमत" पर खड़े हो कर एक ख़ुत्बा दिया था। आप का यह अन्तिम ख़ुत्बा इस्लामी दावत के आदेशों और शरीअ़त के नियमों का मुकम्मल ज़ाब्ता और मानव अधिकार की सुरक्षा की हमेशा के लिये इस्लामी ज़मानत है। चौदह सौ वर्ष बीत जाने के बाद भी इस की आवश्यक्ता, सामयिकता और गंभीरता में कोई कमी नहीं आयी है। वास्तव में यह ख़ुत्बा एक Charter of Human Rights है।

इस ख़ुत्बा का प्रचार एक बहुत बड़ी इस्लामी ज़िम्मेदारी है, ताकि हर शख़्स तक यह संदेश पहुंच जाये। स्वयं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने इसी ख़ुत्बे के अन्त में अपने आदेशों को समस्त लोगों तक पहुंचाने का हुक्म दिया है। चुनान्चे समस्त सन्सार में इस का प्रचार करना हम मुसलमानों का परमर्कतब्य है। इसी उद्देश्य से इस ख़ुत्बे को कुरआन मजीद के आरंभ में दिया जा रहा है----

-----------ख़ालिद

हज्ज के दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अ-र-फ़: तशरीफ़ लाये और आप वहाँ ठहरे। जब सूरज ढलने लगा तो आप ने (अपनी ऊँटनी) "क़स्वा" को लाने का आदेश दिया। ऊँटनी तय्यार कर के हाज़िर की गयी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस पर सवार हो कर "बत्ने वादी" में ठहरे और ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाया जिस में दीन के अहम मामलात को बयान फ़रमाया। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अल्लाह की हम्द व सना करते हुये ख़ुत्बे को यूँ आरंभ किया:

ऐ लोगो! अल्लाह को छोड़ कर कोई और माबूद नहीं है, वह अकेला है, कोई उस का साझीदार नहीं। अल्लाह ने अपना वादा पूरा किया, उस ने अपने सन्देष्टा (रसूल) की सहायता की और अकेले ही उसने बातिल की एकत्रित शक्तियों को पस्त कर के रख दिया। **,s yksxks!** मेरी बात सुनो! मैं नहीं समझता कि भविष्य में कभी हम इस प्रकार ऐसी सभा में एकत्रित हो सकें गे (और शायद इस वर्ष के पश्चात् मैं हज्ज न कर सकूँ गा)

ऐ लोगो! अल्लाह का फ़र्मान है: "इन्सानो! हम ने तुम सब को एक ही मर्द और औ़रत से पैदा किया और तुम्हें जमाअ़तों और क़बीलों में बांट दिया है, ताकि तुम अलग-अलग पहचाने जा सको। तुम में सब से अधिक अ़िज़्ज़त व बुज़ुर्गी वाला अल्लाह की नज़र में वह है जो अल्लाह से डरने वाला है"। (सूर: हुजुरात-१३) चुनान्चे इस आयत की रोशनी में न किसी अ़रबी को अ़जमी (ग़ैर अ़रबी) पर कोई बड़ाई हासिल है, न किसी अ़जमी को अ़रबी पर। न काला, गोरे से अफ़्ज़ल है और न गोरा काले से। हाँ, फ़ज़ीलत और बुज़ुर्गी की अगर कोई कसौटी है तो वह तक़्वा है। इन्सान सारे ही आदम की औलाद हैं। और आदम की हक़ीक़त इस के सिवा क्या है कि वह मिट्टी से बनाये गये थे। अब बड़ाई और बर्तरी के सारे दावे, जान व माल के सारे मुतालबे और सारे बदले मेरे पाँव तले रौंदें जा चुके हैं। बस केवल बैतुल्लाह की देख-भाल

और हाजियों को पानी पिलाने की सेवाएँ अपने स्थान पर बाक़ी रहेंगी। फिर आप ने इर्शाद फ़रमाया: "**क़ुरैश के लोगो!** ऐसा न हो कि अल्लाह के सामने तुम इस प्रकार आओ कि तुम्हारी गर्दनों पर तो दुनिया का बोझ लदा हो और दूसरे लोग आख़िरत का सामान ले कर पहुंचें। और अगर ऐसा हुआ तो मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम न आ सकूँगा"।

"**ऐ क़ुरैश के लोगो!** अल्लाह ने तुम्हारी झूठी अकड़ को ख़त्म कर डाला और बाप-दादा के कारनामों पर तुम्हारे फ़ख़्र व मबाहात की अब कोई गुन्जाइश नहीं। तुम्हारे जान व माल और प्रतिष्ठाऐं एक दूसरे पर हमेशा के लिये हराम कर दी गयीं हैं। इन चीज़ों की अहमिय्यत ऐसी ही है जैसी तुम्हारे इस दिन की और इस मुबारक महीने (ज़िल्हिज्जा) की विशेष कर इस शहर (मक्का) में है। तुम सब अल्लाह के आगे जाओगे अैर वह तुम्हारे आमाल की पूछ-ताछ फ़रमाएगा। **देखो!** मेरे बाद कहीं गुमराह न हो जाना कि परस्पर दंगे-फ़साद करने लगो। अगर किसी के पास अमानत रखवाई जाये तो वह इस बात का पाबन्द है कि अमानत रखने वाले को अमानत पहुंचा दे।

लोगो! हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है। और समस्त मुसलमान परस्पर भाई-भाई हैं। अपने गुलामों का ख़याल रखो! **हाँ,** अपने गुलामों का ख़याल रखो। उन्हें वही खिलाओ जो स्वंय खाते हो। वैसा ही पहनाओ जैसा तुम पहनते हो। जाहिलिय्यत के ज़माने का सब कुछ मैं ने अपने पैरों से रौंद डाला है। जाहिलिय्यत के ज़माना के ख़ून के सारे बदले अब समाप्त हैं। पहला बदला जिसे मैं समाप्त घोषित करता हूँ मेरे अपने ख़ान्दान का है। रबीआ बिन हारिस के दूध पीते बेटे का ख़ून जिसे बनू हुज़ैल ने मार डाला था, अब मैं माफ़ करता हूँ। जाहिलिय्यत के ज़माने का सूद अब कोई हैसिय्यत नहीं रखता। पहला सूद जिसे मैं छोड़ता हूँ, अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के ख़ान्दान का सूद है, अब यह समाप्त घोषित किया जाता है।

लोगो! अल्लाह ने हर अधिकार वाले को उस का अधिकार स्वयं दे दिया है। अब कोई किसी वारिस के हक़ के लिये वसिय्यत न करे। बच्चा उसी तरफ़ मन्सूब किया जाये गा जिस के बिछौने पर वह पैदा हुआ। जिस पर हराम-कारी साबित हो उस की सज़ा पत्थर से मार डालना (रज्म) है। हिसाब-किताब अल्लाह के हाँ होगा। जो कोई अपना नसब बदलेगा, या कोई गुलाम अपने आक़ा के मुक़ाबले में किसी और को अपना आक़ा ज़ाहिर करे गा, उस पर अल्लाह की लानत है। क़र्ज़ की अदायगी अनिवार्य है। उधार ली हुयी चीज़ वापस करनी चाहिये। तुहफ़े का बदला देना चाहिये और जो किसी का ज़मानती बने वह तावान अदा करे। किसी के लिये यह जायज़ नहीं कि वह अपने भाई से कुछ ले, सिवाए इस के जिस पर उस का भाई राज़ी हो और खुशी-खुशी दे। स्वयं पर और एक-दूसरे पर ज़्यादती न करो।

महिलाओं के लिये यह जायज़ नहीं कि वह अपने पति का माल उस की अनुमति के बग़ैर किसी को दे। **देखो!** तुम्हारे ऊपर तुम्हारी महिलाओं के कुछ हक़ हैं, इसी प्रकार उन पर तुम्हारे हक़ बनते हैं। औरतों पर तुम्हारा हक़ यह है कि वह अपने पास किसी ऐसे शख़्स को न बुलाएं जिसे तुम पसन्द नहीं करते। और वह कोई ख़ियानत न करें, कोई काम खुली बे हयाई का न करें। और अगर वह ऐसा करें तो अल्लाह की तरफ़ से इस बात की अनुमति है कि तुम उन्हें मामूली सज़ा (दण्ड) दो। फिर अगर वह बाज़ आ जायें तो उन्हें अच्छी तरह खिलाओ और पहनाओ। महिलाओं से अच्छा व्यवहार करो। क्योंकि वह तुम्हारे अध

ीन हैं और स्वयं अपने लिये वह कुछ नहीं कर सकतीं, इस लिये उन के बारे में अल्लाह से डरो, इस लिये कि तुम.ने उन्हें अल्लाह के नाम पर प्राप्त किया है और उसी के नाम पर वह तुम्हारे लिये हलाल हुयीं है। **लोगो!** मेरी बात समझ लो। मैं ने तब्लीग़ का हक़ अदा कर दिया।

मैं तुम्हारे दर्मियान एक ऐसी चीज़ छोड़े जाता हूँ कि तुम अगर उस पर अ़मल करते रहे तो कभी गुमराह न होगे और वह अल्लाह की किताब है। **और हाँ देखो!** दीनी मामलात में ग़ुलू (कमी-बेशी करने) से बचना, इस लिये कि तुम से पहले के लोग इन्हीं कारणों से हलाक कर दिये गये। शैतान अब इस बात से निराश हो गया कि अब इस शहर (मक्का) में उस की अ़िबादत की जायेगी। लेकिन इस बात की संभावना है कि ऐसे मामलात में जिन्हें तुम कम अहमिय्यत देते हो उस की बात मान ली जाये और वह यही चाहता भी है। इसलिए तुम अपने दीन-ईमान को उस से बचा के रखना। **लोगो!** अपने रब की अ़िबादत करो। पाँच वक़्त की नमाज़ें अदा करो, रमज़ान के पूरे माह के रोज़े रखो और अपने मालों की ज़कात ख़ुशी-ख़ुशी निकालते रहो। अल्लाह के घर का हज्ज करो और अपने ज़िम्मे दार लोगों की आज्ञा मानो। (इसी प्रकार करो गे) तो अपने रब की जन्नत में दाख़िल हो जाओगे.।

अब अपराधी स्वंय ही अपने अपराध का ज़िम्मेदार होगा। और अब न बाप के बदले बेटा पकड़ा जाये गा, न बेटे का बदला बाप से लिया जाये गा। **लोगों सुनो!** यहाँ जो लोग उपस्थित हैं उन्हें चाहिये कि यह आदेश और सारी बातें उन लोगों को बता दें जो यहाँ मौजूद नहीं है। हो सकता है कोई ग़ैर मौजूद तुम से अधिक समझने और महफ़ूज़ रखने वाला हो। **ऐ लोगों!** तुम से मेरे बारे में (अल्लाह के हाँ) प्रश्न किया जाये गा। बताओ तुम क्या उत्तर दोगे? लोगों ने उत्तर दिया कि हम इस बात की गवाही दें गे कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अमानत (दीन) पहुंचा दी और आप ने रिसालत का हक़ अदा फ़रमा दिया और हमारी ख़ैर ख़्वाही फ़रमाई। यह सुन कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी शहादत की उंगली आसमान की तरफ़ उठाई और लोगों की तरफ़ इशारा करते हुये तीन बार इर्शाद फ़रमाया: **"मेरे मौला! गवाह रहना, मेरे मौला! गवाह रहना, मेरे मौला! गवाह रहना"**। *(बुख़ारी, मुस्लिम, इब्ने अ़साकिर, इब्ने जरीर वग़ैरह से सारांश)*

★★★★★

कुरआन मजीद की फ़ज़ीलत और बर्कत

से मुतअ़ल्लिक़

चालीस हदीसें

नोटः— नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः-

"मेरी उम्मत में से जो शख़्स दीन से मुतअ़ल्लिक़ चालीस हदीसें याद कर ले, तो वह क़ियामत के दिन फ़क़ीह बन कर आये गा। मैं उस के लिये सिफ़ारिश करूँ गा और उस की बख़्शिश के लिये गवाह बनूँ गा (   )

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ऊपर के फ़र्मान पर अ़मल करने के लिए कुरआन मजीद के फ़ज़ाइल पर आधारित ४० हदीसें यहाँ लिख रहा हूँ। अल्लाह पाक से दुआ़ है कि इसे क़ुबूल फ़रमाए और क़ियामत के दिन मेरे लिये और मेरे संबन्धियों के लिये और कुरआन पाक की तिलावत का शौक़ रखने वालों के लिये इसे नजात का ज़रीआ़ बनाये-- आमीन! आमीन-नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शफ़ाअ़त का उम्मीद वार

मुहम्मद दावूद राज़

हदीस न०१:- हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

"ऐ मुसलमानो! तुम में बेहतरीन वह मुसलमान है जो कुरआन पाक सीखने वाला और सिखाने वाला है" (बुख़ारी शरीफ़)

इस हदीस में कुरआन मजीद देख कर पढ़ने वाले, ज़बानी पढ़ने वाले, तर्जुमा और तफ़्सीर पढ़ने वाले सब दाख़िल हैं। पढ़ने के साथ-साथ उस का तर्जुमा और तफ़्सीर भी समझने की आवश्यकता है, ताकि कुरआन मजीद से दुनिया व आख़िरत को सुधारने की हिदायत हासिल हो। इस हदीस से उन इस्लामी पाठशालाओं और आरंभिक शिक्षा के मदरसों की भी अहमियत साबित होती है, जिन में कुरआन मजीद की शिक्षा दी जाती है। इन पाठशालाओं के चलाने वाले भी इसी फ़ज़ीलत के योग्य हैं।

२:- हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

"निःसंदेह अल्लाह तआ़ला इस किताब (कुरआन) पर अ़मल करने और इस के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने से बहुत सी क़ौमों को बुलन्द मर्तबा और कामियाबी अ़ता करे गा और बहुत सी क़ौमों को इस (कुरआन) पर अ़मल न करने की वजह से ज़लील और रुस्वा करे गा (मुस्लिम शरीफ़)

इस हदीस से साबित होता है कि कुरआन पाक पर अ़मल करना दुनिया व आख़िरत में तरक़्क़ी की ज़मानत है और उस को छोड़ देना ज़िल्लत और गुमराही का सबब है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को इस हदीस पर ग़ौर करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये- आमीन!

३:- हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"कुरआन मजीद में महारत (निपुणता) रखने वाला उन लिखने वालों के साथ हो गा जो शरीफ़ और नेक लोग हैं। और जो शख़्स कुरआन मजीद पढ़ते समय अटक-अटक कर पढ़ता है और कठिनाई और मुशक़्क़त महसूस करने के बावजूद कुरआन की तिलावत में लगा रहता है, उस को दो-गुना सवाब मिले गा (बुख़ारी, मुस्लिम)

अर्थात यह कि कुरआन पाक में अभ्यास और मश्क़ करने वाला उन फ़रिश्तों के साथ हो गा जो कुरआन पाक को "लौहे महफ़ूज़" से नक़ल कर के पहले आसमान पर लाते हैं। और कुरआन पाक जो सरलता से न पढ़ सके लेकिन कोशिश करता रहे तो उस को दो-गुना सवाब मिलता है।

४:- हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"हसद करना जाइज़ नहीं मगर दो शख़्सों पर। (१) वह जिस को अल्लाह ने कुरआन पाक का इ़ल्म दिया और वह दिन-रात उस के साथ क़ियाम करता है (यानी नमाज़ में उसे क़िरात के तौर पर पढ़ता है) (२) दूसरा वह शख़्स है जिस को अल्लाह ने धनवान बनाया और वह अपने धन को अल्लाह की राह में दिन-रात ख़र्च करता रहता है (बुख़ारी, मुस्लिम)

५:- हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"जिस के सीने में कुरआन का कुछ भी हिस्सा नहीं (यानी उस को कुरआन की कोई आयत याद नहीं) वह उजड़े हुये घर की तरह है (तिर्मिज़ी-"सहीह", हदीस है)

मतलब यह है कि हर मुसलमान को कुछ न कुछ कुरआन पाक याद होना चाहिये। दिल को ईमान से आबाद रखने के लिए यह आवश्यक है।

६:- हज़रत मआ़ज़ जुहनी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"जिस शख़्स ने कुरआन पाक को पढ़ा और उस पर अमल किया, उस के माता-पिता को क़ियामत के दिन ऐसा चमकदार ताज पहनाया जाये गा जो सूरज (अगर तुम्हारे दुनिया के घर में दाख़िल हो जाये) इस से भी ज़्यादा चमकीला हो गा" (अहमद, अबू दावूद)

अपने बच्चों को पढ़ाने-लिखाने के बदले में माँ-बाप का यह दर्जा है, तो स्वयँ अमल करने वाले को कितना सवाब मिले गा इस का अनुमान आप लगा सकते हैं।

७:-हज़रत अबदुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

ने फ़रमायाः

"क़ियामत के दिन तीन चीज़ें अ़र्श के नीचे बन्दों से झगड़ा करें गा (१) कुरआन मजीद बन्दों से झगड़े गा, वहाँ उस का ज़ाहिर और बातिन सब खुल जाये गा (२) अमानत लोगों से झगड़े गी (३) रिश्तेदारी पुकारे गी कि ख़बरदार! जिस ने मुझे मिलाया अल्लाह उसे अपनी रहमत से मिलाये गा, और जिस ने मुझे काटा अल्लाह उस को अपनी रहमत से काटे गा" (शर्हुस्सुन्नः)

यह तीनों उन लोगों से झगड़ा करें गी जिन्हों ने उन के हुकूक़ नहीं अदा किये। कुरआन पर अ़मल नहीं किया, अमानत की हिफ़ाज़त नहीं की और रिश्ता-नाता जोड़ने के बजाए उसे काटा और तोड़ा।

८:- अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

"कुरआन पाक पढ़ने वाले और उस पर अ़मल करने वाले मुसलमान से क़ियामत के दिन कहा जाये गा कि पढ़ और मर्तबा में बढ़ता जा और ठहर-ठहर कर आराम के साथ पढ़ जैसा कि तू दुनिया में कुरआन पाक को ठहर-ठहर कर पढ़ा करता था। आज हर आयत के ख़त्म पर तुम्हारे लिये तरक़्क़ी की एक मन्ज़िल है" (अहमद, तिर्मिज़ी, अबू दावूद, नसई)

९:- हज़रत अ़ली रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

"जिस ने कुरआन को पढ़ा और उस के हलाल को हलाल और उस के हराम को हराम जाना और ज़िन्दगी भर ऐसे ही अ़मल करता रहा, अल्लाह पाक उसे जन्नत में दाख़िल करे गा और उस के खान्दान के दस आदमियों के मुतअ़ल्लिक़ जिन के जहन्नमी होने में कोई संदेह नहीं, उन के बारे में उस की शफ़ाअ़त कुबूल कर के उन को जन्नत में दाख़िल करे गा" (अहमद, तिर्मिज़ी)

१०. हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

"कुरआन मजीद पढ़ो! क्यों कि जिस ने कुरआन पाक सीख लिया और उसे पढ़ा और उस के साथ क़ियाम किया, उस की मिसाल उस थैली की सी है जो मुश्क व अ़म्बर से भरी हुयी है और हर स्थान पर जिस की खुश्बू फैल रही है। और जिस ने कुरआन को पढ़ तो लिया मगर अपने सीने में ले कर उस को सोता रहा, न उसे पढ़ा और न उस के साथ क़ियाम किया, उस की मिसाल उस थैली की सी है जिस के अन्दर मुश्क तो है, मगर उस का मुंह बन्द कर दिया गया,

(तिर्मिज़ी, नसई, इब्ने माजा)

११:- हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

"जिस शख़्स ने कुरआन मजीद में से एक हर्फ़ भी पढ़ा, उस को एक नेकी दस गुनी मिले गी। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि "अलिफ़ लाम्मीम्" एक हर्फ़ है। बल्कि "अलिफ़" एक हर्फ़ है और "लाम" एक हर्फ़ है और "मीम" एक हर्फ़ है। (तिर्मिज़ी, दार्मी)

इस का अर्थ यह हुआ कि "अलिफ़" लाम्मीम पढ़ने से ३० नेकियाँ मिलें गी जो दस गुनी हो कर ३०० तक पहुंच सकती हैं।

१२:- हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"बिला शुब्हा दिल को ज़न्ग लग जाता हैं जिस प्रकार पानी लगने पर लोहे को ज़न्ग लग जाता है। पूछा गया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! उस के साफ़ करने की क्या तर्कीब है? आप ने फ़रमाया: अधिक से अधिक मौत को याद करना और कुरआन पाक की तिलावत करना"। (बैहक़ी)

बिला शुब्हा यह अ़मल ऐसे हैं जिन से दिलों में नूर और दिमाग़ को ताज़गी मिलती है।

१३:- हज़रत अबू सअ़ीद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है कि जिस शख़्स को कुरआन मजीद की तिलावत ने मेरी याद से और मुझ से सवाल करने से ग़ाफ़िल कर दिया, उस को मैं दुआ़एँ माँगने वालों से भी अधिक देता हूँ। और अल्लाह के कलाम (कुरआन मजीद) की तमाम कलामों पर बड़ाई ऐसी ही है, जैसी बड़ाई अल्लाह पाक को उस की सारी मख़्लूक़ पर हासिल है (तिर्मिज़ी)

१४:- हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"जिस ने नमाज़ में सूरः फ़ातिहा को न पढ़ा उस की नमाज़ नहीं हुयी" (बुख़ारी, मुस्लिम)

सूरः फ़ातिहा कुरआन मजीद का सत् और निचोड़ है। इस सूरः के बेशुमार फ़ज़ाइल हैं। यह वह सूरः है जिस को नमाज़ की रूह कहा गया है। इसी लिये इमाम और मुक़्तदी को सिर्री और जेहरी नमाज़ों में इस सूरः का पढ़ना अनिवार्य है, बग़ैर इस सूरः के पढ़े नमाज़ ही न होगी।

१५:- हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"अपने घरों को क़ब्रिस्तान न बनाओ। बिला शुब्हा उस घर से शैतान निकल भागता है जिस में सूरः बक़रः पढ़ी जाती है" (मुस्लिम शरीफ़)

मतलब यह है कि क़ब्रिस्तान में कुरआन पाक का पढ़ना मना है। इस लिये तुम घरों को क़ब्रिस्तान न बनाओ कि कुरआन पाक घरों में पढ़ना छोड़ दो। यानी हर घर में कुरआन पाक की तिलावत होनी चाहिये। सूरः बक़रः ऐसी मुबारक सूरः है कि जिस घर में पढ़ी जाये वहाँ शैतान का क्या काम!

१६. हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

को फ़रमाते सुना:

"कुरआन पढ़ो! इस लिये कि वह क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों के लिये सिफ़ारिशी बन कर आये गा। दो चमकती और जगमगाती सूरतों को अवश्य पढ़ा करो। यह सूर: "बक़र:" और सूर: "आलि इ़म्रान" हैं। यह दोनों सूरतें क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों के लिये बादल बन कर, या छाँव बन कर आएँ गी, या पक्षियों की दो जमाअ़तों की तरह जो पर बाँध कर उड़ते हों, इसी प्रकार उड़ कर आयें गी और अपने पढ़ने वालों की बख़्शिश के लिये अल्लाह पाक से झगड़ें गी। सूर बक़र: को अवश्य पढ़ा करो! उस का ले लेना बर्कत है और छोड़ देना हस्रत का कारण। बुरे लोग इस की ताक़त नहीं रख सकते" (मुस्लिम शरीफ़)

१७:- हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"जिस शख़्स ने किसी रात में सूर: बक़र: की अन्तिम दो आयतों को पढ़ लिया, वह (पूरी रात) उस की सुरक्षा के लिये काफ़ी हो गयीं (बुख़ारी, मुस्लिम)

'अन्तिम दो आयतों से मुराद "आ-म-नर्रसूलु बिमा उन्ज़ि-ल" से सूर: के अंत तक।

१८:- हज़रत उबय्यि बिन कअ़ब रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अबू मुन्ज़िर से दो मर्तबा प्रश्न किया:

"अल्लाह की किताब में कौन सी सब से उत्तम आयत तुम को याद है? (यह प्रश्न आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सहाबी से दो बार किया) उन्हों ने उत्तर में "आयतुल कुर्सी" का नाम लिया, तो आप ने उन के सीना पर अपना हाथ रख कर फ़रमाया: ऐ अबू मुन्ज़िर! "तुम को कुरआन का इ़ल्म मुबारक हो"। गोया आप ने प्रसन्न हो कर उन को शाबाशी दी" (मुस्लिम शरीफ़)

१९:- हज़रत अबू दर्दा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"क्या तुम में से कोई शख़्स एक रात में तिहाई कुरआन मजीद हनीं पढ़ सकता? सहाबा ने कहा कि यह भला कैसे संभव है? आप ने फ़रमाया: "कुल-हु-वल्लाहु अ-हद्" तिहाई कुरआन के बराबर है" (मुस्लिम शरीफ़)

मतलब यह है कि जो शख़्स इस सूर: को एक मर्तबा पढ़े गा तो गोया उस ने एक तिहाई कुरआन पढ़ा और उस को इस सूर: के एक बार पढ़ने के बदले में एक तिहाई कुरआन के पढ़ने का सवाब मिले गा।

२०:- हज़रत अ़नस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि एक सहाबी ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! मैं सूर: "कुल हु-वल्लाह" को बहुत ही पसन्द करता हूँ। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"निःसंदेह उस की मुहब्बत तुम्हें जन्नत में दाख़िल कराये गी" (मुस्लिम)

२१:- हज़रत अबू दर्दा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"जिस ने सूर: कह्फ़ के आरंभ की दस आयतों को ज़बानी याद कर लिया वह दज्जाल के फ़ित्ने से सुरक्षित रहे गा" (मुस्लिम शरीफ़)

२२:- हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"हर एक चीज़ का दिल होता है और कुरआन शरीफ़ का दिल सूर: यासीन है। जिस ने इस सूर: को पढ़ा तो अल्लाह तआ़ला उस को पढ़ने के बदले में दस मर्तबा कुरआन मजीद ख़त्म करने का सवाब दे गा" (तिर्मिज़ी शरीफ़)

२३:- हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन व आसमान के पैदा करने से एक हज़ार वर्ष पूर्व सूर: "यासीन" और सूर: "ताहा" को पढ़ा। जब फ़रिश्तों ने क़िरात को सुना तो कहने लगे कि वह उम्मत कितनी मुबारक हो गी जिस पर कुरआन उतारा जाये गा। और वह सीने कितने मुबारक हों गे जो इस को उठायें गे (ज़बानी याद करें गे) और वह ज़बानें भी कितनी मुबारक होंगी जो कुरआन के साथ कलाम करेंगे" (दार्मी शरीफ़)

२४:- हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"कुरआन पाक में ३० आयतों वाली एक सूर: है जो अपने पढ़ने वालों के लिये सिफ़ारिश करे गी, यहाँ तक कि वह बख़्श दिये जायेंगे। वह सूर: "तबा-र-कल्लज़ी" है। (अहमद, तिर्मिज़ी)

एक हदीस में यह भी आया है कि "जो शख़्स रात को सोते समय इस सूर: की तिलावत करे गा उस को क़ब्र के दन्ड से नजात मिलेगी।

२५:- हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है वह कहते हैं:

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब तक सूर: ''अलिफ़ लाम्मीम सज्दा'' और सूर: ''मुल्क'' को न पढ़ लेते थे उस समय तक न सोते थे (अहमद, तिर्मिज़ी)

२६:- हज़रत माक़िल बिन यसार मुज़नी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"जिस ने सूर: ''यासीन'' की तिलावत केवल अल्लाह को प्रसन्न करने के लिये की, उस के तमाम पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं। उस को उन लोगों के पास पढ़ा करो जो मरने के क़रीब हैं" (बैहक़ी)

नोट:- यह रिवायत ज़ओ़फ़ है। अ़ल्लामा अ़ल्बानी ने इसे ज़ओ़फ़ कहा है और ''कुरआन का दिल'' वाली रिवायत को तो मौज़ूअ़ (मनघड़त) । इस लिये बीमारों और मरने वाले के पास बैठ कर पढ़ना दुरुस्त

नहीं है। इसी प्रकार सूर: ''वाक़िआ'' को ग़रीबी से बचने के लिये तिलावत वाली हदीस भी हद दर्जा ज़ईफ़ है। मुसलमानों को इन सब पर अ़मल करने से एहतियात करना चाहिये। हाँ, और सूरतों की तरह इस की तिलावत अवश्य करें। चूँकि मौलाना दावूद राज़ साहब ने इन को शामिल किया है, इस लिये अनुवाद करना अनिवार्य था- (ख़ालिद)

२७:- हज़रत अबू सअ़ीद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"जिस ने सूर: कह्फ़ को जुम्अ: के दिन तिलावत किया तो उस को बदले में दूसरे जुम्अ: तक चमक्ता हुआ नूर नसीब हो गा" (बैहक़ी)

मतलब यह है कि इस सूर: की बर्कत से अगले जुम्अ: तक उस के नूरे-ईमान में ताज़गी रहे गा।

२८:- हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना:

"हर वस्तु के लिये सुन्दरता होती है और कुरआन की ज़ीनत सूर: रहमान है" (बैहक़ी)

२९:- हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"जो शख़्स हर रात सूर: ''वाक़िअ:'' पढ़े गा उस को कभी भी फ़ाक़ा (उपवास) नहीं पहुंचे गा। और रिवायत करने वाले अपनी लड़कियों को हुक्म देते थे कि वह हर रात सूर: ''वाक़िअ:'' अवश्य पढ़ लिया करें" (बैहक़ी)

नोट:- इस सूर: के बारे में मश्हूर यह हे कि फ़ाक़ा को दूर करने वाली सूर: हैं। जोशख़्स इस की बराबर तिलावत करता रहेगा वह फ़ाक़ा से सुरक्षित रहे गा। लेकिन हक़ीक़त यह है कि इस सूर: की फ़ज़ीलत में कोई भी सहीह रिवायत नहीं है। हज़रत मस्ऊद को अपनी बेटियों को पढ़ने का हुक्म देने वाली रिवायत ज़ईफ़ ही नहीं बल्कि मौज़ूअ़ (मनघड़त) है। इस सूर: की तिलावत भी आ़म सूरतों की तरह की जानी चाहिये और बस (ख़ालिद)

३०:- हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा रिवायत करते हुये फ़रमाती हैं:

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हर रात बिस्तर पर जाते समय अपने हाथों की हथेलियों को सीधी करते फिर सूर: फ़लक़, सूर: नास पढ़ कर उन पर दम करते, फिर अपनी हथेलियों को सर, चेहरा और जहाँ तक भी हाथ पहुंचता, वहाँ तक तीन बार मलते थे (बुख़ारी, मुस्लिम)

३१:- हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० और अनस बिन मालिक रज़ि० रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"सूर: "ज़िल्ज़ाल" आधा कुरआन के बराबर है और "कुल् हु-वल्लाह"

एक तिहाई के, और सूर: "काफ़िरून" चौथाई कुरआन के बराबर है" (तिर्मिज़ी)

यानी इन तमाम सूरतों की वैसी ही तिलावत की जाये जैसा की करने का हक़ है तो उसी के अनुसार सवाब मिले गा।

३२:- हज़रत माक़िल बिन यसार रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"जिस शख़्स ने सुब्ह के समय तीन मर्तबा ''अऊज़ु बिल्लाहि मि-नश्शैतानिर्रजीम'' पढ़ कर सूर: ''हश्र'' की अन्तिम तीन आयतों को पढ़ो, तो अल्लाह पाक उस पर सत्तर हज़ार फ़रिश्तों को मुक़र्रर कर दे गा, जो उस पर शाम तक़ दरूद भेजें गे। और अगर उसी दिन मर गया तो वह शहीद हो कर मरे गा। और जिस ने शाम को इसी प्रकार पढ़ा, तो सुब्ह तक उस को इसी प्रकार सवाब मिलता रहे गा (तिर्मिज़ी, दार्मी)

३३:- हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"जिस ने सूर: "दुख़ान" को जुम्अ़: की रात में पढ़ा, उस के पाप धो दिये जायें गे" (तिर्मिज़ी)

३४:- हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

जिस ने सूर: "मोमिन" को आरंभ से "इलैहिल् मसीर" तक और ''आयतुल कुर्सी" को सुब्ह के वक़्त पढ़ा, तो वह शाम तक अल्लाह की हिफ़ाज़त में रहे गा" (तिर्मिज़ी)

३५:- हज़रत ऐफ़ा राज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से प्रश्न किया:

"ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! माना, मतलब और सवाब में कौन सी सूरत सब से अच्छी है? आप ने उत्तर दिया: सूर: ''इख़्लास''। उस ने फिर प्रश्न किया कि कौन सी आयत सब से बेहतर है? आप ने फ़रमाया: "आयतुल् कुर्सी''। उस ने फिर प्रश्न किया कि कौन सी आयत आप को अधिक पसन्द है कि आप को और आप की उम्मत को उस का सवाब मिलता रहे? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सूर: बक़र: की अन्तिम आयतें। यह आयतें अल्लाह के अर्श के नीचे रहमत के भन्डारों में से हैं, जो इस उम्मत को दी गयी हैं। दुनिया और आख़िरत की कोई भलाई ऐसी नहीं है जो इन आयतों में न हो" (दार्मी)

३६:- हज़रत अ़ब्दुल् मलिक बिन उमैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"सूर: फ़ातिहा में हर बीमारी के लिये शिफ़ा (स्वास्थ्य) है" (दार्मी, बैहक़ी)

यानी रूहानी, जिस्मानी और हर प्रकार की बीमारी में इस सूर: के पढ़ने से स्वास्थ हासिल होता है।

३७:- हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अ़न्हु कहते हैं कि हज़रत अनस रज़ि० से पूछा गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नमाज़ कैसी होती थी? उन्हों ने कहा:

"आप खींच-खींच कर पढ़ा करते थे" फिर उन्हों ने बिस्मिल्लाह को पढ़ कर बताया कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम "बिस्मिल्लाह" को खींचते, फिर "अर्रहमान" को, फिर "अर्रहीम" को। (तिर्मिज़ी)

३८. हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"तिलावत के साथ कुरआन मजीद की हिफ़ाज़त किया करो (बार-बार तिलावत किया करो) क्यों कि अल्लाह की क़सम! उस की मिसाल रस्सी में बंधे हुये ऊँट की सी है कि ज़रा सी ढीली हुयी और वह भागा" (बुख़ारी, मुस्लिम)

यानी जहाँ ज़रा सी लापर्वाही से काम लिया और तिलावत करनी बन्द कर दी तो वह दिमाग़ से निकल जाये गा, इस लिये रोज़ाना उस की तिलावत करते रहो।

३९:- इमाम ताऊस "मुर्सल" रिवायत करते हैं कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा गया कि कुरआन की क़िरात में आवाज़ के लिहाज़ से कौन आदमी बेहतर है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"वह शख़्स कि जब तुम उसे पढ़ते हुये सुनों तो यक़ीन करो कि वह अल्लाह से डरता है (यानी उस की क़िरात से डर ज़ाहिर हो) इमाम ताऊस कहते हैं कि हज़रत तल्क़ की क़िरात ऐसी ही थी" (दार्मी)

४०:- जुन्दुब बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"कुरआन की तिलावत उस समय तक करो जब तक तुम्हारे दिल उस की तरफ़ मुतवज्जह हों। और जब भी दिल में ज़रा सा भी फ़र्क़ देखो तो तिलावत बन्द कर दिया करो" (बुख़ारी, मुस्लिम)

तिलावत पूरी तवज्जुह के साथ करनी चाहिये। तिलावत करते समय यह ख़याल रहना चाहिये कि अल्लाह तआ़ला से बात-चीत कर रहा हूँ। अल्लाह पाक हम सब को ऐसी ही तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये और हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमाये।

रब्बना त-कब्बल मिन्ना इन्न-क अन्-तस्समीउल् अ़लीम+व सल्लल्लाहु अ़ला ख़ैरि ख़ल्क़िही मुहम्मदिंव्व आलिही व अस् हाबिही अज्-मअ़ीन्-या अर्- हमर्रा हिमीन

मुहम्मद दावूद राज़ रह०
(३०.१२.१३८८ हिज्री)

★★★★★

संक्षिप्त परिचय

मौलाना अबुल वफ़ा सनाउल्लाह अमृतसरी रह०

मौलाना मर्हूम ने निम्न में अपना परिचय अपने ही क़लम से स्वँय लिख कर अपनी हफ़्तावार प्रकाशित होने वाली "अहले हदीस" पत्रिका में प्रकाशित किया था, हम वहीं से लेकर आप की सेवा में प्रस्तुत कर रहे हैं------- (ख़ालिद)

मेरी पैदाइश पंजाब राज्य के शहर अमृतसर में हुयी। मेरे पिता जी ख़िज़र जू और ताया अक्रमजू अ़लाक़ा डोर, तहसील इस्लामाबाद, जनपद श्रीनगर कश्मीर से ऊन का कारबार करने अमृतसर आये थे। कश्मीरी लोगों में एक गोत्र "मन्टू" कहलाती है जो वहाँ के ब्रहामणों की एक शाख़ है, उसी गोत्र से उन का संबन्ध था। मेरी आयु ७ वर्ष की थी कि पिता जी का देहान्त हो गया, ताया जी भी चल बसे। मेरे बड़े भाई इब्राहीम मर्हूम रफूगरी का काम करते थे, इसलिये मुझे भी यह काम सिखाया। १४ वर्ष की आयु में माता जी भी चल बसीं। उसी साल मुझे पढ़ने-लिखने का शौक़ पैदा हुआ। फ़ार्सी भाषा की इब्तिदाई पुस्तकें पढ़ कर मौलाना, मौलवी अहमदुल्लाह मर्हूम अमृतसरी के पास पहुंचा। हाथ से सीने-पिरोने (रफूगरी) का काम भी करता और मौलाना मर्हूम से पाठ पढ़ा करता था। "शरहजामी", और "कुतबी" तक्र मौलवी साहब मर्हूम से पढ़ी। इस के पश्चात् हदीस का अ़िल्म हासिल करने के लिये मौलाना अ़ब्दुल मन्नान वज़ीराबादी रह० की सेवा में उपस्तिथ हुआ। वहाँ दर्सी किताबें पढ़ कर सनद हासिल की। यह वाक़िआ सन १३०७ हि० १८८९ अ़ी० का है। इस के बाद मौलाना सय्यद नज़ीर हुसैन रह० की सेवा में हाज़िर हुआ और सनद दिखा कर आप से पढ़ने की इजाज़त हासिल की। फिर चन्द रोज़ सहारन पुर क़ियाम कर के देवबन्द पहुंचा और वहाँ माकूल और मन्कूल की तमाम दर्सी किताबें पढ़ीं.......... और हदीस के दौरे में शरीक हुआ। मौलाना अ़ब्दुल मन्नान वज़ीराबादी के दर्से हदीस और देवबन्द के उस्तादों के दर्से हदीस में जो अन्तर है, उस से लाभ उठाया। देवबन्द की सनद मेरे लिये फ़ख़्र का कारण है और मेरे पास मौजूद है।

देवबन्द के बाद मदरसा फ़ैज़ेआ़म कानपूर गया, क्योंकि उन दिनों मौलाना अहमद हसन मर्हूम के दर्स की बड़ी शुहरत थी और मुझे भी माकूल और मन्कुल (फ़लसफ़ा और हदीस) से बड़ी दिलचस्पी थी, इसलिये मदरसा फ़ैज़े आ़म कानपूर में जा कर दाख़िल हो गया। वहाँ जा कर मैं ने पहले ही से पढ़ी हुयी किताबें पुन: पढ़ीं और लाभ उठाया। इन्हीं दिनों मौलाना मर्हूम को हदीस पढ़ाने का ताज़ा-ताज़ा शौक़ हुआ था, मैं उन के हदीस के भी दर्स में शरीक हुआ। पंजाब में मेरे शैख़ुल हदीस मौलाना हाफ़िज़ अ़ब्दुल मन्नान साहब (जो मसलक के एतिबार से अहले हदीस थे) उस्ताद थे, देवबन्द में मौलाना महमूदुल हसन साहब और कानपूर में मौलाना अहमद हसन साहब मेरे शैख़ुल हदीस थे। इस लिए मैं ने हदीस के तीनों उस्तादों से जिस प्रकार का अ़िल्म सीखा, वह बिल्कुल एक दुसरे से

मुख़्तलिफ़ है, जिस के ज़िक्र का यहाँ मौक़ा नही। शाबान सन १३१० हि० मुताबिक़ सन १८९२. ई० को फ़ैज़ आम कानपूर का जल्सा हुआ जिस में ८ तलबा (छात्रों) को फ़ज़ीलत की पगड़ी और फ़राग़त की सनद दी गयी। उन ८ में से एक मैं नाचीज़ भी था।

फ़राग़त के बादः— कानपूर से फ़ारिग़ हो कर मैं अपने वतन पंजाब पहुंचा और मदरसा "ताईदुल इस्लाम" अमृतसर में दर्से निज़ामी की किताबों को पढ़ाने में लग गया। तबीअ़त में तहक़ीक़ और छान-बीन का जज़्बा था, इस लिये इधर-उधर से माहौल के मज़हबी हालात मालूम करने में लग गया। मैं ने देखा कि इस्लाम के सख़्त, बल्कि निहायत सख़्त मुख़ालिफ़ ईसाई और आर्य दो गरोह हैं। इन्हीं दिनों क़रीब में क़ादियानी तहरीक भी पैदा हो चुकी थी और जिस की शुहरत पूरे मुल्क में फैल चुकी थी। मुसलमानों की तरफ़ से उस का मुक़बाला मौलाना अबू सईद मुहम्मद हुसैन बटालवी मर्हूम कर रहे थे। मेरी तबीअ़त पढ़ाई ही के समय से मुनाज़िरा की तरफ़ थी, इसलिये पढ़ाई के साथ-साथ इन तीनों गरोहों (ईसाई, आर्य और क़ादियानियों) की किताबों को भी पढ़ने में लगा रहा। अल्लाह के फ़ज़्ल से मैं ने उन धर्मों के मुतअ़ल्लिक़ काफ़ी मालूमात हासिल कर ली। हाँ, इस में शक नही कि उन तीनों गरोहों में क़ादियानी गरोह से मेरा खुसूसी मुक़ाबला रहा, शायद इस लिये कि अल्लाह को मन्ज़ूर था कि मौलाना बटालवी मर्हूम के बाद यह ख़िदमत मेरे सिपुर्द हो गी, और इस बाबत मौलाना मर्हूम को सूचना मिली हो तो शायद यह शेर पढ़ते हों गे

आके सज्जादा नशीं क़ैस हुआ मेरे बाद
रही ख़ाली न कोई दश्त में जा मेरे बाद

मुनाज़िरे के ज़माना में मैं ने चन्द सलफ़ी उलामा की किताबों से विशेष रूप से फ़ाइदा हासिल किया। हदीस शरीफ़ में क़ाज़ी शौकानी रह०, हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० और इब्ने क़य्यिम वग़ैरह। इ़ल्म कलाम में बैहक़ी, इमाम ग़ज़ाली, इब्ने हज़्म, अ़ब्दुल करीम शहरिस्तानी,हाफ़िज़ इब्ने तैमिया, शाह वलिय्युल्लाह और इमाम राज़ी रह० की किताबों से भर पूर फ़ाइदा उठाया।

पहली तस्नीफ़ ईसाइयत के रद्द में: तलाश के दर्मियान मुझे पहली सब से क़ाबिले तवज्जुह किताब पादरी ठाकुर दत्त की किताब 'अ़द्मे ज़रूरते कुरआन' (कुरआन की कोई आश्यक्ता नही) नज़र आयी। जिस के जवाब में मैं ने "तक़ाबुले सलास:" (तौरात, इन्जील, कुरआन का मुक़ाबिला) लिखी, जो प्रकाशित हो चुकी है। इस के अ़लावा भी उस किताब के रद्द में और किताबें भी लिखी, जिन के मजमूए का नाम "जवाबाते नसारा" है। ईसाइयों के रद्द में सब से अन्तिम पुस्तक वह किताब है जिस का नाम "इस्लाम और मसीहियत" है। ईसाइयों की तरफ़ से इस्लाम के ख़िलाफ़ तीन किताबें नयी शैली में प्रकाशित हुयीं थीं, जिन के नाम यह हैं (१) आ़लमगीर मज़हब इस्लाम है या मसीहियत (२) दीने फ़ितरत इस्लाम है या मसीहियत (३) उसूलुल् बयान फ़ी तौज़ीहिल कुरआन। इन तीनों किताबों के उत्तर में "इस्लाम और मसीहियत" लिखी गयी और मुल्क में प्रकाशित हुयी और इस्लामी पत्रिकाओं ने जिस की बड़ी प्रशंसा की।

आर्य धर्म के रद्द में तस्नीफ़: इसी दौरान आरियों ने "पुस्तक का उर्दू तर्जुमा प्रकाशित

किया। जिस के चौदहवें बाब में कुरआन मजीद पर १५९ एतराज़ हैं। हर एक एतराज़ के संदर्भ में कई-कई एतराज़ हैं। इस किताब के प्रकाशित होने पर मुसलमानों को ज़रूरत महसूस हुयी कि इस का मुकम्मल उत्तर दिया जाये। इस का उत्तर देना अल्लाह ने मेरे भाग्य में लिखा था, मैं ने उस के उत्तर में पुस्तक "हक़ प्रकाश" लिखी, जो अल्लाह के फ़ज़्ल से ऐसी मक़्बूल हुयी कि इस के बाद किसी फ़िर्क़ा के किसी आ़लिम ने 'सत्यार्थ' के उत्तर के लिये क़लम नहीं उठाया - यह अल्लाह का फ़ज़्ल है इस के बाद एक मुस्लिम अ़ब्दुलग़फ़ूर नामी (नव आर्य धर्मपाल) ने पत्रिका "तुर्के इस्लाम" लिखी, इस के प्रकाशित होने पर मुसलमानों के अन्दर बड़ी बेचैनी हुयी। मैं ने तुरन्त उस के उत्तर में "तर्के इस्लाम" प्राकाशित कर दी। इस के प्रकाशित होते ही मुसलमानों को इतना हार्दिक सुख मिला, जितना मई, जून के महीने में 'रोज़ा इफ़्तार के समय रोज़ादार को मिलता है। (अल्लाह से दुआ़ है कि कुबूल फ़रमाये) इस के बाद आर्य की तरफ़ से एक किताब प्रकाशित हुयी जिस का नाम "किताबुल्लाह वेद है या कुरआन"। इस के उत्तर में मैं ने "किताबुर्रहमान" लिखी। अभी थोड़ा ही ज़माना गुज़रा है कि आर्यों ने "रंगीला रसूल" के नाम से एक पुस्तक प्रकाश्ति की, जिस में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात पाक पर सख़्त नापाक हम्ले किये गये, जिस की वजह से मुल्क में इस कोने से उस कोने तक आग लग गयी। मुसलमान अगर्चे मतवाले फिरते थे कि यह क्या उन्ध ेर है कि ज़ात पाक पर ऐसे हम्ले हो रहे हैं। क्या कारण है कि कोई आ़लिम जवाब नही देता। मैं ने उस के उत्तर में "मुक़द्दस रसूल" लिखी। अल्लाह के फ़ज़्ल से यह पुस्तक भी ऐसी मक़्बूल हुयी कि इस के बाद किसी आ़लिम ने रंगीला रसूल के उत्तर में क़लम नहीं उठाया, क्योंकि उस की आवश्यक्ता ही नहीं समझी। न आर्यों ने भी इस का जवाब लिखा। राज्य गुजरात के मुसलमानों ने गुजराती भाषा में इस का तर्जुमा प्रकाशित किया। इस संदेश में आर्यों की तरफ़ से कंई रिसाले निकले जिन के उत्तर नाचीज़ की तरफ़ से दिये गये, जो मुल्क में प्रकाशित हो चुके हैं।

मिर्ज़ाइयत के रद्द में तस्नीफ़:— मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी के तअ़ल्लुक़ से मेरी इतनी पुस्तकें हैं कि अगर उन की तफ़सील लिखूँ तो मज़मून लंबा हो जाये गा और पढ़ने वालों पर बोझ हो गा, इस लिये संक्षिप्त में बतलाता हूँ कि क़ादियानी तहरीक के मुतअ़ल्लिक़ मेरी इतनी किताबें हैं कि मुझे स्वैंय उन की गिन्ती याद नहीं। हाँ, इतना कह सकता हूँ कि जिस शख़्स के पास यह किताबें मौजूद हों तो उन से क़ादियानी तहरीक के बारे में काफ़ी जानकारी हासिल हो सकती है, जिस का सबूत स्वैंय मिर्ज़ा साहब (जो क़ादियानी तहरीक के बानी हैं) की इस तहरीर से मिलता है जो उन्हों ने १५ अप्रैल १९०७ को प्रकाशित की थी, जिस का विषय था "मौलवी सनाउल्लाह के साथ अन्तिम फ़ैसला" इस के आरंभ में मेरे बारे में जो ख़ास शिकायत की गयी है वह ख़ास तौर पर देखने-सुनने के क़ाबिल है। मिर्ज़ा साहब ने लिखा है "मौलवी सनाउल्लाह ने मुझे बहुत बदनाम किया, मेरे क़िले को गिराना चाहा वग़ैरह, इस लिये मैं दुआ़ करता हूँ कि हम दोनों में जो झूठा है वह सच्चे की ज़िन्दगी में मर जाये"। कोई ख़ास समय था जब यह दुआ़ उन के मुंह और क़लम से निकली और कुबूलियत उसे लेने आयी। आज क़ादियान की बस्ती में इधर-उधर देखो ते रोनक़

बहुत पाओ गे, मगर ऐसी कि देखने वाला मिर्ज़ा साहब को मुख़ातब कर के प्रसिद्ध कवि दाग़ देहलवी मर्हूम का यह शेर सुनाये गा।

आप की बज़्म में सब कुछ है मगर दाग़ नही
आज वह ख़ाना ख़राब हम को बहुत याद आया

नोटः— क़ादियानी पुस्तकों को जमा करने और जानकारी हासिल करने में, मैं ने बड़ी मेहनत की। जिस का प्रभाव यह हुआ कि एक समारोह में मौलाना हबीबुर्रहमान मर्हूम (मदरसा देवबन्द के नाज़िम) ने मुझ से फ़रमाया था कि हम लोग तीस वर्ष तक मेहनत करें तो भी इस बारे में आप की जानकारी तक नही पहुंच सकते। मैं ने कहा: संभवतः आप का हुसने-ज़न और तवाज़ो है।

तफ़्सीरी तस्नीफ़ः— यूँ तो मेरी सब तस्नीफ़ें कुरआन ही की ख़िदमत में हैं, मगर ख़ास तफ़्सीर लिखने से भी मैं ग़ाफ़िल नहीं रहा। रोज़ाना दर्से कुरआन के अ़लावा पहले मैं ने तफ़्सीर सनाई ग़ैर मस्बूक़ शैली में लिखी जो ८ भीगों में ख़त्म हो कर मुल्क में प्रकाशित हो चुकी है। उस के थोड़े समय बाद बल्कि साथ-साथ "तफ़्सीरूल कुरआन बिकलामिर्रहमान" किखी, जिस की मुल्क में ख़ास शुहरत है। तीसरी तफ़्सीर बनाम "बयानुल फ़ुर्क़ान अ़ला ज़िल्मिल बयान" अ़रबी भाषा में लिखनी आरंभ की, जिस का एक हिस्सा सूर: बक़र: तक छप कर प्रकाशित हो चुका है और बाक़ी विचाराधीन है। तफ़्सीर के मुतअ़ल्लिक़ चौथी किताब बनाम "तफ़्सीर बिर्राय" लिखी। इस मे तफ़्सीर बिराय का अर्थ बता कर क़ादियानी, चकड़ालवी, बरेलवी और शीआ़ वग़ैरह के ग़लत तर्जुमें और तफ़्सीरों की निशान दही की है। इस का भी एक भाग छप कर लोगों के सामने आ चुका है, बाक़ी विचाराधीन है। इस के अ़लावा इस्लामी फ़िर्क़ों, शीआ़ वग़ैरह के मुतअ़ल्लिक़ कइ एक किताबें लिखीं, जो मुल्क में प्रकाशित हो चुकी हैं।

इस के अ़लावा मुनाज़िरों का सिलसिला भी जारी रहा। मुझे स्वँय इस बात पर फ़ख़ है कि मेरे बुर्जुग असातिज़ा भी बड़े-बड़े समारोहों में बड़े-बड़े मुनाज़िरे मेरे सिपुर्द करते थे, जिन में वह खुद भी शरीक होते थे। जैसे, मुनाज़िरा देवरिया जन्पद गोरखपुर, मुनाज़िरा नगीना जन्पद बिजनौर, मुनाज़िरा जबलपुर, मुनाज़िरा खूर्जा, मुनाज़िरा रामपुर। यह सब मुनाज़िरे तहरीरी होते थे, जिन की रूदादें किताबी शक्ल में प्रकाशित हो चुकी है। रामपुर का मुनाज़िरा, नवाब रामपुर नवाब हामिद अ़ली ख़ाँ मर्हूम के हुक्म से रामपुर में क़ादियानियों से हुआ था, जिस के मुतअ़ल्लिक़ नवाब साहब का सर्टीफ़िकट निम्न में हैं

"रामपुर में क़ादियानी साहिबों से मुनाज़िरा के समय मौलवी अबुल वफ़ा मुहम्मद सनाउल्लाह साहब की गुफ़्तगू हम ने सुनी। मौलवी साहब निहायत फ़सीहुल बयान हैं। उन की सब से बड़ी ख़ूबी यह है कि बर्जस्ता कलाम करते हैं। उन्हों ने अपनी तफ़्सीर में जिस विषय पर तम्हीद की, उसे दलाइल से साबित किया। हम उन के बयान से बहुत प्रसन्न हुये"। (मुहम्मद हामिद अ़ली ख़ाँ-)

(अख़बार अहले हदीस- अमृतसर १९०९)

अहले हदीस अख़्बार का जारी करना:— जब धार्मिक तब्लीग़ की ज़रूरत रोज बरोज़ बढ़ती नज़र आयी और किताबें लिखने का काम नाकाफ़ी साबित हुआ, तो अख़्बार "अहले हदीस" जारी किया गया, जो अल्लाह के फ़ज़्ल से आज तक जारी है। जिस में हर ग़लत ख़याल की इस्लाह की जाती है, हर ग़ैर मुस्लिम के आक्रमण का उत्तर दिया जाता है। अल्लाह के फ़ज़्ल से आज यह अख़्बार अपनी उम्र के ३८ वर्ष पूरे कर के ३९ वें वर्ष में चल रहा है। अख़्बार "अहले हदीस" के देखने वालों से पोशीदा न हो गा कि यह पत्रिका कितनी इस्लामी सेवा कर रही है।

मुख़्तसर यह कि जो अ़िल्मी ख़िदमत नाचीज़ की तरफ़ से हुयी, यह सल्फ़-सालिहीन की किताबों से फ़ाइदा हासिल करने से हुयी, जिन के नाम पहले ही गिनाए जा चुके हैं। ऐ अल्लाह उन की क़ब्रों को नूर से भर दे और उन से राज़ी होजा! ऐ अल्लाह! अगर जीवन के कुछ क्षण बाक़ी हैं तो उन में भी इस्लाम की सेवा ले और उसे मेरी नजात का ज़रीआ़ बना और मेरी औलाद को भी इसी राह पर चलने की तौफ़ीक़ दे। रब्बना त-क़ब्बल् मिन्ना इन्न-क अन्-तस्समीऊल् अ़लीम

अख़्बार अहले हदीस अमृतसर, पृष्ट ५/३७

२३,१, १९९४२ ईसवी-

मौलाना अमृतसरी और जमीअ़त उलमा-ए-हिन्द:— हिन्दुस्तान के मुसलमानों की सियासी राहनुमाई के लिये जमीअ़त उलमाए-हिन्द का लखनऊ में क़ियाम आप ही की कोशिशों से अ़मल मे आया। लखनऊ के समारोह में तो भरपूर कामियाबी नही मिली, मगर एक दूसरे मौक़ा पर आप ने इस तहरीक को फिर उठाया और जम्अ़ीयतुल-उलमा का एक मुख़्तसर सा ढाँचा बन गया। जिस का एक जल्सा आप ही की दावत पर अमृतसर में २६ मुर्हरमुल हराम स० १३६१ हि० को आयोजित किया गया। आप ने सदर इस्तिक़बालिया की हैसियत से खुत्बा दिया जिस से जम्अ़ीयतुल-उलमा हिन्द की बुनियाद और तिथि पर पूरी रोशनी पड़ती है। खुत्बा यह है

"इस्लामी भाइयो! इस्लाम अल्लाह का सच्चा दीन है जो इन्सानों की हिदायत के लिये आया है। इसलिये इन्सानों को उन की तमाम जरूरतों में हिदायत करता है। सहीह अ़क़ीदा और ख़ालिस अ़िबादत है, अच्छे अख़्लाक़ के अ़लावा सियासत की भी शिक्षा देता है। इस लिये ख़िलाफ़ते-राशिदा के ज़माना में यह सब काम उलमा-ए-इस्लाम के ज़िम्मा होते थे, यानी उलमा और फ़ुक़हा ही मुफ़्ती और क़ाज़ी वग़ैरह होते थे, बल्कि हुकूमत के वज़ीर और फ़ौज के जन्रल भी उलमा ही होते थे। हिन्दुस्तान में जब हर प्रकार की तहरीकों ने जन्म लिया तो सियासत ने भी जूहूर किया। मज़हबी गरोह में ज़रूरत महसूस हुयी कि सियासत को मज़हबी रंग में दिखाने के लिये उलमा की जमाअ़त क़ायम होनी चाहिये, जिस की तफ़्सील यह है।

जिन दिनों वज़ीर मारले हिन्दुस्तान में आये थे, जिन की याद में मन्टू मारले इस्कीम मश्हूर हुयी। लखनऊ में उलमा की एक सभा मौलाना अ़ब्दुल बारी नदवी की कोशिशों से आयोजित हुयी, पंजाब से मुझे बुलाया गया। इस सभा में यह राय पास हुयी कि उलमा का एक मन्डल हिन्दुस्तान

के वज़ीर की सेवा में मुसलमानों की मज़हबी ज़रूरत को पेश करे। चुनान्चे यह मन्डल उन के सामने पेश हुआ। मैं इस की तफ़्सील में नही जाना चाहता, केवल यह बताना चाहता हूँ कि उलमा की इस सभा में मैं ने यह राय दी कि सियासत में रहनुमाई के लिये उलमा की एक जमाअ़त हमेशा के लिये संगठित (मुनज़्ज़म) होनी चाहिये। लगातार दो दिन तक मेरी इस राय पर बहस होती रही, मगर ख़ास कामियाबी न मिली।

इस के बाद देहली में एक तब्लीग़ी सभा हुयी जिस में मैं भी शरीक था, फ़ारिग़ होने के बाद ख़ास लोगों की सभा में मैं ने यह तहरीक पेश की कि हमेशा के लिये उलमा की एक जमाअ़त तश्कील देनी चाहिये। इस जल्सा में मौलाना इब्राहीम साहब सियालकोटी के अ़लावा और कई एक उलमा मेरे साथ भी शामिल थे। उन्हों ने मेरी ताईद की। नतीजा यह निकला कि जम्अ़ीयत उलमा का एक हल्का-फुल्का ढाँचा तय्यार हो गया, जिस के सदर मौलाना किफ़ायतुल्लाह साहब और नाज़िम मौलाना अहमद सअ़ीद साहब मुक़र्रर हुये। उस के थोड़े समय के बाद अमृतसर में मुस्लिम लीग की एक सभा आयोजित होने वाली थी। इस आशा पर मैं ने उन दोनों साहिबों को जमीअ़त उलमा की तहरीक को कामियाब बनाने के लिये अमृतसर आने की दावत दी, ताकि अमृतसर में उलमा-ए-इस्लाम को जमीअ़त उलमा में शरीक होने की दावत दी जाये। इस्लामिया स्कूल अमृतसर में उलमा-ए-इस्लाम को जमीअ़त उलमा में शरीक होने की दावत दी जाये। इस्लामिया स्कूल की एक कोठरी में उन दोनो साहिबों के ठेहरने का इन्तिज़ाम किया गया, उन के साथ तीसरा मैं (दावत देने वाला) था। यह कोठरी क्या थी? गोया ग़ारे-सौर का एक नमूना थी। हाँ, उन दोनों स्थानो में फ़र्क़ यह था कि वहाँ दो पाक हस्तियाँ तशरीफ़ रखती थीं और यहाँ दो-तीन गुनाह गार, मग़फ़िरत के उम्मीदवार बैठे थे। जमीअ़त के इसी तुरन्त इजलास में पहला रजूलेश्न मौलाना महमूदुल हसन मर्हूम के मुतअ़ल्लिक़ पास हुआ जिस की तफ़्सील यह है:

हज़रत मौलाना अगर्चे इन दिनों मालटा में अंग्रेज़ों के बन्दी थे, ताहम अपने शार्गिदों के पास आ कर फ़रमाते थे कि मेरे बच्चो! मुझे आज़ाद कराने की कोशिश करो। ... इस का नतीजा यह निकला कि उन तीनों उलमा में सब से पहले यह तजवीज़ पास हुयी कि हज़रत मौलाना की आज़ादी के लिये वाइस राय को तार भेजा जाये। तार के ख़र्च का अनुमान तीन रूपये लगाया गया। यहाँ मैं पहुंच कर बड़ी प्रसन्नता के साथ यह बात ज़ाहिर करता हूँ क्योंकि मैं इस काम को अपने लिये अ़िज़्ज़त और नजात का ज़रीआ़ जानता हूँ कि तार का सारा ख़र्च मैं ने अदा किया। अल्लाह हमारी चेष्टओं को क़ुबूल फ़रमाए।

यह थी जमीअ़त उलमा की पहली मीटिंग और पहला रेज़ूलेशन, जो सही मानों में भविष्य के लिये एक बुनियादी पत्थर था। यहाँ चूँकि मौलाना महमुदूल हसन साहब का ज़िक्र आ गया है इस लिये मैं मौलाना के मुतअ़ल्लिक़ चन्द और बातें पेश कर दूँ तो बेजा न हो गा। मौलाना बड़े ऊँचे चोटी के आ़लिम थे। हर फ़न (विषय) की शिक्षा देते थे, मगर हदीस से आप को ख़ास लगाव था। मेरा आँखों देखा वाक़िआ़,बल्कि रोज़ना के वक़िआ़त हैं कि आप जिस चौकी पर हदीस की किताब रख कर पढ़ाते थे, मन्तिक़, फ़ल्सफ़ा की किताबें उन पर नही रखते थे, बल्कि नीचे रखते थे। यह

वाक़िआ मैं अपनी पढ़ाई के पूरे ज़माना में देखता रहा।........................ जमीअ़त की कारगुज़रियों में से एक कारगुज़ारी नमूना के तौर पर पेश करता हूँ। देहली के जल्सा में मैं ने यह मश्वरा दिया था कि आइन्दा आज़ादी हासिल करने के लिये मुसलमानों को इख़्तियार होना चाहिये कि वह अपना एक शरअ़ी निज़ाम अलग क़ाइम करें जो शरीअ़त के क़ानून के अनुसार न्याय करें। इस मुद्दे पर बहस होती रही, मगर कुछ उलमा के इख़्तिलाफ़ की वजह से कामियाबी न हुयी, मख़ालिफ़ मिंबर भी नेक नियत थे।

इसके पश्चात् लाहौर में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की सदारत (अध्यक्षता) में जमीअ़त का जल्सा आयोजित हुआ, तो मैं ने यह मुद्दा फिर उठाया, इत्तिफ़ाक़ से मेरे हम-राय सदसस्यों में मौलाना इब्राहीम सियाल कोटी वग़ैरा भी इस सभा में शरीक थे उन लोगों की ताईद से यह बिल पास हो कर लोगों के दस्तख़त (हस्ताक्षर) के साथ अख़्बार "अल जमअ़ीयत" में प्रकाशित हुआ। इस के अ़लावा वह सियासी फ़त्वा भी प्रसिद्ध है। जिस पर जमअ़ीयत ने बड़ी-बड़ी कुर्बानियाँ दीं। शहर अमृतसर भी कुबानी देने में पीछे नही रहा। अल्लाह इन कुबानियों को कुबूल कर के उन में बर्कत दे। जमीअ़त उलमा का बड़ा जल्सा मार्च के महीना में लाहोर मे होने वाला है...............

अहले हदीस अमृतसर, पृष्ट४/८४२६,　　अबुल वफ़ा सनाउल्लाह
सन १३६१ हि०　　मज्लिस इस्तिक़्बालिया, अमृतसर

जमीअ़त उलम-ए-हिन्द के अ़लावा मर्हूम एक सयम तक नदवतुल-उलमा लखनऊ के सदस्य रहे। सन १९१२ अ़ी० में नदवा की तहरीके इस्लाह के सिलसिले में जब हकीम अजमल ख़ाँ मर्हूम की दावत पर देहली में एक बहुत बड़ा इज्लास हुआ, जिस में पूरे मुल्क के पर्तिनिधि शरीक थे। मौलाना शिब्ली मर्हूम की कोशिश के नतीजा में मर्हूम (अमृतसरी) ही मज्लिस के अध्यक्ष (सदर) बने। मर्हूम ने हमेशा ही न केवल मुसलमानों को बल्कि तमाम दुनिया के इन्सानों को इत्तिफ़ाक़, इत्तिहाद प्रेम और भाई-चारा का सन्देश दिया। हिन्दुस्तान की मख़्तलिफ़ कौमों के परस्पर लड़ाई-झगड़े से परेशान हो कर मर्हूम ने लोगों को यह सन्देश दिया:-

हिन्दुस्तान के दो फाड़ हो जाने के नतीजे में आप को १४ अगस्त १९४७ के दिन अपना पैदाइशी वतन छोड़ना पड़ा। चन्द दिन लाहौर में क़ियाम किया, फिर कुछ सम्बन्धी आप को लाहौर से गुजराँवाला ले आये। यहाँ से जनवरी १९४८ में आप सरगोधा चलेगये, क्योंकि वहाँ आप के नाम एक प्रेस और मकान अलाट हो गया था। हिजरत के बाद आप की ज़िन्दगी बड़ी कठिनाइयों में गुज़री, मगर ऐसे समय में भी आप की बुज़ुर्गी, तक़्वा और ख़ौफ़े-ख़ुदा के वाक़िआत ऐसे हैं जिन को भुलाया नही जा सकता। सरगोधा में क़ियाम के दौरान वतन के छूटने और अपने इकलौते जिगर के टुकड़े (अ़ताउल्लाह) की शहादत और कुतुब ख़ाना (पुस्तक भन्डार) की बर्बादी के ग़म ने एक दिन भी आराम और चैन से न बैठने दिया। इस का असर यह हुआ कि १२ फरवरी १९४८ को आप पर फ़ालिज का आर्कमण हुआ और सवा महीना बीमार रह कर १५ मार्च १९४८ अ़ी० सोमवार के दिन सुबह के समय सरगोधा में इन्तिक़ाल फ़रमाया------- इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलैहि राजिऊन।

मुरत्तिब

मौलाना दावूद राज़० रह०

بِسْــــمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْـــمِ

पारः अलिफ़् लाम्मीम् (1)

संक्षिप्त विषय सूची

सूरः फ़ातिहा-1

सुरः फ़ातिहा मक्का में नाज़िल हुयी। इस में एक रूकूअ़, सात आयतें (२५ लफ़्ज़, १२३ हुरूफ़) हैं[१]-
शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है[२]
१. सब तारीफ़ें अल्लाह के लिये हैं जो सब जहान वालों का पर्वरिश करने वाला है, २. बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है ३. क़ियामत के दिन का मालिक भी वही है[३] ४. (ऐ हमारे मेहरबान मौला) हम तेरी ही ज़िबादत करते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं[४] (दीन में) हमें सीधी राह पर पहुंचा[५] ५. उन (बुज़ुर्गों) की राह पर (पहुंचा) जिन पर तू ने (उन की दीन-दारी की वजह से बड़े-बड़े) इनाम किये,[६] ७. न उन (बेईमान) लोगों की, जिन पर (उन की बद-अ़मली के कारण) ग़ज़ब किया गया और न उन (लोगों) की, जो (अपनी नासमझी की वजह से) गुमराह हैं[७]।

....

१. शाने नुज़ूलः- यह मुबारक सूरः मक्का शरीफ़ में उतरी (फ़त्हुल-बयान)। कुरआन मजीद में सूरतों की अहम तक़्सीम नाज़िल होने के ज़माना के लिहाज़ से की गई है। जो सूरतें हिज्रत से पहले नाज़िल हुयीं, चाहे वह मक्का शरीफ़ से बाहर ही नाज़िल हुयी हों, सब "मक्की" ही कहलाती हैं। और जो सूरतें नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हिजरत करने के पश्चात् जब कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मक्का शरीफ़ से हिज्रत फ़रमा कर मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले गये, नाज़िल हुयीं, वह "मदनी" कहलाती हैं। चाहे वह सूरतें मदीना शरीफ़ की सीमा से बाहर ही नाज़िल हुयी हों।

इस मुबारक सूरः के बारे में बुख़ारी शरीफ़ में है कि इस को "उम्मुल् किताब" इस लिये कहा जाता है कि यह कुरआन मजीद में सब से पहले लिखी गयी है और नमाज़ में भी सब से पूर्व इसी सूरः की क़िरात होती है" (बुख़ारी शरीफ़-२/६४२)

'फ़ातिहा' का लफ़्ज़ी अर्थ "शुरू करने वाली" है। यह कुरआन पाक का गोया दीबाचा (भूमिका) है जिस से कुरआन शुरू होता है। इस का एक नाम "उम्मुल-किताब" (कुरआन की माँ) भी है। कुरआन का आरंभ इसी से किया जाता है और नमाज़ भी इसी से शुरू होती है। इमाम तिर्मिज़ी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से नक़ल किया है कि "इस सूरः जैसा बर्कत वाला कलाम न तौरात में है और न ही इन्जील में, न ही किसी और

आसमानी किताब में नाज़िल हुआ। यही वह 'कुरआन अ़ज़ीम' है जो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह ने दिया है) (सनाई)

इस को 'सूरः सलात' भी कहा गया है, जैसा कि हदीसे-कुद्सी में आया है कि अल्लाह ने फ़रमाया: "मैं ने नमाज़ को अपने और अपने बन्दे के दर्मियान आधा-आधा बाँट दिया।" यहाँ नमाज़ से सूरः फ़ातिहा ही मुराद है और इस पर सब ही का इत्तिफ़ाक़ है। यह सब से बर्कत वाली सूरः है। इस की अहमिय्यत को ज़ाहिर करने के लिये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की यह हदीस काफ़ी है जिस में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिस नमाज़ी ने नमाज़ में इस सूरः को न पढ़ा उसकी नमाज़ ही नहीं होती (बुख़ारी-मुस्लिम) आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक मर्तबा मुक़्तदियों से यह भी फ़रमाया: "जब मैं बुलन्द आवाज़ से क़िरात करूँ तो तुम सूरः फ़ातिहा के अ़लावा कुरआन का कोई हिस्सा मेरे पीछे न पढ़ा करो"। इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने अपनी "जुज़उल्-क़िरात" में और इमाम तिर्मिज़ी ने अपनी "सुनन" में और इमाम अहमद ने अपनी "मुस्नद" में और इमाम बैहक़ी ने "किताबुल् क़िरात" में और बहुत से हदीस के इमामों ने भी रिवायत किया है।

इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: "इमाम के पीछे सूरः फ़ातिहा के पढ़ने के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अक्सर सहाबा और ताबेअ़ीन का इसी पर अ़मल है। और इमाम मालिक, इमाम अहमद, इब्ने मुबारक, इमाम शाफ़ेअ़ी और इमाम इस्हाक़ रह० आदि सब इमाम के पीछे सूरः फ़ातिहा पढ़ने के क़ाइल हैं (तिर्मिज़ी-२/२००,) (हदीस की किताबों, तफ़्सीर सनाई, अहादीसुत्तफ़ासीर, तफ़्सीरे मुहम्मदी आदि का खुलासा)

कुरआन पाक की तिलावत आरंभ करने से पूर्व "अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैता निर्रजीम" पढ़ना सुन्नत है। "बिस्मिल्ला हिर्रह्मानिर्रहीम्" सूरः "नम्ल" की एक आयत भी है। और दूसरे स्थानों पर एक सूरत को दूसरी सूरत से फ़र्क़ मालूम करने के लिये है। बुलन्द आवाज़ से क़िरात की जाने वाली नमाज़ों में इस (बिस्मिल्लाह) को आवाज़ के साथ और आहिस्ता, दोनों प्रकार से पढ़ना दुरूस्त है।

२. चुंकि यह सूरः बन्दों की ज़बान पर गोया एक अ़र्ज़ी (प्रार्थना-पत्र) का मुसौदा नाज़िल हुआ है, इस लिये इस के तर्जुमा से पहले "कहो" छुपा हुआ समझना चाहिये। यानी ऐ मेरे बन्दो! तुम यूं कहो" (सनाई)

३. 'दीन' से मुराद भलाई का और बुराई का अच्छा, बुरा बदला है। खुलासा यह है कि नेकी और बदी के बदले के दिन का मालिक है। (बुख़ारी-२/६२)

४. इस आयत से स्पष्ट तौर पर मालूम होता है कि हर प्रकार की इ़बादत बदनी, माली, क़ल्बी, क़ौली, अ़मली, सब अल्लाह के लिये ख़ास है और अल्लाह के अ़लावा किसी दूसरे से मदद (सहायता) माँगना जाइज़ नहीं है। (सल्फ़िय्या)

५. यह पहला मौक़ा है कि कुरआन करीम में दुआ़ का न केवल ज़िक्र आया है, बल्कि उसकी शिक्षा भी दी गयी है। कुरआन करीम और हदीस शरीफ़ से यह बात स्पष्ट रूप से साबित होती है कि दुआ़ जब दिल की तवज्जुह से की जाये, तो अवश्य ही क़ुबुल होती है। मगर इस ज़माना के मुहक़्क़िक़ (रिसर्च स्कालर) सर सय्यद अहमद ख़ाँ रह० इस मामले में न केवल मुसलमानों, बल्कि तमाम ही लोगों के मुख़ालिफ़ हो बैठे हैं और दुआ़ के क़बूल होने का वह अर्थ नहीं मानते हैं जो सब लोग लेते हैं। (सनाई)

६. इस से चार गरोह मुराद हैं १. नबियों २. सिद्दीकों ३. शहीदों ४. नेक लोगों का गिरोह। और 'मग़ज़ूब' और 'ज़ाल्लीन' से यहूद और नसारा मुराद हैं।

'ज़्वाद' और 'ज़ो' की क़िरात में बहुत बारीक अन्तर है। इस लिये सहीह बात यही है कि यह फ़र्क़ (अन्तर) माफ़ है (मुहम्मदी) "फ़तावा क़ाज़ी खाँ" में है कि अगर बिला इरादा किसी ने 'ज़्वाद' को "ज़ो" अथवा "ज़ाल" की तरह अदा कर दिया, तो उस की नमाज़ फ़ासिद नहीं होगी। इसलिये कि "ज़्वाद" और "ज़ो" मख़्रज (अदा करने) के लिहाज़ से ८-९ बातों में बराबर हैं। लेकिन 'ज़्वाद' और 'दाल' में कोई मुनासिबत ही नहीं है।

(विस्तार से देखें-तफ़्सीर बैज़ावी, तफ़सीर कबीर, दुर्रि मुख़्तार, फ़तावा आलम गीरी आदि)

७. सूरः फ़ातिहा को पढ़ कर जेहरी नमाज़ों में "आमीन" बुलन्द आवाज़ से कहना सुन्नत है। सहीह हदीसों में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जेहरी नमाज़ों में ऊँची आवाज़ से "आमीन" कहते और मुक़्तदी भी इतनी ऊँची आवाज़ से आमीन कहते थे कि मस्जिद गूँज उठती थी। (बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अहमद, इबने माजा वग़ैरह)

बहुत सारी सहीह हदीसों की रोशनी में तामाम मुहद्दिसीन, इमाम शाफ़ेई, इमाम मालिक, इमाम अहमद बिन हम्बल और बहुत सारे उम्मत के नेक और बुज़ुर्गों का यही मज़हब है कि जेहरी (जिस नमाज़ में क़िरात बुलन्द स्वरों में की जाती है) नमाज़ों में "आमीन" ऊँची आवाज़ से बोलना नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत है। 'आमीन' का अर्थ है "ऐ हमारे मेहरबान मौला! हम गुनाह-गारों की प्रार्थना कुबूल फ़रमा" (सनाई) बिस्तर पर लेटते समय सूरः "फ़ातिहा" और "कुल हुवल्लाह" पढ़ कर सोना हर ख़तरे से सुरक्षित हो जाना है। (इब्ने कसीर)

बाज़ रिवायतों में आमीन से चिड़ने वालों को यहूद की सी ख़सलत (स्वभाव) व आदत रखने वालों की निशानी बताया गया है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को हक़ की छान-बीन करने और उस को मानने की तौफ़ीक़ बख़्शे .... आमीन! (दावूद राज़)

★★★★★

अलिफ़ लाम्मीम् (1)

सूरः ब-क़्-रः (2)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ
الٓمّٓ ۚ ذٰلِكَ الۡكِتٰبُ لَا رَيۡبَ ۛۚ فِيۡهِ ۛۚ
هُدًى لِّلۡمُتَّقِيۡنَ ۙ الَّذِيۡنَ يُؤۡمِنُوۡنَ
بِالۡغَيۡبِ وَيُقِيۡمُوۡنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا
رَزَقۡنٰهُمۡ يُنۡفِقُوۡنَ ۙ وَالَّذِيۡنَ
يُؤۡمِنُوۡنَ بِمَآ اُنۡزِلَ اِلَيۡكَ وَمَآ اُنۡزِلَ
مِنۡ قَبۡلِكَ ۚ وَبِالۡاٰخِرَةِ هُمۡ يُوۡقِنُوۡنَ ؕ

सूरः बक़्रः मदीना शरीफ़ में उतरी[१] इस में ४० रूकूअ़, २८६ आयतें ६०२१ लफ़्ज़, २० हज़ार हुरूफ़ हैं[२]।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. अलिफ़ लाम्मीम्[३] २. यह किताब (जिस का नाम कुरआन शरीफ़ है) बिला शक (सहीह और मेरी तरफ़ से) है। अल्लाह से डरने वालों के लिये हिदायत है[४] ३. जो (बिंन देखे) ग़ैब की बातें (अल्लाह के आदेश के अनुसार)मानते हैं[५] ओर नमाज़ (को ऐसा) अदा करते हैं (कि पाँचों वक़्त जमाअ़त से पढ़ते हैं)[६] और हमारे दिये से ख़र्च करते हैं[७] ४: और वह जो (ऐ पैग़म्बर) तेरी तरफ़ उतरी हुयी किताब और तुझ से पहलेउतरीहुयी (किताबें) भी मानते हैं[८]। और यही लोग क़ियामात को मानते हैं[९]

....

१. इस सूरः की हदीसों में बड़ी फ़ज़ीलत आई है। तिर्मिज़ी वग़ैरह की एक रिवायत में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमांया: "यह सूरः क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों के साथ आयेगी और अल्लाह तआ़ला से उस के बारे में वकालत के तौर पर बात करेगी उसकी सिफ़ारिश में कहेगी कि ऐ अल्लाह! बन्दे ने मुझे तेरा कलाम जान कर पढ़ा और मुझ पर अ़मल किया उसको क्षमा कर दे"। इसी प्रकार हर एक पढ़ने वाले की सिफ़ारिश कर के माफ़ कराएगी।(तफ़्सीर सनाई) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "सूरः बक़्रः कुरआन का कोहान है। इस की एक-एक आयत के साथ ८० फ़रिश्ते उतरते थे। और विशेष कर "आयतुल-कुर्सी" तो अ़र्श के ख़ज़ाने में से एक ख़ज़ाना नाज़िल किया गया है"। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया: "सूरः बक़्रः सीखो! उस को सीख लेना बर्कत का सबब है और उस को छोड़ देना अफ़सोस की बात है। (यानी उस पर ईमान व यक़ीन न लाने और उस के अनुसार अ़मल न करने वाले और उसकी हिदायत से वन्चित रहने वाले मरने के बाद क़ियामत के दिन शर्मिन्दा होंगे। यह वह मुबारक सूरः है कि जिस ने जादू-टोनों का पोल खोल दिया है। ऐसे वहमी लोग इस सूरः की हिदायत से वन्चित हैं)

फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कुछ देर चुप रहने के बाद बोले: सूरः बक़्रः और "सूरः आले अिम्रान" ➲

सीखो, यह दोनों नूरानी सूरतें हैं, अपने पढ़ने वालों पर छांव या बादल, या परिन्दों के झुन्ड की तरह क़ियामत के दिन साया करें गी। कुरआन मजीद का पढ़ने वाला जब क़ब्र से उठेगा तो देखेगा कि एक नौजवान बहुत अधिक सुन्दर, नूरानी चेहरे वाला उस के निकट खड़ा है और कहता है कि क्या आप मुझे पहचानते हैं? यह कहेगा कि नहीं, तो वह उत्तर देगा कि मैं कुरआन हूँ, जिसने तुम्हें दिन में भूखा-प्यासा रखा और रातों को बिस्तरों से दूर और जगाये रखा, हर शख़्स अपनी तिजारत के पीछे है, लेकिन आज सब कारोबार तेरे पीछे हैं। अब तुमको जन्नत का वारिस बनाया जायेगा और तुम्हारे सर पर बुज़ुर्गी और बड़ाई का ताज रखा जायेगा और बुलन्द दर्जे दिये जायेंगे (तफ़्सीर मुहम्मदी वग़ैरह)

इस मुबारक सूरः की अक्सर, बल्कि क़रीब-क़रीब तमाम आयतें नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मदीना शरीफ़ में ठहरने के ज़माने में (हिजरत के बाद) नाज़िल हुयीं हैं। कहीं-कहीं किसी मक्की आयत का शामिल हो जाना इस सूरः के मदनी होने में रूकावट नहीं (माजिदी) इस सूरः की पहली चन्द आयतें मालिक बिन हनीफ़ यहूदी की बक्वास और खुराफ़ात की रद्द में नाज़िल हुयीं। वह कहता था कि यह क़ुरआन वह किताब नहीं है जिस की सूचना पहले की किताबों में दी गयी है। अल्लाह तआ़ला ने इस सूरः की पहली चन्द आयतों को उतार कर इस शक व संदेह को दूर किया। और पहली चार आयतों में मुसलमानों की विशेषतायें और दो आयतों में काफ़िरों की आलोचना और २३ आयतों में मुनाफ़िक़ों की बुराई बयान फ़रमाई है। इस सूरः में एक हज़ार कामों के करने का आदेश दिया गया है और एक हज़ार कामों के करने से रोका गया है और एक हज़ार ख़बरें हैं (सल्फ़िय्या)

२. इस संबन्ध में विस्तार से "तफ़्सीर माजिदी" में देखा जा सकता है। (दावूद राज़)

३. इन का अर्थ बतलाने में बड़ा इख़्तिलाफ़ किया गया है, जिस के बारे में तफ़्सीर "इत्क़ान" और तफ़्सीर "मआ़लिम" में बयान है। मेरे निकट ज़्यादा सहीह वह माना है जो हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि हर एक हर्फ़ अल्लाह के नाम और सिफ़ात को ज़ाहिर करता है। इसी लिये मैंने अलिफ़ का यह तुर्जुमा किया है "मैं हूँ अल्लाह बड़े अ़िल्म वाला" और यह हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से साबित है (सनाई) लेकिन बुज़ुर्ग सहाबा और ताबेअ़ीन में से अक्सर और जमहूर मुफ़स्सिरीन का मस्लक यह है कि यह हुरूफ़ कुरआन की उन मुतशाबिह आयतों में से हैं, जिन के बारे में अल्लाह ने विशेष कारणों से आ़म बन्दों को नहीं बताया। चारों ख़लीफ़ा, बड़े-बुज़ुर्ग ताबेअ़ीन, मुहद्दिसीन और मुफ़स्सिरीन का यही मज़हब है (इब्ने कसीर)

४. मख़्लूक़ तीन प्रकार की हैं (१) जिनको इस बात की जानकारी है कि हमारा कोई मालिक है जो हम से हमारे कर्मों के संबन्ध में प्रश्न करेगा। ऐसे लोग हमेशा अल्लाह से डरते रहते हैं (२) दूसरे वह लोग हैं जो सदा अपनी बातों को दूसरों से ऊपर ही रखते हैं, चाहे उन की बातें ग़लत ही क्यों न हों। बल्कि सच कहने वालों के दुश्मन बन जाते हैं। (३) तीसरे वह हैं जिनको अपने काम से काम है। न इस्लाम से दोस्ती और न ही कुफ़्र से दुश्मनी। बस यह कुरआन निः संदेश पहली क़िस्म के लोगों के लिये हिदायत है। (सनाई)

५. 'ईमाम शब्द का पूरा अर्थ है अल्लाह तआ़ला, उस की किताबों और उस के रसूलों पर ईमान लाना और इस दावे का अ़मल के साथ सबूत पेश करना। 'ईमान' घटता और बढ़ता रहता है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास और हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि क़ियामत, जन्नत, जहन्नम, अल्लाह के पास उपस्थिति (हाज़िरी), यह सब बातें ग़ैब में दाख़िल हैं। और मुराद इससे वह छुपी हुई चीज़ें हैं जो हमारी आखों को दिखाई नहीं पड़ती हैं। (इब्ने कसीर वग़ैरह)

६. 'नमाज़ को अदा करते हैं' अर्थात नमाज़ को उस के हुक़ूक़ के साथ बजा लाते हैं। (जलालैन) क़तादा रह० कहते हैं कि समय को ध्यान में रखना, अच्छी तरह से वुज़ू करना, रूकूअ़ और सज्दे पूरी तरह करना, इस का नाम "नमाज़ क़ाइम करना" है। (इब्ने कसीर) सफ़ों को सीधी करना, पैरों से पैर, टख़नों से टख़ना, कन्धों से कन्धा मिलाकर जमाअ़त में खड़ा होना भी "नमाज़ क़ाइम करना" में शामिल है (बुख़ारी,मुस्लिम) इस लिये सहीह और सच्ची नमाज़ वही है जो इन तमाम ज़ाहिरी व बातिनी बातों को सामने रख कर अदा की जाये, वर्ना वह नमाज़

➲उल्टा गले का हार बन जाने वाली है।

७. इमाम इब्ने जरीर रह० फ़रमाते हैं कि यह आयः "ज़कात" बाल-बच्चों और इन के अ़लावा जिन लोगों पर ख़र्च करना आवश्यक है, इन सब के लिये आ़म है और इन सब के देने को शामिल है।(इब्ने कसीर)

८. यह बात स्पष्ट रहे कि क़ुरआन करीम ने जिन पहली किताबों की तस्दीक़ की है, वह आजकल की मौजूदा किताबें नहीं हैं। इन किताबों में फेर-बदल कर के इन को तो साहित्य की झूठी-सच्ची पुस्तकों की तरह बना दिया गया है। हमारे इस दावे का सुबूत इन किताबों की तर्ज़ (शैली) ही बता रही है। तौरात और इन्जील को आरंभ से अन्त तक पढ़ने से साफ़ ज़ाहिर हो रहा है कि इन के बनाने वाले हज़रत मूसा और ईसा अ़लैहिस्सलाम के अ़लावा और कोई हैं। चुनांचे हज़रत मूसा अ़लै० के देहान्त के बाद का ज़िक्र भी इस (तौरात) में मौजूद है।(सनाई)

९. यह छठी और अन्तिम सिफ़त उन नेक लोगों की बयान की गयी है जो कुरआन से लाभ उठाते हैं। "आख़िरत" से मुराद वह दुनिया है जो इस दुनियावी ज़िन्दगी के समाप्त होने के बाद आरम्भ होगी। उसे आख़िरत इस लिहाज़ से कहा जाता है कि वह दुनिया इस दुनियावी ज़िन्दगी के अन्त के बाद पेश आयेगी। कुरआन मजीद में उन ज़िन्दगी का ज़िक्र कहीं "आख़िरत का घर" और कहीं केवल "आख़िरत" के साथ आया है, दोनों ही का हासिल (परिणाम) एक है।(इब्न जरीर) अच्छे और बुरे कर्मों का फल भोगने के लिये मुस्तक़िल आने वाली दुनिया पर यक़ीन रखना सच्चे दीन की पहचान में से है। यहीं से उन तमाम ग़लत धर्मों का रद्द हो गया जो कहने को तो मज़हब हैं, लेकिन या तो वह जज़ा और सज़ा (आख़िरत) को मानते ही नहीं हैं, या मानते तो हैं लेकिन उनका कहना है कि इसी दुनिया ही में बदला मिलेगा। चाहे एक ही शक्ल में या फिर कई-कई शक्लों में।(जैसे कुत्ता, बिल्ली, गाय, बैल की शक्ल में)

आज-कल के कुछ गुमराह लोगों ने "आख़िरत" का अर्थ "आख़िर ज़माना की वह्यि" बताया है, ताकि उन की मनघड़त नुबुव्वत के जारी रहने का सिलसिला कुरआन से साबित हो सके। लेकिन यह न तो तर्जुमा है न तफ़्सीर, यह तो केवल कुरआन और अ़रबी भाषा के साथ एक मज़ाक़ है। 'यक़ीन' का अर्थ यह नहीं है कि अक़्ल किसी अ़क़ीदा को मान ले, या दिमाग़, ज़बानी तौर पर ज़बान से इक़रार कर ले, जैसा कि विज्ञानिक सिद्धान्तों के साथ मामला रहता है, बल्कि "यक़ीन" यह है कि उन मस्अलों पर दिल व जान से अ़क़ीदा बैठ जाये। "यक़ीन" की राह, शक-शुब्हा, ख़याल और संदेह से अलग है। (तफ़्सीर माजिदी)

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ
تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ
سَمْعِهِمْ ۖ وَعَلَىٰ أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ
عَظِيمٌ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَ
بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُم بِمُؤْمِنِينَ ۝ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَ
الَّذِينَ آمَنُوا وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝
فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا

५. (बिशक) यही लोग अपने रब के आदेश पर (चलने वाले) हैं और (बिशक) यही लोग मुराद को पहुंचने वाले हैं६. (हाँ) वह लोग जो (कीना के सबब हक़्क़ानियत {सच्चाई से}) इन्कारी हैं (यानी) जिन को तेरा समझाना और न समझाना बराबर है, वह (इस किताब को) नहीं मानेंगे[१०] ७. अल्लाह ने उन के दिलों को (हक़ सुनने से) बन्द कर दिया है। और उन की आँखों पर पर्दा है और उन को दन्ड (भी) बड़ा (ही) होगा ८. और कुछ लोग ऐसे हैं जो (मुसलमानों से दोस्ती पैदा करने को) कहते हैं कि हम अल्लाह (को मानते) और क़ियामत➲

تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ ۙ قَالُوْٓا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ﴿١١﴾
اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢﴾ وَاِذَا
قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ
كَمَآ اٰمَنَ السُّفَهَآءُ ۭ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَلٰكِنْ

पर यक़ीन रखते हैं, हालाँकि दिल में उन के ईमान नहीं[११] ९. अल्लाह को और आ़म मुसलमानों को धोका देते हैं और (याद रखें कि) अपनी जानों ही को धोका देते हैं लेकिन (अपनी नादानी से) समझते नहीं १०. उन के दिलों में (तो) बीमारी है, पस अल्लाह ने भी उन की बीमारी ज़्यादा कर दी और उन को उन के झूठ बोलने के कारण दुःखदाई दन्ड होगा ११. और (फिर तमाशा यह कि) जब कभी कोई उन से कहे कि (झूठ बोलकर) मुल्क में फ़साद न करो तो (झट) कहते हैं कि हम तो पक्के मुस्लिह {सुधार करने वाले} हैं १२. होशियार रहो! (कि) बेशक यही फ़साद फैलाने वाले हैं मगर (समझते) सोचते नहीं [१२/१] १३. और जब कोई (मश्वरा के तौर पर) उन से कहता है कि (मुसलमान) लोगों की तरह ईमान लाओ, तो कहते हैं क्या हम बेवक़ूफ़ों की तरह मान जायें? होशियार रहो! वही बेवक़ूफ़ हैं लेकिन नहीं जानते[१२/२]।

....

१०. कुफ़्र की चार क़िस्में हैं। (१) न तो अल्लाह को पहचाने और न ही उस का इक़रार करे। इसे "इन्कार का कुफ़्र" कहते हैं (२) अल्लाह को तो दिल से सच जानना, मगर ज़बान से इक़रार न करना। इसे "कुफ़्रे जुहूद" कहते हैं। (३) अल्लाह को दिल से हक़ जाने और ज़बान से भी इक़रार करे, मगर आज्ञा न माने। इस का नाम "कुफ़्रे ज़िनाद" है। (४) ज़बान से अल्लाह के हक़ होने का तो इक़रार करे, मगर दिल में यक़ीन न हो। इसे "कुफ़्रे निफ़ाक़" कहते हैं। (मआ़लिम) "कुफ़्र" अल्लाह ही के साथ मख़्सूस नहीं है, बल्कि तमाम नुसूस और दीनी ज़रूरतों के मुतअ़ल्लिक़ यही तक़्सीम होगी।(माजिदी)

११. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब मदीना में आये और आप की इज़्ज़त व मर्तबा और प्रताप बढ़ने लगा और नेक लोग लगातार दीने इस्लाम में शामिल होने लगे तो दुनिया-दारों को इस के अ़लावा कुछ न सुझाई दिया कि ज़ाहिर में तो इस्लाम लायें और अन्दर ही अन्दर अपनी दुश्मनी को छुपाये रखें। जिस प्रकार का आदमी मिले उस के साथ वैसे ही हो जायें और मुसलमान के साथ अल्लाह-अल्लाह और ब्रह्मणों के साथ राम-राम वाली कहावत पर अ़मल करें। इन की इस मक्कारी से आ़म लोग धोका खाने लगे और इस्लाम की तरक़्क़ी और फैलाव में रूकावट का ख़त्रा हो गया इसलिये अल्लाह तआ़ला ने इन दुनिया-दारों के हाल से अपने नबी को अवगत कराना चाहा और कुरआन मजीद में इन की मक्कारियों का बयान इस आयत में किया।(सनाई)

१२/१. हज़रत अ़ली रज़ि० ने एक बार अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि और उस के मित्रों से कहा कि अल्लाह से डरो और निफ़ाक़ छोड़ दो। ज़ाहिर में मुसलमान और दिल से काफ़िर रहना बुरी बात है। उन्होंने उत्तर दिया कि ऐ अबुल् हसन! आप हमारी तरफ़ निफ़ाक़ का ख़याल रखते हैं? हालाँकि हम सच्चे मुसलमान हैं। अल्लाह तआ़ला ने इस के रद्द में यह आयतें नाज़िल फ़रमायीं।

१२/२. मतलब यह है कि जब उन मुनाफ़िक़ों को सहाबा की तरह अल्लाह तआ़ला पर, उस के फ़रिश्तों, किताबों और रसूलों पर, मौत के पश्चात् जीवित होने और जन्नत और जहन्नम आदि पर ईमान लाने को कहा जाता है, तो यह अभागे ऐसे ईमान को जाहिलों और बेवक़ूफ़ों का ईमान बताते हैं।(इब्ने कसीर)

لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَإِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَ
إِذَا خَلَوْا إِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ قَالُوْٓا إِنَّا مَعَكُمْ ۙ إِنَّمَا نَحْنُ
مُسْتَهْزِءُوْنَ ۝ اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُوْنَ ۝ أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى
فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝
مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا ۚ فَلَمَّآ أَضَاءَتْ
مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِيْ ظُلُمٰتٍ
لَّا يُبْصِرُوْنَ ۝ صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ۝
أَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ ۚ
يَجْعَلُوْنَ أَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ
الْمَوْتِ ۚ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝ يَكَادُ الْبَرْقُ
يَخْطَفُ أَبْصَارَهُمْ ۚ كُلَّمَآ أَضَاءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ ۙ وَإِذَآ
أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ۚ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ

१४. और मुसलमानों से मिलते हैं तो कहते हैं हम (बहुत मुद्दत से) मुसलमान हैं और जब अपने बड़े काफ़िरों से एकान्त में मिलते हैं तो कहते हैं कि हम तो (अस्ल में) तुम्हारे साथ (मुत्तफ़िक़) हैं (मुसलमानों से तो) हम केवल मस्ख़री करते रहते हैं १५. अल्लाह उन से मस्ख़री करे गा (उन की मस्ख़री की सज़ा देगा) और उनकी सर्कशी के कारण उन को खींचेगा (अपनी सर्कशी में) हैरान फिरेंगे[13] १६. यही तो हैं जिन्हों ने (कुरआन की) हिदायत के बदले गुमराही ले ली है इस लिये उन की तिजारत लाभ-दायक न हुयी और न उनको (तिजारत करने का) ढब है (वर्ना ऐसे घाटे की वस्तु हर्गिज़ न ख़रीदते) १७. उन की मिसाल (बिल्कुल) उस (शख़्स) की तरह है जिस ने (किसी जंगल में उंजाला करने को) आग जलाई, फिर जब उस (आग) ने उस के आस-पास को रोशन किया, उन का नूर अल्लाह ने छीन लिया और उन को अंधेरों में छोड़ रखा है, कुछ नहीं देखते १८. (कुरआन शरीफ़ सुनने से) बहरे हैं, गूँगे हैं, अन्धे हैं इसलिये यह नहीं लौटेंगें १९. या (उन की) मिसाल वर्षा की सी है जो आकाश से उतरी, उस में अंधेरा और गरज और बिजली (भी) है (पस वह) कड़क की आवाज़ पर मौत से डरते हुये अपनी उँगलियाँ कानों में देते हैं और (यह भागना उनको कुछ भी लाभ न देगा, इसलिये कि) अल्लाह ने सब काफ़िरों को घेर रखा है[14] २०. क़रीब है कि बिजली उनकी (आखों की) रौशनी को उचक ले। जब कभी उन पर रौशनी होती है तो (उस को ग़नीमत जान कर) उस में चल देते हैं और जब (बादलों के कारण) उन पर अंधेरा होता है तो रूक जाते हैं। और अगर अल्लाह चाहता तो उन के (ज़ाहिरी) कान और आँखें भी छीन लेता।

....

१३. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने कहा कि मुनाफ़िक़ जो मुसलमानों का हँसी-मज़ाक़ उड़ाते हैं उस के बदले में उन के साथ भी क़ियामत के दिन यह हँसी की जायेगी कि उनके लिये जन्नत का दरवाज़ा खोला जायेगा और उनको जन्नत की तरफ़ भेजा जायेगा, लेकिन जब वह उस के निकट पहुँचेंगे तो जन्नत का दरवाज़ा बन्द हो जायेगा, मुनाफ़िक़ों को फ़रिश्ते वहाँ से धक्के देकर जहन्नम की ओर हाँक देंगे ताकि उन की अच्छी तरह ज़िल्लत व रूस्वाई हो। (जामिउल्-बयान)

१४. हज़रत इब्ने अ़ब्बास, हज़रत इब्ने मस्ऊ़द और दूसरे सहाबा रज़ि० से रिवायत है कि दो शख़्स मदीना के मुनाफ़िक़ों

➲में से थे, वह एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मुँह मोड़ कर मुश्रिकों की तरफ़ भाग खड़े हुये। रास्ते में वर्षा ने उन्हें घेर लिया जिस में बिजली और कड़क-चमक वग़ैरह बहुत सख़्त थी, तो जब कड़क ज़्यादा होती, वह दोनों अपने कानों में उँगलियाँ देते थे और जब बिजली की रोशनी होती तो कुछ रास्ता चल लेते और जब अंधेरा हो जाता तो खड़े हो जाते। इस प्रकार वह वापस लौट कर अपने घरों को आते और कहते थे कि किसी तरह जल्द सुब्ह हो तो हम फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर हो कर तौबा कर लें और पुन: बैअ़त कर लें, चुनान्चे सुब्ह को पहुँच कर सच्ची तौबा की और सच्चे मुसलमान हो गये।

अल्लाह पाक ने उन दोनों के हाल का उदाहरण और कहावत उन मुनाफ़िक़ों के वास्ते बयान फ़रमाई जो मदीना में थे, जिन का यह हाल था कि आप की सभा में आते और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम कुछ फ़रमाते, तो इस डर से कानों में उगँलियाँ दे लेते कि संभवत: हमारी आलोचना में कोई आय: नाज़िल हुयी हो, या हमारे क़त्ल के बारे में कोई आदेश उतरा हो। और जब उन मुनाफ़िक़ों के माल और औलाद में बढ़ोतरी होती या जंग में फ़त्ह के बाद ग़नीमत के माल में हिस्सा मिलता, तो कहते कि यह दीन अब साबित हो गया, इसलिये दीन पर मज़बूती से जम जाने का इरादा करते। और जब माल व औलाद में कुछ नुक़सान पहुंच जाता, या मुसलमानों को कहीं पराजय हो जाती या कोई और रन्ज व तक्लीफ़ पहुंचती तो कहते कि इस दीन की नहूसत से यह सब कुछ हुआ है और मुर्तद हो जाते। (हदीसुत्तफ़ासीर)

وَاَبْصَارِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ۝٢٠ يٰۤاَيُّهَا
النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝٢١ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ
فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً ۖ وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ
بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّ
اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٢٢ وَاِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى
عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ۖ وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٢٣ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا
وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِىْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَ
الْحِجَارَةُ ۖۚ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ۝٢٤ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ ؕ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا
هٰذَا الَّذِىْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمْ

अल्लाह तो निः संदेह हर एक काम कर सकता है २१. (अब हम तुम्हें) ऐ लोगो! (एक आवश्यक कार्य बतलाते हैं, वह यह कि) तुम अपने मौला की अ़िबादत करो जिस ने तुम को और तुम से पहले के लोगों को पैदा किया शायद तुम (उस के दन्ड से जो अवज्ञा करने वालों पर आने वाला है) बच जाओ[१५] २२. (ऐसे मालिक की अ़िबादत से मुँह फेरना कैसी नासमझी है) जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछौना बनाया और आकाश को छत और (इस के अ़लावा हमेशा) तुम्हारे लिये आकाश से वर्षा उतारता है, फिर उस के साथ तुम्हारे लिये हर प्रकार के फलों से रोज़ी पैदा करता है, इसलिये तुम जान-बूझ कर (उस) अल्लाह के लिये शरीक न बनाओ[१६] २३. और अगर तुम्हें उस (किताब की सच्चाई) में संदेह हो जो हम ने अपने बन्दे (मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर उतारी है, तो तुम भी उस जैसा एक टुकड़ा बना लाओ और अल्लाह के अ़लावा अपने सब मदद-गारों को बुला लो (जो तुम को इस मुक़ाबला में कामयाब करा लें) अगर (इस दावा➲

में) सच्चे हो[१७] २४. पस अगर न करो और (हम तो अभी से कहे देते हैं कि तुम) न करोगे तो (कीना से रूक जाओ और) उस आग से बचो जिस का ईंधन (मुश्रिक) आदमी और (उनके झूठे माबूदों के) पत्थर होंगे, तैयार की गई काफ़िरों के लिये[१८] २५. और जो लोग ईमान ला कर नेक काम करते हैं उन को शुभ सूचना दे कि उन के लिये (अल्लाह के पास) बाग़ हैं, जिन के (मकानों के) नीचे नहरें बह रही हैं। जव कभी उन को कोई फल खाने को मिलेगा वह (थोड़े से फ़र्क़ की वज़ह से) कहेंगे कि यह तो वही है जो हमें अभी मिला था (इस की वजह यह होगी कि) उन को (दुनिया के फलों से) मिलता-जुलता ही मिलेगा।

....

१५. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं जिस स्थान पर भी "अ़िबादत करो" का आदेश आया है उस का यही अर्थ है कि अल्लाह को एक जानो, शिर्क से बचो और तौहीद इख़्तियार करो। हज़रत शाह वलिय्युल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला को जहान का पैदा करने वाला, ज़मीन व आकाश का पैदा करने वाला तो सभी जानते और मानते थे, जैसा कि कुरआन की बहुत सी आयतों से साबित है। लेकिन कुरआन करीम और दूसरी आसमानी किताबों ने जिस तौहीद की ओर दावत दी है वह यह कि बन्दगी और अ़िबादत के जितने भी कार्य हैं उन सब का हक़दार केवल अल्लाह को समझा जाये। और हर प्रकार की माली, क़ौली, अ़मली और क़ल्बी अ़िबादत केवल उसी के लिये की जाये। हज़रत शाह साहब फ़रमाते हैं कि मुश्रिकों का ख़याल है कि अल्लाह के नेक बन्दे अपनी नेकियों की वजह से अल्लाह की अल्लाही (हुकूमत) में शामिल हो गये और अब नेक बन्दों की नज़्र-नियाज़ करना, उन का नाम उठते-बैठते लेना, अपनी आवयश्क्ताओं को पूरी करने के लिये उन को पुकारना, यह अल्लाह की अ़िबादत में शामिल हैं, और यह वह मर्ज़ है जिस में यहूद, नसारा, मुश्रिकीन और इस उम्मते मुहम्मद के दीन इस्लाम का दम भरने वाले कुछ मुनाफ़िक़ आज तक गिरफ़्तार हैं (हुज्जतुल्लाहिल्-बालिग़ा-६१) ऐ अल्लाह तू हम को सच्चे दीन पर साबित क़दम रख- आमीन!

१६. 'अन्दाद' का अर्थ है "साझी दार, बराबर"। यह 'निद्द का बहुवचन है। मुजाहिद रह० फ़रमाते हैं कि तुम तौरेत, इन्जील पढ़ते हो और जानते हो कि अल्लाह तआ़ला एक, बेमिस्ल है, उसका कोई शरीक यानी साझी-दार नहीं, फिर जानते हुये क्यों अल्लाह का शरीक बनाते हो। मनुष्य का यह कहना भी शिर्क है कि "अगर यह कुत्ता न होता तो रात को अवश्य चोर घर में घुस आते," या "अगर यह बतख़ घर में न होती तो चोरी हो जाती," या इस प्रकार कहना कि "जो अल्लाह चाहे और आप चाहें" यह भी शिर्क है। और यूँ कहना भी शिर्क है कि "अल्लाह न होता और फ़लाँ न होता तो यह काम बिगड़ जाता"। यह सब अल्लाह के लिये अन्दाद (शरीक ठहराना) है। (तफ़्सीर मुहम्मदी-तर्जुमा इब्ने कसीर)

१७. इस आयत में अल्लाह तआ़ला कुरआन मजीद की सदाक़त बयान फ़रमाता है। अर्थ इस का यह है कि ऐ मक्का के काफ़िरो! अगर तुम इस कुरआन को सच्ची किताब नहीं मानते तो इस सूरत जैसी एक सूरत ही बना लाओ। अगर न बना सको, और यक़ीन है कि नहीं बना सकते हो, हालाँकि तुम भी इस रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की तरह आदमी हो, बल्कि उस नबी से थोड़ा बहुत दुनिया-दारी के मामलात को समझने में ज़्यादा जानकार भी हो, तो फिर क्या कारण है कि वह तो बना सके और तुम न बना सको। इस से मालूम होता है कि उस नबी के अन्दर कोई ताक़त तुम से ज़्यादा है जो तुम में नहीं है। और वह शक्ति यही है कि "यह नबी अपनी तरफ़ से कुछ भी नहीं कहता है, वह केवल वही कुछ कहता है जो उस पर वह्यि की जाती है" (सूर: नज्म ५३/३४)

यह निचोड़ है इस आय: के मफ़्हूम का। रही यह बात कि 'मिस्ल्' से क्या मुराद है? तो नये-पुराने तमाम ही मुफ़स्सिरों का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि 'मिस्ल्' से मुराद बलाग़त है। तफ़्सीर अबू सऊद, फ़त्हुल् बयान, इब्ने कसीर,

कश्शाफ़, मआलिम, बैज़ावी, जामिउल- बयान, जलालैन, सब का यही कहना है। (सनाई)
१८. हज़रत अनस रज़ि० रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस आयः को पढ़ कर फरमाया: जहन्नम की आग को एक हज़ार वर्ष धौंका गया तो वह लाल हो गयी, फिर एक हज़ार वर्ष और धौंका गया तो वह काली हो गयी। अब वह काली अंधेरी है। और उस की लपट किसी भी समय कम नहीं होती। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सभा में उपस्थित एक हब्शी इस बयान को सुन कर बेचैन हो गया और रोने लगा। उस के अल्लाह से डरने की बिना पर अल्लाह ने तुरन्त हज़रत जिब्रील द्वारा वह्यि भेजी कि मुझ को मेरी प्रतिष्ठा और जलाल की क़सम! जिस बन्दे की आँख दुनिया में मेरे ख़ौफ़ से रोयेगी, मैं उसे जन्नत में हँसाऊँगा और उसे अ़ैश व आराम, चैन व शान्ति अ़ता करूँगा (तर्ग़ीब व तर्हीब)

فِيهَآ أَزْوَٰجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۖ وَهُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٢٥﴾ إِنَّ ٱللَّهَ
لَا يَسْتَحْىِۦٓ أَن يَضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوضَةً فَمَا فَوْقَهَا ۚ
فَأَمَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ ٱلْحَقُّ مِن رَّبِّهِمْ ۖ وَأَمَّا
ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ فَيَقُولُونَ مَاذَآ أَرَادَ ٱللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلًا ۘ
يُضِلُّ بِهِۦ كَثِيرًا وَيَهْدِى بِهِۦ كَثِيرًا ۚ وَمَا يُضِلُّ بِهِۦٓ إِلَّا
ٱلْفَٰسِقِينَ ﴿٢٦﴾ ٱلَّذِينَ يَنقُضُونَ عَهْدَ ٱللَّهِ مِنۢ بَعْدِ
مِيثَٰقِهِۦ وَيَقْطَعُونَ مَآ أَمَرَ ٱللَّهُ بِهِۦٓ أَن يُوصَلَ وَ
يُفْسِدُونَ فِى ٱلْأَرْضِ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْخَٰسِرُونَ ﴿٢٧﴾ كَيْفَ
تَكْفُرُونَ بِٱللَّهِ وَكُنتُمْ أَمْوَٰتًا فَأَحْيَٰكُمْ ۖ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ
يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٨﴾ هُوَ ٱلَّذِى خَلَقَ لَكُم مَّا
فِى ٱلْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ ٱسْتَوَىٰٓ إِلَى ٱلسَّمَآءِ فَسَوَّىٰهُنَّ
سَبْعَ سَمَٰوَٰتٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٩﴾ وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ
لِلْمَلَٰٓئِكَةِ إِنِّى جَاعِلٌ فِى ٱلْأَرْضِ خَلِيفَةً ۖ قَالُوٓا۟ أَتَجْعَلُ

और उन के लिये उन में बीवियाँ पाक होंगी और वह उन बाग़ों में हमेशा रहेंगे[१९] २६. हर्गिज़ अल्लाह (हिदायत के लिये) मिसाल बतलाने से नहीं रूकने का (छोटी हो या बड़ी) मच्छर की हो अथवा उस से ऊपर की। पस जो लोग मोमिन हैं वह जान जाते हैं कि बेशक यह (उदाहरण बहुत ही उचित और बिल्कुल सच है) उन के रब की तरफ़ से, और जो लोग काफ़िर हैं वह कहने लगते हैं कि अल्लाह ने इस उदाहरण (देने) से क्या चाहा? इस के द्वारा बहुतों को (उन की नुक्ता-चीनी की वजह से) गुमराह कर देता है और (साफ़ दिल) लोगों की राह-नुमाई (भी) करता है। और सिवाए फ़ासिक़ों के किसी को गुमराह नहीं करता। २७. जो अल्लाह के अ़हद को पक्का (वादा) करने के बाद भी तोड़ डालते हैं और (इन्सानी संबन्ध) जिस के मिलाने का अल्लाह ने हुक्म किया है {उस को} तोड़ डालते हैं और मुल्क में फ़साद (उपद्रव) मचाते हैं। (जभी तो इन पर यह जुर्म की सज़ा है कि) यही लोग टूटा पाते हैं २८. (कोई उन से यह तो पूछे कि) भला तुम अल्लाह से इन्कारी कैसे होते हो? हालाँकि पहले (तो) तुम (नुत्फ़ा की सूरत में) बेजान थे, फिर उस ने तुम्हें जान बख़्शी, फिर तुम को मार भी देता है, फिर तुम्हें जीवित करेगा, फिर तुम उस की ओर फेरे जाओगे[२०]। २९. वह ज़ात पाक वही है जिस ने (तुम्हें पैदा किया और) दुनिया की सब वस्तुयें तुम्हारे लिये बनायीं[२१] फिर (तुम्हारे ही लाभ को) आसमान का इरादा किया तो (आवश्यकता-नुसार) उस ने उनको सात की मात्रा में

बना दिया। और वह हर वस्तु को जानता है[२२]। ३०. जब तेरे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं ज़मीन पर (अपना) एक नायब बनाने को हूँ। (जो सब दुनिया की आबादी पर शासन करे)

....

१९. शाने नुज़ूल:- अल्लाह तआ़ला ने लोगों को समझाने के लिये जानवरों के उदाहरण दिये हैं। एक स्थान पर फ़रमाया है कि काफ़िरों ने अपने होथों के बनाये हुये जिन बुतों को अपना पूज्य बना रखा है वह ऐसे कमज़ोर हैं कि एक मक्खी तक भी नहीं पैदा कर सकते, बल्कि अगर मक्खि मुँह को चिमट जाये तो उस को छुड़ा भी नहीं सकते। और एक दूसरे स्थान पर फ़रमाया: कि काफ़िरों का दीन मकड़ी के जाले की तरह कमज़ोर और बोदा है। इन उदाहरणों को सुन कर कुफ़्फ़ार ताना देने लगे कि मुसलमानों का अल्लाह कैसा है जिस को ऐसी वस्तुओं के नाम लेने और ऐसे जानवरों को ज़िक्र करने में तनिक भर शर्म नहीं आती, उस समय यह आयत नाज़िल हुयी कि बुरे धर्म के पुजारी काफ़िर लोग इतने बेवकूफ़ हैं कि वह इतनी बात नहीं समझे कि हमारे निकट सारी मख़्लूक़ बराबर है। क्या छोटा क्या बड़ा, सब ही कुछ हमारा ही बनाया हुआ है। और इन मिसालों के बयान करने में बड़ी-बड़ी हिक्मतें और फ़ाइदे हैं। एक तो यही लाभ है कि उदाहरण देने से बात भली-भाँति समझ में आजाती है और दूसरा लाभ यह हैं कि आज़माइश भी हो जाती है कि कौन मानता और ईमान लाता है और कौन उन पर एतिराज़ कर के काफ़िर बनता है (मुहम्मदी)

२०. मतलब यह है कि तुम अपने बापों की पीठ में मुर्दा थे, यानी कुछ भी न थे। उस ने तुम्हें ज़िन्दा किया यानी पैदा किया, फिर तुम को मारेगा, फिर तुम को क़ब्रों से उठायेगा। इस तरह एक हालत मुर्दापन की दुनिया में आने से पूर्व, फिर दूसरी हालत दुनिया में मरने की और क़ब्रों में जाने की, फिर क़ियामत के दिन उठ खड़े होने की। यह हुये दो जीवन और दो मौतें (इब्ने कसीर)

२१. ताकि तुम इन से लाभ उठाओ। वर्ना अल्लाह के लिये तो कोई वस्तु काम आती नहीं है। चौपाए (पशु) हैं तो तुम्हारे लिये, पेड़ पौधे हैं तो तुम्हारे लिये, दरिया-पहाड़ हैं तो तुम्हारे लिये, तुम्हारे ही लाभ के लिये ज़मीन बनाई और उसमें हर प्रकार के फ़ाइदे रख दिये (सनाई)

२२. इस आयत से स्पष्ट रूप से मालूम होता है कि ज़मीन की पैदाइश आकाश से पहले है, मगर सूर: "नाज़िआ़त" आय: न० ३० में है कि "ज़मीन को आकाश के बाद फैलाया"। बुख़ारी शरीफ़ में इन दोनों आयतों की ततबीक़ हज़रतं अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से यूँ रिवायत है कि ज़मीन पैदा तो आसमानों से पहले हुयी, मगर उस का फैलाव आसमानों की पैदाइश के बाद किया गया। अक्सर उ़लमा इन दोनों आयतों के दर्मियान यही ततबीक़ देते हैं।

'इस्तवा' अल्लाह की एक सिफ़ते-कलाम में से है। इस प्रकार की सिफ़तों (विशेषतओं) के बारे में उ़लमा का यही कहना है कि वह इन पर ईमान लाते हैं और इन को ज़ाहिरी माना पर रखते हैं और मोतज़िला फ़िर्के की तरह तावील नहीं करते हैं। यही हक़ व सहीह है (सलफ़िय्या)

वह बोले क्या आप ऐसे शख़्स को नायब {प्रतिनिधि} बनाते हैं जो इस (ज़मीन) में फ़साद करे और ख़ून बहाये? और अगर ख़लीफ़ा {नायब} ही बनाना मन्ज़ूर हो तो हम इस के क़ाबिल हैं (इसलिये कि) हम तेरी ख़ूबियाँ बयान करते हैं और तुझे पाकी से याद करते हैं। अल्लाह ने कहा: यक़ीनन मैं जानता हूँ

فِيهَا مَن يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَاءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ
بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝
وَعَلَّمَ آدَمَ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلَائِكَةِ
فَقَالَ أَنبِئُونِي بِأَسْمَاءِ هَٰؤُلَاءِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝

قَالُوا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ۭ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝ قَالَ يٰٓاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَاۗىِٕهِمْ ۚ فَلَمَّآ اَنْۢبَاَھُمْ بِاَسْمَاۗىِٕهِمْ ۙ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۙ وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ۝ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰۗىِٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ اَبٰى وَاسْتَكْبَرَ ڭ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا ۠ وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۠ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا

जो तुम नहीं जानते[२३] ३२. और आदम को (पैदा होने के बाद) सब चीज़ों के नाम सिखाये, फिर वह फ़रिश्तों को दिखाकर कहा कि इन वस्तुओं के नाम मुझे बताओ, अगर तुम (अपने सब चीज़ों के नाम जानने के दावा में) सच्चे हो? ३२. (इस इल्मी मुक़ाबला से आ़जिज़ आ कर) वह बोले, तू पाक है (अस्ल यह है कि) हम कुछ (भी) नहीं जानते, मगर उतना ही जो तू ने हम को सिखाया है। बेशक तू ही बड़े इ़ल्म वाला और हिक्मत वाला है[२४] ३३: (इसके बाद आदम से) कहा, ऐ आदम! तू उन को, उन वस्तुओं के नाम बतला दे। पस जब उस आदम (अ़लै०) ने उन को उन चीज़ों के नाम बतलाये तो अल्लाह ने कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि मैं आकाश व ज़मीन की सब छुपी (हुयी) चीज़ें जानता हूँ और जो (कुछ) तुम ज़ाहिर करते और छुपाते हो वह भी जानता हूँ ३४. और (सोचो तो सही कि) जब हमने तमाम फ़रिश्तों को हुक्म दिया (था) कि आदम को सज्दा करो, पस सब ने सज्दा किया, मगर शैतान (इस से) इतराया और (अपने जी में) बड़ा बन बैठा और इन्कारियों में से हो गया[२५] ३५. और हम ने कहा (कि) ऐ आदम! तू और तेरी पत्नी (हव्वा) इस बाग़ (जन्नत) में रहो और इसमें जहाँ चाहो (खुला) खाते फिरो। मगर उस दरख़्त से (ख़ास तौर से) ऐसा परहेज़ कर लो कि (उस के) निकट भी न जाइयो (नहीं तो) ज़ालिम ठहरोगे[२३] ३६. पस (आख़िर कार) शैतान ने उनको उस (जन्नत) से लग़ज़िश दी[२७] और (ग़लती करा कर) उन नेमतों से जिन में वह दोनों रहते थे, निकलवा दिया। हम ने कहा: तुम (इस जन्नत से) उतर जाओ,

....

२३: यह पहला अवसर है कि कुरआन करीम में फ़रिश्तों का स्पष्ट ज़िक्र आया है। चूँकि आज कल के आ़लिमों ने इस मस्अला में भी अ़जीब तरह का इख़्तिलाफ़ न केवल मुसलमानों से, बल्कि और दूसरे धर्मों (यहूद, नसारा) से भी बिला वजह किया है, इसलिये इस पर विस्तार से प्रकाश डालेंगे।

'मलक' (फ़रिश्ता) इस का अर्थ वही है जिस को आ़म मुसलमान, बल्कि यहूद व नसारा और अ़रब के मुश्रिक समझा करते थे। वह यह कि यह अल्लाह की एक मख़लूक़ है जो गुनाहों से पवित्र हैं और अल्लाह के आदेशों के पालन और उस की इ़बादत में हर समय लगे रहते हैं। उन में से किसी का ज़मीन से संबन्ध है और किसी का आकाश से। आकाश वाले फ़रिश्ते अल्लाह के हुक्म से ज़मीन पर आ जाते हैं इसी प्रकार ज़मीन वाले आकाश पर आते-जाते हैं। उन को अल्लाह ने ऐसा बनाया है कि हवा की तरह दिखाई नहीं देते। हाँ, जब चाहें अपनी शक्ल-सूरत बदल कर मनुष्य की सूरत में दिखाई दे सकते हैं। वह नबियों पर अल्लाह का संदेश लाते हैं, अल्लाह के हुक्म से नाफ़र्मानों को हलाक करते हैं। यह खुलासा है उन मानो का जिन मानों मे लोग फ़रिश्ता बोलते हैं। अ़रब के मुश्रिकीन फ़रिश्तों को उन के दिखाई न देने के कारण अल्लाह की बेटियाँ कहा करते थे। कुरआन करीम ने उन के इस ख़याल

का रद्द किया है। तौरेत, इंजील, ज़बूर, कुरआन, और हदीसों में इन का ज़िक्र मौजूद है।

एक हदीस में स्पष्ट रूप से मौजूद है कि हज़रत जिब्रील, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास दहूया कल्बी रज़ि० की शक्ल में आया करते थे। मतलब यह है कि फ़रिश्ते अल्लाह की एक मख़्लूक़ हैं। मगर सर सय्यद अहमद खाँ और उन के हमख़याल, फ़रिश्तों को इस माना में तस्लीम नहीं करते। वह 'मलक' से मनुष्य के कुवा (शक्ति) मुराद लेते हैं। आश्चर्य इस बात पर है कि सर सय्यद मुफ़स्सिरीन की बातों को बिला दलील कह कर रद्द कर दिया करते हैं, मगर स्वयं दलील नहीं देते हैं। कुरआन पाक के बयान की रोशनी में सर सय्यद और उन के मानने वालों का यह क़ौल बिल्कुल बेमाना साबित होता है (सनाई)

२४. फ़रिश्तों के सामने आदम की पैदाइश का ज़िक्र करना सूचना और इत्तिलाअ़ के लिये था, न कि मश्वुरा और राय लेना उद्देश्य था। इस पर फ़रिश्तों ने अपनी पवित्रता और बुज़ुर्गी बतला कर अपना हक़ साबित करना चाहा और साथ ही कुछ जानने का दावा भी किया। इस के उत्तर में उन की ग़लतफ़हमी को दूर करने के लिये यह आवश्यक हुआ कि आदम को सब नाम सिखा दिये जायें, ताकि उन को पता चल जाये कि बहुत से ऐसे मामलात अभी और भी हैं जिन के बारे में उनकी मालूमात अभी तक नहीं है। यही कारण है कि उन्होंने "ला अ़िल्-म लना" (हमारी जानकारी नहीं है) कह कर अपने न जानने का इक़रार किया। इन आयतों को इस तरह समझ लेने से तमाम एतराज़ (आपत्ति) दूर हो जाते हैं। (सनाई)

२५. यह सज्दा ताज़ीम के लिये था, जिस को दूसरे शब्दों में "ताज़ीम का सलाम" कहते हैं। इसलिये कि अगर यह अ़िबादत का सज्दा होता तो शैतान अपनी दलील में "मैं उस से बेहतर हूँ" न कहता, बल्कि यूँ कहता कि "यह कौन सा न्याय है कि एक ओर तो हमें शिर्क से रोका जा रहा है और दूसरी ओर शिर्क करने की शिक्षा दी जा रही है"। वह तो बड़ा शैतान है। उसे तो यह सूझना ही चाहिये था। जब उसके चेलों को इस प्रकार के हीले-हुज्जत सुझाई देते हैं तो फिर गुरू को क्यों न सूझी? इस से मालूम हुआ कि उस ने इस सज्दा को स्वयं जायज़ समझा था, क्योंकि आदम को सज्दा न करने की वजह यह बतला रहा है कि "मैं उस से अच्छा हूँ" इसलिये उसे सज्दा न करूँगा।

इस से मालूम हुआ कि अगर आदम को, जो शैतान के ख़याल में उस से उत्तम नहीं थे उस को सज्दा करने का हुक्म होता तो शैतान को अपने लिये सज्दा करवाने में किसी प्रकार का तरद्दुद (संकोच) न होता और न ही तौहीद की शिक्षा उस में रूकावट होती। पस इन दोनों आयतों के मिलाने से मालूम हुआ कि यह सज्दा, अ़िबादत का सज्दा न था, बल्कि केवल इस माना में था जैसे किसी सरदार, या नवाब को उस के अधीन (काम करने वाले) एक ख़ास समय में हाज़िर हो कर सलाम किया करें, जिस से उस सरदार की बड़ाई और मातहतों की वफ़ादारी का सुबूत मिलता है, और यही शैतान को पसन्द न आया। (सनाई)

सही क़ौल यही है कि यह सज्दा (जिस प्रकार आज कल किया जाता है) ज़मीन पर माथा रखने के माना में था ही नहीं, बल्कि यह केवल झुकने के माना में था (तफ़्सीर मदारिक-इब्ने अ़ब्बास के हवाला से, तफ़्सीर माजिदी) सज्दा दो प्रकार का होता है (१) ताज़ीम (सम्मान) व सलाम का सज्दा (२) अ़िबादत का सज्दा। सलाम का सज्दा अगली उम्मतों में अल्लाह के अ़लावा और लोगों को भी करना जायज़ था। दीने इस्लाम में अल्लाह के अ़लावा किसी दूसरे को सज्दा करना हराम और शिर्क है, ताज़ीम और सलाम के तौर पर भी कदापि जायज़ नहीं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि अगर मेरी उम्मत में सज्दा करना जायज़ होता तो मैं औरत को हुक्म देता कि वह अपने पति को सज्दा करे। लेकिन सज्दा इस्लाम में अल्लाह के अ़लावा किसी के लिये भी हर हाल में हराम और नाजायज़ है। (फ़वाइदे सलफ़िय्या)

२६. जिस दरख़्त के खाने से आदम को रोका गया था, उस में उलमा का बड़ा इख़्तिलाफ़ है। मौलाना अमृतसरी रह० का ख़याल 'इन्जीर' की तरफ़ था। लेकिन सहीह और सच्ची बात यह है कि इस के सिलसिले में क़ुरआन और सहीह हदीसों में उस दरख़्त के बारे में कोई ज़िक्र नहीं है, इसी लिये हाफ़िज़ इब्ने जरीर, इमाम फ़ख़रूद्दीन राज़ी

इमाम इब्ने कसीर और दूसरे उलमा का यही कहना है कि उस दरख़्त की निशान-देही की कोई आवश्यक्ता नहीं है, क्योंकि कुरआन व हदीस में उस दरख़्त के नाम का ज़िक्र नहीं है। (तफ़्सीर कबीर)

२७. इस स्थान पर हमारे कुछ उलमा ने एक लम्बा-चौड़ा क़िस्सा नक़्ल किया है कि शैतान साँप की शक्ल में जन्नत में दाख़िल हुआ...... वग़ैरह। लेकिन इस क़िस्से का ज़िक्र कुरआन व सहीह हदीसों में नहीं है, बल्कि इस्राईली रिवायतों से लिया गया है, जिन को सत्य अथवा असत्य जानने में ख़ामोशी ही बेहतर है।

بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ۝ فَتَلَقَّىٰ آدَمُ مِن رَّبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝ قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا ۖ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّي هُدًى فَمَن تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوا بِعَهْدِي أُوفِ بِعَهْدِكُمْ وَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ۝ وَآمِنُوا بِمَا أَنزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُونُوا أَوَّلَ كَافِرٍ بِهِ ۖ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا وَإِيَّايَ فَاتَّقُونِ ۝ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ ۝ أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ

तुम एक दूसरे के दुश्मन होगे। ज़मीन में तुम्हारे लिये ठहरने को स्थान और ज़िन्दगी तक गुज़ारा (भी मुहय्या) है[२८] ३७. फिर (आख़िर कार) आदम ने अपने अल्लाह (के इल्हाम) से चन्द बातें सीखीं[२९] पस अल्लाह ने उस पर रह्म किया। बेशक वह तौबा कुबूल करने वाला (बड़ा मेहरबान) निहायत रहम वाला है ३८. हम ने कहा: (मुनासिब यह है कि अब) तुम सब (यानी आदम, हव्वा और उन की औलाद) इस (बाग़) से नीचे ही उतरे रहो। पस अगर मेरी ओर से तुम को (कोई संदेश) हिदायत का पहुंचे तो जो लोग मेरी हिदायत के ताबे (मानने वाले) होंगे, सो उन को न कुछ डर होगा और न वह ग़म करेंगे (बल्कि वापस अपनी मीरास पा लेंगे) ३९. और जो लोग (इस हिदायत का) इन्कार करने वाले होंगे और हमारी (हिदायत की) निशानियाँ झुठला देंगे (वह हर्गिज़ जन्नत में न जायेंगे, बल्कि) वह आग के क़ाबिल होंगे, हमेशा (के लिये) उसी में रहेंगे ४०. ऐ बनी इस्राईल! तुम मेरी नेमतें याद करो जो मैंने तुम्हें दीं और मेरे वादा को (जो अन्तिम संदेष्टा के मुतअ़ल्लिक़ विशेष कर तुम से लिया हुआ है) पूरा करो, मैं तुम्हारा वादा पूरा करूँगा, पस तुम मुझ से डरो[३०] ४१. और मेरी उतारी हुयी किताब को मानो जो तुम्हारी साथ वाली किताब (उस वादा को फेर-फार कर अपने अधीनों से) मेरे हुक्मों के बदला में (दुनिया का) हक़ीर माल न लिया करो, केवल मुझ ही से डरो ४२. और (झूठी तावीलें कर के) सच को झूठ से न मिलाओ और न जान-बूझ कार (दुनिया के लाभ के लिये) हक़ को छुपाया करो ४३. और (मुसलमान होकर) नमाज़ पढ़ो और ज़कात दिया करो और रूकूअ़ करने वालों के साथ मिल कर रूकूअ़ किया करो ४४. क्या लोगों को

....

२८: यह जन्नत ज़मीन के किसी हिस्सा (छेत्र) पर नहीं थी, बल्कि आसमान पर थी। यही सहीह और दुरूस्त है

➲और स्वयं शब्द "इह्बितू" (उतरो) का अर्थ भी यही है। जब तक कोई क़रीना (तर्क) न पाया जाये, तब तक इस का अर्थ ऊपर से नीचे उतरने का ही लिया जायेगा। यहाँ पर मुख़ातब एक, अथवा दो नहीं हैं, बल्कि बहुवचन है। गोया अब मुख़ातब केवल आदम व हव्वा ही नहीं, बल्कि आदम की सारी नस्ल भी है (मुहम्मदी) "तुम एक दूसरे के दुश्मन हो" इस अर्थ से ज़ाहिर है कि जिन लोगों ने यहाँ साँप वग़ैरह मुराद लिये हैं उन का क़ौल सहीह नहीं है।

२९. 'चन्द बातें सीखीं' इस से इशारा सूरः आराफ़ आयः न० २३ की तरफ़ है, जिस में आदम अ़लै० ने अपनी ग़लती को मान कर दुआ़ की थी। ऊपर आयत न० ३४ के तर्जुमा में "आदम को सज्दा करो" यह तर्जुमा मौलाना रह० ही का है जिसे मैं ने (तफ़्सीर सनाई ५/५०) से नक़ल किया है- मेरे निकट सहीह यह है कि वह जैसा भी सज्दा था, मगर अ़िबादत का न था...........राज़।

३०. हज़रत इब्राहीम अ़लै० से दो मश्हूर नस्लें चलीं। (१) बीबी हाजिरा से (२) बीबी सारा से। हज़रत हाजिरा से हज़रत इस्माईल अ़लै० पैदा हुये। यह नस्ल "बनी इस्माईल" कहलाई। आगे चलकर कुरैश इसी की एक शाख़ से पैदा हुए जिन का वतन (जन्म भूमि) अ़रब था। बीबी सारा से हज़रत इस्हाक़ पैदा हुये, इन की नस्ल "बनी इस्राईल" कहलाई। इन का वतन (जन्म भूमि) शाम था। पुराने साहित्य में फ़लस्तीन कोई अलग मुल्क न था, बल्कि शाम ही का एक हिस्सा था। एक तीसरी नस्ल, तीसरी बीवी 'क़न्तूरा' से भी चली जो आगे चल कर "बनी क़न्तूरा" कहलाई लेकिन तारीख़ में इस नस्ल को कोई विशेष अहमियत नहीं हासिल है। बनी इस्राईल क़ौम सदियों तरक़्क़ी पर रही, तौहीद की प्रचारक दुनिया में यही क़ौम रही। इस नस्ल में नबी और रसूल आते रहे। बड़े-बड़े बुज़ुर्ग और नेक लोग पैदा हुये। इसी में बड़े-बड़े फ़ौजी जंरल और शासक पैदा हुये। कुरआन के नाज़िल होने के समय इन का शासन समाप्त हो चुका था। "बनी इस्राईल" तो एक क़ौमी और नस्ली शक्ल है, मज़हबी हैसियत से यह लोग यहूदी और अहले-किताब थे। अस्ल तौरेत न सही, बदली हुयी किताब तो बहर हाल इन के दर्मियान मौजूद थी। अ़रब के मुश्रिक इन से बहुत ज़्यादा मुतअस्सिर (प्रभावित) थे। यहूद की किताब और रिवायतों में एक आने वाले नबी के बारे में भविष्य वाणी मौजूद थी और यह लोग उस नबी के आने का इन्तिज़ार भी कर रहे थे। इन तमाम कारणें से यह बिल्कुल फ़ितरी बात थी कि कुरआन मजीद में उसी क़ौम को मुख़ातब किया जाये और यह ख़िताब विस्तार से हो। यहाँ इस मन्ज़िल (स्थान) पर पहुंच कर बेहतर होगा कि एक नज़र कुरआन मजीद के बयान की तर्तीब पर भी डाल ली जाये।

कुरआन मजीद का अस्ल मुख़ातब मनुष्य की पूरी नस्ल है, इसी मुनासिबत से पहले रूकूअ़ में इस का बयान हुआ कि इन्सान की दो क़िस्में हैं (१) अच्छा अथवा मोमिन इन्सान (२) बुरा अथवा काफ़िर इन्सान। मोमिन और नेक इन्सान वह हैं जो कुरआन मजीद के आदेशों को मानते हैं, और काफ़िर व बुरे वह लोग हैं जो नहीं मानते हैं। दूसरे रकूअ़ में काफ़िरों ही की एक ख़ास क़िस्म छुपे काफ़िरों का ब्यान हुआ और यह बताया गया कि यह लोग भी ईमान और नजात से वन्चित ही रहेंगे। तीसरे रूकूअ़ में पुरी इन्सानी नस्ल को मुख़ातब किया गया और कुरआन का अस्ल पैग़ाम यानी तौहीद व रिसालत को बयान कर दिया गया। चौथे रूकूअ़ में इन्सान के नस्ल की तारीख़ बयान की गयी है कि उस के पैदा करने का अस्ल उद्देश्य दुनिया में अल्लाह के क़ानून को लागू करना और शासन की देख-भाल करना है। और यह भी बताया कि ज़रा सी चूक से इन्सान का दुश्मन शैतान उस को चित कर सकता है और हक़ से बातिल की ओर, नूर से तारीकी की ओर उसे मोड़ सकता है। लेकिन इन्सान अगर थोड़ी सी हिम्मत और सतर्कता से काम ले और नबी के बताये हुये रास्ते पर चले तो वही ग़ालिब (विजयी) रहेगा। फिर पाँचवें रूकूअ़ से बयान इस का आरंभ होता है और इस की तफ़्सील आगे के रूकूअ़ तक भी चलती रहेगी कि काफ़ी समय पूर्व अल्लाह ने एक नेक बन्दे की औलाद में एक ख़ास नस्ल को तौहीद की विशेष नेमत से नवाज़ा था, मगर उस क़ौम ने कोई तवज्जुह ही न दी, हालाँकि उस को बार-बार मौक़ा दिया गया और रिआ़यतें भी बार-बार की गयीं, लेकिन➲

हर बार उस ने उस नेमत को अपने हाथों से बर्बाद किया, यहाँ तक कि अपनी ही नस्ल के अन्तिम संदेष्टा (हज़रत ईसा अ़लैहि०) की मुख़ालिफ़त में तो हद ही कर दी। चुनान्चे जब पानी सर से ऊँचा हो जाता है तो अल्लाह तआ़ला एक नया दस्तूर अपनाता है और उस नाफ़र्मान और नाशुक्री क़ौम को उस पद से हटा देता है। (तफ़्सीर माजिदी)

بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ اَفَلَا
تَعْقِلُوْنَ ۝ وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ وَاِنَّهَا
لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ
اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَاَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ۝ يٰبَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ
فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ
عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤْخَذُ
مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝ وَاِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ
اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُوْنَ
اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝ وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ
وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ۝ وَاِذْ وٰعَدْنَا
مُوْسٰٓى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهٖ

भली बातें बतलाते हो? और अपने आप को बावजूद किताब पढ़ने के भुलाते हो?[३१] क्या तुम होश नहीं करते? ४५. (अगर तुम को कोई तक्लीफ़ आवे, तो तुम उस को दूर करने में) सब्र और नमाज़ के साथ (अल्लाह से) सहायता माँगा करो। बेशक यह बहुत भारी है, मगर अल्लाह से डरने वालों पर नहीं ४६. (इसलिये कि यह लोग ऐसे पाक ख़्याल के हैं) जो इस बात का पक्का यक़ीन रखते हैं कि उन को अपने रब से मिलना है और उसी की तरफ़ जायेंगे ४७. ऐ बनी इस्राईल! मेरे एहसान याद करो जो मैं ने तुम पर किये और यह कि मैं ने सब जहान के लोगों पर तुम को बड़ाई दी ४८. और उस दिन से डरो जिसमें कोई जान किसी के कुछ भी काम न आयेगी और उस की सिफ़ारिश भी कुबूल न होगी और उस से बदला भी न लिया जायेगा और न उनको किसी प्रकार की मदद पहुंचेगी ४९. और जब हम ने तुम को फ़िरऔ़नियों (यानी उस से और उस के लश्कर) से छुड़ाया जो (हर प्रकार से) तुम को बुरे-बुरे दन्ड देते थे। लड़कों को जान से मार डालते थे और लड़कियों को जीवित (अपनी सेवा कराने को) छोड़ते, इस घटना में अल्लाह की ओर से तुम पर बड़ा एहसान है ५०. और जब तुम्हारे लिये हम ने नदी को फाड़ा पस तुम को (डूबने से) बचाया और (तुम्हारे दुश्मन) फ़िरऔ़नियों को तुम्हारे देखते-देखते ही (उसी में) डुबो दिया[३२] ५१. और जब हम ने मूसा से चालिस रातों का वादा किया था (वह तुम्हारे लिये तूर पहाड़ पर किताब लेने गया) फिर तुम ने उसके पीछे बछड़े को अपना पूज्य बना लिया

....

३१. शाने नुज़ूलः- कुछ यहूद के उ़लमा का यह तरीक़ा था कि जब उन का कोई निकट संबन्धी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हालात के बारे में प्रश्न करता, तो उस पर इस्लाम और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सच्चे होने को बतलाते थे। लेकिन स्वयँ उसी कुफ़्र पर अड़े रहते थे। ऐसे ही लोगों के बारे में यह

➲आय: नाज़िल हुयी (सनाई-मआलिम के हवाला से)

३२. इस आय: में अल्लाह तआला बनी इस्राईल को वह विशेष नेमत याद दिलाता है जो तमाम दुनिया की नेमतों से बढ़ कर थी, यानी उन के दुश्मन फ़िरऔन की हलाकत और बनी इस्राईल की नजात। और इस अन्दाज़ से बयान कर रहा है कि उस की कुद्रत के निशानात ज़ाहिर हों। वही पानी, जिसमें से बनी इस्राईल बच कर साफ़ निकल गये, उसी में फ़िर्औन अपने लाव-लश्कर के साथ, हर प्रकार के बचाव के सामान होने के बावजूद डूब गया। इस बयान पर कुरआन और तौरेत दोनों ही का इत्तिफ़ाक़ है।

मगर सर सय्यद अहमद और उन के हम-ख़यालों ने इस का इन्कार किया है और कहा कि उस दरिया में, समुन्दर की तरह मद्द व जज़्र (जुवार-भाटा) चढ़ना-उतरना आन की आन में (तुरन्त) हुआ करता था इसलिये रात को जब मूसा बनी इस्राईल को लेकर वहाँ से गुज़रे थे तो उस समय दरिया ख़ुश्क था और जब फ़िर्औन पार करने लगा तो इत्तिफ़ाक़ से दरिया चढ़ गया (तफ़्सीर अहमदिय्या-१/९९) सर सय्यद के दावे को इस आयत का मफ़हूम ही ग़लत साबित कर रहा है कि बनी इस्राईल पर किसी अपने बड़े एहसान का जतलाना उद्देश्य है। जभी तो फ़रमाया कि हमने तुम्हारे लिये दरिया को फाड़ कर तुम्हें बचाया और तुम्हारे दुश्मनों को तुम्हारे देखते-देखते डुबो दिया। इस से मालूम होता है कि उस दरिया में तूफ़ान ख़ास कर भेजा था, ताकि उसे एहसान कह सकें। जुवार-भाटा के बारे में ऐसा कहना कि हम ने तुम्हारे लिये किया और उस के करने से तुम्हारी नजात हुयी, यह बिल्कुल बे माना है, और बनी इस्राईल पर कोई एहसान नहीं मालूम देता। बल्कि इसे तो बनी इस्राईल की होशियारी कहना चाहिये कि उन्होंने पार होने के लिये उचित समय खोज लिया।

दूसरी आय: सूर: शुअ़रा की आय: न० ६३ है जिसमें साफ़ शब्दो में इर्शाद है कि हमने मूसा से कहा कि तू अपनी लकड़ी दरिया पर मार, पस वह मारने से ऐसा फट गया कि उस का एक-एक टुक्ड़ा बड़े-बड़े ढेर की तरह हो गया। यह आय: दरिया के फटने को स्पष्ट शब्दों में बयान कर रही है, मगर सर सय्यद साहब ने इस को भी टेढ़ी खीर बना दिया और इसकी ग़लत तावील कर डाली। मैं हैरान हूँ कि सय्यद साहब आख़िर किस बुनियाद पर, कुरआन करीम को इल्हामी किताब मान कर भी ऐसी बेबुनियाद तावील करते हैं और सोने पर सुहागा यह कि उलमा का लक़ब "ख़ुश्क मुल्ला, कोढ़ मग़ज़, शहवत परस्त" आप ने रखा हुआ है। (सनाई)

وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۵۱﴾ ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَاِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ الْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۵۳﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْٓا اِلٰى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۵۴﴾ وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۵۵﴾ ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۵۶﴾ وَ

और तुम बड़े ज़ालिम हो ५२. फिर (भी) हम ने इसके बाद तुम को माफ़ किया, ताकि तुम शुक्र-गुज़ार बनो ५३. और (वह एहसान याद करो) जब हम ने मूसा को किताब (दी) और (उस के सबूत के लिये) बड़े-बड़े चमत्कार (भी दिये) ताकि तुम (दीन की) सीधी राह पाओ ५४. और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि भाइयो! तुम ने बछड़े को पूज्य बनाने के कारण अपने ऊपर अत्याचार किया (इन का इलाज सिवाए तौबा के कुछ नहीं) इसलिये तुम अपने पैदा करने वाले की ओर (दिल से) झुक जाओ और (आपस में) एक दूसरे को➲

ظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۞ وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا

क़त्ल करो। यह (क़त्ल गो देखने में तुम को बुरा मालूम होता है, लेकिन) तुम्हारे पैदा करने वाले के हाँ बेहतर है[३३] पस उस ने तुम पर रह्म किया। वह तो बड़ा ही तौबा कुबूल करने वाला निहायत ही मेहरबान है ५५. और जब तुम ने कहा था कि ऐ मूसा! हम तुझे हर्गिज़ नहीं मानेंगे जब तक कि अल्लाह को साम्ने (अपनी आँखों से) न देख लें, पस (उसी समय) बिजली ने तुम्हारे देखते ही तुम को पकड़ लिया (और हलाक कर डाला)५६. फिर हम ने तुम्हारी मौत के बाद तुम को ज़िन्दा किया तुम (उस नेमत का) शुक्र करो ५७. और हम ने (जन्गल-बयाबान में) तुम पर बादलों का साया किया और मन्न और सल्वा (भी) तुम पर उतारा[३४] (और आम) अनुमति दी कि हमारी नेमतें खाओ जो हम ने तुम को दी हैं और हम पर (उस नाशुक्री के कारण) उन्हों ने कोई जुल्म न किया लेकिन अपना ही नुक्सान करते थे ५८. और (भी सुनो) जब हम ने कहा कि इस बस्ती (बैतुल् मुक़द्दस) में चले जाओ, फिर उस (शह्र) में जहाँ चाहो खुल्लम-खुल्ला खाते फिरो और (शह्र के) दरवाज़े में सज्दा करते हुये दाख़िल होना[३५]

....

३३. यानी जो मुजरिम नहीं हैं, वह लोग जुर्म करने वालों को क़त्ल करें (इब्ने अब्बास रज़ि०) शिर्क करना हज़रत मूसा की शरीअ़त और बनी इस्राईल के दस्तूर में तो जुर्म है ही, इसके अलावा मज़हबी फ़ौजदारी का भी एक बड़ा जुर्म है जिस की सज़ा क़त्ल है। तौरेत की क़ानूनी आयतों में मुश्रिक महिला एवँ पुरूष की सज़ा यह है कि उन पर इतना पथराव किया जाये कि वह मर जाये। गवाहों के हाथ पहले उठें ताकि उनको क़त्ल करें और उन के बाद बाक़ी सब लोगों के हाथ। तुम यूंही अपने बीच से शरारत को खत्म कीजियो (इस्तस्ना-१७:५.७)

और ज़ाहिर है कि शरीअ़त का कानून नबी के सामने भी न लागु होता तो कब लागु होता। शिर्क करने वाले पकड़-पकड़ कर सामने लाये गये और अपने ही भाई-बन्दों के हाथों मौत के घाट उतारे गये। तौरात में है कि तुम में से हर मर्द अपनी कमर पर तलवार बाँधे और एक दरवाज़े से दूसरे दरवाज़े तक तमाम लश्कर के दर्मियान गुज़रता फिरे और हर मर्द तुम में से अपने भाई को और हर एक आदमी अपने दोस्त को और हर एक आदमी अपने क़रीबी को क़त्ल करे। और बनी लादी ने मूसा के कहने के अनुसार किया, चुनान्चे उस दिन लोगों में से तक़रीबन तीन हज़ार आदमी मारे गये (तफ़्सीर माजिदी-खुरूज के हवाला से)

३४. यह अल्लाह की-दो नेमतें थीं जिन का खाना उन के लिये मबाह किया गया। लेकिन उन लोगों ने अल्लाह तआ़ला की उन नेमतों की नाशुक्री की और यही उन का अपनी जानों पर जुल्म करना था। यह दोनों वस्तुयें उन पर तीह की वादी में उतरी थीं, जहाँ उन्होंने अपने रसूल से कहा था कि इस जन्गल में हमारे खाने का इन्तिज़ाम कैसे होगा? तब उन पर मन्न व सल्वा उंतारा गया, और पीने के लिये एक पत्थर में से बारह चश्मे जारी किये और हर क़बीला ने एक-एक चश्मा अपने लिये बाँट लिया। फिर साया (छाँव) माँगने लगे, कि चटियल मैदान में साया के बग़ैर गुज़ारा कठिन है, तो अल्लाह पाक ने बादलों का उन पर साया कर दिया (इब्ने कसीर) 'मन्न' किसी दरख़्त का दूध है जो गोंद की तरह जम जाता है और स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है। 'सल्वा' एक परिन्दा है। यह दोनों वस्तुयें तूर पहाड़ के चारों ओर बहुत अधिक पाये जाते हैं। "मन्न" का हलुवा मैंने स्वयँ खाया है जो फ़लस्तीन के यहूदी बनाया करते हैं (तर्जुमानुल कुरआन-आज़ाद) इब्ने कसीर में है कि जो मन्न उन पर उतरा था वह गोंद की

➲तरह था और दूध से अधिक सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा था। सुब्ह सादिक़ से लेकर सूरज निकलते तक उतरता रहता था, हर व्यक्ति उन में से अपनी इच्छानुसार ले लेता था। 'सल्वा' एक प्रकार की चिड़िया है जो आम परिन्दों से ज़रा कुछ बड़ी होती है और हल्के लाल रंग की होती है। दक्षिण की हवायें चलती थीं और उनको वहाँ ला कर इकट्ठा कर देती थीं। बनी इस्राईल अपनी आवश्यक्ता-नुसार उन को पकड़ कर ज़ब्ह कर के खाते थे।

३५. मौलाना रह० ने इस का तर्जुमा पहले यह किया था "आजिज़ी के साथ झुकते हुये" फिर बाद में मौलाना ने तर्जुमा बदल कर यह कर दिया "सज्दा करते हुये" (तफ़्सीर सनाई २/१५७) मौलाना रह० ने सूरः आराफ़ आयः न० १६१ में भी "सज्दा करते हुये दाख़िल होना" तर्जुमा किया है- (दावूद राज़)

وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ۚ وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝ وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۚ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۚ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝ وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآئِهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ۚ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِيْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِيْ هُوَ خَيْرٌ ۚ اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ ۚ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ ۚ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ

और कहते जाना कि हमारी माफ़ी हो हम तुम्हारी ख़तायें बख़्श देंगे और नेक काम करने वालों पर मज़ीद मेहरबानी भी हम करेंगे[३६] ५९. फिर ज़ालिमों ने बजाये उस के जो उन को हुकम हुआ था (कुछ) और ही बदल दिया ('हित्तः' यानी "माफ़ी" के स्थान पर 'हिन्ता' यानी "गेहुँ" कहने लगे) इस लिये उन ज़ालिमों पर हम ने (विशेष कर) उन के (फ़साद और) फ़िस्क़ (व फ़ुजूर) के कारण आकाश से अज़ाब उतारा[३७] ६०. और (सुनो) जब (हज़रत) मूसा ने अपनी क़ौम (बनी इस्राईल) के लिये (हम से) पानी माँगा और हमने हुक्म दिया कि पत्थर को अपनी लक्ड़ी मार (जब उस ने मारी) तो बह निकले उस से १२ चश्में (इतनी ही संख्या में उस की क़ौम के विभिन्न गोत्र थे,इसलिये) हर एक ने (यह जान कर कि हमारी जमाअ़तों के बराबर उन चश्मों की गिन्ती है) अपना घाट पहचान लिया। (हम ने आदेश दिया) खाओ और पियो अल्लाह के दिये (हुये) में से और ज़मीन में उपद्रव मचाते हुये न फिरो (फिर उस नेमत का भी तुम से शुक्र न हुआ, बल्कि उल्टा नेमतों की नाशुक्री की)[३८] ६१. और (सुनो) जब (बजाए शुक्र के) तुम ने (हज़रत) मूसा से कहा कि हम तो हर्गिज़ एक ही (प्रकार के) खाने पर सब्र नहीं करेंगे, पस हमारे लिये अपने रब से दुआ माँग कि वह हमारे लिये वह वस्तुयें पैदा करे जो ज़मीन से निकलती हैं (यानी) साग, ककड़ी, गेहूँ, मसूर और पियाज़ (वग़ैरह, ताकि हम अपनी तरकारियाँ चटपटी {स्वादिष्ट} बनाया करें)[३९] मूसा ने कहा (ताज्जुब है तुम्हारे हाल पर) क्या अच्छी वस्तु के बदले में घटिया चीज़ (मसूर आदि) लेना चाहते हो (अगर➲

तुम्हारा यही शौक़ है तो) किसी शह्र में जा बासो, पस जो माँगते हो तुम को वहाँ मिलेगा (उन की प्रार्थना के अनुसार उन की गत हुयी) और उन पर ज़िल्लत और मुहताजी डाली गयी (न केवल मुहताज़ी) और (तन्ग दस्ती, बल्कि इस के बाद भी) उन्होंने (अवज्ञा कर के) अल्लाह की नाराज़गी अपने पर ली यह इस लिये कि सदा अल्लाह के आदेशों को झुठलाते रहे

....

३६. कुछ लोगों का कहना है कि यह बस्ती अरीहा जबारीन का शह्र था। कुछ लोगों का कहना है कि मुल्क शाम की कोई बस्ती थी। लेकिन ज़्यादा सहीह बात यह है कि वह बैतुल्मुक़द्दस था, जैसा कि सूरः बक़रः की आयः न० ११४ में बयान हुआ हैं जब ४० वर्ष के पश्चात् तीह से निकले तो अल्लाह तआला ने उन को फ़त्ह दी, उस समय यह हुक्म हुआ था कि शह्र के अन्दर सज्दा करते हुये जाओ, ताकि तीह की वादी से नजात और शह्र फ़त्ह होने पर शुक्र अदा हो सके। मगर उन्होंने मज़ाक उड़ाया और सज्दा करने की बजाए घिसटते और 'हित्ता' के बदले "हिन्ता" कहा। बुख़ारी शरीफ़ में है कि "हब्बतुन फ़ीशारतिन" कहा, इस की सज़ा में उन पर दण्ड नाज़िल हुआ, यानी शह्र में दाख़िल होते ही महामारी (ताऊन) में गिरफ़्तार हुये (तर्जुमा नवाब रह० पृष्ठ ११)

एक मर्फ़ूअ़ हदीस में है कि ताऊन 'रिज्ज़' का नाम है और यह अ़ज़ाब तुम से अगले लोगों पर उतारा गया था। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जब तुम सुनो कि फ़लाँ स्थान पर ताऊन है तो वहाँ न जाओ (बुख़ारी) इब्ने जरीर में है कि दुःख और बीमारी 'रिज्ज़' है जो तुम से पहली उम्मतों पर अ़ज़ाब के तौर पर भेजी गयी थी (इब्ने कसीर)

३७. बनी इस्राईल की यह गुम्राही थी कि जब उन्हें नजात मिल गयी फिर भी बन्दगी और इबादत की जगह ग़फ़्लत और ग़ुरूर में मुबतला हो गए (तर्जुमान आज़ाद)

३८. कहा जाता है कि वह एक नर्म पत्थर था जो एक गज़ लम्बा चौड़ा था, आदम अ़लै० के साथ जन्नत से आया था और हज़रत शुअ़ैब अ़लै० को वरासत में मिला था। उन्होंने लाठी के साथ यह पत्थर भी मूसा को दिया था। कुछ उलमा का कहना है कि यही वह पत्थर था जो मूसा के कपड़े लेकर भागा था। जिब्रील ने मूसा से कहा था कि इस पत्थर को उठा लो, उस में अल्लाह की कुदरत से तुम्हारे लिये चमत्कार है। लाठी 'आस' नामक एक पेड़ की लकड़ी की थी जो जन्नत से हज़रत आदम अपने साथ लाये थे, हज़रत मूसा के क़द के बराबर लम्बी थी। पत्थर में से पानी के सोते जारी होना और मन्न व सल्वा का मिलना और बदली का साया वग़ैरह यह सब काम पहले हुये थे और बस्ती में दाख़िल होने का हुक्म बाद में हुआ था। यहाँ पर बस्ती का बयान पहले और पानी आदि का बाद में होने का कारण यह है कि यहाँ केवल एहसानों को गिनाना मक़्सूद है, तर्तीब -वार गिनाना नहीं है (तर्जुमान-१/१०२)

३९. यहाँ पर बनी इस्राईल की अल्लाह की नेमतों की नाक़दरी का बयान है, कि मन्न व सल्वा जैसे पाक खानों की जगह रद्दी वस्तुएँ माँगने लगे (इब्ने कसीर)

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ ذٰلِكَ بِمَا
عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
الَّذِيْنَ ھَادُوْا وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِـِٕيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَھُمْ اَجْرُھُمْ عِنْدَ

और अल्लाह के नबिय्यों को नाहक़ (ज़ुल्म से) क़त्ल करते थे। यह इस कारण था कि वह पहले ही से अवज्ञा और सर्कशी किया करते थे[४०] ६२. जो लोग (ज़ाहिरी तौर पर अल्लाह और रसूल को) मानते हैं, या जो लोग यहूदी हैं या ईसाई, या बेदीन (दहरिये। कोई भी हो) जो कोई

رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ وَإِذْ
أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ ۖ خُذُوا مَا
آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝
ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ ۖ فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ
وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ
الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا
قِرَدَةً خَاسِئِينَ ۝ فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهَا
وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِلْمُتَّقِينَ ۝ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ
لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً ۖ قَالُوا

उन में से अल्लाह को दिल से माने और क़ियामत के दिन का यक़ीन करे और कार्य (शरीअ़त के अनुसार) अच्छे करे[४१] तो उन की मज़दूरी उन के मालिक के पास है और न उन को (ज़िन्दगी में उस के बर्बाद होने का) भय है और न वह (मरने के बाद) ग़म में होंगे[४२] ६३. और (सुनो) जब हमने तुम पर पहाड़ (को) ऊँचा कर के तुम से वादा लिया (कि तौरात पर अ़मल करना) और (ताकीद भी की कि) जो तुम को हमने दिया उसे मज़बूत पकड़े रहना और जो उस में है उसे (दिल से) याद करना, शायद तुम अ़ज़ाब से छूट जाओ[४३] ६४. फिर (भी) इस के बाद तुम फिर गये। फिर अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और रहमत तुम पर न होती तो बेशक तुम टूटा पाते (कि दीन व दुनिया में तुम को सख़्त रुस्वाई होती) ६५. और बिला शुब्हा तुम उन (शरीर) लोगों को जान चुके हो जिन्हों ने तुम में से हफ़्ता (शनिवार) के दिन में ज़्यादती की, पस हम ने उनको आदेश दिया कि तुम फटकारे हुये बन्दर हो जाओ। (चुनान्चे वह हो गये) ६६. पस हम ने उसको किया डरावना नज़ारा उस के सामने देखने वालों के लिए और उस से पिछलों के लिये। और डरने वालों के लिये नसीहत बनाया ६७. और (सुनो) जब हज़रत मूसा ने अपनी क़ौम से (जब उन्होंने एक बेगुनाह व्यक्ति को क़त्ल कर डाला था) कहा कि अल्लाह तआ़ला तुम को हुक्म देता है कि तुम एक गाय ज़ब्ह करो।

....

४०. चुंकि बनी इस्राईल का तकब्बुर, नबिय्यों के कुफ़्र व क़त्ल तक पहुँच गया था, इस कारण अल्लाह का ग़ज़ब उन पर वाजिब हो गया, दुनिया में भी और आख़िरत में भी। हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि बनी इस्राईल एक-एक दिन में तीन-तीन सौ नबिय्यों को क़त्ल कर डालते थे (इब्ने कसीर)

४१. इस बात का कारण यह है कि नेकी और नाजत, ईमान व अ़मल से जुड़ी हुयी है। नस्ल, ख़ान्दान, ज़ात-पात और धार्मिक गुट-बन्दी को इस में क़ोई अ़मल-दख़ल नहीं। यहूदी जब ईमान व अ़मल से वन्चित हो गये, तो न तो उन की नस्ल उन के किसी काम आई और न ही यहूदिय्यत की गुट-बन्दी कुछ लाभ पहंचा सकी। अल्लाह के क़ानून ने यह नहीं देखा कि वह हैं कौन और किस गिरोह-बन्दी से संबन्ध रखते हैं। बल्कि यह देखा कि उन का अ़मल कैसा है। और फिर जब वह परिक्षा में पूरे न उतरे तो उन पर ग़ज़ब नाज़िल हुआ और वह नामुराद हुये। (तर्जुमान मौलाना आज़ाद)

४२. शाने नुज़ूलः- हज़रत सल्मान फ़ारसी रज़ि० ने अपनी क़ौम के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा कि उनका क्या हाल होगा? और उनकी नमाज़ व इ़बादत और ख़ैरात का ज़िक्र किया। इस के उत्तर में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः वह जहन्नम में हैं। हज़रत सल्मान फ़ारसी को सुन कर रंज भी हुआ और आश्चर्य भी। इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयतें उतारीं (लुबाब)

हज़रत याकूब अ़लैहि की औलाद जो उन के [illegible] हुयी, उसे यहूद कहा गया। और 'यहूद'

➲का अर्थ "हिलना" भी है। लोग तौरात पढ़ते समय हिला करते थे, इसलिये यहूद के नाम से प्रसिद्ध हुये। नसारा को नसारा इस लिये कहते हैं कि हज़रत ईसा अ़लैह० ने कहा था "मन् अन्सारी इलल्लाह" उत्तर में उन के मुरीदों ने "नह्नु अन्सारुल्लाह" कहा था, इसलिये उन को 'नसारा' कहा गया। या यह लोग 'नासिरा' नामी गाँव में आकर बस गये थे, इस लिये यह नाम पड़ा।

'साबिईन' एक फ़िर्क़ा था। यहूद व नसारा के दर्मियान उन का कोई ख़ास मज़हब निश्चित न था। कुछ उलमा ने उस से मुराद मजूसी लिया है। इमाम राज़ी का कहना है कि यह लोग नक्षत्रों की पुजा करते थे जिनकी तरफ़ हज़रत इब्राहीम अ़लै० भेजे गये थे, यह लोग उस क़ौम में से थे। सहीह हाल के बारे में तो अल्लाह ही को इ़ल्म है, मगर ज़ाहिर में यही बात अच्छी लगती है, इस लिये कि यह लोग न तो यहूदी थे और न ही नस्रानी और न ही मजूसी और मुश्रिक, बल्कि यह लोग सीधी राह पर थे और किसी ख़ास मज़हब के पाबन्द न थे। चुनान्चे यही कारणहै कि अ़रब के मुश्रिक नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सहाबा को "साबी" कहा करते थे, इस लिये कि इन लोगों ने तमाम धर्मों को छोड़ दिया था। कुछ उलमा का कहना है कि "साबी" वह लोग कहलाते थे जिन के पास किसी नबी की दावत नहीं पहंची (इब्ने कसीर)

मक्का के काफ़िरों का आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आप के सहाबा को "साबी" कहना ऐसा ही था जैसा कि आज कल बिद्अ़ती लोग सच्चे मुसलमानों को "वहाबी, ग़ैर मुक़ल्लिद, ला मज़हब" वग़ैरह जैसे बुरे अल्क़ाब के साथ पुकारा करते हैं। हालाँकि शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रह० फ़रमाते हैं कि उन ही लोगों का नाम "अह्ले-हदीस" है (गुन्-यतुत्तलिबीन)

४३. इन आयतों में अल्लाह तआ़ला बनी इस्राईल को उन के वादे और इक़रार याद दिला रहा कि मैं तुम लोगों से अपनी और नबी की इताअ़त का वादा ले चुका हूँ। और उस वादे को पूरा कराने और मनवाने के लिये मैंने पहाड़ को तुम्हारे सरों पर ला खड़ा कर दिया था जैसे दूसरे स्थान पर बयान हुआ है "जब हम ने उन के सरों पर साइबान की तरह पहाड़ को ला खड़ा किया। और यह यक़ीन कर चुके थे कि वह अब गिर कर उन्हें कुचल डालेगा। उस समय हमने यह कहा था कि हमारी दी हुयी वस्तु को अच्छी तरह पकड़ कर थाम लो और उस में जो कुछ है उसे याद करो (सूरः आराफ़ आय न० १७१)

'तूर' से मुराद पहाड़ है, जैसा कि सूरः आराफ़ १७१ में है और जैसा कि सहाबा और ताबेअ़ीन ने इस की तफ़्सीर बयान फ़रमाई है। 'तूर' उस पहाड़ को कहते हैं जिस पर हरियाली हो और वह उपजाऊ हो। इमाम सदी कहते हैं कि उन के सज्दे से इन्कार के कारण उन के सर पर पहाड़ आ गया, लेकिन उस समय यह लोग सज्दा में गिर पड़े तो अल्लाह तआ़ला ने उन पर रहम फ़रमाया और पहाड़ हटा लिया। 'जो हम ने दिया' इस से मुराद तौरात है। "कुव्वत" से मुराद "आज्ञापालन" है। अर्थात, तौरात पर मज़बूती से जम कर अ़मल करने का वादा करो, वर्ना पहाड़ तुम पर गिरा दिया जायेगा, और उस में जो है उसे याद करो (मुहम्मदी)

أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ۖ قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ
الْجَاهِلِينَ ۞ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ ۚ قَالَ
إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ عَوَانٌ
بَيْنَ ذَٰلِكَ ۖ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ۞ قَالُوا ادْعُ لَنَا
رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا لَوْنُهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا

वह बोले (ऐ मूसा) क्या तू हम से मस्ख़री करता है? (मूसा ने उन को जवाब में) कहा (कि मस्ख़री करना तो जाहिलों का काम है) पनाह अल्लाह की इस से कि मैं जाहिल बनूँ[४४]
६८. बोले कि (बिहतर, लेकिन) अपने अल्लाह से दुआ कीजिये कि हमें साफ़ बतला दे कि वह (गाय) कैसी है? (और उस की आयु क्या➲

है?) मूसा ने कहा: अल्लाह फ़रमाता है कि गाय न बूढ़ी है और न बहुत छोटी, बल्कि बीच की उम्र की है। पस (अब प्रश्न मत करो) जो कुछ तुम को अल्लाह का हुक्म होता है वही करो[४५] ६९. (मगर) वह (अपनी आ़दत को न भूले) कहने लगे (एक बार और) अल्लाह से दुआ़ कर हमें बतला दे कि उस का रंग कैसा है? मूसा ने कहा: अल्लाह फ़रमाते हैं कि वह पीले रंग की है, ऐसा प्यारा है रंग उस का कि देखने वालों को निहायत भली लगती है ७०. (इतना सुन कर भी बाज़ न आये और) बोले (कि एक मर्तबा फिर) अपने रब से दुआ़ कर कि बतला

بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النّٰظِرِيْنَ ۝ قَالُوا
ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ عَلَيْنَا
وَاِنَّآ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ۝ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا
بَقَرَةٌ لَّا ذَلُوْلٌ تُثِيْرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِى الْحَرْثَ
مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيْهَا قَالُوا الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ
فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝ وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا
فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ۝
فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا كَذٰلِكَ يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى

दे हम को वह गाय कैसी है (दूध देने वाली या काम करने वाली) क्योंकि गायें हम पर मुश्तबह (गडमड) हो रही हैं, अल्लाह ने चाहा तो हम अवश्य राह पा जायेंगे ७१. मूसा ने कहा: अल्लाह फ़रमाता है। वह गाय काम करने वाली नहीं जो (हल चलाकर) ज़मीन को फाड़ती है, न (किसी) खेत को पानी पिलाती है (बल्कि वह बैअ़ेब और) तन्दुरुस्त है, कोई दाग़ भी उस में नहीं (यह सब फ़ुज़ूल झगड़े कर के) बोले, अब आप ने ठीक बात बताई है। पस (ख़ुदा-ख़ुदा कर के) उन्हों ने उसको ज़ब्ह किया और उम्मीद न थी कि करेंगे[४६] ७२. (याद करो) जब एक नफ़्स (जान) को मार कर तुम ने इस में इख़्तिलाफ़ किया (कोई कहता था उस ने मारा, कोई कहता उसने) और जिस बात को तुम छुपाते थे अल्लाह ने उसको ज़ाहिर करना था ७३. पस हम ने हुक्म दिया कि उस (ज़ब्ह की हुयी गाय) में से एक टुकड़ा उस (क़त्ल किये हुये) पर लगाओ (बिशक) अल्लाह इसी प्रकार मुर्दों को जीवित करेगा

....

४४. इसका मुख़्तसर क़िस्सा यह है कि बनी इस्राईल में एक शख़्स बहुत बड़ा धनवान था उस के केवल एक लड़की और भतीजा था। भतीजे ने लड़की और माल के लालच में अपने चचा को क़त्ल कर डाला और लाश को दूसरे स्थान पर फेंक दिया और सुब्ह को स्वंय ही रोना-पीटना, चीखना-चिल्लाना आरंभ कर दिया। और जहाँ शव को ले जा कर डाला था वहाँ के लोगों पर उस के ख़ून का आरोप लगा दिया। उस जगह के रहने वाले इस मुक़द्मा को हज़रत मूसा अ़लै० के पास ले गये, तो आप ने यह हुक्म दिया जो इस आय: में बयान है (इब्ने कसीर)

४५. यानी शरीअ़त के अह्काम पर सीधे-सादे तरीक़े से इताअ़त करने के स्थान पर, तरह-तरह के प्रश्न करना, बिला ज़रूरत कीड़े निकालना, रद्द करना, शरीअ़त की सरलता को सख़्ती से बदल देना (गिन्ती-बाबा १९.२०,इस्तिसना-२१:- देखें तर्जुमा-नुल् क़ुरआन-मौलाना आज़ाद)

४६. जूँ-जूँ वह प्रश्न बढ़ाते गये, अल्लाह के आदेश में भी सख़्ती होती गयी। अन्त में एक अनाथ बच्चे के पास वैसी गाये मिल गयी। यह बच्चा अपने माता-पिता का बड़ा आज्ञाकारी था। उसके पिता ने जो निहायत नेक मर्द था अपने आख़िरी समय में यह गाय अपने बच्चे के लिये अल्लाह के हवाले जंगल में छोड़ दी थी। बच्चा जब सयाना

हो गया और अपनी माता की सेवा में लग गया तो उन ही दिनों में यह घटना और एक बेहतरीन गाय की बनी इस्राईल में खोज हुयी। जब बनी इस्राईल इस प्रकार की गाये ढूँडने निकले तो उस लड़के के अ़लावा और किसी के पास न पाई। अन्त में मामला हज़रत मूसा की हिदायत के अनुसार यूँ तै हुआ कि जो भी मूल्य यह लड़का माँगे, उसे दे दो। आख़िर गाय के भार के बराबर सोना दिया गया, तब उसने अपनी गाय बेची। यह बर्कत अल्लाह ने माँ की सेवा की वजह से अ़ता फ़रमाई थी। उस के पिता का तो देहान्त हो चुका था और उसकी विधवा माँ ग़रीबी और तंगी के दिन काट रही थी।

मतलब यह है कि गाय दे दी गयी और उसे ज़ब्ह किया गया और उस के जिस्म का एक टुकड़ा ले कर मक़्तूल के जिस्म पर लगाया गया, तो अल्लाह के हुक्म से वह मुर्दा भी उ़ठा और क़ातिल यानी क़त्ल करने वाले अपने भतीजे का नाम बतलाया और फिर मर गया। बनी इस्राईल में जो जंग होने वाली थी वह रुक गयी और यह फ़ित्ना टल गया।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि हुक्म मिलते ही अगर वह किसी गाय को भी ज़ब्ह कर डालते तो काफ़ी था, लेकिन उन्हों ने लगातार प्रश्न आरंभ कर दिये इसलिये हुक्म में भी सख़्ती बरती गयी, यहाँ तक कि अगर वह अन्त में इन्शाअल्लाह न कहते, तो कभी भी यह सख़्ती न हटती और क़ातिल का पता न चलता। 'ज़लूल' की तफ़्सीर है "वह हल नहीं जोतती और न ही पानी का चर्स खींचती है," अर्थात खेत की सींचाई का काम भी उस से नहीं लिया जाता और न ही उस में कोई दाग़-धब्बा है (इब्ने कसीर)

وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ ثُمَّ قَسَتْ
قُلُوبُكُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ
قَسْوَةً ۚ وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ ۚ
وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاءُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا
لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا
تَعْمَلُونَ ۝ أَفَتَطْمَعُونَ أَنْ يُؤْمِنُوا لَكُمْ وَقَدْ
كَانَ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ يُحَرِّفُونَهُ
مِنْ بَعْدِ مَا عَقَلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ وَإِذَا لَقُوا
الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا ۚ وَإِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ
قَالُوا أَتُحَدِّثُونَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاجُّوكُمْ
بِهِ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ أَوَلَا يَعْلَمُونَ
أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝ وَمِنْهُمْ
أُمِّيُّونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا أَمَانِيَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا

और तुम को अपनी निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम समझ जाओ[४७] ७४. इस के बाद फिर तुम्हारे दिल सख़्त हो गये, पस वह (सख़्ती में) पत्थरों के समान हैं, बल्कि उन से भी ज़्यादा सख़्त (इसलिये कि पत्थरों की सख़्ती तो प्राकृतिक है) और कुछ पत्थर ऐसे भी हैं कि उन में से नहरें जारी होती हैं और कुछ ऐसे हैं कि वह फट जाते हैं फिर (फटने के कारण) उन में से पानी निकल आता है। और कुछ (पत्थर) ऐसे हैं जो अल्लाह के डर से गिर जाते हैं[४८]। और अल्लाह तुम्हारे कर्मों से ग़ाफ़िल नहीं ७५. क्या तुम (मुसलमानो!) आशा रखते हो कि तुम्हारी बातें मान लेंगे, हालाँकि (अब भी) एक गुरोह उन में से ऐसा है कि अल्लाह के कलाम को सुन कर (अपने मतलब की ओर) फेर लेता है[४९] (यह नहीं कि नासमझी से बल्कि) समझने के बाद जान बूझ कर। हालाँकि वह जानते हैं (कि जो कुछ हम करते हैं वह बुरा

है) ७६. और जब (कभी) मुसलमानों से मिलते हैं तो (मतलब हासिल करने के लिये) कहते हैं कि हम ने माना हुआ है और जब (एक दूसरे से मिलते हैं, तो (मलामत के तौर पर) कहते हैं (कि तुम भी अ़जीब बेवकुफ़ हो) क्या उन (मुसलमानों) को वह भेद बतलाते हो जो अल्लाह ने (ख़ास) तुम को ही बतलाए हैं ताकि वे तुम से (मरने के बाद इसी दलील से) अल्लाह के सामने झगड़ा करें, क्या तुम समझते नहीं हो? ७७. (अफ़्सोस है उन पर) क्या यह नहीं जानते कि अल्लाह उन की बातें जो छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं, सब जानता है[४९] ७८. और कुछ उन में से ऐसे ना जानने वाले हैं जो किताब में से कुछ भी नहीं जानते। हाँ बेजा उमन्गें और यूँही अटकलें चलाते हैं

....

४७. यानी जैसे उस वक़्त एक मुर्दे को गाय का एक टुकड़ा मार कर जीवित कर दिया, इसी प्रकार क़ियमात के दिन सब मुर्दों को ज़िन्दा करेगा। यह ख़िताब अ़रब के मुश्रिकों से है जो क़ियामत के आने के इन्कारी थे। इस सूर: में पाँच स्थानों पर मरने के बाद जी उठने का बयान हुआ है (१) आयत नं ५६ में (२) इस क़िस्से में यानी आय: नं ७३ में (३) आय: नं २४३ में (४) आय: नं २६० में (५) आय: नं १६५ में। अबू दावूद तयालसी की एक हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिस प्रकार बंजर ज़मीन बारिश के बाद हरी-भरी हो जाती है, ऐसी ही मिसाल मौत के बाद जीवन की है (इब्ने कसीर)

४८. कुछ लोगों ने पत्थरों के फट जाने और उन से पानी बह पड़ने की तावीलें की हैं। मगर इमाम राज़ी, क़ुर्तुबी वग़ैरह कहते हैं कि ऐसी तावीलों की कोई आवश्यक्ता नहीं है। अल्लाह पाक जो सिफ़त जिस वस्तु में चाहे पैदा कर सकता है, वह पूरी क़ुद्रत रखने वाला है। उसका फ़र्मान है कि हम ने अमानत को आसमानों और ज़मीनों और पहाड़ों पर पेश किया तो वह डर गये। एक दूसरे स्थान पर है कि समस्त वुस्तुयें उस की तस्बीह बयान करती हैं। दूसरी जगह है कि नक्षत्र और पेड़-पौधे अल्लाह को सज्दा करते हैं। एक जगह फ़रमाया: ज़मीन व आसमान ने कहा कि हम खुशी-खुशी हाज़िर हैं। दूसरी जगह है कि पहाड़ भी कुरआन से मुतअस्सिर (प्रभावित) हो कर डर के मारे फट जाते हैं एक जगह है कि क़ियामत के दिन स्वंय इन्सान का जिस्म बोलेगा। पापी बोलेंगे कि तुम ने हमारे ख़िलाफ़ क्यों गवाही दी? तो जिस्म बोलेंगे कि आज अल्लाह ने हम को बोलने की कुव्वत दी है, जैसे उस ने हर चीज़ को यह कुव्वत दी हैं। उहुद पहाड़ के बारे में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: यह हम को दोस्त रखता है। जिस खजूर के तने पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम टेक लगा कर खुत्बा दिया करते थे उस का रोना सहीह रिवायतों से साबित है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं उस पत्थर को पहचानता हूँ जो नबुव्वत से पहले मुझे सलाम किया करता था। हज्रे अस्वद के बारे में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: यह क़ियमात के दिन हक़ के साथ बोसा देने वालों की गवाही देगा। मतलब यह है कि बहुत सी आयतें और हदीसें हैं कि उन चीज़ों में सोचने-समझने की सलाहियत है और यह तमाम चीज़ें हक़ीक़त हैं न कि मजाज़ी (इब्ने कसीर)

४९. मतलब यह है कि उन के इन बुरे कामों को बयान कर के उन की बुराई बयान हो रही है कि यह लोग अल्लाह की किताब को तो स्वंय शौक़ से पढ़ते हैं, लेकिन अगर कोई मुक़ाबिल में आकर पेश करे और उसके मुतअ़ल्लिक़ कुछ सवाल करे तो यह लोग सुन कर उसे बदल देते हैं। मैं कहता हूँ कि यह बुरे काम और गन्दे तौर-तरीक़े आजकल मुसलमानों में भी राइज (प्रचलित) हो गये हैं। अल्लाह की किताब कुरआन को छोड़ कर यहूद के मिस्दाक़ बन रहे हैं। झूठी रिवायतों और वाहियात क़िस्म के क़िस्सों को मिंबर पर बयान किया जा रहा है कुरआन मजीद, जोंकि वाज़-नसीहत की किताब थी और वाज़ व नसीहत के लिये नाज़िल की गयी थी और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हमेशा अपने खुत्बों में पढ़कर लोगों को नसीहत फ़रमाया करते थे, उस की यह हालत है कि खुत्बों में भी उसे स्थान नहीं मिलता। बल्कि उस की जगह अब तो आज-कल के नज़्म और नम्र (पद्य-गद्य) में लोगों के बनाये

गये खुत्बों ने ले ली है, हाँ अगर तबर्रुक के तौर पर कोई आयः मुँह से निकल आये तो और बात है। हाय अफ़्सोस! उस रोज़ हम क्या जवाब देंगे जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह के सामने हमारी शिकायत करते हुये कहेंगे "ऐ मेरे रब! मेरी इस क़ौम ने इस कुरआन को छोड़ दिया था" (सनाई)

५०. यह तहरीफ़ (हिरा फेरी, रद्दोबदल) करने वाले और छुपाने वाले उन के उलमा थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की जो विशेषतायें उन की किताबों में थीं, उन्हों ने तावीलें कर के अस्ल मतलब से दूर कर दिया था। इसी प्रकार हलाल को हराम और हराम को हलाल, हक़ को बातिल और बातिल को हक़ कर दिया करते। रिश्वत लेना और ग़लत मसाइल को बतलाने की आ़दत डाल ली थी। हाँ कभी-कभी रिश्वत वग़ैरह न मिलती, उन की अगुवाई के समाप्त होने का ख़ौफ़ न होता और मुरीदों से अलग होते, तो हक़ बात भी कह दिया करते थे। मुसलमानों से मिलते तो कह दिया करते कि तुम्हारे नबी सच्चे हैं, यह अल्लाह की तरफ़ से भेजे हुये रसूल हैं। लेकिन फिर आपस में बैठ कर कहते कि क्यों इन अ़रब वालों से ऐसी बातें कहते हो? फिर तो यह तुम पर छा जायेंगे और अल्लाह के हाँ भी तुम्हें लाजवाब कर देंगे। इन ही लोगों के जवाब में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: इन बेवक़ूफ़ों को क्या इतना भी इ़ल्म नहीं है कि हम खुली और छुपी तमाम बातों को जानते हैं (मुहम्मदी)

يَظُنُّوْنَ ۝ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَيْدِيْهِمْ ق
ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ
فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا
يَكْسِبُوْنَ ۝ وَقَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً ؕ
قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗٓ
اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ بَلٰى مَنْ كَسَبَ
سَيِّئَةً وَّاَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓـَٔتُهٗ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ
هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَاِذْ
اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ قف وَ
بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ
وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ
ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝

७९. पस अफ़्सोस है उन (नाम के आ़लिमों) पर जो अपने हाथों से लिखते हैं, फिर कहते हैं, कि यह अल्लाह की तरफ़ से है (सारे हीले इसलिये करते हैं) ताकि उस के बदले में किसी क़दर {थोड़ा बहुत} माल हासिल करें। पस अफ़्सोस है उन के हाल पर उन के लिखने की वजह से[५१] और अफ़्सोस है उन पर उनकी कमाई से ८०. और कहते हैं कि (हम चाहे कुछ भी करें) हम को चन्द रोज़ से ज़्यादा आग का अ़ज़ाब न होगा (ज़्यादा से ज़्यादा चालीस रोज़ तक) तू कह दे कि तुम ने कोई अल्लाह से (इस काम का) इक़रार लिया हुआ है? तो बेशक अल्लाह अपने वादा के ख़िलाफ़ नहीं करेगा। क्या अल्लाह के बारे में ऐसी बातें कहते हो जो ख़ुद (भी) नहीं जानते[५२] ८१. हाँ, (सुनो, हक़ यह है कि) जो शख़्स पाप करे और (इस दर्जा) उस के बुरे काम उस को घेर लें (कि हर प्रकार के कुफ़्र-शिर्क में लत-पत हो) ऐसे लोग (बिशक) आग में जायेंगे, वह सदा उस में रहेंगे ८२. और जो लोग ईमान लायेंगे और अच्छे कार्य करेंगे ऐसे लोग (बिशक) जन्नत में जायेंगे[५३] (न केवल जायेंगे, बल्कि) वह हमेशा उसी में रहेंगे ८३. और जब हम ने बनी इस्राईल से इस काम का वादा लिया

था कि अल्लाह के अ़लावा किसी की अ़िबादत न करना और माँ-बाप, क़रीबी लोगों, यतीमों और मिस्कीनों के साथ एहसान करना और (अ़लावा इस के) सब लोगों से अच्छी तरह बोलना और नमाज़ पढ़ना[५४] और ज़कात दिया करना। फिर (इस वादे के बाद भी) तुम सब (इस से) फिर गये मगर बहुत थोड़े तुम में से। और तुम मुँह फेर जाते हो।

....

५१. मूसा अ़लै० ने बनी इस्राईल को केवल एक सूर: दी थी, बाक़ी तौरात हज़रत हारून अ़लै० की औलाद के पास रख दी थी। जब वह लोग बुख़्तनस्र के हम्ले में मार दिये गये तो अ़ुज़ैर अ़लै ने थोड़ी सी तौरात उन लोगों के ज़रीआ़ से जमा कर ली थी जिन को कुछ ज़बानी याद थी वही तौरात आज-कल मौजूद है और इसमें भी कुछ कमी-ज्यादती हो गयी है।

यही हाल इन्जील का भी है। उसके चार नुस्ख़े हैं। उन में आपस में इख़्लिाफ़ है (तर्जुमान-१/११७) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने कहा कि यहूद के उलमा ने तौरात में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सिफ़त लिखी हुयी देखी कि सुर्मई) आँखें, दर्मियाना क़द, मुड़े बाल, सुन्दर चेहरा होगा। उन लोगों ने ह़सद की वजह से उस को बदल कर यह कर दिया कि "लम्बा क़द, पीला रंग, सीधे बाल होंगे (लुबाब)"

५२. यहूद कहते थे कि दुनिया सात हज़ार वर्ष की है। और हम लोग हर हज़ार वर्ष के बदले एक दिन जहन्नम में रहें गे, फिर अ़ज़ाब हल्का हो जायेगा। उन का एक कथन यह भी था कि केवल चालीस वर्ष जहन्नम में रहेंगे, इस पर यह आयतें नाज़िल हुयीं।

५३. यहूदियों क़ी यह गुमराही कि वह यह समझते थे कि "उन की उम्मत नजात पाई हुयी है इसलिये संभव नहीं कि कोई यहूदी हमेशा के लिये जहन्नम में डाला जाये" क़ुरआन मजीद उन के इस ग़लत ख़याल को रद्द करता है और कहता है कि जन्नत व जहन्नम की तक़्सीम क़ौमों की तक़्सीम की बिना पर नहीं है। किसी ख़ास क़ौम के लिये तो जन्नत और बाक़ी दूसरी क़ौमों के लिये जहन्नम। बल्कि जन्नत और जहन्नम का दारोमदार तो ईमान व अ़मल पर है। जिस इन्सान ने भी बुरे काम किये तो उस के लिये दन्ड है और जिसने नेक काम किये उस के लिये नजात है चाहे वह कोई भी हो और किसी भी गुरोहबन्दी का हो। (तर्जुमान मौलाना आज़ाद)

५४. बनी इस्राईल को जो आदेश दिये गये और उनसे जिन चीज़ों का वादा लिया गया, यहाँ पर उन का बयान हो रहा है। इस उम्मत को भी आदेश दिया गया है "अल्लाह की अ़िबादत में किसी को शरीक न करो, माँ-बाप के साथ, रिश्ते-दारों के साथ, अनाथों और ग़रीबों के साथ, रिश्ते-दारों और पड़ोसियों के साथ, मुसाफ़िरों के साथ, लौंडी और ग़ुलामों के साथ नेक बर्ताव, एहसान और भलाई किया करो। याद रखो! तकब्बुर और फ़ख़्र करने वालों को अल्लाह पसन्द नहीं करता (क़ुरआन)

'क़ूलू लिन्नासि ह़ुस्ना' का अर्थ यह है कि लोगों के साथ नर्मी और हंसी-ख़ुशी के साथ पेश आया करो। फिर ख़बर दी कि उन लोगों ने अ़ह्द-पैमान को तोड़ा और अक्सर अवज्ञाकारी हो गये। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द रज़ि० ने पूछा था कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! कौन सा कार्य सब से अफ़्ज़ल है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "नमाज़ को उस के अव्वल समय पर पढ़ना"। फिर पूछा कि इस के बाद? फ़रमाया: "माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करना"। फिर प्रश्न किया इसके बाद? फ़रमाया: "अल्लाह की राह में जिहाद करना"। एक दूसरी ह़दीस में है कि किसी सहाबी ने मालूम किया कि किस के साथ नेकी और भलाई करूँ? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अपनी माँ के साथ"। पूछा कि फिर किस के साथ? फ़रमाया: "अपनी माँ के साथ"। फिर पूछा गया कि किस के साथ? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अपने पिता के साथ", फिर और दूसरे क़रीबी संबन्धियों के साथ। (इब्ने कसीर) एक और ह़दीस में है कि "जन्नत तुम्हारी माताओं के क़दमों

के नीचे है" मगर अफ़्सोस है कि आज-कल के नौजवान इतने गिर चुके हैं कि माँ-बाप की इ़ज़्ज़त और उन का एहतिराम उनमें से अक्सर के नज़दीक कोई चीज़ ही नहीं है। ऐसे लोगों को अल्लाह से डरते रहना चाहिये। माँ-बाप की बद-दुआ़ औलाद के लिये बर्बादी का कारण बन सकती है। इसलिये माँ-बाप का दिल दुखाना, अल्लाह की नाराज़गी और दीन व दुनिया दोनों की तबाही को दावत देना है।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ
اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ۝
ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا
مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ ز تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ
وَالْعُدْوَانِ ؕ وَاِنْ يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ
مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ ؕ اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ
وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ۚ فَمَا جَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ
مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ
يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى اَشَدِّ الْعَذَابِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ
الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ز فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ
وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ
وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ز وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ

८४. और जब हम ने तुम से यह वादा लिया था कि आपस में ख़ून न बहाना और अपने भाई-बनदों को उन के वतन से न निकालना फिर तुम ने इक़रार (भी) किया और (अब तक) तुम (इस बात के) गवाह हो ८५. फिर तुम (नि) ऐ (बनी इस्राईल के) लोगो! (सब आदेशों का ख़िलाफ़ किया कि) अपने भाई-बन्दों को क़त्ल करते हो और एक जमाअ़त को उन के घरों से निकाल देते हो, उन को कष्ट पहुंचाने में उन के दुश्मनों की गुनाह और ज़ुल्म में मदद करते हो। और अगर वह तुम्हारे पास बन्दी हो कर आयें तो बदला दे कर उन को छुड़ा लेते हो, हालाँकि उन का निकालना भी तुम पर हराम है। क्या आधी किताब (के हुक्मों) को मानते हो और कुछ हिस्से से इन्कार करते हो?[५५] पस जो कोई तुम में से यह ढंग इख़्तियार करे उस को दुनिया में ज़िल्लत और रुसवाई के अ़लावा कुछ भी हाथ न आयेगा और (इसी पर बस नहीं, बल्कि) क़ियमात के दिन वह सख़्त अ़ज़ाब में पहुंचाये जायेंगे। और अल्लाह तुम्हारे कामों से (किसी प्रकार ग़ाफ़िल और) बेख़बर नहीं[५६] ८६. यही तो हैं जिन्हों ने दुनिया को आख़िरत के बदले में लिया, पस (उन के जुर्म के मुनासिब यही दन्ड है कि) न तो उन से अ़ज़ाब हल्का होगा और न उनको (किसी से) सहायता पहुंचेगी ८७. (और उन की हिदायत के लिये) मूसा को हम ने किताब (भी) दी और उस के पीछे कई रसूल (भी) भेजे और (सब से अन्त में) हम ने अ़ीसा बिन मर्यम को मोजिज़े (चमत्कार) दिये

....

५५. मदीना के यहूदी तीन हिस्सों में बंटे हुये थे। बनी क़यूनुक़ाअ़ और बनू नज़ीर, यह दोनों क़बीला ख़ज़्रज् के साथ थे। तीसरा बनू कुरैज़ा, यह क़बीला बनू औस का साथी था। इन दोनों क़बीलों में मुद्दत से दुश्मनी और लड़ाई चली आ रही थी। औस और ख़ज़्रज् के दर्मियान जब लड़ाई होती तो यहूद अपने-अपने साथी क़बीले का साथ देते

➲तो इस में यहूदियों का क़त्ल होता और उन के मकानात लूटे जाते, कुछ बन्दी भी बना लिये जाते। जब लड़ाई समाप्त हो जाती तो अपने ही भाई-बन्दों को फ़िद्या दे कर स्वंय क़ैद से छुड़ाते और यूँ कहते कि हमारी किताब में यही लिखा हुआ है कि अपने भाइयों की सहायता करो और उन्हें क़ैद से छुड़ाओ। अल्लाह तआला ने इन आयतों में उन पर यह आरोप लगाया कि तुम्हारी किताब में भाइयों का क़त्ल करना, लूट-पाट करना और उन को उन के घरों से निकालना भी तो ह़राम लिखा है। फिर तुम अपनी किताब की कुछ बातों को तो मानते हो और कुछ से मुंह मोड़ते हो। सैकड़ों मुसलमान भी ऐसे हैं जो कहा करते हैं कि हम से नमाज़, रोज़ा, नहीं होता तो क्या हुआ, दिल से तो हम सब को हक़ जानते हैं। ऐसे लोगों को इन आयतों पर ग़ौर-फ़िक्र कर के अल्लाह से डरना चाहिये। (तर्जुमानुल कुरआन)

हदीस में आया है कि तमाम ईमानदार हमदर्दी और रहम-करम में एक जिस्म के मिस्ल हैं। किसी एक हिस्से में दर्द होने से तमाम जिस्म बेताब हो जाता है। इसी प्रकार एक दुखी मुसलमान के लिये सारे संसार के मुसलमानों को तड़प उठना चाहिये।

ख़ुदा रहम करता नहीं उस बशर पर+न हो दर्द की चोट जिस के जिगर पर।
करो मेहरबानी तुम अह्ले ज़मीं पर+ख़ुदा मेहरबाँ होगा अ़र्शे बरीं पर।

५६. अ़ब्दे ख़ैर कहते हैं कि हम सलमान बिन रबीआ़ की मातहती (कमांड) में जिहाद कर रहे थे। मुहासरा के बाद उस शहर को फ़त्ह कर लिया जिसमें बहुत से बन्दी भी मिले। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ने उन में से एक यहूदी लौंडी को सात सौ में ख़रीदा। रासुल्-जालूत के पास जब हम पहुंचे तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह उस के पास गये और फ़रमायाः यह लौंडी तेरे मज़हब की है, मैं ने इसे सात सौ में ख़रीद लिया है, अब तुम मुझ से ख़रीद कर इसे आज़ाद कर दो। वह चौदह सौ रुपये पर तैयार हो गये, मगर अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ने चार हज़ार माँगा और साथ ही यह भी कहा कि तौरात में लिखा है कि बनू इस्राईल का कोई भी व्यक्ति अगर बन्दी बना लिया जाये तो उसे ख़रीद कर आज़ाद कर दिया करो। अगर वह बन्दी बना लिया जाये तो फ़िद्या देकर आज़ाद करा दिया करो और उनको उन के घरों से बेघर भी न किया करो। अब तुम तौरात के हुक्म पर अ़मल करो और उसे ख़रीद लो वर्ना तौरात के इन्कारी बनोगे। वह समझ गये और कहने लगे कि संभवतः आप अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (तौरात के बड़े आ़लिम) हैं? उन्हों ने कहाः हाँ, चुनान्चे वह चार हज़ार ले आये, मगर आप ने दो हज़ार वापस कर दिये। मतलब यह है कि इस आयः में यहूद की आलोचना की गयी है कि वह अल्लाह के आदेशों को जानते-बूझते हुये भी पीठ पीछे डाल देते थे। अमानत-दारी और ईमानदारी उन के दर्मियान से उठ चुकी थी। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सिफ़तें, आप की निशानियाँ, आप की रिसालत की तस्दीक़ यहाँ तक कि आप के पैदा होने का स्थान, आप के हिज्रत करने की जगह, सब तौरात में मौजूद थीं, लेकिन यह सब छुपाते रहते थे और मुख़ालिफ़त पर तुले रहते थे। इन्हीं हर्कतों की वजह से दुनिया में ऐसे रुस्वा हुये कि पूरे अ़रब द्वीप में उन का घुसना बन्द कर दिया गया और मदीना से निकाल दिये गये और आख़िरत का अ़ज़ाब इस के अ़लावा है। (इब्ने कसीर)

مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۭ اَفَكُلَّمَا
جَاۗءَكُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ
فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ ۡ وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ۝ وَقَالُوْا
قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ۭ بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا

और उस को जिब्रील द्वारा कुव्वत (भी) दी (कोई उन से यह तो पूछे कि) जब कभी तुम्हारे पास कोई रसूल ऐसे आदेश लाया जिन्हें तुम्हारे दिल नहीं चाहते थे, तो क्या तुम ने इन्कार और तकब्बुर (नहीं) किया था? (अवश्य किया था, बल्कि) एक समूह को झुठलाया और एक को➲

مَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ۡ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝ بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۤ وَهُوَ الْحَقُّ

क़त्ल भी किया[५७] ८८. और कहते हैं कि हमारे दिल सुरक्षित हैं बल्कि (अस्ल बात यह है कि) उन के कुफ़्र की वजह से अल्लाह ने उन पर लानत की है, पस बहुत कम मानेंगे ८९. और जब अल्लाह की तरफ़ से उन के पास एक किताब (मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह द्वारा) पहुंची जिस (की सच्चाई) को पहचान चुके हैं जो उन के साथ वाली (किताब यानी तौरात) को मानती है तो उस से इन्कारी हो गये, हालाँकि इस से पहले कुफ़्फ़ार पर विजय चाहा करते थे, पस अल्लाह की लानत हो उन काफ़िरों पर ९०. बुरी है वह चीज़ जिस के बदले में अपनी जानों को दे चुके हैं यानी कि अल्लाह की उतारी किताब (कुरआन) नहीं मानते (नासमझी के कारण नहीं, बल्कि) केवल हसद से इस बात के कि अल्लाह अपने बन्दों में से अपना फ़ज़्ल किसी पर उतारे, पस (इसी वजह से तो) ग़ज़ब पर ग़ज़ब[५८] अल्लाह का अज़ाब उन्हों ने लिया और काफ़िरों को (क़ियामत में निहायत) ज़लील करने वाला अज़ाब है। ९१. और जब कोई (नसीहत के तौर पर) उन से कहे कि अल्लाह की उतारी हुयी क़िताब (कुरआन) को मान लो तो कहते हैं (कि) हम तो (जनाब) उसी (किताब) को मानेंगे जो हमारी तरफ़ उतरी है और जो उस के अ़लावा है, सब से इन्कार ही करेंगे हालाँकि

....

५७. बनी इस्राईल में एक के बाद एक बराबर रसूल आते रहे जो अधिक तर तौरात ही की तब्लीग़ व प्रचार करते रहे। यह सिलसिला हज़रत ई़सा अ़लै० की नबुव्वत पर ख़त्म हो गया और उन को इन्जील दी गयी। हज़रत मसीह का इस्राईल ख़ानदान में अन्तिम संदेष्टा होने की वजह से बड़ा ऊंचा स्थान है। उनको बहुत से चमत्कार दिये गये और सहायता के लिये हज़रत जिब्रील अ़लै० को ख़ास तौर पर आप के साथ कर दिया गया। इन सब बातों के बावजूद यहूद अपनी आ़दतों से बाज़ न आये, बल्कि उन के क़त्ल पर उतारू हो गये। आख़िर अपने बातिल ख़याल के मुताबिक़ उन्हों ने हज़रत ईसा को सूली पर लटका दिया, हालाँकि अल्लाह तआ़ला ने उन को ज़िन्दा और सही-सलामत आसमान पर उठा लिया (इब्ने कसीर)

५८. एक ग़ज़ब तो यह कि कुरआन बल्कि उस के साथ अपनी किताब के भी इन्कारी हो कर काफ़िर हुये। दूसरे केवल हसद और ज़िद से मौजूदा पैग़म्बर के मुख़ालिफ़ हुये और उन से इख़्तिलाफ़ किया। (मुवज़्ज़िहुल कुरआन) इसीलिये यहूद को "मग़ज़ूब" शब्द से याद किया गया, इस का अर्थ है "अल्लाह की तरफ़ से फटकारी हुयी क़ौम"। अल्लाह पाक मुसलमानों को अपने ग़ज़ब से बचाये- आमीन

مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ۭ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ

वह बिल्कुल हक़ है उन के साथ वाली किताब की तस्दीक़ करती है। तू कह! कि अगर तुम

مِن قَبْلُ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٩١﴾ وَلَقَدْ جَاءَكُم مُّوسَىٰ
بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِن بَعْدِهِ وَأَنتُمْ
ظَالِمُونَ ﴿٩٢﴾ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ
الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُم بِقُوَّةٍ وَاسْمَعُوا ۖ قَالُوا
سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَأُشْرِبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۚ
قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُم بِهِ إِيمَانُكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٩٣﴾
قُلْ إِن كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِندَ اللَّهِ خَالِصَةً
مِّن دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٩٤﴾
وَلَن يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
بِالظَّالِمِينَ ﴿٩٥﴾ وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَىٰ
حَيَاةٍ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ
أَلْفَ سَنَةٍ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهِ مِنَ الْعَذَابِ أَن

ईमानदार हो तो फिर पहले ज़माने में तुम अल्लाह के नबियों को क्यों क़त्ल करते थे[५९] ९२. और तुम्हारे पास मूसा (अपनी नबुव्वत की) साफ़ दलीलें (यानी चमत्कार) लाया फिर तुम ने उसके पीछे बछड़े को माबूद बना लिया और तुम ज़ालिम हो[६०], (क्योंकि शिर्क सब से बड़ा ज़ुल्म है) ९३. और जब हम ने तुम पर तूर पहाड़ खड़ा करके (अ़मल करने का) वादा लिया[६१] और कहा कि अच्छी तरह (मज़बूत) कुव्वत से पकड़ो जो हम ने तुम को दिया है और (जो कुछ हम कहें, दिल लगाकर) सुनो (तो तुम्हारे बाप-दादा) बोले, हम ने सुन लिया और हम करने के नहीं। और उन के दिलों में उन के कुफ़्र की शामत से बछड़े की मुहब्बत रच गयी। तू कह दे! (अगर यही ईमानदारी है तो) तुम्हारा ईमान तुम को बुरी राह बताता है अगर तुम इमानदार हो ९४. तू कह दे कि अगर सब लोगों से अलग तुम्हारे ही लिये अल्लाह के हाँ आख़िरत की नजात है (और किसी की उस में साझेदारी नहीं) तो पस तुम मौत माँगो (ताकि मरते ही हक़ीक़ी ऐ़श में जा बसो और नाहक़ दुनियावी तक्लीफ़ में क्यों फंसे रहो) अगर तुम सच्चे हो[६२] ९५. और अपने किये हुये (बुरे कर्मों) की वजह से (जिन का दन्ड भुगतान उन को भी यक़ीनी है) हर्गिज़ मौत की इच्छा न करेंगे। और अल्लाह ज़ालिमों को (अच्छी तरह) जानता है ९६. (यह तो ऐसे लालची हैं कि अगर तुम तमाम जहान भी तलाश करो तो) सब लोगों से ज़्यादा ज़िन्दगी का चाहने वाला इन्हीं को पाओगे, यहाँ तक कि मुश्रिकों से भी ज़्यादा (उन की ख़ाहिश का अनुमान इस से कर लो कि) हर एक उन में का यही चाहता है कि हज़ार वर्ष की उम्र मिले, हालाँकि उम्र की ज़्यादती कुछ उन को दन्ड से दूर न कर सकेगी

....

५९. क्या तौरात में नबी का क़त्ल जाइज़ है? पस तुम्हारे ऐसे ही बुरे कर्मों से मालूम होता है कि तुम हमेशा से दुनिया के चाहने वाले रहे हो। न तुम को तौरात से ग़रज़ और न हज़रत मूसा से मतलब। इसलिये तुम्हारा कुरआन का इन्कार करना और उस का कारण यह बतलाना कि हम चूँकि तौरात को मानते हैं इस लिये कुरआन को मानने की आवश्यक्ता नहीं बिल्कुल ग़लत है। बल्कि बहुत से नबी तौरात को मुकम्मल करने के लिये आये, लेकिन तुम ने उनको भी क़त्ल कर दिया। अगर तुम्हारी यह वजह सही होती, तो उन को क्यों क़त्ल करते? अस्ल में कारण यह है कि तुम हमेशा से अपनी इच्छाओं के अधीन रहे हो और दीन की आड़ में बेदीनी के काम करते रहे हो। चुनान्चे इसी का एक उदाहरण और सुनो (सनाई)

६०. चुनान्चे बैल के तक़द्दुस (इ़ज़्ज़त, एहितराम) का अ़क़ीदा बनी इस्राईल में लम्बे समय तक बाक़ी रहा (ज्योश

➲इन्साईक्लोपीडिया-१/४५२) 'उश्रिबू फ़ी क़ुलूबिहिम' से मुराद यह है कि बछड़े की मुहब्बत उन की रग-रग में समा गयी थी, जैसे पानी रग-रग में पहुंचकर बदन में घुल-मिल जाता है। 'मश्रूबा' द्वारा यह इस्तिआ़रा अधिक मुहब्बत और अधिक नफ़रत, दोनों मौक़ों पर अ़रब के लोग बोलते रहे हैं (माजिदी)

६१. 'तूर' आम पहाड़ को भी बोलते हैं और जज़ीरा सीना के एक ख़ास पहाड़ का भी नाम हैं। आज कल के भूगोलशास्त्री कहते हैं कि 'तूर' का शुमार सीना द्वीप के बहुत से पहाड़ों पर होता है, लेकिन हज़रत मूसा और बनी इस्राईल में तूर पहाड़ से मुराद सीना का पहाड़ होता है। लेकिन ख़ुद सीना पहाड़ की कोई एक चोटी नहीं, बल्कि बहुत सी चोटियाँ हैं, उन्हीं में से किसी का नाम होगा। क़ौम के ऊपर पहाड़ बुलन्द करने से क्या मुराद है? तौरात में इस का थोड़ा-बहुत बयान है। अल्लाह तआ़ला ने उन के ऊपर सीना को उलट दिया जिस प्रकार कोई बड़ा बर्तन उलट दिया जाता है। और कहा कि अगर तुम तौरात को क़ुबूल करते हो तो ठीक, वर्ना सभी दफ़्न कर दिये जाओगे (ज्योश इन्साईक्लोपीडिया-४/३२१) अल्लाह ने पहाड़ को उन लोगों पर उलट कर औंधा कर दिया और उन से कहा कि अगर तौरेत को कुबूल करते हो तो ठीक है, वर्ना यहीं तुम्हारी समाधि बन जायेगी (हवाला मज़कूर)

हमारे कुछ उलमा ने जो आसार सहाबा व ताबेई़न की ज़बान से नक़ल किये हैं उन की भी रिवायतें उन ही से मिलती-जुलती हैं (माजिदी)

६२. इस आयत से मालूम हुआ कि मौत से डरना बददीनों की निशानी है। मुसलमान को मौत की दुआ़ करनी तो हमारी शरीअ़त मे मना है लेकिन मौत को याद रखने और उस के वास्ते हर समय तैयार रहने की बड़ी ताकीद है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "लज़्ज़तों को तोड़ने वाली मौत को ख़ूब याद किया करो"। एक दूसरे स्थान पर फ़रमाया: "मुसलमानों में सब से अफ़्ज़ल वह है जो अच्छे अख़लाक़ वाला आख़िरत की तैयारी में सब से ज़्यादा लगा रहने वाला हो" (तफ़्सीर हुमैदी) यहूदी कहा करते थे कि हम अल्लाह के प्यारे बन्दे और बुज़ुर्गों की औलाद हैं, इस लिये हमें आख़िरत का अ़ज़ाब नहीं होगा। और हम में से किसी के बुरे कर्मों के कारण हुआ भी तो केवल कुछ रोज़ ही होगा, फिर हम सदा के लिय नजात पाजायेंगे और हमारे अ़लावा कोई नजात नहीं पायेगा। इन लोगों के बारे में यह आयः नाज़िल हुयी।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि अगर यह लोग मौत चाहते तो उसी समय अपना ही थूक निगलने से मर जाते और एक भी यहूदी दुनिया में ज़िन्दा न रहता।

يُعَمَّرَ ۗ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ۝ قُلْ مَنْ كَانَ
عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝
مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ
وَمِيْكٰىلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ۝ وَلَقَدْ
اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ اِلَّا
الْفٰسِقُوْنَ ۝ اَوَكُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ
مِّنْهُمْ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَمَّا جَآءَهُمْ

(इसलिये कि) अल्लाह उन के कर्मों को देखता है (जिस क़द्र उम्र लम्बी हो कर सर्कशी करेंगे, सब की सज़ा देगा) ९७. तू कह दे (याद रखो) जो कोई जिब्रील से दुश्मनी करेगा (वह सख़्त टूटा पायेगा) क्योंकि यह इसीलिये तेरे दिल पर (ऐ मुहम्मद) अल्लाह के आदेश से नाज़िल किया है, कि सच्चा बतलाता है अपने सामने वाली किताब (यानी तौरात) को और हिदायत और शुभ सूचना है मानने वालों के लिये ९८. जो शख़्स अल्लाह से और (उसके निकटतम) फ़रिश्ते या उस के रसूलों या जिब्रील या➲

رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ
فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ
ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا
الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ
وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ۗ وَمَآ

मीकाईल से दुश्मनी रखेगा (वह अपनी अच्छाई न देखेगा) इसलिये कि अल्लाह काफ़िरों का स्वंय दुश्मन है[६३] ९९. हम ने तेरी तरफ़ खुली-खुली आयतें उतारी हैं (जिस में किसी प्रकार का एच-पेच नहीं) और बदकार लोग ही उन से इन्कारी होते हैं[६४] १००. क्या जब कभी उन्हों ने कोई वादा किया तो एक गरोह ने उसे पीठ के पीछे फेंक दिया (फिर इसी ही पर बस नहीं किया) बल्कि बहुत से उन में से मानते ही नहीं १०१. और जब उन के पास अल्लाह के हाँ से एक रसूल आया जो उन के साथ वाली किताब की (तौहीद में) तस्दीक़ करता है तो (इसके बावजूद) एक गरोह ने उन किताब पाने वालों में से, अल्लाह की किताब को अपनी पीठ पीछे फेंक दिया, गोया कुछ भी नहीं जानते (फिर अ़मल से क्या मतलब) १०२. और पीछे हुये हैं उन (वाहियात) बातों के जो शयातीन सुलैमान के ज़माना में पढ़ते थे और (हाशा व कल्ला) सुलैमान ने कभी कुफ़्र नहीं किया, हाँ शयातीन (यानी हारूत-मारूत) ने कुफ़्र किया लोगों को जादू (के वाहियात कलिमे) सिखाते थे और न उतारा गया था

....

६३. इस आयत: में अल्लाह तआ़ला जिब्रील का ज़िक्र फ़रमाता है और उस की जुदागाना हस्ती की ओर रहनुमाई करता है। यह मस्अला कि जिब्रील एक फ़रिश्ता है जो नबिय्यों पर अल्लाह का कलाम लाया करता है, तमाम अहले किताब, यहूद व नसारा और मुसलमानों का इस पर इत्तिफ़ाक़ है। कुरआन मजीद में इस का कई स्थान पर स्पष्ट बयान भी आया है और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हदीसें तो इन के बयान से भरी हुयीं हैं। लेकिन इसके बावजूद सर सय्यद अहमद खाँ और उन के मुरीदीन ने अपनी पुरानी आ़दत के मुताबिक़ इससे भी इन्कार किया है। इनका अ़क़ीदा है कि "नबुव्वत का मल्का (सिफ़त क्षमता) जो अल्लाह ने नबिय्यों में पैदा किया है जिब्रील उसी का नाम है" (तफ़्सीर अहमदिय्या ३०) यह तो है सर सय्यद की तहक़ीक़ का कमाल, और इस पर फ़ख़्र करते हुये उलमा को "कोढ़ दिमाग़ मुल्ला, शह्वत परस्त ज़ाहिद" वग़ैरह का ख़िताब देते हैं।

मालूम नहीं सर सय्यद साहब को बेसबूत बात कहने की आ़दत क्यों है। हम अपने ही लोगों से नहीं, बल्कि सर सय्यद साहब के हवारियों और दोस्तों से भी पूछते हैं कि क्या आप लोगों के पास कोई दलील भी है जिससे इतना बड़ा अहम मस्अला तै हो जाये जिसके मानने की शिक्षा तमाम ही नबिय्यों ने दी है,। हाँ, मैं भूल गया एक दलील आप ने दी है वह भी बड़ी दिल्चस्प है। आप फ़रमाते हैं: "अल्लाह ने बहुत से स्थानों पर कुरआन मजीद में जिब्रील का नाम लिया है, मगर सूर: बक़र: में उसकी हक़ीक़त बता दी है जहाँ फ़रमाया है कि जिब्रील ने तेरे दिल में कुरआन को खुदा के हुक्म से डाला है............"। सर सय्यद साहब के क्या कहने हैं। ज़रा यह तो ख़याल फ़रमा लिया होता कि वस्तु की माहियत (हक़ीक़त) किस को कहते हैं। माहियत तो ज़ातियात को सुना था, जिन का ज़ात से तअख़्ख़ुर महाल है। जैसे कि इन्सान की माहियत हैवान नातिक़ वग़ैरह की। तअख़्ख़ुर इन्सान से मुमकिन नहीं। यह अब मैं पूछता हूँ कि अगर नाज़िल करना जिब्रील की माहियत है तो जब से जिब्रील है तब ही से नाज़िल करने का सिलसिला हो गया। हालाँकि नाज़िल होने का सिलसिला नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर चालीस वर्ष के बाद आरम्भ हुआ। और जिब्रील तो आप के कहने के अनुसार पैदाइश से होता है।

इस का उत्तर तफ़्सीर हक़्क़ानी के मुसन्निफ़ ने यह दिया है कि अगर जिब्रील मल्क-ए नबुव्वत का नाम

➲था, तो यहूद के उत्तर में जो जिब्रील को अपना दुश्मन जानते थे यह क्यों न कह दिया कि जिस जिब्रील (मल्क-ए-नबुव्वत) के साथ तुम्हारी दुश्मनी है वह तो अपने नबी के साथ ही चला गया। क्यों कि सिफ़त अपने मौसूफ़ के साथ होती है, और यह जिब्रील (मलक-ए-नबुव्वत मुहम्मदी) कुछ और ही चीज़ है।

लेकिन मैं ने इस को इसलिये यहाँ नक़ल न किया कि शायद सय्यद साहब माहिय्यते-नोअ़ीया से अ़दावत बतला दें जो किसी के बदलने से बदला नहीं करती, जैसे कि पानी और आग, या इन्सान और साँप में दुश्मनी (सनाई)

६४.शाने-नुजूलः- एक दिन ज़ोरिया यहूदी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा कि आप कोई ऐसी निशानी नहीं लाये जिससे हम आप को सच्चा जानें। इस के उत्तर में यह आय: नाज़िल हुयी और अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को खि़ताब फ़रमाया कि हक़ की दावत स्पष्ट के साथ ज़ाहिर हुयी है, जिन से कोई भी समझदार इन्सान इन्कार नहीं कर सकता। और अगर यहूद के उलमा इन्कार कर रहे हैं तो यह कोई बात नहीं है, इस से पहले भी वह यह कुछ करते चले आये हैं (सनाई) जान बूझ कर स्पष्ट दलीलें होने के बावजूद सिर्फ़ ज़िद और तअ़स्सुब से हक़ बात को न मानना इसी का नाम "इन्कार, कुफ़्र, जुहूद" है।

أُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوتَ وَمَارُوتَ ۚ وَمَا يُعَلِّمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّىٰ يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ۖ فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ ۚ وَمَا هُمْ بِضَارِّينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ۚ وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۚ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٢﴾ وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَمَثُوبَةٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ خَيْرٌ ۖ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا وَقُولُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوا ۗ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾ مَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الْمُشْرِكِينَ أَنْ يُنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِنْ خَيْرٍ مِنْ رَبِّكُمْ ۗ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ

(कुछ) दो फ़रिश्तों पर (शहर) बाबुल में (केवल हारूत-मारूत की चालबाज़ी थी) और वह किसी को जादू न सिखाते जब तक यह न कह लेते कि हम तो स्वंय गिरफ़्तार हैं, पस तू काफ़िर मत हो। फिर भी लोग सीखते उन से वह कलिमे जिन की वजह से पति-पत्नी में जुदाई डाल दें और वह किसी को अ़ल्लाह के हुक्म के बग़ैर हानि न पहुंचा सकते थे और (वह) लोग वही चीज़ सीखते जो उन को (हर प्रकार से जिस्मानी और रूहानी) नुक्सान दे और (किसी प्रकार से) फ़ाइदा न दे हालाँकि निःसंदेह जान चुके थे कि जो शख़्स इस (जादू की वाहियात बातों) को लेगा, क़ियामत में उस के लिये (भलाई से) हिस्सा नहीं। बुरा है वह काम जिस के बदले में अपनी जानों को अ़ज़ाब में दे चुके हैं, काश यह समझते हों। १०३. और अगर यह ईमानदार होते और परहेज़गारी करते तो (बड़ी इज़्ज़त पाते, क्यों कि) अल्लाह के हाँ का बदला सबसे अच्छा है काश यह समझें[६५] १०४ ऐ मुसलमानो! तुम 'राअ़िना'[६६] मत कहा करो और 'उनज़ुर्ना' कहा करो (जो उसी के हम-माना है) और बेहतर तो यह है कि (रसूल की खि़दमत में चुप-चाप) सुनते रहा करो और काफ़िरों को निहायत दुःख दायी अ़ज़ाब होगा। १०५. (यह) किताब वाले काफ़िर और (मक्का के) मुशिरक हरगिज़ इस➲

बात को पसंद नहीं करते कि अल्लाह की तरफ़ से कुछ भलाई तुम को मिले (और याद रखो! तुम्हारा कुछ नहीं बिगाडेंगे इसलिये कि) अल्लाह जिस को चाहता है अपनी (ख़ास) रहमत के साथ मखसूस कर लेता है।

....

६५. इस आयः के बारे में उलमा ने अ़जीब क़िस्से, कहानियाँ बयान की हैं। कुछ तो हज़रत सुलैमान के बारे में और कुछ हारूत-मारूत के बारे में। किसी ने हारूत-मारूत को फ़रिश्ता बताया फिर आदम की औलाद बना कर ज़मीन पर उतारा। और किसी ने बदचलन महिला से ज़िना करना, शराब पीना और बुतों की पूजा करना, फिर अल्लाह का उन को दुनिया व आख़िरत की सज़ाओं में गिरफ्तार करना और उन लोगों का जादू वग़ैरह सिखाना बताया है। मगर इमाम राज़ी जैसे मुहक़्क़िक़ों ने इन सब क़िस्सों को खुराफ़ात और ग़लत ठहराया है। जो तर्जुमा मैं ने किया है वही इमाम कुर्तबी ने भी अपनाया है। चुनाँचे तफ़्सीर "इब्ने कसीर" और "फ़त्हुल बयान" वग़ैरह में बयान है। मौलाना नवाब मुहम्मद सिद्दीक़ हसन ख़ाँ साहब रह० ने भी नक़ल किया है (बल्कि इसी को दुरुस्त भी कहा है) कि हारूत-मारूत शयातीन से "बदल" है। इस को दूसरे शब्दों में यूँ कह सकते हैं कि "शयातीन" से मुराद यही हारूत-मारूत हैं। अगर कुरआन की आयतों पर ग़ौर-फ़िक्र करें तो यही मालूम होता है। क्योंकि पहली आयः में अल्लाह ने शयातीन का काम जादू सिखाना बताया है और दूसरी आयः में उसी जादू की शिक्षा की कैफ़िय्यत बताई है। इस से साफ़ मालूम होता है कि दोनों तालीमों के उस्ताद एक ही हैं और वह शयातीन हैं। अब यह प्रश्न उठता है कि "शयातीन" तो बहुवचन है और "हारूत-मारूत" "तस्निया" यानी दो हैं? तो इस का उत्तर यह है कि शयातीन बहुवचन इसलिये है कि उस में शैतान के मानने वाले भी आ गये हैं (वर्ना जमा नहीं है) और हारूत-मारूत तस्निया यानी जोड़ा ज़ात के लिहाज़ से है। अब इस आयः का अर्थ बिल्कुल स्पष्ट हो गया है। यहूद की इस बारे में शिकायत हो रही है कि अल्लाह की किताब को छोड़ कर यह लोग खुराफ़ात के पीछे लग गये जो उन्हीं की खुराफ़ात हैं, जिसे न तो सुलैमान अ़लै० ने सिखाई और न ही किसी और नबी, वली, पीर अथवा बजुर्ग ने सिखाई हैं। मैं कहता हूँ कि यही कुछ हाल आज के मुसलमानों का भी है। उन के अक़ीदे सब से ज़्यादा ख़राब हैं। कोई कहता है कि पीर साहब ने बारह वर्ष के बाद डूबी कश्ती को मुरीदों की ख़ातिर निकाला और डूबे हुये लोग भी ज़िन्दा-सलामत १२ वर्ष के बाद निकल आये। कोई कहता है कि शैख़ जीलानी ने अपने एक मुरीद को ज़िन्दा करने के लिये कई हज़ार रूहें अ़ज़ाज़ील (जान निकालने वाले फ़रिश्ते) से छीन कर आज़ाद कर दीं। कोई कहता है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मीलाद की मज्लिस में स्वंय तशरीफ़ लाते हैं। मतलब यह है कि इन लोगों के दिमाग़ में ऐसे-ऐसे खुराफ़ात भरे हुये हैं, जिनको मिटाने के लिये अल्लाह ने हज़ारों पैग़म्बर भेजे थे। यह तो हुआ आजकल के मुसलमानों के अक़ीदे के हाल का बयान। उनके आमाल का भी हाल न पूछियें पूरी उम्र दुनियादारी में गुज़ारेंगे। वह इ़ल्म सीखेंगे जिन से चन्द दिनों की दुनियावी ज़िन्दगी आराम से गुज़र सके। हो सका तो आठवें रोज़ कुरआन की दो आयतें पढ़ लीं। और बस अल्लाह की पनाह! (तफ़्सीर सनाई)

६६. यहूद इस शब्द को अपनी शरारत से ज़बान दबा कर "राअ़ीना" कहते थे। इस का अर्थ है "हमारा चरवाहा"। यहूद की भाषा में इस शब्द का अर्थ "अहमक़, कोताह अक़्ल वाला" भी है (मुवज़्ज़िहुल् कुरआन)

और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है १०६. (हमारे हाँ नियम यह है कि) जब कभी कोई निशान (चिन्ह) हम बदल दें या उस को भूला दें तो (हम) उस से अच्छा ले आते हैं या

مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝ مَا نَنْسَخْ مِنْ
اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا ؕ اَلَمْ تَعْلَمْ

اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝١٠٦ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ
اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝١٠٧ اَمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ
تَسْــَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ
يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ۝١٠٨
وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ
كُفَّارًا ۚۖ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا
تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِىَ اللّٰهُ
بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝١٠٩ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ
عِنْدَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝١١٠ وَقَالُوْا

(दूसरी सूरः में) उस जैसा। क्या तुम्हें यह मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला हर एक वस्तु पर क़ुदरत रखने वाला है[६७] १०७. क्या तुम नहीं जानते कि आसमानों और ज़मीनों की समस्त हुकूमत अल्लाह ही को प्राप्त है (वह जो चाहे करे उसे कोई रोकने वाला नहीं) और अल्लाह के अ़लावा तुम्हारा न कोई वली है न मददगार १०८. क्या बल्कि यह चाहते हो कि अपने रसूल से ऐसे सवाल करो जैसे कि पहले (हज़रत) मूसा से किये गये थे और (यह आ़म चलन है कि) जो शख़्स कुफ़्र को ईमान से बदले (यानी मुवह्हिद बन कर फिर मुश्रिक बने) तो वह सीधी राह से भटक गया[६८] १०९. (मुसलमानो!) अक्सर अहले-किताब हक़ बात के ज़ाहिर होने के बाद केवल अपने हसद से यही चाहते हैं कि मुसलमान होने के बाद तुम को काफ़िर बना दें। पस (ऐसे लोगों का अ़िलाज तो यह है कि बिल्कुल ही उन्हें) छोड़ दो और (उन का) ख़याल (भी) न लाओ, यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म (यानी उस की सहायता तुम को) पहुंचे (और तुम्हारा ही बोल-बाला हो) अल्लाह हर काम पर क़ुदरत रखता है, (पस उसी पर भरोसा करो) ११०. और नमाज़ हमेशा पढ़ते रहो और ज़कात (भी) देते रहो। और (भी) जो कुछ बेहतरी के कार्य अपने लिये आगे भेजोगे, अवश्य उन को अल्लाह के हाँ पाओगे (हर्गिज़ बर्बाद न होंगे) अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहा है[६९] १११. और कहते हैं

....

६७. यहूद इस बात का ताना देते थे कि तुम्हारी किताब में बाज़ आयतें मन्सूख़ होती हैं। अगर यह किताब अल्लाह की तरफ़ से होती तो जिस अ़ैब की वजह से अब मन्सूख़ हुयी हैं उस की ख़बर क्या अल्लाह को पहले न थी। इस पर अल्लाह ने फ़रमाया कि किसी अ़ैब की वजह से आयः मन्सूख़ नहीं होती है। एक हाकिम उचित समय देख कर जो चाहे आदेश कर दे। जब यह आयः उतरी उस समय यही मुनासिब थी और अब दूसरा आदेश उचित है। (मुवज़्ज़िहुल कुरआन)

६८. शाने-नुज़ूलः- मुश्रिकों का एक दरख़्त था जिस का नाम था "ज़ाते-अनवात" वह उस की पूजा किया करते थे। उन को देख कर कुछ सीधे-सादे मुसलमानों नें भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से प्रश्न किया कि हमारे लिये भी एक ज़ाते-अनवात मुक़र्रर कर दीजिये। इन लोगों के बारे में यह आयः नाज़िल हुयी (सनाई-तफ़्सीर कबीर के हवाले से)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० रिवायत करते हैं कि मुराफ़े बिन हरमला आदि ने कहा कि अगर आप आसमान से कोई लिखी हुयी किताब जिसे हम पढ सकें, ले आवें, या ज़मीन में से चश्मा जारी कर दें या सफ़ा पहाड़ को सोने का बना दें, तो हम आप पर ईमान ले आयें, इस पर यह आयः नाज़िल हुयी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः यह बिल्कुल संभव है कि मैं दुआ़ करूं और अल्लाह कुबूल कर ले। मगर यह भी सोच लो कि कहीं नसारा

की तरह तुम्हारी सूरतें न बिगाड़ दी जायें? इसलिये कि उन्हों ने हज़रत ईसा अलै० से आसमानी दस्तर-ख़ान का सवाल किया था, फिर उन की ना शुक्री की वजह से उन की सूरतें बिगाड़ दी गयीं। क़ुरैश यह सुन कर डर गये और अपना प्रश्न वापस ले लिया (लुबाब-१८,१९) हज़रत मूसा से भी यहूद ने प्रश्न किया था, कि अल्लाह को हमारी आँखों के सामने दिखा दीजिये, तब हम ईमान लायें गे। इस प्रकार के और भी ऐसे प्रश्न वह करते थे, उन की तरफ़ इशारा है।

६९. मक्का में नमाज़ केवल दो रक्अ़त थी। सन् १ हिजरी में फ़र्ज़ नमाज़ में दो रक्अ़तों का और इज़ाफ़ा हुआ और दो रक्अ़तें सफ़र के लिये मुक़र्रर कर दी गयीं और वतन में ज़ुहर और अ़िशा के लिये चार-चार रक्अ़तें कर दी गयीं। ज़कात सन २ हिजरी में फ़र्ज़ हुयी और कलिम-ए-शहादत और नमाज़ के बाद उस को इस्लाम का तीसरा बड़ा रुक्न क़रार दिया गया। नमाज़ क़ल्बी अ़िबादत का नाम है और ज़कात माली। इन दोनों पर अ़मल करने से जमाअ़ती क़ुव्वत बढ़ती है और सामूहिक क़ौमी-रूह शक्ति पकड़ती है। जिस जमाअ़त में नमाज़ और ज़कात जैसी अ़िबादतें की जायेंगी, उस जमाअ़त की सामूहिक क़ुव्वत कभी कमज़ोर न पड़ेगी।

لَنْ يَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ
تِلْكَ اَمَانِيُّهُمْ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ۝ بَلٰى ۚ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ
مُحْسِنٌ فَلَهٗۤ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۪ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا
هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى
شَيْءٍ ۪ وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَيْءٍ ۙ
وَّهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ
مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا
كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ
اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ خَرَابِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ
مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَا اِلَّا خَآئِفِيْنَ ؕ لَهُمْ فِى
الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝
وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ

जन्नत में वही जायेगा जो यहूदी हो या ईसाई (मगर मुसलमान न हो) यह (सब) उन की (अपने नफ़्स की) ख़्वाहिश हैं। तू कह दे (भला) अपनी दलील (तो) लाओ अगर (इस दावा में) सच्चे हो ११२. हाँ, (जन्नत के हक़-दार हम बतलाते हैं) जो कोई अपने आप को अल्लाह के अधीन कर दे और वह नेक कार्य करने वाला हो, तो उस की मज़दूरी उस के मौला के पास है, न उन को भय होगा और न ग़म उठायेंगे[७०] ११३. और यहूद कहें कि ईसाइयों का कुछ ठीक नहीं और ईसाई कहें यहूदियो का कुछ ठीक नहीं[७१], हालाँकि (अपने गुमान में) यह दोनों (गुरोह अल्लाह की) किताब पढ़ते हैं। ऐसे ही बेअ़िल्म (अ़रब के मुश्रिक) भी उन्हीं की तरह बोलते हैं (कि हम ही नजात के हक़दार हैं) पस अल्लाह ही उन के झगड़ों में क़ियामत के दिन फ़ैसला करेगा (जिस का फ़ैसला अन्तिम होगा) ११४. और कौन बड़ा ज़ालिम है उन लोगों से जो अल्लाह की मस्जिदों में अल्लाह के नाम का ज़िक्र करने से रोकें और उन की ख़राबी में प्रयत्न करें (कुछ दिन ज़ोर दिखायें, थोड़े ही दिनों बाद) उन लोगों को क़ुदरत न होगी कि उन (मस्जिदों) में दाख़िल हों मगर डरते हुये (न केवल यही बल्कि)

➲दुनिया में उन्हीं को ज़िल्लत होगी और क़ियामत में भी उन्हीं को बड़ा अ़ज़ाब होगा[७२] ११५. और अल्लाह ही का (सारा मुल्क) पूरब और पश्चिम है[७३] पस जिधर को मुँह फेरोगे पस वहीं है मुंह अल्लाह का।

....

७०. पूरी दुनिया के मुसलमानों की आ़लमी पैमाने पर सब से बड़ी गुमराही यह है कि उन्हों ने दीन की सच्चाई को मज़हबी गरोह बन्दी में बाँट कर के बर्बाद कर दिया। अब हर गरोह अपने आप को ही सच्चा समझता है। क़ुरआन कहता है कि खुदा की सच्चाई सब के लिये है, लेकिन सभी लोगों ने उस सच्चाई से मुंह मोड़ा है और मैं चाहता हूँ कि उसी मिली-जुली और आ़लमी पैमाने की सच्चाई पर सब को इकट्ठा कर दूँ और मज़हबी झगड़ा समाप्त हो जाये। यह मिली-जुलीं आ़लमी पैमाने की सच्चाई है क्या? अल्लाह की अ़िबादत और इताअ़त और नेकी का क़ानून। इसी को "अल्-इस्लाम" के नाम से याद किया जाता है। यहूदी कहा करते थे कि जब तक कोई यहूद के गरोह में दाखि़ल न होगा, नजात ही नहीं पायेगा। उधर अ़ीसाई कहते थे कि जब तक अ़ीसाई गुरोह में कोई शामिल न होगा, नजात नहीं पायेगा। लेकिन क़ुरआन का कहना है कि नजात का आधार केवल अल्लाह की अ़िबादत और नेक अ़मल हैं, न कि कोई गरोह बन्दी। जो भी खुदा परस्त होगा, वही नजात पायेगा, चाहे इन लोगों के बनाये हुये गरोह में दाखि़ल हो या न हो (तर्जुमान मौलाना आज़ाद)

इस्लाम के दीने-फ़ितरत होने का मतलब ही यही है कि वह इन्सान की बनाई हुयी मज़हबी गरोह बन्दी से ऊपर उठ कर इन्सान को अल्लाह की अ़िबादत और नेक अ़मली के केन्द्र पर जमा करता है। इस लिये इस्लाम की दावत को क़ुबूल कर के सारी गुरोह-बन्दी को तोड़ना, इन्सान को एक ईमानी केन्द्र पर जमा करना है।

७१. **शाने-नुज़ूल:-** जब नज्रान के अ़ीसाइयों की एक जमाअ़त नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आई, तो यहूद के बड़े-बड़े उलमा भी उपस्थिति हुये। उन में से एक यहूदी ने इंजील शरीफ़ को अल्लाह की किताब होने से इन्कार किया और हज़रत अ़ीसा मसीह की शान में बेअदबी की और अ़ीसाई धर्म को झूठा बतलाया। उत्तर में एक अ़ीसाई ने भी यहूदी धर्म को झुठलाया, उस समय यह आयत नाज़िल हुयी।

७२. नसारा ने बैतुल-मुक़द्दस की बर्बादी में बुख़्त नस्र का साथ दिया था और यहूद की दुश्मनी में उस की सहायता की थी। हालाँकि वह बाबुल का मजूसी (आग की पूजा करने वाला) था। इसी प्रकार अ़रब के मुश्रिकों ने भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को हुदैबिय्या वाले साल ख़ान-ए-काबा से रोका था, यहाँ तक कि आप को रुक कर क़ुरबानी कर देनी पड़ी। उस काबा को उजाड़ने की यही कोशिश थी कि हज्ज व उम्रा करने वाली मुसलमान क़ौम को उन्हों ने रोक दिया। मस्जिदों की आबादी केवल ज़ाहिरी रंग-रोग़न से नहीं होती, बल्कि उस में अल्लाह का ज़िक्र होना, उस में शरीअ़त का क़ाइम रहना, उन्हें शिर्क और हर प्रकार के ज़ाहिरी व पोशीदा गन्दगियों से पाक रखना मुराद है। हुदैबिय्या एक स्थान का नाम है जो मक्का से १९. मील की दूरी पर मदीना शरीफ़ की ओर है। इसी स्थान पर सन् ६ हिज्री में क़ुरैश और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दर्मियान एक सुलह-नामा लिखा गया था और कुरैश ने उस वर्ष मुसलमानों को काबा शरीफ़ से रोक कर आने वाले वर्ष हज्ज करने की अनुमति दी थी। हुदैबिय्या के क़रार-नामा के अनुसार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दो हज़ार सहाबा की जमाअ़त के साथ मक्का शरीफ़ तश्रीफ़ ले गये। क़ुरैश ने आप को मक्का आने से तो न रोका, मगर स्वंय अपने-अपने घरों में ताला डाल कर बूक़ैस की चोटी पर (जिस पहाड़ी के नीचे मक्का शहर बसा है) चले गये और वहीं से ही मुसलमानों के काम को देखते रहे। अल्लाह का नबी काबा की ज़ियारत कर के वापस हो गया। मक्का फ़त्ह होने के पश्चात् सन् ९ हिज्री में आप ने हरम शरीफ़ में एलान करा दिया कि इस वर्ष के बाद हज्ज में कोई मुश्रिक नहीं आने पायेगा और न ही नन्गे हो कर कोई बैतुल्लाह का तवाफ़ कर सकेगा। इस प्रकार "वह काबा में नहीं दाखि़ल होंगे मगर डरे-सहमे हुये" (सूर: तौबः आय: नं० ११४) वाली भविष्य वाणी (पेशीनगोई) ज़ाहिर हो गयी। (सनाई)

७३. मदीना शरीफ़ में जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बैतुल-मुक़द्दस की तरफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ने➲

लगे तो यहूदी बहुत प्रसन्न हुये, मगर जब चन्द महीनों के बाद (आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की इच्छानुसार) अल्लाह तआ़ला ने काबा शरीफ़ को क़िबला बना दिया तो उन यहूदियों ने ताना देना शुरू कर दिया, इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयः नाज़िल फ़रमाई। कुछ मुफ़स्सिरीन के निकट जब चन्द सहाबा ने अंधेरी रात में (क़िबला का रुख़ न पहचान पाने के सबब) क़िब्ला से हट कर नमाज़ पढ़ी तो इस मस्अला को बतलाने के लिये यह आयः नाज़िल हुयी। यानी यह कि अगर आदमी ग़लती से, या सवारी पर होने की वजह से दूसरी तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ ले तो जाइज़ है। (मआ़लिम)

इमाम इब्ने जरीर तबरी रह० फ़रमाते हैं कि इस आयः का यह भी अर्थ हो सकता है कि तुम मुझ से दुआ़यें माँगने में अपना मुंह जिस ओर भी करो, मेरा मुँह भी उसी ओर पाओगे, और मैं तुम्हारी दुआ़ओं को कुबूल करूँगा। इस आयः का एक अर्थ यह भी बयान किया गया है कि यह आयः सफ़र, राह चलने और डर-ख़ौफ़ के लिये है, कि इन हालात में जिस तरफ़ भी रुख़ कर के नमाज़ पढ़ लोगे, अल्लाह कुबूल फ़रमा लेगा।

اللهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝ وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ۝ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۙ وَّلَا تُسْـَٔلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ ۝ وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِيْ جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ اَلَّذِيْنَ

बेशक अल्लाह बड़ी कुशादगी वाला, अ़िल्म वाला है ११६. और (देखो तो) कहते हैं कि अल्लाह ने (भी मिस्ल हमारे) औलाद बनाई है[७४], वह पाक है। बल्कि सब आसमानों और ज़मीन वाले उसी के गुलाम हैं। सब के सब उसी के आगे गर्दन झुकाते हैं ११७. आसमानों और ज़मीन को बिला नमूना उसी ने बनाया है। और जिस समय कोई वस्तु चाहता है तो केवल इतना ही कहता है कि "हो जा!" पस वह हो जाती है ११८. और (सुनो तो यह) अनपढ़ (और अ़रब के नासमझ मुश्रिक भी) कहते हैं अल्लाह ही क्यों नहीं हम से बातें करता या कोई निशानी हमारे पास आवे। इन से पहले लोगों ने भी ऐसा ही कहा था (कि हम को सामने लाकर दिखाओ जब हम मानेंगे) ग़ौर से देखा जाये तो उन के दिल एक से हो रहे हैं। बेशक हम बहुत सी निशानियाँ मानने वालों के लिये बयान कर चुके[७५] ११९. हम ने तुम को सच्ची (हिदायत) के साथ शुभसूचना देने और डराने वाला बना कर के भेजा है और तुझ से दोज़ख़ वालों के हाल से सवाल न होगा १२०. और हर्गिज़ तुझ से प्रसन्न न होंगे, न यहूदी और न नसारा, यहाँ तक कि तू ही उन के (ग़लत) मज़हब का मानने वाला बने। तू कह दे! कि हिदायत तो अस्ल वही है जो अल्लाह के हाँ से हो (न कि तुम्हारी ज़टल्लियात) और अगर तू बाद पहुंचने अ़िल्म (यक़ीनी) के उन की ख़ाहिश के पीछे चला तो (बस तेरी भी ख़ैर नहीं) न तो तेरा कोई अल्लाह के पास से सहायक होगा, न मददगार। (जो उस की पकड़ से छुड़ा ले)[७६]

७४. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० रिवायत करते हैं कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक हदीसे कुद्सी में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: आदम की औलाद मुझे झुठलाती है हालाँकि उस के लिदे यह मुनासिब नहीं है। आदम की औलाद मुझे गाली देती है, हालाँकि उसके लिये यह उचित नहीं है। उस का झुठलाना तो यह है कि उस का ख़याल है कि मैं उस को पुन: जीवित करने और क़ियामत के दिन क़ब्र में से निकालने पर कुदरत नहीं रखता हूँ। और गाली देना यह है कि वह यूँ कहता है कि मैं ने किसी को अपना बेटा बना लिया है, हालाँकि मैं इन बातों से पाक हूँ कि अपने लिये कोई पत्नी अथवा औलाद ठहराऊँ (बुख़ारी शरीफ़-६४२)

७५. शाने-नुज़ुलः- राफ़े बिन खुज़ैमा ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा कि अगर आप सच्चे नबी हैं तो अपने अल्लाह से कहो कि हम लोगों से भी बात-चीत करे ताकि हम अपने कानों से उस का कलाम सुनें, इस पर यह आय: नाज़िल हुयी (लुबाब-२२)

७६. शाने नुज़ूल:- कई सहाबा मुश्रिकीन से तंग आ कर हब्शा को चले गये, वहाँ का शासक ओ़साई था। वह किसी और मज़हब से मतलब न रखता था। जब उन्हों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बारे में सुना कि आप हिजरत कर के मदीना आ गये हैं और सब मुसलमान भी आप के साथ इकट्ठा हो रहे हैं तो यह सूचना सुन कर वे वहाँ से मदीना चल पड़े। राह में समुन्द्री यात्रा में उन को काफ़ी परेशानी हुयी, उन्हीं की ख़ातिर-दारी को यह आय: नाज़िल हुयी (सनाई-मआ़लिम के हवाले से) इस आयः मे तिलावत करने का जो हक़ है वैसी तिलावत करने वालों से मुराद वह अहले-किताब हैं जिन्हों ने अपनी किताबों को ग़ौर से पढ़ कर के (उन की किताब में जिस नबी के आने की सूचना दी गयी थी उसे पा लिया और) उस पर ईमान ले आये, जैसे अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० आदि। और इस आय: को उमूम की हैसिय्यत से देखा जाये तो इस से मुराद सहाबा, समस्त मोमिन व सच्चे और अ़िबादत-गुज़ार मुसलमान हैं।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि "तिलावत" का हक़ इस का अर्थ यह है कि हलाल को हलाल और हराम को हराम जाना जाये, शब्दों को उन के स्थान पर रखा जाये, उन में बिला वजह तावील न की जाये। इमाम हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि खुली हुयी और मुतशाबेह आयतों पर ईमान लाना, मुश्किल आयतों के बारे में उन उलमा से जो किताब व सुन्नत के माहिर हों, मालूम करना, इस का नाम "जैसा कि तिलावत करने का हक़ है" (इब्ने कसीर वग़ैरह)

१२१. जिनको हम ने किताब (कुरआन दी है वह उस को पढ़ते हैं, जैसा कि पढ़ना चाहिये।) यही लोग उसको मानते हैं। और जो लोग उस से इन्कारी हैं (क़ियामत में) वही टूटा पावेंगे १२२. ऐ बनी इस्राईल (के लोगो) याद करो मेरे एहसान जो मैं ने तुम पर किये (कि फ़िऔ़न जैसे ज़ालिम से तुम को छुड़ाया) और तमाम जहान के लोगों पर तुम को अ़िज़्ज़त दी १२३. और उस दिन (के अ़ज़ाब) से बच जाओ जिस में कोई किसी के कुछ काम न आयेगा और न उस से बदला लिया जावेगा और न उस को ➲

آتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ
يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ۝ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ
الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝
وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا
يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ
يُنْصَرُوْنَ ۝ وَاِذِ ابْتَلٰٓى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ
قَالَ اِنِّيْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ؕ

قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَإِذْ جَعَلْنَا
الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا ؕ وَاتَّخِذُوْا مِنْ
مَّقَامِ إِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ وَعَهِدْنَآ إِلٰٓى إِبْرٰهٖمَ وَ
إِسْمٰعِيْلَ أَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ
وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ۝ وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ

किसी की सिफ़ारिश ही कुछ काम देगी और न उन (मुज्रिमों) को (किसी ज़बर्दस्त की तरफ़ से) मदद पहुंचेगी १२४. और जब इब्राहीम को उस के अल्लाह ने चन्द बातों का हुक्म दिया तो उस (कामिल बन्दे) ने उन सब को पूरा किया (अल्लाह ने उसे कहा) मैं तुम को सब-लोगों का इमाम बनाऊँगा। वह बोला मेरी औलाद में से (भी किसी को दें) (तो अल्लाह ने) कहा! ज़ालिमों को मेरा वादा नहीं पहुंचेगा[७७] १२५. और जब हम ने काबा को लोगों का केन्द्र और बड़े अम्न का स्थान बनाया। और (आ़म तौर पर) आदेश दिया कि इब्राहीम की जगह नमाज़ पढ़ो। और इब्राहीम और (उस के बड़े बेटे) इस्माओ़ील को हुक्म भेजा कि मेरा अ़िबादत-ख़ाना तवाफ़ और एतिकाफ़ करने वालों और रुकूअ़ व सज्दे करने वालों के लिये (शिर्क की नापाकी से) साफ़ सुथरा रखो १२६. और जब इब्राहीम ने दुआ़ की कि ऐ (मेरे) मौला

....

७७. जनी इस्राईल इस ग़ुरूर में थे कि हम इब्राहीम अ़लै० की औलाद हैं। और उन से अल्लाह तआ़ला ने यह वादा कर लिया है कि नबुव्वत और बुज़ुर्गी तुम्हारे घर में ही रहेगी। ऐसे ही लोगों को समझाने के लिये अल्लाह ने यह आयतें उतारीं, कि हमारा वादा तो केवल उन लोगों से हुआ है जो इब्राहीम की औलाद में नेक और आज्ञाकारी होंगे, पस यह नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम भी इब्राहीम की औलाद से हैं और नेक और फ़र्माबर्दार भी हैं, इसलिये नबुव्वत की नेमत इन को मिली। चूँकि तुम लोग बुरे और अवज्ञाकारी हो, इस लिये इस नेमत से वन्चित कर दिये गये (मुवज़्ज़िहुल कुरआन) हज़रत इब्राहीम अ़लै० की आज़माइश, आज़माइश के पद का तुहफ़ा, तौहीद की दावत, काबा का निर्माण और उम्मते मुस्लिमा के ज़ाहिर होने की दुआ़, इन सब बातों के यहाँ ज़िक्र करने में चार हिक्मतें हैं (१) यहूद, नसारा और मुश्रिकीन, तीनों गरोहों के लिये हज़रत इब्राहीम की ज़ात जांनी पहचानी थी, इसलिये उन की दावत से दलील पेश करना ही उचित था ताकि कोई इन्कार न कर सके (२) मज़हबी गरोह बन्दी के ख़िलाफ़ तीनों के लिये एक हुज्जत है। यह तो ज़ाहिर ही है कि तीनों गुट बन्दियाँ और रीत व रिवाज हज़रत इब्राहीम से बहुत बाद की चीज़ें हैं। प्रश्न यह है कि हज़रत इब्राहीम अ़लै० का तरीक़ा क्या था? निःसंदेह आज के गरोहों का सा तरीक़ा उन का तरीक़ा न था। इसलिये जो उन का तरीक़ा था, उसी तरीक़े की दावत कुरआन देता है (३) यहूदियों की जमाअ़ती गरोह-बन्दी ज़्यादा-तर नस्ली और ख़ानदानी ग़ुरूर का नजीता थी। वह कहते थे कि हम इब्राहीम की नस्ल में से हैं और तौरेत में है कि अल्लाह ने उनकी नस्ल को बर्कत दी। इस बयान ने स्पष्ट कर दिया कि प्रथम तो यह कि नस्ल के शर्फ़ में बनी इस्हाक़ की तरह बनी इस्माओ़ील भी बराबर के शरीक हैं। फिर जो कुछ भी हो अल्लाह का वादा नेक लोगों से था, न कि बुरे लोगों से! इसलिये जिन लोगों ने ईमान व अ़मल की बर्कत को खो दिया उन के लिये नस्ली ग़ुरूर व तकब्बुर कुछ भी फ़ाइदा नहीं पहुंचा सकता (तर्जुमान आज़ाद) (४) पिछली उम्मतों की महरूमियों के बयान के बाद यह हक़ीक़त स्पष्ट करनी थी कि अल्लाह तआ़ला ने कुरआन पर ईमान लाने वालों को दीन की ख़िदमत के लिये चुन लिया है और दुनिया की रहनुमाई की ज़िम्मे-दारी उन के सुपुर्द की जा रही है। इस लिये अनिवार्य था कि पहले कुरआन की दावत के ज़ाहिर होने की मानवी तारीख़ बयान की जाये, इसी लिये काबा की तामीर (निर्माण) और इब्राहीम की दुआ़ का ज़िक्र इसी ग़रज़ से किया गया है कि आने वाले

बयान के लिये एक तम्हीद (भूमिका) का काम कर दे (तर्जुमान आज़ाद) किसी ने सच कहा है:
अज़ल् से मश्यियत् ने था उस को ताका = कि इस घर से उब्लेगा चश्मा हुदा का:

هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ
اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ
فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗۤ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ؕ وَ
بِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ
مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ
اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ
لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَاۤ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۪ وَاَرِنَا
مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝
رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ
وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ
اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا ۚ
وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ لَهٗ

इस शह्र (मक्का)को बड़े आराम(अम्न) का स्थान बना और उस के रहने वालों को जो अल्लाह को मानें और क़ियामत के दिन पर यक़ीन लावें, मेवे नसीब कर। अल्लाह ने कहा! (ईमान वालों को दूँगा) और काफ़िरों को भी किसी क़द्र {थोड़ा बहुत}फ़ाइदा दूँगा, फिर उन को आग के अ़ज़ाब में फेकूँगा जो बहुत ही बुरी जगह है।१२७. (और सुनो) जब इब्राहीम (और उस का बेटा इस्माअ़ील) काबा की बुनियाद (अल्लाह के हुक्म से) उठा रहे थे (तो उस समय भी यही) कहते थे (कि) ऐ हमारे मौला! तू हम से इस (निक काम) को क़ुबूल कर। तू ही सुनता और जानता है[७८/१] १२८. ऐ हमारे मौला! हम को अपना आज्ञाकारी बन्दा बना और हमारी औलाद में से भी एक गरोह को अपना ताबेदार कीजियो और तू हम को हमारी अ़िबादत के तरीक़े बता और तू हम पर रहम फ़रमा। तू ही है तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान। १२९. ऐ हमारे मौला! तू उन में उन ही में से एक रसूल पैदा कीजियो, जो उन को तेरी आयतें पढ़ कर सुना दे और किताब आसमानी और नेक अख़्लाक़ उन को सिखा दे और उन को पाक साफ़ करे[७८/२]। बेशक तू ग़ालिब और बड़ी हिक्मत वाला है[७९] १३०. और इब्राहीम की राह से अहमक़ों के अलावा कौन मुंह मोड़ेगा। हालाँ कि हमने उस को (तमाम लोगों से) दुनिया में पसन्द किया है और आख़िरत में भी वह नेक बंदों (की जमाअ़त) में होगा १३१. (याद करा) जब अल्लाह ने उसे कहा

....

७८/१. अल्लाह तआ़ला ने इस अम्न व शान्ति और बर्कत वाले घर को जो बुज़ुर्गी और बड़ाई अ़ता फ़रमाई है, उस को बयान किया जाना संभव नहीं है। यहाँ पर हर लम्हा आसमानी व रुहानी मख़्लूक़ की भीड़ रहती है। और दुनिया की तारीख़ में केवल यही वह मकान है जिसके चारों तरफ़ घूम कर लाखों नबिय्यों, पैग़म्बरों, बुज़ुर्गों और नेकोकारों ने अल्लाह की मुहब्बत के गीत गाये और अल्लाह के अ़िश्क़ में डूब कर तवाफ़ किया। यह वह मुक़द्दस मकान है जिस की तारीख़ी बुज़ुर्गी का कोई भी धर्म इन्कार नहीं कर सकता। बाइबल में उसे अ़िज़्ज़त और शौकत

➲का घर कहा गया है।

मुकाशिफ़ात यूहन्ना ३, बाब १२ के दर्स में उसे अल्लाह के हैकल का सुतून और मक्का को नया योरोशलम बताया गया है। यह पाक घर चौकोर है और इस की दीवार में वह यादगारी पत्थर आज भी लगा हुआ है जिसे इब्राहीम व इस्माईल अ़लै० के मुबारक हाथों ने छुवा है, निकट ही वह पाक चश्मा (ज़मज़म) है, जिसने इस्माअ़ील और उन की माता की प्यास बुझाई थी, निकट ही वह मुक़द्दस पहाड़ियाँ हैं, जिन पर इस्माअ़ील की माँ ने पानी की खोज में चक्कर लगाये थे।

एक मर्तबा हज़रत उमर रज़ि० ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अनुरोध किया कि आप "मुक़ामे इब्राहीम" में नमाज़ पढ़ा करें। उन की दर्ख़ास्त पर यह आय: नाज़िल हुयी। मैं कहता हूँ कि इस आय: में इस क़िस्सा के लिहाज़ से हज़रत उ़मर फ़ारूक़ रज़ि० की बुज़ुर्गी साबित होती है मगर देखने को बसीरत की आँख चाहिये (सनाई) मगर उम्मते मुस्लिमा पर अफ़्सोस है कि बैतुल्लाह में अपने गरोह-बन्दी को बाक़ी रखने के लिये इब्राहीमी मुसल्ला के अ़लावा, चार और मुसल्ले अपने गढ़ी हुयी टोलियों के नामों पर बना लिये (अल्लाह सऊदी शासकों को नेक बदला दे कि उन्हों ने इस लानत को जड़ से उखाड़ कर फेंक दिया और उम्मत को एक मुसल्ला पर जमा कर दिया।)

७८/२. हिक्मत से मुराद क़ुरआन मजीद की तफ़्सीर जो सुन्नत के नाम से जानी पहचानी जाती है। इस में नेक अख़्लाक़ भी शामिल हैं (राज़)

७९. इस आय: में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुव्वत की ओर इशारा फ़रमाया है। इस का सबूत कि आप हज़रत इब्राहीम की औलाद हैं दलील का मोहताज नहीं। पूरी दुनिया के लोग इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि आप, बल्कि आपका तमाम ख़ानदान क़ुरैश, बल्कि क़रीब-क़रीब कुल अ़रब हज़रत इस्माअ़ील की औलाद हैं। और इस्माअ़ील, इब्राहीम अ़लै० के बड़े बेटे थे जिन के बारे में तौरात में भी शहादत मिलती है कि "और हाजिरा इब्राहीम के लिये बेटा जनी और इब्राहीम ने अपने बेटे का नाम जो हाजिरा जनी, इस्माअ़ील रखा और जब इब्राहीम ८६. वर्ष का था"(पैदाइश १६, बाब १८) उसी किताब में दूसरे स्थान पर लिखा है: "इस्माअ़ील के हक़ में (ऐ इब्राहीम) मैं ने तेरी दुआ़ सुनी देख मैं उसे बर्कत दूँगा और उसे बरोमन्द करूँगा (नस्ल चलाऊँगा) और उसे बहुत बढ़ाऊँगा और उस से १२ सर्दार पैदा होंगे। और मैं उसे बड़ी क़ौम बनाऊँगा" (१७ बाब, २० आयत) इन से स्पष्ट रूप से ज़ाहिर होता है कि हज़रत इस्माअ़ील न केवल इब्राहीम के बेटे थे, बल्कि बर्कत का वादा भी किया गया था। और काबा के निर्माण का वाक़िआ़ तौरात में स्पष्ट तौर पर मौजूद नहीं है और इस का कारण शायद वही है जिस का विस्तार से बयान हम ईसाइयों की पहली ग़लती के संदर्भ में कर आये हैं (देखें-तफ़्सीर सनाई, प्रथम भाग) लेकिन इतना तो मालूम ही होता है कि इब्राहीम को अपने बेटे इस्माअ़ील के लिये बहुत कुछ ख़्याल था, जिस के उत्तर में अल्लाह का हुक्म पहुंचा कि मैं ने तेरी सुनी। नबुव्वत, ख़ानदान और रिसालत का सिलसिला, बल्कि आ़म नेक लोगों के हालात देखने से भी इस बात का पता चलता है कि वह ऐसे मौक़े पर दुनिया की बर्कत और तादाद की ज्यादती पर प्रसन्न नहीं हुआ करते, जब तक कि उन की औलाद में उन का हम मर्तबा या उन से बढ़ कर न पैदा हो। इस पर क़ुरआन की आयतें और तौरात दोनों ही मुत्तफ़िक़ हैं (सनाई)

रَبُّهٗٓ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَوَصّٰى
بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَيَعْقُوْبُ ۭ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى
لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝ اَمْ

कि मेरी आज्ञापालन कीजियो, तो वह (तुरन्त) बोला कि मैं सारे जहान के रब का मुद्दत से आज्ञा कारी हूँ १३२. और इब्राहीम और याक़ूब ने अपने बेटों को वसिय्यत की कि ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने तुम्हारे लिये यही (तौहीद का) दीन पसन्द➲

كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِيْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۖۚ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِيَ

किया है पस तुम मरते दम तक उसी पर रहना १३३. (बल्कि इस बात के तो) तुम भी गवाह हो कि याकूब ने फ़ौत होते समय अपने बेटों से (नसीहत और आज़माइश के तौर पर) कहा था कि मेरे बाद किस की अ़िबादत करोगे? उन्हों ने कहा: हम अकेले अल्लाह की अ़िबादत करेंगे, जो तेरा और तेरे बाप-दादा इब्राहीम और इस्माअ़ील और इस्हाक़ का अल्लाह है और हम (तो अब भी) उसी की आज्ञा मानने वाले हैं १३४. यह एक जमाअ़त (कैसी बर्कत वाली) थी जो (अपने समय में) गुज़र गयी। उन की कमाई उन को (होगी) और तुम्हारी कमाई तुम को है। तुम्हें उन के किये से प्रश्न न होगा १३५. और कहते हैं कि (हमारी तरह) यहूदी या अ़ीसाई हो जाओ, हिदायत पाने वाले हो जाओगे तू कह दे! बल्कि इब्राहीम यकरुख़ा {यक्सू} की राह हम ने पकड़ रखी है। और वह मुश्रिक न था[८०]। १३६. तुम (बुलन्द आवाज़ से) कह दो कि हम (एफ़) अल्लाह को और उस किताब को मानते हैं जो हमारी तरफ़ उतरी और (उस को भी मानते हैं जो इब्राहीम और इस्माअ़ील और इस्हाक़ और याकूब और उस की औलाद की तरफ़ उतारी गयी और जो कुछ मूसा और अ़ीसा

....

८०. अ़ब्दुल्लाह बिन सूरिया ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा था कि हिदायत पर केवल हम ही हैं। हिदायत पाने के लिये मैं आप को भी यहूदी धर्म कुबूल करने की दावत देता हूँ, नसारा ने भी यही कुछ कहा था। इस पर यह आय: नाज़िल हुयी कि हम तो इब्राहीम हनीफ़ के दीन पर हैं, जो दीन पर क़ाइम रहने वाले, केवल अल्लाह की अ़िबादत करने वाले, बैतुल्लाह को अपना क़िबला मानने वाले, काबा का हज्ज करने वाले जो हज्ज की ताक़त रखते हैं उन लोगों को हज्ज की दावत देने वाले अल्लाह की आज्ञापालन करने वाले, गुरोह बन्दी से हट कर दुनिया के समस्त रसूलों, नबिय्यों को मानने वाले, ला इलाहा इल्लल्लाह की गवाही देने वाले, माँ, बेटी, ख़ाला, फूफी के साथ शादी-विवाह को हराम जानने वाले और समस्त बुराइयों से बचने वाले थे। माना व मतलब और मफ़हूम की गहराइयों के लिहाज़ से हज़रत इब्राहीम का लक़ब "हनीफ़" इन तमाम मानों को शामिल करता है, और उलमा ने इन समस्त मानों को "हनीफ़" के संदर्भ में बयान किया है (इब्ने कसीर)

النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۖ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝ فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ

और सब नबिय्यों को अल्लाह की तरफ़ से मिला (मानते हैं) और हम अल्लाह के नबिय्यों में फ़र्क़ नहीं करते: और हम उसी के ताबे-दार हैं[८१] १३७. पस अगर वह तुम्हारी मानी हुयी किताब

فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا هُمْ فِي شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللَّهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٣٧﴾ صِبْغَةَ اللَّهِ ۖ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً ۖ وَنَحْنُ لَهُ عَابِدُونَ ﴿١٣٨﴾ قُلْ أَتُحَاجُّونَنَا فِي اللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُخْلِصُونَ ﴿١٣٩﴾ أَمْ تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ كَانُوا هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ ۗ قُلْ أَأَنْتُمْ أَعْلَمُ أَمِ اللَّهُ ۗ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهُ مِنَ اللَّهِ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤٠﴾ تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۖ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ ۖ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤١﴾

(क़ुरआन) को मान लें तो (जान लो कि) हिदायत पर आ गये। और अगर (पूर्व नियमानुसार) मुंह फेरें तो (मालूम हो कि) सख़्त ज़िद्दी हैं। पस अल्लाह तुझ को उन (की शरारत) से बचायेगा। वह सुनता और जानता है १३७. (तुम कह दो कि) अल्लाह का रंग हम ने इख़्तियार किया है। बतलाओ तो सही कि अल्लाह से किस का रंग अच्छा है और हम उसी की अ़िबादत करते हैं[८२] १३८. (ऐ रसूल) तू कह दे! क्या तुम हम से अल्लाह के बारे में झगड़ते हो, हालाँकि वह हमारा-तुम्हारा मालिक है। और हमारे कर्म हम को और तुम्हारे कर्म तुम को। और हम (दिल से) उसी के इख़्लास-मन्द हैं १३९. क्या तुम यह कहते हो कि (हज़रत) इब्राहीम और इस्माअ़ील और इस्हाक़ और याकूब और उसकी औलाद यहूदी या अ़ीसाई थे? तू (ऐ रसूल उन से) कह दे! भला तुम भली-भाँति जानते हो या अल्लाह (अच्छी तरह जानता है)? और कौन ज़्यादा ज़ालिम है उस से जो अपने पास से अल्लाह की (बताई हुयी) गवाही को छुपाये। और अल्लाह तुम्हारे कामों से बेख़बर नहीं १४०. यह एक जमाअ़त (पसन्दीदा) थी जो (अपने-अपने समय पर) गुज़र गयी। उन की कमाई उन को है और तुम्हारी कमाई तुम को। और तुम उन के किये से न पूछे जाओगे[८१]

....

८१. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि अहले-किताब तौरात का अ़रबी भाषा में तर्जुमा कर के मुसलमानों को सुनाते थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अहले किताब की बातों को न सच जानो और न ही झुठलाओ, बल्कि यूँ कहा करो "हम अल्लाह पर ईमान लाये और जो कुछ हम पर उतारा उस पर भी और जो कुछ इब्राहीम पर नाज़िल किया उस पर भी" (इब्ने कसीर) 'अस्बात' हज़रत याकूब अलै० के बेटों को कहा गया है जो १२ थे। इन के १२ ख़ानदानों में से बहुत से इन्सान पैदा हुये। आज भी दुनिया की बहुत सी पुरानी क़ौमें, ख़ानदानों की तादाद के सिलसिले में अपने हाँ १२ पालों (ख़ानदानों) का तसव्वुर रखती हैं। बनी इस्माअ़ील को 'अस्बात' के बजाए "क़बाइल" कहा गया है। "अस्बात" 'सिब्त' का बहुवचन है, जिस का अर्थ है "आगे पीछे आना"। चूँकि यह भी एक के पीछे एक हुये इसलिये अस्बात कहा गया। 'सबूत' दरख़्त को भी कहते हैं। इस का अर्थ यह हुआ कि यह एक दरख़्त के समान हैं जिस की शाख़ें फैली हुयी हैं। 'सब्त' उस गरोह को भी कहते हैं जिन का बड़ा बुज़ुर्ग ऊपर जा कर एक में मिल जाये (इब्ने कसीर)

८२. नसारा अपनी औलाद को, या जिस किसी को नस्रानी बनाते, उस को पीले रंग के पानी में डुबोते और कहते कि ऐसा करने से आदमी पाक हो जाता है। और इस काम पर वह फ़ख़्र भी करते थे कि हमारे धर्म में रंगत है और दूसरों को यह नसीब नहीं। इस पर अल्लाह ने फ़रमाया कि उन से कह दो कि हम ने अल्लाह की इताअ़त

व फ़रमांबर्दारी का रंग अपने ऊपर चढ़ा लिया है और यह सब से बेहतरीन रंग है (जामिउल बयान) हज़रत उस्मान रज़ि० (तीसरे ख़लीफ़ा) को जब शहीद किया गया उस समय कुरआन उन की गोद में था और आप इसी आयः नं १३७ की तिलावत पर पहुंचे थे कि "सिब्-ग़-तुल्लाह" पर आप के ख़ून के छींटे गिरे (रज़ियल्लाहु अ़न्हु)

८३. अल्लाह का क़ानून यह है कि हर फ़र्द और जमाअ़त को वही पेश आता है जो उसने अ़मल से कमाया है। न तो एक की नेकी दूसरे को बचा सकती है, और न एक की बुराई के बारे में दूसरे की पकड़ होगी। इन्सान के लिये क़दामत परस्ती (यानी यह कि हमारे बाप-दादा यही करते आये हैं) का फन्दा बड़ा ही सख़्त फन्दा है, जिस के पेच से वह निकल ही नहीं सकता है। वह हमेशा माज़ी (भूतकाल) के अफ़्सानों में ही गुम रहेगा और हर पुराने तौर-तरीक़े को क़द्र व इ़ज़्ज़त की निगाह से देखेगा। हिन्दू हज़ारों वर्ष से महाभारत और पुराणों के अफ़्सानों में फंसे हुये हैं। मुसलमानों के दो फ़िर्क़े आज तक इस झगड़े से नहीं उबर सके कि तेरह सौ वर्ष पहले "सक़ीफ़ा" में ख़िलाफ़त का जो चुनाव हुआ था, वह सहीह था या ग़लत।

(तर्जुमानुल कुरआन- हज़रत मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रहमतुल्लाह अ़लैह)

بِسۡــــمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡــمِ

पारः स-यकूल (2)

संक्षिप्त विषय सूची

स-यकूल (2)

سَيَقُولُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰهُمْ عَنْ
قِبْلَتِهِمُ الَّتِيْ كَانُوْا عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ
الْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۴۲﴾
وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ
عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ وَمَا
جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِيْ كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ
يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ؕ وَاِنْ
كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ؕ وَمَا كَانَ
اللّٰهُ لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۳﴾
قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِى السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ
قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۪ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ
وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ وَاِنَّ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ

१४२. बेवकूफ़ लोग यह झट से कहें गे कि किस चीज़ ने उन (मुसलमानों) को उन के (पहले) क़िब्ला (बैतुल मुक़द्दस) से फेर दिया जिस पर यह पहले से थे।[८४] । तू (उन के जवाब में) कह दीजियो! पूरब व पच्छिम (सब) अल्लाह ही का है। जिस को चाहता है सीधी राह की तरफ़ राह नुमाई करता है १४३. इसी प्रकार हम ने तुम को (एक नेमत और दी है कि तुम को) दर्मियाना रविश बनाया है (इफ़रात व तफ़रीत से बिल्कुल साफ़) ताकि तुम लोगों पर हुक्मराँ हो और रसूल तुम पर हाकिम बने[८५] । और हम ने इस क़िब्ला (बैतुल मुक़द्दस) को जिस की तरफ़ तू (अ़मली तौर पर मुतवज्जेह) है, इस लिये चुना था कि रसूल के (मुख़्लिस) ताबेअ़ीन को नाफ़र्मानों (और दो रूख़ी चाल वालों) से अलग क़रें। (हाँ) इस में शक नहीं कि यह (काबा का रूख़ बदलना) बहुत भारी है मगर ऐसे लोगों पर भारी नहीं जिन की अल्लाह ने राहनुमाई की हो। और अल्लाह (भी) तुम्हारे ईमान (और नेक कर्मों को) बर्बाद नहीं करने का। इस लिये कि अल्लाह (सब) लोगों (के हाल) पर बड़ा मेहरबान, रहम करने वाला है[८६] १४४. तेरे मुंह का आसमान की तरफ़ (वह्यि के इन्तिज़ार में) फिरना हम देख रहे हैं, पस तुझ को हम उसी काबा की तरफ़ फेरें गे जिसे तू पसन्द करता है (लीजिये) पस (अब से आइन्दा को) अपना मुंह अ़िज़्ज़त वाली मस्जिद[८७] (अर्थात काब-ए-इब्राहीमी) की तरफ़ फेरा कर। और (आ़म मुसलमानो!) जहाँ कहीं तुम हो (नमाज़ के समय) अपना रूख़ उसी ओर किया करो। और जो लोग किताब वाले हैं अच्छी तरह जानते हैं कि (यह) आदेश ➲

....

८४. शाने-नुज़ूल:- नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब हिजरत कर के मदीना शरीफ़ तशरीफ़ ले गये तो

➲आप बैतुल् मुक़द्दस की तरफ़ (जो नबियों का क़िब्ला रहा था) मुहँ करके तक़रीबन १६ महीने नमाज़ पढ़ते रहे, मगर दिल में यह शौक़ बराबर रहा कि मैं अपने बाप, तौहीद के मानने वालों के सर्दार, हज़रत इब्राहीम अ़लै० के बनाये हुये काबा की ओर रुख़ करके नमाज़ पढूँ। चूंकि इस ख़ाहिश और तमन्ना के पूरी होने पर यहूद-नसारा, मुश्रिकीन और छुपे दुश्मन उन के भाई मुनाफ़िक़ों ने शोर मचाना था, इस लिये हुक्म आने से पहले ही उन के हाल की सूचना दे दी गयी और थोड़ा-बहुत विस्तार से उत्तर देने के पश्चात् क़िब्ला बदलने का आदेश दे दिया ताकि अ़मल करने में आसानी हो (सनाई)

हज़रत इब्राहीम अ़लै० के तौहीद की दावत के सिलसिले में दलाइल का बयान सम्पन्न हो गया। अब यहाँ उस का दूसरा भाग आरंभ होता है जो पिछले बयान का नतीजा है। हज़रत इब्राहीम अ़लै० को क़ौमों की इमामत मिली थी। उन्होंने मक्का में अ़िबादत का घर काबा का निर्माण किया, उम्मते-मुस्लिमा के ज़ाहिर होने की इल्हामी दुआ़ मांगी। अल्लाह के हाँ उस उम्मत के ज़ाहिर होने के लिये एक ख़ास समय मुक़र्रर था, जब वह समय आ गया तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तशरीफ़ लाये और उन की शिक्षा से मौजूदा उम्मत (उम्मते-मुहम्मदिया) पैदा हो गयी। इस उम्मत को सब से नेक उम्मत होने का ख़िताब भी दिया गया और साथ ही पूरी दुनिया की राहनुमाई की ज़िम्मे-दारी भी सौंपी गयी, तो यह भी ज़रूरी था कि उस की रूहानी हिदायत का एक केन्द्र भी होता और यह केन्द्र फ़ितरी तौर पर बैतुल्लाह ही हो सकता था। चुनान्चे क़िब्ला के बदलने से उस के केन्द्र होने का एलान कर ही दिया और यही हक़ीक़त बैतुल्लाह के क़िब्ला मुक़र्रर करने में पोशीदा थी। (तर्जुमानुल् क़ुरआन)

हज़रत इब्राहीम और इस्माअ़ील अ़लै० का क़िब्ला काबा शरीफ़ ही रहा, लेकिन हज़रत याक़ूब और उन की औलाद का क़िब्ला बैतुल् मुक़द्दस रहा। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मक्का शरीफ़ में तो काबा ही की तरफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ते थे, मगर मदीना पहुंचने पर औस व ख़ज़रज क़बीलों के दिलों को नर्म करने के लिये बैतुल मुक़द्दस को अपना आ़रिज़ी (अस्थाई) क़िब्ला तो क़रार दे दिया, मगर काबा शरीफ़ के केन्द्र होने का ख़याल बराबर दिल में रहा। आख़िर अल्लाह तआ़ला ने हमेशा के लिये काबा को आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का और पूरी मुस्लिम समुदाय का क़िब्ला क़रार दे दिया। इस में केन्द्र होने के अ़लावा अल्लाह की निशानियों की ताज़ीम भी मक़्सूद है (हुज्जतुल्लाह) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर जब क़िब्ला बदलने की आयत नाज़िल हुयी उस समय आप क़बीला बनी सलमा की मस्जिद में ज़ुह्र की नमाज़ अदा कर रहे थे और दो रक्अ़तें अदा भी कर चुके थे, फिर बाक़ी दो रक्अ़तें आप ने बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ मुंह कर के पढ़ीं। यही कारण है कि मस्जिदे बनी सलमा का नाम "मस्जिदे-क़िब्लतैन" (दो क़िब्लों वाली मस्जिद) हो गया। क़ुबा वालों को दूसरे दिन फ़ज्र की नमाज़ के समय सूचना मिली, तो सब लोग नमाज़ ही की हालत में क़िब्ला की तरफ़ मुड़ गये (इब्ने कसीर)

८५. 'हुकमराँ' और 'हाकिम' का तर्जुमा मौलाना मर्हूम ने इस लिहाज़ से किया है कि क़ियामत के दिन जब उम्मतें अपने नबियों की तब्लीग़ का इन्कार करें गी तो उम्मते-मुस्लिमा को 'हकम' (जस्टिस) की हैसिय्यत से बुलाया जाये गा, जैसा कि तिर्मिज़ी २/१३५ में है। 'बैज़ावी' ने लिखा है कि 'हाकिम' को ''शहीद'' इसलिए कहते हैं कि वह दर्बारों में मुक़द्दमों को हल करवाने के लिये आया जाया करते हैं। इस लिये 'शुहदा' का अर्थ "हुक्मराँ" लेना, इस को एक प्रकार की हिम्मत अफ़ज़ाई (प्रोत्साहन) बल्कि पेशीन गोई (भविष्य वाणी) क़रार देना उचित ही नहीं, सब से अधिक उचित है (देखें- तफ़्सीर सनाई)

८६. बाज़ मुसलमान कहने लगे कि जो लोग बैतुल् मुक़द्दस की तरफ़ नमाज़ पढ़ने के ज़माने में देहान्त कर गये, अल्लाह जाने उन की नमाज़ों का क्या हाल हो गा? और शायद हमारी भी वह पहली नमाज़ें बेकार हो गयीं? इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई (नसाई)

८७. अ़िज़्ज़त और बुज़ुर्गी वाली मस्जिद से मुराद मक्का शरीफ़ की वह मस्जिद है जिस के अन्दर ख़ान-ए-काबा है। ख़ान-ए-काबा बहुत ही छोटी-मोटी इमारत का नाम है। लोगों को इस का रुख़ मालूम करना बहुत कठिन था, इस लिये उम्मत की सुहूलत के लिये एक बहुत बड़ी अ़िमारत का नाम दे दिया गया। 'शत्र' से मुराद "मस्जिदे हराम की जानिब या उस के रुख़ पर, न कि उस के बिल्कुल सामने। इस लिये कि दूर के इलाक़ों में ठीक उस के सामने की तरफ़ रुख़ करना संभव ही नहीं है (माजिदी)

رَبِّهِمْ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَلَئِنْ
اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا
قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ
بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۗ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْۢ
بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۗ
وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝
اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝
وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۗ
اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ۗ وَمَا
اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ

वास्तव में उन के (और तुम्हारे सब के) मालिक की तरफ़ से है। और अल्लाह उनके कामों से बेख़बर नहीं। १४५. (और तअ़स्सुब में यहाँ तक बढ़े हुये हैं कि) अगर तू उन के पास हर प्रकार के निशान भी लाये गा तो जब भी तेरे क़िब्ला (ए-इब्राहीमी) की तरफ़ नमाज़ न पढ़ें गे और न तू (किसी प्रकार) उन के क़िब्ला को माने गा और वह आपस में भी एक दूसरे के क़िब्ला को नहीं मानते। (और याद रख) अगर तू (जान लेने के बावुजूद भी) उन की ख़्वाहिश पर चला, तो बेशक तू भी उस वक़्त बेइन्साफ़ सबित हो गा १४६. (अस्ल में यह ज़िद केवल झल्लाहट में है, वर्ना) जिन लोगों को हम ने किताब (तौरात की समझ) दी है वह तो उस (रसूल) को ऐसा पहचानें जैसा अपने बेटों को। हाँ एक फ़िर्क़ा (नीम मुल्लाओं का) उन में से (बेशक) जान-बूझ कर हक़ बात को छुपाता है। १४७. (मगर तू सुन रख कि) हक़ (वही है) जो तेरे रब की तरफ़ से है, पस तुम किसी प्रकार का शक न कीजियो। १४८. और हर एक (फ़िर्क़ा) के लिये एक तरफ़ (काबा की मुक़र्रर) है[८८], वह (फ़िर्क़ा) उस (दिशा) की तरफ़ अपना रुख़ फेर ले गा, पस तुम नेकियों के करने में जल्दी करो। जहां कहीं तुम होगे अल्लाह तुम सब को (एक जगह) ले आवेगा। बेशक अल्लाह समस्त कार्य कर सकता है (पस यह वहम मत लाओ कि पूरब, पश्चिम के लोग इस काबा में क्यों कर आवें गे) १४९. और जहां से तू निकले, उसी अ़िज़्ज़त वाली मस्जिद की तरफ़ अपना मुंह फेर[८९]। (इस लिये) कि वही सच्चा आदेश तेरे मालिक की तरफ़ से है। और (जान लो कि) अल्लाह तुम्हारे कामों से ग़ाफ़िल नहीं १५०. और (इस लिये हम बार-बार बतलाते हैं कि) जहाँ से तू निकले➲

....

८८. मैं ने 'कुल्लिन' का मुज़ाफ़ इलैह मुख़ातब यानी मुसलमान लिया है। और 'हुक्म' की ज़मीर "कुल्लिन" ही की तरफ़ फेरी है। यह सब इस लिये किया कि इस ज़माना में इस प्रकार की पेशीन गोई (भविष्य वाणी) इस्लाम की तरक़्क़ी के मुतअ़ल्लिक़ मालूम होती है (सनाई) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि इस का अर्थ यह है कि हर धर्म वालों का एक क़िब्ला है, लेकिन सच्चा क़िब्ला वह है जिस पर मुसलमान हैं (इब्ने कसीर)

८९. इस आयत के मुतअ़ल्लिक़ बड़ा एतिराज़ यह है कि इस्लाम ने काबा, (जो पत्थरों का बना हुआ है) की अ़िबादत का आदेश दिया और ऐसा किया कि बग़ैर उस तरफ़ रुख़ किये नमाज़ क़ुबूल ही नहीं होती। इस का उत्तर यह है कि शिर्क और बुत परस्ती उसे कहते हैं कि अल्लाह के अ़लावा किसी और की अ़िबादत की जाये, या कम से कम उस से ➲

➲वह मामले किये जायें जो अल्लाह के साथ होने चाहियें। जैसे उस से भलाई की या नुक़्सान के दूर करने की आशा करना वग़ैरह। मगर चूंकि काबा के बारे में कोई ऐसा हुक्म नहीं दिया, बल्कि स्पष्ट शब्दों में फ़रमा दिया: "उस घर (काबा) के रब की अ़िबादत करो" (सूर: कुरैश आयत न०4) तो अब इस आदेश के होते हुये इस्लाम के बारे में यह गुमान करना कि वह तो काबा परस्ती और बुत परस्ती सिखाता है, सरासर इन्साफ़ का ख़ून करना है। अगर इस्लाम को काबा परस्ती मन्ज़ूर होती और शिर्क और बुत परस्ती ही को आ़म करना होता, तो क्या कारण है कि सारी नमाज़ में काबा का ज़िक्र तक नहीं, फिर काबा परस्ती कहाँ है? रहा यह प्रश्न कि इस का क्या कारण है कि नमाज़ पढ़ते हुये काबा की तरफ़ मुंह करने का आदेश है? तो इस का उत्तर यह है कि इस रुख़ की सब से बढ़ कर एक ख़ूबी मानी जाती है वह यह है कि काबा एक बड़े प्रसिद्ध तौहीद परस्तों के सर्दार का बनाया हुआ है जिस ने अल्लाह से मुहब्बत और तौहीद को अपनाने के "जुर्म" में वह तक्लीफ़ें और दुःख झेले, जिस का नमूना पूरी दुनिया में न मिल सके गा। इस लिये ऐसे शख़्स की यादगार दिल में बाक़ी रखने की ग़रज़ से काबा मुक़र्रर किया गया ताकि और लोगों को भी तौहीद का पाठ हासिल हो। इसी हिक्मत की बुनियाद पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का दिल तड़पता था कि मैं हज़रत इब्राहीम अ़लै० के काबा की ओर मुंह करके नमाज़ पढ़ूँ, और इस लिये भी कि मुसलमानों के दर्मियान बातिनी एकता के साथ-साथ ज़ाहिरी एकता भी पैदा हो जाये। यही कारण है कि जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ने की बड़ी ताकीद आई है (सनाई)

فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا
كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ
عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ فَلَا
تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي وَلِأُتِمَّ نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ
تَهْتَدُونَ ﴿١٥٠﴾ كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِنْكُمْ يَتْلُو
عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَ
الْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿١٥١﴾
فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ﴿١٥٢﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ ۚ إِنَّ
اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٣﴾ وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ
اللَّهِ أَمْوَاتٌ ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَٰكِنْ لَا تَشْعُرُونَ ﴿١٥٤﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ
بِشَيْءٍ مِنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِنَ الْأَمْوَالِ وَ
الْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ ۗ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٥﴾ الَّذِينَ إِذَا

पस उसी अ़िज़्ज़त वाली मस्जिद की ओर मुंह फेर लो और तुम (भी मुसलमानो!) जहाँ कहीं होओ (नमाज़ पढ़ते हुये) उसी तरफ़ अपना मुंह फेरो, ताकि लोगों का झगड़ा तुम से न रहे (कि दावा मिल्लते-इब्राहीमी का करें और काब -ए-इब्राहीमी को छोड़ दें) हाँ, जो उन में से (बिल्कुल ही) मुजरिम हैं सो उन से मत डरो और मुझ ही से डरो (ताकि तुम तरक़्क़ी करो) और ताकि मैं अपनी नेमत तुम पर पूरी करूँ और ताकि तुम (अल्लाह की) राह पर पहुंचो १५१. जैसा कि हम ने तुम्हारे पास (एक) रसूल तुम्हारी जिन्स का भेजा है जो हमारी आयतें तुम पर पढ़ता है और (शिर्क, कुफ़्र वग़ैरह से) तुम को पाक करता है और तुम को (आसमानी) किताब और (रूहानी) तहज़ीब सिखाता है और (इस के अ़लावा ज़रूरी) वह बातें (भी) तुम को सिखाता है[१०] जो (पहले से) तुम न जानते थे १५२. पस तुम (उसी जाने-पहचाने तरीक़ा से) मेरी याद किया करो, मैं तुम्हें याद करूँ गा और (इस हिदायत का एहसान मान कर) मेरा शुक्र करो और नाशुक्री मत कीजियो १५३. ऐ मुसलमानो! तुम सब्र और नमाज़ से मदद चाहा करो[११] (बड़ी बात यह कि) बेशक अल्लाह ➲

➲(हर समय) सब्र करने वालों के साथ है[९२] १५४ और उन लोगों को जो अल्लाह की राह में (लड़ते हुये) क़त्ल होते हैं मुर्दे मत कहा करो। बल्कि (यह समझो कि) वह ज़िन्दा हैं, लेकिन तुम (उस की कैफ़िय्यत) नहीं जानते १५५. और भविष्य में तुम्हें किसी क़द्र (दुश्मनों के)ख़ौफ़ और भूक (यानी रोज़ी-रोटी की तन्गी) और माल व जान और फलों के नुक़्सानात से हम आज़मायेंगे। और तू ऐसे सब्र वालों को शुभ सूचना दे १५६॰जो मुसीबत के समय➲

....

९०. किताब व हिक्मत की शिक्षा, हिदायत के केन्द्र का क़ाइम करना, सब से नेक उम्मत होने का ख़िताब यही वह बुनियादी उसूल थे जिन की वादा के अनुसार लाने वाली उम्मत के फलने-फूलने में ज़रूरत थी। जब यह तमाम बातें ज़ाहिर हो गयीं तो अब अनिवार्य हुआ कि कुरआन की पैरवी करने वालों को ख़िताब किया जाये और अपने मक़्सद में सरगर्म हो जाने की दावत दी जाये। चुनान्चे अब आगे आयत न० १५२ से यही ख़िताब आरंभ होता है।(तर्जुमान) 'किताब' से मुराद "कुरआन" और 'हिक्मत' से मुराद "हदीस" है। हदीसों की हिफ़ाज़त के लिये भी उलमा ने ऐसे काम किये हैं जिन पर क़ियामत तक मुसलमान गर्व करते रहें गे। उन लोगों की इसी कोशिश के सबब हमारे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पूरी ज़िन्दगी, आप की हर-हर बात और आप का एक-एक अ़मल सुरक्षित है जो कुरआन की तशरीह और वज़ाहत कर के अल्लाह की हिक्मत का एक मुकम्मल नक़्शा हमारे सामने पेश कर रहा है। इस लिये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हदीसें कुरआन की तफ़्सीर हैं और हदीस का इन्कार कुरआन का इन्कार है। अल्लाह तआ़ला हदीस के इन्कार से बचाये- आमीन।

९१. चूँकि दावत व तब्लीग़ करने का परिणाम यह था कि इस राह में रुकावटें और कठिनाइयाँ पेश आयें, इस लिये दावत व तब्लीग़ के साथ ही सब्र, जमे रहने, कठिनाइयाँ झेलने और जान को कुरबान कर देने की भी दावत दे दी गयी और स्पष्ट कर दिया गया कि इस राह में आज़माइश (परीक्षा) से गुज़रना अवश्य पड़े गा। साथ ही उन तीन उसूलों और नियमों की ओर भी इशारा कर दिया गया जिन को अपनाने से साबित-क़दम रह सकते हैं (१) सब्र और नमाज़ की ताक़त से सहायता लो। 'सब्र' की हक़ीक़त यह है कि इस से कष्ट और कठिनाइयों को झेलने और बेजा ख़ाहिश को दबाने की कुव्वत (क्षमता) पैदा हो जाती है। (२) नमाज़ की हक़ीक़त यह है कि यह रूह को शक्ति प्रदान करती है। जिस जमाअ़त में यह दो शक्तियां पैदा हो जायेंगी वह कभी नाकाम नहीं हो सकती। (३) अल्लाह की राह में मौत, मौत नहीं है, बल्कि सर ता सर (मुकम्मल) ज़िन्दगी और हिदायत है। इस लिये मौत के डर से अपने दिलों को पाक-साफ़ कर लो (तर्जुमान)

९२. शाने नुज़ूल:- बद्र की लड़ाई में १४ मुसलमान शहीद हुये तो उन के संबन्धियों को (इन्सान होने के नाते) रंज व मलाल होना फ़ित्री बात थी। जब इस बात का ज़िक्र होता कि फ़लाँ शहीद हो गया, तो उन को बड़ा रंज होता था। इधर कुफ़्फ़ार ने भी कहना आरंभ कर दिया कि यह लोग बिला वजह एक शख़्स (मुहम्मद) के पीछे जान दे रहे हैं। चुनान्चे मुसलमानों को इस बात से रोकने के लिये कि उन शुहदा को मुर्दा न कहो जिस से उन के संबन्धियों को तक्लीफ़ पहुंचे, यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

أَصَابَتْهُم مُّصِيبَةٌ قَالُوٓا إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّآ إِلَيْهِ
رٰجِعُونَ ۞ أُولَٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَ
رَحْمَةٌ وَأُولَٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ۞ إِنَّ الصَّفَا وَ
الْمَرْوَةَ مِن شَعَآئِرِ اللّٰهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ

(बजाये बेहूदा शोर व गुल करने के) कहते हैं कि हम तो अल्लाह ही की मिल्क हैं और बिला शक हम उसी के हुज़ूर में जाने को हैं १५७॰उन ही लोगों पर उन के रब की शाबाश है और रहमत (हो गी) और यही लोग सीधी, अक़्ल-मन्दी की राह पर चलने वाले हैं[९३] १५८॰सफ़ा और ➲

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا
فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٥٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا
أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ
لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ ۙ أُولَٰئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ
اللَّاعِنُونَ ﴿١٥٩﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُوا
فَأُولَٰئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٦٠﴾
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ
لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١٦١﴾ خَالِدِينَ
فِيهَا ۖ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿١٦٢﴾

मर्वा (दोनों पहाड़ियाँ) बेशक अल्लाह की (क़ुबूलियत की) निशानियाँ हैं, पस जो कोई हज्ज या उम्रा करने आवे वह उन दोनों पहाड़ियों के गिर्द भी फिरे तो उस पर कोई गुनाह नहीं (बल्कि सवाब है) और जो कोई (ऐसे) सवाब (भी) कमाये गा तो अल्लाह बड़ा क़द्र करने वाला और (उन को) जानने वाला है[९४] १५९ (याद रखो!) जो लोग हमारे उतारे हुये खुले-खुले आदेश और हिदायत (लोगों से) छुपाते हैं बाद इस के जो हम ने उस को किताब में लोगों के लिये बयान कर दिया, तो ऐसे लोगों को अल्लाह लानत करता है और तमाम (दुनिया) के लानत करने वाले (भी) लानत करते हैं[९५] १६०. हाँ, जिन्हों ने (इस पाप से) तौबा की और अच्छे अ़मल किये और (पहली ग़लतियाँ) बयान कर दीं तो उन लोगों पर मैं रहम करता हूँ और मैं बड़ा ही तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान हूँ[९६] १६१. हाँ जो लोग (मेरी किताब और रसूल से) इन्कारी हुये (और तमाम उम्र भी इस से बाज़ न आये, बल्कि इसी) कुफ़्र की हालत ही में मरे तो उन पर अल्लाह और फ़रिश्तों और सब बन्दों की तरफ़ से लानत है १६२. इसी (लानत के वबाल) में हमेशा रहें गे, न उन के दन्ड में कमी होगी और न (उज़्र-दारी के लिये) उन को मोहलत ही मिले गी[९७]

....

९३. शाने-नुज़ूल:- जाहिलिय्यत के ज़माना में सफ़ा व मर्वा पर दो बुत रखे हुये थे जिन का कुफ़्फ़ार तवाफ़ किया करते थे। जब यह लोग इस्लाम ले आये तो उन बुतों को बुरा जाना और इतनी नफ़रत पैदा हो गयी कि सफ़ा व मर्वा (जहाँ बुत रखे हुये थे) की सअ़इ करना भी हराम जाना, इन लोगों के हक़ में यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

९४. सफ़ा व मर्वा के दर्मियान सअ़इ करने का सबब हज़रत हाजिरा का यहाँ सात फेरे करना है, जब हज़रत इब्राहीम अ़लै० उन्हें और उन के छोटे से बेटे को यहां छोड़ गये थे और उन के पास खाना-पानी ख़त्म हो चुका था और बच्चे की जान पर आ बनी थी, तब माई हाजिरा उन पहाड़ियों के दर्मियान बेकसी की हालत में अपना दामन फैलाये अल्लाह से भीख माँग रही थीं। अल्लाह को उन की यह अदा इतनी पसन्द आयी कि उस दौड़ को हज्ज के अ़मल में दाख़िल कर दिया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "लोगो! सफ़ा और मर्वा के दर्मियान सअ़इ करो (दौड़ लगाओ) अल्लाह तआ़ला ने तुम पर यह सअ़इ लिख दी है" (मुस्नद अहमद)

९५. यहूद व नसारा के उलमा सच्ची बातों को अक्सर छुपाते थे, ऐसा करने का उद्देश्य केवल लोगों को प्रसन्न करना था, इन लोगों के हक़ में यह आयत नाज़िल हुयी। उलमा-ए-इस्लाम इस से सबक़ हासिल करें कि थोड़े-बहुत लाभ के लिये हक़ को न छुपायें वर्ना तुम में और इन में क्या अन्तर होगा? (सनाई)

९६. यानी यह तौबा करने वाले न सिर्फ़ यह कि लानत से बच जाते हैं, बल्कि अल्लाह की रहमत और बख़्शिश की छाँव में आ जाते हैं। लेकिन जो लोग बुराइयाँ करते हैं और अड़े भी रहते हैं उन को दन्ड मिलता है

(रूहुल् मानी) तौबा करने और तौबा क़ुबूल करने का बयान क़ुरआन मजीद में बार-बार आया है। यहाँ पर तौबा के साथ "अस्लिहू व बय्यनू" (अच्छे अ़मल करना और बुराई पर शर्मिन्दा हो कर बयान करना) की क़ैद भी लगी हुयी है। इस का अर्थ यह हुआ कि जो फ़ित्ना व फ़साद फ़ैलाया था उस की दुरुस्तगी करना और जो छुपाया था उस को ज़ाहिर कर देना। उलमा ने लिखा है कि जिन गुनाहों से केवल अल्लाह के हुक़ूक़ की ख़िलाफ़ वर्ज़ी होती है (जैसे नमाज़, रोज़ा छोड़ देना) उन के लिये केवल तौबा और इस्तिग़फ़ार ही काफ़ी हैं इसलिये कि इस का संबन्ध अल्लाह के रहमान व रहीम होने की सिफ़त से है। लेकिन बन्दों के हुक़ूक़ (जैसे चोरी, रिश्वत, फ़साद, सूद वग़ैरह) इन सब का एलान कर के रोक-थाम करे, तब जा कर तौबा क़बूल हो गी। इस लिये कि यहाँ अल्लाह की सिफ़त "अ़द्ल" से तअ़ल्लुक़ है (तफ़्सीर माजिदी)

९७. मक्का के मुश्रिकों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि आप जिस अल्लाह की इ़बादत की तरफ़ हमें बुलाते हैं उस का कुछ हाल हमें बयान कीजिये! इन के उत्तर में यह आयत नाज़िल हुयी (मआ़लिम)

وَ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ
الرَّحِيْمُ ۟ اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ
اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَ النَّهَارِ وَ الْفُلْكِ الَّتِيْ تَجْرِيْ
فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ
السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا
وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۪ وَّتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَ
السَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ يَرَوْنَ
الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّ اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ
الْعَذَابِ ۝ اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا
وَرَاَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ۝ وَقَالَ

१६३. और तुम्हारा सब का अल्लाह एक ही है, इस के अ़लावा कोई (भी) अल्लाह नहीं, वह बड़ा रहम वाला निहायत मेहरबान है १६४. आसमान और ज़मीन की पैदाइश में और रात दिन की तब्दीली में और उन जहाज़ों में जो समुन्द्र में लोगों के नफ़ा को चलते हैं और अल्लाह के आकाश से उतारे हुये पानी में जिस से ज़मीन को बाद ख़ुश्की के ताज़ा करता है और उस में हर प्रकार के जानवर फैलाता है और हवाओं के फेरने में और उन बादलों में जो आसमान और ज़मीन के दर्मियान घिरे हुये हैं, बेशक अक़्ल वालों के लिये बहुत सी निशानियाँ हैं[९८] १६५. और कुछ लोग ऐसे हैं कि अल्लाह के अ़लावा और पूज्य बनाते हैं उन बनावटी पूज्यों (माबूदों) से ऐसी मुहब्बत करते हैं जैसी अल्लाह से (करनी) चाहिये। और जो मोमिन हैं वह दिली लगाव सब से अधिक अल्लाह के साथ रखते हैं। और अगर ज़ालिम (अपने इस बातिल अ़क़ीदे की सज़ा और) अ़ज़ाब की घड़ी को देखें तो (जान जायें कि) तवानाई {कुव्वत} सब अल्लाह ही की है और यह कि (वास्तव में) अल्लाह का दन्ड बहुत सख़्त है १६६. (मज़ा तो जब हो गा कि) जिस समय पेशवा {अगुवा-कार} अपने पैरो कारों (पीछे चलने वालों) से बेज़ार हो जायें गे[९९] और (सामने से) अ़ज़ाब देखें गे और आपस के संबन्ध (उन के) सब टूट जायें गे

....

९८. इस से पहली आयत सुन कर मुश्रिकों ने कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) जो कहते हैं कि अल्लाह एक है, इस की दलील क्या है? इन लोगों के हक़ में यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई) क़ुरआन मजीद में ३०० से

अधिक स्थानों पर ऐसा ही बयान है कि अल्लाह एक है, सब चीज़ों का पैदा करने वाला और मालिक है। किसी छोटे-बड़े का न तो उस के काम में ज़र्रा बराबर साझा है और न ही किसी की उस पर कोई ज़ोर-ज़बर्दस्ती है और न ही किसी का उस पर दबाव है, न ही किसी को उस के किसी मामले में दम मारने की मजाल है। वह आप ही अकेला अपनी इच्छा से जो चाहे कर डाले। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि एक शख़्स ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! सब से बड़ा गुनाह कौन सा है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तू अल्लाह के साथ किसी को शरीक करे, हालाँकि उसी ने तुम को पैदा किया (मिश्कात-शरीफ़) हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "दो चीज़ें वाजिब कर देने वाली हैं" किसी ने कहा कि वह दो चीज़ें क्या हैं ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! आप ने फ़रमाया: "जो शिर्क की हालत में मरा, उस के लिये जहन्नम वाजिब हो गयी और जो तौहीद पर मरा, उस के लिये जन्नत वाजिब हो गयी"। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जब अल्लाह क़ियामत के दिन लोगों को जमा करे गा तो एक पुकारने वाला पुकारे गा कि जिस शख़्स ने अपने किसी ऐसे अ़मल में जो अल्लाह के वास्ते किया था उस में अगर किसी और को भी शरीक कर लिया है तो उस को चाहिये कि उस अ़मल का सवाब भी उसी शरीक से मांगे, क्यों कि अल्लाह तआ़ला हिस्सा लेने वालों के साथ हिस्सा लेने से बेपर्वाह है" (हदीस)

९९. उस दिन जिन को उन लोगों ने ग़लत तौर पर अगुव्वा बना रखा है वह सब उन से अलग हो जायें गे। फ़रिश्ते कहें गे कि ऐ अल्लाह! हम इन से बेज़ार हैं। यह हमारी ज़िबादत नहीं करते थे। ऐ अल्लाह! तू पाक है, तू हमारा मदद-गार है। और यह लोग तो जिन्नात की ज़िबादत करते थे, उन ही पर ईमान रखते थे, इसी प्रकार जिन्नात भी उन से अपनी बेज़ारी का एलान कर दें गे"। क़ुरआन पाक की एक दूसरी आयत में है: "यह लोग जिन की पूजा करते हैं वह इन की ज़िबादतों के न केवल इन्कारी हों गे, बल्कि उन के दुश्मन बन जायें गे" (सूर: मर्यम्-८२) यानी बग़ैर दलील के बातें मानने वाले, एतिक़ाद रखने वाले और नाजाइज़ आज्ञा मानने वाले जब अपने अगुवा कार लोगों का यह हाल देखें गे तो बड़ी मायूसी से कहें गे कि अगर अब हम दोबारा दुनिया में लौट जायें तो हम भी ऐसे ही बेज़ार हो जायें गे जैसे यह हम से हुये हैं। न उन की तरफ़ रुख़ करें गे और न ही उन को अल्लाह का शरीक ठहरायेंगे, बल्कि एक अल्लाह की ज़िबादत करें गे।

कुरआन व सुन्नत में इसी प्रकार के बयान की रोशनी में बुंजुर्गों ने सख़्ती के साथ मुसलमानों को हिदायत की है कि हर मुसलमान अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के आदेशों को मुक़द्दम रखे और अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और सहाबा रज़ि० के मुक़ाबले में बाद के आने वाले किसी भी आ़लिम, इमाम, मुज्तहिद के क़ौल को आगे न बढ़ाये। जहाँ कहीं अल्लाह व रसूल का फ़रमान मिल जाये वहाँ हर्गिज़ यह न देखे कि फ़लाँ इमाम, मुज्तहिद का हुक्म अल्लाह के इस फ़रमान की ताईद में है या नहीं। अगर ऐसा करे मा तो सख़्त गुनाहगार होगा (अ़क़्दुल् जय्यिद)

१६७. और पैरो कार (मुरीद तंग आ कर) बोल उठें गे कि हम अगर एक मर्तबा फिर जायें तो अवश्य ही हम भी उन (दग़ा बाज़ों) से ऐसे बेज़ार हों, जैसा कि यह हम से हुये। ऐसे ही अल्लाह उन के आमाल उन को दिखाये गा कि अफ़्सोस करें और आग से कभी न निकल सकें गे १६८. ऐ लोगो! खाओ दुनिया की हलाल, पाकीज़ा	الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا مِنَّا ۗ كَذَٰلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ حَسَرَاتٍ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ ۝ يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ۝ إِنَّمَا

يَأْمُرُكُم بِالسُّوٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَأَن تَقُولُوا۟ عَلَى ٱللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝١٦٩ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ٱتَّبِعُوا۟ مَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ قَالُوا۟ بَلْ نَتَّبِعُ مَآ أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ ءَابَآءَنَآ ۗ أَوَلَوْ كَانَ ءَابَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْـًٔا وَلَا يَهْتَدُونَ ۝١٧٠ وَمَثَلُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ كَمَثَلِ ٱلَّذِى يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَآءً وَنِدَآءً ۚ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝١٧١ يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ كُلُوا۟ مِن طَيِّبَـٰتِ مَا رَزَقْنَـٰكُمْ وَٱشْكُرُوا۟

वस्तुयें और शैतान के पीछे मत जाओ (उस का कहना न मानो) क्यों कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है[१००] १६९. वह अलावा बद अख़्लाक़ी और बे हयाई के कोई भी राह तुम को नहीं बतलाता और यह (सिखाता है) कि तुम अल्लाह की निस्बत ऐसी बात कहो जिसे तुम नहीं जानते १७०. और जब उन से कोई कहने लगे कि अल्लाह की उतारी हुयी (किताब की) पैरवी करो (तो) कह देते हैं कि हम तो उसी राह पर चलेंगे जिस पर हम ने अपने बाप-दादा को पाया। क्या (उन ही के पीछे चलें गे) गो बाप-दादा उन के ऐसे हों कि न समझें और न राह पर हों १७१. और काफ़िरों (को हिदायत की ओर बुलाने वाले) की मिसाल उस शख़्स की तरह है जो किसी जानवर को बुलाता है जो सिवाए पुकार और आवाज़ के कुछ भी नहीं सुनता। बहरे, गूँगे, अन्धे हैं, पस यह नहीं समझते १७२. ऐ ईमान वालो! हमारी दी हुयी हलाल वस्तुओं में से ख़ूब खाओ और अल्लाह का शुक्र करो

....

१०० यहाँ से उन अहकाम का बयान आरंभ होता है जिन के मुतअ़ल्लिक़ तरह-तरह की गुमराहियाँ लोगों में फैली हुयी थीं और दीने-हक़ की बुनियादी सच्चाइयों पर उन का प्रभाव पड़ता था। यह बयान अगर्चे उमूमी अहकाम का बयान है, लेकिन अपनी तश्रीह और दावत के एतिबार से सर ता सर (संपूर्ण रूप से) उसूली मआ़रिफ़ हैं। उन की आ़लम गीर (अन्तर राष्ट्रीय) गुमराहियों में से एक गुमराही यह थी कि खाने-पीने के बारे में तरह-तरह की बेअस्ल पाबन्दियाँ लगाई गयी थीं और दीनदारी की सब से बड़ी बात यह समझी जाती थी कि इन्सान खाने-पीने में सब से अधिक वहमी हो। स्पष्ट है कि जिस समूह की ज़ेहनिय्यत ऐसे वहम और खुराफ़ात में जकड़ी हुयी हो, वह कभी भी स्वतन्त्रता के साथ तरक़्क़ी का क़दम नहीं उठा सकता। इस लिये सब से पूर्व इस मामला की हक़ीक़त स्पष्ट की गयी और उन समस्त ग़लतियों को दूर किया गया जो कि इस बारे में फैली हुयी थीं। (१) अल्लाह ने इन्सान को जो-जो भी अच्छी चीज़ें दी हैं उन्हें शौक़ से खाना चाहिये। बेअस्ल रोक-टोक और मनघड़त पाबन्दियाँ शैतानी वस्वसे हैं (२) साथ-साथ इस हक़ीक़त की तरफ़ इशारा है कि ईमान की राह अक़्ल व बसीरत की राह है और कुफ़्र की ख़ासिय्यत (विशेष्ता) अन्धी तक़्लीद और जिहालत है। अन्धी तक़्लीद करनी, जो कुछ देखते और सुनते आये हैं, उस पर बिला सोचे-समझे जमे रहना, दलील और सुबूत के स्थान पर अपने बुज़ुर्गों और इमामों के क़ौल व अ़मल को हुज्जत समझना, यह सारी बातें हिदायत की राह में सब से बड़ी रुकावट हैं। अन्धी तक़्लीद करने वालों के सामने अ़िल्म व बसीरत की बात पेश करना ऐसा है जैसे जानवरों को समझाना (तर्जुमान)

तक़्लीद की परिभाषा इब्ने क़य्यिम रह० फ़रमाते हैं: "तक़्लीद शरअ़ी माना के लिहाज़ से यह है कि किसी (उम्मती) का ऐसा क़ौल मान लेना जिस पर कोई शरअ़ी दलील न हो, यह तक़्लीद शरीअ़त में मना है" (अअ़्लाम) क़ुरआन पाक की बहुत सी आयतों में इस अन्धी तक़्लीद की आलोचना की गयी है, मगर अफ़्सोस कि बहुत से लोग इस बला में ग्रस्त हैं।

لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ
الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ
اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَآ اِثْمَ
عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ
يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَشْتَرُوْنَ بِهٖ
ثَمَنًا قَلِيْلًا ۙ اُولٰٓئِكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِىْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا
النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ
بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ اَصْبَرَهُمْ عَلَى
النَّارِ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّ
الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِى الْكِتٰبِ لَفِىْ شِقَاقٍ بَعِيْدٍ ۝
لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَ
الْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ

अगर तुम उसी के बन्दे हो १७३. हाँ, मैता (मुर्दार) और ख़ून और ख़िन्ज़ीर (सुअर) का गोश्त और जो अल्लाह के अ़लावा किसी के नाम से पुकारी गयी हो बेशक तुम पर हराम हैं[१०१] हाँ, जो कोई मजबूर हो न तलाश करने वाला और न हद से गुज़रने वाला हो तो उस पर कोई पाप नहीं।अल्लाह बड़ी बख़्शिश वाला मेहरबान है १७४. बेशक जो लोग अल्लाह की उतारी हुयी किताब छुपाते हैं और उस के बदले में किसी क़द्र माल लेते हैं, वह आग ही अपने पेट में डाल रहे हैं (जिस का बदला उन को आग से मिले गा) और न क़ियामत के दिन अल्लाह उन से कलाम (बात-चीत) करे गा और न उन को पाक करे गा (न क्षमा दे गा) और उन को सख़्त अ़ज़ाब पहुंचे गा १७५. इस लिये कि यही तो हैं जिन्हों ने गुमराही को हिदायत के बदले लिया और (अल्लाह के अ़ज़ाब को बख़्शिश के बदले में (ले चुके हैं) पस कैसे साबिर (सब्र करने वाले) हैं आग (के अ़ज़ाब) पर १७६. कारण यह है कि अल्लाह ने (तो) सच्ची किताब (कुरआन करीम) उतारी है। और जो लोग उस में मुख़ालिफ़ हैं (वह) बड़ी भारी बद-बख़्ती में हैं १७७. (बग़ैर रिसालत के इक़रार के) यह कोई नेकी नहीं जो तुम अपना मुँह पूरब, पश्चिम की तरफ़ फेरते जाओ। हाँ, नेकी वाले वह लोग हैं जो अल्लाह को और क़ियामत के दिन को➲

....

१०१. मुर्दार जानवर जो अपनी मौत मर गया हो और जिसे शरई तौर पर ज़ब्ह न किया गया हो, हराम है चाहे किसी ने उस का गला घोंट दिया हो, या लकड़ी या लाठी-डन्डा लगने से मर गया हो, या दूसरे जानवरों ने उसे सींग मार कर हलाक कर दिया हो, या फाड़ खाने वाले जानवरों ने उसे मार डाला हो, यह सब के सब मैत: (मुर्दार) में शुमार हैं और हराम हैं। सुअर का गोश्त हराम है अगर्चे उसे ज़ब्ह भी किया गया हो। उस की चर्बी का भी यही आदेश है। और जो वस्तु अल्लाह के अ़लावा के नाम पर मश्हूर कर दी जाये, वह भी हराम है। जाहिलिय्यत के ज़माने में काफ़िर लोग अपने गढ़े हुये माबूदों (पूज्यों) के नाम पर जानवर ज़ब्ह किया करते थे, इन को भी अल्लाह तआ़ला ने हराम कर दिया (इब्ने कसीर) आज कल अल्लाह के अ़लावा किसी मख़्लूक़ के नाम का बकरा, या और कोई वस्तु इस निय्यत से दी जाती है कि यह साहब मेरी इस नियाज़ (चढ़ावा, क़ुर्बानी) को क़बूल कर लें, तो क्या यह हराम है? हज़रत शाह अ़ब्दुल् अ़ज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रह० इसे हराम कहते हैं और मौलाना अ़ब्दुल हक़्क़ (सम्पादक तफ़्सीर हक़्क़ानी) भी हराम ही होने को तर्जीह देते हैं। हाँ, कुछ बिद्अ़ती मुल्लाओं का कहना है कि अगर पीर साहब का बकरा कहने से वह बकरा हराम हो जाता है, तो फिर तो कोई भी वस्तु हलाल न हो गी, इस लिये कि हर वस्तु को हम कहा करते हैं कि "यह ज़ैद की रोटी है" और "वह महिला उ़मर की है" तो यह भी हराम हो गयीं। लेकिन➲

अफ़्सोस इस बात पर है कि इन लोगों ने यह नहीं समझा कि इन सूरतों में इज़ाफ़त तम्लीके ज़ात या लाभ की है। पीर साहब की निस्बत में कौन सी इज़ाफ़त है, तो फिर मुर्दा की तरफ़ मिल्क क्यों कर हुयी? और अगर हुयी तो बिला इजाज़त उस वस्तु को क्यों खाते हो? - अल्लाह मेरी कौम को हिदायत दे दे, वह जानते नहीं हैं (सनाई)

الْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى
حُبِّهٖ ذَوِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ
السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِى الرِّقَابِ ۚ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ
وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ
وَالصّٰبِرِيْنَ فِى الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ۗ
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِى
الْقَتْلٰى ۗ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى
بِالْاُنْثٰى ۗ فَمَنْ عُفِىَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ شَىْءٌ فَاتِّبَاعٌ ۢ
بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ۗ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ۗ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ
فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٨﴾ وَلَكُمْ فِى الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ
يّٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٩﴾ كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا

और फ़रिश्तों को और सब किताबों और नबियों को मानें और अपना माल उस की ख़्वाहिश के बावुजूद क़रीबियों और अनाथों और ग़रीबों और मुसाफ़िरों और माँगने वालों को देवें और गुलामों की रिहाई में (ख़र्च करें) और नमाज़ की पाबन्दी रखते हों और ज़कात देते हों, और जब कभी वादा करते हैं तो पूरा करते हैं और सख़्तियों और बीमारियों में और जिहाद के वक़्त में साबिर (सब्र करने वाले) रहते हैं यही लोग (अपने दावे में) सच्चे हैं। और यही लोग (अल्लाह से) डरने वाले हैं[१०२] १७८. ऐ ईमान वालो! मक़्तूलों (क़त्ल किये हुओं) का बदला लेना तुम्हें जाइज़ है (बल्कि क़िसास का क़ानून यह है कि) आज़ाद, बदले आज़ाद के और गुलाम, बदले गुलाम के और महिला, बदले महिला के[१०३] पस जिस को उस के भाई से कुछ माफ़ी मिले[१०४] तो दस्तूर के अनुसार लेना वाजिब है और ख़ुशी से (उस के वारिस का हक़ उस को) पहुंचाओ। यह तुम्हारे रब की तरफ़ से आसानी है और मेहरबानी, पस इस के बाद जो कोई ज़्यादती करे गा तो उस को सख़्त अ़ज़ाब (भुगतना) हो गा १७९. और ख़ूनी (क़ातिल) के क़त्ल करने में तुम्हारी ज़िन्दगी है ऐ अ़क़्ल वालो! ताकि तुम सुरक्षित रहो[१०५] १८०. तुम पर फ़र्ज़ किया गया है

....

१०२. हज़रत मुजाहिद रह० फ़रमाते हैं कि भलाई यह है कि इताअ़त करने की इच्छा दिल में पैदा हो जाये, फ़राइज़ पाबन्दी के साथ अदा हों, भलाइयों पर हर समय तवज्जुह रहे, तो ऐसे शख़्स ने इस आयत पर अ़मल किया और पूरा इस्लाम ले लिया और दिल खोल कर भलाई समेट ली। बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मिस्कीन वह नहीं हैं जो माँगते फिरते हैं, बल्कि वह हैं जो अपने गुज़र-बसर (जीवन-यापन) के अनुसार रोज़गार नहीं पाते कि ख़र्चा चला सकें, लेकिन फिर भी अपनी हालत वैसी नहीं बनाते कि लोगों को उन की मिस्कीनी का अ़िल्म हो और कोई कुछ उन को दे दे"। और 'इब्नुस्सबील' मुसाफ़िर को कहते हैं। यहाँ वह मुसाफ़िर मुराद हैं जिन के पास सफ़र ख़र्च समाप्त हो गया हो, उन्हें इतना दे दिया

➲जाये जिस से वह आराम के साथ अपने घर पहुंच जायें। इसी प्रकार वह व्यक्ति भी जो अल्लाह की राह में यात्रा कर रहा हो उसे आने-जाने का ख़र्च देना। मेहमान भी इस हुक्म में शामिल है। इसी प्रकार वह नेक मुसलमान जो दीन की शिक्षा प्राप्त करने के लिये घर से बाहर जाते हैं वह भी "इब्नुस्सबील" में दाख़िल हैं। हज़रत फ़ातिमा बिन्त क़ैस रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "माल में ज़कात के अ़लावा कुछ और भी अल्लाह का हक़ है और फिर यह आयत आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पढ़ कर सुनाई"। एक हदीस में आया है कि मिस्कीन को देने से एक सवाब और निकट मिस्कीन रिश्ते-दार को देने से दो सवाब मिलता है। एक सवाब तो सद्क़ा देने का और दूसरा सिला-रहमी का। वादा कर के उस के विपरीत करना निफ़ाक़ की पहचान है। एक हदीस में है कि मुनाफ़िक़ के तीन चिन्ह हैं (१) बात करते समय अक्सर झूठ बोलना (२) अक्सर वादा ख़िलाफ़ी करना, आ़म तौर पर अमानत में खुर्द-बुर्द करना (३) लड़ाई-झगड़े के समय गालियाँ बकना (इब्ने कसीर)

१०३. अ़रब के कुछ क़बीले अपने आप को एक दूसरे पे ऊँचे मर्तबे का जानते थे। चुनान्चे अगर शरीफ़ क़बीले का कोई आदमी मार दिया जाता तो उस के बदले में दो को मारा जाता था। अगर किसी शरीफ़ क़बीले की औ़रत को ज़लील क़बीले की कोई औ़रत क़त्ल कर देती, तो उस के बदले में उस क़बीले के मर्द को क़त्ल किया जाता था। यह लोग यहाँ तक अपने आप को ऊँचा समझते थे कि शरीफ़ क़बीले के लोग दूसरे क़बीलों की लड़कियों से बिला महर शादी करते थे। यह लोग जब इस्लाम लाये तो उन के इस्लाम लाने से पूर्व के कुछ मामलात का निपटारा बाक़ी रह गया था जिन्हें वह पुराने तरीक़े पर हल करना चाहते थे, लेकिन अल्लाह को यह नापसन्द था, चुनान्चे इन्हीं लोगों की शान में यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई/मआ़लिम)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: जिस शख़्स का कोई आदमी क़त्ल या घायल कर दिया जाये, तो उसे तीन बातों में से एक का इख़्तियार है (१) क़िसास यानी बदला ले (२) क्षमा कर दे (३) या दियत (जुर्माना) ले। अगर इस के अ़लावा कुछ और कार्यवाही करना चाहे तो उसे रोक दिया जाये। इन तीन में से किसी एक को अपना लेने के बाद अगर कुछ और भी ज़्यादती करेगा तो वह हमेशा के लिये जहन्नमी हो गा, (मुस्नद अहमद) मक़्तूल के बारे में केवल क़त्ल करने वाले ही की जान ली जाये और यह हर्गिज़ न देखा जाये कि क़त्ल करने वाला कौन है और मक़्तूल (मृतक) कौन है। फ़ौजदारी दफ़ा के तहत इस्लाम का यह वह नियम है जो दुनिया की उन क़ौमों के लिये मार्गदर्शक है जिन के नियम (Constitution) में आज भी एक के बदले पचास-पचास आदमियों को क़त्ल किया जाता है और यह उन के सरकारी क़ानून में शामिल है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने शहीदों के सर्दार हज़रत अमीर हमज़ा रज़ि० जैसे बुज़ुर्गों के क़िसास में भी यह अनुमति नहीं दी कि इन के बदले में एक से अधिक काफ़िरों को क़त्ल किया जाये (संक्षिप्त) इस्लाम अपने इस बराबरी के क़ानून पर नि:संदेह फ़ख़्र कर सकता है।

१०४. 'भाई' का शब्द ला कर यह बतलाया गया है कि क़ातिल एवं मक़्तूल (क़त्ल करने वाला और क़त्ल किया हुआ) बहर हाल भाई-भाई हैं, ग़लती से यह घटना घटी है, इस से मानवता और भाई चारे का संबन्ध नहीं टूटता है।

१०५. शाने-नुज़ूल:- अ़रब में दस्तूर था कि लड़के के अ़लावा कोई वारिस न होता था। उन के इस मनगढ़त नियम को मिटाने के लिये यह आयत नाज़िल हुयी (तर्जुमान)

حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ خَيْرًا ۚ الْوَصِيَّةُ
لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا عَلَى
الْمُتَّقِينَ ۝ فَمَنْ بَدَّلَهُ بَعْدَمَا سَمِعَهُ فَإِنَّمَا
إِثْمُهُ عَلَى الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

कि अगर कोई तुम में से माल (पीछे) छोड़ता हो तो मरते समय अपने माँ-बाप और निकट रिश्ते-दारों के लिये दस्तूर के अनुसार वसिय्यत कर जाये[105], परहेज़ गारों पर (तो) अनिवार्य है १८१. हाँ, जो लोग उस को सुनने के पश्चात➲

فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَاۤ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ وَعَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ؕ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْۤ اُنْزِلَ فِيْهِ

बदलें गे तो उस का पाप उन्हीं बदलने वालों पर हो गा (न कि उस मरने वाले पर) बेशक अल्लाह सुनता है (और बदलने वालों को जानता है) १८२. हाँ, जो कोई वसिय्यत करने वाले से कजरवी (टेढ़ा पन) या गुनाह मालूम कर के इस्लाह कर दे (अगर्चे वसिय्यत करने वाले की वसिय्यत में बदलाव ही आ जावे) तो उस पर गुनाह नहीं। निःसंदेह अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है १८३. ऐ मुसलमानो! तुम पर रोज़ा फ़र्ज़ हुआ (है) जैसा कि तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ हुआ था ताकि तुम बच जाओ १८४. (घबराओ नहीं) चन्द ही दिन हैं। फिर जो कोई तुम में से बीमार हो (जिस से रोज़ा न रख सके या) मुसाफ़िर हो तो और दिनों में शुमार (गिन्ती) पूरी करे। और जो लोग उस (रोज़ा) की क्षमता रखते हैं[१०७] उन पर एक फ़क़ीर को खाना देना वाजिब है। फिर जो कोई शौक़ से नेकी करे तो वह उस के लिये बेहतर है। और सब से बेहतर तो यही है कि रोज़ा रखो (गो तक्लीफ़ ही हो) अगर जानते हो (यह दिन क्या हैं, सुनो!) १८५. रमज़ान का महीना ही तो वह महीना है

....

१०६. कुछ मुफ़स्सिरीन इस आयत को मीरास वाली आयत से मन्सूख़ मानते हैं, और कुछ इस हुक्म को मुस्तहब कहते हैं और उन लोगों के हक़ में जिन का मीरास वाली आयत में हिस्सा मुक़र्रर नहीं, जैसे बाप, बेटे के होते हुये चचा या उस की औलाद। इस लिये अगर ऐसे लोगों के हक़ में कुछ वसिय्यत करे तो जाइज़ है। वसिय्यत की सीमा सहीह हदीस में एक तिहाई तक है। मेरे नज़दीक दोनों आयतों में से कोई भी मन्सूख़ नहीं है, बल्कि मीरास वाली आयत की शरह है। क्यों कि इस आयत में अल्लाह ने वसिय्यत करने का हुक्म फ़रमाया था मगर चूँकि उस वक़्त कमी-ज़्यादती करना, इन्सान की तबीअ़त से कुछ दूर न था, इस लिये अल्लाह जो ग़ैब की बातों को जानने वाला है, ने उस वसिय्यत की आप ही शरह कर दी। वह इस प्रकार कि उस फ़ेल को जो उस की शरह में इस्तेमाल था ख़ास अपनी तरफ़ निस्बत किया और फ़रमाया: "यूसीकुमुल्लाहु फ़ी औलादिकुम् लिज़्ज़-करि मिस्लु हज़्ज़िल् उन् सयैनि"। 'यूसी' शब्द का इस स्थान पर आना इसी तरफ़ इशारा है कि यह उस फ़ेल (लिखी हुयी वसिय्यत) की तशरीह है, जो पहले मुज्मल (संक्षिप्त म) थी। अब इस आयत का अर्थ यह हो गा कि अपने उन वारिसों के हक़ में जिन के हिस्से अल्लाह ने मुक़र्रर फ़रमा दिये हैं, यह वसिय्यत करना तुम पर फ़र्ज़ है कि अपने-अपने हिस्से शरीअ़त के अनुसार लें। वारिसों के अ़लावा मय्यित से दूर-नज़दीक का संबन्ध रखने वाले जो हैं उन के लिये मय्यित के इख़्तियार में रखा और "मिम् बअ़्दि वसिय्यतिन् यूसा बिहा औ दैनिन्" में इसी तरफ़ इशारा है। और उस को इतना खुला भी न छोड़ दिया जाये कि सारे माल की वसिय्यत किसी के हक़ में कर जाये, बल्कि उस को भी "ग़ै-र-मुज़ार्रिन" कह कर पाबन्द कर दिया है।

दोनों आयतों का ख़ुलासा यह है कि जिन के हक़ में अल्लाह ने हिस्से मुक़र्रर कर दिये हैं उन की निस्बत तो मुक़र्रर हिस्सों के लिये वसिय्यत करने की हाजत नहीं, बल्कि उन की वही वसिय्यत है जिस को अल्लाह ने अपनी तरफ़ मन्सूब फ़रमाया है और जिन लोगों के हिस्से मुक़र्रर नहीं किये, उन के हक़ में मय्यित को एक तिहाई माल

➲वसिय्यत करने की इजाज़त हासिल है (तर्जुमान)

१०७. कुछ मुफ़स्सिरीन का कहना है कि यह रोज़े और हैं और रमज़ान के रोज़े और। लेकिन जब रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ किये गये तो यह रोज़े मन्सूख़ हो गये। बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि 'युतीकू-न' का अर्थ "यु-तय्यकू-न" (कठिनाई और परेशानी से रोज़ा रखने वाले) है, जैसे बहुत बूढ़े लोग। इस क़ौल के अनुसार यह आयत मन्सूख़ नहीं, बल्कि कमज़ोर बूढ़ों के लिये बहाल है। मैं ने जो तर्जुमा किया है वह इसी आयत की रोशनी में किया है। सहीह बुख़ारी में है कि इस्लाम के आरंभ में जो चाहता रोज़ा रखता था और जो चाहता था इफ़्तार कर के एक मिस्कीन को भर पेट खाना दे देता था, यहाँ तक कि "फ़मन् शहि-द मिन्कुम्" (आयः१८५) नाज़िल हुयी (सनाई) अब भी गर्भवती और दूध पिलाने वाली महिला के लिये यह आदेश बाक़ी है, लेकिन मुसाफ़िर और बीमार बाद में क़ज़ा करें।

الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَ
الْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۗ وَمَنْ
كَانَ مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ۗ
يُرِيْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۫ وَلِتُكْمِلُوا
الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۸۵﴾ وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ
قَرِيْبٌ ؕ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا
لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ﴿۱۸۶﴾ اُحِلَّ لَكُمْ
لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآئِكُمْ ؕ هُنَّ لِبَاسٌ
لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ
كُنْتُمْ تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ
فَالْئٰنَ بَاشِرُوْهُنَّ وَابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ ۪ وَكُلُوْا
وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ مِنَ

जिस में कुरआन नाज़िल हुआ है[१०८] जो सब लोगों के लिये हिदायत और हिदायत की स्पष्ट निशानियाँ और फ़ैसल है, पस जो कोई तुम में से उस महीने को पावे वह उस के रोज़े रखे। और जो कोई बीमार या मुसाफ़िर हो, वह और दिनों से शुमार (गिन्ती) पूरी कर ले। अल्लाह तुम्हारे लिये सरलता चाहता है और तन्गी नहीं चाहता, ताकि तुम गिन्ती पूरी कर सको और बताये हुये रास्ता पर अल्लाह की बड़ाई करो ताकि तुम शुक्र अदा करो १८६. जब मेरे बन्दे तुझ से मेरा हाल मालूम करें तो तू कह दे कि मैं क़रीब (निकट) हूँ। पुकारने वाले की पुकार जब कभी मुझे पुकारे क़बूल करता हूँ, पस मेरी बात मानें और मेरी निस्बत ईमान दुरुस्त करें, तकि राह पावें[१०९] १८७. तुम्हारे लिये रमज़ान की रातों में औरतों से जिमाअ् (संभोग) करना हलाल किया गया। वह तुम्हारा लिबास हैं और तुम उन की पोशाक हो। (सुनो!) अल्लाह ने जान लिया कि तुम अपने नफ़्सों से ख़ियानत करते हो[११०] पस तुम पर रहम किया और तुम को माफ़ कर दिया, पस अब उन से मिला करो और जो, अल्लाह ने तुम्हारे हक़ में लिखा है, उस की तलब करो[१११] और खाते-पीते रहो जब तक कि सुब्ह की सफ़ेद धारी

....

१०८. अक्सर लोग इस के तर्जुमा में "मुज़ाफ़ को पोशीदा नहीं मानते और तर्जुमा यूँ करते है "रमज़ान वह महीना➲

➲है जिस में क़ुरआन नाज़िल हुआ" और दलील यह देते हैं कि रमज़ान के महीने में लौहे-महफ़ूज़ से पहले आकाश पर पूरा क़ुरआन आ गया था फिर आवश्यक्ता-नुसार नाज़िल होता रहा। कुछ मुफ़स्सिरीन इस का तर्जुमा यूँ करते हैं "रमज़ान की फ़ज़ीलत में क़ुरआन नाज़िल हुआ"। कुछ लोग यूँ करते हैं "रमज़ान की फ़र्ज़िय्यत में नाज़िल हुआ" जैसा कि कहा करते हैं कि "ज़कात की फ़र्ज़िय्यत में क़ुरआन की फ़लां आयत उतरी"। मेरे निकट भी यही माना सब से बेहतर है, इसी लिये मैं ने इसी को इख़्तियार किया है। इस लिये कि इस से आगे की आयत में इर्शाद है "फ़-मन् शहि-द मिन् कुमुश्शह्-र फ़ल् यसुमुहु" (पस जो कोई तुम में से उस महीने को पाये वह उस के रोज़े रखे) इस से प्रकट होता है कि यह हुक्म पहले बयान की तश्रीह है, चुनान्चे शब्द "फ़" जिस का अर्थ "पस" है यही बतला रहा है। लेकिन यह बात उसी समय दुरुस्त हो गी जब कि इस से पहली आयत में कुछ ऐसा बयान हो जिस के साथ रोज़ों का वाजिब होना साबित हो सके और वह यह कि "उन्ज़ि-ल फ़ी ईजाबि सौमिही" यानी उस के रोज़ों के फ़र्ज़ होने में क़ुरआन नाज़िल हुआ है इस लिये जो कोई मौजूद हो वह रोज़ा रखे (सनाई)

तफ़्सीर "ख़ाज़िन" १/१३१ में है कि इस आयत का माना यह बयान किया गया है "रमज़ान का महीना ऐसा है जिस में रमज़ान की फ़र्ज़िय्यत के साथ क़ुरआन नाज़िल किया गया है" इमाम मुजाहिद और इमाम ज़हहाक से यही रिवायत है और इमाम हसन बिन फ़ज़्ल ने भी इसी को पसन्द किया है। मगर अक्सर उलमा का यही कहना है कि रोज़ा के लिये रमज़ान का महीना इस लिये आया कि इसी महीने में क़ुरआन का नाज़िल होना आरंभ हुआ है और उस का रोज़ा के लिये मख़्सूस हो जाना क़ुरआन के नाज़िल होने की याद आवरी और याद दिहानी है। इस बर्कत वाले महीने में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हज़रत जिब्रील अ़लै० को क़ुरआन पाक सुनाते थे और इसी लिये आप ने इस महीने में तरावीह की पाबन्दी फ़रमाई। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का चन्द दिन जमाअ़त के साथ तरावीह अदा फ़रमाना उम्मत के वास्ते मस्नून हो गया। हज़रत उमर रज़ि० ने अपनी ख़िलाफ़त के ज़माना में जमाअ़त के साथ तरावीह का मुस्तक़िल तरीक़ा जारी फ़रमा दिया। मुअत्ता इमाम मालिक में हज़रत साइब बिन यज़ीद रज़ि० से रिवायत है: "हज़रत उमर ने उबय्यि बिन कअ़ब और हज़रत तमीम दारी को रमज़ान शरीफ़ में हुक्म दिया कि लोगों को तरावीह की नमाज़ ग्यारह रकअ़त पढ़ाया करें" (मिश्कात १/११५)

१०९. रोज़ों के ज़िक्र के दर्मियान दुआ़ का ज़िक्र इस लिये फ़रमाया ताकि मुसलमान इस महीना के अन्दर दुआ़ओं में ज़्यादा से ज़्यादा लगे रहें, विशेष कर रोज़ा इफ़्तार करते समय बहुत ही इख़्लास के साथ करें जो अल्लाह के दर्बार में यक़ीनन कबूल होती है।

११०. यहूदियों के यहाँ रोज़ों की शर्तें निहायत सख़्त थीं। जैसे अगर शाम को रोज़ा रख कर सो जायें तो फिर बीच में उठ कर कुछ खा पी नहीं सकते थे, और इसी प्रकार रोज़े के महीने में पति-पत्नी का संबन्ध (संभोग) भी मना था। इस लिये मुसलमानों को जो रोज़ों का हुक्म मिला तो उन्हों ने ख़याल किया कि उन के लिये भी यही पाबन्दियाँ हों गी (माजिदी)

१११. शाने नुज़ूल:- आरंभ में सहाबा में यह दस्तूर था कि इफ़्तार के समय ही जो चाहते खा पी लेते थे, फिर नहीं खाते थे। चुनान्चे एक सहाबी अपने खेत से थके-माँदे घर में आये लेकिन खाना तय्यार न था, इतने में सो गये और सो जाने की वजह से खाने-पीने से वन्चित रह गये और भूके-प्यासे दूसरे दिन भी रोज़ा रखना पड़ा, इस से उन को बड़ी तक्लीफ़ हुयी, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۖ ثُمَّ أَتِمُّوا الصِّيَامَ إِلَى اللَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنْتُمْ عَاكِفُونَ فِي

(रात की) काली धारी से अलग हो जाये[११२] (अर्थात सुब्ह सादिक़ हो) फिर शाम तक रोज़ा पूरा करो, और जब तुम मस्जिदों में एतिकाफ़➲

الْمَسٰجِدِ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا ؕ كَذٰلِكَ
يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝ وَلَا
تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَآ اِلَى
الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ
وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ يَسْــَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ؕ قُلْ هِىَ
مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ؕ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِاَنْ تَاْتُوا
الْبُيُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ۚ وَاْتُوا
الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝
وَقَاتِلُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا
تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝ وَاقْتُلُوْهُمْ
حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ

करते हो तो औरतों को मत छुवो। यह ऊपर (के आदेश) अल्लाह की सीमायें हैं, उन के निकट भी न जाइयो। इसी प्रकार अल्लाह लोगों के लिये अपने आदेश बयान करता है ताकि वह बच जायें[११३] १८८ और आपस में एक दूसरे के माल नाजाइज़ तरीक़े से मत खाना और उस को हुक्काम (अधिकारियों) तक न पहुंचाना कि नाहक़ लोगों के माल का कुछ हिस्सा जान बूझ कर खा जाओ १८९ तुझ से चाँद का हाल मालूम करते हैं। तू कह दे कि यह लोगों के औक़ात और हज्ज के लिये है (पस इसे ही काफ़ी समझो)[११४] यह कोई नेकी का कार्य नहीं कि तुम अपने घरों में छत की तरफ़ से आओ। हाँ, नेकी के काम तो उन के हैं जो मुत्तक़ी हैं, सो घरों के दर्वाज़ों से आया करो और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम मुराद (कामियाबी) को पाओ[११५] १९० जो लोग तुम से लड़ते हैं तुम उन से अल्लाह की राह में (अल्लाह को प्रसन्न करने को) लड़ो[११६] और ज़्यादती करने वाले अल्लाह को नहीं भाते १९१ और जहाँ उन को पाओ क़त्ल करो और जहाँ से वह तुम्हें निकाल चुके हैं तुम उन को निकाल दो।

....

११२. 'सफ़ेद धारी' से "सुब्ह" मुराद है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना में सहरी की अज़ान रमज़ान शरीफ़ में हज़रत बिलाल रज़ि० दिया करते थे (मिश्कात) यह सहरी की अज़ान अब भी सुन्नत है। ढोल-ताशा, नक़्क़ारा बजाना शरीअ़त से साबित नहीं। मगर दुःख की बात यह है कि रमज़ान शरीफ़ में लोग सहरी के समय आज-कल भी मस्जिदों में नक़्क़ारा बजाते हैं और बहुत से बुजुर्ग और सूफ़ी-साफ़ी लोग इस में कोई हरज भी नहीं जानते हैं, इस पर जितना भी अफ़्सोस किया जाये कम है।(राज़)

११३. दो आदमियों का आपस में किसी बात को ले कर झगड़ा था। मुद्दई (वादी) ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हो कर दावा कर दिया, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उस से गवाही माँगी तो उस ने कहा कि मेरे पास गवाह नहीं हैं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने नियमानुसार मुद्दआ अ़लैह (प्रतिवादी) को क़सम खाने का हुक्म दिया, वह क़सम खाने पर तय्यार हो गया। आप ने फ़रमाया: "अगर तू झूठी क़समें खा कर उस का माल खाये गा तो क़ियामत के दिन अल्लाह का ग़ज़ब अपने ऊपर ले गा, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

११४. शाने-नुज़ूल:- अ़रब में दस्तूर था कि ह़ज्ज से वापसी पर घरों के दर्वाज़ों से अन्दर नहीं आते थे, बल्कि पीछे की ओर से चढ़ कर ऊपर आते थे और इस कार्य को सवाब जानते थे। चूँकि यह उन की ख़याली रस्म थी इस लिये इस कार्य को समाप्त करने के लिये यह आयत नाज़िल हुयी (इब्ने कसीर)

११५. शाने नुज़ूल:- मक्का शरीफ़ में तो मुसलमानों को किसी से टकराने और लड़ाई करने की मनाही थी, लेकिन

जब मदीना शरीफ़ हिजरत कर के आ गये तो यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई/मआ़लिम)

११६. यह पहली आयत है जो जिहाद के तअ़ल्लुक़ से नाज़िल हुयी है। इस्लामी जिहाद बिल्कुल इन्साफ़ के अनुसार है। जिहाद की वजह कुरआन करीम ने खुद बताई है "उज़ि-न लिल्लज़ी-न युक़ातिलू-न बि-अन्नहुम् ज़ुलिमू" (जिन लोगों से कुफ़्फ़ार लड़ते हैं उन को भी लड़ने की इजाज़त है इस लिये कि वह मज़्लूम हैं और अल्लाह उन की मदद पर पूरी तरह से क़ादिर है। वह लोग जिन को घरों से दुश्मनों ने नाहक़ निकाल दिया केवल इस कारण कि वह कहते थे कि हमारा रब अल्लाह है। सूरः हज्ज ३९,४०)

मैं सच कहता हूँ कि अगर मुसलमानों को आज़ादी होती और वह अम्न व शान्ति में होते और कुफ़्फ़ार की तरफ़ से ज़ुल्म व ज़्यादतियों का सामना न होता, तो उन को जिहाद की आवश्यक्ता ही पेश न आती। और वह अपने इस्लामी चाल-ढाल और तौर-तरीक़े से इतनी तरक़्क़ी कर जाते और इतने आराम व शान्ति में रहते, जो इस जंग व जिहाद से उन को न मिली थी। इस आयत में भी (जिस का हाशिया हम लिख रहे हैं) जिहाद की तरफ़ इशारा फ़रमाया है और इस के बावुजूद कि अब एक मौक़ा बदला लेने का हाथ लगा है, और बदला भी ऐसे लोगों से जिन के ज़ुल्म व ज़्यादती की कोई सीमा ही न हो फिर भी ज़्यादती करने से रोक दिया। और न केवल रोक दिया, बल्कि इस पर सख़्त सज़ा की धमकी (सुनाते हुये) फ़रमाया: "ज़्यादती करने वाले अल्लाह को किसी भी प्रकार पसन्द नहीं हैं"। इस्लाम का केवल फ़ित्ना व फ़साद को समाप्त करना उद्देश्य है, न कि क़त्ल व ख़ून बहाना। चुनान्चे एक स्थान पर स्पष्ट लफ़्ज़ों में इर्शाद है: "अगर अल्लाह बाज़ लोगों को बाज़ से दफ़ा न करे तो अ़िबादत करने वालों के हुज्रे, नसारा के गिर्जे और मुसलमानों की मस्जिदें जिन में अल्लाह के नाम का बहुत ज़्यादा ज़िक्र होता है, बर्बाद हो जातीं" (सूरः हज्ज-३९) इस लिये जिस आयत में लड़ाई का ज़िक्र है वहीं सांथ ही इस का भी बयान है कि इस जिहाद से मक़्सद केवल ज़ुल्म व ज़्यादती को दूर करना है। जिहाद का अस्ल उद्देश्य ही ज़ुल्म व ज़्यादती को समाप्त करना और स्वतन्त्रता को बहाल करना है। इस्लाम का अस्ली मक़्सद तो अल्लाह के कलिमे (इस्लाम) को बुलन्द करना है और अगर कोई इस मामले में दख़ल अन्दाज़ी (हस्तक्षेप) न करे और बिला वजह न टकराये, तो इस काम में उन से जंग मोल लेने की इजाज़त नहीं दी है (सनाई)।

وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ
فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩١﴾ فَاِنِ انْتَهَوْا
فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٩٢﴾ وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ
فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ؕ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا
عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩٣﴾ اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ
الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ
فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۪
وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩٤﴾

(इस लिये कि आपस का) फ़ित्ना (फ़साद जो वह कर रहे हैं) क़त्ल से भी बदतर है[११७], और इज़्ज़त वाली मस्जिद के पास उन से न लड़ो जब तक वह स्वयं तुम से उस में न लड़ें, फिर अगर वह तुम से लड़ें तो तुम उन से लड़ो। इसी प्रकार की सज़ा है ज़ालिमों की १९२. (इस के बावुजूद भी) फिर अगर वह बाज़ आयें (रुक जायें) तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है १९३. और (अगर शरारत ही पर रहें तो) उन से लड़ो, यहाँ तक कि फ़ित्ना ख़त्म हो जाये और दीन (क़ानून) अल्लाह का (जारी) हो जाये। फिर भी अगर बाज़ आयें तो ज़्यादती नहीं मगर उन लोगों पर जो ज़ालिम हैं[११८] १९४. अ़िज़्ज़त वाला महीना अ़िज़्ज़त वाले महीना के मुक़ाबिल है और हुर्मत को तोड़ने

وَاَنْفِقُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَیْدِیْكُمْ اِلَی
التَّهْلُكَةِ ۛ وَاَحْسِنُوْا ۛ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۹۵﴾
وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ؕ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا
اسْتَیْسَرَ مِنَ الْهَدْیِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰی

का (यही) बदला है। पस जो कोई तुम पर ज़्यादती करे उस से उस की ज़्यादती जितना बदला लो और (इस से ज़्यादा बदला लेने में) अल्लाह से डरो[११९] और जानो कि अल्लाह की (मदद) डरने वालों के साथ है १९५. और अल्लाह की राह में (आवश्यक्ता-नुसार अपने कमाये हुये हलाल माल) ख़र्च करो और कंजूसी की वजह से) अपनी जानों को हलाक न करो[१२०], और एहसान किया करो, एहसान करने वाले अल्लाह को भाते हैं १९६. और हज्ज और उम्रा को अल्लाह के लिये पूरा करो[१२१] फिर अगर घर जाओ (और काबा तक न पहुंच सको तो) जो क़ुर्बानी मुयस्सर हो ज़ब्ह किया करो, और अपने सर न मुंडाओ

....

११७. जंग एक बुराई है, लेकिन फ़ित्ने का बाक़ी रहना इस से भी ज़्यादा सख़्त बुराई है, इस लिये यह ज़रूरी था कि फ़ित्ना व फ़साद को दूर करने के लिये जंग की हालत को गवारा कर लिया जाये। मक्का के क़ुरैशियों का फ़ित्ना क्या था? यह था कि वह धौंस और ज़बर्दस्ती से लोगों को मजबूर करते थे कि जिस बात को वह हक़ समझते हैं उसे ही हक़ समझें। मतलब यह है कि दीन पर अ़मल करने की आज़ादी यक+दम समाप्त हो गयी थी। क़ुरआन कहता है कि यह बुराई जंग से भी ज़्यादा सख़्त है इस लिये ज़रूरी है कि इस की रोक-थाम के लिये जंग की बुराई गवारा कर ली जाये (तर्जुमान-मौलाना अज़ाद रह०)

११८. शाने नुज़ूल:- जब मुसलमानों को हुक्म दिया गया कि वह अपने दिफ़ाअ़ (Difence) के लिये जिहाद करें, तो उन के दिल में यह ख़याल पैदा हुआ कि अगर कुफ़्फ़ार हम से हराम वाले महीनों में लड़ाई करें तो हम क्या करें? इस लिये कि चार हराम वाले महीनों (मुहर्रम, रजब, ज़ीक़ादा, ज़िल् हिज्जा) में लड़ाई-झगड़ा नहीं है। उन के इस ख़याल पर यह आयत नाज़िल हुयी (मुवज़्ज़िहुल् क़ुरआन्)

११९. हज्ज के साथ ही यह बयान होता है कि हज़रत इब्राहीम अ़लै० के समय से ही मक्का शह्र अम्न व शान्ति का स्थल है। अगर यहाँ दुश्मन को दुश्मन पा जाता फिर भी कुछ न कहता था। हज्ज के आरंभ और अन्त के तीन महीने (ज़ीक़ादा, ज़िल् हिज्जा, मुहर्रम) थे और चौथा महीना "रजब" का था जिस में यह ज़ियारत करते थे। यह चार महीने उस समय काल में अम्न व शान्ति के थे, और तमाम मुल्क अ़रब के रास्ते खुले रहते थे, लड़ाई बन्द रहती थी। अल्लाह तआ़ला उन का हुक्म देता है, और इस दर्मियान और भी लड़ाई के हुक्म और जिहाद के आदाब बताता है। यह जो फ़रमाया कि "जो तुम से लड़ें तुम भी उन से लड़ो और ज़्यादती मत करो" इस का अर्थ यह है कि लड़ाई में बच्चों, बूढ़ों और महिलाओं को जान-बूझ कर न मारो, बल्कि केवल लड़ने वालों को क़त्ल करो (मुवज़्ज़िहुल् क़ुरआन)

१२०. अल्लाह की राह में ख़र्च करने का अर्थ है अल्लाह के दीन को क़ाइम करना, उस की तब्लीग़ व इशाअ़त करना, और उस के लिये माली सहायता करना है। साथ ही मुसलमानों को चेतावनी भी दी गयी है कि अग़र अल्लाह के दीन को बुलन्द करने में जान-माल की क़ुर्बानी से जी चुराओगे और केवल अपने फ़ाइदे को देखोगे तो परिणाम यह होगा कि दुनिया में ग़ुलाम और ज़लील हो कर रहोगे और आख़िरत में ईश्वर का दन्ड भुगतोगे।

हज़रत अबू अ़िम्रान फ़रमाते हैं कि मुहाजिरीन में से एक सहाबी ने क़ुस्तुन्तुनिया की जंग में कुफ़्फ़ार के लश्कर पर निहायत बहादुरी के साथ हम्ला कर दिया और अकेले ही उन की सफ़ों में घुस गये। यह देख कर कुछ लोगों ने यह आयत पढ़ी "वला तुल्क़ू बिऐदीकुम् इलत्त्ह् लु-कति" (और अपनी जानों को हलाक न करो) हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि० ने यह सुन कर फ़रमाया: इस का मतलब हम से पूछो, हम नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ रहे,

➲जिहाद में भी आप के साथ रहे, यहाँ तक कि इस्लाम ग़ालिब हो गया। तो हम अन्सारियों ने एक दिन एक विशेष बैठक में यह तै किया कि अब हालात संतोष-जनक हैं इस लिये हम लोगों को अब अपने बाग़ों, खेतों और घरेलू मामलात की तरफ़ तवज्जुह देनी चाहिये, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। इस का मतलब यह हुआ कि बाल-बच्चों, व्यापार और तिजारत के कारोबार में लग जाना, यह अपने हाथों अपने आप को हलाक करना है (अबू दावूद, तिर्मिज़ी, नसई)

१२१. यहाँ से हज्ज के अह्काम का बयान है। हज्ज का तरीक़ा यह है कि आठवीं ज़िल्हिज्जा को सुब्ह सवेरे एह्राम की हालत में मक्का से बाहर निकले और मिना में ठहरे। नवी ज़िल् हिज्जा को सूरज निकलने के बाद अ़रफ़ात का सफ़र आरंभ करे और नम्रा की वादी में जा कर ठहरे और सूरज ढलने के बाद नम्रा की मस्जिद में ज़ुहर और अ़स्र की नमाज़ें जमा कर के बाजमाअ़त क़स्र करे। नमाज़ से पहले ख़ुत्बा सुने। दोनों नमाज़ों को अदा करने के बाद अ़रफ़ात के मैदान में पहुंच कर, वुज़ू कर के क़िब्ला की तरफ़ मुंह कर के दुआओं में शाम तक मश्ग़ूल रहे। अ़रफ़ात में मौजूद होना ही हज्ज का सब से अहम और बड़ा रुक्न, या हज्ज की रूह और जान है। सूरज डूब जाने के बाद अ़रफ़ात से मुज़दलिफ़ा को लौट आये और मग़रिब और इशा की नमाज़ें जमा कर के यहाँ अदा करे और मश्अ़रे हराम के क़रीब रात गुज़ारे। सुब्ह सूरज निकलने से पहले-पहले मुज़दलिफ़ा से मिना के लिये रवाना हो जाये। सूरज चढ़ने के वक़्त मिना पहुंच कर सब से पूर्व जमुर-ए-अक़्बा पर सात कंकरियाँ मारे (इस को रमइ जिमार भी कहते हैं) इस कार्य का समय सूरज के निकलने के बाद से ले कर सूरज ढलने तक है। इस तारीख़ में यह काम सूरज चढ़ने के बाद ही करना सुन्नत है। इसी तारीख़ में क़ुर्बानी करके और बाल वग़ैरह कटवा कर तवाफ़ के लिये ख़ान-ए-काबा में हाज़िरी दे। हज्ज उस समय पूरा होता है जब कि क़ुर्बानी वाले दिन (यानी १० ज़िल् हिज्जा को) जमुर-ए-अ़क़्बा को कंकरियाँ मारे और बैतुल्लाह का तवाफ़ करे और सफ़ा व मर्वा के दर्मियान दौड़ लगाये। इस प्रकार अब हज्ज मुकम्मल हो गया। (इब्ने कसीर)

يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ۚ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا
اَوْ بِهٖٓ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ اَوْ
صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ ۗ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ
اِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ
يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِى الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا
رَجَعْتُمْ ۚ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ۚ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ
اَهْلُهٗ حَاضِرِى الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ
وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۚ اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ
مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ
وَلَا فُسُوْقَ وَلَا جِدَالَ فِى الْحَجِّ ۚ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ
خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ۚ وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ

जब तक कि क़ुर्बानी अपने ठिकाने पर न पहुंच जाये (अर्थात जब ज़ब्ह हो जाये) हाँ जो शख़्स तुम में से बीमार हो, या उस के सर में (ख़ास कर कोई) तक्लीफ़ हो (ऐसा शख़्स अगर एह्राम तोड़ दे) तो बदला में (तीन) रोज़े या (साढ़े सात सेर अनाज का) सद्क़ा या क़ुर्बानी उस पर वाजिब है, फिर जब तुम बेख़ौफ़ हो जाओ तो जो शख़्स उम्रा कर के हज्ज तक बहर याब (फ़ारिग़) हो तो वह एक क़ुर्बानी करे जैसी उसे मुयस्सर हो, और जिस को (क़ुर्बानी) न मिले वह तीन रोज़े हज्ज (के दिनों में) रखे और सात, जब (वतन को) लौटे। यह दस पूरे (उस पर वाजिब) हैं। यह हुक्म उन लोगों को है जिन के घर वाले मस्जिदे-हराम (यानी मक्का) में न रहते➲

التَّقْوٰى وَاتَّقُوْنِ يٰۤاُولِى الْاَلْبَابِ ۞ لَيْسَ عَلَيْكُمْ
جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ فَاِذَآ اَفَضْتُمْ

हों। और अल्लाह से डरते रहो और (यह) जान लो कि अल्लाह का अ़ज़ाब (बहुत) सख़्त है १९७. (इस) हज्ज के लिये चन्द महीने मुक़र्रर हैं जो कोई उन में हज्ज को अपने ज़िम्मा ले वह (पत्नी से) संभोग न करे, फ़िस्क़ न करे और न हज्ज में (किसी से) झगड़ा करे। और जो कुछ भलाई करोगे (उस का बदला पाओगे क्योंकि) अल्लाह उस को जानता है[१२२]। और सफ़र ख़र्च साथ लिया करो, क्योंकि सफ़र ख़र्च का बड़ा लाभ (सवाल से) बचना है और ऐ अ़क़्ल वालो! मुझ से डरते रहो १९८. (हाँ) इस में तुम्हें कोई गुनाह नहीं कि तुम अपने रब से फ़ज़्ल चाहो। पस जब तुम अ़रफ़ात से वापस आओ

....

१२२. शाने नुज़ूल:- कुछ लोग बग़ैर सफ़र ख़र्च के हज्ज के लिये चले जाते थे और अपना नाम "मुतवक्किल" (अल्लाह पर भरोसा करने वाला) कहलाते थे। मगर मक्का में आ कर माँगते थे, ऐसे लोगों के हक़ में यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۪
وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ
الضَّآلِّيْنَ ۞ ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ
النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۞
فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ
اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ؕ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ
رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ
خَلَاقٍ ۞ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى
الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ
النَّارِ ۞ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ
وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۞ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِىْٓ اَيَّامٍ
مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِىْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ
عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ؕ

तो मश्अ़रे-हराम के पास (मुज़दलिफ़ा के मैदान में) अल्लाह को ख़ूब याद करो उस को उसी प्रकार याद करो जैसा उस ने तुम को बतलाया (इस लिये कि) तुम इस से पहले गुमराह थे[१२३] १९९. फिर लौटो तुम (ऐ कुरैशियो!) जहाँ से (और) लोग लौटते हैं और अल्लाह से बख़्शिश माँगा करो। अल्लाह बड़ा ही बख़्शने वाला मेहरबान है २००. पस जब तुम हज्ज के काम पूरे कर चुको तो अल्लाह को ऐसा याद करो जैसा कि अपने बाप-दादा को याद करते हो, बल्कि इस से भी ज़्यादा। फिर कुछ लोग ऐसे हैं कि कहते हैं[१२४]: हमारे मौला! हम को इसी दुनिया में दे और आख़िरत में उन के लिये कुछ भी हिस्सा न हो गा २०१. (और उन के मुक़ाबिले में) बाज़ लोग वह हैं जो कहते हैं: हमारे मौला! तू दुनिया में हम को नेमत (और हर प्रकार से राहत) और क़ियामत में भी नेमत नसीब कर[१२५] और तू हम को आग के अ़ज़ाब से छुटकारा दीजियो २०२. उन की कमाई का हिस्सा उन को है। और अल्लाह बहुत जल्द मुहासबा (हिसाब-किताब) करने वाला है २०३. और अल्लाह को याद

करो चन्द दिन गिने हुये[१२६]। फिर जो कोई दो दिन में जल्दी करे तो उस पर कोई पाप नहीं, और जो देर लगाये उस पर भी, जो परहेज़-गारी करे उस पर भी कोई गुनाह नहीं।

....

१२३. शाने नुज़ूल:- कुरैश और उन के साथी क़बीले, मुज़दलिफ़ा में (जो अ़रफ़ात से थोड़ी दूरी पर एक मैदान है) हज्ज के दिनों में ठहर कर वहीं से मक्का वापस लौट जाते थे, (दूसरे लोग अ़रफ़ात से वापस हो जाते थे, हालाँकि अल्लाह का हुक्म दूसरों के मुताबिक़ था। इस लिये कुरैश को हज्ज का तरीक़ा समझाने के लिये यह आयत नाज़िल हुयी- सहीह बुख़ारी (सनाई)

१२४. यहाँ पर दीने इस्लाम के एक अहम और गंभीर मुद्दे का एलान हो रहा है। अल्लाह की अ़िबादत व आज्ञापालन, रोज़ी-रोटी और दुनियावी तरक़्क़ी की राह में रुकावट नहीं है, बल्कि दीने इस्लाम तो एक मुकम्मल जीवन प्रदान करना चाहता है, जिस में दुनिया और आख़िरत दोनों की भलाई मौजूद है।

हज्ज बेशक एक अ़िबादत है, लेकिन उस का अ़िबादत होना दुनियावी कारोबार में लाभ उठाने के सिलसिले में रुकावट नहीं। हलाल और जाइज़ तरीक़े से कमाया हुआ माल अल्लाह का फ़ज़्ल है। लेकिन यह भी सरासर गुमराही है कि इन्सान हाथ-पैर धो कर केवल दुनिया कमाने में लग जाये और आख़िरत को बिल्कुल ही भूल जाये। और दूसरी गुमराही इस से भी अधिक भयानक है कि इन्सान दुनिया से इस क़द्र दूरी इख़्तियार कर ले कि जाइज़ संबन्धों को भी तोड़ डाले। क़ुरआन मजीद बीच की राह को पेश करता है और बताता है कि सहीह जीवन केवल उस का है जो कहता है: "मेरे मौला! मैं दुनिया व आख़िरत दोनों जगह कामियाबी चाहता हूँ"। इस आयत में हज्ज के चन्द महीनों के बारे में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि वह महीने शव्वाल, ज़ीक़ादा और ज़िल् हिज्जा के दस दिन हैं (बुख़ारी) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि किसी के लिये यह मुनासिब नहीं कि हज्ज के महीनों के अ़लावा भी हज्ज का एहराम बाँधे क्योंकि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है अल्-हज्जु अशहुरुम्मालूमात (हज्ज के लिये कुछ विशेष महीने हैं) इब्ने मर्दूया की एक मर्फ़ूअ़ रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "हज्ज का एहराम बाँधना किसी को सिवाए हज्ज के महीनों के जाइज़ नहीं"।

'फ़रज़' से मुराद एहराम बाँधना और लब्बैक पुकारना हैं 'रफ़स' से मुराद जिमाअ़, हम-बिस्तरी और संभोग है। और इस का कम से कम दर्जा यह है कि संभोग वग़ैरह का ज़िक्र करना, बेहयाई की बातें करना, इशारे से छेड़-छाड़ करना वग़ैरह सब के सब "रफ़स" में दाख़िल हैं और एहराम की हालत में यह सब बातें हराम हैं। 'फ़ुसूक़' का अर्थ है नाफ़र्मानी, गाली-गुलौच, बदज़बानी और शिकार वग़ैरह करना, जैसा कि हदीस में है: "मुसलमान को गाली देना फ़िस्क़ और उसे क़त्ल करना कुफ़्र है" (मिश्कात) 'फ़िस्क़' का शब्द और भी बहुत से कामों पर बोला जाता है और यह सब बहर-हाल हराम हैं, मगर एहराम की हालत में तो बहुत ही ज़्यादा हराम हैं। 'जिदाल' का अर्थ यह है कि आपस में झगड़ा न करो, एक दूसरे को गुस्सा न दिलाओ, किसी को गाली न दो। बुख़ारी व मुस्लिम की एक रिवायत में है "जो शख़्स बैतुल्लाह का तवाफ़ करे और फ़िस्क़ न करे, वह गुनाहों से ऐसा पाक हो जाता है जैसा कि अपने पैदा होने के दिन था"। मुस्नद इब्ने हुमैद में है: "जो शख़्स अपना हज्ज पूरा करे और किसी मुसलमान भाई को हज्ज के दौरान अपनी ज़बान और हाथ से तक्लीफ़ न दे तो उस के समस्त पाप धो दिए जाते हैं"। इस लिये अब उस हाजी को चाहिये कि भविष्य में भी वह अपने नेक चाल-ढाल और तौर-तरीक़े को बाक़ी रखे इस लिये कि हज्ज का अस्ल मक़सद यही है (इब्ने कसीर)

१२५. बुख़ारी, मुस्लिम में हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दुआ़ करते समय "रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-न-तंव्वफ़िल् आख़ि-रति ह-स-न-तंव्वक़िना अ़ज़ा-बन्नार" (ऐ हमारे मौला! तू दुनिया में हम को नेमत और आख़िरत में भी नेमत नसीब कर और हम को आग के अ़ज़ाब से बचा लीजियो) को बहुत अधिक पढ़ा करते थे। हज्ज के मौक़ा पर अ़रफ़ात के मैदान में भी इस को बहुत अधिक पढ़ा करते थे (अहमद)

➲१२६. 'अय्यामिम्-मअ़्दूदात' (चन्द गिने चुने दिन) से मुराद "तश्रीक़ के दिन (११, १२, १३, ज़िल् हिज्जा) मुराद हैं। और 'अय्यामिम्-मअ़्लूमात' से मुराद ज़िल् हिज्जा के शुरू के दस दिन हैं। 'ज़िक्रुल्लाह' से मुराद अय्यामे-तश्रीक़ में फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद तक्बीरें कहना।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِىْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ۝ وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِى الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ۭ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِىْ نَفْسَهُ ابْتِغَاۗءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِى السِّلْمِ كَاۗفَّةً ۠ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِىْ ظُلَلٍ مِّنَ

और अल्लाह से डरते रहो[१२७] और जान रखो कि तुम को उसी के पास जमा हो कर जाना है[१२८] २०४. और बाज़ लोग ऐसे हैं जिन की बातें तुझ को दुनिया में भली मालूम होती हैं और जो कुछ दिल में है उस पर अल्लाह को गवाह करता है, हालाँकि वह तुम्हारा दुश्मन है २०५. और जब फिर जाता है तो ज़मीन में दौड़-धूप करता है कि उस में फ़साद फैलाये और खेतों को बर्बाद करे और चार पायों की नस्ल को मार दे। और अल्लाह फ़साद को पसन्द नहीं करता २०६. और जब कोई उसे कहता है कि अल्लाह से डर तो अकड़ ख़ी की वजह से गुनाह पर अड़ जाता है पस जहन्नम उस को काफ़ी है। वह बुरा ठिकाना है[१२९] २०७. बाज़ लोग ऐसे हैं जो अपनी जान अल्लाह को खुश करने में दे देते हैं[१३०]। और अल्लाह बन्दों पर बड़ा मेहरबान है[१३१] २०८. ऐ मुसलमानो! सब अहकाम की फ़र्माबर्दारी किया करो। और (कुछ को करने और कुछ को छोड़ने में) शैतान के पीछे मत चलो। (इस लिये कि) वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है २०९. पस बाद पहुंचने रौशन (स्पष्ट) अहकाम के अगर तुम फिसलोगे तो जान लो कि अल्लाह बड़ा ग़ालिब और बड़ी हिक्मत वाला, २१०. यह मुश्रिक लोग अब इस बात का इन्तिज़ार करते हैं कि खुद अल्लाह ही बादलों के साये में

....

१२७. जाहिलिय्यत के काल में अ़रब वालों का यह दस्तूर था कि हज्ज से फ़ारिग़ हो कर तीन दिन तक खुशियाँ मनाते, बाज़ार लगाते और अपने बाप-दादाओं की बहादुरी के कारनामे बयान करते। इन आयतों में अल्लाह तआ़ला ने इन सब के स्थान पर तीन दिन तक ठहर कर अल्लाह को याद करना मुक़र्रर कर दिया। अब इन दिनों में दोपहर को कंकर फेंकते हैं और हर नमाज़ के बाद तक्बीरें कहते हैं। इस स्थान पर अगर कोई चाहे तो दो ही दिन ठहरे, मगर तीन दिन ठहरना बेहतर है। और अन्त में यह फ़रमा दिया कि जो केवल दुनिया को चाहते हैं वह आख़िरत से महरूम हैं (मुवज़्ज़िहुल् क़ुरआन)

१२८. शाने नुज़ूलः- कुछ लोग मुनाफ़िक़ाना तरीक़े से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर➲

हो कर नर्म-नर्म बातें करते और अपने को मुख़्लिस साबित करते और हर प्रकार की क़समें खा कर यह विश्वास दिलाते कि हम ख़ैर-ख़ाह हैं, हालाँकि बाहर जा कर हर प्रकार से तक्लीफ़ें पहुंचाने की कोशिश करते और मुसलमानों के जान-माल को बर्बाद करने में कोई कसर न छोड़ते थे। चुनान्चे अख़्नस बिन शुरैक़ नाम का एक मुनाफ़िक़ आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में आया करता था। एक मर्तबा मौक़ा पा कर वापस जाते हुये मुसलमानों के खेतों को फूंक दिया और उन के जानवरों को क़त्ल कर के भाग गया। उसी के हक़ में यह आयत नाज़िल हुयी। (जलालैन)

१२९. एक शख़्स की दुनियावी ज़िन्दगी देखने में चाहे जितनी अच्छी हो और वह अपनी नेक-दिली का चाहे जितना दावा करे, लेकिन इस से कुछ नहीं होता। अस्ल कसौटी तो यह है कि देखा जाये कि ताक़त और इख़्तियार पा कर अपने लोगों के साथ क्या बर्ताव करता है? खेती बाड़ी और घरेलू पशुओं की बर्बादी इन्सानी ग़ुरूर और शक्ति का बहुत बड़ा फ़साद है। दुनिया की ताक़त के नशे में चूर लोगों से जब कहा जाता है कि अल्लाह से डरो, तो उन का घमन्ड उन्हें और ज़्यादा ज़ुल्म व ज़्यादती और पाप की ओर आमादा कर देता है।

१३०. शाने नुज़ूल:- यह आयत हज़रत सुहैब बिन सनान रूमी रज़ि० की शान में नाज़िल हुयी। जब यह हिजरत के इरादे से मक्का से निकले तो कुफ़्फ़ार ने उन को घेर लिया और कहने लगे कि तुम अपना माल यहाँ से साथ नहीं ले जा सकते। अगर अपना माल छोड़ कर जा सकते हो तो जाओ। चुनान्चे आप ने अल्लाह की राह में सारा माल छोड़ कर हिजरत करना पसन्द किया। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब और सहाबा की एक बड़ी जमाअ़त आप के इस्तिक़्बाल (स्वागत) के लिये हर्रा तक आई और मुबारक बाद पेश की कि आप ने नफ़ा की तिजारत की। हज़रत सुहैब रज़ि० ने फ़रमाया: अल्लाह तआ़ला आप सब लोगों की तिजारत में नफ़ा दे। आख़िर बताओ तो सही कि मामला क्या है? उन बुज़ुर्गों ने फ़रमाया: आप के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर यह आयत नाज़िल हुयी है। आप जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास पहुंचे तो उन को देख कर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने भी उन्हें मुबारक बाद दी। इस आयत को अगर आ़म समझा जाये तो अल्लाह की राह में जिहाद करने वाला हर मोमिन इस आयत के हुक्म में दाख़िल हो सकता है (इब्ने कसीर)

१३१. शाने नुज़ूल:- कुछ लोग मुसलमान हो कर भी अपने रस्म व रिवाज को छोड़ने से जी चुराते थे। कुछ यहूदी भी इस्लाम लाने के बाद ऊँट का गोश्त खाने से परहेज़ करते थे, इन ही लोगों के हक़ में यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ
تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ سَلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ
مِّنْ اٰيَةٍۭ بَيِّنَةٍ ؕ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْ
بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝
زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ
مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝
كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۫ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ

उन के पास आवे और उस के फ़रिश्ते[१३२] और काम का फ़ैसला हो जाये। यह सब काम तो अल्लाह ही की तरफ़ फिरते हैं। २११ (ज़रा) पूछ (तो) बनी इस्राईल से कि कितने हम ने उन को निशान दिये[१३३]। जो शख़्स अल्लाह की नेमत को बाद हासिल हो जाने के बदलता है, तो अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है[१३४] २१२. काफ़िरों को दुनिया की ज़िन्दगी अच्छी लगती है और मुसलमानों से मस्ख़री करते हैं। हालाँकि अल्लाह से डरने वाले क़ियामत के रोज़ उन से बुलन्द होंगे। अल्लाह जिस को चाहता है रोज़ी बेहिसाब देता है २१३. (अव्वल अव्वल तो) सब लोग एक ही दीन पर

مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۖ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ
بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ
وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ
مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ؕ

थे[१३५]। तो अल्लाह ने नबी भेजे (भले कामों पर) खुशी सुनाने वाले और बुरे (कामों से) डराने वाले और उन के साथ एक-एक सच्ची किताब भी नाज़िल की ताकि वह (किताब) लोगों के इख़्तिलाफ़ात का फ़ैसला कर दे। और ज़्यादा इख़्तिलाफ़ इस में उन्हीं लोगों ने किया जिन को पहले किताब मिली थी खुले निशानात पहुंचने के बाद (केवल) अपने हसद के कारण (इन्कारी हुये) पस अल्लाह ने अपने मानने वालों को अपने फ़ज़्ल से हक़ की राह दिखाई जिस में यह लोग मुख़्तलिफ़ हैं।

....

१३२. अगर किसी के ईमान व यक़ीन लाने के लिये कलामे-इलाही (कुरआन) की हिदायत काफ़ी नहीं, तो फ़िर इस के बाद अब केवल यही रह गया है कि अल्लाह उन के सामने खुद हाज़िर हो कर अपनी ज़बान से कह दे कि मैं तुम्हारा अल्लाह हूँ, मुझ पर ईमान लाओ। लेकिन न तो ऐसा हुआ है और न ही कभी ऐसा हो सकता है (सनाई)

१३३. 'निशान' जैसे मूसा की लाठी, उन के हाथ की रौशनी, उन के लिये दरिया को फाड़ देना, बदलियों का साया करना, मन्न व सल्वा उतारना वग़ैरह-वग़ैरह यह तमाम वस्तुयें हज़रत मूसा के सच्चे नबी होने पर स्पष्ट तर्क थे, मगर उन लोगों ने नेमतों का इन्कार किया और नाशुक्री की तो भला यह अल्लाह के दन्ड से कैसे बच सकते हैं?

१३४. शाने नुज़ूल:- मक्का के काफ़िर आम तौर पर ग़रीब मुसलमानों से मसख़री करते और कहते थे कि यही लोग जन्नत के ठेके-दार हैं। उन लोगों के हक़ में यह आयत नाज़िल हुयी। (सनाई)

१३५. दीने इस्लाम के इस अस्ल उद्देश्य का एलान है कि आरंभ में तमाम इन्सान एक ही क़ौम और समूह (जमाअत) थे और इस्लामी ज़िन्दगी के उसूलों पर जीवन-यापन करते थे। फिर जूँ-जूँ इन्सानी नस्ल में बढ़ोतरी और फैलाव आया, तो इख़्तिलाफ़ात पैदा होने आरंभ हो गये, इस का परिणाम ज़ुल्म व फ़साद की सूरत में प्रकट हुआ, तब अल्लाह ने संदेष्टा (रसूल) भेजे। इन तमाम संदेष्टाओं के भेजने का उद्देश्य केवल एक ही था यानी अल्लाह की इ़बादत, नेक कार्य करना और इख़्तिलाफ़ के स्थान पर एकता और इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद क़ाइम करना (सनाई)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत नूह और हज़रत आदम अ़लै० के दर्मियान १० ज़माने थे। उन ज़मानों के लोग हक़ को मानने वाले और शरीअ़त के पाबन्द थे। फिर इख़्तिलाफ़ात का सिलसिला आरंभ हुआ तो अल्लाह पाक ने संदेष्टाओं को भेजा, उन लोगों ने हक़ की तब्लीग़ की और हक़ पर चलने वालों को शुभ सूचनायें दीं और बुरे लोगों को अल्लाह के अ़ज़ाब से डराया। संदेष्टाओं की पाक शिक्षा के बाद भी केवल आपस के हसद, कीना और तअ़स्सुब की वजह से लोग एक जमाअ़त की शक्ल में न बन सके। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "हम दुनिया में आने के एतिबार से तो पीछे हैं, लेकिन क़ियामत के दिन जन्नत में जाने के एतिबार से सब से आगे होंगे। यहूद व नसारा को हम से पहले किताब दी गयी और हम को बाद में मिली, लेकिन उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया और अल्लाह ने हमारी राहनुमाई की"। (इब्ने कसीर)

'पहले लोग एक रास्ता पर थे' यहाँ इस से मुराद आदम की औलाद है। कुछ लोगों ने नूह की औलाद को मुराद लिया है और कुछ उलमा ने कहा है कि पहले अ़रब के लोग अल्लाह-परस्त थे, लेकिन अ़मर बिन लुहय्यि नामक एक शख़्स पैदा हुआ जिस ने बुतों की पूजा सिखाई। 'अल्लाह ने नबियों को भेजा' कहा जाता है कि दुनिया में एक लाख चौबीस हज़ार संदेष्टा आये, उन में ३१३ के पास आसमानी किताबें थीं। कुरआन पाक में केवल २८ संदेष्टाओं के नाम बयान किये गये हैं।

وَاللّٰهُ يَهۡدِىۡ مَنۡ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ۝ اَمۡ حَسِبۡتُمۡ اَنۡ تَدۡخُلُوا الۡجَـنَّةَ وَلَمَّا يَاۡتِكُمۡ مَّثَلُ الَّذِيۡنَ خَلَوۡا مِنۡ قَبۡلِكُمۡ ؕ مَسَّتۡهُمُ الۡبَاۡسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلۡزِلُوۡا حَتّٰى يَقُوۡلَ الرَّسُوۡلُ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَعَهٗ مَتٰى نَصۡرُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ نَصۡرَ اللّٰهِ قَرِيۡبٌ ۝ يَسۡــَٔلُوۡنَكَ مَاذَا يُنۡفِقُوۡنَ ؕ قُلۡ مَآ اَنۡفَقۡتُمۡ مِّنۡ خَيۡرٍ فَلِلۡوَالِدَيۡنِ وَالۡاَقۡرَبِيۡنَ وَالۡيَتٰمٰى وَالۡمَسٰكِيۡنِ وَابۡنِ السَّبِيۡلِ ؕ وَمَا تَفۡعَلُوۡا مِنۡ خَيۡرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيۡمٌ ۝ كُتِبَ عَلَيۡکُمُ الۡقِتَالُ وَهُوَ كُرۡهٌ لَّـكُمۡ ۚ وَعَسٰۤى اَنۡ تَكۡرَهُوۡا شَيۡـــًٔا وَّهُوَ خَيۡرٌ لَّـكُمۡ ۚ وَعَسٰۤى اَنۡ تُحِبُّوۡا شَيۡـــًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّـكُمۡ ؕ وَاللّٰهُ يَعۡلَمُ وَاَنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ۝ يَسۡــَٔلُوۡنَكَ عَنِ الشَّهۡرِ الۡحَـرَامِ قِتَالٍ فِيۡهِ ؕ قُلۡ قِتَالٌ فِيۡهِ كَبِيۡرٌ ؕ وَصَدٌّ

(क्यों न हो) अल्लाह जिसे चाहे सीधी राह की तरफ़ राह-नुमाई करता है[१३६] २१४. क्या तुम ख़याल किये (बैठे) हो कि जन्नत में दाख़िल हो जाओगे हालाँकि अभी तुम पर वह तक्लीफ़ें नहीं आयीं जो तुम से पहले लोगों पर आयीं। हर प्रकार की सख़्तियाँ और तक्लीफ़ें भी उन को पहुंचीं और काँपते रहे यहाँ तक कि रसूल और उस के ताबे-दार मोमिन (बाज़ दफ़ा) बोल उठे थे कि अल्लाह की मदद कब हो गी? ख़बर दार रहो! अल्लाह की मदद बहुत क़रीब है[१३७] २१५. तुझ से प्रश्न करते हैं कि क्या ख़र्च करें[१३८]? तू कह दे जो कुछ ख़र्च करना चाहो वह (पहले) माँ-बाप को (दो) और क़रीबियों[१३९] और अनाथों और ग़रीबों और मुसाफ़िरों को दो। और जो तुम नेकी करते हो, अल्लाह उस को ख़ूब जानता है। २१६. (और) जंग करना तुम पर फ़र्ज़ हुआ है और वह तुम को नापसन्द है[१४०], (तुम्हारी तबीअ़तों का क्या ठीक) तुम तो (अक्सर औक़ात) एक वस्तु को नापसन्द करते हो हालाँकि तुम्हारे हक़ में बेहतर होती है, और एक वस्तु को पसन्द करते हो हालाँकि तुम्हारे लिये मुज़िर (हानि कारक) होती है। और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते[१४१] २१७. (ताना के तौर पर) तुझ से हराम महीने में लड़ने का हुक्म पूछते हैं। तू कह दे कि इस में लड़ना बड़ा गुनाह है।

....

१३६. शाने नुज़ूल:- मक्का में तो केवल मुश्रिकों ही की जुल्म व ज़्यादतियों का सामना था। मदीना में जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हिज्रत फ़रमाई तो वहाँ एक तरफ़ तो यहूदियों से, दूसरी तरफ़ छुपे दुश्मन मुनाफ़िक़ों से और तीसरी ओर मुश्रिकों से जूझना पड़ा। इन्हीं लोगों ने एक जुट हो कर अह्ज़ाब की लड़ाई में मदीना पर चढ़ाई की थी, जिस में यहूद, नसारा और अह्ले-कितब आगे-आगे थे। ऐसे वाक़िआ़त से सहाबा को बड़ा रंज और दुःख हुआ, उन की हिम्मत बंधाने को यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई/मआ़लिम)

१३७. अह्ज़ाब की लड़ाई सन् ५ हिजरी की एक अहम घटना है। इस में कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन मुसलमानों को तहस-नहस करने के इरादे से चारों तरफ़ से मदीना पर चढ़ आये थे। ज़ीक़ादा का महीना था, मुसलमानों ने देखा कि हम बचाव (Difence) की शक्ति नहीं रखते हैं तो शहर के चारों तरफ़ ख़न्दक़ (खाई) खोद दी। दस-दस आदमियों के समूह ने मिल कर चालीस-चालीस गज़ ख़न्दक़ तय्यार की थी, मुसलमान उस ख़न्दक़ के बीच में आ गये, और उधर क़बीला बनी क़ुरैज़ा के यहूदियों ने शहर के अन्दर अम्न व शान्ति में ख़लल् डालना आरंभ कर दिया और मुसलमानों की औ़रतों और बच्चों को ख़त्रा में डाल दिया, तब इस परेशानी की हालत में कुछ लोगों की ज़बान से निकल गया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु

➲अ़लैहि वसल्लम तो हम को रूम और ईरान के फ़तह होने की ख़ुश्ख़बरी सुनाते थे और यहाँ अपनी हालत यह है कि मदीना में अपने बाल-बच्चों में जाना कठिन है। इस लिये अल्लाह ने फ़रमाया: कि दीन के बारे में तुम्हें बड़े-बड़े कष्ट झेलने पड़ें गे तब जा कर जन्नत हासिल हो गी। (इब्ने कसीर)

१३८.शाने नुज़ूलः- एक सहाबी अ़मर बिन जमूह रज़ि०, जो बहुत माल वाले थे, ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से प्रश्न किया कि मैं क्या ख़र्च करूँ? इस के उत्तर में यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

१३९. यहाँ पर ख़ैरात करने का हुक्म और उस ग़लत फ़ह्मी को दूर करना मक़्सूद है कि लोग समझते थे कि ख़ैरात केवल ग़ैरों को ही दी जा सकती है, अपने और जान-पहचान के लोगों की मदद करना ख़ैरात नहीं है। इस लिये ख़ैरात का मस्रफ़ (उद्देश्य,ख़र्च करने का तरीक़ा)बतलाते हुये स्पष्ट कर दिया कि इस के अव्वलीन (सर्व प्रथम) हक़-दार संबन्धी हैं अगर वह मुहताज हों तो (सनाई) यह बात ध्यान में रहे कि यह सद्क़ा व ख़ैरात, ज़कात के अ़लावा हैं, ज़कात का माल माँ-बाप को देना जाइज़ नहीं (सनाई)

१४०. शाने नुज़ूलः- कुफ़्फ़ार व मुश्रिकों की ज़ुल्म व ज़्यादती जब मुसलमानों के ऊपर बहुत ज़्यादा बढ़ गयी तो उन के हक़ में यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

१४१. 'दिफ़ाअ़' (Difence) अथवा दीन पर ईमान व अ़मल की आज़ादी के लिये लड़ने का हुक्म। (१) जंग की हालत कोई ऐसी हालत नहीं जो तुम्हारे लिये पसन्दीदा हो, लेकिन इस दुनिया में कितनी ही मज़ेदारियाँ हैं जो नागवारियों से पैदा होती हैं और कितनी ही ख़ुशख़बरियाँ हैं जिनका परिणाम उलटा होता है (२) जंग बुराई है, लेकिन इन्सानी ताक़त का ज़ुल्म व फ़साद इस से भी बढ़ कर बुराई है। इस लिये जब ऐसी हालत पेश आ जाये कि ज़ुल्म का दूर करना किसी और प्रकार से संभव न हो तो जंग के अ़लावा और कोई रास्ता नहीं (सनाई)

दुश्मनों की मुख़ालिफ़त किसी ख़ास शख़्स या जमाअ़त से न थी बल्कि इस कारण थी कि लोग अपने पिछले अ़क़ीदे को छोड़ कर क्यों एक नया अ़क़ीदा इख़्तियार कर लेते हैं? यानी केवल अ़क़ीदे के इख़्तिलाफ़ के कारण वह एक जमाअ़त को तहस-नहस कर देना चाहते थे। इस लिये जब तक मुसलमान अपने अ़क़ीदे से फिर न जाते, दुश्मनों की तरफ़ से ज़ुल्म व ज़्यादती और क़त्ल व फ़साद का सिलसिला जारी रहता था। और मुसलमान अपना ईमान बदलने को तय्यार न थे, तो फिर इस के अ़लावा और कोई रास्ता न था कि जिहाद करें और हक़ व बातिल का फ़ैसला हो जाये (सनाई) क़ुरआन ने जंग का क़दम नहीं उठाया है और अम्न व शान्ति का पैग़ाम देने वाला हो कर, वह ऐसा नहीं कर सकता है। जंग का क़दम तो उस के ख़िलाफ़ उठाया गया और उस ने केवल अपना बचाव किया है।

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ
اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ۗ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى
يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ۗ وَمَنْ
يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ
فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ
وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢١٧﴾

और अल्लाह की राह (दीने इस्लाम) से रोकना और उस का इन्कार करना और मस्जिदे-हराम से रोकना और उस के रहने वालों को उस से निकाल देना अल्लाह के नज़दीक बड़ा पाप है, और फ़ित्ना क़त्ल से भी बड़ा है[१४२]। और (काफ़िर लोग) हमेशा तुम से लड़ते रहें गे यहाँ तक कि तुम को तुम्हारे दीन से फेर दें अगर ताक़त रखें और जो लोग तुम में से अपना दीन छोड़ कर कुफ़्र की हालत में मरें गे तो उन के कार्य (जितने किये हों गे) दुनिया व आख़िरत में सब के सब➲

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۖ قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ مِن نَّفْعِهِمَا ۗ وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَ قُلِ الْعَفْوَ ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ

बर्बाद हो जायें गे, और यह लोग आग ही के लाइक़ हों गे, जिस में हमेशा रहें गे[१४३] २१८. (हाँ) जो लोग ईमान लाये और (दीन छोड़ने के स्थान पर अपना घर और वतन छोड़ कर) हिज्रत कर आये और अल्लाह की राह में लड़े, उन्हीं को अल्लाह की रहमत की उम्मीद है। और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला है[१४४]। २१९. तुझ से शराब और जुवे का मस्अला पूछते हैं (कि लाभ-दायक है या नहीं) तू कह दे उन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के लिये लाभ भी हैं और गुनाह उन का लाभ से बड़ा है[१४५]। तुझ से पूछते हैं कि क्या ख़र्च करें? (कितना रखें और कितना दें?) तू कह दे! (जो ज़रूरत से) ज़ाइद (हो) ख़र्च करो। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अह्काम बयान करता है २२०. ताकि तुम दुनिया और आख़िरत में ग़ौर करो[१४६] (और समाप्त होने वाली को छोड़ कर के बाक़ी रहने वाली को इख़्तियार करो)

....

१४२. शाने नुज़ूल:- सहाबा ने एक मौक़ा पर पहली रजब को लड़ाई लड़ ली, हालाँकि महीना हुरमत का था जिस में कि जंग हराम है। इस पर अ़रब के मुश्रिकों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और सहाबा को ताने देने शुरू कर दिये। क्यों कि इस महीने में जंग पहले ही से हराम चली आती थी इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (इब्ने कसीर) इस बारे में मुफ़स्सिरीन का इख़्तिलाफ़ है कि यह प्रश्न किन लोगों ने किया था? कुछ उलमा का कहना है कि प्रश्न कर्ता मुसलमान थे और कुछ का कहना है कि कुफ़्फ़ार थे। लेकिन मेरे नज़दीक सवाल करने वाले कुफ़्फ़ार थे, इस लिये कि आने वाले शब्दों में शर्म दिलाने के लिये जो अल्फ़ाज़ लाये गये हैं वह कुफ़्फ़ार ही के लिये हो सकते हैं (सनाई)

१४३. एक स्थान "नख़्ला" के पास से हो कर मक्का के मुश्रिकों का एक तिजारती क़ाफ़िला गुज़रने वाला था, इसलिये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जहश की मातहती (Command) में ६० मुजाहिदों की एक जमाअ़त को वहाँ मुक़र्रर कर दिया, ताकि क़ाफ़िला के आने की सूचना वह हमें दे दें। जब तिजारती क़ाफ़िला आ गया तो मुसलमानों ने सोचा कि अगर थोड़ी-बहुत भी ताख़ीर (विलंब) करें गे तो रजब का हुर्मत वाला महीना आरंभ हो जाये गा (और क़ाफ़िला पर हम्ला न कर सकें गे) इस लिये बजाए इस के कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सूचना देते, खुद ही उस पर चढ़ दौड़े। तिजारती क़ाफ़िले का सर्दार अ़मर बिन हज़र बिन मुनीर एक सहाबी वाक़िद बिन अ़ब्दुल्लाह तमीमी के हाथों मारा गया। मुजाहिदीन ने मैदान मार लिया और बन्दियों व माले ग़नीमत को ले कर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुये। आप ने मुजाहिदों पर अपनी नाराज़गी का इज़्हार फ़रमाया। काफ़िरों ने भी ताना देना शुरू कर दिया, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी।

१४४. शाने नुज़ूल:- इस्लाम के आरंभ में शराब और जुवे की बुराई में कोई आयत नहीं उतरी थी। हज़रत उमर, हज़रत मआ़ज़ और अन्सार की एक जमाअ़त ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हो कर शिकायत की कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! शराब से मत मारी जाती है और जुये से माल बर्बाद होता है और कुरआन की कोई आयत इन की हुर्मत में नहीं नाज़िल होती है? इस पर यह आयत नाज़िल हुयी और शराब व जुए के नुक़्सानात को बयान कर के उन से नफ़रत दिलायी और फिर बाद में उन्हें हराम कर दिया।

➲१४५. 'मैसिर' (जुवा) हर उस खेल को कहा जाता है जिस में हार-जीत की शर्त लगाई जाये। अ़रबों में पाँसे डाल कर जुवा खेलने का आ़म चलन था। जिस का नाम पाँसे में निकलता था उसी को केवल माल मिलता था। आज कल हमारे हाँ लाटरी का चलन है जो जुवे ही की एक शक्ल है और हराम है। सहाबा, ताबेअ़ीन और बुज़ुर्गों की जमाअ़त ने शत्रंज और चौसर जैसे खेलों को भी जुवे में शुमार किया है। इसी प्रकार ताश को भी जुवा में शामिल किया है। आज-कल बच्चे काग़ज़ के टुकड़े और बादाम की गिरी वग़ैरह से खेलते हैं (फ़त्हुल् बयान) इस विषय पर विस्तार से बयान सूर: माइदा की आय: न० ९० में आये गा। 'ख़म्र' हर उस वस्तु को कहते हैं जिस से मत मारी जाये और जो अ़क़्ल को बेअ़क़्ल कर दे। इस का भी विस्तार से बयान आगे आये गा। इन सब का गुनाह आख़िरत का वबाल तो है ही, दुनिया में भी कोई फ़ाइदा नहीं है और अगर हो भी तो न के बराबर। यह मुमकिन है कि कभी जीत हो जाये या कुछ ख़ुशी हासिल हो जाये, मगर इस का अन्त बहर हाल बर्बादी का कारण है।

१४६. हज़रत मआ़ज़ बिन जबल और हज़रत सालबा रज़ि० यह दोनों नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुये और कहा: ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! हमारे पास गुलाम हैं, बाल-बच्चे भी हैं और हम मालदार हैं। आप हमें बतायें कि अल्लाह की राह में क्या ख़र्च करें? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो बाल-बच्चों के ख़र्च से बच जाये (इब्ने कसीर) एक और हदीस में है कि ऐ बनी आदम! जो तेरे पास अपनी ज़रूरत से अधिक हो, उसे अल्लाह की राह में दे डालना ही तेरे लिये बेहतर है, उस का रोक लेना तेरे लिये बुरा है। हाँ, अपनी ज़रूरत के अनुसार ख़र्च क़रने में तुझ को मलामत नहीं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० यह भी कहते हैं कि यह आदेश ज़कात के हुक्म से मन्सूख़ हो गया। हज़रत मुजाहिद कहते हैं कि ज़कात की आयत गोया इस आयत की तफ़्सीर और उस का स्पष्ट बयान है और यही क़ौल सहीह है (इब्ने कसीर) 'अल्लाह की राह में देना' इस का यह मतलब है कि इस्लाम की तरक़्क़ी और लोगों के लाभ के लिये कोई कार्य किया जाये। अगर निय्यत यही है तो "फ़ी सबीलिल्लाह" (अल्लाह की राह में) है। और अगर ज़ाती लाभ, शुहरत या इ़ज़्ज़त मक़सद है, तो यह अल्लाह की राह में नहीं माना जाये गा। "क़ुलिल् अ़फ़्व" के बारे में प्रसिद्ध कवि अ़ल्लामा इक़्बाल ने यूँ इशारा किया है:-

जो हर्फ़ "क़ुलिल् अफ़्व" में पोशीदा थी अब तक।
इस दौर में शायद वह हक़ीक़त हो नमूदार

क़ुरआन में हो ग़ोता ज़न् ऐ मर्दे मुसलमाँ
अल्लाह करे तुझ को अ़ता जिद्दते किर्दार।

(इक़्बाल)

२२०. और यतीमों के बारे में तुझ से प्रश्न करते हैं तू कह दे! उन की इस्लाह (ख़ैर-ख़ाही) करना अच्छा है। और अगर उन को साथ मिला लो तो वह तुम्हारे भाई हैं[१४७]। अल्लाह को फ़सादी और इस्लाह करने वाले सब मालूम हैं। अगर अल्लाह चाहता तो तुम को तक्लीफ़ में डाल देता। बेशक अल्लाह बड़ा ज़बर्दस्त हिक्मतों वाला है २२१. और मुश्रिक महिलाओं से निकाह न करो जब➲

تَتَفَكَّرُونَ ۝ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَيَسْأَلُونَكَ
عَنِ الْيَتَامَىٰ ۖ قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۖ وَإِن
تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ
الْمُصْلِحِ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَعْنَتَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝
وَلَا تَنكِحُوا الْمُشْرِكَاتِ حَتَّىٰ يُؤْمِنَّ ۚ وَلَأَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ

خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا
الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا ۚ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ
مُّشْرِكٍ وَّلَوْ أَعْجَبَكُمْ ۗ أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ ۖ
وَاللَّهُ يَدْعُوا إِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِإِذْنِهِ ۖ
وَيُبَيِّنُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٢١﴾
وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَحِيضِ ۖ قُلْ هُوَ أَذًى فَاعْتَزِلُوا
النِّسَاءَ فِي الْمَحِيضِ ۖ وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ
يَطْهُرْنَ ۖ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ

तक वह मुसलमान न हों। और ईमान दार लौंडी मुश्रिक (ख़ान्दानी) महिला से बेहतर है, गो वह तुम को भली मालूम हो। और अपनी (लड़कियों को) मुश्रिकों से न बियाहो जब तक वह मुसलमान न हों। और गुलाम मोमिन मुश्रिक (आज़ाद मर्द) से अच्छा है अगर्चे वह तुम को भला मालूम हो। यह लोग आग की तरफ़ बुलाते हैं और अल्लाह अपनी मेहरबानी से जन्नत और बख़्शिश की तरफ़ बुलाता है और लोगों के लिये अपने अह्काम खोल-खोल कर बयान करता है ताकि वह नसीहत पावें[१४८] २२२. और तुझ से हैज़ का मस्अला मालूम करते हैं। तू कह दे! वह नापाकी है, सो हैज़ में महिलाओं से अलग रहो और उन के क़रीब भी न जाओ जब तक पाक न हो जायें[१४९], फिर जब वह पाक हो जायें तो उन से मिलाप करो जहाँ से अल्लाह ने तुम को हुक्म दिया है।

....

१४७. शाने नुज़ूल:- हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब "वला तक्-रबूमा-लल् यतीमि" (बनी इस्राईल आयः नं० ३४) और "इन्नल्लज़ी-न यअ्कुलू-न अम्वा-लल्-यतामा".... (सूरः निसा आयत नं० १०) यह दोनों आयतें उतरीं तो इन को सुन कर अनाथों की देख-भांल करने वालों ने अनाथों का खाना-पीना अपने घरों से बिल्कुल अलग कर दिया। उन यतीमों का खाना बढ़ जाता तो वह यतीम दूसरे वक़्त खुद खाते, या ख़राब हो जाता। इस प्रकार यतीमों का नुक़्सान होने लगा। दूसरी तरफ़ यह हुआ कि उन यतीमों के सरपरस्त भी उन के रख-रखाव से तंग आ गये, तो इन लोगों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हो कर अपनी और अनाथों की कठिनाइयों का ज़िक्र किया, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी और बतलाया गया कि नेक नियती और ईमान दारी के साथ उन के माल को अपने माल में मिला लेने में कोई हरज नहीं है (अबू दावूद, नसई) एक हदीस में है कि जिस शख़्स ने अपने खाने-पीने में किसी यतीम को शामिल कर लिया, तो अल्लाह उस को अवश्य जन्नत देगा। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि मुसलमानों के घरों में वह घर बेहतर है जिस में किसी यतीम का पालन-पोषण और देख-रेख होती हो, और बुरा घर वह है जिस में किसी यतीम को तक्लीफ़ दी जाती हो। एक और हदीस में नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जिस के पास कोई यतीम लड़का या लड़की है और वह अच्छी तरह उस की देख-रेख करता है, तो क़ियामत के दिन जन्नत में वह शख़्स मेरे साथ हो गा। (मुस्लिम)

१४८. मुसलमान और काफ़िर के दर्मियान रिश्ता-नाता इस आयत की रौश्नी में हराम ठहरा (मुवज़्ज़िहुल् क़ुरआन)

१४९. यहूदियों में यह दस्तूर था कि जब महिला को माहवारी (मासिक धर्म) आता तो उस को अपने से बिल्कुल दूर कर देते थे, यहाँ तक कि खाना-पीना सब उस का अलग कर देते। सहाबा ने भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से प्रश्न किया तो इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई) इसे सुन कर यहूदी कहने लगे कि इन लोगों को तो हमारी मुख़ालिफ़त मक़्सूद है। हैज़ की हालत में औ़रतों से अलग रहने का मतलब यह है कि उन से जिमाअ़ (संभोग) न करो, इस के अ़लावा उन के साथ उठना-बैठना, खाना-पीना, बोलना-चालना, छूना-पकड़ना, एक साथ लेटना-बैठना सब जाइज़ है। उन से 'मुबाशिरत' भी जाइज़ है। 'मुबाशिरत' की तश्रीह अबू दावूद की रिवायत में

➲इस प्रकार है कि "हैज़ की हालत में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी बीवियों से मिलते थे इस हालत में कि वह तह्बन्द बाँधे होती थीं"। मतलब यह कि हैज़ वाली महिला के साथ लेटना-बैठना, खाना-पीना सब जाइज़ है। मगर जिन लोगों को अपने ऊपर क़ाबू न हो उन को एक साथ लेटने-बैठने से परहेज़ करना बेहतर है, ताकि हराम काम के होने का ख़त्रा न रहे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जो शख़्स हैज़ वाली पत्नी से जब कि लाल ख़ून आ रहा हो संभोग करे तो एक दीनार सद्क़ा करे और अगर पीला ख़ून आ रहा हो तो आधा दीनार। 'उस जगह से आओ जहाँ का अल्लाह ने तुम को हुक्म दिया है" इस से मु[illegible] है। पीछे (पाख़ाना के स्थान पर) जाना हराम है, जो ऐसा करें गे वह सीमा से आगे बढ़ने वाले हैं। (इब्ने कसीर)

اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ۝
نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۪ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ ز
وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ
مُّلٰقُوْهُ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً
لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ
النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ
بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ
قُلُوْبُكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝ لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ
مِنْ نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَآءُوْ
فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ
فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ
بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ
يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ كُنَّ

अल्लाह झुकने वालों और पाक रहने वालों से मुहब्बत करता है[१५०] २२३. महिलायें तुम्हारी खेती हैं, सो अपनी खेतियों को जिस प्रकार चाहो आबाद करो (औलाद के क़ाबिल बनाओ) और अपनी जानों के लिये आइन्दा की फ़िक्र करो। और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि तुम को उस से मिलना है। और तू मानने वालों को शुभ-सूचना सुना[१५१] २२४. और अल्लाह को अपनी क़समों का बहाना न बनाया करो कि (क़समों की आड़ में) नेकी (करनी छोड़ दो) और परहेज़गारी न करो और लोगों में सुल्ह न कराओ। और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है २२५. बिला इरादा क़समें खाने पर अल्लाह तुम को नहीं पकड़े गा, हाँ, जो दिल से तुम ने क़समें खाई हैं उन पर मुआख़ज़ा (पकड़) करेगा। और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला हिल्म वाला (सहनशील) है[१५२] २२६. (और) जो लोग अपनी बीवियों से ईला करते हैं वह बीवियाँ चार महीनों तक (उन के) इन्तिज़ार में ठहरें, फिर अगर वह बाज़ आवें (रुक जायें) तो अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है २२७. और अगर छोड़ने ही की ठान लें (और सुल्ह न करें) तो बेशक अल्लाह सुनता और जानता है[१५३] २२८. और तलाक़ दी हुयी महिलायें तीन हैज़ों तक अपने को ठहराये रखें (दूसरा निकाह न करें) और जो कुछ अल्लाह ने उन के पेटों में पैदा कर रखा है उस को न छुपायें

....

१५०. ज़ाहिरी पाकी के लिये वुज़ू, ग़ुस्ल वग़ैरह और बातिनी पाकी के लिये दुआ़ और इस्तिग़फ़ार है। आयत में इसी तरफ़ इशारा है।

१५१. यहूदियों का ख़याल था कि अगर पीछे खड़े हो कर पत्नी के आगे के हिस्से में संभोग किया जाये तो➲

➲पैदा होने वाला बच्चा भैंगा पैदा होता है, इन के इस ख़याल के रद्द में यह आयत नाज़िल हुयी। मैं कहता हूँ कि इस से यह समझ लेना कि औरत के पीछे (पाख़ाना वाले हिस्से) में संभोग करना जाइज़ है, बहुत बड़ी ग़लती है। इसलिये कि महिला को अल्लाह तआला ने 'हर्स' (खेती) से तश्बीह दी है। और हर्स जब ही हो गी कि उसी स्थान में दाख़िल किया जाये जहाँ से पैदावार की उम्मीद हो। और पीछे वाले हिस्से में तो सब कुछ बर्बाद होता है। वह स्थान इस लिये नहीं बनाया गया है, इस लिये ऐसा करना आदमीयत (मानवता) के ख़िलाफ़ है। एक हदीस में आया है कि जो शख़्स औरत के पीछे वाले हिस्से में संभोग करता है उस पर अल्लाह लानत करता है (सनाई) नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक और रिवायत में फ़रमाया: "लौंडे-बाज़ी करने वाला, मुश्त ज़नी (हस्त मैथुन) करने वाला, औरत के पीछे वाले हिस्से में संभोग करने वाला, जानवरों से कुकर्म करने वाला, औरत के साथ उस की बेटी से निकाह करने वाला, पड़ौसी को तक्लीफ़ देने वाला, सब लानती हैं, क़ियामत के दिन अल्लाह उन की ओर नज़र उठा कर भी नहीं देखे गा, न उन को पाक करे गा और उन को दोज़ख़ में धकेलने का आदेश दे गा"। (इब्ने कसीर)

१५२. दो सहाबियों (रज़ि०) के दर्मियान आपस में कुछ कहा सुनी हो गयी तो उन में से एक ने क़सम खाली कि न तो मैं तुम्हारे घर आऊँगा और न ही तुम्हारे मामले में कुछ बोलूँगा। चूँकि दोनों सहाबी आपस में रिश्ते-दार थे इस लिये जब कोई उन में से किसी एक के बारे में दूसरे से मालूम करता तो वह कह देते कि मैं उन के मामले में कुछ न कहूँ गा, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। (सनाई/मआलिम)

१५३. इस आयत से ईला का मस्अला बयान होना आरंभ हुआ है। 'ईला' का अर्थ है "क़सम"। अरब में यह एक बहुत बुरा चलन था कि औरत को तक्लीफ़ पहुंचाने के उद्देश्य से क़सम खा लेते थे कि मैं तेरे पास नहीं आऊँ गा। इस से न तो उस महिला पर तलाक़ ही पड़ती थी और न ही वह उस की बीवी की तरह रहती थी। इस्लाम ने ईला की मुनासिब इस्लाह कर दी और उन के लिये एक सीमा मुक़र्रर कर दी, ताकि जो लोग ईला को अपनायें वह उस सीमा से आगे न बढ़ सकें और औरतों पर ज़ुल्म व ज़्यादती का सिलसिला लम्बा न रहे। इस लिये औरतों को हुक्म दिया कि वह ईला के बाद चार माह तक इन्तिज़ार करें अगर मर्द रूजूअ कर लें तो ठीक, वर्ना तलाक़ हो जाये गी। फिर आगे क्या हो गा इस की तफ़्सीर फ़िक़्ह की किताबों में बयान है (सनाई)

يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ
بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ؕ وَلَهُنَّ
مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۪ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ
دَرَجَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۠ اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪
فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِيْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ
لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْئًا اِلَّآ اَنْ
يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا
يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا

अगर वह अल्लाह और क़ियामत के दिन पर ईमान रखती हैं। और पति उन के उस मुद्दत के अन्दर उन को फेर लेने का हक़ रखते हैं अगर उन की ग़रज़ (मक़्सद) इस्लाह की हो (जान लें कि) जैसे महिलाओं पर मर्दों के हुक़ूक़ हैं, वैसे ही महिलाओं के भी उन पर दस्तूर के अनुसार हुक़ूक़ हैं, मर्दों को महिलाओं पर बर्तरी है। और अल्लाह ग़ालिब है हिक्मत वाला है २२९. (रज्ई) तलाक़ें दो (तक) हैं[१५४] फिर या तो दस्तूर के अनुसार रोक है या भलाई से रुख़्सत[१५५]। और अपने दिये हुये में से कुछ न लो। हाँ, जब दोनों यह जानें कि हम से➲

افْتَدَتْ بِهٖ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يَّتَرَاجَعَآ اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ

अल्लाह के अह्काम अदा नहीं हों गे। फिर तुम अगर यह जानो कि वह अल्लाह के अह्काम अदा नहीं करें गे तो उन पर कोई गुनाह नहीं कि महिला कुछ दे कर रुख़्सत ले ले[१५६]। यह अल्लाह के हुदूद (सीमायें) हैं पस इन से आगे न बढ़ो (बल्कि दिल व जान से उन का ख़याल रखो) और जो लोग अल्लाह की हुदूद (सीमाओं) से आगे बढ़ते हैं वही ज़ालिम हैं (और अपने ज़ुल्म का बदला बेशक पावें गे) २३०. फिर अगर (तीसरी) तलाक़ उस को दे तो वह उस को हलाल न हो गी जब तक कि उस के सिवा और शौहर से निकाह न करे। फिर अगर वह उस को तलाक़ दे तो दोनों को आपस में मिलाप करने में कोई गुनाह नहीं अगर जानें कि अल्लाह के अहकाम अदा कर सकेंगे।

....

१५४. अ़रब वालों में एक बुरा चलन यह था कि औ़रत की तलाक़ की कोई सीमा न थी। तलाक़ के बाद जब औ़रत की अ़िद्दत की मुद्दत पूरी होने के क़रीब पहुंचती तो पति तुरन्त रुजूअ़ कर लेते और फिर कुछ समय के बाद तलाक़ दे देते। ग़रज़ यह कि उन के तलाक़ और रुजूअ़ का सिलसिला जारी रहता और इस प्रकार पत्नी को जब तक चाहते तन्ग करते। ऐसे ही लोगों की नाक में नकेल डालने के लिये यह आयत नाज़िल हुयी और साफ़-साफ़ बयान कर दिया कि रोकने वाली दो ही तलाक़ें हैं और बस (सनाई) इस्लामी तलाक़ बिल्कुल समाज के उसूलों के अनुसार हैं। क्यों कि जिस औ़रत के साथ शौहर की निभ न सके तो इस्लाम ने इस अवसर पर तलाक़ का उसूल मुक़र्रर किया है और इतनी गुन्जाइश भी दो तलाक़ों तक रख दी है, ताकि संभव है उन दोनों में सुल्ह-सफ़ाई हो जाये और वह फिर पहले की तरह आबाद हो जायें। अब भी अगर बात न बनी और तीसरी तलाक़ की नौबत आ गयी तो फिर अब उन में सदा के लिये जुदाई ही सब से बेहतरीन समाजी उसूल है ताकि अब औ़रत जहाँ चाहे अपनी इच्छा के अनुसार दूसरा विवाह कर ले (सनाई)

१५५. तलाक़ देने का सहीह तरीक़ा क्या है? इस का जवाब मौलाना आज़ाद रह० के शब्दों में यह है "तलाक़ देने का तरीक़ा यह है कि वह तीन मर्तबा, तीन मज्लिसों में, तीन महीनों में दे, यह एक के बाद एक पड़ती है। और वह हालत जो क़तई़ तौर पर निकाह के रिश्ता को तोड़ देती है तीसरी मज्लिस, तीसरा महीना और तीसरी तलाक़ के बाद वुजूद में आती है। उस वक़्त तक जुदाई के इरादे से बाज़ आ जाने और मिलाप कर लेने का मौक़ा रहता है। इस लिये निकाह का रिश्ता कोई ऐसी चीज़ नहीं है कि जिस घड़ी चाहा बात की बात में तोड़ कर रख दिया। उस के तोड़ने के लिये मुख़्तलिफ़ मन्ज़िलों से गुज़रने, अच्छी तरह सोचने-समझने, बार-बार सुधार की मुहलत पाने और फिर हालात के सुधरने से बिल्कुल मायूस हो कर अन्तिम निर्णय लेने की आवश्यक्ता है (तर्जुमान)

इस आयत के नाज़िल होने के बाद लोग संभल गये, क्यों कि तीसरी तलाक़ के बाद उस शौहर को लौटा लेने का कोई हक़ हासिल न रहा। "अत्तलाक़ु मर्रतान" से वह लोग दलील पकड़ते हैं जो कहते हैं कि तीनों तलाक़ें एक ही मर्तबा देनी हराम हैं, इमाम मालिक और उन के मानने वालों का यही मज़हब है। उन के निकट सुन्नत तरीक़ा यही है कि तलाक़ एक-एक कर के दी जाये, क्यों कि "अत्तलाक़ु मर्रतान" कहा है। फिर फ़रमाया है कि यह सीमाएँ हैं अल्लाह की, इन से आगे न बढ़ो। 'सुनन नसई' में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को एक ऐसे शख़्स के बारे में सूचना मिली जिस ने अपनी पत्नी को एक ही मज्लिस में तीन तलाक़ें दे दी थीं, इस पर आप

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम नाराज़ हो कर खड़े हो गये और फ़रमायाः "क्या मेरी ही मौजूदगी में अल्लाह की किताब के साथ खेल किया जा रहा है"। मुस्नद अहमद में है कि एक सहाबी रुकाना रज़ि० ने अपनी पत्नी को तीन तलाक़ दे दी फिर बहुत शर्मिन्दा हुये। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन से मालूमात करने के बाद फ़रमायाः "यह एक तलाक़ हुयी है तुम चाहो तो लौटा सकते हो"। मुहद्दिसीन की एक जमाअ़त ने इस हदीस को सहीह कहा है। सहीह मुस्लिम में रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम, हज़रत अबू बक्र के शासन काल और दो साल हज़रत उमर के शासन काल में एक मज्लिस की तीन तलाक़ें एक ही मानी जाती थीं, लेकिन हज़रत उमर ने लोगों के अन्दर इस में जल्द-बाज़ी को देख कर तीनों लागू कर दीं। यह आप का सियासी फ़ैसला था, हालांकि बाद में वे अपने इस फ़ैसला पर शर्मिन्दा भी हुये (इग़ा-सतुल्लहफ़ान १८१)

१५६. जब पति-पत्नी में इख़्तिलाफ़ बढ़ जाये और पत्नी, अपने पति से प्रसन्न न हो तो ऐसी सूरत में वह कुछ ले दे कर अपने शौहर से तलाक़ हासिल करे, तो औरत के देने और मर्द के लेने में कोई हरज नहीं। हाँ, अगर पत्नी बिला वजह शौहर से खुला चाहती है तो उस पर जन्नत की खुश्बू तक हराम है।(इब्ने कसीर)

حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۪ وَّلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ؗ وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ يَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ ذٰلِكَ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ

यह अल्लाह की (सुनिश्चित की हुयी) हदें हैं जानने वालों के लिये खोल-खोल कर बयान करता है २३१. और जब तुम औ़रतों को (एक या दो) तलाक़ दे चुको और वह इ़द्दत ख़त्म करने को हों तो उन को भले तरीक़े से रख लो या शरीफ़ाना तरीक़े से छोड़ दो और (याद रखो कि) दुःख देने के लिये उन को मत रोकना कि जुल्म करने लगो (और सुन रखो कि) जो कोई यह करे गा तो उस ने अपनी ही जान पर जुल्म किया (जिस का वबाल उसे उठाना होगा) और अल्लाह की आयतों को मस्ख़री न समझो और अपने हक़ में अल्लाह की नेमतें याद करो और (उसे भी याद करो) जो तुम्हारी तरफ़ किताब और तहज़ीबुल्-हिक्मत उतारी है अल्लाह तुम को उस के ज़रीआ़ से समझाता है। और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह हर एक वस्तु को जानता है[१५७] २३२. और जब तुम औ़रतों को तलाक़ दिला चुको और वह अपनी मुद्दत (ठहरने की) पूरी कर चुकें तो तुम उन को (पहले) शौहरों से जब वह आपस में नियम के अनुसार राज़ी हो जायें, निकाह करने से मत रोका करो[१५८]। इस बात की उन को नसीहत की जाती है जो तुम में से अल्लाह को मानते हैं और क़ियामत के दिन पर यक़ीन रखते हैं। यह आदेश तुम्हारे लिये बड़ा ही सुथरा और बड़ा ही पवित्र है। और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते २३३. जो माएँ अपने बच्चे को

१५७. शाने नुज़ूलः- एक शख़्स ने अपनी पत्नी को तलाक़ दी और अ़िद्दत गुज़र गयी फिर उस से दोबारा निकाह की दर्ख़ास्त की, औ़रत की इच्छा तो दोबारा निकाह की थी लेकिन उस के भाई ने ग़ैरत की वजह से निकाह करने से इन्कार कर दिया और गुस्से में बुरा-भला भी कहा, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (मआ़लिम)

या तो औ़रत को पत्नी की तरह रखना चाहिये और उस के हुक़ूक़ अदा करना चाहिये या फिर तलाक़ दे कर उस की राह खोल देनी चाहिये। ऐसा न करना चाहिये कि न तो बीवी की तरह रखो और न ही तलाक़ दे कर उस की राह खोलो (बल्कि उसे अधर में लटकाये रखो) जैसा कि जाहिलिय्यत के ज़माना में लोग किया करते थे। मियाँ-बीवी की हैसिय्यत से जीवन बिताने का मामला बड़ा ही नाजुक और अहम है। मर्द की खुद-ग़रज़ी और मतलब परस्ती से हमेशा औ़रतों की हक़ तलफ़ी हुयी है, इस लिये विशेष रूप से यहाँ मुसलमानों को नसीहत की गयी कि अल्लाह ने उन्हें सब से बेहतरीन उम्मत का पद भार सौंपा है और किताब और हिक्मत की शिक्षा ने हिदायत और उपदेश के तमाम पहलू स्पष्ट कर दिये हैं, इस लिये जमाअ़ती स्थान व पद की ज़िम्मे दारी से ग़ाफ़िल न हों और वैवाहिक जीवन में अख़्लाक़ व परहेज़-गारी का बेहतरीन आदर्श (नमूना) बनें। यहाँ चलते-चलते इस ओर भी संकेत दे दिया है कि जिस जमाअ़त के लोगों की वैवाहिक ज़िन्दगी सही रूप से नहीं है वह कभी भी कामियाब जमाअ़त नहीं हो सकती (सनाई)

१५८. इस आयत में वारिसों और सरपरस्तों को हिदायत की गयी है कि जब किसी औ़रत को तलाक़ हो जाये और फिर अ़िद्दत भी गुज़र जाए (और तलाक़ रज्अ़ी हो, यानी एक या दो तलाक़ दी हों) और मियाँ-बीवी फिर दोबारा राज़ी-खुशी से रुजूअ़ करना चाहें, तो वह उन को न रोकें। इस आयत में इस बात की भी दलील है कि महिला स्वयं अपना निकाह नहीं कर सकती और निकाह बग़ैर वली के भी नहीं हो सकता है। चुनान्चे इमाम तिर्मिज़ी ने एक हदीस नक़ल की है और इब्ने जरीर ने इस आयत के तहत बयान किया है कि "औ़रत, औ़रत का निकाह नहीं कर सकती और इसी प्रकार न वह अपना निकाह खुद कर सकती है। वह महिलायें ज़िनाकार हैं जो अपना निकाह आप ही कर लें"। एक दूसरी हदीस में रिवायत है "निकाह वली के बग़ैर और दो ईमानदार गवाहों के बिना नहीं होता"। (इब्ने कसीर) इमाम बुख़ारी ने अपनी सहीह में "किताबुन्निकाह" में एक बाब बाँधा है "बाबु मन् का-ल ला निका-ह इल्ला बि-वलिय्यिन्" (बाब है उस शख़्स की दलील के बयान में जो कहता है कि बग़ैर वली के निकाह नहीं होता) फिर हज़रत इमाम बुख़ारी इस आयत "फ़ला तअ़्ज़ुलूहुन्न" (तो उन को मत रोको) को दलील के तौर पर ला कर फ़रमाते हैं "इस में कुंवारी, शादी-शुदा तलाक़ दी हुयी, विधुवा सब शामिल हैं। और "मुश्रिकों से निकाह न करो जब तक वह ईमान न ले आयें" (आयत २२१) और "उन में ग़ैर शादी-शुदा की शादी कर दो" (सूरः नूर, आयत ३२) इन दो आयतों को भी पेश कर के निकाह का मालिक वलियों को बतलाया है। इस सिलसिले में विस्तार से दूसरी किताबें देखें।

पूरी मुद्दत दूध पिलाना चाहें वह पूरे दो वर्ष पिलायें[१५९]। और (उस दूध पिलाने की मुद्दत में) उन का खाना कपड़ा दस्तूर के अनुसार बाप के ज़िम्मा है (जिस क़द्र उस को हासिल है उतना ही दे इस लिये कि) हर एक नफ़्स को उस की हिम्मत के अनुसार हुक्म हुवा करता है। न तो माँ अपने बच्चे के कारण हानि पहुंचावे (कि बिला वजह शौहर से ज्यादा माँगे) और बाप

حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ
وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ
لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌ
بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ ۚ وَعَلَى الْوَارِثِ
مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا

وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ۗ وَإِنْ أَرَدْتُّمْ أَنْ
تَسْتَرْضِعُوٓا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُم
مَّآ ءَاتَيْتُم بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوٓا أَنَّ
اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ
مِنكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ
أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا ۖ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِيٓ أَنفُسِهِنَّ
بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ وَلَا

अपने बच्चे के सबब से (उस की माँ को) तक्लीफ़ दे और (अगर बाप न हो तो) उसी क़द्र वारिसों के ज़िम्मा हैं, फिर वह दोनों अपनी इच्छा और मश्वुरे से (मुद्दत से पूर्व ही) दूध छुड़ाना चाहें तो उन पर कोई गुनाह नहीं और अगर (किसी वजह से मश्वुरा कर के किसी दाया से) अपनी औलाद को दूध पिलवाना चाहो तो (इस में) तुम्हें कोई गुनाह नहीं, मगर शर्त यह है कि जो कुछ तुम ने (माताओं और दाइयों से) देना (तै) किया है दस्तूर के अनुसार दे दिया करो। और अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहा है[१६०] २३४. जो लोग मरते हुये अपने पीछे बीवियाँ छोड़ जाते हैं वह (बीवियाँ उन के सोग में) चार महीने दस दिन (सोग में) बैठा करें[१६१], फिर जब अपनी मुद्दत पूरी कर चुकें तो जो कुछ वह अपने हक़ में दस्तूर के मुताबिक़ (बनाव-सिंगार दूसरे निकाह के लिये) करें तो तुम पर कोई गुनाह नहीं[१६२]। और अल्लाह तुम्हारे कामों की पूरी ख़बर रखता है।

....

१५९. इस आयत से मालूम हुआ कि दूध पिलाने की पूरी मुद्दत दो वर्ष है। तिर्मिज़ी की एक रिवायत में है कि "वह दूध पीना जो हुर्मत साबित करता है वह केवल दो वर्ष तक है" इस के बाद के दूध पीने-पिलाने का कोई एतिबार नहीं (इब्ने कसीर) तलाक़ हो जाने के बाद एक अहम प्रश्न छोटे बच्चों की परवरिश का था। माँ-बाप के अलग-अलग हो जाने के बाद दूध पीते बच्चों के पालन-पोषण का इन्तिज़ाम क्या हो? इस बारे में तरह-तरह की ख़राबियों का डर था, इस लिये यहाँ क़ानून बता कर उस को दूर कर दिया गया और हुक्म दिया गया कि बच्चे को दूध पिलाने का ख़र्चा बाप के ज़िम्मा है और दूध पिलाने की मुद्दत दो वर्ष है (तर्जुमान)

१६०. शाने नुज़ूल:- अ़रब वालों में दस्तूर था कि पति के देहान्त के बाद एक वर्ष तक विधुवा मातम (सोग) में रहती और किसी भी प्रकार की गन्दगी अपने जिस्म से दूर न कर सकती थी। एक वर्ष बीत जाने के बाद किसी जानवर के मुँह में अपनी शर्मगाह लगा कर एक मेंगनी अपने सर के ऊपर से फेंक देती तब उस की इ़द्दत का समापन समझा जाता। चूँकि इ़द्दत की इतनी लम्बी मुद्दत उस औ़रत के लिये बहुत बड़ी बला थी इस लिये उस की मुद्दत कम करने को यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

१६१. इस आयत में आदेश दिया जा रहा है कि औ़रतें अपने पतियों के इन्तिक़ाल के बाद चार माह दस दिन तक इ़द्दत गुज़ारें, चाहे उस औ़रत से संभोग हुआ हो या न हुआ हो, इस मस्अले पर सभी का इत्तिफ़ाक़ है। इस की दलील एक तो इसी आयत का उमूम है, दूसरी दलील वह हदीस है जो मुस्नद अहमद और सुनन में है जिसे इमाम तिर्मिज़ी सहीह कहते हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से ऐसी औ़रत के बारे में फ़त्वा पूछा गया जिस का न तो महर तै था और न ही उस से संभोग हुआ था और उस का पति मर गया था। इब्ने मस्ऊद ने फ़रमाया: "उस औ़रत को पूरा महर मिले गा जो उस के ख़ान्दान का दस्तूर हो, उस में कमी-बेशी न हो और उस औ़रत को इ़द्दत गुज़ारनी चाहिये और उसे तर्का (शौहर के छोड़े हुये माल से हिस्सा) भी मिले गा"। यह फ़तवा सुन कर माक़िल बिन यसार नाम के एक सहाबी ने गवाही दी कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक औ़रत बर्वा

➲बिन्ते वासिक़ के बारे में ऐसे ही फ़ैसला सुनाया था"। हाँ, जो महिला अपने शौहर की वफ़ात के समय हमल से हो उस के लिये यह अ़िद्दत नहीं है, उस की अ़िद्दत बच्चा जनने तक है चाहे इन्तिक़ाल के एक घन्टा के बाद ही वह बच्चा जन दे। क़ुरआन पाक में है "हमल वालियों की अ़िद्दत बच्चा जनने तक है" (सूरः तलाक़-४) चार माह दस दिन अ़िद्दत मुक़र्रर करने की हिक्मत यह है कि अगर औरत को हमल हो गा तो उस मुद्दत में ज़ाहिर हो जाये गा (और अगर बूढ़ी औरत जिस को हमल ठहरने का सवाल ही न हो वह विधुवा हो जाये तो वह चार माह दस दिन की अ़िद्दत इस लिये गुज़ारे गी ताकि शौहर की अ़ज़मत, बुज़ुर्गी, बड़ाई और रिश्ते की पाकी का इज़्हार हो-ख़ालिद) बुख़ारी, मुस्लिम की एक रिवायत में है "बच्चा चालीस दिन तक माँ के पेट में नुत्फ़ा की शक्ल में रहता है, फिर चालीस दिन तक जमे हुये ख़ून की शक्ल में, फिर चालीस दिन तक लोथड़े की शक्ल में, फिर चौथे चिल्ले में अल्लाह तआ़ला एक फ़रिश्ता भेजता है जो उस में रूह फूँकता है"। यह १२० दिन, या चार माह दस दिन हुये। एहतियात के तौर पर दस दिन और बढ़ा दिये ताकि रूह फूंकने के पश्चात् बच्चे की हर्कत भी माँ के पेट में महसूस होने लगे (इब्ने कसीर)

१६२. मतलब यह है कि खुल कर निकाह के बारे में बात-चीत न करे। हाँ, अच्छे और उचित तरीके से अ़िद्दतके अन्दर थोड़ा बहुत ख़याल ज़ाहिर कर लेने में गुनाह नहीं। और यह अनुमति उस महिला के लिये है जिसे तलाक़ 'बाइन' दी गयी हो (जिस से अब रुजूअ़ ही संभव नहीं) रजअ़ी तलाक़ की अ़िद्दत के ज़माना में शौहर के अ़लावा और किसी को अनुमति नहीं है कि वह इशारे से भी अपनी ख़ाहिश का इज़्हार करे। उलमा का इस मस्अले में इत्तिफ़ाक़ है कि अ़िद्दत के अन्दर किसी दूसरे शख़्स से निकाह जाइज़ नहीं है। और अगर किसी ने ऐसा कर भी लिया और संभोग भी कर लिया तो भी उन दोनों के दर्मियान जुदाई डाल दी जायेगी। जमहूर उलमा के नज़दीक अ़िद्दत गुज़र जाने के बाद उस महिला से वह बेशक निकाह कर सकता है। मगर इमाम मालिक के नज़दीक वह औरत हमेशा के लिये उस मर्द पर हराम हो गयी है। हज़रत उमर रज़ि० से भी ऐसा ही फ़ैसला करना साबित है, और इस में हिक्मत यह मालूम होती है कि जब उस ने जल्द बाज़ी में अल्लाह के बताये हुये उसूलों को तोड़ कर अ़िद्दत के अन्दर ही निकाह रचा लिया तो सज़ा के तौर पर महिला अ़िद्दत के बाद भी उस पर हराम कर दी जाये, जैसे कि क़ातिल अपने मक़्तूल के तर्का से वन्चित कर दिया जाता है। इमाम बैहक़ी फ़रमाते हैं कि इमाम मालिक का यह फ़तवा पहले का था, दूसरा फ़त्वा उन का यह है कि अ़िद्दत के बाद मर्द उस से निकाह कर सकता है, और हज़रत अ़ली रज़ि० का भी फ़त्वा यही है। हज़रत मस्रूक़ ने भी हज़रत उमर रज़ि० के बारे में यही नक़ल किया है कि उन्हों ने भी अपने फ़त्वे से रुजूअ़ कर लिया था और दूसरा फ़तवा यह दिया था कि ऐसा शख़्स महर अदा कर दे और अ़िद्दत गुज़र जाने के बाद यह दोनों अगर चाहें तो दोबारा निकाह कर सकते हैं (इब्ने कसीर)

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمْ بِهِ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْنَنْتُمْ فِي أَنْفُسِكُمْ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ سَتَذْكُرُونَهُنَّ وَلَٰكِنْ لَا تُوَاعِدُوهُنَّ سِرًّا إِلَّا أَنْ تَقُولُوا قَوْلًا مَعْرُوفًا وَلَا تَعْزِمُوا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ

२३५. इस में तुम पर गुनाह नहीं कि इशारों से निकाह के संदेश पहुंचाओ या अपने जी में छुपाये रखो कि (अ़िद्दत के बाद उस से निकाह करूँ गा) अल्लाह को मालूम है कि तुम अवश्य उन को याद करो गे (इस लिये इतने तक की तो अनुमति है) लेकिन चुपके-चुपके उन से वादा न लिया करो (कि हम से निकाह करना) हाँ, इतनी इजाज़त है कि भली बात (उन से) कहो और (फिर हम कहते हैं) कि निकाह का वादा हर्गिज न पक्का कीजियो जब तक कि➲

لَاجُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ
اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۖۚ وَّمَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى
الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوْفِ ۚ
حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ
قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيْضَةً
فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّآ اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا
الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۚ وَاَنْ تَعْفُوْٓا

इ़द्दत पूरी न होवे। और जान लो कि अल्लाह तुम्हारे दिल की बातें जानता है इस लिये उस से डरते रहो, और जानो कि अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला बुर्दबार (सहनशील) है २३६. अगर महिलाओं को छूने और मह्र बाँधने से पहले ही तलाक़ दो तो तुम्हें कोई गुनाह नहीं (हाँ, यह अनिवार्य है कि उन को बेइज़्ज़त न करो) और कुछ ख़र्च उन को दिया करो, हैसियत वाला अपने मुनासिब और तन्गी वाला अपने मुनासिब गुज़ारा दस्तूर के अनुसार देवे, भले लोगों पर वाजिब है २३७. और अगर मह्र बाँध कर मिलाप से पहले तलाक़ दे दो तो मुक़र्रर की हुयी मह्र से आधा देना (तुम पर) वाजिब है[१६३], मगर जब वह सब ही माफ़ करें, या जो निकाह का मालिक है (अपना दिया हुआ सारा) छोड़ दे (और आधा वापस न ले तो कोई हरजं नहीं) और माफ़ करना

....

१६३. यानी अगर मह्र तै था और बिना हाथ लगाये ही तलाक़ दे दी तो आधी मह्र लाज़िम आयेगा, मगर यह कि औ़रत या उस का वली माफ़ कर दे। निकाह को बाक़ी रखने या तोड़ने पर पूरा मह्र अदा करे। फिर आगे फ़रमाया कि अगर माफ़ कर दे तो ज़्यादा बेहतर है क्यों कि अल्लाह तआ़ला ने मर्द को निकाह बाक़ी रखने या तोड़ने के सिलसिले में बड़ाई दी है तो उस की बड़ाई को बाक़ी रखे।

फ़ाइदा:- इस की चार शक्लें बनती हैं, लेकिन यहाँ केवल दो ही का बयान हुआ है (१) यह कि मह्र मुक़र्रर नहीं किया था और हाथ लगाने से पहले ही तलाक़ दे दे (२) यह कि मह्र मक़र्रर था और हाथ लगाने से पूर्व ही तलाक़ दे दे (३) मह्र मुक़र्रर था और हाथ लगा कर तलाक़ दी (४) मह्र तो मुक़र्रर न था और हाथ लगा कर तलाक़ दे दी। पहली सूरत में तो इसी आयत न. २३६. में बता दिया कि कुछ दिला कर उन को ख़ुश कर के भेजो। दूसरी सूरत में आयत नं २३७. की रौशनी में आधा मह्र है, मगर यह कि बीवी माफ़ कर दे। तीसरी सूरत में सूरः निसा की आयत नं २४ की रौशनी में पूरा मह्र देना हो गा। चौथी सूरत में मह्र मिस्ल है, यानी जो उस औ़रत के ख़ान्दान में मह्र बाँधने का चलन है। और अगर दोनों एक साथ एकान्त में बैठ कर बात-चीत कर चुके हैं और एक साथ रह चुके हैं तो इसी का नाम हाथ लगाना है। (मुवज़्ज़िहुल् क़ुरआन)

اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۚ وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۚ
اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ حٰفِظُوْا عَلَى
الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۚ وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ۝
فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ

परहेज़गारी के ज़्यादा मुनासिब है। और आपस में एहसान करना न भूलो। अल्लाह तुम्हारे कामों को देखता है[१६४] २३८. पाँचों नमाज़ों की, विशेष कर दर्मियानी नमाज़ (अर्थात अ़स्र) की निगहबानी किया करो[१६५] और अल्लाह के आगे आ़जिज़ी से खड़े हुआ करो (यह जान लो कि अल्लाह तुम को देखता है) २३९. फिर तुम

فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿٢٣٩﴾ وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا وَصِيَّةً لِّأَزْوَاجِهِم مَّتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ إِخْرَاجٍ ۚ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا فَعَلْنَ فِي أَنفُسِهِنَّ مِن مَّعْرُوفٍ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٤٠﴾ وَلِلْمُطَلَّقَاتِ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ﴿٢٤١﴾ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢٤٢﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ

अगर डरो तो (पैदल) या सवार (जिस प्रकार तुम को अपना बचाव मालूम हो, उसी प्रकार किया करो) फिर जब तुम बेख़ौफ़ हो जाओ तो अल्लाह को याद किया करो जैसा कि उस ने तुम को सिखाया है जो तुम नहीं जानते थे[१६६] २४०. जो लोग मरे हुये अपने पीछे बीवियाँ छोड़ जायें और बग़ैर निकालने के साल भर तक उन बीवियों को ख़र्च देने की वसिय्यत भी कर गये हों। फिर (भी) वह महिलायें (चार महीना दस दिन शरई इद्दत पूरी कर के) अगर निकल जायें[१६७] तो जो कुछ वह दस्तूर के मुताबिक़ अपने हक़ में करेंगी उस में तुम पर कोई गुनाह नहीं। और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है २४१. और तलाक़ वालियों को दस्तूर के मुताबिक़ गुज़ारा है (वह उन को दिया करो) परहेज़गारों पर आवश्यक है २४२. इसी प्रकार तुम्हारे लिये अल्लाह अपने अहकाम बयान करता है ताकि तुम समझो २४३. क्या तुम को उन लोगों का क़िस्सा मालूम नहीं जो अपने घरों से हज़ारों जमा हो कर मौत से डरते हुये निकले थे[१६८]?

....

१६४. इब्ने मर्दूया की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमया: "एक ज़माना ऐसा आयेगा कि मोमिन भी अपने क़ब्ज़े की चीज़ को दाँतों से पकड़ लेगा और ख़र्च करने की फ़ज़ीलत को भूल जाये गा, हालाँकि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है कि आपस के फ़ज़्ल को न भूलो। बुरे हैं वह लोग जो एक असहाय और ग़रीब की चीज़ों को सस्ते दामों ख़रीदते हैं"। हालांकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अगर तेरे पास भलाई हो तो अपने भाई को भी वह भलाई पहुंचा, उस की बर्बादी में हिस्सा न ले"। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया: "एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है न उसे तकलीफ़ पहुंचाये और न ही उसे भलाइयों से वन्चित करे"। (इब्ने कसीर)

१६५. शाने नुज़ूल:- अ़स्र की नमाज़ का वक़्त आम तौर पर अधिक कारोबार का वक़्त है, इस लिये कुछ लोगों को देरी हो जाती है। इस लिये विशेष कर इस नमाज़ का ख़याल रखने का हुक्म देने के लिये यह आयत नाज़िल हुयी। बुख़ारी, मुस्लिम की एक हदीस में रिवायत है कि जब अहज़ाब की लड़ाई में अ़स्र की नमाज़ का समय निकल गया तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "दुश्मनों ने हम को 'वुस्ता' की नमाज़ से रोके रखा, यहाँ तक कि सूरज डूब गया"। 'वुस्ता' से मुराद यहाँ अ़स्र की नमाज़ है। इस आयत के नाज़िल होने से पूर्व लोग नमाज़ों में बात-चीत को बुरा नहीं जानते थे, मगर इस आयत के नाज़िल हो जाने के बाद बात-चीत से रोक दिया गया और नमाज़ में चुप रह कर अल्लाह की तरफ़ ध्यान लगाने को फ़र्ज़ क़रार दे दिया गया।

१६६. यानी लड़ाई के मैदान में जब दुश्मन सर पर हो तो जिस प्रकार भी संभव हो सवार, अथवा पैदल, क़िब्ला की तरफ़ मुँह कर के, या न कर के, जिस प्रकार भी संभव हो नमाज़ अदा कर लो। मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि सख़्त ख़ौफ़ और ख़त्रे के समय इशारे से ही नमाज़ पढ़ लिया करो अगर्चे सवारी पर सवार हो"। ख़ौफ़

की नमाज़ एक रक्अ़त भी पढ़नी आयी है (मुस्लिम) इमाम अहमद का कहना है कि एक रक्अ़त पढ़ना यह उस समय है जब कि बहुत ही अधिक और इन्तिहाई ख़ौफ़ और डर हो। इमाम बुख़ारी ने दुश्मन से मुक़ाबला और क़िला फ़त्ह करने के समय नमाज़ अदा करने का बाब बाँधा है। इमाम औज़ाई फ़रमाते हैं कि अगर जीत क़रीब हो और नमाज़ पढ़ने पर क़ुदरत न हो तो हर शख़्स अपने तौर पर इशारे से नमाज़ पढ़ ले, और अगर इतना भी समय न मिले तो देर कर दे यहाँ तक कि लड़ाई ख़त्म हो जाये और सुकून मिल जाये तो दो रक्अ़तें अदा कर ले, वर्ना एक रक्अ़त ही काफ़ी है (इब्ने कसीर)

१६७. इस मस्अले में इख़्तिलाफ़ है कि इ़द्दत के दिनों में औ़रत घर से निकल सकती है या नहीं? हज़रत उमर, उस्मान, इब्ने उमर, ज़ैद बिन साबित, इब्ने मस्ऊद, उम्मे सलमा, सई़द बिन मुसय्यिब, इब्राहीम नख़ई, इबने सीरीन और चारों इमामों का यही कहना है कि इ़द्दत के दिनों में औ़रत को उसी घर में रहना चाहिये जहाँ उस के शौहर ने वफ़ात पाई है। हाँ, दिन में किसी अहम आवश्यक्ता के लिये वह बाहर जा सकती है, मगर रात गुज़ारेगी उसी घर में। इस के ख़िलाफ़ हज़रत आ़इशा, इब्ने अ़ब्बास, हज़रत अ़ली, जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह, अ़ता, ताऊस, बसरी और तमाम अहले ज़ाहिर इस बात के क़ाइल हैं कि औ़रत अपनी इ़द्दत को चाहे जहाँ गुज़ार सकती है और उस ज़माने में सफ़र भी कर सकती है (तफ़हीमुल् क़ुरआन)

१६८. यह लोग ताऊन (महामारी) के डर से अपने शहर को छोड़ कर भाग गये और एक बस्ती में जा कर पनाह ली। अल्लाह के हुक्म से वे सभी वहीं मर गये। इत्तिफ़ाक़ से एक नबी का वहाँ से गुज़र हुआ, उन की दुआ़ओं से अल्लाह ने फिर उन्हें जीवित कर दिया। मुस्नद अहमद में है कि जब हज़रत उमर रज़ि० शाम की तरफ़ चले तो उन्हें सूचना मिली कि वहाँ महामारी की वबा फैली है, इस पर हज़रत उमर को वहाँ जाने या न जाने पर संकोच हुआ। इस पर अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ ने कहा कि मैं ने तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुना है कि जब किसी स्थान पर वबा फैल जाये और वहाँ मौजूद हो तो वहाँ से डर कर मत भागो। और जब तुम किसी स्थान पर वबा की ख़बर सुनो तो वहाँ मत जाओ। हज़रत उमर ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की यह हदीस सुन कर अल्लाह की हम्द व सना बयान की और फिर वहाँ से वापस चले आये। अगले हुक्म के लिये तम्हीद (भूमिका) के तौर पर बतलाया गया कि मौत अल्लाह के हुक्म पर निर्भर है। मौत का जो समय मुक़र्रर है उस से पहले तुम्हें मौत नहीं आ सकती। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० ने इन्तिक़ाल के वक़्त फ़रमाया था कि कहाँ हैं मौत से डरने वाले, लड़ाई से जी चुराने वाले! मेरा जोड़-जोड़ अल्लाह की राह में घायल हो चुका है, पूरे जिस्म में कोई ऐसी जगह नहीं है जहाँ तीर, तल्वार न लगी हो, लेकिन आज मैं अपने बिस्तर पर दम तोड़ रहा हूँ और जंग के मैदान में ज़िन्दा रहा। 'क़र्ज़े ह-स-नह' से मुराद अल्लाह की राह में ख़र्च करना है। इस में बाल-बच्चों पर ख़र्च और अल्लाह की हम्द व सेना, दुआ़ और इस्तिग़फ़ार सब शामिल हैं। इस आयत को सुन कर हज़रत अबू दरदा अन्सारी रज़ि० ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! क्या अल्लाह हम से भी क़र्ज़ माँगता है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः हाँ, उन्हों ने कहा कि आप अपना हाथ बढ़ाइये! फिर आप का हाथ अपने हाथ में ले कर कहा कि मैं अपना बाग़ जिस में छः सौ खजूरों के दरख़्त हैं अल्लाह को क़र्ज़ दे रहा हूँ, फिर वहाँ से सीधे अपने बाग़ में आये और बाहर ही से अपनी बीवी और बच्चों को आवाज़ दी कि बाहर आ जाओ! मैं ने उस को अल्लाह की राह में दे दिया है (इब्ने अबी हातिम/ इब्ने कसीर)

فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا

(यह समझ रहे थे कि निकलने से हमारी जान बच जाये गी) फिर अल्लाह ने उन को हुक्म दिया कि **मर जाओ** (तुरन्त) फिर उस ने उन

اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ مَنْ ذَا الَّذِىْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗۤ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً ؕ وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ ۪ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى ۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِىٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا ؕ قَالُوْا وَمَا لَنَاۤ اَلَّا نُقَاتِلَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَاَبْنَآئِنَا ؕ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝

को ज़िन्दा किया। बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा ही मेहरबान है, लेकिन बहुत से लोग शुक्र नहीं करते २४४. और (मुसलमानो!) अल्लाह की राह में लड़ा करो (ताकि अन्याय का समापन हो) और जान रखो कि अल्लाह सुनता जानता है २४५. कोई अल्लाह को क़र्ज़े-हसना (अच्छा क़र्ज़) दे, फिर (उस की इख़्लास-मन्दी पर) वह कई गुना ज़्यादा उस को दे गा। और अल्लाह ही तन्गी और फ़राख़ी (कुशादगी) करता है और तुम को उसी की तरफ़ लौटना है २४६. क्या तुम्हें बनी इस्राईल की जमाअ़त का क़िस्सा मूसा (अ़लै०) के बाद का मालूम नहीं[१६९]? जब उन्हों ने अपने नबी से प्रार्थना की थी कि हमारे लिये कोई बादशाह मुक़र्रर कर दे (ताकि) हम अल्लाह की राह में लड़ें। उस ने कहा कि अगर तुम को लड़ने का हुक्म हुआ तो तुम से लड़ने की उम्मीद नहीं (तुम पीठ दिखा कर भाग जाओगे) वह बोले, अल्लाह की राह में हम क्यों न लड़ें गे हालाँकि हम अपने मुल्क और (अपने) बाल-बच्चों से निकाले गये हैं। पस जब उन को लड़ने का आदेश हुआ तो अ़लावा चन्द लोगों के सब ने पीठ दिखा दी। और अल्लाह ज़ालिमों को भली-भाँति जानता है

....

१६९. यह लगभग हज़रत ईसा अ़लै० से एक हज़ार वर्ष पूर्व की घटना है। उस समय बनी इस्राईल पर उमालिक़ा ग़ालिब हो गये थे और फ़लस्तीन के अधिकांश भागों पर क़ब्ज़ा हो गया था। बनी इस्राईल की अगुवाई उस ज़माना में समूईल अ़लै० कर रहे थे, जो बूढ़े हो चुके थे। बनी इस्राईल ने उन के बुढ़ापे को देख कर लड़ाई में सेनापति (Commanding officer) बनने के लिये किसी दूसरे अफ़्सर की दर्ख़ास्त की और जिहाद करने की इच्छा प्रकट की। चूँकि अधिकांश जल्द- बाज़ लोगों को समय पड़ने पर पीछे हटते देखा गया है इसी लिये अल्लाह के नबी ने उन की दर्ख़ास्त पर यह कहा: हल् अ़सैतुम् इन् कुति-ब अ़लैकुमुल् क़ितालु अल्ला तुक़ातिलू (अगर तुम को लड़ने का आदेश हुआ तो तुम से लड़ने की उम्मींद नहीं है) फिर उन्होंने तालूत को कमान्डर बना दिया। बाइबल में उन का नाम "साऊल" लिखा है, यह क़बीला बनी ऐ़न का एक तीस वर्षीय नौजवान था। उस को अल्लाह के हुक्म से फ़ौज की निग्रानी का पद भार सौंपा गया। तालूत के बारे में ऐसी कोई वजाहत क़ुरआन या हदीस में नहीं है कि वह नबी बनाये गये हों।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ مَلِكًا ؕ قَالُوْۤا اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ

२४७. और उन के नबी ने उन से कहा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये तालूत को बादशाह (बड़ा अफ़्सर) बनाया है (उस की आज्ञा का पालन करो) बोले कि

أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ۚ
قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً
فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ۖ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَن
يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٧﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ
إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَن يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ
سَكِينَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ
وَآلُ هَارُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً
لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٤٨﴾ فَلَمَّا فَصَلَ
طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُم
بِنَهَرٍ فَمَن شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَن
لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً

वह हम पर कैसे हाकिम हो सकता है? हालाँकि हम उस से हुकूमत का ज़्यादा हक़ रखते हैं, उसे तो माल की भी कुछ कुशादगी नहीं है[१७०]। उस ने कहा इस में शक नहीं कि अल्लाह ने उस को तुम पर बुज़ुर्गी (बड़ाई) दी हुयी है और इ़ल्म भी उस को ज़्यादा दिया हुआ है और बदन में भी उस को शक्ति प्रदान की है और अल्लाह अपना मुल्क जिस को चहता है देता है और अल्लाह बड़ी ही कुशादगी वाला इ़ल्म वाला है १४८. और उन के नबी ने उन से कहा कि उस की हुकूमत की निशानी यह है कि तुम्हारे पास एक सन्दूक़ आयेगा जिस में अल्लाह की तरफ़ से तुम्हें तस्कीन (दिल को जमा देने वाली) होगी और मूसा और हारून की क़ौम की छोड़ी हुयी वस्तुयें हों गी, उस को फ़रिश्ते उठाये हुये लायें गे। बेशक इस में तुम्हारे लिये बड़ी निशानी होगी अगर तुम मानने वाले हुये?[१७१] २४९. पस जब तालूत अपनी फ़ौज के साथ बाहर को चला तो बोला[१७२] कि अल्लाह तुमको एक नह्र के पानी से आज़मायेगा[१७३], पस जो शख़्स उस से पियेगा वह मेरी जमाअ़त से न होगा और जो न पियेगा तो वह मेरा हमराही हो गा मगर जो शख़्स (प्यास की ज़्यादती के कारण) एक चुल्लू हाथ से भरेगा (उस को माफ़ी दी जायेगी)

....

१७०. यह शाही ख़ान्दान से न थे, बल्कि एक लश्करी थे। शाही ख़ान्दान यहूदा की औलाद थी। इस पर क़ौम ने एतिराज़ किया कि हम हर हैसिय्यत से बादशाहत के हक़-दार हैं। उस के पास न तो क़ौमी बड़ाई है और न माल व दौलत। पैग़म्बर अ़लै० ने उत्तर दिया कि यह मेरी राय से नहीं है, बल्कि अल्लाह के हुक्म से हुआ है जिस पर अ़मल करना अनिवार्य है। फिर देखने में भी वह तुम से बड़े आ़लिम, ताक़त-वर और लड़ाई के गुर से जान-कार हैं और एक कमान्डर के अन्दर इन सारी बातों का होना काफ़ी है। यहाँ से यह मस्अला मालूम हुआ कि बादशाह पढ़ा लिखा, बहादुर हौसले वाला होना चाहिये (इब्ने कसीर) शासन करने की जिस के अन्दर क्षमता होती है वही कमान्डरी के लाइक़ होता है, अगर्चे माल-दौलत और दुनियावी मर्तबा उस के पास न हो। कमान्डर के लिये मूल चीज़ इ़ल्म की कुव्वत है, यानी दिमाग़ी और जिस्मानी क़ाबिलिय्यत (योग्यता) न कि माल व दौलत और नस्ल व ख़ान्दान की बड़ाई। जो शख़्स सर्दार बन जाये, जमाअ़त के लोगों का फ़र्ज़ है कि सच्चे दिल से उस की आज्ञा पालन करें। अगर किसी जमाअ़त में इताअ़त नहीं है तो वह कभी जमाअ़ती ज़िन्दगी की उठा-पटक में कामियाब नहीं हो सकती (तर्जुमान)

१७१. उस का नाम "ताबूते सकीना" था। उस में बनी इस्राईल के बुज़ुर्गों के तबर्रुक रखे रहते थे। लड़ाई के मैदान में बनी इस्राईल उस को पहुंचा कर बड़ी हिम्मत से लड़ते, उस के होते हुये अव्वल तो मज़हबी जोश पैदा होता था, दूसरे यह डर रहता कि कहीं सुस्ती करने से दुश्मन उन को लूट न लें। जिस का लुट जाना उन को ऐसे ही नागवार

➲था जैसे कि किसी नबी का क़त्ल हो जाना। मगर बनी इस्राईल की कमज़ोरी से ताबूते सकीना दुश्मनों के हाथ में चला गया। उन्हों ने उस को बड़ी बेअदबी से बैतुलख़ला (शौचालय-Toilet) में रख दिया, इस बात का बनी इस्राईल को बड़ा रंज था। उन के नबी ने उन्हें सूचना दी कि तालूत की यह निशानी है कि ताबूते सकीना तुम्हारे पास चला आयेगा, चुनान्चे ऐसा ही हुआ। हुआ यूँ कि दुश्मनों ने उस को निकाल कर बैल गाड़ी पर लादा तो बैल फ़रिश्तों के इशारे पर सीधे बनी इस्राईल में चले गये, बनी इस्राईल उस को देख कर उछल पड़े। (सनाई)

बाइबल के बयान से यह पता चलता है कि बनी इस्राईल उस को बड़ा मुहतरम, मुतबर्रक और अपने लिये जीत का चिन्ह मानते थे। जब वह उन के हाथ से निकल गया तो पूरी क़ौम की कमर टूट गयी और इस्राईल का हर व्यक्ति यह ख़याल करने लगा कि अल्लाह की रहमत हम से फिर गयी है और हमारे अब बुरे दिन आ गये हैं, इस लिये उस सन्दूक़ का वापस आना उस क़ौम के दिलों को मज़बूत करने का सबब था और यह ऐसा आधार था जिस से उन की टूटी हुयी हिम्मतें दोबारा बंध सकती थीं। मूसा और हारून के ख़ान्दान के जो तबर्रुकात उस में रखे हुये थे, उन में वह पत्थर की तख़्तियाँ थीं जो सैना पहाड़ पर अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा को दी थीं। इस के अलावा तौरात का वह अस्ल (Original) नुस्ख़ा भी उस में था जिसे हज़रत मूसा ने ख़ुद लिखवा कर बनी लावी के हवाले किया था और एक बोतल में "मन्न" भर कर रखा हुआ था, ताकि आने वाली नस्लें (पीढ़ियाँ) अल्लाह के उस एहसान को याद करें जो रेगिस्तान में उस ने उन के बाप-दादा पर किया था। और संभवतः हज़रत मूसा की वह लाठी भी उसी में थी जिसे अल्लाह ने चमत्कार (मोजिज़ा) के तौर पर दिया था।

१७२. जब उन लोगों ने तालूत की बादशाहत स्वीकार करली तो वह जिहाद के लिये चले गये। रास्ते में तालूत ने कहा कि आल्लाह सब को एक नहर से आज़मायेगा, इस लिये कोई उस का पानी न पिये। हां, एक आध घूँट पी लेने में कोई हरज नहीं। जब नहर पर पहुंचे तो प्यास की वजह से परेशान थे। जो आज्ञा कारी थे उन्हों ने तो एक आध घूँट पीकर अपनी प्यास बुझाली और बाक़ी ने पेट भर कर पिया इस लिये यह जिहाद न कर सके और न ही प्यास बुझी और हिम्मत अलग हार बैठे (इबने कसीर)

१७३. प्यास की शिद्दत में कम पीना बहुत ही लाभ दायक है, इस के उल्टा ज़्यादा पिये चले जाना हानि कारक है जिस से प्यास बुझने के बजाए बढ़ती है, यह इसी तरफ़ इशारा है (राज़)

بِيَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ فَلَمَّا جَاوَزَهٗ
هُوَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ
بِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ
مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً
كَثِيْرَةًۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝
وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَاۤ اَفْرِغْ
عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى
الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۙ
وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَ
الْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ

पस आलावा चन्द लोगों के सब ने पी लिया। फिर जब वह और उस के मानने वाले उस के साथ उस से आगे बढ़े तो (बाज़ लोग दुश्मन जालूत की शक्ति देख कर) बोल उठे कि आज तो हम में जालूत और उस की फ़ौज (के मुक़ाबला करने की) शक्ति नहीं। जिन लोगों को यक़ीन था कि उन को अल्लाह से मिलना है वह बोले, बहुत मर्तबा थोड़े लोग बहुतों पर अल्लाह के हुक्म से ग़ालिब आ जाया करते हैं (तुम अल्लाह पर भरोसा करो) और सब्र करो और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है" २५०. और जब वह जालूत की फ़ौज के मुक़ाबिल (लड़ने को) आये तो कहा कि ऐ हमारे मौला! हमें सब्र अता कर और हमारे क़दम मज़बूत रख और हमें काफ़िरों की क़ौम पर फ़त्ह नसीब कर" २५१. पस उन्हों ने उन को अल्लाह के हुक्म से भगा दिया और जालूत को (हज़रत) दावूद ने क़त्ल किया और अल्लाह ने दावूद को मुल्क दिया और तहज़ीब (सभ्यता) सिखाई और उस ने जो➲

النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّفَسَدَتِ الْأَرْضُ وَ لَٰكِنَّ اللّٰهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِينَ ﴿٢٥١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢٥٢﴾

चाहा उस को सिखाया। अगर अल्लाह बाज़ लोगों को बाज़ द्वारा दफ़ा न करे (दूर न करे) तो ज़मीन ख़राब हो जाये, लेकिन अल्लाह दुनिया के रहने वालों पर बड़ा ही मेहरबान है[१७६] २५२. यह हमारी ख़बरें हैं कि उन को हम तुझ से सहीह-सहीह तौर पर बयान करते हैं। और निःसंदेह तू रसूलों में से है[१७७]।

....

१७४. कितनी ही छोटी जमाअ़तें हैं जो बड़ी जमाअ़तों पर ग़ालिब आ जाती हैं, और कितनी ही बड़ी जमाअ़तें हैं जो छोटी जमाअ़तों से शिकस्त खा जाती हैं। फ़तह व शिकस्त (विजय एवँ पराजय) का आधार जन-संख्या की कमी व ज़्यादती पर नहीं, बल्कि दिलों की कुव्वत पर है और अल्लाह की सहायता उन ही लोगों का साथ देती है जिन के अन्दर झेलने और डटे रहने की हिम्मत होती है।

१७५. जब सच्चे, सब्र करने वाले और आज्ञा मानने वालों की उस थोड़ी सी तादाद ने कुफ़्फ़ार के टिड्डी दल लश्कर को देखा तो अल्लाह पाक से सब्र व साबित क़दम रहने के इच्छुक हुये और बड़ी हिम्मत, हौसले के साथ जंग के मैदान में क़दम रखा। दावूद अ़लै० उस समय एक कम आयु के नौजवान थे। जब दुश्मनों की फ़ौज का भारी भरकम, लम्बे डील-डोल का सिपाही जालूत लड़ाई की दावत देने के लिये मैदाने जंग में निकला, तो दावूद अ़लै० ने निशाना लगा कर एक ऐसा पत्थर जालूत के ऊपर फेंका जो उस के माथे पर जा लगा और सर को फाड़ता हुआ पार हो गया और उसी समय जालूत मर गया। इस घटना ने हज़रत दावूद अ़लै० को तमाम बनी इस्राईल में मक्बूल व महबूब बना दिया। तालूत ने अपनी बेटी को उन के निकाह में दे दिया आख़िर कार इस्राईली तख़्त के बादशाह भी आप ही हुये और अल्लाह की तरफ़ से हुकूमत के साथ नबुव्वत जैसी ज़बर्दस्त नेमत भी आप को अ़ता हुयी। हज़रत शमोईल के बाद यही नबी और बादशाह हैं जिन्हों ने बनी इस्राईल की सियासत (राजनीति) और उन के मज़हब को संभाला।

१७६. अगर कौमों और जमाअ़तों की आपस की खींचा-तानी और बचाव की शक्ल न होती और हर जमाअ़त अपनी-अपनी हालत में बग़ैर तबदीली के छोड़ दी जाती, तो परिणाम यह निकलता कि दुनिया जुल्म व फ़साद से भर जाती और हक़ व इन्साफ़ का नाम व निशान बाक़ी न रहता। इस लिये यह अल्लाह का बड़ा ही फ़ज़्ल है कि जब कभी एक गरोह जुल्म व फ़साद में हद से गुज़र जाता है तो दूसरा गरोह बचाव के लिये खड़ा हो जाता है। इस प्रकार एक क़ौम का जुल्म दूसरी क़ौम की रोक-टोक से दूर होता रहता है, इस लिये जुल्म को रोकने के लिये जंग ज़रूरी ठहरी। अल्लाह तआ़ला ने विभिन्न पदों पर एक के बाद एक पैग़म्बर भेजे, उन्हों ने लोगों को इख़्तिलाफ़ और फ़साद की जगह हक़-परस्ती और एकता और इत्तिफ़ाक़ की शिक्षा दी। अगर अलग-अलग न हो जाते तो आपस में दंगा व फ़साद न करते। लेकिन उन्हों ने एक दूसरे के ख़िलाफ़ जथा-बन्दी कर ली और आपस में जंग व फ़साद का ऐसा बीज बो दिया जो अब हमेशा फलता-फूलता रहता है। अगर अल्लाह चाहता तो इन्सान की तबीअ़त ऐसी बनाता कि उन में लड़ाई-झगड़े का माद्दा (क्षमता) ही न होता और किसी एक हालत पर मजबूर कर दिया जाता, लेकिन उस की हिक्मत का फ़ैसला यही हुआ कि इन्सान को मजबूर न बनाये और हर अच्छी-बुरी राह पर चलने की कुदरत देदे। इसी लिये उनमें से कुछ हिदायत की राह अपना लेते हैं और कुछ गुमराही की राह (तर्जुमान)

१७७. इस आयत में रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की रिसालत की दलील है। इस प्रकार कि आप जो कुछ वाक़िआ़त (घटनायें) बयान कर रहे हैं वह बिल्कुल पहली आसमानी किताबों के मुताबिक़ हैं, बल्कि उन में लोगों ने जो कमी-बेशी कर दी है उन की इस्लाह व दुरूस्तगी भी है। हालांकि न तो आप ने किसी शख़्स से उन किताबों को पढ़ा है और न ही उन को किसी की ज़बान से सुना है। इस से साफ़ ज़ाहिर है कि अल्लाह ने वह्यि और अपने कलाम द्वारा आप को उन के सरीह वाक़िआ़त को बतलाया है (कई तफ़्सीरों का खुलासा) आज-कल के तौरात और इन्जील की बहुत सी ग़लत बातों पर भी कुरआन ने और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने निशानदही फ़रमाई है और यही कुरआन के आसमानी किताब होने का सुबूत है।

★★★★★

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पारः तिल्-कर्रुसुलु (३)

संक्षिप्त विषय सूची

तिल्-कर्रुसुलु (3)

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ۚ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۚ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ۚ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۗ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ۗ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ۗ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۗ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۗ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ

२५३. हम ने उन रसूलों में से बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है[१७८]। और बाज़ उन में से ऐसे (भी) हैं कि जिन से अल्लाह ने बातें भी कीं और बाज़ के दर्जे बुलन्द किये।[१७९] और ईसा मरयम् के बेटे को खुली निशानियाँ हम ने दीं और रूहे-पाक (जिब्रील) से उस को कुव्वत दी।[१८०] और अगर अल्लाह चाहता तो नबियों से पिछले लोग स्पष्ट दलीलों के आ जाने के बाद (आपस में) न लड़ते (झगड़ते)[१८१] लेकिन उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया। यानी बाज़ (तो) मान गये और बाज़ इन्कारी हो गये। (इस के बावुजूद भी) अगर अल्लाह चाहता तों न लड़ते, लेकिन अल्लाह जो इरादा करे वह करता है। २५४. (जभ्भी तो हुक्म देता है कि) ऐ मुसलमानों! हमारे दिये हुये में से (ग़रीबों की आवश्यक्तायें पूरी करने में) ख़र्च किया करो इस से पहले कि वह दिन आ पहुंचे जिस में न तिजारत होगी और न (किसी की) दोस्ती और न सिफ़ारिश ही (बिला अनुमति काम आयेगी)[१८२] और (जान लो कि तौहीद से) इन्कारी ही (बड़े) ज़ालिम हैं[१८३] (क्यों कि अल्लाह के अ़लावा और माबूद मानते हैं हालाँकि) २५५. सिवाए अल्लाह के कोई माबूद (पूज्य) नहीं, वह हमेशा (ज़िन्दा) है इन्तिज़ाम करने वाला, न उस को ऊँघ आती है न नींद।[१८४] जो कुछ आकाश और ज़मीन में है सब उसी की मिल्क(संपत्ति) है (किसी की हिम्मत नहीं कि उस के सामने चूँ करे) कौन है जो बिला इजाज़त उस के पास (किसी की) सिफ़ारिश करे।

....

१७८. यानी अगर्चे पैग़म्बरी के लिहाज़ से सब का दर्जा बराबर है, लेकिन अपनी-अपनी विशेष्ताओं के एतिबार से मुख़्तलिफ़ दर्जे रखते हैं (तर्जुमान आज़ाद)

१७९. उम्मत ने इस बात पर इत्तिफ़ाक़ किया है कि हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तमाम नबियों

से अफ़्ज़ल हैं। क्यों कि आप की रिसालत और पैग़म्बरी आ़म है। अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान है: "हम ने तो तुम को समस्त लोगों पर रसूल बना कर भेजा है, तू उन को शुभ सूचना देने वाला और डराने वाला है" (मुवाहिब)

१८०. 'रूहुल् कुदुस' की तफ़्सीर ख़ुद कुरआन ने दूसरे स्थान पर कर दी है "कुल् नज़्ज़-लहू रूहुल् कुदुसि" यानी जिब्रील अ़लै०-सूरःनहल/१०२(सनाई)

१८१. लेकिन तुम देख रहे हो कि उस की हिक्मत का फ़ैसला यही हुआ कि इन्सान को किसी एक हालत पर मजबूर न कर दे और हर प्रकार के इरादा और अ़मल की ताक़त दे दे (तर्जुमान आज़ाद)

१८२. कुरआन से स्पष्ट है कि मोमिनों के दर्मियान दोस्ती और सिफ़ारिश अल्लाह की इजाज़त से साबित होगी। यहाँ जो आ़म नफ़ी फ़रमाई है यह "आ़म" ख़ास है। और जो कुरआन में यह कहा गया है "काफ़िरों को सिफ़ारिश कोई फ़ाइदा न देगी" इस से मालूम हुआ कि मुसलमानों को फ़ाइदा देगी (मवाहिब)

१८३. इमाम अ़ता से रिवायत है कि हम्द व सना उस रब के लिये है जिस ने फ़रमाया: "काफ़िर ही ज़ालिम हैं" और यूँ नहीं फ़रमाया: "ज़ालिम ही काफ़िर हैं"।

१८४. यह आयत 'आयतुल् कुर्सी' कहलाती है। इस आयत में बड़े-बड़े मस्अले पोशीदा हैं। इस में तौहीद और अल्लाह की सिफ़तों के बारे में बयान मौजूद है, इसी वजह से इस को सब से बड़े मर्तबे वाली आयत कहा गया। एक हदीस में है कि 'आयतुल् कुर्सी' चौथाई कुरआन है (अहमद)

اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ
عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ
الْعَظِيْمُ ۝ لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ ۙ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ
مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَ يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ
فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۭ
وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ
يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ڛ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا
اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ
اِلَى الظُّلُمٰتِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْ حَاۗجَّ اِبْرٰهٖمَ فِيْ
رَبِّهٖٓ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّيَ
الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۙ قَالَ اَنَا اُحْيٖ وَاُمِيْتُ ۭ

वह लोगों के आगे-पीछे की सब चीज़ें जानता है, और लोग उस की मालूमात से कुछ भी नहीं जान सकते मगर जिस क़द्र कि ख़ुद ही (बतलाना) चाहे। उस की कुर्सी ने तमाम ज़मीन व आसमान को घेर रखा है[१८५] और उन की हिफ़ाज़त (सुरक्षा) से वह थकता नहीं, और वह बुलन्द और बड़ी बड़ाई वाला है[१८६] २५६. दीन में ज़ोर ज़बर्दस्ती नहीं, (कि ताक़त से इस्लाम में लाया जाये)[१८७] हिदायत की राह गुमराही से अलग हो चुकी है[१८८], इस लिये जो कोई झूठे माबूदों से मुंह फेर कर (अकेले सच्चे) अल्लाह पर ईमान रखे, तो (जान रखो) उस ने ऐसा मज़बूत सहारा लिया जो हर्गिज़ न टूटे गा।[१८९] और अल्लाह सुनता है जानता है २५७. मोमिनों का अल्लाह मुतवल्ली (निगराँ) है (शिर्क के) अंधेरों से उन को निकाल कर नूर (तौहीद) की तरफ़ ले जाता है।[१९०] और जो लोग (तौहीद के) इन्कारी हैं उन के मित्र शयातीन हैं जो उन को नूर से अंधेरों की तरफ़ ले जाते हैं (और यह बात दिल में बिठाते हैं कि फ़लाँ क़ब्र से हाजत

➲पूरी होती है)[१९१] यही लोग आग के लाइक़ हैं, उस में हमेशा रहेंगे[१९२] २५८. क्या तुझे उस शख़्स का हाल मालूम नहीं जिस ने इब्राहीम से अपने रब के बारे में झगड़ा किया था इस वजह से कि अल्लाह ने उस को बादशाह बनाया था। जब इब्राहीम ने कहा: मेरा रब वह है जो ज़िन्दा रखता है और मारता है, वह बोला: ज़िन्दा तो मैं करता हूँ और मारता भी हूँ,

....

१८५. मौलाना मरहूम ने शाह वलिय्युल्लाह रह० के ख़याल के अनुसार कुर्सी से हुकूमत मुराद ली है। हज़रत शाह साहब के अल्फ़ाज़ यह हैं "फ़रा गिरिफ़्ता अस्त बादशाही-ऊ"। लेकिन सल्फ़ (पहले के बुज़ुर्ग उलमा) "कुर्सी" की तावील नहीं करते और यही बात सब से बेहतर है।

१८६. यानी एक तरफ़ ऐ़ब से पाक, हर ऐ़ब से दूर और दूसरी तरफ़ तमाम ख़ूबियों का मालिक है। 'अ़ली' और 'अ़ज़ीम' दो-दो सिफ़तों का लाना माना व मक़्सद से ख़ाली नहीं है। 'अ़ुलू' में तमाम नक़्स (ऐ़ब) और बुराईयों की नफ़ी करदी गयी है और 'अ़ज़मत्' में तमाम कमाली सिफ़तों को साबित किया है और ऐसी ज़ात का बयान है कि जिस के मर्तबे की न इन्तिहा हो और न जिस की इब्तिदा मालूम हो सके (माजिदी) अल्लाह को जानने और पहचानने के सिलसिले में इसी लिये यह आयत बहुत ही अहम है।

१८७. शाने-नुज़ूल:- अ़रब में दस्तूर था कि जब किसी औ़रत की औलाद जीवित न रहती तो वह नज़्र मानती कि अगर मेरा बच्चा ज़िन्दा रहेगा तो मैं उस को यहूदी बनाऊँगी (बिल्कुल ऐसे ही जैसे हमारे मुल्क की ग़लत अक़ीदे वाली औ़रतें कहा करती हैं कि अगर मेरा बच्चा ज़िन्दा रहा तो फ़ुलाँ क़ब्र वाले का मुरीद बनाऊँगी और उस की निशानी यह होती है कि उस के नाम की चोटी उस के सर पर रखी जाती है) चुनान्चे बहुत से लोगों की औलाद इत्तिफ़ाक़ी तौर पर ज़िन्दा रह कर इसी प्रकार यहूदी बनी हुयी थी। जब आप ने बनू नज़ीर के यहूदियों को उन की ग़द्दारी की वजह से अ़रब से ख़ैबर की तरफ़ निकाला तो इस प्रकार के बच्चे भी उन यहूदियों में थे। उन के मुसलमान वारिसों ने इस वजह से कि यह बच्चे माँ-बाप की ग़लती की वजह से यहूदी बनाये गये, तो चाहा कि उन को ज़बर्दस्ती रोक लें और यहूदियों के साथ न जाने दें, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (मआ़लिम) मुख़ालिफ़ लोग ज़रा ग़ौर से देखें (सनाई)

१८८. इस अहम बात का एलान कि दीन पर अ़क़ीदा व अ़मल के मामले में किसी प्रकार की ज़्यादती जाइज़ नहीं। दीन की राह दिल के अक़ीदा व यक़ीन की राह है और एतिक़ाद, दावत व तब्लीग़ से पैदा हो सकता है, न कि ज़ुल्म व ज़्यादती से। जिहाद के अह्काम के बाद ही इस का बयान इस लिये किया गया ताकि स्पष्ट हो जाये कि जंग करने की अनुमति ज़ुल्म व ज़्यादती के बाद दी गयी है, न कि दीन को फैलाने के लिये। दीन की इशाअ़त का ज़रीआ़, एक ही है और वह दावत है (तर्जुमान)

१८९. 'उर्-वतुल्वुस्क़ा' यह अल्लाह की तौफ़ीक़ व सहायता है। नेकियों में आगे बढ़ने और अन्त के अच्छे होने के लिये केवल यही सहायक है। कुछ उलमा का कहना है कि इस से मुराद मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं और बाज़ ने कहा कि इस से मुराद "लाइला-ह-इल्लल्लाह" है और कुछ दूसरों ने कहा कि इस से मुराद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत है। (मुवाहिब)

१९०. 'आमनू' से मुराद वह लोग हैं जिन को ईमान की तौफ़ीक़ देने का अल्लाह ने इरादा किया है और उस के अ़िल्म में साबित हुआ कि वह ईमान लायेंगे। 'ज़ुलुमात' से शक व शुब्हात मुराद हैं जो कुफ़्र की तरफ़ पहुँचाते हैं। इस लिये जो ईमान लाये उन को अल्लाह तआ़ला ऐसे शक व शुब्हे से निकाल देता है और नूर (खुली राह) की तरफ़ लाता है जिस से उन के सारे शक व शुब्हे दूर हो जाते हैं।

१९१. यहाँ मुक़ाबला के तौर पर बयान हुआ है। ऊपर मोमिनों के बयान में तारीकी से नूर की तरफ़ निकालने का➲

बयान था और यहाँ नूर से तारीकी की तरफ़ ले जाने का ज़िक्र है। जैसे हज़रत यूसुफ़ अ़लै० का क़ौल नक़ल किया: "मैं ने ऐसी क़ौम की मिल्लत छोड़ी है जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाती है", हालाँकि हज़रत यूसुफ़ कभी भी काफ़िरों की मिल्लत पर न थे। और अ़रब वाले भी आ़म तौर पर किसी के बुरे व्यवहार पर बोलते हैं "तू ने मुझे अपने माल से बाहर कर दिया" हालाँकि वह कभी उस के माल में दाख़िल न था (मुवाहिब)

१९२. यानी तू उन की बेहूदा बातें सुन कर ताज्जुब करता है। यह हमेशा का दस्तूर है कि लोग दो प्रकार के होते हैं। एक तो दीनदार, चाहे वह किसी भी धर्म के मानने वाले हों। ऐसे लोग हक़ बात को समझ लेने के बाद इन्कार नहीं करते। दूसरे दुनिया-दार लोग, जिन का अपना कोई विशेष धर्म नहीं होता, केवल मक्कार और चाल-बाज़ होते हैं, ऐसे लोग हज़ार सुबूत देखने के बाद भी अपने ग़लत ख़याल को नहीं छोड़ते (सनाई) इसी सिलसिले में आगे नमरूद काफ़िर का ज़िक्र आया है जिस ने केवल कीना और हट-धर्मी की बुनियाद पर इब्राहीम अ़लै० का मुक़ाबला किया और अन्त में ज़लील हुआ।

قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِيْ بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ
فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِيْ كَفَرَ ؕ وَ
اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۵۸﴾ اَوْ كَالَّذِيْ مَرَّ
عَلٰى قَرْيَةٍ وَّهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰى
يُحْيٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ
عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا
اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ
فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ وَانْظُرْ
اِلٰى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى
الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ
فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ﴿۲۵۹﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِيْ كَيْفَ تُحْيِ
الْمَوْتٰى ؕ قَالَ اَوَلَمْ تُؤْمِنْ ؕ قَالَ بَلٰى وَلٰكِنْ

इब्राहीम ने कहा: अल्लाह तो सूरज को पूरब से लाता है तू उस को पच्छिम से चढ़ा, पस (यह सुन कर) वह काफ़िर हैरान रह गया। अल्लाह ज़ालिमों की राहनुमाई नहीं किया करता[१९३] २५९. और क्या तू उस शख़्स को नहीं जानता जो एक गिरी हुयी बस्ती पर से गुज़रा (और उस के रहने वालों को मरा देख कर) बोला[१९४] कि इस बस्ती को मरने के बाद अल्लाह क्यों कर जीवित करेगा? तो अल्लाह ने सौ वर्ष तक उस को मार रखा, फिर उस को जीवित कर के पूछा: कि कितनी मुद्दत तू ठहरा है? वह बोला: एक दिन या कुछ हिस्सा दिन का ठेहरा हूँ (अल्लाह ने) कहा बल्कि तू सौ वर्ष तक ठेहरा है पस तू अपने खाने और पानी को देख कि नहीं बिगड़ा (ख़राब हुआ) और अपनी सवारी की तरफ़ देख[१९५] और हम तुझ को लोगों के लिये निशानी बना देंगे और (अपनी सवारी की) हड्डियों को देख कि किस प्रकार उन को उभार कर गोश्त चढ़ायेंगे (फिर तेरे सामने ही जीवित हो कर चलने फिरने लग जायेगा) तो जब उसे मालूम हो गया तो बोला: मैं भली भाँति जानता हूँ कि अल्लाह सब काम कर सकता है २६०. (एक और वाक़िआ सुनो!)[१९६] जब इब्राहीम ने कहा: कि ऐ मेरे मौला! मुझ को दिखा कि तू किस प्रकार मुर्दों को जीवित करेगा? कहा: क्या तुझे यक़ीन नहीं (कि मुर्दे जीवित होंगे?) इब्राहीम ने कहा कि हाँ! (यक़ीन तो है) लेकिन

१९३. दावत व तब्लीग़ की कामियाबी के बयान के लिये हज़रत इब्राहीम के वाक़िआत की तरफ़ इशारा है। वह एक ऐसे मुल्क में पैदा हुये जहाँ कोई उन का साथी न था। वह ऐसे बादशाह के सामने हक़ की दावत व तब्लीग़ करने खड़े हो जाते हैं जो बड़ा सर्कश और ज़ालिम था। आख़िर में कामियाबी ने इन्ही के क़दम चूमे (तर्जुमान आज़ाद) इब्राहीम और नमरूद के दर्मियान यह मुनाज़रा (वाद-विवाद) उस समय हुआ था जब वह आग से ज़िन्दा निकल आये थे। (मुवाहिब)

१९४. 'क़र्या' से मुरांद "बैतुल् मुक़द्दस" है जिस को बुख़्त नस्र बादशाह ने बर्बाद कर डाला था (इब्ने कसीर)

१९५. मशहूर यह है कि यह घटना हज़रत उज़ैर अ़लै० (जो कि अल्लाह के एक नबी थे) से मुतअ़ल्लिक़ है। यही ख़याल हज़रत अ़ली का भी है और यही क़ौल सब से सहीह है। (इब्ने कसीर) यह प्रश्न करने वाले हज़रत उज़ैर अ़लै० थे। मगर सर सय्यद को यहाँ भी एक नया सपना दिखाई देने लगा। उन्हों ने इस क़िस्से का सिरे से इन्कार कर के जान छुड़ाई (सनाई) बहुत से जानवरों के ढाँचे सदियों तक बाक़ी रहते हैं। कुछ ढाँचे तो हज़ारों वर्ष के बाद भी साबुत और सुरक्षित निकले हैं (माजिदी)

१९६. शाने-नुज़ूल:- अ़रब के मुश्रिक क़ियामत के दिन मुर्दों के जीवित होने के सख़्त मुख़ालिफ़ थे और इस को ऐसा ही असंभव और मुहाल समझते थे जैसे सफ़ेद व सियाह का एक स्थान पर इकट्ठा होना। उन को समझाने के लिये हज़रत इब्राहीम (जिन को वह लोग अपना इमाम व अगुवा मानते थे) का वाक़िआ इस आयत में बयान हुआ है (सनाई)

لِيَطْمَئِنَّ قَلْبِي ۖ قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ
فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ
مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا ۚ وَاعْلَمْ
أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٦٠﴾ مَّثَلُ الَّذِينَ يُنفِقُونَ
أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنبَتَتْ سَبْعَ
سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ۗ وَاللَّهُ يُضَاعِفُ
لِمَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦١﴾ الَّذِينَ يُنفِقُونَ
أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَا أَنفَقُوا
مَنًّا وَلَا أَذًى ۙ لَّهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٦٢﴾ قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ
وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّن صَدَقَةٍ يَتْبَعُهَا أَذًى ۗ وَاللَّهُ
غَنِيٌّ حَلِيمٌ ﴿٢٦٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُبْطِلُوا
صَدَقَاتِكُم بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ كَالَّذِي يُنفِقُ

दिल के इत्मीनान के लिये (पूछता हूँ ताकि आँखों से देख कर और भी यक़ीन हो जाये) अल्लाह ने कहा: चार परिन्दे अपने पास बुला कर रख ले फिर (उन को ज़ब्ह कर के) उन का एक-एक टुकड़ा हर एक पहाड़ पर (जो इस समय तेरे आस-पास हैं) रख दे[१९७], फिर उन को बुला, तो तेरे पास भागते हुये आयें गे। और जान रख कि अल्लाह बड़ा ज़बर्दस्त हिक्मत वाला है[१९८] (वह किसी काम के करने से आ़जिज़ नहीं) २६१. जो लोग अल्लाह की राह में अपने माल ख़र्च करते हैं उन के ख़र्च की मिसाल एक दाना की तरह है जिस से सात बालें निकलती हैं, हर बाल में एक सौ दाना है (इसी प्रकार जो अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उन को एक के सात सौ मिलेंगे) और जिस को अल्लाह चाहेगा ज़्यादा करेगा (उस के हाँ किसी प्रकार की कमी नहीं)[१९९] और अल्लाह बड़ी फ़राख़ी (कुशादगी) वाला, जानने वाला है २६२. जो लोग अल्लाह की राह में अपने माल ख़र्च करते हैं और ख़र्च करने के बाद न एहसान जतलाते हैं न किसी प्रकार की तक्लीफ़ पहुंचाते हैं,

➲ उन ही लोगों का बदला अल्लाह के पास है, न उन को ख़ौफ़ होगा, और न वह ग़म-नाक होंगे[२००]
२६३. (मुहताजों से) अच्छी तरह बोलना और माफ़ कर देना उस ख़ैरात से बेहतर है जिसके बाद तक्लीफ़ पहुंचे (और एहसान जतलाया जावे) अल्लाह बेपर्वाह है, बड़ा बुर्दबार (सहनशील) है। २६४. (हम आम एलान कर देते हैं कि) ऐ मुसलामानो! अपनी ख़ैरात एहसान जतलाने और तक्लीफ़ पहुंचाने से बर्बाद मत किया करो उस शख़्स की तरह

....

१९७. मुफ़स्सिरों ने आम तौर पर इस को हक़ीक़त माना है। वह कहते हैं कि हज़रत इब्राहीम का प्रश्न मुर्दा जिस्म के ज़िन्दा होने के बारे में था, अर्थात क़ियामत के दिन मुर्दे कैसे ज़िन्दा हो जायेंगे? दूसरे यह कि परिन्दों का इस मामले से क्या मक़्सद है? अक्सर मुफ़स्सिर इसी तरफ़ गये हैं कि मक़्सद यह था कि परिन्दों को मार कर टुक्ड़े-टुक्ड़े या बोटी-बोटी कर दिया जाये, फिर उन के चार हिस्से चार पहाड़ों पर रख दिये जायें, फिर उन्हें बुलाया जाये तो अल्लाह की क़ुद्रत से जीवित दौड़ने लगेंगे। इस तफ़्सीर की रौशनी में प्रश्न और उत्तर में मुताबिक़त (समानता) यूँ है कि प्रश्न मुर्दों के ज़िन्दा हो जाने के बारे में था, उत्तर में अल्लाह की क़ुद्रत का मोजिज़ा (चमत्कार) दिखलाया गया कि जिस प्रकार यह परिन्दे बुलाने वाले की आवाज़ सुन कर ज़िन्दा हो गये, इसी प्रकार क़ियामत के दिन अल्लाह के हुक्म से मुर्दे ज़िन्दा हो जायेंगे। लेकिन इस तफ़्सीर के लिये ज़रूरी है कि परिन्दों को मारने और टुक्ड़े टुक्ड़े कर देने का विषय पोशीदा माना जाये, क्यों कि क़ुरआन के अल्फ़ाज़ में इस की कोई वज़ाहत नहीं है। और तर्जुमा यूँ किया जाये "परिन्दों में से चार जानवर लो और उन्हें अपने साथ सिधा लो" (फिर उन्हें ज़्बह कर के टुक्ड़े-टुक्ड़े कर डालो) फिर उन का एक-एक हिस्सा चार पहाड़ों पर रखो (तर्जुमान आज़ाद १/२९८)

१९८. चार जानवर लाये, उन में एक मोर, दूसरा मुर्ग़, तीसरा कौआ, चौथा कबूतर था। उन को अपने साथ रख कर सिधा लिया कि पहचान रहे। फिर ज़्बह कर के चारों के सिर एक पहाड़ पर रख दिये और एक पहाड़ पर उनके पर, एक पर धड़ और, एक पर पाँव रख कर बीच में खड़े हो कर एक को पुकारा, तो उस का सर उठ कर हवा में खड़ा हो गया, फिर उस में धड़ मिला फिर पाँव और फिर दौड़ता हुआ चला आया। इसी प्रकार चारों आ गये (मुवज़्ज़िहुल् क़ुरआन)

१९९. हज़रत इब्ने उमर रज़ि कहते हैं कि जब यह आयत न० २६१ नाज़िल हुयी तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मेरे मौला! मेरी उम्मत के लिये और बढ़ा दे!" तो अल्लाह तआ़ाना ने फ़रमाया: "मन् ज़ल्लज़ी युक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-स-नन् फ़युज़ाइफ़हू लहू अज़्आ़-फ़न् कसीरा (सूर: बक़र:-२४५) फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दुआ़ की कि ऐ मेरे पर्वरदिगार! "मेरे लिये और बढ़ा!" इस पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: इन्नमा यु-वफ़्फ़साबिरू-न अज्-रहुम् बिग़ैरि हिसाब (यानी अ़मल में जैसा इख़्लास होगा वैसा ही अल्लाह उस के सवाब को बिला हिसाब बढ़ाता है) (इब्ने कसीर)

२००. हज़रत अबू ज़र रज़ि० से रिवायत है कि तीन आदमियों से अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन न तो कलाम करेगा और न ही उन की तरफ़ रहमत की नज़र करेगा और न उन को पाक करेगा बल्कि उन के वास्ते दर्द-नाक अ़ज़ाब है। एक तो वह, जो किसी हक़-दार को कुछ दे कर एहसान को जतलाता है। दूसरा वह, जो अपना कपड़ा टख़नों से नीचे लटकाता है। तीसरा वह, जो झूठी क़स्में खा कर अपना माल बेचता है (मुस्लिम शरीफ़)

अब सूद खाने वालों को मालूम होना चाहिये कि अगर वह अपनी दौलत से फ़ाइदा उठाना चाहते हैं तो अल्लाह से मामला करें। इस की शक्ल यह है कि ग़रीबों पर रहम करें और जहाँ तक हो सके उन की आवश्यक्ताओं को पूरी करने की कोशिश करें। और अगर न कर सकें तो इतना तो कम से कम अवश्य करें कि उन पर जुल्म व ज़्यादती से हाथ साफ़ न करें। और यह भी ज़रूरी है कि अगर ग़रीबों पर कुछ एहसान करें तो उन को ताना न दें (सनाई) यह आयत न० २६१ हज़रत उस्मान और हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ के हक़ में नाज़िल हुयी। जब➲

हज़रत उस्मान ने सामान से लदे हुये एक हज़ार ऊँट दिये थे और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने चार हज़ार दिर्हम नक़द दिये थे (सनाई) इन ही कुर्बानियों की बिना पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि आज से उस्मान जो भी अ़मल करें उन को कुछ भी नुक़सान न पहुंचेगा।

مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ ۖۚ فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ۝

जो लोगों के दिखाने को ख़र्च करता है और अल्लाह और क़ियामत के दिन पर यक़ीन नहीं रखता। तो उस के ख़र्च की मिसाल एक पत्थर की सी है जिस पर कुछ मिट्टी हो (और उस मिट्टी की वजह से उस पर कुछ उपजाऊ पन भी हो) फिर उस पर बड़े ज़ोर की वर्षा बरस कर उस को बिल्कुल साफ़ कर छोड़े। अपनी कमाई में कुछ भी हासिल नहीं कर सकते (सब का सब बर्बाद कर बैठते हैं) और अल्लाह काफ़िरों को हिदायत नहीं करता[२०१] २६५. और जो लोग अपने माल (केवल) अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने और (अल्लाह के हुक्म पर) अपने नफ्सो {जानों}के मज़बूत करने को ख़र्च करते हैं[२०२], उन के ख़र्च की तश्बीह{तुलना}एक बाग़ की सी है जो नर्म ज़मीन में हो, जहाँ ज़ोर की वर्षा पहुंचने से वह बाग़ दो गुना फल लावे, फिर अगर उस बाग़ पर बारिश न भी हो तो शब्नम् (ओस) काफ़ी है। अल्लाह तुम्हारे कामों को देखता है (जिस नियत से करते हों उस के अनुसार बदला दे गा) २६६. क्या कोई तुम में से यह चाहता है कि उस का बाग़ खजूरों का और अंगूरों का हो जिस के नीचे नहरें बहती हों और उस बाग़ में उस के लिये हर प्रकार के फल भी हों और वह ख़ुद बूढ़ा(और कमज़ोर)हो और उस के बच्चे छोटे-छोटे हों, पस उस बाग़ को एक लू का-झोका लग जाये जिस में आग हो और वह बाग़ जल जाये[२०३] इसी प्रकार अल्लाह खोल-खोल कर अहकाम बतलाता है ताकि तुम ग़ौर-फ़िक्र करो (और नुक़सान से बच कर फ़ाइदा की ओर आओ)

....

२०१. इस आयत में यह बतलाना मक़्सूद है कि मन्नत मानना, तक्लीफ़ पहुंचाना और रिया कारी करना यह सब काफ़िरों की आ़दतें हैं। एक हदीस कुद्सी में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कि मैं शिर्क करने वाले से बेपर्वाह हूँ, ऐसे लोगों का साथ छोड़ देता हूँ। यानी शिर्क करने वाले और उन के अ़मल (दोनों ही) हमारे यहाँ कुबूल नहीं। मुहिय्यस्सुन्ना ने एक मर्फ़ूअ़ रिवायत नक़ल की है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तुम पर

➲सब से बड़ा ख़ौफ़ मुझे छोटे शिर्क (रिया) से है। जब लोगों को उन के अ़मल का बदला दिया जाये गा तो रिया कार आदमियों से क़ियामत के दिन कहा जायेगा, ऐ रियाकारो! तुम उन लोगों के पास जाओ जिन को दिखाने के लिये तुम दुनिया में कर्म करते थे, जाओ उन के पास जाओ! और देखो कि कुछ भलाई तुम को मिलती है या नहीं?

२०२. मतलब यह है कि उन के दिलों को यक़ीन है कि अल्लाह तआ़ला उन के अ़मल को क़ुबूल फ़रमायेगा और इसी यक़ीन और उम्मीद पर वह ख़र्च करते हैं। सहाबा में जब कोई सद्क़ा व ख़ैरात का इरादा करता तो पहले ख़ूद अच्छी तरह ग़ौर-फ़िक्र कर लेता था, अगर वह अल्लाह की राह में होता था तो वह काम करता था और अगर ज़रा भी दिखावे का संदेह होता तो तुरन्त रुक जाता था। इस प्रकार नेक काम करने का तरीक़ा बुज़ुर्गानि-दीन का रहा है। (मुवाहिब)

२०३. मतलब यह है कि क्या कोई शख़्स भी ऐसी मुसीबत को अपने सर पर लेना पसन्द कर सकता है? मुसीबत भी आये तो ठीक उस समय जब कि उस चीज़ की सख़्त ज़रूरत हो और ज़रूरत अकेले के लिये नहीं बल्कि ख़ान्दान के तमाम छोटो-बड़ों और बूढ़ों सब की हो। ऐसे ही जान लो कि उस ज़रूरत से ज़्यादा ज़रूरत तुम पर आने वाली है जिस में तुम अपने ख़र्च किये हुये माल के उस बूढ़े कमज़ोर से भी ज़्यादा मुहताज होगे, अगर उस में रिया, दिखावा, या एहसान जतलाने का कुछ भी हिस्सा शामिल होगा, या किसी प्रकार की तक्लीफ़ पहुंचाना मक़्सूद होगा तो सब के सब माल इस बाग़ की तरह जल कर राख़ हो जायेंगे और अपनी आंखों से देखते रह जाओगे (सनाई)

२६७.मुसलामानो! अपनी कमाई में से अच्छी-अच्छी चीज़ें (अल्लाह की राह में) ख़र्च किया करो[२०४] और उस में से भी दो जो हम तुम्हारे लिये ज़मीन से निकालते हैं और उस में से गन्दी चीज़ें देने का इरादा न किया करो[२०५] क्या ऐसी चीज़ देते हो? हालाँकि खुद उसे नहीं लेते हो। हाँ, (जान बूझ कर) जब उस से नज़रअन्दाज़ कर जाओ (तो और बात है) और यक़ीन जानो! कि अल्लाह बे नियाज़, तारीफ़ वाला है। २६८. शैतान तुम को फ़क़्-फ़ाक़ा (ग़रीबी)से डराता है और बेहयाई बतलाता है और अल्लाह अपनी बख़्शिश् और कुशादगी का वादा देता है। और अल्लाह बड़ी कुशादगी वाला है (और) जानने वाला है[२०६] २६९. जिस को चाहे समझ देता है और जिसे समझ मिले[२०७] (कि मैं अल्लाह का कहाँ तक मुहताज हूँ) उसे तो बहुत सी भलाई मिल गयी। मगर (इस बात को) कामिल अ़क्ल वालों के अ़लावा कोई नहीं समझता २७०. (क्या तुम नहीं जानते?) कि जो कुछ तुम ख़र्च करते हो, या (ज़रूरत के समय ➲

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنفِقُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ
وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُم مِّنَ الْأَرْضِ ۖ وَلَا تَيَمَّمُوا
الْخَبِيثَ مِنْهُ تُنفِقُونَ وَلَسْتُم بِآخِذِيهِ إِلَّا أَن
تُغْمِضُوا فِيهِ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝
الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُم بِالْفَحْشَاءِ ۖ
وَاللَّهُ يَعِدُكُم مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ۗ وَاللَّهُ
وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَن يَشَاءُ ۚ وَمَن
يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا ۗ وَمَا
يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ۝ وَمَا أَنفَقْتُم
مِّن نَّفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُم مِّن نَّذْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ
يَعْلَمُهُ ۗ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ ۝ إِن تُبْدُوا
الصَّدَقَاتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۖ وَإِن تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا
الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَيُكَفِّرُ عَنكُم مِّن

➲अल्लाह के लिये) कोई नज़्र मानते हो तो अल्लाह उस को जानता है और ज़ालिमों का कोई हिमायती नहीं हो गा (जो उन को अल्लाह की पकड़ से बचाये) २७१. अगर ज़ाहिर कर के ख़ैरात दोगे तो बेहतर है और अगर छुपा कर फ़क़ीरों को बाँटोगे तो वह बहुत ही बेहतर है। और अल्लाह तुम्हारे गुनाह दूर करेगा।

....

२०४. यानी अल्लाह की राह में क़ीमती, बेहतरीन और उम्दा चीज़ जो तुम्हें पसन्द हो उसे दो, क्यों कि वह ग़नी और बेपर्वाह है। 'तय्यिबात' से यह भी मुराद है कि हलाल माल को ख़र्च करो, क्यों कि हराम माल अल्लाह के हाँ क़ुबूल नहीं होगा। 'मिम्मा अख़्-रज्ना' से मुराद ग़ल्ला, फल-फूल, तर्कारी वग़ैरह हैं। यहाँ यह भी मालूम होता है कि ज़मीन की पैदा-वार में ज़कात लाज़िम है (वहीदी)

२०५. 'मआ़लिम' में है कि तमाम उलमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि बाग़ात और घरों में जो अनाज आदमी इकट्ठा करता है अगर उस की सींचाई आसमान के पानी या कुदरती तौर पर बहने वाली नहर से की गयी हो, तो दस्वां हिस्सा ज़कात है।लेकिन अगर सींचाई के लिए पानी मेहनत करके या फिर क़ीमत दे कर हासिल किया गया हो तो बीसवाँ हिस्सा ज़कात है। (मुवाहिब) यह हुक्म उस समय है जबकि कुल माल या अक्सर उम्दा और बेहतरीन हो और अगर कुल माल रद्दी हो तो रद्दी में से देने में कोई हरज नही। (मआ़लिम)

२०६. हमारे ज़माने के अमीर और मालदार लोग इस आयत को ग़ौर से पढ़ें, जिन की अमीरी और मालदारी से अ़लावा रन्डियों और शराब बेचने वालों के किसी को फ़ाइदा नहीं पहुंचता (सनाई)

२०७. 'हिक्मत' यह शरीअ़त के मुताबिक़ तमाम शरई़ इ़ल्म के मज्मूआ़ का नाम है और इस की अस्ल सुन्नते नबवी सल्लल्लांहु अ़लैहि वसल्लम है। अल्लाह तआ़ला ने सूरः अह्ज़ाब आयत न० ३४ में "आयत" और "हिक्मत" का शब्द बयान फ़रमाया है। वहाँ, 'आयत' से मुराद "किताबुल्लाह" और हिक्मत से मुराद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत है। इस में ज़रा भी संदेह नहीं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत अ़ल्लाह ही का हुक्म है जिस में आप को सभी कुछ मिलेगा। हैरत इस बात पर है कि बहुत से लोग हदीस में ग़ौर-फ़िक्र नहीं करते हैं, बल्कि कजबहसी और झगड़े में समय नष्ट करते हैं और यह उन पर अल्लाह की नाराज़गी ही है कि उन को ग़ौर-फ़िक्र की तौफ़ीक़ नहीं मिलती। हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "दो बातों में हसद जाइज़ है एक तो यह कि किसी आदमी को अल्लाह ने माल दिया फिर उस को तौफ़ीक़ दी कि वह उसे नेक राह में ख़र्च करे। दूसरे वह जिसे अल्लाह तआ़ला ने हिक्मत दी जिस के अनुसार वह ख़ुद अ़मल करता है और दूसरों को तालीम भी देता है"। (अहमद, बुख़ारी, मुस्लिम)

سَيِّاٰتِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ لَيْسَ
عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ
وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْنَ
اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ
يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ۝ لِلْفُقَرَآءِ
الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ

(इस लिये कि) अल्लाह तुम्हारे कामों के बारे में ख़बर रखने वाला है[२०८] २७२. यह तेरे ज़िम्मा नहीं कि तू उन को सीधी राह पर लावे लेकिन अल्लाह जिस को चाहता है राह पर ले आता है।[२०९] और (तुम यह भी बतला दो कि) जो माल तुम ख़र्च करते हो तो वह तुम्हारे ही लिये है और उचित नहीं कि अल्लाह की प्रसन्नता हासिल करने के अ़लावा ख़र्च करो और (इस ढंग से) जो माल ख़र्च करोगे उस ➲

ضَرْبًا فِي الْأَرْضِ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ تَعْرِفُهُمْ بِسِيمَاهُمْ لَا يَسْأَلُونَ النَّاسَ إِلْحَافًا وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ۝ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ

का बदला तुम को पूरा मिलेगा और तुम्हारा कुछ नुक़्सान न होगा[२१०] २७३. उन मुहताजों को दो जो अल्लाह की राह में बन्द हो रहे हैं ज़मीन में सफ़र नहीं कर सकते[२११] (दीनी ज़िल्म पढ़ने की वजह से) न जानने वाले लोग उन को न माँगने से मालदार जानते हैं,मगर तू उन के चेहरों से उन को पहचान लेता है। वह लोगों से लिपट कर नहीं माँगते[२१२] (इस लिये ऐसे लोगों की ख़ातिर जहाँ तक हो सके मुक़द्दम रखो) और जो माल ख़र्च करोगे (तो उस का बदला अवश्य ही पाओ गे इस लिये कि) अल्लाह उस को जानता है २७४. जो लोग दिन-रात, खुले-छुपे अपने माल ख़र्च करते हैं उन का बदला उन के रब के हाँ मौजूद है, न उन को (बर्बाद होने का) ख़ौफ़ है और न (बर्बाद होने से) ग़म्गीन हों गे २७५. (और उन के मुक़ाबिल) जो लोग सूद खाते हैं[२१३] (क़ब्रों से) उठते हुये हवास खोये हुओं की तरह

....

२०८.शान-नुज़ूलः- पहली आयत को सुन कर हज़रत अली और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने रात को छुपा कर अल्लाह की राह में माल सद्क़ा व ख़ैरात किया, इन्ही के हक़ में यह नाज़िल हुयी (सनाई)

२०९. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुक्म फ़रमाया कि यह ख़ैरात केवल ग़रीब मुसलमानों ही को दी जाये, इसी के मुतअ़ल्लिक़ यह आयत न०२७२ नाज़िल हुयी। यानी हिदायत अल्लाह के इख़्तियार में है इस लिये ख़ैरात में केवल मुसलमान ग़रीबों ही को न शामिल करो। जो भी ग़रीब-मिस्कीन मिले उसी को दो, वह चाहे जिस धर्म का हो (लुबाब) इस आयत से कुछ लोगों ने दलील पकड़ी है कि ज़कात का माल काफ़िर को देना जाइज़ है मगर शर्त यह है कि वह मुहताज हो (अहादीसुत्तफ़ासीर, अकलील) लेकिन सही यह है कि ज़कात का माल कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन को देना जायज़ नहीं। हाँ, नफ़्ली सद्क़ा दिया जा सकता है (अबू सईद शर्फ़ुद्दीन-फ़तावा सनाइया २/४७७)

२१०. जिस प्रकार देने में इख़्लास शर्त है, इसी प्रकार ख़र्च करने के स्थान तलाश करने में भी शर्त है। मतलब यह है कि तुम देते समय यह भी देखो कि किस को दे रहो हो? कहीं ऐसा न हो कि लेने वाला मुस्तहिक़ न हो और इस तरह अस्ल मुस्तहिक़ और मुहताज की हक़तल्फ़ी हो। (सनाई)

२११. यानी सद्क़ा व ख़ैरात उन के लिये है जो किसी काम में घिर गये हैं और अब आज़ादी के साथ रोज़ी नहीं तलाश कर सकते। यहाँ अस्ल मुराद मुजाहिद हैं। 'इहसा' इस शब्द में बड़ी गुन्जाइश है। घिर जाना, चाहे समय के एतिबार से हो, या जिस्म के एतिबार से, सब शामिल है। 'फ़ी सबीलिल्लाहि' में बड़ी गुन्जाइश है। दीन का कोई काम, कोई ज़रूरत और मामला हो इस में सब ही शामिल है, अगर्चे अस्ल मुराद जिहाद ही है। मौलाना थानवी कहते हैं कि इस आयत के हुक्म में हमारे मुल्क में सब से ज़्यादा वह लोग शामिल हैं जो दीनी ज़िल्म के हासिल करने में लगे हुये हैं। इस लिये कि इस काम में जिस क़द्र मेहनत और समय की ज़रूरत है, इस के साथ अगर रोज़ी-रोटी तलाश करने के समय को भी शामिल कर लिया जाये तो दीन के ज़िल्म की ख़िदमत नामुकम्मल रह जाये गी (माजिदी)

२१२. ख़ैरात का ज़रूरी मद (ख़र्च करने का उद्देश्य) ऐसा था जिस की तरफ़ कम लोग ही तवज्जुह दे सकते थे।

➲यानी उन लोगों की मदद करना जो दुनिया का काम-काज छोड़ कर हक़ की राह में ख़िदमत के लिये वक़्फ़ हो गये हैं। न उन्हें तिजारत की ताक़त है और न ही कोई दूसरा रोज़ी-रोटी का सिलसिला रखते हैं। दिन-रात दीन व मिल्लत की ख़िदमत में लगे रहते हैं। उन की हालत ज़रूरत-मन्दों की सी है, मगर शक्ल व सूरत से बे-नियाज़ और ग़ैर-मुस्तहिक़ मालूम होते हैं। चूँकि नेक लोगों की देख-भाल जमाअ़त पर फ़र्ज़ है इस लिये विशेष कर इस तरफ़ तवज्जुह दिलाई गयी।

२१३. शाने-नुज़ूलः- अ़रब के तमाम ही मालदार बेतहाशा सूद लेते थे (जैसा कि हमारे मुल्क में ज़ालिम बनिये सौ से हज़ार तक लेते हैं) यह काम अख़्लाक़ी तौर पर हद से ज़्यादा गिरा हुआ था, इन के रोकने को यह आयतें नाज़िल हुयीं। इस मनाही के साथ-साथ मालदार लोगों पर ग़रीबों की पर्वरिश के लिये ज़कात भी फ़र्ज़ कर दी गयी। मुख़ालिफ़ लोग इसे ग़ौर से पढ़ें कि अमीरों के साथ ग़रीबों का कितना अहम रिश्ता है (सनाई)

الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْۤا اِنَّمَا
الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ
فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا
سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا
وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ
وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا
اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوۤا اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ
اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ
لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ۝ وَاِنْ كَانَ ذُوْ

जिन्हें किसी भूत ने छुवा हो, उठें गे। यह (बुरी दशा उन की) इस लिये (हो गी) कि वह कहा करते थे कि तिजारत और सूद एक से हैं।[२१४] हालाँकि (उन में बड़ा फ़र्क़ है) अल्लाह ने तिजारत को जाइज़ किया और सूद को हराम।[२१५/१] तो जिस के पास अल्लाह की हिदायत पहुंच गयी और वह उस से दूर रहा तो जो कुछ उसे पहले वुसूल हुआ, उसी का है। और उस का मामला अल्लाह के हवाले। और जो लोग फिर करें गे, तो यही आग के लाइक़ हों गे जिस में वह हमेशा तक रहें गे २७६. अल्लाह सूद को (हमेशा) घटाता है और सदक़ों को बढ़ाता है।[२१५/२] और अल्लाह को ना शुक्रे, बदकार किसी भी प्रकार नहीं भाते २७७. जो लोग (पक्के) मोमिन हैं और अ़मल भी नेक करते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं और ज़कात भी देते हैं, उन का बदला उन के रब के हाँ महफ़ूज़ (सुरक्षित) है, न उन को बर्बाद हो जाने का डर है और न वह ग़मगीन हों गे।[२१६] २७८. (पस) मुसलमानो! तुम अल्लाह से डरते रहो और बक़ाया सूद को छोड़ दो अगर तुम (सच्चे दिल से) मोमिन हो[२१७] २७९. फिर अगर न करो गे (और भविष्य में भी सूद लेते रहो गे) तो अल्लाह और रसूल से लड़ाई के लिये आगाह हो जाओ और अगर रुक जाओ तो तुम्हारे अस्ल माल तुम को मिल जायें गे। न ज़ुल्म करो, न तुम पर ज़ुल्म हो गा २८०. और अगर (जिस के हाथ बेचा है) तंग दस्त है

....

२१४. आज-कल के जाहिलों की तरह उस ज़माना के बेवक़ूफ़ों का भी यह कहना था कि माली फ़ाइदा तिजारत➲

में भी तो है,फिर यह क्यों हराम नहीं है? इन कम-अक़्लों ने इस बात को भुला दिया था कि इन दोनों में किसी भी हैसिय्यत से समानता (बराबरी) नहीं है, न माली हैसिय्यत से और न ही अख़्लाक़ी एतिबार से। सूद की निश्चित रक़म तो महाजन को बेखट्के मिलती रहती हैं, लेकिन तिजारत में हानि-लाभ दोनों ही की शंका व संदेह बना रहता है, और ताजिर को नुक़्सान से बचने के लिये समय, मेहनत, अक़्ल-मन्दी, होशियारी और दौड़-धूप सब कुछ ख़र्च करना पड़ता है। फिर लेन-देन का मामला ले दे कर उसी समय समाप्त हो जाता है, लेकिन सूद लेने वाले का फ़ाइदा तो बढ़ता ही चला जाता है, यहाँ तक कि अक्सर समय क़र्ज़-दार की माली हालत तबाह व बर्बाद हो जाती है (माजिदी) क़र्ज़ के मामले में सूद के अ़लावा हदीस में यह भी साफ़-साफ़ हिदायत है कि गेहूँ को गेहूँ के बदले और जौ को जौ के बदले, चाँदी को चाँदी के बदले और सोने को सोने के बदले जब भी बेचो तो बराबर-बराबर ही बेचो और इस हाथ दो उस हाथ लो। जिस ने ज्यादा लिया या दिया तो इस का भी नाम सूद है (वहीदी)

२१५/१. हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सूद खाने वाले, खिलाने वाले, लिखने वाले और गवाही देने वाले सब लोगों पर लानत फ़रमाई है (मुस्लिम) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "सूद के ७३ दर्जे हैं उन में सब से हल्का ऐसा है जैसे किसी ने अपनी माँ के साथ हराम कारी (संभोग) की हो" (बैहक़ी) इस मस्अले में उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि सूद खाने वाले से मुराद हर वह शख़्स है जो इस का मामला करे, चाहे ले या दे, सब को शामिल है।

'य-त-ख़ब्बतुहुश्शैतानु' से क़ियामत के रोज़ उठना मुराद है, जमहूर मुफ़स्सिरीन ने यही तफ़्सीर बयान की है। 'ख़बत' अस्ल में "टाप्ते चाल" को कहते हैं जो ठीक से न चले (मुवाहिब) जिन्न और आसेब का शिकार जिस प्रकार बद हाल हो जाता है और बावला हो कर चलने में गिरता है, बिल्कुल यही हालत क़ब्रों से निकलने के बाद सूद खाने वालों की हो गी।

२१५./२ यही कारण है कि सूद खाने वाला इतना कंजूस होता है कि किसी के साथ बिला ज़रूरत के एहसान भी नहीं करता और खुद ही लाचारों और मजबूरों की तरह दूसरे का मुंह ताकता रहता है और देखने में ऐसा मालूम होता है कि इस के पास कुछ भी नहीं है। और जो लोग सद्क़ा व ख़ैरात और भलाई करें उन के हौसले और इरादे बुलन्द और उन के ख़यालात ऊँचे होने चाहिये, हर नेक काम में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिये। सूद खाने वालों पर दुनयावी अ़ज़ाब तो यह है कि माल-दौलत का ग़म उन्हें खाता है और आख़िरत में उस का नाम नाफ़र्मानों और ना शुक्रों के दफ़्तर में लिखा जाता है।

२१६. शाने-नुज़ूलः- सदी का कहना है कि यह आयत हज़रत अ़ब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब और ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० के हक़ में नाज़िल हुयी। यह दोनों जाहिलिय्यत के ज़माना में क़बीला सक़ीफ़ के साथ साझी दारी में सूदी कारोबार किया करते थे। जब इस्लाम का ज़माना आया तो उन का बहुत सा रुपया सूद का बक़ाया था। अल्लाह तआ़ला ने जब यह आयत नाज़िल फ़रमाई तो मुसलमानों नें सुन कर कहा कि हम अल्लाह से तौबा करते हैं और जो कुछ भी सूद का माल बाक़ी है उसे छोड़ते हैं (मआ़लिम, इब्ने कसीर)

२१७.शाने-नुज़ूलः- हज़रत अ़ब्बास और उस्मान रज़ि० ने किसी किसान से कुछ मामला किया था, जब खेती के कटने का समय आया तो किसान ने कहा कि अगर आप लोग अपना-अपना हक़ ले लो गे तो मेरे खाने को कुछ भी न बचे गा। ऐसा करो कि आधा ले लो और आधे के बदले में मैं आप को आइन्दा दोगुना दूँ गा। जब दूसरा मौसम आया तो उन्हों ने वादा के अनुसार ज़्यादा देना चाहा। यह मामला नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तक भी पहुंच गया इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। उन दोनों सहाबा ने सुनते ही तुरन्त इस आदेश पर अ़मल किया- बेशक बड़ों की बड़ी बातें हैं। (सनाई/मआ़लिम) ग़ल्ला की एक ही जिन्स जो लोग बढ़ा कर लेते हैं (यानी एक मन गेहूँ का सवा मन गेहूँ लेते हैं) उन को इस ऊपर के वाक़िआ़ पर ग़ौर करना चाहिये। इस प्रकार एक ही जिन्स को अस्ल से ज़्यादा बढ़ा कर लेना-देना खुला हुआ सूद है। ऐसे लोगों को अल्लाह समझ दे- आमीन

عُسۡرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰی مَیۡسَرَةٍ ؕ وَ اَنۡ تَصَدَّقُوۡا خَیۡرٌ لَّکُمۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۲۸۰﴾ وَ اتَّقُوۡا یَوۡمًا تُرۡجَعُوۡنَ فِیۡهِ اِلَی اللّٰهِ ٭ ثُمَّ تُوَفّٰی کُلُّ نَفۡسٍ مَّا کَسَبَتۡ وَ هُمۡ لَا یُظۡلَمُوۡنَ ﴿۲۸۱﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِذَا تَدَایَنۡتُمۡ بِدَیۡنٍ اِلٰۤی اَجَلٍ مُّسَمًّی فَاکۡتُبُوۡهُ ؕ وَ لۡیَکۡتُبۡ بَّیۡنَکُمۡ کَاتِبٌۢ بِالۡعَدۡلِ ۪ وَ لَا یَاۡبَ کَاتِبٌ اَنۡ یَّکۡتُبَ کَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلۡیَکۡتُبۡ ۚ وَ لۡیُمۡلِلِ الَّذِیۡ عَلَیۡهِ الۡحَقُّ وَ لۡیَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَ لَا یَبۡخَسۡ مِنۡهُ شَیۡئًا ؕ فَاِنۡ کَانَ الَّذِیۡ عَلَیۡهِ الۡحَقُّ سَفِیۡهًا اَوۡ ضَعِیۡفًا اَوۡ لَا یَسۡتَطِیۡعُ اَنۡ یُّمِلَّ هُوَ فَلۡیُمۡلِلۡ وَلِیُّهٗ بِالۡعَدۡلِ ؕ وَ اسۡتَشۡهِدُوۡا شَهِیۡدَیۡنِ مِنۡ رِّجَالِکُمۡ ۚ فَاِنۡ لَّمۡ یَکُوۡنَا رَجُلَیۡنِ فَرَجُلٌ وَّ امۡرَاَتٰنِ مِمَّنۡ تَرۡضَوۡنَ مِنَ الشُّهَدَآءِ اَنۡ تَضِلَّ اِحۡدٰىهُمَا

तो फ़राख़ी (कुशादगी) तक उस को ढील देना चाहिये (और अगर माफ़ी के क़ाबिल हो तो) माफ़ करना तुम्हारे हक़ में बेहतर है अगर जानते हो[२१८] २८१. और उस दिन से डरो जिस में तुम अल्लाह की तरफ़ फिरो गे। फिर हर एक जान को उस की पूरी मज़दूरी मिले गी और उन का किसी प्रकार से नुक़सान न हो गा[२१९] २८२. मुसलमानो! जब तुम एक मुक़र्रर मुद्दत (निश्चित समय) तक क़र्ज़ का मामला करने लगो तो उस को लिख लिया करो।[२२०] कोई लिखने वाला तुम में इन्साफ़ से लिखे और लिखने वाला जैसा अल्लाह ने उस को सिखाया, लिखने से इन्कार न करे, पस वह अवश्य लिखे और जिस पर क़र्ज़ है वह बयान करता जाये और (बतलाता हुआ) अल्लाह से डरे जो उस का रब है और उस में से कोई चीज़ कम न करे। हाँ, अगर क़र्ज़ लेने वाला नासमझ है, या कमज़ोर है या बतला नहीं सकता तो उस का मुतवल्ली इन्साफ़ से बतलाता जाये और (कागज़ पर लिखने के बाद) दो मर्दों को (अपने में से) गवाह बनाया करो।[२२१] और अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें जो तुम्हारे पसन्द के गवाहों में से हों (मुक़र्रर करो) ताकि एक के भूलते समय

....

२१८. हज़रत अबू क़तादा का एक शख़्स के ऊपर क़र्ज़ था। जब वह माँगने जाते तो वह छुप जाता। एक दिन मिल गया तो कहने लगा कि अल्लाह की क़सम! मैं परेशान हूँ। यह सुन कर अबू क़तादा रोने लगे और बहीखाता (हिसाब का रजिस्टर) मंगवा कर उसे काट दिया, फिर कहने लगे कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुना है कि जिस ने अपने क़र्ज़-दार को मौक़ा दिया या माफ़ कर दिया, तो क़ियामत के दिन वह अ़र्श के साये में होगा (मुस्लिम, अहमद)

२१९. सहीह रिवायतों की बिना पर कुरआन की सब से आख़िरी नाज़िल होने वाली यही आयत न०२८१ है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस आयत के नाज़िल होने के बाद नौ रातें ज़िन्दा रहे, फिर रबीउल् अव्वल के महीने में सोमवार के रोज़ दिन छुपे इन्तिक़ाल फ़रमाया- इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन (इब्ने अबी हातिम, इबने मर्दूया)

२२०. चूँकि सूद के ज़िक्र से लेन-देन का मामला सामने आ गया इस लिये लगे हाथों उस के भी आवश्यक आदेश बयान कर दिये गये और लेन-देन के तअ़ल्लुक़ से लोगों की नादानी से जो बुराइयाँ फैल रही थीं उन को भी दूर कर दिया गया और यह उसूल बयान कर दिया कि (१) लेन-देन चाहे कम हो या ज़्यादा लिखित रूप में हो, ज़बानी न हो (२) हर प्रकार के लेन-देन के लिये दो गवाहों का होना अनिवार्य है (३) अगर कोई फ़रीक़ नाबालिग़ या कम बुद्धि का हो तो उस की तरफ़ से उस का वली वकालत करे (४) कातिब का फ़र्ज़ है कि ईमानदारी के साथ➲

लिखे-पढ़े (५) दो गवाहों को इन्कार नहीं करना चाहिये (६) कातिब और गवाहों को नुक़सान न पहुंचायें, वर्ना गवाही का पूरा नियम ही गड़बड़ हो जायेगा (७) अगर दो मर्द गवाह न मिल सकें तो एक मर्द के बदले दो महिलायें गवाह हो जायें। इस लिये कि अगर एक भूल जाये गी तो दूसरी याद दिला दे गी (तर्जुमानुल् कुरआन मौलाना आज़ाद)
२२१. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि लिखने का आदेश "बैअे-सलम्"के बारे में है यानि ऐसा मामला जो हाथों-हाथ ख़तम न होता हो। और इस आदेश पर अमल करना केवल मुस्तहब है, वाजिब नहीं। अक्सर सहाबा व ताबेअीन कहते हैं कि आरंभ में वाजिब था, लेकिन जब "फ़इन् अमि-न बअ्ज़ुकुम् बअ्ज़न् (आयत न०२८३) नाज़िल हुयी तो यह हुक्म मुस्तहब हो गया (जामिउल्बयान)

فَتُذَكِّرَ إِحْدٰىهُمَا الْأُخْرٰى ۚ وَلَا يَأْبَ الشُّهَدَآءُ
إِذَا مَا دُعُوا ۚ وَلَا تَسْـَٔمُوٓا أَنْ تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا
إِلٰٓى أَجَلِهِ ۚ ذٰلِكُمْ أَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَأَقْوَمُ
لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنٰىٓ أَلَّا تَرْتَابُوٓا إِلَّآ أَنْ تَكُونَ
تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ
عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوهَا ۗ وَأَشْهِدُوٓا إِذَا تَبَايَعْتُمْ
وَلَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيدٌ ۚ وَإِنْ تَفْعَلُوا
فَإِنَّهُ فُسُوقٌۢ بِكُمْ ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۖ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ۗ
وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَإِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ
وَّلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوضَةٌ ۖ فَإِنْ أَمِنَ
بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي اؤْتُمِنَ أَمَانَتَهُ
وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهُ ۗ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ۚ وَمَنْ
يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ آثِمٌ قَلْبُهُ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝

दूसरी उसे याद दिला दे (इस लिये कि महिलाओं में आम तौर पर भूल होती है) और गवाह बुलाते समय इन्कार न करें।[२२२] और मुक़र्रर मुद्दत (निश्चित समय) तक लिखने में सुस्ती न किया करो छोटा हो चाहे बड़ा। यह (लिखना) अल्लाह के हाँ इन्साफ़ (की बात है) और बड़ा मज़बूत गवाही का ज़रीआ याद रखने का है कि तुम शक में न पड़ो गे। हाँ, जब कि मामला हाथों हाथ हो जिस को उसी समय हाथों हाथ लेते देते हो तो उस के न लिखने में तुम्हें गुनाह नहीं[२२३] और लेन-देन करते हुये गवाह किया करो (सुनो) ने लिखने वाले को नुक़सान पहुंचाया जाये और न गवाह को।[२२४] अगर करो गे तो यह तुम्हारे हक़ में गुनाह की बात हो गी। और अल्लाह से डरते रहो। अल्लाह तुम को सिखाता है। और अल्लाह हर चीज़ को जानता है २८३. और अगर तुम सफ़र में हो और लिखने वाला न पाओ तो (अपनी कोई चीज़) क़र्ज़ देने वाले के हाथ में (बग़ैर सूद के) गिरवी दिया करो।[२२५] हाँ, अगर कोई शख़्स किसी को भरोसे वाला जाने (और उस से चीज़ गिरवी न ले) तो वह भरोसे वाला अपने क़र्ज़ा को अवश्य अदा करे और अल्लाह से डरे जो उस का मालिक है। और गवाही न छुपाओ।[२२६] जो कोई उस को छुपायेगा तो उस का दिल बिगड़ा हुआ है। (उस की सज़ा पाये गा) अल्लाह तुम्हारे कामों को जानता है।

....

२२२. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "ख़ियानत करने वाले मर्द-औरत, जिन पर हद लगी

➲हो, दुश्मनी रखने वाले और झूठ बोलने में बदनाम की गवाही जाइज़ नहीं है। और इसी प्रकार जो शख़्स जिस घर में पला-बढ़ा है उस की भी गवाही उस घर के लिये कुबूल न की जाये गी और जिस के नसब पर इलज़ाम है उस की भी शहादत मानने योग्य नहीं। झूठी गवाही देना महा पाप है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "झूठी गवाही शिर्क के बराबर हो गी" फिर आप ने सूर:हज्ज की आय: न०३० तिलावत फ़रमाई (तिर्मिज़ी)

२२३. जाहिलों ने शोर मचा रखा है कि अब ज़माना इस बात का नहीं है कि मज़हब को (ख़ास कर इस्लाम को) अक़ीदे और दोबारा ज़िन्दा होना, जन्नत-जहन्नम वग़ैरह से जांचा जाये। अब तो देखना यह है कि इस दुनिया के लिये सब से अधिक अ़मली मज़हब कौन-सा है? रोज़ाना के मसाइल के हल करने में कौन सा मज़हब सब से अधिक ज़ोर लगा रहा है। यह बातें कितनी सच और कितनी झूठ हैं यह अ़लग प्रश्न है, लेकिन फिर भी जिन लोगों के जांचने परखने का यही पैमाना है वह ज़रा ध्यान से ग़ौर करें कि तमाम धर्मों में इस्लाम ने ज़िन्दगी के रोज़ाना के छोटे-बड़े तमाम मस्अलों के हल करने की तरफ़ तवज्जुह दी है (माजिदी) यह जो फ़रमाया: "तुम्हें सिखाता है" तो इस का अर्थ यही है कि दीन व दुनिया दोनों में सुधार इसी कुरआन से हुआ है। इसी प्रकार हदीस पर भी कुछ जाहिल एतिराज़ उठाते हैं, हालाँकि यह सब ग़लत ख़यालात हैं। कुरआन व हदीस दोनों ही दुनियावी अहकाम से भरे हुये हैं, दुनिया के सब कामों में अल्लाह और उस के रसूल ने हुक्म दिये हैं जिन पर चलना फ़र्ज़ है (वहीदी) इस आयत से लिखने के फ़न की अहमिय्यत पर भी रौश्नी पड़ती है। हर मुल्क में लिखने का जो भी चलन है वह इस आयत के संदर्भ में आता है। इस लिये इन ज़रूरतों के पेशे नज़र अपनी मुल्की ज़बान सीखना ज़रूरी है (राज़)

२२४. कातिब से वह शख़्स मुराद है जो लिखना जानता है और शाहिद से मुराद वह शख़्स है जो गवाह हो सकता है क्यों कि अभी वह गवाह नहीं हुआ है। यह आयत क़र्ज़ वाली आयत कहलाती है। अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में माल के सिलसिले में एहतियात करने पर आमादा फ़रमाया है क्यों कि माल व दौलत दुनिया में रोज़ी-रोटी का मस्अला हल करते हैं और सद्क़ा ख़ैरात कर के आख़िरत को बनाने का वसीला होते हैं। इस आयत में माल की हिफ़ाज़त की दलील है कि वसिय्यत कर दी जाये ताकि वह बर्बाद न हो। अल्लाह की राह में ख़र्च करने और हर प्रकार की हराम ख़ोरी से बचने के लिये माल हलाल होना ज़रूरी है।

२२५. बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जब वफ़ात पाई तो हाल यह था कि आप की ज़िरह एक यहूदी के पास तीन वसक़ जौ के बदले में गिरवी रखी हुयी थी, जो आप ने घर वालों के खाने के लिये लिया था। जमहूर उलमा का कहना है कि रहन में समझौता ही काफ़ी है लेकिन दोनों का एक दूसरे पर क़ब्ज़ा भी ज़रूरी है।

२२६. हज़रत अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि झूठी गवाही महापाप (कबीरा गुनाह) में से है और गवाही को छुपाना भी उसी प्रकार है।

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَاِنْ تُبْدُوْا
مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ۭ
فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ
اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۭ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ
وَمَلٰۗىِٕكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۣ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ

२८४. अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। और अगर तुम अपने जी की बात ज़ाहिर हो कर करोगे या पोशीदा उस को करोगे, तो अल्लाह तुम से उस का हिसाब लें गा। फिर जिस को चाहेगा बख़्शेगा और जिस को चाहे गा दन्ड दे गा। (इस लिये कि) अल्लाह हर चीज़ पर क़ुद्रत रखता है २८५. यह रसूल और उस के साथ वाले मुसलमान अपने अल्लाह की ➲

مِّنۡ رُّسُلِهٖ ۚ وَقَالُوۡا سَمِعۡنَا وَاَطَعۡنَا ۖ غُفۡرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيۡكَ الۡمَصِيۡرُ ۝ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفۡسًا اِلَّا وُسۡعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتۡ وَعَلَيۡهَا مَا اكۡتَسَبَتۡ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذۡنَاۤ اِنۡ نَّسِيۡنَاۤ اَوۡ اَخۡطَاۡنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحۡمِلۡ عَلَيۡنَاۤ اِصۡرًا كَمَا حَمَلۡتَهٗ عَلَى الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلۡنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعۡفُ عَنَّا ۟ وَاغۡفِرۡ لَنَا ۟ وَارۡحَمۡنَا ۟ اَنۡتَ مَوۡلٰٮنَا فَانۡصُرۡنَا عَلَى الۡقَوۡمِ الۡكٰفِرِيۡنَ ۝

➲ उतारी बातों को मान गये। सब के सब अल्लाह और उस के फ़रिश्तों[२२७] और उस के रसूलों और उस की किताबों पर यक़ीन लाये और बोले! कि हम अल्लाह के किसी रसूल के मानने में फ़र्क़ नहीं करें गे. और बोले कि हम ने दिल लगा कर सुना और आज्ञा पालन की। ऐ हमारे अल्लाह! हम तेरी बख़्शिश चाहते हैं और तेरी ही तरफ़ फिरना है २८६. अल्लाह किसी को उस की ताक़त से बढ़ कर हुक्म नहीं देता[२२८] जो कुछ कोई नेकी करे वह उसी को मिले गी और जो बुराई करे उस का वबाल भी उसी पर हो गा। ऐ हमारे मौला! न पकड़ हम को अगर हम से भूल-चूक हो जाये। ऐ हमारे मौला! न रख हम पर बोझ भारी, जैसा कि रखा था तूने हम से पहलों पर।[२२९] ऐ हमारे मौला! हम को ऐसे हुक्म न दीजियो कि जिन की हम में ताक़त न हो और हम को माफ़ कर, और हम को बख़्श, और हम पर रह्म फ़रमा,तू ही हमारा वाली है, पस तू काफ़िरों की क़ौम पर हम को फ़त्हयाब कर (विजय दिला)

....

२२७. इस आयत से मालूम होता है कि जो शख़्स फ़रिश्तों पर ईमान न लाये वह काफ़िर है। पलहे और बाद की तमाम उम्मतों का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि फ़रिश्ते अल्लाह की मख़्लूक़ हैं और इस बारे में बहुत सारी हदीसों में रिवायत है, बहुत सी आयतें भी साफ़ शब्दों में मौजूद हैं। इस लिये ईमान वालों को आज-कल के कुछ लोगों की बातों पर यक़ीन न करना चाहिये जिन के नज़दीक फ़रिश्ते का वुजूद ही नहीं है, क्यों कि फ़रिश्तों के वुजूद से इन्कार कुफ़्र है (मुवाहिब) आज कल के कुछ गुमराह लोगों ने फ़रिश्तों के इन्कार की शक्ल यह निकाली है कि वह फ़रिश्तों से "इन्सान को नेकी पर उभारने वाली शक्ति" मुराद लेते हैं और ''बराई पर उभारने वाली शक्ति'' को शैतान मुराद लेते हैं और कहते हैं कि मलाइका (फ़रिश्ते) और शैतान का कोई मुस्तिक़िल वुजूद नहीं है। ऐसा अक़ीदा रखने बाले सभी लोग मुन्किरीन में दाख़िल हैं।

२२८. शाने-नुज़ूलः- पहली आयत जिम में "इन् तुब्दू" है, इस का ज़ाहिरी मतलब यह था कि अगर तुम अपने जी की ब्रात को छुपाओ गे, तो भी अज़ाब हो गा। इम मे सहाबा बड़े बेचैन हो गये और कहा कि अगर हमारे दिलों के ग़लत ख़यालात पर भी सज़ा मिली तो फिर तो बड़ा बुरा हाल हो गा, दिल में हर प्रकार के अच्छे-बुरे ख़याल आते ही रहते हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बनी इस्राईल की तरह घबराने की आवश्यक्ता नहीं है, बल्कि जो हुक्म आये उसे कुबूल करो, अल्लाह जानने वाला और हिक्मत वाला है, आगे चल कर कोई उचित आदेश जारी फ़रमा देगा' इम पर यह आयत नाज़िल हुयी कि हम किसी को उस की ताक़त से बढ़ कर तक्लीफ़ नहीं देते। जो बुरे ख़याल तुम्हारे दिलों में बिला इरादा व इख़्तियार पैदा हो जाते हैं, या भविष्य में पैदा होंगे उन पर तुम्हारी पकड़ न हो गी (सनाई/तिर्मिज़ी)

इन आयतों की अहादीस में बड़ी फ़ज़ीलत आई है। एक हदीस में है कि एक फ़रिश्ते ने आसमान से आ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मुबारकबाद दी कि आप को दो चीज़ें ऐसी मिली हैं जो आप से पहले ➲

किसी को नहीं मिलीं, वह सूरः फ़ातिहा और सूरः बक़रः की अन्तिम आयतें हैं" (मुस्लिम) एक रिवायत में यह भी है कि जिस घर में इन आयतों को लगातार तीन रातों में पढ़ा जाये उस घर में शैतान नहीं आये गा। कुछ लोग पहली आयत "इन्तुबद्दू" को मन्सूख़ मानते हैं और कुछ सहाबा से रिवायत भी है। मगर सहाबा के नज़दीक मन्सूख़ के कई माना हैं। कभी वह तफ़्सीर और वज़ाहत पर भी नस्ख़ का लफ़्ज़ बोलते हैं (अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम) इस लिये आयत का अर्थ यह हुआ कि पिछली आयत ने पहली आयत की तफ़्सीर और वज़ाहत कर दी कि इस से मुराद वह काम हैं जो इन्सान के बस में हैं, चुनान्चे हम ने भी यही तफ़्सीर की है।

२२९. अगलों से मुराद बनी इस्राईल हैं, इस लिये कि उन में से किसी भी गुनाहगार के लिये तौबा की यह शक्ल थी कि अपने आप को क़त्ल करा दे और ज़कात में तमाम माल का चौथाई दे और नजासत (नापाकी) को न धोये, बल्कि उतना कपड़ा काट डाले (मवाहिब)

सूर : आले ग़िम्रान —(३)

سُوْرَةُ اٰلِ عِمْرٰنَ مَدَنِيَّةٌ (٨٩) (٣)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ۙ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ؕ نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۙ مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ۝ هُوَ الَّذِيْ يُصَوِّرُكُمْ فِي الْاَرْحَامِ كَيْفَ يَشَآءُ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰيٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ

सूरः आले-ग़िम्रान[१] (ग़िमरान का परिवार) मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुई। इस में २०० आयतें और २० रुकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है।

१. अलिफ़ लाम्मीम्[२] २. अल्लाह के अ़लावा कोई ग़िबादत के लाइक़ नहीं जो हमेशा रहने वाला ज़िन्दा, थामने वाला है।[३] ३. उस ने तेरे पास सच्ची किताब भेजी है जो अपने से पहले की किताबों को सच्चा बतलाने वाली है और तौरात व इन्जील को[४] (पहले के) लोगों की हिदायत के लिए उतारा (था) और फ़ैसला करने वाला (क़ुरआन) उतारा। सो (बिशक) जो लोग अल्लाह के हुक्मों से मुंह फेरें उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब है। और अल्लाह बड़ा ज़बर्दस्त बदला लेने वाला है। ५. (और) अल्लाह से तो कोई वस्तु पोशीदा नहीं, न आसमान की और न ज़मीन की। ६. वही तुम्हारी सूरतें (माओं के) गर्भ में जिस प्रकार चाहता है बना देता है। (इस लिये यक़ीन जानो) अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं जो बड़ा ग़ालिब (और) बड़ी हिक्मत वाला है ७. उसी ने तेरी तरफ़ किताब उतारी है जिस में बाज़ अहकाम स्पष्ट हैं,[५] यही अस्ल किताब हैं और दूसरे कुछ मुतशाबिहात (यानी मिले-जुले हैं)

....
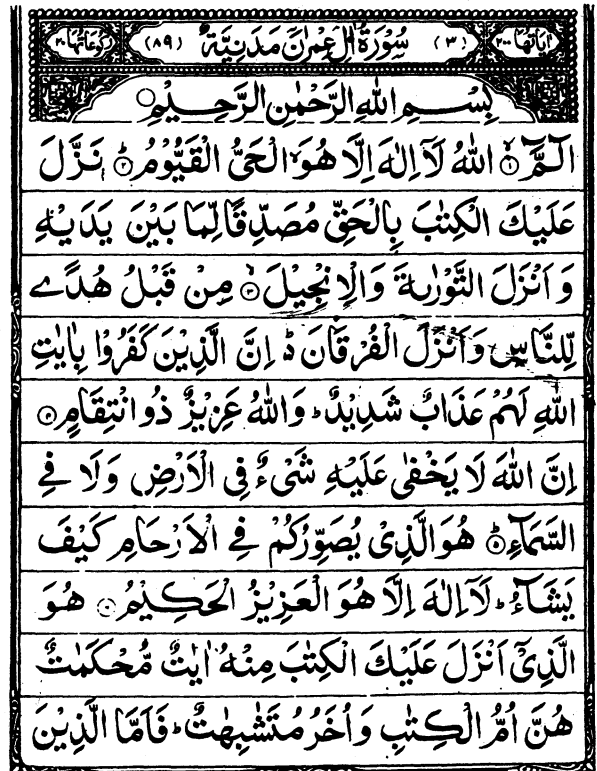
१. शाने-नुज़ूलः- दक्षिण की तरफ़ यमन के इलाक़े में एक स्थान का नाम "नज्रान" है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना में यहाँ ग़ीसाई लोग आबाद थे। उन में ११४ बड़े-बूढ़े और पढ़े-लिखे लोग नबी करीम

➲सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुये, तो इन्हीं लोगों के ग़लत अ़क़ीदा को साबित करने के लिये यह सूरः नाज़िल हुयी।

२. यह हुरुफ़ "मुक़त्तआत" कहलाते हैं। इस का तर्जुमा मौलाना मरहूम ने यूँ किया है "मैं हूँ अल्लाह बड़े अ़िल्म वाला" मगर हक़ीक़त यह है कि इन का अर्थ अल्लाह ही बेहतर जानता है। क़ुरआन पाक की कई सूरतों के आरंभ में यह शब्द आये हैं, सभी स्थानों पर यही उसूल समझ लेना चाहिये। (राज़)

३. शाने-नुज़ूलः- क़बीला नज्रान के क़रीब ६० अ़ीसाई नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास मुलाक़ात के लिये आए उन्हों ने सब से पहले मस्जिदे-नबवी में अपने तरीक़े के मुताबिक़ नमाज़ अदा की फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बात-चीत की। आप ने उन्हें इस्लाम लाने की दावत दी तो उन्हों ने कहा कि हम तो पहले ही से मुसलमान हैं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम लोग उस समय तक मुसलमान नहीं हो सकते जब तक कि अल्लाह के लिये बेटा होने का अक़ीदा, सलीब की पूजा-पाट और सुवर का गोश्त खाना न छोड़ दो। हज़रत अ़ीसा के अल्लाह के बेटे होने के विषय पर जब बात-चीत कर चुके तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क्या तुम नहीं जानते कि औलाद बाप के समान होती है? उन्हों ने कहाः जी हाँ होती तो है। आप ने फ़रमायाः अल्लाह तो हमेशा से ज़िन्दा है और हमेशा ज़िन्दा रहे गा और अ़ीसा मसीह तो मर चुके हैं। अल्लाह तो आकाश की समस्त वस्तुओं को जानता-पहचानता है और अ़ीसा मसीह तो केवल उन के अलावा जिन्हें अल्लाह ने उन्हें बता दिया है, कुछ नहीं जानते हैं। और तुम्हें यह भी मालूम है कि मसीह को उन की माँ ने और दूसरी औरतों की तरह अपने पेट में उठाया और वह उन के पेट में और बच्चों की तरह पलते रहे। यह सुन कर वह चुप हो गये, इस पर यह सूरः नाज़िल होनी आरंभ हुयी (मआ़लिम) यह सूरः हज़रत अ़ीसा मसीह को अल्लाह का बेटा होने के इन्कार के लिये नाज़िल हुयी है।

मैं (राज़) कहता हूँ कि यह घटना नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बेहतरीन अख़्लाक़ का कामिल सबूत है कि वह लोग मस्जिदे-नबवी में अपने तरीक़े के मुताबिक़ नमाज़ अदा करें और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम चुप-चाप रहें और उन को मना करने की ताक़त रखने के बावजूद कुछ न कहें। लेकिन हम लोगों के हाल पर जितना भी मातम किया जाए कम है कि हम ऐसे नबी के उम्मती हैं जो ग़ैरों को अपनी मस्जिद में उनके तौर-तरीक़े के अनुसार नमाज़ अदा करने से मना न करे, और हम हैं कि दूसरे फ़रीक़ को इस जुर्म में अपनी मस्जिदों से मना करते हैं कि वह उन के तरीक़े के ख़िलाफ़ नमाज़ पढ़ता है। फिर इतने ही पर सब्र नहीं होता है, बल्कि कोर्ट-कचेहरियों में काफ़िर और मुश्रिक जजों से यह फ़ैसला कराते हैं कि इस मस्जिद में किस को नमाज़ अदा करने का हक़ है? शैख़ सादी ने सच कहा हैः "अल्लाह के बन्दे दुश्मनों का दिल तक नहीं दुखाते और तुम्हें यह स्थान कैसे हासिल हो सकता है जब कि तुम अपने दोस्तों ही से गुत्थम-गुत्था हो" (सनाई)

४. यहाँ यह बतलाना मक़्सूद है कि क़ुरआन की शिक्षा हमेशा दो प्रकार की होती है (१) मुह्कम (२) मुतशाबेह। 'मुह्कम्' से मुराद वह शिक्षा है जिस में साफ़-साफ़ और खुले अहकाम बयान किये गये हैं, जैसे तौहीद-रिसालत, हराम-हलाल वग़ैरह। 'मुतशाबेह' से मुराद वह बातें हैं जो इन्सान की अ़क़्ल से परे की हैं जिसे इन्सान अपनी अ़क़्ल व समझ से नहीं पा सकता जैसे, अल्लाह पाक की ज़ात, मरने के बाद की ज़िन्दगी, आख़िरत की बातें, अ़ज़ाब व सवाब की हक़ीक़त। जो लोग सीधे-सादे समझ-दार हैं और अ़िल्म व अ़क़्ल में पक्के-सच्चे हैं वह 'मुहकम' ही को हिदायत के लिये काफ़ी समझते हैं और उस पर अ़मल भी करते हैं। और जिन लोगों के समझ में कजी है वह मुताशाबिहात के पीछे पड़ जाते हैं और ईमान व यक़ीन के लिये फ़ित्ना पैदा कर देते हैं (तर्जुमान आज़ाद) आज कल अधिक-तर अ़िल्म व तहज़ीब का दावा करने वालों का यही हाल है। अल्लाह रहम फ़रमाये-आमीन!

فِيْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَآءَ تَأْوِيْلِهٖ ۚ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيْلَهٗۤ اِلَّا اللّٰهُ ۘ وَالرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝ رَبَّنَاۤ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ۝ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى

पस जिन के दिलों में कजी है उस में से मितले-जुलते के पीछे पड़ें गे ताकि (लोगों को) गुमराह करें (और बज़ाहिर यह ग़रज़ बतला दें गे) कि उन की अस्ल मुराद पावें, हालाँकि उन का अस्ल मतलब अल्लाह तआ़ला और रासिख़ अ़िल्म वालों के अ़लावा कोई नहीं जानता (जब ही तो वह कहते हैं कि) हम इस (कुरआन) को मान चुके हैं, यह सब हमारे लिये अल्लाह के पास से है। और (इस भेद को) अ़क्ल वालें के अ़लावा कोई नहीं समझता ८. (और दुआ़ करते हैं कि) हमारे अल्लाह! हमारे दिलों को हिदायत करने के बाद टेढ़ा मत कर और अपने पास से हम को रहमत अ़ता कर, बेशक तू ही बहुत अ़ता करने वाला है ९. ऐ हमारे अल्लाह! बेशक तू आदम की औलाद को एक दिन इकट्ठा करे गा जिस में कोई शक नहीं (बेशक) अल्लाह कभी अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं किया करता १०. बेशक जो लोग इन्कार करने वाले हैं उन के माल और औलाद उन्हें अल्लाह के अ़ज़ाब से नहीं बचा सकें गे। और यह लोग आग का ईंधन हों गे ११. उन की हालत और आ़दत बिल्कुल फिऔ़नियों और उन से पहलो की सीं है जिन्हों ने हमारे आदेशों को झुठलाया, उन के गुनाहों की वजह से अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया।[५] और अल्लाह बड़े सख़्त अ़ज़ाब वाला है[६] १२. तू इन्कार करने वालों से कह दे कि तुम मग़लूब किये जाओ गे (जैसे तुम से पहले के लोग मग़लूब हो चुके हैं)

....

५. जिन लोगों ने दुश्मनी की बजह से कुरआन का इन्कार किया है तो उन्हों ने सर्कशी और इन्कार का वही तरीक़ा इख़्तियार किया है जो हज़रत मूसा के मुक़ाबला में फ़िऔ़न के ख़ान्दान वालों ने इख़्तियार किया था। और वह दिन दूर नहीं जब उन को भी वही सज़ा मिले जो फ़िऔ़न के मानने वालों को मिली थी और दुनिया देख लेगी कि अन्तिम विजय किस का साथ देती है (तर्जुमान आज़ाद)

६. शाने नुज़ूलः- बद्र की लड़ाई के बाद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यहूद को एक स्थान पर इकट्ठा कर के कहा कि सुन लो! अपनी अ़िज़्ज़त और आबरू (मान-मर्यादा) को बचा कर मुसलमान हो जाओ, ऐसा न हो कि तुम भी मक्का के काफ़िरों की तरह ज़लील हो जाओ। उन्हों ने कहा कि मुश्रिकों पर जो तुम ने जीत हासिल की है इसलिये कि वह बेचारे सीधे-सादे थे, लड़ाई जानते ही न थे, हम से अगर आमना-सामना हुआ तो देखो गे कि हम कैसा हाथ दिखायें गे। इन ही लोगों के हक़ में यह आयत नाज़िल हुयी। (सनाई)

جَهَنَّمَ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ
فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ۖ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
وَاُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْيَ الْعَيْنِ ۭ
وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ۝ زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ
الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَاۗءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ
مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَ
الْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ۭ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ
وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ۝ قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ
بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ۭ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ
جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا
وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ
بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۝ اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا

और जहन्नम में जमा किये जाओ गे (जहाँ तुम को हमेशा रहना होगा) और वह बुरा ठिकाना है १३. तुम्हारे लिये उन दो फ़ौजों में जो (बद्र की लड़ाई में) भिड़ी थीं निशानी है। एक जमाअ़त अल्लाह की राह में लड़ती थी और दूसरी जमाअ़त काफ़िर थी (मुसलमान) उन को अपने से दो गुना आँखों से देखते थे[७]। और अल्लाह अपनी मदद से जिस को चाहता है कुव्वत देता है। बेशक इस में समझ-दारों के लिये बड़ी नसीहत है। १४. लोगों को अपनी पसन्द की चीज़ें (सुन्दर) औ़रतें और बेटे और चाँदी-सोने के ढेर और (बहुत सुन्दर) पले हुये घोड़े और चारपाये और खेती-बाड़ी भली मालूम होती हैं। यह दुनिया का गुज़ारा है[८] (जो कुछ समय के बाद ख़त्म है) और अल्लाह के हाँ बड़ी अ़िज़्ज़त का ठिकाना (जन्नत) है। १५. तू उन से कह दे कि मैं तुम को उस से अच्छी चीज़ बताऊँ! जो लोग परहेज़ करते हैं उन के लिये अल्लाह के हाँ बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, हमेशा उन में रहें गे और सुथरी बीवियाँ हों गी और अल्लाह की खुश्नूदी (हो गी) और अल्लाह अपने बन्दों को देख रहा है[९] १६. जो कहते हैं ऐ हमारे अल्लाह! बेशक हम ईमान लाये

....

७. दो गरोह से मुराद बद्र की लड़ाई लड़ने वाले मुसलमान और काफ़िर हैं। इस लड़ाई में मुहाजिरों के कमान्डर हज़रत अ़ली और अन्सार के हज़रत सअ़द बिन उबादा थे। इस लड़ाई में मुसलमानों के पास केवल ७० ऊँट सवारी के थे। कुफ़्फ़ार की तादाद ९५० थी, जो सब के सब ही हथियारों से लैस थे। इन का कमान्डर उत्बा बिन रबीआ़ था। इन के लश्कर में १०० घोड़े भी थे। क़बीला बनू मख़्ज़ूम का कमान्डर अबू जेहल था। बद्र की लड़ाई हिजरत के बाद लड़ी जाने वाली पहली लड़ाई है।

'यरौनहुम् मिस्लैहिम्' की उलमा ने दो प्रकार तफ़्सीर की है। पहली यह कि मोमिनों को मुश्रिकीन अपने से दो गुना देखाई देते थे और आँखों से उन को साफ़-साफ़ दिखाई देते थे, अल्लाह ने उन के दोगुना देखने को उन की विजय का सबब बना दिया। जमहूर उलमा यह तफ़्सीर बयान करते हैं कि मुसलमान लोग काफ़िरों को अपने से दो गुना देखते थे आँखों से देखना, और इस के बावजूद भी अल्लाह तआ़ला ने उन को काफ़िरों पर विजय दिलाई। 'मिस्लैहिम' का अर्थ "दोगुना" ही नहीं है बल्कि "अक्सर" के भी माना में बोला जाता है (मवाहिब) यहाँ 'मुहब्बत' से मुराद बुरी मुहब्बत है। अगर औ़रतों से मुहब्बत का उद्देश्य यह हो कि बुराइयों से बचा जाये तो ऐसी मुहब्बत बुरी नहीं है, बल्कि मुस्तहब है। सहीह हदीसों में निकाह करने पर बहुत ज़ोर दिया गया है। चुनान्चे एक हदीस ➲

➲में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "दुनिया चन्द रोज़ फ़ाइदा उठाने की चीज़ है और उस की सब से बेहतरीन चीज़ पाक-दामन महिला है कि जब तू उस को देखे तो उस को प्रसन्नता हो और जब तू उस को किसी बात का हुक्म दे तो उसे खुशी-खुशी माने और जब शौहर घर पर न रहे तो उस की अनुपस्थिति (ग़ैर मौजूदगी) में उस के माल और अपनी शर्म-गाह की हिफ़ाज़त करे"।

८. **शाने-नुज़ूल-** कुछ लोगों का कहना है कि बद्र की लड़ाई में मुसलमानों की विजय को देख कर यहूदी कुछ-कुछ इस्लाम की ओर झुकने लगे थे, लेकिन फिर इरादा बदल दिया और कहने लगे कि जल्दी मत करो और देखो कि भविष्य में क्या होता है। दूसरे वर्ष उहुद की लड़ाई में मुसलमानों की थोड़ी सी पराजय को देख कर उन के दिल सख़्त हो गये यहाँ तक कि मुआ़हिदा को तोड़ कर खुद मुसलमानों ही से लड़ने की तय्यारी में जुट गये। यहूदियों का सर्दार कअ़ब बिन अश्रफ़ ६० सवारों को ले कर अबू सुफ़यान वग़ैरह से जा कर मक्का में मिला और कहा कि हम और तुम जंग में एक साथ हैं, हमें यक-जुट हो कर मुसलमानों से जंग लड़नी चाहिये। इस पर यह आयतें नाज़िल हुयीं (मुवज़्ज़िहुल क़ुरआन) आज भी इस्लाम के दुश्मन मौक़ा पाते ही मुसलमानों के ख़िलाफ़ एक जुट हो जाते हैं और अपने आपस के सारे इख़्तिलाफ़ को भुला देते हैं।

९. हज़रत अबू सई़द खुदरी रज़ि से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह जन्नती लोगों से कहे गा कि क्या तुम लोग राज़ी हो या कुछ और भी चाहिये? वह कहेंगे कि जो कुछ मुझे दिया है क्या इन सब से बेहतर भी कुछ और है? अल्लाह तआ़ला फ़रमाये गा कि उन से बेहतर अभी देना बाक़ी है और वह मेरी खुश्नूदी (रिज़वान) की दौलत है, जिसे मैं तुम्हें दूँ गा (वह दौलत यह है कि) मैं तुम से हमेशा खुश रहूँ गा और गुस्सा नहीं करूँ गा" (बुख़ारी-मुस्लिम)

فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ اَلصّٰبِرِيْنَ وَ
الصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ
بِالْاَسْحَارِ ۝ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَ
الْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۣ
وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ
مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ فَاِنْ
حَآجُّوْكَ فَقُلْ اَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ۭ
وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ ۭ
فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا
عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ۭ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۝ اِنَّ

पस तू हमारे गुनाह माफ़ कर दे और हम को जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा १७. (और वह लोग) जो सब्र करते हैं और सत्य बोलते हैं और ताबे-दारी करते हैं और ख़र्च करते हैं और सुब्ह को बख़्शिश माँगते हैं[१०] १८. खुद अल्लाह और सब फ़रिश्ते और सब सच्चे इ़ल्म वाले ज़ाहिर करते हैं कि अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं, इन्साफ़ करने वाला हाकिम है। उस के अ़लावा कोई पूज्य नहीं। वह बड़ा ग़ालिब, हिक्मत वाला है १९. (बेशक) अल्लाह के नज़दीक भरोसे-मन्द दीन इस्लाम है[११] और अहले किताब इ़ल्म के पहुंचने के बाद केवल ज़िद की वजह से (इस्लाम और इस्लाम के पैग़म्बर के) मुख़ालिफ़ हो रहे हैं[१२]। और जो कोई अल्लाह के आदेशों का इन्कार करे गा तो अल्लाह बहुत जल्द उन से हिसाब लेने वाला है। २०. पस अगर तुझ से झगड़ा करें तो तू कह दे कि मैं➲

اَلَّذِیۡنَ یَکۡفُرُوۡنَ بِاٰیٰتِ اللّٰہِ وَیَقۡتُلُوۡنَ النَّبِیّٖنَ

➲और मेरे मानने वाले अल्लाह के ताबे-दार हो गये हैं। और तू किताब वालों से और अन्पढ़ों से कह दे कि क्या तुम ताबे-दार होते हो? पस अगर वह ताबेदार हो गये तो हिदायत पा गये[१३]। और अगर मुँह फेरें तो तेरा ज़िम्मा तो सिर्फ़ पहुंचा देना है। और अल्लाह अपने बन्दों को देख रहा है २१. बेशक जो लोग अल्लाह के आदेशों का इन्कार करते हैं और (अल्लाह के) नबिय्यों को नाहक़ (ज़ुल्म से) क़तल करते हैं

....

१०. इमाम हसन बसरी से रिवायत है कि वह लोग अव्वल रात ही से नमाज़ में लग जाते हैं यहाँ तक कि सुब्ह हो जाती है तो दुआ व इस्तिग़फ़ार में लग जाते हैं, पस वह उन का दिन था और यह उन की रात है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर के बारे में आता है कि रात में नमाज़ पढ़ते, और अपने ग़ुलाम हज़रत नाफ़ेअ़ से पूछते कि क्या सुब्ह हो गयी है? यह हैं वह लोग जिन की रातें और दिन इस प्रकार बीतते थे। (इब्ने हातिम) ज़ुजाज कहते हैं कि 'सहर' रात ढलने के बाद से फ़ज्र के ज़ाहिर होने तक का नाम है। कुछ दूसरे लोगो ने कहा कि अन्तिम तिहाई रात से फ़ज्र के ज़ाहिर होने तक का नाम है। सहीहैन के अ़लावा और दूसरी हदीस की किताबों में कई सहाबा से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआ़ला हर रात को रात के अन्तिम तिहाई के समय पहले आसमान पर उतरता है और फ़रमाता है: "कोई मांगने वाला है कि उस को दूँ और कोई दुआ़ करने वाला है कि मैं उस की दुआ़ को क़ुबूल करूँ, कोई माफ़ी माँगने वाला है कि मैं उसे माफ़ कर दूँ।

११. अल्लाह के दीन की हक़ीक़त यह है कि उस के नियमों का पालन किया जाये। अल्लाह का क़ूनन ही यह है कि न्याय को क़ाइम किया जाए जिस के कारण ही पूरी दुनिया की गाड़ी चल रही है। इस के बारे में ज़िल्म यूँ हासिल हो सकता है कि पूरी दुनियाँ में पैदा की गयी वस्तुओं की गवाही पर ग़ौर-फ़िक्र किया जाये। शहादत (गवाही) तीन प्रकार की हैं १. अल्लाह की, अर्थात अल्लाह की वह्यि की २. फ़रिश्तों की जो दुनियाँ में अपनी डिग्रूटी अन्जाम दे रहे हैं ३. ज़िल्म वालों की। यह तीनों प्रकार की गवाहियाँ एलान कर रही हैं कि अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नही! उस ने समस्त संसार को अ़द्ल पर क़ाइम किया है। इन सब के बाद कौन बाक़ी बचा है जिस की शहादत एतबार के क़ाबिल हो सके (राज़)

१२. इन्सान को अव्वल ही दिन से एक ही दीन दिया गया है और वह यही दीने-इस्लाम है। तमाम ही लोगों ने इसी की शिक्षा दी है और इख़्तिलाफ़ व गिरोहबन्दी से रोका है। इख़्तिलाफ़ और गिरोहबन्दी पैदा ही इसी कारण हुयी है कि लोगों ने अस्ल दीन से हट कर आपस की ज़िद और तअ़स्सुब की राह को अपनाया (तर्जुमान-आज़ाद)

१३. इस आयत में अक्बर बादशाह और उस जैसा अ़क़ीदा रखने वालों के ख़याल का रद्द है कि हर दीन सच्चा होता है और हर राह अल्लाह ही की राह है। "काबा व बुत ख़ाना" और कुफ़्र व ईमान में केवल शब्दों का अन्तर है। हक़ीक़त यह है कि दो शब्दों के बीच में एक ही केवल सहीह हो सकता है। इसी प्रकार सीधी राह अल्लाह और बन्दे के दर्मियान केवल एक ही हो सकती है और वह इस्लाम की राह है, जो हमेशा से तमाम ही नबिय्यों का दीन रहा है (माजिदी) तमाम नबिय्यों और नेक बन्दों का दीन एक ही रहा है, मगर आजकल के ग़लत धर्मों की ख़ुराफ़ात का दीन इस्लाम से दूर का भी संबन्ध नहीं है। और फिर चूंकि दीन इस्लाम ने तमाम धर्मों की हक़ बातों को अपने अन्दर शामिल कर लिया है, इस लिये अब अल्लाह के नज़दीक पसन्दीदा दीन इस्लाम ही है।

بِغَیۡرِ حَقٍّ ۙ وَّیَقۡتُلُوۡنَ الَّذِیۡنَ یَاۡمُرُوۡنَ بِالۡقِسۡطِ

और जो लोग (अहले-ज़िल्म में से) न्याय की बात बतलाते हैं उन को भी क़त्ल कर डालते➲

مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۡ وَمَا لَهُمْ
مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا
مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ
ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا
مَّعْدُوْدٰتٍ ۠ وَّغَرَّهُمْ فِيْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا
يَفْتَرُوْنَ ۝ فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ
فِيْهِ ۠ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا
يُظْلَمُوْنَ ۝ قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ
مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۡ وَتُعِزُّ
مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ۭ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۭ اِنَّكَ

हैं तो तू उन को दर्द भरे अ़ज़ाब की शुभ सूचना दे दे[१४] २२. उन ही के आमाल (निक भी) दुनिया और आख़िरत में बर्बाद हों गे और कोई (भी) उन का सहायक न होगा[१५] २३. क्या तूने (ऐ मुख़ातब) उन लोगों को नहीं देखा जिन को (अल्लाह की) किताब से हिस्सा मिलाथा[१६] (वही लोग) जब अल्लाह की किताब (कुरआन) की तरफ़ बुलाये जाते हैं ताकि उन में (उन के झगड़ों का) फ़ैसला करे (तो मानने के बजाये) एक जमाअ़त मुंह मोड़ कर फिर जाती है[१७] २४. यह (उन की बे पर्वाही) इस कारण है कि उन्हों ने समझ रखा है कि हमें तो चन्द दिन ही दन्ड मिले गा (क्योंकि हम नबी के ख़ान्दान से हैं) उन को मज़हब के बारे में उन के झूठे ढकोसलों ने धोके में डाल रखा है[१८] २५. (इस लिये अगर यह ऐसी ही वाहियात ख़यालों पर अड़े रहे) तो उन का क्या हाल होगा जब हम उन को उस दिन इकट्ठा करें गे जो निःसंदेह आने वला है और हर शख़्स को उस की कमाई का पूरा बदला मिले गा और उन पर जुल्म न होगा। २६. तू कह! ऐ अल्लाह मुल्क के मालिक! तू जिस को चाहे मुल्क देता है और जिस से चाहे (तू दिया हुआ) छीन (भी) लेता है[१९] और जिस को चाहे अ़िज़्ज़त देता है और जिस को चाहे ज़लील करता है। तेरे ही हाथ में हर प्रकार की भलाई है।

....

१४. यहाँ "शुभ सूचना" (ख़ुश्ख़बरी) का शब्द मुहावरा के तौर पर बोला गया है। बिल्कुल ऐसे ही जैसे जुर्म करने वालों से कहा जाता है कि तू एक दिन "बड़े घर" (जेल) में जाये गा। और यूँ भी बोला जाता है कि "तू सर्कारी मेहमान रहेगा" यानी जेल जाये गा। (सनाई)

१५. शाने-नुज़ूलः- एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम यहूदियों की एक पाठ शाला में तश्रीफ़ ले गये और उन्हें इस्लाम की दावत पेश की। उन में से दो शख़्स बोल उठे कि आप का किस धर्म से संबन्ध है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं हज़रत इब्राहिम अ़लै० के रास्ते पर हूँ। उन्हों ने कहा कि इब्राहीम तो यहूदी थे। आप ने फ़रमायाः तौरात लाओ, अभी फ़ैसला हो जाये गा। चुनान्चे उन्हों ने तौरात लाने से इन्कार कर दिया। इन्हीं लोगों की शान में यह आयत न०२३ नाज़िल हुयी।

१६. जो बन्दों की हिदायत के लिये थोड़े-थोड़े समय पर आया करती है और वही किताब किसी समय में तौरात इन्जील, ज़बूर वग़ैरह के नाम से जानी जाती थी। हम ने यहाँ उस मश्हूर प्रश्न के उत्तर की तरफ़ इशारा किया है जो आ़म तौर पर इस्लाम की दुश्मनी में अ़ीसाई और उन के साथ-साथ आर्य धर्म के लोग और दूसरे किया करते हैं। चुनान्चे इन लोगों का कहना यही है कि कुरआन की आवश्यक्ता नहीं है (सनाई)

१७. यहाँ पर यहूद के उलमा की उस गुमराही की तरफ़ इशारा है कि जिस किताब (तौरात) को यह अल्लाह की किताब मानते हैं और उन का दावा है कि वे उस पर अ़मल भी करते हैं, जब उसी किताब पर अ़मल करने की दावत दी गयी तो खुल्लम-खुल्ला इन्कार कर गये। क्यों कि अगर वह उस पर अ़मल करते तो अपनी इच्छानुसार कुछ नहीं कर सकते थे (सनाई)

१८. यह बात इस लिये है कि मज़हबी गिरोह बन्दी और ग़ुरूर ने उन को इस धोके में रखा है कि हम ही नजात पाने वाली क़ौम हैं। हमारे काम चाहे जितने बुरे हों लेकिन हम जहन्नम में नहीं डाले जायें गे। हालाँकि अल्लाह का नियम यह है कि वह यह नहीं देखता है कि कौन किस गिरोह से है या उस का नसब किस ख़ान्दान से है, वह तो केवल ईमान और अ़मल को देखता है। और जिस का जैसा ईमान व अ़मल होगा उसी के अनुसार जन्नत या जहन्नम का फ़ैसला हो गा।

१९. शाने-नुज़ूलः- नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को बहुत अधिक फ़तह और जीत व कामयाबी का वादा दिलाया तो मुनाफ़िक़ लोग इस पर आश्चर्य प्रकट करने लगे कि यह भला कैसे संभव है, इस वाक़िआ़ पर आयत नाज़िल हुयी (सनाई/मआ़लिम) हालाँकि बाद के वाक़िआ़त ने साबित कर दिया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जो फ़रमाया था वह किस प्रकार १०० प्रतिशत सहीह साबित हुआ।

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ
تُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۫ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ
وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۫ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ
اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ
فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِيْ شَيْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ
تُقٰىةً ۭ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝
قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ يَعْلَمْهُ
اللّٰهُ ۭ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ
وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ
نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۚ وَّمَا عَمِلَتْ
مِنْ سُوْٓءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ اَمَدًا بَعِيْدًا ۭ
وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۭ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ۝

तू तो हर वस्तु पर कुदरत रखने वाला है २७. (यह तेरी ही कुद्रत की निशानियां हैं कि)[20] तू रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में (कभी दिन को बढ़ाता है और कभी रात को) और ज़िन्दा को मुर्दा (जैसे नुत्फ़ा) से निकालता है और मुर्दा को ज़िन्दा से बाहर निकालता है[21] (और साथ ही तेरी कुदरत का यह कमाल है कि) जिस को चाहे बेहिसाब रोज़ी देता है। २८. मुसलमान, मुसलमानों को छोड़ कर काफ़िरों से दोस्ती मत लगायें (ताकि उन की तरह बुरे अख़्लाक़ के न हों जायें) जो कोई यह (काम) करेगा उस का अल्लाह से कोई संबन्ध नहीं है[22] हाँ, अगर किसी प्रकार का बचाव करो तो जायज़ है। (ख़बर्दार! ऐसा मत करना) अल्लाह तुम को अपने आप से डराता है (बेहतर है कि तुम समझ जाओ) और तुम्हें अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है २९. तू कह दे! कि अगर तुम अपने दिल की बात को छुपाओ या उस को ज़ाहिर करो तो अल्लाह उस को जानता है। वह आसमानों और ज़मीन की समस्त वस्तुऐं जानता है। (इस के अ़लावा) वह हर एक कार्य करने पर कुदरत रखता

➲है ३०. जिस दिन हर शख़्स अपना बुरा-भला किया हुआ अपने सामने पायेगा (तो अपने बुरे कर्मों का दन्ड देख कर) यह कामना करे गा कि मुझ में और उस (बुरे) काम में दूरी लम्बी हो जाये। अल्लाह तुम को अपने आप से डराता है। अल्लाह बन्दों पर निहायत ही मेहरबान है[२३] (इसी लिये वह नहीं चाहता कि कोई बन्दा अन्‌जाने में फंस जाये)

....

२०. शाने-नुज़ूल- इब्ने जरीर ने हज़रत क़तादा से रिवायत नक़ल की है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मक्का को परास्त किया तो मुसलमानों को साथ ही रूम और फ़ारस को भी फ़तह कर लेने की शुभ सूचना दी तो यहूद और मुनाफ़िक़ों ने कहा कि यह तो बड़ी दूर की कौड़ी लाये हैं। यह बिल्कुल असंभव है कि मुसलमान फ़ारस और रूम पर शासन करें गे, इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई। इस आयत में "इस्मे आज़म" भी है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक मर्तबा हज़रत मआ़ज़ रज़ि से फ़रमायाः मैं तुम को एक ऐसी दुआ़ सिखाता हूँ जिस को पढ़ लेने से उहुद पहाड़ के बराबर क़र्ज़ को अल्लाह अदा करा देता है इस आयत न०२६,२७ को पढ़ने के बाद यह दुआ़ पढ़ा करोः या रह्‌मा-नद्दुनिया वल् आख़ि-रति व रही-महुमा तुअ़्ती मन् तशाउ मिन्‌हुमा व-तम्-नअ़ु मन् तशाउ इर्-हम्‌नी रह्-मत् तुग़्निनी बिहा अ़न् रह्-मति मन् सिवा-क अल्लाहुम्म अग़्निनी मि-नल् फ़क़्‌रि वक़्ज़ि अ़न्निदै-न (मवाहिब)

२१. तफ़्सीर इबने कसीर में इस की तफ़्सीर यूँ है "खेती को दाना से और दाना को खेती से, खजूर के पेड़ को गुठली से और गुठली को खजूर के पेड़ से, मुर्ग़ी को अन्डे से और अन्डे को मुर्ग़ी से' मोमिन को काफ़िर से और काफ़िर को मोमिन से निकालता है। और इसी प्रकार और तमाम वस्तुओं को समझा जाये।

२२. शाने-नज़ूलः- कुछ सीधे-सादे मुसलमान, अहलेकिताब से दोस्ती रखते थे। लेकिन होशियार मुसलमान उन लोगों को यहूद से दोस्ती करने पर मना करते थे मगर वह लोग न माने, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई/मआ़लिम) यह भी ध्यान रहे कि किसी क़ौम की मुशाबहत करना भी वैसा ही है। चुनान्चे अगर अक़ीदा व ईमान में उन की नक़ल करता है तो बिला किसी सन्देह के काफ़िर है और अगर कुफ्र के कामों में उस की नक़ल की तो भी काफ़िर है और अगर आ़दत व रिवाज आदि में किया तो ऐसा करना हराम है और कुफ्र के क़रीब है और अगर उन के ख़ुशी के त्योहारों में शरीक हो तो भी ऐसा ही है। एक सहीह और हसन हदीस में है किः "जिस किसी ने किसी क़ौम की नक़्क़ाली की तो वह उन ही में से है"। २३. इब्ने अ़ता रह० का कहना है कि 'राफ़त' यह मोमिन, काफ़िर, अच्छे-बुरे सब को शामिल है, लेकिन 'रहमत' यह केवल उन मोमिनों के लिये ख़ास है जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पैरोकार हैं और उन के अ़लावा और बन्दों को नहीं पहुंचतीहै। (मवाहिब)

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝
قُلْ أَطِيعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُولَ ۖ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللّٰهَ
لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِينَ ۝ إِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى آدَمَ وَ
نُوحًا وَّآلَ إِبْرٰهِيمَ وَآلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِينَ ۝

३१. (ऐ रसूल) तू कह दे कि अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत रखते हो तो (कुफ्र व शिर्क के ख़यालात को छोड़ कर) मेरे पीछे चलो अल्लाह तुम से मुहब्बत करे गा[२४] और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दे गा। अल्लाह बड़ा ही बख़्शने वाला मेहरबान है[२५] ३२. तू कह दे कि अल्लाह और रसूल की आज्ञा मानो (तो मतलब को पहुंच➲

ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ ۗ وَاللّٰهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝
إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ
مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۖ إِنَّكَ أَنْتَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ
إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَىٰ ۖ وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ۖ وَ
لَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنْثَىٰ ۖ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّي
أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ۝
فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنْبَتَهَا نَبَاتًا

जाओ गे) फिर अगर वह मुंह फेरें तो काफ़िर अल्लाह को (हर्गिज़) नहीं भाते। ३३. बेशक अल्लाह ने आदम और नूह को, इब्राहीम और अ़िम्रान के खान्दान को (जो मसीह के नाना थे[२६]) बरगुज़ीदा किया था[२७] ३४. उन में से एक दूसरे की औलाद थे। और अल्लाह (हर एक की बातें) सुनता और जानता है ३५. (याद करो) जब अ़िम्रान की औ़रत (मसीह की नानी हन्ना) ने कहा था कि ऐ मेरे अल्लाह! मैं ने अपने पेट का बच्चा (ख़ालिस) तेरे लिये नज़्र माना है पस तू मुझ से कुबूल कर, बेशक तू (हर बात) सुनने वाला और (हर ख़याल) जानने वाला है[२८] ३६. तो जब उस ने लड़की जनी तो (हसरत से) बोली कि ऐ मेरे अल्लाह! मैं ने तो लड़की जनी (और नज़्र मानते समय बेटे की आशा थी) और अल्लाह को मालूम था जो जनी थी। और (कहा) कि लड़की, लड़के के समान नहीं[२९] (हुआ करती) और उस का नाम मैं ने मर्‌यम (अ़िबादत करने वाली) रखा है और मैं उस को और उस की औलाद को शैतान मर्दूद से तेरी पनाह में देती हूँ ३७. पस अल्लाह ने (उस के इख़्लास के अनुसार) उस को भली-भाँति कुबूल किया और अच्छी तरह से पाला।

....

२४:- शाने नुज़ूल:- कुछ लोगों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा: अल्लाह की क़सम! हम तो अल्लाह को बहुत दोस्त रखते हैं, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। इस आयत में यह बताया गया कि अल्लाह का दोस्त केवल वह हो सकता है जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की आज्ञा माने, बग़ैर इस के वह अल्लाह का दोस्त हर्गिज़ नहीं हो सकता। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जब तक कोई शख़्स अपनी समस्त इच्छाओं को मेरी शरीअ़त पर निछावर न कर दे, वह मोमिन नहीं हो सकता"। बुतों की पूजा करने वाले दावा करते हैं कि हम अल्लाह को खुश रखने ही के लिये उन की पूजा करते हैं, क्यों कि यह अल्लाह के प्यारेऔर दुलारे हैं, उन को पूजने से अल्लाह राज़ी होता है। यहूद का कहना है कि चूँकि हम पैग़ंबर की औलाद हैं इस लिये अल्लाह के प्यारे हैं। इसी प्रकार नसारा का भी दावा है कि हम हज़रत ईसा अ़लै० के ख़ान्दान से हैं और रूह हैं, उन के पूजने से अल्लाह राज़ी होता है। अल्लाह तआ़ला ने इन सभी लोगों के दावा को रद्द करते हुये फ़रमाया कि जो मेरी रज़ा चाहते हैं वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पैरवी करें, वर्ना सब अपने दावे में झूठे हैं। इस में ताज़िया बनाना, ग्यारहवीं करना, तीजा और फ़ातिहा सब शामिल है। मतलब यह है कि अल्लाह की रज़ा केवल उसी काम के करने में है जिस का आदेश नबी ने दिया हो, वर्ना उस काम के करने में सवाब की जगह अज़ाब होगा।

२५. इस का मतलब यह है कि अगर तुम्हारा दावा यह है कि अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो उस के रसूल के आदेशों की पैरवी करो इसी का नाम अल्लाह की मुहब्बत है (इब्ने कसीर) इस आयत को सामने रख कर उन मुक़ल्लिदों को सोचना चाहिये जो अपने इमाम या मुजतहिद की आँखें मूँद कर पैरवी करते हैं और सहीह हदीसों को भी उन की राय के ख़िलाफ़ ठुकरा देते हैं और बड़े दावे से कहते हैं कि हमारे इमाम का फ़त्वा इस सहीह हदीस के ख़िलाफ़

➲है इस लिये इस हदीस को हम नहीं मानते। हालाँकि उन के इमाम और मुजतहिद इन्हीं हदीसों को सामने रख कर फ़तवा देते थे और कहा करते थे कि अगर सहीह हदीस मिल जाये तो वही हमारा मज़हब है। (वहीदी) "हुज्जतुल्लाहिल् बालिग़ा" में शाह साहब ने चारों इमामों के बहुत से अक़्वाल नक़ल किये हैं।

२६. कुछ जाहिलों ने हज़रत आदम अ़लै० की नबुव्वत का इन्कार किया है, हालाँकि इस आयत में उन का नबी होना साफ़ ज़ाहिर है और जो लोग इन्कार करते हैं उन का दावा कुफ़्र है और यह आयत उन पर हुज्जत है। सहीह इब्ने हिब्बान में हज़रत अबू ज़र रज़ि से रिवायत है कि हज़रत आदम ऐसे नबी हैं जिन से अल्लाह ने कलाम किया और उन की आयु ९६० वर्ष की थी। बाज़ दूसरी रिवायतों से १००० वर्ष भी साबित हैं। हज़रत नूह अ़लै० मश्हूर नबी हैं, बहुत ज़्यादा रोने और अल्लाह से फ़रियाद करने की वजह से "नूह" कहलाये। हज़रत इब्राहीम अ़लै० से दो शाखें निकलीं। पहली शाख़ इस्हाक़ अ़लै० से हज़रत ॲीसा तक नबुव्वत का सिलसिला चला और दूसरी शाख़ हज़रत इस्माअ़ील अ़लै से अन्तिम संदेष्टा मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हुये। 'ॲिम्रान' दो बुज़ुर्गों का नाम है। एक तो हज़रत मूसा और हारून के पिता जी हैं और वह ॲिम्रान बिन बसीर हैं जो कि लावा बिन याक़ूब की नस्ल से हैं। दूसरे बुज़ुर्ग हज़रत मर्यम अ़लै० के वालिद हैं जो यहूदा बिन याक़ूब की नस्ल से हैं। हज़रत ॲीसा अ़लै० भी हज़रत इब्राहीम की औलाद से हैं (इब्ने कसीर) इन दोनों ॲिम्रान नाम के बुज़ुर्गों में एक हज़ार आठ सौ वर्ष का अन्तर है (मवाहिब)

२७. शाने-नुज़ूल:- यहूदियों का हमेशा से यह बेहूदा दावा था कि हम चूँकि अंबिया की नस्ल और औलाद से हैं इस लिये हम ही अल्लाह के प्यारे और राज दुलारे हैं, इन्हीं के दावे की रद्द में यह आयत नाज़िल हुयी। इस अयत में यह स्पष्ट कर दिया है कि नबी की औलाद को उन के इख़्लास और नेकी की वजह से अच्छा बताया है, अगर तुम भी उन ही जैसा बनना चाहते हो तो इख़्लास पैदा करो, वर्ना ज़बानी दावे कौन सुनता और मानता है। यहाँ पर ख़ास तौर पर ॲीसाई फ़िर्क़ा के रद्द की भूमिका है (सनाई/मआ़लिम)

२८. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "बच्चा अपने अ़क़ीक़ा में रहन रहता है, उस के पैदा होने से सातवें दिन उस की तरफ़ से जानवर ज़ब्ह किया जाये और उस का नाम रखा जाये और सर मुंडाया जाये (अहमद) हज़रत मर्यम लाखों बेटों से अफ़्ज़ल थीं। जब उन की माँ उन को बैतुल-मुक़द्दस के मुजाविरों के पास ले कर आयीं तो पहले तो उन्हों ने इन्कार किया कि लड़की को रखने का नियम नहीं है। जब मर्यम की माँ ने अपना सपना बयान किया कि अल्लाह तआ़ला ने इस लड़की को क़ुबूल किया है और मस्जिद में ले जाने का हुक्म दिया है तब उन्हों ने स्वीकार किया। कुरा में हज़रत ज़करिया का नाम निकला, चुनान्चे वह उस लड़की की देख-भाल करने लगे और मस्जिद के एक बालाख़ाने में उन को रख दिया। वह देखते थे कि बेमौसम ही उन के पास फल आते हैं।

इस आयत से अल्लाह के वलिय्यों की करामत का सबूत मिलता है। और अहले सुन्नत का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि जब अल्लाह तआ़ला चाहे तो वलिय्यों से करामत ज़ाहिर होती है (वहीदी) मगर वह करामत उन के इख़्तियार से बाहर है, वह तो जब अल्लाह का करम होता है तब ज़ाहिर होता है, वर्ना लोग अपनी मर्ज़ी और इख़्तियार से कुछ भी नहीं कर सकते।

२९. यहाँ पर तश्बीह उल्टी है, अस्ल जुम्ला यूँ है "लैसल् उन्सा कज़्ज़-करि" (सनाई) कुछ उलमा का कहना है कि तर्जुमा यूँ हे गा "लड़का इस लड़की की बराबरी नहीं कर सकता" अर्थात लड़कों से यह लड़की अच्छी है (मवाहिब)

حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۖ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا
الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۖ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى

(चूँकि मरयम का बाप नहीं था इसलिय) ज़करिय्या ने उस की किफ़ालत (देख-भाल) की। जब कभी ज़करिय्या उस के पास चौबारा में जाता तो (कुछ न कुछ) खाना उस के पास➲

لَكِ هٰذَا ۖ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۖ إِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۚ إِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ۝ فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ ۙ أَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّ حَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ أَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِيْ عَاقِرٌ ۚ قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ۝ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْ آيَةً ۚ قَالَ آيَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا رَمْزًا ۚ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّ

पाता (यह देख कर) ज़करिय्या नें पूछा कि (ऐ) मरयम! यह खाना तुम को कहाँ से आता है? मरयम ने कहा: यह अल्लाह के हाँ से है[३०]। (बेशक) अल्लाह जिस को चाहे बे अन्दाज़ा रोज़ी देता है ३८. उसी समय ज़करिय्या ने अपने रब से दुआ की कि मेरे अल्लाह! (जिस प्रकार तू मरयम को बेगुमान खाने आदि देता है) मुझ को (भी) अपने हाँ से नेक औलाद बख़्श! बेशक तू दुआ सुनने वाला है। ३९. पस (उस की दुआ करनी थी) कि फ़रिश्ते ने उसे जब वह अपनी नमाज़ पढ़ने के स्थान पर खड़ा था पुकारा कि अल्लाह तुझे यह्या की शुभ सूचना देता है वह अल्लाह के कलिमे की तस्दीक़ करने वाला और सर्दार और (अल्लाह की ॲिबादत में) घिरा हुआ और नेक बन्दों में से अल्लाह का नबी हो गा[३१] ४०. बोला ऐ मेरे अल्लाह! मेरे हाँ लड़का कैसे होगा, हालाँकि मैं (निहायत) बुढ़ापे को पहुंच चुका हूँ और मेरी औरत बाँझ है। (अल्लाह के फ़रिश्ते ने) कहा कि (हक़ीक़त) ऐसी ही है (लेकिन) अल्लाह जो चाहे कर देता है ४१. (ज़करिया ने) कहा कि मेरे रब! मेरे लिये कोई निशानी बता। कहा कि तेरी निशानी यह हो गी कि तू तीन रोज़ लोगों से बोल नहीं सके गा[३२] लेकिन इशारे से। और अपने रब का ज़िक्र बहुत किया कर।

....

३०. अल्लामा इब्ने कसीर ने मुजाहिद व ॲिक्रमा वग़ैरह से रिवायत की है कि जाड़ों के फल गर्मियों में और गर्मियों के फल जाड़ों में पाये। जब ज़करिय्या ने मरयम की यह करामत देखी कि बेमौसम का फल अल्लाह के पास से आता है तब ज़करिय्या जो पूरी उम्र औलाद से ना उम्मीद थे आशावान हुये कि शायद बेमौसम का फल मुझ को भी मिले, तब उस जगह औलाद की दुआ की (मवाहिब)

३१. जब ज़करिय्या मेहराब में नमाज़ पढ़ते थे तो इसी हालत में जिब्रील ने आवाज़ दी कि ऐ ज़करिय्या: अल्लाह तुम्हें यह्या की बशारत देता है जो अल्लाह के कलिमे (ॲीसा अ़लै०) की तस्दीक़ करे गा। तस्दीक़ करने से मुराद यह है कि वह "रूहुल्लाह" है। हज़रत ॲीसा को "कलिमा" इस लिये कहा गया है कि वह बग़ैर बाप के लफ़्ज़ "कुन" से पैदा किये गये हैं, जैसा कि दूसरी आयतों में ज़िक्र है। "सय्यिद" का अर्थ यह है कि जिस की पैरवी की जाये, यानी लोग उन की पैरवी करें गे। 'हसूर' का अर्थ है "अपने आप को महिलाओं से दूर रखने वाला"। रबीअ़ बिन अनस ने कहा कि हज़रत यह्या ने सब से पहले ॲीसा अ़लै० की तस्दीक़ की। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि यह्या और ॲीसा अ़लै० ख़ालाज़ाद भाई हैं। हज़रत ॲीसा के उठाये जाने से पहले हज़रत यह्या अ़लै० को क़त्ल कर दिया गया था (इब्ने कसीर)

३२. चुंनान्चे ऐसा ही हुआ कि जब हज़रत ज़करिय्या लोगों से बोलना चाहते तो ठीक-ठाक होने के बावजूद न बोल

पाते थे। इस सारे क़िस्से से यह बात स्पष्ट हो गयी कि मसीह और उन के ख़ान्दान के तमाम ही लोग किस प्रकार अल्लाह के सामने झुकते और अपनी आ़जिज़ी का इज़्हार करते थे और अल्लाह की तरफ़ से उन को ख़ुदाई हुक्म मिलता था। उन में से न कोई अल्लाह था और न ही अल्लाह का बेटा (सनाई) अल्लाह के जितने भी नेक बन्दे गुज़रे हैं सब का यही हाल था। उन में से कभी भी किसी ने ख़ुदा या ख़ुदा का बेटा होने का दावा नहीं किया और न ही कभी उन्हों ने किसी से यह कहा कि उन की पूजा-बन्दगी करो। मगर दुःख की बात यह है कि लोगों ने उन को ख़ुदाई में साझा दार बना लिया। और उन की पूजा शुरू कर दी। आज कल मुसलमान भी बहुत से नेक बन्दों की क़ब्रों की इ़बादत कर रहे हैं, उन का मर्तबा उन से कहीं आगे बढ़ा रहे हैं, उन की नज़्र व नियाज़ की जाती है, उठते-बैठते उन के नाम की दुहाई दी जाती है, उन को लाभ-हानि पहुंचाने का मालिक समझा जाता है, उन की क़ब्रों को सजाया-संवारा जाता है, झाड़ फ़ानूस, अगर की बत्तियाँ वग़ैरह सुलगाई जाती हैं। मुसलमानों का यह तौर-तरीक़ा, यहूद व नसारा का रास्ता नहीं तो और क्या है?

سَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ۝ وَإِذْ قَالَتِ الْمَلَٰٓئِكَةُ
يَٰمَرْيَمُ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفَاكِ
عَلَىٰ نِسَآءِ الْعَٰلَمِينَ ۝ يَٰمَرْيَمُ اقْنُتِي لِرَبِّكِ
وَاسْجُدِي وَارْكَعِي مَعَ الرَّٰكِعِينَ ۝ ذَٰلِكَ
مِنْ أَنۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنتَ
لَدَيْهِمْ إِذْ يُلْقُونَ أَقْلَٰمَهُمْ أَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ص
وَمَا كُنتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ۝ إِذْ قَالَتِ
الْمَلَٰٓئِكَةُ يَٰمَرْيَمُ إِنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ
اسْمُهُ الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيهًا فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۝ وَيُكَلِّمُ
النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَمِنَ الصَّٰلِحِينَ ۝
قَالَتْ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي
بَشَرٌ ۖ قَالَ كَذَٰلِكِ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ إِذَا قَضَىٰٓ

और पाकी से सुब्ह व शाम उस को याद किया कर[३३] ४२. जब फ़रिश्ते ने कहा: ऐ मर्यम! अल्लाह ने तुझे चुना है और (कुफ़्र व शिर्क की बुराइयों से) पाक किया है और दुनिया की (मौजूदा) औ़रतों पर तुझे बुज़ुर्गी दी है ४३. ऐ मर्यम! अपने रब की इ़बादत में लगी रह (विशेष कर) नमाज़ (तू) नमाज़ पढ़ने वालों के साथ (जमाअ़त में) पढ़ा कर[३४] ४४. यह ग़ैब की सूचनायें हम तेरी तरफ़ भेजते हैं। वर्ना तू उन के पास न था जब वह अपने क़लम डालते थे कि कौन उन में से मर्यम का कफ़ील हो और न तू उस समय उन के पास था जब वह आपस में झगड़ रहे थे[३५]। ४५. जब फ़रिश्ते ने मर्यम से कहा कि अल्लाह तुझे अपने एक हुक्म की ख़ुशख़बरी देता है (कि उस के हुक्म से तेरे गर्भ में एक बच्चा पैदा हो गा) उस का नाम मसीह बिन मर्यम हो गा दुनिया और आख़िरत में बड़ी इ़ज़्ज़त वाला और मुक़र्रब बन्दों में से होगा ४६. और गहवारा (यानी छोटी आयु ही में) और बुढ़ापे में लोगों से (हिदायत की) बातें करे गा और नेक लोगों में से हो गा[३६] ४७. (मर्यम चूँकि कुँवारी थी इस लिये घबरा कर बोली) मेरे अल्लाह! मुझे लड़का कैसे हो गा (जब कि) मुझ को तो किसी मर्द ने हाथ से नहीं छुवा। (फ़रिश्ते ने कहा) कि बात यही है अल्लाह जो चाहता है[३७] पैदा कर देता है।

....

३३. अक्सर मुफ़स्सिरीन का कहना है कि हज़रत ज़करिय्या की ज़बान बन्द कर दी गयी थी और वह लोगों से बात नहीं

कर पाते थे, लेकिन अल्लाह की याद, दुआ इस्तिग़फ़ार कर सकते थे। यह ज़बान बन्दी इस लिये थी कि वह केवल अल्लाह को याद करें और उन की ज़बान किसी और बात में मश्ग़ूल न हो। अ़ल्लामा इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि इस का अर्थ यह है "तुझ को बोलने की ताक़त न हो गी हालाँकि तू तन्दुरुस्त होगा"। इमाम नसई की एक रिवायत में है कि उस शरीअ़त में केवल दो वक़्त की ही नमाज़ें फ़र्ज़ थीं यानी फ़ज्र और अ़स्र की। इस आयत न०४१ में "सुब्ह-शाम उस को याद किया करो" में सुब्ह से फ़ज्र और शाम से अ़स्र की नमाज़ मुराद है। (मवाहिब)

३४. यहूदियों में से चन्द ने नमाज़ में रुकूअ़ करना छोड़ दिया था, इस लिये हुक्म दिया कि नमाज़ के तरीक़ा में उन लोगों के साथ रहना जो रुकूअ़ करते हैं (बयानुल् क़ुरआन)

३५. मस्जिद के बुज़ुर्गों ने जब हज़रत मरयम की माँ का सपना सुना तो सभी लोगों ने उन को अपनालेने की इच्छा प्रकट की, लेकिन फ़ैसला क़ुरा पर ठेहरा। हर एक ने अपना क़लम (जिस से तौरात लिखते थे) बहते हुये पानी में डाला, सब के क़लम तो बहाव की ओर बह गये लेकिन ज़करिय्या का क़लम बहाव के उल्टा ऊपर की तरफ़ बहा, चुनान्चे इस प्रकार मरयम की देख-रेख उन के ज़िम्मा ठेहरी।

३६. हज़रत अ़ीसा अ़लै० के बारे में पहले के नबिय्यों ने भी बशारत दी थी कि मसीह पैदा हों गे, जिन से इस्राईल को तरक़्क़ी हासिल हो गी। 'मसीह' का अर्थ यह है कि "जिस के हाथ लगाने से बीमार अच्छे हो जायें" या इस का एक दूसरा अर्थ यह भी है कि "जिस का घर न हो' हमेशा चलने-फिरने ही में लगा रहे"। हज़रत अ़ीसा को यहूदी नहीं मानते हैं, लेकिन जब दज्जाल पैदा हो कर अपने आप को मसीह कहलवायेगा तो यहूद उस को मसीह मान लेंगे।

३७. आयत न०४० में हज़रत ज़करिय्या के लिये "यफ्-अ़लु" कहा और यहाँ आयत ४७ में मरयम के लिये यख़्लुक़ु" प्रयोग किया गया है। पहले का अर्थ है "जो चाहता है करता है" और दूसरे का "जो चाहता है पैदा करता है"। ऐसा इस लिये कहा है कि किसी को शुब्हा न हो और जान ले कि अल्लाह बग़ैर नुत्फ़े के भी पैदा करने पर ताक़त रखता है और आगे इसी बात को और भी ज़्यादा खोल कर बयान कर दिया कि "जब कोई चीज़ वह पैदा करना चाहता है तो बस इतना कह देता है कि "हो जा" बस वह हो जाती है"। और हज़रत यह्या की पैदाइश में इतना तो था ही कि एक कमज़ोर बुढ़ा और एक बाँझ बुढ़िया मौजूद थी, अगर्चे उन को इस उम्र में एक अजूबा औलाद पैदा होना था, मगर यहाँ तो हज़रत मरयम के मामले में बाबा आदम ही निराला था, उन के न तो शौहर था और न ही किसी ने हाथ लगाया था, इसी लिये मरयम के लिये "यख़्लुक़ु" और ज़करिय्या के लिये "यफ़अ़लु" इस्तेमाल किया गया (मवाहिब)

أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ ۝ وَيُعَلِّمُهُ
الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْإِنجِيلَ ۝ وَرَسُولًا
إِلٰى بَنِىٓ إِسْرَآءِيلَ ۝ أَنِّى قَدْ جِئْتُكُم بِـَٔايَةٍ
مِّن رَّبِّكُمْ ۙ أَنِّىٓ أَخْلُقُ لَكُم مِّنَ الطِّينِ كَهَيْـَٔةِ
الطَّيْرِ فَأَنفُخُ فِيهِ فَيَكُونُ طَيْرًۢا بِإِذْنِ اللّٰهِ ۖ وَ
أُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ وَأُحْىِ الْمَوْتٰى بِإِذْنِ اللّٰهِ ۖ
وَأُنَبِّئُكُم بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَدَّخِرُونَ ۙ فِى

जब कोई चीज़ (वह) करना चाहता है तो उस के लिये यही कहता है कि हो जा! बस वह हो जाती है[३८] ४८. और उस को किताब और हिक्मत (तहज़ीब व अख़्लाक़) तौरात और इन्जील सिखा देगा ४९. और (वह) बनी इस्राईल की तरफ़ रसूल हो गा (इस पैग़ाम के साथ) कि मैं तुम्हारे अल्लाह की तरफ़ से रिसालत की यह निशानी लाया हूँ कि मिट्टी से जानवर की शक्ल तुम्हारे सामने बना कर उस में फूंकता हूं तो वह अल्लाह के हुक्म से परिन्दा बन जाता है, और मैं पैदाइशी अन्धे और कोढ़ियों को अच्छा करता हूँ और मुर्दों को (केवल)

بُيُوْتِكُمْ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۞ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ
التَّوْرٰىةِ وَلِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ
وَجِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۣ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ
اَطِيْعُوْنِ ۞ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ
هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۞ فَلَمَّآ اَحَسَّ عِيْسٰى مِنْهُمُ

अल्लाह के हुक्म से ज़िन्दा करता हूँ, और तुम को बतला देता हूँ जो तुम खाते हो और जो अपने घरों में जमा करते हो। बेशक इस में तुम्हारे लिये (मेरी नबुव्वत पर) निशानी है अगर तुम मानने वाले हो[३९] ५०. और मैं तौरात की जो मुझ से पहले आयी हुयी हैं तस्दीक़ करता हूँ[४०] और इस लिये भी आया हूँ कि कुछ वस्तुयें जो तुम पर हराम हैं (अल्लाह की तरफ़ से) तुम को हलाल बतलाऊँ और तुम्हारे अल्लाह की तरफ़ से निशानी लाया हूँ। पस तुम (अकेले) अल्लाह से डरो और (शरीअ़त में) मेरी पैरवी करो (और यह मत ख़याल करो कि मैं ख़ुदाई में कोई हिस्सा रखता हूँ) ५१. बेशक अल्लाह मेरा और तुम्हारा पालनहार है[४१] इस लिये उसी की अ़िबादत करो। यही राह सीधी है (नजात तक पहुंचाने वाली है) ५२. जब मसीह-ने

....

३८. इस प्रकार की आयतें फ़लसफ़ियों और गुमराह लोगों के मज़हब का रद्द करती हैं जो हदीस पर क़ियास कर के क़दीम को भी सबब का पाबन्द समझते हैं। उन जाहिलों का कहना है कि जब कोई चीज़ सिरे से मौजूद ही नहीं है तो अल्लाह का उस को मुख़ातब कर के कहना कि "हो जा" यह क्या माना है? हालाँकि इस का साफ़ उत्तर यह है कि अल्लाह के अ़िल्म में तो वह मौजूद है, यानी उस को हुक्म होता है कि ज़ाहिर में भी मौजूद हो जा (माजिदी) हज़रत मसीह के मोजिज़ों (चमत्कार) का जहाँ-जहाँ भी बयान हुआ है वहाँ "अल्लाह के हुक्म से" ज़रूर ज़िक्र है। इस का मतलब यह है नबी, वली सब के सब अल्लाह के मुहताज हैं। अल्लाह का हुक्म न हो तो वह कुछ भी नहीं कर सकते और यही अर्थ है कलिम-ए-तौहीद "लाइला-ह-इल्लल्लाहु" का।

३९. यहाँ पर "कोढ़ी और अन्धा" का विशेष रूप से इस लिये ज़िक्र है कि यह दोनों बीमारियाँ ऐसी थीं जिन्हों ने अच्छे-अच्छे डाक्टरों को थका दिया था और वह नहीं ठीक कर पाते थे। और हज़रत अ़ीसा को नबुव्वत भी ऐसे काल में मिली कि तिब (दवाओं) का उस ज़माना में बड़ा चलन था। हज़रत अ़ीसा ने एक बार पचास हज़ार बीमारों को इस शर्त पर अल्लाह के हुक्म से ठीक किया था कि वह तौहीद को अपनायेंगे (मवाहिब) इब्ने कसीर का कहना है कि 'अक्मह' उसे कहते हैं जिसे दिन में दिखाई न दे और रात को दिखाई दे। और दूसरे उलमा का कहना है कि जो पैदाइशी अन्धा (नेत्र-हीन) हो उसे कहा जाता है और यही अर्थ सहीह है। 'अब्रस' खाल का सफ़ेद हो जाना एक बहुत मशहूर रोग है जिसे सभी जानते हैं।

४०. हज़रत अ़ीसा और मूसा अ़लै० के दर्मियान एक हज़ार नौ सो पचहत्तर (१९७५) वर्ष की दूरी है। हज़रत मूसा की शरीअ़त में तो कुछ चीज़ें शरीअ़त की बुनियाद पर हराम थीं जैसे, ज़िना, चोरी सुवर का गोश्त वग़ैरह। लेकिन कुछ वस्तुयें सज़ा और दन्ड के रूप में उन पर हराम की गयी थीं, जैसे चर्बी का खाना, ओझ की पतली चर्बी, मछली, ऊँट का गोश्त वग़ैरह। शरीअ़त जो हज़रत अ़ीसा लाये थे उस में हज़रत मूसा की शरीअ़त के मुक़ाबले में नर्मी और छूट थी (बैज़ावी) चुनान्चे हज़रत अ़ीसा अ़लै० की शरीअ़त में वह चीज़ें हलाल कर दी गयी थीं जो मूसा की शरीअ़त में दन्ड के तौर पर हराम थीं।

४१. मतलब यह है कि अल्लाह के आदेशों का पालन कर के, जिन वस्तुओं को हराम किया है उन से बच-बचा कर अल्लाह की पूरी-पूरी अ़िबादत और इताअ़त करो। और यह उस हदीस का भी अर्थ है जिस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तू कह! मैं अल्लाह पर ईमान लाया, फिर इसी पर जमा रह" (अहमद)

الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنْصَارِيٓ إِلَى اللّٰهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ
نَحْنُ أَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ آمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُوْنَ ۞
رَبَّنَآ آمَنَّا بِمَآ أَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا
مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ۞ وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ۖ وَاللّٰهُ خَيْرُ
الْمٰكِرِيْنَ ۞ إِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰٓى إِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ
وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا
إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ
بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۞ فَأَمَّا
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَأُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۫ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۞ وَأَمَّا
الَّذِيْنَ آمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ أُجُوْرَهُمْ ۗ
وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۞ ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ

उन से इन्कार ही पाया तो (अपने बन्दा होने को ज़ाहिर करने के लिये) कहा कि कौन है मेरा सहायक अल्लाह की राह में? हवारी (जो उस समय मसीह के मुख़्लिस दोस्त थे) बोले कि हम अल्लाह के दीन के मददगार हैं[४२] हम अल्लाह को मानते हैं, इसलिये तू गवाह रह कि हम ताबेदार हैं ५३. (यह कह कर अल्लाह की तरफ़ झुक कर दुआ करने लगे) ऐ हमारे अल्लाह! हम तेरी उतारी हुयी किताब को मानते हैं (तेरे) रसूल के ताबेदार हैं, पस तू हम को गवाही देने वालों में लिख रख[४३] ५४. और यहूदियों ने (मसीह को दुःख पहंचाने के लिये) पोशीदा दाँव किये और अल्लाह ने उन से दाँव किया। और अल्लाह सब दाँव करने वालों से अच्छा है। ५५. जब अल्लाह ने कहा: ऐ ईसा! मैं तुझे फ़ौत करने वाला[४४] और अपनी तरफ़ उठाने वाला और उन काफ़िरों की (बदज़बानी) से (कुरआन द्वारा) पाक करने वाला और तेरे पैरोकारों को इनकारियों पर क़ियामत तक ग़ालिब रखने वाला हूँ[४५], फिर (मरने के बाद) मेरी ओर ही तुम को आना है पस जिस-जिस बात में तुम झगड़ते हो मैं तुम में फ़ैसला करूँ गा (मोमिनों को सवाब दूँ गा और काफ़िरों को दन्ड) ५६. पस काफ़िरों को दुनिया और आख़िरत (दोनों में निहायत सख़्त) अज़ाब दूँ गा और उन का कोई भी मददगार न होगा (५७) और जो (तुम्हारी पैग़म्बरी पर) ईमान लाये और नेक अमल करते हैं तो अल्लाह उन को उन की नेकियों का पूरा बदला देगा। और अल्लाह को ज़ालिम लोग नहीं भाते ५८. (ऐ मुहम्मद!) यह क़िस्सा जो हम तुझ को सुनाते हैं।

....

४२. यह वह लोग थे जो सर्व प्रथम हज़रत ईसा पर ईमान लाये थे और यह बारह की तायदाद में थे। यह "हवार" शब्द से बना है जिस का अर्थ है "ख़ालिस सफ़ेदी"। कुछ मुफ़स्सिरीन का कहना है कि यह लोग धोबी थे जो कपड़ों को धो कर सफ़ेद करते थे। अल्लामा इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि सहीह बात तो यह है कि 'हवारी' मददगार को कहते हैं, जैसा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "हर नबी के वास्ते हवारी हुआ करते थे और मेरे हवारी ज़ुबैर हैं" (बुख़ारी, मुस्लिम)। यह १२ हवारी ग़ैर क़ौम में से थे, बनी इस्राईल में से तो बहुत ही कम ईमान लाये थे।

४३. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने 'शाहिदीन' का अर्थ "नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत" लिया ➲

➲है और इब्ने कसीर ने इसी को सहीह सनद से रिवायत भी किया है।

४४. इस आयत के माना में उलमा का क़रीब-क़रीब इत्तिफ़ाक़ है कि यहाँ मौत मुराद नहीं, बल्कि दुनिया से ज़िन्दा उठाना मुराद है, लेकिन हम ने यहाँ "मौत देने वाला" तर्जुमा किया है (और यह मौत उस समय आये गी जब वह आख़िर ज़माना में आसमान से दुनिया में उतरें गे) इस आयत से यह नतीजा निकालना कि मसीह अ़लै० इस समय मुर्दा और मरे हुये हैं किसी प्रकार सहीह नहीं हैं। हज़रत अ़ीसा अ़लै० की वफ़ात का वाक़िआ़ इस्लामी और नसारा की किताबों में इस प्रकार बयान किया गया है कि हज़रत अ़ीसा पर जब चारों तरफ़ से हम्ला शुरू हुआ तो उन के एक चेले यहूद अकरचूती ने उन को पकड़वाने पर रिश्वत ले ली और एक स्थान पर हज़रत अ़ीसा को पकड़वाना चाहा तो अल्लाह तआ़ला ने उन को सुरक्षा के साथ ऊपर उठा लिया और एक मुख़ालिफ़ शख़्स को उन्हीं की शक्ल का कर के सामने खड़ा कर दिया। क़ुरआन मजीद की सूरः निसा आय १५७ में इसी तरफ़ इशारा है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने उस शख़्स को जो हज़रत अ़ीसा को पकड़वाने के लिये घर के अन्दर गया था, अ़ीसा अ़लै० की शक्ल का बना दिया और उन को मकान की छत के झरोखे से निकाल कर आसमान पर उठा लिया। जब उस शख़्स को (जिस को मसीह की शक्ल का अल्लाह ने बना दिया था) फाँसी दी गयी तो उस ने ऐसी घबराहट का इज़हार किया कि नबी को तो जाने दीजिये आ़म आदमी भी नहीं करे गा (सनाई) बुख़ारी, मुस्लिम में यह हदीसें मौजूद हैं कि हज़रत अ़ीसा अ़लै० क़ियामत के क़रीब आसमान से उतरें गे और हमारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शरीअ़त के अनुसार लोगों में तबलीग़ करेंगे और दज्जाल को क़त्ल करेंगे।

४५. इस आयत में यह वादा दिया गया है कि ऐ अ़ीसा! तुम अपने ख़ास समय पर (और लोगों की तरह) अपनी मौत वफ़ात पाओगे तुम्हें सूली-फाँसी नहीं दी जा सके गी। दूसरा वादा आसमान की तरफ़ उठा लेने का पूरा किया गया है जैसा कि सूरः निसा की आय नं०१५७ में हैं "उन्हों ने न उन को क़त्ल किया और न ही सूली पर चढ़ाया लेकिन उन को शुब्हा हो गया"।

مِنَ الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ۞ اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى
عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ
لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۞ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ
الْمُمْتَرِيْنَ ۞ فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْ بَعْدِ مَا
جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَ
اَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ قف
ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ۞
اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا
اللّٰهُ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۞ فَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِالْمُفْسِدِيْنَ ۞ قُلْ يٰۤاَهْلَ
الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۭ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ

(अल्लाह की) निशानियाँ (हैं) और हकीमाना नसीहत है[४६] ५९. (बि बाप पैदा होने में) मसीह की मिसाल (और मुशाबिहत) अल्लाह के नज़दीक आदम की सी है[४७] जैसे उस को मिट्टी से बनाया फिर उस को हुक्म दिया कि मौजूद हो जा! पस वह हो गया ६०. (इसी प्रकार मसीह को मरयम के गर्भ में अल्लाह ने केवल अपने हुक्म से पैदा किया, पस) सच्ची बात तेरे रब की तरफ़ से है पस तुम हर्गिज़ शक करने वालों में से मत हो जाना ६१. फिर जो कोई अ़िल्म (और अक़्ल की बात) आने के बाद तुझ से कजबहसी करे (और मसीह को अल्लाह का बेटा बनाने पर अड़े) तो तू कह दे कि आओ! (एक अन्तिम फ़ैसला भी सुनो) हम अपने बेटे और तुम्हारे बेटे, और अपनी बेटियाँ और तुम्हारी बेटियाँ और अपने भाई बन्धु और तुम्हारे भाई बन्धु बुलायें, फिर आ़जिज़ी से झूठों पर➲

अल्लाह की लानत करें[४८] (अल्लाह खुद ही फ़ैसला कर देगा) ६२. बेशक यही बयान (जो मसीह के बन्दा होने का हम ने तुम को सुनाया है) सहीह है। और अल्लाह के अ़लावा कोई भी माबूद नहीं। और बेशक अल्लाह ही बड़ा

اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـًٔا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ فَاِنْ تَوَلَّوْا

ग़ालिब, बड़ी हिक्मत वाला है ६३. फिर अगर मुंह फेरें तो अल्लाह फ़साद करने वालों को भली भाँति जानता है। ६४. तू कह दे कि ऐ किताब वालो! (मन घड़त बातें छोड़ कर) एक बात की ओर आओ जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान बराबर है (वह यह है) कि हम तुम अल्लाह के अ़लावा किसी की अ़िबादत न करें और न ही उस के साथ किसी को शरीक ठहरायें और न ही कोई हम में से अल्लाह के अ़लावा किसी दूसरे को (मालिक और) पालनहार समझे[४९]। फिर भी अगर (यह लोग) मुंह फेरें

....

४६. इस हिक्मत भरी नसीहत से मुझ को और तमाम सुनने वालों को भलीभाँतिं मालूम हो सकता है कि मसीह और उस की माँ बल्कि उस का सारा ख़ान्दान भी दूसरे इन्सानों की तरह अल्लाह के बन्दे और मुख़्लिस बन्दे थे, उन के अन्दर कोई ऐसी विशेष्ता न थी जिस की वजह से वह खुदा या खुदा का बेटा बन सकें (सनाई) सच्चे खुदा की शान यह है कि न वह बाप है और न बेटा और न कोई उस की बराबरी का। जब यह हक़ीक़त है तो मसीह उस का बेटा कैसे हो सकता है।

४७. आदम का बग़ैर माँ-बाप के पैदा किया जाना अ़जीब, बल्कि उस से भी बढ़ कर अ़जीब है, इस लिये यहाँ यह तश्बीह अ़जीब से अ़जीब तर के साथ है ताकि बहस करने वाले का मुंह ही बन्द हो जाये (मवाहिब)

४८. जब क़बीला नजरान के यहूदियों के वफ़्द (प्रतिनिधि मन्डल) ने हज़रत अ़ीसा के मामले में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ हज़रत झगड़ा किया तो आप ने उन को मुबाहिला के लिये बुलाया। उन्होंने कहा कि थोड़ा सा मौक़ा दे दें ताकि हम इस मामले में ग़ौर कर लें फिर हम आप के पास आयेंगे। उस गिरोह के सर्दार ने कहा कि तुमने मुहम्मद की नबुव्वत को जान लिया है और तुम यह भी जानते हो कि जिस ने भी नबी के साथ शर्त लगाई है वह अवश्य हलाक हुआ है। यह सुन कर वह लोग आप के पास आये, उस समय आप उन से मुबाहिला के लिये ही निकले थे और आप के साथ अ़ली, फ़ातिमा और हसन, हुसैन रज़ि० भी थे। आप ने उन सब से फ़रमाया कि जब मैं दुआ़ करूँ गा तो तुम सब आमीन कहना। यह देख कर नज्रान वालों ने मुबाहिला करने से इन्कार कर दिया और इस बात पर सुलह कर ली कि हम टेक्स (जिज़्या) दें गे (दलाइलुन्नुबुव्वत) इब्ने इस्हाक़ की रिवायत में है कि नजरान के नसारा का प्रतिनिधि मन्डल ६० सवारों के साथ आया था उन में से १४ लोग ऊँचे ख़ान्दान से थे।

४९. इस आयत में उन लोगों के ख़याल को रद्द किया गया है जो अल्लाह और रसूल के आदेशों को छोड़ कर अपने अपने पीरों और आ़लिमों के आदेशों पर चलने लगे, उन्हों ने जो हलाल कर दिया उसे हलाल और जो हराम कर दिया उसे हराम समझ लिया। चुनान्चे एक मर्तबा अ़दी बिन हातिम ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा कि हम उन की पूजा तो नहीं करते हैं। आप ने पूछा कि क्या तुम उन के हलाल किये को हलाल और उन के हराम किये को हराम नहीं मानते हो? उन्हों ने कहा कि हाँ, हम मानते हैं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: यही तो उन्हें रब बनाना हुआ (तिर्मिज़ी)

अल्लाह की किताब और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत के मौजूद होते हुये भी जो लोग अपने-अपने इमामों, पीरों, आ़लिमों, फ़क़ीहों, मुफ़्तियों के फ़तवों पर अ़मल करते हैं और क़ुरआन व सुन्नत को छोड़ देते हैं। यह लोग भी अहले किताब की तरह अपने इमामों, फ़क़ीहों और आ़लिमों को रब बनाते हैं।

فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ۝ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ
لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنْزِلَتِ التَّوْرَاةُ
وَالْإِنْجِيلُ إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝
هَا أَنْتُمْ هَٰؤُلَاءِ حَاجَجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ
تُحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَ
أَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ مَا كَانَ إِبْرَاهِيمُ يَهُودِيًّا
وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلَٰكِنْ كَانَ حَنِيفًا مُسْلِمًا ۚ وَمَا
كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ
لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا ۗ
وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَدَّتْ طَائِفَةٌ مِنْ
أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يُضِلُّونَكُمْ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا
أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ
تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ۝ يَا أَهْلَ

तो कह दो कि गवाह रहो हम ताबेदार हैं[५०+५१] ६५. ऐ किताब वालो! क्यों इब्राहीम के मामले में झगड़ते हो (कि वे यहूद थे या नसरानी) हालाँकि तौरात, इन्जील तो उस के बाद उतरी हैं (फिर इतने फ़ासले के बाद भी तुम यह दावा करते हो?) क्या तुम समझते नहीं हो?[५२] ६६. देखो तो! जिस चीज़ के संबन्ध में तुम्हें थोड़ा-बहुत ज़िल्म था उस में तो तुम ने झगड़ा भी किया, लेकिन ऐसे मामलात में क्यों झगड़ते हो जिन का तुम्हें कुछ भी ज़िल्म नहीं (क्या तुम्हारी किताबों में लिखा है कि इब्राहीम यहूदी था या ज़ीसाई?) अल्लाह अच्छी तरह जानता है और तुम नहीं जानते ६७. (अल्लाह ने हमें बतलाया है कि) इब्राहीम न तो यहूदी था और न ज़ीसाई, बल्कि सीधा (अल्लाह का) फ़रमाबर्दार बन्दा (सिर्फ़ तौहीद का मानने वाला था) और मुश्रिक भी न था[५३] ६८. (इसी लिये इस बात में कोई संदेह नहीं है कि) सब लोगों में से इब्राहीम से निकट संबन्ध रखने वाले वही लोग थे जो उस के ताबे हुये थे और यह नबी (मुहम्मद ज़लै०) और जो उस पर ईमान लाये। अल्लाह सब ईमान वालों का वली (देख-रेख करने वाला) है[५४] ६९. (पादरियों की) एक जमाअ़त किताब वालों में से तुम को (दीन से) फिसलाना चाहते हैं। और अपनी ही जानों को गुमराह कर रहे हैं और समझते नहीं[५५] ७०. (ताज़्जुब है तुम पर) ऐ किताब वालो! क्यों अल्लाह के हुक्मों के जान-बूझ कर इन्कारी हुये हो[५६]

....

५०. यानी जिस प्रकार अल्लाह ने हमेशा से तौहीद की शिक्षा दी है इसी प्रकार हम मानते हैं। लेकिन इन लोगों को तो देखो कैसी बातें बनाते और कैसे-कैसे हीले-बहाने करते हैं कि हज़रत इब्राहीम को अपनें ख़यालात का पाबन्द बतलाते हैं, पस तू उन से कह दे कि ऐ किताब वालो! (सनाई) अल्लाह के सच्चे बन्दे हमेशा बनावटी फ़िर्क़ा बन्दियों से दूर ही रहते चले आ रहे हैं।

५१. शाने-नुज़ूलः- यहूद और नसारा का दावा था कि इब्राहीम हमारे-मज़हब पर थे, मगर उन का यह ख़याल ग़लत था, इस लिये कि इब्राहीम ज़लै० तो तौहीद में सब के उस्ताद थे। और उन्होंने जो दीन गढ़ लिया था उस से इब्राहीम ज़लै० बिल्कुल पाक-साफ़ थे। इन्हीं लोगों के रद्द में यह आयत नाज़िल हुयी।

५२. इमाम इब्ने कसीर लिखते हैं कि इस आयत में हर ऐसे शख़्स का रद्द है जो बग़ैर ज़िल्म के कजबहसी करे।

बल्कि पढ़े-लिखे लोगों को भी (अवश्यक्ता के अ़लावा) बहस और झगड़ने से मना फ़रमाया गया है।
५३. हज़रत इब्राहीम अ़लै० यहूदियों की तरह न थे कि अल्लाह तआ़ला के लिये जिस्म के क़ाइल हैं और न ही नसारा की तरह थे कि सलीब वग़ैरह की पूजा करते हैं और अ़ीसा मसीह को ख़ुदा मानते हैं। इन सब ख़ुराफ़ात से हज़रत इब्राहीम अ़लै० पाक थें वह हनीफ़ थे इस लिये कि अल्लाह की अ़िबादत व इताअ़त में किसी को शरीक न करते थे। और वह मुसलमान थे इस लिये कि अल्लाह ने जो आदेश दिया था उन सब को बग़ैर किसी हील व हुजजत के सर झुकाये हुये तस्लीम करते थे (मवाहिब)
५४. शने नुज़ूल:- हज़रत मआ़ज़ बिन जबल और हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि० को यहूदियों ने अपने मज़हब की तरफ़ आने की दावत दी, तो उन के हक़ में यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)
५५. यहाँ पर "नहीं जा़नते" नहीं कहा गया, बल्कि "नहीं समझते" कहा गया। इस का अर्थ यह हुआ कि अगर यह सोच-विचार करें तो समझ सकते हैं, मगर यह इतने अहमक़ हैं कि कुछ भी समझने के मूड में नहीं हैं (मवाहिब)
५६. यहाँ पर अहले किताब की मज़हबी ज़िन्दगी की बुराइयों की ओर इशारा है, कि यह नालायक़ अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं, हक़ को बातिल से मिला देते हैं और सच्चाई को छुपा देते हैं और यह तो उन की आ़म हरकतें हैं। दूसरी ओर उन की इस बुनियादी गुमराही का बयान है कि उन्हों ने दीन और मज़हब को जागीर समझ लिया है और झूठा दावा करते हैं कि यह हो ही नहीं सकता कि किसी दूसरे गिरोह को दीन व मज़हब की सच्चाई हासिल हो सके। जो कुछ भी मिलना था अल्लाह ने हमें दे दिया है और अब अल्लाह किसी और गिरोह को नहीं दे गा (तर्जुमान आज़ाद)

الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ وَقَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ وَلَا تُؤْمِنُوْٓا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ ۭ قُلْ اِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ ۙ اَنْ يُّؤْتٰٓى اَحَدٌ مِّثْلَ مَآ اُوْتِيْتُمْ اَوْ يُحَاۗجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۭ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝ يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝ وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَاۗىِٕمًا ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّھُمْ قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَي اللّٰهِ الْكَذِبَ وَھُمْ

७१. ऐ अहले किताब! क्यों सच को झूठ से मिलाते हो और क्यों (ख़ालिस) हक़ को जान बूझ कर छुपाते हो ७२. और अहले किताब में से एक जमाअ़त ने कहा है कि तुम सुब्ह के समय (मुसलमानों के) क़ुरआन को मान लो और शाम के समय इन्कारी हो जाओ (जाहिल लोग तुम्हारे इन्कार को देख कर शक व शुब्हे में पड़ जायें गे और इस हीला से) संभवत: वह (भी) फिर आयें[१७] ७३. और दिल से अपने लोगों के अ़लावा किसी की बात न मानो[१८]। (ऐ नबी) तू कह दे! बेशक हिदायत तो अल्लाह की तरफ़ से होती है (कहते हैं कि यह मत समझो) कि किसी को भी तुम्हारे जैसी बुज़ुर्गी मिले गी। या अल्लाह के हाँ तुम से मुक़ाबला करे। तू कह दे! फ़ज़्ल तो अल्लाह के हाथ है, जिस को चाहे देता है। और अल्लाह बड़ी कुशादगी वाला, जानने वाला है ७४. वह अपनी रहमत से जिस को चाहे ख़ास कर लेता है। अल्लाह बड़े फ़ज़्ल का मालिक

है। ७५. और कुछ उन किताब वालों में से ऐसे हैं कि अगर तू उन के पास एक ख़ज़ाना भी अमानत रखे तो तुझे अदा कर देंगे, और कुछ उन में से ऐसे (भी) हैं कि अगर तू उन के पास एक दीनार भी अमानत रखे तो तुझे वापस न देंगे[५९] (बल्कि उस का इक़रार भी न करेंगे) मगर जब तक तू उन के सर पर खड़ा रहे। यह इस लिये कि यह लोग ठान चुके हैं कि अन्पढ़ों के माल (हड़पने)में कोई गुनाह नहीं और अल्लाह पर

....

५७. यानी जाहिल लोग तुम्हारे इन्कार को देख कर शक व शुब्हे में पड़ जायें गे और कहें गे कि इस्लाम में कोई कमी है। इस प्रकार अहले ऴिल्म किताबों के जानने वाले इस कुरआन से फिर गये। (सनाई)

५८. अर्थात मुतमइन न हो और अपना भेद किसी पर ज़ाहिर न करो, सिवाए उस शख़्स के जो तुम्हारे दीन को मानने वाला हो। और उस चीज़ को भी उन मुसलमानों पर ज़ाहिर न करो जो तुम्हारे हाथ में है। (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु ऴलैहि वसल्लम और क़ुरआन की विशेष्तायें) वर्ना वह क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने तुम पर हुज्जत क़ाइम कर दें गे कि इन की किताबों में नबी करीम सल्लल्लाहु ऴलैहि वसल्लम और कुरआन की सच्चाई मौजूद थी, उन्हों ने हम से तो बयान कर दिया लेकिन खुद ईमान नहीं लाये। इस पर अल्लाह ने उन के ख़याल को रद्द करते हुये फ़रमाया: "इन्नल् हुदा हुदल्लाह" (हिदायत तो अल्लाह की तरफ़ से होती है) वही रब मोमिनों के दिलों को हिदायत देता है और वह मोमिन बन्दे उन तमाम बातों पर ईमान लाते हैं जो कुछ अल्लाह ने पैग़म्बर पर नाज़िल किया है। (इब्ने कसीर) यह आयत यहूद के तऴस्सुब की तरफ़ इशारा करती है कि मज़हबी तऴस्सुब ने उन्हें इतना अन्धा कर दिया है कि वह अपने ऴलावा किसी को सच्चा मानने को तय्यार ही नहीं हैं और दूसरे मज़हब की अच्छी से अच्छी बात तक को अपनाने के लिये तय्यार नहीं। यही हाल बिल्कुल आज कल तक़्लीद करने वालों का है कि वह अपने मज़हबी तक़्लीद को केवल दीने इस्लाम समझे बैठे हैं।

ऊपर आयत न०६७ में एक शब्द 'हनीफ़' आया है, इस का अर्थ है गुमराही से सीधी राह की तरफ़ आना। जो बातिल को छोड़ कर तौहीद को अपना ले और उस पर जम जाये उसे "हनीफ़" कहा जाता है।

५९. यानी इस प्रकार अदा कर देना सवाब है और जो वापस न करे उस के लिये आग है (मवाहिब) शुरू सूरत से जिस विषय की भूमिका बाँधी थी यहाँ पर उस को स्पष्ट रूप से ज़ाहिर कर दिया गया। हज़रत मसीह के समस्त ख़ान्दान का ज़िक्र अस्ल में भूमिका थी। इस का उद्देश्य यह था कि मसीह को खुदा मानना ग़लत है इस मस्ऴले में कुरआन शरीफ़ ने कई दलीलें बयान की हैं। इन्जील में जहाँ मसीह को खुदा का दर्जा दिया गया है वह अल्लाह का कलाम नहीं है, बल्कि उस में बढ़ाया गया है। ऴीसाइयों पर लाज़िम है कि वह मसीह को खुदा मानने और 'तस्लीस' (खुदा के तीन रूप होने) के अपने अक़ीदा से तौबा कर लें और कुरआन पाक की सीधी-सादी और साफ़ शिक्षा पर ऴमल करें जिस में कोई एंच-पेच नहीं है। (सनाई)

जान बूझ कर झूठ लगाते हैं[६०] (कि हम को अल्लाह ने अनुमति दी है) ७६. हाँ, जो शख़्स अपने वादा को पूरा करे और अल्लाह से डरता रहे तो निःसंदेह परहेज़गार अल्लाह को भाते

يَعْلَمُونَ ۞ بَلَىٰ مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِۦ وَاتَّقَىٰ فَإِنَّ اللَّهَ
يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۞ إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ
وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي

اَلْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۪ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ۝ وَلَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا

हैं। ७७. बेशक जो लोग अल्लाह के वादे और क़समें थोड़े से माल के बदले तोड़ देते हैं, उन के लिये आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं और अल्लाह उन से न तो बात करे गा और न ही (रहमत की नज़र से) आख़िरत में उन को देखे गा और न उन को पाक करे गा और उन को दुःख-दाई दन्ड हो गा[६१] ७८. एक जमाअ़त उन में से ज़बान मरोड़-कर किताब पढ़ती है (और कई जुमले उस के साथ और मिला कर पढ़ देते है) ताकि तुम उस (मिलाये हुये जुम्ले) को किताब समझो[६२] हालाँकि वह (अल्लाह की) किताब से नहीं, और कहते हैं कि यह अल्लाह के हाँ से है, मगर वह अल्लाह के हाँ से नहीं (बल्कि वह ख़ुद बुरे काम करते हैं) और अल्लाह के ज़िम्मे जान-बूझ कर झूठ लगाते हैं ७९. (बल्कि कहते हैं कि मसीह ने हमें अपने को ख़ुदा मानने की शिक्षा दी है, हालाँकि) किसी आदमी का यह काम नहीं कि अल्लाह उस को (आसमानी) किताब (सिखा दे) और अ़िल्म (पढ़ा दे) और नबुव्वत दे फिर वह लोगो से कहने लगे कि अल्लाह के अ़लावा मेरे भी बन्दे बनो[६३] (लेकिन) हाँ (यह अवश्य कहे गा कि लोगों!) तुम अल्लाह की किताब को पढ़ो-पढ़ाओ (रब्बानी में) अल्लाह वाले बनो[६४] ८०. न यह उचित है कि तुम को हुक्म करे कि तुम फ़रिश्तों और नबिय्यों को अपने (हक़ीक़ी पालने वाला) रब बना लो

....

६०. यहाँ पर अहले- किताब की उस गुमराही की तरफ़ इशारा है कि उन का अक़ीदा था कि लेन-देन में अमानत और दियानत दारी केवल अपने लोगों के साथ बर्ती जाये, लेकिन अगर लेन-देन दूसरे मज़हब के लोगों से की जाये तो उस में अमानत और दियानत दारी की कोई आवश्यक्ता नहीं है। जिस प्रकार भी काफ़िरों का माल खा लिया जाये जायज़ है। लेकिन कुरआन पाक का कहना है कि दीन व मज़हब के इख़्तिलाफ़ से अच्छाई, बुराई का क़ानून नहीं बदलता। चाहे जिस धर्म का मानने वाला चाहे जिस धर्म के मानने वाले के साथ बद-दियानती करे गा तो पापी हो गा और क़ियामत के दिन अल्लाह की रहमत और बख़्शिश से वन्चित रहे गा (तर्जुमानुल कुरआन आज़ाद)

६१. शने नुज़ूलः- अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "जिस ने कोई झूठी क़सम खाई ताकि उस से किसी मर्द का माल हड़प कर जाये, तो अल्लाह तआ़ला से वह इस हाल में मिलेगा कि अल्लाह उस पर नाराज़ हो गा"। हज़रत अश्अ़स रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह की क़सम! मेरे भी मामले में ऐसा ही हुआ। मेरे और एक यहूदी के दर्मियान एक ज़मीन साझे में थी लेकिन क़ब्ज़ा यहूदी ही का था और वह उस में मेरा भी हिस्सा होने से इन्कार कर गया। मैं उस को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के

पास ले गया। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझ से गवाह माँगा, लेकिन मेरे पास गवाह नहीं थे। तब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि सल्लम ने यहूदी से क़सम खाने को कहा। मैं ने कहा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! यह तो महा बेईमान है अवश्य यह झूठ बोले गा और मेरा माल हड़प लेगा। इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (बुख़ारी, मुस्लिम) एक दूसरी रिवायत में यह भी आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "झूठी क़सम से आबाद शह्र वीरान हो जाते हैं"।

६२. यहाँ पर अल्लाह तआ़ला यहूद के एक गिरोह की शरारत को बयान कर रहा है कि वह जुम्लों को बदल कर और उन में हेरा-फेरी कर के अस्ल हुक्म को बदल डालते हैं और अन्पढ़ों को यह पट्टी पढ़ाते हैं कि यह अल्लाह का कलाम है। हालाँकि उन जुम्लों की निस्बत अल्लाह की तरफ़ करना सरासर झूठ है (इब्ने कसीर)

६३. इस आयत में उन गुमराह और बिद्अ़ती लोगों का रद्द है जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अल्लाह की जगह बिठाने की कोशिश करते हैं और अल्लाह के वलिय्यों को ख़ुदाई में साझे-दार समझते हैं। हालाँकि उन अल्लाह के पाक बन्दों ने कभी भी यह तालीम नहीं दी। जिस प्रकार नसारा हज़रत मसीह को ज़बर्दस्ती ख़ुदा बनाने पर तुले हुये थे, बिल्कुल इसी प्रकार आज-कल के बिद्अ़ती भी रसूल और वलिय्यों को अल्लाह का साझे-दार बनाने पर अड़े हुये हैं।

६४. रब्बानी' वह है जो रब की तरफ़ मन्सूब हो। 'या' के साथ इज़ाफ़ा ताकीद के लिये है, यानी "बड़ा अल्लाह वाला" "बड़ा अल्लाह का आज्ञा कारी"। जिस दिन हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० का देहान्त हुआ तो मुहम्मद बिन हनफ़िय्या ने कहा था कि आज इस उम्मत के "रब्बानी" इन्तिक़ाल फ़रमा गये (माजिदी)

ءَيَأْمُرُكُم بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ۝٨٠ وَإِذْ
أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ لَمَا آتَيْتُكُم مِّن كِتَابٍ
وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ
لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنصُرُنَّهُ ۚ قَالَ ءَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ
عَلَىٰ ذَٰلِكُمْ إِصْرِي ۖ قَالُوا أَقْرَرْنَا ۚ قَالَ فَاشْهَدُوا
وَأَنَا مَعَكُم مِّنَ الشَّاهِدِينَ ۝٨١ فَمَن تَوَلَّىٰ بَعْدَ
ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝٨٢ أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ
يَبْغُونَ وَلَهُ أَسْلَمَ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ۝٨٣ قُلْ آمَنَّا بِاللَّهِ
وَمَا أُنزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ
وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ

क्या मुसलमान होने के बाद तुम को कुफ़्र बतलाये गा? (हर्गिज़ नहीं)[६५] ८१. (ज़रा) याद तो करें! जब अल्लाह ने हर एक नबी से वादा लिया[६६] कि मैं ने जो तुम को किताब और हिक्मत दी है फिर (इस के बाद) तुम्हारे पास कोई रसूल आवे जो तुम्हारे साथ वाली शिक्षा की तस्दीक़ करता हो, तो तुम उस पर ईमान लाना और उस की मदद करना (फिर और ताकीद के लिये अल्लाह ने) कहा, क्या तुम इक़रारी हो? और इस पर मेरा अ़हद क़ुबूल करते हो (या नहीं?) वह (एक ज़बान हो कर) बोले, हम इक़रारी हैं। (अल्लाह ने) कहा तुम गवाह रहो और मैं स्वयं तुम्हारे साथ गवाह हूँ ८२. पस जो कोई इस (इक़रार) के बाद फिर जायेगा, तो वही बदकार हो गा ८३. तो क्या अल्लाह के दीन के अ़लावा और दीन चाहते हैं?

وَعِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ
اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝ وَمَنْ يَّبْتَغِ

➲हालाँकि तमाम आसमान और ज़मीन के लोग ख़ुशी से या नाख़ुशी से उसी के ताबे हैं और (परिणाम स्वरूप) उसी की तरफ़ फिरें गे[६७] ८४. (इसलिये बुलन्द आवाज़ से) तू कह दे कि हम अल्लाह को (मानते हैं) और जो कुछ हमारी तरफ़ और इब्राहीम और इस्माअ़ील और इस्हाक़ और याकूब और उस की सारी औलाद की तरफ़ उतारा गया जो मूसा और अ़ीसा और नबिय्यों को अल्लाह की तरफ़ से मिला है सब को मानते हैं, हम उन (नबिय्यों) में से किसी पर तफ़रीक़ नहीं करते[६८] और हम उसी के मुख़्लिस बन्दे हैं (न कि तुम्हारी तरह मुश्रिक कि मसीह को भी ख़ुदा मानते हो)

....

६५. इस से ज़ाहिर है कि नबिय्यों और फ़रिश्तों की पूजा कुफ़्र है। इस आयत से उन मुसलमानों को भी सबक़ हासिल करना चाहिये जो अपने ज़िन्दा व मुर्दा बुज़ुर्गों की अ़िज़्ज़त व एहतराम में शरीअ़त की सीमा को पार कर जातेहैं। (माजिदी) मगर दुःख की बात यह है कि आज इस्लाम का दावा करने वालों में से अक्सर के दीन का निचोड़ बस केवल इतना है कि अपने ज़िन्दा व मुर्दा बुज़ुर्गों को उन की सीमा से इतना आगे बढ़ा देते हैं कि शायद यहूद ने भी इतना आगे न बढ़ाया हो। और फिर अगर कोई उन्हें समझाये तो उसे "ग़ैर मुक़ल्लिद" "वहाबी" के नाम से पुकारते हैं। इन लोगों ने इस्लाम की शिक्षा को इतना बिगाड़ दिया है कि अस्ल इस्लामी शिक्षा गुम हो कर रह गयी है। और अस्ली व नक़्ली इस्लाम में फ़र्क़ कर पाना कठिन हो गया है।

शाने नुज़ूल:- हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि यहूद के उलमा और क़बीला नजरान के अ़ीसाई जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आये तो उन्हें इस्लाम की दावत दी। इस पर अबू राफ़ेअ़ यहूदी ने कहा कि ऐ मुहम्मद! क्या आप चाहते हैं कि हम आप को भी उसी प्रकार पूजें जैसे अ़ीसा मसीह को नसारा पूजते हैं? नजरान के अ़ीसाइयों में से एक शख़्स जो कि सर्दार था वह भी बोल पड़ा कि ऐ मुहम्मद! क्या आप हम से यही चाहते हैं? और क्या आप हम को इसी की दावत देते हैं? या इसी प्रकार की कोई बात उस ने कही, तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उत्तर दिया कि हम तो इस बात से अल्लाह की पनाह माँगते हैं कि अल्लाह के अ़लावा किसी को पूजें, या हम अल्लाह के अ़लावा की अ़िबादत का आदेश दें। मुझे अल्लाह ने इस वास्ते नहीं भेजा है और न ही इन बातों का हुक्म ही दिया है। इन्हीं बातों पर यह आयत नाज़िल हुयी।

६६. इमाम महिय्युस्सुन्ना ने कहा कि यह वादा उस दिन लिया जब अल्लाह तआ़ला ने आदम की पीठ से उन की तमाम नस्लों को निकाला। इब्ने कसीर ने कहा कि इस से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुराद हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० की रिवायत में है कि अल्लाह तआ़ला ने हर नबी को भेजने से पूर्व यह वादा लिया कि जब मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नबी बना कर भेजूँ और तुम उस समय ज़िंदा हो तो उन पर ईमान लाना और उन की मदद करना। हज़रत हसन बसरी और क़तादा ने कहा कि अल्लाह तआ़ला ने नबियों से इस बात का इक़रार लिया कि जब मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नबी बना कर भेजूँ और तुम लोग उस समय ज़िन्दा हो तो उन पर अवश्य ईमान लाना और उन की सहायता करना। हसन बसरी और क़तादा का यह भी कहना है कि अल्लाह तआ़ला ने नबिय्यों से यह इक़रार लिया कि एक दूसरे की तस्दीक़ करें। मतलब यह है कि अल्लाह ने हर पैग़म्बर और उस की उम्मत को अपने से बाद के आने वाले पैग़म्बर पर ईमान लाने का आदेश दिया है। और➲

➲चूँकि सब से अन्त में अन्तिम सन्देष्टा मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं, इस लिये आप के लिये तमाम पैग़म्बरों से इक़रार लिया गया था (मवाहिब)

६७. 'इस्लाम' से मुराद "झुकना" है, यानी हुक्म तक़्दीर के ताबेअ़ है। इस लिये मोमिन तो अपने दिल से मुसलमान है, जैसे ज़ाहिर में आज्ञा कारी है और काफ़िर अगर्चे मुस्लिम यह माना मुराद नहीं। मुस्लिम, मुसलमान के माना में है कि वह चाहे या न चाहे ज़रूर उस अल्लाह के ताबे है जो सारे संसार का रब है और जिस का रोक-टोक कुछ नहीं हो सकता।

६८. यानी हम यह नहीं करते कि किसी को सच्चा कह दें और किसी को झूठा। बल्कि हम तो इस बात की तस्दीक़ करते हैं कि तमाम ही नबी, चाहे वह किसी भी मुल्क, किसी भी क़ौम, या किसी भी ज़बान (भाषा) में आये हों, सब के सब अल्लाह के बन्दे और सच्चे रसूल हैं और सब ही पर हमारा ईमान है।

غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي
الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا
كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّ
جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ
وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ
الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ
بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۗ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ
تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ ۝ اِنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ
اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ۚ
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝

८५. और जो कोई इस्लाम के अ़लावा और दीन की खोज करे गा हर्गिज़ उस से कुबूल न हो गा[६९] और वह आख़िरत में टूटा (नक़्सान) पाने वालों में से हो गा[७०] ८६. भला ऐसे लोगों को क्योंकर अल्लाह (जन्नत) की राह दिखाये जो ईमान लाने के बाद (दुनियावी लाभ की वजह से) इन्कारी हो गये, हालाँकि, गवाही दे चुके थे कि रसूल सच्चा है और दलाइल भी उन को पहुंच चुके (मगर इस के बावजूद सब से इन्कारी हो बैठे तो अल्लाह ने भी अपनी रहमत से उन को वन्चित कर दिया) और अल्लाह ज़ालिमों को (जन्नत की) राह नहीं दिखाता ८७. सज़ा उन की यह है कि अल्लाह की और फ़रिश्तों की और दुनिया के सब लोगों की उन पर लानत है (जिस से वह कभी छुटकारा नहीं पायें गे, बल्कि)[७१] ८८. हमेशा उस में रहें गे, न उन के दन्ड में कमी होगी और न उन को (उज़्र का) मौका मिले गा ८९. लेकिन जो लोग (दुनिया में) इस (कुफ़्र) के बाद बाज़ आये और (अपने बुरे) आमाल को संवारा तो (ऐसे लोगों के लिये) अल्लाह बड़ा बख़्शिश करने वाला निहायत मेहरबान है ९०. वह लोग जो ईमान लाने के बाद काफ़िर हुये फिर कुफ़्र ही में बढ़ते गये उन की तौबा हर्गिज़ कुबूल न हो गी और यही लोग (अस्ली राह से) भूले हुये हैं[७२] ९१. बेशक जो लोग काफ़िर हों और कुफ़्र की हालत में मर जायें उन में से किसी से ज़मीन भर कर भी सोना हर्गिज़ कुबूल न हो गा अगर्चे (थोड़ी➲

➲देर के लिये मान भी लें कि) वह अपना जुर्माना इतने से भी अदा करना चाहे। बल्कि उन को दुःखदाई अ़ज़ाब हो गा और कोई भी उन का सहायक न होगा[७३]।

....

६९. यहाँ तक कि अगर इस्लाम के आदेश के अनुसार नमाज़, रोज़ा भी करता हो, मगर दिल में यहूद और नसारा के मज़हब की ख़ाहिश रखता हो, वह भी काफ़िर है। 'मआ़लिम' में बयान है कि वह १२ आदमी थे जो इस्लाम से फिर कर मक्का में काफ़िरों से जा मिले, उन ही में हरस बिन् सुवैद अन्सारी भी था। इस बात पर सभी का इत्तिफ़ाक़ है कि जो कोई भी चाहे इस्लाम से फिर कर, या किसी और धर्म का, इस्लाम के अ़लावा कोई दीन को चाहेगा, उस से क़ुबूल न किया जाये गा (मवाहिब) हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा वग़ैरह सारे आमाल आयेंगे और अल्लाह तआ़ला हर एक से फ़रमायेगा कि तू भलाई पर है। फिर इस्लाम आयेगा और कहेगा कि मेरे रब! तू सलाम है और मैं इस्लाम हूँ, अल्लाह फ़रमायेगा तू भलाई पर है आज के रोज़ मैं तेरे ही साथ काफ़िरों से पूछ-ताछ करूँगा और तेरे ही साथ मुसलमानों को अ़ता करूँ गा (इब्ने कसीर/अहमद, तबरानी)

७०. सहीह हदीस में रिवायत है कि "जिस ने ऐसा काम किया जिस का मैं ने आदेश नहीं दिया है, तो वह रद्द है"। इसी प्रकार जिस ने कोई नया अ़क़ीदा या नई अ़िबादत निकाली जिस का क़ुरआन व हदीस से कोई सबूत न हो, वह बिद्अ़त है जो कि रद्द कर दिये जाने लायक़ है। चुनान्चे इस ज़माना में मीलाद की सभा, दूजा, तीजा, दस्वाँ, चालीसवाँ वग़ैरह करने वालों का अ़मल भी रद्द और बर्बाद है। कुछ लोग अ़ीसा अ़लै० के आसमान से उतरने, इमाम् महदी के आने, ज़मीन से जानवर के निकलने, अर्श और लौहे-महफ़ूज़ वग़ैरह का इन्कार करते हैं, यह सब बुज़ुर्गाने दीन के अ़क़ीदा के ख़िलाफ़ हैं और बिद्अ़ती हैं (वहीदी) अल्लाह और उस के रसूल की इताअ़त और फ़र्माबर्दारी के लिये गर्दन को झुका देना, इसी का नाम इस्लाम है।

७१. शाने नुज़ूलः- हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि क़बीला बनू अन्सार का एक शख़्स हरस बिन सुवैद नाम का इस्लाम लाया, फिर वह इस्लाम से फिर कर मुश्रिकों से जा मिला। बाद में शर्मिन्दा हुआ और अपनी क़ौम को कहला भेजा कि तुम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मालूम करो कि मेरी तौबा क़ुबूल हो सकती है या नहीं? इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। फिर उस के भाई जलास बिन सुवैद ने उस के पास यही आयत भेज दी और वह तुरन्त दोबारा मुसलामन हो गया और अच्छा मुसलमान रहा (इब्ने जरीर)

७२. इमाम क़तादा और हसन बसरी वग़ैरह ने कहा है कि यह आयत यहूद व नसारा के हक़ में नाज़िल हुयी है, इस लिये कि वे तौरात और इन्जील में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बारे में पढ़ कर आप पर ईमान लाये, लेकिन जब आप नबी बनाये गये तो इन्कार कर दिया और उसी इन्कार पर अड़े रहे, और इस प्रकार इन्कार पर अड़े रहना, इन्कार में ज़्यादती है।

'तौबा, से मुराद उस समय की तौबा है कि जब मरने लगा और जान गले तक आ गयी, तो इस समय की तौबा सभी के नज़दीक नहीं क़ुबूल की जाये गी (मवाहिब)

७३. ज़मीन का उदाहरण आसानी से समझ जाने के लिये दिया है, क्यों कि आदमी इसी पर रहता-बसता है। और सोने की मिसाल इस लिये दी है कि यह इन्सान को सब से अधिक प्यारा होता है। इब्ने कसीर ने फ़रमाया कि इस का अर्थ यह है कि जो शख़्स काफ़िर हो कर मरा तो फिर उस की कोई भी चीज़ क़ुबूल न होगी अगर्चे उस ने ज़मीन➲

➲भर सोना भी ऐसे काम में ख़र्च किया हो जिस को वह आज्ञा, इताअ़त और फ़रमाबर्दारी जानता था (मवाहिब) ग़ौर करने की बात यह है कि जिस सोने को इकट्ठा करने में मेहनत और मुशक़्क़त की थी, उस के लिये दिन-रात एक कर दिया था, वह भी इस लाइक़ नहीं कि आख़िरत में उन के लिये कुछ काम आता, क्यों कि दुनिया में उन्हों ने उस को उचित समय पर ख़र्च नहीं किया था, अर्थात उसे अल्लाह के आदेश के अनुसार प्रयोग नहीं किया, बल्कि या तो उस की देख-रेख ही करता रहा, या मौज-मस्ती ही में मगन रहा। तो ऐ मुसलमानो! तुम भी अगर ऐसा ही करोगे तो तुम्हारा हाल भी उन्हीं जैसा होगा (सनाई-हज़रत मौलाना सनाउल्लाह अमृतसरी रह०)

★★★★★

بِسْــــمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْــــمِ

पारः लन्–तनालू (4)

संक्षिप्त विषय सूची

लन तनालू (4)

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ؕ

وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ ﴿۹۲﴾ كُلُّ
الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ
اِسْرَآءِیْلُ عَلٰی نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ
قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۹۳﴾
فَمَنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۹۴﴾ قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۫
فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ حَنِیْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۹۵﴾ اِنَّ اَوَّلَ بَیْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِیْ
بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًی لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۹۶﴾ فِیْهِ اٰیٰتٌۢ
بَیِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِیْمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ
وَلِلّٰهِ عَلَی النَّاسِ حِجُّ الْبَیْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَیْهِ
سَبِیْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ عَنِ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۹۷﴾

९२. तुम नेकी (और सवाब) हर्गिज़ न पाओगे जब तक (इख़्लास के साथ) अपनी पसन्दीदा वस्तुओं में से ख़र्च न करोगे[७४] और जो कुछ तुम ख़र्च करोगे अल्लाह उस को भली भाँति जानता है ९३. हलाल जानवरों[७५] का सारा गोश्त बनी इस्राईल को (भी) हलाल था, लेकिन जितना हिस्सा याकूब (अ़लै०) ने (किसी कारण) तौरात उतरने से पूर्व छोड़ रखा था। (इस कारण वह आदेश उन्हीं के लिये ख़ास था, न कि तमाम लोगों के लिये) तू कह दे कि तौरात ला कर पढ़ो अगर सच्चे हो (कि जानवरों के कुछ हिस्सों का हराम होना तौरात में है) ९४. जो लोग इस के बाद अल्लाह पर झूठ बांधें गे (कि ख़ुदा के बताये बग़ैर कोई आदेश अपनी ओर से गढ़ कर उसे शरीअ़त का आदेश बतला दें तो अल्लाह के निकट) वही ज़ालिम हैं[७६] ९५. तू कह दे कि अल्लाह ने सच बतलाया है इस लिये (अब) तुम (एच-पेच छोड़ कर) एक तरफ़ हो कर इब्राहीम के दीन की पैरवी करो (जो अल्लाह का नेक मुख़्लिस बन्दा था) और वह मुश्रिकों में से न था[७७] ९६. काबा जो मक्का में है[७८] सब से प्रथम मकान है जो लोगों के लिए (अल्लाह की अ़िबादत करने के लिये) बनाया गया है बड़ी बर्कत वाला और सब लोगों के लिये हिदायत (का स्रोत) है ९७. उस में (अल्लाह के) कई निशान (चिन्ह) हैं उन में से एक मक़ामे इब्राहीम है। और जो उस में दाख़िल हो वह बेख़ौफ़ हो जाता है। (इसी बुज़ुर्गी और कुबूलियत की वजह से) जो लोग काबा तक पहुंच सकें अल्लाह के हुक्म से उम्र भर में एक बार हज्ज करना उन पर फ़र्ज़ है (जो शरीअ़त के आदेश के अनुसार करे गा, वह तो बदला पाये गा) और जो अवज्ञा करेगा तो अल्लाह तो सब संसार से बे पर्वाह है[७९]

....

७४. शाने-नुज़ूलः- कुछ लोग मांगने वालों के लिये कुछ ख़जूरों के गुच्छे लटका जाते थे, उन में से ज़्यादा तर➲

➲रद्दी और ख़राब होते थे, ऐसे लटकाने वाले लोगों के बारे में यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)
७५. यानी जिन जानवरों का गोश्त हलाल है।
७६. यहूदियों की ओर से दो एतराज़ विशेष रूप से किये गये थे (१) अगर कुरआन की दावत (संदेश) भी वही है जो पिछले नबिय्यों का था, तो क्यों कुरआन ने भी उन तमाम वस्तुओं को हराम नहीं कर दिया जो यहूदियों के हाँ हराम समझी जाती थीं? (२) अगर कुरआन की राह हज़रत इब्राहीम और उन की राह से भिन्न नहीं है, तो क्यों बैतुल-मुक़द्दस के स्थान पर ख़ान-ए-काबा को क़िब्ला बना दिया गया? हालाँकि बनी इस्राईल के तमाम ही संदेष्टा बैतुल् मुक़द्दस ही को क़िब्ला मानते रहे हैं। यहाँ पर इन दो एतराज़ों का उत्तर दिया गया है। पहले शुब्हा के उत्तर में कहा गया कि तौरात के नाज़िल होने से पूर्व तमाम अच्छी वस्तुयें बनी इस्राईल के लिये जायज़ थीं और हज़रत इब्राहीम से ले कर हज़रत मूसा अ़लै० तक तमाम पैग़म्बरों ने उन्हें हलाल समझा था। फिर जब तौरात नाज़िल हुयी तो कुछ वस्तुओं का प्रयोग रोक दिया गया इस लिये कि यहूद के मन चाहे तौर-तरीक़ों को सुधारने के लिये आवश्यक था कि रोक-टोक में सख़्ती की जाये। बाक़ी रहीं वह वस्तुयें जिन के बारे में तुम समझते हो कि तौरात के उतारे जाने से पहले भी मना थीं, तो उन्हें अल्लाह की शरीअ़त ने खाना मना नहीं ठहराया था, बल्कि स्वयं लोगों ने अपनी इच्छा से छोड़ दिया था और इस बात की पुष्टि तौरात भी कर रही है।

दूसरे एतराज़ के उत्तर में कहा गया है कि अल्लाह का पहला घर जिसे हज़रत इब्राहीम ने बनाया वह बैतुल मुक़द्दस नहीं था, बल्कि ख़ान-ए-काबा है (तर्जुमान)
७७. मगर इन यहूदियों को हज़रत इब्राहीम अ़लै० की सुन्नत पर चलने का केवल दावा ही दावा है, वर्ना वास्तव में लीडरी और अगुवाई के अ़लावा उन में कुछ भी नहीं है। चुनान्चे इसी कारण यह लोग शोर मचा रहे हैं कि मुसलमान पहले के नबिय्यों की सुन्नत पर अ़मल करने का तो दावा करते हैं लेकिन नमाज़ उन नबिय्यों के क़िब्ला (बैतुल मुक़द्दस) की ओर नहीं पढ़ते हैं। हालाँकि अगर ग़ौर किया जाये तो काबा शरीफ़ ही वह प्रथम स्थान है. .... (आगे आयत तक) (सनाई)

मक्का शरीफ़ के लिये "बक्का" तौरात के अन्दर आज तक मौजूद है। अल्लाह तआ़ला ने ज़बूर किताब के अन्दर आयत न०४ और ५ में "बक्का" की वादी में रहने वालों को मुबारक बाद (शुभ कामनायें) दी हैं। और उसे कई स्थानों पर तौरात में नये योरोशलम से भी ताबीर किया गया है। अगर विस्तार से देखना चाहते हैं तो हमारी किताब "हज्जे बैतुल्लाह शरीफ़" को अवश्य पढ़ें (दाबूद राज़)
७८. 'बक्का' यह मक्का के नामों में से एक नाम है। 'बक्का' का अर्थ है "तोड़ना"। चूंकि यहाँ आ कर बड़े-बड़े बादशाहों की गर्दनें झुक जाती और उनका घमन्ड टूट जाता है इस लिय इसे "बक्का" कहा गया है। काबा को फ़रिश्तों ने हज़रत आदम अ़लै० के पैदा होने से पहले बनाया और उस के बाद मस्जिदे अक़सा का निर्माण किया गया। और दोनों के पहले निर्माण के दर्मियान चालीस वर्ष का अन्तर है, जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम में है। और हज़रत इब्राहीम के काबा के निर्माण और हज़रत सुलैमान अ़लै० के बैतुल मुक़द्दस के निर्माण के दर्मियान एक हज़ार वर्ष से भी अधिक की दूरी है। आज-कल के हदीस के कुछ इन्कारियों ने बुख़ारी और मुस्लिम की इस हदीस पर भी एतिराज़ किया है जो उन की जिहालत और दुर्भाग्य की दलील है।
७९. हज़रत उमर रज़ि० ने एक मर्तबा फ़रमाया कि मैं ने इरादा किया कि उन नगरों में अपने कारिन्दे भेज कर पता लगाऊँ और जिस ने हज्ज करने की ताक़त रखते हुये भी हज्ज नहीं किया हो उस पर जिज़्या (टिक्स) लगा दूँ इस लिये कि वह मुसलमान नहीं हैं (मवाहिब)

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۖ
وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ۝ قُلْ يٰۤاَهْلَ

९८. तो कह दीजियो कि ऐ किताब वालो! क्यों अल्लाह के हुक्मों से (जो हम पर वह्यि द्वारा उतरे हैं) इन्कारी होते हो? हालाँकि अल्लाह➲

الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَآءُ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ۝ وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ؕ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِىَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝ وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ص وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ

तुम्हारे सब कामों पर निग्राँ है ९९. तू (उन से यह भी) कह दे कि ऐ किताब वालो! क्यों (बिजा हीलों हवालें से) ईमान लाने वालों को अल्लाह की राह से रोकते हो,. उस में अ़ैब तलाश करते हो (हालाँकि) तुम (उस की हक़ीक़त तक के) गवाह हो (सुनो और याद रखो कि) अल्लाह तुम्हारे कामों से बेख़बर नहीं (तुम्हारे बुरे कर्मों पर वह पूरी-पूरी सज़ा देगा) १००. मुसलमानो! अगर तुम (उन) किताब वालों में से किसी एक गुरोह के भी (मज़हबी बातों में) साथ हुये हो तो (याद रखो) कि वह ईमान लाने के बाद (भी) तुम को काफ़िर कर डालें गे[८०] १०१ तुम कैसे काफ़िर होने लगे (क्या तुम उन से दीन के मामले पूछते हो) हालाँकि अल्लाह के आदेश तुम पर पढ़े जाते हैं और उस का रसूल तुम में मौजूद है (इस लिये तुम उस की पैरवी करो) और जो शख़्स अल्लाह से ठोस संबन्ध रखता है निःसंदेह वह सीधी राह पर है (जो बहुत जल्द उस को मन्ज़िल तक पहुंचा दे गी) १०२. मुसलमानो! अल्लाह ही से डरते रहो जितना कि उस से डरने का हक़ है[८१] और मरते दम तक (इस्लाम पर क़ाइम रहो यानी) उसी (अल्लाह) के ताबे दार रहो १०३. और सब मिल कर अल्लाह की रस्सी (क़ुरआन मजीद) को मज़बूत पकड़ो और फूट न डालो (वर्ना तुम्हारे दुश्मन तुम पर ग़ालिब आ जायेंगे) और अपने हाल (स्थिति) पर अल्लाह के एहसान याद करो जब तुम आपस में दुश्मन थे फिर उस ने तुम्हारे दिलों में मुहब्बत डाली।

....

८०. शाने नुज़ूलः- अन्सार मुसलमानों के दो क़बीले औस और ख़ज़रज थे जिन के दर्मियान इस्लाम से पहले बहुत ही अधिक लड़ाइयाँ हो चुकी थीं, लेकिन इस्लाम क़ुबूल कर लेने के बाद इस्लाम से पहले के कीना-कपट और दुश्मनी का कुछ भी निशान बाक़ी न रहा। इस मुहब्बत और भाई चारा को देख कर अहले किताब यहूदियों को गुस्सा आया, चुनान्चे "शमास" नाम का एक यहूदी, अन्सार की एक मज्लिस (बैठक) में आया और उन को पहले के लड़ाई-झगड़े याद दिलाने लगा। चूंकि अभी नया-नया समझौता और सुल्ह-सफ़ाई हुयी थी इस लिये उस यहूदी के धोखे में पड़ कर अन्सार क़बीले आपस में फिर दुश्मनी करने लगे। यहाँ तक कि दोनों के दर्मियान मुक़ाबला के लिये एक दिन मुक़र्रर हो गया कि आपस में जंग करेंगे। जब यह सूचना नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मिली तो आप ने यहूदियों की साज़िश को भाँप लिया और तुरन्त लड़ाई के स्थान पर तशरीफ़ ले जा कर दोनों क़बीलों को समझाया। फिर क्या था दोनों समझ गये और उसी समय आपस में गले मिल गये, इसी घटना के मुतअ़ल्लिक़ यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

८१. 'हक़्क़ तुक़ातिही' इस तौर पर कि अल्लाह की आज्ञा मानी जाये, उस की अवज्ञा न की जाये और उस का शुक्र

अदा किया जाये, उस की नाशुक्री न की जाये, उस को याद रखा जाये, उस को भूला न जाए। 'हब्लुल्लाह' से मुराद दीने इस्लाम है या कुरआन मजीद। और सहीह हदीसों में भी कुरआन मजीद को "हब्लुल्लाह" जैसे शब्दों मे ज़िक्र किया गया है (मुवाहिब)

فَاَصۡبَحۡتُمۡ بِنِعۡمَتِهٖۤ اِخۡوَانًا ۚ وَكُنۡتُمۡ عَلٰى شَفَا حُفۡرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنۡقَذَكُمۡ مِّنۡهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمۡ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمۡ تَهۡتَدُوۡنَ ۝ وَلۡتَكُنۡ مِّنۡكُمۡ اُمَّةٌ يَّدۡعُوۡنَ اِلَى الۡخَيۡرِ وَيَاۡمُرُوۡنَ بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَيَنۡهَوۡنَ عَنِ الۡمُنۡكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ۝ وَلَا تَكُوۡنُوۡا كَالَّذِيۡنَ تَفَرَّقُوۡا وَاخۡتَلَفُوۡا مِنۡۢ بَعۡدِ مَا جَآءَهُمُ الۡبَيِّنٰتُ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمۡ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ ۝ يَّوۡمَ تَبۡيَضُّ وُجُوۡهٌ وَّتَسۡوَدُّ وُجُوۡهٌ ۚ فَاَمَّا الَّذِيۡنَ اسۡوَدَّتۡ وُجُوۡهُهُمۡ اَكَفَرۡتُمۡ بَعۡدَ اِيۡمَانِكُمۡ فَذُوۡقُوا الۡعَذَابَ بِمَا كُنۡتُمۡ تَكۡفُرُوۡنَ ۝ وَاَمَّا الَّذِيۡنَ ابۡيَضَّتۡ وُجُوۡهُهُمۡ فَفِىۡ رَحۡمَةِ اللّٰهِ ؕ هُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ۝ تِلۡكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتۡلُوۡهَا عَلَيۡكَ بِالۡحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيۡدُ ظُلۡمًا لِّلۡعٰلَمِيۡنَ ۝

पस तुम उस के फ़ज़्ल से भाई-भाई हो गये[८२] और तुम आग के गढ़े के किनारे पर थे फिर उस ने तुम को उस से बचाया। इसी प्रकार (अल्लाह तुम्हारे लिये अपने) आदेश बयान करता रहे गा ताकि तुम राह पाओ १०४. (देखो!) तुम में से एक जमाअ़त (उलमा की हमेशा) मौजूद रहे[८३] जो लोगों को भलाई की ओर बुलाये और नेक कार्य बतलाये और बुरे कार्यों से रोके। और यही लोग नजात पावेंगे[८४] १०५. और उन लोगों की तरह मत हो जाना (जो दुनियावी फ़ाइदे के लिये) आपस में फूट पड़े और आदेश पहुंचने के पश्चात् मुख़तलिफ़ हो गये (दुनिया में भी यह ज़लील हैं) और (क़ियामत के रोज़ भी) उन को बड़ा दन्ड हो गा[८५] १०६. जिस दिन बहुत से चेहरे चमकते हों गे और बहुत से (अपने बुरे कर्मों की वजह से) काले हों गे पस उस दिन काले मुंह वालों से फ़रिश्ते पूछेंगे कि क्या तुम ईमान लाने के बाद इन्कारी हुये थे? पस अपने इन्कार की वजह से अ़ज़ाब चखो १०७. (दूसरे लोग उन के मुक़ाबले में) सफ़ेद चेहरे वाले अल्लाह की रहमत में हमेशा-हमेशा आराम से रहें गे[८६] १०८. यह अल्लाह के आदेश हैं जो तुम को (ऐ नबी) सच-सच हम सुनाते हैं[८७] और अल्लाह का इरादा दुनिया के लोगों पर ज़ुल्म (अत्याचार) का हर्गिज़ नहीं।

---

८२. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि औस और ख़ज़रज नाम के दो सगे भाई थे उन की औलाद में एक बात पर १२० वर्ष तक लड़ाई होती रही, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने उस आग को बुझाया और उन के दर्मियान मुहब्बत डाल दी (मुवाहिब)

८३. हज़रत मुहम्मद बाक़र रह० ने कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस आयत को पढ़ कर फ़रमाया कि "ख़ैर" से मुराद यही कुरआन और मेरी सुन्नत पर अ़मल करना है (इब्ने मर्दूया) इमाम इब्ने कसीर ने फ़रमाया कि इस आयत का अर्थ यह है कि इस उम्मत में से एक गरोह इस कार्य का कष्ट अपने ऊपर उठाये अगर्चे यह काम

हर शख़्स पर उस की क्षमता के अनुसार वाजिब है जैसा कि सहीह मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिस ने तुम में से "मुन्कर" देखा यानी किसी को ऐसा काम करते देखा जो शरीअ़त में ग़लत है, तो चाहिये कि उस को अपने हाथों से बदल दे और अगर ऐसा न कर सके तो ज़बान से बदल दे और अगर ऐसा भी न कर सके तो दिल से बुरा जाने और यह सब से कमज़ोर ईमान है। इस के बाद राई के दाना के बराबर ईमान नहीं है। इस आयत में तर्क यह है कि अच्छे कामों का हुक्म देना और बुरे कामों से रोकना फ़र्ज़ है (इब्ने कसीर)

मतलब यह है कि जिस के दिल में अल्लाह का डर न हो और अपनी ही बात पर उस को ज़िद हो तो ऐसा शख़्स कभी भी हिदायत नहीं पा सकता, बल्कि दूसरों को भी उस से हानि पहुंचने का डर है (सनाई) "मारूफ़" से इस्लाम और अल्लाह की आज्ञा और "मुन्कर" से गुनाह मुराद है। आज-कल यह बड़ी अ़जीब बीमारी फैली है कि मुसलमानों ने नेक काम का हुक्म देने और बुरे काम से रोकने से बिल्कुल चुप्पी साध ली है। खुल्लम-खुल्ला तरह-तरह की बिदअ़तें और शिर्क के काम किये जाते हैं, कलिमा पढ़ने वाले मुसलमान कहलाने वाले क़ब्रों पर जा कर सज्दा करते हैं और अपनी ज़रूरतों के लिये दर्ख़ास्त (प्रार्थना पत्र) लटकाते हैं और अल्लाह का कोई भी बन्दा अपनी ज़बान इन के ख़िलाफ़ नहीं खोलता (वहीदी)

इस्लाम की तब्लीग़ और समाज के सुधार के लिये जमाअ़तें और कमेटियाँ बनाना और उन के ज़रीऐ अच्छे कामों का हुक्म देना और बुरे कामों से रोकना भी एक तरह से इस आयत के हुक्म पर अ़मल करना है (राज़)

८४. यह आयत उलमा की इ़ज़्ज़त बढ़ाने के लिये काफ़ी है कि अल्लाह तआ़ला उन की कामियाबी और इ़ज़्ज़त की सूचना देता है। याद रहे कि यह ज़िम्मे-दारी भी बड़ी है और सब से बढ़ कर यह कि वे अपने कहने पर खुद अ़मल भी करें वर्ना "ऐसी बात क्यों कहते हो जिस पर तुम अ़मल नहीं करते" (सूरः सफ़्फ, आयत३) के हुक्म में शामिल हो जाएंगे (सनाई)

८५. 'तफ़र्रुक़' से दीन में फूट और 'इख़्तिलाफ़' से दीन में इख़्तिलाफ़ मुराद है। और इस से यहूद और नसारा मुराद हैं और यही जमहूर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि इस से बिद्अ़ती लोग मुराद हैं। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यहूदी ७१ फ़िर्क़ों में बट गये और नसारा ७२ फ़िर्क़ों में और मेरी उम्मत ७३ फ़िर्क़ों में बट जाये गी, वह सब जहन्नम में जायें गे सिवाए एक के और वह "जमाअ़त" है (अबू दावूद, तिर्मिज़ी) आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा गया कि वह कौन सी जमाअ़त है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जो उस राह पर हो गी जिस पर मैं और मेरे सहाबा आज हैं (हाकिम) ज़ाहिर है कि तौहीद और सुन्नत की पैरवी करना ही नजात पाने वाले फ़िर्क़े का निशान है। यह जमाअ़त उन तमाम बिदअ़तों से दूर है जो इस्लाम के नाम पर बाद के लोगों ने गढ़ ली हैं। शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रह० फ़रमाते हैं कि नजात पाने वाले फ़िर्क़े का केवल एक ही नाम है यानी "अस्हाबुल् हदीस"। हसद, कीना रखना बिद्अ़ती लोगों की पहचान है (गुन्-यतुत्तालिबीन)

८६. इब्ने कसीर रह० फ़रमाते हैं कि "चमकते चेहरे" से मुराद अहले सुन्नत वल् जमाअ़त हैं और "काले मुंह वाले" से मुराद बिदअ़ती लोग हैं। यह हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० का क़ौल है। लेकिन अगर देखा जाये तो इस से हर प्रकार के लोग मुराद हैं, चाहे इस उम्मत के बुरे अक़ीदा के लोग हों या किसी और उम्मत के हों। खुलासा यह है कि जिन लोगों ने सीधी राह और खुली निशानियों में इख़्तिलाफ़ किया और हक़ की राह में मोमिनों को तक्लीफ़ दी, तो आख़िरत में उन मुश्रिकों और बिद्अ़ती लोगों के लिये बड़ा अ़ज़ाब है (मुवाहिब)

८७. इस प्रकार का मुहावरा उर्दू और हिन्दी भाषा में नहीं है इस लिये मुतकल्लिम (हाज़िर) का तर्जुमा ग़ाइब से किया गया (सनाई)

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّآ اَذًى ؕ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ۫ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْٓا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝ لَيْسُوْا سَوَآءً ؕ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ

१०९. और सब कुछ जो आकाश में और ज़मीन में है अल्लाह ही का है। और सब काम अल्लाह ही की ओर लौटते हैं ११०. (ऐ मुसलमानो!) तुम नेक जमाअ़त हो जो लोगों (की भलाई) के लिये पैदा किये गये हो नेक कामों का हुक्म करते हो और बुरे कामों से रोकते हो और अल्लाह (अकेले) पर ईमान रखते हो (भले काम लोगों को सिखलाते हो) और अगर (वह) किताब (कुरआन को) मान लेते तो उन के लिये अच्छा होता। कुछ उन में से मोमिन हैं और बहुत से उन में से बद कार हैं[८८] १११. तुम को सिवाए ज़बानी तक्लीफ़ पहुंचाने के हर्गिज़ कोई तक्लीफ़ न पहुंचा सकें गे। और अगर तुम से लड़ने को आयें गे तो पीठ दिखा कर भागें गे और कभी उन को मदद न पहुंचे गी[८९] ११२. ज़िल्लत उन पर थोपी गयी है जहाँ पाए जायें गे (ज़लील रहें गे)। मगर अल्लाह की पनाह में या लोगों की पनाह में (जिज़्या और टैक्स दे कर रहें गे तो अम्न पावें गे) अल्लाह के ग़ज़ब में आये हुये हैं और उन पर (ज़िल्लत और) ख़्वारी बरस रही है। क्यों कि अल्लाह के हुक्मों से इन्कार करते और नबिय्यों को नाहक़ (अकारण) क़त्ल करते थे। यह (उन की हालत) इस लिये (हुयी) कि अवज्ञा करते और सीमा से आगे बढ़ते थे[९०] ११३. यह सब बराबर (भी) नहीं[९१] (उन) किताब वालों में से कुछ लोग सीधी राह पर भी हैं जो सज्दा करते हुये अल्लाह की आयतें दिन-रात पढ़ते हैं[९२]

....

८८. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "आगाह हो जाओ! यह उम्मत अल्लाह तआ़ला के यहाँ सब से बेहतर और सब से बुज़ुर्ग है। हज़रत उमर रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जन्नत तमाम नबियों के लिये रोक दी जाये गी यहाँ तक कि मैं पहले उस में दाख़िल हूँ और सब उम्मतों पर हराम रहे गी यहाँ तक कि पहले मेरी उम्मत उस में दाख़िल होगी"। इमाम जाफ़र सादिक़ फ़रमाते हैं कि "नेक काम" से मुराद यह है कि कुरआन मजीद और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत पर अ़मल किया जाये (मुवाहिब)

८९. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० और उन के साथी जब मुसलमान हो गये तो यहूदियों ने उन को यातना देने का इरादा किया, इन लोगों के हक़ में यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई/मआ़लिम)

बुरे रास्ते पर चलने वालों का यह नियम और दस्तूर है कि जब तक नहीं दे पाते हैं तो गाली-गलोच पर उतर आते हैं और अख़्लाक़ व दियानत-दारी को तर्क कर देते हैं। इन बुरे लोगों ने नबियों के मुक़ाबले में भी यही

किया और आज भी यही करते रहते हैं।

९०. सच्ची दावत की मुख़ालिफ़त में सब से अधिक हिस्सा यहूदियों का है, लेकिन उन लोगों का हाल यह है कि नाफ़र्मानियों और सरकशी के कारण अल्लाह के ग़ज़ब का शिकार हो चुके हैं। यही कारण है कि उन के लिये दुनिया में कोई भी स्थान नहीं है। यहाँ पर अगर किसी को यह शुब्हा हो कि आज तो यहूदियों का अपना मुल्क 'इस्राईल' मौजूद है जहाँ से अपने बलबूते पर हुकूमत करते हैं, तो ऐसा सोचना ठीक नहीं। क्योंकि भले ही आज यहूदियों ने 'इस्राईल' नाम का मुल्क छीना-झपटी से बना लिया है। लेकिन वे पूरी तरह से अमरीका के रहमो करम पर (अधीन) हैं जो कि उन्हों ने अमरीका की फ़र्माबर्दारी के वादे के बदले में हासिल किया है। इसलिए उन पर इस आयत का हिस्सा यानी "लोगों की पनाह में" आज भी बिल्कुल सच उतरता है। इन को जहाँ कहीं भी पनाह (शरण) मिली है तो ज़िल्लत और नामुरादी की पनाह है। मतलब यह है कि या तो अहले-किताब होने के नाते लोगों ने छोड़ रखा है, या फिर हुकूमत करने वाली क़ौमों ने आज्ञा और फ़र्मा-बर्दारी करने का वादा ले कर ज़िन्दगी गुज़ारने की मुहलत दे दी है। चुनान्चे पहली हालत (स्थिति) अ़रब में थी और दूसरी रूम और ईरान में। इस लिये तुम लोगों को घबराने और परेशान होने की कोई अवश्यक्ता नहीं है। वह समय दूर नहीं है जब अ़रब में उन की बची-खुची ताक़त भी ख़त्म हो जाये गी।

यहाँ पर यह हक़ीक़त भी स्पष्ट हो गयी कि कुरआन क़ौमी महकूमिय्यत (गुलामी) को किस नज़र से देखता है? उस समय यहूदी रूमियों के अधीन, अम्न व शान्ति का जीवन बिता रहे थे और अ़रब में भी उन की बड़ी-बड़ी बसतियाँ आबाद थीं।, लेकिन चूँकि हुकूमत (शासन) उन के हाथ से निकल चुकी थी इस लिये फ़रमाया कि यह दूसरों के रहम व करम पर (अधीन) जीवन बिताने वाले हैं (तर्जुमान)

९१. शाने नुज़ूलः- अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० आदि के मुसलमान होने पर यहूदियों ने ताना दिया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के साथ शरीर और बुरे लोग होते हैं, उन में कोई भी शरीफ़ नहीं है, अगर शरीफ़ होते तो अपने बाप-दादा के रास्ते को क्यों छोड़ते, इस क़िस्सा के मुतअ़ल्लिक़ यह आयत उतरी (मआ़लिम)

मैं कहता हूँ कि बाप-दादा के रास्ते की मुहब्बत आ़म तौर पर लोगों की गुमराही का कारण बनती है, जिस को बराबर जाँचा-परखा जा चुका है। मुसलमान भी इसी महामारी में फंसे हुये हैं (ए अल्लाह मेरी क़ौम को हिदायत दे क्यों कि वह जाहिल हैं) (सनाई)

९२. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने कहा है कि 'रात के समय' से मुराद "आधी रात" है, यानी वह आधी रात ही से उठ कर तहज्जुद की नमाज़ में कुरआन शरीफ़ पढ़ते हैं। इस आयत में सज्दे से मुराद नमाज़ है क्यों कि सज्दे में कुरआन मजीद पढ़ना जाइज़ नहीं है। कुछ उलमा का कहना है कि "रात के समय" से मुराद अ़िशा की नमाज़ का समय है। और उन की तारीफ़ में यह इस लिये फ़रमाया कि यहूदी अ़िशा की नमाज़ नहीं पढ़ते थे और अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० वग़ैरह इस्लाम लाने के बाद अ़िशा की नमाज़ पढ़ने लगे थे।

الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿١١٣﴾ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ
الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ
الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿١١٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ

११४. अल्लाह और आख़िरत के दिन पर कामिल यक़ीन रखते हैं और नेक काम बतलाते हैं और बुरे कामों से रोकते हैं और नेक कामों में दौड़ते हैं और वह (आ़म हालत में) नेक हैं (अपने किये पर तकब्बुर नहीं करते) ११५. और जो नेकी वह करें गे उस की बेक़द्री न की जाये गी। और अल्लाह परहेज़गारों को भली भांति जानता

تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَآ أَوْلَادُهُم مِّنَ اللَّهِ
شَيْـًٔاۖ وَأُولَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلنَّارِۚ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿١١٦﴾
مَثَلُ مَا يُنفِقُونَ فِى هَٰذِهِ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا كَمَثَلِ
رِيحٍ فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوٓا۟
أَنفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُۚ وَمَا ظَلَمَهُمُ ٱللَّهُ وَلَٰكِنْ
أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٧﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَّخِذُوا۟
بِطَانَةً مِّن دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا وَدُّوا۟
مَا عَنِتُّمْ قَدْ بَدَتِ ٱلْبَغْضَآءُ مِنْ أَفْوَٰهِهِمْ

है ११६. और जो लोग (उस के हुक्मों के) इन्कारी हैं, उन के माल व औलाद अल्लाह के हाँ उन को कुछ काम न आवेंगे (बल्कि उन के लिये हानि कारक हों गे) यही लोग हमेशा जहन्नम में रहें गे ११७. दुनिया में जो कुछ (धर्म के प्रचार के लिये) ख़र्च करते हैं वह पाले वाली हवा की तरह है[९३] जो ज़ालिमों के खेत पर पहुंच कर उस को नष्ट कर देती है।[९४] अल्लाह तो उन पर किसी प्रकार अत्याचार नहीं करता लेकिन यह लोग स्वयं ही[९५] अपने आप पर अत्याचार करते हैं[९६] ११८. मुसलमानो! अपनी क़ौम के अ़लावा ग़ैर क़ौमों को (अपना) राज़दार[९७] (मित्र) न बनाना वह तुम्हें हानि पहुंचाने में कमी नहीं करते[९८]। तुम्हारे रंज में प्रसन्न होते हैं, तुम्हारी दुश्मनी उन के मुंहों से ज़ाहिर हो चुकी है।

....

९३. अहले-किताब तो हमेशा इसी फ़िक्र में थे कि किसी तरह मुसलमानों को फिसला दें। इस षडयंत्र (साज़िश) में सैकड़ों-हज़ारों रूपये ख़र्च करते, जैसा कि आज कल पादरी लोग कर रहे हैं। अल्लाह तआ़ला ने इन के ख़र्च और चन्दा के मतअ़ल्लिक़ बयान फ़रमाया है (सनाई) बातिल-परस्तों की चेष्टा न पहले कामियाब हुयीं और न अब होमी, इन्शाअल्लाह!

९४. अर्थात ऐसी हवा चली जिस में सख़्त सर्दी थी और उस ने बुरे लोगों के खेतों और फलों को तबाह-बर्बाद (नष्ट) कर दिया। और ऐसे ही काफ़िरों ने, जो कुछ ख़र्च किया है उन बुरे लोगों के खेत की तरह बर्बाद हो गया। यानी उन को उस ख़र्च करने का कुछ भी सवाब नहीं मिलेगा।

इमाम ज़ुजाज रह० ने कहा कि शब्द 'सिर्रुन' का अर्थ है "आग की लपट की आवाज़" मतलब यह कि उस हवा में आग की तरह गर्मी थी और उस ने खेत को राख का ढेर कर दिया (मुवज़्ज़िहुल् क़ुरआन)

९५. ऐसे ही अबू सुफ़ियान और अबू जेहल ने जो कुछ ख़र्च किया, मौत की हवा चलते ही वह बुरे लोगों के खेत की तरह सब तबाह-बर्बाद हो गया, उन को कुछ भी सवाब हर्गिज़ नहीं मिले गा। कुछ दूसरे उलमा का कहना है कि यहूद जो अपने आ़लिमों रईसों पर ख़र्च करते थे इस का उदाहरण है। कुछ और उलमा का कहना है कि तमाम काफ़िरों की ख़ैरात की मिसाल है। कुछ दूसरों ने कहा है कि रिया-कारों की ख़ैरात की मिसाल है। इमाम ज़ुजाज का कहना है कि 'सिर्रुन' आग के शोलों लप्टों की आवाज़ को कहते हैं। यानी उस हवा में गर्म आग थी वह खेत को लगी और सब कुछ जल कर ख़ाक हो गया।

९६. अल्लाह तआ़ला ने यहाँ यह जो फ़रमाया है कि "अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया" इस का अर्थ यह है कि उन की नेकियाँ जो बर्बाद हो गयीं, इस में स्वयं उन्हीं का क़ुसूर है। न वह अल्लाह की अवज्ञा और कुफ़्र करते और न उन की नेकियाँ बर्बाद होतीं। तो गोया उन्हों ने अपने ऊपर स्वयं ही अत्याचार कर के अपना नुक़्सान किया। (वहीदी)

९७. 'बिताना' से मुराद "पाक-साफ़ लोग" हैं। यानी गहरे मित्र मत बनाओ कि उन्हें अपना तमाम राज़ बता दो। इस का दूसरा नाम 'वलीजा' है। 'बिताना' हर उस शख़्स को कहा जायेगा जिस को आदमी अपना तमाम राज़ बतला

➲ दे और उस पर भरोसा करे। वैसे इस का सही अर्थ "अस्तर है। इमाम इब्ने कसीर ने कहा कि मुनाफ़िक़ों से राज़-दारी न रखें, इस लिये कि वह मोमिनों के साथ मौक़ा पाते ही अवश्य कोई न कोई चाल चलेंगे। और दीन वालों के अ़लावा किसी से अधिक न घुलें-मिलें (मुवाहिब)

९८. शाने नुज़ूलः- कुंछ मुसलमान रिश्ते-दारी और मित्रता के कारण यहूदियों से दोस्ती रखते थे, उन को मना करने के लिये यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ ۚ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ
الْآيَاتِ ۖ إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٨﴾ هَا أَنْتُمْ أُولَاءِ
تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ
كُلِّهِ ۚ وَإِذَا لَقُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا ۚ وَإِذَا خَلَوْا عَضُّوا
عَلَيْكُمُ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ۚ قُلْ مُوتُوا بِغَيْظِكُمْ ۗ
إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١١٩﴾ إِنْ تَمْسَسْكُمْ
حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَإِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا
بِهَا ۖ وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ
شَيْئًا ۗ إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿١٢٠﴾ وَإِذْ غَدَوْتَ
مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۗ
وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٢١﴾ إِذْ هَمَّتْ طَائِفَتَانِ مِنْكُمْ
أَنْ تَفْشَلَا وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا ۗ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٢٢﴾ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَ

और जो उन के दिलों में (हसद) है (वह) बहुत बड़ा है। हम ने तुम्हारे लिये निशानात बतलाये हैं अगर तुम समझदार हो (तो समझ लो) ११९. देखो तो सही! तुम तो उन्हें चाहते हो और वह तुम्हें नहीं चाहते और तुम सब किताबों को मानते हो (और वह नहीं मानते) और वह जब कभी तुम से मिलें गे तो (मज़ाक़ करते हुये) कहते हैं कि हम (भी क़ुरआन को) मानते हैं, और जब अलग होते हैं तो तुम्हारे हसद में अपनी उँगलियां चबाते हैं। कह दो कि अपने गुस्सा में भरे रहो। अल्लाह तुम्हारे दिलों की बातों को जानता है (ख़ूब ही सज़ा दे गा) १२०. अगर तुम को भलाई पहुंचे तो रंजीदा (दुःखी) होते हैं और अगर तुम को तक्लीफ़ हो तो उस से प्रसन्न होते हैं। अगर तुम सब्र करते और (शरीअ़त की सीमाओं से आगे बढ़ने से) बचते रहो गे तो उन की मक्कारियाँ तुम को कुछ भी हानि न पहुंचायेंगी। निःसंदेह अल्लाह उन के कामों को घेरे हुये है १२१. और याद कर जब तू अपने घर वालों से निकल कर मोमिनों को लड़ाई के स्थान पर बिठाता था (और कुफ़्फ़ार भी बड़ा लश्कर ले कर तुम्हारे मारने को आये थे[९९]) और अल्लाह सुनता-जानता था १२२. और जब कि (अपनी जमाअ़त की कम तादाद और दुश्मनों की ज़्यादा तादाद को देख कर) तुम में से दो क़बीलों ने फ़िसलना चाहा, अल्लाह उन का वाली था। और मोमिनों को चाहिये कि अल्लाह ही पर भरोसा किया करें[१००] १२३. अल्लाह ने बद्र की लड़ाई के मौक़ा पर

....

९९. यह घटना उहुद की लड़ाई के दिन की है। जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम १००० या ९५० सहाबा को ले कर लड़ाई के लिये निकले तो उन में से ३०० मुनाफ़िक़ वापस हो गये। मुश्रिकों की तादाद ३००० के लग-भग ➲

➲ थी जिन के कमान्डर अबू सुफ़ियान थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उहुद की घाटी पर "अ़द्वा" नाम के एक स्थान पर ७ शव्वाल सन् ३ हिज्री, सनीचर के दिन पड़ाव डाला। अपनी फ़ौज की पीठ उहुद पहाड़ की ओर कर दी और मोमिन मुजाहिदों की सफ़ें दुरूस्त कीं। और उहुद के दर्रे पर ५० तीर चलाने वालों को बिठा दिया जिन के कमान्डर अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० थे। और इन लोगों को आदेश दिया कि मुश्रिकों के लश्कर को तीर मार-मार कर हम से परे रखना ताकि वह हमारे पीछे से हम्ला न करने पायें। और यह भी ताकीद फ़रमा दी कि अपनी जगह से मत हटना चाहे हम लड़ाई में मैदान जीतें या हारें।

१००. क़बीला बनू सलमा और बनू हारिसा के लोग भी जंग न लड़ने की निय्यत से दिल में वापस होने का इरादा रखते थे, लेकिन अल्लाह ने उन को साबित-क़दम रखा और वह नहीं लौटे (मुवाहिब).

اَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ﴿۱۲۳﴾ اِذۡ تَقُوۡلُ لِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ اَلَنۡ يَّكۡفِيَكُمۡ اَنۡ يُّمِدَّكُمۡ رَبُّكُمۡ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الۡمَلٰٓئِكَةِ مُنۡزَلِيۡنَ ﴿۱۲۴﴾ بَلٰٓى ۙ اِنۡ تَصۡبِرُوۡا وَتَتَّقُوۡا وَيَاۡتُوۡكُمۡ مِّنۡ فَوۡرِهِمۡ هٰذَا يُمۡدِدۡكُمۡ رَبُّكُمۡ بِخَمۡسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الۡمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيۡنَ ﴿۱۲۵﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشۡرٰى لَكُمۡ وَلِتَطۡمَئِنَّ قُلُوۡبُكُمۡ بِهٖ ؕ وَمَا النَّصۡرُ اِلَّا مِنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ الۡعَزِيۡزِ الۡحَكِيۡمِ ﴿۱۲۶﴾ لِيَقۡطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اَوۡ يَكۡبِتَهُمۡ فَيَنۡقَلِبُوۡا خَآئِبِيۡنَ ﴿۱۲۷﴾ لَيۡسَ لَكَ مِنَ الۡاَمۡرِ شَىۡءٌ اَوۡ يَتُوۡبَ عَلَيۡهِمۡ اَوۡ يُعَذِّبَهُمۡ فَاِنَّهُمۡ ظٰلِمُوۡنَ ﴿۱۲۸﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ يَغۡفِرُ لِمَنۡ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۱۲۹﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ

जब कि तुम निहायत (बि ताक़त) थे तुम्हारी सहायता की, पस तुम अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम शुक्र गुज़ार बनो १२४. और जब तू (ऐ नबी) मोमिनों से कह रहा था कि क्या तुम्हें काफ़ी नहीं? कि तुम्हारा रब (आकाश से) उतरे हुये तीन हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हारी सहायता करे (जिस का उत्तर तू उन की तरफ़ से स्वयं ही देता कि) १२५. क्यों नहीं अगर तुम सब्र करते और डरते रहो गे और वह तुम पर ऐसे ही जोश से चढ़े आयें गे तो (भविष्य में) पांच हज़ार फ़रिश्तों की लैस (और तय्यार) फ़ौज से अल्लाह तुम्हारी मदद करे गा[१०१] १२६. (अस्ल में) यह तो अल्लाह ने तुम्हारे केवल प्रसन्न करने को किया था (ताकि तुम घबराओ नहीं और) ताकि तुम्हारे दिल इस से मज़बूत रहें। वर्ना विजय तो अल्लाह ही के हाँ से है जो सब पर ग़ालिब बड़ी हिक्मत वाला है १२७. (तुम्हारी विजय और मदद इस लिये है कि) काफ़िरों की एक जमाअ़त को हलाक या बाज़ को मग़लूब करे पस नामुराद हो कर वापस जायें[१०२] १२८. तुझे कोई इख़्तियार नहीं कि (अल्लाह चाहे) उन पर रहम करे या उन को अ़ज़ाब दे निःसंदेह वह ज़ालिम हैं (मगर फिर भी यह सब इख़्तियार अल्लाह को है)[१०३] १२९. आकाश और ज़मीन की समस्त वस्तुयें अल्लाह ही की हैं। जिस को चाहे बख़्श सकता है और जिस को चाहे दन्ड दे सकता है। और अल्लाह बख़्शने वाला बड़ा दयालु है १३०. मुसलमानो!

....

१०१. सब्र करने का जो आदेश दिया गया है उस का लाभ यह है कि कठिनाइयों और मुसीबतों का हिम्मत और ➲

➲ बहादुरी के साथ मुक़ाबला किया जाये। 'तक़्वा' की हक़ीक़त यह है कि एहतियात और परहेज़गारी की रूह पैदा हो। बद्र की लड़ाई के मौक़ा पर यह दो शक्तियाँ (सब्र, तक़्वा) मौजूद थीं, इस लिये तुम्हारी मुट्ठी भर तादाद ने दुश्मन की बहुत बड़ी तादाद को शिकस्त दे दी। लेकिन उहुद की लड़ाई के मौक़ा पर तुम ने कमज़ोरी दिखाई, सब्र और तक़्वा की परीक्षा में तुम पूरे नहीं उतरे, तो इस का परिणाम भी यह निकला कि नुक़्सान उठाना पड़ा और दुश्मन को शिकस्त न दे सके। इस सिलसिले में कई नियम और उसूल स्पष्ट तौर पर सामने आ गये (१) उहुद की लड़ाई के मौक़ा पर मुनाफ़िक़ों के बहकाने से आरंभ ही से सब्र और तक़्वा की रूह कमज़ोर पड़ गयी थी इस लिये (नतीजा) वही होना था जो पेश आया (२) इस हक़ीक़त की ओर भी इशारा है कि अत्याचार और कुफ़्र करने वालों की बुराइयों से संदेष्टा, हादी और इस्लाह करने वालों को उन की हिदायत और राह-नुमाई से मायूस नहीं होना चाहिये (३) हक़ की दावत को मानने वाले उन बुराइयों से पाक-साफ़ हो जायें जो दिल के अन्दर कमज़ोरी का रोग पैदा करने वाली हैं (४) इस के अलावा माल-दौलत के लालच में जब तक यह रोग दिलों में मौजूद है जान को क़ुर्बान कर देने की सच्ची रूह पैदा नहीं हो सकती।

१०२. जिन लोगों ने इस आयत को उहुद की लड़ाई से जोड़ा है वह यह अर्थ बयान करते हैं कि लड़ाई के आरंभ में हज़रत अम्मार रज़ि० और हज़रत अली रज़ि० ने आगे बढ़-चढ़ कर मुश्रिकों को क़त्ल किया, इस व्याख्या से अधिक करीब बद्र का दिन है उस में क़ुरैश के ७० जवान मारे गये और ७० ही बन्दी बनाये गये। इस आयत में इस बात की तरफ़ इशारा है कि जंग के सामान और हथियारों पर नज़र न रखें, बल्कि अल्लाह पर भरोसा करें (मुवाहिब)

१०३. शाने नुज़ूल:- उहुद की लड़ाई में जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बहुत तक्लीफ़ पहुंची, यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दाँत शहीद हो गये (टूट गये) और सर में चोटें आयीं तो उस समय आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "वह क़ौम क्यों कर नजात पा सकती है जिस ने अपने नबी का सर फोड़ा और दाँत तोड़ा"। फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कुफ़्फ़ार के हक़ में एक-एक का नाम ले कर लानत भेजी। उन में से कुछ ऐसे भी थे जो अन्त में इस्लाम ले आये, इस से रोकने को यह आयत नाज़िल हुयी--और विस्तार से देखना हो तो तफ़्सीर "मआ़लिम" को देखें (सनाई)

آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبٰوٓا أَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۖ وَّاتَّقُوا
اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٣٠﴾ وَ اتَّقُوا النَّارَ الَّتِيٓ أُعِدَّتْ
لِلْكٰفِرِينَ ﴿١٣١﴾ وَ أَطِيعُوا اللّٰهَ وَ الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُونَ ﴿١٣٢﴾ وَسَارِعُوٓا إِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ
وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْأَرْضُ ۙ أُعِدَّتْ
لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٣﴾ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّرَّآءِ وَ
الضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِينَ الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ
عَنِ النَّاسِ ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣٤﴾ وَ الَّذِينَ
إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوٓا أَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا

दो गुना चौगुना सूद न खाया करो (बल्कि सिरे से ही इस बुरी आ़दत को छोड़ दो) और अल्लाह से डरो ताकि तुम्हारा भला हो[१०४] १३१. और (निक काम कर के) उस आग से बचो जो नाशुक्रे बन्दों के लिये तय्यार है[१०५] १३२. और अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा पालन करो ताकि तुम पर रहम हो १३३. और अपनी बख़्शिश की तरफ़ दौड़ो और (निक कार्य कर के) उस बाग़ की तरफ़ जल्दी करो जिस का फैलाव आकाश और ज़मीनों जितना है जो परहेज़-गारों के लिये तय्यार है १३४. जो (केवल अल्लाह को प्रसन्न करने के लिये) कुशादगी और तन्गी में ख़र्च करते हैं और गुस्सा भी दबा लेते हैं और ➲

اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۖ وَمَنْ يَّغْفِرُ
الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۗ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا
وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٥﴾ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ
مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

(तक्लीफ़ पहुंचाने वाले) लोगों को (क़ुसूर) माफ़ कर देते हैं। (इस लिये कि) एहसान करने वाले अल्लाह को भाते हैं १३५. और जब फ़हश या (किसी ग़लती की वजह से) अपने हक़ में बुराई कर गुज़रें तो तुरन्त अल्लाह को याद करते हैं और गुनाहों की बख़्शिश चाहते हैं[१०६] (और) अल्लाह के अ़लावा कौन गुनाह बख़्शता है, और (बड़ी बात यह है कि कभी उन से ग़लती हो जाये तो) जान बूझ कर अपनी ग़लती पर अड़ते नहीं,[१०७] १३६. उन्हीं लोगों का बदला अल्लाह के हाँ से बख़्शिश है और कई बाग़ जिन के नीचे नेहरें बह रही हैं

....

१०४. शाने-नुज़ूलः- क़बीला बनू सक़ीफ़ और बनू नज़ीर के लोग जाहिलिय्यत के ज़माना में आपस में क़र्ज़ का लेन देन करते थे और जब क़र्ज़ के अदा करने का समय आता तो क़र्ज़ लेने वाला अपने क़र्ज़ देने वाले से मुहलत ले कर उस रक़म पर और ज़्यादती करा लेता, इस पर यह आयतें नाज़िल हुयीं। 'मुज़ाअ़फ़ह' (दो गुना-चार गुना) की क़ैद इस वास्ते नहीं है कि सूद खाना इस क़ैद के साथ जब कि दो गुना-चार गुना हो तब हराम है वर्ना नहीं, क्यों कि पहले ही मालूम हो चुका है कि सूद हर हाल में सरासर हराम है (मुवाहिब)

आज कल के कुछ उलमा जो इस्लाम को एक नये साँचे में ढालने के लिये हाथ-पैर मार रहे हैं, इस चेष्टा में हैं कि किसी प्रकार सूद को जाइज़ कर लिया जाये। उन की यह ग़लत कोशिश नाकाम ही रहे गी, इस लिये कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शरीअ़त के नियम और उसूल क़ियामत तक के लिये बिना किसी कमी-बेशी के मुक़र्रर किये गये हैं। इस्लाम धर्म दूसरे धर्मों के समान नहीं है कि जब चाहा और जो चाहा बदल दिया। इस लिये सूद की तमाम ही शक्लें चाहे वह नई हों या पुरानी सब की सब हराम हैं। हदीस शरीफ़ में सूद खाने का सब से कम गुनाह यह बतलाया गया है कि जैसे कोई शख़्स अपनी माँ से ज़िना करे। इस से अनुमान लगाया जा सकता है कि सूद खाना कितना महा पाप है।

१०५. बाज़ शराबी-कबाबी शाइर (कवि) और जाहिल सूफ़ी (और आज-कल के अल्लाह को न मानने वाले) यूँ कह देते हैं कि जन्नत के लालच में अल्लाह पाक की इबादत नहीं करनी चाहिये, उन का यह कहना क़ुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ है, क्यों कि इस आयत में अल्लाह पाक ने हुक्म दिया है कि जन्नत को हासिल करने में बड़ी मेहनत और कोशिश करो। और सूरः हदीद के रुकूअ़ ३ और सूरः बक़रः के रुकूअ़ ३७ में और सूरः यूनुस के रुकूअ़ ३ और सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन में अल्लाह ने जन्नत के वास्ते कोशिश करने का हुक्म दिया है और यूँ फ़रमाया है "अल्लाह तुम को जन्नत की तरफ़ बुलाता है"। क़ुरआन पाक में और भी बहुत सी आयतों में जन्नत की और जन्नत वालों की प्रशन्सा की है। बहुत सारी हदीसें भी जन्नत को हासिल करने की ओर तवज्जुह दिलाती हैं। (अहादीसुत्तफ़ासीर)

१०६. यहाँ पर मुत्तक़ी लोगों की ख़ूबियों (विशेष्ताओं) का ज़िक्र है कि (१) चाहे उन की हालत अच्छी हो या बुरी, हर हाल में अल्लाह का दिया हुआ माल उस की राह में ख़र्च करते हैं (२) गुस्से की हालत में आपे से बाहर नहीं हो जाते (३) लोगों की ग़लतियों को माफ़ कर देते हैं (४) अगर उन से गुनाह का काम हो जाये तो तुरन्त होशियार हो कर अल्लाह के सामने तौबा व इस्तिग़फ़ार करते हुये सर झुका देते हैं (तर्जुमान)

१०७. हज़रत अबू सअ़ीद रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "शैतान ने अल्लाह तआ़ला से कहा कि ऐ पर्वर्दिगार! तेरी अ़िज़्ज़त की क़सम! मैं बराबर आदम की औलाद को गुमराह करूँ गा जब तक उन की जानें उन के बदन में रहें गी, इस पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: "मुझे मेरी अ़िज़्ज़त और

➲जलाल की क़सम! मैं बराबर उन को बख़्श्ता रहूँ गा जब तक वह बख़्शिश माँगते जायेंगे" (अहमद) एक दूसरी हदीस में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "उन लोगों के लिये ख़राबी है जो अपनी बदकारी पर अड़े रहते हैं, हालाँकि वह जानते हैं"। (अहमद)

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝ ھٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَھُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ۭ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُھَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَاۗءَ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۠ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ

हमेशा उन में रहें गे (लोगो! नेक अ़मल करो) और (ग़ौर करो कि) नेक कार्य करने वालों का कैसा अच्छा बदला है १३७. तुम से पूर्व बहुत सारी घटनायें घट चुकी हैं[१०८] पस तुम ज़मीन में फिरो फिर देखो कि झुठलाने वालों का अन्ज़ाम (अन्त) कैसा (बुरा) हुआ[१०९] १३८. यह लोगों के लिये ब़यान और हिदायत और (विषेश कर परहेज़-गारो) के लिये नसीहत है (कि वह इन घटनाओं से अच्छा नतीजा निकालते हैं) १३९. तुम न तो सुस्त होओ और न ग़मगीन अगर तुम ईमान-दारी पर मज़बूत रहो गे तो तुम ही ग़ालिब हो गे[११०] १४० अगर तुम को तक्लीफ़ पहुंचे तो (सुस्त होने की कोई वजह नहीं, क्यों कि) कुफ़्फ़ार की क़ौम को भी उतनी ही तक्लीफ़ पहुंच चुकी है (तो जब वह सुस्त नहीं हुये तो तुम क्यों सुस्त होते हो) ज़माना कि गर्दिश (चक्र) हम लोगों में फेरते रहते हैं[१११] (और अब की बार तक्लीफ़ किसी क़द्र तुम को) इस लिये (पहुंची है) कि अल्लाह ईमान-दारों की तमीज़ कर दे और बाज़ को तुम में से (शहादत का दर्जा दे कर) शहीद बनाये और अल्लाह को ज़ालिम (मुश्रिक) नहीं भाते १४१. और (इस से यह भी ध्यान रहे) ताकि अल्लाह मोमिनों को निखारे और कुफ़्फ़ार को जड़ से काटे १४२. क्या तुम समझ बैठे हो कि यूँ ही जन्नत में चले जाओ गे हालाँकि अभी अल्लाह ने जिहाद करने वालों को तुम से अलग नहीं किया और सब्र करने वालों की तमीज़ (छंटनी) भी नहीं की[११२] १४३. (इस थोड़ी सी तक्लीफ़ पर तुम्हारी सुस्ती अ़जब आश्चर्य जनक है) तुम तो इस से पूर्व मरने की इच्छा रखते थे पस तुम उसे आँख से देख चुके हो

....

१०८. 'सुनन' का अर्थ है "सुन्नत" यानी तरीक़ा। और इस से मुराद वह घटनायें हैं जो अल्लाह ने पहले की उम्मतों पर नाज़िल कीं। इस का अर्थ यह हुआ कि तुम से पूर्व अगली उम्मतों के काफ़िरों और रसूलों के झुटलाने वालों के तरीक़े गुज़र चुके हैं कि अल्लाह ने एक समय पर उन को जड़ से काट दिया। 'फ़सीरू' मे यह आदेश नहीं है➲

कि तुम ज़मीन में चलो-फिरो, बल्कि इस का अर्थ यह है कि नसीहत हासिल करो और इस से पाठ सीखो (मुवाहिब)
१०९. 'सीरू' और 'उन्ज़ुरू' में अगर्चे आदेश है, लेकिन इस का मतलब चलने-फिरने का हुक्म नहीं है, बल्कि कहना यह है कि जाहिल और सरकश क़ौमों से नसीहत पकड़ो और यह चाहे जिस ज़रीआ से हो। चाहे चल-फिर कर या चाहे इतिहास (तारीख़) पढ़कर। यह बात ध्यान देने के क़ाबिल है कि साहित्य वग़ैरह का पढ़ना अगर ईमान और नसीहत हासिल करने की ग़रज़ से हो तो यह अपनी जगह पर स्वयं एक जिहाद है (माजिदी)

यह घूमने-फिरने और एक दूसरे स्थान पर आने-जाने की बर्कत है कि पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण के समस्त वासी आपस में एक दूसरे से बहुत ही निकट हो चुके हैं और अब इन लोगों के बीच में दूरी नाम की कोई वस्तु ही नहीं रही, यह भी क़ुरआन मजीद के आदेश ही का परिणाम है।
११०. यानी काफ़िरों के साथ लड़ने से न घबराओ और न ही उस बात पर रंजीदा हो जो तुम्हें उहुद की लड़ाई में पहुंची, आख़िर में तुम्हीं को कामियाबी मिलनी है गोया कि तुम कभी पराजित ही नहीं हुये। यह वाक्य (जुम्ला) "इस्मिय्या" है जिस में बशारत (शुभ सूचना) मौजूद है।
१११. यह जंग का मैदान है इस में कभी एक फ़रीक़ जीतता है तो कभी दूसरे की बारी आती है। बद्र में तुम्हारी चोट उन पर लगी थी और उहुद में उन की चोट तुम पर लग गयी। लेकिन जमाअ़तों के आपस के टकराव की तारीख़ में एक दो मैदानों की हार-जीत क्या अहमिय्यत रखती है? अस्ल चीज़ जो सोचने की है वह तुम्हारे दिलों की ईमानी शक्ति है। अगर तुम्हारे अन्दर ईमान की सच्ची रूह मौजूद है तो फिर दुनिया में जीत और कामियाबी केवल तुम्हारे ही लिये है।
११२. ....

تَنْظُرُوْنَ ۝ وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۭ اَفَا۟ىِٕنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ
عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ۭ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰي عَقِبَيْهِ فَلَنْ
يَّضُرَّ اللّٰهَ شَـيْـــًٔا ۭ وَسَيَجْزِي اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ۝
وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا
مُّؤَجَّلًا ۭ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ
وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۭ وَسَنَجْزِي
الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ
رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ اَصَابَهُمْ فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ۭ وَاللّٰهُ
يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ
قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ

१४४. (अभी तो हमारा रसूल भी तुम में मौजूद है[११३] हालाँकि) मुहम्मद[११४] अल्लाह के केवल रसूल हैं (जिन का हमेशा के लिये जीना संभव नहीं) उन से पहले कई रसूल हो गुज़रे हैं अगर वह (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) (अपनी मौत से) मर जाये या (लड़ाई के मैदान में) मारा जाये तो क्या तुम दीन से फिर जाओ गे? जो कोई दीने इस्लाम से फिर जाये गा वह अल्लाह का कुछ न बिगाड़े गा[११५] और अल्लाह शुक्र-गुज़ारों को बदला दे गा १४५. (मौत कोई इख़्तियारी मामला नहीं) बग़ैर अल्लाह के हुक्म के कोई मर नहीं सकता, अल्लाह का मुक़र्रर (सुनिश्चित) किया हुआ समय है (जिस पर मौत आती है[११६]) इस लिये जो कोई दुनिया ही की नेक-नामी चाहता है हम भी उस में से उसे कुछ दे देते हैं और जो कोई आख़िरत का बदला

चाहे तो हम उस को उस में से देंगे और हम शुक्र- गुज़ारों को (अच्छा) बदला दें गे १४६. (क्या तुम नहीं जानते) कि बहुत से अल्लाह वाले लोग कई नबियों के साथ हो कर लड़ते रहे, फिर न तो वह अल्लाह की राह में तक्लीफ़ पहुंचने से हारे और न सुस्त हुये[११७] और न (दुश्मनों से) दबे (वह इस जमे रहने का सवाब पायें गे इस लिये कि) अल्लाह सब्र करने वालों से प्रेम करता है[११८] १४७. (सख़्त से सख़्त तक्लीफ़ में भी) उन की आवाज़ यही होती थी[११९] कि ऐ हमारे मौला! हमारे गुनाह बख़्श दे और सुस्ती जो दीन के बारे में हम से हुयी हो माफ़ फ़रमा और हम को (दुश्मनों के मुक़ाबला में) जमाए रख और हम को काफ़िरों की क़ौम पर विजय दिला[१२०]

....

११३. शाने नुज़ूल:- उहुद की घमासान लड़ाई के दर्मियान ही यह आवाज़ आई कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम शहीद हो गये जिस से मुसलमान हिम्मत हार बैठे। जैसा कि आ़म तौर पर देखा गया है कि कमान्डर के न होने से अक्सर ऐसा ही होता है, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

११४. 'मुहम्मद' यह मुबारक नाम क़ुरआन में पहली बार आया है। इस का लफ़्ज़ी अर्थ है "वह शख़्स जिस की प्रशन्सा बहुत या बार-बार की जाये" या "जो बहुत सी ख़ूबियों का मालिक हो" यह शब्द इस्मे-आज़म है हमारे रसूल और दुनिया के अन्तिम सन्देष्टा का। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नबी बनाये जाने से पूर्व इस नाम का चलन बहुत ही कम था। अ़ल्लामा अबू मुहम्मद बिन हबीब बग़दादी रह० ने (नबुव्वत से पूर्व) कुल सात आदमियों के नाम मुहम्मद गिनाये हैं। उन में से एक शख़्स मुहम्मद बिन सुफ़ियान बिन मजाशे के बारे में तो यह कहा है कि उन के पिता ने मुल्क शाम के एक राहिब (पादरी) से जब यह सुना कि अन्तिम सन्देष्टा का नाम मुहम्मद हो गा, तो उन्हों ने अपने पुत्र का नाम भी मुहम्मद रख दिया। हक़ीक़त यह है कि अ़रब में आ़म तौर पर यह नाम आ़म न था (माजिदी) किसी कवि के एक छन्द का क्या ही प्यारा अर्थ है "अल्लाह तआ़ला ने आप के नाम मुहम्मद को अपने नाम से निकाला (इस प्रकार) अर्श वाला "महमूद" है और आप "मुहम्मद" हैं (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) यह इतना प्यारा नाम है कि हर मुसलमान अपनी जान से भी अधिक इस नाम की क़द्र करता है।

११५. इस आयत में इस हक़ीक़त की ओर इशारा किया गया है कि सब से अहम और अस्ल चीज़ उसूल, नियम और अक़ीदा है, न कि ज़ात और फ़र्द। कोई इन्सान कितना ही बड़ा क्यों न हो, लेकिन इस के सिवा कुछ नहीं है कि अगर किसी वजह से वह हम में मौजूद न रहे, या दर्मियान से हट जाये तो हम सच्चाई की राह से क्यों मुंह मोड़ लें? या किसी फ़र्ज़ के अदा करने में क्यों कोताही करें? सच्चाई की वजह से वह ज़ात कुबूल की जाती है। यह बात नहीं है कि उस ज़ात और शख़्स की वजह से सच्चाई, सच्चाई हो गयी हो। उहुद की लड़ाई में किसी ने यह बात पुकार दी थी कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम शहीद हो गये। यह सुन कर बहुत से मुसलमानो के दिल बैठ गये, यहाँ इसी वाक़िआ़ की ओर इशारा है। (तर्जुमान)

११६. फ़ारस मुल्क पर जिहाद करने की हालत में दजला नदी के इधर मुसलमान और उधर ईरान की फ़ौज थी। एक मुसलमान ने कहा कि तुम को कौन सी चीज़ इन दुश्मनों की तरफ़ जाने से रोकती है? यह दजला नदी क्यों कर मौत दे सकती है? इस लिये कि अल्लाह ने फ़रमा दिया है "बिना अल्लाह के हुक्म के कोई मर नहीं सकता इसलिये कि मौत के लिये अल्लाह ने एक समय मुक़र्रर किया हुआ है" यह कह कर दजला नदी में उस ने घोड़ा डाल दिया, उस के पीछे मुसलमानों ने भी दजला नदी में घोड़े उतार दिये। ईरानियों ने जब यह हाल देखा तो अपनी भाषा में एक दूसरे से कहने लगे "देव आमदन्द" (देव आ रहे हैं) यह कहते हुये डर कर भाग खड़े हुये (हातिम) (मुवाहिब)

११७. कुछ लोगों ने इस आयत का तर्जुमा यूँ किया है "और कई सन्देष्टा मारे गये जिन के साथ बहुत से अल्लाह वाले थे---------" इस आयत से अल्लाह तआ़ला मुसलमानों को तसल्ली देता है कि यह कोई नई बात नहीं

➲है, इस से पहले बहुत से सन्देष्टा ऐसे भी गुज़रे हैं जिन्हों ने काफ़िरों के हाथों सख़्त तक्लीफ़ उठाई हैं लेकिन उन्हों ने हिम्मत नहीं हारी, और तुम एक ही शिकस्त (पराजय) से ऐसे बे दिल क्यों हुये जाते हो? (वहीदी)

इस्लाम और इस उम्मत की मिसाल उन पौधों की सी है जो जितने ही काटे जायें, उतने ही अधिक वह पुनः फलते-फूलते हैं।

११८. अल्लाह तआला ने इस आयत और इस से पूर्व की आयत में उन मुसलमानों पर नाराज़गी जताई है जो उहुद की लड़ाई के दिन केवल इतना ही सुन कर जंग के मैदान से भाग निकले थे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़त्ल कर दिये गये। अल्लाह तआला ने ऐसे लोगों को मलामत करते हुये कहा कि इस से पूर्व ऐसे कितने ही सन्देष्टा गुज़रे हैं जो क़त्ल किये गये और उन के साथ उन के पैरूकार भी थे, मगर उन के पैरूकार न भागे, तो तुम ने मैदान क्यों छोड़ दिया? क्या नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़त्ल होने से भला कोई दीन छोड़ कर भागता है? (मुवाहिब)

११९. इस से इशारा हो गया कि उन लोगों के अमल में कोताही तो क्या होती, उन की ज़बान तक भी हम्द व तस्बीह और आजिज़ी और कुसूर के एतिराफ़ के लिये वक़्फ़ रही। 'जुनूब' से मुराद छोटे-छोटे गुनाह हैं और 'इस्राफ़' से कबीरा गुनाह। इस से क़द्रिया फ़िर्के का रद्द भी निकल रहा है जो कहते हैं अल्लाह बन्दों के अमलों का पैदा करने वाला नहीं है (माजिदी)

१२०. सच्चा मोमिन वह है जो सख़्ती और मेहनत में न तो बेहिम्मत हो कर कमज़ोर पड़े और न किसी भी हाल में ज़ालिमों के आगे अपनी बेचारगी और आजिज़ी का इज़्हार गवारा करे। 'वह्न' यह है कि बे हिम्मत हो कर बैठे रहे और 'ज़ुअफ़' यह है कि मैदान में निकले मगर कमज़ोरी दिखाए। 'इस्तका- नतुल् ख़स्मि' का मतलब यह है कि लाचार हो कर दुश्मन के आगे गिड़गिड़ाने लगे (तर्जुमान)

أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ
الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤٧﴾ فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَ
حُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤٨﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
يَرُدُّوْكُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾ بَلِ
اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ﴿١٥٠﴾ سَنُلْقِيْ فِيْ
قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَآ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ
مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۗ وَ
بِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٥١﴾ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ
وَعْدَهٗٓ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰٓى اِذَا فَشِلْتُمْ وَ
تَنَازَعْتُمْ فِى الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْ بَعْدِ مَآ
اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ۗ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَ

१४८. फिर अल्लाह ने उन को दुनिया का बदला (यानी जीत) भी दिया और आख़िरत का बदला भी बहुत ख़ूब बख़्शा। इस लिये कि अल्लाह को नेकी करने वाले भाते हैं १४९. मुसलमानो! अगर तुम (उन) काफ़िरों के (किसी बात में) ताबे (अधीन) हुये तो तुम को दीन से फेर दें गे फिर तुम टूटे में पड़ जाओ गे १५०. (यह ग़लत कहते हैं कि अल्लाह तुम्हारा सहायक नहीं) बल्कि अल्लाह तुम्हारा वली है, और वह सब से अच्छा यहायक है (किसी की सहायता उस के बराबर नहीं) १५१. हम (अल्लाह) काफ़िरों के दिलों में तुम्हारा ख़ौफ़ डालें गे क्यों कि उन्हों ने अल्लाह के साथ ऐसी चीज़ को शरीक ठेहराया जिस की शिर्कत की अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी[२१] (इस लिये) उन का ठिकाना दोज़ख़ है। और वह ज़ालिमों के➲

➲लिये बहुत बुरी जगह है[१२२] १५२. अल्लाह ने तो अपना वादा तुम से सच्चा कर दिया था जब तुम उन को उस के हुक्म से क़त्ल कर रहे थे यहाँ तक कि तुम स्वयँ ही उखड़े और (रसूल के हुक्म में) झगड़ने लगे और इस के बाद कि अल्लाह ने तुम्हारी पसन्दीदा चीज़ तुम को दिखा दी तुम ने नाफ़र्मानी की (क्योंकि) तुम में से बाज़ दुनिया चाहते हैं और बाज़ (तुम में से) आख़िरत चाहते हैं, फिर तुम को उन से हटा लिया (बल्कि उल्टी तुम को तक्लीफ़ पहुंची) ताकि तुम को मुबतिला करे (आज़माए) और अब (तो) तुम से यह क़ुसूर माफ़ कर दिया (क्योंकि) अल्लाह मोमिनों के हाल पर बड़े फ़ज़्ल वाला है

مِنكُم مَّن يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ
لِيَبْتَلِيَكُمْ ۖ وَلَقَدْ عَفَا عَنكُمْ ۗ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ

....

१२१. रोब से विजय पाना नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की विशेष्ताओं में से है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआ़ला ने मुझे पाँच बातों में दूसरे नबियों पर फ़ज़ीलत दी है उन में एक यह भी है कि एक माह की राह पर, मैं रोब से फ़तह दिया गया हूँ इस लिये कि मेरे दुश्मनों के दिलों में वह रोब डाला जाता है।(अहमद तिर्मिज़ी)

मुश्रिकों ने उहुद की लड़ाई से वापसी पर राह ही में पुन: मदीना पर हमला करने का इरादा किया मगर उन पर रोब छा गया, लेकिन इस के बाद भी वह १५ हज़ार का लश्कर लेकर मदीना पर चढ़ आये थे लेकिन नाकाम वापस हुये, इसी का नाम "जंगे अहज़ाब" है।

१२२. शाने नुज़ूल:- नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उहुद की लड़ाई में एक पहाड़ के दर्वाज़े पर कुछ आदमियों को मुक़र्रर कर दिया और उन से फ़रमाया था कि हमारी जीत हो या हार, तुम इस स्थान को न छोड़ना। मगर जब उन लोगों ने देखा कि मुसलमान जीत गये हैं और माले-ग़नीमत को समेट रहे हैं और कुफ़्फ़ार भाग गये हैं तो अब हमारा यहाँ ठहरना बेकार है। उन के कमान्डर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि० ने बहुत समझाया और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का आदेश भी याद दिलाया मगर वह काफ़िरों की पराजय से धोका खा गये और अपने स्थान को छोड़ कर वह भी ग़नीमत का माल बटोरने में लग गये और केवल दस-बारह आदमी और कमान्डर ही उस दर्वाज़े पर ठहरे रहे, इतने में काफ़िरों ने मैदान खाली देख कर उन पर पीछे से आक्रमण कर दिया तो मुसलमानों को लेने के देने पड़ गये। विजय, पराजय में बदल गयी। यहाँ पर अल्लाह तआ़ला ने इसी घटना को याद दिलाया है (सनाई)

१५३. जब तुम (भागे हुये) चढ़े जा रहे थे और फिर कर किसी को न देखते थे और (अल्लाह का) रसूल तुम को पीछे से बुला रहा था पस तुम को ग़म पर ग़म पहुंचाया[१२३] ताकि तुम हाथ से गयी हुयी चीज़ पर ग़म न करो और पहुंची हुयी मुसीबत पर रन्ज न करो। और अल्लाह तुम्हारे कामों से आगाह है[१२४] १५४. (इस लिये) फिर अल्लाह ने ग़म के बाद तुम पर (बदनी) आराम की ग़रज़ से नींद डाली जो तुम से एक➲

عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلْوُونَ
عَلَىٰ أَحَدٍ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي أُخْرَاكُمْ
فَأَثَابَكُمْ غَمًّا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ
وَلَا مَا أَصَابَكُمْ ۗ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ ثُمَّ
أَنزَلَ عَلَيْكُم مِّن بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نُّعَاسًا
يَغْشَىٰ طَائِفَةً مِّنكُمْ ۖ وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ

ٱَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۖ يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ۗ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ۗ يُخْفُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ۗ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ۗ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا

जमाअ़त पर ग़ालिब आ रही थी और एक जमाअ़त (मुनाफ़िक़ों) को जान के लाले पड़े हुये थे, अल्लाह के बारे में जाहिलाना ग़लत गुमान कर रहे थे और कह रहे थे कि हमें भी कुछ (इख़्तियार यानी) इ़ज़्ज़त है[१२५]? तू कह दे कि (इ़ज़्ज़त और ज़िल्लत देने का) इख़्तियार सारा अल्लाह को है। दिल में वह बातें रखते हैं जो तेरे सामने बयान नहीं कर सकते। (आ़म मुसलमानों के फुसलाने को यह भी) कहते हैं कि अगर हमारी (अल्लाह के हाँ कुछ) इ़ज़्ज़त होती तो हम यहाँ न मारे जाते। तू कह दे (कि मौत के लिये तो एक समय निश्चित है) अगर तुम अपने घरों में भी होते तो भी जिन की तक़्दीर (भाग्य) में क़त्ल लिखा होता अपने क़त्ल के स्थानों पर अवश्य ही आ जाते, अल्लाह को तुम्हारे जी की बातें ज़ाहिर करनी थीं और तुम्हारे दिलों के ख़यालात को निखारना था[१२६]

....

१२३. कुछ मुफ़स्सिरों ने इस आयत का तर्जुमा यह किया है "अल्लाह ने तुम को ग़म पर ग़म दिया" अर्थात एक ग़म और रंज आरंभ में जीत और कामियाबी के बाद पराजय और हार का था और दूसरा ग़म और रंज सहाबा के मारे जाने और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के शहीद होने की सूचना (अफ़वाह) फैलने पर पहुंचा था। कुछ उलमा ने यह अर्थ बयान किया है कि फ़तह और विजय के ख़त्म हो जाने और ग़नीमत का माल हाथ से निकल जाने, जान व माल का नुक़्सान उठाने का जो ग़म और रन्ज था इस के बदले में एक ऐसा ग़म दे दिया गया जिस ने पहले के सब-रन्ज व ग़म को भुला दिया, यानी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मारे जाने की अफ़वाह को सुन कर इस ग़म की शिद्दत में आगे-पीछे का कुछ होश बाक़ी न रहा, यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की आवाज़ भी न सुनी, जैसा कि एक तरफ़ दिल व दिमाग़ के लग जाने की वजह से दूसरी तरफ़ से ज़ेहन बट जाता है (मुवज़्ज़िहुल्-क़ुरआन)

ज़ाहिर है कि इस्लाम के इतिहास में यह बड़ी ही भारी घटना थी। और अगर दीने इस्लाम अल्लाह की तरफ़ से न हो कर एक मनघड़त दीन होता तो उसी दिन मिट जाता, मगर यह दीने इस्लाम के सच्चे दीन होने का अहम सबूत है, किसी ने सच कहा है---फूंकों से यह चिराग़ बुझाया न जायेगा।

१२४. यानी जीत तो मुसलमानों की थी कि काफ़िरों को मारते और भगाते थे और फ़तह की निशानियां नज़र आने लगी थीं। किसी को माल की ख़ुशी थी और किसी को इस्लाम के ग़ालिब आने की। लेकिन जब मुसलमानों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के आदेशों का पालन नहीं किया तो मामला उलट गया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के एक आदेश को न मानना तो यह था कि आप ने ५० तीर चलाने वालों को पहाड़ी के एक रास्ता पर खड़ा कर दिया था और बाक़ी लश्कर जंग लड़ने लगा, जब उन तीर अन्दाज़ों ने मुसलमान लश्कर की कामियाबी देखी तो ख़याल पैदा हुआ कि अब हमें भी अपना स्थान छोड़ कर ग़नीमत का माल बटोरना चाहिये, कुछ लोगों ने उन्हें इस बात से मना किया मगर वह न माने और स्थान छोड़ कर चले गये और केवल १२ तीर चलाने वाले सहाबा ही अपने स्थान पर जमे रह गये तो काफ़िरों ने पीछे से उन पर आक्रमण कर दिया।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के एक दूसरे आदेश को न मानना यह था कि जब काफ़िरों की

फ़ौज मैदान छोड़ कर भागने लगी तो मुसलमानों ने उन का पीछा किया तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन को इस बात से मना करते रहे और बराबर एलान करते रहे कि उन का पीछा न करो बल्कि मेरी तरफ़ आओ लेकिन वह लोग न माने और दुश्मनों का पीछा करने और ग़नीमत (दुश्मनों का छूटा हुआ माल) समेटने में लगे रहे, इस का परिणाम यह निकला कि मुसलमानों की जीत पराजय में बदल गयी (मुवज़्ज़िहुल कुरआन)

१२५. इस पराजय और हार में जिन को शहीद होना था वह हो चुके और जिन को हटना था वह हट गये और जो मैदान में बाक़ी रह गये उन पर ऊँघ आ गयी, इस के बाद रोब और डर-दहशत समाप्त हो गया। इतनी देर तक आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को भी ग़शी (मूर्च्छा) रही, फिर जब होशियार हो गये तो सभी लोग आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के इर्द-गिर्द इकट्ठा हो कर फिर से लड़ाई करने लगे और कमज़ोर ईमान वाले कहने लगे कि इस पराजय के बाद हमारा सब कुछ जाता रहा, इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह फ़रमाया कि इस में हिक्मत यह थी ताकि पक्के-सच्चे मुसलमान और मुनाफ़िक़ के दर्मियान फ़र्क़ हो जाये (मुवज़्ज़िहुल् कुरआन)

हज़रत अबू तल्हा रज़ि० रिवायत करते हैं कि उहुद के दिन जिन लोगों पर अल्लाह पाक ने ऊँघ डाली थी मैं भी उन में था, मेरा यह हाल था कि मेरी तल्वार मेरे हाथ से गिर जाती थी उस को मैं उठा लेता तो फिर गिर जाती थी। और मैं मुतअ़ब बिन कुशैर की बात कि "अगर कुछ काम हमारे हाथ होता तो हम इस प्रकार मारे न जाते" ऐसे सुन रहा था, जैसे सपने में सुनते हैं (तिर्मिज़ी शरीफ़- भाग २/१४०)

१२६. इस आयत में ज़ाहिर है कि अल्लाह तआ़ला ने हर बन्दा की मौत का ज़रीआ़ और कारण व स्थान सब तक़्दीर में लिख दिया है, इसी कारण तक़्दीर पर ईमान लाना वाजिब है और जो कुछ भी घटना घटती है वही तक़्दीर है, इस लिये वही कुछ पेश आयेगा जो तक़्दीर में लिखा होगा, इस कारण तक़्दीर पर ईमान न लाना कुफ़्र है। बड़े दुःख की बात है कि इस ज़माना में कुछ जाहिल लोग इस को नहीं मानते हैं (मुवाहिब)

فِىْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٥٤﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ
اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ
وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٥٥﴾
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَقَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِى الْاَرْضِ اَوْ
كَانُوْا غُزًّى لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَمَا
قُتِلُوْا ۚ لِيَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً فِىْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَ
اللّٰهُ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١٥٦﴾
وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ
مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿١٥٧﴾ وَلَئِنْ مُّتُّمْ

और (यूँ तो) अल्लाह (सब के) सीनों के भेद जानता है १५५. जो लोग दो फ़ौजों के मिलने के दिन (यानी उहुद की लड़ाई के दिन) मुंह फेर गये थे उन को शैतान ही ने (उन के) बाज़ आमाल की शामत से फुसलाया था[१२७] (मगर ख़ैर) अल्लाह ने उन को माफ़ कर दिया (इस लिये कि निःसंदेह) अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला हौसला वाला है[१२८] १५६. ऐ मुसलमानो! उन लोगों जैसे मत बनो जो (स्वयँ भी) इन्कारी हुये और अपने भाइयों के बारे में जब वह यात्रा को जायें या (कहीं) जंग करने को रवाना हों (और अल्लाह के हुक्म से वहीं मर जायें) तो कहते हैं कि अगर वह हमारे पास ठहरे होते तो न मरते और न ही क़त्ल होते (भला उन का कहना कहाँ तक सही है) अल्लाह इस ख़याल को उन के दिलों में हसरत (पछतावे) का कारण करे गा

اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِ۟اِلَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ
اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ

(कि जितना ही वह अपनी तदबीर पर भरोसा करें गे उतना ही अधिक अफ़सोस उठायें गे) अल्लाह ही जीवित रखता है[१२९] और वही मारता है और अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहा है[१३०] १५७. अगर तुम अल्लाह की राह में क़त्ल किये जाओ या (दीन के लिये यात्रा में) मर जाओ तो अल्लाह के हाँ से बख़्शिश और मेहरबानी सब लोगों के माल व असबाब जमा किये हुये से अच्छी है १५८. अगर तुम अपनी मौत से मरे या अल्लाह की राह में क़त्ल हुये, अन्त में अल्लाह के पास ही इकट्ठा किये जाओ गे १५९. क्यों कि तू अल्लाह की रहमत से उन के लिये नर्म दिल पैदा हुआ है, अगर तू बदख़ू (बद ज़बान) सख़्त दिल होता

....

१२७. उहुद की लड़ाई ने मुसलमानों को बतला दिया कि अल्लाह की मदद का वादा सत्य है, लेकिन उस के तमाम कामों की तरह उस की सहायता और मदद के लिये भी कुछ क़ानून और ज़ाबते हैं और ज़रूरी है कि उन्हीं के अनुसार परिणाम भी निकलें। जो जमाअत कमज़ोरी और ग़फ़लत का शिकार हो जाये गी वह सब्र और जमाव में पूरी नहीं उतरेगी। इताअत और फ़रमा-बर्दारी में कच्ची हो गी वह कभी भी अल्लाह की सहायता की हक़दार नहीं हो सकती (तर्जुमान)

१२८. उहुद की लड़ाई में जिन मुसलमानों ने पीठ दिखाई थी और भाग खड़े हुये थे अल्लाह पाक ने उन सब की कोताहियों को माफ़ कर दिया, अब उन को बुरा-भला कहना किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं (तर्जुमान)

१२९. मौत और ज़िन्दगी दोनों मुकम्मल तौर पर अल्लाह के हाथ में हैं, इस लिये इस बात को भुला कर ज़ाहिरी हालात को देखना और जंग के लिये सफ़र को मौत या क़त्ल के मुंह में जाना समझ लेना, यह बहुत बड़ी जिहालत और नादानी की बात है। अमरीका का समाजशास्त्र (Sociology) माहिर प्रोफ़ेसर डेनी सन अपनी किताब में एक स्थान पर लिखता है कि मुसलमानों के तक़्दीर पर अक़ीदा, हर कार्य को अल्लाह के आदेश के अनुसार होना को जानना और शहादत पर मुकम्मल विश्वास और अक़ीदा ने जंग के मैदानों में बड़ी कुव्वत और बहादुरी पैदा कर दी थी। इस अमरीकी स्कालर का न ईमान और न ही अक़ीदा तक़्दीर और शहादत पर है, फिर भी हक़ बात के कहने पर अपने आप को मजबूर कर रहा है। किसी शाइर ने क्या ही ख़ूब कहा है--सब काम अपने करना तक़्दीर के हवाले नज़दीक आक़िलों के तदबीर है तो यह है

१३०. यानी मुनाफ़िक़ों की तरह न हो जाना जो दुनिया का माल इकट्ठा करने के लालची थे और उहुद की लड़ाई में जब मोमिनों को पराजय का मुंह देखना पड़ा तो कहने लगे कि हमारे पास होते तो न मरते, और उन को काफ़िर समझने में इस बात का इशारा है कि उन का अगला क़ौल कुफ़्र है, क्यों कि वह तक़्दीर का इन्कार है। अल्लाह तआला अक्सर मुसाफ़िरों और जिहाद करने वालों को सवाब के साथ-साथ माले ग़नीमत भी देता है और ज़िन्दा रखता है और बहुतों को घर बैठे ही मौत दे देता है (मुवाहिब)

لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ
لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ
عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ۝ اِنْ
يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ

तो तेरे निकट से (सख़्त ज़बानी की वजह से यह लोग) भाग जाते[१३१] पस तू उन को माफ़ कर और उन के लिये बख़्शिश मांग और उन से अपने कामों में मश्वुरा लिया कर, फिर जब किसी कार्य का तू इरादा करे तो अल्लाह पर भरोसा किया कर[१३२] अल्लाह को भरोसा करने वाले भले

ذَا الَّذِيْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۶۰﴾ وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ ؕ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۶۱﴾ اَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۶۲﴾ هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶۳﴾ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ

लगते[१३२] हैं। १६०. (वह तो ऐसा ज़बर्दस्त हाकिम है कि) अगर वह तुम्हारी मदद करे तो कोई भी तुम पर ग़ालिब न आये गा और अगर वह ज़लील करने पर हो तो कौन है जो उस के बाद तुम को मदद दे (इसी लिये तो) मोमिनों को चाहिये[१३३] कि अल्लाह ही पर भरोसा करें[१३४] १६१. किसी नबी की शान नहीं कि (किसी प्रकार की) ख़यानत करे (हालाँकि अल्लाह का आदेश उस के संबन्ध में यह है कि) जो कोई ख़यानत करे गा क़ियामत के रोज़ अपनी ख़ियानत को लाये गा[१३५] फिर हर एक शख़्स को उस की कमाई का पूरा बदला मिले गा और किसी प्रकार उन पर अत्याचार न हो गा १६२. (ऐसे वक़्त में भला बतलाओ कि) क्या जो शख़्स अल्लाह की मर्ज़ी का ताबे रहा हो उस की तरह हो जाये गा जिस ने (बुरे कार्यों की वजह से) अल्लाह का गुस्सा अपने ऊपर किया हो और उस का ठिकाना जहन्नम में हो गा जो बहुत बुरी जगह है १६३. (वह लोग जो अल्लाह की मर्ज़ी में उम्र गुज़ारे हों गे) अल्लाह के निकट उन के बहुत (बुलन्द) दर्जे हैं। और अल्लाह उन के कामों को देखता है १६४. उस ने (आ़म इन्सानों पर और) मुसलमानों पर (विशेष रूप से कितना बड़ा) उपकार किया जबकि उन ही में से एक (आदमी) रसूल (कर के) उन के सिखाने को भेजा जो उस की आयतें पढ़ कर उन को सुनाता है और उन को बुरी आ़दतों से पवित्र करता है और उन को अल्लाह की किताब और रूहानी (तहज़ीब) सिखाता है[१३६]

....

१३१. इस्लाम के सन्देष्टा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से ख़िताब (संबोधन) है और इस में इमामत के तअ़ल्लुक़ से कुछ नियम बतलाये गये हैं (१) यह अल्लाह की बड़ी ही रहमत है कि तुम्हारे दिल में नर्मी और मिज़ाज़ में सदभावना और प्रेम की भावना है, अगर ऐसा न होता तो लोगों के दिल तुम्हारी तरफ़ न खिंचते जिस प्रकार अब खिंच रहे हैं (२) उहुद की लड़ाई में एक गरोह की मामूली सी ग़लती बहुत ही सख़्त और गंभीर ग़लती थी, लेकिन फिर भी तुम्हारी मुहब्बत और सदभावना का तक़ाज़ा यही है कि उसे माफ़ कर दो (३) तुम्हारा काम यह होना चाहिये कि जंग या समझौते का कोई मामला बग़ैर मश्वुरा और विचार के नहीं होना चाहिये (४) इस संबन्ध में नियम यह है कि पहले जमाअ़त से मश्वुरा करो और जब एक बात ठान ली तो उस पर पूरे विश्वास के साथ जम जाओ। इमाम के लिये आवश्यक है कि जमाअ़त के साथ मश्वरा करे, लेकिन साथ ही यह भी आवश्यक है कि पक्के इरादे और भर-पूर हौसले वाला हो (तर्जुमान)

१३२. आम लोगों का यह ख़याल है कि कोई रणनीति (तदबीर) न तय्यार करना और न ही किसी ज़ाहेरी चीज़ का सहारा लेने का नाम तवक्कुल और भरोसा है, हालाँकि यह ख़याल ग़लत है। तवक्कुल और भरोसा इस बात का नाम है कि सामान और दूसरी चीज़ों का सहारा लिया जाये लेकिन यह अ़क़ीदा और यक़ीन रखे कि उस काम

➲का पूरा होना या न होना अल्लाह के इख़्तियार में है। इस प्रकार तवक्कुल एक मुसलमान बन्दे पर वाजिब है (मुवाहिब)

१३३. शाने नुज़ूलः- उहुद की लड़ाई में कुछ लोगों को यह ख़याल पैदा हुआ कि पैग़म्बरे इस्लाम कहीं ग़नीमत के माल में से कुछ अलग कर के न रख लें। चूँकि यह बद-गुमानी निहायत बेतुकी और कुफ़्र तक पहुंचाने वाली थी इस लिये इस के रद्द में यह आयत नाज़िल की गयी (मआ़लिम)

१३४. 'मुतवक्किल' (अल्लाह पर भरोसा करने वाला) की तारीफ़ में बहुत सी सहीह हदीसें आयी हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन को उन सत्तर हज़ार लोगों में शुमार किया है जो बिला हिसाब जन्नत में जायें गे।

१३५. इस आयत की तश्रीह सूरः तौबा की आयः न०३५ कर रही है जिस का तर्जुमा यह है "ज़कात का माल जहन्नम की आग में गर्म किया जाये गा फिर उस से ज़कात अदा न करने वालों के मुंह, पीठ और बग़ल को दाग़ा जाये गा। अर्थात ज़कात न देने वालों को यह दन्ड दिया जायेगा, और यही कुछ मफ़हूम इस आयत का भी है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का एक आदेश भी इसी संबन्ध में है जिस में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "कोई तुम से क़ियामत के दिन मुझ से इस हाल में न मिले कि वह अपनी गर्दन में ऊँट लादे हो जो बलबला रहा हो, या गाय लादे हुये हो जो बाँ-बाँ कर रही हो, या बकरी लादे हुये हो जो में-में कर रही हो, फिर वह मुझे पुकारना आरंभ कर दे कि ऐ मुहम्मद! (स०) ऐ मुहम्मद! पस मैं उस से कह दूँ कि मैं तुम्हारे लिये किसी भी वस्तु का मालिक नहीं हूँ, मैं तुम्हें दुनिया ही में सारी बातें पहुंचा चुका था।

'गुलूल' (ख़ियानत) की बुराई में बहुत सारी हदीसें आयी हैं। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० से रिवायत है कि लोग एक क़त्ल हुये शख़्स के पास आये और कहा कि यह तो शहीद हुआ है। यह सुन कर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "हर्गिज़ नहीं! मैं ने तो इसे आग में देखा है इस वजह से कि इस ने एक चादर या कमली ख़ियानत कर के छुपा ली थी" फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "जा कर लोगों में एलान कर दो कि जन्नत में केवल ईमान वाले ही दाख़िल हों गे (अहमद, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

१३६. अल्लाह तआ़ला ने कुरआन मजीद में बार-बार अपने रसूल को किताब व हिक्मत की शिक्षा देने वाला बताया है। 'किताब' से मुराद कुरआन मजीद और 'हिक्मत' से मुराद हदीस शरीफ़ है। इस लिये कुरआन व हदीस दोनों ही इस आयत के तहत शामिल हैं। जो लोग हदीस के इन्कारी हैं वह कुरआन के भी इन्कारी हैं, क्यों कि बहुत सी इस्लामी चीज़ों का बयान कुरआन मजीद में संक्षिप्त है, उन की तफ़्सील जानने के लिये हदीस की ही आवश्यक्ता है। आप विस्तार से हमारी किताब "ख़ालिस इस्लाम" को अवश्य पढ़ें। हदीस का इन्कार करने वाले उम्मत के सब से बुरे लोग हैं जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का कलिमा पढ़ने के बावजूद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ ग़द्दारी करते हैं और रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शान में तौहीन कर के स्वयं अपनी छोटी और खोटी अक़्ल से कुरआन को समझ लेने का दावा करते हैं। यह बहुत ही बुरा तरीक़ा है और ऐसा वही कर सकता है जिस के दिल में ईमान का नूर नहीं है (राज़)

وَالْحِكْمَةَ ۚ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿١٦٤﴾
أَوَلَمَّا أَصَابَتْكُمْ مُّصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا
قُلْتُمْ أَنَّىٰ هَٰذَا ۖ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِكُمْ ۗ إِنَّ
اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٦٥﴾ وَمَا أَصَابَكُمْ يَوْمَ

वर्ना पहले तो सख़्त ग़लती में थे (हर प्रकार की ख़राबियों में गिरिफ़्तार थे) १६५. क्या जब तुम्हें (उहुद की लड़ाई में) कुछ तक्लीफ़ पहुंची, जिस से दोगुनी तुम उन को पहुंचा चुके थे तो (बड़े हैरान हो कर) तुम बोल उठे कि यह कहाँ से आ गयी? तू उन से कह दे (कि यह तक्लीफ़) तुम्हारी ही तरफ़ से है। अल्लाह सब कुछ कर➲

الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٦٦﴾
وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۚۖ وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا
قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوِ ادْفَعُوْا ۭ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ
قِتَالًا لَّا اتَّبَعْنٰكُمْ ۭ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَىِٕذٍ اَقْرَبُ
مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ
فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ﴿١٦٧﴾ اَلَّذِيْنَ
قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ۭ
قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ﴿١٦٨﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ

सकता है[१३७] १६६. और जो तक्लीफ़ तुम को दो लश्करों के मुक़ाबले के रोज़ पहुंची वह भी अल्लाह के हुक्म से थी ताकि अल्लाह पक्के मोमिनों की तमीज़ (छंटनी) कर दे[१३८] १६७. और उन लोगों को भी अलग करे जो दिल में निफ़ाक़ रखते हैं और जिन को कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में लड़ो या (अगर लड़ नहीं सकते तो काफ़िरों को डरा कर) मुदाफ़िअ़त (सुरक्षा) करो। बोले अगर हम लड़ना जानते तो तुम्हारा साथ देते (अस्ल यह है कि) वह उस रोज़ ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र की तरफ़ बहुत झुके हुये थे, अपने मुंह से बातें कर रहे थे जो उन के दिल में न थीं (तो क्या उन को दिखावटी बातें कुछ लाभ दायक हों गी? हर्गिज़ नहीं) जो छुपा रहे हैं अल्लाह को ख़ूब मालूम है १६८. (यह जहन्नमी लोग वही तो हैं) जिन्हों ने घर बैठ कर अपनी बिरादरी (भाई-बन्दों) के बारे में कहा कि अगर हमारा कहा मानते तो मारे न जाते। तू उन से कह दे कि अपनी जान से तो मौत को टाल दीजियो अगर तुम सच्चे हो[१३९] (कि तदबीर से जान बच जाती है) १६९. और जो लोग अल्लाह की रांह में क़त्ल किये गये हैं तुम उन को मुर्दा न समझो!

....

१३७. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० की रिवायत में है कि उन्हों ने फ़रमाया कि फिर जब आने वाले वर्ष में उहुद की लड़ाई का दिन आया तो अ़ज़ाब दिये गये जैसा कि उन्हों ने बद्र की लड़ाई के दिन किया था कि काफ़िर क़ैदियों से फ़िदया ले कर छोड़ दिया था पस यह हुआ कि उन के ७० आदमी क़त्ल हुये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को छोड़ कर आप के साथी भाग गये और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दाँत टूट गये और ख़ूद (लोहे की टोपी जो लड़ाई में पहनते हैं) से आप का सर घायल हो गया तब अल्लाह तआ़ला ने अ-व-लम्मा असा-बत्कुम् मुसी-बतुन्.........(क्या जब तुम्हें उहुद की लड़ाई में कुछ तक्लीफ़ पहुंची.......) वाली यह आयत नाज़िल फ़रमाई, ऐसा इस लिये हुआ क्यों कि तुम ने फ़िदया ले लिया था (अहमद, हातिम)

१३८. यह सब अल्लाह की ओर से परीक्षा थी ताकि इस तरीक़ा से काफ़िरों और मोमिनों की आज़माइश करे। अगर वह चाहता तो एक लम्हे में तमाम काफ़िर मौत के घाट उतर जाते, या ईमान ले आते। अल्लाह तआ़ला तो हर वस्तु पर क़ुदरत रखने वाला है जो चाहे कर सकता है। हर चीज़ में मदद करना या न करना भी इस में शामिल है।

'यौ-मल्-त-क़ल् जम्आ़न्' से उहुद की लड़ाई का दिन मुराद है।

१३९. उहुद की लड़ाई का मामला मुनाफ़िक़ों के लिये जो मुख़्लिस मुसलमानों के साथ घुल-मिल कर जीवन यापन कर रहे थे, एक फ़ैसला कुन आज़माइश थी। इस मौक़ा पर उन का निफ़ाक़ पूरे तौर पर खुल कर सामने आ गया। जंग के लिये आरंभिक मश्वरे से ले कर जंग के बाद तक कोई मौक़ा ऐसा नहीं आया कि वह अपनी शरारत से बाज़ रहे हों। जब अधिकांश लोगों ने यह राय दी कि लड़ाई मदीना से बाहर निकल कर लड़ी जाये तो यह मुनाफ़िक़

➲लोग लोगों को बहकाने लगे कि बाहर निकल कर लड़ना अपने आप को मौत के मुंह में ढकेलना है। जब उन से कहा गया कि शहर मदीना की मुदाफ़िअ़त (बचाव) करो तो तरह-तरह के हीले-बहाने करने लगे और कहने लगे कि हमें आशा नहीं कि जंग की नौबत आये गी अगर आशा होती तो अवश्य तय्यारी करते। फिर जब लोगों की अवज्ञा से विजय, पराजय में बदल गयी तो इन्हें शरारत करने का एक और मौक़ा मिल गया और कहने लगे कि अगर हमारे मश्वरे पर अ़मल किया होता तो यह सब कुछ न होता। कभी यह कहते कि इस प्रकार की रोज़-रोज़ की लड़ाइयों से क्या फ़ाइदा? फ़ाइदा इसी में है कि दुश्मनों को मना लिया जाये। उन का उद्देश्य केवल यह था कि इस प्रकार की बातों से मुसलमानों के दिलों में मायूसी पैदा कर दी जाये और उन की कोई बात भी ठीक तौर पर बन न सके।

उहुद के मैदान से जाते हुये दुश्मन कह गये थे कि आने वाले वर्ष में फिर आयें गे और तब अन्तिम फ़ैसला कर के ही जायें गे। दूसरे वर्ष जब वह समय आया तो मुसलमान तय्यार हो कर उस स्थान पर पहुंच गये लेकिन दुश्मनों का दूर-दूर तक अता-पता न था, उन्हें मक्का ही से बाहर निकलने की हिम्मत न हुयी। चुनान्चे मुसलमान फ़ौजें उस स्थान पर कुछ दिनों तक इन्तिज़ार कर के वापस आ गयीं। लेकिन इस मौक़ा पर भी मुनाफ़िक़ों ने दुश्मनों से मिल कर हर प्रकार की शरारतें कीं।

इन आयतों में मुनाफ़िक़ों की अन्दरूनी हालत का जो चित्र खींचा है वह कोई नया नहीं है, अगर ग़ौर करें गे तो मालूम हो जाये गा कि जमाअ़त के कमज़ोर और डरपोक लोग सदा ऐसी सूरते-हाल (स्थिति) पैदा कर देते हैं (तर्जुमान आज़ाद रह०)

اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ۙ﴿۱۶۹﴾
فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ وَيَسْتَبْشِرُوْنَ
بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۱۷۰﴾ يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ
مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۷۱﴾ ۚۛ اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ
مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۛؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا
مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۷۲﴾ ۚ اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ
النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ
فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖۗ وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ﴿۱۷۳﴾
فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ
سُوْٓءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۷۴﴾
اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۪ فَلَا تَخَافُوْهُمْ

बल्कि वे (अस्ल में) जीवित हैं अपने रब के पास रोज़ी पाते हैं १७०. अल्लाह के दिये हुये फ़ज़्ल से ख़ुशी मनाते हैं और उन लोगों की तरफ़ से जो अभी इन को नहीं मिले भी ख़ुशख़बरी चाहते हैं कि उन को (भी शहादत नसीब हो) (ताकि उन पर भी) न कोई ख़ौफ़ हो और न ग़म में मुब्तिला हों १७१. और वे अल्लाह की रहमत और मेहरबानी के साथ ख़ुशियाँ मना रहे हैं। और अल्लाह ईमान दारों का अज्र (बदला) बर्बाद नहीं करता[140] १७२. जिन लोगों ने तक्लीफ़ पहुंचने के बाद अल्लाह और रसूल की आज्ञा पालन की[141] उन नेक काम करने वालों और परहेज़-गारों के लिये भी बड़ा सवाब है १७३. (तक्लीफ़ पहुंचने के बाद भी आज्ञा पालन करने वाले) वह लोग हैं जिन को कुछ लोगों ने कहा कि सब लोग तुम्हारे मारने को जमा हो रहे हैं तो तुम उन से डरते रहो तो (इस बात से उन के) ईमान में तरक़्क़ी हुयी और➲

➲बोले (कि) अल्लाह हम को काफ़ी है और वह अच्छा कार साज़ है[१४२] १७४. वे अल्लाह की नेमत और फ़ज़्ल के साथ वापस आये उन को कुछ भी हानि न पहुंची और अल्लाह की मर्ज़ी पर चले (जिस के बदले में अल्लाह ने उन को भी ख़ुशी दिखाई) अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है[१४३]

....

१४०. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: उहुद की जंग के दिन जब तुम्हारे साथी शहीद हुये तो अल्लाह ने उन की रूहों को हरे रंग के परिन्दों के अन्दर डाल दिया, वह जन्नत की नहरों पर आती हैं और जन्नत के फल खाती हैं, फिर सोने की उन क़िन्दीलों की तरफ़ जो अर्श के नीचे लटकती हैं लौट जाती हैं, फिर उन्हों ने जब अपना खाना-पीना और रहना सहना ख़ूब अच्छी तरह पाया तो बोले कि काश हमारे भाई लोग भी जान लेते जो अल्लाह तआ़ला ने उन के साथ करम किया ताकि जिहाद से ग़ाफ़िल न होते और लड़ाई से सुस्त न होते, पस अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई।

१४१. शाने-नुज़ूलः- उहुद की जंग से वापसी के बाद मुश्रिक़ीन ने यह बात फैला दी कि मुसलमानों के मुक़ाबला के लिये कई हज़ार आदमी इकट्ठा हो रहे हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने चारों ख़लीफ़ा और लोगों को इस सूचना की तहक़ीक़ के लिये भेजा तो यह पता चला कि सूचना निराधार है और बिल्कुल झूठी है, इस घटना के बारे में यह आयत नाज़िल हुयी। इस आयत से चारों ख़लीफ़ा की बुज़ुर्गी साबित होती है (सनाई)

चारों ख़लीफ़ा की तर्बियत भी अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी के अनुकूल हुयी थी और अगर ग़ौर से उन ख़लीफ़ा को देखा जाये तो मालूम हो जाये गा कि अपनी-अपनी ख़ूबियों के एतिबार से उन की ख़िलाफ़त का काल बहुत ही दुरुस्त था। लानत है उन लोगों पर जो इस्लाम के इन चमकते सितारों की बुराइयाँ करते हैं। ऐसे लोग बड़े अभागे और बुरे हैं। चारों ख़लीफ़ों की शान में तो कुछ भी अन्तर नहीं पड़ा हाँ, इस प्रकार के लोग अवश्य अपना मुंह काला करते हैं।

१४२. इस आयत से स्पष्ट रूप से ज़ाहिर है कि ईमान घटता-बढ़ता है और अहले-हदीस का भी यही कहना है। हज़रत इब्राहीम अ़लै० जब आग में डाले गये थे तो कहा था "हस्बु-नल्लाहु वनिअ़्-मल् वकीलु" (अल्लाह हम को काफ़ी है और वह अच्छा कार-साज़ है)।

एक हदीस में है कि तुम किसी मुसीबत में घिर जाओ तो यह कलिमा कहो, इस लिये कि इस में पनाह है हर डरे हुये के लिये। हज़रत आ़इशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को कोई ग़म होता तो आप इसी कलिमे को बार-बार कहा करते थे (वहीदी)

यह बड़ा बेहतरीन कलिमा है, बुज़ुर्ग लोगों का इस पर बराबर अ़मल रहा है। हर दुःख, दर्द और मुसीबत के समय इस कलिमे को पढ़ने में बड़ा लाभ मौजूद है।

१४३. यह वाक़िआ़ तफ़्सीर "मआ़लिम" आदि में इस प्रकार बयान हुआ है कि उहुद की लड़ाई के बाद दूसरे वर्ष अबू सुफ़ियान अपने वादा के अनुसार मक्का से निकल कर लड़ने के इरादे से मर्रूज़्ज़हरान नामक स्थान पर पहुंचा तो उस को आगे बढ़ने की हिम्मत ही न हुयी, अल्लाह ने उस के दिल में रोब और भय डाल दिया। उस ने वापस होते हुये एक शख़्स नअ़ीम बिन मस्ऊद को दस ऊँटों का लालच दे कर मदीना भेजा ताकि वह मुसलमानों को मक्का वालों की तरफ़ से डरा-धमका कर आतंकित कर दे ताकि मुसलमान लड़ने के लिये तय्यार न हो सकें। चुनान्चे उस ने मदीना पहुंच कर मुसलमानों को डराया जिस का बयान इन आयतों में है।

"हस्बु-नल्लाहु व निअ़्-मल वकीलु" की बड़ी फ़ज़ीलत बयान की गयी है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि इस पाक कलिमे को हज़रत इब्राहीम अ़लै० ने उस समय कहा था जब नम्रूद बादशाह ने उन को आग में डाला था और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उस समय पढ़ा था जब लोगों ने आप से कहा था➲

➲कि मुश्रिक आप के मुक़ाबले पर अधिक मात्रा में एकत्र हो रहे हैं (बुख़ारी)

हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः यह कलिमा हर डरने वाले को अम्न में रखने वाला है (अबू नअ़ीम) एक दूसरी रिवायत में है कि जब तुम किसी से डर जाओ तो यह कलिमा पढ़ लिया करो इस से अल्लाह तआ़ला उस डर से नजात दे देता है (तब्रानी)

وَخَافُونِ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٧٥﴾ وَلَا يَحْزُنْكَ
الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ ۚ إِنَّهُمْ لَنْ يَضُرُّوا
اللَّهَ شَيْئًا ۗ يُرِيدُ اللَّهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِي
الْآخِرَةِ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرَوُا
الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۖ وَلَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٧﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا
نُمْلِي لَهُمْ خَيْرٌ لِأَنْفُسِهِمْ ۚ إِنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ
لِيَزْدَادُوا إِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿١٧٨﴾ مَا كَانَ
اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ
يَمِيزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۗ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُطْلِعَكُمْ
عَلَى الْغَيْبِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِي مِنْ رُسُلِهِ مَنْ
يَشَاءُ ۖ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۚ وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَ
تَتَّقُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٩﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ

१७५. इस में सन्देह नहीं कि डराने वाला एक शैतान था जो अपने दोस्तों (कुफ़्फ़ार) से डरा रहा था सो उस के मित्रों से न डरो और मुझ से डरो अगर तुम ईमान दार हो १७६. (ऐ नबी!) तू कुफ़्र में कोशिश करने वालों की फ़िक्र न कर (चाहे कितनी ही चेष्टा करें) हर्गिज़ अल्लाह के दीन का कुछ न बिगाड़ें गे। अल्लाह को मन्ज़ूर है कि उन के लिये आख़िरत में कुछ हिस्सा न करे और उन को बड़ा अ़ज़ाब होगा[१४४] १७७. (इस लिये कि अल्लाह के हाँ यह आ़म दस्तूर है कि) जो लोग ईमान के बदले कुफ़्र इख़्तियार करते हैं वह अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ते (बल्कि अपना ही कुछ खोते हैं) उन को दुःख की मार होगी १७८. काफ़िर हर्गिज़ यह गुमान न करें[१४५] कि उन को हमारा ढील देना उन के लिये बेहतर है। हम उन को (केवल इस लिये) ढील दे रहे हैं कि और भी पाप करें और उन को ज़िल्लत का अ़ज़ाब हो गा १७९. (अल्लाह की हिक्मत यह है कि) अल्लाह को मंज़ूर नहीं कि मोमिनों को तुम्हारी मौजूदा हालत पर छोड़ रखे जब तक कि नापाक को पाक से अलग न करे[१४६] (जिस से तुम को दोस्त और दुश्मन में तमीज़ हो जाये) और अल्लाह को मन्ज़ूर नहीं कि तुम्हें ग़ैब की ख़बर बतला दे (कि फ़लाँ तुम में मुनाफ़िक़ है और फ़लाँ कमज़ोर ईमान का) हाँ, अल्लाह अपने रसूलों को इत्तिलाअ़ (सूचना) के लिये चुन लिया करता है (सो उन को बतला देता है) इस लिये तुम अल्लाह और उस के रसूल की बात मानो और अगर तुम अल्लाह और उस के रसूल की बात मानो गे और परहेज़-गारी करो गे तो तुम को बड़ा ही अज्र मिले गा[१४७] १८०. अल्लाह के दिये (हुए माल) में कंजूसी करने वाले

....

१४४. चुनान्चे शैतान जिहाद में काफ़िरों की ज़्यादती और ग़ालिब आने का भय दिलाता है और ज़कात देने में फ़क़ीर➲

हो जाने का। इसी वास्ते हदीस में आया है कि जब कोई इस प्रकार का डर अपने दिल में पाये तो ला हौल पढ़े और अल्लाह के फ़ज़्ल ही पर विश्वास रखे और जिहाद में "हस्बु-नल्लाहु वनिअ़्-मल् वकील्" कहे (मुवाहिब)

१४५. इब्ने कसीर और अबू अ़मर आ़सिम वग़ैरह ने "ला यह्स-बन्न" को गाइब के सेग़े के साथ पढ़ा है, इस प्रकार "अल्लज़ी-न कफ़रू" **Subject** होगा और "इन्नमा नुम्ली लहुम" मफ़ऊल **(Object)** हो गा। "इन्नमा" के बारे में बैज़ावी ने कहा है कि "मा" मसदर का है। चाहिये तो यह था कि लिखावट में उसे अलग लिखा जाये यानी "इन्न-मा" लेकिन हज़रत उस्मान रज़ि० के क़ुरआन में एक साथ "इन्नमा" लिखा हुआ था, इस लिये ऐसे ही लिखा जाने लगा। 'इम्ला' का अर्थ है "छूट देना, उम्र लम्बी करना"

१४६. 'यमीज़ु' को दो प्रकार से पढ़ा गया है (१) यमी-ज़ (२) युमय्यि-ज़। पहले का अर्थ है कि "ताकि छंटनी करदे" और दूसरे का अर्थ है "ताकि ख़ूब अच्छी तरह से छंटनी कर दे" कि सभी आ़म व ख़ास को पता चल जाये (मुवाहिब)

१४७. मुनाफ़िक़ लोगों ने कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अगर सच्चे हैं तो हम को बतायें कि हम में से कौन मोमिन है और कौन नहीं है? इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयतें नाज़िल कीं। ग़ैब के बारे में जानना जिस का यहाँ बयान है यह जुज़्वी ज़िल्मे-ग़ैब है जो बग़ैर अल्लाह के बतलाये नहीं हासिल होता। रहा "ज़िल्मे-ग़ैब" तो इस को अल्लाह तआ़ला के सिवा और कोई नहीं जानता। इस वास्ते कि यह अल्लाह की सिफ़त है और इस सिफ़त का किसी मख़्लूक़ के अन्दर पाया जाना नामुमकिन है। और कभी अल्लाह तआ़ला यह चाहता है कि बन्दा ख़ास इस बात को न जाने कि उस के घर का क्या हाल है, या उस की यात्रा में क्या होने वाला है? इसी कारण जब हज़रत आइशा पर मुनाफ़िक़ों ने आरोप लगाया तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम न जान सके और छोड़ देने तक का ख़्याल पैदा हो गया। पस जो शख़्स इस बात को मानता है कि आप को पूरी तरह से ग़ैब का ज़िल्म था तो वह ज़्यादती करता है (मुवाहिब)

शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० फ़रमाते हैं कि जो शख़्स यह अ़क़ीदा रखे कि रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ग़ैब का ज़िल्म रखते हैं वह काफ़िर है, इस लिये कि ग़ैब का जानना अल्लाह की सिफ़तों में से एक है (मरअतुल हक़ीक़त-१८)

يَبْخَلُونَ بِمَآ ءَاتَىٰهُمُ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦ هُوَ خَيْرًا لَّهُم ۖ
بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ۖ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُوا۟ بِهِۦ يَوْمَ
ٱلْقِيَـٰمَةِ ۗ وَلِلَّهِ مِيرَٰثُ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۗ وَ
ٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١٨٠﴾ لَّقَدْ سَمِعَ ٱللَّهُ
قَوْلَ ٱلَّذِينَ قَالُوٓا۟ إِنَّ ٱللَّهَ فَقِيرٌ وَنَحْنُ أَغْنِيَآءُ ۘ
سَنَكْتُبُ مَا قَالُوا۟ وَقَتْلَهُمُ ٱلْأَنۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ
وَنَقُولُ ذُوقُوا۟ عَذَابَ ٱلْحَرِيقِ ﴿١٨١﴾ ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ
أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ ٱللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّـٰمٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿١٨٢﴾
ٱلَّذِينَ قَالُوٓا۟ إِنَّ ٱللَّهَ عَهِدَ إِلَيْنَآ أَلَّا نُؤْمِنَ

इस कन्जूसी को अपने लिये बेहतर न समझें। बल्कि वह उन को परिणाम स्वरूप हानि कारक हो गी। उन को उसी माल का जिस के ख़र्च करने में कन्जूसी करते हैं क़ियामत के दिन तौक़ पहनाया जाये गा। आकाश और ज़मीन की सब वस्तुयें अल्लाह ही की मिल्क (संपत्ति) हैं। और अल्लाह तुम्हारे कामों के बारे में ख़बर रखने वाला है[१४८] १८१. उन लोगों की बात-चीत सुन ली है जो कहते हैं कि अल्लाह मोहताज है और हम माल-दार हैं (याद रखें!) हम भी उन की यह बेहूदा बात और नबिय्यों का नाहक़ क़त्ल करना दोनों लिख रखें गे और (हिसाब के दिन) उन को कहें गे कि लो अब आग का दन्ड चखो

لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَأْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَأْكُلُهُ النَّارُ ۗ قُلْ
قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِىْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالَّذِىْ
قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۸۳﴾
فَإِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَآءُوْ

१८२. यह उन कर्मों की वजह से है जो तुम ने पहले भेजे थे और इस कारण कि अल्लाह बन्दों के हक़ में ज़ालिम नहीं[१४९] १८३. (यह) वही तो हैं जिन्हों ने कहा कि अल्लाह ने हम से कह रखा है कि हम किसी रसूल को न मानें गे जब तक वह हमारे पास क़ुर्बानी न लावे कि जिस को आग जला दे। तुम कह दो! कि निःसंदेह मुझ से पहले कई एक सन्देष्टा तुम्हारे पास खुली निशानियाँ ले कर आये थे और वह वस्तु भी लाये थे जो तुम ने बतलाई है फिर तुम ने उन को क्यों क़त्ल किया था अगर तुम सच्चे हो[१५०] १८४. फिर अगर वह तुझ को झुठला दें तो बहुत से सन्देष्टा तुझ से पहले झुठलाये जा चुके हैं हालाँकि वह स्पष्ट दलीलें (चमत्कार)

....

१४८. सहीह हदीस में है कि जिस को अल्लाह ने माल दिया और वह उस की ज़कात न दे तो उस का माल क़ियामत के दिन एक गंजे साँप की शक्ल में बन कर आये गा जिस पर दो काले पटके हों गे और उस के दोनों कल्ले पकड़ कर कहे गा कि मैं तेरा माल हूँ, तेरा ख़ज़ाना हूँ। एक हदीस में है कि उस का माल साँप बन कर उस के गले का तौक़ बन जाये गा (वहीदी)

१४९. इस्लाम के दुश्मनों ने ज़कात का आदेश सुन कर कहा कि हम मालदार हैं और अल्लाह फ़क़ीर है तभी तो हम से ज़कात माँगता है, ऐसे लोगों के बारे में यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

ऊपर की आयत में कन्जूसी से मुराद यह है यानी जिस माल से कन्जूसी की है वह माल क़ियामत के दिन तौक़ बना कर उन की गर्दन में डाला जाये गा, यह इस प्रकार हो गा कि माल एक साँप बना कर उस की गर्दन में डाला जाये गा जो उस की दोनों बाछों को काटे और चीरे गा और कहे गा कि मैं तेरा माल और तेरा ख़ज़ाना हूँ (बुख़ारी)

इस हदीस से मालूम हुआ कि माल अजगर साँप की शक्ल में हो गा। 'कंज़' उस माल को कहते हैं कि जिस की ज़कात न निकाली जाये (मुवाहिब)

माल का साँप बन जाना अल्लाह की कुदरत से कुछ दूर नहीं है, कुछ का कुछ हो जाना ज़रा भी असंभव नहीं, जैसा कि बिहार के पटना जनपद में एक शख़्स ने रात को सपने में देखा कि एक सांप उस को डस रहा है, जब वह चीख़-चिल्ला कर जागा तो उस का बदन घाव की तरह पकने लगा, उस के दोनों हाथ कुहनियों तक बुरी तरह घायल थे, उस के होंट भी घायल थे, एक दाँत भी हिल गया था, घुटने तक दोनों पांव भी घायल थे (दैनिक समाचार पत्र "इन्क़िलाब" बंबई -७-६-१९५५)

१५०. यहूदी लोग जानवरों की क़ुर्बानी कर के उन के मांस आग में जला दिया करते थे। चुनान्चे तौरात की तीसरी किताब 'अह्बार' के पहले अध्याय में इस क़ुर्बानी का तरीक़ा विस्तार से बयान किया गया है। क़ुरआन पाक ने कहा कि तुम ने इन नबियों को क़त्ल किया जो तुम्हारे कथन के अनुसार क़ुर्बानी के मांस को जला देने का आदेश ले कर आये थे।

यह विषय हज़रत मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रह० की तफ़्सीर "तर्जुमानुल क़ुरआन" से नक़ल किया गया है। मौलाना अमृतसरी मर्हूम इस पर केवल इतना लिखते हैं कि "हमारे तरीक़ा के अनुसार क़ुर्बानी की जाये"। वह तरीक़ा क्या था की तफ़्सीर "फ़तहुल क़दीर"- १/७७२ में यह है कि बनी इस्राईल का तरीक़ा यह था कि जब वह कोई क़ुर्बानी करते तो उन का नबी दुआयें करता, और आकाश से एक आग उतरती और उस को जला देती थी।"

بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ۝١٨٤ كُلُّ نَفْسٍ
ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ
فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۗ
وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝١٨٥ لَتُبْلَوُنَّ
فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۣ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا
اَذًى كَثِيْرًا ۗ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ
مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝١٨٦ وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَلَا
تَكْتُمُوْنَهٗ ۡ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ
ثَمَنًا قَلِيْلًا ۗ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ۝١٨٧ لَا تَحْسَبَنَّ
الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا
بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ

और आसमानी किताबें यानी रौशन (स्पष्ट) किताब भी लाये १८५. (जान रखो कि) हर एक शख़्स को मौत का स्वाद चखना है। और क़ियामत के दिन अपने-अपने कर्मों का पूरा-पूरा बदला दिये जाओगे। पस जो कोई उस (दिन) आग (के दन्ड) से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया, वह कामियाब हो गया[१५१] (बाक़ी रही दुनिया की चन्द दिन की मौज-मस्ती तो) यह दुनिया की ज़िंदगी तो सिर्फ़ धोखे की पूँजी है। १८६. (ऐ मुसलमानो दुनिया में) तुम अपने मालों और जानों में आज़माये जाओ गे और उन लोगों से जिन को तुम से पहले किताब मिली थी और (अ़रब के) मुश्रिकों से भी बहुत सी रन्ज की बातें सुनो गे (उन पर घबराओ नहीं) और अगर (तुम) उन पर सब्र करो गे और डरते रहो गे यह बड़ी हिम्मत का काम होगा[१५२] १८७. जब अल्लाह ने उन किताब वालों से वादा लिया था कि अवश्य इस किताब को लोगों से बयान करना और हर्गिज़ उस को न छुपाना (उस समय तो सब ने स्वीकार किया) फिर उन्हों ने उस को पीठ के पीछे फेंक दिया और उस के बदले में थोड़े से दाम वसूल कर लिये। बहुत ही बुरे दाम ले रहे हैं[१५३] १८८. सो तू उन (जाहिलों) को जो अपने बुरे कर्मों पर प्रसन्न होते हैं और बिना नेक कार्यों के किये अपनी प्रशंसा चाहते हैं (उन को) अ़ज़ाब से बचा हुआ न समझ

....

१५१. हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जन्नत का एक एक इंच स्थान दुनिया और उस की समस्त वस्तुओं से बेहतर है, और तुम्हारा जी चाहे तो पढ़ो 'फ़-मन् ज़ुह्ज़ि-ह अ़निन्नारि' (पस जो कोई उस दिन आग के दन्ड से बचा लिया गया) (तिर्मिज़ी, हाकिम)

इमाम इब्ने कसीर रह० फ़रमाते हैं कि इस आयत में तमाम वस्तुओं की मौत का ज़िक्र है क्यों कि जिन्न, इन्सान और फ़रिश्ते यहाँ तक कि अर्श के उठाने वाले फ़रिश्ते भी बाक़ी नहीं रहें गे, केवल अल्लाह तआ़ला ही की ज़ात के लिये हमेशगी और बक़ा (हमेशा बाक़ी रहना, अनंत) है। इब्ने अबू हातिम ने हज़रत अ़ली रज़ि० से रिवायत किया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जब वफ़ात पाई तो कोई आने वाला आया जिस के आने की आहट तो सुनाई देती थी मगर कोई दिखाई नहीं देता था, उस ने आ कर कहा: अस्सलामु अ़लैकुम् अह्-लल्बैति वरह-मतुल्लाहि व बरकातुहू......अल्लाह के हाँ हर मुसीबत का बदला है और हर मरने वाले के पीछे जानशीन है और हर गुम हो जाने वाले के पीछे मिलने वाला है, इस लिये केवल अल्लाह पर ही भरोसा करो और उस की ओर ➲

➲से आशा रखो पस मुसीबत तो वास्तव में उस को पहुंची जिस को कुछ सवाब न मिला-- वस्सलामु अ़लैकुम वरहमतुल्लाहि व बरकातुहू।

हज़रत अ़ली रज़ि० कहते हैं कि यह हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम थे (इब्ने कसीर)

१५२. कअ़ब बिन अश्रफ़ यहूदी वग़ैरह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तौहीन किया करते थे और सहाबा को बुरा-भला कहते थे, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (लुबाब-१/६६)

हक़ की दावत को मानने वालों से संबोधन है कि तुम लोगों ने हक़ को क़ाइम करने और उस के प्रचार का ज़िम्मा अपने ऊपर लिया है तो ज़रूरी है कि इस राह की तमाम कठिनाइयों से भी तुम को गुज़रना पड़े। अहले किताब और अ़रब के मुश्रिकीन दोनों ही तुम्हारी मुख़ालिफ़त पर तुले हुये हैं। वह हर प्रकार की तकलीफ़ें तुम्हें पहुंचायें गे और तुम्हें उन को सहन करना पड़े गा। तुम्हारी कामियाबी के लिये मूल चीज़ सब्र और तक़्वा है। अगर तुम ने सब्र किया और तक़्वा को हाथ से जाने न दिया तो यक़ीन करो कि आख़िरत में जीत तुम्हारे ही लिये है (तर्जुमान)

१५३. अल्लाह तआ़ला ने तौरात और इंजील में वादा लिया था कि हम ने किताब में जो कुछ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और उन की उम्मत की फ़ज़ीलत, विशेष्ता और कमालात बयान किये हैं, इन को साफ़-साफ़ लोगों से बयान कर दिया करो।

इब्ने कसीर ने कहा कि इस आयत में उलमा और अहले कुरआन को चेतावनी दी गयी है कि ख़बरदार! इन अहले किताब की राह न चलें, किताब व सुन्नत की लोगों को शिक्षा दें जो जनता के लिये लाभ-दायक हों। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो किसी अ़िल्म को जानता है और उस से मालूम किया गया लेकिन उस ने छुपाया, तो क़ियामत के दिन उस को आग की लगाम दी जाये गी। एक दूसरी हदीस में यह भी आया है कि अन्तिम काल में दीने इस्लाम के उलमा भी यहूद व नसारा की तरह हो जायें गे (मुवाहिब)

हम आज देख रहें हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की भविष्य वाणी हूबहू सत्य साबित हो रही है। आज उलमा की एक बड़ी जमाअ़त आप को ऐसी मिले गी जिन में फ़िर्क़ा बन्दी और तअ़स्सुब इतना अधिक मिले गा कि एक सीधा-सादा समझ-दार इन्सान उन की इस हालत को देख कर बहुत बदगुमान हो जाता है। सच है कि उलमा का सुधार क़ौम का सुधार है और उलमा का बिगाड़ पूरी क़ौम का बिगाड़ है। अल्लाह हम सब को नेक समझ और बेहतरीन तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये कि हम एक जुट हो कर उस के दीन की सेवा करें-- आमीन। हदीस शरीफ़ में आया है कि क़ियामत के दिन जो लोग सब से पूर्व जहन्नम में जाये गे उन में रिया कार उलमा और क़ारी हों गे-- अल्लाह हम सब को सुरक्षित रखे!

وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ إِنَّ فِي
خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ
لَآيٰتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۝ الَّذِينَ يَذْكُرُونَ
اللَّهَ قِيٰمًا وَّقُعُودًا وَّعَلٰى جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ
فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ
هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

बल्कि उन को सख़्त दर्दनाक अ़ज़ाब हो गा १८९. (इस लिये कि) तमाम आसमान और ज़मीन का मुल्क तो अल्लाह का है। और अल्लाह हर काम पर क़ुदरत रखता है १९०. और आसमान और ज़मीन की पैदाइश और रात दिन के आगे-पीछे आने में अक़्ल मन्दों (बुद्धिमानों) के लिये कई एक चिन्ह हैं[१५४] १९१. (बुद्धिमान कौन लोग हैं?) जो खड़े-बैठे और करवट पर (लेटे हुये) अल्लाह ही को याद करते (रहते) हैं[१५५] और ज़मीन व आकाश की पैदाइश में ग़ौर व फ़िक्र करते➲

رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۱۹۲﴾ رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿۱۹۳﴾ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿۱۹۴﴾

रहते हैं कि हमारे मौला! तू ने उस को अ़बस (अकारण) नहीं बनाया तू पाक है[१५६] सो तू हम को आग के अ़ज़ाब से छुटकारा दे[१५७] १९२. ऐ हमारे मौला! जिस को तू (उस के बुरे कर्मों के कारण) जहन्नम में दाख़िल करे गा तू उस को ज़लील करे गा। और न उन ज़ालिमों का कोई सहायक हो गा (जो उस बला से उन को छुड़ा ले) १९३. ऐ हमारे मौला! हम ने एक पुकारने वाले (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को ईमान के लिये पुकारते हुये सुना कि अपने पालन हार पर ईमान लाओ पस (तुझ पर) ईमान ले आये। ऐ हमारे मौला! तू हमारे गुनाह माफ़ कर और हमारी बुराइयां हम से दूर कर दे और हम को नेक बख़्तों (भाग्य शाली लोगों) के साथ फ़ौत कीजियो। १९४. ऐ हमारे मौला! जो तू ने अपने सन्देष्टाओं के ज़रीआ़ (द्वारा) हम से वादा किया है हम को दीजियो और क़ियामत के दिन हम को ज़लील न कीजियो। निःसंदेह तू अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता[१५८]

....

१५४. शाने नुज़ूल:- कुरैश ने यहूदियों से जा कर कहा कि मूसा अ़लै० क्या-क्या चमत्कार लाये थे? उन्हों ने उत्तर दिया कि यदे-बैज़ा (यानी हथेली को बग़ल में ले जा कर बाहर निकालते तो वह चमकने लगती) वग़ैरह फिर नसारा (ई़साइयों) के पास गये और यही प्रश्न किया तो उनहों ने उत्तर दिया कि ई़सा अ़लै० मुर्दों को जीवित कर देते और अन्धों (नेत्र हीन) और कोढ़ियों को चन्गा कर देते थे। इस पर कुरैश के लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आये और कहा कि तुम अल्लाह से प्रार्थना करो कि सफ़ा पर्वत सोने का हो जाये, तो हम तुम को नबी मान लें गे। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दुआ़ की तो उस समय यह आयत नाज़िल हुयी (लुबाब)

दूसरी बात यह कि फ़ुज़ूल झगड़ों से मुंह फेर कर अस्ल मतलब की तरफ़ तवज्जुह दिलाने को यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

१५५. सहीह बुख़ारी में हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हर समय अल्लाह को याद किया करते थे। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से इस की तफ़्सीर इस प्रकार रिवायत है कि भले-चंगे हैं तो खड़े हो कर नमाज़ अदा करते हैं, मजबूरी की हालत में बैठ कर या लेट कर पढ़ते हैं, मगर किसी भी हालत में छोड़ते नहीं हैं

हज़र् अ़िम्रान बिन हुसैन रज़ि० को बवासीर की बीमारी थी, इन्हों ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा तो फ़रमाया खड़े हो कर नमाज़ पढ़ो। अगर न हो सके तो बैठ कर और अगर बैठ कर भी न पढ़ सको तो करवट से पढ़ो (बुख़ारी, मुस्लिम)

१५६. तू ने संसार को अकारण नहीं बनाया, बिला वजह किसी कार्य के करने से तू पाक है, बल्कि उस में कई हिक्मतें हैं, उन में एक तो यही है कि जो उन में से तेरी कुदरत के सबूत पा कर तुझ को संसार का मालिक और हर वस्तु पर कुदरत रखने वाला जानें गे, तो उन पर तेरी कृपा हो गी, और जो अपने दुनियावी फ़ाइदे जैसे, जहाज़ चलाना आदि के लिये उन में ग़ौर करें गे और तेरी तौहीद और तेरे रब होने के इक़रार से बेग़रज़ रहें गे तो उन को अ़ज़ाब उठाना हो गा (सनाई)

१५७. इस आयत से दहरियों और मुलहिदों के ख़याल का रद्द होता है जो कहते हैं कि यह संसार आप ही आप

➲कुछ ज़र्रो के इकट्ठा होने से बन गया है और फिर एक दिन आप ही आप यह टूट-फूट जायें गे। समस्त संसार बिखर जाये गा, फिर उन के बिखरे टुकड़ों से दूसरे संसार पैदा हों गे और ऐसा हमेशा से होता चला आया है और होता रहे गा। यह ख़याल इतना अहमक़ाना (मूर्खता पूर्ण) है जिस की कोई हद नहीं (वहीदी)

जिस प्रकार लकड़ी से बग़ैर बढ़ई के संदूक़ नहीं बन सकता, लोहे से बग़ैर लोहार के तल्वार नहीं बन सकती, इसी प्रकार ज़र्रो और टुकड़ों से ज़िन्दगी की तर्तीब के लिये भी एक माहिर करीगर की आवश्यक्ता है और फिर उसी माहिर कारीगर का नाम अल्लाह है। चुनान्चे अल्लाह तआला ने फ़रमायाः "क्या ऐसे अल्लाह के होने में तुम शक करते हो जिस ने आसमानों और ज़मीन को और सारी वस्तुओं को बनाया"। वह अल्लाह जो अच्छे से अच्छा खाना तुम को खिलाता है, लेकिन उस की शान यह है कि स्वयं कुछ नहीं खाता, वह खाने-पीने, सोने आदि से बेपर्वाह है।

१५८. एक रात नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हज़रत मैमूना रज़ि० के घर पर थे, जब एक तिहाई रात बीत गयी तो आप उठे और आकाश की ओर नज़र उठा कर इन्न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति........से लेकर दस आयतों को पढ़ा, फिर वुज़ू किया और ग्यारह रकअ़तें पढ़ीं, फिर हज़रत बिलाल रज़ि० ने अज़ान दी और आप दो रकअ़तें फ़ज्र की सुन्नत पढ़ कर घर से निकले और फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई (बुख़ारी, मुस्लिम)

दूसरी सहीह हदीसों में है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़ज्र की सुन्नत पढ़ कर दायें करवट पर लेटते और यह दुआ पढ़तेः अल्लाहुम्मज्-अ़ल् फ़ी क़ल्बी नू-रन् वफ़ी समअ़ी नू-रन् वफ़ी ब-सरी नू-रन् व-अ़न् यमीनी नू-रन् व-अन् शिमाली नू-रन् वमिन् बै-न यदी नू-रन् वमिन् ख़ल्फ़ी नूरन् व-मिन् फ़ौक़ी नूरन् वमिन् तह्ती नू-रन् वअ़ज़िम् ली नू-रन् यौमल् क़िया-मति (ऐ अल्लाह!) मेरे दिल को रोशन कर दे, मेरे कानों और मेरी आँखों को रोशन कर दे, मेरे दायें और बायें और आगे और पीछे और ऊपर और नीचे ग़रज़ मेरे लिये हर तरफ़ (हिदायत की) रोशनी पैदा कर दे और क़ियामत के दिन मेरे लिये बहुत बड़ी रोशनी अ़ता कीजियो।

नोटः- बुख़ारी शरीफ़ में है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस दुआ को फ़ज्र की रकअ़तों में पढ़ा करते थे। नसई की रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस दुआ को सज्दा में पढ़ा करते थे। एक और सही रिवायत में यह है कि आप फ़ज्र की नमाज़ के लिये जाते हुये रास्ते में पढ़ा करते थे। तबरानी की रिवायत में इस दुआ का वित्र की नमाज़ के बाद पढ़ने का ज़िक्र है। मगर फ़ज्र की सुन्नतों के बाद लेटकर पढ़ने का कोई सबूत नहीं है। तबरानी की एक रिवायत में बेशक फ़ज्र की सुन्नतों के बाद पढ़ने (नाकि लेटकर पढ़ने) की हदीस है, लेकिन उसकी सनद में अ़ता नामक रावी बहुत ज़्यादा ज़ओ़फ़ है। फ़ज्र की सुन्नतों के बाद लेटकर यह दुआ पढ़ने का सबुत किसी भी सहीह हदीस से साबित नहीं इस लिये नहीं पढ़नी चाहिये। (ख़ालिद)

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ
عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ ۖ بَعْضُكُمْ مِّنْ
بَعْضٍ ۖ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ
وَأُوذُوا فِي سَبِيلِي وَقَاتَلُوا وَقُتِلُوا لَأُكَفِّرَنَّ
عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ عِنْدَهُ
حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ

१९५. पस अल्लाह ने उन को उत्तर दिया कि मैं हर्गिज़ तुम में से किसी का अच्छा काम बर्बाद नहीं करूँ गा चाहे वह मर्द हो या महिला, तुम आपस में एक ही हो, पस जिन लोगों ने (दीन की सुरक्षा में अपना) वतन छोड़ा और अपने घरों से निकाले गये और मेरी राह में सताये गये और लड़े और मारे गये अवश्य उन की बुराइयाँ उन से दूर करूँ गा और उन को ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँ गा जिन के नीचे नहरें बहती हों गी, अल्लाह की तरफ़ से उन को यह बदला मिले गा।➲

كَفَرُوْا فِى الْبِلَادِ ﴿١٩٦﴾ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۗ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾ وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ

(और अ़लावा इस के) अल्लाह के हाँ और भी नेक बदला है[१५९] (यानी अल्लाह की खुशनूदी) १९६. तू काफ़िरों के (जोश के साथ) शहरों में फिरने (और तारों और रेलों के आविष्कार करने) से धोका न खाइयो। १९७. यह तो थोड़ा सा अस्बाब है फिर उन का ठिकाना जहन्नम में हो गा (जहाँ उन को हमेशा तक रहना हो गा) और वह बहुत बुरी जगह है[१६०] १९८. हाँ, जो लोग अपने रब से डरें उन के लिये ऐसे उम्दा बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं हमेशा उन्हीं में रहें गे अल्लाह के हाँ से मेहमानी खायें गे। अ़लावा इस के जो नेक लोगों के लिये अल्लाह के हाँ मौजूद है वह सब दुनिया से बेहतर है[१६१] १९९. बाज़ अहले किताब भी अल्लाह को मानते हैं और जो कुछ तुम्हारी तरफ़ और उन की तरफ़ अल्लाह के हाँ से उतारा गया है (उस को भी) अल्लाह से डर कर मानते हैं

....

१५९. 'उलुल् अल्बाब' से 'हुस्नुस्सवाब' तक यहाँ किसी वाकिआ की हिक्मत नहीं है, बल्कि अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दों की और उन की दुआ़ओं और खुदा के उन दुआ़ओं को कुबूल करने की एक तमसील है। इस प्रकार के उदाहरण कुरआन मजीद में बहुत हैं। सूरः फ़ुर्क़ान के अन्तिम रुकूअ़ में 'वअ़िबादुर्रहमान' वाली आयत भी इसी प्रकार की है। इस प्रकार के उदाहरण का अर्थ यह होता है कि ऐसे लोग जिस समय में हों उन के ऐसा करने पर अल्लाह की तरफ़ से यही बर्ताव होता है (सनाई)

१६०. कुछ सहाबा ने कहा कि हम अल्लाह की अ़िबादत भी करते हैं और फिर भी तक्लीफ़ में हैं और काफ़िरों का हाल यह है कि कुफ़्र भी करते हैं लेकिन मौज मस्ती में हैं, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (जामिउल बयान)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "दुनिया और जो कुछ दुनिया में है सब मल्ऊन हैं सिवाए दीन के आ़लिम या दीन की शिक्षा हासिल करने वाले के, या उन के साथ दोस्ती करने वालों के"। आप ने यह भी फ़रमाया: "आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की क़ीमत इतनी है जितनी एक समुन्द्र के मुक़ाबला में पानी के एक बूँद की जो तुम्हारी उंगली में लग कर आये" (मुस्लिम)

एक मर्तबा हज़रत उमर रज़ि० ने आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से फ़रमाया कि आप के लिए उम्दा आराम देह बिस्तर बनवा दूँ, तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ऐ उमर! तुम तो इस ख़याल को छोड़ो हमारे लिये आराम आख़िरत में है (बुख़ारी)

१६१. 'अबरार' उन का नाम इस कारण से हुआ कि उन्हों ने अपने बाप-दादा और सब बुजुर्गों की सेवा की और बेटे-पोते, औलाद की देख-रेख अच्छी प्रकार की। जैसे तेरे माता-पिता का तुझ पर हक़ है, वैसे ही तेरे बेटों का तुझ पर हक़ है (इब्ने कसीर)

لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۗ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٩٩﴾

और अल्लाह के हुक्मों के बदले थोड़े-थोड़े पैसे हासिल नहीं करते। उन ही लोगों के लिये अल्लाह के हाँ बदला है। निःसंदेह अल्लाह

➲अच्छा बदला देने वाला है[१६२] २००. ऐ मुसलमानो! सब्र करो और एक दूसरे को सब्र सिखाया करो और आपस में मिले रहो (राय-मश्वुरा में इख़्तिलाफ़ के बावजूद) और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम मुराद पाओ[१६३] {कामियाब हो}

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا ٱصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا
وَٱتَّقُوا ٱللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝٢٠٠

....

१६२. यहूद व नसारा में से कुछ मुख़्लिस लोग अपना दीन छोड़ कर इस्लाम ले आये थे उन के हक़ में यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

१६३. यह आयत गोया पूरी सूर: आले इ़म्रान का निचोड़ और ख़ुलासा है कि कुरआन की दावत के मुख़ालिफ़ चाहे जितनी तदबीरें और हीले करें और चन्द दिनों के लिये चाहे कितने ही प्रसन्न दिखाई दें अन्त में हक़ यानी इस्लाम की दावत का मुक़ाबला करने वालों के लिये तबाही और बर्बादी ही है। इस्लाम की दावत के कुबूल करने वालों के लिये यह हिदायत है कि वह सब्र करें और हिदायत की राह में एक दूसरे के साथ बंध जायें और हर हाल में अल्लाह से डरते रहें। अगर उन्होंने ऐसा किया तो कामियाबी उन ही के लिये है (तर्जुमान)

सूर: निसा-(4)

सूर: निसा मदीना शरीफ़ में उतरीं[१]। इस में १७६ आयतें और २४ रुकूअ़ हैं

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

१. लोगो! अपने पालन-हार से डरते रहो जिस ने तुम को एक जान से पैदा किया[२] (इस प्रकार कि एक जान अर्थात आदम को पैदा किया) फिर उस से उस का जोड़ा (यानी बीवी) पैदा किया और फिर उन दोनों से बहुत से मर्द और औ़रतें फैलाये[३]। और उस अल्लाह से डरो जिस के नाम से एक दूसरे से सवाल किया करते हो और रिश्ता व नाता तोड़ने से बचते रहो[४]। नि:संदेह अल्लाह तुम को देख रहा है २. और अनाथों को माल वापस दे दो[५] और अच्छे के बदले में (उन को बुरा और) ख़राब न दिया करो। और हिसाब के एच-पेच में ला कर उन के माल अपने मालों के साथ मिला कर न खा जाओ। यह महा➲

➲पाप है ३. और (अनाथ लड़कियों के बारे में न्याय करो) अगर तुम को (उन) अनाथों के बारे में न्याय न करने का डर हो

....

१. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० कहते हैं कि सूर: निसा में आठ आयतें ऐसी हैं जो इस उम्मत के लिये समस्त संसार से बेहतर हैं (१) युरीदुल्लाहु लियु-बय्यि-न लकुम........ (आय: न०२६) (२) वल्लाहु युरीदु अय्यतू-ब अलैकुम.. ... (आय: न०.२७)(३) युरीदुल्लाहु अंय्यु-ख़फ़्फ़ि-फ़ अ़नकुम........ (आय: न०२८) (४) इन्नल्ला-ह ला यज़लिमु मिस्क़ा-ल....... (आय: न०४०) (५) इन् तज्-तनिबू कबाइ-र........ (आय: न०३१) (६) इन्नल्ला-ह ला यग़फ़िरू अंय्युश्-र-क बिही.......... (आय: न०११६) (७) वलौ अन्नहुम् इज़्ज़-लमू........ (आय: न०.६४) (८) व-मंय्यअ़्-मल सू-अन........ (आय: न०.११०)

२. तमाम इन्सान एक ही माता-पिता की संतान हैं, यह पाठ हर मुनष्य को याद करना बहुत ही अहम और आवश्यक है। मनुष्य के पहले दादा हर गोरे और काले के, हर हिन्दुस्तानी और हर चीनी, हर हबशी और ज़न्गी के एक ही हैं और वह आदम अ़लै० हैं।

ऐसा नहीं है कि फ़लाँ नस्ल के पहले बाप कोई और थे और फ़लाँ नस्ल के कोई और थे। यहाँ पर हिन्दू धर्म के इस ख़याल का रद्द किया गया है कि ब्राहमण जाति के लोग ब्रहमा के मुंह से और खत्री लोग ब्रहमा के सीने से और वैश जाति के लोग उन के पेट से और नीची जाति के लोग उन के पैरों से पैदा हुये हैं। सच्ची बात तो यह है कि समस्त संसार के मनुष्य एक ही बाप की संतान हैं (माजिदी) कुरआन पाक ने इसी लिये तमाम ही इन्सानों को आ़म ख़िताब किया है और यह इस की स्पष्ट दलील है कि सब के दादा एक ही हैं।

३. हज़रत अ़ब्बास और इब्ने मस्ऊद रज़ि० का कहना है कि जन्नत में जाने के बाद आदम अ़लै० सो गये, इतने में अल्लाह तआ़ला ने उन की बायीं पिसुली से हव्वा को पैदा किया। जब वह जागे तो हव्वा को देख कर बहुत प्रसन्न हुये और आपस में मानूस (घुलमिल)हो गये। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० का यह भी कहना है कि चूँकि महिला की पैदाइश पुरूष से हुयी है इस लिये उस का ज्ञान-ध्यान पुरूष ही में लगा रहता है और पुरूष की पैदाइश ज़मीन (मिट्टी) से हुयी है इस लिये इस का ध्यान ज़मीन ही में लगा रहता है, इस लिये अपनी-अपनी महिलाओं को रोके रखो (इब्ने हातिम)

एक दूसरी सहीह रिवायत में है कि महिला की पैदाइश पिसुली से हुयी है जो कि टेढ़ी होती है, अगर उस को सीधी करने की कोशिश करो गे तो तोड़ डालो गे और अगर वैसे ही उस से लाभ उठाना चाहो गे तो टेढ़ी रहते हुये भी लाभ देगी (मुवाहिब)

४. आपस के रिश्ते-नातों के हक़ अल्लाह तआ़ला ने ठहराये हैं इस लिये जो उन के अदा करने में कोताही करे गा वह अल्लाह के आदेश की अवज्ञा करे गा और गुनाह-गार हो गा। इस सिलसिले में सब से अधिक देख-भाल के योग्य अनाथ बच्चे थे, इस लिये सर्व प्रथम उन्हीं के हक़ को बयान किया कि जो लोग यतीमों के माल की देख-भाल करते हैं वह उन के माल को अलग रखें और अपने माल के साथ मिला कर उन्हें हानि न पहुंचायें।

५. 'अनाथ' यानी बिन बाप के बच्चों का मस्अला हर क़ौम में बहुत ही अहम रहा है। कुरआन मजीद उन ही अनाथों के संबन्ध में आदेश दे रहा है। डाक्टर राबर्ट राबर्टसन(**Dr. Robort Raborton**) अगर्चे मुसलमान नहीं है, फिर भी वह इस बात को मानता है कि कुरआन और रसूल दोनों ने अनाथों के हक़ का सब से बेहतर इन्तिज़ाम कर दिया है (माजिदी)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अनाथ की परवरिश करने वाला क़ियामत के दिन मेरे साथ हो गा। एक दूसरी रिवायत में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "यतीम के सर पर मामता➲

➲का हाथ फेरने वाले को उस के बालों के बराबर नेकियाँ मिलेंगी। कुरआन मजीद में बहुत से स्थानों पर अनाथ बच्चों के साथ अच्छा बर्ताव करने की ताकीद आयी है। और उन का माल हड़पना दोज़ख़ की आग अपने पेट में भरना है।

فِي الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى
وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً
اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَلَّا تَعُوْلُوْا ۝
وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ۚ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ
شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓـًٔا مَّرِيْٓـًٔا ۝ وَلَا تُؤْتُوا
السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِيْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيٰمًا
وَّارْزُقُوْهُمْ فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا
مَّعْرُوْفًا ۝ وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰٓى اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَاِنْ
اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا
تَاْكُلُوْهَآ اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا ۚ وَمَنْ كَانَ
غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ
بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ
فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ۝ لِلرِّجَالِ

तो (उन से निकाह न किया करो, बल्कि) और महिलाओं से निकाह किया करो जो तुम्हारे लिये हलाल हैं चाहे एक से, चाहे दो से, चाहे तीन से, चाहे चार से। फिर अगर तुम अन्याय से डरो[६] तो बस एक ही से करो या (विवाहिता महिला न मिलने पर) लौंडी ही काफ़ी है। यह अन्याय से बचने का बहुत अच्छा ज़रीआ़ है ४. और महिलाओं के मह्र खुशी से उन को दिया करो[७]। फिर अगर वह खुशी-खुशी उस में से कुछ तुम को छोड़ दें तो उस को मज़े से बेखटके कुबूल कर लिया करो ५. और बेवकूफ़ों (महिलाओं और बच्चों) को अपना सारा माल जिस को अल्लाह ने तुम्हारा गुज़ारा बना रखा है, हवाला न कर दिया करो। हाँ, उस में से कुछ उन को खिलाते-पिलाते रहो और भली बात कहते रहो (कि तुम्हारा ही माल है) ६. और जवानी को पहुंचने तक (कभी-कभी) अनाथों की परीक्षा कर लिया करो फिर अगर उन में कुछ होशियारी और क्षमता (लियाक़त) पाओ तो उन के माल दे दिया करो[८] और फ़ुज़ूल ख़र्ची से और उन के बड़ा होने के डर से पहले ही जल्दी से न खा जाया करो। और जो मालदार हो वह परहेज़ करे और जो फ़क़ीर हो वह (अपनी मेहनत का बदला) दस्तूर के अनुसार ले लिया करे। फिर जब्र उन को देने लगो तो उन के सामने गवाह कर लिया करो। (इस के बाद भी अगर कुछ ख़ियानत करो गे तो जान लो कि) अल्लाह अकेला ही हिसाब लेने वाला बस (काफ़ी) है।

....

६. इस आयत में अल्लाह ने अपने अटल नियम के लिहाज़ से मर्दों को आवश्यक्ता-नुसार चार महिलाओं को निकाह में लाने की अनुमति दी है। यह मस्अला इतना ठोस और अटल है कि ऐसे-वैसे हवा के झोंकों से तो क्या, बड़े-बड़े ज़ल्ज़लों से भी प्रभावित नहीं हो सकता (सनाई) एशिया के लग भग तमाम ही बड़े धर्मों में एक से अधिक महिलाओं से निकाह करने का सबूत मिलता है। पहले के हिन्दुस्तान में और बनी इस्राईल के सन्देष्टाओं में एक से अधिक महिलाओं से निकाह करने की बहुत सारी मिसालें मिलें गी (इस विषय में विस्तार से जान कारी करने के लिये "रहमतुल्लिल➲

आलमीन" देखें २/१५७) इस्लाम में चार तक की अनुमति इस शर्त के साथ है कि उन में बराबरी, इन्साफ़ और हुक़ूक़ की अदाइगी की जाये, वर्ना फिर एक से अधिक महिला से निकाह जाइज़ न हो गा (मुवाहिब)

७. इस का अर्थ यह है कि महिला से निकाह न करो मगर यह कि पहले मह्र अदा करो क्यों कि बिला मह्र के निकाह नहीं हो सकता। इब्ने अबी हातिम की एक रिवायत है कि पहले यह नियम था कि जब कोई व्यक्ति अपनी लड़की का निकाह करता तो उस का मह्र ले कर अपने प्रयोग में लाता था, इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल की कि मह्र औरत के हवाले कर दो, फिर उस में से जो कुछ वह हँसी-खुशी से अपनी इच्छा-नुसार दे दे उसे खाओ (लुबाब)

८. यानी लड़का अगर कम अक़्ल है तो उस का माल उस के हवाले न करो, जब बालिग़ हो जाये तब माल हवाले करो, लेकिन तसल्ली देते रहो कि माल तुम्हारा है हमारा नहीं, हम तो केवल तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही करते हैं (मुवज़्ज़िहुल् क़ुरआन)

نَصِيۡبٌ مِّمَّا تَرَكَ الۡوَالِدٰنِ وَالۡاَقۡرَبُوۡنَ ۖ وَ
لِلنِّسَآءِ نَصِيۡبٌ مِّمَّا تَرَكَ الۡوَالِدٰنِ وَ الۡاَقۡرَبُوۡنَ
مِمَّا قَلَّ مِنۡهُ اَوۡ كَثُرَ ؕ نَصِيۡبًا مَّفۡرُوۡضًا ۝ وَاِذَا
حَضَرَ الۡقِسۡمَةَ اُولُوا الۡقُرۡبٰى وَالۡيَتٰمٰى وَالۡمَسٰكِيۡنُ
فَارۡزُقُوۡهُمۡ مِّنۡهُ وَقُوۡلُوۡا لَهُمۡ قَوۡلًا مَّعۡرُوۡفًا ۝٨
وَلۡيَخۡشَ الَّذِيۡنَ لَوۡ تَرَكُوۡا مِنۡ خَلۡفِهِمۡ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا
خَافُوۡا عَلَيۡهِمۡ ۖ فَلۡيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلۡيَقُوۡلُوۡا قَوۡلًا سَدِيۡدًا ۝٩
اِنَّ الَّذِيۡنَ يَاۡكُلُوۡنَ اَمۡوَالَ الۡيَتٰمٰى ظُلۡمًا اِنَّمَا
يَاۡكُلُوۡنَ فِىۡ بُطُوۡنِهِمۡ نَارًا ؕ وَسَيَصۡلَوۡنَ سَعِيۡرًا ۝١٠
يُوۡصِيۡكُمُ اللّٰهُ فِىۡۤ اَوۡلَادِكُمۡ ۖ لِلذَّكَرِ مِثۡلُ حَظِّ
الۡاُنۡثَيَيۡنِ ۚ فَاِنۡ كُنَّ نِسَآءً فَوۡقَ اثۡنَتَيۡنِ فَلَهُنَّ
ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۚ وَاِنۡ كَانَتۡ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصۡفُ ؕ
وَلِاَبَوَيۡهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنۡهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ

७. जो कुछ माँ-बाप और क़रीबी छोड़ जाते हैं उस में लड़कों का हिस्सा होता है और माँ-बाप और क़रीबी लोगों के छोड़े हुये माल में लड़कियों का भी हिस्सा है[9] चाहे वह माल कम हो या अधिक। हिस्सा मुक़र्रर कर लें गे[10]। ८. और जब बाँटने के समय क़रीबी रिश्ते-दार (जिन का हिस्सा उस माल में नहीं) और अनाथ बच्चे और ग़रीब लोग आ जायें, तो उन को भी उस माल में से कुछ दिया करो और उन को अच्छी बात कहा करो ९. ख़ास कर जो लोग (अपनी) कमज़ोर (नाबालिग़) औलाद के पीछे रहने में ख़ौफ़ करते हैं (कि कोई उन का माल नष्ट न करे) तो वह (इस मामला में) ख़ौफ़ करें और अल्लाह से डरें और माकूल बात कहें[11] १०. जो लोग यतीमों का माल बेजा तौर से खाते हैं (वह जान लें कि) वह अपने पेटों में आग भरते हैं और बहुत जल्द जहन्नम में जायें गे[12] ११. अल्लाह तुम को औलाद के हिस्सों के बारे में हुक्म फ़रमाता है कि मर्द का हिस्सा दो महिलाओं के बराबर है। फिर अगर (उस मय्यित की) लड़कियाँ दो या दो से अधिक हों तो उन सब के लिये दो तिहाई छोड़े हुये माल में से है। और अगर एक है तो उस को आधा तर्का मिले[13]। और उस मय्यित के माँ-बाप को छटा-छटा हिस्सा तर्का में दिया जाये

....

९. शीआ फ़िर्क़ा इस को आम और सब लोगों के हक़ में जानते हैं। यह कारण है कि पहले ख़लीफ़ा अबू बक्र सिद्दीक़

➲के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तर्का, तक़्सीम न करने से नाराज़ हैं (हालाँकि) विरासत वाली आयत बाज़ के साथ ख़ास है। वरासत की किताब 'सिराजी' में है कि अगर बाप-बेटे में से कोई एक गुलाम हो, या एक दूसरे का क़ातिल हो, या दोनों में से एक काफ़िर हो, या दोनों में से एक इस्लामी हुकूमत में हो और दूसरा हरबी कुफ़्फ़ार के अधीन हो तो विरासत नहीं मिलती। हालाँकि यह आयत आ़म है और सब को शामिल है क्यों कि आयत का अर्थ यह है कि "अल्लाह तुम्हारी औलाद के बारे मे तुम को हुक्म देता है", तो जिस प्रकार यह लोग सब के नज़दीक इस हुक्म से अलग हैं, इसी प्रकार नबी की विरासत भी अलग है। इस की दलील वह हदीस है जो इमाम बुख़ारी ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि से और कलीनी ने अबू अ़ब्दुल्लाह से रिवायत की है। बुख़ारी में रिवायत के शब्द यह हैं "हम नबिय्यों की जमाअ़त हैं हमारा कोई वारिस नहीं होता, जो कुछ हम छोड़ जायें वह सदक़ा है"। शीआ़ा मज़हब की किताब "कलीनी" के "किताबुल इ़ल्म" में यही हदीस अबू अ़ब्दुल्लाह के वास्ते से तफ़्सील के साथ रिवायत है (सनाई)

१०. अस्ल इस बारे में यह है कि लड़के को दो लड़कियों के बराबर हिस्सा मिलना चाहिये, यानी लड़की से लड़के का हिस्सा दो गुना हो। मय्यित ने जो कुछ शरीअ़त के अनुसार वसिय्यत की हो पहले उस को पूरा किया जाये, और उस के ऊपर जो कुछ क़र्ज़ है उसे अदा किया जाये, इस के बाद जो कुछ बचे उसे वारिसों में तक़्सीम किया जाये। यह बात बहुत ही आवश्यक है कि वसिय्यत ठीक तौर पर की गयी हो, इस उद्देश्य से न की गयी हो कि हक़-दारों को उन के हक़ से महरूम (वन्चित) कर दिया जाये (तर्जुमान)

११. यानी मय्यित के पीछे उस की औलाद के हक़ में क़ुसूर न करें, बल्कि अपने ऊपर क़ियास करें कि हमारी औलाद पीछे रह जाये तो हम को उन के बारे में किस प्रकार फ़िक्र हो गी (मुवज़्ज़िहुल् क़ुरआन) मुफ़स्सिरों का एक समूह इस ओर भी गया है कि यह ख़िताब देखभाल करने वालों को नहीं है बल्कि मरने के क़रीब शख़्स के रिश्ते-दारों और निकट संबन्धियों को है कि वह लोग उसे समझायें कि उसे केवल १/३ ही सद्क़ा करने का हक़ है और बाक़ी माल वारिसों के लिये छोड़ जाये (माजिदी)

१२. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मेराज में कुछ लोगों को देखा कि उन के मुंह में आग के गोले डाले जा रहे हैं जो नीचे पाख़ाने के रास्ते मे निकल रहे हैं और वह चीख़ते-चिल्लाते है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत जिब्रील अ़लै० से प्रश्न किया कि यह सब कौन लोग हैं? उन्हों ने कहा कि यह लोग यतीमों का माल नाहक़ खाने वाले हैं। एक दूसरी हदीस में रिवायत हैं कि क़ियामत के दिन कुछ लोग क़ब्रों से निकलें गे और उन के मुंह में आग भड़क रही हो गी, यह लोग अनाथों का माल नाहक़ खाने वाले हों गे (वहीदी)

१३. हज़रत जाबिर रज़ि० ने मरने के समय माल की तक़्सीम के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मस्अला पूछा इस पर यह आयतें नाज़िल हुयीं (इब्ने कसीर आदि) जाहिलिय्यत के काल में अ़रब के लोग महिलाओं को तर्का में कोई हिस्सा नहीं देते थे। आज भी बहुत से नाम के मुसलमान उसी रिवाज पर चलते हैं और क़ुरआन शरीफ़ के हुक्म को छोड़ कर मुश्रिकों और यहूद व नसारा की पैरवी करते हैं, वास्तव में यह लोग मुसलमान नहीं हैं (वहीदी) पंजाब के मुसलमानों में आ़म तौर पर यही दस्तूर है कि अपनी लड़कियों को तर्का नहीं देते, यह बहुत बड़ा अन्याय है। इस रिवाज को मिटाने के लिये भर सक प्रयत्न करना चाहिये।

اِنْ كَانَ لَهٗ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلَدٌ وَّ وَرِثَهٗۤ

اَبَوٰهُ فَلِاُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَاِنْ كَانَ لَهٗۤ اِخْوَةٌ فَلِاُمِّهِ

मगर शर्त यह है कि मय्यित की औलाद भी हो। और अगर उस की औलाद नहीं है और माँ-बाप ही उस के वारिस हैं, तो मां का एक तिहाई (१/३) है। और अगर मय्यित के चन्द भाई➲

السُّدُسُ مِنۢ بَعۡدِ وَصِيَّةٍ يُّوۡصِىۡ بِهَاۤ اَوۡ دَيۡنٍ ؕ
اٰبَآؤُكُمۡ وَاَبۡنَآؤُكُمۡ لَا تَدۡرُوۡنَ اَيُّهُمۡ اَقۡرَبُ لَـكُمۡ
نَفۡعًا ؕ فَرِيۡضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيۡمًا
حَكِيۡمًا ۞ وَلَـكُمۡ نِصۡفُ مَا تَرَكَ اَزۡوَاجُكُمۡ اِنۡ لَّمۡ
يَكُنۡ لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَاِنۡ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ
الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكۡنَ مِنۡۢ بَعۡدِ وَصِيَّةٍ يُّوۡصِيۡنَ بِهَاۤ
اَوۡ دَيۡنٍ ؕ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكۡتُمۡ اِنۡ لَّمۡ يَكُنۡ لَّكُمۡ
وَلَدٌ ۚ فَاِنۡ كَانَ لَكُمۡ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا
تَرَكۡتُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ وَصِيَّةٍ تُوۡصُوۡنَ بِهَاۤ اَوۡ دَيۡنٍ ؕ وَ
اِنۡ كَانَ رَجُلٌ يُّوۡرَثُ كَلٰلَةً اَوِ امۡرَاَةٌ وَّلَهٗۤ اَخٌ
اَوۡ اُخۡتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنۡهُمَا السُّدُسُ ۚ فَاِنۡ كَانُوۡۤا

हों तो माँ का छटा हिस्सा है (यह सब हिस्सा) वसिय्यत के अदा कर देने के बाद हैं जो मय्यित (किसी के हक़ में) कर के मरे या क़र्ज़ के अदा कर देने के बाद। तुम नहीं जानते कि तुम्हारे बाप और बेटों में से कौन तुम को अधिक लाभ दे सकता है (आदेश के अनुसार करो, इस के खिलाफ़ न करो, इस लिये कि) यह हिस्से अल्लाह की ओर से मुक़र्रर हैं। निःसंदेह अल्लाह बड़े इ़ल्म वाला, बड़ी हिक्मत वाला है[१४]। १२. और तुम्हारी बीवियों के तर्का में से, अगर उन की औलाद न हो, तुम्हारे लिये आधा माल है। और अगर उन की औलाद हो तो तुम को चौथाई (१/४) मिले गा (यह आदेश भी) बाद वसिय्यत के है जो मरते हुये कर जायें, या क़र्ज़ के अदा करने के बाद (जो मय्यित पर हो) और तुम्हारे छोड़े हुये माल से उन का हिस्सा चौथाई है, इस शर्त पर कि तुम्हारी औलाद न हो। फिर अगर तुम्हारी औलाद (भी) है तो उन का आठवाँ हिस्सा हो गा तुम्हारी वसिय्यत और क़र्ज़ के अदा कर देने के बाद[१५]। और अगर मर्द या औ़रत जिस की मीरास बाँटनी है, माँ-बाप और बेटी-बेटा नहीं रखते[१६] और उन का एक भाई या बहन है, तो हर एक के लिये उन दोनों में से छटा-छटा हिस्सा है

....

१४. इस आयत में दो प्रकार के मीरास के संबन्ध में आदेश फ़रमाया। (१) औलाद की (२) माँ-बाप की। औलाद अगर मिले हुये हैं यानी लड़के और लड़कियाँ दोनो हैं तो मर्द को महिला का दो गुना हिस्सा मिलेगा। और अगर केवल महिलायें हैं तो एक को आधा माल और एक से अधिक हों तो दो तिहाई बराबर बाँट लें। और अगर मय्यित की औलाद है, या भाई-बहम हैं और एक से ज़्यादा हैं तो मां का छटा हिस्सा है। और अगर दोनों नहीं हैं तो तिहाई। और बाप का हिस्सा अगर मय्यित की औलाद है तो छटा, और अगर औलाद नहीं तो अ़स्बा हो गा। और मय्यित का माल प्रथम तो उस के कफ़न-दफ़न पर लगाये, फिर जो कुछ बचे उस से उस का क़र्ज़ अदा करे, फिर उस क़र्ज़ के अदा करने के पश्चात जो कुछ बचे उस में एक तिहाई तक वसिय्यत करे, इस के बाद जो बचे उस में मीरास का हिस्सा है और उन हिस्सों में अ़क्ल का कोई दख़ल नहीं, उन को अल्लाह तआ़ला ने मुक़र्रर किया है जो सब से अधिक जानने वाला है।

१५. यहाँ पर मर्द और औ़रत की मीरास को बयान फ़रमाया कि औ़रत के माल में मर्द को आधा मिले गा अगर औ़रत के औलाद नहीं। और अगर उस मर्द से या किसी दूसरे मर्द से उस औ़रत की औलाद है तो चौथाई मिले गा। इसी प्रकार मर्द के माल में औ़रत को चौथाई मिले गा अगर मर्द की औलाद नहीं है तो। और अगर मर्द की औलाद है तो औ़रत को आठवाँ हिस्सा मिले गा। मीरास का माल चाहे नक़दी हो अथवा दाल-चावल, हथियार या

➲ज़ेवर, जाइदाद मकान आदि सब शामिल हैं। हाँ अगर औरत का मह्‌र बाक़ी है तो उसे क़र्ज़ माना जाएगा और मरने के पश्चात् उस के माल में से पहले क़र्ज़ अदा किया जाये गा (मुवज़्ज़िहुल कुरआन)
१६. कलाला का यही सहीह अर्थ है जो हिन्दी तर्जुमा में किया गया है (वहीदी)

أَكْثَرَ مِنْ ذَٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ
وَصِيَّةٍ يُوصَىٰ بِهَا أَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَارٍّ ۚ وَصِيَّةً
مِنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿١٢﴾ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۚ
وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٣﴾
وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ
يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿١٤﴾
وَاللَّاتِي يَأْتِينَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِسَائِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوا
عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةً مِنْكُمْ ۖ فَإِنْ شَهِدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ
فِي الْبُيُوتِ حَتَّىٰ يَتَوَفَّاهُنَّ الْمَوْتُ أَوْ يَجْعَلَ اللَّهُ
لَهُنَّ سَبِيلًا ﴿١٥﴾ وَاللَّذَانِ يَأْتِيَانِهَا مِنْكُمْ فَآذُوهُمَا ۖ
فَإِنْ تَابَا وَأَصْلَحَا فَأَعْرِضُوا عَنْهُمَا ۗ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ تَوَّابًا رَحِيمًا ﴿١٦﴾ إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ

और अगर उस से अधिक हों तो वह सब तिहाई में शरीक हों[१७] गे वसिय्यत और क़र्ज़ के अदा करने के बाद जिस से किसी का नुक़्सान न हो (यानी एक तिहाई से अधिक वसिय्यत न हो और नाहक़ किसी का क़र्ज़ मुहब्बत की वजह से अपने ज़िम्मा न किया हो) अल्लाह का यही आदेश है और अल्लाह सब कुछ जानने वाला बड़ा बुर्द बार है १३. यह अल्लाह की सीमायें हैं। जो लोग अल्लाह और उस के रसूल के आदेश पर चलें गे, अल्लाह उन को ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे गा जिन के नीचे नह्‌रें बहती हों गी[१८] हमेशा के लिये उस में रहें गे। और यही बड़ी (भारी) कामियाबी है १४. और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल की अवज्ञा करे गा और अल्लाह की सीमाओं से आगे बढ़ जाये गा, अल्लाह उस को दोज़ख़ की आग में दाख़िल करे गा जहाँ उस को हमेशा के लिये रहना हो गा और उसे ज़िल्लत का अ़ज़ाब हो गा १५. जो तुम्हारी महिलाओं में से ज़िना करें उन पर अपने लोगों (मुसलमानों) में से (बद कारी देखने वाले) चार गवाह मुक़र्रर कर लिया करो[१९] फिर अगर वह (क़ाज़ी के सामने) गवाही दे दें तो उन को अपने घरों में बन्द रखो यहाँ तक कि वह मर जायें या अल्लाह उन के लिये कोई हुक्म बतला दे[२०] (जो सज़ा के मुतअ़ल्लिक़ हो) १६. और जो दो मर्द तुम में से (आपस में) वही (लूतियों का) काम करें उन को तक्लीफ़ पहुंचाओ फिर अगर वह तौबा करें और अपने कामों को दुरुस्त कर लें तो उन का पीछा छोड़ दो इस लिये कि अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला निहायत मेहरबान है[२१] १७. केवल उन ही लोगों की तौबा अल्लाह के हाँ कुबूल है।

....

१७. और बराबर हिस्सा पायें गे। यह न हो गा कि मर्द को तो दोहरा हिस्सा और महिला को अकेहरा। इस पर➲

➲समस्त उलमा का इत्तिफ़ाक़ है।

भाई-बहन तीन प्रकार के होते हैं {१} 'हक़ीक़ी' अर्थात एक माँ और एक बाप से {२} 'अ़ल्लाती' यानी एक बाप और दो माँ से {३} 'अख़याफ़ी' यानी एक माँ और दो बाप से। यहाँ पर अख़याफ़ी भाई-बहनें मुराद हैं। कुछ क़िरातों में तो यह मफ़हूम स्पष्ट रूप से ज़ाहिर है। हज़रत सअ़द बिन अबू वक़्क़ास और इब्ने मस्ऊद रज़ि० की क़िरात में "वलहू अख़ुन् अव उख़्तुन् मिन् उम्मिन्" हक़ीक़ी और अ़ल्लाती भाई-बहनों का हुक्म अलग-अलग है। इस आयत से यह भी हुक्म निकलता है कि 'अख़याफ़ी' भाई और बहन जब मय्यित कलाला हो तो महरूम (वन्चित) नहीं हो सकते, लेकिन हक़ीक़ी कभी महरूम हो जाते हैं। जैसे एक महिला मर गयी। पति, माता और दो अख़याफ़ी भाई और कई हक़ीक़ी भाई छोड़े तो पति को आधा, माँ को छटा, अख़याफ़ी भाई-बहनों को तिहाई मिले गा और हक़ीक़ी भाइयों को कुछ न मिले गा, अहले हदीस उलमा का यही फ़तवा है (वहीदी)

१८. इस आयत से साफ़ रूप से ज़ाहिर हो रहा कि मीरास के अहकाम के बारे में क़ुरआन मजीद ने कितनी ताकीद फ़रमाई है। आरंभ "यूसीकुमुल्लाह" से किया और आय: के अन्त में फिर एक-दो बार नहीं बल्कि तीन-तीन बार ताकीद मौजूद है, लेकिन इस के बावजूद भी हम लोग ग़फ़लत और बेपर्वाही में किस क़दर पड़े हुये हैं (माजिदी)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने कहा कि नाफ़र्मानी से मुराद यह है कि अल्लाह ने हर वारिस का जो हक़ और हिस्सा मुक़र्रर किया है उस को न माने और उस के ख़िलाफ़ करे। कलबी का कहना है कि जब अल्लाह के मुक़र्रर किये हुये हिस्सों का इन्कार करे तो वह काफ़िर हो गया और हमेशा जहन्नम में रहना हो गा। एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: "फ़राइज़ (मीरास के हुक्मों) को सीखो और सिखाओ इस लिये कि यह तमाम दीनी ज़िल्म का आधा हिस्सा है और सब से पूर्व मेरी उम्मत से यही ज़िल्म उठ जाये गा (वहीदी) बड़े दुःख की बात है कि इस भविष्यवाणी के अनुसार आज इस ज़िल्म को लोगों ने भुला दिया है, उलमा की इधर तवज्जुह बहुत कम है और अ़मली तौर पर भी फ़राइज़ का सिलसिला समाप्ति की ओर है। अल्लाह पाक हमारी नाज़ुक हालत पर रहम फ़रमाये और कोताहियों को माफ़ फ़रमाये-- आमीन

१९. ज़िना (बलात्कार, अनैतिक संबंध) की सज़ा इस्लाम में उम्र क़ैद (कार-वास) या हमेशा-हमेशा क़ैद की सज़ा थी। यह बात मालूम रहे कि गवाहों की मात्रा आ़म तौर पर दो होती है लेकिन यहाँ दो गुना यानी चार है। मतलब यह है कि जहाँ मुसलमान मर्द या महिला की प्रतिष्ठा और ज़िज़्ज़त का प्रश्न है वहाँ गवाहों की मात्रा दो के स्थान पर चार होनी चाहिये। फिर यह चारों गवाह मुसलमान हों, आज़ाद हों, बालिग़ हों, बुद्धिमान हों, आँखों देखी गवाही दें।

'फ़अम्सिकूहुन' (उन को बन्द रखो) यह क़ैद हुक्काम या ज़िम्मे-दारों के हुक्म से होना चाहिये। "उन को अपने घरों में बन्द रखो" से कुछ लोगों ने पर्दा मुराद लिया है। इन लोगों का ख़याल बिल्कुल ही ग़लत है (माजिदी) यहाँ वाक्य स्वयँ बता रहा है कि घरों के अन्दर नज़र बन्द करने की सज़ा अस्थाई (आ़रिज़ी) थी और भविष्य में काई और सज़ा का आदेश जारी होने वाला था, चुनान्चे कुछ दिनों के बाद सूर: नूर की आयत न०२ में ज़िना करने वाले मर्द और ज़िना करने वाली महिला के लिये १००-१०० कोड़े लगाने का आदेश जारी हुआ और सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने और स्पष्ट करते हुये यह बताया कि यह दन्ड ग़ैर शादी शुदा (अविवाहित/अविवाहिता) के लिये है और शादी शुदा (विवाहित) मर्द और महिलाओं की सज़ा पत्थरों से मार-मार कर मार डालना है (माजिदी/मआ़लिम)

२०. मुफ़स्सिरों की एक जमाअ़त इस तरफ़ गयी है कि इन आयतो में जिस बुराई को बयान किया गया है वह ज़िना है, और इस ज़िना पर जो दन्ड का हुक्म दिया गया है वह इस्लाम के बिल्कुल आरंभ में था, बाद में जब सूर: नूर नाज़िल हुयी तो ज़िना की सज़ा पत्थर और कोड़े आदि मारा जाना मुक़र्रर हो गया और यह सज़ा मन्सूख़ हो गयी। लेकिन कुछ उलमा का कहना है कि इन आयतों में और सूर: नूर की आयतों में एक ही जुर्म की सज़ा नहीं बयान की गयी है, बल्कि दो मुख़्तलिफ़ जुर्मों की सज़ा का ज़िक्र है। यहाँ जिस जुर्म का बयान है वह बद चलनी है। इस➲

➲से मुराद वह बद चलनी है जो दो महिलाए और दो मर्द आपस में करते हैं और सूरः नूर में ज़िना का ज़िक्र है, इस लिये दोनों ही अहकाम अपनी-अपनी जगह बाक़ी हैं (तर्जुमान)

सहीह मुस्लिम की हदीस से पहले क़ौल की ताईद होती है। 'अव्यज्अलल्लाहु लहुन्न सबीला' के बारेमें नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "मुझ से सीख लो! अल्लाह तआ़ला ने उन के वास्ते राह निकाल दी है। यानी अगर ज़िना करने वाला मर्द या औ़रत कुंवारे हैं तो एक सौ कोड़े लगाये जायें और एक वर्ष के लिये देश से निकाल दिया जाये और अगर दोनों शादी शुदा (विवाहित) हैं तो सौ-सौ कोड़े भी लगाये जायें फिर पत्थरों से मार-मार कर हलाक कर दिया जाये। हज़रत माअ़िज़ बिन मालिक रज़ि० वाली हदीस जिसे बुख़ारी, मुस्लिम दोनों ही ने रिवायत किया है, इस बात पर दलालत करती है कि शादी शुदा मर्द या औ़रत अगर ज़िना करें तो केवल पत्थरों से मार-मार कर हलाक कर दिया जाये, कोड़े न लगाये जायें।

जुम्ला स्वयं इस पर दलालत कर रहा है कि घर के अन्दर नज़र बन्दी की सज़ा आर्ज़ी (अस्थाई) थी और भविष्य में कोई सज़ा तजवीज़ होने वाली थी, चुनान्चे कुछ समय के बाद सूरः नूर में क़ुरआन मजीद ही के ज़रीआ़ दूसरी सज़ा तजवीज़ हुयी, यानी ज़िना करने वाले मर्द और औ़रत दोनों के लिये सौ-सौ कोड़े लगाये जायें। और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत ने इस की यह तशरीह की कि यह कोड़ों का दन्ड केवल ग़ैर शादी शुदा मर्द और औ़रतों के लिये है और शादी शुदा के लिये रज्म (पत्थरों से मार डालना) है (माजिदी/मआ़लिम)

२१. इस्लाम के आरंभ में लिवातत (मर्दों का आपस में कुकर्म- **Sodomy**) के लिये यह आदेश था जो यहाँ बयान है, फिर ज़िना के बारे में क़ानून सूरः नूर में नाज़िल होने के बाद यह आयः मन्सूख़ हो गयी और लिवातत (लौंडे बाज़ी) करने वाले की भी सज़ा वह मुक़र्रर हुयी जो ज़िना करने वाले की है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० का कहना है कि जिस किसी को तुम लूत अ़ले० की क़ौम का सा कर्म (लौंडे बाज़ी) करते देखो तो दोनों ही (करने वाले और कराने वाले) को क़त्ल कर दो (सुनन) हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० की एक रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तीन मर्तबा फ़रमाया "लानती है लूत की क़ौम का सा काम करने वाला"

يَعْمَلُونَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِن قَرِيبٍ
فَاُولٰٓئِكَ يَتُوبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ
عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٧﴾ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ
السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰٓى إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ
إِنِّي تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارٌ ۚ
أُولٰٓئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٨﴾ يَٰٓأَيُّهَا
الَّذِينَ اٰمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَن تَرِثُوا النِّسَآءَ
كَرْهًا ۖ وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَآ
اٰتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّآ أَن يَأْتِينَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ

जो ग़लती से बुरे काम करते हैं और फिर जल्दी से तौबा करते हैं उन लोगों को अल्लाह माफ़ कर देता है और अल्लाह को सब कुछ मालूम है और वह बड़ी हिक्मत वाला है १८. और उन लोगों की तौबा क़ुबूल नहीं होती जो बुरे काम करते रहते हैं, यहाँ तक कि जब किसी को उन में से मौत आती है तो कहने लगता है कि अब मैं तौबा करता हूँ और न उन लोगों की तौबा क़ुबूल होती है जो कुफ़्र की हालत में मरते हैं। उन के लिये हम ने दर्द नाक अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है[२२] १९. मुसलमानो! तुम को जाइज़ नहीं कि ज़बर्दस्ती से औ़रतों के मालिक बन जाओ और न उन को बिला वजह तंग कर के रोक➲

وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِن كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَىٰ أَن تَكْرَهُوا شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا ﴿١٩﴾ وَإِنْ أَرَدتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ وَآتَيْتُمْ إِحْدَاهُنَّ قِنطَارًا فَلَا تَأْخُذُوا مِنْهُ

➲रखो कि किसी प्रकार दिये हुये से कुछ वापस ले लो, हाँ जब वह खुली बेहयाई (ज़िना वग़ैरह) करें। और महिलाओं से दस्तूर के अनुसार निबाह किया करो, फिर अगर तुम उन को किसी वजह से नापसन्द करो तो (भी निबाह करो) शायद अल्लाह तुम्हारी नापसन्द वस्तुयें तुम्हारे लिये बहुत सी बेहतरी कर दे[२३] २०. और अगर एक बीवी को छोड़ कर दूसरी से निकाह करना चाहो और उस (पहली) को बहुत सा माल दे चुके हो फिर भी उस माल में से कुछ न लिया करो[२४]

....

२२. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि जो शख़्स पाप करना न छोड़े और केवल ज़बान से तौबा करता रहे तो वह शख़्स अल्लाह पाक के साथ हंसी-मजाक करने वाला है (तर्ग़ीब) अ़रब के लोग औ़रतों के साथ इस प्रकार का भी अन्याय करते थे कि अगर कोई शख़्स मर जाता तो जिस प्रकार उस का माल उस के वारिसों में चला जाता, इसी प्रकार उस की बीवियों पर भी क़ब्ज़ा जमा लेते थे। यहाँ पर उन ही लोगों के अन्याय का ज़िक्र है।

२३. महिलाओं के साथ तुम्हारा रहन-सहन न्याय के साथ होना चाहिये। ऐसा नहीं करना चाहिये कि अपनी इच्छा की पैरवी करो और अगर किसी कारण बीवी पसन्द न आये तो तुरन्त उसे छोड़ कर दूसरी कर लो, इस प्रकार के लोग समाज को बिगाड़ने वाले हैं। अगर किसी कारण तुम्हें पत्नी पसन्द नहीं है तो सब्र और बर्दाश्त से काम लो, बहुत मुमकिन है कि एक बात अच्छी न लगे, लेकिन उसी में तुम्हारे लिये बेहतरी हो (तर्जुमान)

२४. एक दिन ख़ुत्बा में हज़रत उमर रज़ि० ने आदेश दिया कि मह्र ४०० दिर्हम से अधिक न मुक़र्रर किया जाये। यह सुन कर एक महिला ने कहा कि ऐ उमर! क्या तुम ने इस आयत को नहीं पढ़ा? हज़रत उमर ने यह सुन कर अपने हुक्म को वापस ले लिया और कहा कि उमर से तो सभी लोग ज़्यादा जानने वाले हैं। आप ने एलान कर दिया कि लोगों को इख़्तियार है कि अपने माल में से जितना चाहें दे सकते हैं। इमाम इब्ने कसीर रह० कहते हैं कि इस आयत में इस बात पर दलील है कि अधिक माल औ़रत को मह्र में देना और मुक़र्रर करना जाइज़ है, क्यों कि 'क़िन्तार' अधिक और ज़्यादा माल को कहते हैं। (मुवाहिब)

شَيْئًا ۚ أَتَأْخُذُونَهُ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿٢٠﴾ وَكَيْفَ تَأْخُذُونَهُ وَقَدْ أَفْضَىٰ بَعْضُكُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ وَأَخَذْنَ مِنكُم مِّيثَاقًا غَلِيظًا ﴿٢١﴾ وَلَا تَنكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُم مِّنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۚ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَمَقْتًا وَسَاءَ سَبِيلًا ﴿٢٢﴾ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ وَعَمَّاتُكُمْ وَخَالَاتُكُمْ وَبَنَاتُ الْأَخِ وَبَنَاتُ الْأُخْتِ وَ

क्या नाहक़ और खुले ज़ुल्म से लेना चाहते हो? २१. भला क्यों कर उस को लेते हो? हालाँकि (पति-पत्नी) एक दूसरे से अलग मिल चुके हैं और वह तुम से मज़बूत वादा ले चुकी हैं २२. (यह भी ज़रूरी है) कि अपने बाप की बियाही हुयी औ़रतों से निकाह मत करो मगर जो गुज़र चुका हो (इस लिये कि) यह बड़े बेहयाई का काम है और ग़ज़ब की बात है और बुरा रास्ता है[२५] २३. (अ़लावा इस के) तुम्हारी मायें, बेटियाँ, बहनें, फूफियाँ, ख़ालायें, भतीजियाँ,➲

اُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْٓ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ
وَاُمَّهٰتُ نِسَاۗىِٕكُمْ وَرَبَاۗىِٕبُكُمُ الّٰتِيْ فِيْ حُجُوْرِكُمْ
مِّنْ نِّسَاۗىِٕكُمُ الّٰتِيْ دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ۡ فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا
دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۡ وَحَلَاۗىِٕلُ اَبْنَاۗىِٕكُمُ
الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ
اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا (٢٣)

भांजियाँ, दूध मायें जिन्हों ने तुम को दूध पिलाया, तुम्हारी दूध की बहनें, तुम्हारी सासें और तुम्हारी बीवियों (जिन से तुम संभोग कर चुके हो) की पिछली लड़कियाँ जो तुम्हारे पालन-पोषण में हों, यह सब तुम पर हराम हैं। हाँ, अगर तुम ने उन (बीवियों से) संभोग नहीं किया तो तुम पर गुनाह नहीं। और तुम्हारे सगे बेटों की बीवियाँ और दो बहनों को एक साथ निकाह में इकट्ठा करना भी हराम है, मगर जो गुज़रा (सो माफ़ है क्यों कि) अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है[२६]

....

२५. बाप की बीवियों (सौतेली माओं) से निकाह कर लेना जाहिलिय्यत में आ़म था, इसी प्रकार दो बहनों को भी जमा कर लेना आ़म था, इस लिये अल्लाह तआ़ला ने इन आयतों को नाज़िल कर के हराम कर दिया (इब्ने जरीर) इमाम इब्ने कसीर रह० फ़रमाते हैं कि एक महिला केवल निकाह ही से मर्द की औलाद पर हराम हो जाती है, शौहर ने उस से संभोग किया हो या न किया हो। और इस पर सब ही का इत्तिफ़ाक़ है किसी का भी इख़्तिलाफ़ नहीं।

२६. रिश्ते-नाते की वजह से सात महिलायें हराम हैं और दूध की वजह से दो और दामादी के रिश्ता से चार। रिशते-नाते से जो {१} माँ {२} बेटी {३} बहन {४} फूफ़ी {५} ख़ाला {६} भाई की बेटी {७} बहन की बेटी सात हराम हैं वह यह हैं दूध के रिश्ते से जो हराम हैं वह यह हैं: (१) दूध की माँ (२) दूध की बहन। दामादी के रिश्ता से जो हराम हैं वह यह हैं (१) बीवी की माँ (२) जिन बीवियों से संभोग किया उन के पहले शौहरों से बेटियाँ (३) अपने सगे बेटे की बीवी (४) एक ही समय में दो बहनों का इकट्ठा करना।

यह कुल १३ महिलायें हुयीं जिन से निकाह हराम है और चौदहवीं वह महिला जो बाप के निकाह में हो। और सुन्नत से यह भी साबित है कि बीवी और उस की फूफ़ी या ख़ाला को एक साथ निकाह कर के रखना हराम है। यह कुल १६ हुयीं। १७ वीं वह महिला है जो किसी के निकाह में हो।

इमाम तहावी रह० फ़रमाते हैं कि इन सब के हराम होने पर सब ही का इत्तिफ़ाक़ है इन में से किसी को भी निकाह में लाना जाइज़ नहीं, इस पर उम्मत का इजमाअ़ है। (मुवाहिब)

फ़ाइदा:- माँ के हुक्म में दादी-नानी ऊपर तक सब ही शामिल हैं।

बेटी में पोती-नवासी और नीचे तक सब ही शामिल हैं।

बहन में सगी माँ जाये, बाप जाये सभी शामिल हैं।

फूफ़ी में बाप-दादा और ऊपर तक की पुश्तों की बहन, सगी हो या सौतेली, सभी शामिल हैं।

ख़ाला में माँ और नानी सब की बहनें, तीनों प्रकार की शामिल हैं।

भतीजी में तीनों प्रकार के भाइयों की औलाद, और औलाद की औलाद सब दाख़िल हैं।

भाँजी में, तीनो प्रकार की बहनों की औलाद, और औलाद की औलाद सब शामिल हैं। (मुवज़्ज़िहुल कुरआन)

हज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़ि० से रिवायत है कि मेरे चचा हारिस बिन उमैर मेरी तरफ़ हो कर गुज़रे और उन के साथ लड़ाई का निशान था। मैं ने मालूम किया कि आप कहाँ जा रहे हैं? बोले कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि

ᴐवसल्लम ने उस ख़बीस आदमी को क़त्ल करने के लिये भेजा है जिस ने अपने बाप की बीवी (यानी अपनी सौतेली माँ) से निकाह कर लिया है। मुझे हुक्म हुआ है कि उस का माल भी उठा कर ले आऊँ (अहमद, हाकिम) जो लोग मुसलमान कहला कर बेधड़क इस्लाम के क़ानून का उल्लंघन करें, इस्लामी स्टेट में उन के लिये यही दन्ड है।

★★★★★

بِسْــــمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْـــمِ

पार: वल्मुह्–सनात (5)

संक्षिप्त विषय सूची

वल् मुह्-सनातु (5)

وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ
كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ
اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ۭ
فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ
فَرِيْضَةً ۭ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ
مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٢٤﴾
وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ
الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ
الْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ۭ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ
بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ
اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ
وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَآ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ
بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ

२४. और शौहरों वाली औरतें भी हराम हैं[२७] मगर जिन के तुम (जंग की लूट में) मालिक हुये हो। यह अल्लाह के हुक्म हैं। तुम पर उन महिलाओं के अलावा महिलायें माल के ज़रिआ (निकाह के मह्र के बदले) तुम को हलाल हैं[२८], मगर शर्त यह है कि घर-बारीबनने की निय्यत से हो, न (केवल चन्द दिनों) मस्ती निकालने को[२९]। फिर जितने माल के बदले तुम ने उन से तअ़ल्लुक़ किया हो उन का मुक़र्रर किया हुआ हक़ उन के हवाले कर दो[३०]। और मह्र मुक़र्रर कर लेने के बाद भी किसी मिक़दार (कम या अधिक) पर तुम आपस में राज़ी हो जाओ तो (हर्ज और) गुनाह की बात नहीं। बेशक अल्लाह जानता है और बड़ी हिक्मत वाला है (जो आपसी संबन्धों में सख़्ती का हुक्म नहीं देता) २५. और जो कोई तुम में से आज़ाद मुसलमान महिलाओं से निकाह करने की (अधिक ख़र्च होने के नाते) ताक़त न रखता हो वह तुम्हारी मम्लूका {अध ीन} लौंडियो ही से (निकाह कर ले) (उन लौंडियों के ईमान के बारे में उन के ज़ाहिर पर भरोसा करो) अल्लाह तुम्हारे ईमान को भली-भाँति जानता है[३१]। तुम (आदम की औलाद) एक दूसरे की औलाद हो, पस उन के मालिकों की अनुमति से उन के साथ निकाह कर लिया करो[३२], मगर शर्त यह है कि वह भली मानुस बन कर रहने वालियाँ हों, न मस्ती निकालने वालियाँ और न छुपे-छुपे दोस्त रखने वालियाँ। और उन के मह्र दस्तूर के अनुसार उन को दिया करो, फिर अगर निकाह में ला कर (भी) बेहयाई (ज़िना) करें तो आज़ाद औरतों के मुक़ाबले में आधी सज़ा उन को हो गी (यानी पचास कोड़े)

....

२७. शाने नुज़ूलः- हज़रत अबू सई़द ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि हम ने औतास की लड़ाई में कुछ औरतों

को बन्दी बनाया, हालाँकि उन के मुश्रिक पति भी मौजूद थे, इस लिये हम लोगों ने उन से वती (संभोग) करना उचित न समझा और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस बारे में मालूम किया, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। इस के बाद हम लोगों ने उन्हें अपने वास्ते हलाल समझा। (अहमद, तिर्मिज़ी) लेकिन उन से संभोग करने से पहले एक हैज़ आने का इन्तिज़ार करो, ताकि यह मालूम हो जाए कि वह गर्भवति नहीं हैं (मवाहिब)

२८. हदीस शरीफ़ में फूफी, भतीजी, ख़ाला और भान्जी को एक साथ निकाह में रखना, इसी प्रकार अ़िद्दत गुज़ारने वाली महिला से निकाह करना, या आज़ाद महिला से निकाह करने की ताक़त रखते हुये लौंडी से निकाह करना, या आज़ाद महिला के निकाह में होते हुये लौंडी से भी निकाह करना, या चार औ़रतों के होते हुये भी पांचवीं से निकाह करना, या लिआ़न वाली महिला से पुन: निकाह करना, यह सब हराम और ना जायज़ हैं (वहीदी)

२९. यानी माल दे कर यह भी तै कर ले कि दो-एक घन्टा, या एक रात केवल रखेंगे। और मस्ती झाड़ कर फिर छोड़ दें गे, तो यह ज़िना है और हराम है (वहीदी)

३०. यानी एक बार उन से संभोग कर लिया। इस वास्ते कि निकाह वाली आज़ाद महिला से एक बार संभोग करने से उस का पूरा मह्र साबित हो जाता है, तो इन औ़रतों के मह्र इन को दे दो। कुछ उलमा ने इस हालत को मुत्आ़ के बारे में कहा है। उन लोगों ने 'उजूर' शब्द को मुत्आ़ वाली औ़रत की मज़दूरी बताया है।

मुत्आ़ इस्लाम के आरंभ में तो जायज़ था, यानी किसी महिला को ख़ास मज़दूरी दे कर ख़ास मुद्दत तक के लिये घर में रख लेना। लेकिन अब यह हराम है, इस बारे में बहुत सारी हदीसें और सहाबा के फ़तवे मौजूद हैं। शीआ़ मज़हब में एक फ़िर्क़ा इमामिया ने अहले बैत के लिये मुत्आ़ को जायज़ बतलाया है, यह बात बिल्कुल ग़लत है। सभी के लिए मुत्आ़ हराम है। (इब्ने कसीर)

३१. यानी निकाह की ज़रूरत हो तो लौंडियों से निकाह करने में शर्म न करो, इसलिये कि अस्ल में तो तुम एक ही हो (सनाई)

३२. लड़ाई में जो क़ैदी (बन्दी) बन कर तुम्हारे हाथ में आ जायें, उन्हें इस लिये हक़ीर व ज़लील न समझो कि वह दूसरी क़ौम की औ़रतें हैं, या लड़ाई में बन्दी बन कर आयी हैं। इन्सान होने के नाते हर आदमी एक-दूसरे ही की तरह है, और इन्सानी बिरादरी का रिश्ता सारे रिश्तों से अधिक लिहाज़ के क़ाबिल है। उन में से जो महिलायें मुसलमान हो गयीं हों, तुम उन से निकाह कर सकते हो (तर्जुमान)

الْعَذَابِ ۚ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۚ وَاَنْ
تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٥﴾ يُرِيْدُ
اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦﴾ وَاللّٰهُ
يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۚ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ
الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ﴿٢٧﴾ يُرِيْدُ اللّٰهُ
اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ﴿٢٨﴾
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ

यह (यानी लौंडियों से निकाह का मश्वरा) उस के लिये है जो तुम में से बदकारी का अन्देशा करे। और सब्र करना तुम्हारे लिये अच्छा है (मगर शर्त यह है कि गुनाह में न फंसो[33]) और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है २६. अल्लाह को मन्ज़ूर है कि तुम्हारे लिये अपने अहकाम बयान करे[34] और तुम को पहले (दीन-दार) लोगों की राह दिखा दे और तुम पर मेहरबानी करे[35]। और अल्लाह जानने वाला बड़ी हिक्मत वाला है २७. (यही कारण है कि) अल्लाह तुम पर मेहरबानी करना चाहता है।

بِالْبَاطِلِ إِلَّآ أَن تَكُونَ تِجَارَةً عَن تَرَاضٍ مِّنكُمْ ۚ
وَلَا تَقْتُلُوٓا۟ أَنفُسَكُمْ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ﴿٢٩﴾
وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ عُدْوَٰنًا وَظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيهِ
نَارًا ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى ٱللَّهِ يَسِيرًا ﴿٣٠﴾ إِن تَجْتَنِبُوا۟
كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنكُمْ سَيِّـَٔاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُم

और जो लोग अपनी ख़ाहिश के ग़ुलाम हैं[३६] वह (हर प्रकार से) यही चाहते हैं कि (तुम) किसी सख़्त ग़लती में पड़ो २८. अल्लाह तुम्हारी तक्लीफ़ में कमी करना चाहता है (क्योंकि) इन्सान की ख़िल्क़त {पैदाइश} (उमूमन) ज़अ़ीफ़ है[३७] २९. मुसलमानो! एक दूसरे का माल आपस में बुरे तरीक़े (दग़ा, धोका, चोरी, रिश्वत, ज़ुल्म) से न खाया करो हाँ, अपनी मर्ज़ी से सौदा-गरी करो (जिस में दो गुने, तिगुने भी कर लो तो हरज नहीं) और अपने भाइयों को क़त्ल मत करो। अल्लाह तुम पर मेहरबान है ३०. जो कोई यह काम (यानी क़त्ल व फ़साद) सरकशी और ज़ुल्म से करता रहेगा हम (भी) उस को आग में डालेंगे (चाहे वह कितना ही रोयें, अवश्य ही दन्ड मिलेगा) क्यों कि यह काम अल्लाह पर आसान है[३८] ३१. हाँ, अगर तुम बड़े-बड़े गुनाहों से जिन से तुम को रोका जाता है बाज़ रहोगे [३९] तो तुम्हारी ग़लतियों को हम माफ़ कर दें गे और तुम को बड़ी इ़ज़्ज़त की जगह दाख़िल करें गे[४०]।

....

३३. इस लिये कि लौंडियों से जो औलाद पैदा हो गी, आ़म तौर पर माँ की वजह से उन के लिये शर्म का सबब होगी और इस कुंवारे-पन की हालत में किसी प्रकार की बुराई का ख़याल दिल में पैदा हो और तुम बचे रहो तो अल्लाह ऐसे ख़याल को माफ़ कर देगा, इस लिये कि अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है (सनाई)
३४. इस से पहले ज़िना और लौंडे-बाज़ी (लवातत) को हराम क़रार दिया फिर तौबा का आदेश दिया और फिर औरतों से मुतअ़ल्लिक़ कुछ अहकाम बयान किये, फिर जिन महिलाओं से निकाह हराम है उन का ज़िक्र किया और इस के बाद निकाह से मुतअ़ल्लिक़ मह्‌र की शर्तों को बयान किया, फिर बदकारी से रोका और उस पर दन्ड का ज़िक्र किया। लेकिन कुछ कारणों से लोगों के लिये इन पर अ़मल करना भारी था, इस लिये इस आयत में और आने वाली दो और आयतों में उन अहकाम पर सख़्ती से अ़मल करने का आदेश सुनाया और इन आदेशों की मुख़ालिफ़त करने से सख़्ती के साथ मना कर दिया (मुवज़्ज़िहुल फ़ुरक़ान)
३५. सूरःनिसा- अगले लोगों से पैग़ंबर मुराद हैं और 'सु-नन' से मुराद हराम और हलाल के रास्ते हैं। इस उम्मत पर अल्लाह का यह बहुत बड़ा एहसान है कि उस ने पहले के लोगों की हिदायत के रास्ते इस आख़िरी उम्मत के लिये इकट्ठा कर दिये (मवाहिब)
३६. ख़ाहिश की पैरवी करने वाले से मुराद यहूद व नसारा, मजूसी (आग की पूजा करने वाले) और ज़िना कार लोग हैं। 'शह्‌वत' (ख़ाहिश) से यहाँ वह ख़ाहिशें मुराद हैं जो हराम और मना हैं।
३७. 'ज़अ़ीफ़' का अर्थ यह है कि वह आजिज़ है, अपने नफ़्स पर सब्र की क़ुदरत नहीं रखता है। अल्लाह तआ़ला ने इन्सान की ज़ात को ज़अ़ीफ़ पैदा किया, फिर मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उम्मत तो सब से अधिक ज़अ़ीफ़ है। यह आयत उन आयतों में से एक है जिन की फ़ज़ीलत शुरू के सूरः में हज़रत इब्ने अ़ब्बास और इब्ने मस्ऊद रज़ि० से बयान हो चुकी है (मवाहिब)
३८. यानी इस बात से धोका न खा कि हम मुसलमान हैं, इस लिये जहन्नम में नहीं जायेंगे, अल्लाह पर यह भी आसान है। (मुवज़्ज़िहुल क़ुरआन)
३९. शाने नुज़ूलः- अ़रब के लोगों में शराब, जुवा एक बड़ा फ़ख़्र समझा जाता था, जैसा कि उन के कवियों के

➲कलाम से मालूम होता है। लूट-मार तो उन का दिन-रात का ओढ़ना और बिछौना था, ऐसे बुरे कामों से रोकने के लिए यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

४०. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "सात हलाक कर देने वाले गुनाहों से बचो (१) शिर्क (२) जादू (३) नाहक़ किसी को क़त्ल करना (४) सूद खाना (५) यतीम का माल खाना (६) जिहाद से भागना (७) पाक दामन (पार्सा) महिलाओं पर ज़िना का इल्ज़ाम लगाना (बुख़ारी, मुस्लिम)

مُّدْخَلًا كَرِيمًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ
بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ لِّلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا
اكْتَسَبُوا ۖ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ۚ وَاسْأَلُوا
اللَّهَ مِن فَضْلِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٣٢﴾
وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ ۚ
وَالَّذِينَ عَقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ فَآتُوهُمْ نَصِيبَهُمْ ۚ
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ﴿٣٣﴾ الرِّجَالُ
قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَىٰ
بَعْضٍ وَبِمَا أَنفَقُوا مِنْ أَمْوَالِهِمْ ۚ فَالصَّالِحَاتُ
قَانِتَاتٌ حَافِظَاتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ ۚ وَاللَّاتِي
تَخَافُونَ نُشُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ وَاهْجُرُوهُنَّ فِي
الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوهُنَّ ۖ فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوا
عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيرًا ﴿٣٤﴾

३२. और जिन उमूर के साथ अल्लाह ने बाज़ को बाज़ पर (तुम में) बड़ाई दे रखी है[४१] उन की तमन्ना न किया करो[४२]। मर्दों को मर्दों के किये से और महिलाओं को महिलाओं के किये से हिस्सा है[४३]। और अल्लाह से उस का फ़ज़्ल व करम माँगा करो[४४]। निःसंदेह अल्लाह सब कुछ जानता है. (इस लिये तुम उसी से माँगो) ३३.और हर एक माल में जो माँ-बाप और निकट संबन्धी छोड़ दें हम ने हिस्सेदार मुक़र्रर किये हैं[४५]। और जिन लोगों से तुम ने दोस्ती के अ़हद व पैमान किये हैं उन का हिस्सा भी दिया करो (और जान रखो कि) समस्त वस्तुयें अल्लाह के सामने हैं[४६] ३४. मर्द औरतों पर हाकिम (और अफ़ज़ल) इस लिये हैं[४७] कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर बड़ाई दे रखी है[४८] (कि मर्द सोच-समझ में औरतों के मुक़ाबले में आ़म तौर पर बढ़ कर होते हैं) और वह अपने माल ख़र्च करते हैं। पस जो महिलायें नेक हैं, पतियों की ताबेदार हैं उन के मुक़ाबले में जो अल्लाह ने उन के हुक़ूक़ महफ़ूज़ {सुरक्षित} रखे हैं ग़ैब की सुरक्षा करने वाली हैं[४९]। और जिन महिलाओं की तुम शरारत मालूम करो (पहले) उन को समझाओ और रात को सोने में उन को अलग कर दो और (फिर भी न समझें तो उन को) मारो, फिर अगर वह तुम्हारी फ़र्माबरदारी करें तो (उन पर) बिला वजह इल्ज़ाम लगाने की फ़िक्र न करो। अल्लाह सब से बुलन्द और बड़ा है[५०]

....

४१. रहन-सहन और माल-दौलत के एतिबार से ज़ाती या सामूहिक तौर पर कमी-बेशी एक कुदरती चीज़ है। इस्लाम इस के लिये बीच की राह का आदेश देता है। सच्ची बराबरी इसी का नाम है, इस के अ़लावा और जो कुछ ख़याल है वह एक धोके के अ़लावा कुछ भी नहीं है (राज़)

४२. क्यों कि किसी वस्तु की ख़ाहिश करने का नतीजा यह हो गा कि अगर चन्द रोज़ तक वह चीज़ न मिले गी➲

➲तो हसद करने लग जाओगे, इसी लिये कहा जाता है कि किसी चीज़ की तमन्ना और ख़ाहिश न किया करो। हाँ, अल्लाह से अपनी भलाई के लिये दुःआ किया करो। और याद रखो कि मर्दों को..................(आगे तक)

एक हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "हसद नेकियों को इस प्रकार खा जाता है जैसे आग लकड़ियों को"। अल्लाह तआ़ला हसद से बचाये। बड़े दुःख की बात है कि आज आ़म-ख़ास सभी लोग इस बला में गिरफ़्तार हैं।

४३. शाने-नुज़ूलः- हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! मर्द जिहाद करते हैं और उन को शहादत का दर्जा हासिल होता है। महिलायें जिहाद और शहादत की फ़ज़ीलत से भी महरूम (वंचित) हैं। मीरास में भी उन का हिस्सा आधा है, यूँ भी उन का दर्जा कम है, इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयतें नाज़िल कीं (लुबाब)

४४. सहीह हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के तहज्जुद की नमाज़ में कुरआन मजीद पढ़ने के बयान में है कि जब कोई रहमत की आयत आती तो ठहर कर वहाँ अल्लाह से रहमत की दुआ़ माँगते और जब कोई ऐसी आयत आती जिस में अ़ज़ाब का ज़िक्र होता, तो अ़ज़ाब से पनाह.माँगते।

४५. अक्सर लोग अकेले मुसलमान हुये थे, उन के रिश्ते-दार काफ़िर ही थे, तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दो-दो मुसलमानों को आपस में भाई-भाई कर दिया, वही एक दूसरे के वारिस होते। जब उन के रिश्ते-दार भी ईमान ले आये तब यह आयत नाज़िल हुयी कि मीरास तो क़रीबी रिश्ते-दारों ही का हक़ है और जो लोग ज़बानी भाई बना दिये गये थे उन के साथ अच्छा सुलूक और बर्ताव है, या फिर मरते समय उन के लिये कुछ वसिय्यत कर दो (मुवज़्ज़िहुल कुरआन)

४६. फ़ाइदा:- अक्सर लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हाथ पर अकेले-अकेले मुसलमान हो गये थे और उन के रिश्ते दार काफ़िर ही चले आते थे। उस समय आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दो-दो मुसलमान को आपस में भाई-भाई कर दिया था, वही दोनों आपस में एक दूसरे के वारिस होते। जब उन के रिश्ते-दार भी ईमान ले आये, तब यह आयत नाज़िल हुयी कि मीरास तो क़रीबी संबन्धियों ही का हक़ है। रह गये वह मुंह बोले भाई, तो उन के लिये मीरास में तो कोई हिस्सा नहीं है, अल्बत्ता ज़िन्दगी में उन के साथ अच्छा बर्ताव अवश्य है। और मरते समय उन के लिये कुछ वसिय्यत कर जाये तो बेहतर है, लेकिन बहर हाल मीरास में हिस्सा नहीं है (मुवज़्ज़िहुल कुरआन)

४७. शाने नुज़ूल:- सअ़द बिन रबीअ़ नाम के एक सहाबी ने अपनी पत्नी को जन्गल में एक तमाचा मार दिया तो उस के पिता ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इस बात की शिकायत कर दी, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: औ़रत उस से बदला ले ले, मगर चूँकि ऐसा क़ानून आ़म तौर पर महिलाओं को अदब से रोकने वाला था इसपर यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

४८. अल्लाह तआ़ला ने दुनिया में हर गिरोह को दूसरे गिरोह पर ख़ास-ख़ास बातों में फ़ज़ीलत दी है और ऐसी ही फ़ज़ीलत मर्दों को भी महिलाओं पर है। पुरुष, महिलाओं की रोज़ी-रोटी और उन के रहन-सहन के इन्तिज़ाम करने का ज़रीआ़ हैं, इस लिये अगुवाई और सरबराही कुदरती तौर पर उन ही के लिये हो गयी है (तर्जुमान)

४९. हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "बेहतरीन महिला वह है कि जब पति उस की ओर देखे तो वह उस को प्रसन्न कर दे और जब वह हुक्म दे तो तुरन्त मान ले और जब वह उस के पास न हो तो अपनी ज़ात की और पति के माल की हिफ़ाज़त करे (इब्ने जरीर, सिहाह सित्ता) हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जब औ़रत ने पाँचों वक़्त की नमाज़ को अदा किया और रमज़ान के रोज़े रखे और पाकी की ज़िन्दगी गुज़ारी यानी अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त की और अपने पति की आज्ञापालन की, तो उस से मरने के बाद कहा जायेगा कि जन्नत में जिस दर्वाज़े से चाहे दाख़िल हो (अहमद)

५०. अ़ली बिन अबू तल्हा कहते हैं कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने फ़रमाया: 'हिज्र' यह है कि उस से संभोग➲

➲(हम बिस्तरी) न करे और बिस्तर पर लेटे तो पीठ उस की तरफ़ रखे, उस से बात न करे, फिर अगर वह राह पर आ जाये तो ठीक, वर्ना अल्लाह तआला ने इस बात की अनुमति दी है कि उस को इस तरह मारे कि उस की हड्डी न टूटे (मवाहिब)

وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ۝ وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرًا ۝ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۗ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝ وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَاۤءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا

३५. अगर मियाँ-बीवी में मुख़ालिफ़त पाओ (जो मामूली कोशिश से दूर न हो सकती हो) तो एक मुन्सिफ़ {न्यायधीश} मर्द के ख़ान्दान से तजवीज़ करो और एक औरत के कुंबा से, अगर वह दोनों (मुन्सिफ़) मिल कर सुलह करानी चाहेंगे, तो अल्लाह भी उन को सुलह की तौफ़ीक़ देगा। बेशक अल्लाह हर चीज़ को जानता है और ख़बर रखता है[५१] ३६. और अल्लाह की इबादत में लगे रहो और उस का किसी को शरीक न ठहराओ और माँ-बाप के साथ एहसान करो (न केवल माता-पिता से बल्कि) निकट संबन्धियों और अनाथों और मिस्कीनों और नज़दीक और दूर के पड़ोसियों से और साथ वालों से[५२] और मुसाफ़िरों और गुलामों से एहसान किया करो (तौफ़ीक़ हाने के बावजूद मख़्लूक़ से एहसान न करना एक प्रकार से तकब्बुर है और) अल्लाह तकब्बुर करने वालों, इतराने वालों से मुहब्बत नहीं किया करता ३७. (यानी) जो लोग (ख़ुद भी) कंजूसी करते हैं और लोगों को भी कंजूसी करना बताते हैं और अल्लाह के दिये हुये फ़ज़्ल (माल) को छुपाते हैं। और हम ने ऐसे नाशुक्रों के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है[५३] ३८. और जो लोगों के दिखाने को ख़र्च करते हैं और अल्लाह (पर ईमान नहीं रखते और) क़ियामत के दिन को नहीं मानते (शैतान ने उन को सख़्त भंवर में फंसा रखा है) और जिस का दोस्त शैतान बने

....

५१. दोनों सुलह करने वालों को इख़्तियार है, वह चाहें तो दोनों को इकट्ठा रहने का हुक्म दें, या अलग हो जाने का (इब्ने कसीर)

५२. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि० से रिवायत है कि एक पड़ोसी तो वह है जो मुश्रिक है और उस से कुछ रिश्ता-नाता नहीं है, ऐसे पड़ोसी मुश्रिक का एक हक़ है। दूसरा पड़ोसी वह है जो मुसलमान भी है, उस के दो हक़ बनते हैं। एक तो इस्लामी हक़, दूसरे पड़ोसी होने का हक़। तीसरा पड़ोसी वह है जो मुसलमान भी है और रिश्ते➲

दार भी, तो ऐसे पड़ोसी के तीन हक़ बनते हैं (१) पड़ोसी होने का (२) इस्लाम का (३) रिश्ते दारी का (बज़्ज़ार)
'साहिबि बिल् जंबि' से मुराद सफ़र का या किसी कारोबार का साथी है। हज़रत अ़ली और इब्ने मस्ऊद रज़ि० ने इस से बीवी मुराद लिया है (इब्ने जरीर)

५३. तफ़सीर 'मआ़ल्लिम' में है कि इस आयत का शाने-नुज़ूल यह है कि कुछ यहूदी अन्सार से मिल कर उन से कहते थे कि अपने मालों को ज़कात वग़ैरह में न लुटाओ, इस लिये कि तुम ऐसा कर के फ़क़ीर हो जाओ गे और फिर आगे चल कर मालूम नहीं तुम्हारा हाल क्या होगा। हज़रत अबू सअ़ीद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि दो आ़दतें किसी भी मोमिन के अन्दर इकट्ठा नहीं होती हैं (१) बख़ीली और कंजूसी (२) बद ख़ुल्क़ी (यानी बुरे तरीक़े से लोगों के साथ पेश आना) (तिर्मिज़ी) और यह भी फ़रमाया: बख़ीली सब से बुरी बीमारी है। फ़ुज़ूल ख़र्ची की भी हदीस में बड़ी बुराई बयान की गयी है, इस लिये एक मुसलमान के लिये ज़रूरी है कि बीच की राह अपनाये।

فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿٣٨﴾ وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ
الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ۭ وَكَانَ
اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿٣٩﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ
وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ
اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٤٠﴾ فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۢ بِشَهِيْدٍ
وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰي هٰٓؤُلَاۗءِ شَهِيْدًا ﴿٤١﴾ يَوْمَىِٕذٍ يَّوَدُّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى بِهِمُ الْاَرْضُ ۭ
وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ﴿٤٢﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا
مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِيْ سَبِيْلٍ حَتّٰى
تَغْتَسِلُوْا ۭ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰي سَفَرٍ اَوْ جَاۗءَ
اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَاۗىِٕطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَاۗءَ فَلَمْ
تَجِدُوْا مَاۗءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا

उस के लिये वह बहुत ही बुरा दोस्त है[५४] ३९. भला उन का क्या हरज था अगर वे अल्लाह (को एक, जिस का कोई शरीक नहीं, मान लेते) और क़ियामत के दिन पर ईमान लाते और अल्लाह के दिये हुये (माल) से ख़र्च करते। अल्लाह उन को ख़ूब जानता है ४०. अल्लाह (किसी पर एक) ज़र्रा भी ज़ुल्म नहीं करता[५५] (अगर) ज़र्रा जितनी भी नेकी होगी तो उसे भी दोगुना कर देगा और अपने पास से बड़ा बदला दे गा[५६] ४१. फिर क्या हाल हो गा जब हम हर एक जमाअ़त में से एक-एक गवाह लावें गे और तुझ को भी उन (मश्रिकों और रियाकारों) पर गवाह बना कर लायें गे[५७] ४२. उस दिन काफ़िरों और रसूल के नाफ़र्मानों की ख़्वाहिश हो गी कि काश हम ज़मीन में दबा दिये जाते। और अल्लाह से कुछ न छुपा सकें गे ४३. मुसलमानो! नशे की हालत में नमाज़ के निकट न जाया करो[५८] जब तक कि अपनी बात का मतलब न समझो[५९] और न बेगुसली {नापाकी} की हालत में (नमाज़ पढ़ो) जब तक गुस्ल न कर लो। लेकिन मुसाफ़िरी में {यानी राह चलते गुज़र जाने वाले हो तो और बात है} और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में जा रहे हो, या कोई तुम में से पाख़ाना फिर कर आया हो, या तुम ने औ़रतों से सुहबत {संभोग} की हो (इन सब सूरतों में) फिर तुम को पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लिया करो।

---

५४. हदीस शरीफ़ में आया है कि तीन लोग ऐसे हैं जिन से जहन्नम की आग पहले भड़काई जायेगी (१) वह आ़लिम

➲जो इस लिये पढ़ता है कि लोग उसे आ़लिम कहें (२) जिहाद करने वाला, इस लिये जिहाद करता है कि लोग उसे मुजाहिद कहें (३) ख़र्च करने वाला, जो इस लिये ख़र्च करता है कि लोग उसे सख़ी कहें, इन सब के लिये आख़िरत में अ़ज़ाब के अ़लावा कुछ भी नहीं है।

५५. इस आयत में दो पहलू और भी हैं (१) मुश्रिक क़ौमों ने अपनी देवी-देवताओं को ज़ालिम और ख़ून बहाने वाला माना है (जैसे काली माई वग़ैरह) तो अल्लाह की ज़ात इस प्रकार की सिफ़तों से मुकम्मल तौर पर पाक हो गयी (२) जिन आयतों में अल्लाह तआ़ला के अकेले क़ुदरत और ताक़त रखने का ज़िक्र है, ऐसी आयतें पढ़ कर मुमकिन था कि मुसलमान यह शुब्हा करे कि जब वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है तो ज़ुल्म व ज़्यादती भी कर सकता है, इस प्रकार के शक व शुब्हे को भी इस आयत से दूर कर दिया (माजिदी)

५६. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआ़ला किसी मोमिन की नेकी में से कुछ भी कमी न फ़रमाये गा जिस के बदले में उसे दुनिया में सवाब और रोज़ी भी दी गयी और आख़िरत में भी उसे पूरा-पूरा सवाब दिया जायेगा। रहा काफ़िर, तो वह अपनी नेकियों के बदले में तो दुनिया में बदला पा जायेगा, लेकिन जब वह आख़िरत में जायेगा तो उस के लिये कोई नेकी न होगी कि उस को सवाब मिले।

हज़रत अबू ज़र रज़ि० से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि शरीअ़त में से किसी भी नेक काम को तुम मामूली न समझो, और आग से बचो, चाहे एक खजूर के बदले हो।

५७. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझे कुरआन सुनाने का हुक्म दिया, मैं ने सूरः निसा पढ़नी शुरू कर दी, जब आयत फ़कै-फ़ इज़ा जिअ़्ना मिन् कुल्लि उम्मतिन........ पर पहुंचा तो आप ने फ़रमाया: "बस करो, इतना ही तुम्हारे लिये काफ़ी है"। और मैं ने देखा कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मुबारक आंखों से आँसू जारी थे (बुख़ारी, मुस्लिम)

५८. यह आयत शराब के हराम होने से पहले नाज़िल हुयी थी। इस आयत के नाज़िल होने का कारण यह बना कि हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ ने मुहाजिर और अन्सार को खाने की दावत दी, उन्हों ने इतना खाया और शराब पी कि मग़रिब की नमाज़ में इमाम ने सूरः काफ़िरून को पढ़ा तो शराब के नशे में ऐसा उलट-पलट कर पढ़ा कि आयत का अर्थ ही बदल गया, इस समय अल्लाह ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई। इस के बाद सहाबा ने नमाज़ के समय शराब पीना छोड़ दिया और कुछ समय के बाद ही शराब के हराम होने का हुक्म नाज़िल हो गया।

५९. इस से मालूम हुआ कि नमाज़ में जो कुछ पढ़ा जाता है उस का अर्थ भी समझना ज़रूरी है, अर्थ समझने ही की सूरत में नमाज़ का पूरा लाभ मिल सकता है (राज़)

بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا ﴿٤٣﴾
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ
يَشْتَرُونَ الضَّلَالَةَ وَيُرِيدُونَ أَن تَضِلُّوا السَّبِيلَ ﴿٤٤﴾
وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَلِيًّا وَكَفَىٰ
بِاللَّهِ نَصِيرًا ﴿٤٥﴾ مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ
الْكَلِمَ عَن مَّوَاضِعِهِ وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا

(जिस का तरीक़ा यह है कि) मुंह और हाथों को मिट्टी मल लिया करो (और इस ख़ाक मलने से माफ़ी की उम्मीद रखो) बेशक अल्लाहे बड़ा माफ़ करने वाला बख़्शने वाला है[६०] ४४. क्या तू उन किताब वालों (यहदू व नसारा) को नहीं देख चुका कि गुमराही को दाम दे कर ख़रीदते हैं और दिल से चाहते हैं कि किसी प्रकार भी तुम सीधी राह से बहक जाओ (मगर तुम उन से बिल्कुल निश्चिन्त रहो)➲

وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا لَيًّا بِأَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا
فِي الدِّيْنِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا
وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَقْوَمَ ۙ وَ
لٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ إِلَّا قَلِيْلًا ۝
يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا
مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ أَنْ نَّطْمِسَ
وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰٓى أَدْبَارِهَآ أَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا

४५. अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानता है। और अल्लाह ही तुम्हारी कारसाज़ी {बिगड़ी बनाने को} और मदद को काफ़ी है[६१] ४६. कुछ यहूदी अल्लाह के कलाम को भी मौक़ा मुनासिब से बदल डालते हैं[६२] और कहते हैं कि हम ने सुन लिया और (जी में कहते हैं कि) नहीं माना (और चलते हुये बद्दुआ दे जाते हैं कि ऐ नबी!) हमारी सुन! तेरी कोई न सुने और ज़बान मरोड़ कर दीन में ताना करने को (राअ़ीना) कह जाते हैं। (हाँ) अगर कहते कि हम ने सुना और ताबे हुये, हमारी बात सुनिये और हमारी ओर नज़र कीजिये, तो यह कलाम उन के लिये अच्छा और दुरुस्त होता, लेकिन अल्लाह ने उन की बेईमानी के कारण उन को अपनी रहमत से दूर कर दिया, अब सिवाए किसी क़दर ईमान्दारी के दिल से नहीं मानें गे ४७. ऐ किताब वालो! हमारे उतारे हुये कलाम को मानो जो तुम्हारे पास वाली किताब की तस्दीक़ करता है इस से पहले कि हम कितने मुंहों को बिगाड़ कर उन की पीठ की शक्ल पर उलट दें या उन पर लानत करें

....

६०. अगर पानी न मिले या बीमारी रुकावट बने, तो वुज़ू और गुस्ल के स्थान पर तयम्मुम कर लो, लेकिन किसी भी हाल में नमाज़ न तर्क करो (तर्जुमान) हज़रत अ़म्मार बिन यासिर रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तयम्मुम करने का तरीक़ा इस प्रकार बतलाया कि दोनों हाथों को ज़मीन पर मारो, फिर उन पर फूंक मारो, फिर उन को चेहरे पर और दोनों हाथों की हथेलियों पर मलो। यह एक बार ज़मीन पर हाथ मारने वाली हदीस ज़्यादा सहीह और क़वी है। और दो बार ज़मीन पर हाथ मार कर तयम्मुम वाली हदीस पर भी अ़मल किया जा सकता है।

'इल्ला आ़बिरी सबील' से यह मुराद है कि जनाबत वाले को कोई ऐसा मौक़ा आ जाये कि मस्जिद ही में से हो कर गुज़रना पड़े तो गुज़र जाये (इब्ने जरीर, लुबाब) यज़ीद बिन अबू हबीब से रिवायत है कि कुछ अन्सारी सहाबा के दर्वाज़े मस्जिद की तरफ़ थे। वह जुन्बी होते और पानी न होता तो पानी लेने का रास्ता मस्जिद ही से गुज़रता था, इस पर अल्लाह तआ़ला ने उन के लिये यह रुख़्सत नाज़िल की।

६१. शाने-नुज़ूलः- यहूदियों की शरारत यहाँ तक पहुंच गयी थी कि वह मारे रन्ज और हसद के नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर होते तो जाहिलों की तरह ज़बान मरोड़-मरोड़ कर गालियाँ देते। मुसलमान उन गालियों को तो न समझ सकते, लेकिन वह अपने जी ही जी में खुश होते थे। उन की इस छुपी हुयी शरारत को बताने के लिये यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

६२. 'तहरीफ़' किसे कहते हैं? इस में उलमा का इख़्तिलाफ़ है। लेकिन सच्ची बात यह है कि तौरात और इंजील के जो तर्जुमे आजकल मौजूद हैं वह बदले हुये हैं, उन पर किसी प्रकार भी भरोसा नहीं किया जा सकता (मवाहिब)

'वस्-मअ़् गै-र मुस्-मअ़िन्' की तफ़्सीर हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० इस प्रकार करते हैं कि "तू सुन जो हम कहते हैं, अल्लाह तुझे सुनने वाला न रखे" हज़रत इब्ने जरीर कहते हैं कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० की तफ़्सीर ही ज़्यादा स्पष्ट है। 'राअ़िना' के दो अर्थ हैं (१) "हम को देखिये" (२) "हमारे चरवाहे"। यहूदी दूसरा अर्थ लेते और मुसलमान पहला (सनाई)

لَعَنَّآ اَصۡحٰبَ السَّبۡتِ ؕ وَكَانَ اَمۡرُ اللّٰهِ مَفۡعُوۡلًا ۝
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغۡفِرُ اَنۡ يُّشۡرَكَ بِهٖ وَ يَغۡفِرُ مَا دُوۡنَ
ذٰلِكَ لِمَنۡ يَّشَآءُ ۚ وَمَنۡ يُّشۡرِكۡ بِاللّٰهِ فَقَدِ افۡتَـرٰۤى
اِثۡمًا عَظِيۡمًا ۝ اَلَمۡ تَرَ اِلَى الَّذِيۡنَ يُزَكُّوۡنَ اَنۡفُسَهُمۡ ؕ
بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّىۡ مَنۡ يَّشَآءُ وَلَا يُظۡلَمُوۡنَ فَتِيۡلًا ۝
اُنۡظُرۡ كَيۡفَ يَفۡتَرُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ الۡـكَذِبَ ؕ وَكَفٰى
بِهٖۤ اِثۡمًا مُّبِيۡنًا ۝ اَلَمۡ تَرَ اِلَى الَّذِيۡنَ اُوۡتُوۡا
نَصِيۡبًا مِّنَ الۡكِتٰبِ يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡجِبۡتِ وَالطَّاغُوۡتِ
وَيَقُوۡلُوۡنَ لِلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا هٰٓؤُلَۤاءِ اَهۡدٰى مِنَ
الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا سَبِيۡلًا ۝ اُولٰٓـئِكَ الَّذِيۡنَ لَعَنَهُمُ
اللّٰهُ ؕ وَمَنۡ يَّلۡعَنِ اللّٰهُ فَلَنۡ تَجِدَ لَهٗ نَصِيۡرًا ۝
اَمۡ لَهُمۡ نَصِيۡبٌ مِّنَ الۡمُلۡكِ فَاِذًا لَّا يُؤۡتُوۡنَ
النَّاسَ نَقِيۡرًا ۝ اَمۡ يَحۡسُدُوۡنَ النَّاسَ عَلٰى

जैसे कि हफ़्ता {सनीचर} (में ज़्यादती करने) वालों पर की थी। और अल्लाह का हुक्म हो कर ही रहता है[६३] ४८. अल्लाह शिर्क हर्गिज़ न बख़्शे गा[६४] (हाँ) इस के सिवा जिस को चाहेगा बख़्श दे गा और जो कोई अल्लाह के साथ शिर्क करता है वह बड़ा ही तूफ़ान बांधता है ४९. क्या तू ने उन को नहीं देखा[६५] जो अपने आप को पाक समझते हैं। अल्लाह जिस को चाहता है पाक करता है और उन पर एक धागे बराबर भी अन्याय न होगा। ५०. ग़ौर करो! अल्लाह पर कैसा बुहतान बाँधते हैं। यही स्पष्ट गुनाह काफ़ी है।[६६] ५१. क्या तू ने उन में से उन लोगों को नहीं देखा जिन को कुछ हिस्सा अल्लाह की किताब का मिला था वह बेदीनी की बातों और शैतानों को मानते हैं और काफ़िरों के हक़ में (जो शिर्क व कुफ्र में मुब्तिला हैं) कहते हैं कि यह मुसलमानों से अधिक सीधी राह पर हैं (क्यों न कहें) ५२. उन्हीं पर अल्लाह ने लानत की है। और जिस पर अल्लाह लानत करे उस के लिये तू किसी को सहयोगी न पावेगा (जो उस को ज़िल्लत और ख़्वारी से बचाये) ५३. तो क्या उन का ख़ुदा के मुल्क में कुछ हिस्सा है? फिर तो लोगों को एक राई के बराबर भी न देते[६७] ५४. क्या यह अल्लाह के दिये हुये फ़ज़्ल पर लोगों से हसद करते हैं[६८]

....

६३. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० मुल्क शाम से वापस आ रहे थे कि उन्हों ने राह ही में यह आयत सुन ली, चुनान्चे घर जाने से पहले ही नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर मुसलमान हो गये। वह कहने लगे कि मुझे इस बात का डर हो गया था कि कहीं ऐसा न हो कि घर पहुंचने से पहले ही अल्लाह तआ़ला मेरे चेहरे को बिगाड़ दे (मआ़लिम/कमालैन)

६४. हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि एक आदमी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा कि जन्नत को वाजिब कर देने वाली चीज़ें क्या हैं? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो इस हाल में मरा कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता था उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई और जो इस हाल में मरा कि अल्लाह के साथ शिर्क करता था उस के लिये जहन्नम वाजिब हो गयी (मुस्लिम) तमाम मुसलमानों का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि जो कोई शिर्क पर मरे उस की माफ़ी न हो गी। यहूद व नसारा और आजकल के नाम के मुसलमान जो शिर्क में गिरिफ़्तार हैं, सब इसी हुक्म में दाख़िल हैं।

६५. शाने नुज़ूल:- एक मर्तबा कुछ यहूदी अपने बच्चों को लेकर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास➲

➲हाज़िर हुये और पूछा कि क्या इन पर भी कोई गुनाह है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: नहीं। इस पर यह लोग भी बोले कि इसी प्रकार हम भी गुनाहों से पाक-साफ़ हैं, हमारे दिन के गुनाह रात को और रात के गुनाह दिन को मिट जाते हैं, इस के मुतअ़ल्लिक़ यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई) आज कल के कुछ पीर इसी प्रकार अपनी शेख़ियाँ बघारते हैं और अल्लाह के पास से दूर होते हैं, इन आफ़तों की जड़ केवल दुनिया की लालच और मुहब्बत है (सनाई)

६६. शाने-नुज़ूल:- एक मर्तबा यहूदियों ने मुश्रिकों के पास जा कर कहा कि हम सब को मिल कर मुसलमानों से लड़ना चाहिये। मक्का वालों ने यह सुन कर कहा कि तुम और मुसलमान दोनों ही अ़हले-किताब हो, कोई ताज्जुब नहीं कि इस में भी तुम्हारी कोई चाल हो। जब तक तुम हमारे बुतों की पूजा नहीं करोगे हम तम्हरी बात नहीं मानें गे। उन्हों ने इस बात को मान लिया और बुतों की पूजा पर राज़ी हो गये। फिर मुश्रिकों ने उन से पूछा कि हम लोग तो पढ़े-लिखे नहीं हैं इस लिये हमें धर्म के बारे में कोई जानकारी नहीं है, लेकिन तुम लोग तो पढ़े लिखे हो इस लिये यह तो बताओ कि हम मुश्रिक अच्छे हैं या मुसलमान? वह बोले कि तुम अच्छे हो, इस लिये कि तुम अपने बाप-दादा के धर्म पर जमे हो और मुसलमानों ने अपने बाप-दादा का धर्म छोड़ कर एक नया मज़हब निकाला है। इन यहूद की इन झूठी बातों के रद्द में यह आयत उतरी (सनाई)

६७. 'नक़ीरा' का अर्थ है "खोदना"। इस से मुराद खजूर का छिल्का है। यह मिसाल और उदाहरण बहुत आ़म है। इस से मुराद कमी है। इसी प्रकार 'फ़तीला' और 'क़तीरा' बोल कर कमी का अर्थ लेते हैं।

६८. इस से मुराद नबुव्वत और फ़तह व कामियाबी है, या बीवियों की ज़्यादती है। जैसा कि कुछ यहूदी आप की बीवियों की मात्रा पर ताना दिया करते थे, हालाँकि हज़रत सुलैमान अ़लै० की एक हज़ार और हज़रत दावूद अ़लै० की एक सौ बीवियाँ थीं, तो अगर इस नबी की नौ बीवियाँ हुयीं तो इस पर जलते क्यों हो?

مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَآ اٰلَ
اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ﴿۵۴﴾
فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ۚ
وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا ﴿۵۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا
سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ۚ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ
بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ۚ اِنَّ
اللّٰهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۵۶﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۚ لَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ
مُّطَهَّرَةٌ ۚ وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ﴿۵۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ
يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا ۙ وَاِذَا

हम ने इब्राहीम की औलाद को किताब और तहज़ीब दी थी और उन को बड़ा मुल्क बख़्शा था[६९] ५५. फिर कुछ तो उन में से नबी को मान गये और कुछ अभी तक उस से इन्कारी हैं। उन के जलाने को जहन्नम काफ़ी है ५६. जो लोग हमारे आदेशों से मुंह फेरते हैं हम उन को अवश्य ही आग में डालें गे। जब कभी उन के चमड़े जल जाया करें गे तो उन के बदले हम और चमड़े बदल दिया करें गे ताकि वह दन्ड चखें[७०]। इसी लिये अल्लाह बड़ा ही ज़बर्दस्त बड़ी हिक्मत वाला है। ५७. जो लोग ईमान लाये और नेक कार्य भी करते रहते हैं हम उन को (ऐसे) बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिन के नीचे नहरें बहती होंगी उन्हीं में सदा रहेंगे। उन बाग़ों में उन के लिये बीवियाँ पाक होंगी और हम उन को (घने साया) में दाख़िल करेंगे[७१] ५८. (अगर यह इनाम➲

➲हासिल करना चाहते हो तो सुनो) अल्लाह तुम को हुक्म देता है कि तुम अमानतें मालिकों के पास पहुंचा दिया करो[७२] और जब लोगों में फ़ैसला करने लगो तो न्याय से किया करो। जो नसीहत अल्लाह तुम को करता है वही ख़ूब {बिहतर} है। अल्लाह (सब की बातें) सुनता और (सब के काम) देखता है

حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيْعًۢا

....

६९. हज़रत इब्राहीम की नस्ल की दो शाखें हैं (१) बनी इस्राईल (२) बनी इस्माअ़ील। यहाँ पर यहूदियों को याद दिलाया गया है कि हमारी नेमतों के वादे तो दोनों ही शाखों से हैं, इस लिये तुम अकेले ही क्यों अपने आप को उन नेमतों का हक़दार समझने लगे हो? और जब हज़रत इस्माअ़ील की नस्ल के एक शख़्स (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को यह नेमतें मिल रही हैं तो तुम्हें इस पर हसद या हैरत क्यों है? (माजिदी)

७०. यह नई खाल पैदा कर देना उस के निकट क्या कठिन है। दुनिया में खाल जल जाती है तो फिर दूसरी खाल पुनः पैदा हो जाती है। खाल इस लिये बदली जाये गी कि हर बार उस के जलने में वही तक्लीफ़ हो जैसी शुरू में हुयी थी (वहीदी) सहीह हदीसों में भी इस तअ़ल्लुक़ से बड़ी ही डरावनी हदीसें मौजूद हैं।

"अल्लाह तआ़ला बड़ा ही ज़बर्दस्त और बड़ी हिक्मत वाला है" के तहत यह सब उस की कुदरत में दाख़िल हैं और सहीह हदीसों से भी साबित है, तो इन पर ईमान लाना वाजिब है। और बिला वजह इन का इन्कार करना और इस प्रकार की हदीसों का मज़ाक़ उड़ाना बेदीन लोगों का काम है।

७१. यहाँ गहरा और घना साया मुराद है जहाँ कभी धूप की गर्मी नहीं आ सकती। कुछ उलमा ने यह तर्जुमा किया है कि "हम उन को उस साया में ले जायेंगे जो पायेदार हो गा" यानी सदा एक हाल में रहेगा। यह साया जन्नत के पेड़ों और मकानों का होगा। कुछ लोगों ने कहा है कि यह साया अर्श का होगा और यही सहीह है, क्योंकि जन्नत का बयान ऊपर गुज़र चुका है (वहीदी)

७२. हदीस शरीफ़ में है कि जब रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मक्का को फतह किया और काबा की कुंजी उस्मान बिन तल्हा से (जो काबा की कुंजी के मालिक थे) ले ली तो कुछ लोगों ने प्रार्थना की कि उन्हीं को वापस कर दी जाये, उस समय यह आयत नाज़िल हुयी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उस्मान को बुलाया और कुंजी उन को सौंप दी और फ़रमायाः यह तुम्हारे ही ख़ान्दान में रहेगी, जो इस को तुम से लेगा वह ज़ालिम हो गा।

इस आयत से बहुत से मसाइल निकलते हैं और इस का ख़िताब मुसलमानों से है या हाकिमों से। इस में अल्लाह के हुकूक़ और बन्दों के हकूक़ सभी दाख़िल हैं। अमानत रखवाने वाला नेक हो या बुरा, जिस की अमानत होगी उसी को दी जायेगी (वहीदी)

---

५९. मुसलमानो! अल्लाह और रसूल और अपने में से हाकिमों की ताबे-दारी (आज्ञा-पालन किया) करो, फिर अगर किसी मामले में तुम (लोगों) में झगड़ा पड़े तो उस को अल्लाह और रसूल की तरफ़ फेरो अगर तुम अल्लाह और क़ियामत पर ईमान रखते हो। यह कार्य (हर प्रकार से) बेहतर है। और परिणाम (भी)➲

بَصِيْرًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَ اُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّ اَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ

يَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَحَاكَمُوْٓا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَقَدْ اُمِرُوْٓا اَنْ يَّكْفُرُوْا بِهٖ ؕ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ رَاَيْتَ الْمُنٰفِقِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا ۝ فَكَيْفَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ثُمَّ جَآءُوْكَ يَحْلِفُوْنَ ۖ بِاللّٰهِ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّآ اِحْسَانًا

अच्छा है ६०. क्या तू ने (ऐ नबी!) उन को नहीं देखा[७३] जो दावा करते हैं कि जो कुछ तुझ पर और तुझ से पहले उतरा है हम सब को मानते हैं और (जब शरीअ़त के मुवाफ़िक़ उन का घाटा होता है तो इस सूरत में) चाहते हैं कि शरीरों से न्याय करायें, हालाँकि उन को उस से इन्कार करने का हुक्म हो चुका है। और शैतान चाहता है कि किसी प्रकार उन को बहका कर (हिदायत से) दूर डाल दे ६१. और जब उन को कोई कहे कि अल्लाह के उतरे हुये आदेश और उस के रसूल की तरफ़ आओ (जो कुछ फ़रमा दें उस के अनुसार उस के फ़ैसले कराओ) तो तू मुनाफ़िक़ों को देखता है कि तेरे सामने आने से रुकते हैं[७४] ६२. (भला) फिर क्या होगा जब उन की ऐसी बदअ़मली के सबब से उन पर कोई मुसीबत पहुंचेगी तो तेरे पास क़समें खाते हुये आयेंगे कि अल्लाह की क़सम हम ने तो केवल भलाई और आपस में मिलाप चाहा था (मतलब यह कि ऐसी-वैसी बहुत सी बातें बनायें गे)

....

७३. यह आयत उस समय उतरी जब अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक फ़ौज का कमान्डर बना कर भेजा तो उन्हों ने आग जलाई और लोगों से कहा कि इस में घुस जाओ।

सय्यद अ़ल्लामा कहते हैं कि इस आयत को तक़्लीद करने वाले तक़्लीद के वाजिब होने पर दलील पकड़ते हैं, हालाँकि इस आयत में ऐसी कोई बात नहीं है क्योंकि "उलुल्-अम्र" से बादशाह और हाकिम मुराद हैं और कुछ उलमा का कहना है कि उलमा-ए-दीन मुराद हैं, लेकिन इस में किसी एक आ़लिम को ख़ास नहीं किया गया है। दूसरे यह कि आ़लिम की तक़्लीद उसी समय तक है जब तक उस का क़ौल कुरआन व हदीस के अनुसार हो। तीसरे यह कि स्वयं चारों इमामों ने अपनी तक़्लीद से मना कर दिया है, इस लिये उन इमामों की इताअ़त इसी में है कि उन की तक़्लीद न की जाये। चौथे यह कि स्वयं इस आयत में यह हुक्म मौजूद है कि अगर हाकिम और उन के मानने वालों में इख़्तिलाफ़ पाया जाये तो अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ लौटना चाहिये।

इस आयत से स्पष्ट है कि ईमान की शर्त यह है कि आदमी हर मामले में कुरआन व हदीस की तरफ़ जाये और इस आयत में इस बात की हिदायत है कि कुरआन व हदीस को छोड़ कर और दूसरी किताबों की तरफ़ न जाया जाये (वहीदी) इस आदेश से मालूम हुआ कि मुसलमानों को अपने तमाम मज़हबी इख़्तिलाफ़ में कुरआन व हदीस के पास जाना चाहिये। न कि इन्सानों के क़ौल और रायों की तरफ़। (तर्जुमान) अल्लाह के आदेशों की तरफ़ जाना तो ज़ाहिर है कि कुरआन पर अ़मल करने से हासिल है, लेकिन रसूल की तरफ़ जाना उसी समय संभव है जब कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद हदीस की किताबों की तरफ़ जाया जाये। कुरआन मजीद में हदीस को दलील बनाना स्पष्ट तौर पर साबित है। और इस से यह बात भी ज़ाहिर हो गयी कि हुक्काम और उलमा से आ़म लोगों को इख़्तिलाफ़ करना जायज़ है और अन्तिम अपील किताब व सुन्नत की अ़दालत में होनी चाहिये।

यहीं से उस फ़िर्क़ा का भी रद्द निकल रहा है जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मासूम (बेगुनाह)

➲के साथ-साथ बहुत सारे इमामों का भी वजूद तस्लीम करते हैं, हालाँकि हर इमाम वह चाहे जितना बुज़ुर्ग क्यों न हो बहर हाल ख़ताओं से मासूम नहीं हो सकता (माजिदी)

७४. एक यहूदी और एक मुनाफ़िक़ के दर्मियान किसी बात पर झगड़ा हो गया। यहूदी चाहता था कि इस का फ़ैसला नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कराया जाये, मगर मुनाफ़िक़ इस मस्अले को कअ़ब बिन अशरफ़ मुनाफ़िक़ के पास ले जाना चाहता था, लेकिन यहूदी के कहने के अनुसार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास मामला पहुंचा, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दोनों के बयान को सुन कर फ़ैसला यहूदी के हक़ में सुनाया। मुनाफ़िक़ इस फ़ैसले पर राज़ी न हुआ और हज़रत उमर के पास पहुंच गया। यहूदी ने सारी कहानी हज़रत उमर रज़ि० को बता दी और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के फ़ैसले से भी आगाह कर दिया, हज़रत उमर ने उस मुनाफ़िक़ को तल्वार से क़त्ल कर डाला और कहा कि उस शख़्स को यही दन्ड मिलना चाहिये जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के फ़ैसले को न माने। अल्लाह तआ़ला ने उस मुनाफ़िक़ के ख़ून को जायज़ क़रार दिया और जिब्रील अ़लै० ने यह आयत ला कर कहा कि उमर ने हक़ और नाहक़ में फ़र्क़ कर दिया। इसी के बाद से हज़रत उमर "फ़ारूक़" (हक़ और बातिल के दर्मियान फ़र्क़ करने वाले) के लक़ब से प्रसिद्ध हुये।

وَّ تَوْفِيقًا ﴿٦٢﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُل لَّهُمْ فِي أَنفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا ﴿٦٣﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذ ظَّلَمُوا أَنفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ﴿٦٤﴾ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿٦٥﴾ وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنِ اقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ أَوِ اخْرُجُوا مِن دِيَارِكُم مَّا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِّنْهُمْ ۖ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيتًا ﴿٦٦﴾ وَإِذًا لَّآتَيْنَاهُم مِّن لَّدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٦٧﴾ وَلَهَدَيْنَاهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿٦٨﴾ وَمَن يُطِعِ اللَّهَ

६३. उन के दिलों की बात अल्लाह को मालूम है इस लिये तू उन (के बुरा-भला कहने) से मुंह फेर (लिया कर) और नसीहत किया कर और निहायत नर्म बात असर करने वाली {प्रभाव शाली} उन को कह ६४. और (यह आ़म दस्तूर है कि) हम ने जो-जो रसूल भेजे हैं वह इसी लिये भेजे कि उन की आज्ञा पालन (अल्लाह के आदेश के अनुसार) की जाये और जब उन्हों ने (इन्कार के सबब) अपना बुरा किया था तेरे पास आ कर अल्लाह से माफ़ी माँगते और रसूल भी उन के लिये माफ़ी माँगता[७४] तो अल्लाह को (अवश्य अपने हक़ में) माफ़ी देने वाला मेहरबान पाते[७५] ६५. पस तेरे रब (यानी हम को अपनी बर्कत वाली ज़ात) की क़सम! हर्गिज़ यह लोग ईमान्दार न होंगे जब तक आपस के झगड़ों में तुझ ही को इन्साफ़ करने वाला न बना दें गे फिर अपने दिलों में तेरे फ़ैसले से नाराज़ न होंगे बल्कि उस को (ख़ुशी से) क़ुबूल कर लें गे[७६] ६६. अगर हम उन पर फ़र्ज़ कर देते कि अपनी जानों को क़त्ल करो या अपने घरों से (बाहर) निकल जाओ तो बहुत कम ही लोग उन में से करते[७७] (और अधिक तर लोग खुले आ़म इन्कार कर बैठते) और जो➲

➲कुछ उन को नसीहत की जाती है अगर उस पर अ़मल करते तो उन के लिये हर प्रकार से बेहतर और साबित-क़दमी का सबब होता ६७. और उस समय हम उन को अपने हाँ से बड़ा सवाब देते ६८. और उन को सीधी राह (की मन्ज़िल) पर पहुंचा देते ६९. और जो लोग अल्लाह और उस के रसूल की फ़रमाँबर्दारी करते हैं[७८]

....

७४ इस आयत में यह बात भी मालूम हुयी कि अगर बन्दा किसी ज़िन्दा नेक बुज़ुर्ग से दुआ कराये तो क़ुबूल होती है।

७५. शाने नुज़ूलः- हज़रत ज़ुबैर और एक अन्सारी सहाबी के बीच एक नाली को ले कर झगड़ा हो गया, उस नाली से दोनों ही के खेत में पानी आता था। हज़रत ज़ुबैर का खेत ऊपर था और अन्सारी का नीचे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ुबैर से कहा कि पहले तुम अपने खेत को पानी दे कर अपने भाई के लिये छोड़ दो, यानी चूँकि तुम्हारा खेत पहले है इस लिये तुम पानी ले लो लेकिन ज़्यादा मत रोको सींचाई कर के उन के लिये छोड़ दो। इस पर अन्सारी नाराज़ हो गये और कहने लगे कि आप ने ज़ुबैर की तरफ़-दारी की है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम नाराज़ हो गये और कहने लगे कि ऐ ज़ुबैर! तुम अपने खेत को अच्छी तरह ख़ूब भर कर पानी दे दो तब उस की तरफ़ पानी छोड़ो।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जब तक हर झगड़े में तुझ ही को हाकिम और पन्च न बना दें गे और तेरे फ़ैसले को दिल से और ख़ुशी से क़ुबूल न करेंगे, तब तक मोमिन न हों गे (बुख़ारी) एक और सहीह हदीस में हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "तुम में से कोई उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि उस की ख़ाहिश उस बात को न मान ले जो मैं ले कर आया हूँ"। इस आयत और हदीस में उन लोगों का रद्द है जो किताब व सुन्नत (क़ुरआन-हदीस) को रद्द कर के अपने उलमा, इमामों के क़ियास और राय को मानते हैं।

७६. दीन और शरीअ़त से मुतअ़ल्लिक़ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की क़ौली, फ़ेली और तक़रीरी हदीसें जो सहीह सनदों से साबित हैं इस आयत की रोशनी में उन को मानना अनिवार्य और ईमान में से है (राज़)

७७. यानी बनी इस्राईल की तरह अगर हम पर भी आपस में एक-दूसरे को क़त्ल करना, वतन से निकालना फ़र्ज़ कर देते, तो उन पर अ़मल न करते मगर थोड़े से गिने-चुने लोग। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर यह आदेश नाज़िल होता तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा उन थोड़े लोगों में से होते (यानी घर-बार छोड़ देते) (मवाहिब)

७८. शाने नुज़ूलः- एक सहाबी सौबान नामी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बहुत प्रेम करते थे। एक दफ़ा बड़ी घबराहट में भागे हुये आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुये तो आप ने पूछा कि ऐ सौबान! क्या हाल है अच्छे तो हो? उन्हों ने कहा कि मैं अच्छा हूँ, मुझे कोई बीमारी नहीं है, बात इतनी सी है कि मैं ने आज आप की ज़ियारत नहीं की थी इस लिये मुझे घबराहट हुयी, मुझे क़ियामत याद आ गयी तो और भी रन्जीदा हो गया कि आप जन्नत में बुलन्द मर्तबा नबियों के साथ हों गे, वहाँ हमारी कहाँ पहुंच होगी कि आप का दीदार कर सकूँ गा, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

मैं कहता हूँ कि आप से मुहब्बत की पहचान यह है कि हर मामला में आप की सुन्नत को ध्यान में रख कर उस पर अ़मल किया जाये, वर्ना मुहब्बत का दावा ग़लत है (राज़)

وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ

वह उन लोगों के साथ हों गे जिन पर अल्लाह ने इनाम किये, यानी नबी और सिद्दीक़ और शहीद और नेक काम करने वाले (के साथ)➲

وَحَسُنَ أُولَٰئِكَ رَفِيقًا ۞ ذَٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ ۚ
وَكَفَىٰ بِاللَّهِ عَلِيمًا ۞ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا خُذُوا
حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوا ثُبَاتٍ أَوِ انْفِرُوا جَمِيعًا ۞ وَإِنَّ
مِنْكُمْ لَمَنْ لَيُبَطِّئَنَّ فَإِنْ أَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةٌ قَالَ
قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيَّ إِذْ لَمْ أَكُنْ مَعَهُمْ شَهِيدًا ۞
وَلَئِنْ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِنَ اللَّهِ لَيَقُولَنَّ كَأَنْ لَمْ
تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ يَا لَيْتَنِي كُنْتُ مَعَهُمْ
فَأَفُوزَ فَوْزًا عَظِيمًا ۞ فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
الَّذِينَ يَشْرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۚ وَمَنْ
يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيُقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ
نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۞ وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُونَ فِي

और यह लोग बहुत अच्छे साथी हैं[७९] ७०. यह मेहरबानी अल्लाह की तरफ़ से होगी। और अल्लाह ही जानने वाला काफ़ी है ७१. मुसलमानो! अपने (दुश्मनों से) बचाव (लड़ने के लिये अपने हथियार) ले लिया करो[८०] फिर चाहे अलग-अलग हो कर निकलो या जमा हो कर ७२. (हम जानते हैं कि) कौन तुम में से सुस्ती करता है[८१]। फिर अगर (इत्तिफ़ाक़ से) तुम को किसी प्रकार की तक्लीफ़ पहुंचे तो वह (शुक्र के तौर पर) कहता है कि अल्लाह ने मुझ पर बड़ा एहसान किया जो मैं उन (मुसलमानों) के साथ हाज़िर न था (वर्ना मैं भी मुसीबत में फंसता) ७३. और अगर तुम पर अल्लाह की तरफ़ से मेहरबानी हो (जाये) तो कहता है कि हाय अफ़सोस! मैं (भी) उन के साथ (जंग में) होता तो बड़ी कामियाबी पाता, गोया तुम में और उस में कभी दोस्ती (की निस्बत ही) न थी ७४. पस जो लोग दुनिया (के फ़ाइदे) को आख़िरत के बदले में बेच देते हैं अल्लाह की राह में जंग करें[८२] और जो कोई अल्लाह की राह में लडाई करे फिर मारा जाये या ग़ालिब आ जाये, हम उस को बहुत बड़ा बदला दें गे ७५. (जिहाद की इतनी बड़ी फ़ज़ीलत सुन कर भी) तुम्हें क्या हुआ कि अल्लाह की राह में

....

७९. 'अन्बिया' से मुराद ख़ुदा के वह तमाम सन्देष्टा हैं जो हर ज़माना में मुख़्तलिफ़ क़ौमों में पैदा हुये और जिन्हों ने इन्सानों को ख़ुदा परस्ती और नेक काम करने की राह दिखाई। 'सिद्दीक़' उसे कहते हैं जिस में सच्चाई की रूह रची-बसी हो, यानी ऐसा सच्चा इन्सान जो कुदरती तौर पर सच्चाई से मुनासिबत रखता हो और उसे देखते ही पहचान लेता और कुबूल कर लेता हो। 'शहीद' का अर्थ है "गवाही देने वाला" यानी ऐसा इन्सान जो अपनी ज़बान और अपने अ़मल से सच्चाई का एलान करने वाला हो और दुनिया में उस के लिये शहादत और हुज्जत तमाम कर दे। 'सालिहीन' से मुराद वह समस्त इन्सान हैं जो अपने अ़क़ीदा व अ़मल में पक्के-सच्चे और नेक हैं। सूर: फ़ातिहा में "अ़न्-अम्-त अ़लैहिम" से मुराद इन ही गिरोहों की राह है (तर्जुमान मौलाना आज़ाद रह०)

८०. इस का अर्थ यह है कि इस प्रकार के सामान तय्यार करना भी वाजिब है। आज-कल के मुसलमानों की यह सब से बड़ी ग़लती है कि बैतुल्-माल ख़ाली और सामानों, हथियारों से नंगे हाथ हो गये। और याद रहे कि ऐसी हालत में अल्लाह की मदद भी नहीं पहुंचती, क्योंकि अल्लाह के इस हुक्म के ख़िलाफ़ किया और बचाव के लिये हथियारों की तय्यारी नहीं की। (मवाहिब)

८१. अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि मुनाफ़िक़ का यही हाल था कि स्वयं तो बैठा रहता था और दूसरों को भी बहकाता था (इब्ने कसीर)

८२. इबने कसीर ने इस आयत का यह तर्जुमा किया है "वह मोमिन जो जिहाद के लिये निकला है उन लोगों से

लड़े जो दुनिया को आख़िरत के बदले में ख़रीदते हैं" । मौलाना अमृतसरी मरहूम ने यह तर्जुमा किया है "जो लोग दुनिया को आख़िरत के बदले में बेचते हैं वह अल्लाह की राह में लड़ें" । क्यों कि मोमिन दुनिया को दीन पर तर्जीह नहीं देता, वह तो दीन को दुनिया पर तर्जीह देते हैं, बल्कि दुनिया को दीन के बदले आवश्यक्ता पड़ने पर बेच देते हैं। मौलाना महमूदुल् हसन देव बन्दी ने भी ऐसा ही तर्जुमा किया है और मौलाना अ़ब्दुल हक़्क़ हक़्क़ानी ने भी।

سَبِيلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۚ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيرًا ﴿٧٥﴾ اَلَّذِينَ اٰمَنُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الطَّاغُوتِ فَقَاتِلُوٓا اَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيفًا ﴿٧٦﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوٓا اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ اِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيبٍ ۚ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى

और उन ज़ईफ़ {बूढ़े-कमज़ोर} मर्दों और औरतों और बच्चों के बचाने को नहीं लड़ते हो जो (काफ़िरों की तक्लीफ़ से तंग आ कर) कहते हैं कि ऐ हमारे मौला! हम को ज़ालिमों के इस शहर से निकाल और हमारे लिये अपने पास से कोई मदद-गार मुक़र्रर कर और कोई सहायक बना ७६. (सुनो) जो लोग मोमिन हैं वह अल्लाह की राह में लड़ते हैं[८३] और जो काफ़िर हैं वह शैतान की राह में जंग करते हैं इस लिये तुम शैतान के दोस्तों को मारो (वह तुम पर किसी प्रकार ग़ालिब न आ सकेंगे इस लिये कि उन के हिमायती) शैतान की चाल निहायत सुस्त है। ७७. क्या तू ने उन लोगों को नहीं देखा जिन को हुक्म हुआ था कि (अभी) अपने हाथों को बन्द रखो और नमाज़ पढ़ते रहो और ज़कात देते रहो, तो जब उन को लड़ने का आदेश हुआ तो उन में से एक जमाअ़त लोगों से ऐसे डरती है जैसे अल्लाह से डरना चाहिये, बल्कि इस से भी अधिक[८४], और कहते हैं कि ऐ हमारे मौला! क्यों तू ने हम पर अभी से जिहाद फ़र्ज़ कर दिया? क्यों थोड़ी सी मुद्दत तक हम को ताख़ीर नहीं दी? तू कह दे कि दुनिया का सामान तो बहुत ही थोड़ा है[८५] और आख़िरत परहेज़गारों के लिये बहुत बेहतर है

....

८३. यहाँ यह हक़ीक़त भी स्पष्ट कर दी कि कुरआन ने जंग का हुक्म इस लिये नहीं दिया कि मुसलमान दूसरों पर चढ़ दौड़ें, बल्कि इस लिये कि मज़लूमों और बेसहारा लोगों की सहायता करें और उन्हें अत्याचार करने वालों के पंजों से नजात दिलायें। इसी लिये कुरआन बार-बार कहता है "अल्लाह की राह में लड़ो" यानी अपनी ख़ाहिश के लिये नहीं, बल्कि अल्लाह के न्याय और इन्साफ़ को क़ायम करने के लिये लड़ो (तर्जुमान)

हक़ीक़त यह है कि यह आयत जिहाद के सिलसिले की आयतों में एक कलीदी (अहम और बुनियादी) आयत है। इस ने साफ़-साफ़ इस्लामी जिहाद का फ़र्क़ दुनिया की बाक़ी दूसरी जंगों से स्पष्ट कर दिया। इस ने साफ़ शब्दों में बता दिया कि सच्चा मुसलमान जब अपने ही जैसे इन्सानों पर तल्वार उठाये तो मुल्क पर क़ब्ज़ा जमाने के लिये

⮊नहीं, बल्कि दुनिया के सब से बुलन्द उद्देश्य, इन्सानियत के सब से ऊँचे लक्ष्य (Target) तौहीद के लिये, कलिमे की बरतरी और सर बुलन्दो के लिये। मुसलमान सिपाही ही के सीनों में तो यह ईमान ज़िन्दा रहता है कि उसे एक-एक क़दम का हिसाब देना है, तो क्या कभी भी ऐसे मुसलमान का क़दम रंग, जाति वाद, क़ौम, वतन और ख़ान्दान की इ़ज़्ज़त जैसे गन्दे रास्तों पर पड़ सकता है? (माजिदी)

८४. कुछ सहाबा ने मक्का के काफ़िरों के ज़ुल्म व ज़्यादती से तंग आ कर यह इच्छा ज़ाहिर की कि हमें लड़ने की इजाज़त दी जाये। चूँकि अभी अल्लाह की तरफ़ से हुक्म न था इस लिये आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने भी अनुमति न दी। लेकिन जब मदीना में लड़ने का हुक्म नाज़िल हुआ तो कुछ सीधे-सादे मुसलमान घबराये, इन के हक़ में यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

मुसलमान जब इस्लाम के आरंभ में मक्का में थे तो नमाज़, ज़कात पर अ़मल करते थे, लेकिन ज़कात की कोई हद मुक़र्रर न थी और इसी प्रकार माल की भी कोई हद मुक़र्रर न थी जिस पर ज़कात फ़र्ज़ हो। इसी प्रकार यह भी हुक्म था कि मुश्रिकों के अत्याचार और ज़्यादती पर सब्र करो जब तक कि अल्लाह लड़ने का हुक्म नहीं देता है। मुसलमान लड़ने की तमन्ना करते थे लेकिन उस समय लड़ना उचित नहीं था। जब मदीना में हालात दुरुस्त हो गये तो लड़ने का हुक्म हुआ, इस पर कुछ कमज़ोर ईमान वाले सीधे-सादे लोग घबराये, ऐसे ही लोगों का इस आयत में ज़िक्र है (इब्ने कसीर)

८५. हदीस में है कि दुनिया, आख़िरत के मुक़ाबला में बिल्कुल ऐसे है जैसे कोई समुद्र में उंगली डुबो कर देखे कि उस की उंगली में कितना पानी आता है, दुनिया का यही उदाहरण है।

وَلَا تُظْلَمُونَ فَتِيلًا ۝ أَيْنَ مَا تَكُونُوا يُدْرِككُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنتُمْ فِي بُرُوجٍ مُّشَيَّدَةٍ ۗ وَإِن تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَقُولُوا هَٰذِهِ مِنْ عِندِ اللَّهِ ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَقُولُوا هَٰذِهِ مِنْ عِندِكَ ۚ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِندِ اللَّهِ ۖ فَمَالِ هَٰؤُلَاءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا ۝ مَّا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ۖ وَمَا أَصَابَكَ مِن سَيِّئَةٍ فَمِن نَّفْسِكَ ۚ وَأَرْسَلْنَاكَ لِلنَّاسِ رَسُولًا ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝ مَّن يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ ۖ وَمَن تَوَلَّىٰ فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۝ وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَزُوا مِنْ عِندِكَ بَيَّتَ طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي تَقُولُ ۖ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُونَ ۖ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝ أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ

और तुम पर कुछ भी अत्याचार न हो गा ७८. (यह ज़रूरी नहीं कि तुम जंग के मैदान में ही मर जाओ) जहाँ तुम होगे मौत तुम को आ दबायेगी अगर्चे तुम (उस समय) बड़े मज़बूत क़िलों (FORT) में हो[८६]। और अगर उन को भलाई पहुंचती है तो कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से (हम को पहुंची) है, और अगर (इत्तिफ़ाक़ से) कोई तक्लीफ़ पहंचे तो कहते हैं यह तेरी तरफ़ से है। तू कह दे क़ि यह सब कुछ अल्लाह के हुक्म से होता है[८७]। फिर उन (नासमझ) लोगों को क्या हुआ कि (ऐसी सहल) बात भी नहीं समझते[८८] ७९. जो तुझ को भलाई पहुंचती है वह तो (केवल) अल्लाह की मेहरबानी से है और जो तुझ को तक्लीफ़ पहुंचती है वह तेरे नफ़्स (की गलती) से है। और हम ने तो तुझ को लोगों के लिये रसूल बना कर भेजा है। और (तेरी रिसालत की तब्लीग़ पर) अल्लाह ही गवाह काफ़ी है।⮊

➲८०. जो कोई अल्लाह के रसूल की आज्ञा पालन करता है वह अल्लाह की आज्ञा पालन करता है और जो मुंह फेरता है, हम ने तुझ को उन पर निगहबान कर के नहीं भेजा[८९] ८१. कहते हैं कि हम हाज़िर हैं फिर जब तेरे पास से अलग होते हैं तो एक जमाअ़त उन में से तेरे कहने के ख़िलाफ़ मश्वरे करती है। उन के मश्वरे अल्लाह के हाँ सुरक्षित हैं, इस लिये तू उन से मुंह फेर और अल्लाह पर भरोसा कर। (इस लिये कि) अल्लाह ही कार-साज़ काफ़ी है[९०] ८२. क्या (इस) क़ुरआन (शरीफ़) पर ग़ौर नहीं करते

....

८६. इस लिये तुम मौत के डर से लड़ाई से न घबराओ, हर शख़्स मरने वाला है। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० अपने फ़ौत होते समय अफ़सोस से कहने लगे कि मैं बड़ी संख्या में लड़ाइयों में शरीक हुआ और मेरे बदन का हर भाग घायल है, मगर लड़ाई के मैदान में शहादत नहीं लिखी थी इस लिये मैं अपने बिस्तर पर मर रहा हूँ। 'बुरुज' यह बहुवचन है "बुर्ज" का, जिस का अर्थ है कोठरी नुमा कमरे जो क़िला के कोनों पर बने होते हैं (बैज़ावी)
८७. यानी उस की मर्ज़ी और तक़्दीर से और उसी के पैदा करने से होती है, कोई दूसरा पैदा करने वाला नहीं और कोई असर (प्रभाव) डालने वाला नहीं, बल्कि आदमी तो कमाई करने वाला है (मुवाहिब)
८८. बात से मुराद क़ुरआन है। अगर वह उस को समझते तो यक़ीन कर लेते कि हर वस्तु अल्लाह की तरफ़ से है। कुछ उलमा का कहना है कि 'बात' से हर प्रकार की बात मुराद है, यानी उन्हें बात समझने की तमीज़ नहीं है। जानवरों की तरह हैं (वहीदी)
८९. इस आयत से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मर्तबा मालूम करना चाहिये कि अल्लाह तआ़ला ने आप की इताअ़त को अपनी इताअ़त ठहराया है। और उन बे ईमानों को इस बात से डरना चाहिये जो कहते हैं कि हदीस पर अ़मल करने की आवश्यक्ता नहीं है इस लिये कि क़ुरआन ही काफ़ी है। हालाँकि अगर हदीस को न लिया जाये तो क़ुरआन पर अ़मल हो ही नहीं सकता। न नमाज़ पढ़ सकते हैं और न ही ज़कात अदा कर सकते हैं न हज्ज ही अदा कर सकते हैं।, इस सब के करने का तरीक़ा केवल हदीसों से ही मालूम होता है। एक सहीह हदीस में है कि मुझ को क़ुरआन मिला है और क़ुरआन ही की तरह दूसरी चीज़, यानी हदीस।

यह आयत उस समय नाज़िल हुयी जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो कोई मेरी आज्ञा पालन करे और मुझ से मुहब्बत रखे तो उस ने अल्लाह की आज्ञा पालन की और उस से मुहब्बत की। यह सुन कर मुनाफ़िक़ कहने लगे कि नबी यह चाहते हैं कि हम उन को खुदा बना दें जैसे ईसाईयों ने हज़रत ईसा को बनाया था (वहीदी)
९०. इस आयत में मुनाफ़िक़ों को डराया गया है कि अल्लाह उन सब बातों से आगाह है जिन को वह अपने दिलों में छुपा कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मुख़ालिफ़त पर आमादा होते हैं और दिखावे की मुहब्बत और इताअ़त का इज़्हार करते हैं (मुवाहिब)

अगर यह (क़ुरआन) अल्लाह के अ़लावा किसी और की तरफ़ से होता तो इस में कई प्रकार का इख़्तिलाफ़ पाते[९१] (विषय में, रवानी में) ८३. और जब उन के पास किसी तरफ़ से अम्न या ख़ौफ़ की बात पहुंचती है तो उस को मशहूर➲

الْقُرْاٰنَ ؕ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ
اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ۝ وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ
اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ؕ وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَ

اِلٰٓى اُولِي الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ
مِنْهُمْ ۭ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ
الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ فَقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا
تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ عَسَى اللّٰهُ
اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّ
اَشَدُّ تَنْكِيْلًا ۝ مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ
نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ
لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيْتًا ۝
وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَآ اَوْ رُدُّوْهَا ۭ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ حَسِيْبًا ۝ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ

कर देते हैं[९२]। और अगर उस सूचना को रसूल तक और मुसलमानों के बा इख़्तियार लोगों के पास पहुंचाते तो उन में से तहक़ीक़ करने वाले उस ख़बर की तहक़ीक़ करते। और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और मेहरबानी न होती तो चन्द लोगों को छोड़ कर तुम सब शैतान के पीछे हो लेते[९३] ८४. पस तू अल्लाह की राह में जिहाद कर, तू अपनी जान का ही ज़िम्मे दार है और मुसलमानों को भी उभार, बहुत जल्द अल्लाह काफ़िरों की जंग को रोक देगा (और उन को मग़लूब कर दे गा) और अल्लाह की जंग ज़बर्दस्त और उस का दन्ड बहुत ही सख़्त है[९४] ८५. जो शख़्स भली बात की सिफ़ारिश करता है उस को उस में से हिस्सा मिलता है[९५], और (ऐसे ही) जो किसी को बुरे काम की राह दिखाता है उस को भी उस बुराई का हिस्सा पहुंचता है। और अल्लाह हर एक चीज़ पर मुहाफ़िज़ (निगराँ) है। ८६. और जिस समय तुम को कोई तुह्फ़ा दे तो उस के तुह्फ़े से अच्छा उस को अच्छा तुह्फ़ा दिया करो[९६] या (कम से कम) उसी जैसा दिया करो। बेशक अल्लाह हर एक वस्तु का हिसाब लेने वाला है ८७. अल्लाह के अलावा कोई दूसरा अल्लाह नहीं

....

९१. इस आयत से मालूम हुआ कि (१) कुरआन का मुतालबा है कि हर इन्सान उस के माना में ग़ौर व फ़िक्र करें। पस यह समझना कि वह केवल इमामों और ग़ौर फ़िक्र करने वालों ही के समझने की चीज़ है सही नहीं है (२) ग़ौर-फ़िक्र वही कर सकता है जो माना और मतलब समझे और जो अपनी समझ बूझ से काम लेता हो और दलीलों से नतीजा निकाल सके, पस अन्धी तक़्लीद करने वाला कुरआन में ग़ौर-फ़िक्र करने वाला नहीं हो सकता। (३) जो शख़्स कुरआन में ग़ौर-फ़िक्र करता है उस पर यह हक़ीक़त खुल जाती है कि यह अल्लाह का कलाम है (तर्जुमान -आज़ाद)

९२. यह एक उसूली बात है कि जंग में अगर विजय (जीत) है तो पराजय (हार) भी है। इस लिये अ़रब में एक मिसाल प्रसिद्ध है "लड़ाई तो डोल की तरह है" कभी किसी के हाथ में हुआ कभी किसी के हाथ में। मुसलमानों की जंग के बारे में अगर कभी कोई ऐसी सूचना आ जाती तो मुनाफ़िक़ उस को तुरन्त मशहूर कर देते, जैसे तुर्की की जंग में अंग्रज़ी समाचार पत्र तुर्की की हार की ख़बरें कुछ सच्ची और कुछ झूठी प्रकाशित करते रहते थे। ऐसा करने से अगर्चे हक़ीक़त तो नहीं बदलती मगर लोगों को तक्लीफ़ अवश्य पहुंचती है। मुनाफ़िक़ों को ऐसी हर्कत से बाज़ रखने को यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

हर सूचना को तहक़ीक़ कर लेने के बाद ही आ़म करना चाहिये, कुरआन की यही शिक्षा है। कुरआन मजीद ने जितनी सख़्ती के साथ अपने अन्दर ग़ौर-फ़िक्र करने की दावत दी है, मुसलमान क़ौम ने इस के उलट उतनी ही बेतवज्जुही की है और अन्धी तक़्लीद को अपना कर बैठ गये (राज़)

९३. शाने नुज़ूल:- नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक सहाबी को किसी क़बीला से ज़कात लेने के

➲लिये भेजा। उस क़बीला के लोग उन के स्वागत को निकले मगर उन्हों ने यह समझा कि वह लोग मेरे क़त्ल करने को निकले हैं और भाग कर वापस आ गये और यह सूचना दे दी कि वह क़ौम तो इस्लाम से फिर गयी है। अभी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को यह सूचना नहीं पहुंची थी कि मदीना में चर्चा होने लगी, आख़िर में वह सूचना ग़लत निकलीं, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (मुवज़्ज़िहुल कुरआन)

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी बीवियों से नाराज़ हो गये थे तो लोगों ने यह झूठी ख़बर उड़ा दी कि आप ने तलाक़ दे दी, लेकिन मालूम करने पर वह ख़बर ग़लत निकली। इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (मुवाहिब)

९४. आयत में 'हर्र-ज़' का अर्थ है किसी चीज़ की अच्छाइयाँ बढ़ा-चढ़ा कर बयान करना ताकि लोगों में उस का शौक़ और रग़बत पैदा हो। यह आयत उन झूठे पादरियों की पोल खोल रही है जिन्हों ने झूठी बातों को उछाल रखा है कि मुसलमान लूट-मार के शौक़ में जिहाद पर टूटे पड़ते थे क्या बार-बार उभारने और तवज्जुह दिलाने की आवश्यक्ता ऐसे लोगों को हुआ करती है जो हमेशा जंग के लिए आमादा रहते हों? (माजिदी)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के उभारने और अल्लाह के वादा के असर ने यह किया कि लग-भग एक सदी के अन्दर ही जबलुत्तारिक़ पर्वत से ले कर कोचीन तक और इधर क़ाफ़ के पहाड़ से ले कर अफ़रीक़ा तक बड़े-बड़े मुल्क उस झन्डे के नीचे आ गये जो मदीना में अल्लाह ने क़ायम किया था। इस से बढ़ कर और कौन सी दलील और तर्क नबुव्वत के सबूत के लिये हो सकती है (हक़्क़ानी)

९५. 'शफ़ाअ़ति ह-स-नह' (भले काम की राहनुमाई) यह है कि लोगों के दर्मियान इस्लाह व दुरुस्तगी करे और 'शफ़ाअ़ति सय्यिआ' (बुरे काम की राहनुमाई) यह है कि लोगों के दर्मियान चुग़ली, लगाई-बुझाई कर के फ़साद फ़ैला दे। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने यही तफ़्सीर बयान की है (मुवाहिब)

हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ि० से रिवायत है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास कोई सवाली आता तो आप लोगों से फ़रमाते कि तुम सिफ़ारिश करों और सवाब लो और अल्लाह अपने नबी की ज़ुबान पर जो चाहे गा जारी करेगा (बुख़ारी, मुस्लिम)

९६. जिन मुफ़स्सिरीन ने 'तहिय्या' का अर्थ "अस्सलामु अ़लैकुम" लिया है, हमारा अर्थ उन के ख़िलाफ़ नहीं है, बल्कि उस को भी शामिल है। लफ़्ज़ी अर्थ वही है जो मैं ने किया है (सनाई)

इस आयत में एक दूसरे को सलाम करने का हुक्म है और अच्छे अख़्लाक़ और अच्छे रहन-सहन पर इस बुनियाद पर ज़ोर दिया है कि जब कभी कोई तुम्हें सलाम करे तो तुम्हें उस से बेहतर जवाब देना चाहिये। और अगर बेहतर जवाब न हो तो कम से कम उसी को लौटा दो। यह आदेश यहाँ पर इस मुनासिबत से आया है कि चाहे जंग की हालत हो या अम्न व शान्ति की, मुनाफ़िक़ हो या ईमान दार, जो कोई भी तुम को सलाम करे तो तुम्हें भी वैसा ही जवाब देना चाहिये। उस के दिल का हाल अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते हो (तर्जुमान)

'तहिय्या' का अर्थ है "उस के लिये ज़िन्दगी की दुआ़ करना" और इस को व्याकरण में 'नकिरा' (जातिवाचक संज्ञा) लाने का मतलब यह है कि किसी भी प्रकार का सलाम हो। किसी विशेष प्रकार का सलाम मुराद नहीं हैं। लेकिन कुछ उलमा यहाँ सलाम ही मुराद लेते हैं। सुन्नत यह है कि मर्द जब घर में जाये तो बीवी को सलाम करे और बीवी जब मर्द को देखे तो उसे सलाम करे। पैदल चलने वाला बैठे हुये को, सवार पैदल चलने वाले को, छोटा बड़े को और छोटी जमाअ़त, बड़ी जमाअ़त को सलाम करे (मुवाहिब)

नि:संदेह क़ियामत के दिन तुम को (वह अवश्य) जमा करे गा, और अल्लाह से अधिक सच बोलने वाला कौन है? ३८ फिर क्यों तुम मुनाफ़िक़ों➲	إِلَّا هُوَ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا ۝٨٧ فَمَا لَكُمْ فِي

الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ؕ
اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ
اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿۸۸﴾ وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ
كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ
اَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا
فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۪ وَلَا
تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۸۹﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ
يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ اَوْ جَآءُوْكُمْ
حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ يُقَاتِلُوْا
قَوْمَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ
فَاِنِ اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا اِلَيْكُمُ

के बारे में दो गिरोह हो गये हो? अल्लाह ने उन को गुमराह कर दिया[८७] उन के बुरे आमाल की वजह से। फिर क्या तुम अल्लाह के गुमराह किये हुये को (सीधी) राह पर लाना चाहते हो? अल्लाह जिस को (बुरे कामों के करने की सज़ा में) राह न दे तो उस के लिये कोई सूरत न पाये गा ८९. वह चाहते हैं कि तुम भी उन की तरह काफ़िर हो कर एक से हो जाओ पस तुम उन में से किसी एक को भी मित्र न बनाओ जब तक वह घर छोड़ कर अल्लाह की राह में न निकलें और अगर (इस्लाम का दावा करने के बावजूद) उस से मुंह फेरें तो उन को पकड़ो और जहाँ पाओ क़त्ल कर डालो और उन में से न तो किसी को मित्र बनाओ और न हिमायती (बिल्कुल ही अलग हो जाओ) ९०. हाँ, उन को न मारो जो तुम्हारे मुआहिदा वालों से मुआहिदा रखें या तुम्हारे साथ लड़ने और अपनी क़ौम (कुफ़्फ़ार) के साथ लड़ने से बाज़ आ कर तुम्हारे पास आ जावें (और तुम से सुलह की बात करें[८८]) और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हीं को तुम पर ग़ालिब कर देता फिर वही तुम को मारते, पस अगर वह तुम से किनारा इख़्तियार कर लें और तुम से न लड़ें और तुम्हारी तरफ़ सुलह का संदेश भेजें

....

८७. शाने- नुज़ूल:- बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत में है कि उहुद की लड़ाई में जो लोग आप के साथ आ कर फिर वापस लौट गये, उन के बारे में कुछ लोगों का ख़याल था कि वे क़त्ल कर दिये जायें और कुछ ने कहा कि उन्हें क़त्ल न किया जाये, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (वहीदी) मक्का के मुश्रिकों में से कुछ लोगों ने सियासत की बुनियाद पर इस्लाम का दम भरना आरंभ कर दिया था, लेकिन दिल में इस्लाम के मुख़ालिफ़ थे। जब लड़ाई छिड़ गयी तो मुसलमानों में दो राहें हो गयीं, कुछ लोग कहते कि वह हमारे साथ हैं और कुछ लोग कहते कि वह तो दुश्मनों के साथ हैं। यहाँ क़ुरआन ने स्पष्ट कर दिया कि वे मुनाफ़िक़ हैं, इस लिये उन के बारे में किसी इख़्तिलाफ़ की गुन्जाईश नहीं है (तर्जुमान आज़ाद)

८८. 'जामिउल बयान' में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह मुआहिदा हलाल अस्लमी से किया था कि न वह मुसलमानों की मदद करे, न ही किसी दूसरी क़ौम की मुसलमानों के ख़िलाफ़ मदद करे, और जो शख़्स उस से मिल जाये उस को भी पनाह मिलेगी, इस से मुराद वही क़बीला अस्लम ही के लोग हैं। कुछ उलमा का कहना है कि इस से क़ुरैश के वह लोग मुराद हैं जिन में और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में मुआहिदा हुआ था और क़बीला बनी मुदलिज के लोग उन की पनाह में आ गये थे तो मुराद बनी मुदलिज के लोग हैं (वहीदी)

السَّلَمَ فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ۝٩٠
سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّاْمَنُوْكُمْ وَ
يَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ؕ كُلَّمَا رُدُّوْٓا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا
فِيْهَا ۚ فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْٓا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ
وَيَكُفُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ
ثَقِفْتُمُوْهُمْ ؕ وَاُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا
مُّبِيْنًا ۝٩١ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا
خَطَـًٔا ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ
مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖٓ اِلَّآ اَنْ
يَّصَّدَّقُوْا ؕ فَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ
مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ؕ وَاِنْ كَانَ
مِنْ قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ
مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖ وَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ

तो उन से लड़ने की अल्लाह ने तुम को इजाज़त नहीं दी ९१. (हाँ उन ही की क़िस्म के) और लोग ऐसे भी तुम को मिलेंगे जो चाहें गे कि तुम से अम्न में रहें और अपनी क़ौम से भी (लेकिन अ़मली कार्यवाही उन की यह होगी कि) जब कोई उन को फ़साद की तरफ़ बुलाये गा तो उस में गिर पड़ें गे[९९] इस लिये अगर वह तुम से कनाराकश न हों और तुम्हारी तरफ़ सुलह के पैग़ाम न भेजें और अपने हाथों को (तुम्हारी लड़ाई से) न रोकें तो उन को पकड़ो और जहाँ पाओ उन को क़त्ल कर डालो। उन्हीं लोगों पर अल्लाह ने तुम को ग़लबा देना मुक़द्दर कर रखा है[१००] (हाँ, मुसलमानों के क़त्ल से परहेज़ करो) ९२. किसी मुसलमान का काम नहीं कि किसी मुसलमान को (जान बूझ कर) क़त्ल करे, मगर ग़लती से (हो तो दूसरी बात है) और जो शख़्स किसी मुसलमान को ग़लती से मार दे तो वह एक ग़ुलाम मुसलमान आज़ाद करे और उस के वारिसों को उस का ख़ूँबहा दे मगर जब वारिस माफ़ कर दें[१०१] (तो माफ़ भी हो सकता है) और अगर वह (मक़्तूल) तुम्हारे दुश्मनों में से है मगर ख़ुद मुसलमान है तो केवल मुसलमान ग़ुलाम का आज़ाद करना वाजिब है। और अगर तुम्हारे मुआ़हिदा-दार क़ौम में से है तो उस के वारिसों को ख़ूँबहा देना और एक ग़ुलाम मुसलमान का आज़ाद करना ज़रूरी है।

....

९९. 'फ़िला' से मुराद कुफ़्र व शिर्क और अ़क़ीदा का बिगाड़ भी हो सकता है। लेकिन आगे-पीछे की आयतों से स्पष्ट इशारा मुसलमानों से लड़ाई की तरफ़ है। अक़ीदा के बिगाड़ में तो पहले ही से गिरिफ़्तार थे और अब मौक़ा हाथ आने पर मुसलमानों पर भी टूट पड़ते हैं। 'उरकिसू फ़ीहा' यानी उस में अंधाधुन्द उल्टे मुंह गिर पड़ते हैं (माजिदी)

१००. इब्ने अ़ब्बास रज़ि० का कहना है कि यह लोग क़बीला असद और ग़ित्फ़ान के लोग थे जो मदीना वालों के साथ मौजूद थे और थे तो मुनाफ़िक़, मगर दिखाने को इस्लाम पर अ़मल करते थे। जब अपनी क़ौम में वापस जाते तो इस्लाम का इन्कार करते थे और जब सहाबा से मिलते तो कहते कि मैं तो तुम्हारे दीन पर हूँ। इस से उन का मक़्सद यह था कि दोनों फ़रीक़ को प्रसन्न रख कर अम्न में रहें।

इब्ने जरीर मुजाहिदीन से हिकायत नक़ल करते हुये कहते हैं कि यह आयत मक्का में एक क़ौम के बारे में नाज़िल हुयी है जो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास दिखाने को तो इस्लाम का दावा पेश करते लेकिन क़ुरैश के पास जा कर बुतों की पूजा करते थे। ऐसा करने का मक़्सद यह था कि दोनों को ख़ुश रखें। इमाम इब्ने➲

➲कसीर ने कहा कि यह लोग मुनाफ़िक़ थे जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और सहाबा के सामने अपना ईमान इस लिये ज़ाहिर करते थे कि अपने जान व माल से बेख़ौफ़ हो जायें और पीठ पीछे वह काफ़िरों के पास जा कर बुतों की पूजा करते थे ताकि उन से भी बेख़ौफ़ रहें (मुवाहिब)

१०१. बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जो मुसलमान लाइला-ह इल्लल्लाह की गवाही देता हो और मेरे रसूलुल्लाह होने की भी, तो उस का ख़ून हलाल नहीं मगर तीन बातों में से कोई एक बात पाई जाने से (१) जान के बदले जान (२) विवाहित (शादी शुदा) जो ज़िना करे (३) जो दीन को छोड़ दे और जमाअ़त से जुदा हो जाये। और इन तीन सूरतों में भी जनता (आ़म लोगों) को क़त्ल करने का इख़्तियार नहीं है, बल्कि यह काम सुल्तान (बादशाह, ख़लीफ़ा, क़ाज़ी) या उस के नायब का है (मुवाहिब)

इब्ने जरीर ने एक रिवायत नक़ल की है कि हारिस बिन यज़ीद, अबू जेहल के साथ मिल कर अ़याश बिन अबू रबीआ़ रज़ि० को मारता-पीटता था। उन का जुर्म यह था कि वह इस्लाम ले आये थे। एक मर्तबा हारिस बिन यज़ीद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास हिजरत की निय्यत से आया तो अ़याश ने उसे काफ़िर समझ कर क़त्ल कर दिया, उस वक़्त यह आयत नाज़िल-हुयी। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अ़याश को हुक्म दिया कि एक गुलाम आज़ाद करो, या दियत के १०० ऊँट उसे दो (दियत-ख़ूँबहा का बयान विस्तार से हदीस की किताबों में मौजूद है)

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً
مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٩٢﴾ وَمَنْ
يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا
فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا
عَظِيْمًا ﴿٩٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا ضَرَبْتُمْ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰٓى
اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۡ فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ۭ كَذٰلِكَ
كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ۭ اِنَّ
اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿٩٤﴾ لَا يَسْتَوِي
الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِي الضَّرَرِ وَ
الْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ
فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ

फिर जो शख़्स गुलाम न पाये तो दो महीने पै दर पै (लगातार) रोज़े रखे यह अल्लाह के हाँ से माफ़ी है। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है ९३. और जो शख़्स मोमिन को जान बूझ कर क़त्ल कर डाले तो उस का बदला जहन्नम है जिस में वह सदा रहे गा[१०२] और अल्लाह का ग़ज़ब और लानत उस पर होगी और उस के लिये बड़ा अ़ज़ाब तय्यार है[१०३] ९४. मुसलमानो! जब कभी तुम अल्लाह की राह में सफ़र को जाओ तो (मुख़ातबों का हाल) अच्छी तरह मालूम कर लिया करो और जो कोई तुम को "सलामुन् अ़लैकुम" कहे तो उस को मत कहो कि तू मुसलमान नहीं[१०४] (यूँही हम को धोका देता है) क्या दुनिया का अस्बाब {सामान} लेना चाहते हो? अल्लाह के हाँ ग़नीमतें {माल} बहुत हैं। तुम भी पहले इसी तरह (कुफ़्फ़ार से दबे हुये) थे लेकिन अल्लाह ने तुम पर एहसान किया इस लिये तुम अच्छी तरह मालूम कर➲

लिया करो। अल्लाह तुम्हारे कामों से आगाह {ख़बर रखने वाला} है। ९५. बिला सबब बैठ रहने वाले मुसलमान और अल्लाह की राह में अपने मालों और जानों से जिहाद करने वाले बराबर नहीं हैं[१०५] अपने माल और जान से लड़ने वालों को (घरों में) बैठ रहने वालों पर अल्लाह ने मर्तबा में बड़ाई दे रखी है

....

१०२. क्यों कि क़त्ल करने वाले ने उस को क़त्ल कर के इस बात का इज़हार किया कि उस के ईमान और इस्लाम से उस को रन्ज है, फिर ऐसे शख़्स को काफ़िरों की पूरी सज़ा क्यों न मिले। इस ख़याल से कि तुम भी कहीं उस अज़ाब में गिरिफ़्तार न हो जाओ, तुम्हें हिदायत की जाती है.........(सनाई)

१०३. शाने नुज़ूल:- एक बार सहाबा के एक लश्कर के सामने से गुज़रते हुये एक शख़्स ने सलाम किया। सलाम करने की वजह यह थी ताकि ये लोग उसे मुसलमान समझें और ग़लती से उसे क़त्ल न कर दें। एक सहाबी ने उस के सलाम को मक्र और धोका देना समझा और उसे काफ़िर मान कर क़त्ल कर दिया। चूंकि यह क़त्ल इस्लामी क़ानून के ख़िलाफ़ था, इस लिये यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

यह आयत मुक़ीस बिन ज़िबाबह कन्दी के बारे में नाज़िल हुयी। उस ने अपने भाई हिशाम को बनू नज्जार क़बीला के मुहल्ले में मरा हुआ पाया तो उस ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इस की शिकायत की, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बनू नज्जार को हुक्म दिया कि हिशाम के क़ातिल को क़िसास (बदला) के लिये उस के हवाले कर दो। अगर क़ातिल का पता न चले तो उसे दियत (ख़ूँबहा-ख़ून के बदले में माल) दिया जाये। क़बीला बनू नज्जार के लोगों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के आदेश का पालन करते हुये क़ातिल को तलाश किया, उस का पता न चलने पर १०० ऊँट दियत के दिये। दियत लेने के बाद मुक़ीस ने शैतान के बहकावे में आ कर क़बीला बनू फ़हर के एक शख़्स को (जो उस के साथ था) क़त्ल कर दिया और दियत के १०० ऊँटों को भी मक्का ले कर भाग गया और इस्लाम से फिर गया, उस समय यह आयत नाज़िल हुयी (मुआ़लिम)

"मुवाहिब" में है कि यह आयत ऐसे शख़्स के बारे में नाज़िल हुयी जिस ने एक मुसलमान को जान बूझ कर दियत लेने के बाद भी क़त्ल कर दिया। इस तरह जान-बूझ कर क़त्ल करने से वह काफ़िर हो गया और जहन्नमी ठहरा।

१०४. यह आयत स्पष्ट शब्दों में इस बात की ओर इशारा करती है कि किसी मुसलमान को ग़ैर मुसलमान या काफ़िर कहने में बहुत अधिक एहतियात से काम लेना चाहिये (राज़)

१०५. सही बुख़ारी में हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जन्नत के १०० दर्जे हैं जिन को अल्लाह ने जिहाद करने वालों के लिये तय्यार किया है। और हर दर्जे के दर्मियान ज़मीन और आकाश के दर्मियान जितना फ़ासला है। इस लिये अल्लाह से जब माँगो तो "फ़िरदौस" माँगो, क्यों कि यह सब से ऊँचा दर्जा है, इस के ऊपर अल्लाह का अ़र्श है और उस से नहरें जारी हैं (बुख़ारी)

(हाँ) दोनों को आ़म तौर से अच्छा वादा दिया है[१०६]। और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को बैठ रहने वालों पर बहुत बड़े सवाब की फ़ज़ीलत अ़ता की है ९६. (यानी) कई दर्जे अपनी तरफ़ से और बख़्शिश व मेहरबानी। और अल्लाह तो बड़ा बख़्शने वाला और मेहरबान है ९७. उन

عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ۭ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ
الْحُسْنٰى ۭ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ
اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ۭ
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ

الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ؕ قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ قَالُوْٓا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ؕ فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿٩٧﴾ اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٩٨﴾ فَاُولٰٓئِكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿٩٩﴾ وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ فِي الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا

लोगों से जो अपनी जानों पर ख़ुद ज़ुल्म करते हैं जान निकालते समय फ़रिश्ते पूछते हैं कि तुम लोग कहाँ थे? वह उत्तर देते हैं कि हम मज्बूरी से (काफ़िरों की) ज़मीन में रहते थे (यह कारण था हमारी दीनी ज़िल्लत का) फ़रिश्ते कहते हैं कि क्या अल्लाह की ज़मीन कुशादा न थी कि उस में तुम हिजरत कर जाते[१०७]? इसलिये ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम हो गा और वह बुरी जगह है[१०८] ९८. हाँ, वह कमज़ोर मर्द और महिलायें और बच्चे जो न निकलने की ताक़त रखते हैं और न राह पहचानते हैं (उन के लिये दोनों ही चीज़ें सख़्त रुकावट हैं) ९९. इस लिये आशा है कि ऐसों को अल्लाह माफ़ कर दे गा। और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है १००. और जो कोई अल्लाह की राह में हिजरत करेगा[१०९], ज़मीन में बहुत आराम और कुशादगी पाये गा[११०]

....

१०६. मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने मोमिनों की तीन क़िस्में कर दी हैं (१) वह मोमिन जो अन्धे या कमज़ोर होने की वजह से शक्ति नहीं रखते (२) वह मोमिन जिन्हें कोई मजबूरी नहीं, लेकिन फिर भी जिहाद से जी चुरा कर बैठे रहें (३) वह मोमिन जिन्हों ने अपनी जान व माल से जिहाद किया। इन तीनों में से बीच वाले गिरोह को छोड़ कर बाक़ी गिरोहों के बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यह दोनों सवाब व मर्तबा में बराबर नहीं हैं। 'क़ाअिदी-न से मुराद यहाँ मजबूरी की वजह से जिहाद में न शरीक होने वाले मुसलमान हैं।

१०७. शाने- नुज़ूलः- कुछ लोग मुसलमान होने के बावजूद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मदीना शरीफ़ हिजरत कर जाने के बाद भी मक्का में रहे और यहाँ तक कि चाहे या अन्चाहे मुश्रिकों के साथ मिल कर मुसलमानों से लड़ने के लिये भी आये, ऐसे ही लोगों के बारे में यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई/मआ़लिम)

१०८. जब काफ़िरों के ज़ुल्म व ज़्यादती से तंग आ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मदीना की तरफ़ हिजरत की तो क़ुदरती तौर पर अ़रब मुल्क दो हिस्सों में बट गया (१) दारुल हर्ब (२) दारुल हिजरत। दारुल हरब तो मुल्क का वह हिस्सा था जो दुश्मनों के क़ब्ज़ा में था और उस की राजधानी मक्का थी और 'दारुल हिजरत' मदीना था जहाँ मुसलमान एक-एक कर के इकट्ठा हो गये थे। दारुल हर्ब में जो मुसलमान बाक़ी रह गये थे उन को इस्लाम पर अ़मल करने की आज़ादी नहीं थी। उन्हें सदा दुश्मनों का अत्याचार सहना पड़ता था, इस लिये उन्हें आदेश दिया गया कि मक्का से हिजरत कर के मदीना चले जायें, और अगर हिजरत की ताक़त रखते हुये भी नहीं करें गे तो इस पर उन की पकड़ हो गी, यहाँ पर इसी बात की ओर इशारा किया गया है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जो लोग हिजरत की ताक़त नहीं रखते हैं वह तो मजबूर हैं, लेकिन जो हिजरत की ताक़त रखने के बावजूद दुश्मनों की आबादी न छोड़े और ज़िल्लत व महरूमी सहता रहे तो वह सख़्त गुनाह गार हो गा और ऐसे आदमी का ठिकाना जहन्नम हो गा। जो लोग अपना वतन (घर-बार) छोड़ कर हिजरत करेंगे उन्हें नई-नई जगहें और खाने-पीने और ज़िन्दगी गुज़ारने के सामान मिलें गे (तर्जुमान)

१०९. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "आमाल

का दारो मदार निय्यतों पर है। जैसी जिस की निय्यत हो गी उस को वैसा ही फल भी मिले गा। अगर कोई केवल अल्लाह और उस के रसूल को खुश रखने के लिये हिजरत करे गा तो उस की हिजरत अल्लाह और उस के रसूल की ख़ातिर मानी जाये गी। और अगर उस की निय्यत दुनिया का कोई लाभ उठाने के लिये हो, या किसी महिला से विवाह के लिये हिजरत करे तो (उस की हिजरत अल्लाह और उस के रसूल के लिये न हो गी) बल्कि उस चीज़ की तरफ़ हो गी जिस की उस ने निय्यत की है (बुख़ारी)

कहने का अर्थ यह है कि जो शख़्स अल्लाह के हुक्म का पालन करते हुये अपना धन-माल छोड़ कर हिजरत कर गया उस को अल्लाह आराम से रहने के लिये ठिकाना देता है। कुरआन व हदीस से यह बात साबित है कि मोमिन की ख़ालिस निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है, इस लिये कामिल यक़ीन के साथ अगर निय्यत भी ख़ालिस हो तो फिर उस का क्या कहना।

११०. 'मुराग़िम' यह शब्द "रिग़ाम" से बना है जिस का अर्थ है "मिट्टी"। इसी प्रकार अ़रबी में बोलते हैं "उस की नाक में मिट्टी भर गयी" यानी वह ज़लील और रुस्वा हुआ। चूँकि मुहाजिरों का हिजरत के स्थानों पर आराम और इतमिनान पाना उन के दुश्मनों के लिये शर्म की बात है इस लिये इस आराम और सुकून को "मुराग़िम" कहा गया (हक़्क़ानी)

وَّسَعَةً ۚ وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْۢ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٠٠﴾ وَاِذَا ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ۖ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ يَّفْتِنَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿١٠١﴾ وَاِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَلْيَاْخُذُوْٓا اَسْلِحَتَهُمْ ۚ فَاِذَا سَجَدُوْا فَلْيَكُوْنُوْا مِنْ وَّرَآئِكُمْ ۖ وَلْتَاْتِ طَآئِفَةٌ اُخْرٰى لَمْ يُصَلُّوْا فَلْيُصَلُّوْا مَعَكَ وَلْيَاْخُذُوْا حِذْرَهُمْ وَاَسْلِحَتَهُمْ ۚ وَدَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ وَاَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيْلُوْنَ عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً ۚ وَلَا جُنَاحَ

और जो कोई अल्लाह और रसूल के लिये घर से[१११] निकले फिर (राह में किसी आराम की जगह पाने से पहले ही) उस को मौत आ जाये[११२] तो अल्लाह के ज़िम्मा उस का सवाब (वाके़) हो गया[११३]। अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है १०१. जब तुम ज़मीन में सफ़र करने को जाओ तो तुम्हें नमाज़ का क़स्र करना जायज़ है (यानी चार रक्अ़त की जगह दो रक्अ़तें पढ़ो[११४]) अगर तुम्हें डर हो कि काफ़िर (लोग नमाज़ में) तुम को सतायें गे। निःसंदेह काफ़िर लोग तुम्हारे खुले दुश्मन हैं १०२. और जब तू (ऐ नबी) उन में हो और (ख़ौफ़ की) नमाज़ पढ़ाने लगे तो चाहिये कि (उन हाज़िर लोगों में से) एक जमाअ़त तेरे साथ खड़ी हो जाये और अपने हथियार भी साथ लिये रहें, फिर जब (पहली रक्अ़त का दूसरा) सज्दा कर चुकें तो तुम से पीछे चले जायें और दूसरी जमाअ़त वाले जिन्हों ने (अभी) नमाज़ नहीं पढ़ी आ जायें और तुम्हारे साथ (एक रक्अ़त) नमाज़ पढ़ लें और अपना बचाव और हथियार साथ ही रखें[११५]। काफ़िरों की तो यह दिली तमन्ना है कि किसी प्रकार तुम अपने

➲हथियारों और सामान से ग़ाफ़िल हो जाओ तो तुम पर एक ही दफ़ा टूट पड़ें (इस लिये तुम इस का ख़याल रखो)

....

१११. उलमा ने लिखा है कि हर वह सफ़र जो अल्लाह की रज़ा प्राप्त करने के लिये हो, जैसे हज्ज का सफ़र, या दीन की शिक्षा प्राप्त करने के लिये सफ़र आदि। चूँकि इन सब में एक जगह से दूसरी जगह जाना पड़ता है इस लिहाज़ से यह भी हिजरत के हुक्म में दाख़िल हैं (माजिदी)

११२. हर ऐसी मजबूरी जो मुनष्य को बेबस और आ़जिज़ कर दे वह मौत ही के हुक्म में दाख़िल है (माजिदी)

११३. हज़रत ख़ालिद बिन हराम ने हब्शा की तरफ़ हिजरत की मगर रास्ते में साँप के काटने से देहान्त हो गया, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (इब्ने हातिम) इमाम इब्ने कसीर ने इस वाक़िआ़ को ग़रीब कहा है इस लिये कि यह वाक़िआ़ मक्का में पेश आया था और सूरः मदनी है। इस लिये इस साँप के काटने के क़िस्सा को इस आयत के हुक्म के साथ जोड़ा गया है न कि इस आयत के नाज़िल होने का सबब यह क़िस्सा है (मुवाहिब)

११४. एक मर्तबा उमय्या ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से प्रश्न किया कि हम कुरआन में ख़ौफ़ की नमाज़ का ज़िक्र तो पाते हैं जिस में नमाज़ में रक्अ़त की तादाद आधी कर दी गयी है, लेकिन मुसाफ़िर के लिये क़स्र की नमाज़ का ज़िक्र नहीं है। इस पर उन्हों ने उत्तर दिया कि मेरे भतीजे! अल्लाह ने आप पर कुरआन को नाज़िल किया, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जैसा कुछ किया वैसे ही हम भी करते हैं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सफ़र में क़स्र किया और यह सुन्नत, है इस लिये हम भी सफ़र में क़स्र करते हैं, इस के बारे में इस से अधिक हम कुछ नहीं जानते।

बुख़ारी और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ज़ुह्र और अ़स्र की नमाज़ को मिना में क़स्र कर के पढ़ा, हालाँकि उस समय अम्न व शान्ति का माहौल था। इमाम तिर्मिज़ी ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० के वास्ते से रिवायत नक़ल की है कि इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने कहा कि यह बात सहीह है कि हम ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ मक्का और मदीना के बीच में दो-दो रक्अ़तें पढ़ीं हैं और हम को कोई डर नहीं था। यहाँ पर 'सफ़र' से आ़म सफ़र मुराद है। जिहाद के लिये हो या तिजारत के लिये, या किसी काम के लिये हो नमाज़ का क़स्र करना सुन्नत हैं (वहीदी)

यह सफ़र जो तीन मन्ज़िल का हो (यानी जिसमें तीन दिन लग जायें) उस सफ़र में चार रक्अ़त फ़र्ज़ की दो ही रक्अ़तें पढ़नी चाहिये। और काफ़िरों के सताने का डर था इस लिये यह हुक्म आया और आधी नमाज़ की छूट मिली। इसी लिये पूरी नहीं पढ़नी चाहिये, क्यों कि ऐसा करने से अल्लाह की माफ़ी और छूट से लापर्वाही ज़ाहिर होती है (मुवज़्ज़िहुल् कुरआन)

कुछ उलमा का कहना है कि सफ़र में क़स्र वाज़िब है और कुछ के निकट वाजिब नहीं है, लेकिन क़स्र करना अफ़्ज़ल है और पूरी नमाज़ पढ़ना भी जायज़ है। क्यों कि हज़रत आ़इशा रज़ि० कहती हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सफ़र में रोज़ा रखते थे और नहीं भी रखते थे, क़स्र करते थे और नहीं भी करते थे। यानी दोनों प्रकार का अ़मल करते थे।

११५. हदीसों में ख़ौफ़ की नमाज़ का तरीक़ा छःतरह से आया है, इस लिये ख़ौफ़ के समय जिस वक़्त जैसा भी मौक़ा मिले पढ़ लेना चाहिये। एक तरीक़ा तो यह है कि दो सफ़ें हों और सब नमाज़ पढ़ें, जब सब लोग एक साथ, पहली रकात का रुकूअ़ कर चुकें तो पहली सफ़ वाले इमाम के साथ सज्दा करें और पिछली सफ़ वाले खड़े रहें। जब इमाम और पहली सफ़ वाले सज्दा कर के खड़े हो जायें तब पिछली सफ़ वाले सज्दा करें। इस के बाद अगली सफ़ पीछे हो जाये और पिछली सफ़ आगे हो जाये और दूसरी रक्अ़त का रुकूअ़ एक साथ करें और सज्दा उसी पहली➲

➲रक्अ़त के मुताबिक़ करें, फिर अत्ताहिय्यात पढ़ कर सलाम एक ही साथ फेरें। ख़ौफ़ के नमाज़ की दूसरी शक्ल यह है कि दो रक्अ़त आधे लोगों को इमाम पढ़ा दे, फिर बाक़ी आधे लोगों को दो पढ़ा दे। इस प्रकार इमाम की तो चार रक्अ़तें हों गी और मुक़्तदी लोगों की दो-दो। इस के अ़लावा चार प्रकार से ख़ौफ़ की नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा और है (जामिउल बयान)

इस से मालूम हुआ कि नमाज़ एक ऐसा फ़र्ज़ है जो हर हालत में पढ़ी जायेगी, यहाँ तक कि जंग की भी स्थिति में (तर्जुमान) नमाज़ को दीन का सुतून कहा गया है और यह भी फ़रमाया है कि जिस ने नमाज़ क़ाइम रखी उस ने दीन को क़ायम रखा और जिस ने नामज़ को तर्क कर दिया (छोड़ दिया) उस ने दीन के मकान को ढा दिया। सही हदीसों में तो यहाँ तक मौजूद है कि ज़िस ने बिला सबब एक वक़्त की भी नमाज़ को छोड़ दिया वह काफ़िर हो गया। नमाज़ पढ़ने से नेकियाँ पैदा होती हैं और छोड़ने से हर प्रकार की बुराइयाँ। क़स्र नमाज़ चार रक्अ़त की जगह दो पढ़ना यह मुसाफ़िर के लिये है और इस का हुक्म आ़म है चाहे दुश्मन का डर हो या न हो, और ख़ौफ़ की नमाज़ का हुक्म इत्तिफ़ाक़ी है। (हक़्क़ानी)

عَلَيْكُمْ اِنْ كَانَ بِكُمْ اَذًى مِّنْ مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ
مَّرْضٰٓى اَنْ تَضَعُوْٓا اَسْلِحَتَكُمْ ۚ وَخُذُوْا حِذْرَكُمْ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿١٠٢﴾ فَاِذَا
قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّ
عَلٰي جُنُوْبِكُمْ ۚ فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۚ
اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَي الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ﴿١٠٣﴾
وَلَا تَهِنُوْا فِي ابْتِغَاۗءِ الْقَوْمِ ۭ اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ
فَاِنَّھُمْ يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ ۚ وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ
مَا لَا يَرْجُوْنَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِــيْمًا حَكِــيْمًا ﴿١٠٤﴾ اِنَّآ
اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ
بِمَآ اَرٰىكَ اللّٰهُ ۭ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَاۗىِٕنِيْنَ خَصِيْمًا ﴿١٠٥﴾ۙ
وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٠٦﴾ۚ
وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَھُمْ ۭ اِنَّ

अगर तुम को वर्षा (आदि) की वजह से तक्लीफ़ हो, या तुम बीमार हो तो हथियार उतार रखने में तुम पर गुनाह नहीं (रख दिया करो मगर तमाम नहीं, बल्कि ज़रूरत के मुताबिक़) अपना बचाव साथ रखा करो। अल्लाह ने काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है (इस लिये अब उन की ज़िल्लत के दिन निकट आ गये हैं) १०३. फिर जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो (हर हाल में) ख़ड़े-बैठे, करवटों पर लेटे हुए अल्लाह को याद करो (और किसी भी हालत में उसको न भूलो) फिर जब तुम को जंग से आराम मिले तो (पहले की तरह पूरी) नमाज़ पढ़ो (इस लिये कि) नमाज़ मुसलमानों पर बड़ी ताकीद के साथ तयशुदा वक़्तों पर फ़र्ज़ है[११६] (इस में किसी प्रकार की कमी न होने दो) १०४. और कुफ़्फ़ार की खोज में सुस्त न हो जाओ[११७]। अ़गर तुम तक्लीफ़ उठाते हो तो (क्या डर है?) वह भी तो तुम्हारी तरह तक्लीफ़ उठाते हैं, (तो तुम्हारी सुस्ती के क्या माना?) हालाँकि तुम अल्लाह से उस (सवाब) की आशा रखते हो जिस की उन को नहीं है। और अल्लाह (सब कुछ) जानता और बड़ी हिक्मत वाला है[११८] १०५. हम ने सच्ची किताब तेरी तरफ़ उतारी है[११९] कि तू लोगों में अल्लाह के बताये हुये (क़ानून) से फ़ैसला करे। और दग़ा बाज़ों के सहायक न बनो १०६. और➲

➲अल्लाह से माफ़ी माँगा करो। अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है १०७. और उन की तरफ़ से झगड़ा न किया करो जो अपने भाइयों (इन्सानों) की ख़यानत करते हैं।

....

११६. शाने-नुज़ूल:- इस से ज़ाहिर हुआ कि बन्दगी के वाजिबात जब तक उस के जिस्म में साँस बाक़ी है, तब तक बन्दे के ऊपर से नहीं हटते, चाहे ख़ौफ़ में हो या अम्न और शान्ति में हो। कुछ बिदअ़ती लोगों का कहना है कि बन्दा जब अपने पूरे कमाल के दर्जे तक पहुंच जाता है तो उस से बदनी अ़िबादत साक़ित समाप्त हो जाती है (मुवाहिब)

११७. शाने-नुज़ूल:- उहुद की लड़ाई से वापस हो कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुसलमानों के एक गरोह से कहा कि तुम लोग मक्का के काफ़िरों और अबू सुफ़्यान और उस के साथियों को तलाश करो। उन्हों ने कहा कि हम लोग बहुत ज़्यादा घायल हैं, इसपर यह आयत नाज़िल हुयी (मुवाहिब)

११८. उस ने अपने दीन की हिमायत का दारोमदार तुम ही पर नहीं रखा, बल्कि अपनी हिक्मत के ज़रीआ़ वह हर प्रकार से दीन की हिमायत कर सकता है। इस जंग और जिहाद से हर्गिज़ यह मतलब नहीं कि तुम आतंकवादियों के समान हर जगह बिला वजह आदमियों को तंग करते फिरो और मुसलमान और काफ़िर के मामले में हमेशा मुसलमान ही का साथ दो अगर्चे वह नाहक़ पर हो। हमें हर्गिज़ यह पसन्द नहीं है बल्कि............(आगे आयत का तर्जुमा)

११९. शाने नुज़ूल:- एक शख़्स ने किसी की आटे की बोरी चुरा कर एक यहूदी के हाँ छुपा कर रख दी। जब लोगों में चोरी का चर्चा हुआ तो कुछ लोगों ने आटे के निशान से पहचाना कि यहाँ से आटा निकाल कर उस यहूदी के घर ले जाया गया है। उस यहूदी से पूछा गया तो उस ने चोर का नाम बता दिया। चोर के भाई-बन्दों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आ कर कहा कि इस इल्ज़ाम से मेरा भाई बदनाम हो रहा है आप लोगों को समझा दें कि उस का नाम न लें। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने भी उस के ज़ाहिरी हाल पर रहम खा कर चाहा कि लोगों को उस का नाम लेने से मना फ़रमा दें। मगर चूँकि चोरी उसी ही ने की थी, इस लिये उस के बारे में यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

اللهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا ۝ يَّسْتَخْفُوْنَ
مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللهِ وَهُوَ مَعَهُمْ
اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ الْقَوْلِ ؕ وَكَانَ
اللهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ۝ هٰاَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ جٰدَلْتُمْ
عَنْهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۟ فَمَنْ يُّجَادِلُ اللهَ
عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ۝
وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ
اللهَ يَجِدِ اللهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ وَمَنْ يَّكْسِبْ
اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ عَلٰى نَفْسِهٖ ؕ وَكَانَ اللهُ
عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓئَةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ

बेशक अल्लाह को दग़ाबाज़, बदकार हर्गिज़ नहीं भाते[१२०] १०८. (यह बदकार नहीं समझते हैं कि) लोगों से तो छुप सकते हैं लेकिन अल्लाह से नहीं छुप सकते (इस लिये कि) जब रात को नापसंद बातों के मश्वरे करते हैं तो वह (अपने अ़िल्म से) उन के साथ होता है। उन के तमाम आमाल क़ो अल्लाह ने घेर रखा है[१२१] १०९. भला तुम ने दुनिया में तो उन की तरफ़ से झगड़ा कर लिया[१२२] लेकिन क़ियामत के दिन उन की तरफ़ से कौन झगड़े गा, या कौन उन की कारसाज़ी {वकालत} करे गा (कोई नहीं) ११०. जो शख़्स बुरा काम करे या अपने ऊपर ज़ुल्म करे, फिर अल्लाह से माफ़ी माँगे तो अल्लाह से➲

يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓــًٔـا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ

बख़्शिश और मेहरबानी का हिस्सा अवश्य पाये गा १११. और जो कोई गुनाह करता है वह अपना ही बुरा करता है[१२३] (किसी को उस की ख़राबी नहीं पहुंचेगी क्योंकि) अल्लाह सब को जानता है और बड़ी हिक्मत वाला है ११२. और जो शख़्स (किसी प्रकार का छोटा-मोटा) गुनाह कर के किसी बेगुनाह के ज़िम्मा लगाता है (तो वह सख़्त सज़ा में गिरफ़्तार होगा क्यों कि) उस ने बड़ा बुहतान और खुला गुनाह अपने सर उठाया[१२४] ११३. (सच तो यह है कि) अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसी की रहमत तेरे शामिलहाल न होती तो उन में से एक जमाअ़त तुझे बहकाने का इरादा कर चुकी थी (कि किसी प्रकार से ग़लती में डाल दे) वास्तव में वह अपने आप को बहकाते हैं

....

१२०. 'ख़व्वान' यह मुबालग़ा है और इस से इशारा अत्इमा नामी शख़्स की तरफ़ है। अगर्चे उस ने ज़ाहिर में एक ख़ियानत की थी, मगर इन्कार करना और किसी जुर्म न करने वाले पर जुर्म का लगाना यह भी ख़ियानत है। इस के अ़लावा कुछ रिवायतों से यह भी साबित है कि वह शख़्स (अत्इमा) हाथ काटने की सज़ा से डर कर मुर्तद हो कर मक्का चला गया और फिर वहाँ भी किसी के घर में सेंध (नक़ब) लगाई उसी समय दीवार उस के ऊपर गिर पड़ी और वह दब कर मर गया, इस लिये उस को 'ख़व्वान-असीम' (दग़ा बाज़, बदकार) के अल्फ़ाज़ से याद किया गया। आगे उस की ख़ियानत के सबूत में फ़रमाया कि "वह बदकार लोगों से तो छुप सकते हैं लेकिन अल्लाह से नहीं छुप सकते"।

१२१. यानी अल्लाह का अ़िल्म हर स्थान पर हर समय उन को घेरे हुये है इस लिये पहले उसी से शर्म करनी चाहिये। चोरी करने वाले का नाम अत्इमा था, उस ने और उस के साथियों ने यह साज़िश (षड़यंत्र) रची कि झूठी क़समें खा कर चोरी का इल्ज़ाम यहूदी के सर डाल देंगे और स्वंय बच जायें गे। इस आयत से इसी ओर इशारा है।

१२२. इस आयत में ख़िताब (संबोधन) उस गरोह से है जो अत्इमा की सहायता में जथा बन्दी कर के दूसरे गरोह से झगड़ा करता था और अत्इमा नामी चोर को इल्ज़ाम से बचाना चाहता था। इस आयत में साबित हुआ कि मुसलमानों को हर्गिज़ ऐसा नहीं करना चाहिये कि अपनी ज़ात-पात और बिरादरी का होने के नाते किसी मुजरिम की तरफ़दारी करें और साज़िश कर के जथाबन्दी कर लें, इस लिये कि दुनिया वाले न समझते हों मगर अल्लाह को तो मालूम है कि कौन वास्तव में मुजरिम है (तर्जुमान)

१२३. मस्अला:- आज-कल मय्यित का माल उस के रिश्तेदार मौलवी-मुल्लाओं और हाफ़िज़ों को दे देते हैं कि मय्यित के उमर भर के गुनाह तुम उठाओ और यह तुम्हें इसी लिये दिया जा रहा है और यह लोग ले भी लेते हैं, यह तरीक़ा ग़लत है। वारिसों को इख़्तियार है कि चाहें तो माल वापस ले लें (मुवाहिब)

१२४. इमाम इब्ने जरीर फ़रमाते हैं कि 'ख़तीअतुहू' (गुनाह कर के) में जान-बूझ कर और अन्जाने में दोनों ही शामिल हैं। 'इस्म' से मुराद वह गुनाह है जो जान बूझ कर किया जाये। कुछ उलमा का कहना है कि 'ख़ता' से मुराद वह गुनाह है जो अल्लाह के तअ़ल्लुक़ से किया जाये और 'इस्म' से वह गुनाह जो बन्दों के तअ़ल्लुक़ से किया जाये। लेकिन सही क़ौल यह है कि 'ख़ता' से छोटे गुनाह और 'इस्म' से कबीरा गुनाह मुराद हैं (इब्ने कसीर)

اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ؕ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ

और तुझे कुछ भी हानि नहीं पहुंचा सकेंगे[१२५] (तू भला उन के बहकाने से कैसे भूल जायेगा)

عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ
تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿١١٣﴾ لَا خَيْرَ
فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ
مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۢ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ
ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا
عَظِيْمًا ﴿١١٤﴾ وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا
تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ
نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿١١٥﴾
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ
ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ
ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿١١٦﴾ اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اِنٰثًا ۚ
وَاِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ﴿١١٧﴾ لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ

क्यों कि तुझ पर अल्लाह ने किताब और हिक्मत (दानाई) की बातें उतारी हैं और तुझे वह बातें सिखाई हैं जो तू नहीं जानता था[१२६] और (इस के अ़लावा) तुझ पर अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल है (फिर भला यह बेवकूफ़ लोग क्या नुक्सान पहुंचा सकते हैं) ११४ उन की बहुत सी काना फूसियों में भलाई नहीं, हाँ जो शख़्स दूसरे को सदक़ा, या नेक काम, या लोगों में इस्लाह का हुक्म करे[१२७] (उस की काना-फूसी अल्बत्ता बेहतर है) और जो कोई यह काम अल्लाह की मर्ज़ी प्राप्त करने के लिये करता है, हम उस को बहुत बड़ा अज्र दें गे[१२८] ११५. और जो शख़्स हिदायत के मालूम होने के बाद रसूल की अवज्ञा करेगा और मोमिनों के ख़िलाफ़ राह चलेगा,[१२९] तो जिस तरफ़ उस ने रुख़ किया हम उसी ओर उस को फेर दें गे और उस को जहन्नम में दाख़िल करेंगे जो बहुत बुरी जगह है, ११६. (उस रोज़ का क़ानून यह है कि) अल्लाह शिर्क को हर्गिज़ नहीं बख़्शेगा और इस के अ़लावा जो चाहे बख़्श देगा[१३०] (इस लिये कि) जो कोई अल्लाह के साथ शिर्क करता है वह तो बड़ी (ही) दूर की गुमराही में जा पड़ता है[१३१] ११७. (दिखो तो क्या न्याय की बात है कि) अल्लाह के अ़लावा औ़रतों को पुकारते हैं और (वास्तव में यह लोग) शैतान मर्दूद को पुकारते हैं[१३२] ११८. जिस पर अल्लाह ने लानत की है

....

१२५. यह संबोधन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से है। रहमत इस प्रकार है कि आप को अत्इमा मुजरिम की तरफ़ से झगड़े और झन्झट से सुरक्षित रखा, हालाँकि अत्इमा की क़ौम के एक गिरोह ने यह इरादा कर लिया था कि आप को सच्चा हुक्म देने से भटका दें (मुवाहिब)

१२६. 'जो तू नहीं जानता था' इस से मुराद शरीअ़त के आदेश, या आने वाले दिनों की ख़बरें, या मुनाफ़िक़ों के दिल की बातें हैं (वहीदी)

१२७. अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में मुसलमानों को बतलाया कि राय-मश्वरे के लिये वह सभा आयोजित करें और उन में तीन प्रकार के काम किये जायें (१) सदक़ा-ख़ैरात इकट्ठी कर के यतीमों, मुहताजों और दीन का अ़िल्म हासिल करने वालों की मदद की जाये (२) अपने काम, अच्छे पेशे और काम में आने वाली नहरों में सुधार लाया जाये (३) मुसलमानों के दर्मियान उस से सुधार लाने और उन को एक प्लेटफ़ार्म पर लाने की कोशिश की जाये (?)

१२८. शाने-नुज़ूल:- जिस चोर का ऊपर बयान हुआ है उस पर चोरी का इलज़ाम साबित हो गया तो भाग कर मक्का के मुश्रिकों से जा मिला और दीने इस्लाम से फिर गया, उस के बारे में यह आयत नाज़िल हुयी। मेरे ख़याल में ऐसे लोगों को उन के जुर्म और इस्लाम से फिर जाने की सज़ा उस समय दी जाये गी जब कि वह अड़ा रहे, लेकिन

➲अगर तौबा कर के मुसलमान हो जाये तो सब कुछ माफ़ है। चुनान्चे सूरः नूर की आयत न०.५ में इसी बात की तरफ़ इशारा है (सनाई)

१२९. 'मोमिन' से सहाबा और नेक लोग मुराद हैं। उन के ज़माना में तक़्लीद शख़्सी और आज-कल के फ़िर्क़ों का नाम निशान न था। हर कोई कुरआन व हदीस पर चलता था, चार सौ वर्ष तक ऐसे ही होता रहा। इस के बाद जिन लोगों ने सब बातों में एक ख़ास इमाम की तक़्लीद को अपने ऊपर लाज़िम कर लिया, उन्हों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मुख़ालिफ़त की और मोमिनों (सहाबा,ताबेअ़ीन) की राह छोड़ कर दूसरी राह पकड़ ली। इस आयत से जो लोग यह मतलब निकालते हैं कि अहले हदीस ने आ़म मुसलमानों का तरीक़ा छोड़ कर नया तरीक़ा निकाला है, ऐसे लोगों का कहना ग़लत है, वह आयत का अर्थ स्वंय ही नहीं समझते। आयत के आरंभ में तो यह कहते हैं कि नबी की सुन्नत के आशिक़ बन जाओ, तो उन का रास्ता ही सच्चे मुसलमानों का रास्ता है। कुछ लोगों ने इस आयत से 'इज्माअ़' का मफ़हूम निकाला है, हालाँकि इस से नहीं साबित होता है क्योंकि आयत में मुसलमानों के रास्ते के अ़लावा दूसरे रास्ते से मुराद कुफ़्र है, इस लिये अगर किसी दीन के आ़लिम ने हदीस की पैरवी कर के किसी मस्अला में अपने ज़माना के आ़लिमों और इमामों के ख़िलाफ़ अ़मल किया तो वह इस आयत में दाख़िल नहीं हो सकता, बल्कि उस को सवाब मिलेगा (वहीदी)

१३०. कुरआन की दूसरी आयत से साफ़ ज़ाहिर है कि मुश्रिक के लिये जन्नत हराम है। हदीस कुद्सी में आया है कि ऐ आदम की औलाद! अगर तेरे गुनाह आसमान और ज़मीन को भर देंगे, मगर शिर्क तेरे गुनाहों में शामिल न हो गा तो मैं इस बात पर कुदरत रखने वाला हूँ कि उन तमाम गुनाहों को माफ़ कर दूँ (तिर्मिज़ी) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह के साथ किसी को हर्गिज़ शरीक न करना अगर्चे तुम्हें क़त्ल कर दिया जाये या आग में जला दिया जाये (मिश्कात)

१३१. शाने-नुज़ूलः-.. कहा गया है कि यह आयत भी अत्इमा के बारे में नाज़िल हुयी है। वह चोरी का जुर्म साबित हो जाने के बाद भाग कर मक्का चला गया था और उसी शिर्क ही की हालत में मर गया। कुछ उलमा का कहना है कि एक बूढ़ा शख़्स नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आया और कहने लगा कि मैं गुनाहों में डूबा हुआ हूँ मगर मैं ने शिर्क नहीं किया है, अब मै अपने गुनाहों पर शर्मिन्दा हूँ और तौबा करता हूँ, आप मेरे बारे में क्या फ़रमाते हैं? उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुयी। हज़रत अ़ली रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुझे सारे कुरआन में यह आयत बहुत पसन्द है (वहीदी)

१३२. यहाँ पर अ़रब के मुश्रिकों के कुछ अ़क़ीदों का बयान है जो उन की जिहालत और बेवकूफ़ी का सबूत है। फिर आगे फ़रमाया कि शैतान का सब से बड़ा वसवसा यह है कि वह तरह-तरह के वादों, तमन्नाओं और ख़ाहिशों में डाले रखता है। इस प्रकार बन्दा झूठी आशाओं और ख़ाहिशों का गुलाम बन जाता है और अ़मल से कोरा हो जाता है। वह नजात के लिये अ़मल की कोशिश ही नहीं करता। (तर्जुमान)

और उस ने कह दिया था कि मैं तेरे बन्दों में से अवश्य एक हिस्सा अपना ताबेदार बना लूँ गा ११९. और उन को गुमराह करूँ गा और उन के जी में उम्मीदें डालूँ गा और उन को आदेश दूँगा तो वह जानवरों (चार पायों) के कान फाड़ें गे और उन को आदेश दूँ गा तो वह अल्लाह की पैदाइश को बदल दें गे[133]। और जिस ने➲

وَقَالَ لَأَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ﴿١١٨﴾
وَّلَأُضِلَّنَّهُمْ وَلَأُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ
اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ۚ
وَمَنْ يَّتَّخِذِ الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ
خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ﴿١١٩﴾ يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيْهِمْ ۚ وَمَا

يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢٠﴾ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ
جَهَنَّمُ ۡ وَلَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا ﴿١٢١﴾ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ
حَقًّا ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ﴿١٢٢﴾ لَيْسَ
بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَآ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ مَنْ يَّعْمَلْ
سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا
وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ

अल्लाह को छोड़ कर शैतान को अपना मित्र बनाया उस ने खुला टूटा (नुक़सान) पाया १२०. (सुनो!) शैतान (तो ऐसा मक्कार है कि यूँही) उन को वादे देता है और उम्मीदें दिलाता है (कि फ़लाँ क़ब्र की मन्नत मानो तो तुम्हारा काम हो जाये) और (वास्तव में उन को) झूठी उम्मीदें दिलाता है[१३४] १२१. इन्हीं लोगों का ठिकाना जहन्नम है और उस से निकलने की राह न पायेंगे १२२. और जो लोग ईमान लाये और अच्छे काम किये उन को हम ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे, जिन के नीचे नह्‌रें बहती हों गी, जिन में सदा रहें गे। अल्लाह का वादा सच्चा है। (बताओ तो) अल्लाह से ज़्यादा किस की बात सच्ची है? १२३. (सुनो! नजात का दारोमदार) न तो तुम्हारी ख़ाहिशों पर है और न ही अहले किताब की मर्ज़ी पर है। जो कोई बुरा काम करे गा उस की सज़ा पायेगा और अल्लाह को छोड़ कर किसी को अपना हिमायती और सहायक न पाये गा[१३५] १२४. और (ऐसे ही) जो शख़्स पुरुष हो या महिला, मुसलमान हो कर नेक कार्य करें गे

....

१३३. इस से मालूम हुआ कि अल्लाह की बनाई हुयी चीज़ की हालत को बदलना बहुत बड़ा गुनाह है। जैसे मर्दों को ख़ोजा बनाने की रस्म जो पहले रूमियों ने आरंभ की थी और पूरी दुनिया में फैल गयी थी, इस आयत की रोशनी में वह शैतानी काम है। (तर्जुमान)

१३४. 'उन को झूटी तमन्नायें दिलाता है' कि दुनिया में मुरादें हासिल कर लो। और क़ब्रों से मुर्दों का जी उठना और अच्छे बुरे अ़मलों पर सवाब व अ़ज़ाब कुछ नहीं होता है। चुनान्चे काफ़िरों का ऐसा ही अ़क़ीदा था (मुवाहिब)

१३५. शाने नुज़ूलः- जब मुसलमानों और अहले-किताब ने आपस में फ़ख्र किया। यानी अहले-किताब ने कहा कि हमारा नबी तुम्हारे नबी से पहले और हमारी किताब भी पहले नाज़िल हुयी है, इस लिये हम बेहतर हैं। मुसलमानों ने कहा कि अन्तिम सन्देष्टा मुहम्मदुर्रसलूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और उन पर उतारी गयी किताब सब से बेहतर है, इस लिये हम सब से अफ़ज़ल और बेहतर उम्मत हैं, तब यह आयत नाज़िल हुयी (इब्ने जरीर)

जमहूर उलमा का कहना है कि यह आयत आ़म है। मुसलमानों और काफ़िरों सब के हक़ में है। इस आयत के नाज़िल होने पर मारे डर के हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० की कमर झुक गयी थी। ऐसे ही और दूसरे सहाबा भी मारे ख़ौफ़ के काँप उठते थे।

اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ
وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿١٢٤﴾ وَمَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ

सो वे जन्नत में दाख़िल हों गे और उन पर ज़र्रा भर भी ज़ुल्म न हो गा[१३६] १२५. क्या कोई महज़ उस से भी अच्छा दीनदार है जिस ने

اَسۡلَمَ وَجۡهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحۡسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبۡرٰهِيۡمَ حَنِيۡفًا ؕ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبۡرٰهِيۡمَ خَلِيۡلًا ﴿۱۲۵﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَىۡءٍ مُّحِيۡطًا ﴿۱۲۶﴾ وَيَسۡتَفۡتُوۡنَكَ فِى النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفۡتِيۡكُمۡ فِيۡهِنَّ ۙ وَمَا يُتۡلٰى عَلَيۡكُمۡ فِى الۡكِتٰبِ فِىۡ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِىۡ لَا تُؤۡتُوۡنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرۡغَبُوۡنَ اَنۡ تَنۡكِحُوۡهُنَّ وَالۡمُسۡتَضۡعَفِيۡنَ مِنَ الۡوِلۡدَانِ ۙ وَاَنۡ تَقُوۡمُوۡا لِلۡيَتٰمٰى بِالۡقِسۡطِ ؕ وَمَا تَفۡعَلُوۡا مِنۡ خَيۡرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ

अपने आप को अल्लाह का ताबे दार बनाया और नेक काम भी करता रहा और इब्राहीम हनीफ़ के रास्ता पर चला[१३७]। और (कामिल इख़्लास की वजह से) इब्राहीम को अल्लाह ने अपना क़रीबी बन्दा बनाया था[१३८] १२६. और जो कुछ आसमानों और ज़मीनों में है सब अल्लाह ही का है। और अल्लाह सब को घेरे हुये है[१३९] १२७. और महिलाओं के बारे में तुझ से प्रश्न करते हैं[१४०]। तू कह दे कि अल्लाह तुझ को महिलाओं के बारे में आदेश देता है (और वह आदेश) वही है जो तुम को किताब (कुरआन) में उन अनाथ लड़कियों के हक़ में सुनाया जाता है जिन को तुम पूरा मुक़र्रर हक़ नहीं देते और (सुन्दरता और मालदारी की वजह से) उन से निकाह करना चाहते हो। और ज़ओफ़ बच्चों के लिये सुनाया जाता है और (निचोड़ सब का) यह कि यतीमों के साथ न्याय का मामला करो। और जो कुछ तुम भलाई करोगे अल्लाह को सब मालूम है १२८. (पति-पत्नी हमेशा सुलह से निबाह करें) और अगर कोई औरत अपने पति की बद मिज़ाजी या बे पर्वाही मालूम करे तो उन को आपस में सुलह कर लेने में गुनाह नहीं

....

१३६. हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत हैं कि जब यह आयत नाज़िल हुयी तो मुसलमान बहुत रन्जीदा हुये तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दर्मियान की राह इख़्तियार करो और दीन पर मज़बूती के साथ जमे रहो। मुसलमान को जो मुसीबत पेश आती है वह उस की बुराइयों को मिटा देती है, यहाँ तक कि काँटा चुभने और ठोकर लगने पर भी अगर बन्दा सब्र करता है तो अल्लाह तआला उस पर भी उस के गुनाहों को मिटा देता है (मुस्लिम)

यहाँ पर 'सालिहात' से सभी फ़र्ज़ काम मुराद हैं जैसा कि इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है (मुवाहिब)

१३७. शाने-नुज़ूलः- रिवायतों से मालूम होता है कि एक मर्तबा मुसलमानों और अहले-किताब के दर्मियान बहस चल पड़ी और हर गिरोह अपने को बेहतर जताने लगा, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (इब्ने कसीर)

१३८. 'ख़लील' का अर्थ है "अल्लाह के साथ बहुत मुहब्बत रखने वाला"। और अगर मफ़ऊल (Object) माना जाये तो 'ख़लील' का अर्थ हो गा "निहायत महबूब बन्दा"। महबूब और प्यारा इस लिये कि उन्हों ने अल्लाह की इताअत और फ़रमांबर्दारी की और उस के हुक्म के अनुसार जमे रहे।

१३९. 'अल्लाह सब को घेरे हुये है' वह जिस बात को उचित समझता रहा है उसी को करने का हुक्म देता है, इस लिये तू उसी की तब्लीग़ में लगा रह। और बुरी रस्में, शिर्क, कुफ़्र से रोकता रह छोटी बच्चियों को क़त्ल कर देना और बड़ी लड़कियों को उन के माल से महरूम कर देना, यतीम लड़कियों को निकाह में ला कर उन पर अत्याचार करना वग़ैरह जैसी बुरी आदतों को मिटाने की कोशिश करता रह (सनाई)

१४०. शाने नुज़ूलः- हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि जाहिलिय्यत के ज़माना में यह दस्तूर था कि जब कोई शख़्स मर जाता और उस की यतीम लड़की रह जाती तो उस का वारिस उस के ऊपर चादर डाल देता

➲और अगर वह सुन्दर होती तो उस से निकाह कर लेता और अगर सुन्दर न होती, तो न स्वयं निकाह करता और न ही दूसरों को करने देता। और जब वह मर जाती तो उस के तर्का का वारिस बन जाता। अल्लाह तआ़ला ने इन कामों से मना करने के लिये यह आयत नाज़िल फ़रमाई (माख़ूज़)

بِهٖ عَلِيْمًا ﴿١٢٧﴾ وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا
نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا
بَيْنَهُمَا صُلْحًا ۭ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ۭ وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ
الشُّحَّ ۭ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١٢٨﴾ وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ
النِّسَاۗءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا
كَالْمُعَلَّقَةِ ۭ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ
كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٢٩﴾ وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا
مِّنْ سَعَتِهٖ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ﴿١٣٠﴾ وَلِلّٰهِ مَا
فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ۭ
وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ
وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا ﴿١٣١﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٣٢﴾ اِنْ يَّشَاْ

(जिस प्रकार भी संभव हो सुलह से रहें क्यों कि) सुलह बेहतर है। हर जान को अपने फ़ाइदे का लालच है[१४१]। और अगर तुम (आपस में) एहसान करोगे और बचोगे तो अल्लाह तुम्हारे सब कामों की ख़बर रखने वाला है (तुम्हारे कामों का पूरा बदला मिले गा और) १२९. बीवियों में तुम बराबरी हर्गिज़ न कर सको गे अगर्चे तुम ख़्वाहिश भी करो (चूँकि यह काम असंभव है) इस लिये (मना यह है कि) बिल्कुल एक ही तरफ़ न झुक जाओ कि दूसरी को लटकती हुयी छोड़ दो[१४२]। और अगर आपस में सुलह से रहो गे और (अत्याचार से) बचो गे तो अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है १३०. और अगर दोनों अलग हो जायें गे तो अल्लाह भी अपनी फ़राख़-दस्ती से उन को बेपर्वाह कर दे गा[१४३] अल्लाह बड़ा फ़राख़ी वाला, बड़ी हिक्मत वाला है १३१. जो कुछ आसमान और ज़मीन में है अल्लाह ही की मिल्क (संपत्ति) है। हम ने तुम से पहले किताब वालों (यहूद व नसारा) को और तुम को भी यही नसीहत कर रखी है कि अल्लाह से डरते रहो[१४४]। और अगर तुम नाशुक्री करो गे तो जो कुछ आसमान और ज़मीन में है सब अल्लाह का है और वह बड़ी ख़ूबियों वाला है १३२. (फिर सुन लो!) आसमान और ज़मीन की सब चीज़ें अल्लाह ही की हैं और अल्लाह ही बिगड़ी बनाने वाला काफ़ी है[१४५] १३३. (ऐ लोगो!) अगर वह चाहे तो तुम सब को (इस दुनिया से फ़ना की तरफ़) ले जाये और (तुम्हारे स्थान पर) औरों को ले आये

....

१४१. पहले बार-बार इस बात से रोका गया था कि बीवी के माल पर क़ब्ज़ा करने के लिये ज़बर्दस्ती न करो। यहाँ पर बतलाया कि अगर एक औरत शौहर को अपने से फिरा हुआ देखे और उसे प्रसन्न करने के लिये अपने हक़ में से कुछ छोड़ दे और पति-पत्नी आपस में मिलाप कर लें तो इस में कोई हरज नहीं। इस को ज़बर्दस्ती माल लेना नहीं कहा जाये गा, बल्कि इस का नाम आपस में राज़ी-खुशी से सुलह कर लेना है। (तर्जुमान)

'अन्फ़ुस्' में इस बात की तरफ़ इशारा है कि यह आ़दत (कंजूसी, बुख़्ल) हर-हर नफ़्स के साथ तमाम➲

➲लोगों में नहीं है, बल्कि अक्सर औरतें सुलह पर राज़ी होती हैं और अक्सर मर्द भी सुलह कर लेते हैं, चुनान्चे हज़रत सौदा रज़ि० को यह ख़ौफ़ हुआ कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुझे तलाक़ दे कर अपनी बीवी बनाने से महरूम कर दें गे, इस पर उन्हों ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! आप मुझे तलाक़ न दें और मेरी बारी को हज़रत आ़इशा को दे दें। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन की इस बात को मान लिया, इसपर यह आयत उतरी।

इस से यह मस्अला साबित हुआ कि जिस चीज़ पर दोनों सुलह-समझौता कर लें तो जायज़ है (तिर्मिज़ी)

१४२. शाने-नुज़ूल:- यह आयत हज़रत आ़इशा रज़ि० के बारे में नाज़िल हुयी। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन को और तमाम बीवियों से ज़्यादा चाहते थे। आप अपनी बीवियों के साथ इन्साफ़ से बारी तै करते थे फिर भी यह दुआ़ माँगा करते थे कि "ऐ अल्लाह! यह मेरा बारी मुक़र्रर करना ऐसी चीज़ है जो मेरे बस में है, इस लिये मुझ से उस चीज़ के बारे में पूछ-ताछ न करे जो मेरे इख़्तियार में नहीं है बल्कि तेरे इख़्तियार में है। (यानी दिल से चाहत) उलमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि मुहब्बत में कमी-ज़्यादती माफ़ है, मगर इतना लगाव किसी एक से हो जाये कि दूसरी पत्नी लटकी हुयी हो जाये, तो ऐसी मुहब्बत हराम है। इसी प्रकार खाना-ख़र्चा में भी कमी-ज़्यादती करना हराम है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिस के पास दो बीवियाँ हों और वह केवल एक ही से मेल-मुहब्बत रखे तो क़ियामत के दिन ऐसे हाल में आये गा कि उस का आधा ध ड़ गिरा हुआ हो गा (अहमद, अहले सुनन)

१४३. 'अल्लाह उन को बेपर्वाह कर देगा इस प्रकार कि औ़रत को दूसरा पति और मर्द को दूसरी पत्नी देगा। इस आयत में तलाक़ का बयान है जो अल्लाह को सब से ज़्यादा नापसन्द है फिर भी रहीम होने के नाते यह तसल्ली दी कि तलाक़ से परेशान न हों इसलिये कि औ़रत के लिए अपनी सौतन की ईर्ष्या सहना और साथ ही साथ अपने शौहर की नफ़रत भी झेलना, तलाक़ से ज़्यादा रंज और दुःख की बात है। (मुबाहिब)

१४४ इस का मतलब यह है कि तक़्वा और इख़्लास शुरू ही से शरीअ़त में शामिल रहा है।

१४५ यहां पर 'वलिल्लाहि मा फ़िस्समावाति....... को तीन बार दुहराया गया है और हर जगह इसी कलाम को दुहराने की एक ख़ास वजह है। पहली जगह दुहराने का अर्थ यह है कि वह अल्लाह दुनिया का मालिक है और वही तुम को हुक्म देता है इसलिये उस की अवज्ञा न करो और उस की आज्ञा पालन करो। दूसरी जगह फ़रमाया है कि वह दुनिया का मालिक और बेपर्वाह ज़ात है, इस लिये तुम केवल उसी से माँगो, उस का ख़ज़ाना कभी ख़ाली नहीं होता। तीसरे स्थान पर फ़रमाया कि वह दुनिया का मालिक काफ़ी और वकील है इस लिये उसी पर भरोसा करो और किसी दूसरे पर भरोसा न करो। (मआ़लिम)

(यक़ीन जानो कि) अल्लाह इस पर क़ुदरत रखने वाला है १३४. (ऐसे दुनिया के मालिक की मर्ज़ी के ख़िलाफ़) जो शख़्स केवल दुनिया ही का इनाम चाहता है (वह कैसी सख़्त ग़लती में है क्योंकि) अल्लाह के हाँ दुनियाँ और आख़िरत दोनों का इनाम मौजूद है[१४६]। और अल्लाह सुनता और देखता है[१४७] १३५. (इसलिये) ऐ मुसलमानो! ख़ुदा लगती इन्साफ़ से गवाही दिया करो अगर्चे (वह गवाही)➲

يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ﴿۱۳۳﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ﴿۱۳۴﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۫ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰۤى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ

وَاِنۡ تَلۡوٗۤا اَوۡ تُعۡرِضُوۡا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ خَبِيۡرًا ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اٰمِنُوۡا بِاللّٰهِ وَ رَسُوۡلِهٖ وَالۡكِتٰبِ الَّذِىۡ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوۡلِهٖ وَالۡكِتٰبِ الَّذِىۡۤ اَنۡزَلَ مِنۡ قَبۡلُ ؕ وَمَنۡ يَّكۡفُرۡ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓٮِٕكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ فَقَدۡ ضَلَّ ضَلٰلًاۢ بَعِيۡدًا ۝ اِنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا ثُمَّ كَفَرُوۡا ثُمَّ اٰمَنُوۡا ثُمَّ كَفَرُوۡا ثُمَّ ازۡدَادُوۡا كُفۡرًا لَّمۡ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغۡفِرَ لَهُمۡ

तुम्हारे लिये या तुम्हारे माँ-बाप के लिये, या तुम्हारे क़रीबियों के लिये नुक़्सान पहुंचाने वाली हो[१४८] (तो भी तुम सच्ची गवाही से न रुको) अगर कोई शख़्स मालदार हो या फ़क़ीर, अल्लाह उस का मुतवल्ली है इस लिये तुम न्याय करने में अपने नफ़्स की ख़ाहिश के पीछे न चलो और अगर ज़बान दबा कर (दो रुखी बातें) कहोगे (जिस से किसी हक़दार का नुक़्सान हो) या (बिल्कुल ही गवाही से) मुँह फेरोगे तो अल्लाह तुम्हारे कामों से आगाह है[१४९] १३६. ऐ मुसलमानो! अल्लाह और रसूल के मानने में मज़बूत रहो और जो किताब अल्लाह ने अपने रसूल (मुहम्मद) पर और उस से पहले उतारी है उन के मानने में भी साबित क़दम रहो[१५०]। और जो कोई अल्लाह का, या उस के फ़रिश्तों का, या उस की किताबों का, या उस के रसूलों का, या क़ियामत के दिन का इन्कार करे गा वह (सीधी राह से) बड़ी दूर भटक जाये गा १३७. जो लोग ईमान ला कर फिर काफ़िर हुये, फिर ईमान लाये, फिर इन्कारी हुये, फिर दिन-दिन कुफ़्र में बढ़ते गये अल्लाह उन को हर्गिज़ न बख़्शे गा

....

१४६. 'दुनिया और आख़िरत का इनाम मौजूद है' फिर क्यों बन्दा उन दोनों में से जो निहायत ज़लील है उसे तलब करता है और क्यों नहीं सब से अच्छे को चाहता है? और अगर सब से अच्छा (आख़िरत का इनाम) चाहता है तो अल्लाह से इख़्लास रखे इस लिये कि यह चीज़ अल्लाह के पास के अलावा और कहीं नहीं मिले गी (मुवाहिब)

१४७. इस लिये ऐ मुसलमानों! तुम भी अगर दीन व दुनिया का इनाम चाहते हो तो इस के लिये ज़रूरी है कि तुम्हारे दीन व दुनिया दोनों ज़बर्दस्त हों, किसी प्रकार की उन के अन्दर कमज़ोरी न हो। क्यों कि तौहीद के बाद सब से ज़्यादा ताकीद मामलात के बारे में की गयी है। न केवल अपने मामले में बल्कि किसी के भी मामले में अगर गवाह हो तो हक़ बात की गवाही दिया करो (सनाई) इस आयत के तअल्लुक़ से वह पाक शिक्षा दी गयी है जिस की वजह से बेहतरीन दीवानी क़ानून बनाये गये हैं। आज तमाम दुनिया के दीवानी दफ़ात में अक्सर दीने-इस्लाम ही की झलक नज़र आये गी।

१४८. 'लिलाह' का तअल्लुक़ कुछ उलमा के नज़दीक 'शुहदा' से है और कुछ उलमा का कहना है कि 'क़व्वामीन' से भी है और यही दुरुस्त भी है, क्योंकि सवाब निय्यत के ख़ालिस होने पर ही मिलेगा।

१४९. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का कहना है कि अल्लाह तआला ने ईमान वालों को हुक्म दिया है कि वह सही बात करें, अगर्चे सही बात कहने से उन के माता-पिता, औलाद या संबन्धियों को हानि ही क्यों न होता हो। हर हाल में सच कहना चाहिये किसी मालदार की तरफ़-दारी या किसी ग़रीब की नाजायज़ मदद नहीं करनी चाहिये। हक़ को छोड़ कर अत्याचार नहीं करना चाहिये। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि हम को तुम्हारे अमल की ख़बर है, अगर न्याय को छोड़ दोगे तो हम तुम को दन्ड देंगे (फ़वाइदे सलफ़िया)

१५०. हज़रत अब्दुल्लह बिन सलाम वग़ैरह ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि हम तो आप पर,

आप की किताब पर, तौरात और उज़ैर पर ईमान लाये और दूसरों के इन्कारी हैं, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी।

इस आयत का हुक्म आम है जिस में सहाबा और तमाम मुसलमान सभी शामिल हैं। इस आयत में मुसलमानों की हिम्मत बढ़ाई गयी है कि ईमान पर साबित क़दम रहो और मज़बूती से जमे रहो। इस आयत में ईमान को बढ़ाने का भी सन्देश है। इस आयत से यह भी मालूम हुआ कि ईमान घटता-बढ़ता है (राज़)

وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيلًا ﴿١٣٧﴾ بَشِّرِ الْمُنٰفِقِينَ بِأَنَّ لَهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٣٨﴾ الَّذِينَ يَتَّخِذُونَ الْكٰفِرِينَ أَوْلِيَآءَ
مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ أَيَبْتَغُونَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ
فَإِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيعًا ﴿١٣٩﴾ وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي
الْكِتٰبِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَ
يُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوضُوا فِي
حَدِيثٍ غَيْرِهٖٓ ۚ إِنَّكُمْ إِذًا مِّثْلُهُمْ ۗ إِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ
الْمُنٰفِقِينَ وَالْكٰفِرِينَ فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا ﴿١٤٠﴾ الَّذِينَ
يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ ۚ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوٓا
أَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۚ وَإِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِينَ نَصِيبٌ قَالُوٓا
أَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ فَاللّٰهُ
يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ وَلَنْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِينَ
عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا ﴿١٤١﴾ إِنَّ الْمُنٰفِقِينَ يُخٰدِعُونَ

और न उन को राह दिखाये गा[१५१] १३८. तू उन मुनाफ़िक़ों को (भी) सुना दे कि उन को सख़्त दर्द का अज़ाब पहुंचे गा[१५२] (इन को अगर पहचानना हो तो हम बतला देते हैं) १३९. (यह लोग वह हैं) जो मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को मुख़्लिस दोस्त बनाते हैं। क्या यह (नालायक़) उन काफ़िरों के हाँ से इ़ज़्ज़त चाहते हैं? इ़ज़्ज़त तो सारी अल्लाह के हाथ में है १४०. हालाँकि उस ने किताब में तुम पर यह हुक्म नाज़िल कर दिया है कि जब तुम अल्लाह के हुक्मों से इन्कार या मस्ख़री होती सुनो तो तुम उन के साथ मत बैठो[१५३] ज़ब तक वह किसी दूसरी बात में न लगें वर्ना उसी समय तुम भी उन जैसे हो जाओगे। अल्लाह क़ियामत के दिन मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों को जहन्नम में एक स्थान पर जमा करे गा[१५४] १४१. जो तुम्हारी घात में (लगे रहते हैं) हैं फिर अगर अल्लाह की तरफ़ से तुम को फ़तह पहुंचे तो कहते हैं (क्यों साहब?) क्या हम तुम्हारे साथ न थे? और अगर कभी काफ़िरों की चढ़त हो तो (काफ़िरों से) कहते हैं क्या हम ने (जंग में) तुम पर क़ाबू नहीं पाया था फिर (इस के बावजूद) तुम को मुसलमानों से नहीं बचाया[१५५]। पस अल्लाह ही क़ियामत के दिन तुम में फ़ैसला करेगा। और अल्लाह हर्गिज़ काफ़िरों को मोमिनों पर ग़लबा न देगा[१५६] (मगर शर्त यह है कि मोमिन, मोमिन हों) १४२. जो मुनाफ़िक़ अल्लाह से दावबाज़ी करते हैं

....

१५१. इमाम इब्ने कसीर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में ऐसे लोगों की सूचना दी है जो ईमान लाये लेकिन उस से फिर गये, फिर पुनःईमान लाये और फिर मुर्तद हो गये, फिर अपनी गुमराही पर जमे रहे, फिर उसी को बढ़ाते गये यहाँ तक कि मर गये तो ऐसे लोगों में से किसी शख़्स की तौबा उस की मौत के बाद क़ुबूल नहीं होगी और न ही अल्लाह उस को बख़्शे गा और न ही उस के लिये और कोई राह है।

हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन यज़ीद से रिवायत है कि ऐसे लोग मुनाफ़िक़ थे इस लिये कि दो बार ईमान लाये➲

➲और दोनों बार कुफ़्र किया, फिर कुफ़्र की हालत में मरने से उन के कुफ़्र में और ज़्यादती हुयी (तल्ख़ीस)
१५२. यह आयत बतला रही है कि पहली आयत उन्हीं मुनाफ़िक़ों के हक़ में उतरी है, क्योंकि वह ज़ाहिर में तो ईमान लाये और अन्दर से बार-बार काफ़िर हुये, फिर मुनाफ़िक़त पर अड़े रह कर उस को और बढ़ा दिया। यहाँ पर 'बशारत' का शब्द मुनाफ़िक़ों को ज़लील करने के लिये इस्तेमाल किया है और 'अज़ाबे अलीम' से मुराद जहन्नम है।
१५३. इस आयत से साबित होता है कि जो शख़्स कुफ़्फ़ार की मज्लिसों में बैठ कर दीन के ख़िलाफ़ उन की बातें खुशी से सुनता है और उन के साथ मेल-जोल रखता है वह भी उन के बराबर है। इस्लाम के किसी भी रुक्न का मज़ाक़ उड़ाना कुफ़्र है और ऐसे लोगों के दर्मियान बैठना, उन की बातें सुनना अपने आप को काफ़िर बनाना है। बिद्अ़ती लोगों की मज्लिस, फ़ल्सफ़ा और किताब व सुन्नत के ख़िलाफ़ किताबें वग़ैरह सब का यही हुक्म है।
१५४. फ़ाइदा:- इस से मालूम हुआ कि जो शख़्स किसी मज्लिस में अपने दीन व मज़हब के ख़िलाफ़ बातें सुने और फिर उन के बीच में बैठा सुनता रहे (अगर्चे वह कुछ न कहे) तो वह मुनाफ़िक़ है।(मुवज़्ज़िहुल फ़ुरक़ान) यह बेदीनों का पुराना दस्तूर है कि वह नबिय्यों और उन की बातों का मज़ाक़ उड़ाया करते हैं। आज-कल ऐसे बेदीन ज़्यादा तर वह लोग हैं जो अपने आप को मुहज़्ज़ब (**Civilized**) होने का दावा करते हैं और अपने आप को खुले दिमाग़ वाला समझते हैं। इन लोगों का हाल यह है कि मुसलमान कहलाने के बावजूद इस्लाम के अहकाम में कमी करते हैं और नमाज़, रोज़ा, हज्ज, ज़कात को बेकार समझते हैं, इस्लामी पहनावा पहनने और इस्लामी सूरत बनाने से नफ़रत करते हैं, बल्कि इस्लाम के क़ानून में कमी तलाश करते हैं। ऐसे लोगों की सुहबत में बैठना और उन की मज्लिसों को रौनक़ बख़्शना अपना दीन और ईमान तबाह करना है।
१५५. इन आयतों में मुनाफ़िक़ के आमाल और उन की आ़दतें बताई गयीं हैं कि वह अलग-अलग रह कर घटनाओं पर नज़र रखते हैं। चूँकि उन के दिलों में ईमान तो होता नहीं है इस लिये वह मुसलमानों की कामयाबी पर विश्वास नहीं रखते। वह नमाज़ के लिये खड़े होंगे तो काहिली के साथ और ऐसा मालूम होगा कि गोया मारे-पीटे खड़े हो गये हैं। दिखावे के लिये थोड़ी-बहुत क़िरात जल्दी-जल्दी पढ़ लेंगे और नमाज़ पटक कर अलग हो जायेंगे। उन की नमाज़ में सुकून और दिल का लगाव नहीं हो गा। उन की सारी बातें ऐसी हैं गोया एक क़दम कुफ़्र में है और एक ईमान में और दोनों के दर्मियन तरद्दुद (शक) में खड़े हैं। वह न पूरी तरह कुफ़्र ही का साथ दे सकते हैं और न ही पूरी तरह ईमान का (तर्जुमान)
१५६. 'शर्त यह है कि मोमिन, मोमिन हों न कि मुनाफ़िक़ की तरह दो मुँह वाले और नाम के मुसलमान, जिन के बारे में प्रसिद्ध कवि उस्ताद मोमिन ख़ाँ मर्हूम कह गये हैं........उम्र तो सारी कटी इश्क़े बुताँ में मोमिन + आख़िरी उम्र में क्या ख़ाक मुसलमाँ हो गे (सनाई)

اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَإِذَا قَامُوٓا إِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوا
كُسَالٰى ۙ يُرَآءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللّٰهَ إِلَّا
قَلِيلًا ﴿١٤٢﴾ مُّذَبْذَبِينَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ لَآ إِلٰى هٰٓؤُلَآءِ
وَلَآ إِلٰى هٰٓؤُلَآءِ ۚ وَمَن يُضْلِلِ اللّٰهُ فَلَن تَجِدَ لَهُۥ
سَبِيلًا ﴿١٤٣﴾ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا
الْكٰفِرِينَ أَوْلِيَآءَ مِن دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ أَتُرِيدُونَ
أَن تَجْعَلُوا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِينًا ﴿١٤٤﴾ إِنَّ
الْمُنٰفِقِينَ فِى الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَن

वह उन को दन्ड दे गा[१५७] और जब वह नमाज़ पढ़ने को खड़े होते हैं तो सुस्त-सुस्त खड़े होते हैं केवल लोगों के दिखाने को और अल्लाह की याद तो बहुत ही कम करते हैं[१५८] १४३. इसी हाल में तरद्दुद में हैं, न इन की तरफ़ न उन की तरफ़ (केवल अपने मतलब की तरफ़) फिर जिस को अल्लाह ही भटका दे तो तू उस की नजात की राह न पाये गा १४४. मुसलमानों! मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को (मुख़्लिस) दोस्त न बनाओ। क्या तुम चाहते हो कि अल्लाह का खुला इल्ज़ाम अपने ज़िम्मा आप लगाओ[१५९] १४५. मुनाफ़िक़ लोग दोज़ख़ के निचले दर्जे➲

تَجِدَ لَهُمْ نَصِيرًا ۝ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا بِاللَّهِ وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ مَا يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَذَابِكُمْ إِنْ شَكَرْتُمْ وَآمَنْتُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ۝

में हों गे[१६०] और तू (ऐ मुख़ातब!) कोई उन का हिमायती न पाये गा[१६१] (जो उन को इस बड़ी बला से रिहाई दिला दे) १४६. हाँ, जिन्हों ने तौबा कर ली और अपने अ़मल दुरुस्त कर लिये और अल्लाह के दीन को मज़बूत पकड़ लिया और इख़्लास से अल्लाह की ग़िबादत करते रहे तो यह लोग (पक्के) मुसलमानों के साथ हों गे। और बहुत जल्द अल्लाह मोमिनों को बड़ा ही बदला दे गा १४७. अगर तुम शुक्र गुज़ारी करो और अल्लाह को मानो तो अल्लाह को तुम्हारे अ़ज़ाब से क्या मतलब है[१६२]। अल्लाह तो बड़ा ही क़द्र करने वाला, ग़िल्म वाला है[१६३]

....

१५७. हज़रत शाह रफ़ीउद्दीन रह० इस का तर्जुमा इस प्रकार करते हैं "और वह फ़रेब देने वाला है उन को" हसन रह० से रिवायत है कि क़ियामत के दिन हर मोमिन और मुनाफ़िक़ पर नूर डाला जाये गा जिस की रोशनी में चलें गे, यहाँ तक कि जब पुलसिरात के पास पहुंचेगे तो मुनाफ़िक़ों का नूर बुझ जायेगा और मोमिन अपने नूर के उजाले में पुलसिरात को पार कर जायें गे। बस यही अल्लाह का धोका देना है। इमाम सदी, मुजाहिद और सअ़ीद बिन जुबैर ने भी इसी तरह रिवायत किया है (मुवाहिब)

१५८. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "यह मुनाफ़िक़ की नमाज़ है" आप ने तीन मर्तबा फ़र्मा कर कहा कि मुनाफ़िक़ बैठा रहता है यहाँ तक कि जब सूरज डूबने लगता है तो वह खड़ा हो कर अ़स्र की चार ठोकरें मार लेता है। और नहीं याद करता उस में अल्लाह को मगर थोड़ा" (मालिक, मुस्लिम)

१५९. क़ुरआन पाक में जहाँ-जहाँ 'सुल्तान' शब्द आया है वहाँ "हुज्जत" और "दलील" मुराद है। (अबू हातिम)

१६०. दोज़ख़ के सात दर्जे हैं (१) जहन्नम (२) लज़ा (३) हु-तमा (४) सअ़ीर (५) सक़र (६) जहीम (७) हाविया। यह मुनाफ़िक़ सब से निचले दर्जे यानी "हाविया" में हों गे। वह दोज़ख़ की तह में आग के सन्दूकों में होंगे जो उन पर दहकते होंगे (इब्ने कसीर)

१६१. 'दर्क' का अर्थ है "गहराई, निहायत" जैसे कि दरिया की तह। इस की वजह यह है कि मुनाफ़िक़ जहन्नम की सब से नीचे की तह में हों गे, यानी सख़्त अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार होंगे। काफ़िर का अन्दर-बाहर दुश्मनी में बराबर है, उन से इस्लाम को इतना नुक़्सान नहीं है जितना इन मुनाफ़िक़ों से है। आप देखें कि आज कल बहुत से ऐसे ख़बीस भी मौजूद हैं जो अन्दर से तो काफ़िर और बेदीन हैं, मगर ज़ाहिर में इस्लाम का दम भरते हैं। इन से इस्लाम को क्या फ़ाइदा पहुंचता है? हज़ारों बिद्अ़तें इन्हीं की ईजाद की हुयी हैं, इधर-उधर की तावीलें कर के शरीअ़त में उलट-फेर करते रहते हैं (हक़्क़ानी)

१६२. अल्लाह को तुम्हारे अ़ज़ाब से कुछ मतलब नहीं है इस लिये कि जो करना चाहिये था वह तुम ने किया, फिर अ़ज़ाब क्यों कर हो गा। अ़ज़ाब तो सरकशी और अहकाम की मुख़ालिफ़त पर दिया जाता है। (सनाई)

१६३. यहाँ इस बात की तरफ़ इशारा है कि ऐसा नहीं है कि प्रसन्न हो कर सवाब देने लगता है और नाराज़ हो कर दन्ड देने लगता है, जैसा कि बुतों को पूजने वाले अपने देवी देवताओं के बारे में ख़याल रखते थे और अ़ीसाईयों में भी यह ख़याल घुस आया था। अ़ज़ाब-सवाब इन्सान के अच्छे-बुरे कामों का फल और परिणाम(नतीजा) है। अल्लाह ने हिक्मत की बुनियाद पर ऐसा ही क़ानून बना दिया है कि दुनिया की हर चीज़ की तरह इन्सान के हर अ़मल का भी एक नतीजा और बदला हो (तर्जुमानुल् क़ुरआन -हज़रत मौलाना अबुल् कलाम आज़ाद रहमतुल्लाह अ़लैहि)

★★★★★

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पारः लायुहिब्बुल्लाहु (6)

संक्षिप्त विषय सूची

ला युहिब्बुल्लाहु (6)

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ
ظُلِمَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ۝ اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا
اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا
قَدِيْرًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَ
يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ
نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ
يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ
حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ
اُولٰۗىِٕكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ
غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ يَسْـَٔــلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ
عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَاۗءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ
مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ

१४८. (किसी के हक में) बुरी बात का इज़हार करना अल्लाह को पसन्द नहीं हाँ, जिस पर ज़ुल्म हुआ हो[१६४]। (क्यों कि) अल्लाह तो सब कुछ सुनता और (हर एक का हाल) जानता है १४९. अगर ज़ाहिर तौर पर या छुप कर नेकी करो (और सुलूक से पेश आओ) या बुराई माफ़ कर दो[१६५] (तो अल्लाह भी तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दे गा, इस लिये कि) अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, बड़ी कुदरत वाला है। १५०. जो लोग अल्लाह से और उस के रसूलों से मुनकिर होते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उस के रसूलों के मानने में फ़र्क़ करें[१६६] और कहते हैं कि हम बाज़ को मानते हैं और बाज से इन्कारी है और चाहते हैं कि इस के बीच-बीच में राह निकालें (उन लोगों को सख़्त ज़िल्लत पहुंचे गी) १५१. यही लोग पक्के काफ़िर हैं (अगर्चे यह अपने को अहले-किताब और मोमिन कहें) और उन्हीं काफ़िरों के लिये हम ने ज़िल्लत देने वाला अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है १५२. और जो लोग अल्लाह (की तौहीद को) और उस के सब रसूलों को मानते हैं और उन में से किसी रसूल (के मानने) में तफ़र्क़ा (पक्षपात, भेदभाव) नहीं करते, बहुत जल्द अल्लाह उन के कामों के अज्र (बदला) उन को दे गा[१६७] और (उन के सब गुनाह माफ़ कर दे गा इस लिये कि) अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है १५३. अहले-किताब (यहूदी) तुझ से प्रश्न करते हैं[१६८] कि (उन के सामने) आकाश से पूरी किताब (एक ही बार) उतार दे[१६९] तो मूसा से उन्हों ने इस से भी बढ़ कर प्रश्न किया था, कहने लगे (ऐ मूसा!) अल्लाह हम को खुल्लम-खुल्ला सामने दिखा

....

१६४. इस आयत में बताया गया है कि अगर किसी इन्सान के अन्दर कोई बुराई हो तो उसे लोगों में फैलाना और ➲

पुकारते फिरना जायज़ नहीं। हाँ, अगर किसी पर अत्याचार हो रहा हो तो वह ज़ालिम के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द कर सकता है। नबी क़रीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अगर दो आदमी आपस में गाली-गुलूच करते हैं तो गुनाह उस पर हो गा जिस ने पहल की है जब तक मज़्लूम हद से आगे न बढ़े। (वर्ना मज़्लूम भी ज़ालिम के साथ गुनाहगार होगा) (मुस्लिम) एक दूसरी हदीस में है कि जिस ने ज़ालिम के हक़ में बद्दुआ़ की तो उस ने बदला ले लिया (तिर्मिज़ी)

१६५. सहीह हदीस में रिवायत है कि ज़कात देने से माल कम नहीं होता और माफ़ करने से बन्दे की इ़ज़्ज़त अल्लाह बढ़ाता है। और जो अल्लाह के लिये झुकता है तो अल्लाह उस को बुलन्द करता है।

१६६. इमाम क़तादा ने फ़रमाया कि यह लोग यहूद और नसारा हैं। यहूदी, तौरात और मूसा अ़लै० पर ईमान लाये और ई़सा अ़लै० और इन्जील पर ईमान लाने से इन्कार किया। और नसारा ने ई़सा अ़लै० और इन्जील पर ईमान लाने के बावजूद मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और क़ुरआन को मानने से इन्कार किया। इस प्रकार दोनों ने यहूदियत और नसरानियत की बुनियाद डाली। हालाँकि यह दोनों ही बिद्अ़त हैं। अस्ल इस्लाम को तो छोड़ ही दिया, जिस को फैलाने के लिए अल्लाह ने तमाम रसूलों को भेजा था (मुवाहिब)

१६७. इस से मुराद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के उम्मती हैं जो अल्लाह और समस्त सन्देष्टाओं पर ईमान रखते हैं और इस बात पर यक़ीन रखते हैं कि अल्लाह की सच्चाई (दीन) एक ही है और तमाम ही सन्देष्टा उसी एक सच्चाई (दीन) की दावत देते थे। लोगों में दीन के बारे में सब से बड़ी गुमराही यही थी (और आज भी है) कि वह इस हक़ीक़त को भूल गये और एक दूसरे को झुठलाने लगे (तल्ख़ीस)

१६८. शाने नुज़ूल:- यहूदियों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा कि जिस प्रकार मूसा पर लिखी हुयी किताब तौरात नाज़िल हुयी थी अगर आप पर भी इसी प्रकार लिखी-लिखाई किताब पूरी की पूरी नाज़िल हो तब हम आप पर ईमान लायें गे। चूँकि यह प्रश्न केवल कठहुज्जती और शरारत की वजह से था इस लिये उन के रद्द में यह आयतें नाज़िल हुयीं।

१६९. आसमान से पूरी किताब एक बार में उतार देना यह हिक्मत के ख़िलाफ़ है। पहली बात तो यह कि किसी क़ौम या उम्मत के भी सामने कोई किताब नहीं उतरी, अगर ऐसा होता तो फिर ग़ैब पर ईमान लाने का कोई तुक ही नहीं। दूसरे यह कि क़ुरआन के मुख़ालिफ़ हर प्रकार के लोग हैं, कुछ खुल कर क़ुरआन की मुखालिफ़त कर रहे हैं और कुछ अन्दर ही अन्दर नुक़्सान पहुंचा रहे हैं जैसे मुनाफ़िक़ लोग, इन की शरारतों से पैग़म्बरों को ख़बर देनी थी जो क़ुरआन के ज़रीआ़ से अपने-अपने समय पर दी जाती है, इस लिये यहूद का प्रश्न हिक्मत के ख़िलाफ़ था

الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ
مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا
مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ۝ وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ
بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا
لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا
غَلِيْظًا ۝ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا

(चूँकि उन का यह प्रश्न बहुत ही बेजा था इस लिये) उन के ज़ुल्म की वजह से उन पर बिजुली गिरी (जिस से वह मर गये[१७०]) फिर खुली-खुली निशानियाँ आने के बाद भी उन्हों ने बछड़े को माबूद(पूज्य) बना लिया (और उस बेजान को पूजने लगे[१७१]) फिर हम ने यह भी माफ़ कर दिया और (उन के पैग़ंबर) मूसा को (दुश्मनों पर) ग़लबा ज़ाहिर कर दिया १५४. और हम ने उन पर वादा लेने के लिये तूर पहाड़ को खड़ा कर

غُلْفٌ ؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ
اِلَّا قَلِيْلًا ۪﴿۱۵۵﴾ وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ
بُهْتَانًا عَظِيْمًا ﴿۱۵۶﴾ۙ وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ
عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا
صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا
فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ؕ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا

दिया[१७२] और हम ने उन से कहा कि (इस फ़तह की हुयी बस्ती के) दर्वाज़ा में सज्दा करते हुये दाख़िल हो जाओ[१७३] और यह भी कहा था कि हफ़्ता में ज़्यादती न करो[१७४] और इस पर हम ने उन से बड़ा मज़बूत वादा लिया था (मगर उन्हों ने एक का भी ख़याल न रखा) १५५. फिर उन के अ़हद तोड़ने की वजह से और अल्लाह की आयतों के इन्कार और नबिय्यों को नाहक़ क़त्ल करने की वजह से और उन के इस कहने की वजह से कि हमारे दिल सुरक्षित हैं (हालाँकि यह बात नहीं है) बल्कि अल्लाह ने उन के कुफ़्र की वजह से उन पर मुहर कर दी है इस लिये (नसीहत को) बहुत कम मानते हैं १५६. और उन के कुफ़्र और मरयम पर बड़ा बुहतान बाँधने की वजह से[१७५] १५७. और उन की इस ग़लत गोई की वजह से कि हम ने ई़सा मसीह बिन मरयम अल्लाह के रसूल को क़त्ल कर डाला, हालाँकि न तो उन्हों ने उस को मारा और न सूली दी हाँ, उन को एक प्रकार का भ्रम बेशक हुआ और जो लोग इस में (हमारे बताये हुये के) मुख़ालिफ़ हैं सख़्त ग़लती में हैं (हक़ीक़ी तौर पर उन को ई़ल्म नही)

....

१७०. उन का जुल्म यह था कि बेजा प्रश्न किया। और किसी चीज़ को उस के स्थान से टालना और हटाना यही जुल्म है। इस लिये शिर्क को "बड़ा जुल्म" कहा गया है। क्योंकि शिर्क में आदमी अल्लाह को उस के अकेले माबूद होने के स्थान से हटा देता है और साथ- साथ किसी और देवी-देवता या पीर को उसके स्थान से बढ़ा कर माबूद बना देता है, तो यह भी जुल्म हुआ। उन की लानत और सरकशी का यह हाल है कि वह बेअदबी और गुस्ताख़ी में चरम् सीमा पर पहुंचे हुये हैं। कुछ बिद्अ़ती और अल्लाह के इन्कारी इस से यह दलील पकड़ते हैं कि अल्लाह को नहीं देख सकते। इन लोगों का इस आयत से दलील पकड़ना ग़लत है। सच्ची बात यह है कि इन लोगों ने सरकशी की बुनियाद पर अल्लाह को देखने का मुतालबा किया, जिस की उन को सज़ा मिली। अल्लाह को देखना असंभव नहीं है इस लिये कि क़ियामत के दिन अल्लाह को ईमान वाले देखें गे।

१७१. यानी सामरी नामक व्यक्ति ने जिस बछड़े की शक्ल बनाई थी उसी की पूजा-पाट करने लगे। हज़रत मूसा अ़लै० ने इस बुरे काम से तौबा करने और उस के कुबूल होने के वास्ते उन्हें आदेश दिया कि एक दूसरे को क़त्ल करें। हज़रत मूसा ने क़त्ल का हुक्म अल्लाह की इजाज़त से दिया था। उन्हों ने हज़रत मूसा के हुक्म को मान कर एक दूसरे को क़त्ल किया तो उन की तौबा कुबूल हो गयी। एक दूसरे को क़त्ल करने का मतलब यह है कि जिन लोगों ने बछड़े क़ो पूजने से अपने-आप को बचा कर रखा था, वे लोग ऐसे लोगों को क़त्ल करें जिन्हों ने बछड़े की पूजा की थी।

'बय्यिनात' से मुराद हज़रत मूसा के चमत्कार थे जैसे, लाठी का सांप बन जाना, हथेली का चमकने लगना समुन्द्र का फट जाना, पत्थर से पानी के चश्मे बहने लगना आदि।

१७२. जब बनी इस्राईल को तौरात के अनुसार अ़मल करने का आदेश दिया गया तो उन्हों ने अ़मल करने से इन्कार कर दिया। इस पर अल्लाह तअ़ाला ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया, उन्हों ने शाम मुल्क के पहाड़ों में से एक पहाड़ को जड़ से उखाड़ कर उन के सरों के ऊपर लटका दिया। वह पहाड़ तीन मील लम्बा था और बनी इस्राईल भी उतने

➲ही लम्बे-चौड़े क्षेत्र में आबाद थे। उन से कहा गया कि अगर तौरात पर अ़मल करते हो तो ठीक, वर्ना इस पहाड़ को तुम्हारे ऊपर पटक दिया जाये गा और सब हलाक हो जाओ गे। इस धमकी से बनी इस्राईल डर गये और तुरन्त सज्दे में गिर गये, तौबा की और भविष्य में तौरात पर अ़मल करने का वादा किया। अ़ल्लाह तआ़ला ने भी उन के ऊपर पहाड़ गिरने से रोक दिया (फ़वाइदे-सलफ़िय्या)

यह घटना तूर सैना पहाड़ से बहुत दूर कुल्ज़ुम समुन्द्र के तट पर घटी। यही वह स्थान है जहाँ मूसा अ़लै० ने इन को लेकर दरिया पार किया था और फ़िर्औन अपने लाव-लश्कर समेत उसी में डूब गया था। (मुवाहिब)

१७३. उन सरकशों ने इस सज्दे के हुक्म पर भी ढंग से अ़मल न किया, बल्कि उस बस्ती में चूतड़ों के बल घिसटते हुये दाख़िल हुये।

१७४. यह घटना हज़रत दावूद अ़लै० के काल में घटी। होता यूँ था कि समुन्द्र में सनीचर (शनिवार) ही को पानी चढ़ता था और उसी दिन मछलियाँ भी अधिक से अधिक दिखाई देती थीं और उसी दिन शिकार पर पाबन्दी भी थी, लेकिन उन्हों ने इस पाबन्दी की मुख़ालिफ़त कर के उसी दिन मछलियों का शिकार किया (मुवाहिब)

१७५. हज़रत मरयम अ़लै० पर आरोप लगाते हुये कहा कि उन्हों ने ज़िना (कुकर्म) कराया है और इसी कारण उन के पति यूसुफ़ नज्जार ने उन्हें छोड़ दिया है। उन में से कुछ लोगों का यह भी कहना था कि यूसुफ़ नज्जार ने उन के साथ ज़बर्दस्ती ज़िना किया था और हज़रत ई़सा उसी ज़िना के नतीजे में पैदा हुये हैं (वहीदी)

اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا ۝١٥٧ بَلْ رَّفَعَهُ اللَّهُ
إِلَيْهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝١٥٨ وَإِن مِّنْ أَهْلِ
الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ
يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ۝١٥٩ فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا
حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبَاتٍ أُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَن
سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا ۝١٦٠ وَأَخْذِهِمُ الرِّبَا وَقَدْ نُهُوا
عَنْهُ وَأَكْلِهِمْ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ۚ وَأَعْتَدْنَا
لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝١٦١ لَّٰكِنِ الرَّاسِخُونَ
فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ
إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلِكَ ۚ وَالْمُقِيمِينَ الصَّلَاةَ
وَالْمُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ أُولَٰئِكَ سَنُؤْتِيهِمْ أَجْرًا عَظِيمًا ۝١٦٢ إِنَّا أَوْحَيْنَا
إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَىٰ نُوحٍ وَالنَّبِيِّينَ مِن بَعْدِهِ ۚ

हाँ, अपने ख़याल की पैरवी में हैं, और उन्हों ने हर्गिज़ उस को क़त्ल नहीं किया[१७६] १५८. बल्कि अल्लाह ने उस को अपनी तरफ़ (ज़िन्दा) उठा लिया[१७७]। और अल्लाह बड़ा ज़बर्दस्त बड़ी हिक्मत वाला है १५९. उस के मरने से पहले-पहले सब अहले-किताब उस को (अल्लाह का रसूल) मान जायें गे और वह क़ियामत के दिन उन की गवाही दे गा १६०. पस (ख़ुलासा यह कि) यहूदियों के अत्याचार की वजह से और बहुतों को अल्लाह की राह से रोकने १६१. और ब्याज (सूद) लेने की वजह से हालाँकि इस से उन को मना किया गया था और लोगों का माल (हराम तरीक़े से) खाने की वजह से हम ने उन पर बहुत सी पाक वस्तुयें जो उन के लिये पहले से हलाल थीं, हराम कर दीं। (यह तो उन की दुनिया में सज़ा थी) और (क़ियामत के दिन) उन में से काफ़िरों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है १६२. अल्बत्ता उन में से (तौहीद को जानने वाले) पक्के उलमा[१७८] {विद्वान}➲

➲और आ़म ईमानदार तेरी तरफ़ उतारी हुयी किताब और तुझ से पहले उतारी हुयी (किताबों) को मानते हैं और (पाँचों वक़्त की जमात के साथ) नमाज़ पढ़ने वाले और ज़कात देने वाले और अल्लाह और पिछले दिन (क़ियामत) पर सच्चा ईमान रखने वाले। हम उन को बड़ा बदला दें गे १६३. (आश्चर्य की बात है कि तेरे रसूल होने के क्यों कर इन्कारी हैं हालाँकि) हम ने तेरी तरफ़ वह्यि भेजी जैसा कि नूह की तरफ़ और उस से पीछे और नबिय्यों की तरफ़

....

१७६. जो यहूदी हज़रत ई़सा अ़लै० के क़त्ल पर उतारू थे वह अच्छी तरह उन को पहचानते ही न थे। जब हज़रत ई़सा अ़लै० को इस बात का यक़ीन हो गया कि मैं क़त्ल कर दिया जाऊँ गा तो उन्हों ने अपने हवारियों (मुरीदों) से कहा कि तुम में से कौन इस बात पर तय्यार है कि अल्लाह उस को मेरी सूरत जैसा बना दे और वह मेरे स्थान पर सूली पर लटक जाये? इस पर एक नौजवान ने तीन मर्तबा हामी भरी तब वह हज़रत ई़सा अ़लै० की सूरत जैसा बन गया और यहूदियों ने उसे पकड़ कर सूली पर चढ़ा दिया और हज़रत ई़सा अ़लै० आसमान पर उठा लिये गये (इब्ने कसीर) बुख़ारी और मुस्लिम में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "क़सम है उस ज़ात की जिस के हाथ में मेरी जान है हज़रत ई़सा अ़लै० आख़िर ज़माना में आसमान से तुम्हारे दर्मियान नाज़िल हों गे.............."। एक और रिवायत में फ़रमायाः "वह मरने के बाद मेरी क़ब्र के क़रीब दफ़न किये जायें गे और वह एक क़ब्र से अबू बक्र और उमर के दर्मियान से उठें गे"।

हज़रत मसीह अ़लै० अभी भी ज़िन्दा हैं यह जमहूर उम्मत का अ़क़ीदा है। इस के विपरीत अ़क़ीदा रखना और हज़रत ई़सा अ़लै० को मुर्दा समझना कुरआन और हदीस को झुठलाना है।

१७७. अगर्चे इन्सान का ज़िन्दा आसमान पर चढ़ जाना देखने में तो आ़दत के ख़िलाफ़ और जाहिलों के निकट मुश्किल बल्कि असंभव है, मगर अल्लाह के नज़दीक ऐसे काम न तो कठिन हैं और न ही असंभव, क्योंकि वह बड़ी हिक्मत वाला हैं। बहुत से कार्य ऐसे हैं जो लोगों की नज़र में कठिन हैं, मगर अल्लाह ऐसी हिक्मत से उन को पूरा कर देता है कि बड़े-बड़े ज्ञानी चकित रह जाते हैं। हज़रत ई़सा अ़लै० का जीवित आकाश पर उठा लिया जाना भी लोगों की नज़र में बड़ा कठिन मालूम होता है, लेकिन अल्लाह ने इस काम को कर दिखाया और जब क़ियामत के क़रीब हज़रत मसीह अ़लै० दुनिया में आयें गे तो उन के मरने से पहले............ (आयत के अन्त तक) (सनाई)

हज़रत मसीह जीवित हैं और क़ियामत के क़रीब बड़ी सज-धज के साथ तशरीफ़ लायें गे। और अगर उन के आने का इन्कार किया जाये और उन को मुर्दा मान लिया जाये तो आयत न० १५९ को झुठलाना साबित होता है (हक़्क़ानी) हज़रत मर्यम की पाक-दामनी और हज़रत मसीह के सूली न चढ़ाये जाने और न ही क़त्ल किये जाने, बल्कि आसमान पर जीवित ही उठा लिये जाने के मुतअ़ल्लिक़ इन आयतों में स्पष्ट तौर पर बात ज़ाहिर कर दी गई है। लेकिन मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी यहूदियों की बोली बोलते हुये इन सब का इन्कार करता है (राज़)

१७८. 'रासिख़' पक्का सच्चा इ़ल्म रखने वाले उलमा जैसे, अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और सालबा बिन सई़द रज़ि० आदि जो यहूदी धर्म को तर्क कर के इस्लाम में दाख़िल हुये। 'मोमिनून' से मुराद मुहाजिर और अन्सार हैं। यह आयत के नाज़िल होने के एतबार से है, वर्ना "पक्का सच्चा इ़ल्म रखने वाले" में अल्लाह को जानने और उस के आदेशों पर अ़मल करने वाले हर युग के लोग मुराद हैं जो हर हाल में किताब व सुन्नत पर अ़मल करते हैं और उस से आगे नहीं बढ़ते हैं (मुवाहिब)

और इब्राहीम और इस्माई़ल और इस्हाक़ और याक़ूब और उस की औलाद (और ख़ास कर)➲

وَ الْاَسْبَاطِ وَ عِيْسٰى وَ اَيُّوْبَ وَ يُوْنُسَ وَ هٰرُوْنَ
وَ سُلَيْمٰنَ ۚ وَ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ۚ وَ رُسُلًا قَدْ
قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَ رُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ
عَلَيْكَ ؕ وَ كَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا ۚ رُسُلًا
مُّبَشِّرِيْنَ وَ مُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ
حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا
لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَاۤ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ
وَ الْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۚ
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ صَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ
ضَلُّوْا ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ۚ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ ظَلَمُوْا
لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَ لَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا ۙ
اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ وَ كَانَ

ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान की तरफ़ वह्यि भेजी थी, और दावूद को हम ने (पढ़ने के लिये) ज़बूर दी (इसी प्रकार तुझ को कुरआन दिया[१७९]) १६४. बहुत से रसूलों की हम ने तुम्हें ख़बर कर दी और बहुत से (अभी तक) तुझ को नहीं बतलाये[१८०]। और मूसा से अल्लाह ने (बिला वास्ता) बातें कीं[१८१] १६५. (हमेशा) हम रसूल भेजते रहे जो शुभ सूचना सुनाते और अ़ज़ाब से डराते ताकि रसूलों के आने के बाद लोगों का अल्लाह पर कोई उज़्र बाक़ी न रहे। और अल्लाह बड़ा ग़ालिब[१८२] हिक्मत वाला है[१८३]। १६६. (और अगर तुझ को अल्लाह का रसूल नहीं मानते तो न मानें) अल्लाह तो तेरी तरफ़ उतारी हुयी किताब की गवाही दे रहा है[१८४] कि उसी अल्लाह ने उस को अपने ज़िल्म के साथ नाज़िल किया[१८५] और फ़रिश्ते भी गवाही दे रहे हैं। और अल्लाह ही की गवाही काफ़ी है। १६७. जो लोग काफ़िर हैं और लोगों को अल्लाह की राह से रोकते हैं (अ़रब के मुशरिक हों या अहले-किताब) वह बहुत सख़्त गुमराह हैं १६८. बेशक जो लोग काफ़िर हैं और (लोगों पर गुमराह करने की वजह से) ज़ुल्म कर रहे हैं अल्लाह उन को हर्गिज़ न बख़्शे गा और न (उन को नजात की) राह सुझायेगा १६९. हाँ, जहन्नम की राह अवश्य उन को दिखायेगा जिस में वह हमेशा-हमेशा रहें गे[१८६]

....

१७९. ख़ुलासा यह है कि हमेशा से हम मख़्लूक़ की हिदायत के लिये नबिय्यों को भेजते रहे (सनाई)

१८०. अ़रब में कुल पाँच पैग़म्बर हुये हैं (१) हज़रत सालेह अ़लै० (२) हज़रत हूद अ़लै० (३) हज़रत इस्माईल अ़लै० (४) हज़रत शुऐ़ब अ़लै० (५) मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। 'असबात' यह 'सिब्त' का बहुवचन है, मुराद हज़रत याक़ूब अ़लै० की औलाद हैं। उन के कुल बारह लड़के थे जिन में हज़रत यूसुफ़ अ़लै० तो पैग़म्बर हैं और दूसरों के पैग़म्बर होने में इख़्तिलाफ़ है। एक रिवायत से मालूम होता है कि एक हज़ार पैग़म्बर दुनिया में आये और एक दूसरी रिवायत में एक लाख चौबीस हज़ार भी हैं, लेकिन नबिय्यों के आने के तअ़ल्लुक़ से जितनी भी हदीसें आयी हैं वह सब की सब ज़ईफ़ हैं, सही मात्रा का ज्ञान केवल अल्लाह ही को है। हमारे लिये बस इतना मान लेना काफ़ी है कि अल्लाह ने जितने भी सन्देष्टता भेजे हैं हम उन पर ईमान लाते हैं और उन को सच्चा रसूल व नबी मानते और जानते हैं (सलफ़िय्या) यह बात याद रहे कि कुरआन मजीद में केवल २५ नबिय्यों और रसूलों का ज़िक्र उन के नाम के साथ आया है।

१८१. यानी स्वयं अल्लाह ने कलाम किया और मूसा अ़लै० ने सुना। यहाँ इस से मोतज़िला और जहमिय्या फ़िर्क़े का रद्द होता है जिन का अ़क़ीदा है कि स्वयं अल्लाह ने कलाम नहीं किया बल्कि पेड़ के अन्दर बात करने की ताक़त

पैदा कर दी थी, या किसी फ़रिश्ते ने अल्लाह की तरफ़ से कलाम किया था। इन जाहिलों को इतना भी नहीं मालूम कि जो अल्लाह पेड़ को बोलने की ताक़त दे सकता है क्या वह ख़ुद बात नहीं कर सकता? और अगर पेड़ या फ़रिश्ते ने हज़रत मूसा से बात की तो वह यह कैसे कह सकते थे "मैं सारे जहान का रब अल्लाह हूँ" और फिर हज़रत मूसा को कलीमुल्लाह (अल्लाह से कलाम करने वाला) का ख़िताब क्यों दिया जाता, इसलिये कि फ़रिश्तों के ज़रीआ़ तो अल्लाह ने तमाम ही पैग़म्बरों से बात की है (वहीदी)

१८२. यानी अपनी हिक्मत से उन के अन्दर ही अन्दर अ़ज़ाब के सबब पैदा कर सकता है। यह अर्थ समझाने के लिये तुझे रसूल बना कर भेजा कि अ़रब के मुश्रिकों और यहूद व नसारा को उन की बुराईयों से आगाह कर दे (सनाई)

१८३. ताकि इस के पश्चात् काफ़िरों के लिये कोई हीला बहाना बाक़ी न रह जाये और वह यह न कह सकें कि ऐ मेरे रब तू ने रसूल क्यों नहीं भेजा कि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और मोमिन हो जाते। इसीलिये हम ने रसूलों को भेजा है कि उन पर हुज्जत पूरी हो जाये।

१८४.शाने-नुज़ूलः- नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यहूद से पूछा कि क्या तुम तौरात में मेरे बारे में भी कुछ ब्रशारत (शुभ कामना) पाते हो? उन्हों ने कहा कि कुछ नहीं पाते हैं, तब यह आयत नाज़िल हुयी और फ़रमाया गया कि अगर यह इन्कार करते हैं तो तुम्हें कोई पर्वाह नहीं करनी चाहिये इस लिये कि तेरी नबुव्वत की गवाही देने के लिये अल्लाह काफ़ी है (इब्ने कसीर)

१८५. कुरआन मजीद में अल्लाह का इ़ल्म भरा हुआ है, उस की ज़ात और उस की सिफ़तों का बयान, उस की क़ुदरत की निशानियाँ, उस की हिक्मत, क़ियामत और आख़िरत का बयान, ग़ैब की बातें, पहली उम्मतों के हालात और उन का अन्जाम वग़ैरह (सलफ़िय्या)

१८६. 'अ-बदा' यहाँ ताईद के लिये आया है। इस लिये यह अर्थ हो गा कि हमेशा-हमेशा उस में पड़े रहें गे। जो लोग लम्बी मुद्दत या ज़्यादा दिनों का तर्जुमा करते हैं वह ग़लत हैं।

ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٦٩﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٧٠﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰهَآ اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ ۚ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗٓ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٧١﴾ لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا

अल्लाह पर यह (काम) आसान है (कुछ मुश्किल नहीं है)[१८७] १७०. लोगो![१८८] यह रसूल तुम्हारे रब की तरफ़ से सच्चे अहकाम लाया है उन को मानो तो तुम्हारा भला हो गा और अगर न मानो गे तो जो कुछ आसमानों और ज़मीनों में है सब अल्लाह की (मिल्क) है (उस की खुदाई में कोई कमी नहीं) और अल्लाह बड़े इ़ल्म वाला बड़ी हिक्मत वाला है १७१. ऐ किताब वालो! अपने मज़हब में हद से न निकलो और सच्ची बात के अ़लावा अल्लाह के ज़िम्मा कुछ मत लगाया करो[१८९]। ई़सा बिन मरयम केवल अल्लाह का रसूल और उस का हुक्म है, जिस को उस ने मरयम की तरफ़ भेजा था (पैदा शुदा है)[१९०] और उस की तरफ़ से एक रूह है (यानी ज़िन्दा हस्ती है) इस लिये अल्लाह को

और उस के रसूलों को मानो और तीन (ख़ुदा या तीन वस्तुओं से मिल कर बना हुआ ख़ुदा) न कहो। बाज़ आओ अपना भला चाहो[१९१]। अल्लाह तो केवल एक है (न उस का कोई अंग है न साझी) औलाद होने (के ऐ़ब) से पाक है। जो कुछ आसमानों और ज़मीनों में है सब उसी की सपंत्ति है। और अल्लाह ही काम बनाने वाला काफ़ी है १७२. न तो मसीह को (जिसे तुम अल्लाह और अल्लाह का बेटा मानते हो) अल्लाह का बन्दा बनने से (किसी प्रकार की) शर्म है[१९२] और न क़रीबी फ़रिश्तों को[१९३]। और जो कोई अल्लाह की बन्दगी से शर्म करे या (किसी प्रकार का) तकब्बुर करे तो अल्लाह उन सब को अपने पास जमा करेगा[१९४]

....

१८७. दुनिया के हाकिमों में अगर उन की कुछ पहुंच है या वह हाकिम इन से डरते हैं तो इस लिये कि यह उन को कुछ हानि पहुंचा सकते हैं, अल्लाह को उन की तक्लीफ़ से क्या डर। अल्लाह की ज़ात तो इन सब से बहुत ऊँची है।

१८८. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि (शाने नुज़ूल के एतबार से) कुरआन पाक में "या अय्यु-हन्नासु" से मक्का वालों को मुख़ातब किया गया है और आम माना में यहूद, नसारा और दूसरे तमाम धर्मों के मानने वाले सभी शामिल हैं।

१८९. इस आयत में इस बात की तरफ़ इशारा है कि सीधी राह, इधर-उधर की राहों से पाक है। एक मर्तबा एक शख़्स ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को "सय्यिदना" और "इब्ने सय्यिदना" कह कर ख़िताब किया तो आप ने फ़रमाया कि लोगो! बात सोच-समझ कर बोलो, कहीं शैतान तुम को गुमराह न कर दे। मैं मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह और अल्लाह का बन्दा और रसूल हूँ। मुझे तुम लोग हद से ज़्यादा न बढ़ाओ (अहमद) आगे यह भी फ़रमाया: "तुम लोग मेरे हक़ में तकब्बुर कर के आगे न बढ़ जाओ और न ही मुझे हद से आगे बढ़ाओ, जिस प्रकार नसारा ने हज़रत ई़सा को उन की हद से आगे बढ़ा कर अल्लाह का बेटा बना दिया। मैं तो अल्लाह का बन्दा हूँ इस लिये मुझे अल्लाह का बन्दा और रसूल ही कहो" (बुख़ारी) आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया: "अल्लाह यहूद और नसारा पर लानत करे, उन्हों ने अपने नबिय्यों की क़ब्रों को मसजिदें (सज्दा गाह) बना लिया"। एक और मौक़े पर फ़रमाया: "तुम लोग मेरी क़ब्र को 'ई़द' न बना लेना और मुझ पर दरूद पढ़ना, तुम जहाँ कहीं से भी मुझ पर दरूद व सलाम भेजो गे, तुम्हारा दुरूद व सलाम अल्लाह पाक फ़रिश्तों के ज़रीआ़ मुझ तक पहुंचा दे गा (हदीस)

१९०. और उस के बशारत (शुभ सूचना) के कलिमे का ज़ुहूर है जो मरयम अ़लै० पर डाला गया था (तर्जुमान) मैं गवाही देता हूँ कि ई़सा मसीह अ़लै० तेरे बन्दे और रसूल हैं।

१९१. यहाँ पर संबोधन (ख़िताब) ई़साइयों से है, इस लिये कि उन्हों ने हज़रत ई़सा की मुहब्बत में उन्हें अल्लाह का बेटा बना डाला और एक अल्लाह के स्थान पर तीन-तीन ख़ुदाओं का अक़ीदा गढ़ लिया, (यानी बाप-बेटा और रूहुल क़ुदुस) (तर्जुमान)

यह लोग हज़रत ई़सा को अल्लाह की रूह कहते हैं, हालाँकि तमाम ही रूहें अल्लाह की हैं। फ़र्क़ केवल इतना है कि अल्लाह ने हज़रत ई़सा की रूह को थोड़ी सी बुज़ुर्गी और बड़ाई दे दी है और अपनी तरफ़ मन्सूब कर दिया है। सही हदीसों में रिवायत है कि जो कोई इस बात की गवाही दे कि अल्लाह को छोड़ कर कोई माबूद नहीं

है और उस का कोई साझी और शरीक भी नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं और हज़रत ओ़सा अ़लै० उस के बन्दे और रसूल और उस का हुक्म हैं, जिस को उस ने मरयम में डाल दिया और उस की रूह हैं और जन्नत व दोज़ख़ हक़ हैं, तो अल्लाह उस को जन्नत में दाख़िल करे गा (यानी कभी न कभी जन्नत में अवश्य जाये गा, वह सदा जहन्नम में नहीं रह सकता) चाहे उस के आमाल कैसे ही क्यों न हों (वहीदी)

१९२. शाने-नुज़ूलः- क़बीला नजरान के कुछ लोगों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा कि आप तो ओ़सा अ़लै० पर ऐ़ब लगाते हैं और उन को बन्दा कहते हैं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मसीह के बारे में यह कोई भी ऐ़ब नहीं है कि वह अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं, इस बारे में यह आयत नाज़िल हुयी (मआ़लिम)

१९३. इतनी बात ज़्यादा कह दी गयी है ताकि जो लोग फ़रिश्तों को पूज्य (माबूद) अथवा अल्लाह की बेटियाँ मानते हैं, उन के इस अ़क़ीदे का रद्द हो जाये, जिस प्रकार पहले कलाम में नसारा के अ़क़ीदे का रद्द है। ब़हर हाल संबोधन का मक़्सद यह है कि नसारा के अ़क़ीदे का रद्द हो जाये, लेकिन लगे हाथों मुश्रिकों के भी अ़क़ीदे का रद्द हो गया (मवाहिब)

१९४. हदीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स तकब्बुर करता है तो अल्लाह उस को तकब्बुर करने वालों में लिख लेता है, फिर उस को वही दन्ड मिले गा जो तकब्बुर करने वालों को मिले गा। मतलब यह है कि बड़ाई केवल अल्लाह के लिये है और बाक़ी सब लोगों के लिये आ़जिज़ी और लाचारी शोभा देती है। एक और हदीस में है कि अल्लाह पाक फ़रमाता है: "बड़ाई मेरी चादर है, बुज़ुर्गी मेरा इज़ार है। जो मुझ से उन को छीनने की कोशिश करे गा (यानी दुनिया में अपने आप को सब से बड़ा बनाने की कोशिश करे गा) मैं उस को औंधे मुंह जहन्नम में डालूँ गा (सलफ़िय्या)

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ
اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا
وَاسْتَكْبَرُوْا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّلَا يَجِدُوْنَ
لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧٣﴾ يٰٓاَيُّهَا
النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَآ
اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا ﴿١٧٤﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا
بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۙ وَّيَهْدِيْهِمْ
اِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿١٧٥﴾ يَسْتَفْتُوْنَكَ ۗ قُلِ اللّٰهُ
يُفْتِيْكُمْ فِي الْكَلٰلَةِ ۗ اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ لَيْسَ لَهٗ
وَلَدٌ وَّلَهٗٓ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَآ
اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ۗ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا
الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ ۗ وَاِنْ كَانُوْٓا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً
فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ۗ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ

१७३. फिर जो लोग ईमान लाये और नेक कार्य किये हों गे उन को पूरा-पूरा बदला दे कर और अधिक भी अपने फ़ज़्ल (और मेहरबानी) से दे गा। और जिन्हों ने उस की बन्दगी से शर्म और तकब्बुर किया होगा उन को दुखःदाई दंड दे गा।

और अल्लाह के अ़लावा अपने लिये किसी को वली और न हिमायती पायें गे १७४. ऐ लोगो! (अगर अपनी बेहतरी चाहते हो तो सुनो!) तुम्हारे रब की तरफ़ से एक राहनुमा (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) तुम्हारे पास आ चुका है और हम ने खुला नूर तुम्हारी तरफ़ उतारा है[१९५] १७५. पस जो लोग अल्लाह को मानें गे और उसी से मज़बूत संबन्ध करें गे तो अल्लाह उन को अपनी रहमत और मेहरबानी में दाख़िल करे गा और उन को अपनी तरफ़ (पहुंचने वाले) सीधे रास्ते पर पहुंचा दे गा १७६. (यह मुसलमान) तुझ से (कलाला के

संबंध में) फ़तवा पूछते हैं। तू कह कि अल्लाह स्वयं तुम को कलाला का हुक्म सुनाता है। अगर कोई ऐसा शख़्स मरे जिस की औलाद न हो और उस की बहन हो तो (इस सूरत में वह) बहन उस की छोड़ी हुयी जायदाद में से आधी की मालिक होगी और वह (भाई) सब माल का वारिस हो गा, अगर उस की (बहन की कोई) औलाद न हो तब। लेकिन अगर दो बहनें हों तो उन को दो तिहाई तर्का में से मिलें गे[१९६]। और अगर (उस कलाला की कई) बहन-भाई, मर्द-औ़रत वारिस हों तो मर्द को औ़रत से दो गुना हिस्सा मिले गा। अल्लाह तआ़ला तुम्हारे लिये (अपने) अहकाम बयान करता है ताकि तुम राह न भूलो[१९७]। और अल्लाह को सब कुछ मालूम है।

أَنْ تَضِلُّوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

....

१९५. 'बुरहान' से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और 'नूर' से कुरआन मजीद मुराद है, जो जिहालत और गुमराही के अंधेरों से निकाल कर हिदायत की रोशनी में लाता और अम्न व शान्ति का रास्ता दिखाता है जिस की रोशनी कि़यामत तक बाक़ी रहे गी (तल्ख़ीस)

१९६. शाने-नुज़ूलः- हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि मैं बीमार था कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मेरे पास आये और मुझे बेहोश पाया, आप ने वज़ू किया और वज़ू का पानी मुझ पर डाला तो मैं होश में आ गया, मैं ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! मैं कलाला हूँ (यानी जिस के न माँ-बाप हों और न बेटा-बेटी) मेरा तर्का कैसे तक़्सीम हो गा, इस समय यह आयत नाज़िल हुयी। यहाँ पर उस शख़्स को 'कलाला' (यानी ज़अ़ीफ़, कमज़ोर) कहा गया है जिस के वारिसों में माँ-बाप, बेटा-बेटी कोई नहीं है। अस्ल वारिस सगे भाई-बहन, बेटा-बेटी होते हैं और अगर वह न हों तब सौतेले भाई-बहन वग़ैरह तर्का के हक़दार बनते हैं। अगर केवल एक ही बहन है तो उस को कुल तर्का का आधा मिले गा और अगर दो बहने हैं तो दो तिहाई। अगर भाई-बहन दोनों हों तो भाई (मर्द) को बहन (औ़रत) का दो गुना मिले गा और बहन को एकहरा। और अगर भाई अकेला ही हो (बहन न हो) तो वह कुल जायदाद का मालिक हो गा और उस का कोई हिस्सा तै नहीं हो गा।

फ़ाइदा:- अगर बेटी और बहन हों तो बेटी को हिस्सा मिले गा और बहन अ़स्बा हो जायेगी यानी जो हिस्सादारों को दे दिला कर बचे उन तमाम की मालिक हो जाये गी (मुवज़्ज़िहुल कुरआन)

इस सूरः निसा का आरंभ रिश्ते दारों के हुक़ूक़ और उन के अहकाम व मसाइल से हुआ, फिर दर्मियान में उन का ज़िक्र आता गया। अब सूरत का इख़्तिताम (समापन) भी उन्हीं हुक़ूक़ को बयान कर के किया गया। कलाला की मीरास का हुक्म जो आयत न०१२ में बयान हो चुका है, तीन सूरतों में से केवल एक सूरत था, अब यहाँ बाक़ी दो सूरतों का बयान किया गया है। यानी अगर कलाला के वारिस सगे भाइ-बहन हों या अ़ल्लाती हों (यानी बाप एक और माँ दूसरी हो) तो तर्का और मीरास का बँटवारा बयान किये गये उसूल के अनुसार किया जाये (तर्जुमान) 'कलाला' उस मर्द या औ़रत को कहते हैं जो न माँ-बाप छोड़े और न कोई औलाद, केवल भाई-बहन वारिस छोड़े। ऐसी सूरत में अगर भाई मर जाये तो उस की बहन को आधा तर्का मिले गा और अगर दो या दो से अधिक बहनें हों तो सब को दो तिहाई मिले गा। और अगर बहन-भाई मिले-जुले हों तो मर्द को औ़रत से दोगुना मिले गा। और अगर बहन मर जाये तो सब का सब भाई को मिले गा, मगर शर्त यह है कि उस (बहन के) शौहर न हो (सनाई-३/२५६)

१९७. 'अन् तज़िल्लू' अस्ल में है "अन् ला तज़िल्लू" (ताकि तुम राह न भूलो) इसी प्रकार इब्ने उमर रज़ि० की एक हदीस में भी "ला" अगर्चे नहीं है, लेकिन छुपा हुआ माना जाये गा। हदीस के अल्फ़ाज़ यह हैं "अन् युवा-फ़-क

"मिनल्लाहि" लेकिन "अन ला युवा-फ़-क" (ऐसा न हो कि वह घड़ी आ जाये) पढ़ा जाये गा। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० की हदीस यह है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तुम में से कोई अपने बेटे को बद्दुआ न करे ताकि कहीं ऐसा न हो कि इत्तिफ़ाक़ से वह घड़ी आ जाये जिस में दुआ कुबूल हो जाती है (हदीस)

सूर: माइदा-(5)

सूर: माइदा मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी१। इस में १२० आयतें और १६ रूकूअ़ हैं।

अल्लाह के नाम से आरंभ जो सब से बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. मुसलमानो! अल्लाह के अहकाम को पूरा करते रहो। (सुनो!) चार पाये मवेशी उन को छोड़ कर जो (इस सूरत में) तुम को बतलाये जाते हैं, तुम को हलाल हैं मगर शर्त यह है कि तुम अहराम की हालत में न हो[२]। अल्लाह जो चाहे हुक्म देता है (उस पर किसी का ज़ोर या नाराज़गी का हक़ नहीं, इस लिये) २. मुसलमानो! अल्लाह के मुक़र्रर किये हुये दस्तूरों को न तोड़ो[३] और न ही हराम महीनों की बेहुर्मती करो और न क़ुर्बानियाँ लूटा करो और न पट्टा पहने हुये जानवर पकड़ा करो और न बैतुल-हराम में आने वाले लोगों को बेहुर्मत किया करो वह अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की मर्ज़ी चाहने को आते हैं। और जब एहराम से फ़ारिग़ हो जाओ तो शिकार की अनुमति है। (ख़बर्दार) किसी क़ौम की दुश्मनी से कि उन्हों ने (किसी ज़माना में) तुम को काबा शरीफ़ में आने से रोका था (अब मौक़ा पा कर) हद से तजावुज़ करने पर आमादा न हो जाओ। और नेकी और तक़्वा के कामों में एक दूसरे की मदद किया करो और गुनाह और ज़ुल्म पर मदद न किया करो[४] और अल्लाह से डरते रहो। बेशक अल्लाह बड़े सख़्त अ़ज़ाब वाला है।

(٥) سُوْرَةُ الْمَآئِدَةِ مَدَنِيَّةٌ (١١٢)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ۗ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّى الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ۝١ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَآئِدَ وَلَاۤ اٰمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ؕ وَاِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ؕ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۖ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ

१. यह सूर: इस माना में मदनी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मदीना शरीफ़ में ठहरने के ज़माना में (बल्कि आख़िरी उम्र) में नाज़िल हुयी, वर्ना हक़ीक़त में इस सूर: का अधिकांश हिस्सा मक्का शरीफ़ में अन्तिम हज्ज के मौक़े पर ज़िल् हिज्जा सन नौ हिज्री में और कुछ हिस्सा फ़तह मक्का के समय सन ८ हिज्री में नाज़िल हुआ। रिवायतों में बयान हुआ है कि जिस समय यह सूर: नाज़िल हुयी आप ऊँटनी पर सवार थे। वह्यि के उतरने का

➲बोझ ऊँटनी ने महसूस किया और वह बैठ गयी (माजिदी)

२. मतलब यह है कि चार पाये (पशु) सब हलाल हैं। मगर तीसरी आयत में जिन को अलग कर दिया गया है वह हराम हैं। फिर जो पशु हलाल हैं उन में से शिकार किये जाने वाले जन्गली जानवर का एहराम की हालत में शिकार करना मना है। इसी प्रकार दरिन्दे (फाड़ खाने वाले) और पन्जा से शिकार करने वाले परिन्दे भी हराम हैं (वहीदी)

३. शाने-नुजूलः- एक शख़्स शुरैह बिन रबीआ़ नाम का धोका से मदीना के कुछ मुसलमानों को नुक़्सान पहुंचा कर मक्का वापस भाग गया। यही शख़्स यमामा के एक क़बीला के साथ हाजियों के भेस में तिजारत का माल ले कर मक्का शरीफ़ की तरफ़ आ रहा था। सहाबा ने मदीना में अपने नुक़्सान का बदला लेने की ग़रज़ से उस को पकड़ने की अनुमति चाही मगर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मना फ़रमा दिया, सहाबा ने दोबारा अनुमति माँगी इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (मआ़लिम) इस्लाम पर बेजा लूट-खसूट का अरोप लगाने वालो कहाँ हो? तुम्हें शर्म आनी चाहिये झूठे इल्ज़ाम लगाते हुए। (सनाई)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सूरः माइदा कुरआन में से आख़िर में नाज़िल की गयी सूरः है, इस लिये उस के हलाल को हलाल समझो और उस के हराम को हराम। यह सूरः हलाल व हराम के एतबार से या पूरी सूरः के नाज़िल होने के एतबार से आख़िरी सूरः है (मुवाहिब) अल्लाह के हुक्मों की बेहुर्मती जायज़ न रखो। यानी जो पाक निशानियाँ खुदा परस्ती की ठहरा दी गयी हैं और जो तरीक़े बन चुके हैं उन की बेहुर्मती (अपमान) न करो। इसी प्रकार ज़ीक़ादा, ज़िलहिज्जा, मुहर्रम और रजब के महीने हुर्मत के हैं इस लिये इन महीनों में जंग न करो, और न ही कुर्बानी और अल्लाह के नाम पर ज़ब्ह किये जाने वाले जानवरों को लूटो जो दूर-दूर से मक्का लाये जाते हैं। और इसी प्रकार न हाजियों और ताजिरों को हानि पहुंचाओ। मुक़द्दस (पाक) स्थान के जाने वालों को नुक़्सान पहुंचाना उस पाक स्थान की तौहीन करना है (तर्जुमान)

४. इस आयत में जो सिद्धान्त बताया गया है वह मुसलमानों के तमाम कामों के लिये एक दस्तूर है। जो कोई नेक काम करे उस की सहायता करो अगर्चे वह तुम्हारा दुश्मन हो, और जो कोई बुरा काम करे उस की मुख़ालिफ़त करो, अगर्चे वह मुसलमान और तुम्हारा मित्र ही क्यों न हो। ऊपर की आयत में 'फ़ज़्ल' का शब्द आया है जो यह बता रहा है कि माल और दौलत अल्लाह का फ़ज़्ल है, इस लिये यहाँ पर 'फ़ज़्ल' से मुराद तिजारत और उस का फ़ाइदा है (तर्जुमान)

الْعِقَابِ ۝ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ
الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ وَالْمُنْخَنِقَةُ
وَالْمَوْقُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَا أَكَلَ
السَّبُعُ إِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَ
أَنْ تَسْتَقْسِمُوا بِالْأَزْلَامِ ذَٰلِكُمْ فِسْقٌ الْيَوْمَ يَئِسَ
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دِينِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ
الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ
نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا فَمَنِ اضْطُرَّ
فِي مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِإِثْمٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ

३. ख़ुद मुर्दा जानवर (जो ख़ून के रूक जाने की वजह से हानि कारक होता है) और (ज़ब्ह के समय का) ख़ून और सुअर का गोश्त[५] और जो चीज़ अल्लाह के अ़लावा किसी दूसरे के नाम पर (अल्लाह के अ़लावा को खुश करने के लिये) पुकारी जाये[६] और गला घुँट कर या (लक्ड़ी, पत्थर वग़ैरह की) चोट से, या गिर कर, या सींग लगने से मरा हो, और जिस को दरिन्दा (फाड़ खाने वाला जानवर) खा जाये, सब हराम हैं मगर जिस को तुम ज़ब्ह कर लो, और जो बुतों[७] (और क़ब्रों वग़ैरह) पर ज़ब्ह किया जाये➲

رَّحِيمٌ ﴿٣﴾ يَسْـَٔلُونَكَ مَاذَآ أُحِلَّ لَهُمْ ۖ قُلْ أُحِلَّ لَكُمُ
الطَّيِّبَٰتُ ۙ وَمَا عَلَّمْتُم مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِينَ تُعَلِّمُونَهُنَّ
مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ ۖ فَكُلُوا مِمَّآ أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا
اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٤﴾

हराम है[७] और यह कि तीरों से भाग्य का फ़ैसला करो, हराम है। यह गुनाह का काम है। आज कुफ़्फ़ार तुम्हारे दीन (के मस्अले) से मायूस हो गये हैं इस लिये अब तुम उन का (कुछ भी) ख़ौफ़ न करो और मुझ से डरो। आज मैं ने तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी की है और मैं ने इस्लाम को तुम्हारा मज़हब पसन्द किया है[१]। पस जो शख़्स भूख से तन्ग हो जाये (तो जान बचाने के लिये थोड़ा-बहुत खाले) मगर शर्त यह है कि किसी गुनाह की तरफ़ उस का ख़याल न हो, अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है ४. तुझ से पूछते हैं कि क्या-क्या चीज़ें उन के लिये हलाल हैं? तू कह! तुम्हारे लिये पाकीज़ा वस्तुयें हलाल हैं और जो शिकार करने वाले जानवर तुम ने शिकार करने के लिये सिधाये हो जिन को तुम शिकार की शिक्षा देते हो जिस प्रकार (अल्लाह ने) फ़ितरी तौर पर तुम को शिक्षा दी है, जो वह तुम्हारे वास्ते महफ़ूज़ रखें, वह तुम खा लिया करो और अल्लाह का नाम उस पर ज़िक्र किया करो और अल्लाह से डरते रहो। अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है

....

५. बुख़ारी-मुस्लिम की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह ने शराब, मुर्दार, सुअर और बुतों के ख़रीदने और बेचने को हराम कर दिया है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा गया कि लोग मुर्दार की चर्बी को प्रयोग में लाते हैं, उस को किश्तयों (नौकाओं) में पालिश के तौर लगाया जाता है, उस से चमड़े को चिकना किया जाता है और मोम बत्ती भी बना कर लोग जलाते हैं, तो इन सब के बारे में क्या आदेश है? आप ने फ़रमाया कि इन सूरतों में भी जायज़ नहीं है (बुख़ारी, मुस्लिम)

६. 'इहलाल' का अर्थ है "आवाज़ बुलन्द करना" तो इस का अर्थ यह हुआ कि वह जानवर भी हराम है जिस पर ग़ैरुल्लाह के नाम पर आवाज़ बुलन्द की जाये। शैख़ अहमद मुजद्दिद रह० अपने मकातिब (पत्रों) में लिखते हैं कि जो लोग जानवरों पर बुजुर्गों की नियाज़ करते हैं और उन की क़ब्रों पर जा कर उन को ज़ब्ह करते हैं, उलमा ने इस को शिर्क कहा है। हनफ़ी मज़हब की प्रसिद्ध किताब "दुर्रे मुख़्तार" में है कि बादशाह या किसी और आदमी की ताज़ीम (स्वागत) में अगर जानवर को काटा जाये तो वह भी हराम है, अगर्चे काटते समय अल्लाह का नाम लिया जाये (वहीदी) ऐसे लोगों पर आश्चर्य होता है जो केवल मन्तिक़ और फ़ल्सफ़ा की किताबें पढ़ कर फ़तवा के लिये क़लम उठा लेते हैं और शैख़ सिद्दू और इन जैसे बुजुर्गों के नाम का जानवर ज़ब्ह करने को जायज़ कहते हैं, हालाँकि यह हनफ़ी मज़हब, बल्कि फ़ुक़हा और इमामों व मुजतहिद सभी लोगों के मसलक के ख़िलाफ़ है और इस काम के जायज़ होने का फ़तवा दे कर यह लोग क़ियामत तक उस पर अ़मल करने का गुनाह अपने सर पर लेते हैं (मवाहिब)

७. 'नुसुब' का अर्थ "अस्नाम" (बुत) हैं। इमाम मुजाहिद कहते हैं कि ख़ान-ए-काबा के आस-पास यह पत्थरों के बुत थे। इब्ने जुरैज कहते हैं कि वह बुत ३६० की मात्रा में थे, अरब के मुशिरकीन उन के पास ज़ब्ह करते और गोश्त काट-काट कर बुतों पर रखते थे। अल्लाह ने मोमिनों को ऐसा करने से मना फ़रमाया और ऐसे ज़ब्ह किये गये जानवरों का गोश्त खाना हराम किया है अगर्चे ज़ब्ह करते समय उस पर अल्लाह का नाम भी लिया जाये। क्योंकि यह बुतों के वास्ते ताज़ीम के लिए ज़ब्ह किये गये थे और यह शिर्क है और महा पाप है (इब्ने कसीर) जिन

➲क़ब्रों और मज़ारों (समाधियों) पर पूजा पाट होती है वह भी "अन्साब" ही के हुक्म में शामिल है जैसा कि मौलाना अमृतसरी रह० ने भी लिखा है (राज़)

८. शाह वलिय्युल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० फ़रमाते हैं: "वह जानवर जो झूठे माबूदों के स्थानों पर यानी मूरत या क़ब्र पर ज़ब्ह किया जाये हराम है (वहीदी) 'नुसुब' बग़ैर गढ़े हुये पत्थरों को कहते हैं जिन को मुश्रिकीन पूजते थे और उन को नज़्र व नियाज़ (चढ़ावों) के लिये खड़ा कर लेते हैं। 'अस्नाम' उन पत्थरों को कहते हैं जो किसी शक्ल और सूरत (प्रतिमा)की शक्ल में बनाये गये हों (सनाई) बुज़ुर्ग लोग जिन स्थानों पर बैठ कर चिल्ला करते थे वह स्थान या उन के पैरों के निशान जो किसी पर बना लिये जायें और उन को मुक़द्दस माना जाये, यह सब भी 'नुसुब' में दाखि़ल हैं।

९. यह आयत हज्जतुल् विदाअ़ (अन्तिम हज्ज) के मौक़ा पर नाज़िल हुयी, जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का आखि़री हज्ज था। इस हज्ज के लगभग तीन माह के पश्चात् आप इस दुनिया से तशरीफ़ ले गये। हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि यह आयत अ़रफ़ा की शाम को जुमा (शुक्रवार) के दिन नाज़िल हुयी, इस के बाद हलाल व हराम से मुतअ़ल्लिक़ कोई आदेश नहीं उतरा, हालाँकि इस के बाद भी वह्यि आती रही। कुरआन की जो सब से अन्तिम आयत नाज़िल हुयी वह सूर बक़र: की आयत न० २८१ थी, जिस के बाद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ९ रातें ज़िन्दा रहे और रबीउल अव्वल के महीने में वफ़ात पाई (खुलासा)

जिस दिन यह आयत नाज़िल हुयी उस दिन ५ अ़ीदें इकट्ठीं थीं (१) जुमा का दिन (२) अ़रफ़ा का दिन (३) यहूद की अ़ीद का दिन (४) मजूस (आग की पूजा करने वालों) की अ़ीद का दिन (५) ईसाईयों की अ़ीदका दिन । सय्यद अल्लामा रह० कहते हैं कि इस आयत से उन लोगों को नसीहत हासिल करनी चाहिये जो राय और क़ियास पर चलते हैं और कुरआन की आयतों और सही हदीसों को छोड़ देते हैं। मौलाना के नज़दीक इन लोगों का दीन मुकम्मल नहीं हुआ (वहीदी)

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۭ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ۠ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۡ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ اَخْدَانٍ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۡ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ۭ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ۭ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰي سَفَرٍ اَوْ جَاۗءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَاۗىِٕطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ

५. अब तमाम पाक चीज़ें तुम को हलाल हैं। और किताब वालों का (पका हुआ) खाना भी तुम को हलाल है और तुम्हारा खाना उन को हलाल है और भली मानुस {भोली-भाली} महिलायें मुसलमानों में से और तुम से पहली किताब वालों की भली मानुस औ़रतें तुम को (निकाह में लानी) हलाल हैं[१०] मगर शर्त यह है कि तुम (भी भलेमानुस बन कर) घरबारी बनने की निय्यत से उन के मह्र अदा कर दो न केवल शह्वत रानी {मस्ती निकालने} की ग़रज़ से और न चोरी छुपे संबन्ध रखने के लिए रखो। और जो कोई ईमान की बातों से इन्कारी हो गा उस के तमाम (निक) अ़मल बर्बाद हो जायेंगे और वह आखि़रत में टूटा {नुक़्सान} पाने वालों (की जमाअ़त) से➲

ٱلنِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوا۟ مَآءً فَتَيَمَّمُوا۟ صَعِيدًا طَيِّبًا فَٱمْسَحُوا۟ بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُم مِّنْهُ ۚ مَا يُرِيدُ ٱللَّهُ

होगा ६. मुसलमानो! जब नमाज़ को आमादा हो[11] तो (पहले तो सारा) मुँह और हाथ कुहनियों तक और पाँव टख़नों तक धो लो और सरों पर (केवल) हाथ फेर लिया करो[12]। और अगर तुम जुनुबी {नापाक} हो तो नहा लिया करो और अगर बीमार हो (और नहाने से नुक़्सान पहुंचने का डर हो) या सफ़र में हो, या पाख़ाना {शोचालय} से लौट कर आओ या तुम ने महिलाओं को छुवा (यानी उन से संभोग किया) हो और (इन सूरतों में) पानी न पाओ तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लिया करो (और इस का तरीक़ा यह है कि) मिट्टी अपने मुँह और हाथों पर (थोड़ा-बहुत) मल लिया करो

....

१०. इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब "वला तन्किहुल् मुश्रिकातु हत्ता यूमिन्न" (सूरः बक़रः आयन०२२१) नाज़िल हुयी तो अहले-किताब की औरतों से भी लोग निकाह करने से बचने लगे तब यह आयत नाज़िल हुयी, और लोगों ने अहले-किताब की औरतों से दोबारा निकाह करना आरंभ किया (इब्ने अबी हातिम) सहाबा की एक जमाअ़त ने इसी आयत की रोशनी में अहले-किताब की औरतों से निकाह किया और इस में कोई हरज न जाना। "घर बारी बनने के लिए न कि मस्ती झाड़ने केलिए" यह शर्त है, इस से मालूम होता है कि ज़िना-कार औरतों का निकाह दुरूस्त नहीं, जैसा कि हदीस की किताबों से साबित है (तल्ख़ीस)

आलिमों का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि अहले-किताब के हाथों ज़ब्ह किया हुआ जानवर हलाल है मगर शर्त यह है कि उस पर केवल अल्लाह का नाम लें, वर्ना हज़रत आइशा रज़ि० और हज़रत अ़ली रज़ि० ने फ़रमाया कि जब यह मालूम हो जाये कि वह लोग गैरूल्लाह का नाम लेकर जानवर ज़ब्ह करते हैं तो उस जानवर का गोश्त मत खाओ। यही फ़तवा इमाम ताऊस और हसन बसरी रह० का भी है (फ़तहुल बयान)

यह बात किसी से ढकी-छुपी नहीं है कि आज-कल के नसारा मुर्गी और कबूतर वगैरह की गर्दनें मरोड़ कर बग़ैर ज़ब्ह किये हुये खाते हैं और आसमानी किताब पर उन का कुछ भी अ़मल नहीं है, इस लिये यह फ़तवा दिया जाता है कि उन के हाथों ज़ब्ह किये हुये जानवर का गोश्त खाना नाजायज़ है। आज-कल के कुछ जाहिल लोग बुतों की पूजा करने वालों और मजूसियों (आग की पूजा करने वालों) को अहले-किताब लिखते हैं, यह जाहिल उलमा केवल लोगों को गुमराह करने पर तुले हुये हैं। यह बहुत ज़रूरी है कि जब तक ऐसे उलमा कुरआन व हदीस से दलील न पेश करें लोग उन को गुमराह जानें (मवाहिब) आज के अहले-किताब की पाकी मुकम्मल तौर पर युरोप के रस्म व रिवाज के आधार पर है और इस्लाम के बताये हुये उसूल से उस का कोई संबन्ध नहीं है। सुअर का गोश्त खाना आ़म है, हलाल व हराम के बारे में इन्जील के कुछ भी पाबन्द नहीं हैं, इस लिये उन के हाथों से ज़ब्ह किया हुआ जानवर और उस का गोश्त पहले ज़माना के अहले-किताब के ज़ब्ह किये हुये जानवर और उस के गोश्त से मुख़्तलिफ़ है (पहले ज़माना के अहले-किताब का खाना जायज़ था, लेकिन आज कल के अहले-किताब का नाजायज़ है)

११. इस आयत में यह हुकम दिया गया है कि जब नमाज़ पढ़ने का इरादा हो तो पहले वज़ू करो। अगर पाख़ाना पेशाब या हवा के निकलने के बाद नमाज़ का इरादा किया है तो वज़ू करे, लेकिन अगर बावज़ू होने की हालत में किया है तो वजू करने की आवश्यक्ता नहीं है, लेकिन फिर भी वजू करना मुस्तहब (बिहतर, अच्छा) है। बग़ैर वजू के अल्लाह तआ़ला नमाज़ को नहीं कुबूल करता इस पर तमाम ही उलमा का इत्तिफ़ाक़ है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वज़ू पर वज़ू भी किया करते थे, मगर साहाबा को इजाज़त थी कि वह एक वज़ू से कई नमाज़ें पढ़ सकते हैं (बुखारी,अहमद)

त-यम्मुम् का अर्थ है "इरादा करना" और शरीअ़त की परिभाषा में इस बात का नाम है कि पाक मिट्टी

पर हाथों को मार कर मुंह पर मले। बुख़ारी शरीफ़ में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तयम्मुम करने का तरीक़ा बतलाते समय दोनों हथेलियों को ज़मीन पर मारा, और फिर उन पर फूंक मारी, फिर उन को अपने चेहरे पर मल लिया और दोनों हथेलियों पर भी मल लिया और फ़रमाया कि इस प्रकार का तयम्मुम तुम्हारे लिये काफ़ी है। १२. अपने सर का मसह करें। इमाम मालिक के नज़दीक सारे सर का मसह करे। अहले हदीस का भी यही मज़हब है। इमामिया फ़िर्क़ा "अर्जु-लकुम्" के "लाम" को ज़ेर पढ़ता है (यानी अर्जुलिकुम्)और इस प्रकार सर की तरह पैर पर भी मसह करने का हुक्म निकाला है। हालाँकि सभी जानते हैं कि नबी से ले कर तमाम सहाबा और पूरी उम्मत का पाँव धोने पर इत्तिफ़ाक़ है और यही हक़ है। आयत में वज़ू के इन्हीं चार हिस्सों का धोना फ़र्ज़ हैं। हदीस में भी इस का ज़िक्र है और निय्यत करना, कुल्ली करना, नाक में पानी डालना, शुरू में बिस्मिल्लाह कहना भी साबित है (वहीदी)

لِيَجْعَلَ عَلَيْكُم مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِن يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ
وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَاذْكُرُوْا
نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖٓ ۙ
اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۫ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ
شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۫ هُوَ اَقْرَبُ
لِلتَّقْوٰى ۫ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝
وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ
مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ
اَنْ يَّبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ

अल्लाह तुम पर तंगी नहीं करना चाहता (कि ऐसे हुक्म दे जिसे तुम न निभा सको) बल्कि उसे तो यह मन्ज़ूर है कि तुम को पाक-साफ़ करे[१३] और अपनी नेमत तुम पर पूरी करे (ताकि तुम्हारे रूहानी दर्जे बुलन्द हों) ताकि तुम (उस के कामिल) शुक्र गुज़ार (बन्दे) बनो ७. और अल्लाह की मेहरबानी और उस के मज़बूत वादे जो उस ने तुम से लिये हैं उन को याद करो जब तुम ने कहा था कि हम ने सुना और ताबे हुये और अल्लाह से डरो (क्योंकि) अल्लाह दिलों के भेद भी जानता है[१४] ८. मुसलमानो! (अब लेन-देन के संबन्ध में भी अहकाम सुनो हर एक के मामले में) खुदा लगती गवाही इन्साफ़ से दिया करो और किसी क़ौम की दुश्मनी से अन्याय न करने लगो। (बल्कि हर हाल में) न्याय ही किया करो (क्योंकि) न्याय परहेज़गारी के बहुत ही क़रीब है और अल्लाह से डरते रहो। निःसंदेह अल्लाह तुम्हारे कामों की ख़बर रखने वाला है[१५] ९. जो लोग (अल्लाह की खुदाई और रसूल की रिसालत पर) ईमान ला कर नेक अ़मल करते हैं अल्लाह ने उन से बख़्शिश और बड़े अज्र का वादा कर रखा है १०. और (इन के मुक़ाबले में) जो इन्कारी हो कर हमारे अहकाम को झुठलाते हैं वही जहन्नमी हैं (इस लिये तुम अल्लाह के अहकाम पर अ़मल करने में सुस्ती न करना) ११. मुसलमानो! ज़रा उस वक़्त की अल्लाह की मेहरबानी को याद करो[१६] जब एक क़ौम ने तुम पर आक्रमण करना चाहा था तो अल्लाह ही ने उन को तुम से हटा कर रखा(इसलिये तुम उस का शुक्र अदा करो)

....

१३. यही अल्फ़ाज़ उन नीम मुश्रिकों (नाम के मुसलमानों) और बेदीनों की रद्द के लिये काफ़ी हैं जो अल्लाह के

बारे में यह यक़ीन किये बैठे हैं कि वह इरादा से महरूम है और वह केवल मशीन की तरह चन्द नियमों का पाबन्द है। (माजिदी)

१४. 'नेमत' से मुराद "इस्लाम" है और 'मीसाक़' से वह बैअ़त मुराद है जो इस्लाम लाते समय नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मुबारक हाथ पर मुआ़हिदा के तौर पर की जाती थी (तल्ख़ीस)

१५. शाने-नुज़ूलः- यह आयत ख़ैबर के यहूद के बारे में नाज़िल हुयी जिन्हों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के क़त्ल का इरादा किया था और मुसलमानों ने ख़ैबर को फ़तह कर लिया था, इस लिये इस आयत में हिदायत की कि जो हुक्म हक़ है उस से आगे न बढ़ें। कुछ उलमा का कहना है कि यह आयत कुरैश के बारे में नाज़िल हुयी। जब मक्का फ़तह हो गया तो उस समय मुसलमानों को दुःख देने वाले और सताने वाले लोग वहाँ मौजूद थे इस लिये मुसलमानों को हुक्म दिया गया कि उन से कोई भी मामला न्याय के ख़िलाफ़ नहीं होना चाहिये। हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि० कहते हैं कि मेरे वालिद ने मुझ को कुछ दिया तो मेरी वालिदा ने कहा कि जब तक इस लेन-देन पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को गवाह न बना लोगे मुझे इस पर संतोष नहीं है। चुनान्चे मेरे माँ-बाप मुझे ले कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास गये। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पूछा कि क्या तुम ने अपने और दूसरे बेटों को भी उतना ही दिया है? मेरे माँ-बाप ने कहा कि नहीं, इस पर आपने फ़रमाया: "अल्लाह से डरो और अपनी औलाद के दर्मियान, मैं अन्याय पर गवाही नहीं दिया करता" यह सुन कर मेरे वालिद वापस लौट आये और वह माल जो मुझे दिया था वापस ले लिया। (बुख़ारी, मुस्लिम)

१६. शाने नुज़ूलः- नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम किसी मामले में समझाने-बुझाने की ख़ातिर चन्द सहाबा रज़ि० के साथ यहूदियों की एक बस्ती में तशरीफ़ ले गये। उन्हों ने मौक़ा ताड़ कर सहाबा को तक्लीफ़ पहुंचाने का इरादा किया। इधर अल्लाह तआ़ला ने आप को इस आयत के ज़रीआ़ सूचित कर दिया, चुनान्चे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उसी समय वहाँ से चले आये और उन को पता भी न चला। इसी घटना की ओर इस आयत में इशारा है (मआ़लिम)

وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾
وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۚ وَبَعَثْنَا
مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا ۗ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مَعَكُمْ ۗ
لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ
بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا
لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ
مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٢﴾ فَبِمَا نَقْضِهِمْ
مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ
يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا

और अल्लाह से डरते रहो। मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये १२. और अल्लाह ने बनी इस्राईल से भी (इस बात का) वादा लिया था और उन (के बारह क़बीलों) में से बारह आदमी उन पर सर्दार मुक़र्रर किये थे[१७]। और अल्लाह ने (उन से) कहा था कि अगर तुम नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहो गे और मेरे रसूलों को मानो गे और उन की इ़ज़्ज़त करो गे और अल्लाह को क़र्ज़ देते रहो गे (अर्थात नेक कामों में माल ख़र्च करते रहो गे) तो मैं तुम्हारे साथ रहूँ गा[१८] और तुम्हारे गुनाहों को दूर करूँ गा और तुम को बाग़ों में जिन के नीचे नहरें बहती हैं दाख़िल करूँ गा, तो जो तुम में से इस के बाद इन्कारी हो गा

ذُكِّرُوا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ
اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓى

वह सीधी राह से भटके गा। (बनी इस्राईल ने चूँकि इस वादे की पाबन्दी न की) १३. इस लिये उन के वादा तोड़ने की वजह से हम ने उन पर लानत की और उन के दिलों को सख़्त कर दिया, कि अल्लाह के कलाम में भी तहरीफ़ (फेर-बदल) करते हैं और जिन बातों की उन को नसीहत हुयी थी उन में से एक बड़ा हिस्सा भूल बैठे हैं, तू हर समय उन से (चन्द लोगों को छोड़ कर) ख़ियानत पाये गा फिर भी तू उन को माफ़ी दे और दरगुज़र कर (इस लिये कि) बेशक अल्लाह एहसान करने वालों से प्रेम करता है १४. और (यह) जो (बड़े जन्टिल मैन बने हुये) दावा से कहते हैं कि हम ईसाई हैं

....

१७. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि उन १२ सर्दारों को उस समय मुक़र्रर किया गया था जब बनी इस्राईल को मुल्के शाम की अ़मालिक़ा नामी क़ौम के साथ जिहाद करने का हुक्म हुआ था। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अ़क़बा की घाटी में रात के समय जब मदीना के अन्सार से बैअ़त की थी तो उन में भी १२ नक़ीब (सर्दार) थे। तीन क़बीला औस के और नौ क़बीला खज़रज के थे जिन्हों ने पहले-पहल मदीना आ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अपनी और अपने ख़ान्दान वालों की तरफ़ से पूरी-पूरी वफ़ादारी का वादा किया था। (इब्ने कसीर)

बुख़ारी और मुस्लिम में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "बराबर लोगों का काम चलता रहे गा जब तक उन के दर्मियान बारह नक़ीब (सर्दार) हों गे और सभी क़ुरैश ख़ान्दान से हों गे।" इस हदीस में इस बात की शुभ सूचना है कि आप की उम्मत में बारह लोग इन्साफ़ करने वाले और हक़ पर जमे रहने वाले ख़लीफ़ा हों गे। उन में से चार तो खुलफ़ा-ए-राशिदीन (अबू बक्र, उमर, उस्मान, अ़ली रज़ि०) हो गये। उमर बिन अ़ब्दुल्ल अ़ज़ीज़ भी उन्हीं में से एक हैं। महदी अ़लै० जिन के आने की बशारत दी गयी है वह भी शामिल हैं। इसी प्रकार कुल मिला कर बारह हों गे। और यह भी याद रहे कि सभी आगे-पीछे लगा-तार, एक के बाद एक नहीं आयें गे (मवाहिब) हज़रत मूसा अ़लै० ने उन बारह सर्दारों को मुल्क शाम के क़रीब पहुंच कर दुश्मन की ख़बर लेने के लिये जासूस की हैसिय्यत से भेजा था और इस बात को राज़ में रखने की ताकीद कर दी थी, मगर कुछ लोग यह भी कहते हैं कि रास्ता में उन को औ़ज बिन उनुक़ भी मिला था जो बहुत ही लम्बा था, मगर अहले हदीस उलमा इस क़िस्सा को मनघड़त और बे बुनियाद मानते हैं (वहींदी)

१८. 'मैं तुम्हारे साथ रहूँ गा' यहाँ पर साथ रहने से जिस्मानी तौर पर साथ रहना मुराद नहीं है जिस प्रकार एक आदमी दूसरे के साथ रहता है, बल्कि यहाँ पर अ़िल्म और क़ुदरत, ताक़त और मदद मुराद है। यानी मैं तुम्हें फ़तह दूँगा और उन दुश्मनों के मुक़ाबले में कामियाबी मिले गी। (वहींदी)

اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۠ فَاَغْرَيْنَا
بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۭ وَسَوْفَ
يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ۝ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ
قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ

उन से भी हम ने (मुहम्मद की पैरवी का पक्का) वादा लिया था[१९], फिर वह नसीहत की बहुत सी बातें जो उन को समझाई गयी थीं भूल गये तो हम ने क़ियामत तक उन में दुश्मनी[२०] और कीने की आग सुलगा दी[२१]। और (अभी तो आइन्दा) क़ियामत के दिन अल्लाह उन की

تُخْفُونَ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ ۬ قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُورٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾ يَّهْدِي بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهٖ وَيَهْدِيهِمْ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿١٦﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوٓا إِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا إِنْ أَرَادَ أَنْ يُّهْلِكَ الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهٗ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ؕ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ يَخْلُقُ

कारसतानियाँ (मक्कारियाँ) बतला दे गा १५. ऐ किताब वालो[२२]! (और इल्हामी किताब के दावा करने वालो!) हमारा रसूल (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) तुम्हारे पास आया जो बहुत सी बातें जिन को तुम (अपनी आसमानी) किताब में छुपाते थे, तुम पर ज़ाहिर करता है[२३] और बहुत सी तुम से चश्म पोशी {नज़र अन्दाज़} भी करता है। निःसंदेह तुम्हारे पास अल्लाह का नूर और रोशन किताब (कुरआन मजीद) आयी[२४] १६. जो लोग अल्लाह की रज़ामन्दी चाहते हैं इस किताब के ज़रीआ़ अल्लाह उन को सलामती की राहें दिखाता है और अपने फ़ज़्ल से उन को अंधेरों से रोशनी की तरफ़ लाता है और उन को सीधी राह दिखाता है[२५] १७. जो लोग कहते हैं कि अल्लाह ही मसीह बिन मरयम है, कुछ शक नहीं कि यह लोग अल्लाह का इन्कार करने वाले हैं[२६]। तू (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम!) उन से कह! अगर अल्लाह मसीह और उस की माँ और तमाम दुनियाँ वालों को हलाक करना चाहे तो कोई (किसी प्रकार) अल्लाह को रोक सकता है?[२७]। और आसमानों और ज़मीनों की और जो कुछ उन के दर्मियान है कुल हुकूमत अल्लाह ही की है

....

१९. अल्लाह तआ़ला ने क्या वादा लिया था? इस के लिये देखें इन्जील यूहन्ना १६ बाब व आमाल ३ बाब (सनाई)

२०. वह सब एक दूसरे के ख़ून के प्यासे हैं। मगर आज-कल मुसलमानों के मामला में सब एक हो जाते हैं। ऐ अल्लाह! तू भी मुसलमानों की आँखों को खोल दे कि वह भी नसारा और मुश्रिकों के मुक़ाबिला में एक हो कर रहें। मुसलमान भाईयो! तुम चाहे हनफ़ी हो या शाफ़ई, मुक़ल्लिद हो या ग़ैर मुक़ल्लिद,इमामिया हो या अहले सुन्नत वल् जमाअ़त, सभी होशियार हो जाओ, नींद से जागो, अब ज़माना आपस में लड़ने का नहीं है। दुश्मन चारों तरफ़ से तुम को और तुम्हारे दीन को मिटा देना चाहते हैं। (वहीदी) और आज-कल तो और भी अधिक इस बात की आवश्यक्ता है कि मुसलमान एक हो कर इस्लाम की सेवा करें और आपसी इख़्तिलाफ़ को भूल जायें, अगर एक नहीं होते हैं तो फिर दुनिया से मिटने के लिये तय्यार रहें।

२१. अ़ीसाइयों ने भी ईमान लाने और नेक अ़मल करने का जो वादा किया था उस को भुला दिया और सीधे रास्ते से भटक गये। और हर फ़िर्क़ा एक दूसरे का दुश्मन बन गया। यह आपस की दुश्मनी यहाँ तक बढ़ गयी है कि क़ियामत तक वह दूर होने वाली नहीं है। यहाँ बयान करने का उद्देश्य यह है कि मुसलमान इस से सबक़ सीखें और फ़िर्क़ा परस्ती और एक दूसरे की दुश्मनी से अपने को दूर रखें। लेकिन अफ़्सोस इस बात पर है कि मुसलमान भी इसी महामारी का शिकार हैं (तर्जुमान)

२२. शाने नुज़ूलः- एक मर्तबा यहूदियों ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से शादी-शुदा ज़िना करने वाले की सज़ा के बारे में मालूम किया तो आप ने पूछा कि तुम्हारे अन्दर सब से बड़ा आ़लिम कौन है? उन्हों ने कहा कि

➲इब्ने सूरया। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उस से कहा कि उस अल्लाह की क़सम! जिस ने मूसा अ़लै० पर तौरात उतारी, तू सच-सच बता कि ऐसे ज़िना करने वाले के लिये तौरात में क्या सज़ा है? उस ने कहा कि हमारे दीन में भी वही सज़ा है जो इस्लाम में है यानी पत्थर से मार-मार कर मार डालना। मगर जब ज़िना अधिक होने लगा तो इस ख़याल से कि अपनी क़ौम की संख़्या कम हो जाये गी इस आदेश को बदल दिया, तब इस के बारे में यह आयत नाज़िल हुयी (सलफ़िय्या)

२३. 'तुम अपनी आसमानी किताबों में छुपाते हो' जैसे कि रज्म का हुक्म इन की किताब में मौजूद था और उस की शक्ल यह थी कि शादी-शुदा (विवाहित) मर्द या औ़रत अगर ज़िना करें तो उन को पत्थरों से मार-मार कर मार डालो, मगर यहूदी इस हुक्म को छुपाते थे और कहते थे कि ऐसे लोगों के लिये हुक्म यह है कि उन का मुंह काला कर के गधे पर सवार कर के लोगों में घुमाओ इस के बाद कोड़े मारो, इस प्रकार रज्म वाली आयत को छुपा दिया

इसी प्रकार अन्तिम रसूल के आने के बारे में जो निशानियाँ उन की किताबों में मौजूद थीं उन को बदल डाला, चुनान्चे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन को भी ज़ाहिर कर दिया। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि जिस ने रज्म का इन्कार किया उस ने कुरआन का इन्कार किया (हाकिम)

२४. 'नूर' से मुराद कुरआन मजीद की तफ़्सीर और तशरीह है जिसे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बयान कर के और उस पर अ़मल कर के बतला दिया। यही वह नूर है जिस का यहाँ बयान हो रहा है। (राज़)

२५. अल्लाह तआ़ला के इरादा और उस की तौफ़ीक़ से ईमान लाने वालों को यह किताब कुफ़्र के अन्धकार से निकाल कर ईमान की रोश्नी की तरफ़ लाती है। इस लिये जिस को अल्लाह ने पथभ्रष्ट किया वह उस अंधेरे से निकल ही नहीं सकता कि ईमान की प्रकाश की ओर आये, इसी लिये वह ईमान ही नहीं लाता। इस आयत में मुसलमानों को यह हिदायत की गयी है कि कुरआन मजीद को दिल लगा कर पढ़ें और उस के आदेशों पर अ़मल करें इस से उन के दिल रोशन हो जायें गे।

सहीह हदीस में है कि क़ियामत में वह नूर और मुहब्बत हो गा। और एक दूसरी हदीस में है कि कुरआन पढ़ने वाला और उस पर अ़मल करने वाला ख़ुश्बू दार फूल के पेड़ की तरह है। इस से यह भी मालूम हुआ कि कुरआन मजीद को समझ कर तिलावत करने वाले का दिल ईमान व यक़ीन से रोशन होता है (मवाहिब)

२६. हज़रत ई़सा अ़लै० के आसमान पर उठा लिये जाने के बाद ई़साई लोग तीन फ़िर्क़ों में बट गये। उन में से एक गरोह तो इस बात पर रहा कि हज़रत ई़सा अ़लै० को अल्लाह तआ़ला ने आकाश पर उठा लिया है, लेकिन ऐसा मानने वाले बहुत कम थे। दूसरे गरोह का कहना था कि वह अल्लाह के बेटे थे इस लिये अल्लाह ने अपने बेटे को अपने पास बुला लिया। तीसरे गरोह ने कहा कि वह तो हमारे दर्मियान ख़ुदा थे लेकिन हम को पता ही न था, जब हम ने अवज्ञा की तो वह हमारे दर्मियान से चला गया। अन्तिम दो गरोह ने मिल कर पहले गरोह को जो हक़ पर था क़त्ल कर दिया (इब्ने कसीर)

२७. चुनान्चे तुम्हारी किताब में लिखा है "मसीह ने जिस को कहते हो सूली पर लटके हुये निहायत आ़जिज़ी से ख़ुदा के आगे फ़रयादें कीं और बड़े ज़ोर से चिल्ला कर जान दी। आख़िर सिवाये हक़ को तस्लीम करने के चारा न हुआ तो भला ऐसा शख़्स ख़ुदा हो सकता है जिस के इख़्तियार में इतना भी न था कि और तो और, अपने ही को उस मुसीबत से जिस के लिये बार-बार रो-रो कर दुआ़यें माँग चुका था, बचा लेता (इन्जील मरक़स १५ बाब की तीन आयत)

जो चाहे पैदा कर दे। और अल्लाह हर काम पर कुदरत रखने वाला है १८. (इस डबल बुरे अ़क़ीदे के बावजूद) यहूदी और ई़साई (दावा➲

مَا يَشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَقَالَتِ

الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؗ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝١٨ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّلَا نَذِيْرٍ ؗ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝١٩ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖۗ وَّاٰتٰىكُمْ مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝٢٠ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِيْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا

से) कहते हैं कि हम अल्लाह के बेटे और प्यारे हैं[२८]। तू (ऐ नबी! उन को) कह तो फिर अल्लाह तुम्हारे गुनाहों के कारण तुम को अ़ज़ाब क्यों दिया करता है? बल्कि तुम उस की मख़्लूक़ में से आदमी हो[२९]। अल्लाह जिस को (इख़्लास और नेक अ़मल की वजह से) बख़्शना चाहे, बख़्श देता है और जिस को अ़ज़ाब करना चाहे अ़ज़ाब करता है (क्यों कि) कुल आसमानों और ज़मीनों की और उन के दर्मियान की सब चीज़ों की हुकूमत अल्लाह ही की है और उसी की तरफ़ सब को लौट कर जाना है १९. ऐ किताब वालो! हमारा रसूल (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) रसूलों के समापन पर आ कर साफ़-साफ़ बातें बयान करता है[३०] (ताकि ऐसा ना हो कि क़ियामत में तुम) यह कहने लगो कि हमारे पास कोई ख़ुश-ख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला नहीं आया था। पस ख़ुश-ख़बरी देने वाला और डराने वाला तुम्हारे पास आ गया। और अल्लाह हर एक काम पर क़ुदरत रखने वाला है २०. और याद करो मूसा ने जब अपनी क़ौम को कहा था कि मेरे भाइयो! अल्लाह का एहसान याद करो कि उस ने तुम में से नबी बनाये और तुम को बादशाह किया और तुम को ऐसी चीज़ें अ़ता कीं जो दुनिया के लोगों में से किसी को नहीं दीं[३१] २१. भाइयों! तुम (बिला ख़ौफ़) पाक ज़मीन (कन्अ़ान) में जो अल्लाह ने तुम्हारी क़िस्मत में मुक़द्दर कर रखी है दाख़िल हो चलो

....

२८. इन तक़रीरों का खुलासा यह था कि हम सब ऊँची ज़ात वाले अल्लाह के क़रीबी हैं। इन का ज़ेहन बिल्कुल हिन्दुस्तान के ब्रहमणों के जैसा था जो अपने आप को चन्द्रवंशी और सूर्य वंशी कहते हैं। और आज कल मुसलमानों के अन्दर भी यह बीरामी घुस आई है कि कुछ मुसलमान अपने आप को पीरज़ादा, बुज़ुर्गज़ादा और मख़्दूमज़ादा समझते हुये घमन्ड में हैं। इन का भी दिमाग़ यहूदियों और हिन्दुओं के ऊँच-नीच और छूत-छात के ख़याल से प्रभावित है (माजिदी) कुछ बदअ़मल सादात और सय्यद कहलाने वालों को भी इसी गुमराही में देखा जा सकता है। हालाँकि इस्लाम में इस ख़याल की कि "मैं फ़लाँ का बेटा हूँ और फ़लाँ ख़ान्दान से मेरा तअ़ल्लुक़ है" कोई अहमिय्यत नहीं है।

२९. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यहूद की एक जमाअ़त को इस्लाम की दावत दी और अल्लाह के अ़ज़ाब से ख़ौफ़ दिलाया तो उन्हों ने उत्तर दिया कि तुम हम को बिला वजह डराते-धमकाते हो, हम तो अल्लाह के बेटे, लाडले और चहीते हैं (इब्ने जरीर)

अल्लाह तआ़ला ने उन के इस ग़लत ख़याल का रद्द इस प्रकार किया कि अगर तुम चहीते और अल्लाह के प्यारे और राज दुलारे हो तो अल्लाह तुम को दुनिया में तरह-तरह के दन्ड क्यों देता है और तुम सुअर और

बन्दर क्यों बनाये जाते हो और गुलाम और लौंडी क्यों बनाये जाते हो? तुम्हारा ख़याल ग़लत है, तुम भी और लोगों ही की तरह एक मख़्लूक़ हो (वहीदी)

३०. यानी मुद्दत से हमने रसूल नहीं भेजा था, हज़रत ईसा अ़लै० को आसमान पर उठाये गये छ: सौ वर्ष का समय बीत चुका था, उन के और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दर्मियान कोई रसूल नहीं आया था। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है वह कहते हैं कि हज़रत मूसा और ईसा के दर्मियान १९ सौ वर्ष का फ़ासला था लेकिन रसूलों का सिलसिला दर्मियान में नहीं टूटा था। इस दर्मियान लग-भग एक हज़ार संदेष्टा हज़रत मूसा के बाद आये थे (वहीदी)

३१. हज़रत मूसा अ़लै० ने यह तक़रीर उस समय की थी जब वह मैदान में थे और अभी फ़लस्तीन में दाख़िल नहीं हुये थे। इस से पहले बनी इस्राईल में कोई बादशाह नहीं हुआ था इस लिये मैं ने "ज-अ़-ल" की तफ़्सीर "वादा" से की है। हो सकता है किसी मुफ़स्सिर को इस से भी अच्छी तफ़्सीर समझ में आये (सनाई)

تَرْتَدُّوْا عَلٰۤى اَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ۝٢١ قَالُوْا
يٰمُوْسٰۤى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۖۗ وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا
حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنَّا
دٰخِلُوْنَ ۝٢٢ قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ
اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ
فَاِنَّكُمْ غٰلِبُوْنَ ۚ۬ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْۤا اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝٢٣ قَالُوْا يٰمُوْسٰۤى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَاۤ اَبَدًا
مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَاۤ اِنَّا
هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ۝٢٤ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ لَاۤ اَمْلِكُ اِلَّا
نَفْسِيْ وَاَخِيْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ۝٢٥
قَالَ فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۚ
يَتِيْهُوْنَ فِى الْاَرْضِ ۭ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ
الْفٰسِقِيْنَ ۝٢٦ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ

और (दुश्मन को) पीठ न दिखाओ, वर्ना नुक़्सान उठाओ गे २२. (वह डरपोक) बोले कि ऐ मूसा इस मुल्क में बड़े ज़बर्दस्त लोग हैं जब तक वह वहाँ से न निकलें हम तो वहाँ जाने के नहीं हाँ, अगर वह लोग (स्वयं) निकल जायेंगे तो हम (तुरन्त) चले जायें गे[३२] २३. दो आदमी (यूशअ़ और कालब जो नाफ़र्मानी से) डरने वाले थे, जिन पर अल्लाह ने मेहरबानी की थी कहने लगे कि तुम (शहर के) दर्वाज़े से उन के पास चलो तो दाख़िल होते ही तुम ग़ालिब होगे[३३] (इस लिये चलो) और अल्लाह ही पर भरोसा करो (डर पोक न बनो) अगर ईमानदार हो (तो ऐसा ही करो) २४. वह बोले ऐ मूसा! जब तक वह इस ज़मीन में हैं हम कभी भी उस में नहीं जायें गे पस तू और तेरा ख़ुदा जाओ और लड़ते फिरो हम तो यहाँ ही बैठे हुये हैं[३४] २५. (इस पर हज़रत) मूसा ने कहा ऐ मेरे अल्लाह मैं अपने और अपने भाई के अ़लावा किसी पर क़ाबू नहीं रखता इस लिये तू हम में और उन बुरे लोगों में जुदाई कर दे २६. अल्लाह ने कहा कि यह लोग चालीस वर्ष तक उस (पाक ज़मीन) से महरूम रहें गे (इसी तरह) जंगल में भटके फिरें गे। इस लिये तू उन नाफ़र्मानों के हाल पर अफ़्सोस न कर[३५] २७. (ऐ नबी) तू उन को आदम के दो बेटों {हाबील और क़ाबील} का सच्चा क़िस्सा सुना

....

३२. जब एक क़ौम काफ़ी समय तक गुलामी की हालत में रह जाती है तो उस के अन्दर आज़ादी (स्वतन्त्रता) की

तड़प और भावना समाप्त हो जाती है और वह क़ौम गुलामी को ही अच्छा समझने लगती है। यही कुछ हाल बनी इस्राईल का भी था। आज़ादी हासिल करने के लिये उन के अन्दर तड़प ही नहीं थी, बुज़दिली और पस्त हिम्मती ने उन के पैरों को बाँध दिया था। जब हज़रत मूसा ने उन को आदेश दिया कि कन्आन की ज़मीन में दाख़िल हो जाओ जिसे अल्लाह ने तुम्हें देने का वादा किया है, तो वह कहने लगे कि वहाँ तो बड़े ताक़त वाले लोग रहते हैं हम उन से मुक़ाबला नहीं कर सकते। जब तक वह लोग वहाँ से निकल न जायें, हम क़दम नहीं उठायें गे।

तौरात में है कि बनी इस्राईल जंग का नाम सुन कर इतना घबरा गये थे कि वह रो-रो कर कहते थे कि "ऐ मेरे अल्लाह! तू ने हमें मिस्र से क्यों निकाला? क्या इस लिये कि हम कनआ़न के लोगों की तल्वारों से क़त्ल कर दिये जायें? उन्हों ने इरादा कर लिया था कि मिस्र वापस चले जायें और हज़रत मूसा को छोड़ दें (गिन्ती बाब १३,१४) इस पर अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया कि चालीस वर्ष तक यह लोग जज़ीरा नुमा-ए-सैना के मैदानों ही में पड़े रहें गे (तर्जुमान-मौलाना आज़ाद रह०)

३३. तौरात में है कि यह दो आदमी यूशा और कालब थे (गिन्ती बाब १४) (तर्जुमान)

३४. मदीना के अन्सार इस बात पर बधाई के योग्य हैं जिन्हों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ पूरी वफ़ादारी निभाई और हर मुसीबत और जंग में आपका साथ दिया और साफ़ शब्दों में यह कह दिया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का जहाँ पसीना गिरे गा हम वहाँ अपना ख़ून बहायें गे और हम उन लोगों की तरह नहीं हैं जिन्हों ने अपने नबी से कह दिया था "तुम और तुम्हारा रब जाओ लड़ो, हम तो यहीं बैठे हुये हैं"

३५. चुनान्चे ऐसा ही हुआ यहाँ तक कि हज़रत मूसा अ़लै० का देहान्त हो गया। इस के बाद यूशा ने उस ज़मीन (कन्आ़न) को फ़तह किया। यह उन की फ़र्माबरदारी की मुख़्तसर तारीख़ है जो इस समय आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुक़ाबले में हैं और हसद की आग में जले-भुने जाते हैं (सनाई)

إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ
مِنَ الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ ۖ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ
اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿٢٧﴾ لَئِنْ بَسَطْتَ إِلَيَّ يَدَكَ
لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسِطٍ يَدِيَ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَكَ ۖ
إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٨﴾ إِنِّي أُرِيدُ
أَنْ تَبُوءَ بِإِثْمِي وَإِثْمِكَ فَتَكُونَ مِنْ أَصْحَابِ
النَّارِ ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿٢٩﴾ فَطَوَّعَتْ لَهُ
نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٣٠﴾
فَبَعَثَ اللَّهُ غُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ
كَيْفَ يُوَارِي سَوْءَةَ أَخِيهِ ۚ قَالَ يَا وَيْلَتَا أَعَجَزْتُ
أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَٰذَا الْغُرَابِ فَأُوَارِيَ سَوْءَةَ

जब दोनों ने क़ुर्बानियाँ कीं तो एक की तो क़ुबूल हुयी और दूसरे की (तकब्बुर और रियाकारी की वजह से) क़ुबूल न हुयी (क़ाबील) बोला कि मैं तुम्हें अवश्य मार डालूँ गा। उस (हाबील) ने कहा कि अल्लाह केवल परहेज़गारों से क़ुबूल करता है[३६] २८. अगर तू मेरे मारने को हाथ फैलाना चाहता है तो (ख़ैर, पर) मैं तो तेरे क़त्ल करने का इरादा नहीं करता (क्यों कि) मैं अल्लाह रब्बुल आ़लमीन से डरता हूँ २९. बल्कि मैं चाहता हूँ कि तू ही मेरा गुनाह और अपना गुनाह समेटे और जहन्नमी बने, और यही ज़ालिमों की सज़ा है[३७] ३०. (मगर वह ऐसा बदमस्त था कि) उस के जी में भाई का मार देना ही भला मालूम हुआ चुनान्चे उस ने मार ही दिया पस वह टूटे में पड़ा ३१. फिर अल्लाह ने एक कौआ भेज दिया वह ज़मीन खोदने

أَخِي ۚ فَأَصْبَحَ مِنَ النَّدِمِينَ ﴿٣١﴾ مِنْ أَجْلِ ذَٰلِكَ ۚ
كَتَبْنَا عَلَىٰ بَنِي إِسْرَاءِيلَ أَنَّهُ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا

लगा ताकि अपने भाई की लाश (शव) का छुपाना सिखा दे (हैरत से) बोला कि हाये मेरी कम्बख़्ती (दुर्भाग्य) मैं उस कौए जैसा भी न हुआ कि (गड्ढा खोद कर) अपने भाई की लाश को छुपा दूँ, पस वह (कौए की सहानुभूति और अपनी कठोरता को देख कर) बहुत शर्मिन्दा हुआ ३२. इसी लिये बनी इस्राईल पर (जो शरीअ़त नाज़िल की उस में) हम ने लिख दिया था कि जो कोई किसी जान को बग़ैर किसी जान के बदले

....

३६. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि आदम अ़लै० से कहा गया था कि अपनी औलाद में से एक ही साथ (जुड़वाँ) पैदा होने वाले लड़की और लड़के का निकाह एक साथ न करें, बल्कि दूसरी बार पैदा होने वाली लड़की का निकाह पहले पैदा होने वाले लड़के से कर दें। हज़रत हव्वा अ़लै० से एक बार में एक लड़का और एक लड़की (जुड़वाँ) पैदा होते थे। एक बार जो लड़का और लड़की पैदा हुये वह निहायत सुन्दर थे और दूसरी बार में जो पैदा हुये उन में लड़की बुरी शक्ल की पैदा हुयी। इस पर बुरी शक्ल वाली लड़की के साथ पैदा होने वाले लड़के ने ख़ूबसूरत पैदा होने वाली लड़की के साथ के लड़के से कहा कि तू मुझे अपनी बहन दे दे और मैं तुझे अपनी बहन दे दूँ। इस पर उस ने इन्कार किया और कहा कि मैं ख़ुद ही अपनी सुन्दर बहन से निकाह करूँ गा। फिर दोनों ने क़ुर्बानी पेश की तो मेंढे वाले यानी हाबील की क़ुर्बानी क़ुबूल हुयी और खेती वाले यानी क़ाबील की क़ुर्बानी क़ुबूल न हुयी। इस पर क़ाबील ने हाबील को मार डाला (इब्ने अबी हातिम-इब्ने कसीर का कहना है कि इस रिवायत की सनद जय्यिद है)

इमाम राज़ी रह० का कहना है कि तक़्वा और परहेज़ गारी में तीन बातों पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिये (१) इताअ़त और फ़र्माबर्दारी में अधिक से अधिक अल्लाह से डरते रहना चाहिये और आज्ञा पालन कुछ भी कसर न उठा रखी जाये (२) ताक़त भर यह कोशिश होनी चाहिये कि इस से मक़्सूद केवल अल्लाह को प्रसन्न करना हो (३) अल्लाह के अ़लावा किसी की भी इतआ़त शामिल न हो (माजिदी)

३७. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने फ़रमाया: क़सम है अ़ल्लाह तआ़ला की आदम के दोनों बेटों में जो क़त्ल किया गया वह क़त्ल करने वाले से ताक़त में अधिक था, लेकिन उस को तक़्वा और परहेज़गारी ने भाई को क़त्ल करने से रोके रखा (इब्ने जरीर) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब दो मुसलमान एक दूसरे पर क़त्ल के लिये तल्वार उठायें तो दोनों जहन्नमी हैं। सहाबा ने कहा कि एक तो क़ातिल है लेकिन मक़्तूल क्यों दोज़ख़ में जाये गा? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया इस लिये कि वह भी तो अपने क़ातिल भाई को मार डालने पर तुला हुआ था (बुख़ारी, मुस्लिम) अबू सअ़ीद सुख़्तियानी फ़रमाते हैं कि इस उम्मत में जिस ने सब से पहले "लइम्-ब-सत्त इलय्य य-द-क" पर अ़मल किया वह हज़रत उस्मान रज़ि० थे (अबू हातिम) आप ने बाग़ियों से कोई मुक़ाबला नहीं किया और सब्र के साथ क़ुरआन मजीद की तिलावत करते हुये जान दे दी। आदम अ़लै० के दोनों बेटों में से हाबील भलाई में इस उम्मत के लिये नमूना (आदर्श) हैं, उन की इस बारे में इक़्तिदा (पैरवी) की जाती है। इसी प्रकार क़ाबील में बुरे लोगों के लिये नमूना है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: लड़ाई-झगड़े के मौक़े पर आदम के दोनों बेटों में से नेक बेटे (य़ानी हाबील) की तरह बन जाओ, फिर आप ने यह आयत तिलावत फ़रमाई (अहमद) "मेरे गुनाह" से मुराद उस बुरे ख़याल का गुनाह है जो हाबील के दिल में क़ाबील के हमला करने के समय पैदा हुआ था (सनाई) इस का माना यह भी हो सकता है "मेरे क़त्ल करने के गुनाह के साथ"। और यही अर्थ अक्सर उलमा ने लिया है (मवाहिब)

بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِى الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَآ اَحْيَا النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ ؗ ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِى الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ۝ اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْىٌ فِى الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِىْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ اِنَّ

या बिना मुल्क में फ़साद करने (की सज़ा) के मारता है वह गोया तमाम लोगों को क़त्ल[३८] करता है[३९]। और जिसने किसी नफ़्स को जीवित रखा तो उस ने गोया सब लोगों को ज़िन्दा रखा[४०]। और बिला शुब्हा हमारे रसूल उन के पास खुले-खुले अहकाम लाये इस के बाद भी बहुत से उन में से मुल्क में ज़्यादती करते फिरते हैं ३२. जो लोग (दंगा फ़साद कर के गोया) अल्लाह और उस के रसूल से जंग करते हैं और मुल्क में फ़साद फैलाने की कोशिश करते हैं[४१] उन की सज़ा बस यही है कि क़त्ल किये जायें या सूली दिये जायें या उन के हाथ और पाँव उल्टे-सीधे काट दिये जायें, या उनको देश से निकाल दिया जाए[४२] (यह सब सूरतें हाकिम की राये के अनुसार हों) यह ज़िल्लत उन (फ़सादियों) के लिये दुनिया में है और (अभी) आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब (बाक़ी) है ३४. मगर जो (डाकू) तुम्हारे क़ाबू पाने से पहले ही तौबा कर लें तो (उन को छोड़ दो और) जानो कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है[४३] ३५. मुसलमानो! अल्लाह से डरते रहो और (निक कामों से) उस की तरफ़ नज़दीकी तलाश करो और अल्लाह की राह में (सर तोड़) कोशिश करो ताकि तुम्हारा भला हो[४४]।

....

३८. 'गोया तमाम लोगों को क़त्ल किया' क्यों कि इस के जुर्म से और लोगों को भी क़त्ल की हिम्मत हुयी है इस लिये इस की सज़ा भी ऐसी होनी चाहिये थी जिस से आने वाली नस्लें सबक़ हासिल करें और क़त्ल के ख़याल को भूल जायें। (सनाई)

३९. इमाम अहमद ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से रिवायत की है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब भी किसी शख़्स को नाहक़ क़त्ल किया जाता है उस के ख़ून के गुनाह का एक हिस्सा आदम के उस लड़के (क़ाबील) को मिलता है, क्यों कि उस ने सर्वप्रथम क़त्ल कर के उस की राह खोली।

४०. 'गोया सब लोगों को जीवित रखा' क्यों कि इस नेक तरीक़े पर जितने भी लोग अ़मल करें गे उस को भी सवाब मिले गा (सनाई) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो इस्लाम में नेक तरीक़े जारी करेगा तो जितने लोग उस पर अ़मल करें गे उन सब के बराबर सवाब मिले गा। और जो कोई किसी प्रकार की गुमराही और बिद्अ़त का तरीक़ा जारी करे गा तो क़ियामत तक उस पर चलने वालों को जितना गुनाह मिलेगा उस को भी उतना ही मिलेगा (?) आज-कल की ज़ो नई-नई रस्में और बिद्अ़तें ईजाद की जा रही हैं उन का भी यही हाल है।

४१. यह आयत उन डाकुओं के बारे में नाज़िल हुयी जो धोका दे कर मुसलमान बन गये थे और जलन्दर के मरीज़

➲थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन को सद्का के ऊँटों में भेज दिया ताकि वहाँ आराम के साथ उन ऊँटों का दूध वग़ैरह पियें। चुनान्चे वह तन्दुरुस्त हो गये मगर ग़द्दारी पर उतर आये, चरवाहे को क़त्ल कर दिया और उस की आँखों में बबूल के काँटे गाड़ दिये और ऊँटों को भी ले कर भाग गये। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन्हें पकड़वा कर क़िसास (बदले) में उसी तरह क़त्ल करवा दिया जिस तरह उन्हों ने सद्क़ा के ऊँटों के चरवाहे को क़त्ल किया था (बुख़ारी, मुस्लिम)

४२. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि जिस ने इस्लाम में हथियार उठाया और राह चलने वालों को डराया-धमकाया और फ़साद किया, तो मुसलमानों के इमाम को इस बात का इख़्तियार है कि उसे पकड़ कर अगर मुनासिब समझे तो क़त्ल कर दे या सूली-फांसी दे दे, और अगर चाहे तो उस के हाथ-पाँव काट दे। अक्सर उलमा का भी यही फ़तवा है (इब्ने जरीर)

४३. इस आयत में इस बात की तरफ़ इशारा है कि उस के तौबा-तिल्ला करने से केवल अल्लाह के हुदूद ही ख़त्म हों गे, जिस पर ज़ुल्म किया है उस के हक़ नहीं समाप्त हों गे। चुनान्चे उस ने जिस का माल लिया है उसे वापस करना हो गा, या फिर माफ़ कराये। इस में इस अहम बात की तरफ़ इशारा है कि लोगों को चाहिये कि वह भी माफ़ कर दें और जिस प्रकार अल्लाह की क्षमा-दान देने की आदत है इसी प्रकार बन्दे अपनी आ़दत बनाने की कोशिश करें, इसी लिये फ़रमाया है "अल्लाह उस पर रहम करे गा, वह बख़्शने वाला मेहरबान है"।

४४. कुरआन मजीद जहाँ कहीं बुराइयों को समाप्त करने के लिये सख़्त क़दम उठाने का हुक्म देता है (जैसे जंग करने का, क़िसास लेने का, मुजरिमों को दन्ड देने का, तलाक़ देने का) तो तुरन्त ही इस के बाद अल्लाह से डरते रहने और न्याय में सीमा से आगे न बढ़ने पर विशेष रूप से ज़ोर देता है, ताकि सख़्ती में आ कर लोग ज़ुल्म व ज़्यादती न कर बैठें। चुनान्चे सज़ा के हुक्म के बाद इस आयत में भी तक़्वा और परहेज़ गारी का हुक्म दिया (तर्जुमान) जितने लोगों ने यहाँ वसीला से मुराद क़ब्रों, समाधियों और वलिय्यों की पूजा लिया है उन्हों ने सख़्त धोका खाया है। आयत में तक़्वा और जिहाद तो खुद वसीला की तफ़्सीर के तौर पर मौजूद है। दूसरी बात यह है कि ग़ैरुल्लाह की पूजा को अल्लाह को खुश रखने का वसीला बनाना मुश्रिकों का अ़क़ीदा और मज़हब था। वह कहा करते थे "हम उन बुतों को केवल वसीला के तौर पर पूजते हैं उन को हम खुदा नहीं मानते हैं" (सूरः जुमर, आयत ३) क्या बिल्कुल यही हाल आज के मुश्रिकों और बिद्अ़ती मुसलमानों का नहीं है?

---

३६. (सुनो) आज जिन लोगों ने कुफ़्र किया अगर पूरी दुनिया के माल से दोगुना भी उन को मिले कि जुर्माना दे कर क़ियामत के अ़ज़ाब से छूट जायें तो भी यह उन से कुबूल न हो गा और उन को निहायत दुःख की मार होगी ३७. (ऐसी मार कि) उस से निकलना चाहें गे पर निकल न सकें गे (क्यों कि अल्लाह के आदेश के अनुसार) उन के लिये हमेशा-हमेशा का अ़ज़ाब है ३८. (कुफ़्र,शिर्क,बद अख़्लाक़ी किसी प्रकार अल्लाह को पसन्द नहीं[४५], इस लिये) चोर मर्द हो या औरत[४६] उन के (दाहिने) हाथ उन की➲

الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا
وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ
مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٣٦﴾ يُرِيدُونَ
أَن يَخْرُجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُم بِخَارِجِينَ مِنْهَا ۖ
وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٧﴾ وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ
فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا جَزَاءً بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ
اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٣٨﴾ فَمَن تَابَ مِن بَعْدِ
ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٩﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٠﴾ يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ

चोरी के बदले काट दिया करो यह दन्ड (उन के हक़ में) अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर हैं। और अल्लाह बड़ा ज़बर्दस्त और हिक्मत वाला है[४७] ३९. हाँ, जो ज़ुल्म (औरज़्यादती) करने के बाद तौबा कर ले और भला मानुस बन जाये तो अल्लाह उस पर रहम करेगा। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है ४०. क्या तुम नहीं जानते[४८] कि अल्लाह की हुकूमत तमाम आसमानों और ज़मीनों में है। जिस को अ़ज़ाब करना चाहे कर सकता है और जिस को बख़्शना चाहे बख़्श सकता है। और अल्लाह हर वस्तु पर कुदरत रखने वाला है ४१. ऐ रसूल! जो लोग कुफ़्र में क़ोशिश करते हैं और ज़बान से ईमान का इज़हार करते हैं और दिल से ईमान्दार नहीं

....

४५. यही वजह है कि कुछ बदअख़्लाक़ियों के सिलसिले में जिन का प्रभाव दूसरों पर भी पहुंचता हो, अल्लाह ने उन बदअख़्लाक़ियों पर भी दुनिया में कन्ट्रोल के उद्देश्य से दन्ड मुक़र्रर कर रखा है। बद अख़्लाक़ी में सब से गन्दी चीज़ चोरी है इस लिये तुम को इस के ख़त्म करने के बारे में हुक्म बतलाये जाते हैं (सनाई)

४६. चोरी में पुरुष को महिला से पहले रखा। इस का कारण यह है कि यह काम मर्द ज़्यादा करते हैं। इसी प्रकार ज़िना के मामले में महिला को पुरुष से पहले बयान किया। इस का कारण यह है कि महिलाओं के अन्दर ज़िना का ख़याल मर्दों से अधिक होता है (मवाहिब)

४७. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "चार दीनार या इस से ज़्यादा की चोरी करने पर हाथ काटा जाये" (बुख़ारी) एक दूसरी रिवायत में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "चोर का हाथ न काटा जाये मगर चार दीनार में या इस से ज़्यादा में" (मुस्लिम)

४८. ऐसे लोगों को तो दुनिया के मामूली हाकिम भी माफ़ कर देते हैं जिन को ऐसे मुजरिमों की शरारत से हुकूमत में ख़राबी आ जाने का अन्देशा भी होता है, फिर अल्लाह की हुकूमत तो.........(सनाई)

قُلُوْبُهُمْ ۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۚ سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ؕ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ مِنْۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ اِنْ اُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ وَاِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ؕ وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ؕ لَهُمْ فِى الدُّنْيَا خِزْيٌ ۚ

और जो यहूदियों में से झूठ की ग़रज़ से और ग़ैर क़ौम के लिये जो (आज तक) तेरे पास नहीं आये कन्सूइयाँ लेते फ़िरते हैं[४९], तू (ऐ रसूल) उन से रन्जीदा न हो। (यह तो ऐसे सरकश हैं कि) अल्लाह के कलाम को भी अस्ल जगह से बेजगह कर देते हैं[५०]। कहते हैं कि अगर तुम को यही अर्थ बतलाये जायें तो कुबूल कर लेना और अगर यह न हों तो उन से बचना (हर्गिज़ कुबूल न करना) और जिस को अल्लाह गुमराही में रखना चाहे तो तुझे अल्लाह की तरफ़ से

وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٤١﴾ سَمَّاعُونَ لِلْكَذِبِ أَكَّالُونَ لِلسُّحْتِ ۚ فَإِنْ جَاءُوكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۖ وَإِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَضُرُّوكَ شَيْئًا ۖ وَإِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ﴿٤٢﴾ وَكَيْفَ يُحَكِّمُونَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرَاةُ فِيهَا حُكْمُ اللَّهِ

उस के बचाने का कोई इख़्तियार नहीं। अल्लाह ने उन के दिलों को पाक करना नहीं चाहा। उन के लिये दुनिया में ज़िल्लत है और आख़िरत में भी बड़ा अ़ज़ाब होगा[५१] ४२. झूठी बातें सुनने के आ़दी हराम ख़ोरी के आ़दी। पस अगर तेरे पास आयें तो (तुझे इख़्तियार है कि) उन में फ़ैसला कर या नज़र अन्दाज़ कर, और अगर तू उन को नज़र-अन्दाज़ करे गा तो वह तुझे किसी प्रकार नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते। हाँ, अगर फ़ैसला करना चाहे तो उन का फ़ैसला इन्साफ़ से कीजियो। बेशक अल्लाह न्याय करने वाले हाकिमों से मुहब्बत करता है[५२] ४३. (भला) वह तुझे मुन्सिफ़ (न्यायाधीश) क्यों ठहराते हैं हालाँकि उन के पास तौरात मौजूद है उस में (इस बारे में) अल्लाह का आदेश मौजूद है

....

४९. 'कन्सूइयाँ' का अर्थ है "चोरी छुपे कान लगा कर सुनने की कोशिश करना" (लुग़ाते जदीद)

५०. 'अस्ल जगह से बेजगह कर देते हैं' बल्कि अगर बस चले तो जुम्लों ही को मिटा दें। और अर्थ बदलने में तो इन को कोई कठिनाई ही नहीं होती। सामने वाले को जैसा देखा वैसा ही कर लिया (सनाई) यानी यहूद के लिये ऐ हमारे रसूल! तुझ को हकम (मुन्सिफ़) बनने की क्या ज़रूरत है, इन के हाँ तो तौरात में अल्लाह के अहकाम ख़ुद मौजूद हैं। यह तो दिल के खोट की वजह से तेरे पास अपने मुक़द्दमे लाते हैं।

५१. किसी बात की टोह में रहना, जासूसी करना, इधर की बात उधर लगाना, यह सब ऐसी आ़दतें हैं जो ईमान के साथ इकट्ठी नहीं हो सकतीं। मदीना के यहूदी उलमा मुनाफ़िक़ों को भेजते थे कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मज्लिसों में बैठें और वहाँ की बातें हम लोगों तक पहुंचायें। उन से कहते कि अपने मामलात उन के सामने रख कर देखो कि वह क्या न्याय देते हैं। फिर अगर उन का फ़ैसला हमारे हुक्म के अनुसार हो तो उसे मानो वर्ना क़बूल न करो। हालाँकि तौरात की आयतें अपने स्थान पर बिल्कुल ही स्पष्ट हैं उस के अहकाम भी ज़ाहिर हैं फिर भी यह लोग बेधड़क उस में फेर-बदल कर देते हैं और उन आयतों का मतलब कुछ का कुछ बना देते हैं (तर्जुमान)

मदीना के यहूदियों में दो-एक घटनायें ऐसी घटीं कि उन्हें नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मुन्सिफ़ (न्याय कर्ता) बनाना पड़ा। एक तो ज़िना का मस्अला था। दूसरा बनी क़ुरैज़ा और बनी नज़ीर का आपसी झगड़ा था जो पुराने समय से चला आ रहा था। बनी नज़ीर के लोग क़िसास आदि में अपने आप को बड़ा समझते थे और अपने आदमियों के बारे में उन से दोगुना क़िसास (ख़ून का बदला) लेते थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लभ ने उन दोनों झगड़ों में तौरात ही के अनुसार फ़ैसला दिया। यहूदियों ने तौरात में उन स्थानों को बहुत छुपाने की कोशिश की लेकिन नाकाम रहे और शर्मिन्दगी उठानी पड़ी, इस घटना के संबन्ध में यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई/मआ़लिम)

५२. किसी के लड़ाई-झगड़े या गाली-गुलूच से डर कर, या बदनामी के ख़ौफ़ से, या लोगों के बीच नाम कमाने के चक्कर में पड़ कर इन्साफ़ से हट कर फ़ैसला न करना चाहिये, क्यों कि यह सब बातें अल्लाह के इख़्तियार में हैं। वह जिस को चाहे अ़िज़्ज़त और नेक-नामी दे और जिस को चाहे ज़िल्लत और बदनामी दे। इस लिये तू उसी

➲से अपने संबन्ध को जोड़े रख और किसी मुरव्वत और लाग-लिपट के बिना फ़ैसला सुना, अल्लाह तआ़ला ऐसे ही लोगों से मुहब्बत करता है (सनाई)

'सुह्त' हर प्रकार की हराम चीज़ को कहते हैं। हज़रत अ़ली रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: 'सुह्त' रिश्वत का भी नाम है। आप से पूछा गया कि क्या हुक्म देने में रिश्वत लेना भी? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह तो कुफ़्र है। एक दूसरी रिवायत में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "फ़ैसला सुनाने के बदले में रिश्वत लेने और देने वाले पर अल्लाह ने लानत फ़रमाई है (तिर्मिज़ी) कुछ उलमा का कहना है कि अगर जज्ज रिश्वतख़ोर है और वह बग़ैर इस के सही और हक़ फ़ैसला नहीं करे गा, तो इस सूरत में उसे देना जायज़ है (मवाहिब)

ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ وَمَآ أُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٣﴾
إِنَّآ أَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيهَا هُدًى وَّنُورٌ ۚ يَحْكُمُ
بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا لِلَّذِينَ هَادُوا
وَالرَّبّٰنِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوا مِنْ كِتٰبِ
اللّٰهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ
وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيٰتِي ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ
وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ أَنْزَلَ اللّٰهُ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ
الْكٰفِرُونَ ﴿٤٤﴾ وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَآ أَنَّ النَّفْسَ
بِالنَّفْسِ ۙ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ
وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ وَالْجُرُوحَ
قِصَاصٌ ۚ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهُ ۚ
وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ أَنْزَلَ اللّٰهُ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ
الظّٰلِمُونَ ﴿٤٥﴾ وَقَفَّيْنَا عَلٰٓى آثَارِهِمْ بِعِيسَى ابْنِ

इस के बाद भी यह लोग (हक़ को मानने से) मुंह फेरे चले जाते हैं। उन के पास तो सिरे से ईमान ही नहीं। ४४. बेशक हम ने तौरात उतारी थी उस में हिदायत और नूर था, उसी के साथ अल्लाह के फ़रमाबर्दार (बन्दे,) अन्बिया और मशाइख़ और उलमा[५३] यहूदियों के दर्मियान फ़ैसले करते रहे, क्यों कि अल्लाह की किताब की हिफ़ाज़त उन पर डाली गयी थी और वह उस के निगहबान थे, इस लिये (उचित है कि तुम) लोगों से न डरो और मुझ ही से डरो और मेरे अहकाम को बिगाड़ कर दुनिया के नाचीज़ {हक़ीर} दाम न लिया करो[५४] जो लोग अल्लाह के उतारे हुये अहकाम से फ़ैसला न करें गे वही काफ़िर हैं। ४५. (सुनो!) हम ने उस में हुक्म दिया था[५५] कि जान के बदले जान (मारी जाये) और आँख के बदले आँख (निकाली जाये) और नाक के बदले नाक (काटी जाये) और कान के बदले कान और दाँत के बदले दाँत और घाव पर भी बदला है[५६]। हाँ, जो शख़्स उस को छोड़ दे वह उस के (गुनाहों के) लिये कफ़्फ़ारा है[५७]। और जो कोई अल्लाह के उतारे हुये हुक्म से फ़ैसला न करें वही (अल्लाह के नज़दीक) ज़ालिम हैं[५८] ४६. और उन्हीं (नबियों) के क़दम ब क़दम हम ने मसीह बिन मरयम को

....

५३. 'रब्बानी' वह लोग हैं जो हर हाल में अल्लाह से उम्मीदें रखते हैं। 'अह्बार' उन उलमा को कहते हैं जो अल्लाह और उस की निशानियों को जानते हैं। इब्ने ताहिर ने मुख़्तसर तौर पर इस बात की ओर इशारा किया➲

➲है कि 'रब्बानी' सहाबा रज़ि० हैं जिन्हों ने अल्लाह के कलाम को नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुना और 'अह्बार' वह उलमा हैं जिन्हों ने कुरआन व हदीस का ज्ञान प्राप्त किया और फिर उस के अनुसार अ़मल किया (मवाहिब) 'रब्बानी' और 'अह्बार' यहूदियों के उलमा और मशाइख़ बुज़ुर्गों को भी कहा जाता है (तर्जुमान)

५४. यानी ऐ यहूदियों! जिस बात को तुम जानते हो उसे न छुपाओ। जैसे यह जानते हो कि शादी शुदा (विवाहित) मर्द और औ़रत को ज़िना के जुर्म में पत्थरों से मार मार कर हलाक कर दिया जाये। तुम ने यह भी पढ़ा है कि अन्तिम समय में मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अ़रब द्वीप में नबी बनाये जायें गे और उन की यह-यह सिफ़तें (विशेष्तायें) हों गी उन पर ईमान लाना तमाम ही इन्सानों और जिन्नों पर फ़र्ज़ है। तुम इन बातों को लोगों के डर से मत छुपाओ (तल्ख़ीस)

५५. इस आयत में तौरात के जिस स्थान का ज़िक्र किया है वह अब भी किताब ख़ुरूज २२-२४ और इस्तिसना,१९-२१ में मौजूद है।

५६. हम से पहले की उम्मतों पर जो शरीअ़त फ़र्ज़ थी वह हमारे लिये भी है, मगर शर्त यह है कि हमारी शरीअ़त ने उन्हें मन्सूख़ न किया हो (इब्ने कसीर) इमाम हसन बसरी रह० ने कहा कि यह आयत बनी इस्राईल पर और हम पर आ़म है। चुनान्चे उलमा ने बिना किसी इख़्तिलाफ़ के इसी आयत से क़िसास का हुक्म निकाला है। सूर: बक़र: में है "क़िसास फ़र्ज़ है। आज़ाद, आज़ाद के बदले और गुलाम, गुलाम के बदले और महिला, महिला के बदले"। और यहाँ इस सूर: में "जान के बदले जान, आँख के बदले आँख वग़ैरह है। लेकिन यह हुक्म आ़म है। यहाँ यह बताया जा रहा है कि चाहे मर्द के बदले औ़रत हो, या औ़रत के बदले मर्द हो, या इस के उल्टा हो। इसी लिये तमाम आ़लिमों ने इस आयत से दलील पकड़ी है कि अगर मर्द ने औ़रत को, या औ़रत ने मर्द को क़त्ल कर दिया तो क़िसास (ख़ून का बदला लेने में) जिसने क़त्ल किया है उस को ही क़त्ल किया जाये गा। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अ़मर बिन हज़्म को पत्र लिखा कि मर्द को औ़रत के क़त्ल के बदले में क़त्ल किया जाये गा (नसई)

५७. अबू दावूद की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिस मुसलमान को उस के जिस्म में तक्लीफ़ पहुंचाई गयी और उस ने माफ़ कर दिया तो बदले में अल्लाह तआ़ला उस के दर्जे को बुलन्द करता है और उस के गुनाहों के लिये इस तक्लीफ़ को कफ़्फ़ारा बना देता है (इब्ने जरीर वग़ैरह)

५८. यहाँ, इस आयत से यह मस्अ़ला साबित होता है कि इज्तिहाद करना जायज़ है और यह भी साबित हुआ कि मुक़ल्लिद क़ाज़ी नहीं हो सकता। इस लिये कि तक़्लीद अ़िल्म की ज़िद (विलोम) है। मुक़ल्लिद को न तो कुरआन का अ़िल्म होता है न ही हदीस का, उस का अ़िल्म उस के ईमाम की राय और क़ियास और फ़त्वे के मुताबिक़ होता है।

इस आयत से यह हुक्म निकलता है कि फ़ैसला अल्लाह के उतारे हुये हुक्म के मुताबिक़ हो जो कि कुरआन पाक और सहीह हदीसें हैं। इसी लिये जब हज़रत मआ़ज़ बिन जबल रज़ि० को मुल्क यमन का क़ाज़ी बना कर भेजा गया तो उन से पूछा कि तुम किस प्रकार फ़ैसला करो गे? उन्हों ने कहा कि पहले मैं कुरआन में देखूँ गा, फिर हदीस में, इस के बाद अपनी राए से सोचूँ गा और सोचने में कोई कमी न छोड़ूँ गा। यह सुन कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बहुत प्रसन्न हुये और उन को दुआ़यें दीं (वहीदी)

مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ
وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ وَّمُصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً

इस से पहले (सच्ची किताब यानी) तौरात की तस्दीक़ करने वाला भेजा और उस को इन्जील किताब भी दी उस में हिदायत और नूर था, और तौरात की जो इस से पहले उतरी हुयी थी तस्दीक़ करती थी और वह हिदायत और परहेज़गारों➲

لِلْمُتَّقِيْنَ ۝٤٦ وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ فِيْهِ ۭ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰۗىِٕكَ
هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝٤٧ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَ
مُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاۗءَهُمْ عَمَّا جَاۗءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۭ لِكُلٍّ
جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ
لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ
اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۭ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝٤٨ وَاَنِ احْكُمْ

के लिये नसीहत थी। ४७. (अब भी) इन्जील वालों को चाहिये[५९] कि अल्लाह ने जो उस में अहकाम उतारे हैं उन से फ़ैसला करें। और जो अल्लाह के उतारे हुये अहकाम से फ़ैसला न करें गे वही बुरी राह पर हैं[६०] ४८. और (इन के बाद ऐ रसूल!) हम ने तेरी तरफ़ सच्ची किताब उतारी है जो अपने से पहली किताब (के सच्चे मज़मूनों) की तस्दीक़ करती है और उस की निगरानी करने वाली है[६१] इसी लिये तुम तो (ऐ पैग़म्बर) उन में अल्लाह के उतारे हुये हुक्मों के अनुसार फ़ैसला करो और जो तेरे पास सच्ची तालीम आयी है उसे छोड़ कर उन की ख़ाहिशों के पीछे न हो। हम ने तुम में से हर एक को (समय-समय पर) शरीअ़त और मज़हब बतलाया है[६२]। और अगर अल्लाह चाहता तो सब को एक जमाअ़त कर देता लेकिन वह जब्र नहीं करता ताकि तुम को तुम्हारे दिये हुये अधिकारों में आज़माए[६३] इस लिये तुम नेक कामों की तरफ़ लपको। (और जल्दी करो) अल्लाह ही की तरफ़ तुम सब को फिर कर जाना है वह तुम को जिस में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे {उस से} ख़बर्दार करे गा।

....

५९. आज कल जो इन्जील मौजूद है वह मनघड़त है। अस्ल इन्जील अब दुनिया में नहीं है। इस आयत में उसी अस्ल इन्जील की तरफ़ इशारा है, आजकल की बनावटी इन्जील से कुछ लेने-देना नहीं (राज़)

६०. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने कहा कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के हुक्म का इन्कार करे गा वह काफ़िर हो जाये गा। और जो अल्लाह का हुक्म जान लेने के बावजूद उस के अनुसार न्याय न करे गा वह ज़ालिम और फ़ासिक़ हो गा (वहीदी)

६१. यानी जिन विषयों में क़ुरआन के अहकाम तौरात और इन्जील के अनुसार हैं (तौरात और इन्जील के उन अहकाम को) सही समझो! जैसे, तौहीद रिसालत और शरीअ़त के बाज़ अहकाम। और जिन अहकाम में क़ुरआन उन की मुख़ालिफ़त कर रहा है उन्हें ग़लत और मनघड़त समझो जैसे, तसलीस और मसीह को बेटा वग़ैरह मानना (सनाई) 'निगहबान' का मतलब यह है कि वह अहकाम की हिफ़ाज़त करने वाला है। अगर वह न नाज़िल होता तो पिछली किताबों के तमाम अहकाम और सच्चाइयाँ तहरीफ़ और तब्दीली के नतीजे में गुम हो जातीं। इस तौर पर क़ुरआन तमाम पिछली किताबों की तस्दीक़ और उन की निगरानी करने वाला है।

६२. अस्ल दीन जो है वह ख़ुदा परस्ती और नेक अ़मली का क़ानून है। शरीअ़त, मिन्हाज, दस्तूर और तौर-तरीक़ा इन को उस अस्ल के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये बनाया गया है (तर्जुमान-आज़ाद)

६३. वह बतला दे गा कि कौन आज्ञापालन करता है और कौन अवज्ञा करता है। यही कारण है कि जब शराब हराम की गयी तो जिन सहाबा के पास शराब थी उन्हों ने आज्ञा का पालन करते हुये तुरन्त फेंक दी और शराब के बर्तनों को भी तोड-फोड़ दिया। अल्लाह के आज्ञा कार बन्दे इसी प्रकार अ़मल के लिये सदा तैयार रहते हैं।

بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْ بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ۭ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ۝ اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ۭ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى اَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَتَرَى الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰٓى اَنْ تُصِيْبَنَا دَاۗىِٕرَةٌ ۭ فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَ بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهٖ فَيُصْبِحُوْا عَلٰي مَآ اَسَرُّوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ

४९. और तू उन में अल्लाह के उतारे हुये (कुरआन) के मुताबिक़ हुक्म कर[६४] और उन की ख़ाहिशों पर न चल और उन से बचता रह कि कहीं किसी हुक्म से जो अल्लाह ने तेरी तरफ़ उतारा है तुझे भटका न दें[६५]। अगर वह नाफ़र्मानी करें तो यक़ीन जान कि अल्लाह को यही मन्ज़ूर है कि उन के बुरे अ़मलों की वजह से उन को कोई अ़ज़ाब पहुंचा दे। और (सच पूछो तो) उन लोगों में से अक्सर बदकार हैं[६६] ५०. क्या फिर जाहिलिय्यत की हुकूमत चाहते हैं? और ईमान्दारों के लिये अल्लाह के हुक्म से किस का हुक्म अच्छा हो सकता है[६७]? ५१. मुसलमानो! यहूदियों और अ़ीसाईयों को (मुख़्लिस) दोस्त न समझा करो[६८]। यह लोग एक दूसरे के दोस्त हैं। (इस लिये याद रखो कि) जो उन से दोस्ती की पींगें बढ़ाये गा वह (क़ियामत के दिन) उन्हीं में से हो गा[६९]। बेशक ज़ालिमों को अल्लाह हिदायत नहीं दिया करता ५२. फिर भी तू दिल के बीमारों को देखता हो गा कि उन (बिदीनों) के मामले में दौड़-धूप कर रहे हैं[७०], कहते हैं कि हम को डर है कि हम को कोई मुसीबत न पहुंच जाये[७१]। तो वह दिन दूर नहीं जब तुम को अल्लाह खुली फ़तह दे गा या अपने पास से कोई (और ग़लबा की सूरत) पैदा कर देगा, फिर यह (मुनाफ़िक़) अपने जी की पोशीदा बातों पर खुद शर्मिन्दा हो जायें गे।

....

६४. यह बात भी मालूम रहे कि इस में रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत भी शामिल है, चुनान्चे सही हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मुझे कुरआन और उस के साथ उतना और मिला है"। इस का नाम हिक्मत है जिस को दूसरे शब्दों में "सुन्नत" अथवा "उस्व-ए-हसना" कहा गया है। सही बात यह है कि सुनन्त पोशीदा वह्यि है जो कुरआन के पोशीदा मानों को स्पष्ट करती है।

६५. कुछ यहूद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहते थे कि अगर आप हमारी इच्छा नुसार फ़ैसले सुनाया करें तो हम मुसलमान हो जायें गे इस पर अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को होशियार कर दिया और कुरआन के अनुसार फ़ैसले करने की ताकीद फ़र्मा दी।

६६. इन को न तो अल्लाह, रसूल से मतलब है न दीन और मज़हब से। यह तो बस अपने मतलब के यार हैं (सनाई)

६७. इस्लाम के आने से पूर्व अ़रब की जो हालत थी उसे "जाहिलिय्यत" का नाम दिया गया है। इस लिये कि उस➲

समय के लोग दुनिया भर की खुराफ़ात और वह्म में मुबतला थे, इ़ल्म और सोचने-समझने की सलाहिय्यत(क्षमता) से महरूम थे (तर्जुमान) 'जाहिलिय्यत' उस समय को कहते हैं जिस में कोई नई शरीअ़त ज़मीन पर न आई हो। चंगेज़ ख़ाँ ने शरीअ़त के अहकाम के साथ अ़क़्ली तर्क मिला कर क़ानून की एक किताब बनाई थी, इस किताब को उलमा ने जाहिलिय्यत के अहकाम बताया है और शरीअ़त को छोड़ कर इस प्रकार की किताबों को सामने रख कर फ़ैसला देने से सख़्ती के साथ मना फ़रमाया है (अह्सनुत्तफ़ासीर)

६९. शाने-नुज़ूलः- उहुद की लड़ाई में जब मुसलमानों को पराजय का सामना करना पड़ा तो दो व्यक्तियों ने आपस में बात-चीत की। एक शख़्स ने कहा कि मैं तो फ़लाँ यहूदी से दोस्ती कर लूँ गा ताकि भविष्य में कोई चिन्ता न रहे। दूसरे ने कहा कि मैं तो मुल्क शाम जा कर वहाँ फ़लाँ ई़साई से दोस्ती कर लूँ गा ताकि मेरी परेशानी में वह काम आये, इस पर अल्लाह तआ़ला ने इन आयतों को नाज़िल किया (इब्ने कसीर)

हज़रत इक्रमा से रिवायत है वह कहते हैं कि यह आयत अबू लुबाबा बिन अ़ब्दुल्लाह मुन्जुर के बारे में नाज़िल हुयी। जाहिलिय्यत के ज़माना में उन की बनी क़ुरैज़ा के यहूदियों से दोस्ती थी। उन को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़ुरैज़ा के पास यह संदेश दे कर भेजा कि वह लोग अपने क़िलों से नीचे उतर आयें। बनू क़ुरैज़ा ने अबू लुबाबा से पूछा कि हमारा क्या अन्जाम होगा? उन्हों ने गले की तरफ़ इशारा कर के कहा कि ज़ब्ह किये जाओ गे. ....अबू लुबाबा एक पक्के-सच्चे मुसलमान थे। उन की ज़बान से यह बातें ग़लती से निकल गयीं थीं (इब्ने जरीर)

७०. इस आयत में हिदायत की गयी है कि यहूद और नसारा जो मक्का के मुश्रिकों की तरह दुश्मनी में लगे हुये हैं इन को अपना साथी, दोस्त और मदद गार न बनाओ। जो लोग मुनाफ़िक़ हैं वह मुसलमानों को छोड़ कर उन की तरफ़ दौड़े जा रहे हैं लेकिन बहुत जल्द उन्हें पछताना पड़े गा (तर्जुमान)

७१. किसी जंग में उन की जीत और मुसलमानों की हार हो, तो अगर हम उन से मिल कर न रहें गे तो वह ऐसे मौके पर हमारे काम नहीं आयें गे। खुलासा यह है कि उन को इस्लाम की हक़ीक़त का ज्ञान नहीं है और मतलब के यार हैं इसी लिये इधर-उधर भटकते फिरते हैं (सनाई) आज-कल के बहुत से नाम के मुसलमानों का भी यही हाल है जो केवल मतलब के यार हैं, इस्लाम रहे या जाये इन से कोई मतलब नहीं। यही वह अभागे लोग हैं जिन से इस्लाम को नुक़्सान पहुंचता रहा है। उहुद की लड़ाई में भी ऐसे ही मुसलमानों ने पीठ दिखाई थी और आज भी ऐसा समय आने पर दीन, ईमान, क़ुरआन, हदीस और इस्लाम की इ़ज़्ज़त को भुला कर पीठ दिखा जाते हैं (राज़)

نٰدِمِیْنَ ۝ وَیَقُوْلُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْٓا اَھٰٓؤُلَآءِ
الَّذِیْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰہِ جَھْدَ اَیْمَانِھِمْ ۙ اِنَّھُمْ
لَمَعَكُمْ ؕ حَبِطَتْ اَعْمَالُھُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِیْنَ ۝
یٰٓاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَنْ یَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِیْنِہٖ
فَسَوْفَ یَاْتِی اللّٰہُ بِقَوْمٍ یُّحِبُّھُمْ وَیُحِبُّوْنَہٗٓ ۙ
اَذِلَّةٍ عَلَی الْمُؤْمِنِیْنَ اَعِزَّةٍ عَلَی الْكٰفِرِیْنَ ۫
یُجَاھِدُوْنَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ وَلَا یَخَافُوْنَ
لَوْمَةَ لَآئِمٍ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰہِ یُؤْتِیْہِ مَنْ

५३. और मुसलमान कहें गे कि यह वही हैं जो बड़े ज़ोर की क़समें खाया करते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं (चूँकि) उन की कोशिशें बर्बाद हुयीं इस लिये यह (अब) स्पष्ट नुक़्सान उठाये हुये हैं ५४. इस लियें मुसलमानों! (सुन लो कि) जो शख़्स तुम में से अपने दीन से मुर्तद हो गा (वह किसी का कुछ न बिगाड़े गा) अल्लाह अपने दीन की सुरक्षा के लिये ऐसे लोग तय्यार करे गा जिन से वह मुहब्बत करे गा और वह उस से मुहब्बत करें गे, मुसलमानों से नर्म[७२] काफ़िरों के मुक़ाबला में मज़बूत (हों गे) वह अल्लाह की

يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۞ اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ
وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ
وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ۞ وَمَنْ يَّتَوَلَّ
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ
اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۞ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

राह में जिहाद करें गे और किसी मलामत करने वाले की मलामत का ख़ौफ़ न करें गे। (वास्तव में) यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे वह चाहे दे। और अल्लाह बड़ी कुशादगी वाला इ़ल्म वाला है[७३] (इस लिये तुम अल्लाह के हो जाओ) ५५. तुम्हारे (हक़ीक़ी) दोस्त अल्लाह और रसूल और वह मुसलमान हैं जो नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते हैं और अल्लाह के आगे आजिज़ हैं ५६. और जो लोग अल्लाह और उस के रसूल और और ईमान्दारों से दोस्ती गाँठते हैं[७४] पस अल्लाह की जमाअ़त ही ग़ालिब हुआ करती है। ५७. (जभी तो) मुसलमानो!

....

७२. इस आयत में मुसलमानों की यह शान बताई गयी है कि वह आपस में एक दूसरे के साथ नर्म हैं, लेकिन दुश्मनों के मुक़बला में सख़्त होते हैं। अल्लाह की राह में जान दे देने वाले, और किसी मलामत करने वाले की मलामत की पर्वाह न करने वाले, नमाज़ को क़ाइम रखते हैं ज़कात अ़दा करते हैं और अल्लाह की सहायता पर भरोसा रखते हैं। जिन के अन्दर यह विशेष्तायें हों वह "हिज़बुल्लाह" हैं, यानी अल्लाह का वह गरोह जो कभी इन्सानों से शिकस्त नहीं खाता। यह गरोह अन्सार और मुहाजिरीन का था।

७३. हज़रत अबू ज़र रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझे सात बातों की वसिय्यत फ़रमाई (१) ग़रीबों और मिस्कानों से मुहब्बत करूँ (२) अपने से कम मर्तबे वालों को देखूँ ऊँचे मर्तबे वालों को न देखूँ (३) रिश्ते-नातों को जोड़े रखूँ, अगर्चे दूसरे काटने की कोशिश में लगा रहे (४) किसी से कुछ सवाल न करूँ (५) हक बात कहूँ अगर्चे कड़वी हो (६) दीन के बारे में किसी मलामत करने वाले से न डरूँ (७) लाहौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाह अधिक से अधिक पढ़ा करूँ, क्यों कि यह कलिमा अर्श के ख़ज़ानों में से है ( )

७४. एक ज़ईफ़ रिवायत में है कि हज़रत अ़ली रज़ि० ने रुकूअ़ की हालत में एक सवाली को अंगूठी उतार कर ख़ैरात कर दी। शीआ़ फ़िर्क़ा के लोग इस रिवायत को ख़ूब बढ़ा-चढ़ा कर पेश करते हैं और "इन्नमा वलिय्युकुमुल्लाहु व-रसूलुहू.........से हज़रत अ़ली की ख़िलाफ़त को "बिला फ़स्ल" साबित करते हैं। हालाँकि इस आयत के अन्त में "वहुम राकिऊन" बहुवचन (जमा) इस्तेमाल हुआ है जिस से मालूम होता है कि ऐसे बहुत लोग हैं (और रिवायत में इस सिफ़त में हज़रत अ़ली अकेले हैं) दूसरे यह कि इस आयत में अल्लाह, रसूल और रुकूअ़ में ज़कात देने वालों का शरीअ़त में वली होना आयत के नाज़िल होते वक़्त एक ही साथ मौजूद है। और शीआ़ मज़हब में हज़रत अ़ली की "वलायत" (यानी हुकूमत) नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के देहान्त के बाद आरंभ हुयी। इस लिये यह अर्थ लेना किसी प्रकार सहीह नहीं है। तीसरे यह कि 'ज़कात' माल की एक ख़ास मिक़दार (मात्रा) पर फ़र्ज़ होती है और हज़रत अ़ली रज़ि० के पास उस समय उतना माल था ही नहीं (जितने पर ज़कात अदा करना फ़र्ज़ हो) चौथे यह कि आयत में "वली का शब्द है। और क़ुरआन में यह शब्द और दूसरे मोमिन मर्दों, औ़रतों के लिये भी आया है (जैसे कि मोमिन मर्द और औ़रतें एक दूसरे के वली हैं- सूर.........आयत न०..........) पाँचवें यह कि अगर 'वलायत' को हुकूमत के माना में लिया जाये तो क्या शीआ़ फ़िर्क़ा इस बात को माने गा कि औ़रत भी ख़लीफ़ा बन सकती है? इन तमाम कारणों से यह बात स्पष्ट रूप से साबित है कि शीआ़ फ़िर्क़ा का इस आयत से दलील पकड़ना ग़लत है और आयत का सहीह अर्थ वही है जो हम ने बयान किया है। हम ने "राकिऊन" का तर्जुमा "आ़जिज़" किया है और इस का सबूत क़ुरआन में है (सनाई)

لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّ
لَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ
وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾ وَاِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا
هُزُوًا وَّلَعِبًا ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿٥٨﴾
قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّآ اِلَّآ
اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ
مِنْ قَبْلُ ۙ وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٥٩﴾ قُلْ هَلْ
اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۗ
مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ
الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ۗ اُولٰٓئِكَ
شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٦٠﴾ وَ
اِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ

जिन लोगों ने तुम्हारे दीन को हँसी-मज़ाक़ बना रखा है (यानी) जिन को तुम से पहले किताब मिली थी (यानी यहूद व नसारा) उन को और काफ़िरों को (जो उन जैसे हों) दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरते रहो अगर तुम ईमानदार हो[७५] ५८. जब तुम नमाज़ के लिये अज़ान देते हो (जो अल्लाह का ज़िक्र है) उस से भी यह लोग हंसी-मज़ाक़ करते हैं। क्यों कि यह लोग (जिहालत में ऐसे बढ़े हुये हैं कि) समझते ही नहीं ५९. तू कह! (अ़लावा इस के) ऐ अहले किताब और कोई भी अ़ैब हम में पाते हो कि हम अल्लाह पर और जो किताब हमारी तरफ़ और जो हम से पहले उतरी है उन सब पर हम यक़ीन रखते हैं (और अपनी शरीअ़त के पाबन्द हैं) और तुम में से बहुत से नाफ़र्मान हैं[७६] ६०. तू उन से कह! मैं तुम को उस से भी (बहुत) बड़े ऐब वाले बतालाऊँ (यह) वह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की थी और उन पर ग़ज़ब उतारा और उन में से (कुछ को) बन्दर और सुअर बनाया था और जिन्हों ने अल्लाह के अ़लावा की अ़िबादत की। यही लोग बुरे दर्जे वाले हैं और यही लोग सीधी राह से दूर भटके हुये हैं[७७] ६१. और जब तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये हुए हैं, हालाँकि कुफ़्र ले कर आये थे

....

७५. इस आयत से ज़ाहिर है कि ऐसे बिद्अ़ती वग़ैरह जो ज़ाहिर में तो मुसलमान बनते हैं और नेचर रिय्यत (**Naturalist**) का लबादा पहन कर छुपे फिरते हैं लेकिन अज़ान, नमाज़ वग़ैरह को पुराना तरीक़ा कह कर उसका मज़ाक़ उड़ाते हैं, यह लोग भी उन्हीं लोगों में शामिल हैं। और यह बात भी याद रखें कि जिस शख़्स को देखें कि वह दीन इस्लाम की किसी बात का हँसी-मज़ाक़ उड़ा रहा है तो समझ लें कि वह भी इसी हुक्म में दाख़िल है। (मुवाहिब)

७६. ज़रा यूरप और ब्रिटेन वग़ैरह को तो देखो, वहाँ आज कल किस तरह तहज़ीब (जो अख़्लाक़ को बिगाड़ने वाली है) कोड़ियों के भाव बिक रही है। हमारे और उन के दर्मियान अ़दावत और दुश्मनी का एक बहुत बड़ा कारण यह भी है (सनाई)

७७. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि हम सहाबा ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा कि क्या आजकल जो सुअर बन्दर नज़र आ रहे हैं उन ही चेहरा बिगाड़ दिये जाने वाले यहूदियों की नस्ल से हैं? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: नहीं। उन लोगों की नस्लें तो उसी समय हलाक कर दी गयी थीं। बन्दर और सुअर यह अल्लाह की मख़्लूक़ तो पहले ही से मौजूद थे (मुसिल्म, अबू दावूद)

وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهٖ ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا كَانُوا يَكْتُمُوْنَ ۝ وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِي الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۭ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ لَوْلَا يَنْهٰهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۭ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ۭ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَاۗءُ ۭ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۭ وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاۗءَ اِلٰي يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۭ كُلَّمَآ اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ

वैसे ही उसे लेकर निकल गये हैं। और जो काम छुपे तौर पर यह करते थे अल्लाह उन को ख़ूब जानता है ६२. तू उन में से बहुतों को देखे गा कि गुनाह और जुल्म व ज़्यादती और हराम ख़ोरी में बहुत जल्दी करते हों गे (सोचें तो) बहुत ही बुरे काम करते हैं ६३. उन के मशाइख़ {दुरवेश} और पादरी (जो लोगों को इस्लाम से रोकते फिरते हैं वह) उन को झूठ बोलने और हराम ख़ोरी से क्यों मना नहीं करते? बहुत ही बुरा करते हैं[७८] ६४. और यहूदी कहते हैं कि अल्लाह का हाथ तंग है[७९]। उन ही के हाथ तंग हों और उन की बकवास बकने से उन पर फटकार पड़े। बल्कि दोनों हाथ उस {अल्लाह} के खुले हुये हैं[८०] (ऐसे कि) जिस प्रकार चाहता है ख़र्च करता है। और जो कलाम तेरे पर्वरदिगार की तरफ़ से तुझ को मिला है उन में से बहुतों की सरकशी और कुफ्र को बढ़ाता है (क्यों कि यह उसे सुन कर कुफ्र में तरक़्क़ी करते जाते हैं) हम ने अ़दावत और कीना उन में क़ियामत तक डाल दिया है। जब कभी (मुसलमानों के मुक़ाबला में) लड़ाई की आग भड़काएँ गे तो अल्लाह उस आग को बुझा दे गा और मुल्क में फ़साद करते फिरते हैं। अल्लाह फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता[८१] ६५. अगर यह अहले किताब ईमानदार होते और परहेज़ गारी इख़्तियार करते तो हम उन से गुनाह दूर कर देते

....

७८. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने कहा कि कुरआन मजीद में इस आयत से ज़्यादा और कोई आयत लानत-मलामत और डाँट-फटकार वाली नहीं है यानी आयत "लौ ला यनहाहुम............। (इब्ने जरीर) हज़रत अ़ली रज़ि० ने अपने एक खुत्बा में फ़रमाया था कि पहली क़ौमें इसी लिये हलाक हो गयी थीं कि वह गुनाहों में फंसी रहीं और उन के उलमा व फुक़हा ने उन्हें मना नहीं किया। फिर जब उन के गुनाह का सिलसिला जारी रहा तो अ़ज़ाब ने उन्हें ६ार पकड़ा। इस लिये तुम अच्छी बातों का हुक्म करो और बुरी बातों से मना करो। यह काम अज़ाब आने से पहले ही करो। और जान लो! बुरी बातों के रोकने और भली बातों का हुक्म देने से किसी की रोज़ी-रोटी नहीं छिन सकती है और न ही समय से पहले किसी की मौत को ला सकती है (अबू दावूद, अबी हातिम) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "एक शख़्स समाज में बुराइयाँ करता फिरता है और लोग उस को रोकने की ताक़त रखने के बावजूद नहीं मना करते तो अल्लाह पूरे समाज पर अज़ाब नाज़िल करता है" (अ़हमद)

७९. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि यहूदी इस क़ौल से यह मुराद लेते थे कि अल्लाह बख़ील हो गया

➲है और इसी कारण जो कुछ उस के पास है उस ने रोक रखा है। एक यहूदी ने अल्लाह को फ़कीर भी कहा था इस पर हज़रत अबू बक्र ने उस को थप्पड़ मारा था (तल्ख़ीस) आज के मुसलमानों पर जिस प्रकार उन की बुराइयों के कारण रोज़ी तंग है, इसी प्रकार बुराइयों की वजह से यहूदियों की भी रोज़ी-रोटी तंग हो गयी थी। कुरआन में जब मुसलमानों को ज़कात देने का हुक्म सुना तो कहने लगे कि अल्लाह का भी हाथ तंग हो रहा है इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई/मआ़लिम)

८०. हाथ तंग और कुशादा होने से बख़ीली और सख़ावत मुराद है। हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह के दोनों ही हाथ दायाँ है (बायाँ नहीं है) इस का मतलब यह है कि मख़्लूक़ के हाथ की तरह नहीं है कि बायें हाथ में कम ताक़त हो, बल्कि उस के दोनों में बराबर-बराबर ताक़त है। अहले सुन्नत का यह मज़हब है कि वह अल्लाह की उन सिफ़तों को जो कुरआन मजीद और हदीसों में मौजूद हैं (जैसे हाथ, पाँव, कान, आँख, वग़ैरह) सब को मानते हैं और उन लफ़्ज़ों के माना में कोई तावील नहीं करते हैं और इस के साथ ही यह भी कहते हैं कि उन की कैफ़िय्यत का हाल अल्लाह ही को मालूम है।

एक और हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह का हाथ भरा हुआ है, वह रात-दिन ख़र्च करता है, लेकिन ख़र्च करने से कुछ भी कमी नहीं आती है। देखो कि जब से आसमान और ज़मीन को पैदा किया है, उस समय से ले कर अब तक कितना कुछ ख़र्च किया है मगर उस में कोई कमी नहीं आयी है"। हाथ-पाँव से हमारी तरह हाथ-पाँव मुराद नहीं। यह अक़ीदा तो फ़िर्क़ा "मुजस्समिय्या" का है। सहीह क़ौल यह है और यही जमहूर अहले-सुन्नत का मज़हब है कि अल्लाह की सिफ़तों का अ़िल्म अल्लाह ही को है, उन की कैफ़िय्यत का अ़िल्म किसी को नहीं है (सलफ़िय्या)।

इन तमाम सिफ़तों पर केवल ईमान लाना फ़र्ज़ है। उन में तावील और कचबहसी करने की कोई आवश्यक्ता नहीं है। जमहूर उलमा का यही मानना है कि हमें उन के ज़ाहिरी माना मालूम हैं और उन की कैफ़िय्यत पोशीदा है और उन में कुरेद करना बिद्अ़त है।

८१. इस आयत में यहूद की कुछ बुरी आ़दतों की ओर इशारा किया गया है। (१) आपस में एक दूसरे से यह हमेशा कीना रखें गे। चुनान्चे इस्राईल में आज यही हो रहा है। वहाँ मज़हब से हट कर नस्ल और राष्ट्र को बुनियाद बना कर आपस में दंगे हो रहे हैं (२) यहूद मुसलमानों के ख़िलाफ़ लड़ाई की आग भड़काते रहें गे। इस का ज़िन्दा सबूत आज की इस्राईली हुकूमत है जो हर समय अ़रब देशों से लड़ने को तय्यार है। लेकिन साथ ही अल्लाह पाक ने उन की इस भड़काई हुयी आग को बुझा देने का एलान भी किया है, इस से साफ़ मालूम होता है कि अ़रबों के मुक़ाबला में इस्राईल जब भी कोई चाल चले गा तो अल्लाह उन की चालों को नाकाम बना दे गा, बल्कि अवश्य ही एक दिन यह मुल्क (अमरीका की नाजायज़ औलाद-ख़ालिद) फ़ना के घाट उतर जाये गा और उस का नाम-निशान मिट जाये गा और हमेशा की तरह वहाँ दोबारा इस्लामी झंडा लहरायेगा (दावूद राज़)

सَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ وَلَوْ اَنَّهُمْ
اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ
مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ
مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ مَا
يَعْمَلُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ

और उन को नेमतों के बाग़ों में दाख़िल करते ६६. और अगर वह तौरात और इन्जील पर और जो कलाम अल्लाह के पास से उतरा है (यानी कुरआन) उस पर अ़मल करते तो अल्बत्ता ऊपर से और नीचे से खाते। बाज़ लोग उन में से (इस हाल में भी) बीच की राह चलने वाले हैं। (लेकिन) उन में से अक्सर (तो) बहुत ही बुरे➲

مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَيْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِئُوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ

काम करते हैं ६७. (तू) ऐ रसूल! जो कुछ तेरी तरफ़ तेरे रब के हाँ से उतरा है[८२] पहुंचा दे। और (याद रख) अगर तू ने ऐसा न किया तो तू ने उस का संदेश नहीं पहुंचाया। अल्लाह ही तुझे लोगों की तक्लीफ़ से सुरक्षित रखे गा। बेशक अल्लाह काफ़िरों को कभी भी राह न दे गा[८३] ६८. तू कह दे! ऐ किताब वालो! जब तक तुम तौरात और इन्जील पर और जो तुम्हारी तरफ़ अल्लाह के हाँ से उतारा है उस पर पूरा-पूरा अ़मल न करो गे, तुम्हारी कोई बात भी ठीक नहीं। जो कुछ तुझ को तेरे रब की तरफ़ से मिला है उन में से बहुतों के शरारत और कुफ़्र को बढ़ाता है। इस लिये तू उन काफ़िरों की क़ौम पर (किसी प्रकार का) अफ़्सोस न कर[८४]। ६९. मुसलमान हों या यहूदी, साबी हों[८५] या अ़ीसाई, जो उन में से अल्लाह पर

....

८२. इस आयत में "मा उन्ज़ि-ल" का शब्द जो आया है वह कुरआन मजीद में और भी स्थानों पर आया है। मतलब इसका अल्लाह के अहकाम की तब्लीग़ करने का होता है जो "मा उन्ज़ि-ल" की सूरत में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर नाज़िल हुये। अ़िबादत, अख़्लाक़, अ़क़ीदा सब इस में शामिल हैं। मगर शीआ़ उलमा ने इस आयत को हज़रत अ़ली रज़ि० की ख़िलाफ़त से ज़बर्दस्ती जोड़ने की कोशिश की है। अगर थोड़ी देर के लिये मान भी लिया जाये कि यह आयत हज़रत अ़ली की ख़िलाफ़त को साबित करने के लिये उतारी गयी है तो फिर आयत इस प्रकार होनी चाहिये "बल्लिग़ मा उन्ज़ि-ल इलै-क मिन् ख़िला-फ़ति अ़ली" (अ़ली की ख़िलाफ़त के तअ़ल्लुक़ से जो बात तुम पर नाज़िल की गयी है उसे पहुंचा दो) अगर हज़रत अ़ली की ख़िलाफ़त का मामला इतना गंभीर था तो फिर क्या वजह है कि साफ़ लफ़्ज़ों में नाम ले कर नहीं बयान किया गया। फिर कितनी ढिठाई से यह कहा जा रहा है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस की तब्लीग़ से डरते थे इस लिये बार-बार हुक्म दिया गया कि डरो नहीं। ईमान वाले स्वयं ही अनुमान लगा सकते हैं कि यह रिवायत और तफ़्सीर कितनी मुंह लगाने लायक़ है (तफ़्सीर सनाई)

८३. सहाबा रज़ि० रात में हथियार बन्द हो कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मकान का पहरा दिया करते थे। जब यह आयत नाज़िल हुयी तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन लोगों से कहा कि अब तुम लोग पहरा न दो अल्लाह तआ़ला ने मेरी सुरक्षा फ़रमादी है। (हाकिम, अहमद, तिर्मिज़ी) बुख़ारी शरीफ़ में है कि हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया जिस ने यह ख़याल किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने वह्यि में से कुछ छुपाया है तो वह झूठा है, इसलिये कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है "ऐ रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जो कुछ तेरी तरफ़ तेरे रब के हाँ से उतरा है पहुंचादे"। जो लोग यह गुमान रखते हैं कि अहले-बैत रज़ि० के अन्दर मख़्सूस बातें पाई जाती थीं और कुरआन में हज़रत फ़ातिमा और हज़रत अ़ली का मुसहफ़ (कुरआन) भी शामिल था, यह सब कुफ़्र और बुहतान है। अन्तिम हज्ज के ख़ुत्बा में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया था: ऐ लोगो! तुम से मेरे बारे में सवाल किया जाये गा तो तुम क्या उत्तर दोगे? लोगों ने कहा: हम गवाही दें गे कि आप ने रिसालत की तबलीग़ की और अल्लाह की अमानत अदा कर दी और अच्छी तरह नसीहत फ़र्मा दी (मुस्लिम)

८४. खुलासा यह कि ऐ किताब वालो! तुम किसी आसमानी दीन पर नही हो जब तक कि तुम जिस किताब को मानते हो उस के अनुसार न चलो। और उस के अनुसार चलने का मतलब यह है कि तुम मुझ पर ईमान लाओ। और जब तुम मुझ पर और कुरआन पर ईमान नहीं लाये तो तुम अपनीं किताब पर भी नहीं चले इस लिये तुम कुछ नहीं हो (तल्ख़ीस)

८५. 'साबी' किसे कहते हैं इस में इख़्तिलाफ़ है। कुछ लोगों का कहना है कि वह नसारा और मजूस में से एक फ़िर्क़ा है जिस का कोई दीन नहीं। कुछ उलमा का कहना है कि वह फ़रिश्तों की पूजा करते हैं। कुछ कहते है कि वह अल्लाह को मानते थे लेकिन उन की कोई शरीअ़त नहीं। इस के अ़लावा और बहुत से अक़्वाल हैं (इब्ने कसीर)

بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٩﴾ لَقَدْ اَخَذْنَا
مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ
كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُهُمْ ۙ
فَرِيْقًا كَذَّبُوْا وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَحَسِبُوْٓا اَلَّا
تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ
عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَصَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ
بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٧١﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا
اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ وَقَالَ الْمَسِيْحُ
يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ؕ
اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ
الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٧٢﴾
لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ

और पिछले दिन पर पक्का ईमान लायें गे और नेक अ़मल करें गे उन को न तो (किसी प्रकार का) ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन हों गे ७०. हम ने बनी इस्राईल से भी वादा लिया था[८६] और उन की तरफ़ कई एक रसूल भी भेजे (मगर उन्होंने कुछ क़द्र न समझी) जब कभी कोई रसूल उन के पास उन की ख़ाहिश के ख़िलाफ़ तालीम लाता तो कितनों को झुठलाते और कितनों को जान से (ही) मार डालते ७१. और यह समझे (बैठे) थे कि (हमको) कोई दण्ड न होगा इस लिये अन्धे बहरे हो गये फिर अल्लाह ने उन पर मेहरबानी की, मगर फिर भी उन में से बहुत से अन्धे-बहरे हो गये। और अल्लाह उन के कामों को देख रहा है (जभी तो उन के हक़ में यह कहना सही है कि) ७२. जो लोग कहते हैं कि अल्लाह ही मसीह बिन मर्यम है वह निःसंदेह काफ़िर हैं। (यह जाहिल इतना नहीं समझते कि) मसीह ने (ख़ुद) कहा था कि ऐ बनी इस्राईल! अल्लाह की अ़िबादत करो जो मेरा और तुम्हारा रब है[८७]। निःसंदेह जो कोई अल्लाह के साथ शरीक बनाये गा[८८] अल्लाह उस पर जन्नत हराम कर देगा और उस का ठिकाना जहन्नम होगा। और (ऐसे) ज़ालिमों का कोई सहयोगी न हो गा। ७३. (इस लिये) जो लोग कहते हैं कि अल्लाह तीन माबूदों में का एक है वह भी काफ़िर हैं।

....

८६. 'मीसाक़' (वादा) इस की तफ़्सील सूरः बक़रः के रुकूअ़ न० १० में इस प्रकार है कि केवल अल्लाह ही की अ़िबादत करना, माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करना, रिश्ते-दारों, अनाथों और फ़क़ीरों से अच्छी बात बोलना, नमाज़ पढ़ना

और ज़कात देना। यह है अल्लाह का वादा जिस को बनी इस्राईल नहीं निभा सके। मुसलमानों के लिये भी यही आदेश हैं। मगर कितने मुसलमान हैं जो इसे मुकम्मल तौर पर अदा करते हैं। देखा जाये तो इन का हाल तो और भी अधिक ख़राब है (राज़)

८७. मसीह की शिक्षा क्या थी? देखें इन्जील मरक़स १२ बाब, वाक्य २९। मसीह की शिक्षा क्या है और उस के ख़िलाफ़ इन की मन घड़त बातें क्या हैं। मज़े की बात यह भी है कि यह लोग एक बात पर जमते भी नहीं हैं। कभी मसीह को खुले शब्दों में ख़ुदा कहते हैं और साफ़ लिखते हैं कि हज़रत मूसा को पहाड़ पर दिखाई देने वाला मसीह ही था (मिफ़्ताहुल् अस्रार-१४) और कभी तीनों यानी बाप ख़ुदा, बेटा मसीह और रुहुल क़ुदुस के मजमूआ को ख़ुदा बना देते हैं। इस लिये जो लोग ऐसी बातें कहते हैं वह वास्तव में ख़ुदा के इन्कारी हैं और दहरियों (नास्तिकों) से भी बुरे हैं (सनाई)

८८. 'शिर्क' की परिभाषा यह है कि जो बातें अल्लाह तआला ने अपनी इ़बादत क़रार दी हैं वह किसी मख़्लूक़ के लिये बजा लाये। जैसे, किसी के वास्ते रोज़ा रखा जाये, या नमाज़ पढ़ी जाये, या सज्दा किया जाये, या रुकूअ़ किया जाये, या जिस प्रकार ताज़ीम करने के लिये अल्लाह के वास्ते खड़ा हुआ जाता है उसी प्रकार ताज़ीम के लिये मख़्लूक़ के वास्ते खड़ा हुआ जाये, या किसी ज़िन्दा या मुर्दा या क़ब्र के वास्ते तवाफ़ किया जाये, या किसी के नाम पर क़ुर्बानी की जाये और चढ़ावा चढ़ाया जाये, या किसी को पैदा करने वाला और रोज़ी देने वाला माना जाये, या किसी से इस तरह डरे जैसे अल्लाह से डरा जाता है, या बन्दे के हुक्म को शरीअ़त समझे। अल्लाह ने ऐसे ख़बीस मुश्रिक पर जन्नत हराम कर दी है, क्यों कि उस ने अल्लाह की शान में बे अदबी की है और उस की मख़्लूक़ को इ़बादत के योग्य जाना, इस लिये ऐसा शख़्स जहन्नम ही के लायक़ है (मवाहिब)

ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّآ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ وَاِنْ
لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى
اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝
مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا
يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ
ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝ قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ
وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ قُلْ يٰۤاَهْلَ
الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا
تَتَّبِعُوْۤا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَ
اَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ۝

और हक़ीक़ी माबूद अकेला ही है। अगर यह इस कहने से बाज़ न आये जो यह कहते हैं तो जो उन में से काफ़िर रहें गे उन को सख़्त दुःख की मार होगी[८९] ७४. तो क्या यह अल्लाह की तरफ़ नहीं झुकते? और उस से बख़्शिश नहीं माँगते? और अल्लाह बड़ा ही बख़्शने वाला मेहरबान है[९०] ५. मसीह बिन मर्यम[९१] तो केवल अल्लाह का रसूल था उस से पहले भी कई एक रसूल बीत चुके हैं। और उस की माँ (भी एक पाकदामन अल्लाह की) नेक बन्दी थी। वह दोनों (माँ-बेटे) खाना खाया करते थे। देख! हम किस प्रकार की दलीलें बयान करते हैं? और उन को देख! कहाँ बहकते जाते हैं?[९२]. ७६. तू कह! तुम अल्लाह के अ़लावा उन चीज़ों की इ़बादत करते हो जो तुम्हारे लाभ और हानि का कुछ भी इख़्तियार नहीं रखते। और अल्लाह ही (हर एक की) सुनने वाला और जानने

➲वाला है[९३] ७७. तू कह! ऐ किताब वालो! दीन में नाहक़ (टेढ़ी राह इख़्तियार) न करो और अपने से पहले लोगों की जो स्वयं भी पथभ्रष्ट हुये और बहुतों को सीधी राह से पथभ्रष्ट कर गये, उन की ख़्वाहिशों पर न चलो[९४]

....

८९. यानी हज़रत मसीह, रूहुल कुदुस और अल्लाह, या मसीह, मरयम और अल्लाह तीनों ख़ुदा हैं (अल्लाह की पनाह) ओसाई लोग आज भी यही कहते हैं कि यसूअ़ मसीह केवल अ़िज़्ज़त और एहतराम की वजह से अल्लाह का बेटा नहीं है, वास्तव और हक़ीक़त में अल्लाह के बेटे के दर्जे पर है और उस के अन्दर अल्लाह होने की सारी ख़ूबियाँ पाई जाती हैं। वह अल्लाह के साथ एक है और ख़ुद अल्लाह है। पादरी फ़न्डर की किताब। (मीज़ानुल हक़्क़, जो १८९६ में छपी है का पृष्ट न० १४६) ओसाइयों के इसी ख़ुदा ने फाँसी के तख़्ता पर बड़े ज़ोर-शोर से चिल्ला-चिल्ला कर जान दे दी (इन्जील मती १-१८) ओसीइयों के इन ग़लत अक़ीदों के रद्द में कुआन का यह बयान कि "मसीह बिन मरयम तो केवल अल्लाह का रसूल था" काफ़ी है। (राज़)

९०. इस आयत में तौबा और इस्तिग़फ़ार की तरफ़ तवज्जुह दिलाई गयी है। कुरआन की और बहुत सी आयतों में भी इस की ताकीद आयी है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "लोगों! तौबा किया करो, मैं भी दिन भर में एक सौ बार तौबा किया करता हूँ" (मुस्लिम) एक दूसरी हदीस में फ़रमाया: "सब ही लोग ख़ता करने वाले हैं मगर बेहतरीन ख़ता करने वाला वह है जो तौबा करता है"। यह भी फ़रमाया: "जिस ने इस्तिग़फ़ार किया तो अल्लाह तआ़ला उस की कठिनाइयों को समाप्त कर देता है और उस के ग़मों को दूर कर देता है और ऐसे स्थान से रोज़ी देता है जहाँ उस का गुमान भी नहीं होता (हदीसुत्तफ़ासिर)

९१. उलमा ने यहाँ एक पते की बात बयान की है वह यह है कि अल्लाह ने कुरआन में मर्यम के अ़लावा किसी और महिला का नाम नहीं ज़िक्र किया है। और नाम इस लिये लिया है कि यह एक आ़म उसूल है कि कोई भी शरीफ़ आदमी लोगों के सामने अपनी पत्नी का नाम नहीं लिया करता और उस के बारे में वाक़िआ़त नहीं बयान किया करता। तो अगर मर्यम अल्लाह की पत्नी होतीं तो अल्लाह उन का नाम न लेता, मगर चूंकि वह एक बन्दी हैं जिन के पेट से अल्लाह के बन्दे और रसूल ओसा अ़लै० पैदा हुये, इस लिये उन को ख़ुदा मानना या ख़ुदा की बीवी मानना यह जिहालत और बेवकूफ़ी नहीं तो और क्या है? (तल्ख़ीस)

९२. कुरआन करीम की ख़ूबी देखें कि एक छोटे से वाक्य में कितनी ज़बर्दस्त दलील के साथ हज़रत ओसा और उन की माँ के ख़ुदा होने को रद्द कर दिया और उन के बन्दे होने का सबूत दिया और इस प्रकार कहा कि "वह दोनों खाना खाते थे" यानी वह दोनों ज़िन्दा रहने के लिये उन चीज़ों के मुहताज थे जिन के सभी बन्दे मुहताज होते हैं और जो मुहताज हो वह अल्लाह नहीं हो सकता।

९३. 'अल्लाह जानने वाला है' इस लिये आगाह रहो कि जब हज़रत ओसा जैसे बुज़ुर्ग नबी को अल्लाह ने अपना बन्दा कहा है जो किसी को हानि-लाभ नहीं पहुंचा सकता, तो फिर और दूसरा नबी, वली, पीर, बुज़ुर्ग, हाजी, नमाज़ी कैसे नफ़ा-नुक़्सान का मालिक हो सकता है? इस आयत ने यह शिक्षा दी है कि अल्लाह के अ़लावा किसी भी नबी, वली, बुज़ुर्ग और पीर से कुछ न माँगो और न ही उन्हें कुछ भी हानि-लाभ पहुंचाने वाला मानो। (मवाहिब) आज कल जो लोग मुसलमान हो कर भी वलियों, बुज़ुर्गों, पीरों के बारे में यही अ़क़ीदा रखते हैं कि उन की समाधियों (मज़ारों) पर जा कर माँगने से आवश्यक्तायें पूरी होती हैं, उन को पुकारना अल्लाह को पुकारना है, उनके ऊपर नज़्र-नियाज़ और चढ़ावा, अ़ल्लाह को चढ़ावा है। ऐसे लोग इस्लाम से बहक गये हैं और यहूद व नसारा की तरह गुमराह हो कर दोनों दुनिया में ज़लील व रुस्वा हुये हैं।

९४. यहूद और नसारा दोनों ही हद से आगे बढ़ गये। यहूद ने हज़रत ईसा को झूठा कहा तो नसारा ने उन को➲

इतना बढ़ाया कि अल्लाह का बेटा ही कह दिया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि मेरी तारीफ़ में हद से आगे न बढ़ जाना जैसे अ़ीसा की तारीफ़ में अ़ीसाई बढ़ गये थे कि उन को अल्लाह के दर्जे तक पहुंचा दिया। मैं तो अल्लाह का एक बन्दा हूँ, तुम लोग मुझे केवल अल्लाह का बन्दा और रसूल ही समझना और इस से आगे कुछ नहीं" (बुख़ारी, मुस्लिम) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के इस हुक्म की बिद्अ़ती लोगों ने जिस प्रकार ख़िलाफ़वर्ज़ी की है उस के आगे यहूद और नसारा का ग़ुलू तो कुछ भी नहीं रहा। बिद्अ़ती लोगों के एक कवि ने यहाँ तक कह दिया

वही जो मुस्तवी था अ़र्श पर ख़ुदा बन कर
उतर पड़ा है मदीना में मुस्तफ़ा बन कर

अल्लाह तआला इस तरह की ख़ुराफ़ात से हमें अपनी पनाह में रखे। आमीन।

لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ عَلٰى لِسَانِ
دَاوٗدَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۚ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوا
يَعْتَدُونَ ﴿٧٨﴾ كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ
فَعَلُوهُ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧٩﴾ تَرٰى كَثِيرًا
مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ
لَهُمْ أَنْفُسُهُمْ أَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ
هُمْ خٰلِدُونَ ﴿٨٠﴾ وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ
وَمَآ أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوهُمْ أَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ
كَثِيرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُونَ ﴿٨١﴾ لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ
عَدَاوَةً لِّلَّذِينَ اٰمَنُوا الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ
وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِينَ اٰمَنُوا
الَّذِينَ قَالُوٓا إِنَّا نَصٰرٰى ۚ ذٰلِكَ بِأَنَّ مِنْهُمْ
قِسِّيسِينَ وَرُهْبَانًا وَّأَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٨٢﴾

७८. बनी इस्राईल में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया था उन पर दावूद और मसीह बिन मर्यम की ज़बानी लानत की थी[९५] क्यों कि वह नाफ़र्मानी करते और सीमा से आगे बढ़ते थे ७९. वह जिस बुराई को ख़ुद करते थे उस से लोगों को भी नहीं रोकते थे। बहुत ही बुरा करते थे[९६] ८०. तू उन में से बहुतों को देख रहा है कि काफ़िरों से दोस्ती करते हैं। यह तरीक़ा उन्होंने ने अपने हक़ में बहुत ही बुरा इख़्तियार किया है (जिस का) नतीजा यह है कि अल्लाह उन पर सख़्त नाराज़ है और आख़िरत में यह लोग हमेशा-हमेशा के अ़ज़ाब में रहेंगे ८१. और अगर यह अल्लाह पर और उस नबी पर और जो उस की तरफ़ उतरा है उस पर ईमान लाते तो उन काफ़िरों को दोस्त न बनाते, लेकिन बहुत से उन में बदकार (और बेराह हैं) ८२. तू मुसलमानों के हक़ में सब से अधिक दुश्मनी करने में यहूदियों और मुश्रिकों को पाये गा और जो लोग अपने आप को नसारा कहते हैं[९७] तू उन को मुसलमानों से मुहब्बत करने में सब से अधिक पाये गा। क्यों कि उन में उलमा और मशाइख़ (दर्वेश) हैं और यह लोग (हक़ के क़ुबूल करने में) तकब्बुर नहीं करते[९८]।

....

९५. इस बारे में देखें इन्जील मती बाब २,१२।

९६. बनी इस्राईल में पहली ख़राबी तो यह आयी कि एक शख़्स एक दिन किसी दूसरे से मिलता तो वह उस को

बुरे काम से रोकने के लिये नसीहत करता, लेकिन दूसरे ही दिन उसी के साथ बैठ कर मज़े से खाता-पीता और उस को नसीहत न करता। मुसलमानो! तुम अच्छी बातों का हुक्म देते रहो और बुरी बातों से मना करते रहो, वर्ना इस्राईल की तरह तुम पर भी लानत हो गी (हदीस)

९७. नसारा के अन्दर यहूदियों और मुश्रिकों की तरह ग़ुरूर तकब्बुर और सख़्तदिली नहीं होती। बल्कि उन में से अक्सर नर्म दिल हैं और उन में अक्सर नर्म दिल परहेज़गार और दुनिया से नाता न रखने वाले (दर्वेश) होते हैं, जो हक़ बात को क़ुबूल करने में शर्म नहीं करते।

९८. यहाँ पर नसारा के इस्लाम से ज़्यादा निकट होने के दो कारण बयान किये हैं (१) एक तो यह कि उन की जमाअ़त में आ़लिम, परहेज़गार और दुनिया से कोई मतलब न रखने वाले होते हैं (२) दूसरे यह कि उन के दिल में नर्मी होती है। इन दोनों बातों को सामने रखने से मालूम हो गया कि इस से मुराद आ़म मसीही और ख़ास कर अंग्रेज़ क़ौमें हो ही नहीं सकतीं। इन के अन्दर यह दोनों विशेष्तायें पाई ही नहीं जातीं। इस आयत से मुराद पहले ज़माना का नसारा फ़िर्क़ा (NAZARENES) है जो हज़रत ईसा अ़लै० को केवल नबी मानता है। उस फ़िर्क़ा को आज कल के मसीही लोग काफ़िर मानते हैं हालाँकि सही मानों में वही हज़रत ईसा की शरीअ़त पर हैं (माजिदी) इस विषय में और तफ़्सील से जानकारी के लिये मौलाना सनाउल्लाह अमृतसरी रह० की पुस्तक "इस्लाम और मसीहिय्यत" को पढ़ा जाये।

अंग्रेज़ों ने इस्लाम और मुसलमानों को मिटाने की जो कोशिशें की हैं वह इतिहास (तारीख़) में मौजूद हैं और आज भी इस्लाम को सब से अधिक ख़तरा उन ही की चालों से है।

*****

بِسۡــــمِ اللّٰهِ الرَّحۡـمٰنِ الرَّحِيۡــمِ

पारः वइज़ा समिअू (7)

संक्षिप्त विषय सूची

वइज़ा समिअू (7)

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنْزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَى أَعْيُنَهُمْ
تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُولُونَ
رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ۝ وَمَا لَنَا
لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَنْ
يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ۝ فَأَثَابَهُمُ
اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَالَّذِينَ
كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا
أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ
الْمُعْتَدِينَ ۝ وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ
وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝ لَا يُؤَاخِذُكُمُ
اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَٰكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا

८३. और जब इस रसूल (मुहम्मद) की तरफ़ उतरा हुआ कलाम (कुरआन) सुनते हैं तो तू देखता है कि हक़ की शिक्षा पहचानने से तेरे सामने उन की आँखें आँसू बहाती हैं[९९] (और दुआ करते हुये) कहते हैं कि ऐ हमारे मौला! (इस कुरआन पर) हम ईमान लाये[१००] तो तू हम को गवाही देने वालों में लिख रख[१०१] ८४. और हमारा इस में उज़्र ही क्या है कि हम अल्लाह पर और जो हमारे पास सच्ची तालीम आई है उस पर ईमान न लायें। और हम इस बात की आशा करते हैं कि अल्लाह हम को नेकों की जमाअ़त में शामिल करे गा ८५. पस (इन के इस अख़्लाक़ ही का परिणाम है कि) अल्लाह ने उन को इस कहने के बदले में ऐसे बाग़ अ़ता किये जिन के नीचे नह्रें जारी हैं, हमेशा-हमेशा उन्हीं में रहें गे। (क्यों न हो) नेकों का यही बदला है ८६. और (उन के मुक़ाबिल) जो काफ़िर हैं और हमारे हुक्मों को झुठलाते हैं वही जहन्नम के क़ाबिल हैं ८७. मुसलमानो! अल्लाह की हलाल की हुयी (और जायज़ बतलाई हुयी) चीज़ों को हराम मत समझो और (किसी प्रकार किसी तरफ़ से) सीमा से न बढ़ो। निःसंदेह अल्लाह सीमा से बढ़ने वालों को दोस्त नहीं रखता[१०२] ८८. और जो कुछ अल्लाह ने तुम को हलाल पाकीज़ा रोज़ी दी है उसे खाओ जिस अल्लाह पर तुम ईमान रखते हो उस से (नाशुक्री करने में) डरते रहो (दिखो तो उस की मेहरबानी तुम पर कैसी है कि) ८९. अल्लाह तुम्हारी वाहियात क़समों में (जो तुम बातों-बातों में वल्लाह, बिल्लाह कहा करते हो) पकड़ नहीं करता[१०३], लेकिन जिन बातों पर तुम ने दिल से मज़बूती कर के क़सम खाई हो उन पर पकड़ करता है

....

९९. इस्लाम के आरंभ में दावत व तब्लीग़ की कमज़ोरी और बेबसी का ज़माना था। उसी समय मुल्क हबश का ➲

ईसाई बादशाह नजाशी (नीगोश) बग़ैर देखे ही ईमान ले आया। और मुसलमानों की जो जमाअ़त हिजरत करके हब्शा चली गयी थी उन से कहा कि अपने नबी का कुछ कलाम सुनाओ। उन्हों ने सूरः मर्यम की तिलावत की तो नजाशी की आँखों से आँसू बहने लगे और बेइख़्तियार बोल पड़ा कि इस कलाम में वही रूह बोल रही है जो मसीह में बोलती थी। नजाशी के अ़लावा स्वयं अरब के अ़ीसाइयों ने भी भारी मात्रा में इस्लाम क़ुबूल कर लिया, लेकिन यहूदी अपने स्थान पर अड़े रहे और मुसलमानों को बुरा-भला कहते और उन के ख़िलाफ़ साज़िशें करते रहे, यहाँ तक कि हज़रत उमर की ख़िलाफ़त के ज़माना में ख़ैबर से निकाल दिये गये (तर्जुमान)

१००. क़ुरआन की आयतों से प्रभावित होना और आँसू बहने लगना, यह नेक लोगों की सुन्नत है और अल्लाह से डरने और उस से मुहब्बत की निशानी है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम भी क़ुरआन मजीद में रहमत की आयतों को पढ़ते समय रहमत का सवाल करते और अज़ाब वाली आयतों को पढ़ कर उस से पनाह माँगते थे। बड़े दुःख की बात है कि आज दिल इस क़दर सख़्त हो गये हैं कि इस प्रकार की आयतों को सुन कर रोना तो दूर की बात है, उस तरफ़ ध्यान तक नहीं जाता है, यह मुसलमानों की बदक़िस्मती (दुर्भाग्य) की दलील है।

१०१. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि से रिवायत है कि 'शाहिदीन' से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उम्मत मुराद है। यह रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हक़ में गवाही दें गे कि उन्हों ने हम तक अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाया। और दूसरे रसूलों के हक़ में भी गवाही दें गे कि उन्हों ने भी अपनी-अपनी उम्मत तक अल्लाह का संदेश पहुंचाया (हाकिम) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ही से यह भी रिवायत है कि यह आयत उस समय नाज़िल हुयी जब हब्शा के अ़ीसाई बादशाह नजाशी ने मुसलमान मुहाजिरों की हब्शा से वापसी के समय अपने कुछ उलमा को भी उन के साथ मक्का भेज दिया था, ताकि उसके उलमा वहाँ जा कर नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बात-चीत करें और अल्लाह के कलाम को सुनें और उनकी किताब इन्जील में जो बशारत उस अन्तिम संदेष्टा के बारे में आई है उस से नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तुलना करें। चुनान्चे नजाशी के भेजे हुये उलमा और संतों ने जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से क़ुरआन मजीद को सुना तो उन की आँखों से आँसू बह पड़े और सब के सब तुरन्त मुसलमान हो गये (तब्रानी)

१०२. शाने-नुज़ूल:- कुछ सहाबा ने दुनिया के झमेलों से उकता कर यह इरादा किया कि हम भविष्य में अच्छा खाना नहीं खायें गे और न ही अच्छा लिबास पहनें गे। उन का यह ख़याल शरीअ़त के ख़िलाफ़ था। इस्लामी शरीअ़त तो यह चाहती है कि अल्लाह की दी हुयी हलाल रोज़ी में से अच्छे से अच्छा खाओ और पहनो और अल्लाह की आज्ञा पालन करो, इस लिये उन को इस इरादे से रोकने के लिये यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई/मआ़लिम)

१०३. शाने-नुज़ूल:- पहली आयत में जिन लोगों का बयान है उन लोगों की क़समों का कफ़्फ़ारा बतलाने के लिये यह आयत नाज़िल हुयी। वाहियात और बेमाना क़सम का यह अर्थ है कि बन्दा बिना किसी इरादा के आ़म आ़दत के अनुसार यूँ ही क़सम खा ले। इस प्रकार की क़सम खा लेने के बाद अगर उस के ख़िलाफ़ काम कर डाले तो उस पर कोई कफ़्फ़ारा नहीं है, लेकिन यह बात ध्यान में रहे कि यह बहुत ही बुरी बात है। और जब इरादा कर के सच्ची निय्यत के साथ क़सम खाये फिर उस के ख़िलाफ़ काम करे तो निःसंदेह उस पर कफ़्फ़ारा है। कफ़्फ़ारा की तफ़्सील यह है कि एक ग़ुलाम आज़ाद करे, या दस ग़रीबों को खाना खिलाये, या उन को कपड़ा पहनाये। और अगर यह सब न हो सके तो तीन दिन के रोज़े रखे।

हदीस शरीफ़ में आया है कि किसी अच्छे और नेक काम को न करने की क़सम को तोड़ देना चाहिये, भले ही उस पर कफ़्फ़ारा देना पड़े। मामूली खाना और औसत दर्जे के खाना से यह मुराद है कि जो खाना वह स्वयं और उस के परिवार के लोग आ़म तौर पर रोज़ाना खाते-पीते हैं उसी के अनुसार कफ़्फ़ारा का भी ख़ाना खिलाऐं। कपड़ा भी कम से कम इतना दिया जाये जिसे पहन-ओढ़ कर आदमी नमाज़ पढ़ सके (वहीदी)

عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗۤ اِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ؕ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ؕ وَاحْفَظُوْۤا اَيْمَانَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِى الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ۝ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ لَيْسَ

पस उस के कफ़्फ़ारा में दस मिस्कीनों को औसत दर्जे का खाना जो आम तौर पर तुम अपने अयाल (बाल-बच्चों) को खिलाते हो, खिला दो या (खाने की जगह) उन को लिबास पहनाओ या गुलाम आज़ाद करो। और जिस को यह कुछ भी मुयस्सर न हो तो वह तीन रोज़े रखे। यह तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा है जब तुम क़सम खा कर उस के ख़िलाफ़ करो। और (बिहतरी तो इसी में है कि) अपनी क़समों की ख़ूब हिफ़ाज़त करो। इसी प्रकार अल्लाह अपने अहकाम तुम से खोल-खोल कर बयान करता है ताकि तुम एहसान मानो ९०. मुसलमानो! (शराब और जुवा के नज़दीक भी न जाओ[१०४] क्योंकि) शराबख़ोरी और जुवेबाज़ी और बुत परस्ती[१०५] और तीर (यानी तीरों से फ़ाल निकालना) शैतानी काम हैं इस लिये तुम उन से बचते रहो ताकि तुम्हारा भला हो (और मुहज़्ज़ब बन जाओ) ९१. शैतान यही चाहता है कि शराब ख़ोरी और जुवे बाज़ी की वजह से तुम में आपस में दुश्मनी और कीना डाले, और अल्लाह की याद और नमाज़ से तुम को ग़ाफ़िल (और बेख़बर) कर दे, तो क्या (उस दुश्मन के धोके की ख़बर पा कर भी) तुम बाज़ न आओ गे[१०६] ९२. और अल्लाह और रसूल की फ़रमाँबर्दारी करो और नाफ़र्मानी से बचते रहो, फिर अगर तुम (शरीअ़त के अहकाम से) मुंह फेरो गे तो जान रखो कि हमारे रसूल के ज़िम्मा तो केवल अहकाम की तब्लीग़ है

....

१०४. शाने-नुज़ूल:- इस्लाम के आरंभ में शराब जायज़ थी। एक दिन कई मुसलमानों ने बैठ कर शराब पी और नशे में आ कर आपस में लड़ाई करने लगे। जब यह सूचना नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मिली (उसी समय हज़रत उमर भी आप के पास बैठे हुये थे) तो आप को बड़ा रंज हुआ और तुरन्त ही अल्लाह से प्रार्थना की कि शराब के बारे में कोई अन्तिम फ़ैसला सुना दे, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (सलफ़िया)

१०५. मुश्रिक जिन की पूजा-पाट करते, चढ़ावे चढ़ाते और क़ुर्बानी के जानवर ज़ब्ह करते थे वह बुतों की शक्ल के पत्थर थे। इस आयत में मुतलक़ (नितांत) बुत का ज़िक्र है इस लिये इस में हर प्रकार की मख़्लूक़ की ताज़ीम (सम्मान, सत्कार) में जानवर ज़ब्ह करना भी सम्मिलित है। ऐसा ज़ब्ह किया हुआ जानवर मुर्दार माना जाये गा। चुनान्चे फ़िक़ह की किताबों में स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि शैख़ मस्ऊद के नाम पर जानवर ज़ब्ह करना और दूसरे बुज़ुर्गों की समाधियों पर ज़ब्ह करना भी इसी हुक्म में शामिल है और हराम है। 'अज़लाम' यह एक प्रकार के तीर थे। उन तीरों में कुछ पर "यह काम करो" और कुछ पर "यह काम न करो" लिखा होता था, इन्हीं तीरों के ज़रीआ़

किसी काम के करने या न करने के संबन्ध में फ़ाल निकालते थे।

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि बहुत से लोग अबू तल्हा के घर में शराब पी रहे थे और मैं ही सब को पिला रहा था, इतने में अचानक नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के एलान करने वाले ने एलान किया कि "कान खोल कर सभी सुन लो! शराब हराम कर दी गयी है"। हज़रत अनस कहते हैं कि अल्लाह की क़सम! फिर किसी ने भी शराब को मुंह नहीं लगाया। इतना ही नहीं बल्कि हज़रत अबू तल्हा ने मुझे हुक्म दिया कि शराब को ले जा कर गली में फेंक दूँ। दूसरी रिवायतों से मालूम होता है कि मदीना के गली-कूचों में शराब बहने लगी थी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने शराब को बेचने से भी मना फ़रमाया और उस की क़ीमत को हराम क़रार दिया। (हदीस की किताबों के हवाला से)

१०६. इस आयत को सुन कर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया: "या अल्लाह! या अल्लाह! हम बाज़ रहे" (अहमद, अबू दावूद, नसई, तिर्मिज़ी) जमहूर उलमा के निकट 'ख़म्र' का शब्द केवल अन्गूर के शराब के लिये ही नहीं बोला जाता है, बल्कि यह शब्द आ़म है, और हर उस शराब के लिये बोला जाता है जिस में नशा हो। एक हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "हर वह वस्तु जिस में नशा हो, तो जिस प्रकार उस की अधिक मात्रा हराम है, इसी प्रकार उस की थोड़ी मात्रा भी हराम है"।

शराब और जुर्म व अपराध में बड़ा गहरा संबंध है। अर्थात शराब पी कर मनुष्य अवश्य ही अपराध करे गा। आज-कल के अपराध के विशेषज्ञों और अपराध का पता लगाने वाले माहिरों ने इसे स्पष्ट कर दिया है। जुए और सट्टे बाज़ी की लत में पड़ कर बड़े-बड़े राजाओं-महाराजाओं और सम्राटों ने अपना राज-पाट तक गंवा दिया है, यह बात महाभारत की कहानी से भी ज़ाहिर होती है। अ़रब की क़ौमें उन दिनों इन सब महामारियों का शिकार थीं, बिल्कुल ऐसे ही जैसे आज कल अंग्रेज़ क़ौम इस का शिकार है। शतरंज, जुआ, सट्टे बाज़ी और इस प्रकार के और दूसरे खेल भी इसी के अन्तरगत (ज़िम्न में) आते हैं इस लिये कि इन सब में भी वही बुराइयाँ पायी जाती हैं, इस लिये इन सब के भी हराम होने का उलमा ने फ़तवा दिया है और सहाबा और ताबेअ़ीन से भी यही साबित है (माजिदी)

عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا
طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ
يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ
اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ
لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ
ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٤﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا
الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا
فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ
مِّنْكُمْ هَدْيًۢا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ

९३. जो लोग ईमान लाए और नेक काम किये वह जो कुछ खापी चुके उन पर गुनाह नहीं जबकि उन्हों ने (भविष्य के लिये) परहेज़ किया और ईमान लाये और नेक काम करते रहे फिर परहेज़गारी पर जमे रहे और ईमान लाये फिर तक़्वा इख़्तियार किया और एहसान करते रहे। और अल्लाह एहसान करने वालों से मुहब्बत करता है।[१०७] ९४. मुसलमानो! अल्लाह तुम को एक ज़रा सी बात यानी शिकार से जिस तक तुम्हारे हाथ और नेज़े पहुंचते हों गे (हज्ज के दिनों में मना कर के) आज़माएगा ताकि जो लोग उस से बिन देखे डरते हैं उन को अलग कर दे, इस लिये जो इस के बाद ज़्यादती करेगा (यानी शरीअ़त की सीमाओं को तोड़े गा)

اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ؕ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ؕ وَ اللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝ اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ

उसी को दुःख की मार होगी[१०८] ९५. मुसलमानों! (अब स्पष्ट आदेश सुन लो कि) एहराम की हालत में शिकार न किया करो और जो तुम में से जान-बूझ कर उस (शिकार) को मारे तो जो जानवर उस ने मारा है उसी जैसा चारपाया जिस के बारे में दो इन्साफ़ करने वाले तुम में से फ़ैसला करें, काबा तक पहुंचने वाली कुर्बानी दे, या (उस जैसा जानवर न मिले तो) चन्द मिस्कीनों का खाना कफ़्फ़ारा में दे, या उतने ही (तीन-चार) रोज़े रखे, यह इस लिये है ताकि अपने किये का मज़ा चखे[१०९]। जो इस से पहले गुज़रा सो अल्लाह ने माफ़ किया। और जो इस के बाद ऐसा करे गा तो अल्लाह उस से बदला ले गा। और अल्लाह बड़ा ज़बर्दस्त बदला लेने वाला है[११०] ९६. दरिया के जानवरों का शिकार करना और खाना तुम को (एहराम की हालत में भी) हलाल है

....

१०७. यहाँ पर कुदरती तौर पर यह प्रश्न उठता है कि जिन लोगों ने शराब हराम होने से पहले पी है क्या उन से भी पूछ-ताछ होगी? यहाँ पर इसी प्रश्न का उत्तर दिया गया है कि उन लोगों की कोई पकड़ नहीं हो गी। जिन लोगों को बार-बार रोका गया और वह हर बार रुक गये और ईमान व अ़मल में भी पक्के रहे तो ज़ाहिर है कि उन्हों ने इताअ़त और आज्ञा पालन में कोई कोताही नहीं की, इसी लिये उन से कोई पूछ-ताछ नहीं होगी। (तर्जुमान)

१०८. अ़रब के लोग शिकार के बहुत ही शौक़ीन थे, बल्कि कुछ लोगों का गुज़र-बसर ही शिकार पर होता था। इन लोगों की परीक्षा लेने के लिये अल्लाह ने एहराम की हालत में शिकार को हराम क़रार दे दिया। इस के बाद शिकार के जानवरों का एक झुन्ड उन के मकानों और ख़ेमों की तरफ़ कर दिया, लेकिन फिर भी सहाबा रज़ि० ने उन का शिकार नहीं किया। यह इम्तिहान और आज़माइश बिल्कुल वैसे ही थी जैसे शहर इला के बनी इस्राईल की आज़माइश हज़रत दावूद अ़लै० के ज़माना में ली गयी थी और उन को सनीचर (शनिवार) के दिन मछलियों के शिकार से मना कर दिया गया था। इमाम मुक़ातिल का कहना है कि यह आयत सुल्ह हुदैबिय्या के मौक़ा पर हिजरत के छठे वर्ष उतरी, उस समय हाल यह था कि जानवर और परिन्दे मुसलमानों के डेरों और ख़ेमों पर छाये रहते थे, हालाँकि इस से पहले कभी इतने जानवर दिखाई नहीं देते थे और ऐसे हालात में अल्लाह ने एहराम की हालत में उन को शिकार करने से मना फ़रमा दिया (मवाहिब)

१०९. हज़रत उमर रज़ि० को मालूम हुआ कि किसी ने एहराम की हालत में हिरन का शिकार किया है। उन्हों ने अपने साथ एक और गवाह कर के उस को एक भेड़ की कुर्बानी करने का हुक्म दिया। उस गवाह को इस बारे में कुछ शक हुआ तो हज़रत उमर ने उस से फ़रमाया: क्या तू ने सूरः माइदा नहीं पढ़ी है जिस में दो मोतबर (विश्वस्त) गवाहों को मिल कर फ़ैसला करने का हुक्म दिया गया है? उस ने कहा कि मुझे सूरः माइदा का इ़ल्म नहीं है। हज़रत उमर ने कहा कि तू ने जो यह शक किया है जानकारी न होने के कारण किया है, वर्ना मैं तुझे सज़ा देता (हदीसुत्तफ़ासीर, मुस्लिम)

११०. जमहूर उलमा का कहना है कि इस में हराम और हलाल हर प्रकार के जानवर का शिकार करने से मना किया गया है। हाँ, बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पाँच गन्दे जानवरों को हर हालत में मार डालने का हुक्म दिया है (१) कौआ (२) चील (३) बिच्छू (४) चूहा (५) काटने वाला कुत्ता। इस कुत्ते को हदीस में "कल्बे अ़कूर" कहा गया है (यानी जो बिला वजह भी लोगों को

➲काट खाये)। इमाम मालिक और अहमद के नज़दीक इस कुत्ते के हुक्म में भेड़िया, चीता, शेर और दूसरे दरिन्दे सभी शामिल हैं (मवाहिब) मतलब यह है कि इन जानवरों को एहराम की हालत में भी मार डालना चाहिये।

وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ
صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ
اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝٩٦ جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ
الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ
وَالْقَلَآئِدَ ۗ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ۝٩٧ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ
اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٩٨ مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ۗ وَ
اللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ۝٩٩ قُلْ لَّا يَسْتَوِي
الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝١٠٠ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ
تَسُؤْكُمْ ۚ وَاِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ

ताकि तुम्हारा और क़ाफ़िले वालों का गुज़ारा हो, और जंगली शिकार जब तक तुम एहराम की हालत में रहो, तुम को हराम है। और अल्लाह से डरते रहो जिस के पास तुम सब को इकट्ठा होना है[१११] ९७. अल्लाह ने काबा को जो अिज़्ज़त वाला अिबादत का घर है लोगों के लिये मुलाक़ात (एकता) का ज़रीआ बनाया है[११२] और हुरमत वाले महीनों को और कुर्बानियों और सीलियों को मुक़र्रर किया है इस लिये कि तुम जानो कि अल्लाह आसमानों और ज़मीनों की समस्त वस्तुयें जानता है[११२/१] और अल्लाह हर वस्तु को जानता है ९८. और ख़ूब जान लो कि अल्लाह (नाफ़र्मानों के हक़ में) सख़्त अज़ाब वाला है और (आज्ञा कारी बंदों के लिये) अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है ९९. रसूल के ज़िम्मा तो केवल पहुंचा देना है (अमल के बारे में सवाल तुम से होगा) और तुम्हारे खुले व छुपे सब काम अल्लाह को मालूम हैं १००. तू कह दे कि ख़बीस (बुरी आदत वाला) और नेक किर्दार वाला बराबर नहीं अगर्चे तुम को ख़बासत और बद अख़्लाक़ी) की ज़्यादती हैरानी में डाले, इस लिये तुम ऐ अक़्ल वालों! अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम्हारा भला हो १०१. मुसलमानो! ऐसी चीज़ों का प्रश्न न किया करो (जिन में शुब्हा हो) कि ज़ाहिर होने पर तुम को तक्लीफ़ देने वाली साबित हों। और अगर क़ुरआन के उतरते समय (यानी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िन्दगी में) तुम उन से प्रश्न करोगे तो (बिला शुब्हा) तुम पर ज़ाहिर कर दी जायें गी

....

१११. जमहूर उलमा का कहना है कि इस आयत से मुर्दार मछली का हलाल होना साबित है। मुसलमानों का एक लश्कर राह में खाने-पीने का सामान समाप्त हो जाने के कारण बड़ा दुखी था। इसी परेशानी में समुन्द्र के किनारे एक मरी मछली देखी, उस का गोश्त उन्हों ने १८ दिनों तक खाया। इस हदीस से भी मुर्दार मछली के हलाल होने का सबूत मिलता है (इब्ने कसीर)

११२. सन १३८१ हि० के हज्ज का एक मन्ज़र (दृश्य) मैं कभी नहीं भूल सकता। एक जुम्अः को काबा के सामने➲

➲मैं बैठा हुआ अपने पास-पड़ोस के ईरानी, तुर्किस्तानी, यमनी, पाकिस्तानी और हिन्दुस्तानी भाइयों से बातें कर रहा था और यह आयत ज़बान पर थी (राज़)

११२/१. यानी अल्लाह तआला ने काबा को लोगों के लिये अम्न को क़ायम करने और लोगों के इकट्ठा होने का ज़रीआ बनाया है और उस के इ़ल्म में इस के अ़लावा भी अनगिन्त बर्कतें और फ़ाइदे हैं जो तुम्हें उस से प्राप्त होंगे, इस लिये उस की हुर्मत को बाक़ी रखो और उस में किसी प्रकार का बिगाड़ न पैदा होने दो (तर्जुमान)

अरब देश में कोई शासक न था इसी लिये वहाँ कोई शासन भी न था। रोज़ लड़ाई झगड़े और जंगें होती रहती थीं, मगर वह लोग फिर भी काबा की बुज़ुर्गी का विशेष ख़याल रखते थे। जब हराम महीना आता तो उस में हर कोई बेख़ौफ़ हो कर यात्रा करता और अपना मतलब हासिल करता, खाने-पीने के सामान बेचता और लाता। इन हराम महीनों में कोई किसी को कुछ भी नहीं कहता था और इसी प्रकार गुज़र-बसर होता था।

इस आयत में 'क़लाइद' (सीलियों) से मुराद वे जानवर हैं जिन के गले में पट्टा डाल दिया जाता था जिस से जान सकें कि यह क़ुर्बानी का जानवर है (राज़)

تُبۡدَ لَكُمۡ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَنۡهَا ؕ وَاللّٰهُ غَفُوۡرٌ حَلِيۡمٌ ۝١٠١
قَدۡ سَاَلَهَا قَوۡمٌ مِّنۡ قَبۡلِكُمۡ ثُمَّ اَصۡبَحُوۡا بِهَا
كٰفِرِيۡنَ ۝١٠٢ مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنۡۢ بَحِيۡرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ
وَّلَا وَصِيۡلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا
يَفۡتَرُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ الۡكَذِبَ ؕ وَاَكۡثَرُهُمۡ لَا يَعۡقِلُوۡنَ ۝١٠٣
وَاِذَا قِيۡلَ لَهُمۡ تَعَالَوۡا اِلٰى مَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى
الرَّسُوۡلِ قَالُوۡا حَسۡبُنَا مَا وَجَدۡنَا عَلَيۡهِ اٰبَآءَنَا ؕ
اَوَلَوۡ كَانَ اٰبَآؤُهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ شَيۡـئًا وَّلَا يَهۡتَدُوۡنَ ۝١٠٤
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا عَلَيۡكُمۡ اَنۡفُسَكُمۡ ۚ لَا يَضُرُّكُمۡ
مَّنۡ ضَلَّ اِذَا اهۡتَدَيۡتُمۡ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرۡجِعُكُمۡ جَمِيۡعًا
فَيُنَبِّئُكُمۡ بِمَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ۝١٠٥ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا
شَهَادَةُ بَيۡنِكُمۡ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الۡمَوۡتُ حِيۡنَ
الۡوَصِيَّةِ اثۡنٰنِ ذَوَا عَدۡلٍ مِّنۡكُمۡ اَوۡ اٰخَرٰنِ مِنۡ غَيۡرِكُمۡ

(अ़ब तो) अल्लाह ने तुम्हें माफ़ कर दिया। और अल्लाह बड़ा ही बख़्शने वाला बुर्दबार (सहनशील) है[११३] १०२. (इसी प्रकार) तुम से पहले भी एक क़ौम ने ऐसे प्रश्न किये थे, फिर (ज़ाहिर होने के बाद) उन (पर अ़मल करने) से इन्कारी हो गये (इस लिये अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें बतलाया है वह बस किये जाओ) १०३. अल्लाह ने न तो कोई बहीरा और न साइबा और न वसीला और न हाम मुक़र्रर किये हैं मगर काफ़िर (जो उन का अधिक से अधिक सम्मान करते हैं) अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं। और बहुत से उन में से बे अक़्ल हैं[११४] १०४. जब कोई उन से कहे कि अल्लाह के उतारे हुये कलाम (कुरआन) और रसूल की (बताई हुयी शरीअ़त की) तरफ़ आओ (और उसी पर अ़मल करो) तो कहते हैं कि जिस राह पर हम ने अपने बाप-दादाओं को (चलते हुये) पाया है वही हम को काफ़ी है[११५]। क्या अगर्चे उन के बाप-दादा न कुछ जानते हों और न ही सीधी राह पाये हों? १०५. मुसलमानों! तुम को तसल्ली रहे[११६] कि जब तुम ख़ुद हिदायत पा चुके हो तो गुमराह लोग तुम को नुक़्सान न पहुंचा सकें गे (उन का गुनाह तुम पर नहीं होगा, अपना सर खाऐं) तुम सब को अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है फिर वह तुम को तुम्हारे कामों से आगाह करे गा[११७] १०६. मुसलमानो! जब तुम में से➲

किसी को मौत आये तो (अगर किसी को कुछ वसिय्यत करनी हो तो) वसिय्यत करते समय दो इन्साफ़ करने वाले गवाह तुम मुसलमानों में से होने चाहियें,

....

१९३. शाने-नुज़ूल:- इस आयत के शाने-नुज़ूल में कई रिवायतें मौजूद हैं। उन में से एक रिवायत यह है कि एक लड़के के बारे में लोगों को संदेह था कि यह नाजायज़ औलाद है। उस ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अपने बाप के बारे में पूछा तो आप ने फ़रमाया कि वह अपने अस्ली बाप ही की औलाद है। रिवायत करने वाले कहते हैं कि इस के बाद यह आयत नाज़िल हुयी।

लेकिन अगर इस आयत पर ग़ौर किया जाये तो दो और बातें निकलती हैं (१) जो तुम प्रश्न करो गे उस का उत्तर तुम्हारी तक्लीफ़ का सबब बने गा (२) कुरआन के नाज़िल होते हुये अगर प्रश्न करो गे तो उत्तर अवश्य मिले गा। इन दो जुम्लों से यह नतीजा निकलता है कि प्रश्न का उत्तर कुरआन में दिया जाये गा और उस का उत्तर तुम को तक्लीफ़ दे गा। लेकिन शाने-नुज़ूल वाली ऊपर की हदीस में आप देख रहे हैं कि सवाल करने वाले लड़के को उत्तर कुरआन में नहीं मिला और जो उत्तर मिला उस से उस को तक्लीफ़ भी नहीं पहुंची, बल्कि उस को बेहद प्रसन्नता हुयी। इस का अर्थ यह है कि ऊपर की हदीस इस आयत का शाने-नुज़ूल नहीं है।

शाने नुज़ूल इस आयत का यह है कि सहाबा कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन से तंग आ कर जिहाद की अनुमति माँगते थे, लेकिन अभी जिहाद का हुक्म देना उचित नहीं था, इस लिये उन सहाबा को समझाने और तसल्ली देने के लिये यह आयत नाज़िल हुयी। चुनान्चे इस आयत के साथ ही बनी इस्राईल के पहले के लोगों का ज़िक्र है जिन्हों ने कहा था कि जिहाद का हुक्म दिया जाये "हमारे लिये एक कमान्डर मुक़र्रर कर दिया जाये ताकि हम अल्लाह की राह में जिहाद कर सकें" (सूर: बक़र:-२४६) जब उन को इजाज़त मिल गयी तो जिहाद से पीछे हट गये। मेरे नज़दीक यह आयत जिहाद की इजाज़त माँगने ही के मुतअ़ल्लिक़ है। रही ऊपर की रिवायत और उस जैसी और रिवायतें, तो वह सनद के लिहाज़ से बिल्कुल सहीह हैं और ऐसा वाक़िआ भी पेश आया है, लेकिन उस वाक़िआ को इस आयत से जोड़ना यह रावी की अपनी समझ है। ऐसा हुआ करता है कि रावी अपनी समझ से किसी वाक़िआ को किसी आयत के नाज़िल होने का सबब समझ लेते हैं। चुनान्चे शाह वलिय्युल्लाह ने अपनी किताब "फ़ौज़ुल् कबीर" में ऐसे ही लिखा है (सनाई)

१९४. शाने-नुज़ूल:- अ़रब की जिहालतों में से एक जिहालत यह भी थी कि जिस ऊँटनी से पाँच बच्चे पैदा हो जाते उस का कान फाड़ कर उस को छोड़ देते और उस का नाम "बहीरा" रखते थे। नज़्र के तौर पर छोड़ी हुयी ऊँटनी को "साइबा" कहते थे। अगर किसी ऊँटनी को एक के बाद एक यानी दो बच्चे पैदा होते तो पिछले बच्चे को नेक जानते और उस का नाम "वसीला" यानी पहले बच्चे से मिला रखते। जिस ऊँट का बच्चा सवारी के लायक़ हो जाता उस पर सवारी करना छोड़ देते और उस का नाम "हाम" रखते, यानी अपनी हिफ़ाज़त करने वाला। मतलब यह है उन सब को इसी तरह अलग-अलग नामों से बाँट रखा था और उन की तरफ़ से होने वाले ख़र्च को अल्लाह का हुकम बताते। इन्हीं बातों के रद्द में यह आयत नाज़िल हुयी।

१९५. बाप-दादाओं की लकीर के फ़क़ीर बनना और तक़्लीद पर जमे रह कर अल्लाह और रसूल के अहकाम को ठुकरा देना हमेशा से गुमराह लोगों का अ़मल रहा है। आज-कल भी अधिकतर मुसलमान इसी महामारी के शिकार हैं। हर मुल्क और हर ज़माने में तक़्लीद जाहिलों का सहारा रहा है। यह अन्धी तक़्लीद केवल पाप ही नहीं है, बल्कि कभी तो शिर्क तक भी पहुंचा देती है और इसी का नाम रस्म की पूजा करना है। आज हिन्दुस्तान की एक बहुत बड़ी तादाद के पास न कोई "किताब" है और न ही कोई "रसूल की तालीम" बस कुछ रस्म व रिवाज हैं जिन को दीन समझ कर अंधाधुन्ध उनकी पूजा करते चले जा रहे हैं (माजिदी)

१९६. शाने-नुज़ूल:- मुसलमान, कुफ़्फ़ार की मज्लिसों में बैठते तो उन के कुफ़्र और शिर्क और वाहियात बातों

को सुन कर बड़े रन्जीदा होते थे, उन्हीं के हक़ में यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

११७. हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने फ़रमाया: ऐ लोगो! तुम इस आयत से यह समझते होगे कि केवल अपने-अपने तौर पर अ़मल कर लो और लोग चाहे जो करते रहें? लेकिन हक़ीक़त यह है कि अगर गुनाह करने वाले को गुनाह से न रोकोगे तो अल्लाह सब को दन्ड दे गा। पस "अ़लैकुम अन्फ़ु-सकुम" का अर्थ यह हुआ "जो कुछ तुम्हारे ज़िम्मा है अगर उसे पूरा कर लो गे तो अ़ज़ाब से बच जाओगे" और इस का तरीक़ा यही है कि अपनी ताक़त और पहुंच के अनुसार गुनाहों को मिटाने की कोशिश करो (अहादीसुत्तफ़ासीर) तब भी यह लोग उन ही की पैरवी करें गे और सच्ची बातों को न मानेंगे।

إِنْ أَنتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُم مُّصِيبَةُ الْمَوْتِ ۚ تَحْبِسُونَهُمَا مِن بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ إِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۙ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّا إِذًا لَّمِنَ الْآثِمِينَ ﴿١٠٦﴾ فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰ أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّا إِثْمًا فَآخَرَانِ يَقُومَانِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوْلَيَانِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِن شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَا إِنَّا إِذًا لَّمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٧﴾ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَن يَأْتُوا بِالشَّهَادَةِ عَلَىٰ وَجْهِهَا أَوْ يَخَافُوا أَن تُرَدَّ أَيْمَانٌ بَعْدَ أَيْمَانِهِمْ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاسْمَعُوا ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿١٠٨﴾ يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أُجِبْتُمْ ۖ قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا ۖ إِنَّكَ أَنتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿١٠٩﴾ إِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِي

और अगर तुम सफ़र में हो और (सफ़र ही की हालत में) तुम को मौत आ जाये (और अपने मुसलमानों में से गवाह न मिल सकें) तो ग़ैर क़ौम में से दो गवाह होने चाहियें। अगर तुम को शुब्हा हो तो नमाज़ के बाद उन को खड़ा करो फिर वह दोनों अल्लाह के नाम की क़सम खाते हुये कहें कि हम इस क़सम का कुछ बदला (किसी से) नहीं लेते (और सच कहते हैं) चाहे हमारा कोई निकट रिश्ते-दार ही क्यों न हो और हम ख़ुदा लगती गवाही को छुपाते नहीं वर्ना हम स्वयं गुनहगार हों गे[११८/१] १०७. फिर अगर (किसी ज़रिए से) मालूम हो कि यह गवाह (झूठी गवाही दे कर) गुनाहगार हुये हैं तो और दो आदमी मय्यत के क़रीबी लोगों में से जिन की हक़ तल्फ़ी हुयी है[११८/२] अल्लाह की क़सम खाते हुये कहें कि हमारी गवाही उन (दो गवाहों) की गवाही से ज़्यादा एतबार के क़ाबिल है और हम ने (इस में कोई) ज़्यादती नहीं की, वर्ना हम (अल्लाह के नज़दीक) ज़ालिम होंगे १०८. अनुमान यही है कि इस प्रकार गवाही दुरुस्त बतला देंगे और डरेंगे कि हमारी क़समों के बाद और क़समों की नौबत न आये। और अल्लाह से डरो और (उस के अहकाम) सुनो[११९]। और अल्लाह बदकारों को सीधी राह नहीं दिखाया करता १०९. जिस दिन अल्लाह रसूलों को इकट्ठा कर के (लोगों को समझाने के लिये) पूछे गा (कि बताओ!) तुम को (लोगों की तरफ़ से) क्या जवाब मिला था? वह कहेंगे कि हम को तो कुछ भी मालूम नहीं। ग़ैब की बातें तू ही जानता है[१२०] ११०. जब अल्लाह कहे गा ऐ अ़ीसा बिन मर्यम! मेरी नेमतों को जो तुझ पर और तेरी माँ पर थी याद कर

....

११८/१. शाने-नुज़ूल:- एक मुसलमान शख़्स तिजारत के लिये मदीना से निकला तो उस के साथ दो अ़ीसाई भी

शरीक हो गये। मुसलमान को राह ही में मौत की बीमारी ने घेर लिया। चुनान्चे मुसलमान ने अपने अ़ीसाई साथियों से कह दिया कि मेरे मरने के बाद मेरा सामान मेरे घर वालों को पहुंचा देना। उस मुसलमान ने चुपके से पूरे सामान की एक लिस्ट (ब्यौरा) तय्यार कर के सामान में छुपा कर पहले ही से रख दी थी। दोनों अ़ीसाई साथियों ने उस का सामान उस के घर वालों को तो पहुंचा दिया मगर एक चाँदी का प्याला निकाल लिया। घर वालों ने लिस्ट में चाँदी का प्याला लिखा हुआ देखा लेकिन उसे न पाया तो उन से मालूम किया, मगर उन्होंने इन्कार कर दिया। अन्त में यह मामला नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने लाया गया इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (मआ़लिम) इस आयत से यह मालूम हुआ कि सफ़र में अगर वसिय्यत करने की आवश्यक्ता पेश आ जाये तो दो मुसलमान गवाह कर लिये जायें (सनाई)

११८/२. यह तीन आयतें उलमा के नज़दीक एराब, यानी तफ़्सीर और हुक्म के एतबार से बहुत कठिन हैं (कुर्तुबी) इमाम सख़ावी लिखते हैं कि मैं ने किसी को नहीं देखा जिस ने अव्वल से आख़िर तक इस आयत की तल्ख़ीस की हो। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने इस आयत को इतना स्पष्ट तौर पर बता दिया है कि बन्दे उस को समझते और उस के अनुसार अ़मल करते हैं। और इस आयत में जितना ही ग़ौर-फ़िक्र करते हैं उतना ही उन के दिल रोशन होते चले जाते हैं (मवाहिब)

११९. इस से बढ़ कर हटधर्मी और नादानी और क्या हो गी कि आदमी तक़्लीद में इतना अन्धा हो जाये कि अ़क़्ल से कुछ भी काम न ले और दलील को भी ठुकरा दे। आज-कल के तक़्लीद करने वालों का भी यही हाल है कि जब कोई उन को कुरआन व हदीस की तरफ़ बुलाता है तो यही उत्तर देते हैं कि हमारे बाप-दादा तो ऐसा ही करते आये हैं और हम भी यही करें गे। यह लोग कुरआन व हदीस को न मान कर केवल अपने इमाम के क़ौल को मानते हैं। ऐ अल्लाह! तू उन को नेक तौफ़ीक़ दे- आमीन! (वहीदी) इसी अन्धी तक़्लीद ने आज इस रोशनी के ज़माने में भी अहले-इस्लाम को फ़िर्क़ों में तक़्सीम कर रखा है और कमाल की बात यह है सब ही अपने-अपने ख़यालों में मगन हैं।

१२०. उलमा ने हदीस की रोशनी में इस आयत का यह मतलब बयान किया है कि क़ियामत के दिन समय और स्थान दोनों मुक़र्रर हों गे। उन का यह हाल उस समय हो गा जब डर और ख़ौफ़ के मारे उन के दिल फूल रहे हों गे और वह यह भूल जायें गे कि मेरी क़ौम ने क्या उत्तर दिया था और क्यों कर कुबूल किया था। फिर बाद में जब सुकून पायें गे तो अपनी क़ौम के लिये गवाही दें गे कि उन्हों ने ऐसा और ऐसा जवाब दिया। यही इस आयत का सही अर्थ है और पहले के उलमा से यही अर्थ साबित भी है (इब्ने कसीर)

عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ
الْقُدُسِ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِى الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَاِذْ
عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ
تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِىْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا
فَتَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِىْ وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ
بِاِذْنِىْ ۚ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِىْ ۚ وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِىْٓ
اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ

जब मैं ने तुझ को रूहुल कुदुस (यानी जिब्रील) के साथ कुव्वत दी। तू गहवारे में और बुढ़ापे में लोगों से बातें किया करता था, और जब मैं ने तुझ को किताब यानी तहज़ीब की बातें और तौरात और इन्जिील सिखाई थी, और जब कि तू मेरे हुक्म से[121] परिन्दों की सी सूरतें मिट्टी से बनाता था फिर उन में फूंक मारता तो वह मेरे हुक्म से परिन्दा हो जाते और तू पैदाइशी अन्धे और कोढ़ी को मेरे हुक्म से अच्छा करता था, और जब तू मेरे हुक्म से मुर्दों को (जीवित

كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝ وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا بِي وَبِرَسُولِي قَالُوا آمَنَّا وَاشْهَدْ بِأَنَّنَا مُسْلِمُونَ ۝ إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنَزِّلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِّنَ السَّمَاءِ قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِنْ كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝ قَالُوا نُرِيدُ أَنْ نَّأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ

➲कर के) निकालता था, और जब मैं ने बनी इस्राईल से तुझ को सुरक्षित रखा (जिस समय) तू उन के पास (खुले) चमत्कार लाया तो उन में से काफ़िर लोग कहने लगे कि यह तो खुला जादू है[१२२] १११. और जब मैं ने (तेरे) हवारियों को इल्का किया[१२३] कि मुझ पर और मेरे रसूल (मसीह) पर ईमान लाओ तो वह बोले कि हम ईमान लाये और तू गवाह रह कि हम अल्लाह के फ़र्मांबर्दार हैं ११२. (याद कर कि) जब (भूख से तन्ग आ कर) हवारियों ने कहा कि ऐ अ़ीसा बिन मर्यम! क्या तेरा अल्लाह यह कर सकता है कि ऊपर से एक ख़ान्चा {दस्तर-ख़ान} (खाने का लगा लगाया) हम पर उतारे[१२४]। मसीह ने कहा कि तुम अल्लाह से डरो अगर तुम ईमानदार हो[१२५] (तो ऐसा मत कहो) ११३. वह बोले कि हम तो यह चाहते हैं कि उस में से खायें और हमारे दिल उस के साथ तस्कीन पायें

....

१२१. 'बिइज़्नी' ने यह स्पष्ट कर दिया कि अल्लाह ने अ़ीसा अ़लै० के ऊपर यह करामत फ़रमाई थी कि यह इरादा और कुदरत की तासीर (प्रभाव) उन के फूंकने से हो जाती थी। और तमाम नबिय्यों के भी चमत्कार का यही हाल है और वलिय्यों की भी करामत का। मतलब यह कि उन को यह इख़्तियार नहीं कि जो चाहें वह करें, बल्कि जो अल्लाह तआ़ला चाहता है वही होता है। केवल फ़र्क़ इतना है कि करामत के ज़ाहिर होने के महल (मुक़ाम, स्थान) होते हैं अ़वाम उस करामत के लायक़ नहीं हैं। बहुत से पढ़े-लिखे, जाहिल और आ़लिम जो बिना सोचे-समझे यह कह देते हैं कि फ़लाँ वली अगर ऐसा चाहें तो हो जाये, और यह समझते हैं कि अगर नज़र-नियाज़ न करोगे तो वली नुक़्सान पहुंचा दें गे, यह सब उन की जिहालत और गुमराही है (मवाहिब)

१२२. अबू हुज़ैफ़ा से रिवायत है कि अ़ीसा अ़लै० जब अल्लाह के इरादे और हुक्म के मुताबिक़ किसी मुर्दे को जीवित करना चाहते तो पहले दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ते, फिर अल्लाह की हम्द व सना करते हुये उस के सात नामों से उस को पुकारते यानी, "या क़दीमु, या ख़फ़िय्यु, या दाइमु, या फ़र्दु, या वित्रु, या अ-हदु, या स-मदु" पढ़ते। और जब उन को कोई कठिनाई आती तो अल्लाह के सात नामों के साथ दुआ़ करते यानी, "या हय्यु, या क़य्यूमु, या अल्लाहु, या रहमानु, या ज़ल् जलालि वल् इक्रामि, या नू रस्समा-वाति वल् अर्ज़ि वमा बै-नहुमा व-रब्बल् अर्शिल् अ़ज़ीमि, या रब्बि" पढ़ते (इब्ने कसीर)

इस में कुछ भी संदेह नहीं कि ऊपर गिनाये गये अल्लाह के नामों में बड़ी कुव्वत, ताक़त और तासीर है और वे इस योग्य हैं कि पूरे ईमान के साथ उन नामों के ज़रीआ़ उस को पुकारा जाये तो बिला शुब्हा उस की दुआ़ और विनती कुबूल हो गी। यह बात ध्यान में रहे कि अल्लाह के नाम यानी अस्मा-ए-हुस्ना के मुतअ़ल्लिक़ सही यही है कि यह सब तौफ़ीक़ी हैं। (तल्ख़ीस)

१२३. 'वह्यि' से मुराद यहाँ दिल में बात डाल देना है जैसा कि "सूरः क़सस्" में अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा की माँ के बारे में फ़रमाया: "और हम ने मूसा की माँ के दिल में यह बात डाल दी कि वह अपने बच्चे को दूध पिलायें" और यहाँ भी यही माना मुराद है जिस में किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं।

१२४. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि अ़ीसा अ़लै० ने बनी इस्राईल से कहा था कि क्या तुम से यह➲

हो सके गा कि अल्लाह के लिये ३० रोज़े रखो और फिर जो उस से माँगो पाओ, क्यों कि मज़दूर को मज़दूरी उसी समय मिलती है जब काम पूरा करे। बनी इस्राईल ने पूरे ३० रोज़े रखे फिर हज़रत अ़ीसा अ़लै० से कहा: ऐ भलाई की शिक्षा देने वाले हम ने यह काम किया, अगर किसी बन्दा के वास्ते करते तो वह अब तक खिलाता-पिलाता। इस के बाद माइदा (खाना) की दर्ख़ास्त की- इसे इब्ने अबी हातिम ने रिवायत किया है (मवाहिब) फिर फ़रिश्ते आँखों देखते ही आकाश से खाना ले कर उतरे। उस में रोटियाँ और सात मछलियाँ थीं। उन हवारियों ने उस में ख़ूब पेट भर कर खाया। एक हदीस में हज़रत अ़म्मार बिन यासिर रज़ि० से रिवायत है कि रोटियों के साथ गोश्त का ज़िक्र है और और इस बात का भी कि उस को जमा कर के न रखें गे, लेकिन जब उन्हों ने हुक्म के खिलाफ़ जमा करना आरंभ कर दिया तो खाना उतरना बन्द हो गया (तिर्मिज़ी)

१२५. हज़रत अ़म्मार बिन यासिर रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने माइदा वालों का क़िस्सा और उन पर अ़ज़ाब को बयान करने के बाद फ़रमाया: "ऐ अ़रब के लोगो! तुम भी ज़रा अपनी हालत पर नज़र डालो कि ऊँट और बकरियाँ चराते फिरते थे, फिर अल्लाह ने तुम्हारे पास तुम ही में से एक रसूल भेजा, जिस का हसब-नसब (वंश-गोत्र) तुम भली-भांति जानते हो, उस ने तुम्हें सूचना दी कि अ़रब के अ़लावा के बादशाहों के ख़ज़ानों पर क़ब्ज़ा करो गे लेकिन तुम सोने-चाँदी को बचा कर उसी समय रखना जब उन की ज़कात निकाल देना और दूसरे हक़दारों को उन के हक़ दे देना। और क़सम है अल्लाह पाक की! कि एक दिन-रात नहीं बीतें गे कि उन की ज़कात निकाले और हक़ अदा किये बग़ैर उन को ख़ज़ाना (भंडार-गोदाम) बना कर रखो गे हालाँकि इस से तुम को मना किया गया है, इस कारण अल्लाह तुम को सख़्त अ़ज़ाब दे गा (इब्ने जरीर)

قُلُوْبُنَا وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ۚ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ ۚ بِحَقٍّ ۗ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ۗ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ۗ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝ مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ

और जानें कि तू ने हम से जो कहा है वह सच कहाँ है और हम उस पर गवाह बनें ११४. मसीह बिन मर्यम ने (उन को नेक नियत देख कर) कहा ऐ अल्लाह, हमारे मौला! तू हम पर आकाश से एक ख़ान्चा उतार जो हमारे लिये और हम से पहले और पिछलों के लिये अ़ीद (का सा दिन) हो और तेरी तरफ़ से (मेरी नबुव्वत पर) निशान बने और हम को रोज़ी दे और तू बड़ी अच्छी रोज़ी देने वाला है। ११५. अल्लाह ने कहा कि तुम पर ख़ान्चा उतारूँ गा फिर जो कोई इस के बाद तुम में से (मेरे अहकाम का) इन्कारी हो गा तो मैं उस को ऐसा अ़ज़ाब दूँ गा कि दुनिया के लोगों में से किसी को ऐसा अ़ज़ाब न दूँ गा ११६. जब अल्लाह कहे गा कि ऐ मर्यम के बेटे अ़ीसा! क्या तू ने लोगों से कहा था[१२६] कि अल्लाह के अ़लावा मुझे और मेरी माँ को भी माबूद {पूज्य} समझो? (और हमारी अ़िबादत करो[१२७]?) वह कहे गा (कि इलाही! शिर्क से) तू पाक है

मुझ से नहीं हो सकता कि मैं ऐसी बात कहूँ जिस के कहने का मुझे हक़ नहीं। अगर मैं ने यह बात कही हो गी तो तू भली भाँति जानता है। तू तो मेरे दिल की बात भी जानता है और मैं तेरे दिल की बात नहीं जान सकता। ग़ैब की बातें तू ही ख़ूब जानता है ११७. मैं ने तो उन से वही बात कही थी जिस का तू ने मुझे हुक्म दिया था (यानी यह कि) अल्लाह की जो मेरा और तुम्हारा रब है अ़िबादत करो (और उस के साथ किसी और को शरीक न ठहराओ)

....

१२६. इमाम राज़ी रह० लिखते हैं कि अल्लाह तआ़ला का सीधे (DIRECT) "क्या तू ने कहा था" का उत्तर सीधे तौर पर "मैं ने कहा था" से देने और अपनी सफ़ाई पेश करने के बजाए उसे मुकम्मल तौर पर अल्लाह के अ़िल्म के हवाले कर दिया और अदब (सभ्यता) और तवाज़ो (आदर-सत्कार) के मुनासिब भी यही था (माजिदी) अल्लाह को छोड़ कर जिन-जिन नेक बन्दों की पूजा की जा रही है (वह चाहे जिस धर्म के हों) अवश्य ही उन नेक बन्दों से ज़वाब तलब किया जायेगा।

१२७. हज़रत अबू मूसा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसललम ने फ़रमाया: क़ियामत के दिन तमाम नबिय्यों को उन की उम्मतों (मानने वालों) के साथ बुलाया जाये गा, फिर हज़रत अ़ीसा को बुला कर उन्हें अपनी नेमतों को याद दिलाते हुये अल्लाह तआ़ला कहे गा कि क्या तू ने कहा था कि मुझ को और मेरी माँ को माबूद (पूज्य) बना लेना? वह इन्कार करें गे और कहें गे कि मैं ने ऐसा नहीं कहा है। फिर नसारा से प्रश्न हो गा तो वह लोग कहें गे कि हाँ, इन्हों ने ऐसा ही हुक्म दिया था। अन्त में यह लोग झूठे साबित हों गे और सलीब की अगुवाई में दोज़ख़ में ढकेल दिये जायें गे।

एक दूसरी रिवायत में है कि जब हज़रत अ़ीसा अ़लै० अल्लाह के इस ख़िताब (संबोधन) को सुनें गे तो थर्रा जायें गे और उन के हर-हर बाल की जगह से ख़ून बहने लगे गा और कहें गे कि "तू शिर्क से पाक है मुझ से नहीं हो सकता कि मैं ऐसी बात कहूँ................(इब्ने कसीर)

عَلَيۡهِمۡ شَهِيۡدًا مَّا دُمۡتُ فِيۡهِمۡ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيۡتَنِيۡ كُنۡتَ
اَنۡتَ الرَّقِيۡبَ عَلَيۡهِمۡ ؕ وَاَنۡتَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ شَهِيۡدٌ ﴿۱۱۷﴾
اِنۡ تُعَذِّبۡهُمۡ فَاِنَّهُمۡ عِبَادُكَ ۚ وَاِنۡ تَغۡفِرۡ لَهُمۡ فَاِنَّكَ
اَنۡتَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ﴿۱۱۸﴾ قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوۡمُ يَنۡفَعُ
الصّٰدِقِيۡنَ صِدۡقُهُمۡ ؕ لَهُمۡ جَنّٰتٌ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا
الۡاَنۡهٰرُ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَاۤ اَبَدًا ؕ رَضِىَ اللّٰهُ عَنۡهُمۡ وَرَضُوۡا
عَنۡهُ ؕ ذٰلِكَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِيۡمُ ﴿۱۱۹﴾ لِلّٰهِ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَ
الۡاَرۡضِ وَمَا فِيۡهِنَّ ؕ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿۱۲۰﴾

और मैं जब तक उन में रहा उन की देख-रेख करता रहा[१२८], फिर जब तू ने मुझे फ़ौत कर लिया[१२९] तो तू ही उन का निगहबान था। और तू हर एक चीज़ की ख़बर रखता है[१३०] ११८. (अब आगे) तू उन पर अ़ज़ाब करे तो तेरे बन्दे हैं और अगर तू बख़्श (भी) दे[१३१] तो बेशक तू ही सब पर ग़ालिब, बड़ी हिक्मत वाला है[१३२] ११९. अल्लाह कहे गा (तू ने सच कहा) आज सच्चों को उन की सच्चाई लाभ दे गी। उन के लिये बाग़ हों गे जिन के नीचे नहरें बहती हों गी हमेशा उन ही में रहें गे। अल्लाह उन से राज़ी वह अल्लाह से राज़ी। यही बड़ी कामियाबी है १२०. आसमान और ज़मीन और जो कुछ उन में है सब पर अल्लाह ही की हुकूमत है। और वह

हर एक वस्तु पर कुदरत रखने वाला है

....

१२८. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसललम ने फ़रमाया: क़ियामत के दिन मेरी उम्मत के कुछ लोग दोज़ख़ में डाले जायें गे तो मैं कहूँ गा कि यह लोग तो कुछ थोड़ी मुद्दत तक मेरे साथ रहे हैं फिर क्यों डाले जा रहे हैं? उत्तर दिया जाये गा कि आप को नहीं मालूम कि इन्हों ने आपके बाद क्या-क्या हर्कतें की हैं। तो मैं वही कहूँ गा जो हज़रत अ़ीसा ने अल्लाह से कहा था, यानी "जब तक मैं उन में रहा उन की देख-रेख करता रहा"। फिर मुझ से कहा जाये गा कि तुम्हारे बाद यह बराबर मुर्तद होते रहे और दीन से फिर गये थे। (अबू दावूद, तयालसी)

बुख़ारी की एक रिवायत में यह भी है कि कुछ लोग हौज़े-कौसर पर आने से रोक दिये जायें गे तो मैं कहूँ गा कि इन को आने दो, यह मेरे आदमी (उम्मती) हैं, तो कहा जाये गा कि आप को नहीं मालूम है, इन लोगों ने आप के बाद नई-नई बिद्अ़तें निकाल कर दीन का मुखड़ा बिगाड़ा दिया था, इस पर मैं कहूँ गा कि जिन्हों ने मेरे बाद मेरे दीन को बदल डाला उन को परे ही रहने दो (बुख़ारी)

१२९. क़ियामत के दिन आप आसमान से उतर कर वफ़ात पायें गे और गुंबदे ख़ज़रा (हरे गुंब्द) में दफ़न हों गे। यहाँ उसी मौत का ज़िक्र हो रहा है इस लिये क़ादियानी फ़िर्क़ा का इस से दलील पकड़ना सहीह नहीं (राज़)

१३०. यानी अल्लाह ने पहले तो उन नेमतों को याद दिलाया जो हज़रत मसीह को दी थीं फिर फ़रमाया कि सच्ची बात बता देने के बावजूद तेरे नाम लेने वाले गुमराह हो गये और तुम्हें और तुम्हारी माँ को ख़ुदा बना लिया (क्यों कि लूथर (Luther) की इस्लाह से पहले हज़रत मरयम की भी पूजा की जाती थी और कैथुलिक कलीसा (Catholic Church) अब तक कर भी रहा है। इस पर हज़रत मसीह कहें गे कि मैं इन तमाम कामों से अलग हूँ। कहने का मतलब यह है कि सभी दावत देने वालों ने तौहीद की ही शिक्षा दी थी, लेकिन उन के मानने वालों ने उन्हीं की पूजा आरंभ कर दी। उन की इस गुमराही के लिये उन के पैगंबर, पीर, वली, ज़िम्मे-दार नहीं हैं, बल्कि मुरीद और उन के मानने वाले ज़िम्मेदार हैं। (तर्जुमान)

१३१. हज़रत मसीह अ़लै० ने अपने को अलग करते हुये उम्मत के संबन्ध में दन्ड और क्षमा-दान के दो रास्ते इख़्तियार किये हैं और दोनों में क्षमा या दन्ड देने का ज़िक्र फ़रमाया है। वह गोया उन को बहर हाल दोषी मानते हैं। उम्मत के मुतअ़ल्लिक़ जानकारी न होने का इज़्हार नहीं किया, बल्कि उन्हें इस बात का अ़िल्म है कि वह मुश्रिक थे। यह अ़िल्म क़ियामत के क़रीब नाज़िल होने के बाद ही हो गा, इस लिये यह आयत हज़रत मसीह के ज़िन्दा होने और क़ियामत के क़रीब नाज़िल होने की दलील है (मुहम्मद इस्माईल)

१३२. यहाँ पर मुश्रिक लोगों को सज़ा का हक़-दार कहा और नेक लोगों के हक़ में गुज़ारिश की कि वह लोग अगर्चे गुनहगार हैं लेकिन मुश्रिक नहीं हैं, उन के गुनाहों को माफ़ कर दे, तू ग़फ़ूर और रहीम है। यह माना नहीं है कि मुश्रिकों को बख़्श दे, इस लिये कि अल्लाह ने बिल्कुल ही साफ़ कर दिया है कि मुश्रिक किसी भी हाल में बख़्शा नहीं जाये गा (मवाहिब)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक बार पूरी रात इसी आयत को पढ़ते रहे फिर सुब्ह को आप ने फ़रमाया: मैं ने अपने रब से अपनी उम्मत के लिये शफ़ाअ़त (बख़्शिश) की दर्ख़ास्त की और वह क़ुबूल हो गयी। वह हर उस मुसलमान को मिले गी जिस ने अल्लाह के साथ किसी को शरीक न किया हो गा (अहमद)

एक दूसरी रिवायत में है कि अल्लाह ने फ़रमाया: ऐ रसूल! हम तेरी उम्मत के मामला में तुम को ख़ुश और राज़ी कर दें गे और तुझ को नाख़ुश नहीं करें गे (अबू हातिम) याद रहे कि मुश्रिकों को कभी भी शफ़ाअ़त नसीब न हो गी, चाहे कलिमा पढ़ने वाले मुसलमान ही क्यों न कहलाते हों। शिर्क सब से बड़ा गुनाह है, महा पाप है। अल्लाह हम सब को इस से सुरक्षित रखे।

सूरः अन्आम् –(6)

सूर अन्आम मक्का में नाज़िल हुयी[१]। इस में १६५ या १६६ आयतें और २० रुकूअ़ हैं

अल्लाह के नाम से आरंभ जो निहायत रहम वाला बड़ा मेहरबान है।

१. हर प्रकार की तारीफ़ें अल्लाह ही के वास्ते हैं जिस ने आसमानों को और ज़मीनों को पैदा किया और अंधेरे और रोशनी बनाये[२]। फिर भी अल्लाह का इन्कार करने वाले अल्लाह के साथ (औरों को) बराबर करते हैं २. (हालाँकि) उसी ने तुम को (आरंभ में) मिट्टी से बनाया फिर (हर एक की मौत का) समय मुक़र्रर किया

....

१. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० रिवायत करते हैं कि सूरः अन्आम के नाज़िल होने के साथ ही फ़रिश्तों की एक बहुत बड़ी जमाअ़त भी उतरी जिस ने पूरब और दक्षिण के आसमान के किनारों को भर लिया था। उन की तस्बीह की आवाज़ में एक ज़बर्दस्त गूंज थी और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम भी "सुब्हा-नल्ला हिल् अ़ज़ीम, सुब्हा-नल्लाहिल् अ़ज़ीम" फ़रमाते थे (बैहक़ी) उलमा का कहना है कि मुश्रिकों और बिद्अ़ती लोगों, क़ियामत का इन्कार करने वालों, अल्लाह का इन्कार करने वाले नये-पुराने लोगों के साथ हुज्जत करने में और उन को मनवाने में यह सूरः बहुत ही अहम है। मुतकल्लिम उलमा ने इस सूरः को दीन का उसूल (आधार-बुनियाद) माना है (मवाहिब)

२. 'अस्समावाति वल् अर्-ज़' यह दो नाम उन चीज़ों के लिये दिये गये हैं जिन्हें फ़ल्सफ़ा की परिभाषा में "जौहर" कहते हैं और 'ज़ुलुमाति वन्नू-र' यह दो नाम उन चीज़ों के लिये दिये गये हैं जिन्हें फ़ल्सफ़ा की परिभाषा में "अर्ज़" कहते हैं। अर्थ यह है कि इस दुनिया में समस्त वस्तुओं का पैदा करने वाला अल्लाह है और कोई भी वस्तु उस के लिये ग़ैर मख़्लूक़ नहीं है (माजिदी)

أَجَلٌ مُّسَمًّى عِندَهُ ثُمَّ أَنتُمْ تَمْتَرُونَ ٢ وَهُوَ اللَّهُ
فِي السَّمَاوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ
وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ ٣ وَمَا تَأْتِيهِم مِّنْ آيَةٍ مِّنْ
آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ٤ فَقَدْ
كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَسَوْفَ يَأْتِيهِمْ
أَنبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ٥ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ
أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّن قَرْنٍ مَّكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ

और एक मुक़र्रर वक़्त उस के पास है। फिर भी तुम शक करते हो ३. हालाँकि आसमानों और ज़मीनों में वही माबूद है[३] (उस का ज़िल्म इतना अधिक है कि) तुम्हारे छुपे भेद और ज़ाहिर को जानता है और जो कुछ तुम करते हो वह भी उसे मालूम हैं ४. जब अल्लाह के आदेशों में से कोई आदेश उन के पास पहुंचता है तो उस से मुंह फेर जाते हैं ५. फिर जब सच्ची तालीम उन के पास आयी तो उस को भी उनहों ने झुठलाया। पस जिस चीज़ की यह लोग हंसी ➲

مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٦﴾ وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِيْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧﴾ وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ؕ وَلَوْ
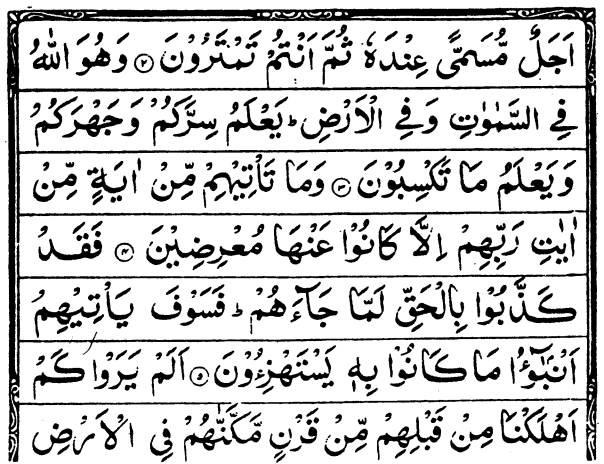
उड़ाते हैं उस की ख़बर उन को हो गी ६. क्या उन्हों ने इस में ग़ौर नहीं किया कि उन से पहले हम ने कई क़ौमों को तबाह कर दिया उन को हम ने ज़मीन में ऐसा क़ाबू दिया था कि तुम को वैसा नहीं दिया और हम ने उन पर मूसला धार वर्षा बरसायी और हम ने उन के बाग़ों और मकानों के नीचे नह्रें जारी की थीं फिर हम ने उन के गुनाहों की वजह से उन को हलाक कर दिया और उन के बाद कई एक (लोग) पैदा कर दिये[४] ७. और अगर हम काग़ज़ में लिखी किताब उतार दें[५] फिर यह उस को अपने हाथों से छू भी लें तो भी यह इन्कारी यही कहें गे कि यह तो खुला जादू है ८. और कहते हैं कि उस पर फ़रिश्ता क्यों नहीं उतरता

....

३. अर्थात यह है कि वह अ़िबादत का हक़-दार है, उस के अ़लावा ज़मीन और आसमान में किसी को भी यह हक़ नहीं पहंचता कि उस की अ़िबादत की जाये। इस का यह भी अर्थ हो सकता है कि उस का इल्म हर जगह है और वह अपनी ज़ात से अर्श पर है और उस का अर्श पर क़ाइम होना हक़ है।

४. यानी यह लोग इतने बिगड़े हुये हैं कि समझते ही नहीं कि स्वंय क्या कह रहे हैं? भला यह भी कोई कहने की बात है कि आसमान से हमें काग़ज़ पर लिखी हुयी किताब ला कर दिखाओ, तब हम मानें गे। भला ऐसे बेहूदा और वाहियात प्रश्न भी किसी ने किये हैं? और अगर................(सनाई)

५. शाने-नुज़ूलः- नज़्र बिन हारिस और अ़ब्दुल्लाह बिन उम्य्या वग़ैरह मक्का के काफ़िरों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा कि हम लोग आप पर हर्गिज़ ईमान न लायें गे जब तक आप हमारे पास आसमान से कोई लिखी हुयी किताब नाज़िल करा कर दिखा न दें और इस के साथ यह भी शर्त है कि उस के साथ चार फ़रिश्ते भी आयें और वह उस किताब के सच होने और आप के रसूल होने की गवाही दें। उन लोगों के इस सवाल पर यह आयत नाज़िल हुयी (सिराज)

اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ ﴿٨﴾ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ ﴿٩﴾ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٠﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١١﴾ قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

और अगर हम ने फ़रिश्ता उतारा होता तो फ़ैसला ही हो चुका होता फिर उन को ढील न मिलती[६] ९. और अगर हम रसूल का उहदा (पदभार) फ़रिश्ता को देते तो उस को भी आदमी की शक्ल में भेजते फिर उस समय भी उन को वही शुब्हात होते जो अब हो रहे हैं १०. तुझ से पहले भी कई रसूलों से मख़ौल (मज़ाक़) हुये फिर जिन लोगों ने उन (रसूलों) से ठट्ठे-मख़ौल किये थे उन्हीं को अ़ज़ाब ने

قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَ النَّهَارِ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ؕ قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ

जिस की वह हंसी उड़ाते थे आ घेरा ११. तू कह! ज़मीन में फिरो फिर देखो कि संदेष्टाओं को झुठलाने वालों का क्या अन्त हुआ १२. तू कह! आसमान और ज़मीन की वस्तुएँ किस की हैं? तू कह! कि अल्लाह ही की हैं। उस ने अपनी ज़ात पर लाज़िम कर रखा है कि मख़लूक़ पर मेहरबानी करे गा[७]। वह क़ियामत के दिन जो निःसंदेह आने वाला है तुम सब को (अवश्य एक साथ) इकट्ठा करे गा। जिन लोगों ने अपने आप को टूटे में डाल रखा है वही ईमान नहीं लाते १३. सब चीज़ें जो रात में और दिन में बसती हैं[८] उसी की हैं। वह सुनता और जानता है १४. ऐ रसूल! तू कह[९] कि क्या मैं अल्लाह के अलावा जो तमाम आसमानों और ज़मीनों का पैदा करने वाला है किसी ग़ैर को अपना मालिक समझूँ? हालाँकि वही रोज़ी देता है और वह किसी से रोज़ी नहीं पाता। तुम कहो! मुझे यह भी आदेश हुआ है कि मैं सब से पहले अल्लाह का फ़रमाँबर्दार बनूँ और यह कि ख़बरदार मुश्रिकों में से मत हो जाना १५ (ऐ रसूल!) तुम कहो! नाफ़र्मानी की सूरत में

....

७. हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब अल्लाह ने कायनात को पैदा करने का फ़ैसला किया, ख़ल्क़ को मुक़द्दर किया, तो एक किताब लिखी और अर्श पर अपने पास रखी और उस में यह लिखा था "मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब (नाराज़गी) पर ग़ालिब हो चुकी है" (बुख़ारी, मुस्लिम) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया: "अल्लाह ने ज़मीन व आसमान को पैदा करते समय सौ रहमतें पैदा कीं, उन में से एक हिस्सा दुनिया में मख़्लूक़ को मिला, इसी कारण आपस में एक दूसरे पर रहम करते हैं और ९९ हिस्सा क़ियामत के दिन के लिये है। क़ियामत के दिन मोमिन को यह ९९ भी दे कर १०० पूरा कर दिया जायेगा (मुस्लिम, अहमद)

इमाम ज़ुजाज रह० कहते हैं कि "उस ने अपनी ज़ात पर मेहरबानी को लाज़िम कर लिया है" इस का अर्थ यह है कि आरंभ ही में अल्लाह तआ़ला ने अपनी ज़ात पर यह मुक़र्रर कर दिया कि रहमत फ़रमायेगा और रहमत ही ग़ालिब रहेगी, यही वजह है कि तुम्हारी आयु और अजीविका (रोज़ी-रोटी) को बाक़ी रखा, हालाँकि तुम शिर्क करते हो। यह छूट केवल दुनिया में है वर्ना क़ियामत के दिन उस के पास हाज़िर हो कर अवश्य ही नेकी और बदी का बदला पाओगे।

८. इब्ने जरीर फ़रमाते हैं कि जिस पर सूरज निकला और डूबा वह उस में रहने वाला हुआ इस लिये यहाँ पर इस से मुराद वह तमाम ही चीज़ें हुयीं जो सूरज के निकलने और डूबने के दर्मियान हैं। मतलब यह है कि तमाम मख़्लूक़ मुराद है और इस का अर्थ यह है कि तमाम मख़्लूक़ का पैदा करने वाला, और उस का मालिक केवल अल्लाह ही है।

९. शाने-नुज़ूल:- एक मर्तबा मक्का के काफ़िरों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा कि शायद तुम अपनी ग़रीबी और फ़ाक़ा की वजह से नबुव्वत का दावा करते हो और झूठे दावे के बहाने से माल इकट्ठा करना चाहते हो। अगर अस्ल यही है तो हमारे बाप-दादा के दीन को बुरा न कहो तो हम तुम्हारे लिये चन्दा इकट्ठा

कर के तुम्हें सब से अधिक धनवान बना देंगे, इन के उत्तर में अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई (सलफ़िय्या)

عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ مَنْ يُصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ ۚ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ۝ وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِنْ يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۝ قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ شَهِيدٌ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَٰذَا الْقُرْآنُ لِأُنْذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ بَلَغَ ۚ أَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ آلِهَةً أُخْرَىٰ ۚ قُلْ لَا أَشْهَدُ ۚ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ وَإِنَّنِي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ ۝ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمُ ۘ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۗ إِنَّهُ

मैं भी तो बड़े दिन (यानी क़ियामत) के अ़ज़ाब से डरता हूँ १६. उस दिन जिस से वह अ़ज़ाब टल गया (तो समझो कि) अल्लाह ने उस पर बड़ा ही रहम किया। और यही (दुगनी सफलता और) खुली कामियाबी है १७. और अगर अल्लाह तुझ को कोई तक्लीफ़ पहुंचाये तो कोई उस तक्लीफ़ को दूर करने वाला सिवाए उस के नहीं और अगर वह तुझ को कुछ भलाई पहुंचानी चाहे तो वह हर काम पर कुदरत रखता है[10] १८. वह अपने सब बन्दों पर ग़ालिब है[11]। और वही बड़ी हिक्मत वाला ख़बर रखने वाला है १९. (ऐ रसूल!) तुम कहो कि बड़ी मोतबर {विश्वसनीय} गवाही किस की है? तू बता! अल्लाह ही मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाह है और यह कुरआन मेरी तरफ़ इस लिये इल्हाम हुआ है कि तुम को और जिसे यह पहुंचे उस को इस के ज़रीआ़ अ़ज़ाब से डराऊँ[12]। क्या तुम गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ और माबूद भी हैं? तुम कहो! मैं तो गवाही नहीं देता। तुम कहो! माबूद केवल एक है और (यह भी उन से कहो कि) निःसंदेह मैं तुम्हारे शिर्क करने से बेज़ार हूँ २०. जिन लोगों को हम ने किताब दी है वह भी उस को यूँ पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को जानते हैं[13]। जिन लोगों को अपना नुक़्सान आप करना है वह नहीं मानें गे २१. जो अल्लाह पर झूठ बाँधे या उस के आदेशों को झुठलाये उस से बढ़ कर भी कोई ज़ालिम है?

....

१०. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ था कि मुझ से कहा: ऐ लड़के! मैं तुम्हें कुछ कलिमे सुनाता हूँ तुम अगर उन को याद रखो गे तो अल्लाह तुम्हें सुरक्षित रखे गा। तू अल्लाह को याद कर तू उस को अपने पास पाये गा, जब कुछ माँगना हो तो केवल उसी से माँग, जब सहायता की आवश्यक्ता हो तो उसी से माँग। और जान रख! अगर सारा संसार मिल कर तुझे लाभ पहुंचाना चाहे तो वह बस उतना ही पहुंचा सकता है जितना तेरे हक़ में लिखा है। और अगर सारा संसार मिल कर तुझे हानि पहुंचाना चाहे तो केवल उतनी ही पहुंचा सकता है जितनी तेरे लिये लिख दी गयी है। क़लम उठा लिया गया है और तक़्दीर में लिखी हुयी बातों की सियाही ख़ुश्क हो चुकी है। (तिर्मिज़ी)

११. अल्लाह तआ़ला के अहकाम दो प्रकार के हैं (१) जिन का करना बन्दों के हाथ में नहीं है जैसे, बीमारी और

मौत वग़ैरह। जिस प्रकार इन हुक्मों को मूसा जैसे रसूल ने माना, इसी प्रकार फ़िर्औन जैसे ज़ालिम ने भी माना (२) दूसरी क़िस्म के अहकाम यह हैं जैसे नमाज़, रोज़ा वग़ैरह। इन अहकाम के करने या न करने में बन्दा ख़ुद मालिक है, इसी लिये जो करते हैं उन के अ़मल का नतीजा कुछ और है और जो नहीं करते हैं उन का कुछ और है। (सनाई) जो अमल करते हैं वह मोमिन बन्दे और जो नहीं करते हैं वह नाफ़र्मान कहलाते हैं।

१२. इस आयत से साफ़ ज़ाहिर है कि जो उस समय मौजूद थे और जो भविष्य में पैदा हों गे सब के लिये क़ुरआन मजीद को मानना बराबर लाज़िम है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिस को क़ुरआन पहुंच गया तो गोया मैं ने ख़ुद उस के सामने हाज़िर हो कर डराया (अबू नआ़ीम) आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया: "अल्लाह की तरफ़ से तब्लीग़ करो। जिस को क़ुरआन की एक आयत पहुंची है उस को अल्लाह का हुक्म पहुंच गया (अब्दुर्रज़्ज़ाक़) एक दूसरी हदीस में है "अल्लाह उस शख़्स को प्रसन्न रखे जिस ने हम से कोई हदीस सुनी, फ़िर जैसी सुनी वैसी ही पहुंचा दी, क्यों कि सुनने वाले के मुक़ाबला में कभी वह ज़्यादा माहिर होता है जिस को पहुंची" (तिर्मिज़ी)

१३. यहूदी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बहुत अच्छी तरह जानते-पहचाने थे, इस लिये कि वह अपनी किताब तौरात में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बारे में निशानियाँ पढ़ चुके थे। लेकिन चूंकि वह रूहानी पहचान नहीं रखते थे इसी लिये बाप-दादाओं की तक़्लीद करने लगे और अल्लाह के ग़ज़ब का शिकार हुये।

لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ
لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ
تَزْعُمُوْنَ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ
رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ﴿٢٣﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓى
اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمِنْهُمْ
مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ
يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا
يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَهُمْ
يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ
اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى
النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا
وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧﴾ بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا

ऐसे ज़ालिमों को कामियाबी नहीं हो गी २२. और जिस दिन हम उन सब को जमा करें गे फिर मुशिरकों से पूछें गे कि तुम्हारे शरीक (ठहराये हुये) कहाँ हैं? जिन को तुम (ख़ुदाई में साझी-दार) समझा करते थे २३. फिर उन की तरफ़ से कुछ उत्तर न हो गा मगर यही कहेंगे कि अल्लाह की क़सम! जो हमारा रब है हम तो मुशिरक न थे[१४] २४. तो देखो! किस तरह अपने किये से इन्कारी हों गे और जो कुछ यह (इस समय) झूठ गढ़ रहे हैं सब को भूल जायें गे २५. कुछ उन में से (बुरी निय्यत से क़ुरआन सुनने के लिए) तेरी तरफ़ कान झुकाते हैं[१५] और हम ने उन के दिलों पर ग़फ़लत डाल रखी है और उन के कानों में बोझ है कि न सुनें और न समझें। और अगर सारी निशानियाँ भी देख लें तो भी न मानें गे। जब तेरे पास आते हैं तो तुझ से झगड़ते हुये काफ़िर कह देते हैं कि (इस क़ुरआन में रखा क्या है) यह तो केवल पहलों की कहानियाँ हैं २६. और लोगों को इस क़ुरआन

से रोकते हैं और ख़ुद भी उस से रुकते हैं और (इन बातों से) अपनी ही तबाही करते हैं (और किसी दूसरे का क्या नुक़्सान है) मगर समझते नहीं[१६] २७. और अगर तू उन को (उस समय) देखेगा जब (क़ियामत में) आग के सामने किये जायें गे और कहें गे कि काश! हम फेरे जायें और अपने रब के हुक्मों को न झुठलायें और ईमा दार बनें[१७] २८. बल्कि जो कुछ छुपाते थे वह उन को सामने दिखाई दे गा

....

१४. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने एक प्रश्न कर्ता के उत्तर में फ़रमाया: मुश्रिक जब देखें गे कि जन्नत में केवल अहले-तौहीद, नमाज़-रोज़े के पाबन्द ही जा रहे है, तो आपस में कहें गे कि हम लोगों को भी शिर्क से तौबा कर लेनी चाहिये ताकि दन्ड से बच जायें, पस वह क़सम खा कर झूठ बोलें गे, उस समय अल्लाह तआ़ला उन के मुंह पर मुहर लगा दे गा और उन के हाथ-पाँव गवाही दें गे इस हालत में अल्लाह तआ़ला से वह कुछ भी न छुपा सकें गे (अबू हातिम)

१५. शाने-नुज़ूलः- वलीद बिन मुग़ीरा और नज़्र बिन हारिस वग़ैरह चन्द लोगों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को क़ुरआन पढ़ते सुना तो नज़्र ने कहा कि मुहम्मद क्या पढ़ते हैं? दूसरे ने उत्तर दिया कि वह तो केवल पहले के क़िस्से-कहानियाँ बयान करते हैं, इस पर अबू सुफ़्यान ने कहा कि अल्लाह की क़सम! मैं उन्हें हक़ पर समझता हूँ। यह सुनते ही अबू जेहल ने नाराज़ हो कर कहा कि तुम बिल्कुल ग़लत कहते हो, इस मौक़ा पर यह आयत नाज़िल हुयी (मदारिक)

१६. शाने-नुज़ूलः- हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि यह आयत अबू तालिब के बारे में नाज़िल हुयी, इस लिये कि वह मुश्रिकों को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को तक्लीफ़ देने से तो मना करते थे और स्वँय इस्लाम को क़ुबूल न करते थे (अब्दुर्रज़्ज़ाक़) यहाँ पर जमा (बहुवचन) सेग़ा इस लिये लाया गया है कि अबू तालिब और उन के तमाम साथी एक साथ थे। और बनी हाशिम का भी यही हाल था कि वह ज़ाहिरी तौर पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हिमायत करते थे।

१७. यानी जब दोज़ख़ के निकट पहुंचें गे तो इन्हें रोक देने का आदेश हो गा, इस से यह लोग यह समझें गे कि शायद पुनः दुनिया में भेजा जाये गा ताकि अबकी बार हम ईमान लायें और अवज्ञा न करें, लेकिन अल्लाह कहे गा कि रोकने का मक़्सद वह नहीं है जो तुम सोच रहे हो, बल्कि यह है कि उन के हाथ-पैर और मुंह गवाही दे दें कि इन्हों ने वादा किया था कि हम शिर्क न करें गे, लेकिन फिर अपने वादे से मुकर गये। इन को तो दोबारा दुनिया में भेजना बेकार है।

يُخْفُونَ مِنْ قَبْلُ ۖ وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَ
إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٢٨﴾ وَقَالُوا إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا
نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وُقِفُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ
قَالَ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٠﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا

और अगर वापस भेज दिये जायें तो फिर भी वही काम करें गे जिन से उन को रोका गया है और झूठ बोलते हों गे[१८] २९. और कहते हैं कि हमारी हयाती यही दुनिया की ज़िन्दगी है[१९] (इस के अ़लावा कुछ नहीं) और न ही हम को (दूसरी ज़िन्दगी के लिये) उठना है ३०. (ऐ रसूल!) अगर तू उन को उस वक़्त देखे जब यह अपने रब के दर्बार में खड़े किये जायें गे। अल्लाह कहे गा

بِلِقَآءِ اللّٰهِ ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَتۡهُمُ السَّاعَةُ بَغۡتَةً قَالُوۡا
يٰحَسۡرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطۡنَا فِيۡهَا ۙ وَهُمۡ يَحۡمِلُوۡنَ اَوۡزَارَهُمۡ
عَلٰى ظُهُوۡرِهِمۡ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوۡنَ ﴿۳۱﴾ وَمَا الۡحَيٰوةُ
الدُّنۡيَاۤ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهۡوٌ ؕ وَلَلدَّارُ الۡاٰخِرَةُ خَيۡرٌ
لِّلَّذِيۡنَ يَتَّقُوۡنَ ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۳۲﴾ قَدۡ نَعۡلَمُ اِنَّهٗ
لَيَحۡزُنُكَ الَّذِىۡ يَقُوۡلُوۡنَ فَاِنَّهُمۡ لَا يُكَذِّبُوۡنَكَ وَلٰكِنَّ
الظّٰلِمِيۡنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجۡحَدُوۡنَ ﴿۳۳﴾ وَلَقَدۡ كُذِّبَتۡ رُسُلٌ
مِّنۡ قَبۡلِكَ فَصَبَرُوۡا عَلٰى مَا كُذِّبُوۡا وَاُوۡذُوۡا حَتّٰۤى

कि क्या यह वाक़ई नहीं? वह बोलें गे अल्लाह की क़सम! हाँ वाक़ई है। अल्लाह कहे गा कि तो फिर अपने कुफ़्र की शामत में अ़ज़ाब (का मज़ा) चखो ३१. जो लोग अल्लाह की मुलाक़ात नहीं मानते वह सख़्त नुक़्सान में हैं[२०], यहाँ तक कि जब अचानक उन पर क़ियामत की घड़ी आये गी तो कहें गे कि अफ़्सोस हमारी कोताही पर जो इस बारे में हम ने की और अपने पापों का भार अपनी कमर पर उठाये हों गे। सुनोजी! (और समझ लो कि) बुरा ही बोझ उठायें गे[२१] ३२. दुनिया की ज़िन्दगी (का निचोड़) सिवाए खेल और कूद के कुछ भी नहीं[२२]। और परहेज़ गारों के लिये तो आख़िरत का घर ही (हर हाल में सब से) बेहतर है। क्या तुम फिर भी नहीं समझते? ३३. हम जानते हैं कि उन की बेहूदा बातों से तुझे रन्ज होता है (लेकिन तू निश्चिंत रह, क्यों कि) यह तुझे नहीं झुठलाते हैं, बल्कि यह ज़ालिम अल्लाह के हुक्मों का इन्कार करते हैं[२३] ३४. और तुझ से पहले भी कई-एक रसूलों को झुठलाया गया फिर उन्हों ने झुठलाये जाने और तक्लीफ़ दिये जाने के बावजूद सब्र किया

....

१८. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अक़्लमन्द आदमी वह है जो अपने नफ़्स का हिसाब लेता रहे और आख़िरत के लिये तय्यारी करता रहे। और बेवकूफ़ वह है जो अपने आप को ख़्वाहिशों के पीछे लगा दे फिर अल्लाह से उम्मीद रखे कि वह बख़्श दे गा"। हज़रत आइशा रज़ि० ने अपनी मौत वाली बीमारी में फ़रमाया: "मुझे अल्लाह के सामने खड़े होने का इतना भय है कि अगर मैं न पैदा हुयी होती तो बेहतर था" (वहीदी) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह की क़सम! आख़िरत के मुक़ाबला में दुनियाँ की हक़ीक़त इतनी ही है जैसे कोई समुन्द्र में एक उंगली डाल कर निकाल ले फिर यह देखे कि समुन्द्र का पानी कितना कम हुआ और उस की उंगली में कितना लगा है"। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया: "जिस ने केवल दुनिया को चाहा उस ने अपनी आख़िरत का नुक़्सान किया और जिस ने आख़िरत को चाहा उस ने दुनिया का नुक़्सान किया जो कि एक दिन मिट जाने वाली है। इस लिये मिट जाने वाली को छोड़ दो और बाक़ी रहने वाली को ले लो" (हमीदी)

१९. तमाम ही आसमानी किताबों, नबिय्यों और नेक लोगों ने मरने के बाद की ज़िन्दगी का यक़ीन दिलाया है, इस मस्अले में किसी का भी इख़्तिलाफ़ नहीं है। लेकिन इस के बावजूद आज के अक्सर नाम के मुसलमान भी दुनिया की चमक-दमक में आख़िरत को भूले हुये हैं और अपने अ़मल से साबित कर रहे हैं कि उन के नज़दीक केवल इसी मिट जाने वाली दुनिया का आराम ही सब कुछ है, आख़िरत कोई चीज़ नहीं है। ऐसे मुसलमानों को अल्लाह से डर कर आख़िरत की ज़िन्दगी की फ़िक्र करनी चाहिये। आख़िरत की ज़िन्दगी पर ईमान लाना तमाम नेकियों की बुनियाद है, अगर यह यक़ीन न हो तो नेकी-बदी का तसव्वुर ही ख़त्म हो जाता है। यही कारण है कि कम्यूनिस्ट मुल्कों और आख़िरत का इन्कार करने वाली क़ौमों के अन्दर से नेकी-बदी और हलाल-हराम का तसव्वुर ख़त्म हो गया है और इन्सान जानवर बनता चला जा रहा है (राज़)

२०. 'वह सख़्त नुक़्सान में है जो अल्लाह की मुलाक़त नहीं मानते' यानी पुन: जीवित हो कर हिसाब-किताब देने

➲को और आख़िरत को नहीं मानते। इस ज़माना में भी यह महामारी बहुत बुरी तरह फैल गयी है। ताज्जुब है कि ऐसे लोगों को दुनिया फ़ल्सफ़ी कहती है। ऐसे लामज़हब लोगों से जब बहस की जाती है तो इन को भी अल्लाह के मौजूद होने का क़ाइल होना पड़ता है। और यह लोग मानने पर मजबूर हो जाते हैं कि इतनी लम्बी-चौड़ी दुनिया का शासन चलाने वाला कोई है। और यह मान लेने के बाद इस को भी मानना चाहिये कि कोई दिन ऐसा आना चाहिये जिस में अच्छे-बुरों को अपने कर्मों का फल भोगना पड़े। अगर अच्छे लोगों को अच्छा बदला और बुरे लोगों को बुरा बदला न दिया जाये तो यह अल्लाह के अ़द्ल और इन्साफ़ के ख़िलाफ़ है। (सलफ़िय्या)

२१. कुफ़्फ़ार और मुश्रिकों के अ़मल (कर्म) बदबूदार और बुरी शक्ल में क़ब्र में भी उन के साथ रहें गे और जब क़ब्रों से यह लोग ज़िन्दा कर के उठाये जायें गे तो यह उन पर सवार हों गे और कहें गे कि दुनिया में तो तू मुझ पर सवार था और आज हम तुम पर सवार हैं। अल्लाह तआ़ला बन्दों के अ़मल को सूरत दे दे गा और इसी प्रकार नमाज़, रोज़ा वग़ैरह में वज़न पैदा कर दे गा ताकि उन को तौला जा सके। इस में कुछ भी शुब्हे की गुन्जाइश नहीं है, तमाम ही लोगों का इस पर इत्तिफ़ाक़ है। लेकिन आज-कल के कुछ मुल्हिद और दज्जाल क़िस्म के लोग जाहिलों को बहकाते हैं कि क़ियामत, के दिन अमल का तौला जाना वग़ैरह सब बेकार बातें हैं यह लोग ख़ुद ही जाहिल हैं।

२२. दुनिया की ज़िन्दगी को खेल-तमाशा इस लिये कहा गया है कि यह पल झपकते ही समाप्त हो जाती है। और इस लिये भी कि अ़ज़ाब व सवाब और न्याय व इन्साफ़ के लिये दूसरी दुनिया न हो तो जो कुछ इस दुनिया में है वह खेल-तमाशा से ज़्यादा कुछ नहीं (तर्जुमान)

२३. यहाँ अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को तसल्ली दी है कि तुम काफ़िरों के झुठलाने से रन्जीदा न हो, इस लिये कि यह तुम को नहीं झुठलाते हैं, बल्कि मेरी आयतों को झुठलाते हैं। अबू यज़ीद कहते हैं कि एक मर्तबा अबू जेहल ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मुसाफ़ह किया (हाथ मिलाया) तो लोगों ने कहा कि क्या तू मुहम्मद से हाथ मिलाता है? तो उस ने कहा: अल्लाह की क़सम! मैं जानता हूँ कि वह सच्चे रसूल हैं (अबू हातिम) एक दूसरी रिवायत में है कि अबू जेहल ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा कि हम तुम्हें नहीं, बल्कि जो हुक्म तुम ले कर आये हो उसे झुठलाते हैं। उस ने तन्हाई में यह भी कहा कि अल्लाह की क़सम! मैं जानता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) सच्चे रसूल हैं, लेकिन हम अ़ब्दे मुनाफ़ के बेटों के कब मातहत थे जो आज इन की मातहती क़ुबूल कर लें और इन के ताबेदार बनें। (हाकिम)

اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ
مِنْ نَّبَاِی الْمُرْسَلِيْنَ ۝ وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ
اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْاَرْضِ
اَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَآءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ۚ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝
اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ۘ وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ
اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ۝ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ
مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً

यहाँ तक कि हमारी मदद उन को पहुंची, और अल्लाह के हुक्मों को कोई बदल नहीं सकता। और तेरे पास पैग़ंबरों के हालात पहुंच चुके हैं (फिर घबराने का क्या अर्थ?) ३५. और अगर उन का मुंह फेरना तुझ को भारी पड़ रहा है[२४] तो तुझ में अगर ताक़त है कि ज़मीन में सुरंग निकाल कर या आसमान पर सीढ़ी लगा कर कोई निशानी उन को ला दे तो ले आ। और (यह याद रख कि) अल्लाह चाहता तो उन सब को हिदायत पर जमा कर देता (मगर उस का कोई काम हिक्मत से ख़ाली नहीं) पस तू नादानों में से हर्गिज़ न हो ३६. जो लोग सुनते हैं वही➲

وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِي الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ؕ وَمَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

कुबूल करते हैं। और जो मुर्दे हैं अल्लाह उन को जीवित करे गा फिर उस की तरफ़ फेरे जायें गे[२५] ३७. और कहते हैं कि उस के रब की तरफ़ से उस पर कोई निशान क्यों नहीं उतरता? तू कह! बेशक अल्लाह निशान उतारने पर कुदरत रखता है (वह अब भी दिखायेगा) लेकिन बहुत से उन में नादान हैं (जानते नहीं[२६]) ३८. ज़मीन में जितने जानवर और दो बाजुओं से उड़ने वाले परिन्दे हैं सब तुम्हारी तरह मख़्लूक़ हैं (जिन की क़िस्मों का जानना भी इन्सान की ताक़त से बाहर है मगर) हमारी तहरीर (गणना, शुमार) से कोई बाहर नहीं[२७] फिर सब को अपने पर्वरदिगार की तरफ़ लौट कर जाना है[२८]। ३९. और जिन्हों ने हमारे अहकाम को झुठलाया है वह बहरे और गूंगे हो कर अंधेरों में पड़े हैं। अल्लाह जिस को चाहे गुमराह कर दे (और हमेशा की गुमराही में रखे) और जिस को चाहे सीधी राह पर लाये

....

२४. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़ाहिश थी कि सभी लोग ईमान ले आयें और हिदायत की राह इख़्तियार कर लें। अल्लाह तआ़ला ने बता दिया कि हिदायत केवल उसी को मिलेगी जिस के भाग्य में अल्लाह तआ़ला ने लिख दिया है (इब्ने कसीर) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम काफ़िरों के हाल पर रहम खाते हुये चाहते थे कि दोज़ख़ की आग से बच जायें और तारीकी व जिहालत से निकल आयें। आप की इस बात को ले कर बड़ी इच्छा थी, इस लिये ख़िताब में थोड़ी सी सख़्ती फ़रमाई गयी है ताकि आप उस इच्छा को बिल्कुल ही दिल से निकाल फेंके और अल्लाह की क़ुदरत का नज़ारा करें (तल्ख़ीस) आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने चचा अबू तालिब को कितना चाहा कि ईमान ले आयें, लेकिन अल्लाह ने उन के भाग्य में नहीं लिखा था इस लिये उन्होंने ईमान लाने से इन्कार कर दिया, और क़ौम के दर्मियान नाक कटने के डर से कुफ़्र ही को पसन्द किया। आज भी बहुत से लोग ऐसे मिल जायें गे जो कि सिर्फ़ अपनी नाक ऊँची रखने के ख़याल से बुरे काम करते रहते हैं।

२५. इमाम इब्ने अ़ता फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने यह जो फ़रमाया है कि "सुनने वाले ही ज़िन्दा हैं" इस से मुराद ज़िन्दा लोग हैं और "जो मुर्दा हैं उन को ज़िन्दा करे गा" से मरे हुये लोग मुराद हैं। हदीस शरीफ़ में है कि मुर्दे पर क़ब्र में अ़ज़ाब होता है और उस के चीख़ने-चिल्लाने को इन्सान और जिन्नात के अ़लावा तमाम ही मख़्लूक़ सुनते हैं और इन दोनों मख़्लूक़ का न सुनना इम्तिहान की वजह से है। अगर यह सुनते और देखते तो "बिन देखे ग़ैब पर ईमान लाते हैं" का कोई अर्थ नहीं था। (मवाहिब)

२६. यानी चमत्कार और निशानी दिखाने का भी एक मौक़ा होता है जिसे अल्लाह ही ख़ूब जानता है। यह कोई मदारी का थैला नहीं कि जाहिल ने कहा कि मुझे चांद के दो टुक्ड़े कर के दिखाओ तो उसे भी दिखा दिया, किसी ने कुछ और दिखाने को कहा तो उसे भी दिखा दिया, इस प्रकार सब की फ़र्माइश पूरी कर दी। इतनी बड़ी मख़्लूक़ में से किस के साथ कब क्या किया जाये और क्या न किया जाये यह अल्लाह ही बेहतर तौर पर जानता है, वह हरएक के हाल से वाक़िफ़ है (सनाई)

२७. कुछ उलमा का कहना है कि पानी और ज़मीन के तमाम जानवर अलग-अलग उम्मत हैं और हर एक के अल्लाह को याद करने के अलग-अलग तरीक़े और ज़िक्र व दुआएं हैं। अहादीस में पत्थरों की तस्बीह साबित है। एक बार

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दो बकरियों को लड़ते हुए देख कर हज़रत अबू ज़र (रज़ि०) से फ़रमाया था - "ऐ अबूज़र! तुम जानते हो कि ये क्यों लड़ रही हैं?" अबूज़र रज़ि० ने अर्ज़ किया कि नहीं जानता। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: लेकिन अल्लाह अच्छीं तरह जानता है और क़ियामत के दिन दोनों के दर्मियान न्याय करे गा। हज़रत उस्मान रज़ि० रिवायत करते हैं कि क़ियामत के दिन सींग वाले जानवरों से बेसींग वाले का भी बदला दिलवाया जाये गा (अहमद) एक रिवायत में है कि अल्लाह तआ़ला उन जानवरों के दर्मियान न्याय करने के पश्चात् फ़रमाये गा कि तुम मिट्टी हो जाओ! इस हाल को देख कर काफ़िर तमन्ना करें गे कि काश आज हम भी ख़ाक (मिट्टी) हो जाते (अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़)

२८. इस आयत से साफ़ ज़ाहिर है कि जानवरों को भी दोबारा ज़िन्दा किया जाए गा और ज़ालिम जानवर से मज़लूम जानवर को बदला दिलाया जाये गा। बिना सींग वाली को सींग वाली बकरी से बदला दिलाया जाये गा। एक और हदीस में है कि सब जानवरों को जीवित कर के और उन को बदला दिलवा कर मिट्टी कर दिया जाये गा, उस समय काफ़िर भी कहे गा कि काश हम भी उन्हीं जानवरों की तरह फ़ना हो जाते (वहीदी)

قُلْ أَرَءَيْتَكُمْ إِنْ أَتَىٰكُمْ عَذَابُ ٱللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ ٱلسَّاعَةُ
أَغَيْرَ ٱللَّهِ تَدْعُونَ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٤٠﴾ بَلْ إِيَّاهُ
تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِن شَآءَ وَ
تَنسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ﴿٤١﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَآ إِلَىٰٓ أُمَمٍ
مِّن قَبْلِكَ فَأَخَذْنَٰهُم بِٱلْبَأْسَآءِ وَٱلضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ
يَتَضَرَّعُونَ ﴿٤٢﴾ فَلَوْلَآ إِذْ جَآءَهُم بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا۟
وَلَٰكِن قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ ٱلشَّيْطَٰنُ مَا كَانُوا۟
يَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾ فَلَمَّا نَسُوا۟ مَا ذُكِّرُوا۟ بِهِۦ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ
أَبْوَٰبَ كُلِّ شَىْءٍ حَتَّىٰٓ إِذَا فَرِحُوا۟ بِمَآ أُوتُوٓا۟ أَخَذْنَٰهُم
بَغْتَةً فَإِذَا هُم مُّبْلِسُونَ ﴿٤٤﴾ فَقُطِعَ دَابِرُ ٱلْقَوْمِ
ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ وَٱلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٤٥﴾ قُلْ
أَرَءَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ ٱللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَٰرَكُمْ وَخَتَمَ
عَلَىٰ قُلُوبِكُم مَّنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ ٱللَّهِ يَأْتِيكُم بِهِ ط ٱنظُرْ

(पस ऐ रसूल!) तू पूछ कि बतलाओ तो (जो तुम अल्लाह से इतने हट रहे हो) अगर अल्लाह का अ़ज़ाब तुम पर आ जाये या क़ियामत तुम पर आ जाये तो क्या (उस समय भी) तुम ग़ैरुल्लाह को पुकारो गे? अगर सच्चे हो ४१. बल्कि ख़ास उसी को पुकारो गे और जिन को तुम शरीक समझते हो भूल जाओ गे, फिर अगर वह चाहे गा तो अपनी मेहरबानी से तुम्हारी तक्लीफ़ जिस के लिये तुम उसे पुकारते थे तुम से दूर कर दे गा ४२. और तुझ से पहले हम ने कई क़ौमों की तरफ़ रसूल भेजे फिर हम ने उन को सख़्ती और तक्लीफ़ में डाला ताकि वह हमारे सामने आ़जिज़ी करें[२९] ४३. फिर जब उन पर हमारा अ़ज़ाब पहुंचा तो क्यों न गिड़गिड़ाये, लेकिन उन के दिल सख़्त हो चुके थे[३०] और शैतान ने उन के काम उन की नज़रों में मुज़य्यन (सुसज्जित) कर दिये थे[३१] ४४. फिर जब वह तमाम नसीहत की बातें भूल गये तो हम ने हर प्रकार की नेमतों के दर्वाज़े उन पर खोल दिये। यहाँ तक कि जब वह अल्लाह की दी हुयी नेमतों पर (मस्ती करने और) इतराने लगे तो हम ने उन को अचानक पकड़ लिया फिर वह (अपनी आसाइश) से निराश हो गये ४५. पस ज़ालिमों की जड़ कट गयी[३२] और सब तारीफ़ों का मालिक अल्लाह रब्बुल् आ़लमीन ही है (और कोई नहीं) ४६. तू पूछ! कि बतलाओ अगर अल्लाह तुम्हारी सुनने की कुव्वत

➲और देखने की कुव्वत छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर कर दे तो अल्लाह के अलावा कौन माबूद है जो तुम को यह ला दे गा?

....

२९. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब देखो कि अल्लाह किसी बन्दे को उस के गुनाह पर गुनाह किये जाने के बावजूद भी दुनिया की नेमतें दिये जा रहा है, तो तुम यह समझो कि यह अल्लाह की तरफ़ से ढील और मुहलत है, फिर आपने यह आयत "फ़-लम्मा नसू मा जुक्किरू बिही"................तिलावत फ़रमाई (अहमद) एक दूसरी हदीस मे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब अल्लाह किसी कौम को अज़ाब देना चाहता है तो उस के वास्ते बुराइयों के दर्वाज़े खोल देता है, और वह बुराइयों और ज़िना में मस्त हो कर अकड़ने लगते हैं तो अचानक उन को पकड़ लेता है, पस वह निराश हो जाते हैं (अहमद)

३०. जब बुराइयाँ करते-करते काफ़ी समय बीत जाने से किसी कौम के दिल सख़्त पड़ जाते हैं और बुराइयाँ उन के दिल व दिमाग़ पर कब्ज़ा जमा लेती हैं तो कोई भी उसे तौबा और सुधार पर आमादा नहीं कर सकता (तर्जुमान)

३१. शैतान का सब से बड़ा हथियार यही है कि वह गुनाहों को ख़ूबसूरत बना कर पेश करता है। वह गन्दे और बुरे पाप में भी कोई ख़ूबसूरत ज़ाहिरी पहलू उसे अवश्य दिखा देता है और इन्सान का कमज़ोर नफ़्स उस का शिकार हो जाता है।

शराब, जुआ-सट्टा, सूद, हराम कारी, से लेकर आज-कल की सनीमा-बाज़ी में भी अगर देखा जाये तो कोई न कोई ज़ाहिरी पहलू ख़ूबसूरत निकल ही आये गा (माजिदी) बड़े दुःख की बात है कि शैतान के इस हम्ले का शिकार आज कल के नाम के मुसलमान मौलवी, मुल्ला, हाफ़िज़ और सूफ़ी भी हैं जो बहुत से शिर्क और बिद्अत के कामों के लिये कोई न कोई जायज़ होने की राह निकालने की कोशिश में लगे रहते हैं जैसे, ताज़िया में इस्लाम की शान-शैकत और जलाल का पहलू निकालते हैं, मज़ारों की ज़ियारत करने, उन पर चढ़ावा चढ़ाने, उस में शरीक होने से रूहें खुश होती हैं, तीजा, फ़ातिहा करने से मुर्दों को सवाब पहुंचता है, कब्रों पर चादरें चढ़ाने से बुजुर्गों का अदब व एहतराम होता है। हालाँकि यह सब केवल शैतानी हम्लों का शिकार हैं।

३२. अक्सर देखने में आया है कि जो कौम बुराइयाँ और अन्याय व अत्याचार करती है उसे ही हर प्रकार की नेमतें मिलती हैं, इस से लोग धोके में पड़ जाते हैं और कहने लगते हैं कि इन लोगों के अन्याय व अत्याचार का परिणाम क्या निकला? लेकिन यह इस लिये नहीं है कि बुरे कर्मों का बदला नहीं मिलता है, बल्कि अस्ल बात यह है कि अल्लाह तआला ने हर वस्तु की तरह बुराइयों के भी फलने-फूलने का समय ठहराया हुआ है, इसी लिये जब तक वह अल्लाह का मुकर्रर किया हुआ समय नहीं आता बुराइयों पर दन्ड नहीं मिलता है। इसी हकीकत की तरफ़ इन आयतों में इशारा है। कुरआन ने इस हकीकत को "ढील" और "मुहलत" देने का कानून कहा है (तर्जुमान)

ज़ालिमों का हलाक और बर्बाद होना अल्लाह की रहमत है, क्योंकि उन की अवज्ञा के कारण जो अज़ाब दुनिया में आता है उस से तमाम मख़्लूक को तक्लीफ़ पहुंचती है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० के सामने एक शख़्स ने कहा कि ज़ालिम भला किसी का क्या बिगाड़ता है, वह तो अपना ही नुक़सान करता है। इस पर हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० ने फ़रमाया: ज़ालिम बिगाड़ता है। क़सम है अल्लाह की! परिंदा भी अपने घोंसले में ज़ालिम के ज़ुल्म के सबब सूख कर मर जाता है, यानी उस की नाफ़र्मानी के कारण कहत (सूखा) और महामारी बीमारियाँ दुनियां में आती हैं, इस से तमाम मख़्लूक, यहाँ तक कि परिन्दों को भी दुःख पहुंचता है (हमीदी)

ग़ौर तो करो हम किस प्रकार की दलीलें बयान करते हैं फिर भी यह मुंह फेरे चले जाते हैं➲

كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ۝ قُلْ

اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً
هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٤٧ وَمَا نُرْسِلُ
الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ
وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝٤٨
وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا
يَفْسُقُوْنَ ۝٤٩ قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ
وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ
اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى
وَالْبَصِيْرُ ۚ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ۝٥٠ وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ
يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ
دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝٥١ وَلَا
تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ

४७. तू पूछ! बतलाओ कि अगर अल्लाह का अज़ाब बेख़बरी {अचानक} या बाख़बरी में {बता कर} तुम पर आ जाये तो क्या नाफ़र्मानों के अ़लावा कोई और भी हलाक हो गा? (फिर नाफ़र्मानी क्यों नहीं छोड़ते हो?) ४८. हम तो पैग़म्बरों को हमेशा से बशारत देने वाले और डराने वाले ही भेजा करते हैं फिर जो लोग ईमान लाते और (उन का कहा मान कर) दुरुस्ती इख़्तियार करते तों उन पर न तो कुछ ख़ौफ़ होता और न वह ग़मगीन होते ४९. और जो हमारे आदेशों को झुठलाते हैं उन की बदकारी की शामत में उन्हीं को अ़ज़ाब पहुँचता ५०. तू कह! मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब की बातें जानता हूँ और न ही मैं तुम से कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ[३३], अल्लाह के इल्हाम के सिवा जो मेरी तरफ़ आता है मैं किसी चीज़ का ताबे नहीं हूँ। तू कह! क्या अन्धा और देखने वाला एक से हैं? तुम (इस में) फ़िक्र (क्यों) नहीं करते हो? ५१. और जिन्हें अल्लाह के पास ऐसे हाल में इकट्ठा होने का ख़ौफ़ हो जिस में न तो कोई उन का दोस्त हो गा और न कोई सिफ़ारिश करने वाला (जो उस के ज़रीअ़ा डरावे) ताकि वह परहेज़गार बन जायें ५२. और जो अपने रब को ख़ुश करने के लिये सुब्ह व शाम उस की याद में लगे रहते हैं

....

३३. मक्का के काफ़िर और मुश्रिक नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से ऐसे चमत्कार का मुतालबा करते जो उन्हें ईमान लाने पर मजबूर कर दे, यहाँ तक कि इस के बाद ग़ैब पर ईमान लाने का अर्थ ही बाक़ी न रह जाये तो अल्लाह तआ़ला ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को आदेश दिया कि आप उन से स्पष्ट शब्दों में सच्ची बात कह दें कि मेरे पास अल्लाह का ख़ज़ाना नहीं है कि तुम लोग जब चाहो मैं तुरन्त निकाल कर दिखा दूँ और न ही मैं ग़ैब की बातें जानता हूँ, यानी जो चीज़ मुझ से पोशीदा है और वह्यि ने ज़ाहिर नहीं की है।

इस बात पर सभी का इत्तिफ़ाक़ है कि ग़ैब को जानने वाला अल्लाह के अ़लावा और कोई नहीं। और जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमा दिया कि मैं ग़ैब को नहीं जानता तो फिर और कौन है जो ग़ैब की बातें बतला सके। बहुत से नाम के जाहिल मुसलमान जब कभी किसी फ़क़ीर, जोगी वग़ैरह से कोई अ़जूबे और अचरज वाली बात देख लेते हैं तो उसे ग़ैब दाँ (ग़ैब की बातें जान्ने वाला) समझ लेते हैं, इस प्रकार वह अपने ईमान को खो देते हैं और शिर्क करने लगते हैं।

इस प्रकार के फ़क़ीर, जोगी शैतानों के चेले होते हैं, शैतान चलते-चलते फ़रिश्तों की आपस की बात-चीत को सुन लेते हैं फिर उन जोगियों को बता देते हैं और जाहिल लोग उन की बातें सुन कर उन्हें ग़ैब की बातें जानने वाला समझने लगते हैं (मवाहिब)

يُرِيدُونَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ
شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ
فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ
بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ
بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ۝ وَاِذَا جَآءَكَ
الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ
رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ
سُوْٓءًۢا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ فَاَنَّهٗ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ
سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ
تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّآ اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ ۙ
قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ۝ قُلْ
اِنِّيْ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ ؕ مَا عِنْدِيْ

उन को अपने पास से मत निकालियो। उन की तरफ़ से जवाब देनां तुझ पर नहीं और तेरी तरफ़ से जवाब देना उन पर नहीं, इस लिये तू अगर उन को निकालेगा तो (स्वयं अल्लाह के निकट) तू ज़ालिमों में दाख़िल हो जाये गा[३४] ५३. इसी प्रकार पहले भी हम ने बाज़ को बाज़ से आज़माया था कि (तकब्बुर करने वालों के मुंह से निकले कि) क्या यही (ज़लील लोग) हैं जिन पर हम में से अलग अल्लाह ने मेहरबानी की है[३५]? क्या अल्लाह को शुक्र गुज़ार बन्दे मालूम नहीं? ५४. और जब हमारे हुक्मों पर ईमान रखने वाले[३६] तेरे पास आयें तो तू (खुद आरंभ में) उन को अस्सलामु अ़लैकुम कह! कि तुम्हारे पर्वरदिगार ने रहम करना (खुद से) अपने ऊपर लाज़िम कर रखा है कि जो कोई तुम में से बुरा काम ग़लती से कर गुज़रे फिर उस के पीछे तौबा करे और नेक बन जाये तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है[३७] ५५. इसी प्रकार हम खोल-खोल कर अहकाम बतलाया करते हैं ताकि लोग समझें और अपराधियों की राह स्पष्ट हो जाये ५६. तू कह दे कि अल्लाह के अ़लावा जिन को तुम पुकारते हो उन की इ़बादत से मुझे (अल्लाह की तरफ़ से) मनाही है। तू कह दे कि मैं तुम्हारी ख़्वाहिशों पर न चलूँगा वर्ना स्वंय गुमराह ठहरूँ गा और हिदायत पाने वालों में से न रहूँ गा[३८] ५७. तू कह दे! मैं अपने पर्वरदिगार की तरफ़ से खुली दलील पर हूँ[३९] और तुम उस से इन्कारी हो चुके हो। तुम जिस (अ़ज़ाब) को जल्दी चाहते हो वह मेरे पास नहीं

....

३४. शाने नुज़ूलः- दुनिया दार मुतकब्बिरों (घमंडियों) की तो हमेशा से यही आ़दत है कि वह ग़रीबों के साथ एक स्थान पर बैठना पसन्द नहीं करते। ऐसे ही कुछ लोगों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा कि हम आप के पास आयें तो हमारी मौजूदगी में उन ग़रीब लोगों को न बैठने दिया करें। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम भी यह चाहते थे कि वह लोग अगर हमारे पास आया करें गे तो उन की हालत में सुधार आ जाये गा, इस लिये आप के दिल में यह ख़याल पैदा हुआ कि कुछ दिनों के लिये उन की मौजूदगी में ग़रीबों को आने से रोक दिया जाये। मगर चूँकि अल्लाह के बन्दों की क़द्र अल्लाह ख़ूब जानता है, अमीरी और ग़रीबी की अल्लाह के हाँ कोई गुंजाइश नहीं है, जिस के दिल में अल्लाह और रसूल पर ईमान हो वही इ़ज़्ज़त वाला है, इस लिये अल्लाह की ग़ैरत को जोश आया और यह आयत नाज़िल फ़रमाई (मआलिम)

इस विषय के तअ़ल्लुक़ से और भी बहुत सी आयतें कुरआन शरीफ़ में मौजूद हैं। मैं कहता हूँ कि इस प्रकार के दिमाग़ वाले लोग हर ज़माने में होते हैं, विशेष रूप से आज-कल के ज़माना में तो ऐसे मग़रूर और मुतकब्बिर

➲लोगों की कमी नहीं है। (सनाई)

३५. यह नादान अपनी अक्ल के ढकोसलों से काम लेते हैं। क्या यह इतनी मोटी बात भी नहीं जानते कि दीनदारी और आख़िरत की विरासत तो तक़्वा और इख़्लास से हासिल होती है (सनाई) इस्लाम, आरंभ में ग़रीबों को नसीब हुआ और आख़िरी ज़माना में फिर सिर्फ़ ग़रीबों में इस्लाम रह जाये गा, इस लिये मुस्लिम ग़रीबों के लिये मुबारक बादी है जो बिगाड़ के समय में भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर क़ाइम रहते हैं (हदीस शरीफ़)

३६. जैसे हज़रत बिलाल, सुहैब, अम्मार, मिक्दाद और सअ़द रज़ियल्लाहु अन्हुम। इस आयत के नाज़िल होने के बाद जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन लोगों को देखते तो स्वयं पहले उन को सलाम करते। (वहीदी)

३७. कुछ उलमा इस आयत की तफ़्सीर में कहते हैं कि "जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की नाफ़र्मानी करता है वह जाहिल है"। हज़रत इकराम ने कहा कि दुनिया सब की सब (पूर्ण रूप से) जिहालत है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह ने मख़्लूक़ को पैदा किया तो उस के साथ ही एक किताब भी लिखी, उस किताब में लिखा है "मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब रहे गी" (बुख़ारी)

३८. इस आयत का अर्थ यह है कि तुम लोग इस की बिल्कुल ही आशा न रखो कि मैं तुम्हारे झूठे माबूदों की इ़बादत करूँ गा (मवाहिब)

३९. यहाँ पर बयान फ़रमाया कि मैं अपने रब की तरफ़ से रोशनी और दलील पर हूँ। इस प्रकार कुरआन में और दूसरे स्थानों पर भी इस बात पर बार-बार ताकीद की गयी है कि वह्यि और नबुव्वत की राह ही दलील व यक़ीन और इ़ल्म व बसीरत की राह है और जो इन्कारी हैं उन के पास शक व गुमान के अ़लावा और कुछ नहीं है। इसी लिये पिछली आयत में गुज़र चुका है कि अंधे और देखने वाले का हुक्म एक जैसा नहीं हो सकता (सनाई)

مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ يَقُصُّ الْحَقَّ
وَهُوَ خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ ۝ قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِيْ مَا
تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِيَ الْاَمْرُ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ
وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا
يَعْلَمُهَاۤ اِلَّا هُوَ ؕ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ
وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِيْ
ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ
كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ وَ
يَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ
لِيُقْضٰۤى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ
يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ
عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ

अल्लाह के अ़लावा किसी का इख़्तियार नहीं। वह ही हक़ बयान करता है और वह सब से अच्छा फ़ैसला करने वाला है ५८. तू कह! तुम्हारा जल्दी चाहा हुआ अ़ज़ाब अगर मेरे बस में होता तो मेरे और तुम्हारे बीच कब का फ़ैसला हो गया होता। और अल्लाह ही ज़ालिमों के हाल से भली भाँति अवगत है[४०] ५९. उसी के पास ग़ैब की कुंजियाँ हैं उन को वही जानता है। और जो कुछ जंगलों और दरियाओं में है वह सब को जानता है[४१] और जो पत्ता दरख़्त से गिरता है वह उस को भी जानता है और कोई (छोटा सा) सूखा दाना हो या तर, ज़मीन के नीचे अंधेरों में भी हो वह भी उस के रोशन अ़िल्म में है (यानी अ़िल्मे इलाही की खुली किताब में दर्ज है[४२]) ६०. वही है जो तुम को रात में (मौत की तरह) सुला देता है[४३] और➲

أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ ﴿٦١﴾

तुम्हारे दिन के कामों को जानता है फिर (नींद के बाद सुब्ह-सवेरे) तुम को उठाता है ताकि तुम्हारी मुक़र्ररा (सुनिश्चित) मुद्दत पूरी हो, फिर तुम को उसी की तरफ़ जाना है, फिर वह तुम को तुम्हारे कामों से (जो तुम कर रहे हो) ख़बर दे गा ६१. (सुनो) वह अपने बन्दों पर ज़ाबित {ग़ालिब} है वह तुम पर निगेहबान भेजता है[४४] यहाँ तक कि जब तुम में से किसी की मौत का समय आता है तो हमारे भेजे हुये फ़रिश्ते उस को फ़ौत करते हैं और वह कमी नहीं करते

....

४०. इस आयत में जल्द से जल्द अ़ज़ाब मांगा जा रहा है। यानी हक़ के इन्कारी जो अल्लाह और उस के अहकाम से बेख़बर हैं वह कहते हैं कि ऐ नबी! तुम रोज़ जिस फ़ैसले का ज़िक्र करते रहते हो अगर वह सच-मुच होने वाला है तो क्यों नहीं हो चुकता? इस के उत्तर में कहा कि अगर मेरे बस और इख़्तियार में होता तो हाथों-हाथ फ़ैसला कर देता, लेकिन वह अल्लाह के इख़्तियार में है, उस ने जो क़ानून मुक़र्रर कर दिया है उसी के अनुसार फ़ैसला हो गा। चुनान्चे वह अपने समय पर ज़ाहिर हुआ और दुनिया ने अपनी आंखों से देख लिया कि कामियाबी किस को मिली (सनाई)

४१. यानी ग़ैब की कुंजियाँ या ग़ैब के ख़ज़ाने उसी के पास हैं, वही उन को जानता है, उस के अ़लावा मख़्लूक़ में से किसी को भी उस के बारे में जानकारी नहीं है। ग़ैब का जानना केवल अल्लाह की विशेष्ता है। इस आयत की रौशनी में सितारों की चाल देख कर, हाथ की रेखाये देख कर अथवा नाम के शब्दों के अदद जोड़ कर भविष्य बताने वाले ज्योतिषी और इस प्रकार के बाक़ी दूसरे लोग जो ग़ैब के जानने का दावा करते हैं वह सब झूठे हैं।

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बहुत कुछ कमालात अ़ता फ़रमाये हैं; मगर ग़ैब का अ़िल्म उन को भी नहीं दिया, फिर कोई दूसरा ग़ैब का जानने वाला कैसे हो सकता है। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "पांच चीज़ें ऐसी हैं कि जिन का अ़िल्म अल्लाह के अ़लावा किसी को नहीं (१) क़ियामत आने का समय (२) वर्षा कब हो गी (३) पेट में नर है या नारी (४) मनुष्य कल क्या काम करे गा (५) मनुष्य किस ज़मीन पर मरे गा। इन पांच चीज़ों का अ़िल्म केवल अल्लाह ही को है (सूरः लुक़मान आयत ३४) इन ही को इस आयत में "ग़ैब की कुंजियाँ" कहा गया है।

४२. हर इमानदार को इस बात पर विश्वास है कि अल्लाह तआ़ला को एक-एक कण की जानकारी है। लेकिन कुछ जाहिल लोग जो अपने आप को फ़ल्सफ़ी कहते हैं और उन का अक़ीदा यूनान शहर के गुमराहों की तरह है वह कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला को जुज़ (छोटी-छोटी बातें या काम) का अ़िल्म नहीं है इस लिये कि वह जुज़ नहीं है। उलमा ने ऐसा अ़क़ीदा रखने वालों को काफ़िर कहा है और यहही सही मज़हब है (मवाहिब)

४३. उलमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि यहाँ पर "य-त-वफ़्फ़ाकुम" (तुम्हे वफ़ात देता है) से मुराद "नींद" है जो कि मौत की बहन है, यानी मौत ही की तरह है और छोटी मौत है।

४४. कुछ उलमा ने "ह-फ़-ज़ह" से अ़मलों की सुरक्षा करने वाले फ़रिश्ते मुराद लिये हैं जैसा कि एक दूसरी आयत में फ़रिश्ते मुराद हैं। इब्ने कसीर ने कहा कि वह फ़रिश्ते मुराद हैं जो हर जानदार को मौत देते हैं और उन की जान निकालते हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि मलकुल् मौत फ़रिश्ता के बहुत से सहायक भी हैं जो जान निकालने में उस की मदद करते हैं। और दूसरे सहयोगी फ़रिश्ते जान को खींच कर गले तक लाते हैं फिर मलकुल् मौत (जान निकालने वाला फ़रिश्ता) उस को पकड़ लेते हैं। यहाँ पर नेकों को जन्नत की बशारत और बुरे लोगों को दोज़ख़ की ख़बर दी गयी है

ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۣ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ۝ قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ لَئِنْ اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ۝ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ۝ وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ۝ لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ؕ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ

६२. फिर अपने हक़ीक़ी मौला की तरफ़ फेरे जाते हैं। सुन रखो! उसी का हुक्म है[४५] वही सब हिसाब लेने वालों से जल्द हिसाब लेने वाला है ६३. तू पूछ कि बतलाओ तो सही, जन्गलों और दरियाओं के अंधेरों से कौन तुम को छुटकारा देता है किस को गिड़गिड़ा कर चुपके-चुपके पुकारते हो कि अगर वह हम को इस से नजात दे तो हम अवश्य ही उस के शुक्र गुज़ार बने रहें ६४. तू कह! अल्लाह ही तुम को उस मुसीबत और हर एक घबराहट से नजात देता है (मगर) फिर भी उस का साझी बताते हो ६५. तू कह दे! वह इस बात पर कुदरत रखने वाला है कि तुम पर कोई अ़ज़ाब ऊपर से (जैसे सूखा काल, या सैलाब) या नीचे से (जैसे महामारी वग़ैरह) भेज दे[४६] या तुम को मुख़्तलिफ़ गरोह बना कर एक को दूसरे से (लड़ा कर आपस में बर्बादी का) मज़ा चखा दे[४७]। तू देख! हम किस प्रकार के दलाइल उन को बतलाते हैं ताकि यह लोग समझें ६६. और तेरी क़ौम ने इस को झुठलाया है हालाँकि यह बिल्कुल हक़ है। तू कह! मैं तुम पर निग्राँ नहीं हूँ ६७. (अल्लाह के नज़दीक) हर एक बात का समय मुक़र्रर है और तुम स्वयं ही जान लोगे ६८. और जब हमारे हुक्मों से मज़ाक़ करने वालों को देखो तो जब तक वह कोई दूसरी बात शुरू न करें उन से हटे रहो[४८] (और उन के साथ न बठो) और अगर शैतान तुझ से यह हुक्म फ़रामोश करा दे {भुलवा दे}

....

४५. आयत के इस टुकड़े को ख़वारिजी फ़िर्क़ा के लोगों ने बार-बार पेश किया है और इस से अपना मनगढ़त अ़क़ीदा साबित करना चाहा है। इन लोगों ने हज़रत अ़ली रज़ि० के ख़िलाफ़ बग़ावत इसी आयत को पेश कर के फैलाई थी और आज भी एक गरोह हर माद्दी हुकूमत को इसी आयत की रोशनी में "ग़ैर इस्लामी" हुकूमत कह कर उस की हर प्रकार की मदद को भी नाजायज़ बल्कि हराम कह रहा है। हालाँकि इस आयत के अगले और पिछले हिस्से पर ग़ौर करने से मालूम हो जाता है कि आयत का इस बहस से दूर का भी तअ़ल्लुक़ नहीं है। आयत ख़ुद ही बतला रही है कि यहाँ पर हुकूमत तक्वीनी और निशानियों और चमत्कारों का ज़िक्र है (माजिदी) मौलाना अब्दुल माजिद साहब ने यहाँ जिस गरोह की तरफ़ इशारा किया है उस से मुराद "जमाअ़त इस्लामी" है जिस का अपना एक ख़याल है (राज़)

४६. हज़रत मआ़ज़ बिन जबल रज़ि० से रिवायत है कि मैं एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के घर पर पहुंचा तो मालूम हुआ कि आप कहीं तशरीफ़ ले गये हैं। वहाँ से वापस हो कर दूसरे लोगों से मालूम करते हुये आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास पहुंचा तो आप नमाज़ पढ़ रहे थे, मैं भी आप के साथ नमाज़ में शामिल

हो गया। आप ने बड़ी लम्बी नमाज़ पढ़ी, फिर फ़रमाया कि मैं ने रग़बत और ख़ौफ़ की नमाज़ पढ़ी है और उस वक़्त अल्लाह से तीन दुआयें की हैं (१) मेरी उम्मत को ज़मीन में धंसाने से सुरक्षित रख (२) उन पर ऐसा हाकिम न बना देना जो दीन के मामले में उन का दुश्मन हो (३) उन के दर्मियान आपसी लड़ाई-झगड़े न हों। अल्लाह ने ऊपर की दो दुआओं को तो कुबूल कर लिया लेकिन अन्तिम दुआ को कुबूल नहीं फ़रमाया।

दुश्मन के ग़ालिब आने का अर्थ यह है कि इस प्रकार ग़ालिब न हो कि पूरी दुनिया से उन सब को ख़त्म कर दे, जैसा कि दूसरी रिवायत में इस का बयान है (अहमद)

४७. इस से मालूम हुआ कि कुरआन के नज़दीक यह भी एक अ़ज़ाब है कि कोई उम्मत एक ख़याल पर जमी रहने की वजह से मुख़्तलिफ़ गरोहों में बट जाये और हर गरोह दूसरे गरोह को अपनी सख़्ती का मज़ा चखाने लगे। बड़े दुःख की बात है कि आज मुसलमान भी इसी अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हैं (तल्ख़ीस)

४८. सय्यद अ़ल्लामा ने कहा कि इस आयत में अल्लाह ने अपने संदेष्टा को ऐसी सभा में बैठने से मना फ़रमाया है जहाँ उस की आयतों की तौहीन हो रही हो। इस आयत में उस शख़्स के लिए हिदायत है जो बुरे लोगों की सुहबत में बैठता है जहाँ कुरआन व हदीस को खेल-तमाशा और इमामों के क़ौल को सनद माना जाता है। कम दर्जा यह है कि आदमी ऐसी सभा में न बैठे और बिद्अ़ती लोगों की सुहबत में बैठना तो बहुत ही बुरा है, विशेष कर उन लोगों के लिये जिन का ईमान व अ़क़ीदा मज़बूत नहीं है। ऐसे लोगों को यह लोग बड़ी जल्दी बहका देते हैं, फिर इन को सीधी राह पर लाना बड़ा कठिन हो जाता है (वहीदी)

जब मुसलमानों को उन के साथ उठने-बैठने से मना कर दिया गया तो इन को चिन्ता हुयी कि अब हम तब्लीग़ किस को करें? इस लिये यह फ़रमाया गया "परहेज़गारों पर उन की कुछ जवाबदेही नहीं है" (हक़्क़ानी)

الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝ وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۗ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝ قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِي الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۖ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى

तो याद आने के बाद ज़ालिमों के साथ मत बैठ[४९] ६९. जो परहेज़गार हैं उन पर (उन मज़ाक़ उड़ाने वालों की) कुछ जवाबदेही {उत्तर दायित्व} नहीं है हाँ, (एक बात उन के ज़िम्मा है) कि उन को नसीहत कर दें शायद वह बच जायें ७०. और जिन लोगों ने अपना मज़हब केवल हंसी और मज़ाक़ समझ रखा है और दुनिया की ज़िन्दगी से धोका खाये हुये हैं उन को छोड़ दे[५०] और इस (कुरआन) के साथ (लोगों को) नसीहत कर ऐसा नहो कि कोई नफ़्स बुरे अ़मलों की सज़ा में हलाक हो और उस का अल्लाह के अ़लावा न तो कोई हिमायती हो गा और न कोई सिफ़ारशी, और तमाम क़िस्म के मुआविज़े अगर देना चाहे तो भी उस से न लिये जायें गे। यह लोग अपने बुरे करतूत के कारण तबाह हों गे, उन को (सख़्त खौलता हुआ) गर्म पानी (पीने को) मिले गा और उन के कुफ़्र की

الْهُدٰى ائْتِنَا ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ

➲शामत से दुःख की मार हो गी[५१] ७१. तू कह! क्या हम अल्लाह के सिवा ऐसी वस्तुओं को पुकारें[५२] जो न हम को लाभ दे सकें और न हानि और जब अल्लाह ने हम को हिदायत की तो अब हम उल्टे पाँव गुमराही की ओर लौटें? जैसे किसी को जन्गल में भूत हैरान कर दें और उस के दोस्त उस को बुलायें कि सीधी राह पर आ (मगर वह शैतानों के क़ाबू में ऐसा फंसा हो कि उस को ख़बर तक न हो कि क्या हो रहा है[५३]) तू कह कि अल्लाह की हिदायत ही अस्ल हिदायत है

....

४९. जिन लोगों का इरादा हक़ तलाश करना न हो, बल्कि अपनी बात को ऊँची साबित करने और हक़ को बातिल साबित करने के लिये कोशिश कर रहे हों, तो ऐसे लोगों की सभा में नेक लोगों को नहीं बैठना चाहिये। इस लिये कि लड़ाई-झगड़ा, बहस-मुबाहसा हिदायत की राह नहीं है और इस प्रकार का अमल करने वाले कभी हिदायत नहीं पा सकते (तर्जुमान)

५०. 'उन को छोड़ दे' यानी उन से तअ़ल्लुक़ न रखो, मगर नसीहत कर दो ताकि हुज्जत तमाम हो जाये और क़ियामत के दिन यह न कह सके कि मुझे वह बात किसी ने नहीं बताई थी (मुवज़्ज़िहुल् क़ुरआन)

५१. उन को दुःख की मार इस लिये हो गी कि इन लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर ऐसे लोगों से अपनी हाजतें और ज़रूतें मांगीं, जो इन को कुछ भी हानि-लाभ नहीं पहुंचा सकते थे। इन लोगों ने केवल अपनी जिहालत की वजह से उन को पुकारा, यही उन की बदकारी थी और यही उन के काले कर्तूत। (सनाई)

५२. शाने-नुज़ूलः- मुश्रिकों ने मुसलमानों से कहा कि तुम हमारे दीन की पैरवी करो और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दीन को छोड़ दो, इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई (सदी)

५३. यहाँ पर उन बुतों और बुतों की पूजा करने वालों की मिसाल दी गयी है जो लोगों को बुतों की पूजा करने की ओर बुलाते हैं, और उन लोगों की भी मिसाल है जो अल्लाह की किताब की तरफ़ बुलाते हैं। उदाहरण यह दिया गया है कि एक आदमी रास्ता में हैरान परेशान है। उस को जंगल में आदमी की शक्ल में किसी शैतान ने पुकार कर कहा कि इस राह पर आ जा, और उस के साथियों ने पुकार कर कहा कि इधर मेरी ओर आ जा। अब अगर वह आदमी पहले पुकारने वाले की राह पर चलता है तो बर्बाद हो जाता है और अगर अपने साथियों की ओर चलता है तो राह पर जाता है।

इस उदाहरण से यह नतीजा निकला कि जिस ने बुतों की ड़िबादत करने की राह बताने वाले का कहा माना और उन की राह पर चलते हुये बुतों की पूजा की, और इसी हालत में मर गया तो उस को शर्मिन्दगी उठानी पड़ी। इब्ने कसीर ने कहा कि जंगल में ग़ौल बयाबानी (बवन्डर) यह शैतान हैं जो आदमी को उस का नाम ले कर पुकारते हैं और वह उन के धोके के में आ कर हलाक हो जाता है (इब्ने-कसीर इब्ने अब्बास रज़ि० से)

وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۱﴾ وَاَنْ اَقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ؕ وَهُوَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۷۲﴾
وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ
وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ؕ قَوْلُهُ الْحَقُّ ؕ وَلَهُ

और हम को यह हुक्म पहुंचा है कि हम सारे जहान के पर्वरदिगार के ताबे हों ७२. और यह कि नमाज़ पढ़ते रहो और उसी से डरते रहो। और वह अल्लाह वही है जिस की तरफ़ तुम को लौट कर जाना है ७३. और वही ज़ात (पाक) है जिस ने आसमानों और ज़मीनों को सच्चे➲

الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۞ وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهِيْمُ لِأَبِيْهِ آزَرَ أَتَتَّخِذُ أَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ إِنِّيْ أَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۞ وَكَذٰلِكَ نُرِيْ إِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ۞ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ۞ فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَأَكُوْنَنَّ

क़ानून से पैदा किया है। और जिस दम किसी वस्तु को "हो" कहता है तो वह तुरन्त हो जाती है ७४. उस का हुक्म (लागू किया हुआ) बिल्कुल ठीक है। और (इस दुनिया के अ़लावा) जिस दिन क़ियामत बर्पा हो गी उसी का इख़्तियार हो गा, वही गायब और हाज़िर को बराबर जानता है। और वही हिक्मत वाला और ख़बर रखने वाला है[५४] ७५. और जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से (जो मुश्रिक था) कहा था क्या तू (अपने) बुतों को माबूद बनाता है, बेशक मैं तुझ को और तेरी क़ौम को खुली गुमराही में देखता हूँ[५५] ७६. और इसी प्रकार (पहले भी) हम इब्राहीम को (तमाम) आसमानों और ज़मीनों की हुकूमत दिखाते थे कि वह (उन में ग़ौर करता-करता पूरा) यक़ीन रखने वाला हो जाये ७७. फिर जब रात का अंधेरा उस पर हुआ तो एक सितारे को देख कर बोला, यह मेरा रब है, लेकिन जब वह डूब गया तो कहने लगा कि मैं डूब जाने वालों को पसन्द नहीं करता ७८. फिर जगमगाता चाँद देख कर कहने लगा कि यह मेरा रब है, फिर जब वह डूब गया तो कहने लगा कि अगर मेरा पर्वरदिगार मुझे हिदायत न करे गा

....

५४. अहले-सुन्नत का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि क़ियामत के दिन सूर फूँका जाये गा। सूर वाली हदीस "तबरानी" ने रिवायत की है उस में है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा कि वह सूर किस प्रकार का है? आप ने फ़रमाया: "क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ा में मेरी जान है उस में एक चक्र की बड़ाई इतनी है कि आसमान और ज़मीन की चौड़ाई उस में समा जाये। उस में हज़रत इसराफ़ील अ़लै० मुंह लगाये हुये अल्लाह के आदेश का इन्तिज़ार कर रहे हैं। तीन मर्तबा वह सूर में फूंक मारेंगे पहली फूंक का नाम 'फ़-ज़अ़' है और दूसरी का 'स-अ़क़' और तीसरी फूंक अल्लाह के सामने खड़ा होने की है। अल्लाह तआ़ला पहली बार इस्राफ़ील को हुक्म देगा कि सूर में फूंक मारो जिस की आवाज़ सुन कर आसमान और ज़मीन की तमाम मख़्लूक़ घबरा जाये गी (हाँ, जिस को अल्लाह घबराहट से बचा ले) दूसरी फूंक में सभी लोग मौत से बेहोश हो जायें गे (मगर जिस को अल्लाह बचा ले) और तीसरी मर्तबा की फूंक से रूहें शहद की मक्खियों की तरह निकल कर जिस्मों में दाख़िल हो जायें गी, फिर हिसाब-किताब होगा......................पूरी हदीस (मवाहिब)

५५. इमाम बुख़ारी रह० ने "तारीख़े कबीर" में लिखा है कि इब्राहीम अ़लै० आज़र के बेटे हैं। आज़र का नाम तौरात में "तारिह" बयान हुआ है। इस का मतलब यह हुआ कि उस के दो नाम हैं। सही हदीस में रिवायत है कि हज़रत इब्राहीम अपने बाप से मिलें गे तो वह कहे गा कि मैं आज तुम्हारी अवज्ञा नहीं करूँ गा, मेरे लिये शफ़ाअ़त कर दो। हज़रत इब्राहीम कहें गे कि "ऐ पर्वर्दिगार! आज मेरे लिये ज़िल्लत है कि बाप मुझ से दूर रहे। और तू ने वादा फ़रमाया था कि क़ियामत के दिन तुझे रुस्वा न करूँ गा। अल्लाह, हज़रत इब्राहीम से कहे गा कि ज़रा नीचे देखो, वह देखें गे तो एक नापाक जानवर दिखाई पड़े गा और उस के चारों पाँव पकड़ कर आग में फेंक दिया जाये गा, वह जानवर इब्राहीम का बाप आज़र हो गा (हदीस का खुलासा) यह कहने से इब्राहीम का यही मतलब था कि लोग हमारी तौहीद की तरफ़ झुकें और शिर्क और नफ़्स परस्ती को छोड़ दें (सनाई)

مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّيْنَ ۝ فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً
قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ
يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝ اِنِّيْ وَجَّهْتُ
وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ حَنِيْفًا
وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَحَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ۭ قَالَ
اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ فِي اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ۭ وَلَآ اَخَافُ مَا
تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَاۗءَ رَبِّيْ شَيْـــًٔا ۭ وَسِعَ رَبِّيْ
كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۭ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝ وَكَيْفَ
اَخَافُ مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ
بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ۭ فَاَيُّ
الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰۗىِٕكَ
لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝ وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ

तो मैं गुमराहों में से हो जाऊँ गा[५६] ७९. फिर जब सूरज को उस ने चमकता हुआ देखा तो कहने लगा यह मेरा रब है, यह तो बहुत बड़ा है, फिर जब वह भी डूब गया तो बोला, ऐ मेरे भाइयो! मैं तुम्हारे शिर्क से बेज़ार हूँ[५७] ८०. मैं ने एक तरफ़ हो कर अपना मुंह उस ज़ात की तरफ़ फेरा है जिस ने असमानों और ज़मीनों को पैदा किया है और मैं मुशिरकों में से नहीं हूँ ८१. (यह सुन कर) उस की क़ौम (के लोगों) ने उस से (जाहिलाना) झगड़ा (शुरू) कर दिया। उस ने कहा कि भाइयो! तुम मुझ से अल्लाह के बारे में झगड़ते हो, हालाँकि उस ने मुझे हिदायत दी है। और मैं तुम्हारे बनाये हुये साझियों से नहीं डरता लेकिन जो मेरा पर्वर्दिगार चाहे (वह हो कर रहे गा) मेरे पर्वर्दिगार को हर चीज़ का ज़िल्म है। क्या तुम नसीहत नहीं पाते?[५८] ८२. भला मैं तुम्हारे (मनघड़त) साझियों से क्यों कर डरूँ, तुम तो बिला दलील के अल्लाह का साझी बनाने से नहीं डरते। पस (तुम स्वयं ही ग़ौर करो कि हम) दोनों फ़रीकों में से कौन ज़्यादा अम्न का हक़दार है अगर तुम को (भी कुछ) ज़िल्म है (तो समझ लो कि) ८३. जो लोग अल्लाह की तौहीद पर ईमान लाये और अपने ईमान को बुराई और जुल्म (यानी शिर्क) से बचाते रहे उन ही को अम्न हो गा और (नतीजा में) वे ही सीधी राह पर हैं[५९] ८४. और यह दलील हम ने इब्राहीम को

....

५६. इन्सान की सब से बड़ी बेवकूफ़ी और बदनसीबी (दुर्भाग्य) यह है कि उस ने अपने पैदा करने वालों को छोड़ कर चाँद, सूरज को माबूद ठहराया, और कभी पत्थर की मूर्तियों के सामने सर झुकाया। तमाम रसूलों ने इसी गुमराही के ख़िलाफ़ जिहाद किया, तमाम वली और बुजुर्ग लोग भी इस से मना करते रहे, मगर फिर भी आज मानव-जाति के अधिक तर लोग इसी बीमारी का शिकार हैं। इस्लाम तो इस बारे में बड़ी ही वज़ाहत (विस्तार) के साथ शिक्षा देता है मगर कुछ मुसलमान भी शिर्क में लिप्त हो गये हैं (राज़)

५७. इब्ने जरीर ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० के वास्ते से रिवायत नक़ल की है कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम अ़लै० को हिदायत की तो उन्हों ने मख़्लूक़ पर ग़ौर कर के उन के पैदा करने वाले को जाना-पहचाना और शिर्क को छोड़ कर तौहीद को इख़्तियार किया। इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ रह० का कहना है कि हज़रत इब्राहीम का यह सब कुछ करना उस समय की बात है जब उस खोह में से निकले थे जिस में उन की माँ नमरूद के क़त्ल करने के ख़ौफ़ से उन को पैदा होने के बाद रख आयी थीं। और यह सोच लिया था कि मेरी आँखों के सामने ज़ब्ह होने

➲से तो यह बेहतर है कि दरिन्दे और जानवर उसे खा जायें। मगर अल्लाह ने उन की सुरक्षा और पर्वरिश की, यहाँ तक कि होशियार हो कर उस खोह से अल्लाह की मख़्लूक़ पर नज़र करते हुये बाहर आये। जमहूर उलमा का कहना है कि यह घटना बालिग़ होने के बाद घटी, जब आप क़ौम के साथ मुनाज़िरा करते थे, ताकि उन पर खुल जाये कि बुत-परस्ती और सितारा-परस्ती का दीन बातिल है।

५८. हज़रत इब्राहीम अ़लै० ऐसे मुल्क और समय काल में पैदा हुये जब बाबुल और नैनवा के लोग चाँद-सूरज की पूजा कर रहे थे और शहर "उर" में चाँद और सूरज के मंदिर भी बने हुये थे, जहाँ सुबह-शाम उन की पूजा करने वाले आते-जाते थे। लेकिन हज़रत इब्राहीम का दिल अल्लाह परस्ती के लिये खोल दिया गया। अल्लाह ने उन की कुछ इस तरह हिदायत और राह नुमाई की कि उन को कोई भी वस्तु हिदायत से भटका न सकी। आख़िर किस प्रकार अल्लाह ने उन को हिदायत दी और उन की राह नुमाई फ़रमाई? इसी तरीक़े को क़ुरआन में यहाँ अपने अन्दाज़ में पेश किया गया है (तर्जुमान)

५९. 'ज़ुल्म' का अर्थ "शिर्क" है। यह तर्जुमा बहुत से सहाबा और ताबेअ़ीन से रिवायत है क्यों कि अल्लाह तआ़ला ने फ़र्मा दिया है "शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है"। इमाम ज़मख़्शरी ने अपनी तफ़्सीर "कश्शाफ़" में इस का इन्कार किया है, लेकिन उन का ख़याल ग़लत है। उन को हदीस का अ़िल्म ही नहीं है। वह तो मोतज़िली हैं और इसी बीमारी के शिकार हैं, इस लिये उन के इन्कार से कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ता है। (मवाहिब)

اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ
اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ
كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ
وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ؕ وَكَذٰلِكَ
نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ ؕ
كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَ
لُوْطًا ؕ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ وَ
ذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ
يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَ
النُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا
لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ

उस की क़ौम के मुक़ाबिले में समझाई थी (फिर भला कौन मुक़ाबला कर सकता) हम जिस को चाहें बुलन्द दर्जा अ़ता करें। तेरा पर्वरदिगार बड़ी हिक्मत वाला बड़ा ही अ़िल्म वाला है ८५. और हम ने उस को एक (निक बेटा) इस्हाक़ और (एक पोता) याक़ूब बख़्शा उन सब को हम ने सीधी राह दिखाई और उन से पहले नूह को हिदायत की थी[६०] और इब्राहीम की औलाद में से दावूद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून को हिदायत की थी। इसी प्रकार हम नेको कारों को (भी) बदला दिया करते हैं ८६. और ज़करिय्या और यहया और अ़ीसा और इल्यास को हिदायत की। यह सब हमारे नेक बन्दे थे ८७. और (इन के अ़लावा अबू मुहम्मद) इस्माअ़ील और यसअ़ और यूनुस और लूत को राह दिखाई। और इन सब को हम ने तमाम दुनियाँ के लोगों पर फ़ज़ीलत दी[६१] ८८. और उन के बुज़ुर्गों और बेटों और बिरादरी के लोगों में से भी कुछ को हिदायत की और➲

बर्गुज़ीदा किया और सीधी राह की हिदायत की ८९. यह अल्लाह की राह नुमाई थी अल्लाह अपने बन्दों (में से) जिसे चाहे इस तरीक़े की हिदायत कर देता है। और अगर (मान लें कि) यह भी अल्लाह का साझी बनाते[६२] तो उन का भी किया-कराया सब अकारत हो जाता[६३] ९०. उन्हीं को हम ने किताब और समझ और नबुव्वत अ़ता की थी इस लिये यह लोग (अ़रब के रहने वाले भी) अगर तेरी नबुव्वत से इन्कारी हों तो हम ने उन के लिये एक क़ौम को मुक़र्रर किया है[६४] जो उस से इन्कारी न होंगे९१. उन लोगों को अल्लाह ने हिदायत की थी इस लिये तू उन ही की हिदायत पर चल[६५]।

....

६०. हज़रत आदम और नूह के दर्मियान ग्यारह सौ वर्ष की दूरी है। हज़रत इब्राहीम, आदम अ़लै० से दो हज़ार वर्ष बाद पैदा हुये और १७५ वर्ष की आयु पाई। हज़रत इस्माअ़ील की आयु सीमा १३० वर्ष की थी। हज़रत इस्हाक़ इन से १४ वर्ष छोटे थे और ८० वर्ष की उम्र पाई। हज़रत याकूब की आयु १४७ वर्ष, हज़रत यूसुफ़ की १२० वर्ष की उम्र थी। हज़रत यूसुफ़ और मूसा अ़लै० के दर्मियान ४०० वर्ष की दूरी है, इसी प्रकार मूसा और इब्राहीम के दर्मियान ५६५ वर्ष (सलफ़िय्या) नूह बिन मलिक, हज़रत इब्राहीम के पुरखों में मश्हूर नबी हुये हैं। तौरात में भी हज़रत इब्राहीम का जो नसब नामा (वंश तालिका) लिखा है, उस को सामने रखते हुये भी हज़रत इब्राहीम, हज़रत नूह की ग्यारहवी पीढ़ी पर हैं। आप का वतन (जन्म भूमि) वही थी जहाँ इतिहास के आरंभ के समय में इन्सान आबाद थे, यानी ई़राक़ मुल्क का दोआबा (दिजला और फुरात) आप का ज़माना अनुमानत: सन् २९४८ ता १९९८ मसीह की पैदाइश से पूर्व समझा गया है (माजिदी)

६१. हज़रत लूत अ़लै० हज़रत इब्राहीम की औलाद में से नहीं हैं, बल्कि उन के भतीजे हैं। इसी लिये कुछ उलमा ने 'मिन् ज़ुर्रिय्यतिही' का तर्जुमा "नूह की औलाद से" किया है। कुछ उलमा का कहना है कि भतीजा भी औलाद में शामिल माना जा सकता है, तो इस तरह 'ज़ुर्रिय्यतिही' में 'ही' सर्वनाम हज़रत इब्राहीम की तरफ़ माना जाएगा। 'इल्यास' हज़रत इदरीस ही को कहते हैं, वह हज़रत इब्राहीम से बहुत पूर्व गुज़रे हैं। कुछ उलमा का कहना है कि यह पैग़म्बर इल्यास बिन सना, बिन कहास, बिन ग़ीदार, बिन हारून, बिन ई़म्रान थे। इस सूरत में इन को हज़रत इब्राहीम की औलाद में से माना जाये गा। इन्जील में एक नबी 'एल्या' का ज़िक्र है, इस से मुराद यही हज़रत इल्यास हैं। हज़रत ई़सा को इब्राहीम की औलाद में इस लिये शामिल माना जाता है कि नवासा भी औलाद में दाख़िल है। चुनान्चे जैसा कि मालूम है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसललम ने हज़रत हसन और हुसैन को अपना बेटा क़रार दिया है।

इमाम बैहक़ी ने अ़ब्दुल मलिक बिन् उमैर से एक रिवायत नक़ल की है कि यह्या बिन यामर, हज्जाज बिन यूसुफ़ के पास गये, जब उस के सामने हज़रत हुसैन रज़ि० का ज़िक्र आया तो कहने लगा कि वह पैग़म्बर की औलाद नहीं हो सकते। इस पर यह्या ने कहा कि तुम झूठे हो, हज्जाज ने कहा कि कोई दलील लाओ! इस पर यह्या ने इसी आयत की तिलावत की और कहा कि अल्लाह ने हज़रत ई़सा को इब्राहीम की औलाद फ़रमाया है। हज्जाज से जब कोई उत्तर न बन पड़ा तो कहने लगा कि तुम सच कहते हो (वहीदी)

६२. यह हम को सबक़ पढ़ाया गया है कि शिर्क इन्सान के तमाम आमाल को बर्बाद कर देता है। और आ़म लोगों को जाने दीजिये अगर थोड़ी देर के लिये मान लें कि नेक बन्दे (अल्लाह की पनाह) शिर्क कर डालें तो उन का भी सारा का सारा किया धरा अकारत हो जाये (मुवज़्ज़िहुल् क़ुरआन)

६३. इस आयत में शिर्क को सब से बुरा कार्य बताते हुये उस से हद दर्जा बचने का ज़िक्र है, जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया गया "ऐ मुहम्मद! तुम को और तुम से पहले के लोगों को वह्यि की गयी कि अगर तू ने शिर्क किया तो इस में कोई संदेह नहीं कि तुम्हारा किया-धरा सब अकारत हो जाये गा" (मवाहिब) बुख़ारी और मुस्लिम की एक

➲रिवायत में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "सब से बड़ा पाप यह है कि अल्लाह के साथ शरीक ठहराया जाये हालाँकि उस ने तुझ को पैदा किया"।

बड़े दुःख की बात है आज-कल के नाम के कुछ मुसलमान इस्लाम का दावा भी करते हैं और इस के साथ ही ग़ैरुल्लाह (अ़ल्लाह को छोड़ कर दूसरों) की सज्दा करते, उन से मुरादें माँगते, उन के नाम पर जानवर ज़ब्ह करते हैं। उन को नफ़ा और नुक़्सान का मालिक समझते और उन को अपना सब कुछ मानते हैं। अल्लाह तआ़ला हम सब को शिर्क से बचाये।

६४. 'मुक़र्रर किया है' इस से मुराद मदीना शरीफ़ के अन्सार हैं (सनाई) मौलाना ने यहाँ तर्जुमा "तैनात" का किया है।

६५. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को उन नबिय्यों की पैरवी करने का हुक्म दिया गया है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सूरः "स्वाद" में हज़रत दावूद के शुक्र की इत्तिबाअ़ करते हुये, सज्दा किया करते थे (बुख़ारी)

اقْتَدِهْ ۗ قُلْ لَّا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرَىٰ
لِلْعَالَمِينَ ﴿٩٠﴾ وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا
أَنزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ بَشَرٍ مِّن شَيْءٍ ۗ قُلْ مَنْ أَنزَلَ الْكِتَابَ
الَّذِي جَاءَ بِهِ مُوسَىٰ نُورًا وَهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُونَهُ
قَرَاطِيسَ تُبْدُونَهَا وَتُخْفُونَ كَثِيرًا ۖ وَعُلِّمْتُم مَّا لَمْ
تَعْلَمُوا أَنتُمْ وَلَا آبَاؤُكُمْ ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِي خَوْضِهِمْ
يَلْعَبُونَ ﴿٩١﴾ وَهَٰذَا كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِي
بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا ۚ وَالَّذِينَ
يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَهُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ
يُحَافِظُونَ ﴿٩٢﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
أَوْ قَالَ أُوحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ وَمَن قَالَ سَأُنزِلُ
مِثْلَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ ۗ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ
الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُو أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا أَنفُسَكُمُ ۖ

तू कह! मैं तुम से इस के बदले कोई मज़दूरी नहीं माँगता। यह क़ुरआन सब जहान वालों के लिये हिदायत है ९२. और (मुख़ालिफ़ लोग तेरी ज़िद में) अल्लाह की शान के मुनासिब उस की क़द्र नहीं करते क्यों कि यह कहते हैं कि अल्लाह ने किसी आदमी पर कोई किताब नाज़िल ही नहीं की[६६]। तू पूछ! जिस किताब को मूसा लाये थे वह किस ने उतारी थी? जो नूर और लोगों के लिये हिदायत थी जिस को तुम अलग-अलग पन्नों में लिख रखते हो, फिर कुछ तो ज़ाहिर करते हो और बहुत सा हिस्सा छुपा लेते हो हालाँकि वह बातें तुम को बतलाई गयी थीं जो ख़ुद तुम को और तुम्हारे बाप-दादाओं को भी मालूम न हुयी थीं। तू कह! अल्लाह ही ने उतारी थी। फिर उन को उन की बकवास में छोड़ दे कि हंसी-मज़ाक़ में खेलते रहें ९३. और इस बर्कत वाली किताब को जो अपने से पहली किताब की तस्दीक़ करती है हम ने इस लिये उतारा है कि तू मक्का[६७] और उस के आस-पास के लोगों को डरावे[६८]। और जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हों गे वह तो अवश्य ही उस को मानेंगे और नमाज़ की मुहाफ़िज़त {पाबन्दी से अदा} करते रहें गे ९४. और अल्लाह पर झूठ बाँधने वाले से या जो कहे कि मुझे इल्हाम होता है हालाँकि उसे कुछ भी इल्हाम नहीं होता हो, या जो कहे कि मैं अल्लाह के उतारे हुये कलाम जैसा (कलाम) उतार सकता हूँ उस से बढ़ कर ज़ालिम➲

➲कौन हो गा[६९]। और अगर तू उन ज़ालिमों को उस समय देखे जब यह मौत की सख़्ती में होते हैं और फ़रिश्ते लम्बे हाथ कर के कहते हैं कि अपनी जानें निकालो

....

६६. शाने-नुज़ूल:- हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि यहूद ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लहि वसल्लम से पूछा कि क्या आप पर अल्लाह ने किताब उतारी है? आप ने उत्तर दिया कि हाँ, उन्हों ने कहा कि अल्लाह की क़सम! आसमान से तो कोई किताब नहीं उतारी गई है, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी।

यहूद किसी काम से मक्का गये हों गे और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से यह प्रश्न किया होगा, वर्ना यह सूरः मक्की है और इन आयतों में मक्का के काफ़िरों का ज़िक्र है। इब्ने जरीर ने इसी शाने-नुज़ूल को सहीह कहा है।

६७. इमाम क़तादा कहते हैं कि आरंभ में अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन को पैदा कर के बिछाया, तो इसी स्थान से बिछाना शुरू किया इसी वास्ते इस का नाम "उम्मुल क़ुरा" पड़ा इस लिये कि सारे संसार का वजूद यहीं से है। कुछ उलमा ने यह कहा है कि मक्का ज़मीन की नाफ़ (नाभि) है और मक्का के आस-पास से मुराद पूरी दुनिया के लोग हैं, चुनान्चे दूसरी ही आयत "ऐ लोगों! तुम सब की तरफ़ मुझ को अल्लाह ने रसूल बना कर भेजा है" में इस बात की पुष्टि कर दी गई है। नमाज़ को विशेष रूप से बयान किया, इस लिये कि नमाज़ दीन का सुतून और तमाम आमाल की जड़ है, तो जो इस की देख-भाल करे गा वह सब की करे गा। एक सहीह हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिस ने नमाज़ को जान-बूझ कर छोड़ा वह काफ़िर हो गया"

६८. 'उम्मुल क़ुरा' आबादियों और बस्तियों की अस्ल और जड़ को कहते हैं। मक्का शरीफ़ तमाम अ़रब का दीनी व दुनियावी केन्द्र था और भौगोलिक एतबार से भी पुरानी दुनिया के बीचों-बीच में केन्द्र बिन्दु की तरह है। और नई दुनिया (अमरीका) उस के बिल्कुल दूसरी तरफ़ है। रिवायतों के अनुसार पानी से ज़मीन बनाई गयी तो अव्वल यह जगह ही खुली थी, इस लिये इन कारणों से मक्का को उम्मुल क़ुरा फ़रमाया (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान) अगर आप भूगोल शास्त्र पर ग़ौर करें तो दुनिया की तीन चौथाई आबादी के लिये केन्द्र मक्का को कह सकते हैं, इस लिये कि यूरोप, ऐशिया और अफ़रीक़ा के मुल्कों को सामने रखते हुये मक्का बीचों-बीच में है (हक़्क़ानी)

६९. शाने-नुज़ूल:- अ़ब्दुल्लाह बिन अबूसर्ह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मुन्शी था, वह क़ुरआन करीम को लिखा करता था। जब आयत "सुम्म अन्-शअ्नाहु ख़ल्-क़न् आ-ख़-र" नाज़िल हो रही थी तो उस की ज़बान से "फ़-तबा-र-कल्लाहु अह्-सनुल् ख़ालिक़ीन" निकल गया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हाँ ऐसा ही उतरा। उस को शक हो गया और कहने लगा कि अगर मुहम्मद सच्चे पैग़म्बर हैं तो मुझ पर भी उन की तरह वह्यि आती है और अगर झूठे हैं तो मैं उन की तरह क़ुरआन बना सकता हूँ। इस के बाद इस्लाम से फिर गया और मुश्रिकों से जा मिला। फ़त्ह मक्का के दिन अपने भाई उस्मान बिन अबू सर्ह की पनाह में आ गया और पुन: इस्लाम लाया, इस के बारे में यह आयत नाज़िल हुयी (वहीदी)

अल्लाह के मुतअल्लिक़ जो तुम झूठी बातें कहा करते थे और उस के हुक्मों से तकब्बुर किया करते थे इस की वजह से आज तुम को ज़िल्लत की मार हो गी[७०] ९५. (अल्लाह की तरफ़ उन को यह भी कहा जाये गा) जैसा हम ने तुम को पहले बग़ैर माल व दौलत के पैदा किया था➲

الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى
اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ
جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ
مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ

الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ؕ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۹۴﴾ اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ؕ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿۹۵﴾ فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿۹۶﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۹۷﴾ وَهُوَ الَّذِيْۤ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ

वैसे ही तुम हमारे पास आये हो और जो हम ने तुम को दुनिया की नेमतें दी थीं अपने पीछे ही छोड़ आये हो, और न हीं तुम्हारे सिफ़ारिशी नज़र आते हैं जिन को तुम अपने हक़ में हमारा शरीक समझे हुये थे। तुम्हारे संबन्ध सब टूट गये और जो तुम गुमान किया करते थे तुम को सब भूल गये[७१] ९६. बेशक अल्लाह दाने और गुठली को फाड़ता है। वही जानदार को बेजान से और बेजान को जानदार से निकालता है। यही अल्लाह है पस तुम किधर को बहके चले जाते हो ९७. सुब्ह को रोशन करता है, उसी ने रात को आराम के लिये और सूरज और चाँद को {दिनों के} हिसाब {रखने} के लिये पैदा किया है। यह अनुमान बड़े ग़ालिब बड़े ही अ़िल्म् वाले का है ९८. उसी ने तुम्हारे लिये सितारे बनाये हैं कि तुम उन के साथ जन्गलों और दरियाओं के अंधेरों में राह पाओ। अ़िल्म रखने वालों के लिये हम नें (अपनी कुदरत के) निशान बता दिये हैं[७२] ९९. और उसी ने तुम सब को एक जान (आदम) से पैदा किया है फिर तुम्हारे लिये मुस्तकि़ल रहने की जगह और ठहराव है[७३]। जो लोग समझते हैं उन के लिये हम ने खुले-खुले निशान बतला दिये हैं

---

७०. यहाँ पर रूह को सख़्ती से निकालने का बयान हो रहा है, जिस में कुछ भी ढील और आसानी न हो गी। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि 'मलाइका' से मुराद मलकुल् मौत और उस के सहायक फ़रिश्ते हैं (मदारिक, इब्ने कसीर वग़ैरह)

७१. नज़्र बिन हारिस कुरैशी कहा करता था कि अगर क़ियामत आये गी तो लात और उज़्ज़ा बुत हमारी तरफ़ से सिफ़ारिश करें गे, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में स्पष्ट शब्दों में बतला दिया कि तुम तंहा और अकेले-अकेले आओ गे और यह दुमछल्ले जो तुम ने लगा रखे हैं उस वक़्त सब टूट जायें गे और कोई भी काम नहीं आये गा। एक दूसरी हदीस में है कि जब बन्दा आजिज़ी की हालत में अल्लाह के सामने क़ियामत के दिन हाज़िर होगा तो अल्लाह पाक बन्दों से प्रश्न करे गा कि आख़िरत के लिये क्या कुछ लाये हो? बन्दा उत्तर दे गा कि दुनिया में तो बहुत कमाया था, मुझे दुनिया में जाने दे तो सब ला कर हाज़िर कर दूँ गा। अल्लाह तआ़ला फिर प्रश्न करे गा कि अच्छा आख़िरत के लिये क्या लाये हो? बन्दा फिर वही कहे गा जो ऊपर कह चुका है, अन्त में जहन्नम में डाल दिया जाये गा (वहीदी)

७२. मजाल नहीं कि अपने मौसम के लिहाज़ से एक मिनट भी आगे-पीछे हो जायें। यह कोई मेल ट्रेन नहीं है कि हर प्रकार की सुविधा प्रदान किये जाने के बाद भी आ़म तौर पर लेट चलती है। इस का कारण यह है कि समय सीमा तय करने वालों को आने वाली कठिनाइयों का पूरा ज्ञान नहीं होता कि कहाँ और कब कौन सी घटना घटे गी, और जब कोई घटना घट जाये तो दूर करने की उन के अन्दर क्षमता भी नहीं होती है, यही कारण है कि उन

गाड़ियों के आवागमन के समय में फ़र्क़ आ जाता है (सनाई)

हदीस शरीफ़ में आया है कि सितारों का ज्ञान केवल इतना सीखो कि उन के द्वारा जंगल या दरिया-समुन्द्र के अंधेरों में रास्ता मालूम कर लो। एक हदीस में है कि अल्लाह के प्यारे बन्दे वह हैं जो नमाज़ का समय मालूम करने के लिये चाँद और सूरज पर ध्यान रखते हैं। सितारों का वह अ़िल्म सीखना जिस से भविष्य की बातें मालूम की जायें, हराम है। एक हदीस में है कि जिस ने यह ज्ञान सीखा उस ने जादू का एक हिस्सा सीखा। (वहीदी)

يَّفْقَهُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَاۗءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ۭ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝ لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۡ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۝ قَدْ جَاۗءَكُمْ بَصَاۗىِٕرُ مِنْ

१००. (और सुनो!) हम अल्लाह ही हैं जो आकाश से पानी उतारते हैं फिर हम उस (पानी) के साथ हर प्रकार की अन्कुरियाँ निकालते हैं फिर उन में से हरियाली बाहर लाते हैं और उस में से गुथे हुये {ऊपर तले लदे हुये} दाने निकालते हैं, और खजूरों के गाभे में से झुके हुये गुच्छे निकालते हैं और अंगूरों और ज़ैतून और अनारों के बाग़ पैदा करते हैं जिन के फल कोई तो (आपस में) एक दूसरे से मिलत-जुलते हों और कोई मिलत-जुलते न हों। उन के फलों की तरफ़ देखो जब निकलते हैं और पकते हैं। बेशक मानने वालों के लिये उस में बड़े ही निशान हैं[७४] १०१. और जिन्नों को उन्हों ने अल्लाह का साझी बना रखा है[७५] हालाँकि अल्लाह ने उन को पैदा किया है और केवल जिहालत से उस के लिये बेटे-बेटियाँ गढ़ रहे हैं। वह उन की इस बेहूदा बातों से पाक और बुलन्द है[७६] १०२. वह आसमानों और ज़मीनों का मूजिद {नये सिरे से पैदा करने वाला} है। उस की औलाद कहाँ से हो, जब कि उस की पत्नी ही नहीं। उस ने सब को पैदा किया (फिर उस का बेटा-बेटी कौन हो सकता है[७७]?) और वह हर एक वस्तु को जानता है १०३. यही अल्लाह तुम्हारा पर्वरदिगार है, उस के अ़लावा कोई माबूद नहीं, वही हर वस्तु का पैदा करने वाला है इस लिये तुम उसी की अ़िबादत करो, वह हर एक चीज़ का मुतवल्ली {देख-भाल करने वाला} है १०४. उस को कोई आँख नहीं देख सकती और वह सब आँखों (और आंखों वालों) को देखता है और वह बड़ा बारीक देखने वाला ख़बर रखने वाला है[७८] १०५. तुम्हारे पर्वरदिगार की रौशनी तुम्हारे पास आ चुकी है

....

७४. यहाँ यह बताया गया है कि सारे नियम और उसूल बस एक ही ज़ात के मुक़र्रर किये हुये हैं। जिन लोगों

➲ने वर्षा और खेती-बाड़ी के लिये अलग-अलग देवी-देवता बना लिये हैं यह जिहालत और नादानी है।

७५. 'जिन्नात' यह आग से पैदा की गयी मख़्लूक़ है जो इन्सानों (ख़ाकी मख़्लूक़) से पहले पैदा की गयी थी। आ़म तौर पर यह इन्सान को दिखाई नहीं देते। इब्लीस इन्हीं की सिफ़त का मख़्लूक़ है (माजिदी)

७६. इन आयतों में मक्का के मुश्रिकों के अ़क़ीदा और ख़याल का रद्द किया गया है। यह लोग जिन्नों के मुतअ़ल्लिक़ विभिन्न प्रकार के ख़यालात रखते थे। उन का अक़ीदा था कि जिन्नों के अन्दर शक्ति मौजूद है, वह जिसे चाहें लाभ पहुंचा दें और जिसे चाहें हानि पहुंचा दें। उन का अ़क़ीदा था कि फ़रिश्ते अल्लाह के बेटे और बेटियाँ हैं और दुनिया का चलाने में वह अल्लाह के सहयोगी हैं (तर्जुमान)

७७. एक हदीस शरीफ़ में है अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैं कि इन्सान ने मुझ को झुठलाया और ऐब लगाया, हालाँकि उस के लिये ऐसा मुनासिब न था। वह कहता है कि क़ियामत के दिन पुन: जीवित नहीं किया जाये गा, हालाँकि प्रथम बार पैदा करने के मुक़ाबला में दूसरी बार उस का पैदा करना कहीं ज़्यादा सरल है। और ऐब लगाने का अर्थ यह है कि वह अल्लाह के लिये बेटे-बेटियाँ ठहराता है, हालाँकि मैं अकेला और बेपर्वाह हूँ, न मैं ने किसी को जना है और न ही मैं जना गया हूँ, और न ही मेरी बराबरी का कोई है (बुख़ारी शरीफ़)

७८. अल्लाह को न देख पाना यह केवल दुनिया की ज़िन्दगी ही तक है, वर्ना जन्नत में ईमान वालों को अल्लाह का दीदार अवश्य हो गा। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक मर्तबा चाँद देख कर फ़रमाया: "जिस यक़ीन के साथ तुम इसे देख रहे हो, इसी प्रकार जन्नत में तुम अल्लाह पाक को बग़ैर पर्दे के देखोगे"। जन्नत में अल्लाह तआ़ला को देखने के मुतअ़ल्लिक़ और बहुत सी हदीसें आई हैं और जो लोग आख़िरत में अल्लाह के दीदार का इन्कार करते हैं उन के पास कोई स्पष्ट दलील नहीं है, बस वह केवल क़ियास (अनुमान) से काम ले रहे हैं (वहीदी)

رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ۚ
وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ۝ وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَ
لِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ اِتَّبِعْ مَآ
اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ
الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ۗ وَمَا جَعَلْنٰكَ
عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝ وَلَا تَسُبُّوا
الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ
عِلْمٍ ۗ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۪ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ
مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ
جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۗ قُلْ

तो जो रोशनी ले गा उसी का भला है और जो अन्धा बने गा उसी पर वबाल हो गा। और मैं तुम पर निग्राँ (मुहाफ़िज़) नहीं हूँ १०६. इसी प्रकार हम बताते रहें गे जिस पर यह कहें गे कि तू पढ़ आया है[७९] और ज़िल्म वालों के लिये हम स्पष्ट कर के बतला दें गे[८०] १०७. जो तेरे पर्वरदिगार की तरफ़ से तुझे मिला है तू उस की पैरवी कर, उस के अ़लावा कोई माबूद नहीं, और उस के साथ साझी बतलाने वालों से किनारा कर १०८. और अगर अल्लाह चाहता तो यह कभी भी शिर्क न करते। और हम ने तुझे उन पर निग्राँ नहीं बनाया और न तू उन पर {दारोग़ा} मुक़र्रर है १०९. और जिन को यह लोग अल्लाह के➲

إِنَّمَا الْآيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ أَنَّهَآ إِذَا جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٩﴾ وَنُقَلِّبُ أَفْـِٔدَتَهُمْ وَأَبْصٰرَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِۦٓ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَنَذَرُهُمْ فِى طُغْيٰنِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١١٠﴾

अ़लावा पुकारते हैं उन को गालियाँ न देने लगो, नहीं तो यह नासमझी से ज़िद में आ कर अल्लाह को गालियाँ देने लगें गे। हर एक फ़िर्क़ा को हम ने ऐसा बना दिया है कि उसे अपने ही अ़मल भले मालूम हों फिर अपने पर्वरदिगार की तरफ़ उन को लौटना हो गा पस वह उन के कामों से उन को ख़बर करे गा[८१] ११०. और वह मज़बूत क़सम खा चुके हैं कि अगर हमारे पास कोई निशान आये गा तो हम अवश्य उसे मान लें गे। तू कह दे कि निशानात सब अल्लाह के पास हैं और तुम को मालूम नहीं कि चमत्कार के आने पर भी (वह लोग) ईमान नहीं लायें गे[८२] १११. और हम उन के दिलों और आँखों को फेर दें गे, क्योंकि पहली मर्तबा उस (निशान) पर ईमान नहीं लाये और हम उन को उन ही की सरकशी में छोड़े रखें गे।

....

७९. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि "द-रस्-त" का अर्थ यह है "कि तू ने यहूद और नसारा से पढ़ लिया और सीख लिया"। हज़रत इमाम बसरी ने 'द-र-स-त' पढ़ा है, इस का अर्थ होगा कि "तुम्हारा दीन पुराना हो गया है, घिस-पिट गया है"। आज-कल भी बहुत से मुल्हिद और अल्लाह को न मानने वाले भी अल्लाह की अ़िबादत और इताअ़त को पुराना तौर-तरीक़ा बताते हैं और अपनी चाल-ढाल को नई रोशनी कहते हैं, ऐसे लोग ईमान से कोसों दूर और कुफ़्र से बहुत ही क़रीब हैं। (मवाहिब)

८०. चुनान्चे हुआ भी वही। एक अनपढ़ और उम्मी की ज़बान से इतना ऊँचा कलाम, बेहतरीन अन्दाज़े-बयान में सुन कर ज़ालिमों ने कहना आरंभ कर दिया कि इस प्रकार की बातें और कलाम किसी यहूदी या नसरानी से पढ़ क़र अच्छी तरह याद कर लिया है। और उन जाहिलों ही की नक़ल करते हुये आज के इस्लाम दुश्मन यहूदी और अ़ीसाई उलमा भी कुरआन मजीद की इस भविष्यवाणी को सही साबित कर रहे हैं (माजिदी) यानी जिस प्रकार पहले के लोग इल्ज़ाम लगा रहे थे, आज कल के यहूदी और अ़ीसाई उलमा भी लगा रहे हैं।

८१. मुश्रिकों ने कहा कि ऐ मुहम्मद! तुम हमारे बुतों को बुरा-भला कहना बन्द कर दो, वर्ना हम भी तुम्हारे माबूद को बुरा कहना शुरू कर दें गे, इस पर अल्लाह तआ़ला ने मना फ़रमा दिया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: वह शख़्स मल्ऊन है जिस ने अपने माँ-बाप को गाली दी। सहाबा ने पूछा कि कोई अपने माँ-बाप को भला कैसे गाली दे गा? आप ने फ़रमाया: तुम दूसरों के माँ-बाप को गाली दो गे तो वह तुम्हारे माँ-बाप को गाली दे गा (और यही अपने माँ-बाप को गाली देना हुआ)

८२. मक्का के काफ़िरों ने भी कहा कि मूसा और अ़ीसा चमत्कार ले कर आये थे, तो तुम भी चमत्कार दिखाओ तब हम तुम्हें सच्चा नबी जानें गे। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पूछा कि तुम क्या चाहते हो? उन्हों ने कहा कि आप इस सफ़ा पर्वत को सोने का बना दें तो हम सब आप पर ईमान ले आयें गे। आप ने अल्लाह से दुआ़ की इतने में हज़रत जिब्रील अ़लै० ने आकर कहा कि बेशक आप चाहें तो यह पहाड़ सोने का बन जाये गा, लेकिन इस के बाद भी अगर यह लोग ईमान न लाये तो सख़्त अ़ज़ाब नाज़िल होगा। और आप चाहें तो इन को इन ही के

➲हाल पर छोड़ दें, जिन की इच्छा होगी वह ईमान लायें गे और तौबा करें गे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं यही चाहता हूँ कि जिस-जिस के भाग्य में तौबा लिखी है वह तौबा करे।

★★★★★

بِسۡــــمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡــمِ

पारः व–लव् अन्नना (8)

संक्षिप्त विषय सूची

व-लव् अन्नना -(8)

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى
وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا
اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ﴿١١١﴾
وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ
وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ
غُرُوْرًا ۚ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١١٢﴾
وَلِتَصْغٰٓى اِلَيْهِ اَفْئِدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ
وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿١١٣﴾ اَفَغَيْرَ
اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ
الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ۚ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ
يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ
مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّ
عَدْلًا ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ

११२. और अगर हम (अल्लाह) फ़रिश्तों को उनके सामने उतारते और मुर्दे भी उनके सामने बातें करते और सब (पोशीदा) वस्तुओं को लाकर उनके सामने खड़ा कर देते तो भी यह (किसी प्रकार) पक्का ईमान न लाते हां, अगर अल्लाह चाहता (तो यकदम सीधा कर देता) लेकिन बहुत से लोग उनमें से जिहालत करते हैं[८३]। ११३. और इस प्रकार हमने (शैतानों यानी) शरीर इन्सानों और जिन्नों को हर नबी का दुश्मन बनाया है एक दूसरे को धोकाबाज़ी से बेहूदा (और वाहियात) बातें फूंकते रहते हैं[८४]। और अगर तेरा पर्वरदिगार चाहता तो यह लोग ऐसा न करते, तू उनका और उनके झूठ बांधने का कुछ भी ख़्याल न कर। ११४. और किसी प्रकार क़ियामत पर ईमान न लाने वालों के दिल उसकी तरफ़ झुकें और वह उसको पसन्द करें[८५] और जो यह कमाना चाहें कमायें। ११५. (तू कह दे!) क्या मैं अल्लाह के सिवा और किसी को इंसाफ़ करने वाला बनाऊं? (हालाँकि) उसी ने तुम्हारी तरफ़ मुफ़स्सल किताब उतारी है। और जिनको हमने किताब दी है वह यक़ीनी जानते हैं कि जो कुछ अल्लाह की तरफ़ से उतरा है वह हक़ (और उस पर अ़मल अनिवार्य) है, इसलिये तू हरगिज़ संदेह न कर। ११६. और (सुन रख!) तेरे रब के कलिमात[८६] सच्चाई और इंसाफ़ से भरपूर हैं। कोई (दूसरा) उसके कलिमात को बदलने वाला नहीं, वही (अल्लाह) सबकी सुनता और जानता है।

....

८३. इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तसल्ली दी है कि यह काफ़िर जो आप के साथ दुश्मनी रखते हैं यह कोई नई बात नहीं है, बल्कि हर ज़माने के काफ़िर, संदेष्टाओं के दुश्मन रहे हैं। जिन्नों और इंसानों के शैतान वह लोग हैं जो अल्लाह की अवज्ञा और सरकशी करते हैं। मुलम्मा और चिकनी-चुपड़ी बातों का अर्थ यह है कि लोगों को धोखा देने और अपने पक्ष में करने के लिए चिकनी-चुपड़ी बातें ➲

➡एक दूसरे के कान में फूंक देते हैं। यानी जिन्नों में जो शरीर क़िस्म के लोग हैं वह शरीर आदमियों के कान में ऐसी बातें फूंक देते हैं जो ज़ाहिर में तो बहुत भली मालूम होती हैं, लेकिन मुकम्मल झूठ होती हैं।

हज़रत अबूज़र रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुझ से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: आदमियों के शैतान और शैतानों से कहीं ज़्यादा नुक़सान पहुंचा देते हैं (इब्ने जरीर) इमाम मालिक बिन दीनार ने कहा कि मैं "अऊज़ुबिल्लाहि मिन-श्शैतानिर्रजीम" पढ़ता हूं तो शैतान तो भाग जाता है मगर इन्सानी शैतान पर इस दुआ का कुछ भी प्रभाव नहीं होता और वह मेरी ही आंखों के सामने आकर मुझ ही को बहकाने लगता है। (मदारिक)

८४. 'बेहूदा बातें फूंकते रहते हैं' कि फ़लां बुत के सामने सर झुकाओ वह तुम्हें सुरक्षा प्रदान करेगा, फ़लां क़ब्र वाले से मांगो वह तुम्हारी इच्छा पूरी करेगा, फ़लां स्थान पर चढ़ावे चढ़ाओ तो तुम्हारी हर मुराद पूरी हो जायेगी। (सनाई)

८५. यानी बुतों के पुजारी और क़ब्रों के मुजाविर जो चाहें कमायें। सारी बातों का निचोड़ यह है कि यह तमाम ढकोसले केवल कमाई के धंधे हैं जो इन सब ने ईजाद कर लिये हैं। (सनाई) इतना ही नहीं इन क़ब्रों के मुजाविरों को अगर देखा जाये तो मालूम होता है कि उन्होंने तो मंदिर के पुजारियों को भी मात दे दिया है।

८६. मौलाना मरहूम ने यहां मुरादी माना लेते हुए "फ़ैसले" तर्जुमा किया था, हमने "कलिमात" ही नक़ल कर दिया है। (राज़)

الْعَلِيمُ ۝ وَإِنْ تُطِعْ أَكْثَرَ مَنْ فِي الْأَرْضِ
يُضِلُّوكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ
وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ
مَنْ يَضِلُّ عَنْ سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝
فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ بِآيَاتِهِ
مُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ
اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا
مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا لَيُضِلُّونَ بِأَهْوَائِهِمْ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ۝
وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ
الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ۝ وَلَا تَأْكُلُوا
مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ ۗ وَإِنَّ

११७. और अगर तू ज़मीन पर बसने वालों में से अक्सर के पीछे हुआ तो ज़रूर ही तुझ को अल्लाह की राह से बहका देंगे। (क्योंकि) वह तो केवल अपने ख़्यालात पर चलते हैं और निरी अटकलें ही दौड़ाते हैं[८७]। ११८. जो लोग अल्लाह की राह से भटकते हैं, तेरा रब उनको अच्छी तरह जानता है और वह सीधी राह चलने वालों को भी ख़ूब जानता है[८८]। ११९. इसलिये अगर तुम अल्लाह के आदेशों को मानते हो तो जिन चीज़ों पर अल्लाह का नाम ज़िक्र हो उन्हीं को खाओ। १२०. और अल्लाह का नाम जिन चीज़ों पर न लिया जाये उनके न खाने में तुम्हें क्या उज़्र है जब कि अल्लाह ने हराम चीज़ें तुम को विस्तार से बतला दी हैं[८९] फिर मजबूरी (और लाचारी) की हालत में माफ़ भी हैं[९०]। और बहुत से लोग बिला तहक़ीक़ अपनी ख़्वाहिशों के मुताबिक़ गुमराह करते हैं[९१] बिलाशुब्हा➡

➲तेरा परवर्दिगार इताअ़त की सीमा से आगे बढ़ जाने वालों को ख़ूब जानता है। १२१. और ज़ाहिरी और पौशीदा गुनाह छोड़ दो। क्योंकि जो लोग गुनाह के काम करते हैं वह अपनी करतूतों के (बुरे) बदले पायेंगे[९२]। १२२. और (सुनो) जिन चीज़ों पर अल्लाह का नाम न लिया जाए उन को मत खाया करो, यह खाना यक़ीनी तौर पर नापाक है। और शैतान अपने ढब के लोगों को शुब्हात में डालते हैं कि वह तुम से झगड़ें और अगर तुम उनके पीछे चले

الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰٓى اَوْلِيٰٓـِٕهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَاِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ۝ اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا

....

८७. **शाने नुज़ूल** : मक्का के मुश्रिक कहा करते थे कि मुसलमानों का मामला भी बड़ा अ़जीब है। अपना मारा हुआ तो खा लेते हैं लेकिन अल्लाह का मारा हुआ (ग़ुर्दार) नहीं खाते हैं। फिर वह दावा करते थे कि चूंकि हमारी तादाद अधिक हैं इसलिये उन लोगों को हमारा धर्म इख़्तियार करना चाहिए, इस पर यह आयत नाज़िल हुई।

इस आयत ने स्पष्ट तौर पर फ़ैसला कर दिया है कि किसी का गिन्ती और मात्रा में अधिक होना, इस बात की दलील नहीं है कि वह हक़ पर हैं, हक़ को साबित करने के लिये दलील और तर्क की आवश्यकता होती है, नाकि तादाद और गिन्ती की (सनाई) ऊपर की आयत में 'कलिमा' से मुराद शरीअ़त के अहकाम, धमकियां और बशारतें हैं। और यह मोमिनों पर अल्लाह का एहसान है कि कुरआन में उनकी तकमील हुई है। ज़माना के बदलने के साथ, शरीअ़त के अहकाम में तबदीली जाइज़ नहीं है। जो ऐसा ख़्याल करें वह काफ़िर और मुर्तद हैं। कुछ उलमा का कहना है कि 'कलिमात' से मुराद कुरआन है। मतलब यह हुआ कि कुरआन पाक हमेशा सुरक्षित रहेगा और इस में कोई कमी बेशी नहीं कर सकता। फ़तह मक्का के दिन जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम काबा शीरफ़ में दाख़िल होकर उसको बुतों से पाक कर रहे थे उस समय आप यही आयत पढ़ रहे थे। (मवाहिब)

८८. इसलिये मुसलमानो! तुम उन गुमराहों की चालों में न आना। जो लोग मुर्दा जानवर खा जाते हैं और मुसलमानों पर एतिराज़ करते हैं उनकी बातें बेहूदा और बेमाना हैं। (सनाई)

८९. इस आयत में मुश्रिकों के ख़्यालात का रद्द किया गया है। उनका ख़्याल था कि जो जानवर बुतों के नाम पर छोड़ दिये जाते हैं वे मुक़द्दस हो गए हैं। और अगर अल्लाह के नाम पर ज़ब्ह किया हुआ जानवर हलाल है, तो बुतों पर चढ़ाया हुआ नज़्र और नियाज़ का जानवर क्यों हलाल नहीं है? तुम भी ज़ब्ह करते हो और हम भी तो ज़ब्ह करते हैं। (सनाई)

९०. यानी अगर तुम ऐसी हालत में हो जाओ कि हलाल खाना न मिले और बग़ैर हराम खाये जान बचानी असंभव हो तो इस हालत में इतना खालो कि जिससे तुम्हारी जान बच जाये। इतना खा लेना तुम्हारे लिये माफ़ है। (सनाई)

९१. यानी यह लोग अपनी ख़्वाहिश की पैरवी में दूसरों को गुमराह करते फिरते हैं और इनके पास कोई सही सनद और सबूत नहीं जिसको अपनी बात की दलील में पेश कर सकें। मुश्रिकों और बेदीनों के पास अपनी बात को सत्य साबित करने के लिये न कोई अक़्ली दलील है और न ही नक़ली, बस यूं ही एक बात बक देते हैं। ज़ब्ह किये हुए जानवर और मुरदार जानवर के गोश्त में डाक्टरी रिसर्च के मुताबिक़ ज़मीन➲

आसमान का अंतर है, इस बात का भी जब उन्हें ज्ञान नहीं है तो फिर अल्लाह का सा इल्म और संदेष्टा की सी निगाह यह कहां से ला सकते हैं? (माजिदी)

९२. इस आयत में हर क़िस्म का गुनाह शामिल है। ज़ाहिरी गुनाह तो वह है जो हाथ-पांव जबान वग़ैरह से करें और जिसे हर कोई देख सकता है, और बातिनी (पोशीदा) गुनाह जैसे कीना, हसद, तकब्बुर, दूसरों के बारे में बुरा सोचना वग़ैरह। हज़रत नवास बिन सम्आन रज़ि० से रिवायत है वह कहते हैं। कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ! 'इस्म' क्या है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उत्तर दिया कि तुम्हारे दिल में जो खटके और तू इस बात को नापसंद करे कि लोगों को उसकी ख़बर दे, बस इसी का नाम 'इस्म' (पाप, गुनाह) है। (अबूहातिम)

فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِىْ بِهٖ فِى النَّاسِ كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِى الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ۭ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِىْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ۭ وَمَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝ وَاِذَا جَاۗءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ رُسُلُ اللّٰهِ ۘ اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ۭ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا صَغَارٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ ۝ فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِى السَّمَاۗءِ ۭ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ

तो तुम भी मुश्रिक बन जाओगे[९३]। १२३. क्या हम जो किसी बेइल्म को इल्म दें और उस को नूर अ़ता करें और वह लोगों में रोशनी फैलाता हो, यह उस जैसा है जो कई अंधेरों में है कि उन (अंधेरों) से निकल ही नहीं सकता। इसी प्रकर काफ़िरों को अपनी ही बुराइयाँ (कुफ़्र, शिर्क) भली मालूम हुआ करती हैं। १२४. इसी प्रकार हम ने हर एक बस्ती में बदकारों को बड़ा बनाया है कि वह उस में (जी खोलकर) दाँव चलायें। वह जितनी कुछ दाँव बाज़ियां करते हैं अपने ही हक़ में करते हैं और वह नहीं समझते[९४]। १२५. और जब कभी उनके पास कोई निशान (चमत्कार आदि) आता है तो कहते हैं कि जब तक हमें भी अल्लाह के रसूलों की तरह (Direct) पैग़ाम न मिले, हम नहीं मानेंगे। अल्लाह जिस जगह अपनी रिसालत सौंपता है उसको ख़ूब जानता है[९५]। बदकारों को उनकी दाँवबाज़ी की वजह से अल्लाह के हां से ज़िल्लत और सख़्त दुःख की मार पहुंचेगी। १२६. तो जिसको अल्लाह हिदायत करता है उसका सीना इस्लाम के कुबूल करने को खोल देता है[९६], और ज़िसको गुमराह (ही) करना चाहे उसके सीने को निहायत तंग कर देता है गोया आसमान पर उसको चढ़ना पड़ता है। इसी प्रकार अल्लाह बेईमानों पर फटकार डाला करता है।

९३. यानी जिन चीज़ों पर अल्लाह के अ़लावा का नाम लिया जाये, या दिल में किसी ऐसी चीज़ का ख़्याल रखे कि वह उसको कुबूल कर के मुराद पूरी कर देगा या करा देगा, तो ऐसी वस्तुओं को चाहे वह जानवर हो या दूसरी खाने पीने की चीज़, उनका खाना हराम है, और यह समझ लो कि वह खाना नापाक है। (सनाई)

हज़रत आ़इशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि कुछ लोगों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! लोग हमारे पास गोश्त लाते हैं, हमें नहीं मालूम कि उस पर अल्लाह का नाम लिया गया है या नहीं। आप ने फ़रमाया उस पर अल्लाह का नाम लेकर खाओ। हज़रत आ़इशा फ़रमाती हैं कि उन लोगों को कुफ़्र छोड़े हुए थोड़ा ही समय गुज़रा था (बुख़ारी) यानी गोश्त लाने वाले नौमुस्लिम सहाबा थे इसलिये लोगों ने यह मसला पूछा था। लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किसी मुलसमान पर तनिकभर भी संदेह और शुब्हा करने की इजाज़त नहीं दी, चाहे वह मुसलमान कितना ही नौमुस्लिम क्यों न हो। इस्लाम लाने के बाद तमाम मुसलमानों को उस शख़्स पर विश्वास करना चाहिए, मगर शर्त यह है कि उसने हक़ीक़ी तौर पर इस्लाम कुबूल किया हो, यहां रस्मी मुसलमानों का ज़िक्र नहीं है चाहे वह कितने ही समय से नाम के मुसलमान चले आ रहे हों।

९४. इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया है कि जब कोई शख़्स नेकी की तब्लीग़ के लिये उठता है तो वहां के ज़ालिम लोग उसकी इस वजह से मुख़ालिफ़त (विरोध) करने लगते हैं कि उनके ज़ालिमाना क़ानून और तौर तरीक़े का समापन हो जायेगा। इसलिये उनको तबलीग़ करने वालों से एक प्रकार की दुश्मनी हो जाती है और उस तबलीग़ को बन्द करने के लिये तरह-तरह के दाँव पेंच इख़्तियार करते हैं, ताकि लोग उसकी हक़ की दावत को कुबूल न करें। (सनाई)

९५. मक्का के लोगों और उनके सरदारों को इस का इक़रार था कि बुजुर्गी, फ़ज़ीलत, बड़ाई और हसब-नसब वग़ैरह के लिहाज़ से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बुलन्द स्थान प्राप्त है। अबू सुफ़यान ने रूमी बादशाह हिरक़्ल के सामने साफ़ शब्दों में कहा था कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) हमारी क़ौम में ऊंचे मर्तबे और नसब वाले हैं, उन्होंने अपने जीवन में कभी झूठ नहीं बोला....पूरी तफ़सील बुख़ारी शरीफ़ में है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम की औलाद में से हज़रत इस्माईल को चुना और बनी इस्माईल में से बनू कनाना को, बनी कनाना में से कुरैश को, कुरैश में से बनी हाशिम को, और बनी हाशिम में से मुझको बुर्गुज़ीदा (ऊँचे मर्तबा का) बनाया (मुस्लिम) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह तआ़ला ने बंदों के दिलों को जांचा परखा तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दिल को सबसे बुजुर्ग और बेहतर पाया, चुनांचे नुबूवत के लिये आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को पसन्द फ़रमा लिया। फिर इस के पश्चात बाकी बंदों के दिलों को जांचा तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सहाबा के दिलों को सब से बेहतर पाकर उनको अपने रसूल का वज़ीर (सहायक) बनाया। आज वह लोग अल्लाह के दीन के वास्ते जिहाद करते हैं....पूरी हदीस। (अहमद)

९६. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से इस आयत के बारे में प्रश्न किया गया तो आपने फ़रमाया जब नूर सीना में भरा जाता है तो वह सीना इस्लाम के लिये कुशादा हो जाता है। सहाबा ने पुनः प्रश्न किया कि ऐसे लोगों की पहचान क्या है? आपने फ़रमाया : उन का दिल आख़िरत की तरफ़ झुक जाता है जो हमेशा का घर है और दुनिया से घृणा और नफ़रत पैदा हो जाती है जो मिट जाने वाली है, मौत के लिये वह हर समय तैयार रहते हैं और उस के लिये सामान तैयार करते हैं। (इब्ने जरीर)

لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ؕ
قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ۝ لَهُمْ دَارُ
السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝
وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ
مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا
اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ
اَجَّلْتَ لَنَا ۚ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا
مَا شَآءَ اللّٰهُ ۚ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝ وَكَذٰلِكَ
نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝
يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ
يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ
هٰذَا ۚ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ
الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا

१२७. और (तू जान ले!) यही (इस्लाम) तेरे रब की सीधी राह है। जो लोग नसीहत पाने को हों उनके लिये हम ने खुले-खुले निशान बयान कर दिये हैं। १२८. उनही के लिये अल्लाह के हां सलामती का घर है, उनके नेक अ़मलों के कारण अल्लाह ही उन का मुतवल्ली (देख-रेख करने वाला) है[97]। १२९. और जिस दिन उन सब को जमा करेगा (तो कहेगा) ऐ जिन्नों की जमाअ़त! (यानी ऐ शैतानो!) तुम ने बहुत से आदमी (दुनिया में) गुमराह किये[98]। और आदमियों में से उन के मित्र कहेंगे कि ऐ मेरे रब! हम एक दूसरे से लाभ उठाते रहे और जो वक़्त तूने हमारे लिये मुक़र्रर किया था उस पर हम आ पहुंचे हैं। अल्लाह कहेगा कि तुम सबका ठिकाना आग है उसी में हमेशा रहोगे, आगे अल्लाह के इख़्तियार में है। तेरा परवर्दिगार बड़ा हिक्मत वाला और बड़े इल्म वाला है[99]। १३०. और इसी प्रकार हम बाज़ ज़ालिमों को उनकी करतूतों की वजह से बाज़ के साथ मिला देंगे। १३१. ऐ जिन्नों और इन्सानों की जमाअ़त! क्या तुम्हारे पास तुम ही में से रसूल न आये थे जो तुम को मेरे आदेश सुनाते और उस दिन (क़ियामत के दिन) के मिलने से तुम को डराते? वह कह देंगे कि हम खुद अपने ख़िलाफ़ गवाह हैं। (कि बेशक रसूल आये थे) और (वह यह भी मानेंगे कि) हमको दुनिया की ज़िन्दगी ने धोखा दिया था और अपने ख़िलाफ़ गवाही देंगे (और मानेंगे) कि हम काफ़िर थे[100]।

....

९७. 'दारुस्सलाम' जन्नत का नाम है। जब हिसाब-किताब वग़ैरह के बाद जन्नती लोग उस में दाख़िल होंगे तो अल्लाह की तरफ़ से उनको सलाम पेश किया जायेगा, जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने दूसरे स्थान पर फ़रमाया है "दुनिया में तुम ने सब्र-शुक्र की ज़िन्दगी बिताई, इसलिये तुम पर आख़िरत का घर क्या ही खूब है" (सूरः र-अ़द २४)

९८. जाहिलीयत के ज़माना में जब कोई आदमी किसी जंगल में जाता तो कहता कि मैं इस जंगल के सरदार से पनाह मांगता हूं ताकि कोई शरीर जिन्न हमें नुक़सान न पहुंचा सके। चूंकि यह कहना एक तरह से इन्सानों का जिन्नों से नफ़ा उठाना था, इसलिये जिन्न यह सुनकर बहुत खुश होते और कहते कि अब हम तो जिन्नों और इंसानों (दोनों) के सरदार बन गये। (इब्ने जरीर)

९९. 'इल्ला मा शा-अल्लाह' से वह समयकाल मुराद है जिनमें जहन्नमियों को जहन्नम से निकाल कर : 'ज़म्हरीर' ➡

➲की तरफ़ भेज दिया जायेगा।(बैज़ावी) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि०. फ़रमाते हैं : यह ऐसी आयत है कि किसी के लिए यह उचित नहीं है कि अल्लाह की मख़लूक़ के बारे में अल्लाह की तरफ़ से कोई हुक्म लगादे। (इब्ने जरीर) कुरआन की और दूसरी आयतों पर ग़ौर करने से पता चलता है कि अल्लाह कभी नहीं चाहेगा कि काफ़िर और मुशिरक जहन्नम से निकलें, इसलिये 'इल्ला माशा-अल्लाह' से भी मुराद ताकीद है। मतलब यह हुआ कि 'मगर अल्लाह जो चाहे' और दूसरी आयतों से मालूम हुआ कि अल्लाह नहीं चाहेगा, तो इससे मुराद हुआ कि अल्लाह नहीं चाहेगा और सदा जहन्नम में रहना होगा (मवाहिब) अक्सर अहलेहदीस ने इसी पर इत्तिफ़ाक़ किया है कि काफ़िर व मुशिरक़ हमेशा-हमेशा के लिये जहन्नम में अ़ज़ाब पाते रहेंगे। जमहूर उलमा का भी यही कहना है कि जहन्नमियों को हमेशा-हमेशा दण्ड मिलता रहेगा, जैसे जन्नती लोगों को हमेशा आराम व चैन मिलता रहेगा (वहीदी) कुरआन की आयतें तो यही बतलाती हैं, यह अलग बात है कि अल्लाह की मर्ज़ी बहरहाल ग़ालिब है।

१००. इन्सानों की कोई आबादी ऐसी नहीं है जहां अल्लाह के रसूल न पैदा हुए हों और उन्होंने लोगों की रहनुमाई न की हो। अल्लाह का यह हरगिज़ क़ानून नहीं है कि वह हिदायत और रहनुमाई से महरूम कर के लोगों की पकड़ करे। (तर्जुमान)

كٰفِرِيْنَ ۝ ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى
بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ۝ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا
عَمِلُوْا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَرَبُّكَ
الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ
مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ
قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۝ؕ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ
بِمُعْجِزِيْنَ ۝ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ
عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ
الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا
ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا
لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ
فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى
شُرَكَآئِهِمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ

१३२. यह (नबियों का भेजना) इसलिये है कि तेरा परवर्दिगार लोगों को ज़ुल्म से और बेख़बरी में हलाक नहीं किया करता[१०१]। १३३. और हर एक की कमाई के मुताबिक़ उन को दर्जे मिलेंगे। क्योंकि तेरा परवर्दिगार उन (बन्दों के) कामों से बेख़बर नहीं। १३४. और तेरा परवर्दिगार बेनियाज़ और बड़ी रहमत वाला है। अगर चाहे तो तुम को दुनिया से उठा ले जाये और तुम से पीछे जिस को चाहे (तुम्हारा) ख़लीफ़ा बना दे जैसा कि तुम को तुम्हारे (पहले) बुज़ुर्गों की नस्ल से पैदा किया। १३५. जो तुम को वादा मिलता है अवश्य आने वाला है[१०२] और तुम अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते। १३६. तू कह दे कि भाइयो! तुम अपने तौर पर अ़मल करो मैं भी अ़मल किये जाता हूं। जिसका परिणाम अच्छा होगा तुम खुद ही मालूम कर लोगे[१०३]। (अल्लाह के हां नियम है कि) ज़ालिम लोग मुराद नहीं पाया करते। १३७. और अल्लाह की पैदा की हुई खेती और चौपायों में से अल्लाह का हिस्सा मुक़र्रर करते हैं फिर अपने ख़्याल में (स्वयं ही) समझ रखते हैं कि यह (ढेर) तो अल्लाह का है➲

और यह हमारे साझियों का[१०४] फिर जो उन के (गढ़े हुए) साझियों का हो तो (किसी प्रकार भी) अल्लाह की तरफ़ न जाने पाये, और जो अल्लाह के हिस्से का हो उनके साझियों की ओर पहुंच सकता है। (यह नालाइक़ कैसे) बुरे (और ग़लत) फ़ैसले करते हैं[१०५]। १३८. इसी प्रकार बहुत से मुश्रिकों को

....

१०१. यानी अल्लाह ऐसा नहीं करता कि किसी क़ौम की तरफ़ अच्छे बुरे कामों की तरफ़ हिदायत देने वाला रसूल न भेजे और फिर अचानक उस क़ौम पर अ़ज़ाब नाज़िल कर दे। इसलिये अल्लाह अवश्य ही पहले नबी भेजता है और उनकी रहनुमाई करता है, फिर क़ौम के लोग अपनी इच्छा से ईमान या कुफ़्र इख़्तियार करते हैं (सनाई) यह बात अपने स्थान पर बिल्कुल तै है कि अल्लाह को जानने पहचानने और तौहीद को अपनाने की शिक्षा रसूलों द्वारा इन्सान और जिन्नात दोनों ही मख़्लूक़ को दे दी गयी है, इसलिये उनमें से जो भी कुफ़् की हालत में हलाक हुआ वह हुज्जत तमाम होने के पश्चात ही हलाक हुआ।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० का कहना है कि रसूल तो केवल इंसानों में आये जिन्नो में 'नज़ीर' (डराने वाले) आये, इसलिये जिन्नों के रसूल से मुराद उनके नज़ीर (डराने वाले) हैं। 'नज़ीर' उन को कहा जाता है जो रसूलों से अल्लाह का कलाम सुन कर अपनी क़ौम को पहुंचाते और उन्हें डराते थे। (मवाहिब)

१०२. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० का कहना है कि रसूल तो केवल इन्सानों में आये जिन्नों में 'नज़ीर (डराने वाले) आये, इसलिये जिन्नों के रसूल से मुराद उनके नज़ीर (डराने वाले) हैं। 'नज़ीर' उन को कहा जाता है जो रसूलों से अल्लाह का कलाम सुनकर अपनी क़ौम को पहुंचाते और उन्हें डराते थे।

१०२. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः 'ऐ आदम की औलाद! अगर तुम को कुछ अक़्ल और तमीज़ है तो अपने आपको मुर्दा समझो। उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है हक़ीक़त यही है कि जो तुम से वादा किया गया है वह अवश्य आने वाला है और तुम उसे रोक नहीं सकते।" (इब्ने अबी हातिम)

१०३. अल्लाह ने अपना वादा अंतिम संदेष्टा मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़रिये पूरा कर दिया। मक्का और पूरा अ़रब महाद्वीप फ़तह हो गया तमाम मुश्रिकों को पराजय का मुंह देखना पड़ा, यहां तक कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बाद ख़ुलफ़ा के शासनकाल (दौरे-ख़िलाफ़त) में चारों तरफ़ इस्लाम फैल गया और अल्लाह का यह वादा पूरा हो गया "अल्लाह अपने नूर को फैला कर रहेगा अगरचे मुश्रिकों को चाहे जितना ना पसंद हो। (सूरः सफ़्फ़ः-आयतः ८)

१०४. मुश्रिकों के गन्दे अक़ीदों, बुरे ख़यालात और मुश्रिकाना कामों में से एक यह भी था कि वह मन्नत और नज़्र मानते थे कि पैदावार और चौपायों (मवेशियों) में से इतना हिस्सा अल्लाह के नाम पर और इतना बुतों के नाम पर निकालेंगे। अल्लाह के नाम का हिस्सा तो फ़क़ीरों मुहताजों को दे देते थे और बुतों का उनके मुजाविरों को। ख़ुदा के हिस्से में कमी-बेशी तो चल जाती थी, मगर बुतों का हिस्सा निकालने में बड़ी एहतियात से काम लेते थे और रत्ती बराबर भी कमी नहीं करते थे (सनाई) अल्लाह को छोड़कर किसी दूसरे की नज़्र या मन्नत मानना शिर्क है, ऐसा करने से आदमी इस्लाम से निकल जाता है। हां, अगर नियाज़ तो अल्लाह की करे और उसका सवाब किसी की रूह को पहुंचाना चाहे तो यह और बात है। सदक़ा-ख़ैरात, दुआ़ का सवाब अहलेहदीस के नज़दीक मुर्दों को पहुंच सकता है। लेकिन मोतज़ला फ़िर्क़े ने इसका भी इन्कार किया है। (वहीदी)

एक सहाबी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अनुरोध किया कि मेरी वालिदा का अचानक देहान्त हो गया और वह कुछ वसीयत न कर सकीं, अब मैं उनको किस प्रकार सवाब पहुंचाऊं? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : तुम उनके लिय एक कुंआ खुदवा दो ताकि उसका सवाब बराबर उनको मिलता रहे, चुनांचे सहाबी ने ऐसा ही किया। इसी प्रकार मस्जिद बनवा देना और कुरआन व हदीस को प्रकाशित करवा देना बेहतरीन सदक़ा है। जिसका सवाब हमेशा मिलता रहेगा। ऐ अल्लाह हमारी इस ख़िदमत को भी कुबूल फ़रमा (दावूद राज़)

१०५. यह लोग जो अल्लाह और बुतों में हेरा-फेरी करते हैं उसकी दलील यह देते हैं कि चूंकि अल्लाह बेनियाज़ है, वह किसी का मोहताज नहीं और न ही उसके हिस्से में थोड़ी कमी कर देने से नाराज़ होता है, इसके विपरीत हमारे शरीक पीर फ़क़ीर और बुत चुंकि मख़्लूक़ हैं इसलिये उनके अंदर अल्लाह जितना हौसला नहीं है, यह मामूली सी कोताही पर भी भड़क उठते हैं और नाराज़ होकर तबाही डाल दिया करते हैं। यह नालाइक़ कैसे बुरे और ग़लत फ़ैसले करते हैं। (सनाई)

مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ
وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ۚ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ
فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ
وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ
وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ
اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ۚ سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا
كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ
الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓى اَزْوَاجِنَا ۚ
وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ۚ سَيَجْزِيْهِمْ
وَصْفَهُمْ ۚ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ
قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا
رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ۚ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا
مُهْتَدِيْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ

(मादा) औलाद का मार डालना उनके बनाये हुए माबूदों ने सुन्दर बनाकर दिखाया है। ताकि (आख़िरकार) उन पर तबाही लायें और उनका (अस्ल) दीन उन पर मुश्तबह (संदिग्ध)कर डालें[१०६]। और अगर अल्लाह चाहता तो कभी भी यह काम न करते, इसलिये तू इनको झूठ गढ़ने की हालत में छोड़ दे[१०७]। १३९. और कहते हैं कि यह चौपाए और खेती (हमारी रस्मी पाबंदी से) इस्तेमाल के योग्य नहीं हैं। उनको कोई नहीं खा सकता मगर वही जिस को हम अपने ख़्याल में चाहें। और कई एक चौपाए ऐसे भी हैं जिन पर सवारी करना हराम समझा गया है, और कई चौपायों पर अल्लाह का नाम भी नहीं लेते (इन ढकोसलों को अल्लाह की तरफ़ से बताते हुए) अल्लाह पर झूठ बांधते हैं। अल्लाह उन के झूठ बांधने का उनको दण्ड देगा। १४०. और कहते हैं कि जो उन चौपायों के पेट के अन्दर बच्चा है वह केवल हमारे मर्द खायें और महिलाओं को उनका खाना मना है[१०८] और अगर वह मरा हुआ (पैदा) हो तो वह (फिर मर्द, औरत) सब उसमें शरीक हैं अल्लाह उनको इस बयान का बदला देगा। बेशक वह बड़ा हिकमत वाला जानने ➲

वाला है[१०९]। १४१. (इस में कुछ संदेह नहीं कि) जो लोग अपनी (मादा) औलाद को जिहालत और बेवकूफ़ी से क़त्ल कर डालते हैं और अल्लाह पर झूठ बांध कर अल्लाह की दी हुई (हलाल) रोज़ी को हराम समझते हैं। यह बड़े टोटे (नुक़सान) में हैं। और बहके हुये और हिदायत की राह से हटे हुए हैं। १४२. अल्लाह वही है जो हरे-भरे बाग़, बेलदार और ग़ैरबेलदार पैदा करता है।

....

१०६. यानी मुश्रिक जो मादा संतान (स्त्री प्राणी) को मार डालते हैं यह उनके शिर्क करने की वजह से है, क्योंकि शिर्क करने से इन्सान का दिल व दिमाग़ इस प्रकार का बन जाता है कि वह बुरे अख़्लाक़, आचरण और अ़मल को बुरा नहीं समझता। (सनाई)

१०७. यानी अल्लाह अगर उनको हिदायत पर मजबूर करे तो वह हिदायत पा सकते हैं लेकिन उसने कुछ इख़्तियारी कामों में उनको मानने या न मानने, करने या न करने पर इख़्तियार दे रखा है। और यह नियम और क़ानून है कि जिस अ़मल के करने या न करने का बंदे को इख़्तियार हासिल न हो, तो उसके करने पर सवाब नहीं मिलता। यही कारण है कि अल्लाह उन्हें ज़बरदस्ती हिदायत पर मजबूर नहीं करता। (सनाई)

१०८. यहां पर मुश्रिकों की कुछ और बेवक़ूफ़ियों का बयान हो रहा है जैसे (१) लड़कियों को क़त्ल करके इस बात पर फ़ख़्र करते और गर्व के साथ सभाओं में बयान करते (२) पैदावार पर चौपायों में से एक हिस्सा बुत के नाम वक़्फ़ कर देते और इसको मुजाविरों और पुजारियों के अ़लावा और कोई नहीं खा सकता। (३) बुतों के नाम पर छोड़े हुए जानवरों से काम लेना नाजाइज़ समझते थे (४) जो जानवर बुतों के नाम पर ज़ब्ह करते उन पर अल्लाह का नाम नहीं लेते थे (५) ज़ब्ह होने वाले जानवर के पेट से अगर ज़िन्दा बच्चा निकलता तो उसे केवल मर्द खाते थे, औ़रतों के लिये उसका खाना हराम था (६) अगर मुर्दा निकलता तो मर्द-औ़रत सभी के लिए उसका खाना जायज़ था।

उनकी यह सारी बातें जिहालत की वजह से थीं। हालांकि वास्तविकता यह है कि जितनी अच्छी वस्तुएं हैं, वह सब इन्सान के लिये पैदा की गयी हैं, उन को बेखटके खाओ-पियो,। हां, इतना अवश्य है कि फ़ुज़ूल ख़र्ची न करो और अल्लाह की राह में भी ख़र्च करो। यही बात हक़ है और यही अक़्ल में समाने वाली है, इसके अ़लावा जो कुछ है वह ढकोसला और शैतान का वसवसा है। (सनाई)

१०९. 'वह जानने वाला है' सभी के कामों की ख़बर रखता है, उसका कोई भी काम हिक्मत से ख़ाली नहीं रहता है। अगर वह किसी को लड़की देता है तो वह भी हिक्मत से ख़ाली नहीं और किसी को लड़का देता है तो वह भी हिक्मत से ख़ाली नहीं, मगर यह जाहिल नहीं समझते। इनका यही ख़्याल है कि जिस के घर लड़की पैदा होती है वह अशुभ और अभागा माना जाता है। इसलिये यह अवसर पाकर लड़कियों को मार डालते थे। (सनाई)

चौपायों और पैदावार में से कुछ हिस्सा बुतों की देख रेख करने वाले और उनकी सुरक्षा करने वाले पुजारी ही खा सकते थे। कुछ जानवरों को केवल मर्द ही खा सकते थे, महिलाएं उनसे वंचित रहती थीं। आज भी हमारे हिन्दुस्तान में बहुत से नाम की मुसलमान महिलाएं ऐसी मिलेंगी जो मुश्रिकों के ख़्यालात की पैरवी कर रही हैं। यह भी कुछ खानों में अछूता समझती हैं। यह सब कुफ़्र और शिर्क की रस्में हैं। मुसलमानों के लिये अनिवार्य है कि वह उनसे तौबा करायें और उन महिलाओं को इस प्रकार की रस्मों के चंगुल से

➲नजात दिलायें। (वहीदी) बीबी की सन्-हक, मुहर्रम का हलुवा वग़ैरह यह सब नाजाइज़ है।

وَّغَيْرَ مَعْرُوشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ
وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ
كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖۤ اِذَاۤ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ۖ
وَلَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ وَمِنَ
الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ؕ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ
وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝
ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ
اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا
اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ نَبِّئُوْنِيْ بِعِلْمٍ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ
الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ
اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ اَمْ كُنْتُمْ
شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ

और खजूरें और (हर क़िस्म की आम) खेती (जैसे गेहूं वग़ैरह) जो खाने में विभिन्न होती हैं और ज़ैतून और अनार (कुछ ज़ाहिर और बातिन में भी) मिलते-जुलते हैं और (कुछ) मुख़्तलिफ़ हैं। और जब फलें तो उन का फल खाओ और काटने के दिन अल्लाह का हक़ (भी फ़क़ीरों को) दिया करो[११०]। (और अधिक पैदावार को देखकर) फुज़ूल न उड़ाया करो। फुज़ूल ख़र्च करने वाले अल्लाह को हरगिज़ नहीं भाते[१११]। १४३. और (देखो!) अल्लाह ने चौपायों में से कुछ (लंबे क़द बोझ उठाने वाले) पैदा किए और बाज़ ज़मीन से लगे हुए[११२]। अल्लाह के दिये हुए से खाओ और शैतान की चाल न चलो (कि दे तो अल्लाह, और हिस्सा निकालो ग़ैरों का) वह (शैतान) तो तुम्हारा खुला दुश्मन है[११३]। १४४. (सुनो!) अल्लाह ने चारपाये (नर-मादा) आठ प्रकार के पैदा किये हैं, भेड़ों में से दो और बकरियों में से दो। (उनसे) मालूम करो कि (बताओ तो सही) अल्लाह ने नर जानवर हराम किये हैं या मादा, या जो मादा के पेट से निकले (चाहे वह नर हो या मादा) मुझे तहक़ीक़ी बात बताओ अगर तुम (अपने दावा में) सच्चे हो (कि अल्लाह ने उन सब को या उनमें से कुछ को हराम किया है)। १४५. और ऊंटों में से दो और गाय की क़िस्म में से भी दो पैदा किये हैं। तू उनसे मालूम कर (कि उनमें से भी) क्या अल्लाह ने नर हराम किये हैं या मादा? या वह जो मादा के पेट से निकले? क्या जिस समय अल्लाह ने इस बात का तुम को आदेश दिया था तुम ख़ुद उस समय वहाँ मौजूद थे? पस (तू उनसे कह दे) कि जो लोग

....

११०. हज़रज इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि इसका अर्थ यह है कि खेती कटने के बाद जब नाप तौल हो जाये तो जितनी ज़कात फ़र्ज़ होती है उतनी निकालो। यह बात मालूम रहे कि ज़कात मदीना शरीफ़ में फ़र्ज़ हुई। और यह सूरः मक्की है इसलिये हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० के क़ौल पर ग़ौर करने की ज़रूरत है। हज़रत सईद बिन ज़ुबैर और अता वग़ैरह से रिवायत है कि इस आयत का अर्थ यह है कि फ़सल काटने के समय जो फ़क़ीर, मिस्कीन और मांगने वाले खेतों में आ जायें तो उन को ख़ाली हाथ वापस न लौटाओ।

सहाबा का यह नियम था कि जो भी फ़क़ीर आ जाता तो उसे ज़कात के अलावा कुछ न कुछ अवश्य दे दिया करते थे। अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि० ने इस आयत की तफ़सीर में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत की है कि जो दाना बालियों में से गिर जाये वह मुराद है। (इब्ने मर्दूया)

१११. शाने-नुज़ूल : हज़रत साबित बिन क़ैस रज़ि० ने खजूर के बाग़ से फल तोड़ा और दिन भर फ़क़ीरों को तक़सीम करते रहे यहां तक कि शाम होते हाते उनके पास कुछ भी न बचा। इस पर अल्लाह ने फ़रमाया कि यह फ़ुज़ूल ख़र्ची है जो अल्लाह को नापसंद है। इमाम सदी का कहना है कि अपने माल को इस तरह से न ख़र्च करो कि मोहताज होकर बैठ जाओ। एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : सर्वप्रथम अपने बाल बच्चों पर ख़र्च करो, फिर जो बच जाये उसमें से दूसरों पर ख़र्च करो। हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ैद बिन अस्लम रज़ि० फ़रमाते हैं कि यह आयत मुसलमानों के सरदारों के हक़ में नाज़िल हुई है। जो ज़कात की वसूली करते हैं। उनको आदेश किया गया है कि जितना वसूली का हक़ बनता है उससे अधिक न लें और ग़ैर मुस्तहिक़ को न दें। (तलख़ीस)

११२. इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि 'हमूल' उन जानवरों को कहते हैं जिन पर बोझ लादा जाता है। जैसे, ऊंट, घोड़ा, ख़च्चर, गधा आदि। और 'फ़र्श' बकरी, भेड़ वग़ैरह को कहा जाता है, इसलिए कि यह ज़मीन से अधिक नज़दीक होते हैं। (इब्ने जरीर)

११३. 'शैतान खुला दुश्मन है' वह तो बनी आदम से हर प्रकार की दुश्मनी करता है। उन मुश्रिकों के दिलों में विभिन्न प्रकार के वसवसे डाल दिये हैं कि फ़लां हलाल है और फ़लां हराम। फिर इसी एक मुद्दे पर उन को शैतान जमने भी नहीं देता कभी किसी नर को हराम ठहरा दिया, तो कभी किसी मादा को। मज़े की बात यह है कि जिस नबी ने हलाल, हराम बताया है उसकी मानते ही नहीं। इनके हां तो नबी कोई और है और चलती शैतान की है। (सनाई)

افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ اِنَّ
اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ قُلْ لَّآ اَجِدُ فِيْ
مَآ اُوْحِيَ اِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلٰي طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗٓ اِلَّآ اَنْ
يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ
رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ
بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَعَلَي الَّذِيْنَ
هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِيْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ
حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَآ اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَآ
اَوِ الْحَوَايَآ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۭ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ
وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ

अल्लाह (के नाम) पर झूठ लगाते हैं ताकि लोगों को नासमझी में गुमराह करें[114] उनसे बढ़कर कोई भी ज़ालिम नहीं। अल्लाह ज़ालिमों को हरगिज़ राह नहीं दिखाया करता[115]। १४६. तू कह! मैं तो अपनी इल्हामी किताब में से किसी खाने वाले के हक़ में जो खाना चाहे सिवाए खुद से मरे हुए जानवर और ज़ब्ह के समय बहने वाले ख़ून और सुअर के गोश्त के, कोई वस्तु हराम नहीं पाता[116]। पस यह सब हराम (और नापाक हैं) और वह गुनाह की चीज़ जो ग़ैरुल्लाह के नाम से पुकारी जाये[117] फिर भी जो शख़्स (निक निय्यत से) न नाफ़रमानी करने वाला, न ज़रूरत की हद से आगे बढ़ने वाला (भूक से) मजबूर हो तो तेरा रब➲

رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ۞ سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكْنَا وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ؕ

बड़ा बख़्शने वाला रहम वाला है। १४७. और यहूदियों पर हमने नाख़ून वाले जानवर (यानी चिरे हुए खुरों वाले) और गाय और भेड़ बकरियों की चर्बी हराम की थी, मगर उस क़दर जो उनकी पीठ या आंतों में या हड्डियों से चिमटी रहे (वह हलाल थी) यह उनकी अवज्ञा करने की सज़ा थी और हम (यानी अल्लाह) तो निःसंदेह सच्चे हैं[११८]। १४८. फिर भी तुझे झुठलायें तो तू कह कि तुम्हारा परवर्दिगार बड़ा कुशादा और रहमत वाला है, और उस का अ़ज़ाब अपराधियों की क़ौम से (तो किसी तरह से भी) फिरा नहीं करता। १४९. भविष्य में मुश्रिक लोग (कहते-कहते यह भी) कहेंगे कि अगर अल्लाह चाहता तो न हम शिर्क करते और न हमारे बाप-दादा, और न हम किसी वस्तु को अपने ऊपर हराम समझते[११९]।

....

११४. अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में अ़रब के लोगों की उस जिहालत (अज्ञानता) को बयान किया है जो इस्लाम लाने से पूर्व उनके अंदर मौजूद थी। उन्होंने पैदावार, फलों और जानवरों वग़ैरह की मुख़्तलिफ़ क़िस्में और हिस्से बना रखे थे और किसी को हराम और किसी को हलाल समझते थे। जैसे, जानवरों में 'बहीरा, वसीला, साइबा' वग़ैरह को हराम कहते थे। यहां पर साथ ही अल्लाह ने उन तमाम जानवरों की हलाल क़िस्मों को बयान फ़रमा दिया है और यह भी बता दिया है कि यह सब हलाल हैं और इन्सानों के लाभ के लिय इन सबको पैदा किया है। इसलिये इन्सानों के लिए हलाल है कि उन को खायें, उन का दूध पियें, उन पर सवारी करें, उन पर बोझ लादें।

यह याद रहे कि दरिन्दों (फाड़ खाने वालों) में जैसे कुत्ता, बिल्ली, सियार, भेड़िया, शेर, चीता वग़ैरह और परिन्दों में जो पन्जा से पकड़ने वाले और शिकार करने वाले हैं जैसे चील, बाज़, उक़ाब, शिकरा, उल्लू वग़ैरह और बिलों (सूराख़ों) में रहने वाले जैसे सांप, बिच्छू, छछूंदर वग़ैरह सब हराम हैं। ख़रगोश अगरचे बिल में रहता है लेकिन हलाल है। (सलफ़िया)

११५. यानी बिना किसी दलील के लोगों को भड़काने के लिये झूठ मूट का अल्लाह पर इल्ज़ाम लगाया, तो इन से बढ़कर कोई भी अत्याचारी नहीं है। अ़रब में अ़म्र बिन लुहयिय नामक एक व्यक्ति ने सब से प्रथम 'बहीरा' करना (कान काटना) और सांड छोड़ने का तरीक़ा निकाला। और दीने-इब्राहीम को बिगाड़ा। और इन्हीं अत्याचारियों में आज-कल के वह लोग भी आ जायेंगे जो अ़म्र की तरह दीन में नई बातें पैदा करते हैं और ऐसे कामों के करने का आदेश देते हैं जिनके करने का अल्लाह और उसके रसूल ने कोई हुक्म नहीं दिया। सलामती, अम्न और शान्ति की राह केवल यही है कि आदमी, सहाबा और नेको-कार असलाफ़ के समय में जो तरीक़ा था उसी पर जमा रहे।

एक सहीह हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "अल्लाह तआ़ला आ़लिमों को उठाकर इल्म को उठा लेगा और लोग जाहिलों को अपना अगुवा मान लेंगे, चुनाँचे वह जाहिल रहनुमा "हम तो डूबेंगे समन तुम को भी लेकर डूबेंगे" की तरह होंगे। (मवाहिब)

११६. मक्का में उस समय तक जो वहिय हुयी थीं उनमें केवल इतनी ही वस्तुएं हराम थीं जिनका ज़िक्र

➲इस आयत में है। इस का यह मतलब हरगिज़ नहीं कि इनके अ़लावा अब और वस्तुएं हराम नहीं हैं। बल्कि इस आयत के नाज़िल होने के बाद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जिन-जिन वस्तुओं को हराम कहा है या इस आयत के बाद और दूसरी आयतों में जो वस्तुएं हराम की गयी हैं, सब हराम होंगी। एक मर्तबा हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने इस आयत को पढ़कर फ़रमाया "अल्लाह ने जिस को हलाल किया वह हलाल और जिनको हराम किया वह हराम हैं और जिसके बारे में कोई ज़िक्र नहीं वह माफ़ (हलाल) है। (अबू दावूद, हाकिम)

११७. किसी पीर, फ़क़ीर, वली, बुज़ुर्ग, शहीद के नाम पर नेकी की नियत से उस को पुकारा जाये, तो वह भी हराम है। (सनाई) आज कल जाहिल लोग मदार बाबा, साईं बाबा, सालार बाबा और इस प्रकार के और दूसरे पीरों के नाम पर जानवर छोड़ते हैं और उनके नाम से उन को ज़ब्ह करते हैं, यह सब भी "मा-उहिल्ल लिग़ैरिल्लाह" (जो अल्लाह के अ़लावा के नाम से पुकारी जाये) में दाख़िल है और हराम है। इन जानवरों का गोश्त हरगिज़ नहीं खाना चाहिए, कुरआन की इस आयत की रोशनी में ऐसा गोश्त हराम हो जाता है। (राज़)

११८. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़त्ह मक्का के वर्ष फ़रमाया : "अल्लाह और उसके रसूल ने शराब, मुर्दार, सूद और बुतों के लेन देन को हराम कर दिया है।" लोगों ने मालूम किया कि मुर्दार की चर्बी के बारे में क्या हुक्म है? हम उससे खालें चिकनी करते हैं, नाव में पोतते हैं और मोमबत्ती बनाकर चिराग़ भी जलाते हैं । आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "सब हराम है।" फिर आप ने फ़रमाया: "अल्लाह यहूद पर लानत करे, उन पर भी चर्बी हराम थी लेकिन उन्हों ने बेचकर कमाई की (बुख़ारी) एक दूसरी रिवायत में है कि अल्लाह ने एक चीज़ को किसी क़ौम पर हराम कर दिया है तो उस को बेचकर उस का पैसा भी खाना हराम है। (तल्ख़ीस)

११९. यह लोग अपनी कम इल्मी की वजह से अल्लाह की मर्ज़ी और रज़ा में फ़र्क़ नहीं समझते हैं। उस की मर्ज़ी के बग़ैर तो दुनिया में कोई काम संभव ही नहीं है। लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि हर एक काम जो दुनिया में उसकी मशिय्यत और मर्ज़ी से हो, उस से वह राज़ी भी हो। दुनिया के हाकिमों को देखो कि जनता और प्रजा बहुत से काम क़ानून की अनुमति के मुताबिक़ करते हैं मगर हाकिम उनसे राज़ी नहीं होते। इसी प्रकार खुदाई क़ानून को समझना चाहिए कि जब कोई आदमी अच्छा या बुरा काम करने लगे तो अल्लाह उस की इच्छा के अनुसार आसानी पैदा कर देता है और ज़रीआ़ (साधन)भी फ़राहम कर देता है, उस का जैसा काम हो वैसा बदला देता है। (सनाई)

كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى ذَاقُوْا
بَاْسَنَا ؕ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا ؕ
اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ ﴿۱۴۸﴾
قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ فَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ
اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۴۹﴾ قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ
اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ

इसी प्रकार उन से पहले लोगों ने (अल्लाह के हुक्मों से) इन्कार किया था यहां तक कि हमारे अ़ज़ाब का मज़ा चखा। तू कह! क्या तुम्हारे पास कोई इल्मी दलील है जो हमें बतला सको? (कुछ नहीं बतला पाओगे) तुम तो सिर्फ़ वहमों पर चलते हो और महज़ अटकलें ही लगाते हो। १५०. तू (उन से) कह! अल्लाह ही की (बतलाई हुई) दलील ग़ालिब है, पस (सुनो!) अगर वह चाहता तो तुम➲

وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَآءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ۝ قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ أَلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ مِنْ إِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُمْ

सबको हिदायत दे देता[१२०]। १५१. तू (उनसे) कह! अपने गवाह लाओ जो (इस बात की) गवाही दें कि अल्लाह ने (यह सब कुछ जिस को तुम हराम समझते हो) हराम की है, फिर अगर वह गवाही दें भी तो तुम उन के मुवाफ़िक़ हरगिज़ गवाही न देना, और जो लोग हमारे हुक्मों को झुठलाते हैं और जो आख़िरत की ज़िन्दगी पर यक़ीन नहीं रखते और जो अपने परवर्दिगार के साथ ग़ैरों को बराबर करते हैं। तुम उनकी मर्ज़ी पर न चलना। १५२. तू कह (कि) आओ मैं तुमको बताऊं जिन चीज़ों का तुम्हारे परवर्दिगार ने तुम को हुक्म दिया है (सब से प्रथम यह है) कि उसके साथ किसी चीज़ को साझी न बनाओ[१२१]। और मां-बाप के साथ एहसान करो[१२२] और अपनी औलाद को भूख के डर से क़त्ल न करो[१२३] हम ही तो तुमको और उनको भी रोज़ी देते हैं और खुली और छुपी बेहयाई (इस प्रकार छोड़ो कि उस) के क़रीब भी न जाओ[१२४] और जिस जान का मारना अल्लाह ने (तुम्हारे वास्ते) हराम किया है उसको नाहक़ न मारो[१२५]। इन ही बातों का अल्लाह ने तुम को हुक्म दिया है

....

१२०. इससे यह न समझो कि अल्लाह का न चाहना भी उसकी मर्ज़ी की दलील है। ऐसी बात नहीं है बल्कि बात यह है कि अल्लाह ने बंदों को एक ताक़त और इख़्तियार दे रखा है। उस इख़्तियार को बंदा जिस काम में चाहे इस्तेमाल कर सकता है। चाहे तो उसी इख़्तियार के तहत एक नेकी करे या बदी। इस आयत का मतलब है। ऐ रसूल! तुम उनको इस आयत का मतलब समझा दो और शिर्क, कुफ़्र और हराम चीज़ों के बारे में भी उन्हें बता दो........(सनाई)

१२१. मुस्लिम शरीफ़ में अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "जो शख़्स इस हाल में मरा कि उसने अल्लाह के साथ तनिक भर किसी को शरीक नहीं किया तो वह बिला शुब्हा जन्नत में दाख़िल होगा।" इस हदीस का अर्थ यह है कि उसने अ़मल, अ़क़ीदा, ज़ात और उसकी सिफ़ात में किसी को शरीक न किया हो। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० की हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि "अल्लाह के साथ हरगिज़ किसी को शरीक न करना चाहे तुझ को क़त्ल कर दिया जाए या जला कर मार दिया जाए।" (हदीस)

१२२. बुख़ारी, मुस्लिम में हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है वह कहते हैं। कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा:- कौन सा अ़मल सबसे अफ़ज़ल है? आपने फ़रमाया : अव्वल समय पर नमाज़ पढ़ना। मैंने पूछा इसके बाद, आपने फ़रमाया: माता-पिता की आज्ञा मानना और उनके साथ भलाई करना।" एक दूसरी हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया "जन्नत मां के पैरों के नीचे है।"

१२३. 'इमलाक़' का अर्थ है "ग़रीबी, मोहताजी" हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है हाफ़िज़ इब्ने कसीर

➲वग़ैरह ने इससे मुराद वह "ग़रीबी और मोहताजी लिया है जो अपने हाथों और करतूतों के नतीजा में हासिल हो। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा कि शिर्क के बाद सबसे बड़ा पाप कौन सा है? आपने फ़रमाया : "अपनी औलाद को इस डर से क़त्ल कर दे कि वह उसकी रोज़ी में शामिल हो जाएगा।" (बुख़ारी, मुस्लिम) गर्भपात करना, गर्भ निरोधक दवाएं खाना वग़ैरह इस प्रकार की तमाम चीज़ें क़त्ल में शामिल हैं। इस्लाम इन्हें प्रयोग में लाने की अनुमति हरगिज़ नहीं देता। (राज़)

१२४. सहीह हदीस में रिवायत है कि अल्लाह से बढ़कर कोई ग़ैरत वाला नहीं है। इस लिये हर प्रकार की खुली छुपी बुराइयों को हराम क़रार दिया है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि जाहिलिय्यत के ज़माना में लोग छुप-छुपा कर ज़िना कर लेने में कोई हरज नहीं समझते थे इसलिये इस आयत ने उसको भी उजागर कर दिया।

१२५. यानी हक़ के साथ शरीअ़त ने जितना मारने की अनुमति दी है, उतना मारना जाइज़ है। जैसे शरीअ़त ने क़िसास का हुक्म दिया है, मुर्तद को क़त्ल करने का, शादी शुदा मर्द और औ़रत को ज़िना के जुर्म में पत्थरों से मार मार कर हलाक करने का। अपनी शहादत से क़ब्ल हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि० ने फ़रमाया : अल्लाह की क़सम! मैंने न कभी ज़िना किया और न दीन में कोई तब्दीली की, न मैंने किसी को क़त्ल किया, फिर क्यों तुम लोग मुझे क़त्ल करने पर उतारू हो (अहमद) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : जिसने किसी ज़िम्मी (जो मुसलमान की पनाह में जीता हो) को क़त्ल किया तो उसने अल्लाह का ज़िम्मा तोड़ा और वह जन्नत की खुश्बू तक न पायेगा (जन्नत में जाना तो दूर की बात है) (तिर्मिज़ी शरीफ़) आप इससे अंदाज़ा लगा सकते हैं कि जब ज़िम्मी के क़त्ल पर यह सज़ा है तो मुसलमान को क़त्ल करने वाले का क्या अन्जाम होगा? विशेषकर जिन लोगों ने हज़रत उस्मान रज़ि० को क़त्ल किया उनका हाल जो होगा उसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا
بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَاَوْفُوا
الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا
وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ
وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا
فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ
سَبِيْلِهٖ ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝ ثُمَّ
اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَ
تَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَاۗءِ

ताकि तुम (उन पर अ़मल करने से) अक़्लमंद बनो। १५३. और अनाथ के बालिग़ होने तक उस के माल को हाथ भी न लगाओ मगर किसी अच्छे ढंग से (जिस में उसको भी लाभ मिले) और नाप और तौल इन्साफ़ से पूरा किया करो, हर किसी शख़्स को उसकी ताक़त (क्षमता) से बढ़कर तकलीफ़ नहीं दिया करते[१२६], और जब कोई बात कहने लगो तो इंसाफ़ से कहा करो चाहे कोई (फ़रीक़ तुम्हारा) क़रीबी ही क्यों न हो और अल्लाह के (नाम से दिये हुए) वादे को पूरा करो। इन्हीं बातों का अल्लाह ने तुम को हुक्म दिया है ताकि तुम नसीहत पाओ। १५४. और (जान लो कि) यही मेरा सीधा रास्ता है। पस तुम उसी की ताबेदारी करो, और दूसरे रास्तों की ताबेदारी न करो वरना तुम को अल्लाह की राह से ➲

➲तितर-बितर कर देंगे। इसी बात का अल्लाह ने तुम को आदेश दिया है ताकि तुम परहेज़गार बनो[१२६]। १५५. और हमने मूसा को किताब दी थी ताकि नेकों पर नेमत पूरी करें और हर एक (मज़हबी) काम की तफ़सील और हिदायत

رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ۝ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى طَآئِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا

और रहमत (से वह किताब भरी हुई थी) ताकि वह अपने परवर्दिगार (की मुलाक़ात) पर ईमान लायें[१२८]। १५६. और यह बरकत वाली किताब (कुरआन शरीफ़) हमने नाज़िल की इसलिए तुम उसकी पैरवी करो (और तक़्वा इख़्तियार करो) ताकि तुम पर रहम हो[१२९]। १५७. इसलिये कि तुम (अ़रब के लोग) कहने लगो कि (आसमानी) किताब तो हमसे पहले दो गरोहों (यहूदो, नसारा) को मिली थी।

....

१२६. यानी आ़म तौर पर जो बराबरी मानी जाती है उसे पूरा कर दिया करो। जैसे गेहूं की बराबरी अलग है, सोने चांदी की अलग, इसलिये हर चीज़ को बराबरी से दिया करो। (सनाई)

१२७. हज़रत इब्ने मसूऊद रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने मुबारक हाथ से एक लकीर खींच कर फ़रमाया : कि यह सीधा रास्ता है। फिर उस सीधी लक्कीर के दायें बायें बहुत सी लकीरें खींच कर फ़रमाया। यह टेढ़े रासते शैतानी रास्ते हैं, शैतान इस सीधे रास्ते से हटा कर इन टेढ़े रास्तों की तरफ़ बुलाता है। फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह आयत तिलावत फ़रमाई "व अन्न हाज़ा सिराती मुस-तक़ीमा!......। (अहमद)

इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं। कि यह तीन आयतें वह हैं जो किसी नबी की शरीअ़त में भी मन्सूख़ नहीं हुई हैं। और यह कुरआन मजीद की जड़ हैं, जो कोई इन पर अ़मल करेगा वह जन्नत में जायेगा और जो कोई इन को छोड़ेगा वह जहन्नम में जायेगा। आपने फ़रमाया : अल्लाह ने इन आयतों में मोमिनों को इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद का हुक्म दिया है और इख़्तिलाफ़ से मना किया है। और इस बात से आगाह किया गया है कि तुम से पहली उम्मतें इसी कारण हलाक हुई हैं कि उन्होंने अल्लाह के दीन में झगड़े और नई-नई बिदअ़तें निकाली थीं। (इब्ने कसीर)

बड़े दुःख की बात है कि मुसलमानों ने अल्लाह के इस आदेश को भुला दिया है और किताब व सुन्नत को छोड़कर कचबहसी पर उतर आये हैं और इमामों की तक़लीद कर के अपने-अपने इमामों के नाम से अलग अलग मज़हब बना लिये हैं और इस्लामी इत्तिफ़ाक़ को मलिया मेट कर दिया है।

१२८. यानी दिल से यक़ीन करें कि अल्लाह उनके कामों को देख रहा है और उनके अच्छे बुरे कामों का अच्छा बुरा बदला देगा। लेकिन इसके बाद गुमराह लोगों ने अल्लाह के दीन को बिगाड़ कर उसमें अपनी तरफ़ से बातें शामिल कर दीं तब अल्लाह ने उनकी हिदायत और रहनुमाई के लिये नबी भेजे (सनाई) अगली आयत में अल्लाह तआ़ला ने कुरआन मजीद को बर्कत वाली और अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल की गयी किताब बतलाया है। और उसी की पैरवी करने का हुक्म दिया गया है। लअ़ल्लकुम तुर्हमून (ताकि तुम पर रहम किया जा सके) में इस बात की तरफ़ इशारा है कि दीन दुनिया में कामियाबी हासिल हो और यह कामियाबी केवल कुरआन व हदीस की पैरवी करके और अल्लाह तआ़ला से ख़ौफ़ खाकर ही हासिल हो सकती है। कुरआन ➲

के अनुसार अ़मल किये बग़ैर न तक़्वा हासिल हो सकता है और न दोनों दुनिया की कामियाबी। मगर आज ख़ुद मुसलमानों ने कुरआन पर अ़मल करना छोड़ दिया है।

१२९. चूंकि पिछली आयतों में तौरात और इंजील का ज़िक्र किया था और अहले-अ़रब से कहा था कि कुरआन के आने के बाद तुम आसमानी किताबों से बेख़बर रहने की मजबूरी और लाचारी का बहाना नहीं बना सकते। इसलिये यहां यह हक़ीक़त स्पष्ट कर दी है कि मूल दीन सबके लिये एक ही था और कुरआन का संदेश भी उसी मूल दीन की तरफ़ बुलाने का है। (तर्जुमान)

وَإِن كُنَّا عَن دِرَاسَتِهِمْ لَغَافِلِينَ ﴿١٥٦﴾ أَوْ تَقُولُوا لَوْ
أَنَّا أُنزِلَ عَلَيْنَا الْكِتَابُ لَكُنَّا أَهْدَىٰ مِنْهُمْ ۚ
فَقَدْ جَاءَكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ ۚ
فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن كَذَّبَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَفَ
عَنْهَا ۗ سَنَجْزِي الَّذِينَ يَصْدِفُونَ عَنْ آيَاتِنَا
سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ ﴿١٥٧﴾ هَلْ يَنظُرُونَ
إِلَّا أَن تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ
بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ ۗ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ
لَا يَنفَعُ نَفْسًا إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ مِن قَبْلُ
أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا ۗ قُلِ انتَظِرُوا إِنَّا
مُنتَظِرُونَ ﴿١٥٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا
شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ ۚ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ
ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿١٥٩﴾ مَن جَاءَ بِالْحَسَنَةِ

और हमको कुछ भी उनकी तालीम से आगाही न थी[१३०]। १५८. या यह कहने लगो कि अगर हम पर किताब उतरती तो (हम) उन से (कई गुना) बढ़कर हिदायत पर होते। तो तुम्हारे पास तुम्हारे परवर्दिगार की दलील और हिदायत और रहमत (यानी अल्लाह की किताब) आ चुकी है, तो जो कोई अल्लाह के आदेशों को झुठलायेगा और उनसे मुंह मोड़ेगा उससे बड़ा ज़ालिम कोई नहीं। (सुन रखो!) जो लोग हमारे हुक्मों से मुंह मोड़ते हैं हम उनके मुंह मोड़ने की वजह से बुरे अ़ज़ाब की सज़ा उन को देंगे (कहो तो अब क्या बहाना करोगे और ईमान क्यों नहीं लाते?)। १५९. पस उन को यही इन्तिज़ार है कि उन के पास फ़रिश्ते आयें या स्वयं अल्लाह आये, या तेरे रब के निशानों में से कोई निशान आये। जिस दिन अल्लाह के निशानों में से कोई निशान आएगा तो किसी शख़्स को जो इससे पहले ईमान न लाया होगा, या अपने ईमान में कोई ख़ैर (निक काम) न किया होगा उस का ईमान लाना हरगिज़ लाभ न देगा। तू कह दे (अगर) तुम (उसी दिन के इन्तिज़ार में हो तो) इन्तिज़ार करो हम भी इंतिज़ार कर रहे हैं[१३१]। १६०. जिन लोगों ने दीन में फूट डाल रखी है और अलग-अलग जमाअ़तें बने हुए हैं, तेरा उनसे कोई संबंध नहीं (यह नहीं कि तुझसे उन की वजह से पूछ-ताछ हो) उनका इख़्तियार अल्लाह को है फिर वही उन को उनके कामों से ख़बर देगा[१३२]। १६१. जिस शख़्स ने नेक काम किया होगा

....

१३०. हम को कुछ भी उनकी तालीम से आगाही न थी' क्योंकि अव्वल तो वह हमारी भाषा में न थी,

दूसरे यह कि अहले किताब (यहूद व नसारा) हिन्दुस्तान के ब्रहमणों की तरह किसी को दीन की बात बताते न थे। (सनाई) 'दो गरोहों से मुराद यहूद और नसारा हैं इसलिये कि उन पर तौरात और इंजील नाज़िल हुई थी। ज़बूर नामक किताब में तौरात ही के अहकाम थे और उसमें केवल उपदेश और नसीहतें थीं, इसलिये ज़बूर को मानने वाले भी अहले किताब ही के साथ शामिल माने जायेंगे। (मवाहिब)

१३१. 'निशानों में से कोई निशान आयेगा' इस निशानी से मुराद यह है कि जब पश्चिम से सूरज निकलेगा। और यह क़ियामत की निशानी क़ियामत आने से पहले आयेगी। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : क़ियामत उस वक़्त तक नहीं आयेगी जब तक सूरज पश्चिम से नहीं निकलेगा। लोग उसको पश्चिम से निकलता देख कर मुसलमान हो जायेंगे, लेकिन यह वह समय होगा जिस में उनका ईमान लाना कुछ भी नफ़ा न देगा। (बुख़ारी) दूसरी रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ऊपर की हदीस बयान करने के बाद इसी आयत की तिलावत फ़रमाई। इब्ने जरीर ने भी अच्छी सनद के साथ अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत नक़ल की है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: तीन चीज़ों के प्रकट हो जाने के बाद जो ईमान नहीं लाया था उसका उस समय ईमान लाना कुछ भी लाभदायक न होगा और जिसने पहले से नेकी नहीं की है उसकी उस समय की नेकी किसी काम की न होगी। (१) सूरज का पश्चिम से निकलना। (२) दज्जाल का ज़ाहिर होना (३) "दाब्बतुल् अर्ज़" का निकलना (मुस्लिम)

"कमालैन" की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: उस समय एक रात, तीन रातों के बराबर होगी। एक रिवायत में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : क़ियामत उस वक़्त तक न आयेगी जब तक कि तुम दस निशानियां न देख लोगे (१) सूरज का पश्चिम से निकलना (२) धुंवा उठना (३) दाब्बतुल अर्ज़ (एक ख़ास जानवर) का निकलना (४) याजूज-माजूज का निकलना (५) ईसा बिन मरयम का आसमान से उतरना (६) दज्जाल का निकलना (७) पूरब में ज़मीन धंसना (८) पश्चिम में ज़मीन धंसना (९) अ़रबद्वीप में ज़मीन धंसना (१०) अ़द्न के एक ग़ार से आग का निकलना। यह आग लोगों को हांक कर ले जायेगी। जहां रात बितायेंगे वहां रात को साथ रहेगी और जहां दोपहर को ठहरेंगे वह भी वहीं ठहरेगी (मुस्लिम, अहमद) हज़रत सफ़वान रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह ने पश्चिम में एक दरवाज़ा खोल रखा है जिसकी चौड़ाई सत्तर वर्ष की राह है और वह उस समय तक बन्द न होगा जब तब कि सूरज पश्चिम से न निकले। (नसाई, तिर्मिज़ी)

१३२. यह आयत यहूद व नसारा के बारे में नाज़िल हुई और इसके उमूम (आ़म मतलब) में तमाम बिदअ़ती और गुमराह लोग शामिल हैं, और जिसने अल्लाह की तौहीद और रसूल की सुन्नत और बुजुर्ग असलाफ़ के तरीक़े से मुंह मोड़ा, वह भी इस आयत के मुताबिक़ है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: बनी इस्राईल ७२ फ़िर्क़ों में बटे हुए थे और मेरी उम्मत ७३ फ़िर्क़ों में बंट जायेगी, उसमें सिर्फ़ एक फ़िर्क़ा को छोड़कर सब जहन्नम में जायेंगे, वह एक फ़िर्क़ा जो जहन्नम में नहीं जायेगा वह है जो मेरे और सहाबा के तरीक़े पर चला। कुछ जाहिल और मूर्ख मुक़ल्लिद कहते हैं कि अहले हदीस नया फ़िर्क़ा है जो चंद सालों पहले हिंदुस्तान में पैदा हुआ है वरना इससे पहले सब हनफ़ी या शाफ़ेअ़ी थे। उनके इस एतिराज़ का उत्तर यह है कि अहले हदीस तो बड़ा पुराना फ़िर्क़ा है, क्योंकि रसूल, सहाबा ताबेअ़ीन और तबा ताबेअ़ीन सब अहले हदीस थे। हां हनफ़ी, शाफ़ेअ़ी, मालिकी, हंबली यह सब नये फ़िर्क़े हैं जो सन् ४०० हि० के बाद पैदा हुए हैं। भला ग़ौर करो कि इमाम अबू हनीफ़ा सन् ८० हिजरी और शाफ़ेअ़ी सन १५० हिज्री में पैदा हुए, तो इन के पैदा होने से पहले लोग हनफ़ी और शाफ़ेअ़ी तो न थे, फिर क्या थे? (वहीदी)

فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا
يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۶۰﴾ قُلْ اِنَّنِيْ
هَدٰىنِيْ رَبِّيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۚ دِيْنًا قِيَمًا
مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۶۱﴾
قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۶۲﴾ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ
وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۱۶۳﴾ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْ رَبًّا
وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ
اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى
رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۶۴﴾
وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ
فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ ۚ اِنَّ
رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۶۵﴾

उस को तो दस गुना सवाब मिलेगा और जिसने बुराई की होगी उस को उसी के बराबर सज़ा मिलेगी और उन पर (ज़्यादती होकर किसी तरह से) जुल्म न होगा। १६२. तू कह! (तुम्हारे झगड़ों से मुझे कुछ लेना देना नहीं) मुझे तो मेरे परवर्दिगार ने सीधी राह दिखाई है जो मज़बूत दीन इब्राहीम एक रुखे (हनीफ़) का रास्ता है और वह मुश्रिकों में से न था। १६३. तू कह! मेरी नमाज़ और मेरी कुर्बानी और मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह ही का है जो सब दुनिया वालों का रब है। १६४. जिस का कोई शरीक नहीं, यही मुझ को हुक्म मिला है और मैं तो सबसे पहले अल्लाह का फ़रमांबरदार हूं। १६५. तू कह! क्या मैं अल्लाह के अलावा और किसी को परवर्दिगार समझूं? हालांकि वह सबका पालनहार है। जो शख़्स बुरा काम करता है वही उसकी सज़ा उठायेगा। और (अल्लाह के नज़दीक) कोई जान किसी जान का बोझ नहीं उठायेगी[१३३]। पस तुमको अपने (हक़ीक़ी) पालनहार की तरफ़ फिर कर जाना है फिर वह तुमको तुम्हारे इख़्तिलाफ़ी कामों (के समाधान की) सूचना देगा। १६६. वह वही है जिसने तुमको ज़मीन में नाइब बनाया (एक के बाद दूसरा उसकी जगह ले लेता है) और एक दूसरे पर मर्तबों में बरतरी दे रखी है, ताकि जो तुम को दिया है उसमें तुम को आज़माए और अल्लाह (सज़ा देने लगे तो बिलाशक) जल्द सज़ा दे सकता है (उसमें बुर्दबारी (सहनशीलता) भी ऊंचे दर्जे की है) और वह बड़ा ही बख़्शने वाला मेहरबान (भी) है[१३४]।

....

१३३. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि इस आयत का मतलब यह है कि कोई इंसान किसी दूसरे इंसान के गुनाह के बदले में नहीं पकड़ा जायेगा। इस आयत में जाहिल मुश्रिकों के ख़्याल का भी रद्द है वह एक शख़्स का बदला उस के क़रीबी से ले लिया करते थे। नसारा के भी अक़ीदे का रद्द है। उनका ख़्याल यह था कि हम जो गुनाह चाहें करें, हज़रत ईसा अलै० ने हम सब के गुनाह उठा लिए हैं। इस आयत में उन जाहिल मुसलमानों के भी इस ग़लत अक़ीदे का रद्द है कि वह कहते हैं कि किसी मुर्दे के गुनाह को कम करने के लिए किसी फ़क़ीर को कुछ माल दे दिया जाये तो मुर्दे का गुनाह उस फ़क़ीर के खाते में चला जाता है। इस आयत का मतलब यह है कि गुमराही में चलने वाला ख़ुद अपना गुनाह उठायेगा और जिन लोगों को गुमराह किया है उनका भी गुनाह उठायेगा, इसलिये कि उसने उनको गुमराह किया था। यही मतलब उस ➲

हदीस का भी है। जिसमें नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: ''जिसने कोई बिदअ़त ईजाद की उस का गुनाह उस पर होगा और क़ियामत तक जो लोग उस बिदअ़त पर अ़मल करेंगे उन का भी एक गुनाह उसको मिलेगा, इसलिये कि वह उस बिदअ़त पर अ़मल करने का सबब बना और उस अ़मल करने वाले के गुनाह में भी कुछ कमी न होगी। (मवाहिब)

१३४. हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : ''काफ़िर भी अगर अल्लाह की रहमत के बारे में जान ले तो कभी भी जन्नत से मायूस न हो। अल्लाह ने सौ रहमतें पैदा की हैं उनमें से एक रहमत को मख़्लूक़ के दर्मियान तक़सीम कर दिया है। कि जिस से वह आपस में एक दूसरे से मुहब्बत करते हैं, और ९९ रहमतें अल्लाह के पास हैं जिनको क़ियामत के दिन ईमान लाने वालों पर तक़सीम किया जायेगा। (अहमद)

सूरः अअ़राफ़– (7)

सूरः अअ़राफ़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें २०६ आयतें और २४ रुकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत रहम वाला मेहरबान है।

१. अलिफ़-लाम्मीम्-स्वाद[1]। २. यह किताब तेरी तरफ़ इसलिये उतारी गयी है कि तू डराये और ईमानदारों के लिये नसीहत हो, इसलिये तू उससे तंग दिल न हो। ३. (हां, तू उन को सुना दे कि) जो कुछ तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से तुम पर उतरा है उस पर चलो[2] और इसके अ़लावा और दोस्तों (और दुनियादारों, लूटने-खसोटने वाले गद्दीनशीनों) की चाल न चलो (मगर) तुम बहुत ही कम सोचते हो। ४. (दिखो!) हम ने कई एक बस्तियां तबाह कर दीं (जब उन्होंने नबियों से मुक़ाबला किया तो) रातों-रात, या दिन को सोते हुए उन पर हमारा अ़ज़ाब आया। ५. फिर जब हमारा अ़ज़ाब उन पर आ पहुंचा तो सिवाए इसके कुछ न कह सके कि बेशक हम ही ज़ालिम हैं (हम ने जान बूझ कर सच्चे लोगों का मुक़ाबला किया)। ६. पस जिन लोगों की तरफ़ रसूल

(٧) سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ مَكِّيَّةٌ (٣٩)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓصٓ ۚ ﴿١﴾ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾ اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾ وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ﴿٤﴾ فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾ فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦﴾ فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ ﴿٧﴾ وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ِۨالْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨﴾ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا

➲भेजे गये थे उन लोगों और रसूलों से भी हम पूछेंगे[३]। ७. फिर हम उन को अपने अ़िल्म से वाक़िअ़ात सुनायें गे और हम किसी वाक़िअ़ात से ग़ाइब नहीं ८. और आमाल का वज़न भी उस रोज़ बरहक़ है[४], पस जिन लोगों के नेक आमाल (वज़न में) ज़्यादा होंगे वही पास (कामियाब) होंगे। ९. और जिन के नेक आमाल कम होंगे हमारी अवज्ञा के कारण उन्होंने ही अपने आप को टोटे (नुक़्सांन) में डाला होगा। (जिसकी सज़ा उनको भुगतनी होगी।)

....

१. मौलाना रह० ने इस का तर्जुमा यूँ किया है कि "मैं हूं अल्लाह बड़ा जानने वाला क़ौल का सच्चा।" यह तफ़सीर अ़ल्लामा सुयूती ने अपनी किताब "इतक़ान" में कुछ सलफ़ के हवाले से नक़ल की है। लेकिन सही और उचित यही है कि इन हुरूफ़ के बारे में अल्लाह ही अपनी मुराद को बेहतर जानता है।

२. 'जो तुम पर उतारा है' इस में कुरआन व हदीस दोनों दाख़िल हैं, क्योंकि दूसरी आयत में स्पष्ट शब्दों में मौजूद है "रसूल दीन के मामले में जो कुछ भी बोलते हैं वह सब अल्लाह की तरफ़ से वह्यि होती है।" इसलिये इस आयत की रोशनी में जो हदीस का इंकार करते हैं और हमारे लिये अल्लाह की किताब काफ़ी है का नारा लगाते हैं वह गुमराह हैं, कुरआन मजीद को उन्होंने समझा ही नहीं। दूसरे माबूदों बुजुर्गों, इमामों और पीरों, फ़क़ीरों की बात आंख बंद करके मान लेना, इसके अ़लावा जब कि उनका क़ौल अल्लाह के या रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़ हो, बिल्कुल ग़लत और खुली गुमराही है। इस आयत से मुक़ल्लिदों को नसीहत लेना चाहिए। (वहीदी) इस आयत से साफ़ तौर पर ज़ाहिर है कि पैरवी सिर्फ़ कुरआन व हदीस की फ़र्ज़ और वाजिब है, कुरआन व हदीस के अ़लावा और किसी दूसरे की पैरवी और आज्ञापालन फ़र्ज़ नहीं। कुछ मुक़ल्लिदों का दावा है कि इमामों की तक़लीद फ़र्ज़ और वाजिब है, इस आयत से उनके ख़्याल का रद्द होता है। ख़ुद इमामों ने भी अपनी तक़लीद से साफ़ तौर पर मना कर दिया है। तफ़सील जानने के लिये शाह वलिय्युल्लाह की किताब "हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा" को पढ़ें।

३. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि तुम सब राअ़ी और निगहबान हो, तुम सबसे अपने मातहतों के बारे में क़ियामत के दिन प्रश्न किया जायेगा। इमाम से उसके मातहत के बारे में, मर्दों से अपने परिवार के बारे में प्रश्न किया जायेगा, औ़रत से शौहर के घर के बारे में पूछा जायेगा कि तूने शौहर के घर में क्या बर्ताव किया और गुलाम से पूछा जायेगा कि अपने मालिक के माल में क्या किया। इमाम लैस फ़रमाते हैं कि मुझे इब्ने ताऊस ने भी ऐसी ही एक हदीस बयान की फिर यह आयत पढ़ी। बुख़ारी और मुस्लिम में भी यह हदीस मौजूद है। मगर उसमें कुरआन की आयत का ज़िक्र नहीं है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने इस आयत की तफ़सीर यूं बयान की है कि अल्लाह तआ़ला लोगों से पूछेगा कि तुम ने रसूलों को क्या जवाब दिया और रसूलों से पूछेगा कि तुम ने हमारा पैग़ाम बंदों तक पहुंचाया या नहीं? (मवाहिब)

४. हज़रत सलमान फ़ार्सी रज़ि० से रिवायत है कि क़ियामत के दिन मीज़ान (ख़ास क़िस्म का तराज़ू जिस में अ़मल को तौला जायेगा) क़ाइम की जायेगी, उस के दो पल्ले होंगे। उस के एक पल्ले में अगर ज़मीन व आकाश और जो कुछ उसके दर्मियान है सब को रख दिया जाये तो सब उस पल्ले में समा जायेंगे (इब्ने मुबारक ने इस को अपनी किताब "ज़ुहद" में रिवायत किया है)।

पहले के और आज के उलमा और बुज़ुर्गों का यह अ़क़ीदा है कि वज़न, मीज़ान, जन्नत, दोज़ख़ शैतान, जिन्नात, मलाइका वग़ैरह को बग़ैर किसी तावील और हुज्जत के माना जाये। कुछ बिदअ़ती और गुमराह क़िसम के ➲

लोग इन में तावीलें करते हैं, हालांकि उन के पास कोई दलील नहीं है। यह ऐसे जाहिल हैं कि अल्लाह की कुदरत और ताक़त पर इन्हें यक़ीन ही नहीं है कि वह इन्साफ़ की हक़ीक़ी मीज़ान क़ाइम करेगा। सहाबा और ताबेईन का आमाल को तौलने के लिये इसी पर अक़ीदा और यक़ीन है। आज-कल के जाहिल लोग ईमान वालों को शक व शुबहा में डालते हैं, हालांकि सच्ची बात यही है कि मीज़ान क़ाइम होगी और बंदों की नेकियां और बुराइयां तौली जायेंगी। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: दो कलिमे अगरचे ज़बान पर हल्के हैं लेकिन मीज़ान में भारी होंगे, और यह अल्लाह तआ़ला को बहुत ही पसन्द हैं "सुब्हा-नल्लाहि वबि हम्दिही सुब्हा-नल्लाहिल् अ़ज़ीम" (मवाहिब)

بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ۝ وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِى الْاَرْضِ وَ
جَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝
وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰۗىِٕكَةِ
اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ لَمْ يَكُنْ مِّنَ
السّٰجِدِيْنَ ۝ قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ۭ
قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ
طِيْنٍ ۝ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ
تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ۝ قَالَ
اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝ قَالَ اِنَّكَ مِنَ
الْمُنْظَرِيْنَ ۝ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ
صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْ بَيْنِ
اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ
شَمَاۗىِٕلِهِمْ ۭ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ۝ قَالَ

१०. और हम ही ने तुम को ज़मीन में जगह दी और तुम्हारी मआ़श (रोज़ी-रोटी) के रास्ते उस में बनाये (मगर) तुम (कुछ ऐसे नासमझ हो कि) बहुत ही कम शुक्रगुज़ारी करते हो। ११. और हमने तुम को (यानी तुम्हारे बाप आदम को) पैदा किया, फिर हम ही ने तुम्हारी सूरत बनाई फिर फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो, सो सबने सज्दा किया मगर इब्लीस सज्दा करने वालों में न हुआ[5]। १२. अल्लाह ने कहा कि मैंने जब तुझे हुक्म दिया था तो फिर तुझे सज्दा करने से किसने रोका? बोला कि मैं उससे बेहतर हूं, तूने मुझे आग से पैदा किया है और उस को मिट्टी से[6]। १३. (चूंकि उस की यह अटकल-बाज़ी नस्ल के मुक़ाबले में थी जो किसी तरह जाइज़ नहीं इसलिये) अल्लाह ने कहा: तू इस (जन्नत) से निकल जा। इस में रह कर तुझे ऐसी शेख़ी मुनासिब न थी[7], इसलिये तू निकल जा क्योंकि तू ज़लील है। १४. (बिहया ने फिर भी शेख़ी बघारनी न छोड़ी) बोला कि उन के जी उठने के दिन तक मुझ छूट दे दे। १५. अल्लाह ने कहा : तुझे छूट है। १६. बोला चूंकि तू ने मुझे भटकाया (और गुमराह किया) है इसलिए मैं उनको रोकने के लिये तेरी सीधी राह में बेठूंगा। १७. फिर उनके आगे और पीछे से दायें और बायें से (ब्रहकाने और गुमराह करने के लिये) आऊंगा और तू उनमें से अक्सर को शुक्रगुज़ार न पायेगा[8]। १८. अल्लाह ने कहा:

....

५. यहां पर सज्दा करने से मुराद तहिय्यत (ताज़ीम, इज्ज़त देने का) सज्दा है। यानी झुक कर, पीठ को

➲झुका करके। यहां पर माथे को ज़मीन पर रखकर इबादत करने की तरह का सज्दा हरगिज़ मुराद नहीं है। और अब शरीअ़ते मुहम्मदी में तहिय्यत का सज्दा भी हराम है। (मवाहिब) फ़रिश्ते नूरी मख़्लूक़ हैं इसलिये उनके पास पीठ और पेशानी ही कहां है, लेकिन बहरहाल जिस तरह अल्लाह ने चाहा था फ़रिश्तों ने वैसे ही आदम को सज्दा किया, बस इतना ही मान लेना काफ़ी है इस में और अधिक कुरेद करने की ज़रूरत ही क्या है (राज़)

६. सर्वप्रथम जिस ने क़ियास किया वह इबलीस है, और इसी क़ियास ही की बुनियाद पर चांद, सूरज और नक्षत्रों की पूजा होनी शुरू हुई (इब्ने कसीर, जरीर)।

७. हक़ बात को ज़लील समझना और उसे न मानना, तकब्बुर है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : नाफ़रमान, सरकश, बद-ज़बान, तकब्बुर और गुरूर करने वाले जहन्नमी हैं। (बुख़ारी, मुस्लिम)।

८. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि "उनके आगे से" मुराद दुनिया की तरफ़ से "उनके पीछे से" आख़िरत की तरफ़ से और "दायें से" मुराद नेकियों की तरफ़ से और "बायें से" मुराद बुराइयों की तरफ़ से है। एक दूसरी रिवायत में है कि "सामने से" मुराद यह है कि आख़िरत के कामों में शक दिलाऊंगा और पीछे से मतलब यह है कि उनको दुनिया की ओर तवज्जुह दिलाऊंगा। और दायें से का मतलब है कि दीन के कामों में उनको शुबहा में डालूंगा और "बायें से" मुराद यह है कि गुनाहों की लज़्ज़त उनको दिलाऊंगा। और इस से तमाम बुराइ की राहें भी मुराद हैं, इसलिये शैतान उनको भलाई की राहों से रोकेगा और बुराई की राहों की तरफ़ हिदायत करेगा।

'शाकिरीन' की तफ़सीर हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० इस प्रकार करते हैं कि तू उनमें से अकसर को मुश्रिक पायेगा तौहीद पर चलने वाला न पायेगा। इबलीस ने तो यह बात केवल गुरूर और तकब्बुर में आकर कही थी, लेकिन इत्तिफ़ाक़ से उसकी बता सही साबित हुई (इब्ने कसीर, इब्ने जरीर)

اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُومًا مَّدْحُورًا ۖ لَّمَن تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٨﴾ وَيَا آدَمُ اسْكُنْ أَنتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٩﴾ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُورِيَ عَنْهُمَا مِن سَوْآتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهَاكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هَٰذِهِ الشَّجَرَةِ إِلَّا أَن تَكُونَا مَلَكَيْنِ أَوْ تَكُونَا مِنَ الْخَالِدِينَ ﴿٢٠﴾ وَقَاسَمَهُمَا إِنِّي لَكُمَا لَمِنَ النَّاصِحِينَ ﴿٢١﴾ فَدَلَّاهُمَا بِغُرُورٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ

ज़लील और रुस्वा होकर इस जमाअ़त से निकल जा, जो उनमें से तेरे पीछे होगा (और तेरे जाल में फंसेगा) मैं तुम सबको जहन्नम में डालूंगा। १९. और ऐ आदम! तू और तेरी बीवी बाग़ में बसो और जहां से चाहो (बि-रोक-टोक) खाओ और इस पेड़ के नज़दीक न जाना वरना तुम नाफ़रमानों में हो जाओगे। २०. फिर शैतान ने उन दोनों को बहकाया ताकि उनकी शर्मगाहों को जो उनसे पोशीदा थीं उन के सामने नंगा करके दिखा दे और कहा कि अल्लाह ने उस पेड़ का फल खाने से तुम को महज़ इसलिए मना किया है कि तुम फ़रिश्ते न बन जाओ, या हमेशा इसी बाग़ में न रह जाओ। २१. और उनसे क़सम ➲

खाकर कहता रहा[९] कि मैं बिलाशुब्हा तुम्हारा ख़ैरख़ाह हूं। २२. फिर धोके से उन को फुसला ही लिया, पस उस पेड़ को उन्होंने खाया ही था कि उनकी शर्मगाहें उन को दिखाई देने लगीं और (मारे शर्म के) वह बाग़ के (चौड़े-चौड़े) पत्ते अपने ऊपर लपेटने लगे[१०]। और अल्लाह ने उनसे कहा कि क्या मैं ने तुमको उस पेड़ के खाने से मना

بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ؕ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ٚ وَاِنْ لَّمْ

न किया था[११] और क्या यह नहीं कहा था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है[१२]? २३. वह दोनों बोले कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हम ने अपनी जानों पर स्वयं ज़ुल्म किया और अगर तू हम को न बख़्शेगा

....

९. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० के बारे में आता है कि जब वह अपने किसी गुलाम को अच्छी तरह नमाज़ रोज़ा अदा करते देखते तो उसको आज़ाद कर देते थे, उनके गुलाम आज़ादी की ख़्वाहिश में ऐसा किया करते थे,। उनसे कहा गया था कि यह लोग आपको धोका देने के लिए ऐसा कर रहे हैं, तो हज़रत इब्ने उमर ने फ़रमाया : जो कोई मुझ को अल्लाह और उसकी इबादत के नाम पर धोका दें हम उस के धोके में आ जायेंगे।

अल्लाह के पाक नाम की झूठी क़सम खाने वालों में सबसे पहला इबलीस है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि नाफ़रमानी की वजह से जब आदम अ़लैहि० जन्नत के लिबास से महरूम कर दिये गये और वह नंगे हो गये तो इन्जीर के पत्तों से अपना बदन छुपाने लगे और इधर उधर भागने लगे। अल्लाह ने पुकारा कि ऐ आदम! क्या तू मुझसे भागता है? आदम ने कहा : ऐ रब! मैं तुझसे भागकर कहां जाऊंगा? लेकिन शर्म आ रही है इसलिए छुपने की कोशिश कर रहा हूं। फिर अल्लाह ने प्रश्न किया कि क्या तुम्हारे लिये जन्नत में हलाल नेमतों की कमी थी जो तुम मेरे हराम किये हुए की तरफ़ गये और मना किये हुए पेड़ के फल को खाया? हज़रत आदम ने जवाब दिया कि मेरे रब! सब कुछ था, मगर क़सम है तेरी इज़्ज़त और जलाल की, इबलीस ने तेरे नाम की झूठी क़सम खाई और मैंने जाना कि कोई तेरे नाम की झूठी क़सम नहीं खायेगा, इसलिये मैं उसके धोके में आ गया। फिर आदम को दुनिया में उतारा गया और उनको खेती करनी सिखाई गयी। (इब्ने जरीर)

१०. जब आदम अ़लैहि० अल्लाह की अवज्ञा करके अपने लिये जन्नत का हक़ खो चुके, तो फिर उनके बदन से जन्नत का लिबास भी उतार लिया गया। उनके नंगे हो जाने की यही वजह थी।

११. इस आयत के अ़लावा और बहुत सी हदीसों से भी यह साबित है कि अल्लाह के कलाम में आवाज़ है और फ़रिश्ते और इंसान उसकी आवाज़ सुन सकते हैं। अहले हदीस का भी यही मज़हब है। इमाम अहमद बिन हंबल रह० ने फ़रमाया कि जो कुरआन के अल्फ़ाज़ को मख़्लूक़ कहते हैं वह जहमिय्या फ़िर्क़ा से भी बदतर है। अहले हदीस के नज़दीक कुरआन शरीफ़ के अल्फ़ाज़ और मतलब दोनों ही अल्लाह का कलाम हैं। (वहीदी)

१२. हज़रत आदम ने अल्लाह से कहा कि मेरे मौला! अगर मैं तौबा करूं और अपने किये पर माफ़ी मांगू तो क्या आप माफ़ फ़रमा देंगे? अल्लाह तआ़ला ने कहा कि ऐसी सूरत में तेरे गुनाह को माफ़ कर दूंगा

➲और फ़िर जन्नत में दाख़िल कर दूंगा। और इबलीस ने न तो तौबा की दरख़ास्त की और न माफ़ी चाही, बल्कि उल्टे मोहलत चाही। तो हर एक को वह मिला जो उसने चाहा और मांगा। (इब्ने कसीर)

تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخٰسِرِينَ ﴿٢٣﴾ قَالَ
اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ
مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلٰى حِينٍ ﴿٢٤﴾ قَالَ فِيهَا تَحْيَوْنَ وَ
فِيهَا تَمُوتُونَ وَمِنْهَا تُخْرَجُونَ ﴿٢٥﴾ يٰبَنِيٓ اٰدَمَ
قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيشًا ۖ
وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ۚ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ
لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿٢٦﴾ يٰبَنِيٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ
كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا
لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ۗ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ
حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۗ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ
لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا
وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ۗ قُلْ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ۖ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ

और न रहम करेगा, तो बिला शुबहा हम टोटा पाने वालों में से हो जायेंगें। २४. (अल्लाह ने) कहा तुम (इस बाग़ से) उतरे रहो (निकल जाओ) तुम आपस में एक दूसरे के दुश्मन होगे[१३] और तुम्हारे लिये ज़मीन में एक समय तक ठिकाना और सामान है। २५ . (अल्लाह ने यह भी) कहा कि उसी ज़मीन में तुम ज़िन्दगी गुज़ारोगे और उसी में मरोगे (और मर कर) उसी में से निकाले जाओगे। २६. ऐ बनी आदम! हम ने (तुम्हारी पर्दा-पोशी की हाजत समझ कर) तुम्हारे लिये लिबास पैदा किया जो तुम्हारी शर्मगाहें ढांपता है और ख़ूबसूरती व ज़ीनत (भी) है। और परहेज़गारी का लिबास सब लिबासों से बेहतर है। यह अहकामे-इलाही से है ताकि यह लोग नसीहत हासिल करें[१४]। २७. ऐ बनी आदम! (होश में रहना) शैतान तुम को सीधी राह से न भटका दे जैसा तुम्हारे माता-पिता को उसने जन्नत से निकाला था, उनसे उनका लिबास उतारता[१४/१] कि उन की शर्मगाहें उन्हें (नंगा करके सामने) दिखा दे। वह और उस की जुर्रीयत (साथी) तुम को ऐसी घात से देख रहे हैं कि तुम उन को नहीं देखते। जो लोग (सच्ची तालीम को) नहीं मानते हम शैतानों को उनके दोस्त बना देते हैं[१५]। २८. (कि) जब कोई काम बेहयाई का करते हैं तो कहते हैं कि हम ने अपने बाप दादाओं को इसी पर पाया है[१६]। और अल्लाह ने भी हमें यही आदेश दिया है। तू कह! कुछ शक नहीं कि अल्लाह बेहयाई का हुक्म नहीं देता। क्या जिन बातों को तुम नहीं जानते

....

१३. यानी आदम और इबलीस की औलाद में क़ियामत तक आपस में दुश्मनी रहेगी। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० का क़ौल है कि 'मुस-तक़िर' से ज़मीन के ऊपर और ज़मीन के नीचे दोनों मुरादे हैं। (अबू हातिम) जब हज़रत आदम अ़लै० के मरने का समय आया और जान निकालने वाले फ़रिश्ते हाज़िर हुए तो उन्होंने हव्वा से कहा कि तू हट जा और फ़रिश्तों को आने दे। अल्लाह की तरफ़ से मुझको जो कुछ नाराज़गी पहुंची है वह सिर्फ़ तुम्हारी वजह से पहुंची है। जब उनकी वफ़ात हो गयी तो पानी में बेरी की पत्तियों को उबालकर उस पानी से गुस्ल दिया गया और पाक कपड़ों में कफ़नाया गया और हिन्दुस्तान मुल्क की ज़मीन सरान्दीप➲

में उनको दफ़न किया गया (आज उस ज़मीन को लंका कहा जाता है जो हिन्दुस्तान से अलग एक मुल्क है - ख़ालिद) और आदम की औलाद से कह दिया गया कि तुम्हारे कफ़न का यही तरीक़ा है। (मआ़लिम)

१४. इब्ने जरीर ने 'रीशा' की तफ़सीर करते हुए लिखा है कि लिबास तो ज़ाहिरी कपड़ों का नाम है और 'रीश' उन के अतिरिक्त और उसके अ़लावा चीज़ है, उसको अन्दर का लिबास कहा जा सकता है। इमाम बुख़ारी रह० ने इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत नक़ल की है कि 'रीश' का मतलब 'माल-दौलत' के है और यह भी कहा कि रीश के माना "लिबास, नेमत, अ़ैश' के हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : कि जो शख़्स नया कपड़ा पहने और उस को गर्दन तक डाले तो पढ़े : "अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी मा उवारी बिहीं अ़ौरती व-अ-त-जम्मलु बिही फ़ी हयाती (उस अल्लाह का शुक्र है कि जिसने मुझे पहनाया जिस में अपनी शर्मगाह छुपाता हूं और उससे अपनी ज़िन्दगी में जमाल हासिल करता हूं) इसके बाद पुराना कपड़ा सदक़ा कर दे तो वह ज़िन्दगी में और मरने के बाद भी अल्लाह की रहमत और उसकी देख रेख में होगा। (अहमद)

इस आयत का मतलब यह हुआ कि ऐ आदम की औलाद! हमने तुम्हारी ज़ीनत और शर्मगाहों को छुपाने के लिए तुम्हें लिबास अ़ता फ़रमा दिये हैं। इस्लाम लाने से पहले अ़रब के लोग नंगे होकर बैतुल्लाह का तवाफ़ करते थे और महिलाएं भी नंगी होकर हाथ या कुछ और चीज़ शर्म गाह पर रख कर तवाफ़ किया करती थीं, इस पर अल्लाह तआ़ला ने इन आयतों को नाज़िल फ़रमाया और साथ ही लिबास की अहमियत भी बतला दी।

१४/१. वह लिबास जन्नत का था जिसकी हक़ीक़त अल्लाह ही को मालूम है।

१५. तमाम उम्मत का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि शैतान भी जिस्म रखने वाली मख़्लूक़ है और ऐसे ही जिन्न भी मख़्लूक़ हैं। इस प्रकार शक व शुब्हा में डालते हैं कि आदमी को कुछ ख़बर ही नहीं होती और इन्सान उन के वसवसे (शक व शुब्हे) को अपनी राय और ख़्याल समझकर धोका खा जाता है। आज कल बहुत से लोग ऐसे भी हैं जो शैतान के वजूद ही के इंकारी हैं, यह उनकी जिहालत और नादानी है। बल्कि इन लोगों ने कुरआन मजीद, अहादीस, उम्मत का इजमा और तमाम अहले किताब सब का इंकार किया है। और इस तरह उनके कुफ़्र में कोई शक व शुब्हा ही नहीं है। (मवाहिब)

१६. अगर अल्लाह का हुक्म न होता तो हमारे बाप-दादा भला ऐसा क्यों करते? क्या वह बेवकूफ़ थे? क्या उनको समझ न थी? क्या वह दीनदार न थे? क्या वह सबके सब जहन्नमी थे? मतलब यह कि इसी प्रकार के चुटकुले छोड़ते हैं (सनाई) बाप-दादाओं के काम और उनके अ़क़ीदे और ख़्याल को दलील बनाना ही तक़लीद की बुनियाद है, जिस की तमाम नबी रद्द करते रहे हैं।

वह तुम अल्लाह के ज़िम्मा लगाते हो[१७] २९. तू कह! मेरे रब ने तहज़ीब (सभ्यता) का आदेश दिया है और यह कि हर नमाज़ के समय मुस्तइद (तैयार) हो जाया करो और दिली इख़्लास से उसकी इताअ़त करते हुए उसे पुकारा करो। जिस प्रकार अल्लाह ने तुम को पैदा किया है इसी प्रकार तुम (उसकी तरफ़) फिरोगे। ३०. एक जमाअ़त

مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۗ وَاَقِيْمُوْا
وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ
لَهُ الدِّيْنَ ۬ؕ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ۝ فَرِيْقًا هَدٰى
وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ؕ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا
الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ

أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ ۝٣٠ يَٰبَنِىٓ ءَادَمَ خُذُوا۟ زِينَتَكُمْ عِندَ
كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوا۟ وَٱشْرَبُوا۟ وَلَا تُسْرِفُوٓا۟ ۚ إِنَّهُۥ
لَا يُحِبُّ ٱلْمُسْرِفِينَ ۝٣١ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ ٱللَّهِ ٱلَّتِىٓ
أَخْرَجَ لِعِبَادِهِۦ وَٱلطَّيِّبَٰتِ مِنَ ٱلرِّزْقِ ۚ قُلْ هِىَ
لِلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ
ٱلْقِيَٰمَةِ ۗ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ ٱلْءَايَٰتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝٣٢
قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّىَ ٱلْفَوَٰحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا
وَمَا بَطَنَ وَٱلْإِثْمَ وَٱلْبَغْىَ بِغَيْرِ ٱلْحَقِّ وَأَن تُشْرِكُوا۟

को अल्लाह ने हिदायत की है और एक जमाअ़त को गुमराही चिमट रही है। (क्योंकि) उन्होंने शैतानों को अल्लाह के अ़लावा अपना दोस्त (और सहयोगी) बना रखा है और (उल्टे) अपने आप को हिदायत पाने वाला भी जानते हैं[१८]। ३१. ऐ आदम के बेटो! नमाज़ के समय अपनी सजावट का लिबास पहना करो और खाओ-पियो और फ़ज़ूल ख़र्ची न करो। अल्लाह को फ़ज़ूल ख़र्ची करने वाले नहीं भाते[१९]। ३२. तू कह! जिस ज़ीनत को अल्लाह ने अपने बंदों के लिए पैदा किया उसको और पाकीज़ा रोज़ी को किस ने हराम किया है[२०]? तू कह! यह नेमतें दुनिया की ज़िन्दगी में तो ईमानदारों के लिये मुश्तरक (साझीदारी में) हैं (मगर) क़ियामत के दिन सिर्फ़ उन्हीं के लिए ख़ास होंगी। इसी तरह हम इल्म रखने वालों के लिये अपने अहकाम खोल-खोल कर बयान किया करते हैं (ताकि वह ग़ौर कर के नतीजा तक पहुंचें)। ३३. तू कह! मेरे परवर्दिगार ने खुली और छुपी बेहयाई को हराम किया है। (यानी खुले और छुपे में हरामकारी) और गुनाह और नाहक़ एक दूसरे पर ज़्यादती करना और अल्लाह का साझी उन वस्तुओं को बनाना

....

१७. यहां 'फ़ाहिशह' से मुराद अ़रब के जाहिलों का एक दस्तूर और नियम है। वह कहते हैं कि हम तो उसी हालत में तवाफ़ करते हैं जैसे हमारी माओं ने हमें जना है। और यह बात शैतान के बहकावे में ईजाद की गयी थी। (इब्ने कसीर)

१८. इस आयत से मालूम हुआ कि हिदायत और गुमराही दोनों अल्लाह की तरफ़ से है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "क़सम है उस अल्लाह की जिसके अ़लावा कोई माबूद नहीं। आदमी जन्नती लोगों का सा काम करते-करते बिल्कुल जन्नत के निकट पहुंच जाता है, मगर ठीक समय पर (यानी मौत के वक़्त) तक़दीर ग़ालिब आ जाती है। और वह दोज़ख़ी लोगों के काम करने लगता है और आख़िर में दोज़ख़ में दाख़िल हो जाता है। इसी प्रकार एक आ़दमी दोज़ख़ियों का काम करते करते बिल्कुल जहन्नम के निकट पहुंच जाता है, मगर तक़दीर का लिखा उस को जन्नती लोगों के अ़मल पर आमादा कर देता है और वह अन्त में जन्नती लोगों के अ़मल करता हुआ मर कर जन्नत में दाख़िल होता है। और हक़ीक़त यह है कि अ़मल का एतिबार ख़ातिमे (समापन) पर है। (बुख़ारी)

१९. मुश्रिकों के नंगे होकर तवाफ़ करने की रस्म और परंपरा को मिटाने के लिये यह आदेश नाज़िल हुआ। 'ज़ीनत' से मुराद वह पाक लिबास है जिस से शर्मगाह को छुपाया जा सके। आ़म हुक्म में हर नमाज़ के लिये और फिर हर समय शर्मगाह को ढके रहना वाजिब है। जुम्अ़: दोनों ईद वग़ैरह के लिये ज़रूरी कपड़ों के अ़लावा गुस्ल करना, मिस्वाक करना, सुगंध और सुर्मा लगाना मुस्तहब है (इब्ने कसीर) एक हदीस में

में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "खाओ-पियो और पहनों-ओढ़ो और सदक़ा-ख़ैरात करो, क्योंकि अल्लाह को यह बात बहुत पसन्द है कि वह अपनी नेमत को बन्दों के ऊपर देखे, मगर ग़ुरूर-तकब्बुर और फ़ुज़ूल-ख़र्ची न करो"। (नसई, इब्ने माजा)

२०. ख़ुलासा यह है कि इन्सान की पैदाइशी ख़्वाहिश को दबाना और रोकना यह कोई दीन-दारी की बात नहीं है। अगर फ़ित्री ख़्वाहिशों का पैदा होना अल्लाह को ना पसन्द होता तो इन्सान में ऐसी ख़्वाहिश पैदा ही नहीं करता। लेकिन यह आवश्यक है कि इंसान ख़्वाहिश को पूरी करने में शरीअ़त के अनुसार अ़मल करे ताकि आख़िरत में उन नेमतों से वन्चित न हो जाए (सनाई) इस से मालूम हुआ कि जाइज़ चीज़ों को अगर कोई फ़ख़्र और तकब्बुर के बिना इस्तेमाल करता है तो इस में कोई बुराई नहीं है और न ही उन को रोकना दुरुस्त है (तर्जुमान)

بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى
اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ
اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝
يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ
عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا
وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ۝ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۗ اُولٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ
مِّنَ الْكِتٰبِ ۗ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ
قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ قَالُوْا
ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا
كٰفِرِيْنَ ۝ قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ

जिन के साझी बनाने की उस ने कोई दलील नहीं उतारी और यह कि तुम अल्लाह के बारे में वह बातें कहने लगो जो तुम को भी मालूम न हों ३४. और हर एक क़ौम के लिये एक वक़्त मुक़र्रर है तो जब उन का वक़्त आ लगता है तो न उस से एक घड़ी आगे बढ़ सकते हैं और न पीछे हट सकते हैं।[२१] ३५. (इसलिये मैं ने पहले ही हुक्म दे रखा है कि) ऐ आदम के बेटो! अगर तुम्हारे पास तुम ही में से मेरे रसूल आयें जो तुम को मेरे आदेश सुनायें तो जो ईमान लायेंगे और तक़्वा इख़्तियार करेंगे, उन पर न ख़ौफ़ होगा और न वह ग़म में होंगे ३६. और जो लोग हमारे हुक्मों के इन्कारी होंगे और तकब्बुर करेंगे वही जहन्नमी हो कर हमेशा जहन्नम में रहेंगे ३७. तो (तुम ख़ुद ही बतलाओ कि) जो अल्लाह पर झूठ बाँधे (यानी नबूवत का झूठा दावा करे) या उसके हुक्मों को झुठलाये तो उस से बढ़ कर भी कोई ज़ालिम है? (कोई नहीं) उन्हीं को इलाही किताब में से अ़ज़ाब का हिस्सा पहुंचेगा। और जब उन के पास हमारे भेजे हुये फ़रिश्ते उन को फ़ौत करने के लिये जायेंगे तो कहेंगे कि जिन को तुम (ज़रूरत के वक़्त) अल्लाह के अ़लावा पुकारा करते थे वह आज किधर चले गये? वह कहेंगे कि (आज तो) वह हम से (ऐसे) ग़ाइब हो गये (कि हमारी सुनते ही नहीं) और अपने ख़िलाफ़ स्वयँ ग़वाही देंगे कि बेशक हम काफ़िर थे[२२] ३८. अल्लाह हुक्म देगा कि जो तुम से पहले जिन्न और इन्सान

➲(कुफ़्र की हालत में) गुज़र चुके हैं

....

२१. जमहूर उलमा ने इस आयत से यह दलील पकड़ी है कि हर शख़्स लिखे हुये समय पर मरता है चाहे वह क़त्ल हो कर मरे या गिर कर मरे। दुआ और नेकी वग़ैरह से आयु सीमा का बढ़ जाना भी तक़दीर के अनुसार है और इस आयत के ख़िलाफ़ नहीं है। हज़रत उमर रज़ि० को जब घाइल कर दिया गया तो कअ़ब अहबार ने कहा कि अगर हज़रत उमर दुआ करते तो उन की मौत में ताख़ीर हो जाती। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने कहा कि अल्लाह तआ़ला तो फ़रमाता है "जब मौत की घड़ी आ पहुंची तो न वह एक लम्हे के लिये आगे बढ़ सकती है और न ही पीछे हट सकती है"। इस पर हज़रत कअ़ब अहबार ने कहा कि अल्लाह ने यह भी तो फ़रमाया हैः "अगर उम्र में कमी-ज़्यादती हो रही है तो वह भी तक़दीर में लिखी हुयी है"।

सहाबा और ताबेअ़ीन रज़ि० के बारे में आता है कि वह यह दुआयें किया करते थेः "ऐ मेरे मौला! अगर मेरा नाम बुरे लोगों में लिखा हुआ है तो उन में से निकाल कर मुझे नेक लोगों में शामिल कर दे और अगर मेरा नाम नेक लोगों में लिखा है तो मुझे उन ही में साबित क़दम रख"। (मवाहिब)

२२. यानी जब फ़रिश्ते मुश्रिकों की जान निकालते हैं तो उनसे प्रशन करते हैं कि जिन को तुम अल्लाह के अ़लावा पुकारते और उन की पूजा-पाट करते थे, वह कहां हैं? उन को बुलाओ ताकि वह तुम को इस बला से बचायें। मुश्रिक उत्तर देंगे कि वह तो छू मन्तर और रफ़ू चक्कर हो गये। और हम ग़लती से उन की पूजा करते थे, वह कुछ भी लाभ या हानि नहीं पहुंचा सकते। मतलब यह है कि मरते समय अपनी ग़लती का इक़रार कर लेते हैं लेकिन उस समय उन को अपनी ग़लती को तस्लीम कर लेने से कोई लाभ नहीं पहुंचेगा। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जान निकलते समय की तौबा-तिल्ला कुबूल नहीं होती"। कुरआन में है कि अल्लाह केवल उन्हीं लोगों की तौबा कुबूल करता है जो नादानी से बुरा कार्य तो कर बैठते हैं, लेकिन फिर तुरन्त ही तौबा भी कर लेते हैं। (सूरः निसा, रुकूअ़ २) यानी मरने से पूर्व अपने गुनाहों पर शर्मिन्दा हो कर पक्का इरादा कर लेते हैं कि भविष्य में ऐसा नहीं करेंगे, तो ऐसे लोगों को अल्लाह माफ़ कर देता है और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। और उन लोगों की तौबा कुबूल नहीं होती जो बुरे काम करते रहते हैं और मौत सर पर आ खड़ी है तो कहने लगते हैं कि अब मैं ने तौबा की, और (इसी तरह) उन लोगों की भी तौबा कूबुल नहीं होती जो कुफ़्र में मरते हैं और मरने के बाद अ़ज़ाब देख कर तौबा करते हैं। इन दोनों प्रकार के लोगों के लिये अल्लाह ने दुःख-दायी दण्ड तैयार कर रखा है (सलफ़िय्या)

قَبْلِكُم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ فِي النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ
أُمَّةٌ لَّعَنَتْ أُخْتَهَا حَتَّىٰ إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا
قَالَتْ أُخْرَاهُمْ لِأُولَاهُمْ رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ أَضَلُّونَا
فَآتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ قَالَ لِكُلٍّ
ضِعْفٌ وَلَٰكِن لَّا تَعْلَمُونَ ۞ وَقَالَتْ أُولَاهُمْ

उन के साथ आग के अन्दर तुम भी दाख़िल हो जाओ। (वहाँ यह स्थिति होगी कि) जब कभी कोई क़ौम उस में जायेगी तो अपने साथ वालों को लानत करेगी। यहाँ तक कि सारे ही उस में जमा हो जायेंगे तो पिछले, पहलों के हक़ में कहेंगे ऐ मेरे पर्वर्दिगार! उन्होंने ही हम को गुमराह किया था (और हम उनके बहकावे में आ गये)➲

لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ
فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّ
الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ
لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى
يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى
الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٤٠﴾ لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ
غَوَاشٍ ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَآ

➲इसलिये तू उन को आग में हम से दोगुना अ़ज़ाब दे। अल्लाह कहेगा कि तुम सब को दोगुना-दोगुना है, लेकिन तुम (एक दूसरे की तकलीफ़) नहीं जानते[२३] ३९. और पहले लोग (जब पिछलों की यह विनती सुनेंगे तो) पिछलों से कहेंगे कि तुम को हम पर कोई फ़ज़ीलत नहीं (कि तुम पर तकलीफ़ हल्की हो) पस (अपना सा मुंह लेकर) अपनी बदकारी के बदले अ़ज़ाब का मज़ा चखो ४०. (क्योंकि हमारे हाँ आ़म दस्तूर है कि) जो लोग हमारे हुक्मों से इन्कारी हों और उन से तकब्बुर करें (मरने के बाद) उनकी रूहों के लिये न तो आकाश के दरवाज़े खुलते है (कि अ़िज़्ज़त के साथ उन की आवभगत हो) और न वह जन्नत में दाख़िल होने पाते हैं यहाँ तक कि ऊँट सुई के नाके[२४] में से पार हो जाये[२५]। हम इसी प्रकार अपराधियों को दण्ड दिया करते हैं ४१. उन के लिए आग ही का बिछौना होगा और आग ही का ऊपर से ओढ़ना। हम इसी तरह ज़ालिमों को सज़ा दिया करते हैं। ४२. और जो लोग ईमान लाये और (ईमान लाने के बाद) नेक कार्य करते रहे (जितना उन से हो सका) हम किसी को उस की हिम्मत से बढ़ कर हुक्म नहीं देते[२६]।

....

२३. पहलों को तो इसलिये जहन्नम में ढकेला जायेगा कि अव्वल तो वह स्वयँ गुमराह हुये, दूसरे यह कि एक बुरी परम्परा (रविश) अपने पीछे छोड़ गये। पिछलों को इसलिये दन्डित किया जायेगा क्योंकि अव्वल तो उन्होंने बुरे कार्य किये, दूसरे यह कि बिला सोचे-समझे पहले लोगों की डगर पर चलते रहे। इस प्रकार दोनों ही गिरोहों को दुगना दन्ड मिलेगा (सनाई)

२४. यानी जैसे यह कठिन बल्कि अंसभव है कि ऊँट सूई के नाके में घुस जाये, इसी प्रकार हमारे आदेशों का पालन न करने वालों का जन्नत में जाना असंभव है (सनाई)

२५. हदीस शरीफ़ में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जब कोई आदमी मरने लगता है तो उस के पास फ़रिश्ते आ जाते हैं, अगर वह नेक है तो फ़रिश्ते उस से कहते हैं, ऐ पाक बदन में रहने वाली पाक रूह! प्रसन्नता के साथ निकल आ, तुझ को आराम, शान्ति, बेहतरीन रोज़ी और अल्लाह की रज़ा की बशारत हो, उस को बशारत बार-बार सुनाई जाती है, यहाँ तक कि पाक रूह बदन से निकल जाती है, फिर फ़रिश्ते उस रूह को लेकर आकाश पर चढ़ते हैं और उन के लिये बड़े अदब से आकाश के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, यहाँ तक कि वह रूह अ़र्श के नीचे जा कर ठहर जाती है और बशारत के साथ उन को लौटाया जाता है।

लेकिन अगर मरने वाला बुरा और काफ़िर है तो फ़रिश्ते आ कर उस से कहते हैं कि ऐ नापाक रूह! निकल, आज तेरे लिये ज़िल्लत और दोज़ख़ के अ़ज़ाब की सूचना है, बड़ी मुश्किल से वह रूह बदन से अलग होती ➲

➲है, तो उस को लेकर फ़रिश्ते आकाश की ओर बढ़ते हैं उस की गन्ध से पूरा आसमान बदबू करने लगता है, आख़िर उस के लिये आकाश के द्वार नहीं खोले जाते और उसे ज़िल्लत और रुसवाई का सामना करना पड़ता है (तल्ख़ीस)

२६. 'हम उसको उसकी हिम्मत से बढ़ कर हुक्म नहीं देते' यानी एक ग़रीब आदमी जिस का अपना ही गुज़ारा मुश्किल से होता हो उस को हज़ारों रुपये ख़ैरात करने का हुक्म कैसे कर सकते हैं? उस को उसकी पहुंच के अनुसार ही हुक्म देते हैं (सनाई)

أُولَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٤٢﴾ وَ
نَزَعْنَا مَا فِى صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ تَجْرِى مِن
تَحْتِهِمُ ٱلْأَنْهَٰرُ ۖ وَقَالُوا۟ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ٱلَّذِى هَدَىٰنَا
لِهَٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِىَ لَوْلَآ أَنْ هَدَىٰنَا ٱللَّهُ ۖ
لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِٱلْحَقِّ ۖ وَنُودُوٓا۟ أَن
تِلْكُمُ ٱلْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾
وَنَادَىٰٓ أَصْحَٰبُ ٱلْجَنَّةِ أَصْحَٰبَ ٱلنَّارِ أَن قَدْ
وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدتُّم مَّا
وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۖ قَالُوا۟ نَعَمْ ۚ فَأَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ
بَيْنَهُمْ أَن لَّعْنَةُ ٱللَّهِ عَلَى ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٤٤﴾ ٱلَّذِينَ
يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ
وَهُم بِٱلْءَاخِرَةِ كَٰفِرُونَ ﴿٤٥﴾ وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ
وَعَلَى ٱلْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّۢا بِسِيمَىٰهُمْ ۚ

वही जन्नती हैं, वही उस (जन्नत) में हमेशा रहेंगे ४३. और हम (दुनिया की आपसी) रंजिशों से उन के सीने साफ़ कर देंगे[२७] उन के मकानों के नीचे से नहरें जारी होंगी (बड़े मज़े से सुख-चैन की ज़िन्दगी बिताएंगे) और कहेंगे कि सब प्रशंसाएँ अल्लाह ही के लिये हैं जिसने हम को इस काम की रहनुमाई की थी और अगर हम को (अल्लाह) हिदायत न करता तो हम कभी भी राह न पा सकते, हमारे पर्वरदिगार के संदेष्टा सच्ची तालीम ले कर आये थे। और उन को एक पुकार आयेगी कि यह जन्नत तुम्हारे (नेक) कामों के बदले में (अल्लाह के फ़ज़्ल से) तुम को मिली है[२८] ४४. और जन्नत वाले जहन्नम वालों को पुकारेंगे (और कहेंगे) कि हम से जो अल्लाह ने (नेक कामों पर) वादा फ़रमाया था हम ने तो उसे दुरुस्त पाया, क्या तुम ने भी (बुरे कामों पर अल्लाह) के वादों को ठीक पाया है? वह कहेंगे कि हाँ! (इस में कोई शक नहीं कि हमारी भी बुरी दुर्गत हो रही है) इतने में पुकारने वाला पुकारेगा कि (उन) ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है ४५. जो अल्लाह की राह से लोगों को रोकते थे और उस में (अकारण एतिराज़ करने को) टेढ़ापन सोचा करते थे, और आख़िरत (की ज़िन्दगी) के इन्कारी थे[२९] ४६. और उन दोनों के दर्मियान एक रोक होगी, और आराफ़ पर कुछ लोग होंगे वह हरएक को उन की निशानियों से पहचानेंगे[३०]।

....

२७. हज़रत अबू सईद ख़ुद्री रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जब ईमान वाले इस ग़म से नजात पा जायेंगे कि वह दोज़ख़ में नहीं डाले जायेंगे तो उन को जन्नत-दोज़ख़ ➲

के दर्मियान एक पुल पर रोक दिया जायेगा और ज़ालिम-मज़लूम के दर्मियान बदला दे दिला कर उन को पाक-साफ़ कर के जन्नत में जाने का आदेश दिया जायेगा। और क़सम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है! हर जन्नती, जन्नत में अपने घर को अपने दुनिया वाले घर से ज़्यादा भली-भाँति पहचानेगा (बुख़ारी) हज़रत अ़ली रज़ि० ने फ़रमायाः "मुझे आशा है कि मैं, उस्मान, तल्हा और ज़ुबैर रज़ि० जैसे लोगों में से हूं जिन के बारे में अल्लाह तआ़ला ने यह आयत "व-न-ज़अ़ना माफ़ी सुदूरिहिम-------नाज़िल की है।(इब्ने जरीर)

२८. हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि जन्नती लोग जहन्नम वालों को देख कर कहेंगे "अगर अल्लाह हिदायत न करता तो हम हिदायत न पाते"। इसी प्रकार जहन्नमी लोग जब जन्नत वालों के ठिकानों को देखेंगे तो कहेंगे "काश! अल्लाह मुझे भी हिदायत कर देता तो मैं भी नेक लोगों में हो कर आज जन्नत का वारिस बन जाता"। कुछ उलमा का कहना है कि यह बात उस समय कहेंगे जब दूर से जन्नत को देख लेंगे। कुछ उलमा ने कहा कि यह उस समय जन्नत में कहेंगे जब जन्नत में अपने-अपने स्थान ग्रहण कर लेंगे।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "एक पुकारने वाला आवाज़ लगायेगा कि ऐ जन्नती लोगो! तुम्हारे लिये जन्नत साबित हो गई, ज़िन्दा रहो, अब कभी न मरोगे और तुम्हारे लिये साबित हुआ कि नेमतों में रहो, अब कभी भी मोहताज न रहोगे। यह आयत "तुम्हें जन्नत तुम्हारे नेक कामों के बदले में मिली है" का अर्थ है (मआ़लिम)

२९. जिस प्रकार जन्नती लोगों का दोज़ख़ वालों को लानत-मलामत करना ज़िक्र है, इसी प्रकार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बद्र के दिन मारे गये काफ़िरों को मुख़ातब करके पुकारा था "अल्लाह ने जो तुम से वादा किया था क्या वह तुम को मिल गया?" हज़रत उमर रज़ि० ने उस मौक़े पर कहा कि यह लोग तो मर चुके हैं, तो क्या मुर्दे भी सुनते हैं? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः क़सम है उस ज़ात की जिस के हाथ में मेरी जान है। मेरी बातों को यह लोग तुम से ज़्यादा सुन रहे हैं, लेकिन उत्तर देने की ताक़त नहीं है (इब्ने कसीर)

३०. 'अअ़राफ़' जन्नत और जहन्नम के बीच में एक टीले का नाम है जिस पर कुछ पापी बन्दी बना कर छोड़ दिये जायेंगे। इमाम मुजाहिद रह० फ़रमाते हैं कि जन्नत-दोज़ख़ के दर्मियान एक दीवार होगी जिस का नाम "अअ़राफ़" है। (इब्ने जरीर)

وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ لَمْ
يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ۞ وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ
تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ
الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۞ وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ
رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ قَالُوْا مَآ اَغْنٰى عَنْكُمْ
جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ۞ اَهٰٓؤُلَآءِ
الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ اُدْخُلُوا

और जन्नत वालों को "सलामुन् अ़लैकुम" कह कर पुकारेंगे, अभी स्वयँ तो जन्नत में दाख़िल न हुये होंगे मगर आशावान (उम्मीदवार) अवश्य होंगे ४७. और जब उन की नज़र जहन्नमियों पर जा पड़ेगी तो (उन की बुरी स्थिति को देख कर) कहेंगे कि ऐ हमारे मौला! तू हम को इन ज़ालिमों की क़ौम के साथ न करना[1] ४८. और आराफ़ वाले दोज़ख़ी लोगों को भी जिन को (उन के ज़ाहिरी तकब्बुर के) निशानों से पहचानते होंगे, बुला कर कहेंगे कि न तो तुम्हारे जत्थे कुछ काम

الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ؕ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَمَا

आये और न तुम्हारा वह (ज़ोर और) माल जिस की वजह से तुम शेख़ियाँ बघारा करते थे ४९. (ज़रा देखो तो!) क्या यही (ग़रीब) लोग हैं जिन के बारे में तुम क़समें खा-खा कर कहा करते थे कि अल्लाह उन को रहमत से नहीं नवाज़ेगा (लो उन को अनुमति मिल चुकी है कि) जन्नत में दाख़िल हो जाओ, न तुम पर भय है और न रन्जीदा होंगे (इस बात को सुन कर जन्नती तो प्रसन्न होंगे) ५०. और जहन्नमी, जन्नती लोगों से कहेंगे (हम तो जले जा रहे हैं) अल्लाह के वास्ते हम पर थोड़ा सा पानी तो डालो[३२]! या जो अल्लाह ने तुम को रोज़ी दी है उस में से कुछ हमें भी दो। जन्नती कहेंगे (हम मजबूर हैं) अल्लाह ने काफ़िरों से यह दोनों नेमतें रोक रखी हैं ५१. (किन काफ़िरों से?) जिन्होंने दीन को हँसी और खेल बना रखा था और दुनिया की ज़िन्दगी से फ़रेब खाये हुये थे, इसलिये हम उन को उस दिन (दोज़ख़ में जानबूझ कर) ऐसे भूल जायेंगे जैसे यह इस दिन (के पेश आने) को भूले हुये हैं,

....

३१. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमयाः "जिन लोगों की नेकी बदी बराबर होगी यही लोग "आराफ़" वाले होंगे, और जन्नत में न जा पाने की वजह से ख़ाहिश करेंगे। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने अपनी रिवायत में इतना और ज़्यादा किया है कि "बुराइयों ने उन को जन्नत में जाने से रोका और नेकियों ने जहन्नम में जाने से, इसीलिये दीवार(टीले) पर ठहराए गये, अब अल्लाह इन के दर्मियान फ़ैसला फ़रमायेगा। अ़मर बिन जरीर से रिवायत है कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से आराफ़ वालों के बारे में पूछा तो आप ने फ़रमायाः बन्दों में सब से आख़िर में जिन के बारे में फ़ैसला होगा वह आराफ़ वाले होंगे। जब अल्लाह तआ़ला बन्दों का फ़ैसला कर चुकेगा तो फ़रमायेगा कि तुम ऐसी क़ौम हो कि तुम्हारी नेकियों ने तुम को आग में दाख़िल होने से बचाया, मगर तुम अभी तक जन्नत में दाख़िल न हो सके, तुम अब मेरे आज़ाद किये हुये बन्दे हो, जाओ जन्नत में दाख़िल हो जाओ और जहाँ चाहो जन्नत में चलो-फिरो और खाओ-पियो।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह तआ़ला उन को आराफ़ में इसलिये रखेगा कि यह लोग जन्नत और दोज़ख़ वालों को पहचान लें। वह जहन्नमी लोगों को उन के चेहरों की सियाही से पहचानेंगे, उस समय कहेंगे कि ऐ मेरे मौला! हम को इन ज़ालिमों के साथ न करियो (इब्ने कसीर, इब्ने जरीर)

३२. इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "बेहतरीन सद्क़ा पानी है"। और फिर इसी आयत की तरफ़ इशारा फ़रमाया (अबू हातिम) एक मर्तबा आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के चचा अबू तालिब बीमार हुये तो कुरैश ने कहा कि तुम अपने भतीजे से जन्नत का कोई फल क्यों नहीं मंगवा लेते ताकि उस को खा कर तन्दुरुस्त हो जाओ? चुनान्चे एक शख़्स ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आ कर जन्नत के फल के बारे में कहा, तो हज़रत अबू बक्र रज़ि० जो पहले ही वहाँ मौजूद थे, उत्तर दिया कि जन्नत की नेमतें काफ़िरों के लिये हराम कर दी गयी हैं (इब्ने कसीर)

और (जिस प्रकार) हमारे हुक्मों से इन्कार करते हैं[३३] ५२. और हमने उनके पास किताब भी पहुंचा दी जिस को हम ने बड़ी समझ-बूझ से खोल-खोल कर बयान कर दिया, और वह मानने वालों के लिये हिदायत और रहमत है[३४] ५३. यह तो केवल उस के परिणाम के इन्तिज़ार में हैं। जिस दिन उस का परिणाम आ पहुंचा तो जो लोग उसको पहले से भूले बैठे होंगे वह कहेंगे कि हमारे रब के रसूल सच्ची तालीम ले कर आये थे (मगर हम ने उन की क़द्र न की) तो क्या कोई है जो (इस आड़े वक़्त में) हमारा सिफ़ारिशी हो कर हमारी सिफ़ारिश करे (कि हमारे अ़ज़ाब में कमी हो) या हम को (पहली ज़िन्दगी में) लौटा दिया जाये कि हम पहले किये के ख़िलाफ़ (निक अ़मल करें) बेशक उन्होंने अपना आप ही नुक़्सान किया और जो कुछ अल्लाह के ख़िलाफ़ झूठ घड़ा करते थे वह सब उन को भूल गये ५४. कुछ शक नहीं कि तुम्हारा पालनहार (एक ही माबूद है जिस का पाक नाम) अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीनों को छः दिन (की मुद्दत) में पैदा किया[३५] फिर अ़र्श पर मुस्तवी हुआ[३६], दिन को रात से वही ढाँपता है (दिन-रात) एक दूसरे के पीछे चुपके-चुपके लगे हुये हैं, और सूरज और चाँद और सितारों को उसी ने अपने हुक्म से काम पर लगा रखा है[३७]। उसी ने सब कुछ पैदा किया और उसी का सब इख़्तियार है। अल्लाह की ज़ात ही बर्कत वाली है जो सारे जहान वालों का पालनहार है। ५५. अपने रब से ही गिड़गिड़ा कर चुपके-चुपके माँगा करो। अल्लाह सीमा-रेखा से आगे बढ़ने वालों को दोस्त नहीं रखता[३८]।

كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝ وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ
فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝
هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ
يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ
رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا
لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ قَدْ
خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝
اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۟ يُغْشِي
الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ
تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ

....

३३. हदीस शरीफ़ में है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला बन्दों को अपनी नेमतें याद दिला कर पूछेगा कि क्या तुझ को आज के दिन के बारे में विश्वास नहीं था? बन्दा कहेगा कि नहीं। अल्लाह बन्दे से कहेगा कि मैं भी तुझ को जहन्नम में डाल कर भूल जाऊँगा, जैसे कि तू मुझ को भूला हुआ था।

दीन को हंसी-मज़ाक़, खेल-तमाशा बनाना, इस का अर्थ है कि जो कुछ मुंह में आये कहो और जो मन में आये करो, अल्लाह के हुक्म से मतलब और न रसूल की इताअ़त से सरोकार। जैसे आजकल के ताज़ियादार मुसलमान हैं जो न अल्लाह से डरते हैं और न रसूल से शर्माते हैं, बल्कि अपनी मनमानी करते हैं (सनाई)

३४. और इन्कार करने वालों के हक़ में तबाही-बर्बादी है---"वला यज़ीदुज्ज़ालिमी-न इल्ला ख़सारा" (नहीं ज़्यादा करता है ज़ालिमों के लिये मगर टोटा) इसी आयत की तरफ़ इशारा है (सनाई)

३५. चूँकि पैदा करने की हालत में सूरज वग़ैरह कुछ न था इसीलिये "छः दिन" से मुराद उसी क़दर समय है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि उन में का एक दिन हज़ार वर्ष के बराबर है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० रिवायत करते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने मिट्टी को शनिवार के दिन, पहाड़ों को रविवार, पेड़-पौधों को पीर के दिन और मक्रूह वस्तुओं को मंगलवार के दिन, नूर को बुद्धवार के दिन, जानवर-चौपायों को जुमेरात के दिन और हज़रत आदम को जुमा के दिन, दिन के अन्तिम पहर में पैदा किया (मुस्लिम, नसाई)

३६. अहले हदीसों ने 'इस्तवा' का अर्थ "अ़र्श पर बुलन्द हुआ, बैठ गया, चढ़ गया या जमा" बयान किया है। मोतज़िला और जहमिय्या फ़िर्क़े ने इस की तावील की है और मुराद लिया है "अर्श पर ग़ालिब हुआ"। यह उन की बहुत बड़ी नादानी है। ग़ालिब तो वह पहले ही से था और हर समय वस्तु पर ग़ालिब है। 'इस्तवा' अल्लाह की एक सिफ़त है और बग़ैर तावील किये उस समय हर वस्तु पर ग़ालिब है। 'इस्तवा' अल्लाह की एक फ़ितरत है और बग़ैर तावील किये उस का ज़ाहिरी अर्थ ही लिया जायेगा, हाँ, उस की कैफ़ियत के बारे में हमें कुरेद करने की आवश्यक्ता नहीं। चारों इमाम और अहले हदीस का मज़हब यही है (वहीदी)

३७. अहले सुन्नत के नज़दीक 'अ़र्श पर मुस्तवी होना' यह अल्लाह पाक की सिफ़त है। हमें उस पर बग़ैर किसी चूँ-चरा के ईमान लाना चाहिये। तमाम इमामों और मुसलमानों का यही अ़क़ीदा है कि इस प्रकार की आयतों के ज़ाहिरी अर्थ पर ईमान लायें, उन की कैफ़ियत को अल्लाह के हवाले कर देना चाहिये। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा और बहुत से बुज़ुर्गों से रिवायत है कि 'इस्तवा' तो मालूम है, लेकिन उस का विवरण, तफ़्सील मालूम नहीं है, केवल उस पर ईमान लाना फ़र्ज़ है और छान-बीन करना बिद्अ़त है। इमाम बैहक़ी ने इमाम अबू हनीफ़ा रह० से रिवायत नक़ल की है कि अल्लाह पाक आसमान पर है न कि ज़मीन पर। इमाम साहब से यह भी रिवायत है कि जो शख़्स इस बात से इन्कार करे कि अल्लाह आसमान पर है, उस के काफ़िर होने में कोई शुब्हा नहीं। इमाम शाफ़ेई रह० का क़ौल है कि अल्लाह पाक अपने अ़र्श पर आसमान में है, वह अपनी मख़लूक़ से सब से निकट है, उस की कैफ़ियत वही है और जैसे चाहता है चढ़ता-उतरता है। खुलासा यह है कि 'इस्तवा अ़लल् अ़र्श' पर बिला किसी तावील के ईमान लाना चाहिये (मवाहिब)

३८. अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल से रिवायत है कि उन्होंने अपने बेटे को कहते सुना "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से जन्नत के दायें तरफ़ सफ़ेद महल माँगता हूँ" इस पर अ़ब्दुल्लाह ने फ़रमायाः "इतना ही काफ़ी है कि अल्लाह से जन्नत माँग और दोज़ख़ से पनाह तलब कर"। मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को फ़रमाते हुये सुना है कि बहुत जल्द कुछ लोग पैदा होंगे जो दुआ़ माँगने और पाकी हासिल करने में हद से ज़्यादा ग़ुलू करेंगे (इब्ने माजा)

تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٥٥﴾
وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا
وَّطَمَعًا ۚ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾
وَهُوَ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ
رَحْمَتِهٖ ۚ حَتّٰٓى اِذَآ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ

५६. और दुनिया की इस्लाह होने के बाद (उसमें) फ़साद न फैलाओ (कि नई-नई बिद्अ़तें निकाल कर अ़मली दीन को मिटाओ) और डर और लालच से उसी को पुकारो[३९]। अल्लाह की रहमत (उन) नेकोकारों से बहुत ही निकट होती है[४०] ५७. वही ज़ात पाक है जो अपनी रहमत से पहले (ठन्डी) हवाओं को (वर्षा की) खुशख़बरी देते हुये भेजता है। यहाँ तक कि जब वह बोझल बादलों को➲

➲ले उड़ती हैं तो हम उस बादल को ख़ुश्क बस्ती की ओर चला देते हैं फिर उस में से वर्षा उतारते हैं फिर उस (पानी) के साथ हर प्रकार के फूल (फल) निकालते हैं। इसी प्रकार हम मुर्दों को निकालेंगे (यानी ज़िन्दा करेंगे) ताकि तुम नसीहत पाओ ५८. और बेहतरीन (उपजाऊ) ज़मीन की पैदावार अल्लाह के हुक्म से हरी-भरी निकलती है, और रद्दी ज़मीन की पैदावार रद्दी ही निकलती है। इसी प्रकार शुक्र अदा करने वाली क़ौम के लिये 'हम अपने अहकाम बार-बार बतलाते हैं[४१] ५९. (क्या तू कोई नई तालीम लाया है? तुझ से पहले) हम ने नूह को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा था, फिर उस ने (भी यही) कहा था कि ऐ भाइयो! अल्लाह ही की इ़बादत करो उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं (अगर इस हाल में तुम्हारी ज़िन्दगी गुज़री तो) तुम्हारे हाल पर मुझे बड़े दिन के दण्ड का भय है[४२] ६०. उस की क़ौम के सर्दार (मुखिया) बोले (हम तो तेरी नहीं मानेंगे क्योंकि) हमारे ख़्याल में तू तो खुली गुमराही में है

لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ
مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ
بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِىْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا ؕ
كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ۝
لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اِنِّىْۤ
اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝ قَالَ
الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝

....

३९. इस आयत में दुआ़ के कुबूल होने की शर्तों को बताया गया है। रोना, गिड़गिड़ाना, डरना, ख़ौफ़ खाना, आशा करना, दिल को हाज़िर करके दुआ़ माँगना, यह बातें दुआ़ के कुबूल होने के सूत्र हैं, इन का लिहाज़ रखते हुये जो भी जाइज़ दुआ़ माँगी जायेगी वह कुबूल होगी।

४०. क्या तुम्हें इतनी अ़क्ल नहीं कि ख़ालिक़ को छोड़ कर मख़्लूक़ के पीछे मारे-मारे फिरते हो (सनाई) 'उदऊ रब्बकुम' दुआ़ करने के तरीक़े सिखाये गये हैं। इस आयत से कुछ लोगों ने आहिस्ता आमीन कहने पर दलील पकड़ी है, मगर यह बिल्कुल ही ग़लत है। बुलन्द आवाज़ से पढ़ी जाने वाली नमाज़ों (फ़ज्र, मग़रिब, इ़शा) में सूरः फ़ातिहा के अन्त में आमीन भी बुलन्द आवाज़ से कहना सहीह हदीस से साबित है, और बहुत से इमामों का इस पर अ़मल है।

४१. जब वर्षा होने वाली होती है तो पहले ठन्डी हवायें चलती हैं, फिर वर्षा होती है और मुर्दा ज़मीन (भूमि) जीवित हो कर हरी-भरी हो जाती है। बिल्कुल यही हाल अल्लाह की वह्यि का भी है, उस की हिदायत और रहनुमाई के चिन्ह प्रकट होते हैं, फिर उस की बर्कतों से मुर्दा रूहों में जान आ जाती है, चुनान्चे हवायें चलनी आरंभ हो गयीं हैं और अब रहमत की वर्षा का इन्तिज़ार करो। लेकिन इस से केवल वही भूमि लाभप्रद हो सकती है जो कि अच्छी हो, बंजर और ख़राब भूमि पर चाहे जितनी वर्षा हो, लेकिन उस में हरियाली नहीं आयेगी। इसी प्रकार कुरआन की हिदायत से केवल वही रूहें हरी-भरी होंगी जिन के अन्दर ➲

➲हक़ को कुबूल करने की क्षमता है, जिन्होंने इसे खो दिया है उस के खाते में महरूमी और नामुरादी के सिवा कुछ हाथ न आयेगा (तर्जुमान)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जिस ज्ञान और हिदायत के साथ अल्लाह नें मुझे भेजा है उस का उदाहरण ऐसा है जैसा अपने मौसम में बरसने वाला पानी अपने समय पर बरसा, तो जो भी ज़मीन उपजाऊ थी उसने पानी को पी कर फल, मेवे, हरे-भरे घास उगाये, और भूमि में इधर उधर जो हिस्से तालाब की शक्ल में थे उन में पानी रुका तो उस से लोगों ने फ़ाइदा उठाया। लेकिन भूमि का जो हिस्सा बिल्कुल पथरीला-कंकरीला था जो न तो पानी ही पीता है और न ही पानी जमा करता है, न हरियाली ही उगाता है उसे कुछ फ़ाइदा न हुआ। बस बिल्कुल यह उदाहरण उन दो क़िस्म के लोगों का है, यानी एक तो वह शख़्स जिस ने मेरी हिदायत को कुबूल किया और लाभ उठाया। और दूसरा वह व्यक्ति जिसने इधर कोई तवज्जोह ही न की (बुख़ारी)

४२. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः कि सर्वप्रथम जो रसूल बना कर भेजे गये वह हज़रत नूह अ़लै० थे (हातिम) हज़रत आदम और हज़रत नूह के दर्मियान सात पुश्तों का फ़ासला है। एक दूसरी रिवायत में है कि जैसी तकलीफ़ नूह को अपनी क़ौम की तरफ़ से पहुंची, वैसी किसी नबी को न पहुंची (इब्ने कसीर)

हज़रत नूह अ़लै० दजला-फ़ुरात के दोआबा में नबी बना कर भेजे गये थे। इस इलाक़े (क्षेत्र) में बहुत ज़माना से इन्सानों की आबादी रही है और संभवत: सब से पहले बुतपरस्ती भी यहीं से आरंभ हुयी। यह भी अनुमान है कि इन्सानों की सब से पहली और पुरानी आबादी हक़ पर क़ाइम रहने के बाद सब से पहले गुमराह भी वहीं हुयी (तर्जुमान)

قَالَ يٰقَوۡمِ لَيۡسَ بِىۡ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّىۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡ رَّبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٦١﴾ اُبَلِّغُكُمۡ رِسٰلٰتِ رَبِّىۡ وَ اَنۡصَحُ لَـكُمۡ وَ اَعۡلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿٦٢﴾ اَوَعَجِبۡتُمۡ اَنۡ جَآءَكُمۡ ذِكۡرٌ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ عَلٰى رَجُلٍ مِّنۡكُمۡ لِيُنۡذِرَكُمۡ وَلِتَتَّقُوۡا وَلَعَلَّكُمۡ تُرۡحَمُوۡنَ ﴿٦٣﴾ فَكَذَّبُوۡهُ فَاَنۡجَيۡنٰهُ وَالَّذِيۡنَ مَعَهٗ فِى الۡـفُلۡكِ وَاَغۡرَقۡنَا الَّذِيۡنَ كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا قَوۡمًا عَمِيۡنَ ﴿٦٤﴾ وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمۡ هُوۡدًا ؕ قَالَ يٰقَوۡمِ اعۡبُدُوا اللّٰهَ مَا لَـكُمۡ مِّنۡ اِلٰهٍ غَيۡرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوۡنَ ﴿٦٥﴾ قَالَ

६१. (यह तो अल्लाह जानता है कि) नूह ने कहा कि भाइयो! मैं गुमराह नहीं, बल्कि सारे जहान के रब की तरफ़ से रसूल हूँ ६२. उसके संदेश तुम को पहुंचाता हूँ और तुम्हारी ख़ैरख़ाही करता हूँ और मुझे अल्लाह की तरफ़ से उन बातों की सूचना (इत्तिलाअ़) है जिन की तुम को नहीं, क्या तुम (इस सीधी-सादी शिक्षा से इन्कारी हो और) ६३. आश्चर्य करते हो कि तुम्हीं में से एक आ़दमी द्वारा अल्लाह के हाँ से तुम को नसीहत पहुंची ताकि वह तुम्हें (बुरे कामों से) डराये और तुम परहेज़गार बनो और तुम पर रहम किया जाये ६४. (इतने विस्तार से बयान सुन कर भी) लोगों ने न माना तो हम ने उस को और उसके साथियों को बेड़े (किश्ती) में (डूबने से) नजात दी[४३] और जिन्होंने हमारे हुक्मों को झुठलाया था उन को➲

ٱلْمَلَأُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ مِن قَوْمِهِۦٓ إِنَّا لَنَرَىٰكَ فِى سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ ٱلْكَٰذِبِينَ ۝ قَالَ يَٰقَوْمِ لَيْسَ بِى سَفَاهَةٌ وَلَٰكِنِّى رَسُولٌ مِّن

➲(पानी में) डुबो दिया (क्योंकि) वह (बुरे कामों में) अंधे हो रहे थे ६५. और आ़द क़ौम की तरफ़ हम ने उन के भाई हूद को भेजा। उस ने कहाः ऐ भाइयो! अल्लाह ही की अ़िबादत करो उस के अ़लावा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। क्या तुम डरते नहीं[४४]? ६६. उस की क़ौम के सर्दार (प्रमुख) जो काफ़िर थे कहने लगे कि हमारे ख़्याल में तो तू बेवकूफ़ है (जो बड़ों की चाल से मुख़ालिफ़ चलता है) और हम तुझ को झूठा समझते हैं ६७. हूद ने कहा कि ऐ भाइयो! मैं बेवकूफ़ नहीं हूँ बल्कि रब्बुल आ़लमीन का (भेजा हुआ) रसूल हूँ।

....

४३. रिवायत में आया है कि हज़रत नूह दस रजब को कश्ती में सवार हुये, इसके बाद तूफ़ान आरंभ हुआ। फिर दस मुहर्रम को नाव से उतरे, इस दर्मियान तमाम काफ़िर हलाक हो चुके थे (मवाहिब)

४४. आ़द अव्वल(प्रथम) और नूह अ़लैहि० के दर्मियान ८०० वर्ष की दूरी है। आ़द अव्वल (प्रथम) की बची-खुची नस्ल को आ़द सानी (द्वितीय) कहा जाता है। यह लोग साम बिन नूह की औलाद में से थे। उन की आबादी यमन के अह्क़ाफ़ (रेत के टीले) के दर्मियान थी जो मुल्क अ़म्मान और हिज़्रमूत के पास है। उन की हिदायत के लिये हूद बिन अ़ब्दुल्लाह को नबी बनाकर भेजा गया था, यह अपनी ही क़ौम में से थे और ४६४ वर्ष तक जीवित रह कर इन्तिक़ाल किया। इन की क़ब्र हिज़्रमूत ही में है (मवाहिब)

हज़रत नूह की क़ौम संभवत: आरमीनिया और एशिया-ए-कोचक में आबाद थी। चन्द वर्ष हुये उन पहाड़ो की चोटियों पर बर्फ़ में दबी हुयी एक बड़ी कश्ती दिखाई दी, जिस के बारे में अक्सर लोगों का कहना है कि यह नूह अ़लैहि० की कश्ती थी (हक़्क़ानी-२/१३४)

رَّبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ۝ أُبَلِّغُكُمْ رِسَٰلَٰتِ رَبِّى وَأَنَا۠ لَكُمْ نَاصِحٌ أَمِينٌ ۝ أَوَعَجِبْتُمْ أَن جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ ۚ وَٱذْكُرُوٓا۟ إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوحٍ وَزَادَكُمْ فِى ٱلْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۖ فَٱذْكُرُوٓا۟ ءَالَآءَ ٱللَّهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ قَالُوٓا۟ أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ ٱللَّهَ وَحْدَهُۥ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ ءَابَآؤُنَا ۖ فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ إِن كُنتَ مِنَ

६८. ताकि तुम को उस के संदेश पहुंचाऊँ और (अगर तुम ग़ौर करो तो) मैं तुम्हारा हक़ीक़ी ख़ैरख़ाह हूँ ६९. क्या तुम तअ़ज्जुब करते हो कि तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से तुम्हीं में से एक आदमी के वसीले से तुम को नसीहत पहुंची ताकि वह तुम को (बुरे कामों से) डराये। और अल्लाह की मेहरबानी को याद करो कि उसने तुम को नूह की क़ौम के पीछे (ज़मीन में) उन का जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाया और बदनी ताक़त भी तुम को (औरों से) अधिक दी, इसलिये तुम उस का एहसान मानो ताकि तुम्हारा भला हो[४५] ७०. (यह अभागे बजाए आज्ञापालन करने➲

الصّٰدِقِيْنَ ۝ قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ؕ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ

(के उलटे यूँ) बोले कि क्या तू हमारे पास इसलिये आया है कि हम लोग अकेले अल्लाह की इ़बादत करें और जिनकी हमारे बाप-दादे इ़बादत करते थे उन्हें छोड़ दें? सो अगर तू सच्चा है तो जिस अ़ज़ाब का हम को डरावा देता है हम पर ले आ (वर्ना हम मानने वाले नहीं[४६]) ७१. हूद ने कहा कि पर्वरदिगार का अ़ज़ाब और ग़ज़ब तुम पर आ ही चुका है, क्या (तुम्हें शर्म नहीं आती कि) मुझ से केवल उन नामों के बारे में झगड़ते हो जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादों ने (मनघड़त) मुक़र्रर कर रखे हैं, अल्लाह ने तो उन की कोई सनद नहीं बतलाई[४७] (यह देवी-देवता, बुज़ुर्ग तुमने स्वयँ बनाये हैं) इसलिये (बिहतर है) कि अब तुम इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ ७२. आख़िर हम ने उस को और उस के साथ वालों को अपनी रहमत के साथ बचा लिया।

....

४५. हज़रत नूह की क़ौम के बाद क़ौमे-आ़द ने भली-भांति तरक़्क़ी की। उन की आबादी अ़म्मान से ले कर हिज़्रमूत और यमन तक फैल गयी थी। हज़रत हूद इसी बस्ती में संदेष्टा बना कर भेजे गये थे (सनाई)

४६. क़ुबूले हक़ की राह में सब से बड़ी रुकावट बाप-दादों की अंधी तक़लीद और उस की पूजा है। आरंभ में जिहालत से कोई अ़क़ीदा गढ़ लिया जाता है, फिर लम्बे समय तक लोग उसे मानते रहते हैं, फिर लम्बे समय तक मानने के बाद वह मुक़द्दस बन जाता है, फिर लोग उस के ख़िलाफ़ कुछ भी मानने को तैयार नहीं होते। क़ुरआन ने इसी बात को यूँ कहा है कि "बुतों की शक्ल में, या दीन व मज़हब के नाम पर, मुख़्तलिफ़ गुटों की शक्ल में यह सब नाम तुम्हारे अपने गढ़े हुये हैं जिन को तुम्हारे बाप-दादों ने स्वयँ ही ईजाद कर लिया है और अल्लाह ने जिन के लिये कोई आदेश नहीं नाज़िल फ़रमाया और किसी भी आसमानी किताब में जिन के जाइज़ होने की कोई दलील नहीं है" (सूरः अहक़ाफ़ आयत ८) बड़े दुःख की बात है कि मुसलमानों में भी बहुत से ऐसे "नाम" पैदा हो गये हैं, जिन्हें वह हुज्जत और दलील समझने लगे हैं, हालांकि अल्लाह ने उन के लिये कोई दलील नहीं उतारी (तर्जुमान)

४७. कहीं नहीं बतलाया कि फ़लाँ बुत या फ़लाँ क़ब्र वाला तुम्हारी कुछ आवश्यक्ताएँ पूरी कर सकता है (सनाई) अ़ल्लामा इक़बाल ने ख़ूब कहा है:

ज़िन्दगी उस की है मिल्लत के लिये पैग़ामे मौत
कर रहा हो जो बजा-ए-काबा, क़ब्रों का तवाफ़

अल्लाह तआ़ला हम लोगों को शिर्क और बिदअ़त से सुरक्षित रखे और किताब व सुन्नत पर अमल करने की तौफ़ीक़ बख़्शे - आमीन

مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
وَمَا كَانُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٧٢﴾ وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ
صَالِحًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ
إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ هَٰذِهِ
نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةً ۖ فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ
اللَّهِ ۖ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٣﴾
وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن بَعْدِ عَادٍ وَ
بَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِن سُهُولِهَا
قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ الْجِبَالَ بُيُوتًا ۖ فَاذْكُرُوا آلَاءَ
اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٧٤﴾ قَالَ
الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِ لِلَّذِينَ
اسْتُضْعِفُوا لِمَنْ آمَنَ مِنْهُمْ أَتَعْلَمُونَ أَنَّ
صَالِحًا مُّرْسَلٌ مِّن رَّبِّهِ ۚ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلَ

और जिन्हों ने हमारे आदेशों को झुठलाया था उन की जड़ काट दी (क्योंकि वह सच्ची शिक्षा पर) ईमान न लाये थे[४८] ७३. और हम ने समूदियों की तरफ़ उन के भाई सालेह को भेजा। उस ने कहा कि भाइयो! अल्लाह ही की इबादत करो[४९] उस के अ़लावा कोई तुम्हारा माबूद नहीं। अल्लाह की तरफ़ से एक स्पष्ट दलील भी तुम्हारे पास आई है (तो मेरी दुआ़ से) यह अल्लाह की पैदा की हुयी ऊंटनी तुम्हारे लिये चमत्कार है इसलिये उसे छोड़ दो ताकि अल्लाह की ज़मीन में खाती फिरे और तकलीफ़ पहुंचाने की ग़रज़ से हाथ न लगाना वर्ना दुःख की मार तुम को पहुंचेगी[५०] ७४. और (अल्लाह के उस एहसान को) याद करो कि अल्लाह ने आ़द क़ौम के बाद तुम को ज़मीन पर नाइब बनाया और ज़मीन में तुम को जगह दी (और ढब सिखाया) कि तुम साफ़ ज़मीन में बड़े-बड़े महल बना लेते हो और पहाड़ों को खोद कर घर बनाते हो[५१] इसलिये तुम अल्लाह के एहसान याद करो और ज़मीन में अकारण उपद्रव न फ़ैलाते फिरो[५२] ७५. उस की क़ौम के घमन्डी नेताओं ने कमज़ोर लोगों को जो ईमान लाये हुये थे कहा, क्या तुम्हें इस बात का विश्वास है कि सालेह अल्लाह का संदेष्टा है[५३]? वह बोले (यक़ीन क्या?)जो कुछ वह अल्लाह की तरफ़ से ले कर आया है,

....

४८. आ़द की क़ौम पर सूखा काल (क़हत) का प्रकोप नाज़िल हुआ था जो लगातार तीन वर्ष तक रहा। उन्होंने कुछ नेक लोगों को वर्षा की दुआ़ के लिये मक्का शरीफ़ भेजा मगर वह लोग वहाँ पहुंचकर शराब-कबाब और लटकों-झटकों में फंस गये और दुआ़ को भूल गये। अन्त में उन्होंने प्रार्थना की तो आकाश पर बादल दिखाई देने लगा और देखते ही देखते पूरी आबादी के ऊपर छा गया। उस बादल से पानी के स्थान पर आग की वर्षा हुयी और लगातार आठ दिन और सात रातें इतनी तेज़ आँधी का तुफ़ान आया कि जिसने एक-एक सरकश को उठा कर ज़मीन व आसमान के बीच में लटका दिया फिर हर एक को उल्टे सरों के बल पत्थरों पर दे मारा जिस से उन का भेजा बाहर निकल गया और उन का धड़ सर से अलग हो गया। हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम अपने मानने वालों को साथ ले कर एक घर में छुप गये। अल्लाह ने उन को और उनके मानने वालों को इस तबाही से बचा लिया (अहमद)

४९. समूदी लोग आ़द क़ौम के तबाह होने के बाद पैदा हुये। इनकी आबादी का नाम "हिज्र" है जो हिजाज़ ➡

➲और शाम के दर्मियान आबाद थी। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सन नौ हिज्री में तबूक की जंग के लिये जाते हुये उस आबादी से होकर गुज़रे थे। इस बस्ती वालों की हिदायत के लिये हज़रत सालेह अ़लै० को भेजा गया था जो उन के नसबी भाई थे। उन्होंने २८० वर्ष की आयु पायी । इन ही का बयान इन आयतों में मौजूद है। हज़रत सालेह, हज़रत हूद के १०० वर्ष के बाद पैग़म्बर बना कर भेजे गये थे (माख़ूज़)

५०. यह ऊँटनी कैसे पैदा हुयी थी, इस के बारे में कुरआन और हदीस में स्पष्ट बयान नहीं है। इतना अवश्य है कि उस की पैदाइश में कोई नया पन ज़रूर था जिस को नबी होने की निशानी कहा गया (सनाई) उन्होंने एक विशेष चमत्कार का मुतालबा किया था कि उस पत्थर से ऊँटनी पैदा हो तब हम ईमान लायेंगे। चुनान्चे आपकी दुआ़ से ऐसा ही हुआ, वह पत्थर फटा और उसके अन्दर से एक भारी डील डोल की ऊँटनी किनली (बयानुल कुरआन-४/१२४)

५१. घटना यह घटी कि हज़रत सालेह अ़लै० की क़ौम ने उनसे कहा कि कोई चमत्कार दिखाओ। आप उन को एक पहाड़ी पर ले गये। आप की दुआ़ से उस पहाड़ी के एक पत्थर से ऊँटनी पैदा हो गयी। हज़रत सालेह ने कहा कि देखो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी माँग और मुतालबे पर ऊँटनी पैदा कर दी है, यह जहाँ चाहेगी जायेगी, चरेगी, पियेगी, इस को कोई तकलीफ़ न पहुंचने पाये वर्ना तुम सब हलाक कर दिये जाओगे। उस ऊँटनी का हाल यह था कि जहाँ भी जाती क़ौम वालों के चौपाए, उस को देख कर डर के मारे भाग जाते और उनके चौपायों के लिये चारा और पानी की भी समस्या खड़ी हो गयी। और वह उस ऊँटनी से तंग आ गये। एक औ़रत के पास बहुत से चौपाए थे उस ने अपने दोस्तों द्वारा मिल कर उस को मार डालने का प्रोग्राम बनाया, चुनान्चे एक शख़्स जो कि ज़िना से पैदा हुआ था (कुदार बिन सालिफ़) इस के लिये तैयार हुआ और ऊँटनी को हलाक कर दिया।

५८. हज़रत सालेह अ़लै० ने उस से कहा कि तुम अल्लाह की नेमतों का तो ख़्याल करो कि उस ने क़ौमे-आ़द के बाद तुम को इस ज़मीन का मालिक बनाया। तुम उसके मैदानों में गर्मी से बचने के लिये बेहतरीन ठन्डे मकान बनाते हो और जाड़ों में ठण्ड से बचने के लिये पहाड़ों को काट कर उन के अन्दर गर्म मकान बनाते हो। कहा गया है कि इस क़ौम के लोगों की आयु इतनी लम्बी होती थी कि उन की ज़िन्दगी ही में उन के मकान कमज़ोर हो कर गिर जाते थे।

५३. इस आयत में बतलाया गया है कि तकब्बुर करना कुफ़्फ़ार की आ़दत है और कमज़ोर-ग़रीब लोगों को नीचा और ज़लील समझना भी। ग़रीब ही लोग सब से पहले संदेष्टाओं के अनुयायी बने हैं। एक सहीह हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "ग़रीबों ने इस्लाम सब से पहले कुबूल किया और इस्लाम का आरम्भ भी ग़रीबों में हुआ और आख़िरी ज़माना में भी इस्लाम ग़रीबों में ही सिमट कर रह जायेगा (यानी केवल ग़रीब ही उस पर अ़मल करेंगे) सो उन ग़रीबों को बशारत हो जो बिगड़े हुये हालात में भी दीन और इस्लाम पर जमे रहते हैं।

بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِيْٓ
اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَ عَتَوْا
عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ وَ قَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ
اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ

हमारा उस पर ईमान है। ७६. उन घमन्डियों ने कहा जिसे तुम ने बिना सोचे समझे माना है हम उस के इन्कारी हैं। ७७. पस उन्होंने ऊँटनी को मार डाला और अपने पर्वरदिगार के आदेश से सरकशी (इख़्तियार)की और बोले ऐ सालेह!➲

فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝٧٨ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَ
قَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَ نَصَحْتُ
لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ۝٧٩ وَ لُوْطًا
اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ
بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝٨٠ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ
الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ
مُّسْرِفُوْنَ ۝٨١ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا
اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝٨٢
فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝٨٣

अगर तू रसूल है तो जिस बात का हम को डरावा देता है हम पर ले आ (देखें तो क्या होता है?) ७८. सो उन पर भूकंप आया तो वह सुब्ह को अपने-अपने घरों में[५४] बैठे ही रह गये (और दम निकल गया) ७९. पस सालेह (उन की यह हालत देख कर) उन से हट गया और बोला: मेरी क़ौम के लोगो! मैंने तुमको अपने पर्वरदिगार के पैग़ाम पहुंचाये और तुम्हारी ख़ैरख़ाही भी की मगर तुम (ऐसे शरीर हो कि) ख़ैरख़ाहों को अपना दोस्त नहीं जानते (बल्कि उल्टे बिगड़े हुये हो) ८०. और लूत को हम ने (रसूल बना कर) भेजा जब उस ने अपनी क़ौम को कहा था क्या तुम ऐसी बेहयाई के कार्य करते हो जो तुम से पहले दुनिया के किसी बाशिन्दे (निवासी) ने नहीं किये ८१. (ग़ज़ब है कि) तुम महिलाओं को छोड़ कर लड़कों से कुकर्म (समलैंगिक) करते हो[५५] बल्कि तुम (इसी प्रकार कई अन्य बुरे कर्म कर के) हद से बढ़े हुये हो[५६] ८२. और (यह सुन कर) सिवाए इस के कुछ न बोले कि मियाँ अपनी बस्ती से इन (निक आदमियों) को (जो लूत के अनुयायी हुये हैं) निकाल दो, यह नेक-पाक आदमी हैं (हम पापियों में रहने से उनको क्या मतलब?) ८३. सो हम ने लूत को और उस के अनुयायियों को बचा लिया, मगर उस की पत्नी (अपनी शरारत की वजह से) तबाह होने वालों में से रही।

....

५४. सूरज के निकलते ही एक ज़ोरदार भूकंप (ज़ल्ज़ला) आया और इसके साथ ही साथ आसमान से भी एक गड़गड़ाहट की आवाज़ पैदा हुई, इस से तमाम लोग हलाक हो गये और हज़रत सालेह अ़लै० अपने मानने वालों को लेकर वहाँ से हिजरत कर गये। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तबूक की लड़ाई के लिये जाते हुये उस आबादी से हो कर गुज़रे तो आप ने सहाबा को इस क़ौम के हालात बयान फ़रमाये और कहा कि जो क़ौम अ़ज़ाब का मुतालबा करती है उस का यही हाल होता है। इसी क़ौम में से एक शख़्स बैतुल्लाह शरीफ़ गया हुआ था वह भी वहाँ से निकलते ही हलाक हो गया था। उस का नाम अबू रग़ाल था। उलमा लिखते हैं कि अबू रग़ाल की औलाद सक़ीफ़ क़बीला के लोग हैं जो ताइफ़ में आबाद हो गये थे। अबू रग़ाल खुद समूद की क़ौम में से था। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक मर्तबा ताइफ़ जाते हुये सहाबा को उस की क़ब्र का निशान भी बताया था (इब्ने कसीर)

५५. हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम हज़रत इब्राहीम अ़लै० के भतीजे थे और बहरेमय्यित (एक समुद्र का नाम) के किनारे सदूम (**Sodom**) के मक़ाम पर आबाद हो गये थे (तर्जुमान)

५६. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि शुरू में शैतान कौमे लूत के पास एक सुन्दर बालक बन कर आया और उन से घुल-मिल कर उन्हें कुकर्म (समलैंगिक संबन्ध) पर आमादा किया। फिर तो यह लोग

धीरे-धीरे दिलेर हो गये और हालात यह हो गये कि मर्द, मर्द के साथ और औरतें, औरतों के साथ संभोग करने लगीं। जब अज़ाब का समय निकट आया तो अल्लाह ने हज़रत लूत को आदेश दिया कि तुम रातों-रात शहर से निकल जाओ और पीछे मुड़ कर भी न देखना। चुनान्चे उन्होंने अल्लाह के हुक्म के अनुसार शहर को छोड़ दिया, उनकी पत्नी ईमान लाने वालों में से नहीं थी इसलिये वह भी हलाक हो गयी। लूत अलै० की क़ौम की संख्या लग-भग चार लाख थी, उन में से मुसलमानों को छोड़ कर बाक़ी सब हलाक कर दिये गये और आसमान से पत्थर बरसाये गये (इब्ने कसीर)

तौरात में भी इस क़ौम का ज़िक्र है कि सदूम और अमूरा (यानी क़ौमे लूत की आबादी) पर आग और गंधक की वर्षा हुयी थी। कुरआन में पत्थर की वर्षा होने का ज़िक्र है। दोनों बयानों को जमा करने से मालूम होता है कि ऐसी हालत पेश आयी होगी जैसी आतिश-फ़शाँ (ज्वाला मुखी) पहाड़ों के फूटने से होती है (तर्जुमान) हदीस शरीफ़ में है कि जिन लोगों को क़ौमे लूत का अमल करते देखो तो करने और कराने वाले दोनों ही को क़त्ल कर दो (अहमद, अबू दावूद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُجْرِمِينَ ۝ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ
يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ
جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَ
الْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا
فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن
كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝ وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ
تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ
بِهِ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ كُنتُمْ
قَلِيلًا فَكَثَّرَكُمْ ۖ وَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُفْسِدِينَ ۝ وَإِن كَانَ طَائِفَةٌ مِّنكُمْ آمَنُوا بِالَّذِي
أُرْسِلْتُ بِهِ وَطَائِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا حَتَّىٰ
يَحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۝

८४. और हम ने उन पर (पत्थरों की) वर्षा बरसाई। पस तुम ग़ौर करो कि बदकारों का अन्त क्या (बुरा) हुआ ८५. और मद्यन शहर वालों की तरफ़ हम ने उन्हीं में से शुअ़ैब को रसूल कर के भेजा। उस ने कहा कि भाइयो! अल्लाह ही की अ़िबादत करो, उस के अ़लावा तुम्हारा कोई माबूद नहीं[६७]। तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास स्पष्ट तर्क आ चुका है सो तुम (कम तौलने की आदत छोड़ दो और) नाप-तौल पूरा किया करो और लोगों को (सौदा सल्फ़ की) चीज़ें (दिते हुये) कम न दिया करो और इन्तिज़ाम (व्यवस्था) दुरुस्त हो जाने के बाद मुल्क में फ़साद न फैलाओ। अगर तुम को (अल्लाह पर) ईमान है तो यह कार्य तुम्हारे लिये अच्छा है (इसलिये इस पर अ़मल करो) ८६. और (सुनो) सड़कों पर डराने-धमकाने को और ईमानदारों को अल्लाह की राह से रोकने को[६८] और उसमें (बिहूदा प्रश्न कर के) कजी (टेढ़ापन) निकालने को न बैठा करो[६९], और उस समय को याद करो जब तुम थोड़े से थे फिर अल्लाह ने तुम को बढ़ाया, और इस पर ग़ौर करो कि फ़साद मचाने वालों का अन्त कैसा (बुरा) हुआ ८७. और अगर एक जमाअ़त तुम में से मेरी तालीम को जो मैं ले कर आया हूँ मान चुकी है और एक जमाअ़त ने नहीं माना है तो (ज़रा देर ठहरो और) सब्र करो जब तक अल्लाह हम में फैसला

फ़रमा दे और वह सब से अच्छा फ़ैसला करने वाला है।

....

५७. हाफ़िज़ इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि 'मद्-यन' शब्द "क़बीला" पर बोला जाता है और मद्यन एक शहर का भी नाम है जो "मआ़न" के क़रीब आबाद है। हज़रत शुऐ़ब अ़लै० वहीं रहते थे, यहाँ के लोगों को "असहाबुल्-ऐका" भी कहा जाता है। इस क़ौम के लोग नाप-तौल में कमी करने में माहिर थे, हज़रत शुऐ़ब ने उन को इन कामों से रोका। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बयान फ़रमायाः "ऐ लोगो! तुम लोग नाप-तौल में अमानत-दार रहो। ख़बरदार ऐसा न करना जैसा पहले वाली उम्मतों ने किया और फिर वह इसी जुर्म में हलाक कर दी गयीं"।

हज़रत शुऐ़ब, हज़रत मीकाईल (पैग़म्बर) के बेटे थे, आख़िरी उम्र में आँखों की रोशनी ख़तम हो गयी थी। बहुत बड़े फ़सीह और बलीग़ थे, इन को इसी लिये "ख़तीबुल-अम्बिया" कहा जाता है। (इब्ने कसीर)

५८. हज़रत शुऐ़ब अ़लै० की क़ौम के शरीर और लुटेरे लोग रास्तों में बैठ जाते और जो कोई दीन की बातें सीखने के लिये हज़रत शुऐ़ब अ़लै० के पास आता उस को डराते -धमकाते थे। कभी-कभी आने-जाने वालों का सामान भी लूट लेते थे और अपनी ज़्यादती में मस्त और मगन रहते थे। हज़रत शुऐ़ब ने उन को इस काम से रोका और पिछली काफ़िर क़ौमों की याद दिला कर अल्लाह के अ़ज़ाब से डराया और फ़रमाया कि अगर तुम मेरी नसीहतों की परवाह नहीं करते हो और मेरे साथ ईमान लाने वालों का मज़ाक़ उड़ाते हो तो सब्र करो। जल्द ही वह वक़्त आ रहा है जब सच और झूठ का फ़ैसला हो जाएगा और जुल्म व गुनाह पर अड़े रहने वाले हलाक और तबाह कर दिये जायेंगे।

५९. यह बहुत ही ग़लत बात है कि ख़ुद नहीं मानते हो और दूसरे मानने वालों को तरह-तरह से तंग करके रोकते हो। ईमान लाने वाले ग़रीबों को डरा-धमा कर, मालदारों को लालच दे कर और बहला-फुसला कर गुमराह करते हो। और जो दीनी ख़्याल और ज़ेहन रखता हो उस को शक व शुब्हे में डाल देते हो। आजकल के ईसाई लोग इन्हीं तीनों हथकंडों को अपना कर धर्म परिवर्तन कराने में ख़ूब कामियाब हो रहे हैं, ख़ास कर बीच के तरीक़ों पर अ़मल करके (यानी पैसों का लालच दिला कर) लोगों को अपने धर्म में शामिल कर रहे हैं। (सनाई)

★★★★★

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पारः क़ा-लल् म-लउ (९)

संक्षिप्त विषय सूची

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

क़ालल् म-लउ (9)

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ
يٰشُعَيْبُ وَالَّذِينَ اٰمَنُوا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَا أَوْ
لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كٰرِهِينَ ﴿٨٨﴾
قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُمْ
بَعْدَ إِذْ نَجّٰنَا اللّٰهُ مِنْهَا ۚ وَمَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَعُودَ
فِيهَا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ۚ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ
شَيْءٍ عِلْمًا ۚ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَ
بَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِينَ ﴿٨٩﴾ وَقَالَ
الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِنَّكُمْ
إِذًا لَّخٰسِرُونَ ﴿٩٠﴾ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا
فِي دَارِهِمْ جٰثِمِينَ ﴿٩١﴾ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا
كَأَنْ لَمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا
هُمُ الْخٰسِرِينَ ﴿٩٢﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ

८८. उस की क़ौम में से तकब्बुर (घमंड) करने वाले सर्दारों ने कहा: ऐ शुऐ़ब! (एक न एक दिन) हम तुझको और तेरे मानने वालों को अपनी बस्ती से निकाल देंगे, या तुम (ख़ुद-बख़ुद) हमारे मज़हब (और चाल-चलन) की तरफ़ लौट आओगे। शुऐ़ब ने कहा: अगर्चे हम को नापसन्दी ही हो[६०] ८९. कुछ शक नहीं कि अगर हम तुम्हारे दीन में (यानी बुतपरस्ती और शिर्क में) इसके बाद कि अल्लाह ने हम को बचाया है लौट आये तो हमने अल्लाह पर बुहतान {झूठ} बाँधा (इसलिये) हम से तो हो नहीं सकता कि तुम्हारे-दीन में आ जायें। हाँ, अल्लाह ही जो हमारा पर्वरदिगार है किसी समय चाहे (तो और बात है) हमारे पर्वरदिगार ने सब कुछ जाना हुआ है[६१]। अल्लाह पर हमारा भरोसा है (हम दुआ़ माँगते हैं कि) हमारे मौला! हम में और हमारी क़ौम में सच्चा फ़ैसला फ़रमा, क्योंकि तू सब फ़ैसला करने वालों से बेहतर फ़ैसला करने वाला है ९०. (शुऐ़ब का यह ठोस उत्तर सुन कर) उस की क़ौम में से सर्दारों ने जो काफ़िर थे कहा कि (लोगो याद रखो) अगर तुम शुऐ़ब के ताबे हुये तो तुम सख़्त घाटे में होगे ९१. (वह इन ही बातों में थे कि) एक सख़्त भूकंप उन पर आया जिस से वह अपने घरों में बैठे ही रह गये ९२. जिन्हों ने शुऐ़ब को झुठलाया था (अल्लाह के ग़ज़ब से ऐसे हो गये कि) गोया इस बस्ती में कभी बसे ही न थे। वास्तव में जिन्हों ने शुऐ़ब को झुठलाया था वही टूटे में हुये ९३. (जब वह तबाह और बर्बाद हुये तो) फिर शुऐ़ब उन से फिरा और (मैदान में आ कर अफ़्सोस के साथ) उन से कहने लगा

....

६०. हाफ़िज़ इब्ने कसीर रह० फ़रमाते हैं कि क़बीला "मद्यन" और "अस्हाबुल ऐकह" इन्हीं दोनों क़ौमों के अन्दर➲

कम तौलने-मापने का रिवाज था, और इन्हीं की हिदायत के लिये हज़रत शुऐब अलै० भेजे गये थे। यह क़ौमें पेड़ों की भी पूजा करती थी इसी वास्ते इन को सूरः शु-अरा आयत नं १७६ में "असहाबुल् ऐकह" कहा गया है। वहाँ पर हज़रत शुऐब को उन का भाई इसलिये नहीं कहा गया कि कहीं लोगों को यह शुब्हा न हो जाये कि वह भी क़ौम के साथ पेड़ों की पूजा में शरीक थे। कुछ उलमा के कहने के अनुसार इन्होंने बड़ी लम्बी आयु पाई। हज़रत मूसा के समय तक जीवित रहे। आप की एक पुत्री का निकाह भी मूसा अलै० के साथ हुआ। आख़िरी उम्र में नाबीना (नित्रहीन) हो गये थे। आप की उम्मत पर एक साथ तीन-तीन अज़ाब आये (१) असमान से आग की वर्षा हुयी (२) आसमान से डरावनी आवाज़ आई (३) फिर आग की वर्षा हुयी जिस से सभी हलाक हो गये (अहसनुत्तफ़ासीर-इब्ने कसीर, ख़ाज़िन और फ़तहुल बारी के हवाले से)

कुछ उलमा ने मद्यन और ऐका वालों को दो अलग-अलग उम्मत बताया है। उन दोनों ही की हिदायत के लिये हज़रत शुऐब को भेजा गया था। ऐका वाले तो बादल के अज़ाब से हलाक हुये और मद्यन वाले हज़रत जिब्रील की चीख़ से। यहाँ पर भी 'रज्फ़ा' से मुराद 'चीख़' है, और इस का अर्थ- भूकंप भी हो सकता है, इसलिये कि चीख़ की आवाज़ के साथ भूकंप आया और दोनों अज़ाबों से हलाक हो गये।

६१.मतलब यह कि दिल अल्लाह के इख़्तियार में है। ज़ाहिर में तो यह असंभव है कि हम काफ़िर हो जायें मगर अल्लाह की मर्ज़ी दूसरी बात है, वह पल भर में दिल को फेर सकता है। यही मज़हब अहले-सुन्नत का है कि अल्लाह की कुदरत महाल से मुतअल्लिक हो सकती है। तमाम पैग़म्बरों ने कुफ़्र और बुरे अन्त से पनाह माँगी है। हज़रत इब्राहीम अलै० ने भी दुआ की थी "मुझ को बुतों की पूजा से बचा"।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी फ़रमाया: "मैं कुफ़्र, शिर्क और निफ़ाक़ से पनाह माँगता हूँ" (वहीदी)

أَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ اٰسٰى
عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٩٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ
نَّبِيٍّ اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ
يَضَّرَّعُوْنَ ﴿٩٤﴾ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى
عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ
فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩٥﴾ وَلَوْ اَنَّ
اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ
مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا
كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٦﴾ اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ
بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿٩٧﴾ اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى
اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٨﴾ اَفَاَمِنُوْا
مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩٩﴾
اَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِ

भाइयो! मैं ने तुम को अपने पवरदिगार के पैग़ाम पहुंचाये और तुम्हारी ख़ैरख़्वाही की। (मगर तुम ने एक न सुनी) फिर मैं काफ़िरों की क़ौम पर क्यों कर रन्जीदा हूँ[६२] ९४. और जिस बस्ती में हम ने कोई नबी भेजा तो उस में रहने वालों को (सच्ची तालीम से इन्कार करने की वजह से) सख़्ती और मुसीबत में गिरफ़तार किया[६३] ताकि वह (अपना कर्तूतों को समझ कर) गिड़गिड़ायें[६४] ९५. (मगर जब वह न रुके तो) फिर हम ने तकलीफ़ के बदले उन को आसानी दी यहाँ तक कि ख़ूब फले-फूले और (मस्ती में आ कर) कहने लगे कि (यह समय का उलटफेर है) इसी प्रकार रन्ज और आराम हमारे बाप-दादाओं को भी पहुंचते रहे[६५] तो हम ने उन को अचानक जब उन्हें कुछ खबर भी न थी पकड़ लिया (और उन का कोई नाम लेने वाला भी न छोड़ा) ९६. और अगर यह बस्तियों वाले ईमान लाते और परहेज़ गारी इख़्तियार करते तो हम आसमान और

ज़मीन की बर्कतें उन पर खोल देते[96] मगर उन्हों ने झुठलाया तो हम ने उन के कर्तूतों के बदले में उन को पकड़ा (और ख़ूब पिछाड़ा) ९७. क्या इन बस्तियों वाले इस बात से बेफ़िक्र हैं कि हमारा अ़ज़ाब रातों-रात उन के सोते वक़्त उन पर आ जाये ९८. क्या यह बस्तियों वाले इस बात से बेख़ौफ़ हैं कि हमारा अ़ज़ाब दिन दहाड़े उनके खेलते हुये उन पर आ जाये (और उन को पीस डाले) ९९. क्या यह अल्लाह के पोशीदा दांव से बेफ़िक्र हैं? अल्लाह के दांव से टूटा पाने वाले ही बेख़ौफ़ हुआ करते हैं[67] १००. क्या उन (टूटा पाने वाले लोगों) को जो एक के बाद दूसरे ज़मीन के मालिक होते हैं

....

६२. यानी अगर्चे वह मेरे अ़ज़ीज़ थे, मगर जब उन्हों ने अल्लाह के हुक्म को न माना और संदेष्टाओं को झुठलाया, तो उन पर तबाही-बर्बादी अनिवार्य हो गयी। और अपने अ़ज़ीज़ों और क़ौम वालों की बर्बादी का रंज और दुःख स्वभाविक है, लेकिन इन पर रंज व मलाल न करना चाहिये।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि मस्जिदे-हराम में दो क़ब्रें हैं, एक तो हज़रत इस्माओ़ील की और दूसरी हज़रत शुऐ़ब की। हज़रत इस्माओ़ील की तो हतीम में है और हज़रत शुऐ़ब की हजरे-अस्वद के सामने। वहब बिन् मुनब्बिह ने कहा कि हज़रत शुऐ़ब ने मक्का में वफ़ात पाई और उन के साथी भी वहीं मरे। इन सब की क़ब्रें काबा शरीफ़ के पश्चिम की ओर दारुन्नदवा और बनी सहम के बाब के दर्मियान हैं (वहीदी)

६३. यानी जब किसी नबी को किसी बस्ती में तब्लीग़ के लिये भेजा और वहाँ के लोगों ने उस का कहना न माना, तो उस बस्ती वालों पर तक्लीफ़, मुसीबत, सूखा काल और महामारी आदि भेजा गया, इसलिये इस आयत को नाज़िल कर के क़ुरैश मक्का को डराया-धमकाया गया है कि वह भी अपने रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मुख़ालिफ़त से बाज़ आयें वर्ना उन का अंजाम भी उसी क़ौम की तरह होगा (सलफ़िय्या)

६४. बन्दे को दुनिया में दन्ड दिया जाता है तो यह आशा की जाती है कि वह सुधर जायेगा लेकिन जब सुधारने के बजाए वह अपने गुनाह ही पर अड़ा रहे तो फिर उस के भाग्य में बर्बादी है। इस का उदाहरण बिल्कुल ऐसे ही है कि किसी ने ज़हर खा कर उगल दिया तो उस के बचने की आशा है, लेकिन अगर हज़म कर जाये तो उस का अन्जाम ज़ाहिर है (मुवज़्ज़िहुल् क़ुरआन)

६५. यानी उन का कहना था कि उन पर कभी मंहगाई और कभी सस्तई आती रही है, यह कोई नई बात नहीं है और न ही इस का किसी नेकी-बदी से कुछ संबन्ध है (सनाई) आजकल माल-दौलत के पुजारी भी चाहे जितना बड़ा अ़ज़ाब देखते हैं, यह लोग भी उस को इत्तिफ़ाक़ी घटना मानते हैं। आजकल हर वर्ष भयानक सैलाब और तूफ़ान आता रहता है, उस में लाखों जानें तबाह होती रहती हैं, लेकिन इन दौलत के पुजारियों की आँखें नहीं खुलती हैं और कह देते हैं कि "इस प्रकार के अ़ज़ाब तो आते ही रहते हैं"

६६. इस विषय की आयतें सूरः माइदा रुकूअ़ २, सूरः बनी इस्राईल रुकूअ़ २, सूरः अन्बिया रुकूअ़ ७ और सूरः नूर रुकूअ़ ७ में भी मौजूद हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला का कहना है कि ऐ मेरे बन्दे! अगर तू तसल्ली और शान्ति के साथ मेरी अ़िबादत और इताअ़त में लग जाएगा तो तेरे दिल को ठन्डक और चैन से भर दूँगा, तेरी मुहताजी को दूर कर के हर प्रकार के अम्न व चैन अ़ता करूँगा। और अगर तू ने ऐसा न किया और दुनिया की उधेड़-बुन में लगा रहा तो तेरे दिल को फ़िक्र और रंज से भर दूँगा और तेरी मुहताजी को बन्द न करूँगा। एक दूसरी हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस शख़्स ने अपनी कोशिश को दुनिया की चमक-दमक के हासिल करने में लगाये रखा, तो अल्लाह तआ़ला उस के कारोबार में कठिनाइयाँ पैदा कर देता है और मुंहताजी व तंगी हरदम उस की आंखों के सामने नज़र आती है, और दुनिया उस को भाग्य से अधिक नहीं मिलती। और जिस शख़्स ने अपनी कोशिश को आख़िरत संवारने में लगाया तो अल्लाह तआ़ला उसके

➲दुनिया के कारोबार में आसानी पैदा कर देता है और उस के दिल को अम्न व सुकून भी अ़ता करता है और दुनिया ज़लील हो कर उस के आगे पीछे फिरती है।

इस प्रकार लोगों को यह शुब्हा हो सकता है कि फिर अल्लाह वाले अक्सर ग़रीब क्यों हुये हैं? तो इस का उत्तर यह है कि ऐसा कर के उन को इम्तिहान में डाला जाता रहा। चुनान्चे वह उस हाल में हमेशा राज़ी रहे और तनिक भर भी वह परेशान नहीं हुये, बल्कि उन को उस आज़्माइश में मज़ा आता था।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह दुआ़ फ़रमाई: "ऐ अल्लाह! मुझको एक दिन भूखा रख और एक दिन रोटी दे, ताकि दुआ़ और ज़िक्र की लज़्ज़त हासिल होती रहे" (तफ़्सीर मौलाना हमीदुल्लाह मेरठी)

६७. अल्लाह तआ़ला के बारे में जो "मक्र" का शब्द आया है इस पर कुछ लोगों को शक होता है कि अल्लाह के लिये यह शब्द उचित नहीं है। लेकिन अगर ग़ौर किया जाये तो इस में कोई बुराई नहीं आती, इसलिये कि इस का अर्थ है "किसी को अन्जाने में तक्लीफ़ पहुंचाना"। अल्लाह का अ़ज़ाब चाहे वह जिस प्रकार का हो किसी को बता कर नहीं आता। क्या कोई यह बता सकता है कि अल्लाह ने किसी को सामने आ कर मारा है? नहीं, बल्कि अल्लाह के अहकाम अन्दर ही अन्दर काम कर जाते हैं। "तुम्हारा रब घात में है" का भी यही अर्थ है। (सनाई)

اَهۡلِهَاۤ اَنۡ لَّوۡ نَشَآءُ اَصَبۡنٰهُمۡ بِذُنُوۡبِهِمۡ‌ۚ وَنَطۡبَعُ عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ فَهُمۡ لَا يَسۡمَعُوۡنَ ۝١٠٠ تِلۡكَ الۡقُرٰى نَقُصُّ عَلَيۡكَ مِنۡ اَنۡۢبَآئِهَا‌ ۚ وَلَـقَدۡ جَآءَتۡهُمۡ رُسُلُهُمۡ بِالۡبَيِّنٰتِ‌ ۚ فَمَا كَانُوۡا لِيُؤۡمِنُوۡا بِمَا كَذَّبُوۡا مِنۡ قَبۡلُ‌ؕ كَذٰلِكَ يَطۡبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوۡبِ الۡـكٰفِرِيۡنَ ۝١٠١ وَمَا وَجَدۡنَا لِاَكۡثَرِهِمۡ مِّنۡ عَهۡدٍ‌ ۚ وَاِنۡ وَّجَدۡنَاۤ اَكۡثَرَهُمۡ لَفٰسِقِيۡنَ ۝١٠٢ ثُمَّ بَعَثۡنَا مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ مُّوۡسٰى بِاٰيٰتِنَاۤ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوۡا بِهَا‌ ۚ فَانْظُرۡ كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الۡمُفۡسِدِيۡنَ ۝١٠٣ وَقَالَ مُوۡسٰى يٰفِرۡعَوۡنُ اِنِّىۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡ رَّبِّ الۡعٰلَمِيۡنَۙ ۝١٠٤ حَقِيۡقٌ عَلٰٓى اَنۡ لَّاۤ اَقُوۡلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الۡحَـقَّ‌ ؕ قَدۡ جِئۡتُكُمۡ بِبَيِّنَةٍ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ فَاَرۡسِلۡ مَعِىَ بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ ؕ ۝١٠٥ قَالَ اِنۡ كُنۡتَ جِئۡتَ بِاٰيَةٍ فَاۡتِ بِهَاۤ اِنۡ كُنۡتَ مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ۝١٠٦ فَاَلۡقٰى

यह काम राहनुमाई नहीं करता कि अगर हम चाहें तो (देखते ही देखते) उन की बदकारियों की वजह से उन पर अ़ज़ाब नाज़िल करें और उन के दिलों पर मुह्र कर दें पस वह सुनें ही नहीं[६८] १०१. हम उन बस्तियों के थोड़े-बहुत हालात तुझ को सुनाते हैं (मुख़्तसर यह कि अपनी मामूली ज़िन्दगी निहायत सर्कशी को पहुंचे) और उन के पास रसूल भी स्पष्ट आदेश लेकर आये, फिर भी वह जिस बात से पहले इन्कारी हो चुके थे, उस पर ईमान न लाये। इसी तरह पर अल्लाह कुफ़्र करने वालों के दिलों पर मुहर लगा दिया करता है १०२. और हम ने उन में से बहुतों को अह्द पर नहीं पाया, और उन में से अधिकतर को हम ने बदकार पाया १०३. फिर (एक मुद्दत के बाद) उन के पीछे मूसा को फ़िर्औन और उस के (दर्बारी) सर्दारों की तरफ़ (हमने) अपने हुक्म देकर भेजा तो उन्हों ने (भी) उन आदेशों से इन्कार किया, फिर किस प्रकार फ़साद करने वालों का अन्त हुआ उसको (भी) तू सोच ले १०४. और मूसा ने (हरचन्द) कहा: ऐ फ़िर्औन! मैं अल्लाह रब्बुल् आ़लमीन का संदेष्टा हूँ १०५. मेरा फ़र्ज़ है कि मैं अल्लाह के हक़ में सच्ची बात के सिवा कुछ न कहूँ (देखो!) मैं तुम्हारे पास पर्वरदिगार के हाँ से एक खुली दलील भी लाया हूँ पस तू (मेरी नबुव्वत➲

पर ईमान ला) और बनी इस्राईल को मेरे साथ जाने दे १०६. फ़िरऔन बोला कि अगर तू कोई निशान (चमत्कार) लाया है तो उसे लाकर दिखा! अगर तू सच्चा है (तो तुझे किस समय का इन्तिज़ार है?)[६९]

....

६८. यानी इस बात में अगर ग़ौर-फ़िक्र करें कि बुरे कर्मों का परिणाम हमेशा बुरा ही हुआ करता है। यह संभव ही नहीं है कि अल्लाह जैसे न्याय कर्ता (मुन्सिफ़) के हाँ अच्छों-बुरों के लिये एक ही बदला हो, मगर यह लोग सोच-विचार ही नहीं करते (सनाई)

६९. फ़िरऔन को इस बात का भी डर था कि कहीं बनी इस्राईल मेरे मुल्क से बाहर अपनी शक्ति और बल को इकट्ठा कर के मुझ पर आक्रमण न कर दें, इसलिये उन को छोड़ देना गुलामों की कमी के अलावा यूँ भी उचित न समझता, मगर बहाना बनाते हुये बोला कि अगर कोई चिन्ह लाया है तो दिखा.........(सनाई) जिस फ़िरऔन की तरफ़ हज़रत मूसा भेजे गये थे उस का नाम वलीद बिन मुसअ़ब बिन रय्यान था, वह क़िब्ती नस्ल का था ज़िना के नतीजे में पैदा हुआ था उस का क़द सात बालिश्त का था, वह चार सौ वर्ष तक जीवित रहा, उस को कभी सर का दर्द तक भी न हुआ (वहीदी)

عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ۝ وَّنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا
هِيَ بَيْضَاءُ لِلنّٰظِرِينَ ۝ قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ
فِرْعَوْنَ إِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيمٌ ۝ يُّرِيدُ أَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ
أَرْضِكُمْ ۚ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ۝ قَالُوٓا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَ
أَرْسِلْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِينَ ۝ يَأْتُوكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ
عَلِيمٍ ۝ وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوٓا إِنَّ لَنَا
لَأَجْرًا إِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِينَ ۝ قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ
الْمُقَرَّبِينَ ۝ قَالُوا يٰمُوسٰى إِمَّآ أَنْ تُلْقِيَ وَإِمَّآ أَنْ
نَّكُونَ نَحْنُ الْمُلْقِينَ ۝ قَالَ أَلْقُوا ۚ فَلَمَّآ أَلْقَوْا
سَحَرُوٓا أَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَآءُو بِسِحْرٍ
عَظِيمٍ ۝ وَأَوْحَيْنَآ إِلٰى مُوسٰٓى أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَإِذَا
هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ۝ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ فَغُلِبُوا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوا

१०७. सो मूसा ने अपनी लाठी फेंक दी तो वह खुल्लम-खुल्ला (स्पष्टतः) एक अज़्दहा था १०८. और मूसा ने अपना हाथ बाहर किया तो वह सब देखने वालों के सामने (सूरज की तरह) चमकता था[७०] १०९. फ़िरऔन की क़ौम के सर्दार कहने लगे[७१] कि निःसंदेह यह बड़ा माहिर जादूगर है ११०. इस का इरादा है कि तुम्हारे मुल्क से तुम को निकाल दे, इसलिये तुम क्या प्रस्ताव पेश करते हो[७२]? १११. सब ने कहा कि उस को और उस के भाई को थोड़ी मोहलत दीजिए[७३] और मुल्क में जमा करने वाले दूत भेज दीजिये ११२. कि हर एक जादू जानने वाले को जो बड़ा माहिर है हुज़ूर (फ़िरऔन) के पास लायें (चुनान्चे दूत भेजे गये) ११३. और जादूगरों ने फ़िरऔन के हुज़ूर में आकर कहा कि अगर हम उस पर ग़ालिब रहे तो हम को कुछ इनाम मिलेगा (या नहीं?) ११४. फ़िरऔन ने कहा कि हाँ (बहुत इनाम मिलेगा) और तुम मेरे मुक़र्रब लोगों में से हो जाओगे[७४] ११५. (अब वह) बोले ऐ मूसा तू पहले (अपनी लाठी) डालता है या हम पहले डालें[७५] ११६. मूसा ने कहा (नहीं बल्कि) तुम (ही पहले) डालो, सो जब डाला तो लोगों की आँखों को जादू {से वशीभूत}

➲कर दिया और उन को दह्शत में डाला और एक बड़ा ही (असर करने वाला) जादू लाये[७६] ११७. और हम ने मूसा को इल्हाम किया कि तू (भी) अपनी लकड़ी फेंक दे, पस उसी समय वह जो झूठ-मूट के साँप बना रहे थे उन को निगलती चली जाती थी ११८. पस हक़ ग़ालिब आया और जो कुछ वह बना रहे थे सब बर्बाद हो गया ११९. पस फ़िरऔनी वहाँ हार गये और (अपना सा मुँह लेकर) ज़लील-ख़ार लौट गये

....

७०. इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा के कई चमत्कार बयान किये हैं, उन में "अ़सा" (लाठी) और "यदे बैज़ा" (हथेली चमकने लगना) भी हैं। इन दोनों चमत्कारों का सबसे अधिक विस्तार से बयान हुआ है। आज कल की तौरात में भी इन का बयान मौजूद है जिसे आप खुरुज-बाब ४, आयत १ और खुरुज-बाब ७, आयत ८,१२ में देख सकते हैं। कुरआन मजीद और तौरात में स्पष्ट शब्दों में मौजूद होने के बावजूद सर सय्यद मर्हूम और उन जैसे नेचर के लोगों ने इन का इन्कार किया है और इन को मस्मुरिज़्म (वशीभूति-करण) या दूसरे शब्दों में हाथ की सफ़ाई कहा है। हालाँकि कुरआन पाक में एक स्थान पर है कि "हम उस को पहली हालत में लौटा देंगे" इस का मतलब यह है कि लाठी अपनी हक़ीक़त को बदल कर (यानी लकड़ी न होकर) सांप बन गयी थी। मुख़्तसर यह कि इस चमत्कार को हाथ की सफ़ाई मानना ग़लत है (सनाई)

७१. फ़िरऔन के सर्दार अपने घटिया और बातिल ख़यालात पर क़ियास कर के एक दूसरे से कहने लगे..........(सनाई) फ़िरऔनियों ने हज़रत मूसा की दावत को इक़्तिदार हासिल करने (सत्ता हथियाने) का बहाना समझाना, इसलिये कहा कि "इस का इरादा है कि तुम्हारे मुल्क से तुम को निकाल दे"।

७२. बनी इस्राईल हज़रत यूसुफ़ अ़लै० के ज़माना में मिस्र जा कर आबाद हो गये थे, फिर धीरे-धीरे मिस्र वालों ने उन्हें अपना गुलाम बना लिया और हज़रत मूसा अ़लै० के नबी बनाये जाने तक गुलामी की ज़िन्दगी में रहे।

जब कोई एक जमाअ़त खड़ी होती है और अपनी हालत में सुधार लाना चाहती है तो ज़ालिम क़ौमें उसे बग़ावत (राज द्रोह) समझने लगती हैं। हज़रत मूसा का मुतालबा तौहीद के बाद यह था कि बनी इस्राईल को मिस्र से निकल जाने दिया जावे, लेकिन मिस्र के सर्दारों (सत्ताधारियों) ने कहा "यह चाहता है कि तुम मिस्र वालों को तुम्हारे मुल्क से बाहर कर दे"। सूरः यूनस की आयत न० ७८ में है कि उन्हों ने मूसा से कहा "तुम चाहते हो कि मुल्क की सर्दारी तुम्हें मिल जाये" (तर्जुमान)

७३. इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने 'अर्जिह्' का तर्जुमा "मुहलत दे" किया है और इमाम क़तादा ने "उसको क़ैद कर"से की है। 'मदाइन' से मुराद वह शहर हैं जो तेरे शासन के अधीन हैं।

७४. इमाम ख़तीब का कहना है कि इस आयत से मालूम होता है कि फ़िरऔन एक आजिज़ और मोह्ताज बन्दा था, वर्ना वह जादूगरों से हर्गिज़ सहायता न लेता। और यह भी मालूम हुआ कि जादूगर किसी चीज़ की ज़ात और हक़ीक़त को नहीं बदल सकते, अगर किसी चीज़ की हक़ीक़त को बदल लेते तो वह लाहे को सोना बना लेते और दुनिया की बादशाहत के मालिक होते (सलफ़िय्या)

७५. इस तरह कह कर अपनी बहादुरी को ज़ाहिर करते थे कि कहीं तेरे अर्मान तेरे जी ही में न रह जायें। अगर तू पहले चाहता है तो हम बड़ी खुशी से तेरे वार को अपने ऊपर लेने को तैयार हैं (सनाई) उन के इस तरह कहने से ज़ाहिर है कि उन को अपनी जीत का पूरा विश्वास था और खुशी के मारे उतावले हो रहे थे।

७६. यह मुक़ाबला इस्कन्दरिया शहर में हुआ था। जब हज़रत मूसा ने अपनी लाठी को फेंका तो वह तुरन्त अल्लाह के हुक्म से वास्तव में एक अज़्दहा (अजगर साँप) बन गयी। चमत्कार और जादू में बड़ा अन्तर है। जादू से किसी ➲वस्तु की हक़ीक़त नहीं बदलती, केवल देखने वालों को वह एक दूसरी वस्तु मालूम होती है- लेकिन चमत्कार➲

➲में अल्लाह का हुक्म शामिल होता है इसलिये हक़ीक़त और अस्लियत बदल कर लकड़ी साँप और साँप लकड़ी बन जाता है।
यह जादूगर अनगिनत मात्रा में थे। कुछ उलमा ने तो उन की मात्रा नौ लाख बताई है लेकिन यह मुबालग़ा है। (वहीदी)

صٰغِرِيْنَ ۝ وَ اُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ۝ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ رَبِّ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ۝ قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِي الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَ اَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ۝ وَ مَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ۚ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّ تَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ۝ وَ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَ قَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَ يَذَرَكَ وَ اٰلِهَتَكَ ۚ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ وَ نَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَ اِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ۝ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَ اصْبِرُوْا ۚ اِنَّ

१२०. और जादूगर सज्दा में गिर पडे[७७] (और अपने ईमान का इज़हार करने को) १२१+१२२. बोले कि हम अपने पर्वरदिगार पर जो मूसा और हारून का पर्वरदिगार है ईमान लाये हैं १२३. फ़िरऔन (धमकी देते हुये) बोला कि तुम मेरी इजाज़त देने से पूर्व (ही) उस पर ईमान ले आये, यक़ीनी बात है कि यह तुम सब का धोका है जो तुम ने (एकजुट हो कर) इस शहर में चलाया है कि शहर के अस्ल रहने वालों को उस से निकाल दो[७८], सो तुम (इस का परिणाम) जान लोगे १२४. कि (पहले तो) मैं तुम्हारे हाथ-पाँव उल्टे कटवा दूँगा फिर तुम सब को सूली पर लटका दूँगा[७९] १२५. (जादूगर यह धमकी सुन कर) बोले, हम तो अपने पर्वरदिगार की तरफ़ लौटने वाले हैं १२६. और तू (केवल) हम में इतनी ही बात ऐबदार पाता है कि हम अपने पर्वरदिगार की निशानियों पर जो हम को (मूसा द्वारा) मिली हम ईमान ले आये। हमारे मौला! हम को सब्र दे और हम को अपनी ताबेदारी में मारना १२७. और उस की क़ौम के सर्दारों (मंत्री-परिषद) ने कहा कि क्या हुज़ूर, मूसा और उस की क़ौम को छोड़ दें गे कि मुल्क में (खुले जी से)फ़साद फैलायें और हुज़ूर के माबूदों को छोड़ दें[८०]। फ़िरऔन ने कहा हम उन के लड़कों को मरवा डालेंगे और उन लड़कियों को जीवित रहने देंगे, और हम उन पर (हर प्रकार से) ग़ालिब हैं[८१] १२८. मूसा ने (तसल्ली देते हुये बनी इस्राईल से) कहा कि भाइयो! (घबराओ नहीं) अल्लाह से मदद चाहो और सब्र करो

....

७७. 'जादूगर सज्दे में गिर पड़े' इसलिये कि किसी बुरे इरादे और ज़िद से नहीं आये थे, बल्कि केवल अपनी लियाक़त (योग्यता) पर गर्व कर रहे थे। जब उन्होंने हज़रत मूसा का साँप देखा तो अपने जादू की कला और फ़न को प्रयोग में ला कर भाँप लिया कि यह जादू नहीं है, बल्कि अल्लाह की मदद और समर्थन की वजह से यह अस्ली साँप चमत्कार के रूप में बना है, तो फ़ौरन सर के बल सज्दे में गिर पड़े (सनाई)

७८. सूरः ता-हा की आयतों से ज़ाहिर होता है कि यह मामला मिस्र वालों के त्योहार के दिन पेश आया, उस समय➲

➲पूरे मुल्क से अधिकांश लोग एकत्रित थे और यह हज़रत मूसा के प्रस्ताव से ऐसा हुआ था। हज़रत मूसा ने जादू के मुक़ाबला से पहले उन को नसीहत भी की थी और जादूगर आपस में काना-फूसी भी करने लगे थे, लेकिन चूँकि फ़िरऔन ने इस मामले को राष्ट्र के लिये ख़तरनाक घोषित कर दिया था इस लिये मजबूरन वह लोग मुक़ाबला के लिये जमे रहे और परस्पर बातें करने लगे कि मूसा हमें निकाल कर मुल्क पर शासन करना चाहता है। जब फ़िरऔन को पराजय का मुंह देखना पड़ा और जिन जादूगरों पर भरोसा था उल्टा वही ईमान ले आये तो घबरा गया कि ऐसा न हो सभी तमाशा देखने वाले लोग मूसा पर ईमान ले आयें, इसलिये जादूगरों पर धोका और विश्वासघात का आरोप लगाते हुये कहा कि यह सब मूसा से पहले ही से मिले हुये थे इसीलिये जान-बूझ कर मूसा को विजय दिला दी और तुरन्त ईमान ले आये। यह बात याद रहे कि सच्चा ईमान अगर्चे एक क्षण के लिये ही क्यों न हो वह ऐसी रूहानी शक्ति प्रदान कर देता है कि दुनिया की बड़ी से बड़ी शक्ति भी उसे तोड़ नहीं सकती है। आप देखें कि वही जादूगर जो अभी थोड़ी देर पूर्व फ़िरऔन से इनाम माँग रहे थे, ईमान लाने के बाद इतने बेपर्वाह हो गये कि फ़िरऔन की धमकी और उस का कठोर दन्ड भी उन के ईमान को डावाँडोल न कर सका। तफ़्सील जानने के लिये सूरः ता-हा, पाराः १६. आयः ५२-७२ का तर्जुमा व तफ़्सीर अवश्य पढ़ें।

७९. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने कहा कि दुनिया में सब से पहले फ़िरऔन ने लोगों को सूली पर चढ़ाया और उन के हाथ पाँव उल्टे कटवा दिये। यानी दायाँ पाँव और बाँया हाथ, इसी प्रकार बाँया पाँव और दाँया हाथ कटवा दिया। जादूगरों ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि तुम जो चाहो हमारे साथ बर्ताव करो हमें ईमान से फेर नहीं सकते, हमें पूरा विश्वास है कि मरने के बाद अपने रब के पास जाना है। इब्ने जुरैज ने कहा कि यह जादूगर सुब्ह के पहर मुसलमान नहीं थे और शाम के पहर इस्लाम की हालत में शहीद हो कर मरे और अल्लाह के नेक बन्दों में दाख़िल हुये (सलफ़िय्या)

८०. फ़िरऔन ने अपनी शक्ल के बुत बनवा कर लोगों में तक़सीम करवा रखे थे, उन को "छोटा रब" और अपने आप को "बड़ा रब" कहता था। फ़िरऔन के बारे में अगर यह यक़ीन कर लिया जाये कि जो कुछ वह लोगों से मनवाना चांहता था वास्तव में उस का अक़ीदा भी वैसा ही था, तो हिन्दुओं के जैनमत मानने वालों का सा उस का अक़ीदा होगा, जो कहते हैं कि ख़ुदा एक उह्दा (पदभार) है जिस पर रूहें अपनी करनी के मुताबिक पहुंच कर दुनिया का इन्तिज़ाम कर लेती हैं (सनाई)

८१. आज-कल फ़िरऔन जैसा दिल व दिमाग़ रखने वालों ने क़त्ल के मन्सूबों पर अ़मल करते हुये ग़ैर-इस्लामी स्कूलों और कॉलिजों को खोल दिया है (मक़सद क़त्ल है पर तरीक़े अलग-अलग हैं) प्रसिद्ध कवि इलाहाबादी ने कहा है- यूँ क़त्ल से बच्चों के वह बद्नाम न होता+अफ़्सोस कि फ़िरऔन को कॉलिज की न सूझी।

الْاَرْضَ لِلّٰهِ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَ
الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾ قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ
اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ؕ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ
اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ
كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾ وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ
بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾

कि ज़मीन अल्लाह की संपत्ति है, अपने बन्दों में से जिसे चाहे इनायत करता है। और (यक़ीनी जानो कि) अच्छा अन्जाम हमेशा परहेज़गारों ही का होता है १२९. बनी इस्राईल ने कहा (ऐ मूसा) तेरे आने से पहले भी हम को तक्लीफ़ें पहुंचती रहीं और तेरे आने के बाद भी (वही हाल रहा)। मूसा ने कहा (अब) अल्लाह से आशा है कि तुम्हारे दुश्मन को अवश्य हलाक करेगा और तुम को ज़मीन में बादशाह बना देगा, फिर तुम्हारे➲

فَاِذَا جَآءَتۡهُمُ الۡحَسَنَةُ قَالُوۡا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنۡ تُصِبۡهُمۡ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوۡا بِمُوۡسٰى وَمَنۡ مَّعَهٗ ؕ اَلَاۤ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمۡ عِنۡدَ اللّٰهِ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۳۱﴾ وَقَالُوۡا مَهۡمَا تَاۡتِنَا بِهٖ مِنۡ اٰيَةٍ لِّتَسۡحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحۡنُ لَكَ بِمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۳۲﴾ فَاَرۡسَلۡنَا عَلَيۡهِمُ الطُّوۡفَانَ وَالۡجَـرَادَ وَالۡقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ فَاسۡتَكۡبَرُوۡا وَكَانُوۡا قَوۡمًا

➲कामों को भी देखेगा[८२] १३०. और हम ने फ़िरऔन की क़ौम को सूखा काल और फलों की कमी के अ़ज़ाब में गिरफ़्तार किया, ताकि वह नसीहत पायें १३१. फिर (भी वह ऐसे शरीर थे कि) जब उन को कोई खुशहाली पहुंचती तो कहते कि यह हमारा हक़ है, और अगर कोई तक्लीफ़ पहुंचती तो मूसा और उस के साथियों की नहूसत समझते (और कहते कि जब से यह मनहूस निकले हैं ऐसी-ऐसी आफ़तें आने लगी हैं) सुन रखो! कि उन की शामते-आमाल (कर्मों का दण्ड) अल्लाह के हाँ से थी, लेकिन बहुत से उन में से नहीं जानते कि (कि यह अल्लाह का ग़ज़ब है या कुछ और) १३२. और (साफ़ मुक़ाबला में खुले मुंह) कहते थे कि कोई भी निशान तू हम को दिखा जिस के ज़रीए तू हम पर जादू करे (और फुसलाना चाहे) हम तुझे न मानेंगे (और कभी भी तेरी आज्ञा-पालन न करेंगे) १३३. फिर हम ने उन पर तूफ़ान भेजा[८३] और टिड्डी दल और जुँए और मेंडक[८४] और ख़ून (वग़ैरह बलायें) भेजीं जो खुले-खुले निशान थे, फिर भी वह लोग तकब्बुर करने वाले और मुज्रिम ही रहे

....

८२. गुलामी की ज़िन्दगी का पहला प्रभाव तो यह होता है कि हिम्मत और हौसला ख़त्म हो जाता है। ऐसे लोग गुलामी की ज़िल्लत को अम्न समझ कर उसी पर क़ाइम रहते हैं और स्वतन्त्रता को हासिल करने से जी चुराने लगते हैं। यही हाल बनी इस्राईल का हुआ था। काफ़ी समय तक दासता में रहते-रहते उन का दिल व दिमाग़ इस क़द्र अंधा हो गया था कि उन की समझ में कुछ नही आ रहा था। और वह तो यह सोचने तक के लिये तैयार न थे कि आज़ादी के बदले में मुफ़्त की गुलामी की रोटी और अम्न व शान्ति से क्यों हाथ धो बेठें? हज़रत मूसा ने जब सब्र और डटे रहने की तालीम दी तो उल्टा उन्हीं पर चढ़ दौड़े, और शुक्र अदा करने के बजाए शिकायतें करने लगे। उन्हें इस बात की शिकायत थी कि तुम्हारी वजह से हम भी फ़िरऔन के दुश्मन बन गये हैं, तुम्हारी ज़ात से लाभ के बजाए हमें नुक़्सान उठाना पड़ रहा है। हज़रत मूसा ने कहा अल्लाह जिसे चाहता है ज़मीन का वारिस बना देता है, इसलिये उस से माँगो और साबित क़दम रहो।

इस से यह भी मालूम हुआ कि जो जमाअ़त हथियार और साधनों की कमी होते हुये भी डटी रहती है और अल्लाह से दुआ़यें करती है, वही जमाअ़त मुल्क का शासन चलाती है। "अल्लाह से मदद माँगना "क़दम को जमाए रखना" कामियाबी के मूल-मन्त्र हैं। आगे यह फ़रमाया "कामियाबी परहेज़गारों के लिये है" यानी जो जमाअ़त बुराइयों से बचने वाली और अ़मल व इरादे में पक्की होगी, अंतः में विजय उसी के साथ है (तर्जुमान आज़ाद)

८३. एक सप्ताह तक वर्षा होती रही। क़िब्ती क़बीला के लोगों के घर पानी में डूब गये, घरों में खड़े होते तो उन के गले तक पानी होता था। आख़िर सब भाग कर हज़रत मूसा के पास गये और कहा कि आप दुआ़ कर दें कि यह अ़ज़ाब टल जाये तो हम आप पर ईमान ले आयेंगे। लेकिन तूफ़ान के टलते ही यह भी वादे से टल गये (वहीदी)

यह आ़दत फ़िरऔन ही की क़ौम की नहीं थी, आज भी अधिकांश लोगों का यही हाल है। ज़रा सी मुसीबत आती है तो अल्लाह याद आने लगता है, और जैसे ही मुसीबत टली तुरन्त अल्लाह को भूल-भाल गये। ईमान वाले तो हर हाल में और हर समय अल्लाह को याद करते हैं।

८४. इस ज़माने में भी इस अ़ज़ाब का उदाहरण मौजूद है और समस्त समाचार पत्रों में समाचार आ चुका है।➲

➲एक नामा निगार लिखता है कि एक मर्तबा मैं ने दो सय्याहों (सैलानियों) को देखा कि उन के कपड़ों में छोट-छोटे मेंडक चिपके हुये हैं, वह दोनों सर से पाँव तक भीगे हुये थे। मेरे पूछने पर उन्हों ने बताया कि हम ऐसे स्थान से आ रहे हैं जहाँ पानी की वर्षा के साथ मेंडकों की भी वर्षा हुयी है। यह समाचार फ़्राँस के शहर "तोलोन" का है। समवाद दाता (नामा निगार) लिखता है कि उन सैलानियों से बात-चीत करने के बाद आगे बढ़ा तो ऐसे स्थान पर पहुंचा जहाँ की ज़मीन मेंडकों से ढकी हुयी थी। मेंडक घोड़ों के खुरों और गाड़ियों के पहियों से कुचल कर मरे पड़े थे (समाचार पत्र) "ज़मीनदार लाहौर" पंजाब, सन्डे एडीशन, दिनाँक (९ अक्टूबर १९२७)

मुमकिन है इन्हीं की तरह फ़िरऔन की क़ौम पर भी अ़ज़ाब आया हो और वह अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हुये हों। टिड्डी दलों का अ़ज़ाब तो आ़म बात है जिसे आ़म तौर पर देखा और सुना गया है। जूँ के अ़ज़ाब का ज़िक्र तौरात में भी है और यह भी लिखा है कि नील नदी का पानी ख़ून की तरह लाल हो गया था और उस की तमाम मछलियाँ मर गयीं थीं (ख़ुरुज-२०)

مُّجْرِمِيْنَ ۝ وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰٓى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ۝ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝ وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۗ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ بِمَا صَبَرُوْا ۗ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ۝ وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ عَلٰٓى اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا

१३४. और जब कभी कोई अ़ज़ाब उन पर नाज़िल होता तो (फ़रियाद करते हुये) कहते कि ऐ मूसा! चूंकि तुझ से अल्लाह ने कुबूलियत का वादा किया हुआ है (इसलिये) हमारे लिये अपने पर्वरदिगार से दुआ़ माँग, अगर तू हमसे यह अ़ज़ाब दूर करा देगा तो हम तेरी बात मान लेंगे और (अवश्य ही) बनी इस्राईल को तेरे साथ भेज देंगे[८५] १३५. फिर जब हम अ़ज़ाब को एक मुद्दत तक उन से हटा देते (जो हमारे इल्म में मुक़र्रर होती) तो वह लोग उस मुद्दत को पहुंचते ही तुरन्त वादा ख़िलाफ़ी करते। १३६. फिर (आख़िर) हम ने उन से (गुस्ताख़ियों का) बदला लिया सो हमने (दरिया के अन्दर) पानी में उन को डुबो दिया, क्योंकि वह हमारे निशानों को झुठलाते थे और उस (झुठलाने की सज़ा) से ग़ाफ़िल थे[८६] १३७. और जिस क़ौम को (तरह-तरह के उपायों से) कमज़ोर किया जाता था हम ने उसे बड़ी बर्कत वाली ज़मीन (कन्ज़ान वग़ैरह) के पूरब और पश्चिम[८७] का मालिक बना दिया। और चूंकि बनी इस्राईल ने तक्लीफ़ों पर सब्र किया था (इसलिये) अल्लाह के नेक हुक्म (यानी अच्छे-अच्छे वादे) उन के हक़ में पूरे हुये। और जो कुछ फ़िरऔन और उस की क़ौम (तजवीज़ें) किया करते और (आ़लीशान) भवन बनाते थे हम ने (सब कुछ) बर्बाद कर दिया[८८] १३८. और बनी इस्राईल को हमने नदी से पार कराया[८९] तो वह एक क़ौम के पास से गुज़रे जो अपने बुतों पर (पुजारी बन कर) बैठा करते थे[९०] बोले कि ऐ मूसा जैसे उन के (पत्थर, पीतल➲

➲और काँच के बड़े-बड़े सुन्दर) माबूद हैं, हमारे लिये भी एक माबूद बना दे

....

८५. 'रिज्ज़' से मुराद ताऊन यानी महामारी है। ऊपर गिनाये गये पाँच अ़ज़ाब के बाद यह छठा अ़ज़ाब है। हज़रत सअ़ीद का क़ौल है कि क़िब्ती क़ौम पर जब ताऊन की बीमारी फैली तो एक ही दिन में सत्तर हज़ार हलाक हो गये। हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० से रिवायत है कि 'रिज्ज़' ताऊन का नाम है जिस को अल्लाह तआ़ला ने बनी इस्राईल और जो तुम से पहले गुज़रे हैं उन पर नाज़िल किया था। अब जब कभी तुम इस महामारी के बारे में सुनो तो जहाँ यह फैली हो वहाँ मत जाओ और जहाँ तुम मौजूद हो वहाँ से बीमारी के डर से मत भागो (बुख़ारी, मुस्लिम)
८६. यह वही समुद्र है जिसको हज़रत मूसा और बनी इस्राईल को गुज़ारने के लिये जुदा कर दिया गया था (इब्ने कसीर) कुछ उलमा का कहना है कि 'कुल्ज़ूम' समुद्र का ऊपरी सिरा है जो आज-कल आबना-ए-सुवेज़ से रूम के समुद्र में मिल गया है (मवाहिब) ८७. इस से मुराद फ़लिस्तीन और शाम हैं जो मिस्र के पूरब में स्थित हैं और उस पश्चिमी हिस्सों का मुल्क "जज़ीरा नुमा-ए-सैना" है जो फ़लिस्तीन के पश्चिम में आबाद है। यह तमाम क्षेत्र उस समय मिस्र ही के ताबे थे और उस को कर (TAX) वग़ैरह देते थे (तर्जुमान) इस से मुराद मुल्क शाम है जिस की प्रशन्सा सहीह हदीसों में की गयी है।
८८. दुनिया की तारीख़ में हमेशा से यही होता रहा है कि जब किसी क़ौम ने हुकूमत की बागडोर संभाली और जुल्म व ज़्यादती करने लगी तो अल्लाह तआ़ला ने उसे दुनिया से मिटा दिया और दूसरी कमज़ोर क़ौम को उस के स्थान पर बिठा दिया। और आज भी यह सिलसिला जारी है। (राज़)
८९. ज़ओ़फ़ रिवायतों में आया है कि हज़रत मूसा ने अपनी क़ौम को लेकर दस मुहर्रम को समुद्र पार किया था और उस दिन शुक्र का रोज़ा रखा था। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने भी उस दिन रोज़ा रखा और मुसलमानों को भी रोज़ा रखने का हुक्म दिया, मगर रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ होने के बाद आ़शूरा के रोज़ों के बारे में इख़्तियार दे दिया (यानी अगर कोई रखेगा तो सवाब का हक़दार होगा और अगर न रखना चाहे तो कोई हर्ज नहीं) (नैलुल् औतार)
९०. बनी इस्राईल की क़ौम कितनी जाहिल थी इस का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उस को फ़िरऔ़न के जुल्म व ज़्यादती के बाद अल्लाह ने बचाया, हज़रत मूसा के समस्त चमत्कार देखे, समुन्द्र ने किस प्रकार उन्हें रास्ता देकर उन की जान बचाई और किस तरह उसी में फ़िरऔ़न को उसके लश्कर के साथ डुबाया। यह जानने के बावजूद कि पग-पग पर उन की सहायता करने वाला अल्लाह था, लेकिन राह चलते मन्दिर में रखे हुये बुत को देख कर हज़रत मूसा से तुरन्त मुतालबा करने लगे "ऐ मूसा! जैसे उन के कांच और पत्थर के माबूद हैं हमारे लिये भी एक ऐसा बुत बना दो" हज़रत मूसा ने उत्तर में कहा कि तुम लोग अभी तौहीद से ग़ाफ़िल हो। क्या तुम्हें इतना भी नहीं मालूम कि यह लोग बातिल पर हैं और इन के आमाल तबाह व बर्बाद हैं? (इब्ने कसीर)

इमाम अहमद ने अबू वाक़िद लैसी से रिवायत किया है कि हम लोग हुनैन की जंग के लिये निकले तो राह में एक बेरी का पेड़ मिला जिस पर हम हथियार लटकाते, उस की इ़ज़्ज़त करते और वहाँ जमघटा लगाते थे। मेरी ज़बान से भी यह बात निकल गयी कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! आप भी हमारे लिये ऐसा ही बना दीजिये जैसा कि काफ़िरों का 'ज़ाते अनवात (यानी हथियार लटकाने और तवाफ़ करने की चीज़ है) इतना सुनना था कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाहु अक्बर! यह तो बिल्कुल वैसा ही प्रश्न है जैसा बनी इस्राईल ने मूसा से किया था कि "ऐ मूसा! हमारे लिये भी उन लोगों जैसा कांच-पत्थर का माबूद बना दो"। तुम भी अपने अगलों की राह चलोगे (तिर्मिज़ी, इब्ने अबी शैबा)

لَهُمْ اٰلِهَةٌ ؕ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ
مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَ بٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۹﴾
قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ
عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۴۰﴾ وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ
يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ
وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿۱۴۱﴾ وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ
لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖۤ اَرْبَعِيْنَ
لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ
قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۱۴۲﴾
وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ
رَبِّ اَرِنِيْۤ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ؕ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ
انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ

मूसा ने कहा! तुम बेसमझ लोग हो १३९ (तुम यक़ीन जानो कि) जिस दीन पर यह लोग हैं बिला शुब्हा वह बर्बाद होने वाला है और जो यह कहते हैं सब बातिल है १४०. (यह भी) कहा कि क्या मैं अल्लाह के अ़लावा कोई और माबूद तुम्हारे लिये तलाश करूँ? हालाँकि उस ने[९१] तुम को तमाम दुनिया के लोगों पर बरतरी दी है १४१. और याद करो जब हम ने तुम को फ़िरऔ़न की क़ौम से नजात दी जो तुम को बड़ी तक्लीफ़ पहुंचाते थे, तुम्हारे बेटों को ज़ब्ह करते और तुम्हारी बेटियों को (सेवा के लिये) ज़िन्दा रखते थे। और इस (नजात) में तुम पर अल्लाह की बड़ी मेहरबानी है १४२. और हम ने मूसा से (किताब देने के लिये) तीस दिन का वादा किया और दस रोज़ (उन के साथ) और बढ़ाये तो अल्लाह का वादा चालीस दिन का हुआ[९२] और (चलते समय) मूसा अपने भाई हारून से कह गया था कि मेरी क़ौम में मेरी नुमाइन्दगी करना और (उनकी) इस्लाह करते रहना और फ़सादियों की राह पर न चलना १४३. (यह कह कर हज़रत) मूसा (क़ौम से रुख़सत होकर) अल्लाह के वादे के अनुसार जब आया और अल्लाह ने उस से कलाम किया[९३] तो (मारे मुहब्बत के) मूसा ने (बेताब होकर) कहा [९४]मेरे मौला! तू मुझे अपना दीदार करा ताकि मैं तुझको देखूँ[९५]। अल्लाह ने कहा कि तू मुझ को हर्गिज़ न देख सकेगा लेकिन तू पहाड़ की तरफ़ नज़र रख अगर (मेरे जल्वे से) वह अपने स्थान पर क़ाइम रहा तो तू भी मुझे देख सके गा

....

९१. यह फ़ज़ीलत और बड़ाई उस ज़माना के लोगों पर उन कार्यों के इनाम की वजह से क़रार दी जो कि आग बयान हैं (मवाहिब) इस आयत से साफ़ ज़ाहिर है कि इन्सानी शराफ़त के लिये अनिवार्य है कि केवल एक अल्लाह को रब की हैसिय्यत से तस्लीम करे और अल्लाह के अ़लावा किसी के सामने हर्गिज़-हर्गिज़ न झुके।
अ़ल्लामा इक़बाल ने ख़ूब कहा है-

पानी-पानी कर गयी मुझको क़लन्दर की यह बात + जब झुका तू ग़ैर के आगे न तन तेरा न मन

९२. अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लै० को किताब देने के लिये अपने पास बुलाया था वह महीना ज़ीक़ादा का था। हज़रत अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत मूसा ने उस मुद्दत में दिन को रोज़े रखे और रात को अल्लाह की अ़िबादत की। जब मुद्दत पूरी होने के क़रीब हुयी तो मूसा अ़लै० के रोज़ा रखने की वजह से मुंह से एक प्रकार की बू आने लगी (और लोग उसे बदबू ख़्याल करने लगते हैं) उस बू को दूर करने के लिए एक पेड़ की लकड़ी से➲

मिस्वाक करके उस बू को दूर किया तो फ़रिश्तों ने कहा कि हम आप के मुंह से जो खुश्बू पाते थे उस को आप ने बिगाड़ दिया।

एक दूसरी रिवायत में है कि अल्लाह तआ़ला ने मूसा से कहा कि क्या तुम्हें नहीं मालूम कि रोज़ा-दार के मुंह की बू अल्लाह तआ़ला के नज़दीक मुश्क की खुश्बू से भी अधिक प्यारी है। फिर मूसा को दस और रोज़े रखने का हुक्म दिया ताकि वह रोज़े के बू के साथ अल्लाह तआ़ला से कलाम करें। यह मुद्दत ज़िल्हिज्जा की दसवीं रात को पूरी हुयी। इस रिवायत से यह भी मालूम होता है कि दसवीं ज़िल्हिज्जा ही की रात को हज़रत मूसा ने अल्लाह तआ़ला से कलाम किया। और यह भी बड़ी खुशी की बात है कि इसी तिथि (तारीख़) में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिये दीन इस्लाम को मुकम्मल करते हुये "अल्यौ-म अक्मल्तु", लकुम्------की आयत नाज़िल की गयी। कुछ उलमा ने इसी बुनियाद पर चालीस के अ़दद को बड़ी अहमिय्यत दी है। यानी किसी काम में पाएदारी और किसी अ़मल में पुख़्तगी आने के लिये चालीस दिन तक करते रहना चाहिये। तमाम नबिय्यों को इसी आधार पर चालीस वर्ष के बाद ही नबुव्वत मिली है इसलिये कि अक़्ल में पायदारी और समझ-बूझ इसी मुद्दत के बाद ही आ़म-तौर पर आती है (मवाहिब)

९३. 'अल्लाह ने मूसा से कलाम किया किस भाषा में? अह्ले हदीस, सहाबा, ताबेआ़ीन और बुज़ुर्गाने दीन का यह मज़हब है कि अल्लाह जिस भाषा में चाहे बात कर सकता है और उस के कलाम में आवाज़ और हर्फ़ दोनों हैं (वहीदी) इस हाशिया को खूब ग़ौर से पढ़े, विशेष कर अन्तिम सतर को- ख़लिद

९४. "मोतज़िला" गरोह का कहना है कि यह कलाम एक दरख़्त में पैदा कर दिया था जिसे मूसा ने सुना। हाफ़िज़ इब्ने कसीर रह० ने मोतज़िला के ख़्याल को बिल्कुल ग़लत बताया है। अ़ल्लामा ख़तीब और राज़ी ने भी ग़लत कहा है क्योंकि उस का ख़्याल किताब व सुन्नत और सहाबा व ताबेआ़ीन के इजमाअ़ के ख़िलाफ़ है।

अ़रबी भाषा में "बात-चीत" किसी से आमने-सामने बात करने को कहा जाता है। इसलिये हज़रत मूसा अ़लै० ने अल्लाह तआ़ला से बराहेरास्त (Direct) बिला किसी वास्ता के कलाम किया और अल्लाह ने भी इसी प्रकार मूसा को अपना कलाम सुनाया। कलाम भी अल्लाह की एक सिफ़त है जिस पर ईमान लाना फ़र्ज़ है।

९५. अल्लाह को देखने के मामले में अहले सुन्नत के अ़लावा तमाम फ़िर्क़े गुमराह हैं। इन का कहना है कि अल्लाह को अपनी आँखों से देख पाना असंभव है, हालाँकि इनका ख़्याल किताब व सुन्नत के ख़िलाफ़ है। यह लोग इन मसाइल में ग़लत तावील करते हैं और अपने क़ियास और राय पर अ़मल करते हैं। इमाम बग़वी ने कहा है कि कुरआन मजीद में "लन् तरानी" में "लन्" के माना "हर्गिज़ नहीं" नहीं हैं, बल्कि अर्थ यह है कि दुनिया में अपनी दुनिया की आँखों से कोई अल्लाह को नहीं देख सकता, बल्कि आख़िरत में देखेगा क्योंकि आख़िरत में जाने के बाद उस की आँखें हमेशा रहने वाली हो जायेंगी इसलिये कि वहाँ की ज़िंदगी हमेशा की होगी। तो मतलब यह हुआ कि हमेशा बाक़ी रहने वाली आँखों से हमेशा बाक़ी रहने वाली ज़ात (अल्लाह) को देखा जा सकता है।

सो जब अल्लाह ने पहाड़ पर ज़रा सा जल्वा किया तो उस को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और मूसा (भी) बेहोश हो कर गिर पड़ा, फिर जब होश में आया तो बोला, तू पाक है मैं (तेरे सामने) तौबा करता हूँ और मैं सब से पहले ईमान लाता हूँ[९६] १४४. अल्लाह ने कहा: ऐ मूसा! मैं ने तुझे अपनी रिसालत और हमकलामी से सब लोगों पर

تَرٰىنِىْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ
مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ
اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّىْ
اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِىْ وَبِكَلَامِىْ ۖ
فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَكَتَبْنَا لَهٗ

فِي الْأَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّأْمُرْ قَوْمَكَ يَأْخُذُوا بِأَحْسَنِهَا سَأُورِيكُمْ دَارَ الْفٰسِقِينَ ﴿١٤٥﴾ سَأَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَإِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوا بِهَا وَإِنْ يَّرَوْا سَبِيلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا وَإِنْ يَّرَوْا سَبِيلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غٰفِلِينَ ﴿١٤٦﴾ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَاءِ

फ़ज़ीलत दी, इसलिये जो कुछ मैं ने तुझे दिया है वह मज़बूत पकड़ और शुक्र गुज़ारों में हो १४५. और हम ने उस के लिये उन तख़्तियों में (जिन में मूसा को तौरात दी थी) हर प्रकार की नसीहत और हर एक (मज़हबी) बात की तफ़्सील लिख दी थी, तो (ऐ मूसा!) तुम उस को कुव्वत से पकड़ना[९७] और अपनी क़ौम को हुक्म करना कि अच्छी तरह से उस को पकड़ें। मैं बहुत जल्द तुम को (थोड़े समय के बाद फ़िरऔनी जैसे) बदकारों का मुल्क (फ़तह की हालत में) दिखाऊँगा १४६. और जो लोग ज़मीन पर नाहक़ बड़ाई करते (और फूले नहीं समाते) हैं उन को अपने हुक्मों से फेर दूँगा[९८] अगर्चे वह हर प्रकार की निशानी और चमत्कार भी देखें तो भी उन पर ईमान न लायेंगे, और अगर हर प्रकार के निशान भी देखें तो भी उन पर ईमान न लायें गे और अगर गुमराही की राह देख पायेंगे तो (झट से) उस को अपनी राह बना लेंगे। क्येंकि वह हमारे हुक्मों से (तो) इन्कारी और बेपर्वाह होंगे १४७. (और यह एलान भी उन को सुना दो) कि जो लोग हमारे हुक्मों को झुठलायेंगे और आख़िरत (की ज़िन्दगी) के इन्कारी होंगे

....

९६. यानी मैं इस बात पर ईमान लाता हूँ कि दुनिया की आँखों से दुनिया में तुझे कोई नहीं देख सकता है। (और हमेशा रहने वाली दुनिया आख़िरत) में हमेशा रहने वाली आँखों से अल्लाह को देखा जा सकता है- देखिये हाशिया नं० ९५। चुनान्चे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम हमेशा रहने वाली दुनिया (आख़िरत) में अल्लाह तआ़ला को अपनी (हमेशा रहने वाली) आँखों से ऐसे ही देखोगे जैसे इस दुनिया में चौदहवीं के चाँद को देखते हो---ख़ालिद

९७. मतलब यह है कि बनी इस्राईल की हिदायत और मार्गदर्शन के लिये जिन आदेशों की आवश्यक्ता थी वह सब उन पर पत्थर के पत्रों में लिखे हुये आए थे। चूँकि उन में अल्लाह के हुक्म से लिखा गया था इसलिये उन की किताबत (लिखावट) की निस्बत अपनी तरफ़ की है, और आसमानी किताबों के बारे में यह आ़म शैली है। तौरात में यह है कि यह पत्थर के दो पत्र थे और दोनों ही ओर आदेश लिखे हुये थे (रोशनाई से नहीं बल्कि खुदे हुये थे) (खुरुज-२,३,४,)

९८. 'अपने हुक्मों से फेर दूँगा, यानी जो लोग अवज्ञा करेंगे उन की निगाहें अपनी निशानियों से फेर दूँगा। जो जान-बूझ कर अवज्ञा करते हैं ऐसे लोगों के बारे में अल्लाह का यही नियम है कि उन के अन्दर से सोचने-समझने, ग़ौर-फ़िक्र करने और उस से प्रभावित होने की क्षमता को समाप्त कर देता है। इस आयत से मालूम हुआ कि जो अल्लाह की आयतों को झुठलाता है वह कभी सच्चाई (हिदायत) को नहीं पा सकता। यही मतलब है "उनको अपने हुक्मों से फेर दूँगा" का। इस से यह मतलब हर्गिज़ नहीं निकला कि अल्लाह किसी को गुमराही पर मजबूर करता है (सनाई)

الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٧﴾ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ
مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ؕ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ
لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا
ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤٨﴾ وَلَمَّا سُقِطَ فِيْۤ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ
قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا
لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾ وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰۤى اِلٰى
قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِيْ
مِنْۢ بَعْدِيْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ
وَاَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗۤ اِلَيْهِ ؕ قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ
الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِيْ وَكَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِيْ ۖ فَلَا
تُشْمِتْ بِيَ الْاَعْدَآءَ وَلَا تَجْعَلْنِيْ مَعَ الْقَوْمِ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٥٠﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِاَخِيْ وَاَدْخِلْنَا

उन के नेक अ़मल (सब के सब) बातिल हो जायेंगे। और जो कुछ (कुफ़्र व शिर्क) वह करते होंगे उसी का बदला उन को मिलेगा १४८. मूसा की क़ौम ने उस से पीछे (और ही गुल खिलाये वह यह कि) अपने ज़ेवरों से एक बछड़ा बना लिया। (वह क्या था?) केवल एक आवाज़दार जिस्म था[९९]। क्या उन जाहिलों ने यह भी नहीं समझा कि वह उन से बोलता नहीं था और न उन की किसी प्रकार की राहनुमाई करता था[१००]। उस को माबूद बनाते ही (अल्लाह के नज़दीक) ज़ालिम ठहर गये[१०१] १४९. और जब अपने किये पर शर्मिन्दा हुये और समझ गये कि हम तो (वास्तव में सीधी राह से) बहक गये हैं तो (अल्लाह से दुआ़ करते हुये) कहने लगे कि अगर हमारा पर्वरदिगार हम पर रहम न करेगा और न बख़्शेगा तो कुछ शक नहीं कि हम टोटा पाने वालों में से हो जायेंगे १५०. जब मूसा (अल्लाह के बतलाने से) गुस्सा से भरा हुआ रन्जीदा अपनी क़ौम की तरफ़ आया तो कहने लगा कि मेरे पीछे तुम लोगों ने बहुत ही बुरा काम इख़्तियार किया (क्या तुम को शर्म नहीं आयी?) क्या अल्लाह की शरीअ़त से पहले ही तुम जल्दबाज़ी कर गये[१०२]? (यह कह कर सख़्त मलीन हुआ) और उन पत्रों को (जो पहाड़ पर उस को मिले थे) फेंक दिया और अपने भाई के सर को पकड़ कर खींचने लगा[१०३]। उस ने (निहायत नर्मी से) कहा: ऐ भाई (मैं क्या करता) क़ौम ने मुझे ज़ईफ़ समझा (अगर मैं ज़्यादा कुछ कहता) तो मुझे मार देना भी उन से कुछ दूर न था, इसलिये दुश्मनों को मुझ पर न हंसा और मुझे भी (अपनी नाराज़गी में) ज़ालिमों के साथ मत शामिल कर[१०४] १५१. मूसा ने दुआ़ की कि ऐ मौला! मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे और हम को अपनी रहमत में दाख़िल कर

....

९९. घटना यह घटी कि हज़रत मूसा ने अपनी क़ौम वालों से कहा था कि केवल एक महीना के लिये मैं तूर पहाड़ पर जा रहा हूँ, लेकिन अल्लाह ने दस दिन के लिये और रोक लिया। मूसा जब वायदे के अनुसार ३० दिन के भीतर नहीं लौटे तो क़ौम गुमराही में मुब्तला हो गयी।

बनी इस्राईल में एक शख़्स सामरी नामक बड़ा होशियार था। क़ौम में उस का एक मर्तबा भी था। वह कुछ इ़ल्म जानता था। उस ने मौक़े को ताड़ कर क़ौम वालों से ज़ेवर (सोने-चाँदी के आभूषण) जमा करवा लिये। यह ज़ेवर उन्हों ने मिस्र को छोड़ने से पहले क़िबतियों (फ़िरऔ़न के ख़ान्दान वालों) से अपने हाँ खुशी के किसी ➲

➲मौक़े पर पहनने वग़ैरह के लिये आर्ज़ी तौर पर उधार माँगे थे। इत्तिफ़ाक़ से अचानक यह लोग रातों-रात हज़रत मूसा के साथ मिस्र से भाग खड़े हुये और वह ज़ेवर उन को वापस नहीं कर सके। जब फ़िरऔन और उस के लोग हलाक हो गये तो यह ज़ेवर उन्हीं कक हो कर रह गये। इन्हीं ज़ेवरों को सामरी ने इकट्ठा करवा कर उस से एक बछड़ा बनाया और हज़रत जिब्रील के घोड़ों के टापों से मिट्टी ले कर उस बछड़े के अन्दर डाल दी (और कुछ मन्त्र आदि भी अवश्य पढ़ा होगा-- ख़ालिद) चुनान्चे उस मिट्टी के पड़ते ही उस के अन्दर जान पड़ गयी और ख़ून व जिस्म वाले आम दुनिया के बछड़ों की तरह आवाज़ भी निकालने लगा। सामरी ने कहा कि यह तुम्हारा और मूसा का रब है।

तौरात में है कि यह मूर्ति सोने की थी और इसे हज़रत हारून ही ने बनवायी की। (ख़ुरुज-३१,३३)

लेकिन कुरआन साफ़-साफ़ कह रहा है कि इस बछड़े का बनाने वाला साम्री नामक एक शख़्स था और हज़रत हारून अलै० का दामन इस धब्बे से पाक है।

१००. इस आयत में "मोतज़िला" और "जहमिय्या" फ़िर्क़ों का रद्द है। इन का अक़ीदा है कि अल्लाह न कलाम करता है न कोई नया आदेश दे सकता है, न चढ़ सकता है और न उतर सकता है, न ही कहीं आ सकता है और न कहीं जा सकता है, न उस की कोई जेहत है और न वह किसी मकान में है। फिर तो अल्लाह सामरी के बछड़े से भी बदतर है (नऊज़ुबिल्लाह) इन फ़िरक़ो के अक़ीदा के मुताबिक़ अल्लाह एक फ़र्ज़ी ज़ात है। इन गुमराहों को भी साम्री का साथी समझना चाहिये (वहीदी) सहीह मज़हब यह है कि अल्लाह पाक अपनी ज़ात और सिफ़ात में अनूठा और बे मिसाल है। कुरआन पाक में और हदीसों में उस की जो सिफ़तें बयान की गयी हैं उन पर ईमान लाना फ़र्ज़ है। उन की कैफ़िय्यत के बारे में अल्लाह ही को इल्म है।

१०१. कुछ बुज़ुर्गों की तरफ़ से यह ख़याल ज़ाहिर किया गया है कि जिन लोगों ने बछड़े की पूजा की उन के दिलों ने तौहीद की ख़ुश्बू पाई होगी? नहीं, हर्गिज़-हर्गिज़ नहीं पाई। इसी प्रकार जिसने जिब्रील, मीकाइल, या अर्श और कुर्सी, या किसी मख़लूक़ में से किसी की तरफ़ (इबादत की निय्यत से) ख़याल किया, उस का हाल यही होगा कि उस ने भी तौहीद की ख़ुश्बू नहीं पाई (मवाहिब)

१०२. 'तुम जल्द बाज़ी कर गये' इसका क्या मतलब? "बैज़ावी" ने यह लिखा है कि क्या तुम ने अपने पर्वरदिगार के वायदे में जो उस ने मुझ से चालीस का लिया था जल्द बाज़ी की? मेरी मौत को मान लिया? मेरे बाद दीन को बदल दिया? जैसे और दूसरी उम्मतों ने अपने नबिय्यों के साथ किया? एक रिवायत में है कि सामरी ने बछड़ा बना कर क़ौम के लोगों से कहा था कि यह तुम्हारा और मूसा का रब है। मूसा अब लौट कर नहीं आयेंगे इसलिये कि वह मर चुके हैं (मवाहिब)

१०३. 'सर को पकड़ कर खींचने लगा' सूरः ता-हा आयत नं ९४ में दाढ़ी पकड़ने का ज़िक्र है। हज़रत मूसा ने गुमान किया कि हारून ने उन को कुफ़्र व शिर्क से रोकने में कोताही की। हज़रत हारून, मूसा के सगे भाई थे और उम्र में तीन साल बड़े थे। बड़े सीधे-सादे और नर्म मिज़ाज थे। इसी वास्ते बनी इस्राईल को वह बहुत महबूब थे। कुछ लोगों का कहना है कि मूसा और इन की माँ एक थीं और बाप दो।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का क़ौल है कि जब मूसा ने वह तख़्तियाँ जिस में तौरात शरीफ़ लिखी हुयी थी ज़मीन पर डालीं तो वह टूट गयीं। उन में से अल्लाह ने ८ हिस्से उठा लिये और एक हिस्सा ही बाक़ी रह गया। इमाम मुजाहिद का कहना है कि भविष्य में पेश आने वाले वाक़िआत से मुतअल्लिक़ जो सूचनायें थीं उन्हें उठा लिया, हिदायत और अहकाम व मसाइल का हिस्सा बाक़ी रह गया। उलमा ने यह बात साफ़ कर दी है कि हज़रत मूसा ने तौरात से नफ़्रत कर के उसे नहीं डाला था, बल्कि गुस्से की हालत में ऐसा हुआ और गुस्सा भी केवल अल्लाह की राह में और सिर्फ़ अल्लाह ही के लिये था (न कि अपने फ़ाइदे के लिये) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

"अल्लाह हज़रत मूसा पर रहम फ़रमाये, जो चीज़ आँखों से देख ली जाये उस में और सुनी-सुनाई ख़बर में अन्तर➲

है। अल्लाह ने मूसा अ़लै० को बता दिया था कि तुम्हारी कौम तुम्हारे यहाँ आने के बाद दीन से फिर गयी है लेकिन उस समय नहीं डाला, जब आँखों से देख लिया तब तख़्तियों को डाला (अबू हातिम)

१०४. हज़रत हारून ने अपनी सफ़ाई में कहा: मेरे प्यारे भाई! मेरी बात तो सुन लीजिये! मैंने अपनी ओर से बहुत कोशिश की, लेकिन जब यह ज़ालिम अल्लाह के ख़िलाफ़ किसी को क़त्ल करने से नहीं डरते तो मेरी क्या पर्वाह करते। मेरी तो एक न चलने पाई। बल्कि जब मैंने ज़्यादा रोक-टोक करना चाहा तो उल्टे मुझ से बग़ावत पर तैयार हो गए। मेरी जान बच गयी यही ग़नीमत है। आप अनुमान लगायें कि कुरआन ने किस प्रकार हज़रत हारून अलै० का यहां ज़िक्र किया है और कहाँ तौरात का यह बयान कि बुत परस्ती पर उभारने वाले हारून ही थे (खुरुज-३१,३३)। नबी से बढ़ कर रहमते इलाही की क़द्र करने वाला और कौन हो सकता है? सही हाल का ज़िल्म होते ही तुरन्त हज़रत मूसा कलीमुल्लाह दुआ़-इस्तिग़फ़ार में लग गये। प्रार्थना अपने ही लिये नहीं बल्कि अपने भाई के लिये भी कर रहें हैं जिन को अभी-अभी डाँट-डपट पिलाई गयी है। ऐसा हज़रत मूसा ने इसलिये किया था ताकि वह उन से प्रसन्न हो जायें और उन पर डाँट-डपट का जो तनाव है वह उतर जाये (माजिदी)

आजकल के तौरात की दूसरी किताब के बाब ३३ में हज़रत हारून को बछड़ा बनाने वाला लिखा है, यह बिल्कुल ही ग़लत है। नबी और शिर्क? भला यह गले उतरने वाली बात है? ईसाइयो! कुरआन के सच्चे होने पर क्या अब भी शक करोगे? (सनाई)

فِيْ رَحْمَتِكَ ۖ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١٥١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ
اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۗ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِيْنَ ﴿١٥٢﴾
وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْٓا ۡ
اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٥٣﴾ وَلَمَّا سَكَتَ
عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ۚ وَفِيْ نُسْخَتِهَا
هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ﴿١٥٤﴾
وَاخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ
فَلَمَّآ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ
اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّايَ ۭ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ
السُّفَهَاۗءُ مِنَّا ۚ اِنْ هِيَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ۭ تُضِلُّ بِهَا
مَنْ تَشَاۗءُ وَتَهْدِيْ مَنْ تَشَاۗءُ ۭ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ
لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ﴿١٥٥﴾ وَاكْتُبْ لَنَا

(क्योंकि) तू सब से अधिक रहम करने वाला है १५२. (अल्लाह ने हज़रत मूसा को वह्यि द्वारा आदेश दिया कि) जिन लोगों ने बछड़ा बनाया था उन को अल्लाह के हाँ से ग़ज़ब और ज़िल्लत की मार दुनिया में पहुंचेगी[१०५/१] झूठ बाँधने वालों को हम इसी प्रकार दन्ड दिया करते हैं (हमारा यह क़ानून अटल है) १५३. और जो लोग बुरे काम कर के तौबा कर जाते हैं और अल्लाह पर पक्का ईमान लाते हैं (तो उनके गुनाह माफ़ हो जाते हैं) बेशक तेरा रब तौबा के बाद बड़ा ही बख़्शने वाला मेहरबान है १५४. और जब (हज़रत) मूसा का ग़ुस्सा ठन्डा हुआ तो उन्होंने उन तख़्तियों को पकड़ा, उन के मज़मून में हिदायत थी और अल्लाह से डरने वालों के लिये रहमत १५५. (अन्त में बनी इस्राईल ने तौबा की) और मूसा ने अपनी क़ौम के ७० आदमियों को हमारी हाज़िरी के लिये चुना, (मगर वह कहने लगे कि हम जब तक अल्लाह को अपनी आँखों से न देखेंगे, न मानेंगे) फिर जब भूंचाल उन पर आया[१०५/२] तो मूसा ने दुआ़ की कि इलाही! अगर

तू चाहता तो इस से पहले ही उन को और मुझ को मार देता। क्या तू हम में से बेवकूफ़ों की नामाकूल बात करने से हम को हलाक किये देता है? यह (काम भी सरासर) तेरी जांच है। जिस को तू चाहे उस को (न समझने से) गुमराह कर दे और जिस को चाहे (उसको) समझ दे। तू हमारा वाली है इसलिये हम को बख़्श दे और हम पर रहम फ़रमा और तू सबसे बड़ा बख़्शने वाला है

....

१०५/१. 'ज़िल्लत की मार दुनिया में पहुंचेगी' उन लोगों को जिन्होंने बछड़े को माबूद बना लिया और उस के पुजारी बन गये।

१०५/२. पहाड़ पर अल्लाह के ग़ज़ब की बिजली गिरने से भूंचाल आया। इस का ज़िक्र सूरः बक़रः आयत न० ५५ में भी है। वहाँ 'साअ़िक़ः' (बिजली की कड़क) का शब्द आया है और यहाँ 'रज्फ़ः' (भूंचाल) का। दोनों में कोई टकराव नहीं है। आँधी-तूफ़ान के साथ बिजली कड़की और फिर भूंचाल आया।

فِي هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَآ
اِلَيْكَ ؕ قَالَ عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَ
رَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ
يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا
يُؤْمِنُوْنَ ۞ اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ
الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي
التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ ز يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰهُمْ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ
الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ
عَلَيْهِمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ
وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُوْنَ ۞ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ
اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ

१५६. हमें दुनिया में नेकहाली नसीब कर और आख़िरत में भी (क्योंकि हम तेरे बन्दे और तू हमारा मौला है) यक़ीनन हम तेरी तरफ़ रुजूअ़ करते हैं। अल्लाह ने (उन को ज़िन्दा किया और) कहा कि मैं अपना अ़ज़ाब जिस को चाहूँगा पहुंचाऊँगा, और मेरी रहमत सब वस्तुओं को शामिल है। पस यह रहमत मैं उन के नाम करूँगा जो परहेज़गारी करते होंगे और ज़कात देते होंगे और जो मेरे हुक्मों को (दिल से) मानते होंगे १५७. (यानी उन लोगों के नाम करूँगा) जो नबी, उम्मी रसूल (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की (दीन के मामले में) ताबेदारी करेंगे जिस को वह तौरात, इन्जील में लिखा हुआ अपने पास पायेंगे[१०६] जो उन को नेक बातों का हुक्म देगा और नाजायज़ कामों से मना करेगा और पाकीज़ा चीज़ें उन को हलाल बतायेगा और (जो) हराम (होंगी उन) को हराम ठहरायेगा और उन (यहूदियों और ईसाइयों) से अहकाम की सख़्ती और गले के फन्दे जो उनपर पड़े होंगे दूर कर देगा[१०७]। पस जो लोग उस (नबी) पर ईमान लाये और उस की अ़िज़्ज़त की और उस की मदद की और जो नूर (यानी कुरआन) उस नबी के साथ उतरा उस की ताबेदारी की होगी, वही लोग कामियाब होंगे १५८. तू कह दे कि ऐ लोगो! तुम सब की तरफ़ मैं अल्लाह का रसूल (होकर)

➲आया हूँ (वह अल्लाह) जिस की हुकूमत तमाम आसमानों और ज़मीनों पर है।

....

१०६. इस स्थान पर पहले की आसमानी किताबों में जो पेशीनगोइयाँ (भविष्यवाणियाँ) की गयी हैं उन को ज़िक्र करना उचित है। तौरात की पाचवीं किताब इस्तिसना, बाब १८ में है "ख़ुदावन्द! तेरा ख़ुदा तेरे लिये तेरे ही दर्मियान से तेरे भाइयों में से मेरी तरह एक नबी बर्पा करेगा। तुम उस की तरफ़ कान धरियो। और ख़ुदावन्द ने मुझे कहा मैं उन के लिये उन के भाइयों में से तुझ सा एक नबी बर्पा करूँगा और अपना कलाम उस के मुँह में डालूँगा और जो कुछ उसे मैं फ़रमाऊँगा वह सब सी कहेगा" (संक्षिप्त में) इस में कोई संदेह नहीं कि यह भविष्यवाणी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हक़ में है। बहुत सी बातें हैं जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और हज़रत मूसा अ़लै० में मुश्तरक हैं, तो जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मूसा अ़लै० के समान हैं तो पेशीनगोई आप ही के हक़ में मानी जायेगी न कि किसी और के हक़ में।

दूसरी भविष्यवाणी इन्जील यूहन्ना १४. बाब, जुम्ला १५ में इस प्रकार है "अगर तुम प्यार करते हो तो मेरे हुक्मों पर अ़मल करो और मैं अपने बाप से प्रार्थना करूँगा और वह तुम्हें दूसरा तसल्ली देने वाला देगा ताकि तुम्हारे साथ अबद (हमेशा) तक रहे और अब मैं ने तुम्हें इस के वाक़े होने से पहले कहा है ताकि जब हो जाये तुम ईमान लाओगे कि तुम से बहुत सी बातें न करूँगा क्योंकि इस दुनिया का सर्दार आता है और मुझ में उस की कोई चीज़ नहीं" (सारांश)

आगे इसी किताब के १६ बाब के वाक्य ७ में यूँ है "लेकिन मैं तुम्हें सच कहता हूँ कि मेरा जाना तुम्हारे लिये लाभदायक है क्योंकि मैं न जाऊँ तो तसल्ली देने वाला तुम्हारे पास न आयेगा, पर अगर जाऊँ तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। जब वह सत्यता की रूह आये तो तुम्हें सच्चाई की राह बता देगी, क्योंकि वह अपनी न कहेगी बल्कि जो कुछ सुनेगी वही कहेगी और तुम्हें भविष्य में सूचनायें देगी वह मेरा ख़याल ज़ाहिर करेगी क्योंकि मेरी चीज़ से लेगी और तुम्हें बता देगी (सारांश)

इस भविष्यवाणी में हज़रत ईसा मसीह ने अपने बाद आने वाले नबी, या रूह की वज़ाहत करने के अ़लावा उस के कामों की तफ़्सील भी बता दी है (सनाई) और विस्तार से जानने के लिये तफ़्सीर सनाई भाग ३, पृष्ठ १५२, १७४, को देखें। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का सुरयानी भाषा में नाम "अल् मन्हम्ना" है। इस का अर्थ वही है जो "मुहम्मद" का है। इन्जील में तो स्पष्ट शब्द में "अहमद" लिखा हुआ है, मगर नसारा ने इसे छुपा दिया है। आज कल यह इन्जील बरबनास इटली की लाइब्रेरी में है जिसमें साफ़-साफ़ बशारतें नबी करीम के तअ़ल्लुक़ से मौजूद हैं। (वहीदी)

१०७. कुरआन मजीद ने दूसरे स्थान पर "अग़लाल" की तफ़्सीर स्वंय कर दी है। मज़हबी ज़िन्दगी में बहुत से ऐसे तरीक़े शामिल कर लिये गये थे जिन पर अ़मल करना असंभव था, ऐसे-ऐसे अ़क़ीदे ईजाद कर लिये गये थे, जो इन्सान की समझ से बाहर थे, और पाखंडियों की पूजा करते थे। शरीअ़त ने इन को "अग़लाल" (बोझ) कहा है। बड़े अफ़्सोस की बात है कि कुरआन ने अहले किताब को जिन फन्दों से नजात दिलाई थी, मुसलमानों ने वही फ़न्दे फिर अपने गलों में डाल लिये हैं (तर्जुमान मौलाना आज़ाद)

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۖ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ
رَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ
وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝ وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى

जिस के सिवा कोई भी माबूद नहीं वही ज़िन्दा रखता और मारता है [१०८] पस तुम अल्लाह पर और उस के रसूल पर जो उम्मी नबी है जो अल्लाह और उस के कलिमात (अहकाम) पर➲

اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ۝ وَ قَطَّعْنٰهُمُ
اثْنَتَيْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ۭ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى
اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗٓ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ
فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۭ قَدْ عَلِمَ
كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۭ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَ
اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۭ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ
مَا رَزَقْنٰكُمْ ۭ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُوْنَ ۝ وَاِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ
وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ
سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْٓـٰٔتِكُمْ ۭ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ۝

दिल से ईमान रखता है, ईमान लाओ और उस की आज्ञापालन करो[१०९] ताकि तुम सीधी राह पाओ[११०] १५९. और (हज़रत) मूसा की क़ौम में से एक जमाअ़त थी जो हक़ (बात) की राहनुमाई करती और उसी से इन्साफ़ करती थी १६०. और हम ने उन को (बड़े-बड़े) बारह गरोह बनाया (और उन की ज़रूरतों का इतना ख़्याल रखा) कि जब मूसा की क़ौम ने उन से पानी माँगा तो हम ने मूसा को संदेश दिया कि अपनी लकड़ी पत्थर पर मार[१११] (उस पत्थर को लकड़ी का लगना ही था कि) बारह सोते उस में से बह निकले। हर एक आदमी ने उन से अपना-अपना घाट मालूम कर लिया। और हम ने उन पर बादलों का छाँव किया और उन पर मन्न और सल्वा उतारा (और आ़म इजाज़त दी) कि हमारी दी हुयी पाकीज़ा नेमतें खाओ (और अवज्ञा न करो। आख़िर कार) हमारा तो कुछ न बिगाड़ सके लेकिन (उस की मुख़ालिफ़त में) अपना नुक़सान करते रहे १६१. और जब (उन्हों ने गेहूँ, प्याज़ वग़ैरह को माँगा) तो उनसे कहा गया कि इस बस्ती में चले जाओ और जहाँ से चाहो खुले खाते फिरो और 'हित्ता' कहो (यानी माफ़ी चाहो) और शहर के दर्वाज़ा में सज्दा करते हुये दाख़िल होना हम तुम्हारे गुनाह बख़्श देंगे (और आइन्दा) नेकोकारों को अधिक देंगे[११२]

....

१०८. यानी समस्त इख़्तियारात का वही अल्लाह अकेला मालिक है। यह नहीं कि ज़िन्दगी के देवता विष्णु जी हों और मौत तबाही-बर्बादी के देवता शिवजी। उस अल्लाह के अ़लावा कोई अल्लाह नहीं है। और ऐसा भी नहीं है कि सब से बड़ा माबूद तो वह है और छोटे-छोटे देवी-देवता उस के मातहत हज़ारों हैं। नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं हैं, बल्कि किसी दूसरे का सिरे से वजूद ही नहीं। माबूद तो केवल एक और अकेला है। और वह ज़ात है जिस के क़ब्ज़े में ज़मीन आसमान की बादशाहत है।

इस आयत से यह भी साबित होता है कि जिस प्रकार इस्लाम धर्म में अल्लाह की ख़ुदाई, उस की बादशाहत पूरी दुनिया पर है, इसी प्रकार रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दावत भी पूरी दुनिया के लिये है। (ताजिदी)

१०९. यहाँ पर 'रसूल' और 'नबी' दो विशेषतायें (सिफ़ात) एक साथ लायी गयी हैं। इस का उद्देश्य ताकीद और कलाम में ज़ोर पैदा करने के लिये है। दोनों सिफ़तों के दर्मियान अन्तर भी है। एक फ़र्क़ तो यही है कि 'नबी' बशर (आदमी) के लिये बोला जाता है और 'रसूल' फ़रिश्तों के लिये भी (माजिदी) 'उम्मी' यह शब्द "उम्म" से बना है जिस का अर्थ यह है "अस्ल"। मतलब यह हुआ कि यह शख़्स जिस अस्ल फ़ितरते-इस्लाम पर पैदा हुआ है उस पर क़ाइम है। या फिर "उम्मी" उम्मते-अ़रब की तरफ़ निस्बत है। जैसा कि हदीस में आया है "हम लोग अ़रब के उम्मी हैं लिखते-पढ़ते नहीं हैं"। इस के बावजूद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अल्लाह तआ़ला ने वह ज्ञान दिये जो किसी और को नहीं दिये गये थे। कुछ यहूदी उलमा ने 'उम्मी' का तर्जुमा "जाहिल और अनपढ़" किया

है और इस से यह साबित किया है कि वह अपने नबुव्वत के दावे में पढ़े-लिखे यहूदियों से मदद के मोहताज थे, यह मान लेना साफ़ कुफ़्र है (हक़्क़ानी)

११०. अ़रबी भाषा में 'उम्मी' ऐसे शख़्स को कहा जाता है जो अपनी पैदाइशी हालत पर हो और लिखने-पढ़ने और दूसरी बातों का ज्ञान न रखता हो। चुनान्चे अ़रब के रहने वाले "उम्मी" कहलाते थे, क्योंकि वह तालीम-सभ्यता से अवगत नहीं थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को भी "उम्मी" फ़रमाया, क्योंकि ज़ाहिरी तालीम-तर्बियत का उन पर साया भी न पड़ा था, जो कुछ था वह वह्यि की बदौलत हासिल हुआ था। तौरात में जिस नबी के आने की बशारत दी गयी थी उस के बारे में यही सिफ़त बताई गयी थी, इसलिये कुरआन ने विशेष रूप से इस विशेष्ता (सिफ़त) का ज़िक्र किया है ताकि यहूद को आप के नबी होने का पूरा यक़ीन हो जाये। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बारे में बशारत का ज़िक्र इस्तिसना १८,१७,३२,२१और ३३,२ में है। ज़बूर ४५-१ में भी है। इन्जील मती २०-१ में, यूहन्ना १,२१,१४,१५ में है (तर्जुमान) तौरात में है कि यह चट्टान हुरेब पर्वत में थी (खुरुज ११-६) 'हुरेब' से मुराद वह पहाड़ी है जो कि "लजा" की वादी में स्थित है। (सनाई)

१११. शायद यह वह शहर है जिसे तौरात में "यरीहू" कहा गया है और जो युर्दन पार करने के बाद कन्आ़न मुल्क की पहली आबादी थी, जिस के मिलने की बनी इस्राईल को बशारत दी गयी थी गिनृती २३-५ (तर्जुमान)

११२. इन को हुक्म दिया गया था कि "हित्त:" गुनाहों की माफ़ी चाहते हैं) कहो लेकिन यह लोग "हिन्त:" (गेंहू मांगते हैं) कहते थे। इनको दूसरा आदेश यह दिया गया था कि शहर में दाख़िल होते समय सज्दा करें मगर चूतड़ घिसटते हुये शहर में दाख़िल हुये। उन पर अ़ज़ाब यह नाज़िल किया गया कि ताऊन (महामारी) की बीमारी में घिर गये और एक ही दिन में सत्तर हज़ार यहूदी मर गये। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है: कि ताऊन की बीमारी पहली उम्मतों के लिये तो अ़ज़ाब थी लेकिन तुम्हारे लिये रहमत है। जो मुसलमान ताऊन की बीमारी में मरे वह शहीद है इसलिये जब यह बीमारी किसी स्थान पर फैले और तुम वहाँ हो तो वहाँ से न भागो और अगर उस स्थान से बाहर हो तो वहाँ जाओ भी मत" (सलफ़िय्या)

१६२. फिर जो लोग उन में ज़ालिम थे उन्हों ने कही हुयी बात के ख़िलाफ़ और बात कही, पस हम ने उन के बुरे कर्तूत की वजह से आसमान से उन पर अ़ज़ाब नाज़िल किया १६३. और तू उन से उस बस्ती का हाल पूछ जो दरिया के किनारे बस्ते थे। जब वह शनिवार (सनीचर) के दिन ज़्यादती करते थे[११३] क्योंकि सब्त के दिन मछलियाँ ज़ोर से (टिड्डी दल की तरह) आतीं और जिस दिन वह सब्त में मशगूल न होते (बिल्कुल) न आतीं[११४], (आख़िर उन्हों ने सब्त की ख़िलाफ़वर्ज़ी करके शिकार करना आरम्भ कर दिया) उन के नाफ़र्मानी करने की वजह से हम उन को इसी तरह आज़माते थे[११५] १६४. और जब उन में से एक जमाअ़त बोली कि क्यों तुम ऐसे

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ
لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا
يَظْلِمُوْنَ ۝ وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ
حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ
تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا
يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۛ كَذٰلِكَ ۛ نَبْلُوْهُمْ بِمَا
كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝ وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ
تَعِظُوْنَ قَوْمًا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ
عَذَابًا شَدِيْدًا ۭ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ
يَتَّقُوْنَ ۝ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖٓ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ

يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍ بَئِيْسٍ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً

लोगों को समझाते हो कि जिन को अल्लाह तबाह करेगा या सख़्त अ़ज़ाब में गिरफ़्तार करेगा। उन्हों ने कहा इसलिये कि हम अल्लाह के पास अपना उज़्र बना सकें और शायद वह भी (इस बदकारी से) बच जायें १६५. पस जब वह लोग उपदेश व नसीहत सब भूल बैठे तो हमने उन ही लोगों को जो बदकारी से मना किया करते थे बचाया और (बाक़ी सब) ज़ालिमों को बदकारियों की वजह से सख़्त अ़ज़ाब में गिरफ़्तार किया १६६. फिर जब वह मनाही (की हद) से बढ़ते ही गये तो हमने उन से कहा कि तुम ज़लील व ख़्वार बन्दर बन जाओ[११६]। (तुम्हारे लिये यही सज़ा उचित है)

....

११३. बनी इस्राईली की एक गुमराही यह भी थी कि दीन के आदेशों पर अ़मल करने से बचने के लिये हीले- बहाने निकाल लिया करते थे। सब्त के मुबारक दिन को शिकार करने से मना किया गया तो एक गिरोह ने यह हीला तलाश किया कि समुद्र के किनारे गड्ढे खोद लिये। सब्त के दिन जब मछलियाँ उन में जमा हो जातीं तो दूसरे दिन उन को पकड़ लेते और कहते कि हम ने सब्त के दिन थोड़े ही शिकार किया है।

हमारे इमामों के हाँ भी इस प्रकार के हीलों - बहानों की बहुत सी मिसालें मौजूद हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सच फ़रमाया था कि तुम लोग भी यहूद व नसारा के क़दम से कदम मिलाकर चलने लगोगे

११४. जब मछलियाँ सब्त (शनिवार) को छोड़ कर और दिनों में नहीं आती थीं तो यह घबराये, क्योंकि यह लोग उन्हीं पर गुज़ारा करते थे। आख़िर उन्होंने सब्त के दिन शिकार न करने के हुक्म को न मान कर धड़ल्ले से मुबारक मौक़े पर भी शिकार करना आरंभ कर दिया (सनाई)

११५. यह एक नियम है कि किसी क़ौम में कुछ लोग बुराइयाँ करते हैं तो कुछ लोग उन को समझाने वाले भी होते है और उन समझाने वालों को रोकने वाले भी होते हैं। यही हाल इस बस्ती के लोगों का भी था। कुछ लोग सब्त के दिन शिकार करने लगे तो कुछ नेक लोगों ने उन्हें मना करना शुरू किया तो कुछ लोग उन्हें रोकने से मना करने लगे। इन लोगों का ज़िक्र बाइबल की किताब नहमिया बाब १३ में आया है। (सनाई)

यह बस्ती मदयन शहर और तूर पर्वत के दर्मियान आबाद थी। इस का नाम "ईला" था। हज़रत दावूद अ़लै० ने सब्त यानी शनिवार के दिन शिकार करने से मना किया था। हिकायतों में आया है कि यह लोग मछलियों का शिकार करके गुज़ारा करते थे। सनीचर के अ़लावा दिनों में मछलियाँ दिखाई ही नहीं पड़ती थीं लेकिन उस दिन समुद्र के तट पर टिड्डी की तरह दिखाई देती थीं (ऐसा अल्लाह की तरफ़ से आज़माइशके तौर पर होता था) इन लोगों ने समुद्र के किनारे गड्ढे खोद दिये जिन में सनीचर के दिन मछलियाँ आ कर गिर पड़तीं फिर इतवार को उन्हें पकड़ लेते। इस प्रकार करने से जब उन पर अ़ज़ाब आने में देरी हुयी तो सनीचर को भी पकड़ना आरंभ कर दिया (कमालैन)

इस से साफ़ ज़ाहिर है कि कुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ हीले-बहाने तलाश करना हराम है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:"तुम यह काम न करना जो यहूद करते थे उन्होने मामूली हीला कर के अल्लाह के हराम किये को हलाल कर लिया था (ख़तीब) इस बस्ती के लोग तीन गरोह में बट गये थे। एक तिहाई ने शिकार किया और एक तिहाई ने उन्हे मना किया और जब न माने तो अपने और उनके दर्मियान दीवार खींचली। तीसरे गरोह ने न तो शिकार किया न ही नसीहत की। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने इस क़िस्म को इसी तरह बयान फ़रमाया है (इब्ने कसीर)

११६. यहाँ दर्दनाक अ़ज़ाब की तफ़्सील बयान की गयी है। रात में यह लोग सुअर और बन्दर बना दिये गये।

सुब्ह को जब इन के घरों से कोई हलचल और अ़ज़ाब की आवाज़ न आई तो नेक लोगों ने अपने और उनके दर्मियान की दीवार पर चढ़ कर देखा तो सब सुअर और बन्दर की शक्ल के हैं और सब के दुम भी हैं। यह लोग उनके पास गए तो उनको पहचान न सके लेकिन वह भली-भाँति पहचानते थे। आ कर अपने रिश्तेदारों के कपड़े सूंघते और रोते थे। तीन दिन के बाद सब हलाक कर दिये गये (सारांश)

(यहाँ यह प्रश्न आता है कि वह तीसरा गरोह जो शिकार तो नहीं करता था लेकिन उनको इस काम से मना नहीं करता था और मना करने वालो को भी नसीहत करने से मना करता था उस का क्या अन्जाम हुआ? क्या वह भी बच गया या ज़ालिमो के साथ हलाक हो गया? उलमा का इस में बड़ा इख़्तिलाफ़ है। इमाम इब्ने कसीर रह०का ख़याल है कि केवल शिकार करने वाला ही गरोह हलाक हुआ। अल्लाह बेहतर जानता है..............खालिद)

خٰسِـِٕيْنَ ۝ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ
اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ
اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖۚ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝
وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَ
مِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۟ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ
وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَ
يَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ
يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ
اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ
وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا
تَعْقِلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا
الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ۝ وَاِذْ

१६७और जब अल्लाह ने एलान कर दिया[११७] कि मैं उन पर क़ियामत तक ऐसे लोगों को मुसल्लत करता रहूँगा जो उन को सख़्त अ़ज़ाब पहुंचाते रहेंगे। बेशक तेरा रब बड़ी जल्दी अ़ज़ाब पहुंचा सकता है, और वह बड़ा ही बख़्शने वाला मेहरबान है। १६८. और (सुनो!) हम ने उन को ज़मीन में मुख़्तलिफ़ जमाअ़तें बना रखा है, बाज़ उन में से नेक हैं और बाज़ उसके अ़लावा हैं (यानी बदअ़मल) और हम ने उन को (कभी) एहसानों से और (कभी) तक्लीफ़ों से आज़माया ताकि वह (बुरे कामों से) फिरें १६९. फिर उन से पीछे नाख़लफ़ {नालायक़ लोग} पैदा हुये जो किताब के वारिस हुये (मगर ग़लत मसाइल से) दुनिया का माल हासिल करते हैं और (अपने बेजा घमन्ड में) कहते हैं कि हमें (सब कुछ) माफ़ किया जायेगा, और अगर (एक तरफ़ वाला कुछ रिश्वत देकर ग़लत मस्अला ले जाये) फिर दूसरी तरफ़ से भी उस के मिस्ल माल मिले तो वह भी ले लेते हैं[११८]। क्या किताब में इस प्रकार अ़ह्द न किया गया था कि अल्लाह के नाम पर हक़ बात ही कहना (यह हुक्म अब भी तौरात में मौजूद है) और जो कुछ उस में है यह लोग पढ़ भी चुके हैं। हालाँकि आख़िरत का घर उन्हीं लोगों के लिये है जो परहेज़गार हैं। क्या फिर भी तुम अक़्ल नहीं रखते?[११९] १७०. और जो लोग किताब को मज़बूत पकड़ते हैं और नमाज़ (अच्छे ढंग से) गुज़ारते हैं (वही मज़े से अ़ैश में होंगे) ऐसे नेक लोगों का अज्र हम बर्बाद नहीं करते

....

११७. अल्लाह ने एलान कर दिया कि अगर बनी इस्राईल ने मेरे हुक्मों की पर्वाह न की और शरीअ़त के ख़िलाफ़

➲काम करने लगे तो मैं क़ियामत तक.................. । इस विषय का ज़िक्र बाइबल की किताब इस्तिस्ना बाब १८-१५ में भी है (सनाई)

११८. जब किसी जमाअ़त में अ़मल की रूह बाक़ी नहीं रहती तो हर शख़्स खुले आ़म गुनाह करने लगता है और अ़मल की जगह केवल ख़ुशफ़हमी और ख़ुशएतिक़ादी के मनघड़त सरदारों पर भरोसा करने लगता है। चुनान्चे यही हाल यहूदियों का भी हुआ जो यह समझ बैठे थे कि हम सब से महबूब उम्मत हैं और दोज़ख़ की आग हम पर हराम कर दी गयी है। और अगर थोड़ी-बहुत पकड़-धड़क होगी भी तो किसी पीर की मुरीदी, या किसी दुआ का विर्द, या कुछ नफ़्ली नमाज़ें पढ़ कर, या दो-चार मीलाद की सभायें करा कर, या उर्सों में शरीक हो जाने से सब कुछ माफ़ हो जायेगा और नजात मिल जायेगी (सनाई) यह बात भली-भाँति मालूम रहे कि इस आयत का हुक्म आ़म है। हर ज़माने के लोग जो इसी प्रकार का अ़क़ीदा रखते हैं सब यहूद क़ौम के हुक्म में शामिल होंगे। इस की दलील हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० की वह हदीस है जिस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "कि यह लोग बराबर गुनाह पर गुनाह किये जाते थे और तौबा नहीं करते थे और अल्लाह से बख़्शिश की भी आशाऐं लगाये हुये थे"।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से इस आयत के बारे में पूछा गया तो उन्हों ने फ़रमाया: कि इस से मुराद वह लोग हैं जो दुनिया पर झुके रहे हैं और हलाल-हराम जो भी हाथ लगे सब हज़्म कर रहे हैं, फिर भी इस ख़ुश फ़हमी में हैं कि हमारी तो बख़्शिश निश्चित है। (मवाहिब)

११९. हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "सब से बहादुर और होशियार वह शख़्स है जिस ने अपने नफ़्स की मुख़ालिफ़त कर के उस को इताअ़त में लगाया और मरने के बाद वाली ज़िन्दगी (आख़िरत) के लिये नेक कार्य किये। और कमज़ोर वह शख़्स है जिसने अपने नफ़्स की पैरवी की और अल्लाह से बख़्शिश की झूठी आशायें कीं (तिर्मिज़ी)

नَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ ظُلَّةٌ وَظَنُّوا أَنَّهُ
وَاقِعٌ بِهِمْ ۚ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُم بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا
مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٧١﴾ وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِن
بَنِي آدَمَ مِن ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰ
أَنفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۛ شَهِدْنَا ۛ
أَن تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَٰذَا غَافِلِينَ ﴿١٧٢﴾
أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِن قَبْلُ وَكُنَّا
ذُرِّيَّةً مِّن بَعْدِهِمْ ۖ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ
الْمُبْطِلُونَ ﴿١٧٣﴾ وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ وَلَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ﴿١٧٤﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ الَّذِي آتَيْنَاهُ
آيَاتِنَا فَانسَلَخَ مِنْهَا فَأَتْبَعَهُ الشَّيْطَانُ فَكَانَ

१७१. और जब हम ने पहाड़ को उन के ऊपर हिलाया[१२०] गोया वह छतरी की तरह साया था और वह समझे कि वह हम पर गिर पड़ेगा (उस समय हमने हुक्म दिया कि) जो हम ने तुम को दिया है मज़बूती से उसे पकड़ो और जो कुछ उस में है उसे याद करो ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ[१२१] १७२. और (वह समय याद करो) जब तेरे पर्वरदिगार ने बनी आदम की औलाद उन की सुल्ब (पीठ की हडडियों) से निकाली और उन ही को उन पर गवाह बनाया (प्रश्न यह था कि) क्या मैं तुम्हारा पर्वरदिगार नहीं हूँ? वह बोले: हाँ (बिशक तू हमारा पर्वरदिगार है) हम इस बात के गवाह हैं कि कहीं क़ियामत के रोज़ न कहने लगो कि हम उन से ग़ाफ़िल थे[१२२] १७३. या यह न कहने लगो कि शिर्क तो हमारे बाप-दादाओं➲

مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿١٧٥﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ
اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ

ने पहले (ही) किया और हम तो उन के बाद (दुनिया में) पैदा हुये, फिर क्या तू हम को दूसरे ग़लतकारों की ग़लतकारी से तबाह करता है १७४. और इसी प्रकार हम अहकाम की तफ़्सील करते हैं ताकि (तेरी क़ौम के लोग हमारी तरफ़) रुजूअ़ करें १७५. और उन को उस का क़िस्सा सुना जिस को हमने अपने अहकाम दिये फिर वह उन हुक्मों से साफ़ ही निकल गया पस शैतान उस के पीछे पड़ गया (पस नतीजा यह हुआ कि) वह राह भूलों में जा मिला[१२३] १७६. और अगर हम चाहते तो उन (अह्काम) के साथ उस को बुलन्द रुत्बा करते (वह उन पर अ़मल करता और दर्जे पाता) लेकिन उस ने स्वयं ही पस्ती में गिरना चाहा और अपनी ख़ाहिश के पीछे लगा रहा, पस उस की मिसाल (ज़लील) कुत्ते की सी है

....

१२०. 'न-तक़्ना' यह 'न-त-क़्' से बना है जिस का अर्थ है "हिलाया"। कुछ लोगों ने इस का तर्जुमा "बुलन्द करना" भी किया है।

१२१. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि मूसा अ़लै० बनी इस्राईल को लेकर रवाना हुये तो उन को तौरात पर अ़मल करने की तरफ़ तवज्जुह दिलाई। उन्होंने इन्कार किया तब अल्लाह ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि फ़लाँ पहाड़ उठा कर उन के सरों के ऊपर लटका दो। हज़रत मूसा ने उनसे कहा कि अगर न मानो गे तो पहाड़ को तुम्हारे सरों पर पटक दिया जायेगा। यह देख कर हर शख़्स सज्दे में गिर पड़ा (नसाई)

१२२. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "क़ियामत के दिन अल्लाह पाक एक जहन्नमी से पूछेगा कि अगर पूरी दुनिया की दौलत तुझ को मिल जाये तो क्या तू उस दौलत को आग से बचने के लिये आज दे दे गा? वह कहेगा कि हाँ अवश्य दे दूँगा"। अल्लाह तआ़ला उस से कहेगा कि मैं ने आदम की पीठ में तुझ से बहुत ही आसान बात चाही थी कि मेरे साथ किसी को शरीक न करना, मगर तू ने उस पर ध्यान न दिया और शिर्क करता रहा (बुख़ारी) कहा गया है कि यह वादा अल्लाह ने "नोमान" की वादी में अ-रफ़: के दिन लिया था- वल्लाहु आलम।

१२३. इस आयत के मुतअ़ल्लिक़ उलमा के बहुत से क़ौल हैं। इन में से सब से अ़जीब क़ौल यह है कि एक व्यक्ति "बलअ़म बिन बाऊरा" नाम का हज़रत मूसा अ़लै० के वक़्त मौजूद था। उसने हज़रत मूसा के मुख़ालिफ़ों के कहने में आ कर हज़रत मूसा और बनी इस्राईल के हक़ में बद्दुआ़ कर दी जिस से उन की जीत, पराजय में बदल गयी। हज़रत मूसा ने अल्लाह से इस पराजय का कारण मालूम किया तो अल्लाह ने बताया कि फलाँ एक बुज़ुर्ग और नेक शख़्स ने तुम्हारे हक़ में बद्दुआ़ कर दी है इस लिये तुम्हारी विजय, पराजय में बदल गयी। यह सुन कर हज़रत मूसा ने उस के हक़ में बद्दुआ़ कर दी जिस की वजह से वह बेईमान होकर मरा।

यह क़ौल इस लिये विचित्र है कि तौरात में इस के ख़िलाफ़ लिखा है। तौरात की चौथी किताब गिनती के बाब ३२-३४ तक पढ़ने के बाद इस क़िस्से को ग़लत मानना पड़ता है। वहाँ पर स्पष्ट तौर पर लिखा है कि "मवाबियों के बादशाह बल्क़ ने बलअ़म से हज़रत मूसा के ख़िलाफ़ बद्दुआ़ कराने की बड़ी कोशिश की और बहुत कुछ लालच भी दिया, मगर उस बन्दे ने बनी इस्राईल के ख़िलाफ़ बद्दुआ़ न की, बल्कि उसी बादशाह के सामने उन के हक़ में बर्कत की नेक दुआ़ की। बादशाह बल्क़ बहुत नाराज़ भी हुआ, मगर वह यही कहता रहा कि मैं तो केवल वही करूँगा जो मेरा रब मेरे मुंह में डालेगा"।

यही वजह है कि हमने इस क़िस्सा को फ़िरऔ़न से जोड़ा है, क्योंकि बनी इस्राईल को फ़िरऔ़न का क़िस्सा सुनाने में मुनासिबत है। यहाँ पर "हम ने उस को अपने अहकाम दिये, फिर वह उन हुक्मों से साफ़ ही निकल गया"

कहा है तो सूरः ता-हा, आयत नं० ३ में है "हम ने उस को अपने निशान दिखाये पस उस ने उन को झुठलाया और इन्कार कर दिया" दोनों ही का अर्थ एक है। और अगर इस आयत पर ग़ौर किया जाये तो इस की तफ़्सीर यह भी होगी कि यह मिसाल उन दुनियादार आ़लिमों की भी है जो ज़मीन अर्थात माल-दौलत की तरफ़ झुकते हैं और अ़िल्म से साफ़ निकल जाते हैं। यानी उस पर अ़मल नहीं करते ऐसे आ़लिमों की मिसाल कुत्ते जैसी...(सनाई)

الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ
يَلْهَثْ ۗ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ
فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿١٧٦﴾ سَآءَ
مَثَلًا ۨالْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ
كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿١٧٧﴾ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ
وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٧٨﴾ وَلَقَدْ
ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ
لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ
لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ
اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٧٩﴾ وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ
بِهَا ۠ وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ؕ
سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٠﴾ وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ

जिस पर तू बोझ लादे तो हाँपता है और अगर छोड़ दे तो भी हाँपता है। यह ज़िल्लत और ख़्वारी की मिसाल उस क़ौम की है जो हमारे आदेशों की मुन्किर हो, पस तू (उन की हिदायत के लिये) क़िस्से बतलाया कर ताकि यह (कुछ) फ़िक्र करें १७७. (अस्ल बात तो यह है कि) जो लोग हमारे हुक्मों के मुन्किर हैं[१२४] और अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं उन की मिसाल (अल्लाह के नज़दीक) बहुत ही बुरी है १७८. जिस को अल्लाह अपनी राह पर लगाये वही हिदायत पर है और जिस को वह अपने पास से ढकेल दे वही नुक़्सान उठाने वाले हैं १७९. बहुत से जिन्न और इन्सान जहन्नम के लिये (ही) हम ने बनाये हैं[१२५] (दिखने में तो) उन के (सीनों में) दिल हैं पर उन से समझते नहीं और उन की आँखें हैं पर वह उन से (हक़ व बातिल) देखते नहीं और उन के (सरों पर) कान हैं पर वह उन से (हिदायत की बातें) सुनते नहीं। (ख़ुलासा यह कि) वह (मूर्खता में) गोया चारपायों के सामान हैं, बल्कि चारपायों से भी गये गुज़रे। और यही लोग ग़ाफ़िल हैं १८०. और सब नेक नाम अल्लाह के लिये मख़्सूस हैं पस तुम उस को उन नामों से पुकारा करो और जो (बिदीन) उस के नामों में कज्रवी (टेढ़ापन) करते हैं उन को छोड़ दो। वह अपने किये की सज़ा पायेंगे[१२६] १८१. और हमारी मख़्लूक़ में ऐसे लोग भी हैं

....

१२४. 'जो हमारे हुक्मों से इन्कारी हों' कुछ उलमा ने इस से मुराद उमय्या बिन अबी सल्त काफ़िर का लिया है और कुछ ने अबू आ़मिर को जिस के लिये मस्जिदे-ज़िरार बनाई गयी थी। इमाम क़तादा रह० का कहना है कि इस से कोई ख़ास आदमी मुराद नहीं है बल्कि हर वह शख़्स मुराद है जो दीने-इस्लाम का मुन्किर हो (बयानुल्र क़ुरआन)

१२५. सहीह हदीसों से साबित है कि जब हज़रत आदम से कहा जायेगा कि अपनी औलाद में से दोज़ख़ में जाने वालों को भेजो तो वह ९९ प्रतिशत होंगे और केवल एक जन्नत का हक़दार होगा।

१२६. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह

➲के ९९ नाम ऐसे हैं कि जो उन को याद करेगा वह जन्नत में जायेगा"। हाफ़िज़ इब्ने कसीर रह० ने फ़रमाया कि अल्लाह के नाम केवल ९९ ही नहीं हैं बल्कि इस से अधिक हैं, इसलिये केवल ९९ ही को पढ़ा जाये यह दुरुस्त नहीं है। 'अल्लाह के नामों में कजरवी करते हैं, इस के दो पहलू हैं। (१) यह कि जो सिफ़त अल्लाह के मर्तबे के ख़िलाफ़ हो, उस सिफ़त को अल्लाह की तरफ़ लगाना (२) यह कि जो सिफ़त अल्लाह के लिये ख़ास है उस में मख़्लूक़ को भी शामिल करना। यहाँ इन दोनों से मना किया गया है। यानी अल्लाह को उस के मुनासिब कमालात से ख़ाली न समझो और अल्लाह के कमालात में देवी-देवताओं (पीरों, बुज़ुर्गों, वलियों, नबिय्यों, उलमा, मशाइख़, जिन्न, फ़रिश्तों वग़ैरह चाहे वह ज़िन्दा हों या मुर्दा- ख़ालिद) और अपनी तरफ़ से गढ़े हुये माबूदों को शरीक न करो। 'अस्मा-ए-हुस्ना' अल्लाह के वह ख़ास नाम हैं जो कुरआन और हदीस से साबित हैं (माजिदी)

أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُم مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَأُمْلِي لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ۝ أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا ۗ مَا بِصَاحِبِهِم مِّن جِنَّةٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ أَوَلَمْ يَنظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ وَأَنْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ ۖ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ۝ مَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ ۚ وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝ يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ۖ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِندَ رَبِّي ۖ لَا يُجَلِّيهَا لِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ ۚ ثَقُلَتْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا تَأْتِيكُمْ إِلَّا بَغْتَةً ۗ يَسْأَلُونَكَ كَأَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۖ

जो (लोगों को) हक़ बात की हिदायत करते हैं और स्वयं भी उसी के अनुसार न्याय करते हैं[१२७] १८२. और जो लोग हमारे हुक्मों का इन्कार करते हैं हम उनको धीरे-धीरे ऐसे रास्तों से जिसे वह नहीं जानते, घसीटेंगे १८३. और (अब तो) मैं उन को ढील दे रहा हूँ। मेरा दांव बड़ा ही मज़बूत है १८४. क्या यह फ़िक्र नहीं करते कि उन का हमसुहबत (साथ उठने-बैठने वाला) (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) मजनून तो हैं नहीं। (अगर ग़ौर करें तो उनको मालूम हो जायेगा कि) वह तो खुला डराने वाला है[१२८] १८५. क्या यह लोग आसमानों और ज़मीनों के इन्तिज़ाम (और हुकूमत) में जो कुछ अल्लाह ने पैदा किया है (उस में) ग़ौर-फ़िक्र नहीं करते[१२९]? और यह कि शायद उन की अजल (अन्त) निकट ही आ लगी हो (और मरने के बाद उन पर क्या कुछ गुज़रेगा?) फिर इस (सच्ची शिक्षा) को छोड़ कर किस बात पर यक़ीन करेंगे? १८६. जिन को अल्लाह ही धुतकार दे उस के लिये कोई राह दिखाने वाला नहीं हो सकता। और अल्लाह उन को उन की सरकशी में हैरान छोड़ देता है १८७. वह (मस्ख़री के तौर पर) तुम से क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि कब होगी? (तारीख़ बताओ) तू कह कि इस की सूचना केवल मेरे पर्वरदिगार ही को है, वही उचित समय पर उसे प्रकट करेगा। (उस का ख़ौफ़ इतना है कि) तमाम आसमान वालों और ज़मीन वालों पर दहशत्नाक है। अचानक ही तुम पर प्रकट हो जायेगी। तुझ से तो इस तरह पूछते हैं गोया तू उस की टोह में है[१३०]।

....

१२७. रबीअ़ बिन अनस से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मेरी उम्मत में एक➲

गरोह बराबर हक़ पर रहेगा यहाँ तक कि ईसा बिन मरयम आकाश से उतरें। यानी उस समय भी यह गरोह हक़ पर रहेगा। बुख़ारी, मुस्लिम में हज़रत मुआविया बिन सुफ़यान से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मेरी उम्मत में से एक गरोह हक़ पर रहेगा। उन की जो कोई भी ज़लील करना चाहे, तो उन का कुछ भी न बिगाड़ सकेगा।

जमहूर उलमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि इस गरोह से मुराद उम्मते-मुहम्मदी है। ऊपर की दोनों हदीसों से यही साबित भी होता है। अ़ल्लामा इब्ने मदीनी और दूसरे अइम्मा फ़रमाते हैं कि हक़ पर डटी रहने वाली जमाअ़त अलहे-हदीस (किताब सुन्नत पर अ़मल करने वाली) है। ऐ अल्लाह हमें भी इसी जमाअ़त में शामिल फ़रमा ले! आमीन!

१२८. शाने-नुज़ूल:- इमाम क़तादा से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक रोज़ सफ़ा पर्वत पर चढ़ कर क़ुरैश के तमाम क़बीलों को आवाज़ दे कर बुलाया, फिर उन को अल्लाह के अ़ज़ाब और भविष्य में आने वाली कठिनाइयों से आगह किया। जब सब लोग आप का संबोधन सुन चुके तो एक आदमी ने कहा कि तुम्हारी क़ौम का यह शख़्स तो मजनून है, इसलिये कि इस ने शाम ही से डरावने समाचार सुनाने आरंभ किये और सुब्ह कर दी। इस पर यह आयत नाज़िल हुयी।

१२९. हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से मेराज के वाक़िए में रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः मैं एक ऐसे गरोह के पास से गुज़रा जिन के पेट कोठरियों की तरह थे, उन में सांप भरे हुये थे जो बाहर से कुलबुलाते हुये नज़र आ रहे थे। मैंने हज़रत जिब्रील से प्रश्न किया कि यह कौन लोग हैं? उन्होंने उत्तर दिया कि यह सूद खाने वाले लोग हैं। फिर जब मैं उतर कर पहले आकाश पर आया तो नीचे की तरफ़ एक बड़ा भारी धुवाँ देखा और गूंजती हुई कुछ आवाज़ें भी सुनीं। मैंने पूछा कि यह क्या मामला है? जिब्रील ने बताया कि यह वह शैतान हैं जो कुछ लोगों की आंखों के सामने रुकावट बने रहते है और उनको ज़मीन व आसमान में साफ़-साफ़ देखने से रोकने की कोशिश करते हैं। अगर यह न होता तो लोग अल्लाह की कुदरत का दर्शन अपनी आंखों से कर सकते (अहमद)

१३०. शाने-नुज़ूल :- क़ुरैश के लोगों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहा कि आप का और हमारा आपस में बहुत घना संबध है इसलिये क़ियामत के आने की तिथि (तारीख़) हमें बता दीजिये ताकि उस के आने से पूर्व हम सतर्क हो जायें। इन लोगों के उत्तर में यह आयत नाज़िल हुई (सनाई/मआ़लिम)

قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِندَ اللَّهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يَعْلَمُونَ ﴿١٨٧﴾ قُل لَّا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا
مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ وَلَوْ كُنتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ
مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوءُ ۚ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ
وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٨﴾ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن
نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ
إِلَيْهَا ۖ فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيفًا فَمَرَّتْ

तू कह दे कि उस की सूचना तो केवल अल्लाह को है[१३१] (मुझे उस की सूचना नहीं है) लेकिन बहुत से लोग नहीं जानते १८८. (ऐ हमारे रसूल!) तू कह दे कि मैं तो अपने नफ़्स के लिये भी फ़ाइदा और नुक़सान का इख़्तियार नहीं रखता[१३२] हाँ, अल्लाह जो चाहे (वही होता है) और (न मैं ग़ैब की बातें जानता हूँ) अगर मैं ग़ैब जानता होता तो बहुत सा भला कर लेता[१३३] और मुझे कभी तक़लीफ़ न पहुंचती[१३४] मैं तो केवल (बुरे कामों पर) डराने वाला और ईमानदारों को शुभसूचना

بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ فَلَمَّآ اٰتٰهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰهُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۝ وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ۝ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى

सुनाने वाला हूँ१८९(मुझे भेजने वाला) वह सच्चा माबूद है जिसने तुमको एक जान (आदम) से पैदा किया और उसी से उस की पत्नी बनाई[१३५] ताकि वह उस पत्नी के साथ तसल्ली पाये, फिर जब पुरुष, महिला से आवश्यकता पूरी करता है तो उस को हल्का सा गर्भ हो जाता है, वह अपने गर्भ (हमल) से चलती-फिरती है, जब बोझल होती है तो दोनों अपने रब से दुआएँ मागँते हैं कि अगर तू हम को सही व सालिम बच्चा दे तो हम तेरे आभारी होंगे[१३६] १९०. फिर जब अल्लाह उन को सही सालिम बच्चा देता है तो उस के दिये में साझी बना देते हैं पस अल्लाह उन के शिर्क से बुलन्द है[१३७] १९१. क्या ऐसे लोगों को अल्लाह का शरीक बनाते हैं जो कुछ भी पैदा नहीं करते बल्कि खुद मख़्लूक़ हैं १९२. और न उन की वह सहायता कर सकते हैं और न अपने आप की १९३. और अगर तुम उन (बनावटी माबूदों को) हिदायत (चाहने) की ग़रज़ से बुलाओ

....

१३१. क़ियामत कब आयेगी? इस की जानकारी रसूल को भी नहीं है। और इसी बात को पुन: बताने के लिये यहाँ ज़िक्र किया है। इस से पहले इसी आयत में ऊपर आ चुका है कि "उस की ख़बर केवल मेरे पर्वरदिगार ही के पास है"। यहाँ कहा "उसकी ख़बर तो केवल अल्लाह को है"। नबी को इस के बारे में इल्म नहीं है। दो-दो बार कहने की आवश्यकता यूँ पड़ी कि कुछ लोग दुनिया की कुल मुद्दत के बारे में भविष्यवाणी करते रहते हैं यह आयत उन के रद्द में है।

१३२. इन्सान की एक सब से बड़ी गुमराही यह भी है कि जब कोई इन्सान बुज़ुर्गी और नेकी में महान पुरुष बन कर सामने आता है तो लोग उस को एक इन्सान से ऊँचा उठा लेते हैं और उसे बन्दे से माबूद बना कर पेश करते हैं। यहाँ पर कुरआन ने नबी की हैसिय्यत इतने स्पष्ट शब्दों में बयान कर दी है कि हमेशा के लिये इस गुमराही का समापन हो गया है। नबी ने इतना भी नहीं चाहा कि काहिनों ज्योतिषियों की तरह मुझे भविष्य की बातें जानने वाला समझ लो। अगर मैं ग़ैब जानने वाला होता तो ज़िन्दगी में मुझे कोई भी तकलीफ़ न पहुँचती (तर्जुमान)

१३३. इस आयत ने साफ़-साफ़ बता दिया कि नबी ग़ैब की बात बिल्कुल नहीं जानते। हाँ, जितना अल्लाह बता दे बस उतना ही जानते हैं। हनफ़ी फ़िक़्ह ने भी कह दिया कि जो शख़्स किसी मामला में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को गवाह करे वह काफ़िर है, क्योंकि उस ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ग़ैब का जानने वाला समझा (फ़तावा क़ाज़ी ख़ाँ) बड़े दुःख की बात है कि मुसलमान इस ईमानी मस्अला को भी नहीं जानते हैं और नबी को तो जाने दीजिये वलियों तक को ग़ैब जानने वाला समझ लिया है। शिया फ़िर्क़ा की मशहूर किताब "कलीनी" के किताबुल् अ़िल्म में बाब बाँधा गया है कि "अहले बैत के इमामों को जो कुछ हो चुका और जो कुछ होने वाला है सब का अ़िल्म था" (नअ़ूज़ुबिल्लाह) इसी फ़िर्क़ा की फैलाई हुयी इस गुमराही को सुन्नी मुसलमानों ने हथिया लिया और अपने बजुर्गों को आ़लिमुल ग़ैब कहना आरंभ कर दिया है। कुरआन मजीद ने सब से अधिक इसी मस्अले का रद्द किया है। (सनाई)

१३४. तक़लीफ़ पहुंचने का कारण ग़ैब का न जानना होता है। माली, बदनी वग़ैरह जो भी नुक़्सान होता है, केवल इसलिये होता है कि इन्सान को उन का हाल मालूम नहीं। वर्ना जिस शख़्स को यह पहले ही से मालूम हो कि फ़लाँ

तिजारत में मुझे घाटा होगा, वह उस तिजारत में क्यों हाथ डालेगा। ऐसे ही जिस को मालूम हो कि फ़लाँ वस्तु का खाना मेरे लिये हानिकारक होगा वह क्यों खायेगा? (सनाई)
१३५. मौलाना मर्हूम ने सूरः निसा के शुरू आयत का तर्जुमा "फिर उस ने उस का जोड़ा पैदा किया है।" उसकी तफ़्सील हाशिया में मौजूद है। यहाँ पर "उसी ने उस की बीवी (पत्नी) बनाई है" तर्जुमा किया है। बात एक ही है उसे चाहे जोड़ा कह लीजिये या बीवी। कोई एतिराज़ की गुन्जाइश नहीं है।" (राज़)
१३६. इस आयत को कुछ उलमा ने हज़रत आदम अ़लै० से जोड़ा है। एक ज़ओ़फ़ हदीस में इसी तरफ़ इशारा है। हदीस में है कि जब हव्वा हमल से हुयीं तो उनके पास शैतान ने आकर कहा कि तेरे पेट में जो है उस का नाम "अ़ब्दुल हारिस" रखना, तो बच्चा सही और सालिम पैदा होगा। हारिस शैतान का नाम है और उस नाम का अर्थ हुआ "शैतान का बन्दा") हव्वा ने भी उसके कहने के मुताबिक़ किया। इस में अल्लाह तआ़ला ने आ़म बनी आदम की हालत का चित्र खींचा है। "युश्रिकून" (उन लोगों के शिर्क से बुलन्द है) बहुवचन इस्तेमाल किया है कि तमाम आदम की नस्ल का यही हाल है।

इस आयत का नतीजा यह है कि जो आज-कल बच्चों का नाम "अ़ब्दुन्नबी" (नबी का बन्दा) "अ़ब्दुर्रसूल" (रसूल का बन्दा) "देवीदत्ता" (देवी का दिया हुआ) "पीरौंदाता" (पीर साहब का दिया हुआ) रखते हैं, ऐसे नाम रखना शिर्क है (सनाई)
१३७. उलमा का कहना है कि इस आयत में आदम और हव्वा को मुराद लेना सही नहीं है इसलिये कि इसका इशारा न कुरआन में है और न ही हदीस में, और न ही ऐसे क़िस्से पैग़म्बरों की शान के लायक़ हैं कि वह अल्लाह के साथ शिर्क करने लग जायें (माजिदी)

الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ
اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا
لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ
بِهَآ ؗ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ ؗ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ
يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ ؗ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ قُلِ
ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ۝
اِنَّ وَلِيِّۦَ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى
الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا
يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ۝
وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَسْمَعُوْا ؕ وَتَرٰىهُمْ
يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ۝ خُذِ الْعَفْوَ
وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ۝ وَاِمَّا

तो तुम्हारी ख़्वाहिश के मुताबिक़ नहीं कर सकते। बराबर है कि तुम उन को पुकारो या ख़ामोश रहो[१३८] १९४. (और इस में तो शक नहीं कि) जिन को तुम अल्लाह को छोड़ कर पुकारते हो तुम्हारी तरह के बन्दे हैं, सो अगर तुम (अपने दावे में कि उन को कुछ लाभ पहुंचाने का इख़्तियार है) सच्चे हो तो उन को बुलाओ फ़िर (देखें कि) वह तुम्हारी मान (भी) लें[१३९] १९५. क्या (तुम देखते हो कि) उन के पाँव हैं जिन के साथ वह चलते हैं? या उन के हाथ हैं जिन के साथ वह (चीज़ों को) पकड़ते हैं? या उन की आंखें हैं जिन के ज़रीआ़ वह देखा करते हैं? या उन के कान हैं जिन के साथ वह सुना करते हैं? तू कह दे कि अपने शरीक़ों को बुला लो फिर मुझ पर दाँव चला लो और मुझे (किसी प्रकार) ढील मत दो (मैं देखूँ कि तुम्हारे बनावटी माबूद मेरा क्या बिगाड़ सकते हैं?) १९६. मेरा निग्राँ अल्लाह है जिस ने किताब उतारी है और वही नेकोंकारों का निग्राँ हुआ करता है १९७. और

➲तुम जिन को उस के सिवा पुकारते हो वह न तो तुम्हारी मदद कर सकते हैं और न ही अपने नफ़्सों की[१४०] १९८. और अगर तुम उन को राह दिखाने के लिये बुलाओ (और दुआ़ माँगो) तो तुम्हारी सुनेंगे भी नहीं। और तू समझता है कि तुझे देख रहे हैं हालाँकि वह नहीं देखते १९९. तू दरगुज़र करने की आ़दत डाल और नेक काम बतला और जाहिलों से अलग रह[१४१]

....

१३८. क्या तुम इतना भी नहीं सोचते कि वह तो अपनी बारी बिता चुके और इस दुनिया से चले गये। वह उन कामों में भी जिन में इन्सान एक दूसरे की सहायता किया करते हैं, मर जाने की वजह से कुछ मदद नहीं कर सकते (सनाई)
१३९. जब उन का कोई जोड़ भी नहीं रहा बल्कि सब के सब क़ब्रों में चले गये हैं, तो क्या तुम इतना नहीं समझते कि जो ताक़तें अल्लाह ने ज़िन्दों को दी हुयीं थीं जब वह भी उन में न रहीं तो ताक़त से ऊपर के कामों में उन को मदद के लिये गुहार लगाना क्यों कर जाइज़ होगा? (तर्जुमान)
१४०. कुरआन ने यह हक़ीक़त स्पष्ट कर दी है कि रूहानी अ़क़ीदे के साथ किसी बुलन्द ज़ात को पुकारना, यह एक ऐसी बन्दगी और इबादत है जो सिर्फ़ अल्लाह के लिये होना चाहिये। अगर किसी दूसरी ज़ात के लिये किया गया तो यह शिर्क होगा। यही वह स्थान है जहाँ मज़हब के ठेकेदारों ने ठोकर खाई है। उन्हों ने अपनी दुआ़ओं, मन्नतों के लिये बहुत से आस्ताने बना लिये हैं। इस तरह करने को कुरआन "खुदा बना लेना" कहता है (तर्जुमान)
१४१. हज़रत सअ़द बिन उबादा रज़ि० से रिवायत है कि जब यह आयत नाज़िल हुयी तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत जिब्रील से पूछा कि इस आयत से क्या मुराद है? उन्हों ने कहा कि अल्लाह आप को हुक्म देता है कि जो आप पर अत्याचार करे उस को आप क्षमा कर दें, जो कोई आपके साथ अच्छा बर्ताव न करे आप उसके साथ अच्छा बर्ताव करें, जो आप से संबन्ध तोड़े आप उस से संबन्ध जोड़ें (जामिउल बयान)

यह आयत बड़े अहम उसूल और नियम की ओर राहनुमाई करती है। चन्द शब्दों के अन्दर ज़िन्दगी की अख़्लाक़ी कठिनाइयों का पूरा हाल बता दिया और बुज़ुर्गी, बड़ाई, और कामियाबी के तमाम सूत्रों को स्पष्ट कर दिया (तर्जुमान) पहले तो इस में मुख़ालिफ़ों की बकवास को नज़रअन्दाज़ करने का हुक्म हुआ है और साथ ही यह भी ताकीद की है कि उन से प्रभावित हो कर भलाई की तब्लीग़ को तर्क न करो। इस राह में अगर कठिनाइयाँ आयें (और अवश्य आयेंगी) तो उन की पर्वाह न करो।

يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۰۰﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ
طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ﴿۲۰۱﴾ۚ
وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ﴿۲۰۲﴾
وَاِذَا لَمْ تَاْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ؕ
قُلْ اِنَّمَآ اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ مِنْ رَّبِّيْ ۚ هٰذَا
بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ

२००. और अगर शैतान की तरफ़ से (मान लो कि) तुझे कोई हर्कत पहुंचे (कि जोश में आ कर शैतान का सामना कर बैठे) तो (झट से) अल्लाह की पनाह ले। बेशक अल्लाह सुनता और जानता है २०१. परहेज़गारों को (इन्सान होने के नाते) जब कोई शैतानी हर्कत सूझती है तो उसी समय (अल्लाह के अ़ज़ाब के ख़्याल से) उन को सूझ आ जाती है तो उन की आँखें खुल जाती हैं २०२. और उन (शैतानों) की सुहबत में रहने वाले उन को गुमराही की तरफ़ ढकेले लिये जाते हैं और➲

يُؤْمِنُونَ ۝ وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَ
أَنصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ وَاذْكُر رَّبَّكَ فِي
نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ
بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ وَلَا تَكُن مِّنَ الْغَافِلِينَ ۝
إِنَّ الَّذِينَ عِندَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ
عِبَادَتِهِ وَيُسَبِّحُونَهُ وَلَهُ يَسْجُدُونَ ۝

कमी नहीं करते २०३. और जब तू उन को (उन की ख़्वाहिश के अनुसार) हुक्म नहीं ला देता तो कह देते हैं कि तूने यह हुक्म क्यों न बना लिया। तू कह दे कि मैं (केवल) उसी बात के पीछे चलता हूँ जिस की मुझे पर्वरदिगार के हाँ से (ख़बर) मिलती है। यह कुरआन तुम्हारे पर्वरदिगार की ओर से नसीहत और हिदायत है और ईमानदारों के लिये रहमत है। २०४. और जब (हिदायत, नसीहत की ग़रज़ से तुम पर) कुरआन पढ़ा जाये तो उस को तुम सुना करो और चुप रहा करो ताकि तुम पर (अल्लाह की ओर से) रहमत हो[१४२] २०५. और तू अपने पर्वरदिगार को दिल ही दिल में आजिज़ी और ख़ौफ़ से न ज़ोर की आवाज़ से (बल्कि मुनासिब दर्मियानी आवाज़ से) सुब्ह व शाम पुकारा कर और ग़ाफ़िलों की (जमाअत) से न हो जा[१४३] २०६. बेशक जो तेरे पर्वरदिगार के मुक़र्रब हैं उस की अिबादत करने से तकब्बुर (और सरकशी) नहीं करते और उस की तस्बीह पढ़ते और उसी को सज्दा करते हैं[१४४]।

....

१४२. इस आयत से हनफ़ी लोग यह दलील पकड़ते हैं कि मुक़्तदी को इमाम के पीछे सूरः फ़ातिहा नहीं पढ़नी चाहिये, लेकिन यह ठीक नहीं है, क्योंकि किसी तफ़्सीर या किसी सहीह या ज़अ़ीफ़ रिवायत में भी नहीं आया है कि यह आयत मुक़्तदी को सूरः फ़ातिहा पढ़ने से मना करने के बारे में आयी है। सहाबा ने इस आयत का शाने-नुज़ूल यह बताया है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० ने कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पीछे नमाज़ में बुलन्द आवाज़ से कुछ लोग पढ़ने लगे थे, इस प्रकार बुलन्द आवाज़ से पढ़ने से मना किया गया। एक दूसरी रिवायत में है कि नमाज़ में बातें कर लिया करते थे, इस से रोकने के लिये यह आयत नाज़िल हुयी। हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि नमाज़ में सहाबा बातें किया करते थे उन्हें मना करने के लिये यह आयत उतरी (लुबाब) किसी ने कहा कि इमाम के ख़ुत्बा देते समय लोग कलाम किया करते थे उन को रोकने के लिये यह आयत उतरी।

मगर किसी ने यह नहीं कहा कि मुक़्तदी सूरः फ़ातिहा पढ़ा करते थे उन्हें रोकने के लिये यह आयत उतरी। हदीसों में साफ़-साफ़ सूरः फ़ातिहा पढ़ने का हुक्म मौजूद है। आप तिर्मिज़ी शरीफ़ पृष्ठ १४९ प्रकाशक अहमदी कुतुब ख़ाना और इब्ने माजा पृष्ठ १२८, फ़ारूक़ी कुतुब ख़ाना में देख सकते हैं। इन हदीसों को इमाम बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसई, दारुकुत्नी, इब्ने हिब्बान, हाकिम, बैहक़ी और ख़त्ताबी वग़ैरह बड़े-बड़े हदीस के हाफ़िज़ों ने सहीह कहा है। इसलिये जब तक कोई सहीह रिवायत ऊपर की रिवायतों के दर्जे और मुक़ाबले की ऐसी न हो जिस में साफ़-साफ़ स्पष्ट तौर पर मुक़्तदी को सूरः फ़ातिहा पढ़ने से मना किया गया हो, तब तक मुक़्तदी के लिये सूरः फ़ातिहा न पढ़ने का दावा सही नहीं हो सकता (सारांश) इस मस्अला की पूरी तहक़ीक़ के लिये बहुत सारी किताबें मौजूद हैं उन्हें अवश्य पढ़ें (राज़)

१४३. वइज़ा कुरि-यल् कुरआन' से जो इमाम के पीछे सूरः फ़ातिहा की मनाही के लिये शुब्हा पैदा किया गया है, इस आयत में उस शुब्हे का रद्द मौजूद है।

१४४. इस आयत पर तिलावत का सज्दा करना चाहिये और सज्दा में यह दुआ़ पढ़नी मसनून है: स-ज-द वज्हि-य लिल्लज़ी ख़-ल-क़हू व-सव्व-रहू व-शक़्क़ सम--अ़हू व-ब-स-रहू बिहौलिही वक़ुव्वतिही फ़-तबा-र-कल्लाहु

➲अह्-सनुल् ख़ालिक़ी-न (मेरे चेहरे ने सज्दा किया उस ज़ात के लिये जिस ने उस को पैदा किया और उस की सूरत बनाई और अपनी कुदरत और कुव्वत से उस के कानों और आंखों को खोला। पस अल्लाह बड़ी बर्कतों वाला सुन्दर पैदा करने वाला है) (नसई, तिर्मिज़ी)
कुरआन मजीद में १५ स्थानों पर तिलावत का सज्दा है जो सुन्नत है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब कोई सज्दा की आयत पढ़ता है और सज्दा करता है तो शैतान को बड़ा दुःख होता है कि अफ़सोस है, मैं सज्दे से इन्कार करके दोज़ख़ में जाने वाला बन गया और इन्सान सज्दे का हुक्म मान कर जन्नत वाला बन गया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कि अल्लाह की नज़दीकी हासिल करने के वास्ते सब से ऊँचा ज़रीआ़ सज्दा है, इसलिये अधिक से अधिक सज्दे किया करो (मुस्लिम)

सूरः अन्फ़ाल—(8)

سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ مَدَنِيَّةٌ (٨٨)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ
فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۪ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝١ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ
الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ
عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ
يَتَوَكَّلُوْنَ ۝٢ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ
يُنْفِقُوْنَ ۝٣ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ
دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝٤ كَمَآ
اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۠ وَاِنَّ فَرِيْقًا
مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۝٥ يُجَادِلُوْنَكَ فِى
الْحَقِّ بَعْدَمَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ

सूरः अन्फ़ाल मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी[1]। इस में ७५ आयतें और १० रुकूअ़ हैं।
शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है।
१. (ऐ रसूल!) माले ग़नीमत का हुक्म तुझ से पूछते हैं। तू कह दे कि (अस्ल में) माले ग़नीमत तो अल्लाह के (हुक्म में) और (अल्लाह के हुक्म से) रसूल के क़ब्ज़े में है, पस तुम अल्लाह से डरते रहो और आपस में सुलह से रहो[2] और अल्लाह की और उस के रसूल की ताबेदारी करते रहो अगर तुम ईमानदार हो (तो इस की तनिक भर ख़िलाफ़वर्ज़ी न करो क्योंकि) २. ईमानदार बस वही लोग हैं जिन के दिल अल्लाह के ज़िक्र से काँप जाते हैं और जब अल्लाह के हुक्म उन को सुनाए जाते हैं तो उनका ईमान और भी ताज़गी में बढ़ता है[3] और अपने पर्वरदिगार ही पर वह भरोसा करते हैं[4] ३. (यानी) वह लोग जो नमाज़ (पाँचों वक़्त की समय पर जमाअ़त की पाबन्दी से) अदा करते हैं और हमारे दिये में से कुछ ख़र्च करते हैं ४. (सच पूछो तो) यही सच्चे मोमिन हैं। इन्हीं के लिये अल्लाह के हाँ (बुलन्द) दर्जे हैं और (गुनाहों पर) बख़्शिश (और उन के लिये) इ़ज़्ज़त की रोज़ी (मुक़र्रर) है ५. (अल्लाह के वादे अवश्य पूरे होंगे) जिस प्रकार तेरे पर्वरदिगार ने (बद्र की लड़ाई के लिये) तुझे सच्चे वादे के साथ घर से निकाला था और मुसलमानों की एक➲
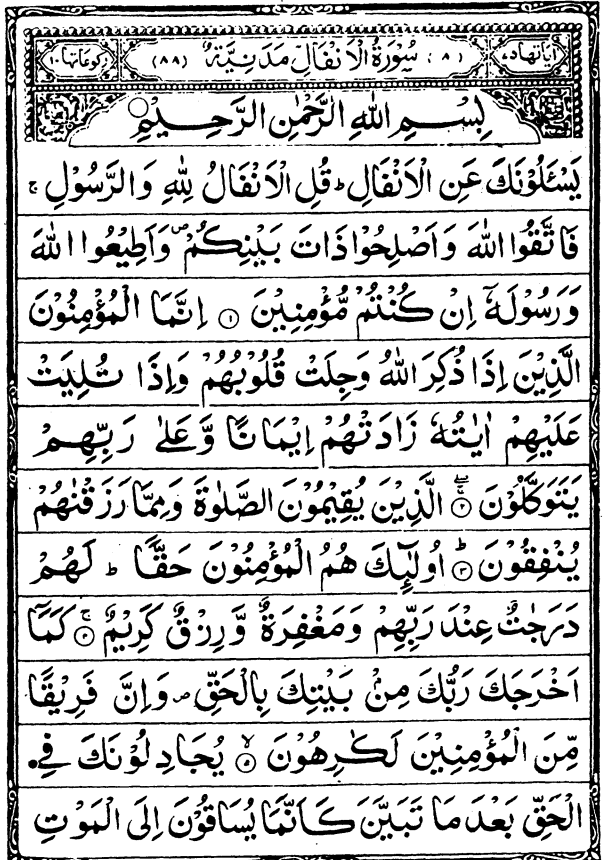
जमाअ़त (उस को) ना पसन्द करती थी (क्योंकि बज़ाहिर सामान न था) ६. जंग की ज़रूरत ज़ाहिर होने के बाद भी तुझ से ज़रूरी काम (यानी जंग के बारे में) झगड़ते थे गोया वह मौत की तरफ़ ढकेले जाते थे।

....

१. मक्का शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम १३ वर्ष तक हर प्रकार के अत्याचार सहते रहे। जब मक्का में रहना दूभर हो गया तो मदीना शरीफ़ चले गये। लेकिन मक्का वालों ने यहाँ भी चैन से बैठने न दिया, लगातार हमले शुरू कर दिये। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने इस के अ़लावा और कोई चारा न रहा कि जुल्म व ज़्यादती का डट कर मुक़ाबला किया जाये और परिणाम अल्लाह के हाथ में छोड़ दिया जाये। कुरआन ने जिस लड़ाई को जाइज़ रखा उस की असलिय्यत इस से अधिक कुछ नहीं। चूँकि लड़ाई की हालत पेश आ गयी थी इसलिये जंग से संबन्धित कुछ आदेश बयान कर दिये गये।

इस सूरः में और इस के बाद की भी सूरः में नसीहत करने का केंद्र यही हालत है। (सनाई)

२. शाने-नुज़ूलः- हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० बयान करते हैं कि हम लोग बद्र में नबी करीम सल्लललाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ थे। जब काफ़िर हार कर भागने लगे तो कुछ मुजाहिद उन भागने वालों को दौड़ाने लगे, कुछ माले ग़नीमत इकटठा करने लगे और कुछ रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुरक्षा में लगे रहे। जब रात को सभी लोग इकट्ठा हुये तो माले ग़नीमत इकट्ठा करने वालों ने कहा कि यह केवल हमारा हक़ है, इसलिये कि अकेले हम ने इकट्ठा किया है। दूसरे लोगों ने कहा कि अगर हम दुश्मन का पीछा न करते तो तुम इतनी आसानी से माले ग़नीमत इकट्ठा नहीं कर सकते थे, इसलिये इस में हमारा भी हक़ बनता है। कुछ लोगों ने कहा कि अगर हम माले ग़नीमत इकट्ठा करने में लग जाते तो दुश्मन आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नुक़सान पहुंचा सकते थे, इसलिये आप के साथ रहना भी ज़रूरी काम था, इसलिये हमें भी माले ग़नीमत में हक़ मिलना चाहिये। इस पर यह आयतें नाज़िल हुयीं।

३. यह आयत इस बात की स्पष्ट दलील है कि ईमान की हालत एक जैसी नहीं रहती है। वह घटता भी है और बढ़ता भी है। हाँ, तस्दीक़ (इस्लाम को सच्चा जानने) के लिहाज़ से सब बराबर हैं, लेकिन कैफ़िय्यत और यक़ीन में फ़र्क़ और अन्तर है। (तर्जुमान)

४. जिन लोगों की कुरआन पर गहरी नज़र है कहते हैं कि दिखाई न देने वाले काम जैसे तवक्कुल, अक़ीदा और दिखाई देने वाले आमाल जैसे नमाज़-ज़कात, इन दोनों का ज़िक्र कर के इस बात की तरफ़ इशारा है कि इन्सान की ज़ाहिरी और पोशीदा ज़िन्दगी में यही काम सब से अहम और अधिक ध्यान देने योग्य हैं।

وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۞ وَإِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ إِحْدَى
الطَّائِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ
الشَّوْكَةِ تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللّٰهُ أَنْ
يُحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهِ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِينَ ۞
لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ۞
إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي

(और गोया वह) मौत को अपनी आँखों से देख रहे थे ७. और (उस समय को याद करो) जब अल्लाह ने तुम से वादा किया था कि दो जमाअ़तों में से एक पर तुम को अवश्य ही विजय होगी. (यानी क़ाफ़िला पर या जंगी लश्कर पर) और तुम चाहते थे कि कमज़ोर जमाअ़त (यानी क़ाफ़िला) पर तुम को ग़लबा हो और अल्लाह को मन्ज़ूर था कि (जंगी लश्कर की जड़ काटने

مُمِدُّكُم بِأَلْفٍ مِّنَ الْمَلَٰٓئِكَةِ مُرْدِفِينَ ۝٩ وَمَا
جَعَلَهُ اللّٰهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِۦ قُلُوبُكُمْ ۚ
وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِندِ اللّٰهِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ۝١٠ إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ أَمَنَةً مِّنْهُ وَ
يُنَزِّلُ عَلَيْكُم مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُم بِهِۦ
وَيُذْهِبَ عَنكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ
قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ۝١١ إِذْ يُوحِي

से और) अपने हुक्म से दीने हक़ को मज़बूत करे और काफ़िरों की जड़ काट दें ८. ताकि हक़ को ताक़त पहुंचाय और बातिल की बुनियाद उखाड़ दे, अगर्चे काफ़िरों को बुरा ही क्यों न मालूम हो ९. जब तुम अपने पर्वरदिगार से प्रार्थना कर रहे थे तो उसने तुम्हारी सुनी (और वादा किया) कि तुम को एक हज़ार फ़रिश्तों से जो पै दर पै (लगातार) पहुंचेंगे, मदद दूँगा[६] १०. (और हक़ीक़त में यह फ़रिश्तों की इमदाद का ज़िक्र) केवल तुम्हारी खुशी और दिल के इतमीनान के लिये किया था (वर्ना सब कुछ तो अल्लाह के क़ब्ज़े में है) वर्ना (अस्ल मदद) अल्लाह ही की तरफ़ से है। कुछ शक नहीं कि अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाला है ११. (वह समय भी याद करने के लायक़ है) जब आराम के लिये अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से तुम पर ऊँघ डाली थी और (आसमान) से तुम पर पानी उतारा ताकि तुम को पाक करे और शैतानी गन्दगी (जो जनाबत वग़ैरह से तुम को लग रही थी) तुम से दूर करें और तुम्हारे दिलों को तसल्ली दे और तुम्हारे क़दम मज़बूत करे[७]।

....

५. इन आयतों में बद्र की लड़ाई का ज़िक्र है। खुलासा यह है कि मक्का वालों का एक तिजारती क़ाफ़िला जिस में तीस-चालीस आदमी थे, मुल्क शाम से समान ले कर आ रहा था। उस के आने की सूचना मदीना वालों को मिल गयी। मक्का वाले चूँकि हरबी थे, हमेशा फ़साद ही करते थे, इसलिये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस क़ाफ़िले को रोकना चाहते थे। उस क़ाफ़िले को भी भनक लग गयी उसने भी एक शख़्स को मक्का दौड़ा दिया ताकि बचाने के लिये लोग मौक़े पर पहुंच जायें, और साथ ही अस्ल राह से हट् कर दूसरी राह से बच कर निकल गये। मालवाहक क़ाफ़िला तो एक अन्जाने रास्ते से बच कर मक्का पहुंच गया। और इन को बचाने के लिये जो लश्कर मक्का से आया था, उस का सामना मुसलमानों के लश्कर से हो गया। मक्का की फ़ौजों की तादाद मुसलमानों से कई गुना अधिक थी। हथियार भी कहीं अधिक थे। इस के बावजूद मुसलमानों ने उस के छक्के छुड़ा दिये और बहादुरी की ऐसी मिसाल क़ाइम कर दी जिस की मिसाल तारीख़ क़ियामत तक नहीं पेश कर सकती। अल्लाह के हुक्म से फ़रिश्तों ने भी मुसलमान लश्कर की सहायता की। इस जंग में कुफ़्फ़ार के सत्तर फ़ौजी मारे गये और इतने ही बन्दी बनाये गये। इन बन्दियों में हज़रत अ़ब्बास (नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हक़ीक़ी चचा) और अबुल आ़स (आप के दामाद) भी थे। अबू जेहल भी इस लड़ाई में जहन्नम रसीद हुआ। यह जंग रमज़ान सन् २ हिज्री में लड़ी गयी (सनाई)

६. जंग शुरू होने से पहले नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़िब्ला की तरफ़ मुंह कर के हाथ उठा कर अल्लाह से दुआ़ की "ऐ अल्लाह! तू ने मदद का जो वादा किया है उसे पूरा कर। अगर मुसलमानों की यह जमाअ़त हलाक हो गयी तो फिर तेरी इबादत करने वाला कोई नहीं बचेगा"। आप ने बड़ी लम्बी दुआ़ फ़रमाई, यहाँ तक कि आप की चादर आपके कंधे से खिसक कर गिर गयी। फिर अबू बक्र रज़ि० ने उस चादर को आप के कंधे पर रखा। फिर अबू बक्र ने फ़रमाया: इतनी दुआ़ काफ़ी है, अल्लाह ज़रूर अपना वादा पूरा करेगा। आयत ९ में इसी

दुआ की तरफ़ इशारा है (तिर्मिज़ी)
७. जंग के मैदान में नींद आ जाना, चुस्त-फुर्त हो कर मैदान में उतरना, आसमान से वर्षा होना, मौसम का वर्षा से ताज़ा हो जाना, डट कर दुश्मन से मुक़ाबला करना, यह सब अल्लाह की मदद थी जो मुख़्तलिफ़ सूरतों में नाज़िल हुयीं (राज़)

رَبُّكَ إِلَى الْمَلَٰٓئِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ
آمَنُوا ۚ سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا
الرُّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا
مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٢﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ
وَرَسُولَهُ ۚ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ
اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١٣﴾ ذَٰلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ
لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا زَحْفًا فَلَا
تُوَلُّوهُمُ الْأَدْبَارَ ﴿١٥﴾ وَمَنْ يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ
دُبُرَهُ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِئَةٍ
فَقَدْ بَاءَ بِغَضَبٍ مِنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ ۖ
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٦﴾ فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَٰكِنَّ
اللَّهَ قَتَلَهُمْ ۚ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ

१२. जब तेरा रब फ़रिश्तों को इलहाम(और आदेश) दे रहा था कि तुम्हारे साथ हूँ पस तुम मोमिनों को साबित क़दम रखो[८]। मैं काफ़िरों के दिलों पर मोमिनों की दहशत (और रोब) डाल दूँगा, पस तुम (अगर मौक़ा पड़े तो) काफ़िरों की गर्दनें और जोड़-पोर उड़ा दो[९] १३. क्योंकि उन्हों ने अल्लाह और रसूल की मुख़ालिफ़त इख़्तियार कर रखी है, और जो कोई अल्लाह की और उस के रसूल की मुख़ालिफ़त करता है (ऐसे काफ़िरों के लिये) अल्लाह का अ़ज़ाब बड़ा सख़्त है १४. (जब अ़ज़ाब आयेगा तो उन से कहा जायेगा) लो इसे चखो और यक़ीन रखो कि काफ़िरों के लिये आग का अ़ज़ाब तैयार है १५. मुसलमानो! जब तुम (जंग के वक़्त) काफ़िरों से भीड़ में मिलो (यानी उनसे मुठभेड़ हो जाये) तो उन से पीठ मत फेरना[१०] १६. और जो कोई जंगी चाल की आवश्यक्ता के अ़लावा या अपनी जमाअ़त से मिलने की नियत के अ़लावा (जंग के मैदान में) पीठ दिखाये गा उस पर अल्लाह का ग़ज़ब (नाज़िल) होगा और उस का ठिकाना जहन्नम में होगा। और वह बहुत बुरा स्थान है। १७. पस तुम ने उनको क़त्ल नहीं किया (क्योंकि उस समय तुम थे ही कितने?) लेकिन अल्लाह ने उनको क़त्ल किया, और (ऐ रसूल!) जब तू ने (कंकरियों की) मुट्ठी (भर कर काफ़िरों की तरफ़) चलाई थी।

....

८. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने कहा कि इस लड़ाई में एक मुजाहिद ने एक काफ़िर पर हमला बोला तो उस ने एक कोड़े के मारने की आवाज़ सुनी। फिर यह आवाज़ आई "आगे बढ़ ऐ हैज़ूम्"। उस मुजाहिद ने जो पीछे मुड़ कर देखा तो वह काफ़िर मरा पड़ा था, उस की नाक पर निशान था और चेहरा फटा हुआ था। वह मुजाहिद सहाबी कहते हैं कि बाद में मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को इस घटना की सूचना दी तो आपने फ़रमाया: वह सातवें आसमान से सहायता के लिये आये हुये फ़रिश्तों में से एक फ़रिश्ता था (मुस्लिम)
'इ-लल मलाइकति' (फ़रिश्तों को हुक्म दे रहा था) इस से मुराद वह फ़रिश्ते हैं जो मुसलमानों की सहायता

➲के लिये आसमान से नाज़िल हुये थे। 'इन्नी म-अ़कुम्' यानी तुम्हें जैसा आदेश दिया है वैसा किये जाओ, असर पैदा करना हमारा काम है। और इसी का नाम ही अल्लाह की मदद है।

९. यानी गर्दन से ऊपर के हिस्से पर वार करो ताकि दुश्मन तुरन्त मर जाये। बिला वजह और बिला ज़रूरत लम्बे समय तक तड़पता और मौत और ज़िन्दगी के दर्मियान झूलता न रहे। दोनों हिदायतें जंग की तकनीक के लिहाज़ से बेहतरीन हैं (माजिदी) बिनवट भी एक प्रकार का लड़ाई का दाव है यह भी इसी आयत से लिया गया है। मुसलमानों में इस कला के बड़े-बड़े कलाकार उस्ताद पैदा हुये। मगर आज हम इस फन को छोड़ते जा रहे हैं।

१०. बद्र की लड़ाई में मुसलमान लश्कर की स्थिति बड़ी ख़राब थी। ३१३ की तादाद लड़ने वालों की थी। उस में केवल एक ही शख़्स के पास घोड़ा था। इसलिये घबरा जाना स्वभाविक था। फिर दुश्मन के लश्कर का पानी पर कब्ज़ा था। लड़ाई का मैदान रेतीला था इसलिये पैदल पाँव धसते जा रहे थे। दुश्मन के पास सवारी थी इसलिये उन पर कोई प्रभाव न पड़ता था। अल्लाह तअ़ला ने मुसलमान लश्कर की कठिनाइयों का समाधान इस प्रकार किया कि उन्हें गहरी नींद सुला दिया। सो कर उठे तो सारा ख़ौफ दूर हो चुका था, फिर वर्षा हो गयी। इस से लाभ यह हुआ कि लश्कर को पीने और नहाने धोने का पानी मिल गया और रेत भी जम गयी। और कामियाबी को लेकर जो शक बना हुआ था वह दिल से निकल गया।

हज़रत अ़ली रज़ि० फ़रमाते हैं कि बद्र की पहली रात को कोई भी ऐसा न था जो न सोया हो और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम रात भर इबादत करते रहे (बैहक़ी)

इस से मालूम हुआ कि जिस दिल में डर और दहशत समाया होता है वह आराम से नहीं सोता। इस से यह भी मालूम हुआ कि वह नींद अल्लाह तआ़ला ने इसीलिये दी थी कि डर-दहशत निकल जाये।

वाटरलू जंग के मुतअ़ल्लिक़ तमाम इतिहासकारों का कहना है कि अगर १७, १८, जून १८१५ A.D. की रात को वर्षा न हुयी होती तो यूरोप का चित्र ही बदल गया होता, क्योंकि निपोलियन को भूमि के सूखने का १२ बजे तक इन्तिज़ार न करना पड़ता और वह सवेरे ही जंग छेड़ देता। परिणाम यह निकलता कि बुलोशर के पहुंचने से पहले वैंगटन की शिकस्त हो जाती।

लेकिन अगर बद्र के दिन वर्षा न होती तो क्या होता? पूरी दुनिया की हिदायत का मान्-चित्र ही पलट जाता। और वही होता जिस का नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बद्र के दिन अपनी दुआ़ में ख़याल ज़ाहिर फ़रमाया था "ऐ अल्लाह! मुसलमानों की यह छोटी-मोटी जमाअ़त अगर आज मार दी गयी तो इस ज़मीन पर तेरी इबादत करने वाला कोई न रहेगा" (तर्जुमान)

वह तूने नहीं पहुंचाई थी, बल्कि अल्लाह ने पहुंचाई थी, ताकि मुसलमानों पर अल्लाह अपनी तरफ़ से मेहरबानी करे (और विजय प्राप्त हो) बेशक अल्लाह सुनता और जानता है १८. बात तो यह है (जो हो चुकी) और (दिल से जानो कि) अल्लाह काफ़िरों की चालें चलने न देगा १९. (मक्का वालो!) अगर तुम फ़तह चाहते हो तो (अब तो) फ़तह भी तुम ने देख ली[११], और अगर (अब भी तुम सच्चे रसूल की मुख़ालिफ़त से) बाज़ आ जाओ तो तुम्हारे हक़ में बेहतर होगा, ➲

رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ۭ اِنَّ
اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ
كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ
الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَعُوْدُوْا
نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَّ لَوْ
كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا

تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٢١﴾ اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ۚ وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٣﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ

और अगर तुम ने फिर वही किया, तो हम भी वही करेंगे, और (याद रखो!) तुम्हारा लश्कर कितना ही बड़ा क्यों न हो हर्गिज़ तुम्हारे काम न आयेगा और (यह भी जान रखो) कि अल्लाह (की मदद) मोमिनों के साथ है २०. मुंसलमानो! अल्लाह और उस के रसूल की फ़र्माबरदारी करते रहो और उस से मुँह न फेरो हालाँकि तुम सुनते हो २१. और जो लोग (मुंह से तो) कहते हैं कि हमने (अल्लाह का) कलाम सुना हालाँकि वह (दिल लगा कर) नहीं सुनते २२. (तुम उन जैसे न हो जाना) जो लोग (अल्लाह के आदेशों को मानने से) बहरे और गूंगे हो कर बेसमझ हो रहते हैं अल्लाह के नज़दीक सब जानदारों (और हैवानों) से (भी) बदतर हैं २३. और अल्लाह उन में कुछ योग्यता (क़ाबिलिय्यत) पाता तो अवश्य उन को (तिरा कलाम) सुनाता (यानी नसीहत से उन को फ़ाइदा होता) और अगर अब उन को सुनाता है तो तुरन्त मुंह फेर जाते हैं और वह मुंह फेरने वालों में हैं २४. मुसलमानो! (ऐसे लोगो से परहेज़ करो) और अल्लाह (का हुक्म मानो) और रसूल की इताअ़त करो[१२] जब वह तुम को तुम्हारी (रूहानी) ज़िन्दगी के लिये पुकारे[१३]

....

११. मुफ़स्सिर और इतिहासकार लिखते हैं कि जब बद्र की लड़ाई के लिये कुफ़्फ़ार मक्का से निकले तो बैतुल्लाह के पर्दे को पकड़ कर यह दुआ़ की कि "ऐ अल्लाह! हक़ पर रहने वाली जमाअ़त को फ़तह दे और बेहतर जमाअ़त की मदद फ़रमा अल्लाह ने उन की दुआ़ के अनुसार ऐसा ही किया कि मुसलमानों को फ़तह दी और बेहतर जमाअ़त को ग़ालिब किया। इस आयत में इसी तरफ़ संकेत है।

१२. हज़रत अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि० से रिवायत है वह कहते हैं कि मैं नमाज़ पढ़ रहा था कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुझे पुकारा। मैं चूँकि नमाज़ की हालत में था इसलिये कोई जवाब न दे सका। सलाम फेरने के बाद मैं हाज़िर हुआ और न आ सकने का कारण बताया तो आपने कहाः तुम्हे तुरन्त आना चाहिये था इसलिये कि अल्लाह पाक का फ़रमाने है अल्लाह और रसूल जिस समय बुलायें हाज़िर हो जाओ (हदीस) इस आयत में यह कहा गया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दावत इसलिये है कि वह तुम्हें ज़िन्दा कर दे। आप ग़ौर करें कि उस दावत ने तमाम मुर्दा जमाअ़तों को किस प्रकार क़ब्रों से उठा कर ज़िन्दगी के मैदानों में मुतहर्रिक (Active) कर दिया था? इस से बढ़ कर मुर्दो को जिलाना और क्या होगा कि अ़रब के चरवाहों में अबू बक्र, उमर, उस्मान, अ़ली, ख़ालिद, वक़्क़ास रज़ि० जैसे बड़े-बड़े विद्वान पैदा हुये और अ़रब की सब से वहशी क़ौम चन्द वर्षों में दुनिया की सबसे मुहज़्ज़ब (शिष्ट) क़ौम बन गयी (सनाई)

१३. अहले हदीस का यह मज़हब है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अगर बुलायें तो नमाज़ को तोड़ कर तुरन्त हाज़िर होना चाहिये लेकिन अगर कोई और बुलाये तो नमाज़ न तोड़े। इस आयत ने नाजाइज़ तक़्लीद की जड़ काट दी। अब अल्लाह का यह हुक्म है कि रसूल की इताअ़त करो और नमाज़ जैसी इबादत को तोड़ कर भी उन की इताअ़त करो, तो भला यह कैसे उचित है कि रसूल जिस की तरफ़ बुलायें उधर न जाओ और इमाम जिस तरफ़ बुलायें उधर जाओ? तमाम इमाम और मुजतहिद रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अधीन हैं। जब

आक़ा और मालिक का हुक्म मालूम हो जाये तो मालिक के नौकर की बात मानना अपने आप को तबाह करना नहीं तो और क्या है? (वहीदी) किसी कवि ने सच कहा है:

होते हुये मुस्तफ़ की गुफ़्तार+ मत देखे किसी का क़ौलो क़रार

नोट:- अगर नफ़्ली नमाज़ पढ़ने की हालत में माता-पिता बुलायें तो नमाज़ तोड़ दे, लेकिन फ़र्ज़ नमाज़ में नहीं।

لِمَا يُحْيِيكُمْ ۚ وَاعْلَمُوٓا أَنَّ اللّٰهَ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ
وَقَلْبِهٖ وَأَنَّهٗٓ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾ وَاتَّقُوا
فِتْنَةً لَّا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ
وَاعْلَمُوٓا أَنَّ اللّٰهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾ وَاذْكُرُوٓا
إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُّسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ
تَخَافُونَ أَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَأَيَّدَكُمْ
بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٢٦﴾
يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا لَا تَخُونُوا اللّٰهَ وَالرَّسُولَ وَ
تَخُونُوٓا أَمٰنٰتِكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾ وَاعْلَمُوٓا أَنَّمَآ
أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّأَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ
أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوٓا إِنْ تَتَّقُوا
اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾ وَإِذْ

और जान रखो कि (नाफ़र्मानी करने पर एक समय ऐसा अवश्य आता है) कि अल्लाह तआ़ला इन्सान और उस के दिल पर पर्दा हो जाता है (जिस को दूसरे शब्दों में "अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी" कहते हैं) और जानो कि उसी के पास तुम सब को जमा होना है २५. और उस अ़ज़ाब से जो ख़ास कर तुम में से ज़ालिमों को ही नहीं पहुंचेगा (बल्कि सब को पहुंचेगा)डरते रहो[१४], और जानो कि अल्लाह का अ़ज़ाब बहुत ही सख़्त है[१५] (किसी के अन्दर उस की बर्दाश्त की हिम्मत नहीं) २६. और उस वक़्त को याद करो जब तुम मुल्क में बहुत ही थोड़े (और इस के साथ ही) ऐसे कमज़ोर थे कि तुम्हें हर समय डर रहता था कि लोग तुम को पीस न डालें फिर अल्लाह ने तुम को (मदीना में) जगह दी और अपनी मदद से तुम को कुव्वत अ़ता की और हलाल रोज़ी तुम को दी ताकि तुम शुक्र करो २७. मुसलमानो! अल्लाह और रसूल की ख़ियानत (यानी नाफ़र्मानी से बचते रहना) और आपस में एक दूसरे के (माल व असबाब की) जान बूझ कर ख़ियानत कभी न करना[१६] २८. और जान रखो कि तुम्हारे माल और औलाद तुम्हारे लिये (हिदायत से) रोक हैं और (अल्लाह की आज्ञापालन करने पर) अल्लाह के हाँ बहुत बड़ा सवाब है २९. ऐ मुसलमानो! अगर तुम अल्लाह से डरते रहोगे तो अल्लाह तुम्हारे लिये एक तमीज़ (का निशान) कर देगा और तुम्हारे गुनाहों से तुम को दूर कर देगा और तुम को बख़्श देगा (क्योंकि) अल्लाह बड़े फ़ज़्ल का मालिक है

....

१४. यानी आज्ञापालन में सुस्ती और काहिली करने से एक तो दिल हटता है, तुरन्त वह नेक कार्य करना कठिन हो जाता है। दूसरी यह कि नेकियों को सुस्ती से पापी लोग बिल्कुल छोड़ देंगे। इस प्रकार समाज में बुराई फैलेगा जिस का प्रभाव पूरे समाज पर पड़ेगा। जैसे लड़ाई में सुस्ती करें और मैदान से भाग खड़े हों और पराज्य का सामना करना पड़े तो बाद में उस पर कन्ट्रोल नहीं हो सकता। (मुवज़्ज़िहुल कुरआन)

एक हदीस में आया है। जब गुनाहों पर रोक-टोक नहीं लगाया जाता है तो बला और फ़ित्ना घर कर

➲जाता है और उस में सभी गिरफ़्तार हो जाते हैं (वहीदी)

१५. हज़रत उस्मान रज़ि० की शहादत से ज़ाहिर हो गया कि अन्जाम क्या होगा? लोगों ने उन को शहीद कर दिया, उस शहादत से इतना बड़ा फ़ित्ना सामने आया कि उस में कोई भी मुसलमान न बच सका। हज़रत अ़ली, मुआ़विया, तल्हा, ज़ुबैर और आ़इशा रज़ि० सब आपस में टकरा गये, परस्पर लड़ाइयाँ हुयीं। हज़रत ज़ुबैर रिवायत करते हैं कि यह आयत हम ही लोगों के हक़ में नाज़िल हुयी। हम लोग इस आयत की तिलावत तो करते रहे मगर यह ख़बर ही न थी कि इस से हम ही लोग मुराद हैं (तफ़्सीर मिर्ज़ा हैरत/ तफ़्सीरे कबीर)

१६. शाने-नुज़ूलः- यहूद का एक क़बीला बनू नज़ीर मदीना में रहता था। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने समझौता की अवहेलना (ख़िलाफ़वर्ज़ी) पर उन पर आक्रमण किया तो उन्हों ने सुल्ह करने की इच्छा प्रकट की। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सअ़द बिन मआ़ज़ जो फ़ैसला करें उस के अनुसार हो गा। अबू लुबाबा रज़ि० एक सहाबी हैं उन के बीवी बच्चे भी उसी क़बीला में रहते थे, इन्हों ने क़ुरैज़ा वालों को मशुवरा दिया कि सअ़द तुम लोगों के क़त्ल का ही आदेश देंगे इसलिये उन का फ़ैसला मत मानो, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। याद रहे कि यहूद ने अबू लुबाबा को अपना ख़ैरख़्वाह समझ कर मश्वरा माँगा था इस पर उन्हों ने मानने का मश्वरा दिया था।

इस आयत के नाज़िल करने का उद्देश्य यह है कि अपनी बीवी-बच्चों का ख़याल कर के अल्लाह और उस के रसूल के साथ ख़ियानत न करो। इस पर अबू लुबाबा को बड़ी शर्म आयी और उन्हों ने कहा कि जब तक अल्लाह मेरी तौबा कुबूल न कर ले, मैं न खाना खाऊँगा और न पानी पियूँगा,

يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ
يُخْرِجُوْكَ ۭ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ
الْمٰكِرِيْنَ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا قَدْ
سَمِعْنَا لَوْ نَشَاۗءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ
اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ
كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا
حِجَارَةً مِّنَ السَّمَاۗءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝
وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ ۭ وَمَا كَانَ
اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝ وَمَا لَهُمْ اَلَّا
يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَاۗءَهٗ ۭ اِنْ اَوْلِيَاۗؤُهٗٓ اِلَّا
الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَمَا كَانَ
صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَاۗءً وَّتَصْدِيَةً ۭ

३०. और तू उस समय को याद कर जब काफ़िर तेरे हक़ में पोशीदा चालें चल रहे थे कि तुझे क़त्ल कर दें, या तुझे वतन से निकाल दें। और पोशीदा चालें (तेरे पकड़ने को कर रहे थे) और अल्लाह भी पोशीदा काम कर रहा था। और अल्लाह सब से अच्छी तदबीर करने वाला है[१७]। ३१. और जब कभी हमारी आयतें उन को सुनाई जाती हैं तो उनको (मानने के बजाए) कहते हैं कि हम ने सुन लिया अगर हम चाहते तो ऐसा कलाम (मुद्दत से) बना लेते, यह तो केवल अगले लोगों के क़िस्से हैं[१८] ३२. (और उस वक़्त को याद करो) जब उन काफ़िरों ने कहा था कि ऐ! अल्लाह! अगर यह कुरआन सच-मुच तेरे पास से आया है तो तू हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे या हम पर कोई दुःख की मार डाल दे ३३. और जिस हाल में तू (ऐ रसूल!) उन में था अल्लाह उन को अ़ज़ाब न करता। और जिस हाल में यह (अपने गुनाहों पर) बख़्शिश माँगते तो अल्लाह उन को➲

अज़ाब न करता ३४. भला उन का क्या उज़्र है कि अल्लाह उन को अज़ाब न करे हालाँकि वह मुहतरम मस्जिद से रोकते हैं और स्वयं उस के योग्य (अह्ल) नहीं। इस मस्जिद के अह्ल (हक़दार) तो मुत्तक़ी लोग हैं (जो केवल अकेले अल्लाह की उस में इबादत करें) लेकिन बहुत से लोग इस बात को नहीं समझते[१९] ३५. और उन की इबादत भी केवल सीटियाँ और तालियाँ (बाजे-गाजे वग़ैरह) ही होती है[२०]।

....

१७. शाने-नुज़ूल:- हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि जब कुरैश के बड़े-बड़े गुरूघन्टाल आप के ख़िलाफ़ मश्वुरा करने के लिये दारुन्नद्वा (Parliament) में जमा हुये, तो शैतान एक बूढ़े शैख़ की शक्ल में बन कर आया और वह भी साज़िश में शामिल हो गया। इस मीटिंग में किसी ने राय पेश की कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ज़न्जीर में बाँध दो यहाँ तक कि उन की मौत हो जाये। शैतान ने इस राय को नामन्ज़ूर करते हुये कहा कि अगर तुम लोग उसको बन्दी बना दोगे तो भी दर्वाज़े से उस की आवाज़ लोगों तक पहुंचेगा दूसरे यह कि उस के मानने वाले तुम पर आक्रमण कर के उस को आज़ाद करा ले जायेंगे। और यह भी संभव है कि तुम्हें मक्का से भी निकाल दें। तमाम सदस्यों ने शैतान की राय से इत्तिफ़ाक़ किया। एक राय यह भी पेश की गयी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक्का से निकाल दिया जाये। यह दुनिया में जायें और जो चाहें करें,. कम से कम हम लोगों को तो उन के अज़ाब से नजात मिल जायेगी। शैतान ने इस राय को यह कह कर नकार दिया कि वह जहाँ भी जायेगा लोगों को मीठी बातों से अपना सहयोगी बना लेगा और यह भी संभव है कि वह और उस के सहयोगी लोग तुम पर हम्ला कर के क़त्ल कर देंगे। अबू जेहल ने यह राय पेश की कि तमाम क़बीला के लोग परस्पर सहमति से उस को क़त्ल कर दें। शैतान ने इस राय की ताईद की और इस पर सभी लोग सहमत हो गये।

अल्लाह तआला ने भी इन की साज़िश से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अवगत करा दिया, चुनान्चे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अबू बक्र सिद्दीक़ को साथ लेकर ख़ैरियत से घर से निकल गये। तीन रात सौर के ग़ार में बिता कर मदीना शरीफ़ हिजरत कर गये। इन आयतों में इसी वाक़िआ की ओर इशारा है (इब्ने कसीर, इब्ने जरीर)

१८. 'यह तो पहले लोगों के क़िस्से-कहानियाँ हैं' यह बात नज़्र बिन हारिस बिन कुलाह ने कही थी। यह शख़्स अपने ज़माने का बड़ा ही एडवांस आदमी था। ईरान जैसे मुल्क की सैर-सपाटा किये हुये था। बड़ा पढ़ा-लिखा, दाना-बीना, और होशियार था। यह बिल्कुल ऐसे ही था जैसे लन्दन से पढ़ कर जब हिन्दुस्तान कोई शख़्स वापस आता है तो अपने क़ाबू में नहीं रहता है और अपने को अक़्ले कुल समझने लगता है (माजिदी)

आज कल अक्सर मुसलमान कहलाने वाले लोग भी नज़्र बिन हारिस से ज़्यादा गन्दी बातें कुरआन के ख़िलाफ़ मुंह से उगलते हैं और फिर भी इस्लाम की सनद साथ लिये फिरते हैं।

१९. शाने-नुज़ूलः- इब्ने जरीर से रिवायत है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का में थे तब यह आयत "तू उन में था इसलिये अल्लाह ने उन पर अज़ाब न नाज़िल करता" उतरी थी। जब आप मदीना आ गये तब यह आयत उतरी "जब तक वह माफ़ी चाहते रहेंगे अल्लाह उन की अज़ाब नहीं करेगा "और कहा कि उनमें कुछ कमज़ोर मुसलमान रह गये थे और किसी कारण हिजरत न कर सके थे, वह दिन-रात दुआयें और इस्तिग़फ़ार करते रहते थे। फिर जब वह लोग भी हिजरत कर के मदीना चले आये तब यह आयत "अल्लाह उन पर अज़ाब क्यों न नाज़िल करे जब कि वह अपनी हर्कतों से बाज़ नहीं आते" नाज़िल हुयी। फिर अल्लाह ने मक्का को फ़तह करने का हुक्म दिया और यही वह अज़ाब था जिस का अल्लाह ने वादा फ़रमाया था।

हज़रत अबू मूसा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला ने दो अमान "शरण" मेरी उम्मत के लिये नाज़िल किये हैं (१) मेरी मौजूदगी (२) दुआ, इस्तिग़फ़ार। पहला

अमान तो मेरे दुनिया से चले जाने के बाद उठ जायेगा लेकिन दूसरा अमान क़ियामत तक बाक़ी रहेगा" । (तिर्मिज़ी) एक दूसरी रिवायत में है कि "शैतान ने जब बनी आदम को गुमराह करने की क़सम खाई तो अल्लाह तआला ने कहा: मेरी इबादत और प्रताप (जलाल) की क़सम! जब तक बन्दे मुझ से माफ़ी तलब करते रहेंगे मैं उन्हें क्षमा दान देता रहूँगा" । (अहमद, हाकिम)

फ़ुज़ाला बिन उबैद से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जब तक बन्दा अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करता रहेगा वह अ़ज़ाब से सुरक्षित रहेगा" । (अहमद) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा गया कि आप के औलिया कौन लोग हैं? आप ने फ़रमाया: मुत्तक़ी और परहेज़गार लोग । फिर आपने यह आयत तिलावत फ़रमाई (इब्ने मर्दूया) हज़रत रिफ़ाआ रज़ि० की हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कुरैश को मुख़ातब कर के फ़रमाया: "मेरे औलिया तुम में परहेज़गार लोग हैं" । (हाकिम) इमाम इस्हाक़ और इमाम सदी वग़ैरा का कहना है कि इस आयत में मुत्तक़ी से मुराद आप के सहाबा हैं

२०. 'सीटियाँ और तालियाँ बुतों की पूजा करने वाली क़ौमों के हाँ आज भी गाना-बजाना बुतों के सामने नाचना इबादत का एक अहम अंश (अंग) माना जाता है । हिन्दुस्तान में तो बुतों की पूजा करने वाली अधिकांश क़ौमें यही करती हैं ।

فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ۬ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٦﴾ لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾ وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٣٩﴾ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ؕ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿٤٠﴾

पस कुफ़्र के जुर्म में अज़ाब का मज़ा चखो ३६. काफ़िर लोग माल (केवल इसलिए) ख़र्च करते हैं कि (लोगों को) अल्लाह की राह (इस्लाम और तौहीद) से रोकें (वह आख़िर नाकाम होंगें) वह माल उन पर हसरत (का सबब) होगा (कि हाय! हम ने ख़र्च क्या किया) फिर (आख़िर यह फ़ैसला होगा कि) काफ़िर जहन्नम में जमा किये जायेंगे ३७. ताकि अल्लाह नापाक को पाक से अलग करे और नापाक लोगों को एक दूसरे के साथ मिला कर एक जगह ढेर लगा दे [२१] फिर उस ढेर को जहन्नम में झोंक दे । (क्योंकि) वह लोग सख़्त टूटा उठाने वाले हैं ३८. (अब भी) तू काफ़िरों से कह दे (कि अगर कुफ़्र से) बाज़ आ जायें तो उन के पहले गुनाह सब माफ़ किये जायेंगे अगर उन्होंने फिर सिर उठाया तो पहले काफ़िरों के वाक़िआत गुज़र चुके हैं । (जो उन का अन्जाम हुआ इन का भी होगा) ३९. और अगर उन से (लड़ाई ठन जाये तो ख़ूब) लड़ो यहाँ तक कि फ़ित्ना व फ़साद (का नाम) न रहे[२२] और सब क़ानून (मुल्की, फौजदारी, दीवानी) अल्लाह (की

किताब) का चले फिर अगर बाज़ आ जायें तो अल्लाह उन के कामों को देखता है (उसी के अनुसार बदला देगा) ४०. और अगर वह सरकशी करेंगे तो अल्लाह तुम्हारा सहायक है। वह बहुत ही अच्छा मौला (सहायक) और बहुत ही अच्छा हिमायती है।

२१. जब काफ़िर बद्र के मैदान से भाग कर मक्का पहुंचे और अबू सुफ़ियान से सहायता माँगी तो उस ने बहुत ढेर कर्ज दिया। उहुद की लड़ाई में भी चालीस उक़िया सोना मदद के तौर पर दिया था। जब जंग में पराजय का मुँह देखा तो उसको बड़ा अफ़सोस हुआ और हाथ मल कर रह गया। इस आयत में यह भविष्यवाणी है कि काफ़िर शिकस्त खायेंगे और ऐसा ही हुआ (वहीदी)

२२. 'फ़ित्ना' का अर्थ शिर्क है। इब्ने अ़ब्बास और ताबेअ़ीन उलमा की एक जमाअ़त का यही कहना है। 'दीन' अल्लाह ही के वास्ते हो जाए' इस का अर्थ यह है कि बुत परस्ती समाप्त हो जाये और केवल अल्लाह ही की पूजा-पाट हो। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जब तक लोग लाइला-ह इल्लल्लाहु नहीं कहते मैं उन से जंग करता रहूँगा। जब उन्होंने पढ़ लिया और अल्लाह की इबादत और उस के रसूल की आज्ञा का पालन करने लगे तो उन की जान और माल महफ़ूज़ हो गये।

*****

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

पारः वअ्-लमू (10)

संक्षिप्त विषय सूची

वअ़् लमू-(10)

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ
وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَ
ابْنِ السَّبِيْلِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا
عَلٰى عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ
وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ
الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ
مِنْكُمْ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيْعٰدِ
وَلٰكِنْ لِّيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا لِّيَهْلِكَ
مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَيِّنَةٍ وَّيَحْيٰى مَنْ حَيَّ عَنْۢ
بَيِّنَةٍ وَاِنَّ اللّٰهَ لَسَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ اِذْ يُرِيْكَهُمُ اللّٰهُ
فِيْ مَنَامِكَ قَلِيْلًا وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا لَّفَشِلْتُمْ
وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ اِنَّهٗ
عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ وَاِذْ يُرِيْكُمُوْهُمْ اِذِ

४१. और जान रखो कि जो कुछ तुम ने ग़नीमत का माल हासिल किया है उस में से पाँचवा हिस्सा[२३] अल्लाह (का है, यानी अल्लाह के रसूल) और रसूल (के) क़राबत-दारों और (आ़म) यतीमों और मिस्कीनों और यात्रियों के लिये है[२४] अगर तुम को अल्लाह पर और उस की उस (ग़ैबी) सहायता पर, जो (जंग के) फ़ैसला के दिन जिस रोज़ दोनों जमाअ़तों (काफ़िरों और मोमिनों) की मुठ भेड़ हुयी थी उस ने अपने बन्दे[२५] पर नाज़िल फ़रमाई थी, कामिल ईमान है[२६]। और अल्लाह हर एक काम पर क़ुदरत रखता है ४२. जब तुम (जंग के मैदान के) वरे किनारे पर थे और वह परे सिरे पर और क़ाफ़िला तुम से (जिस के तुम दाँव पर थे) नीचे की तरफ़ (से बच कर निकल गया) था और अगर तुम आपस में मुआ़हिदा करते (कि फ़लाँ समय लड़ेंगे) तो अवश्य वादा ख़िलाफ़ी कर देते, लेकिन अल्लाह ने तुम को (अचानक) इकट्ठा कर दिया ताकि जो कार्य (उस के इ़ल्म में) हो चुका था उस का फ़ैसला कर दे ताकि जो कोई दलील देखने के बाद गुमराही पर अड़ा रहा, वह गुमराही में तबाह हो और जो दलील से ज़िन्दा हो वह जीवन पाये। और अल्लाह सुनता है और जानता है[२७] ४३. जब अल्लाह ने सपने में तुझे उन की फ़ौज थोड़ी दिखाई। और अगर वह तुझ को (संख्या में) अधिक दिखाता तो तुम फिसल जाते और (जंग के) काम के मुतअ़ल्लिक़ झगड़ते (कि लड़ें या न लड़ें) मगर अल्लाह ने तुम को साबित-क़दम रखा। (क्योंकि) वह दिलों के हाल को जानने वाला है ४४. और जब दोनों गरोह आपस में मिले थे

२३. शरीअ़त की इस तक़्सीम को आज-कल का चश्मा पहन कर ख़ूब ग़ौर से देख लिया जाये कि सरकारी ख़ज़ाना का ३/५ (तीन पाँचवा) ही नहीं, पूरे का पूरा ५/५ (कुल का कुल) हिस्सा क्या आज भी दुनिया की किसी गरीबों और अ़वाम की हमदर्द हुकूमत में प्रजा के सब से अधिक परेशान-हाल लोगों, लावारिस यतीमों, मुहताज मिसकीनों और लुटे-पिटे मुसाफ़िरों और परदेसियों के लिये वक़्फ़ है? (माजिदी) क्या बनावटी "इश्तिराकियत" (Communism) का प्रचार करने वाले इस्लाम के इस इन्सानियत-पर्वर नियम पर कभी ठन्डे दिल से ग़ौर करते हैं?

२४. यानी पाँचवा हिस्सा माले-ग़नीमत का सरकारी ख़ज़ाना में जमा हो गा। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (अगर मौजूद हैं तो, वर्ना) इस समय जो हाकिम हो गा वह इन्साफ़ से तक़्सीम करे गा। तक़्सीम इस प्रकार किया जाये गा कि आवश्यक्तानुसार थोड़ा-बहुत अपना हक़ पहले अलग कर लें, बाक़ी शेष नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के क़राबत-दारों, आ़म मिस्कीनों, लावारिस अनाथों, राह चलते मुसाफ़िरों में तक़्सीम हों गे (याद रहे कि यह तक़्सीम पांचवे हिस्सा का है) फिर बाक़ी चार हिस्से लश्कर वालों में तक़्सीम हों गे। अल्लाह का हिस्सा अलग कुछ नहीं है, बल्कि उस के आदेश के अनुसार तक़्सीम कर देना ही उस का हक़ और हिस्सा है (सनाई)

२५. "वमा अन्-ज़ल्ना..............." इस का तर्जुमा यह होगा "जो हम ने अपने बन्दे पर नाज़िल फ़रमाई थी"। लेकिन चूंकि पहले ग़ाइब का सर्वनाम **(Pronoun)** है, इस लिये यहाँ भी तर्जुमा ग़ाइब का किया है। यानी "जो उस ने अपने बन्दे पर नाज़िल फ़रमाई थी। (सनाई)

इस सूरत में पहले बयान हो चुका है कि ग़नीमत का माल अल्लाह और उस के रसूल का है, अर्थात हुकूमत का है। यहाँ इस आयत में उस के बंटवारे का तरीक़ा बताया गया है। अल्लाह और उस के रसूल के हिस्से से मुराद यह है कि दीन-मिल्लत के कामों के लिये एक विशेष रक़म रखी जाये। उस में से रसूले इस्लाम को जब तक वह जीवित हैं आवश्यक ख़र्चा मिले। रसूल नहीं हैं तो जो यह पद भार उठाये, जैसे इमाम, ख़लीफ़ा वग़ैरह। इस आयत ने स्पष्ट शब्दों में बता दिया है कि क़ुरआन के नज़दीक हुकूमत (State) यतीमों, मिस्कीनों, परेशान-हालों की देख-रेख के लिये ज़िम्मे-दार है और हुकूमत के ख़ज़ाने का एक लाज़िमी हिस्सा क़ौम के इन मजबूर लोगों की सहायता के तौर पर है (तर्जुमान)

२६. हज़रत हसन बिन अ़ली रज़ि० फ़रमाते हैं कि "यौ-मल् फ़ुर्क़ान" से मुराद १७ रमज़ान की वह जुम्अ़: वाली रात है जिस दिन दोनों फ़ौजों में घमासान की लड़ाई हुयी थी। उस लड़ाई में सहाबा की तादाद ३१० से कुछ ऊपर थी और मुश्रिकों की हज़ार और नौ सौ के दर्मियान थी। (इब्ने कसीर)

२७. हज़रत कअ़ब से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और मुसलमान केवल मालवाहक काफ़िले ही के इरादे से निकले थे, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने बिना किसी तय्यारी और समय तै किये दुश्मन के लश्कर से मुठभेड़ करा दी (इब्ने कसीर)

الْتَقَيْتُمْ فِيٓ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَّيُقَلِّلُكُمْ فِيٓ اَعْيُنِهِمْ
لِيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًاؕ وَاِلَى اللّٰهِ
تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۴۴﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً
فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۴۵﴾
وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَ
تَذْهَبَ رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْاؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۴۶﴾

तो अल्लाह ने तुम्हारी निगाह में उन को कम कर दिखाया और तुम को उन की निगाह में थोड़े[२८], ताकि जो काम (उस के ज़िल्म में) हो चुका है उस का फ़ैसला कर दे। और (अगर ग़ौर से देखो तो) सब काम अल्लाह ही की तरफ़ लौटाये जाते हैं[२९]। ४५. मुसलमानो! जब तुम्हारा किसी जमाअ़त से टकराव हो जाये तो जम कर लड़ा करो और (विजय अल्लाह की

وَلَا تَكُونُوْا كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ
بَطَرًا وَّرِئَآءَ النَّاسِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۞ وَاِذْ زَيَّنَ
لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ
الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ
الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ
مِّنْكُمْ اِنِّيْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ۚ

तरफ़ से समझ कर) अल्लाह को बहुत याद किया करो ताकि तुम कामियाब हो ४६. और अल्लाह और (उस के रसूल के हुक्मों) की आज्ञापालन करते रहो और परस्पर (बिजा) झगड़ा न किया करो वर्ना तुम फिसल जाओ गे और तुम्हारी हवा उखड़ जायेगी (यानी तुम्हारा दबदबा जाता रहेगा) और सब्र किया करो। निःसंदेह अल्लाह (की मदद) सब्र करने वालों के साथ है[३०] ४७. और जो लोग अपने घरों से शेख़ी बघारते हुये और लोगों को (अपना प्रताप) दिखाते हुये निकले थे और अल्लाह की राह से रोकते थे, तुम उन की तरह न होना और जो कुछ भी (दुनिया के) लोग करते हैं अल्लाह के घेरे में हैं[३१] ४८. और जब शैतान ने उन (मुश्रिकों) के आमाल उन की नज़रों में उम्दा कर दिखाये और कहा कि आज कोई भी तुम पर ग़ालिब न आये गा और (अ़रब के एक मालदार रईस शैख़ की शक्ल में आ कर यह भी कहा) कि मैं तुम्हारा सहायक हूँ, फिर जब दोनों फ़ौजें आमने-सामने आयीं तो उल्टे पाँव फिरता हुआ कहता गया कि मैं तुम लोगों से बेज़ार हूँ, क्यों कि मैं ऐसी वस्तु देख रहा हूँ जो तुम नहीं देखते, मैं अल्लाह से डरता हूँ (और मुझे विश्वास है)

....

२८. हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं मेरा अनुमान था कि काफ़िरों की तादाद ७० के क़रीब थी, और एक दूसरे सहाबी का अनुमान १०० के लग-भग था। लेकिन काफ़िरों में से एक बन्दी से पूछा गया तो उस ने बताया कि हम लोग एक हज़ार की तादाद में हैं। इसी तरह काफ़िरों की नज़र में मुसलमान थोड़े नज़र आये, और थे भी थोड़े, मगर अल्लाह तआ़ला ने आसमान से फ़रिश्तों को नाज़िल कर के मुसलमानों की संख्या बढ़ा दी, जिस से काफ़िरों के हौसले पस्त हो गये।

२९. वही अल्लाह उन सब गाड़ियों का इन्जन है। वह जिस को जिस प्रकार चाहे रखे और जो चाहे करे। लेकिन उस का चाहना अकारण और बिला वजह नहीं हुआ करता। ज़ाहेरी अस्बाब और हिक्मत अ़मली का भी कामियाबी में अ़मल-दख़ल रखा हुआ है (सनाई)

३०. शाने नुज़ूलः- मक्का के काफ़िर मुसलमानों से जंग करने के लिये बड़े फ़ख़्र से निकले थे, बाजों-गाजों के साथ नाचने-गाने वाली महिलायें भी थीं जो उन के मनोरंजन के साथ उन का समर्थन भी कर रही थीं। हज़रत उर्वा बिन ज़ुबैर का बयान है कि काफ़िरों ने जब जंग का इरादा किया तो साथ ही उन्हें क़बीला बनी बक्र की दुश्मनी याद आ गयी। उन्हों ने यह ख़याल किया कि हम लोगों के मक्का ख़ाली करते ही बनू बक्र हम्ला कर के अपना पुराना बदला ले लें गे। मक्का वालों और बनू बक्र के दर्मियान लड़ाई हो चुकी थी और वह बदला लेने के लिये मौक़ा की तलाश में थे, इस लिये कुरैश ने लग-भग अपना इरादा बदल दिया था कि उसी समय इब्लीस बनू काना के सर्दार की सूरत धारण कर के आया और कुरैश को इतमिनान दिलाया और स्वयं भी उन के साथ हो लिया। जब लड़ाई छिड़ गयी तो वह नौ दो ग्यारह हो गया। लोगों ने उसे भागते देख कर भागने का कारण पूछा तो उस ने

कहा कि मैं वह चीज़ देखता हूँ (यानी फ़रिश्तों को) जिसे तुम नहीं देखते हो। आगे की आयत में इसी का ज़िक्र है (इब्ने कसीर)

३१. इन आयतों में उन छः बातों पर ज़ोर दिया गया है जो फ़तह और कामियाबी का आधार हैं (१) क़दम जमाऐ रहो। क्योंकि मैदान वही जीतता है जिस के क़दम आख़िर तक जमे रहते हैं (२) बहुत अधिक अल्लाह को याद करो! क्यों कि बदन उसी वक़्त साबित क़दम रहेगा जब दिल साबित क़दम हो, और दिल उसी समय साबित क़दम रहेगा जब ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह को याद किया जाये और उस पर कामिल ईमान हो (३) अल्लाह और उस के रसूल की इताअ़त करो। और इस के बाद अपने इमाम और सर्दार की, क्यों कि बिना इताअ़त (Discipline) के कोई जमाअ़त कामियाब नहीं हो सकती। (४) आपस में इख़्तिलाफ़ से बचो, वर्ना सुस्त पड़ जाओगे और बात बिगड़ जायेगी (५) कितनी ही कठिनाइयाँ सामने आयें उन्हें झेलते रहो। इस लिये कि जीत उसी की होती है जो ज़्यादा झेलने वाला होता है (६) काफ़िरों का सा चलन न इख़्तियार करो, जो ईमान और सच्चाई के स्थान पर घमन्ड और दिखावे का तरीक़ा इख़्तियार करते हैं। तुम्हारे कामों की बुनियाद आ़जिज़ी और इख़्लास पर होनी चाहिये (तर्जुमानुल् क़ुरआन मौलाना आज़ाद रह०)

وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَآءِ دِيْنُهُمْ ۗ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا ۙ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ

अल्लाह का दन्ड बड़ा सख़्त है ४९. (यह उस समय का ज़िक्र है) जब मुनाफ़िक़ यानी जिन के दिलों में बीमारी है कहते थे कि यह लोग मज़हब से (ऐसे) धोका खाये हुये हैं (कि अपनी बेसरो सामानी को ज़रा भी नहीं देखते) जो कोई अल्लाह पर भरोसा करे[३२] (वह कामियाब ही हुआ करता है क्यों कि) अल्लाह बड़ा ग़ालिब और बड़ा हिक्मत वाला है ५०. और अगर तू उस समय काफ़िरों को देखे[३३] (तो अ़जीब हालत देखे) जिस समय फ़रिश्ते उन की रूहें आगे-पीछे (लातें) मारते हुये क़ब्ज़ करते हैं[३४] और (कहते हैं कि) जहन्नम का अ़ज़ाब चखो (यह मत समझो कि यह ज़ुल्म है[३५] बल्कि) ५१ यह तुम्हारे ही कामों का बदला है और (दिल से जान लो कि) अल्लाह अपने बन्दों पर ज़र्रा-भर भी अत्याचार नहीं करता ५२. उन (मक्का के मुश्रिकों) की हालत भी फ़िरऔ़नियों और उन से पहले लोगों की सी है। (मुशाबिहत की वजह यह है कि) उन्होंने अल्लाह के अहकाम से इन्कार किया, इस लिये अल्लाह ने उन के गुनाहों के जुर्म में उन को पकड़ा। बेशक अल्लाह बड़ा ज़बर्दस्त, सख़्त अ़ज़ाब वाला है ५३. यह (गत उन की) इस लिये हुयी कि (अल्लाह के हाँ यह सिद्धान्त

है कि) जो नेमत वह किसी कौ़म पर इनआ़म करता है कभी बदला नहीं करता जब तक वह अपने आमाल (और आचरण स्वंय) न बदलें (और उस नेमत के पाने का हक़ न खो दें) और अल्लाह सुनता-जानता है[३६] ५४. उन (मुश्रिकों) की मिसाल फ़िरऔ़नियों की और उन से पहले लोगों की सी है। उन्हों ने अपने पर्वरदिगार के हुक्मों को झुठलाया

....

३२. जब बद्र में मुट्ठी भर असहाय मुसलमान जंग के लिये निकले तो मुनाफ़िक़ों और कमज़ोर ईमान वालों को जब कोई हीला-बहाना न मिल सका तो यही कह दिया कि इन को इन के दीन के नशा ने धोके में डाल रखा है। इन लोगों ने अगर्चे लानत-मलामत के तौर पर यह बात कही, लेकिन एक लिहाज़ से ग़लत भी नहीं थी, इस लिये कि यह दीन ही का नशा था जो उन्हें जंग के मैदान में ले कर आया था। यही कारण है कि कुरआन ने उन का कौल ज़िक्र करने के बाद रद्द नहीं किया बल्कि जवाब में यह कहा कि "जो अल्लाह पर भरोसा करे"......(सनाई)

३३. कुछ उलमा का कहना है कि यह वाक़िआ़ भी बद्र की लड़ाई के दिन का है। उस दिन काफ़िरों के चेहरों पर तल्वारों की बारिश होती थी और जब पीठ फेर कर भागते थे तो पीछे से उन पर तल्वारें पड़ती थीं। एक सहाबी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा कि मैं ने अबू जेहल की पीठ पर काँटों के निशान देखे हैं। आप ने फ़रमायाः कि सही है वह फ़रिश्तों की मार के निशान हैं।

सही बात यह है कि यह आयत केवल बद्र के दिन की लड़ाई के लिये ख़ास नहीं है। यह आयत अपने आ़म होने पर दलालत करती है। हर काफ़िर का यही कुछ हाल होता है। कुरआन में और दूसरे स्थानों पर भी इसी प्रकार का बयान ज़िक्र है (इब्ने कसीर) कुरआन की आयतों और सहीह हदीसों से साबित है कि बद्र के दिन फ़रिश्ते भेजे गये थे। लेकिन बड़े दुःख़ की बात है कि कुछ लोगों ने इस से इन्कार किया है और बिला वजह तावीलें की हैं। फ़रिश्तों का उतरना जब कुरआन से साबित है तो इस की सत्यता से भला इन्कार की गुन्जाइश कहाँ है।

३४. 'उन की जान लातें मार कर निकालते हैं' इमाम राज़ी० फ़रमाते हैं कि काफ़िर की जान जब दुनिया से रवाना होती है तो दुनिया छोड़ने का तो उसे दुःख़ होता है, इधर आख़िरत पर जब नज़र करती है तो यहाँ भी अंधेरा ही नज़र आता है। इस प्रकार उस के ऊपर आगे और पीछे दोनों तरफ़ गोया दोहरी मार पड़ती है। फ़लसफ़ा (PHILOSOPHY) में रूचि रखने वाले उलमा ने इस आयत से यह अर्थ निकाला है कि "इन्सान" जिस चीज़ का नाम है वह जिस्म से अलग चीज़ है और वह रूह और जान है। और हक़ीक़त है भी यही कि रूह ही से ज़िन्दगी है और इसी ही से जिस्म के तमाम हिस्से काम करते हैं। रूह न हो तो जिस्म की पूरी मशीन फ़ेल हो जाती है। इसी लिये फ़ल्सफ़ी उलमा (Philosopher) ने रूह ही को "इन्सान" का नाम दिया है। मगर यह बात याद रहनी चाहिये कि आख़िरत में रूह और बदन दोनों ही को दन्ड मिले गा।

३५. हज़रत बरा बिन आ़जिब रज़ि० रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "जान निकालने के समय जब मलकुल मौत काफ़िर के पास आते हैं तो उससे कहते हैं कि ऐ गन्दी रूह! गर्म हवाओं, गर्म पानी और गर्म छाँव की ओर चल। यह सुन कर वह रूह जिस्म में छुपती फिरती है। आख़िर उसे घसीट कर जिस्म से अलग किया जाता है, बिल्कुल ऐसे ही जैसे किसी ज़िन्दा आदमी के जिस्म की खाल उतार ली जाये तो उस के साथ रगें और पट्ठे भी आ जाते हैं। फ़रिश्ते उस रूह से कहते हैं कि अपने बुरे कर्मों का फल भोगते हुये आग का अ़ज़ाब चखो। अल्लाह ज़ालिम नहीं है वह तो सरासर इन्साफ़ करने वाला, पाकी वाला और प्रशंसा के लाइक़ है (हदीसों का ख़ुलासा)

३६. इस आयत में यह बतलाया गया है कि जब अल्लाह तआ़ला किसी कौ़म पर एहसान करता है तो वह उस समय तक कोई कमी नहीं करता है जब तक कि वह कौ़म स्वयं अपनी हालत को न बदल ले। यानी जब वह कौ़म नेकों

➲पर ज़ुल्म का इरादा कर ले, या अपने अक़ीदा व अ़मल को बदल डाले, ईमान के स्थान पर कुफ़्र और नेकी के स्थान पर बुराई करने लगे, तो फिर अल्लाह तआ़ला भी उस क़ौम पर से अपना एहसान उठा लेता है और उस पर अज़ाब नाज़िल करता है। फ़िरऔ़न की क़ौम और मक्का के काफ़िरों को भी अल्लाह तआ़ला ने बहुत सी नेमतें दे रखी थीं लेकिन जब उन्हों ने अल्लाह के पैग़म्बर को झुठलाया और उसके आदेशों का पालन न किया तो अल्लाह ने और क़ौमों की तरह इन से भी अपनी नेमतें छीन लीं (फ़वाइद सलफ़िय्या)

कुरआन के नज़्दीक यह अल्लाह का नियम और दस्तूर है कि जब वह किसी क़ौम पर एहसान करता है तो उस में उस वक़्त तक कोई तब्दीली नहीं करता जब तक स्वयं उस क़ौम के लोग अपनी हालत को न बदल डालें। चुनान्चे आप इतिहास का मुताला (अध्ययन) करें गे तो आप यही पायें गे कि क़ौमें स्वंय ही अपनी ज़िन्दगी को बनाती हैं और स्वयं ही अपने लिये क़ब्र खोदती हैं (तर्जुमान)

فَأَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَأَغْرَقْنَا اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَ
كُلٌّ كَانُوا ظٰلِمِينَ ۝ إِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ
اللّٰهِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ الَّذِينَ
عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي
كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُونَ ۝ فَإِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي
الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ۝
وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْبِذْ إِلَيْهِمْ
عَلٰى سَوَآءٍ ۚ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِينَ ۝ وَلَا
يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا ۚ إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ ۝
وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ
الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَ
اٰخَرِينَ مِنْ دُونِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُونَهُمْ ۚ اَللّٰهُ
يَعْلَمُهُمْ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ

तो हम (अल्लाह) ने उन के गुनाहों के जुर्म में उन को तबाह कर डाला और फ़िरऔ़न की क़ौम को डुबो दिया, और वह सारे के सारे ज़ालिम थे ५५. जो लोग कुफ़्र पर जमे हुये हैं और ईमान नहीं लाते वह अल्लाह के नज़्दीक (दरिन्दों, जंगली जानवरों ग़रज़) सब हैवानों से बदतर हैं ५६. जिन (काफ़िरों) से तू ने अ़हद किये हैं और वह बार-बार अ़ह्द को तोड़ते हैं और किसी प्रकार (अ़ह्द तोड़ने से) परहेज़ नहीं करते[३७] ५७. तुम उन की लड़ाई (के मैदान में) पाना तो (ऐसी डपट करना कि) उन के साथ ही (उन से) पीछे वालों को भी तितर-बितर कर देना ताकि (आइन्दा को) नसीहत पायें (और अ़ह्द तोड़ने से बचते रहें) ५८. और अगर तुझ को किसी क़ौम से ख़ियानत (और बद् अह्दी) मालूम हो तो उन को बराबरी की सूरत में सूचना दे दिया कर[३८]। ख़ियानत करने वाले, दग़ा बाज़, अल्लाह, को नहीं भाते[३९] ५९. और काफ़िर यह न समझें कि वह हम से आगे बढ़ चुके हैं। हर्गिज़ (नहीं) वह (हम को) आ़जिज़ न कर सकें गे ६०. और उन के मुक़ाबले के लिये जिस क़दर ताक़त रखते हो सामान तय्यार रखो, तीर अन्दाज़ी हो या घोड़ा-सवारी, इस से अल्लाह के दुश्मनों को और अपने दुश्मनों को और इन (ज़ाहिरी दुश्मनों) के अ़लावा और दुश्मनों को भी जिन्हें तुम नहीं जानते[४०], मगर अल्लाह उन को जानता है, इन सब पर रोब डालते रहो (जिस से तुम्हारी उन पर धाक बैठी रहे) और➲

जो कुछ तुम अल्लाह की राह में (क़ौमी लाभ और इस्लामी तरक़्क़ी के लिये) खर्च करा गे

....

३७. मदीना में यहूद के तीन क़बीले (बनू क़यूनुक़ाअ़, बनू नज़ीर, बनू क़ुरैज़ा) आबाद थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इन सब से मुआहिदा किया कि सब आपस में मिल-जुल कर रहें गे और अगर किसी फ़रीक़ पर कोई दुश्मन आक्रमण करे तो सब मिल कर उन की सहायता करें गे (इब्ने हिशाम) लेकिन यहूदियों ने इस मुआहिदे को तोड़-ताड़ डाला और मुसलमानों के ख़िलाफ़ मुख़्तलिफ़ क़िस्म के षड़यंत्र रचने लगे। इन आयतों में उन ही का ज़िक्र है। काफ़िर क़ौमों का आज भी यही हाल है कि मुसलमान उन के साथ चाहे कितनी ही वफ़ादारी और भलाई करें मगर मौक़ा पाने पर वह मुसलमानों के साथ ग़द्दारी करने से नहीं चूकते (राज़)

३८. यानी ऐसे वक़्त उन को सूचित करो कि वह और तुम जंग की तय्यारी कर सको। ऐसा हर्गिज़ न करो कि पहले से तुम अन्दर ही अन्दर तय्यारी मुकम्मल कर लो फिर उन को मुआहिदा ख़त्म करने की सूचना दे कर दूसरे ही दिन उन पर चढ़ाई कर दो। ऐसा करना शरीअ़त में ख़ियानत है और मुसलमान हो या काफ़िर किसी के साथ यह तरीक़ा जायज़ नहीं है। (सनाई)

३९. रूमियों से मुसलमानों का एक ख़ास मुद्दत तक के लिये न लड़ने का मुआहिदा था। जब मुद्दत ख़त्म होने में दो-चार दिन बाक़ी रह गये तो हज़रत मुआविया रज़ि० ने इस्लामी लश्कर को धीरे-धीरे आगे बढ़ाना आरंभ कर दिया ताकि उधर मुद्दत ख़त्म हो और इधर से आक्रमण कर दिया जाये। हज़रत अ़मर बिन अन्बसा रज़ि० अपनी सवारी पर यह कहते हुये आये कि "अल्लाह बहुत बड़ा है, अल्लाह बहुत बड़ा है, वादा ख़िलाफ़ी जायज़ नहीं है, इस लिये कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है: "जब किसी क़ौम से मुआहिदा हो जाये तो उस वक़्त तक उस के ख़िलाफ़ न तो कोई गिरह खोलो और न ही कोई गिरह बाँधो (जंग की तैयारी न करो) जब तक कि मुद्दत समाप्त न हो जाये, या उन्हें सूचित कर के मुआहिदा के पत्र को फाड़ न दिया जाये"। हज़रत मुआविया रज़ि० ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का यह आदेश सुनते ही तुरन्त लश्कर को वापस होने का आदेश दे दिया (मुस्नद अहमद)

४०. 'और उन दुश्मनों को जिन्हें तुम भली-भांति नहीं जानते' इन से मुराद ईरान, रूम और आस-पास के वह काफ़िर हैं जिन्हें उस ज़माना में मुसलमान अच्छी तरह नहीं जानते थे। जैसा कि वर्षों से फ्रान्स, रूस और इंगलैन्ड वग़ैरह नई शक्तियाँ इस्लाम को अन्दर ही अन्दर मिटाने के लिए तत्पर हैं जैसा कि सलीब की लड़ाई में चाहा था (हक़्क़ानी-४/२००)

يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ﴿٦٠﴾ وَإِنْ جَنَحُوا
لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦١﴾ وَإِنْ يُرِيدُوا أَنْ يَخْدَعُوكَ
فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ ۚ هُوَ الَّذِي أَيَّدَكَ بِنَصْرِهِ وَ
بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٢﴾ وَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ ۚ لَوْ أَنْفَقْتَ مَا
فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَا أَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ
وَلَٰكِنَّ اللَّهَ أَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٣﴾
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ

तुम को पूरा दिया जाये गा और किसी प्रकार तुम को नुक़सान न हो गा[४१] ६१. और अगर वह सुलह को झुकें तो तू भी (उसे क़ुबूल कर के) उस की तरफ़ झुक जाया कर और अल्लाह पर भरोसा रख। (क्योंकि) वह (सब की) सुनता और जानता है[४२] ६२. और (अगर यह सुलह के बहाने से) तुझ को धोका देना चाहेंगे तो (न दे सकेंगे क्यों कि) अल्लाह तुझ को काफ़ी है। उसी ने (केवल) अपनी मदद और मुसलमानों (के लश्कर) के साथ तुझे क़ुव्वत दी है ६३. और उसी ने उन के दिलों में मुहब्बत पैदा कर दी

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٤﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ
عَلَى الْقِتَالِ ۚ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ
يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ
يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ
لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾ اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ

है (जो तेरी ताक़त से परे थी इस लिये) अगर तू ज़मीन का कुल माल भी (उस कोशिश में) ख़र्च कर देता तो भी उन के दिलों में मुहब्बत पैदा न कर सकता, लेकिन अल्लाह ने उन में मुहब्बत डाल दी है। निःसंदेह वह ग़ालिब और हिक्मत वाला है[४३] ६४. ऐ नबी! तुझे और तेरी इताअ़त करने वाले मोमिनों को अल्लाह ही काफ़ी है (उस के होते हुये किसी की क्या ज़रूरत?)

६५. ऐ नबी! मुसलमानों को जिहाद की रग़बत दिलाया कर[४४]। अगर बीस आदमी तुम में सब्र करने वाले (यानी मौत को जीवन पर तर्जीह देने वाले) हों गे तो दो सौ पर ग़ालिब आयें गे, और अगर वह एक सौ हों गे तो एक हज़ार काफ़िरों पर ग़लबा पायें गे, क्योंकि यह काफ़िर समझते नहीं (कि हम क्यों लड़ते हैं?) ६६. अब (सरेदस्त) अल्लाह ने तुम को हल्का सा हुक्म दिया है (क्यों कि यह शर्त तुम्हारे अन्दर नहीं पाई जाती है)

....

४१. इस आयत का मतलब यह है कि अपनी ताक़त और इम्कान के मुताबिक़ उन काफ़िरों का मुक़ाबला करने के लिये हर समय तय्यार रहो और मुक़ाबला के लिये हाथी-घोड़े, ऊँट, तीर-कमान, बन्दूक़, लाठी-डन्डा, गरज़ कि ज़माना के एतबार से जिन हथियारों का चलन हो, उन्हें तय्यार रखो। मुस्नद अहमद की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मिंबर शरीफ़ पर कुव्वत की तश्रीह करते हुये फ़रमाया कि इस से मुराद "तीर चलाने का फ़न सीखना" है। और ताकीद की कि तीर चलाया करो, सवारी किया करो, लेकिन जान लो कि तीर चलाना घोड़े की सवारी से बेहतर है (इब्ने कसीर)

यहाँ पर 'कुव्वत' शब्द इस्म नकेरा (Common Noun) हैं इस में अपने-अपने क्षेत्र में जो हथियार प्रयोग में लाये जाते हैं वह सब शामिल हैं।

४२. इस आयत की रोशनी में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हुदैबिय्या वाले साल मक्का के मुश्रिकों से नौवर्ष तक के लिये सुल्ह-समझौता कर लिया था। हज़रत अ़ली रज़ि० फ़रमाते हैं कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सुल्ह के बाद फ़रमाया कि बहुत जल्द इख़्तिलाफ़ पैदा हो जाएगा और सुल्ह के तअ़ल्लुक़ से बहुत सारे मस्अले खड़े हों गे, लेकिन फिर भी बेहतर यही है कि सुल्ह-समझौता ही कर लेना (अहमद)

४३. इस्लाम से पूर्व औस और ख़ज़रज दोनों क़बीलों के दर्मियान आये दिन लड़ाइयाँ होती रहती थीं, मगर इस्लाम ने उन की दुश्मनी को मुहब्बत में बदल दिया। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने फ़रमाया: दुश्मनी में आपस के संबन्ध टूट जाते हैं, एक-दूसरे के एहसान को भुला दिया जाता है, लेकिन जब अल्लाह उन के दिलों को जोड़ देता है तो फिर कोई भी शक्ति उन को जुदा नहीं कर सकती। फिर आप ने आयत "अगर तू ज़मीन का कुल माल भी ख़र्च कर देता फिर भी उन के दिलों में प्रेम और मुहब्बत पैदा न कर सकता" तिलावत फ़रमाई।

एक सहीह हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जब अल्लाह की राह में दो मुहब्बत करने वाले आपस में मिलते हैं तो दोनों के पाप दरख़्त के सूखे पत्तों की तरह झड़ जाते हैं"। उमैर बिन इस्हाक़ रह० फ़रमाते हैं कि सब से पहली चीज़ जो लोगों के दर्मियान से (क़ियामत के क़रीब) उठ जाये गी वह आपस की

मुहब्बत हो गी।

४४. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस आयत पर अ़मल करते हुये सफ़बन्दी के समय कहा करते थे "लोगो! खड़े हो जाओ! और उस जन्नत को हासिल करने की कोशिश करो जिस की चौड़ाई आसमान व ज़मीन के बराबर है" (इब्ने कसीर)

اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ۭ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ
يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا
اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝٦٦ مَا كَانَ
لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰي حَتّٰي يُثْخِنَ فِي
الْاَرْضِ ۭ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ڰ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ
الْاٰخِرَةَ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝٦٧ لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ
سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝٦٨ فَكُلُوْا
مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ڮ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٦٩ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْٓ اَيْدِيْكُمْ
مِّنَ الْاَسْرٰٓي ۙ اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا
يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَ
اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٧٠ وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ
فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ۭ

और तुम्हारी कमज़ोरी उसे मालूम है[४५]। पस अगर तुम में १०० व्यक्ति डट कर लड़ने वाले हों गे तो दो सौ पर विजय पायें गे, और अगर एक-हज़ार हों गे तो दो-हज़ार पर अल्लाह के हुक्म से विजय पायें गे। (क्यों कि) अल्लाह की मदद डटे रहने वालों के साथ है ६७. किसी नबी के लिये जायज़ नहीं कि (मैदाने जंग की) ज़मीन पर (काफ़िरों का) अच्छी तरह ख़ून बहाने से पहले (दुश्मनों को) बन्दी बनाये (ताकि उन से माली बदला लिया जाये) तुम दुनियावी सामान चाहते हो (लेकिन) अल्लाह आख़िरत चाहता है। और अल्लाह बड़ा ग़ालिब, बड़ी हिक्मत वाला है[४६] ६८. अगर अल्लाह की तरफ़ से (आ़म तौर पर) क़ानून जारी न हुआ होता[४७] (कि बग़ैर अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाये सज़ा नहीं) तो जो कुछ तुम ने लिया है उस के सबब से तुम को बड़ा अ़ज़ाब पहुंचता ६९. पस (तुम को माफ़ी दी गयी, इस को भी ग़नीमत का माल समझो और) हलाल-पाकीज़ा को जो तुम ने ग़नीमत में लिया है, खाओ और अल्लाह से डरते रहो। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है ७०. ऐ नबी! (जो हुआ सो हुआ अब तू) उन बन्दियों को जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं कह दे कि अगर अल्लाह को तुम्हारे दिलों में भलाई मालूम होगी तो जिस क़दर तुम से लिया गया है उस से (कहीं) अच्छा तुम को दे गा[४८] और तुम्हारे गुनाह बख़्श दे गा। और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है ७१. और अगर यह (बंदी) तेरी (क़ैद से छूट कर) मुख़ालिफ़त करने का ख़याल करें गे तो पहले भी अल्लाह से मुख़ालिफ़त कर चुके हैं फिर अल्लाह ने तुम को उन पर क़ाबू दिया

....

४५. एक मुसलमान दस काफ़िरों का मुक़ाबला नहीं कर सकता, मगर यह ज़रूर है कि दोगुने काफ़िरों से न भागो मगर शर्त यह है कि हथियार में भी तुम उन के बराबर हो। यह नहीं कि दस काफ़िर तो तोप लिये खड़े हों और

➲पाँच मोमिन उन के सामने ख़ाली हाथ भी जान दे दें (सनाई) ऐसा करना आयत "तुम सकभर दुश्मनों के मुक़ाबले में तय्यारी करो" के भी ख़िलाफ़ हो गा (राज़)

४६. बद्र के बन्दियों के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सहाबा से मश्वरा लिया तो हज़रत उमर रज़ि० ने उन्हें क़त्ल कर देने का मश्वरा दिया, अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने कहा कि मेरी राय यह है कि उन्हें माफ़ कर दिया जाये और फ़िद्या ले कर छोड़ दिया जाये, इस लिये कि हो सकता है बाद में यह लोग इस्लाम क़ुबूल कर लें। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा ने कहा: मेरी तो राय है कि उन्हें जीवित जला दिया जाये। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र रज़ि० की राय से इत्तिफ़ाक़ किया और फ़िद्या ले कर सब को माफ़ कर दिया। इस मौक़ा पर आप ने यह भी फ़रमाया: कुछ नर्म दिल होते-होते दूध से भी अधिक नर्म दिल हो जाते हैं। ऐ अबू बक्र! तुम्हारी मिसाल तो हज़रत इब्राहीम जैसी है जिन्हों ने अल्लाह से कहा था कि मेरे आज्ञा-कार तो हैं ही, मेरे मुख़ालिफ़ भी तेरी माफ़ी और बख़्शिश के उम्मीद-वार हैं। और तुम्हारी मिसाल हज़रत मसीह अ़लै० की तरह भी है जिन्हों ने कहा था कि ऐ अल्लाह! अगर तू उन पर अ़ज़ाब नाज़िल करे तो तेरे बन्दे हैं और अगर तू बख़्श दे तो तू अ़ज़ीज़ और हकीम तो है ही। और ऐ उमर! तुम्हारी मिसाल हज़रत नूह अ़लै० जैसी है जिन्हों ने अपनी क़ौम पर बद-दुआ़ करते हुये कहा था: मेरे मौला! ज़मीन पर किसी काफ़िर को आबाद न छोड़ (मुस्नद अहमद, सहीह मुस्लिम)

४७. 'अल्लाह की ओर से क़ानून न जारी होता' अर्थात माले-ग़नीमत तुम्हारे लिये हलाल लिखी जा चुकी है, इस लिये यह ग़नीमत का माल तुम्हारे लिये हलाल है, इसे शौक़ से खाओ। इमाम इब्ने जरीर ने इसी तफ़्सीर को पसन्द किया है। एक रिवायत में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मुझे पांच ऐसी वस्तुएं दी गयी हैं जो मुझ से पहले किसी नबी को नहीं दी गयीं (१) मेरी मदद इस तौर पर की गयी कि अगर मेरा दुश्मन एक माह की मसाफ़त (यात्रा) की दूरी पर भी है तो वह वहाँ भी मुझ से ख़ौफ़ खा कर बैठा हो गा (२) मेरे लिये पूरी ज़मीन को सज्दा का स्थान बना दिया गया है (चन्द स्थानों को छोड़ कर जहाँ भी नमाज़ का समय हो जाये तुरन्त उस स्थान पर नमाज़ अदा कर लें) इसके साथ ही पूरी ज़मीन की मिट्टी को मेरे लिये पाकी का ज़रीआ बना दिया गया है (अगर पानी न हो तो तयम्मुम कर लें) (३) मेरे लिये ग़नीमत का माल हलाल कर दिया गया है (मुझ से पहले किसी भी उम्मत के लिये हलाल नहीं था) (४) मुझे शफ़ाअ़त दी गयी है (क़ियामत के दिन जब तमाम संदेष्टा शफ़ाअ़त से पीछे हट जायें गे उस समय यह प्रतिष्ठा मुझे सौंपी जाये गी) (५) हर नबी किसी ख़ास क़ौम की तरफ़ भेजा गया है, लेकिन मैं सारे जहान के लिये नबी बना कर भेजा गया हूँ- सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (बुख़ारी, मुस्लिम)

४८. हज़रत अ़ब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि अल्लाह का यह फ़र्मान पूरा उतरा। मैं ने २० ऊक़िया सोना दे कर अपने आप को आज़ाद कराया था तो इस्लाम लाने के बाद २० ग़ुलाम अल्लाह ने मुझे दिये जो सब के सब मालदार थे। साथ ही मुझे अल्लाह से मग़्फ़िरत की भी उम्मीद है। हज़रत अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुझे सारी दुनिया मिलने पर भी इतनी प्रसन्नता न होती जितनी इस आयत के नाज़िल होने से हुयी (इब्ने कसीर)

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
هَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّ نَصَرُوْٓا
اُولٰٓئِكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَلَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ

और अल्लाह बड़े अ़िल्म वाला, बड़ी हिक्मत वाला है ७२. जो लोग ईमान ला कर अल्लाह की राह में अपना वतन छोड़ आये और अल्लाह की राह में जान-माल से लड़े और जिन्हों ने (उन मुसाफ़िरों को अपने हाँ) जगह दी और (उन की) मदद की, यही लोग परस्पर (एक दूसरे के) साथी हैं। और जो लोग ईमान लाये लेकिन उन्हों ने➲

مِّنْ شَيْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ
فِي الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ
وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٧٢﴾
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۗ اِلَّا
تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْاَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ﴿٧٣﴾
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ
هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ۗ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٤﴾

(अपने वतन से) हिजरत नहीं की, तुम्हारी उन से ज़रा भी दोस्ती नहीं होनी चाहिये जब तक कि वह हिज्रत न करें, और अगर वह दीन के मामलात में तुम से सहयोग चाहें तो तुम्हें उन की सहायता करनी ज़रूरी है, मगर ऐसी क़ौम के मुक़ाबला पर नहीं जिन के साथ तुम्हारा अहृद-पैमान (सुल्ह-सफ़ाई का) हो। और अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहा है[४९] ७३. और काफ़िर एक दूसरे के सहयोगी और साथी हैं (पस याद रखो!) अगर तुम उन (मुसलमानों) की मदद न करो गे तो मुल्क में एक (बहुत बड़ा) फ़ित्ना और बहुत बड़ा फ़साद खड़ा हो जाये गा ७४. और जो लोग ईमान लाये और हिज्रत (भी) कर आये और अल्लाह की राह में जिहाद भी किया और (मदीना के) जिन लोगों ने उन को जगह दी और उन की मदद की, यही सच्चे मोमिन हैं। इन्हीं के वास्ते बख़्शिश है और (जन्नत में) इ़ज़्ज़त की रोज़ी

....

४९. इस आयत से ले कर आख़िरी सूरः तक जो कुछ बयान किया गया है इस का निचोड़ यह है (१) इस्लाम की दौलत ने परस्पर प्रेम सदभावना की जो रूह फूंक दी थी वह आज भी इतिहास में मौजूद है। नव मुस्लिमों के दर्मियान जो आपसी भाई-चारा कराया गया था (जिसे अ़रबी भाषा में "मुवाख़ात" कहते हैं) यह दो बार हुयी। पहली मर्तबा केवल मुहाजिरों के दर्मियान हुयी थी। दूसरी मर्तबा भी मदीना ही में हुयी थी लेकिन अन्सार और मुहाजिरों के दर्मियान हुयी थी (यानी मक्का के मुहाजिरों और मदीना के नव मुस्लिमों में) एक रिवायत के अनुसार इन की तादाद ९० थी और दूसरी रिवायत के मुताबिक़ १००। (२) मुसलमानों की एक बड़ी तादाद मक्का से हिजरत कर के मदीना चली आयी थी। बस चन्द गिने-चुने ही मुसलमान रह गये थे जो कुछ मजबूरियों के तहत हिजरत न कर सके थे। (३) यहाँ फ़रमाया गया है कि जो लोग ईमान लाये और घर-बार को छोड़ा और अल्लाह की राह में जिहाद किया तो वह चाहे जिस क़बीला और गोत्र के हों सब एक ही बिरादरी के हो गये, और यही मान कर चलने में ही तुम्हारी कामियाबी है। लेकिन जो लोग किसी कारण हिज्रत कर के तुम से नहीं मिल सके तो ज़ाहिर है इस रिश्ते के हक़ में उन का कोई हक़ नहीं बनता है जब तक कि यह हिजरत कर के तुम लोगों से न आ मिलें। हाँ, अगर वह हिजरत नहीं कर सके तो इस का मतलब यह नहीं कि वह हमारे इस्लामी हक़ूक़ से भी वन्चित हो जायें गे।

एक बात यह भी याद रखनी चाहिये कि वादा पर क़ाइम रहना एक मुसलमान का फ़र्ज़ है यह इशारा इस ओर था कि मदीना आने के तुरन्त बाद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने आस-पास के क़बीलों से जो मुआ़हिदा किया था उन में से अधिकांश ने उसे तोड़ दिया था, लेकिन अभी मुसलमानों की तरफ़ से अलग हो जाने का एलान नहीं हुआ था। इस बात से अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि इस्लाम इस बात पर कितना ज़ोर दे रहा है।

मुहाजिर और अन्सार के मर्तबों का ज़िक्र करने के बाद फ़रमाया कि जो क़रीबी रिश्ते-दार हैं वह अल्लाह के बनाये हुये रिश्ते-दार हैं उन से तअ़ल्लुक़ नहीं तोड़ा जा सकता, इस लिये मरने के बाद वरासत वग़ैरह के हक़ से महरूम नहीं किये जा सकते। यह बात विशेष रूप से ध्यान देने के क़ाबिल है कि यहाँ पर अन्तिम आयत में जो "रिश्तेदार" का शब्द आया है इस से मुराद आ़म क़रीबी रिश्ते दार हैं। और यह भी बता दिया कि जिस तरह काफ़िर

➲इस्लाम दुश्मनी में एक दूसरे के साथी बन गये हैं, तुम लोग भी इस्लाम दोस्ती में एक दूसरे के सहायक बन जाओ और अपने वादे पर अटल रहो, किसी भी हाल में वादा ख़िलाफ़ी न करो वर्ना फ़साद फैल जाये गा और अम्न व शान्ति का दर्वाज़ा बन्द हो जाये गा।

चन्द मुट्ठी भर मुसलमानों ने जिस इस्लामी दावत का बीज बोया था उन लोगों का यह हाल था, लेकिन आज जब कि दुनिया में मुसलमानों की तादाद एक अ़रब है उन के भाई-चारा का क्या हाल है? हिन्दुस्तान के मुसलमानों का क्या हाल है जहाँ २५ करोड़ लोग बस्ते हैं (ख़ुलासा तर्जुमान मौलाना आज़ाद रह०)

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ
فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ ؕ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى
بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۷۵﴾

७५. और जो (उन से) पीछे ईमान लाये और हिजरत भी कर आये और तुम्हारे साथ हो कर लड़े वह भी तुम ही में से हैं। और (ख़याल रखो!) रिश्तेदार एक दूसरे के बहुत क़रीब हैं अल्लाह की शरीअ़त में (रिश्तेदार से मुक़द्दम सुलूक करो) बेशक अल्लाह हर एक चीज़ को जानता है (इस लिये उस के क़ानून पर अ़मल करो)

सूरः तौ-बः (९)

सूरः तौबा मदीना में नाज़िल हुयीं। इस में १२९ आयतें और १६ रूकूअ़ हैं।

آياتها ۱۲۹ (۹) سُوْرَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ (۱۱۳) ركوعاتها ۱۶

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ
مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱﴾ فَسِيْحُوْا فِي الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ
اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ۙ وَاَنَّ
اللّٰهَ مُخْزِي الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲﴾ وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ
بَرِيْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ وَرَسُوْلُهٗ ؕ فَاِنْ تُبْتُمْ
فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ
مُعْجِزِي اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ
اَلِيْمٍ ﴿۳﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ

१. (मुसलमानो!) जिन मुश्रिकों से तुम ने अम्न के वादे किये थे अल्लाह और रसूल (उन की वादा ख़िलाफ़ी की वजह से) उन से बेज़ार हैं। २. पस (उन से कह दो कि) चार महीनों तक (मक्का की) ज़मीन पर चल फिर लो (फिर इस के बाद कूच) और जान रखो कि तुम अल्लाह को आ़जिज़ नहीं कर सकते और अल्लाह को काफ़िरों को रुस्वा करना मन्ज़ूर है ३. और हज्जे-अक्बर के रोज़ अल्लाह और रसूल की तरफ़ से तमाम लोगों को एलान (किया जाता) है कि अल्लाह और उस का रसूल मुश्रिकों से बेज़ार हैं। और अगर तौबा करो तो तुम्हारे हक़ में बेहतर है, और अगर मुंह मोड़ते रहो गे तो जान रखो कि तुम अल्लाह को (अहकाम लागू करने और पकड़ करने में) आ़जिज़ नहीं कर सकते। और तू काफ़िरों को दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुना➲

➲दे ४. लेकिन जिन मुश्रिकों से तुम ने {क़ौल-क़रार} किया

....

१. इस सूर: के आरंभ में "बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम" नहीं है। हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि० से जब इस बारे में प्रश्न किया गया तो उन्हों ने उत्तर दिया कि चूंकि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से नहीं सुनी इस लिये यहाँ नहीं लिखी। यह सूर: मुश्रिकों को उन के अ़ह्द और क़ौल-क़रार के तोड़ने पर सज़ा देने के लिये नाज़िल हुयी। हिजरत के नवें वर्ष नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० को इस सूर: की तब्लीग़ (मुआ़हिदा की मन्सूख़ी का एलान) करने के लिये हाजियों के जत्थे का अमीर बना कर भेजा। बाद में यह ज़िम्मे-दारी हज़रत अ़ली रज़ि० को सौंप दी। हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से जब इस का कारण पूछा तो आप ने बताया: अ़रब के आ़म दस्तूर के मुताबिक़ यह संदेश पहुंचाना मेरे क़रीबी रिश्तेदारों का काम है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अबू बक्र से यह भी कहा: क्या तुम्हें इस बात पर प्रसन्नता नहीं है कि तुम हिजरत की रात हिरा के ग़ार में मेरे साथ रहे और जन्नत में हौज़े कौसर पर भी मेरे साथ रहोगे? अबू बक्र रज़ि० ने कहा: बेशक मैं राज़ी और ख़ुश हूँ। इस के बाद हज़रत अबू बक्र ने लोगों को ख़ुत्बा सुनाया और हज्ज के अहकाम बयान फ़रमाये (सनाई)

मक्का के काफ़िरों ने अन्तिम मुआ़हिदा सुल्ह हुदैबिय्या का भी तोड़ा। तै यह पाया था कि एक तरफ़ मुसलमान और उन के सहयोगी क़बीले हों गे और दूसरी ओर क़ुरैश और उन के सहयोगी। मुसलमानों के साथ क़बीला ख़ुज़ाआ़ शामिल हो गा और क़ुरैश के साथ बनू बिक्र। सुल्ह की बुनियादी शर्त यह थी कि दस वर्ष तक दोनों फ़रीक़ इस समझौते पर क़ायम रहते हुये एक दूसरे पर आक्रमण नहीं करें गे। लेकिन अभी दो वर्ष ही का समय बीता था कि बनू बिक्र ने क़बीला ख़ुज़ाआ़ पर हल्ला बोल दिया और क़ुरैश ने भी उन का साथ दिया। बनू ख़ुज़ाआ़ ने भाग कर काबा में जान बचाई, मगर वहाँ भी उन्हें क़त्ल किया। केवल चालीस आदमियों ने किसी तरह जान बचाई और मदीना पहुंच कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सूचना पहुंचाई। बिक्र का ख़ुज़ाआ़ पर आक्रमण करना और क़ुरैश का साथ देना यह मुआ़हिदे का खुल्लम-खुल्ला उल्लंघन था, इस पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का यह फ़र्ज़ (कर्तव्य) बनता था कि इस उल्लंघन को बर्दाश्त न किया जाये। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने भी दस हज़ार सहाबा को ले कर मक्का पर चढ़ाई कर दी और (छोटी-मोटी झड़पों को छोड़ कर) बिना किसी जंग के मक्का फ़तह हो गया। सन ९ हिजरी में इस सूर: की शुरू की ३० या ४० आयतें नाज़िल हुयीं और इसी एलान को सुनाने के लिये हज़रत अबू बक्र और हज़रत अ़ली रज़ि० को हज्ज के मौक़ा पर भेजा गया था। सूर: का बाक़ी हिस्सा भी सन ९ हिज्री में ही तबूक की जंग से पूर्व या बाद में नाज़िल हुआ (तर्जुमान)

और उन्हों ने उस में किसी प्रकार से कमी नहीं की और न उन्हों ने तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी की सहायता की तो उन के वादों को मुक़र्रर मुद्दत तक पूरा करो (और समझौता तोड़ने से परहेज़ करते रहो) बेशक अल्लाह तआ़ला परहेज़-गारों से प्रेम करता है ५. और जब हराम के महीने गुज़र जायें तो (फ़सादी) मुश्रिकों को जहाँ पाओ क़त्ल करो (ताकि दुनिया में अम्न व शान्ति का माहौल हो) और उन को पकड़ो और उन का➲

ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوكُمْ شَيْـًٔا وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ
اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ۭ اِنَّ
اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝ فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ
الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ
وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ
فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ

فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَاِنْ اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۝ كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖۤ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوْا لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝

घेराव करो और उन के पकड़ने को हर घात में बैठो, फिर अगर वह (शरारत से) तौबा करें और नमाज़ पढ़ने लगें और ज़कात देने लगें तो उन का रास्ता छोड़ दो[२] (क्यों कि) अल्लाह तआ़ला बख़्शने वाला मेहरबान है ६. और अगर कोई मुश्रिक (या काफ़िर जंग की हालत में भी) तुम से अम्न मांगे तो उस को पनाह दिया करो कि वह (मुसलमानों के मेल-मिलाप से) क़ुरआन सुने फिर जब वह जाना चाहे तो अम्न की जगह उस को पहुंचा दिया करो। यह आदेश इस लिये है कि वह लोग बेअ़िल्म हैं[३] ७. (अस्ल पूछो तो) अल्लाह और रसूल के नज़दीक उन मुश्रिकों के वादों का एतिबार क्योंकर हो (इसलिये कि समझौता तोड़ने में सब एक से हैं) मगर जिन लोगों से तुम ने मस्जिदे-हराम के पास वादा किया था, जब तक वह तुम से निबाहें तुम भी उन से निबाहो (और समझौता तोड़ने से परहेज़ करो) अल्लाह तआ़ला परहेज़गारों से मुहब्बत करता है[४]

....

२. इस आयत से यह बात स्पष्ट हो गयी कि वह अ़मल जिस के करने के बाद किसी जमाअ़त को इस्लामी जमाअ़त का नाम दिया जा सकता हैं यह है कि ज़बान से इस्लाम का इक़रार करे और अ़मल में नमाज़ के लिये जमाअ़त का क़ाइम करना और ज़कात की आदायगी। अगर यह दो अ़मली बातें किसी जमाअ़त में नहीं पायी जातीं हैं तो उस की गिन्ती इस्लामी जमाअ़त में नहीं हो गी (तर्जुमान) इसी अहमिय्यत की वजह से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "नमाज़ इस्लाम का सुतून है, नमाज़ को छोड़ना इस्लाम को ढाना है"। इसी प्रकार ज़कात को भी इस्लाम की रीढ़ की हड्डी कहा गया है।

मगर बड़े दुःख की बात है कि आज मुसलमान इन्हीं दोनों से ख़ास कर ग़ाफ़िल हैं। जमाअ़त के साथ नमाज़ अदा करने में वैसे भी बहुत से फ़ाइदे हैं। स्वास्थ के लिये पाँचों समय का वुज़ू और मिस्वाक एक बेहतरीन अ़मल है और जमाअ़त के साथ नमाज़ अदा करने से परस्पर मुहब्बत बढ़ती है, आपस में इत्तिफ़ाक़ पैदा होता है। इस लिये यह फ़र्ज़ है कि मुसलमान जमाअ़त के साथ नमाज़ की अदायगी में कभी सुस्ती न करें (राज़)

३. आप यहाँ ग़ौर करें कि जंग के सख़्त हालात में भी अस्ल उद्देश्य यानी तब्लीग़ व इर्शाद का दरवाज़ा किस प्रकार खुला रखा है? और किस प्रकार अक़ीदा व मज़हब में ज़ोर ज़बर्दस्ती से रोका गया है? इस आयत में यह फ़रमाया गया है कि मुश्रिकों में ऐसे लोग भी हो सकते हैं जिन के अन्दर क़ुरआन को सुनने और हक़ीक़त को मालूम करने की इच्छा होती है। अगर ऐसा कोई आदमी आ जाये तो लड़ाई की हालत में भी उसे ख़ुशी-ख़ुशी पनाह दो। जब तक रहना चाहे रहे और क़ुरआन सुने, और जब जाना चाहे तो उसे उस के ठिकाने पर हिफ़ाज़त से पहुंचा दिया जाये ताकि अपने अम्न के स्थान पर पहुंच कर स्वतन्त्रता के साथ ग़ौर-फ़िक्र करे।

इस आयत से यह भी मालूम हो गया कि दीन के मामला में तक़लीद काफ़ी नहीं है, ग़ौर-फ़िक्र और सोच-विचार भी आवश्यक है, वर्ना क़ुरआन का सुनाना और फिर ग़ौर-फ़िक्र की मुहलत देना अनिवार्य न होता। याद रहे कि क़ुरआन जिस प्रकार इस मामला में ज़ोर-ज़बर्दस्ती को जायज़ नहीं समझता इसी प्रकार तक़लीद के अक़ीदे को भी जायज़ नहीं समझता (सनाई) इस आयत से यह भी मालूम हुआ कि दारुल्-हर्ब से जो संदेष्टा (दूत, क़ासिद) या ताजिर, या

सुल्ह का पैग़ाम लाने वाला, या आपस में इस्लाह के इरादे से, या जिज़्या ले कर आये, या इमाम ने उसे अम्न दे दिया हो, तो जब तक वह मुसलमानों की ज़मीन में रहे और जब तक अपने वतन वापस न चला जाये, उसे क़त्ल करना हराम है। इमाम मुजाहिद रह० फ़रमाते हैं कि जो कोई तेरे पास दीनी बातें सुनने-समझने के लिये आये, चाहे वह कोई भी क्यों न हो वह अम्न में है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने संदेश लाने वालों को हमेशा अम्न दिया। हुदैबिय्या के मौक़े पर क़ुरैश के जितने भी दूत और एलची मदीना आये, वह सुरक्षित रहे। उर्वा बिन मस्ऊद और अ़मर बिन सुहैल वग़ैरह बराबर मदीना आते-जाते रहे, मुसलमानों के इख़्लास से इतने प्रभावित हुये कि ख़ुद ही इस्लाम के प्रचारक बन गये और उन की प्रशंसा की वजह से बहुतों को हिदायत नसीब हुयी (इब्ने कसीर)

४. मतलब यह है कि हुदैबिय्या की सुल्ह जब तक काफ़िर न तोड़ें तुम हर्गिज़ न तोड़ना। यह समझौता दस वर्ष के लिये हुआ था। ज़ीक़ादा सन ६ हिज्री तक आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस समझौता को निभाया। और जब बनू बिक्र के साथ मिल कर क़ुरैश ने भी मुसलमानों के दोस्त बनू ख़ज़ाआ पर आक्रमण कर दिया, यहाँ तक कि हरम में भी उन को क़त्ल किया तो आप ने समझौता को मन्सूख़ मान कर रमज़ान सन् ८ हिज्री में मक्का पर चढ़ाई कर दी और मक्का फ़त्ह हो गया (तल्ख़ीस)

كَيْفَ وَإِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ
إِلًّا وَلَا ذِمَّةً ۚ يُرْضُونَكُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَىٰ
قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَاسِقُونَ ۝ اشْتَرَوْا بِآيَاتِ
اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِهِ ۚ إِنَّهُمْ
سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ لَا يَرْقُبُونَ فِي
مُؤْمِنٍ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ۝
فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ
فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ ۗ وَنُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ
يَعْلَمُونَ ۝ وَإِنْ نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ مِنْ بَعْدِ
عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا أَئِمَّةَ
الْكُفْرِ ۙ إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُونَ ۝
أَلَا تُقَاتِلُونَ قَوْمًا نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا
بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُمْ بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ

८. क्यों कर उन (मुश्रिकों) का एतिबार हो (जब कि उन का तरीक़ा ही यह है कि) अगर तुम पर ग़ल्बा पायें तो न तुम्हारे रिश्ते का लिहाज़ करें और न सुल्ह-समझौते का। यह तो केवल मुंह की बातों से तुम्हें राज़ी करना चाहते हैं और दिल में इन्कारी हैं, और बहुत से उन में बदकार हैं ९. अल्लाह के हुक्मों को चन्द पैसों के लालच के लिये बेच कर अल्लाह की राह से रोकते हैं। कुछ शक नहीं कि (यह लोग) बहुत ही बुरे कार्य करते हैं १०. (कैसे ग़ज़ब की बात है कि) मुसलमान के हक़ में न तो उन को रिश्ता का लिहाज़ है, न वादा की पाबन्दी का। (बिशक) यही ज़्यादती करने वाले हैं ११. सो अगर यह (लोग भी) तौबा कर लें और नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें तो तुम्हारे दीनी भाई हैं। और इ़ल्म रखने वालों के लिये हम अहकाम विस्तार से बयान करते हैं[1]। १२. और अगर यह लोग अह्द {सुल्ह-समझौता} करने के बाद अपने वादों को तोड़ दें और तुम्हारे दीन (इस्लाम) पर ताना करें तो (सब से पहले) कुफ़्र के इमामों (और फ़साद के गुरू घन्टालों) से लड़ना (अब) उन का कोई समझौता (लिहाज़ करने योग्य) न होगा (इस लिये उस वक़्त ख़ूब मारो) ताकि अपनी शरारत से

बाज़ आयें १३. क्या तुम उन लोगों से भी नहीं जंग करो गे? जिन्हों ने अपने वादों को तोड़ा और (इस से पहले) रसूल को (मक्का से) निकालने का इरादा किया और तुम से {लड़ाई का} आरंभ भी उन्हों ने किया था

....

५. मुस्नद अहमद की एक रिवायत में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मुझे लोगों से उस समय तक जिहाद का आदेश दिया गया है जब तक वह लोग इस बात की गवाही न दें कि अल्लाह के अ़लावा कोई ड़िबादत के योग्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं, हमारे क़िब्ला को तस्लीम न करें, हम जैसी नमाज़ न पढ़ने लग जायें और हमारे हाथ का ज़ब्ह किया हुआ गोश्त न खानें लग जायें। इन कामों के करने लग जाने के बाद उन के ख़ून और उन के माल हराम हो जायें गे और वह मुसलमानों के भाई बन जायें गे। हाँ, अगर किसी जुर्म की वजह से इस्लामी क़ानून की ज़द में आजायें तो अवश्य ही उन पर भी इस्लामी क़ानून लागू होगा (बुख़ारी, सुनन) यानी अगर वह चोरी करें गे तो इस्लामी क़ानून के अनुसार उन का हाथ काटा जायेगा और अगर नाहक़ क़त्ल करें गे तो ख़ून का बदला दिया जायेगा..................... ।

أَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللَّهُ أَحَقُّ أَن تَخْشَوْهُ إِن كُنتُم
مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣﴾ قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ
وَيُخْزِهِمْ وَيَنصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُورَ
قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٤﴾ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ ۗ
وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ ﴿١٥﴾ أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ
اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوا مِن
دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَلِيجَةً ۚ
وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾ مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ
أَن يَعْمُرُوا مَسَاجِدَ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَىٰ أَنفُسِهِم
بِالْكُفْرِ ۚ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ وَفِي النَّارِ
هُمْ خَالِدُونَ ﴿١٧﴾ إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ

(तुम फिर भी) क्या उन से डरते हो? अल्लाह से डरो तो ज़्यादा मुनासिब है अगर ईमानदार हो[६] १४. उन से ख़ूब लड़ो तुम्हारे हाथों से अल्लाह उन को दन्ड दे गा और उन को ज़लील करे गा और तुम को उन पर फ़तह दे गा और मुसलमानों के सीनों को (उन के जोश से) ठन्डा करे गा १५. और उन के दिलों का जोश (जो काफ़िरों की बद अ़ह्दियों से भरा हुआ है) दूर करे गा। और जिस पर चाहे रहम करे गा। और अल्लाह तआ़ला (सब के हाल को) जानने वाला बड़ी हिक्मत वाला है १६. क्या तुम ने यह समझ रखा है कि तुम (उन्हीं आमाल पर) छोड़े जाओगे हौंलाकि अभी तो अल्लाह ने तुम से मुजाहिदों को और जिन्हों ने अल्लाह और रसूल के सिवा किसी को अपना मुख़्लिस दोस्त नहीं बनाया, मुम्ताज़ नहीं किया। (इस प्रकार कि लोग देख लें कि यह मुख़्लिस हैं और यह मुनाफ़िक़) अल्लाह को तुम्हारे सब काम मालूम हैं १७. मुश्रिकों से संभव ही नहीं[७] कि जिस हालत में अपने हक़ में कुफ़्र के इक़रारी हों अल्लाह की मस्जिदें आबाद करें (यह काम ख़ालिस

मुवह्हिद लोगों का है) उन के तो आमाल बर्बाद हैं, और जहन्नम में हमेशा रहें गे[८] १८. अल्लाह की मस्जिदों को वही लोग आबाद करते हैं जो अल्लाह पर और पिछले दिन पर ईमान रखते हैं[९] और खुद नमाज़ पढ़ते हैं और ज़कात देते हैं

....

६. यानी जो कुछ भी हो रहा है उस का आरंभ किस ने किया? किस ने मुसलमानों को उन के घरों से निकाला? और कौन फ़ौज ले कर उन पर आक्रमण करने आया? यही लोग ही यह सब करने-धरने वाले थे। अब अगर हम उन के ख़िलाफ़ हथियार उठाते हैं तो इस की ज़िम्मे-दारी भी इन ही पर है। और यह जंग केवल बचाव के लिये है, इस का उद्देश्य दुनियावी फ़ाइदा या ग़ल्बा हासिल करना हर्गिज़ नहीं है, बल्कि इस लिये है कि अत्याचार करने वाले अपने बुरे कर्मों से बाज़ रहें। यही कारण है कि मजबूरी के अ़लावा एक लम्हा के लिये भी अल्लाह ने जंग को जारी रखने की अनुमति नहीं दी है और लगातार सुल्ह-समझौतों का उल्लंघन करने और अत्याचार करने के बावजूद भी बात-चीत का दर्वाज़ा बन्द नहीं किया।

आयत न० १४ में छः बातों की तरफ़ इशारा है। (१) अल्लाह तुम्हारे हाथों से उन्हें अ़ज़ाब दिलवाये गा (२) काफ़िर ज़लील और रुस्वा हों गे (३) तुम कामियाब और विजयी हो गे (४) मोमिनों के दिलों में मुसीबतों के जितने दुःख हैं वह सब समाप्त हो जायें गे (५) उन के दिलों की कायरता निकल जाये गी (६) जिन को तौबा मिलनी है वह तौबा कर लें गे। यह समस्त वादे पूरे हो कर रहे। मुश्रिकों की हस्ती हमेशा के लिये मिट गयी। उन्हीं मुसलमानों के हाथों जो उन के ज़ुल्म व ज़्यादती का शिकार थे, उन की कुव्वत ख़त्म हो गयी। इस से बड़ी ज़िल्लत और क्या हो गी कि इतिहास में यह सारी बातें हमेशा के लिये लिख दी गयीं। और मुसलमानों के दिलों को ज़ुल्म-ज़्यादती और ज़िल्लत-रुस्वाई से ऐसी नजात मिली कि २५ वर्ष के मामूली समय में वह दुनिया के सब से इ़ज़्ज़त-दार और बेहतर इन्सान माने गये (तर्जुमान)

७. शाने-नुज़ूलः- हज़रत अ़ब्बास जब बद्र की लड़ाई में बन्दी बना कर लाये गये तो हज़रत अ़ली रज़ि० ने उन के कुफ़्र और बुत-परस्ती पर बड़ी लानत-मलामत की। इस पर उन्हों ने कहा कि तुम्हें हमारी बुराइयाँ तो नज़र आती हैं लेकिन हमारी नेकियाँ और अच्छाइयाँ नहीं दिखाई देतीं। देखो तो सही! हम लोग मस्जिदे हराम को आबाद करते हैं, काबा पर ग़िलाफ़ चढ़ाते हैं और हाजियों को पानी पिलाते हैं, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी कि अगर शिर्क की हालत में नेक काम किया जाये वह सब अकारत है, उस का शुमार नेकियों में नहीं होता (सलफ़िय्या)

८. कुरैश मक्का को काबा शरीफ़ की मुजावरी (देख-रेख) पर बड़ा नाज़ था। और यह हक़ीक़त भी है कि अक़ीदा व अ़मल से वन्चित रहने वाली क़ौमें इस प्रकार की ख़िदमत और दिखावे को बुज़ुर्गी और नेकी समझने लगती हैं। आज कल मुसलमानों का भी यह हाल है किसी बुज़ुर्ग की कुर्सी संभालना (सज्जादा नशीनी) और किसी क़ब्र का निगराँ बन जाना जो असर रखता है वह बेहतर से बेहतर मुत्तक़ी और परहेज-गार को नसीब नहीं हो सकता। एक मुत्तक़ी और परहेज़-गार मुसलमान को कोई पूछे गा भी नहीं, लेकिन इस क़िस्म के काफ़िर और फ़ाजिर मुजाविरों और मुतवल्लियों के हज़ारों आदमी पैर चूमते हैं। (तर्जुमान)

९. इस आयत से अल्लाह की मस्जिदों के उन नाम-निहाद बनावटी मुतवल्लियों को सबक़ हासिल करना चाहिये जो मस्जिदों की तवल्लियत के लिये एड़ी से चोटी तक का ज़ोर लगा देते हैं, लेकिन उन के अ़मलों का यह हाल है कि नमाज़-रोज़े के निकट तक नहीं जाते। यह आयत स्पष्ट शब्दों में बता रही है कि बेनमाज़ी और ज़कात को हड़प कर जाने वालों को हर्गिज़-हर्गिज़ इस्लामी शरीअ़त ने यह हक़ नहीं दिया है कि वह किसी मस्जिद के मुतवल्ली बनें। मस्जिदों का मुतवल्ली बनने का हक़ केवल उन मुसलमानों को हासिल है जो पांचों वक़्त की नमाज़ जमाअ़त से अदा करते हैं, ज़कात देते हैं और इस्लामी रूह उन के अन्दर ज़िन्दा है और हमेशा अल्लाह के ख़ौफ़ से काँपते रहते हैं।

وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا
مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿۱۸﴾ اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ
وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ
اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۹﴾ اَلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۭ
وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿۲۰﴾ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ
بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ
مُّقِيْمٌ ﴿۲۱﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ
اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۲۲﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا
اٰبَآءَكُمْ وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ
عَلَى الْاِيْمَانِ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ

और अल्लाह के अ़लावा किसी से नहीं डरते, पस यही लोग हिदायत पाने वालों में से हो जायें गे १९. क्या तुम ने हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे-हराम की (ज़ाहेरी) मरम्मत करने को उन (मुवाह्हिद) लोगों के बराबर समझ लिया है जो अल्लाह पर और पिछले दिन पर (कामिल) ईमान रखते हैं और अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं। यह दोनों अल्लाह के नज़दीक बराबर नहीं हो सकते। और अल्लाह ज़ालिमों को समझ नहीं देता[१०] २०. जिन लोगों ने ईमान ला कर (ज़रूरत के समय) हिजरत की और अपने जान व माल से अल्लाह की राह में लड़े, अल्लाह के हाँ उन के लिये बड़े दर्जे हैं। और यही लोग कामियाब हैं २१. अल्लाह उन को अपनी रहमत और खुश्नूदी और (रहने के लिये) बाग़ों की खुश्ख़बरी देता है वहाँ उन के लिये हमेशा की नेमतें हैं २२. हमेशा उन में रहें गे। (निःसंदेह) अल्लाह के हाँ बहुत बड़ा अज्र है। २३. मुसलमानो! (यह भी आवश्यक है कि) अगर तुम्हारे बाप और भाई भी ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र को पसन्द करें तो उन से भी मवद्दत (मेल-मिलाप) न रखो[११]। जो लोग तुम में से ऐसे लोगों से दोस्ती रखें गे वही ज़ालिम ठहरें गे।

....

१०. 'मस्जिदे-हराम की ज़ाहिरी मरम्मत..................' इस संबन्ध में यह जान लेना ज़रूरी है कि मस्जिदों का बनाना और आबाद करना तो इस लिये है कि कोई अल्लाह का बन्दा उन मस्जिदों में ख़ालिस अल्लाह की अ़िबादत करे। ख़ालिस अल्लाह की अ़िबादत करना और अ़िबादत के लिये मस्जिद बनाना, दोनों में बड़ा अन्तर है। अ़िबादत करने वाले से बढ़ कर अ़िबादत के लिये मस्जिद बनाने वाला कभी भी नहीं हो सकता, इस लिये काफ़िर और मुश्रिक तौहीद के मानने वाले आ़बिदों से बढ़ कर नहीं हो सकते। आज कल के मस्जिदों को बनाने और उन की मरम्मत करने वाले भी भली भांति इस बात को समझ लें। जो केवल मस्जिदों का निर्माण ही करते हैं और तौहीद और अ़िबादत से उन का कुछ लेना-देना नहीं होता, वह ज़ालिम हैं और अल्लाह ज़ालिमों को समझ नहीं देता (सनाई)
शाने-नुज़ूल:- हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने कहा: इस्लाम लाने के बाद अगर मैं कुछ न करूँ और हाजियों को केवल पानी आदि पिला दूँ, तो यह मेरी नजात के लिये काफ़ी है। दूसरे ने कहा कि अगर मैं केवल मस्जिदे-हराम की मरम्मत कर दूँ तो यही काफ़ी है। तीसरे ने कहा कि केवल जिहाद ही काफ़ी है। हज़रत उमर रज़ि० भी सुन रहे थे, उन्हों ने बड़ी ज़ोर की डाँट पिलाई और कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मिंबर के पास बैठ कर बकवास मत करो, आज जुम्अ़: का दिन है, नमाज़ के बाद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि ➲

वसल्लम से इस मस्अ़ले के बारे में मालूम कर लिया जाये गा। नमाज़ के बाद जब इन लोगों के ख़याल के बारे में पूछा गया तो इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (इब्ने कसीर)

११. उन से किसी प्रकार का संबन्ध न रखो और दीन के मामले में उन की नाराज़गी की कुछ भी पर्वा न करो। हाँ, दुनियावी मामलात में उन से नेक सुलूक किये जाओ, उन की ख़ातिर-दारी करो, लेकिन दीन में उन की इताअ़त और उन से दोस्ती न करो (सनाई)

अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन में एक दूसरे स्थान पर स्पष्ट कर दिया है कि "अगर माँ-बाप तुझ से शिर्क के काम कराना चाहें तो उन का कहना न मानो। हाँ, दुनियावी मामलात में उन के साथ अच्छा बर्ताव करो" (सूरः लुक़्मान-१५) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जहाँ ख़ालिक़ की नाफ़र्मानी हो रही हो वहाँ मख़्लूक़ की फ़रमाबर्दारी जायज़ नहीं"। अल्लाह की इताअ़त हर हाल में सब से मुक़द्दम है, क्यों कि उस का दर्जा सब से बड़ा है। यहाँ यह भी मालूम हुआ कि जो लोग जान-बूझ कर इमामों के क़ौल को क़ुरआन-हदीस पर तर्जीह देते हैं वह खुल्लम-खुल्ला ज़ुल्म करते हैं।

هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَ اَبْنَآؤُكُمْ
وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَ اَمْوَالُ
اقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَ
مَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ
اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝
لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ
حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ
شَيْـًٔا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ
وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ۝ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى
رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ
تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَذٰلِكَ جَزَآءُ
الْكٰفِرِيْنَ ۝ ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى

२४. तू कह दे कि अगर तुम्हारे माँ-बाप[१२] और बेटे-बेटियाँ और भाई-बन्धु और बीवियाँ और कुंबे (बिरादरी) के लोग और माल जो तुम ने कमाये हैं और तिजारत जिस के घाटे से तुम डरते हो और मकानात जिन को तुम पसन्द करते हो (यह सब कुछ) तुम को अल्लाह और उस के रसूल से और अल्लाह की राह में जिहाद करने से अधिक पसन्द हैं तो सब्र करो यहाँ तक कि अल्लाह (तुम्हारी बर्बादी के लिये) अपना हुक्म भेजे। और (जान रखो कि) अल्लाह बदकारों को भलाई की तौफ़ीक़ नहीं दिया करता[१३] २५. अल्लाह ने तुम को कई एक मौक़ों पर मदद दी है, विशेष कर हुनैन के रोज़ सहायता पहुंचाई जब तुम अपनी कस्रत { अधिक संख्या} पर मग़रूर हो गये थे तो तुम्हारी वह कस्रत {अधिकता} किसी काम न आयी और (तुम ऐसे घबराए कि) ज़मीन कुशादा होने के बावजूद तुम पर तंग हो रही थी फिर तुम पीठ फेर कर (जंग के मैदान से) भाग निकले थे[१४] २६. इस के बाद अल्लाह ने अपने रसूल पर और मोमिनों पर तसल्ली नाज़िल की (और उन की घबराहट को दूर किया) और (फ़रिश्तों की) एक फ़ौज उतारी जिन को तुम ने नहीं देखा, और जो लोग काफ़िर थे उन को अ़ज़ाब दिया। और काफ़िरों की सज़ा यही है। २७. इस के बाद भी जिस को चाहे गा अल्लाह

➲तौबा नसीब करे गा (और माफ़ कर दे गा)

....

१२. शाने-नुजूलः- हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० कहते हैं कि मेरे पिता जी बद्र की लड़ाई के दिन बुतों की तारीफ़ करने लगे। मैं ने उन को बहुत समझाया लेकिन वह न माने और बात बढ़ती चली गयी, यहाँ तक कि मुझ में और उन में जंग छिड़ गयी और मैं ने पिता जी का काम तमाम कर दिया, इस मौक़ा पर यह आयत 'ला तत्-तख़िज़ू आबा-अ-कुम.........नाज़िल हुयी (बैहक़ी)

यहाँ मुसलमानों को आगाह किया गया है कि वह किसी भी हाल में जिहाद से ग़ाफ़िल न रहें, वर्ना अल्लाह के अ़ज़ाब को सहने के लिये तय्यार रहें। और यह भी बता दिया गया है कि अल्लाह और उस के रसूल की मुहब्बत एक मोमिन बन्दे के लिये उस के माता-पिता, बेटे-बेटियाँ, माल-दौलत और समस्त संबन्धियों पर मुक़द्दम होनी ज़रूरी है। चुनान्चे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है! तुम में से कोई भी उस समय तक मोमिन न हो गा जब तक कि मैं उस के माँ-बाप, और दुनिया के सभी लोगों के मुक़ाबला में ज़्यादा महबूब न हो जाऊँ"। (बुख़ारी) एक दूसरी हदीस में जिहाद के तअ़ल्लुक़ से आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "ऐ लोगो! जब तुम खेती-बाड़ी में लग कर केवल बैलों की दुमों के पीछे लग जाओ गे और जिहाद को तर्क कर दो गे, तो अल्लाह पाक तुम पर ज़िल्लत डाल दे गा, और वह ज़िल्लत उस समय तक दूर न होगी जब तक तुम दोबारा अपने दीन की तरफ़ लौट न आओगे (अहमद, अबूदावूद)

१३. जो लोग दुनिया के धन्दों में लगे रहते हैं और उसी हालत में मर जाते हैं उन के बारे में मौलाना रूम रह० फ़रमाते हैं कि उन के काफ़िर होने में कोई संदेह नहीं है। 'दुनिया' की तारीफ़ (परिभाषा) करते हुये कहते हैं "दुनिया अल्लाह से ग़ाफ़िल हो जाने का नाम है। दौलत, औलाद और बीवी का नाम दुनिया नहीं"।

१४. 'हुनैन्' ताइफ़ और मक्का शरीफ़ के दर्मियान एक प्रसिद्ध स्थान का नाम है। यहीं पर क़बीला बनू हवाज़िन आबाद था। रमज़ान स० ८ हिज्री में मक्का को फ़तह करने के बाद अभी आप मक्का ही की देख-रेख में मश्ग़ूल थे, कि बनूहवाज़िन के हम्ले की सूचना मिली। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने भी तुरन्त १२ हज़ार मुजाहिदों का एक लश्कर तय्यार कर लिया। इस में दस हज़ार वही लोग थे जो मक्का फ़तह करने के लिये मदीना से आये थे और दो हज़ार वह लोग थे जो फ़तह मक्का पर ईमान लाये थे, अबू सुफ़्यान भी इन्हीं दो हज़ार में थे। लेकिन इन का ईमान कुछ ही समय के अंतराल में ठोस हो गया था और हुनैन की लड़ाई में जी-जान से डट कर दुश्मनों का मुक़ाबला किया। बल्कि जब फ़ौज बिखर गयी थी उस समय वह आप के साथ थे।

अभी आप का लश्कर पहुंचा ही था और सामान भी पूरी तरह न खोल पाये थे कि हुनैन वालों ने अचानक धावा बोल दिया और तीर बरसाना शुरू कर दिया। इस्लामी लश्कर घबरा कर बिखर गया। हज़रत अ़ब्बास और अबू सुफ़ियान रज़ि० आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त करते हुये आप ही के पास रहे। इसी बीच यह झूठा समाचार मश्हूर हो गया कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम शहीद कर दिये गये। लेकिन इन हालात में भी आप न घबराए और बुलन्द आवाज़ से एलान किया "अ-नन्नबिय्यु ला कज़िब, अना इब्नु अ़बदिल मुत्तलिब"। यानी मेरे पीछे न हटने की दो वजहें हैं (१) मैं नबी हूँ और अल्लाह ने मेरी सहायता का वादा किया हुआ है (२) मैं अ़ब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ, इस लिये मुनासिब नहीं कि मैं पीछे हट जाऊँ। आख़िर में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हुक्म दिया कि सब को इकट्ठा कर लिया जाये। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने आवाज़ लगा कर सब को इकट्ठा किया, फिर एक जुट हो कर पूरे लश्कर ने बनू हवाज़िन पर आक्रमण कर के शिकस्त दे दिया।

इस आयत में मुसलमानों ने शुरू में क्यों शिकस्त खायी इस के कारणों का ज़िक्र है। यानी इन्सान होने के नाते इस्लामी लश्कर को अपनी तादाद पर धोका हो गया और अल्लाह पर भरोसा ज़रा कम हो गया था। जंग के बाद क़बीला बनू हवाज़िन के लोग इस्लाम ले आये तो आप ने उन के क़ैदियों को भी आज़ाद कर दिया (सनाई)

مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ
الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هَٰذَا ۚ وَإِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً
فَسَوْفَ يُغْنِيكُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ إِن شَاءَ ۚ إِنَّ
اللَّهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٢٩﴾ قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ
اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ حَتَّىٰ يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَن يَدٍ وَهُمْ
صَاغِرُونَ ﴿٣٠﴾ وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرٌ ابْنُ اللَّهِ
وَقَالَتِ النَّصَارَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللَّهِ ۖ ذَٰلِكَ قَوْلُهُم
بِأَفْوَاهِهِمْ ۖ يُضَاهِئُونَ قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن
قَبْلُ ۚ قَاتَلَهُمُ اللَّهُ ۚ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٣١﴾ اتَّخَذُوا
أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِّن دُونِ اللَّهِ

और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है २८. मुसलमानो! मुश्रिकीन निरे गन्दे हैं पस (उन से कह दो कि वह) इस साल के बाद मस्जिदे-हराम के पास भी न आयें, और अगर तुम (मुसलमान तिजारती संबन्ध ख़त्म हो जाने की वजह से) तंगी से डरो तो (सुनो!) अल्लाह अगर चाहे गा तो अपने फ़ज़्ल से तुम को (मालदार) कर दे गा। बेशक अल्लाह बड़े अ़िल्म वाला, बड़ी हिक्मत वाला है २९. जो लोग अल्लाह पर और पिछले दिन (यानी दूसरी ज़िन्दगी) पर ईमान नहीं रखते और न अल्लाह और रसूल की हराम की हुयी चीज़ों को हराम जानते हैं और न सच्चे दीन को तस्लीम करते हैं, यानी अहले किताब। इन सब से लड़ो जब तक वह मातहत हो कर जिज़्या देना मन्ज़ूर न करें (यानी जब पराजित होकर प्रजा बन जायें तो उन से जिहाद करना छोड़ दो) ३०. और यहूदी कहते हैं कि उज़ैर अल्लाह का बेटा है और यह (जन्टिल मैन और मुहज़्ज़ब) अ़ीसाई कहते हैं कि मसीह अल्लाह का बेटा है। यह तो केवल उन के मुंह की बातें हैं (यूं मालूम होता है कि अपने से) पहले काफ़िरों की सी बातें कर रहे हैं। उन्हें अल्लाह की मार हो (नफ़्स के पीछे पड़ कर) कहाँ को उल्टे जाते हैं ३१. उन्हों ने अपने पादरियों और दर्वेशों और मसीह बिन मर्यम को अल्लाह के अ़लावा माबूद बना रखा है[१५]

....

१५. अ़दी बिन हातिम का नाम बहुत प्रसिद्ध है। यह जाहिलिय्यत के ज़माना में अ़ीसाई हो गये थे। जब इस्लाम की दावत दी गयी तो भाग कर शाम चले गये। एक दिन वह और उन की बहन दोनों ही मुसलमानों के बन्दी बन गये। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को उन की शराफ़त और सख़ावत का हाल मालूम हुआ तो उन की बहन को न केवल स्वतन्त्र कर दिया, बल्कि उन को मदद के तौर पर बहुत कुछ माल भी दिया। इन्होंने अपने भाई के पास जा कर उन्हें नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अख़्लाक़ का हाल बयान किया और इस्लाम ले आने की रग़बत दी जिस से प्रभावित हो कर शाम से मदीना चले आये। जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मुलाक़ात की तो इन की गर्दन में चांदी की सलीब डली हुयी थी और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम आयत "इत्त-ख़ज़ू अह्बा-रहुम व रुहबा-नहुम........." तिलावत फ़रमाया रहे थे। अ़दी बिन हातिम ने इस आयत को सुन कर कहा: हम ने अपने उलमा और मशाइख़ की अ़िबादत तो नहीं की है। आप ने फ़रमाया: क्या तुम ने उन के हलाल किये हुये को हलाल और हराम किये हुये को हराम नहीं जाना? बस यही उन को रब बनाना है। चुनान्चे अ़दी बिन हातिम इस्लाम ले आये (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) (मुस्नद अहमद, इब्ने जरीर)

وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا
إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ سُبْحَانَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣١﴾
يُرِيدُونَ أَنْ يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى
اللَّهُ إِلَّا أَنْ يُتِمَّ نُورَهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿٣٢﴾ هُوَ
الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ كَثِيرًا مِنَ الْأَحْبَارِ وَ
الرُّهْبَانِ لَيَأْكُلُونَ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَ
يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۗ وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ
الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٤﴾ يَوْمَ يُحْمَىٰ عَلَيْهَا
فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوَىٰ بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ
وَظُهُورُهُمْ ۖ هَٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِأَنْفُسِكُمْ فَذُوقُوا

हालाँकि (उन को) आदेश केवल यही था कि अकेले माबूद की जिस के अ़लावा कोई माबूद नहीं, अ़िबादत करें। वह उन के शिर्क से पाक है ३२. यह लोग (चिकनी-चुपड़ी बातों और दौलत के ज़ोर से) अल्लाह के नूर को (सिर्फ़) मुँह की फूकों से मिटाना चाहते हैं और अल्लाह को इस के सिवा कोई बात मन्ज़ूर नहीं कि अपने नूर को पूरा करे, अगर्चे काफ़िरों को बुरा ही क्यों न लगे। ३३. उसी ने अपने रसूल को (कामिल) हिदायत और सच्चा दीन दे कर भेजा है कि तमाम दीनों पर उसे ग़ालिब करे अगर्चे मुश्रिक लोग अप्रसन्न हों[१६] ३४. मुसलमानो! (यक़ीनन) बहुत से पादरी और दर्वेश (साधु-संत आ़लिमों के भेस में) नाहक़ लोगों का माल खाते हैं[१७] और अल्लाह की राह से भी रोकते हैं। और (हालाँकि) जो लोग सोना और चाँदी जमा करते हैं और उस को अल्लाह की राह में (उचित समय पर) ख़र्च नहीं करते तो उन को दर्दनाक अ़ज़ाब की सूचना दे दो ३५. जिस रोज़ (उन के जमा किये हुये) सोने-चाँदी को जहन्नम में गर्म कर के उन के माथे और बग़ल और कमर को दाग़ा जाये गा और कहा जायेगा कि यही तो है जो तुम ने अपने लिये जमा किया था (इस लिये आज) अपने ख़ज़ाने का मज़ा चखो[१८]

....

१६. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "ज़मीन पर कोई घर चाहे वह अ़िज़्ज़त वाला हो या ज़िल्लत वाला, बाक़ी न बचे गा जहाँ दीन इस्लाम का कलिमा न पहुंच जाये। फिर या तो अल्लाह उन को अ़िज़्ज़त देगा और वह मुसलमान हो जायेंगे, या उन को ज़िल्लत देगा और वह इस्लाम से वन्चित रहेंगे। मगर इन को इस्लाम की मातहती अवश्य ही कुबूल करनी होगी"। रिवायत करने वाले सहाबी कहते हैं कि इस हदीस को सुन कर मैं ने यह भी कहा कि सब स्थानों पर इस्लाम का ग़लबा होगा (मुस्नद अहमद बिन हंबल)

१७. इस आयत का उद्देश्य लोगों को बुरे उलमा सूफ़ियों और आ़बिदों से होशियार करना और डराना है। हज़रत सुफ़्यान बिन उयैना रह० फ़रमाते हैं कि हमारे उलमा में से वही बिगड़ते हैं जिन में यहूदिय्यत का कुछ न कुछ असर होता है। और सूफ़ियों और आ़बिदों में वह बिगड़ते हैं जिन के अन्दर कुछ न कुछ नस्रानिय्यत की बू होती हैं (वहीदी) किसी अ़रबी कवि ने भी सच कहा है "दीन को मलिया-मेट करने वाले हमेशा दो गरोह रहे हैं (१) ज़ालिम बादशाह (२) मक्कार सूफ़ी-सन्त"।

१८. सहीह मुस्लिम के अ़लावा और दूसरी हदीस की किताबों में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने

फ़रमायाः जो शख़्स अपने माल की ज़कात नहीं देता है उस का माल क़ियामत के दिन तख़्ती जैसा बना दिया जाये गा और फिर गर्म कर के उस की पेशानी, बग़ल और कमर को दाग़ा जाये गा। पचास वर्ष तक उस का यही हाल रहे गा जब तक लोगों का फ़ैसला न हो जाये गा। फिर इस के बाद उस को उस के घर (जन्नत या जहन्नम) की राह दिखा दी जाये गी।

मुस्नद अहमद की एक रिवायत के मुताबिक़ जब यह आयत नाज़िल हुयी तो सहाबा में बड़ा चर्चा हुआ। हज़रत उमर रज़ि० ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इस आयत का अर्थ पूछा तो आप ने फ़रमायाः अल्लाह ने ज़कात इस लिये फ़र्ज़ की है कि उस का माल पाक हो जाये। और मीरास का उसूल भी बताया है इस का मतलब है कि माल जमा कर सकते हैं। हज़रत उमर रज़ि० यह सुन कर मारे खुशी के तक्बीरें बुलन्द करने लगे। आप ने फ़रमायाः सुनो और ग़ौर से सुनो! तुम्हें मैं बेहतरीन ख़ज़ाना का पता देता हूँ, वह है नेक औ़रत कि जब उस का पति उस पर नज़र डाले तो वह उसे प्रसन्न कर दे और जब कोई हुक्म दे तो तुरन्त उस पर अ़मल करे। और जब पति घर में न हो तो अपने नफ़्स और उस घर-बार की सुरक्षा करे।

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि माल की ज़कात निकाल दी गयी तो अगर उसे सातों ज़मीन के नीचे दफ़न कर दिया जाये तो भी उस पर "कन्ज़" (ख़ज़ाना) का हुक्म नहीं लागू होगा और वह इस आयत के हुक्म में नहीं आये गा। और जिस माल की ज़कात नहीं निकाली गयी है अगर्चे वह ज़मीन पर फैला हुआ क्यों न हो, फिर भी वह इस आयत के हुक्म के अनुसार कन्ज़" (ख़ज़ाना) है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास, अबू हुरैरा और हज़रत जाबिर रज़ि० से भी यही रिवायत है। हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं इस आयत में वह माल मुराद है जिस की ज़कात न निकाली गयी हो, इस लिये कि वह माल जिस की ज़कात नहीं निकाली गयी है उस को गर्म कर के उस का बदन दाग़ा जाये गा (इब्ने कसीर)

مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ۝ اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ
اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ مِنْهَا اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ ذٰلِكَ
الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ
وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ
كَآفَّةً ؕ وَاعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ اِنَّمَا
النَّسِيْٓءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
يُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّيُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوْا عِدَّةَ مَا
حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ زُيِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ
اَعْمَالِهِمْ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ لَكُمُ
انْفِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَى الْاَرْضِ ؕ

३६. अल्लाह के हाँ वर्ष भर के महीनों की संख्या १२ है (यह मामला) अल्लाह की लिखित किताब में उसी दिन से है जिस दिन अल्लाह ने ज़मीन और आसमानों को पैदा किया। उन (१२) में से चार महीने हराम के हैं। यही तरीक़ा (शरीअ़त में) मुस्तहकम (चला आया) है, पस तुम इन (महीनों) में अपने नफ़्सों पर अत्याचार न किया करो और मुश्रिक, जैसे तुम सब से लड़ते हैं तुम भी उन सब से लड़ो। और जान रखो कि अल्लाह परहेज़ गारों का साथी है" ३७. महीनों का हेर-फेर कर देना कुफ़्र में तरक़्क़ी है जिस के कारण काफ़िर लोग अधिक गुमराह होते हैं, एक वर्ष एक महीने को हलाल समझते हैं और दूसरे वर्ष उसी महीने को हराम कर लेते हैं ताकि जितने महीनों को अल्लाह ने हराम किया है उन की तादाद पूरी कर के अल्लाह के

اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ

➲हराम किये हुये को हलाल बनायें। बुरे कार्य उन को भले लगते हैं। और अल्लाह के हाँ भी नियम है कि (वह) काफ़िरों की क़ौम को हिदायत नहीं किया करता[२०] ३८. ऐ मुसलमानो! तुम्हें क्या हो गया कि जब तुम से कहा जाता है कि अल्लाह की राह में निकलो तो तुम (कायर हो कर) ज़मीन से चिमट जाते हो। क्या तुम आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी हो चुके हो? (अगर तुम्हारा ऐसा ही ख़याल है तो सख़्त बर्बादी में हो क्यों कि) दुनिया की ज़िन्दगी

....

१९. मुस्नद अहमद की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अन्तिम हज्ज के खुत्बे में फ़रमायाः "ज़माना घूम कर अपने अस्ली केन्द्र पर आ गया है। वर्ष के बारह महीनों में चार महीने (१) ज़ीक़ादा (२) ज़िलहिज्जा (३) रजबुल् मुरज्जब (४) मुहर्रमुल् हराम, यह हराम (मुहतरम) महीने हैं। फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने विस्तार से बयान फरमायाः याद रखो! तुम्हारे ख़ून, तुम्हारे माल और तुम्हारी अ़िज़्ज़त, तुम्हारे दर्मियान ऐसी हैं, जैसी हुरमत और अ़िज़्ज़त तुम्हारे दिल में इस दिन की, इस माह की और इस शहर की है। याद रखो! तुम को अपने रब से अवश्य ही मिलना है और वह तुम से तुम्हारे आमाल के बारे में अवश्य ही हिसाब ले गा। सुन लो! मेरे बाद गुमराह न हो जाना कि एक दूसरे की गर्दनें मारने लग जाओ। बताओ तो सही! क्या मैं ने बात पहुंचा दी? सुनो! तुम में से जो उपस्थित हैं वह अनुपस्थित (ग़ैर-मौजूद) लोगों तक मेरा संदेश अवश्य पहुंचा दें। बहुत संभव है कि जिसे वह पहुंचाये वह पहुंचाने वाले से भी अधिक याद रखने वाला हो।" काफ़िरों ने एक गुमराही निकाली थी वह लड़ाई के महीनों में जब मुहर्रम का महीना आ जाता तो उसे हटा देते और कहते कि अब के वर्ष सफ़र का महीना पहले आ गया है और मुहर्रम का महीना इस के पश्चात् आये गा। इस प्रकार हुरमत वाले महीने को भी हलाल कर के उस में जंग लड़ते थे। इस बात को स्पष्ट करने के लिये अल्लाह तआ़ला ने यहाँ तफ़्सील बयान फ़रमाई (मुवज़्ज़िहुल कुरआन)

२०. हज़रत इब्राहीम व इसमाअ़ील के समय काल से ही (चाँद के हिसाब से) साल चला आ रहा था। अ़रब के लोगों ने दुनियावी लाभ की ख़ातिर यहूद व नसारा से सूरज के हिसाब का साल सीख लिया और हज्ज के साल को भी सूरज के साल के हिसाब से कर दिया था। यह शरीअ़त में बहुत ही बुरा फेर-बदल है। बहुत से उलमा ने इस बात से इत्तिफ़ाक़ किया है कि मुसलमानों पर क़मरी (चाँद के हिसाब से) साल व माह की पाबन्दी अनिवार्य है और आज कल के अ़जमी, रूमी, शम्सी साल की पाबन्दी नाजायज़ है (माजिदी)

नोटः- बड़े दुःख की बात है कि आज-कल इस्लाम धर्म की प्रचारक जमाअ़तें इसी तरीक़े को अपना रही हैं अपने मुलाज़िमों को वेतन भी इसी हिसाब से देती हैं, यहाँ तक कि छुट्टी भी रविवार को करती हैं। अपने केलन्डरों में सूरज के साल की तारीखें मोटे अंकों में और चाँद की अ़रबी तारीख़ों को छोटे अंकों में दिखाती हैं, यह सारे तरीक़े ग़ैर इस्लामी हैं- ख़ालिद

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿٣٨﴾ اِلَّا تَنْفِرُوْا
يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ
وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْـًٔا ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٩﴾

आख़िरत की तुलना में हेच है ३९. अगर तुम न निकले तो अल्लाह तुम को (दुश्मनों की मातहती से) दुःख की मार दे गा और तुम्हारे बदले कोई दूसरी क़ौम (अपने दीन की ताईद के लिये) पैदा कर दे गा और तुम उस का कुछ न➲

إِلَّا تَنصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ
كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ
لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا ۖ فَأَنزَلَ اللَّهُ
سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَ
جَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ ۗ وَكَلِمَةُ
اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٠﴾ انفِرُوا
خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ
تَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾ لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا
لَّاتَّبَعُوكَ وَلَٰكِن بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ۚ

बिगाड़ो गे। और अल्लाह सब कामों पर क़ुदरत रखता है ४०. अगर तुम रसूल की मदद न करो गे (तो क्या बिगड़ जाये गा) अल्लाह ने उस की (ऐसे समय में) सहायता की थी जब काफ़िरों ने उस को केवल एक आदमी के साथ निकाल दिया था, जब वह दोनों (ख़ादिम और मख़दूम मक्का से बाहर) ग़ार में थे[२१] जिस समय वह पैग़ंबर अपने साथी (अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि०) से कह रहा था कि कुछ फ़िक्र मत कर अल्लाह हमारे साथ है, पस अल्लाह ने अपनी तरफ़ से उस (साथी सिद्दीक़) पर अपनी तसल्ली नाज़िल की और एक ऐसी फ़ौज जिस को तुम ने न देखा, भेज कर रसूल की सहायता की और काफ़िरों का बोल पस्त कर दिया (वह इस्लाम और इस्लाम के पैग़ंबर के मुक़ाबला पर बिल्कुल नाकाम रहे) और अल्लाह का बोल हमेशा बाला है। और अल्लाह सब पर ग़ालिब और बड़ी हिक्मत वाला है[२२] ४१. हल्के-फुल्के और बोझल-भारी निकलो (यानी पूरे हथियार से लैस हो तो भी, और पूरे हथियार न हों तो भी) अल्लाह की राह में जान माल से जिहाद करो। यह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम को ज़िल्म है (कि यह दुनिया ऐसी जगह है जहाँ हर्कत ही में बर्कत है) ४२. अगर (उन को) लाभ जल्दी पहुंचना होता और सफ़र भी दर्मियाना (यानी दुःख़ दाई न) होता तो तुरन्त तेरे पीछे हो लेते लेकिन {यात्रा} उन पर (दूरी के कारण) कठिन हो रही है (इसी लिये जी चुरा रहे हैं)

....

२१. इस ग़ार का नाम "सौर" है और यह मक्का के दक्षिण-पूर्व में छः मील की दूरी पर स्थित है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस के अन्दर तीन दिन तक ठहरे रहे। 'दो' से मुराद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आप के साथी अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० हैं। जो हज़रत सिद्दीक़ को सहाबी नहीं मानता वह क़ुरआन का इन्कार करता है और उस पर कुफ़्र लाज़िम आता है (माजिदी) जिस पहाड़ी में यह ग़ार है उस को आज कल "ज-बले नूर" कहा जाता है। जद्दा से मक्का जाते हुये यह पहाड़ी रास्ता में बहुत साफ़ दिखाई देती है (राज़)

२२. इस आयत में हिजरत की घटना की ओर इशारा है। जब काफ़िरों ने यह फ़ैसला कर लिया कि तमाम क़बीले के लोग मिल कर एक साथ आक्रमण कर के आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को क़त्ल कर दें तो अल्लाह ने आप को मक्का छोड़ देने का आदेश दे दिया। आप हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० को लेकर सौर पहाड़ी के ग़ार में छुप गये। यह पहाड़ी मक्का से छः मील की दूरी पर स्थित हैं, इस ग़ार में आप ने तीन रातें बितायीं और फिर मदीना के लिये रवाना हो गये। आप की खोज में दुश्मन ग़ार के सामने भी पहुंचे, लेकिन अल्लाह ने आप की सुरक्षा का ऐसा इन्तिज़ाम कर दिया कि बग़ैर देखे-भाले ही वापस चले गये। यह तीनों रातें हज़रत सिद्दीक़ ने जिन हालात में बसर की हों गी, इस का अनुमान वही लगा सकता है जिसने मुहब्बते-रसूल का स्वाद चखा हो।

अल्लाह के रसूल ग़ार में हैं और दुश्मन खोज में लगे हैं। हर लम्हा इस बात का डर कि कहीं पता न चल जाये। एक मर्तबा तो ऐसा भी हुआ कि खोजियों की आवाज़ें भी कानों में आने लगीं थीं। ऐसी हालत में ज़ाहिर है कि उन की घबराहट और मलाल का क्या हाल हो गा? इस में कोई शक नहीं कि उन्हें इस बात का पूरा विश्वास था कि अल्लाह अपने रसूल का मददगार है, लेकिन इ़श्क़ और मुहब्बत का कुदरती तक़ाज़ा है कि महबूब को देख कर घबराहट हो। इस के बर-ख़िलाफ़ पैग़ंबरे-इस्लाम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दिल का हाल कुछ और ही था। आप के साथी घबरा जाते तो आप उन्हें तसल्ली देते और फ़रमाते कि ग़म न करो, अल्लाह हमारे साथ है। स्वयं हज़रत अबू बक्र रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब दुश्मन ग़ार के मुंह के निकट आ गये तो मैं ने घबरा कर कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! अगर उन में से किसी ने भी पाँव ऊँचा किया तो हमें देख लेगा। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ज़रा यह बताओ कि उन दो आदमियों के बारे में क्या ख़याल है जिन का तीसरा साथी अल्लाह है? (बुख़ारी)

'अल्लाह ने उस पर सुकून नाज़िल किया' यानी अबू बक्र सिद्दीक़ पर। इस लिये कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का दिल तो पहले ही से मुतमइन और बेख़ौफ़ था (सनाई)

وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ
يُهْلِكُونَ أَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٤٢﴾
عَفَا اللَّهُ عَنْكَ ۚ لِمَ أَذِنْتَ لَهُمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ
لَكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَتَعْلَمَ الْكَاذِبِينَ ﴿٤٣﴾ لَا
يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
بِالْمُتَّقِينَ ﴿٤٤﴾ إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ فَهُمْ
فِي رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُونَ ﴿٤٥﴾ وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ
لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً وَلَٰكِنْ كَرِهَ اللَّهُ انْبِعَاثَهُمْ
فَثَبَّطَهُمْ وَقِيلَ اقْعُدُوا مَعَ الْقَاعِدِينَ ﴿٤٦﴾ لَوْ
خَرَجُوا فِيكُمْ مَا زَادُوكُمْ إِلَّا خَبَالًا وَلَأَوْضَعُوا
خِلَالَكُمْ يَبْغُونَكُمُ الْفِتْنَةَ وَفِيكُمْ سَمَّاعُونَ

और (अगर उन से पूछो गे तो) अल्लाह के नाम की क़समें खा जायें गे कि अगर हम से हो सकता तो हम अवश्य हीं तुम्हारे साथ चलते। और अपने हक़ में तबाही लायें गे, और अल्लाह तो जानता ही है कि वह झूठे धोके-बाज़ हैं[२३] ४३. अल्लाह तुझे माफ़ करे, क्योंकि तू ने उन को अनुमति दी यहाँ तक कि सच बोलने वाले तुझे मालूम हो जाते और झूठों को भी तू जान लेता[२४] ४४. (सुनो!) जो लोग अल्लाह पर और पिछले दिन (की ज़िन्दगी) पर ईमान रखते हैं वह अपने मालों के और जानों के साथ अल्लाह की राह में जिहाद करने पर डटे रहते हैं, तुझ से अनुमति न माँगें गे। और अल्लाह परहेज़गारों को भली-भाँति जानता है[२५] ४५. जो लोग अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते और उन के दिल शक में पड़े होने की वजह से वह स्वंय भी अपने शुब्हात में हैरान हैं, ऐसे ही लोग (पीछे रहने में) तुझ से अनुमति चाहते हैं ४६. अगर उन को लड़ाई के लिये निकलने का ख़याल होता तो उस की तय्यारी भी करते, लेकिन अल्लाह को उन का हिलना भी पसंद नहीं, इस लिये उन को सुस्त कर दिया और कहा गया कि बैठने वालों में जो (महिलाएँ और कमज़ोर और बच्चे हैं) उन में मिल कर तुम भी बैठे रहो[२६] ४७. अगर यह तुम में मिल कर चलते तो भी तुम

➲को हानि ही पहुंचाते और तुम में फ़साद फैलाने की कोशिश करते और (अभी तक भी) उन के (भेजे हुये) जासूस तुम में मौजूद हैं (जो इधर-उधर की लगाते रहते हैं)

....

२३. जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने रूमियों पर आक्रमण के लिये तबूक की तय्यारी आरंभ की तो जिहाद में शरीक होने के लिये इस आयत में सभी लोगों को आ़म हुक्म दिया गया (इब्ने कसीर) 'तबूक' शाम और कुरा की वादी के दर्मियान एक स्थल का नाम है। जब रूमियों के हम्ले के इरादा की सूचना मिली तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने भी सख़्त गर्मी का मौसम होने के बावजूद तुरन्त रजब सन नौ हिज्री में जंग की तय्यारी शुरू कर दी। यह जंग सफ़र की कठिनाइयों के एतबार से सब से कठिन थी, मगर सहाबा इस की पर्वा न करते हुये तय्यारियों में जुट गये। मुनाफ़िक़ों ने लाख बहकाने की कोशिश की और तरह-तरह की कठिनाइयों का हवाला दिया, मगर उन के बहकावे में कोई भी न आया। आख़िर में जंग की नौबत ही नहीं आई और दुश्मनों ने अपनी इच्छा से जिज़्या (कर, टेक्स) देने पर रज़ामन्द हो कर सुल्ह-सफ़ाई कर ली (सनाई)

२४. यहाँ से आयत के बयान का रुख़ मुनाफ़िक़ों की तरफ़ हो गया है। उन के लिये तबूक की जंग का मामला एक अन्तिम आज़माइश साबित हुआ और उन की मक्कारियों के पर्दे चाक हुये। इसी कारण सहाबा इस सूरः को "अल् फ़ाज़िहा" (आलोचक) के नाम से पुकारते थे, क्यों कि इस ने मुनाफ़िक़ों की मक्कारियों के पर्दे उठा दिये। तबूक की जंग के लिये निकलने का आदेश उन के लिये मौत के संदेश से भी अधिक सख़्त सिद्ध हुआ। चुनान्चे हीलों-बहानों का सहारा लेना शुरू कर दिया। हर मुनाफ़िक़ एक से बढ़ कर एक बहाने ढूँढ कर लाता और कहता कि वैसे मुझे चलने में कोई हरज नहीं है मगर फ़लाँ काम बहुत अहम है, उस का करना अनिवार्य है, फ़लाँ मामला अधर में लटका हुआ है उस को निमटाना है, फ़लाँ काम उल्झा हुआ है उसे सुल्झाना है वग़ैरह। वह जानते थे कि जब हम अपनी मजबूरियाँ पेश करें गे तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अवश्य ही मंज़ूर फ़रमा लें गे, इस लिये कि आप का अख़्लाक़ ऐसा नहीं है कि किसी मजबूर को जंग के लिये मजबूर करें। आप भी जब यह देखते कि न जाने के लिये हीले-बहाने कर रहे हैं तो उन्हें छूट दे देते। उन में से कुछ मक्कारों ने तो माल पेश कर के न जाने की अनुमति चाही। इन आयतों में इनहीं बातों की ओर इशारा किया गया है (सनाई)

२५. मुहाजिर और अन्सार का कहना था कि जब अल्लाह ने जिहाद का हुक्म दिया है तो रुख़सत किस बात की? बल्कि उन का तो यह हाल था कि अगर किसी मस्लिहत की वजह से उन्हें मदीना ही में रहने को कहा जाता तो उन को बड़ी तक्लीफ़ होती थी। चुनान्चे हज़रत अ़ली रज़ि० से इसी जंग में मदीना ही में रह कर काम करने को कहा गया तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ और इस बात पर राज़ी न हुये (मवाहिब)

२६. मतलब यह हुआ कि उन मुनाफ़िक़ों का इस्लामी लश्कर के साथ न जाना अच्छा ही हुआ, इस लिये कि अगर यह साथ जाते तो इधर-उधर की लगाई-बुझाई कर के परस्पर फूट डलवाते, झूठी सूचनायें दे कर परेशान करते और दुश्मन का डर-दहशत दिलों में डालते। (माजिदी) आज भी अगर ग़ौर से देखा जाये तो बहुत से ऐसे लोग मिल जायें गे जो ज़रा सी मुसीबत आने पर इस्लाम को ताक़ पर रख देते हैं और दीनी फ़रीज़ा तर्क कर देने में कुछ ख़ौफ़ नहीं महसूस करते (राज़)

لَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾ لَقَدِ ابْتَغَوُا
الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَآءَ
الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَمِنْهُمْ

और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है ४८. पहले भी (वह कई मर्तबा बहुत बड़ा) फ़ित्ना खड़ा कर चुके हैं और तेरे सामने कई बातें उलट-पलट करते रहे यहाँ तक कि (अल्लाह➲

مَّنۡ يَّقُوۡلُ ائۡذَنۡ لِّىۡ وَلَا تَفۡتِنِّىۡ‌ؕ اَلَا فِى الۡفِتۡنَةِ سَقَطُوۡا‌ ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيۡطَةٌ ۢ بِالۡكٰفِرِيۡنَ ۝ اِنۡ تُصِبۡكَ حَسَنَةٌ تَسُؤۡهُمۡ‌ۚ وَاِنۡ تُصِبۡكَ مُصِيۡبَةٌ يَّقُوۡلُوۡا قَدۡ اَخَذۡنَاۤ اَمۡرَنَا مِنۡ قَبۡلُ وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمۡ فَرِحُوۡنَ ۝ قُلْ لَّنۡ يُّصِيۡبَـنَاۤ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَـنَا‌ۚ هُوَ مَوۡلٰٮنَا‌ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلۡيَتَوَكَّلِ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ۝ قُلۡ هَلۡ تَرَبَّصُوۡنَ بِنَاۤ اِلَّاۤ اِحۡدَى الۡحُسۡنَيَيۡنِ‌ؕ وَنَحۡنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمۡ اَنۡ يُّصِيۡبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنۡ عِنۡدِهٖۤ اَوۡ بِاَيۡدِيۡنَا‌ ‌ۖ فَتَرَبَّصُوۡۤا اِنَّا مَعَكُمۡ مُّتَرَبِّصُوۡنَ ۝ قُلۡ اَنۡفِقُوۡا طَوۡعًا اَوۡ

की सहायता का) सच्चा वादा आ पहुंचा और उन की नाखुशी ही में अल्लाह का हुक्म ज़ाहिर हो गया ४९. कुछ उन लोगों में ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि मुझे इजाज़त दीजिये और मुझ को मुसीबत में न डालिये। सुनो! वह खुद मुसीबत में हैं जिस का नाम जहन्नम है (जो उन का अन्तिम ठिकाना है) और जहन्नम कुल काफ़िरों को घेरे हुये है[२७] ५०. अगर तुझ को भलाई पहुंचती है तो इन को बुरी लगती है, और अगर तुझे कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो (अपनी अक़ल-मन्दी को ज़ाहिर करते हुये) कहते हैं कि हम तो पहले ही से अलग हो बैठे थे और खुशी-खुशी (मज्लिस से अपने घरों को) लौट जाते हैं ५१. तू कह कि जो कुछ अल्लाह ने हमारे बारे में मुक़द्दर किया है वही (हम को) पहुंचे गा (अल्लाह का हुक्म सब से ऊपर है) वह हमारा मालिक है, (और हमें उस का हुक्म है कि) ईमानदार अल्लाह ही पर भरोसा रखें[२८] ५२. तू कह कि तुम हमारे हक़ में दो भलाइयों में से एक का इन्तिज़ार करते हो और हम तुम्हारे हक़ में इस बात का इन्तिज़ार करते हैं कि अल्लाह अपने हाँ से तुम पर कोई अ़ज़ाब नाज़िल करे या हमारे हाथों से तुम्हारी बुरी गत बनवाए, सो तुम इन्तिज़ारी में लगे रहो हम भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करते हैं[२९] ५३. तू कह! तुम खुशी से ख़र्च करो

....

२७. शाने-नुज़ूलः- एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जद्द बिन क़ैस से कहाः ऐ अबू वहब! बनी अस्फ़र से लड़ाई लड़नी है और तुम्हें भी चलना है। उस ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! मेरी क़ौम तो जानती है कि मैं औ़रतों का बड़ा आशिक़ हूँ। मुझे डर है कि मैं बनी अस्फ़र की लड़कियों को देख कर बे सब्र न हो जाऊँ? इस लिये मुझे फ़ित्ना में न डालें। मैं इस कारण न जा सकूँ गा और माल से जिहाद की तय्यारी में सहायता अवश्य करूँ गा। इस के हक़ में यह आयत नाज़िल हुयी। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि इस शख़्स ने यह बहाना मुनाफ़िक़त की वजह से तलाश किया था। यह मुनाफ़िक़ क़बीला बनू सल्मा का बहुत मालदार आदमी था, और पूरे क़बीला में बहुत बड़े कंजूस और बख़ील के नाम से जाना जाता था (इब्ने कसीर)
२८. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ था कि आप ने फ़रमायाः ऐ लड़के, याद रख! अल्लाह को याद कर तो वह भी तुझे याद फ़रमाये गा, अल्लाह को याद कर! तू उस को अपने सामने पाये गा। तू जब भी कुछ माँग तो उसी से माँग, और जब भी तू मदद माँग तो उसी ही से माँग। और यक़ीन कर ले कि अगर सब लोग जमा हो कर तुझे कुछ हानि पहुंचाना चाहें तो वह कुछ भी नहीं पहुंचा सकते, मगर उतना ही जितना तेरी क़िस्मत में लिखा हुआ है। और अगर सब लोग जमा हो कर तुझे फ़ाइदा पहुंचाना चाहें तो कुछ भी नहीं पहुंचा सकते मगर उतना ही जितना तेरी क़िस्मत में लिखा हुआ है। क़लम लिख

➲कर उठा लिया गया है और काग़ज़ की सियाही सूख चुकी है (तिर्मिज़ी)
२९. यानी ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! तुम कह दो कि ऐ मुनाफ़िक़ो! क्या तुम लोग हमारे बारे में दो भलाइयों में से एक का इन्तिज़ार करते हो? यानी या तो काफ़िरों पर जीत या फिर शहादत। (मवाहिब) दो भलाइयों से मतलब शहादत अथवा विजय है। कुछ लोगों ने शहादत या माले ग़नीमत किया है, यह अर्थ सही नहीं है। (सनाई) यानी जंग की सूरत में हम दोनों तरह से राज़ी हैं, चाहे जीत हो या शहादत, इस लिये तुम जो हमारी शहादत के इन्तिज़ारी हो, तो हम तो मरने को अपने हक़ में जीने से भी अच्छा समझते हैं।

كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ؕ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا
فٰسِقِيْنَ ۝ وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ
اِلَّاۤ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ
الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ
كٰرِهُوْنَ ۝ فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُهُمْ ؕ
اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ وَيَحْلِفُوْنَ
بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ؕ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ
قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ ۝ لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ
اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ
مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِى الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا
رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَاۤ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ۝
وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۙ

या नाख़ुशी से, हर्गिज़ तुम से क़ुबूल न हो गा। क्यों कि तुम बदकारों की मन्डली (और चन्डाल चौकड़ी) हो[३०] ५४. और उन की ख़ैरात क़ुबूल न होने की वजह केवल यह है कि यह लोग अल्लाह और उस के रसूल से इन्कारी हैं और नमाज़ (जैसा पाक अ़मल जो दिल की तवज्जुह से अदा होना चाहिये यह लोग) जब उसे पढ़ते हैं तो सुस्त हो कर पढ़ते हैं[३१] और (अल्लाह की राह में) जो ख़र्च करते हैं बददिली से ख़र्च करते हैं ५५. इस लिये तू उन के माल और औलाद की (ज़्यादती) से हैरान न हो। अल्लाह को यही मन्ज़ूर है कि उन को उस माल और औलाद की वजह से दुनिया में अ़ज़ाब कर दे[३२] (यहाँ तक कि उन की मौत आ पहुंचे) और उन की रूहें कुफ़्र की हालत में निकलें ५६. और अल्लाह की क़समें भी खाते हैं कि दिल से तुम्हारे साथ हैं। हालाँकि वह तुम में से नहीं, बल्कि वह डरते हैं (कि अगर मुसलमानों के साथी न बनें गे तो तक्लीफ़ पहुंचेगी) ५७. अगर उन को कोई पनाह की जगह मिल जाती या (किसी पहाड़ में) या ग़ार या (किसी मकान में) कोई छुपने की जगह पाते तो (तुरन्त) उस की तरफ़ भाग जाते ५८. और कुछ लोग उन में से ऐसे हैं कि सदक़ों की तक़सीम (बंटवारा) करने में तुझ पर ताना करते हैं[३३], अगर उन को कुछ मिल जाता है तो प्रसन्न हो जाते हैं और अगर नहीं मिलता तो तुरन्त बिगड़ बैठते हैं (क्यों कि यह माल के दास हैं)[३४] ५९. और अगर यह लोग अल्लाह और रसूल के दिये हुये पर राज़ी रहते

....

३०. शाने-नुज़ूलः- यह आयत जद्द बिन क़ैस के बारे में नाज़िल हुयी जिस ने तबूक की जंग के मौक़े पर कहा➲

➲था कि मुझ से माल ले लें यह मुझे तस्लीम है, मगर जिहाद में जाने से माफ़ रखा जाये। अल्लाह तआ़ला ने यहाँ साफ़-साफ़ बता दिया है कि जिन के दिलों में अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़र्मानी भरी है उन की ख़ैरात कदापि कुबूल न हो गी (माजिदी) अल्लाह पाक जो दिलों के भेद को जानता है वह हलाल माल को भी तभी कुबूल करता है जब वह सच्ची निय्यत से दिया जाये।

३१. हदीस शरीफ़ में आया है कि जब बन्दा "अल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन" कहता है तो अल्लाह फ़रमाता है कि मेरे बन्दे ने मेरी तारीफ़ की। और जब अर्रहमानिर्रहीम" कहता है तो अ़ल्लाह फ़रमाता है कि मेरे बन्दे ने मेरी तारीफ़ की है। जब "इह्दि-नस्सिरा-तल्..........." कहता है तो अल्लाह कहता है कि जो मेरे बन्दे ने मुझ से तलब किया है मैं उस को दूँ गा। ग़रज़ हर-हर लफ़्ज़ पर अल्लाह उत्तर देता है।

बुज़ुर्ग उलमा ने लिखा है कि सूर: फ़ातिहा को इतनी तवज्जुह से पढ़ना चाहिये कि पढ़ने वाला गोया अल्लाह के उत्तर को सुनता है। यह अ़मल दिल की सफ़ाई के लिये बहुत ही उपयोगी है (सनाई) इस से मालूम हुआ कि जो नमाज़ इस तौर पर न पढ़ी जाये तो वह "ला यअ्तू-नस्सला-त इल्ला कुसाला" (यह लोग नमाज़ सुस्त हो कर पढ़ते हैं) के संदर्भ में हो कर निफ़ाक़ की निशानी है (राज़)

३२. एक मर्फ़ूअ़ हदीस में रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जब तुम अल्लाह के किसी बाग़ी को देखो कि वह दुनिया में उन्नति और तरक़्क़ी कर रहा है, तो समझ लो कि अल्लाह उसे बर्बाद करना चाहता है"। फिर आप ने यह आयत तिलावत फ़रमाई: "हम ऐसे लोगों को थोड़ी सी तंबीह करते हैं, फिर अगर बाज़ नहीं आये तो अचानक अ़ज़ाब में पकड़ लेते हैं" (मिशकात)

३३. शाने-नुज़ूल:- हज़रत अबू सअ़ीद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है वह कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ग़नीमत का माल तक़्सीम कर रहे थे, कि एक शख़्स मिक़दाद बिर ख़ुवैसरह तमीमी नामी ने आ कर कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! आप न्याय पूर्वक तक़्सीम कीजिये! आप ने फ़रमाया: तेरा सत्यानास हो अगर मैं ही इन्साफ़ नहीं करूँ गा तो फिर कौन करे गा? हज़रत उमर रज़ि० ने कहा कि आप मुझे अनुमति दें ताकि मैं इस की गर्दन साफ़ कर दूँ। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: इसे छोड़ दो। इस के बाद ऐसे लोग पैदा हों गे कि जिन की नमाज़ों के सामने तुम अपनी नमाज़ों को और उन के रोज़ों के सामने अपने रोज़ों को हक़ीर समझो गे, हालाँकि यह लोग इस्लाम से ऐसे बाहर हों गे जैसे कमान से तीर निकल जाता है। इस लिये इन को जहाँ कहीं भी पाना क़त्ल कर देना। आसमान के नीचे क़त्ल होने वालों में सब से बुरे मक़्तूल हों गे। हज़रत अबू सअ़ीद रज़ि० फ़रमाते हैं कि इसी मुनाफ़िक़ के बारे में यह आयत नाज़िल हुयी।

यह भविष्य वाणी हज़रत अ़ली रज़ि० की ख़िलाफ़त के समय में सत्य साबित हुयी तब आप ने ऐसे लोगों से जिहाद किया और उन्हें क़त्ल किया। इन लोगों को आज तक "ख़ारिजी" के नाम से जाना जाता है (बुख़ारी, नसई, इब्ने जरीर आदि में विस्तार से मौजूद है)

३४. शाने-नुज़ूल:- एक शख़्स "मिक़दाद" नामी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा कि इन्साफ़ से काम कीजिये!

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं अगर इन्साफ़ से काम न करूँ गा तो फिर कौन करे गा? हज़रत उमर रज़ि० ने उस को क़त्ल करना चाहा तो आप ने मना कर दिया और कहा: इस की नस्ल में आगे चल कर बड़े नमाज़ी-रोज़े दार पैदा हों गे मगर निफ़ाक़ की वजह से दीन से ऐसे निकल जायें गे जैसे तीर शिकार के जानवर को पार कर के निकल जाता है (वहीदी)

और कहते कि अल्लाह हम को काफ़ी है तो बहुत जल्द अल्लाह अपने फ़ज़्ल से और उस का➲

وَقَالُوا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ

وَرَسُوْلُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ﴿۵۹﴾ اِنَّمَا
الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا
وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ
اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۶۰﴾ وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ
يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلْ اُذُنُ
خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ
وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ
يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۶۱﴾
يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ
اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿۶۲﴾ اَلَمْ
يَعْلَمُوْٓا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ

रसूल (उस के हुक्म से) हम को दें गे, बेशक हम अल्लाह ही से आशा रखते हैं। (तो यह उन के हक़ में बेहतर होता) ६०. सदक़ात का माल केवल फ़क़ीरों और मुहताजों के लिये है और उन के लिये जो उस (के जमा करने-कराने) पर मुक़र्रर हैं और उन के लिये भी जिन के दिलों को मानूस रखना हो और गुलामों की आज़ादी में और क़र्ज़दारों के लिये, और अल्लाह की राह में और मुसाफ़िरों के लिये। यह हुक़ूक़ अल्लाह के ठहराए हुये हैं। और अल्लाह बड़े इ़ल्म वाला- बड़ी हिक्मत वाला है[३५] ६१. कुछ उन में से ऐसे भी हैं जो अल्लाह के नबी को तक्लीफ़ देते हैं और कहते हैं कि वह तो कान है (जो हर किसी की बात को सुन कर यक़ीन कर लेता है) तू कह! वह तुम्हारे हक़ में ख़ैर का कान है अल्लाह पर ईमान रखता है और मोमिनों पर यक़ीन करता है और तुम में जो ईमानदार हैं उन के लिये रहमत है[३६]। और जो लोग अल्लाह के रसूल को दुःख देते हैं उन के लिये दुःख की मार है। ६२. तुम्हारे सामने अल्लाह की क़स्में (इस ग़रज़ से) खाते हैं कि तुम्हें राज़ी करें, हालाँकि अल्लाह और रसूल राज़ी किये जाने के ज़्यादा हक़दार हैं (इस लिये) अगर ईमानदार हैं (तो अल्लाह को राज़ी करें) ६३. क्या उन को मालूम नहीं कि जो कोई अल्लाह और रसूल की मुख़ालिफ़त करता है

....

३५. यहाँ पर ज़कात को ख़र्च करने की जो तर्तीब बयान की गयी है अगर इस पर ग़ौर किया जाये तो क़ुदरती तौर पर भी तर्तीब यही है। सर्वप्रथम फ़क़ीरों और मिस्कीनों का ज़िक्र किया गया जो हक़ में सब से प्रथम हैं, फिर ज़कात के जमा करने-कराने वालों का ज़िक्र है, जिन की मौजूदगी के बग़ैर ज़कात का निज़ाम क़ाइम नहीं रह सकता, फिर उन का ज़िक्र आया जिन का दिल हाथ में लेना ईमान को शक्तिशाली बनाने और हक़ के प्रचार के लिये ज़रूरी था, फिर ग़ुलामों को आज़ाद कराने और क़र्ज़दारों को क़र्ज़ से मुक्त कराने का उद्देश्य ज़ाहिर किया, फिर फ़ी सबीलिल्लाह का मक़्सद रखा गया, जिस का अर्थ ज़्यादा तर बचाव और जिहाद के माना में आता है। इस के बाद दीन के और उम्मत के नेक कार्य सब इस में शामिल हैं। जैसे, क़ुरआन और दीनी शिक्षा की इशाअ़त, दीनी पाठ शालाओं को चलाना उन को क़ाइम रखना, तब्लीग़ करने वालों के ख़र्च पर लगाना, उम्मत की हिदायत और राहनुमाई के कामों पर ख़र्च करना, यह सब फ़ी सबीलिल्लाह के तहत आते हैं। फ़ुक़हा और मुफ़स्सिरों के एक गरोह का यही कहना है। (नैलुल् औतार) कुछ उलमा का कहना है कि मस्जिद, कुँआ, पुल वग़ैरह का निर्माण भी फ़ी सबीलिल्लाह में आता है।

"फ़तावा ज़हीरिय्या" में लिखा है कि फ़ीसबीलिल्लाह से मुराद इ़ल्म हासिल करने वाले छात्र हैं। "बदाएअ़" पुस्तक के मुताबिक़ फ़ी सबीलिल्लाह से मुराद वह तमाम काम हैं जो नेकी और ख़ैरात के लिये हों। और सब से

➲आख़िर में इब्नुस्सबील (मुसाफ़िर) को स्थान दिया गया है। जमहूर उलमा का मज़हब यह है तमाम आठों मद्द में एक साथ तक़्सीम करना ज़रूरी नहीं है। जिस वक़्त, जैसी हालत और जैसी आवश्यक्ता हो उसी के अनुसार ख़र्च करना चाहिये और यही मज़हब कुरआन व सुन्नत की रूह के मुताबिक़ है। चारों इमामों में केवल इमाम शाफ़ई़ इस के ख़िलाफ़ गये हैं। (तर्जुमानुल कुरआन-मौलाना अबुल् कलाम आज़ाद रह०)

३६. 'तुम में ईमानदारों के लिये रहमत है' कि वह अल्लाह के आदेशों का पालन कर के भर पूर हिस्सा पाते हैं। मतलब यह है कि बेशक रसूलुल्लाह की यह शान नहीं कि तुम्हारे काम और बात-चीत जो पोशीदा तौर पर किया करते हो खुद जानता हो, अल्बत्ता वह्यि के ज़रीआ़ अल्लाह के बतलाने से, या नेक मुसलमानों के ख़बर देने से उसे मालूम हो सकते हैं। ताहम जो कुछ वह सुनता है तुम्हारे हक़ में बेहतर है इसलिए तुम अधिक शरारतों पर आमादा हो कर अपने आप को तबाही में न डालो, यह भी अल्लाह की रहमत है (सनाई)

لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ الْخِزْيُ
الْعَظِيمُ ﴿٦٣﴾ يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُونَ أَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ
سُورَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ ۚ قُلِ اسْتَهْزِءُوا ۚ
إِنَّ اللَّهَ مُخْرِجٌ مَا تَحْذَرُونَ ﴿٦٤﴾ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ
لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ ۚ قُلْ أَبِاللَّهِ
وَآيٰتِهِ وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُونَ ﴿٦٥﴾ لَا
تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ ۚ إِنْ نَعْفُ
عَنْ طَائِفَةٍ مِنْكُمْ نُعَذِّبْ طَائِفَةً بِأَنَّهُمْ
كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٦٦﴾ الْمُنٰفِقُونَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ
مِنْ بَعْضٍ ۘ يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ
عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ أَيْدِيَهُمْ ۚ نَسُوا اللَّهَ
فَنَسِيَهُمْ ۚ إِنَّ الْمُنٰفِقِينَ هُمُ الْفٰسِقُونَ ﴿٦٧﴾ وَعَدَ
اللَّهُ الْمُنٰفِقِينَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ

उस के लिये (दोज़ख़) की आग तय्यार है उस में हमेशा रहे गा। यही बड़ी ज़िल्लत (और रुस्वाई) है। ६४. मुनाफ़िक़ डरते (भी) हैं कि कोई सूरत ऐसी नाज़िल न हो कि उन के दिलों के ख़यालात उन पर ज़ाहिर करे। तू कह! मख़ौल किये जाओ, जिस काम से तुम डरते हो अल्लाह उसे अवश्य ही ज़ाहिर करे गा ६५. और अगर तू उन से पूछे (कि क्या वास्तव में तुम हंसी-मज़ाक़ करते थे?) तो तुरन्त कह दें गे कि हम तो यूँ ही बातें-चीतें और मज़ाक़ कर रहे थे। तू कह! क्या अल्लाह और उस के हुक्मों और उस के रसूल से मस्ख़री करते हो? ६६. (बस अब) उज़्र बहानेबाज़ी न करो तुम ईमान लाये पीछे काफ़िर हो चुके[३७] (हो) अगर हम तुम में से किसी एक पार्टी को माफ़ करें भी तो दूसरी पार्टी को अवश्य ही अज़ाब दें गे, (जो इस फ़साद के सर्दार हैं) क्यों कि वही मुजरिम हैं ६७. (मुसलमानो!) मुनाफ़िक़ मर्द और औ़रतें एक दूसरे के हमजिन्स (और राज़दार) हैं। बुरे कामों का हुक्म करते हैं और भले कामों से मना करते हैं (निकी में ख़र्च करने से) हाथों को रोकते हैं। अल्लाह को भूल गये तो अल्लाह (भी) उन को भूल चुका है[३८]। मुनाफ़िक़ ही बदकार हैं। ६८. अल्लाह ने मुनाफ़िक़ मर्दों और औ़रतों और काफ़िरों के लिये जहन्नम की आग का वादा किया हुआ है

....

३७. शाने-नुज़ूलः- यह आयत मुनाफ़िक़ों की एक जमाअ़त के हक़ में नाज़िल हुयी जो नबी करीम सल्लल्लाहु➲

अ़लैहि वसल्लम की ग़ीबत करते थे। जब उन से कहा जाता कि ऐसी बातें न करो, ऐसा न हो कि उन को ख़बर पहुंच जाये। यह सुन कर जल्लास बिन सुवेद अथवा इब्ने हारिस वग़ैरह ने कहा कि डरने की कोई बात नहीं, हम लोग रसूलुल्लाह के पास जा कर क़समें खा कर कह दें गे कि हम लोगों ने कुछ नहीं कहा है तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मान लें गे क्यों कि वह निरे कान हैं। इस मौक़े पर एक अन्सारी सहाबी आ़मिर बिन क़ैस रज़ि० मौजूद थे, उन्हों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आ कर पूरी जानकारी दे दी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन मुनाफ़िक़ों को बुला कर पूछा तो क़स्में खा कर इन्कार कर गये और यहाँ तक कह गये कि ऐसी सूचना देने वाले पर अल्लाह की लानत हो। चूँकि अल्लाह का पाक नाम दर्मियान में ले आये थे इस लिये आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत आ़मिर अन्सारी की बात पर ध्यान न दिया और मुनाफ़िक़ों की क़स्मों पर विश्वास कर लिया। हज़रत आ़मिर को इस बात से बहुत तक्लीफ़ हुयी और दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! सच्चे को सच्चा और झूठे को झूठा साबित कर दे, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (इब्ने कसीर)

मुहम्मद बिन इस्हाक़ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब तबूक के स्थान पर पहुंचे तो मुनाफ़िक़ों की एक जमाअ़त ने आप से परे हट कर मुसलमान फ़ौजियों को डराना शुरू कर दिया और उन से कहा कि उन रूमियों से लड़ना हंसी-मज़ाक़ नहीं है, तुम सब को पराजय का मुंह देखना पड़े गा और क़ैद कर लिये जाओ गे। इन बातों को कह कर उन्हीं में से कुछ लोग आपस में कहने लगे कि ऐसा न हो हमारी इन बातों पर कोई आयत नाज़िल हो जाये। यह लोग अभी आपस में बात-चीत ही कर रहे थे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अ़म्मार बिन यासिर को आदेश दिया कि जाओ अपने लोगों को ख़बर दो वह मुनाफ़िक़ों की आग में डाले जा रहे हैं, और मुनाफ़िक़ों से भी कह दो कि वह कैसी-कैसी साज़िशें मुसलमानों के साथ कर रहे हैं? हज़रत अ़म्मार ने जब मुनाफ़िक़ों से कहा तो वह भागे हुये आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुये और इधर-उधर की बातें बनाने लगे।

एक शख़्स फ़हश बिन हिम्यर नामी उन मुनाफ़िक़ों में से बाद में सच्चा मुसलमान हो गया और यमामा की लड़ाई में शहीद हुआ। अपनी मुनाफ़िक़ाना रविश को छोड़ देने के बाद उस ने बराबर अल्लाह से दुआ़ की कि मुझ को ऐसी शहादत नसीब कर कि न कोई ग़ुस्ल दे सके और न ही कफ़न-दफ़न कर सके। यमामा की जंग में ऐसा ही हुआ। तमाम शहीदों के शव तो मिल गये मगर इन साहब के शव का पता न चल सका। अल्लाह पाक ने उन की दुआ़ क़ुबूल कर ली। दोबारा इस्लाम लाने के बाद उन का नाम बदल कर "अ़ब्दुर्रहमान" रखा गया था (इब्ने कसीर) शहादत वह दर्जा है जिस के लिये हमेशा से अल्लाह के नेक बन्दे दुआ़यें करते चले आये हैं। हज़रत उमर रज़ि० यह दुआ़ किया करते थे, "ऐ अल्लाह! दीन की राह में मुझे शहादत नसीब कर और मुझे अपने रसूल के शहर में मौत दे"। अल्लाह हर मुसलमान को यह नेक जज़्बा अ़ता फ़रमाये-- आमीन!

३८. मतलब यह कि अल्लाह ने उन को अपनी रहमत और फ़ज़्ल से वन्चित कर दिया है, या अपने फ़रिश्तों के दर्मियान उन का ज़िक्र करना छोड़ दिया है, जैसा कि सहीह हदीस में है: "बन्दा जब किसी जमाअ़त में अल्लाह को याद करता है तो अल्लाह उस से बेहतर जमाअ़त में उस को याद करता है"।(वहीदी)

अ़स्ल में मुनाफ़िक़ कई प्रकार के थे (१) बिल्कुल इस्लाम के मुन्किर थे, मगर किसी सियासत से इस्लाम को क़ुबूल कर लिया था, यही लोग मज़ाक़ उड़ाते और ताने कसते थे (२) कुछ शक्की मिज़ाज के थे, यह इस्लाम की कुछ बातों को सच समझते थे, लेकिन पहली प्रकार के मुनाफ़िक़ों के चक्कर में फंस कर उन के कहने-सुनने में आ जाते थे, लेकिन जब उन को डाँट-फ़टकार लगाई जाती तो हीले-बहाने करने लगते (हक़्क़ानी)

निफ़ाक़ एक घातक बीमारी है जिस का संबंध दिल से है, इस लिये अब भी हर मुसलमान का फ़र्ज़ है कि इस बीमारी से चौकन्ने और होशियार रहें।

جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَ لَعَنَهُمُ
اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۙ﴿۶۸﴾ كَالَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِكُمْ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّ اَكْثَرَ اَمْوَالًا وَّ
اَوْلَادًا ؕ فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ
كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ
وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ
اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ﴿۶۹﴾ اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۙ۬ وَ قَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ
وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ؕ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۷۰﴾ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ
بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ

जिस में यह हमेशा रहें गे। वही उन को बस है, और अल्लाह ने उन पर लानत की है, और उन पर हमेशगी का अ़ज़ाब है[३९] ६९. तुम भी पहले लोगों की तरह काफ़िर हो जो तुम से कहीं बढ़ कर शक्तिशाली और माल और औलाद में (भी) तुम से अधिक थे। फिर उन्हों ने अपनी क़िस्मत का लाभ उठाया, सो तुम ने अपनी क़िस्मत का लाभ उठाया जैसा तुम से पहले लोगों ने अपनी क़िस्मत से लाभ उठाया था, और तुम भी उसी प्रकार बेहूदा बातों में लगे जैसा वह लगे थे। उन लोगों के नेक अ़मल दुनिया और आख़िरत में बर्बाद हो चुके हैं, और यही लोग नुक़्सान वाले हैं ७०. क्या उन को पहले लोगों की तबाही और बर्बादी की सूचनाएँ नहीं मिलीं? यानी क़ौमे-नूह और आ़द और समूद और क़ौमे-इब्राहीम और मदयन वालों और उल्टी हुयी बस्तियों की। (किस तरह) उन के पास खुले निशान ले कर उन के रसूल आये थे, पस अल्लाह तो उन पर अत्याचार का इरादा न रखता था लेकिन वह ख़ुद ही अपनी जानों पर अत्याचार कर रहे थे ७१. मोमिन मर्द और औ़रतें एक दूसरे के रफ़ीक़ (साथी संबधी) हैं। भले कामों का हुक्म करते हैं।

....

३९. मुनाफ़िक़ों के मुतअ़ल्लिक़ आ़म लोगों का यह ख़याल है कि वह काफ़िरों ही में का एक गरोह था जो जासूसों की तरह भेस बदल कर मुसलमानों में शामिल रहता था, हालाँकि यह बिल्कुल ग़लत ख़याल है और क़ुरआन व हदीस के बिल्कुल विपरीत है। उन लोगों ने दीन इस्लाम ऐसे ही इख़्तियार किया था जिस जिस प्रकार दूसरे मुसलमानों ने। चुनान्चे इसी सूरः की आयत न० ७४ में है "इस्लाम ला कर उन्हों ने कुफ़्र की बातें कीं"। वह अपने आप को मुसलमान समझते थे। वह नमाज़-रोज़ा सब कुछ करते थे। जहाँ तक किसी दीन को एक दीन के तौर पर इख़्तियार कर लेने का तअ़ल्लुक़ है, तो कोई बात ऐसी न थी जो ज़ाहिर में उन के मुसलमान होने के ख़िलाफ़ हो। ताहम क़ुरआन ने फ़ैसला कर दिया कि वह मुसलमान नहीं हैं, क्यों कि इस्लाम उन के दिलों में नहीं उतर सका था, यक़ीन व अ़मल की रूह ने उन के दिलों में घर नहीं किया था। इख़्लास और सच्चाई ने उन के दिलों में घर नहीं किया था। वह अल्लाह का कलाम सुनते तो थे मगर इस लिये नहीं कि वह उस पर अ़मल करें। वह नमाज़ तो पढ़ते थे मगर बेदिली के साथ। उन के दिलों में दीन से अधिक दुनिया से मुहब्बत थी। दीन के अहकाम जो उन के मिज़ाज के ख़िलाफ़ न होते थे उन पर शौक़ से अ़मल करते थे। जिहाद का नाम सुन कर तो उन के चौदह तबक रोशन हो जाते थे।

यहाँ यह बात भी स्पष्ट हो गयी कि उन अहादीस का क्या अर्थ है जिन में निफ़ाक़ की ख़स्लतें बयान की➲

गयी हैं। एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "चार आदतें हैं। जिस में यह चारों पाई जायें तो समझ लो कि वह पूरा मुनाफ़िक़ है और जिस में एक पाई जाये तो उस के अन्दर निफ़ाक़ की एक ख़स्लत पायी गयी, अगर्चे वह नमाज़ पढ़ता और रोज़े भी रखता है" । (मुस्लिम) वह चार ख़स्लतें यह हैं (१) अमानत में ख़यानत करना (२) झूठ बोलना (३) वादा ख़िलाफ़ी करना (४) लड़ाई-झगड़ा में क़ाबू से बाहर हो जाना।

इस से मालूम हुआ कि निफ़ाक़ सिर्फ़ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ही के ज़माना में नहीं पाया जाता था, बल्कि आज-कल भी निफ़ाक़ की जो ख़स्लतें किसी मुसलमान के अन्दर पायी जायें गी वह भी मुनाफ़िक़ समझा जाये गा। आज मुसलमानों का सब से बड़ा वर्ग अगर अपने ईमान और अ़मल का जाइज़ा ले तो उसे मालूम हो जाये कि निफ़ाक़ की हक़ीक़त मालूम करने के लिये और किसी तरफ़ देखने की ज़रूरत नहीं है, वह अपने आप में उसे देख ले (तर्जुमानुल कुरआन- मौलाना आज़ाद रह०)

وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلٰوةَ وَ
يُؤْتُونَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيعُونَ اللّٰهَ وَرَسُولَهٗ ط
أُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ط إِنَّ اللّٰهَ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ﴿٧١﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا
وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنّٰتِ عَدْنٍ ط وَرِضْوَانٌ
مِّنَ اللّٰهِ أَكْبَرُ ط ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٧٢﴾
يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ جٰهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِينَ
وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ط وَمَأْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ط وَبِئْسَ
الْمَصِيرُ ﴿٧٣﴾ يَحْلِفُونَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوا ط وَلَقَدْ
قَالُوا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلٰمِهِمْ وَ
هَمُّوا بِمَا لَمْ يَنَالُوا ج وَمَا نَقَمُوٓا إِلَّآ أَنْ أَغْنٰىهُمُ
اللّٰهُ وَرَسُولُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ج فَإِنْ يَتُوبُوا يَكُ

और बुरे कामों से रोकते हैं[४०] और नमाज़ पढ़ते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह और रसूल की फ़र्माबर्दारी करते हैं। उन्ही पर अल्लाह रहम करे गा। बेशक अल्लाह बड़ा ग़ालिब, बड़ी हिक्मत वाला है ७२. ईमानदार मर्दों और औ़रतों से अल्लाह ने जन्नत देने का वादा किया है जिन के नीचे नहरें जारी हैं हमेशा उन में रहें गे और हमेशा की जन्नतों में उम्दा-उम्दा मकानों का वादा है। और अल्लाह की ख़ुशी बड़ी चीज़ है[४१] और यही बड़ी कामियाबी है। ७३. ऐ नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से मुक़ाबला किया कर और उन के मुक़ाबला में मज़बूत रहा कर। और उन का ठिकाना जहन्नम है। और (वह बहुत) बुरी जगह है ७४. अल्लाह के नाम की क़समें खाते हैं कि हम ने यह बात नहीं कही। हालाँकि कुफ़्र का कलिमा (बात) कह चुके हैं[४२] और इस्लाम लाने के बाद काफ़िर हो चुके हैं और ऐसे काम का इरादा कर चुके हैं जिस पर कामियाब नहीं हुये, और केवल उसी पर रन्जीदा हैं कि अल्लाह ने महज़ अपनी मेहरबानी से और रसूल ने (उस के हुक्म से) उन को ग़नी किया, फिर भी अगर तौबा कर लें तो उन के हक़ में बेहतर हो

....

४०. एक सहीह हदीस में है कि एक मुसलमान के लिये दूसरा मुसलमान मकान के समान है जिस में एक ईंट से दूसरी ईंट को सहारा मिलता है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने दायें हाथ की उंगलियों को बायें हाथ

की उंगलियों में डाल कर फ़रमाया कि इस प्रकार। एक दूसरी हदीस में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "आपस में मुसलमानों के भाई-चारे का उदाहरण जिस्म के हिस्सों की तरह है कि अगर जिस्म के एक हिस्से को दर्द हो तो सब को तक्लीफ़ पहुंचती है"।

४१. हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "आख़िरत में अल्लाह ने अपने बन्दों के लिये जन्नतें तय्यार की हैं उन में दो जन्नतें सोने की हैं और उन में सब प्रयोग की वस्तुयें भी सोने की हैं, और दो जन्नतें चाँदी की तय्यार की हैं जिन के समस्त सामान भी चाँदी ही के हैं। और अल्लाह और बन्दों के दर्मियान देखने में सिवाए उस की बड़ाई और प्रताप की चादर के कोई वस्तु रुकावट न हो गी"। (बुख़ारी)

४२. शाने-नुज़ूलः- यह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि मुनाफ़िक़ के बारे में नाज़िल हुयी, जब उस ने कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की मिसाल उस कुत्ते की तरह है कि किसी ने पाल कर ख़ूब मोटा किया हो फिर वह अपने मालिक ही को काट खाये। बिल्कुल यही उदाहरण मुहम्मद और उन के सहाबा का है कि हमारे ही शहर में आ कर हम ही पर हुकूमत गाँठ रहे हैं, अब हम मदीना जा रहे हैं और उन ज़लीलों को निकाल कर ही दम लें गे। इस ख़बीस की बकवास के बारे में जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सूचना दी गयी तो उसे बुलवाया लेकिन वह मर्दूद अपनी कही हुई बात से साफ़ मुकर गया और क़समें खा कर साफ़ बच निकला।

बुख़ारी शरीफ़ में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मदीना शरीफ़ हिजरत करने से पहले लोगों ने इसी मुनाफ़िक़ को ताज पहना कर अपना पेशवा बनाना चाहा था, मगर आप के आने से इस की कामना और इच्छा मिट्टी में मिल गयी, इसी लिये यह ख़बीस दिल में कीना रखने लगा था।

خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَإِن يَتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ
عَذَابًا أَلِيمًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ
فِي الْأَرْضِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٧٤﴾ وَمِنْهُم
مَّنْ عَاهَدَ اللَّهَ لَئِنْ آتَانَا مِن فَضْلِهِ
لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُونَنَّ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا
آتَاهُم مِّن فَضْلِهِ بَخِلُوا بِهِ وَتَوَلَّوا وَّهُم
مُّعْرِضُونَ ﴿٧٦﴾ فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِي قُلُوبِهِمْ
إِلَىٰ يَوْمِ يَلْقَوْنَهُ بِمَا أَخْلَفُوا اللَّهَ مَا
وَعَدُوهُ وَبِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ﴿٧٧﴾ أَلَمْ يَعْلَمُوا
أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ وَأَنَّ اللَّهَ
عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿٧٨﴾ الَّذِينَ يَلْمِزُونَ الْمُطَّوِّعِينَ
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فِي الصَّدَقَاتِ وَالَّذِينَ لَا يَجِدُونَ
إِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ ۙ سَخِرَ اللَّهُ

और अगर मुंह फेरे रहें गे तो अल्लाह उन्हें दुनिया और आख़िरत में दुःख की मार दे गा, न कोई उन का (ज़मीन में) वली हो गा और न कोई मददगार। ७५. और कुछ उन में से ऐसे भी हैं[४३] जिन्हों ने अल्लाह से वादा किया था कि अगर अल्लाह हम को माल देगा तो अवश्य ही ख़ैरात करें गे और नेक लोगों में से हों गे ७६. फिर जब अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उन को दिया तो वह कंजूसी कर बैठे और मुंह मोड़ कर हट गये ७७. पस (उन की बदकारी की सज़ा में) अल्लाह ने उन की मौत के दिन तक उन के दिलों में निफ़ाक़ की बुनियाद लगा दी क्यों कि अल्लाह से उन्हों ने वादा ख़िलाफ़ी की और झूठ बोलते रहे ७८. क्या उन को मालूम नहीं कि अल्लाह उन के पोशीदा राज़ और काना फूसियों को जानता है और यह कि अल्लाह तमाम ग़ैब की बातों से अवगत (आगाह) है[४४] ७९. यह वही तो हैं जो ख़ैरात देने वाले

(आसूदा) मुसलमानों पर ख़ैरात देने में कीड़े निकालते हैं और जो अपनी मेहनत से अधिक क्षमता नहीं रखते उन से भी (यह ज़ालिम) मस्ख़री करते हैं। अल्लाह उन (ख़बीसों) की बेइज़्ज़ती करे गा

....

४३. शाने-नुज़ूल:- एक शख़्स साल्बा नाम के सहाबी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से प्रार्थना की कि आप मेरे लिये माल-दौलत की दुआ़ फ़रमा दें। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: थोड़े ही माल पर शुक्र अदा करो, अधिक माल के आ जाने से नाशुक्रे हो जाओ गे। लेकिन वह बराबर कहते ही रहे तो आप ने दुआ़ फ़रमा दी। आप की दुआ़ से अल्लाह ने उन्हें इतना माल दिया कि उन की भेड़-बक्रियों से मदीना की चरागाह तंग हो गयी। हज़रत सालबा उन की देख-रेख में इतने व्यस्त हो गये कि जुम्अ़: के दिन भी आप की ख़िदमत में हाज़िरी नहीं दे पाते। ज़कात की वसूली के लिये जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तहसील-दार को भेजा तो ज़कात देने के बजाए बेअदबी से पेश आये। बाद में तौबा कर के स्वयं ही ज़कात ले कर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुये तो आप ने उन की ज़कात लेने से इन्कार फ़रमा दिया (संभवत: अभी उन के इख़्लास में कमी थी) आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बाद अबू बक्र के पास ज़कात का माल लेकर हाज़िर हुये तो उन्हों ने भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हवाले से ज़कात लेने से इन्कार कर दिया, फिर हज़रत उमर और हज़रत उस्मान ने भी ऐसे ही इन्कार कर दिया, आख़िर हज़रत उस्मान की ख़िलाफ़त के ज़माना में उन की मौत हो गयी

नोट:- हज़रत सल्बा बिन हातिब रज़ि० उन सहाबा में से हैं जो बद्र और उहुद की जंगों में शरीक रहे है। बद्री सहाबा के बारे में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जन्नत की बशारत दी है। फिर यह सहाबी कैसे मुनाफ़िक़ हो गये? हक़ीक़त यह है कि इस वाक़िआ के तअ़ल्लुक़ से जितनी भी रिवायतें आयी हैं वह सब सख़्त ज़ईफ़ बल्कि मनघड़त व बातिल हैं। इन सहाबी रज़ि० का दामन निफ़ाक़ से पाक है। विस्तार से देखें "साल्बा बिन हातिब एक मज़लूम सहाबी" नामक किताब जो जामिया सलफ़िय्या बनारस से प्रकाशित हुयी है................ख़ालिद

४४. शाने-नुज़ूल:- हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि सदक़ा का आदेश नाज़िल होने के बाद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने लोगों को इस पर रग़बत दिलायी तो एक सहाबी ने बहुत सारा माल आप के क़दमों पर ला कर डाल दिया और कहा कि आप जहाँ उचित समझें ख़र्च करें, तो मुनाफ़िक़ों ने कहा कि उस ने दिखावे के लिये ऐसा किया है। एक सहाबी अबू अ़क़ील नामी केवल आधा किलो खजूर लाये तो मुनाफ़िक़ कहने लगे कि अल्लाह ऐसे हक़ीर सदक़ा से बेनियाज़ है। ऐसा ताना देने वाले मुनाफ़िक़ों के बारे में यह आयतें नाज़िल हुयीं। (बुख़ारी, मुस्लिम)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि ख़ैरात करने वालों में हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ ने चार हज़ार दीनार और हज़रत आ़सिम बिन अ़दी ने चार मन खजूर दिया, तो मुनाफ़िक़ इन को रियाकार कहने लगे। हालाँकि अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दुआ़ फ़रमाई कि जो तू ने सदक़ा किया और जो कुछ घर में छोड़ा, अल्लाह उन सब में बर्कत दे। इस का अर्थ यह हुआ कि वह मुख़्लिस थे। चुनान्चे इन के इख़्लास की तस्दीक़ और मुनाफ़िक़ों की मज़म्मत में यह आयतें नाज़िल हुयीं (बज़्ज़ार)

مِنۡهُمۡ ؕ وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ۝ اِسۡتَغۡفِرۡ لَهُمۡ
اَوۡ لَا تَسۡتَغۡفِرۡ لَهُمۡ ؕ اِنۡ تَسۡتَغۡفِرۡ لَهُمۡ سَبۡعِيۡنَ
مَرَّةً فَلَنۡ يَّغۡفِرَ اللّٰهُ لَهُمۡ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ كَفَرُوۡا

और उन को दु:ख की मार हो गी ८०. तुम उन के हक़ में बख़्शिश (की दुआ़) मांगो या ना मांगो (बराबर है) अगर तू सत्तर दफ़ा भी उन के लिये बख़्शिश मांगे तो भी अल्लाह उन को हर्गिज़ न बख़्शे गा[४५]। यह इस लिये है कि अल्लाह

بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الْفٰسِقِیْنَ ﴿۸۰﴾ فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْۤا اَنْ یُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِی الْحَرِّ ؕ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ لَوْ كَانُوْا یَفْقَهُوْنَ ﴿۸۱﴾ فَلْیَضْحَكُوْا قَلِیْلًا وَّلْیَبْكُوْا كَثِیْرًا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿۸۲﴾ فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰی طَآىِٕفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِیَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِیَ عَدُوًّا ؕ اِنَّكُمْ رَضِیْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ

और रसूल से इन्कारी हुऐ हैं। और अल्लाह ऐसे बदकारों की जमाअ़त को हिदायत नहीं किया करता ८१. (जंग में) रसूलुल्लाह से पीछे बैठे रहने वाले अपने बैठे रहने पर प्रसन्न हैं और अल्लाह की राह में माल व जान से जिहाद करना उन को नापसन्द हुआ[४६], और कहते हैं (मियाँ) गर्मी में मत जाओ। (ऐ नबी!) तू उन से कह दे कि जहन्नम की आग सख़्त गर्म है। काश इन को समझ होती[४७] ८२. पस (उन को चाहिये कि) हंसें कम और अपनी बदआमालियों की सज़ा पर रोयें बहुत ८३. (अब जो हुआ सो हुआ) फिर अगर अल्लाह तुझे उन में से किसी गरोह तक वापस पहुंचा दे और तुझ से तेरे साथ जाने की प्रार्थना करें तो तू कह दे कि तुम हर्गिज़-हर्गिज़ मेरे साथ न निकलोगे और न मेरे साथ दुश्मन से लड़ो गे। (क्योंकि) तुम पहली मर्तबा पीछे बैठे रहने पर राज़ी हो चुके हो इस लिये तुम पीछे बैठे रहने वालों के साथ बैठे रहो

....

४५. यानी यह मुनाफ़िक़ इस लायक़ नहीं कि ऐ नबी तू इन के लिये बख़्शिश की दुआ़ माँग। एक बार नहीं अगर तू सत्तर बार भी माँगे तो अल्लाह उन को नहीं माफ़ करे गा। यहाँ "सत्तर" से मुराद मुहावरा है यानी चाहे जितना मांगो। लेकिन उलमा यह कहते हैं कि सत्तर से मुराद सत्तर ही है और अगर सत्तर से अधिक बार माँगो गे तो अल्लाह बख़्श दे गा। सही क़ौल पहला ही है कि उन के लिये तेरी दुआ़ करना और न करना सब बराबर है (इब्ने कसीर-तर्जुमा मुहम्मदी)

४६. यह हाल उन लोगों का है जा तबूक की लड़ाई में शरीक होने से आना-कानी कर रहे थे। यह जमाअ़त मुनाफ़िक़ों की थी। आप कह सकते हैं कि इन में से तीन मुसलमान भी थे। तो इस का उत्तर यह है कि यह तीन बेशक़ मुसलमान थे, लेकिन यह लोग अपने पीछे रह जाने पर प्रसन्न नहीं थे, इस लिये मुनाफ़िक़ों में और इन तीनों में फ़र्क़ है। कुछ उलमा का कहना है कि यहाँ उन मुनाफ़िक़ों की जमाअ़त मुराद है जिन्हों ने न जाने के तअ़ल्लुक़ से अनुमति माँगी थी कि मुझे मदीना ही में रहने दिया जाये ताकि ग़स्सान क़बीला वग़ैरह मदीना पर आक्रमण न कर सकें। अल्लाह ने इन आयतों को नाज़िल फ़रमा कर उन की मक्कारियों को उजागर कर दिया।

इन लोगों ने आपस में राय-मश्वरा किया कि सख़्त गर्मी है, लू के झोंके चल रहे हैं और खजूर के फल भी पक कर तय्यार हैं इस लिये जाना ठीक नहीं। अल्लाह तआ़ला ने इस के जवाब में फ़रमाया कि दोज़ख़ की गर्मी के सामने इस गर्मी की कोई हक़ीक़त नहीं है। पस अगर इन मुनाफ़िक़ों को दोज़ख़ की आँच पर यक़ीन होता तो अवश्य ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसललम के साथ जिहाद के लिये निकलते और अपना माल अल्लाह की राह में क़ुर्बान करते।

४७. हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जहन्नम में, जिस को सब से कम अ़ज़ाब दिया जाये गा वह शख़्स ऐसा हो गा जिस के पाँव में आग की दो जूतियाँ पहना दी

जाये गी जिन की गर्मी से उस का दिमाग़ उबले गा"। (अहमद) हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि दोज़ख़ की आग हज़ार वर्ष तक धौंकी गयी यहाँ तक कि वह सफ़ेद हो गयी, फिर हज़ार वर्ष तक धौंकी गयी यहाँ तक कि वह काली हो गयी, चुनान्चे अब वह अपनी रात की तरह सियाह है (तिर्मिज़ी) हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० रिवायत करते हैं कि तुम्हारी यह दुनिया की आग दोज़ख़ की आग के सत्तरवें हिस्से का एक हिस्सा है और इस को भी दोबारा सुमन्द्र में बुझाया गया है, वर्ना इस में इतनी गर्मी होती कि कोई भी इस से फ़ाइदा न उठा पाता (अहमद)

الْخٰلِفِيْنَ ۝ وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ۝ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝ لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ز وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ

८४. और उन में से किसी (मुनाफ़िक़) पर जनाज़ा की नमाज़ कभी न पढ़ना[४८] और न ही उस की क़ब्र पर खड़े होना। यह लोग अल्लाह और रसूल से इन्कारी हुये हैं[४९] और बदकारी ही में मरे हैं ८५. तू उन के मालों पर और औलाद पर ताज्जुब न कर। अल्लाह को यही मन्ज़ूर है कि उस माल और औलाद की वजह से उन को दुनिया में अ़ज़ाब दे और उन की जान भी निकले तो कुफ़्र की हालत में निकले ८६. और जब कोई सूरत इस हुक्म की उतारी जाती है कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उस के रसूल के हमराह हो कर जिहाद करो तो उन में से आसूदा {मालदार} आदमी तुझ से इजाज़त चाहने लगते हैं और कहते हैं कि हमें छोड़ दीजिये हम पीछे बैठने वालों के साथ बैठ रहें[५०] ८७. यह राज़ी हैं कि पीछे रहने वाली औ़रतों के साथ बैठ रहें और उन के दिलों पर मुह्र लगाई गयी है पस वह अब नहीं समझें गे ८८. लेकिन अल्लाह का रसूल और उस के साथ के ईमानदार माल व जान से अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं, उन्हीं के लिये भलाइयाँ हैं और वही कामियाब (और नजात पाने वाले) हैं। ८९. अल्लाह ने उन के लिये बाग़ तय्यार किये हैं जिन के नीचे नहरें जारी हैं हमेशा उन में रहें गे।

....

४८. शाने-नुज़ूलः- अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि के मरने के बाद उस के पक्के-सच्चे मोमिन बेटे अ़ब्दुल्लाह रज़ि० ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से जनाज़ा की नमाज़ पढ़ाने की दर्ख़ास्त की। आप ने भी रहम की बुनियाद पर क़ुबूल फ़रमा लिया। मगर चूँकि उस की शरारतें किसी से छुपी हुयी न थीं, ऐसे मौक़े पर हज़रत उमर रज़ि० ने आगे बढ़ कर मालूम किया कि आप ऐसे शख़्स के जनाज़ा की नमाज़ पढ़ते हैं जिस ने यह-यह शरारतें कीं और यहाँ-यहाँ फ़साद भड़काया। आप ने रहम-करम की बुनियाद पर इसे बहुत मामूली जाना लेकिन अल्लाह के नज़दीक

➲चूँकि उमर रज़ि० की यह राय वज़न रखती थी, इस पर यह आयतें नाज़िल हुयीं (सनाई/मआ़लिम)
नोट:- इस मुनाफ़िक़ के जनाज़ा के तअ़ल्लुक़ से बुख़ारी और मुस्लिम में यह रिवायत है कि जब अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि मुनाफ़िक़ का देहान्त हुआ तो उस के बेटे अ़ब्दुल्लाह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुये और कहा कि एक तो आप अपनी क़मीस दे दें ताकि में अपने पिता को उस में कफ़न दे दूँ, दूसरे यह कि आप उस की जनाज़ा की नमाज़ पढ़ा दें। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़मीस भी दे दी और जनाज़ा की नमाज़ पढ़ाने के लिये तशरीफ़ भी ले गये। हज़रत उमर रज़ि० ने आप से कहा कि अल्लाह ने तो आप को ऐसे लोगों की जनाज़ा की नमाज़ पढ़ाने से रोका है, फिर आप क्यों उस के हक़ में माफ़ी की दुआ़ माँगते हैं? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह ने मुझे इख़्तियार दिया है, यानी रोका नहीं है। अल्लाह ने फ़रमाया है कि "अगर तू ७० मर्तबा भी उन के लिये इस्तिग़फ़ार करेगा तो अल्लाह उन्हें माफ़ नहीं करे गा तो मैं ७० मर्तबा से अधिक उन के लिये माफ़ी माँगू"। चुनान्चे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उस की जनाज़ा की नमाज़ पढ़ा दी, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी और भविष्य में मुनाफ़िक़ के हक़ में दुआ़ माँगने से मना फ़रमा दिया(बुख़ारी-तफ़्सीर सूरः तौबः, मुस्लिम, सिफ़ातुल् मुनाफ़िक़ीन व-अहकामिहिम्)

बुख़ारी और मुस्लिम ही में यह भी रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि मुनाफ़िक़ की जनाज़ा की नमाज़ पढ़ने के लिये क़ब्रस्तान पहुंचे तो मालूम हुआ कि उसे दफ़नाया जा चुका है। चुनान्चे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसे क़ब्र से निकलवाया और अपने घुटनों पर रख कर उस पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने थूका और उसे अपनी क़मीस भी पहनाई (बुख़ारी-किताबुल्लिबास, कमीस पहनने का बाब+मुस्लिम-किताबु सिफ़ातिल मुनाफ़िक़ीन) ऊपर के हाशिया में विस्तार नहीं है, इस लिये यहाँ हदीस का पूरा तर्जुमा नक़ल कर दिया है...........ख़ालिद

४९. यहाँ पर मुनाफ़िक़ों के लिये जनाज़ा की नमाज़ और उन की क़ब्र पर दुआ़ के लिये खड़ा होने से मना फ़रमाया है जो इन्सान के लिये नजात का एक बहुत बड़ा वसीला था। और इस तरह उन को मग़्फ़िरत और रसूल की शफ़ाअ़त के दाइरा से ख़ारिज कर दिया (हक़्क़ानी) अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को निफ़ाक़ और बुरे अख़्लाक़ से बचाये- आमीन!
५०. यहाँ पर उन लोगों की बुराई बयान की जा रही है जो ताक़त रखने के बावजूद भी जिहाद में शरीक नहीं हुये और अपनी मौत मर गये। जिहाद का हुक्म पाने के बाद भी न जाने की अनुमति माँगी। उन की बेग़ैरती तो देखो कि यह औ़रतों जैसे हो गये, लश्कर चला गया मगर यह नामर्द औ़रतों की तरह पीछे रह गये। जंग के दिनों में बुज़दिल, डर पोक और घरों में घुसे रहने वाले और अम्न के दिनों में बढ़-चढ़ कर बातें बनाने वाले यह लोग भूंकने वाले कुत्ते और सिर्फ़ गरजने वाले बादल की तरह ढोल के पोल हैं। (मुहम्मदी)

ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾ وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ
الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى
وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا
نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ

यही बड़ी कामियाबी है ९०. और (कुछ) गंवार लोग भी उज़्र करते हुये आते हैं कि उन को रुख़सत मिले[५१] और अल्लाह और अल्लाह के रसूल से झूठ बोलने वाले बैठ रहे हैं। उन में से काफ़िरों को दुःख की मार पहुंचे गी ९१. कमज़ोरों पर गुनाह नहीं[५२] और न बीमारों पर और न उन लोगों पर गुनाह है जिन को जंग का ख़र्चा हासिल नहीं मगर शर्त यह है कि अल्लाह और रसूल की ख़ैर ख्वाही करते रहें।➲

سَبِيلٍ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٩١﴾ وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا أَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوا وَّأَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا مَا يُنفِقُونَ ﴿٩٢﴾ إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْنِيَاءُ ۚ رَضُوا بِأَن يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٩٣﴾

नेक लोगों पर कोई इल्ज़ाम नहीं होता। और अल्लाह बड़ा ही बख़्शने वाला मेहरबान है ९२. और न उन लोगों पर गुनाह है जो तेरे पास आते हैं कि तू उन को सवारी दे तो तू कहता है कि मेरे पास कोई सवारी नहीं जिस पर मैं तुम को सवार करूँ, और ख़र्च पास न होने के रंज से रोते हुये (घरों को) लौट जाते हैं[५३] ९३. गुनाह तो उन ही लोगों पर है जो ग़नी हो कर तुझ से रुख़सती की मांग करते हैं, और ख़ुश हैं कि पीछे रहने वाली महिलाओं में मिल रहे हैं, अल्लाह ने उन के दिलों पर मुह्र कर दी है इस लिये वह नहीं समझें गे

....

५१. यहाँ उन लोगों का बयान हो रहा है जो वास्तव में किसी मज्बूरी की वजह से जिहाद में शामिल नहीं हो सकते थे। मदीना के आस-पास के कुछ लोग आ-आ कर अपनी कमज़ोरी को बयान कर के अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से रुख़सत मांगते थे कि अगर आप मुनासिब जानें तो इजाज़त दे दें वर्ना जिस हाल में हैं हम लड़ने के लिये तय्यार हैं। यह लोग क़बीला बनू ग़िफ़ार से तअ़ल्लुक़ रखते थे (मुहम्मदी) यह दूसरा गिरोह अ़रब के देहातियों का था जिन की नस्लें आज भी उसी हालत में मौजूद हैं और इन को अ़रब का बद्दू कहा जाता है। इन लोगों में से अक्सर नये-नये मुसलमान हुये थे और शहरों में न रहने की वजह से इस्लामी ज़िन्दगी की तर्बियत नहीं मिल पाई थी। जब तबूक की लड़ाई में शामिल होने का आ़म एलान हुआ तो कुछ लोगों ने आ कर रुख़सत ले ली और कुछ चुपके ही से घरों से न निकले। कुछ रिवायतों से मालूम होता है कि उज़्र करने वाले क़बीला आ़मिर बिन तुफ़ैल के लोग थे। (इब्ने जरीर)

५२. शाने-नुज़ूल:- हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० रिवायत करते हैं कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मुन्शी था, वह्यि को लिखता था, जब सूरः तौबा नाज़िल हो रही थी मैं उसे नोट कर रहा था। मैं अपने कान पर क़लम लगाये हुये था और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अगली आयत के नाज़िल होने का इन्तिज़ार कर रहे थे, इतने में एक नाबीना (नेत्र हीन) सहाबी आये और कहने लगे कि अन्धे लोग क्यों कर जिहाद में शरीक हों? उसी समय यह आयत नाज़िल हुयी (मुहम्मदी)

५३. यह लोग सात आदमी थे उन लोगों ने हाज़िर हो कर सवारी के लिये दर्ख़ास्त की थी। कुछ रिवायतों में यह भी है कि यह लोग नंगे पैर थे और गर्मी की तेज़ी की वजह से पाँव में छाले पड़ रहे थे। इस लिये इन लोगों ने पहनने के लिये जूती भी माँगी, मगर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह की क़सम! मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। इस पर यह लोग रंजीदा हो कर रोते हुये लौट आये। चूँकि इन लोगों के पास सवारी और ख़र्चा वग़ैरह न था और अपने क़ौल में सच्चे थे इस लिये अल्लाह तआ़ला ने इन्हें मजबूरों में शामिल माना।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ऐसे ही लोगों के बारे में फ़रमाया था: ऐ लोगो! तुम ने मदीना में ऐसे लोग भी पीछे छोड़े हैं जो अगर्चे जिहाद में तुम्हारे साथ शरीक नहीं हैं, लेकिन फिर भी तुम्हारे साथ सवाब में बराबर के हक़दार हैं। आगे अल्लाह ने उन मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र फ़रमाया है जो ताक़त रखने के बावजूद झूठे हीले-बहाने कर के तबूक की जंग से जान चुरा कर मदीना में बैठे रहे, जो बिल्कुल हट्टे-कट्ठे और मालदार थे, लेकिन फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आ कर हीले-बहाने कर के जिहाद में शरीक नहीं हुये (मुहम्मदी)

★★★★★

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

पारः यअ् तज़िरू-न (11)

संक्षिप्त विषय सूची

यअ़-तज़िरू-न (11)

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ۭ قُلْ لَّا
تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ
وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى
عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ۝ سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ
اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ۭ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ۭ اِنَّهُمْ
رِجْسٌ ۡ وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَاۗءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝
يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ
فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ۝ اَلْاَعْرَابُ
اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ
اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰي رَسُوْلِهٖ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَمِنَ
الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ
بِكُمُ الدَّوَاۗىِٕرَ ۭ عَلَيْهِمْ دَاۗىِٕرَةُ السَّوْءِ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ

९४. जब तुम वापस उनके पास जाओगे तो तुम्हारे पास उज़्र करेंगे। (ऐ नबी!) तुम उनसे कह दो! कोई उज़्र न करो हम तुम्हारा एतिबार न करेंगे अल्लाह ने हम को तुम्हारे हाल से ख़बर बतला दी है। और अल्लाह और उसका रसूल तुम्हारे कामों को देखेंगे फिर तुम (मौत के बाद) हाज़िर व ग़ाइब जानने वाले अल्लाह के पास फेरे जाओगे पस वही तुम्हारे कामों की ख़बर देगा[९३] ९५. जब तुम उनके पास लौटोगे तो तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खायेंगे (इस मक़सद से) कि उन से दरगुज़र करो (और मलामत न करो) सो तुम भी उनसे मुंह फेर लेना। वह नापाक हैं और जो कुछ वह (दुनिया में) करते हैं उसके दंड में उनका ठिकाना जहन्नम है। ९६. तुम्हारे पास क़समें खायेंगे कि तुम उनसे राज़ी हो जाओ फिर तुम उनसे राज़ी भी हो गये तो अल्लाह बदकारों की क़ौम से राज़ी नहीं हुआ करता ९७. देहाती लोग कुफ़्र और निफ़ाक़ में बड़े ही संख़्त हैं और इसी क़ाबिल हैं कि अल्लाह ने जो अपने रसूल पर अहकाम उतारे हैं समझने से कोरे रहें। और अल्लाह बड़े इल्म वाला है बड़ी हिक्मत वाला है[९४] ९८. कुछ देहाती ऐसे हैं जो कुछ ख़र्च करते हैं उसको अपने ज़िम्मे जुर्माना समझते हैं और तुम पर मुसीबतों का इन्तज़ार करते (रहते) हैं। उन्हीं पर मुसीबतें पड़ेंगी। और अल्लाह (हर एक की) सुनता और (हर एक के हाल को) जानता है।[९५]

....

९३. यहां पर तबूक की जंग से पीछे रह जाने वाले मुनाफ़िक़ों का बयान है। इन मुनाफ़िक़ों की तादाद लगभग ८० के निकट थी। मुसलमानों को पहले ही सूचित कर दिया गया था कि जब तुम जंग से वापस आओगे तो अवश्य ही ये मुनाफ़िक़ झूठे हीले-बहाने तुम से करेंगे। इमाम ख़तीब रह० ने इन की तादाद ३० से कुछ अधिक बतायी है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि तुम उनसे कह देना कि हीले-बहाने मत बनाओ, अल्लाह

➲ तुम्हारी मक्कारियों को जानता है उसने हमें तुम्हारी चालों से पहले ही आगाह कर दिया है। दुनिया में तुम्हारा हाल सब को मालूम ही हो जायेगा और आख़िरत में तुम लोगों को भी अपना भला-बुरा पता चल जायेगा और अल्लाह तुम्हें दण्ड अवश्य देगा, उसके दण्ड से बचकर निकल नहीं सकते हो।

आगे यह फ़रमाया कि वह अपनी सफ़ाई पेश करने के लिए झूठी क़समें खायेंगे, लेकिन तुम उन की तरफ़ कुछ भी तवज्जुह न करना। वह ख़बीस और नापाक हैं, उनका ठिकाना दोज़ख़ होगा, और यह उनके कर्मों का फल होगा। और तुम उनकी क़समों पर एतिबार कर के चाहे उनसे राज़ी भी हो जाओ मगर अल्लाह तो राज़ी नहीं होने का, इसलिए कि यें लोग फ़ासिक़ हैं। एक हदीस शरीफ़ में रिवायत है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तबूक की लड़ाई से वापस आये तो मुसलमानों से फ़रमा दिया कि उनसे दूर रहो और उनसे किसी बात पर मत उलझो (मवाहिब, सलफ़िय्या)

५४. 'आराब' से मुराद ''बद्दू, देहाती'' और देहात के गंवार लोग हैं। इन लोगों का कुफ़ और निफ़ाक़ ज़्यादा सख़्त होता है, वे किताब और सुन्नत के अहकाम को नहीं जानते हैं, पढ़े-लिखे लोगों से उनका संबंध नहीं रहता, इसलिये नादानी से उनका कुफ़ व निफ़ाक़ भी अधिक सख़्त होता है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि जो शख़्स जंगलों में जाकर आबाद हो जाते हैं उनका दिल सख़्त हो जाता है, और जो शिकार के पीछे होता है वह ग़ाफ़िल हो जाता है, और जो बादशाहों के पास रहता है वह फ़ित्ने में पड़ जाता है, और जो बदमाशों से क़रीब होना चाहता है वह अल्लाह से दूर हो जाता है। (बैहक़ी, नसई, अबू दाऊद)

५५. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : ''जब मेरी उम्मत के लोग माले-ग़नीमत को तक़सीम करने के बजाए ख़ज़ानों में जमा करने लगें, अमानत को हज़्म करने लगें, ज़कात को तावान समझने लगें, अपनी बीवियों के मुरीद बन जायें, माँ की अवज्ञा करने लगें, अमानत को खा जाने लगें, अपने मित्रों से तो प्रेम और अपने पिता पर अत्याचार करने लगें, मस्जिदों का अदब करने के बजाए उसमें शोर-हंगामा करने लगें, ज़लील लोग क़ौमों के सरदार बन जायें, बदमाशों को उनकी शरारत की वजह से उनकी इज़्ज़त की जाने लगे, शराब का पीना-पिलाना आम हो जाये, रेशम का कपड़ा आम हो जाये, नाचने-गाने वालियाँ रखी जाने लगें, पिछले लोगों पर लानत-मलामत होने लगे, तो उस समय लाल आंधियों का, ज़मीन के फटने का, सूरतों के बदल जाने का इन्तिज़ार करो।'' (तिर्मिज़ी)

आज कल ऊपर गिनाई गयी बुराइयाँ खुलेआम हो रही हैं, इसका परिणाम यह है कि हर वर्ष आसमानी और ज़मीनी आफ़तों का एक न ख़त्म होने वाला सिलसिला जारी है। अल्लाह हम सबको नेक अ़मल करने की तौफ़ीक़ फ़रमाये। (राज़)

عَلِيمٌ ۝ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنفِقُ قُرُبَاتٍ عِندَ اللَّهِ وَصَلَوَاتِ
الرَّسُولِ ۚ أَلَا إِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ۚ سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ
فِي رَحْمَتِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَالسَّابِقُونَ
الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنصَارِ وَالَّذِينَ

९९. और कुछ देहाती ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर और पिछले दिन पर ईमान रखते हैं और जो कुछ ख़र्च करते हैं उस को अ़ल्लाह के हुज़ूर नज़दीकी और रसूल की दुआओं का ज़रिया जानते हैं। देखो वह उनकी ख़ैरात वास्तव में अल्लाह की नज़दीकी का सबब है। अल्लाह उनको अपनी रहमत में दाख़िल करेगा। अल्लाह (बिशक) बड़ा बख़्शने वाला ➲

اتَّبَعُوهُم بِإِحْسَانٍ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا
عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي تَحْتَهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٠٠﴾ وَمِمَّنْ
حَوْلَكُم مِّنَ الْأَعْرَابِ مُنَافِقُونَ وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ
مَرَدُوا عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ
سَنُعَذِّبُهُم مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ﴿١٠١﴾
وَآخَرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا
وَآخَرَ سَيِّئًا عَسَى اللَّهُ أَن يَتُوبَ عَلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ

मेहरबान है १००. सर्वप्रथम सबक़त (पहल) करने वाले यानी मुहाजिरीन और अन्सार और जो उनकी नेक रविश के ताबेअ़ हुए (आज से क़ियामत तक) अल्लाह उन से राज़ी है और वे अल्लाह से राज़ी[५६] और अल्लाह ने उनके लिए जन्नतें तैयार की हैं जिनके तले नहरें जारी होंगी उनमें हमेशा-हमेशा रहेंगे (कभी न निकलेंगे) यही तो बड़ी कामयाबी है। १०१. (और सुनो! मुसलमानो) तुम्हारे आसपास (यानी मदीना के आसपास में) रहने वालों में भी मुनाफ़िक़ हैं। और स्वयं मदीना वालों में भी कुछ लोग निफ़ाक़ पर अड़े हुए हैं (ऐ हमारे रसूल) तू उनको नहीं जानता हम उनको जानते हैं। हम उनको कई मर्तबा अ़ज़ाब करेंगे फिर (मौत के बाद तो) बड़े अज़ाब में फेरे जायेंगे १०२. और (इन के अ़लावा) कुछ और लोग भी हैं जिन्होंने अपनी ग़लती का (शर्मिन्दगी के साथ) इक़रार किया है, उन्होंने कई नेक काम किये हैं और कुछ बुरे भी। (उनकी अच्छी नियत की वजह से) अल्लाह जल्द उन पर रहम करेगा।

....

५६. इस स्थान पर यह पहलू ग़ौर करने के क़ाबिल है कि यह बात ख़ुसूसी तौर पर क्यों **कहीं गई है** कि **'वे भी अल्लाह से** रोज़ी हुए''। तो यह इसलिये कही गयी कि उनके ईमान और इख़्लास का **असली मुक़ाम** बग़ैर **इसके ज़ाहिर** ही नहीं हो सकता था। क्योंकि जिन लोगों के अन्दर इश्क़ व मुहब्बत **की हालत पैदा** हो जाती **है वह** उस राह की मुसीबतों में लज़्ज़त हासिल करते हैं। अगर इस राह में काँटों **पर लोटना पड़े** तो **काँटों की चुभन** में उन्हें ऐसा आराम मिलेगा जो किसी को फूलों की सेज पर लेट कर नहीं **मिल सकता।** मुहाजिरीन **और** अन्सार की ईमानी तड़प का यही हाल था। उन पर दिन रात की मुसीबतों और **कुर्बानियों** के पूरे २३ **वर्ष** गुज़र गये, लेकिन इस पूरी मुद्दत में कहीं से भी कड़वाहट उन के चेहरों पर नज़र न **आयी।** जब भी **जान देने** का समय आया तो इस तरह की हंसी-खुशी से गर्दनें कटवा दीं गोया जीवन की **सबसे** बड़ी **ख़ुशी** ज़िन्दगी में नहीं बल्कि मौत में थी। इस आराम के साथ अपने नर्म बिस्तरों पर भी **जान नहीं** दी **जिस प्रकार** उन्होंने लड़ाई की रेतीली ज़मीन पर लोट-लोट कर दी।

उहुद **की** जंग में हज़रत सआद बिन रबीआ़ को लोगों ने देखा कि ज़ख़्मों से चूर दम तोड़ रहे हैं। पूछा **गया कि** कोई **वसीयत** करनी हो तो फ़रमा दीजिए। उन्होंने कहा कि अल्लाह के रसूल को मेरा सलाम पहुंचा देना **और क़ौम से** कह देना कि उनकी राह में जानें कुर्बान करते रहें। अ़म्मार बिन ज़ियाद रज़ि० ज़ख़्मों से चूर सांसें तोड़ रहे थे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उनके पास पहुंच गये और फ़रमाया: कोई ख़्वाहिश हो तो कह दो। हज़रत अ़म्मार ने अपना ज़ख़्मी बदन घसीट कर अपना सर नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के **पैरों** पर रख दिया और कहा कि बस यही एक ख़्वाहिश थी और यह पूरी हो गयी। औरतों का भी यही हाल था। उन्हें अपने शौहर, भाई, बाप के शहीद होने की ख़बर पहुंचाई जाती तो वे कहतीं थीं,

➲इन्हें तो छोड़ो, यह बतलाओ कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का क्या हाल है? और जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मुबारक चेहरा देख लेतीं तो बेतहाशा खुश होकर पुकार उठतीं "कुल्लु मुसी-बतिन् बा-द-क ज-लल" (आप सलामत हैं तो सारी मुसीबतें हमारे लिए घी और चीनी हैं)। और जो मुहाजिर और अन्सार की रविश पर चले उनको भी हिस्सा मिला "व'रज़ू अन्हु" (अल्लाह उनसे राज़ी वे अल्लाह से खुश) अल्लाह और उसके दीन की राह में कुछ भी पेश आया उन्होंने उसे झेला ही नहीं, बल्कि अपनी ईमानी कुव्वत से चेहरे पर रन्ज तक ज़ाहिर न होने दिया और इसी वजह से उनका मर्तबा भी आजकल के सभी लोगों से बुलन्द है (तर्जुमान-मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रह०)

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ
وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ
لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ
هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ
وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝ وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى
اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ وَسَتُرَدُّوْنَ
اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ۝ وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا
يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ
حَكِيْمٌ ۝ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا
وَّتَفْرِيْقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَآ
اِلَّا الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝ لَا تَقُمْ

बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला-रहम करने वाला है।[५७] १०३. तू उनके मालों से सदक़ा कुबूल किया कर और उनके द्वारा उनको पाक साफ़ किया कर और उनके लिये दुआ़ किया कर (क्योंकि) तेरी दुआ़ उनके लिए सुकून का सबब है। और अल्लाह (स्वयं सब की) सुनता और जानता है १०४. क्या उनको मालूम नहीं कि अल्लाह अपने बन्दों की तौबा कुबूल करता है और सदक़ात लेता है (यानी कुबूल करता है) और यह कि अल्लाह ही बड़ा तौबा कुबूल करने वाला बड़ा रहम करने वाला है। १०५. और कहा कि तुम अ़मल किए जाओ फिर अल्लाह और उसका रसूल और तमाम मुसलमान तुम्हारे कामों को देखेंगे। और इसके बाद तुम हाज़िर और पोशीदा चीज़ों को जानने वाले की तरफ़ फेरे जाओगे। पस वही तुमको तुम्हारे आमाल से आगाह करेगा। १०६. और (इनके अ़लावा) और चन्द (मुख़्लिस) आदमी भी हैं जिनका मामला हुक्मे-इलाही की इन्तिज़ारी तक मुल्तवी किया गया है चाहे वह उनको अ़ज़ाब करे या उन पर रहम करे। और अल्लाह बड़े इल्म वाला और बड़ी हिकमत वाला है। १०७. और जिन्होंने दुःख देने को और अल्लाह से कुफ़्र करने को और मुसलमानों के दर्मियान फूट डालने की ग़रज़ से और उस शख़्स को पनाह देने की नीयत से जो अल्लाह और उसके रसूल से पहले कई मर्तबा लड़ चुका है (उन ज़ालिमों ने एक) मस्जिद बनायी है[५८], क़सम उठायेंगे कि हमें केवल भलाई का ख़्याल है। और अल्लाह स्वयं गवाही देता है कि वे झूठे हैं।

....

५७. शाने-नुज़ूल:- एक रिवायत में है कि जब अबू लुबाबा रज़ि० वग़ैरह ने सुना कि पीछे रह जाने वालों के हक़ में➲

⊃ऐसी-ऐसी आयतें नाज़िल हुई हैं तो अपने आपको मस्जिद के खंबे से बांध दिया और क़सम खाई कि कोई हम को न खोले और अगर हमारी तौबा कुबूल हो जाये तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपने मुबारक हाथों से खोलें, वर्ना मौत बेहतर है। चुनांचे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ही उनको खोला और यह आयत नाज़िल हुई। आयत का शाने नुज़ूल अगरचे ख़ास है मगर हुक्म आम है। कुरआन पाक में यह आयत मोमिनों के लिए उम्मीद की किरण है। (तबरानी)

५८. शाने नुज़ूल : मुनाफ़िक़ों ने मुसलमानों के दर्मियान फूट डालने के लिए यह तरीक़ा सोचा कि मदीना से अलग गांव में एक मस्जिद बनायी जाए और बहाना यह बनाया जाये कि लोगों को मदीना जाने में कठिनाई होती है इसलिये इसी मस्जिद में नमाज़ पढ़ लिया करेंगे। मस्जिद बन जाने के बाद आप से उस का शुभारंभ करने को कहा। दरअसल मस्जिद बनाने की राय देने वाला एक नसरानी अबू आ़मिर नाम का शख़्स था। वह इस्लाम की तरक़्क़ी को देखकर अन्दर ही अन्दर जलता था। वह मस्जिद क्या थी एक फ़साद का घर था। लेकिन वह इस बात से ग़ाफ़िल था कि अल्लाह दिलों के भेद को जानने वाला है और वह रसूल को इस बात से आगाह कर देगा। ऐसे ही शरीरों के बारे में यह आयत नाज़िल हुई। उस मस्जिद में नमाज़ पढ़ना तो दूर, उसे गिरा कर वहां कूड़ा डालने का हुक्म दे दिया गया। (सनाई/मआ़लिम)

इस आयत में मस्जिदे ज़िरार बनाने के तीन कारण बताये गये हैं। (१) इससे कुफ़्र के काम करने का मौक़ा मिलेगा। कुबा की मस्जिद में जाने की ज़रूरत नहीं रह जाएगी और इस तरह नमाज़ छोड़ने का मौक़ा मिलेगा। (२) कुबा के मुसलमानों को तकलीफ़ पहुंचायेंगे कि कुबा की मस्जिद ही की वजह से कुबा वालों को एक ख़ास इज़्ज़त हासिल थी (मस्जिदे-ज़िरार इसलिए क़रीब ही में बनाई गयी थी) (३) मुसलमानों में फूट डालेंगे। अभी तक एक ही मस्जिद में एक ही जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ते थे, अब दो जमाअ़तें हो जायेंगी और मुसलमान परस्पर बंट जायेंगे। जब दो जमाअ़तें हो गयीं तो गोया बाजमाअ़त नमाज़ का जो उद्देश्य था वह समाप्त हो गया। इससे मालूम हुआ कि अगर एक मस्जिद मौजूद है और सारे नमाज़ी उस में समा सकते हैं तो अलग मस्जिद का निर्माण नाजायज़ है। क्योंकि ऐसा करना मुसलमानों में फूट डालना और उनकी एकता को तोड़ना है यही कारण है कि उलमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि हर आबादी में एक ही स्थान पर जुमा की नमाज़ अदा करनी चाहिए। अगर वहां इतनी जगह न हो तब आवश्यक्तानुसार दूसरी मस्जिद में जुमा की नमाज़ क़ायम की जाये। यह नहीं कि बिला ज़रूरत बहुत सी मस्जिदों में जुमा की नमाज़ क़ायम कर दी जाये।

बड़े दुख की बात है कि मुसलमानों ने कुरआन के इस स्पष्ट आदेश को नज़र अंदाज़ कर दिया और केवल दिखावे और रियाकारी के लिये, या किसी मस्जिद के मुतवल्ली से इख़्तिलाफ़ की बुनियाद पर बहुत सी मस्जिदें अलग अलग बना डालीं और रोज़-बरोज़ इन में इज़ाफ़ा हो रहा है। अगर इन मस्जिदों के बारे में तहक़ीक़ की जाये तो यह ठीक-ठीक मस्जिदे-ज़िरार साबित होंगी मगर कोई नहीं जो इस फ़साद से मुसलमानों को रोके (तर्जुमान) आज के हालात को सामने रखते हुए मस्जिद को बनाने से पहले वहां की आबादी को भी देख लेना अनिवार्य है, क्योंकि सारी मस्जिदें नमाज़ी न होने की वजह से या तो उजाड़ पड़ी हैं या उन्हें गिरा दिया गया है।

فِيهِ أَبَدًا ۚ لَمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَىٰ مِنْ أَوَّلِ
يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ ۚ فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ
يَتَطَهَّرُوا ۚ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِينَ ۝ أَفَمَنْ أَسَّسَ

१०८. तुम उस मस्जिद (मस्जिदे ज़िरार) में कभी भी खड़ा न होना। जिस मस्जिद की बुनियाद पहले दिन से ख़ालिस निय्यत पर उठायी गयी है उस में तेरा खड़ा होना लायक़ है। (क्योंकि) उस में ऐसे (निक दिल) लोग हैं जो पाकी⊃

بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ
اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ
فِىْ نَارِ جَهَنَّمَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِىْ بَنَوْا رِيْبَةً فِىْ قُلُوْبِهِمْ اِلَّآ
اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ اِنَّ اللّٰهَ
اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ
لَهُمُ الْجَنَّةَ ؕ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَ
يُقْتَلُوْنَ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِى التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ
وَالْقُرْاٰنِ ؕ وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا
بِبَيْعِكُمُ الَّذِىْ بَايَعْتُمْ بِهٖ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ

चाहते हैं। और अल्लाह पाकी चाहने वालों से मुहब्बत करता है। १०९. क्या (यह बात पोशीदा है कि) जिस ने अपने मकान की बुनियाद तक़वा और अल्लाह की खुशनूदी पर रखी है अच्छा है, या जिसने गिरने वाले किनारे पर अपनी बुनियाद रखी, पस (नतीजा यह हुआ कि) उस को भी जहन्नम में ले गिरे वह अच्छा है? (कुछ संदेह नहीं कि पहला शख़्स ही अच्छा है) और अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं करता[५९] ११०. जो बुनियाद उन्होंने उठाई है उस (के गिर जाने) का रन्ज उनके दिलों में हमेशा तक रहेगा मगर उनके दिलों को टुकड़े टुकड़े कर दिया जाये। और अल्लाह बड़े इल्म वाला बड़ी हिक्मत वाला है। १११. अल्लाह ने मुसलमानो की जान और माल (सब के सब) जन्नत के बदले ख़रीदे हुए हैं[६०] (इसीलिए तो मोमिन खुले जी से) अल्लाह की राह में (काफ़िरों से) लड़ते हैं तो (कई एक को) मार गिराते हैं और खुद भी मारे जाते हैं (ऐसे नेक कामों पर इनाम देने का) उस ने तौरात और इन्जील और कुरआन में वायदा किया हुआ है। और अल्लाह से बढ़कर वायदा पूरा करने वाला कौन है? पर तुम (ऐ मुसलमानो!) अपने सौदे से जो तुम ने अल्लाह के साथ किया है खुशी मनाओ। और यही बड़ी कामयाबी है।

....

५९. पहली मिसाल कुबा वालों की है और दूसरी मस्जिदे-ज़िरार बनाने वाले मुनाफ़िक़ों की। यह कलाम और ये मिसालें इतने ऊँचे पैमाने की हैं कि इमाम राज़ी रह० को कहना पड़ा कि मुनाफ़िक़ों के हालात के बारे में इस से बढ़कर कोई मिसाल नहीं। खुलासा यह है कि दो मकान हैं। उनमें एक को बनाने वाले ने तक़वा और दूसरे ने निफ़ाक़ की नीयत से बनाया। तो पहला मकान तो बाक़ी रखने और दूसरा गिरा देने के क़ाबिल है। इमाम क़तादा रह० फ़रमाते हैं कि ज़िरार वाली मस्जिद मुकम्मल भी न होने पाई थी कि जहन्नम में जा पड़ी।

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में देखा कि उस मस्जिद से धुंआ उठता था (हाकिम, इब्ने जरीर) जब मुनाफ़िक़ों की मुराद पूरी न हुई और अल्लाह ने भी उनकी पोल खोल दी तो वे बड़े ख़ौफ़नाक हो गये। अबू आमिर जिस की शरारत से यह मस्जिद बनी थी वह तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बददुआ देने के लिए जंगल चला गया और वहीं मर गया और उस की मस्जिद भी गयी। (मवाहिब)

९०. इमाम बसरी रह० ने फ़रमाया : सच्चे दिल से सुन लो! अल्लाह पाक की क़सम, यह सौदा तो सरासर नफ़ा और लाभ का सौदा है। इसमें अल्लाह तआला ने पूरी दुनिया के मुसलमानों से क़ियामत तक के लिए वायदा किया है। इस सौदे से कोई मोमिन महरूम न रह जाये।

मुहद्दिसीन की एक जमाअ़त का कहना है कि हिजरत से पहले घाटी वाली रात में जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अंसार के एक गिरोह से बैअ़त ली तो उन्होंने कहा कि आप जो शर्तें भी रखें हमें मंजूर हैं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : तौहीद पर जमे रहो, शिर्क न करो, अपनी जान माल से मेरी हिफ़ाज़त करो। उन्होंने ये शर्तें मंजूर कर लीं। मगर प्रश्न किया कि इसके बदले में हमें क्या मिलेगा? आपने फ़रमाया : जन्नत। उन्होंने कहा कि यह सौदा तो सरासर लाभ का है, इसको हम वापस न लौटायेंगे। एक रिवायत में है कि एक देहाती इस आयत को पढ़ता हुआ आया और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा कि यह किस का कलाम है? आपने जवाब दिया कि अल्लाह का। वह कहने लगा कि इस सौदे में तो लाभ ही लाभ है, मैं न तो यह सौदा लौटाऊँगा और न ही लौटाने दूंगा। यह कहकर जिहाद पर गया और वहीं शहीद हो गया।

आगे आयत न० ११२ में 'साइहून' का शब्द आया है जिसका अर्थ है "चलने-फिरने, सफर करने वाले"। यहां यही तर्जुमा किया गया है। लेकिन कुछ उलमा के नज़दीक इस का अर्थ है "रोज़ा रखने वाले" (इब्ने कसीर, इब्ने जरीर)

الْعَظِيمُ ﴿١١١﴾ التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ
السَّائِحُونَ الرَّاكِعُونَ السَّاجِدُونَ الْآمِرُونَ
بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنكَرِ وَالْحَافِظُونَ
لِحُدُودِ اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾ مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَ
الَّذِينَ آمَنُوا أَن يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا
أُولِي قُرْبَىٰ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ
الْجَحِيمِ ﴿١١٣﴾ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا
عَن مَّوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ
عَدُوٌّ لِّلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ﴿١١٤﴾
وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّىٰ
يُبَيِّنَ لَهُم مَّا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾ إِنَّ
اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا
لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١١٦﴾ لَقَدْ

११२. वह तौबा करने वाले (होते हैं) अल्लाह की इबादत में लगे हुए अल्लाह की तारीफ़ करने वाले (दीनी कार्यों के लिये) सफ़र करने वाले रूकूअ़ सज्दे करने वाले (यानी नमाज़ के पाबंद) नेकियों के काम बतलाने वाले और बुराइयों से रोकने वाले (खुद भी रुके हुए) और अल्लाह के हुक्मों की सुरक्षा करने वाले हैं। और मोमिनों को शुभ सूचना सुना ११३. (पस) नबी और मोमिनों की शान से परे है कि (अल्लाह के साथ) शिर्क करने वालों के हक़ में बख़्शिश मांगें अरगचे वह क़रीबी हों जब कि उनको मालूम हो चुका है कि वे (कुफ़्र पर मरने की वजह से) जहन्नमी हैं ११४. और (सुनो!) "इब्राहीम" की दुआ़ (मुश्रिक) बाप के लिये उस वायदे की वजह से थी जो उससे कर चुका था[६१], फिर जब (उसके मरने पर) उसे मालूम हुआ कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो उससे बेज़ार हो गया।

➲इब्राहीम बेशक बड़ा ही नर्म दिल और बुर्दबार था ११५. अल्लाह की शान नहीं कि किसी क़ौम को हिदायत के सामान आने के बाद गुमराह क़रार दे जब तक उनको उन कामों से सूचित न कर दे जिनसे उनको बचना हो। बेशक अल्लाह को सब कुछ मालूम है। ११६. आसमानों और ज़मीनों की कुल हुकूमत अल्लाह के क़ब्ज़े में है। वही ज़िन्दगी बख़्शता और मारता है और उसके अ़लावा कोई भी वाली और मददगार नहीं।

....

६१. शाने-नुज़ूल : हज़रत अ़ली फ़रमाते हैं कि एक शख़्स के बारे में मैंने सुना है कि वह अपने मुश्रिक मां-बाप के हक़ में दुआयें करता है। मैंने ऐतराज़ किया तो उसने उत्तर दिया कि हज़रत इब्राहीम ने भी तो अपने बाप के हक़ में दुआ़ की थी। मैंने यह बात नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कही तो इस पर यह आयत नाज़िल हुई। (अहमद)कुछ उलमा का कहना है कि यह आयत आपकी वालिदा के हक़ में नाज़िल हुई कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उनके लिए इस्तिग़फ़ार न करें। इसका अर्थ यह हुआ कि काफ़िर के मर जाने के बाद उसके लिये दुआ मांगना मना है अगर्चे वे अपने माता-पिता या निकट संबंधी ही क्यों न हों।

تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ
قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ
رَّحِيْمٌ ۙ وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ؕ حَتّٰۤى
اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ
عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْۤا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ
اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ
الرَّحِيْمُ ۠ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا
مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ
حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ
وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا
يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَلَا يَطَئُوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ

११७. अल्लाह ने (अपने) नबी पर और मुहाजिरों और अन्सारों पर (अपनी मेहरबानी से) तवज्जुह की जो मुश्किल (सि मुश्किल) समय में जब कि कुछ मुसलमानों के दिल डगमगा चुके थे नबी के साथ रहे फिर वह उन पर मुतवज्जह रहा (ताकि वह उस तौफ़ीक़ से इस काम को अंजाम दे सकें) वह (अल्लाह) उन पर बड़ा ही मेहरबान निहायत रहम वाला है[६२] ११८. और उन तीनों पर भी रहम किया जिन का मामला अल्लाह के आदेश के इन्तिज़ार में उस समय तक मुलतवी किया गया था जिस समय ज़मीन उन पर तंग हो गयी इसके बावजूद कि कुशादा थी और वे अपनी जान से बेज़ार हो गये और वे समझे कि अल्लाह से कहीं पनाह नहीं मिल सकती सिवाए, इस के कि उसी तरफ़ लौटा जाये फिर उन पर तवज्जुह की कि वे भी झुके रहें। (क्योंकि) अल्लाह➲

➲तआला बड़ा ही मेहरबान और रहम वाला है ११९. मुसलमानों! (हर हाल में) अल्लाह से डरते रहो और सच्चों का साथ दिया करो १२०. (इसी बिना पर) मदीना और उस के आसपास वाले देहातियों को मुनासिब नहीं कि (जंग में जो बिल्कुल हक़ पर है) रसूलुल्लाह (का साथ देने) से पीछे हट रहें और न (यह उचित है कि ये लोग) उसकी जान से बे परवाह हो कर अपनी जान की फ़िक्र करें। यह इसलिये कि जो कुछ भूख प्यास (मेहनत) और थकावट अल्लाह की राह में उनको पहुंचेगी और जहां उन के क़दम जायेंगे जिससे काफ़िरों को रंज हो (यानी दारुल कुफ़्र को पराजित करेंगे) और जो कुछ काफ़िरों से (जंग व जिहाद में) लेंगे

....

६२. शाने नुज़ूल : तबकू की लड़ाई चूंकि सख़्त गर्मी के मौसम में हुई थी। मुनाफ़िक़ों को इस जंग में पीछे रह जाना ही था, उनके साथ कुछ मुख़्लिस मुसलमान भी बिला वजह पीछे रह गए। उनमें से कुछ ने उज़्र बयान किये तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें माफ़ी दे दी। मगर काअब बिन मालिक, मुरारा बिन रबीअ, हिलाल बिन उमय्या इन तीनों ने कह दिया कि हमारे पास कोई उज़्र और मजबूरी नहीं थी, बल्कि सुस्ती और गफ़लत में कि आज निकलेंगे, कल निकलेंगे, पीछे रह गये। आप के स्थान पर अगर कोई दूसरा होता तो हम बहाने भी तलाश कर के बच सकते थे, लेकिन आप से मामला करना गोया अल्लाह से करना है इसलिये हम झूठ नहीं बोल सकते।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन तीनों को माफ़ी नहीं दी। इन का मामला अल्लाह के हवाले कर के तमाम मुसलमानों को आदेश दे दिया कि इन से बातचीत बन्द कर दें। यहां तक कि इनकी बीवियां भी। इस आदेश पर पूरे पचास दिन तक अमल हुआ। ये तीनों भी अपनी जगह पर परीक्षा में खरे उतरे और इनके ईमान में कोई कमी नहीं आयी। इन तीनों के हक़ में यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)।

इस आयत में मुसलमानों के लिये बड़ी नसीहत है। इमाम अहमद बिन हंबल रह० के बारे में यह क़ौल नक़ल किया गया है कि उनको कुरआन की और कोई आयत इतना नहीं रुलाती थी जितनी कि यह आयत! इन तीनों के वाक़िए से यह भी मालूम हुआ कि हक़ की राह में ग़फ़लत और सुस्ती करना बहुत बड़ा जुर्म है। इतना बड़ा जुर्म है कि ऐसे सहाबा को भी नहीं बख़्शा गया जिन्होंने दूसरी घाटी में ६० अन्सार के साथ मदीना से मक्का आ कर रात की तारीकी में जान को जोखिम में डालकर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ पर बैअत की थी। यहां मुसलमानों के इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ का भी पता चलता है कि अल्लाह के हुक्म पर सभी लोगों ने यहां तक कि उनकी बीवियों ने भी उनका बाइकाट किया। फिर उनकी हमदर्दी और मुहब्बत का भी पता चलता है कि माफ़ी मिलते ही किस प्रकार उनको मुबारक बाद देने के लिए तमाम सहाबा टूट पड़े और हर किसी मुसलमान ने यही चाहा कि मैं सबसे पहले बशारत सुनाऊँ। सिला पहाड़ी पर जाकर जिस सहाबी ने हज़रत काअब को बशारत दी उनका नाम अगरचे नहीं लिया लेकिन वह अबू बक्र सिद्दीक़ थे। सच है कि अगर इख़्लास और अल्लाह का ख़ौफ़ दिल में हो तो उसकी बरकत से बड़े बड़े गुनाह भी माफ़ हो जाते हैं।

(उन सबके बदले) उनके हक़ में नेक अमल लिखे जायेंगे। (क्योंकि) अल्लाह तआला नेकों का बदला बरबाद नहीं किया करता। १२१. और (भी इसी प्रकार) जो कुछ थोड़ा➲

مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۙ وَلَا يُنْفِقُوْنَ

نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا
اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝
وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ؕ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ
كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِى الدِّيْنِ
وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْٓا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ
يَحْذَرُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ
يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ؕ وَاعْلَمُوْٓا
اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ
فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖٓ اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝ وَ
اَمَّا الَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى

बहुत ख़र्च करेंगे और जो मैदान (इस सफ़र में चलते हुए) तै करेंगे यह सब कुछ (उनके आमालनामा में) इसलिये लिखा जायेगा ताकि अल्लाह उन को उनके कामों से बेहतर बदला दे[६३] १२२. और न यह उचित है कि मुसलमान सारे के सारे ही निकल पड़ें। पस ऐसा क्यों न करें कि हर एक क़ौम से चन्द आदमी आयें (और रसूलुल्लाह की सेवा में उपस्थित रहें) ताकि दीन की समझ हासिल करें और जब अपनी क़ौम में जायें तो उनको समझाएं ताकि वह भी (बुरे कामों से) बचते रहें[६४] १२३. मुसलमानों! (तुम को ताकीदी हुक्म दिया जाता है कि) जो तुम्हारे क़रीब क़रीब काफ़िर हैं उनसे लड़ो और (ऐसे डट कर लड़ो कि) उनको तुम्हारी मज़बूती मालूम हो[६५] और जान रखो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है।[६६] १२४. जब कोई सूरत (या कुरआन की आयत) नाज़िल होती है तो उन में से कुछ कहते हैं (कहो तो आज) इस सूरत ने किस का ईमान बढ़ाया है। (नादान नहीं जानते कि) जो ईमानदार हैं उन्हीं का ईमान सूरत बढ़ाती है और वे प्रसन्नता प्राप्त करते हैं[६७] १२५. और जिनके दिलों में बीमारी है उनको ख़बासत पर ख़बासत बढ़ाती है।

....

६३. हज़रत उस्मान रज़ि० को कुरआन की इस बशारत का बहुत बड़ा हिस्सा नसीब हुआ। अ़ब्दुर्रहमान बिन हब्बाब सलमी रिवायत करते हैं कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तबूक की लड़ाई के लिये चन्दे की अपील की तो हज़रत उस्मान ने पहली मर्तबा में एक सौ ऊँट उनके सामानों के साथ दिए। फिर दोबारा अनुरोध करने पर दो सौ ऊँट सामानों के साथ दिए। रिवायत करने वाले का बयान है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मिम्बर से उतर कर तीसरी बार अपील की तो फिर सौ ऊँट सामान के साथ दिये और इसके साथ एक हज़ार सोने की अशरफ़ियां भी लाकर दीं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन अशरफ़ियों को बार बार उलटते पलटते और फ़रमाते जा रहे थे कि आज के बाद उस्मान रज़ि० जो चाहे करें उनको कोई भी अमल नुक़सान नहीं पहुंचा सकता (इब्ने कसीर) "फ़त्हुल बयान" में है कि कोई अल्लाह के काम में लगा रहे उसका उठना, चलना फिरना सब इबादत में शामिल है।

६४. यह आयत जिहाद के ताल्लुक़ से नहीं बल्कि इल्म हासिल करने के ताल्लुक़ से है। यानी दीन का इल्म हासिल करने के लिये हर हर क़बीले के थोड़े थोड़े लोगों को निकलना ही चाहिए क्योंकि दीन का इल्म हासिल करना फ़र्ज़ किफ़ाया है। अगर कोई न हासिल करेगा तो सब पापी होंगे। एक हदीस में आप

➲सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "अल्लाह जिस बन्दे के साथ भलाई चाहता है तो उसे दीन की समझ अता करता है।

एक दूसरी हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिस शख़्स ने दीन का इल्म हासिल करने के लिये सफ़र किया तो अल्लाह पाक उसके लिये जन्नत का रास्ता आसान कर देगा।" एक और हदीस में फ़रमाया "आलिम की फ़ज़ीलत इबादत करने वालों पर ऐसी है जैसी मेरी फ़ज़ीलत तुममें से किसी मामूली शख़्स पर है।" (तिर्मिज़ी)

६५. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ऐसा ही किया पहले तो अपनी क़ौम कुरैश से जिहाद किया, फिर अ़रब की दूसरी क़ौमों से, फिर बनी नज़ीर, ख़ैबर और फ़िदक के यहूदियों से लड़े। जब इनसे निपट चुके तो शाम मुल्क और ईरान वग़ैरह सहाबा ने फतह किया।(वहीदी)

६६. जो अल्लाह का हो जाता है और अपना सारा काम उसी के सुपुर्द कर देता है, तो अल्लाह भी उसकी मुकम्मल सहायता करता है और जो गुरूर, तकब्बुर, सर्कशी में जीवन बिताते हैं जैसे मुनाफ़िक़ लोग हैं, तो दोनों जहान में उनकी मिट्टी पलीद है। दोनों से गए। मान्डा मिला न हलवा। इन लोगों का दिल इतना सियाह हो चुका है कि उन पर हिदायत का कुछ भी प्रभाव नहीं हो सकता और प्रभाव भला हो कैसे जबकि ये कुछ तवज्जुह ही नहीं देते और उल्टा नसीहत करने वाले पर बिगड़ जाते हैं।

६७. निःसंदेह अल्लाह का कलाम सुनकर मोमिनों के ईमान में तरक़्क़ी होती है और दिल सदा खुश रहता है। लेकिन जिन के दिलों में कुफ़्र और निफ़ाक़ है उनकी बीमारियों में और इज़ाफ़ा ही होता जाता है, यहां तक कि जान लेकर ही छोड़ती है (मुवज़्ज़िहुल कुरआन) सच है, वर्षा हर ज़मीन पर होती है। लेकिन उपजाऊ ज़मीन से फल-फूल उगते हैं और बंजर ज़मीन से घास-फूंस उगते हैं। इस में बारिश का कोई क़सूर नहीं, बल्कि ज़मीन का है।

رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٢٥﴾ اَوَلَا يَرَوْنَ
اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِىْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا
يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ
نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ ؕ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ
انْصَرَفُوْا ؕ صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا
يَفْقَهُوْنَ ﴿١٢٧﴾ لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ

(जिसका प्रभाव यह होता है कि वे) कुफ़्र ही में मरते हैं १२६. क्या ये (मुनाफ़िक़) इतना भी नहीं जानते कि हर साल एक दो दफ़ा उनको तकलीफ़ पहुंचती रहती है फिर भी न तो तौबा करते हैं और न समझते हैं १२७ और जब कोई (कुरआन की) सूरत (उन की मौजूदगी में) उतरती है तो एक दूसरे की ओर नज़र कर के (इशारों से) कहते हैं कि कोई तुम को नहीं देखता (उठो चलो) फिर तुरन्त चल देते हैं। अल्लाह ने उनके दिलों को फेर दिया है क्योंकि ➲

عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢٨﴾ فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿١٢٩﴾

(ये लोग) जान बूझ कर नहीं समझते १२८. (लोगो!) तुम्हारे पास तुम ही में से (अल्लाह का) रसूल आया है (वह ऐसा मेहरबान है कि) उस पर तुम्हारी तक्लीफ़ शाक़ गुज़रती है तुम्हारी भलाई का हरीस है और ईमानदारों के हाल पर बहुत ही शफ़ीक़ मेहरबान है[६८] १२९. फिर भी अगर वे मुंह फेरें तो तुम कह दो कि अल्लाह मुझको काफ़ी है। उसके अलावा कोई माबूद नहीं। उसी पर मैंने भरोसा किया और वही बड़े अर्श का मालिक है।[६९]

....

६८. रात दिन इसी फ़िक्र और कोशिश में लगे रहते हैं कि तुम जहन्नम की आग से बच जाओ और आख़िरत में भलाई पाओ, यही उनकी "हिर्स" है। आप अंदाज़ा करें कि मां-बाप से भी अधिक नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हम पर मेहरबान हैं और उनका सारे जहान से अधिक एहसान हमारे ऊपर है। अल्लाह ने अपने पाक नामों में से दो नाम नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को दिये हैं, यह फ़ज़ीलत और किसी भी संदेष्टा को हासिल नहीं है।

कुछ उलमा ने इस का तर्जुमा यह किया है कि "तुम्हारे पास एक संदेष्टा आ चुका है जो तुम सबसे अधिक शरीफ़ ख़ानदान का है।" एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "अल्लाह ने आदम की औलाद में से इब्राहीम अ़लैहि० को चुना, इब्राहीम की औलाद में से इसमाईल अ़लैहि० को, और इसमाईल अ़लैहि० में से बनू कनाना को और उसमें से कुरैश को और कुरैश में से बनी हाशिम को और बनी हाशिम में से मुझको चुना।" (वहीदी)

६९. हज़रत अबू दर्दा से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो शख़्स सुबह शाम, सात-सात बार हस्बि यल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व अ़लैहि त-वक्कलतु व-ह-व रब्बुल अ़रशिल अज़ीम (अल्लाह मुझ को काफ़ी है, उसके अ़लावा कोई माबूद नहीं। उस पर भरोसा किया और वही बड़े अ़र्श का मालिक है) को पढ़ लिया करे तो अल्लाह उसकी किफ़ालत फ़रमायेगा। (अबू दाऊद-सनद हसन है, इब्ने अ़साकिर)

....

सूरः यूनुस (10)

सूरः यूनुस मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुई। इसमें १०९ आयतें और ग्यारह रकूअ हैं। शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है।

سُوْرَةُ يُوْنُسَ مَكِّيَّةٌ (٥١) (١٠)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الۗرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ۝١ اَكَانَ لِلنَّاسِ

عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ

१. अलिफ़ लाम रा[1] सूरत हिकमत वाली किताब के आदेश हैं २. क्या उन लोगों को इस बात से आश्चर्य हुआ[2] है कि हमने उन में से एक आदमी पर यह इल्हाम किया है कि लोगों को डरा

....
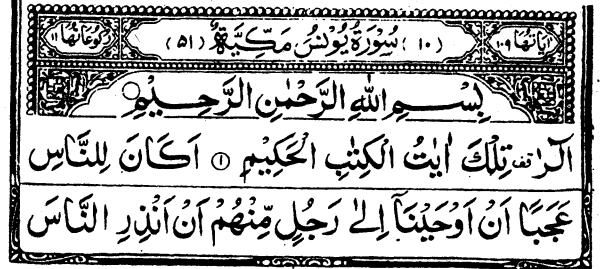
१. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने 'अलिफ़ लाम रा' की तफ़सीर यह की है "मैं अल्लाह हूं और देख रहा हूं" (इब्ने कसीर) जमहूर उलमा और बुजुर्गाने दीन का यह कहना है कि हुरूफ़ मुक़त्तआत कुरआन में जितने आये हैं उनके अर्थ को अल्लाह ही बेहतर जानता है। यह सूरः मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुई। लेकिन तीन आयतें "फ़इन कुन-त फ़ी शक्किन----(आयत नं० ९४) से आगे की आयतें कुछ मक्का में उतरीं और कुछ मदीना में उतरीं, ऐसा कुछ उलमा का कहना है। इसमें १०९ आयतें हैं। हज़रत अनहफ़ फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत उमर रज़ि० के पीछे फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी उन्होंने सूरः यूनुस और सूरः हूद की तिलावत की। (सलफ़िय्या)

२. शाने नुज़ूल : जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम संदेष्टा बनाये गये तो आप ने नुबूवत का ऐलान फ़रमाया। काफ़िर यह सुनते ही ताज्जुब से कहने लगे कि अल्लाह आदमी को संदेष्टा बनाकर क्यों भेजेगा? इस काम के लिए तो फ़रिश्ता होना चाहिए, इस पर यह आयत नाज़िल हुई।

और जो ईमान लायें उनको शुभसूचना सुना कि अल्लाह के हां उनकी बड़ी आवभगत है[3]। (इतनी ही बात पर) काफ़िर कहने लगे कि यह तो खुला जादूगर है ३. कोई संदेः नहीं कि तुम्हारा परवर्दिगार वह है जिस आसमान और ज़मीन छः दिनों में बन ा फिर वह अ़र्श पर मुस्तवी हुआ[4] (है ।) वह अहकाम (जिस प्रकार चाहता है

وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ

رَبِّهِمْ ۔ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ۝٢

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ

سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ۭ مَا

مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ

فَاعْبُدُوْهُ ۚ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ۚ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۚ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ۚ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ

जारी करता है। उसके जनाब में बिना इजाज़त कोई सिफ़ारिशी नहीं हो सकता। यह अल्लाह (जो तमाम विशेषताओं का मालिक है) तुम्हारा रब है पस तुम उसी की इबादत किया करो। क्या फिर भी तुम समझते नहीं हो? ४. (सुनो!) उसी की तरफ़ तुम को फिरना है। (तुम्हें दण्ड और इनाम देने के मुताल्लिक़) अल्लाह का वायदा सच्चा है। वही पैदा करता है और वही पुनः पैदा करेगा ताकि जो लोग ईमान लाए और अच्छे अमल किये उन को (मरने के बाद) इंसाफ़ से (पूरा-पूरा) बदला दे। (यानी जन्नत)। और जो काफ़िर हैं उनको खौलता हुआ पानी और उनके कुफ़्र के जुर्म में दुःखदाई अज़ाब होगा। ५. (तुम्हारा रब जानते हो कौन है?) वही है जिसने सूरज को चमकता हुआ बनाया और चांद की मंज़िलें ठहरायीं (जिनसे उसकी तरक़्क़ी और मन्ज़िल) मालूम हो। वह कभी बढ़ता हुआ नज़र आता है और कभी घटता हुआ, ताकि तुम उसके ज़रीए सालों का (और मामूली कारोबार में तारीखों का) हिसाब जान लिया करो। अल्लाह ने उसको ज़रूरी फ़ायदों के लिये बनाया है, जो लोग कुछ इल्म रखते हैं उनके लिये अहकाम विस्तार से बतलाता है[५] ६. बेशक रात और दिन के आने जाने में

....

३. 'क़-द-म सिद्क़िन से मुराद जन्नत है। मतलब यह है कि आदमी अपने वे नेक आमाल जो दुनियावी ज़िन्दगी में अल्लाह की तौफ़ीक़ से आगे के लिये भेजता है उनका सवाब और अज्र है। यह तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास और उबय्यि बिन कअब ने की है (हाकिम) इमाम मुजाहिद का कहना है कि इससे मुराद नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात, तसबीह, इस्तिग़फ़ार नेक काम हैं (इब्ने जरीर) एक और रिवायत में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० का यह भी क़ौल नक़ल है कि इससे मुराद वे नेकियां और भलाईयां हैं जो अल्लाह के हां लिखी जा चुकी हैं। कुछ और उलमा के नज़दीक इससे मुराद वे इनाम हैं जो क़ियामत के दिन के लिये पहले ही भेज दिये गये हैं (मवाहि बुर्रहमान, सलफ़िय्या, वग़ैरह) इससे मुराद हर वह नेक काम भी है जो नेक इन्सान अपनी ज़िन्दगी में कर जाता है और उसके बाद के लोग उससे फ़ायदा उठाते हैं - जैसे मौलाना मरहूम का कुरआन का यह तर्जुमा वग़ैरह।

४. 'छः दिन' का मतलब छः दिन जितने समय में। वरना ज़मीन आसमान के पैदा करते समय दिन रात तो थे ही नहीं इसलिये कि दिन रात आसमान की हरकत से ही पैदा होते हैं, तो जब आसमान और उसकी हरकत का वजूद ही नहीं था तो दिन-रात कैसे मौजूद होते? अल्लाह तआला अगर चाहता तो "कुन" कह कर भी पैदा कर सकता था, लेकिन तर्तीब के साथ छः दिनों में पैदा कर के बन्दों के इस बात की रहनुमाई की है कि वह अपने कामों में भी जल्दी न करें और हर काम को आराम के साथ ठीक-ठीक अंजाम दें।

➲दिन रात का धीरे धीरे आवागमन भी यह इशारा दे रहा है कि अपने मतलब को हासिल करने में जल्दी➲ न करो, बल्कि हर काम को अपने-अपने उचित समय पर करो।

अल्लाह तआ़ला अ़र्श पर मुस्तवी है, इस का ज़िक्र और भी आयतों में आया है। बुर्जुगाने दीन और जमहूर अहले सुन्नत का मज़हब यह है कि अर्श पर मुस्तवी तो है, लेकिन इसकी कैफ़ियत मालूम नहीं। वह वैसे ही बैठा है जैसा उसकी ज़ात के लायक़ है। इससे यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह मख़्लूक़ के अन्दर दाख़िल और घुसा हुआ नहीं है, बल्कि वह मख़्लूक़ से अलग और जुदा है। उसका इल्म और उस की कुदरत तमाम मख़्लूक़ पर हावी है। वह अपनी हिकमत और तदबीर से समस्त संसार का इन्तिज़ाम करता है, इसलिये उसी की इबादत करो (सलफ़िय्या)

५. इस चांद के हिसाब से अगरचे मौसमों का अनुमान नहीं हो सकता मगर इस में शक नहीं कि कुदरती होने की वजह से सरल है क्योंकि किसी आदमी की कारीगरी को इस में दख़ल नहीं है। अगर तमाम दुनिया की जन्तरी (केलन्डर) और इनके बनाने वालों को ख़त्म कर दिया जाये, तो यही चांद की तारीख़ है जो अपना सबूत दे सकती है, इसलिए अ़रब के लोगों को इसी तारीख़ की शिक्षा दी गयी है। (सनाई)

وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا
بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا
غٰفِلُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ
بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ
النَّعِيْمِ ۝ دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ
فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ
بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ۗ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا
يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝ وَاِذَا مَسَّ
الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖٓ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ
فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ اِلٰى

जो कुछ अल्लाह ने आसमानों और ज़मीनों में पैदा किया है उस सबमें परहेज़गारों के लिये (अ़जीब व ग़रीब) निशान हैं ७. (मगर) जो लोग हम से मिलने की आशा नहीं रखते और दुनिया की ज़िन्दगी ही पर खुश हो बैठे हैं और इसी दुनिया (ही) पर मुतमइन हैं और जो हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल हैं[६] ८. उनके (बुरे) आमाल के बदले में उन का ठिकाना जहन्नम है (जिस से कभी भी छुटकारा न पायेंगे) ९ (इनके मुक़ाबले में) जो लोग ईमान लाये और नेक अ़मल किये उनके ईमान की वजह से अल्लाह उनको (जन्नत की तरफ़) रहनुमाई करेगा, नेमतों के बाग़ों में, (उनके मकानों के नीचे) नहरें जारी होंगी १०. (इस नेमत के शुक्रिया में) उन बाग़ों में उनकी आवाज़ (और पुकार) ''सुबहान-कल्लाहुम्म'' होगी (यानी ऐ अल्लाह तू पाक है) और (फ़रिश्तों की तरफ़ से) उनका तोहफ़ा (उन बाग़ो में) सलाम होगा और (मज्लिस के समापन पर) उनकी➲

➲आख़िरी बात होगी ----- अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन" (यानी सभी तारीफ़ें सारे जहान के रब के लिये हैं) ११. और अगर अल्लाह लोगों को बुराई पहुंचाने में जल्दी करता जैसे वे भलाई जल्दी चाहते हैं तो उनकी अजल (मौत) का (अभी) फ़ैसला हो जाता। मगर जो लोग हमारे मिलने से बेख़ौफ़ हैं हम उनको सरकशी में छोड़ देते हैं^८। (ऐसे कि वे परेशान हैं) १२. जब (नालायक़) इन्सान को कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो करवट पर लेटा हुआ और बैठा और खड़ा (ग़रज़ हर प्रकार से) हम को पुकारता है, फिर जब हम उससे तकलीफ़ हटा देते हैं तो ऐसा (अकड़ कर) चलता है गोया हम को उसने किसी तकलीफ़ के लिये जो उसे लगी थी

....

६. दुनिया में जितने भी धर्म हैं उनके बुनियादी अक़ीदों में से एक अक़ीदा यह भी है कि इन्सान की ज़िन्दगी केवल इसी दुनिया ही में समाप्त नहीं हो जाती, इसके बाद भी एक जिन्दगी है और उस ज़िन्दगी में जैसे कुछ कर्म होंगे वैसे ही परिणाम दूसरी ज़िन्दगी में पेश आयेंगे। कुरआन में अल्लाह पर ईमान लाने का मतलब यही है। अलबत्ता उसने जो ताबीर इख़्तियार की है वह आम धर्मों के ख़्याल से मुख़्तलिफ़ है। वह जज़ा और सज़ा को और अच्छे बुरे अ़मल को दुनिया के क़ानून से अलग नहीं करता, बल्कि उसी के मातहत लाता है। वह कहता है कि जिस प्रकार हर चीज़ की तासीर होती है और हर काम का नतीजा होता है, ठीक उसी तरह इन्सान के कर्मों की भी तासीर और नतीजा निकलता है और यहां माद्दियत की तरह माअनवियत के क़ानून भी काम कर रहे हैं। इसलिये अच्छे अ़मल का अच्छा नतीजा और बुरे अ़मल का बुरा। यह अच्छे बुरे नतीजे किस शक्ल में पेश आयेंगे? कुरआन कहता है कि यह नेक आमाल करने वाले लोग जन्नती लोग और उनके लिये बहिश्त की ज़िन्दगी की खुशहाली और हमेशा की ज़िन्दगी होगी और बुरे अ़मल वाला इन्सान जहन्नमी होगा और उसके लिए जहन्नमी ज़िन्दगी की कठिनाई होंगी और आख़िरत की नेमतों से वंचित होगा। फिर दोनों तरह की ज़िन्दगी के हालात हैं जिन्हें कुरआन ने मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में जगह-जगह बयान किया है। (तर्जुमान)

७. हदीस शरीफ़ में आया है कि जब जन्नत वालों को किसी चीज़ की ख़्वाहिश होगी तो 'सुबहा-न कल्ला हुम्म' कहेंगे। तुरन्त उसी समय वह चीज़ हाज़िर हो जायेगी। कुछ और ताबेअ़ीन का कहना है कि उनके यह कहते ही जन्नत के सेवक वह चीज़ लेकर हाज़िर हो जायेंगे और उन को सलाम करके उसे पेश करेंगे और खा पीकर "अल्-हम्दुलिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन" कहेंगे। कुछ उलमा का कहना है कि जब जन्नती लोग पुलसिरात पार करके जन्नत के दरवाज़े पर पहुंचेगे तो "सुबहा-न-कल्ला हुम्म" कहेंगे, फिर अन्दर जाकर आपस में एक दूसरे से मिलेंगे तो सलाम कहेंगे। फिर जब वे आराम के साथ अपने-अपने घरों में जाकर ठहरेंगे तो 'अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन' कहेंगे (वहीदी)

८. मुश्रिकों ने जब न माना और कुरआन के कमालात को जादू और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जादूगर कहा और शैतान के बहकावे में आ गये, तो कहने लगे कि जो तुम रोज़-रोज़ अज़ाब की धमकियां देते रहते हो उसे ले आओ। उनके उत्तर में यह आयत नाज़िल हुई। यहां यह बात अच्छी तरह याद रहे कि जो लोग इस्लाम का इक़रार तो करते हैं मगर आख़िरत को नहीं मानते वे लोग भी इन्हीं मुश्रिकों के गिरोह में हैं। 'लिक़ा' का अर्थ है मुलाक़ात। इसलिये राफ़ज़ी, ख़ारिजी, मोतज़िली या वे फ़िर्क़े जो अल्लाह के दीदार के मुन्किर हैं सब इसी हुक्म में शामिल हैं। इस आयत से यह भी साबित है कि बुराई की दुआ़ करना मना है, हमेशा भलाई, सलामती और ईमान की दुआ़ करनी चाहिये।

हज़रत ज़ाबिर रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अपनी जानों पर, अपनी औलाद और धन दौलत पर बद्दुआ़ न करो, इसलिये कि ऐसा न हो कि उस समय बद्दुआ़ कुबूल हो जाए और तुम बर्बाद हो जाओ।" इन लोगों ने संदेष्टा को झुठलाया और इन्कार किया तो हमने भी उनको बर्बाद कर के रख दिया। आगे फ़रमाया कि हमने तुम लोगों को उनका ख़लीफ़ा और नायब बनाया है। और रसूल भी भेजा है ताकि हम यह देखें कि तुम किस प्रकार उसकी आज्ञा मानते हो और किस प्रकार भलाई की दुआयें करते हो, हो सकता है तुम्हारी यह दुआ़ भी कुबूल हो जाये। (बज़्ज़ार) (मवाहिब)

ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِى الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِى الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِىْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِىْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ ۚ اِنِّىْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّىْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝ قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ

(कभी) पुकारा ही नहीं था। इसी प्रकार हद से आगे बढ़ने वालों को उनके काम भले (और सजे हुए) मालूम होते हैं। १३. और तुम से पहले कई एक जमाअ़तों को हम ने हलाक किया जब वे जुल्म पर अड़े (और बज़िद) हुए थे और उनके पास उनके रसूल खुले निशान लेकर आये और (वि अपनी शरारत पर ऐसे अड़े कि) ईमान लाने पर उन्होंने रुख़ भी न किया। इसी प्रकार मुजरिमों की क़ौम को हम दण्ड दिया करते हैं (कि जब वे कुफ़्र पर अड़े रहते हैं तो उनको हिदायत से भी महरूम कर देते हैं) १४. फिर हमने उनके बाद तुम (मौजूदा इन्सानी नस्ल) को ज़मीन पर उनका ख़लीफ़ा (स्थान लेने वाला) बनाया ताकि हम तुम्हारे काम भी देखें (और तुम्हारी लियाक़त भी लोगों पर ज़ाहिर करें) १५. और जब हमारे स्पष्ट हुक्म उनको सुनाये जाते हैं जो लोग हमारे पास आने का यक़ीन नहीं रखते, कहते हैं (कि इस कुरआन में तो हमारे माबूदों की बुराई है) इस के अ़लावा कोई और कुरआन लाओ या इसको (थोड़ा सा) बदल दो। (ऐ नबी!) तू (इन नादानों से) कह कि मेरी ताक़त नहीं कि मैं अपने पास से उसे बदल डालूं। मैं तो केवल उसी आदेश का पालन करता हूं जो मुझे (अल्लाह के हां से) हुक्म पहुंचता है, (इसमें मेरा ज़र्राभर भी इख़्तियार नहीं) अल्लाह की नाफ़रमानी करने पर बड़े दिन के अज़ाब का मुझे भी डर है। १६. तू (यह भी उनको) कह कि अगर अल्लाह चाहता तो मैं यह कुरआन तुम्हें न सुनाता और न ही (अल्लाह) तुम को आगाह करता, इससे पहले मैं तुम में लंबे समय तक ➲

➲ठहरा हूं। (कभी मैंने इस प्रकार का दावा नहीं किया) क्या तम समझते नहीं? १७. फिर (बताओ) जो अल्लाह पर झूठ बांधते हैं, या उसके आदेशों को झुठलाते हैं, उनसे भी बढ़कर कोई ज़ालिम है?

....

९. अल्लाह तआला ने हर ज़माने के बुरे लोगों के हालात बयान किये हैं नबियों को भी देख कर उनकी रिसालत का इन्कार किया। हज़रत अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "दुनिया मीठी और हरी भरी है, अल्लाह तआ़ला तुम को इसमें ख़लीफ़ा बनाने वाला है ताकि देखे कि तुम इसमें क्या करते हो? इसलिये आगाह हो जाओ! तुम दुनिया के लालच और फ़ित्नों से बचते रहना, इसलिये कि सबसे पहला फ़ित्ना जो बनी इस्राईल में पैदा हुआ, औरतों का फ़ित्ना था।" (मुस्लिम) मसल मशहूर है कि दुनिया में फ़साद की बुनियाद तीन वस्तुएं हैं (१) धन-दौलत (२) ज़मीन (३) औ़रत। हर मामले की तह में इन तीन में से एक अवश्य मिलेगी। नेक हैं वे लोग जो इन सबसे हट कर हर प्रकार के फ़ित्ना और फ़साद से दूर रहते हैं।

إِنَّهُۥ لَا يُفْلِحُ ٱلْمُجْرِمُونَ ۝ وَيَعْبُدُونَ مِن
دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ
هَٰٓؤُلَآءِ شُفَعَٰٓؤُنَا عِندَ ٱللَّهِ ۚ قُلْ أَتُنَبِّـُٔونَ ٱللَّهَ بِمَا
لَا يَعْلَمُ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَلَا فِى ٱلْأَرْضِ ۚ سُبْحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ
عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ وَمَا كَانَ ٱلنَّاسُ إِلَّآ أُمَّةً وَٰحِدَةً
فَٱخْتَلَفُوا۟ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَقُضِىَ
بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ وَيَقُولُونَ لَوْلَآ
أُنزِلَ عَلَيْهِ ءَايَةٌ مِّن رَّبِّهِۦ ۖ فَقُلْ إِنَّمَا ٱلْغَيْبُ
لِلَّهِ فَٱنتَظِرُوٓا۟ إِنِّى مَعَكُم مِّنَ ٱلْمُنتَظِرِينَ ۝ وَإِذَآ
أَذَقْنَا ٱلنَّاسَ رَحْمَةً مِّنۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا
لَهُم مَّكْرٌ فِىٓ ءَايَاتِنَا ۚ قُلِ ٱللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ
إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ ۝ هُوَ ٱلَّذِى
يُسَيِّرُكُمْ فِى ٱلْبَرِّ وَٱلْبَحْرِ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا كُنتُمْ فِى

कुछ शक नहीं कि बदकार कभी कामयाब न होंगे[१०] १८. और (उनकी बदकारी और जुल्म यह है कि) अल्लाह के अ़लावा उन वस्तुओं को पूजते हैं जो न तो उनको फ़ायदा दें और न नुक़सान[११] (और मुंह से झूठा बहाना बनाने को) कहते हैं कि ये लोग (जिनकी हम इबादत करते हैं) अल्लाह के सामाने हमारे सिफ़ारिशी हैं[१२]। तू कह! क्या तुम अल्लाह को (भी) उन बातों की ख़बर बतलाते हो जिनको वह आसमानों और ज़मीनों में नहीं जानता। वह (अल्लाह) उनके शिर्क से पाक और बहुत बुलन्द है। १९. और (किसी ज़माने में) सब लोग (मुत्तफ़िक़) और एक ही गिरोह थे फिर इसके बाद मुख़्तलिफ़ हुये। और अगर तेरे रब का फ़ैसला न हो चुका होता (कि दीन के मामले में ज़ोर ज़बरदस्ती जायज़ नहीं) तो जिन मामलात में उनको इख़्तिलाफ़ है उनमें बहुत पहले उनके दर्मियान फ़ैसला हो चुका होता। २०. और कहते हैं कि क्यों➲

➡उसके खुदा की तरफ़ से उस पर कोई निशानी नहीं उतारी गयी? तू कह कि ग़ैब की तमाम सूचनायें अल्लाह ही के पास हैं इसलिये तुम भी इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूं (जब वह चाहेगा बता देगा) २१. और जब उन लोगों को तकलीफ़ पहुंचाने के बाद आराम देते हैं तो बस तुरन्त ही हमारे आदेशों (की मुख़ालिफ़त) में चालबाज़ियां करते हैं। तू (उनसे) कह दे कि अल्लाह का दांव बड़ा तेज़ है। जो कुछ भी तुम धोखा (और दांव) करते हो तो हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) लिख रहे हैं[१३] २२. (सुनो!) अल्लाह (तो) वही है जो जंगलों और दरियाओं में तुम्हें सैर कराता है और जब तुम जहाज़ों में होते हो।

....

१०. यानी तुम्हारा यह जो ख़्याल है कि कुरआन मैंने बना लिया है, अगर वास्तव में ऐसा है तो मैंने अल्लाह पर झूठ बांधा है और इससे बड़ा कोई पाप नहीं। लेकिन अगर यह अल्लाह की तरफ़ से उतारा हुआ है और तुम इन्कार करो तो इससे बड़ा पाप और कोई नहीं, और अल्लाह ऐसे लोगों को कामयाब कभी नहीं करेगा। इस्लाम की सच्चाई की इस से बढ़कर दलील और क्या होगी कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माना में मुसैलमा कज़्ज़ाब, अस्वद और सजाह (महिला) आदि ने नुबूवत का दावा किया, लेकिन उनका एक भी दीन व मज़हब न चल सका, बल्कि सब क़त्ल कर दिये गये, लेकिन जो सच्चा मज़हब था अल्लाह ने उसको तरक़्क़ी दी और झूठ को मलियामेट किया। (वहीदी)

११. नज्र बिन हारिस कहता था कि लात और उज़्ज़ा अल्लाह के पास हमारी सिफ़ारिश कर देंगे, उसके रद्द में यह आयत नाज़िल हुई। इस आयत में यह बताया कि अगर उन बुतों का कुछ भी दर्जा और मर्तबा होता तो अल्लाह को अवश्य ही मालूम होता, क्योंकि वह चीज़ों का जानने वाला है। और जब उसको नहीं मालूम तो इसका मतलब ही यह है कि तुम्हारे ख़्यालात सिर्फ़ बकवास हैं। अक्सर मुश्रिकों का यही अक़ी[illegible] है कि उनके अवतार-ठाकुर और बुत खुदा नहीं हैं लेकिन इनकी पहुंच वहां तक है और जिस से खुश हो जायेंगे उसको अल्लाह से कह कर बख़्शवा लेंगे, लेकिन यह भी शिर्क है। अल्लाह के हां न किसी का ज़ोर चलता है और न किसी की मजाल है कि बग़ैर उसकी अनुमति के किसी के बारे में कोई सिफ़ारिश कर सके। आज के बहुत से जाहिल मुसलमानों का भी यही अक़ीदा है हालांकि यह बिल्कुल ही ग़लत अक़ीदा है। शफ़ाअत और सिफ़ारिश के ताल्लुक़ से सही अक़ीदा यह है कि अल्लाह जिस बंदे को नजात देना चाहेगा उसके लिये अपने किसी नेक बंदे को इशारा कर देगा। और वह अल्लाह के हुक्म से इस प्रकार सिफ़ारिश करेगा जिस तरह कोई बेबस, आजिज़ बंदा एक बादशाह के सामने करता है (यानी रो-रोकर, डर-डरकर और गिड़गिड़ाकर)। मक्का के मुश्रिकों का अक़ीदा यह था कि हमारे बुतों की अल्लाह के हां चलती है, उनका रोब और दबदबा है। और बिल्कुल यही अ़कीदा आजकल के जाहिल क़ब्रपरस्त नाम के मुसलमानों का अपने पीरों और वलियों के ताल्लुक़ से है और यह भी शिर्क है। (वहीदी)

१२. अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारिशी हैं, यह ग़लत ख़्याल है। अगर थोड़ी देर के लिये सही मान भी लें कि ये सिफ़ारिशी हैं, तो भी इनकी इबादत कैसे जायज़ है? सिफ़ारिशी के मायने तो यह हैं कि अल्लाह के सामने तुम्हारे लिये दुआ़ कर दें और तुम्हारी नजात के लिये प्रार्थना कर दें। यह अर्थ नहीं है कि अपने सिफ़ारिशी ही की पूजा करने लगें, या अल्लाह के साथ उनको शरीक ठहरा लें। (सनाई)

१३. इसका अर्थ यह है कि अल्लाह तआ़ला जब अपने बंदों की परीक्षा लेता है तो उन पर सूखा काल, आफ़त➡

और भिन्न भिन्न प्रकार की बीमारियां नाज़िल करता है, उस समय रोते, गिड़गिड़ाते और आजिज़ी करते हैं, तब उन पर आफ़तों को दूर करके अपनी नेमतें नाज़िल करता है। लेकिन ये उस नेमत को समयचक्र समझते हैं, अल्लाह को याद नहीं करते, नेक बन्दों से चालें चलते हैं। इनके बारे में अल्लाह ने फ़रमा दिया कि इन की चालें कुछ काम न आयेंगी (वहीदी) अक्सर इन्सानों की यह फ़ितरत है कि जब उन पर मुसीबत आती है तो अल्लाह को याद करते हैं, मुसीबत के टलते ही उसे भूल जाते हैं। हालांकि अगर सुख चैन में भी उसे याद करते रहें तो वह खुदबखुद अपने फ़ज़्ल व करम से उनकी परेशानियों को दूर कर देगा, उसका इर्शाद है "तुम मुझे याद करोगे तो मैं भी तुम्हें याद करूंगा।"

الْفُلْكِ وَجَرَيْنَ بِهِم بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا
جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِن كُلِّ
مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ
لَهُ الدِّينَ لَئِنْ أَنجَيْتَنَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ
الشَّاكِرِينَ ﴿٢٢﴾ فَلَمَّا أَنجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَىٰ أَنفُسِكُم
مَّتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُم
بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٣﴾ إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
كَمَاءٍ أَنزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ
الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتَّىٰ إِذَا
أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَا
أَنَّهُمْ قَادِرُونَ عَلَيْهَا أَتَاهَا أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا
فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا كَأَن لَّمْ تَغْنَ بِالْأَمْسِ كَذَٰلِكَ

और वे जहाज़ अपने सवारों को हवा के अनुकूल साथ लेकर चलते हैं और वे उससे ख़ूबखुश होते हैं तो उन पर तेज़ हवा का झोंका आ लगता है और हर तरफ़ से पानी की लहरें उन पर चढ़ आती हैं और वे जान जाते हैं कि हम बला में घिरे तो ख़ालिस अल्लाह से दुआयें मांगते हैं[२४] (और कहते हैं) कि (ऐ अल्लाह!) अगर तू हम को इस बला से नजात देगा तो हम (तेरे) शुक्र अदा करने वाले (बन्दों में से) बनेंगे २३. फिर जब वह उनको उस बला से नजात देता है तो ज़मीन पर नाहक़ फ़साद करने लग जाते हैं[२५]। लोगो! तुम्हारे फ़साद (और बदआमाली) तुम ही पर वबाल होंगे दुनिया की (चन्द दिन की) ज़िन्दगी में मौज कर लो फिर (आख़िर) हमारी तरफ़ ही तुम को वापस आना है जो कुछ तुम कर रहे हो हम तुम को बतला देंगे २४. (सुनो!) दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल तो बस पानी की सी है जो हम आकाश से (बारिश द्वारा) उतारते हैं फिर उसके साथ ज़मीन का सब्ज़ा गहन हो जाता है जिसे आदमी और चारपाए खाते हैं। यहां तक कि जब ज़मीन अपनी खूबसूरती और ज़ीनत में कमाल को पहुंचती है[२६] और उसके मालिक समझते हैं कि अब यह खेती हमारे बस में है तो अचानक हमारा आदेश रात को या दिन को उस पर पहुंच जाता है बस हम उसका ऐसा सफ़ाया कर देते हैं कि गोया कल उसका नामोनिशान भी न था।

१४. इन्सान पर जब सख़्ती होती है और कोई राह नज़र नहीं आती तो अल्लाह को पुकारने लगता है। और जब वह सख़्ती ख़त्म हो जाती है तो उसे ख़्याल भी नहीं रहता कि मुझ पर कोई सख़्ती भी आयी थी। हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी रज़ि० से रिवायत है वह कहते हैं एक रोज़ रात को बारिश हुई तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सुबह की नमाज़ के बाद फ़रमाया: क्या तुम जानते हो कि आज रात को अल्लाह ने क्या कहा? सहाबा ने कहा : अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं। आपने फ़रमाया : यह कहा कि सुबह को जब मेरे बंदे उठेंगे तो उनमें कुछ तो मोमिन होंगे और कुछ काफ़िर, क्योंकि आज रात को बारिश हुई है उसके बारे में जिसने यह कहा कि अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से बरसाया है तो वह मोमिन होगा और जिसने यह कहा कि सितारों के असर से हुयी है वह काफ़िर होगा (बुख़ारी, मुस्लिम) इस हदीस में मोमिन से मुराद शुक्र-गुज़ार बन्दा और काफ़िर से मुराद नाशुक्रा बंदा है।

१५. यानी जब अल्लाह तआ़ला उनको इस मुसीबत से नजात देता है तो वे ज़मीन में सरकशी करने लगते हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि इस सरकशी का वबाल स्वयं तुम्हारी अपनी जानों पर है और इस की सज़ा में जहन्नम का अ़ज़ाब चखोगे। यह दुनिया की ज़िन्दगी चंद दिनों की है, इसके बाद तुम्हें हमारे पास आना है और अपने कर्मों का फल भोगना है। हम क़ियामत के दिन तुम्हारे करतूतों को बता देंगे और उसी के अनुसार बदला देंगे। हदीस शरीफ़ में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "तीन कामों का वबाल स्वयं उनके करने वालों ही पर आता है। (१) दग़ा-धोखा (२) वायदा तोड़ना (३) शरारत करना। इसके बाद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह आयत तिलवात फ़रमाई। मतलब यह हुआ कि इन तीन कामों से अल्लाह का कुछ नहीं बिगड़ता-बल्कि इसका वबाल उसके करने वाले पर पड़ता है।

एक दूसरी हदीस में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "अगर दुनिया के तमाम ही लोग अव्वल नंबर के मुत्तक़ी परहेज़गार बन जायें तो अल्लाह की बादशाहत में कुछ भी ज़्यादती नहीं होगी और अगर सबके सब बदकार बन जायें तो कुछ भी कमी नहीं होगी।" आजकल के मुसलमान मुश्रिक इनसे भी दोजूती आगे बढ़े हुए हैं। ये जानते-बूझते भी अपने शिर्क से बाज़ नहीं आते और "या ख़्वाजा" या अ़ली, या ग़ौस या ख़िज़्र वग़ैरह को पुकारते रहते हैं। शैतान ने इनको इतना गुमराह कर दिया है कि मरते वक़्त भी इनके मुंह से अल्लाह का नाम नहीं निकलता। (सलफ़िय्या)

१६. इस आयत में खेती के कच्चा खाने और फिर उनके पक जाने की तरफ़ इशारा है, और इस बात की तरफ़ भी इशारा है कि तबाही बर्बादी अक्सर तैयार फ़सल पर आती है।

نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى
دَارِ السَّلٰمِ ۭ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝
لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ۭ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ
قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ۭ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَاۗءُ سَيِّئَةٍۢ

इसी प्रकार सोच-विचार करने वालों को हम अपनी क़ुदरत के दलाइल विस्तार से बतलाते हैं[२०] (ताकि अक़्ल रखने वाले समझें और नतीजा पायें) २५. और अल्लाह (सबको) शान्ति के घर (जिसका नाम जन्नत है) की तरफ़ बुलाता है। और जिसको चाहे सीधी राह की हिदायत कर देता है। २६. जिन लोगों ने नेकी (की राह इख़्तियार) की है ➲

بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۭ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ
كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ۭ
اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَيَوْمَ
نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا
مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَشُرَكَاۗؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ
شُرَكَاۗؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٨﴾ فَكَفٰى بِاللّٰهِ
شَهِيْدًۢا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ
لَغٰفِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ وَ

उनके लिये नेकी और ज़्यादा भी है। और उनके चेहरों पर स्याही और ज़िल्लत का असर न होगा। यही जन्नती होंगे, जो उसमें हमेशा रहेंगे[१८] २७. और जो बदकारियां करते हैं उनकी बुराई के बराबर उन का दण्ड होगा (अर्थात गुनाहों की सज़ा में ज़्यादती न होगी) और उनको ज़िल्लत ढांपे हुए होगी। अल्लाह (के अज़ाब) से कोई भी उनको बचाने वाला न होगा, (सियाही उन पर ऐसी ग़ालिब होगी कि) गोया काली रात का एक हिस्सा उनके चेहरों पर मला गया होगा। यही (ऐसे बदकार) जहन्नमी हैं जो इस जहन्नम में हमेशा रहेंगे २८. (उनको उस दिन की ख़बर सुना) जिस रोज़ हम उन सबको इकट्ठा करेंगे फिर मुश्रिकों से कहेंगे (ख़बरदार!) तुम और तुम्हारे (बनावटी) शरीक अपने-अपने स्थानों पर खड़े रहो, फिर हम उनमें जुदाई कर देंगे और उनके शरीक (उनसे) कहेंगे कि (तुम झूठे हो) तुम हमारी इबादत नहीं करते थे[१९] २९. पस अल्लाह ही हमारे और तुम्हारे दर्मियान काफ़ी गवाह है। (वल्लाह) हम तो तुम्हरी इबादत से बेख़ब्र थे[२०] ३०. (जब यह बात होगी तो) वहां हर नफ़्स अपने आमाल का अनुमान लगा लेगा (और जान लेगा कि उसने क्या कांटे बोये थे।

....

१७. ठीक यही हाल इंसान का माल-दौलत और रुपये पैसे की मस्ती में होता है कि नशा में किसी मुसीबत की शंका तो जाने दीजिए ख़्याल भी नहीं पैदा होता, फिर अचानक अल्लाह का अज़ाब उस पर ऐसा टूट पड़ता है कि अल्लाह की पनाह। अज़ाब अपना प्रताप इस क़दर दिखाता है कि तमाम ख़्वाहिशें और तमन्नाएं कफ़न के अन्दर सीना ही में रखे हुए ले जाता है। (सनाई)

१८. हज़रत सुहैब रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने "लिल्लज़ी न अह सनुल् हुसना वज़िया दतुन' (जिन लोगों ने नेकी की राह अख़्तियार की उन के लिये नेकी और इसके अ़लावा और अधिक भी है) को पढ़कर फ़रमाया : जब जन्नती, जन्नत में और दोज़ख़ी दोज़ख़ में दाख़िल हो जायेंगे तो पुकारने वाला पुकारेगा ऐ जन्नत वालो! तुम्हारे लिए अल्लाह के पास एक वायदा है जिसे वह पूरा करना चाहता है तो जन्नती कहेंगे कि उसने तो हमारा मीज़ान भारी कर दिया, हमारे चेहरों को रोशन कर दिया, हम को जन्नत अ़ता कर दी, और अब कौन सा वायदा बाक़ी बचा है? वे कहेंगे कि एक वायदा पूरा करना और रह गया है वह है अल्लाह का दीदार। फिर अल्लाह तआ़ला जन्नतियों से अपना पर्दा उठा लेगा और वे अपने रब को भी देखेंगे। अल्लाह की क़सम! अल्लाह के दीदार से बढ़कर कोई चीज़ उनको प्यारी न होगी इससे बढ़कर कोई और चीज़ उनकी आंखों को ठंडक न पहुंचायेगी। (मुस्लिम, अहमद) और दूसरी रिवायतों से साबित है कि 'ह-स-न:' से मुराद 'अल्लाह का दीदार' है।

१९. अल्लाह तआला बुतों को ज़बान दे देगा और वह इन्कार कर देंगे, इस वजह से कि उनको कुछ ख़बर ही न थी कि वह पूजे जाते थे। कुछ उलमा ने यह मतलब लिया है कि हमारे हुक्म से तुम ने उन्हें नहीं पूजा था, बल्कि अपनी इच्छा से, इसलिये अपनी इच्छा के पुजारी थे। (वहीदी)

२०. इस आयत में बताया गया है कि तुम जिनको अपनी हाजत के लिये पुकारते हो, उन तक न तो तुम्हारी आवाज़ पहुंचती है और न ही उनको तुम्हारी कुछ ख़बर है, तो वह तुम्हारी मांगे क्या पूरी करेंगे? अल्लाह तआला क़ियामत के दिन मुश्रिकों और उनके शरीकों को एक सफ़ में खड़ा करेगा क्योंकि माबूदों को अपने बन्दों ही के साथ होना चाहिये, लेकिन वे अपने पुजारियों के साथ खड़ा होना पसन्द न करेंगे और कहेंगे कि हमारा तो इनसे कोई लेना देना ही नहीं है। ये हमारे नहीं, बल्कि अपनी ख़्वाहिश के पुजारी थे, हमें तो उनकी इबादत की ख़बर भी नहीं है। ये बिल्कुल ऐसे ही कहेंगे जिस प्रकार सूरः माइदा में हज़रत ईसा अलैहि० के बारे में बयान है कि जब क़ियामत के दिन अल्लाह उन से सवाल करेगा कि क्या तुम ही ने इन्हें ग़ैरुल्लाह की पूजा का हुक्म दिया था? तो उत्तर देंगे मैं तो इनके शिर्क से बरी हूं। (तर्जुमान)

رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا
كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٣٠﴾ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَ
الْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ
يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ
الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ
اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣١﴾ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ
الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚۖ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٣٢﴾ كَذٰلِكَ حَقَّتْ
كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾
قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ
يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى
تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى
الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى
الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ

और अपने हक़ीक़ी मालिक अल्लाह की तरफ़ फेरे जायेंगे और जो कुछ (वि दुनिया में इल्ज़ाम और) झूठ बांध रहे हैं (वह सब) भूल जायेंगे[२१] ३१. तू (उनसे) पूछ कि तुम को आसमान और ज़मीन से कौन रोज़ी देता है (कौन आसमान से बारिश बरसाता है? कौन ज़मीन से हरियाली उगाता है?) और कौन तुम्हारे कानों और आंखों पर मुकम्मल इख़्तियार रखता है? और कौन ज़िन्दों को मुर्दा (यानी बेजान मनी के क़तरे) से निकालता है और कौन मुर्दों को ज़िन्दों से निकाल ले जाता है? और कौन (पूरी दुनिया में) आदेश जारी करता है? तो तुरन्त कह देंगे अल्लाह, तो कह दो कि फिर तुम क्यों डरते नहीं? ३२. पस यही अल्लाह तुम्हारा हक़ीक़ी रब है, तो हक़ (को छोड़ने) के बाद गुमराही (के अ़लावा क्या हो सकता) है? फिर तुम किधर बहके जा रहे हो? ३३. (ऐ नबी!) इसी प्रकार तेरे रब का हुक्म (उनमें से) बदकारों पर लग चुका है कि वे ईमान नहीं लायेंगे ३४. तू (उनसे) पूछ कि तुम्हारे (बनाये हुए) साझीदारों में से कोई भी मख़लूक़ को पैदा करके (केवल अपने आदेश से) फ़ना कर सकता है? तू कह कि अल्लाह ही पहली बार पैदा करता है और फिर उसे फ़ना भी कर देता है[२२], (तू कह कि) कहां को उल्टे जा ➲

रहे हो? ३५. तू (यह भी उनसे) पूछ कि क्या तुम्हारे बनाये हुए शरीकों में से कोई हक़ की रहनुमाई करता है? तू कह कि अल्लाह तो हक़ की राह दिखाता है। फिर (इसके बाद कहो कि) जो कोई सच्ची राह दिखाये उनकी पैरवी बहुत मुनासिब है या जो राह न दिखा सके बल्कि स्वयं भी (अंधों की तरह) बग़ैर (दूसरे की) रहनुमाई के राह न पा सके (उसकी पैरवी मुनासिब है?)

....

२१. यानी उस समय अजीब हंगामा होगा। पूजने वालों और माबूदों के दर्मियान जुदाई पड़ जायेगी और दुनिया में अपने ख़्याल के मुताबिक़ जो संबंध जोड़ रखे थे वह सब तोड़ दिये जाएंगे, मुश्रिकों की इस समय जो अपने साझीदारों से आशाएं थीं, वे भी जवाब देंगे कि तुम्हारा हम से कोई लेना-देना नहीं, तुम झूठ बोलते हो, फिर जो तुमने किया हमारी अनुमति से नहीं किया। हमें अपनी हरकतों का कोई इल्म नहीं था कि तुम इतने बेवकूफ़ और जाहिल होगे कि अल्लाह के मुक़ाबले में हमें शरीक ठहरा लोगे। यह बात बेजान पत्थर भी कहें तो आश्चर्य की बात नहीं। इसलिये कि अल्लाह तआला उन को ज़लील करने के लिये अपनी कुदरत से बेजान मूर्तियों को भी बोलने की कुदरत दे देगा। (मुवज़्ज़िहुल कुरआन) क़ियामत के दिन उन मुश्रिकों के मनघड़ंत माबूद जब अपनी सफ़ाई में यह बयान देंगे तो उनको और भी अधिक शर्मिन्दगी होगी।

२२. 'युईदुहू' का तर्जुमा मैंने "फ़ना" किया है। चूंकि मुश्रिक दोबारा ज़िन्दा किये जाने के क़ाइल नहीं थे, यह उनका पक्का अक़ीदा था तो फिर यहां "दोबारा ज़िन्दा करना" का तर्जुमा सही नहीं है (सनाई) यह शिर्क के रद्द और तौहीद के सबूत की दूसरी दलील है। खुलासा यह है कि क्या तुम्हारे उन माबूदों में से किसी को यह कुदरत हासिल है कि किसी चीज़ को नए सिरे से पैदा कर दे और फिर उसके मर जाने के बाद पुनः उसको पहले ही जैसा ज़िन्दा कर दे? इसके उत्तर में वे यही कहेंगे कि उनमें से किसी को यह शक्ति हासिल नहीं। ऐ रसूल! आप कह दीजिए कि यह काम तो केवल अल्लाह ही कर सकता है और कोई नहीं। तो ऐ जाहिलो! ऐसे अल्लाह को छोड़कर तुम कहां भटक रहे हो?

तुम्हें क्या हो गया है कैसी राय लगाते हो? ३६. और उनमें से अकसर लोग केवल अटकलपच्चू बातों पर चलते हैं। हालांकि हक़ के मामले में महज़ अटकल और वहम की बातें कुछ भी लाभदायक नहीं हुआ करतीं[२३]। अल्लाह उन के कामों में ख़ूब जानकार है। ३७. और यह कुरआन ऐसी किताब नहीं कि अल्लाह के अ़लावा किसी मख़्लूक़ से बनाई जाये लेकिन अपने से पहले वाक़िआत (और भविष्यवाणियों) की तस्दीक़ और किताब (यानी उन इलहामी मज़ामीन) की (जो अल्लाह अपने बन्दों के लिए समय-समय पर नाज़िल फ़रमाया करता है।) तफ़सील है। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह कुरआन रब्बुल् आ़लमीन की तरफ़ से है ३८. क्या कहते हैं कि इसने कुरआन घड़ लिया है? तू कह! इस जैसी एक सूरत (तो) बना

فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۝ وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا
ظَنًّا ۚ إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ
عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝ وَمَا كَانَ هَٰذَا الْقُرْآنُ أَنْ
يُفْتَرَىٰ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ
يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ
الْعَالَمِينَ ۝ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ
مِثْلِهِ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ
وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِهِمْ ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۝ وَ
مِنْهُمْ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهِ ۚ وَ

رَبُّكَ اَعۡلَمُ بِالۡمُفۡسِدِيۡنَ ۝ وَاِنۡ كَذَّبُوۡكَ فَقُلۡ لِّىۡ
عَمَلِىۡ وَلَـكُمۡ عَمَلُكُمۡ‌ۚ اَنۡتُمۡ بَرِيۡٓـُٔوۡنَ مِمَّاۤ اَعۡمَلُ

लाओ और अल्लाह के अ़लावा जिन को तुम बुला सको अपनी मदद के लिए बुला लो अगर (इस दावे में) सच्चे हो (कि कुरआन बन्दे का लिखा हुआ है) ३९. (सुनो! मनघड़त नहीं) बल्कि (वह हक़ है) मगर उन्होंने (नाहक़) उन बातों को झुठलाया है जिन पर उनका इल्म नहीं पहुंचा है और उसकी इन्तिहा तो अभी नहीं। (बिला देखे अन्जाम को झुठलाने पर अड़े बैठे हो) इसी प्रकार (जल्दी में) उनसे पहले लोगों ने भी झुठलाया था फिर तू ग़ौर कर कि ज़ालिमों का अंजाम कैसा (बुरा) हुआ। ४०. और उनमें से कुछ ऐसे हैं जो (दिल से तो) इस कुरआन को मानते हैं, (अगरचे ज़ाहिर न करें) और कुछ ऐसे भी हैं जो (ज़िद में पड़े हुए हैं किसी प्रकार) नहीं मानते। (तेरा कुछ हरज नहीं, क्योंकि) तेरा रब फ़सादियों को ख़ूब जानता है। ४१. और अगर तेरी न मानें तो तू उन से कह दे (कि जाओ अपना सर खाओ) मेरे काम मुझ को हैं और तुम्हारे काम तुम को हैं तुम मेरे काम में बेताल्लुक़ हो

....

२३. यानी केवल सुनी-सुनाई बातों पर ध्यान देकर यह कहने लगते हो कि "फ़लां पीर ने बारह वर्ष पुरानी डूबी हुई नाव को सही सलामत निकाल लिया था, फ़लां बुज़ुर्ग ने अपनी नियाज़ देने वाले की प्रार्थना पर अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ सात बेटे दिये थे"। ये सब ऐसे मनघड़त क़िस्से-कहानियां हैं जिनका कोई सर पैर नहीं है। (सनाई)

ऊपर की आयतों में तौहीद का सबूत पेश करने के बाद, इन आयतों में रिसालत का सबूत पेश किया है कि यह कुरआन किसी इन्सान का लिखा हुआ नहीं है। इसका सबूत यह है कि इसमें पहली क़ौमों के हालात पहले के नबियों के क़िस्से बयान किये गये हैं। और इस नबी का हाल यह है कि वह न तो पढ़े लिखे हैं न ही वह किसी आ़लिम के पास उठे-बैठे हैं कि उनसे मालूम करके लिख लिया करें। और अगर तुम्हारा यही ख़्याल है कि यह बशर ही का कलाम है तो तुम भी बशर ही हो, तुम भी ऐसा ही कुरआन लिख लाओ। चलो पूरा कुरआन नहीं लिख सकते तो केवल १० सूरतें ही सही। और यह भी असंभव हो तो केवल एक वाक्य ही कह कर दिखा दो। और अगर अकेले न हो सके तो जिससे चाहो सहायता ले सकते हो, अपने उन साझीदारों को भी शामिल कर लो जिन को तुम अल्लाह के साथ शरीक ठहराते हो।

मुश्रिकीने मक्का हज़ार कोशिशों के बावजूद कुरआन जैसी एक सूरत भी न बना सके लेकिन अपनी ज़िद पर अड़े रहे और कुरआन का इन्कार ही करते रहे। फिर आगे फ़रमाया गया कि जो वायदा किया गया है उस अज़ाब का हाल उनकी समझ से बाहर है, क्योंकि वह अज़ाब उनकी आंखों के सामने नहीं आया है। पहली उम्मतों ने भी इसी प्रकार अज़ाब आने से पूर्व रसूलों को झुठलाया और अन्त में अज़ाब द्वारा हलाक किये गये। (अहसनुत्तफ़सीर)

وَاَنَا بَرِىۡۤءٌ مِّمَّا تَعۡمَلُوۡنَ ۝ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ يَّسۡتَمِعُوۡنَ
اِلَيۡكَ‌ؕ اَفَاَنۡتَ تُسۡمِعُ الصُّمَّ وَلَوۡ كَانُوۡا لَا يَعۡقِلُوۡنَ ۝
وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ يَّنۡظُرُ اِلَيۡكَ‌ؕ اَفَاَنۡتَ تَهۡدِى الۡعُمۡىَ

मैं तुम्हारे काम से अलग हूं (मेरा काम केवल तब्लीग़ है सो मैं कर चुका हूं) ४२. उन में से कुछ लोग तेरी तरफ़ कान झुकाते हैं (उनको तेरी नसीहत में ऐब तलाशने की ➲

وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ
شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ وَيَوْمَ
يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ
يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ۭ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَاۗءِ
اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝ وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ
الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ
اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰي مَا يَفْعَلُوْنَ ۝ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ
رَّسُوْلٌ ۚ فَاِذَا جَاۗءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ ضَرًّا

निय्यत की वजह से कुछ असर नहीं होता) क्या तू बहरों को समझा सकेगा? अगरचे वे अक़्ल भी न रखते हों[२४]? ४३. और कुछ उनमें से तेरी तरफ़ (आखें फाड़-फाड़कर हैरानी से) देखते हैं। तो क्या तू अन्धों की रहनुमाई करना चाहता है, अगरचे वह (जानबूझ कर) न देखें? ४४. अल्लाह तआ़ला लोगों पर रत्तीभर भी अन्याय नहीं करता लेकिन लोग ख़ुद अपने आप पर अत्याचार करते हैं। ४५. और (अभी तो उनकी उस दिन अ़जीब हालत होगी) जिस दिन (उनको) अल्लाह अपने पास जमा करेगा (अज़ाब को देख कर ऐसा समझेंगे) कि दुनिया में गोया एक घड़ी दिन से अधिक नहीं ठहरे एक दूसरे को (जो बदकारियों में शरीक हुए थे) पहचानेंगे। (सुन लो कोई भी हो) जिन्होंने अल्लाह की मुलाक़ात से इन्कार किया वही लोग नुक़सान पाने वाले हैं और किसी प्रकार हिदायत पर न आये ४६. और अगर हम अपने वायदा किये हुए अ़ज़ाब में से कुछ (हिस्सा) उनको दुनिया में ही पहुंचा दें[२५] या इससे पहले तुझे फ़ौत कर लें (तो दोनों सूरतों में उन को कुछ फ़ायदा नहीं, क्योंकि मामला उनका तो हमारे साथ है) तो भी हमारी तरफ़ उनको लौट कर आना है और अल्लाह उन के कामों से ख़बर रखने वाला है ४७. हर एक उम्मत के लिये रसूल हो गुज़रे हैं फिर जब कभी उनके पास रसूल आते हैं तो उनमें इन्साफ़ के साथ फ़ैसला किया जाता है और उन पर (किसी प्रकार का) अन्याय नहीं होता ४८. और कहते हैं कि यह वादा (क़ियामत का) कब है? अगर तुम (मुसलमान) सच्चे हो? ४९. तू कह! (ऐसी ख़बरों को बतलाना तो ग़ैब जानने की तरह है जो मुझ में नहीं) मैं तो नफ़ा नुक़सान का भी अख़्तियार नहीं रखता।

....

२४. 'तुस्मिउ' का मतलब है "सुनाना"। मगर इसके साथ "अक़्ल नहीं रखते" भी आया है इसका मतलब यह हुआ कि इस का मतलब आ़म है, क्योंकि अगर बहरा आदमी अक़्ल रखता हो तो इशारों से भी समझ सकता है। और जब अक़्ल की भी नफ़ी कर दी गयी तो इसका मतलब यह हुआ कि इससे मुराद केवल सुनाना ही नहीं बल्कि समझना भी है।

२५. नुबूवत का दावा करने वाले मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी की भविष्यवाणियां जब ग़लत साबित हुईं तो उनके मुरीदों ने यह कहना शुरू कर दिया कि किसी नबी के सच्चे होने के लिये यह कोई ज़रूरी नहीं कि उसकी सारी भविष्यवाणियां सच्ची हों। बल्कि अगर कुछ भी सच साबित हो जाएं तो भी उस

➲नबी के सच्चे होने के लिये काफ़ी हैं। चुनांचे मिर्ज़ा साहब ने अपने दावे में इसी आयत को पेश किया है। चुनांचे मिर्ज़ा के अल्फ़ाज़ यह हैं 'एक दूसरा उसूल भविष्यवाणियों के मुताल्लिक़ याद रखने के क़ाबिल यह है कि डराने वाली भविष्यवाणियां कभी-कभी टल भी जाती हैं। एक नियाहत खुली-खुली मिसाल हज़रत यूनुस की पेशगोई है और अल्लाह तआला कुरआन शरीफ़ में भी फ़रमाता है 'इन यकु सादि क़न........। इससे मालूम होता है कि नुबूवत का दावा करने वाले के मुताल्लिक़ देखना यह चाहिए कि अक्सर भविष्यवाणियां पूरी होती हैं या नहीं। (पत्रिका **Review** क़ादियान ६/७ पृष्ठ २८९)

मिर्ज़ा साहब की कथा का उत्तर यह है कि अल्लाह की बताई हुई बातों में से एक भी गलत नहीं हो सकती। अल्लाह फ़रमाता है "यह ख़्याल हरगिज़ न करो कि अल्लाह अपने रसूलों के साथ वायदा करके ख़िलाफ़ करता हैं। हरगिज़ नहीं, क्योंकि अल्लाह ग़ालिब और बड़ा इंतक़ाम (बदला) लेने वाला है।" एक दूसरे स्थान पर फ़रमाया "बेशक अल्लाह वायदा के ख़िलाफ़ नहीं करता।" इस विषय पर बहुत सी आयतें हैं। इस आयत का मतलब क़ादियानी ने जो समझा है वह ग़लत है। नबियों की तरफ़ से दुश्मनों को जो वायदे दिये जाते हैं वे दो प्रकार के होते हैं (१) दुनिया में पकड़ की धमकी (२) आख़िरत में अज़ाब की धमकी। चुनांचे अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः "और हम उनको इस दुनिया का अ़ज़ाब आख़िरत के बड़े अज़ाब से पहले ही चखा देंगें।" (पारः २१, रूकूअ १५) पस इन दलाइल से आयत का मतलब यह हुआ कि वह मोमिन शख़्स कहता है कि अगर मूसा सच्चे हैं तो उनका वायदा किया हुआ अ़ज़ाब तुम को पहुंच जायेगा। चूंकि दुनिया का अ़ज़ाब वायदा किये गये अज़ाब का एक हिस्सा है, इसलिये उस मोमिन ने कहा : "जिस अज़ाब से तुम को डराया है उसमें से कुछ हिस्सा तुम को इसी दुनिया में पहुंच जायेगा जो बिल्कुल सच है।" इसका क्या यही मतलब है कि नबी की कोई बताई हुई बात ग़लत हो जाया करती है? इस प्रकार का अर्थ मनघंड़त है। (सनाई)

وَلَا نَفْعًا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ؕ اِذَا جَآءَ
اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٤٩﴾
قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا مَّا
ذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٠﴾ اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ
اٰمَنْتُمْ بِهٖ ؕ آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٥١﴾
ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ
تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ
اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلْ اِىْ وَرَبِّىْٓ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ۚ وَمَآ اَنْتُمْ
بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥٣﴾ وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِى
الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا
رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَقُضِىَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا

मगर जो अल्लाह चाहे (वह पहुंच कर ही रहता है[२६]) हरएक जमाअत (की हलाकत) के लिये समय सुनिश्चित है जब उन पर वह सुनिश्चित समय पहुंचता है तो एक घड़ी भी न आगे हो सकते हैं और न पीछे हट सकते हैं ५०. (ऐ नबी!) तू (उन से) कह दे कि अगर अल्लाह का अज़ाब तुम पर रात को या दिन को आ जाये तो मुजरिम किस चीज़ के ज़रिया से जल्दी कर जायेंगे? (यानी अल्लाह का अ़ज़ाब आने पर तुम किस चीज़ के ज़रिये बच सकते हो?) ५१. क्या जब अ़ज़ाब नाज़िल होगा तो उस समय ईमान लाओगे? (ऐसा करोगे तो उस वक़्त) कहा जाएगा कि अब ईमान लाते हो और तुम उस को जल्दी मांग रहे थे। ५२. फिर ज़ालिमों से कहा जायेगा कि हमेशा का➲

يُظْلَمُونَ ۝ أَلَآ إِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ أَلَآ إِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا

➲अज़ाब चखो, तुम को अपने ही किये का बदला मिलेगा। किसी प्रकार का अन्याय और अत्याचार तुम पर न होगा। ५३. (यह सुनकर बड़ी हैरानी में) तुझ से पूछते हैं कि क्या यह (जो तू कहता है) सच है[२७]? तू कह! हां, अल्लाह की क़सम (वह निःसंदेह सच है और बिलाशुबह होकर रहेगा) और तुम (अल्लाह को उस के कामों से) आ़जिज़ नहीं कर सकते। ५४. और जिस किसी ने (अन्याय और) बदकारी की होगी उनके पास अगर तमाम ज़मीन का माल होगा तो वह सारे का सारा फ़िदया (हर्जाना) में देने को तैयार हो जायेगा। (मगर क़बूल न होगा) जब अ़ज़ाब देखेंगे तो चुपके-चुपके एक दूसरे को मलामत करेंगे, और उनमें इन्साफ़ से फ़ैसला किया जाएगा और उन पर किसी तरह से अन्याय न होगा[२८] ५५. सुनो! जो कुछ आसमानों और ज़मीनों में है सब कुछ अल्लाह की ही मिल्क है। (किसी की मजाल नहीं कि कोई उसके सामने चूं-चरा कर सके) याद रखो! अल्लाह का वायदा सच्चा है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

....

२६. सैय्यद अ़ल्लामा का कहना है कि इस आयत में उन लोगों को चेतावनी दी गयी है कि जो मुश्किल के समय रसूल से वे चीज़ें मांगते हैं जो अल्लाह के अ़लावा और कोई नहीं दे सकता। और जब नबियों का इमाम, बनी आदम का सरदार अपने नफ़े नुक़सान का मालिक न हो तो फिर कोई वली, कुतुब, पीर दूसरे के नुक़सान व फ़ायदे का मालिक कैसे बन सकता है? उन लोगों पर बड़ा ताज्जुब है जो क़ब्रों पर सिर झुकाते हैं और क़ब्र वालों से अपनी मुरादें मांगते हैं जो साफ़-साफ़ कुफ़्र और शिर्क है, साथ ही उन आलिमों और पीरों पर भी अफ़सोस है जो उन को इन बातों से रोकते नहीं। उनका यह अमल जिहालयत के ज़माने का है, बल्कि उससे भी ज़्यादा बुरा है। इसलिये कि मक्का के मुश्रिक तो नफ़ा-नुक़सान का मालिक अल्लाह ही को समझते थे, बुतों को केवल अपना सिफ़ारिशी मानते थे और ये आज कल के क़ब्रों के पुजारी तो क़ब्र वालों ही को नुक़सान व फ़ायदा वाला मानते हैं। उन को अल्लाह के साथ मिलाकर पुकारते हैं। यह सब शैतानी हथकंडा है और अपने दीन को अल्लाह बचाने वाला है। (वहीदी)

२७. मुश्रिक लोग यह भी प्रश्न करते थे कि सचमुच में क़ियामत आयेगी? और क्या उसका इन्कार करने वालों पर अ़ज़ाब होगा? हालांकि यह सवाल इससे बहुत पहले कर चुके थे और जवाब भी दिया जा चुका था। फिर बार-बार सवाल करना यह और बड़ी नादानी है, इसलिये कि वे न अपनी बात समझते हैं कि क्या कह रहे हैं और न ही दूसरे की सुनते हैं कि वह कह क्या रहा है? इसलिये अल्लाह तआ़ला ने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कह दिया कि उन्हें बतला दो कि वह अवश्य ही आयेगी। तुम यह न सोचो कि मर कर मिटटी में मिल जायेंगे तो पुनः जीवित ही न होंगे और न हिसाब देंगे। उसके लिए शब्द "कुन" (हो जा) ही कह देना काफ़ी है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "हज़रत इस्राफ़ील के मुंह में सूर है और वह अल्लाह के हुक्म से कभी भी फूंक मार सकते हैं।" (अहमद, तिमिर्ज़ी) कुरआन की आयत और हदीस की रोशनी में जिस प्रकार रसूल को क़सम खिला कर क़ियामत के लाने का➲

➲वायदा किया है, इसी प्रकार क़ियामत के आने का भी इतना ताकीदी इन्तिज़ाम है कि हज़रत इस्राफ़ील सूर मुंह में लगाये हुए हैं और तैयार बैठे हैं और हर समय आदेश के इन्तिज़ार में हैं।

२८. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क़ियामत के दिन हल्के से हल्के अ़ज़ाब वाले जहन्नमी से अल्लाह फ़रमाएगा: क्या तू अपनी नजात के बदले दुनिया भर की दौलत और औलाद सबको दे सकता है? वह कहेगा कि हां, मैं इस बात से सहमत हूं। अल्लाह फ़रमायेगा कि जब तू दुनिया में नहीं पैदा हुआ था और अभी आदम की पीठ ही में तेरा नुत्फ़ा था तब मैंने एक वायदा लिया था कि दुनिया में अवज्ञा न करना, मगर तुम माने नहीं, तो अब भला बदला और जुर्माना व तावान से क्या होता है?

वायदा के दिन से मुराद उस ज़माने का वायदा है जिसमें अल्लाह ने सभी को जमा करके पूछा था "अ-लसतु बि-रब्बिकुम (क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं?) उत्तर में सब ही ने कहा था "बला" (जी हां)।

يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾ هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٦﴾
يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ
وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ
لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾ قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ
فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٥٨﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ
مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ
حَرَامًا وَّحَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى
اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ
عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ
فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦٠﴾
وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ
قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ
شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ

५६. वही तो ज़िन्दा करता और मारता है और उसी की तरफ़ तुम सब फेरे जाओगे। ५७. लोगो (सुनो) तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से वाज़ (और नसीहत) और सीनों की बीमारियों (यानी कुफ़्र, शिर्क वग़ैरा) से शिफ़ा और हिदायत और ईमानदारों के लिये रहमत पहुंच चुकी है (यानी कुरआन आ गया, उस पर अ़मल करके नजात पाओ) ५८. (तू यह भी उनसे) कह कि यह अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत से है पस उसी से ख़ुशी मनायें। वह (कुरआन और ईमानी हिकमत) उनके माल से जो जमा करते हैं कहीं बढ़ कर अच्छा है। ५९. तू कह! अल्लाह जो तुम्हारे लिये हलाल रोज़ी पैदा करता है फिर तुम उसमें से कुछ को हराम और कुछ को हलाल बना लेते हो। तू कह! क्या अल्लाह ने तुम को इस बात की अनुमति दी है या तुम (स्वयं) अल्लाह पर झूठ बांधते हो[२९]। (अगर कोई दलील है तो लाओ)। ६०. (ताज्जुब है कि) जो लोग अल्लाह पर झूठ बांधते हैं क़ियामत के दिन के बारे में उनका क्या ख़्याल है? (वि इस मामले में ग़ौर नहीं करते कि इस बात में हमारा अंजाम क्या होगा?) अल्लाह (सब) लोगों के हाल पर बड़े फ़ज़्ल की निगाह रखता है लेकिन बहुत से लोग शुक्र अदा नहीं करते। ६१. और (ऐ➲

इन्सान!) तू किसी काम में हो, या कुरआन का कोई हिस्सा पढ़ता हो, या तुम (बनी आदम) कोई सा काम करो हम (अल्लाह) तुम्हारे पास हाज़िर होते हैं जब तुम उसे अभी आरंभ ही करते हो[३०]।

....

२९. अल्लामा सैय्यद लिखते हैं कि आजकल के कुछ नाम के मुसलमान भी उन मुश्रिकों की पैरवी करते हुए बुजुर्गों के नाम की नियाज़ और नज़रें चढ़ाते हैं और उस का खाना किसी के लिये हलाल और किसी के लिये हराम जानते हैं। यह सब शैतानी अमल हैं, जिसके बारे में शरीअत का कोई हुक्म मौजूद नहीं है। इमाम शौकानी रह० फ़रमाते हैं कि मुकल्लिद मुफ़्ती के लिये भी इस में चेतावनी है। उलेमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि अपने इज्तिहाद पर अमल करना सिर्फ़ मुजतहिद ही के लिये जायज़ है औरों के लिये नहीं। इमाम नस्फ़ी कहते हैं कि इस आयत से स्पष्ट है कि अपनी राय से किसी चीज़ को उस समय तक हराम या हलाल न समझें जब तक कि उस पर अच्छी तरह सोच विचार कर यक़ीन न कर लें। (वहीदी)

३०. इस आयत से मालूम हुआ कि अल्लाह अपने अर्श पर रह कर दुनिया की तमाम ही चीज़ों को देख रहा है और इसी प्रकार हर शख़्स के हर एक काम और हर एक चाल को जानता है। इस आयत से उन जाहिल फ़लासफ़रों का ख़्याल भी रद्द होता है जो कहते हैं कि अल्लाह केवल कुल्लियात ही को जानता है (छोटी छोटी चीज़ों या किसी बड़ी चीज़ के टुकड़ों को नहीं जानता)। (वहीदी)

رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي
السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا
فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٦١﴾ أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾ الَّذِينَ آمَنُوا
وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَفِي الْآخِرَةِ ۚ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٦٤﴾ وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ
إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٥﴾
أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ ۗ
وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
شُرَكَاءَ ۚ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا
يَخْرُصُونَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا
فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ

ज़र्रा जितनी चीज़ भी तेरे रब (यानी हमारे इल्म) से कम नहीं हो सकती, न ज़मीन में न आसमान में, न उस से छोटी और न उससे बड़ी सबकी सब खुली किताब में दर्ज है (जिसका नाम लौहे महफ़ूज़ है)। ६२. सुनो अल्लाह के दोस्तों (और उसी से नियाज़मंदाना ताल्लुक़ रखने वालों) पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वह किसी तरह रंजीदा होंगे[३१]। ६३. जो लोग अल्लाह पर (कामिल) ईमान लाते हैं और (उसकी मना की हुई चीज़ों से) परहेज़ करते हैं। ६४. (यही अल्लाह के वली हैं) उन्हीं के लिये दुनिया और आख़िरत में खुशख़बरी है। अल्लाह के आदेशों में तब्दीली संभव नहीं। (अगर होश में हो तो जानो कि) यही बड़ी कामयाबी है[३२]। ६५. और तू काफ़िरों की बातों से रंजीदा न हो। क्योंकि (इज़्ज़त और) ग़लबा सब अल्लाह ही के क़ब्ज़े में है। वह (सबकी) सुनता और (सब को) जानता है।

६६. सुनो! जो लोग आसमानों और ज़मीनों में हैं सब अल्लाह के गुलाम हैं। और जो लोग उसके अ़लावा (अपनी तरफ़ से बनाये हुए) साझीदारों को पुकारते हैं। वे सिर्फ़ अपनी मनघंड़त बातों (और वहम) पर चलते हैं। और (नफ़्सपरस्ती में) वह निरी अटकलें दौड़ाते हैं। ६७. (सुनो! हम उनके रब की दलील सुनाते हैं) वही (एक) अल्लाह (मालिकुल् मुल्क) है जिसने तुम्हारे लिए रात पैदा की ताकि तुम उसमें आराम पाओ और दिन को रोशन बनाया।

....

३१. 'किसी प्रकार रंजीदा न होंगे, दुनिया में, या दुनिया और आख़िरत दोनों में। इसलिये कि अल्लाह की मुहब्बत और उसकी इताअत में हर लम्हा तैयार रहते हैं। उन को दुनिया की आफ़तें और मुसीबतें सब बे हक़ीक़त मालूम होती हैं। सअ़ीद बिन जुबैर रह० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के वली वे हैं जिन्हें देख कर खुदा याद आ जाये। हज़रत इब्ने अ़ब्बास ने भी यहीं परिभाषा की है। कुछ उलमा का कहना है "अल्लाह के वली वे हैं जो अल्लाह के लिए मुहब्बत रखें। इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम शाफ़ई का कहना है कि अगर आ़लिम अल्लाह का वली नहीं है, तो फिर कोई भी नहीं है। सय्यद अ़ल्लामा कहते हैं कि अल्लाह का वली वह है जो सहीह अक़ीदा रखता हो और कुरआन व हदीस पर अमल करता हो, क्योंकि अल्लाह तक उड़कर पहुंचने के लिये ये दो पंख अनिवार्य हैं (१) सच्चा अक़ीदा (२) नेक अ़मल। अगर इन दोनों में से किसी में ज़रा भी कमी पाई गयी तो वह वली नहीं हो सकता।

एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "जब किसी बन्दे ने अल्लाह के लिये दोस्ती रखी और अल्लाह के लिये दुश्मनी की तो वह वलायत के दर्जे तक पहुंच गया और वली मेरे महबूब बन्दे हैं, मेरे साथ उनका ज़िक्र होता है और उन के साथ मेरा नाम आता है।" एक दूसरी हदीस में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "तुम में बेहतर वे लोग हैं जिन्हें देखकर अल्लाह याद आ जाये और आख़िरत से लगाव बढ़ जाये।

अल्लाह तआ़ला ने स्वयं वली की तारीफ़ इन शब्दों में की है जो नेक काम करते हैं और गुनाहों से बचते हैं। इससे मालूम हुआ कि जिसका अ़क़ीदा दुरुस्त नहीं और न ही वह नेक अ़मल का पाबंद है वह वली नहीं हो सकता। वली अगरचे गुनाहों से मासूम नहीं होते, मगर उस से सुरक्षित अवश्य होते हैं, अल्लाह उन को गुनाहों से बचाता है और कभी धोखे से गुनाह का काम हो भी जाये तो तुरन्त तौबा कर लेते हैं और जब तौबा कर ली तो उसी समय गुनाह का प्रभाव भी समाप्त हो गया। (वहीदी)

इस आयत में वली लोगों की पहचान, अल्लाह पर ईमान और तक़्वा अख़्तियार करना बतलाया गया है। एक सच्चे वली के अन्दर इन दोनों विशेषताओं का पाया जाना अनिवार्य है। जिस बन्दे के अन्दर ये दोनों बातें पायी गयीं वह निःसंदेह अल्लाह का वली है। वली होने के लिये कश्फ़-करामत का उसके अन्दर पाया जाना शर्त के तौर पर नहीं है। उनके लिये दुनिया और आख़िरत में ईमान और तक़्वा की नेमत ही एक बेपनाह नेमत है। इन तमाम बातों से स्पष्ट हो गया कि आज कल के ढौंगी, शराबी, नशाबाज़, बिदअ़ती क़ब्रों का पुजारी हरगिज़ वली नहीं हो सकता बल्कि मौलाना रूम रह० के नज़दीक ऐसे लोगों का वली नाम शैतान ने रखा हुआ है और अगर इनका नाम वली है तो ऐसे वली पर लानत है। (राज़)

३२. 'लहुमुल बुशरा' (दुनिया की खुशी) से मुराद "मुसलमान का ख़्वाब" है, चाहे वह अपने बारे में देखे या अपने किसी मुसलमान भाई के बारे में। नेक ख़्वाब (सपना) पैग़म्बरी का ४६वां हिस्सा है। कुछ उलमा इस जुमले का यह मतलब बताते हैं कि यह खुशी दुनिया की जिन्दगी में उस समय दाख़िल होती है जब

लोग उसके नेक अ़मल करने की वजह से उसकी प्रशंसा करते हैं, और आख़िरत की ख़ुशी यह है कि उसको जन्नत मिलेगी। हदीस शरीफ़ में है कि दुनिया में किसी मुसलमान की प्रशंसा होना वह ख़ुशी है जो जल्दी उसको मिलती है। कुछ उलमा ने कहा कि इस से मुराद वह ख़ुशख़बरी है जो फ़रिश्ते मरते समय मोमिन को देते हैं और आख़िरत की ख़ुशी अल्लाह की रज़ामंदी का नाम है।

अगर लोग इस पर ग़ौर करें तो दुनिया मे जिस को ख़ुशी कहना चाहिये वह वास्तव में ईमान और नेकी की ख़ुशी है और यह क़ेवल मोमिन बन्दे को ही हासिल होती है। रही धन-दौलत अच्छे से अच्छे खान-पान पद और मर्तबे की ख़ुशी, तो यह अस्थाई और आ़रज़ी है इसलिये इन की गिन्ती ख़ुशी में नहीं होती। एक लम्हे में सारी सम्पत्ति जल कर नष्ट हो जाती है, चोर साफ़ कर जाता है या आग से देखते ही देखते वह खेत जल कर नष्ट हो जाता है, एक ही बीमारी में सारी सुन्दरता समाप्त हो जाती है, खाने-पीने का स्वाद एक लम्हे में कड़ुवा हो जाता है। (वहीदी)

لِقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ۝ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ
هُوَ الْغَنِيُّ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ
اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍۭ بِهٰذَا ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى
اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ
عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ۝ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا
ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ
بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ
اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ
وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْا
اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ
غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْا اِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ ۝ فَاِنْ
تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى
اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ فَكَذَّبُوْهُ

बेशक सुनने वाली क़ौम के लिये इस वाक़िया में बहुत सी निशानियां हैं। ६८. कहते हैं कि अल्लाह ने औलाद बनाई है सुब्हानल्लाह वह पाक है। वह बेनियाज़ है। सब चीज़ें जो आसमानों और ज़मीनों में हैं वह सब उसी की (मिल्क) हैं। तुम्हारे पास कोई (भी) दलील इस (दावा) पर नहीं। क्या अल्लाह के हक़ में ऐसी बातें कहते हो जो तुम स्वयं भी नहीं जानते[33]। ६९. तू कह दे कि (जो लोग) अल्लाह पर(झूठ) बांधते हैं। कभी भलाई न पायेंगे। ७०. (उनके लिये) दुनिया में चन्द रोज़ का गुज़ारा है फिर हमारी तरफ़ उनको लौटना है फिर हम (उनको) उनके कुफ़्र की वजह से सख़्त अज़ाब चखायेंगे। ७१. और उन को नूह की ख़बर सुना जब उसने अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि ऐ मेरे भाईयो ! अगर (केवल) मेरा (इस स्थान पर) रहना और अल्लाह के हुक्मों का वाज़ सुनाना (तुम लोगों पर) भारी (और नापसंद) है तो मेरा भरोसा अल्लाह ही पर है पस तुम अपनी सारी तदबीर सोच लो और (अपने बनाए हुए) साझियों को भी (इस सोचविचार में) शामिल कर लो और किसी प्रकार अपने काम को न भूलो फिर जो मुझ पर करना चाहो कर लो और मुझे कुछ भी ढील न दो[34]। ७२. सो अगर (मेरी शिक्षा से) तुम मुंह फेरते हो तो (मुझपर उसका

नुक़सान नहीं क्योंकि) मैं तुमसे मज़दूरी नहीं मांगता। मेरी मज़दूरी तो केवल अल्लाह ही के पास है और मुझे यही आदेश है कि मैं (चूं-चरा करने के बजाए सीधा उसके) आज्ञाकारी बंदों में से बनूं। ७३. लेकिन (नर्म ढंग से समझाने पर भी) लोगों ने उसकी बात न मानी

....

३३. अक्सर उलमा का कहना है कि जितना कमज़ोर अ़क़ीदा ईसाइयों का है उतना और किसी मज़हब का नहीं है, इसलिये अल्लाह ने बन्दों को उनके जिहालत भरे क़ौल को पेश करके ताज्जुब ज़ाहिर किया है कि ज़रा इन बेवक़ूफ़ों को तो देखो जब अल्लाह पाक बेनियाज़ है तो उसे लड़के की आवश्यकता कहां से पेश आ गयी। अल्लाह की क़सम! जिस ने यह अक़ीदा रखा उसने अल्लाह को नहीं पहचाना और उनका यह ऐसा अ़क़ीदा है कि जिस पर उनके पास कोई दलील भी नहीं है। इस आयत से यह भी मालूम हुआ कि जिस क़ौल या अमल पर कोई शरई़ तर्क न हो वह बेबुनियाद बात है और अ़मल के योग्य नहीं। यह भी मालूम हुआ कि जिन बातों पर अ़क़ीदा और अ़मल हो उन पर दलील होना ज़रूरी है। और यह भी मसला मालूम हुआ कि अक़ीदे में तक़लीद जायज़ नहीं। (बैज़ावी)

मुसलमानों का तरीक़ा यह होना चाहिए कि अक़ीदा को छोड़कर आम मामलात में एक दूसरे से लड़ाई-झगड़ा न करें। लेकिन याद रहे अगर किसी ने यह कह दिया कि हम को कुरआन व हदीस से कुछ लेना देना नहीं, हम तो फ़लां इमाम की तक़लीद करते हैं उसी की बात मानेंगे जो वह चाहेगा वहीं करेंगे हम पर उसकी तक़लीद फ़र्ज़ है तो यह बहुत ही बड़ी बात होगी और ऐसा कहना और करना शिर्क हुआ। (मवाहिब)

इस आयत में इस बात की तरफ़ भी इशारा है कि अल्लाह के बारे में ऐसी बातें साबित करना जिस का कोई सबूत न हो यह ईसाइयों का तौर तरीक़ा है। आज मुसलमान भी इस मामले में उन ईसाइयों से पीछे नहीं हैं, इन का भी कहना है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम में केवल "मीम" ही पर्दा है, वरना हम्द (अल्लाह) और मुहम्मद दोनों एक ही हैं। इस ख़तरा को भांप कर अल्लाह तआ़ला के कलिम-ए-शहादत में 'अ़शहदु अन्न मुहम्म दन अबदुहू व रसूलुहू (मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं) बन्दा और रसूल का शब्द इस्तेमाल किया है।

३४. कुरआन पाक के समझाने का तरीक़ा यह है कि पहले तौहीद की दलीलें पेश करता है फिर क़ौमों के वाक़िआ़त और उन पर घटने वाले हालात को दलील के तौर पर पेश करता है। यहां पर हज़रत नूह अ़लै० का वाक़िया बयान हुआ है। हज़रत नूह ने अपने जिस इरादे का इज़्हार किया है वह एक सच्चे नबी होने की स्पष्ट दलील है।

हज़रत नूह अ़लै० ने कहा : अगर तुम पर मेरी दावत बोझ मालूम होती है और मुझे अपने दावे में झूठा समझते हो तो जो कुछ मेरे ख़िलाफ़ कर सकते हो, ज़्यादा कोशिश और ज़्यादा तैयारी के साथ कर डालो। तुम सब इकट्ठा हो कर परस्पर राय मश्वरा कर लो, बेहतर से बेहतर तदबीरें जो मेरे मिटाने के लिये सोची जा सकती हैं सोच लो और मामले का कोई पहलू ऐसा न रह जाये जिसका पहले से इन्तिज़ाम न कर लिया हो, फिर पूरे इरादे और हौसले के साथ उठ खड़े हो और अपनी तरफ़ से मुझे ज़रा भी मौक़ा न दो। यह सब करके देख लो कि मुझे और मेरी दावत को मिटा सकते हो या नहीं? क्या यह संभव है कि अकेला एक व्यक्ति पूरी क़ौम को इस प्रकार की दावत (चुनौती) दे और उसके दिल में ज़रा भी खटक मौजूद न हो कि वह अपने बयान में सच्चां नहीं? (तर्जुमान)

فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِى الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝٧٣ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۗ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ۝٧٤ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝٧٥ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧٦ قَالَ مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ۗ اَسِحْرٌ هٰذَا ۗ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ۝٧٧ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِى الْاَرْضِ ۗ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ۝٧٨ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِىْ

पस हमने उस को और उसके साथ वालों को कश्ती द्वारा बचा लिया और उन्हीं को काफ़िरों का जांनशीन बनाया और जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया था उन को डुबो दिया, सो तू ग़ौर कर कि उन डराए हुए लोगों का कैसा बुरा अंजाम हुआ[३५]। ७४. फिर हमने उस (नूह) के बाद कई रसूल (क़ौमों की तरफ़) भेजे पस वह उन के पास स्पष्ट दलीलें लाये मगर फिर भी वह जिस चीज़ को पहले एक मर्तबा झुठला चुके थे उस पर ईमान न लाये (यहां तक कि अल्लाह की तरफ़ से उनको धुत्कार हुयी) इसी प्रकार सीमा से आगे बढ़ने वालों के दिलों पर हम मुहर कर दिया करते हैं। ७५. फिर (भी हम ने लोगों को बग़ैर हिदायत के न छोड़ा बल्कि) उनके बाद मूसा और हारून को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसकी जमाअ़त की तरफ़ भेजा पस उन्होंने तकब्बुर किया (और लगे अपनी अमीरी के गीत गाने) और बदकार क़ौम बन गये। ७६. फिर जब हमारे पास से उनको हक़ पहुंचा तो और कुछ उत्तर न दे सके कहने लगे कि यह तो स्पष्ट जादू (की क़िस्म) है। ७७. मूसा ने कहा: क्या जब हक़ बात तुम्हारे पास आयी तो उसे जादू कहते हो? (क्या अंधे हो देखते नहीं) क्या यह जादू है? और जादूगर तो कभी कामयाब नहीं होते। ७८. (तो वह अक़्ल के पुतले यूं) बोले[३६] कि क्या तू हमारे पास इसी लिये आया है कि जिस दीन पर हम ने अपने बाप दादों को अ़मल करते हुए पाया है उस दीन से हम को फिसला दे और ज़मीन में तुम दोनों भाइयों की बड़ाई (और शासन स्थापित) हो और हम तुम्हारी बात न मानेंगे। ७९. और फ़िरऔन बोला : मेरे पास हर (माहिर) जादूगर को

....

३५. 'कैसा बुरा अन्त हुआ' जिस किसी के पास इबरत की आंख हो यह देखे कि झुठलाने वालों का अंजाम क्या हुआ। उन लोगों को सैकड़ों वर्ष हज़रत नूह ने उपदेश दिया, नफ़ा-नुक़सान से अवगत कराया। जब भी कोई बात न मानी, बल्कि उल्टे दुश्मनी पर उतर आये तो पानी का अ़ज़ाब नाज़िल करके डुबो दिया। केवल नूह और उनके कुछ साथी ही बचे, जो नूह अ़लै० के साथ कश्ती पर सवार थे। और इन्हीं से आगे नस्ल चली। हज़रत नूह के बाद हूद, स्वालेह, लूत, इब्राहीम और हज़रत शुऐब अ़लैहिमुस्सलाम को अपनी-अपनी

क़ौम की स्पष्ट निशानियों को देकर भेजा गया, लेकिन इनकी क़ौम के लोगों ने इनको भी झुठलाया और इनकी नुबूवत को मानने से इंकार किया। किसी को भी ईमान लाने की तौफ़ीक़ न हुई। और मुंह से एक बार 'ना' शब्द निकल गया तो अब संभव नहीं कि 'हां' उनके मुंह से निकले।

३६. दुनिया के कुत्तों का यह नियम है कि जब उनको अल्लाह के आदेश सुनाओ तो वे तुरन्त सोच लेते हैं कि यह हमारी सरदारी छीन लेना चाहता है। इनके दिमाग़ में जो कुछ भरा होता है वह यह कि दुनिया कमाना और हुकूमत व शासन करना, इस प्रकार दूसरों के भी बारे में सोचने लगते हैं। फ़िरऔन के मानने वालों ने भी अपनी सोच का घटिया प्रदर्शन करते हुए हज़रत मूसा और हारून के बारे में यही कहा (वहीदी) फ़िरऔन और उसके अनुयायियों ने हज़रत मूसा की दावत व तबलीग़ के मुक़ाबले में तक़लीद की आड़ ली और झूठ कह दिया कि यह तो हम लोगों को अपने नये दीन के जाल में फंसा कर वर्षों पुराने बाप दादों के दीन-धर्म से भटका देना चाहता है।

आज भी इसी तक़लीद की महामारी ने उम्मते-मुस्लिमा को इस्लाम से हटा दिया है और इसी तक़लीद ने उसको टुकड़ों में बांट दिया है, इस प्रकार इस उम्मत की कुव्वत और ताक़त का जनाज़ा निकल चुका है। इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलयहि राजिऊन०

بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ۝ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ
لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ۝ فَلَمَّآ اَلْقَوْا
قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝
وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝
فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ
مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ
لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ وَقَالَ
مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا
اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ۝ فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَنَجِّنَا
بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَاَوْحَيْنَآ
اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ

(मुल्क के हर हिस्से से) लाओ। ८०. जब जादूगर (मूसा के सामने) आये तो मूसा ने कहा कि जो कुछ तुम (मेरे मुक़ाबले में) डालना चाहते तो डाल दो (तुम्हारे अरमान बाक़ी न रह जायें)। ८१. तो जब वे (अपने डालने की चीज़) डाल चुके तो मूसा ने कहा जो कुछ तुम लाये हो तो यह जादू है। बेशक अल्लाह इसको बरबाद करेगा (क्योंकि यह सुधार के मुक़ाबले में फ़साद है और) अल्लाह फ़सादियों के अ़मल संवारा नहीं करता। ८२. और (हम एलान किये देते हैं कि) अल्लाह अपने हुक्म से सच्चे दीन को मज़बूत करेगा काफ़िरों को अगरचे यह बुरा लगे[३७]। ८३. (इतना सुन कर) फिर फ़िरऔन की क़ौम के केवल चन्द आदमी मूसा पर ईमान लाये (सो भी) फ़िरऔन और उसकी जमाअ़त (और पुलिसकर्मियों) से डरते हुए कि कहीं किसी बला में न फंसा दे[३८] (क्योंकि) फ़िरऔन ज़मीन (मिस्र) में बड़ा तकब्बुर करने

वाला था, और हद से बढ़ा हुआ था। ८४. (बनी इस्राईल मूसा के पास फ़रियादी हुए) और मूसा ने (उनके उत्तर में) कहा : भाइयो! अगर अल्लाह पर ईमान लाये हो तो (इन तकलीफ़ों में) उसी पर भरोसा करो अगर तुम फ़रमांबरदार हो। ८५. तो वे सब (एक ज़बान होकर बोले) कि हमने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐ हमारे मौला! हमें ज़ालिमों के लिये परीक्षा न बना। ८६. और मेहरबानी के साथ (फ़िरऔनी) काफ़िरों के अ़ज़ाब से हमें नजात दे[३९]। ८७. और हम ने मूसा और उसके भाई हारून को वहिय की कि (सब्र करो) अपनी क़ौम को मिस्र में घरों के अन्दर ठहराये रखो।

....

३७. 'हक़्क़' का अर्थ है "जो बात साबित, अटल, अमिट" हो। और 'बातिल' का अर्थ है जो उस के विपरीत हो यानी ऐसी बात जो मिट जाने वाली, बाक़ी न रहने वाली हो। इसलिये कुरआन ने सच्चाई को 'हक़' से और इन्कार को बातिल कह कर यह बात स्पष्ट कर दी कि सच्चाई की तासीर, साबित और अटल रहना है और इन्कार व सर्कशी के लिये टिक न सकना और मिट जाना है। यही वजह है कि कुरआन में 'हक़ और बातिल'' की जगह-जगह मिसालें मिलती हैं कि अल्लाह हक़ को हक़ और बातिल को बातिल कर देगा, यानी हक़ बाक़ी और साबित होकर अपने हक़ होने को ज़ाहिर कर देगा और बातिल मिट कर अपने बातिल होने का सबूत देगा। सूरः अनफ़ाल आयत नं० ७-८ में भी इसी की तरफ़ इशारा है। (तर्जुमान)

हर ज़माने में ऐसा ही हुआ है कि सच्चे आदमियों के ख़िलाफ़ हमेशा बुरे उठ खड़े हुए हैं लेकिन अल्लाह ने सच को बाक़ी और झूठ को मलियामेट कर दिया और उसका निशान तक बाक़ी न रखा। आप देख लीजिए। हज़रत ईसा अ़लैहि० के ज़माने में तमाम यहूदियों ने और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में अस्वद अन्सी और मुसैलमा कज़्ज़ाब उठ खड़े हुए, कितने कुछ पापड़ बेले और क्या-क्या चालें चलीं, लेकिन दोनों नबियों का दीन फैल रहा है अब तक क़ायम है और मुसैलमा कज़्ज़ाब, अस्वद अन्सी का नाम निशान तक बाक़ी न रहा। इस आयत नं० ८१ को अगर सच्चे दिल से पढ़ा जाए तो इसके पढ़ने वाले पर किसी जादू का असर न होगा, यह अपना ज़ाती तर्जुबा है। (वहीदी)

३८. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि फ़िरऔन की क़ौम में से चन्द मर्द औरतें ही ईमान लाए थे। औरतों में फ़िरऔन की पत्नी, घर की नौकरानी और एक कंघी चोटी करने वाली महिला। मर्दों में फ़िरऔन ही के ख़ानदान का एक मर्द, ख़ज़ाने की देख-रेख करने वाला और कुछ नौजवान, इन लोगों ने डरते-डरते हज़रत मूसा के दीन को कुबूल किया। (इब्ने जरीर)

३९. हज़रत मूसा अ़लैहि० पर ईमान लाने वाले इस्राईली लोगों की यह दुआ़ इस क़ाबिल है कि अगर आज भी मुसलमान सच्चे दीन पर साबित क़दम रहते हुए इस दुआ़ को वज़ीफ़ा बना लें तो उनका भी बेड़ा पार लग जाये। बहरहाल आयत नं० ८५-८६ बड़ी प्यारी कुरआनी दुआ़ है।

بُيُوتًا وَّاجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيمُوا الصَّلٰوةَ ؕ
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَقَالَ مُوسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ

और अपने घरों को इबादत गाहें बना लो और (उन्हीं में) नमाज़ पढ़ लिया करो और (सब्र करने वाले) ईमानदारों को खुशख़बरी सुनाओ[४०]। ८८. और मूसा ने कहा: ऐ

اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۞ قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۞ وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ۭ حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۞ اٰۗلْئٰنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۞

हमारे रब! (हम हुक्म मानने को हाज़िर हैं मगर) तू ने फ़िरऔ़न को और उसकी जमाअ़त को दुनिया में ज़ीनत और अधिक माल दे रखा है (जिसका नतीजा उनके हक़ में यह हुआ कि) वे लोगों को तेरी राह से गुमराह करते हैं तो ऐ हमारे मौला! उन के मालों पर दबाव डाल और उनके दिलों को सख़्त कर इसलिये कि जब तक वे दुःख की मार न देखें ईमान नहीं लायेंगे (जैसी उनके हाल से आशा है। हज़रत मूसा दुआ़ करते थे और हज़रत हारून आमीन कहते थे)। ८९. अल्लाह ने कहा कि तुम्हारी (दोनों भाईयों की) दुआ़ कुबूल हुई पस तुम दोनों भाई मज़बूत रहना और जाहिलों की राह पर न चलना[४१]। (चुनांचे उन्होंने ऐसा ही किया)। ९०. और हम बनी इस्राईल को दरिया पार कराने को थे कि फ़िरऔ़न और उसके लश्कर ने ज़िद और दुश्मनी से उनका पीछा किया। (चुनांचे इसी धुन में दरिया में कूद पड़े) यहां तक कि जब फ़िरऔ़न डूबने लगा तो बोला : मैं ईमान लाया हूं कि (उस) अल्लाह के अ़लावा जिस पर बनी इस्राईल का ईमान है कोई माबूद नहीं और मैं (उसके) आज्ञाकारों में से हूं। ९१. (अल्लाह की तरफ़ से फ़रिश्ता ने उत्तर दिया कि) अब ईमान लाता है? इससे पूर्व तू अवज्ञा कर चुका है और तू बड़ा फ़सादी था[४२]।

....

४०. हज़रत शाह अ़ब्दुल क़ादिर रह० लिखते हैं कि जब फ़िरऔ़न की बर्बादी का समय निकट आ गया तो हज़रत मूसा से कहा गया कि अपनी क़ौम बनी इस्राईल को उनसे अलग कर लो, उनसे अलग एक मुहल्ला बसा लो, इसलिये कि फ़िरऔ़न की क़ौम पर अज़ाब आने वाला है। चुनांचे हज़रत मूसा ने अपनी क़ौम को अलग कर लिया।

मुफ़स्सिरीन ने तर्जुमा किया है कि "अपने मकानों में ठहरे रहो और उनमें से कुछ को इबादत करने के लिये ख़ास कर लो। फ़िरऔ़न ने मस्जिदों और इबादत ख़ानों को ख़राब कर दिया था ताकि कोई बाहर निकल कर अल्लाह की इबादत न कर सके, इसलिये घर पर ही नमाज़ के लिये स्थान ख़ास करने का हुक्म हुआ। हिजरत से पहले मक्का शरीफ़ में भी मुसलमानों के साथ यही हुआ था (मुवज़्ज़िहुल् कुरआन) नमाज़, बशारत और ईमान इन तीनों का जोड़ यह बतलाता है कि अल्लाह की बशारत अल्लाह पर ईमान रखने पर निर्भर है और ईमान का वजूद बाजमाअ़त नमाज़ से ख़ास है। इसका मतलब यह हुआ कि बग़ैर नमाज़ के न ईमान है और न ही अल्लाह की मदद और बशारत। (राज़)

४१. जब हज़रत मूसा अ़लैहि० एक लंबे समय तक तबलीग़ करते और बड़े-बड़े चमत्कार दिखाते रहे, मगर मुख़ालिफ़त करने वालों का इन्कार बढ़ता ही रहा और उनके दर्मियान लंबे समय तक रहने के बाद मालूम हुआ कि ये कभी नहीं सुधरेंगे, तब हज़रत मूसा अ़लैहि० ने उनकी बर्बादी के लिये दुआ फ़रमायी, ताकि उनकी ज़ात से दुनिया पाक हो जाये और दूसरे लोग उनके अंत से डर कर संभवतः ईमान ले आयें। आप ने यह दुआ़ की कि उनकी दौलत को मलियामेट कर दे और उनके दिलों पर मुहर लगा दे, ताकि इनकी आंखें सिर्फ़ उसी समय खुलें जब अपनी आंखों से दर्दनाक अज़ाब को देख लें। यह दुआ़ उनके हक़ में बिल्कुल ऐसी ही है जैसे शैतान के हक़ में "लानतुल्लाह" और कुफ़्फ़ार के लिये "ख़ ज़ लहुमुल्लाह" बोला जाता है, हालांकि उन पर अल्लाह की लानत और जिल्लत की मार तो बहुत पहले ही पड़ चुकी है।

हज़रत शाह साहब ने इस आयत की तश्रीह दूसरे तौर पर की है, वह फ़रमाते हैं कि "उन से सच्चे ईमान की आशा न रही। उन पर जब मुसीबत आती तो झूठी ज़बान से कह देते कि अब हम मानेंगे इसलिये उन पर से अ़ज़ाब थम जाता था और उनका सफ़ाया नहीं हो पाता था। दुआ़ इसलिये मांगी थी कि वह झूठा ईमान न लायें और उनके दिल सख़्त ही रहें ताकि अज़ाब आ कर उनका सफ़ाया कर दे।" रिवायतों से मालूम होता है कि हज़रत मूसा जब दुआ़ करते थे तो हज़रत हारून आमीन कहते जाते थे, इसी लिहाज़ से "तुम दोनों की दुआ" फ़रमाया है। (मुवज्ज़िह)

४२. अ़ज़ाब देख लेने या जान निकलने के समय ईमान लाने को "ईमाने ग़रग़रा" या "ईमाने ना उम्मीदी" कहते हैं और ऐसे समय का ईमान कोई फ़ायदा नहीं देता है। बनी इस्राईल के नजात पाने और फ़िरऔ़न के डूबने का वाक़िया १० मुहर्रमुल हराम के दिन हुआ था। नई तहक़ीक़ की रोशनी में फ़िरऔन की लाश आज तक सुरक्षित है और मुल्क मिस्र के म्यूज़ियम में लोगों के लिये इबरत की निशानी बनी रखी है। (मुवज़्ज़िहुल् कुरआन)

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ
اٰيَةً ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا
لَغٰفِلُوْنَ ﴿۹۲﴾ وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ
صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا
حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۹۳﴾ فَاِنْ
كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْـَٔلِ الَّذِيْنَ
يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ
الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿۹۴﴾
وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۹۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ

९२. पस आज के रोज़ हम (ख़ुदा) तेरा ईमान कुबूल न करेंगे (अलबत्ता) तेरे जिस्म को बाहर फेंक देंगे ताकि तू अपने बाद लोगों के लिये (इबरत का) निशान हो और बहुत से लोग हमारी (कुदरत की) निशानियों से ग़ाफ़िल हैं[४१]। ९३. और बनी इस्राईल को हमने सच्चे वायदे के स्थान (कन्आ़न की ज़मीन) पर पहुंचाया है और उन को पाकीज़ा (और अच्छे-अच्छे क़िस्म का) खाना खाने को दिया फिर वह (इस मामले में मूसा की तरह एक नबी ज़रूर आयेगा) मुख़तलिफ़ न हुए मगर जबकि उन को (क़तई़) इल्म (उसकी तसदीक़ का) हासिल हो गया। बेशक जिन-जिन बातों में (अहले हक़ से) ये इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं तेरा रब

عَلَيۡهِمۡ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤۡمِنُونَ ۝ وَلَوۡ جَآءَتۡهُمۡ
كُلُّ ءَايَةٍ حَتَّىٰ يَرَوُاْ ٱلۡعَذَابَ ٱلۡأَلِيمَ ۝ فَلَوۡلَا

➲क़ियामत के रोज़ उनमें (स्पष्ट) फ़ैसला करेगा। ९४. और (थोड़ी देर के लिये) अगर तुझे (भी) हमारे उतारे हुए कलाम में शक गुज़रे (कि कहीं ऐसा न हो कि मैं ही ग़लती पर हूं) तो जो लोग तुझ से पहली किताब पढ़ते हैं उनसे पूछ ले, बेशक (वि तसदीक़ करेंगे कि) अल्लाह की तरफ़ से तुझे सच्ची बात पहुंची है पस तू हरगिज़ शक करने वालों में से मत होना। ९५. और न उन लोगों से मिलना जो अल्लाह के हुक्मों को झुठलाते हैं वरना तू भी टोटा पाने वालों में से हो जायेगा। ९६. जिन लोगों पर (उनके घमंड और सरकशी की वजह से) तेरे रब (के ग़ज़ब)का हुक्म लग चुका है वे कभी ईमान न लायेंगे। ९७. अगरचे उनको हर क़िस्म के निशान (भी) पहुंच जायें जब तक वह दुःख की मार न देखेंगे।

....

४३. इस आयत का विषय देखने में अ़जीब मालूम होता है यानी तक़दीर का फ़ैसला कि फ़िरऔन के जिस्म को डूबने से बचाया जायेगा ताकि आने वाली क़ौमों के लिये इबरत की निशानी हो। इसलिये पहले के मुफ़स्सिरों को मतलब हल करने में मुश्किल का सामना करना पड़ता है। लेकिन अगर ग़ौर से देखा जाए तो अर्थ बिल्कुल स्पष्ट है। पहले ज़माना में मिस्र के लोगों में हुनूत (जिस्म पर एक ख़ास मसाला लगाने) का तरीक़ा आम था यानी बादशाहों के जिस्म पर एक ख़ास क़िस्म का मसाला लगाकर उनके शवों को काफ़ी समय तक के लिये सुरक्षित कर देते थे। चुनांचे १८वीं शताब्दी के आरंभ से लेकर इस समय तक अनगिन्त शव अब तक ज़मीन से निकल चुके हैं और दुनिया का कोई भी अ़जायब घर (Musium) ऐसा नहीं जहां दो-चार शव न रखे हुए हों। इस प्रकार की लाशों के लिये "मम्मी" का शब्द यूनानियों ने इस्तेमाल किया था जो संभवतः मिस्रियों की परिभाषा है।

आयत का मतलब यह है कि तू अब मौत से नहीं बच सकता, लेकिन तेरी लाश को समुन्द्र की लहरों से बचा लिया जायेगा ताकि वह मम्मी करके रखा जाये और आने वाली नस्लों के लिये इबरत और नसीहत का कारण बने। अगर मिस्र के कुछ उलमा की यह तहक़ीक़ दुरुस्त है कि फ़िरऔन रोमीसीसिस सानी(II) था तो उसकी लाश बहरहाल सुरक्षित है क्योंकि उसकी मम्मी निकल आयी है और मिस्र की राजधानी क़ाहिरा में सुरक्षित मौजूद है। (तर्जुमान) कुरआन की आयत पर ग़ौर किया जाये तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उस का शव आने वाली नस्लों के लिये रहना ज़रूरी है चुनांचे वह मौजूद है।

كَانَتۡ قَرۡيَةٌ ءَامَنَتۡ فَنَفَعَهَآ إِيمَٰنُهَآ إِلَّا قَوۡمَ
يُونُسَ لَمَّآ ءَامَنُواْ كَشَفۡنَا عَنۡهُمۡ عَذَابَ ٱلۡخِزۡيِ
فِي ٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَا وَمَتَّعۡنَٰهُمۡ إِلَىٰ حِينٖ ۝ وَلَوۡ
شَآءَ رَبُّكَ لَأٓمَنَ مَن فِي ٱلۡأَرۡضِ كُلُّهُمۡ جَمِيعًاۚ

९८. तो क्यों न कोई बस्ती (या क़ौम) ईमान लायी होती जिसको ईमान से (ईमान के सही होने की वजह से अल्लाह के नज़दीक) लाभ ही होता (यानी कोई काफ़िर क़ौम ऐसे वक़्त में ईमान न लायी जो ईमान लाने के लिये मुक़र्रर है।) मगर यूनुस की क़ौम[४४]। जब वह ईमान ला चुके तो हमने भी ज़िल्लत➲

➲का अ़ज़ाब उनसे दुनिया में दूर कर दिया और एक समय पर उन को आसूदगी से लाभ पहुंचाया। ९९. और अगर तेरा रब चाहता तो सब ज़मीन के बाशिन्दे ईमानदार हो जाते (तो तू जो इतना रंजीदा होता है) क्या तू लोगों पर जब्र करेगा कि वे ईमानदार बन जायें? (हालांकि तेरे जब्र से कुछ नहीं होगा)। १००. हालांकि कोई शख़्स भी अल्लाह की तौफ़ीक़ के बग़ैर ईमान नहीं लाता। अल्लाह उन लोगों पर (बिसमझी की) नजासत डालता है जो (उसकी दी हुयी) अक़्ल से काम नहीं लेते १०१. (ऐसे लोगों से) तू कह कि ग़ौर तो करो कि आसमानों और ज़मीनों में क्या-क्या (अ़जीब) चीज़ें हैं[४५]। और बेईमानों को न तो (अल्लाह की कुदरत के) निशान और न (उसकी तरफ़ से) डराने वाले कुछ काम दे सकते हैं[४६]। १०२. ये लोग (जो अब) ईमान नहीं लाते तो गोया सिर्फ़ अपने से पहले लोगों के से वाक़िआत के मुन्तज़िर हैं। (ऐ नबी) तू (उन से) कह (अच्छा) इन्तिज़ार कर लो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वाला हूं। (हमारा दस्तूर है कि) जब काफ़िर ज़िद पर अड़े रहते हैं तो हम उन पर अज़ाब भेजते हैं। १०३. फिर हम अपने रसूलों और ईमानदारों को (उस अज़ाब से) बचा लिया करते हैं इसी तरह (ऐसे अज़ाबों से) ईमानदारों को बचाना हमारा जिम्मा है। १०४. तो (ऐ नबी एक बात उनसे और भी) कह दो, लोगो !

أَفَأَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتَّىٰ يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٩٩﴾
وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَ
يَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٠﴾
قُلِ انْظُرُوا مَاذَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَا
تُغْنِي الْآيَاتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠١﴾
فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا
مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ قُلْ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ
الْمُنْتَظِرِينَ ﴿١٠٢﴾ ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا كَذَٰلِكَ
حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنْ

....

४४. इस आयत में हज़रत यूनुस अ़लैहि० के वाक़िआ़ की तरफ़ इशारा है। उनका इबरानी भाषा में "यूनाह" नाम था जो अ़रब भाषा में "यूनुस" हो गया। यह बनी इस्राईल में नबी बनाकर भेजे गये थे। इनका एक संदेश मौजूद है उससे मालूम होता है कि इन्होंने नेनवा के लोगों को आगाह किया था कि ४० दिन के बाद बस्ती तबाह कर दी जायेगी। यह सुनकर उन्होंने सरकशी से तौबा कर ली और बादशाह से लेकर बकरियां चराने वाले सब ही लोगों ने तौबा की, इस का नतीजा यह निकला कि ४० दिन का समय बीत गया और अ़ज़ाब टल गया। अ़ज़ाब इसलिये टल गया कि उन्होंने सर्कशी से तौबा कर ली थी। इस आयत से मालूम होता है कि एक ख़ास वक़्त तक के लिये अज़ाब को टाला गया। चुनांचे हज़रत यूनुस के बाद उनके ज़ुल्म और सरकशी में इज़ाफ़ा हुआ तो उस समय के एक नबी हज़रत नाहूम ने भी उन्हें अ़ज़ाब की ख़बर दी। इसके ७० वर्ष बाद बाबुल की फ़ौजों ने लश्करकशी (आक्रमण) कर दिया, साथ ही दजला नदी में सैलाब आ गया जिससे नेनवा की चारदीवारी टूट फूट कर बिखर गयी और हमला करने वालों से बचाव का कोई ज़रिया न बचा और यह शहर इस तरह से तबाह व बर्बाद हुआ कि सन् २०० ई० पू० में इसका निशान भी मिट गया। एक इतिहासकार ने इस बात को लिखा है।

आयत का मतलब यह है कि अगर मक्का वाले इन्कार कर रहे हैं तो कोई नई बात नहीं है। तुम्हें ग़ौर➲

➲करना चाहिए कि कितने ही रसूल पास पसौड़ में आये लेकिन यूनुस की क़ौम के अलावा कोई और क़ौम ऐसी नहीं निकली जिसने अपने रसूल की बात को मान कर फ़ौरन तौबा कर ली हो और अज़ाब उस से टल गया हो। तो जब अक्सर ऐसा ही हुआ है तो मौजूदा हालत में इन लोगों के झुठलाने और न मानने पर मायूसी नहीं होनी चाहिए। (तर्जुमान)

४५. भला यह भी कोई अक़्ल से काम लेना है कि दुनिया के धंधों में इतने व्यस्त हैं कि पूरब का माल पश्चिम तक पहुंचा रहे हैं, माल कमाने के लिये तरह-तरह के तरीक़ों पर ग़ौर करते हैं, समुन्द्र में जहाज़ चलाने के लिय तरह-तरह के उपकरण प्रयोग में ला रहे हैं, मगर इन लोगों को इतना भी ख़्याल नहीं है कि हमें भी यहां से कूच करना है। ऐसे लोगों से आप कह दीजिए कि आसमानों और ज़मीनों पर ग़ौर फ़िक्र करें, किस प्रकार अल्लाह ने इन को बनाया हैं बेशक जिसने इनको पैदा किया है वह बड़ी शक्ति का मालिक है अगर ऐसी ज़ात के हो रहो तो सब कुछ मिल जाये और अगर उस से अलग हुए तो ज़िल्लत की मार है और कुछ नहीं। वह अल्लाह ऐसा ज़बरदस्त है कि जिसने उस के दरवाज़े से मुंह मोड़ा, तो वह जहां भी जायेगा इ़ज़्ज़त नहीं पायेगा। (सनाई)

आज भी दौलत की पूजा करने वाले तरक़्क़ी के लिये नित नयी मशीनें ईजाद कर रहे हैं और उनको चला रहे हैं। लेकिन उन को इतनी भी ख़बर नहीं कि उन की बनाई हुई मशीनों को चलाने के लिये कारीगर की आवश्यकता है तो इतनी बड़ी कायनात की मशीन को चलाने के लिए भी किसी ज़ात की आवश्यक्ता है और वह अल्लाह की ज़ात है। जिस प्रकार उनकी बनाई हुई मशीनों को चलाने के लिये कारीगर न हों तो उनकी मशीन बंद हो जायेगी, इसी प्रकार इस दुनिया को चलाने वाला अगर न हो तो इस दुनिया का निज़ाम बंद हो जायेगा।

४६. बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि जब मक्का के मुश्रिकों की सर्कशी का सिलसिला जारी रहा तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनके हक़ में एक बद्दुआ़ फ़रमायी कि उन पर ऐसा सूखा-काल आये जैसा हज़रत यूनुस के समय में पड़ा था। आपकी दुआ़ओं का यह प्रभाव हुआ कि लोग मुरदार खाकर जान बचाने लगे। अपने बुतों से भी गुहार लगाई मगर वही ढाक के तीन पात। अन्त में अबू सुफ़ियान ने आप सल्ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से विनती की कि दुआ़ फ़रमा दीजिए, चुनांचे आपने दुआ़ फ़रमायी और बारिश हुई जिससे सूखा काल समाप्त हो गया। ऐसे बड़े-बड़े चमत्कार देख लेने के बाद भी मुश्रिकों को इस्लाम के सच होने में संदेह था। (अहसनुत्तफ़ासीर)

كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ
تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ
يَتَوَفّٰىكُمْ ۚ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۰۴﴾
وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ
مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۰۵﴾ وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا
لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا
مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۰۶﴾ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا

अगर तुम मेरे दीन के बारे में शक में हो तो (सुनो! मैं अपना अक़ीदा बताता हूं कि) अल्लाह के अ़लावा जिन लोगों को तुम पुकारते हो (और दुआ़एं मांगते हो) मैं तो उन की इबादत (और उनसे दुआ़) न करूंगा। हां, मैं अल्लाह (अकेले) की इबादत करता हूं जो तुम्हें मार देता है, और मुझे भी यह आदेश मिला है कि मैं (इस बात पर) ईमान रखने वालों में से बनूं[४७]।➲

كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِن يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ ۚ يُصِيبُ بِهِ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكُمْ ۖ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۖ وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِوَكِيلٍ ۝ وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۝

१०५. और यह (भी हुक्म है कि ऐ नबी) तू सच्चे दीन पर यकसू होकर अपने (आपको) क़ायम रख, और मुश्रिकों में न मिल जाना। १०६. और अल्लाह के अलावा किसी चीज़ को न पुकारना जो न तुझे लाभ दे सके और न हानि, (याद रख कि) अगर यह काम तू ने (कभी) किया (यानी अल्लाह के अलावा किसी चीज़ को मदद तलब करते हुए पुकारा) तो तुरन्त तू भी ज़ालिमों में शामिल होगा। १०७. और (यह बात दिल में जमा ले कि) अगर अल्लाह तुझे कोई तकलीफ़ पहुंचाये तो उसके अलावा कोई भी उसे हटाने वाला नहीं, और अगर वह तेरे हक़ में बेहतरी चाहे तो उसके फ़ज़्ल को कोई तुझसे फेर नहीं सकता। अपने बन्दों में से जिन पर चाहता है अपने ख़ास फ़ज़्ल से हिस्सा पहुंचा देता है। और वह बड़ा ही बख़्शने वाला मेहरबान है। १०८. तू (बुलन्द आवाज़ से) कह दे कि ऐ लोगो (अब किस बात की देरी है?) तुम्हारे रब की तरफ़ से सच्ची तालीम आ चुकी है, 'पस (सुन लो कि) जो कोई हिदायत पायेगा वह अपने ही नफ़्स के लिये पायेगा[४८], और जो गुमराही अख़्तियार करेगा वह अपने ही पर वबाल लेगा। और मैं तुम पर निगहबान (या अफ़सर) नहीं हूं। १०९. (यह बात तू उन को सुना दे और स्वयं) तू भी (उस तालीम की) जो तेरी तरफ़ वहिय की जाती है पैरवी कर और (जो तकलीफ़ पहुंचे उस पर) सब्र कर जब तक अल्लाह तुम में फ़ैसला न कर दे, और वह सब से अच्छा फ़ैसला करनें वाला है[४९]।

....

४७. यानी अगर मेरा तरीक़ा और मेरा मज़हब तुम्हारी समझ में नहीं आता है तो मैं समझाये देता हूं। मेरा अक़ीदा और अमल ख़ालिस तौहीद पर आधारित है। मैं तुम्हारे मनघंड़त माबूदों से नफ़रत करता हूं। तुम यह सोचना भी नहीं कि मैं इनको कुछ मानूंगा। मेरी इबादत केवल अल्लाह के लिये है जिसके क़ब्ज़े में सबकी जानें हैं। गोया मौत और ज़िन्दगी जिस के हाथ में है, मैं केवल उसी की इबादत करता हूं।

इसका मतलब यह हुआ कि हाथ पैर से उस की इबादत तो की जाये, साथ ही साथ दिल में भी तौहीद के ताल्लुक़ से पूरा-पूरा यक़ीन हो और ज़ाहिर में भी पूरी हिम्मत और तवज्जोह के साथ डटा रहे और तनिक भर भी शिर्क का धब्बा न लगने दे। जिस प्रकार इबादत उसी की करें इसी प्रकार मदद भी उसी से मांगे, क्योंकि नफ़ा व नुक़्सान का अकेला मालिक वही है। मुश्रिकीन की तरह ऐसी चीज़ों से मदद मांगना जो नफ़ा नुक़सान नहीं पहुंचा सकते हैं, तो यह बहुत बड़ा जुल्म है यानी शिर्क का एक हिस्सा है। अगर थोड़ी देर के लिये मान लिया जाये कि नबी भी ऐसा करे तो उसकी ज़ात को सामने रख कर यह और बड़ा शिर्क होगा। (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)

तौहीद और आख़िरत के ताल्लुक़ से हर प्रकार की दलीलों के बाद अब सूरत के समापन पर अन्तिम आदेश

➲दिया जा रहा है कि ऐ नबी! आप लोगों से कह दीजिए कि अगर अब भी तुम्हें मेरे दीन में कुछ शुब्हा है तो तुम यह आशा न रखना कि मैं तुम्हारे दीन को अख़्तियार कर लूंगा, मुझे तौहीद पर कायम रहने का आदेश दिया गया है। (हक़्क़ानी)

४८. मज़हबी सच्चाई का मामला समझने बूझने और समझ बूझ कर इख़्तियार करने का मामला है। इसमें किसी की ज़बरदस्ती है और न किसी प्रकार का लड़ाई झगड़ा। तुम्हारी भलाई के लिये एक बात कही गयी है। अगर समझ में आये तो मान लो, न समझ में आये तो न मानो। तुम्हारी राह तुम्हारे लिये, हमारी राह हमारे लिये। अगर मान लोगे तो अपना ही भला करोगे, न मानोगे तो अपना ही नुक़्सान करोगे। हर शख़्स अपने आप का मालिक है। वह चाहे भलाई की राह चले, चाहे बुराई की राह चले और बुराई कमाए। बड़े दुःख की बात है कि स्वयं मुसलमानों ने भी कुरआन की शिक्षा को पीछे डाल दिया है। अगर उन्होंने यह बात न भुलाई होती तो यह असंभव था कि उनके अंदर मज़हबी गिरोह बंदी पैदा होती और हर फ़िर्क़ा दूसरे फ़िर्क़े से केवल अक़ीदे के इख़्तिलाफ़ की बुनियाद पर लड़ाई-झगड़े पर उतर आता। (तर्जुमान)

४९. इमाम मुजाहिद का कहना है कि यह आयत, जिहाद वाली आयत से मन्सूख़ है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने १३ वर्ष तक काफ़िरों के दुःख दण्ड को सहा और उस पर सब्र किया। जब हिजरत करके मदीना पहुंचे तो जिहाद का हुक्म नाज़िल हुआ और इस्लाम को इज़्ज़त मिली। अ़ल्लामा सैयद कहते हैं कि कुरआन और हदीस में पांच आयतें और दस हदीसें मन्सूख़ हैं, इनमें किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं है। इन दस हदीसों और पांच आयतों को तो हर शख़्स याद कर सकता है, इसलिये मुक़ल्लिदों का यह कहना कि नासिख़-मन्सूख़ को पहचानना हर शख़्स के लिये मुश्किल है, बिल्कुल नामाकूल बात है। कुरआन और हदीस पर अ़मल करने के लिये कोई चीज़ रुकावट नहीं । (वहीदी)

सूरः हूद (11)

सूरः हूद मक्का में नाज़िल हुई। इसमें १२३ आयतें और १० रुकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है।

१. अलिफ़-लाम् रा, (सच समझो कि) इस किताब के अहकाम (मज़बूत और) मोहकम हैं और हिक्मत वाले, ख़बर रखने वाले के हां से मुफ़स्सल (विस्तार से) बयान किये जा चुके हैं। २. (सबसे पहला आदेश) यह कि अल्लाह के अ़लावा किसी की इबादत मत➲

تَوَلَّوۡا فَإِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٖ كَبِيرٍ ٣
إِلَى ٱللَّهِ مَرۡجِعُكُمۡۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٌ ٤
أَلَآ إِنَّهُمۡ يَثۡنُونَ صُدُورَهُمۡ لِيَسۡتَخۡفُواْ مِنۡهُۚ أَلَا
حِينَ يَسۡتَغۡشُونَ ثِيَابَهُمۡ يَعۡلَمُ مَا يُسِرُّونَ
وَمَا يُعۡلِنُونَۚ إِنَّهُۥ عَلِيمُۢ بِذَاتِ ٱلصُّدُورِ ٥
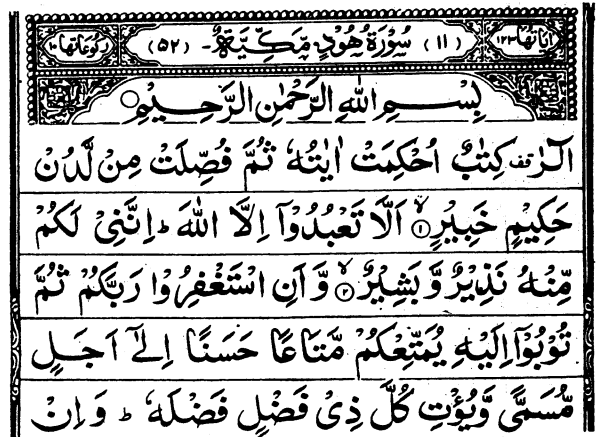
करो। कुछ शक नहीं कि मैं तुम को उस की तरफ़ से डराने वाला और शुभ सूचना देने वाला हूं। ३. और रब से बख़्शिश मांगा करो फिर उसी की तरफ़ झुके (भी) रहो (तुम अगर उसके हो रहोगे तो) वह तुम को एक सुनिश्चित समय तक उम्दा सामाने-ज़िन्दगी देगा (यह तो आ़म बख़्शिश होगी) और हर एक अहले-फ़ज़्ल को (जिसने ज़्यादा मेहनत की होगी) उसकी फ़ज़ीलत (का बदला भी) देगा। और अगर तुम मुंह फेरोगे (और मेरी सच्ची तालीम और सच्ची हमदर्दी को न मानोगे) तो मुझे तुम पर बड़े दिन के अ़ज़ाब आने का डर है (जिस से कुफ़्फ़ार की हलाकत होती रही है। क्योंकि) ४. अल्लाह की तरफ़ तुम सब को फिरना है, और वह (अल्लाह) सब चीज़ों पर कुदरत रखने वाला है। ५. सुनो! ये लोग (कुरआन सुनने से) अपने सीने फेरते हैं (और सर्कशी की ज़िन्दगी में चाहते हैं) कि अल्लाह से छुप जायें। आगाह रहो (अल्लाह से किसी तरह छुप नहीं सकते तो) जब ये कपड़े ओढ़ते हैं तो जो कुछ वह छुपाते हैं और ज़ाहिर करते हैं वह जानता है[३]। वह सीनों के अन्दर के हालात से भी आगाह है।

....

१. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "इस सूरः को जुमा के दिन पढ़ा करो।" एक दूसरी हदीस में फ़रमाया : "मुझ को सूरः हूद और सूरः वाक़िअः ने बूढ़ा बना दिया है।" (तिर्मिज़ी शरीफ़) इन सूरतों में क़ियामत के हालात, हिसाब किताब और अ़ज़ाब के हालात का बयान है।

२. यह हुरुफ़ मुकत्त़आत में से हैं। इस का मतलब अल्लाह ही बेहतर जानता है। वैसे कुछ मुफ़स्सिरों ने इस का तर्जुमा "मैं हूं अल्लाह देखने वाला" किया है। (राज़)

३. शाने नुज़ूल : इस आयत का शाने नुज़ूल कई तरह से बयान किया गया है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि लोगों का आसमान की तरफ़ मुंह करना, इस हालत में कि उनकी शर्मगाह खुली हों जो मकरूह जानते थे, इस पर यह आयत उतरी। बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० से यूं रिवायत है कि कुछ शर्मीले और हयादार लोग जब अपनी बीवियों से संभोग करते तो आसमान की ओर न देखते और अपना मुंह ढांक लेते, उनके हक़ में यह आयत उतरी। इमाम मुजाहिद कहते हैं कि जब मुश्रिक लोग कोई बुरी बात करते या कोई बुरा काम करते तो खड़े होकर करते और यह ख़्याल करते कि हम उसको अल्लाह से पोशीदा रखते हैं, उस समय भी अल्लाह उनकी हर खुली-छुपी बातों को जानता है। कुरआन ने यह भी बयान किया है कि काफ़िर जब मुख़ालिफ़त की कोई बात घर में बैठकर करते और उस का जवाब कुरआन में उतरता, तो वे यह ख़्याल करते कि दीवार के पीछे से कोई आकर सुन जाता है और नबी करीम (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) से कह देता है, इस ख़्याल से वह कपड़ा ओढ़कर और झुक कर कलाम किया करते थे, इस पर यह आयत उतरी।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि काबा में तीन मुश्रिकों ने एक दूसरे से चुपके-चुपके बातें कीं, फिर कहने लगे : क्या अल्लाह ने हमारी यह बातें सुन ली होंगी? एक बोला : जो बात हम पुकार कर करें वह सुनता है और जो चुपके से करें वह नहीं सुनता। तीसरा बोला: अगर अल्लाह सुनता है तो सब बातों को सुनता है (बुख़ारी, मुस्लिम) .... अल्लाह ने इस आयत में उनकी नादानियों को बयान करके फ़रमाया : किसी काम को आड़ में करने से पहले उनके दिल में उसके करने का जो इरादा पैदा हो जाता है अल्लाह उस को भी जानता है, क्योंकि दिल और उस का इरादा ये सब चीज़ें अल्लाह की पैदा की हुई हैं। (अहसनुत्तफ़ासीर)

★★★★★

بِسۡــــمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡــــمِ

पारः वमा मिन् दाब्बतिन् (12)

संक्षिप्त विषय सूची

वमा मिन् दाब्बतिन् (12)

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ
مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٦
وَهُوَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ
اَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ
اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَلَئِنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْۢ
بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ
اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧ وَلَئِنْ اَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِلٰٓى
اُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ؕ اَلَا يَوْمَ
يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا
بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٨ ع وَلَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً
ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَئُوْسٌ كَفُوْرٌ ۝٩ وَلَئِنْ
اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ
السَّيِّاٰتُ عَنِّىْ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ۝١٠ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ

६. और जो जान्दार दुनिया में हैं सब की रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मा है (वही उन की रोज़ी का ज़िम्मेदार है उन के लिये रोज़ी पैदा करता है) और उन का मुस्तक़िल {स्थायी} ठिकाना और आर्ज़ी {अस्थायी} ठिकाना दोनों वह जानता है। यह सब कुछ खुली किताब में है[४] ७. वही अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीनों को छ: दिन (की मुद्दत) में पैदा किया और (इन मौजूदा आसमानों और ज़मीनों की पैदाइश से पहले) उस का अर्श पानी पर था[५] (फिर तुम को पैदा किया) ताकि तुम में अच्छे कार्य करने वालों को ज़ाहिर करे। और अगर तू कहता है कि तुम (मरने के पश्चात् क़ब्रों से) उठाये जाओ गे तो काफ़िर लोग (तुरन्त) बोल उठते हैं कि यह तो खुला दीवाना पन है (और तमाशा यह कि ऐसी बेहूदा बातों की सज़ा भी दुनिया ही में तुरन्त चाहते हैं) ८. और अगर हम थोड़े समय तक अ़ज़ाब को हटाये रखते हैं तो (शान्ति चाहने और शुक्र अदा करने के स्थान पर) कहते हैं कि किस वस्तु ने उस (अ़ज़ाब) को हम से रोक रखा है। सुन रखो! जिस रोज़ वह अ़ज़ाब इन पर नाज़िल हुआ तो वह उन से फिरने का नहीं और जिस बात की यह हंसी उड़ाते हैं वह उन पर घेरा डाल लेगा (ऐसा कि कोई भी उस से बच न सके) ९. और अगर हम (इस नालाइक़) इन्सान को अपनी तरफ़ से मेहरबानी का हिस्सा दे कर फिर वह नेमत छीन लेते हैं तो (बजाए उम्मीद रखने के) सख़्त निराश हो जाता है १०. और अगर तक्लीफ़ के बाद जो उस को ऐसी चिमट रही थी (कि गोया उस के गले का हार हो रही थी) किसी क़दर आराम बख़्शते हैं तो (निमत छिन जाने से बे फ़िक्र हो कर) कहता है कि कठिनाइयाँ मुझ पर से चली गयीं। बेशक वह इतराने वाला, शेख़ी बघारने वाला है।

....

४. इस आयत का खुलासा यह है कि अल्लाह की पैदा की हुयी तमाम मख़्लूक़ को अल्लाह ही रोज़ी देता है और ➲

➲उन के ठौर-ठिकाने, पैदाइश, मौत के बारे में लौहे-महफ़ूज़ में पहले ही लिखा जा चुका है। मतलब यह कि जब अल्लाह इन सब बातों को जानता है तो उस के लिए दिलों की बातों को जानना कौन सा मुश्किल काम है। तुम अपने अ़मल को चाहे जितना छुपाओ उस से कोई वस्तु पोशीदा नहीं हो सकती, वह खुली-छुपी सभी बातों को जानता है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन आ़स से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "दुनिया में जो कुछ होने वाला था, दुनिया पैदा होने से पचास हज़ार वर्ष पूर्व ही लौहे-महफ़ूज़ में लिख लिया है"। (मुस्लिम) यह हदीस गोया इस आयत की तफ़्सीर है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि 'मुस्-तक़िर्र' से "ठौर-ठिकाना" और 'मुस्तौ-दअ़्हा' से "मरने की जगह" मुराद है।

५. 'अ़र्श' के बारे में एक मुसलमान का अ़क़ीदा यह होना चाहिये कि उस को बिला किसी खोज-कुरेद के तस्लीम करे। वह क्या है और किस हालत में है, कितना ऊँचा है, कितना लम्बा-चौड़ा है, उस का वज़न कितना है, इन सब में उलझने की बिल्कुल आवश्यक्ता नहीं। कुछ बुज़ुर्गों का यह कहना है कि अ़र्श में अब भी कोई तब्दीली नहीं हुयी है, जैसा पहले था वैसा ही अब भी है। अबू रज़ीन अ़क़ीली रज़ि० से रिवायत है कि मैं ने नबी करीम सल्लल्ललाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा कि मख़्लूक़ को पैदा करने से पहले अल्लाह कहाँ था? आप ने फ़रमाया: 'अ़मा' में था जिस के ऊपर-नीचे हवा थी। और अपना अ़र्श पानी पर पैदा किया"। (तिर्मिज़ी की यह हदीस हसन है) इमाम अहमद बिन हंबल का कहना है कि 'अ़मा' से मुराद यह है कि उस के साथ कुछ न था। इमाम ज़हरी वग़ैरह ने कहा: हम लोगों को बिला किसी हुज्जत के इस पर ईमान लाना चाहिये। और यही अ़क़ीदा अहले सुन्नत, उलमा, फ़ुक़हा और बुज़ुर्गों का है, क्यों कि अल्लाह की शान तमाम मख़्लूक़ के गुमान, ख़याल और क़ियास से कहीं बुलन्द है। बाद के उलमा ने तावील कर के जो बेवक़ूफ़ी की है वह बिला वजह उलझन में फंसे हैं। (मवाहिब)

صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ
وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ⑪ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوْحٰٓى
اِلَيْكَ وَضَاۗىِٕقٌۢ بِهٖ صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ
عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَاۗءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ۭ اِنَّمَآ اَنْتَ نَذِيْرٌ ۭ
وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ⑫ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۭ
قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوْا
مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ⑬
فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ
اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ⑭
مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ
اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ⑮
اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ڮ
وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا

११. मगर जो लोग (मुसीबत पर) सब्र करते हैं और नेक कार्य करते हैं उन्हीं लोगों के लिये (अल्लाह के हाँ से) बख़्शिश और बड़ा अज्र है[६]

१२. संभवतः तू अल्लाह के कुछ अहकाम जो तेरी तरफ़ नाज़िल हुये हैं (उन की तब्लीग़) छोड़ने को है? और (शायद) इस कारण से तू दिल में तंग होता है जो (तुझ पर ताना करते हुये) कहते हैं (अगर यह अल्लाह का रसूल है तो) क्यों नहीं उस को ख़ज़ाना मिला या उस के साथ फ़रिश्ता क्यों नहीं आया? तू तो केवल (अल्लाह के अ़ज़ाब से) डराने वाला है[७]। और अल्लाह को हर चीज़ का इख़्तियार है (ख़ज़ाना और फ़रिश्ता तो क्या चीज़ है वह जो चाहे कर सकता है)

१३. क्या वह कहते हैं कि उस ने अपने पास से कुरआन बना लिया है? तू कह कि (तुम भी हमारी भाषा जानते हो) दस सूरतें इस प्रकार की बनाई हुयी ले आओ (इस के बनाने में) अल्लाह के अ़लावा ज़िस को बुला सको (मदद➲

के लिये) बुला लो अगर तुम सच्चे हो (कि यह कुरआन आदमी का बनाया हुआ है) १४. फिर अगर वह तुम्हारा कहा न कर सकें तो जान लो कि यह (कुरआन) अल्लाह के ज़िल्म से उतरा है और यह (भी जान लो) कि उस के अलावा कोई (दूसरा) माबूद नहीं तो क्या (तुम ऐ मुश्रिको! इस कुरआन के) ताबेदार न बनो गे? १५. जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी और उस की ज़ीनत चाहते हैं उन के कामों का बदला हम उन को (इसी दुनिया में) दे दिया करते हैं और उस में उन को किसी प्रकार का नुक़्सान नहीं होता १६. अल्बत्ता (इस का नतीजा यह है कि) आख़िरत में उन को सिवाए (दोज़ख़ की) आग के कुछ नसीब न हो गा और ज़ो कुछ यह दुनिया में कर चुके हैं और (इस समय) कर रहे हैं सब अकारत और बर्बाद होने को है।

....

६. इस आयत से मालूम हुआ कि नेक कार्य और सब्र दोनों एक दूसरे का ज़रूरी हिस्सा हैं जिस दिल में ईमान की रोशनी पैदा हो गी वह अवश्य सब्र शुक्र अदा करे गा, नेमतों के मिलने पर वह अल्लाह को नहीं भूले गा और मुसीबत के समय चीख़-पुकार नहीं करे गा, हर हाल में राज़ी रहे गा। आज ऐसे अहले ईमान जो सब्र और ईमान के साथ साथ नेक अ़मल करते हों बहुत ही कम हैं। 'नेक अ़मल' का अर्थ यह है कि वह काम जिस को किताब व सुन्नत के अनुसार इख़्लास के साथ किया गया हो। ऐसे ही लोगों के लिये बख़्शिश और बड़े अज्र यानी जन्नत तय्यार की गयी है। 'सब्र' का अर्थ है अल्लाह की इताअ़त के लिये अपने नफ़्स को हर हाल में तय्यार रखना और अल्लाह की इताअ़त में कोई हीला-बहाना न खोजना।

७. काफ़िर लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अनाप-शनाप ताने देते थे। अल्लाह ने अपने संदेष्टा को तसल्ली देते हुये कहा कि आप इन के तानों से दिल छोटा न करें। काफ़िर कहते हैं कि अगर यह रसूल है तो खाने-पीने का क्यों मोहताज है? बाज़ारों में क्यों चलता-फिरता है? उस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतरता? उसे कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं दिया गया? मुसलमानों को ताना देते हुये कहते कि तुम पर तो उस ने जादू कर दिया है इसी लिये उस के पीछे-पीछे घूम रहे हो। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम आप रन्जीदा न हों, आप काम से पीछे न हटिये और अपनी तब्लीग़ में कोताही न कीजिये, दिन-रात अल्लाह की तरफ़ बुलाते रहिये। हमें मालूम है कि आप को उन के ताने बुरे लगते हैं, फिर भी आप कोई पर्वा न कीजिये। ऐसा न हो कि आप कोई बात छोड़ दें या तन्ग दिल हो कर बैठ जायें। आप से पहले रसूलों के साथ भी यह हुआ है।

आगे कुरआन का चमत्कार बयान फ़रमाया कि उस जैसी दस सूरतें, बल्कि एक सूरत भी सारी दुनिया मिल कर नहीं बना सकती, इस लिये कि यह अल्लाह का कलाम है और उसी की तरफ़ से नाज़िल हुआ है। पस काफ़िरों को केवल उसे ही माबूद मानना चाहिये और इस्लाम के झन्डे तले आ जाना चाहिये (मुहम्मदी)

८. यह आयत रिया कारों के बारे में नाज़िल हुयी (जामिउल बयान) हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि क़ियामत के दिन जब हिसाब-किताब हो गा तो अल्लाह सब से पहले एक आदमी को बुलायेगा जो देखने में तो शहीद हुआ था। उस को अपनी नेमतें याद दिलाये गा और पूछे गा कि तू ने क्या किया? वह कहे गा कि मैं ने तेरी राह में जिहाद किया यहाँ तक कि तेरी राह में शहीद हो गया। अल्लाह उत्तर दे गा कि तू ने ऐसा किया मगर लोगों को दिखाने और नाम कमाने के लिये ऐसा किया, तो जो तेरी इच्छा थी वह तो दुनिया में मिल गयी। फिर उस को घसीट कर दोज़ख़ में डाल दिया जाये गा। इसी प्रकार रियाकार और नाम कमाने वाले आ़लिम, क़ारी का भी यही हाल हो गा (मुस्लिम)

९. जिस प्रकार की भी कोशिश हो, B.A. बनने की हो या M.A., M.B.A. करने की हो या L.L.B. सब की कोशिशों को अल्लाह मुनासिब तरीक़े से कामियाबी अ़ता करता है। (सनाई)

يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۶﴾ اَفَمَنۡ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنۡ رَّبِّهٖ وَيَتۡلُوۡهُ
شَاهِدٌ مِّنۡهُ وَمِنۡ قَبۡلِهٖ كِتٰبُ مُوۡسٰٓى اِمَامًا وَّرَحۡمَةً ؕ
اُولٰٓـئِكَ يُؤۡمِنُوۡنَ بِهٖ ؕ وَمَنۡ يَّكۡفُرۡ بِهٖ مِنَ الۡاَحۡزَابِ
فَالنَّارُ مَوۡعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِىۡ مِرۡيَةٍ مِّنۡهُ ۚ اِنَّهُ الۡحَـقُّ
مِنۡ رَّبِّكَ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱۷﴾
وَمَنۡ اَظۡلَمُ مِمَّنِ افۡتَـرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ؕ اُولٰٓـئِكَ
يُعۡرَضُوۡنَ عَلٰى رَبِّهِمۡ وَيَقُوۡلُ الۡاَشۡهَادُ هٰٓؤُلَۤاءِ
الَّذِيۡنَ كَذَبُوۡا عَلٰى رَبِّهِمۡ ۚ اَلَا لَـعۡنَةُ اللّٰهِ عَلَى
الظّٰلِمِيۡنَ ۙ ﴿۱۸﴾ الَّذِيۡنَ يَصُدُّوۡنَ عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ
وَيَبۡغُوۡنَهَا عِوَجًا ؕ وَهُمۡ بِالۡاٰخِرَةِ هُمۡ كٰفِرُوۡنَ ﴿۱۹﴾
اُولٰٓـئِكَ لَمۡ يَكُوۡنُوۡا مُعۡجِزِيۡنَ فِى الۡاَرۡضِ وَمَا
كَانَ لَهُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مِنۡ اَوۡلِيَآءَ ۘ يُضٰعَفُ
لَهُمُ الۡعَذَابُ ؕ مَا كَانُوۡا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ السَّمۡعَ وَمَا

१७. क्या जो कोई अपने पर्वरदिगार की (उतारी हुयी) हिदायत पर (अ़मल करता हो) और (ख़ुद) उस के नफ़्स से (उस हिदायत की कुव्वत पहुंचाने को) एक शाहिद भी हो और उस से पहले मूसा की किताब जो इमाम और रहमत थी (भी उस की) ताईद करती हो। हक़ीक़त में क़ुरआन पर उन ही का ईमान है[१०]। और जो कोई उन गरोहों में से इस से इन्कारी हो उस का ठिकाना आग ही हो गा, पस इस मामले में शक में न होना बेशक इस क़ुरआन की सच्ची तालीम तेरे रब के हाँ से उतरी है लेकिन बहुत से लोग नहीं मानते (जिहालत से झूठी बातों और इल्ज़ाम बाज़ियों के पीछे जाते हैं और नहीं जानते कि) १८. जो लोग अल्लाह पर झूठ बाँधें उन से बढ़ कर कौन ज़ालिम हो सकता है? यह लोग अल्लाह के सामने पेश किये जायें गे और (उस समय के) गवाह (यानी अंबिया उन को पहचान कर) कहें गे कि यही लोग हैं जिन्हों ने अपने पर्वरदिगार पर झूठ बाँधा था, (इस लिये) सुनो! उन ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है[११] १९. जो (जिहालत में) अल्लाह की राह से (लोगों) को रोकते थे और उस (राह) में (महज़ ज़िद से) कजी (टेढ़ापन) सोचते रहते थे। और आख़िरत के इन्कारी थे २०. (मगर चूँकि) यह लोग (दुनिया में) अल्लाह को (अहकाम जारी करने में) आ़जिज़ नहीं कर सकते (बल्कि ख़ुद उस के सामने आ़जिज़ थे) और अल्लाह के सिवा उन का कोई (भी) सहायक न था। (इस लिये कुछ भी कामियाब न हुये बल्कि काफ़िर अ़वाम से) उन को दोहरा अ़ज़ाब हो गा। (क्यों कि हक़ कहने वालों के दुश्मन ऐसे थे कि) न हक़ बात सुन सकते

....

१०. 'हक़ीक़त में क़ुरआन पर उन्हीं का ईमान है' वर्ना बहुत से कलिमा पढ़ने वाले और क़ुरआन की तिलावत करने वाले ऐसे भी हैं जिन की ग़फ़लत और लापर्वाही की वजह से स्वयं क़ुरआन उन पर लानत करता है। चुनान्चे हदीस शरीफ़ में है कि "बहुत से क़ुरआन की तिलावत करने वाले ऐसे हैं जिन पर क़ुरआन लानत करता है"। इस लिये कि वह उस के अनुसार अ़मल नहीं करते हैं (सनाई)

११. आख़िरत में गवाही देने वाले वह फ़रिश्ते हों गे जो अ़मल लिखते हैं और वह नेक लोग भी गवाही दें गे जो जानते थे। अल्लाह पर झूठ बोलना कई प्रकार से है (१) अ़िल्म में गलत नक़ल करना (२) ख़ुद से बना कर पेश

करना (३) दीन में तुक्का भिड़ाना (४) अक़्ल के तीर चलाना (५) दीन में दावा करना कि कश्फ़-करामात रखता हूँ (६) अल्लाह का नज़दीकी होने का दावा करना। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआ़ला मोमिन को अपने क़रीब बुलाये गा और पूछे गा कि क्या तुझ को फ़लाँ-फ़लाँ गुनाह याद है? बन्दा कहे गा कि हाँ याद है। और अपना गुनाह स्वीकार है, बन्दा यह ख़याल करे गा, कि अब मैं हलाक हुआ। अल्लाह फ़रमाये गा कि तेरे गुनाहों को दुनिया में छुपाया था और अब आख़िरत में तुझे बख़्शता हूँ, फिर उस को नेकों का आ़माल नामा पेश किया जाये गा"।

लेकिन जो लोग काफ़िर या मुनाफ़िक़ हैं उन के गुनाहों को छुपाया न जाये गा, बल्कि खुले आ़म गवाहों को बुला कर उन से गवाही ली जाये गी। गवाह पुकार-पुकार कर कहें गे कि यह लोग झूठे हैं, अल्लाह की इन पर लानत हो (अहसनुत्तफ़ासीर)

كَانُوا يُبْصِرُونَ ﴿٢٠﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ
وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢١﴾ لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ
فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ ﴿٢٢﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَ
عَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَخْبَتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٣﴾ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ
كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ۚ هَلْ يَسْتَوِيَانِ
مَثَلًا ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ
قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٥﴾ أَن لَّا تَعْبُدُوا إِلَّا
اللَّهَ ۖ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿٢٦﴾ فَقَالَ
الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ مَا نَرَاكَ إِلَّا
بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرَاكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ
أَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّأْيِ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِن
فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾ قَالَ يَا قَوْمِ أَرَأَيْتُمْ

और न (हक़ कहने वालों को) देख सकते थे (अपने हसद में जले-भुने जो थे) २१. उन्हीं लोगों ने अपना नुक़्सान आप किया है और जो कुछ दुनिया में झूठ-मूट (शिर्क वग़ैरह) गढ़ा करते हैं सब को भूल जायें गे २२. कुछ शक नहीं यही लोग आख़िरत में नुक़्सान उठायें गे २३. (इस के ख़िलाफ़) जो लोग ईमान लाये और नेक अ़मल भी करते रहे और (सब से बढ़ कर यह कि वह) अपने रब के हो रहे यही लोग जन्नत वाले हों गे, जिस में वह हमेशा रहें गे[१२] २४. उन दोनों फ़रीक़ों (यानी अल्लाह वालों और दुनिया दारों) की मिसाल अन्धे-बहरे, आँखों वाले और सुनने वाले की सी है। क्या यह दोनों बराबर हैं। फिर (तुम्हें क्या हुआ कि) तुम समझते नहीं हो[१३] २५ और नूह को उस की क़ौम की तरफ़ हम ने (इसी उद्देश्य से) भेजा, उस ने कहा कि मैं तुम को साफ़-साफ़ डराने वाला हूँ २६ (सब से अव्वल हुक्म यह कि) तुम अल्लाह के अ़लावा किसी की इ़बादत न करो। (वर्ना) मुझे तुम्हारे हक़ में दर्दनाक दिन के अ़ज़ाब का डर है २७. पस (यह सुनते ही) उस की क़ौम में से काफ़िरों की जमाअ़त ने कहा कि (तू जो अल्लाह का रसूल होने का दावा करता है तो तेरे में क्या बड़ाई है?) हम तुझे अपने जैसा एक आदमी जानते हैं और हम देखते हैं कि जितने तेरे ताबे हुये हैं (आ़म तौर पर सब के सब) हमारे (कमीने और) रज़ील लोग हैं सरसरी समझ से तेरे पीछे हो लिये हैं[१४] और हम तेरे में कोई बड़ाई अपने पर नहीं पाते बल्कि

हम तुझे झूठा जानते हैं २८. नूह ने (यह ग़ैर माक़ूल उत्तर सुन कर) कहा कि भाइयो।

....

१२. हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें जन्नत के बादशाहों के बारे में बतलाऊँ? मैं ने कहा कि अवश्य बताइये! आप ने फ़रमाया: एक शख़्स ग़रीब और कम मर्तबा वाला है, दो कमली रखता है लोगों के दिलों में उस की कोई अहमिय्यत नहीं है, लेकिन अल्लाह के नज़दीक उस की इतनी इ़ज़्ज़त है कि अगर वह किसी बात पर क़सम खा बैठे तो अल्लाह उस को अवश्य पूरा कर दे"। हज़रत हारिस बिन वहब रिवायत करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जन्नत में जाने वाले ग़रीब और कम मर्तबा वाले हों गे और जहन्नम में जाने वाले सख़्त दिल, सर्कश, तकब्बुर करने वाले हों गे"। हज़रत अबू दर्दा से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: " मुझ को ग़रीबों और गिरे-पड़े लोगों में तलाश करो। और जान लो कि तुम्हें रोज़ी ग़रीबों ही की दुआ़ओं की बदौलत मिलती है"। 'तलाश करने' का अर्थ यह है कि जो कोई ग़रीब और गिरे-पड़े, कमज़ोर हाल की मदद करे गा तो उस को जन्नत में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का साथ नसीब हो गा। वास्तव में इस हदीस में मानवता की बड़ाई और रूहानियत का एक बुलन्द स्थान दिखाया गया है। जिन अल्लाह के बन्दों के दिल ख़ुदा की तरफ़ मुतवज्जह हो गये और अपने अ़मल और अ़क़ीदा के साथ मानवता की सच्ची तस्वीर बन गये और मुकम्मल तौर पर अपने रब की तरफ़ मुतवज्जह हो गये, ऐसे लोग दुनिया में बड़ी शान रखते हैं।

१३. यह आयत पिछली तमाम नसीहतों का निचोड़ है। फ़रमाया गया कि दोनों फ़रीक़ों का उदाहरण ऐसा है जैसे एक अन्धा-बहरा हो और दूसरा देखने-सुनने वाला। फिर क्या दोनों बराबर हो सकते हैं? क्या रोशनी और अंधियारी में कोई अन्तर नहीं? क्या देखने वाली और अंधी आँख का एक हुक्म है? अगर नहीं है यह भी ज़रूरी है कि दोनों के परिणाम और नतीजे भी एक दूसरे के उलट हों। और हमेशा दुनिया में ऐसा ही हुआ है जैसा कि अब हो रहा है। इस के बाद ही क़ौमों की तबाही-बर्बादी का बयान आरंभ हुआ जो दलील और हुज्जत का एक पूरा सिलसिला है। और इस सिलसिला की पहली कड़ी हज़रत नूह की दावत है।

हज़रत नूह ने कहा अल्लाह के अ़लावा और किसी की बन्दगी न करो। अगर तुम सर्कशी से बाज़ न आये तो अ़ज़ाब का एक बड़ा ही दर्दनाक दिन आने वाला है। लेकिन क़ौम के सर्दारों और ऊँचे वर्ग के लोगों ने इन्कार और सर्कशी की। केवल वह लोग ईमान लाये जो क़ौम में ज़लील समझे जाते थे। इन्कार करने वालों ने कहा तुम भी हमारी ही तरह एक आदमी हो फिर तुम्हारी बात क्यों मानें। यानी तुम में अगर कोई ऐसा अचंभा या अ़जूबा पाया जाता है जो और आदमियों में नहीं पाया जाता, या कि देवताओं की तरह उतर आये होते, तो तुम्हें सच्चा जानते। इन्कार करने वालों ने कहा कि जो हम में कमीने हैं वही बे समझे-बूझे तुम्हें सच्चा मान रहे हैं, फिर उन जाहिलों की तरह हम भी मान लें। इस के अ़लावा हम ऐसी जमाअ़त में क्यों कर शरीक हो सकते हैं जहाँ शरीफ़ और कमीने में कोई फ़र्क़ नहीं।

हज़रत नूह ने कहा कि इन्सान की हिदायत तो इन्सान ही द्वारा हो सकती है और वह इतना ही कर सकता है जो उस के इख़्तियार में है। तुम कहते हो कि मैं झूठा हूँ। अगर तुम सच्चा समझते हो तो क्या इस बात की आशा करते हो कि ज़बर्दस्ती तुम्हें सच्चाई की राह दिखा दूँ? अल्लाह की तरफ़ से कितनी स्पष्ट हक़ की दलील दी गयी, लेकिन तुम समझने से इन्कार कर दो तो मैं क्या कर सकता हूँ? उन्हों ने कहा कि तुम जिन लोगों को ज़लील समझते हो मैं कभी न कहूँ गा कि वह ज़लील हैं। और तुम्हें ख़ूबी और भलाई नहीं मिल सकती और मैं ऐसा करूँ तो अल्लाह की पकड़ से न बच सकूँ। उन्हों ने कहा कि मेरा दावा केवल यह है कि मैं सच्चाई का संदेष्टा हूँ। मुझे ताक़त और फेर-बदल करने दावा नहीं। और न मैं मानव से बढ़ कर कोई वस्तु हूँ।

मुन्किरों ने इन दलीलों को मानने और इन पर सोच-विचार करने से इन्कार कर दिया और इन बातों को

➲'जिदाल' (लड़ाई-झगड़ा) से ताबीर करने लगे और यहाँ तक सर्कशी पर उतर आये कि अ़ज़ाब की मांग करने लगे इस पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि तुम कह दो कि तुम कहते हो कि मैं झूठा हूँ। अच्छा अगर मैं झूठा हूँ तो मेरा गुनाह मुझ पर और अगर तुम सच्चाई को झुठला रहे हो तो उस की सज़ा तुम्हें झेलनी है, मैं इस से बरी हूँ और अब फ़ैसला का इन्तिज़ार करो (तर्जुमान)

१४. नीच क़ौम के लोग बिना सोचे समझे तेरे साथ हो गए या फिर केवल तुझे धोका देने के लिये ज़ाहिरी तौर पर तेरे साथ हो गए मगर दिल से तेरे साथ नहीं हैं। वे बेवकूफ़ यह न समझ सके कि अल्लाह के नज़दीक ज़ात, बिरादरी और शराफ़त में छोटे मगर हलाल काम करने से कुछ फ़र्क़ नहीं आता। हमेशा नबियों की तसदीक़ पहले-पहल ग़रीब लोगों ने ही की है। अल्लाह के नज़दीक उनकी इ़ज़्ज़त दुनिया के दीवानों से बहुत अधिक है जो अपने माल-दौलत, ख़ानदान और उहदे पर बहुत इतराते हैं।

إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَآتَانِي رَحْمَةً
مِّنْ عِندِهِ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ أَنُلْزِمُكُمُوهَا وَأَنتُمْ
لَهَا كَارِهُونَ ﴿٢٨﴾ وَيَا قَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا
إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الَّذِينَ
آمَنُوا إِنَّهُم مُّلَاقُو رَبِّهِمْ وَلَٰكِنِّي أَرَاكُمْ قَوْمًا
تَجْهَلُونَ ﴿٢٩﴾ وَيَا قَوْمِ مَن يَنصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِن
طَرَدتُّهُمْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٣٠﴾ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِندِي
خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ إِنِّي
مَلَكٌ وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ تَزْدَرِي أَعْيُنُكُمْ لَن
يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي أَنفُسِهِمْ
إِنِّي إِذًا لَّمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٣١﴾ قَالُوا يَا نُوحُ قَدْ جَادَلْتَنَا
فَأَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ
مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٣٢﴾ قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيكُم بِهِ اللَّهُ إِن

भला बतलाओ कि अगर मैं अपने पर्वरदिगार की हिदायत पर हूँ और उस ने अपने पास से मुझे रहमत दी हुयी है और वह रहमत तुम्हें मालूम न हो तो क्या हम उस को तुम्हारे गले मढ़ सकते हैं हालाँकि तुम उसे नापसन्द करते हो २९. (और कहा) ऐ मेरे क़ौमी भाइयो! मैं तुम से इस (तब्लीग़) पर (मज़दूरी में) माल नहीं माँगता[१], मेरी मज़दूरी तो अल्लाह के हाँ है और न मैं ईमान्दारों को जिन्हें तुम हक़ीर (और ज़लील) समझते हो धुतकारता हूँ। क्यों कि वह अपने रब से मिलने वाले हैं हाँ, मैं देखता हूँ, तुम जिहालत करते हो ३०. और ऐ मेरे भाइयो! अगर मैं उन को धुतकार दूँ गा तो मेरी सहायता को कौन उठे गा? क्या तुम समझते नहीं? ३१. (और सुनो! अगर मेरी ग़रीबी की तरफ़ जाते हो तो) मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब की बातें जानता हूँ और न मेरा दावा है कि मैं फ़रिश्ता हूँ और न मैं यह कहता हूँ कि जो लोग तुम्हारी नज़रों में हक़ीर हैं (वह अल्लाह के नज़दीक भी ऐसे हैं कि) अल्लाह उन को ख़ैर (से कुछ) न दे गा। अल्लाह उन के दिलों का इख़्लास जानता है, वर्ना मैं (ऐसा करने पर) तुरन्त (अल्लाह के नज़दीक) ज़ालिमों में हो जाऊँ गा ३२. बोले कि ऐ नूह! तू ने हम से झगड़ा शुरू कर के बहुत ही झगड़ा किया अब (बिहतर है कि) जिस अ़ज़ाब की धमकी तू हम को सुनाता है अगर तू सच्चा है तो हम पर ले➲

आ[१६]। ३३. नूह ने कहा कि (अ़ज़ाब भी अल्लाह ही के क़ब्ज़े में है वही) उसे तुम पर लाये गा अगर चाहे गा

....

१५. हज़रत नूह ने कुफ़्फ़ार के इन्कार पर अपने बशर होने का इन्कार नहीं फ़रमाया, बल्कि उन को अपना क़ौमी भाई कह कर हिदायत की तरफ़ तवज्जुह दिलाई। और अपने इन्सान होने की मज़ीद तश्रीह करते हुये फ़रमाया कि मेरे क़ब्ज़े में अल्लाह के ख़ज़ाने नहीं है................। इस से बिद्अ़ती लोगों के इस ख़याल का रद्द होता है जो कहते हैं कि रसूल इन्सान नहीं होता (राज़)

१६. हज़रत नूह तूफ़ान आनें से पहले साढ़े नौ सौ वर्ष तक अपनी क़ौम के दर्मियान रहे और दिन-रात खुले-छुपे उन को नसीहतें करते रहे। लेकिन क़ौम ने हिदायत पर अ़मल करने से इन्कार कर दिया और बहस-मुबाहिसा और झगड़े में नौ शताब्दियाँ गुज़र गयीं। कुफ़्फ़ार ने भी आ़जिज़ हो कर कहा कि तब्लीग़ व हिदायत का सिलसिला अब बन्द करो और जिस अ़ज़ाब की धमकी देते रहते हो उसे ले आओ। हज़रत नूह ने कहा कि अ़ज़ाब का लाना यह मेरे हाथ में नहीं है। यह अल्लाह के हाथ में है और जब भी उचित समझे गा नाज़िल कर दे गा। हमारा काम केवल आगाह करना है। अ़ज़ाब का लाना और रोकना यह दोनों ही काम इन्सान की ताक़त से दूर हैं, जब अल्लाह इरादा करे गा ले आए गा और तुम लोग जान बचा कर कहीं भाग न सको गे (मुवज़्ज़िहुल क़ुरआन)

شَآءَ وَمَآ اَنۡتُمۡ بِمُعۡجِزِيۡنَ ﴿۳۳﴾ وَلَا يَنۡفَعُكُمۡ نُصۡحِىۡۤ
اِنۡ اَرَدْتُّ اَنۡ اَنۡصَحَ لَـكُمۡ اِنۡ كَانَ اللّٰهُ يُرِيۡدُ
اَنۡ يُّغۡوِيَكُمۡ‌ؕ هُوَ رَبُّكُمۡ وَاِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۳۴﴾ اَمۡ
يَقُوۡلُوۡنَ افۡتَـرٰٮهُ‌ ؕ قُلۡ اِنِ افۡتَرَيۡتُهٗ فَعَلَىَّ اِجۡرَامِىۡ
وَاَنَا بَرِىۡٓءٌ مِّمَّا تُجۡرِمُوۡنَ ﴿۳۵﴾ وَاُوۡحِىَ اِلٰى نُوۡحٍ
اَنَّهٗ لَنۡ يُّؤۡمِنَ مِنۡ قَوۡمِكَ اِلَّا مَنۡ قَدۡ اٰمَنَ فَلَا
تَبۡتَـئِسۡ بِمَا كَانُوۡا يَفۡعَلُوۡنَ ﴿۳۶﴾ وَاصۡنَعِ الۡـفُلۡكَ
بِاَعۡيُنِنَا وَوَحۡيِنَا وَلَا تُخَاطِبۡنِىۡ فِى الَّذِيۡنَ
ظَلَمُوۡا‌ ۚ اِنَّهُمۡ مُّغۡرَقُوۡنَ ﴿۳۷﴾ وَيَصۡنَعُ الۡـفُلۡكَ وَكُلَّمَا
مَرَّ عَلَيۡهِ مَلَاٌ مِّنۡ قَوۡمِهٖ سَخِرُوۡا مِنۡهُ‌ ؕ قَالَ
اِنۡ تَسۡخَرُوۡا مِنَّا فَاِنَّا نَسۡخَرُ مِنۡكُمۡ كَمَا
تَسۡخَرُوۡنَ ﴿۳۸﴾ فَسَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ۙ مَنۡ يَّاۡتِيۡهِ عَذَابٌ
يُّخۡزِيۡهِ وَيَحِلُّ عَلَيۡهِ عَذَابٌ مُّقِيۡمٌ ﴿۳۹﴾ حَتّٰۤى اِذَا

और तुम उस को (किसी प्रकार) हरा नहीं सकते ३४. अगर मैं तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही करूँ तो भी मेरी ख़ैर ख़्वाही तुम्हें कुछ काम नहीं आ सकती जब कि अल्लाह ही (तुम्हारी ज़िद और कीना की वजह से) तुम को गुमराह रखना चाहे। वही तुम्हारा पर्वरदिगार है और उसी की ओर फेरे जाओ गे ३५. क्या यह लोग कहते हैं कि उस ने क़ुरआन को अपने पास से बना लिया है। तू कह कि अगर मैं ने बना लिया है तो मेरा गुनाह मेरे ऊपर है और मैं तुम्हारे जुर्मों से जो तुम करते हो बरी हूँ। ३६. और नूह की तरफ़ वह्यि भेजी गयी कि जितने लोग तेरी क़ौम से ईमान ला चुके हैं बस उन के अ़लावा और कोई ईमान न लाये गा सो तू उन की बदकारियों पर ग़मगीन न हो। ३७. और एक बेड़ा हमारी आँखों के सामने और हमारे इल्हाम से बना (जिस पर तुम लोगो को सवार होना होगा) और ज़ालिमों के हक़ में मुझ से दुआ़ न करना, वह बिला शुब्हा डूबें गे[१७] ३८ और नूह बेड़ा

बनाता था और उस की क़ौम से जब कोई जमाअ़त उस पर गुज़रती तो उस से मस्ख़री करते। नूह (उन के उत्तर में) कहता (अच्छा) अगर तुम हम से मस्ख़री करते हो तो जैसी तुम हम से मस्ख़री करते हो हम भी तुम से करें गे ३९. पस तुम जान लो गे कि किस पर अ़ज़ाब आये गा जो उसे ज़लील करे गा और किस पर हमेशगी की बला नाज़िल हो गी (ग़रज़ इसी प्रकार होता रहा) यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आ पहुंचा

....

१७. हज़रत नूह को कशती बनाने का ढन्ग मालूम न था। अल्लाह ने इल्हाम किया कि मुर्ग़ के सीने की तरह बनाओ। अल्लाह ने यह जो फ़रमाया "मेरी आँखों के सामने बनाओ" इस से अहले हदीस मज़हब की ताईद होती है कि अल्लाह के हाथ और आँख हैं, लेकिन किस तरह हैं, कैसे हैं, कितनी दूर देखती हैं, इन सब के बारे में केवल अल्लाह ही को ज़िल्म है। कुछ उलमा ने इस की तावील की है और आँखों से मुराद "देख-रेख, निग्रानी" मुराद लिया है। अर्थात हमारी देख-रेख और हमारे सामने कश्ती बनाना। कुछ उलमा ने यह मुराद लिया है कि "हमारे फ़रिश्तों की आँखों के सामने"। "ज़ालिमों के हक़ में" यहाँ पर ज़ालिम से मुराद उन का बेटा कन्ज़ान और बीवी है। यानी बार-बार उन के बारे में कुछ मत कहो-सुनो, उन्हें तो हर हाल में डूबना है।

क़ौम के सरदार जब उधर से गुज़रते हुये कश्ती बनाते देखते तो मज़ाक़ उड़ाते और कहते कि पहले सन्देष्टा था और अब बढ़ई भी हो गया है। रिवायतों में आता है कि यह कश्ती ऐसे जन्गल में बनाई जा रही थी जहाँ पानी का नाम-निशान तक न था। उस क़ौम ने तो कभी कश्ती देखी भी न थी। जब यह नई चीज़ सामने आई तो मज़ाक़ उड़ाने लगे कि यह क्या बला है और इस से क्या लाभ है? (वहीदी) रिवायतों में आता है कि कश्ती तय्यार होने में कई वर्ष लग गये। वह कश्ती क्या थी एक बड़ा जहाज़ था जिस में अलग-अलग दर्जे थे। इस्राईली रिवायतों में बड़े अ़जीब-अ़जीब क़िस्से इस के तअ़ल्लुक़ से लिखे हुये हैं। (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

हज़रत नूह तो कश्ती बनाने में लग गये और काफ़िरों को एक मज़ाक़ का मौक़ा हाथ लग गया। वह चलते-फिरते उन्हें छेड़ते, ताने कसते, मज़ाक़ उड़ाते। क्यों कि वह उन्हें झूठा समझते थे और अ़ज़ाब के वादा पर यक़ीन न था। कहा जाता है कि सागवन के पेड़ की लकड़ी से यह कश्ती तय्यार की गयी। लम्बाई ८० हाथ चौड़ाई ५० हाथ थी। अन्दर-बाहर चिकनाई के लिये तेल प्रयोग किया गया था। पानी के लिये पतवार भी था। कुछ लोगों का कहना है कि लम्बाई ३०० हाथ और ऊँचाई ३० हाथ थी। उस में तीन खन्ड थे, हर खन्ड की ऊँचाई १० हाथ थी। सब से नीचे वाले खन्ड में चौपाये, जन्गली जानवर थे। बीच वाले खन्ड में इन्सान और ऊपर के हिस्से में परिन्दे-पखेरु थे। दर्वाज़ा चौड़ान में था ऊपर से बिल्कुल बन्द थी (मुहम्मदी)

४०. और जब तन्नूर ने जोश मारा[१८] तो हम ने नूह को आदेश दिया कि हर एक क़िस्म (हैवानात) में से जोड़ा-जोड़ा चढ़ाये और जिस पर हमारा हुक्म लग चुका है उसे छोड़ कर बाक़ी अपने घर वालों को और जो (तुझ पर) ईमान लाये हैं उन सब को उस बेड़े में सवार कर ले। और नूह पर चन्द आदमी ईमान लाये थे। ४१. (पस उस ने सब को जो उस समय मौजूद थे सवार कर

جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ
كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ
الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ ؕ وَمَآ اٰمَنَ مَعَهٗۤ اِلَّا قَلِيْلٌ ۝
وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ؕ
اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ

كَالْجِبَالِ وَنَادَىٰ نُوحٌ ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ
يَا بُنَيَّ ارْكَب مَّعَنَا وَلَا تَكُن مَّعَ الْكَافِرِينَ ﴿٤٢﴾
قَالَ سَآوِي إِلَىٰ جَبَلٍ يَعْصِمُنِي مِنَ الْمَاءِ ۚ قَالَ
لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِلَّا مَن رَّحِمَ ۚ وَحَالَ
بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِينَ ﴿٤٣﴾ وَقِيلَ يَا أَرْضُ
ابْلَعِي مَاءَكِ وَيَا سَمَاءُ أَقْلِعِي وَغِيضَ الْمَاءُ وَقُضِيَ
الْأَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ ۖ وَقِيلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ
الظَّالِمِينَ ﴿٤٤﴾ وَنَادَىٰ نُوحٌ رَّبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي

लिया) और कहा कि सवार हो जाओ! अल्लाह के नाम से चले गी और उसी के नाम से ठहरे गी। बेशक मेरा रब बख़्शने वाला मेहरबान है। ४२. और वह (बेड़ा) पानी की लहरों में जो पहाड़ों की तरह (आती) थीं उन को ले जाता था, और नूह ने (बाप होने के नाते मुहब्बत के जोश में) अपने बेटे को जो अलग एक किनारे पर खड़ा था बुलाया कि बेटा! हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों के साथ न रह, ४३. वह बोला (कि पानी कहाँ तक बरसे गा) मैं पहाड़ पर चढ़ जाऊँ गा वह मुझ को पानी से बचा लेगा। नूह ने कहा बेटा! आज अल्लाह के अ़ज़ाब से कोई बचाने वाला नहीं, जिस पर वह रहम करे गा वही बच पाये गा (इसी बात-चीत के दर्मियान ही) उन (के बीच) में पानी की एक लहर रुकावट हो गयी और वह डूब गया ४४. और ज़मीन को हुक्म दिया गया कि ऐ ज़मीन! तू अपना पानी (जो इस समय तुझ पर है) पी ले और ऐ आसमान! तू (बरसने से) थम जा और पानी भी उतर गया और (उस क़ौम का) काम भी तमाम हो चुका और बेड़ा (तैरता-तैरता) जूदी पहाड़[१९] पर आ ठहरा और पुकारा कि ज़ालिमों की क़ौम (अल्लाह के हाँ से) धुतकारी गयी ४५. और नूह ने अपने पर्वरदिगार से दुआ़ करते हुये कहा कि मेरे मौला! मेरा बेटा मेरे घर वालों में से है

....

१८. 'तन्नूर' से मुराद भूमि का ऊपरी हिस्सा है। यही हज़रत अ़ली का भी क़ौल है। अल्लाह के हुक्म से ऊपर से वर्षा होनी आरंभ हो गयी और भूमि के अन्दर से भी पानी फूट निकला। कुछ लोगों का कहना है कि यह तन्नूर रोटी पकाने का था, जिस में हज़रत हव्वा रोटियाँ पकाती थीं। यह पत्थर का था और हज़रत नूह को मिला था। कुछ उलमा का यह भी कहना है कि तन्नूर से मुराद कश्ती के बीच का वह हिस्सा जहाँ आ़म तौर पर थोड़ा-बहुत पानी रहता है। कुछ लोगों ने तर्जुमा यह किया है "और जब सुब्ह की पौफटी"। यह क़ौल हज़रत अ़ली से भी साबित है (मौलाना अमृत-सरी ने) यही क़ौल पसन्द किया है। मौलाना वहीदुज़्ज़मा का तर्जुमा यह है "और तन्नूर ने जोश मारा"। कुछ उलमा का कहना है कि तन्नूर से मुराद अल्लाह के अ़ज़ाब का जोश मारना है। सही और दुरुस्त बात यह है कि 'तन्नूर' एक वस्तु का नाम है, अक्सर उलमा ने इसी को सही माना है कि यह कोई चीज़ थी। और अल्लाह ने हज़रत नूह को यह निशानी दी कि जब इस में से पानी फूट पड़े तो सब को लेकर कश्ती पर सवार हो जाओ (वहीदी)

सूरः 'क़मर' की आयत न० ११ से मालूम होता है कि आसमान से लगातार वर्षा हुयी थी और ज़मीन की तमाम नहरों में सैलाब आ गया था। तौरात में भी लग-भग ऐसा ही लिखा है, लेकिन उस में यह इशारा मिलता है कि बड़े-बड़े समुन्द्र के तमाम सोते फूट निकले थे (पैदाइश-७-१२) हज़रत नूह उस स्थान पर नबी बना कर भेजे गये थे जो 'दजला' और "फ़ुरात" नदियों की वादी में है। यह दोनों नदियाँ आरमीनिया (मौजूदा रूस) के पहाड़ों से निकली हैं और दूर तक अलग-अलग बहने के बाद इराक़ में जा कर परस्पर मिल गयी हैं और फिर आगे चल कर फ़ारस की खाड़ी में गिर गयी हैं। यह पहाड़ आरमीनिया में "अरारात" के क्षेत्र में है इसी लिये इन पहाड़ों को

➲तौरात में 'अरारात का पहाड़' कहा गया है।

और जिस पहाड़ी पर कश्ती जा कर लगी थी उस का नाम "जूदी" था। तौरात का ज़िल्म रखने वाले उलमा का ख़याल है कि 'जूदी' उस पहाड़ी सिलसिले का नाम है जिस ने अरारात और जारजिया के पहाड़ी सिलसिले को परस्पर मिला दिया है। वह कहते हैं कि सिकन्दर शासक के काल में कुछ यूनानी लेख़ से भी इस की ताईद होती है। कम से कम यह तारीख़ी वाक़िआ है कि आठवीं शताब्दी तक वहाँ एक पूजा स्थल मौजूद था और लोगों ने उस का नाम "कश्ती वाली मस्जिद" रखा हुआ था। (तर्जुमानुल कुरआन मौलाना आज़ाद रह०)

१९. 'जूदी' एक पहाड़ी का नाम है "मूसिल" स्थान के निकट। कुछ उलमा का कहना है कि यह पहाड़ी मुल्क शाम में है। पानी का यह तूफ़ान छः माह तक रहा। ज़मीन पर कोई भी जीव धारी जीवित न बचा। अल्लाह के अ़ज़ाब ने सब को अपनी लपेट में ले लिया। अल्लाह का क़ानून हमेशा से यही रहा है कि जब कोई क़ौम हिदायत नहीं कुबूल करती है और उलटा सर्कशी पर आमादा हो जाती है तो कुदरत उस को दुनिया से मिटा देती है। बेटे के लिये जो हज़रत नूह ने दुआ़ फ़रमाई थी उस में हज़रत नूह से चूक हुयी है। बात कोई बहुत अहम नहीं थी, लेकिन चूँकि पैग़म्बर का दर्जा बहुत बुलन्द है इस लिये इस मामूली चूक को भी गुनाह समझते हुये अल्लाह से क्षमा माँगी।

مِنْ اَهْلِيْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ
الْحٰكِمِيْنَ ۝ قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ
عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۖ
اِنِّيْٓ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ
اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ۖ
وَاِلَّا تَغْفِرْ لِيْ وَتَرْحَمْنِيْٓ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝
قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَ
عَلٰٓى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ۖ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ
يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَاۤءِ
الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ
وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۚ فَاصْبِرْ ۚ اِنَّ الْعَاقِبَةَ
لِلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ۗ قَالَ يٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۗ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا

और तेरा वादा बिल्कुल सच्चा है और तू सब हाकिमों का हाकिम है। ४६. अल्लाह ने कहा कि ऐ नूह! वह तेरे घर वालों में से नहीं है क्यों कि नेक अ़मल नहीं[२०] (अगर नेक अ़मल होता तो तेरा कहा मानता) पस जिस चीज़ (के सहीह होने)का तुझे ज़िल्म न हो उस का (मुझ से) प्रश्न न कर। मैं तुझे समझाता हूँ (कि ऐसे मौके पर मुहब्बत में डूब कर) नादानों की सी हर्कत न किया कर ४७. (यह कड़ा उत्तर सुन कर) बोला कि ऐ मेरे मौला! जिस चीज़ के सहीह होने का मुझे ज़िल्म न हो उस के सवाल करने से तेरी पनाह लेता हूँ। और अगर तू मेरा गुनाह न बख़्शे गा और न रहम करे गा तो मैं बिल्कुल टोटा पा जाऊँ गा ४८. (इस के उत्तर में अल्लाह की तरफ़ से) कहा गया ऐ नूह! (तुझे माफ़ किया गया) अब तू हमारी तरफ़ से सलामती और बर्कतों के साथ जो तुझ पर और तेरे साथ वाले लोगों पर हैं किनारा पर उतर आ। और भी क़ौमें हैं हम उन को आसूदगी दें गे फिर हमारी तरफ़ से उन को दुःख की मार हो गी[२१] ४९. (ऐ नबी!) यह ग़ैब की सूचनाएँ हैं जो हम तेरी तरफ़ वहयि द्वारा भेजते हैं (वर्ना) इससे पूर्व न तू और न तेरी क़ौम उन को जानते थे। और तक्लीफ़➲

➲पहुंचे तो इसी प्रकार सब्र कर। परिणाम (आख़िरी मैदान) परहेज़ गारों ही के लिये है ५०. और (नूह की क़ौम के बाद) आ़द नामक क़ौम की तरफ़ हम ने उन के भाई हूद को (नबी बना कर के) भेजा। उस ने कहा कि ऐ भाइयो! अल्लाह की इ़बादत करो उस के अ़लावा तुम्हारा कोई माबूद नहीं।

....

२०. इस आयत से मालूम हुआ कि औलाद अगर दीन से फिर जाये, या इस्लाम न कुबूल करे और माता-पिता मुसलमान हों, तो औलाद को बाप के तर्का में से कुछ नहीं मिले गा। और ऐसी औलाद के लिये आख़िरत में नजात की दुआ़ करना भी जाइज़ नहीं है। हाँ, उन की हिदायत के लिये दुआ़ माँगी जा सकती है जैसा कि हज़रत इब्राहीम अ़लै० ने अपने बाप के लिये मांगी थी।

२१. कहा गया है कि जब हज़रत नूह तूफ़ान समाप्त होने के बाद कश्ती से उतरे तो जो लोग उन के साथ कश्ती पर सवार हुये थे, थोड़े दिनों के पश्चात् सब मर गये। उन में से किसी की भी नस्ल नहीं चली। केवल हज़रत नूह के तीनों बेटों (साम, हाम, याफ़िस) की नस्ल (वंश) दुनिया में फैली। इसी लिये हज़रत नूह को "दूसरा आदम" कहा जाता है। अब दुनिया में जितने लोग भी हैं वह सब हज़रत नूह ही की औलाद हैं। हज़रत नूह और हज़रत आदम के दर्मियान एक हज़ार वर्ष का फ़ासिला है।

मजूसी (आग की पूजा करने वाले) चीनी और हिन्दुस्तानी अपनी साहित्य की किताबों में हज़रत नूह का ज़िक्र करते हैं। मजूसी लोगों का कहना है कि सब से प्रथम मनुष्य का नाम 'क्यूमर्स' था, उसी के वंश से सब लोग फैले हैं। कुछ उलमा का कहना है कि यह तूफ़ान ख़ास बाबुल (मौजूदा इराक़ मुल्क) में ही आया था, लेकिन यह बात किसी प्रकार दुरुस्त नहीं है। मुसलमान, यहूद और नसारा सभी का इस मुद्दे पर इत्तिफ़ाक़ है कि यह तूफ़ान आ़म था (वहीदी)

इस बारे में इख़्तिलाफ़ है कि तूफ़ान पूरी दुनिया में आया था या कुछ विशेष मुल्कों में ही आया था? पुस्तक "दाइरतुल् मआ़रिफ़" में यूरोप के साहित्य कारों की तहक़ीक़ और दलाइल लिखे गये हैं, जिन से पता चलता है कि यह तूफ़ान आ़म था (मुवज़्ज़िहुल-फ़ुर्क़ान) कुछ इस्लामी उलमा इस बात की ओर भी गये हैं कि तूफ़ान केवल उसी क्षेत्र में आया था जहाँ नूह अ़लै० की क़ौम आबाद थी और जो उन का तब्लीग़ी क्षेत्र था। लेकिन जमहूर उलमा का बहर हाल यही कहना है कि तूफ़ान पूरी ज़मीन पर आया था- अल्लाह ही बेहतर जानता है।

तुम केवल अल्लाह पर झूठ बाँध रहे हो[२२] ५१. मेरे भाइयो! मैं इस (तब्लीग़) पर तुम से बदला नहीं चाहता। मेरी मज़दूरी तो अल्लाह ही के ज़िम्मा है जिस ने मुझे पैदा किया। क्या तुम समझते नहीं हो (कि बेग़रज़ आदमी की नसीहत मुख़्लिसाना होती है)। ५२. ऐ भाइयो! अल्लाह से बख़्शिश माँगो फिर उसी की ओर झुके रहो वह तुम पर (आसमान से) बरसते बादल भेजे गा और तुम्हारी कुव्वत को और बढ़ाये गा (इस लिये उस का हुक्म मानो) और मुजरिमाना रुगर्दानी न करो ५३. वह बोले ऐ हूद! तू➲

مُفْتَرُوْنَ ۝ يٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ۭ اِنْ اَجْرِيَ
اِلَّا عَلَي الَّذِيْ فَطَرَنِيْ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ وَيٰقَوْمِ
اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاۗءَ عَلَيْكُمْ
مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰي قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا
مُجْرِمِيْنَ ۝ قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ
بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝
اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْۗءٍ ۭ
قَالَ اِنِّىْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّىْ بَرِيْۗءٌ مِّمَّا

تُشْرِكُوْنَ ۝ مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا
تُنْظِرُوْنِ ۝ اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ؕ
مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ
عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ
مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖٓ اِلَيْكُمْ ؕ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ

हमारे पास कोई स्पष्ट तर्क {रोशन दलील} तो लाया नहीं और तेरे केवल कहने से तो हम अपने माबूदों को नहीं छोड़ने के और न (केवल हम तेरे कहने से) तेरी मानें गे ५४ हम तो यही समझते हैं कि (तू जो) हमारे माबूदों (को बुराई से याद करता है उन) में से किसी ने तुझ को कुछ तक्लीफ़ पहुंचाई है। हूद ने कहा कि मैं अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि अल्लाह के अ़लावा जिन चीज़ों को तुम उस का शरीक बनाते हो मैं उन से बेज़ार हूँ ५५. सो तुम सब मेरे खि़लाफ़ (जिस प्रकार का) दाँव (चाहो) चला लो और मुझे ढील न दो ५६. मैं ने अल्लाह पर जो मेरा और तुम्हारा पर्वरदिगार है भरोसा किया है (मैं और तुम क्या हैं) जितने जीवधारी हैं सब पर उसी का इख़्तियार है। (सुनो!) मेरा रब (तो) सीधी राह पर (मिलता) है ५७. और अगर तुम (इस सच्ची शिक्षा से) मुंह मोड़े ही रहे तो जिन बातों को मैं दे कर भेजा गया था वह तो मैं तुम्हें पहुंचा चुका (मानना या ना मानना तुम्हारा काम है, नाफ़र्मानी पर तुम हलाक हो गे) और मेरा रब तुम्हारे अ़लावा किसी दूसरी क़ौम को तुम्हारे स्थान पर ले आये गा

....

२२. आ़द क़ौम के हालात:- आ़द कोई ऐसा-वैसा और मामूली क़बीला न था, बल्कि वह एक बड़ी शक्ति शाली क़ौम थी जो दुनिया की सब से पुरानी सभ्यता की बुनियाद डालने वाली थी। एशिया और अफ़रीक़ा के अधिकांश क्षेत्र पर उस का शासन चलता था। ऊँचे-ऊँचे गगन चुंबी भवन उन की बेहतरीन कारीगरी की ओर संकेत करते थे। इस बुनियाद पर अ़रब के लिये इस क़ौम से अधिक इ़ब्रत और नसीहत का कोई दूसरा नमूना न था। यही कारण है कि क़ुरआन मजीद ने इस शक्ति शाली क़ौम के हालात को बार-बार दोहराया है। अ़रबी भाषा में 'आ़द' का कोई अर्थ नहीं बनता है। 'अब्री' भाषा में इस के माना "बुलन्द" और "प्रसिद्ध" के हैं। अ़रब इतिहास कारों ने आ़द को "औ़ज़ बिन इरम बिन साम" का सगा बेटा लिखा है। इस लिये इस का समय काल मसीह अ़लै० की पैदाइश से तीन हज़ार वर्ष पूर्व माना जाना चाहिये।

क़ुरआन मजीद ने आ़द का ज़िक्र जहाँ किया है उस को नूह की क़ौम के बाद की नस्ल कहा है। इस से यह भी पता चलता है कि मुल्क शाम की पुन: आबादी के बाद बनू साम की पहली तरक़्क़ी आ़द से आरंभ होती है। क़ुरआन ने उन को आ़दे ऊला (पहला आ़द) कहा है। आ़द की आबादी अ़रब के बेहतरीन क्षेत्र यानी यमन और हिज़्रमूत में फ़ारस की खाड़ी के तटवर्ती क्षेत्र से इराक़ की सीमा तक थी। अस्ल राजधानी मुल्क यमन थी, लेकिन फ़ारस की खाड़ी के किनारे-किनारे वह इराक़ तक फैली हुयी थी।

क़ौमों का हुकूमत से हाथ धो बैठना सियासत में कमज़ोर पड़ जाना स्वयं इस बात का तर्क है कि उन के अख़्लाक़, आचरण और अच्छे स्वभाव का पैमाना किस सीमा तक पस्त हो गया है। आ़द की सियासी बर्तरी और विशेष्ताओं में दूसरे मुल्कों से पीछे रह जाना इस बात की दलील है कि वह इस सीमा तक गिर चुके थे कि जहाँ पहुंच कर अल्लाह का अ़ज़ाब क़ौमों पर आता है और उन को तबाह-बर्बाद कर के रख देता है। बाबुल असीरया, फ़नेशिया, क़रताजना, यूनान, रूम और क़दीम फ़ारस सब उसी तबाही के नतीजा में टुकड़ों-टुकड़ों में बंटे। "अल्लाह का क़ानून गुज़री हुयी क़ौमों में भी यही था और अल्लाह के क़ानून में कुछ भी फेर-बदल न पाओ गे"। एक मौक़ा

➲पर अल्लाह का यह क़ानून भी है कि क़ौम में वह किसी संदेष्टा, उलमा और मशाइख़ को पैदा करता है। जो क़ौम को नसीहत करता है और उन कीबुराइयों और ख़राबियों की इस्लाह करता है। उस को सुधारने और संवारने की दावत देता है। इस लिये कि अल्लाह का आदेश है "हम किसी क़ौम को उस समय तक दंडित नहीं करते हैं जब तक कि उन में संदेष्टा न भेज दें"

लेकिन तमाम क़ौमों का पिछला रिकार्ड गवाह है कि एक छोटी सी जमाअ़त को छोड़ कर बाक़ी तमाम ही लोग उस की अनसुनी कर देते हैं। और जो सुनते भी हैं वह समझते नहीं। और जो समझते हैं वह अ़मल कर के सुधरते नहीं हैं। और यह तो सभी को मालूम है कि नतीजा (अ़ज़ाब व सवाब) का दारो-मदार अ़मल पर है। उस समय अल्लाह का ग़ज़ब तल्वार में चमक कर, बादलों से गरज कर या ज़मीन से फट कर ज़ाहिर होता है और दूसरी क़ौम के लिये पहली क़ौम का स्थान साफ़ कर देता है। अब वह समय आ गया है कि इस शक्ति शाली क़ौम को जिस ने दुनिया को अपनी शक्ति से हिला कर रख दिया था, अन्तिम दावत दे दी जाये। आख़िर उन ही में से हज़रत हूद अ़लै० संदेष्टा की हैसिय्यत से तशरीफ़ लाये, जिन्हों ने उन को अल्लाह के आदेश सुनाये।

इन आयतों में क़ौमे आ़द की तबाही के तीन कारण बताये गये हैं, जो हमेशा ही हर क़ौम की तबाही का कारण बने हैं। (१) ताक़त का नशा (२) अन्याय व अत्याचार (३) और सब से आख़िरी चीज़ जो दुनिया की हलाकत व बर्बादी का कारण है एक अल्लाह का इन्कार और बुतों की पूजा व अ़िबादत। आख़िर वह दिन आ गया जब अल्लाह के क़ानून ने अपनी ज़मीन के लिये दूसरी क़ौम का चुनाव कर लिया। और उस शरीर क़ौम को 'अहक़ाफ़' के बाहर तल्वार से और 'अहक़ाफ़' के अन्दर हवा और रेत के तूफ़ान से बर्बाद कर दिया कि यह सब उस के हथियार हैं। उस का हाथ इन्सानों के हाथ में भी वैसा ही काम करता है, जिस प्रकार हवा, पानी और आग में (अ़र्जुल क़ुरआन, भाग अव्वल, आ़द का बयान- मौलाना सुलेमान नदवी रह०)

وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ۝
وَلَمَّا جَاۗءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ
بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝
وَتِلْكَ عَادٌ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ
وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۝ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ
الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اَلَآ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا
رَبَّهُمْ ۭ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ۝ وَاِلٰي ثَمُوْدَ
اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ
مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ هُوَ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَ
اسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ۭ
اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ۝ قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ

तुम उस का कुछ भी न बिगाड़ सको गे। बेशक मेरा पर्वरदिगार हर वस्तु पर निग्राँ है ५८. और जब हमारा हुक्म (उन की हलाकत के मुतअ़ल्लिक़) आ पहुंचा तो हम ने हूद को और जो उन के साथ ईमान लाये थे उन को (केवल) अपनी रहमत से बचा लिया, और सख़्त दन्ड से उन को नजात दी ५९. और (अगर तुम्हें उन को देखना हो तो) यह आ़द की क़ौम है (जिन के भवन यात्राओं में तुम्हारी नज़र से गुज़रते हैं) जो अपने रब के हुक्मों से इन्कारी हुये और उस के रसूलों से नाफ़र्मानी की और मुंह मोड़ने वालों, ज़िद्दी लोगों के ताबे रहे ६०. और (जिस के बदले में) दुनिया और आख़िरत में उन पर लानत हुयी[२१]। (क्यों हुयी?) सुनो! (इस लिये हुयी कि) आ़द क़ौम अपने रब की इन्कारी हुयी। सुनो! आ़द जो हूद की क़ौम से थे (अल्लाह के➲

فِيۡنَا مَرۡجُوًّا قَبۡلَ هٰذَاۤ اَتَنۡهٰٮنَاۤ اَنۡ نَّعۡبُدَ مَا يَعۡبُدُ اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِىۡ شَكٍّ مِّمَّا تَدۡعُوۡنَاۤ

वहाँ से) धुतकारे गये। ६१. और (सुनो!) हम ने समूदियों की तरफ़ उन के भाई सालेह को रसूल बना कर भेजा[२४]। उस ने (भी यही) कहा कि भाइयो! अल्लाह की अ़िबादत करो उस के अ़लावा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। उसी ने तुम को ज़मीन (की मिट्टी) से पैदा कर के उस में आबाद किया है पस तुम (अपने गुनाहों पर) उस से बख़्शिश मांगो फिर उस के हो रहो। बेशक मेरा रब (अपने बन्दों से) क़रीब (और दुआयें) क़ुबूल करने वाला है। ६२. वह बोले कि ऐ सालेह! इस से पूर्व तो हमें तेरे से बहुत कुछ आशाऐं थीं[२५] क्या जिन माबूदों को हमारे बाप-दादा पूजते चले आये हैं उन की अ़िबादत से तू हम को रोकता है (इसी लिये हम तेरी नहीं मानते) और जिस काम की तरफ़ तू हमें बुलाता है

....

२३. 'दुनिया और आख़िरत में लानत हुयी' यानी उन पर अल्लाह का अ़ज़ाब आ धमका। दन्ड और सज़ा से भरी आंधियाँ उन पर चलने लगीं। उस अ़ज़ाब से हज़रत हूद और उन के अनुयायी नजात पा गये। इन क़ौमों ने अल्लाह और उस के रसूल के आदेशों का इन्कार किया। यह याद रहे कि एक नबी की नाफ़र्मानी करने वाला समस्त संदेष्टाओं का नाफ़र्मान होता है। अल्लाह और उस के मोमिन बन्दों की उन पर लानत पड़ी। इस दुनिया में उन का ज़िक्र लानत के साथ होने लगा और आख़िरत में भी सब के सामने उन पर अल्लाह की लानत हो गी। हज़रत सुदी का क़ौल है कि उन के बाद जितने भी नबी आये सभी ने उन पर लानत भेजी (इब्ने कसीर)

आज भी मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को झुठलाने वाली क़ौमों के लिये अल्लाह का क़ानून यही है। काफ़िर और मुश्रिक क़ौमें आज जो धन-दौलत के ऊँचे शिखर पर हैं, यह धन-माल-दौलत उन के लिये हलाकत और बर्बादी का सामान बनने वाली हैं।

२४. समूद क़ौम में हज़रत सालेह अ़लै० सन्देष्टा की हैसिय्यत से तशरीफ़ लाये। उन्हों ने दावत दी कि केवल अल्लाह ही की अ़िबादत करो। उस के अ़लावा और कोई अ़िबादत के लाइक़ नहीं है। उसी ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और तुम्हें आबाद कर के ज़मीन को रौनक़ बख़्शी। क्या वह सब करने वाला अल्लाह के अ़लावा भी कोई है? तो फिर क्या उस ज़ात के अ़लावा किसी का हक़ बनता है कि उस की अ़िबादत की जाये। क़ौम वालों ने कहा कि हमें तो तुम्हारी ज़ात से बड़ी आशायें थीं कि तुम हमारी अगुवाई करो गे, लेकिन तुम ने तो हमारे बाप-दादाओं के रास्ते ही को बुरा कहना आरंभ कर दिया और उस रास्ते से हटाने पर तुले हुये हो।

हज़रत सालेह ने कहा कि देखो अगर एक शख़्स के लिये अल्लाह ने सच्चाई की राहें खोल दी हैं वह देख रहा है कि सच्चाई की राह वह नहीं है जिसे लोगों ने अपनाया हुआ है तो क्या यह दुरुस्त है कि लोगों की पासंदारी में उस राह को बुरा न कहे? अच्छा बताओ तो सही! अगर वह सच्ची राह से हट कर अल्लाह की नाफ़र्मानी कर रहा है तो क्या कोई है जो उसे अल्लाह की पकड़ से बचा सके गा? अगर मैं तुम्हारी पासदारी करते हुये सच्चाई की दावत न दूँ तो इस का मतलब यही हुआ कि मैं अपने-आप को तबाही में डालूँ। बहर हाल उन्हों ने सर्कशी की और नाफ़र्मानी से बाज़ न आये, जिस का परिणाम यह निकला कि वह हलाक कर दिये गये (तर्जुमान)

हज़रत हूद और सालेह अ़लै० के दर्मियान सौ वर्ष की दूरी थी। सालेह अ़लै० दो सौ अस्सी वर्ष तक ज़िन्दा रहे। उन की क़ौम की उम्र ३०० से हज़ार वर्ष तक की थी। क़ौम की माँग पर चमत्कार के तौर पर ऊँटनी पैदा की गयी जो बड़ी लम्बी-चौड़ी, डील-डोल की थी। उन के जानवर उस की शक्ल ही देख कर बिदकते थे। पानी पीने के लिये बारी बनी थी। एक रोज़ उन के जानवर और एक रोज़ यह पानी पीती थी।

एक रिवायत के अनुसार क़ौम समूद का सब से बुरा शख़्स वह था जिस ने उस ऊँटनी पर आक्रमण किया

और दूसरे ने उस की बोटी-बोटी कर डाली। हज़रत सालेह अ़लै० ने उन लोगों को आगाह कर दिया कि केवल तीन दिन के पश्चात् ही तुम इस का परिणाम भुगतोगे। उलमा का कहना है कि तीन दिन का मौक़ा इस लिये दिया गया था कि हो सकता है तौबा कर लें। लेकिन वह न माने आख़िर उन के चेहरे नीले पड़ने लगे तब उन को विश्वास होने लगा। सुब्ह होते-होते हज़रत जिब्रील की सख़्त आवाज़ से उन के दिल फट गये और सब घुटनों के बल गिर कर मर गये (मवाहिब)

२५. यह लोग कितने जाहिल थे इस का अनुमान इस से लगाया जा सकता है कि शिर्क पर तो दिल जमता था, जिस का कोई सबूत नहीं। और तौहीद जो सीधा-सच्चा रास्ता है और जिस के लिये हज़ारों दलीलें मौजूद हैं, उस पर दिल नहीं जमता था। यह सारी ख़राबी बाप-दादाओं की तक़्लीद से पैदा होती है। तक़्लीद की धुन ऐसी समा जाती है कि इन्सान सब कुछ भूल जाते हैं (वहीदी) इस खुली हुयी हक़ीक़त के बावजूद उन लोगों पर बड़ा दुःख होता है जो अपने इमामों की तक़्लीद को फ़र्ज़ समझते हैं और दीन की राह में इख़्तिलाफ़ का कारण बनते हैं

إِلَيْهِ مُرِيبٍ ۝ قَالَ يَٰقَوْمِ أَرَءَيْتُمْ إِن كُنتُ
عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَءَاتَىٰنِي مِنْهُ رَحْمَةً فَمَن
يَنصُرُنِي مِنَ ٱللَّهِ إِنْ عَصَيْتُهُۥ فَمَا تَزِيدُونَنِي
غَيْرَ تَخْسِيرٍ ۝ وَيَٰقَوْمِ هَٰذِهِۦ نَاقَةُ ٱللَّهِ لَكُمْ
ءَايَةً فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِيٓ أَرْضِ ٱللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا
بِسُوٓءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ۝ فَعَقَرُوهَا
فَقَالَ تَمَتَّعُوا۟ فِي دَارِكُمْ ثَلَٰثَةَ أَيَّامٍ ذَٰلِكَ
وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوبٍ ۝ فَلَمَّا جَآءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا
صَٰلِحًا وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مَعَهُۥ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ
خِزْيِ يَوْمِئِذٍ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ ٱلْقَوِيُّ ٱلْعَزِيزُ ۝
وَأَخَذَ ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ ٱلصَّيْحَةُ فَأَصْبَحُوا۟ فِي
دِيَٰرِهِمْ جَٰثِمِينَ ۝ كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا۟ فِيهَآ أَلَآ إِنَّ
ثَمُودَا۟ كَفَرُوا۟ رَبَّهُمْ أَلَا بُعْدًا لِّثَمُودَ ۝

हमें इस में सख़्त पसोपेश है। ६३. सालेह ने कहा कि ऐ भाइयो! बतलाओ तो सही, अगर मैं अपने पर्वरदिगार की हिदायत पर हूँ और उस ने अपने पास से मुझे रहम अ़ता की हो (तो इस हाल में भी) अगर मैं अल्लाह की नाफ़र्मानी करूँ तो उस के अ़ज़ाब के मुक़ाबले में कौन मेरी सहायता करे गा? तुम तो हानि के अ़लावा मुझे कुछ भी लाभ नहीं दे सकते हो ६४. भाइयो! (अगर तुम निशानी माँगते हो तो) यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिये निशानी है[२६], तो उस को छोड़ देना कि अल्लाह की ज़मीन पर (जहाँ चाहे) खाती फिरे और उस को (किसी तरह) तक्लीफ़ न , पहुंचाना वर्ना तुरन्त ही तुम को अ़ज़ाब दबा डाले गा ६५. (मगर वह शरीर मुक़ाबले पर आमादा हुये) पस उन्हों ने उस ऊँटनी को मार डाला तो सालेह ने कहा (अब तुम्हारी ख़ैर नहीं) तीन रोज़ तक अपने घरों में चैन से गुज़ार लो। यह वादा ख़िलाफ़ नहीं (हो सकता) ६६. पस जब हमारा आदेश आ पहुंचा तो हम ने सालेह को और उन को जो उस के साथ ईमान लाये थे रहमत के साथ नजात बख़्शी और उस दिन की ज़िल्लत से बचाया (जिस दिन काफ़िरों पर ज़िल्लत आयी थी) निःसंदेह तेरा पर्वरदिगार बड़ा ही ज़बर्दस्त और ग़ालिब है ६७. और ज़ालिमों को (बड़े ज़ोर की) कड़क ने आ दबाया पस वह (इतने ही से) अपने घरों के अन्दर औंधे पड़े रह गये ६८. (ऐसे कि) गोया उस ज़मीन पर वह बसे

ही न थे[२७]। सुनो! समूदियों ने अपने पर्वरदिगार से इन्कार किया। ख़बरदार रहो समूदी (अल्लाह की जानिब से) धुतकारे गये।

....

२६. यह ऊँटनी हमारी दुआओं से पैदा हुयी है। यह तुम्हारे लिये निशानी है। यह ऊँटनी किस प्रकार पैदा हुयी और कहाँ से पैदा हुयी, कुरआन व हदीस में कोई ज़िक्र नहीं है। हाँ, इतना अवश्य ही पता चलता है कि हज़रत सालेह की नबुव्वत से इस का तअ़ल्लुक़ है, इस लिये यह ज़रूरी है कि यह ऊँटनी इस प्रकार पैदा हुयी हो जो हज़रत सालेह के नबी होने का सबूत बन सके। इसी की तरफ़ हम ने इशारा किया है (सनाई)

२७. यह नादान लोग नहीं जानते थे कि हम मुक़ाबला किस से कर रहे हैं। उस बादशाहों के बादशाह और मालिकों के मालिक के सिपाहियों को भी रोक नहीं है, हमारे हर-हर कण में वह पहरा दे रहे हैं। जब चाहें, जहाँ चाहें ढेर कर सकते हैं। (सनाई)

وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ۭ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿٦٩﴾ فَلَمَّا رَآٰ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ۭ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ﴿٧٠﴾ وَامْرَاَتُهٗ قَاۗىِٕمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَاۗءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿٧١﴾ قَالَتْ يٰوَيْلَتٰٓى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِيْ شَيْخًا ۭ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٧٢﴾ قَالُوْٓا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ۭ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿٧٣﴾ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَجَاۗءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِيْ قَوْمِ لُوْطٍ ﴿٧٤﴾ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ﴿٧٥﴾ يٰٓاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَاۗءَ اَمْرُ

६९. और (सुनो! हज़रत) इब्राहीम के पास हमारे भेजे हुये फ़रिश्ते (बिटे की) शुभ सूचना ले कर आये तो उन्हों ने (इब्राहीम को) सलाम कहा। इब्रहीम ने सलाम का (जवाब) दिया (और मेहमान समझा पस) थोड़ी देर में वह बछड़ा भुना हुआ ले आया[२८] ७०. पस जब इब्राहीम ने देखा कि उन के हाथ खाने को नहीं बढ़ते तो उन को ऊपरा[२९] {अपरिचित} समझा और जी में उन से डरा। फ़रिश्तों ने (अनुमान से मालूम कर के) कहा कि इब्राहीम ख़ौफ़ न कर हम लूत की क़ौम की हलाकत के लिये भेजे गये हैं ७१. (उस समय) इब्राहीम की बीवी (सारा) खड़ी (यह बातें सुन रही) थी (वह लूतियों की हलाकत की सूचना सुन कर) हंस पड़ी और हम ने उसे इस्हाक़ की शुभ सूचना दी और इस्हाक़ के बाद याक़ूब की ७२. वह हाये-हाये करने लगी कि मैं (इस आयु में) जनूँगी? हालाँकि मैं (बूढ़ी होने के अ़लावा) बाँझ (भी) हूँ और मेरा पति बूढ़ा है। यह बेशक अ़जीब बात है ७३. फ़रिश्तों ने कहा तू अल्लाह की क़ुदरत से तअ़ज्जुब करती है? ऐ इब्राहीम के घर वालो! तुम पर अल्लाह की रहमत और उस की बर्कतें हैं। बेशक वह (अल्लाह) बड़ी तारीफ़ों वाला और बुज़ुर्गी वाला है ७४. पस जब इब्राहीम के दिल से डर दूर हुआ (और औलाद की) खुशख़बरी भी उसे आ चुकी तो (हमारे

➲फ़रिश्तों के साथ) लूतियों के बारे में झगड़ने लगा (वह चाहता था कि लूत की क़ौम हलाक न हो क्यों कि) ७५. इब्राहीम बड़ा बुर्दबार-बड़ा नर्म दिल और (हर बात में) अल्लाह की तरफ़ लौटने वाला था[30] ७६. (उसे कहा गया) ऐ इब्राहीम! इस ख़याल को छोड़ दे (यह हुक्म टल नहीं सकता) तेरे रब का निश्चित आदेश आ चुका है।

....

२८. हज़रत सुदी फ़रमाते हैं कि लूत अ़लै० की क़ौम को हलाक करने के लिये जो फ़रिश्ते भेजे गये थे वह सुन्दर लड़कों की शक्ल में थे। यह पहले हज़रत इब्राहीम के घर उतरे। आप ने उन्हें देख कर उन की बड़ी आव-भगत की। तुरन्त घर का बछड़ा ज़ब्ह कर के भून लाये और उन के सामने रख दिया और स्वंय खाने में शामिल हो गये। बीवी सारा खिलाने-पिलाने में जुट गयी। फ़रिश्ते चूंकि खाते-पीते नहीं हैं इस लिये वह खाने से रुक गये और कहने लगे कि जब तक हम खाने की क़ीमत न अदा कर दें नहीं खाते। आप ने फ़रमाया: चलिये क़ीमत दे दीजिये। उन्हों ने पूछा क्या दे दें? आप ने कहा कि "बिस्मिल्लाह" कह कर खाना और खा कर "अल्हम्दुलिल्लाह" कहना, यही क़ीमत है। उस समय हज़रत जिब्रील ने हज़रत मीकाईल की ओर देखा और कहा कि निश्चित रूप से यह इस योग्य हैं कि इन्हें अल्लाह अपना ख़लीफ़ा (मित्र) बनाये। फ़रिश्तों ने इतना कुछ कहने-सुनने के बावजूद भी न खाया तो इब्राहीम अ़लै० के दिल में संकोच पैदा होने लगे। हज़रत सारा ने जब यह देखा कि हज़रत इब्राहीम स्वंय उन की सेवा कर रहे हैं फिर भी वह नहीं खा रहे हैं तो उन्हें मेहमानों के हाल पर हंसी आ गयी।

अब फ़रिश्तों ने इब्राहीम के डर दहश्त को दूर करने के लियें बताना आरंभ किया कि हम लोग तो फ़रिश्ते हैं और लूत अ़लै० की क़ौम को तबाह करने आये हैं। हज़रत सारा इस सूचना को सुन कर प्रसन्न हो गयीं। इसी बीच उन को दूसरी शुभ सूचना यह दी गयी कि इस बुढ़ापे में भी उन के हाँ बच्चा पैदा हो गा और इस आयु में भी उन की गोद हरी-भरी हो गी। सारा को इस पर आश्चर्य हुआ तो फ़रिश्तों ने कहा कि इस पर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिये।

हज़रत इब्राहीम को जब मालूम हुआ कि यह मेहमान लूत की क़ौम को हलाक करने के लिये आये हैं तो कहने लगे कि जिस बस्ती में ३०० से अधिक मुसलमान हों तो क्या वह भी बस्ती हलाक कर दी जाये गी? हज़रत जिब्रील ने कहा कि नहीं। अगर चालीस हों तो? हज़रत इब्राहीम ने पुन: पूछा। हज़रत जिब्रील ने कहा नहीं। हज़रत इब्राहीम अ़लै० ने इसी प्रकार घटाते-घटाते पाँच तक आ गये और पूछा कि अगर उस बस्ती में ५ मुसलमान हों तो? उत्तर दिया कि नहीं हलाक किया जाये गा। फिर एक के बारे में पूछा और वही उत्तर मिला। तो हज़रत इब्राहीम ने कहा कि हज़रत लूत के होते हुये कैसे हलाक करो गे? उन्हों ने कहा कि हम उन को और उन के मानने वालों को बचा लें गे। मगर यह याद रहे कि उन की पत्नी हलाक कर दी जाये गी (इब्ने कसीर-तर्जुमा तफ़्सीर मुहम्मदी)

२९. ऊपरा के माने हैं अपरिचित, अजनबी, जिससे पहले कोई जान-पहचान न हो।

३०. हज़रत इब्राहीम की यहाँ तीन सिफ़तें बयान की गयीं हैं (१) बुर्दबार होना (२) नर्म दिल होना (३) हर समय अल्लाह को याद करना। बिलाशुब्हा जिस शख़्स के अन्दर यह तीन विशेष्तायें मौजूद हों वह इस लाइक़ है कि अल्लाह उसे अपना ख़लीफ़ा (मित्र) बनाये। एक कामिल इन्सान के लिये इन तीनों विशेष्ताओं को उस का ज़ेवर कहा जाये तो बेजा न होगा।

रَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ۝ وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ

यानी उन पर अ़ज़ाब अटल आने वाला है ७७. और जब हमारे भेजे हुये (फ़रिश्ते) लूत के पास (इन्सान की शक्ल में) आये तो (ग़ैब का➲

➲बस्ती में कोई बाहर का व्यक्ति आ जाता तो उस पर हम्ला कर देते और उस के साथ कुकर्म करते थे। चुनान्चे ऐसा ही हुआ। अल्लाह ने भी सदूम और अ़मूरा का क्षेत्र ज्वाला मुखी (आतिश फ़शाँ) के फटने से ऐसा बंजर किया कि आज तक बन्जर है (तर्जुमान)

३२. क़ौम के दर्मियान हज़रत लूत का कोई बहुत बड़ा ख़ान्दान नहीं था। वह कुछ समय तक हज़रत इब्राहीम के साथ रहे, फिर हिजरत कर के शाम चले गये और वहीं से सदूम क़ौम की तरफ़ सन्देष्टा बना कर भेज दिये गये जहाँ यह कुकर्मी आबाद थे। हज़रत लूत उन के दर्मियान एक ग़रीब परदेसी की तरह रहते थे। हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि अल्लाह ने जितने भी सन्देष्टा इस के बाद भेजे गये वह भले पूरे ख़ान्दान वाले रहे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह हज़रत लूत पर रहम फ़रमाये, वह ज़बर्दस्त ख़ान्दान की पनाह ढूंडते थे"। (वहीदी)

३३. इस बस्ती पर सुब्ह के समय अ़ज़ाब आया और सदूम बस्ती खंडर बन कर रह गयी। आसमान से पकी हुयी मिट्टी पत्थर की तरह उन पर बरसने लगी जो आकार में बड़ी और वज़न में भी भारी थी। बुख़ारी शरीफ़ में "सिज्जीन" और "सिज्जील" दोनों का एक ही अर्थ बताया है। इमाम मुजाहिद फ़रमाते हैं कि हज़रत जिब्रील ने उन के घरों और जानवरों के साथ ऊपर उठाया। इतना ऊपर उठाया कि उन के कुत्तों के भोंकने की आवाज़ आसमान के फ़रिश्तों ने भी सुनी। फिर वहीं से उस बस्ती को ज़मीन पर उलट दिया और उन का नाम-निशान समाप्त हो गया।

"सुनन" की रिवायतों में आया है कि अगर किसी को लौंडे बाज़ी करते हुये पाओ तो यह ग़लत करने और कराने वाले (दानों ही को) क़त्ल कर दो (इब्ने कसीर) हदीस शरीफ़ में आया है कि मेरी उम्मत में भी कुछ लोग ज़मीन में धंसा दिये जायें गे और उन के चेहरे बिगाड़ दिये जायें गे। और वह लोग हों गे जिन के अन्दर खुल्लम-खुल्ला चोरी, शराब ख़ोरी, ज़िना कारी और ख़ियानत वग़ैरह की बुराइयाँ पाई जायें गी। इन पर आफ़तें और बलायें टूट पड़ें गी। यह सारी महामारियाँ आज भी उम्मत के अन्दर वबा का रूप धारण किये हुये हैं, इसी लिये बलाओं और मुसीबतों का भी सिलसिला जारी है।

بِقَرِيبٍ ﴿٨١﴾ فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا
وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ مَّنضُودٍ ﴿٨٢﴾
مُّسَوَّمَةً عِندَ رَبِّكَ ۖ وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ
بِبَعِيدٍ ﴿٨٣﴾ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۚ قَالَ
يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ وَلَا
تَنقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ ۚ إِنِّي أَرَاكُم بِخَيْرٍ وَإِنِّي
أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ ﴿٨٤﴾ وَيَا قَوْمِ أَوْفُوا
الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۖ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ
أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٨٥﴾
بَقِيَّتُ اللَّهِ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۚ
وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِحَفِيظٍ ﴿٨٦﴾ قَالُوا يَا شُعَيْبُ أَصَلَاتُكَ

८२. सो जब हमारा हुक्म (उन की बर्बादी के बारे में) आ पहुंचा तो उस बस्ती के ऊपरी हिस्सा को हम ने नीचे कर दिया[३४] और उस पर खंगरों की पत्थरियाँ जो अल्लाह के हाँ मुक़र्रर थीं बरसायीं ८३. और वह पत्थरियाँ ज़ालिमों से भी कुछ दूर नहीं (यानी इन पत्थरियों का दन्ड ऐसे बुरे लोगों के लिये असंभव और अन्याय न था) ८४. और (सुनो!) हम ने मदयन वालों की तरफ़ उन के भाई शुअ़ैब को[३५] (रसूल बना कर) भेजा। (सब से पहले) उस ने कहा कि भाइयो! अल्लाह ही की अ़िबादत करो उस के अ़लावा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। (और समाजी जीवन के नियमों में से अनिवार्य है कि) माप-तौल में कमी न किया करो (तुम अल्लाह की कृपा से तिजारत पेशा हो) मैं तुम को अच्छी हालत➲

➲में देखता हूँ और(अगर माप-तौल में कमी करना न छोड़ो गे तो) तुम्हारे हाल पर मुझे आम अ़ज़ाब के दिन का डर है ८५. और ऐ मेरे भाइयो! माप और तौल न्याय के साथ पूरा किया करो

تَأْمُرُكَ أَن نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا أَوْ أَن نَّفْعَلَ فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ إِنَّكَ لَأَنتَ الْحَلِيمُ الرَّشِيدُ

और लोगों को वस्तुएँ कम न दिया करो और मुल्क में फ़साद न फैलाते फिरो ८६. अल्लाह का दिया हुआ (लाभ हर हाल में) तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम (सच्ची बात) मानो (तो तुम्हारा भला होगा) और (अगर न मानो गे तो) मैं तुम पर निगहबान नहीं हूँ। ८७. वह (मानने के बजाए) कहने लगे कि ऐ शुऐ़ब! क्या तेरी नमाज़ तुझे हुक्म देती है कि (हमें यही नसीहत किया कर) कि हम अपने बाप-दादाओं के माबूदों की ज़िबादत करना तर्क कर दें या अपने मालों में जिस प्रकार चाहें ख़र्च करना छोड़ दें। (वाह साहब!) बेशक तू ही बड़ा नर्म दिल और नेक बख़्त (रह गया) है।

....

३४. मौलाना अमृत सरी मर्हूम ने यहाँ तर्जुमा "पस्त कर दिया" किया है। 'पस्त' के माना "नीचा" के होते हैं।

३५. क़बीला मदयन की तरफ़ शुऐ़ब अ़लै० सन्देष्टा बना कर भेजे गये थे। तौरात में है कि इब्राहीम की पत्नी क़तूरा से छः लड़के पैदा हुये, जिन में से एक का नाम मद्यान था (पैदाइश- २५-१) यही 'मद्यान' अ़रबी भाषा में "मदयन" बन गया। कुल्ज़ुम समुन्दर की जो शाख़ा अ़रब और जज़ीरा नुमाए सैना के दर्मियान गुज़री है, उसी के किनारे मदयन क़बीला आबाद था। बनी इस्राईल हज़रत शुऐ़ब को बनू क़तूरा कहते थे। इन ही में हज़रत शुऐ़ब नबी बना कर भेजे गये थे। इन्हों ने अपनी क़ौम से कहा कि केवल अल्लाह की ज़िबादत करो उस के अ़लावा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। नाप-तौल में बे ईमानी न करो। ना हक़ से अधिक लो और न ही हक़ से कम दो। मुल्क में फ़साद न मचाओ। लूट-मार और उपद्रव न करो। मैं तुम्हें माली तौर पर अच्छी हालत में देखता हूँ, लेकिन डरता हूँ कि कहीं अ़ज़ाब में न घर लिये जाओ। मदयन वालों ने कहा कि तुम अपने अल्लाह की जितनी ज़िबादत करनी चाहो करो। लेकिन क्या तुम्हारी नमाज़ें यह भी कहती हैं कि हमें अपने बाप-दादाओं के रास्ते से रोक दो? हम अपने माल के स्वंय मालिक हैं जिस प्रकार चाहें गे लेंगे और देंगे, जिस प्रकार चाहेंगे नापें-तौलें गे।

हज़रत शुऐ़ब ने कहा कि तुम लोग मेरी तब्लीग़ से नाराज़ क्यों होते हो? मैं तुम लोगों पर हाकिम बना कर नहीं भेजा गया हूँ। मैं तो केवल तुम्हारे अन्दर सुधार चाहता हूँ और सक भर तब्लीग़ करता रहूँ गा इस लिये कि मैं अल्लाह पर भरोसा करता हूँ। तुम लोग ज़िद में आ कर ख़्वाह-मख़्वाह मेरी मुख़ालिफ़त न करो, वर्ना अ़ज़ाब से न बच सको गे। क़ौम वालों ने कहा कि हम तुम्हें पत्थरों से मार-मार कर हलाक कर देते लेकिन तुम्हारे ख़ान्दान का लिहाज़ करते हुये ऐसा नहीं कर रहे हैं। हज़रत शुऐ़ब ने कहा: तुम अपनी राह चलो और हम अपनी राह चलते हैं। और परिणाम का इन्तिज़ार करो। चुनान्चे परिणाम सामने आ गया, नेक लोग सुरक्षित बच गये और अवज्ञा कारी लोग तबाह-बर्बाद हो गये (तर्जुमान)

हज़रत शुऐ़ब अल्लाह के ख़ौफ़ से रोते-रोते नेत्र हीन हो गये थे। बहुत अच्छी तब्लीग़ करते थे। बड़े फ़सीह और बलीग़ थे। हंस मुख और नर्म मिज़ाज थे, इसी लिये इन को "ख़तीबुल् अंबिया" कहा जाता है। यह एक मर्तबा "ऐका" वालों की तरफ़ नबी बना कर भेजे गये थे और पुनः "मदयन" वालों की तरफ़। हज़रत इब्राहीम की औलाद में से एक शख़्स का नाम "मदयन" था, फिर यही क़बीले का भी नाम पड़ गया। यह बस्ती कुल्ज़ुम समुन्द्र के किनारे आबाद थी। वहाँ एक कुंवा भी है जिस का पानी हज़रत मूसा ने हज़रत शुऐ़ब की बकरियों को पिलाया था। आज कल वहाँ एक घर बना हुआ है। हज़रत शुऐ़ब की क़ौम शिर्क भी करती थी और साथ ही साथ नाप-तौल में कमी➲

भी करती थी। रास्ते में बैठ कर ईमान वालों को डराते-धमकाते भी थे। कुछ उलमा का कहना है कि यह राह चलते लोगों से चुन्गी वसूल करते थे (अहादीसुत्तफ़ासीर)

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ
وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ
اِلٰى مَآ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا
اسْتَطَعْتُ ؕ وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ
وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝ وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ
يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ
قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ۝ وَاسْتَغْفِرُوْا
رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ۝ قَالُوْا
يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ
فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ؗ وَمَآ اَنْتَ
عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ۝ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ
اللّٰهِ ؕ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝ وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ

८८. शुअ़ैब (अ़लै०) ने कहा भाइयो! बतलाओ तो सही अगर मैं अपने पर्वरदिगार की (दी हुयी) हिदायत पर हूँ और उस ने (महज़) अपने फ़ज़्ल से मुझे पाक (और हलाल) रोज़ी अ़ता की हो (और मुझे हुक्म दिया हो कि मैं तुम को सुनाऊँ तो भी मैं ख़ामोश रहूँ? न मैं ख़ामोशी पसन्द करता हूँ) और न मैं यह चाहता हूँ कि जिन बातों से तुम को मना करता हूँ उन्हें स्वयं करूँ[३६]। मेरा इरादा तो भरसक (क़ौम की) इस्लाह करने का है। और मुझे तौफ़ीक़ अल्लाह ही ने दी है उसी पर मैं ने भरोसा किया है और उसी की तरफ़ मैं झुकता हूँ८९(हज़रत शुअ़ैब ने यह भी कहा कि) ऐ भाइयों! मेरी दुश्मनी से ऐसे काम न करने लगो जिन की वजह से तुम पर हूद और सालेह की क़ौम जैसा अ़ज़ाब नाज़िल हो। और लूत की क़ौम भी तुम से दूर नहीं[३७] (इन के वाक़िआ़त पर भी ग़ौर करो) ९०. और अपने पर्वरदिगार से (गुनाहों पर) बख़्शिश मांगो फिर उसी की तरफ़ झुके रहो। मेरा पर्वरदिगार बड़ा मेहरबान मुहब्बत करने वाला है। ९१. वह (नालाइक़ एक ज़बान हो कर) बोले ऐ शुअ़ैब! तू जो कुछ (नसीहत वग़ैरह करता है) उस में से अधिकांश हिस्सा हम नहीं समझते और हम तुझे अपनी क़ौम में बहुत ही कमज़ोर समझते हैं[३८], और अगर तेरे कुंबे के लोग न होते तो हम ने मुद्दत हुये तुझे पत्थरों से मार दिया होता और तू हमारे नज़दीक रोब वाला नहीं है ९२. शुअ़ैब ने कहा कि भाइयो! मेरा कुबा तुम्हारे नज़दीक अल्लाह से बढ़ कर इ़ज़्ज़त दार है (जिस के ख़ौफ़ से तुम मेरा लिहाज़ {सम्मान} करते हो) और अल्लाह को तुम अपनी पीठों के पीछे डाल चुके हो। (गोया उस से तुम्हारा कोई मतलब ही नहीं) मेरा पर्वरदिगार तुम्हारे कामों को घेरे हुये है ९३. भाइयो! (जाओ) तुम अपने तरीक़े पर अ़मल करते रहो मैं भी करता हूँ।

....

३६. 'जिन से तुम्हें मना करता हूँ' ऐसा करूँ गा तो अल्लाह का फ़रमान "क्यों अपने कहे हुये पर अ़मल नहीं करते" के तहत ग़लती पर हूँ गा। मैं यह तो कहता जाऊँ कि लेने वालों को कम न दिया करो और ख़ुद ही कम देने लगूँ,

➲तो यह सच्चे लोगों का काम नहीं कि अपने कहे के ख़ुद ही ख़िलाफ़ करें। ऐसा करने वाले ठग होते हैं (सनाई)
३७. हज़रत शुऐ़ब अ़लै० ने मदयन वालों को शिर्क करने और कम तौलने की आदत से तौबा करने की नसीहत की और यह कहा कि मुझे इस बात की शंका है अगर तुम मेरा कहा न मानो गे तो हज़रत नूह, हूद, सालेह और लूत अ़लै० की क़ौमों की तरह तुम लोग भी हलाक कर दिये जाओ गो। जब उन लोगों ने शुऐ़ब अ़लै० की बात न मानी तो अन्त में यह कह दिया कि तुम लोग हलाक कर दिये जाओ गे। तुम्हें स्वंय ही मालूम हो जाये गा कि किस प्रकार ज़लील हो गे। अन्त में हुआ वही कि थोड़े ही दिनों में उन पर आग की वर्षा हुयी और सब का सफ़ाया हो गया।

अन्तिम उपदेश जो हज़रत शुऐ़ब ने अपनी उम्मत को दिया था, बिल्कुल इसी प्रकार की नसीहत हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि० ने भी की थी, जब बलवाइयों ने उन का घर घेर लिया था और शहीद करने पर उतारू थे। हज़रत उस्मान ने उस समय कहा था: मुझे न मारो वर्ना मुझे भी इस बात का डर है कि हज़रत नूह, हूद, सालेह और शुऐ़ब अ़लै० की क़ौमों की तरह तुम पर भी अ़ज़ाब न आ जाये।

आख़िर हुआ वही जिस की शंका हज़रत उस्मान को थी। उसी समय से मुसलमान भांति-भांति की बलाओं और वबालों में गिरिफ़्तार हैं (अह्सनुत्तफ़ासीर)
३८. मदयन वालों ने कहा कि तुम्हारी अक्सर बातें तो हमारे पल्ले ही नहीं पड़ती हैं। और तुम ख़ुद भी अपनी क़ौम में बेहद कमज़ोर हो। इमाम सअ़ीद का कहना है कि आप की नज़र कमज़ोर थी। आप बहुत साफ़ बातें करते थे इसी वजह से आप को "ख़तीबुल् अन्बिया" (नबिय्यों में सब से बेहतरीन बोलने वाले) कहा जाता है। इमाम सुदी का कहना है कि आप को कमज़ोर इस लिये कहा कि आप अकेले थे और आप के ख़ान्दान वाले भी आप के साथ न थे। क़ौम वालों ने कहा कि अगर तुम्हारे ख़ान्दान की लाज न होती तो पत्थरों से मार-मार कर कब का काम तमाम कर दिया होता। यह सुन कर आप ने फ़रमाया: तुम मेरे ख़ान्दान का ख़याल कर के मुझ पर रहम करते हो न कि अल्लाह के डर से। इस का अर्थ यह हुआ कि हमारे ख़ान्दान वालों का पद अल्लाह से भी बड़ा है। हज़रत शुऐ़ब थक-हार कर निराश हो गये तो कहा: जाओ तुम अपनी इच्छानुसार जो समझ में आये करो और मैं भी करता हूँ। तुम लोगों को अपना अन्जाम जल्द मालूम हो जाये गा (तफ़्सीर मुहम्मदी)

إِنِّي عَامِلٌ ۖ سَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن يَأْتِيهِ عَذَابٌ
يُخْزِيهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۖ وَارْتَقِبُوا إِنِّي مَعَكُمْ
رَقِيبٌ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَالَّذِينَ
آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَأَخَذَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا
الصَّيْحَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جَاثِمِينَ ﴿٩٤﴾ كَأَن لَّمْ
يَغْنَوْا فِيهَا ۗ أَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُودُ ﴿٩٥﴾
وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٩٦﴾
إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاتَّبَعُوا أَمْرَ فِرْعَوْنَ ۖ وَمَا
أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ﴿٩٧﴾ يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

जिसे अ़ज़ाब आ कर ज़लील करे गा और जो अल्लाह के नज़दीक झूठा हो गा (कुछ दिन पश्चात्) तुम स्वंय इस को जान लोगे। (पस अब इसी में लगे रहो) और इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ (चुनान्चे ऐसा ही होता रहा) ९४. और जब हमारा (ग़ज़ब से भरा हुआ) आदेश पहुंचा तो हम ने शुऐ़ब को और जो उस के साथ ईमान लाये थे (महज़) अपनी कृपा से उन को नजात दी, और (नाफ़र्मान) ज़ालिमों को सख़्त आवाज़ ने आ पकड़ा सो वह अपने घरों में औंधे पड़े रह गए[३९] (और इस प्रकार "ख़स कम जहान पाक" का उदाहरण बने) ९५. गोया उस बस्ती में कभी➲

तो यह सच्चे लोगों का काम नहीं कि अपने कहे के ख़ुद ही ख़िलाफ़ करें। ऐसा करने वाले ठग होते हैं (सनाई)
३७. हज़रत शुऐ़ब अ़लै० ने मदयन वालों को शिर्क करने और कम तौलने की आ़दत से तौबा करने की नसीहत की और यह कहा कि मुझे इस बात की शंका है अगर तुम मेरा कहा न मानो गे तो हज़रत नूह, हूद, सालेह और लूत अ़लै० की क़ौमों की तरह तुम लोग भी हलाक कर दिये जाओ गो। जब उन लोगों ने शुऐ़ब अ़लै० की बात न मानी तो अन्त में यह कह दिया कि तुम लोग हलाक कर दिये जाओ गे। तुम्हें स्वंय ही मालूम हो जाये गा कि किस प्रकार ज़लील हो गे। अन्त में हुआ वही कि थोड़े ही दिनों में उन पर आग की वर्षा हुयी और सब का सफ़ाया हो गया।

अन्तिम उपदेश जो हज़रत शुऐ़ब ने अपनी उम्मत को दिया था, बिल्कुल इसी प्रकार की नसीहत हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि० ने भी की थी, जब बलवाइयों ने उन का घर घेर लिया था और शहीद करने पर उतारू थे। हज़रत उस्मान ने उस समय कहा था: मुझे न मारो वर्ना मुझे भी इस बात का डर है कि हज़रत नूह, हूद, सालेह और शुऐ़ब अ़लै० की क़ौमों की तरह तुम पर भी अ़ज़ाब न आ जाये।

आख़िर हुआ वही जिस की शंका हज़रत उस्मान को थी। उसी समय से मुसलमान भांति-भांति की बलाओं और वबालों में गिरिफ़्तार हैं (अहसनुत्तफ़ासीर)
३८. मदयन वालों ने कहा कि तुम्हारी अक्सर बातें तो हमारे पल्ले ही नहीं पड़ती हैं। और तुम ख़ुद भी अपनी क़ौम में बेहद कमज़ोर हो। इमाम सअ़ीद का कहना है कि आप की नज़र कमज़ोर थी। आप बहुत साफ़ बातें करते थे इसी वजह से आप को "ख़तीबुल् अन्बिया" (नबिय्यों में सब से बेहतरीन बोलने वाले) कहा जाता है। इमाम सुदी का कहना है कि आप को कमज़ोर इस लिये कहा कि आप अकेले थे और आप के ख़ान्दान वाले भी आप के साथ न थे। क़ौम वालों ने कहा कि अगर तुम्हारे ख़ान्दान की लाज न होती तो पत्थरों से मार-मार कर कब का काम तमाम कर दिया होता। यह सुन कर आप ने फ़रमाया: तुम मेरे ख़ान्दान का ख़याल कर के मुझ पर रहम करते हो न कि अल्लाह के डर से। इस का अर्थ यह हुआ कि हमारे ख़ान्दान वालों का पद अल्लाह से भी बड़ा है। हज़रत शुऐ़ब थक-हार कर निराश हो गये तो कहा: जाओ तुम अपनी इच्छानुसार जो समझ में आये करो और मैं भी करता हूँ। तुम लोगों को अपना अन्जाम जल्द मालूम हो जाये गा (तफ़्सीर मुहम्मदी)

إِنِّي عَامِلٌ ۖ سَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۖ وَارْتَقِبُوا إِنِّي مَعَكُمْ رَقِيبٌ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَأَخَذَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جَاثِمِينَ ﴿٩٤﴾ كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۗ أَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُودُ ﴿٩٥﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٩٦﴾ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاتَّبَعُوا أَمْرَ فِرْعَوْنَ ۖ وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ﴿٩٧﴾ يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

जिसे अ़ज़ाब आ कर ज़लील करे गा और जो अल्लाह के नज़दीक झूठा हो गा (कुछ दिन पश्चात्) तुम स्वंय इस को जान लोगे। (पस अब इसी में लगे रहो) और इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ (चुनान्चे ऐसा ही होता रहा) ९४. और जब हमारा (ग़ज़ब से भरा हुआ) आदेश पहुंचा तो हम ने शुऐ़ब को और जो उस के साथ ईमान लाये थे (महज़) अपनी कृपा से उन को नजात दी, और (नाफ़र्मान) ज़ालिमों को सख़्त आवाज़ ने आ पकड़ा सो वह अपने घरों में औंधे पड़े रह गए[३९] (और इस प्रकार "ख़स कम जहान पाक" का उदाहरण बने) ९५. गोया उस बस्ती में कभी

فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ ۖ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُودُ ﴿٩٨﴾ وَأُتْبِعُوا
فِي هَٰذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ بِئْسَ الرِّفْدُ
الْمَرْفُودُ ﴿٩٩﴾ ذَٰلِكَ مِنْ أَنبَاءِ الْقُرَىٰ نَقُصُّهُ عَلَيْكَ ۖ
مِنْهَا قَائِمٌ وَحَصِيدٌ ﴿١٠٠﴾ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِن

बसे ही नहीं थे। (लोगो!) सुन रखो कि मद्यन वालों को हलाकत हुयी जैसे समूदियों को हलाकत हुयी थी। ९६+९७. और (सुनो! इसी प्रकार) हम ने मूसा को अपने निशानों और ज़ाहिर ग़लबा के साथ फ़िर्औन और उस की जमाअ़त की तरफ़ भेजा फिर (भी) वह फ़िर्औन ही की चाल पर चले हालाँकि फ़िर्औन की चाल दुरुस्त न थी। (यही वजह है कि) ९८. क़ियामत के रोज़ अपनी क़ौम के आगे-आगे हो कर उन को जहन्नम में दाख़िल करेगा। और बहुत ही बुरा घाट है और बुरे उतारे हुये ९९. और इस दुनिया में उन के पीछे लानत लगाई गयी और क़ियामत के रोज़ भी। बहुत ही बुरा बदला है जो उन को दिया जाये गा[40] १००. यह (कुफ़्फ़ार की) बस्तियों के समाचार हैं जो हम तुम को सुनाते हैं उन में से कुछ (की छतें अभी भी) खड़ी हैं और कुछ (बिल्कुल) वीरान (हैं) १०१. और हम (अल्लाह) ने उन पर अन्याय न किया था

....

३९. हज़रत जिब्रील की चीख़ से यह लोग इस तरह हलाक किये गये कि ऐसा मालूम होता था कि वहाँ कोई बस्ती ही न थी। जिस प्रकार समूदी एक चिंघाड़ द्वारा हलाक हुये थे, इसी प्रकार यह क़ौम भी हलाक हुयी। चूंकि मदयन की क़ौम पर भी समूद का सा अ़ज़ाब आया था इसी लिये यहाँ समूद का नाम लिया गया न कि लूतियों का।

हज़रत इमाम बसरी का कहना है कि हज़रत शुअ़ैब की क़ौम पर तीन प्रकार के अ़ज़ाब एक साथ आये। पहले पूरी बस्ती सख़्त गर्मी की लपेट में आ गयी। थोड़ी देर के बाद आसमान पर एक बादल दिखाई पड़ा जिस के नीचे ठन्डी हवा थी। यह लोग गर्मी से बचने के लिये उस के नीचे पहुंचे ही थे कि एक सख़्त आवाज़ आई जिस से ज़मीन में भूंचाल आ गया और उस बादल से आग की वर्षा भी होने लगी। बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत अबू मूसा अश्-अ़री रज़ि० से रिवायत है कि ऐसे नाफ़र्मानों को अल्लाह तआ़ला एक निश्चित समय तक मुहलत देता है फिर वह समय आ जाने के बाद अ़ज़ाब आ जाता है"। (अहसनुत्तफ़ासीर) आज कल ईरान के कुछ शहरों में (और हिन्दुस्तान के लातूर और उस्मानाबाद में) भूंचाल और भूकंप आये हैं, जिन से लाखों मकान बर्बाद हो गये हैं, यह सब अ़क़्ल वालों के लिये आगाही हैं।

४०. इस सूरः के आरंभ में क़ौम को हक़ की पैरवी करने की दावत दी थी और सर्कशी और फ़साद के परिणाम से आगाह किया था और यह भी स्पष्ट किया था कि इस में बुनियादी अहकाम क्या-क्या हैं। फिर आयत न० २४ में इन का निचोड़ बयान किया है यहाँ राहें दो हैं (१) इ़ल्म और बसीरत की (२) अन्धापन की। और यह ज़रूरी है कि दोनों राहों पर चलने वाले अपनी हालत और नतीजा में एक ही प्रकार के न हों। फिर इस हक़ीक़त पर दलील पेश की थी। यह पहले की क़ौमों और उन के हालात का बयान था जो हज़रत नूह के बयान से आरंभ हुआ था और हज़रत मूसा के बयान पर समाप्त हो गया।

अब सूरत के समापन पर उन नतीजों की तरफ़ तवज्जुह दिलाई है जो नतीजा के तौर पर सामने आयी हैं। (१) उन क़ौमों पर जो कुछ पेश आया तो इस लिये पेश नहीं आया कि अल्लाह ने उन पर ज़्यादती की हो। उस के जज़ा और सज़ा का क़ानून सरासर न्याय पर क़ाइम है, बल्कि इस लिये हुआ कि स्वयं उन्हों ने अपने ऊपर अन्याय करना चाहा और नजात की राह से मुंह मोड़ कर हलाकत की तरफ़ चलने लगे (२) इस बात में अल्लाह का क़ानून ही ऐसा है। उस की रहमतों ने छूट पर छूट दी है और रोशनी को तारीकी से बिल्कुल अलग कर दिया

➲है। लेकिन अगर कोई क़ौम रोशनी से यकदम मुंह मोड़ ले तो फिर नतीजा भी ज़ाहिर हो कर रहता है, (३) हर उस इन्सान के लिये जो आख़िरत के ख़याल से निडर न हो, इस बात में हक़ीक़त की बड़ी ही निशानी है। क्यों कि इस से साबित होता है कि अ़मल पर बदला का नियम यहाँ लागू है और अल्लाह के सन्देष्टाओं के सन्देश झूठे नहीं हैं (४) अल्लाह के हाँ हर बात के लिये एक हिसाब है और हर मामला के लिये एक सुनिश्चित समय है। जब तक वह समय न आये वह मामला ज़ाहिर नहीं हो सकता। आख़िरत का दिन भी इसी लिये पीछे डाल दिया गया है ताकि वह अपने मुक़र्रर समय पर ज़ाहिर हो। उस दिन जो बुरे निकलेंगे उन के लिये बुराई और जो नेक हों गे उन के लिये नेकी होगी (तर्जुमान)

ظَلَمُوٓا اَنْفُسَهُمْ فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِىْ
يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَىْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ
رَبِّكَ ۗ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ۝ وَكَذٰلِكَ اَخْذُ
رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِىَ ظَالِمَةٌ ۗ اِنَّ اَخْذَهٗٓ
اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ۝ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ
عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ۗ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَ
ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ۝ وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا لِاَجَلٍ
مَّعْدُوْدٍ ۝ يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ
فَمِنْهُمْ شَقِىٌّ وَّسَعِيْدٌ ۝ فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِى
النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا
دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ۗ اِنَّ
رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ۝ وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا
فَفِى الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ

लेकिन वह (नाफ़र्मानी से) अपने ऊपर आप अन्याय कर रहे थे सो जब तेरे रब का आदेश (उन की हलाकत के लिये) आ पहुंचा तो उन के माबूदों ने जिन को अल्लाह के अ़लावा वह पुकारा करते थे कुछ भी काम न दिया। (बल्कि) सिवाए तबाही के उन को कुछ भी न दे सके १०२. इसी प्रकार तेरे रब की पकड़ है जब ज़ालिम (क़ौमों की) बस्तियों को पकड़ता है। तो बेशक उस का अ़ज़ाब निहायत दर्द नाक और बड़ी शिद्दत का होता है (किसी में उस के बर्दाश्त करने की ताक़त नहीं) १०३. बेशक इस (वाक़िआ) में उन लोगों के लिये दलील है जो आख़िरत के अ़ज़ाब से डरते हैं। (वह दिन ऐसा होगा कि) सब लोग उस दिन जमा किये जायें गे और (यह भी कि) उस दिन (सब लोग हमारे सामने) हाज़िर किये जायेंगे १०४. और हम उस (दिन) को एक मुक़र्रर समय तक (किसी हिक्मत से) मुल्तवी करते हैं। १०५. (याद रहे कि) जिस समय वह दिन आ गया तो कोई नफ़्स भी बिना अल्लाह की अनुमति के नहीं बोल सके गा, फिर कुछ उन में बदबख़्त हों गे और कुछ नेक बख़्त[४१] १०६. पस जो बदबख़्त होंगे वही (तो दोज़ख़ की) आग में पड़ें गे और (चीख़ते हुये) गधे की सी आवाज़ें निकालेंगे १०७. जब तक आसमान और ज़मीन (इस मौजूदा शक्ल से बदल जाने के बाद) क़ाइम रहेंगे हमेशा तक इसी (आग) में उन को रहना होगा (आइन्दा) तेरे पर्वरदिगार को इख़्तियार है (जिसे चाहे निकाल दे) तेरा पर्वरदिगार जो चाहता है तुरन्त कर गुज़रता है[४२] १०८. और (उन के मुक़ाबले में) जो लोग नेक बख़्त (साबित) होंगे वह जन्नत में हमेशा रहेंगे जब तक आसमान➲

➲और ज़मीन मौजूद रहेंगे (यानी हमेशा-हमेशा, जिस की कोई इन्तिहा नहीं)

....

४१. हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह तआ़ला ने आरंभ (अज़ल) ही में यह लिख दिया है कि फ़लाँ शख़्स नेक बख़्त हो और फ़लाँ बद बख़्त। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! फिर हम अ़मल करें तो यह समझ कर कि जो होना है वह हो चुका, या यह समझ कर कि भविष्य में हो गा? आप ने फ़रमाया: यह समझ कर अ़मल करो कि जो होना है वह हो चुका और लिखा जा चुका। लेकिन आदमी को वैसे ही कामों की तौफ़ीक़ दी जाये गी जिस के लिये वह पैदा किया गया है। यानी अल्लाह ने अगर उसे जन्नती लिखा है तो उस को नेक कामों की तौफ़ीक़ होगी और अगर दोज़ख़ी लिखा है तो वह बुरे काम करे गा। सय्यद अ़ल्लामा ने कहा: इस आयत में लोगों की दो क़िस्में ही बयान हैं और एक क़िस्म को नहीं बयान फ़रमाया। यानी जिन की नेकियाँ और बुराइयाँ बराबर हों, या जो पागल या नाबालिग़ हों (वहीदी)

दो क़िस्मों से मुराद अच्छे और बुरे लोग हैं। चूंकि बुरे लोगों की ज़्यादती है, इस लिये इन का बयान पहले किया गया। नेक लोग हमेशा अल्प संख्यक (कम तादाद में) रहे हैं, इस लिये उन का बयान भी बाद में आया (राज़) नेक लोग इस लिये कम होते हैं कि बहुमूल्य (क़ीमती) वस्तुयें हमेशा कम होती हैं। कंकर-पत्थर तो अधिक मिलते हैं मगर हीरे-मोती बहुत कम।

४२. इन आयतों के दो अर्थ हो सकते हैं। (१) जितनी मुद्दत तक ज़मीन-आसमान दुनिया में बाक़ी रहे, उतनी मुद्दत तक बुरे लोग जहन्नम में रहेंगे और नेक लोग जन्नत में। मगर तेरा रब और जो ज़्यादा चाहे वह उसी को मालूम है। क्यों कि जब हम लम्बी से लम्बी मुद्दत तसव्वुर करते हैं तो अपने माहोल के एतिबार से बड़ी मुद्दत यही ख़याल में आती है। इसी लिये "मा दा-मतिस्समावात......................" वग़ैरह के अल्फ़ाज़ अ़रब के मुहावरे में "हमेशगी" का माना अदा करने के लिये बोले जाते हैं। और "दवाम, अबद" जैसे शब्द जिसे लामहदूद (अनंत) ज़माना कहा जाता है, तो इस का इ़ल्म तो बस अल्लाह ही को है और इसी को "मा शा-अ रब्बुक" (मगर जो तेरा रब चाहे) से अदा किया गया है

इस आयत का दूसरा अर्थ यह हो सकता है कि "जब तक ज़मीन व आसमान क़ाइम रहें गे" को दवाम और हमेशगी से माना जाये, या ज़मीन आसमान से आख़िरत की ज़मीन मुराद लिया जाये, जैसा कि सूर: इब्राहीम के सातवें रुकूअ़ में इशारा है। इस का मतलब यह हो गा कि बुरे दोज़ख़ में और अच्छे जन्नत में उस वक़्त तक रहें गे यानी हमेशा, मगर तेरा रब चाहे तो हमेशा न रहने दे। क्योंकि अच्छो और बुरों का हमेशा रहना भी उसी की मर्ज़ी और इख़्तियार में है, लेकिन वह चाह चुका कि अच्छों और बुरों का सवाब व अ़ज़ाब कभी कम न होगा चुनान्चे अल्लाह ख़ुद फ़रमाता है: "वह जहन्नम से नहीं निकलें गे" (सूर: बक़र:, रुकूअ़ २०) "वह आग से निकल भागने की कोशिश करें गे मगर निकल न सकें गे" (सूर: माइदा, रुकूअ़ ६) "न तो उन का अ़ज़ाब हल्का किया जाये गा और न ही मुहलत दी जाये गी" (सूर: बक़र:, रुकूअ़ १९) इसी पर तमाम उलमा का इत्तिफ़ाक़ है।

कुछ उलमा ने ऊपर बयान की गयी तफ़्सीर के ख़िलाफ़ भी लिखा है। लेकिन उन्होंने मनघड़त हदीसों का सहारा लिया है, या कुछ आयतों और हदीसों को ग़लत माना पहना दिया है। रहा गुनहगार मुसलमानों का मसला! यानी वह मुसलमान जो गुनाहों की वजह से आग में डाले जायें गे। तो हदीसों में इन के तअ़ल्लुक़ से साफ़-साफ़ आया है कि सज़ा भुगतने के पश्चात् एक दिन अवश्य ही जहन्नम से निकाल कर जन्नत में पहंचा दिये जायेंगे, जहाँ से फिर कभी न निकाले जायें गे। और शायद यही वजह है कि जन्नती लोगों के ज़िक्र के बाद फ़रमाया: "न ख़त्म होने वाला बदला है"। और जहन्नम वालों के ज़िक्र के बाद फ़रमाया: "मगर तेरा रब जो चाहे वह कर गुज़रता है"। इस से मालूम हुआ कि कुछ जहन्नमी तो दोज़ख़ से निकाले जायें गे मगर जन्नती लोगों को नहीं निकाला जाये गा। "मगर जो तेरा रब चाहे" से यह बयान मक़्सूद है कि ख़ालिक़ के हमेशा रहने और मख़्लूक़ के हमेशा रहने➲

में फ़र्क़ है। किसी मख़्लूक़ का हमेशा रहना यह अल्लाह के चाहने पर निर्भर है, जब वह चाहे फ़ना कर सकता है। और यह भी बता दिया कि जज़ा-सज़ा देना उस के इख़्तियार और उस की मर्ज़ी के ताबे है। "आर्य समाज" के अक़ीदा के मुताबिक़ वह मजबूर नहीं (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

इन आयतों में जन्नत-दोज़ख़ के हमेशगी के बारे में जो अल्लाह की मर्ज़ी का ज़िक्र है, यह इसी लिये कि अल्लाह को जो दवाम और हमेश्गी हासिल है वह ज़ाती है और जन्नत-जहन्नम को जो हमेशगी हासिल है वह अल्लाह की इच्छा के तहत है।

وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ۝١٠٨ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ۝١٠٩ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝١١٠ وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ؕ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝١١١ فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ؕ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝١١٢ وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝١١٣ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ

आइन्दा तेरे रब को इख़्तियार है[४३]। यह (वादा की गयी जन्नत) अटूट बदला है। १०९. पस जिन माबूदों की यह अ़िबादत करते हैं उन (की अ़िबादत के ग़लत और झूठ होने) में (बिल्कुल) शक न करो यह तो ऐसे अ़िबादत कर रहे हैं जैसे उन के बाप-दादा उन से पहले करते थे। (यह तो लकीर के फ़क़ीर हैं) हम उन सब को (उन के अ़मलों का) पूरा-पूरा बदला दें गे जो कम न किया जाये गा ११०. और हम ने मूसा को किताब दी तो उस में भी (ऐसे लोगों से) इख़्तिलाफ़ हुआ (कि कुछ तो ईमान लाये और कुछ इन्कारी हुये) और अगर तेरे रब का हुक्म न गुज़र चुका होता तो (इस दुनिया ही में) उन के दर्मियान फ़ैसला किया जाता। कुछ शक नहीं कि यह लोग उस से सख़्त इन्कारी हैं। १११. और तेरा पर्वरदिगार सब के अ़मलों का पूरा बदला देगा (उसे किसी के जतलाने की ज़रूरत नहीं क्यों कि) वह तुम्हारे कामों से अच्छी तरह आगाह है ११२. इस लिये जैसा तुझे हुक्म होता है तू और तेरे मानने वाले (मज़बूत रहना) और (किसी तरह से उस में बिदअ़त ईजाद कर के) कजी न करना। बेशक वह (अल्लाह) तुम्हारे कामों को देख रहा है ११३. और ज़ालिमों की तरफ़ (ज़रा भी) मैलान न करना वर्ना (दोज़ख़ की) आग (अ़ज़ाब) में मुबतला हो गे और अल्लाह के अ़लावा तुम्हारा कोई सहायक न हो गा और न तुम्हें (किसी प्रकार से किसी की) सहायता पहुंचे गी ११४. और दिन के दोनों किनारों पर (सुब्ह, ज़ुहर, अ़स्र और मग़्रिब को) और कुछ रात गये (अ़िशा को) नमाज़ पढ़ा कर। क्यों कि नेकियाँ, बदियों को (अल्लाह के हुक्म से) दूर कर देती हैं

....

४३. इस का मतलब यह है कि जब तक ज़मीन व आसमान बाक़ी हैं यह लोग नहीं मरें गे मगर जो तेरा रब चाहे

➲तो वह आग को हुक्म दे दे कि उस को खा जा यहाँ तक कि ख़त्म हो जाये फिर उस को ज़िन्दा कर दे फिर आग खाये और इसी प्रकार सिलसिला चलता रहे। यह तफ़्सीर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है (फ़त्हुल क़दीर)

السَّيِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ وَاصْبِرْ
فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۱۵﴾ فَلَوْلَا
كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ
يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ
اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ
وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۱۱۶﴾ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ
الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّ اَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ وَلَوْ شَآءَ
رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ
مُخْتَلِفِيْنَ ﴿۱۱۸﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ؕ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ؕ
وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ
وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ
اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِيْ
هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۲۰﴾ وَقُلْ

अल्लाह का ज़िक्र करने वालों के लिये यह नसीहत है[४४] ११५. (और अगर तक्लीफ़ पहुंचे तो) सब्र किया कर क्यों कि अल्लाह नेक लोगों का अज्र बर्बाद नहीं किया करता ११६. तुम से पहले लोगों में ऐसे दाना (समझदार) क्यों न हुये कि (फ़सादियों को) मुल्क में फ़साद करने से रोकते[४५] (मिल्लत को सुधारने वाले तो बहुत से थे) मगर (अस्ली इस्लाह करने वाले जो नबुव्वत की चाल पर चलने वाले हों) थोड़े से थे जिन को (आख़िर में) हम ने उन (दुनिया में गुमराहों) में से नजात दी और (बाक़ी) ज़ालिम (लोग) लज़्ज़तों के पीछे पड़े रहे जो उन को मिली थीं और वह मुजरिम थे ११७. और तेरा पर्वरदिगार (नाहक़) ज़ुल्म से किसी बस्ती को जब तक वह सलाहियत पर हों हलाक नहीं किया करता ११८. और तेरा रब चाहता तो सब लोगों को एक ही उम्मत बना देता (मगर इख़्तियारी अहकाम में किसी पर जब्र नहीं करता) और हमेशा इसी प्रकार मुख़्तलिफ़ रहें गे[४६] ११९. लेकिन जिन पर तेरे पर्वरदिगार ने रहम किया और इसी लिये उन को पैदा किया हो गा। (यानी भलाई की तौफ़ीक़ अ़ता की) और तेरे रब का फ़र्मान लागू हो चुका है कि मैं जिन्नों और इन्सानों से जहन्नम को भर दूँ गा[४७] १२०. और रसूलों के क़िस्सों से वह वाक़िआ़त हम तुझ को सुनाते हैं जिन के ज़रीआ़ से हम तेरे दिल को मज़बूत रखते हैं, और तेरे पास उन में सच्ची हिदायत और ईमानदारों के लिये वाज़ और नसीहत की बात पहुंच चुकी है

....

४४. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० और दूसरे सहाबा का कहना है कि "दोनों कनारों" से मुराद सुब्ह और मग़्रिब की नमाज़ है। इमाम क़तादा और ज़ह्हाक वग़ैरह के नज़दीक पहले सिरे से मुराद सुब्ह की नमाज़ और दूसरे सिरे से मुराद ज़ुह्र और अ़स्र की नमाज़ है। और रात की घड़ियों से मुराद इ़शा की नमाज़ है। इमाम मुजाहिद वग़ैरह का कहना है कि मग़्रिब, इ़शा की नमाज़ें और दूसरी नेकियाँ गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाती हैं। सुनन की रिवायतों में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिस मुसलमान से कोई गुनाह हो जाये फिर वह वज़ू➲

कर के दो रक्अत नमाज़ पढ़ ले तो अल्लाह तआला उस के गुनाह माफ़ कर देता है" (मगर शर्त यह है कि उस नमाज़ से दिल में ख़ौफ़ पैदा हो और भविष्य में गुनाह के क़रीब न जाये)

"मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि पांचों नमाज़ें और जुमा से जुमा तक और रमज़ान से रमज़ान तक का कफ़्फ़ारा है, जब तक कि कबीरा गुनाहों से परहेज़ किया जाये"। "मुस्नद अहमद की रिवायत में है कि हर नमाज़ अपने से पहले गुनाहों को मिटा देती है"। एक दूसरी रिवायत में है कि एक शख़्स ने ग़लती से एक अजनबी महिला को बोसा ले लिया और फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास मस्अला पूछने आया उस समय यह आयत नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तिलावत फ़रमाई (मुहम्मदी)

४५. यानी हम गुज़रे ज़माना के लोगों में से कुछ एक को छोड़ कर ऐसे लोगों को क्यों नहीं पाते जो शरीरों और इन्कारियों को रोकते रहें, यही वह लोग हैं जिन्हें हम अपने अ़ज़ाब से बचा लिया करते हैं (मुहम्मदी)

४६. मुस्नद अहमद और सुनन की रिवायतों में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "यहूदी ७१ फ़िर्क़ों में बंटे और नसारा ७२ फ़िर्क़ों में और मेरी उम्मत ७३ फ़िर्क़ों में बट जाये गी। उन में सब दोज़ख़ी हों गे मगर एक फ़िर्क़ा को छोड़ कर। सहाबा ने पूछा कि वह कौन हैं? आप ने फ़रमाया: जिस पर मैं हूँ और मेरे सहाबा हैं (मुहम्मदी)

४७. इसी में अल्लाह की हिक्मत है कि दोज़ख़ और जन्नत आबाद रहें। दूसरे यह कि अगर कुफ़्र न हो तो ईमान की और शिर्क न हो तो तौहीद की और बुराई न हो तो नेकी की ख़ूबी नहीं खुल सकती और आदमी के पैदा करने का अर्थ समाप्त हो जाता है। अ़िबादत के लिये तो फ़रिश्ते ही बहुत थे। (वहीदी) बुख़ारी-मुस्लिम में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से रिवायत है कि: दोज़ख़ और जन्नत में बात-चीत होने लगी तो अल्लाह ने जन्नत से फ़रमाया कि तू मेरी रहमत है जिसे में चाहूँ गा तुझे दूँ गा और जहन्नम से फ़रमाया कि तू मेरा अ़ज़ाब है मैं जिस से चाहूँ गा तेरे अ़ज़ाब से बदला लूँ गा। तुम दोनों ही को मुझे भरना है।

وَقُل لِّلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنَّا عَامِلُونَ ﴿١٢١﴾ وَانتَظِرُوا إِنَّا مُنتَظِرُونَ ﴿١٢٢﴾ وَلِلَّهِ غَيْبُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَيْهِ يُرْجَعُ الْأَمْرُ كُلُّهُ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٢٣﴾

१२१. और जो लोग (अल्लाह के वादों पर) ईमान नहीं रखते उन से कह कि तुम अपने रास्ते पर अ़मल किये जाओ हम भी किये जायेंगे १२२. और (अल्लाह के वादों का) इन्तिज़ार करो, हम भी इन्तिज़ार करते हैं। १२३. और आसमानों और ज़मीनों की (ज़ाहिर और) पोशीदा सब बातें तो अल्लाह के क़ब्ज़े में हैं और सब मामलात को उसी(अल्लाह ही)की तरफ़ लौटना भी है, सो उसी की अ़िबादत किया करो और उसी पर भरोसा रखो। जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उन से बेख़बर नहीं (हर एक नेक और बद काम का तुम को बदला देगा)

....

४८. आसमान और ज़मीन की ज़ाहिर और पोशीदा सारी बातों का जानने वाला केवल अल्लाह ही है। उसी की अ़िबादत करनी चाहिये। और उसी पर भरोसा रखना चाहिये। हज़रत कअ़ब का कहना है कि तौरात का समापन भी इन ही आयतों पर है (इब्ने कसीर) तौहीद के तअ़ल्लुक़ से जो शान्दार बयान इन आयतों में मौजूद हैं और परिणाम के तौर पर जो कुछ फ़रमाया गया है, उस का एक-एक शब्द दिल-व-जान में रखने के क़ाबिल है।

अल्लाह तआला हम सब को इन आयतों पर ग़ौर-फ़िक्र करने की तौफ़ीक़ दे- आमीन!

सूरः यूसुफ़ —(12)

(١٢) سُوْرَةُ يُوْسُفَ مَكِّيَّةٌ (٥٣) رُكُوْعَاتُهَا ١٢ ... اٰيَاتُهَا ١١١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۞ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۞ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ۞ اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ۞ قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ

सूरः (यूसुफ़) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में १११ आयतें और १२ रुकूअ़ हैं।

आरंभ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

१. अलिफ़-लाम्-रा, यह अहकाम खुली किताब के हैं २. हम ने इस (किताब) को अ़रबी भाषा में उतारा है ताकि तुम समझो ३. (सुनो!) हम अपनी इस वह्यि के साथ जिस के द्वारा हम ने तुझे यह कुरआन इल्हाम किया है एक उम्दा(और पाक और बिल्कुल सच्चा) क़िस्सा सुनाते हैं, कुछ शक नहीं कि इस से पहले (कि हम तुझे बतला दें) तू बेख़बर था (तुझे मालूम न था कि यूसुफ़ कौन था और जुलेख़ा कौन?) ४. (इस क़िस्सा की शुरूआ़त यह है कि) जब यूसुफ़ ने अपने बाप (हज़रत याकूब) से कहा कि ऐ मेरे बाप! मैं ने ग्यारह सितारे और सूर्य और चन्द्रमा को (सपने में) देखा है कि वह मुझे सज्दा कर रहे हैं ५. याकूब ने (सपने की ताबीर को समझ लिया तो) कहा बेटा! यह सपना अपने भाइयों से न कहना

....

शाने नुज़ूल:- यहूद ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से प्रश्न किया कि बनी इस्राईल अपना पैदाइशी वतन छोड़ कर मिस्र क्यों कर आये थे? इन के प्रश्न के उत्तर में यह सूरः नाज़िल हुयी। और अ़क्लमन्दों को हैरत में डालने वाला क़िस्सा बताने के लिये यह सूरः उतारी गयी।

हज़रत यूसुफ़ का क़िस्सा बाइबल में बयान किया गया है। जिस को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पाक तालीम का नमूना और कुरआन का अन्दाज़े बयान मालूम करना हो तो वह बाइबल को अवश्य पढ़े। उसे तुरन्त मालूम हो जाये गा कि बाइबल मे केवल कहानी के तौर पर बयान है, लेकिन कुरआन में वाक़िआ़ के साथ अ़िब्रत और उपदेश का पहलू भी है। अगर क़िस्सा में कुछ इख़्तिलाफ़ हो गा तो वह इख़्तिलाफ़ बाइबल के संपादकों की वजह से होगा जिन्हों ने मनघड़त शामिल कर दिया हो गा, और उसी को सुधारने के लिये कुरआन पाक नाज़िल हुआ है (सनाई)

हज़रत याकूब के १२ बेटे थे। इन में से छः बेटे (१) रूबेन (२) शमऊन (३) लावी (४) यहदाह (५) अश्कार (६) ज़ब्लून, लियाह बीवी से थे। और दो बेटे (७) वान (८) निफ़्ताली, बल्हा बीवी से थे, और दो लड़के (९) जद (१०) आशर जुल्फ़ा से, और दो (११) यूसुफ़ (१२) बिन यामीन राहिल बीवी से थे। यूसुफ़ और बिन यामीन सब से छोटे थे। बिन यामीन की पैदाइश के बाद माँ का इन्तिक़ाल हो गया था। अब घर में १४ आदमी रह गये १२ लड़के और माता-पिता।

तौरात की रिवायत से मालूम होता है कि बीवी लियाह और राहिल में सख़्त दुश्मनी थी, इसी कारण लड़कों ➲
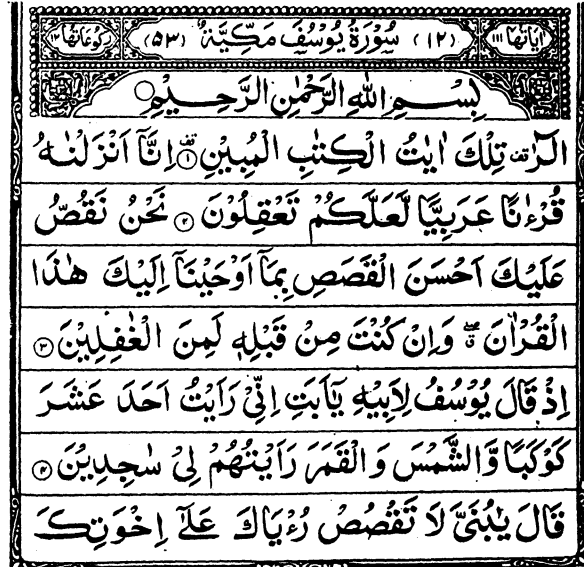
➲के अन्दर भी आपस में दुश्मनी थी। हज़रत याकूब यूसुफ़ को अधिक प्यार करते थे और यह बात और भाइयों को बहुत बुरी लगती थी (पैदाइश, ३७-४) इसी कारण याकूब ने मना किया था कि इस सपने को भाइयों से मत बताना। सपने में ११ सितारों से मुराद ग्यारह भाई और सूर्य-चन्द्रमा से बाप और सौतेली माँ मुराद हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास का क़ौल है कि सन्देष्टाओं का ख़ाब सच्चा होता है। यह सपना हज़रत यूसुफ़ ने जुमा की रात शबे क़द्र को देखा था, उस समय उन की आयु लग-भग ७ या ८ वर्ष थी। ख़ाब की ताबीर ४० वर्ष या ८० वर्ष के बाद पूरी हुयी। 'सज्दा' से मुराद "पेशानी का ज़मीन पर लगाना है जो अगली शरीअ़त में बतौरे सलाम जाइज़ था। हमारी मुहम्मदी शरीअ़त में हराम है चाहे वह सलाम और एहतिराम ही क्यों न हो। कुछ उलमा का कहना है कि इस सज्दा से मुराद झुकना है।

१. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि ने 'अलिफ़-लाम-रा' का तर्जुमा "मैं अल्लाह सब को देख रहा हूँ" किया है और यही तर्जुमा मौलाना अमृत् सरी मर्हूम ने भी किया है। मगर सही बात तो यह है कि उन का तर्जुमा और तफ़्सीर केवल अल्लाह ही को मालूम है। इसी लिये इस शब्द का तर्जुमा नहीं लिखा गया है (राज़)

فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا ۖ إِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْإِنسَانِ عَدُوٌّ
مُّبِينٌ ۝ وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ
مِن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ
وَعَلٰىٓ اٰلِ يَعْقُوبَ كَمَآ أَتَمَّهَا عَلٰىٓ أَبَوَيْكَ مِن
قَبْلُ إِبْرٰهِيمَ وَإِسْحٰقَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝
لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِينَ ۝
إِذْ قَالُوا لَيُوسُفُ وَأَخُوهُ أَحَبُّ إِلٰىٓ أَبِينَا مِنَّا وَ
نَحْنُ عُصْبَةٌ ۖ إِنَّ أَبَانَا لَفِي ضَلٰلٍ مُّبِينٍ ۝ اقْتُلُوا
يُوسُفَ أَوِ اطْرَحُوهُ أَرْضًا يَخْلُ لَكُمْ وَجْهُ أَبِيكُمْ
وَتَكُونُوا مِنۢ بَعْدِهِ قَوْمًا صٰلِحِينَ ۝ قَالَ قَآئِلٌ
مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَأَلْقُوهُ فِي غَيٰبَتِ الْجُبِّ
يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ إِن كُنتُمْ فٰعِلِينَ ۝
قَالُوا يٰٓأَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلٰى يُوسُفَ وَإِنَّا

वह (इस ख़ाब से तेरी तरक़्क़ी का नतीजा पा कर) तेरे हक़ में धोका-धड़ी करें गे। क्यों कि शैतान इन्सान का खुल्लम-खुल्ला दुश्मन है (और वह अवश्य ही उन को भड़का दे गा) ६. और उसी ख़ाब की तरह तेरा रब तुझे चुन ले गा और बातों के अन्जाम (मालूम होने) का तुझे अ़िल्म दे गा। (मतलब यह कि तू बड़ा ज़हीन और दिमाग़ वाला हो गा) वह तुझ पर अपनी नेमत इसी प्रकार पूरी करे गा, जैसी कि उस ने पहले से तेरे दादा, पर दादा इब्राहीम और इसहाक़ पर की थी। तेरा पर्वरदिगार (सब के हाल से) जानकार और बड़ी हिक्मत वाला है ७. कुछ शक नहीं कि यूसुफ़ और उस के भाइयों के क़िस्से में मालूमात करने वालों के लिये बहुत से निशान हैं ८. जब यूसुफ़ के भाइयों ने कहा कि यूसुफ़ और उस का भाई (बिन यामीन) बाप को हम से अधिक प्यारे हैं हालाँकि हम (सब लाइक़ और एक मुकम्मल) जमाअ़त हैं[२]। बेशक हमारा बाप (इस मामले में) खुली ग़लती[३] पर है (इस लिये उचित यही है कि बाप से तो कुछ न कहो) ९. यूसुफ़ को मार डालो या किसी जन्गल में फैंक दो (जब वह सामने से हट जाये गा) तो वालिद की तवज्जुह (बिल्कुल) तुम्हारी ही तरफ़ रहे गी और उस (बिगुनाह के क़त्ल) से पीछे तुम तौबा कर के नेक बन जाना १०. एक (भाई) ने➲

➲उन में से (यह) कहा कि तुम यूसुफ़ (बिगुनाह) को क़त्ल न करो और अगर तुम कुछ करना ही चाहते हो तो उस को किसी अन्धे कुयें में डाल दो[४] कि कोई राह चलता मुसाफ़िर उस को निकाल ले गा (इस राय पर सब का इत्तिफ़ाक़ हो गया बाप से प्रार्थना करते हुये) ११. बोले कि बाबा! क्या कारण है कि तू यूसुफ़ के हक़ में हमारा एतिबार नहीं करता (कि हमारे साथ उसे भी जंगल को नहीं भेजता हालाँकि) हम उस के ख़ैर ख़्वाह हैं

....

२. 'उस्बह' का शब्द दस से लेकर चालीस तक की जमाअ़त पर बोला जाता है (फ़त्हुल क़दीर)

३. 'हमारा बाप खुली ग़लती पर है' कि लाइक़ों से मुहब्बत नहीं करता और छोटे उम्र के लड़के से मुहब्बत करता है। चूंकि उस को अपनी ग़ल्ती का एहसास नहीं होता इस लिये वह अपनी इस आ़दत को भी नहीं छोड़े गा। इस लिये मुनासिब है कि बाप से तो कुछ न कहो अल्बत्ता यूसुफ़ का काम तमाम कर दो (सनाई) 'तावीलुल्-अहादीस' का माना "ख़ाब की ताबीर बताना" और बात की अस्ल हक़ीक़त बयान करना और उस की हिक्मत और मसलिहत और उस के हर पहलू पर जानकारी रखना"। इस क़िस्सा को 'अहसनुल्-क़सस' इस लिये कहा है कि इस में बहुत सी नसीहत की बातें हैं (हक़्क़ानी) यह सूरः हिक्मत और वाज़ व नसीहत का ऐसा ख़ज़ाना है कि जिस के हर एक मोती की कोई क़ीमत ही नहीं लगा सकता। हज़रत याकूब का सब्र, यूसुफ़ अ़लै० का अज़्म व इरादा, पाक दामनी और पापी भाइयों के साथ एहसान और नेक सुलूक, यह सब क़ियामत तक उम्मत के लिये समाजी मसाइल को हल करने में मदद दें गे।

४. यानी उस की तह में जहाँ बिल्कुल अंधेरा है। यह कुआँ कहाँ था? बैतुल मुक़द्दस में, या ईलिया में, या उर्दुन में था। कुछ लोगों ने लिखा है कि हज़रत याकूब के घर से नौ मील की दूरी पर था। मतलब यह है कि यह कुआँ ऐसे स्थान पर था जहाँ से हो कर यात्री और काफ़िले आते-जाते थे और लोग उस से पानी लेते थे (वहीदी)

१२. कल उस को हमारे साथ ज़रा भेजना कि (जंगल में फल-फूल) खाये-पिये और खेले-कूदे और हम उस की सुरक्षा करने वाले हैं[१] १३. याक़ूब ने कहा कि तुम्हारा उस को ले जाना मुझे बुरा लगता है और मैं डरता हूँ कि तुम्हारी ग़फ़्लत में उसे भेड़िया न खा जाये १४. वह (बड़ी चालाकी और होशियारी से) बोले कि भला जिस हाल में हम एक जमाअ़त हैं अगर (हमारी उपस्थिति में भी) भेड़िया उसे खा जाये तो सख़्त टोटा पाने वाले (और निकम्मे) ठहरे १५. (हज़रत याकूब ने उन की बातों में आ कर अनुमति दे दी) पस जब वह उसे ले गये और इस बात पर मुत्तफ़िक़ हो गये कि उस को अन्धे कुंए में फेंक दें (और वह यह काम कर➲

لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ۝ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَ
اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝ قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْٓ اَنْ تَذْهَبُوْا
بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَ اَنْتُمْ عَنْهُ
غٰفِلُوْنَ ۝ قَالُوْا لَئِنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّآ
اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۝ فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْٓا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ
فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ
هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ وَجَآءُوْٓ اَبَاهُمْ عِشَآءً
يَّبْكُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا
يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ
لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ۝ وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ

كَذِبٍ ۚ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ
جَمِيلٌ ۖ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١٨﴾ وَجَاءَتْ
سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَىٰ دَلْوَهُ ۖ قَالَ يَا بُشْرَىٰ

गुज़रे) और हम ने उसे समझाया कि तू उन को इस कर्तूत से सूचित करे गा और वह उस समय बेख़बर होंगे (ख़ैर! जो कुछ उन्हें करना था कर गुज़रे) १६. और (हीला-बहाना तलाश करते हुये) रोते हुये रात को बाप के पास आये १७. कहने लगे कि बाबा! हम कबड्डी खेलने में लग गये और यूसुफ़ को अपने सामान के पास बिठा गये तो (हमारी ग़ैर हाज़िरी में) उसे भेड़िया खा गया और (यह तो हमें विश्वास है कि) तू हमारी बात मानने का नहीं अगर्चे हम सच्चे भी क्यों न हों १८. और (अपनी बात का यक़ीन दिलाने को) उस के कुर्ते पर झूट-मूट (बक्री का) ख़ून भी लगा लाये[६]। याकूब ने (सूझ-बूझ से समझ कर) कहा (कि भेड़िया ने तो खाया नहीं) बल्कि तुम्हारे नफ़्सों ने यह काम तुम्हारी आँखों में सुन्दर कर दिखाया। (ख़ैर) सब्र, शुक्र और अल्लाह से मदद तलब है १९. और (अल्लाह की कुदरत उधर सौदागरों का) एक काफ़िला आ निकला[७] तो उन्हों ने (उसी कुंएँ पर) अपना सक्क़ा भेजा उस ने डोल (उस कुंएँ में) लटकाया तो (यूसुफ़ ने डोल पकड़ लिया। उस ने देखा तो एक सुन्दर शक्ल लड़का नज़र आया) वह बोला वाह जी!

....

५. भाइयों ने समझा-बुझा कर बाप को पटा लिया और हज़रत युसूफ़ को ले जा कर कुएँ में डाल दिया। डालने से पहले मारा-पीटा, बुरा-भला कहा और हाथ-पैर रस्सी से जकड़ कर बाँध भी दिया। कुँए के बीच में एक पत्थर था आप उस पर खड़े हो गये। उसी समय अल्लाह ने कहा कि आप सब्र, शुक्र करें एक समय ऐसा आयेगा कि तू भाइयों के कर्तूत याद दिला देगा और भाई लोग शर्मिन्दगी से सर झुकाये हों गे। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि जब भाई लोग हज़रत यूसुफ़ के पास मिस्र पहुंचे तो उन्हों ने पहचान लिया, मगर भाई लोग उन्हें न पहचान सके। उस समय आप ने एक प्याला मंगवा कर उसे ठोंका और भाइयों की ओर बढ़ा कर कहा कि यह कुछ कह रहा है और तुम्हारे बारे में कुछ बता रहा है। फिर आप ने कहा कि प्याला कह रहा है कि तुम्हारा एक भाई यूसुफ़ नाम का था जिसे तुम लोगों ने कुँए में डाल दिया था, फिर तुम ने उस के कपड़ों में झूठा ख़ून लगा कर बाप से कह दिया कि उस को भेड़िया खा गया। यह सुन कर भाई लोग दंग रह गये और परस्पर कहने लगे कि अब तो भांडा फूट गया और इस प्याले ने तो बादशाह को सारी बातें बता दीं। यही वह बातें हैं जिन के बारे में अल्लाह ने कुँए में कहा था कि तू उन्हें उन की बेखबरी में बताये गा। (तफ़्सीर मुहम्मदी)

६. रक्त को कपड़ों में लगा तो दिया मगर कुर्ता फाड़ना भूल गये इस लिये बाप को उन का मक्र (धोखा, फ़रेब) मालूम हो गया। हज़रत याकूब ने खुल कर तो न कहा मगर बात इस अन्दाज़ में की कि भाइयों को भी एहसास हो गया कि हमारे अब्बा जी को बात जंची नहीं। हज़रत याकूब ने यह कह कर बात टाल दी कि मैं सब्र करता हूँ और अल्लाह ने चाहा तो दूध का दूध और पानी का पानी अलग हो जाये गा।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि कुर्ता देख कर आप ने यह भी फ़रमाया था कि बड़े आश्चर्य की बात है कि भेड़िये ने यूसुफ़ को तो खा लिया मगर उस का कुर्ता फटा तक नहीं। ख़ैर मैं सब्र करूँ गा जिस में न कोई शिकायत और न कोई घबराहट हो। सब्र तीन चीज़ों से मिल कर बनता है (१) अपनी मुसीबत किसी से न कहना और (२) अपने दिल का दुखड़ा किसी के सामने न रोना (३) अपने आप को पाक न समझना। हज़रत आ़इशा रज़ि० पर जब इल्ज़ाम लगाया गया था तो आप ने भी यही फ़रमाया था कि मेरी और आप की मिसाल हज़रत यूसुफ़

➲के पिता जी की सी है कि उन्हों ने फ़रमाया था "सब्र, शुक्र क़रता हूँ और केवल अल्लाह ही से मदद चाहता हूँ" (तफ़्सीर)

७. तौरात में भी इस का बयान मौजूद है। उस के अनुसार क़ाफ़िला इस्माअ़ीली लोगों का था जो खाने पीने का सामान मिस्र ले जा रहा था और उस समय पहुंचा जब भाई लोग अपना काम कर के रोटी खा रहे थे। क़ाफ़िला को देख कर बड़े भाई यहूदा ने कहा कि मेरे ख़याल में यूसुफ़ को इस क़ाफ़िला वालों के हाथ बेच देना बेहतर है, चुनान्चे उन्हों ने बीस दिर्हम में बेच दिया (पैदाइश- ३७-२५) 'इस्माअ़ीली' यानी वह लोग जो हज़रत इस्माईल की नस्ल से थे। अगर तौरात के इस वाक़िआ को सहीह भी मान लिया जाये तो इस का मतलब यह है कि क़ुरआन ने इसे ग़ैर ज़रूरी समझ कर बयान नहीं किया। और उस वाक़िआ को बयान किया जो मिस्र पहुंचने का ज़रीआ हुआ। सक़्क़ा, जो पानी निकाल रहा था तअ़ज्जुब करने के बजाए खुशी ज़ाहिर की इस लिये कि गुलामी का चलन आम था और अगर गुलाम कम आयु का और सुन्दर होता तो उसे और भी बहुमूल्य समझ कर उस की सुरक्षा करते थे इसी लिये क़ुरआन ने फ़रमाया: "उसे क़ीमती चीज़ बना कर छुपा लिया"। तौरात में है कि यह कुंआ ग़ैर आबाद स्थान पर था और उस में पानी भी न था (पैदाइश-३७-२२-२४) हज़रत यूसुफ़ उसी में बैठे रहे और जब सक़्क़ा ने पानी लेने के लिये डोल डाला तो पकड़ कर लटक गये और इस प्रकार रिहाई का रास्ता निकल आया (तर्जुमान) जिन उलमा ने यह लिखा है कि भाइयों ने क़ाफ़िला वालों के हाथ बेच दिया था उन का क़ौल सहीह नहीं है। इस लिये कि अल्लाह तआ़ला ने एक तरफ़ बेचने वालों का ज़िक्र किया है तो दूसरी तरफ़ ख़रीदने वालो का भी। और यह यक़ीनी बात है कि हज़रत यूसुफ़ को मिस्र के आदमी ने ख़रीदा, इस लिये जरुरी है कि उन को मिस्र ही में बेचा गया होगा। (सनाई) "सिराजुल बयान" में इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ का क़ौल नक़ल है कि अल्लाह ही जाने कि भाइयों ने बेचा अथवा मुसाफ़िरों ने ख़रीदा। इतना तो ज़ाहिर है कि बेचा गया। इस से अधिक बहस में पड़ने की आवश्यक्ता नहीं है (मवाहिब)

هٰذَا غُلٰمٌ ۚ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ۝١٩
وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۢ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ
مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ۝٢٠ وَقَالَ الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ
لِامْرَاَتِهٖٓ اَكْرِمِىْ مَثْوٰىهُ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ
نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ۚ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ۡ
وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰٓى
اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٢١ وَلَمَّا بَلَغَ
اَشُدَّهٗٓ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ۚ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝٢٢
وَرَاوَدَتْهُ الَّتِىْ هُوَ فِىْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ
الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ۚ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ
رَبِّىْٓ اَحْسَنَ مَثْوَاىَ ۚ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٢٣ وَلَقَدْ

यह तो लड़का है और बड़ी क़ीमती चीज़ बना कर उसे छुपा रखा। और जो कुछ वह कर रहे थे अल्लाह को ख़ूब मालूम था २०. और उन्हों ने उसे बहुत कम दामों यानी चन्द दिर्हमों पर बेच दिया, और वह उस से बेरग़बत थे २१. मिस्र में जिस ने उसे ख़रीदा था उस ने अपनी बीवी (ज़ुलेख़ा) से कहा कि (यह लड़का नेक ख़ान्दान का और होनहार मालूम होता है) उस को अच्छी तरह रखना आशा है कि हमें लाभ दे गा या हम उस को (लेपालक) बेटा बना लें गे। इसी प्रकार (धीरे-धीरे) हम ने यूसुफ़ को मुल्क मिस्र में स्थान दिया कि वह तजुर्बा कार हो। हमें मन्ज़ूर था कि उसे बातों का अन्जाम सिखायें। और अल्लाह (जो चाहता है कर सकता है क्यों कि वह) अपने काम पर ग़ालिब है (कोई उसे➲

هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَآ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ۚ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ۚ اِنَّهٗ مِنْ

➲रोक नहीं सकता) लेकिन अक्सर लोग (इस बात को) नहीं जानते २२. और (ऐसा हुआ कि) यूसुफ़ जब कमाल (जवानी) को पहुंचा तो हम ने उसे हुक्म (शरीअ़त) और ज़िल्म (नबुव्वत) अ़ता किया। और इसी प्रकार हम नेकों को बदला दिया करते हैं २३. और जिस महिला के घर में वह रहता था उस ने उसे बहकाना आरंभ किया (आख़िर उसे एक दिन महफ़ूज़ मकान में बुलाया) और दर्वाज़ा बन्द कर के कहने लगी कि मेरी तरफ़ आ। यूसुफ़ ने कहा कि अल्लाह की पनाह! मेरे पर्वरदिगार ने मुझे नेक रुत्बा बनाया (मैं नाजाइज़ हर्कत कर के ज़ालिम बनूँ?) ज़ालिमों को कामियाबी नहीं हुआ करती २४. मगर वह महिला उस से बुरा इरादा कर चुकी थी और यूसुफ़ को भी अगर इलाही दलील[९] न सूझती तो वह भी उस से बुरा इरादा कर लेता। (अस्ल हक़ीक़त यह है कि) हम उसे इसी प्रकार बचाते रहे ताकि बुराई और बेहयाई को उस से फेरें रखें

....

८. बयान किया गया है कि जब हज़रत यूसुफ़ को बाज़ार में बेचने ले गये तो २० अशर्फ़ियाँ दाम लगे। इतने में जुलेख़ा के तक़ाज़ा करने पर अ़ज़ीज़े मिस्र ने भी दाम लगाया और बढ़ते-बढ़ते यहाँ तक नौबत आ गयी कि यूसुफ़ के बराबर सोना, चाँदी, कपड़े, मुश्क वग़ैरह दिये जायें। अन्त में अज़ीज़े मिस्र ही ने ख़रीदा और बीवी से कहा कि इस को गुलाम बना कर न रखना, बल्कि अ़िज़्ज़त के साथ रखना। यह होनहार बच्चा है। हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० ने फ़रमाया: तीन आदमी होशियारी में सब से प्रथम हैं। (१) जिस ने यूसुफ़ को ख़रीद कर अपनी पत्नी से कहा था कि इस की अ़िज़्ज़त करना (२) वह लड़की जिस ने अपने पिता से कहा था कि मूसा को मज़दूर की हैसिय्यत से रख लें (३) हज़रत अबू बक्र का उमर रज़ि० को ख़लीफ़ा बना देना (मवाहिब)

९. बुर्हान से मुराद नूरे ईमान का जल्वा देखना है (सनाई) कुछ इस्राईली रिवायतों में आता है कि उस समय बाप याकूब की शक्ल सामने नज़र आ गयी और देखा कि दाँतों तले उंगली दबाए हुए हैं और फ़रमा रहे हैं कि ऐसी हर्कत न करना। 'हम्म बिहा' की तफ़्सीर में कई क़ौल बयान किये गये हैं, तफ़्सील के लिये "फ़त्हुल क़दीर" देखी जाये। हज़रत मौलाना अ़ब्दुस्समद भीमड़ी ने " हम्म" से मुराद उन दोनों का एक दूसरे को पकड़ कर मारने-पीटने का इरादा करना है। (राज़)

عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ۝٢٤ وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ۗ قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّآ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٢٥ قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٢٦ وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ

(क्यों कि) वह हमारे ख़ालिस बन्दों में था २५. और दोनों भागते हुये दर्वाज़े पर पहुंचे और उस महिला (ज़ुलेख़ा) ने पीछे से उस का कुर्ता फाड़ दिया और दर्वाज़ा पर उस (ज़ुलेख़ा) का शौहर उन को मिला[१०]। (ज़ुलेख़ा) बोली (कि इस ने आप की बीवी पर बुरी नज़र डाली थी) जो कोई आप की हरम पर बुराई का ख़याल करे उस की सज़ा यही है कि वह बन्दी बनाया जाये या दुःख की मार दी जाये २६. यूसुफ़ ने कहा: उस ने➲

دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٧﴾ فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ
قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيْدَكُنَّ
عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾ يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۜ وَاسْتَغْفِرِيْ
لِذَنْۢبِكِ ۚۖ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ﴿٢٩﴾ وَقَالَ نِسْوَةٌ
فِى الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ
قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾
فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ

मुझ से बुरी ख़्वाहिश की है और उस औ़रत के कुंबे में से एक व्यक्ति ने यह बात बताई[११] कि अगर उस (यूसुफ़) का कुर्ता आगे से फटा है तो वह (ज़ुलेख़ा) सच्ची है (कि यूसुफ़ ने उसे छेड़ा) और वह (इस सूरत में) झूठा होगा[१२] २७. और अगर उस का कुर्ता पीछे से फटा है तो वह झूठी है और वह सच्चा है (अवश्य ही उस महिला की शरारत होगी। सब को यह राय पसन्द आयी) २८. पस जब उस का कुर्ता देखा तो वह पीछे से फटा हुआ था (यक़ीन हो गया कि ज़ुलेख़ा की शरारत है) अ़ज़ीज़ बोला: तुम औ़रतों की चालाकी {त्रिर्या चरित्र} है। कुछ संदेह नहीं तुम्हारी चालें बड़ी हैं २९. ऐ यूसुफ़! तू इस बात को जाने दे और ऐ औ़रत! तू इस पाप पर क्षमा माँग, बेशक तू ही दोषी है ३०.(हरम में तो यह फ़ैसला हो कर बात आई-गयी ख़त्म हो गयी मगर) शह्र में औ़रतों ने यह कहना आरंभ किया कि (देखो तो) अ़ज़ीज़ की बीवी अपने ग़ुलाम को फुसलाती है और उस के प्रेम में बिल्कुल दीवानी हो गयी है, हमारे नज़दीक तो उस का यह काम खुली जिहालत है (मुंह काला ही करना था तो ऐसा क्या कि ग़ुलामों से किया जाये। यह बात तो शराफ़त से परे है) ३१. उस (ज़ुलेख़ा) ने जब उन की बदगोई सुनी[१३] तो उन की तरफ़ (दावत का) सन्देश भेजा

१०. हज़रत यूसुफ़ को पूरी दुनिया की आधी सुन्दरता दी गयी थी, ज़ाहिर में आप निहायत सुन्दर थे (मवाहिब) उधर अल्लाह की रहमत व मेहरबानी चुपके-चुपके, अन्दर ही अन्दर हज़रत यूसुफ़ की तर्बियत कर रही है और इधर अ़ज़ीज़ की पत्नी ज़ुलेख़ा ने एक परीक्षा में डाल दिया। यानी उन पर दीवानी हो गयी और उन्हें ग़लत काम करने पर आमादा करना चाहा। लेकिन हज़रत यूसुफ़ "अल्लाह की पनाह" कह कर अलग हो गये। ज़ाहिर है कि जो अल्लाह की पनाह में आ जाये उस पर किसी का भी वार नहीं चल सकता है (फ़ुर्क़ान)

११. गवाही देने वाला कौन था? इस बारे में उलमा की कई रायें हैं। लेकिन ज़्यादा दुरुस्त यही है कि वह एक बच्चा था।

१२. हज़रत यूसुफ़ अपने को बचाते हुये आगे-आगे भागे और वह पकड़ने के लिये पीछे-पीछे दौड़ी और आप का कुर्ता उस के हाथ में आ कर फट गया। और दर्वाज़ा पर पति को देखते ही सारा आरोप यूसुफ़ के सर ठोंक दिया। हज़रत यूसुफ़ ने सारी बात दुहरा दी कि यही मेरे पीछे पड़ी थी और इसी ने मेरा कुर्ता भी फाड़ा है। उसी औ़रत के ख़ान्दान के एक शख़्स ने गवाही दी कि..............................

गवाही देने वाला कौन था? इस में उलमा का बड़ा इख़्तिलाफ़ है। इब्ने जरीर ने एक रिवायत नक़ल की है कि चार दूध पीते बच्चों ने कलाम किया है और उन में इस बच्चे का भी ज़िक्र किया है जिस ने हज़रत यूसुफ़ के बारे में गवाही दी थी। जब ज़ुलेख़ा के पति पर यह ज़ाहिर हो गया कि सारा खेल इसी का खेला हुआ है और यूसुफ़ निर्दोष है तो उस ने कहा कि तुम औ़रतों की चालें चक्कर में डालने वाली होती हैं (मुहम्मदी)

१३. यहाँ पर "मक्र" का शब्द इस लिये आया है कि कुछ उलमा के कहने के मुताबिक़ ख़ुद उन औ़रतों का यह एक खुला मक्र था। इसी बहाना से वह युसूफ़ को निहारना चाहती थीं। दावत में फल-फूल का विशेष कर इन्तिज़ाम

➲था, फल उन के हाथों में थे और छुरी से काट-काट कर खा रही थीं इतने में हज़रत यूसुफ़ के जमाल को देख कर मदहोश हो गयीं और बजाए फल काटने के उंलियाँ ही काट लीं। यह औरतें खुद हज़रत यूसुफ़ से बुराई की ख़ाहिश मन्द थीं और इस के लिये दावत का इन्तिज़ाम कर के रास्ता निकाला गया था।

'शहि-द शाहिदुन' (एक गवाह ने गवाही दी) इस की तफ़्सीर में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि चार बच्चों ने दूध पीते कलाम किया (१) फ़िऔ़न की लड़की की देख-रेख करने वाली नौकरानी के लड़के ने (२) हज़रत यूसुफ़ के गवाह बच्चे ने (३) क़ाज़ी जुरैज के बेटे ने (४) हज़रत ई़सा ने (इब्ने कसीर, इब्ने जरीर)

لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّ
قَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗٓ اَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ
اَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ۭ اِنْ هٰذَآ
اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ﴿٣١﴾ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ ۭ
وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ۭ وَلَئِنْ لَّمْ
يَفْعَلْ مَآ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿٣٢﴾
قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ ۚ
وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ
الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٣﴾ فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۭ
اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٤﴾ ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا
الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٣٥﴾ وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ
فَتَيٰنِ ۭ قَالَ اَحَدُهُمَآ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَ
قَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ

और उन की मज्लिस को संवारा और (जब वह आयीं तो) हर एक के हाथ में छुरी (फल अथवा गोश्त आदि खाने को) दी और (युसूफ़ से) कहा कि इन के सामने निकल आ, पस जब उन्हों ने देखा तो उसे बहुत बड़ा बुलन्द मर्तबे का बुजुर्ग समझा (और उस को देखते-देखते बजाऐ गोश्त काटने के) उन्हों ने अपने हाथ काट डाले और बोलीं कि सुब्हानल्लाह! यह तो इन्सान {मनुष्य} नहीं कोई बुजुर्ग फ़रिश्ता है ३२. (जुलेख़ा) बोली कि बस यही है जिस के बारे में मुझे तुम लोगों ने मलामत की थी (देखा कि नहीं? अब बतलाओ, भला मैं मजबूर हूँ या नहीं?) मैं ने उसे फुसलाया था मगर यह (आज तक) बचा ही रहा। और अगर उस ने मेरा कहा न माना तो अवश्य ही बन्दी बनाया जाये गा और बेअ़िज़्ज़त हो गा (औ़रतों ने भी दावत का हक़ अदा करते हुये इस की ताईद की) ३३. यूसुफ़ ने कहा: ऐ मेरे मौला! जिस चीज़ की यह मुझ से ख़ाहिश करती हैं क़ैद उस से कई गुना बढ़ कर मुझे पसन्द है। और अगर तू मुझ से उन का फ़रेब न फेरे गा तो मैं उन की तरफ़ झुक जाऊँ गा और (तिरी नाफ़र्मानी करने से) जाहिल बन जाऊँ गा ३४. अल्लाह ने उस की प्रार्थना कुबूल की यानी उन का फ़रेब उस से फेर दिया (और आख़िर कार कुछ समय यूसुफ़ को जेलख़ाना में रहना पड़ा) क्यों कि अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। ३५. फिर (जुलेख़ा की बेचैन हर्कतों के) निशान देखने के बाद उन (अ़ज़ीज़ के ख़ान्दान वालों) को यह उचित मालूम हुआ कि थोड़े दिनों तक उसे क़ैद में रखें[१४] ३६. (इत्तिफ़ाक़ ऐसा हुआ कि) दो जवान आदमी उस के साथ जेल ख़ाने में दाख़िल हुये। (इत्तिफ़ाक़ी तौर पर एक सपना यूसुफ़ के पास बयान करने के लिये आये) एक ने कहा कि मैं➲

➲सपने में देखता हूँ कि अंगूरों से शराब निचोड़ रहा हूँ, और दूसरे ने कहा कि मैं ने अपने सर पर रोटियों को उठा रखा है

....

१४. अ़ज़ीज़ पर हज़रत यूसुफ़ की सच्चाई स्पष्ट रूप से ज़ाहिर हो गयी थी, इसी लिये उस ने कोई क़दम नहीं उठाया लेकिन उस की बीवी का अ़िश्क़ ऐसा-वैसा न था जो इस नाकामी से ठन्डा पड़ जाता, बल्कि वह और बढ़ गया। जब देखा कि नर्मी से बात नहीं बनती है तो गर्मी पर उतर आयी और यूसुफ़ से कहा कि या तो मेरा कहा मानो या फिर जेल ख़ाने की सज़ा भुगतो। हज़रत यूसुफ़ ने कहा कि भई मुझे तो जेल ख़ाना पसन्द है पर यह हराम कारी नहीं पसन्द है। तौरात में है कि जब हज़रत यूसुफ़ को जेल ख़ाना में डाला गया तो वहाँ का दारोग़ा उन पर मेहरबान हो गया और तमाम बन्दियों का इन्तिज़ाम उन के हवाले कर दिया और वह जेल ख़ाने के पूरे मालिक बन गये। अल्लाह ने वहाँ भी उन के तमाम कामों में मर्तबा बुलन्द किया (पैदाइश- ३९-२२)

الطَّيْرُ مِنْهُ ۖ نَبِّئْنَا بِتَأْوِيلِهِ ۖ إِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٦﴾
قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهِ إِلَّا نَبَّأْتُكُمَا بِتَأْوِيلِهِ
قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمَا ۚ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِي رَبِّي ۚ إِنِّي
تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ
كٰفِرُونَ ﴿٣٧﴾ وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَاءِي إِبْرٰهِيمَ وَإِسْحٰقَ
وَيَعْقُوبَ ۚ مَا كَانَ لَنَا أَنْ نُشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ
ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٨﴾ يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَأَرْبَابٌ
مُّتَفَرِّقُونَ خَيْرٌ أَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾ مَا تَعْبُدُونَ
مِنْ دُونِهِ إِلَّا أَسْمَاءً سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَاٰبَاؤُكُمْ
مَّا أَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلّٰهِ ۚ أَمَرَ أَلَّا
تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ ۚ ذٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٠﴾ يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ أَمَّا أَحَدُكُمَا

कि उन में से परिन्दे खा रहे हैं तू हमें इस की ताबीर से ख़बर दे, हम तुझे नेक आदमी समझते हैं ३७. यूसुफ़ ने कहा कि जो खाना तुम्हें मिलने वाला है उस के मिलने से पूर्व ही मैं तुम को उस सपने की ताबीर बतला दूँ गा यह उन बातों में से है जो अल्लाह ने मुझे सिखाई हैं। मैं ने ऐसे लोगों के दीन को पसन्द नहीं किया जो अल्लाह पर (जैसा चाहिये) ईमान नहीं रखते और आख़िरत की ज़िन्दगी के मुन्किर हैं[१५] ३८. और मैं अपने बाप-दादा इब्राहीम, इस्हाक़, के धर्म को मानने वाला हूँ। हमारे लिये मुनासिब नहीं कि किसी चीज़ को अल्लाह का शरीक बनायें। यह बात (जो हमारे दिमाग़ में जम गयी है) हम पर और तमाम लोगों पर (जो उस पर अ़मल करें) अल्लाह के फ़ज़्ल से है लेकिन बहुत से लोग (उस का) शुक्र नहीं करते[१६] ३९. यूसुफ़ ने कहा कि ऐ मेरे क़ैद ख़ाना के दोस्तो! बतलाओ तो सही जुदा-जुदा कई एक माबूद अच्छे हैं या अकेला अल्लाह जो सब पर ज़बर्दस्त है ४०. (अगर ग़ौर करो तो) तुम लोग अल्लाह को छोड़ कर निरे बनावटी नामों की अ़िबादत करते हो जिन को तुम ने और तुम्हारे बाप-दादाओं ने तजवीज़ कर रखा है अल्लाह ने उस पर कोई दलील नाज़िल नहीं फ़रमाई (और ऐसे मस्अलों में जो ज़ात और सिफ़ात के मुतअ़ल्लिक़ हों) अल्लाह➲

➲के अ़लावा किसी का हुक्म नहीं (चल सकता) उस ने तो यही आदेश दिया है कि उसी की अ़िबादत किया करो। यही मज़बूत मज़हब है लेकिन बहुत से लोग नहीं जानते (वह केवल अपनी जिहालत से ग़ैरों को पुकारते हैं) ऐ जेल ख़ाना के दोस्तो! (अब सुनो! सपने की ताबीर बताता हूँ) ४१. तुम दोनों में से एक

....

१५. जिस दिन हज़रत यूसुफ़ को जेल ख़ाना भेजा गया इत्तिफ़ाक़ से उसी दिन बादशाह का साक़ी (पानी पिलाने वाला) और नान बाई (खाना पकाने वाला) भी किसी जुर्म में उसी जेल ख़ाने में डाल दिये गये। इन दोनों पर आरोप था कि बादशाह को ज़हर खिलाने की साज़िश की थी। क़ैद ख़ाने में हज़रत यूसुफ़ के स्वभाव और आचरण से प्रभावित हो कर यह दोनों उन से मुहब्बत करने लगे थे। उन दोनों ने एक दिन अपने ख़ाब की ताबीर मालूम करने के लिये हज़रत यूसुफ़ से ज़िक्र किया तो आप ने उन को ताबीर बतलाने से पूर्व तौहीद की शिक्षा दी और शिर्क और बुत परस्ती से नफ़रत दिलाई। इस के बाद सपनों की ताबीर बतलाई जिन का ज़िक्र आगे आ रहा है (मुहम्मदी)

हज़रत यूसुफ़ ने मौक़ा को मुनासिब जान कर निहायत प्रभावशाली उपदेश दिया। सन्देष्टाओं का यही काम होता है कि दावत व तब्लीग़ का कोई मौक़ा हाथ से नहीं जाने देते हैं। हज़रत यूसुफ़ ने जब देखा कि उन के दिल मुझ से मानूस हैं और क़ैद में होने के कारण संभवतः कुछ नर्म भी पड़ गये हैं, तो इस से लाभ उठाते हुये प्रथम उन को तौहीद की शिक्षा दी इस के बाद सपनों की ताबीर बताई। यह तसल्ली पहले कर दी कि खाने के समय तक अवश्य ख़ाब की ताबीर मालूम हो जाये गी, ताकि वह उकता न जायें (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

१६. हज़रत यूसुफ़ अ़लै० की इतनी लम्बी-चौड़ी भूमिका बांधने का उद्देश्य यह था कि उन बन्दियों को हिदायत पहुंच सके। यह बात सत्य है कि अच्छे लोग जहाँ भी होते हैं हर स्थान पर उन का मिशन जारी रहता है। हज़रत मुजद्दिद रह० को जब बादशाह जहाँगीर ने कुछ बिद्अ़ती मुल्लाओं के शिकायत करने पर क़ैद कर दिया तो आप ने भी कैद ख़ाने में भी अपनी तब्लीग़ का सिलसिला जारी रखा। चुनान्चे वहाँ जमाअ़त के साथ नमाज़ होने लगी और बहुत से मुसलमान बन्दी आप की सुहबत में रह कर कमाल दर्जे को पहुंचे। (वहीदी) हज़रत यूसुफ़ की दावत भी और सन्देष्टाओं की तरह तौहीद की थी। तौहीद के ख़िलाफ़ शिर्क और बिद्अ़त की बुराइयाँ बयान करना और बातिल परस्तों के ख़िलाफ़ जिहाद का एलान, यही तमाम पैग़म्बरों की तालीम का निचोड़ है। यहाँ यह बात भी मालूम हुयी कि अगर बाप-दादा तौहीद व सुन्नत पर रह कर मरे हों तो उन की पैरवी पर फ़ख़र करना दुरुस्त है।

فَيَسْقِي رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ
الطَّيْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ۭ قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ۝
وَقَالَ لِلَّذِيْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِيْ عِنْدَ رَبِّكَ ۡ
فَاَنْسٰىهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ
سِنِيْنَ ۝ وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّيْٓ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ
سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ
وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۭ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِيْ فِيْ رُءْيَايَ اِنْ

अपने आक़ा को शराब पिलाएगा और दूसरा (जुर्म के सबूत पर) सूली पर लटका दिया जाये गा तो जानवर उस के सर से नोच-नोच कर खायेंगे। जिस के बारे में तुम प्रश्न करते हो (बिला शुब्हा वह अल्लाह के नज़दीक) हो ही चुका है" ४२. यूसुफ़ को जिस के छूटने का गुमान हुआ उस से कहा (कि भाई अगर तू बहाल हो जाये) तो अपने आक़ा के पास (जो मुल्क का मालिक है) मेरा ज़िक्र करना (कि एक बेगुनाह जेल ख़ाना में पड़ा हुआ है) सो शैतान ने➲

كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ﴿٤٣﴾ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَمَا
نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا
مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ
فَاَرْسِلُوْنِ ﴿٤٥﴾ يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِيْ
سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعِ
سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّيْٓ اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ

उसे (छूटे हुए क़ैदी को) आक़ा को याद दिलाना भुला दिया इस लिये वह (यूसुफ़) कई वर्ष तक जेल ख़ाना में पड़ा रहा[१८] ४३. और बादशाह ने कहा कि मैं ने सपने में सात मोटी-मोटी गायें देखी हैं जिन को सात दुबली सी गायें खाये जाती हैं और सात बालें हरी देखी हैं और कई एक सूखी। (इस सपने से मैं सख़्त परेशान हूँ) ऐ दर्बारियो! अगर तुम्हें ताबीर का इ़ल्म है तो इस सपने की ताबीर बयान करो ४४. सब ने कहा कि यह तो बेहूदा और परेशान ख़ाब व ख़याल हैं[१९], और हम ऐसे परेशान ख़ाबों की ताबीर नहीं जानते ४५. और जो उन दो बन्दियों में से बरी हुआ था और उसे काफ़ी समय के बाद (ख़ाब का क़िस्सा सुन कर अपना ख़ाब) याद आया (तो) उस ने कहा कि मैं इस ख़ाब की ताबीर तुम्हें बतला सकता हूँ लेकिन मुझे भेजो (कि मैं जेल से एक बन्दी से पूछ आऊँ। चुनान्चे उस ने हाज़िर हो कर कहा) ४६. ऐ यूसुफ़ सिद्दीक़! तू हमें इस ख़ाब की ताबीर बतला कि सात मोटी-मोटी गायें हैं जिन को दूसरी दुबली-पतली गायें खाये जाती हैं और सात बालें हरी और कई एक सूखी हैं, बता कि मैं लोगों के पास जाऊँ ताकि उन्हें भी मालूम हो।

....

१७. आप ने ख़ाब की ताबीर बताई कि जिस ने अंगूर को निचोड़ते हुये देखा था वह तो बादशाह का साक़ी बन जाये गा और दूसरा जिस ने अपने सर पर रोटियाँ देखी थीं उस के ख़ाब की ताबीर यह है कि उसे सूली दे दी जाये गी और परिन्दे उस का भेजा खायें गे। फिर साथ ही साथ यह भी फ़रमा दिया कि अब यह हो कर रहे गा इस लिये जब तक ख़ाब की ताबीर न बयान की जाये वह अधर में रहता है और जब बयान कर दी जाये तो वह ज़ाहिर हो जाता है। कहा जाता है कि उन दोनों ने ताबीर सुनने के बाद कहा कि हम ने तो कोई सपना-वपना नहीं देखा है तो आप ने फ़रमाया: अब तो तुम्हारे प्रश्न के अनुसार ज़ाहिर हो कर रहे गा।

इस से मालूम होता है कि अगर कोई झूठ-मूट के ख़ाब की ताबीर मालूम करे और उसी के अनुसार ताबीर भी बतला दी जाये तो वह लाज़िम हो जाती है। मुस्नद अहमद बिन हंबल की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "ख़ाब गोया परिन्दों के पैर-पर हैं जब तक उस की ताबीर न बता दी जाये। जब ताबीर बता दी गयी तो फिर अब उस को होना है"। (मुहम्मदी)

१८. 'बिज़्-अ़ सिनीन' (कई वर्ष तक) ७,१२,१४, या ५ वर्ष क़ैद ख़ाना में रहे। कुछ उलमा ने यह तर्जुमा किया है" लेकिन शैतान ने यूसुफ़ को भुला दिया कि वह अल्लाह की याद करे"। यानी अल्लाह पर भरोसा करने के बजाए उन्हों ने एक मनुष्य से सहायता चाही इस का नतीजा यह हुआ कि कई वर्ष तक क़ैद में पड़े रहे। हज़रत अनस रज़ि० ने कहा कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत यूसुफ़ को वह्यि भेजी कि तेरे भाई जब तुझे मार डालना चाहते थे उस समय तुझे किस ने बचाया? उत्तर दिया कि तू ने। अन्धे कुयें से किस ने निकाला? उत्तर दिया तू ही ने। तो फिर तू इन बातों को क्यों भूल गया और क्यों एक मानव से मदद चाही? अब तुम्हें कई वर्ष जेल में रहना है। फिर वह सात

➲वर्ष तक क़ैद ख़ाना में रहे।

अल्लाह ने यह तै कर रखा था कि हज़रत यूसुफ़ इ़ज़्ज़त के साथ जेल ख़ाने से निकलें। इस लिये उसने यह सबब बनाया कि बादशाह ने ऐसा सपना देखा कि सब सोच में रह गये। बादशाह ने दर्बार बुलाया और तमाम लोगों को इकट्ठा कर के उन से ताबीर मालूम किया, लेकिन किसी की भी समझ में नहीं आया और आख़िर यह कह कर टाल दिया कि यह वाहियात सपना है। जिस की कोई ताबीर नहीं। उस समय शाही सक़्क़ा को हज़रत यूसुफ़ याद आ गये कि वह ख़्वाब की ताबीर के माहिर हैं। चुनान्चे वह अनुमति ले कर हज़रत यूसुफ़ के पास पहुंचा ताकि सपने को बयान कर के ताबीर मालूम कर ले। यह वही शख़्स था जिस से आप ने क़ैद से निकलते समय कहा था कि बाद शाह के सामने मेरा भी ज़िक्र कर देना कि एक बेगुनाह भी क़ैद ख़ाना में पड़ा है लेकिन उस ने इस बात को भुला दिया था। अब यूसुफ़ अलै० ने न तो उसे मालामात की और न इस बात की इच्छा ज़ाहिर की कि मुझे जेलख़ाने से मुक्त किया जाये बल्कि बिला किसी इच्छा और ख़्वाहिश के ख़्वाब की ताबीर बतला दी और साथ ही बचाव का तरीक़ा भी। (मुहम्मदी)

१९. 'अज़ग़ास' घास-फूस, साग-सब्ज़ी और हर प्रकार के खर पत्वार की मिलावट को कहते हैं। और उस झूठे सपने को कहते हैं जिस की कोई हक़ीक़त न हो। दूसरे शब्दों में इसे शैतानी वस्वसा भी कहा जा सकता है (फ़त्हुल् क़दीर)

لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٤٦﴾ قَالَ تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَأَبًا
فَمَا حَصَدتُّمْ فَذَرُوهُ فِي سُنبُلِهِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا
تَأْكُلُونَ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ يَأْتِي مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ
يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تُحْصِنُونَ ﴿٤٨﴾
ثُمَّ يَأْتِي مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَ
فِيهِ يَعْصِرُونَ ﴿٤٩﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ ۖ فَلَمَّا
جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَاسْأَلْهُ مَا بَالُ
النِّسْوَةِ اللَّاتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ ۚ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ
عَلِيمٌ ﴿٥٠﴾ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ إِذْ رَاوَدتُّنَّ يُوسُفَ عَن نَّفْسِهِ ۚ
قُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِن سُوءٍ ۚ قَالَتِ امْرَأَتُ
الْعَزِيزِ الْآنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ أَنَا رَاوَدتُّهُ عَن نَّفْسِهِ
وَإِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٥١﴾ ذَٰلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّي لَمْ أَخُنْهُ
بِالْغَيْبِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي كَيْدَ الْخَائِنِينَ ﴿٥٢﴾

४७. यूसुफ़ ने कहा कि सात वर्ष तो नियमित रुप से लगातार खेती करते रहना, फिर जितनी मात्रा में (फ़स्ल) पैदा करो उसे बालों ही में रहने देना[20] मगर थोड़ा सा खाने के लिये साफ़ कर लो ४८. फिर इस के बाद सात वर्ष सख़्त (सूखा के) आयेंगे कि जो कुछ तुम ने उन के लिये बचा रखा हो गा सब का सब चाट जायेंगे (यानी तुम सब खा जाओगे) मगर थोड़ा सा हिस्सा जो तुम बचा रखो गे ४९. फिर इस के बाद एक (ऐसा खुश हाली का) वर्ष आये गा कि उस में लोगों की फ़रियाद सुनी जाये गी और उस में ख़ूब अंगूर निचोड़ें गे[21] ५०. और बादशाह ने कहा (जिस ने यह ताबीर और तदबीर बतलाई है) उसे मेरे पास लाओ, पस जब यूसुफ़ के पास ऐल्ची आया तो यूसुफ़ ने उस से कहा (मुनासिब है कि) तू अपने आक़ा के पास लौट जा और उस से मालूम कर (के आ) कि उन औ़रतों का क्या हाल है जिन्हों ने (ज़ुलेख़ा की दावत में) अपने हाथ➲

➲काट लिये थे? मेरा पर्वरदिगार उन की चाल बाज़ियों से आगाह है ५१. बादशाह ने कहा जिस समय तुम यूसुफ़ को रिझाती थीं तुम्हें उस की बाबत क्या कुछ मालूम है? (कि वह कैसा आदमी था?) वह सब बोलीं कि सुब्हानल्लाह! हम ने तो यूसुफ़ में कोई बुराई नहीं पाई (उस जैसा कोई आदमी हम ने नहीं देखा) अ़ज़ीज़ की पत्नी ने कहा कि (औ़रतों की गवाही से) अब तो (शाही मज्लिस में भी) सच्ची बात का इज़्हार (फ़ाश) हो गया बेशक मैं ने ही उसे फुसलाया था और वह सहीह राह पर है ५२. (यूसुफ़ ने कहा) यह तहक़ीक़ (केवल) इस लिये थी कि मेरा आक़ा मालूम कर ले कि मैं ने उस की ग़ैर हाज़िरी में ख़ियानत नहीं की और यह कि अल्लाह ख़ियानत करने वालों के हथकन्डे चलने नहीं देता।

....

२०. हज़रत यूसुफ़ ने दानों को बालों में रखने का मश्वुरा इस लिये दिया ताकि सात वर्ष के लम्बे समय तक ग़ल्ला कीड़े-मकोड़ों से और गलने-सड़ने से सुरक्षित रह सके। दानों को बालों से निकाल लेने के बाद लम्बे समय तक रखना बड़ा कठिन है। इस में कीड़े लगने और सड़ने का ख़तरा रहता है (राज़)

२१. ख़ाब की ताबीर और उस से बचने का उपाये बतलाने के बाद उन्हें बशारत सुनाई, जो संभवत: आप को वह्यि से मालूम हुयी होगी। यानी सात वर्ष सूखा काल पड़ने के बाद जो वर्ष आये गा उस में अल्लाह की तरफ़ से फ़रियाद सुनी जाये गी और ख़ूब वर्षा हो गी। खेती-बाड़ी, फल-फूल और हर प्रकार की खाने की वस्तुयें ख़ूब पैदा हों गी। जानवरों के थन दूध से भर जायें गे, अंगूर वग़ैरह से लोग ख़ूब शराब निचोड़ें गे। यह अन्तिम बात प्रश्न कर्ता के हाल के मुताबिक़ फ़रमाई क्यों कि वह यही काम करता था। बादशाह कुछ तो पहले ही साक़ी के बयान ही से मोतक़िद हो गया था, अब जो ऐसी बेहतरीन ख़ाब की ताबीर और जनता की हमदर्दी में उपाय सुना तो हज़रत यूसुफ़ के ज़िल्म व फ़ज़्ल का सिक्का उस के दिल पर बैठ गया और तुरन्त आदेश दिया कि ऐसे शख़्स को मेरे पास लाओ ताकि मैं भी उसे देखूँ और उसे शाबाशी दूँ। एल्ची सन्देश ले कर आप के पास हाज़िर हुआ मगर आप की नज़र में दीनी और अख़्लाक़ी पोज़ीशन की बर्तरी दुनियावी ज़िज़्ज़त से कहीं बढ़ कर थी। आप जानते थे पैग़ंबर के बारे में मामूली सी बदगुमानी भी तब्लीग़ व हिदायत की राह में बहुत बड़ी रुकावट है। अगर आज मैं शाही फ़र्मान को पाकर क़ैद ख़ाना से चुप-चाप निकल गया तो मुमकिन है कि हसद करने वाले लोग कुछ दिनों के बाद वही चालें दोहराना शुरू कर दें गे। इन्हीं बातों को भाँपने के बाद आप ने जल्द बाज़ी से बिल्कुल काम न लिया और ऐल्ची को वापस कर दिया कि बादशाह से पहले यह मालूम कर आओ कि उन औ़रतों का क्या हाल है जिन्हों ने अपने हाथ काट लिये थे?

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अगर मैं उतनी मुद्दत क़ैद में रहता जितनी मुद्दत तक हज़रत यूसुफ़ अ़लै० रहे तो बुलाने वाले के साथ तुरन्त चला जाता"। उलमा का कहना है कि इस में हज़रत यूसुफ़ के सब्र और बर्दाश्त की प्रशन्सा और मुकम्मल बन्दे होने का इज़्हार है। बादशाह ने उन औ़रतों से इस ढन्ग से पूछा कि गोया उसे उन की मक्कारियों की ख़बर है ऐसा इस लिये किया ताकि वह झूठ न बोल सकें। और यह भी संभव है कि हज़रत यूसुफ़ के जेल से न निकलने पर उन के सच्चे होने का उसे यक़ीन हो गया हो इसी लिये औ़रतों से इस ढन्ग से पूछा मानो वह मुजरिम हैं। चुनान्चे ज़ुलेख़ा और सभी औ़रतों ने अपने जुर्म को स्वीकार कर लिया कि हम ही लोगों ने उन्हें अपनी ओर माइल (रिझाना) करना चाहा था लेकिन वह सच्चे हैं।

यहाँ इतनी तहक़ीक़ और छान-बीन इस लिये कराई कि हज़रत यूसुफ़ का दामन बिल्कुल हर प्रकार के➲

➲शक-शुब्हे से पाक हो जाये और आगे चल कर नबी की हैसिय्यत से किसी को कुछ कहने-सुनने का मौक़ा ही न रह जाये और लोगों को यह विश्वास हो जाये कि ख़ियानत करने वालों-दग़ाबाज़ों का हथकन्डा नहीं चल पाता है। और देर ही से सही मगर हक़ की जीत होती है। (मुवज़्ज़िहुल क़ुरआन)

नोट:- इस सूरः के तर्जुमे और तफ़्सीर के अन्दर हर स्थान पर मिस्र के बादशाह की पत्नी का नाम "ज़लेख़ा" लिखा गया है, हालाँकि हक़ीक़त यह है कि क़ुरआन, हदीस और इतिहास की सही किताबों में इस नाम का कहीं भी ज़िक्र नहीं है। क़ुरआन ने हर स्थान पर "बादशाह की पत्नी" कहा है। मौलाना अमृतसरी ने हर स्थान पर "ज़ुलेख़ा" ही लिखा है, लेकिन इस नाम की कोई हक़ीक़त नहीं है, यह मनघड़त नाम है.. ख़ालिद

*****

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पारः वमा उ—बर्रिउ नफ़्सी (13)

संक्षिप्त विषय सूची

वमा उबर्रि-उ नफ़्सी (13)

وَمَآ اُبَرِّئُ نَفْسِیْ ۚ اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌ ۢ بِالسُّوْٓءِ
اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّیْ ؕ اِنَّ رَبِّیْ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۵۳﴾ وَقَالَ
الْمَلِكُ ائْتُوْنِیْ بِهٖٓ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِیْ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ
قَالَ اِنَّكَ الْیَوْمَ لَدَیْنَا مَكِیْنٌ اَمِیْنٌ ﴿۵۴﴾ قَالَ
اجْعَلْنِیْ عَلٰی خَزَآئِنِ الْاَرْضِ ۚ اِنِّیْ حَفِیْظٌ عَلِیْمٌ ﴿۵۵﴾
وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِیُوْسُفَ فِی الْاَرْضِ ۚ یَتَبَوَّاُ مِنْهَا
حَیْثُ یَشَآءُ ؕ نُصِیْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِیْعُ
اَجْرَ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۵۶﴾ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَیْرٌ لِّلَّذِیْنَ
اٰمَنُوْا وَكَانُوْا یَتَّقُوْنَ ﴿۵۷﴾ ع وَجَآءَ اِخْوَةُ یُوْسُفَ
فَدَخَلُوْا عَلَیْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿۵۸﴾ وَلَمَّا
جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِیْ بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ
اَبِیْكُمْ ۚ اَلَا تَرَوْنَ اَنِّیْٓ اُوْفِی الْكَیْلَ وَاَنَا خَیْرُ
الْمُنْزِلِیْنَ ﴿۵۹﴾ فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِیْ بِهٖ فَلَا كَیْلَ لَكُمْ

५३. और मैं अपने नफ़्स को पाक नहीं कह सकता, क्योंकि (इन्सानी) नफ़्स तो हर समय बुराइयों ही पर उभरता है मगर जितना समय अल्लाह का रहम हो। निःसन्देह मेरा पर्वरदिगार बड़ा ही बख़्शने वाला मेहरबान है। ५४. और बादशाह ने कहा (जल्दी से इज़्ज़त और इकराम के साथ) उसे मेरे पास लाओ कि मैं उसे अपना मुख़्लिस क़रीबी बनाऊँ, पस जब (यूसुफ़ आया और) बादशाह से उसने बात-चीत की तो बादशाह ने कहा: अब तू हमारे नज़दीक इज़्ज़तदार और अमानत-दार है ५५. यूसुफ़ ने कहा: मुझे भूमि की पैदावार पर (Financial Commissinor) मुक़र्रर कर दीजिये, मैं उस की हिफ़ाज़त कर सकता हूँ और इल्म रखता हूँ। ५६. और इसी प्रकार यूसुफ़ को हम ने समस्त भूमि (मिस्र) पर इख़्तियार दिया (यानी आम तौर पर उसकी लोक प्रियता लोगों के दिलों में डाली) जहाँ चाहता डेरा लगाता। हम अपनी (ख़ास) रहमत से जिसे चाहें हिस्सा देते हैं और हम भले आदमियों का बदला बर्बाद नहीं किया करते[२२] ५७. और आख़िरत का बदला मोमिनों और मुत्तक़ियों के लिये बहुत ही बढ़िया है। ५८. और (जब ख़्वाब की ताबीर के मुताबिक़ सूखाकाल आरम्भ हो गया तो) यूसुफ़ के भाई (भी काल से प्रभावित हो कर उस के पास ग़ल्ला लेने को) आये तो उसने उन्हें पहचान लिया मगर उन्होंने उसे न पहचाना[२३] ५९. और

➲जब यूसुफ़ ने उनका सामान बंधवाने का आदेश दिया तो (इतना उन से) कहा कि (दूसरी दफ़ा आओ तो) अपने भाई को भी साथ लेते आना, तुम देखते हो कि मैं हर आदमी को पूरा (गुज़ारा) माप कर देता हूँ और मैं उम्दा तरह से मेहमान-नवाज़ी करता हूँ ६०. और अगर तुम (मेरे कहने पर भी) उस को न लाये तो (याद रखना फिर) तुम को ग़ल्ला न मिलेगा

....

२२. जब छान-बीन करने के बाद हज़रत यूसुफ़ पाक-दामन साबित हो गये तो बादशाह से मिलने पर राज़ी हो गये। क्योंकि अब उन की रिहाई बादशाह की मेहरबानी से नहीं, बल्कि अपनी पाकदामनी की वजह से हो गयी और अब गोया वे निर्दोष बरी हो गये। हज़रत यूसुफ़ के इस अ़मल ने बादशाह के शौक़ को और बढ़ा दिया। उस ने ख़्याल किया कि जिस शख़्स की सच्चाई और अमानतदारी का यह हाल है उस से बढ़ कर हुकूमत के कामों के लिये और कौन योग्य हो सकता है। इसलिये उस ने कहा कि तुरन्त मेरे पास उन्हें लाओ मैं उन्हें अपने साथ लगा लूँगा। चुनान्चे जब हज़रत यूसुफ़ आये तो पहली ही मुलाक़ात में इतना प्रभावित हुआ कि बोल बैठा: मुझे तुम पर पूरा विश्वास और भरोसा है, मेरी निगाह में तुम्हारा बड़ा मर्तबा है। मुझे राय दो कि उस आने वाले सूखाकाल से निपटने के लिए क्या क़दम उठाया जाये? आपने फ़रमाया: उस का बस एक ही उपाय है कि मुल्क की आमदनी के तमाम स्रोत मेरे हवाले कर दिये जायें मैं मुकम्मल तौर पर उस की सुरक्षा कर सकता हूँ। चुनान्चे बादशाह ने ऐसा ही किया और जब वह दरबार से निकले तो मिस्र के शासक और मुख़्तार बन कर निकले। तौरात से मालूम होता है कि जब हज़रत यूसुफ़ बादशाह से मिले थे उस समय उन की आयु सीमा ३० वर्ष थी (पैदाइश-४१-४६) ख़्वाब की ताबीर के अनुसार पहले सात वर्ष बड़ी खुशहाली के बीते और अपनी राय के मुताबिक़ उन्होंने ग़ल्ला जमा कर के रख लिया। फिर जब सूखा काल आरम्भ हुआ तो वही जमा किया हुआ ग़ल्ला काम में आया और उसे हुकूमत की तरफ़ से वितरण किया जाने लगा।

उसी सूखाकाल में हज़रत यूसुफ़ के भाई लोग भी कन्आ़न से मिस्र ग़ल्ला लेने के लिये आये। और इस प्रकार कहानी का आख़िरी बाब शुरू होता है। जब हज़रत यूसुफ़ ने भाइयों को देखा तो पहचान गये लेकिन वे लोग न पहचान सके। इसलिये कि जब से जुदा हुये थे तो १७ वर्ष के किशोर जवान थे और अब लग-भग ४० वर्षीय शासक थे। इस बात को तो वे सोच भी नहीं सकते थे कि चन्द टकों का बिका हुआ गुलाम मिस्र का शासक होगा। हज़रत यूसुफ़ ने जब उन को देखा तो बाप और माँ जाये भाई बिन यामीन की सूरत उनके सामने आ गयी और उन से कुरेद-कुरेद कर घर के हालात पूछे। और चलते समय यह भी कह दिया कि चूंकि पूरा मुल्क सूखे की चपेट में है और ग़ल्ले की सख़्त क़िल्लत है इसलिये अब की बार आना तो भाई को भी साथ लाना ताकि उस को भी ग़ल्ला मिल जाये। और याद रखना कि ज़रूर ही लाना वर्ना ग़ल्ला नहीं दूँगा (तर्जुमान)

२३. उन को क्या पता था कि क्या से क्या हो चुका है। हज़रत यूसुफ़ ने भी कुछ न बतलाया और अजनबी बन कर घर और कुंबा-क़बीला के लोगों के हालात मालूम कर लिये। तुम लोग कौन हो, कहाँ से आये हो, किस की औलाद हो, कितने भाई हो? तुम्हारा कोई छोटा भाई भी है? उन्होंने सभी प्रश्नों के उत्तर दे दिये। जब ग़ल्ला लादा जाने लगा तो उन्होंने छोटे भाई बिन यामीन के भी हिस्से का ग़ल्ला माँगा, मगर नहीं दिया गया। इसलिये कि यह शाही दस्तूर था कि ग़ल्ला केवल उन ही को मिलेगा जो चल कर लेने आयेंगे। इसलिये चलते समय ताकीद कर दी थी कि जब दोबारा ग़ल्ला लेने आना तो उसे भी साथ लाना ताकि उस के भी गुज़ारे की सूरत निकल आये। और अगर उसको साथ नहीं लाओगे तो इसका मतलब यह हुआ कि तुम लोग झूठ बोल कर उस के नाम का ग़ल्ला लेना चाहते थे इसलिये अगर वह नहीं आया तो झूठ बोलने के जुर्म में कुछ भी नहीं दूँगा, ख़ाली हाथ लौटा दूँगा। (सनाई)

عِنْدِىْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ ۝ قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ
اَبَاهُ وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ ۝ وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا
بِضَاعَتَهُمْ فِىْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَآ اِذَا انْقَلَبُوْٓا
اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ فَلَمَّا رَجَعُوْٓا
اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ
مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝ قَالَ هَلْ
اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ
فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝ وَلَمَّا
فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ؕ
قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا نَبْغِىْ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ
وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ؕ
ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ۝ قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى
تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِىْ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ

फिर तुम मेरे नज़दीक भी न आना ६१. (यूसुफ़ के भाई) बोले कि हम (जाते ही) वालिद को उसके (भेजने) के मुतअ़ल्लिक़ नर्म करेंगे और हम ऐसा कर सकते हैं ६२. यूसुफ़ ने अपने मातहतों से (चुपके से) कहा कि उन की बोरियों में उन की क़ीमत भी छुपा दो ताकि वे घर पहुंचकर उस (क़ीमत) को पहचानें तो शायद (वे) वापस फिर आयें (वे मिस्र से रुख़सत हुये) ६३. पस जब अपने बाप के पास पहुंचे तो बोले कि बाबा! (आइन्दा को) हमें (एक हुक्म पर अ़मल न करने पर) सरकार से ग़ल्ला की मनाही कर दी गयी है पस तू हमारे भाई (बिन यामीन) को हमारे साथ (मिस्र) भेज ताकि हम ग़ल्ला लायें और हम उसके मुहाफ़िज़ होंगे ६४. याकूब ने कहा कि जैसा इस से पहले मैंने यूसुफ़ के बारे में एतिबार किया था वैसा ही इस के हक़ में भी करता हूँ (अगर इस के न जाने में कोई नुक़्सान का अन्देशा है तो) अल्लाह ही अच्छा हिफ़ाज़त करने वाला है और वह सब से अधिक मेहरबान है[२४] ६५. और जब सामान को उन्होंने खोला तो उनकी पूंजी (जो ग़ल्ला की क़ीमत में यूसुफ़ को दे चुके थे) उनको वापस मिली तो (खुशी-खुशी) बाप से कहने लगे, बाबा! हमें और क्या चाहिये[२५]। यह हमारी पूंजी भी हमें लौटा दी गयी और हम अपने घर वालों के लिये ग़ल्ला लायेंगे और अपने तयीं सुरक्षा भी करेंगे और एक ऊँट जितना ग़ल्ला ज़्यादा लायेंगे। यह ग़ल्ला (जो हम लाये हैं) बहुत ही थोड़ा है। ६६. याकूब ने कहा: मैं इसको तुम्हारे साथ नहीं भेजूँगा जब तक तुम मुझे अल्लाह के नाम से मज़बूत वायदा न करोगे कि ज़रूर उसे मेरे पास ले आओगे मगर जिस सूरत में तुम (किसी बला में) घिर जाओ (तो माज़ूर होगे)

....

२४. कहते हैं कि हज़रत याकूब ने हज़रत यूसुफ़ को भाइयों के हवाले करते समय अल्लाह की हिफ़ाज़त में नहीं दिया था इसीलिये उन पर मुसीबत पड़ी और बिन यामीन को अल्लाह की हिफ़ाज़त में दिया तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: मेरी इज़्ज़त और बुज़ुर्गी की क़सम! मैं तेरे दोनों बेटों को तुझ से मिला दूँगा (सलफ़िय्या)

२५. 'मा नबग़ी' में अगर "मा" को इन्कार का मायना माना जाये तो अर्थ यह होगा "हम तुझ से कुछ

माल नहीं मांगते, बल्कि ग़ल्ला लाने के लिये हमारे पास हमारा वापस लिया हुआ माल ही काफ़ी है"। अगर 'मा' को "अय्युशैइन" (क्या चाहिये) के मायना में लिया जाये तो अर्थ यह होगा "इस से अधिक एहसान व सुलूक बादशाह का हम क्या चाहेंगे कि ऐसे समय में हमारा माल वापस कर दिया और अगर 'नब्ग़ी' का मायना "झूठ" लिया जाये तो मतलब यह होगा "हम झूठ नहीं कहते हैं और यह माल भी मौजूद है जो बादशाह के एहसान की दलील है" (अहमदी)

बहरहाल जब यूसुफ़ के भाई ग़ल्ला लेकर अपने घर को वापस आये तो सामान खोलने से पहले अपने वालिद से उनके अच्छे अख़लाक़ का ज़िक्र किया और कहा कि वह एक शरीफ़ और नेक इन्सान है। उसने हमारे साथ ऐसा सुलूक किया, इस प्रकार मेहमानी की और इस तरह भरपूर ग़ल्ला दिया। हज़रत याक़ूब ने कहा कि अब की बार जाना तो मेरा सलाम कहना और कहना कि हमारे बाप आपके लिये बड़ी दुआयें देते हैं वग़ैरह। भाइयों ने यह भी कहा कि अगर हम बिन यामीन को लेकर न जायेंगे तो ग़ल्ला नहीं मिलेगा इसलिये कि उन्होंने साफ़ शब्दों में कह दिया है कि ऐसी सूरत में हम नहीं दे सकेंगे। फिर बिन यामीन के जाने में एक फ़ायदा यह भी है कि इस मर्तबा दस ऊँट का ग़ल्ला लाये हैं और दुबारह ग्यारह ऊँट पर लायेंगे इसलिये कि मिस्र का बादशाह हर शख़्स को एक ऊँट का ग़ल्ला देता है। आप बिन यामीन की तरफ़ से कुछ संकोच और फ़िक्र न करें हम उसे कुछ तकलीफ़ न देंगे बल्कि हर प्रकार से उसको सुरक्षा प्रदान करेंगे।

बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: हर ईमानदार आदमी को सिला रहमी की पाबन्दी ज़रूरी है। संबन्धियों से अच्छा सुलूक करने का नाम "सिला रहमी" है। जो उलमा यह कहते हैं कि हज़रत युसूफ़ ने ग़ल्ला की क़ीमत सिला रहमी की वजह से लौटा दी थी कि ग़ल्ला मुफ़्त पहुंच जाये और यह पैसा उन के किसी दूसरे काम आ जाये, तो इस हदीस की रोशनी में इस क़ौल की ताईद होती है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को हज़रत इब्राहीम की सुन्नत की पैरवी का हुक्म है इस बिना पर यह कहा जा सकता है कि सिला रहमी जिस प्रकार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शरीअ़त में है, इसी प्रकार हज़रत इब्राहीम अ़लै० के दीन में भी थी और उसी के अनुसार हज़रत यूसुफ़ ने अ़मल भी किया (अहसनुत्तफ़ासीर)

يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّآ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى
مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٦٦﴾ وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا
مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ۗ
وَمَآ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۗ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا
لِلّٰهِ ۗ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٦٧﴾
وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ۗ مَا كَانَ
يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِيْ

पस जब वह बाप को वायदा दे चुके तो उस ने कहा जो हम कह रहे हैं उस पर अल्लाह गवाह है[६६] और (मुहब्बत में) याक़ूब ने यह भी कहा कि मेरे बेटो! (मिस्र में) एक ही दरवाज़े से दाख़िल न होना, मुख़्तलिफ़ दरवाज़ों से जाना (बुरी निगाह से बचने की यह तदबीर है, वर्ना) मैं अल्लाह का हुक्म तुम से ज़रा भी टाल नहीं सकता। (क्योंकि पूरी दुनिया पर) हुक्म तो अल्लाह ही का है। मेरा भरोसा अल्लाह ही पर

نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰهَا ۚ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ
وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا
عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْٓ اَنَا
اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَىِٕسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٩﴾
فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِيْ
رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ

है। सब भरोसा करने वालों को चाहिए कि उसी पर भरोसा करें[२६] ६८. और जब वह बाप के कहे हुये के अनुसार जहाँ से उसने दाख़िल होने को कहा था दाख़िल हुये (तो ख़ैरियत से पहुंच गये लेकिन) यह दाख़िला अल्लाह के हुक्म से कुछ भी काम न दे सकता था अलबत्ता याकूब का अपना ख़्याल था जो उस ने पूरा कर दिया। (और बतला भी दिया कि असल में बागडोर सब कामों की अल्लाह के हाथ है) क्योंकि वह हमारी तालीम की वजह से बड़ा इल्म वाला था लेकिन अक्सर लोग इस बात को नहीं जानते[२७] ६९. और (ख़ैर यह जो हुआ सो हुआ) यूसुफ़ के भाई जब यूसुफ़ के पास आये तो उन्होंने अपने (हक़ीक़ी) भाई को अपने पास जगह दी और (चुपके से) कह दिया कि मैं तेरा भाई (यूसुफ़) हूँ पस तू उन कामों से (जो तेरे साथ ला परवाही करते आये हैं) रन्जीदा मत हो ७०. फिर जब (दस्तूर के मुताबिक़) उन की बोरियाँ बँधवाने का हुक्म दिया तो अपने भाई की बोरी में कटोरा रख दिया (फिर उस को ढूंडने का हुक्म दिया तो) एक पुकारने वाले ने पुकारा कि ऐ क़ाफ़िला वालों! तुम चोर हो[२८]।

....

२६. यूसुफ़ के भाई जब पहली मर्तबा मिस्र गये थे तो जिस प्रकार सब लोग जाते हैं वे भी दाख़िल हुये थे। लेकिन जब यूसुफ़ ने उन की आवभगत की तो वे लोगों की नज़र में महान हो गये थे इसीलिये पुनः जाना गोया एक मेहमान की हैसियत से था इसीलिये ख़ास तौर से जाना उचित था। बिन यामीन भी उनके साथ थे जिनसे हज़रत याकूब यूसुफ़ के बाद भाइयों में सब से ज़्यादा मुहब्बत करते थे। हज़रत याकूब को ख़्याल गुज़रा कि एक बाप के ग्यारह बेटे एक विशेष शान के साथ शहर में दाख़िल होंगे तो लोगों की निगाहों का उठना लाज़िम है और इस से नज़र लग जाने का संदेह अवश्य है। हज़रत याकूब ने इसी बुरी नज़र और हसद वग़ैरह जैसी बुरी चीज़ों से बचाने के लिये यह ज़ाहिरी रोक थाम लगायी थी (मुवज़्ज़िहुल् कुरआन)

इससे मालूम हुआ कि बुरी नज़र का लग जाना यह सत्य है। इस से बचाव के लिये यह दुआ पढ़नी चाहिये: अऊज़ू बि-कलिमातिल्ला हित्ताम्मति मिन् कुल्लि शैतानिन् व हाम्मतिन् वमिन् ऐनिन् लाम्मतिन् (राज़)

२७. 'वह हमारे बतलाने की वजह से इल्म वाला था' अक्सर जाहिल इन बातों को नहीं समझ पाते कि अगर कोई बात किसी बुजुर्ग को अल्लाह की तरफ़ से बता दी जाये तो वह ग़ैब का जानने वाला नहीं हो जाता। ऐसे लोगों की मिसाल बिल्कुल वैसी ही है जैसे कोई तार बाबू को सूचना देते हुये जो अभी किसी दूसरे मुल्क से पहुंची हो सुन कर जिहालत से अपने घर वालों का हाल-चाल मालूम करने लग जाये और यह न समझे कि उस ने जो ख़बर बताई है वह तो किसी के बतलाने से बतलाई है, वर्ना उसे क्या मालूम कि दीवार के पीछे क्या है? हज़रत शैख़ सअ़दी रह० ने क्या ही अच्छा कहा है कि "हज़रत याकूब से किसी

➲ने पूछा कि आपने मिस्र से तो हज़रत यूसुफ़ के कुर्ता की ख़ुश्बू सूंघ ली, लेकिन जब वह अपने घर के बग़ल ही में कन्आन के कुएं में पड़े थे तो इस की ख़बर क्यों न लगी? उन्होंने उत्तर दिया कि हमारे हालात अल्लाह के कब्ज़े में हैं और बिजली के समान हैं जो कि अल्लाह के हुक्म से पैदा होती है और तुरन्त ग़ायब हो जाती है। अल्लाह का हुक्म होता है तो कभी तो अर्श की ख़बरें पा लेते हैं और कभी हम को यह भी पता नहीं चलता कि हमारे पीछे क्या है"

फ़ुक़्हा ने लिखा है कि जो लोग नबियों और वलियों को ग़ैब की बातें जानने वाला समझते हैं वे काफ़िर हैं। चुनान्चे "मुल्ला अ़ली क़ारी" लिखते हैं "जान लो कि नबी लोग केवल उन ही ग़ैब की बातों को जानते हैं जिन को अल्लाह तआ़ला कभी-कभी वह्यि के ज़रिये उन्हें मालूम करा देता है" (शरह फ़िक़्ह अक्बर) हनफ़ी मज़हब के इमामों का साफ़-साफ़ कहना है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बारे में ग़ैब जानने का अ़क़ीदा रखना कुफ़्र है इसलिये कि यह अक़ीदा कुरआन की उस आयत के ख़िलाफ़ है जिस में अल्लाह ने फ़रमा दिया है कि "ज़मीनों और आसमानों में ग़ैब अल्लाह के अ़लावा कोई नहीं जानता"(यह आयत सूरः अन्आम ५९ की है)

२८. यह आवाज़ लगाने वाला आदमी पुलिस का था। हज़रत यूसुफ़ ने पुकारने का आदेश नहीं दिया था। इसलिये इस जुम्ले में जो झूठ है यह उस कहने वाले का है न कि हज़रत यूसुफ़ का। हज़रत यूसुफ़ इस झूठ से बरी हैं (सनाई) मुझ नाचीज़ के नज़दीक यह "तोरीया" है। मुराद वह चोरी है कि यूसुफ़ को याकूब अ़लै० से ग़ायब कर दिया जो कि "अन्तुम् शरुम्मकानन्" (इस चोरी के दर्जे में तुम तो और भी बुरे हो) का मफ़हूम है। और सुनने वाले क़रीब का अर्थ यानी प्याले की चोरी समझे, यही तौरिया है। (बयानुल कुरआन)

बिन यामीन को लेकर जब दोबारा गये तो यूसुफ़ अ़लै० ने उनको सारी बातें बतला दीं। सगे भाई को इतने लम्बे समय के बाद देखा तो किसी प्रकार दिल न मानता था कि उन्हें अपने से अलग होने दें, लेकिन समस्या यह थी कि उन्हें रोक भी नहीं सकते थे, इसलिये कि इस बारे में मुल्क मिस्र का नियम बड़ा ही कठोर था अभी वक़्त भी नहीं आया था कि अपने बारे में अपने भाइयों को बता दें। इसलिये मजबूर हो कर रुख़सत कर दिया और निशानी के तौर पर चाँदी का कटोरा रख दिया। चूंकि भाइयों को कटोरे के बारे में बतलाना हिक्मत और मसलेहत के ख़िलाफ़ था इसलिये इस काम को बड़ी राज़दारी से किया गया। लेकिन जब ये लोग ग़ल्ला लेकर वापस हुये और महल के कारिन्दों ने प्याला ढूंडा तो न पाकर उन लोगों का पीछा किया। कारिन्दों को प्याले के बारे में कुछ मालूम न था और चूंकि इन लोगों के अलावा और कोई महल में ठहरा भी नहीं था इसलिये यही समझा कि यह उन्हीं लोगों का काम है। फिर जब कारिन्दों के सरदार ने तलाशी ली तो बिन यामीन की बोरी से प्याला निकल आया। अब उनके चोर होने में कुछ शुबह ही बाक़ी न रहा। वे लोग उन सब को लेकर हज़रत यूसुफ़ के पास पहुंचे! आप ने जब यह मामला सुना तो समझ गये कि घटना में अल्लाह का हाथ काम कर रहा है और आप ख़ामोश रहे और कहा भी तो सिर्फ़ यही कि हम और किसी को नहीं रोक सकते, केवल उसी को रोकेंगे जिसके सामान में प्याला निकला है। और यह बात वे लोग भी कह चुके थे कि जिस के माल में से प्याला निकला उसे ही बन्दी या गुलाम बना कर रख लिया जाये।

जब बिन यामीन के सामान से प्याला निकल आया तो सौतेले भाइयों का हसद जोश में आ गया और झट से बोल पड़े कि अगर इसने चोरी की है तो कोई तअ़ज्जुब की बात नहीं, इस का भाई यूसुफ़ भी चोर था (यहाँ पर तो हज़रत यूसुफ़ को भी चोर कहा गया है यह केवल हसद और मायूसी की वजह से कहा था, वर्ना ज़ाहिर है कि यूसुफ़ अ़लै० इस से पाक थे) और कुरआन ने विशेष रूप से जो भाइयों का यह क़ौल नक़ल किया है इस की वजह यही है ताकि लोग जान लें कि इन्सान जब तक हसद करता है तो किस प्रकार➲

वह बौखला कर ग़लत बातें कहने लगता है। (तर्जुमान) जबकि बिन यामीन के सामान से प्याला निकल आया और भाईयों ही के इक़रार के मुताबिक़ वे रोक लिये गये तो अब अज़ीज़ मिस्र को रहम दिलाने के लिये कमज़ोर और बूढ़े बाप का हाल बयान किया और यह भी कहा कि चोर भाई के स्थान पर हम में से किसी को बन्दी बना लिया जाये और इस भाई को छोड़ दिया जाये। क्योंकि बाप इस भाई के सदमा से नहीं बचेंगे। हज़रत यूसुफ़ ने उत्तर दिया कि भला यह कैसे संभव है कि करे कोई और भरे कोई।

जब भाई लोग निराश हो गये तो बड़े असमंजस में पड़ गये कि अब बाप को क्या मुंह दिखायेंगे? उनमें से एक भाई रोबील नामी ने कहा कि मैं वापस ही नहीं जाऊँगा और यहीं पर उस वक़्त तक पड़ा रहूँगा, जब तक वालिद माफ़ न कर दें, या मुझे आने की अनुमति न दे दें। या हो सकता है कि अल्लाह और कोई सूरत निकाल दे। बहरहाल भाई लोग वालिद के पास गये और पूरी कहानी सुनायी और यह भी कहा कि अगर मेरी बातों पर यक़ीन न हो तो उस क़ाफ़िले से भी मालूम कर सकते हैं जो हमारे साथ ही वापस हुआ है। हज़रत याक़ूब ने पूरी कहानी सुन कर वही बात कही जो इससे पहले हज़रत यूसुफ़ के गुम हो जाने पर कही थी "मैं सब्र और शुक्र करता हूँ"। आप ने इस मामले में भी यही समझा कि यह कहानी भाइयों की घड़ी हुई है, लेकिन फिर भी उम्मीद की किरन को जगाये रखा और उम्मीद रखी कि अल्लाह मेरे बच्चों को जल्दी ही मुझ से मिला देगा। (तफ़सीर मुहम्मदी)

لَسٰرِقُوْنَ ۝٧٠ قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ۝٧١
قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ
وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ۝٧٢ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا
لِنُفْسِدَ فِى الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ۝٧٣ قَالُوْا
فَمَا جَزَآؤُهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ۝٧٤ قَالُوْا جَزَآؤُهٗ
مَنْ وُّجِدَ فِىْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ
نَجْزِى الظّٰلِمِيْنَ ۝٧٥ فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ
اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ
كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِىْ دِيْنِ
الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ
نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِىْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ۝٧٦ قَالُوْۤا اِنْ يَّسْرِقْ
فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ

७१. यूसुफ़ के भाइयों ने घूम कर पूछा कि तुम्हारा क्या खोया गया है? ७२. सिपाहियों ने कहा कि सरकारी (बर्तन) कटोरा (पानी पीने का) हमें नहीं मिलता और (सरकारी एलान हो चुका है कि) जो कोई उसे लाये उसको ऊँट के बोझ जितना ग़ल्ला मिलेगा और मैं उसका ज़ामिन हूँ ७३. यूसुफ़ के भाई बोले कि अल्लाह की क़सम तुम जानते हो कि हम इस मुल्क में फ़साद करने नहीं आये और न हम चोर हैं (बल्कि शरीफ़ ख़ानदान के हैं) ७४. सिपाहियों ने कहा अगर तुम झूठे निकले तो उस चोर की क्या सज़ा है? ७५. वे बोले कि जिस के सामान से वह निकले वही उस की सज़ा है (वह तुम्हारा हमेशा के लिये गुलाम होगा) हम ज़ालिमों (चोरों) को ऐसी सज़ा दिया करते हैं (जब यह क़रारदाद यूसुफ़ के भाइयों में

فِي نَفْسِهِ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ أَنْتُمْ شَرٌّ

और सरकारी आदमियों में हो चुकी) ७६. तो यूसुफ़ ने अपने भाई के थैले से पहले उनके थैलों और बोरों को खुलवाया (जब उन से कुछ न निकला तो खोजते-खाजते) अपने भाई के थैले से निकाल लिया। इस प्रकार हम ने यूसुफ़ को ढब सिखाया था (कि बिन यामीन को रख सके, वर्ना) बादशाह के क़ानून के अनुसार वह अपने भाई को न रख सकता था मगर जो अल्लाह चाहता। हम जिस को चाहते हैं बुलन्द मर्तबा कर देते हैं। और हर एक इल्म वाले से बढ़ कर दूसरा इल्म वाला है ७७. (वह शर्मिन्दा हो कर) बोले कि अगर इस (बिन यामीन) ने (सरकारी बर्तन की) चोरी की है (तो तअ़ज्जुब नहीं) इसके भाई ने भी चोरी की थी, यूसुफ़ ने इस कलिमा (बात) को छुपा रखा और उन के सामने उसको न दोहराया (कि गोया सुना भी न हो) इतना कहा कि तुम बड़े नालायक़ हो।

مَّكَانًا ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَصِفُونَ ۝ قَالُوا يَا أَيُّهَا
الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا كَبِيرًا فَخُذْ أَحَدَنَا
مَكَانَهُ ۖ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ۝ قَالَ مَعَاذَ
اللَّهِ أَنْ نَأْخُذَ إِلَّا مَنْ وَجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهُ ۙ
إِنَّا إِذًا لَظَالِمُونَ ۝ فَلَمَّا اسْتَيْأَسُوا مِنْهُ خَلَصُوا
نَجِيًّا ۖ قَالَ كَبِيرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ أَبَاكُمْ
قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ وَمِنْ قَبْلُ
مَا فَرَّطْتُمْ فِي يُوسُفَ ۖ فَلَنْ أَبْرَحَ الْأَرْضَ
حَتَّىٰ يَأْذَنَ لِي أَبِي أَوْ يَحْكُمَ اللَّهُ لِي ۖ وَهُوَ خَيْرُ
الْحَاكِمِينَ ۝ ارْجِعُوا إِلَىٰ أَبِيكُمْ فَقُولُوا يَا أَبَانَا
إِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلِمْنَا
وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حَافِظِينَ ۝ وَاسْأَلِ الْقَرْيَةَ الَّتِي
كُنَّا فِيهَا وَالْعِيرَ الَّتِي أَقْبَلْنَا فِيهَا ۖ وَإِنَّا

तुम्हारा बयान (कि उस के भाई ने भी चोरी की थी) अल्लाह को ख़ूब मालूम है ७८. कहने लगे कि ऐ अज़ीज़! इसका बाप निहायत बूढ़ा है (और इससे उसे बहुत ही मुहब्बत है) पस तू हम में से किसी को इसके बदले में रख ले। हम तुझे एहसान करने वाला जानते हैं (उस बूढ़े पर भी अगर एहसान करे तो तुझ से दूर नहीं) ७९. यूसुफ़ ने कहा कि अल्लाह पनाह दे कि हम उस शख़्स को छोड़ कर जिसके पास से हमें अपनी चीज़ मिली है किसी दूसरे को लें (अगर हम ऐसा करें) तो तुरन्त हम अन्याय करने वाले ठहरेंगे ८०. फिर जब वे निराश हुये तो (मश्वरा करने को) अलग को बैठे। उन में से बड़े भाई ने कहा (तुम जो बिन यामीन को छोड़ कर जाना चाहते हो) क्या तुम्हें मालूम नहीं कि तुम्हारे बाप ने तुम से अल्लाह के नाम का मज़बूत वायदा लिया हुआ है और इस से पहले यूसुफ़ के बारे में जो तुम ने दोष किया हुआ है (वह भी तुम्हें मालूम है। मेरी ग़ैरत तो इजाज़त नहीं देती कि मैं यहाँ से जाऊँ) पस मैं तो इस ज़मीन को न छोड़ूँगा जब तक मेरा बाप मुझे अनुमति न दे दे या अल्लाह मेरा फ़ैसला न कर दे। (कि बिन यामीन➲

➲मिल जाये) वही सब से अच्छा फ़ैसला करने वाला है ८१. तुम वालिद के पास जाओ और उन से कहो कि बाबा! तेरे बेटे ने चोरी की है (और वह इस जुर्म में पकड़ा गया है) हम तो केवल इसी बात की गवाही देते हैं जो हमें मालूम है और हम ग़ैब नहीं जानते ८२. (और अगर तू हमारी तस्दीक़ करना चाहता है तो बेशक) इसी बस्ती (मिस्र) के लोगों से पूछ ले जिस में हम थे और उस क़ाफ़िले से मालूम कर ले जिस के साथ हम आये हैं।

....

لَصٰدِقُوْنَ ﴿٨٢﴾ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ
فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ؕ
اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٨٣﴾ وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ
يٰۤاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ
فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٨٤﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ
حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿٨٥﴾
قَالَ اِنَّمَاۤ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْۤ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ
اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾ يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ
يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ
لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٧﴾ فَلَمَّا
دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلَنَا
الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَ
تَصَدَّقْ عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿٨٨﴾

और (हम क़सम खा कर कहते हैं कि) हम सच्चे हैं। ८३. बाप ने (सुनते ही) कहा: बल्कि यह बात तुम्हें भली मालूम हुई है (कि तुम्हारा दूसरा महसूद भी मुल्ज़िम ठहरा) मेरा काम तो सब्र व शुक्र है। उम्मीद है कि अल्लाह उन सब को मेरे पास लायेगा। (और मेरी उन से मुलाक़ात होगी) नि:संदेह वही जानने वाला और हिक्मत वाला है। ८४. और उनसे मुंह फेर कर कहने लगा: हाय यूसुफ़ के हाल पर और (युसुफ़ की जुदाई में रोने से) उस की आंखें मारे ग़म के सफ़ेद हो गयीं थीं[२९] और (जी ही जी में) गुस्सा दबाया करता था ८५. (घर वाले) बोले कि अल्लाह की क़सम! तू हमेशा यूसुफ़ ही को याद करता रहेगा यहाँ तक कि मौत के निकट पहुंच जायेगा, बल्कि मर ही जायेगा, (माना की बेटे का रंज होता है मगर आख़िर इस की भी एक सीमा है) ८६. याक़ूब ने कहा: मैं अपनी तकलीफ़ और ग़म का इज़हार अल्लाह ही के सामने करता हूँ और मुझे अल्लाह की तरफ़ से कई एक बातें भी मालूम हैं जो तुम को नहीं मालूम ८७. पस ऐ बेटो! जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई को तलाश करो (और पता लगाओ) और अल्लाह की रहमत से निराश न हो। (क्योंकि) अल्लाह की रहमत से काफ़िरों के अ़लावा कोई निराश नहीं होता। (वि खुदा-खुदा कर के वतन से चले और मिस्र में पहुंचे तो यूसुफ़ ने सूचना पा कर उन को बुलाया) ८८. पस जब यूसुफ़ ➲

के सामने हाज़िर हुये तो बोले कि ए अज़ीज़! हमको और हमारे घर वालों को सख़्त तकलीफ़ पहुंची है और हम थोड़ी सी पूंजी लेकर आये हैं पस आप (अपनी मेहरबानी से पहले की तरह) हम को पूरा ग़ल्ला दिला दीजिये और हमें ख़ैरात दीजिये (क्योंकि) अल्लाह ख़ैरात देने वालों को नेक बदला दिया करता है।

....

२९. बूढ़े बाप की आंखों का सितारा जब गुम हो गया तो बहुत रन्जीदा हुये, लेकिन उस रन्ज को भुलाने के लिये उनके छोटे भाई बिन यामीन को देख कर ग़म भुला लिया करते थे। इस सूरत में यही सब से छोटा बेटा ही आंखों का तारा था। यहाँ यह बात मालूम रहे कि ज़बान से ज़ाहिर न करते हुये दिल ही दिल में रन्ज करना मना नहीं है और न ही नुबुव्वत की शान के ख़िलाफ़ है। यहाँ तक कि सिर्फ़ आंखों से आंसू बहाना भी मना नहीं है, बल्कि यह इन्सान की फ़ितरत है। औलाद की मुहब्बत अल्लाह पाक ने वालिद-वालिदा के दिलों में डाल दी है। अगर किसी को औलाद का रन्ज न हो तो उसकी मानवता पर शक का प्रश्न चिन्ह लगता है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बेटे जनाब इब्राहीम की वफ़ात हो गयी तो आप की आँखों से आँसू बह पड़े और फ़रमायाः ऐ इब्राहीम! हम तेरी जुदाई से रन्जीदा हैं लेकिन ज़बान से कोई ऐसा शब्द नहीं निकालते जिस से हमारा परवरदिगार नाराज़ हो"। सुब्हानल्लाह! यही फ़ितरी बात है और यही सब से बेहतरीन शिक्षा है कि आँखें तो रन्ज व ग़म से आँसू बहायें मगर ज़बान से शिकायत न करे।

कहा जाता है कि २० साल तक हज़रत याकूब अलै० यूसुफ़ की जुदाई में रोते रहे, हालाँकि उस ज़माने में उन से बढ़ कर कोई बन्दा अल्लाह का मक़बूल न था। यह परवरदिगार की तरफ़ से परीक्षा थी जो वह अपने बन्दों से लिया करता है। जब बेटों ने बूढ़े बाप को सब्र की नसीहत की तो उन्होंने कहा कि तुम सब्र का उपदेश न करो। सब्र का अर्थ यह है कि बन्दे के सामने रन्ज व ग़म का इज़हार न किया जाये। और मैं भी बन्दों से न करके अल्लाह से करता हूँ। और मुझ को अल्लाह की तरफ़ से वे बातें मालूम हैं जो तुम को मालूम नहीं हैं। यानी यह कि यूसुफ़ जीवित है और एक दिन ज़रूर ही वह मुझ से मिलेगा और मेरे रोने-पीटने पर अवश्य एक न एक दिन अल्लाह तआला मुझ पर रहम फ़रमायेगा (वहीदी)

इसके बाद हज़रत याकूब ने कहा कि बेटो! मायूस होकर बैठ न जाओ और यूसुफ़ और उस के भाई बिन यामीन का पता लगाओ। वास्तव में वहिय के ज़रिये इशारा भी मिल चुका था और वे समझ चुके थे कि यूसुफ़ की खुश्बू उसी तरफ़ से आने वाली है। एक तरफ़ तो यह हालात और दूसरी तरफ़ यह हाल कि सूखा-काल बढ़ता जा रहा था। भाइयों ने मिस्र आ कर हज़रत यूसुफ़ से कहा कि हमारे घर वालों को सख़्त परेशानी का सामना है। हज़रत यूसुफ़ ने भी उन का हाल सुना और देखा कि किस प्रकार सामने खड़े हो कर भीख माँग रहे हैं तो मुहब्बत से बेक़ाबू हो गये और अपने आपको ज़ाहिर कर दिया। जब उन्होंने भाइयों से पूछा कि क्या तुम्हें मालूम है कि यूसुफ़ के साथ तुम लोगों ने क्या सलूक किया था? तो भाई लोग चौंक उठे कि यह यूसुफ़ का ज़िक्र इस तरह क्यों कर रहा है? फिर उन्होंने उन की आवाज़ और सूरत पर ग़ौर किया तो उन्हें यक़ीन हो गया कि हो न हो यूसुफ़ यही हैं। चुनान्चे हैरान हो कर पूछा कि क्या आप ही यूसुफ़ हैं? आप अनुमान लगा सकते हैं कि हज़रत यूसुफ़ ने अपने भाइयों से जो प्रश्न किया था वह केवल इसलिये किया था ताकि २० वर्ष के हालात और मौजूदा हालात को तोल लें। वर्ना हज़रत यूसुफ़ ने अपने ताल्लुक़ से एक शब्द भी भाइयों से न कहा। यह था हज़रत यूसुफ़ अलै० का अख़्लाक़ (तर्जुमान)

हज़रत इब्ने अब्बास की एक रिवायत में है कि जब भाई लोग हज़रत यूसुफ़ के सामने आये तो आपने पानी

➲पीने का प्याला मंगवाया और उसको ठोकने लगे तो उस से टन-टन की आवाज़ निकलने लगी। इस पर आपने फ़रमाया: प्याला यह कह रहा है कि तुम्हारा एक भाई यूसुफ़ नाम का था जिसे तुम लोगों ने कुयें में डाल दिया था ....(फ़त्हुल क़दीर)

قَالَ هَلْ عَلِمْتُم مَّا فَعَلْتُم بِيُوسُفَ وَأَخِيهِ إِذْ أَنتُمْ
جَاهِلُونَ ﴿٨٩﴾ قَالُوا أَإِنَّكَ لَأَنتَ يُوسُفُ ۖ قَالَ أَنَا
يُوسُفُ وَهَٰذَا أَخِي ۖ قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا ۖ إِنَّهُ مَن
يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٠﴾
قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ آثَرَكَ اللَّهُ عَلَيْنَا وَإِن كُنَّا لَخَاطِئِينَ ﴿٩١﴾
قَالَ لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ۖ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ ۖ
وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿٩٢﴾ اذْهَبُوا بِقَمِيصِي هَٰذَا
فَأَلْقُوهُ عَلَىٰ وَجْهِ أَبِي يَأْتِ بَصِيرًا وَأْتُونِي بِأَهْلِكُمْ
أَجْمَعِينَ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ
إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ ۖ لَوْلَا أَن تُفَنِّدُونِ ﴿٩٤﴾
قَالُوا تَاللَّهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ ﴿٩٥﴾ فَلَمَّا أَن
جَاءَ الْبَشِيرُ أَلْقَاهُ عَلَىٰ وَجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيرًا ۖ
قَالَ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا

८९. यूसुफ़ ने (जब हाल सुना तो निहायत नर्म शब्दों में उन से) कहा कि जो कुछ तुम ने यूसुफ़ और उस के भाई से जिहालत में किया था तुम्हें कुछ मालूम है? ९०. वे बोले कि क्या तुम यूसुफ़ हो? उन्होंने कहा: मैं यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है अल्लाह ने हम पर (बड़ा ही) एहसान किया है। जो कोई उससे डरता है और (मुसीबत के समय) सब्र करता है तो अल्लाह तआला ऐसे भले आदमियों का अज्र बर्बाद नहीं किया करता ९१. बोले कि अल्लाह की क़सम! अल्लाह ने तुझे हम पर बरतरी दी है और हम दोषी हैं (तू हमारा दोष माफ़ कर) ९२. यूसुफ़ ने कहा: आज तुम पर किसी प्रकार का इल्ज़ाम नहीं (जो कुछ तुम ने किया उसको मैं जानता हूँ) अल्लाह तुम्हें बख़्शे वही सब से बढ़ कर रहम करने वाला है[३०] ९३. यह मेरा कुर्ता ले जाओ और मेरे वालिद के चेहरे पर उसे डाल दो (अल्लाह ने चाहा तो) वे सवांखा हो जायेंगे, और अपने बाल-बच्चों को (यहाँ) मेरे पास ले आओ (यहाँ पर अल्लाह के फ़ज़्ल से सब कुछ मौजूद है) ९४. और जब क़ाफ़िला चला तो उनके वालिद याकूब ने कहा अगर तुम मुझे बहका हुआ न कहो तो (मैं सच कहता हूँ कि) मुझे यूसुफ़ की महक आ रही है ९५. घर वालों ने कहा: अल्लाह की क़सम! तू उसी अपनी पुरानी ग़लती में है[३१] ९६. फिर जब शुभसूचना देने वाला याकूब के पास आया और आते ही उस (यूसुफ़ के) कुर्ते को उस के चेहरे पर डाल दिया तो वह सँवाखा हो गया। उस ने कहा: क्या मैंने नहीं कहा था कि मैं अल्लाह के बतलाने से वह बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

....

३०. यानी आज मुझ को तुम्हारे ऊपर गुस्सा नहीं है सुबहानल्लाह! क्या नुबुव्वत की शान है। अगर कोई➲

दूसरा होता तो ऐसे कुसूर को कभी माफ़ न करता और अवश्य ही कुछ न कुछ बदला लेता। जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मक्का फ़तह किया तो वहाँ के लोगों से पूछा कि तुम्हारा मेरे बारे में क्या ख़्याल है? उन्होंने कहा: आप हमारे चचा के बेटे हैं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: मैं भी अब तुम पर क़ोई दोष नहीं रखता। आप अभी सफ़र ही में थे कि अबू सुफ़ियान बिन हारिस और अ़ब्दुल्लाह बिन उमय्या आप को राह में ही मिल गये। ये वह नापाक लोग थे जिन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जितना भी मुमकिन हो सकता था तकलीफ़ें पहुंचायीं थी आप ने उन्हें देखा मगर कुछ भी न कहा। हज़रत उम्मे सलमा ने अनुरोध किया कि अबू सुफ़ियान आपके हक़ीक़ी चचा का बेटा है और अ़ब्दुल्लाह हक़ीक़ी फूफ़ी (आ़तिका) का लड़का है, इसलिये आप माफ़ फ़रमा दें। इन दोनों ने भी आपके सामने यही आयत न० ९१ पढ़ी तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने भी उत्तर में आयत ९२ की तिलावत फ़रमाई। अबू सुफ़ियान आप के इस सुलूक पर इतने प्रभावित हुये कि तुरन्त ही आप की शान में एक कविता कह डाली।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मक्का वालों से जो कहा था वे अल्फ़ाज़ यह थे "जाओ, आज तुम सब आज़ाद हो, तुम पर कोई पकड़ नहीं, अल्लाह तुम सब की ग़लतियों को माफ़ करे"।

३१. अभी क़ाफ़िला कन्आ़न से आठ दिन के फ़ासले पर ही था कि अल्लाह के हुक्म से हवा ने यूसुफ़ के कुर्ते की ख़ुश्बू आप तक पहुंचा दी। उस समय हज़रत यूसुफ़ को गुम हुये २० वर्ष हो चुके थे और शुभसूचना देने वाला क़ाफ़िला अभी कन्आ़न से २० मील की दूरी पर था। भाइयों ने कहा कि यूसुफ़ की मुहब्बत में आप बौखलाये हुये हैं और इधर-उधर की बातें करते हैं। सब से बड़े भाई यहूदा ने कुर्ता आपके मुँह पर डाला तो आप की बीनाई (आंखों की रोशनी) दोबारा वापस लौट आई। इस पर आप ने फ़रमाया: क्या मैंने नहीं कहा था कि मैं अल्लाह की तरफ़ से वे बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते हो (मुहम्मदी)

تَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا يَا أَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كُنَّا خَاطِئِينَ ﴿٩٧﴾ قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي ۖ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٩٨﴾ فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ آوَىٰ إِلَيْهِ أَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوا مِصْرَ إِن شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ ﴿٩٩﴾ وَرَفَعَ أَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوا لَهُ سُجَّدًا ۖ وَقَالَ يَا أَبَتِ هَٰذَا تَأْوِيلُ رُؤْيَايَ مِن قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا ۖ وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ أَخْرَجَنِي مِنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُم مِّنَ الْبَدْوِ مِن بَعْدِ أَن نَّزَغَ الشَّيْطَانُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي ۚ إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ لِّمَا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿١٠٠﴾

९७. वे बोले ऐ बाबा! हमारे लिये (अल्लाह से) बख़्शिश माँग! बेशक हम बड़े गुनाहगार हैं ९८. याक़ूब ने कहा: मैं (तहज्जुद के समय) तुम्हारे लिये अल्लाह से बख़्शिश माँगूंगा (उम्मीद है कि वह कुबूल करेगा क्योंकि) वहीं बड़ा बख़्शने वाला है मेहरबान है ९९. पस वे जब यूसुफ़ के पास पहुंचे उसने माँ-बाप को अपने पास जगह दी और (सब से मुख़ातिब हो कर) कहा कि अम्न व शान्ती से शह्र में दाख़िल हो चलो। अल्लाह ने चाहा तो तुम्हें किसी प्रकार की तकलीफ़ न होगी १००. और माँ-बाप को उस ने एक तख़्त पर बिठाया और सब उस के आगे सज्दे में गिर गये (जो सलाम के तौर पर उन

رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِیْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِیْ مِنْ
تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۟
اَنْتَ وَلِیّٖ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِیْ مُسْلِمًا

की शरीअ़त में जायज़ था) और यूसुफ़ ने कहा बाबा यह मेरे सपने की ताबीर है जो मैंने पहले देखा था (अल्लाह का शुक्र है कि) मेरे परवरदिगार ने उसे सच्चा किया और मुझ पर (बड़ा ही) एहसान किया कि जेलख़ाने से मुझे निकाला और इसके बाद शैतान ने मुझ में और मेरे भाइयों में कदूरत डाल दी थी वतन से तुम को मेरे पास लाया[३२]। कुछ शक नहीं कि मेरा परवरदिगार जो चाहे निहायत आसानी से कर सकता है। निः सन्देह वह बड़े इल्म वाला है और बड़ी हिक्मत वाला है[३३] (यह कह कर अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह हो कर दुआ करने लगा कि) १०१. ऐ मेरे परवरदिगार! तूने मुझे (अपनी मेहरबानी से) हुकूमत बख़्शी और मुझे (राज़ व नियाज़) बातों की समझ अ़ता की, ऐ (मेरे मौला!) आसमानों और ज़मीनों के पैदा करने वाले दुनिया व आख़िरत में तू ही मेरा वली (बिगड़ी बनाने वाला) है, मुझे फ़रमांबरदारी की हालत में मार

....

३२. यूसुफ़ ने अपने आप को ज़ाहिर कर देने के बाद कह दिया था कि वालिद और सभी घर के लोगों को यहाँ ले आओ। भाइयों ने ऐसा ही किया और जब क़ाफ़िला कनआ़न से चल कर मिस्र के निकट पहुंचा तो अल्लाह के नबी यूसुफ़ अ़लै० अपने वालिद अल्लाह के नबी हज़रत याकूब अ़लै० की अगवानी के लिए चले। हुकूमत के तमाम सदस्य भी साथ थे। कहा गया है कि हज़रत याकूब के साथ ख़ानदान के ७२/७३ लोग थे। यह लोग १५ मुहर्रम (आशूरा के दिन) मिस्र पहुंचे और फिर वहीं आबाद हो गये। चार सौ साल के अन्दर अल्लाह ने उनकी नस्ल में ऐसी बरकत दी कि जब मूसा अलै० के साथ निकले तो बारह लाख थे।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत याकूब की १६० और हज़रत यूसुफ़ की आयु सीमा १२० वर्ष की थी। उन की शरीअ़त में सलाम का सज्दा जायज़ था। तहिय्यत का सज्दा भी उस समय जायज़ था और हमारी शरीअ़त में हराम है (जामिउल बयान) हज़रत मआ़ज़ बिन जबल रज़ि० ने शाम से वापस आ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहा कि वहाँ तो लोग अपने बड़ों को सज्दा करते हैं अगर अनुमति हो तो हम भी आपके साथ ऐसा ही करें। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः ऐसा मत करो, अगर मैं अल्लाह के अलावा किसी के लिये सज्दा जायज़ करता तो पत्नी को हुक्म देता कि वह अपने पति को सज्दा करे, लेकिन मेरी शरीअ़त में अल्लाह को छोड़ कर किसी के लिये भी सज्दा जायज़ नहीं है (मुहम्मदी, वहीदी)

३३. हज़रत यूसुफ़ अ़लै० ने कुयें से निकालने का एहसान नहीं बयान किया ताकि भाइयों को शर्मिन्दगी न हो। और उनका दोष तो आप पहले ही माफ़ कर चुके थे। दूसरे यह कि हज़रत यूसुफ़ को तो वे एहसान बयान करने थे जो भाइयों को मालूम न थे। कुएं से निकाला जाना तो भाइयों को मालूम ही था। अब जब की नुबुव्वत मिल गयी, दुःख के दिन भी बीत गये, माँ-बाप और भाई सब से मुलाक़ात हो गयी, तो अल्लाह से दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह! जिस प्रकार यह दुनिया की नेमतें तूने पूरी की हैं इन नेमतों को आख़िरत में भी पूरी फ़रमा और जब मौत आये तो तेरी फ़रमाँबरदारी पर आये और मैं नेक लोगों में शामिल

कर दिया जाऊँ। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि इस प्रकार इस्लाम पर ख़ात्मा की दुआ़ माँगने वाले सब से प्रथम आप ही थे। याद रहे कि मौत की दुआ़ करना हमारी शरीअ़त में सख़्त मना है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: तुम में से कोई भी मौत की इच्छा न करे। और अगर सख़्ती और तकलीफ़ की वजह से ऐसी तमन्ना करनी ही पड़े तो यूँ कहो "ऐ अल्लाह! जब तक मेरी ज़िन्दगी तेरे इल्म में मेरे लिये बेहतर है उस समय तक मुझे ज़िन्दा रख और जब तेरे इल्म में मेरे लिये मौत बेहतर हो तो तू मुझे मौत दे दे।

मुसनद अहमद की एक रिवायत में है कि सहाबी कहते हैं, हम एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के एक ख़ुत्बे में मौजूद थे। आप का ख़ुत्बा सुन कर हज़रत वक्क़ास इतने प्रभावित हुये कि रोते-रोते आप के मुंह से निकल गया कि काश मुझे मौत आ जाती। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: तुम मेरे सामने मौत की तमन्ना करते हो? आपने यही वाक्य तीन बार दोहराया। ऐ साअ़द! अगर तू जन्नत के लिये पैदा किया गया है तो जितनी तेरी उम्र बढ़ेगी उसी क़दर नेकियाँ भी बढ़ेंगी और यह तेरे हक़ में बहुत बेहतर है"। यह भी मालूम रहे कि दीनी फ़ितनों के वक़्त मौत माँगनी जायज़ है।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब सारा ख़ानदान मिस्र में एकत्र हो गया तो सभी लोग हज़रत याकूब की सेवा में पधारे और अनुरोध किया कि हम लोग पापी हैं इसलिये आप अल्लाह पाक से दुआ फ़रमा दें। आप उसी समय खड़े हो गये और दुआ़ करने लगे। और यूसुफ़ अ़लै० आमीन कहते जाते थे। कुछ दिनों के बाद वह्यि आयी कि तुम्हारी विनती सुन ली गयी और कुबूल कर ली गयी इमाम सद्दी फ़रमाते हैं कि हज़रत याकूब ने इन्तिक़ाल के समय हज़रत यूसुफ़ को वसीयत की थी कि मुझे हज़रत इब्राहीम और इसहाक़ अलै० के निकट दफ़्न करना। चुनान्चे आप की वसीयत पूरी हुयी और आप को वहीं दफ़न किया गया (मुहम्मदी, वहीदी)

وَّاَلۡحِقۡنِیۡ بِالصّٰلِحِیۡنَ ﴿١٠١﴾ ذٰلِكَ مِنۡ اَنۡۢبَآءِ الۡغَیۡبِ
نُوۡحِیۡهِ اِلَیۡكَ ۚ وَمَا كُنۡتَ لَدَیۡهِمۡ اِذۡ اَجۡمَعُوۡۤا اَمۡرَهُمۡ
وَهُمۡ یَمۡكُرُوۡنَ ﴿١٠٢﴾ وَمَاۤ اَكۡثَرُ النَّاسِ وَلَوۡ حَرَصۡتَ
بِمُؤۡمِنِیۡنَ ﴿١٠٣﴾ وَمَا تَسۡـَٔلُهُمۡ عَلَیۡهِ مِنۡ اَجۡرٍ ؕ اِنۡ
هُوَ اِلَّا ذِكۡرٌ لِّلۡعٰلَمِیۡنَ ﴿١٠٤﴾ وَكَاَیِّنۡ مِّنۡ اٰیَةٍ فِی
السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ یَمُرُّوۡنَ عَلَیۡهَا وَهُمۡ عَنۡهَا
مُعۡرِضُوۡنَ ﴿١٠٥﴾ وَمَا یُؤۡمِنُ اَكۡثَرُهُمۡ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمۡ
مُّشۡرِكُوۡنَ ﴿١٠٦﴾ اَفَاَمِنُوۡۤا اَنۡ تَاۡتِیَهُمۡ غَاشِیَةٌ مِّنۡ
عَذَابِ اللّٰهِ اَوۡ تَاۡتِیَهُمُ السَّاعَةُ بَغۡتَةً وَّهُمۡ
لَا یَشۡعُرُوۡنَ ﴿١٠٧﴾ قُلۡ هٰذِهٖ سَبِیۡلِیۡۤ اَدۡعُوۡۤا اِلَی اللّٰهِ ؕ
عَلٰی بَصِیۡرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِیۡ ؕ وَسُبۡحٰنَ اللّٰهِ وَمَاۤ

और अपने नेक बन्दों से मिलाना १०२. यह क़िस्सा ग़ैब की बातों में से है जो हम (ऐ रसूल!) तेरी तरफ़ इल्हाम करते हैं वर्ना तू उन के पास न था जब वे (बाप से) फ़रेब करते हुये (अपने काम पर) मुत्तफ़िक़ हुये थे[३४] १०३. और उन लोगों में से अक्सर कभी न मानेगें अगर्चे तू उन के ईमान की हिर्स भी करे[३५] १०४. और (मज़े की बात यह है कि) तू उन से कोई बदला भी नहीं माँगता। (मगर) वह कुरआन (जो तालीम देता है) तमाम जहान वालों के लिये नसीहत है १०५. +१०६.और बहुत सी निशानियाँ आसमानों और ज़मीनों में हैं जिन पर ये लोग गुज़रते हैं और उन की परवाह तक नहीं करते (और जो कोई उन में अल्लाह के मानने वाले

أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٨﴾ وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا
رِجَالًا نُّوحِىٓ إِلَيْهِم مِّنْ أَهْلِ الْقُرَىٰٓ ۗ أَفَلَمْ يَسِيرُوا

भी हैं) उन में भी अक्सर (ऐसे है कि) अल्लाह को मान कर शिर्क (भी उसके साथ) करते रहते हैं[३६] १०७. तो क्या ये उस से बेख़ौफ़ हैं कि (ऐसा न हो कि) अल्लाह के अ़ज़ाब में से कोई आफ़त उन पर आ पड़े या उन की बेख़बरी ही में (उन की) मौत की घड़ी[३७] उन पर आ जाये (और साँस लेना भी नसीब न हो) १०८. तू (उन से) कह कि यह मेरा तरीक़ा है कि मैं और मेरे अनुयायी दलील से (न कि अन्धी तक़लीद से) अल्लाह के दीन की तरफ़ बुलाते हैं। और अल्लाह (सब ऐबों और नुक़सानों से) पाक है और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ १०९. और हम ने जितने रसूल तुझ से पहले भेजे हैं उन बसतियों में रहने वाले लोगों में मर्द ही थे[३८] (कोई फ़रिश्ता न था) क्या उन्होंने मुल्क में सैर नहीं की?

....

३४. जब तू उस समय मौजूद न था। और यह ख़बरें ऐसी हैं कि तेरी क़ौम क़ुरैश को भी मालूम न थीं। तू पढ़ा-लिखा भी नहीं था कि पहले की किताबों को देख लेता। यह आपकी नुबुव्वत की दलील है और यहाँ काफ़िरों के इल्ज़ाम का रद्द है।

३५. ऐसा हुआ कि कुरैश के काफ़िरों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से परीक्षा लेते हुये हज़रत यूसुफ़ अ़लै० का क़िस्सा पूछा। जब आपने बयान कर दिया तो उम्मीद हो चली कि अब उत्तर मिल जाने के बाद ये ईमान ले आयेंगे, मगर वे ईमान न लाये। उस वक़्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तसल्ली देने के लिये यह आयत नाज़िल हुई।

३६. इस से मालूम हुआ कि केवल मान लेने ही से आदमी मोमिन नहीं हो जाता, जब तक कि शिर्क से तौबा न करले। आज-कल के बहुत से नाम के मुसलमान भी मुश्रिक बन गये हैं वे भी इसी आयत के हुक्म में दाख़िल हैं।

३७. 'साअ़ह' का अर्थ क़ियामत है। जो मरा, समझ लीजिये कि उसके लिये क़ियामत क़ाइम हो गयी (सनाई)

३८. 'मर्द ही थे' इस का अर्थ यह है कि महिलाओं में से कोई नबी नहीं बनाई गई। हाँ, उन में पक्की-सच्ची मुसलमान महिलायें मौजूद हैं जैसे मरयम वग़ैरह। आगे अल्लाह फ़रमाता है कि ये झुठलाने वाले लोग क्या मुल्क में चलत-फिरत नहीं करते हैं? ताकि पहले के झुठलाने वालों के हालात को देखें और उनके अन्त पर ग़ौर करें कि किस प्रकार उन पर अज़ाब का सिलसिला आरम्भ हुआ और हमेशा जारी रहेगा। इसलिये दुनिया की बादशाहत के मुक़ाबले में नेक लोगों के लिये आख़िरत का घर ही सब से बेहतर है। यही कारण है कि हज़रत यूसुफ़ ने इसके बावजूद कि बादशाह थे आख़िरत के लिये दुआ़ माँगी, जैसा कि पहले आप पढ़ चुके हैं।

यहाँ से यह भी मालूम हुआ कि जो ज़मीन पर सैर करने के लिये समय और धन रखता हो तो उसके सैर करने में कोई आपत्ति नहीं और न ही उसे फ़ुज़ूल-ख़र्ची कहा जायगा। मगर शर्त यह है कि उस सैर से उस की निय्यत हासिल करना और पहलों के हर अन्जाम को मालूम करना हो। आजकल लोग पैरिस, लन्दन, हांगकांग जाते हैं, यह तो कुफ़्र है इसलिये कि वहाँ के हुस्न व जमाल से लुत्फ़ अन्दोज़ होने जाते हैं।

فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٩﴾ حَتّٰٓى اِذَا اسْتَيْـَٔسَ الرُّسُلُ وَ ظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَآءَهُمْ نَصْرُنَا ۙ فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَآءُ ۗ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١١٠﴾ لَقَدْ كَانَ فِيْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ۗ مَا كَانَ حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّ رَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١١١﴾

कि देखते हैं कि जो (मुश्रिक और अल्लाह के आदेशों के मुक़ाबले में ज़िद करने वाले) उन से पहले थे उन का अन्जाम क्या हुआ? और परहेज़गारों के लिये आख़िरत का घर सब से अच्छा है। क्या तुम ग़ौर-फ़िक्र नहीं करते? ११०. (इसी प्रकार पहले के लोग भी झुठलाते रहे) यहाँ तक कि जब रसूलों को निराशा हुयी और उन को झूठ का गुमान गुज़रा तो (तुरन्त) हमारी सहायता उन को आ पहुंची[३९] फिर हम ने जिस को चाहा वह बचाया गया। और (ज़ालिमों को बर्बाद कर दिया गया क्योंकि) हमारा अज़ाब बदकारों से टला नहीं करता १११. उन लोगों के क़िस्सों में अक़्ल वालों के लिए बड़ी नसीहत है (याद रखो कि) यह क़ुरआन बनावटी बात नहीं बल्कि अपने से पहली किताबों की तसदीक़ है और हर एक (ज़रूरी मज़हबी) मामले की तफ़सील और ईमानदार क़ौम के लिये हिदायत और रहमत है[४०]।

....

३९. यानी रसूलों ने यह गुमान किया कि वे झूठे समझे गये। मुश्रिकों ने खुल कर मुख़ालिफ़त आरंभ कर दी तो पैग़म्बरों ने यह गुमान किया कि हम ने जो यह दावत दी है कि तुम पर अज़ाब आयेगा, उन की मुख़ालिफ़त का मतलब यह हुआ कि हम ने झूठ बोला है। मुश्रिकों को इस बात का संदेह था कि शायद जादू-टोने की वजह से यह शख़्स बहक गया है और नुबुव्वत का दावा कर रहा है और इधर-उधर से सुन-सुना कर भविष्यवाणियाँ कर रहा है, लेकिन समय बीतने के साथ ही उन की मुख़ालिफ़त में भी तेज़ी आती गयी और निडर हो कर और अधिक कुफ़्र व शिर्क करने लगे। और सन्देष्टाओं को झूठा समझा तो तुरन्त अल्लाह की सहायता आ पहुंची और नेक लोग बचा लिये गये और जिस को अल्लाह ने चाहा बर्बाद कर दिया गया।

४०. 'क़-ससिहिम' (उन लोगों के क़िस्से) इस से मुराद हज़रत यूसुफ़ और उनके भाई हैं। और आ़म मायना मुराद लेते हुए हर ज़माना के नबी और उनके मुख़्लिस लोग भी हो सकते हैं। अन्तिम बात यह है कि क़ुरआन मजीद कोई बनावटी किताब नहीं है बल्कि अल्लाह की तरफ़ से उतारी गयी है और यह किताब तमाम आसमानी किताबों की तसदीक़ करती है और उन के सहीह और सच्चे विषयों को सुरक्षा प्रदान करती है।

....

सूरः रअ़्द (13)

सूरः रअ़्द मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुई। इसमें ४३ आयतें और छः रूकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है।

१. अलिफ़ लाम्मीम् रा[1] यह सूरत (आसमानी) किताब के अहकाम हैं और (याद रख कि) जो कुछ तेरे परवरदिगार के हाँ से उतरा है (यानी कुरआन वह बिल्कुल) सच है लेकिन बहुत से लोग ईमान नहीं लाते।

....
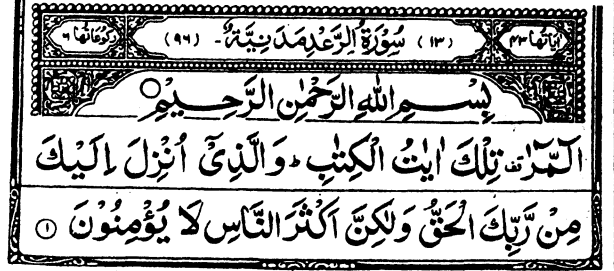
१. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस का तर्जुमा किया है "मैं हूँ अल्लाह सब कुछ जानता और देखता हूँ"। मौलाना अमृतसरी रह० ने भी यही तर्जुमा पसन्द किया है। लेकिन सच्ची बात यह है कि इन शब्दों के अर्थ अल्लाह ही बेहतर जानता है। इस प्रकार के शब्दों को हुरुफ़ "मुक़त्तआ़त" कहा जाता है। (राज़)

اَللّٰهُ الَّذِیْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَیْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ
اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ
كُلٌّ یَّجْرِیْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّی ؕ یُدَبِّرُ الْاَمْرَ یُفَصِّلُ
الْاٰیٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ﴿٢﴾ وَهُوَ الَّذِیْ
مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِیْهَا رَوَاسِیَ وَاَنْهٰرًا ؕ وَمِنْ
كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِیْهَا زَوْجَیْنِ اثْنَیْنِ یُغْشِی
الَّیْلَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾
وَفِی الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّ
زَرْعٌ وَّنَخِیْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَیْرُ صِنْوَانٍ یُّسْقٰی بِمَآءٍ
وَّاحِدٍ ۟ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰی بَعْضٍ فِی الْاُكُلِ ؕ

२. (कह दो कि) अल्लाह (यानी हक़ीक़ी माबूद तो) वह है जिसने आसमानों को बग़ैर सुतून के बुलन्द कर रखा है जो तुम देख रहे हो फिर वह अर्श पर मुस्तवी हुआ और सूरज चान्द को काम पर लगा रखा है[2]। हर एक (सूरज, चाँद, सितारे) एक मुक़र्ररा वक़्त तक चल रहे हैं। (दुनिया के निज़ाम में) समस्त आदेश वही जारी कर सकता है और विस्तार से निशान बतलाता है ताकि तुम अपने परवरदिगार से मिलने का यक़ीन करो ३. और (सुनो) वह अल्लाह (इबादत के लायक़) है जिसने ज़मीन को फैलाया और उस पर पहाड़ और दरिया पैदा किये। और ज़मीन पर हर प्रकार के फल दो-दो क़िस्म➲

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ④ وَإِن تَعْجَبْ
فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ أَإِذَا كُنَّا تُرَابًا أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ
جَدِيدٍ ۗ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ
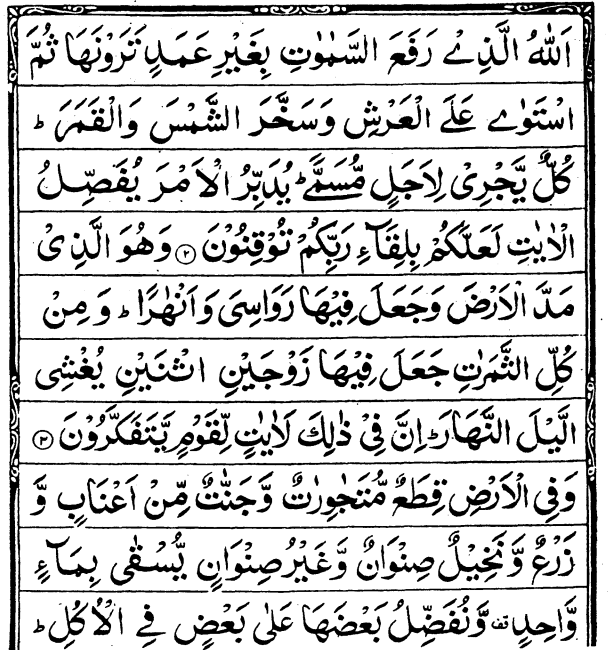
के बनाये (जो आ़म तौर पर सब को मिल सकें) वही रात (अंधेरों) को दिन की रोशनी पर ढाँप लेता है। बेशक ग़ौर-फ़िक्र करने वालों के लिये इस (बयान) में बहुत दलाइल हैं ४. और (ज़मीन के निज़ाम पर ग़ौर करो कि) ज़मीन में मुख़्तलिफ़ टुकड़े क़रीब-क़रीब हैं और अंगूरों के बाग़ और खेती और खजूरों के बाग़, दरख़्त एक तना के, बाज़ अलग-अलग (हालाँकि) एक ही पानी से उन को सींचा जाता है (और पकने के बाद वे मुख़्तलिफ़ होते हैं) और हम एक को दूसरे पर स्वाद में बरतरी देते हैं। बेशक इस (बयान) में अक्लमन्द क़ौम के लिये बहुत से निशान हैं[3] ५. और (जो जाहिल हैं सो) अगर तू उन की बातों से आश्चर्य में है तो उन की बातें ही अ़जीब हैं (कहते हैं कि) क्या जब मर कर मिट्टी हो जायेंगे तो हम एक नई पैदाइश में होंगे? ऐसे ही लोग परवरदिगार के इन्कारी हैं।

....

२. कुछ लोगों ने यहाँ पर 'आसमान' का तर्जुमा "बुलन्दी" से किया है, उनका यह क़ौल बातिल है। इसलिये कि बुलन्दी में 'अ़-मद्' (सुतून) का होना कोई मायना नहीं रखता और न ही बुलन्दी को ऊँचा किया जा सकता है इसलिये कि वह कोई ठोस वस्तु नहीं है। किसी ठोस सी चीज़ को बग़ैर सुतून के बुलन्दी तक ले जाना ही कमाल है। मतलब यह है कि अल्लाह वह है जिसने आसमान को बग़ैर सुतून और खंबे के ऊँचा उठाया, यानी गुंबद की तरह बग़ैर सुतून के खड़े हैं।

आगे फ़रमाया गया है कि अल्लाह अर्श पर बराबर हुआ। अहले सुन्नत इस का तर्जुमा यह फ़रमाते हैं। अल्लाह का अर्श पर मुस्तवी (बराबर) होना यह उस की ख़ास सिफ़्त है। किस प्रकार बराबर हुआ? बैठ कर, या लेट कर, या खड़े हो कर, या अर्श को पकड़ कर? इन सब ख़ुराफ़ातों में पड़ना कुफ़्र है। और इस बारे में ज़्यादा सोच-विचार करना, मालूमात इकट्ठा करना, लोगों से प्रश्न करना गुनाह और बिद्अ़त है (मवाहिबुर्रहमान) कुरआन में ७ स्थानों पर अल्लाह के अर्श पर बराबर होने का बयान है, उन में से यह तीसरी आयत है। इस आयत में "वजूदी" लोगों के अक़ीदे का रद्द है। वजूदी फ़िरक़ा के लोग हर सूरत में अल्लाह की मौजूदगी को मानते हैं। यह अक़ीदा बातिल और कुफ़्र है।

३. ऊपर की आयत में ऊपर का बयान था अब यहां नीचे का बयान हो रहा है। इस ज़मीन को लम्बाई-चौड़ाई में फैला कर अल्लाह ने बिछाया है। इस ज़मीन में मज़बूत पहाड़ अल्लाह ने गाड़े हैं। इस में दरिया, समुन्द्र और सोते उसने जारी किये हैं। जोड़े-जोड़े फल-फूल उस ने उगाये हैं। ज़मीन के टुकड़े आपस में एक दूसरे से मिलते जुलते हैं। यह अल्लाह की कुदरत है कि एक ज़मीन के टुकड़े से कुछ न पैदा हो और एक टुकड़े से पैदावार हो। ज़मीन के एक टुकड़े की मिट्टी लाल तो कहीं की काली है। कहीं की नर्म, तो कहीं की सख़्त है। कहीं की नमकीन तो कहीं की मीठी। कहीं की रेतीली, तो कहीं की पथरीली है। यह सारी बातें गवाही देती हैं कि इन का कोई पैदा करने वाला है और वह एक है। उस के अलावा कोई इ़बादत के योग्य नहीं।

'सिन्वान' उस पेड़ को कहते हैं जिस में कई तने और शाखें हो, जैसे इन्जीर, अनार के पेड़। और 'ग़ैरू सिन्वान' उस पेड़ को कहते हैं जिस में एक ही तना और एक ही शाख़ हों, जैसे खजूर। इसी से आदमी के चचा

को भी 'सनुवुल अब' कहा जाता है। हदीस शरीफ़ में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत उमर से फ़रमाया था कि इन्सान का चचा, बाप के समान होता है। कहने का अर्थ यह है कि अल्लाह को जानने व मानने के लिये यह निशानियाँ काफ़ी हैं।

आगे आयत न० ५ में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़िताब फ़रमाया है कि आप उन के झुठलाने पर ताज्जुब न करें। ये हैं ही इसी दिमाग़ के कि हमारी कुदरत की निशानियाँ देखते हुये भी, और यह जानते हुये भी कि इन सब का पैदा करने वाला एक ही है, क़ियामत के इन्कारी हैं। हर अक़्ल रखने वाला यह जान सकता है कि ज़मीन व आसमान का पैदा करना अपने आप में इन्सान के पैदा करने से ज़्यादा महत्व रखता है। और पहली बार पैदा करने के मुक़ाबले में पुनः पैदा करना अधिक सरल और सहज है। तो जब इन को पहली बार पैदा कर दिया तो दूसरी बार पैदा कर देना क्या मुश्किल है, लेकिन इन के दिमाग़ में यह बात नहीं समाती। चुनान्चे अगर ये नहीं मानते हैं तो क़ियामत के दिन इन की गर्दनों में आग के तौक़ होंगे और हमेशा उसी में जलेंगे।

आगे आयत न० ६ में 'बुराई की दरख़्वास्त करते हैं' इस का मतलब यह है कि कुफ़्र में इतने निडर और ढेट हो गये थे कि स्वयँ अज़ाब माँगने लगे थे। चुनान्चे फ़रमाया कि इन के पहलों की मिसालें इन के सामने मौजूद हैं कि वह किस प्रकार अ़ज़ाब में पकड़े गये, इस प्रकार इनकी भी ख़ैर नहीं है। इब्ने हातिम की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस आयत के नाज़िल होने के बाद फ़रमाया: "अगर अल्लाह माफ़ कर देने का वायदा न करता तो किसी के लिये भी ज़िन्दगी का मज़ा बाक़ी न रहता और अगर वह सज़ा देने की धमकी न देता तो हर शख़्स लापरवाह हो जाता और अन्याय और अत्याचार में लग जाता। इब्ने अ़साकिर में है कि हसन बिन उस्मान अबू हस्सान रमादी रह० ने एक मर्तबा अल्लाह का दीदार किया, देखा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अल्लाह के सामने खड़े अपने एक उम्मती की सिफ़ारिश कर रहे हैं। आप की सिफ़ारिश को सुन कर अल्लाह ने फ़रमाया: क्यों तेरे लिये इतना काफ़ी नहीं है जो मैंने सूरः रअ़्द की आयत न० ६ में नाज़िल कर दिया कि "तेरा परवरदिग़ार लोगों के अत्याचार करने के बावजूद उन के हाल पर बड़ा ही बख़्शने वाला है" अबू हस्सान फ़रमाते हैं कि इस के बाद मेरी आँख खुल गयी। (इब्ने कसीर उर्दू)

आयत का अर्थ यह है कि तेरा रब लोगों के गुनाहों को बख़्शने वाला है और साथ ही साथ सख़्त अज़ाब भी देने वाला है। तो जो उसकी नज़र में बख़्शने के लायक़ होगा उसे अवश्य बख़्शेगा और जो उस की नज़र में दन्ड देने के क़ाबिल है उसे अवश्य ही दन्ड देगा।

الْأَغْلٰلُ فِيْٓ أَعْنَاقِهِمْ ۚ وَأُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ۗ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ

उन्हीं की गर्दनों में तौक़ होंगे, और यही जहन्नुम में जाऐंगे, और हमेशा उसी में रहेंगे ६. और भलाई से पहले मुझ से बुराई की दरख़्वास्त करते हैं (यानी अ़ज़ाब माँगते हैं यह नहीं कि हिदायत माँगे, हालाँकि) इन से पहले (इन जैसी) कई एक मिसालें गुज़र चुकी हैं। और तेरा परवरदिगार (दुनिया का बनाने वाला) लोगों के अत्याचारों के

كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝ اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ؕ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ۝ سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ۝ لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

बावजूद उन के हाल पर बड़ा ही बख़्शने वाला है, (यह भी याद रहे कि) तेरे परवरदिगार का अ़ज़ाब भी बहुत सख़्त है[४] ७. और काफ़िर कहते हैं कि क्यों इस रसूल पर अल्लाह की तरफ़ से कोई निशान नहीं उतरा? (हालाँकि निशान न भी हो तो भी कोई हरज नहीं क्योंकि) तू तो (बुरे कामों पर) केवल डराने वाला है और हर एक क़ौम पर हिदायत करने वाले गुज़रे हैं[५] ८. अल्लाह हर एक मादा के गर्भ को जानता है और (हमल पैदा होने के बाद) जिस क़दर बच्चे-दानी सिकुड़ती है और(हमल के दिनों में)जिस क़दर बढ़ती है सब को जानता है। और हर एक वस्तु उसके नज़दीक अन्दाज़े से है[६] ९. वह ग़ायब और हाज़िर को (यकसाँ) जानने वाला बड़ी ही ऊँची शान वाला है १०. (उस के इल्म का फैलाव यह है कि) तुम में से कोई आहिस्ता से बात करे या चिल्लाकर करे और जो रात के अंधियारें में छुपा रहे या दिन दहाड़े राह चले(उस के पास) सब बराबर हैं। ११. हर इन्सान के लिये अल्लाह की तरफ़ से आगे-पीछे आने वाले (फ़रिश्ते) मुक़र्रर हैं जो अल्लाह के हुक्म से उस की सुरक्षा करते हैं।

....

४. 'परवरदिगार का अ़ज़ाब बहुत सख़्त है' उसकी बर्दाश्त की किसी में सकत नहीं है। मगर उसकी बुर्दबारी और उसका रहम उसके ग़ज़ब पर ग़ालिब है। यह उस के रहम ही का तक़ाज़ा है कि वह लोगों की हिदायत के लिये रसूल भेजता है ताकि लोग हिदायत पा कर उस के ग़ज़ब से सुरक्षित रहें। मगर यहाँ तो उल्टे लोग मुक़ाबले के लिये तैयार हो जाते हैं।

५. हर क़ौम में हिदायत करने वाले गुज़रे हैं जो अपने-अपने समय पर उन को सीधी राह दिखाते रहे। लेकिन लोग नहीं जानते कि उन का असली मामला तो उस अल्लाह से है जो भले-बुरे कामों पर बदला देगा। उस से हमारी कोई हरकत पोशीदा नहीं है। (सनाई)

६. बुख़ारी-मुस्लिम में हज़रत इब्ने मसऊ़द रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "नुत्फ़ा (वीर्य) चालीस दिन तक माँ के गर्भ में नुत्फ़ा की हालत में रहता है। फिर चालीस दिन के बाद एक गाढ़े पानी की शक्ल अख़्तियार कर के तीसरे चिल्ले में लोथड़ा बन जाता है। इसके बाद अल्लाह एक फ़रिश्ता भेजता है जिसे चार बातों का हुक्म दिया जाता है (१) वह क्या करेगा (२) कहाँ मरेगा (३) कितनी रोज़ी मिलेगी (४) जन्नती या जहन्नमी है। फिर उस में जान डाल दी जाती है।

لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاِذَآ

(यह भी क्या कम मेहरबानी है) कि अल्लाह तआ़ला किसी क़ौम की हालत नहीं बदलता

اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ
مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ (11) هُوَ الَّذِیْ یُرِیْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا
وَّطَمَعًا وَّیُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ (12) وَیُسَبِّحُ الرَّعْدُ
بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِیْفَتِهٖ ۚ وَیُرْسِلُ
الصَّوَاعِقَ فَیُصِیْبُ بِهَا مَنْ یَّشَآءُ وَهُمْ یُجَادِلُوْنَ
فِی اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِیْدُ الْمِحَالِ (13) لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ
وَالَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا یَسْتَجِیْبُوْنَ لَهُمْ
بِشَیْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّیْهِ اِلَی الْمَآءِ لِیَبْلُغَ فَاهُ وَمَا
هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِیْنَ اِلَّا فِیْ ضَلٰلٍ (14)
وَلِلّٰهِ یَسْجُدُ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّ
كَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ (15) قُلْ مَنْ رَّبُّ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ

➲जब तक वह खुद अपनी हालत न बदले[7]। और जब अल्लाह किसी क़ौम के बारे में बुराई चाहता है तो वह किसी प्रकार नहीं टलती (उस को कोई टालने वाला नहीं) और न अल्लाह के अ़लावा उन का कोई वली (दिख-रेख करने वाला) है १२. अल्लाह वही है जो (अ़ज़ाब के) डराने और (वर्षा की) उम्मीद दिलाने को तुम्हें बिजली दिखाता है और भारी-भारी बादल पैदा करता है १३. ग़रज़ उसकी पाकी की प्रशन्सा करती है[8] और फ़रिश्ते उसके डर से तस्बीह पढ़ते हैं, वही बिजलियां भेजता है फिर जिस पर चाहता है उन्हें गिरा देता है वे (काफ़िर) अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, हालांकि (उस की) पकड़ के दाँव बड़े मज़बूत हैं[9] १४. उसकी पुकार सच्ची है। और जो लोग उसके सिवा औरों से दुआ़एँ करते हैं (उन की दुआ बिल्कुल बेकार है क्योंकि) वे उन की दुआ़ओं को ज़रा भी कुबूल नहीं कर सकते (उन की मिसाल) बिल्कुल उस (बि अक़्ल) आदमी की तरह है जो (प्यास की सख़्ती के समय) पानी की तरफ़ मुंह फैलाये कि वह उसके मुंह तक पहुंच जाये[10] वह न पहुंचेगा। और काफ़िरों की दुआ़एँ सरासर गुमराही है १५. और अल्लाह की फ़रमांबरदारी (में सज्दा) तमाम आसमान वाले और ज़मीन वाले (कुछ नेक दिल) प्रसन्नता से और (कुछ बुरे लोग) अप्रसन्नता से करते हैं और उन के साए भी सुबह व शाम सज्दा करते हैं। १६. (इसलिये) तू (स्पष्ट शब्दों में) पूछ कि आसमानों और ज़मीनों का परवरदिगार कौन है? (तू स्वयँ ही) कह! अल्लाह ही है[11]। तू कह! क्या फिर भी तुम ने अल्लाह के अलावा ऐसे वली बना रखे हैं

....

७. एक हदीस में है कि अल्लाह ने फ़रमाया: मुझे मेरी इज़्ज़त व जलाल और अर्श की बड़ाई की क़सम! जिस गाँव, बस्ती और घर वाले मेरी अवज्ञा करते हों और फिर वे मेरी आज्ञा मानने लग जायें तो मैं उनको अपने अज़ाब से दूर और अपनी रहमत से ज़रूर ही ढाँप लूँगा (इब्ने कसीर) जो क़ौम अपनी हालत खुद से नहीं बदलती अल्लाह भी उसकी हालत को सुधारने की कोशिश नहीं करता। इस आयत में अल्लाह के इन्हीं नियमों को बयान किया है।

८. शाने नुज़ूल :- अ़रब के मुश्रिकों की बेदीनी की भी कोई सीमा न थी। एक शख़्स को नसीहत करने के लिये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कुछ सहाबा को भेज दिया। उन लोगों ने उसे नसीहत की तो बजाए मानने के अकड़ कर बोला कि अच्छा यह तो बताओ कि जिस ख़ुदा की तरफ़ तुम हमें बुलाते➲

➲हो वह किस वस्तु से बना है? सोने से अथवा चाँदी से? सहाबा को उस का प्रश्न बहुत बुरा लगा और वे लोग वहाँ से वापस चले आये और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूरी कहानी सुनायी। आप ने पुनः उन लोगों को भेजा और कहा कि इस-इस प्रकार से समझाओ। फिर भी वह पहले ही की तरह पेश आया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तीसरी बार भी जाओ। सहाबा गये और उसे समझाया लेकिन फिर भी वह पहली और दूसरी मर्तबा की तरह पेश आया। सहाबा कहते हैं कि हम लोग अभी उठ के घर से चलने की तैयारी ही कर रहे थे कि इतने में एक बादल उस के मकान के ऊपर आया और गरजा, उन में से एक बिजली उस के ऊपर गिरी और वह वहीं जल कर राख हो गया।

सहाबा बयान करते हैं कि उस की हलाकत की ख़ुश्ख़बरी सुनाने के लिए हम लोग उस के घर से निकले कि कुछ सहाबा रास्ते में मिल गये। वे लोग हम सब को मुबारक बाद देने लगे कि तुम लोगों का दुश्मन तो हलाक हो गया। हम लोगों ने कहा कि अभी तो हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास भी नहीं पहुंचे और न ही किसी को सूचना दी है और न ही हम लोगों के अ़लावा किसी को उसके मरने की ख़बर है, तो फिर आप लोगों को कैसे मालूम हुआ? उन्होंने उत्तर दिया कि अभी-अभी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर यह आयत नाज़िल हुई है और आपने हमें बताया है।

९. अक्सर उलमा का कहना है कि 'रअ़्द' एक फ़रिश्ते का नाम है। इमाम अहमद बिन हंबल रह० ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर से एक रिवायत नक़ल की है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब बादल की गरज और चमक देखते तो यह दुआ़ पढ़ा करते थे: अल्लाहुम्म ला तक़्तुलना बि-ग़-ज़बि-क वला तुह्लिकना बि-अ़ज़ाबि-क वआ़फ़िना क़ब्-ल ज़ालि-क (ऐ हमारे रब! हम को अपने ग़ज़ब से क़त्ल न करना और अपने अ़ज़ाब से न हलाक करना और इस के क़ब्ल हमें आ़फ़ियत देना) (तिर्मिज़ी)

१०. हज़रत अ़ली रज़ि० फ़रमाते हैं कि जैसे कोई ऐसे कुँयें से पानी लेने की कोशिश करे जो गहरा हो और वहाँ तक हाथ न पहुंच रहा हो, तो जब पानी तक उस का हाथ ही न पहुंचेगा, तो मुंह में पानी कैसे जायगा? इमाम मुजाहिद फ़रमाते हैं कि इस की मिसाल ऐसी है कि एक बे वक़ूफ़ प्यासा मुंह खोल कर पानी माँग रहा है और हाथ भी पसारे हुये है तो पानी उसके मुंह में कैसे जायेगा? ऐसे ही अल्लाह के अ़लावा दूसरों को पुकारने वालों की मिसाल है कि जिनको ये लोग पुकारते हैं वे क़ियामत तक इन को जवाब नहीं दे सकते (इनकी माँग पूरी नहीं कर सकते)

आजकल नाम के मुसलमान जो क़ब्रों और दर्गाहों से माँगते हैं, इन की भी मिसाल बिल्कुल ऐसी ही है। ग़ैरुल्लाह को पुकारने वालों और क़ब्रों को पुकारने वालों में कोई अन्तर नहीं है।

११. यानी ईमान वाले तो हर वक़्त उस की इताअ़त व फ़रमांबरदारी में लगे रहते हैं, लेकिन ये बेईमान केवल मुसीबत के समय ही याद करते हैं और बिल्कुल इस तरह हो जाते हैं कि उन के साये भी अल्लाह के सामने सज्दे में होते हैं यानी उनके साए जो इधर उधर सूरज की रोशनी में घूमते नज़र आते हैं वे इस बात की तरफ़ इशारा करते हैं कि हम और हमारी अस्ल किसी दूसरी हस्ती से प्रभावित है न कि अल्लाह से यही उस का सज्दा है। (सनाई)

उलमा व बुज़ुर्गाने दीन इस आयत पर सज्दा में सर झुका देते हैं, उन के दिल पानी हो जाते हैं और अल्लाह के जलाल में पिघलने लगते हैं और सच्च व झूठ से देखते हैं लेकिन ज़ाहिलों की समझ से दूर है। एक हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जुहुर की सुन्नतों के बयान में सूरः नह्ल की आयत न० ४८ को पढ़ा। उसमें भी यह ज़िक्र है कि हर चीज़ का साया भी अल्लाह को सज्दा करता है।

دُوۡنِهٖۤ اَوۡلِيَآءَ لَا يَمۡلِكُوۡنَ لِاَنۡفُسِهِمۡ نَفۡعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ قُلۡ هَلۡ يَسۡتَوِى الۡاَعۡمٰى وَالۡبَصِيۡرُ ۙ اَمۡ هَلۡ تَسۡتَوِى الظُّلُمٰتُ وَالنُّوۡرُ ۚ اَمۡ جَعَلُوۡا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوۡا كَخَلۡقِهٖ فَتَشَابَهَ الۡخَلۡقُ عَلَيۡهِمۡ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَىۡءٍ وَّهُوَ الۡوَاحِدُ الۡقَهَّارُ ۝١٦ اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتۡ اَوۡدِيَةٌ ۢ بِقَدَرِهَا فَاحۡتَمَلَ السَّيۡلُ زَبَدًا رَّابِيًا ؕ وَمِمَّا يُوۡقِدُوۡنَ عَلَيۡهِ فِى النَّارِ ابۡتِغَآءَ حِلۡيَةٍ اَوۡ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثۡلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ يَضۡرِبُ اللّٰهُ الۡحَـقَّ وَالۡبَاطِلَ ؕ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذۡهَبُ جُفَآءً ۚ وَاَمَّا مَا يَنۡفَعُ النَّاسَ فَيَمۡكُثُ فِى الۡاَرۡضِ ؕ كَذٰلِكَ يَضۡرِبُ اللّٰهُ الۡاَمۡثَالَ ۝١٧ لِلَّذِيۡنَ اسۡتَجَابُوۡا لِرَبِّهِمُ الۡحُسۡنٰى ؕ وَالَّذِيۡنَ لَمۡ يَسۡتَجِيۡبُوۡا لَهٗ لَوۡ اَنَّ لَهُمۡ مَّا فِى الۡاَرۡضِ جَمِيۡعًا وَّمِثۡلَهٗ مَعَهٗ لَافۡتَدَوۡا بِهٖ ؕ

जो अपने लिये भी हानि और लाभ का इख़्तियार नहीं रखते (यह खुला अन्धा पन है) तू पूछ कि भला अन्धा और सवाँखा बराबर हैं या (नहीं) अँधेरे और रोशनी बराबर होते हैं[१२]? जिन लोगों को उन्होंने अल्लाह का साझी बना रखा है क्या उन्होंने भी अल्लाह जैसी कोई मख़्लूक़ बनाई है? मख़्लूक़ात उन पर मुश्तबह (गडमड) हो गयी है। तू कह कि अल्लाह ही सब चीज़ों का पैदा करने वाला है और वही अकेला सब पर ज़बरदस्त ग़ालिब है १७. वही हमेशा आसमान से पानी उतारता है जिससे नदी-नाले अपनी -अपनी वुसअ़त के मुताबिक़ बहते हैं फिर बहता हुआ पानी झाग को ऊपर उठा लेता है[१३]। और जिस चीज़ पर लोग ज़ेवर या सामान बनाने के लिये आग जलाते हैं उस में भी उसी (बहने वाले पानी की) तरह झाग होता है (जो ख़ालिस सोने पर ग़ालिब आता है) अल्लाह सच्च और झूठ बयान करता है। फिर (इस का परिणाम यह होता है कि) झाग दूर हो जाता है और जो वस्तु लोगों के लिये लाभदायक होती है वह ज़मीन में ठहरी रहती है। इसी प्रकार अल्लाह लोगों के समझाने को उदाहरण (और कहावतें) बतलाता है १८. जो लोग उस (यानी अपने रब) का कहा मानते हैं उन्हीं के लिये बेहतरी (और अन्जाम बख़ैर) है। और जो लोग अपने रब का कहा नहीं मानते (उनकी ऐसी बुरी गत होगी कि) अगर दुनिया का तमाम माल और उसी जितना और माल उनको हासिल हो सके तो (उस तक्लीफ़ से दूर छूटने को वे सारे का सारा) बदले में दे देना मन्जूर करेंगे

....

१२. बात यह है कि दुनिया की तमाम मख़्लूक़ रब के एक होने पर दलील पेश करती हैं और उस की कुव्वत-ताक़त की तरफ़ इशारा करती हैं। इन्सान अगर केवल इन्हीं को देख ले तो तौहीद यानी अल्लाह के एक होने को मान ले। ईमान वाले इन्हीं मख़्लूक़ को देख कर ईमान लाते हैं और काफ़िरों को कुछ नज़र ही नहीं आता इसीलिये वे अन्धे हैं। एक हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआ़ला ➲

ने मख़्लूक़ को तारीकी में पैदा किया, फिर उन पर नूर छिड़का तो जिस पर वह नूर पड़ा वह सीधी राह देखेगा और जिस पर नहीं पड़ा वह नहीं देखेगा और गुमराह होगा। (मवाहिब)

१३. यानी सैलाब के पानी में दो चीज़ें होती हैं (१) ख़ालिस पानी (२) झाग वग़ैरह। तो झाग तो ऊपर रहता है और पानी उस के नीचे दबा होता है यह मिसाल तो पानी की थी। दूसरी मिसाल आग की है कि सोना-चाँदी ज़ेवर बनाने के लिये जो पिघलाते हो उस में भी मैल-कुचैल ऊपर आ जाता है और असली (शुद्ध) धात नीचे होती है तो असल पानी और असल धात तो हक़ की मिसाल है और पानी के ऊपर का झाग कूड़ा-करकट और धात के ऊपर का मैल बातिल की मिसाल है। जिस प्रकार पानी का बहाव झाग को किनारे डाल देता है और धात का मैल निकाल कर फेंक दिया जाता है, बिल्कुल यही हाल हक़ और बातिल का है कि अगर्चे बातिल देखने में ऊँचा और ग़ालिब नज़र आये लेकिन कुछ समय के बाद झाग की तरह उसे भी बर्बाद होना है और हक़ को असल धात की तरह बाक़ी रहना है। (मवाहिब)

इस आयत में कुदरती उसूल भी बताया गया है कि नाकारा और ख़राब चीज़ें एक दिन समाप्त हो जाती हैं, क्योंकि इस दुनिया को उन चीज़ों की ज़रूरत है जो लाभ पहुंचाने वाली हों, दीन इस्लाम की मिसाल ख़ालिस सोने की सी है और दूसरे धर्मों की झाग और मैल-कुचैल की सी है। दीन इस्लाम को बाक़ी रहना है और दूसरे धर्मों को मिट जाना है। (राज़)

أُولَٰٓئِكَ لَهُمْ سُوٓءُ الْحِسَابِ ۙ وَمَأْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَ
بِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٨﴾ أَفَمَنْ يَّعْلَمُ أَنَّمَآ أُنْزِلَ إِلَيْكَ
مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمٰى ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ
أُولُوا الْأَلْبَابِ ﴿١٩﴾ الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا
يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ﴿٢٠﴾ وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ أَمَرَ اللّٰهُ
بِهٖٓ أَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُوْنَ سُوٓءَ
الْحِسَابِ ﴿٢١﴾ وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَ
أَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَأَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً
وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولَٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى
الدَّارِ ﴿٢٢﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ
اٰبَآئِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ
عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ

उन्हीं के लिये बुरा हिसाब होगा और उन का (अन्तिम) ठिकाना जहन्नुम है और वह बहुत बुरी जगह है (क्योंकि वे जान-बूझ कर अन्धे बने) १९. तो क्या फिर जो लोग तेरी तरफ़ उतारे गये कलाम (यानी कुरआन) को हक़ जानते हैं (क्या) वे (उन) अन्धों की तरह हैं (जिन्होंने अपनी उम्र को बेकार बर्बाद किया) अक़्लमन्द ही नसीहत पाते हैं[14] २०. जो अल्लाह के वायदों को पूरा करते हैं और अ़हद नहीं तोड़ते[15] २१. और अल्लाह ने जिन संबन्धों को जोड़ने का आदेश दिया है उन को मिलाते हैं और अपने परवरदिगार से डरते हैं और वे हिसाब की ख़राबी से डरते हैं २२. और वे लोग जो अपने परवरदिगार की रज़ा हासिल करने के लिये सब्र करते हैं और नमाज़ अदा करते हैं और जो कुछ हम ने उन को दिया है उस में

عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٢﴾ وَالَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ

से (थोड़ा बहुत) छुपे और ज़ाहिर (मगर इख़्लास से अल्लाह की राह में) ख़र्च करते हैं और बुराई के बजाए नेकी करते हैं ऐसे (ही) लोगों के लिए अन्जाम बख़ैर है २३. (यानी) हमेशा के बाग़ हैं जिन में वे दाख़िल होंगे और जो उन के बुज़ुर्गों (बाप-दादा इत्यादि) और बीवी-बच्चों में नेक होंगे (वे भी उन के साथ वहाँ मौजूद होंगे) और फ़रिश्ते उन पर हर दरवाज़े से दाख़िल हुआ करेंगे। २४. (और कहेंगे कि) तुम पर सलामती है क्योंकि तुम ने दुनिया में सब्र किया पस (तुम्हारा) अन्जाम बख़ैर हुआ २५. और (उनके मुक़ाबले में यानी) जो अल्लाह के साथ मज़बूत वायदा करने के बाद (भी) वायदा ख़िलाफ़ी करते हैं[१६]

....

१४. बुद्धिमान (अक़्लमन्द) कौन है? यह एक प्रश्न है। यूँ तो हर इन्सान अक़्लमन्द होने का दावा करता है। लेकिन अक़्लमन्द वह है जो आने वाले दिनों की बेहतरी और भलाई के लिये सोचे। और ज़बान से और अ़मल से अल्लाह के अपने बन्दे होने का इक़रार करे और अल्लाह से अपने किये हुए वायदों को पूरा करे वह अक़्लमन्द है। जो मातहत अपने अफ़सर से और नौकर अपने मालिक से बिगाड़ न पैदा करे वह अक़्लमन्द है।

इसी प्रकार जो अल्लाह से वायदा करते हैं उसे पूरा करते हैं, मख़्लूक़ से वायदा नहीं तोड़ते, जिन से अल्लाह ने संबन्ध जोड़ने का हुक्म दिया है उन से संबन्ध जोड़ते हैं, इन्सानों के हुक्म को पूरा करते हैं, ग़रज़ यह है कि हर प्रकार के मज़हबी, क़ौमी और पड़ौस के रिश्ते को मज़बूत करते हैं, वे अक़्ल वाले हैं। जो अल्लाह की इबादत और इताअ़त करते हैं उस के भेजे हुये रसूलों का पालन करते हैं फिर भी डरते रहते हैं कि कहीं कोई कमी न रह जाये इसलिये अल्लाह से तौबा करते रहते हैं। सब्र और नमाज़ के बाद मख़्लूक़ से भलाई करते हुये खुले-छुपे ख़ैरात करते रहते हैं। मुख़्तसर यह है कि अक़्ल वाले वे लोग हैं जो अपने ख़ालिक़ और मख़्लूक़ के साथ अच्छा सुलूक और बर्ताव करते हैं जैसा कि सुलूक और बर्ताव का हुक्म दिया गया है। (सनाई)

१५. सही हदीस की रोशनी में वायदा का पूरा करना ईमान की अ़लामत है। अल्लाह तआ़ला सब को तौफ़ीक़ दे।

१६. यानी जो लोग ज़बान से अल्लाह की इबादत और उसकी इताअ़त का दम भरते हैं मगर मतलब पूरा हो जाने के बाद वायदा तोड़ देते हैं और इस घमन्ड में होते हैं कि हम मालदार हैं इसलिये जो चाहें करें। अल्लाह को हमारे सारे काम पसन्द हैं इसलिये तो उस ने हमें धनवान बनाया है। हालाँकि बात ऐसी नहीं है। वह क्यों किसी को धन-दौलत देता है और किसी को नहीं? यह वही बेहतर जानता है और फिर धन व माल का देना यह मान-सम्मान का चिन्ह भी नहीं है। इन पागलों का यह ख़्याल है कि जिस प्रकार हम इस दुनिया में मौज कर रहे हैं, आख़िरत में भी ऐसे ही रहेंगे, यह बहुत बड़ा धोखा है।

....

مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَ
يُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ ۙ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ
سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ

और जिन संबन्धों को अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है उन को तोड़ते हैं और मुल्क में अकारण फ़साद करते हैं (बिला वजह लोगों को सताते हैं) ऐसे ही लोगों पर लानत है और उनका का अन्जाम बुरा है ➲

يَقۡدِرُ ؕ وَفَرِحُوۡا بِالۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ؕ وَمَا الۡحَيٰوةُ الدُّنۡيَا فِى الۡاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ۝ وَيَقُوۡلُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لَوۡلَاۤ اُنۡزِلَ عَلَيۡهِ اٰيَةٌ مِّنۡ رَّبِّهٖ ؕ قُلۡ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنۡ يَّشَآءُ وَيَهۡدِىۡۤ اِلَيۡهِ مَنۡ اَنَابَ ۝ اَلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَتَطۡمَٮِٕنُّ قُلُوۡبُهُمۡ بِذِكۡرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكۡرِ اللّٰهِ تَطۡمَٮِٕنُّ الۡقُلُوۡبُ ۝ اَلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوۡبٰى لَهُمۡ وَحُسۡنُ مَاٰبٍ ۝ كَذٰلِكَ اَرۡسَلۡنٰكَ فِىۡۤ اُمَّةٍ قَدۡ خَلَتۡ مِنۡ قَبۡلِهَاۤ اُمَمٌ لِّتَتۡلُوَا۟ عَلَيۡهِمُ الَّذِىۡۤ اَوۡحَيۡنَاۤ اِلَيۡكَ وَهُمۡ يَكۡفُرُوۡنَ بِالرَّحۡمٰنِ ؕ قُلۡ هُوَ رَبِّىۡ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيۡهِ تَوَكَّلۡتُ وَاِلَيۡهِ

२६. अल्लाह जिस के बारे में चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिस को चाहता है तंग कर देता है। और दुनिया की ज़िन्दगी (की मौज-मस्ती) से (बहुत) खुश हो रहे हैं, हालाँकि दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में महज़ बे हक़ीक़त चीज़ है २७. और काफ़िर (बार-बार यही) कहते हैं कि क्यों उस के परवरदिगार की तरफ़ से उस पर कोई निशानी नहीं उतरी[१७] (जो हम चाहते हैं वह क्यों नहीं दिखाता) तू कह कि अल्लाह जिस को चाहता है गुमराह कर देता है और जो उसी की तरफ़ झुकते हैं उन को हिदायत करता है २८. (यानी) उन लोगों को (ख़ैर की तौफ़ीक़ मिलती है) जो (अल्लाह पर) ईमान लाते हैं और उन के दिल अल्लाह की याद से तसल्ली पाते हैं[१८]। सुन रखो (साफ़-सुथरे) दिल अल्लाह की याद से तसल्ली पाया करते हैं २९. (सो) जो लोग ईमान लाये और नेक अ़मल किये उन के लिये (आख़िरत में) खुशहाली और बेहतर ठौर-ठिकाना है[१९] ३०. इसलिये हम ने तुझे उस क़ौम में रसूल बना कर भेजा जिस से पूर्व कई पुश्तें उन पर गुज़र गयीं हैं ताकि जो (कलाम) तेरी तरफ़ हमने वह्यि की है तू उन को पढ़ कर सुनाये और वे लोग (अल्लाह सारे जहानों के मालिक से जिस का नाम) रहमान (है उस) से इन्कारी हैं। तू कह कि वह मेरा परवरदिगार है उस के अलावा कोई माबूद नहीं, मेरा भरोसा उसी पर है और उसी की तरफ़ मेरा लौटना है।

....

१७. 'उस पर कोई निशानी क्यों नहीं उतरी' मुश्रिकीन सैंकड़ों निशानात रोज़ देखते थे लेकिन फिर भी मुतालिबे पर मुतालिबा किये चले जाते थे। जैसे वे कहते कि अगर तुम नबी हो तो मक्का के फ़लाँ पहाड़ को अपने स्थान से हटा दो ताकि खेती-बाड़ी के लिये हम लोगों को ज़मीन मिल जाये। ज़मीन से चश्मे और नदियाँ बहा दो ताकि उस से खेती सैराब कर सकें। हमारे बाप-दादों को जीवित कर के उन से बात करा दो। मतलब यह था कि कोई ऐसा चमत्कार हमें दिखाओ जो ईमान लाने पर मजबूर कर दे। इनकी माँग पर यह कहा कि तुम्हारी माँग पूरी करना बहुत आसान है और अल्लाह चमत्कार दिखाने की कुदरत रखता है, लेकिन हिक्मत का तक़ाज़ा यह है कि न दिखाया जाये। इसलिये कि जो क़ौम चमत्कार देखने के पश्चात ईमान नहीं लाती वह हलाक कर दी जाती है।

हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह ने फ़रमाया: "ऐ रसूल! सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अगर तुम चाहो तो इन की माँग पर हम निशानी (चमत्कार) दिखा दें। लेकिन याद रखें कि अगर न माना तो उन पर ऐसा अज़ाब

➲भेजेंगे जो दुनिया में किसी क़ौम पर नहीं भेजा। अगर तुम चाहो तो रहमत और तौबा का दरवाज़ा खुला रखें और चाहो तो चमत्कार दिखा कर बन्द कर दें। आप ने पहली शर्त मन्जूर फ़रमाई, चुनान्चे यही आज के न मानने वाले कल को इस्लाम ले आये। (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)

१८. 'अल्लाह के ज़िक्र से तसल्ली पाते हैं' सब से बड़ा ज़िक्र तो कुरआन मजीद है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: "हम ने ज़िक्र को नाज़िल किया है और हम ही उस ज़िक्र की सुरक्षा करने वाले हैं" (सूरः हिज्र, आयत न० ९) इस कुरआन को पढ़ कर उन के दिलों में यक़ीन की कैफ़ियत पैदा होती है। शुब्हे और शैतान के वसवसे ख़त्म हो जाते हैं और सुकून हासिल होता है। एक तरफ़ अल्लाह की बुज़ुर्गी और बड़ाई उन के दिलों में अल्लाह का ख़ौफ़ पैदा करती है तो दूसरी तरफ़ उस की रहमत व मग़्फ़िरत उन के दिलों को सुकून बख़्शती है और उन का दिल हर ओर से फिर जाता है (मुवज़्ज़िहुल-फ़ुर्क़ान)

१९. मौलाना अमृतसरी मर्हूम ने "तूबा" का तर्जुमा "खुशहाली" से किया है। इसी के अन्दर जन्नत का वह पेड़ भी आ गया है जिसे हदीस में "तूबा" कहा गया है।

مَتَابِ ۝ وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ
قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ۭ بَلْ لِّلّٰهِ
الْاَمْرُ جَمِيْعًا ۭ اَفَلَمْ يَايْــــَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ لَّوْ
يَشَاۗءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ۭ وَلَا يَزَالُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ
قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا
يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ
قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۣ فَكَيْفَ
كَانَ عِقَابِ ۝ اَفَمَنْ هُوَ قَاۗىِٕمٌ عَلٰي كُلِّ نَفْسٍۢ بِمَا
كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَاۗءَ ۭ قُلْ سَمُّوْهُمْ ۭ اَمْ
تُنَبِّــــُٔـوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ
الْقَوْلِ ۭ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا
عَنِ السَّبِيْلِ ۭ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝

३१. और अगर कुरआन (की बरकत) से पहाड़ भी अपने स्थान से हिलाये जायें, या ज़मीन चीर दी जाये, या मुर्दे बुलाये जायें (तो ऐसे चमत्कार देख कर भी ये लोग न मानेंगे) बल्कि अख़्तियार सब कामों का अल्लाह ही को है। तो क्या मुसलमानों को यह भी मालूम नहीं हुआ कि अगर अल्लाह चाहता तो सब लोगों को हिदायत कर देता (मगर यह उस की हिक्मत है कि अख़्तियारी कामों में जब्र नहीं किया करता) और जो लोग इन्कारी हैं उन की करतूतों के बदले में उन को हमेशा तकलीफ़ पहुंचती रहेगी, या उन बस्तियों के क़रीब-क़रीब नाज़िल होती रहेगी (जिस से वे भी हर समय डरे रहेंगे) जब तक अल्लाह का वायदा आ पहुंचे। बेशक अल्लाह वायदा ख़िलाफ़ी कभी नहीं करेगा[२०] ३२. तुझ से पहले कई एक रसूलों की हंसी उड़ाई गयी फिर मैं (अल्लाह) ने काफ़िरों को मोहलत दी (मगर वे बाज़ न आये) तो मैंने उन को ख़ूब पकड़ा फिर मेरा अ़ज़ाब कैसा हुआ[२१]। ३३. क्या वह अल्लाह जो हर नफ़्स के कर्मों (का बदला देने) पर कुदरत रखने वाला है (उसे छोड़ बैठे हैं?)➲

➲और उन्होंने साझी बना रखे हैं? तू कह कि (भला) उन का नाम तो मुअ़य्यन (सुनिश्चत) करो, क्या अल्लाह को ऐसी क़ौमों के बारे में सुनिश्चत करना चाहते हो जिन को वह ज़मीन (के वाक़िअ़ात) में नहीं जानता या निरी बे बुनियाद बातें बना रहे हो। बल्कि काफ़िरों को अपनी चालाकियाँ भी भली मालूम होती हैं और वे (हक़ीक़ी) राह से रुके हुये हैं।और जिस को अल्लाह गुमराह करे उस के लिये कोई भी हिदायत देने वाला नहीं हो सकता।

....

२०. शाने-नुज़ूल :- इस आयत का शाने-नुज़ूल हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० और दीगर उलमा ने यह बयान किया है कि अबू जेहल, अ़ब्दुल्लाह बिन उमय्या और कुछ दूसरे काफ़िर एक दिन हरम में बैठे हुये गप्पें मार रहे थे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आ गये। आपने उन सब को इस्लाम की दावत दी। इस पर इब्ने उमय्या ने कहा कि अगर आप यह चाहते हैं कि हम इस्लाम ले आयें तो आप को हमारे यह मुतालबे पूरे करने होंगे (१) यह जो मक्का में चारों ओर पहाड़ खड़े हैं उन्हें इसी प्रकार अपने स्थान से हटा दो जिस प्रकार हज़रत दाऊद के ज़बूर पढ़ने से पहाड़ चलने लगते थे। इससे हम लोगों को लाभ होगा कि खेती-बाड़ी करने के लिये ज़मीन निकल आयेगी। (२) मक्का में पानी का अकाल है, इसलिये तुभ दो-चार चश्मे नदियाँ जारी कर दो ताकि हम लोगों के कष्ट दूर हो जायें और खेती-बाड़ी की सिंचायीं भी कर सकें (३) जिस प्रकार हज़रत सुलैमान के कहने में हवा थी, इसी प्रकार उसे हमारे ताबेअ़ कर दो ताकि तुरन्त जिस वस्तु की हमें ज़रूरत हो दूसरे मुल्क से दौड़ कर ले आयें। (४) जिस प्रकार हज़रत ईसा मुर्दों को जीवित कर दिया करते थे तुम भी हमारे बाप-दादा को जीवित कर दो ताकि वे आकर तुम्हारे नबी होने की तस्दीक़ कर दें। इस पर यह आयत नाज़िल हुई।

'यहाँ तक कि अल्लाह का वायदा आ पहुंचे' (आयत ३१) का इशारा बद्र की लड़ाई की तरफ़ भी हो सकता है जिस में कुफ़्फ़ार के बड़े-बड़े महारथी मारे गये और मरते ही आख़िरत के अज़ाब में गिरफ़्तार हुये और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उन के शवों पर खड़े होकर फ़रमाया कि अब तो अल्लाह ने तुम्हारा वायदा सच्च कर दिखाया (अहसनुत्तफ़ासीर)

२१. इस आयत में अल्लाह ने अपने रसूल को तसल्ली दी है कि आप क़ौम के बुरे बर्ताव पर रन्जीदा न हों इसलिये कि आप से पूर्व के सन्देष्टाओं के साथ भी यही कुछ बर्ताव किया गया है। मैंने आरंभ में उन को ढील दी लेकिन बाद में उन को जड़ से उखाड़ कर फेंक दिया और उन का नाम व निशान तक बाक़ी न रहा। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआ़ला ज़ालिम को शुरू में ढील देता है फिर वह अत्याचार में और मस्त हो जाते हैं तो अचानक उन को दबोच लेता है और वह अचम्भे में रह जाता है। और फिर उन को कुछ भी सुझाई नहीं देता फिर आप ने इसी आयत ३२ की तिलावत फ़रमाई (बुख़ारी, मुस्लिम)

---

३४. ऐसे लोगों के लिये दुनिया में भी अज़ाब है और आख़िरत का अज़ाब तो बहुत ही सख़्त है, और न कोई अल्लाह के अज़ाब से उन को बचाने वाला होगा, ३५. उस जन्नत का नक़्शा (चित्र) जिसका ➲

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ
وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ
وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ط تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ط اُكُلُهَا

دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ؕ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖ وَّعُقْبَى
الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ﴿۳۵﴾ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ
بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ؕ
قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ؕ
اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ﴿۳۶﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ
حُكْمًا عَرَبِيًّا ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ مَا
جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا
وَاقٍ ﴿۳۷﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا
لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ؕ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ
يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ﴿۳۸﴾

➲परहेज़गारों से वायदा किया गया है यह है कि उस के दरख़्तों के तले नहरें जारी हैं उन के फल और छाया दाइमी हैं[२२]। यह अन्जाम तो परहेज़गारों का होगा और काफ़िरों का अंजाम जहन्नम की आग है (पस जो चाहे जिस गिरोह में से होना पसन्द करे) ३६. और जिन लोगों को हम ने किताब दी है वे तेरी तरफ़ उतारी हुयी किताब (यानी कुरआन मजीद के सुनने) से प्रसन्न होते हैं और बाज़ उन गिरोहों में उसके कुछ हिस्से से (जो कि कुफ़्, शिर्क, बुतपरस्ती, क़ब्रपरस्ती और बुरे कामों के रद्द से संबधित हैं[२३]) इन्कारी भी हैं। तू कह: मुझे तो केवल यह आदेश है कि अल्लाह की इबादत करूँ और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराऊँ: उसी की ओर तुम को बुलाता हूँ और उसी की ओर मेरा लौटना भी है ३७. और इसीलिये हम ने उस को अ़रबी आदेश उतारा है। और अगर मान लें कि तेरे पास इल्म पहुंच चुकने के बाद तू उन की ख़्वाहिशों पर चला तो (तेरी भी ख़ैर न होगी और ऐसी बला में तू फंसेगा कि) अल्लाह के नज़दीक न तेरा कोई दोस्त होगा और न बचाने वाला (जो उस बला से तुझे बचा सके) ३८. और हम ने तुझ से पहले कई एक रसूल भेजे हैं और उनको बीवियाँ भी दीं हैं और औलाद भी[२४] (और ये बातें रिसालत के ख़िलाफ़ नहीं हैं) और किसी रसूल की शान नहीं कि अल्लाह के हुक्म के अ़लावा कोई निशान दिखा सके (हर चीज़ का अख़्तियार उसी को है) हर काम के लिये समय लिखा हुआ है।

....

२२. मुसनद अबू याला की रिवायत में हज़रत उबय्यि बिन कअ़ब बयान फ़रमाते हैं कि हम सहाबा आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ जुहर की नमाज़ अदा कर रहे थे। अचानक आप नमाज़ ही की हालत में आगे बढ़े गोया किसी चीज़ को लेना चाहते हों। सहाबी कहते हैं कि हम लोग भी आगे बढ़ गये। फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पीछे अपने स्थान पर आ गये। नमाज़ के बाद जब हम लोगों ने आप के आगे बढ़ने के मुताल्लिक़ पूछा तो आपने फ़रमाया: मेरे सामने जन्नत पेश की गयी थी जो भली-भान्ति महक रही थी। मैंने चाहा कि आगे बढ़ कर उस में से अंगूर तोड़ लाऊँ, लेकिन मेरे और उस के दर्मियान आड़ पैदा कर दी गयी। अगर मैं उसे तोड़ लाता और उसे पूरी दुनिया के लोग भी मिल कर खाते तो भी ख़त्म न होती। एक सहाबी ने पूछा कि क्या जन्नत में अंगूर भी होंगे? आपने फ़रमाया हाँ। उन्होंने मालूम किया कि कितने बड़े होंगे? आपने फ़रमाया कि इतने बड़े होंगे कि अगर एक कौआ एक महीने तक उड़ता रहे फिर भी उस के आगे नहीं निकल सकता। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह भी फ़रमाया कि जन्नती लोग खायेंगे-पियेंगे लेकिन न तो थूक निकलेगा,➲

न नाक बहेगी और न ही पाख़ाना-पेशाब की हाजत होगी (तफ़सीर मुहम्मदी)

२३. 'उस के कुछ हिस्से का इन्कार करते हैं' यानी वे आदेश जो उन के अ़मल के ख़िलाफ़ हैं उन को पसन्द नहीं करते। यहूद व नसारा भी कुरआन की उन बातों को नहीं मानते जो उन की शरीअ़त के ख़िलाफ़ हैं कुछ उलमा का कहना है कि इन से मक्का के मुश्रिक और काफ़िर लोग मुराद हैं। और कुछ का यह कहना है कि प्रसन्न होने वालों से मुसलमान और अप्रसन्न होने वालों से काफ़िर मुराद हैं। जो यहूदी मुसलमान हो गये थे उन को भी इस बात से दुःख था कि कुरआन मजीद में रहमान का नाम बहुत कम आता था जबकि तौरात में यह शब्द बहुत अधिक प्रयोग हुआ है। चुनान्चे जब यह आयत "चाहे अल्लाह कह कर पुकारो या रहमान कह कर पुकारो जिस नाम से भी पुकारोगे सो उस के बड़े अच्छे-अच्छे नाम हैं" (बनी इस्राईल-११०) उतरी तो वे यहूदी प्रसन्न हो उठे।

आयत न० ३७ में मुख़ातब तो रसूल हैं मगर मुराद मुसलमान हैं। (मतलब यह है कि स्पष्ट आदेश आ जाने के बाद उस पर अ़मल न करना, बल्कि दूसरे की इच्छा पर अ़मल करना इतना बड़ा गुनाह है कि अगर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम (जिनका दर्जा सब से अफ़ज़ल है) भी ऐसा करें तो अल्लाह के अ़ज़ाब से नहीं बच सकते। इस आयत में उन अन्धे तक़लीद करने वालों को कड़ी चेतावनी दी गयी है जो कुरआन व हदीस के तर्क होते हुये भी अपने इमाम और मुजतहिद की रायों से चिमटे हुये हैं। (वहीदी)

२४. शाने नुज़ूल :- कुछ मुश्रिकों और यहूदियों का एतराज़ था कि नबी इतने विवाह नहीं करते। अगर यह भी नबी होते तो इतनी शादी न करते। इस पर यह आयत नाज़िल हुयी कि हम ने कई पैग़म्बर ऐसे भेजे जिनकी बहुत सारी बीवियाँ थीं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तो केवल नौ ही की हैं और वे भी हिक्मत के तहत। इस में दीन और दुनियाँ दोनों ही के फ़ायदे थे। अगर शहवत की नियत से करते तो जवानी में एक बूढ़ी विधवा ४० वर्षीय ख़दीजा से न करते। आज कल के यहूदी और ईसाई लोग भी इस पर ऐतराज़ करते हैं। उन को यह उत्तर देना चाहिये कि तुम हज़रत दाऊद और सुलैमान को तो नबी मानते ही हो तो उन्होंने बहुत सारी शादियां क्यों कीं।

इन लोगों को यह मालूम नहीं कि शरीअ़त फ़क़ीरी, दुर्वेशी और बीवी-बच्चों से अलग ज़िन्दगी गुज़ारने का नाम नहीं, बल्कि इस्लामी शरीअ़त में दीन-दुनिया दोनों शामिल हैं और यह प्रतिष्ठा अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा के बाद केवल नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ही को अ़ता फ़रमाई है कि आप ने दीन के साथ दुनिया की तकमील की। एक रिवायत में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बग़ैर शादी के ज़िन्दगी गुज़ारने को मना फ़रमाया है। और जब सहाबा ने फ़क़ीरी ज़िन्दगी गुज़ारने का इरादा किया तो आपने फ़रमाया निकाह मेरी सुन्नत है और मैं निकाह करता हूँ। जिसने मेरी इस सुन्नत से नफ़रत की वह मुझ में से नहीं (वहीदी)

يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚ وَعِنْدَهٗۤ اُمُّ
الْكِتٰبِ ﴿٣٩﴾ وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ
اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا
الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا

३९. अल्लाह ही जिसको चाहता है फ़ना कर देता है और जिस चीज़ को चाहता है मौजूद रखता है और अस्ल किताब उसी के पास है[२५] ४०. और अगर हम बाज़ उन कामों को जिनका हम उन से वायदा करते हैं तुझे भी दिखा दें या तुझे फ़ौत कर दें तो तेरे ज़िम्मे केवल तब्लीग़ है और हिसाब लेना

مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٤١﴾ وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ الْمَكْرُ جَمِيعًا ۖ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۗ وَسَيَعْلَمُ الْكُفَّارُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مُرْسَلًا ۚ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِندَهُ عِلْمُ الْكِتَابِ ﴿٤٣﴾

हमारा काम है (हम स्वयँ पूछ लेंगे) ४१. क्या ये देखते नहीं कि हम ज़मीन को चारों तरफ़ से दबाए चले आते हैं[२६]। और अल्लाह (जो चाहे) आदेश करता है उसके आदेश (का पीछा करने) वाला कोई नहीं। और वह बहुत जल्द बदला दे सकता है ४२. और इन से पहले के लोगों ने भी (सन्देष्टाओं के मुक़ाबले में) चाल बाज़ियाँ की थीं (मगर वह कुछ भी न कर सके) तमाम तदबीरें अल्लाह के क़ब्ज़े में हैं वह हर एक जानदार के कामों को जानता है। और काफ़िरों को मालूम हो जायेगा कि किस का अन्जाम बख़ैर है। ४३. और काफ़िर कहते हैं कि ऐ मुहम्मद! तू रसूल नहीं। तू उन से कह दे कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान अल्लाह गवाह काफ़ी है और (वे लोग भी) जिन के पास आसमानी किताब का इल्म है[२७]।

....

२५. जब यह आयत नाज़िल हुयी तो मक्का के काफ़िर कहने लगे कि जब सब कुछ पहले ही से लिखा हुआ है तो फिर तुम्हारी तब्लीग़ अकारण है। अल्लाह ने जैसा लिख दिया है अब तो वैसा ही होगा, तब यह आयत नाज़िल हुयी। इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने यह बताया कि हमें सब कुछ अख़्तियार है जैसा चाहें नया इन्तिज़ाम करें (वहीदी)

२६. 'हम ज़मीन को चारों ओर से दबाए चले आते हैं' एक रोज़ उसका क़ाफ़िया ऐसा तंग करेंगे कि देखने वाले कहेंगे कि यही वह मक्का है जहाँ मुसलमानों को सर छुपाने के लिये स्थान न मिलता था। चुनान्चे एक समय ऐसा आया कि मुसलमानों ने मक्का को दिन दहाड़े फ़तह कर लिया। याद रखें कि इन काफ़िरों के बुरे दिन आने वाले हैं (सनाई)

२७. 'जिन लोगों के पास आसमानी किताब है' वे भी मेरी इस बात के गवाह हैं, उन से भी पूछ लो, वे मुख़ालिफ़ होने के बावजूद शहादत (गवाही) देंगे। और अगर गवाही न देंगे तो ज़माना की रफ़्तार स्वयँ उन से कहलवा लेगी।

इस हदीस को विस्तार से पढ़ने के लिये सनाई- ४/२०३ ज़रूर पढ़ें। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम फ़रमाते हैं कि वह आयत "जिन लोगों के पास आसमानी किताब है" मेरे बाब में उतरी है। कुछ सहाबा ने भी उन के क़ौल की ताईद की है।

....

सूरः इब्राहीम् (14)

سُورَةُ إِبْرَاهِيمَ مَكِّيَّةٌ (١٤) (٧٢)
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
الٓر ۚ كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ

सूरः इब्राहीम मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुई। इसमें ५२ आयतें, ७ रुकूअ़, ८१३ कलिमे और ३४३४ हूरूफ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है।

१. अलिफ़-लाम्-रा¹ इस किताब को हम ने इसलिये उतारा कि तू (ऐ नबी) अल्लाह के हुक्म से लोगों को (बि दीनी के) अंधेरों से

....

१.'अलिफ़-लाम्-रा' इस का नाम "हुरूफ़ मुक़त्तआत" है। इस शब्द का अर्थ अल्लाह ही बेहतर जानता है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने इस शब्द का तर्जुमा "मैं अल्लाह हूँ और देखता हूँ" किया है। मौलाना अमृतसरी मर्हूम ने भी इसी तुर्जमे को पसन्द फ़रमाया है।

إِلَى النُّورِ ۙ بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَىٰ صِرَاطِ الْعَزِيزِ
الْحَمِيدِ ۝ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ ۗ وَوَيْلٌ لِلْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ۝
الَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ
وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ أُولَٰئِكَ
فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَسُولٍ إِلَّا
بِلِسَانِ قَوْمِهِ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ۖ فَيُضِلُّ اللَّهُ مَنْ يَشَاءُ
وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَلَقَدْ
أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا أَنْ أَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمَاتِ
إِلَى النُّورِ وَذَكِّرْهُمْ بِأَيَّامِ اللَّهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَاتٍ لِكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ

(दीनदारी के) नूर की तरफ़ निकाल कर ले चले (यानी) अल्लाह ग़ालिब तारीफ़ के योग्य की राह की तरफ़² २. जिसकी हुकूमत आसमान व ज़मीन की समस्त वस्तुओं पर है। और (इस का इन्कार करने वालों और) काफ़िरों के लिये सख़्त अ़ज़ाब से अफ़सोस है ३. जो दुनिया की ज़िन्दगी (के आराम) को आख़िरत (की नेमतों) पर तर्जीह देते हैं और (यही बातें कह कर) लोगों को (भी) अल्लाह की राह से रोकते हैं और इस (सीधी राह) में कजी सोचते रहते हैं। (ख़ाह-मख़ाह बेहूदा ऐतराज़ कर के) यही लोग दूर की गुमराही में हैं³ ४. और हम ने रसूल उस की क़ौम के मुबाहसा (वार्तालाप) पर भेजा है⁴ ताकि वह उन को स्पष्ट बयान (करके)

➲सुनाये फिर (इसका परिणाम यह होता रहा कि) जिस को अल्लाह चाहता है हिदायत करता है और जिस को चाहता है गुमराह करता है (ग़रज़) वह ग़ालिब बड़ी हिक्मत वाला है ५. और हमने मूसा को निशान देकर भेजा कि वह अपनी क़ौम को अंधेरों से नूर की तरफ़ ले चले और (फ़िरऔन से नजात दिलाने के बाद) उन को अल्लाह के अय्याम (यानी कुदरत के वाक़िआत) की याद दिला (जो गुज़रे हैं, क्योंकि) उन वाक़िआत (घटनाओं) में हर एक सब्बार (बहुत सब्र करने वाले) और शुक्रगुज़ार के लिये बड़ी-बड़ी निशानियाँ हैं ६. (याद करो) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि (ऐ भाइयो) अल्लाह की मेहरबानी को याद रखो जब उस ने तुम को फ़िरऔन की क़ौम के अ़ज़ाब से नजात दी जो तुम को बुरी तरह (तकलीफ़ और) अ़ज़ाब देते थे और तुम्हारी नरीना औलाद (बेटों) को ज़ब्ह कर डालते (कि कहीं ऐसा न हो कि बनी इस्राईल की बहूमत हो जाये)

....

२. 'नूर' से मुराद "सीधी राह" यानी दीन इस्लाम है जो केवल एक है। 'ज़ुलुमात' से मुराद ग़लत रास्ते हैं जो बेशुमार हैं। सीधी राह की इन्तिहा जन्नत है यानी सिराते मुस्तक़ीम जन्नत पर जा कर समाप्त होता है और तारीकी की तमाम राहों की इन्तिहा जहन्नम है। यानी सीधी राह को छोड़ कर सारी राहें जहन्नम पर जा कर ख़त्म होती हैं। दुनिया में दोनों ही राहों पर लोग चल रहे हैं। नूर की राह यानी दीन इस्लाम की राह अल्लाह पर ईमान उस पर भरोसा, रसूल की आज्ञा है। और तारीकी की राह अल्लाह और रसूल की अवज्ञा, दुनिया से मुहब्बत, ख़्वाहिश की पैरवी और बुरे काम हैं।

तिर्मिज़ी की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः 'वैल' दोज़ख़ में एक वादी है जिसके अन्दर काफ़िर सत्तर ख़रीफ़ तक चला जायगा। एक ख़रीफ़ सौ वर्ष तक चलते रहने की दूरी का नाम है। एक दूसरी हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "उस शख़्स के लिये वैल है जिस ने कुरआन मजीद से मुंह मोड़ा"। कुछ उलमा का कहना है कि इस स्थान पर 'वैल' का शब्द बद्दुआ के लिये आया है जैसे मोमिनों के लिये 'सलामुन् अ़लैकुम' आया है (मवाहिब)

३. यहाँ पर काफ़िरों का हाल बयान फ़रमाया है कि उन का ओढ़ना-बिछौना यही दुनिया है। आख़िरत के मुक़ाबले में से लोग इसी को पसन्द करते हैं और दूसरों को भी इसी की मुहब्बत में फंसा कर अल्लाह की राह से रोक देना चाहते हैं। इसलिये दिन-रात दीन में बुराईयां निकालते और सीधी राह को टेढ़ी साबित करते रहते हैं। ऐसे लोग हक़ीक़त में सीधी राह से भटक कर बहुत दूर जा पड़े हैं और अब इनके सीधी राह पर आने की कोई उम्मीद नहीं है अल्लाह की मार जब पड़ेगी तब इन की आंखें खुलेंगी (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)

४. अर्थात जिस प्रकार हम ने लोगों की हिदायत के लिये यह किताब (कुरआन) भेजा है, इसी प्रकार हर ज़माने में लोगों की हिदायत का सामान भेजते रहे हैं। चूंकि हर पैग़म्बर के अव्वल मुख़ातब उसी की क़ौम के लोग होते हैं जिस में वह पैग़म्बर भेजा जाता है, इसीलिये क़ौम की भाषा में वहिय भी भेजी जाती है, ताकि अल्लाह के आदेश को समझने-समझाने में सहूलत हो। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दावत पूरी दुनिया के लिये थी और तमाम इन्सान और जिन्नात उस के मुख़ातब थे फिर भी फ़ितरी तौर पर यही उचित था➲

कि जिस क़ौम में आप रसूल बनाये गए थे उसी क़ौम की भाषा में किताब नाज़िल की जाये ताकि वे सरलता पूर्वक समझ लें फिर चारों तरफ़ तब्लीग़ कर के पूरी दुनिया को उसी रंग में रंगने की कोशिश करें।

اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ۚ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ۝ وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنْ تَكْفُرُوْٓا اَنْتُمْ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۛ وَالَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۛ لَا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ ۭ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فِيْٓ اَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوْٓا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَاِنَّا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ۝ قَالَتْ رُسُلُهُمْ اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ قَالُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۭ

और तुम्हारी लड़कियों को जीवित रखते थे और इस (नजात देने) में अल्लाह की तुम पर बहुत बड़ी मेहरबानी हुयी ७. और जब तुम्हारे परवरदिगार ने जता दिया था कि अगर (मेरी नेमतों पर) शुक्र करोगे तो मैं तुमको और अधिक दूँगा और अगर ना शुक्री करोगे तो मेरा अ़ज़ाब बहुत ही सख़्त है[५] ८. और मूसा ने (अपनी क़ौम से यह भी) कहा था कि अगर तुम और तमाम दुनिया के लोग (अल्लाह की मेहरबानी की) ना शुक्री करें (तो अल्लाह का कुछ नहीं बिगड़ेगा क्योंकि) अल्लाह बे नियाज़ और तारीफ़ों वाला है[६] ९. क्या तुम्हें उन लोगों के वाक़िआ़त नहीं पहुंचे जो तुम से पहले गुज़रे हैं यानी नूह की क़ौम और आ़द और समूद की क़ौम और जो उन से पीछे हुये हैं जिन को अल्लाह के अ़लावा कोई नहीं जानता (उन का मुजमल {संक्षिप्त} बयान यह है कि[७]) उन के पास उन के रसूल चमत्कार ले कर आये तो उन्होंने (हैरानी से) अपने हाथ मुंह में डाल दिये (सख़्त गुस्से में चबाने लगे) और बोले कि जिन हुक्मों के साथ तुम भेजे गये हो हम उन सब से इन्कारी हैं और जिस काम की तरफ़ तुम हम को बुलाते हो हमें उस में बड़ा भारी शुब्हा है १०. रसूलों ने कहा कि अल्लाह के बारे में तुम्हें शक है? जो आसमानों और ज़मीनों को पैदा करने वाला है। तुम्हें बुलाता है कि तुम्हारे गुनाह माफ़ करे और मुक़र्ररा वक़्त (सुनिश्चत समय सीमा) तक तुम को (आराम के साथ) मोहलत दे। वे बोले (हम तो यह समझते हैं कि) तुम केवल हमारी तरह के आदमी हो।

....

५. 'सब्र' का अर्थ है "कठिनाइयों और संकट में जमे रहना" और 'शुक्र' का अर्थ है "अल्लाह की दी हुई कुव्वतों की क़द्र करना और उन्हें ठीक-ठाक काम में लाना"। इस आयत में यह फ़रमाया गया है कि अल्लाह का यह क़ानून अपने स्थान पर आज भी अटल है कि जो क़ौम शुक्र करती है अर्थात अल्लाह की दी हुई नेमतों

➲की क़द्र करती है और उन्हें ठीक-ठाक तौर पर काम में लाती है, तो अल्लाह उसे और अधिक नेमतें देता है। लेकिन जो क़ौम इन नेमतों की नाशुक्री करती और इन की क़द्र नहीं करती है वह महरूमी के अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हो जाती है। और यह अल्लाह का अ़ज़ाब है जो किसी इन्सानी गिरोह के हिस्से में आता है। आप अनुमान लगाएँ कि यह हालात की कितनी सच्ची ताबीर है। आगे फ़रमाया गया कि जो गिरोह अल्लाह की बख़्शी हुयी नेमतों की क़द्र करता है, जैसे उस ने फ़तह और कामयाबी दे दी तो वह इस नेमत को पहचानता और इसे ठीक तौर पर काम में लाता है और इस की सुरक्षा से ग़ाफ़िल नहीं होता, तो इन नेमतों का और अधिक हक़दार बन जाता है या नहीं? और जो ऐसा नहीं करता तो क्या उन की ना मुरादी और तबाही में कोई संदेह हो सकता है? (तर्जुमान)

६. एक हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "बन्दा अपने पाप करने की वजह से अल्लाह की रोज़ी से महरूम हो जाता है"। मुसनद अहमद की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास एक सवाली आया तो उसे एक खजूर दी, इस पर वह नाराज़ हुआ और खजूर लेने से इन्कार कर दिया। थोड़ी ही देर के बाद एक दूसरा सवाली आया तो आपने उस को भी वही खजूर दे दी। उसने यह समझ कर कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ से यह तोहफ़ा और उपहार है प्रसन्नता के साथ स्वीकार कर लिया। इस पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसे २० दिरहम देने का हुक्म फ़रमाया।

हज़रत मूसा ने बनी इस्राईल से कहा कि तुम और तुम्हारे साथ पूरी दुनिया के लोग भी अगर अल्लाह की नाशुक्री करो तो भी अल्लाह का कुछ न बिगाड़ पाओगे, इसलिये कि वह बे परवाह ज़ात है। सहीह मुस्लिम में एक हदीसे कुदसी में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः ऐ मेरे बन्दो! अगर तुम्हारे पहले और बाद के आने वाले और तुम समस्त मौजूदा इन्सान और जिन्नात और पूरी दुनिया के लोग मुत्तक़ी और परहेज़गार बन जाओ तो इस से हमारी खुदाई में तनिक भर भी इज़ाफ़ा न होगा और अगर इस के विपरीत तुम सब मेरी अवज्ञा में जुट जाओ तो भी मेरी खुदाई में तनिक भर की कमी नहीं आयेगी, उतनी भी कमी नहीं आयेगी जितनी समुन्दर में सुई की नोक डाल कर पानी निकालने से हो। (इब्ने कसीर)

७. आ़द और समूद की क़ौम अ़रब ही की ज़मीन में आबाद थीं। इस्लाम के ज़माने तक उनके गिरे-पड़े मकानात खंडर की शक्ल में मौजूद थे। तबूक की लड़ाई के लिये तशरीफ़ ले जाते हुए जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उस राह से गुज़रे थे तो आप ने सहाबा से फ़रमाया था कि इन क़ौमों के खंडर देख कर नसीहत हासिल करो अल्लाह बे परवाह और तारीफ़ के लायक़ है। इसी यात्रा के दौरान सहाबा ने उस कुंए को भी देखा जिस से हज़रत सालेह और उनके मुसलमान साथी पानी पीते थे।

अ़रब के लोग उन की आबादियों और उन के खंडरों से भली-भान्ति अवगत थे। समूद और आ़द के क़िस्से हर कोई सुनता-सुनाता था। इनके बाद भी और बहुत सी क़ौमें आयी-गयीं जिन्हें केवल अल्लाह ही जानता है। इसी बुनियाद पर उर्वह बिन ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मअ़द बिन अ़दनान से आगे का नसब नामा दुरुस्त नहीं है इसलिये कि उस के आगे की पीढ़ियों का नाम नहीं मालूम है (मवाहिबुर्रहमान)

تُرِيدُونَ أَن تَصُدُّونَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا
فَأْتُونَا بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۝ قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِن

तुम हम को उन माबूदों की इबादत से रोकना चाहते हो जिन की इबादत हमारी क़ौम के बुज़ुर्ग करते आये हैं पस तुम कोई➲

نَحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ
مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَمَا كَانَ لَنَآ اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا
بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝
وَمَا لَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ
وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ
لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ فَاَوْحٰۤى
اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ
الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَ
خَافَ وَعِيْدِ ۝ وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ
عَنِيْدٍ ۝ مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ

स्पष्ट दलील लाओ (तो हम मानेंगे वर्ना नहीं) ११. रसूलों ने कहा कि हम तुम्हारी ही तरह के आदमी हैं लेकिन (आदमी होना रसूल होने के ख़िलाफ़ तो नहीं है) अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है एहसान करता है (हाँ, हमें ख़ुदाई कामों में अख़्तियार नहीं) और न अल्लाह के हुक्म के बग़ैर हम कोई चमत्कार ला सकते हैं (और अल्लाह ही पर हमारा भरोसा है, इसलिये) मुसलमानों को चाहिये कि अल्लाह ही पर भरोसा करें (वह जिस हाल में चाहे रखे) १२. और हमारा इसमें उज़्र ही क्या है कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें हालाँकि उस ने हम को अपनी राहों की हिदायत की है। और हम तुम्हारी देने वाली तकलीफ़ पर सब्र करेंगे। और भरोसा करने वालों को चाहिये कि अल्लाह ही पर भरोसा करें[८] १३. और काफ़िरों ने रसूलों से (यह माकूल बात सुन कर) कहा कि (अगर तुम बाज़ न आए तो) हम तुम को अपने मुल्क से निकाल देंगे या (हमारी तकलीफ़ों से आजिज़ आकर) तुम स्वयँ ही हमारे मज़हब में लौट आओगे। तो अल्लाह ने उन को इल्हाम किया कि हम ज़ालिमों को तबाह करेंगे[१] (कि उनका नाम लेने वाला भी कोई न होगा) १४. और उन के पीछे इस मुल्क में हम तुम को आबाद करेंगे (मगर) यह इनाम उन्हीं लोगों पर होगा जिन को मेरे सामने हाज़िर होने का और मेरे अज़ाब का डर होगा (यह सुन कर उन को तसल्ली हुयी) १५. और उन्होंने फ़त्ह तलब की (तो अल्लाह ने उन की दुआ़ सुनी) और हर मुतास्सिब {साम्प्रदायिक} ज़िद्दी ज़लील हुआ १६. (अभी तो) इस (दुनिया के अज़ाब) से आगे जहन्नम है जिस में पीप जैसा पानी उन को पिलाया जायगा।

....

८. रसूलों ने उत्तर दिया कि तुम्हारा यह कहना कि मैं तुम्हारी ही तरह इन्सान हूँ बिल्कुल दुरुस्त है। लेकिन यह अल्लाह के अख़्तियार में है कि वह किस को नबी बनाये। और नबी होने का जिस प्रकार तुम प्रमाण पत्र मांगते हो वह हमारे अख़्तियार में नहीं है वह जब चमत्कार दिखाने की अनुमति देगा तभी हम दिखा पायेंगे। और ईमानदारों को केवल अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिये, आख़िर उन पर भरोसा करनें में कौन सी चीज़ रोकती है?

'फ़तहुल बयान' में लिखते हैं कि रसूलों ने जो यह कहा है कि क्या अल्लाह के एक होने में शक है? तो यह सवालिया जुम्ला उन को डाँट-फटकार और लानत-मलामत के लिये है। यानी तुम लोगों को भी मालूम

➲है कि अल्लाह की ज़ात एक है। ज़मीन व आसमान का पैदा करने वाला है। इसलिये इबादत की तरफ़ बुलाता है कि वह तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर दे। इसलिये अगर तुम ईमान लाओगे और मौत तक उस पर जमे रहे तो वह दुनिया में तुम्हारे ऊपर अ़ज़ाब नहीं भेजेगा। इस पर काफ़िरों ने यह एतराज़ किया कि तुम तो हमारी ही तरह इन्सान हो और हमारी ही तरह खाते-पीते हो तो हमारे ऊपर तुम को कैसे फ़ज़ीलत हासिल है? और फिर तुम यह कहते हो कि हम अपने बाप-दादों की राह छोड़ दें और वे जिन की पूजा करते थे उन का भी इन्कार कर दें। तो ऐसा तो हम उसी समय कर सकते हैं जब तुम कोई चमत्कार दिखाओ। उन रसूलों ने कहा कि बेशक तुम्हारा यह केहना बजा है कि हम तुम्हारी ही तरह इन्सान हैं, तुम्हारी ही तरह सोते-जागते और, चलते-फिरते हैं, लेकिन अल्लाह जिस को चाहे नबी बना दे, इस में तुम्हें क्यों इतनी तकलीफ़ हो रही है? इस आयत से यह भी मालूम हुआ कि नुबुव्वत मेहनत-मुशक्क़त और धन-दौलत से नहीं प्राप्त होती है, बल्कि यह अल्लाह की देन है वह जिस को चाहे दे (तर्जुमान-नवाब ख़ाँ रह०)

९. 'ज़ालिमों को तबाह कर देंगे' यानी जिस गिरोह ने अल्लाह के रसूलों की दावत को स्वीकार करने से इन्कार किया, उन्होंने अपने रसूलों से यही बात क़सम खा कर कही कि हम तुम को अपने मुल्क से निकाल देंगे या फिर हमारे साथ शामिल हो जाओ (यानी मेरे साथ तुम भी शिर्क करने लगो) तब अल्लाह तआ़ला ने रसूलों को यह संदेश भेजा कि हम उन काफ़िरों को हलाक कर देंगे और उसी ज़मीन में आबाद कर देंगे। चुनान्चे यह वायदा अल्लाह ने पूरा किया। और तमाम नबियों के साथ भी पूरा किया और आख़िरी नबी के साथ मक्का फ़तह कराके पूरा किया।

صَدِيْدٍ ﴿١٦﴾ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ
الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ
وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿١٧﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ۣاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ
يَوْمٍ عَاصِفٍ ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ؕ
ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٨﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَ
يَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٩﴾ وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ
بِعَزِيْزٍ ﴿٢٠﴾ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ
عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا
اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا مَا

जिस को घूंट भर-भर पियेंगे १७. और (कड़्वाहट से) पी न सकेंगे और उन को मौत हर ओर से आऐगी लेकिन वे मरेंगे नहीं (क्योंकि अल्लाह का हुक्म उन की मौत के मुतअ़ल्लिक़ न होगा) और इसके अलावा (एक प्रकार का) सख़्त अज़ाब और भी होगा[१०] १८. (सुनो) जहां लोग अपने रब के इन्कारी हैं उनके नेक आमाल की मिसाल उस राख (के ढेर) की सी है जिसे सख़्त गर्मी के दिनों में तेज़ आँधी ले उड़ी हो (पस) ये लोग अपनी कमाई में से कुछ न पायेंगे यही तो दूर की गुमराही (का नतीजा) है[११] १९. क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने आसमानों और ज़मीनों को सच्चे (और मज़बूत नतीजा ख़ेज़) क़ानून से पैदा किया है। अगर चाहे तो तुम (सब) को हलाक कर दे और (तुम्हारे स्थानपरएक) नई ➲

لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٢١﴾ وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِىَ

मख़्लूक़ ला बसाए[१२] २०. और यह काम अल्लाह के नज़दीक कोई मुश्किल नहीं (ख़ैर दुनिया में तो यह उस की हुकूमत है) २१. और (जिस दिन) अल्लाह के सामने सब आ खड़े होंगे तो (उस की हुकूमत का रोब देख कर एक दूसरे पर आरोप लगाते हुये) कमज़ोर लोग तकब्बुर करने वालों से कहेंगे कि हम तुम्हारे ताबेअ़ (आधीन) थे तो क्या अल्लाह का अज़ाब हटाने में तुम हमारे कुछ काम आ सकते हो? वे उत्तर देंगे कि (दुनिया में हमारी तुमने पैरवी की थी इसके आरोप का उत्तर तो यह है कि) अगर अल्लाह हमें हिदायत करता तो हम तुम को भी हिदायत करते (इस के बाद असल प्रश्न का उत्तर वे यह देंगे कि भाइयो!) हम घबराहट करें तो और सब्र करें तो हम पर तो दोनों ही बराबर हैं हम को छुटकारा नहीं होगा।[१३/१] २२. और (मख़्लूक़ के दर्मियान) जब फैसला हो चुकेगा तो शैतान कहेगा कि (सुनो! अस्ल) बात यह है कि

....

१०. एक हदीस शरीफ़ में है कि उस दिन जब दोज़ख को लाया जायेगा तो वह मख़लूक़ को पुकार कर कहेगी कि मैं हर तकब्बुर करने वाले और कीना रखने वाले के लिये मुक़र्रर की गयी हूँ। यह जहन्नम की आग उन की ताक में है। ये उस में हमेशा रहेंगे और ख़ून-पीप और खौलता पानी खायें-पियेंगे। 'हमीम' के मायना मित्र और दोस्त के होते हैं और एक मायना "सख़्त गर्म पानी" का भी है, यहाँ यही अर्थ मुराद है 'ग़स्साक़' हद से ज़्यादा ठन्डी और हद से ज़्यादा बदबू करने वाली चीज़ को कहते हैं। इमाम मुजाहिद और इ़िक्रमा का कहना है कि 'सदीद' ख़ून और पीप को कहते हैं।

हज़रत अस्मा बिन्त यज़ीद कहती हैं कि मैंने -सदीद' के बारे में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा तो आप ने बताया कि जहन्नम वालों का ख़ून और पीप है जो उनके चमड़े से आग की जलन से बहेगा। एक दूसरी रिवायत में हज़रत अबू उमामा फ़रमाते हैं कि जब 'सदीद' उन के मुंह में लगाया जायेगा तो वह उन की खाल को जला डालेगा और खाल गल-गल कर गिरने लगेगी। और जब उस को पियेगा तो ओझड़ी कट-कट कर पाख़ाने की राह से निकलेगी। 'सदीद' गले में फंस जाएगी जो बड़ी कठिनायी के बाद नीचे उतरेगी। एक फ़रिशता लोहे का हथौड़ा लेकर उस को मोरगा। हर तरफ़ मौत का मन्ज़र होगा मगर मौत भी नहीं आऐगी। इन तमाम यातनाओं के बाद भी इन सब से सख़्त अज़ाब होगा। कुरआन पाक की बहुत सी आयतों में दोज़ख के अज़ाब का ज़िक्र है। उन में से नवाब भोपाली मर्हूम ने यहाँ इकट्ठा ज़िक्र किया है (तर्जुमान-नवाब रह०)

११. हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह तआला का कथन है: "जो शख़्स मेरे साथ शरीक ठहराता है तो वह जान ले कि मैं ठहराये हुये तमाम शरीकों से बे नियाज़ हूँ। और जो शरीक ठहरा के भी नेकी करता है तो वह अपने उस नेक कार्य का सवाब भी उसी शरीक से माँगे। आजकल जो लोग शिर्क के साथ सद्क़ा, ख़ैरात और दूसरे नेकी का काम भी करते हैं ये सब अगर्चे नेक और सवाब के काम हैं, लेकिन शिर्क के तूफ़ानों के साथ सब उड़ जायेंगे और ये सारे नेक काम बेकार साबित होंगे।

१२. इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने अपने क़ानून का एक अहम उसूल बताया है कि जिन-जिन क़ौमों ने भी अल्लाह की नाफ़रमानी करके उस के साथ टकराव का रास्ता अख़्तियार किया तो वह क़ौमें तबाह व बर्बाद हो गयीं और दुनिया से उन का नाम-निशान मिट गया। आज भी अल्लाह का हर क़ानून अपनी जगह पर अटल है।

१३/१. अल्लाह तआला ने इस आयत में क़ौमों की गुमराही के एक ख़ास कारण की तरफ़ इशारा किया है। वह यह है कि अक्सर क़ौमें और जमाअतें अपने लीडरों, पेशवाओं, हाकिमों और जाहिल मुल्लाओं की अंधी तक़लीद करती हैं और अपनी अक्ल व सूझ-बूझ से कुछ भी काम नहीं लेती हैं। चुनान्चे आज के दिन वे लोग कुछ भी काम न आ सकेंगे। अन्धी तक़लीद के पीछे पड़ कर गुमराह होने वाले धर्म गुरुओं से कहेंगे कि हम ने दुनिया में तुम्हारी पैरवी की थी इसलिये आख़िरत में आग के अज़ाब से मुक्ति दिला दो। तो वे उत्तर देंगे कि हम स्वयं अपने-आप को मुक्ति नहीं दिला पा रहे हैं तो तुम्हें क्या मुक्ति दिला पायेंगे। यहां पर इशारा मक्का के लीडरों और उन के मानने वालों की तरफ़ है कि आज तुम उन की अगुवाई करते हुये इस्लाम की मुख़ालिफ़त कर रहे हो, कल क़ियामत के दिन वे तुम्हारे कुछ भी काम न आ सकेंगे। (तर्जुमान)

....

الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدتُّكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ ۖ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُم مِّن سُلْطَانٍ إِلَّا أَن دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي ۖ فَلَا تَلُومُونِي وَلُومُوا أَنفُسَكُم ۖ مَّا أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَا أَنتُم بِمُصْرِخِيَّ ۖ إِنِّي كَفَرْتُ بِمَا أَشْرَكْتُمُونِ مِن قَبْلُ ۗ إِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٢﴾ وَأُدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ ۖ تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ﴿٢٣﴾ أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ﴿٢٤﴾ تُؤْتِي أُكُلَهَا كُلَّ حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا ۗ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٥﴾ وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ مِن

अल्लाह ने तुम से जो सच्चा वायदा किया था (उसने तो पूरा कर दिया) और मैंने जो तुम से वादा किया था (यानी तुम्हारे दिलों में बुरे काम का नेक नतीजा डाला करता था) वह मैंने पूरा किया और (दोष सरासर तुम्हारा ही है) मेरा तुम पर कोई ज़ोर न था अलबत्ता इतना (था) कि मैंने तुम को बुलाया तुम ने मेरी बात को कुबूल कर लिया। पस तुम मुझ पर इल्ज़ाम न लगाओ बल्कि अपने आपको मुलज़िम ठहराओ। मैं तुम्हारी फ़रियाद सुनने वाला नहीं और तुम मेरी नहीं। मैं तो इस बात से भी इन्कारी हूँ (और हर्गिज़ नहीं मानता) कि तुम दुनिया में मेरे सबब से शिर्क करते थे[१३/२]। (कान खोल कर सुन लो!) ज़ालिमों (नाफ़रमानों) के लिये दुःख की मार है २३. (और देखो कि) जो लोग अल्लाह पर कामिल ईमान लाये थे और नेक अ़मल भी उन्होंने किये थे वे जन्नत में दाख़िल किये गये (और तुम ताकते के ताकते रह गये) उन (जन्नतों) के पेड़ों के नीचे नहरें जारी हैं वे अपने परवरदिगार के हुक्म से उन में हमेशा रहेंगे। उन में उन का उपहार "अस्सलामु अ़लैकुम" होगा २४. क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह तआ़ला ने कलिम-ए-तय्यिबह की मिसाल उस पाकीज़ा दरख़्त से दी है जिसकी जड़ मज़बूत है और चोटी निहायत बुलन्द आसमान पर पहुंची हुई है २५. वह (हमेशा) हर समय अपने रब के हुक्म से फल लाता है। अल्लाह लोगों

के लिये उदाहरण बयान करता है ताकि वे समझें[१४] २६. और नापाक कलिमों (जैसे कुफ़्रिया, शिर्किया, गाली-गलौंच वग़ैरह बुरी आदतों) की मिसाल (कुचले जैसे) गन्दे (और बद मज़ा) दरख़्त की सी है

....

१३/२. जब अल्लाह तआला बन्दों के दर्मियान न्याय करके जन्नत-दोज़ख का फ़ैसला सुना कर सब को अपने-अपने स्थान पर भेज देगा। उस समय इब्लीस जहन्नम में खड़ा हो कर कहेगा, उसकी बातों को सुन कर वे अपनी जानों से भी बेज़ार हो जायेंगे। इतने में एक आवाज़ आयेगी कि आज तुम जितने बेज़ार हो इस से अधिक बेज़ार अल्लाह तुम से उस समय था जब तुम्हें ईमान की दावत दी जाती थी और तुम कुफ़्र करते थे। आमिर शुअबी फ़रमाते हैं कि उस दिन दो शख़्स खुत्बा देने के लिये खड़े होंगे (१) हज़रत ईसा बिन मरयम खड़े होंगे और उन से अल्लाह प्रश्न करेगा कि क्या तुम ने लोगों से कहा था कि तुम अल्लाह के अलावा मुझे और मेरी माँ को माबूद बना लो? (तफ़सील सूरः माइदा आयत ११६ में देखें) (२) इब्लीस खड़ा हो कर आयत न० २२ वाली बात कहेगा (और आयत से ज़ाहिर होता है कि इन सब के साथ जहन्नम में दाख़िल होने के बाद यह बात-चीत होगी)

कुरआन की आयतों और हदीसों में जो वाक़िआ बयान हुआ है उस पर हम सब का कामिल ईमान होना चाहिए कि क़ियामत के दिन इसी प्रकार मामला पेश आयेगा। चूँकि इस दुनिया की ज़िन्दगी में आख़िरत की ज़िन्दगी की बातों को नहीं समझ सकते, इसलिये इन बातों पर ईमान लायें और अधिक कुरेदने की कोशिश न करें वर्ना शैतान गुमराह कर देगा। हमारा यक़ीन यह होना चाहिये कि एक दिन ये सारी घटनायें अवश्य ही घटेंगी (मवाहिब, इब्ने कसीर)

१४. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि 'कलिम-ए-तय्यिबा' से मुराद ला इला-ह इल्लल्लाह की शहादत है। पाकीज़ा दरख़्त, मोमिन की मिसाल है। उस की जड़ मज़बूत है यानी उस के दिल में लाइला-ह-इल्लल्लाहु जमा हुआ है। उस की शाख़ आसमान में है यानी उस तौहीद के कलिमे की वजह से उस के आमाल आसमान की तरफ़ उठाये जाते हैं। कुछ और उलमा ने भी इसी प्रकार तशरीह की है बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "खजूर का पेड़ केवल ऐसा है जो मुसैलमा के मिस्ल है"। एक दूसरी रिवायत में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "ला इलाह इल्लल्लाह, अल्लाहु अक्बर, सुब्हानल्लाह और अल-हम्दु लिल्लाह, हर नमाज़ के बाद १० बार पढ़ लिया करो। यह वह अमल है जिस की जड़ मज़बूत और शाख़ आसमान में है। बुरा कलिमा यानी काफ़िर की मिसाल इन्दराइन के दरख़्त से दी। इस दरख़्त की जड़ ज़मीन में नहीं होती, ज़रा सी ताक़त लगाने से उखड़ कर बाहर आ जाती है। इसी प्रकार कुफ़्र की भी मिसाल है कि वह भी बे जड़ा और बे शाख़ के है। काफ़िर का न कोई नेक अमल ऊपर जाता है और न कुबूल होता है (इब्ने कसीर)

मौलाना आज़ाद रह० फ़रमाते हैं कि यह आयत कुरआन की बहुत अहम आयतों में से है। इस में जमाव को कलिम-ए-तय्यिबा कहा गया है। जिस की मिसाल ऐसी है जैसे एक अच्छा और मज़बूत दरख़्त जिस की जड़ें मज़बूत हों। और जिसको क़रार नहीं उसकी मिसाल एक निकम्मे दरख़्त से दी गयी है जो ज़मीन में जगह नहीं पकड़ सकता। टहनी नहीं है और न ही फल-फूल। जब चाहे पकड़ कर खींच लो तो जड़ समेत उखड़ आए। पस तौहीद वालों की सारी बातों में जमाव और मज़बूती होती है। उनका अक़ीदा, उन का अमल, उनके काम क़ौले-साबित होते है और उन की मिसाल शजर-ए-तय्यिबा की होती है। जो लोग ईमाने-हक़ से महरूम हैं उन की मिसाल ख़बीस दरख़्त की सी होती है जिसके लिये कोई मज़बूती नहीं।

فَوۡقِ الۡاَرۡضِ مَا لَهَا مِنۡ قَرَارٍ ۝٢٦ يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا بِالۡقَوۡلِ الثَّابِتِ فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا وَفِى الۡاٰخِرَةِ‌ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيۡنَ‌ ۙ وَيَفۡعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ۝٢٧ اَلَمۡ تَرَ اِلَى الَّذِيۡنَ بَدَّلُوۡا نِعۡمَتَ اللّٰهِ كُفۡرًا وَّاَحَلُّوۡا قَوۡمَهُمۡ دَارَ الۡبَوَارِ ۝٢٨ جَهَنَّمَ‌ ۚ يَصۡلَوۡنَهَا‌ ؕ وَبِئۡسَ الۡقَرَارُ ۝٢٩ وَجَعَلُوۡا لِلّٰهِ اَنۡدَادًا لِّيُضِلُّوۡا عَنۡ سَبِيۡلِهٖ‌ ؕ قُلۡ تَمَتَّعُوۡا فَاِنَّ مَصِيۡرَكُمۡ اِلَى النَّارِ ۝٣٠ قُلْ لِّعِبَادِىَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا يُقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنۡفِقُوۡا مِمَّا رَزَقۡنٰهُمۡ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنۡ قَبۡلِ اَنۡ يَّاۡتِىَ يَوۡمٌ لَّا بَيۡعٌ فِيۡهِ وَلَا خِلٰلٌ ۝٣١ اَللّٰهُ الَّذِىۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ وَاَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخۡرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزۡقًا لَّكُمۡ‌ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الۡـفُلۡكَ لِتَجۡرِىَ فِى الۡبَحۡرِ بِاَمۡرِهٖ‌ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الۡاَنۡهٰرَ ۝٣٢

जो (ऐसा कमज़ोर है कि) ज़मीन के ऊपर से (गोया) खड़ा हुआ है जिस को कुछ भी क़रार नहीं २७. (कलिम-ए-तय्यिबा और नेक आमाल के सबब से) अल्लाह ईमान दारों को दुनिया और आख़िरत में साबित क़दम रखता है[१५] (और मुसीबत के समय उन का दिल मज़बूत रहता है) और ज़ालिमों को (असल मतलब से) भुला देता है और अल्लाह जो चाहता है करता है २८. क्या तू ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत (रसूल की शिक्षा और सोहबत) की ना शुक्री की (कि उन का नाम लेवा भी दुनिया में न रहा) और (उन्होंने) अपनी क़ौम को तबाही की जगह २९. (यानी) जहन्नुम में ले जा उतारा। वे सब उस में (एक साथ) दाख़िल होंगे। और वह बुरी जगह है ३०. और उन्होंने अल्लाह के शरीक (और साझी) ठहराए ताकि (स्वयँ गुमराह हों और) लोगों को (भी) उस की राह से गुमराह करें। तू कह दे कि (कुछ दिन) मज़े उड़ा लो फिर आख़िर तुम्हारा कूच दोज़ख़ की तरफ़ है ३१. (ऐ नबी) तू मेरे बन्दों से जो (मुझ पर कामिल) ईमान लाये हैं कह दे कि नमाज़ पढ़ते रहें और जो कुछ हमने उन को दिया है उस में से किसी क़दर पोशीदा और ज़ाहिर (मगर खुलूस नीयत से अल्लाह की राह में) उस दिन के आने से पहले ख़र्च कर लें जिसमें न ख़रीद व फ़रोख़्त होगी, न (किसी की) मित्रता काम आयेगी[१६] ३२. अल्लाह (ही वह ज़ात पाक) है जिसने आसमान व ज़मीन पैदा किये हैं और वही (हमेशा) आसमान से वर्षा उतारता है[१७] फिर उस के साथ तुम्हें रोज़ी देने के लिये फल पैदा करता है और उसने (बड़े-बड़े) बेड़े (जहाज़ और स्टीमर) तुम्हारे काम में लगा रखे हैं कि समुन्दर में उस के हुक्म से चलते हैं और दरिया भी तुम्हारे काम में लगा रखे हैं।

....

१५. शाने नुज़ूल :- बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी और नसाई में इस आयत न० २७ का जो शाने-नुज़ूल बयान किया गया है इस का खुलासा यह है कि मुर्दे के संबन्धी उसे दफ़न कर के वापस होते हैं तो मुर्दा उन के➲

चलने की आवाज़ को सुनता है। फिर मुन्किर नकीर आ कर उस से प्रश्न करते हैं (१) तेरा रब कौन है? (२) तेरा दीन क्या है? (३) तेरा नबी कौन है? अगर मुर्दा पक्का-सच्चा मुसलमान है तो बग़ैर किसी घबराहट के उत्तर देता है कि (१) मेरा रब अल्लाह है (२) मेरा दीन इस्लाम है (३) मेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हैं। फ़रिश्ते पूछेंगे कि उन का नबी होना कैसे जाना? तो उत्तर देगा कि वह अल्लाह का कलाम लाये, उस को मैंने पढ़ा और ईमान लाया जिससे मालूम हुआ कि वह अल्लाह के संदेष्टा हैं। फिर फ़रिश्ते उस को जहन्नम दिखा कर कहते हैं कि तेरा एक ठिकाना यह भी था लेकिन अल्लाह ने बदल दिया। फिर उस को जन्नत दिखा कर कहेंगे कि अब तेरा ठिकाना यह है। वह देख कर बहुत प्रसन्न होता है और फ़रिश्तों से कहता है कि ज़रा मुझे दोबारा दुनिया में जाने दो ताकि उन को सुचना दे सकूं। लेकिन फ़रिश्ते कहेंगे कि आराम से क़ियामत तक सो जाओ। मतलब यह है कि नेक लोगों को क़ब्र में मुन्किर नकीर को उत्तर देते समय साबित क़दमी की तौफ़ीक़ मिलती है जिस की वजह से वह सरलता से उत्तर देता चला जाता है। यही साबित क़दमी इस आयत की शाने नुज़ूल है और इसी साबित क़दमी का इस आयत में ज़िक्र है (अहसनुत्तफ़ासीर)

१६. ऊपर की आयतों में कुफ़्फ़ार की नेमतों की ना शुक्री का बयान था, अब यहाँ पर मुसलमानों से ख़िताब है। इन आयतों में मुसलमानों को उपदेश दिया गया है कि अल्लाह की नेमतों पर शुक्र अदा करें। शुक्र करते हुये नमाज़ क़ायम करें, अल्लाह की राह में ख़र्च करें। इन दो कामों पर पाबन्दी से अमल करें, इसलिये कि शुक्र गुज़ारी के कामों में ये दोनों आमाल सब से अहम हैं।

१७. 'आसमान से वर्षा उतारी' कैसे उतारी? इस को यूँ समझें कि बारिश के होने में भाप वग़ैरह ज़ाहिरी सबब के अलावा कुछ दिखाई नहीं पड़ने वाले असबाब का भी अमल-दख़ल है। सूरज की रोशनी जिस प्रकार और वस्तुओं पर पड़ती है इसी प्रकार आतिशी शीशे पर भी पड़ती है। और चीज़ें उस रोशनी को अपने अन्दर नहीं इकट्ठा करती हैं लेकिन वह आतिशी शीशा उस रोशनी की गर्मी को अपने अन्दर सोख लेता है (लेकिन हम लोग उस शीशे के इस अमल को देख नहीं पाते हैं)

इसी प्रकार आप देखते हैं कि चन्द्रमा समुन्दर से कितना दूरी पर है मगर उसके घटने-बढ़ने से समुद्र में पानी घटता-बढ़ता रहता है (समुद्र में जब ज्वार भाटा पैदा होता है) बिल्कल इसी प्रकार बादल भी अपने तौर पर पानी हासिल कर लेता है जिसे हम नहीं देख पाते हैं। लेकिन इस से इन्कार करने की कोई वजह नहीं है (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

....

३३. और सूर्य, चन्द्रमा को भी तुम्हारे ताबेअ कर रखा है कि दोनों घूमते (हुये अपना-अपना चक्कर काटते) हैं और रात और दिन को भी तुम्हारे काम में ही लगाये हुये हैं ३४. और जिस-जिस चीज़ के तुम मुहताज हो उस ने तुम को दी है और (अभी तो क्या) अगर अल्लाह की नेमतें गिनने लगो तो कभी गिन न सकोगे। कुछ शक नहीं कि इन्सान बड़ा ही ज़ालिम और ना शुक्र गुज़ार है[१८] ३५. और (उस समय को याद करो) जब

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ
الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۝ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ؕ وَاِنْ
تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ
كَفَّارٌ ۝ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ
اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ۝ رَبِّ
اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ
فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

رَبَّنَآ اِنِّيْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْـِٕدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْٓ اِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٧﴾ رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ۭ وَمَا يَخْفٰى عَلَي اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاۗءِ ﴿٣٨﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ

➲इब्राहीम ने दुआ की ऐ मेरे मौला! इस शहर (मक्का) को अम्न वाला बना दे और मुझे और मेरी औलाद को बुत परस्ती (यानी ग़ैरुल्लाह की पूजा) से बचा ले[१९] ३६. मेरे मौला (यह ऐसी बला है कि) बहुत से लोगों को (इन्होंने) गुमराह किया (वजह यह है कि लोगों में भेड़ चाल है) सो जो मेरे पीछे चलेगा वही मेरी जमाअत से होगा और जो मेरी नाफ़रमानी करेगा (तो मैं कुछ नहीं कहता) बेशक तू बड़ा ही बख़्शने वाला है और मेहरबान है ३७. हमारे मौला! मैंने अपनी औलाद (इस्माईल को उन की माँ हाजिरा के साथ) तेरे बैतुल हराम (काबा शरीफ़) के पास बे खेती की वादी में ला बसाया है। हमारे मौला! ग़रज़ ये है कि यह नमाज़ पढ़ते रहें पस तू लोगों के दिल इन की तरफ़ माइल कर दे (ताकि वे इन की सोहबत से लाभ उठायें और हिदायत पायें) और फलों की पैदावार से उन को रोज़ी दे ताकि वे शुक्र गज़ारी करें[२०] ३८. हमारे मौला! जो हम छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं तू सब को जानता है और अल्लाह से (जो हक़ीक़ी माबूद है) कोई बात भी ज़मीन व आसमान में पोशीदा नहीं रह सकती।

....

१८. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि इब्ने आदम के लिये क़ियामत के दिन तीन दफ़्तर निकाले जायेंगे। एक में उस के नेक आमाल लिखे होंगे, दूसरे में उस के गुनाह और तीसरे में अल्लाह की नेमतें लिखी होंगी। अल्लाह पाक अपनी छोटी से छोटी नेमत को फ़रमायेगा कि तू उस की नेकियों में से अपनी क़ीमत वसूल कर ले। वह उसकी तमाम नेकियाँ ले लेगी और फिर भी कहेगी: तेरी इज्ज़त की क़सम! अभी मैंने पूरी क़ीमत नहीं ली है। फिर उस बन्दे के पास केवल गुनाह और नेमतें ही बचेंगी। फिर जब अल्लाह बन्दे पर रहमत करना चाहेगा तो कहेगा कि ऐ मेरे बन्दे! मैंने तेरी नेकियाँ दो गुनी कर दी हैं और तेरे पापों को छोड़ दिया और अपनी नेमत तुझ को बख़्श दी। एक बार हज़रत दाऊद अलै० ने अल्लाह पाक से कहा कि मैं किस तरह शुक्र करूँ? इसलिये कि मेरा शुक्र करना भी मुझ पर एक नेमत है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: तू ने कोताहियों को मान लिया तो यह भी शुक्र ही है (तर्जुमान)

१९. यहाँ हज़रत इसमाईल की औलाद मुराद हैं इसलिए कि दूसरी औलाद जो हज़रत इसहाक़ थे ये सब शाम में रहते थे। अल्लाह के निर्देश के अनुसार हज़रत इस्माईल और उन की माता जी हज़रत हाजिरा को यहाँ चटियल मैदान में छोड़ कर चले गये थे। इस के बाद क़बीला जुरहुम के कुछ लोग वहाँ जा कर आबाद हुये। हज़रत इस्माईल ने बड़े होकर उसी क़बीला में शादी की। इस प्रकार उस जगह अच्छी-ख़ासी एक बस्ती आबाद हो गयी। हज़रत इब्राहीम शाम से कभी-कभी ख़ैरियत मालूम करने आ जाया करते थे और उस शहर➲

➲के रहने वालों के लिये दुआ फ़रमाते थे कि ऐ अल्लाह! मैंने अपनी इस औलाद को तेरे निर्देश पर ला कर चटियल मैदान में छोड़ दिया है ताकि ये लोग और आने वाली इनकी नस्लें तेरा और तेरे घर का हक़ अदा करें। तू अपने फ़ज़्ल से कुछ लोगों के दिल इधर फेर दे कि वे सब आयें जिससे तेरी इबादत हो और इस शहर की रौनक़ बढ़े। उन की रोज़ी के लिये ग़ैब से ऐसा सामान कर दे कि यहां पर फल-फूल की बहुतात हो जाये ताकि ये लोग खा-पी कर इत्मीनान के साथ तेरी इबादत में लगे रहें।

अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम अ़लै० की दुआ कुबूल फ़रमाई। आज तक हर वर्ष हज़ारों आदमी चारों ओर से वहां आते हैं और बेहतरीन क़िस्म के फल-फूलों की बहुतात है जो शायद पूरी दुनिया में कहीं न हो। और अल्लाह की कुदरत यह है कि मक्का में एक भी फल देने वाला दरख़्त मौजूद नहीं है। (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)

२०. हज़रत इब्राहीम का मतलब इस दुआ से यह था कि हज़रत इस्माईल को यहां ला कर बसाने से तेरा घर आबाद करना मक़सूद है, मगर दिल में इस्माईल की जुदाई का जो रन्ज है वह भी तू भली-भाँति जानता है। एक दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि इस्माईल और उन की माँ हाजिरा के यहाँ आने की जो वजह है वह तू ख़ूब जानता है कि उन में और सारा में बनती नहीं थी। एक तीसरा मतलब यह भी हो सकता है कि तुझ पर दिल की बात को ज़बान से ज़ाहिर करना और दुआ करना कोई ज़रूरी नहीं है, क्योंकि तू दिल की बातों को भी जानता है, मगर अपनी बन्दगी ज़ाहिर करने के लिये तुझ से सवाल और दुआ करते हैं। हदीस शरीफ़ में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो कोई अल्लाह से दुआ न करे तो वह बन्दे से नाराज़ हो जाता है उस के नज़दीकी फ़रिश्ते और बुज़ुर्ग लोग हमेशा उस के हुक्म का इन्तिज़ार करते हैं। जब दुआ का हुक्म होता है तो तुरन्त करते हैं और जब ख़ामोश रहने का हुक्म होता है तो ख़ामोश रहते हैं। लेकिन आम मुसलमानों का यह मर्तबा नहीं है। उन को यह हुक्म है कि हर समय और हर मुसीबत में उससे दुआ करते रहें। जितना ही वह रोते गिड़गिड़ाते हैं, उतना ही वह प्रसन्न होता है। (वहीदी)

وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ ۚ إِنَّ رَبِّي
لَسَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٩﴾ رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِن
ذُرِّيَّتِي ۚ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ﴿٤٠﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَ
لِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾ وَلَا
تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ ۚ إِنَّمَا
يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ﴿٤٢﴾ مُهْطِعِينَ
مُقْنِعِي رُءُوسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۖ وَ
أَفْئِدَتُهُمْ هَوَاءٌ ﴿٤٣﴾ وَأَنذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ

३९. अल्लाह का शुक्र है जिसने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल और इसहाक़ अ़ता किए[२१]। (मैं विश्वास करता हूँ कि) बेशक मेरा परवरदिगार दुआएँ सुनता और कुबूल करता है ४०. (पस मेरी दुआ है कि) ऐ मेरे मौला! मुझे और मेरी औलाद को नमाज़ पर क़ायम रख (जो तौहीद के बाद दीन की पहली बुनियाद है) हमारे मौला! मेरी दुआ कुबूल फ़रमा। ४१. ऐ हमारे मौला! मुझे और मेरे मां बाप को और तमाम ईमानदारों को हिसाब के दिन बख़्श दे। ४२. और तू ज़ालिमों के आमाल से अल्लाह को हरगिज़ ग़ाफ़िल मत जान➲

الْعَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا أَخِّرْنَا إِلَى أَجَلٍ قَرِيبٍ نُجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ أَوَلَمْ تَكُونُوا أَقْسَمْتُم مِّن قَبْلُ مَا لَكُم مِّن زَوَالٍ ﴿٤٤﴾ وَسَكَنتُمْ فِي مَسَاكِنِ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْأَمْثَالَ ﴿٤٥﴾ وَقَدْ مَكَرُوا

(अल्लाह को उनकी जानकारी है) वह उन को उस दिन तक मोहलत देता है जिस में (मारे दहशत के) उनकी आंखें फटी की फटी रह जायेंगी[२२]। ४३. (ख़ौफ़ के मारे) सर ऊपर को उठाये भागे चले जायेंगे (ऐसे कि) उनकी नज़र उन की तरफ न फिरेगी उन के दिल (हर तरफ़ से) ख़ाली खूली होंगे। ४४. पस तू लोगों को उस दिन से डरा जिस दिन अल्लाह का अ़ज़ाब उन पर आयेगा तो जालिम कहेंगे कि ऐ हमारे मौला हम को थोड़ी सी मोहलत दे कि हम तेरी दावत कुबूल करें और तेरे रसूलों की पैरवी करें[२३]। (उत्तर मिलेगा कि आज तो तुम दुनिया की तरफ लौटना चाहते हो) क्या तुम पहले क़समें न खा चुके थे कि तुम्हें दुनिया को छोड़ना ही नहीं। ४५. और (इस से बढ़कर यह कि) जिन लोगों ने अपनी जानों पर अत्याचार किये थे तुम उनके मकानों (और डेरों) में रह चुके थे[२४]। (तुम समझते थे कि जिस प्रकार ये लोग गुज़र गये हैं हमें भी गुज़र जाना है) और जो कुछ हम ने उनके साथ किया था वह तुम्हें मालूम हो चुका था हमने तुम्हें समझाने के लिये कई एक मिसालें भी बतलाई थी। ४६. और वे हर प्रकार की चालें चल चुके थे।

....

२१. हज़रत इस्माईल, हज़रत इसहाक़ से १३ वर्ष बड़े थे। इस से पहले भी जब आप हज़रत इस्माईल को दूध पीता उनकी मां के साथ लाए थे तब भी आपने इस शहर की शान्ति के लिये दुआ फ़रमायी थी। उस सयम यह दुआ की थी : 'ऐ हमारे मौला! इस शहर को आम शान्ति वाले शहरों की तरह बना दे।" इस दुआ में 'ब-ल-दन्' का शब्द है (अलिफ़ लाम नहीं है) और इस सूरः की आयत ३६ में अल-ब-लद है। (अलिफ लाम है) यहां पर यानी पहली वाली दुआ में जो "अलिफ़ लाम" नहीं है इसलिये कि यह दुआ शहर आबाद होने से पहले की थी और जब शहर आबाद हो गया तो "अलिफ़ लाम" दाखि़ल कर के मख़्सूस कर दिया कि "ख़ास इस शहर को अम्न का गहवारा बनाना" । फिर आपने दुआ में अपने मां बाप और औलाद को भी शामिल किया। फिर आपने बुतों का गुमराही, उनका फ़ितना, अकसर लोगों को बहकाया जाना बयान फ़रमा कर उनसे अपनी बेज़ारी का इज़हार किया और उन्हें अल्लाह के सुपुर्द किया। यहां यह बात ध्यान में रहे कि यह केवल अल्लाह के इरादे और उसकी मर्ज़ी की तरफ़ लौटना है न कि उस के वाक़िया होने को जायज़ समझना है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व स़ल्लम ने हज़रत इब्राहीम की यह दुआ और हजरत मसीह की दुआ (सूरः माइदा आयत ११६) तिलावत करके रो रो कर अपनी उम्मत के लिये दुआ फ़रमायी तो बशारत मिली कि हम आपको आपकी उम्मत के बारे में प्रसन्न कर देंगे।

हज़रत इब्राहीम ने अपने बाप के लिए दुआ की है। लेकिन यह उस समय की दुआ है जब आपको उनके काफ़िर होने का इल्म न था। और जब आपको पूरी बात मालूम हो गयी कि वह अल्लाह की दुश्मनी पर मरा है तो बेज़ार हो गये (दिखें सूरः तौबा ११४) यहां आप ने मां-बाप और तमाम मोमिनों की ख़ताओं की अल्लाह से माफ़ी चाही ताकि हिसाब के दिन माफ़ हो जायें। (तफ़सीर मुहम्मदी)

२२. यानी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तसल्ली दी गयी है। और काफ़िरों को यह बताया गया है कि तुम पर जो अ़ज़ाब नहीं आ रहा है उसका मतलब यह नहीं है कि तुम जो कुछ कर रहे हो अच्छा कर रहे हो। बल्कि हमारा यह उसूल है कि हम पापियों को ढील देते हैं। और उस सयम तक ढील देते हैं जिस दिन आंखें अपनी जगह न ठहरेंगी और मारे डर और दहशत के पलकें तक न घुमा सकेंगे। (तर्जुमान-नवाब भोपाली रह०)

२३. दुआ के कुबूल होने के लिये यह शर्त है कि रसूल की बात मानी जाये। इस आयत से स्पष्ट होता है कि रसूल की राह पर चले बग़ैर अल्लाह की रहमत नहीं पा सकेगा।

२४. शरीअ़त में 'ज़ुल्म' का शब्द शिर्क और कबीरा गुनाह दोनों ही के लिये बोला जाता है। चुनांचे बुख़ारी, मुस्लिम, अहमद, तिर्मिज़ी और नसाई वग़ैरह की हदीसों का निचोड़ यह है कि जब सूरः अनआम की आयत नं०........नाज़िल हुई तो सहाबा डर गये कि कौन ऐसा है जिसने अपने नफ़्स पर अत्याचार और गुनाह के काम नहीं किये हैं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इस आयत में ज़ुल्म से मुराद शिर्क है। फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सूरः लुक़मान की आयत नं० १३ सुनाई। इससे मालूम हुआ कि शिर्क ही सबसे बड़ा गुनाह है।

....

مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ۚ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ
لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿٤٦﴾ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ
وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ۚ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ
تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا
لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٤٨﴾ وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ
مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿٤٩﴾ سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ
وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ﴿٥٠﴾ لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ
نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٥١﴾
هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا
هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٥٢﴾

और उनकी सब चालें अल्लाह की नज़र में थीं और (वि नाकाम रहे क्योंकि) उनकी चालें ऐसी न थीं कि उनसे पहाड़ हिल जाते[२५]। ४७. पस तू अल्लाह को अपने रसूलों से वायदा ख़िलाफ़ी करने वाला मत समझ[२६]। (वह कभी ख़िलाफ़ न करेगा।) अल्लाह तो बड़ा ज़बरदस्त बदला लेने वाला है। ४८. (असल बदला तो उस दिन होगा) जिस दिन ज़मीन आसमान बदल कर दूसरी तरह कर दिये जाएंगे और सब लोग एक अल्लाह और ताक़त वाले अल्लाह के सामने आ मौजूद होंगे[२७]। ४९. और तू मुजरिमों को उस दिन ज़ंजीरों में जकड़े हुए देखेगा[२८]। ५०. (ऐसे हाल में कि) कुर्ते उनके गंधक के होंगे और उनके चेहरों पर आग पहुंची होगी। ५१. ताकि अल्लाह हर नफ़्स को उसकी कमाई का बदला दे। बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। ५२. यह (कुरआन) लोगों के लिये तबलीग़ है ताकि वे इसके साथ (बुरे कामों पर) डराए जायें और ताकि जान लें कि अल्लाह अकेले के सिवा कोई (हक़ीक़ी) माबूद नहीं और (यह भी

फ़ायदा हो कि) अक्ल वाले नसीहत पायें।

....

२५. हज़रत शाह वलिय्युल्लाह मुहद्दिस देहलवी ने भी यही तर्जुमा किया है। शाह साहब ने वज़ाहत के लिये इतना और बढ़ाया है कि "उनका मकर कमज़ोर है।" मौलाना आज़ाद ने यह तर्जुमा किया है कि "उन लोगों ने अपनी सारी तदबीरें कर डाली थीं कि पहाड़ों को उनकी जगह से हिला दें अल्लाह के पास उनकी सारी तदबीरों का जवाब था।" इख़्तिलाफ़ का कारण यह है कि आयत में 'इन' शब्द को कुछ 'नफ़ी' का और कुछ 'शर्त' का मानते हैं। दोनों तर्जुमे अपने स्थान पर दुरुस्त हैं।

२६. वायदा से मुराद जन्नत, दोज़ख़, फ़तह, कामयाबी ज़ालिमों की बर्बादी वग़ैरह सब शामिल हैं यानी इन सबके मुताल्लिक़ अल्लाह ने जो वायदे किये हैं वे अवश्य ही पूरे होंगे।

२७. कुछ उलमा ने इस बारे में इख़्तिलाफ़ किया है। उनका कहना है कि क़ियामत के दिन ज़मीन आसमान की हालत नहीं बदली जायेगी, पहाड़ रेत के टीले की तरह नहीं होंगे, आसमान से चांद, सूरज नहीं हटाये जायेंगे। इन उलमा का ख़्याल ग़लत है और सरासर हदीस के ख़िलाफ़ है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा गया कि जब ज़मीन आसमान बराबर कर दिये जायेंगे और बदल दिये जोयंगे तो सब लोग कहां होंगे? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : पुलसिरात पर होंगे। इस हदीस से मालूम हुआ कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने आयत का मतलब यही बयान किया है कि ज़मीन बदल दी जायेगी, वरना हज़रत आइशा को यह उत्तर देते कि केवल ज़मीन के पहाड़ और टीले बदले जायेंगे और जिस प्रकार समतल ज़मीन पर लोग बसते हैं वैसे ही आबाद रहेंगे। मतलब यह हुआ कि जिस आयत की तफ़सीर स्वयं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमा दी उस में शक व शुब्हा करने की कोई गुजांइश नहीं है। (अहसनुलफ़वाइद, इब्ने कसीर ख़ाज़िन)

२८. 'अस्फ़ाद' का अर्थ है "क़ैद व बन्द"। 'क़तिरान' पिघले हुए तांबा को कहते हैं जो सख़्त गर्म हो

सूरः हिज्र (15)

سُوْرَةُ الْحِجْرِ مَكِّيَّةٌ (١٥) (٥٤) آياتها ٩٩ رکوعاتها ٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ①

सूरः हिज्र मक्का शरीफ़ में उतरी[1]। इस में ९९ आयतें और छः रुकूअ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है।

१. अलिफ़-लाम्-रा[2] ये (बातें जो इस सूरत में सुनाई जाती हैं) आसमानी किताब और कुरआन मुबीन की आयतें हैं।

....
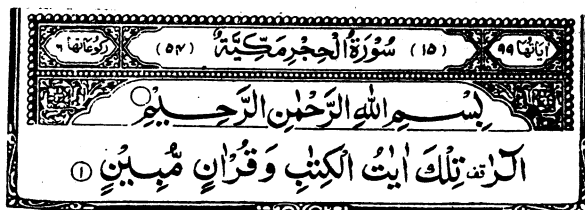
१. यह सूरः मक्का में उतरी है, इस पर सभी का इत्तिफ़ाक़ है। 'हिज्र' मदीना और शाम के दर्मियान एक नदी का नाम है। (तर्जुमान-नवाब रह०)

२. इस को "हरुफ़ मुक़त्तआ़त" कहा जात है। इसके माना व मतलब अल्लाह ही बेहतर जानता है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने इसका तर्जुमा यह किया है कि "मैं अल्लाह हूं देखता हूं" मौलाना अमृतसरी मरहूम ने भी इसी तर्जुमा को पसन्द किया है।

★★★★★

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पारः रु–बमा (14)

संक्षिप्त विषय सूची

रू—बमा—14

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٢﴾
ذَرْهُمْ يَأْكُلُوا وَيَتَمَتَّعُوا وَيُلْهِهِمُ الْأَمَلُ فَسَوْفَ
يَعْلَمُونَ ﴿٣﴾ وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا
كِتَابٌ مَعْلُومٌ ﴿٤﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا
يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٥﴾ وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ
الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ﴿٦﴾ لَوْ مَا تَأْتِينَا بِالْمَلَائِكَةِ
إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٧﴾ مَا نُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ
إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذًا مُنْظَرِينَ ﴿٨﴾ إِنَّا نَحْنُ
نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا
مِنْ قَبْلِكَ فِي شِيَعِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٠﴾ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ
رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿١١﴾ كَذَٰلِكَ نَسْلُكُهُ
فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٢﴾ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ
سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾ وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِنَ السَّمَاءِ

२. (मरने के बाद) बाज़ दफ़ा काफ़िर चाहें गे कि काश हम मुसलमान (अल्लाह के फ़रमा-बर्दार) होते[३] ३. (पस) उन को (उसी हाल पर) छोड़ दे (कि चन्द रोज़) खायें और मज़े उड़ायें और दुनिया की उम्मीदों में भूले रहें फिर (उस का अन्जाम आख़िर कार) जान लें गे ४. और जिस किसी बस्ती को हम ने हलाक किया उस के लिए पहले से समय मुक़र्रर होता था ५. (इस लिये कि) कोई क़ौम अपने वक़्त से न आगे हो सकती है न पीछे (मगर यह मक्का के मुश्रिक बजाए ग़ौर करने के मुख़ालिफ़त करते हुये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यूँ मुख़ातब होते हैं) ६. और कहते हैं कि ऐ वह आदमी जिस पर कुरआन नाज़िल हुआ है कुछ शक नहीं कि तू दीवाना है ७. अगर (अपने दावा में) तू सच्चा है तो (हमारे हलाक करने को) फ़रिश्ते क्यों नहीं ले आता ८. (हालाँकि) हम फ़रिश्तों को (ज़रूरी) फ़ैसला के लिये ही उतारा करते हैं जिन के नाज़िल होने पर काफ़िरों को मुहलत नहीं मिला करती ९. हम ही ने कुरआन को (लोगों की हिदायत के लिये) नाज़िल किया है और हम ही उस की सुरक्षा करने वाले हैं[४] । १०. और (इसी तरह) हम ने तुझ से पहले लोगों में भी रसूल भेजे थे और (वह उन को बराबर समझाते रहे मगर) ११. जब कभी उन के पास रसूल आता उस से हंसी-मज़ाक करते १२. इसी प्रकार हम (उन हंसी-मज़ाक करने वाले बदकार) मुजरिमों के दिलों में (जब यह इन्कार ही पर अड़े हैं) इन्कार ही दाख़िल करते रहते हैं १३. (इसी लिये ऐसे लोग) इस (कुरआन) पर ईमान न लायें गे और पहले लोगों के वाक़िआत गुज़र चुके हैं १४. हम ➲

➲अगर उन पर आसमान से दर्वाज़ा खोल दें

....

३. हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़ियामत के ज़िक्र में फ़रमाया: "जहन्नम में कुछ लोगों को आग उन के घुटनों तक जला रही होगी और कुछ को कमर तक और कुछ को गर्दन तक। यानी जिस के जैसे गुनाह हों गे उतनी मात्रा में दन्ड भी मिले गा। कुछ लोग एक महीना तक जहन्नम में रह कर निकल आयें गे। सब से अधिक उसे दन्ड मिले गा जो जहन्नम में उतनी मुद्दत तक रहे गा जितनी मुद्दत दुनिया की है। जब अल्लाह इन को निकालने का इरादा करे गा तो उस समय यहूद-नसारा और दूसरे धर्मों के मानने वाले जहन्नमी उन अहले-तौहीद से कहें गे कि तुम लोग तो अल्लाह, उस के रसूलों और उन की किताबों पर ईमान लाये थे, फिर हमारे साथ दोज़ख़ में कैसे आ गये और हम और तुम बराबर कैसे हो गये? अल्लाह उन की इस बात से इतना गुस्सा हो गा कि इतना नाराज़ कभी न हुआ हो गा। फिर उन अहले तौहीद जहन्नमी लोगों को दोज़ख़ से निकाल कर जन्नत की नह्र के पास लाया जाये गा। उस समय काफ़िर उन को निकलता देख कर इच्छा प्रकट करें गे कि काश हम भी मुसलमान होते, तो हम भी उन के साथ जहन्नम से निकाल लिये जाते (इब्ने कसीर/ इब्ने हातिम)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास और इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि बद्र की लड़ाई में जब मुश्रिक जहन्नम रसीद किये गये और अल्लाह के अ़ज़ाब को देखा तो इच्छा प्रकट करने लगे कि हम भी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) पर ईमान लाते (वहीदी)

४. यानी तुम्हारा कुरआन और नबी का मज़ाक़ उड़ाना और उन का ठट्ठा-मख़ूल करना कुछ भी प्रभावित नहीं कर सकता है, इसलिये कि इस किताब को हम ही उतारने वाले हैं और इसकी हम ही सुरक्षा करने वाले हैं। जिस शान के साथ यह कुरआन उतरा है, उसी शान के साथ बिला एक शोशे की तब्दीली के पूरे संसार में पहुंच कर रहे गा और क़ियामत तक तनिक भी फेर-बदल से सुरक्षित रहे गा। ज़माना चाहे जितना बदल जाये, मगर इस के आदेश कभी न बदलें गे। हर ज़माना में दुश्मन ताक़तें उस कुरआन की आवाज़ को दबाने की कोशिश करें गी लेकिन उस के एक बिन्दु को कम न कर सकें गी। कुरआन की सुरक्षा से संबन्धित अल्लाह का यह वादा इस तौर पर पूरा हो कर रहा कि इसे देख कर दुनिया के कट्टर कुरआन दुश्मनों के सर शर्म से झुक गये। इंगलेन्ड का मशहूर इस्लाम दुश्मन "मवेर" लिखता है कि जहाँ तक मेरी मालूमात है दुनिया भर में कोई भी एक किताब ऐसी नहीं है जो चौदह सौ वर्ष तक हर प्रकार के तूफ़ानों का मुक़ाबला करने के बाद भी हर प्रकार की तह्रीफ़ (फेर बदल) से सुरक्षित हो। योरोप का एक और प्रोफ़ेसर लिखने पर मजबूर है कि हम आज भी इस कुरआन को मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मुंह से जिस प्रकार निकला था, वही कुरआन समझ रहे हैं। हालात और वाक़िआ़त बताते हैं कि हर ज़माना में उलमा की एक बड़ी तादाद ने इस की सुरक्षा की उन की सही मात्रा केवल अल्लाह ही को मालूम है। कुछ उलमा ने उस के माना व मतलब की सुरक्षा की, तो कुछ उलमा ने लिख कर उस को सुरक्षित कर दिया, कुछ ने याद कर के उस को अपने दिल में महफ़ूज़ कर लिया। यही कारण है कि इतना समय बीतने के बाद भी एक ज़ेर-ज़बर में तबदीली नहीं आयी। किसी ने रुकूअ़ गिन रखे हैं, किसी ने ज़ेर-ज़बर, पेश, किसी ने यह तक गिन रखा है कि कुरआन में कितने हुरूफ़ कितनी बार प्रयोग हुये हैं और कुछ लोगों ने तो नुक़्तों का शुमार कर के रिकार्ड तोड़ दिया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना से ले कर आज तक एक लम्हा भी ऐसा नहीं रहा जिस में हज़ारों हाफ़िज़ मौजूद न रहे हों।

आप ग़ौर करें तो देखें गे कि आठ-दस वर्ष का एक बच्चा जिसे अपनी मादरी ज़बान (मातृभाषा) का एक-दो पन्ना भी ज़बानी न याद हो गा, लेकिन कुरआन जैसी इतनी मोटी किताब को फ़र-फ़र सुनाता है। अगर किसी बड़े से बड़े हाफ़िज़ और क़ारी से अगर एक भी शब्द छूट जाये या कहीं ज़ेर-ज़बर में गड़बड़ी हो जाये तो एक हाफ़िज़ बच्चा भी उन्हें लुक़्मा देता है और उन्हें ग़ल्ती पर आगाह कर देता है। चारों ओर से तस्हीह करने➲

➲वाले भी लल्कारते रहते हैं कि हम लिखाई और छपाई में भी किसी प्रकार की ग़लती नहीं रहने दें गे। कुरआन की हिफ़ाज़त के तअ़ल्लुक़ से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना से ले कर आज तक यही तमाम तरीक़े अपनाए गये जिस की बुनियाद पर अल्लाह तआ़ला ने कहा कि "हम ने ही इसे नाज़िल किया है और हम ही इस की सुरक्षा करने वाले हैं"। (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)

فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ١٤ لَقَالُوٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ
اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ١٥ وَلَقَدْ
جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ١٦ وَ
حَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ١٧ اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ
السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ١٨ وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا
وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ
مَّوْزُوْنٍ ١٩ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ
لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ٢٠ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا
خَزَآئِنُهٗ وَمَا نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ٢١ وَاَرْسَلْنَا
الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ
وَمَآ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ٢٢ وَاِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ وَ
نُمِيْتُ وَنَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ٢٣ وَلَقَدْ عَلِمْنَا
الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ٢٤

फिर यह (सब के सामने दिन दहाड़े) उस (दर्वाज़ा) में से (आसमान पर) चढ़ जायें १५. तो भी (यही) कहें गे कि केवल हमारी आँखों में (किसी प्रकार का) नशा आ गया, बल्कि हमें जादू किया गया है १६. (यह नादान ग़ौर करें तो देखें कि) हम ने आसमानों में (नक्षत्रों के लिये) मन्ज़िलें बनाई हैं और हम ने देखने वालों के लिये आकाश को सजाया-संवारा १७. और हम ने उस को हर शैतान मर्दूद से महफ़ूज़ बनाया (कि वह और उस की जमाअ़त की वहाँ दाल नहीं गल सकती) १८. हाँ, ज़ो चोरी-चोरी बात सुने तो चमकता हुआ शोला उसे जा दबाता है[५] १९. और हम ने ज़मीन को (पानी पर) बिछाया है और उस पर (बड़े-बड़े अटल) पर्वत गाड़ दिये हैं और उस (ज़मीन) में हर प्रकार की मौज़ून {उचित, मुनासिब, संतुलित} वस्तुयें (खाने-पीने की) पैदा की हैं[६] २०. और हम ने उसी (ज़मीन)में तुम्हारे और (तुम्हारे मातहतों के) जिन के तुम रज़्ज़ाक़ (रिज़्क़ देने वाले) नहीं, गुज़ारे के अस्बाब पैदा किये हैं २१. और (दुनिया में) जो-जो वस्तुयें मौजूद हैं हमारे पास उन के कई ख़ज़ाने हैं और हम (हमेशा) अन्दाज़े से पैदा किया करते हैं २२. और (देखो कि) हम ही पानी से भरे हुये (बोझल-बोझल) बादल भेजते हैं फिर आसमान से पानी उतार कर तुम को पिलाते हैं और तुम तो (ऐसे आ़जिज़ हो कि) उस को (अपने पास) जमा नहीं रख सकते (बरसने के बाद ६ रूप में सूखता गया) २३. और हम तुम को ज़िन्दा रखते हैं और हम ही तुम को मारते हैं और हम ही (सब चीज़ों के हक़ीक़ी) मालिक हैं २४. और हम तुम से पहले गुज़रे हुओं को और पीछे रहे हुओं सब को जानते हैं (कमाले क़ुदरत के अ़लावा हमारा अ़िल्म भी ऐसा कुशादा है)

....

५. शैतान जब जासूसी के लिये आता है तो उस को मारते हैं। फिर वह मर जाता है, या जल जाता है या घायल➲

➲हो जाता है। कुछ उलमा का कहना है कि नबुव्वत से पहले यह शोले नहीं मारे जाते थे। कुछ ने कहा कि मारे तो जाते थे मगर इतने अधिक नहीं मारे जाते थे। आप की नबुव्वत के बाद से आसमान की पूरी चौकसी और चौकीदारी की गयी है, अब मुश्किल से भी कोई शैतान बात चुराने के लिये वहाँ फटक नहीं पाता है।

सहीह हदीस में है कि जब अल्लाह तआला आसमान में कोई आदेश लागू करता है तो फ़रिश्ते फ़र्मा बरदारी करते हुये अपने पंख फड़ फड़ाने लगते हैं। अल्लाह के कलाम की आवाज़ ऐसी होती है जैसे कोई ज़न्जीर (किसी सपाट पत्थर पर चलाई जाये।) फिर फ़रश्ति परस्पर एक दूसरे को उस आदेश के बारे में बताते हैं और कहते हैं कि अल्लाह ने जो भी आदेश जारी किया है सत्य है, उस को जारी करने का हक़ है इस लिये कि वह सब से बुलन्द है। उन की परस्पर बात-चीत के समय शैतान भी घात लगा कर थोड़ी-बहुत बातें सुन लेता है और आ कर अपने ज्योतिषियों और काहिनों को एक सच में सौ झूठ मिला कर बतला देता हैं। फिर काहिनों की बतलाई १०० बातों में से वह एक सच निकलता है और बाक़ी झूठी निकलती हैं (वहीदी)

६. अल्लाह तआला ने ज़मीन को इस प्रकार फैला दिया है कि कोई भी आंख ऊँचाई-नीचाई को महसूस नहीं कर पाती और हर स्थान अपनी जगह समतल दिखाई पड़ता है। अगर ज़मीन की यह विशेष्ता न होती तो वह तमाम ज़मीनी खुसूसिय्यात भी वजूद में न आतीं जिन्हों ने ज़मीन को ज़िन्दगी व रोज़ी-रोटी के लिये खुशगवार बना दिया है। यही वजह है कि कुरआन मजीद इस प्रकार के फैलाव का जगह-जगह ज़िक्र करता है और कहता है कि अल्लाह ही है जिस ने उस को फ़र्श की तरह बिछा दिया है। यहाँ इस आयत में भी इसी ओर इशारा किया है। (तर्जुमान)

وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۚ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٢٦﴾ وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِن قَبْلُ مِن نَّارِ السَّمُومِ ﴿٢٧﴾ وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٢٨﴾ فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ﴿٢٩﴾ فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٣٠﴾ إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ أَن يَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٣١﴾ قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٣٢﴾ قَالَ لَمْ أَكُن لِّأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ مِن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٣٣﴾ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٣٤﴾ وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ﴿٣٥﴾ قَالَ رَبِّ فَأَنظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٣٦﴾ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ﴿٣٧﴾ إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ

२५. और (ऐ मुहम्मद!) तेरा पर्वरदिगार उन सब को (एक दिन) जमा करे गा। बेशक वह बड़ी हिक्मत वाला और अ़िल्म वाला है २६. और (सुनो!) हम ही ने इन्सान (यानी आदम) को सड़ी कीचड़ की खन्खनाती मिट्टी से पैदा किया २७. और इस से पहले जिन्नों (के बाप)को तेज़ आग से बनाया था २८. और (तुम को उस समय को याद कर के फ़ख्र करना चाहिये) जब तुम्हारे पर्वरदिगार ने फ़रिश्तों से कहा: मैं एक आदमी को सड़ी मिट्टी से पैदा करने वाला हूँ॰ २९. फिर जब मैं उस को दुरुस्त बना चुकूँ और उस में अपनी (तरफ़ से) रूह फूंक दूँ तो तुम (आदर और सम्मान करते हुये) उसे सज्दा करना ३०. पस (आदेश का पालन क़रते हुये) सब फ़रिश्तों ने सज्दा किया ३१. लेकिन इब्लीस ने सज्दा करने वालों के साथ होने से इन्कार किया ३२. (तो) अल्लाह ने कहा कि ऐ इब्लीस! तुझे क्या रुकावट पेश आयी कि तू (आदम के➲

आदर-सम्मान के लिये)सज्दा करने वालों (की जमाअ़त) में शामिल नहीं हुआ ३३. (शैतान) बोला कि मैं तो ऐसे शख़्स के लिये सज्दा कभी न करूँ गा जिस को तू ने सड़ी मिट्टी से पैदा किया (भला बड़ा, छोटे को झुक कर निहायत आ़जिज़ी से क्यों कर सज्दा करे?) ३४. अल्लाह ने कहा: तू इस जमाअ़त से निकल जा! क्यों कि तू मर्दूद है ३५. और क़ियामत तक तुझ पर लानत रहे गी[९] ३६. उस ने कहा: मेरे पर्वरदिगार! (जो हुआ सो हुआ) बन्दों के (हिसाब के लिये) उठने के दिन तक मुझे मुहलत अ़ता हो३७+३८.अल्लाहने कहा:अच्छा तुझे तयशुदा समय(यानी कियामत) तक मुहलत है

....

७. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि इस आयत में 'सल्साल' से "सूखी मिट्टी" मुराद है। 'ह-मइम्मस्नून' "सनी हुयी कीचड़" को कहते हैं। इब्ने अ़ब्बास से यह भी रिवायत है कि अल्लाह ने जिन्नों को आग की लपट से पैदा किया। सहीह मुस्लिम की रिवायत में है कि फ़रिश्ते नूर से, जिन्नात आग से और आदम मिट्टी से पैदा किये गये हैं।

इस आयत में आदम अ़लै० की शराफ़त और बुज़ुर्गी बयान करना उद्देश्य है। और यह भी बताना है कि वह जिस चीज़ से पैदा किये गये हैं वह पाक है और उन की अस्ल बिल्कुल साफ़-सुथरी हैं जमहूर उलमा का कहना है कि 'जान्न' जिन्नों के पिता का नाम है जान्न उस को इस लिये कहा गया है कि वह लोगों की आंखों से पोशीदा हैं जिन्नों में भी मुस्लिम और काफ़िर हैं। वह भी इन्सानों की तरह खाते-पीते, मरते हैं। शैतानों में कोई मुसलमान नहीं है। वह तब मरें गे जब उन का बाप इबलीस मरे गा। यह बात तफ़्सीर ख़ाज़िन में है।

यहाँ पर इन्सान और जान्न की पैदाइश का ज़िक्र कर के अल्लाह तआ़ला यह बतलाना चाहता है कि जो पहली बार पैदा करने की क्षमता रखता है वह दूसरी बार भी पैदा करने की कुदरत रखता है (तर्जुमान नवाब रह०)

८. तमाम उम्मत का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि 'मिन् रूही' (अपनी रूह फूंक दूँ) में अपनी तरफ़ निस्बत करना आदम की बुज़ुर्गी और बड़ाई साबित करने के लिये है। एक दूसरी आयत में 'रूह' की क़ीमत को बयान किया गया है कि "रूह मेरे रब के हुक्म से है।"। यानी रूह अल्लाह के हुक्म का नाम है। इसी प्रकार हज़रत ई़सा के बारे में फ़रमाया: "अल्लाह की तरफ़ से रूह था"। मतलब यह हुआ कि अल्लाह की तमाम मख़्लूक़ में रूह भी एक मख़्लूक़ है। और इन्सान के पास इतना ज़िल्म नहीं है कि उसे जान सके। फ़रिश्तों को सज्दा करने का जो हुक्म दिया गया इस हुक्म में अल्लाह की शान ज़ाहिर हो रही थी इस लिये फ़रिश्तों ने उन को सज्दा किया। कुछ उलमा का कहना है कि आदम क़िब्ला के तौर थे, यानी फ़रिश्तों ने आदम को क़िब्ला मान कर उन की तरफ़ रुख़ कर अल्लाह को सज्दा किया। (मेरा भी यही ख़याल है- ख़ालिद) अ़ल्लामा सुयूती का कहना है कि यह सज्दा केवल सर झुकाने की हद तक आदर-सम्मान के तौर पर था, ज़मीन पर माथा टेकने की तरह नहीं था। कुछ उलमा का कहना है कि ज़मीन पर माथा टेकने की तरह सज्दा था।

बहर हाल यह बात बिल्कुल तै है कि जिस प्रकार अल्लाह की ज़िबादत की निय्यत से सज्दा किया जाता है, इस प्रकार ज़िबादत का सज्दा न था, बाक़ी आप जिस प्रकार का सज्दा चाहें मान लें। फ़रिश्तों ने हुक्म मिलते ही तुरन्त उसका पालन करते हुये सज्दा किया। यह केवल इस लिये कि उन को यह नहीं देखना था कि किस के आगे सज्दा करने का हुक्म हो रहा है, बल्कि यह देखना था कि कौन हुक्म दे रहा है, इसी लिये तुरन्त सज्दा में गिर गये। हदीस शरीफ़ में है कि सहाबा ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा कि कौन सा अमल सब से अफ़्ज़ल है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: नमाज़ को उस के अव्वल वक़्त पर अ़दा करना। यह मालूम रहे कि ज़िशा की नमाज़ एक तिहाई रात तक विलंब से पढ़ी जा सकती है। (मवाहिब)

९. हाफ़िज़ इब्ने कसीर रह० फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने इब्लीस को मल-ए-आ़ला से जो निकलने का हुक्म दिया था उस की मुख़ालिफ़त मुहाल और असंभव थी (यानी अगर इब्लीस न निकलना चाहता और यहाँ भी निकलने

से इन्कार कर देता तो यह नामुमकिन और मुहाल था) अब क़ियामत तक उस पर लानत पड़ती रहे गी। हज़रत सओद बिन जुबैर रज़ि० से रिवायत है कि जब अल्लाह ने उस पर लानत की तो उस की सूरत फ़रिश्तों जैसी नहीं रही। उस ने हसद की वजह से क़ियामत तक गुमराह करने की मुहलत मांगी जो उसे दे दी गयी। 'रजीम' का अर्थ है "आग की मार" और इस का अर्थ "लानत किया हुआ" का भी है। इस शब्द का प्रयोग गाली-डाँट, फटकार, बुरा-भला कहना और धक्का देने वग़ैरह के भी माना में इस्तेमाल होता है। 'यौमुद्दीन' से मुराद जज़ा और सज़ा का दिन यानि क़ियामत का दिन मुराद है। यानी क़ियामत तक उस पर लानत पड़ती रहें गी। इस का मतलब यह नहीं कि क़ियामत के दिन के बाद उस पर से लानत हटा ली जाये गी। नहीं, बल्कि हमेशा-हमेशा तक लानत की मार उस पर पड़ती रहे गी। एक मतलब यह भी हो सकता है कि क़ियामत तक तो लानत की मार पड़े गी और इस के बाद अ़ज़ाब की मार पड़े गी और लानत का सिलसिला पूरा हो जाये गा (तर्जुमान)

الْمَعْلُومِ ﴿٣٨﴾ قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ
فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾ إِلَّا عِبَادَكَ
مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾ قَالَ هَٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾
إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ
اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿٤٢﴾ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ
أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾ لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ
جُزْءٌ مَقْسُومٌ ﴿٤٤﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾
ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ آمِنِينَ ﴿٤٦﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ
مِنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿٤٧﴾ لَا يَمَسُّهُمْ
فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾ نَبِّئْ عِبَادِي
أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾ وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ
الْأَلِيمُ ﴿٥٠﴾ وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ﴿٥١﴾ إِذْ دَخَلُوا
عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٢﴾ قَالُوا

३९. शैतान ने कहा कि मेरे पर्वरदिगार! इस की वजह से तू ने मुझे गुमराही का मुज्रिम ठहराया है, मैं बुरे काम उन की नज़रों में सुन्दर बना कर पेश करूँ गा और (जिस प्रकार भी बन पड़े गा) उन सब को गुमराह करने की चेष्टा करूँ गा ४०. मगर जो तेरे मुख़्लिस बन्दे हों गे (उन पर मेरा कोई बस न चले गा) ४१. अल्लाह ने कहा: यह बात मुझे भी मन्ज़ूर है (और मैं हमेशा इस बात को मलहूज़ {ध्यान में} रखूँ गा) ४२. कि मेरे नेक बन्दों पर तेरा ज़ोर और क़ाबू न हो गा मगर उन्हीं गुमराहों पर हो गा जो तेरे ताबे हों गे ४३. और (तुझे और तेरी जमाअ़त को ख़बर रहे कि आख़िर कार) उन सब का ठिकाना जहन्नम हो गा ४४. उस के सात दर्वाज़े हों गे। उन में से हर एक फ़िर्क़े के लिये एक दर्वाज़ा मुक़र्रर हो गा (मुश्रिकों के लिये अलग, बिदअ़तियों के लिये अलग, बे नमाज़ियों के लिये अलग और हराम ख़ोरों के लिये अलग) ४५. मुत्तक़ी लोग बाग़ों और चश्मों में हों गे ४६. (उन से) कहा जाये गा कि सलामती से उन बाग़ों में दाख़िल हो चलो ४७. और हम ने उन के सीनों से रन्जिश निकाल दी हो गी भाई-भाई हो कर एक-दूसरे के आमने-सामने (तख़्तों पर) बैठा करें गे ४८. उस (जन्नत) में उन को (किसी तरह की)कोई तक्लीफ़ न हो गी और न ही वह उन (बाग़ों) से निकालें जायें गे ४९. (पस ऐ नबी!) तू मेरे बन्दों को सूचना दे कि मैं बड़ा ही बख़्शने वाला मेहरबान हूँ ५०. और (यह भी बतला दे कि) मेरा अ़ज़ाब भी बड़ा हीं दुःख दाई है ५१. और

➲उन को इब्राहीम के मेहमानों का (जो वास्तव में फ़रिश्ते थे और इन्सान की सूरत में आये थे[१०]) हाल सुना कि ५२. जब वह उस के पास आये तो उन्हों ने (दस्तूर के मुताबिक़) सलाम किया (जब उन्हों ने खाने के लिये अपने हाथ नहीं बढ़ाये तो) इब्राहीम ने कहा कि हमें तुम से डर लगता है।

....

१०. हज़रत इब्राहीम अ़लै० को मेहमानी का बड़ा शौक़ था। एक दिन १२ ख़ूबसूरत लड़के इन के हाँ मेहमान बन कर आए, इन में हज़रत जिब्रील भी थे। इन लोगों ने हज़रत इब्राहीम अ़लै० को सलाम किया। हज़रत इब्राहीम इन को देख कर बेपनाह प्रसन्न हुये और आव देखा न ताव, चट-पट में एक मोटा-ताज़ा बछड़ा ज़ब्ह कर भून कर के ले आये और उन के सामने रख दिया। आप की बीवी सारा और हाजिरा भी ख़िदमत के लिये खड़ी थीं। उन मेहमानों ने खाना नहीं खाया और बता दिया कि घबराने की कोई बात नहीं हम लोग फ़रिश्ते हैं इस लिये नहीं खाते हैं। आप को एक लड़के की बशारत अवश्य देते हैं। इस पर हज़रत सारा को आश्चर्य हुआ कि मैं और मेरे पति बूढ़े हो चुके हैं फिर यह कैसे संभव है? कुरआन ही में एक दूसरे स्थान पर बांझ होने का ज़िक्र है। फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ नबुव्वत के मुबारक घराने वालो! अल्लाह की तुम पर रहमत और बर्कत है। हज़रत इब्राहीम को जब इतमीनान हो गया तो उन्हों ने विस्तार से मालूमात हासिल करना आरंभ किया। तो फ़रिश्तों ने बताया कि हम कुकर्मी लूतियों को हलाक करने के लिये भेजे गये हैं। हज़रत इब्राहीम ने यह सुन कर उस बस्ती में हज़रत लूत की मौजूदगी की वजह से क़ौमे लूत के बारे में सिफ़ारिश के तौर पर झगड़ना शुरू किया तो फ़रिश्तों ने कहा कि हम भी जानते हैं कि उस बस्ती में हज़रत लूत भी मौजूद हैं हमें हुक्म दिया गया है कि उन की बीवी को छोड़ कर बाक़ी उन के समस्त परिवार को अ़ज़ाब से बचा लिया जाये। और ऐ इब्राहीम! यह भी सुन लो कि अल्लाह की तरफ़ से बिल्कुल ही फ़ैसला लिया जा चुका है और इस में अब कोई तबदीली असंभव है इस लिये आप की सिफ़ारिश बेकार है।

फिर जब फ़रिश्ते हज़रत इब्राहीम के पास से उठ कर हज़रत लूत के पास पहुंचे तो वह भी उन की सुन्दरता के नाते घबरा गये और क़ौम के बुरे लोग भी उन से कुकर्म करने के लिये पिल पड़े। हज़रत लूत ने उन से विनती करते हुये कहा कि मेरे मेहमानों के साथ बुरा बर्ताव कर के हमें रुस्वा न करो। उन बदकारों ने बड़ा बेहूदा उत्तर दिया तो फ़रिश्तों ने भी अपने आप को और अपने इरादे को ज़ाहिर कर दिया। हज़रत लूत से कहा कि कुछ रात गये बस्ती से अपने घर वालों को ले कर निकल जाना इस लिये कि सुब्ह होते-होते उन पर अ़ज़ाब आ जाये गा और यह भी ध्यान रहे कि अ़ज़ाब आने के पश्चात् उन की चीख़-पुकार को सुन कर उन की तरफ़ झाँकना भी नहीं। आप सब को नजात मिल जाये गी, लेकिन पत्नी अवश्य ही हलाक हो गी।

चुनान्चे ऐसा ही हुआ। सुब्ह को एक सख़्त चीख़ ने उन के कानों के पर्दे फ़ाड़ दिये और जहन्नम के पत्थरों की उन पर वर्षा की गयी। इन के साथ हज़रत लूत की पत्नी भी स्वाहा हो गयी। कुछ जाहिलों का कहना है कि वहाँ एक ज्वाला मुखी पहाड़ था उस के द्वारा बस्ती तबाह की गयी। लेकिन यह केवल जिहालत की बातें हैं। बहर हाल अल्लाह ने उन पर चीख़ की सख़्त आवाज़ भेजी इस के बाद उन पर ऊपर से पत्थर बरसाए गये और सब ज़ालिम मलिया मेट कर दिये गये। अल्लाह सब कुछ करने की क़ुदरत रखता है इस में तावील करना मूर्खता है। (मवाहिब) कुरआन ने जो कुछ बयान किया है वही हक़ और सच है। इस में केवल उन ही लोगों को शक हो सकता है जिन के दिल ईमान से खाली हैं।

لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ۝ قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ
عَلٰٓى اَنْ مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ۝ قَالُوْا

५३. उन्हों ने कहा: ऐ इब्राहीम! खौफ़ मत कर, हम अल्लाह की तरफ़ से तुझे एक बड़े ज़िल्म वाले लड़के की शुभ सूचना देते हैं ५४. इब्राहीम➲

بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ﴿٥٥﴾ قَالَ وَمَنْ
يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ ﴿٥٦﴾ قَالَ فَمَا
خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٧﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ
اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٥٨﴾ اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ۭ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ
اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٩﴾ اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَآ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٦٠﴾
فَلَمَّا جَاۗءَ اٰلَ لُوْطِ ِۨ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ
مُّنْكَرُوْنَ ﴿٦٢﴾ قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ
يَمْتَرُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٦٤﴾
فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا
يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٥﴾
وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَاۗءِ

बोला: क्या तुम मुझे बुढ़ापे में बेटे की ख़ुशख़बरी सुनाते हो, पस तुम (ज़रा तफ़्सील से बताओ कि) मुझे किस चीज़ की ख़ुश ख़बरी देते हो ५५. वह बोले कि (इब्राहीम!) हम ने तुझ को सच्ची ख़ुशख़बरी सुनाई पस तू निराश मत हो ५६. इब्राहीम बोला कि पर्वरदिगार की रहमत से गुमराह लोगों के अलावा कोई भी निराश नहीं होता (ख़ैर, इस बात-चीत के बाद) ५७. इब्राहीम ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूलों! तुम्हारा (दुनिया पर) क्या काम है? (कि जमा हो कर आये हो) ५८. वह बोले कि हम बद कार क़ौम (यानी लूतियों) की तरफ़ भेजे गये हैं (कि उन्हें तबाह करें) ५९. मगर लूत के ख़ान्दान वाले जितने भी हों सब को हम बचा लें गे ६०. अल्बत्ता उस की बीवी रहे गी जिसे अज़ाब में पीछे रहने वालों में हम ने ताक रखा है ६१. फिर जब अल्लाह के भेजे हुये (फ़रिश्ते) लूत के ख़ान्दान वालों के पास पहुंचे तो (परिचय न होने के नाते) ६२. लूत ने कहा कि तुम अजनबी क़ौम (के) हो ६३. उन्हों ने कहा कि हम तेरे पास वह चीज़ लाये हैं जिस में तेरी क़ौम को शक (और इन्कार) है ६४. (यानी) हम तेरे पास सच्चा आदेश ले कर आये हैं और हम बिल्कुल सच्चे हैं ६५. पस तू रात ही से अपने ख़ान्दान वालों को लेकर निकल जाना और तुम स्वयं उन के पीछे (उन की निग्रानी करते हुये) चलना और तुम में से कोई भी फिर कर न देखे (कि बदकारों से क्या मामला पेश आया, वर्ना दहशत की वजह से तुम को भी तक्लीफ़ हो गी) और जहाँ तुम को हुक्म होता है चले जाना[११] ६६. और हम (अल्लाह) ने लूत को इस बारे में सूचित क़िया कि सुब्ह होते ही

....

११. हज़रत लूत से फ़रिश्ते कह रहे हैं कि थोड़ी सी रात बीतने के पश्चात् आप अपने घर वालों को लेकर यहाँ से चले जायें। आप उन सब के पीछे रहें ताकि उन की अच्छी तरह निग्रानी कर सकें। यही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का भी तरीक़ा था कि आप लश्कर के आख़िर में चला करते थे ताकि कमज़ोर और गिरे-पड़े लोगों का ख़याल रहे। फिर भी बता दिया जब क़ौम पर अज़ाब आ जाये और उन का शोर, हंगामा और चीख सुनाई पड़ने लगे तो उन की तरफ़ नज़र उठा कर भी न देखना। इस लिये कि तुम को उसी अज़ाब और सज़ा में उन्हें छोड़ जाने का आदेश है। (इब्ने कसीर)

लूतियों को जब मालूम हुआ कि हज़रत लूत के घर में कुछ सुन्दर लड़के मेहमान बन कर आये हैं तो वह बुरी निय्यत के साथ ख़ुशियाँ मनाते हुये हज़रत लूत के घर आ धमके। हज़रत लूत ने उन्हें बहुत समझाया-बुझाया

➲और कहा कि मेरे मेहमानों के साथ बुरा ब्रर्ताव कर के मुझे रुस्वा न करो। उस वक़्त तक उन्हें यह नहीं मालूम था कि मेहमान फ़रिश्ते हैं। उन्हों ने उत्तर दिया कि तुम्हें उन की इ़ज़्ज़त का जब इतना ही ख़याल था तो उन्हें मेहमान ही क्यों बनाया? आप ने उन को इस प्रकार भी समझाया कि तुम्हारी औ़रतें जो मेरी बेटियाँ हैं उन से निकाह कर के अपनी इच्छा पूरी कर सकते हो। मगर वह तो नशे में पागल हो रहे थे और एक भी बात सुनने को तय्यार न थे।

एक ख़ास बात जो ध्यान देने के क़ाबिल है वह यह है कि अल्लाह अपने नबी की उम्र की क़सम खा कर उन की हालत बयान फ़रमा रहा है। इस में नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का बहुत बड़ा आदर और सम्मान है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह तआ़ला ने जितनी भी मख़्लूक़ को पैदा किया है उन में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बुजुर्ग कोई नहीं है। अल्लाह तआ़ला ने आप की उम्र के अ़लावा और किसी की उम्र की क़सम नहीं खाई है। 'सक्-रत' से मुराद "गुमराही" है।

अन्त में सूरज निकलते ही आकाश से एक दिल दहला देने वाली और जिगर को टुकड़े-टुकड़े कर देने वाली चीख़ सुनाई दी और उन बस्तियों को आकाश की ऊँचाई तक उठा कर वहीं से पलट दिया गया, फिर ऊपर से पक्की मिट्टी के कन्कड़ बरसाए गये।

'असहाबे-ऐका' से मुराद हज़रत शुऐ़ब अ़लै० की क़ौम है। 'ऐका' दरख़्त के झुन्ड को कहते हैं। इन की बस्तियाँ भी लूतियों के क़रीब आबाद थीं और इन का ज़माना भी उन के ज़माना से क़रीब था। यह बस्तियाँ आने-जाने वाले रास्तों पर आबाद थीं। 'हिज्र वालों' से मुराद समूद की क़ौम है जिस में हज़रत स्वालेह अ़लै० भेजे गये थे। चूंकि एक नबी को झुठलाना गोया तमाम नबिय्यों को झुठलाना है, इस लिये बहुवचन का सेग़ा इस्तेमाल किया है (देखें आयत ८०) यह क़ौम इतनी ताक़त वर थी कि समूचे पहाड़ों को ही काट कर मकान बना लेते थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब तबूक की लड़ाई के लिये ज़ाते हुये इस इलाके से गुज़रे तो अपने सर पर कपड़ा डाल लिया और अपनी सवारी तेज़ कर दी, फिर फ़रमाया कि इन बस्तियों से हो कर जब गुज़रो तो रोते हुये गुज़रो और इन से नसीहत हासिल करो (इब्ने कसीर, फ़त्हुल बयान)

مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ
يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٦٧﴾ قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ﴿٦٨﴾
وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ﴿٦٩﴾ قَالُوْٓا اَوَلَمْ نَنْهَكَ
عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِيْٓ اِنْ كُنْتُمْ
فٰعِلِيْنَ ﴿٧١﴾ لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٢﴾
فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا
سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿٧٤﴾
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ﴿٧٥﴾ وَاِنَّهَا
لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ﴿٧٦﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾
وَاِنْ كَانَ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَانْتَقَمْنَا

उन की जड़-बुनियाद काट दी जाये गी ६७. और शहर वाले (जिन को बदकारी की लत थी) प्रसन्नता का इज़हार करते हुये (लूत के पास) आ मौजूद हुये (और लूत से उन लड़कों के लिये दर्ख़ास्त की) ६८. लूत ने कहा कि ये लोग मेरे मेहमान हैं पस तुम मुझे ज़लील न करो ६९. और अल्लाह से डरो और मुझे रुस्वा न करो ७०. (वह बड़ी तेज़ी से) बोले कि हम ने तमाम दुनिया (के लोगों की मेहमानी) से तुझे मना नहीं किया है? ७१. लूत ने कहा कि यह मेरी लड़कियाँ मौजूद हैं अगर तुम करना ही चाहते हो (तो उन से निकाह कर लो। मगर वह कहाँ मानते थे) ७२. तेरी जान की क़सम! वह तो अपनी मस्ती में झूम रहे थे ७३. पस सुब्ह (की➲

مِنْهُمْ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٩﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ
اَصْحٰبُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٨٠﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا
فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٨١﴾ وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ

रोशनी) होते ही एक ज़ोरदार चीख़ ने उन को हलाक कर दिया (कि उस चीख़ से उन के दिल फट गये) ७४. फिर हम ने उस बस्ती के ऊपर की तरफ़ को नीचे (की तरफ़) कर दिया और उन पर खन्गरों की तरह के पत्थर बरसाये ७५. बेशक इस क़िस्से से समझदारों के लिये बहुत सी निशानियाँ हैं ७६. और बिला शुब्हा लूतियों की बस्ती उन (अ़रब वालों की) सीधी राह में नज़र आती है ७७. बेशक इस में ईमानदारों के लिये कई एक निशामियाँ हैं ७८. और (शुअ़ैब की क़ौम) ऐका (वन) वाले बेशक़ (वह भी नबिय्यों को झुठलाने की वजह से अल्लाह के नज़दीक) ज़ालिम थे ७९. पस हम ने उन से (भी) बदला लिया। और यह दोनों क़ौमें (यानी उन के खंडरात) आ़म रास्ता पर पड़े हैं ८०. और (समूद की क़ौम) हिज्र वालों ने भी रसूलों को झुठलाया था ८१. और हम ने उन को कई एक आदेश दिये (लेकिन) फिर भी वह उन से मुंह मोड़े ही रहे ८२. और (दुनिया के कामों में वह इतने होशियार थे कि) पहाड़ों को काट कर बे ख़ौफ़ हो कर

हाशिया नहीं है

مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ﴿٨٢﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ
مُصْبِحِيْنَ ﴿٨٣﴾ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٤﴾
وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا
بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ
الْجَمِيْلَ ﴿٨٥﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨٦﴾ وَلَقَدْ
اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿٨٧﴾
لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ
وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾
وَقُلْ اِنِّيْٓ اَنَا النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٩﴾ كَمَآ اَنْزَلْنَا
عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ﴿٩٠﴾ الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ﴿٩١﴾
فَوَرَبِّكَ لَنَسْئَلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٢﴾ عَمَّا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ عَنِ

घर बना लेते थे (फिर भी यह होशियारी उन के कुछ काम न आई) ८३. और सुब्ह होते ही उन को एक अ़ज़ाब ने तबाह कर दिया ८४. फिर उन की कमाई ने उन को कुछ काम न दिया और (वह अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ काम करते थे और यह नहीं जानते थे कि) ८५. हम ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ भी इन के बीच में है उसको (हक़ और नेक व बद का बदला देने के) सच्चे नतीजे से पैदा किया है। और कुछ संदेह नहीं कि क़ियामत की घड़ी आने वाली है पस तू (उन की शरारतों की पर्वा न कर और) अच्छे ढन्ग से दरगुज़र कर लिया कर ८६. तेरा पर्वरदिगार बड़ा ही पैदा करने वाला, बहुत बड़े अ़िल्म वाला है ८७. हम ने तुझे सात आयतें मसानी की (जो बार-बार पढ़ने के क़ाबिल हैं) यानी अ़ज़ीम कुरआन दिया है[१२] (जिस का नाम सूरः फ़ातिहा है जिस में तमाम कुरआन का

الْمُشْرِكِيْنَ ۝ اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ۝

संक्षिप्त बयान है) ८८. जिस क़दर हम ने लोगों में से मुख़्तलिफ़ क़िस्मों को (ऐश व आराम के सामान से) नवाज़ा हुआ है तू उन की तरफ़ कभी नज़र न कर और उन (काफ़िरों) के हाल पर अफ़्सोस न किया कर (कि हाए यह ईमान क्यों नहीं लाते) और मुसलमानों के साथ दिल से मिला कर ८९. और तू (काफ़िरों को मुख़ातब कर के) कह दे कि मैं तो केवल खुल कर डराने वाला हूँ ९०+९१. (तुझे किताब का मिलना इसी तरह है) जैसे उन पर जिन्हों ने अल्लाह की किताब को बाँट कर टुक्ड़े-टुक्ड़े कर दिया हम ने किताबें उतारी हैं (ठीक इसी तरह तुझ को भी किताब दी है) ९२.पस तेरे पर्वरदिगार की क़सम हम अवश्य ही उन सब से सवाल करेंगे ९३. हर उस चीज़ का जो वह करते थे। ९४. पस जिस काम का तुझे हुक्म हुआ है तू उसी की धुन में लगा रह और मुश्रिकों से मुंह फेर रख (उन की मुख़ालिफ़त की पर्वा न कर) ९५+९६. ठट्ठे बाज़ों को जो (महज़ बेवकूफ़ी से) अल्लाह के साथ और माबूद बनाते हैं हम तेरी तरफ़ से काफ़ी हैं।

....

१२. हदीसों से साबित है कि यहाँ 'मसानी की आयतों' से मुराद सूरः फ़ातिहा है। यहाँ पर विशेष रूप से इस का बयान इस लिये किया गया है कि वह कुरआन की मुकम्मल शिक्षा का खुलासा और ईमान व अ़मल की ज़िन्दगी का दस्तूरुल्-अ़मल (कार्य क्रम) है। जिस जमाअ़त की ज़िन्दगी इन सातों आयतों की हिदायत और राह नुमाई में गुज़र रही हो, मुमकिन ही नहीं है कि वह दीनी व दुनियावी सआ़दत (सौभाग्य) से वन्चित रहे। यहाँ पर सूरः फ़ातिहा की फ़ज़ीलत के साथ-साथ यह बात भी मालूम हो गयी कि सूरः फ़ातिहा में सात आयतें हैं। इन में आयतों की कमी बेशी कर के आयतों की मात्रा को कम नहीं किया जा सकता। सूरः फ़ातिहा की आयतों पर ग़ौर किया जाये तो मालूम होता है कि 'अन्-अ़म-त अ़लैहिम' के बाद आयत है। ऐसा मान लेने से इस में ७ आयतें बनती हैं, वर्ना फिर 'बिस्मिल्लाहिर्रहमः निर्रहीम' को सूरः की आयत मानना पड़े गा, तब जा कर सात आयतें मुकम्मल हों गी।

सहाबा और ताबेअ़ीन की एक बहुत बड़ी जमाअ़त का यही कहना है कि 'बिस्मिल्लाह हिर्रहमा निर्रहीम' सूरः फ़ातिहा की पहली आयत है। और अहादीस से यह भी मालूम होता है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सूरः फ़ातिहा में सात स्थानों पर ठहरते थे और जहाँ ठहरते थे उस के अन्तिम हर्फ़ को खींच कर ख़त्म करते थे। आज कल का तीन सांसों में पढ़ने का तरीक़ा बिल्कुल ग़लत है। रावी (हदीस रिवायत करने वाले) ने इतने ही पर बस नहीं किया बल्कि हर-हर आयत रुक कर और हर आयत के अन्तिम हर्फ़ को खींच कर बता दिया है। और सूरः फ़ातिहा पढ़ने का सही तरीक़ा यही है भी।

सूरः फ़ातिहा एक दुआ है। इस की हर आयत सवाली के मुंह से निकली हुयी एक आवाज़ है। जब एक सवाली किसी के सामने सवाल करता है तो एक ही सांस में सारे सवाल नहीं पेश कर देता है और न ही किसी भाषण देने वाले की तरह एक ही सांस में कई वाक्य कह जाता है, बल्कि निहायत आ़जिज़ी के साथ ठहर-ठहर कर एक-एक प्रश्न को डरते-डरते दूसरे के सामने रखता है। अगर इस सूरः के पढ़ने वाले के अन्दर यह ख़याल हो पैदा हो जाये तो हर-हर आयत उसे रुकने पर मजबूर करे गी और बग़ैर ठहराए हुये आगे नहीं बढ़ने देगी। इस में कोई शक नही कि हर आयत एक-दूसरे से मिली हुयी है और एक ही आयत में बात कभी नहीं भी पूरी होती है। लेकिन मालूम होना चाहिये कि ठहरने और रुकने के लिये इतनी ही बात काफ़ी नहीं है। मुख़ातब करने का तरीक़ा एक ख़तीब ही बेहतर तौर पर जानता है कि कहाँ रुकना चाहिये और कहाँ नहीं। उन स्थानों पर जहाँ नबी करीम सल्लल्लाहु

अ़लैहि वसल्लम से ठहरना साबित है अगर उन पर ग़ौर किया जाये तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि मुख़ातब करने का तरीक़ा यही है कि यहाँ ठहरा जाये। बग़ैर ठहरे कलाम में ज़ोर नहीं पैदा होता है। अगर्चे आयत अभी पूरी हुयी है, लेकिन मौक़ा यही कहता है कि ठहरा जाये और आगे के जुम्ले से न मिलाया जाये। हालाँकि बाद के उलमा ने उन मक़ामात पर न ठहरने को कहा है, जहाँ आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से ठहरना साबित है। (तर्जुमानुल कुरआन मौलाना आज़ाद रह०) हक़ीक़त यह है कि जिन जगहों पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से ठहरना साबित है वहाँ ज़रूर ठहरना चाहिये। आज कल के क़ारियों के बनाये हुये ठहरने के तरीक़ों पर हर्गिज़ अ़मल न करना चाहिये। इस लिये कि हिदायत नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के तरीक़े पर ही अ़मल करने में है। मौलाना आज़ाद रह० की पूरी तहरीर का यह उद्देश्य है।

ٱلَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ ٱللَّهِ إِلَٰهًا ءَاخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝٩٦
وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ۝٩٧
فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُن مِّنَ ٱلسَّٰجِدِينَ ۝٩٨ وَٱعْبُدْ
رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ ٱلْيَقِينُ ۝٩٩

पस वह जान लें गे (कि ऊँट किस करवट बैठता है) ९७. और यह (तो) हमें मालूम है कि (इन्सानी तक़ाज़ा के तहत) उन की (वाहियात) बातों से जो कहते हैं तू दिल तंग होता है ९८. पस तू अपने पर्वरदिगार की हम्द व सना और (पाकी बयान कर और उस के आगे) सज्दा किया कर ९९. और मरने तक अपने पर्वरदिगार की अ़िबादत में लगा रह[13]।

....

१३. यहाँ पर 'यक़ीन' से मुराद मौत है। सूरः "मुद्दस्सिर" में भी यह शब्द मौत के माना में इस्तेमाल हुआ है "यहाँ तक कि उस हालत में हम को मौत आ गयी"। हज़रत उस्मान बिन मज़्ऊन के इन्तिक़ाल के ज़िक्र वाली हदीस में भी मौत के लिये 'यक़ीन' का शब्द बोला गया है। इस आयत का यह मतलब है कि नमाज़ वग़ैरह अ़िबादतें इन्सान पर फ़र्ज़ हैं। जब तक उस की अक़्ल बाक़ी है और उस के होश-हवास ठिकाने हैं तो जिस हालत में वह अदा कर सकता हो अदा करे।

कुछ जाहिलों ने इस आयत का यह मतलब निकाला है कि जब तक इन्सान कमाल के दर्जा तक न पहुंच जाये उस पर अ़िबादत फ़र्ज़ है। कमाल दर्जा पर पहुंचने के बाद जब मारिफ़त की मन्ज़िलें तै कर लेता है तो अ़िबादत साक़ित हो जाती है। इस प्रकार की बातें ख़ालिस जिहालत और गुमराही हैं। इन लोगों को मालूम होना चाहिये कि नबी से बढ़ कर कमाल और मारिफ़त के दर्जे तक कौन पहुंच सकता है? तो जब उन पर से साक़ित नहीं है तो यह आज कल के वलियों का किस में शुमार है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आप के सहाबा सब से अधिक अ़िल्म व पहचान रखने वाले थे, अल्लाह की ज़ात और सिफ़ात का सब से अधिक अ़िल्म था, इन सब के बावजूद यह लोग सब से अधिक अल्लाह की अ़िबादत करते थे और आख़िरी सांस तक इसी में लगे रहे। तो जब नबियों पर से यह फ़र्ज़ साक़ित न हुआ तो फिर किसी और पीर, वली, बुजुर्ग, अब्दाल से कैसे साक़ित हो सकता है। तमाम उलमा, सहाबा, ताबेअ़ीन वग़ैरह का यही मज़हब है कि 'यक़ीन' से मुराद "मौत" है। (इब्ने कसीर)

सूरः नहल – 16

(١٦) سُورَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ (٧٠)
آياتها ١٢٨ — ركوعاتها ١٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

أَتَىٰ أَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ ۚ سُبْحٰنَهُ وَتَعٰلَىٰ
عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ① يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ
أَمْرِهِ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ أَنْ أَنْذِرُوٓا
أَنَّهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنَا فَاتَّقُوْنِ ② خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ③ خَلَقَ
الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ④
وَالْأَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ

सूरः नहल (मधुमक्खी) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[1]। इस में १२८ आयतें और १६ रुकूअ़ हैं[2]। आरंभ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

१. अल्लाह का हुक्म तुम्हारे हक़ में आना चाहता है पस तुम उसे जल्दी न माँगो[3]। (क्योंकि) अल्लाह तआ़ला उन के (बेहूदा ख़यालात और) शिर्क से पाक और बुलन्द है २. अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर चाहे अपना हुक्म दे कर फ़रिश्तों को भेजता है कि (लोगों को) सूचना दे दो (और न मानने पर डरा दो कि) मेरे सिवा कोई माबूद नहीं पस तुम मुझ ही से डरो (इस में किसी मख़्लूक़ का क्या इख़्तियार। न वह किसी से मश्वरा तलब करता है और न किसी से राय का इज़्हार चाहता है) ३. उसी ने आसमान और ज़मीन सच्चे नतीजे से पैदा किये। वह उन के शिर्क करने (और बेहूदा बकने) से पाक है ४. उस ने इन्सान को मनी के क़त्रा (बूंद) से पैदा किया तो वह खुल्लम-खुल्ला (अल्लाह के बारे में) झगड़ालू बन बैठा है[4] ५. उसी ने तुम्हारे लिये चारपाये {पशु} पैदा किये हैं जिन में तुम्हारे लिये जाड़े के कपड़े और कई एक फ़ाइदे हैं

....
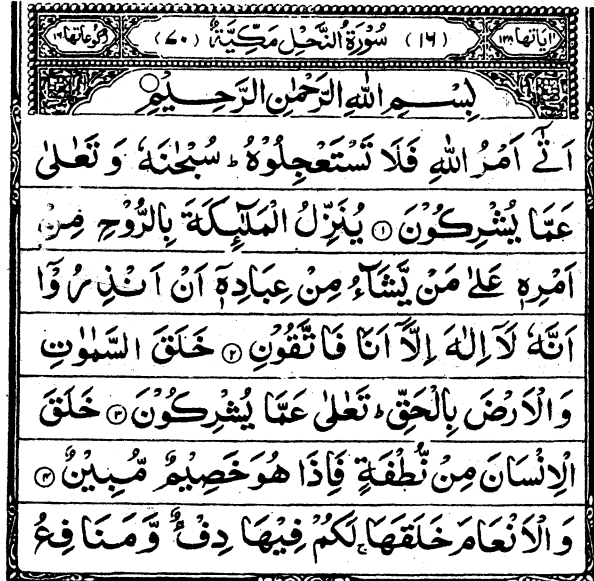
१. सूरः नहल में शहद की मक्खी के ज़िक्र के साथ अल्लाह की शान का भी ज़िक्र है। अन्तिम तीन आयतों को छोड़ कर बाक़ी पूरी सूरः मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी है। आख़िर की तीन आयतें उस समय नाज़िल हुयीं जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उहुद की लड़ाई के बाद वापस लौट रहे थे (मवाहिब)

२. शहद की मक्खी और उस की समाजी ज़िन्दगी, उस की दौड़-धूप यह सब क़ुदरत के करिश्मे (चमत्कार) हैं। इस सूरः में इस मक्खी का भी ज़िक्र है, इस लिये इसी मुनासिबत से इस का नाम "नह्ल" यानि मधुमक्खी रखा गया।

३. इब्ने अबी हातिम की रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क़ियामत के क़रीब पश्चिम से ढाल की तरह का काला बादल दिखाई पड़े गा, उस में से एक शख़्स आवाज़ लगायेगा। लोग उस की आवाज़ को सुन कर एक दूसरे से सवाल करें गे। कुछ लोग उस की आवाज़ का मज़ाक़ उड़ायें गे और कुछ तअ़ज्जुब करें गे। वह शख़्स दोबारा पुकार कर कहे गा कि ऐ लोगो! उस की आवाज़ सुन कर सब को यक़ीन हो जाये गा कि हक़ीक़त में वहीं से आवाज़ आ रही है। चुनान्चे वह शख़्स तीसरी मर्तबा पुकार कर कहेगा ऐ लोगो! अल्लाह का हुक्म आ पहुंचा, अब जल्दी न करो। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो लोग अपने कपड़े को फैलाए हुये होंगे वह समेटने भी न पायेंगे कि क़ियामत आ जायेगी। कोई अपने हौज़ को ठीक कर रहा होगा ➲

➲और उस से जानवरों को पानी भी न पिला सकेगा कि इतने में क़ियामत आ जाये गी। दूध दोहने वाले ग्वाले अभी दूध पी भी न सकेंगे कि क़ियामत आ जाये गी और हर शख़्स को अपनी-अपनी पड़ी होगी।

अगली आयत में 'रूह' से मुराद "वह्यि" है। कुरआन मजीद में और भी दूसरे स्थानों पर 'रूह' से मुराद वह्यि है। (तफ़्सीर मुहम्मदी)

४. शाने नुज़ूल:- तफ़्सीर मआलिम में है कि यह आयत उबय्यि बिन ख़ल्फ़ के बारे में नाज़िल हुयी। यह शख़्स मक्का में बड़ा सर्कश माना जाता था। उहुद की लड़ाई में यह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने आ गया आप ने नेज़े से इस को ज़रा सा छू दिया। आप के छूते ही वह मारे दर्द के चीख़ कर भागा और राबिग़ की वादी में मर कर जहन्नम रसीद हुआ। इस आयत का आम माना यह है कि जो भी इब्ने ख़ल्फ़ की तरह दीने इस्लाम से दुश्मनी करे गा उन का भी अन्जाम इसी जहन्नमी की तरह हो गा और वह भी ऐसे ही ज़लील हो कर जहन्नम रसीद हो गा (मवाहिब)

وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝ وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرِيحُونَ
وَحِينَ تَسْرَحُونَ ۝ وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَلَدٍ
لَّمْ تَكُونُوا بَالِغِيهِ إِلَّا بِشِقِّ الْأَنفُسِ ۚ إِنَّ رَبَّكُمْ
لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝ وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ
لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً ۚ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَعَلَى
اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا جَائِرٌ ۚ وَلَوْ شَاءَ
لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ۝ هُوَ الَّذِي أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ
مَاءً ۖ لَّكُم مِّنْهُ شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ۝
يُنبِتُ لَكُم بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَ
الْأَعْنَابَ وَمِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً
لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَ
الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ وَالنُّجُومُ مُسَخَّرَاتٌ بِأَمْرِهِ ۗ إِنَّ
فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ وَمَا ذَرَأَ لَكُمْ

और उन्हीं में से तुम खाते भी हो ६. और उन को जब तुम दिन ढले घरों को वापस लाते हो और (दोपहर से पहले) जब तुम उन को बाहर ले जाते हो वह तुम्हारे लिये सजावट होते हैं ७. और वह ऐसे स्थानों तक तुम्हारे बोझ उठा कर ले जाते हैं जहाँ पर बग़ैर सख़्त कठिनाई के तुम न पहुंचा सको। बेशक तुम्हारा पर्वरदिगार तुम्हारे हाल पर बड़ा ही मेहरबान है ८. उसी ने घोड़े, ख़च्चर और गधे[५] (तुम्हारी आवश्यक्तायें पूरी करने को) पैदा किये हैं कि तुम उन पर सवारी करो[६] और वह भी तुम्हारी ज़ीनत हैं। और ऐसी चीज़ें भी पैदा करे गा जिन को तुम नहीं जानते[७] ९. सब धर्मों का यह रुख़ (अपने ख़याल में) अल्लाह ही की तरफ़ है और बाज़ उन में टेढ़े भी हैं[८]। और अगर वह चाहता तो सब को हिदायत कर देता (लेकिन वह इख़्तियारी कामों में जब्र नहीं किया करता) १०. वही है जो आकाश से तुम्हारे लिये पानी उतारता है उस में तुम्हारे पीने के क़ाबिल है और उसी से दरख़्त (पैदा होते) हैं जिन में तुम (अपने जानवरों को) चराते हो ११. उसी पानी से वह तुम्हारे लिये खेती और ज़ैतून और खजूरें और अंगूर और हर प्रकार के फल पैदा करता है। बेशक इस में फ़िक्र करने वाली क़ौम के लिये बहुत बड़ी निशानी है (जिस से अल्लाह की कुदरत का इज़हार होता➲

है) १२. उसी ने तुम्हारे लिये रात व दिन और सूरज व चाँद को काम में लगा रखा है और तमाम सितारे भी उसी के हुक्म से काम में लगे हुये हैं (ग़रज़ कोई भी दुनिया की चीज़ टिकाऊ नहीं) बेशक अक़्ल रखने वाली क़ौम के लिये इस में बहुत से निशान हैं। १३. और दुनिया में जिन-जिन मुख़्तलिफ़ रंग की चीज़ों को अल्लाह ने पैदा किया है

....

५. गधे की सवारी केवल जायज़ ही नहीं सुन्नत भी है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास एक गधा था जिस पर आप सवारी फ़रमाते थे। हिन्दुस्तान के कुछ लोग इस की सवारी को नापसन्द करते हैं यह सुन्नत के ख़िलाफ़ है (मवाहिब)

६. मुस्नद अहमद बिन हंबल में हज़रत मिक़्दाम बिन मादी कर्ब से रिवायत है वह कहते हैं कि हम लोग ख़ालिद बिन वलीद की कमान्ड्री में "साइक़ा" की लड़ाई में शरीक थे। कुछ लोग हमारे पास गधे का गोश्त ले कर आये। मैं ने कहा कि ज़रा ठहर जाओ हज़रत ख़ालिद बिन वलीद से मालूम कर लें। हज़रत ख़ालिद ने फ़रमाया कि हम लोग ख़ैबर की लड़ाई में शरीक थे कि सहाबा ने यहूद की फ़स्लों पर धावा बोल दिया और ग़ल्ला वग़ैरह ले आये। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को जब पता चला तो हुक्म दिया कि नमाज़ के लिये सब इकट्ठा हो जायें और मुसलमान के अ़लावा और कोई न आये। जब सब जमा हो गये तो आप ने फ़रमाया कि तुम लोग बड़ी जल्दी उन की फ़सलों पर टूट पड़े हो, सुन लो! जिन के साथ मुआहिदा हुआ है उन का माल बग़ैर हक़ के जायज़ नहीं और पालतू गधों, घोड़ों और हर केचली का दाँत रखने वाले दरिन्दा का गोश्त हराम है। यहूद के बाग़ों से फल तोड़ने से शायद आप ने उस समय मना फ़रमाया जब उन से मुआहिदा हो चुका था। इस हदीस में घोड़े के भी हराम होने का ज़िक्र है, लेकिन बुख़ारी-मुस्लिम में घोड़े का गोश्त खाने की इजाज़त मौजूद है। और यह हदीस क़वी भी है। मुस्लिम शरीफ़ की भी एक हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने घोड़ा ज़ब्ह किया गया और उस का गोश्त खाया गया। जमहूर उलमा के नज़दीक घोड़े का गोश्त हलाल है (इब्ने कसीर) लेकिन गधे और ख़च्चर का हराम है- ख़ालिद

७. यानी वह चीज़ें रेल गाड़ी और पानी के जहाज़ और हवाई जहाज़, आदि हैं जिन पर तुम को सफ़र कराये गा। फिर ऐसे मालिक से बिगड़ कर क्या लाभ उठा सकते हो (सनाई) इस आयत में वह सवारियाँ दाख़िल हैं जो अब तक ईजाद हो कर लोगों के सामने आ चुकी हैं और वह सवारियाँ भी दाख़िल हैं जो भविष्य में ईजाद होंगी। क़ुरआन में इस आयत के नाज़िल होने के बाद से लेकर बहुत सवारियों ने ईजाद हो कर क़ुरआन की इस आयत को सच्चा साबित किया और भविष्य में ईजाद हो कर क़ुरआन के सच्चे होने की दलील बनेंगी।

८. ऊपर की आयतों में दुनिया की राहों को तै करने के साधनों का बयान था। अब नीचे दीन की राह पर चलने के साधनों का बयान होने जा रहा है। क़ुरआन मजीद का यह आ़म उसूल है कि जहाँ दुनिया के सफ़र के लिये साधनों का ज़िक्र है, वहीं आख़िरत के सफ़र के सामान का ज़िक्र है। जहाँ जिस्म ढकने के लिये वस्त्र का बयान है, वहीं तुरन्त ही तक़्वा के वस्त्र का बयान है (देखें सूरः आराफ़....26) ऊपर दुनियावी सफ़र तै करने के लिये मुख़्तलिफ़ क़िस्म के जानवरों का साधन के तौर पर ज़िक्र किया, तो यहाँ तुरन्त ही आख़िरत के सफ़र के लिये सामान का ज़िक्र कर दिया और बता दिया कि अल्लाह तक पहुंचने वाली राह केवल दीने इस्लाम की राह है। इस राह पर चलो गे तो हक़ की राह पर चलो गे, मेरी तरफ़ पहुंचने की यही राह है। हक़ की राह छोड़ कर दूसरी राह पकड़ो गे तो गुमराह हो जाओ गे। सच्ची राह केवल किताब व सुन्नत की राह है और बाक़ी राहें जैसे यहूदियत, मजूसियत, नस्रानियत, बरैलवियत, देवबन्दियत, हनफ़ियत यह सब मनघड़त राहें हैं (तफ़्सीर मुहम्मदी)

فِى الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِىْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَاَلْقٰى فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝ وَعَلٰمٰتٍ ؕ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝ اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۝ اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ۝

उन सब में नसीहत पाने वाले लोगों के लिये बड़ी निशानी है (यानी जो नेक दिल हों उन के लिये) १४. और वही माबूद है जिस ने समुन्दरों को तुम्हारे काम में लगा रखा है कि तुम उस से ताज़ा-ताज़ा गोश्त खाते हो और ज़ेवर (मोती वग़ैरह) निकालते हो जिन्हें तुम पहनते हो और तू जहाज़ों को देखता है कि पानी को चीरते हुये (उस दरिया में) चले जा रहे हैं और ताकि तुम (तिजारत के ज़रिआ) उस का फ़ज़्ल पाओ और शुक्र मनाओ १५. और उस ने ज़मीन पर पहाड़ क़ायम कर दिये हैं[९] कि (ज़मीन पानी की ज़्यादती से कहीं) तुम्हें ले न गिरे और दरिया और रास्ते बनाये ताकि तुम राह पाओ १६. और बहुत सारे निशान पैदा किये हैं और (यह तो खुली बात है कि) यह लोग सितारों की चाल से राह पाते हैं १७. तो क्या फिर (उन के नज़दीक) ख़ालिक, मख़्लूक़ जैसा है? (बड़े दुःख की बात है) क्या तुम (इस राय की ग़ल्ती) समझते नहीं हो? १८. और अगर अल्लाह की नेमतें गिननी चाहो तो तुम कभी पूरी न कर सको गे। बेशक अल्लाह बड़ा ही बख़्शने वाला, मेहरबान है[१०] १९. और (ख़बरदार!) जो कुछ तुम छुपाते और ज़ाहिर करते हो अल्लाह को सब कुछ मालूम है २०. और अल्लाह के सिवा जिन लोगों को यह (मुश्रिक) लोग पुकारते हैं वह कुछ पैदा नहीं कर सकते बल्कि वह स्वयं मख़्लूक़ हैं २१. (जो सब के सब) मुर्दे हैं जिन्दा नहीं हैं[११]। और (ज़िल्म की इतनी कमी है कि) उन को ख़बर नहीं कि (क़ब्रों से) कब उठाये जायें गे।

....

९. हज़रत अ़ली रज़ि० से रिवायत है कि ज़मीन ने अल्लाह तआ़ला से शिकायत करते हुये कहा कि तू मुझ पर बनी आदम को बसाता है। वह मेरी पीठ पर गुनाह करें गे और गुमराही फैलायें गे और वह काँपने लगी, पस अल्लाह तआ़ला ने पर्वतों को उस के ऊपर जमा दिया जिन्हें तुम देख रहे हो और कुछ पर्वत दिखाई नहीं दे रहे हैं।

यह उस का फ़ज़्ल और करम है कि उसने हमारे लिये चारों तरफ़ चश्मे, दरिया और नहरें जारी कर दिये हैं। पस उस ज़ात के अ़लावा कोई अ़िबादत के लायक़ नहीं है। ज़िन्दगी मौत, हानि, लाभ सब कुछ उसी के इख़्तियार में है। जो लोग उस के अलावा किसी दूसरे से मांगते हैं वह अव्वल दर्जा के मूर्ख हैं।

१०. 'कभी पूरी न कर सको गे' यानी अल्लाह की नेमतें इतनी हैं कि तुम उन को शुमार भी नहीं कर सकते। यह न समझो कि यहाँ जितनी नेमतों का ज़िक्र हुआ बस उतनी ही हैं। तुम्हारी ज़िन्दगी का एक-एक सांस, इस दुनिया का एक-एक ज़र्रा, दरख़्तों की एक-एक पत्ती, धूप की एक-एक किरन, पानी की एक-एक बूंद, हवा का एक-एक

झोंका, चाँद, सूरज और नक्षत्रों की एक-एक टिमटिमाहट, चिड़यों की एक-एक चहचहाहट यह सब उस की नेमतें ही तो हैं। फिर क्या तुम शुमार कर सको गे? (तर्जुमान)

११. यानी मन घड़त और बातिल माबूद ख़ुद ही मख़्लूक़ हैं जो हर समय फ़ना और मौत की ज़द में हैं। आप देखते हैं कि कितने बुत रोज़ाना बनते-बिगड़ते हैं, कितने रोज़ाना मरते और फ़ना के घाट उतरते हैं। इस लिये ऐसों को माबूद जानना और मानना यह पागल-पन नहीं तो और क्या है (राज़)

اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ
قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا جَرَمَ
اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۗ اِنَّهٗ لَا
يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَآ
اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾ لِيَحْمِلُوْٓا
اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ وَمِنْ اَوْزَارِ
الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٢٥﴾
قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ
مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَ
اَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ
كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ۗ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ
اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٧﴾

२२. (लोगो! जान लो कि) तम्हारा माबूद एक है इस लिये जिन लोगों का आख़िरत पर ईमान नहीं है उन के दिल (उस ख़ालिस तौहीद से) मुन्किर हैं और वह (इस इन्कार में) मुतकब्बिर हैं २३. (पस) यक़ीनी बात है कि लोग जो कुछ छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं अल्लाह को सब मालूम है। कुछ शक नहीं कि अल्लाह तकब्बुर करने वालों से प्रेम नहीं करता[१२]। २४. और ज़ब उन से पूछा जाता है कि अल्लाह ने क्या भेजा है? तो कहते हैं कि वह तो महज़ पहले लोगों के मनघड़त क़िस्से हैं २५. (उन के इस क़ौल का परिणाम यह हो गा कि) क़ियामत के दिन अपने पाप और जिन (मातहत) लोगों को जिहालत से गुमराह करते हैं उन के (गुमराह करने के) पाप पूरे उठायें गे। देखो तो कैसा बुरा बोझ उठायें गे २६. उन से पहले लोगों ने भी (इसी प्रकार हक़ को मिटाने के) मन्सूबे किये थे सो अल्लाह ने उन की जड़-बुनियाद उखाड़ दी (ऐसी कि) उन की छतें उन पर आ पड़ीं और जहाँ से उन को गुमान भी न था उन पर अज़ाब आया[१३] २७. फिर क़ियामत के दिन (अभी और) उन को अल्लाह ज़लील करे गा[१४] और कहे गा कि मेरे शरीक जिन के बारे में तुम लड़ते-झगड़ते थे आज कहाँ है? इ़ल्म रखने वाले लोग (जो दुनिया में इन ख़ुराफ़ात से बचे हों गे) कहें गे कि आज के दिन ज़िल्लत और बुराई काफ़िरों पर है (किन काफ़िरों पर)

....

१२. शाने नुज़ूल:- यह आयत नज़्र बिन हारिस के हक़ में उतरी। उस के पास तारीख़ (इतिहास) की बहुत सी पुस्तकें थीं। वह कहता था कि मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बेहतर हिकायतें बयान कर सकता हैं। जब कोई उस से कुरआन के बारे में पूछता तो कह दिया करता कि अल्लाह का कलाम नहीं है। यह तो उन्हों ने

➲इधर-उधर से कुछ कहानियाँ याद कर ली हैं और उसी को बार-बार बयान करते हैं (सलफ़िया)
१३. 'उन की छतें उन पर आ पड़ीं' हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि यहाँ नमरूद के महल का हाल बयान हुआ है। कहा जाता है कि उस ने पाँच हज़ार गज़ ऊँचा एक महल बाबुल शहर में बनाया था ताकि उस पर चढ़ कर अल्लाह से लड़ाई लड़ सके। उस महल को अल्लाह ने सख़्त आँधी-तूफ़ान भेज कर पस्त कर दिया और उस के हज़ारों लश्करी उस में दब कर मर गये। नमरूद बादशाह चार सौ वर्ष तक ज़मीन में बड़े-बड़े अत्याचार करता रहा। हज़रत इब्राहीम को आग में उसी ने डाला। लोगों पर ज़ुल्म-ज़्यादती कर के दीने इब्राहीम में दाख़िल होने से उस ने रोका, अन्त में ज़लील हो कर मरा। नाक के रास्ते से उस के दिमाग़ में एक मच्छर घुस गया और उस ने काटना शुरू कर दिया। जब वह बेचैन हो जाता तो चैन हासिल करने के लिये अपने सर पर जूतियाँ पिटवाता था। काफ़ी समय तक यह अ़ज़ाब झेल कर जहन्नम रसीद हुआ।

यह क़िस्सा बयान कर मक्का के काफ़िरों को यह बताना उद्देश्य है कि अल्लाह जिस दीन को फैलाना चाहे उसे कोई रोकने वाला नहीं। एक बड़े शासक ने रोकने की कोशिश की तो वह हलाक हो गया। यही हाल तुम्हारा भी हो गा। तुम भी नमरूद की तरह लोगों को दीने इस्लाम कुबूल करने से रोकते हो। हज्ज के मौसम में हर तरफ़ राह के नाकों पर बैठ कर बाहर के आने वालों को फुसलाते हो और ईमान लाने से डराते-धमकाते हो। जान लो कि अल्लाह जो चाहे गा वही हो गा, उस का वादा पक्का-सच्चा है। अन्त में वही हुआ मक्का के बड़े-बड़े गुरूघण्टाल जैसे अबू लहब, अबू जेहल और वलीद जैसे शरीर लोग हलाक कर दिये गये और आख़िरत का अ़ज़ाब अपने साथ ले गये और दीने इस्लाम को जो तरक़्क़ी हुयी वह सभी के सामने है। (अहसनुल् फ़वाइद)
१४. 'क़ियामत के दिन उन को ज़लील करे गा' यानी अ़ज़ाब, दुनिया में तो मिले गा ही, उस के साथ-ही साथ आख़िरत में भी उन को दोज़ख़ में डाले गा और डाँट-फटकार लगाते हुये अल्लाह कहे गा कि कहाँ हैं तुम्हारे वह माबूद जिन की तुम पूजा किया करते थे और संदेष्टा व मोमिन बन्दों से उन के बारे में लड़ाई-झगड़ा किया करते थे? उन को बुलाओ ताकि वह तुम्हारा अ़ज़ाब कुछ हल्का कर दें। 'जिन को इ़ल्म दिया गया' से मुराद वह हैं जो दीन की तब्लीग़ किया करते थे, लेकिन यह जहन्नमी उन की ओर कुछ भी ध्यान न देते थे (तर्जुमान नवाब सा० रह०)

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ص فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ط بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ط فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝ وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ط قَالُوْا خَيْرًا ط لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ط وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ط وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ۝ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ ط كَذٰلِكَ

२८. वह लोग जो मरने तक (कुफ़्र-शिर्क करने से) अपने आप पर ज़ुल्म करते रहे पस वह इताअ़त पर झुकने लगें गे (और नर्मी से बोलें गे) कि हम तो बुरे काम न करते थे। हाँ, अल्लाह तुम्हारी करतूतों से जो तुम करते थे अवगत है[१५] २९. पस अब जहन्नम के दर्वाज़ों में घुसो जहाँ तुम को हमेशा रहना हो गा। (क्यों कि) तकब्बुर करने वालों का बहुत ही बुरा ठिकाना है ३०. और परहेज़ गारों से जब प्रश्न होता है कि तुम्हारे पर्वरदिगार ने क्या कुछ उतारा है? तो वह कहते हैं कि बहुत अच्छा कलाम नाज़िल किया है। जिन लोगों ने इस दुनिया में भलाई की है उन्हीं के लिये भलाई➲

يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣١﴾ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ
طَيِّبِيْنَ يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٢﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ
الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ اَمْرُ رَبِّكَ كَذٰلِكَ فَعَلَ

है। और आख़िरत का घर सब से बेहतर है। और परहेज़गारों का घर तो बहुत ही अच्छा है ३१. (कैसा घर?) हमेशा के बाग़ हैं जिन में वह दाख़िल हों गे जिन के नीचे नहरें बहती हों गी जो कुछ वह चाहें गे मौजूद हो गा[१६]। अल्लाह तआ़ला इसी प्रकार परहेज़गारों को बदला दे गा ३२. (कौन परहेज़गार?) जो मरने के समय (कुफ़्र, शिर्क और बुरे अख़्लाक से) पाक होते हैं फ़रिश्ते उन से (उन की जानें निकालते वक़्त) अस्सलामु अ़लैकुम कहने के बाद कहते हैं कि अपने नेक अ़मलों के बदले में जन्नत में दाख़िल हो जाइये ३३. यह (तेरे मुख़ातब) केवल इस बात के इन्तिज़ार में हैं कि उन के पास फ़रिश्ते (आयें) या तो तेरे पर्वरदिगार (के अ़ज़ाब) का हुक्म आये। इसी प्रकार इन से पहले के लोगों ने किया था[१७] (चुनान्चे वह तबाह किये गये)

....

१५. इस आयत में बुरे लोगों की जानें निकालने और इस के बाद वाली आयत में नेक लोगों की जानें निकालने का बयान है। मुस्लिम, अबू दावूद, इब्ने माजा, मुस्नद हंबल में रूहों के निकालने के तअ़ल्लुक़ से जो हदीसें आयी हैं उन का खुलासा यह है कि बुरे लोगों की रूहों को निकालने के लिये बुरी शक्ल व सूरत के फ़रिश्ते आते हैं और क़ब्र और क़ियामत के अ़ज़ाब का हाल उसे सुनाते हैं। यह सुन कर मरने वाले की रूह डर जाती है और इधर-उधर बदन में छुपने लगती है। वह फ़रिश्ते जान को निकालने के लिये उस के मुंह और पीठ को बुरी तरह पीटते हुये कहते हैं कि ऐ नापाक रूह! जल्दी बदन से निकल, अल्लाह का दण्ड तेरे लिये बिल्कुल तय्यार है। एक दूसरी हदीस में बुरी रूह के निकाले जाने का इस प्रकार ज़िक्र है कि जिस तरह भीगी हुयी ऊन में गर्म सीख़ चला कर निकाली जाये और नर्म होने की वजह से ऊन उस में लिपट जाये और सूखी ऊन के बालों की तरह उड़ कर कोई बाल जलने से बच न सके। इस प्रकार पूरे बदन के एक-एक बाल को तक्लीफ़ पहुंचा कर जान निकलती है। और वह इतनी गंदी और बदबू दार होती है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उस बदबू का ज़िक्र करते समय नाक पर कपड़ा रख लिया था गोया बदबू आ रही थी। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० भी जब इस हदीस को बयान फ़रमाते तो नाक पर कपड़ा लगा लिया करते थे

यह फ़रिश्ते फिर उस गन्दी रूह को जहन्नम के टाट के एक टुकड़े में लपेट कर अल्लाह के पास ले जाना चाहें गे मगर आसमान के दर्वाज़े नहीं खोले जायें गे, फिर उस रूह को बदन में पुन: डाल कर मुन्किर-नकीर प्रश्न पूछते हैं और जवाब न दे सकने के कारण उस का नाम "सिज्जीन" में लिख लिया जाता है (सातवीं ज़मीन के नीचे एक स्थान का नाम है) फिर हर प्रकार का दन्ड क़ब्र में आरंभ हो जाता है। क़ब्र ही में एक बुरी शक्ल का आदमी आ कर कहता है कि मैं तेरा बुरा अ़मल हूँ जो तू दुनिया में किया करता था। और इसी प्रकार क़ियामत तक उस के अ़ज़ाब का सिलसिला जारी रहता है।

नेक लोगों की रूह निकालनेकेलिये नेक सूरत और सुन्दर मुखड़े वाले फ़रिश्ते आते हैं और जन्नत के एक खुश्बूदार कपड़े में उस की रूह को निकाल कर रख लेते हैं और उसे जन्नत की बशारत देते हैं। ऐसे नेक लोगों की रूह जिस्म से बड़ी सरलता से निकल आती है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिस तरह पानी के मश्क में से पानी की बूंदें फटाफट टपक कर बह जाती हैं और देरी नहीं लगती, इसी प्रकार नेक लोगों की रूहें सरलता से बदन से निकल आती हैं। उस के निकलते ही चारों तरफ़ खुश्बू फैल जाती है। उस की रूह को जब फ़रिश्ता ले कर आसमान पर जाता है तो उस के लिये आसमान के दर्वाज़े तुरन्त खोल दिये जाते हैं और सब

➲फ़रिश्ते उस का स्वागत करते हैं वह रूह अल्लाह के पास पहुंच कर सज्दा में गिर जाती है। अल्लाह हुक्म देता है कि इस का नाम "अ़िल्लीयीन" में लिख लिया जाये (यह सातवें आसमान पर एक स्थान का नाम है जहाँ केवल नेक लोगों की रूहों का नाम दर्ज होता है) फिर उस रूह को बदन में लौटा कर मुन्किर नकीर उस से प्रश्न करते हैं तो वह सब के उत्तर दे देता है, फिर इस के बाद अल्लाह की रहमत और मेहरबानी का सिलसिला शुरू हो जाता है और क़ियामत तक जारी रहता है (अहसनु फ़वाइद/इब्ने कसीर, ख़ाज़िन)

१६. इन आयतों में तक़्वा के फ़ाइदों पर ऐसा बयान है जिस की तफ़्सील के लिये एक दफ़्तर भी नाकाफ़ी है। ख़ुलासा यह है कि इस से दुनिया भी बनती हैं और आख़िरत भी।

१७. 'इस बात के इन्तिज़ार में हैं' इस से यह कहना उद्देश्य है कि क़ियामत का इन्कार करने वाले उस समय तक ईमान नहीं लायें गे जब तक कि मौत के फ़रिश्तों या अल्लाह के दण्ड को अपनी आंखों से न देख लें। और इन का यह मुतालबा कोई नई बात नहीं है, इन से पहले के बुरे लोग भी इसी तरह का नाटक किया करते थे, चुनान्चे वह अपने अन्जाम को पहुंच गये और यह भी ठिकाने लग जायें गे (हक़्क़ानी)

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَ لٰكِنْ
كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٣٣﴾ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا
عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَ
قَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ
مِنْ شَیْءٍ نَّحْنُ وَلَاۤ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ
مِنْ شَیْءٍ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ
عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ بَعَثْنَا
فِیْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا
الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ
حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا فِی الْاَرْضِ
فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٦﴾ اِنْ
تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِیْ مَنْ يُّضِلُّ
وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٧﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ

और अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया बल्कि वह स्वयं ही अपने पर अत्याचार करते थे ३४. पस (अन्जाम यह हुआ कि) उन के आमाल की बुराइयाँ उन को पहुंचीं और जिस (अ़ज़ाब) की हंसी उड़ाते थे वही उन पर नाज़िल हुआ ३५. (सुनो!) मुश्रिक कहते हैं कि अगर अल्लाह चाहता तो न तो हम और न हमारे बुज़ुर्ग उस के सिवा किसी चीज़ की अ़िबादत करते और न हम किसी चीज़ को उस के हुक्म के सिवा हराम समझते[१८]। इसी प्रकार उन से पहले लोगों ने किया था, रसूलों के ज़िम्मा केवल यही फ़र्ज़ है कि वह (अल्लाह के आदेश) स्पष्ट शब्दों में (अपनी-अपनी उम्मतों को) पहुंचा दें ३६. (और बस इस उसूल के तहत) हम ने हर एक उम्मत में रसूल भेजे थे (कि लोगों से कहो) कि अल्लाह की अ़िबादत करो और उस के अ़लावा की अ़िबादत से बचो, फिर उन में से कुछ को तो अल्लाह ने हिदायत दी और कुछ को गुमराही चिमट गयी (इस लिये कि वह हक़ से नाहक़ पेश आते थे) तो तुम ज़मीन पर फिर कर देखो कि (संदेष्टाओं के) झुठलाने वालों का कैसा (बुरा) अन्जाम हुआ[१९] ३७. अगर तू उन की हिदायत की इच्छा भी करे तो (भी हिदायत पर न आयें गे क्यों कि) अल्लाह जिस को गुमराह कर चुके उस को हिदायत नहीं किया करता और उन की सहायता➲

करने वाला भी कोई नहीं होता ३८. और सख़्त से सख़्त क़समें {सौगंध} अल्लाह के नाम की खा चुके हैं[२०]

....

१८. उन का कहना यह है कि अल्लाह हमारे कर्मों से प्रसन्न है जभी तो हम करते हैं अगर वह नाख़ुश हो तो हम कर ही नहीं सकते थे। हालाँकि यह उन की भूल है। अगर अल्लाह उन के कामों से ख़ुश ही है तो फिर उन को वईद क्यों सुना रहा है? यह लोग अल्लाह की मर्ज़ी और रज़ा को नहीं समझते हैं। जो कुछ भी हो रहा है उस के हुक्म और इरादे से हो रहा है। मजाल नहीं कि उस के इरादे के ख़िलाफ़ कोई काम हो। इरादा और मर्ज़ी अल्लाह के क़ानून का नाम है तो जब तक किसी काम को उस के क़ानून अनुसार न करो गे कामियाब नहीं हो गे। जब तक गर्मी हासिल करने के लिये आग न जलाओ गे, गर्मी नहीं पा सकते। इसी तरह आग का काम पानी से, और पानी का काम आग से नहीं ले सकते। तल्वार का काम गर्दन काटना है। अब चाहे ज़ालिम की काटो या मज़लूम की। लेकिन ऐसा करने में अल्लाह की मर्ज़ी का दख़ल नहीं है। अल्लाह की मर्ज़ी का दख़ल उस वक़्त समझा जाये गा जब उस को उसी के हुक्म के अनुसार इस्तेमाल करो गे। मश्यियत और रज़ा में फ़र्क़ न करना, यह ना समझी की बात नहीं तो और क्या है (सनाई)

१९. सच्ची बात यही है कि जब कोई ज़िद पर अड़ जाये तो कोई भी बात उस को फ़ाइदा नहीं पहुंचा सकती (सनाई)

२०. 'हक़' को "क़सम" इस लिये कहा जाता है कि यह लोगों की तस्दीक़ और झुठलाने के वक़्त खाई जाती है। और यह जो फ़रमाया गया कि "अल्लाह की सख़्त से सख़्त क़समें खाते हैं" यह इस लिये कहा गया कि वह अपने बाप-दादों और ठाकुरों की हर तरह की क़समें खाते थे, लेकिन जब कोई भारी मामला आ पड़ता था तब अल्लाह की क़समें खाते थे (फ़त्हुल बयान) उन को यह गुमान था कि अल्लाह पुन: जीवित नहीं करे गा।

अबुल आलिया से रिवायत है कि एक मुसलमान का किसी मुश्रिक पर कुछ क़र्ज़ था, वह मुसलमान उस से क़र्ज़ लेने आ गया। उस मुसलमान की एक आदत यह थी कि जिस किसी से मिलता था तो आख़िरत और मरने के बाद पुन: जीवित होने का ज़िक्र अवश्य करता था। चुनान्चे उस क़र्ज़ दार मुश्रिक के भी सामने ज़िक्र कर दिया। इस पर मुश्रिक ने क़सम खा कर कहा कि मरने बाद पुन: जीवित नहीं किया जाये गा, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (तर्जुमान नवाब ख़ाँ)

أَيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَن يَمُوتُ بَلَىٰ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾ لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يَخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَاذِبِينَ ﴿٣٩﴾ إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَن نَّقُولَ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٤٠﴾ وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِن بَعْدِ مَا ظُلِمُوا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾ الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٤٢﴾

कि अल्लाह मर चुके लोगों को कभी न उठाये गा। क्यो नहीं? (अवश्य उठाये गा) इस बात का उस ने सच्चा वादा किया हुआ है लेकिन बहुत से लोग नहीं जानते[२१] ३९. (यक़ीनन वह अवश्य उठाये गा) ताकि जिन बातों में लोग मुख़्तलिफ़ हैं उन को बयान कर के बतला दे और ताकि काफ़िरों को विश्वास हो जाये कि नि:संदेह वह झूठे थे[२२] ४०. हम जब किसी काम को करना चाहें तो पस हमारा इतना ही कहना होता है कि "हो जा" बस वह हो जाता है[२३] ४१. जो लोग मज़लूम होने के पश्चात् (महज़

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِىٓ إِلَيْهِمْ
فَسْـَٔلُوٓا أَهْلَ الذِّكْرِ إِن كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٤٣﴾
بِالْبَيِّنَٰتِ وَالزُّبُرِ وَأَنزَلْنَآ إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ
لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٤﴾
أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّـَٔاتِ أَن يَخْسِفَ اللَّهُ

दीन की हिफ़ाज़त के लिये) अपने वतन को छोड़ आये हैं[२४] हम उन को दुनिया में अच्छा स्थान दें गे और आख़िरत का अज्र (व सवाब) तो बहुत ही बड़ा है। काश कि उन को कुछ भी ख़बर होती (यह कौन लोग हैं?) ४२. जो तक्लीफ़ पर सब्र करते हैं और अपने पर्वरदिगार ही पर भरोसा करते हैं[२५] ४३. और हम ने तुझ से पहले (बनी आदम में से) मर्दों ही को रसूल बना कर भेजा है जिन पर हम वह्यि भेजा करते थे (मक्का वालो!) तुम्हें अगर अ़िल्म न हो तो अ़िल्म रखने वालों (यानी अ़ीसाइयों और यहूदियों) से पूछ लो[२६] (जो संदेष्टाओं के हालात पढ़ते रहते हैं) ४४. खुले-खुले निशान और स्पष्ट मसाइल ले कर आते रहे[२७]। और हम ने तेरी तरफ़ नसीहत की बात (कुरआन की शिक्षा) इसी लिये उतारी है ताकि जो कुछ लोगों के लिये अल्लाह के हाँ से उतरा है तू उस को स्पष्ट कर के बयान कर दे ताकि वह उस में सोच-विचार करें (क्यों कि तू कुरआन का केवल तब्लीग़ ही करने वाला नहीं, बल्कि उस की तफ़्सीर और तशरीह भी करने वाला है) ४५. क्या बदकार लोग इस बात से बेख़ौफ़ हैं कि अल्लाह उन को ज़मीन में धंसा दे

....

२१. यह समझते नहीं कि मरने के बाद अगर सब बराबर हो जायें यह अन्याय है और अल्लाह अन्याय नहीं करता (सनाई)
२२. क्योंकि ज़बानी समझाने से कुछ नहीं होता जब तक अ़मली सबूत न पेश किया जाये। और यह लोग जो मरने के बाद पुनः जीवित होने पर शुब्हा कर रहे हैं यह निराधार और फ़ुज़ूल है (सनाई)
२३. 'पस वह हो जाता है' ज़रा भी आगे-पीछे नहीं होता। जिन लोगों ने इस पर ग़ौर किया है और अल्लाह की कुदरत और अज़मत का असर अपने दिन पर जमाया है, वह तो तुरन्त मान जाते हैं। चाहे इस सिलसिले में उन को कितनी ही यातनायें सहनी पड़ें मगर वह अपनी बात पर जमे रहते हैं। उन के लिये असंभव है कि अपने स्थान से टल जायें। ऐसे ही लोगों की अल्लाह भी सहायता करता है (सनाई)
२४. शाने नुज़ूलः- इस्लाम के आरंभ में कुछ मुसलमान मक्का के काफ़िरों की यातनाओं से बचने और स्वतन्त्रता के साथ इस्लाम पर अ़मल करने के लिये, मक्का से हबश की ओर हिजरत कर गये। इन मुहाजिरों में हज़रत उस्मान और उन की पत्नी रुक़य्या भी शामिल थीं। यह गरोह लग-भग ८० लोगों पर मुश्तमिल था। इन्हीं लोगों की तारीफ़ में यह आयत नाज़िल हुयी (इबने कसीर) मुल्क हबश के बादशाह नजाशी रह० ने जिस अ़िज़्ज़त के साथ मुहाजिरों को अपने मुल्क में स्थान दिया और उन का जितना आदर-सम्मान किया, यह इतिहास का एक रोशन अध्याय है।
२५. 'उसी पर भरोसा करते हैं' और उसी ही से मांगते हैं। सच पूछो तो यही लोग इन्सानियत की जान हैं और दुनिया के अ़ज़ीम हस्ती हैं। इन्ही से दुनिया बाक़ी है इन के अलावा बाक़ी सब फ़ुज़ूल हैं यह एक हदीस की तरफ़ इशारा है जिस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि दुनिया में आदमी या तो आ़लिम है या अ़िल्म हासिल करने वाला बाक़ी सब फ़ुज़ूल हैं। फ़ुज़ूल और बेकार लोगों की पहचान यह है कि वाहियात बकते रहते हैं जैसे कि यह मक्का वाले कहते हैं कि अल्लाह के रसूल इन्सान नहीं होने चाहिये। इन का यह दावा ऐसा है कि जिस की न तो अक़्ली दलील है और न ही तारीख़ी दलील (सनाई)

➲२६. आज कल के जाहिल मुक़ल्लिद अपनी अन्धी तक़्लीद की दलील में इसी आयत को पेश करते हैं, यह उन की बहुत ही बड़ी गुमराही है। इस आयत को ग़ौर से पढ़ें तो मालूम हो जाये गा कि न जानने वाले लोगों को भी दलाइल के साथ तहक़ीक़ करने का हुक्म है। इस से तक़्लीद का रद्द है न कि ताईद।

२७. मक्का के मुश्रिक अहले किताब को अ़िल्म वाला जानते-मानते थे। इसी लिये अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अगर तुम को इन्सान के पैग़म्बर होने में शक है तो इन अहले किताब से पूछ लो वह हक़ीक़त से तुम्हें आगाह करा दें गे।

अल्लामा वहीदुज़्ज़माँ फ़रमाते हैं कि मुक़ल्लिदों का कहना है कि इस आयत से यह अर्थ निकलता है कि एक ख़ास मज़हब जैसे, हनफ़ी, शाफ़ेई, मालिकी और हंबली में से किसी एक की तक़्लीद जायज़ है। हालाँकि आयत का इस विषय से दूर का भी संबन्ध नहीं है। पहली बात तो यह कि यह आयत एक ख़ास विषय में नाज़िल हुयी है। दूसरे यह कि ज़िक्र से किताब व सुन्नत मुराद है। इस से साफ़ ज़ाहिर होता है कि यह आयत किसी की तक़्लीद की मुख़ालिफ़त करती है और सिर्फ़ क़ुरआन व हदीस पर अ़मल करने की दावत देती है इस से यह भी मालूम हुआ कि क़ुरआन व हदीस का अ़िल्म रखने वालों ही से पूछा जाये और उन को क़ुरआन व हदीस के अनुसार फ़तवा देने की ताकीद की जाये। और इस से यह भी मालूम हुआ कि जो क़ुरआन व सुन्नत के ख़िलाफ़ बताए उस की बातों पर न अ़मल किया जाये। यहाँ तो मुक़ल्लिद का यह हाल है कि वह क़ुरआन व हदीस को छोड़ कर अपने इमाम का मज़हब पूछता है। जो कोई अल्लाह और रसूल का हुक्म दीन के किसी आलिम से मालूम करे वह मुक़ल्लिद नहीं है।

अगर थोड़ी देर के लिये मान भी लिया जाये कि आयत का यही मतलब है कि किसी भी आलिम से दीन की बात मालूम कर लो, तो भी यह आयत तक़्लीद के हक़ में नहीं जाती है। इस लिये कि अहले ज़िक्र (आ़लिम) मख़्सूस नहीं किये गये हैं। फिर जो शख़्स बेअ़िल्म हो, वह हर एक आलिम से चाहे वह हनफ़ी हो या शाफ़ेई, मालिकी हो या हंबली, या ग़ैर मुक़ल्लिद, दीन का मस्अला मालूम कर के उस पर अ़मल कर सकता है। आयत में यह मतलब हर्गिज़ नहीं निकलता कि किसी ख़ास मज़हब के ख़ास आ़लिम से ख़ास इमाम का मस्अला मालूम कर के उस पर अ़मल करो, या किसी ख़ास इमाम के मसले के ताबे बन कर रहो।

"यही कारण है कि इमामों ने भी क़ुरआन व हदीस पर अ़मल करने की ताकीद फ़रमाते हुये स्पष्ट शब्दों में कह दिया है कि "जब तुम हमारे फ़तवे को क़ुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ पाओ तो उसे दीवार पर दे मारो" (यानी उस पर अ़मल न करो)। बड़े तअज्जुब की बात है कि जो लोग अपने आप को इमामों का मुक़ल्लिद कहते हैं वह ऊपर बयान किये गये इमामों के क़ौल पर क्यों अ़मल नहीं करते? और क़ुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ फ़तवों को क्यों छोड़ नहीं देते? सच्ची बात यह है कि सही मानों में मुक़ल्लिद भी नहीं हैं अगर मुक़ल्लिद होते तो क़ुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ इमामों को (इमामों के हुक्म के मुताबिक़) छोड़ देते। यह लोग न मुक़ल्लिद हैं और न ही ग़ैर मुक़ल्लिद, बल्कि पक्के मुतअस्सिब, नफ़्स परस्त और गुमराह हैं।

बहुत से बुज़ुर्गों ने कश्फ़ व करामात से मालूम किया है कि तमाम ही इमाम लोग केवल उन्हीं लोगों से राज़ी और प्रसन्न हैं जो क़ुरआन व हदीस पर चलते हैं और क़ुरआन व हदीस को अपना पीर व बुज़ुर्ग समझते हैं और जो लोग क़ुरआन व हदीस को छोड़ कर अपने इज्तिहाद पर अड़े रहते हैं ऐसे लोगों से वे सख़्त नफ़रत करते हैं। "जब पीर लोग अपने मुरीदों से बेज़ार हो जायें गे और अपनी बरात का इज़्हार करें गे" (सूरः- आयत....... ....) इस से मुक़ल्लिद को नसीहत हासिल करनी चाहिये (वहीदी)

या ऐसी जगह से उन पर अ़ज़ाब आये कि उन को भनक भी न लगे ४६+४७. या उन को चलते-फिरते (सही सलामत) पकड़ लें या➲

بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا
يَشْعُرُوْنَ ۝ اَوْ يَاْخُذَهُمْ فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ

بِمُعْجِزِينَ ﴿٤٦﴾ أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَىٰ تَخَوُّفٍ فَإِنَّ رَبَّكُمْ
لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٤٧﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ
يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا لِّلَّهِ
وَهُمْ دَاخِرُونَ ﴿٤٨﴾ وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا
فِي الْأَرْضِ مِن دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٤٩﴾
يَخَافُونَ رَبَّهُم مِّن فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٥٠﴾
وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۖ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ
وَاحِدٌ ۖ فَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ﴿٥١﴾ وَلَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَ
الْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ وَاصِبًا ۚ أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَتَّقُونَ ﴿٥٢﴾ وَمَا
بِكُم مِّن نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ۖ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ
فَإِلَيْهِ تَجْأَرُونَ ﴿٥٣﴾ ثُمَّ إِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنكُمْ إِذَا

उन को डरा-डरा कर पकड़ें (कि पहले कुछ मामूली तक्लीफ़ पहुंचाये, फिर अधिक। मतलब यह कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है) यह लोग उस को किसी मामले में आजिज़ नहीं कर सकते। बेशक तुम्हारा पर्वरदिगार बड़ा ही मेहरबान निहायत रहम वाला है। ४८. क्या यह लोग अल्लाह की पैदा की हुयी चीज़ों को नहीं देखते? कि उन के साए कभी दायें और कभी बाएं तरफ़ को अल्लाह की (आज्ञा में)सज्दा करते हैं और वह खुद भी ज़लील होती हैं ४९. और जो चीज़ें आसमानों और ज़मीन में हैं (वह) और फ़रिश्ते सब अल्लाह को सज्दा करते हैं और (उस सज्दा करने में) वह तकब्बुर नहीं करते ५०. अपने रब से जो उन के ऊपर है डरते हैं[२८] और जिस बात का उन को हुक्म होता है वही करते हैं ५१. अल्लाह ने हुक्म दे रखा है कि कोई दूसरा माबूद न बनाओ (क्योंकि) हक़ीक़ी माबूद बस एक ही है सो मुझ ही से डरते रहो[२९] (ताकि तुम्हारा भला हो और तुम कामियाब हो इसलिये कि) ५२. जो कुछ आसमानों और ज़मीनों में है सब उसी का है (उसी ने उन को पैदा किया और वही मिटा देता है) और उसी की ज़िबादत दाइमी (स्थाई या अनंत) है। तो क्या फिर तुम अल्लाह के अलावा दूसरों से डरते हो ५३. (सुनो!) जितनी कुछ नेमतें तुम्हारे पास हैं सब की सब अल्लाह के हाँ से हैं और जब तुम को कोई सख़्त तक्लीफ़ पहुंचती है तो फिर भी उसी की तरफ़ बिल्बिलाते हुये आते हो ५४. फिर जब वह उस तक्लीफ़ को तुम से दूर कर देता है

....

२८. इस आयत से अल्लाह के सब से बर्तर-बाला और बुलन्द होने का सबूत है। ऊपर भी कई आयतों में बयान हो चुका है कि वह "फ़ौकुल् अर्श" है। तमाम ही उलमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है, केवल "जहमिय्या" और "मोतज़िला" जैसे गुमराह फ़िर्क़ों ने इस का इन्कार किया है (वहीदी) अल्लाह पाक के लिये "फ़ौक़" (ऊपर) जिहत (दिशा) को भी मानना ईमान का एक अहम हिस्सा है, इस पर ईमान लाना ज़रूरी है। तमाम ही नबियों और रसूलों ने अल्लाह के लिये फ़ौक़ जिहत का इस्तेमाल किया है और यह तमाम नबियों का मुत्तफ़क़ अलैह मस्अला है। इस की तावील जायज़ नहीं है।

२९. 'मुझ ही से डरते रहो' ताकि तुम्हारा भला हो और तुम कामियाब हो जाओ। और तुम यह न समझो कि तुम्हारी इताअत और फ़र्मा बरदारी से उस को कुछ फ़ाइदा पहुंच रहा है। नहीं, बल्कि इताअत और बन्दगी इस लिये है कि सब उसी का है और उसी की बन्दगी दाइमी है। उस के अलावा जिन लोगों ने खुदा होने का दावा किया उन को चन्द ही दिन के बाद अपनी ग़लती का एहसास हो गया। और जब अल्लाह ने उन को पकड़ा तो चीख़-पुकार करने

➲लगे। फिर जब दुःख में वह तुम्हारा साथी है तो सुख में दूसरों को क्यों पुकारते हो। दूसरों से डरते हुये क्यों उन के नाम की नज़्र व नियाज़ करते हो।(सनाई)

فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ۝ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ
اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ وَيَجْعَلُوْنَ
لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ؕ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ
عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ۝ وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ
سُبْحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ۝ وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ
بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ۝
يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ؕ اَيُمْسِكُهٗ
عَلٰى هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ مَا
يَحْكُمُوْنَ ۝ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ
مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ۝ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا
تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ
اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا

तो कुछ लोग तुम में से उसी दम अपने पर्वरदिगार के साथ शिर्क करने लग जाते हैं[३०] ५५. ताकि हमारी दी हुयी नेमत की नाशुक्री करें। (चन्द रोज़) ज़िन्दगी गुज़ार लो आख़िर जान लो गे (बकरे की माँ कब तक ख़ैर मनाये गी) ५६. और (उन की जिहालत सुनो कि) जिन चीज़ों की (अस्लिय्यत) को भी) नहीं जानते उन के लिये हमारे दिये में से हिस्से मुक़र्रर करते हैं (कि फ़लाँ बुत का इतना, फ़लाँ क़ब्र वाले का इतना) सो अल्लाह की क़सम! इस बोहतान लगानेका तुम से अवश्य प्रश्न हो गा ५७. और अल्लाह की बेटियाँ ठहराते हैं वह (उन की बेहूदा बातों से) पाक है और उन के (अपने) लिये जो यह चाहें (यानि मनमाने बेटे) ५८. हालाँकि जब उन में से किसी को बेटी के पैदा होने की सूचना मिलती है तो रंज से मुंह तो उस का काला हो जाता है और गुस्सा से ज़हर के घूंट पीता है ५९. बेटी (की ख़बर) के रंज के मारे बिरादरी से छुपा-छुपा फिरता है कि इस ज़िल्लत के बावजूद ज़िन्दा रख लूँ या ज़िन्दा गाड़ दूँ[३१]? (सुनते हो! लड़की को ऐसा बुरा जानते हैं फिर भी लड़कियों की निस्बत अल्लाह की तरफ़ करते हैं) देखो तो इन लोगों की क्या ही बुरी समझ है ६०. आख़िरत के इन्कारियों की बहुत बुरी मिसाल है (हक़ीक़त में गधों और कुत्तों से भी बदतर है) और अल्लाह की मिसाल तो सब से बुलन्द और बाला है। और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है ६१. अगर अल्लाह लोगों को उन के बुरे कामों की वजह से पकड़ता तो दुनिया पर किसी जीवधारी को ज़िन्दा न छोड़ता[३२], लेकिन एक निश्चित समय तक उन को मुहलत देता है, पस जब उन की अजल {मौत, घड़ी} आ पहुंचे गी

....

३०. अल्लाह की दी हुयी नेमतों की निस्बत ग़ैरों की तरफ़ करते हैं। वह अगर औलाद देता है तो उस का नाम इस प्रकार रखते हैं जिस में शिर्क शामिल हो जैसे माराँ बख़्श, पीर बख़्श, नबी बख़्श, सालार बख़्श मदार बख़्श। ताकि किसी तरह हमारी दी हुयी नेमतों की नाशुक्री करें (सनाई)➲

➲३१. वह फ़रिश्तों को तो अल्लाह की बेटियाँ समझते थे, लेकिन खुद औरतों की जिन्स के लिये उन के ख़यालात क्या थे? यह कि सब से ज़्यादा ज़लील और हक़ीर मख़्लूक़ है। जब किसी के हाँ बेटी पैदा होती तो उसे बड़ी बद नसीबी {दुर्भाग्य} की बात समझता। अक्सर हालतों में उसे खुद अपने हाथ से ज़िन्दा गाड़ कर मार डालते। जब उन में से किसी को सूचना मिलती तो मारे शर्म के लोगों के सामने न आता और सोचने लगता कि ज़िल्लत गवारा कर के बेटी वाला बन जाये, या एक अ़िज़्ज़त वाला आदमी बन कर उसे ज़मीन में ज़िन्दा दफ़न कर दे। यहाँ एक तरफ़ तो उन के इस ज़लील अ़क़ीदे की तरफ़ इशारा किया गया है कि जिस बात को खुद अपने लिये ज़िल्लत की बात समझते हैं, उसे खुदा के लिये पसन्द करने में उन्हें कोई डर नहीं। दूसरी तरफ़ औरत को हक़ीर और ज़लील समझने के ख़याल का रद्द किया है और फ़रमाया: "देखो तो क्या ही बुरा फ़ैसला है जो उन्हों ने इस मामला में किया है" (तर्जुमान)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने इस आयत की तफ़्सीर यह की है कि "ज़ालिमों! मेरे लिये बेटियाँ ठहराते हो, मेरे लिये उन को पसन्द करते हो और अपने लिये नापसन्द"। और यह इस लिये कि जाहिलिय्यत में जब किसी शख़्स के हाँ लड़की पैदा होती तो या तो ज़िल्लत कुबूल कर के उस को ज़िन्दा रहने देता, या ज़िल्लत के डर से ज़िन्दा ही दफ़न कर देता।

आयत न० ६१ में अल्लाह पाक के करम और उस की मेहरबानी का ज़िक्र हो रहा है कि वह बन्दों के गुनाह देखते हुये भी उन्हें मुहलत देता है। अगर तुरन्त ही पकड़ ले तो दुनिया में कोई भी चलता-फिरता नज़र न आये और इन्सानों की ख़ता में जानवर हलाक हो जायें और गेंहूँ के साथ घुन पिस जाये, बुरों के साथ भले भी पकड़ में आ जायें, लेकिन अल्लाह तआ़ला अपनी मेहरबानी से मुहलत दे रहा है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० ने सुना कि कोई सहाबी फ़रमा रहे हैं कि ज़ालिम अपना ही नुक़्सान करता है तो आप ने फ़रमाया: नहीं, नहीं! बल्कि परिन्दे घोंसलों में उस के ज़ुल्म के नतीजे में हलाक हो जाते हैं (इब्ने कसीर) कुरआन मजीद में एक दूसरी आयत में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: "उस अ़ज़ाब से डरो जो आने पर सिर्फ़ ज़ालिमों ही को नहीं पहुंचे गा, बल्कि उस के साथ दूसरी मख़्लूक़ भी उस में गिरिफ़्तार हो जायेगी"। (सूरः अन्फ़ाल आय: २५) इन आयतों से यह मालूम हुआ कि ज़ुल्म की नहूसत से आबाद शहर बर्बाद और वीरान हो जाते हैं। यही हाल और दूसरे गुनाहों का भी है। सैलाब, सूखा, अकाल, अशान्ति का जो माहौल आज कल दुनिया पर मुसल्लत है, यह किसी न किसी गुनाह का परिणाम हैं।

३२. बनी आदम को इस लिये कि वह खुद बदकार हैं। हैवानों को इस लिये कि उन की ज़िन्दगी इन्सानों की ज़िन्दगी से वाबस्ता है। लेकिन ऐसा वह करता नहीं है, बल्कि उन की शरारतों के बावजूद एक निश्चित समय तक उन को मुहलत देता है (सनाई)

तो न एक घड़ी पीछे रह सकें गे और न आगे बढ़ सकेंगे ६२. और (सुनो!) अल्लाह के हक़ में ऐसी चीज़ें मन्सूब करते हैं जिन को अपने लिये मक्रूह जानते हैं और अपनी ज़बान से झूठ कहते हैं कि उन के लिये भलाई है। कुछ शक नहीं कि उन के लिये आख़िरत में अ़ज़ाब है और उन को अधिक से अधिक अ़ज़ाब किया जायेगा ६३. अल्लाह की क़सम! हम ने तुझ से पहले कई एक क़ौम की तरफ़ रसूल भेजे (कि लोगों को➲

يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٦١﴾ وَيَجْعَلُونَ
لِلَّهِ مَا يَكْرَهُونَ وَتَصِفُ أَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ أَنَّ
لَهُمُ الْحُسْنَىٰ ۖ لَا جَرَمَ أَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَأَنَّهُم
مُّفْرَطُونَ ﴿٦٢﴾ تَاللَّهِ لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ
مِّن قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَهُوَ
وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾ وَمَا

اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَمِنْ ثَمَرٰتِ

सीधी राह पर लायें) फिर (भी) शैतान ने उन के बुरे आमाल उन की निगाहों में अच्छे कर दिखाये[३३] पस वही उस दिन उन का क़रीबी हो गा और उन को दुःख की मार हो गी ६४. तुझपर यह किताब इस लिये उतारी है कि तू लोगों के इख़्तिलाफ़ी मामलात का स्पष्ट तौर से बयान कर दे[३४] और यह (किताब) ईमानदारों के लिये रहमत और हिदायत है ६५. और अल्लाह तआला आसमान से पानी उतारता है फिर उस से ज़मीन को खुश्क हो जाने के बाद ताज़ा कर देता है। जो लोग (दिल के कान लगा कर) सुनते हैं उन के लिये इस (बयान) में दलील (मिल जाती) है (कि वह इस के ज़ाहिरी निज़ाम पर ग़ौर कर के नसीहत पा जाते हैं) ६६. (सुनो!) चारपायों में तुम्हारे लिये नसीहत है कि हम उन के पेट (की चीज़ों) से गोबर और ख़ून के दर्मियान से तुम को ख़ालिस दूध पिलाते हैं जिस को पीने वाले निहायत अधिक आसानी से पी जाते हैं[३५]।

....

३३. यह न समझो कि अल्लाह की तदबीर और ख़ाहिश पर शैतान ग़ालिब आ गया कि अल्लाह ने तो उन की हिदायत चाही मगर शैतान ने उन को गुमराह ही रखा, ऐसी बात नहीं है। बात यह है कि उस का चाहना दो तरह का होता है (१) इख़्तियारी (२) क़ह्री और जबरी। 'जबरी मतलब यह है कि जिस काम के बारे में अल्लाह ने चाह लिया कि होना है, तो फिर उस काम को हो कर रहना है, दुनिया की कोई ताक़त उसे रोक नहीं सकती। 'इख़्तियारी' का यह मतलब है कि उस का होना या न होना बन्दों के इख़्तियार में कर दे, कि अगर अच्छा करें गे तो अच्छा बदला पायें गे और बुरा करें गे तो दन्ड पायें गे जैसे, चोरी, ज़िना कारी, बदकारी, वग़ैरह। यही वजह है कि इन इख़्तियारी कामों में शैतान ग़लबा पा लेता है और गुमराह कर देता है।

३४. इस आयत में अल्लाह तआला ने क़ुरआन के नाज़िल करने को अपनी तरफ़ और उस की तफ़्सीर को रसूल की तरफ़ किया है। और यह तो सभी जानते हैं कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़ुरआन की जो तफ़्सीर बयान की है इसी का नाम हदीस है पस जो लोग क़ुरआन का नाम ले कर हदीस से लोगों को रोकते हैं वह इस आयत का इन्कार करते हैं। सच पूछो तो क़ुरआन पर इन का ईमान नहीं है। यह लोग अपनी ख़ाहिश के ग़ुलाम हैं और क़ुरआन को भी अपने ताबे बनाना चाहते हैं। अगर क़ुरआन पर उन का अ़क़ीदा और अ़मल होता तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हदीसों का इन्कार न करते (राज़)

३५. इस आयत में दूध, फलों का रस और शहद, इन तीन नेमतों के ज़िक्र के साथ अल्लाह तआला ने अपने ख़ालिक़ मालिक, राज़िक़ और माबूद होने का सबूत पेश किया है। दूध किस प्रकार पैदा होता है और कहाँ से पैदा होता है? अगर केवल इसी एक मुद्दे पर ग़ौर करें तो हमारी हिदायत के लिये बस यही काफ़ी है। फ़लों के अन्दर भिन्न-भिन्न प्रकार के खट्टे-मीठे रस पैदा होते हैं। जैसे खजूर और अन्गूर जिन के रस से नशा की चीज़ बना लेते हैं (जिन को अल्लाह ने हराम क़रार दिया है) इन के अलावा और भी जायज़ तरीक़े से इस्तेमाल करते हैं। लेकिन ग़ौर करने की बात यह है कि इन फलों में मिठास कैसे पैदा होती है और कहाँ से बनती है। शहद के छत्तों को देखें जिन में हमारे लिये दिन रात शहद तैय्यार होता है। गोया शहद बनाने की फ़ैक्ट्री है। आप दुनिया भर के फलो-फूलों का

रस इकट्ठा कर के शहद बनाना चाहें तो एक बूंद भी नहीं बना सकते हैं, लेकिन एक छोटी सी मक्खी किस प्रकार शहद बनाने के काम को अन्जाम देती है। अल्लाह तआ़ला ने क्या ख़ूब फ़रमाया: "बेशक इन में सोच-विचार करने वालों के लिये हिदायत की दलील है"।

एक अंग्रेज़ डाक्टर मिस्टर केटी आरलावल ने जब इस आयत को पढ़ कर ग़ौर किया तो दंग हो कर रह गया कि अरब का यह पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जिस को मुख़ालिफ़ लोग उम्मी (जाहिल) कहते थे, कितने बड़े आ़लिम थे। फिर आगे लिखता है कि वह एक ज़बर्दस्त फ़ातेह और विद्वान थे। वह फ़ितरत के शैदाई और मक्खियों के कार्य करने के तरीक़ों के बहुत बड़े आलिम थे। वह शहद के लाभ पहुंचाने वाले पहलुवों से भी अवगत थे। वह मक्खियों के घर बनाने के तरीक़ों और हर रंग के शहद तय्यार करने का ज़िक्र करते हैं और यह अ़िल्म बिना तलाश और खोज-तहक़ीक़ के नहीं हासिल हो सकता (दो क़ुरआन पृष्ट १४९)

النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّ
رِزْقًا حَسَنًا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾
وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِيْ مِنَ
الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ﴿٦٨﴾
ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِيْ سُبُلَ
رَبِّكِ ذُلُلًا ۭ يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ
اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَاۗءٌ لِّلنَّاسِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً
لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ
وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ
بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿٧٠﴾
وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰي بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ
فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَاۗدِّيْ رِزْقِهِمْ عَلٰي مَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَاۗءٌ ۭ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ

६७. और खजूरों और अंगूरों से तुम शराब बनाते हो और उम्दा रोज़ी। जो लोग अक़्ल रखते हैं उन के लिये इस में हिदायत की दलील है ६८. और (सुनो!) तुम्हारे पर्वरदिगार ने शहद की मक्खी को इल्हाम किया हुआ है[३६] (यानी उस की फ़ितरत में डाल रखा है) कि पहाड़ों और दरख़्तों और लोगों के मकानों की छतों पर रहने को घर बना लिया कर ६९. फिर हर प्रकार के फूलों से (अपना हिस्सा) खा कर और अपने पर्वरदिगार के रास्तों पर जो आसान किये गये हैं चल कर (चुनान्चे वह इस पर अ़मल करती है तो) उस के पेट से शहद निकलता है जिस के रंग मुख़्तलिफ़ हैं (कोई निहायत लाल और कोई सफ़ेद) इस में लोगों के लिये शिफ़ा है। कुछ संदेह नहीं कि सोच-विचार करने वालों के लिये इस में दलील है ७०. और (सुनो) अल्लाह ही ने तुम को पैदा किया है फिर वही तुम को मौत देता है कुछ तुम में से निकम्मी आयु (यानी बुढ़ापे की अन्तिम सीमा) तक पहुंच जाते हैं[३७] (ऐसे) कि जानने के बाद कुछ नहीं जानते[३८]। अल्लाह ही बड़े अ़िल्म वाला और बड़ी क़ुदरत वाला है। ७१. और अल्लाह ही ने तुम में से बाज़ को बाज़ पर रोज़ी में बर्तरी दी है (एक आक़ा है तो दूसरा नौकर है) फिर जिन को बर्तरी मिली है वह अपने ग़ुलामों को अपना माल दे कर इख़्तियार में उन से बराबर नहीं हो जाते[३९]। तो क्या फिर अल्लाह की नेमत की बेक़द्री {छीछा लेदर} करते

➲हैं? (शुक्र के स्थान पर नाशुक्रे होते हैं?)

....

३६. शहद की मक्खियाँ बड़े अ़जीब-अ़जीब काम करती हैं मुसद्दस (छः कोण का) घर बनाती हैं। इन तमाम कोणों की लम्बाई-चौड़ाई बराबर होती है। सब मिल कर एक महारानी का चुनाव करती हैं। छत्ते के दर्वाज़े पर चौकीदार नियुक्त करती हैं, जो कीड़ों-मकोड़ों और पतिंगों को अन्दर नहीं आने देते। फूलों का रस चूसने के लिये बहुत दूर तक चली जाती हैं, लेकिन वापस होते समय घर का रास्ता नहीं भूलतीं। एक छत्ते की मक्खी दूसरे छत्ते में नहीं जाती। एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "दो तन्दुरुस्ती देने वाली चीज़ों को लाज़िम पकड़ो" (१) कुरआन (२) शहद। शहद हर बदनी मर्ज़ की दवा है और कुरआन दिल और रूह की दवा है (वहीदी)

नई तहक़ीक़ से यह बात सामने आई है कि शहद बहुत सी लाइ़लाज बीमारियों जैसे टी.बी. और दमा आदि में बड़ा लाभदायक है। अगर ख़ालिस शहद का इस्तेमाल किया जाये तो चन्द अहम बीमारियों से शिफ़ा हासिल होती है, लेकिन अगर और दीगर दवाओं के साथ इस्तेमाल किया जाये तो बेशुमार बीमारियों के लिये शिफ़ा है। बहरहाल शहद अपनी जगह एक आहार यानि भोजन और खाना भी है, इस के साथ-साथ दवा भी (फ़त्हुल क़दीर)

३७. अक्सर लोग अधिक आयु सीमा पार कर जाने के बाद सठिया जाते हैं और पागलों की सी हर्कतें करने लगते हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इसी कारण निकम्मी उम्र से पनाह मांगी है। हज़रत इ़क्रमा और दूसरे फ़ुक़हा का कहना है कि जो शख़्स बराबर कुरआन की तिलावत करता रहे उस की अ़क्ल किसी भी उम्र में खोटी नहीं होती। मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान साहब (अल्लाह उन की क़ब्र को रोशन करे) १६० वर्ष की आयु सीमा पार कर जाने के बाद भी उन की अ़क्ल और होश व हवास में तनिक भर अन्तर नहीं आया था। हज़रत मौलाना सय्यद मियाँ मुहम्मद नज़ीर मुहद्दिस देहलवी रह० भी १०० की सीमा पार कर चुके थे लेकिन हदीस शरीफ़ बराबर पढ़ाते रहे। रजब सन १३२० हिज्री में इन्तिक़ाल किया और शाही ई़द गाह के सामने शीदी पूरा के क़ब्रस्तान में (जो आज कल पंजाबी बिरादरी का क़ब्रस्तान कहलाता है) दफ़्न किये गये। हिन्दुस्तान में हदीस का इ़ल्म आप ही की कोशिशों से फैला।

बहुत सारे उलमा के तजुरुबे और तहक़ीक़ में यह बात आयी है कि जो शख़्स कुरआन व हदीस के पढ़ने-पढ़ाने में लगा रहे और तब्लीग़ व इशाअ़त की ख़िदमत में लगा रहे उस की उम्र लम्बी होती है। ऐ अल्लाह! जब तक ज़िन्दा रहें हमें भी कुरआन व हदीस की ख़िदमत और सेवा में मश्ग़ूल रख आमीन! (वहीदी)

३८. बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत के अनुसार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम यह दुआ माँगा करते थे: "अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क अनिल् बुख़्लि वल्-कस्लि वल्-ह-रमि व-अर्-ज़लिल् उमुरि व-अज़ाबिल् क़ब्रि वफ़ित्-नतिद्दज्जालि वफ़ित्-नतिल् मह्या वल-ममाति (ऐ मेरे मौला! मैं बख़ीली से, आजिज़ी से, बुढ़ापे से, ज़लील उम्र से, क़ब्र के अ़ज़ाब से, दज्जाल के फ़ितने से और ज़िन्दगी और मौत के फ़ितने से तेरी पनाह चाहता हूँ) (बुख़ारी शरीफ़)

३९. हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि०) को एक पत्र लिख कर हिदायत की कि अपनी रोज़ी पर क़नाअ़त इख़्तियार करो। अल्लाह ने एक से बढ़ कर एक को धनवान कर रखा है, यह भी उस की तरफ़ से एक आज़माइश है कि अमीर लोग किस प्रकार अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं और जो हक़ दूसरों के अल्लाह ने उन पर मुक़र्रर किये हैं उन को कहाँ तक अदा करते हैं (इब्ने कसीर)

७२. और (सुनो!) अल्लाह ही ने तुम्हारी जिन्स {लिन्ग} से तुम्हारी पत्नियाँ पैदा कीं[४०] और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे बेटे और पोते पैदा➲

يَجْحَدُوْنَ ﴿٧١﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ

اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَ

حَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۭ اَفَبِالْبَاطِلِ
يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَ
يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا
مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٧٣﴾
فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَ
اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧٤﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا
مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا
رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ۭ هَلْ
يَسْتَوٗنَ ۭ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾
وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ اَبْكَمُ لَا
يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا

किये हैं और तुम को पाकीज़ा (स्वादिष्ट भोजन से) रोज़ी दी (फिर जो लोग ऐसे मालिक को छोड़ कर आजिज़ बन्दों की तरफ़ झुकते हैं) तो क्या बे सबूत बात को मानते हैं और अल्लाह की नेमत से इन्कार करते हैं ७३. और (सुनो!) अल्लाह के अ़लावा ऐसी वस्तुओं की अ़िबादत करते हैं जिन को उन के लिये आसमान से (वर्षा के ज़रीअ़ा) और ज़मीन से (उग कर) रोज़ी देने की कुछ कुदरत नहीं और न ही कुदरत पा सकते हैं ७४. पस तुम अल्लाह के हक़ में मिसालें न घड़ा करो[४१] (क्यों कि) अल्लाह को (तो) सब कुछ मालूम है और तुम्हें कुछ मालूम नहीं ७५. (अगर ठीक और सच्ची मिसाल सुनना चाहो तो सुनो) अल्लाह स्वयं (तुम्हारे समझाने को) एक गुलाम {दूसरे की मिलकिय्यत} की मिसाल बतलाता है जिस को किसी काम में कुदरत नहीं और (एक ऐसा है) जिस को हम (अल्लाह) ने महज़ अपने फ़ज़्ल से बेहतरीन रोज़ी दे रखी है पस वह उस में से पोशीदा और ज़ाहिर ख़र्च करता है। क्या यह दोनों क़िस्म बराबर है? पस सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिये मख़्सूस हैं[४२]। लेकिन बहुत से लोग जिहालत करते हैं ७६. और (सुनो) अल्लाह (अच्छे और बुरे की तमीज़ बताने को) दो आदमियों की मिसाल सुनाता है एक तो उन में से गूंगा है कि बात के अन्जाम देने की उसे ताक़त नहीं[४३] और वह (ऐसा नालायक़ है कि) अपने मालिक के हक़ में बोझ हो रहा है जहाँ कहीं भी उसे भेजता है

....

४०. अल्लाह की यह बहुत बड़ी कृपा है कि इन्सान के लिये स्त्री व पुरुष का जोड़ा बनाया फिर उस जोड़े से नस्ल बढ़ाई और फैलाई। 'ह-फ़-दह' का एक अर्थ "पोते" (यानी बेटे का बेटा) है, दूसरा अर्थ "नौकर-चाकर और मददगार" के भी है। लड़के और पोते भी एक आदमी के सेवक ही होते हैं और अ़रब में यही चलन भी था। एक सहीह हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर एहसान जतलाते हुये फ़रमाये गा कि क्या मैं ने तुम्हें बीवी नहीं दी थी? क्या मैं ने तुम्हें अ़िज़्ज़त नहीं दी थी? क्या मैं ने तुम्हें सर्दारी नहीं दी थी? और क्या आराम की हालत में नहीं रखा था? (मुहम्मदी)

४१. कुछ लोग सोचते हैं कि जिस प्रकार दुनिया के बादशाह अपने कारो बार अपने मातहतों में बाँट देते हैं, इस प्रकार अल्लाह ने भी अपना इख़्तियार अपने कुछ बन्दों को भी दे रखा है। यह ख़याल अल्लाह तआ़ला को न जानने और न पहचानने का परिणाम है जो बिल्कुल ग़लत है।

४२. यह ख़िताब मुश्रिकों से है कि तुम लोग अल्लाह को दुनिया के बादशाहों की तरह समझते हो कि वह अपने

➲वज़ीरों और दर्बारियों पर निर्भर होते हैं, उन वज़ीरों की सुननी पड़ती है और हमेशा डरे रहते हैं कि कहीं उन का शासन ही न छीन लें, इसी प्रकार तुम यह समझते हो हमारे ठाकुर और माबूद अल्लाह की हुकूमत में दख़ल दे सकते हैं और उस से सिफ़ारिश कर के तुम्हें नजात दिला सकते हैं। यह तुम्हारी केवल मूर्खता है। दुनिया के बादशाह बेशक सभी कार्य नहीं कर सकते हैं इस लिये उन को अपने वज़ीरों का सहारा लेना पड़ता है, लेकिन अल्लाह अपने कार्य स्वयं करता है उस को किसी मख़्लूक़ की सहायता की आवश्यक्ता नहीं है। सारे संसार का तन्हा ख़ालिक़ मालिक है वह तन्हा सब की सुनता है और सब की आवश्यक्ता को पूरी करता है। वह एक चींटी की भी दुआयें सुनता है। हाँ, अगर वह चाहे तो अपने महबूब बन्दों की सिफ़ारिश क़ुबूल कर ले, मगर किसी के दबाव में आ कर नहीं।

हज़रत शैख़ शर्फ़ुद्दीन यह्या मुनीरी रह० अपने एक पत्र में फ़रमाते हैं: "वह अल्लाह ऐसा बे पर्वाह है कि अगर वह चाहे तो हर रोज़ लाखों मक़्बूल बन्दे हज़रत इब्राहीम और रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तरह पैदा करे। और अगर वह चाहे तो तमाम मक़्बूल बन्दों को एक दम में मर्दूद कर दे और तमाम मर्दूद बन्दों को मक़्बूल बना दे। किसी की मजाल नहीं कि उस के पास तनिक भर भी चूँ चिरा करे। उस के तमाम बन्दों में मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सब से महबूब और मक़्बूल बन्दे हैं मगर वह भी क़ियामत के दिन अर्श के सामने सज्दे में गिर पड़ें गे और लम्बे समय तक पड़े-पड़े अल्लाह पाक की बड़ाई बयान करें गे। जब उन को हुक्म हो गा कि अपना सर सज्दे से उठाओ और माँगो, क्या माँगते हो? हम दें गे और सिफ़ारिश क़ुबूल करें गे। सुब्हानल्लाह! यह केवल नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बुज़ुर्गी और बड़ाई है। इन के अलावा किसी बड़े से बड़े संदेष्टा को इतनी भी हिम्मत न हो गी कि अल्लाह से उस समय कुछ अनुरोध कर सकें"। (वहीदी)

४३. यही मिसाल बुत और अल्लाह की है। बुत, बेजान, बे अक़्ल, पत्थर और मिट्टी के बने हुये हैं, और उस ग़ुलाम से भी बद तर हैं ग़ुलाम कम से कम मच्छर और मक्खी को तो भगा सकता है। उस को अपने हाथ पाँव को हिलाने की तो ताक़त हैं कोई मारने-पीटने को उतारू हो, तो भाग तो सकता है। बुतों को तो इतनी भी ताक़त नहीं है। तो भला ऐसे बुतों का अल्लाह से क्या मुक़ाबला? वह तो सारे संसार का मालिक है, जो चाहे कर सकता है।

बिल्कुल यही उदाहरण मोमिन और काफ़िर का है। काफ़िर चाहे जितना धनवान हो वह निर्धन ग़ुलाम की तरह है। उस की कोई ख़ैरात क़ुबूल नहीं। और मोमिन का यह हाल है कि उस की एक नेकी दस नेकियों के बराबर लिखी जाती हैं। कुछ उलमा का कहना है कि इस आयत में ग़ुलाम से मुराद अबू जेहल और आज़ाद मालदार से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० हैं (वहीदी)

يُوَجِّهْهُّ لَا يَأْتِ بِخَيْرٍ ۖ هَلْ يَسْتَوِىْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّأْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٧٦ وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۖ وَمَآ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ۖ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝٧٧ وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٧٨ اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَآءِ ۗ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا

ख़ैर से वापस नहीं आता। तो क्या यह (नालायक़) और जो शख़्स लोगों को अद्ल और इन्साफ़ की राह बतलाता है और स्वयं भी सीधी राह पर है४४, क्या यह दोनों (इ़ज़्ज़त और शर्फ़ में) बराबर हैं? ७७. और आसमानों और ज़मीनों की छुपी बातें सब अल्लाह ही के क़ब्ज़े में हैं (वह उन को जानता है, उस की क़ुदरत की कोई इन्तहा नहीं) और क़ियामत की हक़ीक़त एक आँख की झपक जैसी है बल्कि इस से भी कम तर (क्योंकि) अल्लाह हर काम पर क़ुदरत रखता है। ७८. और (सुनो!) अल्लाह ही ने➲

اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۷۹﴾ وَاللّٰهُ
جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُیُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّ جَعَلَ لَكُمْ
مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُیُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا یَوْمَ
ظَعْنِكُمْ وَ یَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَ مِنْ اَصْوَافِهَا وَ
اَوْبَارِهَا وَ اَشْعَارِهَاۤ اَثَاثًا وَّ مَتَاعًا اِلٰی حِیْنٍ ﴿۸۰﴾

➲तुम को तुम्हारी माओं के पेटों से (ऐसे) निकाला है कि तुम कुछ न जानते थे और उसी ने तुम में कान और आँखें और दिल बनाये हैं ताकि तुम (इन तरीक़ों से अल्लाह की नेमतों को पाओ और) शुक्र करो ७९. क्या यह (दुनिया के निज़ाम पर ग़ौर नहीं करते और) परिन्दों को आसमान की फ़ज़ा में उड़ते हुये नहीं देखते? (ताकि इस नतीजे पर पहुंचे कि) बग़ैर अल्लाह के (इस तरह) उन को कोई रोक नहीं सकता। कुछ शक नहीं कि ईमानदारों के लिये इस में कई एक निशान है ८०. और अल्लाह ने तुम्हारे घरों को आराम की जगह बनाया (बल्कि अगर ग़ौर करो तो ढब (सलीक़ा) भी तुम को उसी ने सिखाया) और चौपायों से तुम्हारे लिये (ऐसे) घर (यानी खेमे) बनाये हैं जो (सफ़र में) कूच और ठहरने के समय तुम को हल्के मालूम होते हैं और चारपायों की ऊन और रोयों और बालों से तुम्हारे लिये सामान और एक समय तक तुम्हारे गुज़ारे की सूरत बना दी है[४५]।

....

४४. 'सिराते मुस्तक़ीम' (सीधी राह) नाम है सही अ़क़ीदा और नेक अ़मल के मजमूआ़ का। और इन सब से अहम यह कि अल्लाह को अपना रब और मालिक जानना और केवल उसी ही की अ़िबादत करना (वाज़िहुल बयान मौलाना मीर सियाल कोटी)

४५. अ़रब के लोग ऊँट और दूसरे जानवरों के चमड़ों को रंग कर खेमा बनाते थे। दुंबे और भेड़े के बालों को "अस्वाफ़" और बक्री के बालों को "अश्आर" कहा जाता है। इन तमाम चीज़ों से घर बनाने का अ़िल्म अल्लाह का दिया हुआ है। (हक़्क़ानी)

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّ جَعَلَ لَكُمْ
مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّ جَعَلَ لَكُمْ سَرَابِیْلَ تَقِیْكُمُ
الْحَرَّ وَ سَرَابِیْلَ تَقِیْكُمْ بَاْسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ یُتِمُّ
نِعْمَتَهٗ عَلَیْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿۸۱﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا
فَاِنَّمَا عَلَیْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِیْنُ ﴿۸۲﴾ یَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ
اللّٰهِ ثُمَّ یُنْكِرُوْنَهَا وَ اَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۳﴾ ع وَ یَوْمَ
نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِیْدًا ثُمَّ لَا یُؤْذَنُ لِلَّذِیْنَ
كَفَرُوْا وَ لَا هُمْ یُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿۸۴﴾ وَ اِذَا رَاَ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا

८१. और अल्लाह ने तुम्हारे लिये अपनी मख़्लूक़ से साया दार चीज़ें बनाई हैं और उसी ने तुम्हारे लिये पहाड़ों में छुपने की जगह (यानी ग़ार) बनाये हैं और उसी ने तुम्हारे लिये लिबास पैदा किया है जो तुम को गर्मी से बचाता है और एक दूसरी क़िस्म का लिबास जो तुम को लड़ाई से महफ़ूज़ रखता है। इसी प्रकार वह अपनी नेमत तुम पर पूरी करे गा ताकि तुम फ़र्माबर्दार बने रहो[४६] ८२. फिर अगर वह (इस से) मुंह फेरें तो (तेरा कोई हर्ज नहीं) तेरे ज़िम्मा केवल स्पष्ट कर के पहुंचा देना है।८३. (लेकिन यह➲

الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٨٥﴾
وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا
هَٰؤُلَاءِ شُرَكَاؤُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُوا مِنْ دُونِكَ ۖ
فَأَلْقَوْا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٨٦﴾ وَأَلْقَوْا
إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَمَ ۖ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا

नालायक़ ऐसे हैं कि) अल्लाह की नेमत को पहचानते हैं फिर इन्कार कर जाते हैं और अक्सर तो इन में खुल्लम-खुल्ला काफ़िर हैं ८४. (इस इन्कार का वबाल इस दुनिया में भी उठायें गे) और जिस दिन हम हर जमाअ़त से एक-एक गवाह खड़ा करें गे फिर काफ़िरों को अनुमति न हो गी और न उन की तक्लीफ़ दूर की जाये गी[४७] ८५. और ज़ालिम जब अ़ज़ाब को (सामने) देखें गे तो (सख़्त घबरायें गे मगर उन की घबराहट से) उन के अ़ज़ाब में कमी न हो गी और न उन को मुहलत मिले गी (बल्कि तुरन्त पकड़े जायें गे) ८६. और मुश्रिक जब अपने (मनघड़त) शरीकों को देखें गे तो कहें गे: ऐ हमारे मौला! यह हमारे बनाये हुये शरीक हैं जिन को हम (अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिये) तेरे सिवा पुकारा करते थे तो वह लोग (जिन की तरफ़ मुश्रिक इशारा करें गे) उन को उत्तर दें गे कि कुछ शक नहीं कि तुम (इस बात में सरासर) झूठे थे ८७. मुश्रिक (यह माकूल उत्तर सुन कर तुरन्त) अल्लाह के सामने अपने इख़्लास का इज़्हार करें गे और जो दुनिया में झूठे इल्ज़ाम लगाते थे वह उन को सब भूल जायें गे।

....

४६. इमाम मुजाहिद फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक गंवार (देहाती, बद्दू) को जब आयत 'वल्लाहु ज-अ़-ल लकुम'............... सुनाई तो वह कहने लगा इस में कोई शक नहीं और उस ने अल्लाह की नेमतों का इक़रार किया। और जब आप ने यह आयत 'कज़ालि-क युतिम्मु'....... सुनाई तो पीठ फेर कर भागा, तब अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी (वहीदी)

४७. मुश्रिकों की क़ियामत के दिन जो गत बने गी उस का बयान हो रहा है। उस रोज़ हर संदेष्टा अपनी-अपनी उम्मत के बारे में गवाही दें गे कि हम ने उन को अपना संदेश पहुंचा दिया था। फिर काफ़िरों को उज्र पेश करने का कोई मौक़ा नहीं दिया जाये गा। वह अपनी आँखों से अज़ाब को देखें गे और अचानक उस में घेर लिये जायें गे। दोज़ख़ सामने मौजूद हो गी। तमाम लोग उस को देख कर ख़ौफ़ के मारे घुटनों के बल गिर पड़ें गे। उस समय दोज़ख़ पुकार-पुकार कर कहे गी कि मैं हर उस ज़िद्दी और सर्कश के लिये मुक़र्रर की गयी हूँ, जिस ने अल्लाह के साथ किसी और को शरीक किया हो। इसी प्रकार वह और दूसरे पापियों का भी नाम ले कर पुकारे गी। हदीस शरीफ़ में है कि जहन्नम पापियों और अपराधियों को पलक झपकते ही लिपट जाये गी जैसे पतिन्गा रोशनी पर लपकता है। उस समय काफ़िरों के झूठे माबूद उन से बेज़ार हो जायें गे और उन के कुछ भी काम न आयें गे। काफ़िर उन को देख कर कहें गे कि मेरे मौला हम इन्हीं की पूजा किया करते थे, तो वह कहें गे कि यह झूठे हैं, हम ने तो उन्हें शरीक ठहराने का हर्गिज़ हुक्म नहीं दिया था। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि० रिवायत करते हैं कि जहन्नम में ज़हरीले साँप उन को डसना आरंभ कर दें गे। वह इतने बड़े-बड़े हों गे जैसे ख़जूर के दरख़्त।

आगे आय: न० ८९ में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हर उम्मत में से गवाह खड़ा करें गे और नबी भी अपनी उम्मत के बारे में गवाही दें गे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से सूरः निसा पढ़ने का हुक्म दिया। वह जब आयत ४१ पर पहुंचे तो आप ने फ़रमाया कि बस करो। इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि उस समय आप की आँखों से आँसू बह रहे थे (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)

आगे की आयत में यह फ़रमाया कि हम ने तुम्हारी हिदायत के लिये किताब उतारी जिस में उन के लिये सब कुछ मौजूद है। हराम-हलाल का ज़िक्र है, अच्छे-बुरे कर्मों के बदले का ज़िक्र है, गुज़री हुयी क़ौमों की तबाही-बर्बादी का बयान मौजूद है, दुनिया और आख़िरत को सुधारने का तरीक़ा मौजूद है। यह किताब दिलों के लिये हिदायत और रहमत है। इमाम औज़ाअ़ी रह० फ़रमाते हैं कि किताब के साथ सुन्नत को मिला कर देखा जाए तो उसमें हर चीज़ का बयान मौजूद है। इस आयत को ऊपर की आयत से यह तअ़ल्लुक़ है कि जिस प्रकार इस किताब की तब्लीग़ फ़र्ज़ की गयी है, इसी प्रकार क़ियामत के दिन भी इस के बारे में प्रश्न किया जाये गा, जैसे कि दूसरी आयत में ज़िक्र है कि उम्मतों और उन के रसूलों से यानि सब से प्रश्न हो गा (मुहम्मदी)

يَفْتَرُوْنَ ۞ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا
يُفْسِدُوْنَ ۞ وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا
عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا عَلٰى
هٰۤؤُلَآءِ ۭ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ
شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ۞
اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَاۤئِ ذِي
الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاۤءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۞ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا
عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَ
قَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا
تَفْعَلُوْنَ ۞ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا
مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ۭ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًا

८८. जिन लोगों ने कुफ़्र किया होगा और अल्लाह की राह से (लोगों को) रोका हो गा, उन के फ़साद (और बदकारियों) की वजह से हम उन के अ़ज़ाब पर अ़ज़ाब बढ़ाते जायें गे (पस तू उन को यह सूचना दे और उस दिन की घटनायें भी सुना) ८९. जिस रोज़ हम हर एक जमाअ़त में एक-एक गवाह (उन के हालात ज़ाहिर करने के लिये) खड़ा करें गे और तुझ को भी उन मुश्रिकों पर गवाह बना कर लायें गे और हम (अल्लाह) ने तुझ पर (अपनी) किताब नाज़िल की है जिस में हर (आवश्यक) चीज़ का बयान है और मुसलमानों के लिये हिदायत और रहमत और ख़ुशख़बरी है ९०. (उस तालीम का ख़ुलासा यह है कि) अल्लाह तुम को इन्साफ़ करने का हुक्म देता है और (हर एक के साथ) एहसान करने का और संबन्धियों को (ताक़त के मुताबिक़) देने का और बेहयाई (यानी ज़िना और उस की तरफ़ उभारने वाली चीज़ों) और नाजायज़ हर्कतों से और अत्याचार करने से मना करता है, तुम को नसीहत करता है ताकि तुम नसीहत पाओ[४८] ९१. (स्पष्ट शब्दों में सुनो कि) अल्लाह के नाम से जब मुआ़हिदा करो तो पूरे किया करो[४९] और क़समों को (किसी भी हाल में विशेष कर) मज़ीद ताकीद करने के बाद (तो बिल्कुल) न तोड़ा करो (लेकिन तुम ऐसे हो कि वादा कर के भी तोड़ देते हो) हालाँकि अल्लाह को तुम ने अपना ज़ामिन {प्रतिभू} ठहराया होता है। अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों को ख़ूब जानता है ९२. और उस महिला की तरह न बनो जो (तमाम दिन सूत कात कर शाम को) कातने के बाद अपना सूत टुकड़े-टुकड़े कर देती है। तुम (इस

➲मतलब के लिये) अपनी क़समों को (आपस में) धोके बाज़ी का ज़रीआ़ बनाते हो

....

४८. हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने हर ख़ैर और शर्र (भलाई और बुराई) के बयान को इस आयत में इकट्ठा कर दिया है। इस आयत में अ़क़ीदा, निय्यत, अच्छा और बुरा अ़मल के तअ़ल्लुक़ से हुक्म और मिनाही मौजूद है। और शायद यही वजह है कि हज़रत उमर बिन अ़ब्दु-ल अ़ज़ीज़ रह० ने जुम्आ़ के ख़ुत्बा के आख़िर में इस आयत को शामिल कर के उम्मत के लिये एक बेहतरीन अ़मल क़ायम कर दिया। जुम्अ़ः के ख़ुत्बे के आख़िर में इस आयत का पढ़ना आ़म रिवाज बन गया है इस की इब्तिदा सर्व प्रथम हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने की थी जो आज तक क़ायम है।

इस आयत में तीन चीज़ों का हुक्म दिया है (१) अद्ल (२) अहसान (३) क़रीबी संबन्धियों के हक़ अ़दा करना। और तीन चीज़ों से मना भी किया है (१) फ़हशा (बेहयाई) (२) मुन्कर (नाजायज़ काम) (३) बग़्यि (अत्याचार) से। जिन तीन कामों के करने का हुक्म दिया गया है अगर उन पर ग़ौर करें तो मालूम हो गा कि कोई भी नेकी का काम इन तीनों से अलग नहीं है। और जिन तीन कामों से मना किया गया है अगर उन पर ग़ौर किया जाये तो मालूम हो गा कि दुनिया की तमाम बुराइयों की जड़ यही तीन चीज़ें हैं। इन्हीं तीन चीज़ों से नफ़्सानी शह्वत पैदा होती है, शैतानी क़ुव्वत में बढ़ोतरी होती है और ज़िना व बदकारी का हर समय ख़याल आता है। इन्सान जब तक इन तीनों से नहीं बचे गा वह मुहज़्ज़ब और पाक-साफ़ कभी नहीं बन सकता। (तर्जुमान)

४९. यहाँ विशेष रूप से एक ख़ास मामला पर ज़ोर दिया है जो आ़म तौर पर तरह-तरह की बुराइयों का कारण बनता है और मुसलमानों को एक जमाअ़त की हैसिय्यत से सब से अधिक इस पर अ़मल करने की आवश्यक्ता थी, यानी जो मुआ़हिदा किया जाये उसे पूरा किया जाये। जब तुम ने किसी एक शख़्स से या एक जमाअ़त से मुआहिदा कर लिया तो अब यह क़ुरआन के नज़दीक "अहदुल्लाह" (अल्लाह से मुआ़हिदा) हो गया। यानी ऐसा क़ौल व क़रार जिस के तुम अल्लाह के सामने ज़िम्मे दार हो गये। अगर तुम ने उसे पूरा न किया तो अल्लाह के सामने जवाब देना होगा। चुनान्चे फ़रमाया: "अल्लाह के क़ौल व क़रार को पूरा करो"। क़ुरआन ने बहुत से स्थानों पर वादा के पूरा करने पर ज़ोर दिया है। और जहाँ कहीं भी मोमिनों की ख़ूबी बयान की है इस ख़ूबी (वादा पूरा करने) को ख़ास तौर पर ज़ाहिर किया है। और हदीस में हर जगह मुनाफ़िक़ की यह पहचान बतलाई गयी है कि जब वह वादा करता है तो मुकर जाता है (बुख़ारी-मुस्लिम) जब वादा करे गा तो पूरा नहीं करे गा। यहाँ पर ख़ास तौर से जमाअ़ती क़ौल व क़रार को पूरा करने पर ज़ोर दिया गया है। चुनान्चे फ़रमाया कि: "अगर तुम ने एक गरोह से वादा किया है और कल को उस का मुख़ालिफ़ गरोह ज़्यादा शक्ति शाली नज़र आये तो महज़ इस लिये कि ताक़त वाले का साथ देना तुम्हारे लिये अधिक लाभ दायक हो गा, न कि कमज़ोर का, वादा ख़िलाफ़ी पर आमादा न हो जाओ"। जब तुम ने एक गरोह से वादा कर लिया तो उस का पूरा करना अनिवार्य हो गया, चाहे वह कमज़ोर हो गया हो या ताक़त वर। अगर उस के मुख़ालिफ़ शक्ति शाली हो गये हैं अैर उन के ख़िलाफ़ जाने में तुम्हारे लिये कठिनाइयाँ और नुक़्सान हैं, तब भी तुम्हारे पर फ़र्ज़ है कि उन कठिनाइयों को बर्दाश्त करो, क्योंकि तुम वादा कर चुके हो। फिर इस प्रकार की वादा ख़िलाफ़ी की मिसाल क्या है? उस महिला की सी है जिस ने मर-मर कर दिन भर सूत काता, फिर शाम को स्वँय ही टुकड़े-टुकड़े कर के बर्बाद कर दिया। अर्थात जब एक शख़्स या एक गरोह कोई वादा करता है तो उस की पुख़्तगी के लिये बड़ी-बड़ी बातें करता है और हर प्रकार से दूसरे फ़रीक़ को यक़ीन दिलाता है। फिर अगर एक बात इतनी कोशिश के बाद पुख़्ता की गयी तो क्योंकर जायज़ हो सकता है कि जिस ने कल पुख़्ता की थी वही आज उसे अपने हाथों से तोड़ कर रख दे?

इस के बाद फ़रमाया कि अपनी क़समों को लोगों के लिये ठोकर न बनाओ। क्योंकि अगर तुम ने वादा ख़िलाफ़ी की तो लोगों का यक़ीन तुम से उठ जाये गा। वह कहें गे कि ऐसे लोगों का क्या दीन जो अपनी बात➲

के धनी नहीं। इस प्रकार तुम न सिर्फ़ वादा तोड़ने के मुजरिम बनो गे, बल्कि हक़ की राह से लोगों को रोकने का कारण बनो गे

بَيْنَكُمْ اَنْ تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِىَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ؕ اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ؕ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۹۲﴾ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۳﴾ وَلَا تَتَّخِذُوْۤا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًاۢ بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۹۴﴾ وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۹۵﴾ مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ؕ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْۤا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۹۶﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ

इस लिये कि कोई क़ौम दूसरी क़ौम से धन-दौलत में बढ़ी हुयी होती है (तुम तो वादा कर के उन के हलीफ़ बन जाते हो और उन की तरक़्क़ी में फ़र्क़ आने के समय दूसरों से दोस्ती कर लेते हो) अल्लाह तुम को इस बात का हुक्म देता है (कि वादा पूरा करो) और जिन बातों में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो क़ियामत के दिन (अल्लाह उन के बारे में) तुम को बतलाये गा ९३. और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही जमाअ़त बना देता, लेकिन वह जिस को चाहता है गुमराह कर देता है और जिस को चाहता है हिदायत देता है[५०]। और जो कुछ तुम करते हो तुम से उस के बारे में प्रश्न हो गा ९४. और अपनी क़समों को आपस में धोका देने का बहाना न बनाया करो वर्ना मज़बूत होने के बाद क़दम उखड़ जायें गे (यानी तुम से वादा करने वाले तुम्हारी बदनिय्यती सुन कर तुम से फिसल जायें गे) और इस वजह से तुम ने (लोगों को) अल्लाह की राह से रोका, तुम को (दुनिया ही में) तक्लीफ़ पहुंचे गी और आख़िरत में भी तुम को बड़ा अ़ज़ाब हो गा[५१] ९५. और दुनिया के थोड़े से माल के बदले अल्लाह के नाम से वादा किया हुआ न बदला करो (यह समझ लो कि) जो कुछ अल्लाह के पास है वह सब से (बिहतर और) अच्छा है अगर तुम को कुछ अ़िल्म है (तो इस पर ग़ौर करो) ९६. जो कुछ तुम्हारे पास है वह तो बर्बाद होने को है और जो अल्लाह के पास है वह बाक़ी है (कभी फ़ना न हो गा) और (दिल से जान रखो कि) हम (क़दम साबित रख कर) सब्र करने वालों को उन के कामों का बहुत अच्छा बदला दें गे ९७. (क्योंकि हमारे यहाँ नियम यह है कि) जो कोई ईमानदार हो कर नेक अ़मल करे पुरुष हो या महिला (किसी भी क़ौम का हो) तो हम उन को पाकीज़ा ज़िन्दगी दें गे (और हर प्रकार से शान्ति से रहें गे)

....

५०. मगर उस का चाहना ज़ालिमाना (अन्याय पूर्ण) नहीं। बल्कि उस का चाहना उस के क़ानून का नाम है इस लिये जो लोग उस के इन्तिज़ाम और फ़ितरत के क़ानून के मुताबिक़ नेक राह अपनाने की चेष्टा करते हैं, उन को

➲हिदायत मिल जाती है और जो बुरी राह अपनाना चाहते हैं उन को गुमराही नसीब होती है। इस नियम को कुरआन ने बार-बार दोहराया है। (सनाई)

५१. यानी अगर मुसलमान हो कर वादा ख़िलाफ़ी या किसी भी प्रकार का ग़लत काम करो गे तो जिन को अच्छे-बुरे की तमीज़ नहीं है, वह तुम्हारे ग़लत काम को भी दीन समझ लें गे। और यह समझ कर कि दीने इस्लाम ग़लत बातों की तालीम देता है वह इस्लाम से नफ़रत करने लगें गे, जिस का वबाल तुम्हारे ऊपर आये गा। इस लिये तुम ऐसे काम हर्गिज़ न करो जिन के कारण लोग दीन इस्लाम से नफ़रत करने लगें।

मैं (दावूद राज़) कहता हूँ कि मुहर्रम का ताज़िया बनाना भी इन्हीं ग़लत कामों में से है। मुसलमानों को ताज़िया बनाता और उन पर चढ़ावा-बजावा देख कर काफ़िर भी यह समझते हैं कि इन का दीन हमारे दीन की तरह है। और जब ताज़ियों में ख़ुराफ़ात देखते हैं जैसे, गोले दाग़ना, दुलदुल बनाना, चीख़-पुकार करना, ज़न्जीरों से अपने को पीटना और ख़ून निकालना, तो हर शख़्स यही समझता है कि अगर इन्हीं ख़ुराफ़ात का नाम दीने इस्लाम है तो हम ऐसे दीन से दूर ही रहना पसन्द करते हैं। यही कारण है कि जिन उलमा ने इस बारीकी को समझा है उन्हों ने ताज़िया-दारी को नाजायज़ और हराम कहा है। और अल्लाह तआला ऐसे उलमा को और हिम्मत दे ताकि इस की मुख़ालिफ़त में दिलोजान से जुटे रहें (सनाई)

حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ
مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٧﴾ فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ
بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٩٨﴾ اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ
سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٩٩﴾
اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ هُمْ
بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ﴿١٠٠﴾ وَاِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ
وَّاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مُفْتَرٍ ۭ
بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾ قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ
الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٠٢﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ
اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ۭ لِسَانُ الَّذِيْ
يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ
مُّبِيْنٌ ﴿١٠٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ

और हम उन को (केवल अपने फ़ज़्ल से) उन के कामों से भी अच्छा बदला दें गे[५२] ९८. सो तू जब कुरआन पढ़ना चाहे तो शैतान मर्दूद (के वस्वसे) से अल्लाह ही की पनाह लिया कर[५३] (यानी क़िरात से पहले अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतार्निरजीम पढ़ा कर) ९९. क्योंकि जो लोग अल्लाह पर ईमान रखते हैं और अपने रब ही पर भरोसा रखते हैं उन पर उस का किसी प्रकार का ज़ोर नहीं चल सकता १००. उस का ज़ोर तो बस उन ही लोगों पर है जो उस से संबन्ध रखते हैं और जो उस की (तालीम) के सबब से शिर्क करते हैं[५४] १०१. और जब हम कोई आदेश किसी आदेश के स्थान पर नाज़िल करते हैं और अल्लाह जो कुछ नाज़िल करता है उसे तो अच्छी तरह मालूम है (कि पहले क्या था और अब क्या है) तो यह लोग कहने लगते हैं कि तू मुफ़्तरी है (मन घड़त जो चाहता है कह देता है) बल्कि बहुत से उन में से नहीं जानते[५५] १०२. तू (इन से) कह! इस कुरआन को (तो) जिब्रील (जैसे पाक बातिन फ़रिश्ते) ने अल्लाह के हुक्म से सच्ची तालीम के साथ भरपूर➲

➲उतारा है ताकि ईमानदारों को ईमान पर साबित क़दम करे और मुसलमानों के लिये (जो उस की तालीम पर अ़मल करें) हिदायत और बशारत है १०३. हम (अल्लाह) जानते हैं जो यह लोग कहते हैं कि इस (रसूल) को एक आदमी (कुरआन) सिखाता है (झक मारते हैं। इतना भी नहीं सोचते कि) जिस शख़्स की निस्बत उन को बदगुमानी है उस की ज़बान तो अ़जमी है (और अ़रबी साफ़ उसे आती नहीं) और यह कुरआन तो साफ़ अ़रबी ज़बान है १०४. (अस्ल यह है कि) जो लोग अल्लाह के आदेश पर ईमान नहीं रखते (बल्कि अपनी हवस के ताबे हैं अल्लाह भी)

....

५२. हज़रत इब्ने अ़ब्बास और दीगर सहाबा का कहना है कि 'हयाते तय्यिबा' (पाकीज़ा ज़िन्दगी) से मुराद हलाल रोज़ी है। इमाम ज़ह्हाक के नज़दीक इस से मुराद हलाल रोज़ी, इ़बादत और प्रसन्नता के साथ इताअ़त करना है। सहीह बात यह है कि तमाम ही बातों को शामिल है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "वह शख़्स कामियाब हो गया जो इस्लाम लाया और गुज़ारा के लिये उस को आजीविका दी गयी और अल्लाह ने उसे जो कुछ दिया उस पर उस को क़नाअ़त बख़्शी"। (मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अहमद) एक दूसरी रिवायत में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआ़ला मोमिन बन्दे की नेकी में कुछ कमी नहीं करता है। बल्कि उस की नेकी का बदला दुनिया में भी देता है और आख़िरत में तो मिले गा ही। और काफ़िर को उस की नेकियों का बदला केवल दुनिया ही में दे दिया जाता है और आख़िरत में उसे कुछ नहीं मिलता है"। (मुस्लिम)

५३. एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तुम में बेहतर वह है जो कुरआन सीखे और सिखाये। इस हदीस से मालूम हुआ कि कुरआन की क़िरात बेहतरीन अ़मल है। पिछली आयतों में बेहतर कामों पर दो नेकी का बयान था इस लिये यहाँ कुरआन की क़िरात के कुछ आदाब बताये हैं, ताकि क़ारी बेएहतियाती में इस बेहतर की नेकी बर्बाद न कर बैठे। शैतान की कोशिश हमेशा यही रहती है कि वह लोगों को नेक कामों से रोके। विशेष कर कुरआन की क़िरात जैसे नेक काम को वह कैसे ठन्डे दिल से गवारा कर सकता है। इस लिये अवश्य ही उस की कोशिश यही होती है कि उस को रोके और अगर न रोक सके तो ऐसी आफ़त में डाल दें ताकि क़िरात का हक़ीक़ी लाभ न उठा सके (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

५४. शैतान के किसी इन्सान पर ग़ल्बा और क़ाबू पाने की बहुत सी निशानियाँ हैं जैसे, जिहालत से अहले हक़ से कजबहसी करना, सच्ची शिक्षा पा कर भी कीना की वजह से उस की मुख़ालिफ़त करना। चुनान्चे यह कितनी बड़ी जिहालत है कि बग़ैर किसी दलील के कुरआन का मुक़ाबला करते हैं (सनाई)

५५. इस आयत ने स्पष्ट रूप से फ़ैसला सुना दिया है कि जिस की भविष्य वाणियाँ ग़लत निकलें तो यह समझा जाये गा कि उसे अल्लाह पर ईमान नहीं है। इस लिये हम मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी की भविष्य वाणियों का जाइज़ा लेते हैं। इस विषय पर हमारी एक पत्रिका का नाम "इल्हामाते-मिर्ज़ा" है में तफ़्सील से देख सकते हैं। इस आयत के हुक्म के अनुसार मिर्ज़ा साहब की भविष्य वाणियों की जाँच-पड़ताल अनिवार्य है। अगर उस की पेशीन गोइयाँ सही हों तो वह सच्चा और अगर ग़लत हों तो वह झूठा तस्लीम किया जाये गा। मिर्ज़ा की भविष्य-वाणियाँ सरासर झूठी हैं, इस को जानने के लिये हमारी किताब का अवश्य मुताला करें (सनाई)

उन को हिदायत नहीं देता और उन के लिये दुःख की मार है १०५. (तुझे झूठा कहने वाले यह➲

لَا يَهْدِيهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٠٥﴾ مَن كَفَرَ بِاللَّهِ مِن بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَٰكِن مَّن شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٦﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿١٠٧﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٠٨﴾ لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٠٩﴾ ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِن بَعْدِ مَا فُتِنُوا ثُمَّ جَاهَدُوا وَصَبَرُوا إِنَّ رَبَّكَ مِن

नहीं जानते कि) झूठ तो वही लोग गढ़ा करते हैं जो अल्लाह के हुक्मों पर ईमान नहीं रखते[५६] और वही झूठे हैं १०६. (पस याद रखो) जो लोग ईमान लाने के बाद (अल्लाह के हुक्मों से जी खोल कर) कुफ़्र करें गे उन पर अल्लाह का ग़ज़ब है[५७] और उन को बहुत बड़ा अ़ज़ाब हो गा। हाँ, जो (किसी ताक़त वाले के हाथ से कुफ़्र बकने पर) मजबूर किया जाये[५८], मगर दिल उस का ईमान पर हो तो उस से बाज़ पुर्स न हो गी। लेकिन जो जान-बूझ कर (अपनी मर्ज़ी से) जी खोल कर कुफ़्र करें तो उन्हीं पर अल्लाह का ग़ज़ब है और उन्हीं को दुःख की मार हो गी १०७. यह (अ़ज़ाब) इस लिये हो गा कि वह दुनिया को आख़िरत से अधिक पसन्द करते हैं और यह कि अल्लाह काफ़िरों की क़ौम को हिदायत नहीं किया करता (यानी जो लोग जान बूझ कर अल्लाह के हुक्मों से बेपर्वाह हो जाते हैं अल्लाह भी उन से बेपर्वाह हो जाता है) १०८. उन्हीं लोगों के दिलों पर और कानों और आँखों पर अल्लाह ने मुह्र क़र दी है और यही लोग (आख़िरत की भलाई से) ग़ाफ़िल हैं १०९. कुछ शक नही कि यही लोग आख़िरत में हानि उठाने वाले हैं ११०. और जिन लोगों ने काफ़िरों से दुःख उठाने के बाद अपने वतन को छोड़ा और (और अल्लाह की राह में उचित समय पर) जिहाद किया और सब्र करते रहे कुछ शक नहीं कि तेरा पर्वरदिगार ऐसे वाक़िआत के बाद

....

५६. सीरत इब्ने इस्हाक़ में रिवायत है कि जुबैर नामी एक नस्रानी शख़्स क़बीला बनी हज़रमी के किसी शख़्स का गुलाम था उस के पास नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मर्वा पहाड़ी के पास कभी-कभार बैठ जाया करते थे। इस पर मुश्रिकीन ने यह उड़ाना आरंभ कर दिया कि यह कुरआन उसी का सिखाया हुआ है, इसी के उत्तर में यह आयत नाज़िल हुयी। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० का यह फ़रमाना है कि मक्का शरीफ़ में बल्आ़म नाम का एक लोहार रहता था, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उसे समझाया-बुझाया करते थे। आप का उस के पास आना-जाना देख कर मुश्रिकीन ने यह मशहूर कर दिया कि यही लोहार उन्हें सिखाता-पढ़ाता है, इन के उत्तर में यह आयत नाज़िल हुयी (इब्ने कसीर)

५७. हिजरत की रात आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सहाबा से फ़रमाया कि जिस के अन्दर हिम्मत हो वह पिछली रात में सफ़र करे और जिस के अंदर अभी सफ़र करने की हिम्मत हो तो वह अभी शुरू कर दे। मैं जब कहीं मुस्तक़िल तौर पर ठहर जाऊँ तो मुझ से आ कर मिल जाना। चुनान्चे हज़रत बिलाल, हज़रत ख़ब्बाब, हजरत

➲अ़म्मार वग़ैरह ने उसी समय यात्रा आरंभ कर दी, मगर राह में धर लिये गये और बहुत बुरी तरह से सताये गये लेकिन वह अपने स्थान पर साबित क़दम रहे। अ़म्मार बिन यासिर रज़ि० ने मजबूर हो कर उन के बुतों की तारीफ़ कर दी, जिस पर यह आयत नाज़िल हुयी (फ़त्हुल क़दीर)

५८. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० का बयान है कि यह आयत हज़रत अ़म्मार बिन यासिर रज़ि० के बारे में नाज़िल हुयी। मुश्रिकों ने उन्हें मारना-पीटना आरंभ कर दिया और कहा कि जब तलक मुहम्मद को न झुठलाओ गे और हमारे बुतों की प्रशन्सा न करो गे इसी प्रकार यातनाएँ मिलती रहें गी, इस पर उन्हों ने मजबूर हो कर अन्चाहे, दिल के न चाहते हुये भी उन लोगों की ताईद कर दी और छूट कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास पहुंच कर पूरी कहानी सुनाई, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। बैहक़ी की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बारे में दिखाने को तो बुरा-भला कहा और उन के बुतों की प्रशन्सा की, फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आ कर सारी बात रख दी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पूछा कि तुम अपने दिल में क्या ख़याल करते हो? उन्हों ने कहा कि मैं ईमान पर क़ाइम हूँ। आप ने फ़रमाया कि अगर वह फिर तुम्हारे साथ बुरा सुलूक करें तो तुम भी फिर इसी प्रकार कर लेना, इस पर यह नाज़िल हुयी।

उलमा का इस मस्अले में इत्तिफ़ाक़ है कि ऐसे मौक़े पर जान बचाने के लिये उन के मुवाफ़िक़ कह-सुन कर जान बचा लेना जायज़ है और यह भी जायज है कि अपनी जान की पर्वा न करते हुये हक़ बात पर डटा रहे जैसे हज़रत बिलाल रज़ि० ने कर दिखाया। हज़रत बिलाल रज़ि० के बारे में आता है कि उन्हें तेज़ धूप में रेत पर नंगी पीठ लिटा दिया जाता और ऊपर से भारी पत्थर भी रख दिया जाता कि हिल न सकें फिर कहा जाता कि जब तक मुहम्मद के दीन को बुरा और हमारे बुतों को भला न मानो गे, यह दंड झेलते रहो गे। लेकिन उन्हों ने साफ़ इन्कार कर दिया। हज़रत ख़ुबैब बिन ज़ैद अन्सारी रज़ि० के बारे में आता है कि मुसैलमा कज़्ज़ाब ने उन्हें पकड़ कर पूछा कि क्या तू इस बात की गवाही देता है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) सच्चे रसूल हैं? उन्हों ने तुरन्त उत्तर दिया कि जी हाँ। फिर उस ने पूछा कि क्या गवाही देते हो कि मैं भी अल्लाह का सच्चा रसूल हूँ? उन्हों ने उत्तर दिया कि नहीं। इस पर नाजायज़ हो कर उस ने उन के जिस्म के एक हिस्सा को काट डालने का हुक्म दिया। फिर यही प्रश्न दुहराया और इन्कार करने पर दूसरा हिस्सा काट दिया गया और मरते दम तक यह सिलसिला जारी रहा लेकिन यह अल्लाह के नेक बन्दे अपनी बात पर अटल रहे।

इब्ने अ़साकिर में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रहमी रज़ि० के बारे में ज़िक्र है कि आप को रूमी काफ़िरों ने गिरफ़्तार कर अपने बादशाह के पास भेज दिया। बादशाह ने उन से कहा कि अगर तुम हमारे दीन में शामिल हो जाओ तो मैं अपने राज-पाट में तुम्हें शामिल कर लूँ गा और अपनी बेटी तुम्हारे निकाह में दे दूँ गा। हज़रत हुज़ाफ़ा ने उत्तर दिया कि यह क्या, अगर तुम पूरे अ़रब का शासन भी मुझे दे दो और यह चाहो कि अपने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दीन से पल भर के लिये फिर जाऊँ तो यह असंभव है। बादशाह ने कहा कि मैं तुम्हें क़त्ल कर दूँ गा। उत्तर दिया कि बेशक तुम्हें इख़्तियार हैं चुनान्चे उन को सूली पर लटका कर उन के बदन को नेज़ों से छेदना आरंभ कर दिया और कहा कि नस्रानी धर्म को स्वीकार कर लो तो छोड़ दिया जाये गा। लेकिन वह बराबर इन्कार ही करते रहे। फिर बादशाह के हुक्म से उन को सूली से उतार लिया गया। फिर पीतल की एक देग गर्म की गयी और उस में एक मुसलमान क़ैदी को डाल दिया गया, चुनान्चे वह थोड़ी ही देर में जल-भुन कर ख़ाक हो गया। हज़रत हुज़ाफ़ा से फिर कहा गया कि अगर अब भी हमारे धर्म को स्वीकार न करो गे तो तुम्हें यही दन्ड दिया जाये गा। लेकिन हज़रत हुज़ाफ़ा रज़ि० ईमान व इस्लाम पर क़ाइम रहे और कुफ़्र से इन्कार ही किया। अन्त में बादशाह ने उस देग मे डालने का हुक्म दिया। यह आदेश सुन कर हज़रत हुज़ाफ़ा रोने लगे। बादशाह ने समझा कि शायद यह डर गया है और हमारे धर्म को क़ुबूल कर ले गा। मगर सहाबी रज़ि० ने उत्तर दिया कि मैं इस लिये रो रहा था कि काश मेरे हर-हर बाल में जान होती और मैं उन को एक-एक कर के अल्लाह की राह➲

➲में क़ुर्बान करता रहता। बादशाह उन की इस बेबाकी से इतना प्रभावित हुआ कि उन को और उन के समस्त साथियों को स्वतन्त्र कर दिया (इब्ने कसीर)

بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٠﴾ يَوْمَ تَاْتِيْ كُلُّ
نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ
مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١١١﴾ وَضَرَبَ اللّٰهُ
مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَّاْتِيْهَا
رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ
اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا
كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١١٢﴾ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ
فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١١٣﴾
فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاشْكُرُوْا
نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١١٤﴾ اِنَّمَا
حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ
اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا
عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٥﴾ وَلَا تَقُوْلُوْا

(उन को माफ़ कर दे गा क्योंकि) वह बड़ा ही बख़्शने वाला मेहरबान है ११०. जिस दिन हर शख़्स अपने ही लिये झगड़े गा (दूसरे की कोई फ़िक्र न हो गी) और जो कुछ किसी ने कमाया हो गा उस को पूरा-पूरा बदला मिले गा और किसी प्रकार से उन पर अन्याय न हो गा १११. और (सुनो) अल्लाह एक शहर (यानी मक्का शरीफ़) का हाल उदाहरण के तौर पर बयान करता है[५९] वह शहर अम्न-शान्ति में था कि हर एक (दूर-नज़दीक) के स्थान से उस को रोज़ी पहुंचती थी फिर जब उस (शहर वालों) ने अल्लाह की नेमतों की बेक़दरी की तो अल्लाह ने उन के (बुरे) आमाल पर उन को भूक और (दुश्मनों के) डर का मज़ा चखाया (अल्लाह की नाशुक्री तो करते ही थे, अल्लाह के अहकाम पहुंचाने वाले भी बिगड़ बैठे) ११२. और जब अल्लाह की तरफ़ से उन्हीं में से एक रसूल उन के पास आया तो उन्हों ने उसे भी झुठलाया फिर अल्लाह के अ़ज़ाब ने ऐसे हाल में उन को पकड़ा कि वह ज़ालिम थे। ११३. पस (इस से नसीहत हासिल करो और) जो कुछ अल्लाह ने तुम को हलाल और पाकीज़ा रोज़ी दी है उस में से खाओ और अल्लाह की नेमत का शुक्र करते रहो अगर तुम उसी की अ़िबादत करने वाले हो (तो यही काम करो) ११४. उस (अल्लाह) ने तुम पर केवल मुर्दार और (ज़ब्ह के समय बहता हुआ) ख़ून और सुवर का गोश्त हराम किया है और (इन के अ़लावा) जिस चीज़ पर अल्लाह के अ़लावा दूसरे का नाम पुकारा जाये[६०], फिर जो शख़्स मजबूर हो (और उसे हलाल चीज़ खाने को न मिले) ऐसे हाल में कि न तो चाहने वाला हो और न हद से आगे बढ़ने वाला हो (तो उसके लिए छूट है) अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है ११५ और अपनी ज़बानों के झूठे बयान से न कहा करो

....

५९. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि यह मिसाल मक्का वालों को समझाने के लिये दी गयी है जो कभी क़हत में और कभी बद्र की लड़ाई में हलाक हुये, कभी उन पर गल्लों वग़ैरह का लेन-देन ख़त्म कर दिया गया इस➲

➲से उन की अ़िज़्ज़त ख़ाक में मिल गयी और अम्न व शान्ति भी समाप्त हो गयी और उन में से जो भी मरा बुरी मौत मरा यहाँ तक कि मक्का फ़तह हो गया। इन के मुक़ाबले में मदीना वालों को जो शुक्र गुज़ार थे अल्लाह ने कुशादगी अ़ता की। इस में मिसाल अगर्चे मक्का की मक्का वालों को दी गयी है लेकिन इस से हर उस बस्ती को मुराद लिया जा सकता है जो मक्का वालों की तरह नाफ़र्मानी करते हों (मवाहिब)

किसी मुल्क में सूखा काल और अशान्ति का वातावरण हो तो समझ लेना चाहिये कि वह मुल्क अल्लाह के ग़ज़ब का शिकार है। आज-कल खाने-पीने की चाज़ें और अम्न व शान्ति का माहौल पूरी दुनिया के लिये मस्अला बनता जा रहा है, हालाँकि यह अल्लाह के प्रकोप की निशानी हैं।

६०. 'इहलाल' का अर्थ है "आवाज़ बुलन्द करना"। बच्चा ने रोने की आवाज़ बुलन्द की, इस के लिये 'अ-हल्ल' बोला जाता है। मतलब यहाँ पर यह हुआ कि जिस जानवर पर ज़ब्ह करते समय अल्लाह के अ़लावा दूसरे का नाम पुकारा जाये, वह जानवर हराम है। अ़ल्लामा नेशा पुरी ने अपनी तफ़्सीर में इस बारे में उलमा का इत्तिफ़ाक़ बताया है कि जो मुसलमान अपने जानवर को ग़ैरुल्लाह के नाम पर ज़ब्ह कर के नेकी चाहे वह मुर्तद है (दीन से ख़ारिज) और उस का ज़ब्ह किया हुआ बेदीन और मुर्तद का ज़ब्ह किया हुआ माना जाये गा जिस का खाना हराम है।

अब यहाँ इस की तीन शक्लें बनती हैं (१) एक यह कि अल्लाह के लिये क़ुर्बान करने का नाम लिया और उसी के नाम पर क़ुर्बान किया तो यह बिला शुब्हा जायज़ और सवाब का काम हुआ (२) ग़ैर के लिये क़ुर्बान किया और ज़ब्ह करते समय ग़ैर का नाम भी लिया तो ऐसा करने वाला इस्लाम से ख़ारिज है और वह गोश्त भी हराम है (३) ग़ैर के नाम पर ज़ब्ह किया और ज़ब्ह करते समय अल्लाह का नाम लिया तो यह ज़बीहा भी हराम है, इस लिये कि उस ने ग़ैरुल्लाह का तक़र्रुब चाहा। एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "वह शख़्स लानती है जिस ने ग़ैर के वास्ते ज़ब्ह किया"। इस हदीस में ग़ैर के लिए ज़ब्ह करने वाले पर लानत का ज़िक्र है और ग़ैर का नाम ज़ब्ह करते समय लेने का ज़िक्र नहीं है, तो इस का मतलब यह हुआ कि चाहे ज़ब्ह करते समय उस का नाम ले या किसी और का नाम ले, दोनों सूरतों में वह जानवर हराम और वह शख़्स लानती हुआ।

एक बात स्पष्ट तौर पर समझ लेने की ज़रूरत है कि अल्लाह तआ़ला के नाम से ज़ब्ह कर के उस का सवाब चाहे जिस को दे दो और चाहे किसी मख़्लूक़ की तरफ़ से नायब बन कर अल्लाह से तक़र्रुब की निय्यत से ज़ब्ह कर दो, यह भी जायज़ है। यहाँ पर इतनी वज़ाहत इस लिये कर दी गयी है ताकि कम पढ़ा लिखा वर्ग भली-भांति समझ ले और गुमराही से सुरक्षित रहे।

لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّ
هٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ
اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ
لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿۱۱۶﴾ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۪ وَّلَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ﴿۱۱۷﴾ وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا
قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ
كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۱۸﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ

कि यह हलाल है और यह हराम है (जिस का नतीजा तुम्हारे हक़ में यह हो) कि तुम अल्लाह पर झूठा इल्ज़ाम लगाने लगो (जो चीज़ अल्लाह ने हराम नहीं की उसे हराम क्यों कहो? सुनो!) जो लोग अल्लाह पर झूठ बांधते हैं हर्गिज़ कामियाब न हों गे (बल्कि हमेशा नाकाम रहें गे) ११७. (दुनिया में)उन के लिये थोड़ा सा गुज़ारा और (आख़िरत में) उन के लिये दुःख दाई दन्ड है[६१] ११८. और यहूदियों पर हम ने यह चीज़ें हराम की थीं जो हम (सूरः अन्आ़म के रुकूअ़ १८ में) बयान कर आये हैं[६२], और हम➲

لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْ
بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا
لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۹﴾ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا
لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ۭ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۲۰﴾ شَاكِرًا
لِّاَنْعُمِهِ ۭ اِجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۲۱﴾
وَاٰتَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۭ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ

ने उन पर ज़ुल्म न किया था लेकिन वह ख़ुद अपनी जानों पर (बदकारियों के कारण) ज़ुल्म करते थे ११९. फिर भी जो लोग ग़लती से बुरे कार्य कर के उस के पश्चात् तौबा कर लें और नेक बन जायें तो तेरा पर्वरदिगार उस तौबा के बाद उन के हक़ में बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है १२०. कुछ शक नहीं कि इब्राहीम (ईमानदारों का) अगुवा और अल्लाह का हर तरफ़ से कट कर फ़र्माबर्दार बन्दा था। और वह मुश्रिकों में से न था[६३] १२१. अल्लाह की नेमतों का शुक्र गुज़ार था। अल्लाह ही ने उस को चुना था और सीधी राह दिखाई थी १२२. और हम (अल्लाह) ने दुनिया में भी उसे ग़िज़्ज़त दी थी और आख़िरत में भी वह

....

६१. सूरः अन्आम में बयान हो चुका है कि मुश्रिकों ने अपने ख़यालात के मुताबिक़ बहुत सारी चीज़ें ख़ुद ही अपने ऊपर हराम कर ली थीं और समझते थे कि यही शरीअ़त का हुक्म हैं। इस आयत में यह हुक्म दिया कि अपनी ज़बानों को इस प्रकार बेलगाम न छोड़ दो कि वह जो चाहे हराम कर दे और जो चाहे हलाल। हलाल व हराम ठेहराने का हक़ तो केवल अल्लाह को है। यह आयत उन लोगों के ख़िलाफ़ हुज्जत है जो महज़ अपने बातिल अ़क़ीदा के मुताबिक़ जिस चीज़ को चाहते हैं हलाल कर लेते हैं और जिस चीज़ को चाहते हैं हराम। हर वह चीज़ हलाल है जब तक कि शरीअ़त उसे हराम न ठहरा दे और कुरआन व हदीस में उस का स्पष्ट तौर पर ज़िक्र न हो। यहाँ पर किसी की राय-क़ियास या ख़याल की बुनियाद पर कोई चीज़ हलाल या हराम नहीं हुआ करती। (सनाई)

६२. वह आयत यह है "यहूदियों पर हम ने तमाम नाख़ून वाले जानवरों को हराम कर दिया था और गाय, बकरियों की चर्बी मगर जो उन की पीठ में लगी हो या अंतड़ियों पर या हड्डियों से मिली हुयी हो। यह उन की सर्कशी की सज़ा थी"। (सूरः अन्आम आयत...१४६) यानी उन के ज़ुल्म की वजह से सज़ा के तौर पर उन पर यह चीज़ें हराम की थीं, एक और वजह थी, वह यह कि लोगों को सीधी राह से रोकते थे इस लिये भी।

६३. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि उस ज़माना में हज़रत इब्राहीम के अलावा कोई भी दीन इस्लाम पर न था इसी लिये उन को अकेले ही उम्मत कहा गया (इब्ने कसीर)

لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۲۲﴾ ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ
مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۭ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۲۳﴾
اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۭ
وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا
كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ

वह नेको कारों में से हो गा १२३. और तेरी तरफ़ भी (इस के बावजूद कि तू नबिय्यों का सर्दार है) हम ने यही हुक्म भेजा है कि तू इब्राहीम के तरीक़े पर चल जो अल्लाह का यक्सू (एकाग्रचित) फ़र्माबर्दार बन्दा था और मुश्रिकों से न था १२४. (यहूद कैसी बेवकूफ़ी से भरा प्रश्न करते हैं कि तुम सनीचर की ताज़ीम क्यों नहीं करते? हालाँकि) सब्त केवल उन ही लोगों

بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُم بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَن ضَلَّ عَن سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١٢٥﴾ وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُم بِهِ ۖ وَلَئِن صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصَّابِرِينَ ﴿١٢٦﴾ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ ۚ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٧﴾ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوا وَّالَّذِينَ هُم مُّحْسِنُونَ ﴿١٢٨﴾

पर फ़र्ज़ किया गया था जो (उस समय) उस में इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं (तौरात से यह साबित नहीं कि सब्त तमाम क़ौमों के लिये है) और तेरा पर्वरदिगार क़ियामत के दिन उन के इख़्तिलाफ़ी कामों में स्पष्ट फ़ैसला करे गा[६४] १२५. अपने पर्वरदिगार की राह की तरफ़ होशियारी और बेहतरीन नसीहत से लोगों को बुलाता रह और (बहस) की नौबत आये तो बड़े अच्छे ढंग[६५] से उन के साथ बहस किया कर[६६]। तेरा पर्वरदिगार उन लोगों को भी ख़ूब जानता है जो उस की राह से बहके हुये हैं और वह हिदायत वालों से भी अच्छी तरह जानकार है[६७] १२६. और अगर ज़्यादती का बदला लेना चाहो तो उसी क़दर लिया करो जिस क़दर तुम को तक्लीफ़ पहुंचाई गयी हो और अगर सब्र करो तो सब्र करना साबिरों के हक़ में बेहतर है १२७. और सब्र (ही) किया कर और तेरा सब्र अल्लाह ही की मदद से है और उन (बि दीनों) के हाल पर ग़म न कर और न उन के धोके बाज़ियों से दिल तन्ग हो १२८. नि:संदेह अल्लाह तआ़ला परहेज़गारों और नेको कारों के साथ है।

....

६४. यहूदी यह कहा करते थे कि सब्त (सनीचर) के दिन का शिकार यहूदियों पर हराम था तो फिर कुरआन क्यों नहीं हराम करता? इस का उत्तर यह दिया गया कि यहूदियों को इस दिन शिकार करने से जो रोका गया तो इस का मतलब यह नहीं कि उस दिन जो जानवर शिकार किया जाये वह हराम हो जाता है। बल्कि उन के जुर्म और सज़ा के तौर पर उन को हराम किया था। यानी जब उन्हों ने सब्त के दिन की क़द्र न की और हीले बहाने कर के शिकार करने लगे तो इस राह को बन्द करने के लिये शिकार का गोश्त हराम किया गया (तर्जुमान)

६५. बेहतर तरीक़ा यह है कि इस तरह कहो कि दुश्मन उन के मारने और मरने पर आमादा न हो। जैसे कि दूसरे स्थान पर फ़रमाया: "उन के बुतों को बुरा-भला न कहो कि वह तुम्हारे अल्लाह को भी बुरा कहने लगें"।

६६. इस आयत की तफ़्सीर में इमाम ग़ज़ाली रह० ने एक किताब "सीधी राह" के नाम से लिखी है। बाद के उलमा ने भी उन्हीं के क़ौल को पसन्द करते हुये इख़्तियार किया है। इमाम साहब लिखते हैं "सोच-विचार के एतिबार से हर इन्सान की तबीअ़त और हर दिमाग़ी हालत एक विशेष प्रकार की तब्लीग़ चाहती है। पढ़े-लिखे वर्ग के लिये दलील की ज़रूरत होती है, बे पढ़े-लिखे लोगों के लिये पन्द और नसीहत और फ़सादी ज़ेहन रखने वालों के लिये बहस की ज़रूरत पड़ती है। इस आयत में कुरआन ने इन तीनों तरह के इन्सानों को तब्लीग़ करने का तरीक़ा बता दिया है कि अक़्ल वालों को हिक्मत से और अ़वाम को वाज़-नसीहत से और बहस-तकरार करने वालों से तकरार की भी अनुमति दी है, मगर ख़ूबसूरत ढन्ग से (तर्जुमान)

६७. शाने नुज़ूल:- हज़रत उबय्यिय बिन कअ़ब रज़ि० से रिवायत है कि उहुद की लड़ाई में अन्सार के ६४ और मुहाजिरीन के छ: यानी कुछ सहाबा शहीद हुये। इन शहीदों में हज़रत हम्ज़ा रज़ि० भी थे जिन के नाक, कान, आँख वग़ैरह मुश्रिकों ने काट डाले और पेट फ़ाड़ डाला था। उस समय मुहाजिरों और अन्सार ने कहा था कि अगर अल्लाह

तआ़ला ने फ़तह दी तो हम भी इस का बदला लें गे। जब अल्लाह ने मक्का को इन के क़ब्ज़ा में दे दिया (यानी जब मक्का फ़तह हो गया) तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हम सब्र करें गे और हर्गिज़ बदला न लें गे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़त्ह मक्का के बाद सख़्त ताकीद फ़र्मा दी कि कोई किसी पर उन्गली नहीं उठा सकता। आप ने केवल चार आदमियों को जिन में एक महिला भी थी क़त्ल करने का हुक्म दिया था और आप ने यह भी फ़रमाया था कि अगर यह हरम का पर्दा भी पकड़े हुये हों फिर भी न छोड़ना। बाद में दो तीन को माफ़ी दे दी गयी और संभवत: महिला क़त्ल हुयी (इन चारों के क्या जुर्म थे यहाँ तफ़्सील का मौक़ा नहीं) (तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपने चचा जान हज़रत हम्ज़ा की लाश के पास आये और देख कर बहुत रन्जीदा और दुखी हुये और फ़रमाया: ऐ मेरे चचा! अल्लाह आप पर रहम फ़रमाये, मेरी जानकारी में आप रिश्तों को जोड़ने वाले और पाक-साफ़ इन्सान थे, अगर मुझे इस बात का अन्देशा न होता कि आप की लाश को देख कर लोग रन्जीदा हों गे, तो मैं यूँ ही छोड़ देता और दरिन्दे खा जाते और फिर क़ियामत के दिन बहुत सारे दरिन्दों की रूहों से तुम निकलते। फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया कि आइन्दा अगर मुश्रिकों पर हमारा बस चला तो तुझ एक के बदले में सत्तर मुश्रिकों के आंख, कान, नाक काट कर मुसलमान बनाऊँ गा, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। इस आयत के नाज़िल होने के बाद आप ने सब्र किया और अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा दिया।

इमाम इब्ने कसीर रह० फ़रमाते हैं कि अन्तिम तीन आयतों (१२६, १२७, १२८) को छोड़ कर पूरी सूर: मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। और यह तीन आयतें उहुद के मौक़े पर मदीना में नाज़िल हुयीं। ऊपर की रिवायत में फ़त्ह का ज़िक्र आया है। सहाबा ने क़सम खाई थी कि मक्का फ़त्ह होने के बाद हम भी उन के साथ हज़रत हम्ज़ा जैसा सुलूक करें गे। इस पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हर्गिज़ नहीं। हम सब अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ सब्र करें गे (मवाहिब)

★★★★★

بِسۡــــمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡــمِ

पारः सुब्हा–नल्लज़ी (15)

संक्षिप्त विषय सूची

नं.	विषय	आयत नं.
	सूरः बनी इस्राईल (17)	
१.	मेराज के वाक़िए का बयान	१
२.	हज़रत मूसा और नूह अलै० का ज़िक्र	३
३.	कुरआन मजीद हादी और बशारत देने वाला है	९
४.	इन्सान की एक फ़ितरत का बयान	११
५.	रात और दिन अल्लाह की आयात हैं	१२
६.	हर इन्सान के आमाल उस के गले का हार होंगे	१३
७.	दुनिया व आख़िरत के हासिल करने के लिये क़ानूने-इलाही	१९
८.	बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत भी अल्लाह ही ने दी है	२१
९.	शिर्क का सब से बुरा नतीजा	२२
१०.	माँ-बाप के सामने बहरहाल झुक जाओ	२४
११.	फ़ुज़ूलख़र्ची की मज़म्मत	२६
१२.	चन्द कबीरा गुनाहों का बयान	३१
१३.	हिक्मत पर कुरआनी तफ़्सीलात	३९
१४.	मौत के बाद ज़िन्दगी पर एक मुश्किल और उस का हल	५१
१५.	जब भी कहो नेक बात कहो	५३
१६.	नबियों में बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत है	५५
१७.	बातिल माबूद मुकम्मल मजबूर हैं	५६
१८.	औलिया और अंबिया तो खुद अल्लाह से डरने वाले और उस की रहमत	५७
१९.	अल्लाह की आयात को झुठलाना कोई नई चीज़ नहीं	५९
२०.	नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने एक हक़ीक़त का इज़हार	६०
२१.	इब्लीस की सरकशी पर कुछ तफ़्सीलात	६१
२२.	समुन्दरी तिजारत के लिये तर्ग़ीब	६६
२३.	नबी अलै० के लिये कुछ हिदायात	७३
२४.	कुरआन मजीद शिफ़ा और रहमत है	८२
२५.	कुरआन की सच्चाई के लिये एलान	८८
२६.	मुश्रिकों के चन्द बेहूदा प्रश्नों के उत्तर	९३
२७.	गुमराहों का हश्र किस हाल में हो गा	९७
२८.	इन्सान बहुत ही तंगदिल है	१००
२९.	मूसा की एक बात-चीत फ़िर्औन से	१०१
३०.	अस्माए-हुस्ना पर एक बयान	११०
३१.	इज़्ज़त वाली आयत शरीफ़	१११
	सूरः कहफ़– (18)	
४०.	कुरआन के नाज़िल करने का उद्देश्य	२
४१.	ईसाईयों के बातिल क़ौल की तर्दीद	५
४२.	दुनिया की ज़ीनत अल्लाह की तरफ़ से आज़माइश है	७
४३.	ज़मीन, क़ियामत के दिन एक चटियल मैदान हो जाये गी	८
४४.	ग़ार वालों का क़िस्सा	९
४५.	इस क़िस्सा की तफ़्सील	१३
४६.	बातिल माबूदों से दूर हो जाना ही बेहतर है	१६
४७.	ग़ार वालों का नींद से जागना	१९
४८.	क़ियामत के आने में कोई संदेह नहीं	२१
४९.	ग़ार वालों की सही तादाद केवल अल्लाह को मालूम है	२२
५०.	जन्नत की नेमतों का बयान	३१
५१.	दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल	४५
५२.	मूसा और ख़िज़्र का वाक़िआ	६५
५३.	कश्ती के सफ़र के वाक़िआत	७१

सुब्हा-नल्लज़ी -(15)

सूरः बनी इस्राईल- (17)

سُورَةُ بَنِيٓ إِسۡرَآءِيلَ مَكِّيَّةٌ (١٧) (٥٠) — اٰيَاتُهَا ١١١ — رُكُوعَاتُهَا ١٢

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

سُبۡحٰنَ الَّذِيۡۤ اَسۡرٰى بِعَبۡدِهٖ لَيۡلًا مِّنَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ
اِلَى الۡمَسۡجِدِ الۡاَقۡصَا الَّذِىۡ بٰرَكۡنَا حَوۡلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنۡ
اٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيۡعُ الۡبَصِيۡرُ ۞ وَاٰتَيۡنَا مُوۡسَى الۡكِتٰبَ
وَجَعَلۡنٰهُ هُدًى لِّبَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ اَلَّا تَتَّخِذُوۡا مِنۡ
دُوۡنِىۡ وَكِيۡلًا ؕ ۞ ذُرِّيَّةَ مَنۡ حَمَلۡنَا مَعَ نُوۡحٍ ؕ اِنَّهٗ كَانَ
عَبۡدًا شَكُوۡرًا ۞ وَقَضَيۡنَاۤ اِلٰى بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ فِى
الۡكِتٰبِ لَتُفۡسِدُنَّ فِى الۡاَرۡضِ مَرَّتَيۡنِ وَلَتَعۡلُنَّ
عُلُوًّا كَبِيۡرًا ۞ فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ اُوۡلٰٮهُمَا بَعَثۡنَا عَلَيۡكُمۡ
عِبَادًا لَّنَاۤ اُولِىۡ بَاۡسٍ شَدِيۡدٍ فَجَاسُوۡا خِلٰلَ الدِّيَارِ ؕ
وَكَانَ وَعۡدًا مَّفۡعُوۡلًا ۞ ثُمَّ رَدَدۡنَا لَـكُمُ الۡكَرَّةَ عَلَيۡهِمۡ
وَاَمۡدَدۡنٰكُمۡ بِاَمۡوَالٍ وَّبَنِيۡنَ وَجَعَلۡنٰكُمۡ اَكۡثَرَ نَفِيۡرًا ۞

सूरः बनी इस्राईल मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस सूरः में १११ आयतें और १२ रूकूअ़ हैं। आरंभ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. अल्लाह तआ़ला (तमाम ऐ़बों से) पाक है जिस ने अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को रातों-रात काबा शरीफ़ से बैतुलमुक़द्दस तक, जिस के चारों तरफ़ हम ने बर्कतें कर रखी हैं, सैर कराई ताकि हम उस को (अपनी कामिल कुदरत के) कुछ निशान दिखायें। निःसंदेह वह अल्लाह बड़ा ही सुनने वाला, बड़ा देखने वाला है २+३. और हम ने मूसा को किताब (तौरात) दी और उस को बनी इस्राईल के लिये हम ने हिदायत नामा बनाया (पहला आदेश उस में यह था कि) ऐ नूह के साथियों की औलाद! (इस्राईलियो!) जिन को हम ने नूह के साथ (बिड़े पर) सवार किया था (मेरे अ़लावा किसी को अपना मुतवल्ली न बनाना)। बेशक वह बड़ा ही शुक्र गुज़ार बन्दा था ४. और हम ने बनी इस्राईल को सूचित कर दिया था कि तुम दो बार (शरीअ़त की मुख़ालिफ़त करके) मुल्क में फ़साद करो गे और बहुत ही सर उठाओ गे ५. फिर जब पहली बार (तुम्हारी गत होने को) आये गी तो हम अपने बन्दों (में से एक ऐसी क़ौम) को जो सख़्त लड़ाकू हों गे तुम पर भेजें गे फिर वह तुम्हारे मुल्क में फैल जायें गे (और समझो कि) यह वादा किया जा चुका है (इस में ज़रा भी आगे-पीछे और कमी न होगी) ६. एक मर्तबा फिर हम तुम्हारी माल और औलाद से मदद करें गे और बहुत

➲बड़े जथे वाले बनायें गे (लेकिन यह याद रखना कि)

....

१. मेराज की घटना की तफ़्सील और कैफ़िय्यत में जितना इख़्तिलाफ़ है, शायद ही किसी दूसरे मस्अला और घटना में इतना इख़्तिलाफ़ हो। संक्षिप्त में यह बता दें कि इस में इख़्तिलाफ़ इस प्रकार है (१) 'मेराज' और 'इस्रा' दोनों एक ही हैं या दो अलग-अलग वाक़िए हैं (२) दोनों जागते समय हुये हैं या सोते समय (३) एक जागते समय हुआ और दूसरा सोते समय (४) बैतुल मुक़द्दस तक तो जागते समय हुआ और उस से आगे सोते समय। जिन उलमा ने इख़्तिलाफ़ किया है उन्हों ने अपने-अपने तर्क भी दिये हैं जो हदीस की तफ़्सीरों में, विशेष कर बुख़ारी शरीफ़ की शरह "फ़त्हुल बारी" में मौजूद हैं।

हम इस बात को तर्जीह देते हैं कि 'इस्रा' और 'मेराज' दो अलग-अलग घटनाएं हैं और दोनों जागते और मुकम्मल जिस्मानी हालत में हुई हैं। यह हमारा कोई तन्हा ख़याल नहीं है, बल्कि बाद के उलमा में इब्ने दह्या और इमाम बुख़ारी रह० का भी यही ख़याल है। (फ़त्हुलबारी पारः १५ पृष्ट ४५१) कुछ और भी अहादीस से इस की ताईद होती है। चुनान्चे एक हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "जिस रात मुझे 'इस्रा' कराया गया (यानी बैतुल-मुक़द्दस की सैर कराई गयी) उस की सुबह ही मुझ से अबू जेहल ने मज़ाक़ करते हुये पूछा कि क्या आज भी कोई नयी घटना घटी है? मैं ने कहा कि हाँ, मैं आज रात बैतुल मुक़द्दस तक गया और फिर वापस आ गया। उस ने पूछा कि सुबह को वापस आ गये? आप ने फ़रमाया हाँ, तुम्हारे सामने खड़ा हूँ"। (फ़तहुलबारी) हज़रत अबू सल्मा रज़ि० रिवायत करते हैं कि 'इस्रा' की ख़बर सुन कर सब अचंभे में रह गये और बौखलाए हुये हज़रत अबू बक्र रज़ि० के पास आये और कहा कि आप के नबी ने आज यह दावा किया है कि रात को बैतुल मुक़द्दस तक गया था फिर रात ही में वापस आ गया। हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने कहा कि उन्हों ने बिल्कुल सच कहा मैं उन की इस बात की तस्दीक़ और समर्थन करता हूँ। उन्हों ने कहा कि मैं तो इस बात की भी तस्दीक़ करता हूं कि वह एक ही रात में मुल्क शाम तक जा कर फिर मक्का में आ गया। हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने कहा कि बैतुल मुक़द्दस ही क्या, मैं उस से भी आगे की बातों की तस्दीक़ करता हूँ कि आप आसमान तक गये और वहाँ की ख़बरें लाये। रिवायत करने वाले हज़रत सलमा कहते हैं कि इसी के बाद आप का लक़ब "सिद्दीक़" ठहरा।

ऊपर की दोनों रिवायतों में केवल बैतुल मुक़द्दस ही तक जाने का ज़िक्र है। स्वयं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अबू जेहल के सामने और काफ़िरों ने हज़रत अबू बक्र रज़ि० के सामने केवल बैतुल मुक़द्दस ही तक का नाम लिया है। इस से साबित होता है कि जिस रात की यह घटना है उस रात आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम केवल बैतुल मुक़द्दस तक ही गये थे। इस सूरः की पहली आयत में भी केवल बैतुल मुक़द्दस ही तक का ज़िक्र आया है। हालाँकि अगर इस के आगे भी आप गये होते तो अवश्य ही कुरआन उस का भी ज़िक्र करता, इस लिये कि बैतुल मुक़द्दस से आगे का ज़िक्र करने का इस से बेहतरीन अवसर हो ही नहीं सकता है। और एक ही सिलसिले के सारे कामों का ज़िक्र एक साथ हो जाता।

दूसरी हदीसों से आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का आसमानों की सैर करना भी साबित है। हम भी इस के क़ाइल हैं, लेकिन इस को दूसरी घटना मानते हैं। यानी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पहली बार मक्का शरीफ़ से बैतुल मुक़द्दस तक जा कर वापस लौट आये। फिर कुछ समय के बाद दूसरी बार मक्का शरीफ़ से सीधे आसमान की सैर को गये। यह दोनों अलग-अलग घटानाएँ हैं। पहली घटना का नाम 'इस्रा' और दूसरी का नाम 'मेराज' है।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या मक्का से बैतुल मुक़द्दस तक की सैर(इस्रा) आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जिस्मानी तौर पर की थी, या रूहानी तौर पर? इस का उत्तर यह है कि जिस्मानी तौर पर की थी। इस के सबूत में चार दलीलें पेश की जाती हैं।

पहली दलीलः- पहली आयत में 'अ़ब्द' का शब्द प्रयोग हुआ है। यह शब्द रूह और जिस्म दोनों को मिला➲

➲कर बोला जाता है। कुरआन मजीद में दूसरे स्थान पर है: "अगर तुम को उन चीज़ों में शक है जिन को मैं ने अपने अ़ब्द पर नाज़िल किया तो तुम भी वैसी ही बना कर दिखादो" (सूरःबक़रः-२३) यहाँ पर "अ़ब्द" का इस्तेमाल नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिये हुआ है, और यही अ़ब्द यहाँ इस आयत में भी इस्तेमाल हुआ है।

दूसरी दलील:- "सुब्हान" का शब्द तअ़ज्जुब (आश्चर्य,अचंभे) के मौक़ा पर बोला जाता है। अगर केवल रूहानी सफ़र होता तो इस में कौन से अचंभे की बात थी। इस से मालूम हुआ कि जिस्मानी तौर पर आप जा कर रातों-रात लौट आये थे और यह वास्तव में तअ़ज्जुब वाली बात है, इसी लिये कुरआन में 'सुब्हान' का शब्द इस्तेमाल किया गया है।

तीसरी दलील:- इस आयत में 'इस्रा' का शब्द प्रयोग हुआ है। इस्रा का अर्थ है "रात को ले जाना"। अ़ल्लामा राग़िब अस्फ़हानी अपने शब्द कोश (Dictionary) में लिखते है कि इस का अर्थ है "रात को सैर करना"। खुद कुरआन मजीद में यह शब्द कई स्थानों पर इस्तेमाल हुआ है। (सूरः हिज्र-६५, सूरः शु-अ़रा-५२, सूरः हूद-८१) इन स्थानों पर अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा और हज़रत लूत को हुक्म दिया कि रात में अपने मानने वालों को शहर से ले कर निकल जाओ। ज़ाहिर है कि वह जिस्मानी तौर पर निकल कर गये थे इस में किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं है। तो जब इन लोगों के लिये 'इसरा' का माना "जिस्मानी तौर पर निकलता" है, तो फिर यहाँ भी 'इस्रा' के माना नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मक्का से बैतुल-मुक़द्दस तक जिस्मानी तौर पर जाना है।

चौथी दलील:- काफ़िरों ने जब यह ख़बर सुनी तो बड़े तअ़ज्जुब में हुये और परीक्षा लेने के लिये कुछ प्रश्न पूछे। चुनान्चे रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब काफ़िरों ने मेरे 'इस्रा' को झुठला दिया और यह पूछ लिया कि राह में कौन-कौन से स्थान पड़े थे, या कौन- कौन सा लश्कर मिला था? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि मुझे याद नहीं रह गया था लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उन राहों का मान चित्र (नक़्शा) मेरी आँखों के सामने पेश कर दिया और मैं उसे देख कर उन को बताता गया" (बुख़ारी, मेराज का बाब) इस हदीस मे और इस जैसी और दूसरी हदीसों से यह साबित होता है कि काफ़िरों ने आप के जिस्मानी सफ़र का इन्कार किया था इसी लिये कुरेद-कुरेद कर तफ़्सील मालूम की थी। अगर केवल रूहानी सफ़र मुराद होता, तो काफ़िर भी यह जानते हैं कि सपने में आदमी कहाँ-कहाँ की सैर करता है, इस में क्या तअज्जुब की बात है। रूहानी सैर, सपने में तो हर शख़्स करता है और सपनों में चीन, जापान और लन्दन घूमता है फिर आँख खुलते ही अपने को घर में मौजूद पाता है। फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन के इन्कार पर खुद ही बता देते कि अल्लाह के बन्दो! यह तो रूहानी सैर था और तुम भी तो रूहानी सैर सपने में करते हो। आप का इस प्रकार उत्तर न देना यह भी जिस्मानी सफ़र की दलील है।

यहाँ तक तो बहस इस पर थी कि 'इस्रा' मक्का से बैतुल मुक़द्दस तक के सफ़र को कहा जाता है और जिस्मानी तौर पर सफ़र करने को कहा जाता है। अब आगे 'मेराज' का सिलसिला शुरू होता है। 'मेराज' नाम है आप के मक्का से आसमान पर "सिद्रतुल मुन्तहा" तक जाने का जिस्म के साथ। लेकिन ऐसा होता है कि कुछ लोग दोनों सफ़र (इस्रा-मेराज) को एक ही साथ जोड़ कर उसे 'इस्रा' या 'मेराज' भी कह देते हैं। और इसी कारण इस मस्अले में इतना इख़्तिलाफ़ पैदा हुआ। मेराज के तअ़ल्लुक़ से लग-भग ३० अहादीस मुख़्तलिफ़ सहाबा से रिवायत हैं। जिन में आप का आसमान पर जाना, जन्नत-जहन्नम को देखने वग़ैरह का तफ़्सील से ज़िक्र मौजूद है। अगले और पिछले तमाम ही जमहूर उलमा का इस बारे में इत्तिफ़ाक़ है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने 'इस्रा' की तरह 'मेराज' भी बेदारी की हालत में जिस्मानी तौर पर किया (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

आयत न० ४ में 'किताब' से मुराद इस्राईली नबिय्यों की किताबें हैं। चुनान्चे 'यस्-अ़या यरमया' और 'हिज़क़ील' में बनी इस्राईल के दो फ़सादों और दो बड़ी बर्बादियों की सूचना दी गयी थी। पहली बर्बादी बाबुल के बादशाह बुख़्त नस्र के हम्ले से हुयी थी और दूसरी बर्बादी रूमियों के हम्ले से। एक शताब्दी के पश्चात फ़ारस के बादशाह की कोशिशों से यहूद की उजड़ी और वीरान बस्तियाँ फिर आबाद हो गयीं। अगली आयत में इसी की ओर संकेत है। (तर्जुमान)

إِنْ أَحْسَنتُمْ أَحْسَنتُمْ لِأَنفُسِكُمْ ۖ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا ۚ
فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءُوا وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا
الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَلَوْا
تَتْبِيرًا ﴿٧﴾ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يَرْحَمَكُمْ ۚ وَإِنْ عُدتُّمْ
عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ﴿٨﴾ إِنَّ هَٰذَا
الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ
الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ﴿٩﴾
وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا
أَلِيمًا ﴿١٠﴾ وَيَدْعُ الْإِنسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ ۖ وَ
كَانَ الْإِنسَانُ عَجُولًا ﴿١١﴾ وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ
فَمَحَوْنَا آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً
لِّتَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَ
الْحِسَابَ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنَاهُ تَفْصِيلًا ﴿١٢﴾ وَكُلَّ

७. अगर तुम ने नेक काम किये तो अपने लिये करो गे और अगर बुराई करोगे तो उस का भी तुम ही पर वबाल हो गा। फिर जब दूसरी दफ़ा का समय आये गा (यानी जब तुम पहले की तरह शरारतें करने लगो गे) तो फिर हम तुम्हारे दुश्मनों को तुम पर ग़लबा दें गे ताकि वह मार-मार कर तुम्हारे मुँह बिगाड़ दें और मस्जिद (बैतुल-मुक़द्दस) में (बर्बाद करने को) घुस आयें गे जैसे कि वह पहली मर्तबा घुस आये थे और जिस चीज़ पर क़ाबू पायें गे तोड़-फ़ोड़ दें गे। ८. उम्मीद है कि तुम्हारा पर्वरदिगार तुम पर रहम करे गा, और अगर तुम ने फिर वही काम किये तो हम भी वही दण्ड देंगे। और हम ने काफ़िरों के लिये जहन्नम घेरने वाली बनाई है। ९. कुछ शक नहीं कि यह कुरआन वह रास्ता दिखाता है जो सब से अच्छा और मज़्बूत है (जो किसी अक़्ली और नक़्ली दलील से ग़लत नहीं हो सकता) और ईमानदारों को जो नेक अ़मल करते हैं शुभसूचना देता है कि उन के लिये बड़ा अज्र (और सवाब) है १०. और (यह ख़बर भी बतलाता है कि) जो लोग दूसरी ज़िन्दगी (यानी क़ियामत) पर ईमान नहीं रखते उन के लिये हम ने दुःख की मार तय्यार की है (लेकिन यह सब कुछ सुन-सुना कर भी नालायक़ लोग पर्वा नहीं करते) ११. और (यह नालायक़ इन्सान अक्सर-बेश्तर) अपने हक़ में बुराई की दुआ ऐसी करता है जैसी भलाई की किया करता है। और इन्सान बहुत जल्द बाज़ है। १२. और (दिखो तो) हम ने दिन और रात (अपनी कुदरत के) दो निशान बनाये हैं फिर हम रात का निशान मिटा कर दिन के निशान को स्पष्ट रूप से रोशन करते हैं ताकि तुम (मेहनत कर के दिन के वक़्त में) अपने पर्वरदिगार का फ़ज़्ल (यानी रोज़ी) तलाश करो और वर्षों की गिन्ती और हिसाब भी मालूम कर सको। और हम ने हर चीज़ को मुफ़स्सल विस्तार से जाना हुआ है

إِنسَانٍ أَلْزَمْنَاهُ طَائِرَهُ فِي عُنُقِهِ ۖ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مَنشُورًا ﴿١٣﴾ اقْرَأْ كِتَابَكَ كَفَىٰ

१३. और हम ने हर इन्सान के आमाल (नेक हों या बुरे) उन के गले के हार बना दिये हैं (मजाल नहीं कि कोई बर्बाद या कम हो सके) और क़ियामत के दिन हम उस की किताब निकालें ➲

بِنَفۡسِكَ الۡيَوۡمَ عَلَيۡكَ حَسِيۡبًا ﴿١٤﴾ مَنِ اهۡتَدٰى فَاِنَّمَا
يَهۡتَدِىۡ لِنَفۡسِهٖ ۚ وَمَنۡ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيۡهَا ؕ
وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزۡرَ اُخۡرٰى ؕ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيۡنَ
حَتّٰى نَبۡعَثَ رَسُوۡلًا ﴿١٥﴾ وَاِذَاۤ اَرَدۡنَاۤ اَنۡ نُّهۡلِكَ قَرۡيَةً
اَمَرۡنَا مُتۡرَفِيۡهَا فَفَسَقُوۡا فِيۡهَا فَحَقَّ عَلَيۡهَا الۡقَوۡلُ
فَدَمَّرۡنٰهَا تَدۡمِيۡرًا ﴿١٦﴾ وَكَمۡ اَهۡلَكۡنَا مِنَ الۡقُرُوۡنِ
مِنۡۢ بَعۡدِ نُوۡحٍ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوۡبِ عِبَادِهٖ خَبِيۡرًاۢ
بَصِيۡرًا ﴿١٧﴾ مَنۡ كَانَ يُرِيۡدُ الۡعَاجِلَةَ عَجَّلۡنَا لَهٗ
فِيۡهَا مَا نَشَآءُ لِمَنۡ نُّرِيۡدُ ثُمَّ جَعَلۡنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ
يَصۡلٰٮهَا مَذۡمُوۡمًا مَّدۡحُوۡرًا ﴿١٨﴾ وَمَنۡ اَرَادَ الۡاٰخِرَةَ وَ
سَعٰى لَهَا سَعۡيَهَا وَهُوَ مُؤۡمِنٌ فَاُولٰٓٮِٕكَ كَانَ سَعۡيُهُمۡ

गे वह उस को (अपने सामने) खुला पाये गा (उस को हुक्म हो गा कि) १४. अपनी किताब (आमाल नामा) पढ़ ले। तू आज अपना हिसाब करने को आप स्वयँ काफ़ी है (पस सुनो कि) १५. जो कोई हिदायत पाता है वह अपने ही लिये पाता है (उस का लाभ उसी को मिले गा) और जो गुमराह है उस का वबाल भी उसी पर हो गा (क्योंकि अल्लह के हाँ तो यह नियम मुक़र्रर है कि) कोई आदमी किसी दूसरे आदमी का बोझ नहीं उठाये गा[२]। और (सुनो!) हम (किसी क़ौम को) अ़ज़ाब नहीं किया करते जब तक (उन की तरफ़) रसूल न भेजें १६. और जब किसी बस्ती को (उस के बुरे कर्तूतों के नतीजा में हम) तबाह करना चाहते हैं तो उस के अमीरों (और खाते-पीते लोगों) को और अधिक बढ़ाते हैं[३] फिर वह उस में (जी खोल कर) बदकारियाँ करते हैं बस उन पर हुक्म लग जाता है फिर हम एक ही दफ़ा सब को तबाह कर देते हैं (इस की नज़ीर सुनो!) १७. नूह के बाद कितनी ही बस्तियाँ हम ने तबाह की हैं (उन की शरारतों की वजह से कीं) और तेरा पर्वरदिगार अपने बन्दों के गुनाहों से पूरी ख़बर रखने वाला और देखने वाला है। १८. (हमारे हाँ यह भी नियम है कि) जो कोई (अपने आमाल से दुनिया में) जल्दी का चाहने वाला होता है तो जिस को हम चाहते हैं उस को दुनिया में जल्दी (बदला) दे देते हैं। फिर उस के लिये जहन्नम कर देते हैं जिस में वह ज़लील व ख़ार हो कर दाख़िल हो गा[४] १९. और जो आख़िरत का इरादा करे और उस के लिये मुनासिब प्रयास करे और ईमानदार भी हो (जो कुछ करे अल्लाह को राज़ी करने की निय्यत से करे) तो उन लोगों की कोशिश अल्लाह के हाँ मक़्बूल हो गी[५]

---

२. यानी हर एक के गुनाह के बारे में पूछ-ताछ उसी ही से हो गी, दूसरे से नहीं हो गी। हदीस शरीफ़ के मुताबिक़ जो कोई बुरा काम ईजाद करे तो क़ियामत तक उस पर वबाल पड़ता जाता है। यह हदीस आयत के मुख़ालिफ़ नहीं है क्यों कि बुराई ईजाद करने वाले की बुराई पर हर दम लोग अ़मल करते रहते हैं, इस प्रकार गुनाह ताज़ा होता रहता है और जो कोई उस की ईजाद की हुयी बुराई पर अ़मल करे उस का गुनाह अलग होता है (वहीदी)

३. कुछ उलमा ने इस आयत का तर्जुमा यूँ किया है "जब हम किसी बस्ती को बर्बाद करना चाहते हैं तो वहाँ अय्याशों को बढ़ा देते हैं। यानी आवारा मिज़ाज अमीर-उमरा (क़ौम के लीडर और प्रमुख) वहाँ अधिक हो जाते हैं।"

➲ 'बदकारियों' से मुराद ज़िना और लिवातत (लौंडे बाज़ी) वग़ैरह है। (वहीदी)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि आदम और नूह अ़लै० के दर्मियान दस क़र्न (१००० वर्ष) की दूरी है और उस ज़माने के तक़रीबन तमाम ही लोग इस्लाम पर थे। यहाँ पर मक्का के काफ़िरों को धमकी दी गयी है कि जिस प्रकार नूह अ़लै० और उन के बाद की क़ौमों को हलाक किया है, तुम्हें भी उसी प्रकार हलाक कर के छोड़ूं गा, इस लिये कि तुम्हारे अन्दर कोई सुर्ख़ाब के पर नहीं लगे हुये हैं। और फिर यह कि तुम्हारा जुर्म तो और भी बढ़ा हुआ है, इसलिये कि सब से अफ़्ज़ल और बेहतर व बाला नबी को तुम झुठला रहे हो।

४. इन आयात का खुलासा यह है कि जो शख़्स दुनिया में फंस कर दीन से ग़ाफ़िल हो जाता है, उस को दुनिया कुछ ज़्यादा नहीं मिलती, बल्कि केवल उतनी ही मिलती है जो उस के भाग्य में अल्लाह ने लिखा है। और जो लोग यह चाहते हैं कि आख़िरत में उन के आमाल क़ुबूल हो जायें, इस के लिये क़ुरआन ने यहाँ तीन शर्तें बताई हैं (१) उस का ईमान कामिल हो (२) जो बातें शरीअ़त में ईमान लाने की हैं उन से बदअ़क़ीदा न हो उस के अ़मल में दिखावा न हो और केवल अल्लाह को खुश रखने के लिये हो (३) दिल व जान से उस अ़मल को करे अन्चाहे और आधेमन से एक रस्म निभाने के तौर पर अ़मल न करे, इस लिये कि यह मुनाफ़िक़ होने की पहचान है।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं कि जो शख़्स दुनिया चाहता है वह भाग्य और नसीब से अधिक पाये गा नहीं और परेशान अलग होता है। और जो शख़्स दीन तलब करता है उस का दिल हमेशा ग़नी और खुशहाल रहता है और दुनिया नसीब के मुताबिक़ बिला माँगे पाता है। एक और रिवायत में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह पाक न तो तुम्हारी सूरतें देखता है और न माल व दौलत को देखता है, वह केवल तुम्हारे दिलों की निय्यतों और अ़मल के इख़्लास को देखता है"। (मुस्लिम) मुस्नद अहमद में हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिस शख़्स का ठिकाना कहीं न हो उस का ठिकाना दुनिया है, और जो बिल्कुल कंगाल रहना चाहे उस की पूंजी दुनिया है और जो लोग दुनिया के लिये रूपये-पैसे जमा करते हैं वह बिल्कुल ही अक़्ल के कोरे हैं।" (अहसनुल् फ़वाइद/ इब्ने कसीर, ख़ाज़िन))

५. इस आयत से स्पष्ट हो गया कि आख़िरत की तलब के लिये पहले ईमान शर्त है और फिर उस के हासिल करने के लिये संदेष्टओं के बताये हुये तरीक़े के अनुसार कोशिश। जब यह दोनों शर्तें मुकम्मल तौर पर पाई जाएं गी तब अल्लाह तआ़ला का वादा है कि ऐसे शख़्स की कोशिश अवश्य ही कामियाब हो गी और उस को आख़िरत के ऐश व आराम नसीब हों गे। इस से यह भी स्पष्ट हो गया कि जो लोग आख़िरत की कामियाबी तो चाहते हैं मगर न तो उन के दिलों में अल्लाह और रसूल पर ईमान है और न ही नेक निय्यती के साथ कोशिश, तो ऐसे लोगों की इच्छा कभी पूरी न हो गी । इस आयत में उन नाम के मुसलामानों की भी तर्दीद होती है जो केवल अपने पीरों, मुरीदों, वलिय्यों और इमामों की सिफ़ारिश पर आशा लगाये बैठे रहते हैं और अ़मल से हाथ-पैर समेट कर बैठे हैं। ऐसे लोगों की इच्छा कभी पूरी न हो गी।

مَّشْكُورًا ﴿١٩﴾ كُلًّا نُّمِدُّ هَٰؤُلَاءِ وَهَٰؤُلَاءِ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ ۚ
وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا ﴿٢٠﴾ انظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا
بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ وَلَلْآخِرَةُ أَكْبَرُ دَرَجَاتٍ وَأَكْبَرُ
تَفْضِيلًا ﴿٢١﴾ لَّا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُومًا
مَّخْذُولًا ﴿٢٢﴾ وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ

२०. (यूँ तो) हम हर एक को (दुनिया का चाहने वाला हो या आख़िरत का) अपनी मेहरबानी से मदद देते हैं यह हों या वह हों (रोज़ी-रोटी के मामले मे सब बराबर हैं) तेरे पर्वरदिगार की बख़्शिश किसी से बन्द नहीं २१. देखो तो हम ने एक को दूसरे पर कैसी फ़ज़ीलत दी है। और आख़िरत अपने दर्जों और फ़ज़ीलतों में कहीं ➲

إِحْسَانًا ۚ إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِندَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا
فَلَا تَقُل لَّهُمَا أُفٍّ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُل لَّهُمَا قَوْلًا
كَرِيمًا ﴿٢٣﴾ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ
وَقُل رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيَانِي صَغِيرًا ﴿٢٤﴾ رَّبُّكُمْ أَعْلَمُ
بِمَا فِي نُفُوسِكُمْ ۚ إِن تَكُونُوا صَالِحِينَ فَإِنَّهُ كَانَ
لِلْأَوَّابِينَ غَفُورًا ﴿٢٥﴾ وَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ
وَابْنَ السَّبِيلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيرًا ﴿٢٦﴾ إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ
كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيَاطِينِ ۖ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ﴿٢٧﴾

बढ़-चढ़ कर है २२. (पस ऐ मुख़ातब!) तू अल्लाह के साथ किसी दूसरे को माबूद मत बना, वर्ना तू ज़लील व ख़ार हो कर (जहन्नम में) बैठे गा २३. और (सुनो! यह यक़ीनी और निश्चित है कि) तेरे पर्वरदिगार ने हुक्म दे रखा है कि मेरे अ़लावा किसी की अ़िबादत मत करो और अपने माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक किया करना। अगर उन में का एक या दोनों तेरी मौजूदगी में बुढ़ापे को पहुंचें (तो उन की सेवा करते हुये) तुम उन को उफ़ तक भी न कहना और न उन को झिड़कना और अ़िज़्ज़त से उन को मुख़ातब किया करना[६] (वर्ना उन का तनिक भर भी दिल टूटा तो तेरी ख़ैर नही।) २४. और मुहब्बत से उन के आगे झुक जाया करना और (उन के लिये दुआ़ करते हुये) कहा करना कि ऐ मेरे पर्वरदिगार! उन दोनों पर रहम फ़रमा, जैसा कि उन्हों ने मुझे बचपन में पाला-पोसा[७] २५.तुम्हारा पर्वरदिगार तुम्हारे दिलों के भेद भली भांति जानता है। अगर तुम (सही मानों में) नेक हो गे (और माता-पिता के साथ अच्छे सुलूक से पेश आओ गे) तो वह (पर्वरदिगार) भी नेक बख़्तों के लिये बख़्शन-हार है[८] २६. और (तीसरे दर्जे पर यह आदेश है कि) रिश्तेदारों, मिसकीनों और मुसाफ़िरों के हक़ अदा किया करो और फ़ुज़ूल ख़र्ची (में माल व दौलत बर्बाद) मत करो २७. कुछ शक नहीं कि फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वाले शैतानों के भाई हैं। और शैतान तो अपने पर्वरदिगार का बिल्कुल नाशुक्रा है (पस तुम ऐसा काम मत करना)

६. इस आयत के उमूम से जमहूर उलमा ने यही हुक्म निकाला है कि माता-पिता को किसी भी प्रकार का तनिक भर भी दुःख-तक्लीफ़ और कष्ट पहुंचाना हराम है (हक़्क़ानी)

७. 'मुझे पाला पोसा' यानी मेरी ज़रा सी तक्लीफ़ पर अपना आराम भूल जाते थे। पूरा-पूरा दिन और रात गोद में उठाये फिरते थे, मेरे आराम पर अपना आराम कुर्बान कर देते थे, इस लिये ऐ मेरे मौला! तू भी उन पर ऐसी ही मेहरबानी कर। कुछ लोग शर्म की वजह से या लोगों को दिखावे के लिये माता-पिता की सेवा करते हैं। ऐसे लोग याद रखें कि अल्लाह तआ़ला दिलों के भेद को जानता है उसी के मुताबिक़ बदला देगा (सनाई)

८. माता-पिता चाहे बूढ़े हों या जवान, हर हाल में उन का अदब और एहतराम करना और उन से नर्मी से बात करना फ़र्ज़ है। उन को झिड़कना, डांटना, बेअदबी और गुस्ताख़ी करना कबीरा गुनाह (महा पाप) है। यहाँ पर जो बुढ़ापे की क़ैद लगाई है, वह इस लिये कि बूढ़े माँ-बाप की औलाद कुछ पर्वा नहीं करती है। इसी लिये उन का ज़िक्र कर के हिदायत की गयी कि उन को बोझ समझ कर उन के साथ लापर्वाही न करो। हज़रत इमाम हुसैन रज़ि० फ़रमाते हैं कि सब से कम बेअदबी "उफ़" है, इस से कम बेअदबी का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता है। अगर इस शब्द से भी कोई हल्की बेअदबी होती तो उस से भी रोका जाता।

माँ-बाप की अ़िज़्ज़त और उन का एहतराम, उन को सदा प्रसन्न और राज़ी रखना यह तमाम नेकियों की

जड़ है। दुनिया में वही लोग खुशी से रहते हैं और अमन व चैन से ज़िन्दगी गुज़ारते हैं जिन के माँ-बाप उन से खुशी की हालत में मरते हैं। इस का कई बार तजुर्बा किया जा चुका है। 'जनाह' का अर्थ है "बाजू"। उन पर अपने बाजू झुका दिया करो, यानी उन से निहायत आजिज़ी के साथ मिलो। सईद बिन जुबैर रह० फ़रमाते हैं कि अपने माता-पिता से इस प्रकार आजिज़ी से मिलो, जैसे एक गुलाम अपने गुस्सैल और बद मिज़ाज मालिक से मिलता है। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० के बाप काफ़िर थे और लड़ाई में दुश्मनों की तरफ़ से लड़ रहे थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से उन को क़त्ल कर देने की अनुमति माँगी, तो आप ने फ़रमायाः तुम रहने दो, और कोई दूसरा यह काम कर डाले गा। 'अल्लाह दिलों के भेद को खूब जानता है' यानी तुम्हारे दिल में बदी और नाफ़रमानी का कोई इरादा न होते हुये भी अगर कभी-कभार नाफ़रमानी हो जाये, लेकिन तुरन्त तौबा कर लो तो अल्लाह तआ़ला बख़्श दे गा।

'अव्वाबीन' के बारे में उलमा का इख़्तिलाफ़ है। कुछ उलमा के नज़दीक इस से मुराद चाश्त की नमाज़ पढ़ने वाले हैं। कुछ लोगों के निकट जो अ़िशा और मग़्रिब की नमाज़ों के दर्मियान नफ़्ल पढ़ते हैं उन्हें कहा जाता हैं। 'हक़ वाले को उस का हक़ दो' इस बारे में इमाम ज़ैनुल्र आबिदीन का कहना है कि इस के मुख़ातब उम्मत के तमाम लोग हैं। और अर्थ यह है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के जो नातेदार हैं उन के हक़ अदा करो। तमाम संबन्धियों से मुहब्बत और अख़्लाक़ से पेश आओ अगर संभव हो तो रूपये-पैसे से उन के साथ सुलूक करो। इस से भी अल्लाह तुम से राज़ी हो गा। 'फ़ुज़ूल ख़र्ची न करो' यहाँ पर इस बात से मना किया गया है इसलिये फ़ुज़ूल ख़र्ची शैतान की एक सिफ़त है। और जिस ने फ़ुज़ूल ख़र्ची की वह शैतान का ताबेदार हो गया और उस का शुमार शैतान के भाई-बन्द में हो गा। हज़रत अ़ली रज़ि० का फ़र्मान है कि अपने घर वालों पर ख़र्च करना और सदक़ा व ख़ैरात करना फ़ुज़ूल ख़र्ची में नहीं शामिल है। हाँ, जो दिखावे और नाम कमाने के लिये ख़र्च करे गा वह बेशक शैतानी काम हो गा। हज़रत इब्ने मस्ऊद और मुजाहिद रह० फ़रमाते हैं कि अगर किसी ने अकारण एक मुद (लग भग एक किलो ग्राम) ग़ल्ला भी ख़र्च किया तो वह फ़ुज़ूल ख़र्ची में शामिल हो गा, इस के विपरीत अगर किसी नेक काम में अपना सब कुछ देदे तो यह फ़ुज़ूल ख़र्ची नहीं है (वहीदी)

२८. और अगर (कोई ऐसा समय आ जाए कि) तुम हक़दारों के हक़ अदा न कर सको बल्कि अपने पर्वरदिगार की मेहरबानी (यानि रुपया-पैसा) के इन्तिज़ार में, जिसकी तुम उम्मीद रखते हो, उनसे मुंह फेरो तो (कम से कम) उनसे नर्म बात कहा करो २९. और (हाँ, यह भी ख़याल रहे कि) न (तो बिल्कुल) अपने हाथों को गर्दन से बाँध रखा करो (कि किसी को फूटी कौड़ी भी न दो) और न बिल्कुल खुला छोड़ दिया करो, नहीं तो तुम बिल्कुल शर्मिन्दा औरआजिज़ हो कर बैठे रहोगे। ३०. (अस्ल बात दिल में यह जमा लो कि) तुम्हारा पर्वर्दिगार ही जिसको चाहे बेशुमार रोज़ी देता है और

وَإِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاءَ رَحْمَةٍ مِّن رَّبِّكَ تَرْجُوهَا
فَقُل لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا ﴿٢٨﴾ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً
إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا
مَّحْسُورًا ﴿٢٩﴾ إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ
إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٣٠﴾ وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ
خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ نَّحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ إِنَّ قَتْلَهُمْ
كَانَ خِطْئًا كَبِيرًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنَىٰ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً
وَسَاءَ سَبِيلًا ﴿٣٢﴾ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ
إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَن قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهِ

سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّي الْقَتْلِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ۝ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِىَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۠ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْــــُٔـوْلًا ۝ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ

जिसको चाहे तंग कर देता है। (सब चीज़ों पर उसी का क़ब्ज़ा है) वह अपने बन्दों के हाल से ख़ूब ख़बरदार है और देखता है। ३१. और (सुनो) अपनी औलाद को ग़रीबी के डर से क़त्ल मत करो, हम (अल्लाह) ही तो उन को और तुम को रिज़्क़ देते हैं। (याद रखो कि) उन का क़त्ल भी बहुत ही बड़ा गुनाह है[९]। ३२. और (सुनो) ज़िना (और बदकारी और लिवातत वग़ैरह से ऐसे दूर रहो कि उस) के नज़दीक भी मत जाया करो, क्योंकि यह बेहयाई और बहुत बुरा रास्ता है[१०]। ३३. और किसी जान को जिसका मारना अल्लाह ने हराम किया है (बिना शरई हुक्म के) मत मारा करो, (क्योंकि) जो कोई मज़लूम और बेगुनाह मारा जाए, हम उसके वारिसों के हक़ में डिग्री देंगे। पस क़त्ल में जल्दी (और ज़्यादती) न करो (हाँ) इसमें शक नहीं कि (इस्लामी सरकार की तरफ़ से) वह मदद का हक़दार है[११]। ३४. और यतीम के माल के पास भी मत जाना, लेकिन जो तरीक़ा (यतीम के हक़ में) बेहतर (और फ़ायदेमंद) हो। (यह रोक) तब तक है जब तक कि वह अपनी जवानी को न पहुंच जाएं। और वादों को पूरा किया करो, कुछ शक नहीं कि वादों के बारे में सवाल होगा (कि पूरा क्यों नहीं किया) ३५. और जब तुम नाप कर लेने-देने लगो तो पूरा-पूरा दिया करो और (जब वज़न कर के देने लगो तो) सीधी तराज़ू से वज़न किया करो

....

९. शाने-नुज़ूलः- अरब के लोग लड़कियों के पैदा होने पर बड़े दुःखी होते और मौक़ा मिलने पर क़त्ल भी कर देते थे, ऐसे ही लोगों के हक़ में यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

१०. 'ज़िना बहुत बुरा अमल है इसलिये कि इस से हसब-नसब गड्मड् हो जाता है और लड़ाई-झगड़े उठ खड़े होते हैं। फिर इस प्रकार से बुरी राह निकलती है (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)

११. कुरआन मजीद ने नाहक़ क़त्ल को सब से बड़ा गुनाह कहा है। शिर्क के बाद अगर कोई बुराई हो सकती है तो वह यही है। चुनान्चे सूरः "फ़ुर्क़ान" में शिर्क के बाद इसी का ज़िक्र है "जो लोग अल्लाह के अलावा ग़ैर को नहीं पुकारते हैं और जिन जानों को अल्लाह ने हराम क़रार दिया है उन्हें नाहक़ नहीं क़त्ल करते हैं"। (सूरः फ़ुर्क़ान-६८)

الْمُسْتَقِيْمِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ۝ وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰۗىِٕكَ كَانَ عَنْهُ مَسْــــُٔـوْلًا ۝ وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ۝ كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ

यह (रास्ता तुम्हारे हक़ में) बहुत बेहतर है और इस का अन्जाम भी अच्छा है ३६ और ऐसी बातों के पीछे मत पड़ा करो जिन के बारे तुम्हें निश्चित तौर पर इल्म न हो (सुनो!) कान, आँख और दिल (वग़ैरह) हर एक अंग से प्रश्न हो गा[१२] (कि उस को कहाँ-कहाँ तुम ने इस्तेमाल किया था) ३७. और (सुनो!) ज़मीन पर (अकड़-अकड़ कर) अभिमानी चाल न चला करो[१३] (ऐसी

مَكْرُوْهًا ﴿٣٨﴾ ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ؕ
وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِىْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا
مَّدْحُوْرًا ﴿٣٩﴾ اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ مِنَ
الْمَلٰٓئِكَةِ اِنَاثًا ؕ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ﴿٤٠﴾ وَلَقَدْ
صَرَّفْنَا فِىْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ؕ وَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا
نُفُوْرًا ﴿٤١﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗٓ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا
لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِى الْعَرْشِ سَبِيْلًا ﴿٤٢﴾ سُبْحٰنَهٗ وَ
تَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا ﴿٤٣﴾ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ

अभिमानी चाल से) तुम ज़मीन को न तो फ़ाड़ सको गे और न लम्बाई में पर्वत के बराबर हो जाओ गे ३८. (ऐसे नापसन्दीदा काम छोड़ दो) इन सब की बुराई तुम्हारे पर्वरदिगार को नापसन्द है। ३९. (ऐ रसूल! यह बातें अक़्ल और हिक्मत की हैं जो तेरा पर्वरदिगार तेरी तरफ़ वह्यि के ज़रीआ भेजता है। और अल्लाह के साथ कोई और माबूद न बनाना वर्ना शर्मिन्दा और ज़लील हो कर तुम जहन्नम में डाले जाओ गे ४०. क्या तुम्हारे पर्वरदिगार ने तुम को बेटों के लिये चुना है और स्वयँ..अपने लिये फ़रिश्तों में से बेटियाँ बनाई हैं। इस में संदेह नहीं कि तुम बहुत ही बड़ी (बिहूदा बात) कहते हो ४१ और कुरआन में हर एक हिदायत की बात को खोल-खोल कर हम (अल्लाह) ने बतलाया ताकि यह (किसी प्रकार) समझें। मगर उन को नफ़रत ही ज़्यादा हुयी है। ४२. (ऐ नबी!) तू कह कि अगर अल्लाह के साथ (यानी उस के होते हुये) और माबूद भी होते जैसे यह (मुश्रिक) कहते हैं तो तुरन्त अल्लाह मालिकुल-मुल्क की तरफ़ चढ़ने की राह निकालते। ४३. (सुनो!) वह (ऐसे हालात से) पाक है और उन की बेहूदा बातों से बहुत बुलन्द है।

....

१२. यानी बिला छान-बीन के बात मुख से मत निकालना और न ही हर प्रकार की बातों पर कान धरना। बल्कि अपनी आँख-कान और दिल व दिमाग़ से काम ले कर और भरसक चेष्टा कर के कोई बात मुंह से निकालना या अ़मल में लाना। आजकल समाज में विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ प्रचलित हैं जैसे, झूठी गवाही देना, झूठा इल्ज़ाम और आरोप लगाना, बिना छान-बीन किये हुये केवल सुन कर ही किसी के पीछे पड़ जाना और उस से दुश्मनी कर लेना, बाप-दादाओं की रस्मों की तक़्लीद को जायज़ साबित करने के लिये शरीअ़त को बदल देना, बिला देखी या सुनी बातों को देखी और सुनी हुयी बताना, जिस बात का ज़िल्म न हो उस के बारे में जानकारी होने का झूठा दावा करना, यह तमाम शक्लें भी इस आयत के तहत दाख़िल हैं और नाजायज़ हैं। इन सब के बारे में भी सख़्त पूछ-ताछ हो गी (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

१३. हदीस में है कि एक शख़्स चादर को घसीटता हुआ तकब्बुर के साथ चला जा रहा था जिस को अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन में धंसा दिया जो आज भी धंसता ही जा रहा है। कुरआन मजीद में क़ारून का क़िस्सा ज़िक्र है कि तकब्बुर के नतीजे में महल समेत वह ज़मीन में धंसा दिया गया। एक हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआ़ला झुकने वालों को बुलन्द करता है। वह आदमी स्वयँ को ज़लील समझता है लेकिन लोगों की आँखों में ऊँचे मर्तबे का होता है। और तकब्बुर करने वालों को अल्लाह ज़लील करता है। वह स्वँय को बड़ा समझता है लेकिन लोग उसे ज़लील समझते हैं। यहाँ तक कि उसे सुवर और कुत्ते से भी अधिक ज़लील समझते हैं। एक और हदीस में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जब मेरी उम्मत तकब्बुर की चाल चलने लगे गी और फ़ारसियों और रूमियों को अपना ख़ादिम बना लेगी तो अल्लाह तआ़ला एक को एक पर मुसल्लत कर दे गा"।

'तेरा रब वह्यि के ज़रीआ़ भेजता है' यानी जिन अच्छे कामों के करने का हुक्म दिया है और जिन बुरे

कामों से रोका है यह सारी बातें हम ने वह्यि के ज़रीआ नाज़िल की हैं। ताकि तू लोगों को हुक्म दे दे कि मेरे साथ किसी को शरीक न ठहरायें, वर्ना एक समय ऐसा भी आने वाला है कि आदमी स्वँय अपने आप को मलामत करे गा और अल्लाह की तरफ़ से भी मलामत हो गी, बल्कि समस्त मख़्लूक़ की तरफ़ से भी मलामत हो गी। और हर प्रकार की नेमत से दूर कर दिया जाये गा। इस आयत में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्लम की मारिफ़त (के द्धारा) पूरी उम्मत से ख़िताब है, क्यों कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्लम ख़ताओं से सुरक्षित हैं (मुहम्मदी)

السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ
بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ
حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿۴۴﴾ وَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ
وَبَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ﴿۴۵﴾ وَّ
جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ
وَقْرًا ؕ وَاِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰٓى
اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ﴿۴۶﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖٓ اِذْ
يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ وَاِذْ هُمْ نَجْوٰٓى اِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ
اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿۴۷﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا
لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿۴۸﴾ وَ
قَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ
خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿۴۹﴾ قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ﴿۵۰﴾ اَوْ
خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا ؕ

४४. (वह तो ऐसी तारीफ़ के लाइक़ ज़ात है कि) सातों आसमानों और ज़मीन और जो उन में रहते हैं उस को पाकी से याद करते हैं (बनी आदम ही नहीं) दुनिया की जितनी वस्तुएँ हैं सब उस की तारीफ़ के गीत गाती हैं मगर तुम उन की तस्बीह नहीं समझ सकते। वह बड़ा ही बुर्दबार (सहनशील) और बख़्शने वाला है[१४] ४५. और जब तू (ऐ रसूल!) कुरआन पढ़ता है तो हम तेरे दर्मियान और आख़िरत के इन्कारियों के दर्मियान एक पोशीदा पर्दा कर देते हैं (जो लोगों की आँखों से छुपा होता है) ४६. और हम अल्लाह उन के दिलों पर पर्दे और कानों में एक प्रकार का बोझ डाल देते हैं (मगर वही जो देखने में नहीं आता) ताकि वह कुरआन को न समझें। और जब तू कुरआन में अपने अकेले रब को याद करता है तो नफ़रत से पीठ फेर कर भाग जाते हैं ४७. (मगर याद रखें जो कुछ यह करते हैं) हम भली-भाँति जानते हैं जिस निय्यत से (तेरे पास आ कर) कलाम सुनते हैं, जिस समय यह तेरी तरफ़ कान लगाते हैं और जिस समय यह मश्वरे (और काना फूसियाँ) करते हैं यानी जिस समय ज़ालिम कहते हैं कि तुम तो एक जादू किये हुये आदमी के पीछे चलते हो ४८. देख तो किस प्रकार तेरे बारे में (बिहूदा) उदाहरण देते हैं सो यह ऐसे गुमराह हुये हैं कि सीधी राह नहीं पा सकें गे[१५] ४९. और कहते हैं कि क्या जब मर कर हम हड्डियाँ और रेज़े-रेज़े हो जायें गे तो हम फिर किसी नई पैदाइश में उठाये जायें गे? ५०. तू कह! तुम चाहे पत्थर बन जाओ या लोहा ५१. या कोई और वस्तु जो तुम्हारे ख़्याल में बहुत बड़ी हो[१६] (तब भी वह तुम को पुन: जीवित ही करे गा) पस (यह उत्तर सुन कर) कहें गे कि भला कौन हम को पुन: जीवित करे गा?

....

१४. तबरानी की एक रिवायत के अनुसार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को "मुक़ामे इब्राहीम" और ज़म्ज़म

के कुँऐं के बीच से हज़रत जिब्रील और मीकाईल बैतुल मुक़द्दस (मस्जिदे अक़्सा) तक मेराज की रात में ले गये। जिब्रील आप के दायें और मीकाईल आप के बायें थे। यह दोनों आप को उड़ा कर सातों आसमानों तक ले गये। वहाँ से लौटने के पश्चात् आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं ने बुलन्द आसमानों में बहुत सारी तस्बीहों के साथ यह तस्बीह भी सुनी: सब्ब-हतिस्समा वातुल् ऊला+मन् ज़िल महा-बति मुश्फ़िक़ातु लिज़िल् उलुव्वि बिमा अ़ला+ सुब्-हा-नहुल् उ-लल् अअ़्ला+सुब्हा-नहू व-तआ़ला (मख़्लूक़ में से हर वस्तु उस की पाकी और तारीफ़ बयान करती है लेकिन ऐ लोगो! तुम उन की तस्बीह को नहीं समझते हो। इस लिये कि वह तुम्हारी भाषा में तस्बीह नहीं करते। तमाम मख़्लूक़ उस की हम्द व सना बयान करती हैं)

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है वह फ़रमाते हैं कि खाना खाते समय खाने की तस्बीह को भी हम सुनते थे। (बुख़ारी) हज़रत अबू ज़र रज़ि० रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी मुट्ठी में चन्द कंकरियाँ लीं तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सुना कि वह शहद की मक्खी की भंभनाहट की तरह अल्लाह की तस्बीह फ़रमा रही हैं। इसी प्रकार हज़रत अबू बक्र, उमर और उसमान रज़ि० के भी बारे में आता है कि उन के हाथों में भी कंकरियाँ तस्बीह पढ़ा करती थीं। यह और इस प्रकार की और भी हदीसें हैं जो "सहीह" और "मुस्नद" की किताबों में मौजूद हैं। एक और रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कुछ लोगों को अपनी सवारी के ऊपर खड़े देखा तो फ़रमाया: "आराम के साथ बैठ कर सवारी करो और फिर आराम के साथ छोड़ दिया करो, रास्तों और बाज़ारों में लोगों से बातें करते समय उन सवारियों को कुर्सियाँ न बना लिया करो। ग़ौर से सुन लो! बहुत सी सवारियाँ अपने सवारों से भी अधिक अल्लाह का ज़िक्र करने वाली और उन से अफ़्ज़ल होती हैं"। (अहमद) एक रिवायत में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मेंडक को मारने से मना फ़रमाया है इस लिये कि उन का बोलना अल्लाह की पाकी बयान करना है (नसई)

एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: 'लाइला-ह इल्लल्लाह' का कलिमा कह लेने के बाद ही अल्लाह नेकी कुबूल करता है। 'अल्-हम्दु लिल्लाह' यह शुक्र का कलिमा है। इस कलिमे को न पढ़ने वाला नाशुक्रा होता है। 'अल्लाहु अक्बर' का कलिमा ज़मीन व आकाश को नेकियों से भर देता है। 'सुब्हा-नल्लाह' का कलिमा मख़्लूक़ की तस्बीह है। अल्लाह तआ़ला ने किसी भी मख़्लूक़ को नमाज़ और तस्बीह का इक़रार लिये बग़ैर नहीं छोड़ा। हज़रत नूह अ़लै० ने वफ़ात के समय अपने बच्चों को नसीहत फ़रमाई थी कि "लाइला-ह इल्लल्लाह, सुब्हानल्लाहि वबिहम्दिही" अधिक से अधिक पढ़ा करो। यह वह मुबारक तस्बीह है जो वज़न में ज़मीन और आसमान से भी भारी है और इस के पढ़ते रहने से मख़्लूक़ को रोज़ी दी जाती है (इब्ने कसीर उर्दू)

१५. सूरः "तब्बत यदा" जब नाज़िल हुयी तो अबू लहब की पत्नी उम्मे जमील (जो कानी थी-याद रहे कि यह हज़रत अबू सुफ़यान की सगी बहन है-ख़ालिद) बौखला गयी और बक-बक करते हुये कहने लगी कि हम इस शख़्स को नबी नहीं मानते और न ही इस के दीन को पसन्द करते हैं। उस के हाथ में एक धार दार पत्थर भी था। अबू बक्र ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा कि वह पत्थर लिये आप की तलाश में आ रही है। आप ने फ़रमाया चिन्ता न करो वह मुझे देख ही न पाये गी, और आप ने यह आयत तिलावत फ़रमाई। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० फ़रमाते हैं कि वह आ कर मुझे धमकाने लगी कि मैं ने सुना है तुम्हारे नबी मेरी बुराइयाँ करते फिरते हैं? उन्हों ने उत्तर दिया कि ऐसी कोई बात नहीं है। फिर वह यह बकती और बड़बड़ाती हुयी लौट गयी कि तमाम कुरैश के लोग जानते हैं कि मैं उन के सरदार की बेटी हूँ (इब्ने कसीर)

१६. इस आयत के मुख़ातब वह लोग हैं जिन का विश्वास था कि हम पुन: जीवित नहीं किये जायें गे। उन को अल्लाह ने चेतावनी देते हुये फ़रमाया कि तुम चाहे पत्थर बन जाओ या लोहा, या जो भी तुम्हारी इच्छा हो बन जाओ, मगर मैं तुम्हें अवश्य ही पुन: जीवित करूँ गा और क़ियामत के दिन अपने सामने ला खड़ा करूँ गा।

قُلِ الَّذِىْ فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُوْنَ اِلَيْكَ
رُءُوْسَهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ ؕ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ
قَرِيْبًا ۝ يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ وَتَظُنُّوْنَ
اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ وَقُلْ لِّعِبَادِىْ يَقُوْلُوا الَّتِىْ
هِىَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ
كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ۝ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ؕ
اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ؕ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ
عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ۝ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ؕ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰى بَعْضٍ وَّ
اٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ۝ قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ
دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ۝
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ
الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ

तू कह कि वही अल्लाह जिस ने तुम्हें पहली मर्तबा पैदा किया। फिर तेरी ओर सर झुका कर कहें गे कि (भला वह दिन) कब हो गा (जो तू कहता है) तू कह कि क्या तअ़ज्जुब कि निकट ही हो (मुझे उस की तिथि तो मालूम नहीं अल्बत्ता इतना बतलाता हूँ कि) ५२. जिस दिन वह तुम्हें (जीवित करने को) बुलाये गा तो तुम उस की प्रशन्सा करते हुये आदेश का पालन करो गे और तुम (उस समय) समझो गे कि (दुनिया में) बहुत थोड़े समय ठहरे थे ५३. और मेरे नेक बन्दों को कह कि (मुख़ालिफ़ों से बहस करते हुये) बहुत ही नेक बात कहा करें[१७] क्यों कि (सख़्ती से बात करने से) शैतान उन के दर्मियान फ़साद डलवा देगा (फिर जो लाभ उन्हें पहुंचाना उद्देश्य है वह हाथ से जाता रहे गा) इस लिये कि शैतान इन्सान का खुल्लम-खुल्ला दुश्मन है ५४. तुम्हारा पर्वरदिगार तुम को खूब जानता है। वह अगर चाहे तो तुम पर रहम फ़रमा दे और अगर चाहे तो अ़ज़ाब में डाल दे (मगर वह ना हक़ अत्याचार नहीं करता) और हम ने तुझ को उन पर ज़िम्मे-दार ठहरा कर नहीं भेजा ५५. और तुम्हारा पर्वरदिगार तमाम आसमानों और ज़मीन वालों को खूब जानता है[१८] (कि हम ने बहुत से नबी भेजे) और हम ने बाज़ नबिय्यों को बाज़ पर बुज़ुर्गी (भी) दी है और दावूद को ज़बूर अ़ता की। (मगर उन में भी कोई बन्दों की हाजत में दख़लअन्दाज़ी {हस्तक्षेप} नहीं कर सकता) ५६. तू उन से कह कि अल्लाह के अ़लावा जिन लोगों को तुम अधिकार वाले जानते हो उन को पुकारो फिर (देखो कि वह तुम्हें क्या देते हैं। याद रखो!) वह तुम से कष्ट दूर न कर सकें गे और न फेर सकेंगे (बल्कि) ५७. जिन लोगों को यह (मुशिरक, यहूदी और नसारा) पुकारते हैं वह तो स्वयँ अपने पर्वरदिगार (की इ़बादत करने से उस) के पास नज़दीकी चाहते थे और (इसी फ़िक्र में रहते थे) कि कौन अधिक क़रीबी है और उसी की रहमत की आशा रखते थे

....

१७. शाने नुज़ूल:- इमाम कलबी फ़रमाते हैं कि सहाबा ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से शिकायत की कि मुश्रिक और काफ़िर हम लोगों से सख़्त लह्जा में बात-चीत करते हैं, उस समय यह आयत नाज़िल हुयी कि तुम उन से नर्मी के साथ बात-चीत करो। सुब्हानल्लाह! यह वह अख़्लाक़ी शिक्षा है जिस से दीन और दुनिया दोनों का लाभ होता है। इमाम हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि जब कोई सख़्त बात कहे तो उस के उत्तर में तुम ➲

➲"यर-हमु-कल्लाह" या "यग़फिरूल्लाहु-ल-क" कहा करो। इमाम सीरीन फ़रमाते हैं कि उत्तर में सब से अच्छा कलिमा "लाइला-ह इल्लल्लाह" कह दिया करो, यह सुन कर सख़्ती से बात करने वाला स्वयँ शर्मिन्दा हो जाये गा, बल्कि अपने अपराध को भी स्वीकार कर ले गा। इब्राहीम बिन अदहम रह० कहीं जा रहे थे कि राह में एक सवार ने उन्हें कोई फ़क़ीर (भीखमंगा) समझ कर पूछ लिया कि बाबा आप का घर कहाँ है? उन्हों ने क़ब्रस्तान की तरफ़ इशारा करते हुये कहा कि वहाँ। सवार ने आगे चल कर देखा तो क़ब्रें नज़र आयीं घर कोई न था। मारे गुस्सा के वहाँ से लौटा और इन्हें कोड़े से पीटना शुरू कर दिया। अदहम रह० ने भी अपना सर झुका दिया और कहने लगे इस सर को ख़ूब पीटो, इस ने बहुत समय तक अल्लाह की अवज्ञा की है सवार यह गुफ़्तगू सुन कर काँप गया और उन के पैरों पर गिर कर क्षमा माँगने लगा (वहीदी)

१८. शाने-नुज़ूल:- मक्का के काफ़िरों को इस बात पर बड़ा आश्चर्य था कि अल्लाह तआला जैसे पूरे संसार के शासक को अपनी तमाम मख़्लूक़ में यही मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) जैसा अनाथ ही पसन्द आया था जिस का पालन-पोशण उस के चचा ने किया और फिर उस पर ईमान लाने वाले भी मक्का के कंगले और नंगे भूखे, मुहताज, फ़क़ीर हैं, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। इस में अल्लाह तआ़ला ने उस की बेवकूफ़ी का ज़िक्र करते हुये फ़रमाया कि दुनिया की धन-दौलत एक हक़ीर चीज़ है जो हर दम आनी-जानी है। इस के मुक़ाबले में अ़िज़्ज़त और शराफ़त एक ऐसी ख़ूबी है जो दुनिया के माल व दौलत से कहीं बढ़ कर है। फिर अल्लाह तआ़ला की यह कुदरत है कि जिस को लोग हक़ीर और ज़लील समझते हैं, उसे वह ऊँचा स्थान देता है और उसी को तख़्त व ताज का मालिक बना देता है। जैसे कि इन्जील मुक़द्दस में है कि जिस पत्थर को लोगों ने बुरा समझ कर फेंक दिया था वह महल के कोने में लगाया गया। हज़रत दावूद अ़लै० अपने भाईयों में सब से नाटे क़द के और हक़ीर थे, यहाँ तक कि माँ-बाप की नज़रों में भी उन का कोई विशेष महत्व न था। मगर अल्लाह तआ़ला उन के मर्तबा व मुक़ाम को पहचानता था, चुनान्चे उन्हें नबी बना कर न केवल भाइयों पर, बल्कि तमाम जहान के लोगों पर फ़ज़ीलत अ़ता की। बिल्कुल यही हाल नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का है। तो जब तुम लोग हज़रत दावूद अ़लै० के मर्तबे पर शक नहीं करते हो तो फिर मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मर्तबे पर क्यों संदेह है।

"जामिउल बयान" में है कि इस आयत से मालूम हुआ कि अन्तिम संदेष्टा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तमाम संदेष्टओं में सब से अफ़ज़ल हैं और उन पर उतरी किताब कुरआन मजीद सब किताबों से अफ़ज़ल है। एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: एक संदेष्टा को दूसरे संदेष्टा पर फ़ज़ीलत नहीं। इस हदीस का मतलब यह है कि तअ़स्सुब की बुनियाद पर ऐसा न करो ताकि एक दूसरे की तौहीन न हो वर्ना इस बात पर तो सभी का इत्तिफ़ाक़ है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम समस्त संदेष्टाओं से अफ़ज़ल हैं, इस के बाद हज़रत इब्राहीम, फिर हज़रत मूसा और फिर हज़रत अ़ीसा अ़लै।

आयत न० ५६. में उन मुश्रिकों का रद्द है जो बुतों की पूजा-पाठ यह सोच कर करते थे कि यह फ़रिश्तों की मूर्तियाँ हैं। या उन अहले किताब की तरह थे जो हज़रत अ़ीसा या हज़रत मरयम की तरह उन को भी अल्लाह की ख़ुदाई में शरीक ठहराते थे। यहाँ पर अ़रब के वह मुशरिक भी मुराद हैं जो जिन्नों को बहुत बड़ा मान कर उन की पूजा किया करते थे। "जामिउल बयान" में है कि जब मक्का के मुश्रिक सूखाकाल की चपेट में आये तो उन्हों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से आ कर अनुरोध किया, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। (वहीदी)

عَذَابَهُ ۚ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ۝ وَإِن مِّن
قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا

और उस के अज़ाब से डरते थे। इस में शक नहीं कि तेरे पर्वरदिगार का अज़ाब डरने की चीज़ है ५८. और (दुनिया में) जो कोई बस्ती है➲

عَذَابًا شَدِيدًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ﴿٥٨﴾
وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَنْ كَذَّبَ بِهَا
الْأَوَّلُونَ ۚ وَآتَيْنَا ثَمُودَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوا بِهَا ۚ
وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَخْوِيفًا ﴿٥٩﴾ وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ
رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ ۚ وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ
إِلَّا فِتْنَةً لِلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ ۚ
وَنُخَوِّفُهُمْ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ﴿٦٠﴾ وَإِذْ قُلْنَا
لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ قَالَ
أَأَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِينًا ﴿٦١﴾ قَالَ أَرَأَيْتَكَ هَٰذَا الَّذِي
كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَئِنْ أَخَّرْتَنِ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَأَحْتَنِكَنَّ
ذُرِّيَّتَهُ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٦٢﴾ قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ

उस➲ को हम अवश्य ही क़ियामत से पहले तबाह या सख़्त अ़ज़ाब में मुबतला करने वाले हैं (जैसे उन के आमाल हों गे वैसा उन से बर्ताव किया जाये गा) यह (अल्लाह की) किताब में लिखा हुआ है[१९] ५९. और हमें (इस प्रकार के) चमत्कार भेजने में कोई चीज़ रूकावट नहीं सिवाए इस के कि पहले के लोगों ने भी (इन जैसे फ़र्माइशी चमत्कारों को) न माना था[२०]। और हम ने समूद की क़ौम को (हज़रत स्वालेह के ज़रीआ़) ऊँटनी का खुला निशान दिया (जो उस की दुआ़ से पैदा हुयी[२१]) फिर भी उन्हों ने उस से इन्कार ही किया। और हम निशान केवल डराने को भेजा करते हैं[२२] ६०. और जब हम ने तुझ से कहा था कि हमने तमाम लोगों को घेर रखा है[२३] (तू तसल्ली रख, अन्त में तेरी ही फ़तह होगी) और तेरी आखों देखी घटना को[२४] उन लोगों के हक़ में हम ने गुमराही का सबब बनाया (यह लोग उस से दुश्मनी से पेश आये) और वह नापसन्दीदा (थूहड़ का) दरख़्त जिस का क़ुरआन में बयान है उन के हक़ में गुमराही साबित हुआ[२५] और हम उन को डराते हैं मगर वह उन को गुमराही और सरकशी में ही ज्यादा करता है ६१. जब हम ने फ़रिश्तों से कहा था कि आदम को सज्दा करो तो उन सब ने सज्दा किया मगर इबलीस ने इन्कार किया। वह बोला कि क्या मैं ऐसे को सज्दा करूँ जिसे तू ने मिट्टी से बनाया है? (उस ने यह भी) ६२. कहा कि देखिए! यही (आदम) जिस को आप ने मुझ पर फ़ज़ीलत दी है अगर मुझे क़ियामत तक ज़िन्दगी दो तो मैं चन्द लोगों को छोड़ कर उस की समस्त औलाद को बर्बाद कर दूँ[२६] ६३. अल्लाह ने फ़रमाया: अच्छा तू जा (और अपना तमाम ज़ोर लगा ले) सो जो उन में से तेरा ताबेअ़ (अनुयायी) हो गा

....

१९. 'किताबे इलाही में लिखा है' और उस के अ़िल्म में ऐसा ही आ चुका है। इसलिय वह होश संभाल लें और बार-बार शरारती प्रश्न न किया करें (१५ जनवरी १९३४ का भूकंप जो बिहार में आया था वह भी इस भविष्यवाणी में दाख़िल है) यह जो बार-बार चमत्कार देखने के बाद भी पुन: चमत्कार माँगते हैं और भांति-भांति के प्रश्न करते हैं। कभी कहते हैं कि तू सफ़ा-मर्वा दोनों पर्वतों को सोना बना दे......... (सनाई)

२०. 'चमत्कार को न माना' जिस के कारण वह हलाक कर दिये गये। मगर चूंकि इन मौजूद लोगों से या इन की औलाद से हमें अभी इस्लाम की ख़िदमत लेनी है, इसलिये उन के लाख मुतालबे और माँगने पर भी हम चमत्कार नहीं भेजते हैं, वर्ना पहले की उम्मतों ने जब भी मुतालबा किया तुरन्त चमत्कार दिखाए (सनाई)➲

➲२१. हज़रत स्वालेह की ऊँटनी को खुली निशानी (चमत्कार) तो कहा गया है, मगर यह कहीं नहीं साबित है कि वह ऊँटनी कहाँ और किस प्रकार पैदा हुयी। जिन लोगों का कहना है कि वह पहाड़ी के पत्थर से निकाली गयी थी, यह केवल एक ख़्याल है जो लोगों में प्रचलित हो गया है, हदीस से इस का कोई सबूत नहीं मिलता है। हाँ, यह बात अपने स्थान पर निश्चित है कि अवश्य ही वह ऊँटनी अ़जीब-ग़रीब ढंग से पैदा हुयी, या सामने आयी हो गी जो नुबुव्वत के लिये स्पष्ट दलील साबित हुयी थी (सनाई)

२२. 'डराने को भेजा करते थे' जैसे फ़िऔ़न की बर्बादी के लिये हज़रत मूसा अ़लै० की तरफ़ से कई चमत्कार प्रकट हुये। लेकिन हर बा़र डर कर वादा कर लिया करता था कि अगर अब की बार तुम तक्लीफ़ को दूर कर दो तो हम तुम पर ईमान ले आयें गे। लेकिन जब तक्लीफ़ दूर हो जाती तो तुरन्त मुकर जाता, लेकिन अन्त में हलाक ही हुआ। इन मक्का के मुन्किरों को जो हम केवल अ़ज़ाब की धमकी ही दे रहे हैं और अ़ज़ाब नहीं भेज रहे हैं, महज़ इस लिये कि उन को अभी बर्बाद नहीं करना है, बल्कि उन से और उन की नस्ल से अभी दीन की ख़िदमत लेनी है। क्या तुम्हे ख़बर नहीं है? जब हम ने........................ (सनाई)

२३. यहाँ पर 'रब्ब-क' का तर्जुमा "तेरे रबने" हो गा। लेकिन उर्दू भाषा में ऐसा इस्तेमाल नहीं होता इस लिये यहाँ मुतकल्लिम (दितीय पुरूष) का तजुर्मा "हम ने" किया है (सनाई)

२४. 'तेरे आंखों देखे वाक़िआ़ को' इस से मुराद वह वाक़िए (घटनायें) हैं जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेराज की रात आसमानों में देखे थे। (सनाई)

२५. 'गुमराही ही साबित हुआ' यानी कुरआन में तो उस का बयान नसीहत हासिल करने के लिये था, मगर उल्टा उस का मज़ाक़ उड़ाने लगे। कोई कहता कि यह कैसे संभव है कि आग में दरख़्त रहें गे। तो बजाए नसीहत हासिल करने के जब मज़ाक़ उड़ाने लगे तो यही चीज़ उन क लिये गुमराही का कारण बन गयी। ऐ नबी! आप लाख उन की हिदायत के लिये कोशिश कर लें और हम भी उन को अ़ज़ाब की धमकी देते रहें, मगर तुम्हारा और हमारा डराना उन की सरकशी में और इज़ाफ़ा ही करे गा। फिर यह उन की गुमराही नहीं तो और क्या है? ऐ नबी! तुम्हारा कुछ भी नुक़्सान न करें गे। चाहे वह दुश्मनी करें या हसद, आप का कुछ भी बिगड़ने वाला नही।

२६. 'तमाम औलाद को बर्बाद कर दूँ' क्योंकि मैं उन की कमज़ोरियों से परिचित हूँ और उन्ही कमज़ोरियों में उन्हें फंसा दूँ गा और वह स्वयँ ही गुमराह हो जायें गे। जिन की नफ़्सानी ख़ाहिशें अलग-अलग हों, जिन की तमन्नाएँ मुख़्तलिफ़ हों, जिन के तक़ाज़े जुदा-जुदा हों, तो ऐसे बेपर के बटेरों को जाल में फंसाना क्या मुश्किल है (सनाई)

فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ۝ وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِى الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ۭ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ۝ اِنَّ عِبَادِىْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ۭ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ۝ رَبُّكُمُ الَّذِىْ يُزْجِىْ لَكُمُ الْفُلْكَ فِى الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ۝ وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِى الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ

तो तुम सब का ठिकाना जहन्नम हो गा जो तुम्हारी काफ़ी-वाफ़ी {भर पूर} सज़ा हो गी (जो तेरा ज़ोर है लगा ले) ६४. सो उन में से जिस पर तेरा ज़ोर है (चला ले) अपनी आवाज़ से बहका ले और अपने सवार-प्यादे उन पर दौड़ा ले और उन के मालों और औलाद में (भी) शरीक हो ले[२६] और उन सब को वादे सुना। और शैतान जो लोगों को वादे देता है सरासर धोका है। ६५. मेरे नेक बन्दों पर तेरा ज़ोर हर्गिज़ न चले गा। तुम्हारा पर्वरदिगार➲

تَدْعُوْنَ اِلَّآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ ۚ وَ
كَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ﴿٦٧﴾ اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ
الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ
وَكِيْلًا ﴿٦٨﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً اُخْرٰى
فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ
ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ﴿٦٩﴾ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا

बिगड़ी बनाने वाला काफ़ी है ६६. (सुनो! अ़िबादत के लायक़) तुम्हारा पर्वरदिगार वह है जो तुम्हारे लिये समुद्र में बेड़े चलाता है ताकि तुम (तिजारत के ज़रीअ़ा) उस का फ़ज़्ल तलाश करो[२८] । कुछ संदेह नहीं कि वह तुम्हारे हाल पर बड़ा ही मेहरबान है ६७. और जब तुम को समुद्र में कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो उस अल्लाह के अ़लावा जिन (बनावटी) माबूदों को तुम पुकारते हो सब को भूल जाते हो फिर जब वह तुम को खुश्की पर ले आता है तो तुम मुंह फेर लेते हो। और इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा है[२९] ६८. क्या तुम बेख़ौफ़ हो जाते हो कि तुम को खुश्की के कनारे पर धंसा दे या तेज़ हवा तुम पर चलादे फिर तुम अपने लिये कोई सहायक (जो तुम को उन अ़ज़ाबों से बचा सके) हगिर्ज़ न पाओ गे ६९. या क्या तुम इस बात से भी संतुष्ट हो जाते हो कि एक मर्तबा तुम को फिर उसी (दरिया) में ले जाये तो तुम पर एक तेज़ हवा-झक्कड़ ही भेज कर तुम्हारी (निमतों की) नाशुक्री के बदले में तुम को ग़र्क़ कर दे फिर तुम अपने लिये हमारे पर कोई पीछा करने वाला न पाओ गे ७०. और हम ने आदम की औलाद को बड़ी अ़िज़्ज़त दी है

....

२७. यानी जान-माल की भलाई-बुराई में दूसरों की तरफ़ निस्बत करा ले। यानी यह कहलवा ले कि यह फ़ाइदा मुझे फ़लाँ पीर बाबा ने पहुंचाया है, या यह हानि मुझे फ़लाँ क़ब्र ने नाराज़ हो कर पहुंचायी है। यह लड़का फ़लाँ बुज़ुर्ग ने हमें दिया। ऐ इबलीस तू यह सब वादे करा और हम नबियों के ज़रीअ़ा यह कहलावें गे कि शैतान जो वादे करता है वह सरासर धोका हैं। जो कुछ पीरों-बुज़ुर्गों और क़ब्र वालों का हवाला दे कर काम करवाता है सब ग़लत है। (सनाई)

२८. यानी समुन्दरी सफ़र के ज़रीअ़ा तिजारत कर के फ़ाइदा उठाओ और आराम की ज़िन्दगी गुज़ारो। यह अल्लाह की कुदरत है कि कुछ वस्तुयें इस मुल्क में हैं तो उस मुल्क में नहीं हैं और कुछ उस मुल्क में हैं तो इस मुल्क में नहीं हैं। ऐसा अल्लाह ने इस लिये किया है कि इस मुल्क के लोग उस मुल्क के लोगों से लाभ उठायें और उस मुल्क के लोग इस मुल्क से (सनाई)

२९. जब भूमि पर क़दम पड़ जाते हैं और तूफ़ान से नजात मिल जाती है तो सब भूल जाते हैं और नाशुक्री करने लगते हैं। और जब तक तूफ़ान में घिरे रहते हैं तो बस खुदा याद आता है। मक्का के मुश्रिकों का यह अ़क़ीदा था कि अच्छे समय में तो अल्लाह को छोड़ कर देवी-देवताओं को पुकारते, उन से मदद चाहते थे और उन पर चढ़ावे चढ़ाते थे, लेकिन जब मुसीबत में फंस जाते तो सब को भूल कर अल्लाह ही को पुकारते और उसी की मदद चाहते थे।

आज कल के नाम के मुसलमान भी मक्का के मुश्रिकों से कुछ कम नहीं हैं, बल्कि एक जूती उन से आगे ही हैं। यह मुश्रिक मुसलमान मुसीबत में भी ग़ौस पाक, सालार बाबा, अली हैदर, दाता गंज बख़्श, ख़ाजा निज़ामुद्दीन ही को पुकारते हैं। अन्दाज़ा करें कि मक्का के मुश्रिकों से इन का शिर्क बढ़ा हुआ है या नहीं? (वहीदी)

بَنِيٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ۝ يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۭ بِاِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝ وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ۝ وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۖ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ۝ وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا ۝ اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيْرًا ۝ وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا

और हम उन को बढ़ कर (यानी खुश्की व तरी में) उठा ले जाते हैं[३०] और उन को पाकीज़ा नेमतों में से रोज़ी देते हैं और अपनी बहुत सी मख़्लूक़ पर हम ने उन को फ़ज़ीलत बख़्शी[३१] ७१. और जिस दिन हम तमाम इन्सानों को उन के पेशवाओं {धर्म गुरूओं} के नाम के साथ बुलायें गे[३२] फिर जिन लोगों को आमाल नामा {कर्म पत्र} उन के दायें हाथ में मिले गा वह {खुशी-खुशी} अपना आमाल नामा पढ़ेंगे और उन पर (किसी प्रकार) तनिक भर भी अत्याचार न होगा ७२. और जो कोई इस दुनिया में (बुरे कामों की वजह से) अन्धा हो रहा होगा सो वह आख़िरत में भी अन्धा होगा[३३] और बहुत दूर राह भटका हुआ होगा[३४] ७३. और तुझे हमारे उतारे हुये इस हुक्म से जो हम ने वह्यि के ज़रीआ तेरी तरफ़ भेजा है बिचलाने (डगमगाने) लगे थे ताकि तू हम पर किसी और हुक्म का इफ़्तरा (ईजाद)करे (तौहीद के स्थान पर शिर्क सिखाए) तो यह तुरन्त तुझ को अपना मित्र बना लेते ७४. और अगर हम तुझ को (तेरे नबुव्वत के नूर से) मज़बूत न रखते तो तू किसी क़दर थोड़ा-बहुत उन की ओर झुक जाता[३५] ७५. हम उसी समय तुझ को ज़िन्दगी और मौत में दोगुना अ़ज़ाब करते फिर तू हमारे सामने किसी को मददगार न पाता ७६. (उन की कोशिश तो इस नौबत तक पहुंची है कि) यह लोग इस कोशिश में हैं कि जैसे भी हो तुझे इस ज़मीन से उचाट कर के उस से निकाल दें (मगर याद रखें कि मक्का से तेरे निकलने की देर है कि) फिर यह लोग भी तेरे बाद बहुत ही थोड़ी मुद्दत ठहरें गे ७७. जिन रसूलों को हम ने तुझ से पहले भेजा है (उन का दस्तूर याद करो कि उन के निकलने पर क़ौम की ख़ैर न होती थी) और तू हमारे बर्ताव में रद्दो-बदल कभी न पाये गा

....

३०. इन्सान ने पानी और खुश्की की यात्रा कि लिये जितने भी साधन जुटाये हैं और भविष्य में जिन-जिन साधनों का अविश्कार हो गा, इस आयत में इन सब की तरफ़ इशारा है।

३१. 'फ़ज़ीतल दी है' जैसे कि उन की सूरत और शक्ल दूसरे जानवरों से अच्छी बनाई, उन के खाने-पीने के लिय अच्छी से अच्छी चीजें पैदा कीं, उन को सोचने-समझने, बोलने और अच्छे-बुरे में फ़र्क़ करने की तमीज़ दी, तमाम जानवरों को उन का ताबेअ़ बनाया और उन की हिदायत कि लिये संदेष्टा भेजा। एक हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क़ियामत के दिन मनुष्य से अधिक इ़ज़्ज़त और किसी की न होगी। लोगो

➲ने पूछा कि फ़रिश्तों की भी नहीं? आप ने फ़रमाया कि फ़रिश्ते तो चाँद-सूरज की तरह मजबूर हैं। एक दूसरी हदीस में फ़रमाया: फ़रिश्तों ने अल्लाह तआ़ला से पूछा कि तू ने इन्सानों को दुनिया की नेमतें दी हैं जिसे वह खाते-पीते हैं और हम को आख़िरत की नेमतें अ़ता फ़रमा इस लिये कि दिन-रात तेरी तस्बीह बयान करते हैं। अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्तों को उत्तर दिया कि सुनो! हम ने तुम्हें तो केवल "कुन" (होजा!) ही कह कर पैदा कर दिया, लेकिन आदम का पुतला तो अपने हाथ से मिट्टी गूंध कर बनाया, इसलिये तुम आदम के बराबर नहीं हो सकते।

दुनिया की तमाम मख़्लूक़ पर इन्सान की बड़ाई और बुज़ुर्गी तो मुसल्लम (प्रमाणित) है, लेकिन फ़रिश्तों के मुक़ाबले में? इस में इख़्तिलाफ़ है। लेकिन यह बात अपनी जगह तै है कि इन्सानों में अल्लाह के ख़ास बन्दे जैसे नबी और रसूल का मर्तबा बहरहाल फ़रिश्तों से ऊँचा है। मोतज़िल फ़िर्क़ा का कहना है कि फ़रिश्ते तमाम मख़्लूक़ से अफ़्ज़ल हैं यहाँ तक कि इन्सान से भी।

लेकिन इस मामले में झगड़ने की कोई आवश्यक्ता नहीं है। जो अल्लाह के निकट अफ़्ज़ल है वही अफ़्ज़ल है। (वहीदी)

३२. 'नाम के साथ पुकारें गे' ताकि उस दिन भी इ़ज़्ज़त पायें क़ियामत के दिन हर उम्मत अपने-अपने पेशवाओं के नाम पर बुलाई जाये गी। यहूदियों, अ़ीसाइयों और मुहम्मदियों को इस प्रकार पुकारा जाये गा "ऐ मूसाइयो," "ऐअ़ीसाइयों" "ऐ मुहम्मदियो"। इसी प्रकार काफ़िरों को भी उन के धर्म गुरूओं के नाम से पुकारा जाये गा। यह लोग एलान सुनते ही तुरन्त इकट्ठा हो जायें गे और स्वीकर करें गे कि हम उन ही के उम्मती हैं।

कुछ जाहिल लोग इस आयत से इमामों की तक़्लीद का सबूत पेश करते हैं, यह बिल्कुल ग़लत है। इस आयत में हर एक इन्सान के बुलाये जाने का ज़िक्र है। तो अगर वह इमाम बरहक़ है (यानी ऐसा इमाम है जिस की इताअ़त का हुक्म दिया गया है जैसे दूसरे और संदेष्टाओं की तरह) तो ऐसे इमाम के साथ वालों की ही नजात हो गी। और अगर वह खुद ही इमाम और पेशवा बना हुआ था और संदेष्टाओं की तरह अपनी इताअ़त करवा रहा था, तो उल्टा उस ही से सवाल हो गा कि क्यों तुमने अपनी इताअ़त का हुक्म दिया था? जब वह तेरी इताअ़त करते थे तो तू ने क्यों न रोका था सो स्पष्ट तौर पर साबित है कि इस आयत का इमामों की तक़्लीद से दूर का भी संबन्ध नहीं (सनाई)

३३. 'आख़िरत में भी अंधा होगा' यहाँ पर अंधापन से मुराद बसीरत की महरूमी अर्थात दिल का अंधापन मुराद है। यानी जिस ने दुनिया में दिल की आँखों से काम न लिया, दीन इस्लाम के सच और नबी के बरहक़ होने का इक़रार न किया हो तो ज़ाहिर है कि वह मरने के बाद भी आख़िरत में भी अन्धा ही रहेगा और आख़िरत की कोई भी नेमत उसे हासिल न होगी। (राज़)

३४.'और सीधी राह से भटका हुआ' इसलिये उन को यह बातें साफ़-साफ़ सुना दे कि अभी से अपना हानि-लाभ सोचलो, कहीं ऐसा न हो कि पछताना पड़े। लेकिन इन की शरारत और ज़िद का यह हाल है कि वह उसी ही पर अड़े हुये हैं और खुद क्या बदलते वह तुम्हें ही सीधी राह से हटा देने पर लगे हुये हैं (सनाई)

३५. शाने-नुज़ूलः- उमय्या बिन ख़ल्फ़, अबू जेहल और दीगर गुरू घन्टाल लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आ कर कहने लगे कि अगर आप हमारे बुतों पर हाथ फेर दें तो हम आप के दीन को कुबूल कर लें गे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तो चाहते ही थे कि यह लोग चाहे जिस हाल से मुसलमान हो जायें तो अच्छा था, आप के दिल में भी ख़्याल आ गया, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी।

कुछ उलमा का कहना है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम काबा के तवाफ़ के स हज्रे-अस्वद का बोसा ले रहे थे, इस पर मुश्रिकों ने कहा कि अगर आप हमारे बुतों का भी बोसा ले लें तो हम ईमान ले आयें। आप के दिल में भी ख़याल आया कि दिखावे के तौर पर ऐसा करने में कोई हरज नहीं, दिल का हाल तो अल्लाह जानता है, इसपर यह आयत नाज़िल हुयी

कुछ उलमा ने कहा कि यह उस समय नाज़िल हुयी जब मक्का के मुश्रिकों ने आप से कहा कि अगर आप➲

➲यह चाहते हैं कि हम आप के पास आयें तो अपने मानने वाले इन कंगलों और बेवकूफ़ों को अपने पास से उठा दीजिये। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने भी इरादा फ़रमाया।

और दूसरे उलमा का कहना है कि अरब क़बीले की एक क़ौम बनू सक़ीफ़ ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा कि हम इन तीन शर्तों पर ईमान लाने को तय्यार है (१) नमाज़ में हम सर नहीं झुकायें गे (२) अपने बुतों को अपने ही हाथ से नहीं तौड़ें गे (३) लात (बुत)को एक वर्ष तक बाक़ी रहने दिया जाये (पूजा तो नहीं करें गे मगर बाक़ी रहने दिया जाये) इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। चुनान्चे आप ने उन की केवल एक शर्त मंजूर की कि तुम अपने हाथ से बुतों को न तोड़ो हम आदमी भेज कर तुड़वा दें गे।

इस हदीस से यह साबित होता है कि ज़िन स्थानों पर शिर्क किया जाता है उन को गिरा देना और मलिया मेट कर देना वाजिब है, उन को बाक़ी रखना किसी प्रकार जायज़ नहीं है। ऊपर के शानेनज़ूलों से यह बात भी साबित होती है कि अगर दिल में बुराई का ख़्याल पैदा हो, तो जब तक उसे न करे कोई पकड़ नहीं होगी। लेकिन चूंकि नबी का मर्तबा बुलन्द होता है इस लिये बुतों के सामने झुकना तो दूर की बात, झुकने के क़रीब होने पर भी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को दोहरे दन्ड की धमकी दी है। इस आयत से पता चलता है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मर्तबा कितना बुलन्द है। हज़रत यूसुफ़ अ़लै० की शान में फ़रमाया: "अज़ीज़ की बीवी ने तो हज़रत यूसुफ़ का इरादा कर लिया और हज़रत यूसुफ़ भी कर लेते अगर....... " (सूरःयूसुफ़) लेकिन यहाँ पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ऐसे इरादे के क़रीब फटकने को भी गुनाह कहा। (वहीदी)

تَحْوِيلًا ﴿٧٧﴾ أَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوكِ الشَّمْسِ إِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ
وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ۖ إِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ﴿٧٨﴾ وَ
مِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰى أَنْ يَّبْعَثَكَ
رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا ﴿٧٩﴾ وَقُلْ رَّبِّ أَدْخِلْنِي مُدْخَلَ
صِدْقٍ وَّأَخْرِجْنِي مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّي مِنْ
لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيرًا ﴿٨٠﴾ وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ
الْبَاطِلُ ۖ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ﴿٨١﴾ وَنُنَزِّلُ مِنَ
الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۙ وَلَا يَزِيدُ
الظّٰلِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ﴿٨٢﴾ وَإِذَآ أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ
أَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَئُوسًا ﴿٨٣﴾
قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ۖ فَرَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَنْ
هُوَ أَهْدٰى سَبِيلًا ﴿٨٤﴾ وَيَسْئَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ ۖ قُلِ
الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَآ أُوتِيتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٨٥﴾

७८. (पस तू) सूरज के ढलने से रात के अंधेरे तक चन्द नमाज़ें पढ़ा कर (यानी ज़ुह्र, अ़स्र, मग़्रिब और अ़िशा) और सुब्ह को कुरआन पढ़ा कर। क्यों कि सुब्ह के कुरआन पढ़ने पर दिल जमअ़ी होती है[३६]। ७९. और रात के एक हिस्से में कुरआन के साथ तहज्जुद पढ़ा कर, यह आदेश तेरे लिये (औरों से) अधिक है, आशा है तेरा रब तुझ को पसन्दीदा स्थान पर क़ायम करे गा। ८०. और दुआ़ किया कर कि ऐ मेरे पर्वरदिगार! मुझे अच्छी जगह पहुंचा और अच्छी तरह सुरक्षा के साथ निकाल कर ले चल और मुझे कामियाबी का ग़लबा दे ८१. और तू (उन से) कह कि (याद रखो! तुम्हारी शरारत किसी काम न आये गी। अल्लाह की तरफ़ से) हक़ आ चुका है और झूठ नाबूद हो चुका। क्योंकि बातिल (झूठ) बर्बाद होने वाला है ८२. और हम कुरआन में ईमानदारों के (दिल की बीमारियों के)लिये शिफ़ा और रहमत नाज़िल करते हैं और ज़ालिम (जो उस की हिदायतों पर अ़मल नहीं करते) उस से सरासर➲

हानि ही उठाते हैं। ८३. हम जब कभी इन्सान को कोई नेमत देते हैं तो वह फिर जाता है और पहलू अकड़ाता हुआ चलता है, और जब उस को तक्लीफ़ पहुंचती है तो बिल्कुल निराश हो जाता है ८४. तू कह कि हर एक अपने-अपने तरीक़ा {सिद्धान्त} पर अ़मल करता है सो (उस का अच्छा-बुरा बदला भी पाये गा क्योंकि) तेरा पर्वरदिगार सीधी राह वालों को भली-भांति जानता है[३७]। ८५. और रूह के बारे में तुझ से प्रश्न करते हैं। तू कह कि रूह मेरे पर्वरदिगार के हुक्म से है और तुम्हें तो बहुत ही थोड़ा अ़िल्म मिला है (तुम उस की कैफ़िय्यत जानने से बिल्कुल आ़जिज़ हो)

....

३६. एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सुब्ह की नमाज़ में रात और दिन के फ़रिश्ते इकट्ठा होते हैं। एक अन्य हदीस में है कि अस्र की नमाज़ में इकट्ठा होते हैं। इमाम राज़ी फ़रमाते हैं कि इस आयत से यह मस्अला साबित होता है कि सुब्ह की नमाज़ अंधेरे में आरंभ की जाये और इतनी लम्बी क़िरात की जाये कि रोशनी हो जाये, और रात और दिन के फ़रिश्ते उस में शरीक हो जायें। तहज्जुद की नमाज़ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर फ़र्ज़ थी और आप की उम्मत पर नफ़्ल है। 'मक़ामे-महमूद' शफ़ाअ़त का वह स्थान है जहाँ से तमाम संदेष्टा अल्लाह के जलाल (प्रताप) से घबरा कर शफ़ाअ़त की हिम्मत न कर सकें गे। लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पैग़ंबरों और उम्मतियों की परेशानी को देख कर शफ़ाअ़त के लिये उठ खड़े हों गे। कुछ उलमा इस का यह अर्थ बताते हैं कि अल्लाह तआ़ला अर्श पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अपने साथ बिठा लेगा। इमाम अबू दावूद का क़ौल है कि इस हदीस को जो न माने वह गुमराह है। उलमा और पढ़ा लिखा वर्ग हमेशा से इस हदीस को रिवायत करते चले आये हैं। (वहीदी) मैं कहता हूँ कि इस हदीस को केवल जहमिय्या और मोतज़िला फ़िर्क़ा के लोग नहीं मानते, और अहले सुन्नत जिन का अक़ीदा है कि अल्लाह तआ़ला अर्श पर मुस्तवी है, वह इस हदीस को शौक़ से मानते हैं।

'इन्न कुरआ-नल्...........' इस का तर्जुमा कुछ उलमा ने यह किया है "बेशक सुब्ह की नमाज़ फ़रिश्तों के हाज़िर होने का वक़्त है"। (राज़)

३७. अ़रबी भाषा में 'शिक्ल' का अर्थ है "दशा, हालत, बनावट"। ओर 'शक्ल' के माना "तरीक़ा" के हैं। चुनान्चे जिस राह से बहुत सी राहें निकली हों उन को "शवाकिल" कहा जाता है। इस आयत का मतलब यह हुआ कि दुनिया में इन्सान का कोई तरीक़ा है और उसी के अनुसार वह काम कर रहा हैं। कोई इधर ज़ा रहा है तो कोई उधर जा रहा है। किसी ने इस राह को अपनाया हुआ है तो किसी ने उस राह को। किसी को यह तरीक़ा पसन्द है तो किसी को वह। और उन तमाम राहों में सब से सीधी राह और इन पर चलने वाले को आल्लाह ही बेहतर जानता है। कुछ अलमा ने 'शाकिल' का तर्जुमा "फ़ितरत, आ़दत" से किया है। यानी इन्सान की एक पैदाइशी बनावट और फ़ितरत है और वह उसी के अनुसार काम करता है। लेकिन सही बात यही है कि इस शब्द का अर्थ "तरीक़ा,मसलक, मज़हब" हैं।

आयत ८५ में 'रूह' का शब्द आया है। तौरात और इन्जील में यह शब्द फ़रिश्ता के लिये इस्तेमाल हुआ है और कुरआन मजीद में फ़रिश्ता और वह्यि दोनों के लिये। यहाँ पर 'रूह' से इन्सान के बदन की रूह (जान) मुराद है या फ़रिश्ता, इस में उलमा का इख़्तिलाफ़ है। अक्सर उलमा का कहना है कि यहाँ पर 'रूह' से मुराद इन्सान के बदन की जान है। लेकिन काफ़िरों की तरफ़ से प्रश्न दोनों (रूह, फ़रिशता) ही के बारे में हो सकता है और यहाँ पर जो उत्तर दिया गया है वह दोनों ही के बारे में हो सकता है। यहाँ पर प्रश्न से ज़्यादा उस का उत्तर अहम है। "अल्लाह के हुक्म का नाम रूह है। इस बारे में जो कुछ तुम्हें बतलाया जा सकता है वह यही कि अल्लाह का हुक्म काम कर रहा है, इस से अधिक तुम कुछ नहीं समझ सकते। और इस से अधिक जान भी तो नहीं सकते इस

लिये कि "तुम्हें बहुत थोड़ा ज़िल्म दिया गया है। तुम्हारे ज़िल्म का घेरा बहुत सीमित है। तुम्हें जो ज्ञान दिया गया है उस से आगे नहीं जान सकते। और तुम ज़िल्म में से जो कुछ पा सकते हो वह अस्ल हक़ीक़त के मुक़ाबला में बहुत ही थोड़ा है। इस की मिसाल समुद्र में से चन्द बूँद की है। (तर्जुमान-मौलाना आज़ाद रह०) रूह की हक़ीक़त क्या है? इस बारे में डाक्टरों, हकीमों और साइंसदानों ने बहुत गंभीरता से सोच-विचार और तहक़ीक़ की, लेकिन अभी उस की गहराई तक नहीं पहुंच सके हैं। सभी ने अपने अक़्ली घोड़े दौड़ाये हैं। इन के अक़्वाल को अगर जमा किया जाये तो उन की मात्रा १८०० तक पहुंचती है। (वहीदी) इमाम शौकानी रह० ने अपनी तफ़्सीर "फ़त्हुल् क़दीर" में उन अक़्वाल को बकवास और खुराफ़ात बताते हुये लिखा है कि हक़ वही है जो कुरआन ने कहा है यानी "रूह रब का हुक्म है"।

وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ ثُمَّ لَا
تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَيْنَا وَكِيْلًا ﴿٨٦﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ
رَّبِّكَ ۭ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيْرًا ﴿٨٧﴾ قُلْ لَّئِنِ
اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓي اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا
الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ
ظَهِيْرًا ﴿٨٨﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ
مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۡ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٨٩﴾
وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ
يَنْۢبُوْعًا ﴿٩٠﴾ اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّعِنَبٍ
فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ﴿٩١﴾ اَوْ تُسْقِطَ السَّمَاۗءَ
كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةِ
قَبِيْلًا ﴿٩٢﴾ اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى
فِي السَّمَاۗءِ ۭ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا

८६. और अगर हम चाहें तो जो कुछ भी हम ने तेरी तरफ़ वह्यि भेजी है उस को तेरे दिल से (मिटा कर के) उठा लें फिर तू हमारे मुक़ाबला पर अपने लिये किसी को हिमायती न पा सके ८७. मगर तेरे पर्वरदिगार की रहमत है। कुछ संदेह नहीं कि तुझ पर उस का फ़ज़्ल बहुत बड़ा है ८८. (इन शक्की लोगों से) तू कह कि अगर तमाम जिन्न और इन्सान भी जमा हो जायें कि इस कुरआन के समान कोई कलाम लायें तो उस के समान कभी न ला सकें गे अगर्चे एक दूसरे के सहायक भी बन जायें। (हम ने तो हर प्रकार से उन की हिदायत के सामान मुहय्या किये) ८९. और हम ने कुरआन में लोगों के लिये हर प्रकार की मिसालें बयान की हैं, फिर भी अधिकांश लोग इन्कार ही पर अड़े रहे (किसी प्रकार हिदायत पर न आये, बल्कि तरह-तरह की बेहूदा बातें बकते हैं) ९०. और कहते हैं कि तेरी बात तो हम कभी न मानें गे जब तक तू हमारे लिये ज़मीन से चश्मे जारी न कर दे ९१. या खजूरों और अंगूरों के तेरे बाग़ हों फिर तू उन के दर्मियान नहरें चीर-चीर कर जारी कर दे ९२. या जैसा तू कहता है (कि कुफ़्र व शिर्क करने से अल्लाह ऐसा नाराज़ होता है कि आकाश तुम पर गिर पड़े) आकाश हम पर गिरा दे, या अल्लाह और फ़रिश्तों को हमारे सामने ला कर खड़ा कर दे ९३. या (तेरे रहने का) घर सोने का बन जाये, या तू (हमारे सामने) आकाश पर चढ़ जाये। मगर हम तेरे ऊपर चढ़ने पर भी भरोसा न करें गे जब तक तू ऊपर से एक किताब हमारे पास न ला दे

كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ۗ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا
رَّسُوْلًا ۝٩٣ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ
الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ۝٩٤ قُلْ
لَّوْ كَانَ فِي الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ
لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ۝٩٥ قُلْ كَفٰى
بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۗ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ
خَبِيْرًا بَصِيْرًا ۝٩٦ وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ
يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ ۗ وَنَحْشُرُهُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا ۗ مَاْوٰىهُمْ
جَهَنَّمُ ۗ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ۝٩٧ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ
بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا
ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ۝٩٨ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ
الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ

जिस को हम पढ़ें। (ऐ रसूल!) तू (उन के उत्तर में) कह कि मेरा पर्वरदिगार पाक है मैं तो केवल बन्दा और रसूल हूँ[38]। ९४. और ऐसे लोगों को हिदायत पहुँचने के बाद ईमान से रोक होती है तो यही कहते हैं कि क्या अल्लाह ने एक को रसूल बनाया? (क्या वह फ़रिश्तों को संदेष्टा बना कर नहीं भेजता?) ९५. तू (उन को हमारी तरफ़ से) कह कि फ़रिश्ते अगर ज़मीन पर आराम से चलते-फिरते तो हम उन पर आकाश से फ़रिश्ते को रसूल बना कर भेजते (मगर चूंकि आदमी आबाद हैं इस लिये तुझ आदमी को रसूल बना कर भेजा है) ९६. तू कह (अगर तुम को मेरे संदेष्टा होने में संदेह है तो) मेरे और तुम्हारे दर्मियान अल्लाह ही गवाह काफ़ी है। वह अपने बन्दों के हालात की ख़बर रखने वाला है और देखता है ९७. जिस को वह (बादशाह) हिदायत करे वही हिदायत पाने वाला है और जिस को गुमराह करे तो हर्गिज़ उस के अलावा उस का कोई हिमायती न पायेगा। और हम (अल्लाह) उन गुमराहों को (जो कीना की वजह से नबुव्वत के मुन्किर हैं) क़ियामत के रोज़ अन्धे, गूँगे और बहरे कर के मुंह के बल उठायें गे। उन का ठिकाना जहन्नम हो गा। जब कभी ठन्डी होने को होगी तो हम उन पर और तेज़ी कर दें गे। ९८. यह सख़्त सज़ा उन को इसी लिये मिले गी कि उन्हों ने हमारे आदेशों का इन्कार किया था और कहते थे कि क्या जब मर कर हड्डियाँ और रेज़े-रेज़े हो जायें गे तो क्या हम नये सिरे से पैदा हों गे? ९९. क्या उन्हों ने नहीं सोचा कि जिस अल्लाह ने आकाश और ज़मीन पैदा किये वह इस बात पर कुदरत रखता है कि (मरने के पश्चात्) उन जैसे (बदन, शरीर, देह) पुन: पैदा कर दे

....

३८. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० रिवायत करते हैं कि अबू जेहल, अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या, उमय्या बिन ख़ल्फ़ और अन्य प्रमुख नेता एक दिन सूर्यअस्त होने के पश्चात् काबा शरीफ़ की दीवार के पीछे जमा हुये और मिटिंग की। उस में आम सहमति से यह तै पाया कि आज अभी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को बुला कर उन के सामने सारी बातें रख दी जायें ताकि कल उन को कुछ कहने का मौक़ा न मिले कि हमें पहले क्यों नही बताया था। एक शख़्स आप को बुला कर ले आया। उन लोगों ने कहा कि आज हम लोग हुज्जत पूरी कर देते हैं आप ग़ौर से सुन लीजिये। अल्लाह की क़सम! आज तक किसी ने अपनी क़ौम को ऐसी मुसीबत में नहीं डाला होगा जिस भयानक ➲

मुसीबत में आप ने हम लोगों को डाल दिया है। आप हमारे बाप-दादाओं को बुरा-भला कहते हो, हमारे दीन को और हमारे माबूदों को झुठलाते हो, हमारे अन्दर तुम ने इख़्तिलाफ़ के बीज बो दिए हैं।, घर-घर लड़ाई-झगड़े हो रहे हैं। अब आप कान खोल कर सुन लीजिये और सोच-विचार कर के हमें उत्तर दीजिये। अगर इन बातो से आप का इरादा धन-दौलत इकट्ठा करने का है तो हम आप को इतनी दौलत देदें गे कि आप के बराबर मक्का में कोई न होगा। और अगर इन बातों से आप की इच्छा सर्दारी करने की है तो हम लोग आप को अभी अपना नेता तस्लीम कर लेते हैं। अगर आप के दिमाग़ में कोई बीमारी है तो उस का उपचार हम करवाने को तय्यार हैं। अगर किसी ने जादू-टोना कर दिया है तो वह उतार देने को तय्यार हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन की बातों को सुन कर उत्तर दिया: न मुझे धन-दौलत चाहिये और न ही सर्दारी, न मुझ पर जादू-टोना किया गया है और न ही मेरे दिमाग़ में कुछ ख़लल है। मुझे तो केवल रसूल बना कर भेजा गया है। मुझे आदेश दिया गया है कि मैं तुम्हें डराऊँ और शुभ+सूचना दूँ। अब मैं ने तुम तक अपने रब का संदेश पहुचा दिया है, अगर उस पर अ़मल करो गे तो दोनों जहान में इ़ज़्ज़त पाओ गे और अगर न मानो गे तो मैं सब्र करता हूँ यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला हमारे और तुम्हारे दर्मियान फ़ैसला फ़रमा दे।

आप की बातों को सुन कर उन नेताओं ने कहा कि अगर आप हमारी बातों को नहीं मानते तो न मानें, फिर भी हम आप का दीन कुबूल कर लें गे, मगर शर्त यह है कि आप अपने रब से दुआ़ कर दीजिये कि मक्का के आस-पास की पहाड़ियों को हटा दे ताकि खेती-बाड़ी के लिये ज़मीन निकल आये। फिर उस ज़मीन में चश्मे जारी कर दें, ताकि सींचाई का प्रबन्ध हो सके। और यह भी दुआ़ कर दीजिये कि हमारे बाप-दादाओं में से विशेष कर क़ुसय्य बिन किलाब अवश्य जीवित हो जायें और वह आप के संदेष्टा होने की गवाही देदें तो हम लोग भी तस्दीक़ कर दें गे और आप की बुज़ुर्गी को तस्लीम कर लें गे। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन की बातों से सख़्त रन्जीदा हुये और निराश हो कर घर लौट आये। अल्लाह तआ़ला ने आप से फ़रमाया कि अगर आप की इच्छा है तो मैं पहाड़ी को हटादूँ और चश्मे-नहरें भी जारी कर दूँ, लेकिन याद रहे! अगर फिर भी ईमान न लाये तो उन को ऐसा दन्ड दूँ गा जो आज तक किसी को नहीं दिया। और अगर आप चाहें तो निशानियाँ न भेज कर उन के लिये रहमत का दर्वाज़ा खुला रखूँ। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यही दूसरी बात पसन्द फ़रमाई (तफ़्सीर मुहम्मदी)

'मैं तो केवल संदेष्टा और मनुष्य हूँ' इस आयत न० ९३ में उन लोगों के ख़यालात का रद्द है जो आप को इन्सान और मनुष्य के दाइरे से निकाल कर अल्लाह से मिलाते हैं और यह खुराफ़ात बकते हैं कि वह अल्लाह जो कभी अर्श पर अल्लाह की हैसिय्यत से विराजमान था, मदीना में मुहम्मद मुस्तफ़ा बन कर उतर पड़ा है। अल्लाह तआ़ला हम सब को ऐसे अ़क़ीदे से सुरक्षित रखें।

مِّثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۚ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ
اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٩٩﴾ قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّيْٓ
اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ﴿١٠٠﴾
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
اِذْ جَاۗءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّىْ لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى
مَسْحُوْرًا ﴿١٠١﴾ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَاۗءِ اِلَّا رَبُّ

और उसी ने उन के लिये सुनिश्चित समय मुक़र्रर किया है जिस में कोई शक नहीं। (अल्लाह की इस कुदरत को देख कर) फिर भी ज़ालिम इन्कार ही पर अड़े हुये हैं। १००. तू (उन से) कह कि अगर तुम मेरे पर्वरदिगार की रहमत के ख़ज़ानों के मालिक होते (यानी तुम को इख़्तियार मिल जाता कि जिस को चाहो दो और जिसे चाहो न दो) तो ख़र्च होने के डर से उन को रोक रखते। इन्सान आ़म तौर पर

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَآئِرَ ۚ وَاِنِّیْ لَاَظُنُّكَ یٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ۝ فَاَرَادَ اَنْ یَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِیْعًا ۝ وَّقُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اسْكُنُوا الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِیْفًا ۝ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۗ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِیْرًا ۝ وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِیْلًا ۝ قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖۤ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا

तंगदिल है १०१. और हम ने मूसा को खुले-खुले नौ निशान दिये[३९] (जो पारः नौ के रूकूअ़ छः में बयान हैं) पस तुम बनी इस्राईल से पूछ लो (कि अस्ल वाक़िआ़ क्या है) जब मूसा उन के पास आये तो फ़िरऔ़न ने कहा कि ऐ मूसा! मैं तुझ को दीवाना समझता हूँ १०२. मूसा ने कहाः आप दिल से जान चुके हैं कि यह मोजिज़े (चमत्कार) आसमानों और ज़मीन के पर्वरदिगार ही ने दलील बना कर उतारे हैं (मगर आप के दिमाग़ में शासन का घमन्ड है) मैं समझता हूँ कि आप बहुत जल्द हलाक हों गे १०३. फिर फ़िरऔ़न ने चाहा कि उन (बनी इस्राईल) को मुल्क में कमज़ोर कर दे, सो हम ने उस को और उस के मानने वालों को दरिया में डुबो दिया १०४. और उस के बाद बनी इस्राईल से हम ने कहा कि (लो अब चैन से) अपने मुल्क में रहो सो जब आख़िरत का दिन आये गा तो हम तुम सब को एक स्थान पर लाकर (मैदान में) जमा कर दें गे[४०] १०५. हम ने इस (कुरआन) को सच्ची तालीम के साथ उतारा है और वह सच ही के साथ उतरा है। और तुझ को भी हम ने बस खुश्-ख़बरी देने वाला और डराने वाला रसूल बना कर भेजा है १०६. और कुरआन को हम ने इस लिये थोड़ा-थोड़ा कर के उतारा है कि तुम लोगों को ठहर-ठहर कर सुना दो और हम ने ही उस को उतारा है।१०७. (सो) तू कह दे कि इस पर ईमान लाओ या न लाओ

....

३९. हज़रत मूसा अ़लै० को नौ चमत्कार दिये गये थे जो उन के नबी होने का सबूत थे (१) लाठी का सांप बन जाना (२) हाथ चमकने लगना (३) सूखा काल (४) फल की पैदावार में कमी (५) तूफ़ान (६) टिड्डी (७) चेचड़ी (जूँ) (८) मेंडक (९) रक्त-खून। यह है 'आयाते बय्यिनात' (खुले मोजिज़े) की तफ़्सील। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने भी इन्ही नौ को गिनाया हैं। इन तमाम निशानियों को देखने के बाद भी फ़िरऔ़न अपने तकब्बुर से बाज़ न आया हालाँकि उस को मूसा अ़लै० के नबी होने का पूरा विश्वास था।

इस आयत न० १०१ का पिछली आयत से यह तअ़ल्लुक़ हैं कि मक्का के कुफ़्फ़ार भी आप से ऐसे ही मोजिज़े तलब कर रहे हैं। तो जिस प्रकार फ़िरऔ़न और उस की क़ौम मोजिज़े आ जाने के बाद भी ईमान न लाई और इसी जुर्म में हलाक कर दी गयी, मैं भी तुम्हारे वास्ते इन को मोजिज़े दिखाऊँ गा, और अगर फिर भी ईमान न लाये तो फ़िरऔ़न की तरह इन्हें भी हलाक कर दूँगा। मुस्नद अहमद की एक रिवायत में है कि दो यहूदियों ने परस्पर यह तै किया कि चल कर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से उन नौ चमत्कारों की तफ़्सील मालूम की जाये। चुनान्चे उन्हों ने आप से पूछा तो उत्तर दियाः अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठेहराओ, चोरी और ज़िना कारी न करो, क़त्ल और जादू-टोना न करो, सूद और रिश्वत ख़ोरी से बचो, किसी बेगुनाह को बादशाद के पास ले जा कर झूठा इल्ज़ाम लगा कर क़त्ल न कराओ, पाकदामन महिलाओं पर ज़िना का आरोप न लगाओ, जिहाद करने से जी न चुराओ , सब्त (सनीचर) के दिन अन्याय और अत्याचार से बचो। इन सारी बातों को सुन कर वह दोनों यहूदी

आप के हाथ-पैर चूमने लगे और गवाही देने लगे कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तो वास्तव में संदेष्टा है। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कहा कि फिर ईमान क्यों नहीं ले आते? वह कहने लगे कि हज़रत दावूद अ़लै०ने अल्लाह से प्रार्थना की थी कि मेरी नस्ल से नबी आयें और आप उन की नस्ल से नहीं हैं। दूसरे यह कि अगर हम ईमान ले आयें तो हमारी क़ौम के लोग हमें मार डालें गे। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इन के प्रश्न के उत्तर में ऊपर गिनाये गये नौ चमतकारों का हवाला दिया। फिर उन्हीं की किताब तौरात के अनुसार उन्हें अपदेश भी दिया (इब्ने कसीर) यह बात याद रहे कि हज़रत मूसा अ़लै० को इन नौ के अ़लावा और भी मोजिज़े दिये गये थे जिन का ज़िक्र कुरआन में मुख़्तलिफ़ स्थानों पर है।

४०. इस आयत न० १०४ में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़तह मक्का की बशारत दी गयी है। मक्का वालों ने आप को मक्का छोड़ने पर बाध्य किया इस के बावजूद अल्लाह ने उन पर विजय दिलायी और अपना वादा पूरा किया। हज़रत इब्ने अ़ब्बास, मुजाहिद, क़तादा, और ज़ह्हाक रह० का कहना है कि 'लफ़ीफ़ा' के माना "समस्त लोग" के हैं।

यह सूरः हिजरत से पूर्व मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। आयत न० १०३. में जिस प्रकार फ़िरऔन के मूसा को मुल्कबदर करने का ज़िक्र है, इसी प्रकार मक्का के मुश्रिकों ने भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और उन के सहाबा को मुल्कबदर कर दिया, लेकिन जिस प्रकार हज़रत मूसा और उन की क़ौम को मिस्र में दोबारा जगह मिली इसी प्रकार आप और सहाबा को भी फ़त्ह मक्का के बाद पुनः रहने की जगह मिली। 'जब आख़िरत के दिन का वादा आये गा' (आयत न० १०४) इस से मुराद कुछ लोगों ने क़ियामत भी लिया है (मवाहिब)

إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مِن قَبْلِهِ إِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ يَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿١٠٧﴾ وَيَقُولُونَ سُبْحَانَ رَبِّنَا إِن كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ﴿١٠٨﴾ وَيَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ خُشُوعًا ۩ ﴿١٠٩﴾ قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوِ ادْعُوا الرَّحْمَٰنَ ۖ أَيًّا مَّا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا ﴿١١٠﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُن لَّهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُن لَّهُ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ ۖ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا ﴿١١١﴾

जिन लोगों को इस से पहले (आसमानी किताबों) का ज़िल्म है जब यह कुरआन उन पर पढ़ा जाता है तो ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं[४१] १०८. और कहते हैं कि हमारा पर्वरदिगार (शिर्क के वह्म से भी) पाक है। कुछ शक नहीं कि हमारे पर्वरदिगार का वादा हो कर ही रहे गा १०९. और रोते हुये ठोड़ियों पर गिरते हैं और कुरआन (पढ़ने और सुनने) से उन के अन्दर अल्लाह के ख़ौफ़ में ज़्यादती होती है[४२] ११०. तू कह कि तुम अल्लाह को पुकारो या रहमान को (चाहे) किसी नाम को पुकारो तमाम नेक (सिफ़तों के) नाम (सब के सब) उसी (अल्लाह) के लिये हैं, दुआ न तो तू चिल्ला कर किया कर और न बहुत ही आहिस्ता पुकार (बल्कि उस में) दर्मियाना रविश और शैली इख़्तियार किया कर १११. (और दुआ करने से पहले अल्लाह की हम्द व सना करने को) कह कि सब तारीफ़ें अल्लाह पाक के लिए हैं जिस ने अपने लिये न औलाद बनाई और न कोई मुल्क में उस का शरीक है

और न तक्लीफ़ की वजह से उस का कोई दोस्त है (क्योंकि उस को मुसीबत नहीं आती) और उसी के नाम की बड़ाई किया कर[४३]।

....

१४. ठोड़ी पर दोनों जबड़े मिलते हैं। सज्दा में जाते समय सर्वप्रथम ठोड़ी ही ज़मीन से क़रीब होती है। 'ठोड़ी के बल गिरना' यह एक मुहावरा है जिस से मुराद अल्लाह के ख़ौफ़ और शौक़ से सिज्दा करना। 'जिन को इ़ल्म दिया गया' से मुराद वह यहूदी उलमा हैं कि जिन्हों ने अपनी कितबों में कुरआन की सच्चाई मालूम की और इस्लाम लाये जैसे अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम, सलमान फ़ारसी वग़ैरह। यहाँ पर मजमूई़ तौर पर इ़ल्म वालों की यह शान बतलाई है कि वह कुरआन मजीद सुन कर इतने प्रभावित होते हैं कि रोते हुये अल्लाह के सामने सज्दे में गिर जाते हैं।
४२. 'अल्लाह से ज़्यादा डरते हैं' यह ईमानदार लोगों की विशेष्तायें हैं। इन के ख़िलाफ़ उन जाहिल मुश्रिकों का यह हाल है कि जब मुसलमान अल्लाह को उस के सिफ़ाती नामों के साथ या अल्लाह, या रहमान, या रहीम कह कर पुकारते हैं तो झट कह देते हैं कि इन्हें देखो, हमें तो एक अल्लाह को पुकारने का निर्देश देते हैं और स्वँय तीन-तीन चार-चार खुदाओं को पुकारते हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से फ़रमाया गया कि ऐसे नादानों से आप कह दीजिये कि तमाम दुनिया में जितने नेक नाम हैं सब उसी एक अल्लाह के लिये हैं। वह नाम चाहे जिस भाषा या मुहावरा में हों। और यहाँ पर नाम तो भले कई हैं लेकिन जिस का नाम लिया जा रहा है वह अकेला है।
४३. इस आयत न० १११. को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम घर के हर छोटे-बड़े को सिखाया करते थे। जिस घर में रात को यह आयत पढ़ ली जाए तो उस घर में चोरी और दूसरी आफ़तें नहीं होतीं। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझे इस प्रकार पढ़ने का निर्देश दिया: "त-वक्कल्तु अ़-लल् हय्यिल्लज़ी ला यमूतु अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लाज़ी लम् यत्तख़िज़्.........."। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि इस वज़ीफ़ा को मैं ने चन्द दिनों तक पढ़ा कि मेरी हालत सुधर गयी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मेरी हालत को देख कर पूछा तो मैं ने कहा कि आप के सिखाए हुये कलिमात की बर्कत का नतीजा है। (तफ़्सीरे मुहम्मदी)

सूरः कह्फ़-(18)

सूरः कह्फ़ (गुफ़ा) मक्का में नाज़िल हुयी[१]। इस में ११० आयतें और १२ रूकूअ़ हैं।
शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है।
१. सब तारीफ़ें अल्लाह पाक के लिए हैं जिस ने अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) पर (मुकम्मल) किताब (कुरआन) नाज़िल की और उस में किसी प्रकार की कजी {कसर, कमी} नहीं रखी २. बिल्कुल सीधी (और साफ़ है), इस लिये उतारी है ताकि सख़्त अ़ज़ाब से जो उस की तरफ़ से (बदकारों पर) आने वाला है डराये

....
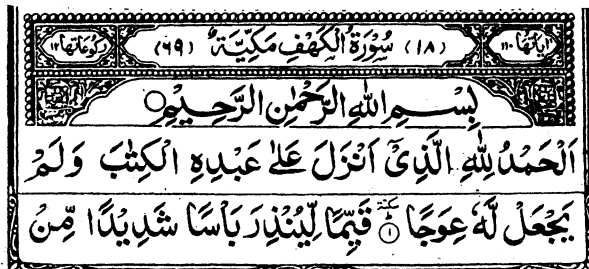
१. मुस्नद अहमद में रिवायत है कि जिस शख़्स ने सूरः कह्फ़ की शुरू की दस आयतों को याद कर लिया और➲

➲उस पर अ़मल भी करता है तो वह दज्जाल के फितने से सुरक्षित रहे गा। (मुस्लिम) एक अन्य हदीस में नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जो शख़्स सूरः कहफ़ का अव्वल और आख़िर पढ़ ले तो उस के लिए सर से पैर तक नूर ही नूर हो गा"। और जो शख़्स पूरी सूरः को पढ़े गा उसे ज़मीन से आसमान तक नूर ही नूर मिले गा"। एक और हदीस में है कि जुमुअ़: के दिन जो शख़्स इस सूरः की तिलावत करे गा तो दूसरे जुमुअ़: तक उस के लिये नूर ही नूर होगा" (हाकिम) एक और रिवायत में है जो शख़्स जुमुअ़: के दिन सूरः कह्फ़ की तिलावत करे गा वह एक सप्ताह तक हर प्रकार के फ़ित्नों से सुरक्षित रहे गा (तफ़्सीर मुहम्मदी)

शाने नुज़ूल:- नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने नबुव्वत का एलान फ़रमाया तो मुश्रिकों को बड़ा आश्चर्य हुआ और अपने बाप दादाओं के मज़हब के ख़िलाफ़ होने की वजह से उस का इन्कार किया और कुछ तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के क़त्ल के लिये तैयार हो गये। आख़िर थक-हार कर मुश्रिकों ने नज़्र बिन हारिस और उक़्बा बिन अबू मुअ़ीत को मदीना के यहूद के पास भेजा कि वह लोग क्या कहते हैं। यहूद ने कहा कि तुम उस नबी से तीन प्रश्न करो। अगर वह वास्तव में नबी है तो इन का उत्तर देदे गा। पहला प्रश्न यह था कि उन नौजवानों का क़िस्सा किस प्रकार है जो घर-बार छोड़ कर एक ग़ार में जा छुपे थे? (२) रूह की हक़ीक़त क्या है? (३)जुल्क़रनैन का क़िस्सा किस प्रकार है जिस ने पूरब से पश्चिम तक का सफ़र किया था? मुश्रिकों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से यही तीनों प्रश्न किये। रूह के प्रश्न का उत्तर सूरः बनी इस्राईल की आयत न० ८५ में दिया। ग़ार वालों का क़िस्सा इस सूरः के आरंभ से आयत न० २६.तक फैला हुआ है। और जुल्क़रनैन का क़िस्सा आयत न० ८३ से आख़िरी सूरः तक ज़िक्र है। इन्ही तीनों प्रश्नों का उत्तर देने के लिये यह सूरः नाज़िल हुयी (तफ़्सीर सूरः कह्फ़ मौलाना सियालकोटी)

لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّلِحٰتِ
اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۙ﴿۲﴾ مَّاكِثِينَ فِيهِ اَبَدًا ۙ﴿۳﴾ وَّ
يُنْذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۗ﴿۴﴾ مَا لَهُمْ بِهٖ
مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ؕ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ
اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ يَّقُولُونَ اِلَّا كَذِبًا ﴿۵﴾ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ
نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوا بِهٰذَا الْحَدِيثِ
اَسَفًا ﴿۶﴾ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِينَةً لَّهَا
لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ﴿۷﴾ وَاِنَّا لَجٰعِلُونَ مَا
عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ۗ﴿۸﴾ اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ
الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ ۙ كَانُوا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ﴿۹﴾ اِذْ اَوَى
الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ
رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ﴿۱۰﴾ فَضَرَبْنَا
عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ فِى الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ۙ﴿۱۱﴾ ثُمَّ

और ईमानदारों को जो नेक अ़मल करते हैं खुश- ख़बरी दे कि उन के लिये (नेक कार्यों पर) नेक बदला है (चन्द दिन के लिये नहीं बल्कि) ३. हमेशा उस में रहें गे ४. और (इस किताब के उतारने का यह भी उद्देश्य है कि विशेष कर) उन लोगों को डराये जो कहते हैं कि अल्लाह ने औलाद बनाई ५. उन को और उन के बाप-दादा को (जिन के संबन्ध और संगति के प्रभाव से यह लोग गुमराह हो रहे हैं) इस बात का अ़िल्म नहीं। बहुत ही बड़ा बोल उन के मुंह से निकलता है (ऐसा जो सरासर झूठ है, और) यह बिल्कुल झूठ कहते हैं ६. (मगर ऐ रसूल!) अगर यह इस कलाम पर ईमान न लायें गे तो शायद तू उन के पीछे अफ़सोस से अपनी जान को हलाक कर डाले गा (ऐसी भी क्या बात है हर शख़्स अपने काम में खुदमुख़्तार है। तुझे मालूल नहीं कि) ७. जो कुछ जमीन पर (सूखा-गीला नज़र आता)है हम ने उस को➲

➲भूमि की सजावट बनाया है ताकि उन को जाँचें कि कौन उन में अच्छे अ़मल करता है (लेकिन यह जांच ज़ाहिर करने की ग़रज़ से है न कि मालूमात हासिल करने के लिये) ८. और हम ने ज़मीन की तमाम चीज़ें फ़ना कर के ज़मीन को चटियल मैदान करना है ९. क्या तू ने समझा है कि ग़ार (यानी कह्फ़ वाले) और कतबे (यानी तख़्तियों) वाले (जिन पर उन के नाम लिखे थे) हमारी कुदरत के कामों में से अ़जीब थे[२] १०. जब चन्द नौजवानों ने ग़ार में पनाह ली और दुआ़ की थी कि ऐ हमारे पर्वरदिगार! तू हम पर अपनी तरफ़ से रहमत नाज़िल फ़रमा और हम को हमारे इरादे में कामियाबी की (सरल और सहज) राह बतला ११. पस (यह कह कर ग़ार में दाख़िल हो गये तो) हम ने उन को कई वर्ष ग़ार में सुलाए रखा

....

२. ग़ार वालों के संबन्ध में इस से अधिक जानकारी की कोई आवश्यक्ता नहीं और कहीं मिल भी नहीं सकती है। इसलिये कि कुरआन व हदीस में इस का और कहीं ज़िक्र नहीं है। इसलिये कुरआन में जितना कुछ ज़िक्र है इस से अधिक की आवश्यक्ता नहीं है और न ही अन्य इतिहास की किताबों में मिल सकता है। इस क़िस्से का मुख़्तसर बयान यह है कि पुराने ज़माना में कुछ नौजवान थे जिन को आज-कल की परिभाषा में Liberal Party कहना चाहिये। वह अपने मज़हबी जोश और जज़्बे पर क़ाबू न पा सके और अपने मुल्क और बिरादरी को छोड़ कर कहीं पहाड़ के ग़ार में जा छुपे और लम्बे समय तक वहीं पड़े रहे। इस के बाद उन्हों ने अपने साथियों में से एक को शहर भेजा तो वहाँ का सब कुछ बदला हुआ था। न वह बादशाह था और न वह प्रजा। आख़िरकार वह किसी प्रकार पहचान लिया गया लेकिन फिर भी किसी तरह जान बचा कर अपने साथियों से वापस जा मिला और उस स्थान को कोई जान न सका। बस यह है ग़ार वालों का मुख़्तसर क़िस्सा। मतलब यह है कि हर ज़माना में अल्लाह के नेक बन्दे मौजूद रहे हैं जो अल्लाह के अ़लावा न किसी की पूजा करते थे और न ही पर्वाह। इसलिये ऐ मुसलमानो! तुम्हें भी उन्ही जैसा होना चाहिये।

शाने नुज़ूलः- कुफ़्फ़ारे मक्का ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इस क़िस्से के बारे में प्रश्न किया था कि अगर आप सच्चे नबी हैं तो इन क़िस्सों के बारे में बताएँ। चूँकि यह क़िस्से उस ज़माना में भी लोगों की ज़बान पर थे और थोड़ी-बहुत जानकारी सब को थी। रहा यह प्रश्न कि ग़ार वाले बन्दे इस समय कहाँ हैं? वह ज़िन्दा हैं या मुर्दा? इस का उत्तर जानने से पहले कुरआन मजीद की आयतों पर ग़ौर करना ज़रूरी है। देखना यह है कि क्या कुरआन में उन के ज़िन्दा रहने का कोई सबूत है? मुझे उन के जीवित होने का सबूत कुरआन में नहीं मिलता। एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने इन्तिक़ाल से कुछ पहले फ़रमाया था: जो लोग इस समय ज़मीन पर जिन्दा हैं सौ वर्ष के बाद उन में से कोई भी ज़िन्दा न रहे गा"। इस हदीस से भी यही साबित होता हे कि ग़ार वाले अगर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माने तक ज़िन्दा भी रहे हों तो ऊपर की हदीस की रोशनी में १०० साल के बाद मर गये हों गे।

उन के ज़िन्दा रहने के बारे में संभव है कि लोग आयत न० १८ को पेश करें। लेकिन उस आयत का सही तर्जुमा यह है "अगर तू उन को देखता तो मारे डर के भाग जाता और तुझ में ख़ौफ़ भर जाता"। मेरे निकट इस आयत को उन के जीवित होने के सबूत में नहीं पेश किया जा सकता, इसलिये कि "लौ" का प्रयोग गुज़रे हुये ज़माना (भूतकाल) के लिये होता है। इस आयत से ज़्यादा से ज़्यादा यह साबित होता है कुरआन के नाज़िल होने से पहले न वह ज़िन्दा थे और न नाज़िल होते समय और न अब १४०० वर्ष बीत जाने के बाद।

मुख़्तसर यह कि ग़ार वाले किसी पहाड़ के ग़ार में छुपे थे जहाँ वह एक समय तक अल्लाह के हुक्म से ज़िन्दा रहे, आख़िर एक समय के बाद दुनिया से चल बसे (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) हाँ, यह प्रश्न ग़ौर करने के क़ाबिल है➲

➲कि वह लोग किस बादशाह के शासनकाल में पैदा हुये थे। और किस नबी के मानंने वाले थे? इस के बारे में भी क़तई़ तौर पर कुछ कहना मुश्किल है। क्यों कि इस वाक़िआ़ का न तो कोई आँखों देखा हाल बयान करने वाला है और न ही नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कुछ साबित है। हाँ कुछ इतिहास कारों ने अपने ख़याल के मुताबिक़ इन बन्दों को हज़रत ई़सा का उम्मती माना है। उन का अ़मल हज़रत ई़सा अ़लै० की तालीम के मुताबिक़ था। हज़रत ई़सा अ़लै० के दो सौ वर्ष के बाद दक़्यानूस के शासन काल में गुज़रे हैं जो कि बुतपरस्त था और इन लोगों को भी बुतपरस्ती पर मज्बूर करता था, जिस से तंग आ कर हिजरत कर के पहाड़ के एक खोह में पनाह ली थी। (सनाई)

بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَیُّ الْحِزْبَیْنِ اَحْصٰی لِمَا لَبِثُوْۤا
اَمَدًا ۠ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَیْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ
فِتْیَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَ زِدْنٰهُمْ هُدًی ۠ وَّ رَبَطْنَا
عَلٰی قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ
وَ الْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاۡ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَاۤ
اِذًا شَطَطًا ۠ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ
اٰلِهَةً ؕ لَوْ لَا یَاْتُوْنَ عَلَیْهِمْ بِسُلْطٰنٍۭ بَیِّنٍ ؕ فَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا ۠ وَ اِذِ
اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَ مَا یَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗۤا اِلَی الْكَهْفِ
یَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَ یُهَیِّئْ لَكُمْ مِّنْ
اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ۠ وَ تَرَی الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ
عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ وَ اِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ
ذَاتَ الشِّمَالِ وَ هُمْ فِیْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ

१२. फिर हम ने उन को जगाया कि हम देखलें (यानी ज़ाहिर कर दें) कि दो गरोहों में किस गरोह को ग़ार में उन के ठहरने की मुद्दत खूब याद है १३. हम तुझे उन का (ज़रा विस्तार से) ठीक-ठीक हाल सुनाते हैं। वह चन्द जवान थे जो अपने पर्वरदिगार पर ईमान लाये हम ने भी उन को हिदायत ज़्यादा दी थी। १४. और उन के दिलों को मज़बूत किया था (कि अनाप-शनाप एतराज़ों से वह काँपते न थे) जब वह उठ गये (और बादशाह को सज्दा न किया) सो बोले कि हमारा पर्वरदिगार तो वही है जो तमाम आसमानों और ज़मीन का पर्वरदिगार है हम अल्लाह के अ़लावा किसी माबूद को न पुकारें गे वर्ना हम भी बेहूदा बातें करने वाले हों गे १५. उन हमारे क़ौमी भाईयों ने जो उस(अल्लाह) के अ़लावा और माबूद बना रखे हैं क्यों कि उन पर खुली दलील पेश नहीं करते (जिस से साबित हो कि अल्लाह के साथ और भी माबूद हैं) फिर जो अल्लाह पर झूठ गढ़े उस से अधिक गुंमराह कौन है? १६. और जब तुम उन (मुश्रिकों) से और (अल्लाह के सिवा) उन मन्घड़त माबूदों से अलग हो चुके हो तो बस ग़ार में बैठ रहो (अल्लाह पर भरोसा करो) तम्हारा पर्वरदिगार तुम पर अपनी रहमत फैला देगा और तुम्हारा (मुश्किल) काम आसान करदेगा। १७.(चुनान्चे वह ग़ार में ऐसे स्थान पर छुपे कि) सूरज को चढ़ते हुये तू देखे (तो मालूम होता है) कि उन के ग़ार से दायें तरफ़ को होता है और जब डूबने को होता है तो बायें तरफ़ को कतरा जाता है[3] और वह उसी ग़ार के अन्दर एक कुशादा जगह में हैं

....

३. इस सूरत में ग़ार का मुंह उत्तर की जानिब था। यानी बनातुन्नाश के सामने (कश्शाफ़)४. वह ग़ार अन्दर से➲

कुशादा था उस का मुंह ऐसी जानिब था कि धूप उस के अन्दर नहीं जा सकती थी। 'कह्फ़' कहते ही हैं ऐसे ग़ार को जिस के अन्दर कुशादगी हो (तफ़्सीर सियालकोटी)

اٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ
فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ۝١٧ وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا
وَّهُمْ رُقُوْدٌ ڰ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَ ذَاتَ
الشِّمَالِ ڰ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ۭ لَوِ اطَّلَعْتَ
عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ۝١٨ وَ
كَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَاۗءَلُوْا بَيْنَهُمْ ۭ قَالَ قَاۗىِٕلٌ
مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ۭ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۭ
قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ۭ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ
بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَآ اَزْكٰى
طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا
يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ۝١٩ اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ
يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا
اَبَدًا ۝٢٠ وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ

यह अल्लाह की कुदरत के निशान हैं[४] (अस्ल बात पूछो तो यह है कि) जिस को अल्लाह हिदायत करे (और नेकी की तौफ़ीक़ दे) वही राहनुमा होता है और जिस को वह गुमराह कर दे तो वह हर्गिज़ अपने लिये कोई कारसाज़ {बिगड़ी बनाने वाला} और राह दिखाने वाला न पाये गा १८. और (अल्लाह की कुदरत देख कि अगर) तू (उन को देखता) तो गुमान करता कि यह जागते हैं[५] हालाँकि वह सोते थे (आखें उन की खुली थीं जैसे जागने वालों की होती हैं) और हम उन के पहलू दायें और बायें तरफ़ फेरते थे और उन का कुत्ता उस ग़ार की चौखट पर दोनों हाथ फैलाये हुये था (उन की हालत देखने में ऐसी डरावनी थी कि) अगर तू उन को देख लेता तो भागता हुआ वापस फिर आता और तुझ में उन की दहशत भर जाती। (ग़रज़ वह सालों-साल तक इसी प्रकार सोते रहे फिर वह उठे) १९. और इसी तरह हम ने उन को उठाया ताकि वह आपस में एक दूसरे से सवाल करें (चुनान्चे) उन में से एक ने कहा कि कितनी देर तुम ग़ार में रहे? वह बोले कि (संभवतः) एक-आध रोज़ रहे हैं। आख़िर सब ने कहा कि तुम्हारा पर्वरदिगार तुम्हारे ठहरने की मुद्दत को खूब जानता है। पस तुम अपने में से एक को यह चाँदी का टुकड़ा दे कर शह्र की तरफ़ भेजो फिर वह ग़ौर करे कि उन (शहर वालों) में से किस का खाना सुथरा है? पस उस से कुछ खाने की वस्तु तुम्हारे पास ले आये और (बात-चीत में) बड़ी नर्मी से बात करे और तुम्हारे हाल पर किसी को ख़बर न करे[६] २०. (क्यों कि) अगर वह (शहर वाले) तुम्हारे हाल को जान गये तो तुम पर पथराव कर डालेंगे, या तुम को अपने मज़हब में वापस ले जायेंगे और तुम कभी भी आज़ाद न होगे २१. इसी तरह हम ने शहर वालों को उन पर (किसी तरह) ख़बर कर दी कि उन को मालूम हो जाये कि अल्लाह का वादा सच्चा है

....

४. बाज़ उलमा का बयान है कि यह लोग रूम मुल्क के बादशाह के ख़ान्दान में से थे। वहाँ का बादशाह दक़ियानूस नामी बुतपरस्त था। यह लोग एक दिन मुश्रिकों के साथ एक मेले में गये वहाँ पर बुतों की पूजा देख कर सख़्त

➲नफ़रत पैदा हुयी। और वहाँ से हट कर पेड़ के नीचे जमा हो कर सब ने एक-दूसरे से अपने दिल का हाल बयान किया और परस्पर यह तै किया कि हम लोग बुतों की पूजा नहीं करें गे। इन्हों ने अल्लाह की अ़िबादत के लिये एक ख़ास स्थान मुक़र्रर कर लिया। क़ौम वालों को जब मालूम हुआ तो बादशाह से शिकायत कर दी। यह लोग बादशाह के सामने हाज़िर किये गये। बादशाह ने इन्हें बुतों की पूजा करने का आदेश दिया लेकिन इन्हों ने इन्कार कर दिया। उस ने सख़्ती की तो इन्हों ने वतन छोड़ने का इरादा कर लिया और मौक़ा पा कर एक पहाड़ की ग़ार में जा छूपे। बादशाह ने बहुत तलाश करवाया मगर नाकाम रहा। अल्लाह तआ़ला ने तौहीद की बर्कत से इन पर पर्दा डाल दिया।

इस से भी ज़्यादा आशचर्यजनक (तअ़ज्जुब ख़ेज़) वाक़िआ़ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ पेश आया। आप मदीना की तरफ़ हिज्रत करते हुए अपने मित्र अबू बक्र रज़ि० के साथ सौर पर्वत के ग़ार में जा छुपे। दुश्मनों ने बहुत तलाश किया लेकिन उन्हें पकड़ने में कामियाबी न मिली, अल्लाह तआ़ला ने उन की आंखों की रोशनी छीन ली। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बग़ल ही से गुज़रते थे लेकिन दिखाई न देते थे। हज़रत अबू बक्र घब्रा कर कहते कि अगर दुश्मनों ने ज़रा भी सर नीचा किया तो हम पकड़ लिये जायें गे, लेकिन आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बराबर उन्हें इतमिनान दिलाते कि जिन दो के दर्मियान तीसरा अल्लाह है उस का कोई बालबीका नहीं कर सकता। हक़ीक़त यह है कि यह घटना ग़ार वालों की घटना से कहीं ज़्यादा तअ़ज्जुब वाली है। (इब्ने कसीर)

५. 'यह जागते हैं' यानी वह सोते थे, लेकिन आँखें खुली हुयी थीं और इतने लंबे समय तक सोने के बावजूद उन के जिस्म में कोई बदलाव नहीं आया। उन की रूप-रेखा और रहन-सहन ऐसा डरावना कर दिया था कि लोग उन्हें तमाशागाह न बना लें ताकि उन की नींद में ख़लल पैदा हो। उन के साथ एक कुत्ता भी था, उस ने भी उन लोगों के साथ ग़ार में पनाह ले ली थी और उन्हीं के साथ सदियों तक ज़िन्दा रहा। कुत्ता रखना अगर्चे बुरा है, लेकिन लाखों बुरों में एक भला भी है। शैख़ सादी शीराज़ी रह० की कविता के दो शेरों का उर्दू तर्जुमा यह है "नूह के बेटे ने बुरों के संग-सुहबत में बैठकर नबुव्वत के ख़ान्दान को भुला दिया और ग़ार वालों का कुत्ता चन्द दिन नेकों के साथ लग कर बहुत से इन्सानों से भी अच्छा बन गया"। (गुलिस्ताँ)

६. अल्लाह तआ़ला ने जिस प्रकार लंबी नींद सुलाया था उसी प्रकार उन को जगाया भी। जागने के बाद यह लोग आपस में पूछने लगे कि कितने समय तक हम लोग सोये हैं? किसी ने उत्तर दिया एक-आध दिन और किसी ने कहा कि इससे भी कम। किसी ने कहा कि इस बहस में पड़ने से क्या फ़ाइदा? अल्लाह ही बेहतर जानता है कि हम कितने दिनों तक सोये हैं। फिर इन लोगों ने अपने में से एक को रूपया-पैसा दे कर शहर भेजा ताकि हलाल और पाक खाना ले आये। और चलते-चलते यह ताकीद भी कर दी कि बड़ी होशियारी से जाना, वर्ना अगर बादशाह को पता चल गया तो पकड़वा कर हमें पत्थरों से मार-मार कर हलाक कर दे गा, या फिर उस का दीन कुबूल करना पड़े गा। बहरहाल यह शहर में गया तो वहाँ का सब कुछ बदला हुआ नज़र आया। न वह बादशाह था और न उस का सिक्का। लोगों ने जब इस के पास ३०० वर्ष पुराना सिक्का देखा तो बादशाह को इस की सूचना दे दी। बादशाह ने पुराना रिकार्ड मंगवाया जिस में इन भागे हुए लोगों के नाम दर्ज थे, इस बुनियाद पर यह बात साबित हो गयी कि यह वही लोग हैं जो ३०० वर्ष पूर्व उस ज़माना के मुश्रिक बादशाह के अत्याचार से भाग कर ग़ार में जा छुपे थे।

उस समय जब कि यह बादशाह के सामने मौजूद था लोग मरने के बाद जी उठने को ले कर बहस कर रहे थे। कुछ लोग पुन: जीवित हो उठने के क़ाइल थे, तो कुछ रूहानी तौर पर मानते थे और कुछ लोग सिरे से इन्कार ही कर रहे थे। बादशाह कोई ऐसा सबूत चाहता था जिस से यह इख़्तिलाफ़ ख़त्म हो सके। अल्लाह तआ़ला ने इस शख़्स को भेज कर सबूत फ़राहम कर दिया। ३०० वर्ष के बाद जागना यह भी मर कर जी उठने से कुछ कम नहीं है। चुनान्चे शहर वालों को यक़ीन हो गया कि मरने के बाद पुन: जी उठना यक़ीनी है।

अब प्रश्न यह उठता है कि जागने के बाद वह कितने दिनों तक ज़िन्दा रहे, उन का देहान्त कब हुआ? क्या➲

➲यह लोग पुनः वापस जा कर ग़ार में सो गये? शहर वालों ने ग़ार में जा कर उन सब से मुलाक़ात की या नहीं? यह और इस प्रकार के और बहुत से प्रश्न हैं जिन का उत्तर कुरआन व हदीस में नहीं है। और सही बात तो यह है कि यह सब ग़ैरज़रूरी अनावश्यक प्रश्न हैं। अगर इन की गंभीरता होती तो कुरआन स्वयँ इन सब का उत्तर देता। बहर हाल जो ज़िम्मेदार क़िस्म के लोग थे उन्हों ने यह राय दी कि उस ग़ार के निकट एक इबादतघर बना दिया जाये। ग़ार वालों के बारे में तो यह तै है कि निहायत मुत्तक़ी, परहेज़गार और तौहीदपरस्त थे, लेकिन यह लोग किस नबी की शरीअ़त मानने वाले थे? कुछ अता-पता नहीं। हाँ, जिन लोगों ने उस स्थान पर अ़िबादत घर बनाया था वह नसारा यानी ईसाई थे। (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ
بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ؕ رَبُّهُمْ
اَعْلَمُ بِهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰٓى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ
عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾ سَيَقُوْلُوْنَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ
كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ
رَجْمًا بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ؕ
قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ۬
فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۪ وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ
مِّنْهُمْ اَحَدًا ﴿٢٢﴾ وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَايْءٍ اِنِّيْ فَاعِلٌ
ذٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۫ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ
اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّيْ لِاَقْرَبَ
مِنْ هٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾ وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ
سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا

और क़ियामत में कुछ शक नहीं (यह ख़बर उन शहर वालों को उस समय दी गयी थी) जब वह अपने काम में झगड़ते थे कि उन पर एक दीवार बना दो। उन का पर्वरदिगार उन के हाल से अच्छी तरह अवगत था। जो लोग अपने काम पर ग़ालिब थे उन्हों ने कहा कि हम तो उन पर एक मस्जिद बना दें गे २२. कुछ (अहले-किताब) कहें गे कि तीन (आदमी) थे, चौथा उन में कुत्ता था। कुछ कहते हैं कि वह पांच आदमी थे, छटा उन में कुत्ता था (मगर यह सारी बात-चीत और उन का ख़याल) अटकल पच्चू है। कुछ कहते हैं कि सात आदमी थे, आठवाँ उन में का कुत्ता था। तू कह कि मेरा पर्वरदिगार उन की गिंती को खूब जानता है उन (की गिन्ती) को बहुत ही कम लोग जानते हैं[७] सो तू (ऐ रसूल) उन की शान में (किसी से) झगड़ा न करना मगर सरसरी तौर पर, और उन के बारे में किसी से मालूमात भी न करना २३. और (यूँ) न कहा कर कि मैं यह बात कल अवश्य (बतलाऊँगा, या) करूँगा २४. लेकिन (यूँ कहा कर कि) जो अल्लाह चाहे और जब तू (इन्शा-अल्लाह समय पर कहना) भूल जाये तो अपने पर्वरदिगार को याद किया कर और कहा कर कि आशा है मेरा पर्वरदिगार मुझे इस से भी अधिक हिदायत की राह बतला दे गा २५. और वह अपने ग़ार में (कुल मुद्दत) तीन सौ नौ वर्ष (क़मरी तारीख़ के हिसाब से) रहे[८] २६. (अगर यह लोग इस बारे में झगड़ें तो) तू उन से कह कि अल्लाह उन के ठहरने की मुद्दत को भी भली-भांति जानता है

....

७. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि उन बहुत कम जानने वाले लोगों में से मैं भी हूँ। वास्तव में ग़ार➲

वाले सात ही की मात्रा में थे, आठवाँ उन का कुत्ता था। (जलालैन)

८. क़मरी साल (चाँद की तारीख़) की क़ैद इस लिये लगाई है कि अ़रब में उस समय यही हिसाब प्रचलित था। कुरआन शरीफ़ में सूरः बक़रः १८९ में है कि "ऐ नबी! तुम से लोग चाँद के बारे में प्रश्न करते हैं तू कह दे कि चाँद उन लोगों के हिसाब के लिये घटता-बढ़ता है"। कुछ उलमा का ख़याल यह है कि सूरज के साल के हिसाब से ३०० और चाँद के साल के हिसाब से ३०९ वर्ष, उन का यह ख़याल बिल्कुल ही ग़लत है। अ़रब में उस ज़माना में सूरज का साल था ही नहीं इस लिए बतलाने का प्रश्न ही नहीं उठता। (सनाई)

لَبِثُوْا ۚ لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ اَبْصِرْ بِهٖ وَ
اَسْمِعْ ۭ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ ۡ وَّلَا يُشْرِكُ
فِيْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٦﴾ وَاتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ
كِتَابِ رَبِّكَ ۭ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ڟ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ
دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ
يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ
وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا
وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿٢٨﴾ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ
رَّبِّكُمْ ۣ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۙ
اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۭ
وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوْهَ ۭ
بِئْسَ الشَّرَابُ ۭ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

(और यह यक़ीनी बात है कि) तमाम आसमानों और ज़मीन के ग़ैब का अ़िल्म उसी के पास है। वह बहुत बड़ा देखने वाला और सुनने वाला है। उन लोगों के लिये उस के अ़लावा कोई बिगड़ी बनाने वाला नहीं और वह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता २७ और जो कुछ तेरे पर्वरदिगार की किताब के अहकाम तेरी तरफ़ भेजे जाते हैं वह पढ़ दिया कर। उस के आदेशों को कोई बदल नहीं सकता और उस के अ़लावा तू कहीं पनाह की जगह न पाए गा (इस लिये तू उसी का हो रह और इन दुनिया दारों से अलग रहा कर) २८. और जो लोग अपने पर्वरदिगार को सुब्ह व शाम पुकारते हैं (किसी के दिखावे और रिया से नहीं बल्कि) महज़ उस की खुश्नूदी चाहते हैं तो तू उन के साथ दिलबस्तगी (दिली- लगाव) रखा कर[९] और उन को छोड़ कर दुनिया की ज़ीनत का इरादा करता हुआ दूसरी तरफ़ तवज्जुह न करना और जिस शख़्स के दिल को हम ने अपने ज़िक्र से ग़ाफ़िल कर दिया और वह अपनी ख़्वाहिश के पीछे पड़ा हुआ है और उस की कार्रवाई हद से आगे बढ़ी हुयी है ऐसे आदमी की बात कभी न मानना २९. और तू कह कि सच्ची तालीम तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से आ पहुंची है पस जो चाहे ईमान लाये और जो चाहे काफ़िर रहे, हम ने ज़ालिमों के लिये आग तय्यार कर रखी है जिस की क़नातों (पर्दों) ने उन पर घेरा डाला होगा और अगर फ़रियाद करेंगे तो ताँबे के रंग जैसे गर्म पानीसे उनकी फ़रियाद सुनी जाएगी जो मुँह को जला देगा (सो इसी से तुम अनुमान लगालो कि) कितना बुरा पानी हो गा और वह (कैसी) बुरी जगह होगी[१०] ३०. इस में संदेह नहीं कि...

....

९. शाने नुज़ूल:- कुरैश मक्का आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा करते थे कि आप छोटे लोगों की मज्लिस

➲में न बैठा करें जैसे, बिलाल, अ़म्मार, सुहैब, इब्ने मस्ऊद रज़ि० वग़ैरह, बल्कि हम लोगों जैसे बड़े लोगों के दर्मियान बैठा करें। इन लोगों के रद्द में अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई।

मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि हज़रत सअ़द बिन वक़्क़ास, इब्ने मस्ऊद, एक शख़्स क़बीला बनू हुज़ैल का, हज़रत बिलाल और दो सहाबी और (यानि कुछ सहाबी रज़ि यल्लाहुअ़न्हुम) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास बैठे हुये थे कि इतने में मुश्रिकों के नेता भी आ गये और कहने लगे कि इन्हें अपनी मज्लिस में न बैठने दो। अल्लाह ही बेहतर जाने कि उस समय आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दिल में क्या ख़याल आया कि यह आयत नाज़िल हुयी। तबरानी की रिवायत में है कि जैसे ही यह आयत नाज़िल हुयी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपने घर से निकल कर ऐसे लोगों की तलाश में निकल पड़े। आख़िर इस प्रकार के लोग मिल गये जो अल्लाह का ज़िक्र कर रहे थे। उन के बाल बिखरे हुये थे, खालें सूख रही थी, जिस्म पर फटे-पुराने कपड़े थे। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन की मज्लिस में बैठ गये और कहने लगे कि अल्लाह का शुक्र है कि उस ने मेरी उम्मत में ऐसे लोग पैदा किये हैं जिन के साथ मुझे बैठने का निर्देश दिया गया है।

अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में यह हिदायत फ़रमाई है कि ऐसे लोगों से आँखें न फेरो, उन को छोड़ कर मालदारों को न तलाश करो, उन को न ढूँढो जो ़इबादत से दूर हैं और जिन के पाप का घड़ा भर चुका है। इन लोगों पर रश्क न करना । उन को जो कुछ दिया है केवल आज़माने के लिये दिया है वर्ना तेरे रब के पास बेहतर रोज़ी मौजूद है जो ख़त्म न होने वाली है (मुहम्मदी)

१०. हज़रत अबू सअ़ीद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "घर की चार दीवारी की तरह दोज़ख़ के चारों तरफ़ भी चार दीवारी है, उस की चौड़ाई चालीस साल के रास्ते के बराबर है"। (तिर्मिज़ी) हज़रत अबू उमामा रज़ि० से रिवायत है कि जब जहन्नम वालों को भूख लगे गी तो उन को खाने के लिए एक काँटेदार घास दी जाये गी जो उन के गले में फँस जाये गी जब उसे नीचे उतारने के लिये पानी माँगें गे तो उन्हें ताँबे की तरह खौलता हुआ पानी दिया जाये गा जिस को मुहँ लगाते ही चेहरे की सारी खाल उतर कर पानी के बर्तन में गिर पड़े गी। जो पानी अन्दर जाये गा उस से पेट की अंतड़ियाँ बाहर निकल पड़ें गी। इन तक्लीफ़ों से तंग आ कर जहन्नमी मरने की दुआ़ माँगें गे, लेकिन हज़ार वर्ष तक तो उन की दुआ़ का कोई उत्तर ही न मिले गा। हज़ार वर्ष बीत जाने के पश्चात् दोज़ख़ के फ़रिश्ते उत्तर देते हुये उन से यह कहें गे कि दुनिया में तुम्हारे पास अल्लाह ने संदेष्टा भेजे थे लेकिन तुमने उन का कहा न माना, तो अब हमेशा के लिये इसी में जलो (अबूदावूद) (अहसनुल फ़वाइद)

آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ
عَمَلًا ﴿٣٠﴾ أُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهِمُ الْأَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ
وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ
مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ ۚ نِعْمَ الثَّوَابُ ۖ وَحَسُنَتْ
مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا رَجُلَيْنِ جَعَلْنَا
لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَ
جَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾ كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ آتَتْ

जो लोग ईमान लाये और नेक अ़मल किये हैं हम नेक अ़मल करने वालों के आ़माल बर्बाद नहीं किया करते ३१. इन्हीं (नेक) लोगों के लिये हमेशा के बाग़ हैं उन के नीचे नहरें जारी हों गी जिन में उन्हें सोने के कंगन पहनाये जायें गे और हरा लिबास बारीक और मोटा कपड़ा पहनें गे, वह उन (बाग़ों) में तख़्तों पर बैठे हों गे। यह बहुत ही अच्छा बदला और बहुत ही बेहतरीन जगह है (मगर यह ऐसे अ़क़ल मन्द कहाँ हैं कि ऐसी यक़ीनी बात को मान लें। इसलिये उन के दिमाग़ से दुनिया की मुहब्बत➲

اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْئًا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا
نَهَرًا ﴿٣٣﴾ وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ
اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ
وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَآ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖٓ
اَبَدًا ﴿٣٥﴾ وَّمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ

और उसी को सब कुछ समझ लेने का ख़याल निकालने को) ३२. तू उन को दो आदमियों की (एक) मिसाल (हिकायत) सुना (जो पहले ज़माना में एक बाप के दो बेटे थे) उन में से एक को हम ने अन्गूरों के दो बाग़ दिये थे और उन के इर्द-गिर्द खजूरों के दरख़्तों से रोक कर दी थी और उन के दर्मियान खेती-बाड़ी पैदा की थी[११] ३३. वह दोनों बाग़ खूब फल देते थे और मामूली फल से उन्हों ने कभी कुछ कम न किया और हम ने उन के दर्मियान एक नह्र भी जारी कर रखी थी। ३४. और जिस के पास फल मुहय्या थे उस ने अपने साथी से बातें करते हुये कहा कि मैं तुझ से अधिक मालदार और बड़े ज़बर्दस्त जत्थे वाला हूँ ३५. और अपने बाग़ में दाख़िल हुआ ऐसे हाल में कि वह अपने नफ़्स पर अत्याचार कर रहा था, बोला कि मैं तो नहीं समझता कि यह बाग़ कभी वीरान हो गा[१२] ३६. और मैं तो नहीं समझता कि क़ियामत आने वाली है और अगर मैं (फ़र्ज़ करलो कि) अपने पर्वरदिगार की तरफ़ गया भी तो (चूँकि मैं यहाँ मालदार हूँ इस लिये वहाँ)

....

११. भूतकाल में एक पिता के दो पुत्र थे जो बँटवारे के बाद अलग-अलग हो गये। उन दोनों में से एक तो दुनिया कमाने में लग गया और दूसरा ऌल्म और परहेज़गारी में जुट गया (सनाई) पिता के तर्का में से हिस्सा पाने के बाद जो काफ़िर बेटा था उस ने ज़मीन ख़रीदी और दूसरे मुसलमान बेटे ने अपने हिस्से को अल्लाह की राह में ख़ैरात कर दिया और स्वयँ अल्लाह की ऌबादत व इताअ़त में मश्गूल हो गया। एक दिन दोनों भाई एक जगह इकट्ठा हुये तो काफ़िर भाई ने जो कि दुनियादार था कहा कि धन-दौलत और लाव-लश्कर के एतबार से मैं तुझ से ऊँचे मतर्बे वाला हूँ अब यह लहलहाती, फलों से लदी हुयी खेतियां और बहती नहरें कभी समाप्त न हों गी। यह बात सुन कर उस के मुस्लिम भाई ने कहा कि तुझ को तो अल्लाह की दी हुयी नेमत पा कर शुक्र अदा करना चाहिये और "मा शा-अल्लाहु ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाह" कहना चाहिये।

इसी आयत की रौशनी में उलमा और बुर्जुगों ने कहा है कि जिसे अपनी औलाद या माल व दौलत अत्याधिक पसन्द आये तो उसे यही आयत पढ़नी चाहिये। एक हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिस बन्दे को अल्लाह ने माल-दौलत् कुंबा-क़बीला और बीवी- बच्चों से मालामाल किया हो फिर वह इस कलिमा को पढ़ लिया करे तो उन में कोई कमी नहीं आये गी सिवाए मौत के"। (अबूयाला) एक अन्य रिवायत में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें जन्नत के एक ख़ज़ाना के बारे में न बताऊँ? जान लो कि वह ख़ज़ाना "लाहौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाह" पढ़ना है। (अहमद) एक और रिवायत में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है: मेरे बन्दे ने मान लिया और मुझ को सौंप दिया। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से पूछा गया तो उन्हों ने फ़रमाया कि केवल ला हौ-ल........ न पढ़े, बल्कि जो सूरः कह्फ़ में है यानी "माश-अल्लाहु लाहौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाह" पूरा पढ़े।

फिर उस नेक बन्दे ने कहा कि आशा है मुझे अल्लाह आख़िरत में इस से भी बेहतर नेमतें अ़ता करे गा और तेरे इस बाग़-बाग़िचे को जिसे तू हमेशगी वाला समझता है, तबाह कर देगा। चुनान्चे ऐसा ही हुआ। दूसरे दिन जब वह अपने बाग़ में गया तो वास्तव में वह बर्बाद हो चुका था। और वह उसे देख कर अफ़सोस के साथ

➲हाथों को मलते हुये कहने लगा "काश मैं ने अपने पर्वरदिगार के साथ किसी को न शरीक किया होता"। (इब्ने कसीर)
१२. इमाम कश्शाफ़ लिखते हैं कि आजकल माल-दौलत रखने वाले मुसलमानों में अक्सर का भी यही हाल है। अगर्चे वह ज़बान से तो नहीं कहते, मगर अ़मली तौर पर उन को इतना ग़ुरूर होता है कि अल्लाह की पनाह। वह भी समझते हैं कि हमारी जायदाद कभी समाप्त न होगी और हम हमेशा ही धनवान बने रहें गे (वहीदी) अगर ग़ौर किया जाये तो दुनिया की दौलत का कोई ठिकाना नहीं। जब वह ख़त्म होने पर आती है तो देखते-देखते लम्हों में ख़त्म हो जाती है और इन्सान की कोई तदबीर काम नहीं आती है। दो भाइयों के क़िस्से में हमारे लिये बड़ी इ़ब्रत है। काफ़िर भाई को अल्लाह ने सब नेमतें दे रखी थीं जिस पर उसे बड़ा ग़ुरूर था और इसी कारण अपने मुसलमान भाई को हक़ीर समझता था। उस के लाख समझाने पर भी वह अकड़ता था। आख़िर अल्लाह ने उस के बाग़ को वीरान कर दिया (राज़)

إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنقَلَبًا ۝٣٦ قَالَ
لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي
خَلَقَكَ مِن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّاكَ
رَجُلًا ۝٣٧ لَّٰكِنَّا هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِرَبِّي
أَحَدًا ۝٣٨ وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا
شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ إِن تَرَنِ أَنَا أَقَلَّ
مِنكَ مَالًا وَوَلَدًا ۝٣٩ فَعَسَىٰ رَبِّي أَن يُؤْتِيَنِ
خَيْرًا مِّن جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ
السَّمَاءِ فَتُصْبِحَ صَعِيدًا زَلَقًا ۝٤٠ أَوْ يُصْبِحَ مَاؤُهَا
غَوْرًا فَلَن تَسْتَطِيعَ لَهُ طَلَبًا ۝٤١ وَأُحِيطَ بِثَمَرِهِ
فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلَىٰ مَا أَنفَقَ فِيهَا وَهِيَ
خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَيَقُولُ يَا لَيْتَنِي لَمْ أُشْرِكْ
بِرَبِّي أَحَدًا ۝٤٢ وَلَمْ تَكُن لَّهُ فِئَةٌ يَنصُرُونَهُ

इस से भी अच्छा स्थान पाऊँ गा ३७. उस के साथी ने बातें करते हुये उस से कहा कि तू अपने पर्वरदिगार का इन्कारी है जिस ने तुझ को मिट्टी से पैदा किया है (यानी तेरे बाप आदम को) फ़िर (आदम की औलाद को) मनी की एक बूँद से (पैदा किया) फिर तुझ को पूरा आदमी बनाया ३८. लेकिन मैं तो इस ख़याल पर हूँ कि अल्लाह ही मेरा पर्वरदिगार है और मैं अपने पर्वरदिगार के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता ३९. भला तेरा इस में क्या नुक़सान था कि जब तू अपने बाग़ में दाख़िल हुआ था तो यह कहता कि सब कुछ अल्लाह के हुक्म से हुआ है, बग़ैर अल्लाह की मदद के न ताक़त है न कुव्वत, अगर्चे माल व दौलत के एतबार से तू मुझे कम दर्जा का जानता है। ४०. तो (इस बात का मुझे कुछ भी ख़याल नहीं, क्योंकि) बहुत जल्द मेरा पर्वरदिगार तेरे बाग़ से अच्छा बाग़ मुझे अ़ता करेगा और इस (तेरे ब़ाग) पर आकाश से कोई ऐसी बला नाज़िल करे गा जिस से वह (दम के दम में) वीरान मैदान हो जाये गा ४१. या उस का पानी खुश्क हो जाये गा तो तू उस को तलाश भी न कर सके गा (चुनान्चे रातों-रात सब कुछ किया कराया बर्बाद हो गया) ४२. और उस के तमाम फलों पर (तबाही का) घेरा डाला गया फिर तो वह अपने माल पर जो उस ने उस (बाग़ को सजाने-संवारने पर) ख़र्च किया था दोनों हाथ मलने लगा और वह अपनी छतों पर गिरा पड़ा था➲

और वह क़हता था कि हाए मेरा दुर्भाग्य! मैं अपने पर्वरदिगार के साथ किसी को शरीक न बनाता और कोई जमाअ़त भी उस की सहयोगी न हुयी

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ۝٤٣ هُنَالِكَ
الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ۭ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ۝٤٤
وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَاۗءٍ اَنْزَلْنٰهُ
مِنَ السَّمَاۗءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ
هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ
مُّقْتَدِرًا ۝٤٥ اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ
وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ
اَمَلًا ۝٤٦ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ
وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ۝٤٧ وَعُرِضُوْا
عَلٰي رَبِّكَ صَفًّا ۭ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ
اَوَّلَ مَرَّةٍ ۡ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ۝٤٨
وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ
مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ

४३. जो अल्लाह के अ़लावा उस की सहायता करती और न ही वह स्वँय बदला ले सका (कि अल्लाह से लड़ने-मरने पर तय्यार होता) ४४. ऐसे ही मौक़ा पर मालूम होता है कि अल्लाह बरहक़ ही की हुकूमत है उसी का बदला अच्छा है और उसी का अन्जाम बेहतर है ४५. और उन को दुनिया की ज़िन्दगी (और उस के बुल्बुला होने) की मिसाल बतला कि वह पानी की तरह है जो हम आकाश से उतारते हैं फ़िर उस के साथ ज़मीन की अन्कुरियाँ खूब फल-फूल जाती हैं (इतने में) फिर वह (दिखते-देखते, दम के दम में सख़्त लू लगने से) चूर-चूर हो जाती हैं कि हवायें उस को उड़ाती हैं[१३]। और अल्लाह हर एक चीज़ पर क़ुदरत रखता है ४६. माल और बेटे दुनिया की सजावट हैं (लेकिन यह सब कुछ ख़्वाब व ख़याल है और कुछ नहीं) मगर नेक आमाल जो बाक़ी रहने वाले हैं[१४] उन का बदला और उम्मीद तेरे पर्वरदिगार के नज़दीक सब से बेहतर है (सो तुम तैयार हो जाओ) ४७. और (उस दिन से डरो) जिस रोज़ हम पहाड़ों को (बादल के समान) चलायें गे[१५] और तू ज़मीन को चटियल मैदान देखे गा और हम उन सब को जमा करें गे और उन में से किसी एक को भी न छोड़ें गे ४८. और तेरे पर्वरदिगार के सामने सफ़ें (लाइनें) बाँध कर पेश किये जायें गे। आज तो हमारे पास ऐसे आये हो जैसे हम ने तुम को पहली मर्तबा पैदा किया था, बल्कि तुम ने यह समझा कि हम तुम्हारे लिये कोई वक़्त न ठहरायें गे ४९. और किताब रखी जाये गी पस तू मुजरिमों को देखे गा कि उस किताब के अन्दर वाली बातों से डरते हों गे और कहें गे कि हाये हमारी बदक़िस्मती! यह कैसी किताब है

....

१३. 'हवायें उस को उड़ाती हैं' यानी तमाम हरियाली दम के दम में ख़त्म हो जाती है। यही हाल दुनिया की ज़िन्दगी और इन्सान की जवानी का और उस की इ़ज़्ज़त व प्रतिष्ठा का है। इन्सान को दुनिया की दौलत के साथ जवानी और इ़ज़्ज़त मिल जाती है तो वह फ़िरऔ़न बन जाता है। उस की नज़र में शरीअ़त के क़ानून की कोई अहमियत

नहीं होती। वह किसी की बात मानना तो जाने दीजिये कुबूल करने को तय्यार नहीं होता। समझाने वालों को स्वयँ समझाने लगता है। उन से बिगड़ जाता है और दो चार उल्टी-सीधी भी सुनाने लगता है। लेकिन जब कुछ समय के बाद धन-दौलत, मान-मर्यादा छिन जाती है, जवानी चली जाती है, अ़िज़्ज़त भी बाक़ी नहीं रहती, तो फिर उन साहब की कैसी गत बनती है कि पूछो मत।

१५. जनवरी १९१४ को हिन्दुस्तान के सूबा बिहार में जो भूकंप आया उसे सारी दुनिया ने देख लिया, मगर फिर भी जाहिल लोग इस से नसीहत नहीं पकड़ते और नशे में बदमस्त रहते है (सनाई)। सितंबर १९६२ में मुल्क ईरान में भूकंप ने दो सौ बस्तियों को देखते ही देखते मिट्टी के ढेर में बदल दिया। अस्फ़हान जैसा सुन्दर शहर ईट-पत्थर के मलबे में तबदील हो गया। समाचार पत्रों की सूचना के आधार पर कम से कम ५०००० इन्सान मौत के मुंह में चले गये और जो जीवित बचे उन में कितने लूले-लंगड़े, अपाहिज हो कर ज़िन्दा शव बन गये इन की कोई गिन्ती ही नहीं। यह और इस प्रकार की दूसरी महामारियाँ अल्लाह की तरफ़ से तंबीह हैं मगर अक्सर लोग नसीहत नहीं पकड़ते (राज़)

१४+१५. हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि० रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक रात अ़िशा की नमाज़ के बाद हमारे पास आये। आप ने आसमान की तरफ़ देखा फिर निगाहें नीची कर लीं। हम लोगों ने ताड़ लिया कि संभवत: आज कोई नई बात पेश आई है। हम लोगों ने मालूम किया तो आप ने फ़रमाया: मेरे बाद झूठे लोग बादशाह हों गे। सो जान लो कि जिस ने भी उन के झूठ और अत्याचार पर उन का समर्थन किया वह मेरी उम्मत से ख़ारिज है और न मैं उस का हूँ गा। और जो अन्याय और अत्याचार में उन का समर्थन नहीं करेगा वह मेरा होगा और मैं उस का हूँ गा। फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "सुब्हा-नल्लाह, अल्-हम्दुलिल्लाह, लाइला-ह इल्लल्लाह, अल्लाहु अक्-बर" यह सदा बाक़ी रहने वाले नेक आमाल हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह का ज़िक्र, नमाज़, रोज़ा, हज्ज, ज़कात, जिहाद, गुलामों को आज़ाद करना वग़ैरह सब "बाक़ियाते-सालिहात" (हमेशा बाक़ी रहने वाले नेक आमाल) हैं जिन का सवाब जन्नत वालों को हमेशा-हमेशा मिलता रहे गा। वह यह भी फ़रमाते हैं कि हर अच्छी बात, हर अच्छे अ़मल को भी इसी में शामिल किया जाये गा।

मैं कहता हूँ कि दुनिया में औलाद का माँ-बाप के हक़ में दुआयें करना, मस्जिद-मदरसा बनवाना, कुआँ खुदवाना, कुरआन और दीनी किताबें छाप कर तक़्सीम करना, यह सब भी "बाक़ियाते-सालिहात" के संदर्भ में आते हैं (राज़) इस में तनिक भर संदेह नहीं-ख़ालिद।

لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَّلَا كَبِيرَةً إِلَّآ أَحْصٰهَا ۚ وَ
وَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا ۗ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ
أَحَدًا ﴿٤٩﴾ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوا لِاٰدَمَ
فَسَجَدُوٓا إِلَّآ إِبْلِيسَ ۗ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ
عَنْ أَمْرِ رَبِّهِ ۗ أَفَتَتَّخِذُونَهُ وَذُرِّيَّتَهُ أَوْلِيَآءَ
مِن دُونِي وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ۚ بِئْسَ لِلظّٰلِمِينَ
بَدَلًا ﴿٥٠﴾ مَآ أَشْهَدتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
وَلَا خَلْقَ أَنفُسِهِمْ ۖ وَمَا كُنتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّينَ

कि न छोटा गुनाह छोड़ती है और न बड़ा गुनाह यह सब पर हावी है और जो कुछ उन्हों ने किया हो गा सब उस में मौजूद पायें गे। और (साथ ही उस की सज़ा भी भुगतनी पड़े गी, मगर न कम न ज़्यादा, क्योंकि) तेरा पर्वरदिगार किसी पर अन्याय नहीं किया करता ५०. (तुझे मालूम है) जब हम ने फ़रिश्तों से कहा था कि आदम को सज्दा करो। उन सब ने (वैसा ही) किया मगर इबलीस ने इन्कार किया क्यों कि वह जिन्नों में से था (उस की तबीअ़त को शरारत ही सूझी) सो वह अपने पर्वरदिगार के हुक्म

عَضُدًا ۞ وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَآءِىَ
الَّذِينَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ
وَجَعَلْنَا بَيْنَهُم مَّوْبِقًا ۞ وَرَا الْمُجْرِمُونَ النَّارَ
فَظَنُّوٓا أَنَّهُم مُّوَاقِعُوهَا وَلَمْ يَجِدُوا عَنْهَا
مَصْرِفًا ۞ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِى هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ

से नाफ़र्मान हुआ। तो क्या फिर तुम उस को और उस की ज़ुर्रियत (औलाद) को मित्र बनाते हो? हालाँकि वह तुम्हारे दुश्मन हैं। ज़लिमों का बहुत ही बुरा बदला है[१६] ५१. न मैं ने आसमानों और ज़मीनों की पैदाइश पर उन को हाज़िर किया था न खुद उन की पैदाइश पर (उन को ख़बर तक हुयी) और न मैं ऐसे गुमराह करने वालों को अपना मददगार बनाने वाला हूँ। ५२. और (उस दिन से डरो) जिस रोज़ अल्लाह कहेगा कि जिन को तुमने मेरा शरीक समझा था उन को बुलाओ सो वह (नादान) उन को बुलायें गे (मगर वह नबी और वली जिन से दुनिया में मदद माँगते थे) वह उन की बात का उत्तर भी न दें गे और हम उन में एक बड़ी मज़बूत आड़ हाइल कर दें गे ५३. और मुज्रिम आग देखें गे तो समझें गे कि हम उस में गिरे (चुनान्चे वह औंधें क़र के डाल दिये जाये गें) और उस से भागने की राह उन को न मिले गी ५४. और हम ने इस कुरआन में लोगों के लिये हर प्रक़ार की मिसालें बयान की हैं

....

१६. इबलीस और आदम अ़लै० का क़िस्सा पूरे कुरआन में सात स्थानों पर ज़िक्र है। सूरः बक़रः- पारः१, आयत ३४+सूरः हिज्र-पारः १४, आयत ३१+ सूरः बनी इनी इस्राईल- पारः १५, आयत ६१+ सूरः कह्फ़-पारः१५, आयत ५०+ सूरः त्वाहा- पारः१६, आयत ११६+ सूरः स्वाद- पारः२३, आयत ७४।

हर जगह क़िस्सा तो एक ही बयान है लेकिन मौक़ा-महल के एतबार से उद्देश्य जुदा-जुदा हैं। यहाँ बयान करने का मक़्सद यह है कि मक्का के काफ़िर नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और ग़रीब सहाबा को देखकर उन्हें ज़लील समझते थे। जिस प्रकार ऊपर दो भाइयों में से, मालदार भाई ने अपने ग़रीब भाई को समझा। तो यह लोग बिल्कुल इबलीस की तरह गुमराह हैं, कि उस ने भी आदम को ज़लील समझ कर सज्दा करने से इन्कार किया था इन मुश्रिकों और इब्लीस की सोंच में कोई अन्तर नहीं है। आगे कुरआन फ़रमाता है कि यह लोग उस शैतान के पैरूकार हैं जिस ने आदम को मिट्टी से पैदा किये जाने को हक़ीर जाना और अपने आप को आग से पैदा हुआ जान कर रौशन और चमकदार जाना। उस ने आदम के नूरानी जौहर पर ध्यान न दिया और इसी प्रकार अपनी बातिनी ख़बासत को न देखा। फ़रिश्तों की संख्या कितनी थी जिन को सज्दा करने का हुक्म हुआ था? तो कुरआन मजीद में 'कुल्लुहुम अज्-मऊन' (कुल और तमाम फ़रिशतों ने सज्दा किया) का ज़िक्र है। यानी ज़मीन व आसमान के समस्त फ़रिश्ते मुराद हैं। कुछ लोग यह कहते हैं कि केवल आसमान या केवल ज़मीन के फ़रिश्ते मुराद हैं। हालाँकि इस दावे के लिये कोई तर्क नहीं है। मिश्कात शरीफ़ में है कि फ़रिश्ते नूर से पैदा किये गये हैं। यह फ़रिश्ते अन्य मख़्लूक़ की तरह नर-मादा से नहीं पैदा किये गये हैं। अल्लाह का ज़िक्र उन की ख़ूराक है वह अवज्ञा और नाफ़र्मानी से पाक हैं। कुछ लोग फ़रिश्ता' मख़्लूक़ के इन्कारी हैं। उन का कहना है कि नूर जिस्म नहीं रखता, इसीलिये मलक के माना इन्सानी कुवा और मलका मुराद लेते हैं, ऐसे लोग अ़रबी भाषा नहीं जानते हैं। 'म-लक' शब्द में "मीम" अस्ली नहीं है और 'म-ल-कह' (कुव्वत, ताक़त) शब्द का "मीम" अस्ली है। गोया दोनों दो अलग-अलग शब्द हैं और दोनों के अलग-अलग माना भी है। कुरआन मजीद में साफ़ शब्दों में मौजूद है कि फ़रिश्ते अन्य मख़्लूक़ की तरह अल्लाह की मख़्लूक़ हैं। यह नबियों के पास-आते-जाते और जंगों में मुसलमानों की मदद करते थे। नबी

करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फ़रमाना है कि फ़रिश्ते मेरे पास आते और अल्लाह का फ़र्मान लाते हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सहाबा फ़रमाते हैं कि हम उन्हें आँखों से देखते थे। इस लिये इन तमाम शहादतों की मौजूदगी में उन का दावा रद्द है जो कहते हैं कि फ़रिश्ता कोई मख़्लूक़ नहीं बल्कि इन्सान के अन्दर की कुव्वत और ताक़त का नाम है। ऐसे लोग नेचरी बेदीन और अ़िल्म से कोरे हैं, दिल के अन्धे और अक़ीदे के गन्दे हैं।

हज़रत आदम और हज़रत यूसुफ़ को सज्दा करने के मुतअ़ल्लिक़ उलमा के बहुत से अक़वाल हैं (१) यह सज्दा सलाम का था, न कि अ़िबादत का (२) पहले की शरीअ़त में बुज़ुर्गों को सज्दा जायज़ था। हाँ, अ़िबादत का सज्दा तो बहरहाल तमाम शरीअ़तों में हराम था। (३) आदम को सज्दा नहीं किया, बल्कि आदम को क़िब्ला मान कर अल्लाह को सज्दा किया। अल्लाह तआ़ला ने इस अन्तिम उम्मत के लोगों पर तहिय्यत और सलाम का सजदा भी हराम किया है। (तफ़सीर सूरः कह्फ़ मौलाना सियालकोटी)

مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۗ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنْذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ ۖ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا أُنْذِرُوا هُزُوًا ﴿٥٦﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ ۚ إِنَّا جَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۖ وَإِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَنْ يَهْتَدُوا إِذًا أَبَدًا ﴿٥٧﴾ وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ ۖ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ۚ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ

और इन्सान सब से अधिक झगड़ने वाला है[१७] ५५. उन लोगों को हिदायत आने के बाद ईमान लाने और अपने पर्वरदिगार से (गुनाहों की) बख़्शिश माँगने से किसी बात की रोक इस के सिवा नहीं कि पहले लोगों की सी हालत उन पर भी आये (यानी बिल्कुल तबाह हो जायें) या सामने से हमारा अ़ज़ाब उन पर आये[१८] ५६. और हम संदेष्टाओं को केवल शुभसूचना देने और डराने को भेजा करते हैं और काफ़िर लोग झूठ के साथ झगड़े किया करते हैं ताकि (किसी तरह) इस झूठ के साथ सच को दबा दिया करें और मेरे आदेशों को और बुरे कामों पर डराए जाने को केवल मज़ाक़ समझते हैं ५७. और उस से अधिक ज़ालिम कौन होगा[१९] जो अपने पर्वरदिगार के हुक्मों से नसीहत किया जाये फिर वह उन से मुंह फेर ले और अपने आमाल को (जो कर चुका है) भूल जाये। हम ने भी उन के दिलों पर समझने से पर्दे डाल रखे हैं और उन के कानों में (एक प्रकार की) बन्दिश {डाट} पैदा कर दी है। और अगर तू उन को हिदायत की तरफ़ बुलाये तो कभी भी हिदायत नहीं पायेंगे ५८. (और इन शरारतों के बावजूद उन को हर प्रकार का सुख क्यों है? इस लिये कि) तेरा पर्वरदिगार बड़ा ही बख़्शने वाला मेहरबान है। अगर वह उन के (बुरे) आमाल पर पकड़ करता तो तुरन्त उन पर अ़ज़ाब नाज़िल कर देता। बल्कि (बात यह है कि) उन के लिये एक वक़्त मुक़र्रर है

१७. 'इन्सान बड़ा झगड़ालू है' गोया उस की पैदाइश ही में झगड़ा दाख़िल है। इस के अ़लावा बुरी सुहबत का असर भी

➲उस के अन्दर दाख़िल हो रहा है, यही कारण है कि वह खुली निशानियाँ देखने के बावजूद भी गुमराही को नहीं छोड़ता।
१८. जैसा कि फ़िरऔन पर सूखा काल, बीमारी वग़ैरह का अ़ज़ाब आया था। यानी उन की हालत यह बता रही है कि जब तक तबाह और बर्बाद न हों गे, ईमान नहीं लायें गे। और अस्ल यह है कि यह लोग नबुव्वत का उद्देश्य ही नहीं मसझते हैं वर्ना अक्सर ऐसे बेतुके प्रश्न न करते जो नबियों की कुदरत में नहीं हैं। (सनाई)
१९. कुरआन मजीद में 'उस से अधिक ज़ालिम कौन हो गा' यह वाक्य चन्द ख़ास क़िस्म के लोगों के लिये आया है। (१) जो अल्लाह के अहकाम से मुंह मोड़ते हैं और उस के अनुसार अ़मल नहीं करते हैं, जैसे कि अल्लाह ने फ़रमाया: "उस शख़्स से बढ़ कर ज़ालिम कौन हो गा जिसे अल्लाह की आयतों से नसीहत की जाये फिर वह उस से मुंह मोड़ ले। हम अवश्य ही ऐसे मुज्रिमों से बदला लेने वाले हैं"। (२) झूठे नुबुव्वत के दावेदारों के लिये आया है, जैसे सूरः "सफ़्फ़" मे फ़रमाया: "उस शख़्स से बड़ा ज़ालिम कौन हो गा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे"। सूरः अन्आ़म में भी ऐसे ही लोगों के लिये इस जुम्ले का इस्तेमाल है। खुदा पर झूठ बाँधने वालों में वह लोग भी शामिल हैं जो अपनी तरफ़ से झूठी बातें गढ़ कर शरीअ़त में दाख़िल कर देते हैं और लोग धोका से उस को शरीअ़त समझ कर उस पर अ़मल करने लग जाते हैं। (३) जो लोग मस्जिदों में अल्लाह का ज़िक्र करने से मना करते हैं उन के भी लिये आया है जैसे, "उस शख़्स से बड़ा ज़ालिम और कौन हो गा जो अल्लाह की मस्जिदों में अल्लाह का ज़िक्र करने से मना करे और उस को उजाड़ने की कोशिश करे"। अल्लाह का ज़िक्र सब से बढ़ कर है, इसलिये जो इस से रोके वह सब से बढ़ कर ज़ालिम है। (तफ़्सीर मौलाना सियालकोटी रह०)

لَّن يَجِدُوا مِن دُونِهِ مَوْئِلًا ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ الْقُرَىٰ
أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِم
مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتَاهُ لَا أَبْرَحُ حَتَّىٰ
أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا بَلَغَا
مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ
فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتَاهُ آتِنَا
غَدَاءَنَا لَقَدْ لَقِينَا مِن سَفَرِنَا هَٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾
قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ
الْحُوتَ وَمَا أَنسَانِيهُ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ
وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ﴿٦٣﴾ قَالَ ذَٰلِكَ
مَا كُنَّا نَبْغِ فَارْتَدَّا عَلَىٰ آثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿٦٤﴾
فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَا آتَيْنَاهُ رَحْمَةً مِّنْ
عِندِنَا وَعَلَّمْنَاهُ مِن لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾ قَالَ لَهُ

इस से पहले उन को कहीं पनाह की जगह हर्गिज़ नहीं मिले गी ५९. उन बस्तियों वालों ने जब अत्याचार किये तो हम ने उन सब को तबाह कर दिया और हम ने उन के लिये एक वक़्त मुक़र्रर कर रखा था। ६०. और जब मूसा ने अपने ख़ादिम से कहा कि जब तक मजू-म-अल् बह्रैन {दो दरियाओं के संगम} पर न पहुंचूँगा न ठहरूँगा या सालहासाल चलता रहूँ गा[२०] ६१. पस वह दोनों जब संगम पर पहुंचे तो अपनी मछली भूल गये तो उस ने सुरंग की तरह दरिया में अपना रास्ता बना लिया ६२. सो वह दोनों आगे बढ़े तो मूसा ने अपने ख़ादिम (यूशअ़) से कहा कि हमारा नाश्ता तो लाओ, हमें तो इस यात्रा में सख़्त तक्लीफ़ पहुंची है ६३. वह बोला: आप ने देखा कि जब हम उस पत्थर के पास ठहरे थे तो मैं मछली भूल गया और मुझे शैतान ने इस वाक़िआ़ का याद दिलाना भुला दिया और उस मछली ने दरिया में अपनी राह अ़जीब➲

➲ढंग से बनाई ६४. मूसा ने कहा: यह वही स्थान तो है जिस को हम खोज रहे थे सो वह अपने क़दमों की खोज लगाते हुये उल्टे पाँव चले ६५. पस उन्हों ने हमारे बन्दों में से एक बन्दा पाया (जिस का नाम ख़िज़्र था) जिस को हम ने अपने पास से रहमत अ़ता की थी और उस को अपने हाँ से अ़िल्म सिखाया था ६६. मूसा ने क़हा:

....

२०. हज़रत उबय्यि बिन कअ़ब रज़ि० कहते हैं कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना कि हज़रत मूसा अ़लै० बनी इस्राईल में खड़े हो कर खुत्बा दे रहे थे कि किसी ने प्रश्न किया सब से बड़ा आ़लिम कौन है? आप ने उत्तर दिया मैं हूँ और यह न कहा कि अल्लाह बेहतर जाने। अल्लाह को हज़रत मूसा का यह कहना पसन्द न आया और वह्यि भेजी कि फ़लाँ दो दरियाओं के संगम पर हमारा एक बन्दा है जो तुम से भी अधिक अ़िल्म रखता है। मूसा ने कहा कि मैं वहाँ तक कैसे पहुंचूँ? अल्लाह ने क़हा अपने साथ एक मछली ले लो वह जहाँ गुम हो जाये वहीं पर उन से मुलाक़ात हो गी। हज़रत मूसा अपने साथी यूशअ़ बिन नून को ले कर चले। राह में एक पत्थर के पास पहुंच कर थोड़ी देर आराम करने के लिये बैठे और वहीं सो गये मछली उन की थैली से उसी स्थान पर निकल कर दरिया में कूद गयी और ऐसी गयी जैसे कोई सुरंग बना कर ज़मीन में उतर गया हो। दोनों जब नींद से जागे तो फिर अपना आगे का सफ़र जारी कर दिया और पूरा दिन और रात चलते ही रहे। सुब्ह को मूसा ने सफ़र की तक्लीफ़ बयान करते हुये अपने साथी से नाश्ता तलब किया। अब उन के साथी को मछली का थैली से दरिया में कूद जाना याद आया और मूसा को पूरी दास्तान सुनाई। उन्हों ने कहा कि वही स्थान तो था जिस की हमें तलाश थी फिर वह दोनों वापस लौट कर उस पत्थर के पास पहुंचे तो क्या देखा कि एक बुज़ुर्ग सफ़ेद पोशाक में लिपटे हुये बैठे हैं। आप ने उन्हें सलाम किया। उन्हों ने आश्चर्य प्रकट करते हुये कहा कि इस ज़मीन में सलाम कहाँ? आप ने कहा कि मैं मूसा हूँ। उन्हों ने कहा कि बनी इस्राईल के मूसा? कहा कि हाँ, और मैं इस लिय हाज़िर हुआ हूँ कि आप मुझे वह बातें सिखाएँ जो आप को अल्लाह की तरफ़ से सिखाई गयी हैं। उन्हों ने कहा कि आप मेरे साथ रह कर सब्र नहीं कर सकते, इस लिये कि जो अ़िल्म मुझे है वह आप को नहीं और जो आप को है वह मुझे नहीं। अल्लाह ने दोनों को अलग-अगल अ़िल्म से नवाज़ा है। मूसा ने कहा कि मैं सब्र करूँ गा और नाफ़र्मानी न करूँ गा। हज़रत ख़ज़िर ने कहा कि अगर आप मेरे साथ रहना चाहते हैं तो मुझ से किसी चीज़ के बारे में प्रश्न न करें गे। मैं स्वँय ही उस के बारे में बतलादूँ गा।

बहर हाल दोनों साथ हो गये। राह में नदी पार करने के लिये दोनों कश्ती पर सवार हो गये। मल्लाह ने हज़रत ख़िज़्र को पहचान लिया इस लिये मज़दूरी नहीं ली। जब बीच दरिया में पहुंचे तो उन्हों ने चुप-चाप नाव के तख़्तों को कुल्हाड़ी से उखाड़ना आरंभ कर दिया। मूसा अ़लै० से न रहा गया और तुरन्त बोल पड़े कि उन्हों ने तो यह एहसान किया कि बग़ैर किराया-भाड़ा के अपनी कश्ती पर बिठा लिया और आप हैं कि उस की कश्ती को ही तोड़ रहे है? इस प्रकार तो सब के सब डूब जायें गे। हज़रत ख़िज़्र ने कहा मैं ने तुम से पहले कह दिया था कि तुम मेरे साथ रह कर सब्र न कर सको गे। मूसा ने कहा कि भूल कर मुझसे यह ग़लती हो गयी इस लिये क्षमा कीजिये और सख़्ती न कीजिये।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: यह पहली ग़लती वास्तव मे भूल कर ही हुयी थी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने वाक़िआ बयान करते हुये फ़रमाया कि इतने में एक चिड़िया आ कर नाव पर बैठ गयी और दरिया से एक चोंच पानी ले कर उड़ गयी। हज़रत ख़िज़्र ने मूसा अ़लै० से कहा कि मेरे और तुम्हारे अ़िल्म ने अल्लाह के अ़िल्म में इतनी ही कमी की है, जितनी इस चिड़िया ने पानी ले कर दरिया के पानी को कम किया है।

अन्ततः कश्ती दरिया के किनारे लग गयी और सब उतर कर अपनी-अपनी राह चले। हज़रत मूसा भी➲

➲इन के साथ चलने लगे कि राह में कुछ बच्चे खेलते हुये नज़र आये। खिज़्र ने उन में से एक बच्चे का सर पकड़ कर इतने ज़ोर से झटका दिया कि वह मर गया। हज़रत मूसा यह देख कर घबरा गये और बोल पड़े कि आप ने इस बच्चे को नाहक़ क़त्ल कर के बड़ा ही बुरा काम किया है। उन्हों ने कहा कि मैं ने पहले ही कह दिया था कि हमारी तुम्हारी नहीं निभे गी। इस बार उन्हों ने हज़रत मूसा पर और अधिक सख़्ती की। उन्हों ने कहा कि अगर अब प्रश्न करूँ गा तो आप अपने साथ मुझे मत रखिये गा। मुआहिदा तै हो जाने के बाद फिर दोनों एक साथ चल पड़े और एक गाँव में पहुंच गये। गाँव वालों से खाना माँगा, लेकिन उन्हों ने देने से इन्कार कर दिया। वहीं एक टेढ़ी दीवार नज़र आयी जो एकदम झुक गयी थी और अब गिरी कि तब गिरी के क़रीब थी। हज़रत ख़िज़्र अलै० ने बिना मज़दूरी लिये उस दीवार को ठीक कर दिया। हज़रत मूसा अ़लै० से न रहा गया और तुरन्त बोल पड़े कि आप को इन से मज़दूरी लेनी चाहिये थी, इस लिये कि इन्हों ने एक वक़्त खिलाने से भी इन्कार कर दिया था। ख़िज़्र अलै० ने कहा कि अब हमारा और तुम्हारा साथ यहीं से छूटता है। लेकिन जुदा होने से पहले मैं उन तीनों कामों की असलिय्यत बतला दूँ जो तुम्हें देखने में उल्टा दिखाई दे रहा था। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अगर मूसा अ़लै० ने सब्र से काम लिया होता तो और भी बहुत सी बातें हमारे सामने आतीं। यह हदीस बुख़ारी शरीफ़ की है। एक दूसरी सहीह रिवायत में है कि जिस पत्थर के पास हज़रत मूसा ठहरे थे वहाँ पर एक चश्मा था जिस का नाम "नह्रे हयात" (जीवन सरिता) था, उस का पानी जिस किसी चीज़ को लग जाता था तो वह ज़िन्दा हो जाती थी।

مُوسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا
عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾ قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ
مَعِيَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ
بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾ قَالَ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا
وَّلَآ اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾ قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِيْ
فَلَا تَسْـَٔلْنِيْ عَنْ شَيْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ
ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ فَانْطَلَقَا حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِي السَّفِيْنَةِ
خَرَقَهَا قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا لَقَدْ
جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ﴿٧١﴾ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ
تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا
نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ عُسْرًا ﴿٧٣﴾
فَانْطَلَقَا حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ قَالَ اَقَتَلْتَ
نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ﴿٧٤﴾

क्या मैं आप के साथ रह सकता हूँ? इस शर्त पर कि जो कुछ अल्लाह ने आप को अ़िल्म दिया है उस में से मुझे भी कुछ सिखाइये ६७. उस ने कहा कि तू हर्गिज़ मेरे साथ सब्र नहीं कर सकेगा ६८. और (क़यास भी यही कहता है कि) तू जिस चीज़ को नहीं जानता उस पर क्यों कर सब्र कर सकेगा? ६९. मूसा ने कहा: आप मुझ को इन्शाअल्लाह सब्र करने वाला पायें गे और मैं आप की नाफ़र्मानी न करूँ गा ७०. (ख़िज़्र ने) कहा कि अगर तू मेरे साथ रहना चाहता है तो किसी बात के बारे में मुझ से प्रश्न न करना यहाँ तक कि मैं स्वयँ ही तुझ को उस का राज़ बताऊँ ७१. पस दोनों चले यहाँ तक कि जब दोनों एक नाव पर सवार हुये तो उस ने नाव तोड़ दी। मूसा ने कहा: क्या आप ने उस को इस लिये तोड़ा है कि उस के सवारों को डुबो दें? यह तो आप ने मक्रूह काम किया है[२१] ७२. ख़िज़्र ने कहा: क्या मैं ने नहीं कहा था कि तू हर्गिज़ मेरे साथ सब्र न कर सके गा ७३. मूसा➲

ने कहा: मेरी भूल पर मेरी गिरिफ़्त न कीजिये और मेरे साथ इस काम में सख़्त पकड़ न कीजिये ७४. फिर दोनों चलते-चलते एक लड़के से मिले तो उस (ख़िज़्र) ने उसे क़त्ल कर दिया, मूसा ने कहा: क्या आप ने एक बेगुनाह जान को बग़ैर किसी जान के बदले क़त्ल कर दिया है? कुछ शक नहीं कि यह काम तो आप ने बहुत ही बेजा किया है।

....

ग़ार वालों का क़िस्सा:- शाने नुज़ूल के एतबार से देखा जाये तो इन लोगों का क़िस्सा मक्का के मुश्रिकों के प्रश्न के उत्तर में बयान किया गया है, जैसा कि सूर: के आरंभ में हाशिया न०१ में गुज़र चुका है। लेकिन कुरआन मजीद किसी वाक़िआ और घटना को केवल वाक़िआ और क़िस्से-कहानियों के तौर पर नहीं बयान करता, बल्कि उस का उद्देश्य उस काल के लोगों को कोई शिक्षा और संदेश भी देना होता है। चुनान्चे ग़ार वालों की घटना बयान कर के मक्का के काफ़िरों को धमकी दी है और मुसलमानों को तसल्ली और उन की ढारस बंधाई है।

ग़ार वालों के वाक़िआ पर अगर नज़र डालें तो मालूम हो गा कि वह केवल चन्द गिने-चुने नौजवान थे। उन का जुर्म केवल यह था कि उन्हों ने बादशाह को अपना ख़ुदा मानने से इन्कार कर दिया था, बुतों की पूजा छोड़ कर केवल एक अल्लाह की पूजा करते थे। इन के इस जुर्म पर जब बादशाह ने उन को क़त्ल करना चाहा तो अल्लाह ने उन की ग़ार में सुरक्षा फ़रमाई और उन को बादशाह के हर प्रकार की यातनओं से सुरक्षित रखा।

इन्हीं ग़ार वालों के ही समान मक्का के मुसलमानों का भी हाल था। मक्का के काफ़िरों ने उन का भी जीना दूभर कर रखा था। उन का भी जुर्म ग़ार वालों के समान यही था कि उन्हों ने भी बुतों की पूजा से इन्कार कर दिया था और केवल एक अल्लाह की इबादत और इताअ़त में लगे हुये थे। चुनान्चे उन मुसलमानों को ग़ार वालों का क़िस्सा बयान कर के यह शिक्षा दी कि तुम लोग भी अपने दीन पर जमे रहो, उन की सुनते और सहते रहो, जिस प्रकार मैं ने ग़ार वालों की सुरक्षा की थी, तुम्हारी भी सुरक्षा करूँ गा।

चुनान्चे इतिहास गवाह है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और उन के साथी हज़रत आबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० की सौर पर्वत के ग़ार में सुरक्षा फ़रमाई, मक्का वालों की आँखों से उन्हें ओझल कर दिया और उस ग़ार के आस-पास चक्कर काटते ही रह गये। दूसरे मुसलमानों को हब्शा भेज कर और बाक़ी को मदीना भेज कर सुरक्षा प्रदान की और एक समय वह भी आया कि काफ़िरों को परास्त होना पड़ा और उन्हें मुंह की खानी पड़ी। मक्का फ़तह हो गया और पूरे अ़रब महादीप में इस्लाम का बोल-बाला हुआ।

आज-कल के मुसलमानों को इस वाक़िआ से यह शिक्षा दी गयी है कि हर मुसलमान को ग़ार वालों का सा जविन बिताना चाहिये और अपने तौहीद पर क़ाइम रहना चाहिये, हर प्रकार के अत्याचार को सहन करना चाहिये, जिस प्रकार अल्लाह ने ग़ार वालों को सुरक्षा प्रदान की और जिस प्रकार मक्का के मुसलमानों को कुफ़्फ़ार और मुश्रिकों से सुरक्षित रखा, इसी प्रकार तुम्हारी भी सुरक्षा फ़रमाये गा। ला तहिनू वला तह्-ज़नू अन् तुमुल्-आलौ-न इन् कुन्तुम् मोमिनी-न (हिम्मत न हारो और ग़म न करो, विजय तुम्हारी ही हो गी-मगर शर्त यह है कि तुम मोमिन बने रहो)

कहने को तो यह केवल ग़ार वालों के वाक़िआ का एक बयान है, लेकिन इस में मौजूदा और भविष्य में आने वाली नस्लों के लिये कितनी ज़बर्दस्त तालीम और नसीहत मोजूद है किसी से पोशिदा नहीं।

*****

....ख़ालिद सिद्दीक़ी

بِسْــــمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْــــمِ

पारः क़ा-ल अ-लम अक़ुल् (16)

संक्षिप्त विषय सूची

क़ा-ल अ-लम् अक़ुल्ल-क-(16)

قَالَ اَلَمۡ اَقُلۡ لَّكَ اِنَّكَ لَنۡ تَسۡتَطِيۡعَ مَعِىَ
صَبۡرًا ﴿۷۵﴾ قَالَ اِنۡ سَاَلۡتُكَ عَنۡ شَىۡءٍۢ بَعۡدَهَا فَلَا
تُصٰحِبۡنِىۡ‌ۚ قَدۡ بَلَغۡتَ مِنۡ لَّدُنِّىۡ عُذۡرًا ﴿۷۶﴾ فَانْطَلَقَا
حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَيَاۤ اَهۡلَ قَرۡيَةِ ۨاسۡتَطۡعَمَاۤ اَهۡلَهَا فَاَبَوۡا
اَنۡ يُّضَيِّفُوۡهُمَا فَوَجَدَا فِيۡهَا جِدَارًا يُّرِيۡدُ اَنۡ
يَّنۡقَضَّ فَاَقَامَهٗ‌ ؕ قَالَ لَوۡ شِئۡتَ لَـتَّخَذۡتَ عَلَيۡهِ
اَجۡرًا ﴿۷۷﴾ قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيۡنِىۡ وَبَيۡنِكَ‌ ۚ سَاُنَبِّئُكَ
بِتَاۡوِيۡلِ مَا لَمۡ تَسۡتَطِعْ عَّلَيۡهِ صَبۡرًا ﴿۷۸﴾ اَمَّا السَّفِيۡنَةُ
فَكَانَتۡ لِمَسٰكِيۡنَ يَعۡمَلُوۡنَ فِى الۡبَحۡرِ فَاَرَدْتُّ اَنۡ
اَعِيۡبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمۡ مَّلِكٌ يَّاۡخُذُ كُلَّ سَفِيۡنَةٍ
غَصۡبًا ﴿۷۹﴾ وَاَمَّا الۡغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤۡمِنَيۡنِ
فَخَشِيۡنَاۤ اَنۡ يُّرۡهِقَهُمَا طُغۡيَانًا وَّكُفۡرًا‌ ۚ ﴿۸۰﴾ فَاَرَدۡنَاۤ
اَنۡ يُّبۡدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيۡرًا مِّنۡهُ زَكٰوةً وَّاَقۡرَبَ رُحۡمًا ﴿۸۱﴾

७५. हज़रत ख़िज़्र ने कहा (ऐ मूसा!) मैं ने तुझ से कहा था कि तू मेरे साथ किसी प्रकार सब्र करने की ताक़त न रखे गा[२२] ७६. मूसा ने कहा! (हाँ) अगर भविषय में किसी चीज़ का आप से प्रश्न करूँ तो फिर अपनी सुहबत में न रखिये गा, बेशक मेरी तरफ़ से आप एक माकूल उज़्र तक पहुंच चुके हैं (ख़ैर यह नौबत भी माफ़ हुयी) ७७. फिर दोनों चले यहाँ तक कि एक बस्ती पर गुज़रे (तो सख़्त भूक की वजह से) उस बस्ती के रहने वालों से उन्हों ने खाना तलब किया तो उन्हों ने मेहमानी करने से इन्कार किया (थोड़ा समय बीता तो) इस बस्ती में उन्हों ने एक दीवार पाई जो गिरने को थी ख़िज़्र ने उस को सीधा कर दिया। मूसा ने कहा कि अगर आप चाहते तो इस काम पर उन से कुछ मज़दूरी ले लेते[२३] ७८. हज़रत ख़िज़्र ने कहा: बस, अब तो तेरी मेरी जुदाई है अब मैं तुझे उन बातों का जिन पर तू सब्र न कर सका हक़ीक़त बतलाऊँ गा ७९. वह कश्ती (जिसे मैं ने थोड़ी-बहुत तोड़ दिया था) ग़रीबों की थी जो दरिया में (मेहनत, मज़दूरी का) कार्य करते थे सो मैं ने चाहा कि उस को (किसी क़द्र) ऐ़ब दार कर दूँ क्योंकि उन से आगे (सामने किनारे पर) एक बादशाह था जो ज़बर्दस्ती से हर एक (काम में आने वाली) कश्ती को पकड़ लेता था[२४] ८०. और उस लड़के के माता-पिता मोमिन हैं[२५]। सो हमें ख़ौफ़ हुआ कि उन दोनों पर अपनी सरकशी और कुफ़्र से ग़ालिब न आ जाये ८१. पस हम ने चाहा कि उन का पर्वरदिगार उन को उस बच्चे के बदले में एक ऐसा बच्चा दे जो सब से अधिक पाक तबीअ़त का और मुहब्बत और प्यार करने वाला हो

....

२२. हज़रत मूसा अ़लै० बड़े असमंजस और पेसोपेश में थे। एक तरफ़ तो शरीअ़त का अदब और नबुव्वत की शान➲

➲है, सीना में नबुव्वत और रिसालत का ज़िल्म है, दूसरी ओर पीरे-तरीक़त (हज़रत ख़िज़्र) के अदब व ऐहतराम का भी ख़याल है। और फिर आख़िर में यह ख़याल करके कि अल्लाह ही ने उन के पास मुझे भेजा है, इस लिये उन की आज्ञा, वास्तव में अल्लाह की आज्ञा है। हज़रत मूसा ने कहा कि मुझ से बड़ी बेअदबी और गुस्ताख़ी हुयी। और चूंकि यह अख़्लाक़ी गुस्ताख़ी है, इस लिये क्षमा के क़ाबिल है और आप भी माफ़ फ़रमायें (सनाई)

२३. 'अगर आप चाहते तो' हज़रत मूसा उन के मिज़ाज का अनुमान लगाने में असफल रहे। सूखा को गीला और गीला को सूखा करना उन्हीं का काम है। इधर उन से प्रश्न करना भी बेअदबी है और उधर ज़ाहिर में उल्टा काम देख कर रहा भी नहीं जाता है, इस लिये ज़रा सा विषय बदल कर (कि हज़रत ख़िज़्र ऐतराज़ न समझ बैठें) उन से अनुरोध किया कि उन्हों ने मेहमानी करने से इन्कार किया जो शरीअ़त में एक हद तक वाजिब भी है, इस लिये दीवार सीधी करने की मज़दूरी भी ले लेते तो मेरे ख़याल से बजा था।

हज़रत ख़िज़्र सुनते ही आग-बगूला हो गये और कहा कि बस अब हमारी-तुम्हारी जुदाई है। मेरा निबाह तुम जैसे से असंभव है जो बार-बार मना करने पर भी बाज़ नहीं आता। लेकिन तुम्हें अलग करने से पहले अपने उन तीनों कामों की हक़ीक़त को बतला दूँ, जिन पर तुम ने ऐतराज़ किया था। ताकि तुम्हें तुम्हारे सफ़र और मेरे साथ इतने दिनों की सुहबत का लाभ मिल जाये। जिन कामों पर तुम ने ऐतराज़ किया था मैं भी मानता हूँ कि बज़ाहिर देखने में सही न थे, लेकिन उन में राज़ पोशीदा था जिस के बारे में तुम्हें ख़बर नहीं। तुम्हारी और मेरी मिसाल एक डाक्टर और एक आ़म आदमी की सी है जो आप्रेशन करता देख कर घबरा जाता है कि नाहक़ उस मरीज़ का पेट फाड़ा जा रहा है और उस का ख़ून निकाल कर उस को बर्बाद किया जा रहा है। हालाँकि उस का पेट फाड़ना और ख़ून निकालना उस की जान बचाने के लिये है। यही हाल कश्ती वग़ैरह का भी है।

२४. उस कश्ती को ऐब-दार बनाने में उन ग़रीबों का लाभ था। इस लिये कि कश्ती को ऐब-दार देख कर वह बादशाह इन से कश्ती न छीने गा और बेचारे उस से मेहनत-मज़दूरी कर के गुज़ारा करते रहें गे।

२५. उस लड़के को मैं ने इस लिये क़त्ल किया है कि मुझे ग़ैब से यह बात बतलायी गयी कि आगे चल कर वह बड़ा शरीर हो गा और अपने मोमिन माता-पिता पर अत्याचार करे गा (सनाई) हर बच्चा मुसलमान पैदा होता है, मगर आगे चल कर माहौल के प्रभाव से बचपन ही में कुछ की बुनियाद ही बुरी पड़ जाती है, जिस का पूरा यक़ीनी ज़िल्म तो अल्लाह तआ़ला ही को होता है, मगर कुछ निशानियाँ बुज़ुर्ग लोग दिल की आँखों से भी देख लेते हैं। उस लड़के के बारे में अल्लाह तआ़ला ने हज़रत ख़िज़्र अ़लै० को बता दिया कि उस की बुनियाद ग़लत पड़ी है, इस लिये बड़ा होता तो गुमराह होता और माता-पिता को भी ले डूबता और वह इस की मुहब्बत में काफ़िर बन जाते। इस प्रकार लड़के का क़त्ल किया जाना माँ-बाप के हक़ में रहमत और उन की हिफ़ाज़त का ज़रीआ़ बन गया। हज़रत ख़िज़्र ने वह्यि के ज़रीआ़ इशारा पा कर उसे क़त्ल किया था (मुवज़्ज़िहुल-फ़ुर्क़ान)

हज़रत ख़िज़्र अ़लै० के तअ़ल्लुक़ से अ़वाम शिर्क में मुब्तला हैं। उन के नाम पर कुओं, नहरों, तालाबों आदि पर चराग़ और फ़ातिहा दिलाते और उन के नाम की दुहाई देते हैं। यह सब काम सरासर शिर्क है, जो हराम है।

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنزٌ لَّهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ رَبُّكَ أَن يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنزَهُمَا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ذَٰلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِع عَّلَيْهِ صَبْرًا ۞ وَيَسْأَلُونَكَ عَن ذِي الْقَرْنَيْنِ

८२. और जो दीवार (तुम ने देखी थी वह) उस शहर में दो यतीमों की थी। उस के नीचे उन का ख़ज़ाना था और उन का पिता (बड़ा) नेक था, सो तेरे पर्वरदिगार ने इरादा किया (और मुझे अपने इरादा से अवगत किया) कि यह दोनों लड़के अपनी जवानी को पहुंचें और अपना➲

قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ۝ اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِي الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۝ فَاَتْبَعَ سَبَبًا ۝ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِيْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۬ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّآ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّآ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ۝ قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ۝ وَاَمَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨ الْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ

खज़ाना निकाल लें (ऐसा न हो कि दीवार गिर पड़े और लोग बेख़बरी में सब कुछ लूट कर ले जायें) यह महज़ तेरे पर्वरदिगार की रहमत है। मैं ने यह काम अपनी राय से नहीं किया। यह है अस्ल हक़ीक़त उन कामों की जिन पर तू सब्र नहीं कर सका[२६] ८२. और यह तुझ से ज़ुल्-क़रनैन का क़िस्सा पूछते हैं। तू कह कि तुम लोगों को उस का थोड़ा सा क़िस्सा सुनाता हूँ (सुनो! अल्लाह फ़रमाता है) ८४. हम ने उस को मुल्क में कुदरत दी थी और हर चीज़ के सामान (और उन्हें प्राप्त करने के साधन) हम ने उस को दिये थे ८५. पस वह (मुल्क में दौरा करता हुआ) एक राह पर चला गया ८६. यहाँ तक कि जब वह सूर्य अस्त होने के स्थान पर पहुंचा (यानी मुल्क के पश्चिमी छोर पर) तो उस ने सूरज को पानी की दल्दल् में (समुन्द्र के अन्दर) डूबता पाया और उस ने उस के पास एक क़ौम भी पाई। हम ने कहा कि ऐ ज़ुल-क़रनैन[२७] उन को दन्ड दो या उन के बारे में नेक बर्ताव करो[२८] ८७. उस ने कहा कि जो कोई ज़ुल्म करे गा[२९] हम उस को दन्ड दें गे फिर वह अपने पर्वरदिगार के पास जाये गा तो वह भी उस को सख़्त दन्ड दे गा ८८. और जो ईमान लाये गा[३०] और नेक अ़मल करे गा तो उस को अच्छा बदला मिले गा और हम भी उस को अपने कामों में आसानी करेंगे

....

२६. अल्लाह तआ़ला ने हर काम के लिये अलग-अलग मनुष्य पैदा किये हैं, जैसा कि मसल मशहूर है "लिकुल्लि फ़न्निन रिजालुन्" (हर फ़न के लिये आदमी हैं) तुम को लोगों की हिदायत और मार्ग दर्शन के लिये पैदा किया है। तुम्हें अल्लाह ने दूसरा इ़ल्म दिया है और मुझे दूसरा। अगर तुम चन्द दिन और मेरी सुहबत में रहते तो तुम्हारे अन्दर भी एक रूहानी कुव्वत पैदा हो जाती और तुम को भी ऐसी पोशीदा बातों का इ़ल्म हो जाया करता। लेकिन अल्लाह तुम से जो काम लेना चाहता है वह दूसरा ही है। और वास्तव में वह हमारे पोशीदा कामों से अधिक आवश्यक है। इस लिये तुम जाओ और लोगों को नबुव्वत के आदेश सिखाओ।

हज़रत ख़िज़्र अ़लै० ने यहाँ उसूल मुक़र्रर कर दिया है कि नबी, वली, बुज़ुर्ग वग़ैरह को जो ग़ैब का थोड़ा-बहुत इ़ल्म हो जाता है। वह अल्लाह के दिल में बात डाल देने और इल्हाम करने से होता है, आप ही आप किसी को भी यह इ़ल्म प्राप्त नहीं होता है। फिर जितना अल्लाह बतलाये गा उतना ही पाये गा, उस से एक ज़र्रा बराबर अधिक नहीं पा सकता।

हज़रत ख़ज़िर कौन थे? इस बाबत उलमा के तीन क़ौल हैं (१) फ़रिश्ता थे (२) नबी थे। (३) वली थे।

फ़रिश्ता होने की दलीलः— जो उलमा उन्हें फ़रिश्ता मानते हैं उन की दलील यह है कि अल्लाह ने हज़रत ख़ज़िर को कुछ ऐसे कामों के करने पर लगा रखा था जो शरीअ़त के ज़ाहिरी इ़ल्म के अनुसार

नाजायज़ थे, इसी लिये हज़रत मूसा उन के तीनों कामों पर ख़ामोश न रह सके और अपने ज़ाहिरी शरीअ़त के इ़ल्म के अनुसार उन्हें टोक दिया। ज़ाहिर शरीअ़त के ख़िलाफ़ अ़मल फ़रिश्ते ही अन्जाम देते हैं। इन के फ़रिश्ता होने की दूसरी दलील यह है कि कई सहाबा ने इन से मुलाक़ात की है और बहुत से लोगों ने इन से राहनुमाई हासिल की है, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के इन्तिक़ाल के बाद वह ताज़ियत के लिये भी आये थे।

लेकिन यह दोनों तर्क ठोस नहीं हैं। पहली दलील इस लिये ठोस नहीं है कि अल्लाह नबी को भी वह पोशीदा ज्ञान दे सकता है। दूसरी दलील भी इस वजह से ठोस नहीं है कि वह सारी रिवायतें ज़ई़फ़ और मनघड़त हैं।

वली होने की दलीलः- जो उलमा हज़रत ख़ाज़िर को केवल वली और बुज़ुर्ग मानते हैं उन का दावा भी किसी ठोस बुनिया पर नहीं है। इसलिये कि नबी का मर्तबा वली से बुलन्द होता है। हर वली नबी नहीं होता, लेकिन हर नबी वली होता है, फिर यह कैसे संभव है कि केवल एक वली नबी को शिक्षा दे। यह तो नबी की शान के विपरीत है। फिर केवल वली होने की हैसिय्यत से ख़िज़र को एक नबी से अधिक शरीअ़त का ज्ञान नहीं होता है। जो लोग यह कहते हैं कि हज़रत ख़ज़िर नबी न थे, केवल नेक बन्दे थे और उन्हें शरीअ़त की पोशीदा बातों का ज्ञान था जो मूसा को न था। लेकिन यहाँ यह प्रश्न उठता है कि क्या किसी नेक बन्दे को पोशीदा ज्ञान दे कर इतना बुलन्द मर्तबा अल्लाह दे सकता है कि एक नबी उन से ज्ञान प्राप्त करने के लिये चल कर उस के घर जाये? जैसा हज़र मूसा अ़लै॰ चल कर ख़ज़िर के पास पहुंचे। फिर तो यहाँ पर एक पहलू से एक नेक बन्दे का मर्तबा हज़रत मूसा जैसे नबी से बुलन्द हुआ और यह बात उचित नहीं लगती।

नबी होने की दलीलः- जो लोग इन्हें नबी मानते हैं उन की दलील यह है कि अल्लाह ने उन पर वह्यि भेज कर वह तीनों कार्य करवाये हैं जिन पर मूसा ने एतराज़ किया था। चुनान्चे हज़रत ख़ज़िर स्वँय कहते हैं कि "मैं ने अपनी राय और इख़्तियार से कोई कार्य नहीं किया"। हज़रत मूसा और ख़ज़िर की नबुव्वत में यह अन्तर है कि हज़रत मूसा को शरीअ़त के ज़ाहिर का ज्ञान था और हज़रत ख़ज़िर को शरीअ़त के बातिनी और पोशीदा पहलू का। चुनान्चे हज़रत ख़ज़िर ने मूसा को शरीअ़त के उसी पोशीदा तालीम की शिक्षा देने की कोशिश की थी।

ख़ुलासा यह कि हज़रत ख़ज़िर इन्सानों में से एक वली होने के साथ नबी थे। उन के इन्सान होने की एक दलील उन का गाँव वालों से खाना माँगना भी है, इसलिये कि फ़रिश्ते खाना-पानी नहीं रखते। नबी होने की दलील यही है कि उन पर वह्यि आती थी। अब जब इन्सान हुये तो उन का मरना भी अनिवार्य है। वह नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पहले ही मर चुके हैं, इसलिये कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अन्तिम संदेष्टा थे और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के देहान्त के पश्चात् कोई संदेष्टा दुनिया में जीवित नहीं रह सकता, वर्ना आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अन्तिम संदेष्टा न हो कर वह जीवित नबी अन्तिम संदेष्टा माना जाये गा।

आज-क़ल हिन्दुस्तान की तबलीग़ी जमाअ़त के लोग जब एक दूसरे से मुसाफ़ह करते हैं तो सामने वाले के हाथ के अंगूठे को दबाते हैं (उन का अ़क़ीदा है कि हज़रत ख़ज़िर के अंगूठे में हड्डी नहीं है और इस प्रकार सामने वाले को परखते हैं कि वह ख़ाज़िर हैं या नहीं) जों उन की राहनुमाई करें गे। यह सरासर जिहालत और धोका है। अल्लाह उन्हें हिदायत दे......................ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी

२७. इस आयत का मतलब बिल्कुल स्पष्ट है कि अल्लाह ने ज़ुल्-क़रनैन को बराहे-रास्त (Direct) मुख़ातब किया है। इस से मालूम हुआ कि उन पर वह्यि आती थी। रहा यह प्रश्न कि यह वह्यि नबुव्वत की थी या किसी और प्रकार थी? जैसा कि हज़रत मूसा की वालिदा के बारे में है: "हम ने मूसा की माँ को वह्यि की कि बच्चे को

दूध पिलायें" (सूरः क़सस-७)। तो इस बारे में सहाबा और ताबेअ़ीन से यही साबित है कि यह नबी थे। शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमिया रह० और उन के शागिर्द हाफ़िज़ इब्ने कसीर भी यही कहते हैं। तारीख़ से भी यही साबित होता है कि वह नबी थे। हज़रत ईसा और उन से पहले ज़माना के नबी उन्हें अल्लाह का चुना हुआ, उस की मर्ज़ी का मसीह और उस की मर्ज़ी पूरा करने वाला कहते हैं (तर्जुमानुल कुरआन)

इस बादशाह को "ज़ुल् क़रनैन" इस लिये कहते हैं कि दुनिया के दोनों किनारों (पूरब, पश्चिम) तक सफ़र किया था। वह यह जानना चाहता था कि दुनिया की आबादी कहाँ तक फैली है? लेकिन पश्चिम की तरफ़ दलदल् थी जहाँ से आगे आबादी नहीं नज़र आती थी। बहर हाल वह अपने मिशन में कामियाब न हो सका और अल्लाह के मुल्क की सीमा तक न पहुंच सका।

२८. इस स्थान पर इस्लाम दुश्मनों ने कुरआन मजीद पर ऐतराज़ किया है कि सूरज तो पूरी ज़मीन (पृथ्वी) से कई हज़ार गुना बड़ा है, फिर वह समुन्दर में कैसे डूब गया? लेकिन मालूम होना चाहिये कि 'व-ज-द' का अर्थ है "उस ने ख़याल किया"। इस का मतलब यह हुआ कि ज़ुल् क़रनैन ने समुन्दर के किनारे सूरज के डूबते समय यह ख़याल किया कि सूरज समुन्दर के अन्दर डूब रहा है। मैं कहता हूँ कि समुन्दर ही क्या, तालाब के किनारे पर भी खड़े हो कर सूरज को तालाब में डूबता हुआ देखा जा सकता है। कुरआन मजीद ने इसी कैफ़िय्यत को यहाँ बयान किया है। (सनाई)

२९+३०. अधिक-तर उलमा का कहना है कि यहाँ पर 'ज़ुल्म' से मुराद "कुफ़्र, शिर्क" है और 'ईमान' से मुराद "इस्लाम" है। बादशाह ने अपनी प्रजा के दर्मियान यह एलान कर दिया था कि जो कोई शिर्क करे गा उस को सज़ा मिले गी और जो कोई ईमान के कार्य करे गा उसे नेक बदला मिले गा। चूंकि शरीअ़त का यह क़ानून है कि प्रजा चाहे मुश्रिक और काफ़िर ही क्यों न हो उस की हिफ़ाज़त की जाती है, उसे शिर्क करने पर सज़ा नहीं मिलती है। इसी लिये मौलानाा अमृत सरी रह० ने 'ज़ुल्म' का तर्जुमा "ख़ून-ख़राबा" किया है और 'आ-म-न' का तर्जुमा "जो अम्न् दे गा" किया था। लेकिन उचित तर्जुमा वह है जो हज़रत शाह वलिय्युल्लाह और उन के बेटों (अ़ब्दुल क़ादिर, अ़ब्दुल ग़नी) ने किया है और उसी को मौलाना वहीदुज़्ज़माँ रह० ने भी इख़्तियार किया है यानी, "जो ईमान लायेगा"। (राज़)

ज़ुल्क़रनैन का बयानः— इस शब्द का अर्थ है "दो सींगों वाला"। इस शासक का यह नाम इस लिय पड़ा कि या तो वास्तव में उस के सर पर दो सींग थे, या इस लिये कि उस ने पूरब से पश्चिम तक के दोनों किनारों पर पहुंच कर सूरज के निकलने और डूबने को देखा। कुछ उलमा का कहना है कि उस के सर पर बालों की दो लटें थीं, इसलिये उस का यह नाम पड़ा पहले के उलमा और मुफ़स्सिरों ने इस बादशाह को सिकन्दर रूमी माना है जिस का शासन पूरब से पश्चिम तक फैला हुआ था। लेकिन आज-कल के उलमा नई तहक़ीक़ की रोशनी में इस बात को सहीह नहीं मानते हैं। विशेष कर हज़रत मौलाना अबुल् कलाम आज़ाद रह०। इन्हों ने इस बादशाह के बारे में जो तहक़ीक़ की है उस का खुलासा यह है कि कुरआन की रोशनी में वह ऐसा शासक था जिस को अल्लाह ने हर प्रकार के सामान व साधन दिये थे। वह पूरब और पश्चिम के मुल्कों को फ़तह करता हुआ एक ऐसे पहाड़ी स्थान पर पहुंचा जिस के दूसरी ओर याजूज-माजूज की क़ौमें आबाद थीं। चुनान्चे उस ने उन की राह बन्द करने के लिये एक ठोस दीवार चुन दी। वह अल्लाह और आख़िरत को मानने वाला इन्साफ़ करने वाला था। वह माल-दौलत का पुजारी ओर लोभी नहीं था।

मौलाना आज़ाद रह० आगे लिखते हैं कि यह तमाम विशेष्तायें केवल फ़ारस के शासक के अन्दर पायी जाती थीं, जिसे यूनानी में "साइरस" और इ़बरानी भाषा में "खोरस" और अ़रब वाले "केखुसरू" के नाम से पुकारते थे। इस बादशाह का शासन काल 539 A.D. है। सन् 1838 में साइरस बादशाह के एक स्टेचू (मुजस्समा) का भी पता लगाया गया था जिस में साइरस बादशाह का जिस्म इस प्रकार दिखाया गया था कि उस के दोनों तरफ़ उक़ाब (परिन्दे) की तरह पर निकले हुये थे और सर पर मेंढे की तरह दो सींग। इस विषय पर और अधिक जानकारी के लिये मौलाना आजाद रह० की तफ़्सीर "तर्जुमानुल् कुरआन" का प्रथम भाग देखें। हिन्दी पाठकों को लाभ पहुचाने हेतु मौलाना रह० की तफ़्सीर से सारांश पेश क़िया है--- ख़ालिद सिद्दीक़ी

أَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ
الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَل لَّهُم مِّن
دُونِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذَٰلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾
ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِن
دُونِهِمَا قَوْمًا لَّا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوا يَا ذَا
الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ
فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَن تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ
سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي
بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾ آتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ
حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انفُخُوا
حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا قَالَ آتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾
فَمَا اسْطَاعُوا أَن يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ﴿٩٧﴾
قَالَ هَٰذَا رَحْمَةٌ مِّن رَّبِّي فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ

८९. फिर वह एक और राह चला ९०. यहाँ तक कि जब वह (अपने मुल्क में) सूरज के चढ़ने के स्थान पर पहुंचा तो सूरज को एक ऐसी क़ौम पर चढ़ते हुये पाया कि उन के लिये सूरज से वरे हम ने कोई रोक न बनाई थी ९१. इसी प्रकार करता था। और उस के पास जो कुछ था हमें उस की पूरी ख़बर थी ९२. वह एक और रास्ता चला ९३. यहाँ तक कि (पहाड़ी सिलसिला) में जब वह दो खाइयों के बीच में पहुंचा तो उस ने उन से वरे एक क़ौम पाई जो कोई बात न समझ सकती थी (आख़िर किसी तर्जुमान के ज़रीअ़ा) ९४. उन्हों ने कहा: ऐ ज़ुल क़रनैन याजूज-माजूज की क़ौम (जो उस राह के पार रहते हैं) हमारे मुल्क में फ़साद करते हैं। क्या हम हुज़ूर के लिये कुछ टेक्स अदा करें कि हुज़ूर हमारे और उन के दर्मियान कोई (मज़बूत सी) रोक कर दें[३१] (ज़ुल् क़रनैन ने टेक्स लगाना तो पसन्द न किया और) ९५. कहा कि जो कुछ अल्लाह ने मुझे क़ुदरत बख़्शी है वही अच्छी है पस तुम अपनी क़ुव्वत से मेरी मदद करो मैं तुम में और उन में रोक कर दूँ गा ९६. मेरे पास लोहे के टुकड़े लाओ यहाँ तक कि जब (लोहे की दीवार उस) दर्रे के ऊपर के किनारों तक पहुंच गयी तो उस ने हुक्म दिया कि उस में आग लगा दो। यहाँ तक कि जब उस को बिल्कुल आग कर दिया तो उस ने कहा कि लाओ मैं उस पर पिघला हुआ ताँबा उडेल दूँ ९७. पस वह उस पर न चढ़ सके और न ही उस में सूराख़ कर सके ९८. (इस कामिल इन्तिज़ाम को देख कर ज़ुल् क़रनैन ने) कहा: यह मेरे पर्वरदिगार की रहमत है पस जब मेरे पर्वरदिगार का हुक्म आयेगा तो उस को चकना-चूर कर दे गा और मेरे पर्वरदिगार का हुक्म बेशक हो कर रहे गा ९९. उस दिन एक पर एक गड्मड् हों गे और (दुनिया में नये सिरे से फसाद बर्पा करें गे। क़रीब ही उस दिन से) सूर फूँका जाये गा फिर हम सब को एक स्थान पर जमा करें गे १००. और जहन्नम को काफ़िरों के सामने ला कर

....

३१. 'हमारे और उन के दर्मियान रोक कर दें' ताकि वह हमारे मुल्क में न आ सकें। उन लोगों के दो तरफ़ तो ऊँचे पहाड़ थे जिन पर वह चढ़ न सकते थे। बीच में घाटी थी उसी राह से याजूज-माजूज आ कर लूट-पाट करते और ग़रीबों को सताते थे। उन्हों ने चाहा कि अगर यह घाटी बादशाह बन्द कर दे तो हम लोग मुतमइन हो जायें। 'याजूज-माजूज' याफ़िस बिन नूह की औलाद में से दो क़ौमों का नाम है। जिन लोगों ने इन के मौजूद होने पर शक किया है उन को यह मालूम नहीं है कि अल्लाह की मख़्लूक़ बेशुमार हैं, जिसे केवल वही जानता है। शाह अ़ब्दुल

क़ादिर रह० लिखते हैं कि ताँबा इस लिये पिघला कर डाला ताकि जोड़ों में बैठ जाये और पूरी दीवार जम कर एक पहाड़ सी हो जाये।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास एक शख़्स ने आ कर कहा कि मैं 'सद्द' तक गया हूँ और उसे देखा है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कैफ़िय्यत बयान करने को कहा। उस ने कहा कि जैसे धारी-दार तहबन्द। आप ने फ़रमाया कि सही कहा। लोहे के तख़्ते काले हैं और जोड़ों के बीच में ताँबे की लकीरें लाल हैं। क़ुरआन मजीद की तफ़्सीर "फ़त्हुल बयान" में है कि इस हिक्मत से दीवार को फूंकना ज़ुल् क़रनैन का एक मोजिज़ा (चमत्कार) है। क्योंकि दीवार जब लाल हो जाये गी तो उस के निकट कोई जा नहीं सकता। फिर उस को फूंकना और ताँबा उंडेलना दोनो कठिन हैं।

आयत 'फ़इज़ा जा-अ..............' (जब मेरे रब का हुक्म आये गा) कुछ उलमा के नज़दीक इस से क़ियामत के क़रीब का दिन मुराद है। चुनान्चे जब याजूज-माजूज के निकलने का समय क़रीब आये गा तो यह दीवार गिर पड़े गी। अगर आज के तहक़ीक़ी दौर में इस दीवार का पता न लगा तो इस से यह लाज़िम नहीं आता कि यह दीवार बनी ही न थी। अल्लाह तआला का फ़र्मान ग़लत नहीं हो सकता। कुछ लोगों का कहना है कि यह दीवार मुल्क चीन में है जो अभी भी बाक़ी है और सैकड़ों मील लम्बी है। यह दीवार ख़ताइयों ने तातारी क़ौमों की लूट-खसूट से सुरक्षित रहने के लिये बनावाई थी, लेकिन यह ख़याल ग़लत है। क्योंकि तातारी क़ौम, याजूज-माजूज नहीं हैं, वह तो अभी भी चीन के पूरे मुल्क में फैले हुये हैं, दूसरे यह कि यह दीवार पत्थर की बनी हुयी है। इस में न तो लोहे के तख़्ते हैं और न ही पिघला हुआ ताँबा डाला गया है। उस दीवार के बारे में अल्लाह ही बेहतर जानता है, हमें इस में ज़्यादा छान-बीन और खोज-कुरेद करने की ज़रूरत नहीं है। (वहीदी)

याजूज-माजूज का बयानः— इस क़ौम का ज़िक्र पूरे क़ुरआन में केवल दो स्थानों पर आया है। एक तो यहाँ सूरः कह्फ़ में और दूसरे सूरः अन्बिया की आयत नं० ९६ में। सहीह अहादीस से साबित है कि हज़रत ईसा अ़लै० के ज़माना में क़ियामत के निकट यह क़ौमें सामने आयें गी और इतनी तेज़ी के साथ हर तरफ़ फैल जायें गी और फ़साद मचायें गी कि मोमिन इन से तंग आ जायें गे, यहाँ तक कि हज़रत ईसा अ़लै० ईमान वालों को साथ ले कर तूर पर्वत पर चले जायें गे। फिर उन की बद्दुआ से यह हलाक हो जायें गे और इन की लाशों की बदबू चारों ओर फैले गी। फिर अल्लाह कुछ परिन्दों को भेज कर उन की सड़ी लाशों को समुन्दर में डलवा दे गा और वर्षा कर के पूरी ज़मीन को पाक कर दे गा (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

एक हदीस में है कि ज़ुल् क़रनैन बादशाह की सीसा, ताँबा और लोहा पिलाई दीवार को याजूज-माजूज हर दिन खोदते हैं और फिर कल पर टाल देते हैं, लेकिन अल्लाह के हुक्म से जब उन के निकलने का समय आये गा तो वह कहें गे कि इन्शाअल्लाह इस दीवार को कल खोदें गे और फिर दूसरे दिन वह खोदने में कामियाब हो जायें गे और निकल कर ज़मीन में फ़साद मचायें गे, यहाँ तक कि लोग क़िला बन्द हो जायें गे। यह लोग आकाश की ओर अपने तीर फेकें गे जो ख़ून लगे वापस हों गे। अन्त में अल्लाह उन की खोपड़ियों में ऐसा कीड़ा (कीटाणु) पैदा कर दे गा जिस से वह सब हलाक हो जायें गे (अहमद, तिर्मिज़ी-- यह रिवायत सही है)

हज़रत नवास बिन समआन रज़ि० से रिवायत है कि याजूज-माजूज (यह दो क़ौमें) हज़रत ईसा अ़लै० के आकाश से उतारे जाने के बाद ज़ाहिर हों गी (मुस्लिम)

इस हदीस से उन लोगों के ख़याल का रद्द होता है जो कहते हैं कि तातारियों का मुसलमानों पर आक्रमण, या मंगोल तुर्क जिन में से चन्गेज़ ख़ाँ भी था, या रूसी और चीनी क़ौमें, यही याजूज-माजूज हैं और क़ौमें ज़ाहिर हो चुकी हैं। हदीस की रोशनी में वह क़ौम हज़रत ईसा के ज़माना में ज़ाहिर हों गी। इस विषय में हाशिया नहीं दिया गया है अतः मैं ने यहाँ पाठकों को लाभ पहुंचने हेतु सल्फ़ी तफ़्सीरों का सारांश पेश किया है-- ख़ालिद सिदीक़ी

دَكَّآءً ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ۝ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ ۖ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ جَمْعًا ۝ وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكَافِرِينَ عَرْضًا ۝ الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَن ذِكْرِي وَكَانُوا لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ۝ أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِن دُونِي أَوْلِيَاءَ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ۝ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُم بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ۝ الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا

खड़ा करें गे। १०१. जिन की आँखें मेरी याद से पर्दे में हैं (उन की यह हालत है कि न कुदरत की आयतों को देखते हैं) और न (कुरआन की आयतों को) सुन सकते हैं १०२. तो क्या उन काफ़िरों ने यही समझ रखा है कि मेरे अलावा मेरे बन्दों को बिगड़ी बनाने वाला समझना कोई नेक काम है? हम ने काफ़िरों के लिये जहन्नम की मेहमानी तय्यार कर रखी है १०३. तू (ऐ रसूल उन से) कह दे कि मैं तुम को बतलाऊँ कि बड़े टोटे वाले कौन हैं? १०४. वह लोग जिन की कोशिश (सारी की सारी) दुनिया ही में ध्ंस गयी[३२] और समझते हैं कि हम अच्छे काम करते हैं[३३] १०५. (पस सच जानो कि) यही लोग हैं जो अपने पर्वरदिगार के हुक्मों और उस की मुलाक़ात के मुन्किर हैं पस (उन को उन के जुर्म में यह सज़ा मिली कि) उन के नेक आमाल अकारत जायें गे फिर क़ियामत के रोज़ उन के लिये हम वज़न क़ाइम न करें गे १०६. उन की सज़ा बस यही जहन्नम हो गी क्योंकि उन्हों ने मेरे हुक्म से इन्कार किया और मेरी आयतों और रसूलों को महज़ मज़ाक़ समझते थे १०७. (हाँ) कुछ शक नहीं कि जो लोग ईमान लाये और नेक अ़मल भी किये उन के लिये जन्नतुल्-फ़िर्दौस

....

३२. इब्ने माजा शरीफ़ में हज़रत सौबान रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत के दिन मेरी उम्मत के बहुत से लोग पहाड़ों के बराबर अ़मल रखते हों गे मगर उन के यह अ़मल रेत की तरह हवा में उड़ जायें गे (यानी उन की कोई अहमिय्यत न हो गी) यह वह लोग हों गे जिन्हों ने गुनाहों से बचने की कोई पर्वा न की हो गी। इस हदीस से मालूम हुआ कि जो भी अ़मल अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हों गे वह सब अकारत जायें गे। अ़मल अल्लाह की मर्ज़ी के अनुसार न होने का यह मतलब है कि उन का अ़क़ीदा ख़राब हो, या फिर शरीअ़त के बताये हुये अहकाम के अनुसार न हों। इन में काफ़िर, बिदअ़ती, मुनाफ़िक़, क़ब्रों की पूजा करने वाले, चढ़ावा-बजावा करने वाले और मख़्लूक़ को ख़ालिक़ की शरीअ़त में शामिल करने वाले सभी लोग शामिल हैं। वह अ़मल भी इस में शामिल है जो शरीअ़त के मुताबिक़ तो है, मगर रिया और दिखावे के लिये है। (अहसनुल फ़वाइद)

३३. और इतना भी नहीं सोच पाते कि जिस दुनिया के लिये हम इतनी भाग-दौड़ और कोशिशें कर रहे हैं, उस में हमें कितने दिन रहना है? किसी कवि ने क्या ही ख़ूब कहा है: किसी का कन्दा नगीना पे नाम होता है+किसी की उम्र का लब्रेज़ जाम होता है। अ़जब सरा है ये दुनिया कि जिस में शामो सहर+किसी का कूच किसी का मुक़ाम होता है। (सनाई)

نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ۝ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ۝ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ۝ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ۝

में मेहमानी हो गी १०८. जिस में वह हमेशा रहें गे, उस (जन्नत) से अलग होना नहीं चाहें गे १०९. तू कह कि अगर (सात[३४]) समुन्दर मेरे पर्वरदिगार के कलिमात के लिये सियाही बन जायें (और दुनिया के दरख़्त क़लम हो जायें और उन से अल्लाह के कलिमे लिखे जायें) तो यह समुन्दर ख़त्म हो जायें गे इस से पहले कि मेरे पर्वरदिगार के कलिमात[३५] ख़त्म हो सकें, अगर्चे हम उस जैसी और मदद भी लायें ११०. तू कह! मैं तुम्हारी ही तरह आदमी हूँ मेरी तरफ़ वह्यि पहुंची है कि तुम्हारा हक़ीक़ी माबूद एक ही है, पस जो कोई अपने पर्वरदिगारकी मुलाक़ात का उम्मीद-वार है वह नेक अ़मल करे और अपने पर्वरदिगार की इ़बादत में किसी को शरीक न बनाये[३६] (यानी शिर्क से दूर रहे)।

३४. यहाँ पर मौलाना मर्हूम ने "सात" का शब्द बढ़ा कर सूरः लुक़्मान की इस आयत की ओर इशारा किया है "अगर पूरी दुनिया के तमाम ही दरख़्त क़लम बन जायें और तमाम समुन्दर सियाही बन जायें और इस के बाद सात समुन्दर और हों, फिर भी अल्लाह के कलिमे ख़त्म नहीं हो सकते"। (सूरः लुक़्मान- २७, पारः २१)

३५. मौलाना अमृत सरी मर्हूम ने 'कलिमात' का तर्जुमा कहीं पर "मालूमात" वग़ैरह से किया है।·(अल्लामा बग़वी ने भी "मआ़लिमुत्तन्ज़ील" में यही लिखा है)। और कहीं पर "कलिमात" ही तर्जुमा कर दिया है। दोनों ही अपनी जगह पर दुरुस्त हैं। हम ने "कलिमात" का तर्जुमा "कलिमात" ही नक़ल कर दिया है (राज़)

३६. एक सहाबी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा कि बहुत सी नेकी के काम हम अल्लाह के लिये करते हैं और इस लिये भी कि लोग मेरी नेकियों को देखें, तो ऐसे अ़मल के बारे में क्या हुक्म है? आप थोड़ी देर ख़ामोश रहे इस के बाद यह आयत नाज़िल हुयी (यह हदीस मुर्सल है) हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० से एक शख़्स ने प्रश्न किया कि उस शख़्स के बारे में आप का क्या ख़याल है जो नमाज़, रोज़ा, हज्ज, ज़कात, सदक़ा और ख़ैरात वग़ैरह अल्लाह के लिये करता है और इस लिये भी, कि मेरी नेक नामी और चर्चा हो। उन्हों ने उत्तर दिया कि ऐसे शख़्स की समस्त नेकियाँ अकारत और बर्बाद हैं, अल्लाह शिर्क से बेज़ार है। जो उस की इ़बादत में किसी दूसरे को शरीक करता है तो क़ियामत के दिन अल्लाह उस से कहे गा कि अपनी सारी नेकियाँ उसी को दे दो, मुझे ऐसी नेकी बिल्कुल नहीं चाहिये।

हज़रत अबू सई़द ख़ुदरी रज़ि० बयान करते हैं कि एक दिन हम सब मसीह दज्जाल के बारे में गुफ़्तुगू कर रहे थे और घबराए हुये थे, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह देख कर फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हें इस से भी ज़्यादा घबरा देने वाली बात न बतलाऊँ? सुनो! वह पोशीदा शिर्क है, यानी इन्सान दिखावे के लिये नमाज़-रोज़ा करे। और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जो लोगों को दिखाने के लिये नमाज़ पढ़े वह मुश्रिक है और जो दिखावे के लिये ख़ैरात करे वह भी मुश्रिक है"। एक हदीसे क़ुदसी में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है: मैं सब से बेहतर हिस्से वाला हूँ। जो कोई मेरे साथ किसी अ़मल से दूसरे को भी शरीक करता है तो मैं अपना वह हिस्सा भी उस दूसरे को दे देता हूँ और निहायत लापर्वाही से सब का सब छोड़ देता हूँ। एक और हदीस में नबी➲

करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "क़ियामत के दिन रियाकारों से कहा जाये गा कि जाओ जिन को दिखाने के लिये तुम ने अ़मल किया था उन्हीं से बदला भी ले लो" (इब्ने कसीर)

वास्तव में यह आयत निहायत अहम और तवज्जुह के क़ाबिल है। अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में स्पष्ट शब्दों में फ़रमा दिया है कि जिन लोगों को मेरी मुलाक़ात पर विश्वास है वह लोग हर प्रकार के शिर्क से दूर हो कर नेक अ़मल करें। इस आयत में उन मुसलमानों का भी रद्द है जो दावा तो मुसलमान होने का करते हैं, लेकिन डट कर क़ब्रों की पूजा करते, इमामों और पीरों की परस्तिश करते हैं। कोई ग़ौस को पुकारता है तो कोई सय्यद सालार को। कोई या अ़ली के नारे लगाता है तो कोई दाता बख़्श के। अल्लाह तआ़ला हम सब को शिर्क से महफ़ूज़ रखे- आमीन!

सूरः मर्-यम्-19

सूरः मर्यम मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ९८ आयतें और छःरुकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा ही बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है।

१. काफ़ हा या अ़ैन स्वाद[1] २. यह (सूरत) उस रहमत का बयान है जो तेरे पर्वरदिगार ने अपने बन्दे ज़करिय्या पर की थी ३. जब उस ने अपने पर्वरदिगार को आहिस्ता-आहिस्ता पुकारा ४. और कहा कि ऐ मेरे पर्वरदिगार! मेरी हड्डियाँ सुस्त हो गयीं और मेरा सर बुढ़ापे से सफ़ेद हो गया और मैं तुझ से दुआ़ कर के कभी नामुराद नहीं रहा ५. और मैं अपने बाद अपनी बिरादरी (और ख़ान्दान) के लोगों से डरता हूँ (कि दीन की सेवा छोड़ दें गे) और मेरी पत्नी भी बाँझ है पस तू ही अपने पास से मुझे एक वारिस अ़ता कर

....
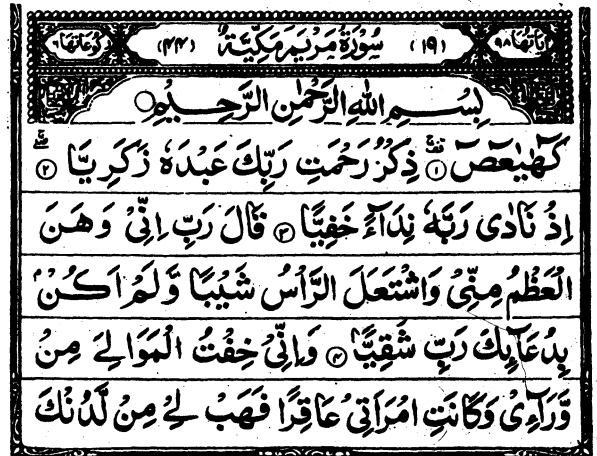
१. इस सूरत के आरंभ की चन्द आयतें हज़रत जाफ़र बिन अबू तालिब ने मुल्क हबशा के बादशाह नजाशी और उन के दर्बारियों के सामने तिलावत फ़रमाई थीं (अहमद, सीरत अहमद, सीरत इस्हाक़) 'हुरुफ़ मुक़त्तआ़त' के अस्ली माना तो केवल अल्लाह ही को मालूम हैं, लेकिन हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने इस का तर्जुमा यह किया है "मैं अल्लाह हूँ सब को हिदायत देने वाला, सब को अम्न देने वाला, सब पर ग़ालिब और क़ौल का सच्चा"। हज़रत मौलाना अमृत सरी ने भी यही तर्जुमा पसन्द फ़रमाया है। मैं ने आ़म दस्तूर के अनुसार हुरुफ़ मुक़त्तआ़त ही को नक़ल कर दिया है और तर्जुमा छोड़ दिया है (राज़)

यह सूरः मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी है। हज़रत मरयम के अ़लावा और किसी महिला का नाम क़ुरआन मजीद में नहीं आया है। (फ़त्हुल बयान) हज़रत ज़करिय्या अ़लै० बनी इस्राईल के बड़े प्रसिद्ध संदेष्टा गुज़रे हैं। आप बढ़ई गीरी का काम कर के गुज़र-बसर करते थे। आप के बेटे हज़रत यहया अ़लै० भी संदेष्टा थे जिन के ज़माना में हज़रत अ़ीसा अ़लै० ज़ाहिर हुये (वहीदी)

وَلِيًّا ۙ يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ۝ يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ۨ اسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝ قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ۝ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۚ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝ يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۙ وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۗ وَكَانَ تَقِيًّا ۙ وَّبَرًّاۢ بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ۝ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۝ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ

६.जो मेरा और याकूब के घराने का वारिस हो[२] (यानी इस्राईली ज़िल्म की सुरक्षा करे) और ऐ मेरे पर्वरदिगार! तु उस को पसन्द कर लेना ७. (हम ने पुकारा) ऐ ज़करिया! हम तुझे एक लड़के की बशारत देते हैं जिस का नाम यहया हो गा, इस से पूर्व उस नाम का हम ने कोई आदमी पैदा नहीं किया ८. (ज़करिय्या ने) कहा: ऐ मेरे पर्वरदिगार मेरे हाँ लड़का कैसे हो गा? मेरी पत्नी बाँझ है और मैं भी बुढ़ापे की अन्तिम सीमा को पहुंच चुका हूँ ९. फ़रिश्ते ने कहा: बात इसी प्रकार है (लेकिन) तेरे पर्वरदिगार ने फ़रमाया है कि वह मुझ पर आसान है (दिखो तो) मैं ने इस से पहले तुझे पैदा किया हालाँकि तू कुछ भी न था १०. (यह माकूल उत्तर सुन कर) उस ने कहा: ऐ मेरे पर्वरदिगार! मेरे लिये कोई निशान मुक़र्रर फ़रमा अल्लाह ने फ़रमाया: तेरी निशानी यह है कि तीन दिन तक तू सही-सलामत होने के बावजूद लोगों से बात न कर सके गा ११. फिर अपने हुज्रे {ज़िबादत ख़ाना} से क़ौम की तरफ़ आया (तो वास्तव में कलाम न कर सका पस) उन को इशारे से समझाया कि सुब्ह-शाम अल्लाह की तस्बीह बयान किया करो १२+१३ (चुनान्चे जब यहया पैदा हुये तो हम ने उस से कहा कि) ऐ यहया! तुम किताब को कुव्वत से पकड़ना। और हम ने लड़कपन ही में दानाई और नर्मदिली और पाकीज़ा तबीयत अपने फ़ज़्ल से अ़ता की। और वह बड़ा ही परहेज़ गार था १४. और माता-पिता से अच्छा सुलूक करने वाला था और सरकश और नाफ़र्मान न था[३] १५. और उस की पैदाइश के रोज़ और मौत के दिन और जिस दिन ज़िन्दा उठाया जाये गा उस पर सलामती नाज़िल हुयी[४] १६. और किताब (क़ुरआन मजीद) में मर्यम का ज़िक्र कर (और मसीह की पैदाइश का अस्ल क़िस्सा सुना) जब वह

....

२. यानी मैं बूढ़ा और मेरी पत्नी बाँझ हो चुकी है। बच्चे के पैदा होने के ज़ाहिरी हालात और साधन समाप्त हो चुके हैं, लेकिन तू अपनी क़ुदरत और रहमत से मुझे ऐसी औलाद अ़ता फ़र्मा जो दीन की ख़िदमत करे और तेरी पाक अमानत का बोझ उठा सके। मैं इस बुढ़ापे में क्या कर सकता हूँ? जी तो यही चाहता है कि कोई बेटा इस लाइक़ हो जो मेरी विरासत को संभाल सके और ज़िल्म व हिक्मत के ख़ज़ानों का मालिक और नबुव्वत के क़मालात का वारिस बने।

एक विशेष मस्अला जिस का ज़िक्र इस मौक़े पर बहुत ही ज़रूरी है वह यह कि सहीह हदीसों से साबित है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "नबिय्यों के माल में वरासत जारी नहीं होती, उन की

➲वरासत इ़ल्म की दौलत में चलती है"। शीआ़ मज़हब की किताब "काफ़ी" और "कलीनी" में और "रूहुल मआ़नी" में भी इसी प्रकार की रिवायतों का ज़िक्र मौजूद है। इस लिये यह बात सुनिश्चित है कि "जो मेरे और याक़ूब के घराने का वारिस हो" में माल-दौलत की वरासत नहीं मुराद है। और यह बात स्वयँ बोल रही है कि तमाम आले याक़ूब के माल-दौलत का वारिस यहया अकेले ही कैसे हो सकता है जब कि याक़ूब के माल-दौलत का वारिस उन के नज़दीकी ही होने चाहियें। फिर यह तो दुनिया जानती है कि बेटा, बाप की जायदाद का मालिक होता है, फिर हज़रत ज़करिय्या का दुआ़ में इस बात का ज़िक्र करना ही फ़ुज़ूल था। कुछ लोगों का यह ख़याल भी हो सकता है कि हज़रत ज़करिय्या इस बात से डरते थे कि मेरे मरने के बाद कहीं और दूसरे रिश्ते-दार मेरे माल के मालिक न बन जायें, इस लिये उन्हों ने माली विरासत का ज़िक्र किया, यह अ़क़ीदा और ख़याल एक पैग़ंबर की शान में बहुत बड़ी गुस्ताख़ी है। नबी की शान यह हर्गिज़ नहीं होती कि मरते समय उन का दिल दौलत में लगा रहे कि किस को मिले और किस को न मिले। हज़रत ज़करिय्या अ़लै० कोई इतने बड़े धनवान भी नहीं थे। वह बेचारे बढ़ई का काम करते थे और मेहनत-मज़दूरी कर के मुश्किल से अपना और बच्चों का गुज़ारा करते थे, तो इन को बुढ़ापे में काहे का ग़म हो सकता है कि दूसरे संबन्धी उन की दौलत पर क़ब्ज़ा न कर लें।

बहर हाल यहाँ पर वरासत से मुराद इ़ल्म की दौलत की वरासत है। हज़रत ज़करिय्या की दुआ़ क़ुबूल हुयी। अल्लाह ने बशारत पहुंचाई और पैदा होने से पहले ही उस लड़के का नाम यहया रखने का हुक्म दिया। यह नाम भी इतना अनोखा था कि इस से पहले किसी ने भी न सुना था। कुछ उलमा ने 'समिय्या' का तर्जुमा "मुखड़ा" से किया है। यानी इस मुखड़े, विशेष्ता और शान व शौकत का बच्चा उस समय तक नहीं पैदा हुआ था। यह भी हो सकता है कि बूढ़े और बाँझ औ़रत से वैसा बच्चा उस समय तक नहीं पैदा हुआ था। और भी मतलब हो सकता है कि जो विशेष्ता, नर्मदिली, ख़ौफ़े-ख़ुदा और अल्लाह की याद में रोना वग़ैरह, इन के अन्दर थी यह ख़ूबी इस से पहले इन की उम्र के बच्चों में नहीं थी (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

३. शुभ सूचना के अनुसार हज़रत यहया पैदा हुये। अल्लाह ने बचपन ही में उन को आसमानी किताब का आ़लिम बना दिया। जब आप के साथ के बच्चे उन से खेलने को कहते तो उत्तर देते कि मैं खेलने के लिये नहीं पैदा किया गया हूँ। 'हनानन्' का अर्थ है कि आप हर प्रकार के गुनाह और बुराइयों से पाक थे। यही कारण है कि तीन घबराहट के मौक़ों पर (पैदाइश के दिन, मौत के दिन, हश्र के दिन) आप को अल्लाह की तरफ़ से अम्न व सलामती मिली हुयी थी। एक मुर्सल हदीस में रिवायत है कि लोग कुछ न कुछ गुनाह क़ियामत के दिन ले कर जायें गे सिवाए हज़रत यहया के। हज़रत इमाम क़तादा का कहना है कि आप ने कभी किसी गुनाह का इरादा तक नहीं किया। हज़रत इमाम हसन बसरी फ़रमाते हैं कि जब हज़रत यहया और हज़रत ई़सा की मुलाक़ात हुयी तो हज़रत ई़सा ने कहा: आप मेरे लिये दुआ़ फ़रमा दीजिये, इस लिये कि आप मुझ से बेहतर हैं। हज़रत यहया ने फ़रमाया: आप बेहतर हैं। हज़रत ई़सा ने कहा कि मैं ने तो अपने ऊपर स्वँय ही सलाम कहा है और आप पर तो ख़ुद अल्लाह ने सलाम कहा है। बहर हाल इन दोनों नबिय्यों की फ़ज़ीलत ज़ाहिर है (मुहम्मदी)

४. आयत न० १५ दुआ़इया जुम्ला और एक मुहाविरा है। जिस प्रकार उर्दू भाषा में कहा जाता है "उस की पैदाइश पर मर्हबा क़ुबूल फ़रमायें" या "उस का पैदा होना मुबारक हो"। (हक़्क़ानी)

مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿١٦﴾ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ
حِجَابًا ۖ فَاَرْسَلْنَا اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا
سَوِيًّا ﴿١٧﴾ قَالَتْ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ

अपने घर वालों से अलग हो कर पूरब की जानिब बैठी १७. और लोगों से पर्दा की ओट कर ली तो हम ने उस के पास अपना फ़रिश्ता (जिब्रील) भेजा तो वह हू-बहू आदमी की शक्ल बन कर उस के सामने आ गया १८. मरयम ने (उसे➲

تَقِيًّا ﴿١٨﴾ قَالَ إِنَّمَآ أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ لِأَهَبَ لَكِ غُلٰمًا
زَكِيًّا ﴿١٩﴾ قَالَتْ أَنّٰى يَكُونُ لِي غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ وَّلَمْ
أَكُ بَغِيًّا ﴿٢٠﴾ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ
وَلِنَجْعَلَهُٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ أَمْرًا
مَّقْضِيًّا ﴿٢١﴾ فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿٢٢﴾
فَأَجَآءَهَا الْمَخَاضُ إِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِي
مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ﴿٢٣﴾ فَنَادٰىهَا مِنْ
تَحْتِهَآ أَلَّا تَحْزَنِي قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾ وَ
هُزِّيٓ إِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا
جَنِيًّا ﴿٢٥﴾ فَكُلِي وَاشْرَبِي وَقَرِّي عَيْنًا ۚ فَإِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ

➲आदमी ही समझ कर) कहा कि अल्लाह तुझ से पनाह दे अगर तू भला-मानुस है (तो अलग हो जा) १९. फ़रिश्ता ने कहा: मैं तो तेरे पर्वरदिगार का एल्ची हूँ कि मैं तुझे एक पाक फ़ितरत लड़का दूँ (यानी अल्लाह के देने की तुझे सूचना दूँ) मर्यम (हैरान हो कर) बोली: भला मुझे लड़का कैसे हो सकता है? मुझे तो किसी मर्द ने नहीं छुवा और न मैं बदकार हूँ[६] २१. फ़रिश्ते ने कहा: बात भी ऐसी है, तेरे पर्वरदिगार ने कहा है कि वह मुझ पर आसान है ताकि हम उस को लोगों के लिये अपनी कुदरत की निशानी बना दें और अपनी तरफ़ से रहमत बना दें गे, और यह बात (अज़ल से) तै शुदा है[७] २२. पस मर्यम को गर्भ ठहरा और वह (जनने के लिये) उस गर्भ को ले कर अलग मकान में चली गयी २३. फिर वह दर्द की वजह से एक खजूर के दरख़्त के पास पहुंची (तो दर्द की तक्लीफ़ से) बोली: हाये मेरा अभाग्य, मैं इस से पूर्व ही मरी होती और भूली-बिस्री हो गयी होती २४. सो फ़रिश्ता ने दरख़्त से नीचे की तरफ़ से पुकारा कि ग़म न कर! अल्लाह ने तेरे नीचे पानी का चश्मा जारी कर रखा है (पस तू प्रसन्न हो) २५. और खजूर के दरख़्त को अपनी तरफ़ हिला वह तुझ पर ताज़ा-ताज़ा खजूरें गिराए गा २६. पस तुम उसे खाना और पानी पीना और आंखें ठन्डी करना फिर अगर किसी आदमी को देखना

....

५. इन्जील में लिखा है कि "इस घटना के छ: माह के बाद जिब्रील मर्यम पर ज़ाहिर हुआ जिस की मंगनी यूसुफ़ नाम के एक नौजवान से हो चुकी थी और उस ने कहा कि तू हामिला (गर्भवती) हो गी और बेटा जने गी, उस का नाम यसूअ़ रखियो" (लूक़ा: २६) 'पूरब की तरफ़' इस से मालूम होता है कि हज़रत मर्यम हैकल (इबादत ख़ाना) को छोड़ कर अपने वतन "नासिरा" चली गयीं। यह स्थान योरोशलम के पूरब और उत्तर में स्थित एक गाँव का नाम है, योरोशलम वालों के लिये पूरब का हुक्म रखता है। इन्जील से भी इस की ताईद होती है और वह भी उस स्थान को नासिरा ही बतलाते हैं (लूक़ा-१-२६)

६. कुरआन मजीद में यह वाक़िआ इतने स्पष्ट शब्दों में बयान होने के बावजूद मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी हज़रत मरयम को ज़िना कार और हज़रत ई़सा को नाजायज़ औलाद कहता है। हैरत है कि इस्लाम का दावा भी करता है और कुरआन मजीद को झुठलाता भी है। (सनाई)

७. यानी यह काम अवश्य हो कर रहे गा, हमारी हिक्मत का तक़ाज़ा यही है कि बग़ैर इन्सान (पति) के महज़ औरत के वजूद से बच्चा पैदा किया जाये और वह देखने-सुनने वालों के लिये हमारी कुदरत की निशानी हो। बयान किया जाता है कि फ़रिश्ता ने फूंक मारी जिस से वह गर्भवती हो गयीं। जब बच्चा जनने का वक़्त आया तो शर्म के मारे हज़रत मरयम सब से अलग-थलग किसी दूसरे स्थान पर चली गयीं और दर्द की तक्लीफ़ से एक खजूर का सहारा➲

➲लेने के लिये उस के निकट जा पहुंचीं। अनुमान लगाइये कि एक तो दर्द की तक्लीफ़, दूसरे कोई देख-रेख करने वाला अथवा वाली न हो, तीसरे बदनामी और बे-ज़िज़्ज़ती का ख़ौफ़, यही सब सोच कर घबरा उठीं और बोल पड़ीं "काश मैं इस समय से पहले ही मर चुकी होती, मेरा नाम-निशान तक न रहता और किसी को भूले से भी याद न आती"।

जिस खजूर के नीचे हज़रत मरयम मौजूद थीं, वह स्थान कुछ ऊँचाई पर था। उसी के नीचे से फ़रिश्ते ने पुकारा कि परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं, अल्लाह की कुदरत से ज़ाहिरी और बातिनी सुकून मिलने वाला है। उधर देखो कैसा चश्मा जारी कर दिया है, उस से पानी पियो और उस खजूर के दरख़्त को हिलाओ, उस से ताज़ा-ताज़ा खजूरें गिरें गी। कुछ उलमा ने 'सरिय्या' के माना "सर्दार" लिया है। यानी तुम से एक बहुत बड़ा सर्दार पैदा होने वाला है। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रह० ने भी इसी माना को तर्जीह दी है। जिन लोगों ने 'सरिय्या' का अर्थ चश्मा और सोता लिया है, यह अर्थ भी अपने स्थान पर सही है। इस लिये कि मोजिज़ा के तौर पर चश्मा जारी होना और बे मौसम पकी खजूरों को देख कर निःसंदेह हज़रत मर्यम को सुकून मिला हो गा। फिर आगे हुक्म हुआ कि किसी से बात न करना, इशारे से समझा देना कि मैं रोज़े से हूँ। हो सकता है कि उस ज़माना में रोज़ा रखने वालों के लिये बात-चीत करना भी मना रहा हो, और यह भी हो सकता है कि कह दो कि मैं ने न बोलने की नज़र मानी है। इस प्रकार का रोज़ा यहूदियों में आम था। हज़रत ईसा ने पैदा होने के बाद अपनी माँ से कहा कि आप घबराएँ नहीं। वालिदा ने कहा कि मैं कैसे न घबराऊँ, मैं ख़ाविंद वाली नहीं (यानि शादीशुदा नहीं) और न ही किसी की लौंडी या बाँदी हूँ। दुनिया क्या कहे गी? मैं कैसे कहूँ गी कि यह बच्चा किस का है? हज़रत ईसा ने कहा कि आप घबराएँ नहीं और न ही कोई उज़्र पेश करें, आप बस ख़ामोश रहें, मैं उन सब से बात कर लूँ गा। (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान, तफ़्सीर मुहम्मदी, वहीदी)

الْبَشَرِ أَحَدًا فَقُولِي إِنِّي نَذَرْتُ لِلرَّحْمَٰنِ صَوْمًا فَلَنْ
أُكَلِّمَ الْيَوْمَ إِنسِيًّا ﴿٢٦﴾ فَأَتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُ ۖ قَالُوا
يَا مَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا ﴿٢٧﴾ يَا أُخْتَ هَارُونَ مَا كَانَ
أَبُوكِ امْرَأَ سَوْءٍ وَمَا كَانَتْ أُمُّكِ بَغِيًّا ﴿٢٨﴾ فَأَشَارَتْ
إِلَيْهِ ۖ قَالُوا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَن كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿٢٩﴾ قَالَ
إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ آتَانِيَ الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ﴿٣٠﴾ وَجَعَلَنِي
مُبَارَكًا أَيْنَ مَا كُنتُ وَأَوْصَانِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ
مَا دُمْتُ حَيًّا ﴿٣١﴾ وَبَرًّا بِوَالِدَتِي وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا
شَقِيًّا ﴿٣٢﴾ وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدتُّ وَيَوْمَ أَمُوتُ وَ
يَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ﴿٣٣﴾ ذَٰلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ
الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ ﴿٣٤﴾ مَا كَانَ لِلَّهِ أَن يَتَّخِذَ مِن
وَلَدٍ ۖ سُبْحَانَهُ ۚ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن

तो कह देना कि मैं ने तो अल्लाह के लिये नज़र मानी है इस लिये मैं तो आज हर्गिज़ किसी आदमी से न बोलूँ गी २७. फिर वह उस बच्चे को अपनी क़ौम के पास उठा लाई। उन्हों ने (यह माजरा देख कर) कहाः ऐ मर्यम! तू ने बहुत ही नालायक़ हर्कत की है २८. ऐ हारून की बहन[1]! (तेरा नाम तो मर्यम है जो हारून नबी की बहन का नाम था) तेरा बाप कोई बुरा आदमी न था और तेरी माँ बदकार न थी (फिर तू क्यों ऐसी बदकार हुयी?) २९. पस मर्यम ने उस बच्चे की तरफ़ इशारा किया। वह बोले कि हम ऐसे बच्चे से कैसे बोलें जो अभी पालने में खेल रहा है ३०. उस बच्चे ने कहा (कि मेरी माँ पर इल्ज़ाम लगाते हो, हालाँकि) मैं अल्लाह का बन्दा हूँ उस ने मुझे किताब दी है और मुझे नबी बनाया है[1] ३१. और मैं जहाँ हूँ मुझे➲

فَيَكُونُ ۝ وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا

बर्कत दी है और जब तक मैं ज़िन्दा हूँ मुझे नमाज़ और ज़कात का हुक्म दिया है ३२. और मुझे मेरी माँ का फ़रमाँ बरदार बनाया है और मुझ को सरकश और नाफ़र्मान नहीं किया ३३. जिस दिन मैं पैदा हुआ उस दिन, और जिस दिन मरूँ गा उस दिन, और जिस रोज़ ज़िन्दा उठाया जाऊँ गा उस दिन मुझ पर सलामती है ३४. यह है अ़ीसा बिन मर्यम (जो न तो अल्लाह है न अल्लाह का बेटा) यही सच्ची बात है जिस में कि यह लोग झगड़ा करते हैं ३५. अल्लाह की शान के लायक़ नहीं कि औलाद बनाये वह (तो ऐसी कमज़ोरियों से) पाक है। जब किसी काम को चाहता है तो वह केवल "हो जा" कहता है पस वह हो जाता है[10] ३६. (इसी लिये हज़रत मसीह ने यह शिक्षा दी) और (कहा) अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा पर्वरदिगार है इस लिये उसी की अ़िबादत करो (जिस की मैं करता हूँ)

....

८. हज़रत हारून, हज़रत मूसा अ़लै० के भाई थे। मुराद यह है कि यह भी चूंकि हारून अ़लै० की तरह प्रहेज़ गार और नेक थीं तो गोया हज़रत हारून की बहन हुयीं। कुछ उलमा का कहना है कि हज़रत हारून मर्यम के माँ जाये भाई और बड़े मुत्तक़ी और परहेज़-गार शख़्स थे। एक हदीस शरीफ़ में आया है कि नज्रान के नसारा ने जब यह सुना तो एतराज़ किया कि हारून अ़लै० तो मूसा के भाई थे और उन का ज़माना हज़रत मर्यम से बहुत पहले का है, फिर बहन कैसे बन गयीं? नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उत्तर दिया कि क्या "हारून" और किसी दूसरे का नाम नहीं हो सकता? बनी इस्राईल अपने बच्चों का नाम पहले के संदेष्टाओं और बुज़ुर्गों के नाम पर रखा करते थे (वहीदी)

हज़रत मर्यम को हारून अ़लै० की बहन इस लिये कहा कि हज़रत मूसा के भाई हारून से मुराद, हज़रत हारून की क़ौम की बहन हैं। जैसे क़ुरआन में हज़रत हूद को आ़द का भाई कहा है, हालाँकि आ़द उन की क़ौम के पहले के एक बुज़ुर्ग का नाम था। बेहतर है कि मर्यम को हारून की बहन ही माना जाये और हारून से मुराद (मूसा का भाई न मान कर) मरयम के सगे भाई को लिया जाये, इस लिये कि ऊपर हदीस में बयान हो चुका है कि लोग अपने बच्चों का नाम नबिय्यों के नाम पर रखते थे, इस लिये इन के वालिद ने भी मूसा के भाई के नाम पर अपने बेटे का नाम हारून रख दिया हो गा। बहर हाल हारून मर्यम का सगा भाई मान लेने में कोई आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिये।

मतलब यह हुआ कि ऐ मर्यम! तुम्हारा बाप नेक, तुम्हारी माँ नेक और तुम्हारा सगा भाई हारून नेक, फिर यह ग़लती तुझ से कैसे हो गयी (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

९. 'मुझे नबी बनाया' और तुम्हारी किताबों में साफ़ लिखा है कि हरामी बच्चा दस पुश्त तक अल्लाह की जमाअ़त में शरीक नहीं हो सकता (इस्तिसना- बाब-२३) तो अगर मैं हरामी होता तो अल्लाह मुझे नबी क्यों बनाता? मेरा नबी बनाया जाना मेरे हलाली होने और मेरी माँ के पाक दामन होने का सबूत है (सनाई)

१०. वह अल्लाह जो जिस चीज़ के बारे में कह दे कि "हो जा" तो वह तुरन्त हो जाती है, फिर ऐसे अल्लाह को बेटे-बेटियाँ बनाने की क्या ज़रूरत है। इन्सान को बेटों की इच्छा इस लिये होती है ताकि दुःख-तकलीफ़ में वह काम आयें गे और मरने के बाद वारिस होकर हमारा नाम ज़िन्दा रखें गे, लेकिन अल्लाह को किस बुनियाद पर बेटों-बेटियों की ज़रूरत है? वह हमेशा रहने वाली ज़ात है, किसी का मुहताज नहीं, न उस को बुढ़ापा सताये गा, न उस को किसी की मदद की ज़रूरत है, वह ज़ात पाक है, फिर वह औलाद क्यों बनाये और किस के लिये बनाये? इसी लिये हज़रत मसीह अ़लै० ने तौहीद की शिक्षा दी।

صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٣٦﴾ فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ
فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِن مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٣٧﴾ أَسْمِعْ
بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا لَٰكِنِ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي
ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾ وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ
الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٩﴾ إِنَّا نَحْنُ
نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ﴿٤٠﴾ وَاذْكُرْ
فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ ۚ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَّبِيًّا ﴿٤١﴾ إِذْ
قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ
وَلَا يُغْنِي عَنكَ شَيْئًا ﴿٤٢﴾ يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي مِنَ
الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿٤٣﴾
يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ ۖ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ
عَصِيًّا ﴿٤٤﴾ يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَن يَمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ
الرَّحْمَٰنِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ﴿٤٥﴾ قَالَ أَرَاغِبٌ أَنتَ

यही सीधी राह है ३७. (इस सीधी-सादी शिक्षा के बावजूद) फिर भी (ईसाइयों के) फ़िर्के परस्पर मुख़्तलिफ़ हो गये[११], पस उस बड़े दिन की हाज़िरी से काफ़िरों के लिये अफ़सोस है जिस रोज़ वह हमारे पास आयें गे ३८. कैसे कुछ सुनते और देखते हों गे (किसी प्रकार का शक उन को न हो गा) लेकिन इस दुनिया में ज़ालिम खुली गुमराही में हैं. ३९. और अफ़सोस के दिन से उन को डरा जिस समय तमाम कामों का फ़ैसला किया जाये गा। और यह लोग ग़फ़लत में हैं और ईमान नहीं लाते[१२] (लेकिन जब उन के सर पर पड़े गी तो जानें गे कि ऊँट किस करवट बैठता है) ४०. हम ही तमाम ज़मीन और ज़मीन पर रहने वालों के मालिक हैं और हमारी तरफ़ यह सब फिर कर आयें गे ४१. और इब्राहीम का क़िस्सा उन को सुना। वह बड़ी ही सच्चाई वाला नबी था[१३] ४२. जब उस ने अपने बाप से कहा: ऐ बाबा! तू क्यों ऐसी वस्तुओं की इबादत करता है जो न सुनती हैं और न देखती हैं और न ही तुझ से कोई बला दूर कर सकती हैं। (ऐसे माबूदों की पूजा से क्या हासिल?) ४३. ऐ बाबा! मुझे अल्लाह की तरफ़ से ज़िल्म पहुंचा है जो तुझे नहीं पहुंचा, इस लिये तू मेरी ताबेदारी कर मैं तुझे सीधी राह की हिदायत करूँ गा ४४. ऐ मेरे बाबा! तू शैतान की ज़िबादत न कर (मैं सच-सच कहता हूँ कि) निःसंदेह शैतान, रहमान का नाफ़र्मान है। ४५. मुझे डर है कि तुझे रहमान की जानिब से कोई अज़ाब न पहुंच जाये (इस लिये कि शिर्क ऐसा गुनाह है कि रहमान को भी गुस्सा आ जाता है) फिर तू भी शैतान का क़रीबी हो जाये गा। ४६. (इस माकूल नसीहत के उत्तर में) इब्राहीम के बाप ने कहा कि ऐ इब्राहीम! क्या तू मेरे माबूदों से मुंह मोड़ बैठा है?

....

११. 'परस्पर मुख़्तलिफ़ हो गये' किसी ने मसीह को अल्लाह का बेटा कहा तो किसी ने उन्हें अल्लाह ही बना दिया। चुनान्चे मशहूर ज़ीसाई पादरी फ़न्डर लिखता है कि "मूसा को तूर पर्वत पर "मैं तुम्हारा रब हूँ" कहने वाला ज़ीसा मसीह ही था" (मिफ़्ताहुल् अस्रार) यानी अल्लाह में और ज़ीसा मसीह में कोई फ़र्क़ नहीं है। एक दूसरा फ़िर्क़ा उन की माँ हज़रत मर्यम की भी पूजा करने लगा, चुनान्चे आज भी योरोशलम में ज़ीसाइयों के गिरजा घरों में हज़रत मर्यम का बुत खड़ा किया हुआ है, जिस की पूजा की जाती है। एक फ़िर्क़ा आज भी ऐसा है जो हज़रत ज़ीसा अलै० की तौहीद की शिक्षा के अनुसार तौहीद पर ज़मल कर रहा है, इस फ़िर्क़ा को पानी ट्रेन यानी "तौहीदी ज़ीसाई"

कहा जाता है। यह फ़िर्क़ा अगर्चे मुसलमान नहीं है, लेकिन हज़रत ओ़सा को केवल आदमी और रसूल मानता है। इन की मात्रा अव्वल तो बहुत ही कम है, दूसरे यह कि आ़म ओ़साई लोग इस फ़िर्क़ा को काफ़िर कहते हैं। (सनाई)

मुसलमानों के अन्दर भी एक गरोह मौजूद है जिस का कुरआन व हदीस से दूर का भी संबन्ध नहीं है, लेकिन अपने आप को कुरआन व हदीस का सब से बड़ा आ़लिम समझता है, ग़लत तावील कर के यहूद की तरह हज़रत ओ़सा को इन्सान के नुत्फ़ा से पैदा होना कहता है। लेकिन यह मालूम नहीं कि हज़रत ओ़सा की पैदाइश कुरआन के ज़िक्र के अनुसार मान लेने में क्यों तरद्दुद है (हक़्क़ानी) यह नेचरियों, दहरियों और आज़ाद ख़यालों और हदीस का इन्कार करने वालों का गरोह है। यह लोग अल्लाह की आयतों को अपनी अ़क़्ल की कसौटी पर परखते हैं। चुनान्चे यही वजह है कि संदेष्टाओं के चमत्कारों का भी इन्कार करते हैं। यह लोग स्वयँ तो गुमराह हैं ही, दूसरों को भी गुमराह करते हैं। ईमान की सलामती इन से दूर रहने ही में है। (राज़)

१२. पिछली आयत में क़यामत के दिन का बयान हो चुका है कि "उस बड़े दिन की हाज़िरी से काफ़िरों के लिये अफ़सोस है जिस रोज़ वह हमारे पास आयें गे" (आयत- ३७) "और जिस दिन हमारे सामने हाज़िर हों गे" (आयत-३८) इस के बाद इस आयत- ३९ में फ़रमायाः "उन्हें अफ़सोस के दिन से भी डरा दे"। इस से मालूम हुआ कि "अफ़सोस के दिन" से मुराद क़ियामत का दिन नहीं है, बल्कि यह कोई दूसरा आने वाला दिन है। चुनान्चे उस दिन की शक्ल ज़ाहिर कर दी है कि यह कौन सा दिन था? यक़ीनन कोई ऐसा दिन, जो ओ़साइयों को बहुत जल्द पेश आने वाला था और जिस में उन के लिये बड़ी ही हसरत और ना उम्मीदी (निराशा) थी। चुनान्चे सूरः मर्यम को नाज़िल हुये अभी २५ वर्ष भी न गुज़रे थे कि यह दिन ज़ाहिर हो गया था और तमाम ओ़साई यह समाचार सुन कर हक्का-बक्का रह गये कि ओ़साइयों की राजधानी और उन का केन्द्र (बैतुल मुक़द्दस) अचानक उन के हाथों से निकल कर एक नई क़ौम के हाथों में चला गया है।

मशहूर इतिहास कार गेबिन (Gibbon) ने लिखा है कि तमाम मसीही दुनिया पर ख़ामोशी छा गयी, क्योंकि ओ़साई धर्म की इतनी बड़ी तौहीन को न तो मज़हब का कोई चमत्कार रोक सका न बारनतीनी शासन का लाव-लश्कर। फिर यह केवल बैतुल मुक़द्दस ही की फ़त्ह न थी, बल्कि तमाम एशिया और अफ़्रीक़ा में ओ़साई शासन की समाप्ति थी। हेरक़्ल (हरकोलिस) के यह शब्द जो उस ने जहाज़ पर चढ़ कर लबनान की चोटियों को संबोधित (ख़िताब) कर के कहे थे, आज तक इतिहास कारों की ज़बान पर हैं "विदाई ऐ शाम की भूमि! हमेशा के लिये विदाई"। आप ग़ौर करें क्या यह दिन सही मानों में ओ़साइयों के लिये "यौमुल् हस्रत" (अफ़्सोस का दिन) नहीं था?

फिर इस आयःन० ३९. के आख़िरी टुकड़े पर ग़ौर कीजिये "यह लोग इस समय अपनी कामियाबी की ग़फ़लत में डूबे हैं, यक़ीन करने वाले नहीं"। लेकिन तुम एलान कर दो और इस के बाद वाली आयत न० ४० से भी इसी वाक़िए की तरफ़ इशारा है (तर्जुमान कुरआन आज़ाद रह०)

नोटः- मौलाना आज़ाद का ख़याल हम ने ऊपर पेश कर दिया है कि "अफ़सोस का दिन" से बैतुल मुक़द्दस का ओ़साइयों से छिन जाना और उन का शासन समाप्त हो जाना है, लेकिन यह उन का अपना ख़याल है। बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत के अनुसार "यौमुल्-हस्-रति" से मुराद क़ियामत का दिन है, जबकि एक समय दोज़ख़ और जन्नत के दर्मियान ख़ुद मौत ही को मेंढे की शक्ल में बना कर उस (मौत) को ख़त्म कर दिया जाये गा और एलान कर दिया जाये गा कि ऐ जन्नत में जाने वालो! तुम्हें हमेशा रहना है, अब मौत कभी न आये गी और ऐ जहन्नम में जाने वालो! हमेशा तुम्हें उसी में रहना है, अब कभी मौत न आये गी। (राज़)

अगर तू बाज़ न आया तो तुझे पत्थरों से मार कर हलाक कर दूँ गा और मुझ से दूर हो जा

४७. इब्राहीम ने कहाः अच्छा तुझ पर सलाम

عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰٓاِبْرٰهِيْمُ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِيْ مَلِيًّا ۝ قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ

اِنَّهٗ كَانَ بِیْ حَفِیًّا ۝ وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّیْ ۖ عَسٰۤى اَلَّاۤ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّیْ
شَقِیًّا ۝ فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا یَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَیَعْقُوْبَ ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِیًّا ۝
وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ
صِدْقٍ عَلِیًّا ۝ وَاذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ مُوْسٰۤى ؗ اِنَّهٗ كَانَ
مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِیًّا ۝ وَنَادَیْنٰهُ مِنْ جَانِبِ
الطُّوْرِ الْاَیْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِیًّا ۝ وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ
رَّحْمَتِنَاۤ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِیًّا ۝ وَاذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ اِسْمٰعِیْلَ ؗ
اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِیًّا ۝ وَكَانَ
یَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۪ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ

हो (मगर) मैं तेरे लिये अपने पर्वरदिगार से बख़्शिश की दुआ़ माँगता रहूँ गा। मेरा पर्वरदिगार मेरे हाल पर बड़ा ही मेहरबान है ४८. और मैं तुझ से और तेरे माबूदों से जिन को तुम अल्लाह के अ़लावा पुकारते हो अलग होता हूँ और मैं तो अपने पर्वदरिगार से दुआ़यें माँगता हूँ, मुझे क़वी आशा है कि मैं अपने पर्वरदिगार से दुआ़ माँग कर नामुराद (निराश) न हूँ गा। ४९. फिर जब इब्राहीम उन से और उन के माबूदों से जिन की वह अल्लाह के अ़लावा अ़िबादत करते थे अलग हो गया तो हम ने उन को इस्हाक़ और याकूब दिये। और सब को संदेष्टा बनाया ५०. और अपनी रहमत से उन को भरपूर हिस्सा दिया और उन की सच्ची तारीफ़ बुलन्द की[१४] (पस तू इस क़िस्से को मुख़्तसर तौर पर यहाँ तक पहुंचा कर रहने दे) ५१.और किताब (कुरआन मजीद) में मूसा का ज़िक्र कर बेशक वह बड़ा ही ख़ालिस बन्दा और (अल्लाह का) रसूल और नबी था[१५] ५२. हम ने उस को तूर की ओर से बुलाया और उस को मुनाजात (दुआ़)की हालत में अपना क़रीबी बनाया ५३. और महज़ अपनी रहमत से हम ने उस के भाई हारून को नबी बना कर उस के साथ कर दिया (जैसा कि उस की दर्ख़ास्त थी) ५४. और किताब में इस्माअ़ील को याद कर बेशक वह वादे का सच्चा, रसूल और नबी था (और अपने मालिक के आदेशों का संपूर्ण रूप से पालन करता था) ५५. और अपने अह्ल को नमाज़ और ज़कात का (विशेष कर) हुक्म देता था और अपने पर्वरदिगार के नज़दीक (बड़ा ही) पसंदीदा था।

....

१४. 'सच्ची तारीफ़ बुलन्द की' यानी दुनिया के अधिकांश मज़्हब को मानने वाली उम्मतें उन की ख़ूबियाँ बयान करती और उन पर दुरूद व सलाम भेजती रहें गी। अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मु-हम्मदिंव्-अ़ ला आलि मुहम्मदिन् कमा सल्लै-त अ़ला इब्-राही-म व अ़ला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद+अल्लाहुम्म बारिक् अ़ला मुहम्मदिंव्-अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा बारक्-त अ़ला इब्राही-म व-अ़ला आलि इब्राही-म इन्नक हमीदुम्मजीद।

१५. तफ़्सीर सदी और "इब्ने जरीर" वग़ैरह में हज़रत मूसा अ़लै० की पैदाइश के तअ़ल्लुक़ से यूँ क़िस्सा बयान है कि फ़िर्औ़न ने एक मर्तबा सपना देखा कि बैतुल-मुक़द्दस की तरफ़ से एक आग निकली जिस ने बनी इस्राईल के मुहल्ले के साथ ही पूरे मिस्र शहर को जला दिया। उस ने यह सपना नजूमियों ज्योतिषियों से बयान किया। उन्हों ने कहा कि बैतुल मुक़द्दस की ज़मीन से बनी इस्राईल ख़ान्दान में से एक लड़का पैदा होने वाला है जिस के हाथों मिस्र मुल्क तबाह व बर्बाद हो गा। फ़िर्औ़न ने बनी इस्राईल में पैदा होने वाले लड़कों को मार डालने का आदेश दिया। चुनान्चे

➲हज़ारों लड़के मौत के घाट उतार दिये गये। जब हज़रत मूसा अ़लै० पैदा हुये तो अल्लाह ने उन की माँ के दिल में यह बात डाल दी कि हज़रत मूसा को एक सन्दूक़ में बन्द कर के दरिया में डाल दें। हज़रत मूसा की माँ ने ऐसा ही किया, लेकिन माँ की ममता से मजबूर हो कर मूसा की बहन मरयम को सन्दूक़ पर निगाह रखने का हुक्म दिया। फ़िरऔ़न ने नील नदी से एक नहर अपने महल तक निकाली थी। वह सन्दूक़ उसी नह्र से होता हुआ उस के महल के दर्वाज़े पर जा लगा।

इत्तिफ़ाक़ से उस की पत्नी आसिया जो नह्र पर सैर कर रही थी उसने संदूक देख लिया और उस संदूक़ को नह्र से निकाल लिया। उस में एक जीवित बच्चा (शिशु) निकला। फ़िरऔ़न ने उस का पालन-पोषण करने की अनुमति दे दी। लेकिन हज़रत मूसा किसी भी औ़रत का दूध ही न पीते थे, चुनान्चे एक ऐसी महिला की तलाश शुरू हुयी जिस का मूसा दूध पी लें। सूरः "क़सस" और सूरः "त्वाहा" में विस्तार से इस क़िस्सा को बयान किया गया है कि अल्लाह की क़ुदरत से हज़रत मूसा फिर अपनी माँ के पास वापस आ गये और उन्हीं की गोद में पर्वरिश पाई और वह भी दुश्मन फ़िरऔ़न के घर में। जब जवान हो गये तो क़त्ल के एक मामले में डर कर घर छोड़ कर मद्यन भाग गये और हज़रत शुऐ़ब अ़लै० के घर में पनाह ली। वहीं उन की बेटी से विवाह भी हुआ। हज़रत मूसा पूरे दस वर्ष तक हज़रत शुऐ़ब अ़लै० के घर रह कर मद्यन से मिस्र अपने घर लौटे और रास्ता में तूर पर्वत पर अल्लाह तआ़ला से कलाम किया।

रिवायतों में बयान है कि हज़रत मूसा बचपन में जब घुटनों के बल चलने लगे तो फ़िरऔ़न की गोद में ही उस की दाढ़ी नोच ली। फ़िरऔ़न उन की इस हर्कत पर भड़क उठा और उन को मार डालने का हुक्म दे दिया। उस की बीवी आसिया ने कहा कि यह नासमझ बच्चा है, इस की इस हर्कत पर नाराज़ हो कर मासूम बच्चे को मार डालना कोई बुद्धिमानी का काम नहीं है, मैं एक तरफ़ आग का अन्गारा रखती हूँ और एक तरफ़ याकूत, अगर उस ने आग का अंगारा उठा लिया तो समझो कि बच्चा है। हज़रत जिब्रील अ़लै० ने मूसा का हाथ पकड़ कर आग में डाल दिया और आग को मूसा के हाथ में दे कर उन के मुँह में रख दिया जिस की वजह से उन की ज़बान जल गयी और तुतलाने लगे। इस वाक़िए का ज़िक्र विस्तार से सूरः त्वाहा में आये गा (अहसनुल फ़वाइद, इब्ने कसीर, ख़ाज़िन, फ़त्हुल बारी)

مَرْضِيًّا ۝ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ز اِنَّهٗ كَانَ
صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ۝ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ق وَ
مِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ز وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَ
اِسْرَآءِيْلَ ز وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ط اِذَا تُتْلٰى
عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ۝ فَخَلَفَ
مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا
الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ۝ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ
وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ

५६. और (इस) किताब में इदरीस का ज़िक्र कर, निःसंदेह वह बड़ी सच्चाई वाला और नबी था ५७. और हम ने उस को ऊँचे मकान पर उठा लिया[१] ५८. यही लोग हैं जिन को अल्लाह ने इनाम दिये यह आदम की औलाद में से नबी हैं और उन में से हैं जिन को हम ने नूह के साथ सवार किया था और यह लोग इब्राहीम और इस्राईल की औलाद में से हैं और उन लोगों में से हैं जिन को हम ने हिदायत की थी और चुन लिया था। जब उन को अल्लाह की आयतें सुनाई जाती हैं तो रोते-रोते सज्दे में गिर पड़ते। ५९. फिर उन के बाद ऐसे नालाइक़ जानशीन हुये कि उन्हों ने नमाज़ को बर्बाद किया और➲

شَيْئًا ﴿٦٠﴾ جَنّٰتِ عَدْنِ ِۨ الَّتِىْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ
اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿٦١﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا
سَلٰمًا ؕ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿٦٢﴾ تِلْكَ
الْجَنَّةُ الَّتِىْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾

➲नफ़्स की शह्‌वतों के पीछे पड़ गये सो इस जुर्म में बहुत जल्द यह लोग (आख़िरत में) ख़राबी देखें गे ६०. लेकिन जो लोग ईमान लाये और नेक अ़मल किये वह लोग ज़न्नत में दाख़िल हों गे और तनिक भर भी उन पर अत्याचार न हो गा ६१. (वह जन्नत मामूली और चन्द दिनो के लिए न होगी बल्कि) हमेशा के रहने के बाग़ हैं जिन का अल्लाह रहमान ने ग़ाइबाना अपने बन्दों से वादा किया है। निःसंदेह उस के वादे पूरे हों गे। ६२. (वह लोग) उन जन्नतों में कोई वाहियात बात न सुनें गे मगर (परस्पर एक दूसरे का) सलाम (या अल्लाह की तरफ़ से) और उन में उन को सुब्ह व शाम रोज़ी मिले गी ६३. हम इस जन्नत के वारिस अपने बन्दों में से उन्ही लोगों को करें गे जो परहेज़गार हों गे[१७]।

....

१६. हज़रत शाह वलिय्युल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० के इस आयत के फ़ार्सी तर्जुमा का उर्दू अर्थ यह है "हम ने उन को ऊँचे मकान (आकाश) पर उठा लिया"। मौलाना वहीदुज़्ज़माँ रह० का तर्जुमा इस प्रकार है "और हम ने उस को बुलन्द जगह उठा लिया"। यानी चौथे, या छठे, या दूसरे आसमान पर, या जन्नत में पहुंचा दिया, या नबुव्वत अ़ता किया। हज़रत मौलाना अमृता सरी मर्हूम ने भी इसी तर्जुमा को पसन्द करते हुये तर्जुमा किया है "हम ने उस को एक बड़े ऊँचे मर्तबे पर बुलन्द किया था जो नबुव्वत का दर्जा था"।

हज़रत मुजाहिद रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत इदरीस भी हज़रत ईसा अ़लै० की तरह आकाश पर उठा लिये गये। इब्ने मस्ऊद फ़रमाते हैं कि "इदरीस" यह हज़रत इल्यास ही का नाम है। एक रिवायत के अनुसार हज़रत इदरीस एक फ़रिश्ते के हाथ पर चढ़ कर आसमान पर चले गये और वहीं पर जान निकालने वाले फ़रिश्ते (मलकुल-मौत) ने उन की जान निकाली (वहीदी) हज़रत इदरीस अ़लै०, हज़रत नूह के परदादा थे। तौरात में उन का नाम "हनूक" लिखा है। उन की आयु सीमा ३६५ वर्ष आँकी गयी है (सफ़र पैदाइश बाब ५, दर्स २३)

१७. इस आयत में इस बात की तरफ़ इशारा है कि यह कोई ज़रूरी नहीं कि सब के सब ऊँचे दर्जे के मुत्तक़ी और परहेज़ गार हों, बल्कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराते हों, उन पर जो चीज़ें फ़र्ज़ की गयी हैं उन्हें अदा करते हों। कहने का अर्थ यह है कि नेक चलन और चरित्र के अच्छे हों तो अल्लाह के फ़ज़्ल से जन्नत में जायें गे। बाक़ी अस्ल पूछो तो यह सब कुछ अल्लाह ही के फ़ज़्ल से होता है, उस के सामने किसी की मजाल नहीं कि तनिक भर चूँ भी कर सके। यहाँ तक कि फ़रिश्तों की, जिन को यह मुश्रिक लोग पूजते और अल्लाह की बेटियाँ समझते हैं, इतनी भी मजाल नहीं कि अल्लाह के हुक्म के बग़ैर हिल सकें।

इस आयत में "जो परहेज़गार हों गे" से मुराद वह लोग हैं जो शिर्क से बचते हों गे। मोतज़िला फ़िर्क़ा का कहना है कि शिर्क ही नहीं, बल्कि छोटे-मोटे गुनाहों से बचते हों गे। यह तुर्जमा बिल्कुल ही ग़लत है। (अहसनुत्तफ़ासीर)

وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهٗ مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَمَا
خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾ رَبُّ

६४. और (हम फ़रिश्ते) तुम्हारे पर्वरदिगार की अनुमति के बग़ैर आसमान से उतरते नहीं[१८] (वह ऐसे प्रताप वाला शासक है कि) जो कुछ हमारे आगे-पीछे और उस के दर्मियान में है सब का➲

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَ اصْطَبِرْ
لِعِبَادَتِهٖ ؕ هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾ وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ
ءَاِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾ اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ
اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْـًٔا ﴿٦٧﴾ فَوَرَبِّكَ
لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ
جِثِيًّا ﴿٦٨﴾ ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى
الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ﴿٦٩﴾ ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا
صِلِيًّا ﴿٧٠﴾ وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا
مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ
فِيْهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا ۙ اَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ خَيْرٌ

➲वही मालिक है, और तेरा पर्वरदिगार किसी चीज़ को भूलता नहीं ६५. वह समस्त आसमानों और ज़मीनों और उन के दर्मियान वाली मख़्लूक़ का पर्वरदिगार है पस तू उस की अिबादत कर और उसी की अिबादत पर जम जा। तुम उस जैसा किसी को जानते हो? (तुम्हारे अिल्म में कोई है जो अल्लाह कहलाने का हक़ रखता हो?) ६६. और इन्सान कहता है कि क्या मैं मर कर ज़िन्दा उठूँ गा? (यह बात उस की छोटी सी अ़क्ल में नहीं आती) ६७. क्या उसे याद नहीं कि हम ने उसे पहले जब वह कुछ भी न था (एक मर्तबा) पैदा किया (तो क्या वह फिर पुनः जीवित न हो सके गा?) ६८. तेरे रब की क़सम! हम (अल्लाह) उन को और (उन के बहकाने वाले) शैतानों को भी जमा करें गे फिर उन को जहन्नम के चारों तरफ़ घुटनों के बल बैठे हुये हाज़िर करें गे ६९. फिर हम हर एक गरोह में से उन शरीरों को जो अल्लाह रहमान के सामने सरकशी करते थे अलग करें गे ७०. फिर जिन लोगों को हम जहन्नम के ज़्यादा योग्य समझते हैं उन को जहन्नम में दाख़िल करें गे ७१. और यह यक़ीनी बात है कि तुम में का हर एक इस (जहन्नम) को पार करे गा, यह कार्य तेरे पर्वरदिगार का यक़ीनी वादा है[१९] ७२. फिर जो लोग मुत्तक़ी हों गे उन को तो हम (दोज़ख़ से) नजात दें गे और ज़ालिमों को उस में औंधा गिरायें गे[२०] ७३. और जब हमारे खुले-खुले अहकाम उन को सुनाये जाते हैं तो जो लोग काफ़िर (और हमेशा के बद-बख़्त) हैं वह ईमान दारों को कहते हैं कि दोनों फ़रीक़ों में से किस का मर्तबा अच्छा है

....

१८. शाने नुज़ूलः- एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत जिब्रील अ़लै० से फ़रमाया कि आप मेरे पास जल्दी-जल्दी आया करें, आप से मिल कर मुझे बड़ा इतमिनान होता है। अल्लाह तआ़ला ने यह आयत हज़रत जिब्रील की ज़बान से कहलवायी कि हमारा आप के पास आना हमारी इच्छानुसार नहीं (सनाई) एक हदीस शरीफ़ में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी पत्नी उम्मे सलमा रज़ि० से फ़रमायाः सब कुछ ठीक-ठाक कर लो आज एक ऐसा फ़रिश्ता आ रहा है जो इस से पूर्व पृथ्वी पर कभी नहीं आया था। हमारे आगे-पीछे की तमाम वस्तुयें उसी अल्लाह की हैं, आने वाले का नाम आख़िरत और बीते हुये का नाम दुनिया है। दुनिया और आख़िरत के दर्मियान की सारी चीज़ें उसी के क़ब्ज़े में हैं, तुम्हारा रब भूलने वाला नहीं है, उस ने आप को अपनी याद से कभी नहीं भुलाया और न ही यह उस की सिफ़त है (मुस्नद अहमद)

१९. हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "पुल सिरात से➲

➲सब ही को गुज़रना हो गा, और यही आग के पास खड़ा होना है"। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि पुल सिरात तल्वार की धार से अधिक तेज़ है। इस पर से पहला गरोह बिजली की तरह देखते ही देखते पार हो जाये गा, दूसरा गरोह हवा की तरह और तीसरा गरोह तेज़ दौड़ने वाले घोड़ों की तरह, चौथा गरोह दोड़ने वाले दीगर जानवरों की तरह दौड़कर पार हो जायेगा। और फ़रिश्ते हर तरफ़ से दुआएँ दे रहे हों गे कि ऐ अल्लाह इन्हें सलामत रख"। बुख़ारी मुस्लिम की बहुत सी हदीसों में भी इस मज़्मून की हदीसें आयी हैं। हज़रत कअ़ब रज़ि० फ़रमाते हैं कि जहन्नम अपनी पीठ पर तमाम लोगों को जमा कर ले गी। जब सब लोग इकट्ठा हो जायें गे तो अल्लाह तआ़ला उसे हुक्म दे गा कि तू बुरे लोगों को पकड़ ले और नेक लोगों को छोड़ दे। चुनान्चे वह सभी बुरे लोगों को पकड़ ले गी और नेक लोगों को छोड़ दे गी"। मुस्नद अहमद बिन हंबल की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मुझे अल्लाह पाक की ज़ात से पूरी आशा है कि बद्र और हुदैबिय्या की लड़ाई में शामिल होने वाले दोज़ख़ में नहीं जायें गे। यह सुन कर एक सहाबी ने आयत न० ७१ आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने पढ़ी, तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उत्तर में इस के बाद वाली आयत न० ७२ तिलावत फ़रमाई और फ़रमाया कि नेक लोग उस से नजात पा जायें गे, बड़ी सरलता से पार हो जायें गे और जहन्नमी लोग उसी में रह जायें गे। बुख़ारी और मुस्लिम की एक रिवायत में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिस के तीन बच्चे मर जायें तो उस को जहन्नम की आग न छुये गी मगर सिर्फ़ क़सम पूरी होने के तौर पर"। क़सम से मुराद यही आयत न० ७१ है, जिस में अल्लाह तआ़ला ने क़सम खाई है कि मैं अपना वादा पूरा कर के रहूँ गा।

इस आयत में संबोधन अगर्चे आ़म है, मगर ईमान वालों का उस पर से गुज़रना दाख़िल होने के लिये नहीं होगा, बल्कि उसे देखने और नसीहत हासिल करने के लिये हो गा जैसा कि आयत न० ७२ इस तरफ़ इशारा कर रही है। और दूसरी रिवायतों से साबित है कि मोमिनों को जहन्नम के ऊपर से इस लिये गुज़ारा जाये गा ताकि जन्नत में जाने के बाद उस तक्लीफ़ को याद कर के और ज़्यादा शुक्र अदा करें (हक़्क़ानी)

२०. अल्लाह तआ़ला हर अच्छे-बुरे, नेक-बद और मोमिन-काफ़िर सभी लोगों को जहन्नम के ऊपर से गुज़ारे गा, क्योंकि जन्नत में जाने के लिये दोज़ख़ के ही ऊपर से गुज़रना हो गा (इस को दूसरे शब्दों में पुल सिरात भी कहा जाता है) मोमिन तो सही सलामत गुज़र जायें गे, मगर काफ़िर लोग जहन्नम में गिर जायें गे (मुवज़्ज़िहुल क़ुरआन)

مَّقَامًا وَّاَحۡسَنُ نَدِيًّا ۝ وَكَمۡ اَهۡلَكۡنَا قَبۡلَهُمۡ مِّنۡ قَرۡنٍ
هُمۡ اَحۡسَنُ اَثَاثًا وَّرِءۡيًا ۝ قُلۡ مَنۡ كَانَ فِى الضَّلٰلَةِ
فَلۡيَمۡدُدۡ لَهُ الرَّحۡمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰۤى اِذَا رَاَوۡا مَا يُوۡعَدُوۡنَ
اِمَّا الۡعَذَابَ وَاِمَّا السَّاعَةَ ؕ فَسَيَعۡلَمُوۡنَ مَنۡ هُوَ
شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضۡعَفُ جُنۡدًا ۝ وَيَزِيۡدُ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ
اهۡتَدَوۡا هُدًى ؕ وَالۡبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيۡرٌ عِنۡدَ
رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيۡرٌ مَّرَدًّا ۝ اَفَرَءَيۡتَ الَّذِىۡ كَفَرَ
بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوۡتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ۝ اَطَّلَعَ الۡغَيۡبَ
اَمِ اتَّخَذَ عِنۡدَ الرَّحۡمٰنِ عَهۡدًا ۝ كَلَّا ؕ سَنَكۡتُبُ مَا

और किस की मज्लिस ज़ीनत वाली है?[२१] ७४. (मगर नालाइक़ यह नहीं जानते और नहीं समझते कि) इन से पूर्व हम ने बहुत सी क़ौमें तबाह कर दीं जो उन से अच्छे साज़-सामान और सुन्दरता वाले थे। ७५. तू कह दे कि जो कोई गुमराही में होता है अल्लाह भी उस को ढील दिये जाता है, यहाँ तक कि जब यह लोग अपने वादा किये गये अ़ज़ाब को या अन्तिम घड़ी को देखें गे तो उन को मालूम हो गा कि किस का मर्तबा बड़ा था और किस का जथा कमज़ोर (अपनी और अपने सहयोगियों की कमज़ोरी महसूस कर के रोयें गे मगर कुछ बन न पड़े➲

يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾ وَنَرِثُهُ مَا
يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾ وَاتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ آلِهَةً
لِّيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾ كَلَّا ۚ سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ
وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا

गा, लेकिन) ७६. जो लोग हिदायत पर हैं अल्लाह उन की हिदायत और ज़्यादा करता है और नेक आमाल (जो मरने के पश्चात् पीछे रहने वाले हैं) वही तुम्हारे पर्वरदिगार के नज़दीक अच्छे बदले और बेहतरीन अन्जाम वाले हैं ७७. क्या तू ने उस व्यक्ति को देखा है जो हमारे आदेशों का इन्कार करता है और कहता है कि मुझे माल व औलाद मिलें गे[२२] ७८. क्या यह अल्लाह के ग़ैब को जान चुका है या उस ने रहमान से कोई वादा लिया है ७९. हर्गिज़ नहीं! हम उस की बातों को लिख लें गे और उस के लिये अ़ज़ाब बढ़ाये चले जायें गे ८०. और जो कुछ यह कहता है हम ही उस के मालिक हों गे और हमारे सामने तन्हा हो कर आये गा ८१. और इस के अ़लावा और लोगों को माबूद बना रखा है ताकि (आड़े समय में) उन के मदद गार हों ८२. हर्गिज़ (वह मदद गार) न हों गे। (बल्कि क़ियामत के दिन) उन की अ़िबादत से इन्कार करें गे और (उल्टे) उन के दुश्मन हो जायें गे[२३] ८३. क्या तू देखता नहीं कि हम ने शैतानों को काफ़िरों पर मुसल्लत कर रखा है

....

२१. यानी कुफ़्फ़ार जब उन कुरआन की आयतों को सुन कर जिन में बुरा परिणाम बतलाया गया है, मज़ाक़ उड़ाते हैं और मज़ाक़ के तौर पर ग़रीब मुसलमानों से कहते हैं कि तुम्हारा यह कहना कि मरने के बाद आख़िरत में हमारा अन्जाम बुरा हो गा, यह सही नहीं है। इस का कारण यह है कि आज दुनिया में हमारी स्तिथि तुम से अच्छी है। हम तुम से अधिक ख़ुश-हाल हैं, तुम से अधिक धन-दौलत और लाव-लश्कर वाले हैं। और तुम्हारा हाल यह है कि किसी भी मामले में तुम्हारी हालत (स्तिथि) हम से अच्छी नहीं है, इस लिये तुम्हारा यह कहना कि हम जन्नत में जायें गे और तुम लोग दोज़ख़ में, सही नहीं है। इन लोगों को उत्तर दिया गया है कि तुम्हारी जैसी बहुत सी क़ौमें तुम से पहले गुज़र चुकी हैं जो कुव्वत-ताक़त और शान-शौकत में तुम से कहीं ज़्यादा बढ़-चढ़ कर थीं, वह भी तुम्हारी तरह तकब्बुर में मुब्तिला थीं, लेकिन हम ने उन की जड़ काट दी और आज दुनिया में उन का कोई नाम लेने वाला नहीं रहा, तो तुम्हारा भी अन्जाम उन क़ौमों से मुख़्तलिफ़ नहीं है।

इस आयत में इस बात की ओर भी संकेत है कि दुनिया की ख़ुशहाली का आख़िरत की ख़ुशहाली से कोई संबन्ध नहीं है।

२२. शाने नुज़ूल:- हज़रत ख़ब्बाब बिन इर्त रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं लोहारी का काम करता था। आ़स बिन वाइल ने मुझ से कुछ क़र्ज़ लिया था। जब मैं मे उस से अपना क़र्ज़ मांगा तो वह कहने लगा कि मैं उस समय तक तुम्हारा क़र्ज़ नहीं लौटाऊँ गा जब तक तुम अपने रसूल की ताबेदारी से तौबा न कर लो। मैं ने कहा कि अगर तू मर कर दोबारा ज़िन्दा हो फिर भी मैं यह न करूँ गा। उस ने कहा कि तो फिर ठीक है जब मैं पुन: ज़िन्दा हूँ गा तो ज़रुर मुझे मेरा माल और औलाद भी मिल जाये गी और वहीं तुम्हारा क़र्ज़ भी अदा कर दूँ गा, इस मौक़ा पर यह आयत नाज़िल हुयी (बुख़ारी, मुस्लिम)

२३. यानी यह कुफ़्फ़ार भी उस दिन अल्लाह के अ़लावा और दूसरों की अ़िबादत का इन्कार कर जायें गे। जब सब जहन्नमी इकट्ठा हों गे तो एक-दूसरे को लानत-मलामत करें गे, आपस में एक-दूसरे को बुरा-भला कहते हुये झगड़ा करें गे। उस दिन सारे संबन्ध समाप्त हों जायें गे और एक दूसरे के खुले दुश्मन हो जायें गे। सहायता तो दूर की

बात, ज़ाहिरी हमदर्दी तक न हो गी। इसी प्रकार उन के झूठे माबूद भी उन के कुछ काम न आयें गे (मुहम्मदी) 'कल्ला' का अर्थ यहाँ पर यह लिया जाये गा कि "उन का ख़याल ग़लत है।" उन के मनघड़त माबूद न सिर्फ़ उन की इ़बादत का इन्कार करें गे, बल्कि स्वयँ उन के मुख़ालिफ़ हो जायें गे। उन काफ़िरों के दिमाग़ में जो ख़याल पैदा होते हैं वह सब शैतानी ख़यालात हैं जो शैतान उन के दिलों में डालता और बुतों की पूजा-पाट की ओर उकसाता है। ऐसे लोगों के लिये दन्ड का एक समय सुनिश्चित है (हक़्क़ानी)

الشَّيٰطِيْنَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ﴿۸۳﴾ فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿۸۴﴾ يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿۸۵﴾ وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿۸۶﴾ لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿۸۷﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿۸۸﴾ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْـًٔا اِدًّا ﴿۸۹﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَ تَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿۹۰﴾ اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿۹۱﴾ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ﴿۹۲﴾ اِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّآ اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿۹۳﴾ لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿۹۴﴾ وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿۹۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا ﴿۹۶﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا ﴿۹۷﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ ۭ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿۹۸﴾

कि वह उन को (बुराइयों पर) उकसाते रहें[२४] ८४. सो तू (ऐ रसूल! उन की बर्बादी के लिये) जल्दी न कर। हम तो उन के लिये दिन गिन रहे हैं ८५. जिस रोज़ (यानी क़ियामत के दिन) हम अल्लाह रहमान अपने सामने (तमाम परहेज़गारों और) मुत्तक़ियों को मेहमानों की तरह जमा करें गे और मुज्रिमों को जहन्नम की तरफ़ प्यासे हाँकें गे ८६. (उस समय उन की ऐसी दुर्गत हो गी कि अल्लाह दुश्मन की भी न करे जिन को यह माबूद बनाये बैठे हैं) सिफ़ारिश करने का भी उन को इख़्तियार न हो गा। हाँ, वह करे गा जिस ने अल्लाह के हाँ से इस का वादा लिया हो[२५] ८८. कहते हैं कि रहमान ने औलाद बनाई है ८९. तुम ने बड़ी बेढब बात कही है ९०. (ऐसी) कि (सातों)आसमान उस (की बुराई) से फट जायें और ज़मीन शक़ हो जाये और पर्वत रेज़ा-रेज़ा हो कर गिर पड़ें (तो आश्चर्य की बात नहीं[२६]) ९१. क्योंकि अल्लाह रहमान के लिये औलाद ठहराते हैं ९२. हालाँकि अल्लाह (सारे संसार का मालिक है, किसी भी प्रकार उस) के लिये उचित नहीं कि (किसी को अपनी) औलाद बनाये ९३. तमाम आसमानों और ज़मीनों वाले तो अल्लाह रहमान के समक्ष (हाथ बांधे हुये) ग़ुलामों की तरह हाज़िर हों गे ९४. (उस के इ़ल्म की यह कैफ़िय्यत है कि) उस ने उन को घेर रखा है और गिना हुआ है ९५. और क़ियामत के दिन (भी) हर एक उन में से उस के पास अकेला-अकेला हाज़िर हो गा ९६. (हां) इस में कुछ भी संदेह नहीं कि जो लोग ईमान लाते हैं और अ़मल (भी) नेक करते हैं (अल्लाह तआ़ला जो बड़ा) रहमान है उन के दर्मियान (परस्पर) मुहब्बत पैदा कर दे गा[२७] ९७. सो हम ने क़ुरआन को तेरी ज़बान (अ़रबी भाषा) पर सरल किया है ताकि तू उस के साथ नेक बख़्तों को शुभ सूचना दे और सख़्त दुश्मनों को डराये ९८. और हम ने उन

➲से पहले कई एक जमाअ़तों को हलाक किया। क्या तुम उन में से किसी को मालूम करते हो या किसी के पांव की आहट भी सुनते हो? (हर्गिज़ नहीं, बस इसी प्रकार समय आने पर उन की भी गत हो गी)

....

२४. यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि दुनिया में ऐसे मुसलमान भी हैं जिन पर (काफ़िरों ही की तरह) शैतान रात-दिन सवार रहते हैं। यह नाम के मुसलमान अगर्चे ज़बान से क़ियामत का इन्कार तो नहीं करते मगर काम ऐसा करते हैं जिस से मालूम होता है कि क़ियामत और आख़िरत उन के निकट कोई चीज़ नहीं है। ऐसे लोगों को इस आयत से नसीहत हासिल करनी चाहिये और शैतान को अपना दुश्मन समझना चाहिये। दिन-रात उसी की आज्ञा पालन नहीं करना चाहिये, बल्कि अपने पैदा करने वाले अल्लाह की इ़बादत व इताअ़त करनी चाहिये। (अहसनुल फ़वाइद)
२५. संदेष्टा भी लंबे समय तक सज्दों में रहें गे इस के बाद ही मन्नत-समाजत कर के अनुमति लें गे तभी कुछ अनुरोध कर सकें गे। इस के बावजूद भी वह किसी मुश्रिक और काफ़िर के बारे में सिफ़ारिश न करें गे, बल्कि केवल उन्हीं के बारे में सिफ़ारिश करें गे जो इख़्लास तो रखते हों गे मगर नफ़्स की ग़लती से गुनाह में लत-पत हो गये हों गे। (सनाई)
२६. उन का यह कहना इतना बुरा है कि आसमान भी सुन कर काँप उठे और ज़मीन भी सुन कर मारे ग़ज़ब के फट पड़े और पर्वत भी गुस्सा के मारे चूर-चूर हो जाये। मुस्नद अहमद की एक मर्फ़ूअ़ रिवायत में है कि तक्लीफ़ पहुंचाने वाली बातों पर अल्लाह से ज़्यादा सब्र करने वाला कोई नहीं। अल्लाह तआ़ला के सब्र का यह हाल है कि लोग उस के साथ शरीक ठहराते हैं, फ़रिश्तों को उस की औलाद बनाते हैं, मगर फिर भी वह उन को रोज़ी और अम्न व शान्ति देता है"। (इब्ने कसीर)
२७. अर्थात जिन के दिलों में तौहीद रची-बसी है और जिन के दिल किताब व सुन्नत के नूर से रोशन हैं, हम अपने बन्दों के दिलों में उन की मुहब्बत पैदा कर दें गे। एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआ़ला जब अपने किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो हज़रत जिब्रील को बुला कर फ़रमाता है कि मैं अपने फ़लाँ बन्दे से मुहब्बत करता हूँ तुम भी उस से मुहब्बत करो, चुनान्चे जिब्रील अमीन भी उस से मुहब्बत करने लगते हैं। फिर आसमानों में एलान कर दिया जाता है कि अल्लाह फ़लाँ बन्दे से मुहब्बत करता है, ऐ फ़रिश्तो! तुम सब भी उस बन्दे से मुहब्बत करो। चुनान्चे तमाम फ़रिश्ते उस से मुहब्बत करने लगते हैं, फिर उस की मक़्बूलियत ज़मीन पर भी उतार दी जाती है।

और जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे से नाराज़ हो जाता है तो जिब्रील से फ़रमाता है कि मैं फ़लाँ बन्दे से अप्रसन्न हूँ, तुम भी उस से अप्रसन्न रहो। चुनान्चे वह भी उस से नफ़्रत करने लग जाते हैं। फिर आसमानों में एलान किया जाता है कि फ़लाँ बन्दे से अल्लाह दुश्मनी रखता है इस लिये तुम सब भी उस के दुश्मन हो जाओ। चुनान्चे आकाश के तमाम फ़रिश्ते उस के दुश्मन हो जाते हैं और फिर वह नाराज़गी ज़मीन पर भी नाज़िल कर दी जाती है (बुख़ारी, मुस्लिम)

इस आयत का अर्थ यह हुआ कि नेक अ़मल करने वाले बन्दों से अल्लाह स्वयँ प्रेम करता है और मख़्लूक़ भी उस से मुहब्बत करने लगती है, उस को अच्छे नाम से याद किया जाता है और मरने के पश्चात् भी रहती दुनिया तक उसे नेक नामी से याद किया जाता है। (इब्ने कसीर) अल्लाह का शुक्र है कि उस ने इस क़ुरआन के उर्दू अनुवादक मौलाना अमृत सरी रह० को भी अ़वाम में क़ुबूलिय्यत अ़ता फ़रमाई और उन के दुनिया से चले जाने के बाद भी क़ियामत तक अच्छे नाम से याद किया जाता रहे गा-- अल्लाहुम्मग़्फ़िर लहू वर्-ह-म्हू व-अक्रिम् नुज़ु-लहू (राज़) या अल्लाह! मुझ हिन्दी अनुवादक को भी इस नेक कार्य की बदौलत मग़्फ़िरत अ़ता फ़रमा और इस नेक कार्य को➲ लोगों में क़ुबूलियत अ़ता फ़रमा--- आमीन (ख़ालिद)

सूरः त्वाहा-(20)

सूरः त्वाहा मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस सूर में १३५ आयतें और ८ रुकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।

१. त्वाहा २. हम ने तेरे ऊपर कुरआन इस लिये तो नहीं उतारा कि तू मुसीबत में पड़ जाये। ३. लेकिन डरने वाले लोगों के लिये नसीहत (और समझाने को कुरआन आया) है। ४. अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जिस ने ज़मीन और बुलन्द आसमान पैदा किये हैं, कुरआन नाज़िल हुआ है ५. रहमान है जिस ने अ़र्श के ऊपर क़रार पकड़ा ६. आसमानों और ज़मीन में और उन के दर्मियान और जो कुछ उस के नीचे है सब उसी का है ७. और (उस के ज़िल्म की हालत यह है कि हर एक दिल की बात जानता है) अगर तुम बुलन्द आवाज़ से बात करो तो (और आहिस्ता से करो तो भी) वह आहिस्ता और (आहिस्ता से भी) पोशीदा को जानता है ८. (मुख़्तसर यह कि) वह अल्लाह हक़ीक़ी माबूद है। उस के अ़लावा कोई दूसरा माबूद नहीं। तमाम नेक काम उसी के लिये हैं ९. क्या तुम्हें मूसा की सूचना (नहीं) पहुंची है (कि वह किस प्रकार नबी हुआ) १०. जब उस ने (मद्-यन से वापसी के समय पर्वत पर) आग देखी तो अपने बाल-बच्चों से कहा: इस स्थान पर ठहरो। मैं ने आग देखी है (और तुम को सर्दी ने सताया है) संभवतः मैं उस में से एक जलती हुयी अंगारी लाऊँ, या उस के पास कोई रास्ता पाऊँ ११. पस जब वह उस के पास आया तो उसे आवाज़ आयी: ऐ मूसा! (तू क्या देख रहा है और किस ख़्याल में है, देख) १२. मैं तेरा पर्वरदिगार हूँ पस तू अपनी दोनों जूतियाँ उतार ले, तू इस समय एक पाक जन्गल तुवा में है १३. और (सुन) मैं ने तुझ को चुन लिया है

(٢٠) سُوْرَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ (٤٥)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

طٰهٰ (١) مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى (٢) اِلَّا تَذْكِرَةً
لِّمَنْ يَّخْشٰى (٣) تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ
الْعُلٰى (٤) اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى (٥) لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِى الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى (٦) وَاِنْ
تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى (٧) اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى (٨) وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى (٩)
اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا
لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى (١٠)
فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ يٰمُوْسٰى (١١) اِنِّيْٓ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ
نَعْلَيْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى (١٢) وَاَنَا اخْتَرْتُكَ

....

१. सूरः त्वाहा मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। मगर 'फ़सबिर अ़ला मा......' से सूर के अन्त तक (आयत १३० से १३५ तक) मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस सूरः में १३५ आयतें हैं। एक हदीस के अनुसार जन्नती लोग जन्नत ➲

➲में केवल सूरः "यासीन" और "त्वाहा" की तिलावत किया करें गे, और बाक़ी कुरआन उठा लिया जाये गा। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० ने इसी सूरः को सुन कर इस्लाम क़ुबूल किया था।इतिहास और सीरत की किताबों में यह क़िस्सा बहुत ही प्रसिद्ध है। 'त्वाहा', यह उन शब्दों में से एक है जिस का अर्थ केवल अल्लाह ही को मालूम है। कुछ उलमा ने इस शब्द का अर्थ बताया है "ऐ मर्द" अथवा "ऐ हबीब"। मौलाना अमृतसरी मरहूम ने भी "ऐ अल्लाह के बन्दे" तर्जुमा किया है। कुछ उलमा फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कुरआन मजीद की क़िरात एक पाँव पर बैठ कर किया करते थे, इस पर अल्लाह तआ़ला ने इसे नाज़िल फ़रमाया। फिर इस का अर्थ हो गा "अपने दोनों पाँव को ज़मीन पर टेका देने वाले"। (वहीदी) सही बात यह है कि यह हुरुफ़ मुक़त्तआ़त में से है जिस का अर्थ केवल अल्लाह ही को मालूम है।

२. कुरआन मजीद में सात स्थानों पर अल्लाह तआ़ला के अ़र्श पर मुस्तवी होने का बयान है, उस में यह चौथी आयत भी है। इस के बारे में तमाम उलमा का यह अ़क़ीदा है कि इस पर केवल हमें ईमान लाना चाहिये। इस में खोज-कुरेद करने की बिल्कुल ही आवश्यक्ता नहीं। अल्लाह किस प्रकार अ़र्श पर बैठा है? अ़र्श के कितने पाए हैं, उस की ऊँचाई कितनी है, वह कितना लंबा-चौड़ा है? वग़ैरह इन बहसों में पड़ना गुमराही है।

३. 'तमाम नेक नाम उसी के लिये हैं' दुनिया में उस के दर्जे का कोई रहमान, ख़ालिक़, मालिक और राज़िक़ नहीं। तमाम दुनिया में उसी की बादशाही और शासन है। तमाम ही संदेष्टाओं ने उसी की तब्लीग़ की और उसी की आज्ञा पालन का आदेश दिया (सनाई)

४. हज़रत मूसा अ़लै० को क्या मालूम था कि आग लेने को जायें गे और पैग़ंबरी मिल जाये गी। यह अल्लाह की शान है कि जिस को चाहे, जो चाहे और जब चाहे अ़ता कर दे।

५. 'एक आवाज़ आयी' यह आवाज़ कैसी थी? इस को तो वही जानता है जिस ने सुनी। हाँ, इतनी बात ज़रूर है कि चाहे सर के कानों से सुना हो या दिल के कानों से (सनाई) हज़रत मूसा ने दूर से अल्लाह के नूर को आग समझा और जब वहाँ लेने पहुंचे तो अल्लाह ने पैगंबरी सौंप दी। यह आवाज़ स्वयँ अल्लाह की थी जो मूसा को एक दरख़्त से सुनाई दी। 'तुवा' उस मैदान का नाम था जहाँ दरख़्त से आवाज़ आई थी। जूतियाँ उतारने का हुक्म इस लिये हुआ कि वह मुर्दा गधे की खाल की बनी थीं। या फिर अदब व एहतराम की वजह से ऐसा हुक्म क्रिया गया (वहीदी) मोज़ा अथवा जूता अगर पाक हो तो उन में बिला शुब्हा नमाज़ अदा कर सकते हैं। (मुवज़्ज़िहुल फुर्क़ान)

पस जो कुछ तुझे वह्यि की जाये उसे सुनते जाओ १४. मैं ही सब का हक़ीक़ी माबूद हूँ, मेरे अ़लावा कोई भी माबूद नहीं सो तुम मेरी ही इ़बादत करना और मेरा ज़िक्र करने को नमाज़ क़ाइम करना १५. क़ियामत की घड़ी आने वाली है जिसे बहुत जल्द मैं ज़ाहिर करूँ गा ताकि हर शख़्स को उस की कमाई का बदला दिया जाये १६. पस (बेईमान लोग) जो उस को नहीं मानते और नफ़्स की ख़ाहिश के पीछे पड़े रहते हैं, तुझे भी कहीं उस (क़ियामत के मानने) से न रोकें वर्ना तू हलाक हो जाये गा १७. ऐ मूसा! (यह➲

فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوحَىٰ ۝ إِنَّنِي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا
فَاعْبُدْنِي وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي ۝ إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ
أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعَىٰ ۝ فَلَا
يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ فَتَرْدَىٰ ۝
وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يَا مُوسَىٰ ۝ قَالَ هِيَ عَصَايَ أَتَوَكَّأُ
عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا عَلَىٰ غَنَمِي وَلِيَ فِيهَا مَآرِبُ
أُخْرَىٰ ۝ قَالَ أَلْقِهَا يَا مُوسَىٰ ۝ فَأَلْقَاهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ
تَسْعَىٰ ۝ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا

الْأُولَىٰ وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلَىٰ جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ
غَيْرِ سُوءٍ آيَةً أُخْرَىٰ لِنُرِيَكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَى
اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي
صَدْرِي وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّن لِّسَانِي
يَفْقَهُوا قَوْلِي وَاجْعَل لِّي وَزِيرًا مِّنْ أَهْلِي

तो बता!) तेरे दायें हाथ में क्या है?[६] १८. मूसा ने कहा: यह मेरा असा (लकड़ी) है जिस पर मैं (खड़े होते समय) सहारा लेता हूँ और अपनी भेड़-बकरियों के लिये पत्ते झाड़ लिया करता हूँ, मेरे लिये इस में और कई फ़ाइदे हैं १९. अल्लाह ने कहा: ऐ मूसा! इसे फेंक दे २०. सो मूसा ने उसे फेंक दिया तो अचानक वह भागता हुआ सांप था २१. अल्लाह ने फ़रमाया: उसे पकड़ ले और ख़ौफ़ न कर हम उस की पहली सी (शक्ल और) कैफ़ियत वापस ले आयें गे २२. और (देख) अपना हाथ (सिकोड़ कर) अपनी बग़ल के अनदर रख वह बग़ैर बीमारी के सफ़ेद हो कर निकले गा यह दूसरी निशानी है २३. ताकि तुझे अपनी क़ुदरत के बड़े-बड़े निशान दें २४. (पस तुम बिस्मिल्लाह कह कर) फ़िर्औन की तरफ़ जाओ बेशक वह सरकश हो रहा है २५. मूसा ने कहा: इलाही मेरा सीना खोल दे २६. और मेरा कार्य सरल कर दे (तेरी ही सहायता से बेड़ा पार है) और मेरी ज़बान की गाँठ खोल दे २८. ताकि लोग मेरी बात समझ सकें[७] २९+३०. और मेरे कुंबे वालों में से मेरे भाई हारून को मेरा वज़ीर बना दे

....

६. 'इख़्फ़ा' का अर्थ "छुपाना" और "ज़ाहिर करना" दोनों है। यहाँ पर "ज़ाहिर करना" माना है (सनाई) हज़रत मूसा अ़लै॰ को पैगंबरी मिलने और उन को मोजिज़े (चमत्कार) मिलने का ऊपर बयान था। अगर्चे कोई भी चीज़ अल्लाह के इ़ल्म से बाहर नहीं है, लेकिन मूसा अ़लै॰ से लक्ड़ी के बारे में विस्तार से मालूमात करने में यह हिक्मत थी कि उन को अल्लाह की क़ुदरत का इ़ल्म हो जाये और मूसा यह बात भली-भांति जान लें कि फ़िर्औन के सामने मोजिज़ा दिखाते समय वह इसी प्रकार सांप बन जाये गा।

इस लक्ड़ी से और भी बहुत से चमत्कार प्रकट हुये जैसे, उस को पत्थर पर मारने से १२ चश्मे जारी हो गये (सूर: बक़र:, आयत ६०) दरिया पर उस लक्ड़ी के मारने से उस ने रास्ता दे दिया (सूर: शुअ़रा, आयत ६३) जब हज़रत मूसा लकड़ी का हाल बयान कर चुके तो अल्लाह ने हुक्म दिया कि उस लकड़ी को ज़मीन पर डाल दो, चुनान्चे डालते ही सांप बन कर दोड़ने लगा। हज़रत मूसा डर गये तो अल्लाह ने हुक्म दिया कि उसे पकड़ लो, चुनान्चे वह पहले की तरह लकड़ी हो गयी। दूसरे चमत्कार के बारे में यह बतलाया कि अपने हाथ की हथेली को बग़ल में ले जा कर निकालो, वह हथेली सफ़ेद हो जाएगी और उस में सूरज की सी रोशनी आ जाये गी। यह सफ़ेदी किसी बीमारी के कारण न हो गी, बल्कि जब चाहो गे समाप्त हो जाये गी। अब फ़िर्औन के पास जा कर इन्हें दिखाओ उस ने बहुत सर उठाया है और अपने आप को ख़ुदा कहता है।

हज़रत मूसा जब फ़िर्औन के महल में पर्वरिश पा रहे थे उस समय वह उस का प्रताप और रोब दब-दबा देख चुके थे इस लिये उस के पास जाने का आदेश सुन कर अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की कि तू अपनी रहमत से मेरे सीने को इस प्रकार खोल दे कि मैं बेधड़क हो कर फ़िर्औन को तेरा पैग़ाम पहुंचा सकूँ। अल्लाह तआ़ला ने मूसा की प्रार्थना के उत्तर में फ़रमाया कि हम ने तुम्हारी इच्छानुसार आवश्यक्ताएं पूरी कर दी हैं (अहसनुत्तफ़ासीर) लाठी के सांप बनने, हथेली के चमक उठने और हज़रत हारून के वज़ीर व शरीक होने का ज़िक्र तौरात में भी है (ख़ुरूज:४) अल्लाह ने फ़रमाया: अब तू जा! मैं तुझे फ़िर्औन के पास भेजता हूँ (ख़ुरुज: ३:१) हज़रत मूसा का हाथ बर्फ़ के समान

➲सफ़ेद बर्स की बीमारी वाला था (खुरुज बाब २, आयत ७) कुरआन मजीद ने "बग़ैर किसी बीमारी के" का शब्द बढ़ा कर बाइबल के इस ख़याल की तर्दीद कर दी कि वह सफ़ेदी बर्स की बीमारी के कारण थी। (सनाई)

७. हज़रत मूसा की ज़बान में हकलाहट थी। कुछ उलमा इसे पैदाइशी बताते हैं और कुछ का कहना है कि हज़रत मूसा ने बचपने में फ़िऔंन की दाढ़ी नोच ली थी इस पर उस ने इन्हें क़त्ल करने का इरादा कर लिया तो उस की बीवी आसिया ने उन को नासमझ साबित करने के लिये उन के सामने आग और याकूत रख दिया। हज़रत मूसा ने आग को उठा कर अपने मुँह में रख लिया था जिस से उन की ज़बान जल गयी थी और इसी कारण हकलाहट पैदा हो गयी थी। यह भी संभव है कि इन्सान जब किसी ज़ालिम बादशाह के सामने जाता है तो हैबत, डर और ख़ौफ़ से ज़बान में गिरह लग जाती है और स्पष्ट शब्दों में बात नहीं कर पाता, इसी गिरह को खोल देने की दुआ की हो (हक़्क़ानी)

هٰرُوْنَ اَخِي ﴿٣٠﴾ اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِيْ ﴿٣١﴾ وَ اَشْرِكْهُ فِيْٓ
اَمْرِيْ ﴿٣٢﴾ كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٣﴾ وَّ نَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٤﴾ اِنَّكَ
كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا ﴿٣٥﴾ قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى ﴿٣٦﴾
وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰٓى ﴿٣٧﴾ اِذْ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّكَ
مَا يُوْحٰٓى ﴿٣٨﴾ اَنِ اقْذِفِيْهِ فِي التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ فِي
الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّيْ وَ
عَدُوٌّ لَّهٗ ۭ وَاَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّيْ ڬ وَلِتُصْنَعَ عَلٰى
عَيْنِيْ ﴿٣٩﴾ اِذْ تَمْشِيْٓ اُخْتُكَ فَتَقُوْلُ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى مَنْ
يَّكْفُلُهٗ ۭ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰٓى اُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا
تَحْزَنَ ڛ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنّٰكَ
فُتُوْنًا ڛ فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ ڏ ثُمَّ جِئْتَ
عَلٰى قَدَرٍ يّٰمُوْسٰى ﴿٤٠﴾ وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِيْ ﴿٤١﴾ اِذْهَبْ
اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِيْ وَلَا تَنِيَا فِيْ ذِكْرِيْ ﴿٤٢﴾ اِذْهَبَآ

३१ उस के साथ मेरी हिम्मत बंधा ३२. और मेरे काम (तब्लीग़) में उसे शरीक कर दे ३३. ताकि तेरे नाम की अधिक से अधिक तस्बीहें पढ़ें ३४. और ख़ूब-ख़ूब तेरा ज़िक्र करें (मतलब यह है कि दोनों के साथ रहने से तब्लीग़ में बड़ी आसानी हो गी) ३५. तू हमारे हाल को ख़ूब देख रहा है (तू ही सब कामों में हमारे लिये काफ़ी है) ३६. अल्लाह ने फ़रमाया: ऐ मूसा! जो तुम ने माँगा उसे तुम्हें दिया गया ३७. (उस से कहा) एक और मर्तबा भी हम ने तुम पर एहसान किया था ३८. जब हम ने तेरी माँ को वहयि की थी (यानी वहयि के ज़रिआ उन के दिल में बात डाल कर यह सुझाया था) ३९. उस को (फ़िऔंनी अत्याचार से बचाने को) सन्दूक़ में बन्द कर के दरिया में डाल दे (पानी) उस को (कहीं ले जा कर) किनारे पर डाल दे गा (वहाँ पर यह स्थिति पेश आये गी कि) मेरा और उस का दुश्मन उस को पकड़ ले गा[९]। और मैं ने अपनी तरफ़ से (सब के दिल में) तेरी मुहब्बत डाल दी ताकि तू मेरी आँखों के सामने पाला जाये[१०] ४०. (क्या तुझे मालूम है?) जब तेरी बहन (तेरे पीछे) चलती हुयी (शाही महल में) पहुंची[११] पस उस ने कहा: मैं तुम को एक ऐसी दाया बतलाऊँ जो उस की देख-भाल करे? सो हम ने तुझे तेरी माँ के पास पहुंचा दिया ताकि उस की आँखें ठन्डी हों और ग़मगीन न हों। और तू ने एक शख़्स को मार डाला था तो हम ने तुझे उस ग़म से नजात➲

दी। और तुझ को कई प्रकार के तजुर्बे कराये, फिर तू मदयन वालों में कई वर्ष रहा फिर ऐ मूसा! तू एक हद तक पहुंचा[१२] (चुनान्चे नबुव्वत से तुझे नवाज़ा गया) ४१. और मैं ने तुझे (अपने अहकाम की तब्लीग़ के लिये) पसंद किया है ४२. (पस) तू और तेरा भाई मेरे (अहकाम और) निशानियों के साथ जाओ (और देखना, दुश्मन के झमेले में फंस कर) मेरी याद में सुस्ती न करना ४३. फ़िर्औन की तरफ़ जाओ

....

८. ऐसे बड़े पैग़ंबरों को सहायक के तौर पर एक सहयोगी चाहिये ताकि सहजता से तब्लीग़ कर सकें। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सहायक अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० थे। आरंभ में इन की कोशिशों से काफ़ी लोग ईमान लाये थे (मुवज़्ज़िहुल कुरआन)

९. कुछ लोगों ने लिखा है कि हज़रत मूसा को फ़िर्औन की बीवी ने पकड़ा था, उन का यह ख़याल दुरुस्त नहीं है, इस लिये कि फ़िर्औन की बीवी हज़रत मूसा पर ईमान ले आयी थी। इस का ज़िक्र कुरआन में भी है। बाइबल में है कि सन्दूक़ को निकालने वाली फ़िर्औन की बेटी थी (तर्जुमान)

१०. हज़रत मूसा को उन की पैदाइश का वाक़िआ इस लिये याद दिलाया गया कि उन्हें मालूम हो जाये कि अल्लाह ने उन्हें अव्वल दिन ही चुन लिया है और ऐसी परिस्थितियों में उन की पर्वरिश हुयी है जो बग़ैर अल्लाह की कुदरत के नहीं ज़ाहिर हो सकती। फिर उन का मिस्र से निकलने पर मजबूर होना और मद्यन के बयाबानों में ज़िन्दगी गुज़ारना भी इसी लिए था कि पेश आने वाले हालात में इस सारी बातों की आवश्यक्ता थी। जब यह सब कुछ हो चुका और मूसा अ़लै० ने ट्रेनिन्ग मुकम्मल कर ली तो नबुव्वत का भार उन पर डाल दिया गया। चनुान्चे इसी लिये फ़रमाया: "हम ने तुझे भाँति-भाँति की हालतों में डाल कर आज़माया"। और फ़रमाया: "फिर तुम इस अन्दाज़े पर ठीक उतर आये जो तुम्हारी तकमील के लिये ठहराया गया था"। इस के बाद फ़रमाया: "मैं ने तुझे अपने लिये बनाया और तय्यार किया"।

११. 'शाही महल में पहुची' तो यह देखा कि तू रो रहा है और किसी दाया का दूध नहीं पीता। इस लिये कि हम (अल्लाह)ने हर एक दाया का दूध उस पर हराम कर दिया था। यह हालत देख कर उस होशियार लड़की ने शाही महल के ज़िम्मे दारों से कहा कि मैं आप लोगों को एक ऐसी दाया के बारे में बताऊँ गी जिस का यह दूध पिये गा और वह इस बच्चे की भली-भाँति देख-भाल भी करे गी। चुनान्चे यह सुन कर सभी लोग प्रसन्न हो गये और ऐसी दाया लाने का हुक्म दिया ताकि बच्चे की जान बच सके। यह सब कुछ मेरी कुदरत के चमत्कार थे (सनाई)

१२. 'क़द्र' के दो अर्थ हैं (१) "कुदरत" यानी ऐ मूसा! हमारी कुदरत से तू इस जगह आया। यानी हम तुझ को कलाम करने के मौक़ा पर लाये (२) "तै शुदा मुद्दत"। यानी एक तै शुदा मुद्दत (सुनिश्चित समय) के बाद तू आया तो मैं ने तुझ को अपने लिये चुन लिया। अब तुम दोनों भाई फ़िर्औन के पास जाओ। हमारे चमत्कार जो तुम्हारे पास हैं, तुम्हारे नबी होने की गवाही दें गे। और एक विशेष बात की तरफ़ ध्यान देना वह यह कि मुझे ज़्यादा से ज़्यादा याद करना! इस लिये कि मुझे याद करते रहने से एक ऐसी ताक़त पैदा हो जाती है जिस से लोग अदब व एहतराम करने लगते हैं और मुझे याद करने वाला इ़ज़्ज़त की नज़रों से देखा जाता है। दूसरा फ़ाइदा मुझे याद करते रहने का यह है कि उस के सामने बड़े-बड़े ज़ालिमों की गर्दनें झुक जाती हैं, दिल में कुव्वत और बात-चीत करने में सरलता होती है, रूहानियत का ग़लबा होता है, बड़े से बड़े कठिन कार्य बड़ी सरलता से अन्जाम पा जाते हैं।

आयत न० ४९. से फ़िर्औन और मूसा की बात-चीत का बयान है। यह बात-चीत शाही महल में हुयी थी। फ़िर्औन ने पूछा कि तुम्हारा रब कौन है? यह प्रश्न उस ने इस लिये किया था कि वह 'साबिया' फ़िर्क़ा से था जो लोग सितारों की पूजा किया करते थे। फ़िर्औन अपनी दौलत-शौकत और जादू-टोने के बल पर अपनी प्रजा पर

➲रोब जमाने के लिये अपने आप को रब कहता था। पुराने ज़माना के बादशाहा का यह दस्तूर था। हिन्दू क़ौम के कई राजा-महाराजा अपने आप को "अन्न दाता" (राज़िक़) कहलाते और पूजे जाते हैं। बादशाह नमरूद का भी यही हाल था। हज़रत मूसा अ़लै० ने उत्तर देते हुये कहा: हमारा रब तो वह है जिस ने हर वस्तु को उसकी उचित सूरत पर पैदा किया (हक़्क़ानी)

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿٤٣﴾ فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهُ
يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ ﴿٤٤﴾ قَالَا رَبَّنَا إِنَّنَا نَخَافُ أَن يَفْرُطَ
عَلَيْنَا أَوْ أَن يَطْغَىٰ ﴿٤٥﴾ قَالَ لَا تَخَافَا إِنَّنِي مَعَكُمَا
أَسْمَعُ وَأَرَىٰ ﴿٤٦﴾ فَأْتِيَاهُ فَقُولَا إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ
مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ۙ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ۖ قَدْ جِئْنَاكَ بِآيَةٍ
مِّن رَّبِّكَ ۖ وَالسَّلَامُ عَلَىٰ مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ ﴿٤٧﴾ إِنَّا قَدْ
أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٤٨﴾ قَالَ
فَمَن رَّبُّكُمَا يَا مُوسَىٰ ﴿٤٩﴾ قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ
خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَىٰ ﴿٥٠﴾ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ ﴿٥١﴾
قَالَ عِلْمُهَا عِندَ رَبِّي فِي كِتَابٍ ۖ لَّا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنسَى ﴿٥٢﴾
الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَسَلَكَ لَكُمْ فِيهَا
سُبُلًا وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا
مِّن نَّبَاتٍ شَتَّىٰ ﴿٥٣﴾ كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ ۗ إِنَّ فِي

वह (नालायक़) सरकश हो गया है ४४. पस (जा कर) उस से नर्म बात करना शायद वह समझ जाये या डर जाये ४५. दोनों ने कहा: ऐ हमारे मौला! हमें डर है कि फ़िर्औन हम पर ज़ुल्म-ज़्यादती करे गा या (जोश में आ कर) हद से गुज़र जाये गा ४६. अल्लाह ने कहा: तुम मत डरना, मैं तुम्हारे साथ हूँ (सब कुछ) सुनता और देखता हूँ ४७. पस तुम दोनों उस के पास जा कर कहना कि हम तेरे पर्वरदिगार के रसूल हैं पस (पहले) तू (ख़ुदाई का दावा छोड़ कर बन्दगी इख़्तियार कर। दूसरे यह कि) बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे और उन को नाहक़ दन्ड न दे। हम तेरे पर्वरदिगार के हाँ से तेरे पास निशान लाये हैं। और सलामती हमेशा उसी पर हो गी जो हिदायत की पैरवी करे गा ४८. हमारी तरफ़ वह्यि पहुंच चुकी है कि अ़ज़ाब उसी पर हो गा जो (सच्ची बात को) झुठलाए गा और (सीधी राह से) मुँह मोड़े गा ४९. फ़िर्औन ने कहा: ऐ मूसा! तुम दोनों का पर्वरदिगार कौन है?[13] ५०. मूसा ने कहा: हमारा पर्वरदिगार वह है जिस ने हर चीज़ को पैदा किया फिर उस को अच्छा-बुरा समझाया ५१. (यह सुन कर भी) वह बोला (कि अगर यह बात है) तो फिर पुरानी संगतों (और क़ौमों) का क्या हाल है? ५२. मूसा ने कहा कि उन (लोगों) का हुक्म अल्लाह के पास किताब में (लिखा हुआ) है[14], मेरा पर्वरदिगार न बहकता है और न भूलता है ५३. जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछौना बनाया है और तुम्हारे लिये उस में (मुख़्तलिफ़ प्रकार के क़ुदरती) रास्ते बनाए और आकाश से तुम्हारे लिये पानी उतारता है। फिर उस पानी के साथ हम(अल्लाह)तुम्हारे लिये मुख़्तलिफ़ प्रकार की सबज़ियाँ निकालते हैं (ज़रा देखो तो सब काम किस तरह हमारी क़ुदरत से हो रहे हैं पस तुम) ५४. स्वयँ भी खाओ और अपने जानवरों को भी चराओ

....

१३. यानी आज तक तो मैं ही अपनी प्रजा का पर्वरदिगार बना रहा। यह आज नई बात सुन रहा हूँ कि मेरे अ़लावा➲

भी कोई पर्वरदिगार है। हज़रत मूसा ने कहाः हमारा पर्वरदिगार तो वह ज़ात है जिस ने हर वस्तु को पैदा किया। यह सुन कर भी फ़िर्औन नादानों की सी बातें करने लगा और बोला कि अगर यह बात है तो फिर उन पहली क़ौमों का क्या हाल हो गा जो मेरी अिबादत करते हुये दुनिया से चले गये। इस प्रकार प्रश्न करने का उद्देश्य यह था कि अभी मूसा उन के बारे में कोई सख़्त बात कहें गे, तो हवाली-मवाली उन से ले-दे करें गे और इस प्रकार पूरी जनता के दिल में मुख़ालिफ़त की लहर दौड़ जाये गी।

मगर हज़रत मूसा आज-कल के उलमा की तरह जल्द बाज़ न थे कि तुरन्त कुफ़्र का फ़तवा दे देते। इस लिये हज़रत मूसा ने निहायत होशियारी से उत्तर दिया कि पहले के लोगों का अन्जाम क्या हो गा? इस का ज्ञान केवल अल्लाह को है और उस की किताब में नोट है (सनाई)

१४. हज़रत मूसा अ़लै० के इस उत्तर ने यह बात स्पष्ट कर दी कि जिन चीज़ों के बारे में जानकारी न हो और जिन के बारे में खोज-कुरेद करने का कोई विशेष लाभ भी न हो, ऐसी चीज़ों के पीछे हमें नहीं पड़ना चाहिये, बल्कि उन का हुक्म अल्लाह के हवाले कर देना चाहिये। वास्तव में अगर आज लोग इस दृष्टिकोण को अपना लें और इसी के अनुसार अ़मल करने लग जायें तो मसलक और मज़हब के तमाम झगड़े समाप्त हो जायें (तर्जुमान)

ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى النُّهٰى ﴿٥٤﴾ مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَ
فِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ﴿٥٥﴾
وَلَقَدْ اَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ﴿٥٦﴾ قَالَ
اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٥٧﴾
فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَ بَيْنَكَ
مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَآ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾
قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ
ضُحًى ﴿٥٩﴾ فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ﴿٦٠﴾
قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا
فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ﴿٦١﴾
فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى ﴿٦٢﴾
قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ
مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ

इस में अक़्लमन्दों के लिये कई एक निशान हैं[15] ५५. इसी में से हम ने तुम को (यानी तुम्हारे बाप आदम को) पैदा किया है और इसी में हम तुम को लौटा देते हैं और इसी (ज़मीन) से तुम को एक दफ़ा फिर निकालें गे ५६. और हम ने उस (फ़िर्औन) को अपने कुल निशान दिखाए उस ने फिर उन को झुठलाया और इन्कारी ही रहा ५७. वह बोला कि ऐ मूसा! तू तो इस लिये आया है कि अपने जादू के साथ हमारे मुल्क से हमें निकाल दे[16] (यह तेरे हक़ में अच्छा न हो गा) ५८. हम तेरे जादू के बराबर का जादू लायें गे पस तू हम में और अपने में एक वादा गाह (बराबर का स्थान) मुक़र्रर कर जिसे न हम टालें और न तुम टालना (बल्कि ठीक समय पर पहुंचे) ५९. मूसा ने कहा: तुम्हारे हमारे वादा का स्थान ज़ीनत का दिन[17] (यानी अ़ीद के जश्न का दिन) हो गा और लोग चाश्त के समय (सवा पहर दिन चढ़े) जमा किये जायें ६०. पस फ़िर्औन ने हट कर अपने हथकन्डों (यानी जादू गरो को) जमा किया फिर (मैदान में) आया[18] ६१. मूसा ने कहा: तुम्हारे हाल पर अफ़सोस है अल्लाह पर झूठा इल्ज़ाम मत लगाओ (यानी फ़िर्औन को अल्लाह न मानो) वर्ना अल्लाह तुम को अ़ज़ाब से तबाह

कर दे गा और जिस ने (अल्लाह पर) झूठ बाँधा वह ज़लील हुआ[१६] ६२. पस उन्हों ने इस मामले में परस्पर झगड़ा किया और पोशीदा मश्वरे किये ६३. वह बोले कि यह दोनों जादूगर हैं इन का इरादा है कि अपने जादू के ज़ोर से तुम को तुम्हारे मुल्क (मिस्र) से निकाल दें और तुम्हारा (सच्चा और) अफ़ज़ल दीन (जिस की पैरवी तुम्हारे बाप-दादा करते आये हैं) बर्बाद करें।

....

१३. 'अक़्ल रखने वालों के लिये निशान हैं' वह ग़ौर कर के इस नतीजा पर पहुंच सकते हैं कि जिस अल्लाह ने इतनी लम्बी-चौड़ी दुनिया बनाई है, वह इस बात की भी क़ुदरत रखता है कि क़ियामत के दिन मुर्दों को भी जीवित कर सके। (सनाई)

१६. 'हमारे मुल्क से हमें निकाल दें' और हमारी प्रजा को अपनी मुरीदी के जाल में फंसा कर हम से दूर कर दे। और ऐ मूसा! तू सर्कार की मुख़ालिफ़त कर रहा है तो यह तेरे हक़ में अच्छा नहीं है (सनाई)

१७. 'यौमुज़्ज़ीन:' (प्रसन्नता का दिन) इस दिन मिस्र वालों का वर्ष पूरा होता था और इस वर्ष गाँठ के मौक़े पर उस दिन एक बहुत बड़ा समारोह आयोजित किया जाता था, जिस में लोग ख़ुशियाँ मनाते और अपने-अपने कर्तब पेश करते थे। आज कल हिन्दुओं के मेले भी ऐसे ही होते हैं जैसे, कुंभ का स्नान, हरिद्वार का नहान, नौरात्रि का समारोह, दुर्गा पूजन का समारोह, मेरठ का नवचन्दी का मेला, देवी पाटन का मेला वग़ैरह। ऐसे समय का चुनाव इस लिये किया था कि उस दिन समस्त जनता इकट्ठी रहे गी और सत्य और असत्य का सभी को ज्ञान हो जाये गा। फ़िऔंन ने दूर-दूर के स्थानों से बड़े-बड़े जादूगरों को बुलावा भी भेजा और उन को इनाम देने का लालच दिया। उस समय काल में जादू, टोने, टोटके आदि का बड़ा ज़ोर था, इसी लिये जादू में हार-जीत ही को हक़-नाहक़ (सत्य-असत्य) की कसौटी माना गया। (सनाई)

१८. हज़रत मूसा अ़लै० ने जब यह तमाशा देखा कि उस समारोह में जमा होने के लिये लोग झुन्ड के झुन्ड चले आ रहे हैं और सब के सब फ़िऔंन को ख़ुदा मानने वाले हैं, तो इस मौक़ा को वाज़-नसीहत और तब्लीग़ के लिये निहायत उचित जाना। चुनान्चे इस मौक़ा से लाभ उठाते हुये हज़रत मूसा ने जनता को संबोधित करते हुये कहा कि तुम्हारे हाल पर बड़ा अफ़सोस है कि तुम लोग अपनी ही तरह की मख़्लूक़ को ख़ुदा बनाये हुये बैठे हो। तुम में से अमीर और ग़रीब सभी इस नादानी में गिरफ़्तार हैं। तुम केवल उस को पूजो जिस ने सन्सार को बनाया और वही सब को आहार देता है। हज़रत मूसा का यह तब्लीग़ी भाषण सुन कर बहुत से लोगों के दिल दहल गये और परस्पर ही लड़ने-झगड़ने लगे। कुछ लोगों का तो कहना था कि इस से मुक़ाबला करना ठीक नहीं, इस लिये कि यह तो अल्लाह वाला मालूम होता है। फ़िऔंन के वज़ीरों ने जब देखा कि पाँसा मूसा के हक़ में पलटना चाहता है, तो लोगों को अपने पक्ष में लेने के लिये कहा कि यह दोनों तो जादूगर हैं..............(सनाई)

१९. क़ुरआन मजीद और अहादीस में भी झूठा इल्ज़ाम लगाने पर बड़ी सख़्त वईद आयी है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिस शख़्स ने किसी मुसलमान पर ऐसा इल्ज़ाम लगाया जिस से वह बरी है (यानी उस को बदनाम करने के लिये इल्ज़ाम लगाया) तो अल्लाह ने अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है कि उस को दोज़ख़ में डाल कर पिघला दे, या फिर वह उस का बदला ला दे (यानी न तो वह बदला ला पाये गा और न ही जहन्नम से निकल सके गा) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक दूसरी हदीस में फ़रमया: पाँच गुनाह ऐसे हैं जिन का कफ़्फ़ारा नहीं है। (१) अल्लाह के साथ शिर्क करना (२) अकारण किसी को क़त्ल करना (३) किसी मुसलमान पर इल्ज़ाम लगाना (४) जिहाद के मैदान से पीठ फेर कर भागना (५) झूठी क़सम खा कर किसी का माल हासिल करना। यानी जब मुसलमान कोई नेकी करता है, या किसी दुःख-तक्लीफ़ में गिरिफ़्तार होता है, तो उस के गुनाह माफ़ हो जाते हैं, लेकिन यह पांच गुनाह ऐसे हैं जो किसी भी प्रकार माफ़ न हों गे और हर हाल में इन की सज़ा मिले गी (अहादीसुत्तफ़ासीर)

الْمُثْلَىٰ ﴿٦٣﴾ فَأَجْمِعُوا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوا صَفًّا ۚ وَقَدْ
أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَىٰ ﴿٦٤﴾ قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِمَّا أَن
تُلْقِيَ وَإِمَّا أَن نَّكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَىٰ ﴿٦٥﴾ قَالَ
بَلْ أَلْقُوا ۖ فَإِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ
مِن سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَىٰ ﴿٦٦﴾ فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ
خِيفَةً مُّوسَىٰ ﴿٦٧﴾ قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنتَ
الْأَعْلَىٰ ﴿٦٨﴾ وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا ۖ
إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدُ سَاحِرٍ ۖ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَىٰ ﴿٦٩﴾
فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ
وَمُوسَىٰ ﴿٧٠﴾ قَالَ آمَنتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُ
لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۖ فَلَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ
وَأَرْجُلَكُم مِّنْ خِلَافٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ فِي جُذُوعِ
النَّخْلِ وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَىٰ ﴿٧١﴾ قَالُوا

६४. पस तुम अपने तमाम दाँव-घात जमा कर लो फिर सफ़ें बाँध कर आओ और (याद रखो कि) आज जो ग़ालिब रहे गा वही सदा के लिये कामियाब हो गा ६५. जादूगर बोले कि ऐ मूसा! (क्या इरादा है?) तू पहले वार करना चाहता है या पहले हम वार करें[२०]? ६६. मूसा ने कहा: (मैं पहले वार नहीं करना चाहता) बल्कि तुम ही वार करो, सो तुरन्त उन की रस्सियों और लकड़ियों पर उन के जादू के प्रभाव से मूसा को ख़याल होने लगा कि हर्कत करती हैं ६७. तो फिर तो मूसा को भी जी में उन से किसी क़दर ख़ौफ़ होने लगा ६८. (तो तुरन्त) हम ने कहा कि ऐ मूसा! डर नहीं, बेशक तू ही ग़ालिब है (यह तो अस्ल में कुछ भी नहीं, इस लिये तू डटा रह) ६९. और जो कुछ तेरे हाथ में है उसे डाल दे वह उन के तमाम हथकन्डों को लील जाये गा। निःसंदेह जो कुछ उन्हों ने किया है यह केवल जादू का प्रभाव है। और जादूगर कहीं से भी आये कामियाब नहीं हो सकता ७०. पस जादूगर सज्दे में गिर पड़े और बोले कि हम हारून और मूसा के रब पर ईमान लाये हैं ७१. फ़िर्औन बोला कि मेरी अनुमति से पहले ही तुम ईमान ले आये? यह तो तुम्हारा बड़ा उस्ताद है जिस ने तुम को जादू सिखाया है, सो तुम्हारे हाथ-पाँव उल्टे-सीधे कटवा दूँ गा और तुम को खजूरों के तनों पर सूली दूँ गा और तुम जान लो गे कि हम में से किस का अ़ज़ाब सख़्त और ज़्यादा दिनों तक रहने वाला है।

....

२०. हज़रत मूसा ने फ़रमाया: पहले तुम लोग ही वार कर के अपने दिल की भड़ास निकाल लो। चुनान्चे उन्हों ने अपनी-अपनी रस्सियाँ ज़मीन पर फेंक दीं तो ऐसा मा़लूम होने लगा कि वह साँप बन कर दौड़ रही हैं। यह देख कर हज़रत मूसा को ख़ौफ़ पैदा हुआ कि कहीं जनता उन के इन हथकन्डों के जाल में न फंस जाये। उसी समय अल्लाह ने वह्यि की कि तुम भी अपनी लकड़ी फेंक दो और घबराओ नहीं। वह लकड़ी अज़दहा (अजगर) साँप बन गयी (जिस के सर, पैर, दाँत और केचलियाँ भी थीं) उस ने आन की आन में सब को लील कर मैदान साफ़ कर दिया। अब पूरी प्रजा ने जान लिया कि जादूगरों के हथकन्डों में कुछ भी वास्तविक्ता नहीं है। तिर्मिज़ी शरीफ़ में एक हदीस है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जादूगरों को जहाँ पाओ तुरन्त मौत के घाट उतार दो"। फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यही आयत तिलावत फ़रमाई। मतलब यह है कि उन को कहीं ठोर ठिकाना (शरण) न दिया जाये।

जादूगरों ने जब यह हालत देखी तो ताड़ गये कि मूसा के हाथ का यह कमाल नहा है बल्कि हो न हो ➲

यह अल्लाह की कुदरत है जो मूसा के हाथों अन्जाम पायी है। चुनान्चे वह भरे सभागार में ही पुकार उठे कि हम हारून और मूसा के रब पर ईमान लाये। यह लोग सुब्ह को काफ़िर थे और शाम को पक्के-सच्चे मोमिन बन कर अल्लाह की राह में शहीद हो गये। रिवायतों के अनुसार जब यह लोग सज्दे में गये तो अल्लाह तआला ने उन के सामने जन्नत को ला कर उन के स्थानों को दिखा दिया, परिणाम यह निकला कि फ़िर्औन की धमकियों से डरने के बजाए ईमान मे और पक्के हो गये। फ़िर्औन ने धमकाने के साथ-साथ यह बुहतान (आरोप) भी लगाया कि मूसा जादू की कला में तुम्हारा उस्ताद है और उसी ही से तुम लोगों ने जादू सीखा है। तुम लोगों का इरादा यह है कि हमारे राज-काज को बर्बाद कर दो। तो मालूम रहे कि तुम सब के हाथ-पाँव उल्टे-सीधे कटवा कर खजूर के पेड़ों पर लटका कर सूली-फांसी दे दूँ गा और इतनी यातनायें दूँ गा कि दूसरे लोग अ़िब्रत (सबक़) हासिल करें।

मुख़्तसर यह कि फ़िर्औन की धमकियों का उन पर कोई प्रभाव न हुआ और उन के ईमान में कोई कमी नहीं आयी (इब्ने कसीर)

لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِىْ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ ؕ اِنَّمَا تَقْضِىْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ؕ اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا وَمَآ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۝ اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ؕ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۝ وَمَنْ يَّاْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ۝ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى ۝ وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِىْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِى الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى ۝ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ۝ وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ

७२. वह (जादूगर) बोले: हमारे पर्वरदिगार की तरफ़ से जो खुले निशान (मूसा के द्वारा) हमारे पास आयें हैं उन पर और जिस खुदा ने हम को पैदा किया है उस पर हम आप को किसी प्रकार तर्जीह नहीं दे सकते, सो जो कुछ आप कर सकते हैं कर लीजिये आप तो केवल इसी दुनिया में हुक्म कर सकते हैं ७३. हम अपने पर्वरदिगार पर ईमान लाये हैं कि वह हमारे गुनाह माफ़ करे और जादू का गुनाह भी माफ़ करे जिस पर आप ने हम को बाध्य किया। और अल्लाह सब से अच्छा और हमेशा बाक़ी रहने वाला है[२१] ७४. जो कोई अपने पर्वरदिगार के पास मुजरिम की हैसिय्यत से जाये गा उस के लिये अवश्य ही जहन्नम मुक़र्रर है। जिस में न वह मरे गा और न जिये गा[२२] ७५. और जो लोग उस के पास ईमान दार हो कर आयें गे और नेक अ़मल भी किये हों गे उन के लिये बुलन्द दर्जे हों गे, यानि सदैव रहने के लिये बाग़ हैं उन के नीचे नहरें जारी हैं हमेशा उन में रहें गे। यह उस शख़्स का बदला है जो (कुफ़्र व शिर्क) और (बुरे आचरण से) पाक हुआ हो गा[२३] ७७. और हम ने मूसा की तरफ़ वह्यि (से सूचना) भेजी कि तू मेरे बन्दों को रात के समय (फ़िर्औन की बेख़बरी में) ले निकल और समुन्द्र में उन के लिये (हमारे आदेश से लकड़ी के साथ) खुश्क रास्ता बनाना, पकड़े जाने का ख़ौफ़ न करना और न डरना (चुनान्चे वह रात को चल पड़े) ७८. सो फ़िर्औन

अपनी सेना के साथ उन के पीछे हो लिया पस पानी ने उन को कैसा घेरा[२४] ७९. और फ़िऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह किया

....

२१. यानी ऐसे स्पष्ट तर्क को तुम्हारी वजह से नहीं छोड़ सकते और न ही अल्लाह तआला की ख़ुश्नूदी के मुक़ाबले में तुम्हारी कुछ पर्वा कर सकते हैं। अब तो जो कुछ तुम्हें करना है कर लो। तुम ज़्यादा से ज़्यादा यही कर सकते हो कि हमारी इस दुनियावी ज़िन्दगी को समाप्त कर दो, लेकिन हमें इस की भी कोई पर्वाह नहीं है इस लिये कि हम इस दुनियावी ज़िन्दगी के मुक़ाबले में आख़िरत की ज़िन्दगी को पसन्द करते हैं। हमें दुःख, तक्लीफ़ और रन्ज की फ़िक्र नहीं, बल्कि हमारी तमन्ना है कि हमारा मालिक हम से प्रसन्न हो जाये और हमारे गुनाहों को माफ़ कर दे, विषेश कर उन गुनाहों को जो तुम्हारी वजह से हमें करने पड़े हैं (जैसे, यही कि हक़ का मुक़ाबला हम लोगों ने जादू से किया है)

जादूगर हज़रत मूसा अ़लै० के चमत्कार को देख कर समझ गये कि वह जादू नहीं हो सकता, बल्कि अल्लाह की तरफ़ से दी गयी निशानी है, इस लिये हम अल्लाह की क़ुदरत का मुक़ाबला नहीं कर सकते (मुवज़्ज़िहुल क़ुरआन)

२२. मुस्नद अहमद की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अस्ली जहन्नमी तो जहन्नम में ही पड़े रहें गे। वहाँ उन को न तो मौत आये गी और न ही तनिक भर आराम मिले गा। हाँ, ऐसे भी कुछ लोग हों गे जिन्हें उन के गुनाहों के सबब दोज़ख़ में डाला जाये गा, वहाँ वह जल कर कोइला हो जायें गे। फिर शफ़ाअ़त के बाद उन को निकाला जाये गा और उन की राख को जन्नत की नहरों के कनारे बिखेर दिया जाये गा, फिर जन्नत वालों से कहा जाये गा कि उन पर पानी डालो। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि पानी डालने के बाद तुम उन को ऐसे ही उगते देखो गे जिस प्रकार तुम नहरों के किनारे खेत के दानों को उगते देखते हो।

एक दूसरी हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने ख़ुत्बा में इस आयत की तिलावत फ़रमाई फिर इस के बाद ऊपर वाली हदीस बयान फ़रमाई (इब्ने कसीर)

२३. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जन्नत के १०० दर्जे हैं और हर दर्जे के दर्मियान उतनी ही दूरी है जितनी दूरी ज़मीन व आकाश के दर्मियान है। जन्नत में सब से बुलन्द दर्जा जन्नतुल् फ़िर्दौस का है जो सब से ऊपर है। उसी से चारों ओर नहरें निकलती हैं। उस की छत रहमान का अ़र्श है। तुम अल्लाह से जब माँगो तो जन्नतुल् फ़िर्दौस की दुआ़ माँगा करो (तिर्मिज़ी)

२४. फ़िऔन ने जादू के मुक़ाबला में शिकस्त खाई, जादूगर इस्लाम ले आये और बनी इस्राईल का पल्ला भारी होने लगा, फिर भी फ़िऔन ने हक़ बात को क़ुबूल करने और बनी इस्राईल को ग़ुलामी से स्वतन्त्र करने से इन्कार कर दिया, जब अल्लाह ने हुक्म दिया कि बनी इस्राईल को ले कर रातों-रात मिस्र से चले जायें ताकि ग़ुलामी का समापन हो सके और जब रास्ता में समुन्दर (क़ुल्ज़ुम) आड़े आये गा तो तुम अपनी लाठी मार कर उस में रास्ता बना लेना। चुनान्चे आदेश के अनुसार हज़रत मूसा ने लाठी मारी जिस से पानी फट गया और रास्ता निकल आया। बनी इस्राईल उस में से गुज़र गये और फ़िऔन अपनी फ़ौज समेत उसी में डूब गया (मुवज़्ज़िहुल क़ुरआन) हर ज़माना के फ़िऔनी दिमाग़ रखने वालों का अन्जाम यही होता है।

और हिदायत न की ८०. ऐ बनी इस्राईल! (सुनो) हम ने तुम को तुम्हारे दुश्मन (फ़िऔन) से नजात दी थी और तूर पर्वत के दायें तरफ़ किताब देने का तुम से वादा किया था और (मैदान

قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ۝ يٰبَنِىٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ
مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ
وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۝ كُلُوْا مِنْ

طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ
عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ وَمَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ
هَوٰى ﴿٨١﴾ وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ
صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ﴿٨٢﴾ وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ
يٰمُوْسٰى ﴿٨٣﴾ قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِيْ وَعَجِلْتُ
اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى ﴿٨٤﴾ قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ
مِنْ بَعْدِكَ وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ﴿٨٥﴾ فَرَجَعَ
مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ
اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۚ اَفَطَالَ
عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُّمْ اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ

में) तुम पर मन्न और सल्वा नाज़िल किये थे ८१. (और हम ने तुम को अनुमति दी थी कि) हमारा दिया हुआ पाकीज़ा आहार खाओ और उस में सरकशी हरगिज़ न करना वर्ना मेरा ग़ज़ब तुम पर टूट पड़े गा और (याद रखो कि) जिस पर मेरा ग़ज़ब टूटा पस वह हलाक हुआ ८२. और मैं तौबा करने वालों और ईमानदारों और नेक अ़मल करने वालों और हिदायत पर चलने वालों के लिये बड़ा ही बख़्शने वाला हूँ ८३. और ऐ मूसा! तू अपनी क़ौम से पहले जल्दी क्यों आ गया है? ८४. मूसा ने कहा: वह भी तो मेरे पीछे आ रहे हैं। और ऐ मेरे मौला! मैं तेरे पास इस लिये जल्दी आया हूँ कि तू राज़ी हो जाये ८५. अल्लाह ने कहा: हम ने तेरे पीछे तेरी क़ौम को आज़माइश में डाला है यानी[२५] सामिरी ने उन को गुमराह कर दिया ८६. पस मूसा गुस्से और रन्ज में भरा हुआ अपनी क़ौम की तरफ़ वापस आया[२६] कहा: मेरे भाइयो! क्या तुम्हारे पर्वरदिगार ने तुम से नेक वादा न किया था? (फिर यह क्या तुम्हारी अ़क्ल पर पत्थर पड़ गये) क्या(मेरी अनुपस्थिति का) ज़माना तुम पर लम्बा हो गया था? या तुम ने चाहा कि तुम्हारे पर्वरदिगार का ग़ज़ब तुम पर टूट पड़े

....

२५. 'यानी' शब्द कह कर इस बात की तरफ़ संकेत है कि "वाव" तफ़्सीर के लिये है। अल्लाह के बारे में जहाँ भी गुमराह करने का शब्द आता है वहाँ सबब की तरफ़ निस्बत होती है, जैसे कहा जाता है कि "अल्लाह ने बाग़ को हरा भरा कर दिया" हालाँकि पानी उस को हरा-भरा करने का क़रीबी सबब है। इस बारे में हम ने अपनी किताब "तर्के इस्लाम" में विस्तार से बयान किया है। (सनाई)

२६. कहा जाता है कि जब मूसा अ़लै० तूर पहाड़ से लौट कर बनी इस्राईल के पास पहुंचे तो चीख़ने-चिल्लाने की आवाज़ सुनी। वह लोग बछड़े के चारो-तरफ़ गा-बजा रहे थे। हज़रत मूसा ने यह देख कर फ़रमाया कि यह तो गुमराही की आवाज़ है। इमाम कुर्तुबी फ़रमाते हैं कि इमाम अबू बक्र तर्तूसी रह० से फ़तवा पूछा गया कि उन लोगों के बारे में क्या हुक्म है जो इकट्ठा हो कर अल्लाह और रसूल का ज़िक्र करते हैं, फिर ढोल-तमाशे की आवाज़ सुन कर उन में से कुछ कूदने-फाँदने लगते हैं और कुछ-एक तो बेहोश हो कर गिर पड़ते हैं। क्या ऐसे लोगों की सुहबत में बैठना दुरुस्त है? उन्हों ने उत्तर दिया कि यह तरीक़ा सुन्नत के ख़िलाफ़ है। इस्लामी तरीक़ा केवल इतना है कि कुरआन और हदीस पर अ़मल किया जाये, और नाचना-गाना, कूदना-फाँदना यह सामिरी का तौर-तरीक़ा है। ढोल-ताशः और तबले की थाप, यह सब बे दीनों की ईजाद है ताकि इस के ज़रीआ़ लोगों को अल्लाह की किताब और रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत से ग़ाफ़िल कर दें।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मज्लिस तो ऐसी ख़ामोश होती थी कि गोया लोगों के सरों पर

➲परिन्दे बैठे हैं। जो लोग अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान रखते हैं उन के लिये लाज़िम है कि ऐसी मज्लिसों के क़रीब न जायें। तमाम ही इमामों का यही मज़हब है। हनफ़ी मज़हब में भी राग-रागनी सुनना और तबला-ताशा बजाना नाजाइज़ है। उस शख़्स पर तअ़ज्जुब है जो हनफ़ी मज़हब का मुक़ल्लिद होने के बावजूद इन कामों के क़रीब जाता है और इन की मज्लिसों में शरीक होता है।

ज़ाहिर में सामरी तो हज़रत मूसा पर ईमान लाया था, लेकिन दिल में काफ़िर था। वह उन मुश्रिकों में से था जो गाय की पूजा करते थे। कुछ उलमा का कहना है कि यह शख़्स किरमान शहर का रहने वाला था (वहीदी)

غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِيْ ﴿٨٦﴾ قَالُوْا مَآ
اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلْنَآ اَوْزَارًا
مِّنْ زِيْنَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلْقَى
السَّامِرِيُّ ﴿٨٧﴾ فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ
فَقَالُوْا هٰذَآ اِلٰهُكُمْ وَاِلٰهُ مُوْسٰى ۥ فَنَسِيَ ﴿٨٨﴾
اَفَلَا يَرَوْنَ اَلَّا يَرْجِعُ اِلَيْهِمْ قَوْلًا ۙ وَّلَا يَمْلِكُ
لَهُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾ وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ
قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَاِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ
فَاتَّبِعُوْنِيْ وَاَطِيْعُوْٓا اَمْرِيْ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ
عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى ﴿٩١﴾ قَالَ يٰهٰرُوْنُ مَا
مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْٓا ﴿٩٢﴾ اَلَّا تَتَّبِعَنِ ۭ اَفَعَصَيْتَ
اَمْرِيْ ﴿٩٣﴾ قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا بِرَاْسِيْ ۚ
اِنِّيْ خَشِيْتُ اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ

इसी लिये तुम ने मेरे आदेश के ख़िलाफ़ काम किये (मैं तो तुम को तौहीद का पाठ पढ़ा कर गया था और तुम लोगों ने मेरे पीछे यह क्या गुल खिलाया) ८७. उन्हों ने कहा: हम ने आप के हुक्म के ख़िलाफ़ अपनी मर्ज़ी से नहीं किया, बल्कि क़ौम के ज़ेवरात[२७] (आभूषण) हम पर लादे गये वह हम ने (सामरी के कहने पर) आग में डाल दिये ८८. फिर उसी प्रकार सामरी ने भी डाल कर एक बछड़ा उन के लिये निकाल दिया जो केवल एक जिस्म ही जिस्म था जिस में एक आवाज़ सी निकलती थी, पस उस ने कहा कि यह तुम्हारा खुदा और मूसा का खुदा है, मूसा तो भूल गया ८९. उन्हों ने यह भी न देखा कि वह तो उन को किसी बात का उत्तर भी नही दे सकता था और न उन के लिये किसी प्रकार के हानि-लाभ का इख़्तियार रखता था ९० मूसा के आने से पहले हारून ने उन से कहा था कि भाइयो! तुम उस की वजह से गुमराह हो गये हो (यह शरारत तुम्हारे हक़ में अच्छी न हो गी) कुछ शक नहीं कि तुम्हारा पर्वरदिगार सब से बड़ा रहम करने वाला है सो तुम मेरी ताबेदारी करो और मेरा कहा मानो ९१. वह बोले कि हम तो हमेशा उसी पर जमे रहें गे जब तक हमारे पास मूसा वापस न आये[२८] (आख़िर जब मूसा वापस आये तो) ९२. कहा कि ऐ हारून! जब तू ने देखा था कि यह गुमराह हो गये हैं तो मेरी ताबेदारी करने से किस चीज़ ने तुझे रोका था? ९३. क्या तू ने भी मेरे आदेश के ख़िलाफ़ किया ९४. हारून ने कहा: ऐ मेरे माँ जाये भाई! (अपने गुस्सा को ज़रा ठन्डा करो) मेरी दाढ़ी और सर को छोड़ दे, मैं इस बात से डरता था कि तू कहे गा कि बनी इस्राईल में तू ने फूट डाल दी

....

२७. 'क़ौम' से मुराद कुछ उलमा ने फ़िर्औन की क़ौम लिया है, लेकिन उन के पास कोई दलील नहीं है। सही बात➲

➲यह है कि 'क़ौम' से मुराद बनी इस्राईल की क़ौम है, इस लिये कि ऊपर इसी क़ौम का बयान चल रहा है। अ़ल्लामा शौकानी रह० लिखते हैं कि यह आभूषण (ज़ेवर) फ़िर्औ़न की क़ौम के थे जिसे बनी इस्राईल की क़ौम ने ई़द की ख़ुशी के मौक़े पर उधार ले लिया था। और जब फ़िर्औ़नी क़ौम दरिया (कुल्ज़ुम) में डूब गयी तो वह ज़ेवर उन्हीं के पास ही रह गये थे (फ़त्हुल क़दीर- २/२३६)

२८. 'मूसा जब तक वापस न आ जायें' ऐ हारून हम, तुम्हारी बात नहीं मानें गे। यह इतने नालायक़ थे कि अल्लाह के नबी हज़रत हारून की बात को मानने तक से इन्कार कर दिया। इस का कारण बस इतना था कि हज़रत हारून अ़लै० बड़े नर्म दिल और बुर्दबार तबीअ़त के थे। आख़िर जब मूसा तूर पर्वत से अल्लाह से बात-चीत कर के वापस आये तो हारून अ़लै० से कहा कि तुम ने इन पर सख़्ती क्यों न की। अगर तू ग़फ़लत न करता तो क़ौम गुमराह न होती (सनाई)

وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي ﴿٩٤﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يَا سَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾
قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهِ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً
مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَٰلِكَ سَوَّلَتْ لِي
نَفْسِي ﴿٩٦﴾ قَالَ فَاذْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيَاةِ أَن
تَقُولَ لَا مِسَاسَ ۖ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّن تُخْلَفَهُ ۖ
وَانظُرْ إِلَىٰ إِلَٰهِكَ الَّذِي ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ۖ
لَّنُحَرِّقَنَّهُ ثُمَّ لَنَنسِفَنَّهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿٩٧﴾ إِنَّمَا إِلَٰهُكُمُ
اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾
كَذَٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ
آتَيْنَاكَ مِن لَّدُنَّا ذِكْرًا ﴿٩٩﴾ مَّنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ
يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾ خَالِدِينَ فِيهِ ۖ وَسَاءَ لَهُمْ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ حِمْلًا ﴿١٠١﴾ يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ ۚ وَنَحْشُرُ
الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ﴿١٠٢﴾ يَتَخَافَتُونَ بَيْنَهُمْ إِن

और मेरे हुक्म का इन्तिज़ार न किया ९५. हज़रत मूसा बोले कि ऐ सामरी! (नालायक़) तेरा क्या हाल है? (तू ने यह फ़साद की जड़ क्यों क़ाइम की?) ९६. उस ने कहा: मैं ने वह चीज़ देखी जो उन्हों ने न देखी इस लिये मैं ने रसूल के क़दम के निशान से मिट्टी की एक मुट्ठी भर ली[२९] और उस को (उन ज़ेवरों में) डाल दिया और मुझे मेरे नफ़्स की ख़्वाहिश से यह बात भली महसूस हुयी ९७. (यह नामाक़ूल बात सुन कर) मूसा ने कहा कि जा (दफ़ा हो जा) इस दुनिया की ज़िन्दगी में तेरी सज़ा यह हो गी कि तू कहे गा मुझे मत छूना[३०] और तेरे लिये एक और वादा है जो तुझ पर से किसी प्रकार न टले गा और अपने इस (बनावटी) माबूद की तरफ़ देख जिस पर तू जी रहा है। हम उस को जलायें गे और राख कर के उस को पानी में बहा दें गे ९८. (लोगो! इस सारे बयान का नतीजा सुनो कि) तुम्हारा सब का हक़ीक़ी माबूद केवल अल्लाह पाक है उस के अ़लावा कोई दूसरा माबूद नहीं। उस का इ़ल्म तमाम चीज़ों पर हावी है ९९. इस प्रकार हम बीते हुये वाक़िआ़त तुझ को (ऐ रसूल) सुनाते रहें गे और हम ने तुझ को अपने पास से एक नसीहत (की किताब क़ुरआन) अ़ता की है (जो एक व्यापक और मुकम्मल किताब है) १००. (इस लिये) जिन लोगों ने उस से मुंह मोड़ा वह क़ियामत के दिन गुनाहों का बोझ उठायें गे १०१. हमेशा उसी बोझ के तले दबे रहें गे। क़ियामत➲

के दिन वह बोझ उन का बहुत ही बुरा हो गा १०२. जिस दिन सूर फूंका जाये गा और हम मुजरिमों को नीली आँखों वाले बना कर उठायें गे (ऐसे कि देखने वाले ख़ौफ़ खायें गे। उसी हाल में) परस्पर चुपके-चुपके कहते हों गे

....

२९. उलमा ने 'रसूल' से मुराद हज़रत जिब्रील को लिया है। इस्राईली रिवायतों से मालूम होता है कि बछड़े का बोलने लगना उस मिट्टी का मोजिज़ा था जिस पर हज़रत जिब्रील के घोड़े के सुम लगे थे। जब बनी इस्राईल मिस्र से निकले तो उन के आगे-आगे हज़रत जिब्रील ज़िन्दगी के फ़रिश्ते पर सवार थे, उस समय ज़िन्दगी का फ़रिश्ता घोड़े की शक्ल का था। उस के सुम जिस मिट्टी पर पड़ते थे उस में ज़िन्दा करने की ख़ासियत पैदा हो जाती थी। यह चीज़ सामरी ने देख ली थी, चुनान्चे एक बछड़ा बना कर उस में उसी सुम के नीचे की मिट्टी जो उस ने जमा कर रखी थी डाल दी, चुनान्चे वह जीवित हो कर बोलने लगा।

हज़रत मौलाना अमृत सरी रह० की तहक़ीक़ के अनुसार आयत न० ९६ में 'रसूल' से मुराद हज़रत मूसा अ़लै० हैं। हज़रत मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रह० का भी यही ख़याल है। मौलाना आज़ाद की तफ़्सीर का ख़ुलासा यह है कि हज़रत मूसा ने जब सामरी से पूछा कि तू ने क्या कर डाला? सामरी ने कहा: मुझे ऐसी बात सुझाई दी जो दूसरों को न सूझी (यानी बछड़ा बनाना) मैं ने रसूल (मूसा अ़लै०) की पैरवी में थोड़ा बहुत हिस्सा लिया था मगर फिर छोड़ दिया। यानी गो मैं ने आप की पैरवी में चन्द क़दम उठा दिये मगर मेरा दिल उस पर न जम सका। 'सव्व-लत् ली नफ़्सी' का मतलब यह है कि मेरी तबीअ़त का यही तक़ाज़ा हुआ और मैं आप की इताअ़त और पैरवी में आप के पीछे न चल सका। उर्दू का एक मुहावरा है "मैं ने केवल एक मुट्ठी ही उठाई है" यानी बहुत थोड़ा हिस्सा हासिल किया है (तफ़्सील के लिये तर्जुमानुल क़ुरआन २/४६६ देखें)

हज़रत मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी रह० ने 'रसूल' से मुराद जमहूर उलमा की तरह हज़रत जिब्रील ही को लिया है। लिखते हैं कि जब बनी इस्राईल दरिया में घुसे और पीछे-पीछे फ़िर्औन का लश्कर भी घुसा, उस समय सामरी ने जिब्रील के घोड़े के पाँव के नीचे से एक मुट्ठी मिट्टी उठा ली थी। बहर हाल उलमा और बुज़ुर्गों की तफ़्सीर से यही साबित है। (राज़)

३०. 'मुझे मत छूना' इस से मालूम हुआ कि छूत-छात अल्लाह की तरफ़ से एक फटकार है और यह अ़ज़ाब के तौर पर सामरी पर दी गयी थी। दुनिया की और बहुत सी क़ौमों में आज भी जो छूत-छात की बीमारी मौजूद है, यह अल्लाह की तरफ़ से फटकार है (राज़)

लَّبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ﴿١٠٣﴾ نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ﴿١٠٥﴾ فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾ لَّا تَرَىٰ فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ﴿١٠٧﴾ يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ ۖ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَٰنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾

कि दुनिया में तो हम कोई आठ-दस दिन ठहरे हों गे। १०४. जो कुछ वह कहें गे हम भली भांति जानते हैं जब उन में से अच्छी राह वाला यूँ कहे गा कि तुम तो एक ही दिन दुनिया में रहे हो" १०५+१०६ और तुझ से पहाड़ों के बारे में प्रश्न करते हैं (कि क्या यह फ़ना हो जायें गे?) तू कह कि मेरा पर्वरदिगार उन को एक दम उड़ा कर ज़मीन को चटियल मैदान कर दे गा १०७. (ऐसी कि) तुम उस में किसी प्रकार की कजी न देखो गे और न बुलन्दी (बिल्कुल साफ़

يَوْمَئِذٍ لَّا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ
وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ۝ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا
خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ۝ وَعَنَتِ الْوُجُوهُ
لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ۝ وَمَن
يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخَافُ
ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ۝ وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا
وَصَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ

मैदान हो जाये गा) १०८. उस दिन सब लोग पुकारने वाले के पीछे चलें गे जिस से तनिक भर इधर-उधर न हों गे और तमाम आवाज़ें अल्लाह रहमान के ख़ौफ़ से दब गयी हों गी पस तू पाँव की आहट के अ़लावा कोई आवाज़ न सुने गा १०९. उस दिन किसी की सिफ़ारिश कुछ लाभ न दे गी। हाँ, जिस के बारे में अल्लाह रहमान अनुमति दे गा और उस की बात उसे पसन्द भी आयी हो गी[३२] ११०. वह उन के आगे-पीछे की सब बातें जानता है और लोग उस के अ़िल्म को किसी प्रकार नहीं जान सकते १११. और (सुनो! उस दिन) मारी मख़्लूक़ ज़िन्दा अल्लाह और इन्तिज़ाम चलाने वाले के आगे मुंह के बल गिरी हों गी। और जिन्हों ने (अपनी गर्दनों पर) ज़ुल्म उठाए हों गे वह ज़लील और रुस्वा हों गे[३३] ११२. और जो कोई अल्लाह पर ईमान ला कर नेक काम करे गा वह किसी प्रकार के अत्याचार और हानि से न डरे गा (क्योंकि जो कुछ किसी ने किया हो गा उस को सम्पूर्ण बदला मिले गा) ११३. इसी प्रकार हम ने क़ुरआन अ़रबी भाषा में नाज़िल किया और उस में (बुरे कर्मों पर) हर प्रकार की धमकी बयान की है ताकि यह लोग (सम्पूर्ण रूप से) परहेज़गार बनें

....

३१. वह कहें गे कि यह भी कोई ज़िन्दगी है कि आज हैं तो कल पर विश्वास नहीं और कल ज़िन्दा रहें गे तो परसों के बारे में ख़बर नहीं। ऐ काश! हम उस समय दुनिया में इस बात को जानते होते, तो हर्गिज़-हर्गिज़ दुनिया से दिल न लगाते और आख़िरत पर यक़ीन करते हुये आज के दिन से डरते, लेकिन अब सोचने से क्या हासिल।

३२. यानी क़ियामत के दिन किसी की मजाल न हो गी कि किसी के बारे में सिफ़ारिश कर सके। हाँ, जिस को अल्लाह सिफ़ारिश करने की अनुमति दे दे तो और बात है। आख़िरत के मैदान में तमाम फ़रिश्ते यहाँ तक कि जिब्रील अ़लै० भी सफ़ बाँध कर खड़े हों गे लेकिन कोई भी सिफ़ारिश के लिये मुँह न खोल सके गा। स्वयं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम भी अ़र्श के नीचे काफ़ी समय तक अल्लाह के सामने सज्दे में सर रखे हों गे, फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाये गा कि ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपना सर उठाओ और सिफ़ारिश करो, तुम्हारी बात सुनी जाये गी। आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) उन को बख़्शवा कर जन्नत में ले जायें गे। फिर जहन्नम में दाख़िल हुये लोगों के बारे में सिफ़ारिश करें गे, चुनान्चे जिन के दिलों में राई के दाने के बराबर भी ईमान हो गा उन्हें निकाल लिया जाये गा, फिर उन लोगों को भी निकाल लिया जाये गा जिन के दिल में उस से भी कम ईमान हो गा, फिर उन को भी जिन के अन्दर उस से भी कम हो गा, यहाँ तक कि जिस के दिल में तनिक भर भी ईमान हो गा उसे जहन्नम से निकाल लिया जाये गा। (इब्ने कसीर)

यह बात विशेष रूप से ध्यान में रहे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम केवल उन ही लोगों की शफ़ाअ़त करें गे जो तौहीद पर थे लेकिन गुनाह गार थे। रहे आज कल के मुश्रिक मुसलमान जो क़ब्रों की पूजा करते चढ़ावा चढ़ाते नज़्र व नियाज़ करते और तरह-तरह की बिदअ़तों और ख़ुराफ़ातों में लत-पत हैं, तो ऐसे लोगों के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कभी भी शफ़ाअ़त नहीं फ़रमायें गे। अल्लाह पाक हर मुसलमान को कुफ़्र, शिर्क और बिद्अ़त से सुरक्षित रखे।

३३. यानी जिस ने दुनिया में अत्याचार किये हों गे वह आख़िरत में तबाह व बर्बाद हों गे, क्योंकि आख़िरत में हर

हक़दार को उस का हक़ दिलवाया जाये गा। चुनान्चे हदीस शरीफ़ में आया है, कि अगर दुनिया में सींग वाली बक्री ने किसी बे सींग वाली बक्री को नाहक़ मारा हो गा, तो क़ियामत के दिन बे सींग वाली बक्री को सींग दे कर उसे बदला लेने को कहा जाये गा। एक हदीस क़ुद्सी में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: आज ज़ालिम के ज़ुल्म को मैं अपने सामने से न गुज़रने दूँ गा। (यानी अवश्य ही बदला दिलवाऊँ गा, फिर जाने दूँ गा) एक अन्य सही हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम
ने फ़रमाया: ऐ लोगों! अत्याचार से बचो। अत्याचार क़ियामत के दिन अंधेरा बन कर आये गा। और जान लो कि आख़िरत में सब से ज़्यादा घाटे में वह रहे गा जिस ने अल्लाह के साथ शिर्क किया हो गा, इस लिये कि शिर्क ज़ुल्मे-अ़ज़ीम (महा पाप) है (मुहम्मदी)

اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ
وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ
وَحْيُهٗ ۫ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ﴿١١٤﴾ وَلَقَدْ عَهِدْنَآ اِلٰٓى
اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِيَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿١١٥﴾ وَ
اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ
اِبْلِيْسَ ۭ اَبٰى ﴿١١٦﴾ فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ
وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ﴿١١٧﴾
اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿١١٨﴾ وَاَنَّكَ
لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ﴿١١٩﴾ فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ
الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰٓاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ
الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿١٢٠﴾ فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ
لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ
وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۫ وَعَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ﴿١٢١﴾ ثُمَّ

या इस (क़ुरआन) से उन को कुछ नसीहत पहुंचे ११४. (इस क़ुरआन की शिक्षा का परिणाम यह समझो कि) अल्लाह तआ़ला सच्चा बादशाह बहुत बुलन्द है[३४]। और क़ुरआन की वह्‌यि तेरी तरफ़ ख़त्म होने से पूर्व उस के लेने में जल्दी न किया कर और (दुआ़ करने को) कहा कर कि "मेरे पर्वरदिगार! मुझे अ़िल्म अधिक दे"[३५/१] ११५. और हम ने तुम से पहले (तुम्हारे बाप) आदम की तरफ़ एक आदेश भेजा फिर वह भूल गया और हम ने उस को मज़बूत न पाया[३५/२] ११६. (इस की तफ़्सील यह है कि) जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो पस (इतना सुनते ही) सब फ़रिश्तों ने सज्दा किया मगर इब्लीस (यानी शैतान) ने इन्कार किया ११७. फिर हम ने कहा: ऐ आदम! कुछ शक नहीं कि यह तेरा और तेरी बीवी का खुला दुश्मन है सो ऐसा न हो कि (तुझे किसी जाल में फंसा कर कहीं) तुम को जन्नत से निकलवा दे फिर तू बद-नसीब हो जाये गा ११८. न तो इस (जन्नत) में तू भूका हो गा और न नंगा हो गा ११९. न तुझे इस में प्यास की शिकायत हो गी और न धूप की सख़्ती[३६] १२०. फिर भी (इस आगाही और एलान के बावजूद) शैतान ने उस को फुसलाया और कहा: ऐ आदम! मैं तुझ को एक सदाबहार दरख़्त और हमेशा बाक़ी रहने वाले मुल्क का पता न दूँ? (कि उस के खाने से उसी जगह हमेशा रहने लग जाओ) १२१. पस उन दोनों ने उस दरख़्त में से कुछ खा लिया पस उन की शर्मगाहें नंगी हो गयीं और वह उस बाग़ के दरख़्तों के पत्ते अपने

बदन पर लपेटने लगे। और आदम ने अपने पर्वरदिगार की नाफ़र्मानी की, सो वह भटक गया"

....

३४. शाने नुज़ूल:- हज़रत जिब्रील अ़लै० जिस समय कोई आयत लाते और सुनाते, तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन के पढ़ने के साथ ही जल्दी-जल्दी पढ़ने लग जाते कि कहीं ऐसा न हो कि भूल जायें। इसी बात को ले कर यह आयत नाज़िल हुयी और बताया कि जल्दी करने की कोई आवश्यक्ता नहीं, याद कराने का काम हमारे ज़िम्मा है (सनाई)

३५/१. एक हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: दो लालची ऐसे हैं कि उन का पेट कभी नहीं भरता। १. दुनिया का लालची २. अ़िल्मे दीन का लालची। और दूसरा लालची अल्लाह को बहुत ही प्यारा है। अ़िल्म ही एक ऐसी दौलत है जिस को ज़्यादा से ज़्यादा माँगने के लिये अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल को हुक्म दिया है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० के बारे में आता है कि जब वह इस आयत की तिलावत फ़रमाते तो यह माँगा करते थे "अल्लाहुम्म ज़िद्‌नी ईमा-नन व यक़ी-नन्" (ऐ अल्लाह! मेरे अ़िल्म और ईमान यक़ीन में ज़्यादती फ़रमा) एक अन्य हदीस में एक सहाबी रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस प्रकार दुआ़ माँगा करते थे: "अल्लहुम्मन्-फ़अ़नी बिमा अ़ल्लम्-तनी व अ़ल्लिम्नी मा यन्-फउनी अ़िल्-मन्+वल्-हम्दु लिल्लाहि अ़ला कुल्लि हालिन् व-अऊज़ु बिल्लाहि मिन् हालि अह्‌लिन्नारि" (ऐ अल्लाह! मेरे अ़िल्म से मुझे लाभ पहुंचा और मेरे लिये अ़िल्म की ज़्यादती फ़रमा। हर हाल में अल्लाह का शुक्र है और अल्लाह से जहन्नम वालों के हाल से पनाह चाहता हूँ")

३५/२. 'उस को मज़बूत न पाया' इस में इस बात की तरफ़ इशारा है जो हज़रत आदम अ़लै० ने दरख़्त का फल खा लिया था। 'वह भूल गये' यानी न खाने के वादे पर क़ाइम न रह सके (मुवज़्ज़िहुल् क़ुरआन)

३६. इस आयत न० १८,१९ में इस की तरफ़ इशारा है कि दुनिया में आदमी को चार ही चीज़ों की आवश्यक्ता रहती है। १. भूक मिटाने के लिये खाना २. प्यास बुझाने के लिये पानी ३. सतर छुपाने के लिये कपड़ा ४. गर्मी और सर्दी से बचाव के लिये झोंपड़ी। जब अल्लाह इन चार चीज़ों को अ़ता कर दे तो और चीज़ों की फ़िक्र करना फ़ुज़ूल है। (वहीदी)

३७. हज़रत आदम अ़लै० ने जान बूझ कर नाफ़र्मानी नहीं की। बल्कि उन को इस बात का धोका हुआ कि शैतान सच कहता है और वह अल्लाह की झूठी क़सम न खाये गा। अल्लाह ने एक ख़ास दरख़्त का फल खाने से मना किया था। उस दरख़्त का फल अब खा सकते हैं, इस लिये कि न खाने का आदेश अब मनसूख़ हो गया। हज़रत आदम की यह इज्तिहादी (अपनी समझ की) ग़लती थी और आ़म मुसलमान से ऐसी ग़लती पर गुनाह नहीं होता, लेकिन नबी का दर्जा बुलन्द होता है इस लिये बुलन्द दर्जा वालों के लिये इतनी मामूली सी चूक भी गुनाह में शामिल हो गयी।

एक सहीह हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: एक मर्तबा हज़रत आदम और हज़रत मूसा के दर्मियान बहस हो गयी। मूसा ने कहा कि तुम ही तो वह आदम हो जिस ने दरख़्त का फल खा कर हम लोगों को जन्नत से निकलवा दिया। आदम ने कहा कि तुम इस बात पर मुझे लानत-मलामत न करो, इस लिये कि अल्लाह ने मेरे पैदा होने से चालीस वर्ष पहले ही मेरी तक़्दीर में लिख दिया था (फिर मेरा क्या क़ुसूर) मूसा को कोई जवाब न बन पड़ा और इस तरह इस बहस में हज़रत आदम ग़ालिब आ गये (मिश्कात)

शैतान ने यह सोचा कि जिस तरह मैं बर्बाद हुआ हूँ इसी प्रकार आदम भी बर्बाद हों, लेकिन उस की एक न चली, बल्कि आदम का ग़लती के बाद रोना, माफ़ी मांगना अल्लाह से और ज़्यादा नज़दीकी का कारण बना। एक अन्य हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह की क़सम! अगर तुम गुनाह न करो तो अल्लाह ऐसे लोग पैदा करे गा जो गुनाह करें गे फिर उस से माफ़ी माँगें गे। वह अ़िबादत और तक़्वा जिस से तकब्बुर पैदा हो, इस से वह गुनाह हज़ार दर्जा बेहतर है जिस के करने के बाद आदमी रोये, माफ़ी माँगे और अपने को सब से हक़ीर और ज़लील समझे (वहीदी)

اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿١٢٢﴾ قَالَ اهْبِطَا
مِنْهَا جَمِيْعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ
مِّنِّىْ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَاىَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ﴿١٢٣﴾
وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِىْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً
ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ﴿١٢٤﴾ قَالَ رَبِّ لِمَ
حَشَرْتَنِىْۤ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿١٢٥﴾ قَالَ كَذٰلِكَ
اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿١٢٦﴾
وَكَذٰلِكَ نَجْزِىْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ
وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ﴿١٢٧﴾ اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ
كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِىْ
مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى النُّهٰى ﴿١٢٨﴾
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّ
اَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿١٢٩﴾ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ

१२२. फिर उस पर्वरदिगार ने उस को चुन लिया और उस पर रहम फ़रमाया १२३. अल्लाह ने कहा अब तुम दोनों यहाँ से उतर जाओ तुम यानी तुम्हारी औलाद एक दूसरे के दुश्मन हों गे, फिर अगर तुम को मेरी तरफ़ से हिदायत पहुंचे तो जो कोई मेरी हिदायत का मानने वाला हो गा वह न तो गुमराह हो गा और न बदनसीब[38] १२४. और जो कोई भी नसीहत से मुंह फेरे गा तो उस की तमाम ज़िन्दगी बदनसीबी की हो गी और क़ियामत के दिन हम उसे अन्धा कर के उठायें गे[39] १२५. वह कहे गा कि ऐ मेरे पर्वरदिगार! मुझे तू ने अन्धा कर के क्यों उठाया? हालाँकि मैं आँखों वाला था १२६. अल्लाह कहे गा जिस प्रकार तेरे पास हमारे आदेश पहुंचे थे फिर भी तू उन को भूल गया था[40] इसी प्रकार आज तेरी भी ख़बर न ली जाये गी १२७. जो कोई (अपने बन्दा होने की) हद से आगे बढ़े और अपने रब के अहकाम पर ईमान न लाये उस को हम इसी प्रकार बदला दें गे। और आख़िरत का अ़ज़ाब बहुत ही सख़्त और हमेशगी का है १२८. क्या (और नहीं तो) यह भी उन को हिदायत नहीं करता कि इस मामले पर ग़ौर करें कि हम ने उन से पहले कितनी क़ौमों को हलाक किया कि अब यह उन की जगहों में चलते-फिरते हैं (उन के खंडरों को देख रहे हैं) कुछ शक नहीं कि इस में अ़क्ल रखने वालों के लिये बहुत से निशान हैं १२९. और अगर तेरे पर्वरदिगार का हुक्म और अजल {समय} मुक़र्रर न होती तो (इसी दुनिया में) उन को अल्लाह का अ़ज़ाब चिमट जाता १३०. सो यह (मक्का के काफ़िर) लोग जो कुछ भी (तेरे बारे में) कहते हैं (कि तू जादूगर है, मजनून है, पागल है) इस पर सब्र कर

....

३८. 'जो मेरी हिदायत को अपनाये गा' इस आयत से मालूम हुआ कि कुरआन पर चलना दुनिया और आख़िरत में कामियाबी हासिल करना है। एक हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जो अल्लाह की किताब (क़ुरआन मजीद) पर अ़मल करे गा वह दुनिया में गुमराही से सुरक्षित रहे गा और आख़िरत में भी हिसाब-किताब की सख़्ती से बचा रहे गा"। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि कुरआन पर चलने वाले को अल्लाह दुनिया में गुमराही, आख़िरत में बद बख़्ती और क़ियामत के दिन अन्धा उठाये जाने से महफ़ूज़ रखेगा। क़ियामत के दिन अन्धा उठाये जाने से मुराद यह है कि उस को दोज़ख़ के अ़लावा कुछ दिखाई न दे गा, या उस ➲

➲के पास कोई दलील न हो गी। कुछ उलमा का कहना है कि तंग ज़िन्दगी से क़ब्र का अ़ज़ाब मुराद है। इमाम हाकिम की एक सहीह रिवायत से इस क़ौल की ताईद भी होती है। एक अन्य हदीस की रोशनी में 'तंग ज़िन्दगी' से मुराद यह है कि क़ब्र में उस पर ९९ साँप चिमट जायें गे जो क़ियामत तक उसे डसते रहें गे। यह भी मुराद हो सकता है कि हराम माल उसे नसीब हो गा जिस में ख़ैर और बर्कत न होने से उस की पूरी ज़िन्दगी रन्ज, फ़िक्र और ग़म में बीत जाती है और इसी हालत में दुनिया से चला जाता है। और इन के मुक़ाबले में जो लोग ईमान और नेक अ़मल पर क़ाइम रहते हैं उन्हें हलाल रोज़ी की तौफ़ीक़ होती है और उन की ज़िन्दगी बड़े सुख और चैन में गुज़रती है और इसी हालत में वह दुनिया से जुदा होते हैं (वहीदी)

३९. अल्लाह तआ़ला के इस फ़र्मान के मुताबिक़ हलाल रोज़ी से दिल को सुकून और चैन नसीब होता है और उस की ज़िन्दगी बड़े ही सुख और आराम से गुज़रती है और इस के विपरीत हराम रोज़ी से पूरा जीवन नर्क बन जाता है। इसी को क़ुरआन ने 'मओ़ी-श-तन् ज़न्का' (बद नसीबी की ज़िन्दगी) कहा है। (राज़)

४०. 'तू उन को भूल गया' यानी उन आयतों के अनुसार अ़मल न किया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मेरी उम्मत के तमाम गुनाह मुझ को दिखाये गये, उन में सब से बड़ा गुनाह मैं ने यह पाया कि क़ुरआन मजीद की कोई सूरत उस को याद हो गी लेकिन उस को भुला दिया हो गा (यानी उस के मुताबिक़ अ़मल न किया हो गा) इस आयत की रोशनी में उन लोगों को डरना चाहिये जो क़ुरआन को याद कर के भुला देते हैं और उन को भी डरना चाहिये जो दुनिया के झमेलों के फंस कर उन में मुताबिक़ अ़मल नहीं करते हैं। (राज़)

بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا ۖ وَمِنْ آنَاءِ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضَىٰ ﴿١٣٠﴾ وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ﴿١٣١﴾ وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۖ لَا نَسْأَلُكَ رِزْقًا ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُكَ ۗ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ﴿١٣٢﴾ وَقَالُوا لَوْلَا يَأْتِينَا بِآيَةٍ مِّن رَّبِّهِ ۚ أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةُ مَا فِي الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ﴿١٣٣﴾ وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُم بِعَذَابٍ مِّن قَبْلِهِ لَقَالُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ مِن قَبْلِ أَن نَّذِلَّ وَنَخْزَىٰ ﴿١٣٤﴾ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ أَصْحَابُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَىٰ ﴿١٣٥﴾

और सूरज के निकलने और डूबने से पहले अपने पर्वरदिगार की हम्द के साथ उस की पाकी बयान कर[४१] और रात के वक़्तों में और दिन के अव्वल व आख़िर में भी उस की पाकी बयान किया कर ताकि तू मालामाल (और राज़ी) हो जाये[४२] १३१. और हम ने (उन लोगों में से) कुछ मुख़्तलिफ़ क़िस्म के लोगों को दुनियावी दौलत से मालामाल किया है उन की तरफ़ अपनी आँखें तक उठा कर न देखिये[४३] (हम ने उन को इस लिये माल दिया है) ताकि उन को उस माल की वजह से फ़ित्ना में डालें। तेरे पर्वरदिगार की रोज़ी सब से अच्छी और बाक़ी रहने वाली है १३२. और अपने बाल-बच्चों को नमाज़ का हुक्म किया करो और स्वयँ भी उस पर मज़बूत रहो (ऐसा कि कभी न टले) हम तुझ से रोज़ी नहीं माँगते बल्कि हम तुझ को रोज़ी देते हैं। और बेहतर अन्जाम परहेज़गारी का है[४४] १३३. और कहते हैं कि क्यों नहीं यह नबी अपने➲

पर्वरदिगार के हाँ से कोई (ऐसी) निशानी लाता (जो हम चाहते हैं) क्या उन के पास पहली किताबों के (साफ़-साफ़) मज़मून नहीं पहुंचे[४५] (कि सच कहना सच्चाई की सब से बड़ी दलील है) १३४. और अगर हम उस (रसूल के आने) से पहले (उन के कुकर्मो के नतीजा में) उन को हलाक कर देते तो यह लोग कहते कि हमारे मौला! हमारी तरफ़ क्यों न रसूल भेजा कि ज़लील व रुसवा होने से पहले तेरे आदेशों का पालन करते (और अब जब कि संदेष्टता आ गया तो उस की क़द्र नहीं करते बल्कि उल्टा झुठलाते हैं) १३५. तू कह कि हम (तुम) सब इन्तिज़ार में हैं (हम अपनी तरक़्क़ी के और तुम अपनी फ़तह के) सो इन्ज़िार करो, बहुत जल्द जान लो गे कि कौन सीधी राह पर हैं और कौन हिदायत वाले हैं

....

४१. एक हदीस शरीफ़ में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने चौदहवीं के चाँद को देख कर फ़रमाया: क़ियामत के दिन तुम लोग अल्लाह को ऐसे ही देखो गे जिस प्रकार तुम इस चंद्रमा को बिना किसी रुकावट के देख रहे हो, सो अगर तुम से हो सके तो सूरज निकलने से पहले और सूरज डूबने से पहले की (यानी अस्र की) नमाज़ की पूरी तरह हिफ़ाज़त करो, फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई। मुस्नद अहमद बिन हंबल की एक रिवायत के मुताबिक़ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: उन दोनों वक़्तों की नमाज़ पढ़ने वाला आग में न जाये गा। "मुस्नद" और "सुनन" की रिवायतों के मुताबिक़ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सब से कम दर्जे का जन्नती वह हो गा जो हज़ार वर्ष की राह तक अपनी ही मिलकियत को देखे गा और जन्नत के ऊँचे दर्जे के लोग अल्लाह तआ़ला को दिन में दो बार देखें गे और यह अल्लाह पर ईमान लाने और नमाज़ को पाबन्दी के साथ अदा करने का परिणाम हो गा।

इस आयत में 'सूरज निकलने से पहले' से मुराद फ़ज्र की नमाज़ और 'सूरज डूबने से पहले' से मुराद अ़स्र की नमाज़ है (इब्ने कसीर) 'रात के वक़्तों' से मग़्रिब, इशा और तहज्जुद वग़ैरह की नमाज़ें मुराद हैं। 'दिन के अव्वल-आख़िर' से ज़ुह्र की नमाज़ मुराद है।

४२. 'माला-माल हो जाये' अर्थात दुनिया में उम्मत की मदद होगी और आख़िरत में तेरी सिफ़ारिश से उन के गुनाह बख़्श दिये जायें गे (मुवज़्ज़िहुल् क़ुरआन)

४३. शाने नुज़ूल:- एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के घर पर कुछ मेहमान आ गये, लेकिन घर में खाने-पीने की कोई चीज़ न थी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अबू राफ़ेअ़ को एक यहूदी के पास भेजा कि कुछ आटा क़र्ज़ ले आयें। यहूदी ने बग़ैर रहन के देने से इन्कार कर दिया तो आप ने अपनी ज़िरह गिरवी रख कर आटा मंगवाया और मेहमानों को खिलाया। इस मौक़े पर आप की तसल्ली के लिये यह आयत नाज़िल हुयी (सलफ़िय्या)

४४. हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० की आदत थी कि जब आप तहज्जुद की नमाज़ के लिये उठते तो सारे घर वालों को जगाते और इसी आयत की तिलावत फ़रमाते। हज़रत हिशाम के वालिद जब किसी मालदार आदमी के घर जाते और उस का ठाट-बाट देखते तो घर वापस आ कर तुरन्त इसी आयत की तिलावत फ़रमाते (ताकि दिल से दौलत की हवस का प्रभाव समाप्त हो जाये) और फ़रमाते कि मेरे घर वालो! नमाज़ की पाबन्दी करो ताकि अल्लाह तआ़ला तुम पर रहम फ़रमाये। इब्ने हातिम की एक रिवायत के अनुसार जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को कोई तंगी पहुंचती तो अपने घर वालों से फ़रमाते: नमाज़ें पढ़े और इस की पाबन्दी करो, इस लिये कि तमाम ही संदेष्टाओं का यह नियम रहा है कि घबराहट और परेशानी के वक़्त नमाज़ अदा करते थे।

तिर्मिज़ी और इब्ने माजा में एक हदीस क़ुदसी है कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: ऐ इब्ने आदम! मेरी

⊃इ़बादत के लिये अपने आप को फ़ारिग़ कर ले, मैं तेरे दिल को ग़िना (बेनियाज़ी) से भर दूँ गा और तुझ को हर प्रकार की ज़रूरतों से बेफ़िक्र कर दूँ गा (इब्ने कसीर) जब इस सूरः की आयत न० १३२ नाज़िल हुयी तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम आठ माह तक बराबर हज़रत अ़ली के घर जाते और पुकार कर फ़रमाते: "ऐ घर वालो! अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाये, नमाज़ अदा करो"। (वहीदी)

४५. आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के नबी होने की इस से बड़ी दलील और क्या हो गी कि यहूद और नसारा की किताबों में आप का ज़िक्र मौजूद है। आयत न० १३३ में 'बय्यिनह' से मुराद "क़ुरआन मजीद" है। जिस में पहले की उम्मतों का उसी प्रकार बयान है, जिस प्रकार उन की किताबों में मौजूद है। यह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का एक जीता-जागता चमत्कार (मोजिज़ा) है जो क़ियामत तक आप के सच्चे होने की गवाही देता रहे गा।

सूरः के अन्त में यह एलान किया गया कि जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सच्चा नबी मानें गे और आप के बतलाए हुये फ़र्मान के अनुसार अ़मल करें गे, दुनिया और आख़िरत में वही कामियाब हों गे।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

पारः इक़्–त–र–ब लिन्नासि (17)

संक्षिप्त विषय सूची

इक्-त-र-ब लिन्नासि-(17)

सूरः अन्बिया-21

(٢١) سُورَةُ الْأَنْبِيَاءِ مَكِّيَّةٌ (٧٣)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ
مَا يَأْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ
وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۝ لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى
الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ اَفَتَاْتُوْنَ
السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝ قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ
فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ بَلْ
قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ
فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ۝ مَآ اٰمَنَتْ
قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝
وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ
فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

सूरः अन्बिया मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ११२ आयतें और ७ रुकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है।

१. (अफ़्सोस) लोगों का हिसाब क़रीब आ गया है (अर्थात मौत सर पर खड़ी है) और वह ग़फ़्लत में (आख़िरत की ज़िन्दगी से) मुँह फेरे हुये हैं २. जो नई-नई नसीहत उन के पर्वरदिगार की तरफ़ से उन के पास आती है (जिस से सरासर उन्हीं की भलाई मन्ज़ूर है) तो उसे हंसी-खेल में सुनते हैं ३. (क्योंकि) उन के दिल हंसी-मज़ाक़ में लगे हुये हैं। और ज़ालिम चुपके-चुपके परस्पर काना फूसी करते हैं कि यह नबुव्वत का दावा करने वाला तुम्हारी तरह का एक आदमी है, क्या तुम जान-बूझ कर एक जादू किये हुये (मजनून) के पास जाते हो? ४ (मुहम्मद) रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने (इस के उत्तर में) कहा कि मेरा पर्वरदिगार आसमानों और ज़मीन के बीच की बातें सब जानता है और वह बड़ा सुनने वाला जानने वाला है ५. बल्कि (यह ज़ालिम) कहते हैं कि यह क़ुरआन तो बिखरे ख़यालात का मजमूआ़ {संग्रह} है बल्कि घड़ा हुआ है, बल्कि यह कवि है, पस हमारे पास कोई निशान आये जैसे पहले लोग (ई़सा, मूसा) भेजे गये थे।६. इन से पूर्व जिस बस्ती को हम ने तबाह किया वह ईमान न लाये तो क्या यह लोग ईमान ले आयें गे ७. हम ने जितने रसूल तुझ➲

से पहले भेजे हैं सब के सब मर्द ही भेजे हैं उन की तरफ़ वह्यि करते रहे सो अगर तुम को मालूम नहीं तो इन किताब वालों से पूछ लो।

....

१. सूरः अन्बिया मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ११२ आयतें और सात रुकूअ़ हैं। इस सूरः में चूँकि बहुत से नबिय्यों के क़िस्से बयान किये गये हैं, इस लिये इस सूरः का नाम "अन्बिया" मशहूर हुआ। हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि सूरः बनी इस्राईल, कहफ़, मरयम और अन्बिया उन आरंभिक सूरतों में से हैं जो मक्का में नाज़िल हुयीं। इस सूरः के नाज़िल होने के बाद हज़रत आमिर बिन रबीआ़ ने एक शख़्स से कहा कि मुझे तुम्हारे माल व दौलत की ज़रूरत बाक़ी नहीं रही, इस लिये कि आज एक ऐसी सूरः नाजिल हुयी है जिस ने हमें दुनिया को भुला दिया है।

आयत न० २ में काफ़िरों की शरारत की ओर इशारा है कि जब कोई नयी सूरः या आयः नाज़िल होती है तो उस की ओर कोई तवज्जुह नहीं देते हैं और अगर सुनते भी हैं तो हँसी-मज़ाक़ उड़ाने के लिये। इस आयत से हर्गिज़ यह नहीं साबित होता कि कुरआन मख़्लूक़ है, जैसा कि जहमिया और मोतज़िला का ख़याल है। 'मुह-दस' का मतलब यह है कि कुरआन का नाज़िल किया जाना नया है, न कि कुरआन। कुछ फ़लसफ़ी उलमा का कहना हैं कि अल्फ़ाज़ (शब्द) जिसे हम देखते या लिखते हैं वह तो मख़्लूक़ हैं, लेकिन नफ़्स मख़्लूक़ नहीं है। अहले-हदीस का यह मज़हब है कि कुरआन के शब्द, अक्षर और अर्थ सभी ग़ैरमख़्लूक़ हैं। और छपे हुये शब्द जिसे हम देख कर पढ़ते हैं वह भी ग़ैरमख़्लूक़ हैं। अल्लाह का कलाम उस की सिफ़त है और अल्लाह की सिफ़त मख़्लूक़ नहीं हो सकती।

अल्लाह जब चाहता है और जिस समय चाहता है कलाम करता है। उस के कलाम में स्वर है, अक्षर और शब्द हैं। फ़रिश्ते उस का कलाम सुनते हैं और तमाम लोग आख़िरत में उस का कलाम सुनें गे। हज़रत मूसा ने तो दुनिया ही में अल्लाह का कलाम स्वर के साथ सुना था। जो लोग यह कहते हैं कि अल्लाह के कलाम में स्वर (आवाज़) और अक्षर (हर्फ़) नहीं है, वह अल्लाह के कलाम के मुन्किर हैं। कुछ लोगों का यह भी कहना है कि वह अज़ल (इब्तिदा, आरंभ) से ही अब तक बराबर कलाम कर रहा है, यह लोग भी महज़ झूठ बोल रहे हैं स्वयं कुरआन की आयतें ही उन के इस ख़याल का रद्द कर रही हैं। कुरआन मजीद की सूरः "क़सस" में हज़रत मूसा के क़िस्सा में है "जब मूसा तूर पहाड़ पर आये उस समय उन को पुकारा गया" इस का अर्थ यह हुआ कि पहाड़ पर आने से पहले अल्लाह ने उन से कलाम नहीं किया, बल्कि आने के बाद कलाम किया।

सहीह अहादीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब अल्लाह कलाम करता है तो आसमान वाले उस की आवाज़ को सुनते हैं। अगर उन जाहिलों के ख़याल के मुताबिक़ हर समय कलाम करता तो बहुत सी आयतें और हदीसें बेमाना (निरर्थक) हो कर रह जातीं। फिर दूसरे यह कि हर समय ही बातें किये जाना यह एक प्रकार का अ़ैब है और अल्लाह तआ़ला हर प्रकार के अ़ैब से पाक है।

आगे आयत न० ७ में यह बतलाया गया है कि काफ़िरों का यह कहना कि इन्सान नबी नहीं हो सकता, उन का यह ख़याल ग़लत है। हम ने तुम से पहले जितने भी संदेष्टा भेजे हैं वह मर्द (आदमी) ही थे। इन लोगों को अगर जानकारी नहीं है तो इ़ल्म वालों, यानी यहूद और नसारा के आ़लिमों से पूछ लें। वह इन को सच्ची बात बता दें गे कि कोई भी फ़रिश्ता इन्सानों के पास नबी बन कर कभी नहीं आया।

इस आयत न० ७ से कुछ लोगों ने तक़्लीद के जायज़ होने पर दलील पकड़ी है। हांलाँकि इस आयत का मतलब यह है कि उन आ़लिमों से अल्लाह का हुक्म पूछ लो। तो अगर कोई मुक़ल्लिद किसी आ़लिम से अल्लाह और रसूल का हुक्म पूछता है तो यह तक़्लीद नहीं है (फ़तहुल बयान) मैं कहता हूँ कि अगर थोड़ी देर के लिये हम मान भी लेते हैं कि इस आयत में एक जाहिल के लिये तक़्लीद का पहलू निकलता है, तब भी इस से आज कल के मुक़ल्लिदों को कोई फ़ाइदा नहीं पहुंचे गा। इस लिये कि आज-कल के मुक़ल्लिद किसी एक ख़ास इमाम की तक़्लीद

करते हैं और यह आयत बतलाती है कि किसी भी पढ़े-लिखे आ़लिम से पूछ लो। इस आयत में सिर्फ़ एक ख़ास आ़लिम और इमाम से पूछने का हुक्म नहीं निकलता है (वहीदी)

وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا
كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ۝٨ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ
وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ۝٩ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ
اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝١٠ وَكَمْ
قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا
بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝١١ فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا
هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ۝١٢ لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ
اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ۝١٣ قَالُوْا
يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝١٤ فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ
دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ۝١٥ وَمَا
خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ۝١٦ لَوْ
اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۖ
اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝١٧ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى

८. हम ने उन रसूलों को ऐसे जिस्म वाला न बनाया था कि खाना ही न खायें और न वह हमेशा रहने वाले थे ९. फिर हम ने उन से अपने वादे सच्चे किये कि उन को और जिस को हम ने चाहा बचा लिया और सीमा से आगे बढ़ने वालों को हलाक कर दिया (इसी प्रकार यह रसूल दुनिया में आया) १०. और हम ने (उन के साथ) तुम्हारी तरफ़ एक किताब भेजी जिस में तुम्हारे लिये नसीहत है। क्या फिर भी तुम नहीं समझते? ११. और हम ने कई ज़ालिम बस्तियों को तबाह किया और उन के बाद दूसरी कई क़ौमें पैदा कीं १२. जब उन्हों ने हमारा अ़ज़ाब महसूस किया (यानी उन की बस्तियों में कोई बला, ताऊन वग़ैरह के तरह की आयी) तो लगे उन बस्तियों से भागने १३. (मगर उन से कहा गया) मत भागो और उन नेमतों की तरफ़ जिन में तुम थे और अपने मकानात की तरफ़ लौट जाओ ताकि तुम से प्रश्न हो[२] १४. उन्हों ने कहा: हाए हमारा दुर्भाग्य, हम तो बड़े ही ज़ालिम थे[३] १५. पस यही पुकार उन की अन्त तक रही यहाँ तक कि हम ने उन को बिल्कुल बर्बाद कर दिया ऐसा कि सब के सब मर-मिट गये (मगर उन को कोई नसीहत नहीं हासिल हुयी) १६. और हम ने आसमान और ज़मीन और उन के दर्मियान की चीज़ें खेलते हुये नहीं पैदा कीं (कि उन का परिणाम कुछ भी न हो) १७. अगर हम को खेल बनाने का ख़याल होता तो हम अपने पास से कोई खेल बना लेते (मगर) हम ऐसा (बिकार काम) करने वाले नहीं हैं[४] १८. बल्कि हम तो सच को (पत्थर की तरह) झूठ पर डालते हैं

....

२. पहले की तरह ग़रीब लोग तुम से प्रश्न करें। यह बात उन को किसी नसीहत करने वाले की तरफ़ से कही गयी जो उन को हमेशा अल्लाह से डरने और नेक कामों के करने का हुक्म देते थे, मगर वह बाज़ न आते थे बल्कि अपने गुरूर और तकब्बुर की बुनियाद पर उन पर दबाव डालते। आख़िर जब उन की हलाकत का समय आया और सख़्त बला में गिरिफ़्तार हो गये तो उन नसीहत करने वालों ने भी उन को चलते-चलते यह बात कह दी, मगर वह ऐसे

समय में सिवाए इस के और क्या कह सकते थे कि "हाय हमारी ख़राबी हम तो बड़े ही ज़ालिम थे" (सनाई)
३. जब उन लोगों ने अ़ज़ाब आते हुये देख लिया तो उस समय घबरा कर भागने लगे और बचने की राह तलाश करने लगे, सो उन से कहा गया कि अब भागो-दौड़ो नहीं, बल्कि अपने मकानात और अ़ैश व आराम के सामानों में आ जाओ ताकि तुम से सवाल-जवाब हो सके कि तुम ने अल्लाह की दी हुयी नेमतों का शुक्र अदा किया या नहीं? यह बात याद रहे कि यह सब बातें उन को डाँट-फटकार और ज़लील करने के लिये कही जायें गी। वह उस समय अपनी ग़लती का इक़रार करें गे मगर उस समय का इक़रार बेमाना हो गा (इब्ने कसीर)
४. इब्ने कसीर, हातिम की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सहाबा की मज्लिस को संबोधित करते हुये फ़रमायाः ऐ लोगो! जो मैं सुनता हूँ, क्या तुम भी सुनते हो? सब ने उत्तर दिया कि हम तो कुछ भी नहीं सुन रहे हैं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं तो आकाश की चर्चराहट को सुन रहा हूँ और उस का हक़ है कि वह चर्चराए। इस लिये कि आकाश में एक बालिश्त जगह भी ऐसी नहीं जहाँ किसी न किसी फ़रिश्ते ने सज्दा न किया हो।

आयत न० १७ में नसारा का रद्द है। उन का अक़ीदा है कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मर्यम को तमाम कुंवारियों में पसन्द किया और उन के पेट से अल्लाह के इक्लौते बेटे हज़रत अ़ीसा मसीह पैदा हुये। इन जाहिलों को यह नहीं मालूम कि अल्लाह की शान और उस का मर्तबा इस से कहीं बड़ा है कि वह किसी महिला को अपनी बीवी बनाये, या किसी इन्सान को अपना बेटा। अगर उस को अपनी बीवी और बेटा बनाना ही होता तो फ़रिश्तों और हूरों में एक से एक सुन्दर और सुन्दरी मौजूद हैं उन में से किसी को पसन्द कर लेता। कुछ उलमा ने इस का यह तर्जुमा किया है "अगर हम को बीवी बनाना ही होता तो हम उस को अपने पास रख छोड़ते"। इस लिये कि पत्नी हमेशा अपने पति के पास रहती है; तो फिर हम इन्सानों के दर्मियान क्यों छोड़ते? (वहीदी वग़ैरह)

الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۚ وَلَكُمُ الْوَيْلُ
مِمَّا تَصِفُونَ ۝ وَلَهُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ
وَمَنْ عِنْدَهُ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ
وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ۝ يُسَبِّحُونَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ
لَا يَفْتُرُونَ ۝ أَمِ اتَّخَذُوا آلِهَةً مِنَ الْأَرْضِ
هُمْ يُنْشِرُونَ ۝ لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ إِلَّا اللَّهُ
لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا
يَصِفُونَ ۝ لَا يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ ۝
أَمِ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ آلِهَةً ۖ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ ۖ
هَٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِي ۗ بَلْ أَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ الْحَقَّ ۖ فَهُمْ مُعْرِضُونَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا
مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا

फिर वह उस को कुचल डालता है पस वह (झूठ) मलियामेट हो जाता है। और तुम्हारे लिये तुम्हारे ही बयान से अफ़्सोस है १९. और (सुनो) जो आसमानों में (फ़रिश्ते वग़ैरह हैं) और जो ज़मीन में हैं वह सब के सब उसी अल्लाह की मिल्क {संपत्ति} है और जो लोग उस के सामने हैं (यानी संदेष्टा, नेक लोग, फ़रिश्ते) वह उस की अ़िबादत से तकब्बुर नहीं करते और न ही थकते हैं २०. रात-दिन उस की तस्बीहें पढ़ते हैं सुस्ती नहीं करते २१. क्या उन लोगों ने ज़मीन की चीज़ों में से माबूद बना रखे हैं वह उन को (दुनिया में मौजूद कर के) फैलाते हैं? २२. अगर उन दोनों (आसमान और ज़मीन) में अल्लाह के अ़लावा और माबूद होते तो यह दोनों (आसमान और ज़मीन बुरे इन्तिज़ाम के कारण) बर्बाद हो चुके होते, सो अल्लाह अ़र्श का मालिक उन

إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا فَاعْبُدُونِ ۝٢٥ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَٰنُ

की बेहूदा बातों से पाक है" २३. जो कुछ वह करता है उस के बारे में पूछा नहीं जा सकता और तमाम मख़्लूक़ से पूछ-ताछ हो गी २४. क्या उन्हों ने अल्लाह के अ़लावा और माबूद बना रखे हैं? तू कह कि अपनी (कोई) दलील लाओ[६] (जिस से साबित हो कि तुम्हारा शिर्क करने का दावा सच्चा है) यही नसीहत मेरे साथ वालों की है और मुझ से पहले लोगों की भी यही नसीहत थी। मगर उन में के अक्सर लोग सच्ची बात को नहीं जानते[७] तो मुंह फेरे जाते हैं २५. और (कहने लगते हैं कि यह नयी बात है हालाँकि) जितने रसूल हम ने तुझ से पहले भेजे हैं उन सब की तरफ़ यही संदेश हम भेजा करते थे कि बस मेरे अ़लावा कोई माबूद नहीं इस लिये मेरी ही अ़िबादत करो २६. और (यह लोग जिहालत में इतने बढ़ गये हैं कि) कहते हैं: रहमान ने (भी हमारी तरह) औलाद बनाई है

....

५. 'यह दोनों बर्बाद हो चुके होते' इस लिये कि एक ही राष्ट्र में दो बादशाहों का राज संभव नहीं। आप यह भी कह सकते हैं कि दोनों आपस में सुल्ह-समझौते से रह सकते हैं, तो यह भी दुरुस्त नहीं। इसलिये कि उन दोनों में से एक कमज़ोर हो गा और दूसरा ताक़तवर (जैसे १९४७ से पहले अंग्रेज़ हुकूमत की तुलना में हिन्दुस्तान के राजा-महाराजा और नवाब लोग) इस सूरत में कमज़ोर के खुदा बनने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता, इस लिये कि माबूद वह ज़ात है जो किसी से कमज़ोर न हो और न किसी के मातहत हो। और अगर दोनों ही एक टक्कर के हों तो फिर तो सुल्ह करने का प्रश्न ही नहीं उठता, दोनों परस्पर लड़-मर कर संसार को भी तबाह कर दें गे। सो आज जो यह दुनिया क़ाइम है और एक क़ानून के तहत चल रही है, यह इस बात की निशानी है कि अल्लाह एक है (सनाई)

६. ऊपर की आयत में तौहीद पर अक़्ली दलील दे कर यहाँ पर मुश्रिकों से भी मुतालबा किया जा रहा है कि तुम कई खुदाओं को साबित करने के लिये अक़्ली या नक़्ली दलील दो। ज़ाहिर है कि इन लोगों के पास कोई दलील नहीं है, बस एक ही जिहालत से भरी हुयी दलील है कि हमारे बाप-दादा भी कई खुदाओं की पूजा करते आये हैं इस लिए हम भी कर रहे हैं।

ऊपर दो खुदाओं की खुदाई को अक़्ली दलील से रद्द किया कि अगर दो खुदा होते तो सारा संसार तबाह व बर्बाद हो जाता। अब यहाँ पर अल्लाह के नायब की हैसिय्यत से काम करने वाले छोटे-छोटे खुदाओं को साबित करने के लिये दलील माँगी जा रही है। बहुत से मुश्रिकों का यह अ़क़ीदा था कि यह खुदा तो नहीं हैं लेकिन खुदा ने इन्हें भी थोड़ा-बहुत इख़्तियार दे रखा है। इस की भी दलील चाहिये कि अल्लाह ने किस-किस को अपना नायब होने की सनद दी है? अगर सनद और सबूत हो तो पेश करो (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)

७. 'अक्सर लोग सच्ची बात को नहीं जानते' यानी इन लोगों के पास दो खुदा होने के तअ़ल्लुक़ से कोई सनद और सबूत नहीं है। और जिस एक खुदा की अ़िबादत करते हैं इस के तअ़ल्लुक़ से हमारे पास बहुत सी दलीलें हैं। पहली दलील तो यही किताबुल्लाह है जो हमारे हाथों में है।अल्लाह के इस कलाम में साफ़-साफ़ हुक्म दिया गया है कि मेरे साथ किसी को कभी भी शरीक न करो। दूसरी दलील इस क़ुरआन से पहले की आसमानी किताबें हैं। उन में भी यही बात मौजूद है कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करो। जितने भी संदेष्टा आये सभी लोगों ने अपनी-अपनी उम्मत को यही संदेश दिया है। चुनान्चे आयत न० २५ में इसी बात की ओर इशारा है कि "हम ने हर उम्मत में अपना पैग़ंबर भेजा जिस ने लोगों में एलान किया कि तुम सब एक ही अल्लाह की अ़िबादत करो और उस के अ़लावा किसी दूसरे की हर्गिज़ अ़िबादत न करो"। तौहीद पर इतनी सारी दलीलों के बाद मुश्रिकों की कठहुज्जती बेकार है। उन पर अल्लाह की लानत, उस का ग़ज़ब और सख़्त अ़ज़ाब है। (मुहम्मदी)

उन मुसलमानों को भी इस आयत से सबक़ हासिल करना चाहिये जो दावा तो तौहीद को मानने का करते

➲ हैं मगर साथ ही क़ब्रों, शद्दों, झन्डों, ताज़ियों और ज़िन्दा-मुर्दा पीरों, फ़क़ीरों को हाजत रवा (आवश्यक्तायें पूरी करने वाला) मान कर उन पर चढ़ावा चढ़ाते और उन के नाम की नज़्र, नियाज़ें वग़ैरह करते हैं। ऐसे मुसलमानों से पूछना चाहिये कि अगर शिर्क इन चीज़ों का नाम नहीं है तो फिर किस बला का नाम है? (राज़)

وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ﴿۲۶﴾ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ
بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿۲۷﴾ يَعْلَمُ مَا
بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ
ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿۲۸﴾ وَمَنْ
يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّىْۤ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ
جَهَنَّمَ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِى الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۹﴾ اَوَلَمْ يَرَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا
رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَىْءٍ
حَىٍّ ؕ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَجَعَلْنَا فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ
اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ ۪ وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا
لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿۳۱﴾ وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا
مَّحْفُوْظًا ۚۖ وَّهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿۳۲﴾ وَهُوَ
الَّذِىْ خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ

वह (ऐसी नाजायज़ निस्बतों से) पाक है। बल्कि यह {लोग जिन्हे अल्लाह कहा जाता है जैसे अ़ीसा अ़लै० और उ़ज़ैर अ़लै०} तो उस के मुअ़ज़्ज़ज़ {इज़्ज़तदार} बन्दे हैं। २७. उस के सामने (बढ़ कर) बात कभी नहीं कर सकते और वह उसी के आदेश पर अ़मल करते हैं। २८. वह (अल्लाह) उन से पहले और पिछले वाक़िआ़त भी जानता है और वह (किसी के हक़ में) सिफ़ारिश भी नहीं करते मगर जिस के हक़ में अल्लाह पसन्द फ़रमा दे और वह उस के ख़ौफ़ (और प्रताप) से काँपते हैं २९. और (सुनो) जो कोई उन में का (फर्ज़ कर लो कि) कहीं कह दे कि मैं भी अल्लाह से वरे एक माबूद हूँ तो उस (नालाइक़) को हम ऐसी जहन्नम की सज़ा दें (कि याद करे) इसी प्रकार हम ज़ालिमों को बदला दिया करते हैं। ३०. क्या उन मुन्किरों ने (कभी ग़ौर करते हुये) यह नहीं देखा कि आसमान और ज़मीन कैसे बन्द होते हैं (कि बादलों से पानी की बूँद नहीं गिरने पाती और ज़मीन से अंकुर नहीं उगती) फिर हम उन को खोल देते हैं। और सब ज़िन्दा चीज़ें हम ने पानी से पैदा की हैं। क्या फिर भी यह ईमान नहीं लाते?[८] ३१. और हम ने ज़मीन पर बड़े-बड़े पहाड़ पैदा किये हैं ताकि वह (ज़मीन अपने हल्केपन से) उन को कहीं ले न गिरे और ज़मीन में हम ने खुले-खुले रास्ते बनाये हैं (क्यों?) ताकि यह लोग (अपने मतलब पर) राह पा सकें ३२. और हम ने (इस नीले) आकाश को महफ़ूज़ छत (लोगों के सरों पर) बनाया फिर भी लोग उस के निशानों से मुंह मोड़े हुये हैं ३३. और (सुनो) वही पाक ज़ात है जिस ने रात, दिन, सूरज और चन्द्रमा बनाये

....

८. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने इस आयत की तफ़्सीर यूँ बयान की है कि ज़मीन व आकाश सब एक साथ थे। न वर्षा होती थी और न ही कुछ पैदावार होती थी। जब अल्लाह तआ़ला ने जानदार मख़्लूक़ को पैदा किया तो आकाश को फाड़ कर उस में से पानी बरसाया और ज़मीन को चीर कर उस में से ग़ल्ला उगाया। हज़रत उमर रज़ि० ➲

➲ से जब इब्ने अ़ब्बास रज़ि० की यह तफ़्सीर बयान की गयी तो बहुत ही प्रसन्न हुये और फ़रमाया: आज मुझे यक़ीन हो गया कि क़ुरआन के ज़िल्म में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास बहुत ही बढ़े हुये हैं।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा कि तमाम चीज़ों की अस्ल (सत) क्या है? आप ने फ़रमाया: तमाम चीज़ें पानी से पैदा की गयीं हैं। मैं ने फिर प्रश्न किया कि नजात के लिये सब से बेहतर अ़मल क्या है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "लोगों को सलाम करो, लोगों को खाना खिलाओ, रिश्ते-नातों की क़द्र करो और रात को तहज्जुद की नमाज़ पढ़ो, तो सलामती के साथ जन्नम में दाख़िल हो जाओ गे (इब्ने कसीर)

كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ۝ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۭ اَفَا۟ىِٕنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ۝ كُلُّ نَفْسٍ ذَاۗىِٕقَةُ الْمَوْتِ ۭ وَنَبْلُوْكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۭ وَاِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۭ اَهٰذَا الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۭ سَاُورِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝ بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ

(क़ुदरत का चमतकार देखो कि) हर एक उन में का (आसमान में) अपनी-अपनी धुरी पर घूम रहा है[९] ३४. और हम ने तुझ से पहले किसी आदमी को हमेशा के लिये नहीं रखा। फिर अगर तू (ऐ रसूल) मर गया तो क्या वह लोग हमेशा जीते रहें गे ३५. (कुछ शक नहीं कि) हर एक जान को मौत का स्वाद चखना है[१०] (इस लिये तुम होशियार हो जाओ) हम तुम को बुरी-भली बातों से जांचते हैं[११]। और हमारी ही तरफ़ तुम फिर कर आओ गे। ३६. और काफ़िर लोग (ऐ रसूल!) जब तुझ को (चलता-फिरता) देखते हैं तो (आपस में) तेरी हंसी उड़ाते हैं (और कहते हैं) क्या यही है जो तुम्हारे माबूदों को बुराई से याद करता है और वह ख़ुद (अल्लाह) रहमान की याद (और नसीहत) से मुन्किर हैं[१२] (जानते ही नहीं कि अल्लाह कौन है?) ३७. इन्सान की पैदाइश ही जल्दी से है (इस लिये) मैं (अल्लाह) बहुत जल्द तुम को अपनी क़ुदरत के निशान दिखाऊँ गा पस तुम जल्दी न मचाओ ३८. और (यह धमकी सुन कर और अकड़ कर) कहते हैं कि यह वादा कब पूरा हो गा अगर तुम (मुसलमान) सच्चे हो? ३९. ऐ काश! यह काफ़िर उस वक़्त की असलिय्यत को जान लेते जिस समय न अपने मुंह से, न अपनी पीठों से आग (के अ़ज़ाब) को रोक सकें गे और न (किसी तरफ़ से) मदद किये जायें गे ४०. बल्कि अचानक वह घड़ी उन पर आ कर उन को हैरान कर दे गी पस वह उस को किसी प्रकार रद्द न कर सकें गे और न उन को (किसी प्रकार की कुछ) मुहलत मिले गी ४१. (अगर यह लोग तेरे साथ हंसी-मज़ाक़ कर रहे हैं तो क्या हुआ) तुझ से पहले➲

➲भी कई एक संदेष्टाओं से हंसी की गयी

....

९. 'हर एक अपनी-अपनी धुरी पर घूम रहा है' किसी की मजाल नहीं कि एक दूसरे से टकरा जाये, या किसी की राह में रुकावट डाले। अल्लाह की कुदरत के ऐसे-ऐसे निशानों को देख कर भी तुम उस की इताअ़त और फ़रमा-बर्दारी से मुंह मोड़ते हो और वाहियात और बेकार बातें बनाते हो। यह उन की कितनी बड़ी जिहालत है कि यह सोचे बैठे हैं कि इस नबी का एक न एक दिन अन्त हो जाये गा। इस के मरने के पश्चात् इस का कोई नाम लेने वाला तक न रह जाये गा। लेकिन यह नादान इतना भी नहीं जानते कि हम ने तुझ से पहले........"। (सनाई)

१०. दुनिया के मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह का क़ानून यही है कि हर चीज़ को फ़ना होना है। नबी और वली भी इसी क़ानून के तहत दुनिया से चले जाते हैं। और मरने के बाद वाली ज़िन्दगी भी एक अटल हक़ीक़त है जिस से इन्कार की मजाल नहीं। (राज़)

११. यानी कभी तुम्हें दुःख पहुंचाते हैं और कभी सुख, और कभी ख़ुशहाली देते हैं तो कभी बदहाली, ताकि हम देखें कि इन हालात में तुम कौन सी राह इख़्तियार करते हो, इताअ़त की अथवा नाफ़र्मानी की। यह बात भली-भांति जान लो कि तुम हमारी पकड़ से निकल नहीं सकते हो (सनाई)

१२. शाने-नुज़ूलः कुरआन मजीद में बुतों से इन्कार और उन की मज़म्मत के बारे में जब कोई आयत नाज़िल होती तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उसे पढ़ कर मुश्रिकों को सुनाते, इस पर वह चिढ़ते और आप का मज़ाक़ उड़ाते। वह कहते कि क्या अल्लाह को यही शख़्स नबी बनाने के लिये मिला था? क्या यही शख़्स है जो हमारे बुतों को बुरा-भला कहता है (बिल्कुल ऐसे ही जैसे आज-कल के बिद्अ़ती और क़ब्रों की पूजा करने वाले तौहीद परस्तों को देख कर ताना देते हैं) इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई और फ़रमाया कि ऐसे लोगों के लिये आख़िरत में जो अ़ज़ाब तैयार किया गया है अगर उसे जान लें तो अपनी सारी शरारतें भूल जायें। और यह भी बता दिया कि यह दुनिया चन्द दिन की है, जिस प्रकार लोगों का आना-जाना लगा हुआ है इस तरह इन्हें भी इस दुनिया से जाना है और जाते ही इस प्रकार के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार किये जायें गे कि उस से निकल भागने की कोई राह न पा सकें गे।

सहीह हदीसों से यह बात साबित हो चुकी है कि शरीअ़त का इन्कार करने वालों के तमाम बदन को आख़िरत में यातनायें दी जायें गी, लेकिन यहाँ पर केवल मुंह और पीठ ही का उल्लेख है। ऐसा इस लिये कि इन लोगों की जानें निकालते समय फ़रिश्ते उन के मुंह और पीठ पर कोड़े मारते हैं (जैसा कि पाराः२६ में सूरः मुहम्मद की आयत २७ में इस का बयान आये गा) इस लिये इन आयतों में उस अ़ज़ाब का ज़िक्र किया गया है जो सर्वप्रथम इन को मिले गा। फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को तसल्ली दी गयी है कि अगर यह लोग तुम्हारा मज़ाक़ उड़ा रहे हैं तो यह कोई नयी बात नहीं है, इन से पहले के लोग भी अपने संदेष्टाओं का मज़ाक़ उड़ाते रहें हैं, तो जिस प्रकार वह लोग तबाह और बर्बाद कर दिये गये इसी प्रकार यह लोग भी तबाह कर दिये जायें गे और दुनिया की कोई ताक़त इन्हें अ़ज़ाब की पकड़ से बचा नहीं सकती है। मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन दुनिया के ऐ़श व आराम की ज़िन्दगी गुज़ारने वाले पापियों को जहन्नम में एक ग़ोता दे कर पूछा जाये गा कि तू ने दुनिया में अपनी उम्र भर कुछ आराम पाया? वह पापी जहन्नम के एक ग़ोता ही से दुनिया के सारे आराम को भूल जायें और कहें गे कि हम ने तो दुनिया में कुछ भी आराम नहीं पाया। इसी प्रकार दुनिया का एक मुस्लिम बन्दा जो हमेशा परेशानियों में ही घिरा रहा, क़ियामत के दिन जन्नत में जाने के साथ ही दुनिया की सारी तक्लीफ़ों को भूल जाये गा (अहसनुल् फ़वाइद)

قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ قُلْ مَن يَكْلَؤُكُم بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمَٰنِ ۗ بَلْ هُمْ عَن ذِكْرِ رَبِّهِم مُّعْرِضُونَ ۝ أَمْ لَهُمْ آلِهَةٌ تَمْنَعُهُم مِّن دُونِنَا ۚ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ أَنفُسِهِمْ وَلَا هُم مِّنَّا يُصْحَبُونَ ۝ بَلْ مَتَّعْنَا هَٰؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۗ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ أَفَهُمُ الْغَالِبُونَ ۝ قُلْ إِنَّمَا أُنذِرُكُم بِالْوَحْيِ ۚ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاءَ إِذَا مَا يُنذَرُونَ ۝ وَلَئِن مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ يَا وَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا ۖ وَإِن كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا ۗ وَكَفَىٰ

पस जो लोग इन रसूलों का मज़ाक़ उड़ाते थे उन ही पर वह अ़ज़ाब नाज़िल हुआ जिस की वह हंसी क़रते थे ४२. (अगर यह अल्लाह की पकड़ से न डरें तो तू उन से) पूछ कि (तुम जो इतने मस्त हुये फिरते हो तो बतलाओ) रात-दिन में तुम को अल्लाह मेहरबान के अ़ज़ाब से कौन बचा सकता है[१३]? लेकिन यह लोग अपने पर्वरदिगार के ज़िक्र से मुंह मोड़े हुये हैं ४३. क्या उन के और माबूद हैं जो उन की हम से अलग ही सुरक्षा कर सकते हैं? वह तो स्वयँ अपने नफ़्सों की सहायता नहीं कर सकते और न वह हमारी तरफ़ से साथ दिये जायें गे। ४४. बात यह है कि हम (अल्लाह) ने उन को और उन के बाप-दादा को (दुनिया में) आसूदा (मालदार,खुशहाल) किया यहाँ तक कि उन की उम्रें लम्बी हुयीं। क्या यह लोग इतना भी नहीं जानते कि (चारों ओर इस्लाम के फैलने से) हम उन की (कुफ़्र की) ज़मीन को घटाते चले आये हैं। क्या फिर भी यह ग़ालिब आयें गे? ४५. (ऐ रसूल!) तू कह दे कि मैं तुम को केवल अल्लाह के हुक्म के साथ डराता हूँ और बहरों को जब समझाया जाता है तो वह किसी की पुकार को सुना नहीं करते ४६. और अगर उन को अल्लाह के अ़ज़ाब की तनिक भर हवा भी लग जाये तो बस तुरन्त कहने लग जायें गे कि हम ही ज़ालिम थे ४७. और (कब तक यह लोग अकड़ते फिरें गे। आख़िर एक रोज़) हम क़ियामत के दिन न्याय की तराज़ू क़ाइम करें गे[१४]। (फिर तो सब के पोशीदा राज़ खुल जायें गे) फिर किसी जान पर किसी प्रकार का अत्याचार न हो गा। यहाँ तक कि कोई काम अगर राई के दाने के बराबर हो गा तो हम उस को भी (उस के करने वाले के सामने) ले आयें गे

....

१३. यानी अगर अल्लाह तआ़ला दिन या रात के किसी भी हिस्से में तुम को पकड़ ले तो उस की पकड़ से तुम को कोई नहीं बचा सकता। इस ज़मीन और आसमान पर अल्लाह की हुकूमत है, सारे संसार का वही शासक है, केवल वही तुम्हें सुरक्षा प्रदान कर सकता हैं और कोई नहीं। (सनाई)

१४. लगभग तमाम ही मुफ़स्सिरों का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि क़ियामत के दिन आमाल को तौलने के लिये तराज़ू लगाई जाये गी जिस में नमाज़, रोज़ा, हज्ज, ज़कात, सदक़ा, ख़ैरात, नेकी, बदी आदि सारे आमाल तौले जायें गे। गोया एक ही तराज़ू में कई प्रकार के आमाल तौले जायें गे. इसी लिये यहाँ पर 'मवाज़ीन (बहुत से तराज़ू) ➲

बहुवचन प्रयोग किया गया है। इस मीज़ान (तराजू) में क्या-क्या चीज़ें तौली जायें गी? इस बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने खुद फ़रमाया है कि आमाल तौले जायें गे। चुनान्चे बुख़ारी, मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "सुब्हा-नल्लाहि वबि-हम्दिही सुब्हा-नल्लाहिल् अ़ज़ीम" यह दो कलिमे अगर्चे ज़बान पर हल्के हैं मगर क़ियामत के दिन मीज़ान में भारी हैं, और यह दोनों कलिमे अल्लाह को बहुत ही प्यारे है"। इस हदीस शरीफ़ में इन दोनों कलिमों का वज़न और बोझ बताया गया है। मुस्नद अहमद, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा की अहादीस का खुलासा यह है कि एक गुनाहगार के गुनाहों की ९९ फ़ाइलें हों गी जिन को अगर फैलाया जाये तो इतनी लम्बी हों गी जहाँ तक आँखें देख सकती हैं। जब वह दोज़ख़ की तरफ़ ले जाया जाये गा तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाये गा उस का एक अ़मल तुलने से रह गया है। फिर एक छोटा सा काग़ज़ का पर्चा लाया जाये गा जिस पर कलिम-ए-तौहीद (लाइला-ह इल्लल्लाहु+मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह) लिखा हो गा। जब इस को तौला जाये गा तो यह गुनाहों की ९९ फ़ाइलों पर भी भारी हो गा। ज़ाहिर है यह अ़मल ही का बोझ हो गा।

एक अन्य हदीस शरीफ़ में रिवायत है कि क़ियामत के दिन तीन मौक़े बहुत ही सख़्त हों गे १. आमाल नामा (कर्म पत्र) तौले जाने का समय (ताकि यह मालूम हो सके कि नेकी का पलड़ा भारी है या बदी का) २. आमाल नामा बाँटे जाने का समय ३. पुल सिरात पर गुज़रने का समय। हज़रत आ़इशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि एक दिन मैं जहन्नम को याद कर के रोने लगी। फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा कि क्या आप क़ियामत के दिन हम लोगों के भी कुछ काम आ सकें गे? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसललम ने फ़रमाया: तीन मौक़ों पर मैं किसी के कुछ भी काम न आ सकूँ गा, और आप ने ऊपर लिखे तीनों मौक़ों का ज़िक्र फ़रमाया (अबू दावूद) (अहसनुल् फ़वाइद)

بِنَا حٰسِبِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٤﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿٥٥﴾ قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ

और हम स्वयँ हिसाब करने को काफ़ी हैं ४८. और हम ने मूसा और हारून को (हक़ और नाहक़ में) फ़र्क़ करने वाली किताब और रोशनी और परहेज़गारों का दस्तूरुल् अ़मल {कार्यक्रम} दिया[15] (यानी उन का) ४९. जो अपने पर्वरदिगार से बिन देखे डरते हैं और वह क़ियामत की घड़ी से भी कांपते हैं ५०. (इसी प्रकार) यह कुरआन बर्कत और नसीहत की किताब है जो हम ने उतारी है (जिस का उतारना कोई नया नहीं) क्या तुम उस का इन्कार करते हो[16]? ५१. और हम ने इस से पूर्व (तुम्हारे पुर्खे और पूर्वज हज़रत) इब्राहीम को हिदायत दी और हम उसको जानते थे ५२. (तुम लोग उस वक़्त की घटी घटनाओं को याद करो) जब उसने अपने बाप और क़ौम से कहा था कि यह क्या सूरतें {मूर्तियाँ} हैं जिन पर तुम डेरे डाले रहते हो ५३. वह बोले कि हम ने

اَصۡنَامَكُمۡ بَعۡدَ اَنۡ تُوَلُّوۡا مُدۡبِرِيۡنَ ۝ فَجَعَلَهُمۡ

अपन बाप-दादा को उन की अ़िबादत करते हुये पाया है[१७] ५४. इब्राहीम ने कहा कि तुम और तुम्हारे बाप-दादा भी खुली गुमराही में फंस रहे हो ५५. (उन्हों ने हज़रत इब्राहीम की यह हिम्मत देखी तो) वह बोले कि तू कोई सच्ची बात लाया है या दिल्लगी करने वालों में से है? ५६. इब्राहीम ने कहा: बल्कि तुम्हारा हक़ीक़ी पर्वरदिगार वही है जो आसमानों और ज़मीन का पर्वरदिगार है जिस ने उन को पैदा किया है और मैं इस पर गवाही देने वालों में से हूँ ५७. वल्लाह! मैं तुम्हारे उन बुतों से तुम्हारे जाने के बाद एक दाँव करूँ गा (जिस से तुम उन की नादानी और उन के ख़ुदा न होने के बारे में अच्छी तरह समझ सको)

....

१५. ऊपर की आयतों में तौहीद के मुतअ़ल्लिक संक्षिप्त बयान था, अब यहाँ आयत न० ४८ से पैगंबरों के दस क़िस्से बयान कर के तौहीद पर विस्तार से बहस की गयी है। यहाँ पर जिन संदेष्टाओं का बयान है उन के नाम तर्तीब-वार यह हैं १. हज़रत मूसा, २. हज़रत इब्राहीम, ३. हज़रत लूत, ४. हज़रत नूह, ५. हज़रत दावूद, ६. हज़रत सुलैमान, ७. हज़रत अय्यूब, ८. हज़रत इस्माअ़ील, ९. हज़रत इदरीस, १०. हज़रत ज़ुल् किफ़्ल, ११. हज़रत ज़करिया और फिर दर्मियान में मर्यम का भी बयान १२. फिर उन के सुपुत्र हज़रत अ़ीसा अलैहिमुस्सलाम का ज़िक्र। (तर्जुमान नवाब रह०)

१६. 'क्या तुम उस का इन्कार करते हो' अफ़्सोस! तुम इतना भी नहीं सोचते कि इन्कार का नतीजा तुम्हारे हक़ में क्या हो गा और इस जुर्म की सज़ा कौन झेले गा। यह तुम्हारी बहुत बड़ी नादानी है कि तुम यह समझते हो कि यह किताब और नबी कोई नयी चीज़ है। हालाँकि हम ने जब से दुनिया बनाई और उस पर इन्सानों को बसाया है तभी से हर युग में उन की हिदायत और राहनुमाई के लिये किताब और नबी भेजे हैं। इस के अ़लावा उलमा और मशाइख़ को भी यह कार्य सौंपा। इस से पहले तुम्हारे दादा हज़रत इब्राहीम....................."। (सनाई)

१७. बस यही दलील हमारे सामने है कि हमारे बाप-दादा भी ऐसा ही करते चले आये हैं। लेकिन उन्हों ने यह नहीं सोचा कि हज़रत इब्राहीम के सामने ऐसी कमज़ोर और लाचार दलील काम नहीं कर सकती। इस लिये कि तुम यह कह रहो हो कि हम ने अपने बाप-दादाओं को करते पाया है, फिर अगर बाप-दादाओं से यही प्रश्न किया जाता तो वह क्या उत्तर देते? (सनाई)

जब अ़क्ली हुज्जत और दलील में हज़रत इब्राहीम के बाप आज़र, बादशाह नमरूद और उस की क़ौम के लोग ग़ालिब न आ सके तो सभी लोगों ने परस्पर-मश्वरा कर के हज़रत इब्राहीम को आग में डालने का प्रोग्राम बनाया। उस समय हज़रत इब्राहीम की आयु १६ वर्ष की थी। तफ़्सीर सदी के अनुसार क़ौम के लोग जलाने के लिये लकड़ियाँ इकट्ठा करने को बहुत बड़ा पुण्य समझते थे। चुनान्चे हाल यह था कि जब कोई औ़रत बीमार होती तो यह नज़्र मानती थी कि अगर अच्छी हो गयी तो एक बोझ लक्ड़ी का इब्राहीम को जलाने के लिये मैं भी दूँ गी। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि जब लोग उन को आग में डालने की तय्यारी कर रहे थे तो बारिश बरसाने वाला फ़रिश्ता इस गुमान में था कि अल्लाह तआ़ला उस आग को बुझाने के लिये मुझे ही हुक्म देगा। लेकिन अल्लाह तआ़ला का हुक्म किसी ज़रीआ़ और वसीला का मुहताज नहीं। अल्लाह के हुक्म से आग ने स्वयँ पानी का काम किया और जिस प्रकार पानी से हरियाली पैदा होती है इसी प्रकार उस आग से हरियाली उग आयी और उस दिन पूरे संसार की आग बुझ गयी थी।

इब्ने अबी हातिम की रिवायत के मुताबिक़ हज़रत इब्राहीम ४० दिन आग में रहे। आप फ़रमाया करते थे कि उन दिनों से अधिक आराम मुझे अपनी पूरी उम्र में कभी न मिला। बादशाह नमरूद ने तमाशा देखने के लिये एक ऊँचा महल बनवाया था। उस ने जब इब्राहीम अ़लै० को सही सलामत देखा तो चिल्ला कर बोल उठा

➲कि तुम्हारा रब बड़ी क़ुदरत वाला है जिस ने तुम्हें आग में जलने न दिया। उस ने यह भी कहा कि मैं भी तुम्हारे रब के नाम क़ुर्बानी करूँ गा। हज़रत इब्राहीम ने उत्तर दिया कि बुत परस्ती छोड़ने के बाद ही तुम्हारी क़ुर्बानी क़ुबूल हो सकती है। उस ने कहा कि यह तो मुझ से नहीं हो सकता। बुख़ारी की एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत इब्राहीम अ़लै० आग में "हस्बु-नल्लाहु वनिअ़-मल् वकीलु" (अल्लाह हमारे लिये काफ़ी है और वह बेहतरीन सहायक है) पढ़ रहे थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अक्सर-बेश्तर लड़ाई के मौक़े पर यही कलिमा पढ़ा करते थे। (अहसनुल् फ़वाइद/इब्ने कसीर, ख़ाज़िन)

جُذٰذًا اِلَّا كَبِیْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَیْهِ یَرْجِعُوْنَ ۝
قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَاۤ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِیْنَ ۝
قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى یَّذْكُرُهُمْ یُقَالُ لَهٗۤ اِبْرٰهِیْمُ ۝ قَالُوْا
فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰۤى اَعْیُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ یَشْهَدُوْنَ ۝
قَالُوْۤا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا یٰۤاِبْرٰهِیْمُ ۝
قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖۗ كَبِیْرُهُمْ هٰذَا فَسْــٴَـلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا
یَنْطِقُوْنَ ۝ فَرَجَعُوْۤا اِلٰۤى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْۤا اِنَّكُمْ
اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ
عَلِمْتَ مَا هٰۤؤُلَآءِ یَنْطِقُوْنَ ۝ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا یَنْفَعُكُمْ شَیْــٴًـا وَّ لَا یَضُرُّكُمْ ۝
اُفٍّ لَّكُمْ وَ لِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا
تَعْقِلُوْنَ ۝ قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَ انْصُرُوْۤا اٰلِهَتَكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِیْنَ ۝ قُلْنَا یٰنَارُ كُوْنِیْ بَرْدًا

५८. पस उस ने उन सब को टुकड़े-टुकड़े कर दिया लेकिन उन में से बड़े बुत को बचा रखा, ताकि वह लोग उस की ओर मुतवज्जह हों ५९. उन्हों ने कहा: जिस ने हमारे माबूदों के साथ यह काम किया है बेशक वह बड़ा ज़ालिम है ६०. (फिर परस्पर) उन्हों ने कहा कि हम ने एक जवान लड़के को उन के बारे में ज़िक्र करते हुये सुना है उस को इब्राहीम कहा जाता है ६१. (यह सुन कर प्रमुख लोगों ने) कहा: तो उस को लोगों के सामने लाओ ताकि (अगर वह स्वीकार करे तो) लोग उस पर गवाह हों ६२. (ख़ैर) उन्हों ने कहा: इब्राहीम! हमारे माबूदों के साथ यह बेजा कार्य तू ने किया है? ६३. इब्राहीम ने कहा: बल्कि उन में के उस बड़े बुत ने किया है[१८]। अगर बोल सकते हैं तो उन से पूछ लो ६४. (इस माकूल उत्तर से) वह (ऐसे रुके कि कोई उत्तर न बन पड़ा) अपने जी में सोचते रहे फिर बोले कि बेशक तुम ही ज़ालिम हो ६५. फिर (वह कुफ़्फ़ार कुछ समय तक) औंधे गिर कर कहने लगे इब्राहीम! तू जानता है कि यह तो बोलते नहीं (फिर हम पूछें किस से और बतलाये कौन?) ६६. इब्राहीम ने कहा: क्या फिर तुम अल्लाह के अ़लावा ऐसी वस्तुओं की इ़बादत करते हो जो (इ़बादत करने पर) न तुम को लाभ पहुंचा सकें और न (छोड़ देने पर) हानि पहुंचा सकें ६७. अफ़्सोस है तुम पर और उन चीज़ों पर जिन की तुम अल्लाह के अ़लावा इ़बादत करते हो। क्या तुम अक़्ल नहीं रखते ६८. उन्हों ने कहा: इस (इब्राहीम को (आग में) जलाओ और अपने माबूदों की सहायता करो अगर कुछ करना चाहते हो ६९. हम ने (आग को) आदेश दिया कि तू इब्राहीम के लिये 'ठंडी'[१९]

....

१८. यहाँ पर यह प्रश्न उठता है कि हज़रत इब्राहीम ने उस बड़े बुत को तोड़ने वाला क्यों कहा? इस का उत्तर➲

➲यह है कि उस को तोड़ने वाला मजाज़ (उपमा) की हैसिय्यत से कहा है। प्रसिद्ध शायर दाग़ देहलवी अपनी ग़ज़ल के एक शेर में कहते हैं

"मुझे खटका हुआ था जब बिनाए काबा पड़ती थी + कि यह झगड़े में डाले गा बहुत गिब्रो मुसलमों को"। यानी काबा की बुनियाद पड़नी यह मुसलमानों और ग़ैर मुसलमानों के दर्मियान झगड़े, लड़ाई और फ़साद का कारण बने गा, इस में दोश काबा का नहीं बल्कि झगड़ा करने वालों का है। (सनाई)

१९. 'ठण्डी और सलामती वाली बन जा' इस से उन लोगों का रद्द होता है जो कहते हैं कि आग ठण्डी नहीं हुयी थी, बल्कि हज़रत इब्राहीम को आग में डाला ही नहीं गया था। इन लोगों का यह ख़याल ग़लत है। क़ुरआन में एक सिद्धान्त यह बताया गया है कि अल्लाह तआ़ला जब किसी चीज़ को पैदा करना चाहता है तो कहता है "कुन" (हो जा) बस वह तुरन्त हो जाती है। यहाँ इस आयत में भी "कूनी" (हो जा) का शब्द मौजूद है। इस का मतलब ही यह है कि हज़रत इब्राहीम आग में डाले गये थे तभी अल्लाह ने यह शब्द कहा, वर्ना कहने की कोई ज़रूरत नहीं थी।

रहा यह प्रश्न कि अल्लाह ने आग के अन्दर ज़लाने की सिफ़त रखी है तो क्या यह संभव है कि उस की यह सिफ़त बदल जाये? तो इस का उत्तर यह है कि जिस के हुक्म से आग जलाने का काम करती है उसी के हुक्म से बुझाने का भी काम कर सकती है, इस में आश्चर्य की क्या बात है। (सनाई)

وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا
فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ﴿٧٠﴾ وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى
الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾ وَوَهَبْنَا
لَهٗٓ اِسْحٰقَ ۭ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۭ وَكُلًّا جَعَلْنَا
صٰلِحِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا
وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَ
اِيْتَاۗءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ﴿٧٣﴾ وَلُوْطًا
اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ
كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰۗىِٕثَ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ
فٰسِقِيْنَ ﴿٧٤﴾ وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ۭ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾
وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ
وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾ وَنَصَرْنٰهُ
مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا

और सलामती वाली बन जा ७०. और उन्हों ने उस से दाँव किया था पर हम ने उन्हीं को नाकारा (और ज़लील) किया[२०] ७१. और हम ने उस को और लूत को उस ज़मीन की तरफ़ पहुंचा दिया जिस में हम ने संसार के सब लोगों के लिये बर्कतें पैदा कर रखी हैं। ७२. और हम ने उस को इस्हाक़ (बिटा) और याकूब (पोता) इनाम बख़्शा। और सब को हम ने नेक बनाया (ऐसे कि तमाम लोगों ने उन से हिदायत पाई) ७३. और हम ने उन को दीन का इमाम बनाया कि हमारे हुक्म से लोगों को हिदायत करते थे और हम ने उन को नेक कामों के करने और नमाज़ अदा करने और ज़कात देने का आदेश दिया, वह ख़ास हमारी ही ज़िबादत में लगे हुये थे[२१] ७४. और हम ने लूत को हुक्म और ज़िल्म दिया और उस बस्ती से जहाँ के रहने वाले सख़्त बदकारी करते थे हम ने उस को बचाया। कुछ संदेह नहीं कि वह लोग बहुत बड़े बदकार थे[२२] ७५. और लूत को हम ने अपनी रहमत में दाख़िल किया। निःसंदेह वह नेक बन्दों में से था। ७६. और (लूत से पूर्व) नूह को हम ने नजात➲

➲दी जब उस ने हम को पुकारा तो हम ने उस की दुआ कुबूल कर ली, पस हम ने उस को और उस के अनुयायियों को बड़ी घबराहट के अज़ाब से बचा लिया ७७. और जिन लोगों ने हमारे हुक्मों को झुठलाया था उन के मुक़ाबला पर हम ने उस (नूह) की सहायता की

....

२०. यानी हज़रत इब्राहीम अ़लै० के साथ उन्हों ने बुरा इरादा किया, मगर हम ने उन के इरादों को ख़ाक में मिला दिया। अ़ल्लामा नवाब साहब रह० फ़रमाते हैं कि बाप-दादा की अन्धी तक़्लीद ने हमेशा ही लोगों को गुमराही के समुन्द्र में डुबोया है। आज-कल के मुक़ल्लिद लोगों का भी यही हाल है कि जब कोई कुरआन व हदीस का आ़लिम उन्हें नसीहत करता है कि बाप-दादाओं की अन्धी तक़्लीद तर्क कर दो, तो वह झट यही बहाना पेश कर देते हैं कि हमारे बाप-दादा इस मस्अ़ले में फ़लाँ इमाम के कहने के अनुसार चलते रहे हैं। हालाँकि हक़ बात यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के क़ौल के ख़िलाफ़ जो भी क़ौल हो उस को छोड़ दो और अगर किसी आ़लिम या मुज्तहिद का क़ौल आप के ख़िलाफ़ हो तो उसे भी छोड़ दो, यही दीन और अस्ल ईमान है। और जो कोई इस मस्अले में इख़्तिलाफ़ करे उस का फ़ैसला अल्लाह के हवाले कर देना चाहिये (वहीदी) जब लोग बहस-मुनाज़िरा और गुफ़्तुगू में चित हो गये तो जैसा कि उसूल है वह लोग ज़ुल्म व ज़्यादती पर उतर आये और आग में जला देने की नापाक कोशिश कर डाली, लेकिन अल्लाह ने उन के सारे के सारे मन्सूबे ख़ाक में मिला दिये और हज़रत इब्राहीम अ़लै० ज़िन्दा-सलामत वहाँ से निकल कर अपने भतीजे हज़रत लूत के साथ कन्आ़न चले गये। रिवायतों में आता है कि जब हज़रत इब्राहीम को आग में डाला गया तो उस समय आप "हस्बु-नल्लाहु वनिअ्-मल् वकीलु" (अल्लाह ही हमारे लिये काफ़ी है और वही सब से बेहतर सहायक है) पढ़ रहे थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम भी अहम मौक़ों पर यही कलाम पढ़ा करते थे। हज़रत इब्राहीम चालीस दिन तक आग में रहे और आप को उन दिनों इतना सुख और आराम मिला कि आप सारी उम्र नहीं भूले। नमरूद ने जब अपने महल से आप का यह हाल देखा तो अल्लाह की कुदरत का तो क़ाइल हो गया, मगर ईमान से महरूम रहा। (राज़)

२१. इ़बादत के अहम कामों में नमाज़ और ज़कात के अदा करने का विशेष रूप से ज़िक्र किया गया है। नमाज़ और ज़कात की अदायगी तमाम संदेष्टाओं और बुज़ुर्गों का ख़ास अ़मल रहा है। जो लोग इन दोनों कामों को नहीं करते हैं और फिर भी अल्लाह वाले होने का दावा करते हैं वह झूठे हैं। यही कारण है कि बेनमाज़ी को इस्लामी मिल्लत से ख़ारिज क़रार दिया गया है।

२२. हज़रत लूत अ़लै० की क़ौम दुनिया के बड़े बदमाशों में से थी। सब से बुरी बीमारी इन के अन्दर यह थी कि यह कुकर्मी थे। इन के हाँ मर्द, मर्द के साथ शारीरिक (समलैंगिक) संबन्ध बनाते थे। ऐसी बदतरीन क़ौम के साथ पड़ने में उन को कितनी तक्लीफ़ हुयी हो गी, इस का अनुमान लगाना मुश्किल नहीं, मगर अल्लाह तआ़ला ने उन की सुरक्षा फ़रमाई (सनाई) हदीस शरीफ़ में आया है कि जिस किसी को हज़रत लूत अ़लै० की क़ौम का सा अ़मल करते देखो तो दोनों ही को क़त्ल कर दो। मतलब यह है कि इस्लामी स्टेट में दोनों की सज़ा क़त्ल है।

क्यों कि वह (बदमाश और) बुरे लोग थे पस हम ने उन सब को (पानी में) डुबो दिया ७८. और दावूद और सुलैमान का क़िस्सा भी उन को सुना जिस समय वह दोनों (किसी की) खेती के बारे में फ़ैसला कर रहे थे, जब क़ौम की भेड़-बकरियाँ उस खेती में कूद पड़ीं और हम➲

قَوْمَ سَوْءٍ فَأَغْرَقْنٰهُمْ أَجْمَعِيْنَ ۝ وَدَاوٗدَ وَ
سُلَيْمٰنَ إِذْ يَحْكُمٰنِ فِى الْحَرْثِ إِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ
غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ۝ فَفَهَّمْنٰهَا
سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۡ وَّسَخَّرْنَا

مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ۚ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿٧٩﴾ وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۚ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿٨١﴾ وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٨٢﴾ وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٨٣﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ

उन के फ़ैसलों के समय वहाँ उपस्तिथ थे ७९. फिर हम ने सुलैमान को यह मुक़दमा समझा दिया[२३] और हम ने हर एक को हुक्म और ज़िल्म दिया था और हम ने दावूद (पर एक विशेष कृपा यह की थी कि उस) के साथ पहाड़ों और जानवरों को मुसख़्ख़र {अधीन} किया था वह उस के साथ तस्बीह पढ़ते थे। और निःसंदेह हम (ऐसे कार्य) कर सकते हैं ८०. और हम ने उस को तुम्हारे लिये जंगी लिबास बनाना सिखाया ताकि तुम को वह (यानी दावूद की बनाई हुयी लोहे की ज़िरह) जंग के नुक़्सान से बचाये। क्या तुम ऐसी नेमतों का शुक्र न करो गे? ८१. और हम ने तेज़ हवा को सुलैमान के ताबेअ़ कर दिया था वह उस के निर्देश से उस ज़मीन की तरफ़ जाती थी जिस में हम ने हर प्रकार की बर्कतें पैदा की हैं (यानी मुल्क शाम का क्षेत्र) और हम हर एक वस्तु को जानते हैं। ८२. और शैतानों (यानी शरीर जिन्नों) में से जो (समुन्दर में) डुपकी लगाते थे और उस के अ़लावा कई एक और काम करते थे, हम ने उस के ताबेअ़ कर दिये थे और हम उन के निग्राँ थे (कि सरकशी न करें) ८३. और उन को अय्यूब का भी ज़िक्र सुना! जब उस ने अपने पर्वरदिगार से दुआ़ की कि मैं सख़्त मुसीबत में हूँ और तू सब से बड़ा रहम करने वाला है ८४. पस (उस नेक बन्दे की) उस दुआ़ को हम ने क़ुबूल किया और जो उस को तक्लीफ़ थी सब दूर कर दी।

....

२३. हज़रत सुलैमान ने अपने वालिद हज़रत दावूद से कहा कि आप ने जो फ़ैसला सुनाया है उस पर पुनः विचार करें। उन्हों ने विचार किया तो अपने सुपुत्र हज़रत सुलैमान के फ़ैसले को दुरुस्त पाया और उसी के अनुसार फ़ैसला सुनाया। इस क़िस्सा से दो बातें मालूम हुयीं १. यह कोई ज़रूरी नहीं कि बड़े-बूढ़ों की हर बात सहीह हो। जो ग़लत हो उसे तुरन्त बताना चाहिये। उन की हर बात पर आँख मूँद कर अ़मल नहीं करना चाहिये। २. बड़ों पर भी यह लाज़िम है कि वह अपनी बड़ाई पर न जायें, बल्कि अपने से छोटे की हक़ बात को तस्लीम करें।

बक्री वालों का क़िस्सा हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने इस प्रकारबयान किया है कि एक आदमी की भेड़-बक्रियों ने दूसरे आदमी का सारा खेत रात में चर लिया। हज़रत दावूद के पास जब यह मुक़दमा आया तो उन्हों ने तमाम बक्रियाँ खेत वाले को दिला दीं। हज़रत सुलैमान अ़लै० ने, जो उन दिनों राजकुमार की हैसियत से थे, जब यह फ़ैसला सुना तो कहने लगे कि अगर यह मुक़दमा मेरे पास न्याय हेतु आता तो मैं इस से अच्छा फ़ैसला सुनाता और वह यह कि जिस खेत को नुक़्सान पहुंचा है उसे बक्रियों वाले को दे दिया जाये ताकि वह उस में खेती करे और जानवरों को खेत वाले को दे दिया जाये और जब तक फ़स्ल तय्यार न हो उन्हें इस्तेमाल करे। फिर जब फ़स्ल तय्यार हो जाये तो बक्री वाला खेत वापस कर दे और खेत वाला उस की बकरियाँ वापस कर दे। हज़रत दावूद अ़लै० ने भी इस फ़ैसला को पसन्द फ़रमाया और अपने फ़ैसला को वापस ले लिया।

कुछ रिवायतों से यह मस्अला निकलता है कि दिन में खेत की रखवाली मालिक के ज़िम्मा है और जानवरों

➲की निग्रानी रात में जानवर के मालिक के ज़िम्मा है। सो अगर जानवर दिन में नुक़्सान पहुंचाये तो खेत के मालिक को कोई हर्जाना न मिले गा और अगर रात को चर जायें तो खेत के मालिक को हर्जाना लेने का हक़ है, क्योंकि रात के समय जानवरों की हिफ़ाज़त करना जानवरों के मालिक के ज़िम्मा है (सनाई)

ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ۭ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا ۭ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِي الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ڰ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ۭ وَكَذٰلِكَ نُـْۨجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾ وَزَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٨٩﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۡ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ۭ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿٩٠﴾

और उस को उस का परिवार दिया[२४] और केवल अपनी कृपा से और आ़बिद लोगों की नसीहत के लिये उन के साथ और भी दिये (यानी उन की नस्ल में बर्कत की) ८५. और इस्माई़ल और इदरीस और ज़ुल् क़िफ़्ल का ज़िक्र उन को सुना कि वह तमाम साबिरों की जमाअ़त में से थे[२५] ८६. हम ने उन को अपनी रहमत में दाख़िल किया। बेशक वह नेकों की जमाअ़त में से थे ८७. और (इसी प्रकार हज़रत यूनुस) मछली वाले का ज़िक्र उन को सुना जब वह (क़ौम की सरकशी पर) नाराज़ हो कर चला गया और समझा था कि हम उस (के जाने) पर गिरिफ़्त न करें गे पस उस ने (मछली के पेट के) अंधेरों में (हम को) पुकारा कि तेरे अ़लावा कोई माबूद नहीं तू पाक है बेशक मैं ही ज़ालिमों में से हूँ[२६] ८८. तो हम ने उस की प्रार्थना कुबूल की और उस को ग़म से नजात बख़्शी। और इसी प्रकार हम (इस दुआ़ की बर्कत और असर से हमेशा) ईमानदारों को नजात देते हैं ८९. और ज़करिय्या का (भी) ज़िक्र सुना जब उस ने अपने पर्वरदिगार से दुआ़ की कि ऐ मेरे पर्वरदिगार! तू मुझे अकेला न छोड़ और तू ही सब से अच्छा वारिस है ९०. सो हम ने उस की दुआ़ कुबूल की और उस को यहया (नाम का एक बेटा) बख़्शा और उस की औ़रत को (जो बाँझ थी) दुरुस्त कर दिया। इस में संदेह नहीं कि यह लोग नेक कामों में जल्दी करते थे और (आड़े कामों में) आशा और ख़ौफ़ से हम ही को पुकारते थे। और हम ही से डरा करते थे

....

२४. हज़रत अय्यूब अ़लै० काफ़ी समय तक सख़्त मुसीबत में गिरिफ़्तार रहे। आप बड़े धनवान और काफ़ी बाल-बच्चों वाले थे। अल्लाह तआ़ला ने उन को आज़माइश में डालते हुये माल भी छीन लिया और बच्चों को भी उठा लिया। एक पत्नी को छोड़ कर ग़ुलाम और लौंडी सब चले गये। सारे बदन में कोढ़ की बीमारी हो गयी, बदन में कीड़े पड़ गये। बस्ती वालों ने बस्ती से बाहर निकाल दिया। लेकिन सब्र और शुक्र के साथ सब कुछ सहते रहे और रब का➲

शुक्र अदा करते रहे। काफ़ी समय बीत जाने के पश्चात् अल्लाह से रहम की प्रार्थना की।

एक हदीस में है कि अल्लाह तआला ने उन से फ़रमाया कि ऐ अय्यूब! क्या तुम्हें अपना दोष मालूम है? उन्हों ने उत्तर दिया नहीं। अल्लाह ने फ़रमाया कि तुम्हारा दोष जिस के कारण तुम्हें मुसीबतों में डाला, यह था कि तुम एक मर्तबा बादशाह के दर्बार में गये। उस समय उस ने तुम्हारे सामने ही शरीअ़त के ख़िलाफ़ दो फ़ैसले सुनाये, लेकिन तुम हक़-नाहक़ जानने के बावजूद भी उस को प्रसन्न रखने की ख़ातिर ख़ामोश रहे। बस इसी जुर्म में तुम्हें इतने समय तक आज़माइश में डाले रखा। फिर अल्लाह की कृपा से सारा बदन चाँदी की तरह साफ़ हो गया, बाल-बच्चों को भी जीवित कर दिया और उतने ही और बच्चे अ़ता फ़रमाये। यह भी मतलब हो सकता है कि जितने मर चुके थे वह तो जन्नत में चले गए, और दोबारा बीमारी के बाद उतने ही और पैदा हुये। मतलब यह कि दोबारा पहली जैसी हैसियत के मालिक हो गये (वहीदी)

२५. हज़रत इस्माअ़ील अ़लै० का सब्र यह था कि छुरी से ज़ब्ह होने को राज़ी हो गए और अल्लाह के हुक्म पर जान निछावर करने को राज़ी-ख़ुशी तय्यार हो गये। हज़रत इदरीस, हज़रत नूह के दादा थे। उन का नाम अख़नूख़ था। हज़रत आदम की हयात ही में पैदा हुये और उन की वफ़ात के दो वर्ष पश्चात् संदेष्टा बनाये गये। कहा जाता है कि उन्हों ने ४५० वर्ष की आयु पायी। 'ज़ुल् किफ़्ल', यह हज़रत इल्यास अ़लै० का लक़ब है। कुछ उलमा ने इसे लक़ब (उपनाम)न मान कर बनी इस्राईल का एक अलग मुस्तक़िल संदेष्टा बताया है (और यही सत्य है--- ख़ालिद) (वहीदी) हज़रत ज़ुलकिफ़्ल् नबी थे या नही? इस बारे में उलमा का इख़्तिलाफ़ है। कुछ उलमा का कहना है कि वह नबी थे और कुछ का कहना है कि वह केवल वली थे। इमाम इब्ने जरीर तबरी रह० का कहना है कि इस बारे में ख़ामोशी ही बेहतर है। इमाम इब्ने कसीर का कहना है कि चूंकि इन का बयान नबिय्यों के बयान के साथ आया है इस से उन का नबी होना स्पष्ट है-ख़ालिद

२६. हज़रत यूनुस का क़िस्सा इस प्रकार है कि इन्हों ने अपनी क़ौम वालों को हिदायत की लेकिन वह न माने और अपनी ज़िद ही पर अड़े रहे। हज़रत यूनुस अ़लै० ने उन्हें अ़ज़ाब की सूचना दी और स्वयें बस्ती से निकल गये। उधर जब निश्चित समय पर अ़ज़ाब के आसार ज़ाहिर होने लगे तो बस्ती वालों में खलबली मच गयी और अपने संदेष्टा को तलाश करने लगे, आख़िर कार न पा कर बस्ती वाले स्वयें ही निकल कर एक मैदान में जमा हो कर अल्लाह से रो-रो कर अपने गुनाहों की माफ़ी माँगने लगे। अल्लाह ने उन की दुआ़ को क़ुबूल फ़रमाते हुये अ़ज़ाब को टाल दिया। इधर हज़रत यूनुस ने जब दोबारा बस्ती में आ कर लोगों को अपने स्थानों पर ठीक-ठाक पाया तो बहुत रन्जीदा हुये। और यह सोच कर कि पहले तो वह मुझे झूठा समझ कर मेरी बातों का इन्कार करते थे और अब तो कहीं ज़्यादा झूठा और धोके-बाज़ कहें गे, बस्ती को छोड़ कर दूसरे मुल्क जाने लगे। राह में नदी पार करने के लिये कश्ती पर सवार हुये। कश्ती मंजधार में पहुंच कर डाँवाडोल होने लगी। मल्लाह ने कश्ती पर सवार लोगों से कहा कि अवश्य ही मेरी कश्ती पर मालिक से भागा हुआ गुलाम सवार है, जभी मेरी कश्ती डूबने वाली है। जब तक वह कश्ती पर सवार रहे गा, आगे नहीं बढ़े गी। आख़िर में कुरा डालने की नौबत आयी। उस में हज़रत यूनुस का नाम निकला, चुनान्चे उन्हें दरिया में फेंक दिया गया। पानी में गिरते ही एक बड़ी मछली ने उन्हें समूचा जीवित निगल लिया। उस समय उन्हें ख़याल आया कि अपने मालिक की इजाज़त के बिना बस्ती छोड़ कर निकल भागना यह मेरा दोष है। चुनान्चे उस के पेट में "लाइला-ह इल्ला अन्-त सुब्हा-न-क इन्नी कुन्तु मि-नज़्ज़ालिमीन" (तेरे अ़लावा और कोई दूसरा इबादत के लायक नहीं, तू पाक है। मैं ही ज़ालिमों में से हूँ) पढ़ना आरंभ कर दिया। नजात की दुआ़ मांगी। उस ने दुआ़ क़ुबूल फ़रमा ली और मछली को उन्हें उगल देने का हुक्म दिया। कहा जाता है कि वे मछली के पेट में चालीस दिन तक रहे (वहीदी) यह पूरी तफ़सील सूरःक़लम आयत ४८,४९+सूरःसाफ़्फ़ात आयत १३९,४० और सूरःयूनुस आयत ९८,९९ में देखी जा सकती है-ख़ालिद

وَالَّتِيٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا
وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩١﴾ اِنَّ هٰذِهٖٓ
اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٩٢﴾
وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ۭ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿٩٣﴾
فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ
لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ﴿٩٤﴾ وَحَرٰمٌ عَلٰي قَرْيَةٍ
اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٩٥﴾ حَتّٰٓي اِذَا فُتِحَتْ
يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٦﴾
وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ
اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ
غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٩٧﴾ اِنَّكُمْ وَمَا
تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ۭ اَنْتُمْ لَهَا
وٰرِدُوْنَ ﴿٩٨﴾ لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَاۗءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ۭ

९१. और (मर्दों के अ़लावा) उस औ़रत (मर्‌यम सिद्दीक़ा) का ज़िक्र भी सुना जिसने अपनी शर्मगाह की सुरक्षा की थी फिर हम ने उस में अपनी (तरफ़ से) रूह फूंकी थी[27] और हम ने उस को और उस के बेटे को तमाम लोगों के लिये बहुत बड़ा निशान बनाया था ९२. यह (संदेष्टाओं का समूह) तुम्हारा एक ही गरोह है और मैं तुम्हारा पर्वरदिगार हूँ सो तुम लोग मेरी ही ज़िबादत किया करो ९३. और (लोगों ने) आपस के (एक ही दीन पर चलने के) संबन्ध को तोड़ दिया (लेकिन जान लो कि)सब को हमारी ही तरफ़ फिर कर आना है। ९४. फिर ज़िस किसी ने ईमान्दारी के साथ नेक काम किये हों गे उन की कोशिश की बेक़द्री न हो गी और हम (स्वयँ) उस के आमाल को लिखने वाले हैं ९५. (इन को ख़बर नहीं कि) जिस बस्ती (के लोगों) को हम हलाक करते हैं संभव नहीं कि वह हमारी तरफ़ फिर कर न आयें[28] ९६. फिर जब याजूज-माजूज की रोक खोल दी जाये गी और वह हर एक बुलन्दी से ढलकते हुये चले आयें गे[29] (उस समय क़ियामत के चिन्ह प्रकट हों गे) ९७. और सच्चा वादा निकट आ जाये गा तो काफ़िरों की आँखें खुली की खुली रह जायें गी। कहते हों गे कि हाये कमबख़्ती हम इस(सख़्त तकलीफ़) से बिल्कुल बेख़बर थे, बल्कि सरासर अत्याचार करते रहे (लेकिन आज हम अपनी आँखों से सच्चाई देख रहे हैं) ९८. तुम और तुम्हारे माबूद जिन की तुम अल्लाह को छोड़ कर ज़िबादत करते हो जहन्नम का ईंधन हो। तुम लोग उस में दाख़िल हो गे ९९. अगर यह लोग (तुम्हारे माबूद) सच्चे माबूद होते तो दोज़ख़ में न जाते

....

२७. ओ़साई लोग इस आयत और इस प्रकार की अन्य आयतों से दलील पकड़ते हैं कि हज़रत ओ़सा बिन मर्‌यम अल्लाह थे, इस लिये कि उन को रूहुल्लाह (अल्लाह की रूह) कहा गया है। मगर यह तो कुरआन मजीद का एक मुहावरा है जिसे दूसरे स्थानों पर भी इस्तेमाल किया गया है। सूरः "अलिफ़ लाम्मीम्" की आयत १९ में भी इसी प्रकार की एक आयत है "अल्लाह ने इन्सान को मिट्टी से पैदा किया, फिर इस के बाद इस सिलसिला को नुतफ़ा से जारी किया, फिर उस को ठीक-ठाक किया, फिर उस में अपनी रूह फूंक दी"। तो अगर इस सूरः अन्बिया की आयत ९१ से मसीह का अल्लाह होना साबित होता है, तो फिर तो अलिफ़ लाम्मीम् सज्दा की आयत न० १९ से तमाम इन्सानों का अल्लाह होना साबित होता है। फिर अगर मसीह अ़ले० भी ऐसे ही ख़ुदा और इलाह हैं जैसे सब इन्सान➡

➲हैं, तो इन के मानने में किसी को कलाम नहीं। इस लिये आयः का अर्थ यही है जो मैं ने लिखा है, यानी "फिर हम ने उस मर्यम में अपनी तरफ़ से रूह फूंकी थी"।

२८. इस आयत न० ९५. से मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी यह साबित करते हैं कि हज़रत ईसा का पुनः दुनिया में भेजा जाना असंभव है, चुनान्चे वह इस प्रकार तर्जुमा करते हैं "जिन लोगों को मौत आ गयी दुनिया की तरफ़ उन का लौटना हराम है"। लेकिन उन के तर्जुमे में "ला" का अर्थ नहीं लिया गया है। अरबी ग्रामर को सामने रखते हुये हम ने जो तर्जुमा किया है वही सहीह है यानी "नहीं फिरें गे" (सनाई)

२९. क़ियामत के निकट हज़रत मसीह के आसमान से नाज़िल होने के बाद बादशाह जुल क़रनैन की बनाई गयी दीवार (जिस का ज़िक्र सूरः कहफ़ की आयत न० ९४ में है) को तोड़ कर याजूज-माजूज का लश्कर टूट पड़े गा। यह लोग अपनी जनसंख्या की ज़्यादती की वजह से तमाम बुलन्दी और पस्ती पर छा जायें गे। उन की तादाद इतनी ज़्यादा हो गी कि इन्सानी ताक़त उन को रोक न सके गी। उन की फ़ौजें हर टीला और पहाड़ से फ़िसलती-लुढ़कती चली आ रही हों गी।

आयत न० ९८. का संबोधन मक्का के मुश्रिकों से है जो बुतों की पूजा किया करते थे, यानी "तुम और तुम्हारे यह माबूद सब जहन्नम का ईंधन बनें गे"। सूरः बक़रः की आयत न०२४ में फ़रमाया गया है "उस का ईंधन इन्सान और पत्थर (बुत) हो गे"। इस का यह अर्थ नहीं कि बुतों को भी सज़ा मिले गी, बल्कि मतलब यह है कि उन को देख कर इन की निराशा और जिहालत में इज़ाफ़ा हो गा, और वह सोचें गे कि हम जिन की पूजा करते थे वास्तव में वह किसी लायक़ न थे। आयत न० ९८ में "मा ताबुदू-न" (जिन को तुम पूजते थे) आया है। यहाँ "मा" से मुराद केवल बेजान बुत ही हों गे। बुतों के अलावा जिन ज़िन्दा इन्सानों को माबूद समझते थे (जैसे हज़रत उज़ैर और फ़रिश्ते वग़ैरह) तो यह जहन्नम में बुतों की तरह नहीं जलाये जायें गे। चुनान्चे आगे की आयत में फ़रमा दिया "जिन के हक़ में हमारी तरफ़ से नेक वादा गुज़र चुका है वह उस दोज़ख़ से दूर बैठे रहें गे"। (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

وَكُلٌّ فِيهَا خَٰلِدُونَ ۝٩٩ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ۝١٠٠ إِنَّ ٱلَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُم مِّنَّا ٱلْحُسْنَىٰٓ أُو۟لَٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ۝١٠١ لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا وَهُمْ فِى مَا ٱشْتَهَتْ أَنفُسُهُمْ خَٰلِدُونَ ۝١٠٢ لَا يَحْزُنُهُمُ ٱلْفَزَعُ ٱلْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّىٰهُمُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ هَٰذَا يَوْمُكُمُ ٱلَّذِى كُنتُمْ تُوعَدُونَ ۝١٠٣ يَوْمَ نَطْوِى ٱلسَّمَآءَ كَطَىِّ ٱلسِّجِلِّ لِلْكُتُبِ كَمَا بَدَأْنَآ أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيدُهُۥ وَعْدًا عَلَيْنَآ إِنَّا كُنَّا فَٰعِلِينَ ۝١٠٤ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِى ٱلزَّبُورِ مِنۢ بَعْدِ ٱلذِّكْرِ أَنَّ ٱلْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِىَ ٱلصَّٰلِحُونَ ۝١٠٥ إِنَّ فِى هَٰذَا لَبَلَٰغًا لِّقَوْمٍ عَٰبِدِينَ ۝١٠٦ وَمَآ أَرْسَلْنَٰكَ إِلَّا

और सब (आबिद और माबूद) उस में हमेशा रहें गे। १००. वह (मारे तक्लीफ़ के) सख़्त चिल्लायें गे और उस में किसी की न सुनें गे १०१. इस में संदेह नहीं कि जिन के बारे में हमारी तरफ़ से नेक वादा गुज़र चुका है उस दोज़ख़ से दूर बैठे रहें गे १०२. उस की भनक भी उन के कानों में न पड़े गी[३०] बल्कि वह अपनी मनमानी कामनाओं (और खुशहाली) में हमेशा रहें गे (क्योंकि वह अल्लाह का न ख़त्म होने वाला इनाम हो गा) १०३. उन को (क़ियामत की) बड़ी घबराहट परेशान न करे गी और उन की मुलाक़ात को फ़रिश्ते यह कहते हुये आयें गे कि यही वह दिन है जिस का आप लोगों से वादा किया जाता था १०४. (यह कब हो गा?) जिस रोज़ हम आकाश को लपेट लें गे जिस➲

رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۷﴾ قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۰۸﴾

प्रकार लिखे दस्तावेज़ जमा कर के लपेटे जाते हैं। जैसा हम ने पहली बार मख़्लूक़ को पैदा किया था इसी प्रकार उन को लौटायें गे। यह वादा हमारे ज़िम्मा है। बेशक हम करने वाले हैं। १०५. और ज़बूर में (जो हज़रत दावूद पर नाज़िल हुयी थी) हम ने आवश्यक उपदेशों के बाद लिख दिया था कि (जन्नत की) ज़मीन के वारिस मेरे परहेज़गार बन्दे हों गे[३१] १०६. इस (क़ुरआन पाक) में निःसंदेह अ़िबादत करने वालों के लिये तब्लीग़ है १०७. हम ने तुझ को ऐ रसूल! आ़म जहानों के लिये रहमत बना कर (और तमाम लोगों पर रहमत करने के लिये) भेजा है[३२] १०८. (पस) तू (उन से) कह कि मेरी तरफ़ बस यही इल्हाम होता है कि तुम सब लोगों का माबूद एक ही है, तो क्या तुम उस के फ़रमा-बर्दार न हो गे?

....

३०. 'उन के कानों में न पड़े गी' इस लिये कि वह न तो स्वयँ ही शिर्क की तालीम दे गये और न अपनी अ़िबादत कराने पर वह राज़ी थे, बल्कि ख़्वाह-मख़्वाह लोगों ने उन को यह मर्तबा दे रखा है, जैसे हज़रत मसीह को अल्लाह और अल्लाह का बेटा बना दिया, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी को मुश्किल कुशा बना दिया। (सनाई) हज़रत अ़ली रज़ि० ने आयत न० १०१ पढ़ कर फ़रमाया कि मैं, अबू बक्र, उमर, उसमान, तल्हा, ज़ुबैर, सअ़द और अ़ब्दुर्रहमान सभी इस आयत में शामिल हैं। आयत न० १०३ में "बड़ी घबराहट" से क़ियामत का दिन मुराद है। एक हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तीन लोग क़ियामत के दिन मुश्क के चबूतरों पर हों गे और उन को क़ियामत का कुछ भी डर और ख़ौफ़ न हो गा (१) इमाम, जिस से मुक़्तदी राज़ी हों (२) पांचों वक़्तों की अज़ान देने वाला (मुअ़ज़्ज़िन) (३) वह गुलाम जो अपने मालिक का हक़ अदा करने के साथ-साथ अल्लाह का भी पूरा-पूरा हक़ अदा करे। (वहीदी)

३१. अल्लाह तआ़ला का अपने नेक बन्दों से वादा है कि उन को दुनिया और आख़िरत में कामियाबी अ़ता करे गा और दुनिया की ज़मीन और आख़िरत में जन्नत की ज़मीन का वारिस बनाये गा। यह वादा अल्लाह तआ़ला ने सूरः आराफ़ रुकूअ़ १५, आयत १२८, सूरः मोमिन- रुकूअ़ ६, आयत ५१, सूरः नूर- रुकूअ़ ७, आयत न० ५५ में भी किया है। अल्लाह तआ़ला ने इस वादे का एलान अपनी किताबों में किया, लौहे महफ़ूज़ में लिख दिया उम्मुल् किताब में दर्ज कर दिया है। तमाम संदेष्टाओं ने अपने ज़माना में इस का एलान भी किया। हज़रत दावूद अ़लै० की किताब ज़बूर में है कि "सादिक़ ज़मीन के वारिस हों गे" (ज़बूर- ३७, २९) चुनान्चे उस उम्मत के वफ़ादार और कामिल बन्दे लम्बे समय तक ज़मीन के वारिस रहे। पूरब से पश्चिम तक अल्लाह के क़ानून के अनुसार बादशाहत क़ाइम की और अ़दल व इन्साफ़ के झन्डे गाड़ दिये, इस्लाम के दीन का डंका चारों ओर बजा दिया और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की यह भविष्यवाणी पूरी हुयी जिस में आप ने फ़रमाया: "अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन को मेरे लिये समेट दिया तो मैं ने उस के पूरब और पश्चिम के दोनों सिरों को देखा और मेरी उम्मत उन दोनों सिरों तक शासन करे गी"। इसी प्रकार की एक दूसरी भविष्यवाणी इमाम महदी और हज़रत अ़ीसा मसीह अ़लै० के ज़माना में पूरी हो कर रहे गी। (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

३२. नेकों के लिये तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का सरापा रहमत होना ज़ाहिर है, लेकिन बुरों के लिये भी आप की ज़ात पाक रहमत है। इस का सबूत यह है कि जब से आप दुनिया में तशरीफ़ लाए चेहरा बिगड़ना, ज़मीन में धंसना और आ़म अ़ज़ाब का आना बन्द हो गया। कुछ उलमा का कहना है कि "आ़लमीन" (जहान, संसार) से

मुराद मोमिन लोग हैं। एक हदीस शरीफ़ में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मैं भी आदमी ही हूँ, आदमियों की तरह गुस्सा भी करता हूँ, इसलिये अगर अपनी उम्मत में से मैं ने किसी को बुरा-भला कहा, या लानत भेजी, तो ऐ अल्लाह! तू उस पर रहम कर"। (वहीदी)

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ وَ اِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ ﴿۱۰۹﴾ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿۱۱۰﴾ وَاِنْ اَدْرِيْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿۱۱۱﴾ قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿۱۱۲﴾

१०९. फिर अगर वह मुंह मोड़ें तो तू उन से कह दे कि मैं तुम सब को बराबर तौर पर डरा चुका हूँ और उस की मुझे ख़बर नहीं कि जिस अज़ाब का तुम से वादा किया जाता है वह निकट है या दूर ११०. कुछ संदेह नहीं कि वह (अल्लाह) बुलन्द आवाज़ को (भी) जानता है और जो कुछ तुम छुपाते हो उसे भी जानता है १११. और मुझे (तो यह भी) मालूम नहीं कि यह (चन्द दिन की मुहलत) संभवत: कुछ आज़माइश है और एक विशेष समय तक तुम को फ़ाइदा पहुंचाना है ११२. (यह कह कर रसूल ने दुआ में) कहा: ऐ मेरे पर्वरदिगार! हक़ के साथ फ़ैसला फ़रमा और हमारा पर्वरदिगार बड़ा रहम करने वाला है और तुम्हारी बातों पर जो तुम कहते हो उसी से मदद चाही जाती है।

सूरः हज्ज-22

(٢٢) سُوْرَةُ الْحَجِّ مَدَنِيَّةٌ (١٠٣)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ ﴿۱﴾ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ﴿۲﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ

सूरः हज्ज (हज्ज) मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी[1]। इस सूरः में ७८ आयतें और १० रुकूअ़ हैं।

आरंभ अल्लाह के शुभ नाम से जो बड़ा दयालु और कृपाशील है।

१. लोगो (सुनो) तुम अपने पर्वरदिगार से डरते रहो, कुछ संदेह नहीं कि उस (क़ियामत की) घड़ी की हलचल एक बहुत बड़ी वस्तु है[2]। २. जिस दिन तुम उस को देखो गे तो दूध पिलाने वाली मातायें अपनी औलाद को, जिसे उन्हों ने दूध पिलाया हो गा भूल जायें गी और हर गर्भवती अपना गर्भ पात कर दे गी[3] (मारे दहशत के) तुम सब लोगों को मतवाले देखो गे, हालाँकि वह मतवाले {मस्त} न हों गे, बल्कि अल्लाह का दन्ड सख़्त हो गा

➲(मारे ग़म के वह मस्त नज़र आयें गे) ३. और कुछ लोग केवल कमइ़ल्मी से अल्लाह की शान में (जिहालत से) झगड़ते हैं

१. सूरः हज्ज मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी और इस में ७८ आयतें हैं। इमाम क़तादा रह० फ़रमाते हैं कि आयत न० ५२ से ५५ तक (चार आयतें) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयीं। हदीस शरीफ़ में आया है कि इस सूरः को दूसरी सूरतों पर यह फ़ज़ीलत है कि इस में दो सज्दे हैं। जो कोई इन दोनों सज्दों को न करे वह इस सूरः को न पढ़े। अहले हदीस और इमाम हंबल वग़ैरह का इसी पर अ़मल है, लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा रह० फ़रमाते हैं कि इस सूरः में एक ही सज्दा है (यानी केवल आयत न० १८ में) दूसरा सज्दा न नमाज़ का है और न ही तिलावत का। लेकिन इमाम साहब का यह क़ियास हदीस के मुक़ाबले में बातिल है। सहीह मज़हब यही है कि दोनों आयतों पर पहुंच कर दो सज्दे किये जायें (वहीदी)

२. उलमा का कहना है कि भूकंप क़ियामत के निकट रमज़ान की पन्द्रहवीं तिथि को आये गी, इस के पशचात् सूरज पश्चिम से निकले गा। एक सहीह हदीस के अनुसार यह आयः सफ़र में नाज़िल हुयी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम लोगों को मालूम है कि वह कौन सा दिन है? इस दिन अल्लाह तआ़ला हज़रत आदम से फ़रमाये गा कि ९९९ को दो ज़ख़ के लिये और एक को जन्नत के लिये मुन्तख़ब कर लो। यह सुन कर मुसलमान बहुत रन्जीदा हुये तो आप ने फ़रमाया: साबितक़दम रहो, नेक अ़मल करते रहो और प्रसन्न हो जाओ, हर नबुव्वत से पूर्व जाहिलियत का काल गुज़रा है, तो यह ९९९ की गिन्ती उन लोगों से पूरी हो जाये गी। अगर इन से भी पूरी न हो गी तो मुनाफ़िक़ों से पूरी की जाये गी। मुझे आशा है कि जन्नत में आधे से ज़्यादा तुम लोग हो गे (वहीदी)

३. फिर चूंकि इस सूरः में हज्ज का ज़िक्र है इस लिये यह सूरः इसी नाम से प्रसिद्ध हुयी। इस सूरः का आरंभ अल्लाह तआ़ला ने क़ियामत के हालात से फ़रमाया है। सर्व प्रथम अपने से डरने का हुक्म दिया, इस के पश्चात् क़ियामत की दर्दनाक घटनाओं को बयान करते हुये फ़रमाया कि उस दिन सख़्त भूकंप आये गा, आदमी डर के मारे होश-हवास खो बैठे गा, दूध पिलाने वालियाँ अपने दूध मुंहे बच्चों को भूल जायें गी और गर्भवती महिलाओं का गर्भपात हो जाये गा। आयत न० ३ और ४ में क़ियामत का ज़िक्र फ़रमा कर उन लोगों की सख़्त आलोचना की है जो क़ियामत के आने के बारे में इख़्तिलाफ़ करते हैं और उन्हें शैतान का पैरूकार कहा गया है। आयत न० ५ से क़ियामत के इन्कारियों के शक व शुब्हात और सन्देह का रद्द फ़रमाया है। और सबूत में दो दलीलें यहाँ ज़िक्र फ़रमाई हैं जिन में अल्लाह तआ़ला की मुकम्मल क़ुदरत का पूरा सबूत है। ज़ाहिर है जो ज़ात इतनी ज़बर्दस्त क़ुदरत की मालिक हो, उस के नज़दीक मुर्दों को पुनः जीवित कर देना कुछ भी कठिन नही है।

पहली दलील में इन्सान की पैदाइश की कैफ़िय्यत का बयान है। हज़रत आदम को मिट्टी से पैदा किया फिर उन की नस्ल को पानी से जारी किया। मिट्टी और पानी दोनों ही बेजान वस्तुयें हैं। फिर पानी (वीर्य) से रक्त बनाया और उस से गोश्त का लोथड़ा। फिर गोश्त में हाथ, पैर, आँख, कान, नाक वग़ैरह बना कर रूप बना दिया, और कभी लोथड़े ही को माँ के पेट से गिरा दिया। फिर बच्चा बना कर माँ के पेट से बाहर निकाला और जवान किया। फिर कभी तो जवानी ही में मौत दे दी और कभी बुढ़ापे तक पहुंचा दिया.........अनुमान लगायें, जो अल्लाह इतनी हालतें बदल कर इन्सान को बना सकने की क्षमता रखता हो, वह मरने के बाद पुनः क्यों कर जीवित नहीं कर सकता है? और क्योंकर उन सड़ी-गली और मिट्टी में मिली हुयी हड्डियों में जान नहीं डाल सकता है?

क़ियामत के आने की दूसरी दलील ज़मीन की हरियाली से दी। जब ज़मीन का पानी सूख जाता है तो भूमि की हरियाली समाप्त हो जाती है और पेड़-पौधे जल कर ख़ाक हो जाते हैं, हरियाली का नाम-निशान नहीं रहता है, लेकिन वर्षा होते ही पुनः उन में जान पड़ जाती है और देखते-देखते सारी ज़मीन हरी हो जाती है। तो जो अल्लाह इस ज़मीन को ख़ाक कर के पुनः हरा भरा कर सकता है, क्या इस प्रकार इन्सान को भी ख़ाक हो जाने➲

➲के बाद पुनः जीवित नहीं कर सकता? निःसंदेह ऐसा कर सकता है, इस में कोई आश्चर्य की बात नहीं। आयत न० ६ से यही परिणाम निकलता है कि क़ियामत आ कर रहे गी और सब को पुनः जीवित हो कर अल्लाह के सामने हाज़िर हो कर अपने-अपने कर्मों का फल भोगना है (तफ़्सीर मिर्ज़ा हैरत)

एक हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मर्द का वीर्य माँ के पेट में चालीस दिन तक पानी की शक्ल में रहता है, फिर इतने ही दिनों तक जमे हुये रक्त की शक्ल में, फिर इतने ही दिनों तक गोश्त का लोथड़ा (बच्चा) बन जाता है। फिर १२० दिन बीत जाने के बाद एक फ़रिश्ता भेजा जाता है जो उस के अन्दर रूह फूंकता है और उस की तक़्दीर में चार बातें लिखता है (१) उम्र (२) रोज़ी (३) नेकी (४) अथवा बदी। क़सम है अल्लाह की जिस के अ़लावा कोई माबूद नहीं, तुम में से एक शख़्स जन्नत हासिल करने के काम करता है यहाँ तक कि उस के और जन्नत के दर्मियान एक गज़ की दूरी रह जाती है कि अल्लाह का लिखा हुआ ग़ालिब आ जाता है और वह दोज़ख़ वालों का सा अ़मल करने लग जाता है (और वह जहन्नमी हो कर मरता है) इसी प्रकार एक व्यक्ति जहन्नम वालों के से अ़मल करता रहता है यहाँ तक कि उस के और जहन्नम के दर्मियान एक गज़ की दूरी रह जाती है कि अल्लाह का लिखा हुआ ग़ालिब आ जाता है और वह जन्नत वालों के से अ़मल करने लगता है और जन्नती हो कर मरता है (मिश्कात)

उम्र की इन्तिहा' से मुराद वह बुढ़ापा है जिस में दिमाग़ का बिगाड़ पैदा हो जाता है। दिमाग़ कमज़ोर हो जाता है, बहकी-बहकी बातें करने लगता है। हज़रत इक्रमा फ़रमाते हैं कि जो कोई बराबर क़ुरआन की तिलावत करता रहता है वह बुढ़ापे में इस बला से सुरक्षित रहता है। (वहीदी) सूरः हज्ज को क़ियामत के ज़िक्र से इस लिये भी आरंभ किया है कि हज्ज की यात्रा में कठिनाइयों और क़ियामत के हालात में बड़ी हद तक समानता है। अरफ़ः के मैदान में उपस्थिति और मिना के मैदान में डेरा डालना, यह सब क़ियामत को याद दिलाने वाले दृश्य हैं (राज़)

فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ۝٣
كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَ
يَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ
اِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ
مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ
مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ؕ
وَنُقِرُّ فِى الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى
ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا اَشُدَّكُمْ ۚ
وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى
اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ
وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا

और (बिहूदा ख़ुराफ़ात और एतराज़ करने में) सरकश शैतानों की पैरवी करते हैं ४. अल्लाह ने फ़ैसला कर रखा है कि जो कोई उस (शैतान) से दोस्ती करे गा तो वह अवश्य ही उस को गुमराह करे गा और दोज़ख़ के अ़ज़ाब की तरफ़ उस को ले जाये गा। ५. तू (ऐ रसूल!) कह दे कि अगर तुम जी उठने में संदेह करते हो तो (ज़रा ग़ौर करो कि) हम ने तुम को (यानी तुम्हारे बाप आदम को) मिट्टी से बनाया फिर (तुम्हारा सिलसिला) नुत्फ़ा {वीर्य} से (चलाया) फिर लोथड़े से (तरक़्क़ी देकर कच्चे और पक्के गोश्त की शक्ल में बनाते हैं) फिर (उस को तरक़्क़ी देकर अक्सर तो पक्का और) मज़बूत गोश्त से, और (बाज़ समय) कच्चे गोश्त से पैदा करते हैं ताकि तुम पर (क़ुदरत के चमत्कार) स्पष्ट कर दें और हम तुम को अर्हाम➲

الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْيِ

(गर्भाषय) में एक सुनिश्चित समय तक ठहरा रखते हैं फिर तुम को ऐसे हाल में निकालते हैं कि तुम बच्चा होते हो, फिर हम तुम को शक्ति प्रदान करते हैं ताकि तुम अपनी जवानी को पहुंच जाओ और बाज़ तुम में (पहले ही) मर जाते हैं और कुछ अन्तिम आयु तक पहुंचते हैं (जिस का परिणाम यह होता है) कि ज़िल्म के बाद भी (उन को ख़बर नहीं रहती और) वह कुछ भी नहीं जानते। और (सुनो! वर्षा से पहले) तुम भूमि को सूखी देखते हो फिर जब हम उस पर पानी उतारते हैं तो लहलहाती है और (फलती) फूलती है और हर प्रकार की हरियाली निकालती है ६. यह (सब घटनायें इस नतीजा पर पहुंचाती हैं कि) निःसंदेह अल्लाह ही सच्चा माबूद है और यह कि वह मुर्दों को जीवित करे गा।

الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝ ثَانِيَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ لَهٗ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ِۨ اطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ِۨ انْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۣ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ۝ يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۝ يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗٓ اَقْرَبُ

और यह (भी) कि वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। ७. और यह (भी इस से साबित है) कि क़ियामत आने वाली है जिस में तनिक भर संदेह नहीं और यह कि अल्लाह मुर्दों को जो क़ब्रों में पड़े हैं उठाये गा ८. कुछ लोग बग़ैर ज़िल्म और बग़ैर हिदायत के और बग़ैर किसी रोशन {स्पष्ट} किताब के अल्लाह की शान में (महज़) तकब्बुर(घमंड) की वजह से पहलू फेर कर झगड़ा करते हैं[4]। और मुंह फाड़-फाड़ कर अल्लाह की किताब पर एतराज़ करते हैं ९. ताकि (आ़म लोगों को) अल्लाह की राह से गुमराह करें। उन के लिये दुनिया में ज़िल्लत है और क़ियामत के रोज़ हम उन को दोज़ख़ के अ़ज़ाब (का स्वाद) चखायें गे १०. (उस समय उन से कहा जाये गा कि) यह (बुरा दिन तुम को) तुम्हारे हाथों की कर्तूतों से मिला है और (जानो कि) अल्लाह बन्दों पर अत्याचार जायज़ नहीं रखता। ११. (यह सुन कर भी) कुछ लोग ऐसे हैं कि अल्लाह की ज़िबादत (गोया एक) किनारे पर हो कर करते हैं[1] (यानी अपने मतलब से करते हैं) फिर अगर उन को कोई लाभ पहुंच जाये तो तसल्ली पा जाते हैं और अगर उन को कोई हानि पहुंचे तो मुंह उठा कर (कुफ़्र की तरफ़) चल देते हैं (सच पूछो तो) इन लोगों ने दुनिया और आख़िरत (दोनों में) घाटा पाया (इसी वास्ते यह कहना बिल्कुल

सहीह है कि) यही खुल्लम-खुल्ला नुक़्सान है १२. भला इस से भी अधिक कोई हानि हो सकती है कि अल्लाह के अ़लावा ऐसी चीज़ों को पुकारते हैं जो न उन को नुक़्सान पहुंचा सकें और न लाभ पहुंचा सकें। यही तो परले दर्जे की गुमराही है १३. (इस से बढ़ कर गुमराही क्या हो गी कि) ऐसे लोगों को पुकारते हैं जिन के पुकारने का नुक़्सान, (उनको पुकारने के) नफ़ा से अधिक क़रीब है[६]।

....

४. यानी न तो उस को पैदाइशी ज्ञान है और न ही अक़्ल से काम लेता है और न ही उस के पास किसी आसमानी किताब की दलील है, बल्कि महज़ बाप-दादाओं की अंधी तक़्लीद में पड़ कर झगड़ा करता है। और उन्हीं के रस्म व रिवाज को सनद (प्रमाण) के तौर पर पेश करता है। लेकिन यह दलील किसी काम की नहीं, क्योंकि जिस प्रकार यह बेवकूफ़ है इसी प्रकार इस के बाप-दादा भी बेवकूफ़ थे, उन को भी कुछ ज्ञान न था। कहा गया है कि यह आयत नज़्र बिन हारिस, या अबू जेहल, या किसी अन्य काफ़िर के बारे में नाज़िल हुयी। "जामिउल बयान" के मुफ़स्सिर रह० लिखते हैं कि यह आयत मुक़ल्लिदों की तक़्लीद के रद्द में बहुत ही ज़बर्दस्त दलील है (वहीदी)

क़ब्रों से पुन: जीवित किये जाने को दलीलों से साबित करने के बाद आयत न० ८ में फ़रमाया: कितने ही लोग हैं जो अल्लाह की आयतों को लेकर झगड़ते हैं, हालाँकि उन की हालत यह है कि न तो उन के पास कुछ ज्ञान है और न ही उन को हिदायत ही मिली है और न ही कोई किताबी दलील है। किसी बात को हक़ साबित करने के लिये इन्हीं तीन दलाइल की अवश्यक्ता पड़ती है। इन के पास जब इन तीन दलीलों में से कुछ भी नहीं है, इस लिये इन को लाख समझाने की चेष्टा की जाये सब बेकार है- भैंस के आगे बीन बजाओ भैंस खड़ी पगुराए- अन्त में यह सर हिला दें गे कि मेरे तो कुछ भी पल्ले नहीं पड़ा।

यह आयत क़ुरआन करीम की बहुत ही अहम आयतों में से एक है। इस आयत में अल्लाह के बारे में बिला ज्ञान के लड़ाई-झगड़ा करने की तरफ़ इशारा है- और यही हालत क़ुरआन करीम के नज़दीक जिहालत, गुमराही, लड़ाई-झगड़ा, दंगा-फ़साद, कीना, तअ़स्सुब और मज़हबी गरोहबन्दी की जड़ और बुनियाद है (तर्जुमान-आज़ाद रह०)

५. शाने नुज़ूल:- बुख़ारी, इब्ने शैबा, इब्ने मुन्ज़िर और इब्ने अबी हातिम आदि में इस आयत का शाने नुज़ूल यह बयान किया गया है कि मदीना शरीफ़ के आस-पास के कुछ देहाती (बद्दू) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हाथ पर इस्लाम लाये। इस्लाम लाने के बाद जब उन के धन-दौलत में बढ़ोतरी होती और उन की आर्थिक स्तिथि (माली हालत) बेहतर होती, तो इस्लाम की प्रशन्सा करते, लेकिन इत्तिफ़ाक़ से अगर उन के हालात में तब्दीली आती और उन की तिजारत आदि में नुक़्सान पहुंचता तो इस्लाम की बुराइयाँ बयान करने लग जाते और इस्लाम से मुर्तद हो जाते। इन्हीं लोगों और इन जैसे दूसरे लोगों के बारे में यह आयत नाज़िल हुयी--- इस आयत का निचोड़ यह है कि अल्लाह के नज़दीक वही इस्लाम स्वीकार है जो दिल से कुबूल किया जाए और उस पर पूरे इख़्लास के साथ अ़मल किया जाये। जिस में इख़्लास नहीं वह अल्लाह के हाँ हर्गिज़ मक़्बूल नहीं। (अहसनुल फ़वाइद)

६. आयत न० १२ में फ़रमाया गया कि बुतों की पूजा करने वालों को उन के बुत कुछ भी हानि अथवा लाभ नहीं पहुंचा सकते। आगे आयत न० १३ में फ़रमाया गया कि बुतों की पूजा-पाठ करने से उन बुतों से लाभ से ज़्यादा हानि पहुंचने वाली है। मतलब यह है कि आयत १२ में तो दुनिया का हाल बयान किया गया है कि अगर उन बुतों की कोई पूजा करता है तो उस को कुछ लाभ नहीं पहुंचे गा और अगर कोई पूजा न करे तो उस को हानि भी नहीं पहुंचे गी। और आयत १३ में आख़िरत का हाल बयान किया गया है कि दुनिया में जिस प्रकार बुतों की पूजा करने वालों का बुतों से नफ़ा-नुक़्सान पहुंचने का अक़ीदा ग़लत है, आख़िरत में उन लोगों की बुत परस्ती का नुक़्सान जो आख़िरत के अ़ज़ाब से पहुंचने वाला है वह महज़ ख़याली (ख़ाली-ख़ूली) नहीं, बल्कि यक़ीनी है, इस लिये बुतपरस्ती में लाभ से अधिक हानि और केवल हानि ही है। (अहसनुल फ़वाइद/इब्ने कसीर, ख़ाज़िन वग़ैरह)

مِنْ نَّفْعِهٖ ۭ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ﴿١٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿١٤﴾ مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَاۗءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ﴿١٥﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ﴿١٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـِٕيْنَ وَالنَّصٰرٰى وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا ڰ اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١٧﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَاۗبُّ

(इसी लिये) ऐसे दोस्त भी बुरे और ऐसा कुंबा (खानदान) भी बुरा (जो बुरे कामों की तरफ़ दौड़ते हों)१४. मगर जो लोग अल्लाह के हुक्मों पर ईमान लाये और उन्होनें नेक अ़मल किये हैं, अल्लाह उन को जन्नतों में दाख़िल करे गा जिन के नीचे नहरें जारी हैं। निःसंदेह अल्लाह तआ़ला जो इरादा करे, कर देता है (वह तो सब का मालिक है और सब के हाल से अवगत है) १५. जो कोई (अपने ख़याल में) यह गुमान किये बेठा है कि अल्लाह दुनिया और आख़िरत में उस की मदद न करे गा तो उसे चाहिये कि ऊपर छत की तरफ़ एक रस्सी ताने (जिस के साथ अपनी फांसी लगाये) फ़िर उसी को काट दे (जिस के कटने से वह ज़मीन पर गिर कर मर जाये) फिर वह देखे कि क्या उस की इस तदबीर से उस का रंज व ग़म दूर हो जाये गा७? १६. इसी प्रकार हम ने इस(कुरआन)मे खुले-खुले आदेश नाज़िल किये हैं (पस तुम उन पर अ़मल करो और दिल से जानो कि) अल्लाह जिस को चाहता है हिदायत देता है। १७. (हाँ, बनी आदम में जो धार्मिक इख़्तिलाफ़ है) ईमानदार मुसलमान, यहूदी, साबी (अर्थात बेदीन) अ़ीसाई, मजूसी (आग की पूजा करने वाला) और (बुतों की पूजा करने वाले) मुश्रिक, बेशक अल्लाह क़ियामत के दिन उन के दर्मियान स्पष्ट निर्णय करे गा (ऐसा कि किसी को उस फ़ैसले से इन्कार की गुन्जाइश न रहे गी) अल्लाह हर एक चीज़ पर स्वयँ हाज़िर {गवाह} है (उस की कुदरत का चमत्कार तमाम दुनिया में नज़र आ रहा है) १८. क्या तुम नहीं देखते कि जो मख़्लूक़ आसमान में है (यानी फ़रिश्ते इत्यादि) और जो (मख़्लूक़) ज़मीन में है और सूरज और चाँद-सितारे, पहाड़, दरख़्त, चार-पाये

....

७. 'रंज व ग़म दूर हो जाये गा' मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला अवश्य ही अपने सन्देष्टा की सहायता करे गा और इस्लाम को तरक़्क़ी दे गा। अगर काफ़िरों को इस बात पर हसद और गुस्सा है तो बस यही तदबीर उन के गुस्सा को दूर करने की है कि वह स्वयँ फाँसी लगा कर मर जाएं। और सन्देष्टा के ख़िलाफ़ चाहे जो चाल चलें अपने उद्देश्य में कामियाब नहीं हो सकते। कुछ उलमा ने यह भी तर्जुमा किया है "उस को चाहिये कि एक रस्सी आसमान तक भी लटकाले और संदेष्टा की मदद जो अल्लाह की तरफ़ से आ रही है उस को काट दे"। और यह भी तर्जुमा किया गया है "जो कोई यह समझता है कि अल्लाह तआ़ला उस को दुनिया और आख़िरत में रोज़ी नहीं

देने का वह एक रस्सी छत से लटकाये और फाँसी लगा कर मर जाए फिर देखे कि इस तदबीर से उस को रोज़ी मिलती है या नहीं, और उस का गुस्सा दूर होता है या नहीं?"

शेख अब्दुल क़ादिर रह० फ़रमाते हैं कि दुनिया की तक्लीफ़ में जो कोई अल्लाह से निराश हो कर उस की बन्दगी छोड़ दे और झूठी चीज़ें जैसे बुत आदि को पूजने लग जाये जिन को न बुराई का इख़्तियार है न भलाई का, वह अपने दिल को मुतमइन करने को यह सूरत क़यास (तसव्वुर) कर ले जैसे एक शख़्स एक ऊँची रस्सी से लटक रहा है अगर चढ़ नहीं सकता तो आशा है कि रस्सी ऊपर खींचे तो वह चढ़ जाये। और जब रस्सी काट ही दी तो फिर किस बात की आशा रह गई। यहाँ पर "अल्लाह से आशा" को "रस्सी" कहा गया है और आसमान से "ऊँचाई" मुराद है (वहीदी) मतलब यह है कि अगर कोई शख़्स अल्लाह के बारे में ऐसा बदगुमान है कि अल्लाह उस की आवश्यक्ता पूरी नहीं करता और उस की तरफ़ कोई तवज्जुह नहीं देता है, तो ऐसे शख़्स को चाहिये कि अपनी ज़िन्दगी की फ़िक्र करे, क्योंकि उस की ऐसी ज़िन्दगी जो उसे अल्लाह से बदगुमान करती हो, मौत उस से बेहतर है ताकि उस को पूरी हक़ीक़त मालूम हो सके और जान ले कि मैं ग़लती पर था। (सनाई)

وَكَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ ۖ وَكَثِيرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۗ وَمَن يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّكْرِمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۩ ﴿١٨﴾ هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّن نَّارٍ يُصَبُّ مِن فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ ﴿١٩﴾ يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ﴿٢٠﴾ وَلَهُم مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيدٍ ﴿٢١﴾ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٢٢﴾ إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٢٣﴾ وَهُدُوا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ وَهُدُوا إِلَىٰ صِرَاطِ الْحَمِيدِ ﴿٢٤﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا

और बहुत से इन्सान भी अल्लाह ही को सज्दा करते हैं (हाँ, कुछ पूरे आज्ञाकारी हैं[८]) और बहुत से लोगों (की बदआमाली, कुफ़्, शिर्क और अन्य बुराइयों की वजह से उन) पर अज़ाब वाजिब {साबित} हो चुका है। और जिस को अल्लाह ही ज़लील करे तो उस को कोई भी इ़ज़्ज़त नहीं दे सकता। कुछ संदेह नहीं कि अल्लाह (ऐसा शक्ति शाली, क़ुदरत रखने वाला और क़य्यूम है कि) जो कुछ चाहता है कर देता है[९] १९. (अस्ल पूछो तो) यह लोग (मोमिन और काफ़िर) दो विरोधी गरोह हैं (यह लोग) अपने पर्वरदिगार के बारे में झगड़ते हैं[१०], सो जो लोग काफ़िर हैं उन के लिये आग का वस्त्र तय्यार कराया जाये गा। उन के सरों के ऊपर से सख़्त गर्म पानी डाला जाये गा २०. जिस के साथ उन के पेटों के अन्दर की अंतड़ियाँ और (बाहरी) चमड़े गल जायें गे २१. और उन को मारने के लिये लोहे के गुर्ज़ हों गे[११] (जिन से उन की हड्डियाँ चूर-चूर की जायें गी) २२. जब कभी उस (जहन्नम) से मारे ग़म के निकलना चाहें गे तो उसी में लौटा दिये जायें गे (और कहा जाये गा कि) जलाने वाला दन्ड चखते रहो (कभी भी इस अज़ाब से न निकलो गे) २३. (इन के मुक़ाबिल) जो लोग ईमान ला कर नेक अ़मल करते हैं उन को अल्लाह तआ़ला जन्नतों में दाख़िल करे गा जिन

के नीचे नहरें जारी होंगी, उन (बाग़ों) में उन को सोने-चाँदी और मोतियों के कंगन पहनाए जायें गे (अस्ल बनावट तो उन की दर्जे के एतबार से सोने अथवा चाँदी की हो गी, मगर मोती उन में जुड़े हों गे) और वस्त्र उन का रेशमी हो गा (इस लिये कि दुनिया में वह नेक कार्य करते रहे) २४ और पाक कलाम बोलने की उन को हिदायत की गयी थी, और अल्लाह हमीद {बिनियाज़} की राह उन को सुझाई गयी थी (यह तो उन लोगों का ज़िक्र है जो अल्लाह के हो रहे लेकिन) २५. जो लोग काफ़िर हैं

....

८. उस की आज्ञापालन करते हैं, उसी से मांगते हैं और उसी को अपना माबूद जानते हैं। जिस प्रकार इन्सानों में नेक बन्दे नमाज़, रोज़ा, हज्ज और ज़कात में मश्ग़ूल हैं, इसी प्रकार जानवर भी अल्लाह की अ़िबादत में अपने-अपने तरीक़े के अनुसार लगे हैं, जैसे मुर्ग़ा रात में ठीक सुब्ह सादिक़ के समय बाँग दे कर बुलन्द स्वरों में अल्लाह की तस्बीह पढ़ता है। (सनाई)
९. इस आयत न० १८ के अन्त में सज्दा है। पढ़ने और सुनने वालों के लिये सज्द-ए-तिलावत है। इस सूरत में यह पहला सज्दा है (वहीदी) सज्द-ए-तिलावत की दुआ़ यह है: स-ज-द वजहि-य लिल्लज़ी ख़-ल-क़हू व-शक्क़ सम्-अहू बिहौलिही वक़ुव्वतिही।
१०. 'अपने पर्वरदिगार के बारे में झगड़ते हैं' यानी तौहीद वाले कहते हैं कि अल्लाह एक है उस की ज़ात और सिफ़ात में कोई शरीक नहीं, और वह अपनी ज़रूरतें उसी ही से माँगते हैं। दूसरा गरोह इन के विरोधियों यानी मुश्रिकों का है, जो अपनी हाजतें मख़्लूक़ से माँगते हैं, अपने आप को और अपनी औलाद को अल्लाह के बन्दों की तरफ़ मन्सूब करते हैं, अपना नाम देवी-देवताओं के साथ जोड़ते हैं जैसे, दाताबख़्श, सालारबख़्श, हुसैनबख़्श वगैरह। ऐसे तौहीद के इन्कारी लोगों का ठिकाना जहन्नम है जिस में वह हमेशा-हमेशा जलें गे (सनाई) बद्र की लड़ाई में मुसलमानों की तरफ़ से हज़रत हम्ज़ा, अ़ली और अबू उबैदा और मुश्रिकों की तरफ़ से उत्बा बिन रबीआ़, शैबा बिन रबीआ़ और वलीद बिन उतबा निकले थे। हज़रत अबूज़र रज़ि० क़सम खाते हैं कि यह आयत इन्हीं लोगों के बारे में नाज़िल हुयी। सहीह बुख़ारी में हज़रत अ़ली से रिवायत है कि यह आयत हम लोगों के बारे में उतरी (वहीदी)
११. यह गुर्ज़ ताँबे के हों गे ताकि अधिक गर्म हो कर ज़्यादा तक्लीफ़ पहुंचाये। फिर ऊपर से खौलता हुआ पानी पिलाया जाये गा जिस से सारी आँत कट कर बाहर आ जाये गी, चर्बी पिघल जाये गी और खाल भी झुलस कर जल जाये गी। तिर्मिज़ी शरीफ़ की एक रिवायत के मुताबिक़ उस गर्म पानी के पीने से उन की आँतें कट कर पेट से बाहर निकल आयें गी, फिर सही हो जायें गी, फिर कट कर बाहर आ जायें गी, और यही सिलसिला जारी रहे गा। जहन्नम के गुर्ज़ (हथौड़ा) के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "कि अगर उसे ला कर ज़मीन पर रख दिया जाये तो तमाम इन्सान और जिन्नात मिल कर उसे न उठा सकें गे" (मुस्नद अहमद) एक अन्य रिवायत में आप ने फ़रमाया कि उस को दुनिया के किसी पहाड़ पर मार दिया जाये तो वह चूरा हो जाये। उसी से जहन्नमी को चूरा-चूरा किया जाये गा। और अगर 'ग़स्साक़' (ख़ून और पीप का धोवन) जो जहन्नमियों को पिलाया जाये गा, उस का एक डोल दुनिया में डाल दिया जाये तो उस की बदबू से दुनिया के तमाम जीवित प्राणी हलाक हो जायें गे (मुस्नद अहमद) हज़रत अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि उस के लगते ही बदन का एक-एक हिस्सा कट-कट कर गिर जाये गा और हर तरफ़ हंगामा मच जाये गा। हज़रत सलमान फ़रमाते हैं कि जहन्नम की आग काली हो गी। उस में न रोशनी हो गी और न ही लपटें उठें गी। हज़रत फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ फ़रमाते हैं कि अल्लाह की क़सम! वह वहाँ से निकल नहीं सकते, उन के पैरों में बेड़ियाँ और हाथ में हथकड़ियाँ हों गी। हाँ, आग की लपटें उन्हें इतना ऊँचा उठा दें गी कि गोया बाहर निकल जायें गे, लेकिन फ़रिशतों के घन और हथौड़ों की मार से पुनः जहन्नम की तह में चले जायें गे। (इब्ने कसीर)

وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ وَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
الَّذِي جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءً الْعَاكِفُ فِيهِ وَ
الْبَادِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ فِيهِ بِإِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ
مِنْ عَذَابٍ اَلِيمٍ ۝٢٥ وَإِذْ بَوَّاْنَا لِإِبْرٰهِيمَ مَكَانَ
الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِي شَيْـًٔا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ
لِلطَّآئِفِينَ وَالْقَآئِمِينَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُودِ ۝٢٦
وَاَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوكَ رِجَالًا وَّ عَلٰى
كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ۝٢٧
لِّيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيٓ
اَيَّامٍ مَّعْلُومٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ بَهِيمَةِ
الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوا مِنْهَا وَ اَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيرَ ۝٢٨
ثُمَّ لْيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوا
بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ۝٢٩ ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ

और अल्लाह की राह से रोकते हैं और मस्जिदे-हराम (काबा शरीफ़) से मना करते हैं जिस को हम ने लोगों के लिये बनाया है (अर्थात किसी भी मुल्क का रहने वाला उस में अ़िबादत कर सकता है) जिस में मुक़ीम और मुसाफ़िर बराबर हक़दार हैं। और जो कोई उस मस्जिद में बेदीनी और अन्याय का तरीक़ा इख़्तियार करे गा उस को दुःख की मार (के साथ अ़ज़ाब) करें गे[१२] २६. और हम ने जब इब्राहीम को उस मकान (मस्जिदे-हराम) में स्थान दिया था तो यह आदेश भी दिया था कि मेरे साथ किसी को शरीक न बनाना और मेरे घर (यानी अ़िबादत ख़ाना) को तवाफ़ करने वालों, रूकूअ़ और सज्दे करने वालों के लिये साफ़ रखना २७. और लोगों में हज्ज की मुनादी कर देना (तेरे पुकारने का यह प्रभाव हो गा कि लोग) पैदल और पतली-दुबली ऊँटनियों पर ग़ दूर-दराज़ राहों से (सवार हो कर तेरी ज़िन्दगी में) तेरे पास आयें गे[१३] २८. ताकि अपने नफ़ा पर पहुंचें और अल्लाह ने जो मवेशी उन को दिये हैं ख़ास दिनों में उन पर अल्लाह का नाम ज़िक्र करें (यानी हज्ज के दिनों में कुर्बानियाँ किया करें) फिर तुम सब लोग उन (कुर्बानियों) में से ख़ुद भी खाओ और मुहताज फ़क़ीरों को भी खिलाओ २९. फिर (हज्ज के बाद) अपना मैल-कुचैल दूर करें और फ़राइज़ (नज़्र-नियाज़ आदि) को पूरा करें और पुराने घर का तवाफ़ करें (यानी काबा शरीफ़ के चारों तरफ़ घूमते हुये अल्लाह का ज़िक्र करें) ३०. आदेश तो यह है कि जो कोई अल्लाह की हुरुमात (यानी ताज़ीम की जाने वाली चीज़ों) की अ़िज़्ज़त करे गा

....

१२. यहाँ से (आयत न० २६ से) बयान का सिलसिला कुफ़्फ़ार की तरफ़ हो गया है। गोया यहाँ से जिहाद के हुक्म की तम्हीद आरंभ हो रही है (जिहाद की इजाज़त आगे आयत न० ३९ में आ रही है) फ़रमाया कि यह लोग केवल कुफ़्र और शिर्क ही नहीं कर रहे हैं, बल्कि ज़ुल्म और ज़्यादती पर उतर आये हैं। यह लोग अपने आप को मस्जिदे हराम का मालिक समझते हैं और जिसे चाहते हैं अ़िबादत करने देते हैं और जिसे चाहते हैं रोक देते हैं। हालाँकि उस पर किसी की इजारादारी नहीं है। वह केवल मक्का वालों ही की अ़िबादत के लिये नहीं है, बल्कि तमाम इन्सानों के लिये बनाया गया है, इस लिये किसी को भी अ़िबादत करने वालों पर दर्वाज़ा बन्द करने का हक़ नहीं है। फिर आगे आयत न० २६ में यह स्पष्ट कर दिया गया कि हज़रत इब्राहीम ने इस अ़िबादत ख़ाना की बुनियाद किस उद्देश्य ➲

➲से रखी थी? और किस राह पर चलने की हिदायत की थी? और फिर जब हज्ज का ऐलान किया गया तो उस का बुनियादी उद्देश्य क्या था? और किस प्रकार वह्यि द्वारा राहनुमाई की गयी थी? हज्ज के एलान का बुनियादी उद्देश्य यह था (१) तौहीद का अक़ीदा पुख़्ता होना (२) अ़िबादत करने वालों के लिये मस्जिदे-हराम को पाक-साफ़ रखना (३) हज्ज के लिये इकट्ठा होना ताकि लोग हर प्रकार के फ़ाइदे उठा सकें और साथ ही मख़्सूस दिनों में अल्लाह को याद कर के अपने ईमान को भी ताज़ा करते रहें (४) जो लोग इस मौक़ा पर जमा हों वह क़ुर्बानियाँ कर के मुहताजों के लिये खाने का इन्तिज़ाम करें। जिस इबादत के मर्कज़ (केन्द्र) की बुनियाद इन कामों के लिये डाली गई हो, यह क्योंकर जायज़ हो सकता है कि मक्का के काफ़िर उस के मालिक बन बैठें और जिस को चाहें आने दें और जिस को चाहें रोक दें? (तर्जुमान मौलाना आज़ाद)

'व-मंय्युरिद् फ़ीहि......' (जो इस मस्जिद में ज़ुल्म की राह अपनाये गा) इस आयत की रोशनी में उलमा का कहना है कि हरम की सीमा के अन्दर जो कोई गुनाह करे गा उस को दो गुना दन्ड मिले गा (१) गुनाह करने का दन्ड (२) हरम के एहतराम और अ़िज़्ज़त को पामाल करने का दन्ड। मेरे ख़याल से तो हरम के अन्दर गुनाह का इरादा करना भी गुनाह का सबब है। (राज़)

१३. जब काबा शरीफ़ का निर्माण मुकम्मल हो गया तो हज़रत इब्राहीम अ़लै० ने एक पहाड़ी पर खड़े हो कर हज्ज की अदायगी के लिये लोगों को पुकारा। अल्लाह तआ़ला ने उन की आवाज़ को हर तरफ़, हर रूह तक पहुंचा दिया। (जिस प्रकार लन्दन की आवाज़ रेडियो पर हम हिन्दुस्तान में बैठे-बैठे सुन लेते हैं, इसी प्रकार अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम अ़लै० के एलान की आवाज़ पूरी दुनिया के एक-एक इन्सान के कानों में पहुंची दी। इसे कोई साहब मुबालग़ा न समझें, बल्कि यह एक हक़ीक़त है।) चुनान्चे जिस की तक़दीर में हज्ज करना लिखा था उसकी रूह ने उस मौक़े पर लब्बैक कहा था, वही शौक़ की चिन्गारी है जो लोगों को मजबूर करती है कि पैदल, सवारी से, दूर से, नज़दीक से दौड़े हुये चले आते हैं और हज्ज का फ़रीज़ा अदा करते हैं।

'अय्यामिम्मालूमात' (ख़ास दिनों में) इस से मुराद ज़िलहिज्जा का पहला दहा है और कुछ उलमा के नज़दीक क़ुर्बानी के तीन दिन (१०, ११, १२) मुराद हैं। इन दिनों में अल्लाह का ज़िक्र करने की बड़ी फ़ज़ीलत आयी है। इसी ज़िक्र के तहत खुसूसियत के साथ यह भी दाख़िल है कि क़ुर्बानी के जानवरों को ज़ब्ह करते हुये अल्लाह का नाम लिया जाये और "बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर" कहा जाये। इन दिनों में क़ुर्बानी के जानवरों को ज़ब्ह करते समय अल्लाह का नाम लेना ही सब से बेहतर ज़िक्र है।

'त-फ़-सहुम्' (अपना मैल-कुचैल दूर करें) जब एहराम बाँध कर लब्बैक कहना आरंभ कर दिया, तभी से बाल काटना, नाखुन काटना, बालों में तेल डालना वग़ैरह नाजायज़ है, इस लिये इन दिनों में बदन पर मैल-कुचैल जमा हो जाता है और एक अ़जीब मस्ताना हालत हो जाती है। दस्वीं तिथि को हज्ज के ज़रूरी कामों से फ़ारिग़ हो कर बाल और नाखुन आदि कटवा कर, स्नान कर के सिले हुये कपड़े पहन कर ज़ियारत के तवाफ़ के लिये जाते हैं।

'अ़तीक़' का अर्थ है "पुराना, क़दीम"। इस आयत की रोशनी में ख़ान-ए-काबा ही दुनिया का सब से पुराना अ़िबादत का घर है जो ख़ालिस तौहीद की बुनियाद पर तमाम इन्सानों के लिये एक अज़ीमुश्शान (भव्य) अ़िबादत ख़ाना की हैसियत से बनाया गया। बुख़ारी, मुस्लिम में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज्ज का आख़िरी काम बैतुल्लाह का तवाफ़ बतलाया। 'हतीम' का क्षेत्र भी "बैतुल अ़तीक़" में शामिल है इस लिये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हतीम के पीछे से तवाफ़ किया। 'हुरुमातिल्लाह' (अ़िज़्ज़त व एहतराम वाली चीज़ें) इस के संदर्भ में क़ुर्बानी का जानवर, बैतुल्लाह, सफ़ा, मर्वा, मिना, अ़रफ़ात, मस्जिदें, क़ुरआन मजीद, हदीस की किताबें वग़ैरह सब शामिल हैं। यहाँ इस आयत में ख़ास तौर पर हदी के जानवर और मस्जिदे-हराम मुराद हैं।

'औसान' (शिर्क की नापाकी से बचते रहो) यानी जानवर अल्लाह की मख़्लूक़ हैं। उस की इजाज़त के➲

➲मुताबिक़ केवल उसी के नाम पर ज़ब्ह किये जा सकते हैं और उसी के काबा की नियाज़ हो सकते हैं। जो जानवर किसी देवी, देवता, (या किसी पीर, फ़क़ीर, वली बुज़ुर्ग वग़ैरह के मज़ार) पर ज़ब्ह किया गया हो वह मुर्दार हैं। ऐसे शिर्क के कामों से बचने की सख़्त ताकीद की गयी है, इसी के बाद झूठ बोलने और झूठी शहादत देने से मना किया गया है। इस से मालूम हुआ कि शिर्क के बाद झूठ बोलना और झूठी गवाही देना दूसरा बड़ा गुनाह है।

'व-मय्युश्रिक' (जो अल्लाह के साथ शरीक बनाता है) यहाँ पर शिर्क की मिसाल बयान फ़रमाई है। यानी तौहीद जैसे ऊँचे मर्तबे को छोड़ कर जब बन्दा किसी मख़्लूक़ के सामने झुकता है तो स्वयँ अपने आप को ज़लील करता है और तौहीद की बुलन्दी से अपने आप को शिर्क की पस्ती की तरफ़ गिराता है। ज़ाहिर है कि इतनी ऊँचाई से नीचे गिर कर जीवित नहीं बच सकता।

'जो कोई अल्लाह की निशानियों की ताज़ीम करे गा' यहाँ पर यह बात याद रहे कि अल्लाह की निशानियों की ताज़ीम और उन का अदब-एहतराम करना शिर्क नहीं है। जिस के दिल में अल्लाह का ख़ौफ़ और तक़्वा व परहेज़गारी हो गी वह अल्लाह के नाम लगी चीज़ों का अदब अवश्य करे गा और यह अदब करना शिर्क नहीं। बल्कि तौहीद की निशानियों में से है (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान, तफ़्सीर मुहम्मदी) अल्लाह की निशानियों के एहतराम का अर्थ उन की सुरक्षा करना, उन की क़द्र करना और उन की ऐतिहासिक बुज़ुर्गी और बड़ाई को याद करना है।

اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۚ وَ اُحِلَّتْ لَكُمُ
الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ
مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ۝ حُنَفَآءَ
لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ
فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ
تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ۝ ذٰلِكَ ۚ
وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ۝
لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَآ
اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ۝ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا
لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ بَهِيْمَةِ
الْاَنْعَامِ ۚ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا ۚ
وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ
وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَآ اَصَابَهُمْ

यह उस के पर्वरदिगार के नज़दीक उस के लिये बेहतर हो गा। और उन जानवरों के अलावा जिन की हुर्मत तुम को सुनाई जाती है बाक़ी चारपाए तुम्हारे लिये हलाल किये गये हैं, पस तुम शिर्क की नापाकी से बचते रहो (यह तुम को मज़हबी हुक्म है। अख़्लाक़ी तौर पर हमेशा सीधी राह इख़्तियार करो) और झूठी बात कहने से बिल्कुल हटे रहो ३१. (केवल)एक तरफ़ हो कर अल्लाह के बन्दे बनकर रहो उस के साथ किसी चीज़ को शरीक न बनाओ! और (याद रखो कि शिर्क ऐसी बुरी बला है कि) जो कोई अल्लाह के साथ किसी को शरीक बनाता है गोया वह आसमान से गिर पड़ा फिर उसे जानवर नोच लें गे, हवा उस को किसी दूर-दराज़ स्थान पर में फेंक दे गी ३२. यह आदेश है (ऐसा कि इस के अलावा किसी बन्दे की नजात ही संभव नहीं है) और जो कोई अल्लाह के निशानात का एहतराम करे गा (तो बस वह मुत्तक़ी है और) यह तो दिलों के तक़्वा की बात है। ३३. एक निश्चित समय तक तुम्हारे लिये उन में कई-कई प्रकार के फ़ाइदे हैं, फिर पुराने इबादत ख़ाना (ख़ाना➲

➲शरीफ़) के पास (हज्ज के दिनों में कुर्बानी की ग़रज़ से) उन को जाना हो गा ३४. हम ने हर एक क़ौम के लिये कुर्बानी का तरीक़ा मुक़र्रर कर रखा है ताकि अल्लाह के दिये हुये चारपायों पर अल्लाह का नाम ज़िक्र करें (सो तुम दिल में इस बात का विश्वास रखो कि) तुम्हारा हक़ीक़ी माबूद एक ही है इसलिये तुम उसी की फ़र्माबर्दारी करते रहो। और तू (ऐ रसूल!) अल्लाह की तरफ़ झुकने वाले बन्दों को शुभसूचना सुना[14] ३५. जो ऐसे हैं कि जब अल्लाह का नाम लिया जाये तो उन के दिल काँप जाते हैं और जो मुसीबत आने पर सब्र करते हैं

....

१४. आयत न० ३४ में इस बात की तरफ़ इशारा है कि तमाम उम्मतों में से हर मज़हब और हर गरोह को हम ने कुर्बानी का आदेश दिया था। उन लोगों के लिये भी एक ख़ास दिन था और वह सब लोग भी अल्लाह के नाम पर ज़ब्ह करते और अपनी-अपनी कुर्बानियाँ मक्का शरीफ़ भेजते थे ताकि कुर्बानी के जानवर भी ज़ब्ह करने के वक़्त अल्लाह का नाम ज़िक्र करें। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास भी दो चितकबरे और लंबे-लंबे सींगों वाले मेंढे लाये गये। आप ने उन्हें लिटा कर उन की गर्दन पर पाँव रख कर "बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर" पढ़ कर ज़ब्ह किया। मुस्नद अहमद की एक रिवायत में है कि सहाबा ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मालूम किया कि यह कुर्बानियाँ क्या हैं? आप ने उत्तर दिया: तुम्हारे बाप इब्राहीम अ़लै० की सुन्नत है। फिर पूछा गया कि हमें उस में क्या मिलता है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हर बाल के बदले एक नेकी। फिर पूछा गया कि उन का क्या हुक्म है? फ़रमाया: उन के (जानवर के) हर रोयें के बदले में एक नेकी। इस हदीस को इमाम इब्ने माजा ने भी रिवायत किया है।

तुम सब का अल्लाह एक है' अगर्चे शरीअ़त के बाज़ अहकाम थोड़े-बहुत तब्दील होते रहे हैं, लेकिन तौहीद को ले कर कभी भी कोई तब्दीली नहीं की गयी। तमाम ही नबिय्यों ने सिर्फ़ एक ख़ुदा की इ़बादत और इताअ़त का हुक्म दिया और हर ज़माना में नेक बन्दों ने इसी पर अ़मल किया। हर उम्मत को जो सब से पहला आदेश दिया गया वह यही तौहीद का था----फिर आगे फ़रमाया कि जो अल्लाह के अहकाम पर अ़मल करते हैं, जो तक़्वा वाले हैं, जो ज़ुल्म से दूर रहते हैं और मज़लूम होते हुये भी बदला लेना पसन्द नहीं करते, अल्लाह की मर्ज़ी पर राज़ी रहते हैं, ऐसे लोगों को शुभसूचना दे दो। वह धन्यवाद के योग्य हैं जो अल्लाह का ज़िक्र सुनते ही काँप जाते हैं और उस के सामने झुक जाते हैं और कठिन कामों पर सब्र करते हैं। हज़रत इमाम बसरी रह० ने फ़रमाया: अल्लाह की क़सम! अगर तुम लोगों ने सब्र और शुक्र की आ़दत न डाली तो तुम बर्बाद कर दिये जाओ गे (मुहम्मदी)

وَالْمُقِيمِي الصَّلٰوةِ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝٣٥
وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ
فِيْهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ
فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا
الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۚ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٣٦ لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا

और नमाज़ हमेशा (जमाअ़त के साथ) अदा करते हैं और हमारे दिये में से (नेक कामों में) ख़र्च करते हैं (और यही मुख़्बित यानी अल्लाह की तरफ़ झुकने वाले लोग हैं) ३६. (रहे ज़ाहिरी उमूर जैसे कुर्बानी के बुद्ना तो उन) कुर्बानी के ऊँटों को हम ने तुम्हारे लिये पैदा किया है (जो) अल्लाह की कुदरत की निशानियों में से हैं उन में तुम्हारे लिये कई प्रकार की भलाई है पस उन को खड़ा कर के (ज़ब्ह करते वक़्त) अल्लाह➲

وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ۝ اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۝ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا

➲ कानाम याद किया करो फिर जब वह (ज़ब्ह हो कर) ज़मीन पर गिर पड़ें तो उन में से स्वयँ भी खाया करो और सवाल न करने और सवाल करने वाले (गदागरों) को भी खिलाया करो। हम ने इसी प्रकार उन को तुम्हारे बस में कर दिया है, ताकि तुम शुक्र करो ३७. (कुर्बानी का गोश्त अल्लाह खाता है? नहीं, हर्गिज़ नहीं) अल्लाह को उन के गोश्त तो हर्गिज़ नहीं पहुंचते और न उन के रक्त पहुंचते हैं, लेकिन तुम्हारा (दिली इख़्लास और) तक़्वा पहुंचता है[१५]। अल्लाह ने इसी प्रकार उन को तुम्हारे क़ाबू में दिया है ताकि तुम अल्लाह के बतलाए हुये तरीक़ों से उस की बड़ाई बयान करो (और तक्बीरें पढ़ो) और नेक आदमियों को शुभसूचना सुना ३८. बेशक अल्लाह (उन को यूँही बेसहारा न छोड़े गा बल्कि) ईमानदारों से मुदाफ़िअ़त (सुरक्षा) करे गा। और अल्लाह कभी किसी ख़ियानत करने वाले और नाशुक्रे से मुहब्बत नहीं किया करता ३९. (लो सुनो) जिन लोगों से लड़ाई की जाती है (कुफ़्फ़ार उन को मारते हैं) उन को (भी आज से) अनुमति दी गयी है क्योंकि वह मज़लूम हैं (कि अल्लाह का नाम ले कर हाथ उठाएँ) और अल्लाह उन की सहायता करने पर क़ादिर है। ४०. यह लोग वही तो हैं जो केवल इतना कहने पर कि हमारा पर्वरदिगार अल्लाह है (अकारण) अपने घरों से निकाले गये

....

१५. शाने-नुज़ूलः- तफ़्सीर इब्ने हातिम में इस आयत का शाने-नुज़ूल यह बयान किया गया है कि कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन हज्ज के दिनों में जानवर ज़ब्ह करते तो उस का थोड़ा सा ख़ून काबा शरीफ़ की दीवारों पर भी लगा दिया करते थे। मुसलमानों ने भी इस रस्म को जारी करना चाहा, इस पर अल्लाह ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "अल्लाह तआ़ला ब्रन्दों की शक्ल-सूरत और उन के माल और दौलत को नहीं देखता, बल्कि लोगों के दिलों और उन के अ़मलों को देखता है"। (मुस्लिम शरीफ़) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० 'सवाफ़्फ़' का अर्थ यह बतलाते हैं "ऊँट को तीन पैरों पर खड़ा कर के बाँया हाथ बाँध कर नह्र करना"। ऊँट को तीन पाँव पर खड़ा कर के एक पाँव बाँध कर नह्र करना सुन्नत है (अबू दावूद) 'क़ानिअ़' उस फ़क़ीर को कहते हैं जो सब्र से घर में बैठा रहे और 'मोतर' उस शख़्स को कहते हैं जो इधर-उधर आये-जाये लेकिन प्रश्न न करे। और यह भी कहा गया है कि 'क़ानेअ़' से मुराद चल-फिर कर माँगने वाला और 'मोतर' से कमज़ोर लोग और पड़ोसी वग़ैरह मुराद हैं। कुर्बानी का गोश्त १०, ११, १२ और १३ (अय्यामे तश्रीक़) से आगे के लिये रखना भी जायज़ है। जानवर की कुर्बानी ईदुज़्ज़ुहा की नमाज़ अदा करने के पश्चात् ही करनी चाहिये (वहीदी, मुहम्मदी)

رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ
بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّ
مَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ؕ
وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ
عَزِيْزٌ ﴿٤٠﴾ اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ
اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَ اَمَرُوْا
بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ
الْاُمُوْرِ ﴿٤١﴾ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ
قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ ﴿٤٢﴾ وَ قَوْمُ
اِبْرٰهِيْمَ وَ قَوْمُ لُوْطٍ ﴿٤٣﴾ وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ
مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ
فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٤﴾ فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ
اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى

अगर अल्लाह बाज़ इन्सानों को (उन के अत्याचार की वजह से) दूसरे बाज़ (इन्सानों के ज़रीआ) दफ़ा न करे तो गिर्जे और यहूदियों के पूजा स्थल और दरवेशख़ाने और मस्जिदें जिन में अल्लाह को बहुत-बहुत याद किया जाता है वीरान हो जायें। और अल्लाह अवश्य ही उन की मदद करता है जो उस (के दीन) की मदद करते हैं। निःसंदेह अल्लाह सब से बड़ा शक्तिशाली और ग़ालिब है[१६] ४१. (जिन लोगों को हम ने हाथ उठाने का निर्देश दिया है) यह ऐसे लोग हैं कि अगर हम उन को (मुल्क पर) हुकूमत दें गे तो नमाज़ क़ाइम करें गे और ज़कात दें गे और नेक कामों का हुक्म करें गे और बुरे कामों से रोंके गे (और इस बात पर ईमान रखें गे कि) सब चीज़ों का अन्जाम अल्लाह ही के क़ब्ज़ा में है ४२. और यह लोग तुझे झुठलायें तो (कोई नई बात नहीं) तुझ से पहले नूह की क़ौम ने (नूह को) और आद ने और समूद की क़ौम ने ४३ और इब्राहीम की क़ौम ने और लूत की क़ौम ने ४४. और मदयन वालों ने (अपने-अपने पैग़ंबरों को) झुठलाया था और मूसा को भी झुठलाया गया तो मैं ने काफ़िरों को (पहले कुछ) मुहलत दी फिर मैं ने उन को पकड़ लिया (और ख़ूब पिछाड़ा) फिर मेरा ग़ुस्सा कैसा ज़ाहिर हुआ ४५. सो कितनी ही ऐसी बस्तियाँ हैं जो ज़ालिम थीं, हम ने उन को तबाह किया पस वह अपनी छतों समेत गिरी पड़ी हैं

....

१६. आयत न० ३९ में मुसलमानों को अनुमति दी गयी है कि वह अपने बचाव की ख़ातिर हथियार उठा सकते हैं। इस बात पर तमाम ही उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि यह पहली आयत है जो जिहाद के सिलसिले में नाज़िल की गयी। इस से पूर्व मक्का के काफ़िरों का यह अत्याचार बयान कर दिया था कि उन्हों ने मुसलमानों पर हज्ज की राह बन्द कर दी है जिस का उन्हें कोई अधिकार नहीं है। अब यहाँ पर स्पष्ट शब्दों में बयान कर दिया है कि क़िताल (लड़ाई) के जायज़ होने का सबब क्या है? (१) इस लिये की वह मज़लूम हैं और मज़लूम को यह अधिकार प्राप्त है कि ज़ालिम के मुक़ाबला में अपना बचाव करे। यह बेचारे मज़लूम मुसलमान १३ वर्षों तक ज़ुल्म का निशाना बनते रहे, आख़िरकार अपना घर तक छोड़ने पर बाध्य हुये। लेकिन वहाँ भी चैन न लेने दिया। (२) उन मुसलमानों का कहना था कि अपने अक़ीदा व यक़ीन के अनुसार अपने पर्वरदिगार को याद करना चाहते हैं। हम दूसरों को इस बात पर बाध्य नहीं करते कि वह हमारा अक़ीदा स्वीकार करें, तो फिर दूसरे लोग हमें अपने अक़ीदा को मानने पर क्यों मजबूर करें? इस के बाद स्पष्ट शब्दों में यह बयान कर दिया के मज़लूमों को यह अधिकार प्राप्त है। अगर वह इस हक़ ➲

➲से वन्चित कर दिये जायें तो दुनिया में अराजकता फैल जाये और जिस गरोह को बन पड़े दूसरे गरोह के अक़ीदा व अ़मल और आज़ादी को हमेशा के लिये पामाल कर दे। चुनान्चे फ़रमा दिया कि यहाँ अल्लाह ने एक जमाअ़त के हाथों दूसरी जमाअ़त के ज़ुल्म को रोकने का निज़ाम क़ाइम कर रखा है। अगर बाज़ को बाज़ के ज़रीआ़ रोकने का सिलसिला बन्द हो जाता, तो दुनिया में खुदापरस्ती भी समाप्त हो जाती। किसी गरोह का पूजास्थल सुरक्षित न रह सकता।

आयत न० ४१ में स्पष्ट कर दिया कि कुरआन के नज़दीक मुसलमानों के शासन का अस्ल उद्देश्य यही है कि अगर उन के क़दम जम गये तो नमाज़ क़ाइम करें गे, ज़कात अदा करें गे, नेकी का निर्देश दें गे, बुराइयों से रोकें गे और ज़ुल्म की जगह न्याय (इन्साफ़) करें गे। यहाँ पर एक विशेष बात जो तवज्जुह देने के क़ाबिल है वह यह है कि यहाँ पर और तमाम इस्लामी आमाल (कामों) का ज़िक्र न कर के केवल नमाज़ और ज़कात का ज़िक्र किया गया है। इस से मालूम हुआ कि मुसलमानों के जमाअ़ती सत्ता की अस्ल पहचान यही दो अ़मल हैं। जिस इस्लामी शासन में यह दो चीज़ें न पायी जायें, वह इस्लामी हुकूमत कहलाने की मुस्तहिक़ नहीं। (तर्जुमान- मौलाना आज़ाद रह०)

عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ﴿٤٥﴾
اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ
يَّعْقِلُوْنَ بِهَآ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا لَا
تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِىْ
فِى الصُّدُوْرِ ﴿٤٦﴾ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَ
لَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ؕ وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ
رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٤٧﴾ وَكَاَيِّنْ
مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِىَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ
اَخَذْتُهَا ۚ وَاِلَىَّ الْمَصِيْرُ ﴿٤٨﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا
النَّاسُ اِنَّمَآ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٩﴾ فَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ
كَرِيْمٌ ﴿٥٠﴾ وَالَّذِيْنَ سَعَوْا فِىْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٥١﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ

और कई एक (शान्दार पक्के) कुयें बेकार और कितने पक्के महल वीरान हैं[७] ४६. क्या उन्हों ने ज़मीन में कभी सैर (चलत-फिरत) नहीं की (अगर करते तो) उन के दिल ऐसे होते कि उन के साथ समझते और कान होते कि उन के साथ (हिदायत की बातें) सुनते, क्योंकि आँखें अन्धी नहीं होतीं बल्कि दिल अन्धे हो जाते हैं जो सीनों में छुपे रहते हैं। ४७. (भला देखो तो यह कैसा अन्धा पन है कि सलामती चाहने के स्थान पर) तुझ से अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं हालाँकि अल्लाह हर्गिज़-हर्गिज़ अपना वादा ख़िलाफ़ न करे गा। तेरे पर्वरदिगार के हाँ एक-एक दिन तुम्हारी गिन्ती से हज़ार-हज़ार साल के बराबर है[८] ४८. (इसी प्रकार) मैं ने कई एक बस्तियों को इस के बावजूद कि वह ज़ालिम थीं चन्द रोज़ मोहलत दी थी (जिससे वह बहुत इतराए थे) फिर मैं ने उन को ख़ूब पकड़ा और मेरी ही तरफ़ फिरना है। ४९. (सो ऐ रसूल!) तू (उन सब लोगों को मुख़ातब कर के) कह दे कि ऐ लोगो! मैं तो तुम को खुल्लम-खुल्ला अल्लाह के अ़ज़ाब से डराने वाला हूँ ५०. पस जो लोग ईमान ला कर नेक अ़मल करते हैं उन के लिये बख़्शिश और अ़िज़्ज़त की रोज़ी हो गी ५१. और जो लोग हमारे आदेशों की मुख़ालिफ़त में (हम को) जीतने की ग़रज़ से कोशिश करते➲

हैं वही जहन्नमी हों गे (रही यह बात कि रसूल चाहता है कि दुनिया के लोग मुसलमान हो जायें। मगर यह ख़्वाहिश उस की पूरी नहीं हुयी, तो यह कोई नई बात नहीं) ५२. ऐ रसूल! हम ने तुझ से पहले जितने रसूल या नबी भेजे हैं (सब को यही मामला पेश आता रहा है कि)

....

१७. यानी या तो इतने आराम से जीवन-यापन करते थे, या ऐसे तबाह हुये कि नाम व निशान तक बाक़ी न रहा। न बस्ती बाक़ी रही, न मकान। न हुकूमत बाक़ी बची, न बादशाहत। न खेती-बाड़ी, न तिजारत। उन के कुंओं से कोई पानी निकालने वाला तक न रहा, और उन के महलों में कोई चराग़ तक जलाने वाला न रहा। कुछ उलमा का कहना है कि इस आयत में हिज़्रमूत के कुंये और महल का ज़िक्र है। कुछ लोगों ने कहा कि यह कुँआ अदन की बस्ती में था और महल शद्दाद का था। कहते हैं कि शद्दाद बादशाह ने एक महल बनवाया था जिसे जन्नत का नमूना कहता था, लेकिन उसे देखने से पहले ही दुनिया से चल बसा (वहीदी) मैं कहता हूँ कि जिस मुग़ल बादशाह ने अपने महल पर लिख रखा था कि "अगर दुनिया में कहीं जन्नत है तो वह यहीं है, यहीं है, यहीं है" आज उन के महल्लात और क़िले भी दिल्ली शहर में हमारे लिये ड़िब्रत हैं (राज़)

१८. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं: जिन छः दिनों में अल्लाह तआला ने ज़मीन व आसमान को पैदा किया था। उन में का हर दिन एक हज़ार वर्ष के बराबर था। अज़ाब से क़ियामत का दिन मुराद है। कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन इस के लिये बड़ी जल्दी मचाते थे और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बार-बार प्रश्न करते थे कि क़ियामत कब आये गी? कहाँ ठहरी हुयी हैं? क्यों नहीं आती? मतलब यह है कि यह क फ़िर अ़ज़ाब के लिये जल्दी मचा रहे हैं, हालाँकि अ़ज़ाब का दिन इतना कठिन दिन होगा कि एक दिन उन का एक हज़ार वर्ष के बराबर मालूम हो गा (वहीदी) हक़ीक़त यह है कि उलमा ने इस आयत के जो-जो अर्थ बयान किये हैं वह सभी इस आयत मे शामिल हैं। (राज़)

قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّآ اِذَا تَمَنّٰٓى اَلْقَى
الشَّيْطٰنُ فِيْٓ اُمْنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِي
الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ
حَكِيْمٌ ۝ لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً
لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ ۗ
وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ ۝ وَّلِيَعْلَمَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ
فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ
لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝
وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ
حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ

जब कभी उन्हों ने कोई ख़ाहिश दिल में जमाई तो शैतान ने उन की ख़ाहिश में शक व शुब्हा डाला[१९] फिर अल्लाह शैतान के डाले हुये ख़यालात को मिटा देता है और अपने इर्शादों को (जो वह्यि के ज़रीआ़ बतलाये हुये हैं, ठोस और) मज़बूत कर देता है। अल्लाह बड़े अ़िल्म वाला-बड़ी हिक्मत वाला है[२०] ५३. अन्जाम यह होता है कि शैतान का डाला हुआ ख़याल बीमार दिल और कठोर दिल वालों के लिये फिसल जाने का सबब होता है। कुछ शक नहीं कि ज़ालिम (इसी लिये तो) पर्ले दर्जे की गुमराही में हैं (उन को इस बात की तमीज़ नहीं कि अल्लाह कौन है? रसूल कौन है? वह समझते हैं कि अल्लाह भी रसूल की मर्ज़ी के ताबे होता है) ५४. और जो अ़िल्म वाले हैं वह जान जाते हैं कि यह

(तरीक़ा अस्ल वह्यि) तेरे रब की तरफ़ से बिल्कुल सच है, पस वह उस पर ईमान ले आते हैं और उन के दिल (अल्लाह का मालिकाना इख़्तियार देख कर) उस की तरफ़ झुक जाते हैं[२०]। और अल्लाह (भी ऐसे) ईमानदारों को सीधी राह की तरफ़ राहनुमाई फ़रमाता है ५५. (बाक़ी रहे) काफ़िर (सो वह) तो हमेशा उस से शक में रहें गे यहाँ तक कि उन पर मौत की घड़ी अचानक आ पहुंचे, या क़ियामत के मन्हूस दिन का अज़ाब उन पर आ जाये (जो उन के लिये वास्तव में मन्हूस हो गा अगर्चे बाक़ी लोगों के लिये नजात का सबब हो गा[२१]) ५६. उस दिन सारा इख़्तियार अल्लाह ही को हो गा (ज़ाहिरी और मजाज़ी हुकूमत भी किसी मख़्लूक़ को न हो गी) अल्लाह उन में आप फ़ैसला करे गा। सो जिन लोगों ने ईमान ला कर नेक अ़मल किये हों गे

....

१९. यानी अगर उन्हों ने कोई काम किया तो शैतान ने उस ख़ाहिश को बढ़ा कर और इज़ाफ़ा कर दिया। यहाँ तक कि अ़वाम के दिल में यह बात बैठ गयी कि फ़लाँ काम जिस का अन्जाम को पहुंचना नबी ने चाहा था वह बस अभी हो जाये गा। हालाँकि अल्लाह के इरादे में ऐसा न होता था। फिर आख़िर कार जो होता वह अल्लाह के मुवाफ़िक़ ही होता। चुनान्चे फिर अल्लाह तआ़ला............................(सनाई)

२०. नबी को एक हुक्म अल्लाह की तरफ़ से आता है उस में हर्गिज़ तफ़ावुत नहीं है। और एक अपने दिल का ख़याल, इस में जैसे और आदमी। कभी ख़याल ठीक पड़ा और कभी न पड़ा। जैसे हज़रत ने ख़ाब देखा कि मदीना से मक्का में गये, उम्रा किया। ख़याल में आया कि शायद अब के बरस वह ठीक पड़ा अगले बरस यह वादा हुआ। काफ़िरों पर ग़लबा हो गा, ख़याल आया कि अब की लड़ाई में उस में न हुआ। फिर अल्लाह जता देता है लड़ाई का हुक्म था इस में तफ़ावुत नहीं (मुवज़्ज़िहुल कुरआन)

एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कुरआन में से सूरः नज्म की तिलावत फ़रमा रहे थे। जब आप इस आयत "व-मना-तस्सालि-स-तल् उख़्रा" पर पहुंचे तो आप की आवाज़ के साथ लोगों के कानों में यह अल्फ़ाज़ भी आये "तिल्-क ग़रानीकुल् उला............" (तीनों बुत बड़े हैं और शफ़ाअ़त करें गे) इस पर काफ़िर बहुत प्रसन्न हुये कि उन्हों ने हमारे बुतों की प्रशंसा कर दी। जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को इस मामला की ख़बर हुयी तो आप को बहुत रन्ज हुआ। इस पर अल्लाह पाक ने तसल्ली फ़रमाई कि और अन्य संदेष्टाओं के साथ भी ऐसा हुआ है कि शैतान ने उन की क़िरात में कुछ ख़लल डाला था, ऐसे ही अब भी किया है। मगर ऐसा मामला केवल इस लिये हुआ करता है कि खरे-खोटे की जांच हो जाये। इस क़िस्से के बारे में उलमा ने बड़ा इख़्तिलाफ़ किया है। किसी ने इस क़िस्से को ज़ओ़फ़ कहा है तो किसी ने मनघड़त। हज़रत मौलाना अमृतसरी रह० ने भी इसे अपनी तफ़्सीर में मनघड़त लिखा है। हाफ़िज़ इब्ने हजर ने बुख़ारी की शरह में लिखा है कि इस वाक़िआ में ज़रूर कुछ न कुछ हक़ीक़त है मगर उस के बयान करने में कुछ कमी-बेशी हुयी है, इसी लिये मतलब कुछ का कुछ हो गया है (हदीसुत्तफ़ासीर, जामिउल बयान-२९५)

मौलाना आज़ाद ने इस वाक़िआ के संदर्भ में जो कुछ लिखा है उस का खुलासा यह है कि कोई रसूल और नबी दुनिया में ऐसा नहीं आया कि उस की इस्लाह और हिदायत की राह में शैतान ने रुकावट न डालना चाही हो। पस इस मामला की सच्चाई की कसौटी यह नहीं है कि शैतान का वस्वसा ख़लल डालता है या नहीं? और वह्यि और नबुव्वत की रब्बानी शक्तियाँ उस का प्रभाव समाप्त कर देती हैं या नहीं? क्योंकि शैतानी कुव्वतें किसी हाल

➲में ख़त्म नहीं हो सकतीं। जब तक इन्सान मौजूद है, उस के वस्वसा डालने का अ़मल भी मौजूद हैं, लेकिन वहयि और नबुव्वत के आमाल की खुसूसिय्यत यह है कि शैतानी कुव्वतें कितनी उभरें मगर कामियाब नहीं हो सकतीं "अल्लाह शैतान के डाले हुये ख़यालात को मिटा देता है"। (तर्जुमान-आज़ाद)
हज़रत मौलाना हक़्क़ानी अपनी तफ़्सीर में लिखते हैं कि क़वी दलीलों से यह बात साबित है कि यह क़िस्सा जिस तरह से प्रसिद्ध है बिल्कुल झूठ है (हक़्क़ानी-५/२०९,२१०)
२१. रसूल हों या नबी, वली हों या ग़ौस, अल्लाह पर किसी की ज़ोर-ज़बर्दस्ती नहीं। कोई ज़रूरी नहीं कि वह जो चाहें अल्लाह भी वही चाहे। बल्कि यह तो रसूलों की सच्चाई की दलील है कि वह अपनी मर्ज़ी को अल्लाह की मर्ज़ी के ताबे कर देते हैं और किसी प्रकार का तकल्लुफ़ या बनावट नहीं करते (सनाई)
२२. यह अचानक आफ़त और मुसीबत का दिन उन लोगों के हक़ में बद्र की लड़ाई का दिन था कि जिस प्रकार बाँझ औ़रत को औलाद नहीं नसीब होती, इसी प्रकार उन के बड़े-बड़े सरकशों को उस दिन सुब्ह की शाम नसीब नहीं हुयी। कुछ उलमा ने "मन्हूस दिन" से मुराद क़ियामत का दिन लिया है। लेकिन क़ियामत का ज़िक्र इस आयत के अ़लावा दूसरी आयत में आया है, इसी लिये अ़ल्लामा जरीर ने इस से मुराद बद्र की लड़ाई का दिन लिया है और इसी को सहीह क़रार दिया है।

क़ियामत के दिन अल्लाह की हुकूमत के अ़लावा किसी की हुकूमत न हो गी। बल्कि बड़े-बड़े बादशाह और अमीर उस दिन फ़क़ीरों की तरह नंगे पाँव और नंगे बदन अल्लाह के सामने हाज़िर हों गे। और फ़र्माबर्दारों के हक़ में जन्नत में दाख़िल होने का और नाफ़र्मानों के हक़ में दोज़ख़ में डाले जाने का फ़ैसला उस दिन अल्लाह तआ़ला फ़रमाये गा, उस का प्रभाव बादशाह, अमीर और फ़क़ीर सब पर यकसाँ पड़े गा (अहसनुत्तफ़ासीर)

جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٥٦﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا
فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ
هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا
لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ
خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٥٨﴾ لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ؕ
وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿٥٩﴾ ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ
عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ
لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ﴿٦٠﴾ ذٰلِكَ
بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ
فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ ﴿٦١﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ
اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ
الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٦٢﴾ اَلَمْ

वह नेमतों के बाग़ात में हों गे ५७. और जो लोग इन्कारी हैं और हमारे (यानी अल्लाह के) अहकाम (और आयतों) को झुठलाते हैं उन्हीं को ज़िल्लत का अ़ज़ाब पहुंचे गा (इसी लिये सोच लो कि कौन सी जानिब {दिशा} से बेहतर है) ५८. और जो लोग अल्लाह की राह में (कुफ़्फ़ार से तंग आ कर) अपना वतन छोड़ आये फिर वह (अल्लाह की राह में) मारे भी गये, या (खुद ही) अपनी तबई़ मौत से मरे तो अवश्य ही अ़ल्लाह उन को जन्नत में बेहतरीन रोज़ी दे गा। और अल्लाह ही सब से अच्छा रोज़ी देना वाला है ५९. बेशक वह उन को ऐसी जगह में दाख़िल करे गा जिसे वह पसन्द करें गे। कुछ शक नहीं कि अल्लाह सब को जानता और बड़े हौसले वाला है[२३] ६०. बात यह है (जो बयान हुयी) और जो दुश्मन को उतना ही सताए जितना कि उस को सताया गया है (यानी उस से➲

تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ز فَتُصْبِحُ

➲अधिक ज़ुल्म न करे जितना ज़ालिम की तरफ़ से हुआ था) फिर उस पर बग़ावत की जाये तो अल्लाह उस की अवश्य सहायता करे गा। कुछ शक नहीं कि अल्लाह बड़ा ही माफ़ करने वाला बख़्श देने वाला है[२४] ६१. यह इस वजह से है कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में (दुनिया का कुल इन्तिज़ाम उस के क़ब्ज़ा में है फिर असंभव है कि वह अपने मज़लूम बन्दों की ख़बर न ले) और यह कि अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है। ६२. यह इस लिये है कि अल्लाह ही सच्चा है और उस को छोड़ कर जिन चीज़ों को यह लोग पुकारते हैं वह बिल्कुल बेबुनियाद हैं (यानी जिन से यह मदद चाहते हैं वह बिल्कुल बातिल हैं) और अल्लाह ही बड़ा आलीशान सब से बड़ा है (उस की बड़ाई पर तमाम कायनात गवाह है) ६३. क्या तुम ने देखा कि अल्लाह आकाश से पानी उतारता है

....

२३. इब्ने हातिम ने सही सनद के साथ शुरहबील बिन समत से रिवायत नक़ल की है कि हम शाम मुल्क के एक क़िला की काफ़ी समय तक निग्रानी करते रहे। हज़रत सलमान फ़ार्सी एक मर्तबा आये तो उन्हों ने फ़रमाया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना है कि जो शख़्स निग्रानी ही की हालत में मर जाये उस को अल्लाह तआ़ला इस प्रकार का अज्र दे गा, यानी उस को शहीदों वाली रोज़ी दे गा और क़ब्र में दो इम्तिहान लेने वाले फ़रिश्तों से अम्न में रखे गा। अगर तुम्हारा जी चाहे तो इन बातों की तस्दीक़ के लिये "वल्लज़ी-न हा-जरू (आयत न० ५८)" को पढ़ लो (तर्जुमान- नवाब रह०)

इस आयत से मुहाजिरीन (हिजरत करने वाले) के फ़ज़ाइल पर रोशनी पड़ती है। उन के लिये अल्लाह के हाँ बेहतरीन रोज़ी तय्यार की गयी है। वह शहीद हो कर मरें या अपनी मौत, हर हाल में वह अल्लाह के हाँ बड़े अज्र व सवाब के हक़दार हों गे। 'मुद्-ख़ल्' या 'मद्-ख़ल (मीम पर पेश और ज़बर के साथ) इस से मुराद जन्नत है।

२४. शाने-नुज़ूलः- तफ़्सीर इब्ने जरीर इत्यादि में इस आयत का शाने नुज़ूल यह बयान किया गया है कि एक स्थान पर मुहर्रम के महीना में कुछ मुसलमानों और काफ़िरों के बीच मुक़ाबला हो गया। मुश्रिकों ने परस्पर सलाह-मश्वरा किया कि इस महीना में ज़रूर मुसलमानों पर आक्रमण बोल देना चाहिये क्योंकि यह लोग इस महीना में लड़ाई को जायज़ नहीं समझते, इस लिये अगर यह लड़ें गे भी तो बस ऊपरी दिल से, और जीत हमारी ही हो गी। आख़िर कार उन्हों ने आकर्मण कर ही दिया। मुसलमानों ने अगर्चे मुक़ाबला से बचना चाहा मगर अल्लाह ने उन्हें फ़तह अ़ता की। मुसलमानों के दिलों में इस बात को ले कर भय था कि कहीं अल्लाह तआ़ला इस माह में लड़ाई की वजह से नाराज़ न हो गया हो और मदीना वापस जाने तक हम लोगों पर नाराज़गी की कोई आयत न नाज़िल हो गयी हो? लेकिन अल्लाह पाक को मुसलमानों की पाक निय्यतों का ज़िल्म था। वह जानता था कि मुसलमानों ने मजबूरी की हालत में इस हराम महीनें में जंग लड़ी। उन लोगों के मदीना शरीफ़ में दाख़िल होने से पहले ही उन के हक़ में यह आयत नाज़िल फ़रमाई कि मजबूरी की हालत में अल्लाह ने उन की पकड़ नहीं की है और इस प्रकार के हालात में अल्लाह माफ़ करने वाला बख़्शने वाला है (अहसनुल् फ़वाइद)

الْأَرْضُ مُخْضَرَّةً ۚ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ﴿٦٣﴾ لَهُ مَا
فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ
الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٦٤﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَا
فِي الْأَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ
وَيُمْسِكُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا
بِإِذْنِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٦٥﴾ وَ
هُوَ الَّذِي أَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۗ
إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ ﴿٦٦﴾ لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا
مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ ۖ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْأَمْرِ
وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ ۖ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُسْتَقِيمٍ ﴿٦٧﴾
وَإِنْ جَادَلُوكَ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٦٨﴾
اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ
تَخْتَلِفُونَ ﴿٦٩﴾ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي

फिर उस पानी के साथ ज़मीन हरी-भरी हो जाती है। (ऐसी कि आंखों को ठन्डक बख़्शती है) बेशक अल्लाह बड़ा ही मेहरबान (और सब के हाल से) ख़बरदार है ६४. (उस की हुकूमत का क्या हिसाब है) जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीनों में है सब उसी का है। और अल्लाह अपनी ज़ात में (मख़्लूक़ से) बे पर्वाह और बेनियाज़ है ६५. क्या तुम नहीं देखते कि जो ज़मीन पर है अल्लाह ने तुम्हारे लिये (बिला उज्रत और मज़दूरी किस प्रकार) काम में लगा रखा है और जहाज़ समुन्द्र में उस के हुक्म से (इधर-उधर) चलते हैं और वही (अल्लाह) आसमान को ज़मीन पर गिरने से रोके हुये हैं (क्या मजाल कि उस के निर्देश के बग़ैर अपने स्थान से हिल भी जाये) कुछ शक नहीं कि अल्लाह लोगों के हाल पर मेहरबान निहायत रहम वाला है। ६६. वही अल्लाह तो है जिस ने तुम को ज़िन्दगी बख़्शी फिर तुम को (जिस की मौत आ चुकी है) मार देता है। फिर तुम को ज़िन्दा करे गा[२५]। निःसंदेह इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा है ६७. हर एक क़ौम के लिये हम ने कुर्बानी का तरीक़ा मुक़र्रर कर दिया था जिस पर वह कारबन्द भी रहे[२६] सो (अब) उन लोगों को चाहिये कि दीन (के बारे)में तुझ से झगड़ा न करें। तू (डट कर) अपने पर्वरदिगार की तरफ़ लोगों को बुलाता रह। बिला शुब्हा तू सीधी हिदायत पर है[२७] ६८. अगर तुझ से (बेहूदा) झगड़ा करें तो तू कह दिया कर कि अल्लाह तआला तुम्हारे कामों को ख़ूब जानता है। ६९. (वही) अल्लाह क़ियामत के दिन तुम्हारे इख़्तिलाफ़ी मामलात में फ़ैसला करे गा। (अगर तुम को शुब्हा हो कि अल्लाह को हमारे छुपे कार्यों की क्या ख़बर है? तो यह तुम्हारी जिहालत है) ७०. क्या तुम्हें मालूम नहीं कि अल्लाह आसमान और ज़मीन की छुपी चीज़ों को भी जानता है?

....

२५. यानी हर समय वह तुम पर मुकम्मल इख़्तियार रखता है लेकिन फिर भी लोग उस का शुक्र नहीं अदा करते, बल्कि उल्टा नाशुक्री करते हैं, इस में तनिक भर संदेह नहीं कि इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा हैं। एक नाशुक्री उस की यह है कि अव्वल तो वह अल्लाह की दी हुयी नेमतों पर शुक्र अदा नहीं करता। दूसरी नाशुक्री यह है कि ख़ुद तो कुछ करते-कराते नहीं, उल्टे और काम करने वालों पर मुंह फाड़ कर एतराज़ करते हैं। तुम्हारे मुख़ालिफ़ों का हाल यह है कि तुम्हारे एक-एक अमल पर एतराज़ करते हैं, कभी नमाज़ पर, कभी रोज़ा पर, कभी कुर्बानी पर और कभी ➲

➲हज्ज पर। (सनाई)

२६. शाने-नुज़ूल:- कुछ मुश्रिकों ने सहाबा से इस बात पर झगड़ा किया कि तुम अपने हाथों का ज़ब्ह किया हुआ तो खाते हो, मगर अल्लाह का मारा हुआ जानवर नहीं खाते हो, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। मुफ़स्सिरों ने इस आयत का तर्जुमा दो प्रकार से किया है (१) "हर ज़माना के लिये अल्लाह ने एक शरीअ़त क़ाइम की है। कभी मूसा अ़लै० की शरीअ़त, कभी अ़ीसा अ़लै० की, तो कभी दूसरी शरीअ़त के हुक्म पर एतराज़ करना ठीक नहीं है" (२) दूसरा अर्थ यह है कि दुनिया के पैदा करने से पूर्व अल्लाह के हुक्म में नेक-बद, अच्छे-बुरे छंट चुके हैं, इस लिये हर एक गरोह अपनी तक़्दीरी आ़दत पर अड़ा हुआ है। इस दूसरे अर्थ में अल्लाह के फ़ैसले का ज़िक्र है और अल्लाह के अ़िल्म के अनुसार जो कुछ दुनिया के पैदा होने से पचास हज़ार वर्ष पूर्व क़रार पाया है उस का ज़िक्र है। इसी का नाम तक़्दीर है। यह मस्अला इतना कठिन है कि इस में अच्छे-अच्छे लोग बहक गये हैं और तरह-तरह की ग़लतियों में पड़े हुये हैं। चुनान्चे फ़ल्सफ़ा और मन्तिक़ के आ़लिमों ने यह कह कर कि अल्लाह को छोटी-छोटी चीज़ों और मामलों के बारे में अ़िल्म नहीं है, सख़्त ठोकर खाई है (अहसनुल् फ़वाइद)

२७. कुरआन मजीद का यह दावा कि हर एक क़ौम में कुर्बानी का हुक्म है इस का सबूत आज भी आसमानी किताबों में मौजूद है। अ़ीसाइयों की मज़हबी पुस्तक बाइबल तो कुर्बानी के अहकाम से भरी हुयी है। तौरात की दूसरी किताब "सफ़र खुरुज" में आ़म तौर पर यही अहकाम हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि हिन्दू धर्म की पुस्तकों में भी इस का सबूत मिलता है। हिन्दुओं और आर्यधर्म के गुरू मनु फ़रमाते हैं "यज्ञ" (कुर्बानी) के वास्ते और नौकरों को खिलाने के वास्ते अच्छे हिरण और परिन्दा मारना चाहियें"। अगले ज़माना में ऋषियों ने यज्ञ के लिये खाने के लायक़ हिरण और परिन्दों को मारा है। ब्रह्मा ने आप से आप यज्ञ (कुर्बानी) के वास्ते पशु को पैदा किया। इस खिलाने में जो क़त्ल होता है वह वध नहीं कहलाता। जानवर, परिन्दे और कछुवा आदि सब यज्ञ के वास्ते मारे जाने से लोग दूसरे जन्म में ऊँची जाति को पाते हैं (मनुस्मृति अध्याय ५, स्लोक-२२, २३, ३९, ४०)

अगर्चे आज कल के हिन्दू या आर्यधर्म के मानने वाले लोग इन स्थानों की तावील या तर्दीद करें मगर स्पष्ट शब्दों में मौजूद होने की वजह से उन की तावील ग़लत मानी जाये गी। हम तो केवल इतना साबित करना चाहते हैं कि कुरआन ने जो हर धर्म में कुर्बानी का दावा किया है यह अपना सबूत रखता है। रहा यह मस्अला कि कुर्बानी का सबब क्या है? तो इस के लिये हमारी किताब "हक़ प्रकाश" और दूसरी किताबें पढ़ें (तफ़्सीर-५/१३३)

السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ إِنَّ ذَٰلِكَ فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ
ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ
اللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَمَا لَيْسَ لَهُم
بِهِ عِلْمٌ ۗ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِن نَّصِيرٍ ۝ وَإِذَا تُتْلَىٰ
عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ
كَفَرُوا الْمُنكَرَ ۖ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ
يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۗ قُلْ أَفَأُنَبِّئُكُم بِشَرٍّ
مِّن ذَٰلِكُمُ ۗ النَّارُ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ

कुछ शक नहीं कि यह सब कुछ किताब में मौजूद है। निःसंदेह यह अल्लाह के नज़दीक आसान है[२८] ७१. (बड़े अफ़्सोस की बात है कि ऐसे मालिक को छोड़ते हैं) और अल्लाह के अ़लावा ऐसी चीज़ों की अ़िबादत करते हैं कि जिन के बारे में न तो अल्लाह ने कोई दलील उतारी है न स्वयँ उन को उन चीज़ों का यक़ीनी ज्ञान है। और (ऐसे) ज़ालिमों के लिये कोई सहायक न हो गा[२९] ७२. और जब उन को हमारे खुले-खुले अहकाम (पढ़ कर) सुनाये जाते हैं (जिन में तौहीद का सबूत और शिर्क का रद्द होता है)➲

وَبِئۡسَ الۡمَصِيۡرُ ۞ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ
فَاسۡتَمِعُوۡا لَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيۡنَ تَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ
اللّٰهِ لَنۡ يَّخۡلُقُوۡا ذُبَابًا وَّلَوِ اجۡتَمَعُوۡا لَهٗ ؕ وَ
اِنۡ يَّسۡلُبۡهُمُ الذُّبَابُ شَيۡـًٔا لَّا يَسۡتَنۡقِذُوۡهُ
مِنۡهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالۡمَطۡلُوۡبُ ۞ مَا قَدَرُوا

➲तो तुम काफ़िरों के चेहरों पर नाराज़गी सी मालूम करते हो (ऐसे बिगड़ जाते हैं) क़रीब होता है कि जो लोग हमारे अहकाम उन को सुनाते हैं उन पर टूट पड़ें। तू कह! क्या मैं तुम्हें इस से भी बुरी चीज़ बताऊँ (जो सब से बुरी है) वह आग है जिस का अल्लाह ने काफ़िरों (और तौहीद के इन्कारियों)से वादा किया हुआ है। और वह बुरा स्थान है (इस में शिर्क करने वाले दाख़िल हों गे) ७३. लोगो! (शिर्क से बचो और इस से आगाह करने के लिए) एक मिसाल बताई जाती है पस तुम उसे कान लगा कर सुनो (वह यह है कि) अल्लाह को छोड़ कर जिन लोगों से तुम दुआयें करते हो (कोई भी हो। नबी, वली, मसीह, उज़ैर, पीर, फ़कीर या ग़ौस) वह लोग एक मक्खी भी नहीं बना सकते, अगर्चे वह सब उस के लिये जमा हो जायें[३०]। और (सुनो!) अगर मक्खी उन से कोई वस्तु छीन ले तो वह उस से वापस नहीं ले सकते (तो परिणाम क्या निकला? यही कि) तालिब (यानी दुआयें मांगने वाले) और मतलूब (वि जिनसे दुआऐं की जाती हैं, अल्लाह के अलावा)सब कमज़ोर हैं

....

२८. यानी ज़मीन और आसमान की हर चीज़ उस के ज़िल्म के घेरे में है, एक कण भी उस के ज़िल्म से बाहर नहीं। इस दुनिया के पैदा करने से पहले ही इस दुनिया के कण-कण का उस को ज़िल्म था। मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि अल्लाह तआला ने आकाश व ज़मीन की पैदाइश से पचास हज़ार वर्ष पूर्व ही जब कि उस का अर्श पानी पर था, तमाम मख़्लूक़ की तक़दीर लिख दी थी। "सुनन" की रिवायतों में है कि सर्वप्रथम अल्लाह ने क़लम को पैदा किया, फिर उस से कहा कि जो कुछ क़ियामत तक होने वाला है उसे लिख दे। यह अल्लाह के ज़िल्म का कमाल है कि चीज़ के पैदा होने से पहले ही उस के बारे में उस को ज़िल्म है। यह उस के लिये कोई कठिन कार्य नहीं बल्कि बहुत ही सरल है।

२९. इस आयत में बिला दलील व सबूत के अल्लाह को छोड़ कर दूसरों की पूजा-पाट करने वालों की मूर्खता को बयान किया गया है कि शैतान की तक़्लीद और बाप-दादाओं की देखा-देखी के अलावा न कोई अक़्ली दलील है और न ही नक़्ली। इस के बावजूद उन का हाल यह है कि जब अल्लाह का कलाम उन को पढ़ कर सुनाया जाता है तो उन के तन-बदन में आग लग जाती है। ऐ नबी! उन के कुफ़्र की वजह से जो उन पर अज़ाब आने वाला है उस से उन को अवगत करा दे (मुहम्मदी)

३०. इस आयत में जो लोग अल्लाह के अलावा दूसरों की पूजा करते हैं उन की कम अक़्ली और नादानी का बयान हो रहा है। फ़रमाया गया कि यह जाहिल अल्लाह के अलावा जिन चीज़ों की पूजा कर रहे हैं उन की मिसाल (उदाहरण) बिल्कुल ऐसी ही है कि इन के बुत और ठाकुर वग़ैरह इकट्ठा हो कर अगर एक मक्खी भी बनाना चाहें तो नहीं बना सकते। मुस्नद अहमद की एक रिवायत में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि उस शख़्स से बढ़ कर ज़ालिम कौन हो गा जो मेरी तरह किसी दूसरे को ख़ुदा बनाना चाहता है। अगर वह ख़ुदा बनने के क़ाबिल हैं तो एक मक्खी या मच्छर बना कर दिखा दें। बुख़ारी, मुस्लिम के अल्फ़ाज़ यह है "वह एक ज़र्रा या एक जौ का दाना ही बना दें"।➲

➲आगे उन मन्घड़त ठाकुरों की कमज़ोरी का और हाल बयान हुआ है कि यह लोग मक्खी और मच्छर की छीनी हुयी चीज़ को वापस भी नहीं ले सकते हैं, तो वह जो अपना हक़ मक्खी और मच्छर तक से न हासिल करे, वह भला ख़ुदा कैसे बन सकता है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने फ़रमायाः 'तालिब' से मुराद "बुत" और 'मतलूब' से मुराद "मक्खी" है। इमाम इब्ने जरीर ने भी इसी को पसन्द किया है और यही सहीह भी है। दूसरा अर्थ यह भी बयान किया गया हैं कि 'तालिब' से मुराद "पूजा करने वाले" और 'मतलूब' से मुराद "बुत और ठाकुर हैं"। आगे फ़रमाया कि उन के दिलों में अल्लाह की बुज़ुर्गी और बड़ाई का कुछ भी ख़याल नहीं है। इसी लिये तो ऐसी ज़लील और हक़ीर चीज़ों की पूजा करते हैं और अल्लाह के साथ ज़लील मख़्लूक़ को शरीक ठहराते हैं (मुहम्मदी)

मक्खी एक छोटी-मोटी ज़लील मख़्लूक़ है। यह सब जानवरों में सब से अधिक जाहिल और मूर्ख है अपने आप को गन्दगी में हमेशा लत-पत रखती है। इस की आयु लग-भग ४० दिन की है। इस की पैदाइश गन्दगी से है और गन्दगी ही इस का खाना-पीना है। तो जो ख़ुदा इस मख़्लूक़ को भी न पैदा कर सके वह भला माबूद और पूजने के लाइक़ क्यों कर हो सकता है और एक अक़्ल रखने वाला भला उन को क्यों कर माबूद बना सकता है। (तर्जुमान-नवाब)

اللّٰہَ حَقَّ قَدْرِہٖ ؕ اِنَّ اللّٰہَ لَقَوِیٌّ عَزِیْزٌ ۝ اَللّٰہُ
یَصْطَفِیْ مِنَ الْمَلٰٓئِکَۃِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ؕ
اِنَّ اللّٰہَ سَمِیْعٌۢ بَصِیْرٌ ۝ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْھِمْ
وَمَا خَلْفَھُمْ ؕ وَاِلَی اللّٰہِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝
یٰٓاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا ارْکَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا
رَبَّکُمْ وَافْعَلُوا الْخَیْرَ لَعَلَّکُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ وَجَاھِدُوْا
فِی اللّٰہِ حَقَّ جِھَادِہٖ ؕ ھُوَ اجْتَبٰکُمْ وَمَا جَعَلَ
عَلَیْکُمْ فِی الدِّیْنِ مِنْ حَرَجٍ ؕ مِلَّۃَ اَبِیْکُمْ
اِبْرٰھِیْمَ ؕ ھُوَ سَمّٰکُمُ الْمُسْلِمِیْنَ ۬ۙ مِنْ قَبْلُ
وَفِیْ ھٰذَا لِیَکُوْنَ الرَّسُوْلُ شَھِیْدًا عَلَیْکُمْ
وَتَکُوْنُوْا شُھَدَآءَ عَلَی النَّاسِ ۚۖ فَاَقِیْمُوا
الصَّلٰوۃَ وَاٰتُوا الزَّکٰوۃَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰہِ ؕ ھُوَ
مَوْلٰکُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰی وَنِعْمَ النَّصِیْرُ ۝

७४. (सच जानो तो) उन मुश्रिकों ने अल्लाह की क़द्र जैसी करनी चाहिये थी नहीं की। (हालाँकि) अल्लाह बड़ा ही ज़बर्दस्त और सब पर ग़ालिब है। ७५. अल्लाह (बन्दों की हिदायत के लिये) फ़रिश्तों से रसूल चुनता है (जो बनी आदम के नबियों के पास आते हैं) और बनी आदम में से। कुछ शक नहीं कि अल्लाह बड़ा ही सुनने वाला देखने वाला है[३१] ७६. जो चीज़ें उन के आगे और पीछे की हैं वह सब को जानता है। और सब काम अल्लाह ही की तरफ़ फेरे जाते हैं (गोया उन सब गाड़ियों का इन्जन वही है) ७७. ऐ ईमान वालो! (अल्लाह के आगे उस के रसूल की शिक्षा के अनुसार) रुकूअ़ और सज्दे करो और अपने पर्वरदिगार की अ़िबादत करो[३२] और नेक कामों में लगे रहो ताकि तुम्हारा भला हो और तुम मुराद तक पहुंचो (और दोनों दुनियाओं में अ़िज़्ज़त पाओ) ७८. और अल्लाह की राह में ऐसी कोशिश करो जो उस का हक़ है (जान से, माल से। और देखो) उसी ने तुम्हारा इन्तिख़ाब किया और दीन के अहकाम में तुम पर कोई तंगी नहीं की[३३]। सो तुम अपने बाप इब्राहीम का दीन इख़्तियार करो। उसी ने इस (किताब) से पहले (नाज़िल की हुयी किताबों से)➲

➲और इस किताब (कुरआन) में तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है (पस तुम मुसलमान यानी अल्लाह के फ़र्माबर्दार बने रहो) ताकि रसूल तुम पर और तुम आम लोगों पर शासक (हुक्मराँ) हो जाओ (क़ियामत के रोज़ नबिय्यों की तब्लीग़ की गवाही दे सको और तुम्हारी गवाही मोतबर मानी जाये) सो तुम नमाज़ क़ाइम करो और (माल की) ज़कात देते रहो और (बड़ी बात यह है कि तुम) अल्लाह ही से चन्गुल मारो (उसी का सहारा ढूंडो और उसी के हो रहो) वही तुम्हारा मौला है, वही सब से अच्छा मौला है, और सब से अच्छा सहायक[३४]।

....

३१. यानी अल्लाह तआला फ़रिशतों में से पैग़ाम लाने ले जाने के लिये किसी को चुन लेता है जैसे जिब्रील, मीकाईल वग़ैरह। और इसी प्रकार इन्सानों में से नबी बनाने के लिये कुछ लोगों को चुन लेता है जैसे, तमाम अम्बिया और रसूल। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह ने मूसा से कलाम कर के उन को मर्तबा दिया, हज़रत इब्राहीम को ख़लील (मित्र) बना कर उन को मर्तबा दिया"। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने आगे फ़रमाया: "मूसा बिन अ़िम्रान, अल्लाह के "सफ़ी" यानी मुन्तख़ब किये हुये हैं"। यह आयत उस समय नाज़िल हुयी जब मुश्रिकों ने एतराज़ किया कि क्या यह कुरआन ऐसे शख़्स पर नाज़िल किया गया है जो हम लोगों में बड़े मर्तबा का नहीं है। यह बात वलीद बिन मुग़ीरा ने कही थी। इस से पहले तौहीद का बयान था अब यहाँ कुछ नबुव्वत के बारे में ज़िक्र हो रहा है। पहले बुतों की पूजा का रद्द था अब यहाँ फ़रिश्तों की अ़िबादत का रद्द फ़रमाया है। (तर्जुमान मौलाना नवाब रह०)

३२. 'अ़िबादत' हद दर्जा आजिज़ी और ज़िल्लत का नाम है। चुनान्चे वह रास्ता जिस पर लोग बहुत ज्यादा चलते-फिरते हों, उस पर आना-जाना अधिक हो और अ़िबादत के लिये उस राह से आते-जाते हों, ऐसी राह को "मुज़ल्लल" कहा जाता है। यह बात स्पष्ट है कि सब से ज़्यादा आजिज़ी सब से बड़ी ज़ात के सामने करनी चाहिये, इसी लिये इस्लाम ने यह आजिज़ी अल्लाह के अ़लावा किसी के लिये जायज़ नहीं रखी है। यह अ़िबादत तीन प्रकार से अदा होती है (१) ज़बान से, जैसे हम्द व सना और ज़िक्र वग़ैरह। (२) बदन से, जैसे नमाज़, रोज़ा, हज्ज वग़ैरह। (३) माल से, जैसे ज़कात, सदक़ा, ख़ैरात, कुर्बानी और नज़्र व नियाज़ वग़ैरह। यह सारी क़िस्में सिर्फ़ अल्लाह की अ़िबादत, इताअ़त और उस की ख़ुश्नूदी हासिल करने के लिये इस्तेमाल की जायें गी और अ़िबादत की इन तीनों क़िस्मों में किसी दूसरे को शरीक करना जायज़ नहीं है। (वाज़िहुल् बयान- अ़ल्लामा सियालकोटी रह०)

३३. 'दीन के अहकाम में तुम पर कोई तंगी नहीं की' इसी लिये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मुझे सहल और सरल दीन दे कर भेजा गया है"। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जब हज़रत मआ़ज़ बिन जबल और अबू मूसा अश्अ़री रज़ि० को यमन का क़ाज़ी बना कर भेजा तो यह हिदायत फ़रमाई: "लोगों को बशारत (शुभसूचना) दो और उन को दीन से नफ़रत मत दिलाओ। आसानी पैदा करो उन पर सख़्ती न करो"।

'हु-व सम्माकुम...........' (उस ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है) यानी अल्लाह ने। कुछ लोगों ने यह तर्जुमा किया है "इब्राहीम ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा"। अ़ल्लामा जरीर तबरी ने इस क़ौल का रद्द किया है। इमाम मुजाहिद ने भी यही तर्जुमा किया है कि "अल्लाह ने इस किताब में और पहले की सभी किताबों में तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है"। हाफ़िज़ इब्ने कसीर रह० ने भी इसी को सहीह कहा है। हज़रत हर्स अश्अ़री रज़ि० इमाम नसई से रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिसने जाहिलिय्यत की पुकार पुकारी, वह दोज़ख़ में जाये गा चाहे वह नमाज़, रोज़ा ही क्यों न करता हो, इस लिये तुम अल्लाह ही को पुकारो। उस ने तुम्हारा नाम मुस्लिम मोमिन और अ़िबादुल्लाह (अल्लाह के नेक बन्दे) रखा है"। (नसई शरीफ़)

'ताकि रसूल तुम पर और तुम आम लोगों पर' यानी हम ने तुम को सब से पसन्दीदा और सभी उम्मतों➲

ंमें से गवाही में ज़्यादा मोतबर (विश्वसनीय) इस लिये बनाया है ताकि क़ियामत के दिन तुम लोगों पर गवाह बनो। इस लिये कि क़ियामत के दिन तमाम उम्मतें इस उम्मत को अपने से अफ़्ज़ल समझें गी, इस लिये इस उम्मत की गवाही मक़्बूल हो गी। यह उम्मत इस बात की गवाही दे गी कि तमाम नबियों ने अल्लाह का पैग़ाम अपनी-अपनी उम्मतों तक पहुंचा दिया, और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस उम्मत के गवाह हों गे। 'अल्लाह ही से चन्गुल मारो' यानी क़ुरआन व हदीस (किताब व सुन्नत) को लाज़िम पकड़ो और तमाम मामलात में अल्लाह ही पर भरोसा करो। वही सब से अच्छा मौला और सब से अच्छा सहायक है। (तर्जुमान नवाब मर्हूम)

३४. इस सूरः का आरंभ अल्लाह से डरते रहने की नसीहत से हुआ था और अब समापन भी अल्लाह से संबन्ध बनाये रखने की नसीहत से हो रहा है। अगर ग़ौर किया जाये तो हज्ज की अदायगी का उद्देश्य भी यही है। अगर दिल की आँखों से देखें गे तो यह पायें गे कि हज्ज करने का उद्देश्य भी दिल में अल्लाह का डर पैदा करने और अल्लाह के साथ संबन्ध बनाये रखने के लिये ही है। (राज़)

بِسْــمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْــمِ

पारः क़द अफ़्-ल-ह (18)

संक्षिप्त विषय सूची

क़द् अफ़्-ल-ह (18)

सूरः मुअ्मिनून-(23)

सूरः मुअ्मिनून (ईमान लाने वाले) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[1]। इस में ११८ आयतें औरः ६ रुकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है।

१. (नजात चाहने वालो सुनो!) नजात पाने वाले वह ईमानदार हैं २. जो (अल्लाह को वहदहू ला शरीक मान कर) अपनी नमाज़ों में आजिज़ी करते हैं[2] (ऐसे कि गोया अल्लाह के सामने हाथ बाँध कर खड़े हैं) ३. जो (बि मतलब और) बेफ़ाइदा बातों से मुंह फेरे रहते हैं ४. और वह लोग जो अपने मालों की ज़कात अदा करने वाले हैं ५. और (वह लोग) जो अपनी शर्मगाहों की (ज़िना और लिवातत आदि से) हिफ़ाज़त करते हैं ६. कि अपनी औरतों और लौंडियों के अलावा किसी से नहीं मिलते उन पर (अल्लाह की तरफ़ से) कोई मलामत नहीं ७. हाँ, जो लोग इस के अलावा और तरीक़ा इख़्तियार करते हैं (यानी पराई महिलाओं या लड़कों से लिवातत {कुकर्म} करते हैं) वही सीमाओं को लाँघने वाले है[3] ८. और (वह लोग भी नजात पाने वाले हैं) जो अपनी अमानतों और वादों का ख़याल रखते हैं। ९. और वह लोग जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं (इस प्रकार कि ठीक समय पर उन को अदा करने का ख़याल रहता है[4]) १०. सो यही लोग वारिस हैं ११. जो जन्नतुल् फ़िर्दौस के वारिस हों गे। उस में हमेशा रहें गे १२. हम ने इन्सान को (यानी उस के बाप आदम को) साफ़ मिट्टी से बनाया १३. फिर हम ने उस को एक मज़बूत मकान➲
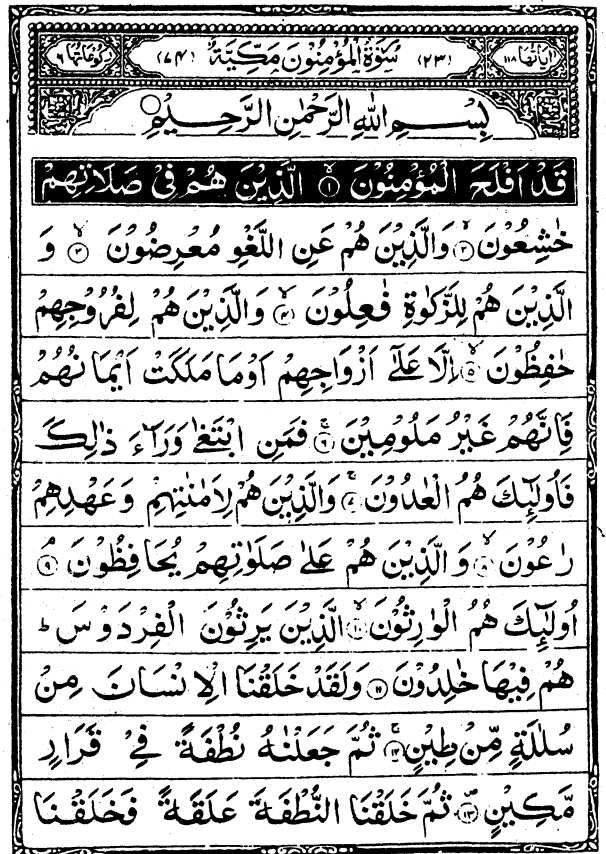
में नुत्फ़ा बना कर रखा १४. (नुत्फ़ा बनाने के कुछ दिन पश्चात्) फिर उस नुत्फ़ा को लोथड़ा बनाया

....

१. नसई, तिर्मिज़ी और मुस्नद अहमद में रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर जब वह्यि नाज़िल होती, तो भीनी-भीनी, मीठी-मीठी और हल्की-हल्की सी आवाज़ आप के पास सुनाई पड़ती थी। वह आवाज़ शहद की मक्खियों की भिंभिनाहट की सी होती थी। एक मर्तबा वह्यि की यह हालत पैदा हो कर ख़त्म हो गयी तो आप ने क़िब्ला की ओर मुंह कर के दोनों हाथों को ऊपर उठा कर यह दुआ पढ़ी: "ऐ अल्लाह!हमें अधिक दे और कुछ भी कमी न कर, हमें अ़िज़्ज़त दे और ज़लील न कर, हमें अ़ता कर और वन्चित न कर, हमें दूसरों पर पसन्द फ़र्मा ले और मेरे होते हुये दूसरों को न पसन्द कर, हम से तू प्रसन्न हो जा और हमें भी प्रसन्न कर दे"। इस दुआ़ से फ़ारिग़ हो कर आप ने यह शुभ सूचना सुनाई कि आज हम पर ऐसी दस आयतें नाज़िल हुयी हैं कि जिस ने उन पर पाबन्दी से अ़मल किया तो वह निः संदेह जन्नत में जाये गा। फिर आप ने इसी सूरः मुअ्मिनून की आरंभ की दस आयतों की तिलावत फ़रमाई।

हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि० से जब आप के आचरण और स्वभाव के बारे में प्रश्न किया गया तो उन्हों ने आप के अख़्लाक़ का चित्र खींचने के लिये इन्हीं दस आयतों की तिलावत फ़रमाई और कहा: आप का अख़्लाक़ कुरआन अ़ज़ीम था (अर्थात बिल्कुल कुरआन के आदेश और हिदायत के अनुकूल था)

२. मुहम्मद बिन सीरीन रह० फ़रमाते हैं कि इस आयत के नाज़िल होने के बाद सहाबा रज़ि० इतने इतमिनान के साथ नमाज़ पढ़ते थे कि सज्दा की जगह से निगाहें न हटाते थे। एक अन्य हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "मुझे सुगंध (ख़ुश्बू) और औ़रतें अधिक पसन्द हैं और मेरी आंखों की ठन्डक नमाज़ में रख दी गयी है" (नसई) 'बेफ़ाइदा, बेमतलब, वाहियात, निकम्मी बातों' से मुराद हर एक फ़ुज़ूल बात-चीत, काम-काज, खेल-तमाशा और इसी प्रकार के अन्य दूसरे कार्य हैं जिन का कोई लाभ न हो। कुछ उलमा ने तो इस के मतलब को आ़म करते हुये कुफ़्र, शिर्क, गाली-गुलूच और अन्य हराम और बे ज़रूरत कामों को भी इस में शामिल माना है (वहीदी)

३. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: सात आदमी ऐसे हैं जिन पर अल्लाह न तो रहमत की नज़र करे गा, न उन्हें पाक करे गा, न उन्हें आलिमों के साथ जमा करे गा, बल्कि उन्हें दोज़ख़ में सब से पहले जाने वालों के साथ करे गा। हाँ, अगर वह मरने से पहले तौबा कर लें तो तौबा करने वालों के लिये अल्लाह मेहरबान है। वह सात अभागे यह हैं (१) मुश्त ज़नी (हस्थ मैथुन) करने वाला (२) इग़लाम बाज़ी (लौंडे बाज़ी) करने वाला और कराने वाला (३) शराब पीने का आ़दी (नशेणी) (४) माता-पिता के साथ दुर्व्यवहार करने वाला (५) पड़ोसियों को तक्लीफ़ें देने वाला (६) पड़ोसी की पत्नी से ज़िना करने वाला (७) रिश्ते-नाते को अकारण तोड़ने वाला (इब्ने कसीर)

४. 'वादों का ख़याल रखते हैं' अपनी अमानतों और वादों को पूरा करते हैं। अमानत में ख़ियानत नहीं करते। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मुनाफ़िक़ की तीन पहचान हैं (१) बात करे तो झूठ बोले (२) वादा करे तो उस के ख़िलाफ़ करे (३) अमानत रखने के लिये दी जायें तो उस में ख़ियानत करे। नौवीं आयः में फ़रमाया: वह नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं। सूरः की पहली आयत में आरंभ नमाज़ से हुआ था और अन्त में भी नमाज़ का ज़िक्र किया। (१) नमाज़ में आ़जिज़ी (२) वाहियात कर्मों से बचना (३) माल की ज़कात देना (४) शर्म गाहों की सुरक्षा (५) अमानत की सुरक्षा (६) वादा का ख़याल (७) नमाज़ों की हिफ़ाज़त का ज़िक्र करने के बाद फ़रमाया: यही लोग (जो इन सात कामों पर अ़मल करते हैं) जन्नतुल् फ़िर्दौस के वारिस हों गे। एक अन्य हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह से माँगो तो जन्नतुल फ़िर्दौस ही माँगो"। यह सब से ऊँचा दर्जा और बेहतरीन जन्नत है। वहीं से जन्नत की समस्त नहरें जारी होती हैं और उसी के ऊपर अल्लाह तआ़ला का अर्श है (बुख़ारी, मुस्लिम) ऐ अल्लाह! तेरी किताब कुरआन मजीद का हिन्दी अनुवाद करने वाले, इस के प्रूफ़ की रीडिंग

करने वाले, इस के प्रकाशन में माल-दौलत ख़र्च करने वालों को जन्नतुल फ़िर्दौस में स्थान अ़ता फ़रमा, अवश्य अ़ता फ़रमा (ख़ालिद)

الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۗ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ۗ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ۝ ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ۝ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ ۖ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ۝ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِي الْاَرْضِ ۖ وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍ ۢ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ۝ فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ اَعْنَابٍ ۘ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ۝ وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۗ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا

फिर उस लोथड़े को कच्ची सी (गोश्त की) बोटी बनाया, फिर उस कच्ची (गोश्त की) बोटी को हड्डी की शक्ल में लाये, फिर हम ने उन हड्डियों पर चमड़ा पहनाया (इस के पश्चात्) फिर हम उस को एक और प्रकार की पैदाइश में लाये (यानी पुरूष एवं महिला की तमीज़ उस में कर दी) अल्लाह की ज़ात बड़ी बर्कत वाली है जो सब पैदा करने वालों से अच्छा पैदा करने वाला है[५] १५. (इतने चरणो के बाद) फिर तुम लोगों को मरना है १६. इस के बाद क़ियामत के रोज़ उठना हो गा (यह है तुम्हारे हालात का संक्षिप्त बयान) १७. देखो हम ने तुम्हारे (सरों पर) सात आकाश बनाये और हम अपनी मख़्लूक़ से बेख़बर नहीं हैं १८. और हम आसमान से (बादलों के ज़रीआ़) अनुमान से पानी उतारते हैं फिर उस को ज़मीन में ठहराते हैं और उस पानी को ले जाने (यानी सुखा देने) पर क़ुदरत रखते हैं १९. फिर उस के साथ तुम्हारे लिये खजूरों और अंगूरों के बाग़ उगाते हैं। उन में तुम्हारे लिये बहुत से फल हैं और उन्हीं में से तुम खाते हो २०. और (सुनो) हम ने (तुम्हारे लिये) ज़ैतून का पेड़ पैदा किया है जो तूरे सैना पर्वत से निकलता है खाने वालों के लिये वह घी और सालन ले कर उगता है[६] २१. और (सुनो!) चार पायों में तुम्हारे लिये (इ़बरत और) नसीहत है। उन के पेटों में से तुम को दूध पिलाते हैं और तुम्हारे लिये उन में कई एक फ़ाइदे हैं और तुम उन्हीं में से खाते भी हो २२. और उन चार पायों और कश्तियों पर सवार किये जाते हो[७] २३. और हम ने नूह को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा, उस ने कहा कि भाइयों! अल्लाह की इ़बादत करो।

....

५. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम में हर एक की पैदाइश इस तरह होती है कि वह चालीस दिन तक अपनी माँ के पेट में नुत्फ़ा की सूरत में रहता है, फिर चालीस दिन तक जमे हुये ख़ून की शक्ल में, फिर चालीस दिन तक गोश्त के लोथड़े की शक्ल में रहता है। फिर अल्लाह पाक एक फ़रिश्ते को भेजता है जो उस में रूह फूंकता और उस की रोज़ी, अ़मल, मौत और अच्छा या बुरा होना लिखता है। पस क़सम है उस ज़ात की जिस

➲के अलावा कोई माबूद नहीं, एक शख़्स जन्नत का अमल करता रहता है यहाँ तक कि जन्नत उस से केवल एक हाथ दूर रह जाती है कि तक़्दीर का लिखा ग़ालिब आ जाता है और बुरे अमल कर के दोज़ख़ी हो कर मरता है। इसी प्रकार एक शख़्स ज़िन्दगी भर बुरे अमल करता रहता है यहाँ तक कि उस के और जहन्नम के दर्मियान केवल एक हाथ की दूरी रह जाती है कि तक़्दीर का लिखा ग़ालिब आ जाता है और वह नेकों का अमल करने लगता है और जन्नती हो कर मरता है (मुत्तफ़क़ अलैह)

इन्सान की पैदाइश के सिलसिले में इस आयत में, या इस प्रकार की और अन्य आयतों में जो चरण गिनाये गये हैं वह अल्लाह की क़ुदरत की निशानियों में से हैं। क़ुरआन ने जो आज से चौदह सौ वर्ष पूर्व बात कही थी आज की साइन्सी तहक़ीक़ ने उस को और स्पष्ट कर दिया है।

६. इस आयत में विशेष रूप से ज़ैतून के पेड़ का ज़िक्र है। और पेड़-पौधों के मुक़ाबला में इस में अधिक फ़ाइदे हैं इस लिये विशेष रूप से इस का ज़िक्र किया। इस के दाने और फल में केवल आहार का ही भन्डार नहीं है बल्कि इस के अन्दर तेल का भी भर-पूर ख़ज़ाना मौजूद है, जो मनुष्य के लिये निहायत शक्ति शाली आहार और भोजन के साथ-साथ दवा में काम आता है। इस के दाने में तेल ही तेल होता है। चुटकी में ले कर मलने से तेल टपकने लगता है। और दूसरे तेलों में जो चिकनाई होती है वह हानिकारक होती है, लेकिन इस तेल की चिकनाई बिल्कुल ही हानिकारक नहीं होती। ज़ैतून के लिये तूरे सैना की तरफ़ इशारा इसलिये किया कि ज़ैतून की मुनासिबत से सब से निकट स्थान यही "सैना" ही था। गोया ज़ैतून की अस्ल खेती-बाड़ी यहीं से शुरू होती है और दुनिया में सब से अधिक ज़ैतून यहीं पैदा की जाती है (तर्जुमान)

'तूरे सैना' उस पर्वत का नाम है जिस पर मूसा अलै० ने अल्लाह से कलाम किया था। मुस्नद अहमद की एक रिवायत में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "ज़ैतून का तेल खाओ और लगाओ, इस लिये कि यह तेल बहुत ही मुबारक पेड़ से निकलता है"। क़ुरआन मजीद में सूरः "तीन" में अल्लाह ने ज़ैतून की भी क़सम खाई है और उस की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई है (तफ़्सीर मुहम्मदी)

७. यानी ज़मीन पर जानवरों की पीठ पर और पानी में नाव पर सवार हो कर आते-जाते हो और सामान लाद कर तिजारत करते हो। कश्ती का ज़िक्र आ गया तो लगे हाथों हज़रत नूह अलै० का क़िस्सा भी संक्षिप्त में बयान कर उन की क़ौम की हलाकत की याद ताज़ा कर दी। और यह भी बता दिया कि किस प्रकार मोमिनों ने नजात पाई। नूह अलै० के ज़िक्र की मुनासिबत से और अन्य संदेष्टाओं का भी संक्षिप्त में बयान आ गया।

इन संदेष्टाओं के वाक़िआत को बयान करने का उद्देश्य यह भी हो सकता है कि ऊपर मनुष्य के जिस्म की आवश्यक्ताओं यानी खाने-पीने की वस्तुओं का बयान था। अल्लाह तआला ने उस को ज़िन्दा रखने के लिये उस के खाने-पीने का इन्तिज़ाम किया, इसी प्रकार उस की रूह की आवश्यक्ताओं को पूरा करने के लिये संदेष्टाओं को भेजा ताकि उन के ज़रीआ मनुष्य को रूहानी खाना-पीना मिल सके। फिर आगे यह बताया गया कि जिन लोगों ने नबिय्यों की बात मानी और उन के आदेशानुसार अमल किया वह कामियाब रहे और जिन लोगों ने रसूलो की अवज्ञा की वह हलाक हुये (मुवज़्ज़िहुल-फ़ुर्क़ान)

उस के अलावा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। क्या तुम (उस से) डरते नहीं? २४. पस (यह सुन कर) उस की क़ौम के धन्ना सेठों ने जो इन्कारी हो चुके थे कहा कि यह तो तुम्हारी ही तरह एक आदमी है (फिर यह नबी और रसूल कैसे➲

لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ
اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ۖۚ مَّا

سَمِعْنَا بِهٰذَا فِیۡۤ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِیْنَ ﴿۲۴﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰی حِیْنٍ ﴿۲۵﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِیْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿۲۶﴾ فَاَوْحَیْنَاۤ اِلَیْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْیُنِنَا وَ وَحْیِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَ فَارَ التَّنُّوْرُ ۙ فَاسْلُكْ فِیْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَیْنِ اثْنَیْنِ وَ اَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَیْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ وَ لَا تُخَاطِبْنِیْ فِی الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿۲۷﴾ فَاِذَا اسْتَوَیْتَ اَنْتَ وَ مَنْ مَّعَكَ عَلَی الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ نَجّٰىنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۲۸﴾ وَ قُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِیْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّ اَنْتَ خَیْرُ الْمُنْزِلِیْنَ ﴿۲۹﴾ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ وَّ اِنْ كُنَّا

बन गया? कुछ नहीं) यह चाहता है कि तुम पर अपनी बड़ाई साबित कर। अगर अल्लाह चाहता तो आकाश से फ़रिश्ते उतार देता (न कि हमारे जैसा एक आदमी भेजता) हम ने अपने बुज़ुर्गों में यह बात नहीं सुनी २५. यह तो केवल एक दीवाना आदमी है (कोई तअ़ज्जुब नहीं कि हमारे माबूदों को बुरा-भला कहने की वजह से उन माबूदों की मार पड़ी हो) पस तुम उस के बारे में बस थोड़े समय तक सब्र करो २६. नूह ने कहा: ऐ मेरे पर्वरदिगार! जिस बात पर उन्हों ने मुझे झुठलाया है तू उस पर मेरी मदद कर २७. पस हम ने उस की तरफ़ एक वह्यि भेजी कि तू हमारे सामने और हमारे इल्हाम से एक कश्ती बना फिर जब हमारा हुक्म पहुंचे और तन्नूर (की ज़मीन पानी से फट कर) जोश में आये[८] तो तू हर एक (जीव धारी और प्राणी की) क़िस्म में से दो-दो जिन्स (एक नर और मादा) और अपने अनुयायियों को उस पर चढ़ा लीजियो लेकिन उनमें से जिस पर (उसकी बेईमानी की वजह से अल्लाह तआला के गुस्सा का)हुक्म लग चुका है उसे न चढ़ाना और ज़ालिमों के हक़ में मुझे मुख़ातब न करना (इसलिये कि) उन्हें अवश्य ही डूबना है २८. फिर जब तू और तेरे साथ वाले कश्ती पर सवार हो जायें तो (दुआ़ करते हुये) कहना कि "सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं जिस ने हम को ज़ालिमों की क़ौम से नजात दी" २९. और तू (यह भी)कहियो- ऐ मेरे पर्वरदिगार मुझे किसी बर्कत वाले स्थान पर उतारना इसलिये कि तू सब से बेहतर उतारने वाला है ३०. बेशक इस (बयान) में (अल्लाह की कुदरत के) कई एक निशान हैं"

....

८. 'तन्नूर' का शब्द इस से पूर्व: सूरः हूद की आयःन० ? में भी आ चुका है (इस का क्या अर्थ है? विस्तार से वहाँ भी देख सकते हैं।. बहर हाल अधिकांश का यही कहना है कि यह वास्तव में एक तन्नूर (रोटी पकाने का चूल्हा) था। गोया अल्लाह तआ़ला ने हज़रत नूह को अ़ज़ाब आने की यह निशानी बता दी थी कि जब उस में से पानी फूट निकले तो लोगों को ले कर कश्ती में सवार हो जाओ (वहीदी)

"हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़मा मर्हूम ने यह तर्जुमा किया है "जब हमारे अ़ज़ाब का हुक्म (या कश्ती में सवार होने का हुक्म) आ पहुंचे और तन्नूर उबलने लगे" (यानी उस में पानी भर जाये और जोश मारने लगे) हज़रत अ़ली रज़ि० ने इस की तफ़्सीर यह बयान फ़रमाई है कि "जब जमीन पानी से फट कर जोश में आ जाये"। हज़रत मौलाना अमृतसरी ने भी इसी को पसन्द फ़रमाया है। लेकिन यह भी लिखते हैं कि अ़रबी शब्द कोश की किताब "क़ामूस" में इस का अर्थ "वज्हुल् अर्ज़" (ज़मीन का ऊपर का हिस्सा) है। (सनाई)

आयत न० २३ (व-ल-क़द अर्-सल्ना नू-हन्..........) से गुज़री हुयी कौमों का जो यहाँ पर हाल बयान हुआ है वह बहुत ही मुख़्तसर (संक्षिप्त) है, क्योंकि यहाँ पर तब्लीग़ व नसीहत करना मक़्सूद नहीं है, बल्कि पिछली

➲दो नसीहतों को वाक़िआत की रौशनी में और अधिक क़वी बनाना है। चूंकि तब्लीग़ व नसीहत का जहाँ भी बयान हुआ है हर जगह हज़रत नूह की दावत से आरंभ किया गया है और हज़रत अ़ीसा की दावत पर समाप्त हो जाता है, इसलिये यहाँ पर भी दावत की इब्तिदा हज़रत नूह से हुयी और हज़रत अ़ीसा के बयान पर ख़त्म हो गयी। दर्मियान में जो क़ौमें गुज़रीं उन की तरफ़ मुख़्तसर तौर पर इशारा कर दिया गया। अल्बत्ता हज़रत मूसा का खुसूसी तौर पर नाम लिया गया क्योंकि उन से दावत का एक नया सिलसिला शुरू हुआ था। कुरआन मजीद ने जहाँ "क़र्न" और "क़ुरून्" लफ़्ज़ इख़्तियार किया है इस से केवल क़ौमों का पैदा होना और आबादियों में बसना ही मुराद नहीं, बल्कि क़ौमी तरक़्क़ी और बुलन्दी का ज़माना भी मुराद है। हज़रत नूह के बाद क़ौमी तरक़्क़ी के जिस ज़माना का ज़िक्र किया है, वह संभवतः आ़द व समूद की क़ौम का ज़माना था, क्योंकि दूसरी जगह उन्हें हज़रत नूह की क़ौम का जानशीन (उत्तराधिकारी) कहा गया है। फिर इन के बाद जिस ज़माना की तरफ़ इशारा किया है उस से मुराद वह बेशुमार क़ौमें हैं जो हज़रत मूसा के नबी बनाये जाने से पहले गुज़री हैं। और जिन के बारे में सूरः इब्राहीम में बयान गुज़र चुका है कि "और जो क़ौमें इन के बाद गुज़रीं जिन को सिर्फ़ अल्लाह जानता है" और आयत "फिर हम ने पै दर पै रसूल भेजे" से मालूम हुआ कि उन ज़मानों में बेशुमार क़ौमें उभरीं और तबाह व बर्बाद हुयीं और अल्लाह के रसूल बहुतायत से आये, क्योंकि फ़रमाया: "फिर हम ने यके बाद दीगरे रसूल भेजे" और "यके बाद दीगरे क़ौमें भेजीं" और गुनाहों के जुर्म में बर्बाद होती रहीं (तर्जुमानुल कुरआन मौलाना आज़ाद)

لَمُبْتَلِيْنَ ۝ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۝
فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ
مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ
قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ
مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ۝ وَلَئِنْ
اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۝ اَيَعِدُكُمْ
اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ۝
هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ۝ اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا
الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ۝ اِنْ هُوَ اِلَّا
رَجُلُ ۨافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝
قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ۝ قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ
لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ۝ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ

और हम जांचने वाले थे ३१. उन के बाद हम ने और लोग पैदा किये ३२. फिर उन्हीं में से रसूल बना कर उन में इस संदेश के साथ भेजा कि (भाइयों) अल्लाह की अ़िबादत करो उस के अ़लावा तुम्हारा कोई माबूद नहीं है, क्या तुम डरते नहीं? ३३. (यह सुन कर) उस की क़ौम में से सरदारों ने कहा जो काफ़िर थे और आख़िरत की मुलाक़ात (यानी दूसरी ज़िन्दगी) के इन्कारी थे और हम ने उन को दुनिया (की ज़िन्दगी) में आसूदगी {माल-दौलत,खुशहाली} दी थी (उन्हों ने कहा कि) यह (रसूल) तो महज़ तुम्हारी तरह का आदमी है जो तुम खाते हो यह भी वही खाता है' और जो तुम पीते हो यह भी वही पीता है ३४. (पस सुन रखो!) अगर तुम ने अपने जैसे आदमी की पैरवी की तो यक़ीनन तुम नुक़्सान उठाओ गे ३५. क्या यह तुम को डराता है कि तुम जब मर जाओ गे तो मिट्टी और हड्डियाँ हो कर (फिर जीवित कर के) निकाले जाओ गे ३६. (हाये अफ़्सोस) कैसी (अ़क़्ल से दूर की) बात है जिस से तुम डराये जाते हो ३७. (अरे भाइयों!) यही दुनिया तो हमारी➲

➲ज़िन्दगी है जिस में हम मरते और जीते हैं और हम को क़ब्रों से (हिसाब के लिये) उठना नहीं है[१०] ३८. यह तो एक ऐसा आदमी है जिस ने अल्लाह पर महज़ झूठ बाँध रखा है (कि मैं उस का रसूल हूँ। हालाँकि महज़ गप और झूठ है) और हम उस को मानने के नहीं ३९. रसूल ने कहा: ऐ मेरे पर्वरदिगार! उन के झुठलाने पर मेरी मदद कर ४०. अल्लाह ने (उत्तर में) कहा: (ज़रा सब्र करो) थोड़ी देर में यह लोग अपने किये पर शर्मिन्दा हो जायें गे ४१. फिर उन पर (वास्तव में) अ़ज़ाब आया पस हम ने उन को कूड़ा-कर्कट की तरह कर दिया (कि किसी गिन्ती में न रहे)

....

९. जिस प्रकार तौहीद, क़ियामत और आख़िरत के मामले में तमाम अंबिया और नेकोकारों का एक ही मुत्तफ़िक़ा अक़ीदा रहा है कि वह सब हो कर रहे गा, बिल्कुल इस के उल्टा कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन का भी इसी प्रकार एक ही ख़याल रहा है कि सब झूठ है। और दलील यह है कि हमारे जैसा इन्सान भला रसूल कैसे हो सकता है। कुफ़्फ़ार के इस अ़क़ीदा का ज़िक्र क़ुरआन ने जगह-जगह बयान किया है, मगर बड़े अफ़्सोस की बात है कि मुसलमानों में से बहुत से लोग ऐसे भी मिलें गे जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को तो नबी और रसूल मानते हैं, मगर बशर (इन्सान, आदमी, मानूस, मिट्टी का मनुष्य) होने का इन्कार करते हैं, यह भी कुफ़्फ़ार के अ़क़ीदा की ताईद है। (राज़)

१०. 'हम को क़ब्रों से उठना नहीं है' बस दुनिया में आये, रहे और चले गये। आज कल यूरप वालों का भी यही ख़याल है। क्या वह मूर्ख नहीं? बल्कि वह तो बड़े बुद्धिमान हैं, इसी लिये उन्हों ने इस प्रकार के मज़्हबी झगड़ों को छोड़ रखा है (सनाई)

غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ
بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٤٢﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا
وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ؕ كُلَّمَا
جَآءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا
وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٤٤﴾ ثُمَّ
اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ
مُّبِيْنٍ ﴿٤٥﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا
عَالِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَقَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا
عٰبِدُوْنَ ﴿٤٧﴾ فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ﴿٤٨﴾
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَ
جَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗٓ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَآ اِلٰى رَبْوَةٍ

सो ज़ालिमों की क़ौम पर लानत हो ४२. फिर हम ने उन के बाद और लोग पैदा किये[११] (जिन का मरना जीना हमारे इख़्तियार में था) ४३. कोई क़ौम अपने निश्चित समय से न आगे बढ़ सकती है और न पीछे रह सकती है[१२] ४४. (उस में सच्ची तालीम फैलाने को) फिर हम ने पै दर पै रसूल भेजे (मगर लोगों का यही हाल रहा) जब कभी किसी क़ौम के पास कोई रसूल आता तो वह उस को झुठलाते पस हम ने एक के पीछे एक को बुलाया और हम ने उन को बीती कहानी बना दिया[१३]। जो लोग अल्लाह पर ईमान नहीं लाते ऐसी क़ौम को दूरी हो ४५+४६. फिर मूसा और हारून को हम ने अपने अहकाम और खुली दलीलें दे कर फ़िर्औन और उस के सर्दारों की (और समस्त क़ौम की) तरफ़ भेजा तो (वह फ़िर्औनी शेख़ी में आये और) मुतकब्बिर हो➲

ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ﴿٥٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ۭ اِنِّىْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٥١﴾ۭ

➲गये और (वह पहले ही बड़े बुरे किर्दार वाले और) सरकश क़ौम थे ४७. वह बोले: क्या हम अपने जैसे आदमियों (मूसा और हारून) पर ईमान लायें? हालाँकि उन की क़ौम हमारी ख़िदमत गुज़ार है। ४८. पस उन्हों ने उन दोनों को झुठलाया तो वह हलाक हो गये ४९. और हम ने मूसा को किताब (तौरात) दी थी ताकि वह लोग (बनी इस्राईल) उस से हिदायत पायें ५०. और (इस प्रकार ईसा) बिन मर्यम और उन की वालिदा को भी हम ने लोगों के लिये निशान बनाया और हम ने उन को एक ऊँची जगह पर जो मज़बूत और चश्मेदार पहाड़ी थी जगह दी थी[१४/१] ५१. (हम उन को आदेश दिया करते थे कि) ऐ रसूलों! हलाल और पाक चीज़ें खाया करो और नेक अमल किया करो। बेशक मैं (अल्लाह) तुम्हारे कामों से बाख़बर हूँ।

....

११. अल्लाह तआला के फ़र्मान के अनुसार हज़रत नूह के बाद भी बहुत सी उम्मतें आयी हैं जैसे, आद और समूद जिन का यहाँ पर ज़िक्र है। उन में भी अल्लाह के रसूल आये और उन को भी तौहीद पर अमल करने की तालीम दी गयी। लेकिन उन्हों ने भी अपने रसूल को मानने से इन्कार कर दिया और उन्हें झूठा बताया। बहाना यह बनाया कि यह रसूल तो हम ही जैसा मनुष्य है इस लिये नबी नहीं हो सकता और इस बात का भी इन्कार किया कि हम जिस्म व जान के साथ पुनः जीवित हों गे और क़ियामत के दिन अपने कर्मों का फल भोगें गे। दोबारा जीवित किया जाना, क़ब्रों से उठाया जाना, हश्र के मैदान में जमा होना, जन्नत या जहन्नम में डाला जाना, यह सब नबी की मनघड़त बातें हैं और हम ऐसी बेमाना बातों पर कोई ध्यान नहीं देते। इस पर नबी ने रन्जीदा हो कर दुआ की तो अल्लाह तआला ने उसी समय उत्तर दिया कि हम इन पर अज़ाब भेजें गे, और आख़िर चीख़-चिंघाड़ और तेज़ आंधी-तूफ़ान और भूकंप द्वारा सब के सब हलाक कर दिये गये और भूसी की तरह उड़ा दिये गये, केवल उन के घरों के चिन्ह ही दूसरी आने वाली, क़ौमों की इ़बरत (चेतावनी) के लिये ही बाक़ी रह गये। इन पर अल्लाह ने कुछ भी अत्याचार नहीं किया बल्कि उन की करनी का ही नतीजा उन के सामने आया।

इन क़ौमों के बीत जाने के बाद हज़रत मूसा और हारून अ़लै० फ़िऔ़न की क़ौम के पास भेजे गए तो क़ौम ने पहली क़ौमों की तरह ही उन्हें झुठलाया और मुख़ालिफ़त पर कमर कस ली। इन लोगों ने भी मुख़ालिफ़त का मुद्दा यही बनाया कि हम अपने जैसे मिट्टी के बने हुये मनुष्य को संदेष्टा नहीं मानते, आख़िर अल्लाह तआला ने उन सब को एक ही दिन, एक ही समय में, एक ही साथ दरिया में डुबो कर मार डाला। फ़िऔ़न की क़ौम के बाद और कोई क़ौम अज़ाब के ज़रीआ नहीं हलाक की गयी। इस के बाद हज़रत मूसा को लोगों की हिदायत के लिये तौरात दी, जिस में दीगर अहकाम के अलावा जिहाद का भी हुक्म नाज़िल हुआ। इस प्रकार मोमिनों के हाथों काफ़िर हलाक किये गये (मुहम्मदी)

१२. यानी यह संभव नहीं है कि कोई शख़्स या क़ौम अपनी मुक़र्ररा मुद्दत से तनिक भर भी आगे-पीछे हो सकें। अल्लाह तआला का यह आ़म क़ानून है (सनाई)

१३. यानी हम ने इन को ऐसा बर्बाद किया कि उन का दुनिया से नाम व निशान ही मिटा दिया। एक समय ऐसा था कि उन के नाम का सिक्का चलता था, लेकिन आज हाल यह है कि वह एक बीती कहानी बन कर रह गये। लोग ख़ाली समय में अपने बच्चों को कहानी सुनाते कि एक बादशाह था, उस का नाम नमरूद था, उस ने ख़ुदा होने का दावा किया, उस को समझाने के लिये हज़रत इब्राहीम अ़लै० संदेष्टा को भेजा उस ने उन से कजबहसी की, अन्ततः एक मच्छर के ज़रीआ हलाक कर दिया गया (सनाई)

१४/१. शायद यह वही जगह हो जहाँ हज़रत ईसा की पैदाइश के समय हज़रत मर्यम ठहरी थीं। चुनान्चे सूरः➲

➲मरयम की आयत से ज़ाहिर है कि वह जगह ऊँची थी और उस के नीचे चश्मा या नहर जारी थी और ख़जूर का एक पेड़ भी था (इब्ने कसीर) अक्सर उलमा लिखते हैं कि यह हज़रत मसीह के बचपन का वाक़िआ है। एक बहुत ज़ालिम बादशाह हीरदोस नामी को ज्योतिषियों ने सूचना दी ईसा मसीह नाम के एक लड़के को बचपने में सर्दारी मिले गी यह सुन कर बादशाह आग बगूला हो उठा और उन की हत्या पर उतारू हो गया। हज़रत मरयम अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ उन को ले कर मिस्र चली गयीं और उस ज़ालिम के मरने के बाद शाम लौटीं। इस घटना का ज़िक्र मती इन्जील में भी है। मिस्र शह्र का ऊँचा होना नील दरिया के एतिबार से है वर्ना डूब जाता। 'मअ़ीन्' से मुराद नील दरिया है। कुछ उलमा ने 'रब्-वह्' (ऊँची जगह) से मुराद शाम या फ़लिस्तीन किया है। और बहुत संभव है कि जिस टीला पर मरयम अलै० ईसा अलै० की पैदाइश के समय मौजूद थीं, वहीं पर बादशाह के ख़त्रा के समय भी पनाह दी गयी हो- अल्लाह बेहतर जानता है।

बहर हाल यह बात अपनी जगह पर तै है कि किसी ने भी 'रब्-वह' से मुराद "कश्मीर" नहीं लिया है और न ही हज़रत ईसा की क़ब्र कश्मीर में बताई है। अल्बत्ता आज-कल के कुछ गुमराह लोगों ने इस से मुराद कश्मीर लिया है और हज़रत मसीह की क़ब्र भी वहीं बतलाई है, हालाँकि यह महज़ झूठ और मनघड़त हैं मुहल्ला खान यार शह्र (श्रीनगर) में एक क़ब्र है जिस के बारे में "तारीख़ आज़मी" के संपादक ने महज़ अफ़वाह की बुनियाद पर लिख मारा है कि वह हज़रत ईसा की क़ब्र है। हालाँकि सच्चाई यह है कि वह क़ब्र योज़ आसिफ़ नाम के किसी राजकुमार (शहज़ादा) की क़ब्र है जो दूसरे मुल्क से आ कर यहाँ ठहरा था। अगर आप इस विषय में मज़ीद जानकारी चाहते हैं तो मुन्शी हबीबुल्लाह अमृतसरी की पत्रिका इस बारे में बहुत ही लाभदायक है। इस किताब में मुंशी जी ने उस क़ब्र के बारे में और योज़ आसिफ़ के बारे में विस्तार से रोशनी डाली है और इस पुस्तक में मनघड़त अफ़वाह लिखने वाले की धज्जियाँ बिखेर दी हैं (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

وَاِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ﴿٥٢﴾
فَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ۭ كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ
فَرِحُوْنَ ﴿٥٣﴾ فَذَرْهُمْ فِيْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٥٤﴾ اَيَحْسَبُوْنَ
اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ ﴿٥٥﴾ نُسَارِعُ لَهُمْ فِي
الْخَيْرٰتِ ۭ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ
رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٨﴾
وَالَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ
اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ﴿٦٠﴾
اُولٰۗىِٕكَ يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ﴿٦١﴾ وَلَا
نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ يَّنْطِقُ
بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾ بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِيْ غَمْرَةٍ مِّنْ
هٰذَا وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ﴿٦٣﴾

५२. और यह (नबिय्यों की) जमाअ़त तुम्हारी पार्टी के हैं (तुम सब तौहीद का प्रचार करने के लिये आये हो) तुम एक ही गरोह हो और मैं तुम्हारा पर्वरदिगार हूँ पस तुम मुझ से डरते रहो ५३. लोगों ने परस्पर फूट डाल दी जो कुछ किसी फ़रीक़ के पास था और है उसी के साथ मगन हैं ५४. पस तू एक समय तक उन की ग़फ़्लत में उन को छोड़ दे (अपने किये की सज़ा स्वयँ ही पायें गे) ५५. क्या यह लोग समझते हैं कि हम जो उन को माल और औलाद से मदद दे रहे हैं ५६. उन को लाभ पहुंचाने में हम जल्दी करते हैं? (नहीं, नहीं) बल्कि यह लोग समझते नहीं है ५७. (हाँ) जो लोग अपने पर्वरदिगार के ख़ौफ़ से डरते हैं (उन के दिलों में अल्लाह का ख़ौफ़ घर किये होता है) ५८. और जो लोग अपने पर्वरदिगार की आयात (मत्लू और ग़ैर➲

मतलू[१४/२]) पर ईमान रखते हैं ५९. और जो लोग अपने पर्वरदिगार के साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करते ६०. और जो लोग (तौफ़ीक़ के मुताबिक़ जो) बन पड़ता है (अल्लाह की राह में) देते हैं और दिल में डरते हैं[१५] कि पर्वरदिगार के पास जाना है ६१. (ऐसे लोगों के बारे में हम गवाही देते हैं कि) यही लोग नेक कामों में जल्दी करते हैं और उन की तरफ़ लपकते हैं[१६] ६२. (हमारा आ़म नियम है कि) हम किसी जान को उस की क्षमता से अधिक आदेश नहीं दिया करते[१७] और हमारे पास एक किताब है जो सच्चाई का इज़्हार करे गी और वह ज़ुल्म नहीं किये जायें गे ६३. लेकिन उन के दिल उस से पर्दे में हैं और उस के अ़लावा उन के आमाल और भी हैं जो यह करते हैं (उन का भी इन पर प्रभाव है। पस इसी प्रकार सरकशी और हटधर्मी में रहें गे) ६४. यहाँ तक कि जब हम उन में से अच्छी हालत वालों को अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार करें गे तो फिर यह चीख़ उठें गे

....

१४/२. "आयाते मत्लू" कुरआन के अल्फ़ाज़ को और "आयाते ग़ैर मत्लू" अल्लाह की क़ुदरत के निशानात को कहते हैं। सो ईमान उसी समय हासिल हो सकता है जब कि दोनों प्रकार की आयतों पर यक़ीन हो। क़ुरआन की आयात को ज़बान से पढ़े और क़ुदरत के निशानात पर दिल से सोचे और ग़ौर करे (सनाई)

१५. यानी वह जो कुछ भी देते हैं इस निय्यत से नहीं देते है कि दे कर अल्लाह, मुहताज, ग़रीब, मदर्सा या दीनी कामों पर कोई एहसान करते हैं, बल्कि अल्लाह की रज़ा, ख़ुशनूदी और उस को प्रसन्न करने के लिये देते हैं और इस बात से डरते भी रहते हैं कि कहीं ऐसा न हो कि अल्लाह के दर्बार में यह मामूली ख़िदमत न क़ुबूल हो। बजाये सवाब के अ़ज़ाब मिले और लेने के देने पड़ जायें। इसलिये हमेशा दुआयें करते रहते हैं कि ऐ अल्लाह! हम वैसी फ़रमांबर्दारी नहीं कर सकते जैसा करने का हक़ है इस लिये मेरी कोताहियों को माफ़ कर दे और मेरे हक़ीर दान-पुण्य को क़ुबूल कर ले (सनाई)

१६. 'उन की तरफ़ लपकते हैं' लेकिन यह ख़याल मत करो कि नेक कार्य दुनिया में कोई कर ही नहीं सकता। इन्सान कभी भी बुरे ख़यालात से ख़ाली नहीं रहता। कभी दुनिया के तअ़ल्लुक़ से ख़याल, कभी आवश्यक्ताओं के तअ़ल्लुक़ से ख़याल। मतलब यह है कि ख़याल दो प्रकार के होते हैं (१) जिन ख़यालों का आना अपने इख़्तियार में है (२) जिन का आना अपने इख़्तियार में नही है। वह ख़यालात जो यूँ ही दिल व दिमाग़ में आते रहते हैं उन पर कोई पकड़ नहीं है। लेकिन सोच कर दिल में गिरह दे ले और उन पर अ़मल करने की निय्यत कर ले, तो ऐसे ख़यालात पर पकड़ हो गी (सनाई)

१७. 'किसी जान को उस की ताक़त से ज़्यादा हुक्म नहीं देते' इसलिये कि ताक़त से ज़्यादा हुक्म देना बहुत बड़ा ज़ुल्म है। उदाहरण के तौर पर हम इन्सान को यह तो आदेश दें गे कि तू रोज़ा रख, जिसे वह रख सकता है, मगर यह आदेश नहीं दें गे कि तुझे भूख न लगने पाये, इसलिये कि भूख न लगना उस के इख़्तियार में नहीं है। इसी मिसाल पर और दूसरे आदेशों को भी समझो और ऊपर की आयत में ख़यालात को समझो कि अगर वह आप ही आप पैदा हों और बेइख़्तियारी हों तो माफ़ हैं, लेकिन अगर इख़्तियारी हैं तो तुम्हारे नाम लिखे जायें गे। (सनाई)

لَا تَجْـَٔرُوا الْيَوْمَ إِنَّكُم مِّنَّا لَا تُنصَرُونَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ

६५. (उन से कहा जाये गा कि) आज मत चीख़ो (क्योंकि) तुम को हमारी तरफ़ से कोई

ايٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾
مُسْتَكْبِرِيْنَ ۖۗ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾ اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا
الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾
اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَمْ
يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلْ جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ
لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ
السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ
فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧١﴾ ؕ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا
فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۖۗ وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِنَّكَ
لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾ وَاِنَّ الَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَلَوْ
رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ

➡सहायता न पहुंचे गी ६६. हमारे आदेश तुम को सुनाये जाते थे तो तुम पीछे हट जाते थे ६७. तकब्बुर करते हुये, इस के साथ अफ़साना गोई करते हुये {गप्पें मारते हुये} बेहूदा बकते थे ६८. क्या उन्हों ने इस बात पर कभी विचार नहीं किया (कि किस प्रकार का कलाम उसूल व ज़ाबते के साथ है) या उन के पास कोई ऐसी बात आयी है जो उन के बाप-दादाओं के पास न आयी थी[१८] । ६९. क्या उन्हों ने अब भी अपने रसूल को पहचाना नहीं कि उस का इन्कार कर रहे हैं? ७०. क्या यह लोग कहते हैं कि उसे जुनून {पागल पन} है? (नहीं) वह तो सच्ची शिक्षा उन के पास लाया है और उन में से अधिकांश लोग सच्चाई को नापसन्द करते हैं ७१. अगर सच उन की इच्छानुसार हो तो आकाश और धरती और उन में रहने वाले सब (के सब) तबाह (और बर्बाद) हो जायें। बल्कि (अस्ल बात यह है कि) उन के पास हम उन की (सच्ची) नसीहत लाये हैं, सो यह अपनी नसीहत से मुंह मोड़ रहे हैं ७२. क्या तू उन से कुछ मज़दूरी {मिहनताना} माँगता है? तेरे पर्वरदिगार की रोज़ी अच्छी है और वह सब से अच्छी रोज़ी देने वाला है ७३. और तू (तो) उन को सीधी राह की तरफ़ बुलाता है ७४. और जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वह सीधी राह से टेढ़े जाते हैं (मगर जब पकड़े जाते हैं तो फिर रहम की प्रार्थना करते हैं[१९]) ७५. और अगर हम उन पर रहम करें और जो कुछ उन पर तक्लीफ़ आ रही है दूर कर दें तो यह (हर्गिज़ न हो गा कि अपनी शरारतों मे बाज़ आयें, बल्कि) अपनी गुमराही में भटकते हुये धंसते जायें।

....

१८. 'उन के बाप दादाओं के पास न आयी थी' यानी हज़रत इस्माओ़ील और उन की क़रीब की नस्ल के पास न आयी थी। हम ने यह शब्द इस लिये बढ़ाया है कि स्वयँ क़ुरआन मजीद की दूसरी आयतों से मालूम होता है कि अ़रब के लोग स्वयँ यह कहते थे "हम ने यह बात जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कहते हैं पहले लोगों में नहीं सुनी"। और यह भी इर्शाद फ़रमाया: "ऐ नबी तुम उन लोगों को समझाओ जिन के बाप दादा नहीं डराये गये इस लिये वह ग़ाफ़िल हैं"। (सूरः यासीन) इन जैसी और अन्य आयतों से मालूम होता है कि मौजूदा अरब वालों के बाप-दादा नहीं डराये गये, इस लिये वह ग़ाफ़िल हैं। इस आयत में जो तअ़ज्जुब से यह कहा गया कि उन के पास कोई ऐसी बात आयी है जो उन के बाप-दादा को नहीं आयी थी। हालाँकि बात भी ठीक है कि उन के बाप-दादाओं के पास यह तालीम नहीं आयी थी, इस लिये क़ैद लगाई गई है। और यह क़ैद क़ुरआन मजीद के शब्द 'अव्वलीन' ➡

➲(पहले के लोगों) से भी साबित है (सनाई)

आयत न० ६८ में 'क्या उन्हों ने ग़ौर नहीं किया' पर ग़ौर कीजिये। किस प्रकार कुरआन बार-बार इस पहलू पर ज़ोर देता है कि क्या लोगों ने ग़ौर-फ़िक्र नहीं किया? क्योंकि उस का सारा मुतालबा ग़ौर-फ़िक्र और सोच-विचार ही से है। वह कहता है कि सच्चाई की सब से बड़ी निशानी यह है कि अक़्ल और बसीरत उसे पा ले गी और जिहालत उसे नहीं पा सकती। इसलिये अगर लोग कुरआन मजीद में ग़ौर-फ़िक्र करें तो मुमकिन ही नहीं उस की सच्चाई उन्हें इस्लाम कुबूल करने पर आमादा न करे। यहाँ यह भी हक़ीक़त स्पष्ट हो गयी कि कुरआन मजीद ग़ौर-फ़िक्र पर ज़ोर देता है न कि अन्धी तक़्लीद पर। इस लिये जो शख़्स कुरआन के माना-मतलब पर ग़ौर नहीं करता वह कुरआन का हक़ अदा नहीं करता। और फिर जब कुरआन के लिये ग़ौर-फ़िक्र आवश्यक है तो क्योंकर यह बात जायज़ हो सकती है कि किसी मुजतहिद और इमाम की तहक़ीक़ में ग़ौर-फ़िक्र ज़रूरी न हो? और आलिमों के लिये ज़रूरी हो कि तक़्लीद की वजह से आँख मूँद कर बात मान लें? (तर्जुमान-आज़ाद)

मैं कहता हूँ कि यह बड़े दुख की बात है कि आज मुसलमानों का एक बहुत बड़ा पढ़ा-लिखा वर्ग अन्धी तक़्लीद पर ज़ोर देता है और उन का अमल बताता है कि बग़ैर किसी ख़ास इमाम की तक़्लीद के चारा ही नहीं है। इन लोगों ने ग़ौर-फ़िक्र, सोच-विचार और तहक़ीक़ का नाम "ग़ैर मुक़ल्लिदी" और ग़ौर-फ़िक्र और तहक़ीक़ करने वालों का नाम "ग़ैर मुक़ल्लिद" रखा हुआ है। इन के नज़दीक तहक़ीक़ करना जुर्म और तहक़ीक़ करने वाला बहुत बड़ा मुजरिम है। हिन्दुस्तान की प्रसिद्ध इस्लामी पाठशाला (दारुलु उलूम देवबन्द-ख़ालिद) से बहुत से विद्यार्थियों (तालिब इ़ल्मों) को इस "जुर्म" में निकाल दिया गया था कि वह इमामों के क़ौल और उन के फ़तवों को कुरआन व हदीस पर जांचते थे। यह एक बहुत बड़ी ऐतिहासिक घटना है जो कट्टर वाद की पहचान है, जिसे भुलाया नहीं जा सकता। (दावूद राज़)

१९. शाने नुज़ूल:- मक्का के कुफ़्फ़ार और मुश्रिकों की सरकशी के कारण अल्लाह तआ़ला ने उन पर सूखा काल का अ़ज़ाब नाज़िल कर दिया। यह सूखा काल इतना भयानक था कि लोग मुर्दों की हड्डियाँ खा गये। इन परिस्थितियों में अबू सुफ़यान ने मजबूर हो कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हो कर प्रार्थना की कि आप संसार वालों के लिये रहमत हैं, कुरैश के लोग आप के संबन्धी हैं, इन की हालत पर रहम फ़रमायें और दुआ़ फ़रमा दें कि यह अ़ज़ाब दूर हो जाये। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन की हालत पर तरस खा कर दुआ़ फ़रमाई। आप की दुआ़ की बर्कत से सूखा काल समाप्त हो गया। और कुरैश ने फिर सरकशी और मुख़ालिफ़त आरंभ कर दी, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। (नसई, हाकिम, बैहक़ी)

يَعْمَهُونَ ۝ وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوا
لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا
عَذَابٍ شَدِيدٍ إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ۝ وَهُوَ
الَّذِي أَنْشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا
مَا تَشْكُرُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَ
إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ وَلَهُ
اخْتِلَافُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ بَلْ قَالُوا

७६. (इस लिये कि इस से पहले) हम ने उन को सख़्त अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार किया था, फिर भी यह लोग अपने पर्वरदिगार के सामने न झुके और न आ़जिज़ी इख़्तियार की। ७७. फिर जब उन पर अ़ज़ाब का दर्वाज़ा खोल दें गे तो (बजाए अल्लाह की तरफ़ झुकने और रहमत के आशा वादी होने के) तुरन्त उस से निराश हो जायें गे ७८. और अल्लाह वह ज़ात है जिस ने तुम्हारे लिये कान और आँखें और दिल पैदा किये (फिर उस की रहमत से निराश होना कौन जायज़➲

مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿٨١﴾ قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٨٢﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨٣﴾ قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٤﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۚ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٨٦﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۚ قُلْ اَفَلَا

कहे गा) तुम बहुत ही कम शुक्र अदा करते हो ७९. वही ज़ात (पाक) है जिस ने तुम को ज़मीन पर पैदा किया और उसी के पास तुम जमा किये जाओ गे ८०. वह ही ज़ात (पाक) है जो (मख़्लूक़ को) जीवन देता है और मारता है और रात-दिन का इख़्तिलाफ़ {आना-जाना} उसी के क़ब्ज़ा में है। क्या तुम लोग फिर भी समझते नहीं? ८१. बल्कि इस प्रकार कहते हैं जो उन से पहले के लोग कह गये हैं ८२. (यानी यह) कहते हैं कि जब हम मर जायें गे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जायें गे तो क्या हम फिर उठाये जायें गे (नहीं, यह तो मतघड़त बातें हैं) ८३. इस से पूर्व हमें और हमारे बाप-दादा को भी डराया गया (हम तो इस बात को इस से अधिक अहमियत नहीं दे सकते कि) यह तो केवल पहले लोगों के क़िस्से हैं[२०] ८४. (ऐ नबी!) कह कि बतलाओ तो सही! ज़मीन और ज़मीन के लोग किस की मिल्क {संपत्ति} हैं[२१]? अगर तुम जानते हो तो बतलाओ? ८५. (आशा है कि यह प्रश्न सुन कर) यह लोग कह दें गे कि अल्लाह ही की संपत्ति हैं। तुम कहो कि फिर क्यों नहीं नसीहत हासिल करते ८६. (ऐ नबी!) तुम उन से कहो कि सातों आकाश और बड़े अर्श का मालिक कौन है? (किस ने उन सब को पैदा किया है?) ८७. यह कह दें गे कि अल्लाह ही की यह शान है। तू कह कि क्या तुम डरते नहीं?

....

२०. हश्र का इन्कार करने वाले चाहे वह इस ज़माना के हों या पहले ज़माना के, इन लोगों के पास इन्कार के लिये कोई ठोस दलील कभी नहीं रहीं। बस ले दे कर वही एक घिसी-पिटी दलील कि हमारे बाप-दादा भी यही सुनते आये थे अगर हम भी सुन रहे हैं। इस की हक़ीक़त केवल क़िस्से-कहानियों से अधिक कुछ नहीं है। अल्लाह तआ़ला ने इन लोगों से यह प्रश्न किया कि तुम को इस दुनिया में नये सिरे से किस ने पैदा किया? तो यह उत्तर दें गे अल्लाह ने। तो फिर उसी का यह भी तो वादा है कि मरने के पश्चात् पुन: जीवित किये जाओ गे, तो इस को क्यों नहीं मानते हो? यह कौन सी बात हुयी कि उस के पहली मर्तबा पैदा करने को तो मानो और मरने के बाद पुन: पैदा किये जाने का इन्कार करो?

बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क़ियामत के दिन जब सब लोग इकट्ठा हों गे तो एक फ़रिश्ता अल्लाह के हुक्म से पुकार कर कहे गा कि जिस प्रकार तुम लोग दुनिया में अलग-अलग गरोह थे (बुत परस्त, आग परस्त आदि) इसी प्रकार यहाँ भी अलग-अलग गरोह में बँट जाओ। चुन्चे सब लोग अपने अपने दुनियावी मनघड़त खुदाओं के साथ हो जायें गे। अब केवल अल्लाह को एक जानने और मानने वाले तौहीद परस्त ही बचें गे। इस गरोह में भी मुनाफ़िक़, रिया कार और दिखावे के लिये ईमान वाले भी शामिल हों गे, इन लोगों को भी अलग करने के लिये एक फ़रिश्ता अल्लाह के हुक्म से एक ख़ास प्रकार का रूप धारण कर के उन के सामने आ कर कहे गा कि मैं तुम्हारा खुदा हूँ। तौहीद परस्त लोग उसे खुदा मानने से इन्कार कर दें गे और कहें गे कि हमारा दिल गवाही देता है कि तू खुदा नहीं हो सकता। हमारे दिल में अल्लाह ने एक ख़ास पहचान रखी है। फिर अल्लाह का दीदार करें गे। अल्लाह तआ़ला अपनी पिंडली खोल कर उन के सामने ज़ाहिर करे गा, जिस को देखते ही ख़ालिस अल्लाह वाले सज्दे में गिर जायें गे, लेकिन मुनाफ़िक़

➲लोगों की कमर तख़्ता की तरह हो जाये गी और वह सज्दा न कर सकें गे। अन्त में केवल तौहीद वाला ही गरोह नजात पाये गा और बाक़ी समस्त गरोह अपने झूठे माबूदों के साथ जहन्नम में ढ़केल दिये जायें गे (अहसनुल फ़वाइद) २१. यानी यह लोग तो कहते हैं कि ज़मीन और आकाश की समस्त वस्तुयें अल्लाह ही की हैं इस के बावजूद फिर भी पचासों माबूद और भी बना रखे हैं। हर मुल्क और क़ौम के माबूद अलग-अलग हैं। आग, पानी, सूरज, चँद्रमा, नक्षत्र, पेड़-पौधे, पत्थर और न जाने किन-किन वस्तुओं की पूजा करते हैं। आज कल के हिन्दुस्तान के जाहिल मुसलमान भी बुतपरस्ती में इन में कम नहीं हैं। क़ब्रों पर चढ़ावे चढ़ाना, क़ब्र वालों से लड़का-लड़की मांगना, उन पर जानवर ज़ब्ह करना, उन के नाम की नज़्र करना, उन्हें अपने हानि-लाभ का मालिक जानना, यह सब बुत परस्ती नहीं तो और क्या है? लेकिन इन जाहिलों ने इस बुत परस्ती का नाम "वसीला" रखा हुआ है (हक़्क़ानी-५/२२५)

تَتَّقُوْنَ ﴿٨٧﴾ قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ
وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ
قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿٨٩﴾ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ
لَكٰذِبُوْنَ ﴿٩٠﴾ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ
مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۭ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ
عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٩١﴾ عٰلِمِ الْغَيْبِ وَ
الشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٩٢﴾ قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ
مَا يُوْعَدُوْنَ ﴿٩٣﴾ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٤﴾
وَاِنَّا عَلٰٓى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ﴿٩٥﴾ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ
هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَ
قُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾ وَاَعُوْذُ
بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ
قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿٩٩﴾ لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ

८८. तू कह! तमाम चीज़ों की हुकूमत किस के हाथ में है? और कौन है जो (भागे हुये को) पनाह देता है और उस से भागे हुये को कहीं पनाह नहीं मिल सकती, अगर जानते हो तो बतलाओ? ८९. यह (ख़ुद ही) कह दें गे कि अल्लाह ही की यह शान है तू कह! तुम फिर कहाँ को बहकाए जाते हो[२२]? ९०. और हम उन के पास सच्ची बात लाये हैं और इस में शक नहीं कि यह लोग झूठे हैं ९१. अल्लाह ने किसी को औलाद नहीं बनाया और न ही उस के साथ कोई और माबूद है अगर होता तो हर एक माबूद अपनी-अपनी मख़्लूक़ को अलग-अलग ले जाता और एक दूसरे पर ग़लबा पाने की कोशिश करता। अल्लाह उन बातों से जो यह लोग बयान करते हैं पाक है[२३] ९२. वह (तमाम) ग़ायब और हाज़िर (चीज़ों) को जानने वाला है पस वह लोगों के शिर्क (की बातें करने) से पाक है ९३. तू (दुआ करता हुआ यूँ) कह: ऐ मेरे पर्वरदिगार! जो कुछ उन लोगों को अज़ाब आदि की धमकी दी जाती है ९४. अगर तू मुझे (वह समय भी) दिखादे तो मेरे पर्वरदिगार! मुझे उन ज़ालिमों की क़ौम में मत करना ९५. और हम क़ादिर हैं कि जो कुछ हम उन को वादे दे रहे हैं तुझे दिखा दें ९६. (हम सहनशीलता से काम लेते हैं तो) तू भी अच्छे बदले से बुराई को हटा दिया कर। हम उन की बात-चीत को जो यह लोग कहते हैं ख़ूब जानते हैं[२४] ९७. और कहा कर कि ऐ मेरे पर्वरदिगार! मैं शयातीन की छेड़-छाड़ से तेरी पनाह में आता हूँ ९८. और मैं तेरी पनाह मांगता हूँ इस बात➲

➲से कि यह मेरे पास आयें[२५] (और मुझे सतायें। हाँ, उन की बेहूदा बातों का ख़याल न करना। उनकी हालत तो यही रहे गी) ९९. यहाँ तक कि जब उन में से किसी को मौत आये गी तो कहे गा कि ऐ मेरे पर्वरदिगार! मुझे दुनिया की तरफ़ वापस कर१०० ताकि मैं पिछली ज़िन्दगी में जिस को मैं छोड़ आया हूँ नेक अ़मल करूँ

....

२२. 'तुम कहाँ बहकाए जाते हो' क्या तुम्हें कोई जादू कर जाता है कि अल्लाह के होते हुये उस की मौजूदगी में तुम उस के बन्दों से अपनी ज़रूरतें चाहते हो। अगर्चे तुम खुदा से भी मांगते हो मगर इतना करने से तुम शिर्क की बीमारी से नहीं बच सकते। जब तक अपनी हाजतें केवल उसी से न चाहो गे और अपने आप को केवल उस के ही सुपुर्द न कर दो गे, किसी प्रकार तौहीद का दावा सही न हो गा। और इसी तौहीद को आ़म करने के लिये हम ने एक के बाद एक संदेष्टाओं को भेजा।

२३. 'अल्लाह की ज़ात पाक है' क्योंकि जो हक़ीक़ी माबूद हो यह बात उस की शान के ख़िलाफ़ है कि वह किसी का मातहत हो। क्योंकि मातहती और सुलह दो हाल से ख़ाली न हो गी (१) या तो उन दोनों में एक शक्ति शाली हो गा (२) या दोनों बराबर टक्कर के हों गे, मगर किसी तीसरी ताक़त के मातहत हों गे, जैसे हिन्दुस्तान की क्षेत्रीय रियासतें १९४७ से पूर्व थीं। और यह दोनों सूरतें अल्लाह की शान के ख़िलाफ़ हैं (सनाई)

२४. यानी अगर कोई तेरे साथ बुराई से पेश आये तो तू उस के साथ नेकी से पेश आ। लेकिन यह क़ानून उस शख़्स के लिये है जो शरीफ़ हो लेकिन किसी ग़लत फ़हमी की वजह से मुख़ालिफ़त करता हो। लेकिन अगर वह शख़्स कमीना, ज़िद्दी और शरीर हो, जो नेकी और नर्मी को उल्टा कमज़ोरी समझने लगे, तो ऐसे शरीर मुख़ालिफ़ों की सज़ा वही है जो कुरआन ने दूसरे स्थान पर बयान किया है यानी "बुराई का बदला उस के बराबर की बुराई करना है"। चुनान्चे शैख़ सादी रह० फ़रमाते हैं कि "बुरे लोगों के साथ नेकी करना ऐसे ही है जैसे नेकों के साथ बुराई करना" (सनाई)

२५. यानी ऐसा कर दे कि शैतान मेरे क़रीब फटकने तक न पाये, वस्वसा और शुब्हा डालना तो दूर की बात। एक हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब आदमी बुरे सपने देख कर घबराए तो यह दुआ़ पढ़ लिया करे "बिस्मिल्लाहि अऊज़ु बि-कलिमातिल्लाहित्ताम्मति मिन् ग़-ज़बिही वइक़ाबिही व-शर्रि इबादिही वमिन् ह-मज़ातिश्शयातीनि व-अंय्यहु ज़रूनि" (मिश्कात) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अ़मर रज़ि० अपने बच्चों को यह दुआ़ सिखाते थे कि रात को पढ़ कर सोया करें।

كَلَّا ۖ إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا ۖ وَمِن وَرَائِهِم
بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٠٠﴾ فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ
فَلَا أَنسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿١٠١﴾ فَمَن
ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٢﴾ وَمَنْ
خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا
أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ﴿١٠٣﴾ تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ

हर्गिज़ नहीं, यह लफ़्ज़ केवल उस के मुंह का बोल है। और उन से आगे उन के उठने के दिन तक दर्मियानी ठिकाना (क़ब्र में) है[२६]। १०१. फिर जब क़ियामत के दिन सूर में फूंका जाये गा तो उस रोज़ न उन में नसब (वंश) के संबन्ध (लाभदायक) हों गे और न वह एक दूसरे की बात पूछें गे[२७] १०२. पस जिन लोगों के नेक आमाल वज़न में भारी हों गे वही लोग बामुराद, पास (और कामियाब) हों गे १०३. और जिन➲

النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ ﴿١٠٤﴾ أَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿١٠٥﴾ قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ﴿١٠٦﴾ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ﴿١٠٧﴾ قَالَ اخْسَئُوا فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ ﴿١٠٨﴾ إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِنْ عِبَادِي يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سِخْرِيًّا حَتَّىٰ أَنْسَوْكُمْ

के नेक आमाल का वज़न कम हो गा तो यही लोग हों गे जिन्हों ने अपने आप को टूटे में डाला हो गा (परिणाम यह हो गा कि) जहन्नम में हमेशा रहें गे १०४. जहन्नम की आग (की लपट) उन के (केवल मुंह को ही नहीं[२८], बल्कि तमाम) बदन को झुलसती हो गी और वह उस में मुंह बनाते हों गे १०५. (मैं उन को ज़लील करने के लिये पूछूँ गा) क्या मेरे अहकाम (कुरआन) तुम को सुनाये न गये थे, फिर क्या तुम उन को झुठलाते थे? १०६. वह कहें गे: हमारे पर्वरदिगार! हमारी कम बख़्ती {दुर्भाग्य} हम पर ग़ालिब आयी (हम दुनिया के खेल-कूद में लगे रहे और वास्तव में हम गुनहगार लोग थे १०७. ऐ हमारे पर्वरदिगार! तू हम को दोज़ख़ (के अ़ज़ाब) से निकाल, फिर अगर हम ने पुनः यह कार्य किये तो निःसंदेह हम ज़ालिम हों गे १०८. अल्लाह कहे गा: इसी जहन्नम में धुतकारे रहो और मुझ से मत बोलो[२९] १०९. (क्योंकि) मेरे बन्दों में से एक (छोटा सा) गरोह था जो कहा करता था: ऐ पर्वरदिगार! हम (तेरे कलाम पर) ईमान लाये, पस तू हम को बख़्श और हम पर रहम फ़रमा और तू सब से अधिक रहम करने वाला है ११०. तो (वह तो यह दुआ़ करते और) तुम उन से मज़ाक़ करते थे यहाँ तक कि उन की वजह से तुम मेरी याद भूल गये

....

२६. यानी जो धन-दौलत मैं अपने पीछे छोड़ आया हूँ अब दोबारा जा कर उस को अच्छे कामों में ख़र्च करूँ गा। या जिस ईमान को मैं ने छोड़ दिया था अब की बार जा कर उस ईमान में अच्छे काम करूँगा। एक हदीस शरीफ़ में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब काफ़िर अपनी क़ब्र में रखा जाता है और अपना जहन्नम का ठिकाना देख लेता है तो कहता है कि ऐ मेरे रब! मुझ को पुनः दुनिया में लौटा दे। अब मैं तौबा करता हूँ और अब अच्छे क़ाम करूँ गा हुक्म होता है कि तुम को जो आयु मिलनी थी वह मिल चुकी। फिर उस की क़ब्र उस को दबोचे गी और सांप-बिच्छू उस को चिमट जायें गे"। "एक अन्य हदीस में रिवायत है कि मोमिन से फ़रिश्ते कहते हैं कि क्या तुम्हें पुनः दुनिया में भेज दिया जाये? वह कहता है कि दुनिया में जहाँ रन्ज-ग़म हैं, मैं नहीं जाना चाहता, मैं अल्लाह के पास चलता हूँ। और काफ़िर कहता है कि मुझ को भेज दो ताकि मैं दोबारा जाकर अच्छे काम करूँ"। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं: "अच्छे काम" से मुराद लाइला-ह इल्लल्लाह है। (वहीदी)

२७. यानी न मित्र अपने मित्र को पूछे गा और न कोई संबन्धी अपने किसी संबन्धी का हाल मालूम करे गा। सूरः यूनुस में गुज़र चुका है कि लोग क़ियामत के दिन एक दूसरे को पहचानें गे। एक अन्य आयत में है कि एक दूसरे की तरफ़ मुंह कर के सवाल करें गे। यह दोनों आयतें, इस सूरः की आयत के मुख़ालिफ़ नहीं है। क्योंकि हर आयत में अलग-अलग मौक़ों का ज़िक्र है। जब पहला सूर फूंका जाये गा तो क़ब्रों से उठ कर एक-दूसरे को पहचानें गे। लेकिन जब मैदान में नफ़्सी-नफ़्सी का आ़लम हो गा तो कोई किसी से कुछ न पूछे गा। कुछ उलमा का कहना है कि जब पहला सूर फूंका जाये गा और सब बेहोश हो जायें गे इस समय कोई किसी को न पूछे गा और रिश्ता-नाता

कुछ काम न आये गा, यहाँ इस सूरः में उसी मौक़े का ज़िक्र है। एक हदीस शरीफ़ में रिवायत है कि "क़ियामत के दिन सब रिश्ते-नाते कट जायें गे मगर मेरा रिश्ता न कटे गा"। हज़रत उमर ने जब हज़रत फ़ातिमा रज़ि० की बेटी उम्मे कुल्सूम से निकाह किया तो फ़रमाया: अब मुझे निकाह की आवश्यकता नहीं है मगर मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुना है कि आप फ़रमाते थे: हर रिश्ता-नाता क़ियामत के दिन कट जाये गा मगर मेरा रिश्ता-नाता बाक़ी रहे गा, इसी लिये मैं निकाह कर रहा हूँ। फिर उन की इ़ज़्ज़त व एहतराम के लिये चालीस हज़ार दिर्हम मह्र मुक़र्रर किया। इस प्रकार हज़रत उमर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ससुर तो थे ही, आप की नातिन से निकाह कर के दामाद भी हो गये। एक अन्य हदीस में रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अल्लाह से दुआ़ की कि मैं अपनी उम्मत में से जिस से निकाह करूँ, या जो कोई मेरे घराने से निकाह करे, उन सब को जन्नत में मेरे साथ कर दे। अल्लाह तआ़ला ने आप की यह दुआ़ क़ुबूल फ़रमाई और इस हदीस की रौशनी में हज़रत उमर दोनों तरफ़ से जन्नती हैं। (वहीदी)

२८. यानी जलते-जलते बदन सूज जाये गा, नीचे का होंट नाभि तक और ऊपर का होंट खोपड़ी तक पहुंच जाये गा और ज़बान ज़मीन तक घिसटें गी जिसे लोग पामाल करें गे (मुवज़्ज़िहुल क़ुरआन)

२९. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि दोज़ख़ी सब से पहले जहन्नम के दारोग़ा को बुलायें गे और उसे चालीस साल तक पुकारें गे मगर कोई जवाब न मिले गा। चालीस साल के बाद उत्तर दिया जाये गा कि तुम यहीं पड़े रहो। उन की पुकार की न कोई अहमिय्यत जहन्नम के दारोग़ा के पास हो गी और न ही अल्लाह के नज़दीक। फिर वह अल्लाह को पुकारें गे और कहें गे कि हम अपनी बद अ़मली की वजह से हलाक हुये। मुझे दोबारा दुनिया में भेज दे, अब हम हर्गिज़ कुफ़्र न करें गे। इन की प्रार्थना का उत्तर इन को दुनिया की दो गुनी उम्र तक न मिले गा। फिर उत्तर मिले गा तो यह कि अल्लाह की रहमत से दूर रहो, इसी दोज़ख़ में पड़े रहो, मुझ से किसी प्रकार का कोई कलाम न करो। यह सुन कर निराश हो जायें गे और गधों की तरह चीख़-पुकार करें गे। उस समय उन के चेहरे बदल जायें गे, उन की सूरतें बिगाड़ दी जायें गी। कुछ मोमिन शफ़ाअ़त की अनुमति ले कर आयें गे तो जहन्नमी उन्हें देख कर पुकारें गे कि मैं फ़लाँ हूँ मेरे लिये सिफ़ारिश कर दो, लेकिन वह उत्तर दें गे कि मैं तो किसी को नहीं पहचानता। फिर अल्लाह को पुकारें गे तो उन को ऊपर का सा उत्तर मिले गा। फिर दोज़ख़ के दर्वाज़े बन्द कर दिये जायें गे और यह लोग उसी में पड़े रहें गे।

एक अन्य हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब जन्नत और जहन्नम वाले अपने-अपने ठिकानों पर पहुंच जायें गे तो अल्लाह मोमिनों से पूछे गा कि कितने दिनों तक दुनिया में रहे? वह कहें गे कि यही कोई एक आध दिन। अल्लाह फ़रमाये गा: तुम बहुत अच्छे रहे कि इतने समय की नेकियों का बदला पाया। जहन्नमी लोगों से पूछा जाये गा तो वह भी यही एक-आध दिन बतलायें गे लेकिन उन से कहा जाये गा कि तुम्हारा सौदा तो घाटे वाला रहा कि इतने थोड़े से समय में तुम ने दोज़ख़ को ख़रीद लिया (वहीदी)

और तुम उन से हंसी मज़ाक़ करते रहे १११. (तो) मैं ने उन के सब्र की वजह से आज उन को बदला दे दिया कि (आज इस महशर के मैदान में) वही कामियाब हैं ११२. (यह कह कर फिर) कहे गा कि (बतलाओ!) तुम कितने वर्ष ज़मीन पर रहे थे? ११३. वह (अपनी मौजूदा तकलीफ़ को देख कर) कहें गे कि हम तो एक-आध

ذِكْرِيْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ﴿١١٠﴾ اِنِّيْ جَزَيْتُهُمُ
الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْٓا اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿١١١﴾ قٰلَ كَمْ
لَبِثْتُمْ فِي الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ
بَعْضَ يَوْمٍ فَسْئَلِ الْعَآدِّيْنَ ﴿١١٣﴾ قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا

لَوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١٤﴾ اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ
عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ
الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾ وَمَنْ
يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا
حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١١٧﴾ وَقُلْ
رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١١٨﴾

➲रोज़ रहे हैं पस आप गिनने वालों {हिसाब दानों} से मालूम कर लीजिये ११४. अल्लाह फ़रमाये गा: इस में शक नहीं कि अगर तुम (दुनिया की हक़ीक़त को) जानते हो तो निःसंदेह बहुत ही थोड़े समय रहे थे (मगर अफ़्सोस कि तुम आख़िरत को भूल गये) ११५. तो क्या तुम ने यह समझा कि हम ने तुम को फ़ुज़ूल पैदा किया है? और यह कि तुम हमारी तरफ़ न लौटो गे? ११६. (तुम ने काइनात {ब्रह्माण्ड} को केवल अफ़साना समझा) पस अल्लाह बरहक़ बादशाह (ऐसे बेहूदा ख़याल से) बहुत बुलन्द है, उस के अ़लावा कोई माबूद नहीं, वही बड़े इ़ज़्ज़त वाले तख़्त का मालिक है[३०]। ११७. (इसी लिये तो) जो कोई अल्लाह के साथ दूसरे को पुकारता है, इस (दावा) पर उस के पास कोई दलील नहीं (वह महज़ बे दलील लड़ता है) उन का हिसाब उन के पर्वरदिगार ही के हाँ हो गा। और काफ़िर कभी नहीं छूटें गे। ११८. (यह उन को सुना दे और दुआ़ करते हुये) तू कहा कर कि ऐ मेरे मौला! मुझे बख़्श और मुझ पर रहम फ़रमा और तू ही सब से अच्छा रहम करने वाला है।

....

३०. यानी अर्श पर है जो कि सारी मख़्लूक़ से बुलन्द है। हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० ने इस आयत को एक आसेब सवार(ऐसा आदमी जिस पर जिन्न चढ़ गया हो) के कान में पढ़ा तो वह ठीक-ठाक हो गया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन से पूछा कि तुम ने क्या पढ़ा था? उन्हों ने बताया तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क़सम है उस की जिस के हाथ में मेरी जान है अगर यक़ीन वाला शख़्स इस आयत को किसी पहाड़ पर पढ़े तो वह सरक जाये। एक और रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हमें लड़ाई के लिये भेजा तो हुक्म दिया कि सुब्ह-शाम इस को पढ़ते रहना। हम पढ़ते रहे और सलामती से लौट आये और ख़ूब ग़नीमत का माल हासिल किया (वहीदी)

सूरः नूर (24)

सूरः नूर (रौशनी) मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी[१]। इस में ६४ आयतें और ९ रुकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

१. इस सूरः (नूर) को हम ने उतारा है और (इस के अहकाम पर अ़मल करना) हम ने फ़र्ज़ किया है और हम ने इस में खुले-खुले अहकाम➲

فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ
وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢ اَلزَّانِيْ
لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۡ وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ
اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٣
وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ
شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ
شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝٤ اِلَّا الَّذِيْنَ
تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝٥ وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ
شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍ
بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٦ وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ

नाज़िल किये हैं ताकि तुम नसीहत पाओ २. (एक आवश्यक आदेश सर्व प्रथम सुनो कि) ज़िना करने वाला मर्द और ज़िना करने वाली महिला (हर एक को हाकिम के निर्देश से) सौ-सौ कोड़े मारो[२] और (ख़ूब मारो) अल्लाह का आदेश जारी करने में तुम उन पर किसी प्रकार का तरस न खाओ अगर तुम को अल्लाह पर और पिछले दिन पर ईमान है (तो ऐसा ही करना) और (सुनो! उन को कोड़े खुले मैदान में खुल्लम-खुल्ला लगाओ और) उन की सज़ा के समय मुसल्मानों की एक जमाअ़त हाज़िर रहे ३. ज़िना करने वाला (जब तक ज़िना से तौबा नहीं करता) ज़ानिया अथवा मुश्रिका (औ़रत) ही से निकाह करे[३] (ताकि कोई भली औ़रत उस के संग रह कर ख़राब न हो।) इसी प्रकार ज़ानिया महिला से (जब तक वह ज़िना से तौबा नहीं करती) से ज़ानी अथवा मुश्रिक ही निकाह करे, और मुसलमानों पर यह निकाह हराम है। ४. और जो कोई पाक (दामन) औ़रतों पर ज़िना की झूठी तुहमत लगायें फिर (इस दावा पर) चार गवाह न लायें तो उन (फ़सादियों) को अस्सी-अस्सी कोड़े मारो और भविष्य में कभी भी (किसी मामले में) उन की गवाही कु़बूल न करना, (क्योंकि) यह लोग बदकार हैं ५. मगर जो लोग इस के बाद तौबा करें और भलाई की राह इख़्तियार करें तो (ऐसे लोगों पर से यह इल्ज़ाम उठा लिया जाये गा) क्योंकि अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है ६. और जो लोग अपनी बीवियों पर ज़िना की तुहमत लगायें[४] और सिवाए अपने, उन के पास चार गवाह न मौजूद हों तो (क़ाज़ी के सामने खड़ा कर के) उन में से हर एक से (यानी जिसने इल्ज़ाम लगाया है) चार बार अल्लाह के नाम की क़सम खिला कर गवाही ली जाये कि बिला शुब्हा वह सच्चों में से है ७. और पाँचवी बार यह कहे कि मुझ पर अल्लाह की लानत है

....

१. यह सूरः मदीना शरीफ़ में उतरी। इस में ६२ अथवा ६४ आयतें हैं। एक हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "महिलाओं को सूरः नूर और मर्दों को सूरः माइदा सिखाओ"। (वहीदी)

२. 'कोड़े' से मुराद आ़म कोड़ा नहीं है, बल्कि शरीअ़त का बताया हुआ कोड़ा है कि कितना लम्बा, कितना मोटा और कितना सख़्त हो। पहले ज़िना के बाब में यह हुक्म था कि मर्द और औ़रत दोनों को कै़द कर दो, यहाँ तक कि तौबा करें (यह हुक्म सूरः निसा की आयः१५ में है) फिर जब यह यानी सूरः नूर उतरी तो कै़द वाला हुक्म मन्सूख़ हो गया। यहाँ पर आयत न० २ का हुक्म उस मर्द और महिला के लिये है जो विवाहित न हों। और विवाहित

➲महिला एवं पुरुष ज़िना करें तो उस की सज़ा पत्थरों से मार मार कर हलाक करना है। पत्थरों से मार-मार कर हलाक कर देने का हुक्म सहीह हदीसों से तो साबित है ही, इस बारे में एक आयत भी नाज़िल हुयी थी: "आयत यह है: अश्शैखु वश्शै-खतु इज़ा ज़-नया फ़रजुमूहुमा नका-लम्मि-नल्लाहि अ़ज़ीज़ुन हकीम"। इस आयत की तिलावत तो समाप्त घोषित कर दी गयी, लेकिन अ़मल आज तक बाक़ी है और क़ियामत तक बाक़ी रहे गा। हज़रत उमर रज़ि० ने मिंबर पर इस आयत की तिलावत कर के लोगों को सुनाया और कहा कि यह क़ुरआन मजीद की एक आयत है। ऐसा न हो कि आगे चल कर कोई यह कहे कि मैं रज्म का हुक्म क़ुरआन मजीद में नहीं पाता। (वहीदी)

३. कुछ उलमा यह मतलब भी बयान करते हैं कि ज़िना कार मर्द, ज़िना कार औ़रत ही से ज़िना करता है और इसी प्रकार ज़िना कार औ़रत, ज़िना कार मर्द ही से ज़िना कराती है। यह आयत उस समय नाज़िल हुयी जब एक मुसलमान ने जाहिलिय्यत के समय में एक रंडी से निकाह किया था ताकि उस की कमाई खाये। बाज़ों ने कहा कि यह आयत एक ख़ास औ़रत के बारे में नाज़िल हुयी वह ज़िना कार महिला थी और एक सहाबी ने उस से निकाह करना चाहा था। बाज़ उलमा का कहना है कि यह आयत एक मर्द मरसद नामी के बारे में नाज़िल हुयी जो कि ग़दाक़ नामी एक बद कार महिला से विवाह करना चाहता था।

इमाम हसन बसरी रह० बड़ी अहम बात फ़रमाते हैं। उन के नज़दीक एक ज़िना कार मर्द जिस पर ज़िना की वजह से कोड़े भी लग चुके हों, वह पाकदामन महिला से निकाह नहीं कर सकता। और अगर करे गा भी तो निकाह नाजायज़ हो गा, इसी प्रकार ज़ानिया महिला भी पाक दामन मर्द से निकाह नहीं कर सकती और अगर करे गी तो निकाह नाजायज़ हो गा। लेकिन आ़म उलमा का कहना है कि हद लग जाने के बाद वह निकाह कर सकता है और पाक दामन महिला से निकाह जायज़ हो गा। इन उलमा का कहना है कि यहाँ आयत न० ३ में एक आ़म बात बताई गयी है कि ज़ानी, अपने ही तरह की बद चलन महिला की तरफ़ झुकता है और इसी प्रकार बदचलन महिला, बदकार मर्द की तरफ़। इस आयत में हुक्म नहीं है बल्कि हिकायत बयान है। अब प्रश्न यह उठता है कि मर्द ने जिस महिला से ज़िना किया है, उस से निकाह कर सकता है? इमाम अबू हनीफ़ा और शाफ़ई रह० के नज़दीक जायज़ हैं इब्ने मस्ऊद, इब्ने अ़ब्बास, उमर, जाबिर और इमाम मालिक के नज़दीक नाजायज़ है। और अगर किया तो गोया सारी उम्र ज़िना करता रहा। इसी प्रकार एक दूसरा प्रश्न यह है कि एक विवाहित (शादी शुदा) महिला अगर ज़िना कराये, तो क्या अपने शौहर से उस का निकाह टूट गया? अक्सर उलमा के नज़दीक नहीं टूटे गा। हाँ. कुछ उलमा हैं जिन के नज़दीक टूट जाये गा। कुछ उलमा का कहना है कि यह आयत मन्सूख़ है (वहीदी)

४. शाने नुज़ूल:- यह आयत हलाल बिन उमय्या के बारे में नाज़िल हुयी। इन साहब ने अपनी पत्नी पर ज़िना का आरोप लगाया तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अपने आरोप को सिद्ध करने के लिये चार गवाह लाओ वरना इल्ज़ाम के जुर्म में कोड़े लगें गे। उन्हों ने कहा: यह तो बड़ा मुश्किल काम है कि एक शख़्स बुरा काम करते देखे तो दौड़ कर चार गवाह ढूँढे। अल्लाह तआ़ला इस बारे में अवश्य ही कोई आदेश नाज़िल फ़रमाये गा, तब हज़रत जिब्रील अ़लै० यह आयतें ले कर आये। कुछ उलमा का कहना है कि यह आयत उवैमर अ़ज्लानी के बारे में नाज़िल हुयी। उन्हों ने आसिम नामी एक व्यक्ति से कहा कि तुम जा कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मस्अला मालूम करो कि अगर कोई शख़्स अपनी पत्नी के साथ दूसरे मर्द को बुरा कार्य करते देखे तो क्या करे? हज़रत आसिम ने जब यह प्रश्न पूछा तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बुरा माना और कोई उत्तर न दिया। तो उवैमर अजलानी ने स्वयँ आ कर पूछा, इतने में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर वह्यि नाज़िल होने लगी। इस के बाद आप ने उवैमर और उन की पत्नी के दर्मियान लिआ़न करा दिया। लिआ़न तलाक़ के उस तरीक़े का नाम है जो आयत न० ६ से आयत न० ९ तक में बयान है। और लिआ़न उसी सूरत में कराया जाये गा जब पति अपनी पत्नी पर ज़िना का इल्ज़ाम तो लगाये मगर चार गवाह न पेश कर सके। (वहीदी)

اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۞ وَيَدْرَؤُا عَنْهَا
الْعَذَابَ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ
الْكٰذِبِيْنَ ۞ وَالْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَاۤ اِنْ
كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۞ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ
رَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ۞ اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ
بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ؕ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ؕ بَلْ هُوَ
خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْاِثْمِ ۚ
وَالَّذِيْ تَوَلّٰى كِبْرَهٗ مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۞
لَوْلَاۤ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ
خَيْرًا ۙ وَّقَالُوْا هٰذَاۤ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ۞ لَوْلَا جَآءُوْ
عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا بِالشُّهَدَآءِ
فَاُولٰٓئِكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ۞ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِيْ مَاۤ

अगर मैं झूठा हूँ ८. और (इस के बाद औरत की बारी है) उस औरत से सज़ा टल सकती है अगर वह भी चार मर्तबा अल्लाह की क़सम खा कर शहादत दे कि वह मेरा पति (यानी मुद्दई) झूठा है (मैं ने हर्गिज़ यह पाप नहीं किया) ९. और पाँचवी मर्तबा यह कहे कि अगर यह (अपने दावा में) सच्चा है तो मुझ पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल हो (फिर क़ाज़ी उन के दर्मियान जुदाई डाल दे[५]) १०. अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रहमत (तुम मुसलमानों पर) न होती और यह कि अल्लाह बड़ा ही मेहरबान और निहायत हिक्मत वाला है (अगर यह बातें न होतीं तो तुम्हें ऐसी दानाई की बातें कौन सिखाता) ११. जिन लोगों ने बुहतान उठाया है कुछ संदेह नहीं कि वह तुम (मुसलमानों) में से हैं। तुम उस को अपने हक़ में बुरा न समझो बल्कि वह तुम्हारे हक़ में अच्छा है[६]। उन में से जिस-जिस ने (इस मामले में ज़बान खोल कर) जितना-जितना पाप किया है वह उस को मिले गा और उन में से जिस शख़्स ने उस का बड़ा हिस्सा लिया है[७] उस को बहुत ही बड़ा अ़ज़ाब पहुंचे गा[८] १२. तुम ने जब यह सुना था तो क्यों ईमानदार मर्दों और महिलाओं ने उस को अपने हक़ में अच्छा न जाना, और क्यों न कहा कि यह तो खुल्लम-खुल्ला बुहतान है[९] १३. उन बुहतान वालों को चाहिये था कि चार गवाह लाते फिर अगर यह सच्चे थे तो क्यों यह लोग उस पर चार गवाह न लाये, पस जब यह गवाह न ला सके तो (समझो कि) अल्लाह के निकट यही झूठे हैं (जिन लोगों ने उन की हाँ में हाँ मिलाई है उन को शरीक होने का बराबर गुनाह हो गा) १४. और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रहमत दुनिया और आख़िरत में तुम (मुसलमानों) पर न होती तो तुम ने जिस (नामुनासिब) बात में कुरेद की थी (और नाहक़ बात सुन कर बाज़ों ने तस्लीम कर लिया था) उस के कारण तुम पर कोई बड़ा अ़ज़ाब नाज़िल होता

....

५. जब पति-पत्नी लिआ़न से फ़ारिग़ हो जायें (यानी दोनों पाँच-पाँच बार क़स्में खा चुकें) तो इस के बाद दोनों एक दूसरे पर हराम हो जाते हैं। अगर दोनों राज़ी नहीं तो क़ाज़ी अलग करा दे। (बयानुल् कुरआन)

६. हज़रत आइशा रज़ि० पर अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि और ज़ैद बिन रिफ़ाआ आदि ने तुहमत लगाई थी। इस तअ़ल्लुक़ से हज़रत आइशा की पाक दामनी के सिलसिले में १८ आयतें अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल फ़रमायीं, जो क़ियामत तक

➲कुरआन में पढ़ी जाती रहें गी (यह १६ आयतें, आयत न० ११ से आयत न० २६ तक हैं) यह क़िस्सा हदीस की मुख़्तलिफ़ किताबों में विस्तार से बयान है। इस क़िस्से का खुलासा यह है कि एक सफ़र में हज़रत आइशा रज़ि० आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ थीं। वह अपने गले का हार ढूंडने या किसी और काम से अपने हौदे (ऊँट या हाथी पर बैठने की काठी) से उतर गयीं। जब रवानगी का समय हुआ तो लोगों ने यह समझा कि वह अपने हौदे ही में हैं उसे ऊँट पर रखा और क़ाफ़िला चल पड़ा। जब हज़रत आइशा रज़ि० वापस आयीं तब तक क़ाफ़िला दूर निकल गया था, चुनान्चे यह अकेली मुंह लपेट कर वहीं लेट गयीं। हज़रत सफ़वान बिन मुअत्तल रज़ि० के जिम्मा क़ाफ़िले के कूच कर जाने के बाद उस स्थान पर क़ाफ़िले के छूटे हुये सामानों को लाने का ज़िम्मा था। इन्हों ने उस स्थान का जाइज़ा किया तो वहाँ हज़रत आइशा को पाया, चुनान्चे उन्हें अपने ऊँट पर सवार कर के क़ाफ़िले के साथ जा मिले।

बस इतनी सी बात को बतंगड़ बना दिया गया। मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबय्यि को जब इस बात की ख़बर लगी तो उस ने बुराई का इल्ज़ाम लगाया। इस मामले के हज़रत हस्सान बिन साबित और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ के ख़ाला ज़ाद भाई और भान्जे मिस्तह बिन असासा भी मुलव्वस हो गये। इस मामले को ले कर हज़रत आइशा को तो रन्ज हुआ ही स्वयँ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम भी बहुत दुःखी हुये। आख़िर अल्लाह तआ़ला ने उन की बराअत में यह १६ आयतें बड़ी धूम-धाम के साथ उतारीं और इल्ज़ाम लगाने वालों पर हद जारी की गयी (वहीदी) अब्दुल्लाह बिन उबाय्ये मुनाफ़िक़ ज़लील हुआ। एक मर्तबा हज़रत हस्सान रज़ि० का ज़िक्र हज़रत आ़इशा रज़ि० के सामने हुआ तो आप ने कहा कि वह जन्नती हैं। लोगों ने कहा कि आप पर इल्ज़ाम में यह भी शामिल थे, तो उन्हों ने कहा कि उन्हों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शान में जो यह कहा है: "मेरे माँ-बाप और मेरी इ़ज़्ज़त और आबरू, सब कुछ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की इ़ज़्ज़त और आबरू के लिये ढाल हैं"। (हक़्क़ानी- ५/२२५)

इस इफ़्क (झूठ) के वाक़िए को 'ख़ैर' (भलाई) इस लिये कहा गया है कि इस की वजह से उम्मत के लिये बहुत से अहकाम व मसाइल बयान किये गये हैं और इस मुबारक सूरः का नुज़ूल हुआ है और बहुत से समाजी क़ानून और ज़ाबते सामने आये हैं।

७. इस से अब्दुल्लाह बिन उबय्यि मुराद है जो हर जगह इस बात को फैला रहा था (सनाई)

८. 'अ़ज़ाब पहुंचे गा' दुनिया में अथवा दुनिया और आख़िरत दोनों में ज़लील होगा (यानी मुनाफ़िक़ अब्दुल्लाह बिन उबय्यि) रिवायतों में आता है कि हज़रत हस्सान और मिस्तह पर तो हद जारी की गयी थी। अब्दुल्लाह बिन उबय्यि को छोड़ दिया गया था इस लिये कि वह मुनाफ़िक़ था। इस के लिये आख़िरत का अ़ज़ाब ही क्या कम था। फिर दूसरी बात यह कि अगर उस पर भी हद जारी हो जाती तो वह गुनाहों से पाक हो जाता, जैसा कि एक हदीस शरीफ़ में आया है कि हद गुनाह का कफ़्फ़ारा है। इमाम ज़हरी फ़रमाते हैं कि हज़रत सऊ़ीद बिन मुसय्यिब, उर्वा बिन ज़ुबैर, अल्क़मा बिन वक़्क़ास और अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० को फ़रमाते सुना कि हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० पर बुहतान लगाने में सब से पेश-पेश अब्दुल्लाह बिन उबय्यि ही था (वहीदी)

९. 'बि-अन् फुसिहिम' (अपने हक़ में) इस से मुराद मुसलमान भाई हैं। कुछ उ़लमा ने यह भी तर्जुमा किया है कि "उन को अपने आप की तरह समझ कर दूसरों के साथ भी यूँ ही गुमान करना चाहिये था"। यानी जैसे ईमानदार आदमी ज़िना से बचते और उस को बुरा जानते हैं, ऐसे ही हज़रत आ़इशा और हज़रत सफ़वान के बारे में भी सोचना चाहिये था। रिवायतों में आता है कि हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि० की पत्नी ने जब यह अफ़वाह सुनी तो अपने पति जी महोदय से पूछा कि यह सब क्या हो रहा है? उन्हों ने पूछा कि क्या तुम ऐसा कर सकती हो? कहा कि हर्गिज़ नहीं। उन्हों ने फ़रमाया कि जब तुम नहीं कर सकती तो हज़रत आ़इशा जो तुम से हज़ार गुना अफ़्ज़ल हैं, वह कैसे कर सकती हैं। यह सब सर से पैर तक झूठ, इल्ज़ाम और बुहतान है। अल्लाह तआ़ला ने इस आयत न०➲

➲१२ में इसी बात की ओर संकेत दिया है कि हर मुसलमान मर्द और महिला को हज़रत अय्यूब की तरह सोचना चाहिये। हज़रत सफ़वान बिन मुअत्तल रज़ि० फ़रमाया करते थे कि अल्लाह की क़सम! मैं ने किसी महिला पर आज तक अपना तहबन्द नहीं खोला और अन्त में अल्लाह की राह में शहीद हुये- राज़ियल्लाहु अन्हु (वहीदी)

اَفَضۡتُمۡ فِیۡهِ عَذَابٌ عَظِیۡمٌ ۚ﴿۱۴﴾ اِذۡ تَلَقَّوۡنَهٗ بِاَلۡسِنَتِکُمۡ وَ
تَقُوۡلُوۡنَ بِاَفۡوَاهِکُمۡ مَّا لَیۡسَ لَکُمۡ بِهٖ عِلۡمٌ وَّ تَحۡسَبُوۡنَهٗ
هَیِّنًا ٭ۖ وَّ هُوَ عِنۡدَ اللّٰهِ عَظِیۡمٌ ﴿۱۵﴾ وَ لَوۡ لَاۤ اِذۡ سَمِعۡتُمُوۡهُ
قُلۡتُمۡ مَّا یَکُوۡنُ لَنَاۤ اَنۡ نَّتَکَلَّمَ بِهٰذَا ٭ۖ سُبۡحٰنَکَ هٰذَا
بُهۡتَانٌ عَظِیۡمٌ ﴿۱۶﴾ یَعِظُکُمُ اللّٰهُ اَنۡ تَعُوۡدُوۡا لِمِثۡلِهٖۤ اَبَدًا
اِنۡ کُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِیۡنَ ﴿ۚ۱۷﴾ وَ یُبَیِّنُ اللّٰهُ لَکُمُ الۡاٰیٰتِ ؕ وَ اللّٰهُ
عَلِیۡمٌ حَکِیۡمٌ ﴿۱۸﴾ اِنَّ الَّذِیۡنَ یُحِبُّوۡنَ اَنۡ تَشِیۡعَ الۡفَاحِشَةُ
فِی الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا لَهُمۡ عَذَابٌ اَلِیۡمٌ ۙ فِی الدُّنۡیَا وَ الۡاٰخِرَةِ ؕ
وَ اللّٰهُ یَعۡلَمُ وَ اَنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۹﴾ وَ لَوۡ لَا فَضۡلُ اللّٰهِ
عَلَیۡکُمۡ وَ رَحۡمَتُهٗ وَ اَنَّ اللّٰهَ رَءُوۡفٌ رَّحِیۡمٌ ﴿۲۰﴾ یٰۤاَیُّهَا
الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّبِعُوۡا خُطُوٰتِ الشَّیۡطٰنِ ؕ وَ مَنۡ یَّتَّبِعۡ
خُطُوٰتِ الشَّیۡطٰنِ فَاِنَّهٗ یَاۡمُرُ بِالۡفَحۡشَآءِ وَ الۡمُنۡکَرِ ؕ
وَ لَوۡ لَا فَضۡلُ اللّٰهِ عَلَیۡکُمۡ وَ رَحۡمَتُهٗ مَا زَکٰی مِنۡکُمۡ مِّنۡ

१५. क्योंकि तुम उस को अपनी ज़बानों से नक़ल दर नक़ल करते थे और अपने मुंह से वह बातें करते थे जिन का तुम को (यक़ीनी) ज़िल्म न था और तुम इस (हिकायत) को सरल समझते थे हालाँकि अल्लाह के हाँ वह बहुत बड़ी बात थी[१०] १६. और जब तुम ने इस (बुहतान) को सुना था तो (क्यों न अपने मुंह को बन्द रखा और) क्यों न तुम ने कहा कि हमारे लिये उचित नहीं कि इस बात को मुंह से निकालें (यह भी कहना चाहिये था कि) अल्लाह पाक है यह तो (बहुत) बड़ा बुहतान है १७. (सुनो!) अल्लाह तुम को नसीहत करता है अगर ईमानदार हो तो फिर कभी ऐसा काम न करना (और अल्लाह की नसीहत पर अ़मल करते रहना) १८. और अल्लाह तुम्हारे लिये अपने अहकाम खोल-खोल कर बयान करता है। और अल्लाह बड़े ज़िल्म वाला बड़ी हिक्मत वाला है १९. जो लोग (यानी मुनाफ़िक़) चाहते हैं कि (बि गुनाह) मुसलमानों (के हक़) में ज़िना कारी (की ख़बर) मशहूर हो दुनिया और आख़िरत में उन को दुःख की मार है[११]। और अल्लाह तआ़ला उन के दिलों के हाल को जानता है और तुम नहीं जानते २०. और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रहमत तुम पर न होती और यह कि अल्लाह बड़ा ही मेहरबान निहायत रहम वाला है तो तुम देखते कि ऐसे काम की सज़ा तुम को क्या मिलती २१. मुसलमानों! (ख़बरदार! ऐसी बेहूदा बातें बकने और अन्य बुरे कार्यों के करने में) तुम शैतान की डगर पर न चलना[१२]। (याद रखो) जो कोई शैतान की डगर पर चले गा फिर (उस की ख़ैर नहीं। क्योंकि वह) तो हमेशा बेहयाई और नाजायज़ कामों का हुक्म देता है। और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रहमत तुम्हारे साथ न होती तो कोई भी तुम में कभी पाक न होता (क्योंकि यह कोई मामूली गुनाह नहीं)

....

१०. यानी तुम वह बात ज़बान से निकालते थे जिस का तुम्हें ज़िल्म न था। तुम अगर्चे उस कलाम को हल्का समझते➲

➲थे, लेकिन वास्तव में वह अल्लाह के नज़दीक बड़ा भारी कलाम था। एक आम मुस्लिम महिला पर ऐसा आरोप लगाना बड़ा जुर्म है तो फिर अल्लाह के नबी की बीवी पर यह इल्ज़ाम कितना बड़ा पाप हो गा? यही कारण है कि अल्लाह की ग़ैरत जोश में आयी और वह्यि नाज़िल फ़रमा कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पवित्र पत्नी हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि० को पवित्र घोषित फ़रमाया। बुख़ारी, मुस्लिम की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बाज़ मर्तबा इन्सान कोई ऐसी बात कह जाता है जिस को वह कोई गंभीरता नहीं देता, लेकिन अल्लाह तआ़ला उस बात पर इतना नाराज़ होता है कि उसे जहन्नम की इतनी गहराई में पहुंचा देता है जितनी आसमान और ज़मीन के दर्मियान दूरी है, बल्कि इस से भी अधिक गहराई में (इब्ने कसीर)
११. 'आख़िरत में दुःख की मार है' यह तीसरी चेतावनी है। यानी जो शख़्स ऐसी बुरी बात सुने भी, तो उसके लिए उस का प्रचार करना हराम है। जो इस प्रकार की बुरी अफ़वाहों को उड़ाते फिरते हैं उन्हें दुनिया में कोड़ों की सज़ा मिले गी और आख़िरत में जहन्नम का अ़ज़ाब अलग मिलेगा। एक अन्य हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह के बन्दों को दुःख न दो, उन्हें शर्म दिलाओ, उन की पोशीदा बातों को न टटोलो। जो अपने मुसलमान भाई के अ़ैब के पीछे पड़े गा तो अल्लाह भी उस के अ़ैबों को ज़ाहिर कर के उसे रुस्वा कर दे गा (मुहम्मदी) बड़े दुःख की बात है कि बाज़ हाजी, नमाज़ी और आलिमे दीन लोग भी इस महामारी का शिकार हैं। उन के अपने ख़याल में दूसरों के अन्दर अ़ैब तलाश करना बहुत बड़ा पुण्य का काम है। अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को इस बुरी आ़दत से सुरक्षित रखे-- आमीन!
१२. एक सहाबी ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से कहा कि मैं ने फ़लाँ चीज़ न खाने की क़सम खाई है। आप ने फ़रमाया: यह शैतान का बहकावा है अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा दो और उसे खाओ-पियो। हज़रत अबू राफ़ेअ कहते हैं कि एक मर्तबा मेरा अपनी पत्नी से झगड़ा हो गया। उस ने आव देखा न ताव कहने लगी कि अगर तुम अपनी पत्नी को तलाक़ न दो तो वह यहूदी है और उस के गुलाम आ़ज़ाद हैं। मैं ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० के सामने इस घटना को बयान किया तो उन्हों ने फ़रमाया: यह शैतानी हर्कत है और अन्य समझदार महिलाओं ने भी उस को शैतानी हर्कत ही कहा। एक साहब ने हज़रत इमाम शोबी रज़ि० से आ कर कहा कि मैं ने अपने बच्चा को ज़ब्ह करने की नज़्र मानी है। आप ने फ़रमाया: यह शैतानी हर्कत है, ऐसा मत करो। हाँ, एक बक्री वग़ैरह अल्लाह की राह में उस की तरफ़ से क़ुर्बान कर दो (मुहम्मदी) यहाँ पर चन्द एक उदाहरण पेश किये गये हैं, वर्ना इस आयत की हिदायत आ़म है और हर शैतानी वस्वसा से दूर रहना अहले ईमान के लिये अनिवार्य है।

أَحَدٍ أَبَدًا ۙ وَّلَٰكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ
عَلِيمٌ ﴿٢١﴾ وَلَا يَأْتَلِ أُولُو الْفَضْلِ مِنكُمْ وَالسَّعَةِ أَن
يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۗ أَلَا تُحِبُّونَ أَن يَغْفِرَ
اللَّهُ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٢﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ
الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لُعِنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ
وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾ يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ
وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾ يَوْمَئِذٍ

लेकिन अल्लाह जिस को चाहे पाक करता है। और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है[१३] २२. और तुम में से बुजुर्ग मनुष्य और कुशादगी वाले क़सम न खा लें कि रिश्ते दारों और मिस्कीनों और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों को न दें गे (इस लिये कि उन्हों ने उन को रन्ज पहुंचाया) और (उन का दोष) माफ़ करें और नज़र अन्दाज़ करें। (सुनो!) क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम को बख़्श दे? (फिर तुम मख़्लूक़ के साथ क्यों बख़्शिश से पेश नहीं आते) और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।➲

يُوَفِّيهِمُ اللَّهُ دِينَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ
الْحَقُّ الْمُبِينُ ۝٢٥ الْخَبِيثَاتُ لِلْخَبِيثِينَ وَالْخَبِيثُونَ
لِلْخَبِيثَاتِ ۖ وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ ۚ
أُولَٰئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ ۖ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ
كَرِيمٌ ۝٢٦ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ

२३. जो लोग पाक दामन, बेख़बर {भोली भाली} ईमानदार महिलाओं पर (किसी प्रकार की) तुहमत लगाते हैं[१४/१] दुनिया और आख़िरत में उन पर (अल्लाह की) लानत है और उन को बहुत बड़ा अ़ज़ाब हो गा[१४/२] २४. (क्या अ़ज़ाब हो गा?) जिस रोज़ (स्वयँ) उन की ज़बानें और उन के हाथ और उन के पांव उन के (किये हुये बुरे) कामों की सूचना दें गे २५. उस रोज़ अल्लाह तआ़ला (उन के) आमाल का बदला उन को पूरा दे गा और वह जान लें गे कि बेशक अल्लाह (ही का आदेश) खुल्लम-खुल्ला हक़ था २६. (यह तो आ़म नियम है कि) गन्दी महिलायें, गन्दे मर्दों के लिये और गन्दे मर्द, गन्दी महिलाओं के लिये होते हैं और पाक महिलायें, पाक मर्दों के लिये और पाक मर्द, पाक महिलाओं के लिये होते हैं[१५] (साफ़ परिणाम यह है कि) यह लोग (यानी आइशा सिद्दीक़ा वग़ैरह चूँकि नबी की बीवियाँ हैं) उन (लोगों की) बेहूदा बातों से पाक हैं उन के लिये बख़्शिश और इ़ज़्ज़त की रोज़ी है। २७. ईमानदारो! (तुम्हें यह आदेश दिया जाता है कि) तुम अपने घरों के अ़लावा दूसरे घरों में बग़ैर मालूम कराये

....

१३. शाने नुज़ूल:- हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० के एक संबन्धी हज़रत मिस्तह बिन असासा भी तुहमत लगाने वालों में शामिल थे। हज़रत सिद्दीक़ रज़ि० उन की बड़ी देख-रेख करते थे, आड़े वक़्त में उन की माली सहायता भी किया करते थे। इस घटना के बाद उन्हों ने दिल में ठान लिया कि अब इन हज़रत के लिये दिल में नर्म गोशा न रखूँ गा इस लिये कि अब यह हज़रत इस लायक़ नहीं रहे। अल्लाह ने उन के इस इरादे से मना फ़रमाया। हज़रत सिद्दीक़ रज़ि० ने भी अपना इरादा बदल ही नहीं दिया बल्कि जितना देते थे उस से दो गुना देने लगे (रज़ियल्लाहु अन्हु) (सनाई)

१४/१. 'ग़ाफ़िलत' (बिख़बर, भोली-भाली) इस से मुराद यह है कि वह ज़िना से और बेहयाई के कामों से नावाक़िफ़ हैं और भूल कर भी उन के दिलों में इस तरह का ख़याल नहीं आता। कुछ उलमा का कहना है कि यह आयत न० २३ अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि मुनाफ़िक़ के लिये ख़ास है। और कुछ लोगों का कहना है कि जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बीवियों पर इल्ज़ाम लगाते हैं उन सब के हक़ में यह आयत नाज़िल हुयी है, और ऐसे लोगों की तौबा क़ुबूल नहीं हो गी। लेकिन आ़म मुस्लिम महिलाओं पर इल्ज़ाम लगाये और तौबा करे तो उस की तौबा क़ुबूल हो गी, जैसा कि इस सूरः के आरंभ में आयत न० ५ में बयान हुआ। कुछ उलमा का कहना है कि यह आयत उन लोगों की चेतावनी के लिए नाज़िल हुयी जो पाक दामन, मुसलमान महिलाओं पर इल्ज़ाम लगायें और फिर तौबा न करें। कुछ का कहना है कि इस से मक्का के मुश्रिक और काफ़िर मुराद हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने फ़रमाया: जो कोई तौबा करे उस की तौबा तो क़ुबूल है मगर जिस ने हज़रत आइशा पर इल्ज़ाम लगाया उस की तौबा नहीं क़ुबूल होगी (मुहम्मदी)

'यह लोग (नबी की बीवियाँ) उन के बेहूदा इल्ज़ाम से पाक हैं' (आयत न० २६) इस सूरः में हज़रत आ़इशा की पाकी साबित करते हुये अल्लाह ने १६ आयतें नाज़िल फ़रमाई हैं। इस से आप भली-भांति अनुमान लगा सकते हैं कि अल्लाह को हज़रत आ़इशा की इ़ज़्ज़त का कितना ख़याल था। जब यह आयतें नाज़िल हुयीं तो पिता अबू

बक्र ने हज़रत आइशा से कहा: उठ कर जाओ और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शुक्र अदा करो। उन्हों ने फ़रमाया: न आप का, न नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का, बल्कि मैं तो अपने मालिक का शुक्र अदा करूँ गी। वह फ़रमाती हैं कि मैं सोच भी नहीं सकती थी कि कुरआन में मेरी पाकी के बारे में इस प्रकार की आयतें नाज़िल हों गी। मैं तो केवल यूँ समझती थी कि अल्लाह तआला बस यूँ ही सपनों वग़ैरह में कुछ सूचित कर दे गा, लेकिन उस का मेरे ऊपर बड़ा करम और मेहरबानी है कि उस ने मेरी बात की सफ़ाई के लिये आयतें उतारीं (वहीदी) हज़रत आइशा की फ़ज़ीलत के लिये यह आयतें नस्स (ठोस सबूत) हैं।

१४/२. 'बड़ा अज़ाब हो गा' इस लिये कि बदकारी जितना बड़ा पाप है और समाज की तबाही-बर्बादी के लिये घुन है, उतना ही बड़ा गुनाह यह है कि बग़ैर सबूत के किसी पाक दामन मर्द-औरत पर बदकारी का आरोप लगाया जाये। (राज़)

१५. किसी कवि ने कहा है कि परिन्द और पखेरू अपनी-अपनी जाति के साथ रहते हैं। कबूतर, कबूतर के साथ और बाज़, बाज़ के साथ रहता है। बिल्कुल यही हाल नबी की बीवियों का है। जो नबी के साथ रहे गा वह नबी ही की तरह पाक हो गा। इस लिये हज़रत आइशा उन की बेहूदा बातों से पाक हैं। उन के लिये अल्लाह के हाँ बख़्शिश है और अिज़्ज़त की रोज़ी है और उन के दुश्मनों के लिये ज़िल्लत और ख़ारी है (सनाई) आयत का साफ़-साफ़ मतलब यह है कि अल्लाह के रसूल जो हर प्रकार से पाक-साफ़ हैं, यह असंभव है कि अल्लाह उन के निकाह में किसी ऐसी महिला को दे जो गन्दी हो। गन्दी महिलायें तो गन्दे पुरूषों के योग्य होती हैं। इसी लिये फ़रमाया कि यह लोग उन तमाम आरोपों से पाक हैं जो दुश्मन उन पर लगा रहे हैं। और बेहूदा बातों से जो उन्हें तक्लीफ़ पहुंची है, वह तक्लीफ़ उन के लिये मग़्फ़िरत का कारण बन जाये गी। और चूंकि यह आप की पत्नी हैं इस लिये जन्नत में भी आप ही के साथ रहें गी, (मुहम्मदी)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० की फ़ज़ीलत के तअल्लुक़ से बहुत सारी हदीसें मौजूद हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी अन्तिम साँस आप की गोद में तोड़ी, यही आप की फ़ज़ीलत और मर्तबे के लिये बहुत काफ़ी है (रज़ियल्लाहु अन्हा)

بُيُوتِكُمْ حَتَّىٰ تَسْتَأْنِسُوا وَتُسَلِّمُوا عَلَىٰٓ أَهْلِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ
خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾ فَإِن لَّمْ تَجِدُوا فِيهَآ
أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّىٰ يُؤْذَنَ لَكُمْ ۖ وَإِن قِيلَ
لَكُمُ ارْجِعُوا فَارْجِعُوا ۖ هُوَ أَزْكَىٰ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨﴾ لَّيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَدْخُلُوا
بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا
تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٢٩﴾ قُل لِّلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا
مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ أَزْكَىٰ
لَهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌۢ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿٣٠﴾ وَقُل لِّلْمُؤْمِنَاتِ

और उन में रहने वालों को सलाम किये बग़ैर दाख़िल न हुआ करो[१६]। यह तुम्हारे लिये अच्छा है (और तुम्हें इस लिये बताया है) ताकि तुम नसीहत पाओ। २८. और अगर तुम उन (घरों) में किसी को न पाओ तो (फिर) तुम उन में दाख़िल न हुआ करो जब तक कि तुम्हें अनुमति न मिले और अगर तुम्हें कहा जाये कि (इस समय मिलने का मौक़ा नहीं) आप लौट जायें, तो वापस लौट जाओ यह तुम्हारे लिये अधिक सफ़ाई (का मश्वरा) है। और अल्लाह तुम्हारे कामों को जानता है। २९. ऐसे घरों में जो किसी ख़ास शख़्स के रिहाइशी {आवासीय} न हों दाख़िल होने में तुम पर गुनाह नहीं[१७] उस में

يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ
وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ
بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ
اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ

तुम्हारा सामान रहता है (ताहम बद निय्यती हर हाल में बुरी है) और जो कुछ प्रकट करते और छुपाते हो अल्लाह को सब मालूम है ३०. (इस लिये ऐ नबी!) तू ईमान्दारों को कह कि (चलते-फिरते समय) अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्म गाहों को (ग़ैर औरतों से) बचाते रहें। यह उन के हक़ में ज़्यादा सफ़ाई (का सबब) है। (और यूँ तो) अल्लाह को उन के सब कामों की ख़बर है[१८]। ३१. और (इसी प्रकार) ईमान्दार औरतों से कह दे कि अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की (ग़ैर मर्दों से) हिफ़ाज़त करें और अपनी सज-धज को भी ज़ाहिर न किया करें लेकिन जो चीज़ (खुद-बखुद) खुली रहे[१९] और (चलते समय) अपने सीनों को दुपट्टों से ढँक लिया करें और अपनी ज़ीनत {बनाव-सिंघार} को किसी के सामने ज़ाहिर न किया करें लेकिन अपने पतियों के सामने या अपने बापों (बाप, दादा, नाना के सामने) या अपने पति के बापों के

....

१६. यानी जब तुम किसी मित्र या संबन्धी के हाँ मिलने जाओ तो पहले आवाज़ दिया करो ताकि वह आगाह हो जायें। फिर सलाम कहा करो, फिर अन्दर जाने की अनुमति माँगा करो। अगर अनुमति मिले तो अन्दर जाओ, वर्ना वापस लौट जाओ (सनाई)

१७. 'ग़ै-र मस्कू-नतिन्' (ग़ैर रिहायशी, जिस में कोई न रहता हो) यानी वह सराय और मुसाफ़िर ख़ाने (यात्री निवास) जिस में हर कोई आ-जा सकता है। इस लिये वह किसी ख़ास शख़्स की संपत्ति नहीं होती, या उस पर किसी का अधिकार नहीं होता। ऐसे मकानों में बाहर से कोई शख़्स आ जाये तो बिला अनुमति उस को दाख़िल होने में गुनाह नहीं, ताहम यह शर्त है कि बुरी निय्यत से हर्गिज़ दाख़िल न हो, इस लिये कि बदनिय्यती हर हाल में बुरी है। (सनाई)

१८. यानी यह न समझें कि अपनी आंखों से जो बुरे इरादे अपने अन्दर रखें गे उन की अल्लाह को ख़बर नहीं हो गी। जान लो कि अल्लाह सब कुछ जानता है (सनाई)

१९. 'मा ज़-ह-र' (जो ख़ुद ब ख़ुद खुला रहे) इस से कुछ उलमा ने हाथ और मुंह मुराद लिया है। यह बात सभी को मालूम है कि मर्द और औरत के दर्मियान संबन्ध, मुहब्बत, इ़श्क़, लगाव, दीवानगी और झुकाव बदन के किस हिस्से को देख कर पैदा होता है?--- सिर्फ़ और सिर्फ़ मुंह को देख कर। तो फिर भला शरीअ़त मुंह खोलने की इजाज़त क्यों दे गी? फिर दूसरी बात यह है कि 'मा ज़-ह-र' का अर्थ यह है "जो ज़ाहिर हो" न कि "जो ज़ाहिर किया जाये"। ज़ाहिर होने और ज़ाहिर करने में बड़ा अन्तर है। जो ज़ाहिर हो उस में किसी का इख़्तियार नहीं और ज़ाहिर करने में इख़्तियार है। अब अगर ग़ौर करें गे तो मुंह एक ऐसा हिस्सा है जो ज़ाहिर करने और पर्दा उठाने पर ज़ाहिर होता है, न कि स्वयँ ज़ाहिर हो जाता है। इस से मालूम हुआ कि उस से मुराद चेहरा हर्गिज़ नहीं है (सनाई) आज-कल के हालात में मुंह खुला रखने की इजाज़त देना बिल्कुल ही ग़ैर मुनासिब है। हाँ, अहम ज़रूरत के वक़्त चन्द लम्हों के लिये खोल लेना और बात है। बहर हाल एहतियात और अम्न व सलामती का पहलू मौलाना ही के ख़याल पर अ़मल करने में है (राज़)

أَبْنَآئِهِنَّ أَوْ أَبْنَآءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ
بَنِىٓ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِىٓ أَخَوَاتِهِنَّ أَوْ نِسَآئِهِنَّ أَوْ مَا
مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ أَوِ التَّابِعِينَ غَيْرِ أُولِى الْإِرْبَةِ
مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَىٰ عَوْرَاتِ
النِّسَآءِ ۖ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِن
زِينَتِهِنَّ ۚ وَتُوبُوٓا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣١﴾ وَأَنكِحُوا الْأَيَامَىٰ مِنكُمْ وَالصَّالِحِينَ
مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَآئِكُمْ ۚ إِن يَكُونُوا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ
اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٢﴾ وَلْيَسْتَعْفِفِ
الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِن
فَضْلِهِ ۗ وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ
أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۖ وَآتُوهُم
مِّن مَّالِ اللَّهِ الَّذِىٓ آتَاكُمْ ۚ وَلَا تُكْرِهُوا فَتَيَاتِكُمْ

या अपने बेटों के, या पतियों के बेटों के, या अपने भाइयों के बेटों, या बहनों के बेटों के सामने, या अपनी (यानी आ़म इन्सान की) औ़रतों[२०], या अपने गुलामों या (बुढ़ापे या किसी और कारण से) बेहाजत ख़िदमत गार मर्दों या बच्चों के सामने जो महिलाओं के पर्दा से अवगत नहीं हुये (यानी उन को अभी मर्द-औ़रत का संबन्ध मालूम नहीं। इस प्रकार के लोगों के सामने किसी औ़रत का बनाव सिंघार) ज़ाहिर करना गुनाह नहीं और (पर्दा में रह कर बाज़ारों में या अपने घरों में ऐसे) ज़ोर से पाँव न मारा करें कि (झंकारों की आवाज़ से) उन की छुपाई हुयी ज़ीनत मालूम होने लगे। और तुम सब मुसलमान अल्लाह की तरफ़ लगे रहो ताकि तुम अपनी मुराद पाओ। ३२. और अपने में से बेवा औ़रतों {विधवाओं} की और अपने नेक चलन गुलामों की और लौंडियों की शादी कर दिया करो[२१]। (सुनो!) अगर वह मुहताज भी हों गे तो (आशा रखो कि) अल्लाह उन को अपने फ़ज़्ल से मालदार कर दे गा[२२] और (याद रखो!) अल्लाह बड़ी कुशादगी वाला और जानने वाला है ३३. और जो लोग निकाह (के ख़र्च) की क्षमता नहीं रखते (तो ख़ैर) वह (लोग ज़िना वग़ैरह से) बचते रहें, यहाँ तक कि अल्लाह उन को अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दे (इस के अ़लावा एक बात) और (सुनो कि) तुम्हारे गुलामों में से जो 'मुकातिबत' चाहें[२३] अगर तुम भी उन में कुछ भलाई जानो तो 'मुकातिबत' कर दिया करो और (सुलूक करने को) अल्लाह के माल में से जो उस ने तुम को दिया है उन को दिया करो। और तुम अपनी लौंडियों को ज़िना कारी पर मजबूर न करना

....

२०. 'अव् निसाइहिन्न' (अपनी औ़रतें) कुछ मुफ़स्सिरीन ने "अपनी औ़रतों" से मुराद आ़म मुसलमान औ़रत को लिया है इस का अर्थ यह हुआ कि उन के निकट मुसलमान महिलाओं को ग़ैर मुस्लिम महिलाओं से पर्दा करना चाहिये, चाहे वह महिलायें ई़साई हों या यहूदन। मगर यह सहीह नहीं है, क्यों कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बीवियों के पास यहूदी महिलायें आ़म तौर पर आया करती थीं। फिर पर्दा का उद्देश्य ज़िना करी और समाजी बुराइयों को रोकना है। इस उद्देश्य को सामने रख कर महिला का महिला से पर्दा (चाहे वह किसी भी धर्म की हो) ग़ैर ज़रूरी मालूम होता है। इसी लिये मैं ने "आ़म इन्सान की औ़रतों" तर्जुमा किया है (सनाई)

२१. यानी तुम यह न समझो कि मर्द को औ़रत की और औ़रत को मर्द की ज़रूरत नहीं पड़ती। आर्य धर्म का तो ➲

➲दावा है कि जो धर्म दलील और अक़्ल से साबित न हो वह ग़लत है। मगर विधवाओं के विवाह के मुतअल्लिक़ उन का ख़याल भी नफ़ी (नकारात्मक) है। उन के गुरू स्वामी दयानन्द अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "सत्यार्थ प्रकाश" में लिखते हैं कि जिन औरतों और मर्दों की शादी एक बार हो चुकी हो उन की पुन: शादी नहीं होनी चाहिये (१/१४६) यानी जिस मर्द ने पत्नी से शारीरिक संबन्ध बना लिया हो, अगर उस की पत्नी मर जाये तो वह दोबारा शादी न करे, इसी प्रकार वह महिला जो संभोग के पश्चात विधवा हो जाये तो उस की भी शादी दोबारा नहीं होनी चाहिये। हालाँकि शादी-विवाह एक फ़ितरी और क़ुदरती ज़रूरत है। दुनिया जानती है कि मर्द को औरत की और औरत को मर्द की ख़्वाहिश होती है। फिर विधवा या रंडुवा हो जाने के बाद उन को ख़्वाहिश पूरी करने के लिये पुन: शादी-विवाह से रोकना यह कहाँ की बुद्धिमानी है? इसी लिये क़ुरआन मजीद ने "विधवाओं की शादी कर दिया करो" का आदेश दिया है ताकि वह अपनी ख़्वाहिश को पूरी कर के बदचलनी का शिकार न हों। मगर बड़े दु:ख की बात है कि आज-कल जाहिल मुसलमानों के अन्दर भी आर्य धर्म का ख़याल पैदा हो चला है और अपनी विधवा बहनों, बेटियों की शादी को बुरा समझते हैं और लाख समझाने पर भी नहीं मानते। चुनान्चे इस का नुक़्सान समाज को क्या कुछ और कितना कुछ उठाना पड़ रहा है यह किसी से ढका-छुपा नहीं है। अल्लाह तआ़ला ऐसे मुसलमानों को हिदायत दे। (सनाई)

मैं कहता हूँ कि आज कल के ज़माना में हिन्दुओं का भी एक बहुत बड़ा वर्ग विधवाओं के विवाह पर बहुत अधिक ज़ोर दे रहा है और शादियाँ कर और करा भी रहा है। मगर अफ़्सोस यह कि आज कल मुसलमानों पर जो अपने धर्म के खुले आदेश पर भी अ़मल नहीं करते हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब तुम में से दीन और अख़्लाक़ वाला शख़्स किसी से शादी का संदेश भेजे तो निकाह कर दो, वर्ना ज़मीन पर बड़ा सख़्त फ़ित्ना व फ़साद फैल जाये गा (नसाई इब्ने माजा)

२२. "हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स महज़ बुराई से बचने के लिये निकाह करे तो अगर वह ग़रीब है तो अल्लाह पाक उस की अवश्य ही सहायता करे गा और अपनी रोज़ी के दर्वाज़े उस पर खोल दे गा"।

२३. 'मुकातब' उस गुलाम को कहते हैं जिस की आज़ादी रुपये-पैसे के साथ मुमकिन हो। उदाहरण के तौर पर एक मालिक अपने गुलाम से कहता है कि अगर तू एक हज़ार रुपये मुझे दे दे तो तू आज़ाद है। क़ुरआन ने यहाँ पर यही आदेश दिया है कि अगर गुलाम या लौंडी यह चाहें कि हम तुम को इतना रुपया दें गे हमारे लिये आज़ादी लिख दो, तो लिख दिया करो, मगर शर्त यह है कि तुम को बेहतरी मालूम हो। इस मामले को शरीअ़त में "मुकातिबत" कहते हैं। (हक़्क़ानी-५/२४१) "मुकातिबत" उस मुआ़हिदे को कहते हैं जो मालिक का गुलाम से तै पाता है। जैसे, अगर मालिक, गुलाम से यह कहे कि तू अगर इतनी तै शुदा रक़म अदा कर दे तो मेरी तरफ़ से तू आज़ाद है (सनाई)

عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ۭ وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْۢ بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۞ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ
وَّمَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً
لِّلْمُتَّقِيْنَ ۞ اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ مَثَلُ
نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ۭ اَلْمِصْبَاحُ فِيْ زُجَاجَةٍ ۭ
اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ

अगर वह ज़िना से बचना चाहें (तुम को शर्म नहीं आती कि तुम उन पर ज़बर्दस्ती करते हो) क्या तुम इस लिये ऐसा करते हो कि दुनिया की ज़िन्दगी का माल व दौलत हासिल कर लो। और जो कोई उन को ज़िना कारी पर मजबूर करे गा तो उन की मजबूरी के बाद अल्लाह उन के हक़ में बख़्शने वाला और मेहरबान है[२४] ३४. हम ने तुम्हारी तरफ़ खुले अहकाम भेजे हैं और तुम से पहले गुज़रे हुये लोगों की हिकायत (भी तुम को सुनाई हैं) और परहेज़गारों के लिये (वाज़➲

زَيۡتُوۡنَةٍ لَّا شَرۡقِيَّةٍ وَّلَا غَرۡبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيۡتُهَا يُضِىۡٓءُ وَلَوۡ لَمۡ تَمۡسَسۡهُ نَارٌ ؕ نُوۡرٌ عَلٰى نُوۡرٍ ؕ يَهۡدِى اللّٰهُ لِنُوۡرِهٖ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَيَضۡرِبُ اللّٰهُ الۡاَمۡثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىۡءٍ عَلِيۡمٌ ۙ﴿۳۵﴾ فِىۡ بُيُوۡتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنۡ تُرۡفَعَ وَيُذۡكَرَ فِيۡهَا اسۡمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيۡهَا بِالۡغُدُوِّ وَالۡاٰصَالِ ۙ﴿۳۶﴾ رِجَالٌ ۙ لَّا تُلۡهِيۡهِمۡ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيۡعٌ عَنۡ ذِكۡرِ اللّٰهِ وَ

और) नसीहत उतारी है[२५] ३५. अल्लाह आसमानों और ज़मीन का नूर है। उस के नूर की मिसाल एक ताक़ की तरह जिस में एक चराग़ है मगर वह चराग़ (ऐसे ही नहीं, बल्कि) शीशा में है। वह शीशा (भी) ऐसा (साफ़-सुथरा) है कि गोया वह चमकीला सितारा है जो ज़ैतून के मुबारक पेड़ (के तेल) से जलता है जो (पहाड़ से) न पूरब की जानिब है न पश्चिम की (बल्कि ठीक बीचो-बीच है) उस का तेल (ऐसा साफ़ है कि) स्वयँ जलने को होता है चाहे आग उसे न छुऐ। नूर पर नूर[२६]। अल्लाह तआ़ला अपने नूर की तरफ़ जिसे चाहे राह नुमाई करता है। अल्लाह लोगों के लिये मिसालें बयान करता है। और अल्लाह को हर एक चीज़ का ज्ञान है ३६. वह चराग़ ऐसे घरों में है जिन के हक़ में अल्लाह का हुक्म है कि उन को बुलन्द किया जाये और उन में उस अल्लाह का ज़िक्र किया जाये, उन में सुब्ह-शाम अल्लाह के नेक बन्दे तस्बीह पढ़ते हैं ३७. जिन को तिजारत अल्लाह के ज़िक्र से

....

२४. यानी लौंडी से मालिक ज़बर्दस्ती धन्धा और पेशा करा कर उस की आमदनी से ख़र्च चलाये और वह लौंडी दिल व जान से उस पेशे को बुरा जाने, लेकिन मालिक के ज़ुल्म से मजबूर हो कर इस पेशा को कर रही हो, तो उस पर नहीं बल्कि उस के मालिक पर गुनाह हो गा। इस पर जो कुछ वह कुसूर करे तो अल्लाह उस को बख़्शने वाला है। इस आयत का हर्गिज़ यह मतलब नहीं कि लौंडी अगर राज़ी हो तो उस से हरामकारी कराना जायज़ है। यह बात याद रहे कि लौंडी से पेशा कराना हर हाल में हराम है, चाहे वह राज़ी हो या न हो। आयत का मतलब यह है कि जब लौंडी स्वयँ बुरे काम करने पर राज़ी न हो तो उस से ज़बर्दस्ती यह काम कराना (जैसे जाहिलिय्यत में चलन था) सख़्त बुरा है और अगर राज़ी हो, तब भी हराम है।

हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि मुनाफ़िक़ अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि की एक लौंडी थी। वह उस से कहता कि जा कुछ कमाई कर ला। इस पर वह नाराज़ होती थी, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। कुछ लोगों का कहना है कि उस के पास "मुसैका" और "उमैमा" नाम की दो लौंडियाँ थीं, उन से वह ज़बरदस्ती ख़र्चा चलाता था। उन दोनों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से शिकायत की इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (वहीदी)

२५. इस लिये इस से लाभ उठाओ और उसी की तरफ़ दिल लगाओ। चूँकि क़ुरआन मजीद में समझाने के लिये कई तरीक़े अपनाये गये हैं। कभी अक़्ली दलीलों से तो कभी नक़्ली दलीलों से। कभी गुज़रे हुये लोगों के क़िस्से बयान कर के, तो कभी भविष्य के अ़ज़ाब से। कभी इशारा से तो कभी तश्बीह बयान कर के। चुनान्चे यहाँ पर भी एक मिसाल तश्बीह के तौर पर तुम को सुनाई जाती है और बार-बार कहा जाता है कि अल्लाह ही को अपना सब कुछ समझो और उसी के रंग में रंग जाओ। उस की एक मिसाल तुम को सुनाते हैं, कान लगा कर सुनो...........(सनाई)

२६. उसी के लिये कहना दुरुस्त है कि वह "नूरून अ़ला नूर" है। यानी एक तो उस तेल का ज़ाती तौर पर साफ़ होना, दूसरे उस की साफ़ रोशनी, तीसरे शीशे की चमक। यह सब परस्पर मिल कर एक दूसरे के साथ ऐसी बन गयीं कि नूर पर नूर बन गया है। बल्कि यही उदाहरण अल्लाह के नूर यानी मुहब्बत का है। जिस प्रकार यह रोशनी

अंधेरे पर ग़ालिब आ जाती है, ठीक इसी प्रकार अल्लाह की सच्ची मुहब्बत की आग भौतिकतावाद की तारीकी और नफ़्स की ख़्वाहिश को दूर कर देती है। यही माना सूफ़ियों के इस क़ौल का है कि "अल्लाह से मुहब्बत एक ऐसी आग है जो अल्लाह के अ़लावा सब को जला कर राख कर देती है"। जिन लोगों के दिल अल्लाह की मुहब्बत के नूर से रोशन हैं वह तमाम चीज़ों से बेनियाज़ हो चुके हैं, यहाँ तक कि उन को हसब-नसब का भी ख़याल नहीं रहा। अल्लाह तआ़ला अपने नूर यानी हक़ीक़ी मुहब्बत की तरफ़ जिस को चाहता है राह नुमाई करता है, फिर उस की बुलन्द मन्ज़िल पर पहुंच कर हमेशगी की राहत में हो जाते हैं, जहाँ पर इन्आ़म ही इन्आ़म हैं (सनाई)

إِقَامِ الصَّلٰوةِ وَإِيْتَاۤءِ الزَّكٰوةِ ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ
فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْأَبْصَارُ ۝٣٧ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ أَحْسَنَ مَا
عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۗ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ
يَّشَاۤءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝٣٨ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا أَعْمَالُهُمْ
كَسَرَابٍۭ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَاۤءً ۗ حَتّٰىٓ إِذَا جَاۤءَهٗ
لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ۗ
وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝٣٩ أَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ
يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ۗ
ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ۗ إِذَآ أَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ
يَكَدْ يَرٰىهَا ۗ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ
مِنْ نُّوْرٍ ۝٤٠ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰۤفّٰتٍ ۗ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَ
تَسْبِيْحَهٗ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝٤١ وَلِلّٰهِ مُلْكُ

नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने से ग़ाफ़िल नहीं कर सकती[२७] वह उस दिन से डरते हैं जिस में दिल और आंखें मारे ख़ौफ़ के उलट-पलट हो जायें गी ३८. अल्लाह उन के अ़मलों का बेहतर से बेहतर बदला दे गा और उन को अपने फ़ज़्ल से उन के हक़ से ज़्यादा ही दे गा। और अल्लाह जिस को चाहे बिला हिसाब रोज़ी देता है[२८]। ३९. और जो लोग (अल्लाह के हुक्मों से) इन्कारी हैं उन के आमाल ऐसे हैं जैसे चटियल मैदान में चमकता हुआ रेत कि प्यासा उस को पानी समझता है। यहाँ तक कि जब उस के पास आता है तो उसे कुछ भी नहीं पाता और (मारे प्यास के मर कर) अल्लाह ही को अपने पास पाता है फिर अल्लाह उस को पूरा हिसाब देता है। और अल्लाह बहुत जल्द हिसाब करने वाला है[२९] ४०. या उन के आमाल ऐसी चीज़ की तरह हैं जो गहरे दरिया में अंधेरों के अन्दर है जिस के ऊपर पानी की मौज है, उस पर फिर एक मौज है और उस मौज से ऊपर बादल हैं। एक दूसरे के ऊपर अंधेरे हैं कि जब कोई शख़्स अपना हाथ निकालता है तो उसे देख नहीं सकता। और (अस्ल बात यह है कि) जिस को अल्लाह ही नूर न दे उसे कहीं भी नूर नहीं मिल सकता ४१. क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह वह ज़ात पाक है कि जितनी मख़्लूक़ आसमानों और ज़मीनों में हैं सब उसी के नाम की तस्बीह पढ़ती हैं और जानवर भी सफें बाँधे हुये तस्बीह पढ़ते हैं। हर एक उन में का अपनी ड़िबादत और तस्बीह को जाने हुये हैं। और अल्लाह को उन के सब कामों का ड़िल्म है[३०] ४२. और तमाम आसमानों और ज़मीनों की बादशाही अल्लाह ही के क़ब्ज़े में है

२७. यानी दुनिया का कोई भी कार्य करें इन इबादत के कामों को नहीं भूलते, क्योंकि वह जो काम करते हैं मालिक

➲की अनुमति से करते हैं इस लिये जिस समय और जिस घड़ी मालिक की इजाज़त उन्हें मिलती है, काम करते हैं और जिस वक़्त अनुमति नहीं मिलती है नहीं करते हैं। गोया उन का उसूल यह है कि जिस काम में अल्लाह राज़ी है उस को करने पर हम भी राज़ी हैं। (सनाई)

२८. दिल का उलटना यह है कि परेशानी हो गी और आँख का उलटना यह है कि रोशनी जाती रहे गी, जैसे आँखे चका चौंध हो जाती हैं। "सुब्ह और शाम को अल्लाह की याद' से मुराद फ़ज्र और अस्र की नमाज़ें हैं। एक हदीस शरीफ़ में आया है कि इस आयत में उन लोगों का बयान है जो लेन-देन करते हैं लेकिन अज़ान सुनते ही सारा माल-मव्वाल छोड़-छाड़ कर मस्जिद का रुख़ करते हैं और जमाअ़त से नमाज़ अदा करते हैं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० एक मर्तबा बाज़ार में थे कि अज़ान की आवाज़ सुनाई दी, इतने में लोग अपनी-अपनी दुकानें बन्द कर के मस्जिद की तरफ़ चल पड़े। वह फ़रमाते हैं कि यह आयत उन ही लोगों के हक़ में नाज़िल हुयी है। हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० यह शाने-नुज़ूल बयान फ़रमाते हैं। 'बे हिसाब रोज़ी' देने का अर्थ यह है कि एक नेकी का बदला दस नेकी से सात सौ नेकियों तक। (वहीदी)

२९. काफ़िर यह समझता है कि मेरा नेक अ़मल मरते समय मेरे काम आये गा। लेकिन जब मौत आ जाती है तो देखता है कि वह नेक अ़मल उस के कुछ काम न आया और अल्लाह तआ़ला हिंसाब लेने को तय्यार है। और वह आख़िर में दोज़ख़ में फेंक दिया जाये गा। एक अन्य हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क़ियामत के दिन काफ़िर लोग प्यासे उठें गे और दूर से उन को रेत पानी की तरह मालूम हो गा। वह पानी समझ कर उस की तरफ़ लपकें गे लेकिन वहाँ पानी तो पायें गे नहीं, अल्बत्ता अल्लाह तआ़ला हिसाब लेने के लिये मौजूद हो गा।

'अल्लाह जिस को नूर न दे' में उन काफ़िरों की मिसाल है जो कुफ़्र के साथ तक़्लीद की भी बीमारी में फंसे हुये हैं। पहली मिसाल चमकते रेत की उन काफ़िरों की थी जो स्वयँ भी अ़क़्ल रखते हैं। मुक़ल्लिद काफ़िर कई तारीकियों में फंसा हुआ है (१) कुफ़्र की तारीकी में (२) दिल की तारीकी में। कुछ उलमा का कहना है कि यह आयत विशेष रूप से उत्बा बिन रबीआ़ के बारे में नाज़िल हुयी। वह जाहिलिय्यत के ज़माना में तो दीनदारी और फ़क़ीरी को पसन्द करता था, लेकिन जब इस्लाम का ज़माना आया तो कुफ़्र और सरकशी करने लगा (वहीदी)

काफ़िर दो प्रकार के होते हैं। एक काफ़िर तो वह है जो अपने अ़क़ीदा और ख़याल के अनुसार कुछ अच्छे काम करते हैं और ख़याल करते हैं कि मरने के बाद काम आयें गे। हालांकि अगर कोई काम उन का अच्छा भी हो तो वह कुफ़्र की वजह से अल्लाह के हाँ क़ुबूल न हो गा। इन काफ़िरों की मिसाल ऐसी है कि दुपहर के समय जन्गल में एक प्यासे को दूर से पानी दिखाई दिया (और थी वह चमकती रेत) वह प्यास की शिद्दत से बेताब हो कर जब वहाँ पहुंचा तो पानी के स्थान पर हलाकत और बर्बादी की घड़ी को पाता है और अल्लाह को हिसाब किताब लेने के लिये तय्यार पाता है चुनान्चे वहीं पर हाथों हाथ उम्र भर की शरारतों का भुगतान कर दिया जाता है।

काफ़िर की दूसरी क़िस्म वह है जो सर से पाँव तक दुनिया की बुराइयों, कुफ़्र व जिहालत और सरकशी के दरिया में ग़ोते लगा रहे हैं। इन की मिसाल आगे बयान फ़रमाई है कि उन के पास रोशनी की इतनी चमक भी नहीं जितनी कि रेगिस्तान में रेत को पानी समझने का धोका खाने वाले को नज़र आती थी (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

३०. यानी अल्लाह ने हर वस्तु को उस के हाल व तरीक़ा को सामने रख कर बन्दगी, इबादत और तस्बीह पढ़ने का तरीक़ा बताया है, हर वस्तु उसी के अनुसार अपना वज़ीफ़ा अदा करती रहती है। उन की बन्दगी और तस्बीह को तुम समझो या न समझो, लेकिन अल्लाह को सब मालूम है कि कौन क्या करता है (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

और सब को उसी ही की तरफ़ लौटना है ४३. भला तुम ने देखा नहीं कि अल्लाह ही बादलों को हाँकता है फिर उन को आपस में जोड़ कर➲

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝٤٢ اَلَمْ تَرَ

اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ

رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ مِنَ
السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ
مَنْ يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ؕ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ
يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ۝٤٣ يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ؕ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِى الْاَبْصَارِ ۝٤٤ وَاللّٰهُ
خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى
بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ
مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰٓى اَرْبَعٍ ؕ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٤٥ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ
يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٤٦ وَيَقُوْلُوْنَ
اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَاَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ

तह ब तह कर देता है तुम देखते हो कि उन (बादलों) के मुक़ामात में से बारिश निकलती है और वही अल्लाह आसमान से बर्फ़ के गोले उतारता है[३१] उन में सख़्त ठन्डक होती है फिर जिस पर चाहता है वह बर्फ़ पहुंचा देता है और जिस से चाहता है हटा देता है। उस में बिजली की चमक ऐसी तेज़ होती है कि आँखों (के नूर) को उचक लें ४४. (इन क़ुदरत के कमालात के अ़लावा यह देखो कि) अल्लाह ही रात और दिन को बदलता रहता है। कुछ शक नहीं कि इस में अक़्लमन्दों के लिये बहुत बड़ी ‍इ़बरत है[३२] ४५. और (सुनो) अल्लाह ही ने हर एक जानदार को पानी से पैदा किया कि उन में से कुछ ऐसे हैं कि अपने पेट पर चलते हैं (जैसे साँप, गोह, छिपकली वग़ैरह) और कुछ ऐसे है कि अपने दोनों पैरों पर चलते हैं (जैसे कबूतर, मुर्ग़, इन्सान) और कुछ ऐसे हैं कि चार पैरों पर चलते हैं (जैसे गाय, भैंस, वग़ैरह) अल्लाह जो चाहता पैदा कर देता है। और अल्लाह हर एक चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है[३३] ४६. हम (अल्लाह) ने खुले-खुले अहकाम उतारे हैं। और अल्लाह ही जिसे चाहे सीधी राह की तरफ़ राह नुमाई करता है। ४७. और (देखो कि सामने आ कर तो) कहते हैं कि हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाये हैं और फ़र्मांबरदार हैं (ज़बानी यह बात कह कर) फिर भी इस के बाद उन में से एक जमाअ़त मुंह फेर लेती है

....

३१. 'जिबाल' से यहाँ "बर्फ़ के तोदे" मुराद हैं, इसलिये कि यहाँ पर बर्फ़ानी तूफ़ानों का बयान है।

३२. इस स्थान पर अल्लाह की तौहीद की तीसरी दलील है कि अल्लाह ही दिन-रात को बदलता है। रात के बाद दिन और दिन के बाद रात वही लाता है, वह रात-दिन को छोटा-बड़ा करता है। दिन-रात का छोटा-बड़ा होना ज़मीन के सूरज के चारों ओर चक्कर लगाने से होता है। ज़मीन को चलने की ताक़त अल्लाह ने दी है तो गोया वही दिन-रात छोटा-बड़ा करता है। इसी लिये आयत के अन्त में फ़रमाया: "इन में उन ही के लिये नसीहत है जो ‍इ़बरत की आँखों से देखते हैं"। ऐसे ही लोग संसार के रचयिता को समझ सकते हैं और यह भी जान सकते हैं कि दुनिया में जितनी नेमतें उन के पास मौजूद हैं सब उसी की दी हुयी हैं। मालदारी के बाद ग़रीबी, तरक़्क़ी के बाद पस्ती, बीमारी के बाद तन्दरुस्ती यह सब बातें, दिन-रात के उलटने-पलटने की तरह वही उलटता-पलटता है। अगर अक़्ल है तो फिर अल्लाह के अ़लावा की पूजा-बन्दगी कभी न करें (हक़्क़ानी- ५/२४८)

३३. 'हर जीवधारी को पानी से पैदा किया' लेकिन आप कह सकते हैं कि जिन्न आग से और फ़रिश्ते नूर से पैदा किये गये हैं। इस का उत्तर यह है कि अल्लाह ने हर 'दाब्बह्' (चार पायों) को पानी से पैदा किया, न कि समस्त

मख़्लूक़ को। और यह भी मतलब हो सकता है कि हर मख़्लूक़ की अस्ल पैदाइश पानी है फिर उस पानी से और दीगर अ़नासिर (आग, पानी, हवा, मिट्टी) पैदा किया। इस सब को पानी से कैसे पैदा किया? इस का उत्तर है कि अल्लाह बेहतर जाने वह पानी से आग पैदा करने पर क़ुदरत रखता है। फिर फ़रमाया कि कुछ जानवर पेट के बल चलते हैं जैसे साँप वग़ैरह कुछ दो पाँव से चलते हैं और कुछ चार पाँव से। कुछ चार से अधिक पाँव से चलते हैं। इन सब को अल्लाह ने जिस प्रकार चाहा पैदा किया (हक़्क़ानी)

مِّنْهُم مِّنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ ۚ وَمَآ أُولَٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾ وَ
إِذَا دُعُوٓا إِلَى اللّٰهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا
فَرِيقٌ مِّنْهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٤٨﴾ وَإِن يَكُن لَّهُمُ الْحَقُّ
يَأْتُوٓا إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ ﴿٤٩﴾ أَفِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ أَمِ
ارْتَابُوٓا أَمْ يَخَافُونَ أَن يَحِيفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولُهُ ۚ
بَلْ أُولَٰٓئِكَ هُمُ الظَّٰلِمُونَ ﴿٥٠﴾ إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ
الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوٓا إِلَى اللّٰهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَن
يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۚ وَأُولَٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥١﴾
وَمَن يُطِعِ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَأُولَٰٓئِكَ
هُمُ الْفَآئِزُونَ ﴿٥٢﴾ وَأَقْسَمُوا بِاللّٰهِ جَهْدَ أَيْمَٰنِهِمْ
لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۖ قُل لَّا تُقْسِمُوا ۖ طَاعَةٌ
مَّعْرُوفَةٌ ۚ إِنَّ اللّٰهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٥٣﴾ قُلْ
أَطِيعُوا اللّٰهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا

और वह ईमानदार ही नहीं होते। ४८. और जब कभी उन को अल्लाह और रसूल की तरफ़ बुलाया जाता है कि रसूल (अल्लाह के हुक्म के अनुसार) उन में फ़ैसला करे[३४] तो उसी समय एक जमाअ़त उन में से मुंह फेर लेती है ४९. और अगर उन को हक़ पहुंचता हो तो उस की तरफ़ दौड़े चले आते हैं ५०. क्या उन के दिलों में (कुफ़्र का) मर्ज़ है या यह (रसूल की सच्चाई से) शक में हैं, या उन को भय है कि अल्लाह और उस का रसूल उन पर अत्याचार करें गे? बल्कि (अस्ल कारण यह है कि) यह लोग स्वयँ ही अत्याचारी हैं[३५] ५१. पक्के ईमानदारों को जब अल्लाह और रसूल (और उन के फ़रमान) की तरफ़ बुलाया जाता है ताकि उन में फ़ैसला करे तो उन का उत्तर बस यह होता है कि कहते हैं कि हम ने सुना और (दिल से) मानने वाले हैं। यही लोग (अल्लाह के नज़दीक) कामियाब हैं। ५२. जो लोग अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा पालन करें गे और अल्लाह से डरते रहें गे और (उस की अवज्ञा से) बचें गे बस वही लोग कामियाब हों गे। ५३. और यह लोग (यानी मुनाफ़िक़) बड़ी मज़बूती से अल्लाह की क़समें खाते हैं कि अगर तू (ऐ नबी) उन को (जिहाद वग़ैरह जैसे दीनी कार्यों के लिये) आदेश दे तो अवश्य निकलें गे। तू कह! तुम क़समें न खाओ, मतलब तो अच्छी ताबेदारी से है। अल्लाह तुम्हारे कामों से अवगत है। ५४. तू कह कि अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा पालन करो फिर (यह सुन कर) अगर वह मुंह फेरें

....

३४. शाने नुज़ूलः- इब्ने अबी हातिम की एक रिवायत में है कि एक शख़्स का जब किसी से झगड़ा होता और उस से कहा जाता कि मामला नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास ले चलो, तो वह अगर हक़ पर होता

➲तो तुरन्त राज़ी हो जाता, लेकिन अगर वह हक़ पर न होता तो जाने पर राज़ी न होता। इमाम मुक़ातिल फ़रमाते हैं कि यह आयत बिश्र मुनाफ़िक़ के बारे में नाज़िल हुयी। उस का एक यहूदी से झगड़ा था, वह उस मामले में हक़ पर न था। उस से कहा गया कि मामला नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास ले चलो। उस ने कहा कि कअ़ब बिन अश्रफ़ के पास ले चलो। इमाम ज़हहाक रह० फ़रमाते हैं कि मुग़ीरा बिन वाइल मुनाफ़िक़ और हज़रत अ़ली रज़ि० के दर्मियान एक ज़मीन को ले कर झगड़ा हो गया। हज़रत अ़ली रज़ि० ने कहा कि अपना मुक़द्दमा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास ले कर चलो और उन्हीं से फ़ैसला कराओ लेकिन उस ने इन्कार कर दिया, यह आयत उसी के बारे में नाज़िल हुयी (हक़्क़ानी- ५/२९५)

३५. इस आयत में साफ़-साफ़ यह हक़ीक़त मौजूद है कि अल्लाह और रसूल के फ़ैसले को स्वीकार करना और किसी ग़ैर के फ़ैसले की तरफ़ नज़र उठा कर भी न देखना, अस्ल ईमान है। इस आयत से उन मुक़ल्लिदों के ख़याल का रद्द होता है जो सहीह हदीसों की मौजूदगी में इमामों के फ़तवे, उन के अक़्वाल और इज्तिहाद को तर्जीह देते हैं। उन लोगों का यह कह देना कि हदीस तो अपनी जगह ठीक है, लेकिन मेरे मज़हब के ख़िलाफ़ है और मेरे इमाम साहब ने इस प्रकार नहीं कहा है, आप अनुमान लगायें कुरआन व हदीस की किस क़द्र तौहीन करना है। हालाँकि तमाम ही इमाम साफ़-साफ़ वसिय्यत कर गये हैं कि अगर तुम मेरे क़ौल को कुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ पाओ तो उसे दीवार पर दे मारो और मेरे क़ौल पर अ़मल न करो। इमाम अबू हनीफ़ा, शाफ़ई, मालिक, अहमद रह वग़ैरह के बयानात स्पष्ट रूप से मौजूद है। हज़रत शाह वलिय्युल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० फ़रमाते हैं कि अगर सहीह हदीसों की मौजूदगी में हम इमामों के क़ौल से चिपटे रहे और रसूल के फ़रमान को ठुकरा दिया, तो क़ियामत के दिन हम अल्लाह को क्या मुंह दिखायें गे।

عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ۗ وَإِنْ تُطِيعُوهُ
تَهْتَدُوا ۚ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِينُ ۝
وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِينَ اٰمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِهِمْ ۖ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ
وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۚ يَعْبُدُونَنِي لَا
يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَأُولٰئِكَ
هُمُ الْفٰسِقُونَ ۝ وَأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ
وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ لَا تَحْسَبَنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَأْوٰىهُمُ النَّارُ ۖ
وَلَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ يٰأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا لِيَسْتَأْذِنْكُمُ
الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ

तो उस (नबी) को जिस बात का आदेश दिया गया है वह उस के ज़िम्मे है और तुम लोगों को जिस बात का निर्देश दिया गया है वह तुम पर है और अगर तुम आज्ञा पालन करो गे तो हिदायत पाओ गे। और संदेष्टा के ज़िम्मा {सिर्फ} साफ़-साफ़ आदेश पहुंचाना है। ५५. जो लोग तुम में से ईमान ला कर नेक अ़मल भी करें गे तो अल्लाह वादा करता है कि उन को ज़मीन पर हाकिम बना दे गा जैसा उस ने उन से पहले लोगों को हाकिम बनाया था और उन के दीन को जो ख़ुद अल्लाह ने उन के लिये पसन्द किया है मज़बूत कर दे गा और उन के ख़ौफ़ ज़दा {भयभीत} होने के बाद (जो इस समय दुश्मनों की तरफ़ से उन को हो रहा है) उन को अम्न हो गा (बस) इस के बाद वह मेरी बन्दगी करें गे और (किसी मुश्रिक, काफ़िर के दबाव या डर से) मेरे साथ किसी को शरीक न➲

ثَلٰثَ مَرّٰتٍ مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ

करें गे[३६]। और जो इस के बाद ना शुक्री करें गे बस वही लोग बदकार हैं ५६. (पस तुम लोग अभी से ईमान लाओ) और नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात दिया करो और रसूल की पैरवी किया करो ताकि तुम पर रहम किया जाये ५७. मत ख़याल करो कि काफ़िर लोग ज़मीन में अल्लाह को आजिज़ कर सकते हैं (नहीं हर्गिज़ नहीं) और उन का ठिकाना आग हो गा जो बहुत बुरी जगह है ५८. ऐ ईमानदारो! जो तुम्हारे ग़ुलाम हैं वह और तुम्हारे नाबालिग़ लड़के तीन समय में (अवश्य ही) तुम से अनुमति लिया करें (वह समय यह हैं) सुब्ह की नमाज़ से पहले और जब तुम दुपहर को कपड़े उतारा करते हो

....

३६. यह आयत न० ५५. शीआ़ और सुन्नी लोगों की ख़िलाफ़त को ले कर झगड़े का फ़ैसला करती है, मगर शर्त यह है कि अपने दिल व दिमाग़ को हर प्रकार की तरफ़-दारी और तअ़स्सुब से ख़ाली कर लिया जाये। इस आयत में वाक़िआ़ को बयान किया गया है और इस का तअ़ल्लुक़ पहले के ईमान लाने वालों से है। इस आयत का साफ़-साफ़ तर्जुमा यह है कि तुम (मुख़ातब) लोगों में से ईमान दारों और नेक कार्य करने वालों से अल्लाह का वादा है कि वह तुम को ख़लीफ़ा बना दे गा। फिर उस ख़िलाफ़त की निशानियाँ भी बयान कर दीं (१) उन का दीन मज़बूत करे गा (२) दुश्मनों से बे ख़ौफ़ कर दे गा (३) वह अल्लाह की अ़िबादत करें गे और किसी को शरीक न ठहरायें गे। इन निशानियों को सामने रख कर अगर देखा जाये कि मुसलमानों को इस प्रकार की ख़िलाफ़त कब मिली थी तो मालूम हो जाये गा कि इस प्रकार की ख़िलाफ़त और हुकूमत खुलफ़ा-ए-राशिदीन के समय में मुसलमानों को मिली थी। बनी उमय्या और बनी अ़ब्बास के ख़िलाफ़त के ज़माना में भी इस्लाम ने तरक़्क़ी की मगर यह इस भविष्य वाणी पर पूरे तौर पर सही नहीं उतरतीं। इस लिये कि अव्वल तो यह खुलफ़ा इस आयत के अनुसार अव्वल मुख़ातब नहीं हैं, बल्कि बाद की नस्ल हैं। दूसरे यह कि इन लोगों ने जो तरक़्क़ी की वह उन्हीं पहले के खुल्फ़ा की बुनियाद डाली हुयी थी। कौन नहीं जानता कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बाद अ़रब में जब बग़ावत फैली एक तरफ़ मुसैलमा कज़्ज़ाब के झूठे नबुव्वत के दावे ने ज़ोर पकड़ा तो दूसरी तरफ़ बाग़ियों ने ज़कात देने से इन्कार कर दिया। मगर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० की हिक्मत अ़मली ने सब को मिटा दिया और तमाम अ़रब पर इस्लाम का शासन क़ाइम कर के आगे आने वालों के लिये रास्ता साफ़ कर दिया। इन के बाद दूसरे ख़लीफ़ा उमर फ़ारूक़ रज़ि० ने पहले ख़लीफ़ा के बनाये हुये रास्ता को और चौड़ा कर के और कुशादा कर दिया। इन के बाद हज़रत उस्मान के शासन में तरक़्क़ी ने इतना ज़ोर पकड़ा, कि बहुत से मुल्क फतह हुये। इन के ज़माना में कोई भी मुल्क अलग न हुआ बल्कि शामिल ही हुआ। जो कुछ बहर हाल उन ही की चेष्टाओंसे हुआ। दुश्मन डरते थे कि मुसलमान हम पर आक्रमण न कर दें। तौहीद का एलान जितना इन के ज़माने में हुआ उतना कभी न हुआ। इस मौक़ा पर हमें यह बताना ज़रूरी नहीं है कि इस्लाम की तरक़्क़ी जितनी इन तीनों खुलफ़ा के ज़माना में हुयी उतनी हज़रत अ़ली के ज़माना में नहीं हुयी। जितना दबदबा और प्रताप इन तीनों ख़लीफ़ा के ज़माना में था उतना चौथे ख़लीफ़ा के ज़माना में नहीं था। यहाँ पर इस तफ़्सील की आवश्यक्ता नहीं और न ही हम बताना भी चाहते हैं। हम केवल यह दिखाना चाहते हैं कि कुरआन में जो वादा किया गया है अगर इन्साफ़ से देखा जाये तो वह खुलफ़ा-ए-राशिदीन के ज़माना में पूरा हो गया। हज़रत अ़ली रज़ि० का ज़माना अगर्चे ख़ाना जन्गी और अफ़रा-तफ़री का था ताहम ख़ैर व बर्कत से ख़ाली न था। हर प्रकार से दीन की अ़िज़्ज़त थी। फिर आ़म उसूल यह है कि पाँचों उंग्लियाँ बराबर नहीं होती हैं तो फिर चारों खुलफ़ा का शासन कैसे एक समान हो सकता है। हाँ मजमूई तौर पर सब का शासन काल कुरआन मजीद के वादे के मुताबिक़ था। बड़े दुःख की बात है कि शीआ़ लोग इस खुली और स्पष्ट आयत

का इन्कार करते हैं और एक रिवायत से दलील पकड़ते हैं कि ख़िलाफ़त का हक़ हज़रत अ़ली का था। रिवायत का निचोड़ यह है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिस का मैं मौला हूँ अ़ली भी उस का मौला है"। मौला का माना वाली और हाकिम बताते हैं। हालाँकि मौला के माना दोस्त और महबूब के भी आते हैं, चुनान्चे कुरआन मजीद में बहुत से स्थानों पर 'मौला' का अर्थ "मित्र और दोस्त" आया है। इसी प्रकार बहुत सी हदीसों में भी आया है।

ऊपर की हदीस में आगे यह भी है कि "ऐ अल्लाह! जो कोई अ़ली से मुहब्बत करे तू भी उस से मुहब्बत कर और जो कोई उन से दुश्मनी करे तू भी उस से दुश्मनी कर"। हदीस के इस टुकड़े से साफ़ ज़ाहिर है कि हज़रत अ़ली के मौला होने से मुराद दोस्त और महबूब होना है। इस हदीस से हर्गिज़ यह साबित नहीं होता कि हज़रत अबू बक्र, उमर और उस्मान की ख़िलाफ़त कुरआन की इस आयत न० ५५ के वादे के अनुसार न थी, बल्कि अ़ली की थी। बड़े दुःख की बात है कि एक तो कुरआन की आयत को सहीह तौर पर समझने की कोशिश नहीं की जाती है और दूसरे हदीस का माना और मफ़हूम तोड़-मरोड़ कर पेश किया जाता है, और बिला वजह एक सही और सच्चे वाक़िए को बिगाड़ा जा रहा है (सनाई)

ثِيَابَكُم مِّنَ الظَّهِيرَةِ وَمِن بَعْدِ صَلَوٰةِ الْعِشَاءِ ۚ ثَلَٰثُ عَوْرَٰتٍ لَّكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ۚ طَوَّٰفُونَ عَلَيْكُم بَعْضُكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَٰتِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَٰلُ مِنكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَـْٔذِنُوا۟ كَمَا اسْتَـْٔذَنَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ ءَايَٰتِهِۦ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَالْقَوَٰعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الَّٰتِى لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَن يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَٰتٍۭ بِزِينَةٍ ۖ وَأَن يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ لَّيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلَىٰٓ أَنفُسِكُمْ أَن تَأْكُلُوا۟ مِنۢ بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ ءَابَآئِكُمْ أَوْ بُيُوتِ

और ज़िशा की नमाज़ के बाद (सोते वक़्त मुमकिन है कोई नन्गा हो या पति-पत्नी का मिलाप हो इसी प्रकार दुपहर को क़ैलूला के समय। ग़रज़) यह तीन समय तुम्हारे पर्दे के हैं। इन समय के बाद (बिला अनुमति) अगर वह आयें तो न तुम पर गुनाह है और न उन पर (क्योंकि तुम्हारी ज़रूरतें ऐसी हैं कि) बाज़ का बाज़ के पास आना-जाना लगा रहता है। अल्लाह इसी प्रकार तुम्हारे लिये आदेश जारी करता है। और अल्लाह बड़े ज़िल्म वाला, बड़ी हिक्मत वाला है। ५९. और जब तुम्हारे बच्चे बुलूग़त (वयस्कता) को पहुंचें[३७] तो (फिर) वह अनुमति लिया करें जिस प्रकार इन से पहले लोग इजाज़त लेते रहे हैं[३८]। इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपने अहकाम बयान करता है। और अल्लाह बड़ा हिक्मत वाला है। ६०. और बड़ी-बूढ़ी औरतें जो मर्द से मिलाप की ख़्वाहिश नहीं रखतीं अगर वह अपने कपड़े उतार दें {यानि पर्दा करना छोड़ दें}तो उन पर गुनाह नहीं, मगर शर्त यह है कि बनाव-सिंगार को ज़ाहिर न करें और (अस्ल बात तो यह है कि) इस से भी एहतियात रखना उन के लिये बेहतर है[३९]। और अल्लाह बड़ा सुनने वाला बड़े ज़िल्म वाला है

➲६१. न किसी अन्धे को गुनाह है[४०], न किसी लंगड़े को, न किसी बीमार को और न ही स्वयं तुम (तन्दुरुसत) को (इस में) गुनाह है कि तुम अपने घरों से खाओ, या अपने बाप-दादा के घर से

....

३७. यानी उन के अन्दर भी वह ख़्वाहिश पैदा हो जाये जो मर्द को औरत से होती है। इस का आरंभ आम तौर पर १५ वर्ष से होता है। (सनाई)

३८. क्योंकि यह भी तो अब रुकावट हैं। जिन लड़कियों के साथ उन का निकाह दुरुस्त है, अगर्चे वह बचपन में उन के साथ खेलती रही हों और गो वह चचा और मामू ही की लड़कियाँ हों, लेकिन फिर भी उन को उन से पर्दा करना चाहिये, क्योंकि अब दोनों ओर से एक-दूसरे के लिये ख़्वाहिश पैदा हो गयी है, इस लिये इस का संदेह है कि मेल-जोल से कोई बुरा नतीजा न पैदा हो (सनाई)

३९. 'एहतियात रखना उन के लिये बेहतर है' इस लिये कि अरबी भाषा की एक मिसाल के मुताबिक़ "हर गिरी हुयी चीज़ को कोई न कोई उठाने वाला होता है"। उन बूढ़ी महिलाओं के अन्दर अगर्चे ख़्वाहिश नहीं है लेकिन संभव है कि दूसरा अपनी ख़्वाहिश की बुनियाद पर उनके ऊपर दबाव डाले। और चूंकि अल्लाह बड़ा सुनने वाला, बड़े अ़िल्म वाला है, इस लिये तुम लोग उस की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ बातें करने और दिल में उस की मुख़ालिफ़त करने से परहेज़ करो। यह मालूम रहे कि जिस प्रकार यह अख़्लाक़ी शिक्षा तुम को दी जाती है, इसी प्रकार यह भी तुम को बतलाया जाता है कि किसी के घर पर जा कर कोई चीज़ रखी-रखाई बेइजाज़त न उठा लिया करो, बल्कि जब तक साफ़-साफ़ इजाज़त न हो मत उठाया करो। मगर चन्द एक सूरतें ऐसी हैं कि वहाँ अनुमति लेने की आवश्यक्ता नहीं है, वह सुनो.............(सनाई)

४०. इस आयत के आरंभ में नाबीना (नेत्र हीन) लंगड़ा वग़ैरह का ज़िक्र मिसाल के लिये है। यानी यह लोग किसी के घर पड़े हों तो वहाँ से ख़ा लेने में उन को गुनाह नहीं। इसी प्रकार तुम तन्दुरुस्तों को भी गुनाह नहीं, मगर शर्त यह है कि नाराज़गी का अ़िल्म न हो (सनाई) एक ही दस्तर ख़्वान पर बैठ कर खाना ख़ैर-बर्कत और मुहब्बत का सबब है। इस्लाम ने छूत-छात को हराम क़रार दिया है।

या अपनी माओं के घर से खाओ, या अपने भाइयों के घरों से, या अपनी बहनों के घरों से, या अपने चचाओं के घर से, या अपनी फूफियों के घरों से, या अपने मामुओं के घरों से या अपनी मौसियों के घरों से खाओ, या जिन की कुंजियां तुम्हारे इख़्तियार में हैं उन के घरों से खाओ या अपने महज़ दोस्तों के घरों से खाओ तुम्हें इस में गुनाह नहीं कि तुम चन्द आदमी साथ ले कर खाओ या अलग-अलग खाओ। पस जब तुम घरों में जाओ तो लोगों को सलाम करो जो अल्लाह की तरफ़ से पाकीज़ा बाबर्कत तुहफ़ा है। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अहकाम बयान फ़रमाता है ताकि तुम समझो[४१] ६२.➲

أُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اِخْوَانِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ
اَوْ بُيُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ
اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗۤ
اَوْ صَدِيْقِكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا
جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ؕ فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا
عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً
طَيِّبَةً ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُوْنَ ۝٦١ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖ وَاِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰۤى اَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ

يَذْهَبُوا حَتّٰى يَسْتَاْذِنُوْهُ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ فَاِذَا
اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ
مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۶۲﴾

➲मुसलमान तो बस वही लोग हैं जो अल्लाह (की उलूहियत यानि माबूद होने) और रसूल (की रिसालत) पर ईमान लायें और जब किसी जमा होने के अहकाम में (जैसे जंग वग़ैरह में) उस रसूल के साथ हों तो इजाज़त लिये बग़ैर न जायें। जो लोग (ज़रूरत के समय) तुम से इजाज़त लेते हैं कुछ शक नहीं कि वही लोग अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान रखते हैं, पस जब यह (मुख़्लिस लोग) अपनी ज़रूरत के मुवाफ़िक़ तुम से इजाज़त चाहें तो (मस्लिहत को सामने रख कर) जिस को तू चाहे इजाज़त दिया कर। और अल्लाह से उन के लिये बख़्शिश मांगा कर। इस में शक नहीं कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

....

४१. मतलब यह है कि तुम जहाँ चाहो इजाज़त से खाओ तो कोई हर्ज नहीं और न ही कोई गुनाह है। क्योंकि इस्लाम की यह शिक्षा नहीं कि हिन्दुओं की तरह जिस मुहल्ला या गाँव में लड़की बियाह दी है, उस मुहल्ला और गांव के कुंये का पानी कभी मत पियो। यह एक प्रकार का वह्म है। एक-दूसरे के घरों में खाने-पीने से प्रेम और मुहब्बत पैदा होती है इस लिये तुम्हें इजाज़त दी गयी है कि अगर यह रिश्ते-दार स्वंय खिलायें तो भी तुम को खाने में हरज नहीं, या अगर तुम स्वयं उन घरों में से उन को बताये बग़ैर खा लो तो भी कोई हरज नहीं। मगर शर्त यह है कि तुम को इस बात का इतमिनान हो कि उन को बुरा न लगे गा। (सनाई)

अ़रब मुल्क में दो प्रकार के लोग रहते थे। कुछ लोग अकेले खाना-पीना बुरा जानते थे। और कुछ लोग एक साथ खाना-पीना बुरा जानते थे। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि यह दोनों बातें इस्लाम में जायज़ हैं। इस्लाम में कोई कष्ट और तंगी नहीं है। एक हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: आपस में मिल बैठ कर खाओ-पियो, अल्लाह तआ़ला बर्कत दे गा। सफ़र में सब लोग अपने-अपने खाने-पीने के सामान निकालो और परस्पर मिला कर खाओ, इस में बड़ी बर्कत है"। (वहीदी) मुस्नद अहमद की एक रिवायत में है कि एक शख़्स ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से शिकायत की कि ऐ अल्लाह के रसूल! हम खाते-पीते ख़ूब हैं लेकिन आसूदगी नहीं होती। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: शायद तुम लोग अलग-अलग खाते हो गे। इकट्ठा हो कर, एक साथ मिल-बैठ कर अल्लाह का नाम ले कर खाओगे तो ख़ैर व बर्कत हो गी।

फिर आगे की आयत में यह शिक्षा दी गयी कि घरों में सलाम कर के दाख़िल हो। हज़रत जाबिर रज़ि० ने फ़रमाया: जब तुम घर में दाख़िल हो तो अल्लाह का सिखाया हुआ बर्कत से भरा सलाम किया करो। मैं ने आज़माया है कि यह सरासर बर्कत है। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है वह फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझे पाँच बातों की वसिय्यत फ़रमाई है (१) ख़ूब अच्छी तरह वज़ू करो, इस से उम्र बढ़े गी (२) मेरे उम्मती मुसलमान को सलाम किया करो इस से नेकियाँ बढ़ें गीं (३) घर में सलाम कर के दाख़िल हो, इस से घर की ख़ैरियत बढ़े गी (४) चाश्त (दिन चढ़े) की नमाज़ पढ़ लिया करो, तुम से पहले के अल्लाह वालों का यही तरीक़ा था (५) छोटों पर रहम और बड़ों की इ़ज़्ज़त किया करो, जो ऐसा करे गा क़ियामत के दिन मेरे साथ हो गा (इब्ने कसीर)

لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ
بَعْضًا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنْكُمْ
لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَنْ
تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾ أَلَا
إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قَدْ يَعْلَمُ مَا
أَنْتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا
عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٤﴾

६३. (मुसलमानों!) तुम रसूल की आवाज़ को जब वह तुम को बुलाये तो आपस में एक दूसरे की सी आवाज़ न समझा करो[४२]। अल्लाह उन लोगों को अच्छी तरह जानता है जो तुम से छुप-छुप कर खिसक जाते हैं, पस जो लोग रसूल के आदेशों की मुख़ालिफ़त करते हैं उन को डरना चाहिये कि (कहीं से) उन पर कोई आफ़त आ पहुंचे, या कोई दर्द नाक अ़ज़ाब उन पर नाज़िल हो। ६४. सुन लो कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब अल्लाह ही के क़ब्ज़े में है। तुम जिस ख़याल पर हो उसे सब मालूम है। और जिस रोज़ यह लोग उस की तरफ़ फिर कर जायें गे तो वह उन के कामों के बारे में ख़बर दे गा। और अल्लाह हर वस्तु को जानता है।

....

४२. आ़म सहाबा जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मिलने आते तो आप के नाम कुन्नियत के साथ मामूली समझ कर जैसे आपस में एक दूसरे को पुकारते थे, आप को भी पुकारा करते थे। अल्लाह तआ़ला ने इसे बेअदबी बताते हुये इस से मना फ़रमाया और कहा कि नाम मत लो बल्कि "ऐ अल्लाह के नबी!" अथवा "ऐ अल्लाह के रसूल" कह कर पुकारो, ताकि आप की बुज़ुर्गी और अदब व इ़ज़्ज़त पर आंच न आये।

दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि तुम रसूल की दुआ़ को आपस की अपनी दुआ़ओं की तरह न समझो। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दुआ़ हर हाल में मक़्बूल है। देखो, नबी को तक्लीफ़ मत देना, कहीं ऐसा न हो कि उन के मुंह से कोई ऐसा कलिमा निकल जाये जिस से तुम तहस-नहस हो जाओ। 'जो खिसक जाते हैं' की तफ़्सीर करते हुये मुक़ातिल बिन हय्यान फ़रमाते हैं कि जुमअ़: के दिन खुत्बे में बैठना मनुाफ़िक़ों पर बहुत भारी पड़ता था, यह मुनाफ़िक़ आड़ ही आड़ में आँखें बचा कर सरक जाते थे, इन के बारे में यह आयत नाज़िल हुयी

सूरः फ़ुर्क़ान् (25)

آيَاتُهَا ٧٧ (٢٥) سُورَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ (٤٢) رُكُوعَاتُهَا ٦

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَىٰ عَبْدِهِ لِيَكُونَ
لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا ﴿١﴾ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ

सूरः फ़ुरक़ान (सच और झूठ में फ़र्क़ करने वाला) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[१]। इस में ७७ आयतें और ६ रुकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. अल्लाह की ज़ात बड़ी बर्कत वाली है जिस ने अपने बन्दे पर क़ुरआन उतारा ताकि➲

فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهُ تَقْدِيرًا ۝

➲दुनिया के लोगों को (अल्लाह के अ़ज़ाब से) डराए[2] २. जिस के क़ब्ज़े में आकाश और ज़मीन की (सारी) हुकूमत है और उस ने (अपने लिये) कोई औलाद नहीं बनाई और मुल्क में उस का कोई शरीक नहीं (वह ख़ुद मुख़्तार है) उसी ने सब चीज़ों को पैदा किया है और हर चीज़ के लिये उचित अनुमान लगाया

....

१. सूरः फ़ुरक़ान मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। हज़रत इब्ने अ़ब्बास और इमाम क़तादा रह० का कहना है कि आयत ६८ से ७७ तक (१० आयतें) मदीना शरीफ़ में उतरीं। इस सूरः में ७७ आयतें हैं। (वहीदी)
२. यानी अल्लाह के अ़ज़ाब से दुनिया के तमाम लोगों (जिन्नों और इन्सानों) को डराये। इस आयत से स्पष्ट रूप से ज़ाहिर है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तमाम दुनिया के लिये नबी बना कर भेजे गये थे। ऐसा और कोई संदेष्टा दुनिया में नहीं आया (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) (वहीदी)

وَاتَّخَذُوا مِن دُونِهِ آلِهَةً لَّا يَخْلُقُونَ شَيْئًا
وَهُمْ يُخْلَقُونَ وَلَا يَمْلِكُونَ لِأَنفُسِهِمْ ضَرًّا
وَلَا نَفْعًا وَلَا يَمْلِكُونَ مَوْتًا وَلَا حَيَاةً وَلَا
نُشُورًا ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا
إِفْكٌ افْتَرَاهُ وَأَعَانَهُ عَلَيْهِ قَوْمٌ آخَرُونَ
فَقَدْ جَاءُوا ظُلْمًا وَزُورًا ۝ وَقَالُوا أَسَاطِيرُ
الْأَوَّلِينَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلَىٰ عَلَيْهِ بُكْرَةً
وَأَصِيلًا ۝ قُلْ أَنزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ
فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ غَفُورًا
رَّحِيمًا ۝ وَقَالُوا مَالِ هَٰذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ
الطَّعَامَ وَيَمْشِي فِي الْأَسْوَاقِ لَوْلَا أُنزِلَ
إِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُونَ مَعَهُ نَذِيرًا ۝ أَوْ يُلْقَىٰ
إِلَيْهِ كَنزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا

३. और उन (मुश्रिकों) ने उस (अल्लाह) के अ़लावा और माबूद बना रखे हैं जो कुछ पैदा नहीं कर सकते बल्कि स्वयं पैदा किये गये हैं (और उन की कुदरत का यह हाल है कि) अपने लिये भी बुरे-भले का इख़्तियार नहीं रखते और न मौत का उन को इख़्तियार है न हयात (ज़िन्दगी) का, न (ही क़ब्रों से) उठने का ४. और जो लोग काफ़िर हैं वह कहते हैं कि यह तो महज़ एक बनावटी बात है इस ने अपने दिल से उस को घड़ लिया है और दूसरे लोगों ने इस पर उस की मदद की है पस यह लोग (सरापा) अत्याचार कर रहे हैं और झूठ बोल रहे हैं ५. और कहते हैं कि यह पिछले लोगों की कहानियाँ हैं जिन को उस ने किसी से लिखवा लिया है पस वह सुब्ह और शाम उस को सुनाई जाती हैं ६. तू कह कि उस को अल्लाह पाक ज़ात ने उतारा है जो आसमानों और ज़मीन के पोशीदा भेद जानता है। कुछ शक नहीं कि वह बड़ा ही बख़्शने वाला मेहरबान है ७. और कहते हैं कि यह कैसा रसूल है जो खाना खाता है और बाज़ारों में चलता है? क्यों उस के पास कोई फ़रिश्ता नाज़िल नहीं होता जो उस के साथ हो कर लोगों को डराता फिरे[1] ८. या उसे कोई ख़ज़ाना ही मिला➲

होता, या उस के पास कोई बाग़ ही होता जिस से यह खाता

....

३. शाने नुज़ूलः- मक्का के सर्दारों में से उत्बा, अबू सुफ़यान, वलीद, अबू जेहल और उमय्या बिन ख़ल्फ़ वग़ैरह यह सब इकट्ठा हुये और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को समझाने-बुझाने लगे कि तुम पैग़म्बरी का दावा क्यों करते हो? अगर दौलत चाहते हो तो हम सब मिल कर तुम्हें इतनी दौलत दे दें गे कि तुम माला-माल हो जाओ गे। अगर सर्दारी चाहते हो, तो हम तुम्हें अपना सर्दार भी बनाने को तय्यार हैं। अगर बादशाहत चाहते हो, तो इस पर भी सहमत हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मुझे न माल की भूक है और न सरदारी और बादशाही की ख़्वाहिश है मुझे अल्लाह ने अपना संदेश दे कर तुम लोगों के पास भेजा है और मुझ पर एक किताब भी नाज़िल फ़रमाई है, इस लिये तुम को अल्लाह का संदेश पहुंचा रहा हूँ। अगर मानो गे तो तुम्हारा ही भला हो गा और नहीं मानते तो मैं उस वक़्त तक सब्र करूँगा यहाँ तक कि अल्लाह हमारे और तुम्हारे दर्मियान फ़ैसला फ़रमा दे। उन लोगों ने कहा कि अगर तुम हमारी कोई बात नहीं मानते तो न मानो, मगर इतना तो करना ही पड़े गा कि अपने अल्लाह से कह दो कि तुम्हारे साथ एक फ़रिश्ता ही भेज दें जो हर जगह तुम्हारी सच्चाई बयान करता फिरे और हमारे प्रश्नों का उत्तर देता रहे। अपने रब से यह भी कह दो कि तुम्हें कई एक बाग़ भी दे दे और सोने-चाँदी के महल भी, ताकि कमाने की फ़िक्र न रहे। तुम्हारा हाल यह है कि बाज़ारों में मारे-मारे फिरते हो और हर समय रोटी की फ़िक्र में रहते हो। अगर तुम्हें हमारी बताई हुयी सारी चीज़ें मिल जायें तो हम जान लें गे कि अल्लाह के नज़दीक तुम्हारा कोई मर्तबा है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः भाई साहब! मैं तो कुछ भी नहीं माँगू गा और न मुझे इन सब की कुछ आवश्यकता है और न ही इन सब के लिये मैं भेजा गया हूँ, इस मौक़े पर यह आयतें नाज़िल हुयीं (वहीदी)

وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝
اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا
فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۝ تَبٰرَكَ الَّذِيْۤ
اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ لَّكَ
قُصُوْرًا ۝ بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ ۫ وَاَعْتَدْنَا
لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ۝ اِذَا رَاَتْهُمْ
مِّنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّ
زَفِيْرًا ۝ وَاِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ
دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ۝ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا
وَّاحِدًا وَّادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا ۝ قُلْ اَذٰلِكَ خَيْرٌ

और ज़ालिम कहते हैं कि तुम एक ऐसे शख़्स की पैरवी करते हो जो राह से हटा हुआ है ९. देखो तो सही! तेरे बारे में कैसी-कैसी मिसालें देते हैं पस यह गुमराह हो गये अब यह (किसी तरह) हिदायत की राह न पायें गे १०. अल्लाह बड़ी बर्कत वाला है अगर चाहे तो तेरे लिये इस (बाग़) से बेहतर (जिस की यह लोग माँग करते रहते हैं) कई एक बाग़ बना दे जिन के नीचे नहरें जारी हों और तेरे लिये बड़े महल बनवा दे ११. बल्कि क़ियामत की घड़ी को झूठ जानते हैं और क़ियामत की घड़ी को झुठलाने वालों के लिये हम ने दोज़ख़ की आग तय्यार कर रखी है १२. जब यह उस को दूर से देखें गे तो उस का जोश और डरावनी आवाज़ सुनें गे १३. और जब (हाथ-पैर) जकड़े हुये उस में किसी तंग मकान के अन्दर डाले जायें गे तो वहाँ मौत

➲को पुकारें गे (कि हाये! हम छूट जायें। लेकिन उत्तर मिले गा) १४. आज तुम एक ही मौत न माँगो (ऐसी दुःखी जानों के लिये) बहुत सी मौतें माँगों १५. (ऐ नबी!) तू उन से कह दे कि क्या यह (जहन्नम की मुसीबत) बेहतर है या हमेशा के बाग़ जो मुत्तक़ियों को वादे दिये गये हैं। जो उन का बदला और ठिकाना हो गा १६. जो चाहें गे वही उन को वहाँ मिले गा

....

४. 'जो सीधी राह से हटा हुआ है' यह "मसहूरा" का तर्जुमा है। "जादू किया गया" भी ठीक है। मगर मुझे पहला तर्जुमा ज़्यादा पसन्द है। अरबी शब्द कोष की मश्हूर किताब "मन्-त-हल् इरब्" में दोनों ही माना दिये गये हैं। (सनाई) कुफ़्फ़ार कहा करते थे कि यह शख़्स बाप-दादाओं के रास्ते से हटा हुआ है और यह भी कहते थे कि इस पर किसी ने जादू कर दिया है इस लिये बहकी-बहकी बातें कर रहा है।

५. एक हदीस शरीफ़ में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा गया कि क्या तुम यह चाहते हो कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें दुनिया के सारे ख़ज़ाने दे दे और ऐसी दौलत दे दे जो दुनिया में किसी को न मिली हो और न तुम्हारे बाद किसी को मिले और फिर भी आख़िरत में मिलने वाले में से कुछ कम न हो। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उत्तर दिया कि मेरे लिये आख़िरत में सब कुछ रखा है, यहाँ मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं, इस मौक़ा पर यह आयत नाज़िल हुयी! एक दूसरी हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक टाट पर लेटे हुये थे जिस पर बिछौना तक न था। हज़रत उमर रज़ि० यह देख कर रोने लगे और आप से कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! रूम और ईरान मुल्क के बादशाह जो अल्लाह के दुश्मन हैं वह तो आराम की ज़िन्दगी गुज़ारें और उन के पास माल-दौलत की रेल-पेल हो और आप इस प्रकार ज़िन्दगी गुज़ारें? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐ उमर! तुम भी इसी ख़याल में हो। क्या तुम्हें यह बात पसन्द नहीं कि हमारे लिये आख़िरत हो और उन के लिये दुनिया (वहीदी)

६. इब्ने अबी हातिम की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो शख़्स मेरे हवाले से वह बात कहे जो मैं ने नहीं कही, और जो शख़्स अपने माँ-बाप के अ़लावा दूसरे को अपना माँ-बाप बताये, और जो ग़ुलाम अपने मालिक के अ़लावा की तरफ़ अपनी निस्बत करे, तो यह सब जहन्नम की दोनों आँखों के दर्मियान अपना ठिकाना बना लें। सहाबा ने पूछा कि जहन्नम की दो आँखें क्या हैं? आप ने फ़रमायाः क्या तुम ने कुरआन की यह आयत नहीं सुनी? फिर आप ने यही आयत न० १२ तिलावत फ़रमाई। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि०, हज़रत रबीअ़ वग़ैरह के साथ कहीं जा रहे थे कि राह में एक लोहार की दुकान दिखाई पड़ी। आप वहाँ रुक कर उस लाल लोहे को देखने लगे। इस के बाद उन की हालत ख़राब हो गयी और बेहोश होने के क़रीब हो गये, जहन्नम का नक़्शा आप के सामने घूमने लगा। इस के बाद फ़ुरात नदी के किनारे पहुंचे तो वहाँ एक तन्नूर को देखा जिस में आग की लपटें भड़क रही हैं। यह देख कर आप की ज़बान से अचानक ही यह आयत जारी हो गयी और बेहोश हो कर गिर गये। आप को उठा कर घर ले जाया गया। सुब्ह से दुपहर तक हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि० उन के पास बैठे रहे और उन की देख-भाल करते रहे, लेकिन फिर भी उन को होश न आया।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० रिवायत करते हैं कि जब जहन्नमी को जहन्नम की तरफ़ घसीट कर ले जाया जाये गा तो जहन्नम चीख मार कर एक झुरझुरी ले गी, जिसे देख कर सब लोग डर जायें गे। एक अन्य रिवायत में है कि कुछ लोगों को जहन्नम की तरफ़ जब ले जाया जाये गा तो वह सिमट जाये गी। अल्लाह उस से पूछे गा कि क्या बात है? वह कहे गी कि यह लोग दुनिया में तुझ से जहन्नम की पनाह माँगा करते थे और आज भी➲

➲माँग रहे हैं। अल्लाह तआला को रहम आ जाये गा और हुक्म देगा कि इन्हें छोड़ दिया जाये। फिर कुछ और लोगों को जहन्नम की तरफ़ घसीटा जाये गा तो वह अल्लाह को पुकार कर कहें गे कि ऐ अल्लाह! हमारा गुमान तो तेरे बारे में यह न था कि तू हमें जहन्नम में डाले गा। अल्लाह पूछे गा कि तुम्हारा क्या ख़याल था? कहें गे कि हम तो यह सोचते थे कि तेरी रहमत हमें छुपा लेगी, तेरा करम हमारे ऊपर हो गा और तेरी रहमत हमें अपने दामन में समेट ले गी। अल्लाह तआला हुक्म देगा कि मेरे इन बन्दों को आज़ाद कर दिया जाये।

फिर कुछ और लोग भी घसीट कर लाये जायें गे। उन्हें देखते ही जहन्नम चीख़ पड़े गी और शोर मचाती हुयी थर थरा उठे गी। यह देख कर सभी लोग डर जायें गे। हज़रत उबैद बिन उमर रह० फ़रमाते हैं कि जब जहन्नम चीख़ने, शोर मचाने और थर्राने लगे गी तो उस समय तमाम मुक़र्रब फ़रिश्ते और अंबिया कांपने लगें गे, यहाँ तक कि अल्लाह के ख़लीफ़ा इब्राहीम अ़लै० भी घुटनों के बल गिर पड़ें गे और कहें गे कि ऐ अल्लाह! मैं आज तुझ से अपनी जान का बचाव चाहता हूँ, इस के अ़लावा और कुछ भी नहीं माँगता। जहन्नमी लोग जहन्नम के इतने तंग और तारीक मकान में ठूंस दिये जायें गे, जैसे भाला किसी सूराख़ में। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से जब आयत १३ के मुतअ़ल्लिक़ प्रश्न किया गया तो आप ने फ़रमाया: जैसे कोई कील दीवार में ठोंकी जाती है, इसी प्रकार जहन्नमी लोग जहन्नम में ठूंसे जायें गे। यह लोग उस समय बुरी तरह जकड़े हुये हों गे, उन का एक-एक बाल बंधा हुआ हो गा। वहाँ पर यह लोग मौत, हलाकत और हसरत को पुकारें गे, लेकिन उन से कहा जाये गा कि एक ही मौत को नहीं, बल्कि हज़ारों मौतों को पुकारो। मुस्नद अहमद की एक रिवायत में है: सब से पहले इब्लीस को जहन्नम का वस्त्र पहनाया जाये गा। यह मर्दूद उसे अपनी पेशानी पर रख कर पीछे से घसीटे गा, उस की ज़ुर्रिय्यत (चेले) भी उस के पीछे-पीछे हो गी। इब्लीस, मौत को पुकारता हुआ इधर-उधर भागे गा, उस के साथ उसके साथी भी इधर-उधर भागते हुये चीख़-पुकार करें गे और मौत को पुकारें गे।

خٰلِدِيْنَ ؕ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔوْلًا ﴿١٦﴾ وَ
يَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
فَيَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِىْ هٰٓؤُلَآءِ اَمْ
هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ﴿١٧﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ
يَنْۢبَغِىْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ
اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا
الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوْا قَوْمًاۢ بُوْرًا ﴿١٨﴾ فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ
بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا ۚ
وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ﴿١٩﴾
وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ
اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِى
الْاَسْوَاقِ ؕ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ؕ
اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ﴿٢٠﴾

हमेशा (उन नेमतों में) रहें गे। यह वादा तेरे पर्वरदिगार के ज़िम्मा माँगे जाने के योग्य है १७. और जिस रोज़ अल्लाह उन को और जिन को अल्लाह के अ़लावा पूजते हैं जमा कर के कहे गा कि क्या तुम ने मेरे उन बन्दों को गुमराह किया था? या स्वयँ गुमराह हुये थे? १८. वह कहें गे कि तू एक है (हमारी क्या मजाल थी कि हम तेरे बन्दों से अपनी अ़िबादत करा कर गुमराह करते इस हाल में कि) हम ख़ुद लायक़ नहीं कि तेरे अ़लावा किसी को अपना कारसाज़ {बिगड़ी बनाने वाला} बनायें, लेकिन तू ने उन को और उन के बाप दादा को आसूदा किया यहाँ तक कि हिदायत को भूल गये और तबाह होने वाली क़ौम बन गये १९. तो उन्हों ने तो तुम्हारी बातों को झुठला दिया अब तुम (अपने से) अ़ज़ाब को टाल न सको गे और न अपनी➲

मदद कर सको गे। और जो तुम में से ज़ालिम हो गा हम उस को बड़ा अ़ज़ाब चखायें गे २०. हम ने तुझ से पहले जितने भी रसूल भेजे हैं सब खाना खाते थे और (आवश्यक्तानुसार) बाज़ार में चलते-फिरते थे (हाँ, यह भी सच है कि) हम ने (कुदरती तौर पर) तुम में से एक को दूसरे के लिये आज़माइश का ज़रीआ़ बनाया है। क्या तुम भी सब्र करो गे? और तुम्हारा पर्वरदिगार सब कुछ देखता है[७]।

....

७. कहने का मतलब यह है कि नबी और रसूल इन्सान ही होते हैं। आ़म इन्सानों की तरह रहना-सहना, खाना-पीना, उठना-बैठना, चलना-फिरना सब कुछ उन में भी पाया जाता था। मगर इन्सान होने के बावजूद अल्लाह की तरफ़ से उन को कु़र्बत यानि अल्लाह से नज़दीकी का एक विशेष दर्जा हासिल होता है जो उन को दूसरों से मुम्ताज़ (विशेष) करता है। अगर कुछ लोग उन को न पहचान सकें तो यह उन का दुर्भाग्य है। (राज़)

*****

بِسْـــمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْـــمِ

पारः वक़ा–लल्लज़ी–न (19)

संक्षिप्त विषय सूची

•••••

वक़ा-लल्लज़ी-न (19)

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَاۤءَنَا لَوْلَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰۤئِكَةُ اَوْ نَرٰى رَبَّنَا ؕ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا ۝ يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰۤئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ۝ وَقَدِمْنَاۤ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ۝ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا ۝ وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰۤئِكَةُ تَنْزِيْلًا ۝ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ۨالْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ۝ وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِى اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ۝ يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِىْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ۝ لَقَدْ اَضَلَّنِىْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِىْ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ۝ وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِى اتَّخَذُوْا

२१. और जो लोग हमारी मुलाक़ात की आशा नहीं रखते (यानी क़ियामत के मुन्किर हैं) वह कहते हैं कि हम पर फ़रिश्ते क्यों नहीं आते? (हम तो तब मानें गे जब कि हम पर भी फ़रिश्ते आयें) या हम अपनी आंखों से अपने पर्वरदिगार को देखें। वास्तव में यह लोग अपने आप को बहुत कुछ समझे बैठे हैं और सरकशी में बहुत बढ़ गये हैं। २२. जिस दिन (यानी मौत के समय) यह लोग फ़रिश्तों को देखें गे तो उस दिन मुज्रिमों के लिये ख़ुशख़बरी न हो गी और कहें गे कि दूर-दूर दफ़ा[८]। २३. (इधर) हम उन के आमाल की तरफ़ मुतवज्जह हों गे तो उन को गुबार की तरह बेकार कर दें गे २४. जन्नत वाले उस रोज़ अच्छे ठिकाने वाले और बेहतरीन (बिस्तरों और) ख़्वाबगाहों में हों गे[१]। २५. और (सुनो!) जिस दिन आकाश बादलों के साथ फट जाये गा और फ़रिश्ते (हर तरफ़ से दुनिया को तबाह करने के लिये) उतारे जायें गे। २६. उस दिन (ज़ाहिर और पोशीदा की) अस्ली हुकूमत अल्लाह मेहरबान की हो गी। काफ़िरों पर वह दिन बड़ा ही सख़्त हो गा २७. उस रोज़ ज़ालिम अपने हाथ काटे गा (और अफ़सोस से) कहे गा कि काश! मैं रसूल के साथ (दीन का रास्ता) इख़्तियार करता (तो आज मेरी यह बुरी गत न होती) २८. हाए मेरी कम्बख़्ती! मैं फ़लाँ (शरीर) को दोस्त न बनाता २९. उस ने मुझे हिदायत पहुंचने के बाद हिदायत से गुमराह कर दिया (उस ने मुझे क़ुरआन पर अ़मल न करने दिया) और शैतान तो इन्सान को ज़लील करने में लगा ही हुआ है ३०. (यह तो इधर चीख़ता हो गा, उधर) रसूल कहें गे कि ऐ मेरे रब! मेरी क़ौम ने (जिन में तू ने मुझे भेजा था)

....

८. मक्का के काफ़िर और मुश्रिक, जो नबुव्वत और क़ुरआन के मुन्किर थे, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

➲को ताना देते हुये यह भी कहा करते थे कि जिस प्रकार संदेष्टाओं पर फ़रिश्ते वह्यि ले कर आते हैं, हम पर क्यों नहीं आते हैं। या फ़रिश्ते हमारे पास आ कर क्यों नहीं कह देते कि मुहम्मद अल्लाह के सच्चे संदेष्टा हैं इस लिये तुम उन की आज्ञापालन करो। या स्वयँ अल्लाह आ कर कह दे कि हम ने मुहम्मद को सच्चा संदेष्टा बना कर भेजा है। जब हमारी माँग और मुतालबे के मुताबिक़ नहीं होता तो हम उन्हें क्योंकर ख़ुदा का रसूल मान लें। मतलब यह हुआ कि अहले मक्का के जब तक दो मुतालबे (फ़रिश्तों से मुलाक़ात, अल्लाह को देखना) पूरे नहीं हो जाते वह संदेष्टा को सच्चा नबी नहीं मानें गे। अल्लाह तआ़ला ने आयत २१,२२ में उन के प्रश्नों का उत्तर दे दिया कि इन सरकश लोगों की शख़्सिय्यत (**Personality**) ही ऐसी नहीं है कि फ़रिश्ते जैसे मासूम और बेगुनाह इन के पास आयें। रहा अल्लाह के देखने का प्रश्न, तो दुनिया की कोई निगाह ख़ुदा को कभी भी देखने की ताब नहीं रखती। उस के जमाल व जलाल (प्रताप) को देखने की ताब कम से कम दुनिया में तो किसी को नहीं है। हाँ आख़िरत में नेक बंदे अल्लाह का दीदार कर सकें गे, लेकिन कुफ़्फ़ार फिर भी वहाँ देखने से वन्चित रहें गे। अल्बत्ता अ़ज़ाब के फ़रिश्तों को अवश्य देखें गे। लेकिन उस समय देखने से ख़ुशी नहीं होगी, बल्कि उन के हाथों अ़ज़ाब को देख कर उन को दूर और दफ़ा करें गे और "हिज्-रम्मह्जूरा" (दूर हो, दफ़ा हो) यह कह कर उन के मिलने से अल्लाह की पनाह माँगें गे (तफ़्सीर जुमल) तफ़सीर "बैज़ावी" और "ख़ाज़िन" में इस शब्द का अर्थ "आड़, रोक" दिया गया है। यानी हम में और अज़ाब के फ़रिश्तों में आड़ और रुकावट हो कि उन की सूरत हम को दिखाई न दे। मौलाना रह० ने मुहावरा में तर्जुमा करते हुये "दूर, दूर, दफ़ा" किया है।

९. आयत न० २३ से क़ियामत का चित्र खींचा गया है कि उन क़ियामत के मुन्किरों के नेक आमाल (जैसे, मज़लूमों की मदद, मेहमानों की सेवा, संबन्धियों का ख़याल आदि) जो दुनिया में करते थे, हिसाब-किताब के दिन सब अकारत हो जायें गे। इसलिये कि नेक अ़मल भी क़ुबूल होने के लिये कुफ़्र, शिर्क और रिया कारी से पाक और शरीअ़त के आदेशानुसार होना चाहिये। इन के विपरीत नेक लोगों के आमाल अल्लाह के हाँ तुरन्त क़ुबूल कर लिये जायें गे और बेहतरीन बदला दिया जाये गा (तर्जुमान)

هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ۝ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ
عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ۝
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً
وَّاحِدَةً ۚ كَذٰلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ
تَرْتِيْلًا ۝ وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ
تَفْسِيْرًا ۝ اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى
جَهَنَّمَ ۙ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا ۝ وَلَقَدْ
اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُوْنَ
وَزِيْرًا ۝ فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَا ؕ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ۝ وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا

इस क़ुरआन को (ग़लत जान कर) छोड़ दिया था[१०] ३१. (और दुनिया में जो यह लोग शरारत करते हैं उस की वजह यह है कि) इसी प्रकार हम ने हर एक नबी के दुश्मन मुजिरमों को बनाया है (जो आ़दत के तौर पर इस शरारत पर मजबूर हैं) और तेरा पर्वरदिगार हिदायत करने और सहायता करने को काफ़ी है। ३२. और जो लोग काफ़िर हैं वह कहते हैं कि एक ही मर्तबा तमाम का तमाम क़ुरआन उस पर क्यों नाज़िल नहीं होता? (बात) इसी प्रकार (है कि) हम इस क़ुरआन को (थोड़ा-थोड़ा कर के) नाज़िल करते हैं ताकि तेरे दिल को साबित रखें[११] ३३. और(यह लोग याद रखें कि) जब कभी वह कोई मिसाल (नबुव्वत को झुठलाने की)➲

اَلرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ؕ وَاَعْتَدْنَا
لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ۚۖ وَّعَادًا وَّ ثَمُوْدَاۡ وَاَصْحٰبَ
الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ۝ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ

तेरे पास लायें गे हम उस का दुरुस्त जवाब और उम्दा बयान तुझे देते रहें गे। ३४. (सो याद रखें कि) जो लोग मुंह के बल जहन्नम की तरफ़ घसीटे जायें गे[12] वही सब से बुरे मर्तबे वाले और सब से अधिक गुमराह हों गे[13] (इस लिये अपने किये की सज़ा पायें गे) ३५. और हम ने मूसा को किताब दी और उस के भाई हारून को उस का वज़ीर बनाया ३६. फिर हम ने (दोनों को) कहा कि उस क़ौम की तरफ़ जाओ जिन्हों ने हमारे आदेशों का पालन नहीं किया (और अन्त तक झुठलाते ही रहे) सो हम ने उन सब को तबाह कर दिया ३७ और (सुनो!) नूह की क़ौम ने भी जब हमारे रसूलों को झुठलाया तो हम ने उन को भी डुबो दिया और हम ने उन को समस्त लोगों के लिये निशानी बनाया। और ज़ालिमों के लिये हम ने दुःख दाई दन्ड तय्यार कर रखा है ३८. (इन के अ़लावा) आ़द, समूद, ख़न्दक़ वालों और उन के दर्मियान बहुत सी क़ौमों को हलाक कर दिया ३९. और हर एक के लिये मिसालें बतलायीं (मगर वह न माने तो हमारा अ़ज़ाब भड़का)

....

१०. आयत न० २४. से क़ियामत की सख़्तियों का बयान है। आकाश का फटना, फ़रिश्तों का नीचे उतरना, हश्र के मैदान में अल्लाह तआ़ला का इन्साफ़ के लिये आना वग़ैरह। 'अस्ली हुकूमत अल्लाह रहमान की हो गी' (आयत न० ३५) इस का अर्थ यह है कि उस दिन अस्ली और हक़ीक़ी बादशाहत (शासन) अल्लाह ही की हो गी, क्योंकि दुनिया की ज़िन्दगी में बादशाहत करने वाले उस रोज़ अपनी बादशाहत और हुकूमत से अलग हो जायें गे। 'ज़ालिम अपना हाथ काटे गा' का अर्थ यह है कि उस दिन ज़ालिम निराश हो कर अपना हाथ काट-काट खाये गा, जिस प्रकार निराश लोग अपनी बेवकूफ़ी पर दाँतों से हाथ नोचने लगते हैं। 'ज़ालिम' से मुराद यहाँ पर हर प्रकार के छोटे बड़े गुनाहगार और हर प्रकार के अत्याचारी मुराद हैं, इस लिये कि इस आयत का अर्थ आ़म होने पर दलालत करता है। कुछ उलमा ने 'ज़ालिम' से मुराद उक़्बा बिन मुअ़ीत काफ़िर को लिया है। लेकिन सही बात यही है कि इस से आ़म ज़ालिम मुराद हैं।

११.वह्यि में आदेश, उपदेश और अहकाम होते हैं जिन का एक ही बार में सहन करना कठिन है। ज़ाहिर है कि उस्तादों के शागिर्द भी एकदम में नहीं पढ़ सकते, तो भला यह कैसे संभव है कि इतने बड़े बोझ की बर्दाश्त एकदम में कर सके। इसी लिये हम उस को थोड़ा-थोड़ा कर के उतारते हैं और आहिस्ता-आहिस्ता पढ़ाते हैं।

१२. 'घसीटे जायें गे' का तर्जुमा दुरुस्त है। इमाम शौकानी रह० ने अपनी तफ़्सीर "फ़त्हुल् क़दीर" भाग ४, पृष्ठ ७१ पर लिखा है कि "अपने मुंह के बल जहन्नम की तरफ़ ले जाये जायें गे"। (राज़)

१३. एक हदीस शरीफ़ में हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि एक शख़्स ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा कि हश्र कैसे बर्पा होगा और मुंह के बल जहन्नम में काफ़िर कैसे चलाये जायें गे? आप ने फ़रमाया: जिस ने उस को पाँव के बल चलाया, वह इस बात पर भी कुदरत रखता है कि क़ियामत के दिन उसे मुंह के बल चलाये। यह हदीस शरीफ़ आयत-३४ की बेहतरीन तफ़्सीर है। (तर्जुमान)

आयत न० ३५ में संदेष्टाओं की नाफ़र्मानी का नतीजा बयान किया जा रहा है। इस संदर्भ में सर्वप्रथम हज़रत मूसा की नाफ़र्मान क़ौम का ज़िक्र है कि हम ने हज़रत मूसा को नबी और उन के भाई हारून अ़लै० को उन का वज़ीर (सहायक) बना कर फ़िरऔ़न और उस की क़ौम की तरफ़ भेजा, मगर उन्हों ने उन को झुटलाया।

➲परिणाम यह हुआ कि हम ने उन को तबाह-बर्बाद कर दिया और उन का नाम- निशान तक मिटा दिया। इसी प्रकार हज़रत नूह की क़ौम के साथ भी बर्ताव किया। उन सब को हलाक कर डाला और कशती पर सवार लोगों को छोड़ कर कोई भी ज़मीन पर ज़िन्दा बाक़ी न रहा। इस क़ौम ने अगर्चे केवल हज़रत नूह को झुटलाया था, मगर एक नबी को झुटलाना गोया तमाम नबियों को झुटलाना है, क्योंकि एक नबी और दूसरे नबी के दर्मियान तालीम व तब्लीग़ के एतबार से कोई अन्तर नहीं होता। एक हदीस शरीफ़ में है कि संदेष्टा सब अ़ल्लाती भाई है (यानी बाप एक और मायें जुदा-जुदा हैं) इसी लिये आयत में "रसूलों को झुटलाया" कह कर यह बतलाया कि अगर अल्लाह उन के पास तमाम पैग़ंबरों को भेजता तो यह सभी को झुटलाते। इसी प्रकार आ़दियों को हज़रत हूद के और समूदियों को हज़रत स्वालेह के झुटलाने की वजह से हलाक कर दिया। इसी प्रकार 'रस्स' वालों को भी हलाक किया।
'रस्स' को लेकर उलमा के दर्मियान बड़ा इख़्तिलाफ़ है। कुछ उलमा का कहना है कि इस से मुराद इन्ताकिया के लोग हैं। वहां एक कुंवा था, वहीं पर उन के संदेष्टा हबीब नज्जार क़ौम वालों को नसीहत किया करते थे। क़ौम वालो ने उन्हें क़त्ल कर के उसी कुंए में डाल दिया। यह भी क़ौल मशहूर है कि 'रस्स' एक कच्चे कुंए का नाम था जहां मुश्रिक लोग बुतों की पूजा करते थे। अल्लाह तआ़ला ने उस कुएं को धंसा दिया और सब के सब हलाक हो गये। एक क़ौल यह भी है कि 'अस्हाबे रस्स' से हज़रत शुऐ़ब अ़लै० की क़ौम मुराद है। कुछ के नज़दीक इस से मुराद ख़न्दक़ वाले है। इस के अ़लावा और भी बहुत से अक़्वाल हैं। खुलासा यह है कि इस बयान से नबी करीम की दिलजूई मुराद है कि नबिय्यों को झुटलाना यह कोई नयी बात नहीं है, बल्कि लग-भग तमाम ही क़ौमों ने अपने अपने ज़माना में नबिय्यों को झुटलाया है। जिस प्रकार झुटलाना उन की आ़दत रही है इसी प्रकार उन को तबाह-बर्बाद करना हमारा भी उसूल रहा है (सारांश मुख़्तलिफ़ तफ़ासीर)

الْاَمْثَالَ ۡ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ۝ وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ
الَّتِىْۤ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ؕ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ
كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ۝ وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ
اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا الَّذِىْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ۝ اِنْ كَادَ
لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَاۤ اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ؕ وَسَوْفَ
يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝
اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰٮهُ ؕ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ
وَكِيْلًا ۝ اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ ؕ
اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝ اَلَمْ تَرَ
اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَآءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ
ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ۝ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا
قَبْضًا يَّسِيْرًا ۝ وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا

और हम ने सब का सत्तियानास कर दिया (इस घटना को तो यह लोग भी जानते हैं) ४०. और इस बस्ती पर भी आते-जाते हैं जिन पर (पत्थरों की) वर्षा हुयी थी फिर क्या उस को देखते नहीं (कि वह कैसे तबाह हुये) बल्कि दोबारा जी उठने का उन को ख़याल ही नहीं ४१. और जब तुम को देखते हैं तो तुम से हंसी मज़ाक़ करते हैं (और कहते हैं) कि क्या यही वह शख़्स है जिस को अल्लाह ने रसूल बना कर भेजा है ४२. उस ने तो हम को हमारे माबूदों से हटा ही दिया होता अगर हम उन पर साबित-क़दम न रहते (ख़ैर जाने दो। जो चाहें कहते फिरें।, आख़िरकार) जब अज़ाब देखें गे तो मान जायें गे कि कौन सब से अधिक पथभ्रष्ट था ४३. क्या तू ने ऐसे लोग भी देखे हैं जिन्हों ने अपना माबूद अपनी ख़ाहिश को बना रखा हो (जो जी में आया कर लिया) तो क्या ऐसे लोगों का तू➲

وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ۝ وَهُوَ الَّذِيْٓ

ज़िम्मेदार हो गा[१४] ४४.क्या तू समझता है कि उन में से बहुत लोग (तेरी बातों को) सुनते हैं या समझते हैं (तौबा-तौबा! उन को समझने से क्या मतलब?) यह तो बस चारपायों के समान हैं, बल्कि उन से भी अधिक गुमराह[१५] ४५.क्या तू ने नहीं देखा कि तेरा पर्वरदिगार (रात के समय) साया को कैसे लम्बा करता है[१६] और अगर अल्लाह चाहता तो हमेशा उस को ठहरा रखता[१७] और हम ने सूरज को उस पर राहनुमा बनाया है (यानी सूरज से साया को नापा जा सकता है कि कितना है) ४६.फिर हम उस को धीरे-धीरे अपनी ओर खीचते जाते हैं (यानी सूरज उदय होने से रात का साया समाप्त होता जाता है ४७. और अल्लाह वह ज़ात है जिस ने तुम्हारे लिये रात को वस्त्र और नींद को आराम और दिन को चलने-फिरने के लिये बनाया। ४८. और वही ज़ात है

....

१४. यह लोग अपनी इच्छा और मर्जी के गुलाम हैं, चाहे शरीअ़त और अ़क्ल अनुमति दे या न दे। यह लोग न किसी नबी के आज्ञाकारी हैं और न किसी वली और बुज़ुर्ग के। ए नबी! अगर आप ने ऐसे लोग न देखे हो तो इन के देख लेजिये...... (सनाई) कुछ नही, आप को इन से कुछ भी लेना-देना नही। जो चाहें करें, अपना सर खायें, झक मारें।

१५. यह लोग तो पशुओं से भी अधिक गुमराह हैं' जानवर तो अपने मालिक के वफ़ादार होते हैं, मगर यह नमक हराम ऐसे हैं कि अपने मालिक का खाते-पीते हैं, फिर भी नाफ़र्मानी किये जाते हैं। इस लिये इन से निराशा ही निराशा है, इन का तो तू ज़िक्र ही न कर! हाँ, गुमराही और हिदायत की मिसाल में कुदरत का एक चमत्कार हम तुझे दिखाते हैं......... (सनाई)

१६ 'साया को कैसा लम्बा करता है' यहाँ तक कि सियाही ही सियाही हो जाता है। साइंसदानों (वैज्ञानिकों) का तो यहां तक कहना है कि रात के समय पृथ्वी की छाँव "ज़हरा" सय्यारा तक पहुंच जाती है और देखने में उस छांव की शक्ल गाजर के आकार जैसी लंबूतरी होती है। सनाई)

१७. 'हमेशा उस को ठेहरा रखता' इस का परिणाम यह होता कि प्रकाश (रोशनी) दुनिया से बिल्कुल ही समाप्त हो जाती। मगर हम ने ऐसा नही किया, बल्कि हिक्मत के अनुसार किया (सनाई)

أَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَأَنْزَلْنَا مِنَ
السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ۝ لِّنُحْيِۦَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ
مِمَّا خَلَقْنَآ أَنْعَامًا وَّأَنَاسِيَّ كَثِيْرًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ
بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَأَبٰىٓ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُوْرًا ۝ وَلَوْ
شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ۝ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ
وَجٰهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ۝ وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ
هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا

जो अपनी रहमत (यानी वर्षा) से पहले-पहल खुशख़बरी देने वाली हवायें भेजता है (जिन से तुम समझ जाते हो कि रहमत की वर्षा हो गी) और हम आकाश से पाक पानी उतारते हैं[१८] ४९. ताकि उस के साथ सूखी ज़मीन को तरोताज़ा करें और वह पानी अपनी मख़लूक़ात में से चारपायों और बहुत से लोगों को पिलाए ५०. हम ने तो यह बातें मुख़्तलिफ़ पैरायों (दृष्टिकोणों)में बयान की हैं ताकि वह नसीहत पायें, फिर भी बहुत से लोगों ने नाशुक्री के

بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ۝ وَهُوَ الَّذِیْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ
بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ؕ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِیْرًا ۝ وَ
یَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا یَنْفَعُهُمْ وَلَا یَضُرُّهُمْ ؕ وَكَانَ
الْكَافِرُ عَلٰی رَبِّهٖ ظَهِیْرًا ۝ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّ
نَذِیْرًا ۝ قُلْ مَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ
اَنْ یَّتَّخِذَ اِلٰی رَبِّهٖ سَبِیْلًا ۝ وَتَوَكَّلْ عَلَی الْحَیِّ الَّذِیْ

अ़लावा कुछ नहीं इख़्तियार किया। ५१ और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में (अ़ज़ाब से) डराने वाला भेजते (मगर तेरी मौजूदगी में आवश्यक्ता नहीं ५२. पस तुम उन काफ़िरों की ताबेदारी मत करना और इस कुरआन के अनुसार उन से बड़े ज़ोरों का जिहाद किया करना[१९] ५३. वह (अल्लाह) है जिस ने दो दरियाओं को आपस में मिला दिया, एक मीठा मज़ेदार {स्वादिष्ट} है और एक कड़ुवा खारी है, और उन दोनों के बीच में एक पर्दा और मज़बूत आड़ बना दी है[२०] (कि मजाल नहीं कोई उन में से दूसरे पर ग़लबा पा सके) ५४. ओर (सुनो!) वह ज़ात (पाक जिसने तुम को यह आदेश दिया है) वह है जिस ने पानी से मनुष्य को (अव्वल) पैदा किया फिर उस के लिये पैदाइश का रिश्ता और दामादी रिश्ता बनाया। और तम्हारा पर्वरदिगार हर काम पर कुदरत रखने वाला है[२१] ५५.और अल्लाह के अ़लावा ऐसी चीजों की इ़बादत करते हैं जो न उन को लाभ दें न हानि और (सच पूछो तो) काफ़िर अपने पर्वरदिगार की तरफ़ (गोया) पीठ दिये हुये हैं[२२] (यानी उस की जैसी इ़ज़्ज़त करनी चाहिये नहीं करते) ५६. हम ने तुम को केवल शुभसूचना देने वाला और डराने वाला बना कर के भेजा है ५७. (पस) तू उन से क़ह कि मैं तुम से इस (तब्लीग़ के) कार्य पर कोई मज़दूरी नहीं माँगता। हाँ, (यह मेरी मज़दूरी है कि) जो कोई चाहे अपने पर्वरदिगार की राह इख़्तियार कर ले ५८. और उसी हमेशा ज़िन्दा रहने वाले (अल्लाह) पर भरोसा करो जो कभी न मरे गा

....

१८. 'पाक पानी उतारते हैं' ग़रज़ यह है कि दुनिया का सारा इन्तिज़ाम अल्लाह ही की तरफ़ से है। इसी लिये हज़रत शैख़ सादी रह० ने अपनी पुस्तक "गुलिस्ताँ" में लिखा है: "बादल, पानी, चाँद, सूरज, आकाश सब के सब अपनी डयूटी अंजाम दे रहे हैं ताकि तुम को दो वक़्त की रोटी मिले और ग़फ़्लत से न खा। यह सारी चीज़ें केवल तुम्हारे ही लिये काम पर लगी हुयी हैं, तो अगर तुम अपने रब की फ़र्माबरदारी न करो गे तो यह कितना बड़ा अन्याय हो गा"। 'पाक पानी' इस तअ़ल्लुक़ से नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ाँ मर्हूम अपनी तफ़सीर "तर्जुमान" में एक रिवायत लाये हैं। इब्ने अबी हातिम ने हज़रत साबित बनानी से रिवायत नक़ल की है, वह कहते हैं कि मैं अबुल आ़लिया के साथ बारिश के दिनों में बसरा शहर के गन्दे रास्ते से गुज़रा। फिर अबुल आ़लिया ने उसी हालत में नमाज़ पढ़ी तो मैं ने कहा (आप ने पाँव नही धोये! या इसी प्रकार की कोई बात कही) इस पर उन्होंने उत्तर देते हुये यही आयत तिलावत की और कहा कि " उस को आसमान के पानी ने पाक कर दिया"। इब्ने अबी हातिम ने हज़रत सअ़ीद बिन मुसय्यिब की तफ़्सीर में यह रिवायत नक़्ल की है कि "अल्लाह ने उस को पाक उतारा है, उस को कोई चीज़ नापाक नहीं करती"। हज़रत अबू सअ़ीद रज़ि० से रिवायत है कि किसी सहाबी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से प्रश्न किया हम "बुज़ाआ़" के कुँओं के पानी से वज़ू कर सकते हैं? (मालूम रहे कि इस कुयें में कूड़ा-कर्कट, गन्दगी, औ़रतों की नापाकी, मुर्दार जानवर आदि डाले जाते थे) आप ने उन सहाबी को उत्तर दिया: "पानी पाक है, उस को कोई चीज़ नापाक नहीं करती" (इस हदीस को नसई ने "हसन" और दावूद और तिर्मिज़ी ने "सहीह"

➲कहा) (तर्जुमान-नवाब सिद्दीक़ ख़ाँ)

नोटः- ऊपर की हदीस में मुतलक़ पानी के पाक होने का ज़िक्र है। दूसरी रिवायतें इस की तशरीह करती हैं कि वह पानी पाक है जिस का रंग, मज़ा (स्वाद) और बू न बदले। अगर उन तीनों में से कोई एक बदल गया तो पानी पाक नहीं माना जाये गा-- ख़ालिद।

१९. 'ज़ोरों से जिहाद किया करो' यानी तक़रीर के समय तक़रीर से, तहरीर के समय तहरीर से और तल्वार के समय तल्वार से, जहाँ जैसा मौक़ा हो वह तरीक़ा अपनाओ, पीछे मत हटना और नही पीछे हटने का ख़याल दिल में लाना, तुम्हें मालूम होना चाहिये कि मालिकुल मुल्क ने तुम्हें यह हुक्म दिया है (सनाई) मौलाना अमृतसरी रह० ने यहाँ इस बात की ओर इशारा किया है कि "जिहादे कबीर" से मुराद अल्लाह के क़ानून की इशाअ़त और उस का प्रचार है। यानी क़ुरआन मजीद की इशाअ़त और अ़द्ल व इन्साफ़ को आ़म करने के सिलसिले में समय-समय पर जिस चीज़ के ज़रीए संभव हो हर मुमकिन कोशिश करने का नाम जिहादे-अक्बर है। (राज़)

२०. 'मज़बूत आड़ बना दी है' जिस की वजह से मीठा पानी मीठा और खारा पानी खारा रहता है। मीठे पानी के दरिया जैसे गंगा, जमुना, अटक, घाघरा, फ़ुरात, जीहून और नील वग़ैरह और खारे पानी का समुन्दर, इन दोनों के दर्मियान एक मज़बूत आड़ है। यानी ज़मीन दोनों पानियों को मिलने नहीं देती। कुछ उलमा का कहना है कि इस की मिसाल दजला नदी का पानी है जो बग़दाद शहर से कई सौ मील तक समन्दुर में बहता है लेकिन उस का पानी मीठा ही रहता है। एक क़ौल यह भी है कि हिन्द महासागर में एक स्थान पर दोनों प्रकार के पानी मिले हुये हैं और एक साथ बह रहे हैं, लेकिन एक को चखो तो मीठा और दूसरे को चखो तो खारा है, अल्लाह की क़ुदरत से दोनों एक साथ बहते हुये भी एक साथ नहीं मिलते हैं। (वहीदी)

२१. यानी हजरत आदम के बाद उन की संतान में यह सिलसिला क़ाइम किया। कोई किसी का बेटा है तो कोई किसी का दामाद, कोई किसी का ससुर है तो कोई किसी का बाप। इस प्रकार उन को एक दूसरे से निकट किया जाता है, क्योंकि इन्सान को इस चीज़ की सख़्त आवश्यक्ता है (सनाई)

२२. इस से पूर्व की आयतों में अल्लाह तआ़ला ने तौहीद पर निर्धारित दलाइल को पेश करने के बाद यहाँ से कुफ़्फ़ार और मुश्रिकों के बुरे अ़क़ीदों का ज़िक्र कर उन को लानत-मलामत का सिलसिला आरंभ किया है। आयत न० ५५ में बयान फ़रमाया कि यह मूर्ख मुझे छोड़ कर ऐसी चीज़ों की पूजा करते हैं जो न किसी को लाभ पहुंचा सकते हैं न हानि। इन के पास कोई दलील भी नहीं है जिस की बुनियाद पर ऐसा करना उन के लिये जाइज़ हो। बस केवल अपने नफ़्स की ख़्वाहिश के सबब वह बुतों की पूजा-पाठ करते हैं और उन के लिये लड़ते मरते हैं। और उन्हीं बुतों को ले कर अल्लाह और उस के रसूल से दुश्मनी रखते हैं। (इब्ने कसीर)

لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ ۚ وَكَفَىٰ بِهِ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا ۝
الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ
أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ الرَّحْمَٰنُ فَاسْأَلْ بِهِ
خَبِيرًا ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَٰنِ قَالُوا وَمَا
الرَّحْمَٰنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ۩ ۝ تَبَارَكَ
الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا وَ

और उसी की तारीफ़ के साथ तस्बीह-तहलील पढ़ते रहो और (याद रखो कि) वह अपने बन्दों के गुनाहों से पूरी तरह ख़बरदार है[२३] ५९. वह वही तो है जिस ने आसमान और ज़मीन और उन दोनों के दर्मियान की चीज़ों को छः दिनों में पैदा किया, फिर उस ने अर्श पर क़रार पकड़ा, वह (बहुत ही रहम करने वाला) रहमान है, पस तू उसी से (अपनी तमाम ज़रूरतों के मुतअ़ल्लिक़) प्रश्न किया कर जो ख़बरदार है ६०. और जब➲

قَمَرًا مُّنِيرًا ۝ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ أَرَادَ أَن يَذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ۝ وَعِبَادُ الرَّحْمَٰنِ الَّذِينَ يَمْشُونَ عَلَى الْأَرْضِ هَوْنًا وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ۝ وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا ۝ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۝ إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۝ وَالَّذِينَ إِذَا أَنفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا

उन (मुतकब्बिरों {घमंडियों})से कहा जाता है कि रहमान की इताअ़त करो (तो यह अभाग्य) कहते हैं कि रहमान कौन है? क्या हम उस को सज्दा करें जिस का तू हुक्म देता है? और उन की नफ़रत में बढ़ोतरी ही होती है[२४] ६१. वह बर्कत वाली ज़ात है जिस ने आसमानों में सय्यारों (नक्षत्रों) की मन्ज़िल बनायीं (जिन में बारह महीनों के हिसाब से वह चलते हैं) और उन आसमानों में एक सूर्य और चमकता हुआ चन्द्रमा बनाया ६२. और रहमान वह ज़ात है जिस ने रात और दिन को एक दूसरे के आगे-पीछे लाने वाला बनाया यह उन लोगों के लिये है जो नसीहत करें या शुक्र करना चाहें[२५]। ६३. (उन के आ़माल का बयान ग़ौर से सुनो!) रहमान के नेक बन्दे वह लोग हैं जो ज़मीन पर नर्मी से चलते हैं[२६] (ग़ुरूर और तकब्बुर का नाम तक नहीं जानते) और जाहिल लोग जब उन का सामना करते हैं तो वह (मुक़ाबला करने के बजाए) सलाम कहते हैं। ६४. और (रहमान के बन्दे) वह हैं जो रात अपने रब के सामने सज्दे और क़ियाम में {नमाज़ में खड़े हो कर} गुज़ारते हैं ६५. और वह लोग हैं जो कहते हैं कि ऐ हमारे पर्वरदिगार! हम से जहन्नम का अ़ज़ाब हटा लीजिये (क्योंकि) उस का अ़ज़ाब बड़ी भारी मुसीबत है। ६६. (अल्लाह की पनाह!) वह तो बहुत ही बुरा ठिकाना और बहुत ही बुरा स्थान है। ६७. और वह लोग (अल्लाह के बन्दे) हैं कि जब ख़र्च करते हैं तो न फ़ुज़ूलख़र्ची में उड़ाते हैं

....

२३. यहाँ आयत न० ५६ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को दिलासा देना मक़सूद है कि ऐ हमारे नबी! हम ने आप को केवल इस लिये नबी बना कर भेजा है कि अल्लाह से डरने वाले और नेक लोगों को अल्लाह के हाँ सवाब की ख़ुशख़बरी सुना दें और इन्कारियों को अल्लाह के अ़ज़ाब से ख़ौफ़ दिला दें। अब अगर यह लोग आप की नसीहत से लाभ उठा कर ईमान न लायें तो न लायें, और आप कुछ भी चिन्ता न करें, इस लिये कि आप उन को हिदायत पर लाने के ज़िम्मेदार नहीं हैं। आप का काम तो केवल हमारा आदेश उन तक पहुंचा देना था वह आप कर चुके। आप उन से कह दें कि मैं तुम से तब्लीग़ व नसीहत के बदले में मज़दूरी भी नहीं मांगता मेरे इस काम की मज़दूरी तो अल्लाह के पास है, मेरी मज़दूरी अल्लाह के हाँ मुक़र्रर हो चुकी है (तर्जुमान, तफ़्सीर ख़ाज़िन वग़ैरह)

२४. आयत न० ६० में (रहमान की इताअ़त करो) में यह बात बताई जा रही है कि मुश्रिक इस बात का इन्कार करते थे कि अल्लाह का नाम रहमान रखें। चुनान्चे सुल्ह हुदैबिय्या के मौक़े पर जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अ़ली से फ़रमाया कि लिखो "बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम"। तो उन्हों ने कहा कि हम रहमान और रहीम को कुछ नहीं जानते। बस वैसे ही आरंभ करो जिस प्रकार पहले से किया जाता रहा है यानी "बिस्मि-कल्लाहुम्म" (ऐ अल्लाह! तेरे नाम से आरंभ) दूसरे स्थान पर (बनी इस्राईल-११०) "अल्लाह कह कर पुकारो या रहमान कह कर........."। यहाँ मुश्रिक कहते हैं कि रहमान को नहीं पहचानते और तुम्हारे कहने से हम थोड़े ही रहमान को सज्दा करें गे। कुछ मुश्रिक मज़ाक़ करते हुये कहते कि तू तो यमामा के रहमान को पुकारने का हुक्म

➲देता है (मुसैलमा बिन कज़्ज़ाब जिस ने नबुव्वत का दावा किया था वह यमामा का रहने वाला था। मुश्रिक उसे रहमान के नाम से जानते थे) इन्हीं तमाम बातों की इस आयत में तर्दीद की गयी है। (वहीदी तर्जुमानुल क़ुरआन) उलमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि जब कोई बन्दा इस आयत (न० ६०) की तिलावत करे तो अवश्य ही सज्दा-ए-तिलावत करे। इसी प्रकार सुनने वाले के लिये भी आदेश है।

२५. आयत न० ६२ में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मैं अल्लाह दिन-रात को एक दूसरे के पीछे चलाता हूँ। ऐसा करने से मेरे बन्दों को यह लाभ पहुंचता है कि अ़िबादत और दूसरे दीनी कार्यों के लिये समय सुनिश्चित कर सकें। और अगर किसी का अ़मल रात में फ़ौत हो जाये तो उस की पूर्ति दिन में और अगर किसी का अ़मल दिन में फ़ौत हो जाये तो उस की पूर्ति रात में कर सके। एक सहीह हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआ़ला रात में अपना हाथ फैलाता है ताकि दिन का गुनाह-गार रात में तौबा कर ले और इसी प्रकार दिन में हाथ फैलाता है ताकि रात का गुनहगार दिन में तौबा कर ले"। अबू दावूद तयालसी रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने एक बार चाश्त (सूरज चढ़े) की लंबी नमाज़ पढ़ी तो किसी ने चकित हो कर पूछा कि आप तो ऐसा न करते थे? इस पर हज़रत उमर ने फ़रमाया: मेरी रात की दुआ़ और दरूद का कुछ हिस्सा बाक़ी रह गया था तो सोचा कि दिन में सूरज चढ़ते पूरा कर लूँ। फिर हज़रत उमर ने यही आयत न० ६२ तिलावत फ़रमाई (तर्जुमान नवाब सिद्दीक़ी हसन रह०)

२६. 'रहमान के नेक बन्दे वह हैं' यहाँ से अल्लाह के नेक बन्दों की ख़ूबियाँ बयान की जा रही हैं (१) वह तकब्बुर करने वालों की तरह अकड़ कर नहीं चलते, बल्कि बड़ी नर्मी और ख़ाकसारी से चलते हैं (२) जब जाहिलों और मूर्खों से बात करते हैं तो उन की बेतुकी और बेहूदा बातों का उत्तर जिहालत से नहीं देते, बल्कि माफ़ कर देते हैं। इन दोनों ख़ूबियों का संबन्ध तो बन्दों के साथ था। और अल्लाह के साथ मामला यह होता है कि (३) अल्लाह के सामने क़ियाम और सज्दे में रातें बसर करते हैं। फिर भी उन को अपनी अ़िबादत और इताअ़त पर भरोसा नहीं होता, इसी लिये वह अपने इन नेक कामों पर गुरूर नहीं करते (४) और जब वह लोग ख़र्च करते हैं तो नाजायज़ कामों पर ख़र्च कर के फ़ुज़ूल ख़र्ची और जायज़ कामों में न ख़र्च कर के बख़ीली नहीं करते, बल्कि बीच की राह इख़्तियार करते हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "हर काम में सब से बेहतर तरीक़ा बीच की राह इख़्तियार करना है"। एक अन्य हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "बीच की राह इख़्तियार करने वाला मुहताज नहीं होता"। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया है: "आदमी के बुद्धिमान होने की पहचान यह है कि वह अपने गुज़र-बसर और खान-पान में बीच की राह इख़्तियार करता है"।

यहाँ तक तो अल्लाह के नेक बन्दों की ख़ूबियों का ज़िक्र था। आगे उन नेक बन्दों के गुनाहों से बचने और जिन कामों से मना किया गया है उन से दूर रहने का ज़िक्र फ़रमाया है (ख़ाज़िन)

وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾ وَالَّذِيْنَ لَا
يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ
حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ
اَثَامًا ﴿٦٨﴾ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ
فِيْهٖ مُهَانًا ﴿٦٩﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا
فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ

और न कन्जूसी करते हैं (बल्कि) उन की चाल उस के दर्मियान की होती है। ६८. और वह लोग हैं जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद को नहीं पुकारते[२७] और जिस जान के मारने से अल्लाह ने मना किया है उस को नाहक़ {अकारण} नहीं मारते और न ज़िना करते हैं (क्योंकि वह जानते हैं कि यह काम बुरे हैं) और जो कोई यह काम करे गा वह अपने गुनाह की➲

غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٧٠ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهٗ يَتُوْبُ
إِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ۝٧١ وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ وَإِذَا مَرُّوْا
بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ۝٧٢ وَالَّذِيْنَ إِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ
لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ۝٧٣ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ
رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَّ
اجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ إِمَامًا ۝٧٤ أُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ
بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ۝٧٥ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ۭ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝٧٦ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ
لَوْلَا دُعَاۤؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ۝٧٧

➲सज़ा भुगते गा ६९. क़ियामत के दिन (कुफ़्र और शिर्क करने की वजह से) उस को दो गुना अ़ज़ाब हो गा और वह उस में हमेशा के लिये ज़लील व रुस्वा हो कर रहे गा ७०. लेकिन जिन लोगों ने (ऐसे गुनाहों से) तौबा कर के नेक अ़मल किये हों गे, अल्लाह उन की बुराइयों को नेकियों से तबदील कर दे गा (क्योंकि अल्लाह को बन्दों की तौबा बहुत अच्छी मालूम होती है) और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है ७१. (यह नियम है कि) जो कोई तौबा कर के नेक अ़मल करते हैं (वास्तव में) वही अल्लाह की तरफ़ झुकते हैं ७२. और वह लोग हैं जो बेहूदा कामों पर हाज़िर नहीं होते और जब किसी बेहूदा काम के पास से उन का गुज़र होता है तो अ़िज़्ज़त के साथ गुज़र जाते हैं ७३. और वह लोग हैं कि जब उन को पर्वरदिगार के अहकाम से हिदायत की जाये तो बहरे और अन्धे हो कर उन पर नहीं गिरते[२८] (अथवा इस प्रकार नहीं सुनते कि गोया सुना ही नहीं, बल्कि इस तरह सुनते हैं कि उन पर अ़मल भी करें) ७४. और वह लोग हैं जो कहते हैं कि ऐ हमारे पर्वरदिगार! हम को हमारी बीवियों और औलाद से आँखों की ठन्डक अ़ता कर और हम को मुत्तक़ी लोगों का इमाम बना[२९] ७५. उन्हीं लोगों को उन के सब्र की वजह से बालाख़ाने मिलें गे और वहाँ दुआ़ और सलाम के साथ उन का इस्तिक़बाल {स्वागत} किया जाये गा। ७६. उन में वह हमेशा रहें गे जो बहुत ही अच्छा ठिकाना है और बहुत ही मुनासिब स्थान है। ७७. तू कह दे कि अगर तुम अल्लाह की अ़िबादत न करो गे तो अल्लाह को भी तुम्हारी पर्वा नहीं, सो तुम ने झुठलाया है पस वह तुम को चिमट जाये गा[३०] (ज़रा होश से रहना)

....

२७. यह उन की सब से बड़ी विशेष्ता है और इसी पर उन की नजात निर्भर है। उन का अ़मल यह है कि किसी बला और मुसीबत में किसी अन्य से मदद नहीं चाहते, बल्कि केवल अल्लाह को पुकारते हैं (सनाई) निःसंदेह अल्लाह के सच्चे पुजारियों की यही विशेष्ता है।

२८. यानी इन पर अंधे हो कर नहीं गिरते, बल्कि सोच-समझ कर गिरते (सज्दा करते) हैं। कुछ लोगों ने इस का तर्जुमा यह किया है "वह अन्धे और बहरे हो कर नहीं पड़ जाते" यानि ख़ूब समझ-बूझ कर और कान लगा कर ग़ौर से सुनते हैं (वहीदी)

२९. एक क़ौल के अनुसार इस का तर्जुमा यह भी है "हम को परहेज़गारों का ताबेअ़ और मुरीद बना दे"। लेकिन सहीह बात यह है कि उन्हों ने अल्लाह से यह प्रश्न किया कि इताअ़त में हमें भी उन के दर्जे और मर्तबे तक पहुंचा दे कि हमारी भी मिसाल पेश की जाये (यानी हमारी भी पैरवी की जाये) (वहीदी, तर्जुमान)➲

३०. यानी तुम्हारी उस के सामने कोई हक़ीक़त नहीं। तुम तो एक मच्छर से भी कम अहमियत रखते हो। तुम उस से दुआ़ करते रहते हो इसलिये वह भी अपने रहम व करम से तुम पर कृपा करता रहता है और अ़ज़ाब नहीं करता है। वह चिमटना और वबाल का पड़ना यह हुआ कि वह बद्र की लड़ाई के दिन मारे गये ओर ज़लील हो कर बन्दी बनाये गये (वहीदी)

सूरः शु-अ़रा (26)

(٢٦) سُوۡرَةُ الشُّعَرَاۤءِ مَكِّيَّةٌ (٤٧)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

طٰسٓمّٓ ۝١ تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡكِتٰبِ الۡمُبِيۡنِ ۝٢ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ
نَّفۡسَكَ اَلَّا يَكُوۡنُوۡا مُؤۡمِنِيۡنَ ۝٣ اِنۡ نَّشَاۡ نُنَزِّلۡ عَلَيۡهِمۡ
مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتۡ اَعۡنَاقُهُمۡ لَهَا خٰضِعِيۡنَ ۝٤
وَمَا يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ ذِكۡرٍ مِّنَ الرَّحۡمٰنِ مُحۡدَثٍ اِلَّا كَانُوۡا عَنۡهُ
مُعۡرِضِيۡنَ ۝٥ فَقَدۡ كَذَّبُوۡا فَسَيَاۡتِيۡهِمۡ اَنۡۢبٰٓؤُا مَا كَانُوۡا بِهٖ
يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ۝٦ اَوَلَمۡ يَرَوۡا اِلَى الۡاَرۡضِ كَمۡ اَنۡۢبَتۡنَا
فِيۡهَا مِنۡ كُلِّ زَوۡجٍ كَرِيۡمٍ ۝٧ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا
كَانَ اَكۡثَرُهُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ۝٨ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الۡعَزِيۡزُ
الرَّحِيۡمُ ۝٩ وَاِذۡ نَادٰى رَبُّكَ مُوۡسٰٓى اَنِ ائۡتِ الۡقَوۡمَ

सूरः शुअ़रा मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में २२७ आयतें और ११ रूकूअ़ हैं।

आरंभ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

१. तासीम्मीम्[१] २. यह अहकाम रोशन किताब के हैं[२] ३. शायद तू इस ग़म में कि यह लोग ईमान नहीं लाते खुदकुशी {आत्म हत्या} कर लेगा[३] ४.(तुझे इन की फ़िक्र क्या पड़ी है। यह जान रख कि)अगर हम चाहें तो आकाश से कोई ऐसा निशान उतारें कि उन की गर्दनें उन के सामने झुक जायें (ऐसी कोई आफ़त भेज दें कि कोई बात न बन पड़े) ५. और(अब तो उन की यह हालत है कि)जो भी नयी नसीहत अल्लाह मेहरबान की तरफ़ से उन को पहुंचती है तो उस से मुंह मोड़ लेते हैं[४] ६.इस लिये (अब तो) उन्होंने (साफ़-साफ़ हमारी भेजी हुयी किताब को) झुठलाया है सो जिन बातों पर यह हंसते हैं उन की (सही-सही) सूचनायें उन के पास (बहुत जल्द) आ जायें गी ७. क्या उन्हों ने पृथ्वी की ओर कभी नज़र नहीं[५] की कि क्या-क्या बेहतरीन क़िस्म की वस्तुयें हम ने उस में पैदा की हैं ८. कुछ संदेह नहीं कि इस में एक तर्क है लेकिन उन में के बहुत से लोग ईमान नहीं लाते (केवल ज़िद पर अड़े रहते हैं) ९.और बेशक तेरा पर्वरदिगार बड़ा ग़ालिब और बड़ा रहम करने वाला है[६] १०+११.और जब तेरे पर्वरदिगार ने मूसा को पुकार कर कहा कि ज़ालिम क़ौम फ़िरऔनियों के पास जा

....

यह सुरः मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी, मगर आख़िर की पाँच आयतें मदीना शरीफ़ में उतरीं। हज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़ि से रिवायत है कि नबी करीम सल्ललाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मुझे अल्लाह तआ़ला ने तौरात की जगह "सब्अ़े तवाल" और इन्जील की जगह "अलिफ़ लाम्मीम स्वाद", ज़ुबूर की जगह "तवासीम" अ़ता की

➲और "हवामीम" और "मुफ़स्सल" अ़ता कर के फ़ज़ीलत बख़्शी। मुझ से पूर्व किसी नबी ने इन की तिलावत नहीं की (जुमल) इस सूरः में २२६ अथवा २२७ आयतें हैं (वहीदी)

१. 'तासीम्मीम' यह हुरूफ़ मुक़त्तआ़त में से है। इन काअर्थ केवल अल्लाह ही को मालूम है। मौलाना अमृतसरी मर्हूम ने इस का मफ़्हूम यूँ बयान फ़रमाया है: मैं हूँ बड़ी पाकी और सलामती वाला दुनिया जहान का बादशाह"। मगर हक़ीक़त यह है कि इस शब्द का अर्थ केवल अल्लाह ही को मालूम है (राज़)

२. यानी यह सूरः जिसे नबी करीम सल्ललाहु अ़लैहि वसल्लम लोगों को पढ़ कर सुना रहे हैं, खुली किताब की आयतें हैं जिन का अर्थ बिल्कुल साफ़ और स्पष्ट है। इस के समझने में तनिक भर कठिनाई नहीं होती और न ही किसी शक का संदेह होता है। 'किताब' से मुराद कुरआन मजीद और 'मुबीन' के माना "स्पष्ट,वाज़ेह" के हैं। अर्थ यह हुआ कि कुरआन हक़ और बातिल के दर्मियान फ़र्क़ करने वाली किताब है (इबने कसीर)

३. 'ल-अ़ल्ल-क' (शायद तू) यहां पर "शायद" से शक या संदेह मुराद नही है। इस लिये कि अल्लाह तआ़ला शक व शुब्हे से पाक है। यहां पर "शायद" मेहरबानी के लिये इस्तेमाल हुआ है। मतलब यह है कि अपने आप पर आसानी करो और रंज व ग़म को कम करो। नबी करीम सल्ललाहु अ़लैहि वसल्लम को इस बात की बड़ी ख़्वाहिश थी कि मक्का वाले मुसलमान हो जायें, इस लिये अल्लाह तआ़ला ने इस आयः में तसल्ली दी कि इतना रंज व ग़म करने की ज़रूरत नहीं कि अपने आप को हलाक कर लो(वहीदी)

४. आयत न० ५ का अर्थ यह है कि अगर अल्लाह चाहे तो उन को ईमान लाने पर मजबूर कर सकता है, मगर चूंकि यह लोग हमेशा के शक्की और सरकश, हैं इस लिये जब कुरआन उतरता है तो उस को झुटलाने और हक़ की तौहीन करने पर हमेशा आमादा रहते हैं। यह लोग बहुत जल्द अपने किये की सज़ा भुगतें गे। इस आयत में कुफ़्फ़ार को सख़्त धमकी दी गयी है(तर्जमान)

५. आयत न०७ में अल्लाह तआ़ला अपनी अ़ज़मत, बुज़ुर्गी, बड़ाई और जलाल का इज़हार कर के लोगों को अपनी कुदरत की तरफ़ झुकाता है ताकि उस की हिक्मत पर दलील ले सकें।

६. 'वह बड़ा रहम वाला है' इस लिये जल्दी नहीं पकड़ता, बर्ना इन की क्या हक़ीक़त है। इन से पहले बड़ी-बड़ी क़ौमें बीत चुकी है, जब उन की शरारत और मुख़ालिफ़त सीमा को पार कर गयी तो अल्लाह के अज़ाब ने उन को धर दबोचा, तो इन को तबाह करने में कितना समय लगे गा। इन लोगों को हज़रत मूसा और फ़िरऔ़न का क़िस्सा भली भाति मालूम है........(सनाई)

ٱلظَّٰلِمِينَ ⑩ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۚ أَلَا يَتَّقُونَ ⑪ قَالَ رَبِّ
إِنِّىٓ أَخَافُ أَن يُكَذِّبُونِ ⑫ وَيَضِيقُ صَدْرِى وَلَا
يَنطَلِقُ لِسَانِى فَأَرْسِلْ إِلَىٰ هَٰرُونَ ⑬ وَلَهُمْ عَلَىَّ
ذَنۢبٌ فَأَخَافُ أَن يَقْتُلُونِ ⑭ قَالَ كَلَّا ۖ فَٱذْهَبَا
بِـَٔايَٰتِنَآ ۖ إِنَّا مَعَكُم مُّسْتَمِعُونَ ⑮ فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَآ
إِنَّا رَسُولُ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ⑯ أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِىٓ
إِسْرَٰٓءِيلَ ⑰ قَالَ أَلَمْ نُرَبِّكَ فِينَا وَلِيدًا وَلَبِثْتَ

क्या वह डरते नहीं? १२. (हज़रत मूसा ने) कहा: मेरे पर्वरदिगार! मुझे डर है कि वह मुझे झुठलाएं गे १३. और (पैदाइशी तौर पर) मेरा सीना तंग है और मेरी ज़बान भी (बोलने से कुछ) रुकती है इस लिये तू (मेरे भाई) हारून को रसूल बना दे १४. और (इस के अ़लावा) उन का मेरे ज़िम्मा एक गुनाह है (उन का एक आदमी मेरे हाथों ग़ल्ती से मारा गया था) इस लिये मुझे डर है कि वह मुझे क़त्ल न कर दें १५. अल्लाह ने फ़रमाया: हर्गिज़ नहीं (मार सकें गे) तुम➲

فِيۡنَا مِنۡ عُمُرِكَ سِنِيۡنَ ﴿١٨﴾ وَفَعَلۡتَ فَعۡلَتَكَ الَّتِىۡ
فَعَلۡتَ وَاَنۡتَ مِنَ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿١٩﴾ قَالَ فَعَلۡتُهَاۤ اِذًا وَّاَنَا
مِنَ الضَّآلِّيۡنَ ﴿٢٠﴾ فَفَرَرۡتُ مِنۡكُمۡ لَمَّا خِفۡتُكُمۡ فَوَهَبَ
لِىۡ رَبِّىۡ حُكۡمًا وَّجَعَلَنِىۡ مِنَ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ﴿٢١﴾ وَتِلۡكَ
نِعۡمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَىَّ اَنۡ عَبَّدتَّ بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ ﴿٢٢﴾ قَالَ
فِرۡعَوۡنُ وَمَا رَبُّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٢٣﴾ قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ

हमारे निशानों के साथ जाओ, हम तुम्हारे साथ सुनते हों गे[७]। १६. तुम दोनों फ़िऔ़न के पास जा कर उस से कहो कि हम रब्बुल् आ़लमीन के रसूल हैं (तेरी तरफ़ आदेश ले कर आये हैं) १७. कि तू हमारे साथ बनी इस्राईल को भेज दे (और बिला कारण उन को तंग न कर। जब यह संदेश फ़िऔ़न ने सुना तो) १८. कहा: क्या तुझे हम ने अपने में बच्चा सा पालन-पोषण नहीं किया और तू हम में अपनी उम्र के बहुत से साल रह चुका है १९. और तू ने वह काम भी किया हुआ है जिसे तू भी जानता है और तू बड़ा ही नाशुक्रा है २०. मूसा ने (तवज्जुह करने को) कहा: मैं ने वह काम बेशक किया था मगर जब मैं स्वयँ भी गुमराहों में था (न नबी था और न ही किसी मर्तबे पर) २१. फिर जब मैं तुम से डरा तो मैं (मदयन की तरफ़) भाग गया और मेरे रब ने मुझे (नबुव्वत का) हुक्म दिया और मुझे रसूलों की जमाअ़त में से किया[९] २२. और (जो मेरे पालन-पोषण का ज़िक्र तुमने किया) यह भी कोई एहसान है जो मुझ पर जतलाता है कि बनी इस्राईल को तू ने गुलाम बना रखा है[१०] २३. फ़िऔ़न ने कहा: वह रब्बुल् आ़लमीन कौन है? २४. मूसा ने कहा: वह आसमानों और ज़मीनों और उन के दर्मियान की चीज़ों का पर्वरदिगार है

....

७. 'हारून को भी रसूल बना' ताकि वह भी मेरा साथ दे और हम दोनों मिल कर पैग़ंबरी सेवा बजा लायें और एक दूसरे की सहायता से दिल मज़बूत रहे और किसी प्रकार की घबराहट का एहसास न हो। और इस के अलावा एक और बात भी है जो ख़तरे का कारण है..........(सनाई)

८. हज़रत मूसा अ़लै० ने अल्लाह तआ़ला के सामने तीन उज़्र पेश किये। (१) मुझे इस बात की शंका है कि फ़िऔ़नी मुझे झुठलायें गे (२) बचपन में ज़बान जल जाने के कारण बात करने में कठिनाई हो रही है (३) फ़िऔ़नियों का मुझ पर एक गुनाह का दावा है, इस लिये मुझे शंका है कि फ़िऔ़नी उस कि़ब्ती के क़त्ल के बदले में अहकाम की तब्लीग़ से पूर्व ही क़त्ल कर डालें गे। अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा का यह उज़्र सुन कर फ़रमाया: तुम इन तीनों में किसी भी बात की चिन्ता न करो, वह तुम्हारा कुछ भी न बिगाड़ सकें गे। हम हारून को भी नबी बना कर उस के ज़रीआ़ तुम्हारी सहायता करें गे और अन्ततः (आख़िरकार) फ़िऔ़नियों पर तुम्हें ग़लबा दें गे। (तर्जुमान)

९. फ़िऔ़न मर्दूद ने हज़रत मूसा पर गोया यह आरोप लगाया कि जिस के हाथ से ख़ून हुआ हो वह पैग़ंबर कैसे बन सकता है? हज़रत मूसा ने उत्तर दिया वह ख़ून वास्तव में ख़ून न था, इसलिये कि मैं ने क़त्ल के इरादे से उस को नहीं मारा था। बल्कि एक कमज़ोर को ताक़तवर से बचाने के लिये घूंसा मारा था और यह इत्तिफ़ाक़ ही है कि इतनी मामूली चोट से वह मर गया। तो पहली बात तो यह कि मेरा उसे मारना गुनाह नहीं है, दूसरे यह कि पैग़ंबरी मुझे बाद में मिली है। अल्लाह को इख़्तियार है जिस को चाहे यह पद-भार सौंप दे, इस में किसी का कोई इख़्तियार तो है नहीं (वहीदी)

१०. 'गुलाम बना रखा है' अगर तू ने मुझे पाला-पोसा और मेरी पर्वरिश की तो इस से क्या हुआ, तू ने मेरी क़ौम

➲और भाइयों को तो गुलाम बना रखा है। इसलिये मुझ पर ज़ाती तौर पर एहसान कर के तुम पूरी क़ौम की गुलामी के गुनाह से थोड़े ही बच सकते हो। इस क़ौमी तब्राही-बर्बादी के मुक़ाबले में मुझ पर ज़ाती एहसान कर के जताना बिल्कुल ही बेमाना है, बल्कि इस को एहसान भी नहीं कहा जाये गा। एक शख़्स तमाम मुसलमानों को लूट कर उन का घर तबाह-बर्बाद कर दे और उन के माल व दौलत पर क़ब्ज़ा कर ले, फिर उन्ही में से एक-आध की अपने ज़ाती फ़ाइदे के लिये पर्वरिश करने लगे, तो ऐसे शख़्स को एहसान करने वाला नहीं कहा जाये गा, ऐसे को तो मुसलमानों का क़ातिल और दुश्मन कहा जाये गा। मतलब यह है क़ौमी नुक़्सान के सामने ज़ाती एहसान की कोई हैसियत नहीं।

कुछ उलमा ने इस आयत का मतलब यह लिखा है कि तू ने मुझे बच्चों की तरह पाला-पोसा तो दूसरी तरफ़ पूरे बनी इस्राईल को जो गुलाम बना लिया और उन के लड़कों को एक तरफ़ से क़त्ल कर डाला। इसी भय और ख़ौफ़ से मेरी माँ ने मुझे संदूक़ में रख कर दरिया में डाल दिया था और तेरी बीवी ने मेरी पर्वरिश की। तो क्या यह भी एहसान है? (वहीदी, तर्जुमान)

وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٢٤﴾ قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗۤ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْۤ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٢٧﴾ قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾ قَالَ فَاْتِ بِهٖۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿٣٢﴾ وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿٣٣﴾ قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗۤ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ ۖ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ قَالُوْۤا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٣٦﴾ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ﴿٣٧﴾ فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٣٨﴾ وَّقِيْلَ

अगर तुम लोग यक़ीन करने वाले हो २५. फ़िर्औन ने अपने आस-पास वालों से कहा कि क्या तुम नहीं सुनते? (यह कैसी बहकी-बहकी बातें करता है) २६. मूसा ने कहा: वह रब्बुल् आ़लमीन, तुम्हारा और तुम्हारे पहले बाप-दादाओं का पर्वरदिगार है। २७. फ़िर्औन बोला: तुम्हारा यह रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है मजनून है (देखो तो कैसी बेअ़क़्ली की बातें करता है) २८. मूसा ने कहा: (वह अल्लाह तो) पूरब और पश्चिम और उन दोनों के दर्मियान की चीज़ों का पर्वरदिगार है। अगर तुम कुछ अक़्ल रखते हो[११]। २९. फ़िर्औन ने कहा: अगर तू ने मेरे अ़लावा और माबूद बनाया तो मैं तुझे (जेलख़ाना के) बन्दियों में भेज दूँ गा[१२] ३०. मूसा ने कहा: अगर्चे खुला सबूत भी लाऊँ[१३]? (तो भी तुम मुझे क़ैद कर दो गे) ३१. फ़िर्औन ने कहा: अगर तू सच्चा है तो वह सबूत पेश कर(और सामने ला) ३२. पस मूसा ने अपनी लाठी फेंक दी और वह उसी समय अज़दहा {अजगर साँप} हो गई ३३. और अपना हाथ निकाला तो वह देखने वालों की नज़र में सफ़ेद (चमकीला) था ३४. फ़िर्औन ने अपने आस-पास के सर्दारों से कहा कि यह केवल बड़ा माहिर जादूगर है (तुम जानते हो कि इस की इच्छा क्या है?) ३५. यह चाहता है कि अपने जादू के ज़ोर से तुम्हारे मुल्क➲

➲से तुम को निकाल दे (और स्वयँ बादशाह बन बैठे) सो तुम क्या राय देते हो? ३६. उन्हों ने कहाः हुज़ूर {श्रीमान जी!} उस को और उस के भाई को मुहलत दीजिये और शहरों में जादूगरों को जमा करने वाले भेज दीजिये ३७. वह हुज़ूर जी के पास हर एक जादूगर को ले आयें[१४] ३८. पस निश्चित दिन और निश्चित समय पर सब जादूगर जमा हो गये ३९. और लोगों से कहा गया कि (फ़लाँ समय)

....

११. हज़रत मूसा और फ़िऔ़न की बात-चीत का खुलासा यह है कि फ़िऔ़न की क़ौम चूंकि उस को खुदा मानती थी इस लिये जब फ़िऔ़न ने "दुनिया का रब कौन है"? कहा तो हज़रत मूसा ने उस को समझाने के लिये अल्लाह तआ़ला की सिफ़त बयान की और फ़िऔ़न से कहा कि तू तो अभी चन्द रोज़ का पैदा हुआ है, तुम से पहले कौन खुदा था? तो जो खुदा तुम से पहले के बाप-दादाओं का था वही तुम्हारा भी है। यह सुन कर फ़िऔ़न ने अपने साथियो और सर्दारों से कहाः देखो तो यह शख़्स कैसी बहकी-बहकी बातें करता है। इस अक़्ली दलील के अ़लावा दूसरी दलील हज़रत मूसा ने यह दी कि ऐ फ़िऔ़न तू यूँ भी खुदा नहीं हो सकता कि तू तो एक छोटे से मुल्क मिस्र का बादशाह है और हमारा रब तो पूरब से पश्चिम और उस के दर्मियान की तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ और मालिक़ है। तो भला मिस्र वालों से बड़ा मूर्ख और कौन हो गा कि एक छोटे से मुल्क मिस्र के बादशाह को तो खुदा समझें और जो मिस्र समेत पूरब से पश्चिम तक की पूरी ज़मीन का मालिक है उस को खुदा न समझें।

कुछ उलमा ने आयत न०२८ की इस प्रकारतशरीहकीहैकि हज़रत मूसा ने अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत की निशानी समझाते हुये कहा कि सूरज का एक तरफ़ से निकल कर दूसरी तरफ़ डूबना और वह भी अपने निश्चित समय पर, यह सब अल्लाह के अ़लावा और किसी का काम नहीं हो सकता। (वहीदी, तर्जुमान)

१२. इस आयत से उन लोगों का रद्द होता है जो अल्लाह को मख़्लूक़ का अ़ैन (हूबहू) समझते हैं, इस लिये कि फ़िऔ़न ने हज़रत मूसा को इसी कारण धमकाया था कि वह अल्लाह को फ़िऔ़न का ग़ैर समझते थे। और हक़ीक़त भी यही है कि तमाम शरीअ़तों और तमाम नबिय्यों ने यही कहा है कि अल्लाह की ज़ात अलग है और मख़्लूक़ अलग। और अगर ख़ालिक़ और मख़्लूक़ की ज़ात को एक मान लिया जाये तो फिर तो सारी इ़बादत बेकार और शरीअ़त के सारे अहकाम बेमाना हो कर रह जायें गे। मतलब यह है कि अल्लाह का वजूद बिल्कुल अलग ही है।

१३. यानी मैं अगर स्पष्ट दलील पेश करूँ तब भी तुम मुझे क़ैद कर दो गे? ज़ाहिर है स्पष्ट दलील को पा कर कोई भी अक़्लमन्द यह नहीं कहे गा कि तब भी मैं क़ैद कर दूँ गा और अगर कोई बेवक़ूफ़ी करे भी तो कोई भी उस की इस हर्कत को सहीह नहीं तस्लीम करे गा। इसीलिये फ़िऔ़न ने तो यह न कहा कि "मैं तुझे भी क़ैद कर दूँ गा" बल्कि यह कहा कि.............(सनाई)

१४. 'माहिर जादूगरों को ले आयें' वही उस का मुक़ाबला करें गे। हम यह भी कर सकते हैं कि मूसा को दम के दम में मौत के घाट उतार दें लेकिन ऐसा करने से आ़म जनता में बदगुमानी फ़ैल जाये गी कि मूसा के कमाल का उत्तर जब न बन पड़ा तो उसे क़त्ल ही कर डाला। इस लिये उचित यही है ईट का जवाब पत्थर से देते हुये ऐसे ही लोगों को बुलाया जाये। और मुल्क में ऐसे लोगों की कमी भी नहीं है। एक ढूँढें गे तो हज़ारों मिल जायें गे। चुनान्चे फ़िऔ़न ने दर्बारियों का यह मश्वरा सुन कर आदेश जारी कर दिया कि माहिर से माहिर जादू गरों को लाओ ताकि वह डट कर इस जादूगर (मूसा) का मुक़ाबला करें (सनाई)

तुम सब इकट्ठा हो जाओ ४०. ताकि हम (मूसा और हारून को पराजित कर के हुर्रे-हुर्रे का नारा मारते हुये) उन जादूगरों के पीछे आयें अगर➲

لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ۝ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ

اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤٠﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا
لِفِرْعَوْنَ اَئِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤١﴾
قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٢﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى
اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٤٣﴾ فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ
وَقَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَاَلْقٰى
مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿٤٥﴾ فَاُلْقِىَ
السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٧﴾
رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿٤٨﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ
اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِىْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ
فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۬ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ
خِلَافٍ وَّلَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٩﴾ قَالُوْا لَا ضَيْرَ ۡ
اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿٥٠﴾ اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا

वह ग़ालिब हों ४१. सो जब सब जादूगर आये तो उन्हों ने फ़िरऔन से कहा कि (हुज़ूर!) अगर हम ग़ालिब आयें तो हम को कुछ बदला भी मिले गा? ४२. फ़िरऔन ने कहा: हाँ, (क्यों नहीं! बदला के अलावा) मुक़र्रबों (दर्बारियों) में से हो जाओ गे। ४३. मूसा ने उन से कहा कि जो कुछ तुम डालना चाहते है डालो। ४४. पस उन्हों ने अपनी रस्सियाँ और पतली-पतली लकड़िया डाल दीं और बोले: फ़िरऔन की अिज़्ज़त से हम ही ग़ालिब हों गे। ४५. फिर मूसा ने भी अपनी लकड़ी फेंक दी तो जो कुछ जादूगर झूठ-मूट का जाल बनाते थे वह सब को चट कर जाता था[१५] ४६. पस जादूगर सज्दे में गिरायें गे ४७+४८. और बोले कि हम रब्बुल् आलमीन पर जो मूसा और हारून का पर्वरदिगार है, ईमान लाये[१६] ४९. फ़िरऔन ने कहा: क्या तुम मेरी अनुमति से पहले ही उस पर ईमान ले आये? बात यह है कि वह तुम्हारा बड़ा (गुरू) है जिस ने तुम को जादू सिखाया है, पस तुम (इस का बुरा परिणाम) जान लो गे। मैं तुम्हारे हाथ और पाँव उल्टे-सीधे काट दूँ गा और (इस के बाद) तुम सब को सूली पर लटका दूँ गा ५०. वह बोले (वाह, क्या ग़म है जब हम अल्लाह को मान चुके) कुछ हरज नहीं, हमें अपने पर्वरदिगार की तरफ़ वापस जाना है[१७] (तो कल न सही, आज ही सही) ५१. हम आशावान है कि हमारा पर्वरदिगार हमारे गुनाह बख़्श दे गा

....

१५. उन बेचारों को क्या पता था कि हम किस से मुक़ाबला कर रहे हैं। उन्हों ने तो यही सोचा था कि हमारा मुक़ाबला मूसा से है। मगर उन को अपनी ग़लती का जल्द ही एहसास हो गया कि यह जो काम मूसा ने किया है वह जादूगरी का नहीं, बल्कि--- कोई महबूब है इस पर्द-ए-ज़ंगारी में........(सनाई)

१६. फ़िरऔन ने जब देखा कि जिन लोगों को हम मुक़ाबला के लिये लाये थे (और इस बात का पूरा विश्वास था कि उन दोनों भाइयों पर ग़ालिब आ जायें गे और विजय प्राप्त करें गे) उल्टे यही लोग भी उन्हीं का कलिमा पढ़ने लगे। इस लिये इस ने जादूगरों को धमकाते हुये कहा..................(सनाई)

१७. एक दिन अवश्य ही मरना है। तू अगर ज़ुल्म कर के हम को मारे गा तो हमारा फ़ाइदा है कि शहादत का दर्जा मिले गा और सब्र का सवाब अलग पायें गे (वहीदी)

رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاَوْحَيْنَآ
اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ۝
فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ۝ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ
لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ۝ وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ۝ وَ
اِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ۝ فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّ
عُيُوْنٍ ۝ وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ۝ كَذٰلِكَ ۭ وَ
اَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝ فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ۝
فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ۝
قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ۝ فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى
مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ۭ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ
فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ۝ وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ۝ وَ
اَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ۝ ثُمَّ اَغْرَقْنَا
الْاٰخَرِيْنَ ۝ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ

इस वजह से कि हम सर्वप्रथम ईमान लाये हैं[१८] ५२. और हम ने मूसा की तरफ़ वह्यि भेजी[१९] कि तू हमारे बन्दों को रात के समय ले चल (मगर इतना याद रहे कि फ़िऔ़न की तरफ़ से) तुम्हारा पीछा किया जाये गा ५३. फ़िऔ़न ने तमाम शहरों में फ़ौज को जमा करने वाले भेजे ५४. (यह कह कर) कि यह लोग थोड़ी सी जमाअ़त हैं ५५. और हम को (ख़्वाह-मख़्वाह) गुस्सा दिला रहे हैं ५६. और हम (सत्ता धारी पार्टी और हुकूमत के अरकान) सब दूर की सोचने वाले हैं ५७+५८. (सुनो!) पस हम ने उन को बाग़ों और चश्मों और ख़ज़ानों और उम्दा स्थानों से बाहर निकाल दिया (वह बनी इस्राईल का पीछा करने के लिये निकले और डूबो दिये गये) ५९. वाक़िआ़ तो ऐसा ही है और हम ने उन का मालिक बनी इस्राईल को कर दिया[२०] ६०. फ़िऔ़नी सुब्ह होते ही उन के पीछे हो लिये ६१. पस जब दोनों जमाअ़तों में से एक ने दूसरी को देखा तो मूसा के साथियों ने कहा कि हम तो फंसे (इसलिये कि फ़िऔ़न की फ़ौज हमारे क़रीब आ गयी) ६२. मूसा ने कहा: हर्गिज़ ऐसा न होगा, कुछ शक नहीं कि मेरा पर्वरदिगार मेरे साथ है वह मुझे राह दिखाएगा ६३. बस (इतनी ही देर थी कि) हम ने मूसा को इल्हाम किया कि अपनी लक्ड़ी इस दरिया पर मार (चुनान्चे उस ने मारी) पस वह दरिया ऐसा फट गया कि उस का हर एक हिस्सा एक-एक टीला बन गया (बनी इस्राईल आराम के साथ दरिया से गुज़र गये) ६४. और हम औरों को (यानी फ़िऔ़नियों को) उसी स्थान पर ले आये ६५+६६. और हम ने मूसा और उस के सब साथियों को (डूबने से) बचा लिया, फिर दूसरों को वहाँ डुबो दिया ६७. निःसंदेह इस (घटना) में एक बड़ी निशानी है और उन में से बहुत से लोग बेईमान हैं

....

१८. उन के ईमान लाने के पश्चात् उन की देखा-देखी और बहुत से लोग भी ईमान ले आये। कहा जाता है कि छः लाख सत्तर हज़ार फ़िऔ़नी उस दिन ईमान लाये (वहीदी)

१९. आयत न० ५२ में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हम ने हज़रत मूसा को वह्यि की कि मेरे बन्दों (यानी बनी इस्राईल) को रातों-रात मिस्र से ले कर निकल जाओ,क्योंकिअब फ़िऔ़नियों को तबाह करने और बनी इस्राईल को नजात देने का समय आ गया है। फ़िऔ़न और उस की सेना तुम्हारा पीछा अवश्य करे गी लेकिन तुम को घबराने की कोई आवश्यक्ता नहीं। हम तुम को सहीह सलामत दरिया पार करा दें गे और तुम्हारे दुश्मन क़िब्तियों को डुबो ➲

➲दें गे। हज़रत मूसा ने बनी इस्राईल को अल्लाह का आदेश सुनाया और यह तै पाया कि फ़लाँ रात को जब चन्द्रमा निकल आये तो तुम सब घरों से निकल कर फ़लाँ स्थान पर एकत्र हो जाना। बनी इस्राईल किसी ख़ुशी के समारोह का बहाना कर के फ़िरऔनियों से कुछ ज़ेवर (आभूषण) उधार ले कर प्रोग्राम के अनुसार सुनिश्चित स्थान पर एकत्र हो गये। हज़रत मूसा अ़लै० मिस्र से बनी इस्राईल को ले कर रातों-रात चल पड़े। फ़िरऔनियों को जब मालूम हुआ तो उन्हों ने उन का पीछा किया। कहा जाता है कि हज़रत मूसा के साथ बनी इस्राईल की संख्या छ: लाख सत्तर हज़ार के लग-भग थी और फ़िरऔन के लश्कर की संख्या सवा लाख। एक अन्य हदीस में है कि हज़रत मूसा के साथियों की संख्या एक लाख बीस हज़ार थी। दरिया में उन के पार होने के लिये बारह रास्ते बने और हर राह से बारह हज़ार लोग पार हुये। फ़िरऔन के सत्तर कमान्डर थे हर कमान्डर के साथ सत्तर हज़ार की सेना थी (इस प्रकार फ़िरऔनी फ़ौज की कुछ संख्या लगभग पचास लाख हुयी) एक और हदीस के अनुसार बनी इस्राईल की कुल संख्या सत्तर हज़ार के निकट थी। ख़ुलासा यह कि बनी इस्राईल की संख्या फ़िरऔनी फ़ौज के मुक़ाबला में बहुत थोड़ी थी (वहीदी)

यह एक आ़म धारणा रही है कि हर ज़माना में नेक लोगों की संख्या कम और बुरे लोगों की ज़्यादा रही है। मगर जीत हक़ परस्तों ही की हुयी है। आज-कल के बातिलपरस्तों के लिये मूसा और फ़िरऔन के वाक़िआ़ में ज़बर्दस्त इ़ब्रत है।

२०. इतिहास में यह सबूत नहीं मिलता कि बनी इस्राईल ने कभी मिस्र पर हुकूमत की हो, लेकिन क़ुरआन मजीद का कहना है कि उन बाग़ों और मकानों का बनी इस्राईल को वारिस बनाया। तो इस का उत्तर यह है क़ुरआन मजीद की उस आयत का यह अर्थ है कि फ़िरऔनी जिस प्रकार के बाग़, चश्मे, ख़ज़ाने और मकानात छोड़ गये थे, उसी तरह के बाग़ और चश्मे वग़ैरह हम ने बनी इस्राईल को दिये (ना कि फ़िरऔनियों के छोड़े हुये पर उन्हों ने क़ब्ज़ा किया) (सनाई)

مُّؤْمِنِينَ ﴿٦٧﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٦٨﴾ وَاتْلُ
عَلَيْهِمْ نَبَأَ إِبْرَاهِيمَ ﴿٦٩﴾ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ﴿٧٠﴾
قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عَاكِفِينَ ﴿٧١﴾ قَالَ هَلْ
يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ﴿٧٢﴾ أَوْ يَنفَعُونَكُمْ أَوْ يَضُرُّونَ ﴿٧٣﴾
قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٧٤﴾ قَالَ
أَفَرَأَيْتُم مَّا كُنتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٧٥﴾ أَنتُمْ وَآبَاؤُكُمُ
الْأَقْدَمُونَ ﴿٧٦﴾ فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّي إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿٧٧﴾
الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ﴿٧٨﴾ وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَ
يَسْقِينِ ﴿٧٩﴾ وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ﴿٨٠﴾ وَالَّذِي
يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِ ﴿٨١﴾ وَالَّذِي أَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لِي
خَطِيئَتِي يَوْمَ الدِّينِ ﴿٨٢﴾ رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَأَلْحِقْنِي
بِالصَّالِحِينَ ﴿٨٣﴾ وَاجْعَل لِّي لِسَانَ صِدْقٍ فِي

६८+६९. और तेरा पर्वरदिगार निःसंदेह बड़ा ही ग़ालिब और बड़ा ही रहम करने वाला है[२१]। और इब्राहीम (के एक वाक़िआ़) की सूचना उन को दे। ७०. जब उस ने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा कि तुम किन चीज़ों की इ़बादत करते हो? ७१. वह बोले कि हम तो उन बुतों की इ़बादत करते हैं, पस हम तो उन ही पर जमे रहेंगे ७२. इब्राहीम ने कहा: भला जब तुम उन को पुकारते हो तो क्या वह तुम्हारी कुछ सुनते हैं? ७३. या तुम्हें हानि लाभ पहुंचा सकते हैं? ७४. वह बोले: हम ने अपने बाप-दादा को ऐसा ही करते पाया (सो हम भी ऐसा ही करें गे) ७५+७६+७७. (आख़िर) इब्राहीम ने कहा कि (सुनो भाई!) जिन चीज़ों की तुम और तुम्हारे बाप-दादा इ़बादत करते आये हो उन सब (की इ़बादत) से मुझे दिली नफ़रत है (मैं मर जाऊँ मगर उन की तरफ़ सर न झुकाऊँ) लेकिन➲

الْاٰخِرِيْنَ ۝ وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ۝

➲रब्बुल आलमीन (मेरा हक़ीक़ी माबूद है) ७८. जिस ने मुझे पैदा किया है, बस वही मेरी राहनुमाई करे गा ७९. जो मुझे खाना खिलाता और पानी पिलाता है[२२] ८०. और जब मैं बीमार होता हूँ तो वही मुझे शिफ़ा {स्वाथ्य} देता है ८१. और जो (समय आने पर) मुझे मारे गा फिर मुझे जीवित करे गा ८२. जिस से मैं उम्मीद रखता हूँ कि न्याय के दिन मेरे दोष माफ़ करे गा ८३. (यह कह कर इब्राहीम अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह हुआ) ऐ मेरे पर्वरदिगार! मुझे हुक्म (यानी बात करने की क्षमता) अ़ता फ़रमा और मरने के पश्चात मुझे नेक लोगों से मिला दे। ८४. और पिछले लोगों में मेरा ज़िक्र सच्चाई से रख[२३] ८५. और मुझे नेमतों की जन्नत के वारिसों में से बना (यानी मैं मरने के बाद जन्नत का हक़दार बनूँ)

....

२१. आयत न० ६० ता ६८ तक में यह फ़रमाया गया है कि फ़िर्औन के लाव-लश्कर ने बनी इस्राईल का पीछा किया और दिन चढ़े उन को पा लिया। जब मूसा की क़ौम (बनी इस्राईल) ने उन को देखा तो घबरा कर मूसा से कहने लगे कि "हम तो घेर लिये गये"। यह लोग कुल्ज़ुम दरिया के किनारे पर थे। (इतिहास में नील दरिया लिखा है जो तहक़ीक़ के अनुसार सही नही है-ख़ालिद) आगे दरिया और पीछे फ़िर्औन का लश्कर और बीच में बनी इस्राईल की क़ौम। इन परिस्तिथियों में घबराना स्वभाविक था। हज़रत मूसा ने फ़रमाया: घबराने की कोई बात नहीं मेरा पर्वरदिगार मेरे साथ है वह राहनुमाई करे गा। उसी ने हिजरत का आदेश दिया है इसलिये वही हमारी सुरक्षा भी फ़रमाये गा। चुनान्चे अल्लाह ने आदेश दिया कि अपनी लाठी को दरिया के ऊपर मारो। हज़रत इब्ने अबी हातिम ने एक रिवायत नक़ल की है कि जब हज़रत मूसा अ़लै० दरिया के पास पहुंचे तो यह दुआ़ पढ़ी: या मन् का-न क़ब्-ल कुल्ल शैइन अल् मुकव्विनु लिकुल्लि शैइन इज्-अ़ल्लना मख़्-र-जा (ऐ वह ज़ात जो हर चीज़ से पहले था, हर चीज़ को बाक़ी रखने वाला, हमारे लिये बच निकलने की राह निकाल दे)

'तौद' ऊँचे और बड़े पहाड़ को कहते हैं। वह दरिया ऐसा ही हो गया। बनी इस्राईल पार हो कर बच गये और फ़िर्औनी बीच दरिया में डूब गये। (तर्जुमान, जुमल वग़ैरह)

२२. आयत न० ६९ से हज़रत इब्राहीम अ़लै० का वाक़िआ़ बयान है। मक़्सूद बयान करने का यह है कि मुश्रिकों को सूचित कर दीजिये कि हज़रत इब्राहीम (जिन की उम्मत होने का यह लोग दावा करते हैं) जब जवान हुये तो अपनी क़ौम वालों से कहा कि हम तो बुतों की पूजा नहीं करें गे। तुम भी उन की पूजा न करो। और बाप और क़ौम से कहा: यह क्या मूर्तियों के सामने धूनी रमाए बैठे रहते हो? उन्हों ने कहा कि हम उन की अ़िबादत करते, उन से दुआ़यें माँगते और उन को पुकारते हैं। उन लोगों से जब कोई माकूल जवाब न बन पड़ा तो मजबूर हो कर बाप-दादाओं की तक़्लीद का सहारा लिया। आज भी बातिलपरस्तों का अन्तिम हथियार यही तक़्लीद ही है। फ़र्क़ केवल इतना है कि आज इमामों, बुज़ुर्गों और उलमा-ए-दीन की तक़्लीद का सहारा लिया जाता है और वह लोग बाप-दादा की तक़्लीद का सहारा लेते थे।

२३. 'मेरा ज़िक्र सच्चाई से रखना' ताकि ऐसा न हो कि मेरी प्रशंसा करते-करते मुझे कहीं ख़ुदा न बना डालें, जैसे अ़ीसाइयों ने हज़रत अ़ीसा अ़लै० को मनुष्य से ईश्वर बना दिया (सनाई)

وَاغْفِرْ لِاَبِيْٓ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ۝ وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ

८६. और मेरे बाप को भी बख़्श दे (अगर्चे वह बज़ाहिर बख़्शिश का हक़दार नहीं, क्योंकि)➲

يُبْعَثُونَ ﴿٨٧﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُونَ ﴿٨٨﴾ إِلَّا
مَنْ أَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿٨٩﴾ وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ
لِلْمُتَّقِينَ ﴿٩٠﴾ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِلْغَاوِينَ ﴿٩١﴾ وَقِيلَ لَهُمْ
أَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٩٢﴾ مِنْ دُونِ اللّٰهِ هَلْ يَنْصُرُونَكُمْ
أَوْ يَنْتَصِرُونَ ﴿٩٣﴾ فَكُبْكِبُوا فِيهَا هُمْ وَالْغَاوُونَ ﴿٩٤﴾ وَجُنُودُ
إِبْلِيسَ أَجْمَعُونَ ﴿٩٥﴾ قَالُوا وَهُمْ فِيهَا يَخْتَصِمُونَ ﴿٩٦﴾
تَاللّٰهِ إِنْ كُنَّا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٩٧﴾ إِذْ نُسَوِّيكُمْ بِرَبِّ
الْعٰلَمِينَ ﴿٩٨﴾ وَمَا أَضَلَّنَا إِلَّا الْمُجْرِمُونَ ﴿٩٩﴾ فَمَا لَنَا
مِنْ شَافِعِينَ ﴿١٠٠﴾ وَلَا صَدِيقٍ حَمِيمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَوْ أَنَّ لَنَا
كَرَّةً فَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٢﴾ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيَةً
وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ
الرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٥﴾ إِذْ قَالَ

वह बेशक गुमराहों में से था[२४]। ८७. और मुझे उस दिन ज़लील न करना जिस दिन सब लोग उठाये जायें गे ८८. जिस दिन न माल नफ़ा देगा और न औलाद ८९. लेकिन उसी को लाभ हो गा जो अल्लाह के हुज़ूर में सलामती वाला दिल लाये गा[२५]। ९०. और (उसी दिन) जन्नत परहेज़गारों के निकट की जायेगी ९१. और जहन्नम भी गुमराहों के सामने की जाये गी[२६]। ९२. और उन से कहा जाये गा कि अल्लाह के अ़लावा जिन चीज़ों की तुम इ़बादत करते थे वह कहाँ हैं? ९३. क्या वह तुम्हारी और अपनी कुछ सहायता कर सकते हैं? ९४+९५. (कुछ नहीं!) फिर वह और तमाम गुमराह लोग और शैतानी लश्कर सब के सब उस जहन्नम में औंधे कर के गिराए जायें गे ९६+९७+९८. वहाँ एक दूसरे से झगड़ा करते हुये कहें गे कि अल्लाह की क़सम! हम ती सख़्त ग़लती में थे कि तुम को रब्बुल् आ़लमीन के साथ बराबर करते थे[२७] ९९. हम को उन मुजिरमों ही ने गुमराह किया था[२८] १००. पस (इस का लाज़िमी परिणाम यही होना चाहिये था कि आज) न तो हमारा कोई सिफ़ारिशी है १०१. और न कोई मुख़्लिस सहयोगी[२९] १०२. अगर हम को एक मर्तबा दुनिया में लौट कर जाने की अनुमति हो तो हम अवश्य ही ईमानदार बन जायें[३०] १०३. निःसंदेह इस में निशानी है। और उन में से बहुत से लोग ईमान नहीं लाते १०४. और तेरा पर्वरदिगार (भी) बड़ा ही ग़ालिब और बड़ा ही मेहरबान है। १०५. (क्या तुम्हें मालूम है?) नूह की क़ौम ने भी रसूलों को झुठलाया था।

....

२४. हज़रत इब्राहीम अ़लै० की यह दुआ़ पिता के मरने से पहले की है। बाप के मरने के बाद आप बाप से बेज़ार हो गये थे (जैसा कि सूरः तौबा आयत न० ११४ में बयान गुज़ारा)

२५. यानी जिस का दिल कुफ़्र, शिर्क और दुनिया की मुहब्बत की बीमारी से पाक-साफ़ हो गा, उसे तो सब वस्तुयें फ़ाइदा दें गी। क्योंकि ऐसे लोग हर चीज़ को आ़म तौर पर अच्छे स्थानों पर प्रयोग में लाते हैं, इसी लिये इस का सवाब भी उन्हें ज़रूर मिले गा..............(सनाई)

२६. 'जहन्नम उन के सामने लायी जाएगी' ताकि अपनी आंखों से देख लें और जिसे यह दुनिया में झुठलाते थे उस की तस्दीक़ कर दें। नबी जब उन्हें डराता था तो उसे मजनून, पागल और दीवाना कहते थे, तो आज विश्वास हो जाये कि वह जो कुछ कहता था सब सच है। पस वह काफ़िर अपनी आंखों से अ़ज़ाब को देख कर अपनी ग़लती को तस्लीम करें गे। (सनाई)

२७. 'रब के साथ बराबर करते थे' यानी गोकि हम तुम को अल्लाह की तरह ज़मीन व आसमान का ख़ालिक़ न

कहते थे; मगर बुरे वक़्त पर तुम से जो दुआ़यें करते थे, यही हमारा शिर्क था जिस की सज़ा भुगतने वाले हैं। फिर आपस में कहें गे कि सच तो यह है कि.........................(सनाई)

२८. 'गुमराह किया था' हमारे पास आ कर पीरों, फ़क़ीरों और पाखन्डियों की झूठी बातें पेश कर के हम को गुमराह करते थे और हम भी ऐसे अ़क़्ल के अन्धे थे कि जो कुछ भी सहीह ग़लत सुनते थे उसी के अनुसार अ़मल करने लगते थे और इतना भी पूछना गवारा न करते थे कि इस का सबूत क्या है? (सनाई)

२९. 'सदीक़' का अर्थ है दोस्त, मित्र। 'हमीम' का अर्थ है जिगरी दोस्त, वह दोस्त जो अपने दोस्त की तक्लीफ़ पर, तक्लीफ़ देने वाले के ऊपर गर्म हो जाये। एक अच्छे हकीम से पूछा गया कि 'हमीम' किसे कहते हैं? उन्हों ने उत्तर दिया कि यह ऐसा शब्द है जिस के मुताबिक़ कोई भी दुनिया में मौजूद नहीं है। (वहीदी)

३०. हज़रत इब्राहीम अ़लै० जब अल्लाह के इनामों का ज़िक्र कर चुके और उन नेमतों के इक़रार से फ़ारिग़ हो गये तो अल्लाह तआ़ला से चन्द दुआ़यें कीं। इन दुआ़ओं का ज़िक्र यहाँ पर इस लिये किया है कि आने वाली नस्लें भी इन दुआ़ओं से लाभ उठायें। चुनान्चे आयत न० ८३ से ८६ तक उन्हीं दुआ़ओं का ज़िक्र है। फिर आयत न० ९२ से १०२ तक की आयात में उन बातों का बयान है जो क़ियामत के दिन आ़बिदों, माबूदों, गुरूओं और चेलों के दर्मियान हों गी। इस से मालूम हुआ कि आ़लिमों, इमामों, पीरों की हर सही अथवा ग़लत बात को मान लेना, और उसी के अनुसार अ़मल करना (अगर्चे शरीअ़त के ख़िलाफ़ ही क्यों न हो) यही उन को अल्लाह के बराबर ठेहराना है। इन आयतों ने शख़्सी तक़्लीद और जुमूद की जड़ काट दी है।

لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٠٦﴾ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ
أَمِينٌ ﴿١٠٧﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٠٨﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ
مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّقُوا
اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١١٠﴾ قَالُوا أَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ
الْأَرْذَلُونَ ﴿١١١﴾ قَالَ وَمَا عِلْمِي بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٢﴾
إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي ۖ لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١٣﴾ وَمَا أَنَا
بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٤﴾ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿١١٥﴾ قَالُوا
لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَا نُوحُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٦﴾
قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ ﴿١١٧﴾ فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ
فَتْحًا وَنَجِّنِي وَمَنْ مَعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾ فَأَنْجَيْنَاهُ
وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿١١٩﴾ ثُمَّ أَغْرَقْنَا بَعْدُ
الْبَاقِينَ ﴿١٢٠﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُؤْمِنِينَ ﴿١٢١﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٢﴾ كَذَّبَتْ

१०६. जब उन के भाई नूह ने कहा: क्या तुम (अल्लाह की नाफ़र्मानी करने से) डरते नहीं हो[३१]? १०७. बेशक मैं (अल्लाह की तरफ़ से) तुम्हारे लिये अमीन (अमानतदार) रसूल हूँ[३२] १०८. इसलिये तुम अल्लाह से डरो और मेरी ताबेदारी करो। १०९. मैं तुम से (इस तब्लीग़ पर) कोई उजूरत (मूल्य,पारिश्रमिक) नहीं माँगता। मेरी उजूरत तो अल्लाह रब्बुल आ़लमीन ही के पास है ११०. पस तुम अल्लाह तआ़ला से डरो और मेरी पैरवी करो। १११. उन्हों ने कहा: क्या हम तेरी बात स्वीकार करें? हालाँकि तेरी ताबेदारी में ज़लील लोग आये हैं[३३/१] ११२. नूह ने कहा: मुझे उन (दुनियावी) कामों का इ़ल्म नहीं (कि यह क्या करते हैं) ११३. उन के तमाम (अच्छे-बुरे) कामों का हिसाब मेरे पर्वरदिगार पर है, काश तुम जानो। १४४. और मैं उन ईमानदारों को कभी नहीं धुतकार सकता[३३/२] ११५. मैं तो स्पष्ट डराने

➲वाला हूँ (जिस का जी चाहे कुबूल करे, जिस का न चाहे, न करे) ११६. वह बोलेः ऐ नूह! अगर तू बाज़ न आया तो तू पत्थरों से हलाक किया जाये गा ११७. (नूह ने क़ौम की जब यह सख़्ती देखी तो) कहा: ऐ मेरे पर्वरदिगार! मेरी क़ौम ने मुझे झुठलाया है (यह किसी प्रकार भी सीधी राह पर नहीं आते) ११८. पस तू मुझ में और मेरी क़ौम में साफ़-साफ़ फ़ैसला फ़रमा और मुझ को और मेरे साथ वाले ईमानदारों को (इन तक्लीफ़ों से) नजात बख़्श। ११९. पस हम ने उस को और उस के साथ वालों को भरी कश्ती में तूफ़ान से बचा लिया १२०. और (उन को बचा कर) बाक़ी लोगों को डुबो दिया १२१. कुछ संदेह नहीं कि इस घटना में एक बड़ी निशानी है (अल्लाह के प्रताप और बड़ाई की) और उन में बहुत से लोग ईमान नहीं लाते (और मुक़ाबला करते हैं) १२२. और कुछ संदेह नहीं कि तेरा पर्वरदिगार बड़ा ग़ालिब और बड़ा मेहरबान है।

....

३१. यह तीसरा क़िस्सा हज़रत नूह अ़लै० और उनकी उम्मत का है। यह क़िस्सा बयान कर के नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को तसल्ली और मक्का के कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन को धमकी दी गयी है। तसल्ली इस तौर पर कि जिस प्रकार अल्लाह तआ़ला ने नूह और उन की उम्मत को नजात दी, इसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आप के मानने वालों को नजात दें गे, और जिस प्रकार हज़रत नूह की मुख़ालिफ़त करने वालों को डुबो कर तबाह कर दिया, इसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मुख़ालिफ़ों, कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन को बर्बाद करें गे।

हज़रत नूह अपनी क़ौम को ९५० वर्ष तक लगा तार वाज़ नसीहत करते रहे, मगर वह अभागे ईमान न लाये और बराबर झुठलाते रहे। चूंकि एक नबी को झुठलाना गोया तमाम नबिय्यों को झुठलाना है, इसी लिये 'मुरसलीन' (रसूलों) बहुवचन प्रयोग किया गया है, हालाँकि उन्हों ने केवल हज़रत नूह ही को झुठलाया था। (वहीदी)

३२. रसूल का तअ़ल्लुक़ एक तरफ़ तो अल्लाह से होता है और दूसरी तरफ़ उम्मत से। इसी प्रकार अमीन यानि अमानतदार के भी दो पहलू हैं। एक तो यह कि अल्लाह तआ़ला ने वह्यि पर रसूल का एतिबार किया कि यह जैसे का तैसा हुक्म बन्दों को पहुंचा दें गे। दूसरे यह कि वह लोगों में मोतबर समझे जाते थे कि झूठ नहीं बोलते। इस सूरत में जहाँ-जहाँ "रसूलुन अमीन" का शब्द आया है, वहाँ यही माना मुराद है। (ग़राइबुल कुरआन)

३३/१. जैसे, गिरे-पड़े, रोटियों के मुहताज, ग़रीब, धुनिये-जुलाहे, मोची-चमार तुम्हारे साथ हैं। हम लोगों को तो शर्म आती है कि उन लोगों के साथ तुम्हारे ताबेदारों में शामिल हों। एक सहीह हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः पैग़ंबरों पर प्रथम ईमान लाने वाले ग़रीब ही होते हैं। चूंकि मालदार अपनी अमीरी के नशे में मस्त होते हैं इस लिये वह बग़ैर डन्डा खाये सीधी राह पर नहीं आते"। "फ़त्हुल बयान" में है कि किसी भी मुसलमान को "रज़ील" (ज़लील, नीचा) नहीं कहना चाहिये, चाहे वह कितना ही ग़रीब और नीची जाति का समझा जाता हो। (वहीदी)

३३/२. 'नहीं धुतकार सकता' मेरा काम तो केवल अल्लाह का रास्ता बताना है। उन की जाति और व्यवसाय से कुछ लेना-देना नहीं। अगर वह जायज़ पेशा अपनायें और अल्लाह के हुक्म पर चलें, तो वह उन ऊँची जाति वाले धनवानों से लाख गुना बेहतर हैं, जो अवज्ञा पर उतारू हैं। एक अन्य हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मेरी उम्मत के मुहताज लोग धनवानों से पाँच सौ वर्ष पूर्व जन्नत में दाख़िल हों गे। आयत न० ११२ का तर्जुमा यह भी किया गया है: "क्या जानूँ कि उन के दिलों में क्या गुन भरे हुये हैं"। यानी मैं तो ज़ाहिर को देखता हूँ। ज़ाहिर में वह ईमान लाये तो मैं ने उन को अपने लोगों में शरीक कर लिया। तुम्हारा यह कहना कि वह ज़लील हैं, दिल से ईमान नहीं लाते हैं और किसी लालच से तुम्हारे साथ हो गये हैं, तो इस का इ़ल्म अल्लाह➲

➲ही को है। (वहीदी) हलाल और जायज़ हर प्रकार के पेशे अल्लाह के नज़दीक पसन्दीदा हैं। किसी जायज़ पेशे को हक़ीर और मानहीन समझना सहीह नहीं है। अल्लाह के नज़दीक शराफ़त, बुज़ुर्गी और बड़ाई की कसौटी केवल तक़्वा है। अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान है: "तुम में से सब से बेहतर वह है जो मुत्तक़ी है"।

عَادُ ۨالْمُرْسَلِيْنَ ۚ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا
تَتَّقُوْنَ ۚ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ
اَطِيْعُوْنِ ۚ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ
اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۗ اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ اٰيَةً
تَعْبَثُوْنَ ۙ وَتَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ۚ
وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِيْنَ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ
اَطِيْعُوْنِ ۚ وَاتَّقُوا الَّذِيْٓ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ۚ
اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ۙ وَجَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۚ اِنِّيْٓ
اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۗ قَالُوْا سَوَآءٌ
عَلَيْنَآ اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ۙ اِنْ هٰذَآ
اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ۚ فَكَذَّبُوْهُ
فَاَهْلَكْنٰهُمْ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۗ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۚ كَذَّبَتْ

१२३. (इसी प्रकार) आ़द की क़ौम ने संदेष्टाओं को झुठलाया था १२४. जब उन के भाई हूद ने उन से कहा: क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं? १२५. बेशक मैं तुम्हारे लिये अमानतदार संदेष्टा हूँ। १२६ इस लिये तुम अल्लाह से डरो और मेरी फ़रमांबर्दारी करो (अल्लाह तुम से प्रसन्न हो गा) १२७. और मैं तुम से इस काम पर कोई बदला नहीं माँगता, मेरी मज़दूरी तो अल्लाह रब्बुल आ़लमीन ही के पास है १२८. क्या तुम (दुनिया में) हर एक ऊँची जगह (पहाड़ों और टीलों पर) वाहियात खेलने को निशानियाँ बनाते हो? १२९. और बड़े-बड़े मकान (ऐसे मज़बूत) बनाते हो, गोया तुम सदा दुनिया ही में रहो गे[३४]। १३०. (और तुम्हारी यह बुरी आ़दत है कि) जब तुम किसी पर आक्रमण करते हो तो बड़ी सख़्ती से आक्रमण करते हो[३५] (चाहे हक़ पर हो या नाहक़ पर) १३१. सो तुम अल्लाह से डरो और मेरी ताबेदारी करो १३२. और (मुख़ालिफ़त करने में) अल्लाह से डरो जिस ने तुम को उन चीज़ों से मदद दी जो तुम जानते हो १३३+१३४. यानी चारपायों, बेटों, बाग़ों और चश्मों से तुम्हारी सहायता की (फिर तुम समझते नहीं कि क्या कर रहे हो)१३५. मुझ को तुम्हारे बुरे कामों की वजह से तुम्हारे हाल पर बड़े दिन के अज़ाब से डर लगता है १३६. (यह साफ़ संबोधन सुन कर भी) वह बोले कि बराबर है, तू हम को वाज़ सुना या वाज़ करने की तक्लीफ़ न उठा। १३७. (यह दीन और धर्म जिस पर हम हैं) यही पहले लोगों का तरीक़ा रहा है (इस लिये यह दुरुस्त मालूम होता है) १३८. और हम पर कोई अ़ज़ाब नहीं आने का। १३९. पस (इस ग़लत घमन्ड में) उन्हों ने उस को (यानी हूद को) झुठलाया। फिर हम ने उन को हलाक कर दिया। बेशक इस (वाक़िए) में (बहुत बड़ी) निशानी है, मगर उन में से बहुत से बेईमान हैं। १४०. और इस में शक नहीं कि तेरा पर्वरदिगार बड़ा ही ग़ालिब, बड़ा ही रहम करने वाला है[३६]।

....

३४. 'आ़द' इस क़ौम के दादा-पुर्खे का नाम था। वह साम बिन नूह की औलाद में से था। यहाँ उसी बूढ़े की नस्ल➲

➲क़ौम आद का क़िस्सा बयान हो रहा है। यह क़ौम बड़ी शक्तिशाली थी, वह पत्थर काट-काट कर भवनों का निर्माण करती थी। ऐसा मालूम होता था कि इन्हें क़ियामत तक ज़िन्दा रहना है। आज-कल भी कुछ मूर्ख अपनी यादगार के लिये भवन, गुंबद या बुर्ज बनाते हैं, और इतना नहीं समझते कि इन सब को भी कुछ समय बीतने के पश्चात् मिट जाना हैं। यह सब कुछ बनाने के बाद अगर सौ-दो सौ वर्ष तक तुम्हारा नाम रहा तो इस से भी तुम्हें कोई लाभ नहीं पहुंचने का, इस लिये कि तुम तो ऊपर की दुनिया में रहो गे।

अ़रबी भाषा का सुप्रसिद्ध कवि अबुल् अ़ताहिया अपनी एक अ़रबी कविता के एक शेर में कहता है "अल्लाह का फ़रिश्ता हर रोज़ पुकार-पुकार कर कह रहा है कि तुम्हारी ज़िन्दगी का अन्जाम मौत है और तुम्हारे बनाये हुये भवनों का अन्जाम वीरानी है"। (वहीदी, सनाई)

३५. 'आक्रमण करते हो' जैसे ज़ालिमों का नियम है कि अगर ज़रा सी किसी से तक्लीफ़ पहुंचती है तो बदले में उस की जान लेने के दरपै हो जाते हैं। (वहीदी)

३६. हज़रत हूद अ़लै० की तब्लीग़ का खुलासा यह है कि तुम को हरदम दुनिया के मिट जाने का ख़याल रखना चाहिये। तुम लोगों का ऊँचे-ऊँचे भवनों का निर्माण करना वाहियात और निरर्थक हैं इस प्रकार की नसीहतें तमाम ही संदेष्टा अपनी-अपनी क़ौमों को करते आये हैं। अन्तिम संदेष्टा मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की समस्त जीवनी पर नज़र डालने से मालूम होता है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दुनिया की तरफ़ तनिक भर भी नज़र उठा कर नहीं देखा। बल्कि फ़रमाया: "दुनिया की हैसिय्यत बिल्कुल ऐसी ही है जैसे एक मुसाफ़िर की नज़र में सराय की हैसिय्यत है"। मतलब यह है कि जिस प्रकार एक मुसाफ़िर सराय को कोई अहमियत नहीं देता (इस लिये कि उसे चन्द दिन वहाँ ठहरना होता है) बिल्कुल ऐसे ही दुनिया को कोई हैसिय्यत नहीं देनी चाहिये (इस लिये कि दुनिया में भी चन्द वर्ष से अधिक नहीं जीना है)

ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ ۚۖ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ اَلَا
تَتَّقُوْنَ ۚ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ
اَطِيْعُوْنِ ۚ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ
اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۗ اَتُتْرَكُوْنَ فِيْ مَا
هٰهُنَآ اٰمِنِيْنَ ۙ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۙ وَّزُرُوْعٍ وَّ
نَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيْمٌ ۚ وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا
فٰرِهِيْنَ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۚ وَلَا تُطِيْعُوْٓا اَمْرَ
الْمُسْرِفِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا
يُصْلِحُوْنَ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ۚ مَآ اَنْتَ
اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۚۖ فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ
قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۚ

१४१. समूदियों ने रसूलों को झुठलाया था १४२. जब उन के भाई सालेह अ़लै० ने उन से कहा कि क्या तुम डरते नहीं हो? १४३. कुछ शक नहीं कि मैं तुम्हारे लिये रसूल अमीन हूँ[३७] १४४. पस अल्लाह से डरो और मेरी ताबेदारी करो १४५. मैं इस (तब्लीग़) पर तुम से कोई बदला नहीं माँगता। मेरी मज़दूरी तो केवल अल्लाह रब्बुल आ़लमीन के पास है १४६+१४७+१४८. क्या (तुम समझते हो कि) इस स्थान पर (तुम इसी प्रकार हमेशा) आराम में छोड़े जाओ गे, यानी बाग़ों, चश्मों और (पसंदीदा) खेतों और खजूरों में जिन के शगूफ़े नाज़ुक-नाज़ुक हैं १४९. और तुम पर्वतों को खोद-खोद कर खुशी-खुशी सुन्दर घर बनाते हो १५०. पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो (मैं तुम को सीधी राह पर ले चलूँ गा) १५१. और तुम हद से गुज़र जाने➲

وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوٓءٍ فَيَأۡخُذَكُمۡ عَذَابُ يَوۡمٍ عَظِيمٍ ۝١٥٦ فَعَقَرُوهَا فَأَصۡبَحُواْ نَٰدِمِينَ ۝١٥٧ فَأَخَذَهُمُ ٱلۡعَذَابُ

वालों की बात न मानो १५२. जो मुल्क में फ़साद करते हैं (लोगों में बुराइयाँ फैलाते हैं) और (बुराइयों की) सुधार नहीं करते १५३. वह बोले: (हमारे ख़याल में) तुझ पर जादू किया गया है १५४. तू तो हमारी ही तरह का आदमी है[३८] पस अगर तू अपने दावा में सच्चा है तो कोई निशानी ले आ (यानी ऐसा चमत्कार जिस से तेरी नबुव्वत की तस्दीक़ हो) १५५. (हज़रत सालेह ने दुआ़ की[३९]। उन की दुआ़ से एक ऊँटनी पैदा हुई तो) कहा: यह ऊँटनी तुम्हारे लिये निशानी है। पानी में एक दिन उस का हिस्सा और एक दिन तुम्हारा हिस्सा मुक़र्रर है। (पस उस को जहाँ चाहे चरने-फिरने दो) १५६+१५७. और बुराई से उस को तक्लीफ़ न पहुंचाना वर्ना बड़े दिन का सा अ़ज़ाब तुम को आले गा[४०]। पस उन्हों ने उस की कूचें काट डालीं सो वह सुब्ह होते ही शर्मिन्दा पड़े थे। १५८.पस अ़ज़ाब ने उन को आ दबाया (और हलाक कर दिया)

....

३७. पाँचवाँ क़िस्सा हज़रत सालेह अ़लै० और उन की क़ौम समूद का बयान किया गया है (इस क़ौम का विस्तार से बयान सूरःआराफ़ में गुज़र चुका है) यहाँ भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को तसल्ली और कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन को धमकी दी गयी है। हज़रत सालेह अ़लै०, हज़रत हूद के लग-भग १०० वर्ष के बाद समूदियों में नबी बना कर भेजे गये। 'समूद' हज़रत सालेह के दादा का नाम था। इसी नाम से पूरी क़ौम प्रसिद्ध हुयी। यह क़ौम, आ़दियों की तबाही के बाद अ़रब के उत्तरी छोर पर हिज्र शहर में आबाद हुयी थी जो शाम के रास्ते में पड़ता है। मुल्क शाम जाने वालों को राह में इस क़ौम की चन्द बस्तियों के निशानात मिलते हैं (सारांश)

३८. 'हमारी तरह का आदमी है' फिर तू रसूल कैसे बन बैठा? तू तो खाना खाता है, पानी पीता है और बीवी भी रखता है। इन्सान होने के नाते इन्हीं तीन चीज़ों की आवश्यक्ता पड़ती है जो हम में और तुझ में बराबर-बराबर हैं, फिर आख़िर कौन सी बुजुर्गी और बड़ाई है जिस कारण अल्लाह ने तुझे रसूल बना दिया है (सनाई)

३९. 'सबूत' का शब्द इस लिये बढ़ाया है कि आज कल के नेचरी (दहरिये) मज़ाक़ करते हैं कि हर चीज़ क़ुदरत की निशानी है, जिन में ऊँटनी भी एक बड़ी निशानी है। हज़रत सालेह अ़लै० ने अपनी क़ौम को उसी क़ुदरती निशानी की तरफ़ तवज्जुह दिलायी है और कोई नया चमत्कार नहीं दिखाया है। इस एतराज़ का उत्तर यह है नबिय्यों से जो लोग चमत्कार का मुतालबा करते थे वह क़ुदरती निशान न माँगते थे, बल्कि ऐसे निशान माँगते थे जिस से साबित हो सके कि उस रसूल की नबुव्वत का दावा सहीह है। और क़ुदरत के निशान, अल्लाह का इन्कार करने वालों के सामने अल्लाह पेश करता है, जैसे दहरिये लोग। और नबुव्वत के निशान, नबुव्वत और रिसालत के इन्कारियों के सामने पेश किये जाते हैं। यह दो अलग-अलग निशान हुये। इन दोनों को एक मानना सहीह नहीं है। भला यह कैसे संभव है कि नबुव्वत की मुख़ालिफ़त करने वाले तो ऐसा निशान माँगें जिस से नबुव्वत और रिसालत की तस्दीक़ हो, लेकिन नबी उन्हें क़ुदरत के निशान पेश करे (जिस से अल्लाह की मौजूदगी का सबूत हो)। (सनाई)

४०. 'बड़े दिन का सा अ़ज़ाब' इस से मुराद वह दिन है जिस दिन हज़रत सालेह अ़लै० की क़ौम पर अ़ज़ाब नाज़िल हुआ था।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَأٓيَةٗۖ وَمَا كَانَ أَكۡثَرُهُم مُّؤۡمِنِينَ ۝١٥٨ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلرَّحِيمُ ۝١٥٩ كَذَّبَتۡ قَوۡمُ لُوطٍ

कुछ शक नहीं कि इस में निशानी है और उन में से बहुत से लोग नहीं मानते १५९. और तेरा पर्वरदिगार बड़ा ग़ालिब, बड़ा मेहरबान है

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٦٠﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٦١﴾
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٦٢﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٦٣﴾
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٤﴾ أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٥﴾ وَ
تَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ بَلْ أَنْتُمْ
قَوْمٌ عٰدُونَ ﴿١٦٦﴾ قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يٰلُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ
الْمُخْرَجِيْنَ ﴿١٦٧﴾ قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُمْ مِنَ الْقَالِيْنَ ﴿١٦٨﴾ رَبِّ
نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٦٩﴾ فَنَجَّيْنٰهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِيْنَ ﴿١٧٠﴾
إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٧١﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِيْنَ ﴿١٧٢﴾ وَ
أَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٣﴾ إِنَّ
فِي ذٰلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٤﴾ وَإِنَّ

(कि जल्दी नहीं पकड़ता)[४१] १६०. (इसी प्रकार) लूत की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया था[४२] १६१. जब उस के भाई लूत ने उन से कहाः क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं? १६२. बेशक मैं तुम्हारे लिये (अल्लाह की तरफ़ से) मोतबर रसूल हूँ। १६३. पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी पैरवी करो। १६४. और मैं तुम से इस काम पर मज़दूरी नहीं माँगता। मेरी मज़दूरी तो अल्लाह रब्बुल् आ़लमीन ही के पास है। १६५. (देखो तो सही!) क्या (तुम्हारी मत मारी गयी है कि) तुम दुनिया के लोगों में से लड़कों के साथ हवस को पूरी करते हो १६६. और तुम्हारे पर्वरदिगार ने जो तुम्हारे लिये जोड़े पैदा किये हैं उन को छोड़ते हो? बल्कि तुम मुक़र्ररा हुदूद {सुनिश्चित सीमा} से आगे बढ़ने वाले हो। १६७. वह बोलेः ऐ लूत! अगर तू बाज़ न आया तो तू (एक दिन यहाँ से) निकाला जाये गा। १६८. लूत ने कहाः (मुझे निकाल दो गे तो क्या हो गा?) मैं स्वयँ तुम्हारे कामों से बेज़ार हूँ। १६९. ऐ मेरे पर्वरदिगार! मुझे और मेरे मानने वालों को उन के कामों की सज़ा से नजात देना। १७०. पस हम ने उस को और उस के मानने वालों सब को बचाया १७१. सिवाए एक बूढ़ी महिला के जो (अ़ज़ाब में) पीछे रहने वालों में से थी। १७२. फिर हम ने दूसरे लोगों को हलाक कर दिया १७३. यानी हम ने उन पर पत्थरों की सख़्त वर्षा की, पस उन डराए गये लोगों पर बहुत बुरी वर्षा थी। १७४. बेशक इस में (एक बड़ी) निशानी है। और बहुत से लोग उन में से बेईमान हैं

....

४१. 'उस की कूचें काट दीं' यह काम करने वाला कुदार बिन सालिफ़ नामी एक अभागा था। इस मर्दूद ने तल्वार से उस ऊँटनी को घायल कर के उस की कूचें काट दीं। इस ऊँटनी का संक्षिप्त क़िस्सा मुफ़स्सिरीन ने यह बयान किया है कि क़ौम के लोगों ने हज़रत सालेह से यह मुतालबा किया कि पहाड़ के पत्थर से एक गाभिन (गर्भवती) ऊँटनी निकले और अपने जैसा ही एक बच्चा जने। पैग़ंबर अ़लै० ने दुआ़ की और क़ौम वालों के मुतालबे के अनुसार पत्थर से ऊँटनी पैदा हुयी और बच्चा जना। इस चमत्कार के ज़ाहिर होने के बाद भी बस गिने-चुने लोग ही ईमान लाये (अहसनुत्तफ़ासीर)

४२. यहाँ आयत न० १६०. से हज़रत लूत अ़लै० का बयान है। यह हज़रत इब्राहीम के हक़ीक़ी भतीजे और हारान के बेटे थे। हज़रत इब्राहीम और हारान, दोनों ही आज़र के सुपुत्र हैं। हज़रत लूत, हज़रत इब्राहीम ही की ज़िन्दगी में एक बड़ी गन्दी और नापाक क़ौम की तरफ़ संदेष्टा बना कर भेजे गये थे। यह क़ौम सदूम और अ़मूरा वग़ैरह में आबाद थी जो कि बैतुल मुक़द्दस के ठीक सामने स्थित (वाक़ेअ़) है। हज़रत लूत के ज़माना में यहाँ की जन संख्या बहुत अधिक थी, मगर तबाही व बर्बादी के बाद यहाँ एक बहुत बड़ा गन्दा तालाब बन गया। इस नापाक और गंदी

➲क़ौम के लोग बुत परस्त तो थे ही, साथ ही लौंडे बाज़ी की घिनावनी बीमारी का भी शिकार थे। ग़रीब यात्रियों और राहगीरों को पकड़ कर उन से कुकर्म (शारीरिक संबन्ध) बनाते थे। महिलाओं से सख़्त नफ़रत थी। हज़रत लूत ने अपनी इस क़ौम के दर्मियान बड़ी प्रभाव शाली नसीहत फ़रमाई। केवल अल्लाह की अ़िबादत की तरफ़ दावत दी। कुफ़्र-शिर्क और बुतपरस्ती को समाप्त करने की जी-जान से कोशिश की। उन को अल्लाह के प्रकोप से डराया और अपने-आप को अल्लाह का सच्चा और उनका ख़ैरख़्वाह संदेष्टा बताया। लड़कों से शारीरिक (समलैंगिक) संबन्ध स्थापित करने से विशेष रूप से मना किया। मगर क़ौम ने कहा कि अगर तू नसीहतें करने से बाज़ न आया तो हम तुम्हें शहर से निकाल बाहर करें गे। आप ने दुआ़ फ़रमाई: "ए अल्लाह! मुझे और मुझ पर ईमान लाने वालों को इस क़ौम की बुराई से नजात दे"। आप की प्रार्थना स्वीकार हुयी। बदकारों को अल्लाह ने तबाह किया और नेक लोगों को नजात बख़्शी। (आज़मुत्तफ़ासीर)

رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ كَذَّبَ أَصْحٰبُ لْئَيْكَةِ
الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۝
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيعُونِ ۝
وَمَا أَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلٰى رَبِّ
الْعٰلَمِينَ ۝ أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ۝
وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ۝ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ
أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ وَ
اتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْأَوَّلِينَ ۝ قَالُوا
إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ۝ وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا
وَإِنْ نَظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِينَ ۝ فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا
مِنَ السَّمَاءِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۝ قَالَ رَبِّي
أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابُ
يَوْمِ الظُّلَّةِ إِنَّهُ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ إِنَّ

१७५. और तेरा रब बड़ा ही ग़ालिब और बड़े रहम वाला है। १७६. (इसी प्रकार) ऐका (यानी जंगल) वालों ने भी संदेष्टाओं को झुठलाया था[४३]। १७७. जब उन को शुअ़ैब ने कहा: क्या तुम (अल्लाह से) नहीं डरते। १७८. बेशक मैं तुम्हारे लिये रसूल अमीन हूँ। १७९. पस अल्लाह से डरो और मेरी ताबेदारी करो। १८०. (देखो!) मैं तुम से इस पर कोई मजूदरी नहीं माँगता, मेरी मज़ूदरी तो केवल अल्लाह रब्बुल आ़लमीन के पास है (मैं तुम्हारा बग़ैर किसी लालच के ख़ैरख़ाह हूँ) १८१. और नाप-तौल पूरी किया करो और कम देने वालों में न बनो १८२. सीधी तराज़ू से वज़न किया करो और लोगों के माल कम न किया करो १८३. और (शरीअ़त के ख़िलाफ़ अ़मल कर के) मुल्क में फ़साद न फैलाओ। १८४. और अल्लाह से डरते रहो जिस ने तुम को और पहली मख़्लूक़ को पैदा किया। १८५. वह बोले: (हमारे ख़याल में तो) किसी ने तुझ पर जादू कर दिया है १८६. और तू हमारी तरह का एक मनुष्य है और हम तो तुझे जानते हैं। १८७. पस अगर तू सच्चा है तो हम पर आकाश का कोई टुकड़ा गिरा दे (या जो कुछ तुझ से बन पड़े, कर डाल) १८८. शुअ़ैब ने कहा: मेरा रब तुम्हारे कामों को भली-भाँति जानता है (वह जो भी उचित समझेगा, करे गा। ग़रज़) १८९. वह शुअ़ैब को झुठलाते ही रहे पस (आख़िर) उन को सायादार {छाँव वाले} दिन के अ़ज़ाब ने आ दबाया

....

४३. इस सूरः में यह सातवाँ क़िस्सा बयान किया जा रहा है। मदयन शहर के निकट पेड़-पौधों का एक बड़ा बन➲

➲ (जंगल) था, जिस को उस समय "ऐका" कहा जाता था। एक क़ौल के अनुसार बन यानी जंगल के रहने वाले चार अलग-अलग बस्तियों में रहा करते थे। (इस का मतलब यह हुआ कि "अस्हाबे मदयन" और "असहाबे ऐका" एक ही क़ौम के दो नाम हैं--- ख़ालिद) बहर हाल! हज़रत शुअ़ैब को इन दोनों क़ौमों पर संदेष्टा बना कर भेजा गया। इस क़ौम में जो बुराइयाँ थीं, उन में नाप-तौल में कमी करना आ़म बात थी। कम देते थे और ज़्यादा लेते थे। शुअ़ैब अ़लै० ने इन को डराया-धमकाया तो इन्हों ने तीन आरोप लगाये (१) "तुम पर किसी ने जादू कर दिया है"। (२) तुम तो हमारे जैसे ही एक मनुष्य हो (३) तुम झूठे हो और तुम्हारा नबुव्वत का दावा महज़ बनावटी है। जब इस क़ौम की शरारतें और सरकशी सीमा से आगे बढ़ गयीं तो अ़ज़ाब ने उन्हें आ दबोचाा।

यहाँ पर एक ख़ास बात जो ध्यान देने योग्य है वह यह कि संदेष्टाओं ने जहाँ तौहीद पर अ़मल करने की दावत दी है वहीं समाज के सुधार की तरफ़ भी खुसूसी तवज्जुह फ़रमाई है। यहाँ पर हज़रत शुअ़ैब ने अपनी क़ौम को ठीक-ठीक नापने और तौलने की सख़्त ताकीद फ़रमाई हैं इस समाजी बीमारी को समाप्त करने के लिये तीसवें पार: में सूर: "मुतफ़्फ़िफ़ीन" भी नाज़िल फ़रमाई गयी है। इस सूर: में नाप-तौल में कमी करने वालों की सख़्त आलोचना करते हुये उन्हें जहन्नम के अ़ज़ाब की धमकी दी गयी है। जो लोग लेने और देने के लिये दो अलग-अलग बाँट (वज़न के बट्टे) रखते हैं, यह समाज के सख़्त दुश्मन हैं।

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝١٩٠
وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝١٩١ وَاِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٩٢ نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ۝١٩٣ عَلٰى
قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ۝١٩٤ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ
مُّبِيْنٍ ۝١٩٥ وَاِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٩٦ اَوَلَمْ يَكُنْ
لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰۗؤُا بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ۝١٩٧ وَلَوْ
نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ۝١٩٨ فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا
كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ۝١٩٩ كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ
الْمُجْرِمِيْنَ ۝٢٠٠ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ
الْاَلِيْمَ ۝٢٠١ فَيَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٢٠٢
فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ۝٢٠٣ اَفَبِعَذَابِنَا
يَسْتَعْجِلُوْنَ ۝٢٠٤ اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ۝٢٠٥ ثُمَّ
جَاۗءَهُمْ مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝٢٠٦ مَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا

कुछ शक नहीं कि वह बुरे दिन (यानी क़ियामत का) सा अ़ज़ाब था १९०. निःसंदेह इस में निशानी है, मगर बहुत से लोग उन में से ईमान नहीं लाते। १९१. और तेरा पर्वरदिगार बहुत ग़ालिब, बड़ा रहम करने वाला है[४४]। १९२. और बेशक यह कुरआन रब्बुल आ़लमीन का उतारा हुआ है। १९३+१९४. रूहुल अमीन (यानी जिब्रील फ़रिश्ता) ने उस को तेरे दिल पर उतारा है[४५] (यानी तुझ को सुनाया है, कानों में डाला है) ताकि तू उन डराने वालों में से हो जाये[४६] १९५. (इसी लिये) स्पष्ट अ़रबी भाषा में है (ताकि तू पढ़े और यह लोग सुन कर समझें) १९६. और इस में शक नहीं कि यह पहले लोगों की किताबों में है १९७. क्या उन के लिये यह निशान काफ़ी नहीं कि बनी इस्राईल के उलमा भी इस को जानते हैं? १९८+१९९. और अगर हम उस को किसी अजमी (ग़ैर अ़रब) पर उतारते और वह उन को पढ़ कर सुनाता तो वह कभी इस पर ईमान न लाते (वह यह कहते कि वाह साहब! हम तो अ़रबी हैं और यह अ़जमी) २००. इस प्रकार हम ने इस (कुरआन) को मुज्रिमों के ➲

➲दिलों में दाख़िल कर दिया है (यानी उन के कानों में डाल कर दिल तक इस का विषय पहुंचा दिया है) २०१. वह हर्गिज़ इस को न मानें गे जब तक दुःखदाई अ़ज़ाब न देखें गे[४७]। २०२. पस (याद रखें) अ़ज़ाब उन पर अचानक आ जाये-गा कि नहीं जानते हों गे। २०३. फिर कहें गे कि हमें कुछ मुहलत है? (उस समय मुहलत माँगें गे) २०४. और इस समय हमारा अ़ज़ाब जल्दी माँगते हैं २०५. भला बतलाओ! हम अगर उन को सालों-साल तक भी मुहलत दें २०६. फिर जो कुछ उन से वादा किया जाता है वह उन पर आ जाये २०७. तो जिन चीज़ों से उन को मुनाफ़ा हो रहा है वह उन्हें क्या काम आयें गी।

....

४४. आयत १९१ तक हज़रत शुअ़ैब अ़लै० की क़ौम का ज़िक्र है। यहाँ तक की आयत का निचोड़ यह है कि हज़रत शुअ़ैब की क़ौम सात रात और सात दिन तक सख़्त लू और लपट की गर्मी में मुब्तला रही, यहाँ तक कि सख़्त गर्मी से उन के कुंओं और चश्मों का पानी उबल पड़ा। ऐका वाले जान बचाने की ग़रज़ से घरों में घुस गये। जब वहाँ भी गर्मी से नजात न मिली तो घबरा कर जंगल की तरफ़ निकल खड़े हुये। अचानक वहाँ थोड़ा सा घना बादल दिखाई पड़ा जिस में बड़ी ठन्डी हवा थी। सब लोग उस साया में इकट्ठा हो गये तो अचानक आकाश से आग और चिन्गारियों की वर्षा होने लगी और तमाम ऐका वाले जल कर राख हो गये। कुछ मुफ़स्सिरीन ने हज़रत शुअ़ैब की क़ौम की बर्बादी का एक और भी कारण लिखा है। हम जगह की कमी की वजह से नहीं लिख रहे हैं।

४५. 'अमीन' शब्द का अर्थ है "अमानतदार"। यह हज़रत जिब्रील अ़लै० की विशेष सिफ़त है इस लिये कि वह संदेष्टाओं के पास अल्लाह की वह्‌यि लाते और बिना कुछ कमी और ज़्यादती के पहुंचाते रहे हैं। 'रूह' से मुराद हज़रत जिब्रील अ़लै० हैं। उन्हें रूह इस लिये कहा जाता है कि वह रूह से पैदा किये गये हैं, या इसलिये कहा जाता है कि वह सरापा रूह हैं। और "अमीन" इस लिये कहा जाता है कि संदेष्टओं की तरफ़ जो चीज़ उन के ज़रीआ भेजी जाती है वह उस में हद दर्जा अमानतदार हैं।

४६. 'न-ज़-ल' का अर्थ है "उतारना"। मतलब यह हुआ कि दिल पर उतारते हैं। यानी रूहानी मतालिब सब से पहले रूह पर उतरते हैं, फिर रूह से दिल की तरफ़। इसलिये कि रूह और दिल में एक विशेष प्रकार का संबन्ध है। फिर वह मतालिब दिमाग़ की तरफ़ चढ़ते हैं, फिर वहाँ से (दिमाग़ के अन्दर, या दिल के अन्दर) सोचने-समझने वाली तख़्ती पर लिखे जाते हैं। (ग़राइबुल क़ुरआन)

४७. आयत न० १९५. में यह बयान हुआ है कि क़ुरआन मजीद अ़रबी भाषा में नाज़िल किया गया है। इस भाषा को अ़रब के लोग भली-भाँति समझते हैं क्योंकि उन की भी भाषा अ़रबी है दूसरे यह कि उस की ज़बान इतनी उम्दा है कि कोई भी शख़्स चाहे जितना बड़ा अ़रबी भाषा का आ़लिम क्यों न हो, वैसा कलाम नहीं कह सकता। तीसरे यह कि इस क़ुरआन का ज़िक्र बनी इस्राईल की किताबों में भी है। वह लोग अपनी किताबों में क़ुरआन के आने की भविष्यवाणी को पढ़ते हैं। इन तीन विशेष्ताओं के होते हुये कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन मानने से इन्कार कर रहे हैं, तो अगर कहीं क़ुरआन अ़जमी भाषा में नाज़िल होता तब तो न मानने के और भी बहाने मिल जाते। हक़ीक़त यह है कि यह लोग शरारत और सरकशी पर आमादा हैं। इन्हीं की भाषा में नाज़िल करें तो न मानें और अ़जमी भाषा में नाज़िल करें तब भी न मानें, तो यह लोग अ़ज़ाब चाहते हैं, वही अ़ज़ाब इन को ज़बर्दस्ती मनवाए गा। क्योंकि लातों के भूत बातों से नहीं मानते। (डिप्टी नज़ीर अहमद) यह बात अपनी जगह ९.८ बिल्कुल सत्य है कि अल्लाह की लाठी में आवाज़ नहीं होती। ज़ालिमों को अवश्य दन्ड मिलता है, मगर उस की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं। कभी तो आसमान या ज़मीन से अ़ज़ाब नाज़िल होता है, तो कभी कमज़ोर हक़परस्त मज़लूमों को उन पर ग़लबा➲

दे दिया जाता है और उन की आपस की फूट ही उन का कचूमर निकाल देती है।

يُمَتَّعُونَ ۝ وَمَا أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنذِرُونَ ۝
ذِكْرَىٰ ۛ وَمَا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيَاطِينُ ۝
وَمَا يَنبَغِي لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ۝ إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ
لَمَعْزُولُونَ ۝ فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَكُونَ
مِنَ الْمُعَذَّبِينَ ۝ وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ۝
وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝
فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ۝ وَتَوَكَّلْ
عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝ الَّذِي يَرَاكَ حِينَ تَقُومُ ۝ وَ
تَقَلُّبَكَ فِي السَّاجِدِينَ ۝ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ هَلْ
أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ۝ تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ
أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ۝ يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كَاذِبُونَ ۝
وَالشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ
وَادٍ يَهِيمُونَ ۝ وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ۝

२०८+२०९. और हम किसी बस्ती को बग़ैर इस के तबाह व बर्बाद नहीं करते कि उन के पास डर सुनाने वाले नसीहत करने को नबी न आये हों और हम ज़ालिम नहीं हैं[४८] २१०. और न शैतानों ने उस को उतारा है और न उन (शैतानों) को लाइक़ है २११. और न उन से हो सकता है (कि उस के साथ उतर सकें) ११२. वह इस के सुनने से भी अलग किये जा चुके हैं। २१३. (इस कुरआन का पहला पाठ ख़ालिस तौहीद है) इस लिये तू अल्लाह के साथ किसी और माबूद को मत पुकार, वर्ना तू सख़्त अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार किया जाये गा (क्योंकि शिर्क, विष की तरह हर किसी के लिये हानिकारक है) २१४. और अपने निकट के संबन्धियों को समझाया कर। २१५. और जो ईमानदार तेरे ताबेअ़ हैं, अपने बाजू उन के सामने झुका दिया कर २१६. (अच्छे अख़्लाफ़ के बावजूद) फिर भी अगर यह लोग (यानी अ़रब के काफ़िर लोग) तेरी अवज्ञा करें, तो तू कह! मैं तुम्हारे कामों से बेज़ार हूँ २१७. और अल्लाह, ग़ालिब और मेहरबान पर भरोसा कर २१८. जो तुझे देखता है जब तू नमाज़ के लिये खड़ा होता है २१९. और सज्दा करने वालों (यानी नमाज़ियों) में तेरा आना-जाना भी देखता है। २२०. कुछ शक नहीं कि वही सुनता और जानता है। २२१. मैं तुम्हें बतलाऊँ कि शयातीन किन लोगों पर नाज़िल होते हैं २२२. वह (शयातीन) हर एक झूठे और बदकिर्दार पर उतरा करते हैं २२३. और उन तक सुनी-सुनाई बातें पहुंचाते हैं और बहुत से उन में झूठे हैं[४९] २२४. और (सुनो!) शाइरों {कवियों} के पीछे गुमराह लोग ही चलते हैं। २२५. क्या तू ने देखा नहीं कि वह (कवि लोग) हर एक जंगल में घूम जाते हैं[५०]। २२६. और (एक अ़जीब बात उन में यह है कि) जो कुछ कहते हैं, करते नहीं[५१] (यानी खुद ही अ़मल नहीं करते)

....

४८. बल्कि जब बन्दों की तरफ़ से शरारत सीमा से आगे पहुंच जाती है तो उन को कुचलने के लिये उचित अ़ज़ाब नाज़िल होता है। इन कुफ़्फ़ार और मुश्रिकों के अ़ज़ाब के दिन भी अब क़रीब आ गये हैं, क्योंकि उन की सरकशी और मुख़ालिफ़त भी सीमा लाँघ चुकी है। खुद ही ग़ौर कीजिये कि इस से बढ़ कर शरारत और क्या हो गी कि

कुरआन के बारे में कितने ग़लत ख़यालात रखते हैं। कोई कहता है कि इस ने स्वयँ घड़ लिया है और कोई कहता है कि शैतान ने इस पर नाज़िल किया है और कोई कहता है कि इस ने किसी से सुन कर याद कर लिया है। (सनाई)

४९. पहली बात तो यह कि उन की बातें सुनी-सनाई होती हैं। दूसरे यह कि वह स्वयँ भी झूठे होते हैं, इसलिये तुम उन की बातों की सच्चाई का अनुमान ख़ुद ही लगा सकते हो। और सुनो! इन्हीं झूठों के पैरूकार कवि भी हैं जिन के बारे में प्रसिद्ध इस्लामी कवि अ़ल्लामा हाली मर्हूम ने कहा है---गुनहगार वाँ छूट जायें गे सारे+जहन्नम को भर दें गे शाइर हमारे। (सनाई)

५०. 'जन्गल में घूम जाते हैं' यानी हर प्रकार के मज़ामीन बना देते हैं। जिस की चाहें झूठी प्रशंसा के पुल बाँध दें और जिस की चाहें बुराइयाँ बयान कर दें। उन को न किसी की तारीफ़ से मतलब और न किसी की बुराई से ग़रज़ होती है, बस अस्ल उद्देश्य किसी प्रकार से लोगों की जेबों से रूपये निकालना होता है। राई का पर्वत और पर्वत का राई सिद्ध करना इन के दायें-बायें हाथ का खेल होता है। आयत न० २२५ में 'यहीमून; का अर्थ है "हैरत में पड़ना, बौखलाया हुआ होना"।

५१. 'यह जो कहते हैं उस के अनुसार करते नहीं हैं' यह वैसे तो बहादुर और सिपाही हैं मगर वक़्त पड़ने पर भागतों के अगाड़ी हैं। यानी वैसे तो समारोहों, महफ़िलों और संगोष्ठियों में तो ख़ूब-ख़ूबी बढ़ी मारें गे, लेकिन वक़्त आने पर सर्वप्रथम दुम दबा कर भाग लें गे (वहीदी)

२२७. मगर जो लोग ईमानदार हैं और नेक आमाल करते हैं और अल्लाह को बहुत-बहुत याद करते हैं[५२] और मज़लूम होने के बाद बदला लेते हैं (ऐसे ईमानदार और नेक लोग अल्लाह के हाँ मक़्बूल हैं) और (जो) ज़ालिम (हैं वह ख़ुद ही) जान जायें गे कि किस चक्कर में घूम रहे हैं[५३]?

....

५२. यानी कभी-कभार कविता कहे, मगर हरदम नहीं। कि उसी को ओढ़ना-बिछौना बना ले। न नमाज़ का ख़याल और न अल्लाह की याद की फ़िक्र। कुछ उलमा ने यह तर्जुमा किया है: "जिन्हों ने अपने शेअ़रों में अल्लाह का बहुत ज़िक्र किया"। यानी जो कवि नेक और मोमिन बन्दे हैं वह गुमराह नहीं हो सकते। जैसा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना में अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा बड़े प्रसिद्ध कवि थे। इन्हों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा कि मैं भी कवि हूँ, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। अल्लामा नवाब सिद्दीक़ रह० फ़रमाते हैं कि जो कविता इस लिये कही जाये कि उस से अल्लाह और उस के रसूल की हिमायत हो और काफ़िरों, मुश्रिकों, गुमराहों, राफ़िज़ियों और ख़ारिजियों वग़ैरह का रद्द हो, तो ऐसी कवितायें कहनी जायज़, बल्कि सवाब का काम हैं। उदाहरण के तौर पर अगर किसी ने किसी की नाहक़ बुराई की और किसी कवि ने उस का उत्तर दिया तो यह जायज़ है। मगर शर्त यह है कि ज़्यादती न करे। अ़ल्लामा सय्यद रह० फ़रमाते हैं कि कविता कहना जायज़ भी है, मक्रूह भी और हराम भी। और बाज़ सूरतों में तो वाजिब हो जाती है। जैसे, जब कोई अल्लाह और उस के रसूल की तौहीन कर रहा है तो इस का उत्तर देना ज़रूरी है। अगर कोई कवि है तो कविता में, कोई लेखक है तो अपने लेख के ज़रीआ़।

एक हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मुसलमान अपनी ज़बान और तल्वार दोनों से जिहाद करता है"। एक अन्य हदीस में फ़रमाया: "कुछ कवितायें हिक्मत से भरी होती हैं"। एक मर्तबा

➲आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने किसी से फ़रमाया था: "रूहुल कुदुस (जिब्रील) तुम्हारे साथ हैं, तो मुश्रिकों की मज़म्मत करो (यानी बुराइयाँ बयान करो)। और यह जो हदीस में आया है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अगर तुम्हारा पेट पीप से भर जाये तो यह इस से कहीं बेहतर है कि कविता से भरे"। तो इस से मुराद वह कवितायें हैं जो वाहियात, खुराफ़ात और बेकार बातों से भरी होती हैं। जिन में बेहयाई, फ़हश और अशलीलता की बातें हैं। इमाम शुअ़बी रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बक्र और उस्मान कविताएँ कहते थे और हज़रत अ़ली तो दोनों से बढ़ कर अच्छे कवि थे। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि० से उन की कवितायें पढ़वा कर सुनीं। एक मर्तबा आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे तो शरीद से फ़रमाया: क्या तुम्हें ज़ैद बिन सल्त की कुछ कवितायें याद हैं? उन्हों ने कहा जी हाँ! आप ने सुनीं, और बार-बार फ़रमाते जाते थे कि और पढ़ो। हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि कवितायें भी कलाम की तरह अच्छी और बुरी हुआ करती हैं। (यानी जिस प्रकार अच्छा कलाम कहना जायज़ और बुरा कलाम कहना नाजायज़ है, इसी प्रकार अच्छी कवितायें कहनी जायज़ और बुरी नाजायज़ हैं)।

बहरलहाल इस को मुस्तकिल पेशा और कमाई का धन्धा बना लेना सहीह नहीं है। शेर व शाइरी की तुक बन्दियों में पड़ कर इन्सान का ज़ेहन बातिल हो जाता है। उन को अपने कपड़े-लत्तों तक का होश नहीं रहता। कहीं भी रहें उन की बदहवासी उन के शाइर होने की तरफ़ इशारा करती है। इस प्रकार की तुकबन्दी करने और जोड़-तोड़ मिलाने वालों और ज़बर्रस्ती की शाइरी कर के ख़ाह-मख़ाह दिल व दिमाग़ ख़राब करने वालों के लिये तो बिल्कुल ही उचित नहीं है। 'लिकुल्लि फ़न्निन् रिजाल' (हर फ़न के लिये अल्लाह ने अलग-अलग इन्सान पैदा किये हैं) के तहत जिन को अल्लाह ने अपनी ओर से यह सलाहियत बख़्शी है उन्ही का हक़ है जैसे अल्लामा इक़्बाल और हाली।-- ख़ालिद

५३. यानी इन ज़ालिमों के मरने के साथ ही दोज़ख़ उन के लिये तय्यार है। जब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० (पहले ख़लीफ़ा) ने हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० को ख़लीफ़ा बनाया, तो यही आयत तिलावत फ़रमाई (वहीदी)

सूरः नम्ल-(27)

सूरः नम्ल (चींटी) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस सूरः में ९३ आयतें और ७ रुकूअ़ हैं।
शुभारंभ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

१. तासीन्[1], यह आयतें कुरआन अर्थात रोशन किताब की हैं[2] २. जो मोमिनों के लिये हिदायत और बशारत (ख़ुश्ख़बरी) हैं[3] ३. जो (अल्लाह को मान कर उस के आदेशानुसार) नमाज़ पढ़ते हैं और ज़कात देते हैं और आख़िरत पर विश्वास रखते हैं[4] ४. जो लोग आख़िरत के मुन्किर हैं हम उन के आमाल उन की नज़रों में मुज़य्यन {ख़ुश्नुमा} कर देते हैं पस वह भटकते फिरतें हैं। ५. यही लोग हैं जिन के लिये बहुत बड़ा➲

(٢٧) سُوْرَةُ النَّمْلِ مَكِّيَّةٌ (٤٨)
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
طٰسٓ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۝١
هُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ
وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝٣ اِنَّ
الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ
يَعْمَهُوْنَ ۝٤ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ
فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ۝٥ وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ
مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ۝٦ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖٓ
اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ۗ سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ

अ़ज़ाब (तय्यार) है और यही लोग आख़िरत में सब से अधिक हानि उठाने वाले हैं। ६. और क़ुरआन शरीफ़ तुझे हिक्मत वाले, जानने वाले की तरफ़ से दिया गया है। ७. जब मूसा ने अपने घर वालों से कहा कि मैं ने आग देखी है[5]। मैं तुम्हारे पास कोई सूचना

....

१. मौलाना अमृतसरी मर्हूम ने इस शब्द का तर्जुमा यूँ किया है "मैं अल्लाह बड़ा कुशादगी वाला और पाक हूँ"। हक़ीक़त यह है कि इन शब्दों का अर्थ केवल अल्लाह ही को मालूम है (राज़)

२. 'खुली किताब' अर्थात जिस का विषय स्पष्ट है। हर शख़्स की समझ में आ जाता है। इस में हर प्रकार का स्पष्ट बयान है (वहीदी)

३. 'हुदंव्वबुश्रा' (हिदायत और बशारत है) यह अ़रबी ग्रामर में "हाल, ख़बर, बदल" तीनों हो सकता है।

४. या फिर वह उन्हीं कामों को हमेशा किये जाते हैं। कुछ उलमा यह तर्जुमा करते हैं "जो लोग आख़िरत का यक़ीन नहीं रखते, हम ने उन को भी नेक आमाल बता दिये हैं, लेकिन फिर भी वह भटकते फिरते हैं। यानी यह मालूम होने के बावजूद कि नेक काम है, यह लोग नहीं करते हैं। (वहीदी)

५. यह आग, आग न थी बल्कि अल्लाह का नूर था जो हज़रत मूसा को दूर से आग की शक्ल में दिखाई दे रहा था। यह नूर एक पेड़ पर चमक रहा था। अल्लाह तआ़ला ने उस पर अपनी तजल्ली फ़रमाई थी और आवाज़ देने वाला भी अल्लाह ही था। तौरात में है कि अल्लाह तआ़ला सैना पहाड़ से आया, फिर साई़न से उस ने देखा और फ़ारान की पहाड़ियों से बुलन्द हुआ। यह हज़रत मूसा, ई़सा और मुहमम्द सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तरफ़ इशारा है (वहीदी)

بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ۝٧ فَلَمَّا جَآءَهَا
نُودِيَ أَنۢ بُورِكَ مَن فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا وَ
سُبْحَٰنَ اللَّهِ رَبِّ الْعَٰلَمِينَ ۝٨ يَٰمُوسَىٰٓ إِنَّهُۥٓ أَنَا اللَّهُ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝٩ وَأَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَلَمَّا رَءَاهَا تَهْتَزُّ
كَأَنَّهَا جَآنٌّ وَلَّىٰ مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ ۚ يَٰمُوسَىٰ
لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُونَ ۝١٠ إِلَّا
مَن ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًۢا بَعْدَ سُوٓءٍ فَإِنِّي غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ۝١١ وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ
مِنْ غَيْرِ سُوٓءٍ ۖ فِي تِسْعِ ءَايَٰتٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِۦٓ ۚ
إِنَّهُمْ كَانُوا۟ قَوْمًا فَٰسِقِينَ ۝١٢ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ ءَايَٰتُنَا

या सुलगता हुआ अंगारा लाता हूँ ताकि तुम लोग गर्माई पाओ ८. पस (वह इस ख़याल से बच्चों को छोड़ कर निकला) जब उस के निकट आया तो उस को पुकार हुयी कि मुबारक है जो आग में है और जो उस के इर्द-गिर्द है। और अल्लाह रब्बुल् आ़लमीन पाक है। ९. ऐ मूसा! (अस्ल) बात यह है कि मैं हूँ अल्लाह बड़ी हिक्मत वाला, सब पर ग़ालिब। १०. और तू अपनी लकड़ी को फेंक दे। फिर जब उस ने देखा कि वह हर्कत करती है, गोया कि वह पतला साँप है, तो पीठ फेर कर भागा और उस ने लौट कर भी न देखा। ऐ मूसा! डरो नहीं (तेरे जैसा मुक़र्रब बन्दा क्यों डरे) मेरे नज़दीक पहुंच कर रसूल डरा नहीं करते। ११. हाँ, जो (बुराई

مُبۡصِرَةً قَالُوۡا هٰذَا سِحۡرٌ مُّبِيۡنٌ ۝ وَجَحَدُوۡا بِهَا وَاسۡتَيۡقَنَتۡهَاۤ اَنۡفُسُهُمۡ ظُلۡمًا وَّعُلُوًّا ؕ فَانۡظُرۡ كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الۡمُفۡسِدِيۡنَ ۝ وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا دَاوٗدَ

से) अत्याचार करे (उसे तो डरना चाहिये, लेकिन) जो फिर बुराई के बाद नेकी इख़्तियार करे तो मैं बख़्शन्हार और मेहरबान हूँ[६] १२. और तू अपना हाथ अपने गरीबान में दाख़िल कर (देखो) वह बग़ैर बीमारी के सफ़ेद (चमकता हुआ) निकले गा (यह दो और बाक़ी सात, यानी कुल) नौ निशानों के साथ तुम फ़िर्औन और उस की क़ौम की तरफ़ जाओ। बेशक वह बदकारों की क़ौम है[७]। १३. फिर जब उन के पास हमारे स्पष्ट निशान आये तो उन्हों ने (बजाए मानने के) कहा: यह तो स्पष्ट जादू है १४. और ज़ुल्म व तकब्बुर की वजह से (जिन के वह आदी हो रहे थे) उन्हों ने उन निशानात को न माना, मगर उन के दिल तस्लीम कर चुके थे। फिर तुम देख लो उन फ़सादियों का कैसा अन्जाम हुआ[८]

....

६. 'बुराई के बाद नेकी इख़्तियार करे' यानी बुराई से तौबा की और शर्मिन्दा हुआ। जैसे, हज़रत आदम ने ग़लती से फल खा लिया, हज़रत दावूद ने एक पड़ोसी की महिला से निकाह कर लिया, फिर शर्मिन्दा हुये और तौबा की। इसी प्रकार मूसा से भी एक ग़लती हो गयी थी। इन के घूंसा मारने से एक फ़िर्औनी (क़िब्ती) मर गया था।

यह सब ग़लतियाँ अगर्चे ऐसी हैं जो आ़म लोगों के हक़ में कोई ख़ास बड़े गुनाह के संदर्भ में नहीं आतीं। मगर चूंकि संदेष्टा मासूम और पाक होते हैं, इसलिये यह छोटी-मोटी ग़लतियाँ भी बड़ी समझी जाती हैं। और अल्लाह के माफ़ कर देने के बाद भी, वह डरते रहते हैं। मतलब इस आयत का यह हुआ कि मेरे हुज़ूर में संदेष्टा नहीं डरते, मगर वही संदेष्टा डरते हैं जिन्हों ने कोई कुसूर किया है। लेकिन फिर इस के बाद भलाई की तो मैं बख़्शने वाला मेहरबान हूँ। इस आयत में इस बात की तरफ़ इशारा है कि ऐ मूसा! तुम को साँप से तो बिल्कुल नहीं डरना चाहिये था इस लिये कि मैं ने तुम को भी बख़्श दिया। और पैग़ंबरों को बख़्श देने के बाद कोई चीज़ अल्लाह से डरने में रुकावट नहीं होती, क्योंकि वह अल्लाह के मुक़र्रब होते हैं और जो अल्लाह से जितना क़रीब होता है उतना ही अधिक डरता है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फ़रमान है: "तुम्हारे अगले-पिछले गुनाह अल्लाह ने माफ़ कर दिये"। फिर भी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि काश मैं एक दरख़्त होता जिस को लोग काट डालते। शफ़ाअ़त वाली लंबी हदीस में है कि क़ियामत के दिन बड़े-बड़े मर्तबे वाले पैग़ंबर अल्लाह के सामने जाने से डरें गे, हालाँकि उन सब के कुसूर माफ़ किये जा चुके हैं। (वहीदी)

७. हज़रत मूसा को अल्लाह तआ़ला ने जो नौ निशानियाँ दे कर फ़िर्औन के पास भेजा था उन में से एक निशानी हाथ का बग़ल से निकालने के बाद चमकने लगना भी है। इस निशानी के बारे में मौजूदा तौरात की दूसरी किताब "खुरुज" के चौथे बाब की छटी आयत में हज़रत मूसा के हाथ को सफ़ेद दाग़ वाला लिखा है। कुरआन मजीद में साफ़-साफ़ लिखा है कि "बग़ैर किसी बीमारी के"। इसी लिये मैं ने तर्जुमे में भी "बग़ैर किसी बीमारी के" का शब्द बढ़ा दिया है ताकि मौजूदा तौरात की गलती का सुधार हो जाये। वह बदकार क़ौम है, बदकारी की जड़ और बुनियाद अल्लाह से न डरना है। लेकिन जो शख़्स अल्लाह ही को न मानता हो तो उस की ढिठाई की कोई सीमा ही नहीं हो गी। फिर उस को बुराई से रोकने में भला कौन सी चीज़ रूकावट होगी? (सनाई)

८. 'क्या अन्जाम हुआ' यानी किस प्रकार वह दुनिया की नज़रों में ज़लील हुये' इसी प्रकार यह मुश्रिक और काफ़िर भी जो तुम्हारी मुख़ालिफ़त पर कमर कसे हुये हैं, एक रोज़ ज़लील किये जायें गे। यहाँ तक तो नबुव्वत के सिलसिले

की फ़क़ीराना मिसाल दी गयी थी। अब आगे हज़रत सुलैमान के क़िस्से से बादशाही मिसाल पेश की जा रही है। (सनाई)

وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥﴾ وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۗ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾ وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٧﴾ حَتّٰٓى اِذَآ اَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰٓاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٨﴾ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ

१५.और हम ने दावूद और सुलैमान को अ़िल्म दिया (था) और उन दोनों ने कहा:सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं जिस ने हम को अपने बहुत से ईमानदार बन्दों पर बर्तरी बख़्शी १६. और सुलैमान (अपने बाप) दावूद का वारिस हुआ (यानी बाप की तरह दीन की ख़िदमत उस के सुपुर्द हुयी)और उस ने कहा: ऐ लोगो! हम को परिन्दों की बोली भी सिखाई गयी है और हम को हर एक (ज़रूरी)चीज़ (अल्लाह के हाँ से) मिली है। निः संदेह यह खुला हुआ अल्लाह का फ़ज़्ल है। १७. और (एक मर्तबा हज़रत) सुलैमान के सामने जिन्नों, इन्सानों और जानवरों में से उस की फ़ौज जमा की गयी तो वह सब उस के सामने इकट्ठे किये गये (फिर जमा हो कर सब चले) १८. यहाँ तक कि वह चीटियों के एक मैदान में पहुंचे तो उन (चीटियों) में से एक ने कहा: ऐ चीटियो! तुम अपने बिलों में घुस जाओ ऐसा न हो कि सुलैमान और उस की फ़ौज अन्जाने में तुम को रौंद डालें[९] १९. (चींटी का यह कलाम वह्यि या कश्फ़ के ज़रीआ़ सुलैमान तक भी पहुंचा) वह उस के कहने से हंस पड़ा और (प्रसन्न हो कर) कहा: ऐ मेरे पर्वरदिगार! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी इस नेमत का शुक्र अदा करूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर की और यह (भी तौफ़ीक़ दे) कि मैं नेक अ़मल करूँ जिन को तू पसन्द करता है और अपनी रहमत के साथ मुझको नेक बन्दों में दाख़िल फ़रमा २०. और(उसी यात्रा में) सुलैमान ने परिन्दों की तलाश की तो कहा: क्या कारण है कि में हुद्हुद् (यानी खट बढ़ई परिन्दा) को नहीं देखता

....

९. हो सकता है किसी साहब को यहाँ पर एतराज़ हो कि चींटी ने कैसे कलाम किया और हज़रत सुलैमान ने कैसे सुना और समझा? इस लिये हम चीटियों की आ़दतों और उन की हर्कतों के बारे में पंजाब युनिवर्सिटी की उर्दू की आठवीं किताब से ऐक पैरागराफ़ को नक़ल करते हैं। उस किताब में लिखा है कि: "चींटियाँ अपने और ग़ैर की पहचान बड़ी अच्छी तरह करती हैं। हालाँकि उन की आयु बहुत थोड़ी होती है, लेकिन अपना ठिकाना कभी नहीं

➲भूलतीं। अपने और पराए में फ़र्क़ कर सकती है। अगर भटक कर एक दूसरे से अलग हो जायें तो जब भी मिलने का इत्तिफ़ाक़ होगा तो तुरन्त एक-दूसरे को पहचान लेंगी। उनकी एक और बात भी बहुत आश्चर्यजनक है कि मुर्दो को दफ़्न करती हैं और इन्सान की तरह जनाज़ा भी निकालती हैं। सिडनी शहर के न्यूसाउथ वेल्ज़ (New South Wales)की एक मेम का बयान है कि उस का एक चार वर्षीय बच्चा एक मकान में सोया हुआ था कि वह अचानक चौंक पड़ा। वह झट उस के पास दौड़ कर गयी तो क्या देखती है कि बच्चा चिल्ला रहा है और उस के बदन पर चींटियों की एक भीड़ जमा है। उसे पूरा विश्वास हो गया कि चींटियों ने बच्चा को काट खाया। उस ने बीस चींटियों को मार डाला और बाक़ी को बच्चा के जिस्म से हटा कर उस को गौद में ले लिया और नहलाने के लिये चली गयी। चूँकि उसे शौक़ था कि चींटियों का हाल मालूम करे इस लिये वापस आ गयी तो क्या देखती हैं कि तमाम चींटियाँ अपने-अपने ठिकानों को वापस जा रही हैं। यह भी उन के पीछे-पीछे चल पड़ी। वह अपने बिल में घुस गयीं। उन में से चार-पांच पुनः अपने घर से लौट कर कुछ दूर चल कर ठहर गयीं। थोड़ी देर के पश्चात् और बहुत सारी चींटियाँ भी वहाँ आकर इकट्ठा होने लगीं। सभी लाशों के पास चल पड़ी (उन २० चींटियों के पास जिन को मेम साहब ने मार डाला था) दो चींटियों ने एक शव को उठाया और उन के पीछे कुछ चींटियाँ चलने लगीं। इसी प्रकार सभी के वास्ते इन्तिज़ाम किया गया। अब बाक़ी दो सौ के क़रीब चींटियाँ सब के पीछे मातम करते हुये चलीं। इसी प्रकार चलते हुये समस्त चींटियां एक छोटे से टीले पर पहुँची। राह में अगर एक जोड़ी थक-हार जाती तो पिछली जोड़ी उन को अलग कर के स्वँय भार संभाल लेती थी। यहाँ दो सौ में से आधी चींटियों ने गड्ढे खोदे और मुर्दा शवों को उन में डाल दिया और बाक़ी चींटियों ने उन के ऊपर मिट्टी डाल कर ढाँक दिया। छः के निकट चींटियां ऐसी भी थीं जिन्हों ने कुछ काम न किया था, इस लिये उन्हें मार डाला गया और इन को भी बग़ल में दफ़्न कर दिया गया। जब फ़ारिग़ हुयीं तो सब की सब क़त्ल की हुयी चींटियों पर आयीं और वहाँ थोड़ी देर ठहर कर हर एक ने अपने घर की राह ली।

मेम साहब कहती हैं कि यह तमाशा हम ने अपनी आँखों से कई मर्तबा देखा। इस के आलावा हम स्वयं देखते हैं कि एक चींटी इधर से जाती है और एक उधर से आती है और दोनों मुंह जोड़ कर खड़ी हो जाती हैं, फिर थोड़ी देर के बाद अपनी-अपनी राह चली जाती है। इस से साफ़ पता चलता है कि वह ठहर कर परस्पर बातें करती हैं।

रहा यह प्रश्न कि हज़रत सुलैमान ने उन की बात को कैसे सुन लिया? तो इस का उत्तर यह है कि उन को वह्यि के ज़रीआ सूचना दी गयी थीं। इस की मिसालें बहुत सी मिलती हैं कि संदेष्टाओं को इस प्रकार की घटनाओं के बारे में वह्यि और इल्हाम (दिल में बात डाल देना) के ज़रीआ जानकारी हो जाती है। हज़रत याकूब अ़लै० को मिस्र से क़ाफ़िला के निकलने और हज़रत यूसुफ़ के हालात के बारे में पूरी जानकारी मिल गयी। इसी प्रकार और भी बहुत सारी मिसालें मिल जायें गी। इसी प्रकार हज़रत सुलैमान अ़लै० को भी अ़िल्म हुआ हो गा (सनाई)

مِنَ الْغَآئِبِيْنَ ۝ لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاذْبَحَنَّهٗٓ
اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ
فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍۢ بِنَبَاٍ
يَّقِيْنٍ ۝ اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَاُوْتِيَتْ
مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ۝ وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا

क्या वह ग़ाइब है? २१. (अगर वह जीवित है) तो मैं उस को सख़्त अ़ज़ाब करूँ गा या ज़ब्ह कर डालूँ गा, या मेरे पास कोई स्पष्ट दलील (अपनी ग़ैरहाज़िरी पर) लाये २२. पस वह (हुदहुद) थोड़ी देर के बाद आ मौजूद हुआ तो उस ने कहा: मैं ने एक ऐसे मामले के बारे में ख़बर पाई है जिस की हुज़ूर को जानकारी नहीं और मैं हुज़ूर के पास सबा क़ौम के पास से➲

يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ
اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٢٤﴾
اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٦﴾ قَالَ سَنَنْظُرُ
اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾ اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ
هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا
يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْۤ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ

एक तहक़ीक़ी ख़बर लाया हूँ २३. मैं ने एक महिला को उँन पर शासन करते पाया और उसे हर प्रकार की सुविधायें प्राप्त हैं और उस का तख़्त भी बहुत बड़ा है २४. और (इस के बावजूद उस की मूर्खता का यह हाल है कि) मैं ने उस को और उस की क़ौम को पाया है कि अल्लाह को छोड़ कर सूर्य की इ़बादत करते हैं और शैतान ने उन के बुरे कामों को उन की नज़रों में सुन्दर दिखा कर उन को राह से रोक दिया है इस लिये वह राह नहीं पाते २५. कि अल्लाह ही को सज्दा करें जो आकाश और ज़मीन की छुपी चीज़ों को ज़ाहिर कर देता है और जो तुम छुपाते या ज़ाहिर करते हो, सब को जानता है। २६. वह अल्लाह है, उस के अ़लावा कोई माबूद नहीं, वह बड़े तख़्त का मालिक है। २७. (यह ख़बर सुन कर) सुलैमान ने कहा: हम देखें गे कि तू ने सच कहा है या झूठों में से है। २८. अच्छा यह मेरी चिट्ठी ले जा! यह उन के पास डाल कर उन से ज़रा हट जाना, फिर देखना कि वह क्या उत्तर देते हैं? (हुदहुद ने चिट्ठी पहुंचा दी) २९. महारानी ने कहा: ऐ मेरे दर्बारियो! मेरे पास एक चिट्ठी आयी है

كَرِيْمٌ ﴿٢٩﴾ اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ
الرَّحِيْمِ ﴿٣٠﴾ اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَتْ
يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْۤ اَمْرِيْ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً
اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿٣٢﴾ قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا
بَاْسٍ شَدِيْدٍ ۙ وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿٣٣﴾
قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَ
جَعَلُوْۤا اَعِزَّةَ اَهْلِهَاۤ اَذِلَّةً ۚ وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٤﴾
وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ
الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ
بِمَالٍ فَمَاۤ اٰتٰىنِۦَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّاۤ اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ
بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ

३०. कुछ शक नहीं कि वह सुलैमान (बादशाह) की तरफ़ से है और वह अल्लाह रहमान, रहीम के नाम से शुरू हुआ है[10] ३१. (लिखा है कि) हम से सरकशी मत करो और हमारे हुज़ूर में फ़रमांबर्दार हो कर चले आओ[11] ३२. उस ने कहा: ऐ मेरे दर्बारियो! तुम मेरे इस काम में मुझे राए दो। मेरा नियम है कि जब तक तुम लोग मेरे पास न आओ मैं किसी काम का फ़ैसला नही करती[12] ३३. उन्हों ने कहा: हम ताक़त वाले हैं और बड़े लड़ाकू हैं और सारा इख़्तियार हुज़ूर को है सो सरकार जो आदेश देना चाहें ग़ौर फ़र्मा लें। ३४. मलका {महारानी} ने कहा: नि: संदेह बादशाह जब किसी शहर में आते हैं तो उस को ख़राब कर देते हैं और उन के ग़िज़्ज़तदार लोगों को ज़लील कर देते हैं और (तुम जान लो कि

वास्तव में) ऐसा ही करते हैं। ३५. और मैं उन की ओर हदिया {भेंट} भेज कर देखती हूँ कि (मेरे) एलची (दूत) क्या उत्तर लायें गे (यह कह कर उस ने अपना सफ़ीर {दूत} भेजा) ३५. सो जब वह सुलैमान के पास पहुंचा तो उस ने (तुहफ़ा तहाइफ़ देख कर) कहा: तुम मुझे माल से मदद देना चाहते हो? जो कुछ अल्लाह ने मुझे दिया वह उस से अच्छा है जो तुम को दिया है, तुम ही अपने हृदयों पर प्रसन्न हुआ करते हो[१३] ३७. तू उन की तरफ़ वापस जा! हम उन पर ऐसी फ़ौज लायें गे कि उस के मुक़ाबला की उन में ताब न होगी और हम उन को उन के मुल्क से ज़लील कर के निकाल दें गे ३८. सुलैमान ने कहा: ऐ सर्दारो!

....

१०. जिस के प्रताप और जलाल को तुम ने भी सुना हो गा। यह एक प्रश्न के उत्तर की तरफ़ इशारा है कि हज़रत सुलैमान को तो सबा की महारानी बिल्क़ीस के बारे में ख़बर ही न लगी, मगर महारानी को कैसे मालूम हुआ कि सुलैमान भी कोई ऐसा बादशाह है जिस का पत्र इ़ज़्ज़त के क़ाबिल है। (सनाई)

११. जिन लोगों ने यह कहा है कि पत्र का आरंभ "इन्नहूमिन् सुलैमान ......" से हुआ है, यह ग़लत है। इसलिये कि तमाम संदेष्टाओं का यह नियम है कि वह अपने पत्र का आरंभ "बिस्मिल्लाह" से करते हैं। और हज़रत सुलैमान ने भी ऐसा ही किया था। बात यह है कि महारानी ने ख़त भेजने वाले का नाम स्वँय ही पहले बतलाया है, वर्ना वह जुम्ला बिस्मिल्लाह के बाद था।

यानी पत्र इस प्रकार था ::बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम इन्न्हू मिन सुलैमा-न अल्ला तअ़लू अ़लय्या वअ़तूनी मुस्लिमीन........" (ख़ालिद)

१२. यानी जब तक मुझ को इतमिनान न हो जाये मैं कोई फ़ैसला नहीं करती। मैं कभी-कभी कौंसिल की राए के ख़िलाफ़ भी फ़ैसला करती हूँ, मगर कौंसिल की राय तो बहरहाल सुनती हूँ। आप को मालूम होगा कि हिन्दुस्तान में (सन १९४७ से पहले तक) वाइसराय भी कौंसिल की राय के ख़िलाफ़ फ़ैसला नहीं करता था, अगर्चे वाइस राय को इस बात का इख़्तियार है। यह सारी बातें इस लिये पेश की गयीं कि महारानी ने वज़ीरों से मशवरा लेने की वजह यह बतलायी कि जब तक मैं तुम से राए न लेलूँ कोई फ़ैसला नहीं करती, लेकिन आख़िर में जो फ़ैसला किया वह वज़ीरों की राए के ख़िलाफ़ किया (सनाई)

१३. यहाँ पर एक प्रश्न यह उठता है कि हज़रत सुलैमान महारनी के एल्ची से इतनी सख़्ती से क्यों पेश आये? जब कि अल्लाह का आदेश है कि सफ़ीरों (एलचियों)के साथ अच्छा सुलूक करो और अगर कोई क़ौम सुलह पर आमादा हो तो उस से सुल्ह कर लो। इस का उत्तर यह है कि हज़रत सुलैमान ने सफ़ीर की कोई तौहीन नहीं की, बल्कि अ़िज़्ज़त के साथ पेश आये थे। और जो कुछ सख़्ती उन के कलाम में मालूम होती है यह केवल शब्दों में है। फिर दूसरी बात यह है कि सफ़ीर कोई सुल्ह-सफ़ाई या इक़रार और इन्कार का संदेश ले कर नहीं आया था, बल्कि मामूली तुहफ़े ले कर आया था, इस लिये हज़रत सुलैमान ने उस को आगाह किया कि जब तक बाक़ायदा सुलह या मातहती कुबूल कर लेने की बात न होगी, हम इतने पर राज़ी न हों गे। (सनाई)

يَأْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ۝ قَالَ

कौन तुम में से उस का तख़्त मेरे पास ला सकता है? इस से पहले कि लोग मेरे पास ताबेदार

عِفۡرِيۡتٌ مِّنَ الۡجِنِّ اَنَا اٰتِيۡكَ بِهٖ قَبۡلَ اَنۡ تَقُوۡمَ
مِنۡ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّىۡ عَلَيۡهِ لَقَوِىٌّ اَمِيۡنٌ ۝ قَالَ
الَّذِىۡ عِنۡدَهٗ عِلۡمٌ مِّنَ الۡكِتٰبِ اَنَا اٰتِيۡكَ بِهٖ قَبۡلَ
اَنۡ يَّرۡتَدَّ اِلَيۡكَ طَرۡفُكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسۡتَقِرًّا عِنۡدَهٗ
قَالَ هٰذَا مِنۡ فَضۡلِ رَبِّىۡ ۖ لِيَبۡلُوَنِىۡۤ ءَاَشۡكُرُ اَمۡ
اَكۡفُرُ ؕ وَمَنۡ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشۡكُرُ لِنَفۡسِهٖ ۚ وَمَنۡ كَفَرَ
فَاِنَّ رَبِّىۡ غَنِىٌّ كَرِيۡمٌ ۝ قَالَ نَكِّرُوۡا لَهَا عَرۡشَهَا نَنۡظُرۡ
اَتَهۡتَدِىۡۤ اَمۡ تَكُوۡنُ مِنَ الَّذِيۡنَ لَا يَهۡتَدُوۡنَ ۝ فَلَمَّا
جَآءَتۡ قِيۡلَ اَهٰكَذَا عَرۡشُكِ ؕ قَالَتۡ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَ
اُوۡتِيۡنَا الۡعِلۡمَ مِنۡ قَبۡلِهَا وَكُنَّا مُسۡلِمِيۡنَ ۝ وَصَدَّهَا
مَا كَانَتۡ تَّعۡبُدُ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهَا كَانَتۡ مِنۡ قَوۡمٍ
كٰفِرِيۡنَ ۝ قِيۡلَ لَهَا ادۡخُلِى الصَّرۡحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتۡهُ

➲हो कर आयें ३९. जिन्नों में से एक हट्टा-कट्ठा देव बोल उठा कि मैं उस को ला सकता हूँ इस से पहले कि हुजूर अपने इस स्थान से उठें, और मैं इस काम पर कुदरत रखता हूँ और अमानतदार भी हूँ ४०. एक शख़्स ने जिस के पास किताब का अ़िल्म था कहा: हुजूर की आँख झपकने से पहले मैं उस को हुजूर के सामने ला सकता हूँ। पस जब उस ने अपने सामने मौजूद देखा तो कहा: "यह मेरे पर्वरदिगार का फ़ज़्ल है[१३/२] ताकि मुझ को आज़माये कि मैं शुक्र करता हूँ या नाशुक्री"। और जो कोई शुक्र करता है वह अपने नफ़्स के लिए शुक्र करता है और जो नाशुक्री करता है तो अल्लाह बेनियाज़ और करीम है। ४१. (सुलैमान ने) कहा: तुम उस का यह तख़्त (ज़रा)तबदील कर दो ताकि हम देखें कि वह (उस के पहचानने में) राह पाती है या उन लोगों में होती है जो राह नहीं पाया करते। ४२. पस (आख़िरकार) जब वह आयी तो (उस की परीक्षा लेने को) उस से कहा गया: क्या तेरा तख़्त इसी प्रकार का है[१४]? उस ने कहा: यह तो गोया वही है और इस वाक़िआ़ से पहले भी हमें अ़िल्म था और हम फ़र्मांबर्दार थे[१५] ४३.और उस को (शाही दर्बार में हाज़िर होने से) उन चीज़ों ने रोक रखा था जिन को वह अल्लाह के अ़लावा पूजते थे। क्योंकि वह काफ़िरों की क़ौम से थी (जो अल्लाह के अ़लावा और चीज़ों की भी अ़िबादत किया करते थे)४४. उस से कहा गया: शाही महल में पधारिये

....

१३/२. तख़्त को लाने वाला हज़रत सुलैमान का वज़ीर, या मुंशी आसिफ़ बिन बरख़िया नाम का था। कहा जाता है कि उस को "इस्मे आज़म" का अ़िल्म व अ़मल था। 'निगाह झपकने से पहले' का अर्थ यह है तुम आकाश की ओर नज़र करो फिर वहां से लौट कर निगाह डालो गे तो तख़्त तुम्हारे सामने होगा। यह भी कहा गया है कि "इस्मे आज़म" के ज़ोर से वह तख़्त ज़मीन के नीचे-नीचे से आ कर हज़रत सुलैमान अ़लै० के सामने उभर आया। इब्ने अ़ब्बास रज़ि और इमाम मुजाहिद रह० से यही रिवायत है। (वहीदी)

नोटः आयत न० ४० में " जिस के पास किताब का अ़िल्म था उस ने कहा" इस की तफ़्सीर में मौलाना अश्रफ़ अ़ली थानवी रह० लिखते हैं " अक़रब यह है कि इस से सुलैमान अ़लै० मुराद हैं"। इतना ज़र्बदस्त अ़िल्म पैग़ंबर के अ़लावा और किस को हासिल हो सकता है? और किताब का अ़िल्म भी उन से अधिक किस को है? चुनान्चे अ़िल्म की बदौलत जब तख़्त को हाज़िर कर दिया तो बजाये यह कि तकब्बुर करते, अल्लाह का शुक्र अदा किया और कहा:➲

➲यह जो कुछ हुआ है मेरे रब के फ़ज़्ल से हुआ है। ''हाज़ा मिन् फज़लि रब्बी'' (यह मेरे रब के फ़ज़्ल से हुआ है) यह जुम्ला हज़रत सुलैमान अ़लै० ही का है। वर्ना तख़्त लाये दूसरा और शुक्र आदा करें सुलैमान, यह बात कुछ उचित नहीं लगती।फिर यह कि हज़रत सुलैमान ने परीक्षा लेते हुये प्रश्न किया था कि कौन कितनी जल्दी ला सकता है? जब पूरे दर्बारियों में से सब से अधिक जल्दी लाने वाले ने कहा कि मैं मज्लिस की समाप्ति से पहले लादूँगा।, तो हज़रत सुलैमान ने कहा कि तुझ से भी पहले लाने की मैं क्षमता रखता हूँ और पलक झपकते ही ला हाज़िर किया। इस से सुलैमान अ़लै० का रोब, दबदबा, प्रताप, जलाल और हैबत दरबारियों पर और अधिक पड़ी। बहर हाल यह तो मालूम ही है कि इस में उलमा का इख़्तिलाफ़ है और मेरे नज़दीक हक़ यही है कि तख़्त लाने वाले हज़रत सुलैमान ही थे, न कि कोई वज़ीर और दर्बारी..................-ख़ालिद

१४. महारानी से तख़्त के बारे में प्रश्न करने का मक़्सद यह था कि उस की अक़्ल का इम्तिहान हो जाये और दूसरे यह कि अपने तख़्त को मेरे पास देख कर डर जाये और मन ही मन में समझले कि मैं इतनी ताक़त रखता हूँ कि उस के आने से पहले ही उस का तख़्त भी मंगवा लूँ। चुनान्चे इस परीक्षा में उस की अक़्ल का अन्दाज़ा हो गया (सनाई)

१५. इस परीक्षा का जो मक़्सद था वह भी पूरा हो गया और सबा मुल्क की महारानी पर हज़रत सुलैमान का रोब तारी हो गया। उस की बात-चीत से भी ऐसा अन्दाज़ा होता था कि हज़रत सुलैमान की ज़ात का प्रभाव पहले ही से उस के दिल पर था, मगर मज़हब के इख़्तिलाफ़ और तअ़स्सुब की वजह से वह अब तक न पहुँच सकी थी (सनाई)

حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ۚ قَالَ اِنَّهٗ
صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ۗ قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ
نَفْسِيْ وَاَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٤﴾
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا اَنِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٥﴾
قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ
الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٦﴾
قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ۚ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ
عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَكَانَ فِي
الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا
يُصْلِحُوْنَ ﴿٤٨﴾ قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَ
اَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ
اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا

पस जब उस ने उस को देखा तो उस को गहरा पानी समझा और अपनी पिंडली से कपड़ा उठा लिया। सुलैमान ने कहा: यह महल शीशों का जुड़ाव है (पानी नहीं है) उस ने कहा: ऐ मेरे पर्वरदिगार! मैं ने अपने आप पर अत्याचार किया (कि आज तक शिर्क करती रही।और आज से) मैं सुलैमान के साथ रब्बुल् आ़लमीन् की फ़रमांबर्दार हूँ[१६]। ४५. और हम ने समूद क़ौम की तरफ़ उन के भाई सालेह को संदेश देकर भेजा कि अल्लाह ही की इ़बादत करो पस वह सुनते ही दो गरोह हो कर परस्पर झगड़ने लगे[१७] ४६. (यह क़िस्सा सुन कर) सालेह ने कहा कि मेरे भाईयो[१८]! भलाई से पहले बुराई के लिये क्यों जल्दी करते हो[१९]? क्यों अल्लाह से तुम बख़्शिश नही माँगते? ताकि तुम पर रहम किया जाये ४७.वह बोले! हम ने तुझ को और तेरे साथ वालों को बड़ा ही मंहूस पाया है। सालेह ने कहा: तुम्हारी नहूसत अल्लाह के हाँ से है, बल्कि तुम अ़ज़ाब में डाले जाते हो[२०] ४८. शहर में नौ➲

➲लोग ऐसे थे जो मुल्क में फ़साद करते थे और (किसी प्रकार) इस्लाह (सुधार)न करते थे। ४९. उन्हों ने परस्पर कहा: अल्लाह की क़सम खाओ कि हम उस को और उस के साथ वालों को क़त्ल कर डालें गे फिर उस के वली को कह दें गे कि हम उस की हलाकत के समय उपस्थित न थे और हम (इस बयान में)बिल्कुल सच्चे हैं। ५०. उन्हों ने (हर प्रकार के)पोशीदा दाँव किये और हम ने भी पोशीदा हुक्म दिया(ऐसा कि उन को तबाह-बर्बाद कर दिया)

....

१६. ताकि मेरे पिछले गुनाह माफ़ हो जायें और आइन्दा मेरी तौबा कुबूल हो। सोचने की बात है कि इतनी बड़ी हुकूमत की महारानी को हिदायत और सच्ची राह की तालीम दी गयी तो तुरन्त उस ने कुबूल कर ली। यह इन्सान की सब से बड़ी मानवता है कि अल्लाह के आदेश के सामने चूँ तक न करे। यही शिक्षा देने के लिये सभी संदेष्टा और नेक बन्दे आये थे।

१७. 'वह परस्पर झगड़ने लगे' एक गरोह तो ईमान ले आया, लेकिन दूसरा गरोह बराबर अपनी ज़िद पर अड़ा रहा और मुख़ालिफ़त ही करता रहा। यह मुख़ालिफ़ गरोह हज़रत सालेह और उन पर ईमान लाने वालों से कहते कि हम तो कभी भी तुम्हारी बात नही मानें गे। अगर,तुम सच्चे हो तो हम पर अ़ज़ाब ले आओ यह सुन कर हज़रत सालेह ने कहा कि ऐ मेरे भाइयो......... (सनाई)

१८. मेरे भाइयो! अल्लाह से डरो और नेकी के काम करो.......।

१९. क़ौम को तो चाहिये था कि ईमान लाती और नेक अ़मल करती , लेकिन हुआ इस का उल्टा बजाए ईमान लाने के कहने लगे कि हम ईमान नहीं लाते और वह तुम्हारा अ़ज़ाब कहाँ है जिस की रोज़-रोज़ धमकी देते रहते हो। जल्दी से हम पर उतार दो (वहीदी)

२०. वह अ़ज़ाब भेज कर उन को तंबीह (चेतावनी) करता है, ताकि कुफ़्र और शिर्क छोड़दें और उस पर ईमान ले आयें। कुछ उलमा ने यह तर्जुमा किया है। "बात यह है कि अ़ज़ाब तुम लोगों के गुनाहों की वजह से है"। इमाम कुर्तुबी लिखते हैं कि दुनिया के इन्तिज़ाम को बिगाड़ने में नहूसत के एतिक़ाद से ज़्यादा कोई चीज़ नहीं हैं। जो लोग कमज़ोर अ़क़ीदे के होते हैं उन का कोई काम नही बनता। कुछ जाहिलों का यह अक़ीदा है कि गाय का बोलना, कौए का आवाज़ देना, किसी का छींकना, गाय या महिला का सामने से गुज़रना, कुत्ते का रोना, उल्लू का बोलना, अथवा बिल्ली आदि का सामने से गुज़रना यह सब नहूसत है, तो उस शख़्स से बड़ा मूर्ख और कोई नहीं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं, बुरा शगुन लेना शिर्क है, इसलिये कि इस्लाम में बद शगूनी की कोई गुन्जाइश नहीं है"। अ़रब के मुश्रिक और काफ़िर भी इसी प्रकार के वह्म में गिरफ़्तार थे। सफ़र करने से पहले परिन्दा को उड़ाते, अगर वह दायें तरफ़ उड़ता तो मुबारक और बायें तरफ़ जाता तो मन्हूस जानते थे। इस्लाम ने इन सब बातिल ख़यालात को मिटा दिया (वहीदी)

مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝
فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ

और ऐसा दाँव किया कि उन को भनक तक न लगी[२१] ५१.पस तू देख कि उन के दाँव का क्या अन्जाम हुआ? हम ने उन (नौलोगों) को और उन की सारी क़ौम को हलाक कर दिया ५२. पस उन के ज़ुल्म की वजह से यह उन के घर वीरान पड़े हैं। बेशक इस (वाक़िए) में अ़िल्म➲

كَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝٥٣ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ
الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝٥٤ اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ
شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ۝٥٥
فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْٓا اٰلَ لُوْطٍ
مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝٥٦ فَاَنْجَيْنٰهُ
وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝٥٧ وَ
اَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝٥٨
قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ
اصْطَفٰى ؕ آٰللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٥٩

रखने वाली क़ौम के लिये (हिदायत की) निशानी है। ५३. और जो लोग ईमान लाये और परहेज़गार थे उन को हम ने नजात बख़्शी। ५४+५५. और लूत को भी हम ने भेजा था। जब उस ने अपनी क़ौम से कहा: क्या तुम जान-बूझ कर बेहयाई करते हो? क्या तुम्हें शर्म नहीं आती कि तुम महिलाओं को छोड़ कर शह्वत {वासना} पूरी करने के लिये लड़कों पर गिरते हो, बस बात यह है कि तुम बिल्कुल जिहालत के काम करते हो[२२] ५६. पस (यह सुन कर) उस की क़ौम का उत्तर यही हुआ कि उन्हों ने (परस्पर) कहा कि लूत के साथियों को अपनी बस्ती से निकाल दो, यह लोग पाक रहते हैं (और नेक बनने का दावा करते हैं) ५७. पस हम ने उस को और उस के साथियों को बचा लिया, उस की औरत को छोड़ कर, कि हम ने उस को पीछे रहने वालों में मुक़द्दर कर रखा था ५८. और उन पर पत्थरों की वर्षा की पस डराये हुये लोगों पर बहुत बड़ी तबाही आयी ५९. तू कह! सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं और सलाम उस के बन्दों पर है जिस ने उन को चुन लिया। क्या अल्लाह बेहतर है? या वह जिन को लोग अल्लाह का शरीक बनाते हैं[२३]।

....

२१. यानी हम को उन का दाँव मालूम था फिर भला वह मुझ से कैसे जीत सकते थे? घटना यूँ घटी कि जब क़ौम के नौ शरीर लोगों ने ऊँटनी को घायल कर दिया और हज़रत सालेह और उन के घर वालों को मारने के लिये निकले, तो राह ही में अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्तों को भेज कर उन सब को कुचल डाला। यह भी कहा गया है कि यह लोग एक पर्वत तले जा बैठे कि अचानक एक चटान उन के ऊपर जा गिरी और सब दब कर मर गये। 'अल्लाह का दाँव' इस से मुराद उस की तदबीर है। अ़रबी भाषा का यह उसूल है कि एक चीज़ के तोड़ का नाम भी वही रख देते हैं। इस की मिसालें बहुत सारी गुज़र चुकी हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ भी मुश्रिकों ने चाल चली थी, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उन की चाल को नाकाम बना दिया। यह वाक़िआ़ सूरः अन्फ़ाल में गुज़र चुका है (वहीदी)

२२. तुम इतना गंदा काम करते हो कि ऐसा तो गधे और कुत्ते भी नहीं करते। ऐसे ही काम कर के इन्सान जो तमाम मख़्लूक़ में अफ़्ज़ल है, उन से भी बदतर हो जाता है।

२३. इस का हर्गिज़ यह मतलब नहीं कि बुत भी थोड़े-बहुत अच्छे होते हैं, अगर्चे अल्लाह तआ़ला से कम सही। बुतों के अन्दर अच्छाई नाम की चीज़ तक नहीं है। इस प्रकार का इस्तेमाल अ़रबों का मुहावरा है। जैसे बोला जाता है कि "भला मज़दूरी कर अ़िज़्ज़त से रोटी कमाना अच्छा है, या चोरी, डाका डालना"। (वहीदी)

➲इस आयत से यह भी साबित हुआ कि अल्लाह की हम्द व सना बयान करना और फिर अल्लाह के नेक बन्दों पर सलाम भेजना, ठीक अल्लाह तआ़ला के इस आयत के हुक्म के मुताबिक़ है-----अल्-हम्दु लिल्लाहि व सलामुन् अ़ला ज़िबादिहिल्लज़ी-नस्-तफ़ा-आमीन। हर प्रकार की हम्द व सना अल्लाह ही के लिये ख़ास है, (जो तमाम संसार वालों का पालनहार है, जो रहमान और रहीम है) और उस के नेक बन्दों पर सलाम हो। (राज़)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

पारः अम्मन् ख़-ल-क़ (20)

संक्षिप्त विषय सूची

अम्मन् ख़—ल—क़—(20)

اَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ۗ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ۞ اَمَّنْ جَعَلَ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ اَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِىَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۗ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۞ اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْاَرْضِ ۗ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۞ اَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِىْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَىْ رَحْمَتِهٖ ۗ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۞ اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۗ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۞

६०. कौन है जिस ने आकाश बनाये और ज़मीन पैदा की[२४]? और तुम्हारे लिये आकाश से पानी उतारता है? फिर उस पानी के साथ खुश्नुमा (घने-घने ऐसे) बाग़ उगाता है[२५] जिन के दरख़्त पैदा करने की तुममें ताक़त नहीं। क्या (इतनी बड़ी मख़्लूक़ बनाने में) कोई और माबूद भी अल्लाह के साथ है? (नहीं,नहीं) बल्कि यह लोग टेढ़ी राह चलने वाले है। ६१. भला किस ने पृथ्वी क़ो ठहरने की जगह बनाया? और उस के बीच में (कुदरती तौर पर) दरिया जारी किये और उस पर बड़े-बड़े अटल पहाड़ पैदा किये? और दर्मियान में दो (मीठे और खारी) समुन्द्रों के रोक कर दी? (कि मीठा और ख़ारा पानी अलग रहता है) क्या कोई और माबूद भी अल्लाह के साथ है? बल्कि बहुत से इन में जानते नहीं। ६२. भला कौन है जो आ़जिज़ों की दुआ़यें कुबूल करता है, जब उस को पुकारतें है? और तकलीफ़ दूर करता है और तुम को ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाता है (पिता के मृत्यु के पश्चात पुत्र कार्यवाहक हो जाता है) बतलाओ! कोई माबूद अल्लाह के साथ है? तुम लोग बहुत ही कम नसीहत पाते हो।[२६] ६३. भला कौन तुम्हारी खुश्की व तरी के अंधेरों में राहनुमाई करता है? और कौन अपनी रहमत (यानी वर्षा) से पूर्व हवाओं को खुश्ख़बरी देने के लिये भेजता है? क्या कोई और माबूद भी अल्लाह के साथ है? (कुछ शक नहीं कि) अल्लाह उन के शिर्क से बुलन्द है। ६४. भला कौन है जो मख़लूक़ की पैदाइश आरंभ करता है फिर उस की (फ़ना की तरफ़) लौटाता है? और कौन तुम को आकाश और ज़मीन से रोज़ी देता है (आकाश से वर्षा करता है और ज़मीन से वनस्पति उगाता है) क्या कोई और माबूद भी अल्लाह के साथ है? (ऐ नबी!) तू कह अगर तुम सच्चे हो तो अपनी (जिस➡

➲से साबित हो कि अल्लाह के साथी हैं)

....

२४. सूरत के आरंभ से यहां (आयत ५९) तक रिसालत की बहस थी। आयत न० ५९ 'कुलिल् हम्दु लिल्लाहि' के साथ तौहीद की बहस आरंभ की गयी है।

२५. अ़रबी भाषा में तो 'ग़ायब' का तर्जुमा ''मुतकल्लिम'' का किया जाता है, मगर उर्दू मुहावरा में ऐसा नहीं है इस लिए ग़ायब के सेग़ा से तजुर्मा किया गया है। इसी लिये 'अंबत्ना' (मुतकल्लिम बहुवचन) का तर्जुमा ''हम ने उगाये'' के साथ स्थान पर ''वह उगाता है'' किया गया।

२६. यानी सख़्तियों और मुसीबतों के समय पुकारे जाने के लाइक़ केवल उसी की ज़ात है, असहाय लोगों का वही सहारा है, उसी की ज़ात है जो परेशान को पनाह देती है। उस के अ़लावा कोई कष्ट और मुसीबत को दूर करने वाला नहीं। एक सहाबी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अनुरोध किया कि अपनी सच्ची दावत को कुछ तफ़्सील से बयान फ़रमायें? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं उस ज़ात की तरफ़ बुलाता हूँ जो अकेला है उस का कोई शरीक नहीं। वह उस समय काम आता है जब तू किसी मुसीबत में फंसा हो, वही जंगलों में भूले-भटकों की राहनुमाई करता है, वही बिछड़े हुये लोगों को एक दूसरे से मिलाता है। वही सूखाकाल दूर कर के मूसला धार वर्षा करता है। सहाबी रज़ि ने फिर अनुरोध किया कि आप और नसीहत फ़रमाऐं। आप ने फ़रमायाः किसी को बुरा-भला न कहो, किसी नेकी को हल्की और मामूली न समझो, अपने किसी मुसलमान भाई से कुशादा पेशानी से मिलना और डोल से किसी को पानी पिला देना भी नेकी है। अपने तहबन्द को आधी पिंडली तक रखो और टख़्ने के नीचे लटकाने से बचो, इस लिये कि यह फ़ख़्र और गुरूर में सम्मिलित है जिसे अल्लाह नापसन्द करता है और किसी को गाली मत देना। सहाबी कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की यह नसीहत सुनने के बाद से मैं ने कभी भी किसी को (यहाँ तक कि पशु- पक्षियों को भी) गाली नहीं दी (इब्ने कसीर)

हक़ीक़त यह है कि इस आयत में परेशान हाल बन्दों के लिये बशारत और शुभ सूचना है, मगर शर्त यह है कि अल्लाह को सच्चे दिल से पुकारा जाये। जो अल्लाह को सच्चे दिल से पुकारते हैं, बिलाशुब्हा वह उन की सुनता और हर आवश्यक्तायें पूरी करता है। (राज़)

६५. तू कह! अल्लाह के अ़लावा कोई भी ग़ैब नहीं जानता। न आकाश के फ़रिश्ते और न ज़मीन के वासी। (यहाँ तक कि उन लोगों को अपने हाल की भी खबर नहीं) और वह यह भी नहीं जानते कि (क़ब्रों से या नींद से) कब उठाऐ जायें गे[२७] ६६. बल्कि उन (मुश्रिकों) का अ़िल्म-आख़िरत (यानी दूसरे जीवन) के मुतअ़ल्लिक़ ख़त्म हो चुका है (दूसरी ज़िन्दगी का वजूद उन की समझ में नहीं आता) बल्कि उन को उस में संदेह है, बल्कि उस से अन्धे हैं[२८]। ६७. काफ़िर लोग कहते हैं कि जब हम और हमारे बाप-दादे मर कर मिट्टी हो➲

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا
اللّٰهُ ۭ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ۝ بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ
فِي الْاٰخِرَةِ ۣ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا ۣ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ۝
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَاۗؤُنَآ اَىِٕنَّا
لَمُخْرَجُوْنَ ۝ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَاۗؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۙ
اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ
فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ
وَلَا تَكُنْ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا

الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝ وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝ اِنَّ هٰذَا

जायें गें तो (इस के पश्चात) हम (ज़मीन से फिर) निकाले जायें गे? ६८. (हर्गिज़ नहीं!) पहले हमें और हमारे बाप-दादों को (इस प्रकार के)वादे दिये गये थे। (जो आज तक पूरा न हो सके) यह बातें केवल पहले लोगों की कहानियाँ हैं[२९]। ६९.पस तू (ऐ नबी!) कह दे कि ज़मीन में जा कर सैर करो। फिर देखो कि मुज्रिमों का अन्त कैसा हुआ (उन को देख कर अ़िब्रत हासिल करो) ७०. (पस तू उन को यह संदेश सुना दे) और उन के हाल पर ग़म न कर (तेरा क्या बिगाड़ें गे) और तू उन की साज़िशों से तन्गदिल न हो। ७१. और कहते हैं कि यह (क़ियामत का) वादा कब पूरा हो गा अगर तुम सच्चे हो (कि अवश्य ही आये गी तो बतलाओ) ७२.तू कह कि बहुत जल्द तुम्हारे माँगे हुये बाज़ अ़ज़ाब तुम पर लाये जायें गे (लेकिन अल्लाह के अ़िल्म के मुताबिक़ जब उस का समय आयेगा तब आयें गें) ७३. (क्योंकि) तेरा पर्वरदिगार लोगों के हाल पर बड़ा फ़ज़्ल रखता है (वह सदा उन को तौबा के लिये ढील देता है) लेकिन बहुत से लोग शुक्र नही करते। ७४. और जो कुछ यह लोग सीनों के अन्दर छुपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं, तेरा पर्वरदिगार उन को भली-भांति जानता है। ७५. और भी जो कुछ आसमानों और ज़मीनों में कहीं छुपी हुयी चीज़ है वह किताबे मुबीन {खुली किताब} में (मौजूद और) दाख़िल है।

....

२७. इस आयत में ऊपर बयान किये गये मज़मून (विषय) को मुकम्मल किया गया है और यहीं से आगे बयान किये जाने वाले विषय की तम्हीद (भूमिका) है। इस पारः के आरंभ (आयत न० ६०) से यहाँ तक अल्लाह की कुदरत, उस की रहमत और उसी के रब होने के तअ़ल्लुक़ से बयान था। इस का अर्थ यह हुआ कि जब वह अल्लाह उन सिफ़तों और विशेष्ताओं में अकेला और तन्हा है तो फिर वह अपने रब और माबूद होने में भी अकेला है (उस का कोई शरीक नहीं)

अब यहाँ से दूसरे तरीक़े से उस के रब होने को साबित किया जा रहा है। और इस प्रकार कि माबूद वह हो गा जो पूरी कुदरत और शक्ति रखने के साथ पूरी-पूरी ख़बर रखता हो। और यह वह सिफ़त है जो ज़मीन और आसमान में किसी भी मख़्लूक़ को प्राप्त नहीं, यह केवल उसी रब के लिये ख़ास है और इस एतिबार से भी माबूद बनने लायक़ ज़ात केवल अल्लाह की है। एक और ख़ास बात ध्यान रखने के क़ाबिल है वह यह कि तमाम ग़ैब की बातों का ज्ञान केवल अल्लाह ही को प्राप्त है, अल्लाह के अ़लावा और किसी को हासिल नहीं है (चाहे वह कितना बड़ा पैग़ंबर, पीर, नबी, वली, बुज़ुर्ग क्यों न हो) तमाम ग़ैब की बातों को तो जाने दीजिये, केवल एक ग़ैब की बात तक का ज्ञान किसी भी मख़्लूक़ को प्राप्त नहीं। हाँ, केवल उन्हीं ग़ैब की बातों का ज्ञान प्राप्त हो सकता है, जिस को और जितना कुछ अल्लाह बतला दें।

इस प्रकार ग़ैब की कुंजियाँ (सूरः अन्आ़म आयत न० ५९) भी अल्लाह ने किसी को नहीं दी हैं। हाँ कुछ बन्दों को अल्लाह ने ग़ैब की ख़बर दी है, लेकिन यह ख़ब८र अल्लाह के बतलाने से उस को हासिल हुयी है, नकि उस बन्दे ने अपनी कुव्वत और ताक़त और ज्ञान से हासिल किया है। अल्लाह के बतलाने पर किसी को ग़ैब का अ़िल्म हो जाये तो क्या उसे आ़लिमुल् ग़ैब (ग़ैब का जानने वाला) कहा जाये गा? नहीं, न कुरआन ने कहा है और

➲न ही हदीस ने, बल्कि हदीस में तो मना किया गया है। क्योंकि ऐसे शख़्स को भी अगर ग़ैब का जानने वाला कहा जाये तो यह अल्लाह की सिफ़त के मुशाबेह हो जाता है यहीं कारण है कि उलमा इस प्रकार की सिफ़तों को मख़्लूक़ के लिये इस्तेमाल करने की इजाज़त नही देते। (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)

सच्चे माबूद के लिये ज़रूरी है कि वह अपनी इबादत करने वालों के हालात से अवगत हो और उन की ग़ैब की बातों का भी ज्ञान हो। लेकिन जब हम दुनिया की तमाम ही मख़्लूक़ पर नज़र डालते हैं तो इस नतीजा पर पहुंचते हैं कि अल्लाह के अ़लावा कोई भी ग़ैब नही जानता। न आकाश के फ़रिश्ते और न ही ज़मीन पर बसने वाले। यहाँ तक कि उन लोगों को अपने बारे में इतनी भी ख़बर नही कि क़ब्रों से या नींद से कब उठाये जायें गे। इस प्रकार के हालात उन पर रोज़ाना ही आते हैं और आने वाले हैं, मगर उन को ख़बर तक नहीं (सनाई)

२८. 'बलिद्दा-र-क......' (उन के ज़िल्म आख़िरत के समय के जानने से तंग आ गये हैं) यानी उन के पास इतना ज्ञान ही नहीं है कि वह आख़िरत के आने के समय को जान सकें। कुछ उलमा ने इसे 'बल् अद्-र-क' भी पढ़ा है। यानी आख़िरत के आने के सहीह समय न जानने में सब के सब बराबर हैं। जिस प्रकार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत जिब्रील अ़लै० के एक प्रश्न के उत्तर में फ़रमाया था कि "मेरा ज़िल्म और तुम्हारा ज़िल्म दोनों ही के पास इस प्रश्न का उत्तर नहीं है" बिल्कुल इसी प्रकार यहाँ भी फ़रमाया गया कि आख़िरत से उन के ज़िल्म ग़ायब हैं"। चूंकि मक्का के कुफ़्फ़ार अपने रब से जाहिल हैं इसलिये आख़िरत के भी इन्कारी हैं वहाँ तक उन के ज़िल्म की पहुंच नही है।

कुल्ला यअ़्लमु.... (अल्लाह के अ़लावा ग़ैब कोई नहीं जानता) इस आयत न० ६५ की तफ़सीर बयान करते हुये हज़रत आ़इशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि जो कोई यह कहे कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम भविष्य की बातें जानते थे, तो उस ने अल्लाह पर बहुत बड़ा आरोप लगाया। इस लिये कि अल्लाह पाक का फ़र्मान है कि ज़मीन व आसमान की समस्त मख़्लूक़ में अल्लाह के अ़लावा कोई ग़ैब का जानने वाला नहीं, उन्हें तो अपने पुनःजी उठने का समय भी मालूम नहीं। (इब्ने कसीर) 'बलिद्दार-क-.....(आयत न० ६६) में तीन प्रकार के लोगों का ज़िक्र है (१)वह लोग जिन का ज़िल्म आख़िरत के बारे में कुछ काम नहीं देता है। यह लोग आख़िरत के इन्कारी हैं। इन लोगों का अ़क़ीदा है कि इस ज़िन्दगी के बाद और कोई ज़िन्दगी नहीं है यह अ़क़ीदा नेचरियों, और बेदीनों का है। (२) दूसरा गरोह उन लोगों का है जो आख़िरत को ले कर तरद्दुद (संदेह) में हैं और पुनः जीवित हो कर ज़िन्दा किये जाने और अपने कर्मो का फल भोगने के बारे में पूरा यक़ीन नहीं रखते। (३) तीसरा गरोह उन लोगों का है जो आख़िरत पर यक़ीन तो रखते हैं लेकिन दुनिया की चमक-दमक और उस के झमेलों में इस बुरी तरह फँसे हुये हैं, गोया आख़िरत को भूले हुये हैं (वहीदी)

२९. यानी जो वादा हम से किया जारहा है यही वादा इस से पूर्व भी ईसाई पादरी और यहूदी उलमा करते रहे हैं, लेकिन आज तक पूरा न हो सका। इस का अर्थ यह है कि यह वादा आरंभ ही से एक-दूसरे से सुन कर चला आ रहा है जिस का हक़ीक़त से दूर का भी संबन्ध नहीं है। ऐ नबी! आप इन बदकारों और वादे को झुटलाने वालों से कह दीजिये कि ज़मीन में चल-फिर कर ज़रा इन्कारियों का अन्जाम देखो और उन से नसीहत पकड़ो (सनाई)

७६. निः संदेह यह कुरआन बनी इस्राईल को बहुत सी ऐसी बातें बतलाता है जिन में वह परस्पर इख़्तिलाफ़ रखते हैं[३०]। ७७. और कुछ शक नही कि वह हिदायत है और मानने वालों के लिये रहमत है (बस तू उन को सुना दे और अल्लाह के हवाले कर) ७८. निः संदेह (एक➲

الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَكْثَرَ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ
يَخْتَلِفُوْنَ ۝ وَاِنَّهٗ لَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ اِنَّ
رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۝
فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ۝ اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ

الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاۤءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝
وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِى الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ۭ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا
مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝ وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ
عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَاۤبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ
النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ
اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ۝ حَتّٰٓى
اِذَا جَاۤءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِيْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا
اَمَّاذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا
ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ۝ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ

दिन) तेरा पर्वरदिगार अपने हुक्म से उन में फ़ैसला करे गा और वह ग़ालिब, बड़े ज़िल्म वाला है। ७९. पस तू अल्लाह पर भरोसा कर। कुछ शक नहीं कि तू स्पष्ट रूप से हक़ पर है[३१] ८०. कुछ शक नहीं कि तू (ज़िन्दों की हिदायत के लिये आया है) मुर्दों को हिदायत नहीं कर सकता और न बहरों को सुना सकता है जब कि वह पीठ फेर कर वापस जाते हैं। ८१. और तू अंधों को उन की गुमराही में राह नहीं दिखा सकता (पस तू याद रख कि) तू उन्हीं लोगों को सुना सकता है जो हमारे आदेशों को मानते हैं और समर्पण करने वाले हैं। ८२. और जब उन पर आरोप साबित किया जाये गा तो हम ज़मीन से एक जानवर पैदा करें गे[३२] जो इज़हार करे गा कि लोग हमारी आयात पर ईमान नहीं लाते थे (उस दिन दुनिया में एक बड़ा इन्क़िलाब पैदा होगा) ८३. और जिस रोज़ हम हर एक क़ौम में से एक जमाअ़त उन लोगों को जमा करें गे जो हमारे अदेशों को झुठलाते थे फिर वह एक (कुशादा मैदान में) जमा किये जायें गे। ८४. यहाँ तक कि जब वह आयें गे तो अल्लाह उन को कहे गा कि क्या तुम ने मेरे आदेशों को झुठलाया था और उन का ज़िल्म हासिल न किया था? यह नहीं तो और क्या करते थे? ८५. और उन के ज़ुल्म की वजह से उन पर हुक्म लग जाये गा फिर वह (अपने जुर्म को देख कर) बोल न सकें गे। ८६. क्या उन्हों ने (इस बात पर) कभी ग़ौर नहीं किया कि हम ने रात को बनाया कि लोग उस में विश्राम कर सकें

....

३०. यह कुरआन बनी इस्राईल को बहुत सारी बातें बतलाता है इस लिये कि यह उस अल्लाह ने नाज़िल किया है जो ग़ैब की बातें जानने वाला है और वह सब कुछ जानता है, इस लिये जो हक़ है उसे बतला देता है। उदाहरण के तौर पर, बनी इस्राईल हज़रत ज़ीसा अ़लै० की ज़ात को लेकर परस्पर कई गरोहों में बटे हुये थे। यहूदी लोग तो उन को केवल इन्सान मानते थे, लेकिन ज़ीसाई उन को खुदा समझते थे। इस मामले में कुरआन ने यह फ़ैसला दिया कि ज़ीसा भी इन्सानों की तरह एक इन्सान हैं। इन्सान होने के नाते जो बातें और इन्सानों में पाई जाती हैं वह उन में भी पाई जाती हैं। इस मामला में यहूदियों के हक़ में फ़ैसला दिया गया। इन के परस्पर इख़्तिलाफ़ का एक दूसरा उदाहरण यह है कि ज़ीसा किस प्रकार के इन्सान थे? यहूदी उन को नाजायज़ औलाद कहते और उन्हें बुरे लफ़्ज़ों से याद करते थे, इस के विपरीत ज़ीसाई उन को पाक-साफ़ और बुज़ुर्ग मानते थे। इस मामला में कुरआन ने यह फ़ैसला सुनाया कि हज़रत ज़ीसा मसीह अल्लाह के नेक और परहेज़गार बंदे थे। यहाँ कुरआन ने ज़ीसाइयों के हक़ में फ़ैसला दिया। इस लिये कि कुरआन अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल किया गया है और इस में तनिक भर संदेह नहीं कि यह किताब लोगों के लिये हिदायत और रहमत है। (सनाई)

३१. यानी उन ही लोगों के दिलों में तेरी तालीम व तबलीग़ असर करे गी और वही लोग सुनने और अ़मल करने

➲को तय्यार हों गे, जिन के दिलों में यह बात अच्छी तरह बैठ गयी हो कि अगर यह बातें अल्लाह की तरफ़ से हो गी तो मान लें गे लेकिन अगर यह बात बैठ गयी है कि हम को नही मानना है, तो चाहे अल्लाह की तरफ़ से हो या न हो, नहीं मानें गे। यही कारण है कि पहली क़िस्म के लोग अन्तिम क्षणों में सुनते-सुनते ईमान ले आते हैं और आज्ञापालन करने लगते हैं और दूसरे क़िस्म के लोगों पर कुछ भी असर नहीं पड़ता (सनाई)

३२. हज़रत शाह साहब लिखते हैं कि क़ियामत आने से पहले मक्का का सफ़ा पर्वत फट जाये गा जिस से एक जानवर निकले गा और लोगों से बात-चीत करे गा और बतलाये गा कि अब क़ियामत बिल्कुल निकट है। फिर अच्छे -बुरे और नेक- बद लोगों को निशान दे कर अलग-अलग कर देगा (मुवज़्ज़िहुल् क़ुरआन) कुछ रिवायतों से स्पष्ट होता है कि जब सूरज पश्चिम से निकले गा तब यह जानवर निकलेगा। और चूंकि क़ियामत के निकट दुनिया का सारा निज़ाम ही बिगड़ जाये गा, इस लिये ऐसे मौक़े पर जानवर आदि का निकलना और लोगों से बात-चीत करना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इन चीज़ों के ज़ाहिर होने से हर शख़्स यह आसानी से अनुमान लगा सकता है कि क़ियामत बिल्कुल निकट है। और शायद उस जानवर के ज़रीआ़ यह भी बताना उद्देश्य हो कि जिस बात को तुम संदेष्टाओं के कहने पर नहीं मानते थे, आज वह एक जानवर के कहने पर माननी पड़े गी, मगर इस समय का मानना बेकार है। इस जानवर के मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीर की किताबों में बहुत सारी बेसर-पैर की बातें लिखी हुयी हैं, मगर सहीह रिवायतों से केवल उतना ही साबित है जो अभी ऊपर शाह साहब के हवाले से नक़ल किया गया है। (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान) लेकिन नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ाँ रह० ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "इक़तिराबुस्साअ़:" (क़ियामत के निकट की निशानियाँ) में सहीह हदीसों के हवाले से यह साबित किया है कि वह एक जानवर हो गा जो अल्लाह के हुक्म से पैदा हो कर क़ियामत की एक निशानी बने गा। और दूसरे उलमा और मुफ़स्सिरीन भी इसी को बयान करते हैं। (राज़)

'दाब्बतुलअर्ज़' (ज़मीन का जानवर) के संबन्ध में "दुर्रे मन्सूर" और "रूहुल् मआ़नी" में बहुत सारी अहादीस के हवाले से लिखा है कि यह जानवर मक्का की भूमि से क़ियामत के निकट ज़ाहिर होगा और इन्सान की तरह बातें करेगा (बयानुल् क़ुरआन)

لِيَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَيَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ فَفَزِعَ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَن شَاءَ اللَّهُ ۚ وَكُلٌّ أَتَوْهُ دَاخِرِينَ ۝ وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ۚ صُنْعَ اللَّهِ الَّذِي أَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ ۝ مَن جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِّنْهَا وَهُم مِّن فَزَعٍ يَوْمَئِذٍ آمِنُونَ ۝ وَمَن جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِي حَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ

और दिन को रोशन बनाया। बेशक इस (अल्लाह की कारीगरी) में मानने वालों के लिये बहुत सी निशानियाँ हैं। ८७. और जिस दिन सूर फूँका जाये गा तो आसमान और ज़मीन वाले सब के सब घबरा उठें गे, मगर जिस को अल्लाह चाहे गा (उस को घबराहट से) सुरक्षित रखे गा। और सब लोग अल्लाह के पास आजिज़ी करते हुये उपस्थित हों गे। ८८. और तुम पर्वतों को देख कर समझो गे कि एक स्थान पर जमे हुये हैं[३३] हालाँकि वह बादलों की तरह उड़ते हों गे। यह अल्लाह की कारीगरी है जिस ने हर वस्तु को मज़बूत बनाया है। कुछ शक नहीं कि वह तुम्हारे कामों की ख़बर रखता है[३४]। ८९. जो लोग नेक काम ले कर (उस के पास) हाज़िर➲

وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩١﴾ وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿٩٢﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

हों गे उन को उस से अच्छा बदला मिले गा और वह उस (क़ियामत के) दिन की घबराहट से बेख़ौफ़ हों गे। ९०. और जो लोग बुरे काम ले कर हाज़िर हों गे उन को आग में औंधा कर के डाला जाये गा। जो कुछ उन्हों ने बुरे कार्य किये हों गे वही उन को बदला मिले गा। ९१. (तू कह!) मुझे केवल यही निर्देश हुआ है कि मैं इस शहर (मक्का शरीफ़) के पर्वरदिगार की ऩिबादत करूँ जिस ने इस (शहर) को मुहतरम बनाया है (मैं ही क्या) तमाम चीज़ें उस के ताबेअ़ हैं (इसीलिसे) मुझे हुक्म हुआ है कि मैं भी अल्लाह के फ़रमाँबर्दारों में शामिल हो जाऊँ[35]। ९२. और (मुझे यह भी हुक्म हुआ है) कि मैं क़ुरआन पढूँ फिर जो कोई हिदायत पाये गा वह अपने लिये हिदायत पाये गा और जो गुमराह हो गा तो तू कह कि (मेरा क्या बिगाड़े गा) मैं तो केवल डराने वालों में से एक हूँ ९३. और तू (ऐ नबी!) कह कि सारी तारीफ़ें अल्लाह के लिये हैं वह तुम को अपने निशान दिखाऐ गा फिर तुम उन को पहचानो गे। और तुम्हारा पर्वरदिगार तुम्हारे कामों से बेख़बर नहीं[36]।

....

३३. 'तरा' इस का दो प्रकार से तर्जुमा हो सकता है १. भविष्य काल (Future Tense) का, यानी "तुम पर्वतों को देख कर समझोगे"। २.वर्तमान काल (Present Tense) का, यानी "तुम पर्वतों को देख कर समझते हो" यहाँ इस आयत में ज़मीन के चलने और हर्कत करने की तरफ़ इशारा है। आज के वैज्ञानिकों ने तहक़ीक़ कर के ज़मीन के चलने का एलान किया है, इस को क़ुरआन आज से चौदह सौ वर्ष पूर्व ही बता चुका है। यह भी संभव है कि यह अर्थ कोई आ़लिम पसंद न करें, लेकिन क़ुरआन के अल्फ़ाज़ के ख़िलाफ़ नहीं है (सनाई)

३४. इन आयतों में अल्लाह तआ़ला क़ियामत की घबराहट और बेचैनियों का ज़िक्र कर रहा है। हज़रत इस्राफ़ील अ़लै० अल्लाह के हुक्म से सूर में फूंक मारें गे और देर तक फूंकते रहें गे जिस से सभी लोग व्याकुल हो जायें गे। हाँ, अल्लाह की राह में शहीद होने वालों पर सूर का कोई प्रभाव नहीं पड़े गा और न ही वह तनिक भर घबराऐं गे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से किसी सहाबी ने कहा कि आप यह क्या फ़रमाया करते हैं कि इतने-इतने समय तक क़ियामत आ जाये गी? उन्हों ने कहा: सुब्हानल्लाह! (या इसी प्रकार का और कोई तअ़ज्जुब का कलिमा कहा) फिर फ़रमाया कि सुनो! अब तो यही जी चाहता है कि किसी से कोई हदीस ही न बयान करूँ। मैं ने तुमसे यह कहा था कि बहुत जल्द आप लोग बड़ी अहम-अहम बातें देखें गे। बैतुल्लाह उजाड़ हो जाये गा और यह हो गा वह हो गा, वग़ैरह। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फ़रमान है कि दज्जाल मेरी उम्मत के दर्मियान चालीस..? रहे गा। (हज़रत इब्ने उमर को इस बात पर शुब्हा है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने चालीस माह कहा, या चालीस वर्ष) फिर हज़रत ई़सा अ़लै० आकाश से उतरें गे और दज्जाल को क़त्ल करें गे। इस के बाद चालीस वर्ष बड़े आराम और चैन से गुज़रे गा, दो आदमी भी ऐसे न मिलें गे जिन के दर्मियान इख़्तिलाफ़ हों, फिर एक ज़माना ऐसा आये गा कि ईमान वाले दुनिया से समाप्त हो जायें गे और केवल बुरे लोग ही बाक़ी रह जायें गे और इन्ही पर क़ियामत आये गी। पहला सूर फूंके जाने पर सब बेहोश हो जायें गे, फिर दूसरी बार सूर फूंकने पर सब उठ ख़डे हों गे। यही वह दिन हो गा जो बच्चों को बूढ़ा कर दे गा। पहला सूर तो घबराहट का हो गा और दूसरा बेहोशी और मौत का। और तीसरा पुन: जीवित हो कर अल्लाह के सामने हाज़िर होने का (मुहम्मदी)

➲३५. मख़्लूक़ के लिये सब से बड़ी इ़ज़्ज़त अल्लाह की आज्ञापालन करने में है, इस लिये हमें और तुम्हे यही हुक्म दिया गया है कि उसी के हो कर रहो। अल्लाह की इताअ़त और फ़रमांबर्दारी के तो बहुत से दावेदार हैं, मगर उन्हें यही नहीं मालूम कि इताअ़त किसे कहते हैं। इताअ़त इस बात का नाम है कि इन्सान आपनी ज़िन्दगी और मौत को अल्लाह के हवाले कर दे, उसी के लिये जिये और उसी के लिये मरे, जहाँ चलने का हुक्म दे चले और जहाँ ठहरने का हुक्म दे ठहर जाये। (सनाई)

३६. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ऐ लोगो! अपने किसी अ़मल से अल्लाह को ग़ाफ़िल न जानो, वह एक-एक मच्छर, एक-एक पतिन्गे और एक एक कण से अवगत है। हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० किसी कवि के इस शेर को अकसर पढ़ा करते थे (तर्जुमा) जब तू किसी समय एकान्त में हो तो अपने को तन्हा न समझ, बल्कि अल्लाह को वहाँ हाज़िर जान। वह एक लम्हे के लिये भी ग़ाफ़िल नहीं और न ही कोई पोशीदा चीज़ उस के इ़ल्म से बाहर है। (इब्ने कसीर)

सूरः क़-सस्-(28)

सूरः क़सस मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस सूरः में ८८ आयतें और ९ रूकूअ़ हैं[1]। शुभारंभ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है।

१ तासीम्मीम्[2] २ यह आदेश खुली किताब के हैं ३ (मूसा) और फ़िरऔ़न की सत्य कथा हम ईमान्दारों के लिये तुझ को सुनाते हैं ४ कुछ शक नहीं कि फ़िरऔ़न (एक बड़ा फ़सादी आदमी था। उस ने ज़मीन पर (अकारण) तकब्बुर किया था और मुल्क के रहने वालों को गरोह-गरोह बना दिया था (जिन के दर्मियान इख़्तिलाफ़ डाल कर[3])उन में से एक जमाअ़त को कमज़ोर करता था। उन के लड़कों को ज़ब्ह करता था और उन की लड़कियों को ज़िन्दा रखता था। निः संदेह वह (फ़िरऔ़न बड़ा ही) फ़साद करने वालों में से था[4]। (इसलिये कि बिला वजह ग़रीबों को सताता था) ५. और जिन लोगों को ज़मीन में कमज़ोर किया जाता था हम चाहते थे कि उन पर एहसान करें और उन को (दीन का) इमाम बनायें और उन को (मुल्क का) वारिस बनायें। ६. और ज़मीन पर उन ही को हुकूमत दें। और (हम यह भी चाहते थे कि) फ़िरऔ़न और हामान और उन की फ़ौजों को उन से जिस बात का भय था, वही➲

➲उन को दिखा दें[५] (यानी फ़िरऔन के शासन की समाप्ति) ७. और मूसा की माता को हम ने इल्हाम किया कि उस (बच्चे) को दूध पिलाती रह, फिर जब तुझे उस पर किसी बात का भय हो तो उस को (दरिया के) पानी में डाल देना और (किसी प्रकार की शंका न करना और न ग़म, कि उस बच्चे पर क्या बीते गी)

....

१. सूरः क़सस मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी, लेकिन कुछ मुफ़स्सिरीन का कहना है कि 'इन्नल्लज़ी फ़-र-ज़' (आयत ८५) जुहफ़ा के स्थान पर और आयत न० ५२ से ५५ तक मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ८८ आयतें और ९ रुकूअ़ हैं। (वहीदी)

२. पौलाना अमृतसरी रह० ने इस का तर्जुमा "मैं अल्लाह हूँ पाक और सलामती वाला" किया है। लेकिन सहीह बात यह है कि इन हुरूफ़ मुक़त्तआत का सही अर्थ केवल अल्लाह ही को मालूम है। (राज़)

३. फ़िरऔन जैसे दाँव-पेच जानने वाली हुकूमतों का आज भी यही हाल है कि प्रजा को जिस प्रकार भी संभव हो परस्पर लड़ाओ और ठाट से शासन करो। हिन्दुस्तान पर अंग्रेज़ों ने इसी प्रकार लंबे समय तक शासन किया था।

४. फ़िरऔन एक मुतकब्बिर (घमंडी) और बद दिमाग़ शख़्स था। उस का इरादा बनी इस्राईल को तहस-नहस करना था, यही कारण था कि उन को ज़लील समझता और हर प्रकार के ज़लील काम उन से लेता फिर भी उस का गुस्सा न ठन्डा होता था। उन के यहाँ पैदा होने वाली नर संतान को क़त्ल करवा डालता था, इस लिये कि उस को सूचित किया गया था कि बनी इस्राईल के गोत्र में एक बच्चा पैदा हो गा जो उस का शासन समाप्त कर दे गा। यह सूचना देने वाले हज़रत इब्राहीम अ़लै० थे। वाक़िआ़ यूँ बयान किया जाता है कि जब हज़रत इब्राहीम अ़लै० मिस्र में अपनी पत्नी हज़रत सारह के साथ जा रहे थे तो यहाँ के ज़ालिम बादशाह ने उन की पत्नी पर बुरे इरादे से हाथ डालना चाहा, तब हज़रत ख़लील अ़लै० ने भविष्यवाणी के तौर पर यह सूचना दी कि ऐ सारा! तेरी संतान में से एक बच्चा पैदा हो गा जिस के हाथों बादशाह की हुकूमत मलियामेट हो जाये गी। और स्वयं बादशाह भी बड़ी ज़िल्लत के साथ रहे गा। बनी इस्राईल में यह कथा बहुत प्रचलित थी। इन्हीं से सुन कर बादशाह ने यह क़ानून बना दिया कि बनी इस्राईल के नर बच्चों को क़त्ल कर दिया जाये। मगर अल्लाह के हुक्म से हज़रत मूसा बच गये और उन के हाथों से फ़िऱौन तबाह व बर्बाद कर दिया गया (इब्ने कसीर)

५. 'वही उन को दिखा दें' फ़िरऔन इस बात से डरते थे कि कहीं वास्तव में इब्राहीम अ़लै० की भविष्यवाणी सहीह न निकले और बनी इस्राईल हमारे मुल्क और माल-दौलत पर क़ब्ज़ा न कर ले। चुनान्चे अल्लाह तआ़ला ने उन को डूबते समय सब कुछ दिखा दिया कि बनी इस्राईल तो समूचे बच गये और यह समूचे मर मिटे और हकूमत की बागडोर बनी इस्राईल के हाथ में आ गयी (वहीदी)

رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ فَالْتَقَطَهٗ
اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ۭ اِنَّ فِرْعَوْنَ وَ
هَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِئِيْنَ ۝ وَقَالَتِ امْرَاَتُ
فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَلَكَ ۭ لَا تَقْتُلُوْهُ ۖ عَسٰٓى اَنْ
يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ وَاَصْبَحَ

हम ज़रूर उस को तेरे पास वापस लायें गे और उस को अपने संदेष्टाओं में से करें गे ८. (सो मूसा की माँ ने अपने बच्चे को दरिया में डाल दिया) तो फ़िरऔन के घर वालों ने उस को पकड़ लिया (क़ुदरत ने उन से यह काम इसलिये कराया) ताकि वह उस का दुश्मन और ग़म का सबब बने। कुछ शक नहीं कि फ़िरऔन और➲

فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فَارِغًا ۖ إِن كَادَتْ لَتُبْدِي بِهِ لَوْلَا
أَن رَّبَطْنَا عَلَىٰ قَلْبِهَا لِتَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَ
قَالَتْ لِأُخْتِهِ قُصِّيهِ ۖ فَبَصُرَتْ بِهِ عَن جُنُبٍ وَهُمْ
لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِن قَبْلُ
فَقَالَتْ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ
وَهُمْ لَهُ نَاصِحُونَ ۝ فَرَدَدْنَاهُ إِلَىٰ أُمِّهِ كَيْ تَقَرَّ
عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ
أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَاسْتَوَىٰ

हामान और उन की फ़ौज ख़ताकार (अपराधी) थी। ९. और फ़िरऔन की पत्नी ने कहा कि यह मेरी और तेरी आँखों की ठन्डक है (दूसरे बच्चों की तरह) उस को क़त्ल मत करना। आशा है कि बहुत जल्द हम को नफ़ा दे गा हम उस को अपना मुतबन्ना {लैपालक} बना लें गे और वह जानते न थे[६] (कि क्या पेश आये गा) १०. मूसा की माँ का दिल ख़ाली हो गया (और ऐसी घबराई कि) अगर हम उस के दिल को मज़बूत न रखते तो वह (सारा राज़) ज़ाहिर कर देती ताकि वह (हमारे वादे पर) पंक्का ईमान लाने वालों में से हो जाये[७]। ११. (ख़ैर! अब इस क़िस्से की इब्तिदा सुनिये) मूसा की माँ ने (बच्चे को पानी में डाल दिया और) उस की बहन से कहा कि उस के पीछे-पीछे जा, सो उस ने दूर से फ़िरऔनियों की बेख़बरी में उस को देखा। १२. और उस बच्चे पर पहले ही से हम ने सब दूध हराम कर दिया था पस उस (लड़की) ने (बड़ी सन्जीदगी से) कहाः मैं तुम को एक घराने का पता दूँ जो तुम्हारे लिये उस (बच्चे) की पर्वरिश करे और वह उस का ख़ैर-ख़ाह भी हों। १३. सो हम ने (एक ज़रा सी तदबीर से) उस बच्चे को उस की माँ की तरफ़ वापस पहुंचा दिया ताकि उस की आँखें ठन्डी हों और ग़म न करे और जाने कि अल्लाह का वादा सच्चा है लेकिन बहुत से लोग जानते नहीं (ख़ैर! इसी प्रकार बच्चा पर्वरिश पाता रहा) १४. और जब अपनी जवानी को पहुंचा और ख़ूब तन्दुरुस्त हुआ

६. यानी फ़िरऔन के घर वालों ने संदूक़ को दरिया से निकाल लिया जिस में हज़रत मूसा लेटे हुये थे, और अन्ततः वही उस के लिये उल्टे रंज व ग़म और दुश्मनी का कारण बने। एक रिवायत में है कि हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने फ़िर्क़ा क़दरिय्या (तक़्दीर को न मानने वाले लोगों) को एक पत्र लिख कर समझाया कि हज़रत मूसा अ़ले० अल्लाह की तक़्दीर के मुताबिक़ फ़िरऔन के दुश्मन और उस के लिये रंज व ग़म का सबब थे (जैसा कि क़ुरआन की इस आयत न०८ से स्पष्ट है) फिर तुम लोग कैसे कहते हो कि अगर फ़िरऔन चाहता तो मूसा, उस के सहयोगी और मित्र होते? बहर हाल फ़िरऔन उस बच्चे को देख कर भुका और उस को बनी इस्राईल समझ कर क़त्ल कर देना चाहा मगर उस की पत्नी हज़रत आसिया रज़ि० ने ऐसा करने से मना कर दिया और कहा कि बहुत संभव है यह बच्चा हम लोगों की आँखों की ठन्डक बने। फ़िरऔन ने कहा कि मुझे आँखों की ठन्डक की कोई आवश्यक्ता नहीं। अल्लाह की रहमत और मेहरबानी कि हज़रत आसिया को अल्लाह ने ईमान की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई और हज़रत मूसा की वजह से उन्हों ने हिदायत पाई और उस घमंडी फ़िरऔन को अल्लाह ने हज़रत मूसा के हाथों हलाक कर डाला। उस के चूँकि कोई औलाद न थी इस लिये हज़रत मूसा को लैपालक बनाना चाहा, लेकिन उस को क्या मालूम था कि अल्लाह तआ़ला अन्दर ही अन्दर किस प्रकार अपना काम कर रहा है (मुहम्मदी)

७. हज़रत मूसा की वालिदा ने मूसा को दरिया में तो डाल दिया, लेकिन वह इतनी परेशान हुयीं कि उन का सब

➲जाता रहा और अगर अल्लाह ने उन के दिल को जमा न दिया होता तो बेसब्री में सारा राज़ ही उगल देतीं। फिर भी अपनी बड़ी लड़की को उस संदूक़ का पीछा करने को कहा। उन्हों ने देखा कि सन्दूक़ के महल के पास पहुंचते ही उसे वहाँ मौजूद लौंडियों ने उठा लिया और महल के अन्दर ले कर चली गयी हैं। वह बाहर ही ठहर गयीं ताकि महल के अन्दर क्या हो रहा है यह मालूम हो सके। इधर महल के अन्दर यह हुआ कि फ़िर्औन ने उन्हें क़त्ल करना चाहा तो हज़रत आसिया ने मना कर दिया और उसे अपना लैपालक बना कर दूध पिलाने वाली दाइयों को बुलवा भेजा लेकिन वह किसी का दूध ही न पीते थे। मूसा की बहन ने यह देख कर कहा कि मैं एक ऐसी दाई को जानती हूँ जिस का दूध यह बच्चा अवश्य ही पिये गा। हज़रत मूसा वास्तव में अपनी माँ का दूध पीने लगे। इस प्रकार वह अपनी माँ के गोद में पुन: वापस आ गये। हज़रत आसिया ने उन को बड़ा इनाम दिया और महल ही में रह कर दूध पिलाने का अनुरोध किया, लेकिन उन्हों ने महल में रहते हुये दूध पिलाने से इन्कार कर दिया और अपने घर वापस आ कर पर्वरिश करने लगीं।

एक हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स अपना कोई काम-धंधा करे और उस में अल्लाह का ख़ौफ़ और मेरी सुन्नतों का पूरा-पूरा ख़याल रखे, तो उस की मिसाल उस माँ की तरह है जो अपने ही बच्चे को दूध पिलाये और मज़दूरी भी ले। अल्लाह की ज़ात पाक है, उसी के हाथ में सारा काम है, उसी का चाहा हुआ होता है, वह हर उस शख़्स की सहायता करता है जो उस पर भरोसा करता है, वही नेक बन्दों के आड़े समय में काम आता है और उन की तंगी को दूर करता और रंज व तक्लीफ़ को सुख-चैन में बदल देता है (मुहम्मदी)

८. फ़िर्औन के लोगों को हज़रत मूसा की बहन के उत्तर पर शुब्हा हुआ कि उस बच्चे के बारे में जानती है कि किस का है, जभी तो कहती है कि "वह उस के साथ ख़ैर ख़्वाही करें गे"। लेकिन उन्हों ने तुरन्त उत्तर दिया हुम् लहू नासिहू-न (वह लोग बादशाह के ख़ैर ख़्वाह हैं) इस सूरत में 'लहू' का सर्वनाम बादशाह की तरफ़ लौटे गा, न कि बच्चे की तरफ़। (बयानुल् कुरआन)

اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ۚ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤﴾ وَ
دَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ
فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۗ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ
عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِيْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِيْ مِنْ
عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۖ قَالَ هٰذَا مِنْ
عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ قَالَ رَبِّ
اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَغَفَرَ لَهٗ ۭ اِنَّهٗ هُوَ
الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦﴾ قَالَ رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ
اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٧﴾ فَاَصْبَحَ فِي الْمَدِيْنَةِ
خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ

तो हम ने उस को मुहकम (सच) बात करने की क्षमता और (दीनी व मुल्की मामलात का) इ़ल्म दिया। और इसी प्रकार हम नेकोंकारों नेक कार्य करने वालों को बदला देते हैं। १५. और (एक दिन) मूसा शहर के अन्दर ऐसे समय आया कि वहाँ के लोग बेख़बर थे तो उस ने उस शहर में दो आदमियों को लड़ते हुये पाया, एक (उन में का) उस के गरोह (यानी बनी इस्राईल) से था और एक उस के मुख़ालिफ़ों (यानी फ़िर्औन की क़ौम) से था। तो जो उस की क़ौम से था उस ने मूसा से उस के दुश्मनों के गरोह वाले (यानी फ़िर्औनी) के ख़िलाफ़ मदद चाही (क्योंकि फ़िरऔनी, इस्राईली को मार रहा था) तो उस (मूसा) ने उसे एक मुक्का मारा➲

يَسْتَصْرِخُهُ ۚ قَالَ لَهُ مُوسَىٰ إِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِينٌ ﴿١٨﴾
فَلَمَّا أَنْ أَرَادَ أَن يَبْطِشَ بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا
قَالَ يَا مُوسَىٰ أَتُرِيدُ أَن تَقْتُلَنِي كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا

जिस ने उस का काम तमाम कर दिया (यानी वह मर गया) उस (मूसा) ने कहा: यह तो शैतानी हर्कत है[९]। निःसंदेह वह खुला बहकाने वाला दुश्मन है १६. (इसलिये दुआ करते हुये) उस ने कहा: ऐ मेरे पर्वरदिगार! वास्तव में मैं ने अपने नफ़्स पर अत्याचार किया, तो तू मुझे बख़्श दे! सो अल्लाह ने उसे बख़्श दिया। अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है। १७. (मूसा ने) कहा: ऐ मेरे पर्वरदिगार! चूंकि तूने मुझ पर बड़ा इनाम फ़रमाया (कि इ़ल्म से बड़ा हिस्सा मुझे दिया) इस लिये मैं भविष्य में कभी अपराधी (मुजि़्रम) का सहयोगी न बनूँ गा। १८. मूसा सुब्ह को डरते-डरते शहर में गया, इन्तिज़ार ही में था (इतने में उस की नज़र पड़ी) तो अचानक वही शख़्स जिस ने कल ही उस से सहायता चाही थी (आज फिर) उस को पुकारें रहा है। उस ने कहा: कुछ शक नहीं कि तू खुला बदमाश है। १९. (बाद में मालूम किया तो पाया कि इस्राईली मज़्लूम है तो) मूसा ने उस (फ़िरऔनी) को पकड़ना चाहा जो उन दोनों का दुश्मन था तो उस ने कहा: ऐ मूसा! क्या तू मुझे भी क़त्ल करना चाहता है[१०] जैसे तू ने कल एक आदमी को मार डाला

....

९. हज़रत मूसा अ़लै० जब जवान हुये तो फ़िरऔन के अत्याचार और कुफ़्र व सरकशी की वजह से उस से नफ़्रत करते और बनी इस्राईल की कमज़ोर स्थिति को देख-देख कर अन्दर-ही अन्दर कुढ़ते थे। उन की माँ का घर शहर से बाहर था कभी छुप-छुपा कर वहाँ भी चले जाया करते थे। इसी दौरान आते-जाते रास्ते में देखा कि दो आदमी परस्पर झगड़ा कर रहे हैं। एक तो इस्राईली है और दूसरा फ़िरऔनी (क़िब्ती) इस्राईली ने हज़रत मूसा को देख कर अपनी मदद के लिये पुकारा और फ़िरऔनी से नजात के लिये गुहार लगाई (यह बात) मालूम रहे कि क़िब्ती फ़िरऔन के बावर्चीख़ाना (रसोईघर) का आदमी था और उस की शरारतों से मूसा भली भाँति अवगत थे हज़रत मूसा ने पहले तो उसे ज़बान से समझाया और इस प्रकार की जुल्म व ज़्यादती से रोका। लेकिन जब वह ओल-फ़ोल बकने लगा तो उस को सबक़ सिखाने के लिये एक घूँसा जड़ दिया। स्वँयं हज़रत मूसा को भी यह नहीं मालूम था कि वह एक मुक्के से ही मर जाये गा। उस क़िब्ती ने घूँसा लगते ही पानी तक न माँगा और दम तोड़ दिया।

सब से ज़्यादा हज़रत मूसा को अपनी इस नागहानी हर्कत पर बड़ा रंज हुआ और अपने इस बिला इरादा क़त्ल पर बहुत पछताये। डर इस बात का था कि कहीं फ़िर्क़ा-वाराना (सांप्रदायिक) फ़साद का दरवाज़ा न खुल जाये। उन्हों ने सोचा कि इस क़त्ल में बहुत हद तक शैतान का भी अ़मल-दख़ल है, इस लिये अपनी ग़लती को स्वीकार करते हुये अल्लाह से माफ़ी माँगी और क्षमादान मिल भी गया।

१०. आज-कल के बाइबल में और कुरआन में जहाँ और बहुत सारे स्थानों पर इख़्तिलाफ़ है, यहाँ भी इख़्तिलाफ़ है। बाइबल में इस क़िस्से को यूँ बयान किया गया है कि "जब मूसा दूसरे दिन बाहर गया तो क्या देखता है कि दो इ़ब्रानी परस्पर लड़-झगड़ रहे हैं। तब उस ने उस को जो नाहक़ पर था कहा कि तू अपने यार को क्यों मारता है? वह बोला कि किस ने तुझे हम पर हाकिम और मुन्सिफ़ (न्यायधीश) मुक़र्रर किया है? क्या तू चाहता है कि जिस प्रकार तू नें उस मिस्री को मार डाला है, मुझे भी मार डाले? तब मूसा डरा और कहा कि यक़ीन है कि यह भेद खुल गया" (ख़ूरूज ७२-१३) इ़ब्रानी "बनी इस्राईल" को कहते हैं। बाइबल के बयान से मालूम हुआ कि दोनों ही इस्राईली थे। लेकिन कुरआन मजीद ने दूसरे दिन लड़ने वालों में से एक को उन दोनों (यानी मूसा और इस्राईली)

का मुश्तरक दुश्मन कहा है। इस से साबित हुआ कि वह इस्राईली (मूसा की नस्ल से) न था बल्कि फ़िरऔनी था।

बाइबल की तहरीर में (लेख) आपस ही में बड़ा इख़्तिलाफ़ है और शक व शुब्हे से भरा हुआ है। इस का एक कारण तो यह है कि बाइबल के मुसन्निफ़ (संपादक) का नाम ही नहीं मालूम है। चुनान्चे बाइबल की तहरीरों में परस्पर इख़्तिलाफ़ का एक उदाहरण यह है कि किताब इस्तिस्ना-३४ में लिखा है कि "मूसा के मरने और मरते समय तक उस की उम्र १२० वर्ष थी और वह तन्दुरूस्त था"। फिर आगे चल कर लिखा है कि " अब तक बनी इस्राईल में कोई नबी मूसा की तरह नहीं उठा" (३४-१०) इसी "अब तक" के शब्द से मालूम होता है कि मूसा को इन्तिक़ाल किये हुये काफ़ी समय बीत चुका था, लेकिन फिर भी यह वाक्य तौरात में मौजूद है। कहने का मतलब यह है कि अगर तौरात हज़रत मूसा पर नाज़िल की गयी, तो उन की मौत का ज़िक्र उन ही की ज़िन्दगी में कैसे किताब में बयान किया जाये गा। यह तो असंभव है और इस बात पर दलील है कि यह वाक्य हज़रत मूसा के इन्तिक़ाल के बाद तौरात में शामिल कर दिया गया है। यही हाल इन्जील का भी है। यही कारण है कि जब कुरआन और तौरात व इन्जील में परस्पर इख़्तिलाफ़ हो तो कुरआन मजीद ही की बातों को सहीह माना जाये गा (सनाई)

بِالْاَمْسِ ۖ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِي الْاَرْضِ وَمَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ۡ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّيْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢٠﴾ فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ۡ قَالَ رَبِّ نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿٢٢﴾ وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۬ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۭ قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ٚ وَاَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿٢٣﴾ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّيْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿٢٤﴾ فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِيْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۡ قَالَتْ اِنَّ اَبِيْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ

क्या तेरा यही इरादा है कि तू मुल्क में सरकशी करे? और तू नहीं चाहता कि भले आदमियों में से हो कर रहे" (उसके कहने की देर थी कि यह समाचार पूरे शहर में बिजली की तरह फैल गया) २०. (चुनान्चे) एक आदमी शहर के परले सिरे (अन्तिम छोर) से ख़बर पा कर दौड़ता हुआ आया। उस ने कहा: ऐ मूसा! मालदार लोग तेरे बारे में परस्पर मश्वरा कर रहे हैं कि तुझे क़त्ल कर दें पस तू इस शहर से निकल जा, कुछ शक नहीं कि मैं तेरे बारे में ख़ैरख़ाह हूँ। २१. पस वह डरता हुआ शहर से निकला (इस) ताक में था (कि कोई जासूस न आ पहुंचे) कहा: ऐ मेरे पर्वरदिगार! तू मुझे इन ज़ालिमों की क़ौम से नजात दे। २२. और जब (अल्लाह के द्वारा दिल में बात डाल देने से) उस ने मदयन की तरफ़ रूख़ किया तो कहा: बहुत जल्द मेरा पर्वरदिगार मुझको सीधा रास्ता दिखाये गा (जहाँ मैं उन ज़ालिमों से सुरक्षित हो जाऊँ गा) २३ और जब मदयन के पानी पर आदमियों की एक भीड़ पायी जो पानी पिलाते थे और उन से दूर दो औरतें पायीं जो (अपनी बक्रियों को) रोके हुये थीं। मूसा ने कहा: तुम्हारा क्या काम है? उन्हों ने कहा (हम अपनी बकरियों को पानी पिलाने आयी हैं मगर) जब तक चर्वाहे न हटें हम पानी नहीं पिलाया करतीं, और हमारे पिता जी बहुत बूढ़े हैं[२२] २४. पस

➲मूसा ने (हमदर्दी की बुनियाद पर स्वयँ) उन (के जानवरों) को पानी पिला दिया फिर छाँव की तरफ़ चला गया और कहा: 'ऐ मेरे पर्वरदिगार! जिस प्रकार की भी नेमत तू मुझे अता करे मैं उस का मुहताज हूँ'[११] २५. पस उन में से एक हया के साथ चलती हुयी उस (मूसा) के पास आयी और उस ने कहा: मेरा बाप आप को बुलाता है

....

११. दूसरे दिन सुब्ह को मूसा डरते-डरते शहर में यह मालूम करने के लिये आये कि कल की घटना की सूचना जब फ़िरऔन तक पहुंची हो गी तो उस की क्या प्रतिक्रिया (रद्देअमल) रही? लेकिन यहाँ तो कुछ और ही देखा। यह देखा कि वही इस्राइली आज फिर दूसरे क़िब्ती से झगड़ा कर रहा है और मुझ से सहायता की गुहार लगा रहा है। यह उस को देखते ही उस पर बरस पड़े और कहा कि तू निहायत गुमराह है, लोगों से रोज़-रोज़ लड़ाई करता रहता है और मुझे भी मजबूर करता है। हज़रत मूसा ने डाँटा तो इस्राईली को ही, लेकिन मारने के लिए हाथ बढ़ाया क़िब्ती पर। लेकिन इस्राईली ने यह समझा कि अभी मुझे डाँट पिलाई है इसलिए मुझे ही मारने का इरादा है, इसलिये तुरन्त बोल पड़ा कि कल की तरह क्या आज मुझे मारने का इरादा है? क़िब्ती ने झगड़ा ख़त्म करने के बाद यह ख़बर फ़िरऔन तक पहुंचा दी (हक़्क़ानी ६/५) क़िब्ती से पूरी कहानी सुन कर फ़िरऔन ने मूसा को क़त्ल कर डालने का आदेश दे दिया और चप्पे-चप्पे पर आदमी लगा दिये गए। फ़िरऔन के चचा के लड़के जो पोशीदा तौर पर मुसलमान हो चुके थे उन का नाम शमऊन था। उन्हें जब इस षणयंत्र की भनक लगी तो तुरन्त दौड़ कर हज़रत मूसा के पास पहुंचे और सारा हाल बताने के बाद शहर से निकल जाने का मश्वरा दिया। हज़रत मूसा को मश्वरा देने वाले बुज़ुर्ग का क्या नाम था? इस में इख़्तिलाफ़ है। जैसा कि ऊपर बयान हुआ उन का नाम शमऊन था जो फ़िरऔन के चचा जाए भाई थे। किसी ने उन का नाम जबर और किसी ने हबीब या ख़िर्क़ील लिखा है। बहरहाल नाम के इख़्तिलाफ़ की कोई अहमिय्यत नहीं, अस्ल मतलब तो वाक़िआ से है जो हमारे लिये इब्रत है कि "जिस को अल्लाह रखे, उस को कौन चखे" (सारांश)

१२. दोनों लड़कियाँ उस दिन अपने जानवरों को पानी पिला कर आम दिनों के मुक़ाबले में पहले पहुंच गयीं तो उन के पिता हज़रत शुऐब अलै० ने कारण पूछा तो उन दोनों ने उस दिन की पूरी घटना की जानकारी दी तो बाप ने अपनी एक बेटी को भेज कर बुलवा भेजा। लड़की ने वापस जा कर हज़रत मूसा से कहा कि मेरे पिता जी ने आप को मज़दूरी देने के लिये बुलाया है। हज़रत मूसा ने दिल ही दिल में बहुत बुरा जाना कि मैं ने तो यह काम अल्लाह के लिये किया था, न कि किसी लालच में। मगर फिर यह सोचा कि पहले चल कर उन बड़े मियाँ को देखें शायद वह बुज़ुर्ग और नेक आदमी हों और इन परिस्थितियों (हालात) में हमारी कुछ रहनुमाई कर सकें। आख़िर जब हज़रत शुऐब के घर पर पहुंचे तो रात का खाना सामने रखा हुआ था। उन्हों ने कहा कि पहले आप खाना खा लें। मूसा ने कहा कि हमें खाने में तो कोई आपत्ति नहीं है, मगर यह संदेह लग रहा है कि कहीं जानवरों को पानी पिलाने के बदले में उजरत के तौर पर यह खाना न हो। अगर वास्तव में ऐसी ही बात है तो इसे न खाऊँ गा इसलिये कि हमारे ख़ान्दान का यह उसूल है कि किसी के साथ नेकी कर देने के बाद मज़दूरी में अगर कोई दुनिया का सोना भी दे तो नहीं लिया जाता। हज़रत शुऐब ने कहा कि ऐसी बात नहीं है, बल्कि मेहमान को खिलाना-पिलाना हमारे ख़ान्दान की आदत है। यह सुन कर हज़रत मूसा ने खाना खाया और पूरा क़िस्सा उन को सुनाया। (वहीदी)

नोटः-इन लड़कियों के पिता कौन थे और उन का क्या नाम था? क़ुरआन और हदीस में इस बारे में कोई बयान नहीं है। लेकिन अक्सर ने इन का नाम हज़रत शुऐब अलै लिखा है जो मदयन क़ौम में सन्देष्टा बना कर भेजे गये थे। लेकिन इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि इन का समयकाल हज़रत मूसा से बहुत पूर्व का है, इसलिये यहाँ हज़रत शुऐब के बजाए उन के ख़ान्दान के कोई बुज़ुर्ग हों गे। मैं अनुवादक कहता हूँ कि अगर हज़रत शुऐब मुराद हैं तो➲

➲क़ुरआन यहाँ उन नबी के नाम को गुमनाम न रखता, बल्कि उन का नाम अवश्य ही एक पैगंबर होने के नाते बयान करता। इस का अर्थ यह है कि उन लड़कियों के पिता (और मूसा के ससुर) कम से कम नबी नहीं थे अल्लाह बेहतर जाने!–ख़ालिद सिद्दीक़ी

१३. इधर हज़रत मूसा अ़लै० ने दुआ की उधर अल्लाह ने उन की दुआ़ को क़ुबूल करते हुये तुरन्त हज़रत शुअ़ैब के दिल में बात डाल दी और उन्हों ने उन को बुलवा भेजा ताकि उन के एहसान का शुक्र अदा कर सकें (सनाई) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हज़रत मूसा ने मिस्र को छोड़ा तो उन के पास खाने-पीने की कोई चीज़ न थी और न ही पाँव में जूता। सफ़र के दौरान केवल दरख़्त की पत्तियाँ खा कर गुज़ारा करते थे। नन्गे पैर चलते-चलते पाँव में छाले पड़ गये थे और भूक से पेट, पीठ में चिपक गया था। इन हालात में हज़रत मूसा ने यह दुआ़ फ़रमाई थी (सल्फ़िय्या)

اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ؕ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ
الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ٝ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۵﴾
قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا يٰٓاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ز اِنَّ خَيْرَ مَنِ
اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْاَمِيْنُ ﴿۲۶﴾ قَالَ اِنِّيْٓ اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ
اِحْدَى ابْنَتَيَّ هٰتَيْنِ عَلٰٓى اَنْ تَاْجُرَنِيْ ثَمٰنِيَ حِجَجٍ ۚ
فَاِنْ اَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ
اَشُقَّ عَلَيْكَ ؕ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۲۷﴾
قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ ؕ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ
فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿۲۸﴾
فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖٓ اٰنَسَ
مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ
اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ
مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿۲۹﴾ فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ

कि आप ने जो पानी पिलाया है उस का बदला आप को दें[१४]। सो जब वह (मूसा) उस (शुअ़ैब) के पास आया और सारा क़िस्सा उस को सुनाया तो उस ने कहा: मत डर! (अल्लाह का शुक्र बजा ला!) तू उन ज़ालिमों की क़ौम से छूट आया[१५]। २६. (यह बातें हो ही रही थीं कि उन की) उन (दो लड़कियों) में से एक ने कहा: बाबा! इस को नौकर रख लीजिये, (आप कमज़ोर हैं और हम औ़रत ज़ात) बेहतर से बेहतर जो आप नौकर रखें उसे मज़बूत और अमानतदार होना चाहिये[१६] २७. (शुअ़ैब ने) कहा: मैं चाहता हूँ कि उन दोनों बेटियों में से एक का निकाह तुझ से कर दूँ इस शर्त पर कि तू (उस के मह्र के बदले में) आठ वर्ष तक मेरा कार्य करे और अगर तू दस वर्ष पूरे करे गा तो यह तेरी तरफ़ से एहसान हो गा (और मैं इस बात का शुक्र गुज़ार हूँ गा) मगर मैं नहीं चाहता कि तुझ पर बोझ डालूँ। अल्लाह ने चाहा तो मुझे (मामले का सच्चा और) भलामानुस पाये गा। २८. मूसा ने कहा: यह बात मेरे और आप के दर्मियान मुक़र्रर हो चुकी। उन दोनों वादों में से जो भी पूरा करूँ तो मुझ पर किसी प्रकार का जब्र न हो। और अल्लाह तआ़ला हमारे कलाम पर (गवाह और) ज़िम्मेदार है[१७]। २९. सो मूसा ने जब मुद्दत पूरी की और अपने अह्ल को साथ ले चले तो तूर पर्वत की ओर उन को एक आग दिखाई पड़ी। अपने अह्ल से कहा: यहीं कहीं ठहरो मैं ने आग देखी है मैं (वहाँ जाता हूँ ताकि मैं) उस से कोई सूचना प्राप्त करूँ या कोई आग से अंगारा लाऊँ ताकि तुम आग➲

➲तापो॰[८] (और ठन्ड से बचो) ३०. पस जब मूसा उस आग के पास आया

....

१४. इस क़िस्सा से बेपर्दगी का शुब्हा न किया जाये। क्योंकि ज़रूरत के समय घर से निकलना जायज़ है, मगर शर्त यह है कि शरीअ़त में छुपाये जाने वाले हिस्से पोशीदा हों। (बयानुल् क़ुरआन)

१५. अगर्चे हज़रत मूसा से ख़ून हुआ था, मगर हज़रत शुऐ़ब ने फ़िर्औन को ही ज़ालिम कहा। इसलिये कि बिला इरादा क़त्ल के जुर्म में ग़ल्ती करने वाले को भी क़त्ल करना किसी भी हुकूमत का क़ानून नहीं है। इस का मतलब यह हुआ कि जो लोग मूसा के क़त्ल के दरपै थे वह बड़े ज़ालिम थे। (सनाई)

१६. और यह विशेष्तायें उस में मौजूद हैं। शक्ति तो इतनी है कि दस पुरुष जिस कार्य को न कर सकें वह अकेले ही कर डाले और अमानतदारी इस से अधिक क्या हो गी कि उस ने मुझ पर नज़र न डाली और मुझे अपने से पीछे चलने को कहा। (वहीदी)

१७. नबी करीम् सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत जिब्रील से पूछा कि हज़रत मूसा ने कौन सी मुद्दत पूरी की थी? हज़रत जिब्रील ने उत्तर दिया कि उन दोनों में से जो लंबी मुद्दत थी (यानी दस वर्ष) (इब्ने जरीर) एक दूसरी हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया हज़रत मूसा ने उन दोनों में से छोटी से निकाह किया था। (इब्ने कसीर)

१८. मुद्दत पूरी कर लेने के बाद हज़रत मूसा अ़लै॰ के दिल में शौक़ पैदा हुआ कि अब अपने वतन (मिस्र) जा कर अपने संबन्धियों से मिलना चाहिये। चुनान्चे अपनी पत्नी और बकरियों को ले कर वहाँ से रवाना हुये। रात को वर्षा होने लगी और ठन्डी हवायें चलने लगीं। घुप अंधेरा छा गया और हाथ को हाथ सुझाई नहीं देता था। चराग़ जला कर रोशनी करने की चेष्टा करते, मगर रोशनी ही न होती थी। इसी परेशानी और हैरानी की हालत में कुछ दूरी पर आग देखी तो अपनी पत्नी से कहा कि यहीं ठहरो, मैं उस आग के पास जाता हूँ। अगर कोई वहाँ मिला तो उस से रास्ता मालूम कर लूँ गा, वर्ना थोड़ी-बहुत आग ही ले आऊँ गा जिस से तुम्हारे तापने का इन्तिज़ाम हो जाये गा। हज़रत मूसा जब वहाँ पहुंचे तो उस वादी के दायें तरफ़ के पश्चिमी पर्वत से आवाज़ सुनाई दी। क़ुरआन मजीद की एक अन्य आयत से मालूम होता है कि हज़रत मूसा आग लेने के लिये क़िब्ला की ओर चले थे और पश्चिमी पहाड़ उन के दायें तरफ़ था। आग एक हरे-भरे दरख़्त में नज़र आ रही थी जो पहाड़ में मैदान के क़रीब था। उस दरख़्त में से आग की लपटें उठती नज़र आ रही थीं, लेकिन आग किसी चीज़ में जलती हुयी नहीं दिखाई दे रही थी। उसी समय अल्लाह की तरफ़ से आवाज़ आयी। हज़रत मूसा ने उस आवाज़ को सुना कि आवाज़ आ रही है। आवाज़ यह आ रही थी कि "ऐ मूसा! मैं रब्बुल आ़लमीन इस समय तुम से कलाम कर रहा हूँ"। फिर अल्लाह ने निर्देश दिया कि अपनी लक्ड़ी ज़मीन पर गिरा दो और मेरी क़ुदरत का अपनी आँखों से तमाशा देखो। लक्ड़ी ज़मीन पर गिरते ही एक फनफनाता अजगर साँप बन कर इधर-उधर दौड़ने लगी। यह इस बात की दलील थी कि बोलने वाला वास्तव में अल्लाह ही था कि जिस बात का जो हुक्म दे दे वह टल नहीं सकता। हज़रत मूसा यह मन्ज़र (दृश्य) देख कर घबरा गये, पीठ फेर कर उल्टे पाँव सरपट भागे और घूम कर भी न देखा। तुरन्त ही अल्लाह नें पुकाराः ऐ मूसा! इधर-उधर भागो नहीं, तुम हमारी सुरक्षा में हो। यह सुन कर हज़रत मूसा को इतमिनान हो गया और बेख़ौफ़ हो कर अपने स्थान पर ठहर गये। यह चमत्कार अ़ता करने के बाद दूसरा चमत्कार यह दिया कि अपना हाथ बग़ल में ले जा कर निकालते तो वह चाँद [illegible] र.ान चमकने लगता और देखने में बहुत भला मालूम होता। यहाँ पर अल्लाह तआ़ला ने साफ़ लफ़्ज़ों में फ़र्मा दिया कि यह कोढ़ की बीमारी के कारण नहीं था। फिर फ़रमाया कि अगर तुम्हें इस साँप से या किसी से डर और ख़ौफ़ महसूस हो तो अपने बाज़ू को अपने बदन से मिला लो, इस प्रकार से डर और ख़ौफ़ ख़त्म हो जाये गा।

हज़रत मूसा ने अल्लाह तआ़ला से दो प्रार्थनायें और भी कीं (१) ज़बान की गिरह, लुक्नत और हकलाहट➲

➲की समाप्ति (२) हज़रत हारून को सहायक और सहयोगी बनाने की दुआ। अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा की यह दोनों प्रार्थनायें भी कुबूल कर लीं (मुहम्मदी)

नोटः- आयत न० ३४ में हज़रत मूसा फ़रमाते हैं कि हारून जो मुझ से ज़्यादा फ़सीह है। सूरः ताहा की आयत न० २७ में फ़रमाया "मेरी ज़बान की गाँठ को खोल दे"। इन्हीं दोनों आयतों की बुनियाद पर यह क़िस्सा बनाया गया कि बचपन में आग का अंगारा खा लेने की वजह से ज़बान जल गयी थी और हकलाने लगे थे। लेकिन ऐसे मौक़े पर अपने मुक़ाबला में दूसरे को फ़सीह नहीं कहा जा सकता। फ़साहत यह है कि आसान और हल्के-फुल्के शब्द प्रयोग किये जायें, ज़बान में सरलता हो। जहाँ जिस मौक़े पर हल्के-भारी शब्द को इस्तेमाल करने की ज़रूरत हो, तुरन्त अपनी तक़रीर में मौक़ा व महल ताड़ कर इस्तेमाल किया जाये। यह तमाम बातें हज़रत हारून के अन्दर हज़रत मूसा के मुक़ाबले में ज़्यादा थीं। इस की वजह यह है कि हज़रत हारून जहाँ पैदा हुये वहीं की ज़बान आख़िर तक बोलते रहे उन के विपरीति हज़रत मूसा ने नौजवानी ही की उम्र में अपना वतन छोड़ कर मदयन में पनाह ली और वहाँ कम से कम २०-२५ वर्ष तो रहे ही। इस बिना पर मदयन की भाषा बोलने लगे थे और मुल्क मिस्र की अपनी मादरी भाषा पर पकड़ ढीली हो गयी थी। और तब्लीग़ का काम मिस्र में मिस्री भाषा में करना था इस लिये हर लिहाज़ से हज़रत हारून ही उचित थे। हज़रत मूसा ने अपनी इसी परेशानी को "गिरह, गाँठ और लुक्नत" कहा है जिसे लोगों ने ज़बान जल जाने के कारण बीमारी बताया। बहर हाल यह हमारे उस्ताद हज़रत मौलाना जलील अहसन नदवी रह० की तहक़ीक़ है और इस पर भी ग़ौर करने की आवश्यक्ता है ------ ख़ालिद

شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ
الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰۤى اِنِّيْۤ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَ
اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى
مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰۤى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ
اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ۝ اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ
بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ؗ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ
الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ
مَلَا۠ئِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ
قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۝ وَاَخِيْ
هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْاً
يُّصَدِّقُنِيْۤ ؗ اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ۝ قَالَ سَنَشُدُّ
عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا
يَصِلُوْنَ اِلَيْكُمَا ۚ بِاٰيٰتِنَآ ۚ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا

तो मैदान के दायें किनारे की तरफ़ पाक जगह में उस के एक दरख़्त में से आवाज़ आयी कि ऐ मूसा! बेशक मैं अल्लाह रब्बुल् आलमीन हूँ (इसलिये तू मेरी इबादत किया कर) ३१. और यह कि अपनी लकड़ी को (जो इस समय तेरे हाथ में है) फेंक दे। सो मूसा ने (उस को फेंक दिया मगर) जब उस को हिलते देखा कि गोया वह पतला सा सांप था तो मूसा पीठ फेर कर भागा और उस ने मुड़ कर न देखा। अल्लाह ने फ़रमायाः ऐ मूसा! आगे आ और डर नहीं, बेशक तू अम्न में है। ३२. और तू अपना हाथ अपनी गरीबान में दाख़िल कर वह बग़ैर किसी बीमारी के सफ़ेद निकले गा[1] (यह तेरा दूसरा चमत्कार ज़ाहिर हो गा) और उस ख़ौफ़ को दूर करने के लिये अपने बाजुओं को सिकोड़ कर मज़बूती के साथ पकड़। सो यह दो फ़ैसलाकुन (निर्णायक) चमत्कार तेरे रब के हाँ से तुझ को मिले हैं और उस के दर्बारियों की तरफ़ जा ➲

➲कुछ शक नहीं कि वह बदकार लोग हैं। ३३. मूसा ने कहा: ऐ मेरे पर्वरदिगार! मैं ने उन में से एक जान को क़त्ल किया हुआ है इस लिये मैं डरता हूँ कि कहीं मुझे क़त्ल न कर दें ३४. और मेरा भाई हारून जो मुझ से अधिक फ़सीह (अच्छा बोलने वाला) है उस को मेरे साथ सहयोगी बना कर भेज जो मेरी तस्दीक़ करे,[२०] मुझे डर है कि फ़िर्औनी लोग मुझे झुठलायें गे (और मेरी तबीअ़त पर बुरा असर हो गा) ३५. अल्लाह ने कहा: हम तेरे भाई के साथ तेरे बाज़ू को शक्ति प्रदान करें गे और तुम को ग़लबा दें गे पस वह तुम्हारी आयात (चमत्कारों) के कारण तुम तक पहुंच भी न सकें गे (याद रखो!) तुम और तुम्हारे ताबेदार ही ग़ालिब रहें गे।

....

१९. 'बग़ैर बीमारी के' तौरात में लिखा है कि मूसा के हाथ में कोढ़ की सफ़ेदी थी (जिसे बर्स या सफ़ेद दाग़ बोला जाता है)। तौरात की इसी ग़लती के सुधार के लिये यह शब्द बढ़ाया गया और बताया कि किसी कोढ़ आदि की बीमारी के कारण यह सफ़ेदी नहीं थी, बल्कि यह एक चमत्कार था (सनाई)

२०. 'वह मेरी तस्दीक़ करें गे' यानी मेरी ज़बान में लुकनत (हकलाहट) है और इसी कारण मेरी तक़रीर साफ़ नहीं है। और मैं बहुत अच्छी तरह दलील भी न दे सकूँ गा। इस लिये मेरे भाई हारून भी साथ रहें गे तो वह मेरी बातों को ढंग से समझा दें गे। 'मेरी बात की तस्दीक़ करें गे' से यही मुराद है। (वहीदी)

३६. पस जब मूसा हमारे खुले-खुले अहकाम लेकर उन के पास आया तो उन्हों ने कहा कि यह जादू है (अल्लाह पर) बुहतान लगाया हुआ और हम ने यह बात पहले बाप-दादाओं से नहीं सुनी। ३७. मूसा ने कहा कि जो कोई अल्लाह के हाँ से हिदायत लाया है और जिस का अन्जाम बेहतर है अल्लाह उस को ख़ूब जानता है (पस तुम याद रखो कि) ज़ालिम लोग कभी कामियाब न हों गे। ३८. और फ़िर्औन ने कहा: ऐ दर्बारियो! मैं तुम्हारे लिये अपने को छोड़ कर कोई माबूद नहीं जानता[२१] (और यह मूसा और दूसरा माबूद होने की सूचना देता है) पस ऐ हामान! तू मिट्टी के पज़ावे {भट्टे} पका कर मेरे लिये एक भवन बनाना कि मूसा के माबूद की तरफ़ झाँकूँ और इस में कुछ शुब्हा नहीं कि मैं उस को झूठा समझता हूँ[२२]। ३९. और उस ने और उस की फ़ौज ने ज़मीन पर नाहक़ (फ़ख़्र और) तकब्बुर किया और वह समझते थे कि➲

الْغٰلِبُوْنَ ۝ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ
قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا
فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَقَالَ مُوْسٰى رَبِّيْٓ اَعْلَمُ
بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ لَهٗ
عَاقِبَةُ الدَّارِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَقَالَ
فِرْعَوْنُ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ ۚ
فَاَوْقِدْ لِيْ يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا
لَّعَلِّيْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ
الْكٰذِبِيْنَ ۝ وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي الْاَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ ۝
فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّدْعُوْنَ
اِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝ وَاَتْبَعْنٰهُمْ

➲हमारी तरफ़ लौट कर नहीं आयें गे। ४०. पस (उन के तकब्बुर की शामत से) हम ने उस को और उस की फ़ौज को पकड़ कर दरिया में डुबो दिया, देखो! उन ज़ालिमों का अन्जाम क्या बुरा हुआ (गये तो थे बनी इस्राईल को पकड़ने और स्वयँ घर लिये गये) ४१. और हम ने उन को पेशवा बनाया था जो लोगों को जहन्नम (के लाइक़ कामों) की तरफ़ बुलाते थे और क़ियामत के रोज़ उन को (किसी प्रकार की) मदद न मिले गी।

....

२१. फ़िर्औन, या तो नेचरी यानी दह्रिया था जो अल्लाह को नहीं मानता था, या हर चीज़ को ख़ुदा समझता था, जैसा कि आज-कल के कुछ मुल्हिदों और बेदीनों का अ़क़ीदा है कि अल्लाह और बन्दा दोनों एक हैं। रिवायतों में आया है कि जब फ़िर्औन ने यह कहा तो हज़रत जिब्रील ने अल्लाह तआ़ला से उस को हलाक करने की अनुमति माँगी, मगर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अभी समय नहीं आया है। फिर जब उस ने 'अना रब्बुकुमुल् अअ़्ला' (मैं तुम्हारा सब से बड़ा रब हूँ सूरः नाज़िआ़त-२४) कहा तब अल्लाह ने फ़रमाया: अब इस के हलाक होने का समय आ चुका है। हज़रत जिब्रील के फ़िर्औन की हलाकत के लिये इजाज़त माँगने और इस दावे के दर्मियान चालीस वर्ष का फ़ासिला था (वहीदी)

२२. 'उस को मैं झूठा समझता हूँ इस लिये कि वह कहता है मेरा ख़ुदा आसमान में है। हज़रत आदम से लेकर अन्तिम संदेष्टा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तक यही कहते आये हैं कि अल्लाह ऊपर है, यानी आसमान के ऊपर अर्श पर विराजमान है। सहाबा, ताबेओ़न, तबा ताबेओ़न और समस्त मोमिनों का यही अ़क़ीदा था। फिर एक शख़्स जुहैम बिन सफ़वान नामी ने यह अ़क़ीदा फैलाया कि अल्लाह आसमान पर नहीं है, बल्कि हर स्थान पर मौजूद है, अर्श और फ़र्श (आसमान और ज़मीन) उस के लिये सब बराबर हैं। उस ज़माना के उलमा ने यह बातें फैलाने वाले इस मर्दूद के ख़िलाफ़ कुफ़्र का फ़तवा दिया, चुनान्चे वह हलाक कर दिया गया। इमाम अबुल हसन शअ़रानी फ़रमाते हैं कि फ़िर्औन ने मूसा के इस क़ौल को झुठलाया था कि "अल्लाह आसमान के ऊपर " । (वहीदी)

हाफ़िज़ इमाम अबुल क़ासिम अस्फ़हानी रह० संपादक पुस्तक "तर्ग़ीब व तर्हीब" लिखते हैं कि तमाम मुसलमानों का यह अ़क़ीदा है कि अल्लाह बुलन्दों का बुलन्द है। कुरआन में उस ने अपने आप को अर्श पर मुस्तवी और तमाम काइनात (ब्रह्माण्ड) से अलग बताया है। इस बात में किसी प्रकार का तनिक भर संदेह नहीं है। अल्लाह तआ़ला अपनी ज़ात, ग़लबा, मर्तबा और तमाम बातों में बुलन्दों से बुलन्द है। तमाम मुसलमानों का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि दुआ़ माँगते समय अल्लाह की तरफ़ इशारा करने के लिये ऊपर (बुलन्दी की तरफ़) हाथ या उंगली से इशारा करना जायज़ है (इस प्रकार यह साबित होता है कि अल्लाह आसमान में अर्श पर मुस्तवी है) और इस की दलील इस आयत से भी सिद्ध है कि फ़िर्औन ने हामान से कहा था कि मेरे लिये एक ऊँचा महल बनाओ ताकि उस के ऊपर से चढ़ कर मूसा के ख़ुदा को देखूँ। फ़िर्औन ने भी यही समझा था कि हज़रत मूसा का यही अ़क़ीदा है कि अल्लाह आसमान के ऊपर है इसलिए ऊँचा महल बनवाने का आदेश दिया और मूसा पर झूठ बोलने का आरोप लगाया।

आश्चर्य की बात तो यह है कि फ़िर्औन ने तो हज़रत मूसा का अ़क़ीदा समझ लिया, लेकिन जहमिय्या फ़िर्क़ा के लोग तो फ़िर्औन से भी अधिक गुमराह हैं जो अल्लाह की ज़ात के लिये बुलन्दी के क़ाइल नहीं हैं। एक सहीह हदीस से यह बात साबित है कि एक लौंडी से पूछा गया कि अल्लाह कहाँ है? उस ने बतलाया कि आकाश के ऊपर। इस पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसे ईमानदार बताया। आप ग़ौर फ़रमायें कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तो अल्लाह को आसमान पर बतलाने वाले को ईमान वाला फ़रमायें और जहमिय्या फ़िर्क़ा के लोग आसमान पर बतलाने वालों को काफ़िर कहें। यह ख़ुद उन की गुमराही की दलील है। (किताबुल् अस्मा वस्सिफ़ात) अल्लाह की ज़ात के लिये "हमा ऊस्त" (हर जगह मौजूद है) का अक़ीदा रखना भी सरासर गुमराही है। अल्लाह➲

➲ने क़ुरआन पाक में सात आयतों के अन्दर फ़रमा दिया है कि वह अर्श पर मुस्तवी है और मख़्लूक़ से जुदा है। हाँ! अल्लाह तआला का इल्म हर जगह मौजूद है। यानि अल्लाह तआला स्वयँ तो अर्श पर मुस्तवी है लेकिन वहाँ मुस्तवी होते हुए भी कायनात के ज़र्रे-ज़र्रे की ख़बर और उसका इल्म अल्लाह को है। इस विषय पर विस्तार से जानकारी प्राप्त करने के लिये हज़रत मौलाना अब्दुल जब्बार सा० ग़ज़नवी रह० का लेख "सबीलुन्नजात" और इस लेख का ज़मीमा (Annexure) जिस का नाम "बुनियादी अक़ाइद" है और जिसे मैं ने लिखा है का मुताला किया जाये (दावूद राज़)

नोटः- जहमिय्या फ़िर्क़ा की बुनियाद जहम बिन सफ़वान नामक एक गुमराह व्यक्ति ने डाली और यह फ़िर्क़ा इसी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बनी उमय्या के शासन काल में मुस्लिम मरबानी ने इसे क़त्ल कर डाला था। इस शख़्स ने अपने अ़लाक़े में बड़ी गुमराही फैला रखी थी। इस का कहना था कि कुरआन मख़्लूक़ है, अल्लाह ने मूसा से कलाम नहीं किया था, अल्लाह देखा नहीं जाता है, न उस के पास अर्श है और न ही कुर्सी, इसलिये अर्श पर बैठना यह ग़लत है। मीज़ान और क़ब्र का अ़ज़ाब ख़ाली-ख़ूली बहकावे की बातें हैं। जन्नत-दोज़ख़ फ़ना हो जायें गे। आख़िरत में अल्लाह का दीदार नहीं हो गा। ईमान केवल दिल से मानने का नाम है, ज़बान से एलान करने की आवश्यकता नहीं है, इस लिये अगर कोई ज़बान से अल्लाह का इन्कार करे तो ईमान से ख़ारिज न हो गा। आ़म लोगो और नबिय्यों के ईमान में कोई कमी-बेशी नहीं। अल्लाह की ज़ात अर्श पर नहीं, बल्कि हर स्थान में मौजूद है। अल्लाह किसी चीज़ को उस के पैदा करने से पहले नहीं जानता था। इस फ़िर्क़ा का विस्तार से अक़ीदा जानने के लिये अ़ल्लामा अ़ब्दुल करीम शहरिस्तानी की प्रसिद्ध पुस्तक "अल्मिलल वन्नहल" और शेख़ अ़ब्दुल क़ादिर रह० की पुस्तक "गुन्यतुत्तालिबीन" का मुताला किया जाये - ख़ालिद सिद्दीक़ी

فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ هُم مِّنَ
الْمَقْبُوحِينَ ﴿٤٢﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِن بَعْدِ
مَا أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولَىٰ بَصَائِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى
وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٣﴾ وَمَا كُنتَ بِجَانِبِ
الْغَرْبِيِّ إِذْ قَضَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنتَ مِنَ
الشَّاهِدِينَ ﴿٤٤﴾ وَلَٰكِنَّا أَنشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ
الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنتَ ثَاوِيًا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُو
عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا وَلَٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ﴿٤٥﴾ وَمَا كُنتَ
بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَٰكِن رَّحْمَةً مِّن رَّبِّكَ
لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَاهُم مِّن نَّذِيرٍ مِّن قَبْلِكَ
لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْلَا أَن تُصِيبَهُم مُّصِيبَةٌ
بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ

४२. हम ने इस दुनिया में उन के पीछे लानत लगा दी और क़ियामत के दिन भी वह ज़लील व रुस्वा हों गे ४३. और कई एक क़ौमें (आ़द व समूद इत्यादि) हलाक करने के बाद हम ने मूसा को किताब (तौरात) दी थी जो लोगों के लिये (बातिनी) बीनाई, हिदायत और रहमत थी ताकि वह लोग (जो उस के ज़माना में थे) नसीहत पायें। ४४. (ऐ नबी!) तू (उस वक़्त पहाड़ के) पश्चिमी जानिब पर (मौजूद) न था जब हम ने मूसा को (शरई़) हुक्म हवाला किया, और न तू (इस वाक़िआ़ पर) हाज़िर था ४५+४६. और न तू मदयन वालों में उन को हमारे अहकाम पढ़-पढ़ कर सुनाता था और न तू पर्वत के किसी तरफ़ मौजूद था[२१] जब हम ने (मूसा को) पुकारा (लेकिन अस्ल बात यह है कि) हम ने बहुत सी क़ौमें पैदा कीं फिर उन पर ग़फ़्लत का लम्बा समय बीत गया, तो हम➲

➲ने केवल अपनी रहमत से तुझ को रसूल बना कर के भेजा (यानी तेरा दावा अल्लाह की तरफ़ सेहै, मनघड़त नहीं) कि तू उस क़ौम को डरावे जिस के पास तुझ से पहले कोई डराने वाला नहीं आया ताकि (तेरे आने से) वह नसीहत पायें[२४]।
४७. और अगर यह ख़याल न होता कि उन को उन के बुरे कर्मों की वजह से जो आज से पहले कर चुके हैं कोई मुसीबत पहुंचे तो कहने लगें कि ऐ हमारे रब! तू ने हमारी तरफ़ रसूल क्यों न भेजा कि हम तेरे आदेशों की पैरवी करते और ईमान लाते (तो हम भी न यह क़ुरआन भेजते और न रसूल)

....

२३. यानी तूर पर्वत के पश्चिम की तरफ़ जहाँ मूसा को नबुव्वत और तौरात मिली थी, वहाँ के और उस समय के वाक़िआत को तू इतनी सच्चाई, सफ़ाई और तफ़्सील से बयान कर रहा है जैसे तू तूर पहाड़ ही के पास खड़ा देख रहा हो। हालाँकि ज़ाहिर है कि तुम उस मौक़े पर मौजूद न थे। और यह भी सब जानते है कि तुम जाहिल अनपढ़ हो और किसी पढ़े-लिखे के पास भी उठे-बैठे नहीं हो, और न ही मक्का में इस प्रकार का कोई आलिम ही मौजूद था। इस लिये प्रश्न उठता है कि तुम्हें यह ज्ञान कहाँ से प्राप्त हुआ? और इस का उत्तर भी सभी को मालूम है कि अल्लाह ने वह्यि के ज़रीआ दिया।

अस्ल बात यह है कि इस वाक़िए पर ज़माना गुज़र गया और लोग इस को भूल भी गये, फिर क़ौमों ने इस अस्ल वाक़िए में तब्दीली भी कर दी जिस से हिदायत के मिट जाने का संदेह पैदा हो गया था, इस लिये अल्लाह तआ़ला ने यह इरादा किया कि एक उम्मी (अनपढ़) की ज़बान से भूले हुये सबक़ याद दिलाये जायें और उन वाक़िआ़त का ऐसा नक़्शा दुनिया के सामने पेश कर दिया जाये कि जो भी सुने उसे मानना पड़े कि बयान करने वाला गोया मौक़ा पर ही मौजूद था और अपनी आँखों से सब कुछ देख रहा था। ज़ाहिर है कि तुम उस समयकाल में और उस स्थान पर तो मौजूद न थे, तो इस का मतलब इस के सिवा और कुछ नहीं कि यह ज्ञान अल्लाह ने आप को अ़ता फ़रमाया

और जब हज़रत मूसा को मदयन जा कर जो वाक़िआ़त पेश आये, उन का इस ख़ूबी और सच्चाई से बयान तो यह ज़ाहिर करता है कि गोया उस समय तुम पैग़ंबर की हैसिय्यत से वहाँ ठहरे हुये थे और जिस प्रकार आज अपने शहर मक्का में अल्लाह की आयतें पढ़ कर सुना रहे हो उस वक़्त मदयन वालों को सुनाते हो गे, हालाँकि यह बात सहीह नहीं है। बात केवल इतनी है कि हम हमेशा से पैग़ंबर भेजते रहे हैं जो दुनिया को ग़फ़लत से चौंकाते और गुज़रे हुये वाक़िआ़त याद दिलाते रहें, इसी तरीक़े के मुताबिक़ हम ने इस ज़माना में तुम को रसूल बना कर भेजा ताकि पिछले क़िस्से याद दिलाओ। और जब मूसा को आवाज़ दी थी कि "मैं अल्लाह हूँ सारे संसार का पालनहार" तो तुम वहाँ खड़े सुन नहीं रहे थे। यह अल्लाह का इनाम है कि आप को उन बातों की जानकारी दी और तुम्हारे साथ भी उसी प्रकार बर्ताव किया जो मूसा अ़लै० के साथ के साथ किया था। गोया "नूर पर्वत" (जहाँ ग़ारे हिरा है) जो मक्का मदीना के बीच में स्थित है उसपर तूर पर्वत जो मदयन में स्थित है उस की तारीख़ दुहरा दी गयी।

"लितुन्ज़ि-र-क़ौम-न" (आयः ४६) यानी अ़रब वालों को यह वाक़िआ़त सुना कर उन को भी बुरे अन्जाम से आगाह कर दें, इस लिये कि मुम्किन है वह सुन कर याद रखें और नसीहत पकड़ें। (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)
२४. इस आयत (न० ४६) का तर्जुमा ग्रामर के आधार पर बड़ा कठिन है। इसी लिये समझाने के लिये आयत के शब्दों को ऊपर नीचे कर के तर्जुमा किया गया है। इस प्रकार आगे-पीछे तर्जुमा करने पर अगर किसी को एतराज़ होगा तो मैं पुनः विचार करूँ गा (सनाई) इसी कठिनाई में पड़ कर मैं ने भी आयः न० ४५+४६ को एक साथ कर के तर्जुमा का अनुवाद किया है-ख़ालिद

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِيَ
مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى ؕ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى
مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۟ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ
كٰفِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ
اَهْدٰى مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٩﴾ فَاِنْ لَّمْ
يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ؕ وَمَنْ
اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللّٰهِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدْ
وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥١﴾ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ
الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَاِذَا يُتْلٰى
عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا
مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ﴿٥٣﴾ اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ
بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا

४८. पस जब हमारे हाँ से उन के पास सच आ चुका तो कहते हैं कि क्यों नहीं उस को ऐसे मोजिज़े मिलते जैसे मूसा को मिले थे? क्या यह लोग उस किताब से जो मूसा को मिली थी इन्कारी नहीं हैं? (फिर यह कैसी ग़ल्त बात है कि मूसा का नाम ले कर कुरआन की तालीम को रद्द करते हैं) कहते हैं कि यह दोनों (मूसा और हारून) जादूगर थे एक दूसरे के मददगार थे, और कहते हैं कि हम उन सब का इन्कार करते हैं। ४९. तू कह कि तुम ही कोई किताब अल्लाह की तरफ़ से उतारी हुयी लाओ जो उन दोनों से ज़्यादा हिदायत वाली हो, मैं उसी की पैरवी करूँ गा। अगर तुम सच्चे हो (तो इस का फ़ैसला करो) ५०. पस अगर तुझ को उत्तर न दें तो जान रख कि यह लोग केवल अपनी नफ़्सानी ख़ाहिश के पीछे चलते हैं। और जो कोई बग़ैर अल्लाह की हिदायत के सिर्फ़ अपने नफ़्स की ख़ाहिश के पीछे चले तो उस से ज़्यादा कौन गुमराह है? कुछ शक नहीं कि अल्लाह भी ऐसे ज़ालिमों को हिदायत नहीं दिया करता। ५१. और हम ने कलाम (कुरआन मजीद) को उन के लिये विस्तार से बयान किया, ताकि यह लोग नसीहत पायें[२५]। ५२. जिन लोगों को हम ने इस से पहले किताब (की समझ) दी है वह इस (कुरआन) पर भी ईमान लाते हैं। ५३. और जब (कुरआन) पढ़ कर उन को सुनाया जाता है तो कहते हैं कि हम उस पर ईमान लाये। कुछ शक नहीं कि यह हमारे पर्वरदिगार के पास से आया है और हम इस से पहले ही फ़रमाबर्दार थे। ५४. उन लोगों के (इख़्लास और मुख़ालिफ़ों की तक्लीफ़ पर) सब्र करने की वजह से उन के आमाल का बदला उन को दोगुना मिले गा और यह लोग बुराई को नेकी के साथ दूर करते हैं (यानी बुराई के बदले में नेकी करते हैं)

....

२५. इस से पहले यह बयान हो चुका है कि अगर संदेष्टाओं को भेजने से पहले ही हम उन पर अ़ज़ाब भेज देते तो उन को यह कहने का मौक़ा मिल जाता कि अगर हमारे पास रसूल आते तो हम अवश्य ही उन पर ईमान लाते। इसी लिये हम ने संदेष्टा और विशेष कर अन्तिम संदेष्टा (मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को भेजा। लेकिन जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन के पास पहुंचे तो उन्हों ने इन्कार किया और हिदायत से आँखें मूंद लीं, और कहने लगे कि जिस प्रकार हज़रत मूसा को चमत्कार दिये गये थे, हमें भी क्यों नहीं दिये गये? (याद रहे ➡

➲कि हज़रत मूसा को ९ चमत्कार दिये गये थे (१) लकड़ी का सांप बन जाना (२) हाथ का चमकने लगना (३) तूफ़ान (४) टिड्डी (५) मेंडक (६) चेचड़ी (७) ख़ून (८) अनाज में कमी (९). फलो में कमी इस के अलावा पानी का रास्ता देना, बादलों का साया करना, मन्न व सल्वा नाज़िल होना) अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यह लोग जिस वाक़िआ को उदाहरण के तौर पर पेश करते हैं और जिस मोजिज़े के जैसा मोजिज़ा माँगते हैं, यह जब उन पहले के मोजिज़ों पर ईमान नहीं लाये तो तुम को दिये गये मोजिज़ों पर क्या ईमान लायें गे? इन लोगों ने तो उन मोजिज़ों को देख कर कहा था कि दोनों भाइयों ने तो अपने जादू के ज़ोर से बना लिया है, इस लिये हम हर्गिज़ ईमान न लायें गे। इसी प्रकार अगर हम तुम्हें भी मोजिज़ा दे दें तब भी यह झुठला दें गे (मुहम्मदी)

رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا
عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ز سَلٰمٌ
عَلَيْكُمْ لَا نَبْتَغِى الْجٰهِلِيْنَ ۝ اِنَّكَ لَا تَهْدِىْ مَنْ
اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ج وَهُوَ
اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝ وَقَالُوْٓا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ
نُتَخَطَّفْ مِنْ اَرْضِنَا ط اَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا
يُّجْبٰٓى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ شَىْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَ
لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ
قَرْيَةٍۭ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا ج فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ
مِّنْ بَعْدِهِمْ اِلَّا قَلِيْلًا ط وَكُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ ۝
وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى يَبْعَثَ فِىْٓ
اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ج وَمَا كُنَّا مُهْلِكِى
الْقُرٰٓى اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ۝ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَىْءٍ

और हमारे दिये में से ख़र्च करते हैं[२६] ५५. और (बड़ी अच्छाई यह है कि) जब कभी कोई बेहूदा बात सुनते हैं तो उस से मुंह फेर लेते हैं और (उन से) कहते हैं कि हमारे काम हमारे लिए हैं और तुम्हारे काम तुम्हारे लिए, तुम को हमारा सलाम, हम ऐसे जाहिलों से मिलना नहीं चाहते[२७]। ५६. तू (ऐ नबी!) जिस को चाहे हिदायत नहीं कर सकता लेकिन अल्लाह ही जिस को हिदायत पर लाये, और वह हिदायत पाने वालों को ख़ूब जानता है[२८]। ५७. और कहते हैं अगर हम (ऐ नबी!) तेरे साथ हो कर हिदायत की पैरवी करें तो (मुख़ालिफ़ों के ज़ुल्म से) हम अपनी ज़मीन (यानी मुल्क)से निकाल दिये जायें गे। क्या हम ने उन को हरम में जगह नहीं दी जिस की तरफ़ हमारे देने से हर प्रकार के फल खिंचे चले आ रहे हैं (वर्ना ख़ास मक्का शरीफ़ में तो कुछ भी नहीं पैदा होता) लेकिन बहुत से लोग नहीं जानते[२९] (कि इस एहसान का शुक्र अदा करें) ५८. और हम ने कई एक बस्तियाँ हलाक कर दीं जिन्हों ने अपनी ज़िन्दगी ख़राब कर ली थी, पस यह (तुम्हारे निकट ही) उन की बस्तियाँ हैं (जो ऐसी उजड़ी हैं कि) उन लोगों के बाद बहुत कम आबाद हुयी हैं, और हम ही मालिक हैं। ५९. और (याद रखो कि) हम किसी बस्ती को तबाह नहीं किया करते जब तक कि उस के बड़े स्थान (जनपद) में रसूल न भेजें जो उन को हमारे अहकाम सुना दे, और हम किसी बस्ती को तबाह नहीं किया करते मगर जिस हाल में वह (हद से आगे बढ़ कर) ज़ालिम होते हैं। ६०. और जो कुछ तुम को मिला है

....

२६. शाने-नुजूलः- हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जिन लोगों की शान में यह आयत नाज़िल➲

हुयी वह ७० बुज़ुर्ग थे। उन्हें हबश मुल्क के बादशाह नजाशी ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में भेजा था। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जब उन के सामने सूर: यासीन की तिलावत फ़रमाई तो रोने लगे और तुरन्त इस्लाम ले आये। अल्लाह तआ़ला इन को दोहरा सवाब दे गा। एक तो पहली किताब को मानने का और दूसरे क़ुरआन मजीद को मानने और इस पर अ़मल करने का। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि का फ़रमान है, तीन प्रकार के लोगों को दोगुना सवाब मिले गा (१) अहले किताब, जो अपने नबी पर ईमान लाये। और मुझ पर भी। (२) वह ग़ुलाम, जो अपने मालिक की आज्ञापालन करते हुए अल्लाह तआ़ला के भी तमाम अहकाम बजा लाता हो। (३) वह शख़्स जिस के पास लौंडी हो, जिसे अदब सिखाये और बाद में उस से निकाह भी कर ले (इब्ने कसीर)

२७. जिन ई़साई उलमा का ऊपर बयान हुआ है उन के इस्लाम लाने की ख़बर सुन कर मक्का के काफ़िरों ने उन्हें ताने देने आरंभ कर दिये, तो उन्हों ने यही उत्तर दिया कि हम तुम्हारे साथ जाहिलाना बातें करना पसन्द नहीं करते। इस आयत में इसी घटना की ओर संकेत है। (इब्ने कसीर)

२८. **शाने-नुज़ूलः-** यह आयत नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि के चचा अबू तालिब के बारे में नाज़िल हुयी। चचा आपके हर प्रकार सहयोगी थे। इन्तिक़ाल के समय आप ने अन्तिम क्षणों में भी इस्लाम लाने की दावत दी, लेकिन यह उन का दुर्भाग्य था कि इस्लाम नहीं लाये। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन से कहा था कि केवल एक बार ही कलिमा पढ़ दें, ताकि क़ियामत के दिन आप के लिये सिफ़ारिश कर सकूँ, लेकिन अबू जेहल और अन्य काफ़िरों के बहकावे में आ कर अन्तिम जुम्ला ज़बान से यही निकला कि "मैं अपने बाप अ़ब्दुल मुत्तलिब के दीन पर मरता हूँ", इस मौक़े पर यह आयत नाज़िल हुयी (बुख़ारी, मुस्लिम) 'हिदायत' अर्थात मन्ज़िल तक पहुंचाना अल्लाह का काम है और 'हिदायत' अर्थात राह दिखाना नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि का और आप के बाद ख़ुलफ़ा फिर उलमा का।

२९. ऊपर की आयतों में अल्लाह तआ़ला ने मक्का वालों का यह क़ौल बयान फ़रमाया था जिस को वह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान न लाने के उज़्र में पेश करते थे कि हम अगर इस अन्तिम संदेष्टा पर ईमान लायें गे तो मक्का की आस-पास की बस्तियों के लोग दीनी और मज़हबी मुख़ालिफ़त पैदा हो जाने के कारण हमारे साथ दुश्मनी से पेश आने लगें गे, जिस से हमारी राहत और अम्न में फ़र्क़ पड़ जाये गा। अल्लाह तआ़ला ने मक्का वालों के इस उज़्र का एक उत्तर तो ऊपर बयान फ़रमाया था जिस का ख़ुलासा यह था कि मक्का वालों की यह नादानी है कि उन को अपनी तदबीर का नतीजा ख़याल करते हैं। हालाँकि उन की तदबीर से मक्का में कोई अम्न नहीं है, बल्कि अल्लाह के घर की वजह से अम्न हासिल है।

अब इन आयतों में उन के उज़्र का यह दूसरा उत्तर दिया गया है कि अगर मक्का वाले पास-पड़ोस की बस्तियों से डर कर ईमान न लायें गे तो उन का यह ख़याल ग़लत है कि फिर यह अम्न से बैठे रहें गे। बल्कि उन के ईमान न लाने से अल्लाह और रसूल को उन से दुश्मनी पैदा हो जाये गी। और मुल्क शाम व यमन के रास्ते में बहुत सी बस्तियाँ उन्हों ने इस प्रकार के अल्लाह और उस के रसूलों के नाफ़र्मान लोगों की वीरान पड़ी हुयी देखी हैं। यह लोग याद रखें कि इन का भी अन्त उसी प्रकार होने वाला है। और यह भी फ़रमाया है कि जो लोग ग़ारत हो गये उन को अल्लाह ने हलाक करने से पहले अपने रसूल भेज कर समझा दिया था कि अल्लाह और उस के रसूल की अवज्ञा करें गे तो हलाक हो जायें गे। इसी प्रकार इन मक्का वालों के पास भी अल्लाह ने अपना संदेष्टा भेजा है और उन पर तरह-तरह के अहकाम नाज़िल किये जाते हैं और हर तरह से उन को समझा दिया जाता है। समझने का समय अभी बाक़ी है, फिर इस के बाद अल्लाह का अज़ाब आ जाये गा तो दुनिया के चन्द दिन का ऐ़श व आराम हाथ से जाता रहे गा और ऐसे आख़िरत के अ़ज़ाब में पकड़े जायें गे जिस अ़ज़ाब की सख़्ती के सबब से यह दुनिया का चन्द दिन का ऐ़श व आराम और अम्न के क़ाइम रहने के लिये यह लोग पास-पड़ोस की बस्तियों के लोगों को अपना दुश्मन बनाना नहीं चाहते और इस तर्क से यह लोग मौजूदा रसूल पर ईमान नहीं लाये तो क्या उन लोगों को इतनी समझ नहीं कि बड़े-बड़े ऐ़श व आराम के बन्दे जो उन से पहले थे वह आख़िर कहाँ गये? क्या दुनिया

➲में कोई हमेशा रह कर ऐ़श व आराम करने वाला है? फिर जो चीज़ आख़िर हाथ से जाने वाली है उस की सुरक्षा कोई कहाँ करे गा? ऐसी जाने वाली चीज़ आज अगर न गयी तो कल अवश्य चली जाये गी। मतलब यह है कि ऐसे हाथ से जाने वाले ऐ़श व आराम के पीछे यह लोग अपनी उस हमेशा के ऐ़श व आराम को जो मिट्टी में मिलाते हैं जिस का वादा अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल की फ़रमांबर्दारी के अज्र में फ़रमांबर्दारों के लिये फ़रमाया है, तो यह बिल्कुल उन की नादानी कम अ़क्ली का सबब है, जिस तरह अल्लाह तआ़ला ने इन आयतों में कुरैश को समझाया है। (अहसनुत्तफ़ासीर)

فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ
خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٠﴾ اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ
وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٦١﴾
وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ
تَزْعُمُوْنَ ﴿٦٢﴾ قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا
هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَآ
اِلَيْكَ مَا كَانُوْٓا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَقِيْلَ ادْعُوْا
شُرَكَآءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ ۚ
لَوْ اَنَّهُمْ كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ
مَاذَآ اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦٥﴾ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْۢبَآءُ
يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ فَاَمَّا مَنْ تَابَ وَ
اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ﴿٦٧﴾

वह दुनिया की ज़िन्दगी का गुज़ारा और ज़ीनत है और जो कुछ अल्लाह के पास है वह (इस दुनिया की ज़िन्दगी से कहीं बढ़-चढ़ कर) बहुत बेहतर और बाक़ी रहने वाला है। क्या तुम समझते नहीं हो? ६१. क्या (तुम यह भी नहीं जानते कि) जिस शख़्स को हम ने अच्छा वादा दिया हो फिर वह उस के मुवाफ़िक़ बदला भी पाने वाला हो क्या वह उस शख़्स की तरह है जिस को हम ने दुनिया की ज़िन्दगी में गुज़ारा दिया फिर वह (अपने बुरे कर्मों की वजह से) क़ियामत के रोज़ (अ़ज़ाब में) हाज़िर किया जाये गा (क्या यह दोनों बराबर हैं? हर्गिज़ नहीं) ६२. और जिस रोज़ अल्लाह उन को पुकार कर कहे गा कि मेरे शरीक कहाँ हैं जिन को तुम गुमान करते थे (कि हमारे सिफ़ारिशी और फ़रियाद सुनने वाले हैं) ६३. जिन लोगों पर जुर्म साबित हो चुका हो गा (जैसे बुतों के पुजारी, क़ब्रों के मुजाविर) वह कहें गे कि (ऐ हमारे मौला!) यह वह लोग हैं जिन को हम ने गुमराह किया था, जैसे हम बहके थे हम ने उन को भी बहकाया। अब तेरे सामने हम बेज़ारी ज़ाहिर करते हैं कि यह लोग हम को न पूजते थे। ६४. कहा जाये गा कि तुम अपने शरीकों को बुलाओ (जिन को तुम लोग हमारा शरीक जानते थे)[३०] पस वह उन को पुकारें गे तो वह उन को उत्तर न दें गे और मुश्रिक अ़ज़ाब देखें गे तो अफ़्सोस करें गे कि काश वह हिदायत पाते। ६५. और जिस दिन अल्लाह उन को बुला कर कहे गा कि तुम ने रसूलों को क्या उत्तर दिया था?[३१] ६६. पस (वह यह प्रश्न सुन कर ऐसे हैरान हों गे कि) वह उस रोज़ सब कुछ भूल जायें गे फिर (मज़े की बात यह कि) परस्पर एक दूसरे से पूछें गे भी नहीं। ६७. सो जिस ने तौबा की हो गी और ईमान ला कर नेक अ़मल किये➲

➲हों गे पस वह शख़्स बहुत जल्द नजात पाने वालों में हो जाये गा

....

३०. झूठे माबूद अपने पुजारियों को दुनिया में भी कौन सा सही उत्तर देते हैं जो आख़िरत में दें गे? हम देखते हैं कि आग की पूजा करने वाले हज़ारों वर्ष से आग की पूजा करते चले आ रहे हैं, लेकिन आग एक लम्हे के लिये उन का लिहाज़ नहीं कर सकती कि वह हाथ डालें और उन को न जलाये। यही हाल और दूसरे माबूदों का है, मगर शिर्क इन्सान को इतना पागल बना देता है कि वह कुछ भी नहीं सोच पाता (राज़)

३१. इसी प्रकार क़ब्र में भी प्रश्न होता है कि तेरा रब कौन है? तेरा नबी कौन है? और तेरा दीन क्या है? मोमिन बन्दा तो उत्तर देता है कि मेरा रब केवल अल्लाह है, हमारे रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं जो अल्लाह के बन्दे और रसूल है और मेरा दीन इस्लाम है। काफ़िर से कोई उत्तर न बन पड़े गा और घबराहट में कहे गा कि मुझे तो कुछ भी मालूम नहीं। वह अंधा और बहरा हो जाये गा, जिस प्रकार अल्लाह तआ़ला ने सूरः बनी इस्राईल की आयत न० ७२ में फ़रमाया "जो शख़्स दुनिया की ज़िन्दगी में अंधा है वह वहाँ भी अंधा हो गा और राह भटका हुआ होगा"। कोई उत्तर न बन पड़े गा, रिश्ते-नाते कुछ काम न आयें गे, हसब-नसब का नाम-निशान तक न हो गा। हाँ, दुनिया में तौबा करने वाले और ईमान व नेकी के साथ जीवन यापन करने वाले बेशक कामियाबी हासिल करें गे। आयत न० ६७ में "अ़सा" यक़ीन के माना में है, यानी अवश्य ही कामियाब हों गे। (तफ़्सीर मुहम्मदी/तफ़्सीर इब्ने कसीर)

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۗ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝ وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ لَهُ الْحَمْدُ فِى الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِضِيَآءٍ ۗ اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ۗ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۝ وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ

६८. तेरा रब जो चाहे पैदा करता है और (जिस को चाहे) चुन लेता है उन को किसी तरह इख़्तियार नहीं। अल्लाह पाक बुलन्द है उन के शिर्क से[३२]। ६९. और जो कुछ उन के दिलों में पोशीदा है और जो कुछ यह ज़ाहिर करते हैं उन्हें तेरा पर्वरदिगार ख़ूब जानता है। ७०. और वही अल्लाह (सच्चा माबूद) है। उस के अ़लावा और कोई माबूद नहीं। इस दुनिया में भी और आख़िरत में भी उसी की तारीफ़ें हैं, और (समस्त वस्तुओं पर) उस की हुकूमत है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओ गे। ७१. तू (उन से) कह कि भला बतलाओ तो अगर अल्लाह तुम पर रात को क़ियामत तक के लिये दाइमी (स्थाई) कर दे तो अल्लाह के अ़लावा कौन माबूद है जो तुम को (ऐसी) रोशनी ला दे? क्या तुम (ऐसी स्पष्ट दलील भी) सुनते नहीं? ७२. यह भी कह कि बताओ तो भला अगर अल्लाह क़ियामत तक तुम पर दिन ही रखे (रात आये ही नहीं) तो अल्लाह के अ़लावा➲

➲कौन माबूद है जो तुम्हारे पास रात ला दे जिस में तुम आराम व सुकून पाओ। क्या तुम देखते नहीं हो? (कि ऐसी-ऐसी नेमतें कौन पैदा करता है और तुम उस की क्या क़द्र करते हो?) ७३. और (सुनो!) उस ने अपनी रहमत से तुम्हारे लिये रात और दिन को बनाया ताकि तुम उस (रात) में आराम पाओ और (दिन में) उस का फ़ज़्ल (रोज़गार के ज़रीआ) तलाश कर लो[३३] और ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो। ७४. सुनो! जिस दिन अल्लाह उन मुश्रिकों को बुला कर कहे गा कि मेरे शरीक कहाँ हैं जिन को तुम (मेरा शरीक) ख़याल किया करते थे[३४]?

....

३२. यानी तमाम मख़्लूक़ का पैदा करने वाला और तमाम इख़्तियार का मालिक अल्लाह ही है इन मामलात में न तो कोई उस से झगड़ने वाला है और न ही कोई शरीक है। जो चाहे पैदा करता है और जिसे चाहे अपना ख़ास बन्दा बना लेता है। वह जो चाहता है, होता है और जो न चाहे, नहीं हो सकता। अच्छे-बुरे तमाम मामलात उसी के हाथ में हैं। आयत न० ६८ में 'मा का-न लहुम' में "मा" नफ़ी के लिये है, जैसा कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि यह आयत इसी बयान में उतरी है कि मख़्लूक़ की पैदाइश में, तक़्दीर के मुक़र्रर करने में, इख़्तियार रखने में अल्लाह अकेला और उस की ज़ात पाक है। इसी लिये आयत की समाप्ति पर फ़रमाया कि जिन बुतों को वह अल्लाह का शरीक ठहरा रहे हैं वह न किसी चीज़ को बना सकते हैं और न ही किसी चीज़ का इख़्तियार रखते हैं। अल्लाह की ज़ात इन सब से पवित्र और दूर है। (वहीदी)

३३. यहाँ पर अल्लाह के एहसान को गिनाया जा रहा है कि बग़ैर तुम्हारी किसी कोशिश और तदबीर के रात-दिन बराबर आगे-पीछे आ-जा रहे हैं। अगर रात ही रात रहे तो तुम्हारे सारे काम-काज रुक जायें और तुम्हारा जीवन अजीरन हो जाये। तुम किसी ऐसी ज़ात को न पा सको जो तुम्हारे लिये दिन को निकाल सके। और इसी प्रकार अगर अल्लाह दिन-ही-दिन कर दे तब भी तुम्हारा जीवन अजीरन हो जाये, तुम काम करते-करते थक हार कर चूर-चूर हो जाओ और किसी ऐसी ज़ात को न पा सको जो दिन को रात में बदल सके।

यह अल्लाह का बड़ा ज़बर्दस्त एहसान है कि उस ने दिन-रात दोनों को एक साथ पैदा किया ताकि दिन भर की थकान और थकावट तुम रात की तारीकी में आराम कर के उतार सको, फिर ताज़ा दम हो कर दिन की रोश्नी में अपने कामों पर लग जाओ। इस पर तुम्हें अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिये और उसकी इ़बादत और इताअ़त करनी चाहिये। यह सब अल्लाह की क़ुदरत के करिश्मे हैं ताकि इन से नसीहत हासिल करो और उस का शुक्र बजा लाओ। (इब्ने कसीर)

आयत न० ७३ में 'फ़ज़्ल' का शब्द आया है इस का मतलब हलाल और जायज़ तरीक़े से रोज़ी कमाना है। हलाल तरीक़े से दुनियावी तरक़्क़ी करना भी क़ुरआन की परिभाषा में "फ़ज़्ल" कहलाये गा। जो लोग दीन इस्लाम को दुनियावी तरक़्क़ी में रुकावट बतलाते हैं उन के ख़याल का यह आयत रद्द करती है।

३४. यहाँ पर मुश्रिकों को दूसरी बार डाँट पिलायी गयी है कि दुनिया में जिन्हें तुम मेरा शरीक ठहराते थे वह आज कहाँ हैं? हर उम्मत में से एक गवाह (पैग़ंबर) चुन लिया जाये गा और मुश्रिकों से कहा जाये गा कि अपने शिर्क की कोई दलील हो तो उसे पेश करो। उस समय इन को विश्वास हो जाये गा कि वास्तव में इ़बादत के योग्य केवल अल्लाह की ज़ात ही है और उन से कोई उत्तर न बन पड़े गा और सब कुछ भूल जायें गे (वहीदी)

كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ۝ وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا
فَقُلْنَا هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوْٓا اَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ وَ

७५. और (उसी रोज़ यह वाक़िआ भी हो गा कि) हम हर एक क़ौम में से एक गवाह अलग करें गे फिर हम उन को कहें गे कि (अब तुम)➲

ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ اِنَّ قَارُوْنَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَيْهِمْ ۠ وَاٰتَيْنٰهُ مِنَ الْكُنُوْزِ مَآ اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ اُولِى الْقُوَّةِ ۤ اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ۝ وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَاَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِى الْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِىْ ؕ اَوَلَمْ يَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّاَكْثَرُ جَمْعًا ؕ وَلَا يُسْئَلُ

अपनी (सफ़ाई की) दलील लाओ (मगर वह कुछ न कर सकें गे) पस वह जान जायें गे कि (तमाम ही इ़बादतों का) हक़ अल्लाह ही का है और जो कुछ वह झूठ बाँधते थे वह सब भूल जायें गे ७६. क़ारून मूसा की क़ौम से था[३५] फिर वह उन पर अत्याचार करने लगा (इस का कारण यह था कि वह शख़्स गन्दे आचरण का था) और हम ने उस को इतना माल दिया था कि उस के ख़ज़ानों (की कुंजियों) को शक्तिशाली आदमियों का एक समूह मुश्किल से उठा पाता था, जब उस की क़ौम (बनी इस्राईल के नेक लोगों) ने कहा कि इतरा नहीं! यक़ीनन (जान ले कि) अल्लाह इतराने वालों से मुहब्बत नहीं करता[३६]। ७७. और जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है उस के ज़रीआ़ से आख़िरत की तलाश कर और दुनिया से अपना हिस्सा न भूल (जो चन्द मीटर कपड़ा यानि कफ़न और चन्द हाथ ज़मीन यानि क़ब्र है) और (मख़्लूक़ से) एहसान कर जैसा कि अल्लाह ने तुझ से एहसान किया और मुल्क में उपद्रव न कर। कुछ शक नहीं कि अल्लाह फ़सादियों से मुहब्बत नहीं करता (बल्कि सख़्त बुरा जानता है) ७८. उस (नालायक़) ने कहा: मुझ को जो कुछ मिला है मेरी लियाक़त और इ़ल्म से (प्राप्त हुआ) है[३७]। क्या उसे मालूम न था कि अल्लाह तआ़ला ने उस से पहले (बहुत से) उन लोगों को हलाक किया जो उस से अधिक शक्तिशाली और बड़े लाव-लश्कर (माल-अस्बाब) वाले थे।

....

३५. रिवायतों में आया है कि क़ारून हज़रत मूसा के चचा का लड़का था। उस का नसबनामा (वंश तालिका) यह है क़ारून बिन यस़्मर बिन क़ाहीत.........। इमाम इस्हाक़ की तहक़ीक़ के अनुसार हज़रत मूसा का चचा था। लेकिन अधिकांश उलमा चचा का लड़का ही बताते हैं। उस की आवाज़ बड़ी अच्छी थी। तौरात को बड़े अच्छे स्वरों में पढ़ता था, इस लिये लोग उसे "मुनव्वर" कहते थे। लेकिन जिस प्रकार सामरी मुनाफ़िक़ हो गया था, इसी प्रकार यह भी हो गया था। और चूंकि था बहुत मालदार, इस लिये फूल गया और अल्लाह को भूल गया। क़ौम के लोग जो वस्त्र आ़म तौर पर पहनते थे, उन से एक बालिश्त नीचा ही पहनता था ताकि इस से तकब्बुर का इज़्हार हो। उस के पास इतना अधिक माल था कि उस के ख़ज़ाने की चाबियाँ उठाने के लिये जवान मर्दों की एक टोली होती थी। उस के पास अलग-अलग ख़ज़ाने थे और हर ख़ज़ाने की कुंजी एक बालिश्त लंबी थी। जब यह कुंजियाँ सवारी पर लादी जातीं तो उसे खींचने के लिये साठ शक्तिशाली घोड़े मुक़र्रर होते थे-- अल्लाह बेहतर जाने (मुहम्मदी)

३६. 'मफ़ातिह' यह 'मफ़्तह' (मीम पर ज़बर) का जमा है, इस का अर्थ है "ताले, चाबी, कुंजी"। और 'कुनूज़' यह जमा है "कंज़" का। आ़म शब्दों में इस का अर्थ है माल और ख़ज़ाना। लेकिन शरीअ़त की परिभाषा में उस

➲माल को कहा जाता है जिस की ज़कात न निकाली गयी हो। क़ारून चूँकि अपने माल में से ज़कात नहीं निकालता था, इसी लिये उस के माल को "कंज़" कहा गया। हज़रत इब्ने अ़ब्बास और हज़रत इमाम बसरी रह०, दोनों ही ने "मफ़ातिह" से मुराद माल-दौलत लिया है (तफ़्सीर कबीर) इस का मतलब संभवत: यही है जो मैं ने बयान किया कि उस के ख़ज़ाने को यानी जिन सन्दूक़ों में वह माल को बन्द किया करता था, शक्तिशाली लोगों की एक जमाअ़त, मुश्किल से उठा सकती थी। क़ारून का नाम बाइबल में "क़रह" आया है और इस का क़िस्सा किताब इस्तिसना में आया है। बाइबल की किताब गिन्ती १६-८ में भी क़रह का नाम आया है (सनाई)

३७. 'जो कुछ प्राप्त हुआ है मेरे अ़िल्म से हुआ है' क़ारून का यह क़ौल बिल्कुल ऐसे ही है जैसे कि आज-कल के दहरिया लोग कहते हैं कि हमारी सारी तरक़्क़ियाँ हमारे अ़िल्म की वजह से हैं, अल्लाह का इन में कोई दख़ल नहीं। (राज़)

عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ
فِيْ زِيْنَتِهٖ ۭ قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا
يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ
عَظِيْمٍ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ
ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ وَلَا
يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ۝ فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ
الْاَرْضَ ۣ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۤ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ۝
وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ
وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ
عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ۚ لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ
بِنَا ۭ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ۝ تِلْكَ الدَّارُ
الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي

और (जब अ़ज़ाब आता है तो) मुज्रिमों से गुनाहों के बारे में प्रश्न नहीं होता (कि यह काम तुम ने किया था या नहीं) ७९. पस वह ज़ेब व ज़ीनत कर के अपनी क़ौम के सामने निकला[३८] तो जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी के चाहने वाले थे उन्हों ने कहा: ऐ काश! जो कुछ क़ारून को मिला है हम को भी मिला होता, कुछ शक नहीं कि वह बड़ा नसीबे वाला {भाग्यशाली} है[३९] (यह उन लोगों का कहना था जिन का ख़याल था कि जो कुछ है इसी दुनिया में है) ८०. और जिन लोगों को अ़िल्म (और अल्लाह की पहचान से कुछ हिस्सा) मिला था उन्हों ने (इन दुनिया-दारों का कलाम सुन कर) कहा: तुम पर अफ़्सोस है (तुम समझते हो कि दुनिया ही दुनिया है और कुछ नहीं, हालाँकि) अल्लाह के हाँ उन लोगों के लिये बहुत ही बेहतर बदला है जिन्हों ने ईमान ला कर नेक काम किये हैं और यह चीज़ उन्हीं को मिलती है जो सब्र करने वाले हैं। ८१. पस हम ने उस को और उस के घर को ज़मीन में धंसा दिया[४०], फिर तो अल्लाह के सिवा कोई जमाअ़त भी ऐसी न हुयी जो उस की सहायता करती और न वह स्वयँ बदला लेने में से हो सका[४१] (इधर यह तबाह हुआ उधर शतरंज की चाल ही बदल गयी और कुछ का कुछ हो गया) ८२. और जिन लोगों ने अभी कल ही उस के रुत्बा {स्थान} की तमन्ना की थी वह भी कहने लगे कि हाए ग़ज़ब! (मालूम हुआ कि) अल्लाह ही अपने बन्दों में से जिस की रोज़ी चाहता है कुशादा कर देता है और (जिस की चाहता है) तंग कर➲

➲देता है (अल्लाहु अक्बर) अगर अल्लाह हम पर एहसान न करता तो (हमारे बुरे ख़याल की सज़ा में) हम को धंसा देता। कुछ संदेह नहीं कि नाशुक्रे (काफ़िर) कभी कामियाबी नहीं पायें गे। ८३. हम (अल्लाह) आख़िरत का घर (और उस की इ़ज़्ज़त) उन्हीं लोगों के लिये ख़ास करें गे जो ज़मीन पर (अपने स्थान से) बुलन्दी और फ़साद करना नहीं चाहते[४२]

....

३८. क़ारून के बारे में आता है कि एक दिन निहायत क़ीमती वस्त्र (बहुमूल्य) पहन कर बेहतरीन सवारी पर सवार हो कर अपने नौकरों-चाकरों के साथ अकड़ता हुआ निकला। जिसे देख कर दुनियादारों के मुंह में पानी भर आया और कहने लगे कि ऐ काश! हमारे पास भी उस जितना माल होता तो बड़ा अच्छा होता, यह तो बड़ा भाग्यशाली है। अल्लाह ने उस को तकब्बुर की सज़ा यह दी कि उस को ज़मीन में धंसा दिया। एक हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "एक शख़्स अपना तहबन्द टख़्नों के नीचे बाँधे-घसीटता हुआ चला जा रहा था, आख़िर अल्लाह तआ़ला ने उसे ज़मीन में धंसा दिया जो क़ियामत तक धंसता हुआ चला जाये गा" (बुख़ारी) मुस्नद की एक रिवायत में है कि वह शख़्स दो चादरों में अकड़ता हुआ निकला था कि अल्लाह ने ज़मीन को हुक्म दिया कि उसे निगल जा! चुनान्चे ज़मीन निगल गयी। उस का न माल काम आया और न धन-दौलत और न नौकर-चाकर। और न ही उस की सहायता के लिये कोई उठा और इस प्रकार दुनिया से मिटा दिया गया।
३९. रिवायतों में यह भी आया है कि एक रोज़ क़ारून की सवारी बड़े चमक-दमक के साथ निकली, उधर कहीं आस-पास हज़रत मूसा बनी इस्राईल के एक मजमा (समूह) को वाज़ फ़रमा रहे थे। क़ारून का क़ाफ़िला जब उध र से गुज़रा तो सब की निगाहें उस पर और उस के ताम-झाम पर जम गयीं। हज़रत मूसा ने उसे देख कर प्रश्न किया कि आज कैसे निकल पड़े? उस ने कहा बात यह है कि अगर आप को अल्लाह ने एक बुज़ुर्गी (नबुव्वत) दी है तो हमें भी माल-दौलत और लाव-लश्कर वग़ैरह से नवाज़ा है। अगर आप को मेरी बुज़ुर्गी पर कुछ संदेह है तो आओ दोनों मिल कर दुआ़ करें और देखें कि अल्लाह किस की दुआ़ क़ुबूल करता है। हज़रत मूसा इस शर्त पर राज़ी हो गये। पहले क़ारून ने दुआ़ की जो क़ुबूल न हुयी। फिर हज़रत मूसा ने दुआ़ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! ज़मीन को मेरे ताबेअ़ कर दे और जो मैं कहूँ उसे मान ले। तुरन्त वह्यि आयी कि हम ने ज़मीन को तेरी इताअ़त का आदेश दे दिया है। हज़रत मूसा ने ज़मीन को निर्देश दिया कि तू क़ारून को उस की दौलत के साथ निगल जा! चुनान्चे ऐसा ही हुआ कि ज़मीन ने सब को निगल लिया। उस समय जो लोग उस जैसे बनने की तमन्ना दिलों में लिये हुये थे कहने लगे कि अगर अल्लाह का एहसान हमारे ऊपर न होता तो हम भी उसी के साथ ज़मीन के अन्दर धंसा दिये जाते। आजकल के क़ारून जैसे काफ़िर भी कभी नजात नहीं पा सकते। (इब्ने कसीर)
४०. ज़मीन इस तरह से हिली कि क़ारून अपने महल और दौलत समेत ज़मीन में धंस गया। बिल्कुल इसी प्रकार १४ अप्रेल सन् १९०५ को पंजाब में और १५ जनवरी १९२४ को सूबा (राज्य) बिहार में भूकंप आया था (सनाई) अभी चन्द वर्षों पूर्व सन् १९९२ में महाराष्ट्र के दो क़स्बों उस्मानाबाद और लातूर का भूकंप १९ वीं शताब्दी का सब से तबाही लाने वाला भूकंप था जो बाबरी मस्जिद के शहीद किये जाने के कुछ महीनों के पश्चात् आया था-- ख़ालिद
४१. न तो वह अपने आप को अल्लाह के अ़ज़ाब से बचा सका और न ही हज़रत मूसा से अपना बदला चुका सका। एक हदीस के अनुसार उसने एक बदकार औ़रत को यह पट्टी पढ़ाई कि वह हज़रत मूसा पर ज़िना का आरोप लगा दे। यह जान कर हज़रत मूसा को जलाल आ गया और अल्लाह से रो-रो कर दुआ़ की कि ज़मीन मेरे ताबेअ़ कर दे। तुरन्त वह्यि आयी कि मैं ने ज़मीन को तुम्हारे अधीन कर दिया, तुम जो भी कहो गे ज़मीन उस का पालन करे गी। हज़रत मूसा ने ज़मीन को निर्देश दिया कि क़ारून को पकड़ ले, चुनान्चे वह एड़ियों तक धंस गया। क़ारून यह देख कर हज़रत मूसा से विनती करने लगा कि मुझे माफ़ किया जाय, लेकिन हज़रत मूसा ने पुन: ज़मीन को➲

➲इशारा किया, चुनाँचे वह घुटनों तक समा गया। वह हज़ार बार चीख़ता-चिल्लाता रहा, लेकिन हज़रत मूसा ने उस की एक न सुनी और बराबर ज़मीन को पकड़ लेने का हुक्म देते रहे, यहाँ तक कि वह पूरा समा गया और उस के साथ ही उस का ख़ज़ाना और उस के सुरक्षा कर्मी सब धंस गये। एक रिवायत में यह भी आया है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा से फ़रमाया कि ऐ मूसा! मेरे बन्दे ने तुझे इतना पुकारा और मन्नत-समाजत की मगर तू ने रहम न किया, अगर वह मुझे पुकारता तो मैं अवश्य ही उस की दुआ कुबूल फ़रमा लेता। (वहीदी) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि क़ारून, हज़रत मूसा का दुश्मन हो गया था, इसलिये कि वह उसे ज़कात निकालने का हुक्म देते थे। अपनी इसी दुश्मनी की बुनियाद पर एक औ़रत को कुछ रुपये दे कर हज़रत मूसा पर ज़िना का आरोप लगाने के लिये खड़ा किया, मगर समय आने पर वह अल्लाह से डर गयी और सच-सच बात बता दी। हज़रत मूसा को यह जान कर गुस्सा आ गया और उन्हों ने बद्दुआ कर दी जिस के नतीजे में वह ज़मीन में धंस गया (राज़) ४२. 'फ़साद करना नहीं चाहते' जैसे, क़त्ल, डाका, चोरी, ज़िना कारी, शराब और शिर्क वग़ैरह फैलाना। हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रह० मरते समय अन्तिम क्षणों में इसी आयत की बराबर तिलावत कर रहे थे और इसी हालत में उन्हों ने अपना प्राण त्याग दिये। उलमा का कहना है कि यह आयत बादशाहों, हाकिमों और शासकों के लिये बड़ी नसीहत की है। इस आयत से साफ़ ज़ाहिर है कि इन लोगों को किस प्रकार रहना चाहिये (वहीदी) अपने बन्दा होने के स्थान से आगे बढ़ना, इस का नाम तकब्बुर है और मुल्क के समाजी और माली आदेशों के ख़िलाफ़ अमल करना उपद्रव और फ़साद है। मुत्तक़ी और परहेज़-गार लोग इन बुरी आ़दतों से पाक होते हैं। (सनाई)

الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ۭ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝
مَنْ جَاۗءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ
جَاۗءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ
اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْ فَرَضَ
عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَاۗدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ ۭ قُلْ رَّبِّيْٓ
اَعْلَمُ مَنْ جَاۗءَ بِالْهُدٰى وَمَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ
مُّبِيْنٍ ۝ وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْٓا اَنْ يُّلْقٰٓى اِلَيْكَ
الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِيْرًا
لِّلْكٰفِرِيْنَ ۝ وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ
اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ
مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ ۘ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۣ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ۭ
لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝

और (अच्छा) अन्जाम परहेज़गारों ही का है। ८४. (पस सुनो!) जो कोई नेक काम अल्लाह के पास लाये गा उस को उस से बेहतर मिले गा[४३] और जो कोई बुराई लाएगा तो बुराई करने वालों को उतनी ही सज़ा मिले गी जितनी वह बुराई कर चुके हों गे (यह नहीं हो गा कि जिस प्रकार नेक कार्य करने वालों को अज्र ज़्यादा मिले गा, बुरे काम करने वालों को दंड भी अधिक मिले गा) ८५. (पस ऐ नबी! तू) यक़ीनन (जान रख कि) जिस अल्लाह ने तुझ पर क़ुरआन (के अहकाम को) फ़र्ज़ किया है वह तुझे पुनः पहले स्थान की तरफ़ फेरने वाला है। तू (उन को भी सुनाने के लिये) कह कि जो कोई हिदायत वाला है और खुली गुमराही में है अल्लाह उन को ख़ूब जानता है[४४] ८६. तू इस बात की आशा न रखता था कि तेरी तरफ़ कोई किताब उतारी जाये मगर तेरे पर्वरदिगार की रहमत (से उस का नुज़ूल हुआ) है, पस तुम काफ़िरों के हिमायती न➲

होना। ८७. और यह (बिदीन) लोग तुझ को अल्लाह के अहकाम से न रोकें बाद इस के कि वह तेरी तरफ़ उतारे गये और अपने रब की तरफ बुलाता रह और मुश्रिकों में से भी कभी न होना ८८. और (यह भी सुन रख कि) अल्लाह के साथ किसी और (झूठे) माबूद को मत पुकारना (क्योंकि) उस के अ़लावा कोई माबूद नहीं, अल्लाह के चेहरे के अ़लावा सब चीज़ें फ़ना होने वाली हैं। उसी का (सब इख़्तियार और) हुक्म है और उसी की ओर तुम सब लौटाए जाने वाले हो[४५]।

....

४३. 'बेहतर मिले गा' इस का अर्थ यह भी हो सकता है कि उस नेकी का दस गुना सवाब उस को मिले गा, या इस से भी अधिक, जैसा कि कुछ रिवायतों में सात सौ गुना तक आया है। इस के मुक़ाबले में उस की बुराई का बदला केवल गुनाह करने के बराबर ही उस को मिले गा।

४४. 'इला मआ़दिन्' (वह आप को आप के अस्ली वतन यानी मक्का में फिर पहुंचाये गा) सहीह बुख़ारी शरीफ़ में है कि इस से मुराद मक्का शरीफ़ है। मुजाहिद कहते हैं कि इस से मुराद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पैदाइश का स्थान है। इमाम ज़ह्हाक फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मक्का से निकले। आप अभी जुह्फ़ा के स्थान तक ही पहुंचे थे कि आप के दिल में मक्का का शौक़ पैदा हो गया, चुनान्चे इस मौक़े पर यह आयत नाज़िल हुयी, और आप से वादा किया गया कि आप वापस पहुंचाये जायें गे। इस से मालूम होता है कि यह आयत मदनी है, हालाँकि पूरी सूरः मक्की है। यह भी कहा गया है कि 'मआ़द' से मुराद बैतुल-मुक़द्दस है शायद कहने वाले की ग़रज़ इस से भी क़ियामत है, इस लिये कि बैतुल-मुक़द्दस ही महशर की ज़मीन है।

इन तमाम अक़्वाल में इत्तिफ़ाक़ पैदा करने की सूरत यह है कि इब्ने अ़ब्बास ने कभी तो इस की तफ़्सीर आप के मक्का की तरफ़ लौटने से की, जो फ़तह मक्का से पूरी हुयी और यह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की आयु के पूरी होने की एक ज़बर्दस्त चिन्ह थी। इसी प्रकार आप ने सूरः "इज़ा जा-अ" की तफ़्सीर में फ़रमाया है, जिस की हज़रत उमर ने भी ताईद की थी और फ़रमाया था कि जो आप जानते हैं वही मैं भी जानता हूँ। यही वजह है कि उन्हीं से इस आयत की तफ़्सीर में जहाँ "मक्का" रिवायत है वहीं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इन्तिक़ाल भी मर्वी है। और कभी क़ियामत से तफ़्सीर की है, क्योंकि मौत के बाद क़ियामत है। और कभी जन्नत से तफ़्सीर की है, क्योंकि यही आप का ठिकाना है।

४५. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सब से ज़्यादा सच्चा कलिमा हज़रत लबीद कवि का है जो उन्हों ने कहा है "अला कुल्ल शैइन् मा ख़-लल्लाहु बातिलू" (अल्लाह की ज़ात को छोड़ कर हर चीज़ बातिल है) इमाम मुजाहिद फ़रमाते हैं कि वह काम जो अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ हैं, उन्हें छोड़ कर हर काम बातिल है। अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ किये गये अ़मल पर सवाब बाक़ी रह जाता है। रिवायत में आता है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० जब अपने दिल को मज़बूत और ईमान को ताज़ा करना चाहते तो किसी खंडर में चले जाते और वहाँ बुलन्द आवाज़ से पुकारते और कहते: "कहाँ है इस के बनाने वाले"? फिर स्वयँ ही उत्तर देते हुये यही आयत तिलावत फ़रमाते।

हुक्म, मुल्क और मिलकिय्यत उसी की है। मालिक और हाकिम वही है, सब कुछ उसी के क़ब्ज़े में है, उस के आदेश को कोई टाल नहीं सकता, उसी की तरफ़ सब को लौटना है वह नेकों को नेकियों का और बदों को बुराई का बदला दे गा। (इब्ने कसीर)

सूरः अ़न्-कबूत (29)

सूरः अ़न्-कबूत (मकड़ी) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। । इस में ६९ आयतें और ७ रुकूअ़ हैं।

آيَاتُهَا ٦٩ (٢٩) سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ مَكِّيَّةٌ (٨٥) رُكُوْعَاتُهَا ٧

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

الٓمّٓ ۝١ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا
اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ۝٢ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ
الْكٰذِبِيْنَ ۝٣ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ اَنْ
يَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝٤ مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ
اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٥
وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ
عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝٦ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِيْ
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٧ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ
حُسْنًا ؕ وَاِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. अलिफ़ लाम्मीम्[1] २. क्या लोगों ने समझ रखा है कि इतना कहने पर छूट जायें गे कि हम ईमान ले आये और उन की आज़माईश न की जाये गी[2]? ३. बेशक आज़माइश हो गी (क्योंकि) हम ने उन से पहले लोगों को जाँचा था (इसी प्रकार उन को भी जांचे गे) फिर हम उन लोगों को जुदा कर दें गे जो सच्चे हैं और उन लोगों को जो झूठे हैं (उन दोनों में हम छटनी करें गे[3]) ४. क्या बुरे काम करने वाले समझे बैठे हैं कि हम से आगे बढ़ जायें गे? (हम उन को पकड़ना चाहें गे तो पकड़ न सकें गे?) बहुत बुरा ख़याल करते हैं। ५. जो कोई अल्लाह से मिलने की उम्मीद रखे पस (वह समझे कि) अल्लाह का मुक़र्रर वक़्त ज़रूर आने वाला है (उस को ज़रूर बदला मिले गा) और वह (अल्लाह) सुनने वाला जानने वाला है। ६. और जो कोई कोशिश करे वह अपने नफ़्स ही के लिये कोशिश करता है (क्योंकि इस का बदला उसी को मिले गा और किसी को नहीं) बेशक अल्लाह तमाम जहान वालों से बेनियाज़ है। ७. और जो लोग ईमान लाये और उन्हों ने नेक कार्य भी किये हम ज़रूर उन के गुनाह दूर करें गे और (सुनो!) हम उन को उन के किये हुये कार्यों से बेहतर बदला दें गे[4]। ८. और हम ने इन्सान को उस के माता-पिता के बारे में नेक बर्ताव करने का निर्देश दिया[5]। और अगर वह दोनों तेरे दरपै हों कि तू मेरे साथ किसी ऐसी वस्तु को शरीक करे जिस का तुझे ज्ञान नहीं

....
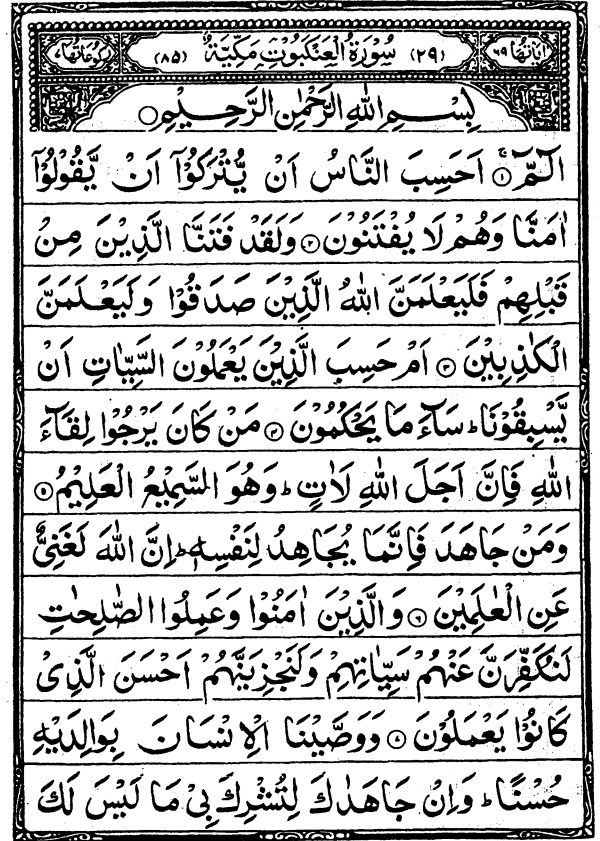
१. यह शब्द हुरूफ़ मुक़त्तआ़त में से हैं। मौलाना रह० ने इस शब्द का तर्जुमा यह किया है "मैं अल्लाह हूँ सब से अधिक ज्ञान वाला"। लेकिन सही बात तो यह है इस के अर्थ का ज्ञान केवल अल्लाह ही को है। (राज़) ➲

➲२. शाने नुज़ूलः- यह आयत उस समय नाज़िल हुयी जब कुछ लोगों ने अपने ही मुल्क में रह कर मुसलमानों को पत्र भेजा कि हम अपने ही मुल्क में रह कर इस्लाम लाना चाहते हैं और यहीं पर ही रहना पसन्द करते हैं। मुसलमानों ने उन को उत्तर दिया कि तुम्हारा इस्लाम उस समय तक क़ुबूल न हो गा जब तक हिजरत न करो। यह सुन कर वह हिजरत के लिये निकल पड़े लेकिन काफ़िरों ने हिजरत में बाधा पहुंचाई और वापस पकड़ ले गये। फिर जब मुसलमानों को इस आयत का ज्ञान हुआ तो पुनः निकल पड़े और कहा कि हम मारें गे और मरें गे भी मगर वापस लौटने का प्रश्न ही नहीं। चुनान्चे इस कश्मकश में कुछ तो शहीद हो गये और कुछ हिजरत कर के मुसलमानों में आ मिले, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी।

३. इस आयत न० २ में ज़मीरें (सर्वनाम) बड़ी जल्दी-जल्दी बदल रही हैं। ग़ौर करें "हम ने जाँचा" "अल्लाह उन को जुदा करे गा"। पहले ज़मीर मुतकल्लिम की इस्तेमाल हुयी फिर ग़ाइब की। लेकिन चूँकि उर्दू में ज़मीरें इतनी तेज़ी से नहीं बदलतीं, इसी लिये मौलाना मर्हूम ने उर्दू में मुतकल्लिम ही का तर्जुमा किया है। (सनाई)

४. 'जो नेकियों के मातहत हों गें' इस को मिसाल से यूँ समझें कि कुछ दवायें ठन्डी और कुछ गर्म होती हैं। फिर उन में भी कई दर्जे हैं। कुछ ठन्डी चीज़ों के प्रयोग से गर्मी दूर हो जाती है, इसी प्रकार कुछ गर्म वस्तुओं के प्रयोग से ठन्ड दूर हो जाती हैं। मगर कुछ गर्म चीज़ें ऐसी भी होती हैं कि उन की गर्मी को कोई ठन्डी दवा दूर नहीं कर सकती। बिल्कुल यही नियम गुनाहों का है कि कुछ गुनाह नेकियों से दूर हो जाते हैं, जो उन नेकियों से कम दर्जा के होते हैं। ऐसे ही कुछ नेकियाँ, बाज़ गुनाहों से ख़त्म हो जाती हैं, जैसे शिर्क से तमाम नेकियाँ बर्बाद हो जाती हैं (सनाई)

५. शाने नुज़ूलः- हज़रत सअ़द बिन अबू वक़्क़ास रज़ि० फ़रमाते हैं कि मेरे बारे में क़ुरआन में जो चार आयतें नाज़िल हुयी हैं उन में से एक यह भी है। हज़रत सअ़द रज़ि० फ़रमाते हैं कि मेरी काफ़िर माँ ने मुझ से कहा कि ऐ सअ़द! क्या अल्लाह ने माँ के साथ नेकी का हुक्म नहीं दिया है? अगर तू ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुव्वत का इन्कार न किया तो अल्लाह की क़सम! मैं खाना-पीना छोड़ दूँ गी। चुनान्चे उन्हों ने ऐसा ही किया। जब उन की हालत चिंताजनक हो गयी तो हज़रत सअ़द उन का मुंह खोल कर ज़बर्दस्ती खाना खिलाते थे, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ اِلَیَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِی الصّٰلِحِیْنَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ یَّقُوْلُ
اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَاۤ اُوْذِیَ فِی اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ
كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ وَلَىِٕنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَیَقُوْلُنَّ
اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ؕ اَوَلَیْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِیْ صُدُوْرِ
الْعٰلَمِیْنَ ۝ وَلَیَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَلَیَعْلَمَنَّ
الْمُنٰفِقِیْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوا
اتَّبِعُوْا سَبِیْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰیٰكُمْ ؕ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِیْنَ

तो उन का कहना न मानना[५]। मेरी तरफ़ तुम को लौट कर आना है पस मैं तुम को तुम्हारे किये की ख़बरें बताऊँ गा। ९. और जो लोग ईमान ला कर नेक अ़मल भी करते हैं (यानी हमारी ख़ुशनूदी तलाश करने में लगे रहते हैं) हम उन को (गुज़रे हुये) नेक लोगों में दाख़िल कर दें गे[७] १०. और कुछ लोग ऐसे हैं जो (ज़बानी तो) कहते हैं कि हम अल्लाह पर ईमान लाये फिर जब (ऐसा कहने पर) अल्लाह के मामले में (मुख़ालिफ़ों की तरफ़ से) उन को कोई तक्लीफ़ पहुंचती है, तो लोगों की तक्लीफ़ को अल्लाह के अ़ज़ाब की तरह (क़ाबिले-ख़ौफ़) बना लेते हैं और अगर अल्लाह की तरफ़ से➲

مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ۫ وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۳﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ؕ

कोई मदद पहुंचे तो कहते हैं कि हम तो तुम्हारे साथ हैं। क्या अल्लाह जहान वालों के दिल के भेदों से अवगत नहीं है? ११. बेशक अल्लाह ईमान दारों को भी जानता है और (बिईमान) मुनाफ़िक़ भी उसे ख़ूब मालूम हैं[८]। १२. और जो काफ़िर हैं वह ईमानदारों से कहते हैं कि आओ तुम हमारे रास्ते की पैरवी करो और (कहते हैं कि तुम अगर किसी पकड़ से डरते हो तो) हम तुम्हारे गुनाह उठा लें गे। हालाँकि वह उन के गुनाहों से कुछ न उठायें गे। निःसंदेह वह झूठे हैं। १३. और (उस झूठ के दंड में) वह अपने पाप {की गठरी} उठायें गे और अपने गुनाहों के साथ और गुनाह भी उठायें गे और जो कुछ वह झूठ घड़ते हैं (कि अल्लाह को भी दुनिया के बादशाहों के समान समझ कर उस के वसीले और अर्दली तलाश करते हैं) क़ियामत के रोज़ उस के बारे में पूछे जायें गे। १४. और हम ने नूह को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा था, फिर वह उन में पचास कम हज़ार वर्ष (यानी साढ़े नौ सौ वर्ष वाज़-नसीहत करते) रहे

....

६. 'उन का कहा न मानना' इस लिये कि माँ-बाप का हक़ अगर्चे बहुत ज़्यादा है लेकिन जिस अल्लाह ने माँ-बाप और सारे संसार को पैदा किया है उस का हक़ सब से उत्तम और अधिक हैं अल्लाह के हुक्म के सामने किसी की बात नहीं मानी जाये गी चाहे वह माता-पिता हों, या पीर और उस्ताद किसी की भी आज्ञापालन जायज़ नहीं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिस काम के करने में अल्लाह की अवज्ञा होती हो ऐसे किसी काम की भी आज्ञापालन जायज़ नहीं"। (बुख़ारी) और बुख़ारी, मुस्लिम ही की एक दूसरी रिवायत के अनुसार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिस काम के करने का शरीअ़त हुक्म दे उस में तो मख़्लूक़ की इताअ़त हो सकती है, लेकिन जिस काम में ख़ालिक़ की नाफ़र्मानी होती हो, तो उस में मख़्लूक़ की इताअ़त नाजायज़ और हराम है"। (अहसनुत्तफ़ासीर)

७. ऊपर की आयत के बाद इस आयत (न० ९) को तुरन्त बयान फ़रमाने का उद्देश्य यह है कि अल्लाह की नाफ़र्मानी में माता-पिता की इताअ़त न करना और अल्लाह के फ़र्मान को सब से ऊपर रखना अस्ल ईमान है और इस के विपरीत बेईमानी है। इसी विषय को सूरः मुजादिला में यूँ बयान फ़रमाया गया है: "अल्लाह और आख़िरत पर कामिल ईमान रखने वाले अल्लाह और उस के रसूल का मुक़ाबला करने वालों से कभी भी दोस्ती नहीं रखते, चाहे वह उन के माता-पिता और बेटे ही क्यों न हों" (सूरः मुजादिला आयत-२२) अल्लाह और उस के रसूल के दुश्मनों से दोस्ती रखना, यह अवज्ञा और नाफ़र्मानी में दाख़िल है, इस लिये ईमान का तक़ाज़ा यही है कि अल्लाह ही की फ़र्माबंर्दारी की जाये और शरीअ़त की सीमा के अन्दर ही माँ-बाप की इताअ़त की जाये। इसी का नाम "अ़मले-सालेह" (नेक अ़मल) है। ऐसे नेक बन्दों के लिये अल्लाह का वादा है कि ज़रूर नेक लोगों की जमाअ़त में दाख़िल कर दें गे। यह नेक लोग वह हैं जिन पर इनामों की वर्षा हुयी और जिन के बारे में सूरः फ़ातिहा में फ़रमाया: "उन लोगों की राह चला जिन पर तू ने इनाम किया"। और सूरः निसा में फ़रमाया: "जिन लोगों ने अल्लाह और रसूल की इताअ़त की उन को अल्लाह पाक नबिय्यों, सिद्दीक़ों, शहीदों और नेक लोगों के साथ जमा करे गा"।

८. इन आयात में उन मुनाफ़िक़ों का बयान है जो ज़बानी तौर पर (ऊपरी दिल से) तो ईमान का दावा करते हैं, लेकिन जहाँ काफ़िरों की जानिब से कोई तक्लीफ़ पहुंची, अल्लाह का अ़ज़ाब जान कर तुरन्त मुर्तद हो जाते हैं। हज़रत

➲इब्ने अ़ब्बास और दीगर मुफ़स्सिरों ने यही अर्थ बयान किये हैं। और इसी प्रकार का अर्थ सूरः हज्ज की आयत न०.११ में भी बयान किया है जिस का तर्जुमा है "कुछ लोग एक किनारे खड़े हो कर अल्लाह की अ़िबादत करते हैं, अगर आराम मिला तो संतुष्ट हो गये और अगर मुसीबत पहुंची तो मुंह फेर लिया"। यहाँ भी यही हो रहा है कि यह मुनाफ़िक़ जब ग़नीमत का माल पाते हैं तो अपनी दीनदारी जताने लगते हैं और हाँकते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ नहीं? और अगर काफ़िरों की जीत होती है तो कहते हैं कि देखो हम ने तुम्हारा साथ दे कर तुम्हें बचा लिया।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हम तुम को आज़मायें गे यहाँ तक कि तुम में से मुजाहिदों और साबिरों को हम दुनिया के सामने ज़ाहिर कर दें और तुम्हारी ख़बरों को जांच-परख लें। इसी प्रकार उहुद की जंग के इम्तिहान का ज़िक्र कर के फ़रमाया कि अल्लाह मोमिनों को, जिस हालत पर वह थे, रखने वाला न था जब तक कि वह अच्छे और बुरे को अलग-अलग न करे दे (इब्ने कसीर)

فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٤﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَ
اَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٥﴾ وَاِبْرٰهِيْمَ
اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اَوْثَانًا وَّ تَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ
الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿١٧﴾
وَاِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ وَمَا عَلَى
الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٨﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ
يُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى
اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿١٩﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ
بَدَاَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ

पस (आख़िरकार) उन को तूफ़ान ने आ लिया इस हाल में कि वह ज़ालिम थे। १५. फिर हम ने उस को और (उस के साथ) कश्ती वालों को नजात दी और उस (कश्ती) को तमाम जहान वालों के लिये निशानी बनाया। १६. और (इसी प्रकार) इब्राहीम को (रसूल) बना कर भेजा तो उस ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह की अ़िबादत करो और उसी से डरो यह (बात) तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम कुछ जानते हो[९] (तो समझो) १७. तुम (इतना नहीं सोचते कि) अल्लाह के सिवा केवल बुतों (और बनावटी माबूदों) की अ़िबादत करते हो और (अपने दिल को तसल्ली देने के लिये झूठ-मूठ खुराफ़ात) घड़ते हो[१०]। जिन लोगों की तुम अल्लाह के अ़लावा अ़िबादत करते हो वह तुम्हारे लिये रोज़ी देने का इख़्तियार नहीं रखते पस तुम अल्लाह के हाँ से रोज़ी माँगो[११] (जो तुम को रोज़ी देने पर कुदरत रखता है) और उस ही की अ़िबादत करो और उस का शुक्र बजा लाओ। और उस की तरफ़ तुम को फिरना है। १८. और अगर तुम झुठलाओ गे तो तुम से पहले भी कई एक जमाअ़तों ने झुठलाया था। और रसूल के ज़िम्मा बस स्पष्ट रूप से पहुंचाना होता है (इसी लिए उम्मतों के इन्कार पर रसूलों से कोई पूछ-ताछ नहीं, मानें या न मानें) १९. क्या उन्हों ने ग़ौर नहीं किया कि किस प्रकार अल्लाह तआ़ला मख़्लूक़ को पैदा करता है और फिर उस को (फ़ना की तरफ़)लौटा देता है। बेशक यह बात अल्लाह के लिये सरल है। २०. (ऐ नबी!) तू (उन से यह भी) कह (कि➲

ज़रा) मुल्क में तुम सैर करो फिर देखो कि अल्लाह ने किस प्रकार मख़्लूक़ को पैदा किया है (ज़मीन की मख़्लूक़ को देखो और पानी की मख़्लूक़ पर नज़र करो) फिर अल्लाह इस के बाद एक नई मख़्लूक़ पैदा करे गा (जो आख़िरत के घर में हो गी) और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है[१२]। २१. (यहाँ तक कि) जिसे चाहे अ़ज़ाब कर सकता है

....

९. 'अल्लाह की ज़िबादत करो' यही बात कलिम-ए-तौहीद (लाइला-ह-इल्लल्लाह) में कही गयी है, यानी पहले तमाम झूठे माबूदों का इन्कार फिर केवल अल्लाह की ही ज़िबादत और इताअ़त का इक़रार। इस्लाम में इसी का नाम ख़ालिस तौहीद है जो हर प्रकार की मिलावट से पाक है। वर्ना मिलावट वाली तौहीद तो इस्लाम से पहले भी सब क़ौमों में थी, चुनान्चे सूरः यूसुफ़ में इसी मिलावटी तौहीद का ज़िक्र कर के फ़रमाया: "उन में से अल्लाह पर ईमान लाने वालों में अधिकांश मुश्रिक हैं"। इसी ख़ालिस तौहीद से मक्का के मुश्रिक चिढ़ते थे और इसी वजह से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दुश्मनी रखते थे। और ताना देते थे कि इस नबी ने तो नया दीन ईजाद किया है जो बाप-दादाओं के तरीक़े के ख़िलाफ़ है। मुख़्तसर यह कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नबी बना कर भेजने का सब से बड़ा उद्देश्य इसी ख़ालिस तौहीद की तालीम व तब्लीग़ थी (वाज़िहुल बयान- मीर सियालकोटी)

१०. आयत न० १४,१५ में हज़रत नूह अ़लै० का बयान है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि चालीस वर्ष की आयु में नबी बनाये गये और ९५० वर्ष तक क़ौम में तब्लीग़ करते रहे। तूफ़ान आने के बाद साठ वर्ष तक जीवित रहे। तूफ़ान के बाद से इसी साठ वर्ष के दर्मियान इन्सान की नस्ल ख़ूब फैली और फली-फूली और चारों तरफ़ आबादी दिखाई देने लगी।

अब आयः न० १६ से तौहीदपरस्तों के इमाम, रसूलों के सर्दार, अल्लाह के ख़लील इब्राहिम अ़लैहिस्सलाम का बयान हो रहा है। इन्हों ने पूरी ज़िन्दगी अपनी क़ौम को ख़ालिस तौहीद की दावत दी और इस सिलसिले में बड़ी यातनायें झेलीं। अपनी क़ौम से कहते रहे कि जिन बुतों की तुम पूजा-पाट करते हो वह न तुम्हें लाभ पहुंचा सकते हैं और न हानि। जिन को तुम अपने हाथों से बनाते हो वह तुम्हारी तरह ही एक मख़्लूक़ हैं, बल्कि तुम से भी कमज़ोर। यह तुम्हें रोज़ी भी नहीं दे सकते हैं। इस लिये केवल एक अल्लाह की ज़िबादत करो उसी से रोज़ी तलब करो और उस की अ़ता की हुयी नेमतों पर शुक्र बजा लाओ तुम को एक न एक दिन अल्लाह ही की तरफ़ लौटना है और अपने किये का फल भोगना है।

आयत न० १६ से २३ तक हज़रत इब्राहीम अ़लै० की तब्लीग़ का बयान है, फिर आयः न० २४ से आप की क़ौम का जवाब बयान किया गया है। (इब्ने कसीर)

११. यानी अल्लाह तआ़ला से खाना-पानी (रोज़ी) माँगो और उसी के बतलाये हुये नियमों के तहत हलाल रोज़ी तलाश करो इस लिये कि केवल वही बेहतर रोज़ी देने वाला है। (राज़)

१२. 'कुल सीरू' (आयत २०) में उलमा के दो अक़्वाल हैं। पहला क़ौल तो यह है कि इस आयत के मुख़ातब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं। दूसरा क़ौल यह है कि इस के मुख़ातब हज़रत इब्राहीम हैं। अगर इस आयत का ख़िताब हज़रत इब्राहीम से है तो इस का मतलब यह हुआ कि जब आप की क़ौम ने परस्पर मश्वरा किया तो कुछ लोगों ने कहा कि इब्राहीम की तीन दलीलों यानि, तौहीद, रिसालत और क़ियामत में से एक का भी उत्तर न दो बल्कि दो कामों में से एक काम करो या तो उसे तल्वार से क़त्ल कर डालो ऐसा करने से तुम जल्दी ही राहत पा लोगे। या आग ही में डाल कर जला दो, इस से यह हो गा कि या तो वह तुम्हारा दीन तक्लीफ़ की वजह से क़ुबूल कर ले गा, या उस में जल कर मर जाये गा और हम सब की जान बच जाये गी। सब ने इस पर इत्तिफ़ाक़ किया और हज़रत इब्राहीम को आग में डाल दिया। उसी समय हज़रत जिब्रील अ़लै० ने आ कर कहा कि मैं आप

की सहायता के लिये हाज़िर हूँ। आप ने फ़रमाया: मेरा रब मेरी सहायता के लिये काफ़ी है। उन्हों ने कहा: अपने रब ही से सहायता माँग लो। फ़रमाया: उस से कहने की क्या ज़रूरत है वह स्वयँ जानता है कि किस बन्दे को किस चीज़ की आवश्यक्ता है। उस समय अल्लाह तआ़ला ने आग को निर्देश दिया "ऐ आग! तू इब्राहीम के लिये ठन्डी और सलामती वाली बन जा"। (सारांश)

وَيَرْحَمُ مَن يَشَاءُ ۖ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ﴿٢١﴾ وَمَا أَنتُم
بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۖ وَمَا لَكُم مِّن
دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٢٢﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ أُولَٰئِكَ يَئِسُوا مِن رَّحْمَتِي وَ
أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٣﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ
إِلَّا أَن قَالُوا اقْتُلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنجَاهُ اللَّهُ مِنَ
النَّارِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢٤﴾ وَقَالَ
إِنَّمَا اتَّخَذْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا مَّوَدَّةَ
بَيْنِكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُ
بَعْضُكُم بِبَعْضٍ وَيَلْعَنُ بَعْضُكُم بَعْضًا وَمَأْوَاكُمُ
النَّارُ وَمَا لَكُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٢٥﴾ فَآمَنَ لَهُ لُوطٌ ۘ
وَقَالَ إِنِّي مُهَاجِرٌ إِلَىٰ رَبِّي ۖ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ﴿٢٦﴾ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا

और जिस पर चाहे रहम फ़रमा सकता है (यानी किसी मालदार बादशाह की राय का पाबन्द नहीं) और तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओ गे[13]। २२. और (ख़ूब याद रखो कि) तुम ज़मीन और आकाश में अल्लाह को थका नहीं सकते (कि तुम उस की पकड़ में न आ सको) और तुम्हारे लिये अल्लाह के अ़लावा कोई वाली और सहायक नहीं है। २३. और (न हो गा। इस लिये कि) जो लोग अल्लाह के हुक्मों और उस की मुलाक़ात से इन्कारी हैं (या इक़रार करने के बावजूद तय्यारी नहीं करते) यही लोग मेरी रहमत से निराश हैं और इन्हीं को दुःखदाई अ़ज़ाब हो गा। (यह तो थी एक मुख़्तसर बात-चीत जो मुनासिबत की वजह से ज़िक्र में आ गयी) २४. पस (अब सुनिये क़िस्सा कि) इब्राहीम की क़ौम से आख़िरी जवाब यही बन सका कि उन्हों ने कहा: उस को क़त्ल कर दो या आग में जला दो[14], फिर (ग़ौर-फ़िक्र करने के बाद उन्हों ने हज़रत इब्राहीम को आग में डाल दिया, लेकिन) अल्लाह ने उस को आग से बचाया। बेशक इस में ईमानदार लोगों के लिये बहुत सी निशानियाँ हैं। २५. और (इब्राहीम आग से निकला तो) उस ने कहा: तुम ने केवल आपस की दुनियावी मुहब्बत से बुतों को माबूद बना रखा है (इस की सज़ा तुम को अवश्य मिले गी) फिर क़ियामत के रोज़ तुम में का एक, दूसरे से इन्कारी हो गा और एक दूसरे पर लानत करे गा, और तुम सब का ठिकाना (जहन्नम की) आग में हो गा और तुम्हारा (वहाँ पर) कोई मददगार न हो गा[15] २६. पस (यह तक़रीर सुन कर) लूत (जो इब्राहीम का हक़ीक़ी भतीजा था) उस पर ईमान लाया और इब्राहीम ने कहा: मैं अपना वतन छोड़ कर अपने पर्वरदिगार की तरफ़ जाता हूँ। बेशक वह बड़ा ग़ालिब और बड़ी हिक्मत वाला है[16]। २७. और (जब वह वतन छोड़ कर गया तो) हम ने उस को इस्हाक़ और याक़ूब दिये

....

१३. एक हदीस शरीफ़ में है कि अगर सातों ज़मीन और सातों आसमान की तमाम मख़्लूक़ पर अल्लाह अ़ज़ाब करे

➲तो वह उस के मुस्तहिक़ हैं, और अगर रहम करे तो यह उस का एहसान हो गा। और सभी लोग क़ियामत के दिन उस की तरफ़ लौटाए जायें गे। क़ियामत के दिन उसे कोई हरा नहीं सकता, इस लिये कि वह सब पर ग़ालिब है।

इस आयत में दोज़ख़ वालों के आग में जलने का कारण बताया गया है कि इन्हों ने शिर्क किया, अल्लाह की आयतों को झुठलाया, उस की किताबों का इन्कार किया, उस के संदेष्टाओं को नहीं माना, क़ियामत और हश्र का इन्कार किया, यही कारण है कि यह लोग अल्लाह की रहमत (यानी जन्नत) से नाउम्मीद हो गये हैं। यह वह लोग हैं जिन के लिये दु:खदाई दण्ड तय्यार है। मुलाक़ात का दिन (यानी जिस दिन नेकी बदी का जाइज़ा लिया जाये गा) इस को क़ुरआन मजीद ने "यौमुद्दीन" (जज़ा का दिन) कहा है, जैसा कि सूर: फ़ातिहा की तीसरी आयत में ज़िक्र है। "यौमुल् हिसाब" (हिसाब का दिन) "यौमुल ख़ुरूज" (क़ब्रों से निकलने का दिन) "यौमुम्मश्हूद" (हाज़िरी का दिन) "यौमुत्तग़ाबुन" (नुक़्सान और अफ़्सोस का दिन) और इस के अलावा भी बहुत से नामों से ज़िक्र किया गया है। क़ियामत को झुठलाना, अल्लाह से मुलाक़ात को झुठलाना है। कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन ने हमेशा ही तौहीद की मुख़ालिफ़त के साथ-साथ क़ियामत का भी इन्कार किया है (सारांश)

१४. हज़रत इब्राहीम की क़ौम के लोग दलीलों का तो जवाब दे न सके, इस लिये अपनी पूरी शक्ति से हक़ को दबाने की कोशिश में एकजुट हो गये। इस के लिये प्रोग्राम यह बना कि एक गड्ढे में आग भड़का कर उस में इब्राहीम को डाल दो ताकि जल कर राख हो जाये और न रहे बांस न बजे बाँसुरी। लेकिन अल्लाह तआला ने उन के मक्र को उन्हीं पर लौटा दिया। एक गड्ढा खोदा, उस में महीनों तक लकड़ियाँ जमा करते रहे इस के बाद गड्ढे के चारों तरफ़ दीवार खड़ी कर के आग लगा दी, जब उस के शोले आकाश को छूने लगे तो हज़रत इब्राहीम को मिन्जिनीक़ (LAUNCHER)द्वारा आग में फेंक दिया। लेकिन अल्लाह तआला ने उस आग को अपने ख़लीफ़ा (मित्र) के लिये बाग़-व-बहार बना दिया। आप उस के अन्दर कई दिनों तक रहने के पश्चात् सही-सलामत निकल आये (मुहम्मदी)

१५. यानी बुतपरस्ती को कोई भी शख़्स जायज़ नहीं समझता। बुतों की पूजा-पाट करने वाले भी दिल से इस को बुरा और अनर्थ काम समझते हैं, मगर जनता को एकजुट रखने के लिये एक मज़हब ठहरा लिया है ताकि इस के नाम पर पूरी क़ौम मुत्तफ़िक़ रहे और एक-दूसरे के दोस्त बने रहें। आज-कल यूरोप में ईसाई क़ौमों का यही हाल है। या यह मतलब है कि बुतपरस्ती इस बुनियाद पर नहीं फैली कि वह कोई अच्छी और सच्ची चीज़ है, बल्कि अन्ध ी तक़्लीद, क़ौमी मुरव्वत और लिहाज़, परस्पर का दबाव इस का बड़ा कारण है। बुतपरस्ती के फैलने और फलने-फूलने का यह भी कारण हो सकता है कि क़ौमों में परस्पर मुहब्बत और मित्रता थी। उस क़ौम के कुछ नेक आदमी जिन से लोग बहुत अधिक प्यार करते थे इन्तिक़ाल कर गये, तो लोगों ने मुहब्बत के जोश में उन के चित्रों को यादगार के तौर पर सुरक्षित कर लिया, फिर धीरे-धीरे उन चित्रों की ताज़ीम होने लगी। आख़िर कार वही ताज़ीम बढ़ते-बढ़ते इबादत बन गयी। मुफ़स्सिरीन ने बुतपरस्ती के फैलने के यही सब कारण बयान किये हैं जो अभी ऊपर बयान हुये हैं। और यह भी मुमकिन है कि 'म-वद्द-त बैनिकुम' (आपस की मुहब्बत) से बुतपरस्तों की अपने बुतों से मुहब्बत हो, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "यह लोग अपने बुतों से अल्लाह से मुहब्बत करने की तरह मुहब्बत करते हैं" (मुवज़्ज़िहुल क़ुरआन)

'म-वद्द-त' (ता पर ज़बर के साथ) कुछ लोगों ने "पेश" भी पढ़ा है। इस का मतलब यह है कि तुम्हारी यह बुतपरस्ती, तुम्हारे लिये दुनिया में मुहब्बत को बढ़ा दे, मगर क़ियामत के दिन मुहब्बत के स्थान पर नफ़रत और इत्तिफ़ाक़ के स्थान पर इख़्तिलाफ़ पैदा हो जाये गा। एक दूसरे पर लानत-मलामत करें गे, फिर सब के सब ठोकरें खा कर जहन्नम में ढकेल दिये जायें गे। एक हदीस में आया है कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन तमाम लोगों को जमा करे गा फिर एक पुकारने वाला अर्श के नीचे से पुकारे गा: "ऐ तौहीद वालो!" यही आवाज़ तीन बार लगाये गा। अहले तौहीद सर उठा कर खड़े हो जायें गे और आपस के इख़्तिलाफ़ और लेन-देन का मुतालबा करने लगें गे, तो अल्लाह तआला की तरफ़ से आवाज़ दी जाये गी कि ऐ अहले तौहीद! तुम परस्पर एक दूसरे को माफ़ कर➲

दो, मैं तुम को अच्छा बदला दूँ गा (इब्ने कसीर)

१६. कहा जाता है कि हज़रत लूत, हज़रत इब्राहीम के भतीजे थे। आप की क़ौम में मर्दों में से यह और महिलाओं में से हज़रत सारा केवल ईमान लाने वालों में थे। जब आप ने हिजरत का इरादा फ़रमाया तो हज़रत लूत ने यह कहा था। यह भी हो सकता है कि यह कहने वाले हज़रत इब्राहीम हों, जैसा कि हज़रत इब्ने अब्बास और ज़हहाक का क़ौल है। मौलाना अमृतसरी रह० ने भी इसी को पसन्द फ़रमाया है और "मैं अपना वतन छोड़ कर अपने पर्वरदिगार की तरफ़ जाता हूँ" इस जुम्ले को हज़रत इब्राहीम अलै० ही का क़ौल माना है।

فِيْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ فِي
الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾ وَ
لُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ ز
مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾ اَئِنَّكُمْ
لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ السَّبِيْلَ ۙ وَتَاْتُوْنَ
فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ۚ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ
اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ
الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ
بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مُهْلِكُوْٓا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ
اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ اِنَّ فِيْهَا لُوْطًا ۚ
قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا ۖ لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَاَهْلَهٗٓ
اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَلَمَّآ اَنْ

और हम ने उस की नस्ल में नबुव्वत और किताब (की हिदायत) जारी की थी (और इब्राहीम की नस्ल से कई एक नबी पैदा हुये) और हम ने उस को दुनिया में बड़ा अज्र दिया था और आख़िरत में भी वह नेक बन्दों में हो गा २८. और लूत को हम ने (रसूल बना कर के) भेजा। जब उस ने अपनी क़ौम से कहा कि तुम बड़ी बेहयाई के काम करते हो (ऐसी बेहयाई का काम है) कि तुम से पहले दुनिया वालों में से किसी ने यह काम नहीं किया। २९. तुम मर्दों (यानी लड़कों) से कुकर्म करते हो और (कुदरती) रास्ता (जो महिला-पुरुष के मिलाप का है) काटते हो और तुम अपनी सभाओं में नाजायज़ हर्कतें करते हो (यानी हंसी-मज़ाक़, ठट्ठा-मख़ोल और लोगों को बे इ़ज़्ज़त करना तुम में एक मामूली बात है) उस की क़ौम का बस यह जवाब हुआ कि उन्हों ने कहा: अगर तू सच्चा है तो हम पर अ़ज़ाब ले आ[१७]। (और हमें हलाक कर दे। बस तेरी सच्चाई का सबूत स्वयँ ही हो जाये गा) ३०. लूत (अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह हुआ और उस) ने कहा: ऐ मेरे पर्वरदिगार! फ़सादियों की क़ौम पर मेरी मदद कर[१८]। ३१. और जब हमारे भेजे हुये {संदेष्टा} इब्राहीम के पास (बेटे की) शुभ सूचना लाये[१९] (कि तेरे घर बेटा पैदा होगा) तो उन्हों ने (इब्राहीम के पूछने पर) कहा कि हम उस (लूत की) बस्ती को हलाक करने वाले हैं (और इसी ग़रज़ से हम आये हैं क्योंकि) उस के रहने वाले ज़ालिम हैं[२०]।

३२. इब्राहीम ने कहा: उस में लूत भी तो है। फ़रिश्तों ने कहा: जो-जो उस में है हम उस को ख़ूब

जानते हैं हम (अल्लाह के हुक्म के अनुसार) उस को और उस के सबन्धियों को बचा लें गे, मगर उस की औरत पीछे रहने वालों में रहे गी (क्योंकि वह लूत पर ईमान नहीं लायी)

....

१७. लड़कों के साथ कुकर्म तो करते ही थे। इस के साथ और भी बहुत सी बुराइयाँ थीं जैसे, रास्ता रोकते थे, डाके डालते थे, सभाओं में खुल्लम-खुल्ला बकवास करते, पाद कर हंसते, मुर्ग़ और मेंडे वग़ैरह लड़ाते, राह चलतों पर आवाज़े कसते, कन्कर फेंकते, तालियाँ बजाते, कबूतर-बाज़ी करते, नंगे हो कर घूमते और बदफ़ेली (समलैंगिक संबन्ध) का खुले आ़म एलान करते थे। आख़िर हज़रत लूत अ़लै० ने तंग आकर अल्लाह के सामने हाथ फैला दिये कि ऐ अल्लाह! इस फ़सादी क़ौम के मुकाबला में मेरी मदद फ़रमा।

१८. यहाँ पर हज़रत लूत ने साफ़ शब्दों में अ़ज़ाब की दख़ास्त नहीं की, बल्कि केवल इतना कहा कि "फ़सादी क़ौम पर मेरी मदद फ़रमा"। इस की वजह यह है कि हज़रत लूत जानते थे कि अल्लाह किसी के कहने पर अ़ज़ाब नहीं भेजता, बल्कि वह खुद जानता है कि किस के साथ क्या बर्ताव किया जाये। चूंकि अल्लाह के इ़ल्म में यही था कि उस की क़ौम हलाक हो और वह अपने अंजाम को पहुचे, इस लिये फ़रिश्ते लानत-मलामत करने के लिये आ पहुंचे। (सनाई) इस आयत से यह भी मालूम हुआ कि कुफ़्र, शिर्क, गुनाह, ज़िना, लौंडे बाज़ी वग़ैरह बुरे काम, यह सब दुनिया में फ़साद के काम हैं और यह काम करने वाले फ़सादी हैं। और वह हुकूमतें भी फ़सादी कहलायें गी जिन के शासनकाल में यह बुराइयाँ हो रही हैं और वह आँखें मूँदे हुये बैठी हुयी हैं। (राज़)

१९. क़ौम की हलाकत की सूचना के साथ ही बेटे की बशारत का संभवत: यह मतलब हो कि एक क़ौम से अल्लाह की ज़मीन ख़ाली होने वाली है, तो दूसरी तरफ़ अल्लाह तआ़ला एक ज़र्बदस्त क़ौम यानी बनी इस्राईल की बुनियाद डालने वाला है। अ़ल्लामा नेशा पूरी ने अपनी तफ़्सीर में इसी बात की ओर इशारा किया है (मुवज्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

२०. यह फ़रिश्ते इन्सान की सूरत में मेहमान बन कर हज़रत इब्राहीम के घर आये तो आप ने उन के लिये खाने पीने का सामान तय्यार कराया। लेकिन जब यह देखा वह खाने के मूड में नहीं हैं तो अन्दर ही अन्दर डर गये क्योंकि उस ज़माने में यह दस्तूर था कि अगर कोई मेहमान ख़ाना खाने से मना कर देता था तो इसका मतलब यह होता था कि वह आपका शत्रु है। फ़रिश्तों ने जब उन की हताश हालत देखी तो उन की घबराहट को दूर करने के लिये उन से बात-चीत का सिलसिला आरंभ करते हुये प्रथम उन्हें एक बच्चे की बशारत दी। आप की पत्नी हज़रत सारा जो पहले ही से वहाँ उपस्थित थीं सुन कर तअ़ज्जुब करने लगीं (विस्तार से देखें सूरः हूद, आयत न० ७२,७३ पारः१२) इस के बाद फ़रिश्तों ने अपने आने का उद्देश्य ज़ाहिर किया तो हज़रत इब्राहीम अ़लै० को ख़याल पैदा हुआ कि अगर कुछ और मुहलत दे दी जाये तो हो सकता है हिदायत कुबूल कर लें। फ़रिश्तों ने कहा कि हम हज़रत लूत और उन के अनुयायियों को निश्चित तौर पर बचा लेंगे, लेकिन उन की बीवी अवश्य हलाक की जाये गी, इसलिये कि वह काफ़िरों के साथ है। यहाँ से विदा हो कर सुन्दर लड़कों की सूरत में हज़रत लूत के पास पहुंचे तो लूत अ़लै० उन्हें देख कर बहुत चिन्तित हुये, कि अगर अपने पास ठहराते हैं तो बदकार लोग उन पर टूट पड़ें गे। लेकिन फ़रिश्तों ने उन की घबराहट दूर कर दी और कहा: आप घबरायें नहीं, हम अल्लाह की तरफ़ से भेजे हुये दूत हैं और उन को तबाह करने के लिये आये हैं आप का पूरा खान्दान आप की पत्नि को छोड़ कर बचा लिया जाएगा। जिब्रील अलै० उस बस्ती को ज़मीन से उठा कर आसमान पर ले गये और वहाँ से उलट दिया फिर उन पर उन के नाम लिखे हुये पत्थर बरसाये और जिस अ़ज़ाब को वह दूर समझ रहे थे बिल्कुल सामने आ गया। यह बस्ती जहाँ उल्टी गयी थी वहाँ एक गन्दी और बदबूदार झील बन कर रह गयी, जो इन कुफ़्फ़ार और मुश्रिको के लिये इ़ब्रत का ज़रीआ़ है। (इब्ने कसीर)

جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِىْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّ
قَالُوا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۗ إِنَّا مُنَجُّوكَ وَأَهْلَكَ
إِلَّا امْرَأَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِينَ ﴿٣٣﴾ إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلٰٓى
أَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوا
يَفْسُقُونَ ﴿٣٤﴾ وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ ءَايَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ
يَعْقِلُونَ ﴿٣٥﴾ وَإِلٰى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۙ
فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا
تَعْثَوْا فِى الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٣٦﴾ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ
الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِى دَارِهِمْ جٰثِمِينَ ﴿٣٧﴾ وَعَادًا وَّثَمُودَا۟
وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۗ وَزَيَّنَ لَهُمُ
الشَّيْطٰنُ أَعْمٰلَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَ
كَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ﴿٣٨﴾ وَقٰرُونَ وَفِرْعَوْنَ وَ
هٰمٰنَ ۗ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوسٰى بِالْبَيِّنٰتِ

३३. (ख़ैर यहाँ से चल कर) हमारे रसूल (फ़रिश्ते) जब लूत के पास आये तो (चूंकि फ़रिश्त सीधे-सादे लड़कों की शक्ल में थे और क़ौम के लोग कुकर्म के आ़दी थे, इसलिये) लूत उन से नाखुश और तंग दिल हुआ और उन्हों ने कहा: तू ख़ौफ़ न कर और दुखी न हो। हम तुझ को और तेरे संबन्धियों को बचा लें गे, लेकिन तेरी पत्नी नि: संदेह पीछे रहने वालों में है ३४ (तुम लोगों को निकाल कर) हम उस बस्ती के रहने वालों पर उन की बदकारी की वजह से आसमान से अज़ाब उतारने वाले हैं (चुनान्चे ऐसा ही हुआ कि तमाम क़ौम हलाक हो गयी) ३५. और अक़्ल मन्दों के लिये हमने इस में एक खुली निशानी छोड़ी (जिस से देखने वाले नसीहत पकड़ें) ३६. और मदयन वालों की तरफ़ उन के भाई शुअ़ैब को भेजा, फिर उस ने (भी यही) कहा कि भाइयो: अल्लाह की अ़िबादत करो और आख़िरत के दिन (की बेहतरी) की आशा रखो और मुल्क में फ़साद करने की कोशिश न करो[२१] ३७. फिर भी उन्हों ने झुटलाया, पस सख़्त भूकंप ने उन को आ लिया (जिस के साथ एक सख़्त आवाज़ भी थी) सो वह अपने घरों में औंधे पड़े रह गये ३८. और हम ने आ़द और समूद की क़ौम को हलाक किया और तुम को उन की (उजड़ी) बस्तियों से (उन का अस्ल हाल) मालूम हो चुका है (कि वह किस प्रकार हलाक हुये) और शैतान ने उन के आमाल उन को ख़ूबसूरत कर के दिखाये थे, पस (इसी वजह से) उन को सीधे रास्ते से रोका था (वर्ना वह बड़े होशियार) और बड़ी सूझ वाले थे[२२] ३९ और (इसी प्रकार) क़ारून, फ़िरऔ़न और हामान (आदि को हम ने हलाक किया) मूसा उन (फ़िरऔ़नियों) के पास खुले अहकाम लाया

....

२१. अल्लाह के बन्दे और उस के सच्चे रसूल हज़रत शुअ़ैब अ़लै॰ ने मदयन में अपनी क़ौम को नसीहत की, उन्हें अल्लाह की अ़िबादत का आदेश दिया और उस के अ़ज़ाब से डराया। और फ़रमाया: क़ियामत आ कर रहे गी इसलिये उस दिन की तय्यारी कर लो और नाहक़ अत्याचार न करो। अल्लाह की ज़मीन में फ़साद न करो और बुराइयों से दूर रहो। इस क़ौम के अन्दर एक बहुत बड़ा ऐ़ब यह भी था कि नाप-तोल में गड़बड़ करती थी। अधिक लेती और कम देती थी। डन्डी मारने में उस्ताद थी, डाका डालती और रास्तों को बन्द कर देती थी, अल्लाह और उस के रसूल को तो झुटलाती ही थी। इस क़ौम ने उन की बातों की ओर कोई ध्यान न दिया, बल्कि उलटा रसूल की शान में ➲

➲गुस्ताख़ी की। अन्त में अल्लाह ने उस पर अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाया। सख़्त भूकंप आया और साथ ही इतनी तेज़ आँधी आयी कि उन के दिल फट गये और प्राण त्याग दिये। चन्द लम्हों में सब के सब ढेर हो गये (मुहम्मदी) २२. आ़द की क़ौम में हज़रत हूद अ़लै० भेजे गये थे। यह क़ौम "अहक़ाफ़" के अलावा में आबाद थी। यह इलाक़ा हिज़्रे मूत के क़रीब है। समूद की क़ौम में हज़रत सालेह अ़लै० नबी बना कर भेजे गये थे। यह लोग "हिज़्र" में आबाद थे। यह ज़िलाक़ा कुरा की वादी के क़रीब पड़ता है। अ़रब के लोग इस ज़िलाक़ा से गुज़र कर तिजारत के लिये आते-जाते थे, इस लिये इन बस्तियों से ख़ूब परिचित थे। 'क़ारून' यह एक मालदार आदमी था। इस के ख़ज़ाने की तालियाँ (Key) शक्तिशाली मर्दों की एक जमाअ़त उठाती थी (विस्तार से सूरः क़सस आयत न० ७६ देखें) 'फ़िऔ़न' मिस्र का बादशाह और हामान उस का वज़ीर था। यह दोनों क़िब्ती ख़ानदान के थे और काफ़िर थे। इन लोगों को अल्लाह ने तबाह-बर्बाद कर दिया। आ़दियों पर तेज हवा भेजी। यह हवा इतनी तेज़ थी कि उन पर ज़मीन के छोटे-छोटे पत्थर उड़ा-उड़ा कर बरसाने लगी। फिर उन को भी उचक ले गयी और आसमान के क़रीब लेजा कर गिरा दिया। इस प्रकार पूरी बस्ती हलाक हो गयी। समूद की क़ौम पर ज़बर्दस्त अ़ज़ाब आया जिस ने दिलों के टुकड़े-टुकड़े कर दिये और सब मर गये। क़ारून को उस के ख़ज़ानों और महलों के साथ ज़मीन में धंसा दिया और आज तक धंसता ही चला जा रहा है। फ़िरऔ़न, हामान और उस की सेनाओं को कुल्ज़ुम समुन्द्र में डुबो कर दे मारा। उन का कोई नाम लेने वाला भी बाक़ी नहीं रहा (इब्ने कसीर)

मैं कहता हूँ कि इस ज़माना में भी लोगों के ज़ुल्म व ज़्यादती और सरकशी की वजह से अल्लाह का अ़ज़ाब किसी न किसी सूरत में आता रहता है। सन १३७५ हि० में हिन्द व पाक में ज़बर्दस्त सैलाब आया था जिस ने दोनों मुल्कों के हज़ारों लोगों को अपने पेट में लील किया, यह अ़ज़ाब भी इसी ज़ुल्म व नाफ़रमानी का परिणाम था इस के बावजूद भी इन्सान की सर्कशी का यह हाल है कि हर धर्म का इन्सान बदी पर तुला हुआ है और धर्म के नाम पर चारों तरफ़ ख़ून की नदियाँ बहायी जा रही हैं। क़त्ल व ग़ारत-गरी आ़म है। अल्लाह और रसूल का इन्कार फ़ैशन बन चुका है और इस जुर्म में अपने आप को पक्का-सच्चा मोमिन होने का दावा करने वाले बड़े-बड़े महारथी भी शामिल हैं, इन हालात में अल्लाह का प्रकोप न नाज़िल हो तो क्या हो। अल्लाह तआ़ला हम सब को सीधे और सच्चे रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़र्माए-(राज़)

فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا سٰبِقِيْنَ ﴿٣٩﴾
فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنْبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ
حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ
خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَغْرَقْنَا ۚ وَمَا
كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْا أَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٠﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ۚ

ताहम उन्हों ने मुल्क में तकब्बुर किया (बन्दे से ख़ुदा बन बैठा और ख़ुदा को छोड़ कर बन्दे को माबूद बना लिया) मगर वह (हम से) आगे न बढ़ सकते थे ४०. हम ने उन सब को गुनाहों पर धर पकड़ा, उन में से बाज़ पर हम ने पथराव किया और बाज़ को सख़्त आवाज़ ने (भूकंप के साथ) दबा लिया और बाज़ को हम ने ज़मीन में धंसा दिया और बाज़ को हम ने (पानी में) डुबो दिया और (सच पूछो तो) अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म न किया था, बल्कि वह लोग

وَاِنَّ اَوۡهَنَ الۡبُيُوۡتِ لَبَيۡتُ الۡعَنۡكَبُوۡتِ‌ۘ لَوۡ كَانُوۡا يَعۡلَمُوۡنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يَعۡلَمُ مَا يَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِهٖ مِنۡ شَىۡءٍ‌ؕ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ۝ وَتِلۡكَ الۡاَمۡثَالُ نَضۡرِبُهَا لِلنَّاسِ‌ۚ وَمَا يَعۡقِلُهَاۤ اِلَّا الۡعٰلِمُوۡنَ ۝ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ بِالۡحَقِّ‌ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۝

अपने-आप पर ज़ुल्म करते थे (कि अल्लाह ➲ ➲ को छोड़ कर औरों को अपनी बिगड़ी बनाने वाला जानते थे) ४१. (हालाँकि) जो लोग अल्लाह के अ़लावा दूसरों को अपना कारसाज़ बनाते हैं उन की मिसाल एक मक्ड़ी की सी है जिस ने (दीवार पर) घर बनाया और (अपने मन ही मन में समझा कि मैं तो मज़बूत क़िले में हूँ, हालाँकि) तमाम घरों से बोदा मक्ड़ी का घर है। काश यह लोग अ़िल्म रखते[२३] (तो उन को मालूम होता कि कितनी बड़ी गलती पर हैं) ४२. कुछ शक नहीं कि अल्लाह को मालूम है (ख़ास कर) जिन-जिन चीज़ों को अल्लाह के सिवा यह लोग पुकारते हैं (उस को सब मालूम है) और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है[२४]। ४३. और यह मिसालें तो हम लोगों को (समझाने के लिये) बतलाते हैं और (वास्तव में) उन (मिसालों) को समझदार लोग ही समझ सकते हैं[२५]। ४४. अल्लाह ने आकाश और ज़मीन एक पुख़्ता क़ानून के साथ पैदा किये। नि: संदेह इस (बयान) में ईमानदारों के लिये (बहुत बड़ी) निशानी है[२६]।

....

२३. यानी घर इस वास्ते बनाया जाता है कि उस से जान-माल का बचाव हो। मक्ड़ी के जाले में तो कुछ भी सुरक्षित नहीं है, दामन के एक झटके से टूट कर बिखर जाये। बिल्कुल यही मिसाल उन लोगों की है जो अल्लाह के अ़लावा दूसरों को अपना सहायक, मददगार, कारसाज़ और सहयोगी बनाते हैं कि अल्लाह की इच्छा और मर्ज़ी के सामने उन की सहायता और मदद भी मक्ड़ी के जाले की तरह टूट कर बिखर जाती है और अल्लाह के सामने एक भी नहीं चलती।

२४. यहाँ पर मुमकिन था सुनने वाला तअ़ज्जुब करे कि सब को एक ही दर्जे में ला ख़ड़ा किया और किसी को अलग नहीं किया सो मालूम रहे कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमा दिया कि मुझे सब कुछ मालूम है, किसी के भी अन्दर तनिक भर कुदरत नहीं है। अगर उन में से किसी को ज़रा भी इख़्तियार होता तो अल्लाह सब को एक ही दर्जे में ख़ड़ा कर के नफ़ी न करता ("मुबज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान")

२५. मुश्रिकीन और कुफ़्फ़ार कहते थे कि मक्ड़ी और मच्छर के उदाहरण पेश करना अल्लाह की शान और बड़ाई के ख़िलाफ़ है। उन के इस क़ौल का यह उत्तर दिया कि यह मिसालें अपने मौक़ा-महल के एतबार से बहुत ही उचित और संतुलित हैं। जिस चीज़ की मिसाल दी गयी है और जिस के बारे में मिसाल दी गयी है दोनों अपने स्थान पर बिल्कुल फ़िट हैं, मगर समझदार लोग ही इस का अर्थ समझते हैं, जाहिल क्या जानें? यह नहीं देखना चाहिये कि कौन मिसाल दे रहा है, बल्कि यह देखना चाहिये कि किस शख़्स के बारे में मिसाल दी जा रही हैं। अगर वह ज़लील, कमज़ोर और गन्दा है तो उस की मिसाल भी वैसी ही घटिया और हक़ीर देने से अल्लाह की शान में कोई फ़र्क़ नहीं आता (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुरक़ान)

२६. इस आयत से मालूम हुआ कि हक़ीक़ी आ़लिम वही है जिस को अ़िल्म के साथ समझ भी अ़ता हो। अगर किसी ➲

➲ने केवल किताबें ही पढ़ ली हैं और सोच-समझ कर नहीं पढ़ी हैं, तों कुरआन मजीद के नज़दीक ऐसा शख़्श आ़लिम नहीं है। (राज़)

इसी प्रकार जिस ने दुनियावी अ़िल्म हासिल किया और दुनिया के तअ़ल्लुक़ से बहुत सारी डिगरियाँ इकट्ठी कर ली हैं लेकिन कुरआ़न व हदीस का ज्ञान-ध्यान नहीं है तो ऐसा व्यक्ति भी कुरआ़न की परिभाषा में आ़लिम नहीं कहलाये गा।

★★★★★

بِسۡـــــمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡـــمِ

पारः उत्लु मा ऊहि-य (21)

संक्षिप्त विषय सूची

उत्लु मा ऊहि़-य (21)

اُتۡلُ مَاۤ اُوۡحِیَ اِلَیۡکَ مِنَ الۡکِتٰبِ وَ اَقِمِ الصَّلٰوۃَ ؕ اِنَّ
الصَّلٰوۃَ تَنۡہٰی عَنِ الۡفَحۡشَآءِ وَ الۡمُنۡکَرِ ؕ وَ لَذِکۡرُ اللّٰہِ
اَکۡبَرُ ؕ وَ اللّٰہُ یَعۡلَمُ مَا تَصۡنَعُوۡنَ ﴿۴۵﴾ وَ لَا تُجَادِلُوۡۤا اَہۡلَ
الۡکِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِیۡ ہِیَ اَحۡسَنُ ٭ۖ اِلَّا الَّذِیۡنَ ظَلَمُوۡا
مِنۡہُمۡ وَ قُوۡلُوۡۤا اٰمَنَّا بِالَّذِیۡۤ اُنۡزِلَ اِلَیۡنَا وَ اُنۡزِلَ اِلَیۡکُمۡ
وَ اِلٰـہُنَا وَ اِلٰـہُکُمۡ وَاحِدٌ وَّ نَحۡنُ لَہٗ مُسۡلِمُوۡنَ ﴿۴۶﴾ وَ
کَذٰلِکَ اَنۡزَلۡنَاۤ اِلَیۡکَ الۡکِتٰبَ ؕ فَالَّذِیۡنَ اٰتَیۡنٰہُمُ الۡکِتٰبَ
یُؤۡمِنُوۡنَ بِہٖ ۚ وَ مِنۡ ہٰۤؤُلَآءِ مَنۡ یُّؤۡمِنُ بِہٖ ؕ وَ مَا یَجۡحَدُ
بِاٰیٰتِنَاۤ اِلَّا الۡکٰفِرُوۡنَ ﴿۴۷﴾ وَ مَا کُنۡتَ تَتۡلُوۡا مِنۡ قَبۡلِہٖ
مِنۡ کِتٰبٍ وَّ لَا تَخُطُّہٗ بِیَمِیۡنِکَ اِذًا لَّارۡتَابَ الۡمُبۡطِلُوۡنَ ﴿۴۸﴾
بَلۡ ہُوَ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ فِیۡ صُدُوۡرِ الَّذِیۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ ؕ
وَ مَا یَجۡحَدُ بِاٰیٰتِنَاۤ اِلَّا الظّٰلِمُوۡنَ ﴿۴۹﴾ وَ قَالُوۡا لَوۡ لَاۤ
اُنۡزِلَ عَلَیۡہِ اٰیٰتٌ مِّنۡ رَّبِّہٖ ؕ قُلۡ اِنَّمَا الۡاٰیٰتُ

४५.जो किताब तेरी तरफ़ वह्यि की गयी है तू (लोगों को) पढ़ कर सुना और (स्वयं भी उस पर अ़मल कर[२७]) पस नमाज़ पढ़ा कर (क्यों कि नमाज़ के बेशुमार फ़ाइदे हैं। उन में से यह भी है कि वह) नमाज़ बेहयाई और बुरी हर्कतों से रोकती है। और अल्लाह का ज़िक्र बहुत बड़ा है। और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह को सब मालूम है। ४६. और तुम किताब वालों से बहस मुबाहिसा[२८] निहायत अच्छे ढंग से किया करो मगर जो लोग उन में ज़ालिम (यानी कीना रखने वाले बुरी राह पर) हैं (उन से मुबाहिसा की ज़रूरत ही नही) और तुम (अपना अ़क़ीदा ज़ाहिर करते हुये) कहो कि हम उस किताब पर ईमान लाये जो हमारी तरफ़ और तुम्हारी तरफ़ उतारी गयी है और हमारा तुम्हारा माबूद एक है और हम उस के फ़रमाबर्दार हैं। ४७. और (जिस प्रकार पहले संदेष्टाओं को किताबें मिली थीं) इसी प्रकार हम ने तेरी तरफ़ यह किताब उतारी है। पस जिन लोगों को हम ने किताब दी वह उस पर ईमान लायें गे और उन (अ़रब के मुश्रिकों) में से बाज़ लोग उस पर ईमान न लायें गे। और हमारे आदेशों का काफ़िर ही इन्कार करते हैं। ४८. और (खूब फ़िक्र करें कि) तू इस से पहले न कोई किताब पढ़ता था[२९] और न ही दायें हाथ से कुछ लिखता था (बल्कि महज़ उम्मी {अन्पढ़} था) वर्ना (बिदीन और) झूठे लोग तुरन्त शक व शुब्हा करते। ४९. बल्कि जिन लोगों को ज़िल्म (और अल्लाह की पहचान) है[३०] उन के दिलों में यह (किताब) खुले (और स्पष्ट) अहकाम (के मानिन्द) हैं (जिस के मानने में उन को ज़रा सी भी कठिनाई नहीं होती) और जो ज़ालिम हैं वही हमारे हुक्मों का इन्कार करते हैं। ५०. और कहते हैं: क्यों नहीं उस पर उस के पर्वरदिगार की तरफ़ से निशानियाँ ➲

➲उतारी गयीं? (ऐ नबी!) तू कह कि निशानियाँ सब अल्लाह के पास हैं

....

२७. और स्वंय भी उस पर अ़मल कर। इस की तालीम में सब से मुक़द्दम नमाज़ है। नमाज़ के बहुत से फ़ाइदे हैं। उन में एक बड़ा फ़ाइदा यह है कि वह बेहयाई और बुरी हर्कतों से रोकती है। इस लिये कि नमाज़ अल्लाह से एक गहरे संबन्ध का नाम है। अल्लाह के सामने अपने बन्दे होने का इक़रार करना अल्लाह की बड़ाई को तस्लीम करना है। अपने तमाम माल व दौलत को अल्लाह का दिया हुआ मान कर भविष्य के लिये उसी से प्रश्न करना है। फिर कौन है जो पाँच मतर्बा इस तरीक़े से नमाज़ भी पढ़े और गुनाह और बुराइयों के काम भी करे। ऐसे नमाज़ी से अगर कोई बेजा हर्कत हो भी, तो चूंकि नमाज़ का नूर दिल में होता है, इस लिये उस की पूर्ति करता है, अल्लाह के सामने रोता है, माफ़ी माँगता है (इस में इस आयत की तरफ़ इशारा है जिस में फ़रमाया गया "मुत्तक़ी लोगों से जब कोई शैतानी हर्कत हो जाती है तो वह चौंक कर आगाह हो जाते हैं" (सूरः आराफ़-२०१) इस आयत से साबित हुआ कि परहेज़ गारों से भी गुनाह के काम हो जाते हैं। मगर उन में और दूसरों में अन्तर यह है कि मुत्तक़ी उस गुनाह की तुरन्त तलाफ़ी कर लेते हैं और नापाक लोग इस की पर्वा नही करते

और इस का कारण यह है कि अल्लाह का ज़िक्र बहुत बड़ा है। पस जो लोग अल्लाह का ज़िक्र हर समय करते हैं और नामाज़ को ख़ास तौर पर अदा करते हैं, उन के दिलों में एक प्रकार का नूर पैदा होता है जो उन को बराइयों से रोकता है। (सनाई)

२८. 'जिदाल' का अर्थ है "बहस-मुबाहिसा" यानी दोनों तरफ़ से अपने-अपने दावा पर दलील क़ायम करना ताकि जो हक़ है वह ज़ाहिर हो जाये। फिर अगर किसी फ़रीक़ को केवल अपना ग़लबा ही मन्जूर हो तो वह झगड़ालू है। जैसे यहूद-नसारा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सच्चा रसूल और कुरआन को सच्चा जानते हुये भी शरारत से झगड़ा करते और कुरैश वग़ैरह को लड़ाई करने पर उभारते थे। इसी लिये अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: "अहले किताब से बहस न करो मगर उम्दा तरीक़े से"

इस में अहले किताब के दो फ़रीक़ थे। एक ज़ालिमों का था, जो सरकशी करता और राहे-हक़ से लोगों को रोकता था। इन लोगों के लिये यह हुक्म है कि उन के साथ तल्वार से लड़ाई की जाये। दूसरा गरोह वह था जो यहूद की तरह मुल्क में ताबे और मातहत बन कर रहता था, तो ऐसे लोगों के साथ बहस करने की बेशक इजाज़त दी गयी, मगर बेहतर अन्दाज़ में। हज़रत इब्ने अ़ब्बास से रिवायत है कि यह तरीक़-ए-दावत लाइला-ह इल्लल्लाह है। (मवाहिब)

२९. नबी बनाये जाने से पहले चालीच वर्ष तक आप उन ही मक्का वालों में रहे-सहे। सभी जानते हैं कि आप कभी उस्ताद के सामने नहीं बैठे, न कोई किताब पढ़ी और न कभी क़लम हाथ से पकड़ा। अगर ऐसा होता तो शायद काफ़िरों को संदेह होता कि अगली किताबें पढ़ कर नोट कर ली हों गी, और उन ही को अब धीरे-धीरे अपने तौर पर लोगों को सुनाते हैं। अगर्चे उस समय भी यह कहना ग़लत होता, क्योंकि कोई पढ़ा- लिखा इन्सान, बल्कि दुनिया के तामाम आदमी मिल कर और कुल मख़्लूक़ की ताक़त को मिला कर भी ऐसी बेनज़ीर (अद्भुत) किताब नहीं तय्यार कर सकते, लेकिन फिर भी झूठों को बात बनाने का मौक़ मिल जाता। लेकिन जब कि आप का उम्मी होना सब को तस्लीम है तो इस सरसरी शुब्हा की भी जड़ कट गयी (मुवाज़्जिहुल् फ़ुर्क़ान)

३०. यह सिफ़त केवल सहाबा के लिये बयान है (यानी इस से मुराद सहाबा हैं) क्योंकि क़ुरआन के नाज़िल होने के समय यही लोग हाफ़िज़ थे अल्लाह ने अपनी किताब क़ी हिफ़ाज़त उन के मुबारक सीनों से फ़रमाई। जो शख़्स उन सीनों का इन्कार करे वह मुनाफ़िक़ और जाहिल है। और यह भी साबित हुआ कि सहाबी हक़ीक़ी उलमा हैं और यह भी साबित हुआ कि "अ़िल्म" कुरआन को जानने और समझने का नाम है। (मवाहिब)

عِندَ اللّٰهِ ۖ وَإِنَّمَآ أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝٥٠ أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّآ
أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ فِى ذٰلِكَ
لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُونَ ۝٥١ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ
بَيْنِى وَبَيْنَكُمْ شَهِيدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ
وَالَّذِينَ اٰمَنُوا بِالْبٰطِلِ وَكَفَرُوا بِاللّٰهِ ۙ أُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُونَ ۝٥٢ وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۚ وَلَوْلَا
أَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ۚ وَلَيَأْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً
وَّهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝٥٣ يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۚ وَإِنَّ
جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌۢ بِالْكٰفِرِينَ ۝٥٤ يَوْمَ يَغْشٰهُمُ الْعَذَابُ
مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ ذُوقُوا
مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝٥٥ يٰعِبَادِىَ الَّذِينَ اٰمَنُوٓا إِنَّ
أَرْضِى وٰسِعَةٌ فَإِيَّاىَ فَاعْبُدُونِ ۝٥٦ كُلُّ نَفْسٍ
ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۟ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ۝٥٧ وَالَّذِينَ اٰمَنُوا

और मैं तो केवल स्पष्ट रूप से डराने वाला हूँ। ५१. क्या उन को यह काफ़ी नहीं कि हम ने तुझ पर एक जामे {ठोस} किताब उतारी है जो उन को पढ़ कर सुनाई जाती है। बेशक इस में (बहुत बड़ी) रहमत और (सच्ची बात पर) ईमान लाने वालों के लिये नसीहत है। ५२. तू (ऐ नबी उन से) कह कि मेरे (नबुव्वत के दावे पर मेरे) और तुम्हारे दर्मियान अल्लाह ही गवाह काफ़ी है (क्योंकि) वह आसमानों और ज़मीनों के सब वाक़िआत जानता है (लेकिन) जो लोग बेहूदा बातों को मानते हैं और अल्लाह के मुन्किर हैं, यही लोग (क़ियामत के दिन) नुक़्सान उठायें गे। ५३. और तुझ से अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं (कि अभी ले आ) और अगर (उन की हलाकत का) समय मुक़र्रर न होता तो ज़रुर ही उन पर अ़ज़ाब आ जाता (तुम याद रखो!) उन पर अचानक बेखबरी में अ़ज़ाब आये गा (कि यह जानते न हों गे कि कैसे आया) ५४. (देखो कैसे) तुझसे जल्दी (जल्दी) अ़ज़ाब चाहते हैं, हालाँकि जहन्नम (उन) काफ़िरों को घेरे हुये है। ५५. (यह घटना उस दिन घटे गी) जिस दिन ऊपर से और नीचे से उन को अ़ज़ाब ढाँक लेगा और अल्लाह कहे गा कि अपने कर्मों का बदला चखो[३१]। ५६. ऐ मेरे (नेक) बन्दो! जो (मेरे हुक्मों पर) ईमान लाये हो (परेशानियों में सब्र करो और अगर न हो सके तो सुनो) मेरी ज़मीन बहुत कुशादा है[३२] पस तुम (यह मुल्क छोड़ कर कहीं निकल जाओ और) ख़ास मेरी बन्दगी करो। ५७. हर एक जान, मौत का स्वाद चखने वाली है फिर तुम हमारी तरफ़ वापस आओ गे। ५८. और जिन लोगों ने ईमान ला कर नेक अ़मल किये हों गे

....

३१. यानी उस दिन उन्हें ऊपर नीचे से आग ढाँक ले गी, जैसा कि दूसरी आयत में है कि दोज़ख़ ही उन का ओढ़ना-बिछोना होगी। और एक दूसरे स्थान पर फ़रमाया: "काश कि काफ़िर उस समय को जान लें जब कि न यह आग को अपने सामने से हटा सकें गे और न पीछे से"। मालूम हुआ कि हर तरफ़ से आग उन्हें खा रही हो गी और उस पर अल्लाह की डाँट- फटकार न हो गी कि लो अब अ़ज़ाब का मज़ा चखो। यही वह जहन्नम है जिसे तुम झुठलाते थे अब जाओ जहन्नम में, तुम्हारा सब्र करना और न करना बराबर है। तुम्हारे आमाल की सज़ा अब तुम को मिले गी और भुगतनी पड़े गी। (इब्ने कसीर)

३२. मुस्नद अहमद की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तमाम शहर अल्लाह ➲

के शहर हैं और कुल बन्दे अल्लाह के गुलाम हैं, इसलिए तुम जहाँ भी भलाई पा सकते हो वहीं क़ियाम करो। चुनान्चे सहाबा के लिये जब मक्का में रहना दूभर हो गया तो हिज्रत कर के हब्शा चले गये ताकि अम्न और चैन के साथ अल्लाह के दीन को क़ायम कर सकें। वहां के दीनदार बादशाह (असहमा-नज्जाशी) ने भी उन की भरपूर सहायता की। फिर अल्लाह के हुक्म से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ तमाम सहाबा ने मदीना शरीफ़ हिजरत फ़रमायी।

इस के बाद फ़रमाया: तुम में से हर एक मर कर मेरे पास हाज़िर हो गा, तुम कहीं भी हो मौत ज़रूर तुम्हें आये गी, इस लिये पूरी उम्र तुम्हें अल्लाह की इ़बादत और इताअ़त में बितानी चाहिये, ताकि मरने के बाद अल्लाह के सामने बुराई में न फँसो। ईमानदार और नेक अ़मल करने वालों को अल्लाह अ़द्न की जन्नत में दाख़िल फ़रमाये गा, जिस के नीचे नहरें बह रही हों गी। कहीं साफ़ पानी के चश्मे, कहीं शराब की नहरें, वही पियें गे, हमेशा उस में रहें गे और वहाँ से निकाले नही जायें गे और न ही वह नेमतें समाप्त हों गी। मोमिनों के नेक आमाल पर जन्नत के बालाख़ाने उन को मुबारक हों जिन्हों ने दीन पर सब्र किया, दीन की राह में हिजरत की, घर-बार छोड़ा और जन्नत के बदले में दुनिया के ऐ़श- आराम पर लात मार दी।

इब्ने हातिम की रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जहन्नम में ऐसे बाला ख़ाने हैं जिन का अन्दर-बाहर से नज़र आता है। यह घर उन लोगों के लिये बनाये गये हैं जो गरीबों और मुहताजों को खाना खिलाते हैं, लोगों से भले तरीक़े से बात करते हैं, रोज़ा- नमाज़ की पाबन्दी करते हैं, रातों को जाग कर नमाज़ें पढ़ते हैं, अपने हर काम में अल्लाह पर भरोसा रखते हैं और दीनी और दुनियावी मामलात को अल्लाह के हवाले करते हैं।

फिर फ़रमाया कि रोज़ी किसी जगह के साथ मख़सूस नहीं है, बल्कि अल्लाह तआ़ला की तक़सीम की हुयी आ़म है और हर स्थान पर है, जो जहाँ है वहीं उस की रोज़ी पहुंच जाती है। मुहाज़िरीन की रोज़ी में अल्लाह ने हिजरत के बाद इतनी बर्कत दी कि यह दुनिया के ख़ज़ाने के मालिक बन गये और बादशाह बन गये। फिर आगे फ़रमाया कि बहुत से जानवर ऐसे हैं जो अपनी रोज़ी जमा नहीं करते और न ही हासिल करने की ताक़त रखते हैं और न ही कल के लिये इकट्ठा करते हैं। अल्लाह के ज़िम्मा उन की रोज़ी है (इब्ने कसीर)

मतलब यह हैं कि रोज़ी क़िसमत (भाग्य) से जुड़ी हुयी है। बहुत से इ़ल्म और हुनर वाले भूकों मरते हैं और बहुत से जाहिल और नाकारा मज़े उड़ाते हैं। हाँ, हासिल करने के लिये कोशिश बहरहाल ज़रूरी है और ऐसा करना तवक्कुल के ख़िलाफ़ भी नहीं है। हदीस शरीफ़ में रिवायत है कि सब से पाक और हलाल खाना वह है जो आदमी हलाल तरीक़े से अपने-अपने हाथ से कमा कर खाता है। खेती-बाड़ी, तिजारत और कारीगरी जैसे पेशे सब इसी हदीस के संदर्भ में आते हैं। (राज़)

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰي رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝ وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَاۗبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ڰ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ڮ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ

उन को हम जन्नत के बाला-ख़ानों में स्थान दें गे जिस के नीचे नहरें जारी हों गी हमेशा उन में रहें गे। बहुत अच्छा बदला है (नेक) काम करने वालों का ५९. जो (तक्लीफ़ों पर) सब्र करते हैं और अपने पर्वरदिगार ही पर भरोसा करते हैं। ६०. और कई एक जीव-धारी ऐसे हैं जो अपनी रोज़ी आप नही उठाते (न कमाते हैं, न ख़रीद कर लाते हैं) अल्लाह ही उन को

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُوْلُنَّ
اللّٰهُ ۚ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٦١﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ
يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ﴿٦٢﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً
فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۭ
قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَمَا
هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ۭ وَاِنَّ الدَّارَ
الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٤﴾

➲और तुम को रोज़ी देता है, और वह सुनने वाला जानने वाला है[३३] ६१. और अगर तू उन से पूछे कि आसमान व ज़मीन किस ने पैदा किये है? किस ने सूरज और चाँद को (तुम्हारे) काम में लगा रखा है तो (इस प्रश्न के उत्तर में तुरन्त) कहें गे कि अल्लाह ने। फिर किधर को बहकाये जाते हैं[३४]। ६२. अल्लाह ही अपने बन्दों में से जिस को चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिस को चाहता है तंग कर देता है। बेशक अल्लाह हर एक चीज़ को जानता है (और जो जिस लाइक़ होता है उस को वही देता है) ६३. अगर तू उन से पूछे कि कौन आकाश से पानी उतार कर ज़मीन को सूख जाने के बाद हरा-भरा कर देता है तो फ़ौरन कहेंगे कि अल्लाह ही करता है (ऐ नबी!) तू (यह सुन कर) कह दे कि अल्-हम्दु लिल्लाह (शिर्क और कुफ़्र के बावजूद भी तुम लोग इस बात को मानते हो) लेकिन उन में से बहुत से नहीं समझते। ६४. और (आश्चर्य की बात है कि इस पर कभी ग़ौर भी नही करते कि) यह दुनिया की ज़िन्दगी केवल चन्द दिन का खेल-कूद है और आख़िरत के घर की ज़िन्दगी ही अस्ल ज़िन्दगी है[३५]। काश कि यह लोग भी (इस को) जानें।

....

३३. शाने-नुज़ूलः- हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि इस आयत का शाने नुज़ूल यह है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक दिन मदीना के एक बाग़ में तशरीफ़ ले गये और अ़ब्दुल्लाह बिन उमर भी आप के साथ थे। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पेड़ों के नीचे की खजूरें चुन कर खायीं और इब्ने उमर से फ़रमाया कि तुम भी खाओ। सहाबी ने कहा कि मुझे तो भूक नही हैं। आप ने फ़रामाया: मुझे तो भूक लगी है इस लिये कि चार रोज़ से कुछ नहीं खाया है, हालाँकि अगर मैं दुआ़ करूँ तो ईरान और रूम के बादशाहों की सी दौलत मिल जाये। आप ने फिर फ़रमाया: ऐ अ़ब्दुल्लाह! मेरे बाद तुम ऐसे लोगों को देखो गे कि कई-कई साल का ग़ल्ला इकट्ठा कर के रखें गे, अल्लाह के राज़िक़ होने पर उन को भरोसा ही न रहे गा। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर फ़रमाते हैं कि हम अभी बाग़ ही में थे कि यह आयत नाज़िल हुयी (बैहक़ी, मुस्नद हुमैद, इब्ने हातिम)

यहाँ हदीस में अव्वल दर्जा के तवक्कुल का बयान है, वर्ना जिस प्रकार शरीअ़त में ज़रूरत पड़ने पर दवा-दारू करना मना नहीं है बल्कि जाइज़ है, इसी प्रकार सस्ते भाव अगर चीज़ मिले तो उस को ख़रीद कर जमा कर लेने में भी कोई हर्ज नहीं है। यहाँ हिजरत करने वालों को समझाया गया है कि वतन छोड़ते समय अगर आप का खाना-कपड़ा छूट गया है तो फ़िक्र करने की बात नहीं है, जहाँ जाओ गे वहाँ भी अल्लाह आप लोगों को देगा, क्योंकि अल्लाह हर किसी की ज़रूरत को जानता है और हर किसी की दुआ़ को सुनता है। (अहसनुत्तफ़ासीर)

३४. इन आयात में अल्लाह ने मुश्रिकों के ग़लत ख़यालात का रद्द और अपने माबूद होने को दलील से स्पष्ट किया है। चुनान्चे फ़रमाया कि मुश्रिक लोग अगर्चे अल्लाह के अ़लावा को पूजते हैं लेकिन चाँद, सूरज और ज़मीन आसमान को पैदा करने वाला अल्लाह ही को मानते हैं। और इस बात का भी इक़रार करते हैं कि बन्दों को रोज़ी➲

➲देने वाला, उन्हें मारने और जिलाने वाला भी वही अल्लाह है। वही किसी को मालदार, किसी को फ़क़ीर बनाता है और वही सब का ख़ालिक़ है। इसी लिये फ़रमाया कि उन में से अक्सर मुश्रिक अ़क्ल नहीं रखते।

यह मुश्रिक आख़िरत के मुन्किर थे इसी लिये यह केवल दुनिया ही को सब कुछ समझते थे। यही वजह है कि अगली आयत में दुनिया को ज़लील बताया और आख़िरत की तारीफ़ फ़रमाई है। यानी दुनिया की ज़िन्दगी फ़ना होने वाली है और आख़िरत की ज़िन्दगी अमर है और यह मुश्रिक इस बात को समझ लें तो दुनिया को आख़िरत पर तर्जीह हगिर्ज़ न दें (अहसनुत्तफ़ासीर)

३५. खेल-कूद का ज़माना बहुत संक्षिप्त होता है इसी प्रकार दुनिया की ज़िन्दगी बहुत थोड़ी है, इसीलिये खेल-कूद से तश्बीह दी गयी है

فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ ﴿٦٥﴾ لِيَكْفُرُوا بِمَا اٰتَيْنٰهُمْ ۚ وَلِيَتَمَتَّعُوا ۗ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٦٦﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ۚ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَكْفُرُونَ ﴿٦٧﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِينَ ﴿٦٨﴾ وَالَّذِينَ جٰهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۚ وَإِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٦٩﴾

६५. फिर जब यह लोग कश्तियों पर सवार होते हैं (और भंवर में फंस जाते हैं) तो अल्लाह की फ़रमाबर्दारी का इज़्हार करते हुये इख़्लास के साथ उसी को पुकारते हैं (और) जब अल्लाह उन को नजात दे कर खुश्की पर पहुंचाता है तो तुरन्त शिर्क करने लग जाते हैं[३६]। ६६. ताकि जो नेमतें हम ने उन को दी हैं उन की नाशुक्री करें और (चन्द दिन दुनिया में) मज़े उड़ायें पस वह खुद ही जान लें गे। ६७. क्या यह देखते नहीं कि हम ने हरम को अम्न वाला बनाया है[३७] (किसी की मजाल नही कि बाप के क़ातिल को भी यहाँ पर कुछ कह सके) और उन के आस-पास में लोग लूटे जाते हैं। क्या फिर (भी यह लोग बेहूदा और) बेबुनियाद चीज़ों पर ईमान लातें हैं और अल्लाह की नेमत से इन्कार करते हैं ६८. और जो कोई अल्लाह पर झूठ बाँधे, या अल्लाह की तरफ़ से आयी हुयी हक़ बात जब उस को पहुंचे तो उस को झुठलाए, क्या उस से भी कोई बड़ा ज़ालिम है? क्या ऐसे बेईमानों का जहन्नम में ठिकाना नहीं है। ६९. और जो लोग हमारी राह में चेष्टा करते हैं हम भी उन को अपनी राहें बतलाते हैं (ख़ैर की तौफ़ीक़ उन के साथ रहती है) और हम नेक लोगों के साथ होते हैं[३८]।

....

३६. मुश्रिक लोग जब दरिया के तूफ़ानों का शिकार होते तो अपने बातिल मनघड़त माबूदों को भूल जाते थे। मगर आज कल के नाम के मुसलमान ऐसे मौक़ों पर भी "ग़ौस का दामन नहीं छोड़ें गे" का नारा लगाते हैं और मज़े की बात यह कि अपने आगे किसी को मुसलमान ही नहीं समझते हैं (राज़)

३७. इस आयत में अल्लाह तआला क़ुरैशे-मक्का पर अपने एहसानात को जताते हुये फ़रमाता है कि मैं ने इन को हरम में पनाह दी है, जहाँ जो पहुंच जाये अम्न में पहुंच जाता है। उस के आस-पास लड़ाई होती रहती है, मगर यहाँ के रहने वाले अपने दिन-रात चैन से बिताते हैं। चुनान्चे सूरः क़ुरैश में भी इसी बात की तरफ़ इशारा फ़रमाया।➲

तो क्या अल्लाह की इतनी बड़ी नेमत और उस के एहसान का यही बदला है कि उस के साथ दूसरों को शरीक किया जाये? (इब्ने कसीर)

आज-कल भी अल्लाह का शुक्र है कि मक्का में हरम शरीफ़ का वही हाल है जो पहले था। सऊदी हुकूमत ने भी उस के एहतराम को बाक़ी रखा है और उस को अम्न की जगह बनाये हुये है (राज़)

३८. इस में वह बन्दे दाख़िल हैं जो किताब और सुन्नत के अनुसार अ़मल करते हैं तो अल्लाह भी उन को अपनी राहें दिखाता है, यानी उन को ऐसी बातें मालूम होती हैं जो उन के ज़िल्म में नही थीं। अबू सुलैमान दारानी फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स को किसी बात का या भले काम का इल्हाम हो, वह उस पर उस समय तक अ़मल न करे जब तक कि उस को हदीस व असर (सहाबा के अ़मल) में तलाश न कर ले। जब उसे मिल जाये तब उस पर शौक़ से अ़मल करे और अल्लाह का शुक्र अदा करे (अबी हातिम, इब्ने कसीर) इमाम हसन बसरी फ़रमाते हैं कि मुजाहिदा से मुराद नफ़्स की मुख़ालिफ़त करना है। 'नफ़्स की ख़ाहिश' हर उस ख़ाहिश का नाम है जो शरीअ़त के ख़िलाफ़ हो। फुज़ैल बिन अ़याज़ रह० फ़रमाते है: जिस ने ज़िल्म हासिल करने में मुजाहिदा किया उन को अल्लाह अ़मल करने की राह दिखाता है। इमाम सहल बिन अ़ब्दुल्लाह ने फ़रमाया: जो सुन्नत को क़ायम करने की कोशिश करता है अल्लाह उस को जन्नत की राह दिखाता है। (मवाहिब)

सूरः रूम (30)

सूरः रूम मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[1]। इस में ६० आयतें और ६ रूकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. अलिफ़ लाम्मीम्[2] २. रूम के लोग (अपने मुल्क के) क़रीब की सीमा में (अगर्चे) मग़लूब {पराजित} हो गये हैं[3] ३. (मगर याद रखो) वह अपनी इस पराजय के बाद चन्द वर्ष में जल्दी ही ग़ालिब आयें गे

....
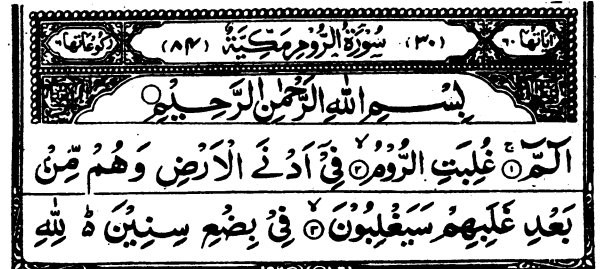
१. सूरः रूम मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी, इस में किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं। इस में ६० आयतें, ८१९ कलिमे और ३५३४ हुरूफ़ हैं। एक सहाबी रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह सूरः फ़ज्र की नमाज़ में तिलावत फ़रमाई। क़िरात दे दर्मियान आप को शुब्हा हुआ। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुये तो फ़रमाया:) हमारी नामाज़ में कुछ लोग बग़ैर पाकी के आते हैं इसी कारण शुब्हा का सबब बनते हैं, इस लिये जो भी नामाज़ में दाख़िल हो, पहले वह अच्छी तरह पाकी (वज़ू) हासिल कर लिया करे। इस हदीस को इब्ने अबी शैबा ने रिवायत किया है। (मवाहिब)

२. 'अलिफ़ लाम्मीम्' यह हुरुफ़ मुक़त्तआ़त में से है। मौलाना मर्हूम ने इस का तर्जुमा "मैं हूँ अल्लाह सब से अधिक ज्ञान वाला" किया है। लेकिन हक़ीक़त यह है कि इस जैसे हुरूफ़- मुक़त्तआ़त का मतलब और मुराद अल्लाह ही को सम्पूर्ण रूप से मालूम हैं। (राज़)

३. शाने-नुज़ूलः- रूम और फ़ारस के लोग अलग-अलग दो क़ौम की हैसिय्यत से थे। दोनों के धर्म अलग-अलग थे। रूम वाले अहले किताब ईसाई थे और फ़ारस वाले मुश्रिक, जो कि आसमानी किताबों के मुन्किर थे। युद्द में

➲ जब रूम के ईसाई पराजित हो गये तो अरब के मुश्रिक और काफ़िर निहाल हो गये, कारण यह था कि दोनों ही मुश्रिक और एक ही अक़ीदा के थे और रूमी, मुसलमानों की तरह अहले किताब थे। अरब के मुश्रिकों ने बड़े फ़ख्र से कहा था कि जिस प्रकार फ़ारस के लोग विजयी रहे, इसी प्रकार हम भी मुसलमानों पर विजय पायें गे, इन लोगों के ख़याल के रद्द में यह आयतें नाज़िल हुयीं। इत्तिफ़ाक़ ऐसा हुआ कि जिस रोज़ बद्र की लड़ाई में मुसलमानों को विजय प्राप्त हुयी उसी दिन रूमियों को फ़ारस वालों पर विजय हासिल हुयी (सनाई)

الْأَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدُ ۚ وَيَوْمَئِذٍ يَفْرَحُ
الْمُؤْمِنُونَ ﴿٤﴾ بِنَصْرِ اللَّهِ ۚ يَنْصُرُ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الرَّحِيمُ ﴿٥﴾ وَعْدَ اللَّهِ ۖ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ وَعْدَهُ وَلَٰكِنَّ
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦﴾ يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِنَ
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ عَنِ الْآخِرَةِ هُمْ غَافِلُونَ ﴿٧﴾ أَوَلَمْ
يَتَفَكَّرُوا فِي أَنْفُسِهِمْ ۗ مَا خَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَ
الْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُسَمًّى ۗ وَ
إِنَّ كَثِيرًا مِنَ النَّاسِ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ لَكَافِرُونَ ﴿٨﴾
أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً
وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوهَا وَ
جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ
وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٩﴾ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ

४+५. (क्योंकि फ़ारस वालों की) इस (जीत) से पहले और पीछे सब इख़्तियारात अल्लाह ही को हैं (वह जिस को चाहे जीत दे सकता है) मुसलमान उस रोज़ अल्लाह की सहायता से प्रसन्न हों गे[४] (क्योंकि उस रोज़ उन की भी अरब के मुश्रिकों पर फ़तह हो गी) और (अल्लाह) जिस की चाहता है सहायता करता है और वह बड़ा ग़ालिब, बड़ा मेहरबान है। ६. अल्लाह ने यह वादा किया है (कि मैं अवश्य ऐसा करूँ गा और याद रखो कि) अल्लाह कभी वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता लेकिन बहुत से लोग (इस राज़ को) नहीं जानते (और अल्लाह के वादों पर उन को भरोसा नही होता) ७. वह केवल दुनियावी ज़िन्दगी के ज़ाहिरी असबाब को जानते हैं और आख़िरत से ग़ाफ़िल हैं[४/२]। (भला यह लोग जो आख़िरत से ऐसे ग़ाफ़िल हैं)[५] ८. क्या उन्हों ने अपने दिल में कभी यह ग़ौर नही किया कि अल्लाह तआला ने आसमानों और ज़मीन को और उन के दर्मियान की सब चीज़ों को सच्चे नतीजे से पैदा किया और निश्चित वक़्त के साथ बनाया है। और बहुत से लोग अपने पर्वरदिगार की मुलाक़ात से भी इन्कारी हैं[६/१] (उन को यक़ीन नही आता कि तमाम लोग अपने पर्वरदिगार के सामने पेश हो कर अपने अच्छे बुरे कामों का बदला पायें गे) ९. क्या उन्हों ने मुल्क में कभी सैर नहीं की कि देखते उन से पहले (काफ़िर) लोगों का क्या अन्जाम हुआ वह इनसे ज़्यादा कुव्वत वाले थे और उन्हों ने ज़मीन को जोता और उन से अधिक उस को आबाद किया था (मगर आख़िरकार सब कुछ तबाह हो गया[६/२] क्योंकि उन्हों ने अल्लाह के सामने तकब्बुर किया) और उन के रसूल उन के पास खुले-खुले अहकाम ले कर आये तो (उन्हों ने किसी की न सुनी इस लिये अपने अन्जाम को पहुंचे) अल्लाह ने उन पर जुल्म न किया था मगर वह स्वयँ अपनी जानों पर जुल्म करते थे

....

४. आयत में इस बात की ओर संकेत है कि जिस दिन रूमी लोग विजय प्राप्त करें गे उसी दिन मुसलमानों को ➲

भी एक खुशी का मौक़ा हासिल हो गा। चुनान्चे बिल्कुल ऐसे ही हुआ, जिस दिन रूम वालों ने ईरान को फ़तह किया उसी दिन मुसलमानों ने बद्र की लड़ाई में कुफ़्फ़ार पर विजय प्राप्त की और इस प्रकार कुरआन की यह भविष्यवाणी बिलकुल सत्य साबित हुयी। (सलफ़िय्या)

४/२. आज तमाम यूरप, रुस और अमरीका का लग-भग यही हाल है। नित नये-नये आविष्कारों ने उन को आख़िरत से बिल्कुल ग़ाफ़िल कर दिया है। और बड़ा दुःख इस बात पर होता है कि कुछ पढ़े-लिखे मुसलमान भी उन दह्रियों का प्रभाव क़ुबूल कर के इस्लाम से दूर होते जा रहे हैं। अल्लाह हर मुसलमान को फ़ितनों से सुरक्षित रखे (राज़)

५. हज़रत इमाम बसरी रह० फ़रमाते हैं कि बहुत से ऐसे लोग भी हैं जो नमाज़-रोज़ा तो ठीक से अदा नहीं कर पाते, लेकिन दिर्हम को चुटकी में लेते ही तुरन्त उस का वज़न बता देते हैं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि दुनिया की आबादी और चमक-दमक की तो बीसों सूरतें उन का ज़ेहन घड़ लेता है, लेकिन दीन में महज़ आख़िरत से ग़ाफ़िल हैं (मुहम्मदी)

६/१. चूंकि दुनिया का ज़र्रा-ज़र्रा अल्लाह की कुदरत का निशांन है और उस की तौहीद और उस के रब होने पर दलालत करता है, इस लिये फ़रमाया गया कि दुनिया की तमाम चीज़ों पर ग़ौर करो, अल्लाह की कुदरत की निशानियों से उस को जानो-पहचानो। कभी आसमान को देखो और कभी ज़मीन पर ग़ौर करो, कभी मख़्लूक़ की पैदाईश को सोचो और समझो कि यह सारी वस्तुयें अल्लाह तआला ने बेकार नही पैदा की हैं, बल्कि उन्हें अपनी कुदरत की निशानी बनाया है। हर एक चीज़ का एक समय सुनिश्चित है, उस समय वह काम हो कर रहे गा। फिर आगे चल कर नबिय्यों की सच्चाई को इस प्रकार ज़ाहिर फ़रमाया है कि जिन लोगों ने नबिय्यों को झुठलाया और उन को मानने से इन्कार किया, देखलो उन का कैसा अन्त हुआ? और जिन लोगों ने उन्हें माना उन को दोनो संसार में किस प्रकार इ़ज़्ज़त मिली? तुम चल-फिर कर अगली उम्मतों के हालात मालूम करो, वह माल-दौलत और कुंबे-क़बीले वाली थीं, उन के पास जो कुछ और जितना-कुछ था उन का दसवाँ भाग भी तुम को प्राप्त नही। वह तुम से उम्र में भी बड़े थे और उन की जनसंख्या भी तुम से कहीं आधिक थी। तुम से कहीं ज़्यादा खेतियाँ और खलियान रखते थे, लेकिन जब इन के पास संदेष्टा अल्लाह का पैग़ाम ले कर आये तो उन लोगों ने मानने से इन्कार कर दिया और अपने बुरे कामों में ही लगे रहे, आख़िरकार अल्लाह के अ़ज़ाब ने उन को धर दबोचा, उस समय कोई उन को बचाने वाला, या उन पर से अज़ाब को हटाने वाला न था। तो जब इतनी बड़ी और शक्तिशाली क़ौमों को तबाह-बर्बाद करने में अल्लाह को देर नही लगी तो तुम कैसे उस के अ़ज़ाब से बच सकते हो? अल्लाह की ज़ात पाक है, वह अपने बन्दो पर अत्याचार नही करता, यह आज़ाब तो उन पर उन के बुरे कामों के परिणाम स्वरूप आता है। चुनान्चे एक आयत में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: "उन की बेईमानी की वजह से हम ने उन के दिलों को फेर दिया और उन्हें उन की सरकशी में हैरान छोड़ दिया"। एक दूसरे स्थान पर फ़रमाया:"उन के टेढ़े होने की वजह से हम ने उन के दिल भी टेढ़े कर दिये"। एक और आयत में फ़रमाया गया: " अल्लाह तआ़ला उन के गुनाहों के नतीजे में उन की पकड़ का इरादा कर चुका है"। (मुहम्मदी)

६/२. पत्थर, आसमान, ज़मीन, चाँद और सितारे इन की उम्रें अधिक मालूम होती हैं इस लिये जाहिलों को यह गुमान हो गया है कि यह सब नष्ट न हों गी, बल्कि हमेशा बाक़ी रहने वाली हैं। और जब हमेशा बाक़ी रहना मान लिया तो मजबूर हो कर यह भी कहना पड़ा कि उन की इब्तिदा भी नही है, फिर तो हश्र और क़ियामत का भी इन्कार कर दिया, हालाँकि हमेशा बाक़ी रहने वाली ज़ात केवल अल्लाह की है। (हक़्क़ानी-६/३८)

इतिहास की पुस्तकें गवाही दे रही हैं कि आज-कल की क़ौमों से कहीं आधिक शक्तिशाली क़ौमों को अल्लाह ने ख़ाक में मिला दिया और जब उन का कोई नाम लेने वाला नही रह गया है तो यह मक्का के मुश्रिक किस गुमान में हैं और इन के अन्दर क्या सुरख़ाब के पर लगे हैं कि इन पर अज़ाब नहीं आये गा। (राज़)

ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوا السُّوْٓآٰى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ
كَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١٠ اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ
ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝١١ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ
الْمُجْرِمُوْنَ ۝١٢ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآىِٕهِمْ شُفَعٰٓؤُا
وَكَانُوْا بِشُرَكَآىِٕهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝١٣ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ
يَوْمَىِٕذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ۝١٤ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ۝١٥ وَاَمَّا الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓىِٕكَ فِي
الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ۝١٦ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَ
حِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ۝١٧ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ۝١٨ يُخْرِجُ الْحَيَّ
مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ
الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝١٩ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ

१०. जिन लोगों ने बुरा किया था उन का अन्त भी बुरा हुआ इस लिये कि वह अल्लाह के अहकाम को झुठलाते थे और उन की हंसी उड़ाते थे। ११. अल्लाह ही मख़्लूक़ को पहली बार बनाता है फिर उस को (फ़ना की तरफ़) लौटाता है, फिर तुम उसी की तरफ़ लौटाये जाओ गे। १२. और (सुनो!) जिस रोज़ क़ियामत आये गी, मुज्रिम लोग निराश हो जायें गे १३. और उन के (बनावटी) शरीकों में से कोई उन की सिफ़ारिश करने वाला न होगा और वह लोग स्वयँ भी अपने शरीकों का इन्कार कर जायें गे। १४. और जिस रोज़ क़ियामत क़ायम हो गी उस दिन सब लोग बिखर जायें गे (मोमिन अलग और काफ़िर अलग) १५. फिर जिन लोगों ने ईमान ला कर नेक अ़मल भी किये हों गे वह तो जन्नत में ख़ातिर तवाज़ुअ़ {आव-भगत} किये जायें गे। १६. और जिन लोगों ने कुफ़्र किया हो गा और हमारे हुक्मों को और आख़िरत की मुलाक़ात को झुठलाया हो गा तो वही लोग अ़ज़ाब में पकड़े जायें गे। १७. पस तुम सुब्ह-शाम अल्लाह को पाकी से याद किया करो (क्योंकि वह समस्त दुनिया का अस्ल मालिक है) १८. और ज़मीन व आसमान की सब तारीफ़ें उसी को लाइक़ हैं (उन सब का मुस्तहिक़ वही है) और दिन के तीसरे पहर को[७] और ज़ुहर के समय उस की पाकी बयान किया करो। १९. वह बेजान से ज़िन्दा निकालता है और ज़िन्दों से मुर्दों को निकाल कर ले जाता है और भूमि को सूख जाने के बाद ताज़ा करता है। और इसी प्रकार तुम (क़ब्रों से) निकाले जाओ गे[८]। २०. और उस के निशानात में से यह भी है कि

....

७. कुरआन की आ़दत है कि वह नमाज़ को उस के जुज़ के साथ ताबीर करता है। नमाज़ में तस्बीह, तह्मीद, रूकूअ़, सज्दा और दीगर अर्कान शमिल हैं। इसी लिये कुरआन नमाज़ को कभी तस्बीह से, कभी तहमीद से, कभी सज्दा से और कभी रूकूअ़ से बयान करता है। मतलब यह है एक रूक्न को बोल कर पूरी नमाज़ मुराद लेता है। 'तुम्सू-न' (शाम करते हो) से मुराद मग़रिब और अ़िशा की नमाज़ और 'तुस्बिहू-न (सुब्ह करते हो) से फ़ज्र की नमाज़ और 'अशिय्यन्' से अ़स्र की और 'तुज़हिरून' से ज़ुहर की नमाज़ मुराद है। अल्लाह तआ़ला ने इन वक़्तों को अ़िबादत, दुआ़ और तौबा व इस्तिग़फ़ार के कुबूल करने के लिये ख़ास कर दिया है। (हक़्क़ानी)

८. मुफ़स्सिरीन का कहना है कि इस आयत में पाँचों वक़्तों की नमाज़ का बयान आ गया है। 'शाम' से मग़रिब➲

➲और इशा और सुबह से फ़ज्र की नमाज़ और अ़शिय्यः से अ़स्र और ज़ुह्र से ज़ुह्र की नामाज़ें मुराद हैं। 'अशिय्य': तीसरे पहर को कहते हैं और इस से अ़स्र ही की नमाज़ मुराद है। हज़रत मआ़ज़ बिन अन्स जुहनी रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इन आयात की फ़ज़ीलत बयान करते हुये फ़रमाया: "अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम अ़लै० को इस लिये अपना ख़लील और वफ़ादार बनाया था कि वह सुब्ह-शाम "सुब्हा-नल्लाहि ही-न-तुम्सू-न...." पढ़ा करते थे। (अहमद) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि जिस शख़्स ने सुब्ह को इन आयात को पढ़ा तो उस ने दिन का हक़ अदा कर दिया और जिस ने शाम को पढ़ा उस ने रात का हक़ अदा कर दिया। (मवाहिब)

اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ۝٢٠ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝٢١ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ۝٢٢ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاۗؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ۝٢٣ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝٢٤ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَاۗءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ۭ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ڰ مِّنَ الْاَرْضِ ڰ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ۝٢٥ وَلَهٗ مَنْ فِي

उस ने तुम को मिट्टी से पैदा किया है इस के बाद तुम अब इन्सान हो कर इधर-उधर फैले हुये हो[९] २१. और उस के निशानों में से एक यह भी है कि उस ने तुम्हारी जिन्स (लिंग) से तुम्हारे लिये बीवियाँ पैदा की हैं ताकि तुम उन के साथ उन्स (मुहब्बत) हासिल करो और उस ने तुम में प्यार और रहम पैदा किया है। बेशक इस वाक़िआ़ में फ़िक्र करने वाली क़ौम के लिये बहुत से निशान हैं[१०] २२. और उस के निशानों में से आसमानों और ज़मीन की पैदाइश है और तुम्हारी ज़बानों और रंगतो का इख़्तिलाफ़ (भी उस की सम्पूर्ण कुदरत की दलील है) बेशक इस में अ़िल्म वालों के लिये बहुत से निशान हैं।२३. और रात में तुम्हारा सो रहना और दिन में उस के फ़ज़्ल को तलाश करना भी उस की निशानियों में से है। कुछ शक नही कि उस क़ौम के लिये बहुत से निशान हैं जो (हक़ बात को) सुनते हैं। २४. और उसी की निशानियों में से है कि वह तुम को (नुक़सान के) ख़ौफ़ और (फ़ाइदे के) लालच से चमकती बिजली दिखाता है और आकाश से पानी उतारता है फिर उस के साथ ज़मीन को सूखने के बाद ताज़ा कर देता है। बेशक इस वाक़िआ़ में अ़क़्लमन्द क़ौम के लिये बहुत से निशान हैं। २५. और उसी के निशानों में से है कि आसमान और ज़मीन उस के हुक्म से क़ाइम हैं[११] फिर जब एक मर्तबा तुम को ज़मीन से (निकालने के लिये) पुकारे गा तो तुम तुरन्त निकल आओ गे (और उस के सामने जमा हो जाओ गे) २६. और जो लोग आसमानों और ज़मीन में हैं सब उस के मातहत हैं

....

९. हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह➲

➲तआला ने आदम को एक मुट्ठी मिट्टी से जो पूरी ज़मीन से थोड़ी-थोड़ी कर के ली गयी थी, पैदा फ़रमाया इसीलिये आदम की औलाद में से मिट्टी के असर से कुछ सफ़ेद, कुछ लाल और कुछ काली पैदा हुयी (और मिट्टी के नर्म और सख़्त के एतबार से) कुछ सख़्त, कुछ नर्म और कुछ दर्मियाना मिज़ाज, कुछ ख़बीस और कुछ पाकीज़ा मिज़ाज की पैदा हुयी''। (अहमद, अबू दावूद, तिर्मिज़ी ने इसे हसन और सहीह कहा है)

१०. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: '' निकाह के बाद पति और पत्नी के दर्मियान जो मुहब्बत और प्रेम की भावना पैदा हो जाती है वह निहायत ही बेमिसाल चीज़ है''। एक दूसरी हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया ''एक मोमिन मर्द के लिये दीन ईमान और तक़्वा के बाद दुनिया में सब से अधिक लाभ पहुंचाने वाली चीज़ उस की बीवी है जो नेक हो कि जब शौहर उस को कोई हुक्म दे तो तुरन्त आज्ञापालन करे और जब भी उस की तरफ़ देखे तो अपने हंसते हुये चेहरे से उस को प्रसन्न कर दे और उस के माल और इ़ज़्ज़त व प्रतिष्ठा में हर प्रकार से उस का भला चाहे और ख़ियानत न करे''। (इब्ने माजा)

११. यानी अल्लाह की निशानियों में से आसमान और ज़मीन की पैदाइश है। आसमान को बुलन्द किया और उस में चाँद, सूरज और सितारे बनाये, इसी प्रकार ज़मीन को केन्द्र के तौर पर पैदा किया। इन्सान की पैदाइश में ज़मीन की भूमिका है और उस की अ़स्ल व रूह में आसमान की। इस प्रकार आसमान का ज़मीन से और ज़मीन का आसमान से तअ़ल्लुक़ साफ़ ज़ाहिर है। आकाश को इस तौर पर पैदा फ़रमाया कि जिस्म के हवास उस से आगे नहीं बढ़ सकते। इस ज़माना में कुछ जाहिलों ने आसमान के वजूद से इन्कार किया है, इस का केवल एक ही कारण है कि उन की अक़्ल की पहुंच आसमान तक नहीं है। इसी वजह से उन का बुरा नफ़्स उन्हें उभारता रहता है कि तुम हर चीज़ से बाहर हो।

आगे की आयतों में अल्लाह तआ़ला अपनी कुदरत की निशानियाँ बयान करते हुये फ़रमाता है कि देखो तुम्हारी पैदाइश के साथ तुम्हारे रंग-रूप और तुम्हारी भाषा में भी इख़्तिलाफ़ है। चुनान्चे केवल अपने मुल्क ही में देख लें कि अलग-अलग क्षेत्र में अलग-अलग बोलियाँ बोली जाती हैं। फिर बोलने के अंदाज़ (शैली) में भी फ़र्क़ है। किसी का लहजा नर्म है और किसी का सख़्त, कोई सीधे-सादे लहजे में बात करता है और कोई ज़बान को तोड़-मरोड़ कर। यह अल्लाह पाक की इतनी अ़जीब-ग़रीब कारीगरी है कि अक़्ल हैरान-परेशान है इन तमाम बातों पर ग़ौर-फ़िक्र कर के अगर अल्लाह की ज़ात पर कोई यक़ीन न करे तो जाहिल और कम अक़्ल नही तो और क्या है? (मवाहिब)

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِیْ
یَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ یُعِیْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَیْهِ ؕ وَلَهُ
الْمَثَلُ الْاَعْلٰى فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِیْزُ
الْحَكِیْمُ ۝ ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ؕ هَلْ لَّكُمْ
مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَیْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ فِیْ مَا رَزَقْنٰكُمْ
فَاَنْتُمْ فِیْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِیْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ؕ
كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ۝ بَلِ اتَّبَعَ

और सब उसी के फ़रमाबर्दार हैं। २७. और वही है जो पहली बार मख़्लूक़ को पैदा करता है फिर उस को (फ़ना की तरफ़) लौटा देता है और वह (लौटा देना) उस पर बहुत आसान है। और आसमान और ज़मीन में उस की शान बहुत ही बुलन्द है और वह बड़ा ग़ालिब बड़ी हिक्मत वाला है। २८. उस ने तुम्हारे समझाने को तुम ही में से एक मिसाल तुम को बतलाई है (सो ग़ौर से सुनो!) तुम्हारे ग़ुलामों में से कोई है कि जो कुछ हमने तुम को दिया है उस में वह➲

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ۭ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۭ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ۭ لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ڎ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾ مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٣١﴾

तुम्हारे साथ ऐसे शरीक हो कि तुम और वह उस (निमत) में बराबर हो। उन से तुम ऐसा ख़ौफ़ करो जैसे अपने (बराबर के भाइयों से तुम) डरते हो। इसी प्रकार हम़ अक़्ल वालों के लिये दलाइल बयान करते हैं[१२] २९. लेकिन जो लोग ज़ालिम हैं वह महज़ (अपनी) जिहालत से अपनी ख़्वाहिशों के पीछे फिरते हैं, फिर जिस शख़्स को अल्लाह ही गुमराह करे उस को कौन राह दिखा सकता है। और कोई उन का मददगार न हो गा। ३०. पस तू (ऐ नबी!) एक तरफ़ हो कर अपने आप को ख़ालिस दीन की तरफ़ लगा रख। अल्लाह की बनाई हुयी (इन्सानी) फ़ितरत जिस पर अल्लाह ने लोगों को पैदा किया है (इख़्तियार कर) अल्लाह की बनावट में तबदीली ठीक नहीं[१३]। यही मज़बूत तरीक़ा है (जिस पर कोई आफ़त नही आने की) लेकिन बहुत से लोग (इस शिक्षा को) नही जानते[१४] ३१. तुम (ऐ मुसलमानो!) उसी (अल्लाह) की तरफ़ रूजूअ़ हो कर उस तालीम के पाबन्द रहना और उस से डरते रहना और नमाज़ को क़ाइम करना और उन मुश्रिकों में से कभी न बनना[१५]।

....

१२. यानी जैसे तुम को अपने भाइयों का डर होता है कि कहीं वह सारा माल न दबा लें, क्या ऐसे ही गुलाम-लौंडी का भी डर होता है? नहीं, हर्गिज़ नहीं इन तीनों बातों में से कोई बात भी ग़ुलाम-लौंडी में नहीं है। न वह माल और दौलत में तुम्हारे साझी हैं और न वह और तुम बराबर हो। उन को जो तुम उठा कर दे दो उसे वह खाते हैं। आज़ाद भाइयों की तरह उन से किसी प्रकार का डर नही होता। पस जब तुम्हारे गुलाम और लौंडी जो तुम्हारी ही तरह आदम की औलाद हैं और किसी बात में तुम से कम नही हैं, तुम्हारे बराबर न हो सके, तो अल्लाह जो सब का ख़ालिक़ और मालिक है उस के गुलाम-लौंडी उस के बराबर क्योंकर हो सकते हैं। तुम्हारे जितने माबूद हैं वह सब पर्वरदिगार के लौंडी-गुलाम हैं, उसी ने पैदा किये हैं। (वहीदी)

१३. यानी अल्लाह तआला ने समस्त मख़्लूक़ को सलीम फ़ितरत (दीने इस्लाम) पर पैदा किया। अल्लाह के इस दीन में कोई तब्दीली नही है। इमाम बुख़ारी ने यही माना बयान किये हैं कि यहाँ "पैदाइश" से मुराद दीन इस्लाम है। बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "हर बच्चा फ़ितरत पर पैदा होता है। फिर बाद में उस के माँ-बाप उसे यहूदी, नस्रानी और मजूसी बना देते हैं। जैसे बकरी का बच्चा सही सालिम पैदा होता है, लेकिन बाद में उस का कान काट कर अ़ैबदार बना देते हैं, फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यही आयत न० २९ तिलावत फ़रमाई। हज़रत मआ़ज़ बिन जबल रज़ि० से हज़रत उमर ने जब इस आयत का अर्थ पूछा तो उन्हों ने उत्तर दिया कि यह तीन चीज़ें हैं और यही नजात की बुनियाद हैं (१) 'इख़्लास' जिस का दूसरा नाम फ़ितरत है जिस पर अल्लाह ने हर मख़्लूक़ को पैदा किया है। दूसरी नमाज़ है जो दीन की अस्ल है। तीसरे इताअ़त है जो सुरक्षा और बचाव है"। हज़रत उमर फ़रमाते हैं कि उनहों ने बिल्कुल सच कहा। (इब्ने कसीर)

१४. सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की अ़िबादत करना, हर समय उस का ख़ौफ़ दिल में रखना, नमाज़ अदा करना, शिर्क

➲से दूर रहना, गुटबाज़ी और मज़हबी गरोहबन्दी से दूर रहना इसी का नाम "फ़ितरत" है और कुरआन इसी दीन की दावत देता है।

१५. यानी तुम्हें मुश्रिकों में न मिलना चाहिये, तुम्हें उन जैसा कार्य भी नहीं करना चाहिये, उन का साथ भी न देना चाहिये और जिस प्रकार उन्होंने दीन में फेर-बदल कर के कुछ को मान लिया और कुछ का इन्कार कर दिया, इस से बचना चाहिये। कुछ मुफ़स्सिरीन ने 'फ़ारक़ू' पढ़ा है जिस का अर्थ हो गा उन्हों ने अपने दीन को छोड़ दिया जैसे यहूद, नसारा, मजूसी और अ़ीसाई वग़ैरह हैं कि उन्होंने अपने अस्ल मज़हब को छोड़ कर बातिल मज़हब इख़्तियार कर लिया और उसी पर जम गये और दावा यह किया कि हम ही हक़ पर हैं। हालाँकि सच्ची बात यह है कि उन में से केवल एक ही फ़िर्क़ा हक़ पर है और बाक़ी सब नाहक़ पर हैं और वह फ़िर्क़ा " अहले सुन्नत वल् जमाअ़त" है। इसीपर सहाबा, ताबेअ़ीन और दीगर नेक लोग भी क़ाइम रहे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा गया कि उन में नजात पाने वाला फ़िर्क़ा कौन सा है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिस पर मैं और मेरे सहाबा हैं"। शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रह० फ़रमाते हैं "नजात पाने वाला फ़िर्क़ा वह है जिस को अहले हदीस कहा जाता है (ग़ुन्-यतुत्तालिबीन) अब सब ही लोग ग़ौर करें कि जिस चीज़ पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आप के सहाबा थे, वह क्या था? कुरआन और हदीस थी, न कि इमाम की तक़्लीद? (तफ़्सीर मुहम्मदी)

مِنَ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا ۖ كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٣٢﴾ وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُم مُّنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا أَذَاقَهُم مِّنْهُ رَحْمَةً إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُم بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾ لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾ أَمْ أَنزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ﴿٣٥﴾ وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ﴿٣٦﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣٧﴾ فَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٣٨﴾ وَمَا آتَيْتُم مِّن رِّبًا لِّيَرْبُوَ فِي أَمْوَالِ

३२. जिन्हों ने अपने दीन में फूट डाली और गरोह-गरोह हो गये और हर फ़रीक़ के पास जो कुछ है वह उसी पर प्रसन्न है[१६]। ३३. और जब उन लोगों को किसी प्रकार की तक्लीफ़ पहुंचती है तो अपने रब की तरफ़ झुक कर पुकारते हैं फिर जब वह (पर्वरदिगार महज़ अपने फ़ज़्ल से) उन को अपनी रहमत से कुछ हिस्सा दे देता है तो तुरन्त उन में से एक गरोह अपने पर्वरदिगार के साथ शरीक ठहराता है। ३४. ताकि हमारे दिये की नाशुक्री करें। पस (लोगो! चन्द दिन और) गुज़ारा कर लो आइन्दा ज़माना में (उस की हक़ीक़त) जान लोगे ३५. क्या हम ने उन पर कोई सनद उतारी है कि उस से उन के शिर्क का सबूत मिलता है ३६. (और उन की कैफ़ियत तो यह है कि) उन लोगों को जब हम रहमत का मज़ा चखाते हैं तो उस से प्रसन्न हो जाते हैं और अगर उन की बदआमाली की वजह से उन को कोई कष्ट पहुंचता है तो तुरन्त निराश हो जाते हैं (जिस की वजह से आख़िर कार ईमान ख़त्म हो जाता है) ३७. क्या उन्हों ने कभी इस पर ग़ौर नहीं किया कि अल्लाह तआ़ला ही➲

जिस के लिये चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है (और जिस के लिये चाहता है) तंग कर देता है बेशक इस में ईमान लाने वाली क़ौम के लिये बहुत से निशान हैं। ३८. पस तुम अपने क़राबत दारों {निकट सबन्धियों} मिस्कीनों और यात्रियों को (उनका) हक़ दिया करो। जो लोग अल्लाह की खुश्नूदी चाहते हैं उन के लिये यह तरीक़ा बहुत अच्छा है और यही लोग (आख़िरत में) कामियाब हों गे। ३९. और जो माल[१७] तुम (लोगों को इस निय्यत से क़र्ज़ा के तौर पर) दोगे कि लोगों के माल में बढ़े (और बढ़ कर तुम्हारे पास आये)

....

१६. इस आयत में मुसलमानों को मज़हबी गरोहबन्दी से सख़्त मना किया गया है। चुनान्चे एक दूसरे स्थान पर इस आयत से भी अधिक सख़्ती से मना करते हुये फ़रमाया: "जो लोग दीन में फूट डाल कर गरोह-गरोह बन गये हैं, ऐ नबी! तेरा उन से कोई संबन्ध नहीं। उन का काम अल्लाह के हवाले है वही उन के आमाल से उन को अवगत करा दें गा" (पारः ८ रूकूअ७) इस के अलावा और भी बहुत सी आयतें हैं जिन के बयान करने की इस आयत की तफ़्सीर में गुन्जाइश नहीं। अहादीस में भी इस गरोहबन्दी से सख़्ती से मिनाही आयी है। अगर ग़ौर किया जाये तो मालूम हो जाये गा कि शरीअ़त ने जितनी अधिक नाराज़गी गुटबन्दी पर दिखाई है किसी दुसरी चीज़ पर नहीं। लेकिन सब से महत्वपूर्ण बात यह है कि यह जानना आवश्यक है कि इख़्तिलाफ़ कहते किसे हैं? और गुटबन्दी क्या है? आज कल इत्तिफ़ाक़ की परिभाषा यह बयान की जाती है कि एक आ़लिम जो फ़तवा दे दे उस को पूरी दुनिया के मुसलमानों को मानना अनिवार्य है और उस में किसी भी प्रकार का इख़्तिलाफ़ जायज़ नहीं। लेकिन यह परिभाषा बिल्कुल ग़लत है। इस समयकाल को तो जाने दें सहाबा और ताबेअ़ीन के समय तक में भी ऐसा अ़मल नहीं रहा। उस ज़माना में एक सहाबी की तहक़ीक़ कुछ और थी, दूसरे सहाबी की कुछ और। जो इख़्तिलाफ़ सहाबा के दर्मियान था, तक़रीबन उन्ही मसाइल में आज भी इख़्तिलाफ़ बहाल है, बल्कि थोड़ा बहुत इस इख़्तिलाफ़ को बढ़ावा ही मिला है। इस्लामी इतिहास का अगर मुताला किया जाये तो स्पष्ट रूप से मालूम हो गा कि सहाबा के दर्मियान भी इस प्रकार का इख़्तिलाफ़ था, लेकिन इस के बावजूद भी उन का इख़्तिलाफ़ गुटबन्दी और गरोहबन्दी तक नही पहुचा था, बल्कि वह लोग इख़्तिलाफ़ के बावजूद भी एक ही गरोह और एक ही क़ौम रहे। सहाबा के नज़दीक एक सहाबी का ग़लत फ़तवा ग़लत ही माना जाता था, चाहे उस का कहने वाला बड़े-से बड़ा सहाबी ही क्यों न हो।

आज-कल जो इख़्तिलाफ़ देखने में आरहा है इस का उदाहरण बिल्कुल ऐसे ही है कि किसी खान्दान के एक बड़े-बूढ़े ने अपना एक विशाल भवन छोड़ा और मरने से पूर्व यह हुक्म दे दिया कि मेरे मरने के बाद सब को हर हाल में इसी एक ही मकान में रहना है, मकान का एक ही नाम हो गा। लेकिन उस के वारिसों ने उस की वसिय्यत पर अ़मल न किया, और उस मकान को कई हिस्सों में बाँट लिया और अपने-अपने हिस्सों का अलग-अलग नाम रख लिया। इन लोगों की इस कार्यवाही का नतीजा यह निकला कि मकान की अस्ली हालत ही बदल गयी। अगर किसी एक घर के लोगों को तक्लीफ़ पहुंचती तो दूसरे घर वालों को कुछ ख़बर ही न होती, और अगर ख़बर भी होती तो यह मश्हूर कर देते कि यह घराना इसी लायक़ है। इस प्रकार के इख़्तिलाफ़ से अक़लमन्द लोग भली भाँति अनुमान लगा सकते हैं कि उस ख़ान्दान की क़द्र और इ़ज़्ज़त दुनिया की नज़ारों में क्या रहे गी।

अब आप ऊपर की मिसाल को सामने रखते हुये दीन इस्लाम के मकान की तरफ़ आइये। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम यह हुक्म दे कर इस मकान (दीन इस्लाम) को छोड़ गये कि ख़बरदार! मेरे चले जाने के बाद आपस में सर फुटव्वल न करना, एक दूसरे से अलग न होना। हमारे पहले के बुज़ुर्गों ने तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के आदेश का पालन किया। अगर किसी मसले में इख़्तिलाफ़ होता तो वह इसे एक घर के आपसी इख़्तिलाफ़

की तरह समझते और परस्पर मिल-जुल कर रहते थे।

इख़्तिलाफ़ की वजह से अलग-अलग मस्लों में अलग-अलग इमामों की बात मानते, लेकिन इस इख़्तिलाफ़ के बावजूद भी सब एक ही मसलक और मज़हब पर रहे। जिन लोगों ने इमाम मुहम्मद रह० की पुस्तक "मुअत्ता" में हज्ज का बाब देखा होगा उन को मालूम हो गया होगा कि उन इमामों का तरीक़ा क्या था? एक स्थान पर इमाम अबू हनीफ़ा रह० के फ़तवे पर अ़मल हो रहा है तो दूसरे मस्अले में इमाम शाफ़ई़ के फ़तवे पर। एक मस्अले में इमाम मालिक के फ़तवे से इत्तिफ़ाक़ है तो दूसरे मस्अले में उन के फ़तवे से इख़्तिलाफ़ है।

उदाहरण के तौर पर तफ़्सीर की बहुत ही प्रसिद्ध पुस्तक "जलालैन" में "सला-स-त अय्यामिन् फ़िल् हज्जि" (सूर: बक़र: आय न० १९६) की तफ़्सीर करते हुये मुफ़स्सिर ने इमाम शाफ़ई़ के मसलक को अपनाया है, मगर तयम्मुम वाली आयत में इमाम अबू हनीफ़ा रह० के मसलक को तर्जीह दी है, चुनान्चे लिखतें है कि "दो मर्तबा मिट्टी पर हाथ मार कर कुहनियों तक मले"। हालाँकि यहाँ पर इमाम शाफ़ई़ रह० का मज़हब यह है कि एक बार ज़मीन पर हाथ मार कर मलना ही काफ़ी है। आप यहाँ पर देख रहे हैं एक हनफ़ी मुफ़स्सिर हज्ज वाली आयत में इमाम शाफ़ई़ के मसलक को अपनाते हुये कुछ भी शर्म नहीं महसूस कर रहा है। इस हनफ़ी मुफ़स्सिर (जलालुद्दीन सुयूती रह०) ने एक ही स्थान पर नहीं, बल्कि बहुत से स्थानों पर इमाम शाफ़ई़ के मसलक को तर्जीह दी है। यही कारण है कि बाद के लोगों ने इस मुफ़स्सिर को शाफ़ई़ मज़हब का मुक़ल्लिद कह दिया है। हालाँकि ऐसी बात नही है, वह हनफ़ी मज़हब ही के मुक़ल्लिद हैं, मगर तहक़ीक़ ने उन को मजबूर कर दिया है इसलिये उन्हों ने हनफ़ी मज़हब की कोई पर्वा न करते हुये इमाम शाफ़ई़ के मज़हब की ताईद की है। हक़ीक़त यह है कि उस ज़माना में तमाम ही मुक़ल्लिदों का यही हाल था कि वह मज़हब की पर्वा न करते हुये जिस को हक़ समझते थे उसी को अपनाते थे।

लेकिन चौथी शताब्दी के आते ही ज़िद्दी और अक्खड़ उलमा की कसरत हो गयी, उन्हों ने मज़हबी गरोह बन्दी और फ़िर्क़ा परस्ती को हवा देना आरंभ कर दिया और दीन इस्लाम के मकान को अलग-अलग कोठरियों में बांट दिया। चुनान्चे हज़रत शाह वलिय्युल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "अल् इन्साफ़" में लिखते है "पहली और दूसरी शताब्दी में लोग किसी एक मज़हब के मुक़ल्लिद न थे, बल्कि जाहिल लोग आ़लिमों से पूछते और उलमा कुरआन व हदीस से मालूम कर के उन को बतलाते थे" (इन्साफ़, पृष्ठ५७) शाह साहब अपनी दूसरी किताब में लिखते हैं "चौथी शतब्दी से पूर्व के लोग किसी एक इमाम के मुक़ल्लिद न थे, बल्कि सब के सब कुरआन और हदीस से मसले मालूम करते थे (हुज्जतुल्लाह-१/१५२) फ़िक़ह की सुप्रसिद्ध किताब "हिदाया" के संपादक लिखते है "पहले ज़माना के आ़म लोग (कम पढ़े लोग) कभी किसी आ़लिम से मस्अला पूछते थे तो कभी किसी आ़लिम से। सिर्फ़ एक ही से नहीं पूछते थे"। यह उस ज़माना का हाल था जिसे "ख़ैरुल् कुरून" (बिहतरीन ज़माना) काहा जाता है। हालाँकि उस ज़माना में सियासी उतार-चढ़ाव ज़ोरों पर था और मामला क़त्ल व ख़ून तक पहुंच चुका था, मगर इस सियासी गरोहबन्दी के बावजूद मज़हब और तक़लीद की गरोहबन्दी न थी और कोई यह पूछने वाला न था कि तुम कौन हो? उत्तर मिलता कि "मुसलमान", लेकिन तुरन्त ही प्रश्न होता कि कौन सा मुसलमान? हनफ़ी मज़हब का मुसलमान या किस मज़हब का मुसलमान। गोया इन के नज़दीक केवल मुसलमान होना ही काफ़ी नही है और न केवल इस्लाम कोई मज़हब है। फिर भला मज़हब किस बला का नाम है? एक फ़रीक़ के सामने अगर यह ज़ाहिर किया जाये कि यह मसला तो कुरआन व हदीस का है तो उस को झूठा समझें गे और उस पर अ़मल करने वाले की तौहीन करें गे। मगर जब उन से यूँ कहा जाये कि मैं तो फ़लाँ इमाम और मुजतहिद का मुक़ल्लिद हूँ और यह मस्अला उन्ही का मज़हब है, तो बजाये नाराज़ होने के खुले शब्दों में कहा जाता है कि फ़लाँ इमाम और मुजतहिद के मुक़ल्लिद हो कर रहो तो उस पर अ़मल करो, वर्ना नहीं। आप ग़ौर फ़रमायें कि अगर वह कुछ कुरआन व हदीस के मुख़ालिफ़ होने के नाते गलत था तो उस पर कैसे अ़मल जायज़ था? और वह उस पर अ़मल कर के अल्लाह के हाँ कैसे बच सकता है? इसी का नाम तफ़रीक़ और इख़्तिलाफ़ है। गोया कि एक बड़ी हुकूमत को उस के शासकों ने कई छोटी-छोटी रियासतों में तक़्सीम कर के उन में अलग-अलग क़ानून लागू कर लिये हैं।

➲यह हाल तो केवल सुन्नी मुसलमानों का है, अभी तो शीआ लोगों का इख़्तिलाफ़ और उन की गुटबाज़ी का बयान बाक़ी ही है।

मुख़्तसर यह कि राय और इजातिहाद में इख़्तिलाफ़ और चीज़ है और तफ़रीक़ और चीज़ है। 'तफ़रीक़' नाम है फ़िर्क़ाबन्दी और गरोहबन्दी का और 'राय में इख़्तिलाफ़' नाम है तहक़ीक़ में इख़्तिलाफ़ का। हम सब को तो यह चाहिये था कि पक्के-सच्चे मुसलमान होते और हमारा मज़हब इस्लाम होता, किसी प्रकार की मज़हबी फ़िर्क़ाबन्दी हम में न होती, राय के इख़्तिलाफ़ को अपनी सीमा के अन्दर ही तक महदूद रखते, जैसा पहले लोगों में दस्तूर था। अल्लाह तआला उन सब पर रहम फ़रमाये जो मज़हबी तफ़रीक़, गुटबन्दी और गरोहबन्दी को मिटाने की कोशिश में लगे हैं, आमीन! (तफ़्सीर सनाई)

१७. 'रिबा' का अर्थ है वह माल जिस में बढ़ोतरी हो यानि सूद। (सनाई)

النَّاسِ فَلَا يَرْبُوا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ
تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَللّٰهُ
الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ۭ
هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ
شَيْءٍ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٠﴾ ظَهَرَ الْفَسَادُ
فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ
بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤١﴾ قُلْ سِيْرُوْا
فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلُ ۭ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ﴿٤٢﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ
لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ
مِنَ اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ ﴿٤٣﴾ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ
كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ﴿٤٤﴾
لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ۭ

तो वह अल्लाह के नज़दीक नहीं बढ़ता (यानी यह मत समझो कि उस का तुम को कोई नेक बदला मिले गा) और तुम ख़ैरात (के तौर पर जो कुछ) दो गे जिस के साथ तुम अल्लाह की खुश्नूदी चाहने वाले हो तो ऐसे लोग ही (दुनिया व आख़िरत में माल को) बढ़ाने वाले हैं। ४०. अल्लाह वही है जिस ने तुम को पैदा किया फिर तुम को रोज़ी दी फिर (एक मुद्दत तक पाल-पोस कर) तुम को मार दे गा फिर तुम को जीवित करे गा। भला तुम्हारे (बनावटी) माबूदों में से भी कोई है जो उन (कामों) में से कुछ भी कर सके? वह पाक है और उन के शिर्क से बुलन्द है (उस के दामन तक उन के शिर्क का गुबार भी नहीं पहुंच सकता) ४१. खुश्की और तरी में इन्सानों की बदआमाली से फ़साद ज़ाहिर होता है (कि लोगों के बुरे काम अपनी हद से आगे निकल जाते हैं फिर अल्लाह की तरफ़ से सज़ा का कोड़ा उन को लगाया जाता है) ताकि उन के आमाल का किसी क़द्र बदला हम उन को चखा दें ताकि वह रुजूअ़ (तौबा) करें। ४२. तू कह! मुल्क में सैर करो फिर देखो कि पिछले लोगों का अन्जाम क्या हुआ था जिन में से बहुत से मुश्रिक थे (और शिर्क पर अड़ कर संदेष्टाओं का मुक़ाबला करते थे) ४३. पस तुम अपने आप को मज़बूत दीन पर क़ाइम रखो इस से पूर्व कि वह दिन आये जिस को अल्लाह की तरफ़ से हटने का हुक्म न हो गा। उस दिन सब लोग अलग-अलग➲

➲हो जायें गे। ४४. (उस दिन) जिस किसी ने कुफ़्र किया होगा उसके कुफ़्र का वबाल उसी (की गर्दन) पर हो गा और जिस ने नेक अ़मल किये होंगे (वह अपने कर्मों का फल पायें गे क्योंकि) वह अपने ही लिये तय्यारी करते हैं ४५. अल्लाह ईमानदारों और नेक अ़मल करने वालों को महज़ अपने फ़ज़्ल से (अच्छा)बदला देगा

إِنَّهُۥ لَا يُحِبُّ ٱلْكَٰفِرِينَ ۝ وَمِنْ ءَايَٰتِهِۦٓ أَن يُرْسِلَ
ٱلرِّيَاحَ مُبَشِّرَٰتٍ وَلِيُذِيقَكُم مِّن رَّحْمَتِهِۦ وَلِتَجْرِىَ
ٱلْفُلْكُ بِأَمْرِهِۦ وَلِتَبْتَغُوا۟ مِن فَضْلِهِۦ وَلَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ
فَجَآءُوهُم بِٱلْبَيِّنَٰتِ فَٱنتَقَمْنَا مِنَ ٱلَّذِينَ أَجْرَمُوا۟ ۖ
وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۝ ٱللَّهُ ٱلَّذِى
يُرْسِلُ ٱلرِّيَٰحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُۥ فِى ٱلسَّمَآءِ كَيْفَ
يَشَآءُ وَيَجْعَلُهُۥ كِسَفًا فَتَرَى ٱلْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ
خِلَٰلِهِۦ ۖ فَإِذَآ أَصَابَ بِهِۦ مَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦٓ
إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۝ وَإِن كَانُوا۟ مِن قَبْلِ
أَن يُنَزَّلَ عَلَيْهِم مِّن قَبْلِهِۦ لَمُبْلِسِينَ ۝ فَٱنظُرْ
إِلَىٰٓ ءَاثَٰرِ رَحْمَتِ ٱللَّهِ كَيْفَ يُحْىِ ٱلْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَآ ۚ
إِنَّ ذَٰلِكَ لَمُحْىِ ٱلْمَوْتَىٰ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ۝

(और यह तो उस का क़ानून है कि) वह काफ़िरों से मुहब्बत नहीं रखता। ४६. और उसी के निशानों में से यह है कि (वर्षा से पूर्व ठंडी) हवाओं को भेजता है ताकि खुश्ख़बरी पहुंचाये और तुम को अपनी रहमत चखा दे और (समुद्रों में) कश्तियाँ उस के हुक्म से चलें और ताकि तुम उस का फ़ज़्ल (समुद्री तिजारत के ज़रीआ़) तलाश करो और ताकि शुक्र करो ४७. और हम ने तुम से पहले कई रसूल उन की कौमों की तरफ़ भेजे फिर वह उन के पास खुली-खुली दलीलें लाये। पस हम ने उन मुजरिमों से बदला लिया। और मोमिनों की मदद करना हम पर अनिवार्य है। ४८. अल्लाह वही है जो हवाओं को भेजता है फिर वह बादलों को उठा लाती हैं फिर अल्लाह उन को आकाश में जिस प्रकार चाहता है फ़ैला देता है और उन को टुकड़े-टुकड़े भी कर देता है, फिर तुम देखते हो कि (उन दो हालतों में) उन के बीच में से वर्षा निकलती है फिर जब उस वर्षा को अपने बन्दों में से जिन पर चाहता है पहुंचाता है तो तुरन्त वह प्रसन्न हो जाते हैं ४९. हालाँकि उस के उतरने से पहले वही निराश होते हैं (मगर जब वर्षा हो जाती है तो प्रसन्न हो जाते हैं) ५०. पस तुम अल्लाह की रहमत के निशान देखो कि किस प्रकार ज़मीन को खुश्क होने के बाद ताज़ा कर देता है। बेशक यह अल्लाह मुर्दों को भी ज़िन्दा कर देगा, और वह हर वस्तु पर कुदरत रखने वाला है

وَلَئِنْ أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوا۟ مِنۢ بَعْدِهِۦ
يَكْفُرُونَ ۝ فَإِنَّكَ لَا تُسْمِعُ ٱلْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ ٱلصُّمَّ
ٱلدُّعَآءَ إِذَا وَلَّوْا۟ مُدْبِرِينَ ۝ وَمَآ أَنتَ بِهَٰدِ ٱلْعُمْىِ

५१. और अगर गर्म लू उन पर भेज दें फिर यह लोग उस (हवा के साथ अपने खेतों को) पीला देखें तो उस के बाद नाशुक्री करने लग जायें गे। ५२. पस तू मुर्दों को नही सुना सकता➲

عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ۭ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّشَيْبَةً ۭ يَخْلُقُ مَا يَشَاۗءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ۝ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ڏ مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ ۭ كَذٰلِكَ كَانُوْا يُؤْفَكُوْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْاِيْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ ۡ فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ فَيَوْمَىِٕذٍ لَّا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۝

और न बहरों को आवाज़ सुना सकता है जब वह पीठ फेर कर भागे जा रहे हों[१८]। ५३ और न तू अन्धों को गुमाराही से सीधी राह बतला सकता है। तू तो उन्हीं लोगों को सुना सकता है जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं तो वह ताबेदार भी हो जाते हैं ५४. अल्लाह वही है जिस ने तुम को कमज़ोर हालत में पैदा किया फिर ज़ोफ़ (कमज़ोरी) के बाद तुम को कुव्वत दी (ऐसी कि जवानी की उम्र में तुम उस ताक़त पर पहुंचते हो) फिर बाद कुव्वत के तुम में कमज़ोरी और बुढ़ापा पैदा कर देता है[१९] (ऐसा कि कमर पर हाथ रख कर उठते हो) अल्लाह जो चाहता है पैदा कर देता है और वह जानने वाला बड़ी कुदरत वाला है ५५. और जिस रोज़ क़ियामत क़ायम हो गी तो मुजरिम लोग (उस का ग़ज़ब देख कर बरज़ख़ का अ़ज़ाब भूल जायें गे और) क़समें खायें गे कि (क़ब्रों में) एक घड़ी से अधिक नही ठहरे। इसी प्रकार (यह लोग दुनिया में सीधी राह से) बहके हुये थे ५६. जिन लोगों को अ़िल्म व ईमान दिया गया होगा वह कहें गे कि अल्लाह की किताब के अनुसार तुम उठने के दिन यानी क़ियामत के रोज़ तक (बरज़ख़ में) ठहरे रहे, लो अब उठने का दिन (आ गया) है लेकिन तुम नही जानते थे। ५७. पस उस रोज़ ज़ालिमों की माज़रत (माफ़ी माँगना) उन को कुछ लाभ न देगी और न उन को (दुनिया की तरफ़)वापस होने की अनुमति दी जाये गी[२०]

....

१८. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जितना अधिक तौहीद की तब्लीग़ करते थे, कुफ़्फ़ार और मुशरिकीन उतना ही सुन कर बहरे बनते जाते थे। इसीलिये अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: "यह लोग मुर्दे और बहरे हैं"। और इस प्रकार कि उन का मुंह भी बात करने वाले की तरफ़ नहीं, बल्कि उस की तरफ़ पीठ होती है। इस आयत और इस प्रकार की दूसरी आयतों से मालूम होता है कि मुर्दे कुछ भी नही सुनते। आप कह सकते हैं कि बद्र के मैदान में मुश्रिक मुर्दे सुनते थे, जभी तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन को मुख़ातब किया था? इस का उत्तर यह है कि उन मुर्दों में अल्लाह ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बात सुनने की शक्ति पैदा कर दी थी, इसलिये उन्हों ने सुना था। क़ब्रों में मुन्किर नकीर के प्रश्नों का उत्तर देने के लिये भी अल्लाह पाक मुर्दे के बदन में रूह को लौटा देता है इसलिये वह उस समय सुनते हैं। बहरहाल इस बात पर तमाम सहाबा और ताबेअ़ीन का इत्तिफ़ाक़ है कि मुर्दे नही सुनते। इमाम अबू हनीफ़ा रह० का मज़हब भी यही है (फ़तावा नज़ीरिया-१/४३४) इन तफ़्सीलात के बावजूद भी बहुत से जाहिल लोगों ने इस मस्अले पर बिला वजह इख़्तिलाफ़ ख़ड़ा कर दिया है और इस मस्अले को इख़्तिलाफ़ी बना दिया है (अहसनुत्तफ़ासीर)

१९. इस आयत में अल्लाह पाक ने इन्सान की पैदाइश और उस की उम्र में कमी-ज्यादती और घटाव-बढ़ाव का

ज़िक्र फ़रमाया है कि सर्वप्रथम उस को मिट्टी से पैदा किया फिर उस की नस्ल को पानी (यानि वीर्य) से चलाया फिर उस पानी को जमा हुआ रक्त, फिर उस रक्त को गोश्त की बोटी बनाया, फिर गोश्त में हड्डियाँ पैदा कीं, इस के बाद उस बदन में रूह डाली गयी फिर एक निश्चित समय पर माँ के पेट से निकाला। जब माँ के पेट से पैदा हुआ तो कमज़ोर था लेकिन धीरे-धीरे ताक़त आती गयी और वह उठ कर बैठ गया, फिर खड़ा हो कर चलने लगा। आहिस्ता-आहिस्ता बच्चे से जवान हो गया फिर जवानी के बाद कमज़ोर होने लगा, धीरे-धीरे बाल सफ़ेद होने लगे, शक्ति घटने लगी, हिम्मत पस्त होने लगी।

अल्लाह तआ़ला ने इस प्रकार की आयतों में क़ियामत का इन्कार करने वालों को बतला दिया है कि जिस ज़ात ने यह सब कुछ किया है उस के लिये क़ब्रों से दोबारा ज़िन्दा करना कुछ मुश्किल नही है। इसलिये याद रखो! मरने के पश्चात पुनः क़ब्रों से जीवित हो कर हश्र के मैदान में उपस्तिथ होना है और अपने कर्मों का फल भोगते हुये जन्नत या जहन्नम में जाना है। (अहसनुत्तफ़ासीर)

२०. अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में इस बात की तरफ़ इशारा किया है कि यह ग़ाफ़िल लोग जिन्हों ने दुनिया ही को सब कुछ समझ रखा है, जब क़ियामत के दिन अज़ाब को देखें गे तो क़समें खा-खा कर कहें गे कि इस लाखों वर्ष के अ़ज़ाब के हिसाब से गोया हम दुनिया में केवल घड़ी-दो घड़ी ही रहे है। आगे अल्लाह ने यह फ़रमाया कि आज उन का उज़्र पेश करना कुछ भी फ़ाइदा न पहुंचाये गा। यह इसलिये कहा गया कि ग़ाफ़िल लोग यह कह सकते हैं कि जब दुनिया में घड़ी दो घड़ी ही रहे हैं तो इस का मतलब यह हुआ कि दुनिया में हमें नसीहत को सुनने का बहुत ही कम मौक़ा मिला इसी वास्ते इ़ल्म वाले यानी फ़रिश्ते, अंबिया ओर आ़म मुसलमान क़समें खा कर उन के उज़्र का जवाब दें गे कि अल्लाह के वादे के मुताबिक़ जिस क़दर हम दुनिया में रहे, उसी क़दर तुम भी तो रहे। मगर तुम अपनी नादानी और शैतानी से नेक अ़मल से दूर रहे इसलिये आज उज़्र पेश करने से कोई फ़ाइदा नही (अहसनुत्तफ़ासीर)

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ
وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ
اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ۝٥٨ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى
قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٥٩ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ
اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ۝٦٠

५८. और हम ने लोगों के लिये इस कुरआन में हर प्रकार की मिसालें बतलायीं (मगर जो लोग ज़िद्दी हैं उन में ज़रा भी तबदीली न आयी) और अगर तू कोई निशान (चमत्कार) दिखा दे तो (न मानने वाले) काफ़िर (झट से) कहते हैं कि तुम (मुसलमान) तो पक्के धोके बाज़ हो[२१] ५९. इसी प्रकार अल्लाह जाहिलों (यानी हक़ की मुख़ालिफ़त करने वालों) के दिलों पर मुह्र लगा दिया करता है। ६०. पस तू (उन की तक्लीफ़ पर) सब्र किया कर, अल्लाह का वादा बिला शुब्हा हक़ है और बेईमान लोग तुझ को ओछा न बना दें

....

२१. यानी हक़ को हम ने इस कुरआन में खूब अच्छी तरह ज़ाहिर कर दिया है और उदाहरण भी देकर समझा दिया है, ताकि लोगों पर हक़ खुल जाये और पूरी तरह उस की ताबेदारी में लग जायें। लेकिन यह काफ़िर सुनते ही झट कह दें गे कि यह तो जादू और झूठ हैं। आगे फ़रमाया गया कि बेइ़ल्म लोगों के दिलों पर इस तरह मुह्र लग जाती है। ऐ नबी! आप सब्र कीजिये और उन की मुख़ालिफ़त को सहते और सुनते जाइये अल्लाह का वादा सच्चा है वह एक दिन ज़रूर आप को ग़ालिब करे गा। तुम हक़ पर जमे रहो और ज़रा भी डगमगाने की ज़रूरत नही, इसी में

हिदायत और कामियाबी है (इब्ने कसीर)

सूरः लुक़्मान (31)

سُوْرَةُ لُقْمٰنَ مَكِّيَّةٌ (٣١) (٥٧)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ۚ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ۙ ﴿٢﴾ هُدًى وَّ
رَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ۙ ﴿٣﴾ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ
وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ؕ ﴿٤﴾
اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِىْ لَهْوَ
الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ ۗ

सूरः लुक़्मान मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ३४ आयतें और चार रुकूअ़ हैं[१]।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है।

१. अलिफ़ लाम्मीम्[२] २. यह आयतें हिक्मत वाली किताब की हैं ३. जो (लोगों के लिये) हिदायत और नेकोकारों के लिये रहमत है ४. (नेकोकार वह लोग हैं) जो नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात देते हैं और आख़िरत पर दिल से यक़ीन रखते हैं ५. यही लोग अपने पर्वरदिगार की हिदायत पर हैं और यही लोग (आख़िरत में) कामियाब होने वाले हैं ६. और (उन के मुक़ाबला में) बाज़ लोग वाहियात खुराफ़ात बातें ख़रीदते हैं (और लोगों को सुनाते हैं) ताकि महज़ जिहालत के साथ अल्लाह की राह से गुमराह करें

....

१. इस सूरः में कुल ३४ आयतें, ५४८ कलिमे और २११० हुरूफ़ हैं। हज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़ि० से रिवायत है कि हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ते तो सूरः लुक़्मान, सूरः ज़ारियात की कुछ-कुछ आयतें यके बाद दीगरे सुन लेते थे (नसई, इब्ने माजा) इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि अगर इमाम सिर्री नमाज़ में एक-आध आयतें इतनी बुलंद आवाज़ से पढ़े कि मुक़्तदी सुन लें, तो इस में कोई हरज की बात नही है, विशेष कर जब कि शिक्षा देना उद्देश्य हो। और यह भी मालूम हुआ कि जुह्र की नमाज़ मे इन सूरतों को भी-कभी पढ़ लेना सुन्नत है।

'अलिफ़ लाम्मीम्' के बारे में अ़ल्लामा सुयूती रह० लिखते हैं कि इस के माना व मतलब अल्लाह ही बेहतर तौर पर जानता है। 'नमाज़ क़ाइम करना' इस में सही समय पर अदा करना, सुन्नत के मुताबिक़ अदा करना, हर रूक्न को ठीक-ठीक तौर पर इतमिनान और यकसूई के साथ बिना किसी रिया और दिखावे के अदा करना, सब शामिल है। अगर यह तमाम शर्ते पूरे तौर पर पाई जायें गी तो कहा जाये गा कि उस ने नमाज़ क़ाइम की। एक रिवायत में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा गया कि सब से अफ़्ज़ल अ़मल कौन सा है? आप ने फ़रमाया: नमाज़ को ठीक उस के समय पर अदा करना। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० के बारे में आता है कि उन्हों ने एक शख़्स को देखा कि नमाज़ में जल्दबाज़ी कर रहा है और रूकूअ़, सज्दे और क़ियाम वग़ैरह की तरफ़ कोई तवज्जुह नही दे रहा है, तो आप ने फ़रमाया: अगर तू इसी हालत में मर जाता तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बतलाये हुये तरीक़े की मुख़ालिफ़त करता हुआ मरता, फिर उस को नमाज़ को सहीह तरीके से अदा करने का तरीक़ा बतलाया

➲(बुखारी,मुस्लिम) 'ज़कात' के बारे में कुछ मुफ़स्सिरीन ने फ़र्ज़ ज़कात ही मुराद लिया है। इस का मतलब यह हुआ कि नमाज़ से बदनी पाकी और ज़कात से माली पाकी हासिल होती है। लेकिन कुछ उलमा का कहना है कि यहाँ पर ज़कात के लफ़्ज़ी माना "पाकी" मुराद है। तो फिर 'ज़कात' शब्द में रोज़ा और हज्ज सब शामिल हैं (इस लिये कि इन से पाकी हासिल होती है) मतलब यह है कि इन सब कामों में जब तक खुलूस न हो सब बेकार हैं। निय्यत ख़ालिस उसी वक़्त होगी जब अ़मल ख़ास अल्लाह को खुश रखने के लिये और आख़िरत की निय्यत से किया जाये और यह उसी वक़्त हो गा जब कि आख़िरत पर ईमान हो, इसी लिये नेकोकारों की यह सिफ़त बयान की गयी है कि यह लोग आख़िरत पर कामिल यक़ीन रखते हैं और हर काम आख़िरत को सामने रख कर ही करते हैं। 'यही लोग अपने रब की तरफ़ से हिदायत पर हैं' इस की तफ़्सीर में अ़ल्लामा शाह किरमानी लिखते हैं कि हिदायत हासिल होने की तीन पहचान हैं १. मुसीबत के समय हर चीज़ का नकार कर अल्लाह की तरफ़ रूजूअ़ करे २. जब नेमत हासिल हो तो उस पर तकब्बुर न करे ३. जब किसी को कुछ दे तो यह न समझे कि मैं दे रहा हूँ, इसलिये कि देने वाली अल्लाह की ज़ात है, इसलिये यह सोच लेने से उस का अ़मल बातिल हो जाये गा (मवाहिब) २. हज़रत मौलाना अमृतसरी रह० ने इन हुरूफ़ मुक़त्तआ़त का तर्जुमा हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० की तफ़्सीर की रोशनी में यह किया है "मैं हूँ अल्लाह सब से बड़ा अ़िल्म वाला"। लेकिन हक़ीक़त यह है कि इन की मुराद अल्लाह तआ़ला ही बेहतर तौर पर जानता है। (राज़)

وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِيْٓ اُذُنَيْهِ وَقْرًا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَاۗبَّةٍ ۭ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ۝ هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ۭ بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ۭ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝ وَاِذْ

और राहे-खुदा (की बातों) को हंसी-मख़ौल समझें। इन्हीं लोगों के लिये ज़िल्लत वाला अ़ज़ाब है[३]। ७. जब उन को हमारी आयात (हिक्मत वाली किताब से) पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो अकड़ते हुये मुंह फेर कर चल देते हैं गोया उन्हों ने हमारी वह आयात सुनी ही नहीं, गोया उन के कान बहरे हैं। पस तू (ऐ नबी!) उन को दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुना। ८. हाँ, जो लोग ईमान लाये हैं और उन्हों ने नेक अ़मल किये हैं उन के लिये नेमतों के बाग़ हैं ९. जिन में वह हमेशा रहें गे। अल्लाह ने सच्चा वादा किया है कि वह (अपने वादे को पूरा करने पर) बड़ा ग़ालिब, बड़ी हिक्मत वाला है। १०. (देखो तो उस की कैसी हिक्मत है कि) उस ने आसमानों को बग़ैर सुतूनों (खंबों,स्तंभों) के पैदा किया है जिन्हें तुम भी देख रहे हो (कि इतनी बड़ी छत के लिये कोई सहारा नही) और उस ने ज़मीन पर बड़े-बड़े पर्वत पैदा कर दिये ताकि तुम को ले न गिरे[४]। और ज़मीन पर➲

➡हर प्रकार के जानदार फैलाये। और आसमान से पानी उतारता है" फिर उस के साथ ज़मीन पर हर प्रकार की अच्छी-अच्छी चीज़े उगाता है। ११. यह तो अल्लाह की मख़्लूक़ है (जिसे तुम भी देखते हो) पस (अब) तुम लोग मुझे दिखाओ कि अल्लाह के अ़लावा दूसरे माबूदों ने क्या कुछ बनाया है? (कुछ नहीं बनाया है) बल्कि ज़ालिम (यूंही) खुली गुमराही में हैं। १२. और हम ने लुक़मान को हिक्मत दी (इस का खुलासा यह है) कि अल्लाह का शुक्र कर। और जो कोई शुक्र करता है वह अपने ही लिये करता है और जो नाशुक्री करता है तो अल्लाह की ज़ात बेपर्वाह, तारीफ़ {प्रशंसा} के लाइक़ है।

....

३. 'वाहियात बातों' से "गाना-बजाना, झूठे क़िस्से कहानियाँ, झूठे नावेल और हर प्रकार के खेल-कूद की बातें मुराद हैं। इमाम हसन बसरी रह० का कहना है कि इस से मुराद गाना-बजाना है। कुछ मुफ़स्सिरीन ने कुफ़्र और शिर्क मुराद लिया है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० के नज़दीक इस से मुराद गाना है। एक रिवायत के अनुसार यह आयत नज़र बिन हारिस के बारे में नाज़िल हुयी जो बादशाहों के क़िस्से-कहानियाँ लोगों को सुनाता और कुरआन को सुनने-सुनाने से रोकता था। हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० क़सम खा कर कहते हैं कि 'वाहियात बातों' से मुराद गाना-बजाना है और ताबेअ़ीन की एक जमाअ़त का भी यही कहना है। अक्सर उलामा के नज़दीक ग़िना और मज़ामीर (गाना-बजाना) का सुनना हराम है। हज़रत इमाम मालिक ने राग-रागनी के सुनने-सुनाने से मना फ़रमाया है और यह भी कहा कि अगर किसी लौंडी को ख़रीदने के बाद यह मालूम हो कि वह गाने-बजाने वाली है तो उस को अ़ैब समझ कर वापस कर देने का इख़्तियार है। इमाम अबू हनीफ़ा रह० राग-रागनी को मक्रूह मानते हैं और उन को गुनाह के कामों में से जानते हैं

अहले कूफ़ा, अबू सुफ़यान सौरी, हम्माद, इब्राहीम नख़ई और इमाम शअ़बी बग़ैरह का भी यही मज़हब है। इमाम शाफ़ई रह० अपनी किताब "किताबुल क़ज़ा" में लिखते हैं कि राग-रागनी मक्रूह और बातिल काम है। आप के मुक़ल्लिदीन भी हराम होने का फ़तवा देते हैं। इमाम अहमद कहते हैं कि उन के बेटे अ़ब्दुल्लाह कहते हैं कि मैं ने अपने बाप से राग के बारे में मालूम किया तो उन्हों ने फ़रमाया: राग दिल में निफ़ाक़ पैदा करता है जो हर हाल में बुरा है, फिर इस के बाद इमाम मालिक का क़ौल नक़ल करते हुये फ़रमाया कि ऐसा शख़्स फ़ासिक़ है। (वहीदी)

४. यानी उस की डाँवा-डोल हर्कत से तुम्हें कोई नुक़्सान नहीं पहुंचता। इस की मिसाल कश्ती की सी है कि अगर वह सीधी चले तो कोई नुक़्सान नहीं और अगर दायें-बायें झुक कर चले तो इस से नुक़्सान है, ठीक इसी प्रकार अल्लाह तआ़ला ने उसे ऐसा किया है। इस आयत में हल्का सा इशारा ज़मीन के हर्कत करने की तरफ़ भी है। आज-कल के साइन्स दाँ अगर क़वी दलीलों से ज़मीन के चलने को साबित कर दें तो यह कुरआन की आयत के मुख़ालिफ़ नहीं है मगर शर्त यह है कि दलील व सबूत क़वी हों। (सनाई)

५. 'अन्-ज़ल्ना' (हम ने उतारा) यह माज़ी का सेग़ा है और तर्जुमा भी माज़ी का होना चाहिये, लेकिन हम ने यहाँ हाल और दवाम का तर्जुमा किया है "आसमान से पानी उतारता है" चूँकि अल्लाह वर्षा करने का काम बार-बार करता है इसलिये हमेशगी का तर्जुमा ही सही है। फिर मुतकल्लिम का तर्जुमा ग़ाइब के सेग़े से इस लिये किया है क्योंकि उर्दू मुहावरा में यही सही है। (सनाई)

१३. और (एक समय वह भी था) जब लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुये कहा कि बेटा! तुम अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक न➡

وَإِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ
بِاللّٰهِ ۭ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ۝ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ

بِوَالِدَيۡهِ ۚ حَمَلَتۡهُ اُمُّهٗ وَهۡنًا عَلٰى وَهۡنٍ وَّفِصٰلُهٗ
فِىۡ عَامَيۡنِ اَنِ اشۡكُرۡ لِىۡ وَلِـوَالِدَيۡكَ ؕ اِلَىَّ الۡمَصِيۡرُ ﴿۱۴﴾
وَاِنۡ جَاهَدٰكَ عَلٰٓى اَنۡ تُشۡرِكَ بِىۡ مَا لَـيۡسَ لَـكَ
بِهٖ عِلۡمٌ فَلَا تُطِعۡهُمَا وَصَاحِبۡهُمَا فِى الدُّنۡيَا مَعۡرُوۡفًا ؗ
وَّاتَّبِعۡ سَبِيۡلَ مَنۡ اَنَابَ اِلَىَّ ۚ ثُمَّ اِلَىَّ مَرۡجِعُكُمۡ
فَاُنَبِّئُكُمۡ بِمَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۵﴾ يٰبُنَىَّ اِنَّهَاۤ اِنۡ تَكُ
مِثۡقَالَ حَبَّةٍ مِّنۡ خَرۡدَلٍ فَتَكُنۡ فِىۡ صَخۡرَةٍ اَوۡ
فِى السَّمٰوٰتِ اَوۡ فِى الۡاَرۡضِ يَاۡتِ بِهَا اللّٰهُ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ لَطِيۡفٌ خَبِيۡرٌ ﴿۱۶﴾ يٰبُنَىَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاۡمُرۡ
بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَانۡهَ عَنِ الۡمُنۡكَرِ وَاصۡبِرۡ عَلٰى مَاۤ
اَصَابَكَ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ مِنۡ عَزۡمِ الۡاُمُوۡرِ ﴿۱۷﴾ وَلَا تُصَعِّرۡ

[illegible] हराना इस लिये कि (अल्लाह के साथ) [illegible] करना बड़ा ज़ुल्म है[६] १४. और हम ने इन्सान को माँ-बाप के साथ (नेक व्यवहार करने की) हिदायत की है कि मेरा और अपने माँ-बाप का शुक्र अदा करो उस की माँ ने उस को कमज़ोरी पर कमज़ोरी की हालत में (पेट के अन्दर) उठाया और दो वर्ष में उस का दूध छूटता है और मेरी तरफ़ वापसी है। १५. और अगर तेरे माँ-बाप तुझ पर ज़ोर दें कि मेरे साथ उन चीज़ों को शरीक ठहरा जिन का तुझ को ज़िल्म नही तो तुम (इस काम में) उन का कहना न मानना[७] और दुनिया में उन के साथ अच्छी तरह रहना[७] और (दीन के कामों में) तुम उन लोगों की राह पर चलना जो मेरी तरफ़ रुजूअ हों, तुम सब को (मरने के बाद) मेरी तरफ़ फिर कर आना है फिर मैं तुम लोगों को तुम्हारे कामों की ख़बर बतलाऊँ गा। १६. (हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे से कहा:) ऐ बेटा! (किसी गुनाह को कम आँक कर धोके में न पड़ना) गुनाह अगर राई के दाने के बराबर भी हो, या वह (फ़र्ज़ कर लो कि) कहीं बड़े पत्थर के नीचे या आसमानों में या ज़मीन के अन्दर कहीं छुपा हो तो बहरहाल अल्लाह उस को तेरे सामने ले आये गा। अल्लाह बड़ी गहराई से देखने वाला और ख़बरदार है। १७. ऐ मेरे बेटे! तुम नमाज़ हमेशा अदा किया करना और नेक कार्य करने का हुक्म करना और बुरे कामों से मना किया करना और (ऐसा करने पर) जो कुछ तुझे तक्लीफ़ पहुंचे उस पर सब्र करना । यह बेशक हिम्मत के काम हैं।

....

६. 'ज़ुल्म' इस बात का नाम है कि किसी हक़दार को उस का हक़ न देना। इस प्रकार जो जितना बड़ा एहसान करने वाला होगा उस की हक़तल्फ़ी करना उतना ही बड़ा ज़ुल्म हो गा। चुनान्चे यही वजह है कि भाई-बहन के मुक़ाबला में माँ-बाप के साथ बुरा व्यवहार करना बहुत अधिक बुरा है। अल्लाह से बड़ा मुहसिन (एहसान करने वाला) कोई नहीं, इस लिये उस की हक़तल्फ़ी करना (उस के साथ शरीक ठहराना) तमाम हक़ मारने से बढ़ कर हक़ मारना है, इसी लिये शिर्क को सब से बड़ा ज़ुल्म कहा गया है।

हज़रत लुक़मान एक बहुत बड़े वली और बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। उन को हकीम इस माना में कहा गया है कि वह अल्लाह को अच्छी तरह जानने-पहचानने वाले थे। (सनाई)

७. इमाम सुहैली के बयान के अनुसार हज़रत लुक़मान के वालिद का नाम "सारान" था। अल्लाह ने उन्हें ज़िल्म व हिकमत और दानाई अता फ़रमाई थी। उन्हों ने अपने बेटे को जो नसीहत फ़रमाई थी उस का यहाँ ज़िक्र हो

➲रहा है। सर्वप्रथम नसीहत यह फ़रमाई कि केवल अल्लाह की इ़बादत करना उस के साथ किसी को शरीक न ठेहराना, इसलिये कि इस से बड़ी बेहयाई और इस से बड़ा बुरा अ़मल दुनिया में कोई नहीं। बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत में है कि जब यह आयत "जो लोग ईमान लाये और अपने ईमान को ज़ुल्म से लत-पत नही किया" (सूरः अन्फ़ाल) नाज़िल हुयी तो सहाबा यह सोच कर घबरा गये कि हम में कौन है जिस ने गुनाह न किया हो? इस पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: 'ज़ुल्म' से मुराद वह ज़ुल्म है जो हज़रत लुक़मान ने अपने पुत्र को नसीहत करते हुये फ़रमाया था कि अल्लाह के साथ शरीक न ठहराना, यह बड़ा भारी ज़ुल्म है।

हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे को दूसरी नसीहत यह फ़रमाई कि माता-पिता के साथ अच्छा बर्ताव और एहसान करना। यह नसीहत भी पहली नसीहत से कुछ कम अहम नही है। लेकिन अगर वह इस्लाम के अ़लावा और दूसरे दीन को कुबूल करने को कहें तो तुम उन की बात हर्गिज़-हर्गिज़ न मानना और मेरे साथ किसी को कभी शरीक न ठहराना, लेकिन इस के बावजूद उन के साथ अच्छा व्यवहार और बर्ताव करते रहना। हज़रत सअ़द बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं कि यह आयत मेरे बारे में नाज़िल हुयी। हुआ यूँ कि जब मैं ईमान ले आया तो मेरी माता जी ने कहा कि उस दीन को छोड़ दो वर्ना मैं खाना-पीना छोड़ दूँ गी और यूँ ही मर जाऊँ गी। लेकिन मैं ने इस्लाम को नही छोड़ा तो मेरी माता जी ने भी भूक हड़ताल आरंभ कर दी। इस हालत में तीन दिन बीत गये। मैं ने उन से साफ़-साफ़ कह दिया कि चाहे तुम यूँही भूक-प्यास से मर जाओ मगर मैं तो दीन इस्लाम नही छोड़ूँ गा। यह सुन कर उन्हों ने खाना-पीना आरंभ कर दिया।

तीसरी नसीहत हज़रत लुक़्मान ने यह फ़रमाई कि चाहे जितना छोटे से छोटा गुनाह करो अगर्चे वह गुनाह राई के दाना के बराबर ही क्यों न हो, और उस को चाहे जितना छुपा कर किया गया हो, मगर अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उस को अवश्य ही ला हाज़िर करे गा और उस के अनुसार बदला देगा। मुस्नद अहमद की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अगर तुम ऐसे पत्थर के बीच में बैठकर बुरा अ़मल करो जिस में न सूराख़ हो और न ही आने-जाने का कोई रास्ता हो, फिर भी अल्लाह तआ़ला उसे देख लेगा। और क़ियामत के दिन बन्दे को दिखा देगा कि यह है वह तेरा अ़मल जिसे तू ने पत्थर के अन्दर बैठ कर किया था।

चौथी नसीहत यह फ़रमाई कि नामाज़ को अदा करते रहना और लोगों को नेकी का हुक्म और बराइयों से मना करना और इस राह की परेशानियों पर सब्र करना। चूंकि इस राह में अक्सर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है इस लिये सब्र की नसीहत फ़रमाई।

पांचवी नसीहत यह फ़रमाई कि अच्छे अख़्लाक़ के साथ दूसरों से पेश आना और गुरूर-तक़ब्बुर से दूरी इख़्तियार करना। हज़रत लुक़मान की यह नसीहतें बहुत ही लाभदायक हैं इसी लिये कुरआन ने विशेष कर इन्हें यहां ज़िक्र किया है। हज़रत लुक़मान की और बहुत सारी नसीहतों को अ़ल्लामा इब्ने कसीर रह० ने ज़िक्र फ़रमाया है, जो कि सही मानों में बड़े काम की हैं।

८. इस से मालूम हुआ कि नमाज़ अदा करना, तब्लीग़ करना और सब्र से काम लेना यह भाग्यशाली लोगों की खूबियाँ हैं। (राज़)

خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۖ
إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۝ وَاقْصِدْ
فِي مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِن صَوْتِكَ ۚ إِنَّ أَنكَرَ
الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ ۝ أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ

१८. और तुम तकब्बुर की वजह से लोगों से मुंह न फेरना और ज़मीन पर इतराते हुये न चलना (यानी गुरुर और तकब्बुर की ज़िन्दगी न गुज़ारना) अल्लाह गुरुर और फ़ख्र करने वालों से हर्गिज़ प्रेम नही करता १९. और अपनी रविश {चाल} में दर्मियानारवी इख़्तियार करना➲

سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ؕ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝٢٠ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝٢١ وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗٓ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ؕ وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝٢٢ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ

(हर बात में, चाल-ढाल में और बात-चीत में भी) और अपनी आवाज़ को पस्त रखना, इसलिये कि सब आवाज़ों से बुरी आवाज़ गधे की है (पस तुम गधे की तरह चिल्ला कर दूसरे का दिमाग न चाटा करना)२०. क्या तुम ने देखा नहीं कि अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन की तमाम चीज़ों को तुम्हारे काम में मुफ़्त लगा रखा है और अपनी ज़ाहिर और पोशीदा नेमतों से तुम को मालामाल किया है[९]। और कुछ लोग महज़ जिहालत से बग़ैर हिदायत और रोशन किताब के अल्लाह की शान में झगड़ते हैं। २१. और जब उन से कहा जाता है कि तुम अल्लाह के उतारे हुये कलाम की पैरवी करो तो कहते हैं कि हम तो उसी राह पर चलें गे ज़िस पर हम ने अपने बाप-दादा को पाया है (देखो तो कितना ग़लत उत्तर है) क्या अगर्चे शैतान उन को जहन्नम के अज़ाब की तरफ़ बुलाता हो[१०]? २२. और जो लोग अपने आप को अल्लाह के हवाले करते हैं और वह नेकोकार भी होते हैं तो ऐसे लोग मज़बूत कड़े को मज़बूती से पकड़े हुये हैं (पस ऐसे ही तुम भी बनो) और (दिल से जानो कि) सब कामों का अन्जाम अल्लाह ही की तरफ़ है। २३. और जो कोई कुफ़्र करता है तो उस के कुफ़्र से तुझे ग़म न होना चाहिये

....

९. नेमतों की दो क़िस्में है (१) ज़ाहिरी (२) बातिनी। ज़ाहिरी नेमतें तो वह हैं जिन का प्रभाव हमारे ऊपर प्रकट होता है जैसे, स्वास्थ, वस्त्र, सुंदरता वग़ैरह। बातिनी और पोशीदा नेमतें वह हैं जिन का प्रभाव हमारे अख़्लाक़, आचरण और स्वभाव पर पड़ता है और यह नेमतें नबिय्यों के ज़रीआ तुम पर पूरी की गयी हैं। मगर लोग महज़ अपनी जिहालत और नादानी से अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं। कोई कहता है कि जिस प्रकार दुनिया के बादशाहों की तरफ़ से हुकूमत के नायब होते हैं इसी प्रकार अल्लाह की तरफ़ से भी नायब मुक़र्रर हैं। जिस प्रकार नायब को नफ़ा-नुक़सान का इख़्तियार होता है इसी प्रकार उन अल्लाह के नायबों को भी है। कोई कहता है कि जिस प्रकार बादशाहों के पास पहुंचने के लिये वासीले की बीच में आवश्यकता होती है, इसी प्रकार अल्लाह तक भी पहुंचने के लिये वसीले की ज़रूरत है। कुछ लोग यह भीं कहते हैं कि उन बुर्ज़ुगों को हमारे तमाम हालात मालूम हैं और अल्लाह ने उन को सब कुछ बता दिया है। याद रखो! यह सब उन की मनघड़त बातें हैं जिन का कोई भी सबूत अल्लाह की किताब में नहीं हैं। (सनाई)

१०. इमाम ख़तीब बग़दादी रह० फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तो उन को अल्लाह के कलाम की तरफ़ बुलाते थे, लेकिन वह लोग अपने बाप-दादों के ख़याल से चिपके हुये थे। अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम रह० फ़रमाते हैं कि उलमा ने इस आयत से तक़्लीद के हराम होने पर दलील पेश की है, क्योंकि यहाँ पर तक़्लीद की बुराई इस लिये बयान की गयी है कि इन लोगों ने बग़ैर अ़िल्म व किताब के बाप-दादों की तक़्लीद की। इस का मतलब यह

हुआ कि जो शख़्स बग़ैर हिदायत के किसी आ़लिम की तक़्लीद करे तो वह इन्हीं मुक़ल्लिदों की तरह है और हिदायत केवल क़ुरआन व हदीस की रोशनी का नाम है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यहूद ओर नसारा के बारे में फ़रमाया था कि इन लोगों ने अपने-अपने उलमा और पीरों को रब बना लिया है। इस का यही अर्थ है कि उन्हों ने उन की अन्धी तक़्लीद करनी आरंभ कर दी। इस से मालूम हुआ कि जिन लोगों का अ़क़ीदा किताब व सुन्नत के मुताबिक़ है और सहाबा व ताबेअ़ीन की राह पर चल रहे हैं वह सब एक हैं चाहे कोई इमाम अबू हनीफ़ा से फ़तवा पूछे या इमाम शाफ़अ़ी से इस से कोई फ़र्क नही पड़ता, लेकिन यह शर्त है कि उन से पूछने का उद्देश्य किताब व सुन्नत पर अ़मल करना हो (न कि उन के नर्म फ़त्वे से अपना उल्लू सीधा करना) चुनान्चे उलमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि अगर कोई शख़्स इमामों के फ़रमान को बग़ैर क़ुरआन व हदीस की दलील के अपने ऊपर लाज़िम कर ले तो वह मोमिनों की राह से हट जाये गा। इमाम ख़तीब बग़दादी ने अपनी प्रसिद्ध किताब "सिराजे मुनीर" (रोशन चराग़) में साफ़ लफ़्ज़ो में लिख दिया है कि उलमा, मशाइख़ और बुर्ज़ुगों के फ़रमान को क़ुरआन व हदीस की कसौटी पर जाँचा जाये गा, फिर जिस का क़ौल क़ुरआन व हदीस के मुताबिक़ हो गा उस पर अ़मल हो गा (यह सोच कर नहीं, कि फ़लाँ इमाम का क़ौल है, बल्कि यह मान कर कि यह अल्लाह और उस के रसूल का फ़रमान है) और जिस का क़ौल क़ुरआन व हदीस के मुख़ालिफ़ हो गा उस को दीवार पर दे मारा जाये गा (मवाहिबुर्रहमान)

इन तमाम दलाइल की रोशनी में अगर आप इमामों का ज़ाइज़ा लें तो मालूम होगा कि तमाम ही इमामों ने इस बात की बड़ी सख़्ती से मिनाही फ़रमाई है कि आँखों को मूँद कर हमारे फ़तवे पर अ़मल किया जाये। यही कारण है कि खुद इमामों के शागिर्दो ने अपने-अपने उस्ताद इमामों के फ़तवों की खुल कर मुख़ालिफ़त की है (मवाहिब) (इमाम यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद ने अपने उस्ताद इमाम अबू हनीफ़ा रह० से उन के एक तिहाई फ़तवों में इख़्तिलाफ़ करने हुये उन के ख़िलाफ़ फ़तवा दिया है--------ख़ालिद) इतनी वज़ाहत के बावजूद इमामों की तक़्लीद करना और इसी को रिवाज देना और इसी पर अड़ा रहना हद दर्जा दुःखदाई है। फिर इन लोगों की यह हिम्मत भी देखिये कि "उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे" की मिसाल के मुताबिक़ जो कोई इन्हें समझाता और नसीहत करता है तो उसे "ग़ैर मुक़ल्लिद" (गुमराह) कहते हैं (राज़)

كُفْرُهٗ ۭ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ
عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ
اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝ وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۭ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۭ
بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝ وَلَوْ اَنَّ مَا
فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ
بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ۭ اِنَّ
اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا
كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ

हमारी ही तरफ़ उन्हें फिर कर आना है फिर हम उन को उन के कामों के बारे में बतलायें गे। हम दिलों के भेदों से भी अवगत हैं। २४. और उन को किसी क़द्र गुज़ारा दे कर सख़्त अ़ज़ाब की तरफ़ मजबूर कर के ले जायें गे (वहाँ पहुंच कर उन को सुख-चैन की अहमियत मालूम हो गी) २५. और अगर तू उन से पूछे कि किस ने आकाश और ज़मीन बनाये हैं? तो तुरन्त कह दें गे कि "अल्लाह ने"। तू कह! अल्हम्दुलिल्लाह! (जो कुछ हम कहते हैं वह यह भी मानते हैं) मगर बहुत से उन में से (अस्ली बात को) नही जानते हैं। २६. जो कुछ आसमान और ज़मीन में है सब अल्लाह ही की मिल्क {संपत्ति} है

اللّٰهَ يُولِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَ سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَّجْرِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ

(फिर कमाल यह है कि) अल्लाह (अपनी ज़ात में तमाम मख़्लूक़ से) बेनियाज़ और बेपर्वाह है। २७. अगर ज़मीन के तमाम दरख़्त क़लम बन जायें और समुद्र के अ़लावा और सात समुद्र उस की सहायता के लिये सियाही बन जायें तो भी अल्लाह के कलिमात ख़त्म न होने पायें (क्यों यह सब चीज़ें ख़त्म होने वाली हैं और अल्लाह के कलिमे ख़त्म हाने वाले नहीं) कुछ शक नहीं कि अल्लाह बड़ा ग़ालिब और बड़ा ही हिक्मत वाला है। २८. तुम्हें पहली बार पैदा करना और पुनः जीवित करना केवल एक जान के पैदा करने जैसा है। बेशक अल्लाह बड़ा सुनने वाला और देखने वाला है। २९. क्या तुम ने देखा नही कि अल्लाह ही रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल करता है और उस ने सूरज और चाँद को (तुम्हारे) काम में लगा रखा है, उन में का हर एक निश्चित समय तक चलता है और (अपना-अपना काम ठीक से अंजाम देता है) और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है ३०. यह इसलिये कि अल्लाह ही अपनी ज़ात में कामिल और मुकम्मल है (इस लिये दुनिया के निज़ाम में फ़र्क़ नही आता)

هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ وَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝ وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّا

और उस के अ़लावा जिन-जिन चीज़ों को लोग पुकारते हैं वह बेबुनियाद हैं (यानी वह अपनी ज़ात तक के मालिक नहीं) और अल्लाह ही बुलन्द मर्तबे का और बुज़ुर्गी वाला है। ३१. क्या तू ने नही देखा कि समुद्र में जहाज़ अल्लाह की नेमत के साथ चलते हैं ताकि तुम को अपनी क़ुदरत के निशान दिखा दे। इस में बहुत से निशान हैं सब्र करने वालों और (नेमतों पर) शुक्र करने वालों के लिये। ३२. और जब उन (मुश्रिकों की कश्तियों) पर सायेबानों की तरह (समुद्र के पानी की) मौज ढाँपने को होती है तो उस वक़्त ख़ालिस दिल से अल्लाह ही की बन्दगी का इज़्हार करते हैं फिर जब अल्लाह उन को बचा कर किनारे तक पहुंचा देता है तो उन में से कुछ तो बीच की राह इख़्तियार करते हैं (मगर अक्सर वादा तोड़ने वाले ही होते हैं) और अल्लाह की आयतों का वही इन्कार करते हैं जो बदअ़हद (वादा के खिलाफ़ करने

➲वाले} और नाशुक्रे होते हैं[१२] ३३. ऐ लोगो! अपने पर्वरदिगार से डरते रहो और उस दिन से डरो जिस में न माता-पिता अपने बच्चे को और न बच्चा अपने माता-पिता को कुछ लाभ पहुंचा सकें गे। अल्लाह का वादा हक़ है इसलिये तुम दुनिया कि ज़िन्दगी से धोका न खाना और अल्लाह के बारे में उस बड़े धोके बाज़ {यानि शैतान} के धोके में कभी मत आना[१३]। ३४. क़ियामत की घड़ी का ज़िल्म अल्लाह ही के पास है और वही वर्षा करता है और वही जानता है कि मादाओं के गर्भ में क्या है[१४] और किसी जान को मालूम नही कि कल क्या करे गा और न किसी शख़्स को यह मालूम है कि किस ज़मीन में मरे गा। नि: संदेह अल्लाह ही ज़िल्म वाला और सब की ख़बर रखने वाला है।

....

११. इस आयत में अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत के करिश्मे दिखा कर यह बतलाया है कि यह सब काम मैं इस लिये करता हूँ कि मैं उन खूबियों का तंहा मालिक हूँ और मेरे अ़लावा जितने दावेदार हैं वह सब झूठे हैं। यहाँ पर यह बता देना भी ज़रूरी है कि पंजाब में एक नया फ़िर्क़ा ''अहले कुरआन'' नाम का पैदा हुआ है उस का दावा है कि शरीअ़त के तमाम अहकाम कुरआन में मौजूद हैं, इस लिये कुरआन के अ़लावा हदीस, फ़िक़्ह और दूसरी किताबों की कोई ज़रूरत नही। उन्हों ने नमाज़ के विषय में एक किताब लिखी है जिस में तक्बीरे-तहरीमा (अल्लाहु अक्बर) कहने के बजाये यही आयत ''व-अन्नल्ला-ह हु-वल् अ़लिय्युल् कबीर'' कहने को कहा गया है। जब उन लोगों से पूछा गया कि इस में ''वाव'' क्या है और फिर यह कि ''अन्न'' के अलिफ़ पर ज़बर क्यों है? इस का उत्तर ग्रामर से तो वह न दे सके, इसलिये इस से पहले चन्द शब्द और बढ़ा दिये। चुनान्चे किताब के दूसरे एडीशन में अल्लाहु अक्बर के स्थान पर अब यह पढ़ते हैं ''मा यद्ऊ- न मिन् दूनिहिल्बातिलु व-अन्नल्ला-ह हु-वल् अ़लिय्युल् कबीरू'' ऐसा कर के वह और बुरी तरह जाल मे फंस गये है.......................... बहर हाल ग्रामर की बहस को जाने दीजिये और ग़ौर कीजिये कि इस आयत का तक्बीरे-तहरीमा से क्या तअ़ल्लुक़ है? क्या इस आयत में या किसी और आयत में इस बात का हुक्म है कि नमाज़ पढ़ने से पहले तुम इस आयत को पढ़ा करो? अगर है, तो वह हुक्म दिखाया जाये। अगर नही है तो जिस प्रकार तुम लोगों ने इस आयत को इस काम में इस्तेमाल किया है, दूसरे को भी हक़ है कि इस के सिवा किसी और आयत को उस काम में इस्तेमाल कर सके, मगर यह कि वह हो उसी काम के लिये। अगर क़ियास ही से किसी आयत को रखना चाहते हो तो सब से बेहतर आयत ''व-लज़िक्रूल्लाहि अक्-बर'' है। लेकिन इस आयत को भी इस्तेमाल करने की कोई ज़रूरत नहीं है, इसलिये कि कुरआन मजीद का फ़रमान है ''तुम्हारे लिये रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) बेहतरीन नमूना हैं''। इस लिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अपना आदर्श मानते हुये, आप ने जब-जब और जहाँ-जहाँ जो चीज़ें पढ़ी हैं वही हमें भी पढ़ना चाहिये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तक्बीरे-तहरीमा के समय ''अल्लाहु अक्बर'' पढ़ा है, इसलिये हमें भी वही पढ़ना चाहिये (सनाई)

१२. ऊपर के हाशिया न०११ की तरह का ख़याल रखने वाले एक डाक्टर (परवेज़) ने एक किताब ''दो इस्लाम'' नाम की लिखी है और उस में अपनी हदीस दुश्मनी का खुल कर इज़्हार किया है। मगर अल्हम्दुलिल्लाह! मैं ने उस के रद्द में ''ख़ालिस इस्लाम'' नाम की किताब लिखी है। इस के मुताला से बहुत से हदीस के इन्कारी अल्हम्दु लिल्लाह धोके में आने से बच गये हैं। (राज़)

१३. इसलिये कि उस के दाँव कई प्रकार के होते हैं। बेदीनों को तो कुफ़्र व शिर्क और दीगर गुनाहों में मुबतला➲

कर देता है, लेकिन दीनदारों को इस से भी बढ़ कर बला में फंसाता है जो देखने में तो दीनदारी मालूम होती है मगर वास्तव में वह घोर पाप होता है। यानी उन के दिल में यह ख़्याल डालता है कि नबियों और बुज़ुर्गों के क़ब्रों पर चढ़ावा जाइज़ है, वह अगर्चे मुर्दा हैं, फिर भी हमारे हालात से आगाह हैं और हमारी हाजत को पूरी करने की कुदरत रखते हैं। हालाँकि यह सारी बातें केवल अल्लाह के लिये मख़सूस हैं, इन बातों में उस का कोई शरीक नही है। (सनाई)

१४. बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिन पाँच बातों का ज़िक्र इस आयत में है वह ग़ैब की कुन्जियाँ हैं, अल्लाह के अ़लावा उन को कोई और नहीं जान सकता"। (बुख़ारी शरीफ़)

सूरः सज्-दः (32)

सूरः सज्-दः मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[१]। इस में ३० आयतें और ३ रूकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है।

१. अलिफ़ लाम्मीम्[२] २. यह किताब बिला शुब्हा सारे जहान के रब के हाँ से नाज़िल हुयी है ३. क्या यह लोग कहते है कि उस (नबी) ने अपने पास से इस (कुरआन) को बनाया है? (नही, नही) बल्कि वह तेरे पर्वरदिगार के हाँ से सच्चाई के साथ उतरा है ताकि तू उस क़ौम को डराये जिन के पास तुझ से पहले कोई डराने वाला नहीं आया ताकि वह लोग हिदायत पायें ४. अल्लाह (वह ज़ात पाक है जिस)ने आसमानों और ज़मीन और उन के दर्मियान की तमाम चीज़ों को छः दिनों (की मुद्दत) में पैदा किया फिर वह अ़र्श पर मुस्तवी हुआ(बैठा)[३]। उस के अ़लावा न तुम्हारा कोई वाली है (जो खुद-बखुद तुम को फ़ाइदा पहुंचा सके) न कोई सिफ़ारिशी है। क्या फिर भी तुम नहीं समझते? ५. (और सुनो!) वह अल्लाह ही आसमानों से ज़मीन तक इन्तिज़ाम करता है फिर वह (हुक्म और इन्तिज़ाम मुकम्मल हो कर) उसी की तरफ़ एक रोज़ में पहुंचता है जिस की मिक़्दार {मात्रा} तुम्हारे हिसाब से एक हज़ार वर्ष की है[४]।

....
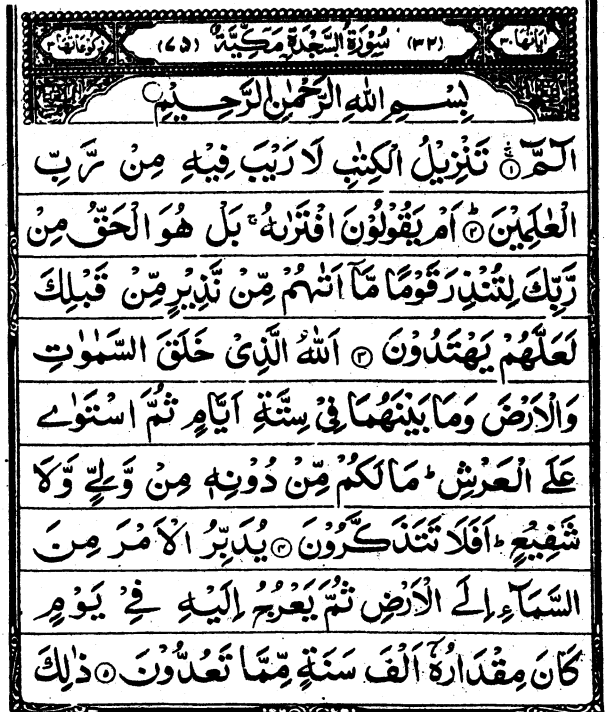
१. यह मुबारक सूरः क़ब्र और हश्र में अपने पढ़ने वाले के वास्ते सिफ़ारिश करेगी। क़ब्र में मुन्किर नकीर के सामने शहादत देगी। इस लिये इस सूरः का रात को सोने से पहले पढ़ना मर्तबे की बुलन्दी का कारण है। नबी करीम

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जुमा की फ़ज्र की पहली रक्अ़त में इस सूर: को और दूसरी रक्अ़त में सूर: दह्र (इन्सान) को पढ़ा करते थे।

२. मौलाना अमृतसरी रह० ने इस आयत का तर्जुमा "मैं हूँ अल्लाह सब से बड़ा अ़िल्म वाला" किया है। मगर वास्तव में इन हुरूफ़ मुक़त्तआत का मुराद और माना अल्लाह ही बेहतर जानता है (राज़)

३. फिर वह अ़र्श पर मुस्तवी हुआ, जैसा इस्तवा (बैठना) उस की शान के लायक़ है। (सनाई)

४. इस आयत में अल्लाह पाक ने अपनी कामिल कुदरत और अ़िल्म का ज़िक्र फ़रमाया है। मुफ़स्सिरीन उलमा ने इस आयत के मुतअ़ल्लिक़ बहुत कुछ लिखा है और भरपूर लिखा है। कुछ मुफ़स्सिरीन ने इधर-उधर की बातें भी लिख दी हैं जो बिल्कुल अनुचित हैं। लेकिन उर्दू भाषा समझने वालों के लिये इतना ही काफ़ी है कि उन को एक उदाहरण दे कर इस आयत का मतलब समझाया जाये। अल्लाह तअ़ला ने इस आयत में अपनी हुकूमत को दुनियावी हुकूमतों की मिसाल दे कर समझाया है। दुनिया की हुकूमत का इनितज़ाम उस वक़्त सहीह माना जाता है कि रोज़ाना के काम की कारकर्दगी ऊँचे अफ़सरों तक पहुंचती रहे कि मातहत लोगों ने आज कहाँ और कितना काम किया है और अपने हाकिम के आदेशों पर कितना अ़मल किया है। जिन हुकूमतों में इस प्रकार का उसूल नही है वह कब शासन से अपना हाथ धो बैठें कुछ नही कहा जा सकता। इस क़ानून और ज़ाबता की तरफ़ इस आयत में अल्लाह पाक ने इशारा किया है कि दुनियावी हुकूमतों की तरह हमारे हाँ भी रोज़नामचा (दैनिक कार्यवाही रजिस्टर) है, मगर वह डायरी ऐसी है कि उस का एक-एक दिन, तुम्हारे हिसाब के हज़ार-हज़ार वर्ष जितना है। चुनान्चे इसी सूर: में इसी बात को इस तरह कहा है: "तुम्हारे रब की बादशाहत ऐसी ज़बरदस्त है कि उस के हाँ एक-एक दिन तुम्हारे हिसाब से हज़ार-हज़ार साल जितना है। दुनिया की बादशाहत में हज़ार वर्ष डायरी न पहुंचे तो हुकूमत तबाह हो जाये, मगर अल्लाह की बादशाहत में डायरी के लिये हज़ार वर्ष है, तो भला बतलाओ कि अल्लाह की बादशाहत कितनी शाक्तिशाली हो गी। यहाँ यह प्रश्न हो सकता था कि अगर्चे अल्लाह की डायरी के लिये हज़ार वर्ष हो ताहम इतना तो साबित हुआ कि अल्लाह को आइन्दा के वाक़िआत के बारे में खुद खबर नहीं। तो इस शुब्हे को दूर करने के लिये अल्लाह तआ़ला ने इस मिसाल के तुरन्त बाद ही यह फ़रमा दिया: "जो चीज़ें बन्दों की निगाह में मौजूद हैं या पोशीदा हैं अल्लाह उन सब को जानता है। वह सब पर ग़ालिब और सब के हाल पर मेहरबान है"। इस से यह बात साफ़ हो गयी कि अल्लाह की तरफ़ तदबीर का चढ़ना या उस की तरफ़ से अहकाम और तदबीर का नाज़िल होना एक तमसील (उदाहरण) है, वर्ना वह पाक ज़ात हर चीज़ को जानता है और सब पर ग़ालिब है। यह तो हुयी इस आयत की मुख्तसर तफ़्सीर।

एक दूसरे स्थान पर अल्लाह पाक ने इस डायरी की मुद्दत और भी अधिक बताई है। चुनान्चे सूर: "मआ़रिज" में इर्शाद फ़रमाया: "अल्लाह के आ़म फ़रिश्ते और ख़ास फ़रिश्ता जिब्रील पचास हज़ार वर्ष में उस की तरफ़ जाते हैं"। यानी पचास हज़ार साल उन की डायरी है। बड़ी खूबी की बात यह है इन तीनों आयतों में अल्लाह पाक ने इस उदाहरण को बतलाने के लिये बहुत से दलाइल पेश किये हैं। हम उन तीनों आयतों को एक साथ कर के उस की अस्ल सूरत पेश करते हैं।

१. पहली आयत का तर्जुमा यह है: "कुफ़्फ़ार तुझ से जल्दी अ़ज़ाब माँगते हैं और अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ कभी न करे गा। और अल्लाह के नज़दीक एक दिन तुम्हारे हिसाब से एक हज़ार वर्ष का हैं और कई एक ज़ालिम बस्तियों को मैं ने थोड़ी सी मुहलत दी फिर तुरन्त उन को धर दबोचा। और मेरी ही तरफ़ सब कामों को लौटना है"। (पार: १७, रुकूअ़ १३) इस आयत में अल्लाह पाक ने कुफ़्फ़ार की दर्ख़ास्त का ज़िक्र किया है कि वह अ़ज़ाब जल्दी चाहते हैं। इस के उत्तर में अल्लाह ने फ़रमाया कि मेरे नज़दीक एक दिन एक हज़ार वर्ष का है। यह कह कर फ़रमाया कि मैं ने बहुत सी क़ौमों को मुहलत दे कर भी न छोड़ा। ज़ाहिर में हज़ार वर्ष का दिन होने का ज़िक्र यहाँ बेतअ़ल्लुक़ ही नहीं, बल्कि मुख़ालिफ़ भी मालूम होता है, क्योंकि कुफ़्फ़ार के उत्तर में यह फ़रमाना कि अल्लाह

के नज़दीक एक-एक दिन हज़ार वर्ष का होता है, यह इस तरफ़ इशारा करता है कि घबराते क्यों हो आख़िर कभी तो अ़ज़ाब पहुंच ही जाये गा, यहाँ तो हज़ार वर्ष भी एक दिन की मुद्दत है जिस में मौजूदा कुफ़्फ़ार की नस्लें समाप्त हो सकें गी, तो फिर अ़ज़ाब ही क्या और किस को? हालाँकि साथ ही यह भी फ़रमाया है कि पहले के लोगों को मुहलत दे कर ख़ूब पकड़ा। पस मालूम हुआ कि जाहिरी माना मुराद नहीं बल्कि अल्लाह की कुदरत और ताक़त का इज़्हार है। मुराद यह है कि यह लोग जल्दी अ़ज़ाब माँगते हैं इस ख़्याल से कि अल्लाह के अ़ज़ाब से कहीं बच सकें गे, हर्गिज़ नहीं

२. दूसरी आयत जो इसी सूरः की है जिस की तफ़्सीर ऊपर बयान हुयी (आयत न० ५,६,७) ३. तीसरी आयत का तर्जुमा यह है कि "एक सवाल करने वाला उस अ़ज़ाब के बारे में पूछता है जो काफ़िरों पर अल्लाह की तरफ़ से अटल आने वाला है, जो अल्लाह बड़ी बुलन्दियों वाला है उस की तरफ़ आ़म फ़रिश्ते और जिब्रील एक दिन में चढ़ते हैं, जिस की मात्रा पचास हज़ार वर्ष है"। (सूरः मआ़रिज, पारः ३०) यह कह कर आगे फ़रमाया गया "तू अच्छी तरह से सब्र कर"।

इस प्रकार इस आयत की तफ़्सीर यह हुयी कि अल्लाह यहाँ पर अपनी कुदरत और ताक़त का इज़्हार कर रहा है। इन तीनों आयतों को मिला कर जो अर्थ मेरी समझ में आये हैं, मैं ने खुद लिखे हैं। मैं यह दावा नहीं करता कि हमारा ही लिखा हुआ सब कुछ सही है कोई अल्लाह का बन्दा इस से भी अच्छी तश्रीह करे तो हमें खुशी हो गी (सनाई)

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝٦ الَّذِيْٓ أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَأَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ ۝٧ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۝٨ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۗ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝٩ وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۬ؕ بَلْ هُمْ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ۝١٠ قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝١١ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ۝١٢ وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّيْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

६. यह (अल्लाह है) ग़ैब और ज़ाहिर (सब को) जानने वाला सब पर ग़ालिब, बड़ा रहम करने वाला ७. जिस ने अपनी मख़्लूक़ को हर प्रकार से उम्दा बनाया (जो जैसा मुनासिब था उस को वैसा बनाया) और इन्सान की पैदाइश मिट्टी से आरंभ की (यानी आदम को पहले मिट्टी से बनाया) फिर उस की नस्ल को इन्सानी जिस्म के निचोड़ (यानी) ज़लील पानी (मनी) से जारी किया। ८. फिर वह उस को दुरुस्त करता है और उस में अपनी रूह फूंकता है और तुम्हारे लिये वह कान और आँखें और दिल पैदा करता है (मगर) तुम बहुत ही कम शुक्र करते हो ९. (यह भी कोई शुक्र है कि अल्लाह के होते उस की मख़्लूक़ से अपनी ज़रूरतें माँगते हो) १०. और कहते हो कि क्या जब हम मर कर ज़मीन में मिल जायें गे तो क्या हम फिर एक मर्तबा नई पैदाइश में हों गे? बल्कि यह लोग अपने पर्वरदिगार की मुलाक़ात से इन्कारी हैं (उन को इस बात से इन्कार है कि आमाल का अच्छा

➲और बुरा बदला मिलेगा) ११. ऐ नबी! तू कह कि तुम को मौत के फ़रिश्ते फ़ौत करें गे जो तुम पर मुक़र्रर किये गये हैं (मरने के बाद) फिर तुम अपने पर्वरदिगार के सामने वापस किये जाओ गे। १२. और अगर तू उस समय (उन को) देखे जब मुजरिम अपने रब के सामने सरों को नीचे डाले हुये हों गे उस समय कहें गे कि ऐ हमारे रब! हम ने तेरा अ़ज़ाब देखा और सुना पस तू हम को दुनिया की तरफ़ एक मर्तबा फेर दे ताकि हम नेक अ़मल करें, कुछ शक नही कि हम को बिल्कुल यक़ीन हो गया है। १३. और अगर हम चाहते तो सब को हिदायत दे देते लेकिन मेरी तरफ़ से यह एलान हो चुका है कि मैं तमाम क़िस्म के जिन्नों और इन्सानों से जहन्नम को भर दूँ गा।

أَجْمَعِينَ ﴿١٣﴾ فَذُوقُوا بِمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا
إِنَّا نَسِينَاكُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾ إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا
بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا
يَسْتَكْبِرُونَ ۩ ﴿١٥﴾ تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ
يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿١٦﴾
فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ
جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٧﴾ أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا
كَمَن كَانَ فَاسِقًا لَّا يَسْتَوُونَ ﴿١٨﴾ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ جَنَّاتُ الْمَأْوَىٰ نُزُلًا بِمَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾ وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ
النَّارُ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا
وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّذِي كُنتُمْ بِهِ

१४. पस उस दिन को भूलने की वजह से अ़ज़ाब का स्वाद चखो हम तुम को भूल गये हैं (मतलब यह है कि तुम से ऐसा बर्ताव करें गे कि गोया हम तुम को भूल गये हैं) और अपने किये हुये आमाल की वजह से हमेशगी के अ़ज़ाब का स्वाद चखो। १५. हमारे अहकाम वही लोग मानते हैं कि जब उन को उन अहकाम के बारे में नसीहत की जाये तो सज्दे में गिर पड़ते हैं और पर्वरदिगार की हम्द के साथ तस्बीहें पढ़ते हैं और वह तकब्बुर नहीं करते। १६. रातों को अपने बिस्तरों से पहलुओं को अलग रखते हैं अल्लाह के अ़ज़ाब से डरते हुये और उस की रहमत के लालच में अपने रब से दुआयें माँगते हैं और हमारे दिये में से ख़र्च करते हैं। १७. पस उन ही लोगों के लिये ऐसी आँखों की ठन्डक छुपा कर रखी गयी है जिस को कोई शख़्स नही जान सकता। यह सब कुछ उन के किये हुये नेक आमाल का बदला होगा १८. क्या फिर पक्के ईमानदार, बदकारों की तरह हो जायें गे? (हर्गिज़ नहीं) बराबर न हों गे १९. (सुनो!) जो लोग (बयान किये हुये तरीक़े के मुताबिक़) ईमान ला कर नेक अ़मल करते हैं, उन के नेक अ़मल की वजह से हमेशा के बाग़ों में उन की मेहमान नवाज़ी हो गी २०. और जो लोग बदकार हों गे उन का ठिकाना (जहन्नम की) आग में होगा (वह उस में ऐसे घिरे हों गे) कि जब कभी उस से निकलना चाहें गे तो वापस उसी में लौटा दिये जायें गे (और उन से कहा जाये गा (कि लो अब) आग का अ़ज़ाब चखो जिस को तुम झुटलाया करते थे।➲

تُكَذِّبُوْنَ ۝ وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ؕ اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهٖ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ؕ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يُوْقِنُوْنَ ۝ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ اَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ؕ اَفَلَا يَسْمَعُوْنَ ۝ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ ؕ

२१. और (सुनो!) उस बड़े अ़ज़ाब से पहले हम उन को एक हल्का सा अ़ज़ाब चखा दें गे ताकि यह लोग हमारी तरफ़ लौटें। २२. और जिस शख़्स को पर्वरदिगार की आयात सुना कर नसीहत की जाये और वह उन से मुंह फेर ले तो उस से बढ़ कर कौन ज़ालिम है। हम अवश्य ही मुजरिमों से बदला लेने वाले हैं। २३. और हम ने मूसा की किताब दी थी पस तुम उस (किताब) के (मूसा को) मिलने में हर्गिज़ शक न करना[५] (बल्कि तस्लीम करना) और हम ने (इस किताब को) बनी इस्राईल के लिये हिदायत नामा बनाया था[६]। २४. और जब बनी इस्राईल ने (सख़्त तक्लीफ़ों पर) सब्र किया, तो हम ने उन में कई एक इमाम बनाये[७] जो हमारे हुक्म से हिदायत करते थे और स्वयँ भी हमारे अहकाम पर यक़ीन रखते थे। २५. तुम्हारा पर्वरदिगार क़ियामत के दिन उन के इख़्तिलाफ़ी मामलात में फ़ैसला करे गा। २६. (क़ियामत का ज़िक्र सुन कर जो यह लोग इन्कार करते हैं) क्या यह बात उन को कुछ भी हिदायत नही करती कि उन से पूर्व हम ने कितनी क़ौमों को हलाक कर दिया यह लोग उन के मकानात में चलते-फिरते हैं। इस में बहुत सी निशानियाँ हैं, तो क्या यह लोग सुनते नहीं? २७. क्या उन्हों ने ग़ौर नही किया कि हम किस प्रकार सूखी बंजर ज़मीन पर पानी ले आते हैं फिर उस के साथ खेत उगाते हैं जिस में से उन के चौपाये और वह स्वयँ भी खाते हैं।

....

५. मौलाना मर्हूम ने यहाँ जो तर्जुमा किया है यही तर्जुमा तफ़सीर ख़ाज़िन में भी है, आप विस्तार से वहाँ पढ़ सकते हैं। इस आयत में 'लिक़ाइही' की ज़मीर से हज़रत शाह वलिय्युल्लाह रह० ने कुरआन पाक मुराद लिया है। लिखते हैं "मबाश दर शुब्हा अज़ मुलाक़ाते कुरआन" (कुरआन के मुलाक़ात में शुब्हा न करना)

६. हज़रत इमाम क़तादा रह० ने कहा है कि यहाँ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हज़रत मूसा से मेराज की रात की मुलाक़ात मुराद है। चुनान्चे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिस रात मुझ को मेराज के लिये ले जाया गया उस रात मैं ने मूसा बिन अ़िम्रान को देखा कि वह गेहुवाँ रंग के, लम्बे क़द के, घुंघराले बालों वाले थे। और अ़ीसा बिन मर्यम को देखा कि वह एक भारी भरकम, सफ़ेदी लिये हुये, सीधे बाल वाले थे। इस के अ़लावा और भी बहुत सी चीज़ें देखी जो अल्लाह ने दिखलायीं (तब्रानी) आजकल के कुछ उलमा में से मौलाना अ़ब्दुस्समद रहमानी (रह०) का ख़याल है कि 'लिक़ाइही' की ज़मीर अल्लाह ➲

की तरफ़ है यानी "अल्लाह की मुलाक़ात में शक न करो"। सहीह हाल का ज़िल्म केवल अल्लाह को है। (राज़०)
७. यानी यक़ीन कर के उस पर जम गये और अहकाम की फ़रमाबर्दारी पर सब्र किया। इमाम सौरी रह० फ़रमाते हैं कि कोई शख़्स उस समय तक इमाम बनने का हक़दार नहीं हो सकता जब तक कि दुनिया से परहेज़ न करे। और आप यह भी फ़रमाया करते थे कि दीन के वास्ते ज़िल्म आवश्यक है। इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि यह लोग अल्लाह के बतलाये हुये कामों पर अ़मल करते और जिस के न करने का हुक्म दिया होता उस से बाज़ रहते थे। लेकिन जब यह लोग बिगड़ गये तो इन्हों ने भी तौरात में तब्दीली करनी आरंभ करदी और उन के उलमा दुनियादार और आ़म लोगों की तरह बेअ़मल हो गये। उन्होंने बुराइयों को देख कर नसीहत करने के बजाये आँखें मूँद लीं और चुप्पी साध ली। दुनिया के लोभ में फंस कर तरह-तरह की बिद्अ़तें ईजाद कर लीं और अस्ल दीन का तिया-पाँचा कर डाला।

क्या फिर भी यह लोग नहीं देखते? २८. और कहते हैं कि यह फ़ैसला कब हो गा? अगर तुम (मुसलमान) सच्चे हो (तो बतलाओ) २९. (ऐ नबी!) तू कह दे कि फ़ैसला के दिन काफ़िरों को उन का ईमान लाना लाभदायक न होगा और न ही उन को मुहलत मिले गी। ३०. पस तू उन से मुँह फेर ले और इन्तिज़ार कर, वह भी इन्तिज़ार करें

....

८. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि 'जुरूज़' उस भूमि को कहते हैं कि जहाँ ज़रूरत से कम वर्षा होती हो, फिर नहर और तालों से उस की सींचाई की जाये। इमाम मुजाहिद फ़रमाते हैं कि यह ज़मीन मुल्क यमन में है। इमाम हसन बसरी के नज़दीक ऐसी भूमि और बस्तियाँ यमन में हैं। इब्ने ज़ैद वग़ैरह तशरीह करते है कि 'जुरूज़' उस भूमि को कहा जाता है जिस में पैदावार न हो और गर्द और धूल ही धूल हो। अल्लाह तआला ने सूरः यासीन की आयत न० ३३ में फ़रमाया: "उन की मुर्दा ज़मीन भी हमारी कुदरत की निशानियों में से है। उस को हम ज़िन्दा करते हैं फिर उस से दाने उगाते हैं जिसे तुम लोग खाते हो"। (मुहम्मदी)

सूरः अहज़ाब-33

सूरः अहज़ाब (टुकड़ियाँ, फ़ौजें) मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस सूरः में ७३ आयतें और ९ रूकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है।

१. ऐ नबी! तू (हमेशा) अल्लाह से डरता रह

مِنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝ وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝ مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰۗـِٔيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَاۗءَكُمْ اَبْنَاۗءَكُمْ ۭ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ

➲और (दीन के मामले में ज़ाहिरी) काफ़िरों और (बातिनी काफ़िरों, यानी) मुनाफ़िक़ों की कभी ताबेदारी न करना[२]। अल्लाह बड़े अ़िल्म वाला और बड़ी हिक्मत वाला है। २. और तू उसी बात की पैरवी कर जो तेरे पर्वरदिगार की तरफ़ से तुझ पर नाज़िल हुयी है। बेशक अल्लाह तुम्हारे कामों से बाख़बर है। ३. और अल्लाह पर भरोसा किया करो और अल्लाह ही बिगड़ी बनाने वाला काफ़ी है[३]। ४. अल्लाह ने किसी आदमी के लिये दो दिल नही बनाये (कि एक में तो अल्लाह की मुहब्बत हो और दूसरे में ग़ैर की) और अल्लाह ने तुम्हारी बीवियों को जिन से तुम ज़िहार करते हो, तुम्हारी मायें और तुम्हारे लेपालकों को तुम्हारे बेटे नहीं बनाया[४], यह बातें तो केवल तुम्हारे मुंह की हैं। (जिन की हक़ीक़त कुछ भी नहीं)

....

१. हज़रत उबय्यि बिन क-अ़ब रज़ि० ने हज़रत अबू ज़र रज़ि० से पूछा कि इस सूरः में कितनी आयतें हैं? उन्हों ने उत्तर दिया कि तिहत्तर। इस पर हज़रत उबय्यि ने फ़रमायाः नहीं, मैं ने तो देखा है कि यह सूरः, सूरः बक़रः के क़रीब-क़रीब थी और इस में यह आयत भी पढ़ी जाती थी "खूसट बूढ़ा और बुढ़िया अगर ज़िना करें तो उन्हें बिला तकल्लुफ़ पत्थरों से मार डालो। यह अल्लाह की तरफ़ से उन दोनों को सज़ा है। अल्लाह बड़ा ग़ालिब और हिक्मत वाला है"। (अहमद) इस हदीस से मालूम होता है कि इस सूरः की कुछ आयतें (या कम से कम ऊपर वाली आयत) अल्लाह के हुक्म से उठा ली गयी हैं। इस मामले का बेहतर अ़िल्म अल्लाह पाक ही को है (मुहम्मदी)

२. इस लिये कि यह लोग हमेशा बुरी राह की तरफ़ राहनुमाई करें गे, इस लिये इन की ताबेदारी में नुक़्सान ही नुक़्सान है। हाँ, दीन के अ़लावा किसी दुनियावी मामले में, या दीन ही में किसी अच्छे काम का मश्वरा दें तो उस से इन्कार नही करना चाहिये, इसलिये कि बुरे लोग या बुरी क़ौम के कुछ काम बुरे नही हुआ करते। बुरे काम केवल वही हैं जो दीन के ख़िलाफ़ हैं, बाक़ी वह काम जो दीन के ख़िलाफ़ नहीं हैं वह तो मुसलमान की खोई युयी चीज़ है, उस को तो ले ही लेना चाहिये। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दानाई और हिक्मत की बात मोमिन की खोई हुयी चीज़ है, इस लिये जहाँ कहीं भी उसे पाये वह उस का हक़दार है"। लेकिन यह भी ध्यान रहे कि उस को लेने में इतनी जल्दी भी न करे बल्कि उसे पहले जाँच-परख ले। (सनाई)

३. तू उसी को अपनी बिगड़ी बनाने वाला जान, और इस बात को अच्छी तरह गिरह देले कि अल्लाह के अ़लावा और कोई नही जो उस की आवश्यक्तओं को पूरी कर सके या आड़े समय में उस के कुछ काम आ सके। जो लोग ज़बान से तो अल्लाह पर भरोसा और उस से मुहब्बत का दम भरते हैं मगर अ़मल से उस का सबूत नही दे सकते। इसलिये कि अगर उन के दिल में मुहब्बत होती, तो यह हो नही सकता था कि किसी दूसरे को भी दिल में जगह देता। इस लिये कि अल्लाह ने किसी भी इन्सान के अन्दर दो दिल नही बनाये हैं कि एक में तो अल्लाह की और दूसरे में ग़ैरुल्लाह की मुहब्बत हो। दिल तो एक है, फिर उस में दो की कहाँ गुन्जाइश? बुज़ुर्गों का क़ौल है कि "अल्लाह के अ़िश्क़ की आग अल्लाह के अ़लावा सब चीज़ों को भस्म कर देती है"। ग़ैरुल्लाह की मुहब्बत को दिल में स्थान दे कर अल्लाह से मुहब्बत का दावा करना ही ग़लत है, जितना कि गुस्सा की हालत में अपनी बीवियों को माँ कह देना, या दूसरे के बेटे को अपना बेटा कह कर पुकारना। अल्लाह ने तुम्हारी बीवियों को न तो तुम्हारी माँ बनाया है और न ही तुम्हारे लेपालकों को तुम्हारा बेटा। यह बातें केवल तुम्हारे मुंह की हैं जिन की कुछ भी असलिय्यत➲

नही। जैसा कि मालूम होगा कि अ़रब में यह आ़म चलन था कि पति अपनी पत्नि को माँ की पीठ की तरह कह दिया करता था और इस को ज़िहार कहते थे। (सनाई)

४. अ़रब में आम चलन था कि पति अपनी पत्नी को ''तू मेरी माँ की पीठ की तरह है'' कह दिया करते थे, फिर उस को अपनी माँ की तरह हराम समझ लेते थे, उन के इस ग़लत ख़याल के रद्द में यह आयत नाज़िल हुयी। इस आयत में बतलाया गया कि पत्नी को माता के समान कह देने से वह माता नही हो जाती, उस को माता कहना ग़लत है। (सनाई)

بِأَفْوَاهِكُمْ ۖ وَاللَّهُ يَقُولُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيلَ ﴿٤﴾
ادْعُوهُمْ لِآبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ ۚ فَإِنْ
لَمْ تَعْلَمُوا آبَاءَهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَمَوَالِيكُمْ ۚ
وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُمْ بِهِ وَلَٰكِنْ
مَا تَعَمَّدَتْ قُلُوبُكُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا
رَحِيمًا ﴿٥﴾ النَّبِيُّ أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ ۖ
وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ ۗ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ
بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ
إِلَّا أَنْ تَفْعَلُوا إِلَىٰ أَوْلِيَائِكُمْ مَعْرُوفًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ
فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ﴿٦﴾ وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ
مِيثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ
وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۖ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا ﴿٧﴾
لِيَسْأَلَ الصَّادِقِينَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَأَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ

और अल्लाह सच कहता है और सीधी राह की हिदायत करता है ५. (अल्लाह तुम को हुक्म देता है कि) तुम उन (लेपालकों को) उन के बापों के नाम से बुलाया करो, अल्लाह के हाँ यह बड़ी इन्साफ़ की बात है और अगर तुम उन के बापों को न जानते हो तो वह तुम्हारे दीनी भाई और (धार्मिक) मित्र हैं (पस उन को छोटे भाइयों के समान समझो) और जिन बातों में तुम ग़लती कर जाओ उनमें तुम पर गुनाह नही लेकिन जो काम दिल के इरादे से करो गे (उस पर पकड़े जाने का ख़ौफ़ है ताहम) अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। ६. अल्लाह का नबी मुसलमानों के हक़ में उन की जानों से भी क़रीबतर है[५] और उस की बीवियाँ (अ़िज़्ज़त व इहतराम में) उन मुसलमानों की मायें हैं और अल्लाह की शरीअ़त में रिश्ते दार (यानी बाज़ के साथ दीगर ईमानदारों और मुहाजिरों से क़रीबतर हैं,) लेकिन (तुम भरसक) अपने दोस्तों से कोई सुलूक करो[६] (तो कोई रोक नहीं, हालाँकि मुक़ाबला में रिश्तेदार का हक़ प्रथम हो गा) अल्लाह की शरीअ़त में यह आदेश इसी प्रकार लिखा हुआ है। ७. और (ऐ नबी! क्या तुझे मालूम नही) हमने जब संदेष्टाओं से और तुझ से और नूह से और इब्राहीम से और मूसा से और अ़ीसा बिन मरयम से (इसी तौहीद का उन सब से) पक्का वादा लिया था (तो फिर उन्हें कैसा उम्दा बनाया। इसी प्रकार मुसलमानों को आदेश हुआ है, इसलिये वह भी मज़बूत रहें क्यों कि) ८ इस का परिणाम यह हो गा कि सच्चे लोगों को अल्लाह सच्चाई से प्रश्न करे गा और जो इन्कारी हैं उन के लिये उस ने दुःख की मार तैयार कर रखी है

....

५. यानी जितना हक़ उन की जानों का उन पर है। इस को उदाहरण से यूँ समझें कि अगर कोई ऐसा मौक़ा आ

➲जाये कि नबी की इ़ज़्ज़त को बचाने के लिये किसी मुसलमान को जान भी देनी पड़े तो यह उस मुसलमान पर फ़र्ज़ है कि वह अपनी जान दे दे। माँ-बाप जिस्म का पालन पोशण करते हैं और नबी रूह की तालीम व तर्बियत करता है जिस का प्रभाव उस आदमी की पूरी ज़िन्दगी पर पड़ता है और उसी नतीजे में आख़िरत भी संवरती है, इसीलिये नबी के हुक़ूक़ सब से अधिक हैं (सनाई)

६. इस को उदाहरण से यूँ समझें कि किसी मुसलमान को अल्लाह ने तौफ़ीक़ दी है कि वह एहसान कर सके और वह एहसान करना भी चाहता है। उस के सामने दो ग़रीब हैं पहला उस का निकट संबन्धी है और दूसरा अजनबी और ग़ैर है। तो ऐसे मौक़े पर निकट संबन्धी के साथ एहसान करना चाहिये। कुछ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत को मन्सूख़ कहा है हालाँकि ऐसी कोई बात नही है। एक दहीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अन्सार और मुहाजिरों के दर्मियान भाई का रिश्ता क़ायम कर दिया था वह दोस्ती का था न कि नसब (खानदान) का। जो लेपालक को बेटा बनाने से मना करता है, यह भला कैसे संभव है कि एक मुहाजिर को अन्सार के बाप की वलदिय्यत लिखवाने का हुक्म दे, या अन्सार को मुहाजिर के बाप का। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अन्सार और मुहाजिर के दर्मियान जो भाई-चारा का रिश्ता क़ायम किया था (जिसे "वला" कहा जाता है) उसे इस आयत ने और भी मज़बूती प्रदान की है, "इल्ला अन् तफ़्-अ़लू........में इसी ओर इशारा है। (सनाई)

عَذَابًا أَلِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ
عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا
وَجُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝٩
إِذْ جَاءُوكُمْ مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَإِذْ
زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ
بِاللَّهِ الظُّنُونَا ۝١٠ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا
زِلْزَالًا شَدِيدًا ۝١١ وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ
فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ
إِلَّا غُرُورًا ۝١٢ وَإِذْ قَالَتْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ يَا أَهْلَ
يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا ۚ وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ
مِنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ ۛ وَمَا هِيَ
بِعَوْرَةٍ ۛ إِنْ يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ۝١٣ وَلَوْ دُخِلَتْ
عَلَيْهِمْ مِنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَآتَوْهَا

९. मुसलमानो! तुम अल्लाह की नेमत को याद करो जब तुम पर (चारों तरफ़ से कुफ़्फ़ार की) फ़ौजें चढ़ आयी थीं[७] तो हम ने उन पर तेज़ हवा और (आसमान से फ़रिश्तों की) फ़ौजें भेजीं जिस को तुम ने देखा नहीं था। और अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहा था १०. जब वह (कुफ़्फ़ार) ऊपर की तरफ़ से और नीचे की तरफ़ से (यानी पूरब और पश्चिम से) तुम पर टूट पड़े थे[८] और जब (मारे ख़ौफ़ के तुम्हारी) आँखें फिरी की फिरी रह गयी थीं और (मारे ख़ौफ़ के) कलेजे मुंह को आ चुके थे तुम अल्लाह के बारे में तरह-तरह की बदगुमानी करते थे[९]। ११. उस समय मुसलमानों की जाँच की गयी और (वह ख़ूब ज़ोर-ज़ोर से हिलाये गये।) १२. और जब मुनाफ़िक़ और वह लोग जिन के दिलों में (ईमान वग़ैरह की कमज़ोरी का) मरज़ था (बिइख़्तियार मुँह से) कहते थे कि अल्लाह और उस के रसूल ने जो (विजय का) वादा हम लोगों से किया था वह महज़ धोका था। १३. और जब भी उन में से कई एक कहते थे कि ऐ मदीना के (मुसलमान) बाशिन्दो[१०]! तुम्हारे लिये यहाँ (अब)➲

ठिकाना नहीं पस तुम वापस चले जाओ, और एक गरोह उन में का नबी से घरों को जाने की अनुमति माँगता था, कहते थे कि हमारे घर (बिल्कुल) ग़ैरमहफ़ूज़ {असुरक्षित} हैं हालाँकि उन के घर असुरक्षित नही, वह (इस बहाने से) केवल भागना चाहते हैं[११]। १४. और (हाल यह है कि) अगर (यही मुख़ालिफ़ फ़ौजें) उन पर मदीना के अतराफ़ (चारों तरफ़) से आ जातीं और उन को फ़साद (की जंग) में (शामिल होने की) दावत दी जाती तो तुरन्त उस में कूद पड़ते

....

७. हिज्रत के चौथे वर्ष अरब के काफ़िरों ने यहूद व नसारा से साज़िश कर के आम हल्ला बोल कर मदीना शरीफ़ को घेर लिया और पन्द्रह दिनों तक घेरे रहे। आक्रमण इस लिये नही किया कि उन को घेर कर ही ख़ौफ़ और दहशत से बर्बाद कर दें गे। मुसलमान उतने दिनों तक घिरे रहे। उस दर्मियान अल्लाह ने अपनी कुदरत के अजब करिश्मे दिखाये, आसमान से फ़रिश्तों को मुसलमानों की सहायता और सहयोग कि लिये भेजा। इसी घटना की ओर इस आयत न० ९+१० में संकेत है। रहा यह प्रश्न कि फ़रिश्ते उतरे थे, या 'जुनूद' (फ़ौजें) से कुछ और मुराद है? तो इस का उत्तर सूरः अन्फ़ाल (पारः १०) में दिया जा चुका है। आख़िर जब कुफ़्फ़ार अपने मिशन में नाकाम वापस लौटे तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अब भविष्य में वह कभी भी आक्रमण करने की हिम्मत नही जुटा पायें गे, बल्कि हम ही आक्रमण करें गे। चुनान्चे आप की यह भविष्य-वाणी पूरी हुयी। इस जंग का नाम ''जंग अहज़ाब'' है और ''जंग ख़न्दक़'' भी है। (सनाई) 'अहज़ाब' यह ''हिज़्ब'' का बहुवचन है, इस का अर्थ है ''फ़ौज'' इस जंग में काफ़िरों का लश्कर बहुत से क़बीलों की फ़ौजों पर सम्मिलित था।

८. अल्लामा ख़तीब बग़दादी रह० लिखते हैं कि बनू ग़ितफ़ान ने मदीना को पूरब की ओर ऊँचाई की तरफ़ से और कुफ़्फ़ार ने नीचाई की तरफ़ से घेर लिया था। चूँकि मुसलमानों की जनसंख्या उस समय बहुत कम थी और खन्दक़ (खाई) की सुरक्षा और देख-भाल के लिये मुसलमानों को मदीना शरीफ़ से बाहर निकल कर ठहरना जरूरी था, इसलिय उन को कड़ाके की सर्दी में भी खुले मैदान में रहना पढ़ा। उन के पास ओढ़ने बिछाने तक का कोई सामान न था। इधर इन परेशानियों में तो मुसलामन घिरे हुये थे ही कि उधर दूसरी मुसीबत यह आ खड़ी हुयी कि बनू क़ुरैज़ा के यहूदियों ने वादा ख़िलाफ़ी की और मुआहिदा को तोड़ कर मदीना शहर के अन्दर दंगा-फ़साद शुरु कर दिया। तमाम मुजाहिद ख़न्दक़ की हिफ़ाज़त के लिये शहर के बाहर थे, इस लिये शहर में अन्दर दंगाइयों का मुक़बला करने वाला कोई न था। चुनान्चे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफी हज़रत सफ़िय्या रज़ि० फ़रमाती हैं कि हम लोगों ने मदीना के ठीकरों (कोठरियों) में अपनी हिफ़ाज़त की थी चूंकि मुसलमान मदीना से बाहर दुश्मनों के मुक़ाबला में जमे हुये थे, इसलिये हम लोगों की सुरक्षा करने वाला कोई न था। उधर दूसरी ओर पूरब और पश्चिम की तरफ़ से दुश्मनों का दबाव ख़न्दक़ पर बढ़ता जा रहा था और इस घेरेबंदी की वजह से मुसलमानों पर सर्दी और भूक-प्यास की तक्लीफ़ बढ़ती जा रही थी। इन्हीं हालात की तरफ़ आयत न० ११ में इशारा है। (मवाहिबुर्रहमान)

९. 'अल्लाह के बारे में तरह-तरह की बद गुमानी करते थे' इमाम हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि यह गुमान लोगों के अन्दर अलग-अलग प्रकार के थे। मुसलमानों को तो यह गुमान था कि अल्लाह ने जो वादा किया है उसे अवश्य पूरा करे गा और आख़िर में विजय हमारी ही हो गी। मुनाफ़िक़ों का गुमान यह था कि यह मुसलमान तबाह-बर्बाद कर दिये जायें गे (इब्ने इस्हाक़) इमाम इब्ने जरीर फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ कुछ कमज़ोर अक़ीदा के मुसलमान भी थे जिन को अपनी हलाकत का गुमान था और जो मुनाफ़िक़ थे उन के निफ़ाक़ में और अधिक बढ़ोतरी हो गयी, यहाँ तक कि वह अभागे कहने लगे कि हमारे नबी तो क़ैसर व किसरा के ख़ज़ानों की बशारत देते थे, लेकिन यहाँ यह हाल है कि हम में से कोई ख़ौफ़ के मारे जंगल में पाख़ाना-पेशाब के लिये भी नही जा सकता। (मवाहिबुर्रहमान)

१०. आयत न० १३ में एक शब्द 'यस्रिब' आया है, यह जाहिलिय्यत के ज़माना में मदीना शरीफ़ का पहला नाम

था। इस्लाम के आने के बाद यह नाम बदल कर "मदीना" रख दिया गया। 'ला मुक़ा-म लकुम' (तुम्हारे लिये कोई पनाह का स्थान नहो) यह बात मुनाफ़िक़ लोग मुसलमानों से कहते थे और यह भी कहते थे कि अभी भी ग़नीमत है कि इस्लाम से फिर कर हम लोगों के साथ आ जाओ, वर्ना बर्बाद हो जाओ गे। इस का एक दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि उन मुनाफ़िक़ों ने ख़न्दक़ की सुरक्षा करने वाले मुसलमानों से कहा कि तुम लोग अपने घरों को छोड़ कर यहाँ पड़े हुये हो यह तुम्हारे ठहरने की जगह नहीं है, इसलिये यहाँ से अपने घरों को लौट चलो। और यही दूसरा अर्थ कुछ ज़्यादा मुनासिब मालूम होता है। (मवाहिब)

११. सहीह मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० से रिवायत है कि एक शख़्स ने उनके सामने कहा कि अगर हम उस समय नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ होते तो आप के साथ डट कर जिहाद करते। हज़रत हुज़ैफ़ा ने यह सुन कर फ़रमाया: ऐ मेरे भाई! इस बात की तमन्ना न करो। अल्लाह की क़सम! अगर उस समय तुम होते तो अल्लाह जाने क्या हाल होता। अहज़ाब की लड़ाई की रात हमारा यह हाल था कि अंधेरी रात थी, कड़ाके की ठन्ड पड़ रही थी, ओढ़ने के लिये भी कुछ न था, फिर भी हम सफ़ में होशियारी के साथ बैठे हुये थे। अबूसुफ़यान और उस की फ़ौज हमें वादी की ऊंचाई की तरफ़ से घेरे हुये थी और वादी की नीचाई की तरफ़ से बनू कुरैज़ा के यहूदी ख़तरा बने हुये थे मुसलमानों के लश्कर में जो मुनाफ़िक़ शामिल थे उन्हों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से घरों को जाने की अनुमति मांगनी आरंभ कर दी और इधर-उधर के हीले-बहाने कर के खिकसने लगे।

وَمَا تَلَبَّثُوا بِهَا إِلَّا يَسِيرًا ۝ وَلَقَدْ كَانُوا عَاهَدُوا
اللَّهَ مِن قَبْلُ لَا يُوَلُّونَ الْأَدْبَارَ ۚ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ
مَسْئُولًا ۝ قُل لَّن يَنفَعَكُمُ الْفِرَارُ إِن فَرَرْتُم مِّنَ
الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذًا لَّا تُمَتَّعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝
قُلْ مَن ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُم مِّنَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ
سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۚ وَلَا يَجِدُونَ لَهُم مِّن
دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ
الْمُعَوِّقِينَ مِنكُمْ وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا ۖ
وَلَا يَأْتُونَ الْبَأْسَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ أَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۖ
فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ تَدُورُ
أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَإِذَا
ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُم بِأَلْسِنَةٍ حِدَادٍ أَشِحَّةً عَلَى
الْخَيْرِ ۚ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۚ

फिर तो शहर में बहुत कम ठहरते (बल्कि सुनते ही मुसलमानों पर टूट पड़ते) १५. हालाँकि इस से पहले अल्लाह से वादा कर चुके थे कि हर्गिज़ पीठ न दिखाऐं गे। और (क्या अल्लाह उन से नही पूछे गा?) अल्लाह के वादे का ज़रूर सवाल हो गा। १६. तू कह दे कि मौत से या क़त्ल होने से तुम भागते हो, तो यह भागना तुम को लाभ न दे गा और (भाग कर भी) तुम बहुत ही कम लाभ उठाओ गे (जो क़रीब-क़रीब शून्य के हो गा) १७. (ऐ नबी!) तू कह! भला अगर वह (अल्लाह) तुम्हारे हक़ में (किसी प्रकार की) बुराई करे या तुम को कोई फ़ाइदा पहुंचाना चाहे तो अल्लाह के अ़लावा कौन है (जो इस फ़ाइदे को रोकले, या उस की मुसीबत से) तुम्हारी सुरक्षा कर सके और अल्लाह के सिवा किसी को अपना वाली और मददगार न पायें गे। १८. (तुम में से) जो (खुद भी शरीक नही होते और) दूसरों को (भी) रोकते हैं और अपने भाइयों से कहते हैं कि हमारी तरफ़ आओ (और लड़ाई

से अलग रहो) अल्लाह उन को ख़ूब जानता है। १९ यह मुनाफ़िक़ लोग तुम्हारे मामला में बुख़्ल करते हुये लड़ाई में बहुत कम शरीक होते हैं पस जब कोई ख़ौफ़ आता है तो तुम उन (मुनाफ़िक़ों) को देखते हो कि उन की आंखें यूँ फिरती हैं जैसे किसी पर मौत से बेहोशी आई हो, फिर जब ख़ौफ़ चला जाता है (और तक्लीफ़ के बजाए फ़तह की झलक दिखाई पड़ती है तो यह (मुनाफ़िक़) लोग बेहतरी की उम्मीद पर (मतलब के लिये) बड़ी चर्ब ज़बानी (मीठी-मीठी बातों) से तुम्हारे साथ बातें करते हैं। चूंकि यह लोग दिल से ईमान नही लाये[१२] इसलिये अल्लाह ने उन के नेक काम बर्बाद कर दिये

....

१२. अब्दुल्लाह बिन उबय्यि बिन सलूल जैसे मुनाफ़िक़ों ने मुसलमानों को यह कह कर बहकाना आरंभ कर दिया कि तुम लोग भी हमारी तरह हो जाओ। ज़ाहिर में मिले रहो और पोशीदा तौर पर उन से अलग रहो। जब कुफ़्फ़ार के लश्कर ने मदीना शरीफ़ को चारों ओर से घेर लिया, हालाँकि जंग और लड़ाई की नौबत नही आयी थी, फिर भी ख़ौफ़ की वजह से मौत के साये उन पर मंडलाने लगे। 'यह लोग तुम्हारे मामले में बुख़्ल करते हैं' यहाँ बुख़्ल से मुराद यह है कि ख़न्दक़ के खोदने में हाज़िर न हुये, फिर माली सहायता भी न की। इस तरह उन्हों ने हर प्रकार से अहले ईमान के साथ बुख़्ल किया। लेकिन जब अल्लाह ने काफ़िरों को निकाल दिया और ख़ौफ़ के बादल छट गये तो बुख़्ल की वजह से मुनाफ़िक़ लोग चाहने लगे कि काश उन्हीं को कुल माले ग़नीमत मिल जाये, इस लिये ज़बानी तौर पर खूब बढ़-बढ़ कर अपनी बहादुरी और सहायता के गीत गाने लगे।

इमाम क़तादा रह० फ़रमाते हैं कि यह मुनाफ़िक़ लोग ग़नीमत के बंटवारे के समय ज़बानी तौर पर बड़े तेज़-तर्रार थे और बराबर यही कहे जाते कि हम को दीजिये- हम को दीजिये, हम लोग जिहाद में आप के साथ हाज़िर थे। जंग के वक़्त तो बड़े डरपोक और बख़ील थे, लेकिन जब जंग के बादल छंट गये और मौत का ख़ौफ़ जाता रहा तो बड़े बहादुर हो गये। इन के अन्दर कुछ भी भलाई नही है। (मवाहिब)

وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝ يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ وَاِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ اَنَّهُمْ بَادُوْنَ فِى الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ۗ وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا قٰتَلُوْٓا اِلَّا قَلِيْلًا ۝ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِىْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَ الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ۝ وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَ صَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۫ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا ۝ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ

और यह बात अल्लाह के नज़दीक बहुत ही आसान है[१३]। २०. अभी तक उन को यही ख़याल जम रहा है कि फ़ौजें वापस नहीं गयीं और अगर आज कोई (मुख़ालिफ़) लश्कर आ जाये तो यही लोग यह चाहें गे कि काश हम (शह्र से बाहर) दीहातों में बसे होते, वहीं से तुम्हारे हालात पूछा करते। और अगर यह लोग तुम में होते भी तो लड़ाई में बहुत ही कम शरीक होते[१४]। २१. अल्लाह के रसूल में तुम्हारे लिये यानी जो लोग अल्लाह की मुलाक़ात और पिछले दिन की बेहतरी की उम्मीदें रखते हैं और अल्लाह को बहुत-बहुत याद करते हैं, उन के लिये बेहतरीन नमूना {आदर्श} है[१५]। २२. और जब ईमानदारों ने (कुफ़्फ़ार की) फ़ौजों को देखा

مَّن يَنتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلًا ﴿٢٣﴾ لِّيَجْزِيَ اللَّهُ الصَّادِقِينَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنَافِقِينَ إِن شَاءَ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٢٤﴾

तो कहा: यह तो वही वाक़िआ है जिस का वादा अल्लाह और रसूल ने हम से (पहले ही से) किया हुआ है और अल्लाह और उस के रसूल ने सच फ़रमाया था और इस से भी उन के ईमान और तस्लीम में ज़्यादती हुयी[१६]। २३. इन्ही ईमानदारों में ऐसे लोग भी हैं कि अल्लाह के साथ जो उन्हों ने वादे किये थे[१७] उस में वह पूरे उतरे, उन में से कुछ ने अपनी कामियाबी हासिल कर ली और कुछ उन के अभी इन्तज़ार में हैं और उन्हों ने (वादे) में किसी प्रकार की तबदीली नही की २४. (नतीजा यह होगा कि) अल्लाह सच्चों को उन के सच का बदला देगा और मुनाफ़िक़ों को चाहे गा तो अ़ज़ाब करे गा या उन पर रहम करे गा। अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला, मेहरबान है।

....

१३. यानी ज़ाहिर में अल्लाह के अ़दल और हिक्मत को देखते हुये तअ़ज्जुब होता है और यह बात बहुत भारी मालूम होती है कि वह किसी की मेहनत को बर्बाद कर दे, लेकिन पोशीदा तौर पर उन के अन्दर ऐसी ख़राबी छुपी होती है जो किसी तरह भी उस को दुरूस्त नही होने देती। इस लिये कि किसी भी अ़मल के दुरूस्त होने के लिये ईमान शर्त है और बग़ैर ईमान के वह अ़मल मुर्दा है, इस लिये काफ़िर चाहे जितना अ़मल करें सब बेकार है। (मुवज़्ज़िहुल्- फ़ुर्क़ान)
१४. यानी कुफ़्फ़ार की फ़ौजों के नाकाम वापस लौट जाने के बावजूद भी मुनाफ़िक़ों को इस बात का यक़ीन नही था, इस लिये कि वह डर रहे थे कि कहीं दोबारा मुड़ कर आक्रमण न कर दें। इस लिये उन्हों ने उचित जाना कि शहर को छोड़ कर दूर किसी दीहात में चले जायें और वहीं आने-जाने वालों से मुसलमानों और लड़ाई के बारे में हालात मालूम कर लिया करें (मुवज़्ज़िहुल कुरआन)
१५. 'बेहतरीन नमूना है' यानी जिस प्रकार रसूल ने जिहाद किया, तुम्हें भी जिहाद करना है। जिस प्रकार रसूल ने तक्लीफ़ों में सब्र किया तुम्हें भी सब्र करना है। और हर-हर क़दम पर उन के क़ौल और अ़मल की पैरवी करनी हो गी। यह आयत अगर्चे जिहाद के हुक्म में उतरी है, लेकिन आपने माना व मतलब के लिहाज़ से आ़म है। दीन के हर काम में दुःख-तक्लीफ़ और परेशानी के मौक़े पर इस आयत से सब्र व शुक्र और साबित क़दम रहने की तालीम हासिल करनी चाहिये। अल्हम्दु लिल्लाह! अहले हदीस इस आयत पर अ़मल करते हैं और दुनियाँ-जहान के पीरों, फ़क़ीरों और उलमा व मशाइख़ के मुक़ाबला में रसूल की पैरवी को मुक़द्दम जानते हैं (वहीदी)
१६. 'उन के ईमान और तस्लीम में ज़्यादती हुयी' यानी पहले से कहीं ज़्यादा रसूल से मुहब्बत करने वाले और अपने रब के फ़रमाबर्दार बन गये। इस आयत से अहले हदीस का मज़हब सहीह साबित होता है कि ईमान घटता-बढ़ता है। (वहीदी)
१७. शाने-नुज़ूलः- 'अपने वादे में पूरे उतरे' यानी अल्लाह की राह में जिहाद कर के शहीद हुये जैसे हज़रत हमज़ा रज़ि० वग़ैरह। हज़रत अनस बिन नज़्र रज़ि० किसी कारण बद्र की लड़ाई में शामिल न हो सके थे। इस का उन्हें बहुत ही दुःख था और दिल में यह ठान कर बैठे हुऐ थे कि अब अगर कोई जंग हुई तो उस में ज़रूर हिस्सा लूँ गा। चुनान्चे उहुद की लड़ाई के दिन हज़रत सअ़द रज़ि० नें उन से पूछा: आप कहाँ तशरीफ़ ले जा रहे हैं? उन्हों ने उत्तर दिया कि पहाड़ की तरफ़ से मुझे जन्नत की खुश्बू आ रही है। चुनान्चे उस दिन जी-जान से लड़े। उन के बदन पर ८० से भी अधिक तीर-तल्वार और नेज़ों के ज़ख़्म आये। आख़िर शहादत का प्याला पिया। इन्ही के बारे में यह आयत नाज़िल हुयी। (वहीदी)

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ۭ وَ
كَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿٢٥﴾
وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ
صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ
وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ﴿٢٦﴾ وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ
وَاَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطَـُٔوْهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢٧﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ
كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ
اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٢٨﴾ وَاِنْ كُنْتُنَّ
تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ
اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾ يٰنِسَاۗءَ النَّبِيِّ
مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا
الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَي اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾

२५. (उन मोमिनों की साबित क़दमी का नतीजा यह हुआ कि) अल्लाह ने काफ़िरों को गुस्से ही में नाकाम वापस किया उन्हों ने कुछ फ़ाइदा न पाया[१८]। और अल्लाह ने मोमिनों को जंग से बचा लिया (कि बग़ैर लड़ाई के काफ़िर चलते बने) और अल्लाह बड़ा क़वी ग़ालिब है। २६. और अहले किताब (यहूदियों) में से जिन लोगों ने उन (मक्का के मुश्रिकों) की मदद की थी अल्लाह ने उन को क़िलों में से बाहर निकाल मारा और उन के दिलों में (ऐसा) रोब डाला (कि काफ़ी संख्या में होने के बावजूद कुछ न कर सके) एक फ़रीक़ को तुम क़त्ल करते थे और एक जमाअ़त को क़ैद। २७. और उन की ज़मीनों, मकानों और उन के मालों का तुम को मालिक कर दिया और इस के अ़लावा और ज़मीन[१९] का भी तुम को मालिक किया जिस पर तुम ने अभी तक क़दम नही रखा था। और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है। २८. ऐ नबी! तू अपनी बीवियों से कह दे कि अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी और ज़ेब व ज़ीनत चाहती हो तो (बिहतर है) आओ मैं तुम्हें कुछ दे दिला कर हंसी-खुशी से छोड़ दूँ (क्योंकि मुझ ग़रीब के घर में इस प्रकार के झगड़े-बखेड़े नामुनासिब हैं) २९. और अगर तुम (मेरी हिदायत के ताबे हो कर) अल्लाह और रसूल की खुश्नूदी और आख़िरत (की ज़िन्दगी) को चाहती हो तो (सुनो!) अल्लाह तआ़ला ने तुम नेकोकारों के लिये बहुत बड़ा अज्र तय्यार कर रखा है। ३०. ऐ नबी की बीवियो! जो कोई तुम में से कोई नामुनासिब हर्कत करे गी तो उस को (दूसरों के मुक़ाबले में) दोगुना अ़ज़ाब किया जाये गा और अल्लाह के नज़दीक यह काम बहुत सरल है

....

१८. मदीना शरीफ़ में बनी कुरैज़ा और बनी नज़ीर नामी यहूद के दो बड़े ही शक्तिशाली क़बीले आबाद थे। इन दोनों यहूदी क़बीलों का काम हमेशा मुसलमानों को किसी तरह नीचा दिखाना और नुक़्सान पहुंचाना था। एक मर्तबा उन के बड़े-बड़े नेता (सलाम बिन अबू हुक़ैक़, हय्यि बिन अख़्तब, कनाना बिन रबीअ़ और अबू अ़म्मार वाइली इत्याद) मक्का वालों के पास आये और उन से कहा कि हम और तुम सब मिल कर मुसलमानों पर आक्रमण कर के उन को तबाह कर डालें ताकि रोज़-रोज़ का झगड़ा ही समाप्त हो जाये। मक्का वालों ने उन से कहा कि आप लोग पढ़े-लिखे हैं, भला यह बात बताइये कि हम दोनों (काफ़िरों और मुसलमानों) में किस का धर्म हक़ पर है? यहूदियों ➲

ने कहा कि तुम्हारा दीन उन के दीन से अच्छा है। आख़िर में यहूद के इस मन्डल ने मक्का वालों को राज़ी कर के अपने साथ मिला लिया। फिर यह लोग क़बीला ग़ित्फ़ान, क़बीला क़ैस और क़बीला गीलान के नेताओं से मिले और उन को भी अपने साथ मिलाया। कुरैशी फ़ौज की अगुवाई अबू सुफ़यान और क़बीला ग़ित्फ़ान की उनैयहबिन हिस्न कर रहे थे।

उधर जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को उन की साज़िश का पता चला तो हज़रत सलमान फ़ार्सी रज़ि० से मश्वरा कर के मदीना के चारों तरफ़ खन्दक़ (खाई) खोदने का हुक्म दिया (आज-कल मदीन शरीफ़ में जहाँ जामिआ इस्लामिय्या यूनीवर्सिटी बनाई हुयी है उसी के आस-पास मस्जिद "फ़तह" के नाम से एक मकान बना हुआ है। यह खाई वहीं खोदी गयी थी) खन्दक़ के खोदने में आ़म सहाबा के साथ आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम भी बराबर के शरीक रहे। उस मौक़ा पर एक घटना यह घटी कि एक सख़्त पत्थर खुदाई के दर्मियान रुकावट बन गया जो सहाबा के तोड़ने से न टूटता था। आख़िर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने मुबारक हाथों से उस पर तीन बार वार किये ओर तीनों वार पर उस पत्थर से चिंगारी निकली और हर बार चिंगारी निकलते ही आप "अल्लाहु अक्बर" का नारा बुलन्द करते थे। सहाबा ने जब तक्बीर बुलन्द करने का सबब मालूम किया तो आप ने फ़रमायाः पहले वार पर जो चिंगारी निकली थी उन में मुझे ख़ीरा और मुल्क फ़ारस के महल दिखाये गये और बताया गया कि बहुत जल्द इस पर क़ब्ज़ा होगा। दूसरे वार में जो चिंगारी निकली उस में रूम के सम्राट क़ैसर के महल दिखाये गये, तीसरे वार में जो चिंगारी निकली उस में सन्आ़ (यमन) के महल दिखाये गये और यह फ़रमाया गया कि इन सब पर तुम्हारा क़ब्ज़ा हो गा और यह सब मुसलमानों के क़ब्ज़े में आयें गे। लिहाज़ा ऐ सहाबा! तुम सब प्रसन्न हो जाओ। अल्लाह के फ़ज़्ल से ऐसा ही हुआ और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की भविष्यवाणी पूरी हुयी। इस भविष्यवाणी की भनक मुनाफ़िको को लगी तो उन्हों ने मुसलमानों का मज़ाक़ उड़ाते हुये कहा कि डर के मारे घर से बाहर तो निकल सकते नही और सपना देख रहे हैं मुल्कों को फ़तह करने का। आख़िर हुआ वही जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया था।

ख़न्दक़ की लड़ाई के मौक़े पर मुसलमानों को कैसी-कैसी परेशानियों का सामना करना पड़ा इस का अनुमान हज़रत जाबिर रज़ि० के बयान से लगाया जा सकता है। वह बयान करते हैं कि सहाबा को जाने दीजिये, स्वयँ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पेट पर भूक की वजह से पत्थर बंधा था। हम सब तीन दिन तक इसी प्रकार भूखे रहे। जब भूक से न रहा गया तो मैं इजाज़त ले कर घर आया और अपनी बीवी से पूरा क़िस्सा बयान किया। उन्हों ने कहा कि घर में थोड़ा सा जौ और बकरी का एक छोटा बच्चा है। मैं ने उस बच्चे को ज़ब्ह किया और बीवी ने जौ का आटा पीसा और झट-पट हंडिया चूल्हे पर चढ़ा दी। मैं ने वापस जा कर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से फ़रमाया कि घर में दो-चार आदमियों का खाना है, आप तशरीफ़ ले चलें और एक-आध आदमियों को भी साथ लेलें। आप ने पूरे लश्कर को चलने का हुक्म दे दिया और जाबिर से फ़रमायाः जब तक मैं न पहुंचूँ हंडिया चूल्हे पर ही रहे और मेरे आने तक रोटियाँ न पकाना। आप तशरीफ़ लाये और सब से पहले हंडिया को एक कपड़े से ढक दिया उधर रोटी पकती जाती थी और इधर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस पर शूर्बा और बोटी रख कर सहाबा को तक़्सीम करते जाते थे। यहाँ तक कि तमाम सहाबा ने खूब डट कर खाया। फिर मुझे हुक्म दिया कि सब लोगों के खा-पी लेने के बाद पास-पड़ोस और निकट के संबन्धियों में भी तक़्सीम कर दो। अल्लाह के हुक्म से इतनी बर्कत हुयी कि तमाम सहाबा समेत मेरे घर वालों न खाया और पास-पड़ोस और रिश्ते दारों ने भी खूब खाया फिर भी थोड़ा बहुत बच ही गया।

आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने बड़े ज़ोर की आंधी भेजी और इस के साथ फ़रिश्तों को भी मदद के लिये भेजा। इस आँधी और तूफ़ान ने काफ़िरों के छक्के छुड़ा दिये। आख़िर एक-एक कर के सब लोग भाग खड़े हुये और अल्लाह पाक ने इस प्रकार मुसलमानों को विजय दिलायी। (सनाई)

➲१९. 'जिस पर तुम ने अभी क़दम न रखा था' इस में इशारा ख़ैबर की ज़मीन की तरफ़ है। इस आयत के नाज़िल होने तक ख़ैबर फ़तह नहीं हुआ था, लेकिन इस आयत में उस की बशारत पहले ही से दे दी गयी थी। आख़िर में ख़ैबर भी बग़ैर किसी लड़ाई-भिड़ाई के आराम से फ़तह हो गया। (सनाई)

नोटः- 'और उस ज़मीन का भी (तुम्हें वारिस बनाया) जिस को तुम्हारे क़दमों ने अभी नही पामाल किया' इस में बनी क़ुरैज़ा के साथ जंग की तरफ़ इशारा है। इस की तफ़सील यह है कि इस क़बीला ने वादा ख़िलाफ़ी कर के अहज़ाब की लड़ाई में मुसलमानों के ख़िलाफ़ मुश्रिकों और दूसरे यहूदियों का साथ दिया था। चुनान्चे रिवायत में आता है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अहज़ाब की जंग से वापस आ कर स्नान कर रहे थे कि हज़रत जिब्रील ने बनी क़ुरैज़ा से जंग करने का संदेश सुनाया। आप ने मुसलमानों को तुरन्त ख़बर कर दिया और यह आदेश दिया कि अस्र की नमाज़ वहीं पढ़ें। याद रहे कि यह कबीला मदीना से चन्द किलो मीटर की दूरी पर आबाद था। इस्लामी लश्कर ने उनको चारों ओर से घेर लिया और उनके जवानों को क़त्ल कर के उनकी महिलाओं को लौंडी बना लिया और इस प्रकार मदीना शरीफ़ के अ़लाक़े को उन के नापाक वजूद से पाक कर दिया। इस विषय में विस्तार से मुताला के लिये सहीह बुख़ारी में जंग ख़न्दक़ का बाब देखें................. *ख़ालिद सिद्दीक़ी*

नोटः- जंगों में मुसलसल माले ग़नीमत हासिल होने से मुसलमानों की माली हालत बहुत बेहतर हो गयी और उन की औरतें अच्छी हालत में लगने लगीं तो उन की अच्छी हालत को देख कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बीवियों ने भी अपनी हालत सुधारने के लिये अपने ख़र्चों में इज़ाफ़े की मांग कर दी। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने नाराज़ हो कर अपने आप को एक माह के लिये उन से अलग कर लिया, इस पर आयत न० ३० नाज़िल की गयी। इस के बाद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी तमाम बीवियों को इख़्तियार दे दिया। लेकिन सभी ने अल्लाह और उस के रसूल को पसन्द किया और रसूल को छोड़ कर दुनिया के अ़ैश व आराम को तर्जीह न दी (बुख़ारी-तफ़सीर सूरः अहज़ाब)

इस मौक़े पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास नौ बीवियाँ थीं जिन में पाँच (आइशा, हफ़सा, उम्मे हबीबा, सौदा, उम्मे सलमा) कुरैश ख़ान्दान से थीं और दीगर चार (सफ़िय्या, मैमूना, ज़ैनब, जुवैरिया) दूसरे ख़ान्दान से संबन्ध रखती थीं।

मस्अलाः- कुछ उलमा मर्द के अपनी पत्नी से अलग होने को तलाक़ मानते हैं, लेकिन यह बात सही नही। सही बात यह है कि शौहर अपनी पत्नी को अलग होने का इख़्तियार देदे और पत्नी अलग होने को पसन्द कर ले, तो यह तलाक़ मानी जाये गी और यह तलाक़ रज्ई होगी। लेकिन अगर पत्नी इख़्तियार मिलने के बाद भी अपने आप को, शौहर से अलग करना नही पसन्द करती, तो फिर यह तलाक़ नहीं मानी जायी गी, जैसा कि ऊपर की घटना में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बीवियों ने अलग होने के बजाये अपने को नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ही की हरम में रहना पसन्द किया तो इस इख़्तियार को तलाक़ नहीं शुमार किया गया (तलाक़ का बाब) विस्तार से जानकारी के लिये मौलाना सलाहुद्दीन यूसुफ़ का लिखा हुआ हाशिया देखें। तलाक़ के मसले के तअ़ल्लक़ से यह हाशिया अनिवार्य था। .. ..*ख़ालिद सिद्दीक़ी*

★★★★★

بِسۡــــمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡــمِ

पारः व-मंय्यक़् नुतु (22)

संक्षिप्त विषय सूची

व—मंय्यक़्नुत् (22)

وَمَن يَقْنُتْ مِنكُنَّ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ وَتَعْمَلْ صَالِحًا
نُّؤْتِهَا أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيمًا ۝٣١
يَا نِسَاءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَأَحَدٍ مِّنَ النِّسَاءِ إِنِ اتَّقَيْتُنَّ
فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِي فِي قَلْبِهِ
مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۝٣٢ وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ
وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَىٰ وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ
وَآتِينَ الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ
اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ
تَطْهِيرًا ۝٣٣ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلَىٰ فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ
آيَاتِ اللَّهِ وَالْحِكْمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا ۝٣٤
إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَ
الصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَ

३१. और जो कोई तुम में से अल्लाह की और उस के रसूल की ताबेदार रहेगी और नेक कार्य करेगी तो हम उस को (दूसरों से) दो गुना सवाब देंगे और हम ने उस के लिये इज़्ज़त की रोज़ी तैयार कर रखी है। ३२. ऐ नबी की बीवियो! तुम किसी और औ़रत के दर्जा की नहीं हो (तुम नबी की बीवी हो) अगर तुम (अल्लाह से) डरती हो तो (किसी शख़्स के साथ जो पर्दा के पीछे से तुम से बोले) तुम दबी ज़बान से बातें मत करना वर्ना जिन लोगों के दिलों में (निफ़ाक़ की) बीमारी है वह अपने मतलब की उम्मीदें रखने लगेंगे और दस्तूर के मुताबिक़ बात कहा करो। ३३. और अपने मकानों में ठहरी रहना और पहले जाहिलियत के ज़माना की तरह नंगी न फिरना और नमाज़ अदा करती रहना और ज़कात देती रहना और (बड़ी बात यह है कि) अल्लाह और उस के रसूल की इताअ़त करती रहना। अल्लाह को बस यही मन्ज़ूर है कि वह तुम अहले-बैत से नजासत दूर रख कर तुम को (बिल्कुल) पाक (और साफ़--सुथरी, निथरी) करे[२०]। ३४. और जो कुछ अल्लाह की आयतें और (ईमानी) हिक्मत तुम्हारे घरों में पढ़ी जाती है तुम उन को ख़ूब याद किया करो। निःसंदेह अल्लाह बहुत बारीक देखने वाला और ख़बरदार है। ३५. मुसलमान मर्दों और औरतों ईमानदार मर्दों और औरतों, फ़रमार्बदार मर्दों और औरतों, सच बोलने वाले मर्दों और औ़रतों, सब्र करने वाले मर्दों और औरतों और (अल्लाह से) डरने वाले मर्दों और औरतों

....

२०. इस में किसी शक व शुब्हे की गुंजाइश नहीं कि कुरआन की इस आयत पर जो कोई भी नज़र डालेगा उसे मालूम होगा कि इस आयत में जो अल्लाह ने "अहले-बैत" का शब्द प्रयोग किया है इस से आप सल्लल्लाहु ➲

➲अलैहि व सल्लम की पाक बीवियाँ ही मुराद हैं, क्योंकि तमाम शब्द मुअन्नस (स्त्री लिंग) के हैं, इस का यह अर्थ हुआ कि मुख़ातब वही हैं और आगे-पीछे के अहकाम भी उन्हीं के लिये हैं। पहले तो उन को "ऐ नबी की बीवियो!" कह कर संबोधित किया गया। इस के बाद तमाम शब्द मुअन्नस (स्त्री लिंग) के लाये गये हैं, यहाँ तक कि "पहले जाहिलिय्यत की तरह नंगी न फिरना" में भी मुअन्नस शब्द है, और यह "अहले-बैत" से पहले आया है। 'अहले-बैत' के बाद भी आयत न० ३४ में वही ऊपर की आयतें ही मुख़ातब हैं। मतलब यह हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने नबी की बीवियों को इतनी सख़्त हिदायत किस लिये दी है? इस का उत्तर आगे का वाक्य ख़ुद ही दे रहा है "ताकि तुम अहले-बैत को नजासत से दूर रख कर तुम को बिल्कुल पाक-साफ़ करे"। अगर थोड़ी देर के लिये यह मान भी लिया जाये कि "अहले बैत" से मुराद नबी की बीवियाँ नहीं, बल्कि हज़रत अ़ली, फ़ातिमा, हसन, हुसैन मुराद हैं, तो आयत का तर्जुमा कुछ यूँ होगा, "ऐ नबी की बीवियो! अपने मकानों में ठहरी रहो, जाहिलियत के ज़माने की तरह नंगी न फिरो, नमाज़ पढ़ो, ज़कात दो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त करो, अल्लाह को बस यही मन्ज़ूर है कि वह अ़ली, फ़ातिमा, हसन और हुसैन (अहले-बैत) को नजासत से पाक करे"। ख़ुद शीआ़ हज़रात ग़ौर फ़रमायें कि नेकी के काम करने का हुक्म तो हो रहा है नबी की बीवियों को और उन के कामों के बदले में पाक किया जा रहा है इन चारों को। यह कैसी अन्धेर नगरी है कि नेक काम करें नबी की बीवियाँ और पाक हों यह चार तन पाक। यह तो बिल्कुल ऐसे ही हुआ कि कोई शख़्स ज़ैद नाम के शख़्स से यह कहे कि तुम ख़ूब खाओ-पियो ताकि अ़मर का पेट भर जाये। भला कहीं संभव है कि ज़ैद के खाने से अ़मर का पेट भी भरेगा?

फिर दूसरी बात यह कि क़ुरआन में "अहले बैत" का शब्द और भी स्थानों पर इस्तेमाल हुआ है। उस से मालूम होता है कि हर आदमी की बीवी उस के लिये "अहले-बैत" है। हज़रत इब्राहीम को जब फ़रिश्तों ने लड़के की बशारत दी तो उन की बीवी को आश्चर्य हुआ। इस पर फ़रिश्तों ने कहा "ऐ अहले बैत! तुम पर अल्लाह की रहमत और बर्कतें हों, क्या तुम अल्लाह के फ़ैसले पर आश्चर्य प्रकट करती हो" (पारा:१२, रुकूअ़ ७) यहाँ पर हज़रत इब्राहीम की बीवी के लिये "अहले बैत" कहा गया है। ख़ुलासा यह है कि यहाँ पर शीआ़ हज़रात का "अहले बैत" से हज़रत अली, फ़ातिमा, हसन और हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुम मुराद लेना किसी तरह दुरुस्त नहीं।

وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَ
الْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا
وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ۝
وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ
اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ۭ وَمَنْ يَّعْصِ
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ۝ وَاِذْ
تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ
عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ

और सदक़ा (ख़ैरात) करने वाले मर्दों और औरतों और रोज़ादार मर्दों और औरतों और अपनी शर्मगाहों की सुरक्षा करने वाले मर्दों और औरतों और अल्लाह का बहुत-बहुत ज़िक्र करने वाले मर्दों और औरतों (ग़रज़ उन सब) के लिये अल्लाह ने बड़ी बख़्शिश और बहुत बड़ा बदला तैयार कर रखा है।
३६. और (इसलिये) किसी मुसलमान मर्द या औरत को मुनासिब नही कि जब किसी (दीन के) काम में अल्लाह और उसके रसूल (उन के संबन्ध में) फैसला कर दें तो उन➲

مُبۡدِيۡهِ وَتَخۡشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنۡ تَخۡشٰىهُ ؕ فَلَمَّا قَضٰى زَيۡدٌ مِّنۡهَا وَطَرًا زَوَّجۡنٰكَهَا لِكَىۡ لَا يَكُوۡنَ عَلَى الۡمُؤۡمِنِيۡنَ حَرَجٌ فِىۡۤ اَزۡوَاجِ اَدۡعِيَآٮِٕهِمۡ اِذَا قَضَوۡا مِنۡهُنَّ وَطَرًا ؕ وَكَانَ اَمۡرُ اللّٰهِ مَفۡعُوۡلًا ﴿۳۷﴾ مَا كَانَ عَلَى النَّبِىِّ مِنۡ حَرَجٍ فِيۡمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ؕ سُنَّةَ اللّٰهِ

(मुसलमानों) को भी अपने काम में इख़्तियार बाक़ी हो (उन के लिये जायज़ नहीं कि चूँ-चिरा करें) और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़र्मानी करता है वह खुली गुमराही में पड़ जाता है[२१]। ३७. जब तू ने उस शख़्स को जिस पर अल्लाह के इनाम थे और तू ने भी इनाम किये थे, कह रखा था कि तू अपनी बीवी को रहने दे और अल्लाह से डर और तू (ऐ नबी!) अपने दिल में वह बात छुपाता था जिसे (आख़िर कार) अल्लाह ज़ाहिर करने को था तू (उस के ज़ाहिर करने में) लोगों से ख़ौफ़ करता था। हालाँकि अल्लाह से अधिक ख़ौफ़ करना चाहिये। सो जब ज़ैद (सहाबी) ने उस औरत (ज़ैनब) से अपना संबन्ध तोड़ लिया तो हम ने उस औरत का निकाह तुझ से कर दिया ताकि (तेरे इस निकाह के बाद) मुसलमानों के लैपालक जब अपनी बीवियों से तअल्लुक़ ख़त्म कर चुकें तो उन मुसलमानों को उन महिलाओं से विवाह करने में कोई हरज न हो। और अल्लाह का हुक्म हो कर ही रहता है[२२]। ३८. अल्लाह नबी पर जो काम फ़र्ज़ करता है तो नबी को उस (की अदायगी) में कभी मुज़ाइक़ा (हरज) नही होता। यही अल्लाह का दस्तूर उन लोगों में रहा

....

२१. इस आयत में तक़्लीद करने वालों का रद्द है। और साफ़ ज़ाहिर है कि किसी आयत या हदीस के मुक़ाबले में मुजतहिद की राय पर हर्गिज़ अ़मल न करना चाहिये, बल्कि आयत या हदीस मिलते ही मुजतहिद की राय और क़ियास को तुरन्त छोड़ देना चाहिये (वहीदी)

२२. हज़रत ज़ैद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मुंह बोले बेटे (लैपालक) थे और हज़रत ज़ैनब आपकी फूफ़ी ज़ाद बहन थीं। इन का निकाह ज़ैद से हुआ था, लेकिन कुछ घरेलू इख़्तिलाफ़ात के कारण उन्होंने तलाक़ दे दी। हज़रत ज़ैद के तलाक़ दे देने के बाद आप ने दिल में हज़रत ज़ैनब से निकाह करने का इरादा कर लिया मगर शर्म के नाते ज़ाहिर न फ़रमाया। लेकिन अल्लाह ने उस को ज़ाहिर फ़रमा दिया, बल्कि ज़ैनब का निकाह आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सात आसमानों पर कर दिया। इस निकाह का उद्देश्य यह था कि जाहिलियत की रस्म मिट जाये और सब को मालूम हो जाये कि लैपालक की पत्नी से तलाक़ के बाद लैपालक बनाने वाला निकाह कर सकता है, क्योंकि उस का हुक्म बेटे का सा नही है। (वहीदी)

فِى الَّذِيۡنَ خَلَوۡا مِنۡ قَبۡلُ ؕ وَكَانَ اَمۡرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقۡدُوۡرَا ۙ﴿۳۸﴾ الَّذِيۡنَ يُبَلِّغُوۡنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَ يَخۡشَوۡنَهٗ وَلَا يَخۡشَوۡنَ اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ

जो तुम से पहले थे। और अल्लाह का हुक्म मुक़र्रर ठहर चुका है ३९. (इसलिये) जो लोग अल्लाह के अहकाम पहुंचाते और उसी से डरते थे और अल्लाह के अ़लावा किसी और से न डरते थे (उन की हालत भी अल्लाह

حَسِيْبًا ۝ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ
رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا
كَثِيْرًا ۝ وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝ هُوَ الَّذِيْ
يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ
اِلَى النُّوْرِ ۗ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ۝ تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ
يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚ وَّاَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا ۝ يٰٓاَيُّهَا
النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝ وَّ
دَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ۝ وَبَشِّرِ
الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ۝ وَلَا

के आदेशों का पालन करने में यही थी) और अल्लाह ही हिसाब करने को काफ़ी है। ४०. मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) तुम में से किसी मर्द के बाप नही, लेकिन वह अल्लाह के रसूल और तमाम नबियों के ख़त्म करने वाले हैं (इसलिये अल्लाह उन की ज़रूर मदद करेगा, क्योंकि वह अल्लाह के महबूब हैं) और अल्लाह सब कुछ जानता है[२३]। ४१. मुसलमानो! अल्लाह को बहुत-बहुत याद किया करो। ४२. और सुब्ह व शाम की तस्बीहें पढ़ा करो (उस की कृपा से तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा) ४३. वह स्वँय और उसके (नज़दीकी) फ़रिश्ते तुम्हारे हाल पर कृपा की नज़र रखते हैं ताकि वह तुमको अंधेरों से निकाल कर नूर की तरफ़ ले चले। अल्लाह मोमिनों पर बड़ा ही मेहरबान है। ४४. जिस रोज़ उस से मिलेंगे तो उन को सलाम का तोहफ़ा मिलेगा। और अल्लाह ने उन के लिये इज्ज़त का बदला तैयार किया है। ४५+४६. ऐ नबी! हम ने तुम को (हक़ीक़ी शहादत का) गवाह (निक कामों पर) ख़ुश्ख़बरी देने वाला और डराने वाला और अल्लाह के हुक्म से अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाला और रोशन चराग़ बना कर भेजा है। ४७. और ईमान वालों को शुभ सूचना दे कि उन के लिये अल्लाह के हाँ से बहुत बड़ा फ़ज़्ल है।

....

२३. इस आयत में साफ़-साफ़ इस बात की दलील है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बाद अब कोई नबी नही आयेगा। और जब कोइ नबी नहीं आयेगा तो फिर रसूल के आने का प्रश्न ही नही उठता। 'रिसालत' नबुव्व्त से अहम दर्जा है। हर रसूल, नबी होता है, लेकिन हर नबी रसूल नही। (आ़मतौर पर रसूल उस को कहा जाता है जिन पर किताब उतरी हो और नबी उन्हें जिन पर किताब नहीं उतरी है) मुतवातिर हदीसों से भी नबी करीभ सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का अन्तिम संदेष्टा होना साबित है। एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः मेरी मिसाल संदेष्टाओं में बिल्कुल ऐसी ही है जैसे किसी शख़्स ने एक सुन्दर मकान बनाया लेकिन उस में एक ईंट की जगह छोड़ दी। लोग उस भवन के चारों तरफ़-फिर कर देखते और उस की बनावट की प्रशंसा करते, लेकिन उस ख़ाली स्थान को देख कर कहते कि यह स्थान भी पुर कर लिया जाता तो अच्छा होता। पस मैं नबियों में उसी ख़ाली स्थान की ईंट हूँ"। (मुस्नद अहमद) इमाम तिर्मिज़ी ने भी इस हदीस को नक़ल किया है और "सहीह-हसन" कहा है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि मेरे आने के बाद नबुव्वत और रिसालत ख़त्म हो गयी, मेरे पश्चात् अब न कोई रसूल आयेगा और न ही नबी। सहाबा रज़ि० को यह सुन कर बहुत रंज हुआ तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व

➲सल्लम ने फ़रमायाः "लेकिन खुश्ख़बरियाँ देने वाले" सहाबा ने इस का अर्थ पूछा तो आप ने फ़रमायाः "मुसलमानों के सपने जो नबुव्वत के हिस्सों में से एक हिस्सा हैं"। (मुस्नद अहमद) इमाम तिर्मिज़ी ने इस हदीस को "सहीह" लेकिन "ग़रीब" कहा है। ऊपर एक हदीस में मकान की मिसाल दी गयी है। इस हदीस को अबू दावूद ने भी नक़्ल किया है और आख़िर में इतना और भी इज़ाफ़ा किया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "मैं उस ईंट की जगह हूँ, मुझ पर नबियों का सिलसिला ख़त्म कर दिया गया है।" इस इज़ाफ़ा को बुख़ारी, मुस्लिम और इमाम तिर्मिज़ी ने भी नक़ल किया है। मुस्नद अहमद की एक दूसरी रिवायत में है कि आप ने फ़रमायाः "मैं आया और मैंने उस ख़ाली ईंट का स्थान पुर कर दिया"। मुस्नद अहमद की एक दूसरी रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "मेरे बाद नबुव्वत का सिलसिला बन्द हो गया मगर खुश्ख़बरी देने वाले"। सहाबा ने पूछा इसका क्या अर्थ है? आपने फ़रमायाः "अच्छे सपने" या यह फ़रमायाः "नेक सपने"। मुस्नद अब्दुर्रज़्ज़ाक़ वग़ैरह में भी यह रिवायत इस प्रकार है "मकान को लोग देख कर मकान मालिक से कहते हैं कि इस ईंट का स्थान ख़ाली क्यों छोड़ दिया? सो वह ईंट मैं हूँ"।

सहीह मुस्लिम शरीफ़ में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "मुझे तमाम नबियों पर छः फ़ज़ीलतें दी गयी हैं, (१) मुझे जामे (ठोस) कलिमात अता किये गये हैं (२) केवल रोब और प्रताप से मेरी सहायता की गई है। (३) ग़नीमत के माल को मेरे लिये हलाल कर दिया गया (४) मेरे लिये पूरी ज़मीन मस्जिद बना दी गयी। पाकी के लिये पानी के समान (५) सारी मख़्लूक़ की तरफ़ नबी बना कर भेजा गया हूँ। (६) मेरे आने के साथ ही नबियों का सिलसिला ख़त्म कर दिया गया है"। इस हदीस को तिर्मिज़ी ने भी नक़्ल किया है और इसे "हसन-सहीह" कहा है। सहीह मुस्लिम शरीफ़ ने भी ईंट वाली मिसाल की रिवायत नक़्ल की है और अन्त में यह नक़ल किया है आप ने फ़रमायाः "मैं आया और मैं ने उस ख़ाली जगह को पुर कर दिया"। मुस्नद अहमद में यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "मैं अल्लाह की तरफ़ से उस वक़्त ही नबियों का सिलसिला ख़त्म करने वाला था जबकि हज़रत आदम को अभी पूरे तौर पर पैदा भी नहीं किया गया था"। एक हदीस में हैं कि "मेरे कई नाम हैं। मैं मुहम्मद, अहमद, और माही (कुफ़्र-शिर्क को मिटाने वाला) हूँ, अल्लाह तआला मेरी वजह से कुफ़्र को मिटा देगा। मैं "हाशिर" हूँ, तमाम लोगों का हश्र मेरे क़दमों के नीचे होगा। मैं "आक़िब" हूँ, यानी मेरे बाद कोई और नबी नहीं (बुख़ारी, मुस्लिम) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास आये गोया आप रुख़्सत कर रहे हैं, फिर आप ने तीन मर्तबा फ़रमायाः "मैं उम्मी हूँ, मैं उम्मी हूँ, मेरे पश्चात् कोई नबी नहीं, मैं फ़सीह कलिमात दिया गया हूँ, जो निहायत जामे और पूरे हैं। मैं जानता हूं कि जहन्नम के दारोग़ा कितने और अर्श को उठाने वाले कितने हैं, मेरा तआरुफ़ (परिचय) मेरी उम्मत से कराया गया है-----(मुस्नद अहमद) हाफ़िज़ इब्ने कसीर रह० फ़रमाते हैं कि कुरआन मजीद के इस स्पष्ट बयान और सहीह अहादीस के बाद अब जो कोई नये नबी होने का दावा करे, या उस को तस्लीम करे, तो उस के काफ़िर होने में तनिक भर संदेह नहीं है। (राज़)

---

४८. और किसी काफ़िर और मुनाफ़िक़ का कहना न मानना और तुम उन के तकलीफ़ देने की कुछ पर्वाह न करना और अल्लाह पर भरोसा करना। और अल्लाह ही बिगड़ी बनाने वाला काफ़ी है। ४९. मुसलमानो! जब➲

تَمَسُّوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّونَهَا ۚ فَمَتِّعُوهُنَّ وَسَرِّحُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ﴿٤٩﴾ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ اللَّاتِي آتَيْتَ أُجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمِّكَ وَبَنَاتِ عَمَّاتِكَ وَبَنَاتِ خَالِكَ وَبَنَاتِ خَالَاتِكَ اللَّاتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ وَامْرَأَةً مُؤْمِنَةً إِنْ وَهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ أَنْ يَسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً لَكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۗ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِي أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٥٠﴾ تُرْجِي مَنْ تَشَاءُ مِنْهُنَّ وَتُؤْوِي إِلَيْكَ مَنْ

➲ तुम ईमान्दार औ़रतों से निकाह करो फिर (किसी उचित कारण से संभोग से पूर्व ही तुम) उन को तलाक़ दे दो तो तुम्हारे लिये उन पर ज़िद्दत का कोई हक़ नहीं कि तुम उस मुद्दत को गिनते रहो (और यह ख़्याल दिल में रखो कि जब तक तीन महीने ख़त्म न हों, उन पर हमारा अधिकार है ऐसा ख़्याल ग़लत है) पस तुम उन को कुछ दे दिला कर इज़्ज़त के साथ रुख़सत किया करो। ५०. ऐ नबी! (देख) तेरी बीवियाँ जिन का तू ने हक़ अदा कर दिया है और तेरी लौंडियाँ जो (ग़नीमत में) अल्लाह ने तुझे अ़ता की थीं और तेरे चचा की बेटियाँ, तेरी फूफ़ी की बेटियाँ, तेरे मामू की बेटियाँ, तेरी ख़ालाओं की बेटियाँ जिन्होंने तेरे साथ हिजरत की थी और (इन के अ़लावा) जो ईमानदार औ़रत अपने आप को नबी को सौंप दे (यानी निकाह में देना चाहे) हलाल की थीं यह (बिताद निकाह करने की अनुमति ख़ास तेरे लिये थी और मुसलमानों के लिये नहीं। उन के लिये उन की बीवियों और लौंडियों के बारे में जो हम ने हुक्म दे रखे हैं हम उन को ख़ूब जानते हैं (मगर तू उन पाबन्दियों से आज़ाद है) ताकि तुझ पर किसी प्रकार की तंगी न हो। और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला रहम करने वाला है[२४]। ५१. उन (बीवियों) में से जिसको तू चाहे (कुछ मुद्दत तक) अलग कर दे और जिस को चाहे अपने पास बुला ले।

....

२४. अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में यह बतलाया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी जिन बीवियों को महर दिये हैं वह सब आपके लिये हलाल हैं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तमाम ही बीवियों का महर साढ़े बारह ऊक़िया था। इस के लग-भग पाँच सौ रुपये बनते हैं। हाँ, हज़रत उम्मे हबीबा बिन्त अबू सुफ़यान का महर हज़रत नजाशी ने अपने पास से चार सौ दीनार अदा किया था। इसी प्रकार हज़रत सफ़िया बिन्त हय्यि का महर केवल उन की आज़ादी थी। यह ख़ैबर की लड़ाई में गिरफ़्तार हो कर आयी थीं। आप ने उन को आज़ाद कर दिया और आज़ाद करने को ही महर क़रार दिया और फिर निकाह फ़रमाया। हज़रत जुवैरिय्या बिन्त हारिस ने महर के बदले में जितनी रक़म की माँग की थी, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने वह पूरी रक़म हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शमास को दे कर हज़रत जुवैरिया से निकाह किया था।

इसी प्रकार जो लौंडियाँ ग़नीमत में आपके क़ब्ज़े में आयीं वह भी आपके लिये हलाल हैं। हज़रत सफ़िय्या और जुवैरिया आप की लौंडी थीं, आप ने उन्हें आज़ाद कर दिया। रैहाना बिन्त शमऊन और मारिया क़िबतिय्या आप की मिलकिय्यत थीं। मारिया से आपके एक बेटे इब्राहीम नामी पैदा हुये। निकाह के बारे में यहूद व➲

➲नसारा ने अपनी मन मानी चला रखी थी इसलिये क़ुरआन मजीद ने यहाँ पर बीच की राह बतला दीं नसारा के हाँ निकाह के लिये यह शर्त थी कि जिस औ़रत-मर्द का नसब सात पुश्त तक न मिलता हो केवल उन्हीं से निकाह जायज़ समझते थे और यहूदियों का हाल यह था कि वह बहन, भाई की लड़की से भी निकाह कर लेते थे। चुनाचे शरीअ़त ने यह रास्ता दिखाया कि भांजी और भतीजी से निकाह नाजायज़ और चचा की लड़की, फूफी, मामू और ख़ाला की लड़की से जायज़ क़रार दिया (मुहम्मदी)

हज़रत आ़इशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि मैं उन औ़रतों को शर्म दिलाया करती थी जो अपने आप को नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हवाले कर देती थीं। और मैं कहा करती थी कि यह औ़रतें बग़ैर महर के अपने-आपको हवाले कर देने में नहीं शर्मातीं? लेकिन जब यह आयत नाज़िल हुई तो मैं ने कहा कि अल्लाह ने आप पर कुशादगी कर दी है । इसका मतलब यह हुआ कि आयत न० ५१ में यही औरतें मुराद हैं और इन्ही के बारे में आप को इख़्तियार दिया गया है कि जिस को चाहें कुबूल करें और जिस को चाहें न कुबूल करें, फिर यह भी आप को इख़्तियार दिया गया कि जिन्हें आप ने कुबूल नही किया उन्हें जब चाहें कुबूल फ़रमा सकते थे। आ़मिर शुअ़बी फ़रमाते हैं कि जिन औ़रतों ने अपने आप को हवाले किया और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उन्हें कुबूल नहीं फ़रमाया उन में उम्मे शुरैक भी थीं। इस आयत का एक मतलब यह भी बयान किया गया है कि आप की बीवियों के बारे में आप को इख़्तियार दिया गया कि अगर चाहें तो बीवियों के दर्मियान बारी मुक़र्रर करें या न करें, जिस को चाहें पहले कर दें और जिसे चाहें बाद में, इसी प्रकार बात-चीत और दूसरे कामों में भी। लेकिन मालूम होना चाहिये कि इस रुख़सत के बावजूद भी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमेशा अ़द्ल और इन्साफ़ ही किया (मुहम्मदी) जो लोग एक से अधिक बीवियाँ रखने पर एतराज़ करते हैं वह पहले अपने नबियों, रसूलों, अवतारों और ऋषियों-मुनियों के जीवन का मुताला करें तो उन्हें मालूम हो जायेगा कि उन के बुज़ुर्गों ने भी एक से अधिक शादियाँ की हैं।(राज़)

تَشَآءُ ۭ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۭ
ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ
بِمَآ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۭ
وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ۝ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنْ
بَعْدُ وَلَآ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ
حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ
شَيْءٍ رَّقِيْبًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ
النَّبِيِّ اِلَّآ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ
اِنٰىهُ ۙ وَلٰكِنْ اِذَا دُعِيْتُمْ فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ
فَانْتَشِرُوْا وَلَا مُسْتَاْنِسِيْنَ لِحَدِيْثٍ ۭ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ
يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيٖ مِنْكُمْ ۡ وَاللّٰهُ لَا يَسْتَحْيٖ مِنَ

और जिसको तूने किसी समय नाराज़गी से अलग किया हो उन में से भी किसी को (ज़रूरत के मुताबिक़) तलब कर ले तो तुझ पर गुनाह नही। यह (तेरी आज़ादी) इसलिये है कि (इस से) उन सब की आंखें ठन्डी रहें और (किसी तरह) ग़मगीन न हों। और जो कुछ भी तू उन को दे उस पर सब राज़ी रहें। और अल्लाह को तुम्हारे दिलों के ख़यालात मालूम हैं क्योंकि अल्लाह जानने वाला इल्म वाला, है ५२. आज के बाद उन के अ़लावा कोई भी औ़रत तुझे हलाल नहीं, और न ही किसी और बीवी को उन की जगह करना जायज़ है कि (उन में से किसी एक को छोड़ कर दूसरी से तू निकाह कर ले) अगर्चे उस (दूसरी औ़रत) की सुन्दरता➲

الْحَقِّ ۗ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ
حِجَابٍ ۚ ذَٰلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ ۚ وَمَا كَانَ

तुझ को भली मालूम हो, लेकिन अगर कोई लौंडी हो तो कोई हरज नही। और अल्लाह हर एक चीज़ पर निग्राँ है[२५]।५३. मुसलमानो! (एक और आवश्यक समाजी आदेश सुनो!) नबी के घर में बिना अनुमति के कभी दाख़िल न हुआ करो, हाँ जब तुम को खाने के लिये बुलाया जाये (तो इस सूरत में बेशक आओ) मगर खाना पकाने से पहले न आया करो हाँ, ठीक दावत के समय दाख़िल हुआ करो फिर जब खा चुको तो चले जाया करो और बातों-बातों में दिल लगा कर बैठे न रहा करो (इस प्रकार एक तो समय नष्ट होता है और दूसरे) इस से पैग़म्बर (या जिनके घर दावत पर बुलाया है उस) को तकलीफ़ होती है (तुम्हारे बैठे रहने से) वह तुम से हया करता है और अल्लाह हक़ बात को ज़ाहिर कर देने से नहीं रुकता (सुनो!) जब तुम उन (नबी की बीवियों) से कोई वस्तु माँगो तो पर्दे के पीछे से माँगा करो (क्योंकि आज से इस्लाम में पर्दा का हुक्म नाज़िल होता है[२६]) यह तरीक़ा तुम्हारे और उन के दिलों को बहुत-कुछ साफ़ रख सकता है।

....

२५. शाने नुज़ूल :- नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक मर्तबा वलीमा की दावत की तो कुछ लोग खाना खा लेने के बाद बैठ कर बातें करते रहे, उस समय यह आयत नाज़िल हुई। (सनाई)

२६. यह आयत न० ५३ वह पहली आयत है जिसमें पर्दा का हुक्म आया है। (सनाई)

لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تَنْكِحُوا أَزْوَاجَهُ
مِنْ بَعْدِهِ أَبَدًا ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا ۝
إِنْ تُبْدُوا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمًا ۝ لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِي آبَائِهِنَّ وَلَا أَبْنَائِهِنَّ
وَلَا إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءِ إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءِ
أَخَوَاتِهِنَّ وَلَا نِسَائِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ ۗ
وَاتَّقِينَ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝
إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ
يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَ

पस तुम को चाहिये कि अल्लाह के रसूल (की नाफ़र्मानी कर के उस) को (किसी प्रकार की) तकलीफ़ न देना और न उस के बाद उस की बीवियों से कभी निकाह करना (ऐसा करना हमेशा के लिये नाजायज़ है) निःसंदेह यह काम अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ा पाप है[२७]। ५४. अगर तुम किसी मामले को ज़ाहिर करो या उसको छुपाओ तो (दोनों बराबर हैं, क्योंकि) अल्लाह हर एक चीज़ को जानता है। ५५. उन (औरतों) को अपने बाप-दादा, या हक़ीक़ी बेटों या हक़ीक़ी भाइयों, या हक़ीक़ी भतीजों या भान्जों, या अपनी (पड़ोसी) औरतों या ख़रीदे हुये गुलामों के सामने बेपर्दा होने में कोई गुनाह नहीं।

الْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝ وَالَّذِيْنَ
يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا
فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ۝ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ

तुम भी (ऐ औरतो!) अल्लाह से डरती रहो। बेशक अल्लाह हर एक चीज़ पर हाज़िर-नाज़िर है। ५६. अल्लाह और उस के फ़रिश्ते नबी पर दरूद भेजते हैं[२८]। ऐ मुसलमानों! तुम भी उस पर दरूद आर सलाम भेजा करो (यानी कहा करो अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला मुहम्मदिव्व-अ़ला आ़लि मुहम्मदिन----) ५७. (और सुनो!) जो लोग अल्लाह और रसूल को तकलीफ़ देते हैं (यानी उन की नाफ़रमानी करते हैं) अल्लाह ने दुनिया और आख़िरत में उन पर लानत की है और उन के लिये ज़िल्लत की मार तैयार कर रखी है।[२९] ५८. जो लोग मुसलमान मर्दों और औ़रतों को बग़ैर किसी (लानत-मलामत कें) काम के यातनायें देते हैं वह बहुत बड़ा बुहतान और खुले पाप (का बोझ अपनी गर्दन पर) उठाते हैं। ५९. ऐ (हमारे प्यारे नबी!

....

२७. यानी काफ़िर और मुनाफ़िक़ जो चाहें बकते रहें, मुसलमानों के लिये यह जायज़ नहीं कि वह आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़िन्दगी में या आप के देहान्त के बाद ऐसा मामूली से मामूली काम करें जिस से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहिं व सल्लम को तकलीफ़ पहुंचे। उन के लिये लाज़िम है कि वह अपने मुक़द्दस रसूल की अ़ज़मत और बड़ाई का ख़्याल रखें, ताकि कहीं ऐसा न हो कि मामूली ग़फ़लत और ढील की वजह से कोई तकलीफ़ पहुंच जाये और दुनिया व आख़िरत का टोटा सहना पड़े। उन कामों में से एक तो यही है कि आप के बाद आप की बीवियों से कोई विवाह करना चाहे। नबी की बीवियों की अ़ज़मत और बड़ाई नबी के तअ़ल्लुक़ की वजह से स्थापित है और इसी रुहानी हैसियत से वह दुनियाँ-जहान के मुसलमानों की मायें कहलायीं। आप स्वयँ ग़ौर फ़रमायें: क्या किसी उम्मती के निकाह में जाने के बाद उन का दर्जा और मर्तबा बाक़ी रह सकता है? वह इन्सानों के सर्दार, मुत्तक़ियों के इमाम और बेहतरीन, अख़्लाक़ के मालिक इन्सान की ख़िदमत में अपनी उम्रें बिताने वाली थीं जिन के सामने जब दो राहों में से एक राह चुनने को कहा गया तो उन्होंने बड़ी ख़ुशी से दुनिया के अ़ैश व आराम पर लात मार कर अल्लाह के रसूल की ख़ुश्नूदी और आख़िरत का रासता इख़्तियार कर लेने का एलान किया। चुनान्चे इतिहास गवाह है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के देहान्त के बाद उन्होंने किस प्रकार सब्र, शुक्र और नेकी के साथ पूरी ज़िन्दगी गुज़ारी और दीन के आदेशों को फैलाने और इस्लाम की ख़िदमत के लिये अपने-आप को वक़्फ़ (समर्पित) कर दिया और कभी भूल कर भी दुनिया की लज़्ज़तों का ख़्याल न आया। और ख़्याल आता भी कैसे? अल्लाह तआ़ला ने जो पहले ही "तुम को ख़ूब-ख़ूब पाक करे" (आयत ३३) कह कर उन को पाक-साफ़ करने का जिम्मा अपने ऊपर ले लिया है। (मुवज़्ज़िहुल् मुर्क़ान)

२८. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है "जो शख़्स मेरे ऊपर एक मर्तबा दरूद भेजेगा अल्लाह उस पर दस-दस रहमतें भेजता है, उसके दस गुनाह माफ़ करता औरउसकेदर्जे जन्नत में बुलन्द करता है। एक दूसरी हदीस में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "क़ियामत में सब से ज़्यादा क़रीब मुझ से वह होगा जो मुझ पर अधिक से अधिक दरूद भेजता है"। एक अन्य हदीस में फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला ने कुछ फ़रिश्ते ऐसे भी मुक़र्रर कर रखे हैं जो ज़मीन पर चलते-फिरते रहते हैं और जब कोई मुझ

➲पर दरूद भेजता है वह फ़रिश्ते उस को मेरे पास पहुंचाते हैं"। एक और मर्फ़ूअ़ हदीस में फ़रमाया: "उस की नाक मिट्टी में मिले (ज़लील हो) जो रमज़ान का महीना पा कर भी अपने गुनाह न बख़्शवा सका। और उस की नाक मिट्टी में मिले जिसने अपने माँ-बाप या दोनों में से एक को पाया और उन की सेवा कर के जन्नत न हासिल कर ली। और उस की नाक मिट्टी में मिले जिसने मेरा नाम सुना, लेकिन मुझ पर दरूद न भेजा"। हज़रत कअ़ब रज़ि० के एक प्रश्न का उत्तर देते हुये आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अगर तू तमाम वज़ीफ़ों से ज़्यादा दरूद ही पढ़े, या सिर्फ़ दरूद ही को अपना वज़ीफ़ा बना ले, तो अल्लाह तेरे सारे ग़मों को दूर कर देगा और तमाम गुनाहों को बख़्श देगा।

२९. अ़ल्लामा इब्ने कसीर रह० फ़रमाते हैं कि यह आयत आम है और इस का मुख़ातब हर वह शख़्स है जिसने चाहे जिस तरह आप को तकलीफ़ पहुंचाई हो। आप को तकलीफ़ पहुंचाने की बहुत सी शक्लें हैं। (१) जिस ने आप की ज़ात को तकलीफ़ दी (२) आप की बीवियों पर आरोप लगाया (३) आप के आल को तकलीफ़ पहुंचाई (४) आपकी शरीअ़त में बिगाड़ पैदा किया और भिन्न-भिन्न प्रकार की बिद्अ़तें ईजाद कीं। ज़ाहिर है इन कामों से आप की ज़ात को तकलीफ़ पहुंचेगी, इसलिये यह सब लोग दुनिया और आख़िरत में लानती हैं। आयत न० ५८ "जो लोग मुसलमान मर्दों और औ़रतों को तकलीफ़ देते हैं" की तफ़सीर बयान करते हुये हाफ़िज़ इब्ने कसीर रह० लिखते हैं कि मुसलमान मर्दों और महिलाओं पर ऐसे आरोप लगाते हैं जिन से वह बरी हैं। ऐसे पापियों में राफ़िज़ी फ़िर्क़ा भी दाख़िल है जो सहाबा को बुरा-भला कहता और उन पर झूठे आरोप लगाता है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक हदीस में फ़रमाया: "मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह से डरो, मेरे बाद उन को निशाना न बनाना, जिस ने उन को दोस्त रखा तो उन से दोस्ती, मुझ से दोस्ती है। और जिसने उन से दुश्मनी की तो मुझ से दुश्मनी की। और जिसने उन को तकलीफ़ पहुंचाई उस ने मुझे तकलीफ़ पहुंचाई"। (तिर्मिज़ी) एक अन्य हदीस में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह भी फ़रमाया: "जब तुम ऐसे लोगों को देखो जो मेरे सहाबा को बुरा-भला कहते हैं तो उन से कहो कि तुम्हारी शरारत पर अल्लाह की लानत है।" आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने मेरे सहाबा को बुरे शब्दों से याद किया तो उस पर अल्लाह, फ़रिश्तों और दुनिया-जहान के तमाम लोगों की लानत है"।

आयत न० ५९ की तफ़सीर में शैख़ इब्ने कसीर रह० लिखते हैं कि मदीना में कुछ ऐसे फ़ासिक़ लोग भी थे जो रात की तारीकी में मदीना की राहों पर औ़रतों से छेड़-छाड़ करते थे। महिलायें जब रात की तारीकी में पेशाब-पाख़ाना के लिये जातीं तो यह मौक़ा की ताक में लगे रहते अगर कोई पर्दे वाली औ़रत को देखते तो उसे शरीफ़ और आज़ाद जान कर उस को कुछ न कहते, लेकिन अगर कोई बिना पर्दे वाली बाँदी मिल जाती तो उस का मज़ाक़ उड़ाते। अल्लाह तआ़ला ने उन को आगाह किया कि अगर यह अपनी आ़दतों से बाज़ न आये तो हम तुझ को उन का नाम बता देंगे और इन का मदीना में रहना दूभर हो जायेगा, जहाँ कहीं भी पाये जायेंगे क़त्ल कर दिये जायेंगे। चुनान्चे ऐसा ही हुआ, बहुत से मुनाफ़िक़ तो अपनी इन बुरी आदतों से बाज़ आकर ईमान ले आये और बाक़ी लोगों को तलवार से ख़त्म कर दिया गया और मदीना शरीफ़ से उनका नाम-निशान मिट गया। (मवाहिब)

لِّأَزْوَٰجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَآءِ ٱلْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ

तू अपनी बीवियों, बेटियों और मुसलमानों की औ़रतों से कह दे कि (बाहर चलते समय) बड़ी-बड़ी चादरें ओढ़ा करें, इस से उन की➲

مِنۡ جَلَابِيۡبِهِنَّ ؕ ذٰلِكَ اَدۡنٰۤى اَنۡ يُّعۡرَفۡنَ فَلَا يُؤۡذَيۡنَ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوۡرًا رَّحِيۡمًا ۝ لَئِنۡ لَّمۡ يَنۡتَهِ الۡمُنٰفِقُوۡنَ وَ
الَّذِيۡنَ فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ مَّرَضٌ وَّالۡمُرۡجِفُوۡنَ فِى الۡمَدِيۡنَةِ
لَنُغۡرِيَنَّكَ بِهِمۡ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوۡنَكَ فِيۡهَاۤ اِلَّا قَلِيۡلًا ۝
مَّلۡعُوۡنِيۡنَ ۛۚ اَيۡنَمَا ثُقِفُوۡۤا اُخِذُوۡا وَقُتِّلُوۡا تَقۡتِيۡلًا ۝
سُنَّةَ اللّٰهِ فِى الَّذِيۡنَ خَلَوۡا مِنۡ قَبۡلُ ۚ وَلَنۡ تَجِدَ لِسُنَّةِ
اللّٰهِ تَبۡدِيۡلًا ۝ يَسۡـئَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ؕ قُلۡ اِنَّمَا
عِلۡمُهَا عِنۡدَ اللّٰهِ ؕ وَمَا يُدۡرِيۡكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوۡنُ
قَرِيۡبًا ۝ اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الۡكٰفِرِيۡنَ وَاَعَدَّ لَهُمۡ سَعِيۡرًا ۝
خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَاۤ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوۡنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيۡرًا ۝ يَوۡمَ
تُقَلَّبُ وُجُوۡهُهُمۡ فِى النَّارِ يَقُوۡلُوۡنَ يٰلَيۡتَنَاۤ اَطَعۡنَا اللّٰهَ
وَاَطَعۡنَا الرَّسُوۡلَا ۝ وَقَالُوۡا رَبَّنَاۤ اِنَّاۤ اَطَعۡنَا سَادَتَنَا

पहचान हो सकेगी (किसी शरीफ़ घराने की हैं) तो उन को (किसी क़िस्म की) तक्लीफ़ न होगी। और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है। ६०. (इतने निज़ाम से भी) अगर मुनाफ़िक़ लोग और जिनके दिलों में (बदकारी की) बीमारी है और शहरों में इधर-उधर की बेसबूत बातें उड़ाने वाले बाज़ न आये, तो हम तुझको उन पर उभार देंगे (कि तू उन को ऐसी सज़ा दे कि याद करें) फिर वह तेरे साथ इस (मदीना) में बहुत कम ठहर सकेंगे (वह भी ऐसे हाल में कि) ६१. चारों तरफ़ से उन पर लानत होगी जहाँ कहीं पाये जायेंगे पकड़े जायेंगे और क़त्ल किये जायेंगे। ६२. जितने लोग गुज़र चुके हैं उन में खुदाई क़ानून यही रहा है और तुम खुदाई क़ानून में कभी रद्दो-बदल नहीं पाओगे। ६३. क़ियामत का हाल यह लोग तुझ से पूछते हैं (तू उन से कह कि) उसका इल्म अल्लाह के पास है। और तुझे क्या मालूम शायद वह घड़ी निकट ही आने वाली हो।[३०] ६४. (सुनो)! अल्लाह ने (उसका) इन्कार करने वालों पर लानत की है और उनके लिये भड़कता हुआ अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। ६५. उस में उनको हमेशा रहना होगा वहा न कोई उनका दोस्त होगा औरनकोई सहायक ६६. जिस रोज़ उनके चेहरे आग में उलट पलट किये जायेगें (जैसे कबाब सीख़ पर। उस रोज़ यह लोग) कहेंगे कि हाय अफ़सोस! हमने अल्लाह की ताबेदारी की होती और रसूल का कहना माना होता ६७. और (इससे पहले वह) यह भी कह चुके होंगे कि (हाय) हम ने अपने सर्दारों

....

३०. एक आराबी (देहाती, बद्दू) ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से प्रश्न किया कि क़यामत कब आयेगी? आपने उसके प्रशन का उत्तर देते हुये फ़रमायाः तुम ने क़ियामत के लिये क्या तैयारी कर रखी है? उसने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे पास न तो कोई बहुत अधिक नमाज़ है और न ही रोज़ा, मगर मैं अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता हूँ। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः तू जिससे मुहब्बत करता है उसके साथ होगा, सहाबा यह सुन कर बहुत प्रसन्न हुये। कुछ ऐसे इन्कार करने वाले भी थे जो शैतान के बहकावे में आकर इन्कार करते थे और एतराज़ के तौर पर सवाल उठाते थे कि अगर क़ियामत कोई चीज़ है और उसके आने का समय निश्चित है तो कब आयेगी? वह यह चाहते थे कि उन्हें साल, महीना, दिन और घन्टा-मिन्ट बता दिया जाये। उनके प्रश्न के उत्तर में कहा गया कि उसके आने का सही समय केवल अल्लाह ही को मालूम है। (मवाहिब)

وَكُبَرَآءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَا ۝٦٧ رَبَّنَآ ءَاتِهِمْ ضِعْفَيْنِ
مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيرًا ۝٦٨ يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ
ءَامَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ ءَاذَوْا مُوسَىٰ فَبَرَّأَهُ اللَّهُ
مِمَّا قَالُوا ۚ وَكَانَ عِندَ اللَّهِ وَجِيهًا ۝٦٩ يَٰٓأَيُّهَا
الَّذِينَ ءَامَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۝٧٠
يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَٰلَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ
وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُۥ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ۝٧١
إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَ
الْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَن يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا
وَحَمَلَهَا الْإِنسَٰنُ ۖ إِنَّهُۥ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ۝٧٢
لِّيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَٰفِقِينَ وَالْمُنَٰفِقَٰتِ وَالْمُشْرِكِينَ
وَالْمُشْرِكَٰتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَٰتِ ۗ
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝٧٣

और बड़े लोगों का कहा माना, सो उन्होंने हम को (अल्लाह के) रास्ते से गुमराह कर दिया[३१]। ६८. ऐ हमारे परवरदिगार! तू उनको हम से दोगुना अज़ाब पहुंचा और बहुत बड़ी लानत की मार कर। ६९. ऐ मुसलमानो! तुम उन लोगों की तरह न बनना जिन्होंने मूसा को तक्लीफ़ें पहुंचाई थीं तो अल्लाह ने उनकी बेहूदा बातों से उस को पाक किया और वह अल्लाह के नज़दीक बड़ी इज़्ज़त वाला था[३२]। ७०. मुसलमानो! अल्लाह से डरते रहो और हमेशा दुरुस्त बात कहा करो (इसका परिणाम यह होगा कि) ७१. अल्लाह तुम्हारे आमाल दुरुस्त कर देगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की ताबे दारी करेगा वह अवश्य मुराद (कामयाबी) पायेगा ७२. (सुनों!) हमने (अहकाम की) अमानत को आसमानों और ज़मीनों और पहाड़ों पर पेश किया तो उन्होंने उसके उठाने से इन्कार कर दिया और उस से डर गये[३३]। और इन्सान ने उसे उठा लिया (मगर पूरे तौर पर उसे अदा न कर सका, क्योंकि) वह बड़ा ज़ालिम और जाहिल है। ७३. (इसका) नतीजा यह होगा कि अल्लाह मुनाफ़िक़ मर्दों और औरतों और मुशिरक मर्दों और औरतों को (उनकी बदकारी पर) अज़ाब करेगा और ईमानदार मर्दों और औरतों पर तवज्जोह फ़रमायेगा। और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला, मेहरबान है।

....

३१. इस आयत से और इसके अ़लावा और भी बहुत सी आयतों से तक़लीद का रद्द साबित होता है, लेकिन शर्त यह है कि मुक़ल्लिद लोग इन्साफ़ की नज़र से देखें और पढ़ें (वहीदी)।

३२. कुछ फ़सादी और शरीर क़िस्म के यहूदियों ने हज़रत मूसा अ़लै० पर यह आरोप लगाया कि उन्होंने जंगल में ले जा कर हज़रत हारून को क़त्ल कर दिया ताकि वह हुकूमत में उनका शरीक न बन सकें। लेकिन अ़ल्लाह तआ़ला ने उनका जनाज़ा आसमान पर दिखा दिया और उनकी आवाज़ सुनाई दी कि मैं अपनी मौत मरा हूँ, मुझे मूसा ने क़त्ल नही किया। इसी प्रकार हज़रत मूसा पर कोढ़ की बीमारी का भी आरोप लगाते थे कि इनके छुप कर स्नान करने का मतलब यह है कि ज़रूर इनके जिस्म में कोई बीमारी है। या तो इनके बदन पर सफ़ेद दाग़ हैं, या उनका खुसिया(फ़ोता) फूला हुआ है। एक दिन हज़रत मूसा अपने कपड़े पत्थर पर रख कर स्नान करने लगे कि वह पत्थर उनके कपड़े ले भागा। और उस स्थान पर जा कर रुका जहां ➲

सब लोग खड़े थे। हज़रत मूसा ने जब यह देखा तो अपनी लठिया ले कर उस पत्थर को दौड़ाया और उसको मारने लगे, चुनान्चे उस पत्थर पर चोट के निशान पड़ गये और लोगों ने उनको नंगे देख लिया कि कोई ऐब नहीं है। इस हदीस को हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० ने रिवायत किया है और इमाम तिर्मिज़ी ने नक़ल किया है। (मुवज़्ज़िहुल कुरआन)

यह आयत उस वक़्त उतरी जब लोगों ने हज़रत ज़ैद को "ज़ैद बिन मुहम्मद" कह कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तकलीफ़ पहुंचाई। उलमा ने यह भी लिखा है कि यह आयत उस समय नाज़िल हुयी जब आप ग़नीमत का माल तक़सीम कर रहे थे इतने में एक सहाबी ने टोक दिया कि आप जिस तरह तक़सीम कर रहे हैं अल्लाह इससे राज़ी नहीं है (यानी आप अन्याय कर रहे हैं) इस पर आपने उत्तर दिया अल्लाह हज़रत मूसा पर रहम करे वह मुझ से भी ज़्यादा सताये गये लेकिन उन्होंने सब्र किया (वहीदी)

३३. 'अमानत' से अल्लाह के आदेश और अहकाम मुराद हैं। इनको अदा करने के इक़रार से आसमान, ज़मीन और पर्वत डर गये और माफ़ी मांगी, लेकिन आदम ने उनको कुबूल कर लिया, लेकिन चन्द ही दिनों के बाद उन से ग़लती हो गयी। कुछ उलमा ने 'अमानत' से मुराद माल की अमानत और कुछ ने शर्मगाह की हिफ़ाज़त और कुछ लोगों ने अक़्ल, सोच-फ़िक्र मुराद लिया है। कुछ उलमा ने इस आयत का तर्जुमा इस प्रकार भी किया है "हम ने अपनी अमानत आसमान और ज़मीन और पहाड़ों को सौंपी तो उन्होंने तो अपनी अमानत अदा कर दी और ख़यानत नही किया और इन्सान ने उसे अदा नहीं किया और ख़यानत की" (वहीदी)

सूरः सबा — (34)

सूरः सबा मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुई। इसमें ५४ आयतें और छः रुकूअ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है।

१. तमाम तारीफ़ों का मालिक अल्लाह है, तमाम आसमान और ज़मीन जिस के मातहत हैं (अन्जाम कार) आख़िरत में भी तारीफ़ का वही मुस्तहिक़ है और वह बड़ी हिकमत वाला और बड़ा ख़बर रखने वाला है। २. जो कुछ ज़मीन के अन्दर (दाना और पानी इत्यादि) दाख़िल होता है और जो कुछ उस से (हरियाली, कोंपल और पानी इत्यादि) निकलता है और जो कुछ आसमान से (पानी इत्यादि) उतरता

سُورَةُ سَبَإٍ مَكِّيَّةٌ (٣٤) (٥٤)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَلَهُ
الْحَمْدُ فِي الْآخِرَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ﴿١﴾ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ
فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا
يَعْرُجُ فِيهَا ۚ وَهُوَ الرَّحِيمُ الْغَفُورُ ﴿٢﴾ وَقَالَ الَّذِينَ
كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ ۖ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ
عَالِمِ الْغَيْبِ ۖ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ
وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي
كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٣﴾ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

है और जो कुछ उस की तरफ़ चढ़ता है, अल्लाह सब को जानता है और वह बड़ा रहम करने वाला और बख़्शने वाला है। ३. और काफ़िर लोग कहते हैं कि हम पर क़ियामत कभी नही आने की। (ऐ नबी!) तू (उन से) कह! अल्लाह की क़सम! वह अवश्य आयेगी, मुझे अपने परर्वदिगार की क़सम[2] जो (मख़लूक़ की) तमाम पोशीदा बातों को जानने वाला है, एक ज़र्रा (कण) भर चीज़ भी न आकाश में और न ज़मीन में उस से छुपी रह सकती है और उस से भी छोटी या बड़ी जो कुछ भी है अल्लाह की रोशन किताब में है[3]। ४. नतीजा यह होगा कि जो लोग ईमान लाए और नेक आमाल करते हैं उन के लिये बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है। ५. और जो लोग हमारे हुक्मों को झुठलाने की मुख़ालिफ़ाना कोशिश करते हैं उन्ही के लिये सख़्त अज़ाब का हिस्सा है[4]। ६. जिन लोगों को इल्म (से कुछ हिस्सा) मिला है वह (अच्छी तरह) जानते हैं कि जो कुछ तेरी तरफ़ पर्वरदिगार के हाँ से उतरा है।

....

१. सूर: सबा मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुई है। इस में ५४ आयतें और छ: रुकूअ हैं। इस प्रकार की सूरतें जिन का आरंभ "अल्हम्दु लिल्लाह" से होता है पाँच हैं (१) सूर: फ़ातिहा (२) अन्आम (३) कह्फ़ (४) सबा (५) फ़ातिर। इस प्रकार सूर: का आरम्भ करने में हिकमत यह है कि अल्लाह की बेशुमार नेमतों की दो क़िस्में हैं। पहली क़िस्म ईजाद की नेमत है, यानी उस ने अ़दम से (जब हम कुछ नही थे) वजूद बख़्शा और जीवित रहने के सारे साधन जुटाये। फिर बन्दे की भी दो हालतें हैं (१) इब्तिदा और आरम्भ, जो इस दुनियाँ से तअ़ल्लुक़ रखती है। (२) दोबारा जीवित करना और वहाँ (आख़िरत) का इन्तिज़ाम करना। इन पाँचों सूरतों में कहीं तो ईजाद (नये सिरे से पैदा करने) की नेमतें याद दिलायी गयी हैं और कहीं दुनियाँ में ज़िन्दा रहने की। अल्लाह की हम्द व सना के बाद क़ियामत का बयान है कि वह अवश्य ही आयेगी और नेकों और बुरे बन्दों को उन के अच्छे-बुरे कर्मों का फल भोगना होगा, क़ियामत लाने का अर्थ ही यही है कि सब को उनके कर्मों के अनुसार बदला दे कर न्याय किया जाये। जिन लोगों का क़ुरआन और उस के वादों पर विश्वास है वह इस को हक़ जानते हैं और जिन की बुद्धि मारी गयी है वह शक़ व शुब्हे में पड़े हुये हैं कि इन्सान जब मर कर सड़-गल जायेगा फिर दोबारा कैसे ज़िन्दा हो जायेगा? हालाँकि जिस प्रकार हम ने स्पष्ट दलीलों से समझाया है, उस से हर कोई समझ कर यक़ीन कर लेगा (मिर्ज़ा हैरत देहलवी)

२. पूरे क़ुरआन मजीद में तीन स्थान पर क़सम खा कर कहा गया है कि क़ियामत आ कर रहेगी। (१) सूर: यूनुस में फ़रमाया: "यह लोग तुझ से क़ियामत के बारे में मालूमात करते हैं कि क्या भला उस का आना बरहक़ है? तू कह दे कि हाँ-हाँ, मेरे रब की क़सम! वह यक़ीनन हक़ है और तू शिकस्त नही दे सकता" (पारा: ११, सूर: यूनुस, आयत ५३) (२) सूर: तग़ाबुन में फ़रमाया: "काफ़िरों का ख़्याल है कि वह क़ियामत के दिन नही उठाये जायेगे। तू कह दे कि मेरे रब की क़सम! तुम अवश्य ही उठाये जाओगे और अल्लाह पर यह बहुत आसान काम है (पार: २६, सूर: तग़ाबुन, आयत७) (३) यहाँ सूर: सबा में फ़रमाया: "काफ़िर कहते हैं कि हम पर क़ियामत कभी नहीं आयेगी (ऐ नबी) आप कह दीजिये कि अल्लाह की क़सम वह ज़रूर आयेगी" (सबा-३)

➲अल्लाह तआ़ला ने इन तीनों स्थानों पर क़सम के ज़रीआ़ जवाब दे कर मज़ीद ताकीद करते हुये फ़रमाया है कि क़ियामत ज़रूर आयेगी इस में किसी प्रकार के शक व शुब्हे की तनिक भर गुन्जाइश नहीं है। अल्लाह तआ़ला पोशीदा बातों को जानने वाला है, उस से कोई ज़र्रा तक पोशीदा नही है, सब उसके इल्म में हैं, मर कर, सड़-गल कर, रेज़ा-रेज़ा हो कर उन की हड्डियाँ कहाँ हैं? वह सब जानता है और सबको इकट्ठा करने की कुदरत रखता है। फिर आगे क़ियामत के आने की यह हिक्मत बयान फ़रमाई ताकि दुनिया में जिन्होंने अच्छे-बुरे कर्म किये हैं आख़िरत में उसी के अनुसार अच्छा-बुरा बदला मिल सके। फिर आगे क़ियामत की एक और हिक्मत यह बयान फ़रमाई कि ईमानदार भी क़ियामत के दिन जब नेकों को नेक और बुरों को बुरा बदला पाते देखेंगे तो पूरा-पूरा यक़ीन हो जायेगा (दुनिया में अगर यक़ीन में कुछ कमी रहेगी तो वह आख़िरत में पूरे यक़ीन में बदल जायेगी) और उस समय पुकार कर कह उठेंगे कि हमारे पास हमारे रब के रसूल हक़ को ले कर आये थे। उस वक़्त कहा जायेगा कि यह है जिस का वादा रहमान ने किया था और रसूलों ने सच-सच कह दिया था। अल्लाह ने तो लिख दिया था कि तुम क़ियामत तक रहोगे, सो अब क़ियामत तक रहना है। लो अब क़ियामत का दिन आ चुका है। वह अल्लाह बहुत बुलन्द, बहुत इज़्ज़त और पूरे ग़लबे वाला है। उस पर न किसी का बस है और न ज़ोर। हर चीज़ उस के सामने पस्त और ज़लील है। दुनिया की तमाम मख़्लूक़ अपनी-अपनी भाषा और अपनी-अपनी शरीअ़त के मुताबिक़ उस की प्रशंसा के गुन गाती हैं। (सारांश मुख़्तलिफ़ तफ़ासीर)

३. आगे-पीछे अल्लाह के इल्म का बयान चल रहा है, इसलिये ज़्यादा उचित यही है कि "किताबे-मुबीन" से मुराद लौहे महफ़ूज़ लिया जाये।

४. इस आयत से मालूम हुआ कि बनी आदम दो प्रकार के हैं (१) फ़रमाबर्दार (आज्ञाकारी) (२) नाफ़र्मान (अवज्ञाकारी), जैसे आ़म तौर पर इन्सान दो प्रकार के होते हैं (१) आ़लिम (बुद्धिमान)(२) जाहिल (मूर्ख) इसलिये हर उस अ़मल में जिसमें ग़ौर-फ़िक्र और सोच-विचार की ज़रूरत होती है, उस काम में इल्म रखने वालों की राय मानी जाती है, इसलिये इल्म रखने वाले ख़ूब जानते हैं कि जो कुछ तुम पर नाज़िल किया गया है वह तुम्हारे रब की तरफ़ से नाज़िल किया गया है (सनाई)

مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَيَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ
الْحَمِيْدِ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى
رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِيْ
خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝ اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ
بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ
الْبَعِيْدِ ۝ اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنْ نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ
اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

वह बिल्कुल सच है[६] और ग़ालिब और हम्द व सना के मुस्तहिक़ अल्लाह की राह दिखाता है ७. और जो काफ़िर हैं वह कहते हैं कि आओ! हम तुम को एक ऐसा आदमी बतलायें जो कहता है कि (मरने के बाद) बिल्कुल रेज़े-रेज़े हो कर भी तुम को एक नई पैदाइश में आना होगा। ८. क्या यह अल्लाह पर झूठ बाँधता है, या उस का पागल-पन है (ग़ौर से देखा जाये तो कुछ भी नही) बल्कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नही रखते, अ़ज़ाब और दूर की गुमराही में हैं। ९. क्या उन्होंने अपने आगे और पीछे आसमान और ➲

لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبۡدٍ مُّنِيۡبٍ ۝٩ وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا دَاوٗدَ مِنَّا
فَضۡلًا ؕ يٰجِبَالُ اَوِّبِىۡ مَعَهٗ وَالطَّيۡرَ ۚ وَاَلَـنَّا لَـهُ
الۡحَدِيۡدَ ۝١٠ اَنِ اعۡمَلۡ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرۡ فِى السَّرۡدِ وَاعۡمَلُوۡا
صَالِحًا ؕ اِنِّىۡ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ بَصِيۡرٌ ۝١١ وَلِسُلَيۡمٰنَ الرِّيۡحَ
غُدُوُّهَا شَهۡرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهۡرٌ ۚ وَاَسَلۡنَا لَهٗ عَيۡنَ

ज़मीन पर भी ग़ौर नही किया? (कि जिसने इतनी बड़ी मख़्लूक़ पैदा की है, क्या उस से बओ़द (असंभव) है कि उन को पुन: पैदा कर दे?) अगर हम चाहें तो उन को ज़मीन में धंसा दें या आकाश के टुकड़े उन पर गिरा दें। (ग़रज़ जो चाहें हम करें) कुछ शक नहीं कि इस में हर उस एक बन्दे के लिये दलील है जो अल्लाह की तरफ़ झुकता है। १०. और हम ने दावूद को बहुत बड़ा फ़ज़्ल दिया था (यह कि पहाड़ों को निर्देश दिया कि) ऐ पहाड़ो! ऐ जानवरो! तुम दावूद के साथ तस्बीहें पढ़ते रहो और उसी के लिये हम ने लोहे को नर्म कर दिया[6] ११. (और हुक्म दिया कि) पूरी ज़िरहें बनाओ और उन के जोड़ने में अन्दाज़ा रखो और नेक अ़मल किया करो। मैं नि:सन्देह तुम्हारे कामों को देख रहा हूँ। १२. और सुलैमान के लिये एक विशेष, प्रकार की हवा को हम ने मुसख़्ख़र (अधीन) कर दिया था जो सुब्ह के वक़्त एक महीने की सैर की दूरी तक चली जाती थी[7] और शाम को एक महीने जितना। और हम ने उस के लिये पिघले हुये तांबे का चश्मा जारी कर दिया।

....

५. कुरआन की परिभाषा में "इल्म" केवल उस का नाम है जिसे अल्लाह ने नाज़िल किया है। मतलब यह है कि जो अल्लाह और उसके रसूल ने फ़रमाया, फिर बाद में सहाबा ने जो कुछ पढ़ा और पढ़ाया, और बस।

६. हज़रत दावूद के लिये लोहे को कैसे नर्म कर दिया? इस का इल्म केवल अल्लाह को है। ज़ाहिर में तो यही मालूम होता है कि कोई ख़ास सूरत नर्म करने की थी। अ़रबी ग्रामर को सामने रखा जाये तो तर्जुमा यह होगा "हम ने उसी के लिय लोहा नर्म कर दिया" इस तर्जुमे से हज़रत दावूद के लिये एक खुसूसियत पैदा हो गयी। इस से यह भी मालूम हुआ कि जिस प्रकार आज-कल लोग भट्ठियों में डाल कर पानी की तरह पिघलाते हैं, यह शक्ल हर्गिज़ मुराद नहीं। अगर इस को मुराद लेते हैं तो फिर हज़रत दावूद की खुसूसिय्यत कहाँ बाक़ी रह गयी? (सनाई)

७. कुछ लोगों ने हज़रत सुलैमान के इस वाक़िआ को अ़क़्ल और क़ियास के ख़िलाफ़ जान कर उल्टी तावीलें कर डाली हैं। लेकिन इस में तावील करने की कोई ज़रूरत नहीं है। आप देखें, किसी ज़माना में लोग परिन्दों की तरह उड़ना असंभव जानते रहे होंगे, लेकिन आज कल ऐसा ही हो रहा है। किसी ज़माना में लोग हज़ारों मील का सफ़र कुछ घंटे में तै कर लेने को ग़लत जानते थे, लेकिन आज के साइंस ने सही साबित कर दिया और ऐसे हवाई जहाज़ बना डाले जिन पर सवार हो कर चन्द घन्टों में पूरी दुनिया का चक्कर लगा कर अपने घर लौट आइये। इसी प्रकार साइंस की तरक़्क़ी हज़रत सुलैमान के वाक़िए को (जो देखने में बड़ा आश्चर्य जनक लगता है), सही साबित कर देगी। अभी तो साइंस ने कोई विशेष तरक़्क़ी नही की है, जैसे-जैसे और

तरक्की करेगा हज़रत सुलैमान के इस वाकिए को सत्य साबित कर देगा।

आज-कल एक और आला (उपकरण) है जिससे उड़ने का काम लिया जाता है उस का नाम गुब्बारा है। हो सकता है हज़रत सुलैमान का तख़्त भी इसी गुब्बारा की तरह उड़ता रहा होगा और उस में उड़ने के तअ़ल्लुक़ से कुछ विशेष उपकरण (आले) लगे रहे होंगे। बहर हाल हज़रत सुलैमान के तख़त का हवा में उड़ना असंभव मान कर उस का इन्कार या तावील करना जल्द बाज़ी होगी।

इमाम राज़ी रह० अपनी तफ़सीर में लिखतें हैं कि "हज़रत सुलैमान के आधीन यह हवा न थी जो आज-कल चल रही है, क्योंकि यह तो आ़म लोगों के फ़ाइदे और नफ़ा (लाभ) के लिये है।" इसलिये हम ने उस तख़्त को गुब्बारा के समान बताया है। हाँ, शायद यहाँ पर यह प्रश्न उठे कि गुब्बारा की ईजाद (आविष्कार) तो काफ़िरों ने भी कर दिया, तो फिर यह मोजिज़ा कैसे बना? तो इस का उत्तर यह है कि मोजिज़ा की हक़ीक़त सिर्फ़ यह है कि नबी से ऐसा काम ज़ाहिर हो जो उस नबी के ज़माना के लोग न कर सकें (हाँ, नबी के बाद का ज़माना गुज़र जाने के बाद उस को लोग कर सकते हैं) इस को मिसाल से इस प्रकार समझें कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से एक मोजिज़ा "शक्कुल क़मर" (चाँद के दो टुकड़े होना) ज़ाहिर हुआ जो उस ज़माने के लोग नही कर सकते थे; लेकिन चौदह सौ वर्ष गुज़र जाने के बाद अगर आज के साइंस और टेकनालोजी के दौर में कोई दो टुकड़े कर दे, तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मोजिज़े पर कोई फ़र्क़ नही पड़ता है। मोजिज़ा केवल नबी के ज़माने और नबी के लोगों ही तक के लिये होता है, क़ियामत तक के लिये नही। इसी प्रकार हज़रत सुलैमान का अपने ख़ास तख़्त पर बैठ कर उड़ना उस ज़माना के लिये मोजिज़ा ही था, आज-कल गुब्बारों में चाहे जितना उड़ते फिरें।

फिर दूसरी बात यह कि हज़रत सुलैमान के इस वाक़िआ को कुरआन मजीद ने मोजिज़ा (चमत्कार) या अ़लामात (ख़ास निशानी) नही कहा है। (सनाई)

नोट :- कुरआन की इन आयात को सामने रखते हुये हज़रत सुलैमान अ़लै० के उड़ने को मोजिज़ा (चमत्कार) के तौर पर ही बयान किया गया है। मोजिज़ा केवल अल्लाह की तरफ़ से होता है। इन्सानी कोशिश, कारीगरी एक अलग चीज़ है जो मोजिज़ा नही कही जा सकती (राज़) कहने का मतलब यह है कि मोजिज़ा के मिस्ल क़ियामत तक कोई ईजाद नही कर सकता–ख़ालिद।

और बाज़ जिन्नात भी उस के पर्वरदिगार के हुक्म से उस के सामने काम करते थे। जो कोई उन में से हमारे हुक्म से मुँह मोड़ेगा हम उस को आग के अ़ज़ाब का मज़ा चखा देंगे। १२. जो कुछ वह (सुलैमान) चाहता उस के हुक्म से उस के लिये क़िले, नक़्शे और बड़े-बड़े हौज़ों की तरह प्याले और भारी देगें बनाते। ऐ दावूद के कुंबे वालो! अल्लाह का शुक्र करो। और मेरे बंदों में से बहुत कम

الْقِطْرِ ۚ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۚ
وَمَنْ يَزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿١٢﴾
يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُ مِنْ مَحَارِيبَ وَتَمَاثِيلَ وَجِفَانٍ
كَالْجَوَابِ وَقُدُورٍ رَاسِيَاتٍ ۚ اعْمَلُوا آلَ دَاوُودَ شُكْرًا ۚ
وَقَلِيلٌ مِنْ عِبَادِيَ الشَّكُورُ ﴿١٣﴾ فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ
الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَىٰ مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ
مِنْسَأَتَهُ ۖ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ أَنْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ

الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِي الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿١٤﴾ لَقَدْ كَانَ
لِسَبَاٍ فِيْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّشِمَالٍ ۬ؕ
كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَّ
رَبٌّ غَفُوْرٌ ﴿١٥﴾ فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ
وَبَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّ
اَثْلٍ وَّشَيْءٍ مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ﴿١٦﴾ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ؕ

शुक्रगुज़ार हैं। १४. पस जब हम ने उस पर मौत का हुक्म जारी किया तो ज़मीन के एक कीड़े (दीमक वग़ैरह) ने आम लोगों को उस पर आगाह किया जो सुलैमान का अ़सा खा रहा था। पस जब (उस अ़सा के गिरने से) सुलैमान (भी) गिरा तो जिन्नों को मालूम हुआ कि (हमारा ग़ैब की बातें जानने का दावा ग़लत है) अगर हम ग़ैब (की बातें) जानते तो (इस) ज़िल्लत के अज़ाब (यानी सुलैमान की क़ैद) में न रहते। १५. सबा क़ौम के (खुद) अपने ही घरों में (कुदरत की एक बहुत बड़ी) निशानी थी[८] कि (उन की बस्तियों में) दायें-बायें दो बाग़ थे (उस वक़्त के नबी ने उन से कहा कि) अपने रब का दिया हुआ खाओ और उस का शुक्र करो (देखो तुम्हारा) मुल्क (कितना) उम्दा (पैदावार देने वाला) है और पर्वरदिगार बख़्शने वाला है। १६. इस पर भी उन्होंने मुँह मोड़ा पस हम ने उन पर बड़े ज़ोर का सैलाब भेजा (जिस से तमाम क्षेत्र बर्बाद हो गया) और हम ने उन के दो तरफ़ा बाग़ों के बदले में उन को दो बाग़ ऐसे दिये जिस में सख़्त बदमज़ा फल, झाऊ के पेड़ और थोड़े-बहुत बे-हक़ीक़त बैर थे। १७. यह उन की नाशुक्री का बदला हम ने उन को दिया।

....

८. 'तमासील' यह "तिम्साल" का बहुवचन है। इस से मुराद उन स्थानों के नक़्शे (मानचित्र) हैं जो जंगी ज़रूरतों के तहत कभी तो अपने मुल्क में जंगी इमारतें बनाने के लिये काम में आते हैं और कभी दूसरी हुकूमतों की जंगी इमारतों को जांचने और परखने के लिये बनाये जाते हैं। कुछ लोग इससे मुराद मूर्तियाँ (स्टेचू) और तस्वीरें (चित्र) लेते हैं और दलील यह देते हैं कि इस्लाम में तो हराम हैं, लेकिन उस समय-काल में जायज़ था। लेकिन आयत के आगे और पीछे के टुक्ड़ों पर ग़ौर फ़रमायें, तो मालूम होगा कि यहाँ जंग की तैयारी के लिये जंगी साज़-सामान (उपकरणों) का बयान चल रहा है, फिर ऐसे मौक़े पर 'महारिब' (क़िलों) के साथ चित्रों और मूर्तियों की क्या तुक है? हाँ, अगर नक़्शा (मानचित्र) मुराद लिया जाये तो बात समझ में आती है। इसलिये कि लड़ाई में इनकी सख़्त ज़रूरत पड़ती है। क़िलों का निर्माण तो अपनी सुरक्षा के लिए किया जाता है और नक़्शे तो कभी अपने मुल्क में अहम घर (बंकर) बनाने के लिये बनाये जाते हैं और कभी दूसरी हुकूमत के क़िलों (और बंकरों) को जानने के लिये। ऐसे ही हौज़, प्याले, देगों का जो आगे बयान है, यह सब खाने-पकाने और फ़ौजों में खाना सपलाई करने के उद्देश्य से उस ज़माना के दस्तूर के मुताबिक़ होंगी। मतलब यह है कि यहाँ पर जिन-जिन चीज़ों का ज़िक्र है वह सब फ़ौजी नौइयत (ज़रूरत) की हैं जंग और लड़ाई में तस्वीरों की ज़रूरत न उस ज़माना में थीं और न ही आज कल है, इसलिये जिन लोगों ने इस का तर्जुमा तस्वीर (चित्र) बनाने और तस्वीर रखने से किया है और इस से तस्वीर बनाने का जवाज़ निकाला है, बिल्कुल ग़लत है। (सनाई)

९. मुल्क यमन में क़हतान बिन आमिर नाम का एक बादशाह गुज़रा था। उस के बाद उस का बेटा गद्दी पर बैठा। इब्ने सअ़ीद मग़रिब की तहक़ीक़ के अनुसार उसी को "सबा" कहा जाता था। लेकिन दूसरे इतिहासकारों का कहना है कि 'सबा' उसके बेटे का नाम था। उस ने इतना नाम पैदा किया कि उसी के नाम से पूरे ख़ानदान का नाम पड़ गया। यह लोग अलग-अलग स्थानों पर आबाद थे। इनकी आबादी का नाम "मआरिब" है। सबा शहर से मअ़ारिब तक ऊँट के द्वारा तीन दिन की राह थी। इमाम हाकिम और तबरानी ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से नक़्ल किया है कि सबा एक मर्द का नाम था, जिस के दस बेटे थे। उन में से छः लड़के तो मुल्क यमन ही में रह गये और शेष चार बेटे मुल्क शाम में जा कर आबाद हो गये। हर एक की औलाद उसी के नाम से प्रसिद्ध है। बुख़ारी व मुस्लिम ने भी क़रीब-क़रीब यही बातें नक़्ल की हैं। एक समय में सबा की बादशाहत बुलन्दी की चोटियों पर थी। ऊँचे-ऊँचे मकानात थे, रास्ते अमन व शान्ति से भरे हुये थे किसी प्रकार का कोई ख़तरा नही था। मगर जब इन के आमाल गन्दे हो गये तो अल्लाह ने उन के बनाये हुये एक बाँध को तोड़ कर उन को डुबो दिया और दुनिया से उन का नाम-निशान मिटा दिया (तफ़सीर मिर्ज़ा हैरत लखनवी)

وَهَلْ نُجْزِيْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ ۝ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ
الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا
السَّيْرَ ۭ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ۝ فَقَالُوْا
رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ
اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ
ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ
لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ
مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ۭ وَرَبُّكَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ۝
قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ
مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ
فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ۝ وَلَا تَنْفَعُ
الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ۭ حَتّٰٓى اِذَا فُزِّعَ عَنْ

और इस प्रकार का बदला हम नशुक्रों ही को दिया करते हैं। १८. और हम ने उन के और बर्कत वाले स्थानों के दर्मियान बड़ी-बडी बा रौनक़ बस्तियाँ बनाई थीं और उन में सैर (व सय्याहत, भ्रमण) का अन्दाज़ा लगाया था (हम ने नबी द्वारा कहलवा दिया था कि) उन (स्थानों) में दिन-रात अम्न व शान्ति से सैर किया करो। १९. (लेकिन वह इन नेमतों के शुक्रगुज़ार न हुये और उल्टे यूँ) बोलेः ऐ हमारे अल्लाह! हमारे सफ़र का रास्ता दूर कर दे और उन्होंने अपने आप पर जुल्म किये, फिर हम ने (भी) उन को कहानियाँ बना दिया, यानी उन का सत्तियानास कर दिया। कुछ शक नहीं कि इस (वाक़िआ़) में सब्र करने वालों और शुक्र अदा करने वालों के लिये बहुत से निशान हैं। २०. और इब्लीस (यानि शैतान) ने (भी) अपना गुमान उन के बारे में सहीह पाया पस (चन्द को छोड़ कर बाक़ी सब लोग उस शैतान) के पैरू हो गये २१. हालाँकि शैतान का उन पर कोई ज़ोर न था, लेकिन नतीजा यह हुआ कि हम ने आख़िरत पर ईमान रखने वालों को शक करने वालों से अलग कर दिया (इस प्रकार कि ईमानदारों को तो नजात दी और ➲

➲बेईमानों को तबाह कर दिया) और तेरा पर्वरदिगार हर चीज़ की निगरानी करने वाला है[१०]। २२. (ऐ नबी!) तू कह दे कि जिन लोगों को तुम अल्लाह को छोड़ कर कुछ समझे बैठे हो उन को ज़रा पुकारो (तो सही) वह न तो आसमानों में ज़र्रा जितना इख़्तियार रखते हैं, न ज़मीन में और न ही उन दोनों (आसमानों और ज़मीन) में उन का किसी प्रकार का साझा है और न उन में से कोई अल्लाह का मददगार है। २३. अल्लाह के पास उन की सिफ़ारिश भी कुछ काम नही दे सकती मगर उसी को जिनके लिये वह (हक़ीक़ी मालिक) इजाज़त बख़्शे[११], यहाँ तक कि जब उन के दिलों से हैबत (डर, दहशत) दूर होती है

....

१०. अगर ग़ौर किया जाये तो मालूम हो जायेगा कि जो झगड़ा और इख़्तिलाफ़ उस ज़माना में मोमिनों और काफ़िरों के दर्मियान था, वह अब भी इस ज़माने में बरक़रार है। तुम्हारे दुश्मन इसलिये तुम से दुश्मनी रखते हैं कि तुम एक अल्लाह की इबादत करते हो, उसी को अपनी ज़रूरतें पूरी करने वाला जानते हो, इसीलिये केवल उसी से माँगते हो। और इन लोगों का यह हाल है कि कई ख़ुदाओं के पुजारी हैं और हर एक से दुआयें माँगते हैं। इसीलिये ऐ नबी! तू इन से ज़रा पूछ कि कौन तुम को आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है? और तू खुद ही उन को उत्तर दे दे कि केवल वही एक अल्लाह है जो सब कुछ देता और लेता है और तुम सब खुली गुमराही में हो (सनाई)

११. आज कल के नाम के मुसलमानों को भी इस आयत पर ध्यान देना चाहिये। जो लोग मुर्दा बुज़ुर्गों, वलियों से मन्नतें माँगते और उन के दर्बार में अपनी ज़रूरतें पेश करते हैं, जब उन से कहा जाता है कि ऐसा करना नाजायज़ और हराम है, तो वह उत्तर देते हैं कि हम उन से थोड़े ही माँगते हैं? हम केवल उन को अल्लाह के दर्बार में सिफ़ारिशी बना कर पेश करते हैं।

हालाँकि उन को सिफ़ारिशी समझ कर पुकारना भी जायज़ नही। इसी प्रकार किसी भी मख़्लूक़ को पुकारना, या आड़े वक़्त में (किसी मुसीबत और परेशानी में) भी उन से मदद के लिये गुहार लगाना और मदद तलब करना हर्गिज़ जायज़ नही (सनाई–६/१६५)

قُلُوۡبِہِمۡ قَالُوۡا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّکُمۡ ؕ قَالُوا الۡحَقَّ ۚ وَ ہُوَ الۡعَلِیُّ
الۡکَبِیۡرُ ﴿۲۳﴾ قُلۡ مَنۡ یَّرۡزُقُکُمۡ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ ؕ قُلِ
اللّٰہُ ۙ وَ اِنَّاۤ اَوۡ اِیَّاکُمۡ لَعَلٰی ہُدًی اَوۡ فِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ ﴿۲۴﴾
قُلۡ لَّا تُسۡـَٔلُوۡنَ عَمَّاۤ اَجۡرَمۡنَا وَ لَا نُسۡـَٔلُ عَمَّا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۲۵﴾
قُلۡ یَجۡمَعُ بَیۡنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ یَفۡتَحُ بَیۡنَنَا بِالۡحَقِّ ؕ وَ ہُوَ الۡفَتَّاحُ
الۡعَلِیۡمُ ﴿۲۶﴾ قُلۡ اَرُوۡنِیَ الَّذِیۡنَ اَلۡحَقۡتُمۡ بِہٖ شُرَکَآءَ کَلَّا ؕ

तो (एक दूसरे से) पूछते हैं कि तुम्हारे पर्वरदिगार ने क्या फ़रमाया है? तो कहते हैं कि सच फ़रमाया है, और वह बड़ा बुलन्द मर्तबे वाला सब से बड़ा है[१२]। २४. तू कह कि कौन तुम को आसमानों से और ज़मीन से रोज़ी देता है? तू कह कि अल्लाह ही (रोज़ी) देता है, हम या तुम ज़रूर हिदायत पर हैं या खुली गुमराही में। २५. तू (ऐ नबी! यह भी) कह दे कि (हम तुम को महज़ ख़ैर-ख़्वाही से➲

بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ۭ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ښ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ

समझाते हैं, वर्ना) तुम से हमारे गुनाहों के बारे में प्रश्न नहीं होगा और न ही हम से तुम्हारे आमाल के बारे में ही प्रशन होगा। २६. तू कह कि अल्लाह हम को और तुम को एक स्थान पर जमा कर के हमारे और तुम्हारे दर्मियान ठीक-ठाक फ़ैसला करेगा। वह ठीक फ़ैसला करने वाला बड़े इल्म वाला है। २७. तू कह दे कि जिन लोगों को तुम ने उस के साथ शरीक बना कर मिला रखा है ज़रा मुझे भी तो दिखाओ, नहीं! बल्कि वह अल्लाह अकेला ही सब पर ग़ालिब और बड़ी हिक्मत वाला है। २८. हम ने तुझ को समस्त इन्सानों के लिये ख़ुश्ख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है लेकिन बहुत से लोग जानते नहीं। २९. कहते हैं कि (ऐ मुसलमानो!) अगर सच्चे हो तो (बतलाओ) यह वादा कब होगा[13]? ३०. (पस) तू (ऐ नबी उन से) कह दे कि तुम्हारे लिये एक दिन की मीआ़द मुक़र्रर है जिस से न एक घड़ी तुम पीछे हटोगे और न आगे बढ़ सकोगे (तारीख़ का इल्म किसी को नही दिया इसलिये यह प्रश्न ग़लत है) ३१. और काफ़िर लोग कहते हैं कि हम न तो इस कुरआन को मानेंगे, न इस से पहले किसी किताब को (मज़े की बात यह है कि यहाँ तो बड़े लोगों की सुन कर छोटे भी वही राग अलापते हैं) ऐ काश! तुम वह वक़्त भी कहीं से देख पाओ जब यह ज़ालिम अपने पर्वरदिगार के सामने (मुजरिम बना कर) खड़े किये जायेंगे (इस हालत में) एक दूसरे की तरफ़ (सवाल व जवाब में) बातें लौटायेंगे।

....

१२. यानी जाहिल लोग अल्लाह के हाँ औलिया को सिफ़ारिशी बनाते हैं और औलिया नबियों को और वह फ़रिश्तों को। हालाँकि (फ़रिश्तों का सिफ़ारिश करना तो दूर की बात) वह थर-थर वैसे ही काँपते हैं। और जब ऊपर से अल्लाह का कोई हुक्म आता है तो एक आवाज़ आती है, वह आवाज़ पत्थर पर ज़ंजीर के रगड़ने की सी होती है। यह सुन कर वह डर जाते हैं। फिर जब सुकून मिलता है और कलाम उतर चुका होता है, तो एक-दूसरे से प्रश्न करते हैं कि कौनसा आदेश जारी हुआ है? फ़रिश्ते उन को उत्तर देते हैं कि जो अल्लाह की हिकमत के अनुसार था ----। इस आयत का मज़मून गोया उस हदीस का तर्जुमा है जिस को हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० ने रिवायत किया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जब अल्लाह कोई हुक्म जारी करता है तो ऐसी आवाज़ आती है जैसे कोई ज़न्जीर पत्थर पर रगड़ खाती हो। यह आवाज़ सुन कर फ़रिश्ते मारे डर के काँपने लगते हैं। जब आवाज़ बन्द हो जाती है तब परस्पर प्रश्न करते हैं कि क्या आदेश जारी हुआ? ऊपर वाले फ़रिश्ते नीचे वालों को उत्तर देते हैं कि जो कुछ भी जारी हुआ है वह हक़ है और यह आदेश जारी हुआ है। फ़रिश्तों की इस बात-चीत को सुनने के लिये शैतान

भी आसमान पर पहुंच जाते हैं, लेकिन उन को तारों से मार कर भगा दिया जाता है (रात में जो तारे टूट कर चलते हुए नज़र आते हैं वह तारे शैतानों को दौड़ा कर मारते हैं) अक्सर तो शैतान नाकाम वापस आ जाते हैं और कभी चन्द बातें सुन लेते हैं और उसमें अपनी तरफ़ से ग़लत बातों को शामिल करके काहिनों और ज्योतिषियों को बता देते हैं ताकि वह ग़ैब की बातें पेशगी ही बता कर अपनी बड़ाई को ज़ाहिर कर सकें। वही बातें यह लोग आम लोगों को बतलाते हैं। जब कभी कोई बात इन लोगों की सच साबित हो जाती है तो वह वही होती है जिस को शैतान सुन कर बता देते हैं, लेकिन जाहिल लोग उस नुजूमी के पुजारी बन जाते हैं। ग़ैब की ख़बरें मालूम करने की बीमारी बहुत पुरानी है, हर ज़माना में नुजूमी और ज्योतिषी मौजूद रहे हैं। आज-कल मुसलमानों के अन्दर यह बीमारी आम हो गयी है। यह जाहिल मुसलमान भी कुफ़्फ़ार और मुश्रिकों की तरह नुजूमियों, (ज्योतिषयों) भविष्यवाणी करने वालों, हाथ की रेखाऐं देखने वालों, काहिनों और फ़ाल-गन्डे करने वालों से ग़ैब की बातें पूछते हैं और हिन्दू ब्रहमणों के पास जा कर पोथियाँ खुलवाते हैं, हालाँकि यह सब शिर्क और कुफ़्र की बातें हैं। (वहीदी)

१३. यह प्रशन भी उसी ग़लत उसूल पर आधारित है जो ऊपर बयान हो चुका है। यानी लोग नबी को तमाम ग़ैब की बातों को जानने वाला मानते हैं, इसी लिये इस प्रकार के प्रश्न करते हैं। (सनाई)

الْقَوْلَ ۚ يَقُولُ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا
لَوْلَا أَنتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ﴿٣١﴾ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا
لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا أَنَحْنُ صَدَدْنَاكُمْ عَنِ الْهُدَىٰ
بَعْدَ إِذْ جَاءَكُم ۖ بَلْ كُنتُم مُّجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾ وَقَالَ الَّذِينَ
اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ
إِذْ تَأْمُرُونَنَا أَن نَّكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ أَندَادًا ۚ وَ
أَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ ۖ وَجَعَلْنَا الْأَغْلَالَ
فِي أَعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿٣٣﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ
مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ كَافِرُونَ ﴿٣٤﴾ وَقَالُوا نَحْنُ
أَكْثَرُ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿٣٥﴾ قُلْ إِنَّ رَبِّي
يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾ وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُم بِالَّتِي

कमज़ोर लोग बड़े आदमियों से कहेंगे (ऐ ज़ालिमो!) अगर तुम न होते तो हम ईमान्दार होते। ३२. बड़े लोग, उन (मातहत) ज़ईफ़ (कमज़ोर) लोगों को (जवाब में) कहेंगे कि हम ने तुम को हिदायत आने के बाद हिदायत से रोका था? (नही!) बल्कि तुम स्वयँ मुजरिम थे (कि बिला सोचे-समझे हमारी हाँ में हाँ मिलाते थे)। ३३. (इस के उत्तर में) ज़ईफ़ लोग, बड़े आदमियों से कहेंगे कि बल्कि (अस्ल बात यह है कि) तुम्हारे दिन-रात के दाँव-घात ने हम को रोका जब तुम हम को (हर तरह से) हुक्म किया करते थे कि हम अल्लाह के हुक्मों का इन्कार करें और उस के लिये शरीक बना दें (इस लिये हम भी ऐसा ही करते थे) और जब वह अज़ाब देखेंगे तो छुपे-छुपे पछतायेंगे। और हम काफ़िरों की गर्दनों में तौक़ डलवा देंगे। जो उन्होंने किया होगा वही उनको बदला मिलेगा। ३४. (यह हमेशा से चला आया

है कि) हमने जिस बस्ती में कभी रसूल भेजे तो वहाँ के आसूदा (मालदार) लोगों ने कहा कि जो अहकाम तुम को दे कर भेजा गया है हम उनका इन्कार करते हैं (हम से ऐसी गुलामी नहीं हो सकती)[१४] ३५. और बोले कि हम माल और औलाद में तुम से ज़्यादा हैं और (जब यहाँ हमारी इज्ज़त है तो आख़िरत में भी होगी) हम को अज़ाब न होगा[१५]। ३६. तू कह! (दुनियावी रोज़ी की हिक्मत तो अल्लाह ही को मालूम है) मेरा पर्वरदिगार जिस को चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है। और जिसको चाहता है तंग कर देता है[१६] (यह उस की हिक्मत का तक़ाज़ा है) लेकिन अक्सर लोग जानते नही। ३७. और तुम्हारे माल और औलाद ऐसे नही कि

....

१४. यानी तुम्हारे मक्र में से यह भी था कि तुम हम को कुफ़ करना सिखाते और दूसरों को अल्लाह के साथ शरीक करने का सुझाव देते थे। (मवाहिब) मतलब यह है कि जिस शख़्स ने जान लिया कि हुक्म सिर्फ़ अल्लाह का चलेगा तो वह मोमिन है और वह अल्लाह के हुक्म के सामने किसी की बात नही मानेगा और यही मोमिन की शान और निशानी है। इस के उलट मुश्रिक अल्लाह के हुक्म से इन्कारी हैं, इसीलिये वह उस की इताअ़त भी नहीं करते हैं और अपनी मन-मानी अ़मल करते हैं।

अस्ल में अल्लाह का इन्कार करने वालों की दो क़िस्में हैं। एक वह जो हज़रत ईसा मसीह, बुतों, भूत, प्रेत और वलियों आदि की इबादत करते हैं। यह लोग अपनी अक़्ल के तुक्के लगा कर वह सारे गुनाह के काम करते हैं, इस में केवल उन की अपनी राय का अ़मल-दख़ल होता है। दूसरे वह लोग हैं जो किसी माल-दार, या मौलवी-मुल्ला, या अपने आशिक़ के कहने में आ कर अल्लाह के अहकाम का इन्कार करते हैं, तो यह लोग पक्के मुश्रिक, बल्कि शिर्क से भी बुरा अ़मल करते हैं। एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया थाः यहूद व नसारा ने अल्लाह को छोड़ कर बहुत से पर्वरदिगार बना लिये हैं। और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसकी तशरीह करते हुये फ़रमाया कि उलमा, बुज़ुर्गों, मशाइख़ इमामों की ग़लत-सहीह बातों को मान कर उस पर अ़मल करना यह उन को रब बना लेना है। (मवाहिब)

मैं कहता हूँ कि आज-कल के मुसलमानों का हाल भी यहूद व नसारा से कुछ मुख़्तलिफ़ नही है। आज-कल जितने फ़िर्क़े और मज़हबी गिरोह बने हुये हैं वह सब के सब अपने-अपने पीरों, वलियों और बुज़ुर्गों ही की तरफ़ निसबत करते हैं। और हर गरोह अपने इमामों की बातों को लेकर इतना सख़्त है कि उस के ख़िलाफ़ कुरआन की आयतों और सहीह हदीसों तक को मानने को तैयार नही है। बल्कि इमामों के फ़तवों के मुताबिक़ कुरआन व हदीस में तावील कर डालता है और हदीस को झुठलाने और अपने इमाम के फ़तवे को जायज़ करने के लिये तरह-तरह के हीले-बहाने करने से भी नही चूकता है। अगर उन को ख़ैरख़ाही और नसीहत की बुनियाद पर कुरआन व हदीस की तरफ़ दावत दी जाती है और इमाम की न मान कर कुरआन व हदीस को मानने की नसीहत की जाती है, तो इस को इमामों की शान में गुस्ताख़ी, बेअदबी समझते हुये उन को "वहाबी" (गुमराह) और "ग़ैर मुक़ल्लिद" (राह से भटका हुआ) कहते हैं। और अस्ल में यह सब तौर-तरीक़े यहूदियों के हैं, जिनको आज-कल मुसलमानों ने अपना लिया है। यहूद का हाल भी यही था कि वही केवल अपने-आपको हक़ पर और जन्नती समझते थे, और दूसरों को हक़ की राह से हटा हुआ जहन्नमी।

१५. यानी दौलत के नशे में चूर उन बिगड़े हुये लोगों ने कहा कि ऐ रसूल! तुम जिस को पेश करते हुये कहते हो कि अल्लाह की तरफ़ से यह आदेश आये हैं, हम उन बातों को नहीं मानते हैं। रिवायत में आया

➲है कि एक शख़्स ने अपने साथी को मक्का शरीफ़ नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बारे में विस्तार से हालात मालूम करने के लिये भेजा। उस ने वहाँ से पत्र द्वारा सूचित किया कि नबी के मानने वाले अधिकांश लोग ग़रीब वर्ग के हैं। उस ने पत्र पाते ही अपना कारोबार छोड़ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास उपस्थित हो कर कहा कि आप अल्लाह के सच्चे संदेष्टा हैं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उस से पूछा कि तुझे कैसे मालूम? उस ने कहा कि जब भी कोई पैग़म्बर आया तो उस पर ईमान लाने वाले ग़रीब लोग ही रहे हैं। इस आयत के नाज़िल होने के बाद आपने उसे बुला कर फ़रमाया कि अल्लाह ने यह आयत नाज़िल फ़रमा कर तुम्हारी बात की तस्दीक़ की है। (वहीदी) आज भी अक्सर मालदारों और पेट भरों का यही कुछ हाल है कि नमाज़, रोज़ा वग़ैरह को यह लोग केवल ग़रीबों के लिये ज़रूरी जानते हैं और अपने आप को इन "झंझटों" से अलग समझते हैं। (राज़)

१६. इस आयत से मालूम हुआ कि माल-दौलत और औलाद पर घमंड करना इन्सान की बड़ी नादानी (मूर्खता) है। माल का तो यह हाल है कि आज हमारी जेब में है तो कल दूसरे की जेब में। हर चीज़ हमेशा आती-जाती रहती है। और औलाद का यह हाल है कि बहुत कम ऐसे निकलते हैं जो वफ़ादार और सपूत हों, वर्ना अधिकांश तो जान के हक़ में वबाल मचा देते हैं। फिर अगर अल्लाह ने माल और दौलत दे ही दिया है तो उस पर अकड़ दिखाना और यह कहना कि "हम पर अज़ाब नही आयेगा" (आयत ३५) यह तो बहुत बड़ी मूर्खता है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "हर उम्मत के ज़वाल और पस्ती का कोई कारण होता है और मेरी उम्मत की पस्ती का कारण माल है"। यानी माल के प्रेम जाल में फँस कर दीन से ग़ाफ़िल हो जायेंगे। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० रिवायत करते हैं कि एक मर्तबा आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा से मालूम किया कि क्या यह संभव है कि अदमी पानी में घुसे और वह न भीगे? सहाबा ने उत्तर दिया कि यह तो असंभव (ना मुमकिन) है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इसी प्रकार यह भी असंभव है कि किसी के पास माल-दौलत हो और वह गुनाहों और दीगर बुराइयों से सुरक्षित रहे। (वहीदी)

कि तुम को हमारे कुर्ब में पहुंचायें[१७], लेकिन जो लोग ईमान लायें और नेक अमल करें उन्हीं के लिये उन के कर्मों के अनुसार दोहरा बदला होगा और वह (बड़े-बड़े) बुलन्द बाला ख़ानों में अम्न से रहेंगे। ३८. और जो लोग (दुनिया की दौलत के नशे में आख़िरत को भूल कर मुख़ालिफ़ाना तौर पर) हमारे अहकाम को तोड़ने में लगे हैं वह लोग अज़ाब में हाज़िर किये जायेंगे। ३९. (ऐ नबी!) तू उन से कह कि (तुम किस ख़याल में हो?) मेरा पर्वरदिगार अपने बन्दों में से जिस की चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और (जिसकी चाहता है रोज़ी) तंग कर देता है➲

تُقَرِّبُكُمْ عِندَنَا زُلْفَىٰٓ إِلَّا مَنْ ءَامَنَ وَعَمِلَ صَٰلِحًا فَأُو۟لَٰٓئِكَ
لَهُمْ جَزَآءُ ٱلضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوا۟ وَهُمْ فِى ٱلْغُرُفَٰتِ ءَامِنُونَ ۝
وَٱلَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِىٓ ءَايَٰتِنَا مُعَٰجِزِينَ أُو۟لَٰٓئِكَ فِى ٱلْعَذَابِ
مُحْضَرُونَ ۝ قُلْ إِنَّ رَبِّى يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ
مِنْ عِبَادِهِۦ وَيَقْدِرُ لَهُۥ ۚ وَمَآ أَنفَقْتُم مِّن شَىْءٍ فَهُوَ
يُخْلِفُهُۥ ۖ وَهُوَ خَيْرُ ٱلرَّٰزِقِينَ ۝ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا
ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَٰٓئِكَةِ أَهَٰٓؤُلَآءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا۟ يَعْبُدُونَ ۝
قَالُوا۟ سُبْحَٰنَكَ أَنتَ وَلِيُّنَا مِن دُونِهِم ۖ بَلْ كَانُوا۟
يَعْبُدُونَ ٱلْجِنَّ ۖ أَكْثَرُهُم بِهِم مُّؤْمِنُونَ ۝ فَٱلْيَوْمَ لَا

يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ۝
وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا رَجُلٌ
يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَقَالُوْا

➲और जो कुछ अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे उसका बदला वह तुम को देगा। और वह सब से अच्छा रोज़ी देने वाला है। ४०. और जिस रोज़ अल्लाह उन सब को जमा करेगा तो फ़रिश्तों को (नाराज़गी ज़ाहिर करते हुये) कहेगाः क्या यह लोग तुम्हारी इबादत करते थे? ४१. वह (फ़रिश्ते) कहेंगे कि (ऐ अल्लाह!) तू पाक है, हमारा तू वाली है उन से हमारा कोई संबन्ध नही। बल्कि यह लोग (अस्ल में) जिन्नों (यानी शयातीन) की इबादत करते थे, अकसर उन में से उन ही को मानते थे[१७]।४२. पस उस रोज़ तुम में से किसी को न तो किसी को नफ़ा पहुंचाने का इख़्तियार होगा और न नुक़्सान का। हम ज़ालिमों से कहेंगे कि उस आग का अज़ाब (मज़े से) चखो जिस को तुम लोग झुठलाते थे। ४३. और जब हमारे खुले-खुले अहकाम उन को सुनाये जाते हैं तो (कोई माकूल बात तो नही कर सकते, हाँ इतना) कहते हैं कि यह शख़्स (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) तो केवल एक आदमी है जो तुम को तुम्हारे बाप-दादा के माबूदों से रोकना चाहता है।

....

१७. यानी वह माल और औलाद जिन पर तुम्हें घमंड है, इन से अल्लाह के नज़दीक तुम्हारा दर्जा बुलन्द नही हो जाता है। चीज़ें वही हैं, इल्ला मन् आ-म-न-----में इसी ओर इशारा किया गया है। और जो गुम्राह लोग ग़ुरूर में आ कर हमारी आयतों को झुठलाने की नाकाम चेष्टा करते हैं वह आख़िरत में हमेशा के अज़ाब में गिरफ़तार होंगे और माल-औलाद उस के कुछ भी काम न आ सकेंगे। और एक ग़लत ख़्याल तुम्हारे दिमाग़ में यह भी भरा है कि कुफ़्र करने से दुनिया हासिल होती है, इसीलिये मोमिनों को दुनिया की दौलत नही मिलती, तो जान लो कि दुनिया की रोज़ी-रोटी अल्लाह के हाथ में है जिस को जितना देना वह उचित समझता है देता है, इस में मोमिन-काफ़िर की कोई खुसूसियत नहीं। बहुत से मोमिनों को दुनिया की दौलत में से इतना कुछ दे रखा है कि काफ़िर लोग सोच भी नहीं सकते, जैसे, हज़रत दावूद और हज़रत सुलैमान अ़लै० वग़ैरह। (आज-कल भी मजमूअ़ी तौर पर खाड़ी के इस्लामी शासकों के पास इतनी दौलत है जो पूरी दुनिया की दौलत के बराबर है। केवल छोटे से मुल्क कुवैत का ही कोई मुक़ाबला नहीं कर सकता। हिन्दुस्तान में भी कुछ मुसलमानों के पास इतनी दौलत है जो पूरे हिन्दुस्तान के लोगों की दौलत के बराबर है -ख़ालिद) सहीह बुख़ारी में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "ऐ आदम की औलाद! तुझ पर भी ख़र्च किया जायेगा"। यानी अगर तू अल्लाह की राह में देगा तो तुझे भी दिया जायेगा। बुख़ारी शरीफ़ की एक अन्य रिवायत में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "हर सुबह को दो फ़रिश्ते आसमान से नाज़िल होते हैं, उन में एक कहता है कि ऐ अल्लाह! देने वाले को दे, और दूसरा कहता है कि न देने वाले को न दे और उसे बर्बाद कर दे"। इस बात का तजुर्बा मैंने भी किया है कि माली परेशानी की हालत में अगर अल्लाह की राह में ख़र्च किया गया तो अल्लाह ने देने की बदौलत गरीबी दूर➲

कर दी। मेरा यह आज़माया हुआ अ़मल है, आप भी तजुर्बा कर के देखें (तफ़सीर हक़्क़ानी)

१८. कुछ बुतख़ानों, या मज़ारों वग़ैरह पर उन के पुजारियों को कुछ अचंभी, आश्चर्यजनक और चकित कर देने वाली चीज़ें दिखाई देती हैं, यह सब गन्दे जिन्नों की हरकतें होती हैं, इस आयत में इस बात की ओर इशारा है। गुमराह लोग इन को देख कर और भी अधिक गुमराह हो जाते हैं।

مَا هٰذَآ اِلَّآ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ۭ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ
لَمَّا جَاۗءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَمَآ اٰتَيْنٰهُمْ
مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ
نَّذِيْرٍ ۝ وَكَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ
مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۣ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ۝ قُلْ اِنَّمَآ
اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَفُرَادٰى ثُمَّ
تَتَفَكَّرُوْا ۣ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ
بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ۝ قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ
فَهُوَ لَكُمْ ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَي اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ
شَهِيْدٌ ۝ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝
قُلْ جَاۗءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ ۝ قُلْ اِنْ
ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰي نَفْسِيْ ۚ وَاِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا
يُوْحِيْٓ اِلَيَّ رَبِّيْ ۭ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ ۝ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ فَزِعُوْا

और (यह भी) कहते हैं कि (उस की) यह (तालीम) तो (सिर्फ़) मनघड़त झूठ है। (देखो!) उन काफ़िरों (का दुर्भाग्य कि उन) के पास जब (ख़ालिस) सच्चाई आयी तो कहते हैं कि यह तो खुला जादू है। ४४. (ऐ नबी! अस्ल बात यह है कि) तुझ से पहले हम ने उन को कोई किताब नही दी जिस को यह लोग पढ़ते हैं और न तुझ से पहले (हज़रत इस्माईल के बाद) उन के पास डराने वाला कोई रसूल आया[१९] (इसलिये उनकी ग़फ़लत हद से बढ़ गयी) ४५. उन से पहले के लोगों ने भी (नबियों को) झुठलाया, हालाँकि जो कुछ हम ने उन को दे रखा था यह लोग उसके दसवें हिस्से को भी नहीं पहुंचे, फिर उन लोगों ने उसे झुठलाया तो मेरी नाराज़गी कैसी हुयी। ४६. तू कह कि मैं तुम को केवल एक बात बतलाता हूँ वह यह है कि तुम लोग मिल कर और अकेले-अकेले हो कर अल्लाह की तरफ़ लग जाओ (यानी उसका ख़ौफ़ दिल में पैदा करो) फिर फ़िक्र करो कि तुम्हारे साथी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को जुनून नहीं है[२०]। वह बड़े सख़्त अज़ाब से पहले तुम्हें (बुरे कामों से) डराने आया है। ४७. (ऐ नबी!) तू (यह भी) कह दे कि मैं ने जो तुम से उस की कोई मज़दूरी माँगी हो तो वह तुम ही को मुबारक रहे। मेरी मज़दूरी तो अल्लाह ही के जिम्मा है (और किसी से मेरा कोई मतलब नहीं) और वह हर चीज़ पर हाज़िर है। ४८. तू कह दे कि मेरा पर्वरदिगार सच्ची तालीम (दुनिया में) भेजता है, वह तमाम ग़ैबों का जानने वाला है। ४९. तू (ऐ नबी!) कह दे कि (अब तुम्हारे सामने) सच्ची तालीम आ चुकी है और बातिल किसी काम और फ़ाइदा की चीज़ नहीं है[२१]। ५०. (ऐ नबी) तू कह कि अगर मैं भूलूँ तो

➲उस का वबाल मेरी जान पर है और अगर मैं हिदायत पाऊँ (यानी किसी मामले में सही राय पर हूँ) तो अल्लाह की वह्यि की वजह से है जो मेरी तरफ़ मेरा पर्वरदिगार करता है। कुछ शक नहीं कि वह सुनने वाला, क़रीब है ,५१. और अगर तुम उस वक़्त को देख पाओ जब यह लोग घबरायेंगे

....

१९. कहने का अर्थ यह है कि मक्का के काफ़िरों के पास दीन इस्लाम का इन्कार करने का यहूद व नसारा की तरह कोई बहाना भी नहीं है। यहूद व नसारा के पास तौरात और इन्जील किताब मौजूद थी। वह अपनी किताबों का बहाना बना कर कहते थे कि हम तौरात व इन्जील के होते हुये तुम्हारे कुरआन को नहीं मानेंगे। लेकिन इन मुश्रिकों के पास तो कोई किताब भी नहीं जिस की आड़ में कुरआन का इन्कार कर सकें।

२०. 'अकेले-अकेले हो कर लग जाओ' अकेले की शर्त इसलिये लगाई है कि दो आदमी होंगे तो मुमकिन है कि एक दूसरे की सुन कर ख़याल बदल जाये और अपनी हक़ बात को ग़लत जान कर उस की ग़लत बात को सही समझ बैठे। अक्सर अकेले और तन्हाई में जो ग़ौर-फ़िक्र करेगा तो तन्हा अपने ईमान और यक़ीन की बुनियाद पर करेगा, इसलिये अकेले में जो सोचेगा वह हक़ और दिल की आवाज़ होगी। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सफ़ा पर चढ़ कर मक्का वालों को आवाज़ दी। उन लोगों ने हाज़िर-होकर बुलाने का कारण पूछा। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अगर मैं तुम लोगों से यह कहूँ कि पहाड़ के दूसरी ओर एक लश्कर है जो आज-कल में तुम पर आक्रमण करने वाला है, तो क्या तुम लोग यक़ीन करोगे? उन्होंने उत्तर दिया कि ज़रूर यक़ीन करेंगे। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अगर तुम्हें मेरी इस बात पर भरोसा है तो इस बात पर भी यक़ीन करो कि तुम्हारे लिये एक सख़्त अज़ाब यानी दोज़ख़ तैयार है और उस में गिरने ही वाले हो, मैं पहले आ गया हूँ ताकि तुम्हें ख़बरदार कर दूँ (वहीदी)

२१. आयत न० ४३ में 'हक़' से मुराद "दीने इस्लाम" या "कुरआन मजीद" है। मतलब यह है कि अल्लाह की तरफ़ से सच्चा दीन आ गया और कुफ़्र व शिर्क के दिन लद चुके हैं जब फ़तह मक्का के दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ख़ान-ए-काबा में दाख़िल हुये उस समय आप के हाथ में एक छड़ी भी थी। उस छड़ी से अन्दर रखे हुये बुतों को गिराते जाते और यही आयत न० ४९ तिलावत करते जाते थे (सलफ़िय्या) हज़रत इब्राहीम अ़लै० ने काबा शरीफ़ की बुनियाद तौहीद पर रखी थी और उसको तौहीद का केन्द्र क़रार दिया था, लेकिन मुश्रिकों ने उसे कुफ़्र व शिर्क का मर्कज़ (केन्द्र) बना दिया था। मुश्रिकों का यह अ़मल बहुत बड़ा ज़ुल्म था। अब समय आ गया कि फिर उस घर को तौहीद के मर्कज़ में बदल दिया जाये। चुनान्चे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यह शर्फ़ बख़्शा गया और आप ने काबा को कुफ़्र-शिर्क की ज़ाहिरी और बातिनी गन्दगी से पवित्र कर के पुन: तौहदी का मर्कज़ बना दिया। दर्मियान में सन १९२०-२५ के आस-पास उस समय के हंगामी दौर में थोड़े समय के लिये ज़रूर बिद्अ़तों का सिलसिला चल पड़ा था, लेकिन अल्लाह पाक ने अहले नज्द के हाथों (जिन की अगुवाई शैख़ुल इस्लाम अ़ब्दुल वह्हाब रह० ने फ़रमाई) हरमैन-शरीफ़ैन (काबा शरीफ़-मदीना शरीफ़) कुफ़्र, शिर्क, बिद्आ़त, ख़ुराफ़ात वग़ैरह से पाक हो गया। और आज तक पाक साफ़ है। अलहम्दु लिल्लाह (राज़)

فَلَا فَوْتَ وَأُخِذُوا مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٥١﴾ وَقَالُوا آمَنَّا
بِهِ ۚ وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِن مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾ وَقَدْ
كَفَرُوا بِهِ مِن قَبْلُ ۖ وَيَقْذِفُونَ بِالْغَيْبِ مِن مَّكَانٍ
بَعِيدٍ ﴿٥٣﴾ وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ
بِأَشْيَاعِهِم مِّن قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُّرِيبٍ ﴿٥٤﴾

और कहीं भाग न सकेंगे और पास-पास के मकान में पकड़े जायेगें। ५२. और कहेंगे कि हम उस पर ईमान लाये, मगर ऐसे दूर के स्थान से उन को कैसे कामियाबी होगी? (यानी जो ईमान लाने का मौक़ा था वह हाथ से खो बैठे, क्योंकि) ५३. इस से पहले तो वह मुन्किर थे और दूर-दूर से महज़ अटकल-पच्चू बातें किया करते थे[२२]। ५४. और उन में और उन की ख़ाहिशात में रोक कर दी गयी है, जैसे उन से पहले उन के हम जिंसों (साथ वालों) के साथ किया गया। कुछ शक नहीं कि वह सख़्त इन्कार में थे[२३]।

....

२२. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि यह लोग प्रार्थना करेंगे कि मुझे पुन: दुनया में भेज दिया जाये ताकि कुफ़्र-शिर्क से तौबा कर सकूँ, लेकिन वह समय न तो वापस भेजने का होगा और न ही तौबा करने का। मुस्नद अहमद में बरा बिन आ़ज़िब रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "नाफ़र्मानों पर मौत के वक़्त से ही अ़ज़ाब की सख़्ती आरंभ हो जाती है"। यह गोया इस आयत न० ५० की तफ़सीर है। कहने का मतलब यह है कि आख़िरत के मुक़ाबला में दुनिया क़रीबी जगह होती है इसलिये बुरे लोगों पर अ़ज़ाब का सिलसिला भी क़रीब ही से (दुनिया से) शुरू हो जाता है, इस लिये आख़िरत में नजात मिल जाने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। "ऐसे दूर के स्थान से उन को कैसे कामियाबी होगी?" (आयत न० ५२) का मतलब यह है कि आख़िरत में पहुंच जानें के बाद, दुनिया इन्सान के लिये दूर की जगह हो जाती है। फिर जो ख़ाहिश दुनिया में आ कर पूरी होने के क़ाबिल है, वह ख़ाहिश इतनी दूर बैठे-बैठे क्यों कर पूरी हो सकती है? (अहसनुत्तफ़ासीर)

२३. 'उन के और उन की ख़ाहिश के दर्मियान रोक कर दी गयी है' यानी जिस चीज़ की ख़ाहिश रखते हैं (जैसे, ईमान, नजात, दुनियावी ऐ़श व आराम, या दुनिया में वापस लौट जाने की ख़ाहिश वग़ैरह) इन के दर्मियान सख़्त रोक क़ाइम कर दी गयी है। इसलिये कभी उन तक नहीं पहुंच सकते। (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

सूरः फ़ातिर —(35)

सूर: फ़ातिर मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयीं। इसमें ४५ आयतें और ५ रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से, बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है।

رُسُلًا اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ؕ يَزِيْدُ فِى الْخَلْقِ
مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ① مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ
لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ
فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ②
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ

१. तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं जो आसमानों और ज़मीनों का ख़ालिक़ है (परों वाले[२]) फ़रिश्तों को (बनी आदम की तरफ़) रसूल बनाया करता है जिन के दो-दो, तीन-तीन, चार-चार पर होते हैं[३] (इसके अ़लावा और भी) जिस क़दर चाहता है पैदाइश में ज़्यादती कर देता है। अल्लाह हर एक चीज़ पर क़ुदरत रखता है। २. (यही कारण है कि) जिस प्रकार की रहमत (का दर्वाज़ा) बन्दों के लिये खोल दे तो कोई उस को बन्द नही कर सकता और जिस कों बन्द कर दे उस के बाद कोई उसे खोलने वाला नही, क्योंकि वह (बड़ी कुदरत वाला और) बड़ा ज़बर्दस्त हिक्मत वाला है। ३. ऐ लोगो! अल्लाह की मेहरबानियों को याद करो जो तुम्हारे हाल पर हैं

....

१. इस सूरः का नाम "सूरतुल् मलाइका" (वह सूरः जिस में फ़रिश्तों का अधिक ज़िक्र है) भी है। इस में ४५ आयतें हैं। यह सूरः मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी है। (बुख़ारी)

२. यह आयत खुल्लम-खुल्ला गुहार लगा कर कह रही है कि फ़रिश्तों का वजूद है और वह अलग से एक मख़्लूक़ हैं। जिन लोगों ने शैतान या फ़रिश्तों के वजूद से इन्कार किया है वह महा जाहिल, गुमराह और इस आयत के मुन्किर हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने शबे-मेराज में जिब्रील अ़लै० को उन की अस्ली सूरत में देखा, उस समय उन के छः सौ बाजू थे और हर बाजू के दर्मियान पूरब और पश्चिम का फ़ासला था (मवाहिब/इब्ने कसीर)

३. 'तीन-तीन, चार-चार पर होते हैं' यहाँ इस मौक़े पर एक वाक़िआ़ याद आया। एक आ़लिम मौलाना अ़ब्दुल्लाह नामी गुज़रे हैं। यह मुक़ाम "चकड़ाला" स्तिथ सूबा पंजाब के रहने वाले थे। मौसूफ़ हदीस के मुन्किर थे। हदीस को शरअ़ी दलील नही मानते थे। कुरआन मजीद में पाँच वक़्त की नमाज़ का ज़िक्र तो है, लेकिन हर नमाज़ में कितनी-कितनी रक्अ़तें पढ़ी जायें, इस का ज़िक्र नहीं है (इसका ज़िक्र केवल हदीसों में है) मौलाना हम ही लोगों की तरह रक्अतें पढ़ते थे। जब उन से प्रशन हुआ कि रक्अ़तों का सबूत कुरआन में कहाँ है? तो उत्तर में इसी आयत को पेश किया। आप ग़ौर फ़रमायें, यहाँ पर फ़रिश्तों के परों का ज़िक्र है, इस आयत का नमाज़ की रक्अ़तों से क्या सम्बन्ध? इसी को कहते है "पागलों से तो नफ़रत करो लेकिन उन्हीं की सी हर्कतें भी करो" यानी हदीस का इन्कार करो और उसी के अनुसार ही अ़मल भी करो। (सनाई)

अ़िल्म और अ़क़ल की कमी, यह एक मुसीबत है और इसी वजह से इन्सान हक़ और सच्चाई तक नही पहुंच पाता। लेकिन इसके साथ उस की अकड़ और कजी भी शामिल हो जाये तो वह मुसीबत पर मुसीबत बन जाती है और उस के लिये हिदायत के तमाम दर्वाज़े बन्द हो जाते हैं। यही हाल इस अहले-कुरआन गरोह➲

का है। यह लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के फ़र्मान को क़ुरआन से जुदा मान कर मनमानी तफ़सीर करते हैं। इन लोगों का कहना है कि नबी केवल अल्लाह और क़ुरआन के दर्मियान नाज़िल होने में वास्ता हैं, उस की तफ़सीर और माना व मतलब तै करने का उन्हें कुछ इख़्तियार नही है। इस का मतलब यह हुआ कि नबी करीम पर केवल क़ुरआन के अल्फ़ाज़ की वहिय की जाती थी, उस के माना व मतलब नही बताये जाते थे। गोया नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मिसाल किसी मस्जिद के मुल्ला जी की तरह थी कि वह केवल बच्चों को अल्फ़ाज़ रटा दिया करते हैं और बस (वाज़िहुल् बयान-मौलाना मीर सियालकोटी) इस्लामी इतिहास में बहुत से गुमराह फ़िर्क़ों का ज़िक्र मिलता है, लेकिन अपनी गुमराही में यह फ़िर्क़ा तमाम फ़िर्क़ों से दो जूती आगे बढ़ा हुआ है। इस सिलसिले में मुझ नाचीज़ के हाथों लिखी गयी किताब "ख़ालिस इस्लाम" का मुताला फ़रमा सकते हैं।(दावूद राज़)

خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۭ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ڮ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ③ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ
كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ④
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ⑤ اِنَّ الشَّيْطٰنَ
لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ۭ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا
مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ⑥ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ
شَدِيْدٌ ڛ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ
اَجْرٌ كَبِيْرٌ ⑦ اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْۗءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ۭ
فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ڮ
فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ
بِمَا يَصْنَعُوْنَ ⑧ وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ
سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ

क्या अल्लाह के अ़लावा कोई ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) है जो तुम को आसमानों से (पानी के ज़रीअ़ा) और ज़मीन से (फ़सलों के ज़रिअ़ा) रोज़ी दे[४]? अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं, फिर तुम कहाँ को बहके जा रहे हो। ४. और अगर तुम्हें झुठलाते हैं तो (यह कोई नई बात नही) तुम से पहले कई रसूलों को झुठलाया गया है। और सब काम अल्लाह की तरफ़ फिरते हैं[५] ५. लोगो! (इस प्रकार के वाक़िआ़त से सबक़ हासिल करो, इसलिये कि) अल्लाह का वादा बिल्कुल सच्चा है, पस तुम दुनिया की (छोटी सी) ज़िन्दगी से धोका न खाना और न उस बड़े धोकेबाज़ (शैतान के धोके में आना) ६. (सुनो!) शैतान तुम्हारा बिला शुब्हा दुश्मन है, तो तुम भी उस को अपना दुश्मन समझो। वह अपने गरोह को (बुराइयों की तरफ़ इसीलिये) बुलाता है कि वह जहन्नमी बनें। ७. जो लोग क़ाफ़िर हैं (यानी अल्लाह के हुक्मों का इन्कार करने वाले हैं) उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब है। और जो लोग ईमान लाये और नेक कार्य भी किये उन के लिये बख़्शिश और बड़ा अज्र है। ८. भला जिसको अपने बुरे आमाल अच्छे नज़र आयें और वह उन ही को अच्छा जाने तो (वह क्योंकर उन को

➲छोड़ सकता है) अल्लाह जिसे चाहे गुमराह करे और जिसे चाहे हिदायत करे। पस (ऐ नबी!) तू उन के हाल पर अफ़सोस करते-करते अपनी जान को हलाक न कर लेना। जो कुछ यह करते हैं अल्लाह को सब मालूम है। ९. अल्लाह ही (वर्षा से पूर्व) हवायें भेजता है। फिर वह बादल को उड़ाती हैं, फिर हम (उन ही हवावों के ज़रीआ़) उस (बादल) को सूखी ज़मीन की तरफ़ ले जाते हैं, फिर उस (बादल के पानी) से उस ज़मीन को सूखने के बाद ताज़ा कर देते हैं

....

४. यानी जिस प्रकार अल्लाह ने रोज़ी हासिल करने का तरीक़ा बताया है, इसी प्रकार रोज़ी के लिये काम करो, तो अवश्य ही अल्लाह रोज़ी देगा। कुछ लोगों ने ग़लती से यह मतलब समझ लिया है कि चूंकि रोज़ी-रोटी अल्लाह के हाथ में है इसलिये कारो-बार छोड़ कर बैठे रहो। यह मतलब लेना बहुत बड़ी ग़लती है। इस आयत का मतलब यह हर्गिज़ नही है। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० जैसे अल्लाह पर भरोसा करने वाले, नेक बन्दे तिजारत वग़ैरह कर के रोज़ी हासिल करते थे (अल्लाह पर भरोसा कर के बैठे नही रहते थे) हज़रत अ़ली रज़ि० के बारे में आता है कि एक रोज़ भूक से बेचैन हो कर एक चमड़े की मश्क़ गले में डाल कर घर से निकल पड़े। राह में एक यहूदी के बाग़ में पहुंचे, उस ने कहा कि एक खजूर के बदले में एक डोल पानी कुएँ से निकालना होगा। हज़रत अ़ली रज़ि० ने उस की शर्त मन्जूर कर ली और इतने डोल खींचे कि दोनों मुट्ठियाँ खजूरों से भर गयीं। उन्होंने खा कर पानी पिया और यहूदी से कहाः अब मुझे तुम्हारा काम करने की ज़रूरत नहीं (मवाहिब)

५. इस आयत में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को दिलासा दिया गया है कि ऐसी स्पष्ट दलीलों के बाद भी इन्कार करना यह शैतानी काम है। उनके मानने या इन्कार करने से हक़ और नबुव्वत की सच्चाई में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। यह तो उन का दुर्भाग्य है कि इतनी स्पष्ट दलीलों के बावजूद भी वह हक़ व सदाक़त को नहीं पहचान पाते हैं (मवाहिब)

इसी प्रकार जी उठना होगा[६]। १०. जो कोई इज़्ज़त चाहने वाला है तो सब की सब इज़्ज़त अल्लाह ही के क़ब्ज़े में है। पाक कलिमात उसी की तरफ़ चढ़ते हैं और (उसी की शान है कि) नेक आमाल को अपनी तरफ़ उठाता है[७]। और जो लोग मक्कारी से बुरे काम करते हैं उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब है। और उन की मक्कारी अन्ततः (आख़िरकार) तबाह होगी। ११. और अल्लाह ही ने तुम को (यानी आरंभ में तुम्हारे दादा आदम को) मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से (तुम्हारा सिलसिला➲

بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ۝ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ
الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ۚ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ
الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ۚ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ
السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۚ وَمَكْرُ اُولٰٓئِكَ هُوَ
يَبُوْرُ ۝ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ
جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ۚ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا
بِعِلْمِهٖ ۚ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ
اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ۚ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝ وَمَا

يَسْتَوِى الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ
وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّ
تَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ
مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲﴾
يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ ۙ وَ

चलाया) फिर तुम को जोड़े (यानी पति-पत्नी) बनाया। जिस किसी मादा को गर्भ ठहरता है और जो मादा बच्चा जनती है वह उस के इल्म से जनती है। और जो शख़्स (आम इन्सानी उम्र से) ज़्यादा उम्र दिया जाता है और जो कम दिया जाता है वह सब (अल्लाह की) किताब में मौजूद है। कुछ शक नहीं कि यह काम अल्लाह के नज़दीक आसान है[६]। १२. और (सुनो! अल्लाह की कुदरत की यह निशानी है कि) दो (प्रकार के) दरिया बराबर नही। एक तो ऐसा है कि उस का पानी मीठा बहुत स्वादिष्ट है और एक का निहायत कड़वा और खारा है, और तुम लोग उन दोनों में से ताज़ा-ताज़ा (मछलियों का) गोशत खाते हो और (मोती वग़ैरह जवाहिरात के) ज़ेवर निकाल कर पहनते हो और तुम देखते हो कि जहाज़ उस में पानी को चीरते हुये चलते हैं ताकि तुम उस का फ़ज़्ल तलाश करो[१] और ताकि तुम उसका शुक्र अदा कर सको। १३. (सुनो! वही अल्लाह है जो) रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल कर देता है।

....

६. इस आयत में इस बात की तरफ़ हिदायत की गयी है कि दुनिया के उलट-फेर से इन्सान को नसीहत हासिल करना चाहिये। हम इस चीज़ को अपनी आँखों से देखते हैं कि मुर्दा ज़मीन जिस पर हरियाली नाम की कोई चीज़ नहीं होती है, पानी पड़ते ही ज़िन्दा हो जाती है और देखते ही देखते वह ज़मीन हरी भरी हो जाती है, इसी प्रकार जो क़ब्रों में मुर्दा हैं वह भी मुर्दा ज़मीन की तरह दोबारा- जीवित हो जायेंगे। मगर यह मूर्ख, और दुनिया की झूठी शोहरत को चाहने वाले, दुनियादारों की ग़लत बातों पर हाँ में हाँ मिला कर इज़्ज़त हासिल करना चाहते हैं, हालाँकि इज़्ज़त हासिल करने का एक ही रास्ता है कि वह अल्लाह की इबादत व इताअ़त करें। इसलिये कि इज़्ज़त अल्लाह के हाथ में है और वह उसी को देता है जो उस के आदेशों पर अ़मल करता है। अल्लाह की ज़ात इतनी बुलन्द शान वाली है कि तमाम हम्द व सना और तारीफ़ की हक़दार केवल उसी की ज़ात है। उदाहरण के तौर पर यूँ समझें कि अगर किसी इन्सान की सख़ावत (दानवीरता) पर उस की तारीफ़ होती है, तो उस तारीफ़ का मुस्तहिक़ अल्लाह पाक ही है, इसलिये कि उसी ने बन्दे के दिल में सख़ावत और फ़य्याज़ी की बुनियाद रखी है। इसी प्रकार किसी की सुन्दरता और ख़ूबसूरती की तारीफ़ होती है तो वह भी अस्ल में अल्लाह ही की तारीफ़ है जिसने उस को सुन्दर बनाया। इसी प्रकार दुनिया में जितने भी तारीफ़ के कलिमे हैं, उन सब का मुस्तहिक़ अल्लाह ही की ज़ात है। और यह उसी की शान है कि नेक आमाल को अपनी तरफ़ उठाता है, यानी उसे कुबूल करता है। दुनिया में जो भी नेक काम करता है उस को कुबूल करना, या न करना उसी के इख़्तियार में है, यानी नेक लोगों का बदला देने वाला वही है। रहे दुनिया में इनाम देने वाले इन्सान, तो अव्वल तो वह उस वक़्त तक कुछ दे नहीं सकते, जब तक कि अल्लाह उन के दिल में यह बात न डाल दे और उन को तौफ़ीक़ न दे। दूसरे यह कि उन का बदला अल्लाह के बदला के मुक़ाबला में बहुत कम है। (सनाई)

'पाक कलिमात उसी की तरफ़ चढ़ते हैं' इस आयत की तफ़सीर करते हुये हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० ने फ़रमायाः बन्दा जब "सुबहा-नल्लाहि वबि-हम्दिही, वल्-हम्दु लिल्लाहिंव अला इला-ह इल्लल्लाहु" कहता है तो एक फ़रिश्ता इस कलिमे को बाज़ू के नीचे रख कर आसमान की ओर ले जाता है। वह जिन फ़रिश्तों के पास से हो कर गुज़रता है वह फ़रिश्ते तस्बीह पढ़ने वाले के हक़ में इस्तिग़फ़ार करते हैं, यहाँ तक कि वह अल्लाह तआला तक पहुंचा देता है। (इब्ने जरीर) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं 'पाक कलिमात' से मुराद अल्लाह का ज़िक्र और 'नेक आमाल' से मुराद, फ़र्ज़ को अदा करना है। (मवाहिब)

७. इमाम क़तादा अपनी तफ़सीर में लिखते हैं "पाक कलिमे उसी की तरफ़ चढ़ते हैं" का मतलब यह है कि अल्लाह पाक नेक कामों को क़ुबूल करता है। तफ़सीर "जलालैन" "मदारिक" सभी ने "चढ़ते हैं" का अर्थ "क़ुबूल होते हैं" लिखा है।

८. इस का अर्थ यह है कि हर काम आसानी से होता है जैसे माँ के पेट में बच्चा बनने का अमल।(मुवज़्ज़िहुल कुरआन) नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः माँ के पेट में नुत्फ़ा (वीर्य) चालीस दिन तक पानी की शक्ल में रहता है, फिर चालीस दिन तक ख़ून की शक्ल में, फिर चालीस दिन तक गोश्त के लोथड़े की शक्ल में। फिर अल्लाह तआला एक फ़रिश्ते को भेजकर उस के बदन में रूह डलवाता है और चार चीज़ें लिखने का निर्देश देता है (१) रोज़ी (२) आयु (३) अच्छा अमल (४) बुरा अमल। सो उस रब की क़सम जिस के अलावा कोई माबूद नहीं, एक शख़्स जन्नत वालों के से कार्य करता रहता है यहाँ तक कि जन्नत में दाख़िल होने के लिये एक बालिश्त की कसर बाक़ी रहती है कि उस पर उस की लिखी हुई तक़दीर ग़ालिब आ जाती है और वह जहन्नम वालों के काम करने लगता है और आख़िर कार जहन्नमी हो कर मरता है। इसी प्रकार एक जहन्नमी आदमी जहन्नम वालों के से अमल करता रहता है यहाँ तक कि उस के और जहन्नम के दर्मियान एक बालिश्त की कसर बाक़ी रह जाती है कि अल्लाह का लिखा हुआ ग़ालिब आ जाता है और वह जन्नत वालों के काम करने लगता है और जन्नती हो कर मरता है।

आज-कल के नई तालीम हासिल करने वाले लोग कहते हैं कि इस हदीस का मज़मून ज़ाहिर के ख़िलाफ़ है। दलील यह देते हैं कि हस्पतालों में हर प्रकार के और कई-कई माह के रखे गये नुत्फ़े (वीर्य) देखे गये हैं लेकिन उन में चालीस दिन के बाद कोई तब्दीली नहीं देखी गई। इसलिये यह हदीस सहीह नहीं, इस की तावील की जानी चाहिये। इस का उत्तर यह है कि यह हदीस "हसन, सहीह" है, इसलिये इस हदीस को ज़ईफ़ किसी भी हाल में नही कहा जा सकता। रही तजुर्बे और मुशाहिदे की बात, तो इस का उत्तर यह है कि कई बार ऐसा हुआ है कि औरत को गर्भ का एहसास होता है, फिर कुछ दिनों के बाद पता चलता है कि गर्भ नहीं है। कभी ऐसा होता है कि खुद उस औरत को भी गर्भ का एहसास नही होता और डाक्टर भी कह देते हैं कि गर्भ नहीं है, लेकिन अल्लाह के हुक्म से चन्द रोज़ के बाद गर्भ ज़ाहिर हो जाता है और बच्चा भी पैदा होता है। इससे मालूम हुआ कि हस्पतालों का तजुर्बा और तहक़ीक़ ऐसी नहीं कि उस से दलील पकड़ी जाये। ऊपर की बयान की गयी हदीस अपने स्थान पर बिल्कुल सहीह और दुरुस्त है। उसे ग़लत या ग़ैर सहीह कहना ख़ाह-मख़ाह की हठधर्मी है। (हमीदी)

नोट :- हदीस में माँ के गर्भ की बात कही गयी है, इसलिये माँ के गर्भ में रख कर तजरबा करना चाहिये, ना कि अलग किसी बर्तन में रख कर -ख़ालिद

९. अल्लाह पाक ने दो प्रकार के दरिया पैदा किये। एक दरिया का पानी तो साफ़, सुथरा, मीठा और स्वादिष्ट है, जो आबादियों और जन्गलों में बह रहा है, और दूसरा दरिया ठहरा हुआ पानी कड़ुवा है, जिसमें बड़ी-बड़ी कश्तियाँ और जहाज़ चलते हैं, और दोनों दरियाओं से तुम मछलियाँ पकड़ते हो जिन का ताज़ा-ताज़ा गोश्त खाते हो और उन में से ज़ेवर यानी मोती और मूँगे निकालते हो, उन कश्तियों द्वारा तिजारती सफ़र भी करते हो, जहाँ जाना हो पहुंच जाते हो, यह सब कुछ उसी रब का फ़ज़्ल व करम है, इसलिये वही इबादत

के लाइक़ है। जिन बुतों को तुम पुकारते हो उन को खजूर की गुठली के ऊपर के बारीक छिलके जितना भी इख़्तियार नहीं। वह तुम्हारी आवाज़ सुनते ही नहीं। वह क़ियामत के दिन तुम्हारे शिर्क का इन्कार करेंगे और तुम से बेज़ार हो जायेंगे (मुहम्मदी)

سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِن قِطْمِيرٍ ﴿١٣﴾ إِن تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ ۖ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ ۚ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ ﴿١٤﴾ ۞ يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿١٥﴾ إِن يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٦﴾ وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿١٧﴾ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ وَإِن تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۗ إِنَّمَا تُنذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۚ وَمَن تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿١٨﴾ وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ﴿١٩﴾

और सूरज और चाँद को उसी ने मुसख़्ख़र (आधीन) कर रखा है, हर एक मुक़र्रर वक़्त तक चलता है। (सुनो!) यही अल्लाह तुम्हारा पर्वरदिगार है उसी का सब कुछ इख़्तियार है। उस के अ़लावा जिन लोगों को तुम पुकारते हो (और जिनसे मुरादें माँगते हो) वह एक धागे का भी इख़्तियार नहीं रखते। १४. अगर तुम उन को पुकारो तो वह तुम्हारी पुकार नही सुनते (फिर कुबूल करें तो कैसे?) और अगर (थोड़ी देर के लिये मान भी लें कि) वह (किसी तरह) सुन पायें तो भी तुम्हारी दुआ़ कुबूल नही कर सकते। और (सुनो!) क़ियामत के रोज़ तुम्हारे इस शिर्क से इन्कार करेंगे। और अल्लाह ख़बर रखने वाले जैसी ख़बर तुम को कोई नही बतला सकता। १५. ऐ लोगो! तुम अल्लाह की जनाब के मुहताज हो और वह अल्लाह बेनियाज़ है और वह तमाम तारीफ़ों का मुस्तहिक़ है। १६. अगर चाहे तो तुम को फ़ना कर दे और (तुम्हारे स्थान पर) नई मख़्लूक़ ले आये। १७. और यह काम अल्लाह पर (कुछ भी) मुश्किल नहीं है। १८. और (दूसरा) कोई किसी के गुनाह न उठायेगा। और अगर कोई (गुनाहों में) दबा हुआ अपने बोझ की तरफ़ (किसी दूसरे को) बुलायेगा तो उस से कुछ (लेकर) हल्का न किया जायेगा अगर्चे वह क़रीबी संबन्धी ही क्यों न हो[१०]। जो लोग अपने पर्वरदिगार से बिनदेखे (भी) डरते हैं और नमाज़ क़ाइम करते हैं और जो सुधर जाये तो उस का लाभ उसी को है और अल्लाह ही की तरफ़ (सब को) लौटना है। १९. और (जो इस राज़ से बेख़बर हैं वह अंधे हैं, पस) अन्धा और अंखियारा (आँखों वाला) बराबर नहीं[११]।

....

१०. क़ियामत के दिन कोई भी दूसरें का गुनाह अपने ऊपर न लेगा और न ही कोई उस का बोझ हल्का

➲करेगा, उस के संबन्धी भी उस से मुंह मोड़ लेंगे, यहाँ तक कि माता-पिता भी कुछ काम न आयेंगे। हज़रत इक्रमा रह० फ़रमाते हैं कि एक पड़ोसी, अपने पड़ोसी के पीछे पड़ जायेगा और अल्लाह तआला से शिकायत करेगा कि इसने मुझ पर अपना दरवाज़ा बन्द रखा था। इसी प्रकार एक काफ़िर, मोमिन के पीछे पड़ जायेगा और दुनिया में अपने एहसान को याद दिला कर कहेगा कि मेरी सिफ़ारिश कर दे। हो सकता है कि इस से उस काफ़िर का अ़ज़ाब कम हो जाए हालांकि जहन्नम से छुटकारा तो ना मुमकिन ही है। इसी प्रकार बाप, अपने बेटे पर एहसान जतायेगा और कहेगा कि सिर्फ़ राई के दाने के बराबर मुझे अपनी नेकियों में से कुछ दे दो, बेटा कहेगा कि आप जो चीज़ मुझसे माँग रहे हैं उस की मुझे भी तो सख़्त ज़रूरत है, इसलिये मैं देने में असमर्थ हूँ। इसी प्रकार एक शख़्स अपनी पत्नी से भी कुछ नेकियाँ माँगेगा, लेकिन बीवी भी यही उत्तर देगी कि आज अगर आप को नेकियों की ज़रूरत है तो मुझे भी तो ज़रूरत है, इसलिये मैं कुछ भी न दे सकूँगी (इब्ने कसीर)

११. इस आयत में यह बतलाया गया है कि जिस प्रकार अन्धा (नेत्रहीन) और अंखियारा (आँखों वाला) तारीकी और रोशनी, धूप और साया, ज़िन्दा और मुर्दा बराबर नहीं हैं, इसी प्रकार मोमिन और काफ़िर भी बराबर नही हैं। जिस प्रकार उन चीज़ों के दर्मियान ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ है, इसी प्रकार ईमान और कुफ़्र के दर्मियान भी फ़र्क़ है। मोमिन की मिसाल अंखियारे, रोशनी, साया और ज़िन्दा की सी है और काफ़िर की मिसाल अन्धे, तारीकी, धूप और मुर्दा की सी है। कुरआन मजीद में एक दूसरे स्थान पर इस की मिसाल इस प्रकार दी हैः "जो मुर्दा था फिर उसे हमने ज़िन्दा कर दिया और नूर भी दिया जिसे ले कर वह लोगों के दर्मियान चल-फिर रहा है, ऐसा शख़्स और वह शख़्स जो अंधेरों में घिरा हुआ है, जिससे निकल नही सकता, क्या यह दोनों बराबर हो सकते हैं?" (सूरः अन्आ़म आय २२) एक दूसरे स्थान पर इसी मिसाल को इस प्रकार बयान किया हैः "दोनों जमाअ़तों की मिसाल अन्धे, बहरे और देखने-सुनने वाले की सी है"। (सूर हूद २४) मोमिन तो आँखों, कानों, उजाले और नूर वाला है, इसीलिये सीधी राह पर है जो सायों और नहरों वाली जन्नत में पहुंचेगा। (इब्ने कसीर)

وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ﴿٢٠﴾ وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ﴿٢١﴾
وَمَا يَسْتَوِي الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ
مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي الْقُبُوْرِ ﴿٢٢﴾ اِنْ اَنْتَ
اِلَّا نَذِيْرٌ ﴿٢٣﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۭ وَاِنْ
مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ﴿٢٤﴾ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ
كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ
وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٢٦﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ
مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا

२०. न अंधेरा और नूर बराबर हैं। २१. न साया और गर्मी बराबर है। २२. और न ज़िन्दे और मुर्दे बराबर हैं (पस नतीजा यह कि जो लोग अल्लाह के अहकाम की मुख़ालिफ़त करते हैं वह दरअस्ल मुर्दे हैं। यूँ) अल्लाह तो जिसे चाहे सुना सकता है (मगर) तू (ऐ नबी!) क़ब्रों में पड़े हुये मुर्दों को नही सुना सकता[१२]। २३. तू तो केवल डराने वाला है। २४. हम ने तुझ को सच्चाई के साथ खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है (इसी प्रकार) हर एक क़ौम में कोई न कोई डराने वाला गुज़रा है। २५. (फिर) अगर यह लोग तुझे झुठलाते➲

اَلْوَانُهَا وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ
اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ ۝ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ
وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ
مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ۝ اِنَّ

रहे तो (तुझ को ग़म न करना चाहिये) जो लोग इन से पहले थे उन्होंने भी झुठलाया था, उन के पास उन के रसूल खुले मोजिज़े और दीनी रिसाले[१३] (पत्रिकायें) और रोशन किताब लाये (मगर उन्होंने इन्कार ही किया) २६. सो जो लोग काफ़िर थे मैं ने उन को ख़ूब पकड़ा फिर मेरी नाराज़गी कैसी हुयी? २७. क्या तुम ने नही देखा कि अल्लाह आसमान से पानी उतारता है फिर उसके साथ मुख़्तलिफ़ रंगों के फल पैदा करता है। और पहाड़ों में जो बाज़ टुक्ड़े सफ़ेद और बाज़ लाल, मुख़्तलिफ़ रंग के हैं और बाज़ बहुत सियाह काले[१४] (यह भी उस की कुदरत के करिश्मे हैं) २८. इसी तरह आदमियों, जानवरों और चारपायों में बाज़ मुख़्तलिफ़ रंग के हैं। अल्लाह के बन्दों में से उलमा (ज़िल्म वाले) ही डरते हैं[१५] (पस अल्लाह की पहचान यही अल्लाह से डरना है) अल्लाह ग़ालिब और बड़ा बख़्शने वाला है।

....

१२. मुर्दे, ज़िन्दों की आवाज़ सुनते हैं या नहीं? इस मस्अला में उलमा का इख़्तिलाफ़ है। इमाम अबू हनीफ़ा रह० का कहना है कि मुर्दे ज़िन्दों की आवाज़ नही सुनते हैं, लेकिन कुछ उलमा सुनने के क़ाइल हैं। अगर इसी दूसरे क़ौल को ही सहीह मान लिया जाये तो भी क़ब्र वालों से मदद चाहना और उन के सामने अपनी हाजतें पेश करना शिर्क है। (सलफ़िय्या)

१३. 'ज़ुबूर' से मुराद छोटी किताबें हैं। जैसे हज़रत इब्राहीम अ़लै० पर ३० और हज़रत शीस अ़लै० पर ६० और हज़रत मूसा पर तौरात के उतरने से पहले ६० सहीफ़े (पम्फ़लेट साइज़ के अहकाम पर आधारित किताबचे) उतारे गये थे। 'रोशन किताब' से मुराद बड़ी किताबें हैं जैसे, तौरात, इन्जील, ज़ुबूर वग़ैरह। (सलफ़िय्या)

१४. इस आयत में पहाड़ों को देख कर अल्लाह की कुदरत के चमत्कार को देखने की हिदायत की गयी है। यह सफ़ेद रंग के होते हैं, फिर सफ़ेद में भी कई प्रकार के होते हैं, कुछ मर-मर सफ़ेद होते हैं और कुछ नमक सफ़ेद। कुछ लाल होते हैं और कुछ काले। इमाम इकरमा ने फ़रमायाः 'ग़राबीब' बुलन्द काले पहाड़ को कहा जाता है। अ़रब के लोग जब किसी निहायत काली चीज़ को बयान करते हैं तो उसे 'ग़राबीब सूद' (निहायत काली) बोलते हैं, गोया काले कौए की तरह काला कहते हैं। इसी प्रकार इन्सानों और जानवरों, कीड़े-मकोड़ों का हाल है, सब में हर प्रकार के रंग के लोग मौजूद हैं। इन पर निगाह डाल कर अल्लाह की कुदरत के करिश्मे वही पहचानता है जिस के पास इल्म हो।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह की कुदरत के करिश्मे और उस की इज़्ज़त व जलाल को जो पहचानता है वही उस से ख़ौफ़ करता है। इस आयत से यह भी मालूम हुआ कि आ़लिम का दर्जा सब से अधिक बुलन्द है"। इस का मतलब यह हुआ कि "बुज़ुर्गी" तक़्वा के लिहाज़ से है और "तक़्वा," इल्म के हिसाब से होता है न कि अ़मल के हिसाब से। जिस के पास इल्म ज़्यादा होगा उसी के अन्दर अल्लाह का ख़ौफ़ भी अधिक होगा। इस प्रकार जिस के पास इल्म कम होगा उस के पास अल्लाह का ख़ौफ़ भी क़म होगा। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया "मैं तुम से बढ़ कर अल्लाह का इल्म रखता हूँ और तुम सब से अधिक अल्लाह का ख़ौफ़ भी रखता हूँ"। (बुख़ारी) एक दूसरी हदीस में फ़रमायाः "जो कुछ

मैं जानता हूँ अगर तुम जानते तो कम हंसते और बहुत रोते"। इमाम इब्ने कसीर नक़्ल करते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमायाः "बड़ा और बुज़ुर्ग आलिम वह है जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करे, उस के हलाल किये हुये को हलाल और उस के हराम किये हुये को हराम समझे, अल्लाह की हिदायत पर अमल करे और यह यक़ीन करे कि वह बहुत जल्द अल्लाह से मिलने वाला है"। इमाम मस्रूक़ रह० फ़रमाते हैं आदमी के आलिम होने के लिये यही दलील काफ़ी है कि वह अल्लाह से ज़्यादा से ज़्यादा डरने वाले हो, और उस के जाहिल होने के लिये यही दलील काफ़ी है कि उस को अपना अमल बेहतर नज़र आये। (मवाहिब)

१५. अल्लाह की कुदरत के चमत्कार और दुनिया की तमाम वस्तुओं पर ग़ौर-फ़िक्र कर के अल्लाह की बुज़ुर्गी और बड़ाई को समझने वाले अहलेइल्म ही सही मानों में मुत्तक़ी कहलाने के हक़दार हैं। ऐसे लोगों की ज़ाहिरी पहचान यह है कि अल्लाह से डरने वाले, कुरआन पाक की तिलावत करने वालें, नमाज़ों को ठीक समय पर अदा करने वाले और अल्लाह की राह में ख़र्च करने वाले होते हैं।

الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا
مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ
تَبُوْرَ ﴿٢٩﴾ لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ
اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٣٠﴾ وَالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ مِنَ
الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٣١﴾ ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ
اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ
مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ
هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٣٢﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا
يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ
فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٣٣﴾ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا
الْحَزَنَ ؕ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ۨ ﴿٣٤﴾ الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا
دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا

२९. जो लोग अल्लाह की किताब को पढ़ते हैं (ग़ौर-फ़िक्र करते हैं) और नमाज़ (वक़्त पर) अदा करते हैं और हमारे दिये में से (ज़रूरत के अनुसार) खुले और छुपे ख़र्च भी करते हैं, यही लोग एक बड़ी तिजारत की आशा करते हैं जिसमें कभी घाटा न पायेंगे ३०. नतीजा यह होगा कि अल्लाह उन के आमाल के पूरे बदले देगा और (महज़) अपने फ़ज़्ल से ज़्यादा भी अता करेगा। वह बड़ा बख़्शने वाला, बड़ा क़द्र करने वाला है। ३१. जो किताब हम ने तेरी तरफ़ भेजी है वही सच्ची है, जो किताब (तौरात, इन्जील नाम की) उस के सामने है उस की तस्दीक़ करती है। बिलाशुब्हा अल्लाह अपने बन्दों के हाल से ख़बरदार, देखने वाला है। ३२. फिर हम ने किताब का वारिस उन लोगों को बनाया जिन को हम ने अपने बन्दों में से मुन्तख़ब किया[१६] (यानी मुसलमानों को जो बाद में तीन हिस्सों में बट गये) बाज़ उन में के अपने हक़ में ज़ालिम होंगे। कुछ उन में के दर्मियाना दर्जे के हैं और कुछ उन में के अल्लाह के हुक्मों से नेकियों में आगे बढ़ने वाले होंगे[१७]। यही बड़ा फ़ज़्ल है। ३३. (जिस का बदला) हमेशा रहने के बाग़ हैं जिन में यह लोग दाख़िल होंगे, उन बाग़ों में सोने के कंगन और मोती उन को पहनायेंगे और उन (बाग़ों) में उन का लिबास रेशमी होगा ३४. और कहेंगेः हर प्रकार की तारीफ़ें उस अल्लाह के लिये हैं जिस ने हम

से हर प्रकार के ग़मों को दूर कर दिया है[१८]। बेशक हमारा पर्वरदिगार बड़ा बख़्शने वाला और क़द्र करने वाला है। ३५. जिस ने (केवल) अपने फ़ज़्ल से हम को ठहरने के स्थान (जन्नत) में उतारा है[१९], जिस में न किसी तरह की तक्लीफ़ है

....

१६. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की उम्मत पर अल्लाह तआ़ला ने पहले की किताबों का खुलासा और मज़ीद इज़ाफ़े के साथ कुरआन मजीद की शक्ल में नाज़िल फ़रमाई और मीरास की शक्ल में उन को अ़ता की। पस जो उन में ज़ालिम हैं अल्लाह उन को माफ़ी देगा और जो दर्मियाना दर्जे के हैं उन का हिसाब आसान करेगा और जो नेकियों में आगे बढ़े हुये हैं वह बेहिसाब जन्नत में चले जायेंगे। (मवाहिब)

१७. यह सब मुसलमान बन्दे होंगे, वर्ना पापी लोग तो महशर में रुके खड़े रहेंगे और कुछ दण्ड सहन कर के ही जन्नत में जा सकेंगे। हदीस शरीफ़ में आया है कि यह लोग जन्नत में जाते समय कहेंगे "हर प्रकार की तारीफ़ें अल्लाह के लिये हैं जिस ने ग़मों से दूर रखा है"। और जो दर्मियानी दर्जे के नेक लोग हैं और उन से कभी गुनाह के काम हो गये हैं अल्लाह तआ़ला उन का आसान हिसाब लेगा और जन्नत में दाख़िल कर देगा। रहे औलिया, शुहदा और अव्वल दर्जे के मुसलमान, तो यह लोग बग़ैर हिसाब के जन्नत में जायेंगे। हज़रत उक़्बा रज़ि० ने आ़इशा रज़ि० से जब इस आयत का मतलब पूछा तो उन्होंने फ़रमायाः "आगे बढ़ने वाले" वह लोग हैं जो आप की ज़िन्दगी ही में गुज़र गये और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उन्हें जन्नती भी कहा। और "बीच की राह चलने वाले" वह लोग हैं जो उन गुज़रे हुये लोगों के तरीक़े पर चले। और "अपने नफ़्सों पर जुल्म करने वाले" से मुराद, जैसे हम और तुम दूसरे गुनाह गार लोग। कुछ उलमा ने "अपने नफ़्सों पर जुल्म करने वाले" से मुराद काफ़िर लिया है। "बीच की राह चलने वाले" से मुराद वह लोग हैं जिनके पास नेकियां और गुनाह दोनों हैं और "आगे बढ़ने वाले" से मुराद वह लोग हैं जिन के पास नेकियाँ हैं। लेकिन सच्ची बात यह है कि इन तीनों से मुराद मुसलमान हैं। हज़रत बरा कहते हैं कि मैं गवाही देता हूँ कि यह सब जन्नती हैं (वहीदी)

१८. हदीस शरीफ़ में आया है कि "लाइला-ह इल्लल्लाह" कहने वालों पर क़ब्रों में और हश्र के मैदान में कोई डर और ख़ौफ़ न होगा। मैं तो गोया उन्हें इसी समय देख रहा हूँ कि वह अपने सरों से मिट्टी झाड़ते हुये कह रहे हैं कि अल्लाह का शुक्र है जिसने हम से रंज व ग़म को दूर कर दिया। (इब्ने अबी हातिम) तबरानी की रिवायत में है कि मौत के समय भी उन को कोई घबराहट नहीं होगी। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि उन की बड़ी-बड़ी ग़लतियाँ माफ़ कर दी गयीं हैं और छोटी-मोटी नेकियाँ क़ुबूल कर ली जायेंगी (इब्ने कसीर)

१९. 'ठहरने का मक़ाम' इसलिये कहा कि दुनिया रहने की जगह नहीं है। वह तो मन्ज़िल तक पहुंचने के लिये एक पड़ाव है और फिर रोज़ी-रोटी का चक्कर, दोस्त-दुश्मनों का ग़म और दीगर परेशानियाँ अलग, अब जब कि जन्नत में पहुंच गये तो इन तमाम परेशानियों से नजात मिल गयी। इसी मुनासिबत से जन्नत को "ठहरने का स्थान" कहा (मुवज़्ज़िहुल कुरआन) एक शख़्स ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहाः हम को दुनिया की नींद बहुत प्यारी है, इस से बड़ा आराम और सुख मिलता है, तो क्या जन्नत में भी नींद आयेगी? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः नींद तो मौत की बहन है (यानी मौत ही की तरह है) इसलिये जन्नत में नींद नही आ सकती। सहाबी ने पूछा कि फिर वहाँ आराम की क्या शक्ल होगी? आप ने फ़रमायाः नींद और आराम की आवश्यक्ता तो उस समय होती है जब इन्सान थक जाये, और जन्नत में थकान और सुस्ती आयेगी ही नहीं, वहाँ तो जन्नती हमेशा चुस्त और चौबन्द रहेंगे, फिर वहाँ नींद के आने का प्रश्न ही नहीं। इसी बात की ताईद में यह आयत नाज़िल हुयी (हमीदी)

يَمَسُّنَا فِيهَا لُغُوبٌ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُم مِّنْ عَذَابِهَا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَفُورٍ ۝ وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۚ أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُم مَّا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَن تَذَكَّرَ وَجَاءَكُمُ النَّذِيرُ ۖ فَذُوقُوا فَمَا لِلظَّالِمِينَ مِن نَّصِيرٍ ۝ إِنَّ اللَّهَ عَالِمُ غَيْبِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ ۚ فَمَن كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ شُرَكَاءَكُمُ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَاوَاتِ أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا

न थकान (और न कमज़ोरी[२०]) ३६. और (इन के मुक़ाबला में) जो लोग काफ़िर हैं उन के लिये जहन्नम की आग है (जिसमें वह हमेशा रहेंगे) न उन पर (मौत का) हुक्म होगा कि मर जायें और न उन के अ़ज़ाब में कुछ कमी होगी। इसी प्रकार हम हर एक (नाशुक्रे) काफ़िर को सज़ा देंगे। ३७. वह (उस) दोज़ख़ में चीख़ें मारते हुये कहेंगे कि हमारे पर्वरदिगार! तू हम को (इस दोज़ख़ से) निकाल ले तो हम अपने बुरे कामों को छोड़ कर नेक अ़मल करेंगे (उन को उत्तर मिलेगा) क्या हम ने तुम को इतनी उम्र न दी थी? जिस में कोई नसीहत पाना चाहता तो पा सकता था और तुम्हारे पास समझाने वाले भी आये थे[२१] (मगर तुम ने किसी की एक न सुनी) पस (अब) तुम (अपने किये का) स्वाद चखो, ज़ालिमों के लिये कोई मदद नही। ३८. अल्लाह आसमानों और ज़मीनों की पोशीदा बातों को जानने वाला है (बल्कि) वह सीने के भेदों को जानने वाला है। ३९. उसी ने तुम लोगों को ज़मीन पर (अपना) ख़लीफ़ा बनाया पस जिसने (अल्लाह और अल्लाह के अहकाम से) इन्कार किया तो उस के कुफ़्र का वबाल उसी पर है और काफ़िरों के कुफ़्र से उनके पर्वरदिगार के हाँ ग़ज़ब ही बढ़ता है, और कुफ़्र से उन्हीं का (नुक़्सान ही) नुक़्सान होता है[२२]। ४०. (उन से) कह दे कि बतलाओ तो सही, जिन शरीकों को तुम अल्लाह के अ़लावा पुकारते हो, मुझे दिखाओ तो सही (उन्होंने क्या बनाया है,) क्या ज़मीन में उन्होंने कुछ पैदा किया है? या आसमानों में उन की कुछ साझेदारी है? या हम ने उन को कोई किताब दी है।

....

२०. वह नहीं जो करते थे, यानी उस समय तो उसी को भला समझते थे पर अब वह न करेंगे (मुवज़्ज़िहुल कुरआन) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः ऐ मुसलमानो! उस चीज़ को तलाश करो जिस का अल्लाह ने हुक्म दिया है और उस चीज़ से डरो, जिस से अल्लाह ने डराया है।

फ़ाइदाः— जन्नत ऐसी लज़्ज़तों और नेमतों वाली है कि अगर वहाँ के पीने की चीज़ की एक बूंद भी दुनिया में टपक जाये, तो सारा संसार चमकने लगे। और दोज़ख़ ऐसी मुसीबत वाली चीज़ है कि वहाँ के पीप की एक बूँद भी दुनिया में टपक जाये तो सारा संसार बदबूदार हो जाये (तर्ग़ीब व तर्हीब) एक दूसरी हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः तुम लोग दो भारी-भरकम चीज़ों, यानी जन्नत और दोज़ख़ से ग़ाफ़िल मत हो, फिर आप इतना रोये कि दाढ़ी आँसू से भीग गयी। फिर आप ने आगे फ़रमायाः ➲

उस ज़ात की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान है, अगर तुम को आख़िरत में पेश आने वाले हालात का पता चल जाये (जैसा कि मुझे पता है) तो तुम लोग रोते, चीख़ते-चिल्लाते और अपने सरों पर मिट्टी डालते हुये (होश-हवास खो कर) जंगलों में भाग जाओ (हमीदी)

२१. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जिस शख़्स को अल्लाह तआ़ला ने ६० वर्ष की उम्र अ़ता कर दी, तो उस के लिये कोई बहाना बाक़ी नही रखा," फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह आयत तिलावत फ़रमाई। (इस उम्र से मतलब यह है कि ६० वर्ष तक दुनिया में ज़िन्दा रखा, फिर भी उस ने आख़िरत को याद न किया) एक अन्य हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "क़ियामत के दिन एक पुकारने वाला पुकार कर कहेगा कि कहाँ हैं ६० वर्ष की उम्र वाले"। इस से ज़ाहिर होता है कि आयत में जिस उम्र का ज़िक्र है इस से मुराद ६० वर्ष ही उम्र है। तिर्मिज़ी शरीफ़ की एक हदीस में रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से एक सहाबी ने प्रशन किया कि सब से अच्छा आदमी कौन है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जिस की उम्र ज़्यादा होने के साथ-साथ उसके अ़मल भी अच्छे हों"। उन्होंने फिर पूछा कि सब से बुरा आदमी कौन है? आपने फ़रमायाः "जिसकी उम्र लम्बी होने के साथ उस के अ़मल बुरे हों"। (वहीदी)

२२. यानी उस ने तुम्हें ज़मीन में एक दूसरे का ख़लीफ़ा बनाया है। और काफ़िरों के कुफ़्र का वबाल स्वयं उन पर ही होगा। वह जूँ-जूँ कुफ़्र में बढ़ते जाते हैं, उन पर अल्लाह की नाराज़गी भी बढ़ती जाती है। (मुहम्मदी)

فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٤٠﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤١﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى الْاُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرَا ﴿٤٢﴾ اسْتِكْبَارًا فِى الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ؕ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ ؕ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ﴿٤٣﴾ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ﴿٤٤﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ

कि उस की दलील पर यह लोग क़ाइम हैं (इस मामले में उन को इजाज़त है कि अल्लाह के बन्दों को अल्लाह का शरीक बनायें? मगर ऐसा नही) बल्कि बाज़ ज़ालिम लोग बाज़ को महज़ फ़रेब के वादे देते हैं[२३]। ४१. अल्लाह ज़मीनों और आसमानों को गिरने से थामे हुये है, और अगर यह दोनों (अपने स्थान से) टल जायें तो उस (अल्लाह) के अ़लावा कोई उन को संभाल नही सकता[२४] (वह इस के बावजूद कि अकेला पैदा करने वाला है) बड़े हौसले वाला और बख़्शने वाला है। ४२+४३. और (एक ज़माना था कि) उन्होंने बड़ी पक्की क़समें खा ली थीं कि अगर हमारे पास कोई समझाने वाला आये तो हम ज़रूर ही दूसरी क़ौमों से ज़्यादा हिदायत पर होंगे, फिर जब डराने वाला उन के पास आ पहुंचा (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम रसूल हो कर आ गये) तो मुल्क में तकब्बुर और

➲बुरे अ़मलों की वजह से उन को (हक़्क़ानी तालीम से) नफ़रत ही (नफ़रत) ज़्यादा होती गयी[२५]। और बदअ़मली का असर हमेशा करने वालों ही पर पड़ता है (इसलिये उन से भी वही बर्ताव होगा, क्योंकि यह भी तो अब) बस पहले लोगों के से बर्ताव का सा इन्तिज़ार कर रहे हैं (कि जिस प्रकार उन पर अज़ाब आया, उन पर भी आये) पस तुम अल्लाह के क़ानून को बदला हुआ नहीं पाओगे और हर्गिज़ अल्लाह का क़ानून टलता हुआ न देखोगे (और ज़रूर-ज़रूर ऐसा ही होगा) ४४. क्या उन्होंने मुल्क में फिर क नही देखा? कि इन से पहले लोगों का अन्जाम कैसा हुआ जो तायदाद में ज़्यादा और बल-बूते में उन से बढ़ कर थे[२६]। और अल्लाह को तो कोई चीज़ न आसमानों में आ़जिज़ कर सकती है, न ज़मीन में (हर्गिज़ ऐसा नही हो सकता) वह बड़े इल्म वाला और बड़ी क़ुदरत वाला है[२७]।

....

२३. 'फ़रेब के वादे देते हैं' और शिर्क के कामों की तरफ़ बुलाते हुये कहते हैं कि हमने फ़लाँ स्थान पर चढ़ावा चढ़ाया तो हमारा यह फ़ाइदा हुआ और फ़लाँ क़ब्र से माँगा तो यह मुराद पूरी हूयी वग़ैरह, वग़ैरह। हालाँकि उन के यह ख़यालात बिल्कुल झूठे हैं, बिना अल्लाह के हुक्म के एक पत्ता भी हर्कत नही कर सकता (सनाई)

२४. बुख़ारी और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि अल्लाह तआ़ला न तो सोता है और न ही सोना उसकी शान है, वह मीज़ान (तुला) ऊँचा-नीचा करता रहता है, दिन के अ़मल रात से पहले और रात के अ़मल दिन से पहले उस के पास पहुंच जाते हैं, उस का पर्दा नूर है और आग है अगर उसे खोल दे तो उस के चेहरे की तजल्ली (चमक, नूर) जहाँ तक उस की निगाह, पहुंचती है, तमाम मख़्लूक़ को जला कर राख कर दे। इमाम इब्ने जरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० ने एक शख़्स से पूछा कि कहाँ से आ रहे हो? उसने उत्तर दियाः मुल्क शाम से। फिर पूछा कि वहाँ किस से मिले? उन्होंने बताया कि कअ़ब ने मुझ से यह बयान किया है कि आसमान एक फ़रिश्ते के कंधे पर घूम रहे हैं। उन्होंने उन से पूछा कि फिर तुम ने क्या कहा? उत्तर दिया कि न मैं ने झुठलाया और न ही सच जाना। हज़रत मस्ऊद रज़ि० ने फ़रमाया फिर तो तुम ने कुछ भी नही किया। सुनो! हज़रत कअ़ब ने जो भी कहा है ग़लत कहा है, इसके बाद उन्होंने इस आयत की तिलावत फ़रमाई। इस हदीस की सनद सहीह है। एक दूसरी रिवायत में उन सहाबी का नाम हज़रत जुन्दुब बुजली था जिन्होंने कअ़ब से बयान सुना था। इमाम मालिक रह० ने इसी आयत की रोशनी में आसमान के घूमने का इन्कार किया है। इस आयत के अ़लावा अपनी दलील में वह हदीस भी पेश करते हैं जिस में है कि "पश्चिम की तरफ़ एक दर्वाज़ा है और वह तौबा का दर्वाज़ा है, यह दर्वाज़ा उस वक़्त तक बन्द न होगा जब तक सूरज पश्चिम से उदय न हो"। यह हदीस सहीह है (तफ़सीर मुहम्मदी)

२५. यानी उन्होंने तकब्बुर करते हुये अल्लाह के अहकाम को मानने से इन्कार किया और अपने मक्र से दूसरों को भी मानने से रोका। लेकिन वह लोग जान लें कि ऐसा कर के वह अल्लाह का कुछ भी न बिगाड़ सकेंगे, बल्कि अपना ही बिगाड़ेंगे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "मक्कारी करने से बचो! इसलिये कि मक्र का बोझ (वबाल) मक्कार ही पर पड़ता है और क़ियामत के रोज़ केवल उसी को उत्तर देना पड़ेगा"। हज़रत मुहम्मद बिन कअ़ब रह० फ़रमाते हैंः तीन कामों का करने वाला कभी भी नजात नही पा सकता और उन कामों का वबाल बिला शुब्हा केवल उसी पर होगा (१) मक्र करने वाला (२) बग़ावत करने वाला (३) वादे को तोड़ने वाला, फिर उन्होंने यह आयत तिलावत फ़रमाई (तफ़सीर मुहम्मदी)

२६. अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि उन मुन्किरों से कह दीजिये कि ज़मीन में चल कर देखो तो सही कि उन जैसे अगले लोगों का कैसा अन्जाम हुआ और किस प्रकार हम ने उन्हें तबाह कर के रख दिया, उन की सारी नेमतें छीन लीं, उन के मकानात उजाड़ दिये, उन की औलाद को हलाक कर डाला। और अल्लाह का अ़ज़ाब उन पर से किसी प्रकार न टला और न ही वह स्वयँ उस अ़ज़ाब को टाल सके, उन की तमाम अकड़➲

➲और मक्र रफू चक्कर हो गयी। आगे फ़रमाया गया कि अल्लाह को कोई न हरा सकता है और न ही आजिज़ कर सकता है। उस के इरादे को कोई नही बदल सकता और न ही उस का हुक्म कोई टाल सकता है, वह तमाम दुनिया-जहान के हालात से अवगत है और वह हर काम करने पर कुरदत रखता है। अगर अल्लाह अपने बन्दों के गुनाहों पर पकड़ करता तो तमाम आसमान और ज़मीन वाले हलाक हो जाते। (मुहम्मदी)

२७. यानी न उस के इल्म को कोई पा सकता है और न उस की कुदरत को कोई पहुंच सकता है। इतनी कुरदत और ताक़त के बावजूद उस की नर्मी और रहम का यह हाल है कि तमाम मख़्लूक़ को नाफ़र्मानी के बावजूद मुहलत और ढील देता है। लेकिन जब मुहलत का समय समाप्त हो जायेगा तो उन के अमाल के अनुसार उन को बदला देगा (सनाई)

اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ
دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا
جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ۝٤٥

४५. (हालाँकि) अगर अल्लाह लोगों की उन के (बुरे) कामों पर पकड़ करे तो किसी जीवधारी को जमीन पर (जीवित) न छोड़े, लेकिन एक मुक़र्ररा वक़्त (मौत) तक उन को ढील देता है, पस जब उन का वक़्त आ जायगा तो (अल्लाह उन के आमाल के मुताबिक़ उन को बदला देगा) अल्लाह अपने बन्दों को देख रहा है।

सूरः यासीन् (36)

(٣٦) سُوْرَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ (٤١)
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يٰسٓ ۝ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ۝ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ عَلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۝ لِتُنْذِرَ قَوْمًا
مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ۝ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى
اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا
فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ۝ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ
اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ

सूरः यासीन मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[1]। इस में ८३ आयतें और ५ रुकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है।

१. यासीन[2] २. क़सम है (इस आसमानी और) हिक्मत वाले कुरआन की ३. बेशक तू रसूलों में से है। ४+५. (कुरआन की) सीधी राह पर है जो बड़े ग़ालिब और रहम करने वाले अल्लाह की तरफ़ से उतारा हुआ है। ६. ताकि तू उस क़ौम को डराये जिन के बाप-दादे नहीं डराये गये इसलिये वह ग़ाफ़िल हैं। ७. बेशक उन में से बहुतों (की ➲

(शरारत की वजह से उन) पर (अल्लाह का) हुक्म साबित हो चुका है, इसलिये वह ईमान न लायेंगे। ८. हम ने उन की गर्दनों में (गोया) तौक़ डाल रखे हैं। जो (उन की) ठोड़ियों तक पहुंचे हुये हैं जिन से उन के सर ऊपर को हैं[३]। ९. और हम ने उन के सामने रोक कर रखी है[४] और उन के पीछे भी रोक है और उन की आँखों पर (गोया) पर्दा डाल रखा है पस वह नहीं देखते[५]। १०. तेरा समझाना और न समझाना उन के लिए बराबर है, यह ईमान नही लायेंगे (क्योंकि उन की तबीअ़त इधर नही झुकती[६]) ११. तू तो केवल उन ही लोगों को समझाता है जो तेरे समझाने की पैरवी करते हैं और बिन देखे (अल्लाह) रहमान से डरते हैं।

....

१. शाने-नुज़ूल :- हज़रत आइशा और इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि यह सूरः मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुई। इस सूरः में ८३ आयतें , ७१९ कलिमें और ३०००हुरूफ़ हैं। उलमा-ए-इस्लाम ने कुरआन मजीद की ख़िदमत के सिलसिले में जो कोशिशें की हैं उस का यह खुला सुबूत है कि कुरआन पाक के एक-एक लफ़्ज़, बल्कि एक-एक हर्फ़ तक को शुमार किया है। चुनान्चे कुरआन की आयतों की मात्रा, सब से सहीह क़ौल के मुताबिक़ ६६१६, कुल अल्फ़ाज़ ७७९३४ और कुल हुरूफ़ ३२३७६० हैं। कलामुल्लाह के आ़शिक़ों ने इन को शुमार करने में कितनी मेहनत और मुशक्क़त की है- सुब्हानल्लाह! (मवाहिब, माजिदी)

२. कुछ उल्मा का कहना है कि यह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का नाम है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास ने कहा कि इस का तर्जुमा होगा "ऐ मोमिन मर्द" और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने कहा कि "ऐ इन्सानों के सरदार"। मगर सहीह क़ौल यह है कि इस आयत का शुमार भी उन आयतों में होता है जिन का माना व मुराद अल्लाह ही बेहतर जानता है (वहीदी) मौलाना अमृतसरी मर्हूम ने "ऐ कामिल इन्सान" तर्जुमा क़िया है।

३. यानी उन लोगों का हिदायत तक पहुंचना बहुत मुश्किल, बल्कि नामुमकिन है। यह तो उन लोगों की तरह हैं जिनके हाथ गर्दनों पर बांध दिये जायें और उनका सर ऊंचा जा रहा हो। यहाँ पर गर्दन के ज़िक्र के बाद हाथ का ज़िक्र छोड़ दिया है, लेकिन मुराद यही है कि गर्दन से हाथ मिला कर बाँध दिये गये हैं (इब्ने कसीर)

४. शाने-नुज़ूल:- एक मर्तबा अभागे अबू जेहल ने कहा कि अगर मैं मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को देख लूं तो यह कर डालूँ, वह कर डालूँ, इस पर यह आयतें नाज़िल हुईं। अबू जेहल से लोग कहते कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) तेरे सामने खड़े हैं, लेकिन उसे कुछ सुझाई ही न देता और बार-बार पूछता कि कहाँ है? कहाँ है? हिज्रत की रात भी यही चमत्कार हुआ। लोगों ने आप को क़त्ल के इरादे से घेर लिया, मगर अल्लाह ने उन की आँखों को अन्धा कर दिया और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम घर से सही-सलामत निकल गये और कोई न देख सका (इब्ने कसीर)

५. इस आयत में इस बात की तरफ़ इशारा है कि उन की हिदायत की राह में मुख़्तलिफ़ क़िस्म की रुकावटें हैं। बिरादरी का ख़्याल, ख़ान्दानी रस्म व रिवाज की पाबन्दी, कुफ़्र व शिर्क से प्रेम, नफ़्स की ख़्वाहिश का दावा और इन जैसे और न जाने कितने बन्धन हैं जो एक दीवार की शक्ल में रोक बने हुये हैं। यह दीवार कोई ईंट-पत्थर की नहीं है, बल्कि ऊपर गिनायी गई रुकावटों की है (सनाई)

६. बयान किया गया है कि हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अज़ीज़ रह० ने जबरिय्या फ़िर्क़ा के एक शख़्स ग़ैलान नामी को जब यह आयत सुनाई तो उस ने कहा कि अब मैं अपने अ़क़ीदे से तौबा करता हूँ। हज़रत उमर रह० ने अल्लाह से दुआ़ की कि अगर यह सच्चा है तो तू इस के गुनाह माफ़ कर दे और अगर यह झूठा है तो इस पर किसी ऐसे शख़्स को सवार कर दे जो इस पर तनिक भर भी रहम न करे। चुनान्चे ऐसा ही हुआ कि हिशाम बिन मलिक ने उस के हाथ-पाँव कटवा कर दमिश्क़ शहर के सदर दर्वाज़े पर उसे फ़ांसी दे दी। (वहीदी)

नोटः- जबरिय्या' फ़िर्क़ा का अक़ीदा है कि दुनियाँ में हम जो कुछ भी अच्छा बुरा कार्य करते हैं वह अल्लाह के हुक्म से करते हैं, उन में इन्सान की अपनी कोशिश और मर्ज़ी का तनिक भर अ़मल-दख़ल नहीं है -ख़ालिद

بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّاَجْرٍ كَرِيْمٍ ۝ اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ
الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ ۣ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ
فِيْٓ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ
اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝ اِذْ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ
فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا اِنَّآ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ۝
قَالُوْا مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ
شَيْءٍ ۙ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ۝ قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ
اِنَّآ اِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ ۝ وَمَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝
قَالُوْٓا اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَ
لَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ قَالُوْا طَاۤىِٕرُكُمْ مَّعَكُمْ ۗ
اَىِٕنْ ذُكِّرْتُمْ ۗ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ۝ وَجَآءَ مِنْ
اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ۝
اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝

पस उन को बख़्शिश और बाइ़ज़्ज़त बदले की ख़ुशख़बरी सुना। १२. कुछ शक नही कि हम मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे और उन लोगों के पेश किये गये आमाल और आसार हम लिखते रहते हैं और हम ने तो सब कुछ रोशन किताब में घेर रखा है"। १३. और उन को एक बस्ती की मिसाल सुना जब (हमारे भेजे हुये) रसूल उस में आये' १४. (यानी) जब हम ने उन की तरफ़ दो रसूल भेजे उन्होंने उन दोनों को झुठला दिया, फिर हम ने तीसरे से (उन दोनों की) मदद की तो उन तीनों ने (मिलकर) कहाः हम तुम्हारी तरफ़ रसूल हो कर आये हैं। १५. उन्होंने कहाः तुम केवल हमारी तरह के आदमी हो, रहमान ने कोई हुक्म नहीं उतारा (इसलिये) तुम बिल्कुल झूठ कहते हो (कि हम अल्लाह के रसूल हैं) १६. उन्होंने (यानी रसूलों ने) कहाः हमारा पर्वरदिगार जानता है कि हम तुम्हारी तरफ़ (रसूल हो कर आये) हैं। १७. और हमारे ज़िम्मा तो खुल कर तबलीग़ करना है और बस। १८. उन्होंने कहाः (यह जो आये दिन हम पर आफ़तें नाज़िल होती रही हैं उन में) हम तुम्हारी नहूसत समझते हैं (सो) अगर तुम (इस नये मज़हब से) बाज़ न आये तो हम तुम पर पथराव करेंगे और ज़रूर तुम लोगों को हमारी तरफ़ से दुखदाई अ़ज़ाब पहुंचेगा। १९. रसूलों ने कहाः तुम्हारी नहूसत तो खुद तुम्हारे साथ है (जो रात-दिन बुरे कामों में लगे रहते हो) अगर तुम को समझाया जाये ➲

☽तो तुम समझाने वाले से लड़ते हो, बल्कि बड़े बेहूदा हो। २०. और (यह सवाल-जवाब हो ही रहा था कि) शह्र के दूसरे किनारे से एक शख़्स भागता हुआ आया, उस ने कहाः ऐ मेरे भाइयो! तुम रसूलों की ताबेदारी करो। २१. तुम उन लोगों की ताबेदारी किया करो जो तुम से किसी प्रकार का बदला नहीं माँगते और वह ख़ुद भी हिदायत पर हैं[९]।

....

७. पस जो कुछ उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में अच्छे बुरे काम किये हैं सब उन के आमाल नामे में नोट हैं उसी के मुताबिक़ वह बदला पायेंगे। 'मा-क़द्दमू' जो कुछ अपनी ज़िन्दगी में किया, जैसे बुरे काम। 'आसा-रहुम' जो पीछे छोड़ गये, जैसे सदक़-ए-जारिया करते हुये कुवां खुदवा दिया, या मस्जिद-मदरसा बना दिया। इसी प्रकार बुरी रस्म छोड़ गये, जैसे क़ब्र पक्की बनवा गये ताकि लोग उस की पूजा करें, या नई बिदअ़त ईजाद कर गये, तो इन अच्छे-बुरे कामों का अज़ाब-सवाब उस के दुनिया से चले जाने के बाद भी उस को मिलता रहेगा। (सनाई)

८. उस बस्ती का नाम कुछ उल्मा ने इन्ताकिया बताया है। इस में हज़रत ईसा अ़लै० ने अपने शागिर्दों को तब्लीग़ के लिये भेजा था। यह शागिर्द भी हज़रत ईसा अ़लै० के वास्ते से रसूल थे, इसलिये अल्लाह ने उन को भी रसूल कहा है। कुछ ईसाई आ़लिमों ने इस से यह नतीजा निकाला है कि कुरआन भी ईसा अ़लै० को ख़ुदा मानता है और हज़रत ईसा के बनाये गये रसूलों को अपना रसूल कहता है, इस से मालूम हुआ कि ख़ुदा और मसीह एक ही हैं। लेकिन अगर ग़ौर किया जाये तो ईसाईयों के इस दावे की दलील उन उलमा का क़ौल है जिन्होंने ऐसा तर्जुमा किया है। अगर कुरआन की आयत को कुरआन ही की परिभाषा में देखें तो तर्जुमा भी सहीह होगा और किसी को एतराज़ करने का कोई मौक़ा भी न मिलेगा। कुरआन ने जहाँ भी "इन्ना अर-सलना" इस्तेमाल किया है, उस से मुराद यही है कि अल्लाह ने उन्हें बिला किसी वास्ता के रसूल बना कर भेजा, इसलिये यहाँ भी यही तर्जुमा होगा। जिन लोगों ने ईसा अ़लै० के वास्ते से बताया है, उन का ख़्याल बातिल है।

रहा यह प्रशन कि उस बस्ती का क्या नाम है? तो इस का उत्तर यह है कि उस का नाम न अल्लाह ने ज़िक्र किया है और न ही नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कुछ तफ़सीर की है और न ही उस के जानने से कुछ फ़ाइदा है। अगर ज़रूरत होती तो कुरआन स्वयँ यहाँ पर उस का नाम ज़िक्र कर देता। बस्ती के नाम से कुछ हासिल नही, हासिल तो बस्ती वालों के वाक़िआ़ से है, सो कुरआन ने उसे तफ़सील से बयान कर दिया (सनाई)

९. रिवायतों में आता है कि बस्ती वालों ने उन नबियों को क़त्ल करने का पोशीदा तौर पर प्रोग्राम बना लिया था, लेकिन उसी बस्ती के एक नेक शख़्स ने जिस का नाम "हबीब" था, और जो बस्ती के किनारे पर रहते थे, उन्होंने समझाना शुरू कर दिया। अपनी तब्लीग़ में उन्होंने कहा कि उन रसूलों की आज्ञापालन करो और उन का कहा मानो। यह लोग तुम से कोई मज़दूरी भी नहीं माँगते हैं, केवल अल्लाह की राह में उस का संदेश तुम लोगों तक पहुंचा रहे हैं, इसलिये तुम्हें ज़रूर उन की इताअ़त करनी चाहिये। लेकिन क़ौम ने उन की एक न सुनी और उल्टा उन को शहीद कर दिया (तफ़सीर मुहम्मदी)

★★★★★

بِسْـــمِ اللّٰهِ الرَّحْـمٰنِ الرَّحِيْـــمِ

पारः वमा लि—य (23)

संक्षिप्त विषय सूची

वमा लि–य (23)

وَمَا لِيَ لَآ أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝٢٢

ءَأَتَّخِذُ مِن دُونِهِۦٓ ءَالِهَةً إِن يُرِدْنِ الرَّحْمَٰنُ بِضُرٍّ لَّا
تُغْنِ عَنِّي شَفَٰعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَلَا يُنقِذُونِ ۝٢٣ إِنِّيٓ إِذًا
لَّفِي ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ۝٢٤ إِنِّيٓ ءَامَنتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ ۝٢٥
قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ يَٰلَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ۝٢٦ بِمَا
غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ۝٢٧ وَمَآ أَنزَلْنَا
عَلَىٰ قَوْمِهِۦ مِنۢ بَعْدِهِۦ مِن جُندٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا
مُنزِلِينَ ۝٢٨ إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَٰحِدَةً فَإِذَا هُمْ
خَٰمِدُونَ ۝٢٩ يَٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيهِم مِّن
رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ۝٣٠ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا
قَبْلَهُم مِّنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ۝٣١ وَإِن
كُلٌّ لَّمَّا جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ۝٣٢ وَءَايَةٌ لَّهُمُ الْأَرْضُ
الْمَيْتَةُ أَحْيَيْنَٰهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ

(२२) (कहा) मेरा क्या तर्क है कि मैं अल्लाह की इबादत न करूँ जिसने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ़ (मैं क्या) तुम सब को भी लौट कर जाना है। २३. क्या मैं उसके अलावा औरों को भी माबूद बनाऊँ? हालाँकि अल्लाह रहमान अगर मुझ को किसी प्रकार का नुक़सान पहुंचाना चाहे तो उन की तो सिफ़ारिश भी मेरे किसी काम न आयेगी और न वह मुझ को छुड़ा सकेंगे°। २४. कुछ शक नही कि मैं (ऐसा करने से) तुरन्त ही खुली गुमराही में जा पहुंचूँगा। २५. (इसलिये) यक़ीनन मैं (अपने और) तुम्हारे पर्वरदिगार पर ईमान लाया हूं पस तुम मेरी सुनो। २६+२७. उस से कहा गया है कि तू जन्नत में दाख़िल हो जा (मगर क़ौमी मुहब्बत से) उस ने कहाः ऐ काश! मेरी क़ौम को मालूम हो जो अल्लाह ने मुझ पर बख़्शिश की और मुझे अपने नज़दीकी बन्दों में किया (अगर मेरी क़ौम को यह मालूम हो जाये तो कभी हक़ से मुँह न मोड़ें) २८. हम ने इसके बाद उस की क़ौम (को तबाह किया मगर उन) पर आकाश से कोई फ़ौज न भेजी थी और न हम को भेजने की ज़रूरत थी २९. (बल्कि) उन की हलाकत तो सिर्फ़ एक ही (ख़ौफ़नाक) आवाज़ से हुयी पस वह तुरन्त ही (तेज़ आग की तरह दम के दम में) बुझ गाये। ३०. बन्दों के हाल पर अफ़सोस! जब कभी कोई रसूल उन के पास आया तो यह उस के साथ मज़ाक़-मख़ौल ही से पेश आये। ३१. क्या उन्होंने (इस पर) ग़ौर नही किया कि उन से पहले कई एक क़ौमों को जो हम ने हलाक और बर्बाद किया है वह उन की तरफ़ वापस नहीं आते।

➲३२. यक़ीनन हर एक हमारे सामने हाज़िर होने वाला है (तो आख़िर उस हाज़िरी का भी कुछ ख़्याल है) ३३. और उनके लिये मुर्दा (सूखी) ज़मीन दलील है जिस को हम (अल्लाह पानी से) ज़िन्दा कर देते हैं और उस में दाने उगाते हैं।

....

१०. वह आदमी अल्लाह के नबी को झुठलाता हुआ और उसकी तौहीन होती देख कर दौड़ा हुआ आया था, और जिसने अपने पैग़ंबरों की ताबेदारी करने का अनुरोध किया था, वह अब अपने अ़मल और अ़क़ीदे को उनके सामने पेश कर रहा है और उन्हें हक़ीक़त से आगाह कर के ईमान की दावत दे रहा है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि यह बुज़ुर्ग इतना ही कह पाये थे कि तमाम लोग उन पर टूट पड़े और शहीद कर डाला। यह अल्लाह के बन्दे और सच्चे वली पत्थर खा रहे थे लेकिन ज़बान से यही कहते थेः ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम को हिदायत दे, यह नही जानते। हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि काफ़िरों नें उस अल्लाह के बन्दे को बुरी तरह मारा-पीटा, उसे पटक कर सीने पर चढ़ बैठे और पैरों से इतना रौंदा कि आँत पीछे के रास्ते से बाहर निकल आयी। ठीक उसी समय अल्लाह की तरफ़ से उन्हें जन्नत की बशारत दी गयी, उसे अल्लाह ने दुनिया के रन्ज व ग़म से आज़ाद कर दिया और अम्न व शान्ति के साथ जन्नत में पहुंचा दिया, वहाँ के सुख-चैन को देख कर फिर उन की ज़बान से निकल गयाः काश! मेरी क़ौम जान लेती कि मेरे रब ने मुझे बख़्श दिया है और मेरी बड़ी आव-भगत हुयी है।

इसके बाद उन लोगों को अल्लाह ने तबाह-बर्बाद कर दिया। चूंकि उन्होंने अल्लाह के रसूलों को झुठलाया और उसके वली को क़त्ल कर दिया, इसलिये उन पर अ़ज़ाब नाज़िल हुआ और हलाक कर दिये गये। उनके हलाक करने के लिये न तो आसमान से कोई लंबा-चौड़ा लश्कर भेजा गया और न ही अल्लाह को इसकी आवश्यक्ता है। इसके लिये केवल निर्देश देना ही काफ़ी है। कहा जाता है कि हज़रत जिब्रील अ़लै० आये और उनके शह्र इन्ताकिया के दर्वाज़े की चौखट थाम कर इतने ज़ोर से आवाज़ निकाली कि कलेजे टुकड़े-टुकड़े हो गये और सब हलाक हो गये। हज़रत उर्वा बिन मस्ऊद सक़फ़ी रज़ि० ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हो कर कहा कि अगर अनुमति दें तो मैं अपनी क़ौम में जा कर तबलीग़ करूँ और उन्हें इस्लाम की दावत दूँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हें क़त्ल कर दें? उन्होंने कहा कि मैं इसके बारे में सोच भी नहीं सकता इसलिये कि मेरी क़ौम को मुझ से बड़ी ही मुहब्बत है, चुनान्चे हाल यह है कि अगर मैं सोया हुआ हूँ तो मारे अदब व एहतराम के वह मुझे जगायेंगे भी नहीं। आप ने फ़र्मायाः फिर आप जायें और अपनी क़ौम के दर्मियान तब्लीग़ करें। यह चल पड़े। इन का गुज़र राह में लात और उज़्ज़ा नामी दो बुतों के पास से हुआ तो कहने लगे कि अब तुम दोनों की शामत आ चुकी है। फिर क़ौम से कहने लगे कि तुम लोग बुतों की पूजा छोड़ दो और इस्लाम को अपना लो। यह बुत कुछ भी हक़ीक़त नही रखते हैं, सारी भलाई इस्लाम में दाख़िल हो जाने ही में है। इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि इन बातों को अभी तीन ही मर्तबा कह पाये थे कि एक काफ़िर ने दूर ही से एक तीर मारा जो उन की गर्दन में घुस गया और वह वहीं शहीद हो गये। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जब इस की सूचना मिली तो आप ने फ़रमायाः यह भी उन्हीं अल्लाह के बन्दे की तरह थे जिन्होंने कहा था कि काश! मेरी क़ौम मेरी मग़्फ़िरत और इज़्ज़त को जान लेती। (तफ़सीर मुहम्मदी)

फिर उस में से यह लोग खाते हैं। ३४. और हमने इस ज़मीन में खजूरों, अंगूरों के➲

يَأْكُلُونَ ۝ وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيلٍ وَّ اَعْنَابٍ

وَفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ﴿٣٤﴾ لِيَأْكُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ
وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٥﴾ سُبْحَانَ الَّذِي
خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنْفُسِهِمْ
وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾ وَآيَةٌ لَهُمُ اللَّيْلُ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ
فَإِذَا هُمْ مُظْلِمُونَ ﴿٣٧﴾ وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَهَا ۚ
ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٣٨﴾ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنَاهُ مَنَازِلَ
حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ﴿٣٩﴾ لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا
أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۚ وَكُلٌّ
فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٤٠﴾ وَآيَةٌ لَهُمْ أَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ
فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿٤١﴾ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِنْ مِثْلِهِ مَا
يَرْكَبُونَ ﴿٤٢﴾ وَإِنْ نَشَأْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيخَ لَهُمْ وَلَا
هُمْ يُنْقَذُونَ ﴿٤٣﴾ إِلَّا رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ﴿٤٤﴾

बाग़ पैदा किये, और उस (ज़मीन) में चश्मे जारी किये हैं ३५. ताकि उस के फल खायें और उन के हाथों ने उस (फल) को नहीं बनाया। क्या फिर भी वह शुक्र नहीं करते?। ३६. (सो याद रखें) जिस (अल्लाह) ने ज़मीन की पैदावार की कुल क़िस्में (प्रजातियाँ) और खुद उन इन्सानों की क़िस्में और जिस को यह लोग नही जानते, जोड़ों में पैदा किये हैं[11]। वह (अल्लाह इन के शिर्क और बेहूदा ख़्यालात से) पाक है। ३७. और रात, जिस में से हम दिन की रोश्नी निकाल लेते हैं तो तुरन्त यह लोग अंधेरे में रह जाते हैं, यह भी उन के लिये दलील है[12]। ३८. और सूरज अपने ठहरने की जगह के लिये चल रहा है[13]। यह अन्दाज़ा ग़ालिब और इ़ल्म वाले (अल्लाह) का है। ३९. और चाँद के लिये हमने (कई एक) मन्ज़िलें बनाई हैं (जिन में वह महीना का चक्कर काटता है) यहाँ तक कि वह एक पतली शाख़ जैसा हो जाता है। ४०. (अल्लाह के नियम को देखो कि) न सूरज से बन पड़ता है कि (चलते-चलते) चाँद को दबा ले और न रात का वक़्त दिन (के मुक़र्रर किये हुये वक़्त) से पहले आ सकता है। और (आकाश में) सब के सब अपने-अपने मदार पर फिरते हैं ४१. और उन (इन्कार करने वालों) के लिये एक निशान यह है कि हम उन की नस्ल को भारी कश्तियों में सवार करते हैं। ४२. और हमने उन के लिये इस प्रकार की और भी सवारियाँ बनाई हैं, जिन पर यह लोग चढ़ते हैं। ४३. और अगर हम चाहें तो उन को डुबो दें, फिर न तो कोई उन की सहायता करने वाला हो और न मुसीबत से छुड़ायें जायें। ४४. सिवाए इसके कि हम उन पर रहमत करें और (उन की ज़िन्दगी को) एक मुक़र्ररा समय तक पहुंचाना चाहें।

....

११. नबातात (पेड़-पौधे) और हैवानात (जानवर) सब मुख़्तलिफ़ क़िस्म के जोड़े-जोड़े बनाये हैं। इन्सान ने अब तक अल्लाह की कुदरत के राज़ों में से जो कुछ भी जाना है, वह न के बराबर है। संसार के बहुत से गोशें ऐसे हैं जिन तक इन्सान का इ़ल्म नही पहुंच सका है (राज़) साइंसदानों ने इस बात को सिद्ध कर दिया है कि हर प्रकार के फल-फूल में नर-मादा होते हैं जिनके आपस में मिलने से फूलों में फल लगते हैं। और जीवधारी के बारे में तो दुनिया जानती ही है कि नर-मादा होते हैं। -ख़ालिद

१२. इतने बड़े-बड़े सूरज, चाँद और सितारे आसमान में इधर से उधर कितनी सरलता से चलते हैं। सूरज के आकार के बारे में साइंसदानों का कहना है कि ज़मीन से चौदह लाख अस्सी हज़ार (१४,८०,०००) गुना बड़ा है (मुमकिन है कि भविष्य में तहक़ीक़ के बाद और भी बड़ा साबित हो) यह सूरज इतना भारी-भरकम होने के बावजूद भी, अल्लाह के हुक्म का इस क़दर ताबेदार है कि दिन-रात ऐसा चक्कर में है गोया अपने ठहरने की जगह के लिये चल रहा है यानी वह हर समय अल्लाह के हुक्म से ऐसी हरकत में है गोया ठिकाना तलाश कर रहा हो। आकार इतना बड़ा और चलत-फिरत इतनी तेज़ कि एक घन्टा में ६८००० मील का सफ़र तै करता है और कभी अपनी राह से भटकता नहीं है और न ही कभी सुस्त और कभी तेज़ हुआ है, क्योंकि उस का अन्दाज़ा ग़ालिब और इल्म वाले अल्लाह ने लगाया हुआ है।

इसमें इस आयत की जो तफ़सीर की गई है वह न तो किसी हदीस के ख़िलाफ़ है और न ही नये-पुराने फ़लसफ़ा के मुख़ालिफ़। नई तहक़ीक़ में यह बात सामने आई है कि ज़मीन हरकत कर रही है और हमारे तर्जुमे और तफ़सीर में उस की हर्कत का ज़िक्र नही है बल्कि सूरज के अपने धुरे पर हरकत करने का बयान है जो कि दोनों फ़लसफ़ों में तस्लीम किया जाता है। (सनाई)

इस विषय पर अधिक जानने के लिए मौरिस बुकैल की किताब "बाइबल, कुरआन और साइंस" का अध्यन करें (ख़ालिद)

१३. सूरज का निज़ाम, ज़मीन के निज़ाम से कहीं ज़्यादा बड़ा है। आप देखते हैं कि आज-कल हर शख़्स के हाथों में घड़ी बंधी होती है, लेकिन सभी घड़ियों का समय बराबर नही होता, बल्कि कुछ न कुछ मिनट और सैकिन्ड का अन्तर ज़रूर होता है, लेकिन सूरज के चलने-फिरने के समय में एक सैकिन्ड का फ़र्क़ नहीं होता इसका मतलब ही यह है कि उस का चलाने वाला ज़बर्दस्त कुदरत का मालिक है।

अगस्त १८९६ में एक आर्य धर्म के पंडित का "अल्लाह की ज़ात" के विषय पर लेक्चर का प्रोग्राम था, उन्होंने बड़ी ख़ूबी के साथ इस विषय पर लेक्चर दिया और अल्लाह की ज़ात के मौजूद होने को साबित किया। अपने लेक्चर के दौरान उन्होंने ज़िक्र किया कि एक मर्तबा प्रोग्राम था, मैं अपनी घड़ी के हिसाब से ठीक समय से एक दो मिनट पहले ही पहुंच गया। लोगों ने कहा कि आप लेट आये हैं। मैंने अपनी घड़ी देख कर कहा कि ठीक समय पर आये हैं। फिर उन्होंने साबित किया कि यह घड़ी जो बड़े ढंग से बनाई हुई है लेकिन फिर भी आगे-पीछे चलती है, लेकिन सूरज कभी भी ऐसा नहीं करता है इस का मतलब यह है कि सूरज का बनाने वाला एक बहुत बड़ी ज़ात है जिस की निग्रानी में सब कुछ चल रहा है। मेरी तवज्जुह तुरन्त इसी आयत पर गयी कि इस बात को कुरआन ने चौदह सौ वर्ष पूर्व ही बयान कर दिया है। (सनाई)

यह आयत पुकार-पुकार कर कह रही है कि कोई ज़ात है जो इस आसमान और ज़मीन के पूरे निज़ाम को इतनी ख़ूबी से चला रही है, लेकिन बड़े अफ़सोस की बात है कि आज-कल ख़ुदा के इन्कारियों के दिमाग़ में यह बात नही समा रही है यह उनका दुर्भाग्य नहीं तो और क्या है?

---

४५. और जब उन से कहा जाता है कि अपने आगे और पीछे की आफ़तों से बचो ताकि तुम पर रहम किया जाये (तो वह इस की पर्वाह नहीं करते ४६. और जब कभी उन के पास उनके रब के हाँ से कोई निशान आता है तो (नसीहत हासिल करने ➲

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ
رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ
اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا

أَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ أَطْعَمَهٗٓ ۖ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٤٧ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٤٨ مَا يَنْظُرُوْنَ إِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ۝٤٩ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّلَآ إِلٰٓى أَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ۝٥٠ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَإِذَا هُمْ مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ۝٥١ قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ۝٥٢ إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ۝٥٣

के बजाए) उस से मुंह मोड़ लेते हैं। ४७. (यह तो हुआ। इससे भी बढ़ कर सुनो!) जब कभी उन को कहा जाये कि अल्लाह के दिये हुये में से ख़र्च करो तो बेईमान लोग ईमान्दारों से कहते हैं: क्या हम ऐसे लोगों को खाना खिलायें (जो अल्लाह के हुक्म से भूखे हैं) अगर अल्लाह चाहता तो ख़ुद उन को खिला देता (बल्कि उस के उल्टा नतीजा निकालते हैं कि) तुम तो खुली ग़लती में हो। ४८. और कहते हैं कि यह (क़ियामत का) वादा कब पूरा होगा, सच्चे हो तो बतलाओ[१४] (यह प्रश्न भी केवल ज़िद की बुनियाद पर है) ४९. यह लोग (अस्ल में) एक ही आवाज़ का इन्तिज़ार कर रहे हैं जो (क़ियामत के दिन) उन को पकड़ेगी इस हाल में कि यह लोग (दुनिया में) परस्पर झगड़ते होंगे। ५०. फिर (यह ऐसे फसेंगे कि) न तो वसिय्यत कर सकेंगे और न अपने बाल-बच्चों की तरफ़ वापस हो सकेंगे। ५१. और सूर फूंका जायेगा तो यह लोग क़ब्रों से निकल कर अपने पर्वरदिगार की तरफ़ चल खड़े होंगे। ५२. (वह उठते हुये) कहेंगे कि हाए! हमको हमारी क़ब्रों से किस ने उठाया? यह तो वही है जिस का अल्लाह तआला ने (अपनी मेहरबानी से) वादा किया था और रसूलों ने सच कहा था। ५३. (वास्तव में उस घड़ी) एक ही आवाज़ (पैदा) होगी जिसको सुनते ही सब लोग हमारे (अल्लाह के) सामने हाज़िर होंगे।

....

१४. काफ़िर और मुश्रिक लोग क़ियामत का बयान सुन कर मुसलमानों से कहते थे कि क़ियामत के आने के बारे में तो बहुत समय से सुनते आ रहे हैं, अगर तुम लोगों का बयान सच है तो वह कब आयेगी और कब सूर में फूंक मारी जायेगी? अल्लाह तआला ने उन काफ़िरों के प्रश्न के उत्तर में फ़रमाया कि अगर वह लोग इन्तिज़ार ही कर रहे हैं तो एक चीख़ का इन्तिज़ार करें। यह लोग अपने मामूल के मुताबिक़ रोज़ाना के धंधों में लगे होंगे कि हज़रत मीकाइल की एक चीख़ से दुनिया मिटा दी जाएगी।

बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरह से और मुस्लिम शरीफ़ में अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन आ़स रज़ि से पहले सूर के बारे में रिवायत है कि ताजिर बाज़ार में कपड़े के थान खोल रहे होंगे, नहरों की लोग मरम्मत कर रहे होंगे, बाग़ों में सिंचाई का काम चल रहा होगा, लोग अपने जानवरों का दूध दूह रहे होंगे, कुछ लोग बैठे खाना खा रहे होंगे, कि अचानक सूर की आवाज़ से सब कुछ फ़ना हो जायेगा। कपड़े का थान खुला का खुला रह जायेगा। मुंह का खाना मुंह में ही रह जायेगा। नहरों की मरम्मत का काम अधूरा ही रह जायेगा। न कोई अपने माल की वसिय्यत कर सकेगा और न घर से बाहर गया हुआ घर आ सकेगा। इस पहली सूर की आवाज़ के बाद चालीस वर्ष तक पूरी दुनिया वीरान पड़ी रहेगी, फिर दूसरा सूर फूंका जायेगा जिसका आगे आयत न० ५१ में ज़िक्र आ रहा है। इस सूर की आवाज़ को सुन कर सब लोग जी उठेंगे और अपने रब

के सामने हाज़िर होने के लिये चल खड़े होंगे। इस दूसरी सूर का नाम 'नफ़्-ख़तुल् बअ़्स' (ज़िन्दा होने का सूर) है। दोनों सूर के बीच चालिस वर्ष के ज़माना में क़ब्र का अ़ज़ाब रोक दिया जायेगा और उन पर नींद की हालत सी रहेगी। इसी वास्ते जब यह दूसरे सूर की आवाज़ सुन कर जागेंगे। तो अपनी क़ब्रों को सोने की जगह समझ कर कहेंगे कि किस ने हमें जगा दिया। नेक लोग कहेंगे कि अल्लाह और उसके रसूल के जिस वादे को तुम लोग झुठलाते थे, आज का दिन वही दिन है, अब तुम को हिसाब-किताब के लिये अल्लाह के सामने हाज़िर होना है।

अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ैद की तफ़सीर में है कि पहले काफ़िर लोग तो यह कहेंगे कि हमें किस ने सोने की जगहों से जगा दिया, फिर अपनी ही बात का स्वयँ ही जवाब देंगे कि शायद आज का दिन वह दिन है जिस को अल्लाह और उसके रसूल ने हश्र का दिन बताया था। इमाम हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि काफ़िरों के इस प्रश्न का उत्तर फ़रिश्ते देंगे। लेकिन सूरः रूम की आयत ५६ से यही मालूम होता है कि काफ़िरों के एतराज़ का जवाब नेक लोग ही देंगे, इसलिये यही क़ौल कुरआन व हदीस के मुताबिक़ है कि काफ़िरों की इस बात का जवाब दीनदार लोग ही देंगे। फिर आगे फ़रमायाः कि दूसरे सूर की आवाज़ अल्लाह तआ़ला के सामने हाज़िर होने के लिये होगी और उस आवाज़ के साथ ही यह सब अल्लाह के सामने हाज़िर हो जायेंगे। फिर हिसाब-किताब का अ़मल आरम्भ होगा। (अहसनुत्तफ़ासीर)

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَّلَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ
شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ۝ هُمْ وَاَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ عَلَى
الْاَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ۝ لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ
مَّا يَدَّعُوْنَ ۝ سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ۝ وَامْتَازُوا
الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ۝ اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ
يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ
مُّبِيْنٌ ۝ وَّاَنِ اعْبُدُوْنِيْ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝
وَلَقَدْ اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا
تَعْقِلُوْنَ ۝ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝
اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝ اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ
عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ
بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى

५४. फिर उस रोज़ किसी जान पर ज़ुल्म न होगा और जो कुछ तुम करते हो उसी का तुम को बदला मिलेगा इस का खुलासा यही है कि नेक लोग जन्नत में और बुरे लोग जहन्नम में जायेंगे ५५. जन्नत वाले उस रोज़ मज़े में जी बहला रहे होंगे ५६. (क्योंकि) वह और उन की बीवियाँ तख़्तों पर तकिया लगाये होंगे ५७. उन के लिये उन (जन्नतों) में हर प्रकार के फल होंगे और जो कुछ वह चाहेंगे उन को मिलेगा ५८. (उन सब नेमतों में बड़ी नेमत यह होगी कि) पर्वरदिगार मेहरबान की तरफ़ से उन को सलाम कहा जायेगा। ५९. और (कहा जायेगा कि) ऐ बदकारो! आज अलग हो जाओ। ६०. क्या मैं ने (नबियों के ज़रिये) तुम को सूचना नहीं दी थी कि ऐ बनी आदम! शैतान की इताअत मत करना (क्योंकि) वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। ६१. और (ख़ालिस) मेरी इताअ़त करना, यही

सीधी राह है (दिखो, तुम को नबियों के ज़रिये इस बात की ख़बर हो चुकी थी) ६२. और वह (शैतान) तुम में से बहुत को गुमराह भी कर चुका था। क्या फिर भी तुम नही समझते थे? (बस अब तुम्हारा क्या उज़्र है?) ६३. यह जहन्नम अब तुम्हारे सामने है जिस का तुम लोग वादा दिये जाते थे ६४. आज कुफ़्र करने के सबब जहन्नम में दाख़िल हो जाओ ६५. उस रोज़ हम उन के मुँह पर मुहर लगा देंगे और जो काम वह लोग दुनिया में कर रहे हैं उस के बारे में उन के हाथ हम से बोलेंगे और पैर गवाही देंगे[१५] (जो काम जिस ने किया होगा वह उसकी गवाही देगा) ६६. और अगर हम चाहें तो उन की आँखों को बे नूर कर दें

....

१५. क़ियामत के दिन आदमी के हाथ पांव-भी बोलेगें और इन्सान के ख़िलाफ़ गवाही देंगे, इस विषय में कुरआन मजीद में और दूसरे स्थानों पर भी बयान हैं, तफ़सील मालूम करने के लिये इन सूरतों को देखें- सूरः आराफ़ रुकूअ़ १२, नहल-रुकूअ़ ६, बनी इस्राईल-रुकूअ़ ७, मुल्क रुकूअ़ २, हामीम् सज्दा- रुकूअ़ ३, हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: एक शख़्स क़ियामत के दिन अल्लाह से कहेगा कि क्या तू मेरे साथ न्याय नहीं करेगा? अल्लाह फ़रमायेगा कि ज़रूर करूंगा। बन्दा कहेगा कि मैं तो अपने मामला में ऐसे गवाह की गवाही तसलीम करूंगा जो मेरा क़रीबी हो। अल्लाह फ़रमायेगा कि आज तेरे ऊपर ख़ुद तुम्हारी ज़ात ही को और आमाल लिखने वाले फ़रिश्तों को गवाह बना कर पेश करूँगा। इसके बाद उसके मुँह पर मुह्र लगा कर उस के हाथ-पाँव को गवाही देने के लिये कहा जायेगा। उसके हाथ पाँव गवाही देंगे कि उसने फ़लाँ-फ़लाँ काम किया है। इसके बाद उसके मुँह की मुह्र को हटा लिया जायेगा तो वह बन्दा अपने हाथ-पाँव से नाराज़ हो कर कहेगा कि तुम्हारा बुरा हो, मैं तो तुम्हारी सुरक्षा हमेशा करता रहा और तुम हो कि आज मेरे ख़िलाफ़ ही गवाही दे रहे हो? (तफ़सीर हमीदी) एक दूसरी हदीस में है कि मुँह पर मुह्र लगाने के बाद सब से पहले इन्सान की बायीं रान बोलेगी।

फिर आगे अल्लाह फ़रमाता है कि हम अगर चाहते तो उन्हें गुमराह कर देते और यह फिर कभी हिदायत न हासिल कर पाते। अगर हम चाहते तो उन की आँखें अन्धी कर देते और यह इधर-उधर भटकते फिरते और हक़ को न पा सकते और न ही सीधी राह पर चल सकते। अगर हम चाहते तो उनके घरों के अन्दर ही उन का चेहरा बिगाड़ देते और उन की सूरतें बदल देते, उन को लूला-लंगड़ा बना देते, फिर वह चल-फिर न सकते। (तफ़सीर मुहम्मदी)

फिर यह रास्ता की तरफ़ लपकें तो कहाँ से देखें। ६७. और अगर हम चाहें तो यह लोग जहाँ हैं, वहाँ ही उन को बिगाड़ दें (यानी उनकी शक्लें बदल डालें) फिर (तो राह भी) न चल सकें और न (अपने घरों को) वापस हो सकें। ६८. और हम जिस किसी को लम्बी उम्र देते हैं उसे उसकी पैदाइश में उल्टा कर देते हैं। क्या फिर

أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَنَّىٰ يُبْصِرُونَ ﴿٦٦﴾ وَلَوْ
نَشَاءُ لَمَسَخْنَاهُمْ عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا
مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ﴿٦٧﴾ وَمَنْ نُعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي
الْخَلْقِ ۖ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي
لَهُ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُبِينٌ ﴿٦٩﴾ لِيُنْذِرَ

مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۞ اَوَلَمْ
يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَآ اَنْعَامًا
فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ۞ وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ
وَمِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ۞ وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ط
اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ۞ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً
لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ۞ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ
لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ۞ فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ اِنَّا
نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۞ اَوَلَمْ يَرَ

वह समझते नहीं?[१६] ६९. और हम ने उस (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को शेर (कविता) बनाना नही सिखाया[१७] और न ही यह काम इस के योग्य है वह तो सिर्फ़ नसीहत की बात और क़ुरआन मुबीन (यानी आसान अरबी कलाम) है ७०. ताकि जो लोग ज़िन्दा (दिल) हैं उन को उनकी (बुराई से) डरायें और काफ़िरों पर हक़ साबित हो जाये[१८]। ७१. क्या उन्होंने ग़ौर नहीं किया कि हमने अपने हाथों से चार पाए बनाये तो यह लोग उन के मालिक (बन रहे) हैं[१९]। ७२. और हमने मवेशियों को न सिर्फ़ उन के बस में कर दिया पस कुछ उन में से उन की सवारी का काम देते हैं और कुछ को यह खाते हैं। ७३. और उनके लिये इन में कई प्रकार के फ़ाइदे हैं और पीने को दूध। क्या फिर भी शुक्र अदा नहीं करते। ७४. और अल्लाह के अलावा बनावटी माबूद बनाते हैं कि किसी तरह उन की तरफ़ से उन को मदद पहुंच सके। ७५. हालाँकि वह (बनावटी माबूद) उन की सहायता करने की ताक़त नही रखते और यह उनके (झूठे माबूदों के) सामने जमाअ़त-जमाअ़त हाज़िर होते हैं(जब यह इतने मूर्ख हैं तो उनकी किसी बात से क्या मलाल) ७६. पस तू उन की बातों से ग़मगीन न हुआ कर। जो कुछ यह लोग छुपाते और ज़ाहिर करते हैं हम ख़ूब जानते हैं। ७७. क्या इन्सान जानता नहीं

....

१६. यानी एक आ़म उम्र (६०+६५ वर्ष) से उस को बढ़ा देते हैं तो वह लम्बी उम्र की वजह से अक़्ल और ताक़त में कमज़ोर हो जाता है। ऐसा क्यों होता है? इसलिये कि उस के ऊपर एक ज़बरदस्त ताक़त है जिस के मातहत दुनिया का सारा काम चल रहा है, वह अल्लाह उसको कमज़ोर कर देता है और अच्छे से अच्छे खाने-पीने के बावजूद वह कमज़ोर ही होता चला जाता है और मर जाता है। यह बात अल्लाह की ज़ात के मौजूद होने की खुली दलील है (सनाई)

१७. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब कोई शेर पढ़ते भी थे तो इस प्रकार पढ़ते थे जैसे कोई शेर से दिलचस्पी न रखने वाला वज़न को घटा-बढ़ा कर पढ़ता है। (सनाई) शेर कहना नबुव्वत की शान के ख़िलाफ़ है। मगर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दूसरों की ज़बान से अच्छे और पाकीज़ा कलाम अवश्य सुनते थे। हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि० के कलाम को सुन कर बहुत प्रसन्न हुये और उन्हें अपनी दुआओं से नवाज़ा भी है। विस्तार से मालूमात के लिये सूरः शु-अ़रा का अन्तिम रुकूअ़ देखें।

१८. यानी कविता कहना, उस रसूल के दर्जे और मर्तबे से निहायत कम है। आप सल्लल्लाहु अ़लैह व सललम की तबीअ़त ही अल्लाह ने कुछ इस प्रकार की बनाई थी कि आप शेर को वजन के मुताबिक़ नही ढाल सकते थे और अगर आप कभी किसी का शेर पढ़ते भी थे तो उस का वज़न तोड़ डालते थे। एक-आध बन्द का जो आप से पढ़ना साबित है वह बिला इरादा आप की ज़बान से निकले हुये हैं जिन्हें शेर नही कहा जा सकता।

१९ क्या इस से यह लोग इस नतीजा पर नहीं पहुंच सकते कि अल्लाह के साथ हमारा क्या संबंध है। वह हमारा कौन है और हम उस के कौन हैं? अल्लाह उन का हक़ीक़ी रब और मालिक है और यह लोग उस के हक़ीक़ी बन्दे हैं। फिर यह क्योंकर संभव है कि उन की वह जिस्मानी तर्बियत तो करे मगर रूहानी तर्बियत में उन को बेख़बर छोड़ दे। इसलिये उन की जिस्मानी तर्बियत के लिये जिस्मानी सिलसिला पैदा किया और रूहानी हिदायत के लिये नुबुव्वत का सिलसिला क़ाइम फ़रमाया (सनाई)

الْإِنسَانُ أَنَّا خَلَقْنَٰهُ مِن نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ۝ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُۥ ۖ قَالَ مَن يُحْيِ الْعِظَٰمَ وَهِيَ رَمِيمٌ ۝ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِىٓ أَنشَأَهَآ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ۝ الَّذِى جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَآ أَنتُم مِّنْهُ تُوقِدُونَ ۝ أَوَلَيْسَ الَّذِى خَلَقَ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضَ بِقَٰدِرٍ عَلَىٰٓ أَن يَخْلُقَ مِثْلَهُم ۚ بَلَىٰ وَهُوَ الْخَلَّٰقُ الْعَلِيمُ ۝ إِنَّمَآ أَمْرُهُۥٓ إِذَآ أَرَادَ شَيْـًٔا أَن يَقُولَ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ ۝ فَسُبْحَٰنَ الَّذِى بِيَدِهِۦ مَلَكُوتُ كُلِّ شَىْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

कि हम ने उस को नुतफ़े से पैदा किया (और किस प्रकार हम उस की देख-रेख करते रहे। इन तमाम के बावजूद) फिर भी वह हमारा खुला दुश्मन है। ७८. हमारे बारे में (ग़लत-सलत) मिसालें बयान करता है और अपनी (साबिक़ा) पैदाइश को भूलता है (बल्कि यह ज़ालिम) कहता है कि सड़ी-गली हड्डियों को कौन जीवित करेगा[२०]? ७९. तू कह दे कि वही उन को जीवित करेगा जिस ने उन को पहली मर्तबा पैदा किया था और वह हर एक वस्तु को जानता है ८०. जिस ने तुम्हारे लिये हरे-भरे दरख़्त से आग पैदा की पस तुम लोग उस में से तुरन्त आग सुलगा लेते हो। ८१. जिस ने आसमानों और ज़मीनों को पैदा किया है क्या उसे इस बात की कुदरत नहीं कि वह इन जैसे लोग पैदा कर दे? बेशक वह बड़ा पैदा करने वाला और इल्म वाला है। ८२. जब वह किसी चीज़ को पैदा करना चाहता है तो उस का हुक्म बस इतना ही होता है कि उस वस्तु को कहता है "हो जा"! तो वह तुरन्त हो जाती है। ८३. जिस ज़ात के हाथ में हर प्रकार की हुकूमत है वह पाक है और उसी की तरफ़ तुम वापस किये जाओगे।[२१]

....

२०. शाने-नुज़ूल :- रिवायत में आता है कि उबय्यि बिन ख़लफ़ काफ़िर एक मर्तबा अपने हाथ में एक सड़ी-गली हड्डी ले कर आया और चुटकी से मसलते हुए नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहने लगा कि आप कहते हैं अल्लाह इन हड्डियों को जीवित करेगा? आप ने फ़रमायाः हाँ, हाँ! अल्लाह तुझे हलाक करेगा फिर तुझे जहन्नम रसीद करेगा, इस पर यह आयत नाज़िल हुई। एक दूसरी रिवायत में है कि यह कहने वाला आ़स बिन वाइल था, चुनान्चे उस के जवाब में इस आयत से लेकर अन्तिम सूरः तक आयतें नाज़िल हुयीं। मुस्नद अहमद की एक रिवायत के मुताबिक़ एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी

हथेली पर थूका फिर उस पर उंगली रख कर फ़रमाया अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐ आदम की औलाद! क्या तू मुझे भी आजिज़ कर सकता है? मैं ने तुझे इस जैसी चीज़ से पैदा किया, फिर ठीक-ठाक, एकदम दुरुस्त कर दिया और जब तू ज़रा ताक़त वाला हो गया तो तू ने माल जमा करना और उस को ग़रीबों से रोक रखना शुरू कर दिया और जब जान गले में आ कर अटक गयी तो कहने लगाः अब मैं तमाम माल अल्लाह की राह में सदक़ा करता हूँ। भला अब सदक़ा और ख़ैरात का वक़्त कहाँ? मतलब यह कि पानी की एक बूंद से पैदा किया हुआ इन्सान हुज्जत बाज़ियाँ करने लगा और अपना दोबारा जी उठना असंभव जानने लगा। और अल्लाह की उस क़ुदरत को भूल गया जिस ने ज़मीन व आसमान और उन के दर्मियान की समस्त वस्तुओं को पैदा किया। अगर यह इन्सान ग़ौर करता तो ख़ुद अपनी ही पैदाइश में दोबारा पैदा होने की निशानी पाता।

आगे हुक्म होता है कि इन्सान से कह दो कि इन सड़ी-गली हड्डियों को जिसने प्रथम बार पैदा किया है वह दोबारा उन को पैदा कर सकता है। यह हड्डियाँ जहाँ-जहाँ होंगी, उन्हें जानता है और सब को इकट्ठा कर के पैदा करेगा। मुस्नद अहमद में है कि एक मर्तबा हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि० से हज़रत अक़्बा बिन आ़मिर रज़ि० ने कहाः आप मुझे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की कोई हदीस सुनाइये। उन्होंने यह हदीस सुनाई कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः एक शख़्स जब मरने लगा तो उस ने वसिय्यत की कि मेरे मरने के पश्चात मुझे जलाकर मेरी राख समुंद्र में फेंक देना, घर वालों ने वैसा ही किया। अल्लाह ने उस राख को जमा करके उसे पुनः ज़िन्दा कर के पूछा कि अच्छा तू ने ऐसी वसिय्यत क्यों की थी? उसने कहाः आप के डर और ख़ौफ़ से, चुनान्चे अल्लाह ने उसे बख़्श दिया। हज़रत हुज़ैफ़ा कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह हदीस राह चलते सुनाई थी और आप की ज़बान से ख़ुद मेरे कानों ने सुना। यह हदीस बुख़ारी और मुस्लिम में भी थोड़े से फ़र्क़ के साथ रिवायत है। मुस्नद अहमद में एक हदीस कुदसी है कि अल्लाह तआला फ़रमाता हैः ऐ मेरे बन्दो! तुम सब पापी हो, तुम मुझ से माफ़ी माँगो, मेरा यह वादा है कि माफ़ करूंगा। तुम सब फ़क़ीर हो, मगर जिसे माल दार कर दूँ। मैं बहुत बड़ा सख़ी हूँ, माजिद (प्रतिष्ठावान) हूँ, वाजिद (वजूद देने वाला) हूँ, जो चाहता हूँ करता हूँ मेरा इनआ़म भी एक कलाम है और मेरा अज़ाब भी कलाम है। मैं जिस चीज़ को करना चाहता हूँ कह देता हूँ कि "हो जा!" वह हो जाती है। अल्लाह की ज़ात हर प्रकार की बुराई से पाक है वह आसमान और ज़मीन का बादशाह है, उसी के हाथ में आसमानों और ज़मीनों की कुँजियाँ हैं, वह सब का ख़ालिक़ है, वही अस्ली हाकिम है, उसी की तरफ़ क़ियामत के दिन लौट कर जाना है।

२१. 'उस के हाथ में हर चीज़ ----' इस से मालूम हुआ कि बेशक अल्लाह पाक के हाथ हैं। लेकिन वह हाथ कैसा है? कितना लम्बा-चौड़ा है? कितनी उंगलियाँ हैं? वग़ैरह, इन सब के चक्कर में पड़ने की ज़रूरत नहीं। जैसा अल्लाह है वैसा ही उस का हाथ है। अल्लाह के हाथ को अल्लाह के हवाला करना चाहिये और अपने इन्सानी हाथ की तरह न समझना चाहिये, बस जैसा अल्लाह है वैसा ही उस का हाथ है। कुछ लोगों ने तावील कर के हाथ के माना "कुदरत" और "ताक़त" के लिये हैं यह तावील दरुस्त नहीं। इसी प्रकार आँख, कान, नाक वग़ैरह को समझना चाहिये (राज़)

सूरः साफ़्फ़ात — (37)

सूरः साफ़्फ़ात (पंक्तियाँ बाँधने वाले) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुई। इसमें १८२ आयतें और ५ रुकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है

१. क़सम सफ़्फ़ें (पंक्तियाँ) बाँधने वालों की[1] २. क़सम है सख़्त डाँट पिलाने वालों की ३. क़सम है कुरआन पढ़ने वालों की ४. बेशक तुम्हारा पर्वरदिगार एक है (दूसरा कोई नहीं) ५. आसमानों और उन के दर्मियान की सब चीज़ों का वह रब है।

....

१. इस आयत में फ़रिश्तों और मुजाहिदों की क़सम का बयान है (फ़रिश्ते सफ़ बाँध कर लड़ते हैं और मुजाहिद भी) इस आयत में सूरः "सफ़" की दूसरी आयत की तरफ़ इशारा है "जो लोग अल्लाह की राह में सफ़ बाँधकर क़िताल करते हैं" फिर दूसरी आयत में जंग में दुश्मनों पर अहकाम इलाही में मुनासिब मौक़े पर सख़्त डाँट पिलाने की क़सम है। तीसरी आयत में जंग की हालत में भी नसीहत की किताब कुरआन मजीद पढ़ते रहने वालों की क़सम है। इन तमाम क़समों का जवाब आयत न०४ है यानी "बे शक तुम्हारा पर्वरदिगार एक है"। (सनाई)

وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝٥ إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا
بِزِينَةٍ الْكَوَاكِبِ ۝٦ وَحِفْظًا مِّن كُلِّ شَيْطَانٍ مَّارِدٍ ۝٧
لَّا يَسَّمَّعُونَ إِلَى الْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ وَيُقْذَفُونَ مِن كُلِّ
جَانِبٍ ۝٨ دُحُورًا وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ۝٩ إِلَّا مَنْ
خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝١٠ فَاسْتَفْتِهِمْ
أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَم مَّنْ خَلَقْنَا إِنَّا خَلَقْنَاهُم مِّن طِينٍ
لَّازِبٍ ۝١١ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ۝١٢ وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا
يَذْكُرُونَ ۝١٣ وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ ۝١٤ وَقَالُوا إِنْ

और तमाम मतालिअ़ (सूरज के निकलने के स्थानों) का भी वही रब है। ६. हम ही ने इस वरले (नज़दीकी) आसमान को सितारों से सजाया। ७. और हर एक सर्कश शैतान से (उस आसमान को) सुरक्षित रखा[2]। ८. (ऐसा कि) वह आला जमाअ़त की तरफ़ कान भी नहीं लगा सकते, हर ओर से उन को धुतकार होती है। ९. और (इसके अलावा उन की गुम्राही पर और उन के गुमराह करने पर) उन के लिये हमेशा का अ़ज़ाब है। १०. हाँ, उन में से➲

هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا
ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿١٦﴾ اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿١٧﴾ قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ
دَاخِرُوْنَ ﴿١٨﴾ فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿١٩﴾
وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿٢٠﴾ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ
الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢١﴾ اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا
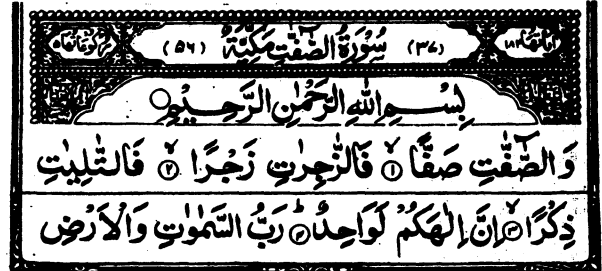
किसी बात को उचक ले तो दहकता हुआ अंगारा उस के पीछे लग जाता है। ११. पस तू उन से मालूम कर कि उन का पैदा करना कठिन है, या उन चीज़ों का जिन को हम बना चुके हैं[1]। कुछ शक नहीं कि हम ने उन को लेसदार मिट्टी से पैदा किया है। १२. बल्कि तू तअ़ज्जुब करता है। और वह हंसी करते हैं १३. और जब उन को नसीहत की जाती है तो नसीहत नही पाते। १४. और जब कोई निशान देखते हैं तो मसख़री करते हैं। १५. और कहते हैं कि यह तो खुला जादू है। १६. भला जब हम मर कर मिट्टी और हड्डियाँ हो जायेंगे तो क्या हम दोबारा फिर जियेंगे? १७. क्या हमारे पहले के बाप-दादे भी पुन: जियेंगे? १८. तू कह कि वास्तव में तुम जियोगे और तुम्हारे बाप-दादा भी जियेंगे और तुम ज़लील होगे। १९. वह (क़ियामत की घड़ी तो बस) सिर्फ़ एक आवाज़ से पैदा होगी पस तुरन्त ही लोग देखने लग जायेंगे। २०. और कहेंगे कि हाये हमारा दुर्भाग्य! यह तो न्याय का दिन है। २१. (उन को उत्तर मिलेगा कि) यही दिन तो फ़ैसले का है जिस को तुम लोग झुठलाया करते थे। २२. (फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि) ज़ालिमों (यानी मुश्रिकों के गुरू लोगों) और उन के साथियों को

....

२. इस आयत पर एक प्रशन उठता है कि जो सितारे शैतान को मारने के लिये टूटते हैं यह कौन से सितारे हैं? क्या यही जो देखने में आ रहे हैं? या जो बरसात के दिनों में टूटते नज़र आते हैं? अगर पहली क़िस्म के सितारे मुराद हैं तो उन की मात्रा में कमी आनी चाहिये। और अगर दूसरी क़िस्म के सितारे मुराद हैं तो ख़ास कर बरसात और वह भी अगस्त वग़ैरह ही के महीनों में क्यों ज़्यादा टूटते हैं? मेरी राय में पहली क़िस्म के सितारे मुराद हैं, क्योंकि जिन सितारों को आकाश की ज़ीनत (शोभा) के लिये बनाया गया है, उन्ही को शैतान के मारने के लिये भी बनाया गया है। इससे साफ़ मालूम होता है कि आसमानी सितारे ही शैतानों के लिये रज्म (धुतकरा) का काम देते हैं। अल्लाह ने उन के अन्दर तासीर रखी है इसलिये म-ल-ए-आला के निकट पहुंचने से रोकते हैं। तफ़सीर इब्ने कसीर और फ़तहुलबयान में भी यही लिखा हुआ है। अल्लाह बेहतर जाने। (सनाई)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि शैतान पहले जा कर आसमानों में बैठ कर वहाँ की बातें सुन लेते थे, फिर उस में अपनी तरफ़ से झूठ मिला कर काहिनों को बता दिया करते थे। लेकिन जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नुबूवत मिली तो शैतानों का आसमान पर जाना बन्द कर दिया गया। अब अगर यह जाते हैं तो उन पर आग के गोले फेंके जाते हैं और उन्हें जला कर राख कर दिया जाता है। उन शैतानों ने जब आग से मारे जाने वाली सूचना अपने गुरू इब्लीस को दी तो उस ने तुरन्त कहा कि हो न हो किसी नये और अहम मामले की वजह से इतनी सख़्ती की गयी है। चुनान्चे उस ने पूरी दुनिया में अपने हवारियों (चेलों) को तहक़ीक़ के लिये भेज दिया। एक गिरोह को मक्का की तरफ़ भी भेजा, उसने

देखा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम नख़्ला नामक स्थान की दो पहाड़ियों के दरमियान नमाज़ अदा कर रहे हैं। उस जमाअ़त ने इब्लीस को सूचना दी तो उस ने कहा कि बस इसी कारण तुम्हारा आसमान पर जाना बन्द कर दिया गया है। (इब्ने कसीर)

३. अल्लाह तआ़ला अपने नबी को हुक्म दे रहा है कि भला क़ियामत के इन इन्कारियों से पूछो तो सही क्या तुम्हारा पैदा करना कठिन है, या आसमान, ज़मीन, फ़रिश्तों और जिन्नों का? एक दूसरी आयत में फ़रमाया गया "कि इन्सान की पैदाइश से भारी पैदाइश तो आसमान की है, लेकिन अक्सर लोग इस बात पर तवज्जुह नही देते हैं (सूर: नाज़िआ़त-२७) फिर आगे इन्सान की पैदाइश की कमज़ोरी को बयान किया गया है। कि यह चिकनी मिट्टी से पैदा किया गया है जिसमें लेस था और जो हाथों को चिपक जाती थी। अब जब कि हक़ीक़त को जान-पहचान गया है, फिर भी घमंड करके यह लोग हंसी उड़ाते हैं। और स्पष्ट दलील आ जाने के बाद भी मानने को तैयार नही होते हैं, बल्कि उल्टा यह आरोप लगाते हैं कि यह तो जादू है और हम तो किसी तरह भी इसे नही मानते। हम भी जी उठेंगे और हमारे बाप-दादे भी, यह तो हमारे गले नही उतरता है। ऐ नबी! तुम उन से कह दो कि तुम यक़ीनन दोबारा ज़िन्दा किये जाओगे। अल्लाह की मशिय्यत और मर्ज़ी और क़ुदरत के सामने तुम्हारी कोई हैसियत नही है। (मुहम्मदी)

وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٢٢﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ﴿٢٣﴾ وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ
مَّسْئُوْلُوْنَ ﴿٢٤﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ﴿٢٥﴾ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ
مُسْتَسْلِمُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٢٧﴾
قَالُوْٓا اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ﴿٢٨﴾ قَالُوْا بَلْ
لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ
سُلْطٰنٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ﴿٣٠﴾ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ
رَبِّنَآ ۖ اِنَّا لَذَآئِقُوْنَ ﴿٣١﴾ فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ﴿٣٢﴾
فَاِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِى الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ
نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٤﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا اللّٰهُ ۙ يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَيَقُوْلُوْنَ اَئِنَّا لَتَارِكُوْٓا اٰلِهَتِنَا
لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ﴿٣٦﴾ ؕ بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٧﴾
اِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ ﴿٣٨﴾ ۚ وَمَا تُجْزَوْنَ

और अल्लाह के अ़लावा जिन-जिन की (यह लोग) पूजा करते थे[४] २३+२४. सब को जमा करके जहन्नम की तरफ़ ले जाओ और (चलते-फिरते रास्ते में) ठहरा लेना[५] उन से पूछा जायेगा (कि तुम लोग जो दुनिया में एक दूसरे की इताअ़त किया करते थे अब) २५. तुम्हें क्या हुआ कि एक दूसरे की मदद नही करते? २६. बल्कि वह उस समय अल्लाह की फ़र्माबरदारी का इज़हार करेंगे २७+२८. और बाज़ उन में के बाज़ की तरफ़ मुतवज्जह हो कर प्रश्न करते हुये कहेंगे कि आप लोग तो हम पर बड़े ज़ोर से आया करते थे[६] (कि हमारा धर्म ऐसा है, हमारा मज़हब ऐसा है) २९. वह कहेंगे बल्कि तुम को अल्लाह पर ईमान न था (वर्ना हमारे ख़ाली, ज़बानी दावा के चक्कर में क्यों फंसते) ३०. हमारा तुम पर कोई ज़ोर नहीं था, बल्कि तुम खुद सरकश (बदमाश) थे। ३१. सो हमारे रब का हुक्म

➲(जिस के हम लोग सभी हक़दार थे) हम पर लग गया कुछ शक नही कि (अब) हम (अज़ाब) भुगतेंगे। ३२. हम ने तुमको भी गुमराह किया, जैसे हम स्वयँ गुमराह थे। ३३. सो बेशक वह (गुमराह और गुमराह करने वाले) उस रोज़ अज़ाब में (एक दूसरे के) शरीक होंगे। ३४. इसी प्रकार हम मुजरिमों के साथ बर्ताव करेंगे ३५. जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं तो वह अकड़ बैठते हैं* (कि यह कैसे हो सकता है कि पूरी दुनिया का माबूद एक ही हो!) ३६. और कहते हैं कि क्या एक मजनून कवि के कहने से हम अपने माबूदों को छोड़ दें? ३७. बल्कि वह (नबी) सच्ची तालीम लाया है और उस ने (अल्लाह के हुक्म से) सब रसूलों की तस्दीक़ की है ३८. (सो) तुम (ऐ इन्कार करने वालो! इस जुर्म में) दुःखदाई दन्ड का स्वाद चखोगे। ३९. और, जो कुछ तुम कर रहे हो

....

४. 'इन सब को जहन्नम की तरफ़ ले जाओ' मगर शर्त यह है कि वह भी इस पूजा पर राज़ी थे। यह क़ैद हम ने अपनी तरफ़ से नही लगाई है, बल्कि अल्लाह तआ़ला ने दूसरे स्थान पर फ़रमाया हैः "जिन नेक लोगों को मुशिरकों ने माबूद बना लिया है वह दोजख़ से दूर रहेंगे" (   ) (सनाई)

५. चुनान्चे उन को राह में रोक कर आपस में लड़वायेंगे (मुवज़्ज़िह) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जिस ने किसी को बुरी राह सुझाई तो क़ियामत के दिन सुझाने वाले को अ़मल करने वाला पकड़ लेगा (कि तेरी वजह से मैं ने अ़मल किया) और दोनों ही एक साथ रहेंगे। अल्लाह तआ़ला उस समय फ़रमायेगा कि दुनिया में तो तुम दोनों एक साथ रह कर बड़े-बड़े दावे ठोंकते थे, अब एक दूसरे की सहायता क्यों नही करते? (तफ़सीर हमीदी/ तिर्मिज़ी शरीफ़)

६. 'यमीन' (दायाँ हाथ) इसलिये कहा कि उस हाथ में ताक़त और कुव्वत भी ज़्यादा होती है। यहाँ 'यमीन' का तर्जुमा "ज़ोर" और "ताक़त" से होगा। यानी बहुत ज़ोर और ताक़त दिखा कर, बड़े ज़ोर-शोर से बहकाने के लिये आते थे। 'यमीन' का दूसरा तर्जुमा "ख़ैर-बर्कत" भी है। यानी ख़ैर-बर्कत और भलाई से रोकने के लिये हम पर चढ़ाई करते थे। यह गुफ़्तगू गुरू और चेलों के दर्मियान होगी। गुरू लोग कहेंगे कि खुद तुम ही ईमान नही लाये थे अब हम पर आरोप सिद्ध करते हो? हमारा तो तुम पर कोई इख़्तियार न था कि तुम्हारे दिल में ईमान को घुसने न देते। तुम लोगों ने खुद ही नेक लोगों का कहना न माना और हमारे बहकाने में आ गये। अगर ज़रा भी अक़्ल और समझ से काम लेते तो हमारी बातों पर ज़रा भी कान न धरते। रहा हमारा मामला, तो ज़ाहिर है हम गुमराह थे, फिर एक गुमराह से गुमराही के अ़लावा और किस बात की आशा की जा सक़ती है। हम ने तो वही समझाया जिसे हम समझते थे। कुसूर तुम्हारा है, हमारा कोई दोष नहीं। अब दोनों पर अल्लाह की हुज्जत पूरी हो चुकी है हम और तुम दोनों के लिये जहन्नम तैयार है और दोनों ही को अपने-अपने कर्मों के अनुसार फल भोगना है। (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)

७. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "मुझे लोगों से उस वक़्त तक जिहाद करने का हुक्म दिया गया है जब तक वह लोग "लाइला-ह-इल्लल्लाह" का कलिमा न पढ़ लें, जिस्ने पढ़ लिया उस ने अपने जान-माल को सुरक्षित कर लिया, और इस्लामी क़ानून उस पर जारी रहेगा। रहा उस का बातिनी मामला (कि दिल से कलिमा पढ़ा था या नही) तो यह मामला अल्लाह के हवाला है"। (मिश्कात) अल्लाह तआ़ला ने यहाँ पर मुन्किरों का ज़िक्र किया है कि वह भी इस कलिम-ए-तौहीद को मानने से इन्कार करते हैं और कहते हैं कि यह नबी तो शाइर और पागल-दीवाना है। हम इसके कहने से अपने माबूदों को छोड़➲

दें? मानना तो एक तरफ़ रहा, उल्टा दीवाना बताते थे। अल्लाह तआला ने उन के क़ौल का रद्द फ़रमाया और कहा कि यह रसूल जो कुछ ले कर आया है वह सच है और सारे रसूलों की तस्दीक़ भी करता है। पहले के रसूलों ने आख़िरी नबी की जो पहचान बताई थी वह सारी ख़ूबियाँ आप के अन्दर मौजूद थीं और आप की तालीम भी पहले के नबियों की तालीम ही जैसी थी। (इब्ने कसीर)

إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝
أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ۝ فَوَاكِهُ ۖ وَهُم مُّكْرَمُونَ ۝
فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝ عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ۝ يُطَافُ
عَلَيْهِم بِكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ۝ بَيْضَاءَ لَذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ ۝
لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنزَفُونَ ۝ وَعِندَهُمْ
قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ عِينٌ ۝ كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُونٌ ۝
فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝ قَالَ
قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ۝ يَقُولُ أَإِنَّكَ
لَمِنَ الْمُصَدِّقِينَ ۝ أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا
أَإِنَّا لَمَدِينُونَ ۝ قَالَ هَلْ أَنتُم مُّطَّلِعُونَ ۝
فَاطَّلَعَ فَرَآهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝ قَالَ تَاللَّهِ إِن
كِدتَّ لَتُرْدِينِ ۝ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنتُ مِنَ
الْمُحْضَرِينَ ۝ أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ۝ إِلَّا مَوْتَتَنَا

उसी के अनुसार तुम बदला पाओगे ४०+४१. (हाँ) जो लोग अल्लाह के मुख़्लिस बन्दे हैं उन के लिये रोज़ी मुक़र्रर है ४२+४३+४४. (यानी हर प्रकार के) फल-फूल (उन को मिलेंगे) और वह (आपस की दोस्ताना मुलाक़ात के वक़्त) नेमतों के बाग़ों में इज़्ज़त के साथ आमने-सामने तख़्तों पर बैठे होंगे ४५+४६. उन (की सभा में) साफ़-सफ़ेद और पीने वाले लज़्ज़त देने वाली शराब का दौर चलाया जाएगा ४७. जिसमें न नशे का ख़ुमार होगा और न उन की अक़्लें ख़राब होंगी (क्योंकि उन में कुछ नशा ही नहीं होगा, बल्कि एक बेहतरीन स्वादिष्ट चीज़ होगी। इस के अ़लावा) ४८. उन के पास (बड़ी सुन्दर) हयादार औ़रतें मोटी-मोटी आँखों वाली होंगी। ४९. गोया वह (शुतुरमुर्ग़ के) अन्डे (पर्दे में छुपे हुये) हैं ५०. (ऐसी नेमतों में) जन्नती लोग एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह हो कर पूछेंगे ५१+५२. बाज़ कहेंगे कि मेरा साथी था जो मुझे कहा करता था कि (इस्लाम की) क्या तू तस्दीक़ करता है? ५३. भला जब हम मर कर मिट्टी और हड्डियाँ हो जायेंगे तो क्या हम (अपने कर्मों का अच्छा-बुरा) बदला पायेंगे? (मैं चाहता हूँ कि अपने उस साथी को देखूँ कि उस का क्या अन्त हुआ। इसके बाद अपने साथियों से) ५४. कहेगा क्या तुम उसे देखना चाहते हो? ५५. फिर वह झांकेगा तो उस को जहन्नम के बीच में देखेगा। ५६. कहेगाः अल्लाह की क़सम! तू तो मुझे भी तबाह करने को था। ५७. अगर मुझ पर अल्लाह की मेहरबानी न होती तो मैं भी (तेरे साथ ही जहन्नम में) हाज़िर होने वालों में होता ५८+५९. क्या (हम ने अल्लाह

का वादा नही पाया) कि मर कर जी उठेंगे? (बिशक पाया है) पस पहली मौत के सिवा अब हम न मरेंगे[११]।

....

८. आर्य धर्म के लोग जन्नत की शराब पर एतराज़ करते रहते हैं, हालाँकि उनको हमेशा बताया जाता रहा है कि वहाँ की शराब में नशा न होगा, बल्कि सफ़ेद रंग का दूध जैसा मीठा पानी होगा जिसे पी कर दिल व दिमाग़ और खुल जायेगा। कुरआन मजीद में फ़िरऔन के बारे में कहा गया है "यह लोग हिदायत की बात को सुन कर भी उसे नही अपनाते हैं"। यही कुछ हाल आज-कल मुख़ालिफ़ीन का है। अल्लाह तआला उन्हें हिदायत दे। (सनाई)

९. पर्दे में छुपे रहने की वजह से उन की सुन्दरता (यानी उन की आँखों में लाल रंग की मिली हुई सफ़ेदी) पर गर्द-गुबार का बिल्कुल प्रभाव नही होता। (सनाई)

१०. आयत न० ५० में बताया गया है कि जन्नत में एक जन्नती अपने किसी मित्र से दुनिया का ज़िक्र करेगा और कहेगा कि दुनिया में मेरा एक मित्र आख़िरत का इन्कार करता था, फिर वह अपने दोस्तों से कहेगा कि क्या आप लोग उसे देखना चाहते हैं कि वह किस हाल में है, वह झांक कर देखेगा तो उस को जहन्नम में पड़ा पायेगा। यह देख कर उस से कहेगा कि अगर मैं भी तेरे बहकावे में आ जाता तो मेरा भी यही हाल होता, लेकिन अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से मुझे बचा लिया। अब देख मुझे वही एक दुनियावी मौत थी जो आ चुकी, अब तो हमेशा वाली ज़िन्दगी और मौज-मस्ती है, और यह बहुत बड़ी कामयाबी हे।

आयत न० ६१ के बारे में कुछ उलमा का कहना है कि यह जन्नती का नही, बल्कि अल्लाह का क़ौल है। यानी अल्लाह बन्दों से कह रहा है कि उन्हें ऐसे ही काम करने चाहिये, जिस से उन को जन्नत मिल सके। आयत न० ५१ में 'उन में का एक कहेगा' इस से मुराद एक ख़ास मोमिन बंदा है। लेकिन कुछ इस को आ़म बताते हैं। इस में इस बात की तरफ़ भी इशारा है कि दूसरी बार जीना कोई नई ज़िन्दगी न होगी, बल्कि उसी पहली ज़िन्दगी को दुहराना होगा। इस का मतलब यह समझें कि दुनिया की ज़िन्दगी एक नींद है और आख़िरत की ज़िन्दगी अस्ल बेदारी। इसीलिये कहेंगे कि "किस ने मुझे नींद से जगा दिया"। (हक़्क़ानी-६/१५०)

११. इस आयत का तर्जुमा हज़रत शाह अ़बदुल क़ादिर मुहद्दिस देहलवी रह० ने यह किया है: "क्या अब हमको नही मरना, मगर जो पहली बार मर चुके"। मौलाना डिप्टी नज़ीर अहमद ने यूँ किया है: "क्या हम जन्नतियों का यह हाल नहीं कि पहली बार मरना था (सो मर चुके) अब आगे को हमें मरना नही"। बहरहाल हम ने ग्रामर को सामने रख कर तर्जुमा किया है और इस लिहाज़ से तर्जुमा दुरुस्त यही मालूम होता है (सनाई) आगे की आयत में आख़िरत की नजात को बहुत बड़ी कामियाबी बता कर उस को हासिल करने की तरफ़ उभारा गया है। अल्लाह से दुआ़ है कि हमें भी यह कामियाबी अ़ता करे और उस को हासिल करने के लिये नेक आ़माल की तौफ़ीक़ दे -आमीन (राज़-ख़ालिद)

न किसी तरह से हमें अ़ज़ाब होगा। ६०. कुछ शक नहीं कि यही (नजात) बड़ी कामियाबी है ६१. चाहिये कि ऐसी ही चीज़ के लिये काम करने वाले कोशिश करें।

الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ۝ لِمِثْلِ هَٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ ۝ أَذَٰلِكَ
خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ ۝ إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً

لِّلظّٰلِمِيْنَ ۝ اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْٓ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ۝ طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ ۝ فَاِنَّهُمْ لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۝ ثُمَّ اِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ۝ ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاِلَى الْجَحِيْمِ ۝ اِنَّهُمْ اَلْفَوْا اٰبَآءَهُمْ ضَآلِّيْنَ ۝ فَهُمْ عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ يُهْرَعُوْنَ ۝ وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ۝ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝ وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ۝ وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝ وَجَعَلْنَا

६२. क्या यह (जन्नत में अल्लाह की) मेहमानी अच्छी है या थूहड़ का दरख़्त अच्छा[१२]? ६३. जिसको हम ने ज़ालिमों के लिये अज़ाब बनाया है[१३]। ६४. (उस की हक़ीक़त यह है कि) वह एक दरख़्त है जो जहन्नम की तह से निकलता है (और बहुत बुलन्द है) ६५. उस के फल गोया शैतानों के सर हैं (यानी देखने में निहायत बुरे) ६६. वह लोग उस को खा कर पेट भरेंगे ६७. फिर खोलता हुआ गर्म पानी साथ-साथ उस के पीने को होगा ६८. फिर (इस स्थान से) उन की वापसी जहन्नम की तरफ़ होगी। ६९+७०. (ऐसी सज़ा की वजह यह है कि) उन्होंने अपने बाप-दादा को गुमराह पाया, तो स्वयँ भी उन के क़दम के निशान पर लपके जाते रहे (यानी बिना सोचे-समझे तक़लीद करते रहे) ७१. और उन के पहले अगले लोगों में भी बहुत से लोग गुमराह हो चुके थे। ७२. और हम ने उन में डरने वाले भेजे ७३. सो देखो कि उन डराए हुये लोगों का क्या अन्जाम हुआ? ७४. (यह हुआ कि) अल्लाह के नेक बन्दो को छोड़ कर (सब के सब हलाक हुये) ७५. और नूह नबी ने हम को पुकारा पस हम ने उस की दुआ़ कुबूल की और हम बहुत अच्छे कुबूल डरने वाले हैं। ७६. और हम ने उस को और उस के संबन्धियों को बड़ी घबराहट से बचाया।

....

१२. इसके अ़लावा भी उन को और एक चीज़ खाने को मिलेगा "ग़िस्लीन" (ख़ून और पीप का धोवन) भी खाने को दिया जायेगा (सूरः मआ़रिज) "हमीम्-ग़स्साक़" (गर्म खौलता पानी और जिस्म की धोयी हुयी गन्दगी।) भी पिलाई जायेगी (सूरः नबा)

१३. जन्नती लोगों के बुलन्द दर्जो और उनके ऐश व आराम का ज़िक्र फ़रमा कर यह हुक्म दिया था कि अमल करने वालों को कैसा अमल करना चाहिये। फिर फ़रमाया कि अब देखो तो सही! इन जन्नती लोगों का खाना अच्छा है या थूहड़ का पेड़? फिर इस पेड़ की कैफ़ियत बयान फ़रमाई कि "हम ने इस को ज़ालिमों के लिये फ़ितना बनाया है"। 'फ़ित्ना' का अर्थ है "आज़माइश" और "तकलीफ़" के माना में भी आता है। कुफ़्फ़ार को इस बात से बड़ा तअ़जजुब होता था कि जहन्नम में भी पेड़ होगा, हालाँकि आग पेड़-पौधों को जला देती है (इब्ने जरीर) यहाँ पर फ़ितना के माना यह हैं कि देखें कौन इस बात पर ईमान लाता है और कौन इन्कार करता है। और इसी माना की ताईद यह आयत भी करती है जिसमें कहा जाता है "और हम ने जो तमाशा आप को मेराज की रात दिखाया था और जिस दरख़्त की कुरआन में बुराई

➲बयान की गयी है, हम ने इन दोनों चीज़ों को उन लोगों के लिये गुमराही का सबब बना दिया है" (बनी इस्राईल-६०)

कुछ उलमा ने दूसरा अर्थ मुराद लिया है, यानी जहन्नम के लोगों को खाने में अच्छी चीज़ें देने के बजाए यह पेड़ दिया जायेगा जो कि सख़्त तकलीफ़ देने वाली चीज़ है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अगर उस की एक बूँद दुनिया के दरिया में मिल जाये तो लोगों का जीना दूभर हो जाये"। (तिर्मिज़ी, नसई) फिर आगे उस पेड़ की कैफ़ियत बयान करते हुये फ़रमाया गया "वह पेड़ जहन्नम की तह में उगे गा" उलमा का कहना है कि जिस प्रकार जन्नत में एक पेड़ "तूबा" का साया तमाम जन्नती लोगों के घरों में पहुंचेगा, इसी प्रकार जहन्नम में तमाम जहन्नम वालों के दुःख देने के लिये केवल यही एक पेड़ काफ़ी होगा। इस की डालियाँ हर तरफ़ फैली हुई होंगी जिस की गंध, बदबू वग़ैरह से वह अधिक तकलीफ़ महसूस करेंगे। उस पेड़ का आग में पैदा होना कोई आश्चर्य की बात नहीं, दुनिया में "समन्दर" नाम का एक कीड़ा होता है जो आग ही में जीवित रहता है। जब कीड़ा जैसा जानवर ज़िन्दा रह सकता है तो पेड़ तो उस से ज़्यादा सख़्त होता है उस को तो रहना ही चाहिये। अल्लाह की कुदरत के अ़जीब अ़जीब करिश्में हैं। हैवानों की ज़िन्दगी सांस लेने पर निर्भर है, मगर हज़ारों-लाखों कीड़े मनों मिट्टी के नीचे दबे हुये हैं जहाँ हवा पहुंचनी असंभव है, और हज़ारों जानवर पानी में रहते हैं जहाँ हवा होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

एक बात और सुन लें जिससे थूहड़ की कैफ़ियत मालूम हो जाये गी। समुन्दर में जहाँ पानी साफ़-सुथरा होता है उस की तह में पत्थरों की झाड़ होती है। पत्थर के उन झाड़ों की बनावट भी दुनिया की झाड़ की तरह होती है। वह पत्थर की झाड़ियां बढ़ती भी हैं, लेकिन बाहर निकाल कर देखेंगे तो वह पत्थर ही होगा। इसी प्रकार उस थूहड़ के पेड़ को अगर आग से मुनासिबत हो तो क्या तअ़ज्जुब। हाँ, अबू जेहल की तरह अगर बदअक़्ल और कोढ़दिमाग़ का हो तो कोई तअ़ज्जुब नहीं। आ़म तौर पर किसी की बुराई करनी होती है तो उसे शैतान ही के समान बताते हैं और इन्सान के नज़दीक शैतान है भी सब से बुरा। इसी लिये बुराई में दरख़्त को शैतान से तश्बीह दी है। उस पेड़ की सूरत और सीरत सब बुरी होगी। जहन्नम में जब खाने को कुछ न मिलेगा तो मरता क्या न करता उसी को खायें गे और भूख के मारे ऐसा खायेंगे कि पेट भर लेंगे। उस की सख़्ती से प्यास महसूस करेंगे, तो खौलता हुआ पानी दिया जायेगा, और फिर जहन्नम की कोठरियों में बन्द कर दिये जायेंगे। तफ़सीर हक़्क़ानी -६/१५१)

ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبٰقِيْنَ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۝
سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعٰلَمِيْنَ ۝ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝
اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ ثُمَّ اَغْرَقْنَا
الْاٰخَرِيْنَ ۝ وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ۝ اِذْ جَآءَ
رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ۝ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَاذَا
تَعْبُدُوْنَ ۝ اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ۝
فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُوْمِ ۝
فَقَالَ اِنِّيْ سَقِيْمٌ ۝ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ۝ فَرَاغَ اِلٰٓى

७७. और उस (क़ौम में से) उस के मानने वालों ही को बाक़ी छोड़ा (और उसके मुख़ालिफ़ों को तबाह व बर्बाद कर दिया) ७८+७९. और पिछले लोगों में जारी किया कि सारे आ़लम में नूह पर सलाम हो। ८०. (हमारे हाँ आ़म क़ाइदा है कि) हम नेक लोगों को इसी प्रकार बदला दिया करते हैं (नूह के साथ ऐसा बर्ताव इसीलिये तो किया गया कि) ८१. वह हमारे ईमान्दार बन्दों में से था (इसलिये हमने उस को बचाया) ८२. फिर औरों को (जो उस के मुख़ालिफ़➲

اِلٰهَتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٩١﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ﴿٩٢﴾
فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِيْنِ ﴿٩٣﴾ فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ﴿٩٤﴾
قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ ﴿٩٥﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا
تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا فَاَلْقُوْهُ فِي الْجَحِيْمِ ﴿٩٧﴾
فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَقَالَ اِنِّيْ

थे) हम ने डुबो दिया। ८३. और उसी के गिरोह में से इब्राहीम भी था ८४. जब वह अपने पर्वरदिगार की तरफ़ साफ़ दिल के साथ आया ८५. (यानी) जिस समय उस ने अपने बाप और क़ौम से कहा कि तुम लोग किन चीज़ों की इबादत करते हो? ८६. क्या अल्लाह के अ़लावा झूठे माबूद बनाते हो? ८७. (अगर ऐसे हो) तो रब्बुल् आ़लमीन् के बारे में तुम्हारा क्या गुमान है? ८८+८९. फिर उसने (इत्तिफ़ाक़ी तौर पर) सितारों में निगाह डाली, तो कहाः मैं बीमार हूँ[१३/१] ९०.(मुख़ालिफ़ों ने जब यह सुना) तो वह उसे छोड़ कर चले गये। ९१. फिर वह (इब्राहीम) तुरन्त उनके माबूदों की तरफ़ गया (और उन के आगे खाने की चीज़ें रख कर) कहाः तुम खाते क्यों नहीं? ९२. तुम बोलते क्यों नहीं? ९३. तो वह बड़े ज़ोर से उन बुतों को तोड़ने-फ़ोड़ने लगा (यहाँ तक कि चूर-चूर कर दिया) ९४. फिर वह लोग इब्राहीम की तरफ़ दौड़े आये ९५. इब्राहीम ने कहाः क्या तुम ऐसी चीज़ों को पूजते हो जिनको तुम लोग अपने हाथों से काट-काट कर बनाते हो ९६. हालाँकि अल्लाह ने तुम को और तुम्हारे कामों को पैदा किया ९७. उन लोगों ने कहाः इसके लिये एक बड़ा मकान बनाओ, फिर इसको दहकती हुयी आग में डाल दो[१४]. ९८. (ग़रज़) उन्होंने उस के हक़ में बुराई करने का इरादा किया तो हम ने उन्हीं को ज़लील किया।

....

१३/१. बाज़ उलमा का ख़्याल है कि चूंकि लोग सितारों की पूजा करते थे इसलिये हज़रत इब्राहीम ने सितारों की तरफ़ देख कर कहा ताकि उन लोगों को यक़ीन हो, क्योंकि वह लोग सितारों में इस प्रकार के प्रभाव (तासीर) को मानते थे। मगर उन का यह ख़्याल ग़लत है। नबी और नेक बन्दे कुफ़्फ़ार को ग़लत ख़्यालात पर क़ायम नही रखा करते। न स्पष्ट रूप से और न ही इशारे से। इस आयत में "फ़ा" यह बतला रहा है कि हज़रत इब्राहीम के दोनों, बल्कि तीनों कलाम एक के बाद एक कहे गये हैं, न कि उन में से कोई दूसरे हिस्से का सबब है। इसलिये हमने तुर्जमा में "इत्तिफ़ाक़ी तौर पर" का लफ़्ज़ बढ़ाया है। (सनाई) हज़रत इब्राहीम ने जो यह कहा कि "मैं बीमार हूँ" इस में उन्होंने वही तरीक़ा अपनाया है जो शरीअ़त में पसन्दीदा है। यानी अल्लाह की अ़ज़मत और बड़ाई को ज़ाहिर करने के लिये "मैं बीमार हूँ" का सेग़ा मुस्तक़्बिल के माना में है (बयानुल-कुरआन)

१४. इस में कुछ शक नहीं कि "क़ैद" से मुराद इस स्थान पर वह तदबीर है जो "इस को आग में डाल दो" में वह बतला चुके हैं। हज़रत इब्राहीम की आग के मुतअ़ल्लिक़ तरह-तरह के एतराज़ हो रहे हैं, इसलिये कुरआन की इस आयत पर ग़ौर करने की ज़रूरत है कि आग ठन्डी हुयी थी या नही? इसकी तस्दीक़ के लिये दो शब्दों पर ग़ौर करने की ज़रूरत है। अव्वल यह कि अल्लाह के फ़रमान "या नारू कूनी" (ऐ आग तू हो जा) इस में "कूनी" मुवन्नस का सेग़ा है। जिसका तर्जुमा है "ऐ आग ठन्डी हो जा"। यहाँ पर आग को ठन्डी होने के लिये "कुन्" का शब्द प्रयोग किया गया है। सुरः यासीन की अन्तिम आयत में अल्लाह तआ़ला ने

➲फ़रमाया: "अल्लाह किसी काम को करना चाहता है तो उस को "कुन" कहता है पस वह हो जाता है"। इससे मालूम होता है कि जिस चीज़ को "कुन" के शब्द से हुकम हो, वह चीज़ हुक्म होते ही तुरन्त पैदा हो जाती है।

अब इस आम उसूल को सामने रख कर हज़रत इब्राहीम अ़लै० का आग पर ग़ौर करते हैं तो हमें यक़ीन हो जाता है कि आग अवश्य ठन्डी हुयी होगी (अगर न ठन्डी हुयी तो इस का मतलब यह हुआ है कि अल्लाह के हुक्म देते ही वह चीज़ नही पैदा होती है (और यह अल्लाह की ज़ात से असंभव है) अब रहा यह प्रशन कि क्या आग अपनी तासीर और ख़ासिय्यत बदल कर ठन्डी हो सकती है? तो ऐसे वाक़िआत महाल और असंभव बिल्कुल नही। अल्लाह अपनी मख़्लूक़ पर हर तरह का इख़्तियार रखता है। जिसने आग के अन्दर गर्मी की तासीर रखी है वही ठन्डी तासीर भी डाल सकता है। (सनाई)

ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ۝ رَبِّ هَبْ لِي مِنَ
الصّٰلِحِينَ ۝ فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيمٍ ۝ فَلَمَّا بَلَغَ
مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يٰبُنَيَّ إِنِّيٓ أَرٰى فِي الْمَنَامِ أَنِّيٓ
أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ۚ قَالَ يٰٓأَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۖ
سَتَجِدُنِيٓ إِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِينَ ۝ فَلَمَّآ
أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ۝ وَنٰدَيْنٰهُ أَنْ يّٰٓإِبْرٰهِيمُ ۝ قَدْ
صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ إِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝
إِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِينُ ۝ وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ
عَظِيمٍ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْأٰخِرِينَ ۝ سَلٰمٌ عَلٰٓى
إِبْرٰهِيمَ ۝ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّهُ مِنْ
عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَبَشَّرْنٰهُ بِإِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ
الصّٰلِحِينَ ۝ وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى إِسْحٰقَ ۚ وَمِنْ
ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ مُبِينٌ ۝ وَلَقَدْ مَنَنَّا

९९. और उस ने कहा: मैं अपने पर्वदिगार की राह में किसी तरफ़ चला जाता हूँ। वह खुद ही मुझे हिदायत करेगा। १००. ऐ मेरे पर्वरदिगार! मुझे नेक औलाद अ़ता कर १०१. पस हम ने उस को एक बड़े बुर्दबार लड़के की खुश्ख़बरी दी १०२. जब वह लड़का उस के साथ चलने-फिरने लगा[१५] तो इब्राहीम ने कहा: ऐ मेरे बेटे! मैं ख़ाब में देखता हूँ कि मैं तुझ को ज़ब्ह कर रहा हूँ, पस तू बता कि तेरी क्या राय है? उसने कहा: बाबा जान! जो कुछ आपको हुक्म होता है कीजिये, इनशाअल्लाह! आप मुझको सब्र करने वाला पायेंगे[१६]। १०३. पस जब वह दोनों ताबेदारी पर तैयार हो गये और उस को माथे के बल गिराया १०४. और हम (अल्लाह) ने उस को अवाज़ दी कि ऐ इब्राहीम! १०५. तूने अपना सपना सच कर दिया, हम इसी तरह नेक बन्दों को बदला दिया करते हैं। १०६+१०७. यह एक बड़ी खुली नेमत है।[१०/१] १०८. और हम ने उस (के लड़के इस्माईल) के बदले में बड़ी कुर्बानी दी[१०/२] १०८+१०९. और पिछले लोगों में हम ने यह दस्तूर जारी किया कि (वह) इब्राहीम पर सलाम कहें ११०. हम नेक बन्दों को इसी तरह नेक बदला दिया करते हैं। १११. कुछ➲

➲शक नहीं कि वह (इब्राहीम) हमारे (पक्के) ईमान्दार बन्दों में से था। ११२. और हम ने उस को इस्हाक़ के नबी और नेकों की जमाअ़त में होने की खुश्ख़बरी दी। ११३. और उस पर और इस्हाक़ पर बड़ी बर्कत की। और उन दोनों की औलाद में नेक भी हुये और अपने नफ़्सों के हक़ में खुले ज़ालिम भी।

....

१५. मुस्नद अहमद में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि "सअ़-य" से मुराद हज्ज के दौरान सअ़ी (दौड़ लगाने) का स्थान है। मुफ़स्सिरों ने आ़म तर्जुमा "चलने-फिरने और दौड़-धूप के लायक़" किया है।

१६. इस में इख़्तिलाफ़ है कि हज़रत इब्राहीम ने किसे ज़ब्ह किया था। इस्माओ़ील को या इस्हाक़ को? दोनों ही गरोह के पास अपने-अपने दलाइल हैं। मगर कुरआन की यह आयत फ़ैसला करती है कि वह इस्माओ़ील थे, क्योंकि इन्ही आयतों में आगे चल कर ज़बीह लड़के के बाद इस्हाक़ का बयान आ रहा है (दिखो आयत न० ११२) इस से साफ़ ज़ाहिर है कि हलीम और ज़बीह लड़का इस्माओ़ील थे। इस्हाक़ का वाक़िआ, इस्माओ़ील के वाक़िए के बाद आयत न०११२ में आ रहा है (सनाई) कहा जाता है कि हज़रत इस्माओ़ील, हज़रत हाजिरा से पैदा हुये, उस समय हज़रत इब्राहीम की आयु ८६ वर्ष थी। तौरेत में लिखा है कि "इस्माओ़ील के हक़ में मैंने तेरी सुनी। देख! मैं उसे बर्कत दूँगा और उसे नेक करूँगा और उसे बहुत बढ़ाऊँगा और उसके बाद सर्दार पैदा होंगे और मैं उस से बड़ी कौम बनाऊँगा" (तौरात, सफ़र, पैदाइश –बाब १७) सही बात यही है कि ज़बीह हज़रत इस्माईल ही हैं। कुरआन पाक की इन आयतों पर ग़ौर करने से सही मालूम होता है।

१७/१. 'बला' के माना "तकलीफ़" और "नेमत" दोनों आते हैं।

१७/२. कुछ मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि यह दुंबा (मेंढा) जन्नत से आया था। लेकिन यह बात किसी आयत या सही और मर्फ़ूअ़ हदीस से साबित नही। उलमा आ़म तौर पर अपनी तक़रीरों में बड़े ज़ोर-शोर से मेंढे वाली ज़ओ़फ़ और मनघड़त रिवायतों को बयान करते हैं, उन्हें इस से परहेज़ करना चाहिये।

عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١١٤﴾ وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿١١٥﴾ وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٦﴾ وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿١١٧﴾ وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١١٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١١٩﴾ سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٠﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢١﴾ اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٢﴾ وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخٰلِقِيْنَ ﴿١٢٥﴾ اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٢٦﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٢٧﴾

११४. और हम ने मूसा और हारून पर भी बड़ा एहसान किया ११५. और उन को और उन की क़ौम (बनी इस्राईल) को सख़्त घबराहट (यानी फ़िर्औ़नी अज़ाब) से नजात दी। ११६. और हम(अल्लाह) ने उनकी मदद की तो वही (अपने दुश्मनों पर) ग़ालिब हुये। ११७. और हम ने उन दोनों को रोशन किताब तौरात दी। ११८. और उन को सीधी राह की हिदायत की (ऐसी कि वह खुद लोगों को हिदायत करने वाले बने) ११९. +१२०. और पिछले लोगों में हम ने (यह दस्तूर) जारी किया कि मूसा और हारून➲

إِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۝ سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ ۝ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ۝ اِلَّا عَجُوْزًا

पर सलाम (यानी उन का नाम इज़्ज़त और नेक दुआओं में लेते रहें) १२१. इसी प्रकार हम नेकोंकारों को बदला दिया करते हैं। १२२. कुछ शक नहीं कि यह दोनों हमारे नेक बन्दों में से थे। १२३. और इल्यास भी अल्लाह के भेजे हुओं में से था (वह समय अजीब था) १२४. जब उसने अपनी क़ौम से कहाः क्या तुम लोग डरते नहीं? १२५+१२६. क्या तुम बअ़्ल् (जैसे बेजान बुत) से दुआयें माँगते हो और सब से बेहतर ख़ालिक़ (यानी अल्लाह) को छोड़ते हो? जो तुम्हारे बाप-दादों का पर्वरदिगार है। १२७. तो उन्होंने उसकी एक न मानी सो वह दोज़ख़ में हाज़िर किये गये। १२८. हाँ, अल्लाह के मुख़्लिस बन्दे बचे रहेंगे १२९+१३०. और इल्यास के लिये पिछले लोगों में (यह तरीक़ा) जारी किया कि (नाम के साथ) इलयास पर सलाम (कहें। यह भी एक क़ुबूलियत की अ़लामत है) १३१. हम नेकोंकारों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। १३२. बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से था। १३३. और कुछ शक नही कि लूत हमारे रसूलों में से था[१८]। १३४. जब हम ने उस को और उसके तमाम संबन्धियों को बचा लिया।

....

१८. यह चौथा क़िस्सा हज़रत इल्यास का है। बाइबल की पुस्तक "सलातीन" के सत्तरहवें बाब से मालूम होता है कि यह जलआ़ शहर के रहने वाले थे जो मुल्क शाम में था। आपके बेटे और शरह समरू के बादशाह अ़रबी आब के ज़माना में थे। यह हज़रत मसीह से लग-भग ९१० वर्ष पूर्व याहू नबी के बाद भेजे गये थे। "किताबुस्सलातीन" के पहले बाब से मालूम होता है कि आप के बेटे ने चन्द लोगों को भेजा कि जाकर समरून बादशाह के माबूद बअ़ल ज़बूब से पूछो कि मैं बीमारी से ठीक हो जाऊँगा या नही। उसी समय अल्लाह ने हज़रत इलयास को हुक्म दिया कि उन लोगों से कहा कि तू ने अल्लाह को छोड़ कर बअ़ल बुत से पूछा है, तू अपने बिस्तर पर मरेगा। क़ासिद बादशाह के पास आये और कहा कि एक शख़्स ने हमें यह कह कर वापस भेजा है। बादशाह ने उस की शक्ल मालूम की तो उन्होंने बताया कि वह चमड़े से अपनी कमर बांधे हुये, बहुत बालों वाला आदमी है। बादशाह ने कहाः वह तस्मा बांधने वाला शख़्स इल्यास है। इन्होंने अख़ीआब के ज़माने में सख़्त सूखा काल पड़ने की सूचना दी थी। इन्हें कुरैब की वादी में रहने का हुक्म हुआ था। कुरैब की वादी उर्दन नदी के सामने है। वह वहीं रहते थे। उन के लिये कोई खाना लाया करता था। यह खाना खाते और पास के नाले से पानी पीते थे। जब नाले का पानी सूख गया तो उन्हें हुक्म हुआ कि फ़लाँ जगह जाओ वहाँ एक विधवा तुम्हारी सेवा करेगी। उन्होंने वहाँ जा कर उस विधवा महिला से खाना माँगा। उस ने थोड़ा सा आटा और तेल दिया जिससे मुश्किल से एक टिकया तली जा सकती थी। आप ने उस आटा और तेल पर दुआ़ की जो सूखाकाल के पूरे दिनों तक चलता रहा और कोई कमी नहीं आयी। इसी दर्मियान उस बेवा औरत का लड़का भी मर गया जिसको उन्होंने दुआ़ से जीवित कर दिया। (किताबुस्सलातीन, बाब १७)

समरून के बादशाह अख़ीआब ने सैकड़ों नबियों को क़त्ल करवा दिया था। अल्लाह ने हज़रत इलयास को हुक्म दिया कि अख़ीआब बादशाह के पास जायें। वह गये और उस से मुलाक़ात की। दोनों के दर्मियान इम्तिहान की ठहरी। बादशाह अपने कई सौ पुजारियों को ले कर आया। आख़िर हज़रत इलयास, बअ़ल-बुत के पुजारियों पर ग़ालिब

➲आये। यह मुक़ाबला करबल पहाड़ की चोटी पर हुआ था। उन पुजारियों को हज़रत इल्यास ने क़त्ल कर डाला और बारिश की दुआ माँगी। अल्लाह तआला ने उन की दुआ क़ुबूल फ़रमाई और ख़ूब वर्षा हुयी। इस के बावजूद हज़रत इल्यास को क़त्ल करने पर आमादा रहे। यह वहाँ से बरीसलअ चले गये, फिर जैरब पहाड़ के किसी ग़ार में जा कर छुप गये। फिर वहाँ से हुक्म हुआ कि दमिश्क़ जा कर जिज़ईल को ममसूह करो ताकि वह इरम का बादशाह बने और मसना के बेटे याहू को भी ममसूह करो ताकि इस्राईल का बादशाह बने और सक़त के बेटे यसअ़ को ममसूह करो कि वह तुम्हारे स्थान पर नबी बन सके। चुनान्चे उन्होंने ऐसा ही किया। फिर हज़रत यसअ़ को साथ ले कर जार्डन की नदी को पार किया और साथ में बातें भी करते जाते थे कि एक आतिशी रथ और आतिशी घोड़े दिखाई दिये। उस पर सवार हो कर हज़रत इलयास आसमान पर चले गये। उन का नाम ईलयाह, इलयास और इलयासीन है। इन के ज़माने में सोनें-चाँदी से एक बुत बनाया गया था, उस का नाम बअ़ल था जो २२ हाथ लम्बा था। इसके चार सौ पुजारी थे। हज़रत इलयास ने इसे तोड़ कर मिटा दिया (हक़्क़ानी)

नोट :— यह हाशिया जिस किताब के हवाले से नक़ल किया गया है वह एतिबार के क़ाबिल नहीं है। हाशिया में अ़जीब-अ़जीब कहानियां हैं और लोगों के अ़जीब-अ़जीब नाम भी हैं। यह हाशिया हिदायत और रहनुमाई के दृष्टीकोण से कोई लाभदायक नहीं है। मौलाना अब्दुल हक़्क़ हक़्क़ानी के इस हाशिये को न देकर किसी और तफ़सीर का हाशिया शामिल किया जा सकता था। — ख़ालिद

فِي الْغٰبِرِيْنَ ۝ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۝ وَاِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ
عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ ۝ وَبِالَّيْلِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ وَاِنَّ
يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۝
فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ۝ فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ
وَهُوَ مُلِيْمٌ ۝ فَلَوْلَآ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ۝ لَلَبِثَ
فِيْ بَطْنِهٖٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝ فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ
سَقِيْمٌ ۝ وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ۝ وَ
اَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ۝ فَاٰمَنُوْا
فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ۝ فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ
وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ۝ اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ
شٰهِدُوْنَ ۝ اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ۝
وَلَدَ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝ اَصْطَفَى الْبَنَاتِ
عَلَى الْبَنِيْنَ ۝ مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ۝ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝

१३५. सिवाए एक बूढ़ी औरत के जो पीछे रहने वालों में थी। १३६. और बाक़ी सब (मुख़ालिफ़ों) को हलाक कर डाला। १३७+१३८. तुम (अ़रब के) लोग (सफ़र करते हुये) सुब्ह व शाम के वक़्त (आम तौर पर) उन (की बस्तियों) पर गुज़रा करते हो। फिर भी तुम समझते नहीं? १३९. और यूनुस भी अल्लाह के रसूलों में से था १४०. जब वह (किसी काम के लिये) कश्ती पर (बैठने को) लपका[१९] १४१. तो उस ने उन के साथ कुरा अन्दाज़ी की तो वह उस में हार गया १४२. पस मछली ने उस को लुक़्मा बना लिया और वह शर्मिन्दा था १४३+१४४. और अगर वह अल्लाह की तस्बीह न करता तो उस (मछली) के पेट ही में क़ियामत तक पड़ा रहता[२०] (और फिर वहीं सड़ जाता) १४५. पस हमने उस को खुले मैदान में डाल दिया इस हाल में कि वह बहुत कमज़ोर था। १४६. और हम ने उस के क़रीब एक दरख़्त उगा रखा था जो कद्दू की बेल से ढका था[२१] (जिस के➲

साया में हज़रत यूनुस को राहत मिली) १४७. और हमने उस को लाख से अधिक आदमियों की तरफ़ रसूल कर के भेजा[२२] १४८. फिर वह ईमान ले आये पस हमने उन को एक मुक़र्ररा वक़्त तक आसूदगी से गुज़ार दिया १४९. पस तू उन से पूछ ले क्या पर्वरदिगार के लिये लड़कियाँ हैं और उनके लिये लड़के? १५०. क्या उन के सामने हमने फ़रिश्तों को मादा बनाया था १५१+१५२. याद रखो! यह लोग महज़ अपनी झूठी आदत से ऐसा कहते हैं कि अल्लाह ने औलाद जना है और यह लोग झूठे हैं। १५३. क्या अल्लाह ने बेटों पर बेटियों को तर्जीह दी है? १५४. तुम्हें क्या हुआ कैसे (बिहूदा) हुक्म लगाते हो। १५५. क्या तुम समझते नहीं हो?

....

१९. हज़रत यूनुस अ़लै० के दरिया में जाने और परेशानियाँ झेलने का कारण सूर: अन्बिया में विस्तार से बयान किया गया है। "हज़रत यूनुस अपनी क़ौम की सरकशी और नाफ़र्मानी देख कर बस्ती से निकल गये, वह समझे कि हम उन के ऐसा करने पर पकड़ न करेंगे, यानी तकलीफ़ में न डालेंगे, मगर चूंकि वह हमारी अनुमति के बग़ैर गये थे इसलिये हम ने उन की पकड़ की। और इस की सूरत यह हुयी कि हमने उन को मछली के पेट में डाल दिया। वह वहाँ तस्बीह पढ़ते रहे और उसी की बर्कत से नजात मिली। यह है कहानी हज़रत यूनुस अ़लैह० की परेशानी की और इस के बाद नजात पाने की। (सनाई)

२०. आज कल के दूर की कौड़ियाँ लाने वाले उलमा ने 'मुसब्बिहीन' का तर्जुमा "तैरने वाला", यानी अगर वह तैरना न जानते तो----। गोया वह तैरना जानते थे इसलिये मछली के पेट में जाने से बच गये। इस प्रकार का ग़लत-सलत तर्जुमा कर के मछली के पेट में जाने से इन्कार किया है। यह साफ़-साफ़ कुरआन के माना में तब्दीली है। (राज़)

२१. इस आयत में तीन प्रकार की पेचीदगियाँ हैं। (१) कद्दू की बेल ऊँची नही होती, बल्कि ज़मीन पर फैलती है, इसी लिये उस का साया नही होता (२) कुरआन में "श-ज-र-ह" का लफ़्ज़ आया है जिस के माना तनादार दरख़्त के होते हैं, और कद्दू के तना होता ही नहीं। (३) 'अ़लैहि' का अर्थ "ऊपर" होता है और यह उसी सूरत में हो सकता है जब दरख़्त हज़रत यूनुस के बदन पर उगा हो। इन तमाम मुश्किलों के हल के लिये तफ़्सीर सनाई -७/१४ देखें।

इस स्थान पर मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी लिखते हैं "शायद उस मैदान में कोई तना वाला दरख़्त होगा, जिस के पत्ते साया वाले न होंगे उस पर बेलदार दरख़्त जिस के पत्ते चौड़े हों फैल गया होगा और वह कद्दू की बेल थी।

२२. यह छटा किस्सा हज़रत यूनुस अ़लै० का है जिसका विस्तार से बयान सूर: यूनुस में गुज़र चुका है। यह भी बनी इस्राईल में नबी बना कर भेजे गये थे। इ़ब्रानी ज़बान में इन को यूनह कहते हैं। मत्ता उनके वालिद का नाम है। हज़रत ईसा मसीह से लग-भग ८६२ वर्ष पूर्व नबी बनाये गये थे। उन्हें नेनवा शहर वालों में भेजा गया था। उन्होंने इस डर से कि मैं अपनी क़ौम पर अ़ज़ाब के लिये दुआ माँगू और अल्लाह ऐसा न करे तो क़ौम के बीच में हमारी बड़ी तौहीन होगी और मैं झूठा भी कहलाऊँगा, इसलिये नैनवा शहर छोड़ कर तरसीस चले गये। एक जहाज़ जो तरसीस जाने के लिये था, उस पर सवार हो गये। कश्ती रवाना हो गयी। अभी कुछ ही आगे बढ़ी थी कि दरिया में तूफ़ान आ गया। कश्ती वालों ने यह मालूम करने के लिये कि किस के कारण यह तूफ़ान आया है, कुरा डाला तो उस में हज़रत यूनुस अ़लै० का नाम निकला। कश्ती वालों ने उन्हें दरिया में डाल दिया और एक मछली ने उन्हें निगल लिया। मछली के पेट में जा

➲कर उन्होंने अल्लाह से दुआ की, चुनान्चे मछली ने अल्लाह के हुक्म से उन्हें दरिया के किनारे उगल दिया। अगर वह दुआ और तस्बीह न पढ़ते तो क़ियामत तक समुन्दर में मछली के पेट में रहते। मछली के पेट में तीन रात-दिन रहने की वजह से उन के बदन की खाल गल गयी थी, इसलिये अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उन पर साया करने के लिये कद्दू की तरह का एक पेड़ उगा दिया। जब ठीक-ठाक हो गये तो फिर दोबारा उसी नैनवा शहर में भेजा गया। वहाँ जा कर तब्लीग़ की और बुत परस्ती की सज़ा में अल्लाह के अज़ाब की सूचना दी। सब लोगों ने डर कर तौबा की और रोज़ा रखा। कहा जाता है कि लोगों ने जानवरों के बच्चों को भी खाने-पीने से दूर रखा। सभी लोग दुआ में लग गये। और इस तरह अज़ाब आते-आते टल गया। हज़रत यूनुस ने कहा कि ऐ अल्लाह अब तो मैं क़ौम की नज़र में झूठा ठहरा। इसी डर से तो मैं ने शहर छोड़ कर तरसीस जाना चाहा था। हज़रत यूनुस अलै० शहर के बाहर एक झोंपड़ी बना कर शहर का हाल मालूम करने के लिये बैठ गये। उन पर साया करने के लिये अरन्ड का ऐक पेड़ उग आया। दूसरे दिन एक कीड़े ने उसे काट दिया और वह सूख गया, जिस से यूनुस अ़लै० बहुत रन्जीदा हुये। अल्लाह ने कहा कि ऐ यूनुस! तुझे उस दरख़्त के सूख जाने पर बड़ा दुःख हुआ और रहम आया, हालाँकि वह तुम्हारी मेहनत से न उगा था, फिर मैं इस शहर पर रहम क्यों नही करता? एक एक बात ख़ास तौर पर ध्यान देने योग्य है कि हज़रत यूनुस का भागना और नेनवा शहर जाना पसन्द न करना, अ़ज़ाब न लाने से रन्जीदा होना, यह सब अल्लाह और उन के दर्मियान राज़-नियाज़ की बातें हैं और गुनाह नही हैं। अगर यह गुनाह है तो उन्हीं की शान के ख़िलाफ़ बात होने के लिहाज़ से गुनाह है जिस पर वह तौबा करते और माफ़ी चाहते थे, शरीअ़त के क़ानून की बरख़िलाफ़ी के गुनाह न थे (हक़्क़ानी -६/१५८)

اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥٦﴾ فَاْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٥٧﴾ وَجَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ؕ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٥٩﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٠﴾ فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ﴿١٦١﴾ مَاۤ اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ﴿١٦٢﴾ اِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ ﴿١٦٣﴾ وَمَا مِنَّاۤ اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿١٦٤﴾ وَّاِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ ﴿١٦٥﴾ وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ ﴿١٦٦﴾ وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٦٧﴾ لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٦٨﴾ لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٩﴾ فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٧٠﴾ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧١﴾ اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ﴿١٧٢﴾ وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿١٧٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٤﴾ وَّ

१५६. क्या (ऐसा कहने पर) तुम्हारे पास कोई रोशन दलील है? १५७. सच्चे हो तो अपनी किताब लाओ जिस में ऐसा लिखा हो। १४८. और (उन की बेहूदा बातें सुनो कि) उन्होंने अल्लाह में और जिन्नात में नाता मुक़र्रर कर रखा है, हालाँकि जिन्न खुद भी जानते हैं कि वह भी अल्लाह के सामने पेश किये जायेंगे। १५९. अल्लाह उनके ऐसे इल्ज़ामों से पाक है। १६०. हाँ, जो अल्लाह के मुख़्लिस बन्दे हैं (वह ऐसे नहीं) १६१+१६२+१६३. पस तुम और तुम्हारे माबूद (यानी गुरू और पीर जो तुमको शिर्क की तालीम देते हैं) सिवाए उस के जो जहन्नम में जाने वाला हो किसी को गुमराह नही कर सकते। १६४. हम (फ़रिश्तों) में से हर एक का एक निश्चित➲

أَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿١٧٥﴾ أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿١٧٦﴾
فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنذَرِينَ ﴿١٧٧﴾ وَتَوَلَّ

➲स्थान है[२३] (जिससे वह बढ़ नहीं सकता) १६५. और हम अल्लाह के सामने सफ़ बनाये रहते हैं[२४] १६६. और हम (सब अल्लाह की) तस्बीहें पढ़ते हैं १६७+१६८+१६९. यह लोग कहा करते थे कि अगर हमारे पास पहले लोगों से नसीहत पहुंची होती तो हम (पक्के और सच्चे) अल्लाह के मुख़्लिस बन्दे हो जाते। १७०. सो अब उस के मुन्किर हो गये पस अपने आप ही जान जायेंगे (इसी दुनिया में ज़लील होंगे और आख़िरत में भी ज़लील होंगे क्योंकि) १७१+१७२. हमारा अपने भेजे हुये (बन्दों) के हक़ में फ़ैसला हो चुका है कि आख़िरकार उन को मदद पहुंचती है। १७३. और हमारी फ़ौज (यानी दीनदार जमाअ़त) ही ग़ालिब आती है। १७४. पस तू एक वक़्त तक उन से मुँह मोड़ १७५. और उनको देखता रह, वह भी अपना अन्जाम देखेंगे। १७६. फिर क्या हमारा अ़ज़ाब जल्द-जल्द चाहते हैं? १७७. (याद रखें) जब वह अ़जाब़ उन के आंगनों में (यानी उन के आस-पास में) उतरा तो जिन लोगों को डराया गया है उन का बुरा हाल हो जायेगा।

....

२३. कुरआन मजीद के नाज़िल होने का तरीक़ा मुख़्तलिफ़ क़िस्म का है। कभी तो नबी को मुख़ातिब कर के कहा जाता है। कि तुम कहो और कभी नबी की ज़बानी हिकायत बयान की जाती है। यहाँ इस आयत में फ़रिश्तों की तरफ़ से कलाम नक़ल किया गया है, ताकि मुश्रिकों के अक़ीदे की सुधार हो सके। (सनाई)

२४. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः " मैं वह चीज़ें देखता हूँ जो तुम नही देखते हो और मैं वह चीज़ें सुनता हूँ जो तुम नहीं सुनते हो। आसमान चर-चर बोलता है और (उसकी ऐसी हालत है कि उस को बोलना ही चाहिये, क्योंकि तमाम आसमान में चार अन्गुल भी जगह ऐसी नहीं ख़ाली है जहाँ फ़रिश्ते सज्दा में सर न रखे हुये हों। क़सम है अल्लाह की अगर तुम को वह हालात मालूम हो जायें जो मुझे मालूम हैं तो तुम बहुत कम हंसो और बहुत ज़्यादा रोओ, और तुम को अपने बिस्तरों और बीवियों की कुछ लज़्ज़त बाक़ी न रहे और तुम लोग घबरा कर जंगलों की तरफ़ निकल भागो और चीख़ते-चिल्लाते फिरो"। (तिर्मिज़ी) इब्ने अ़साकिर में भी इसी मज़मून की रिवायत नक़ल है, लेकिन थोड़ा सा इतना ज़्यादा है कि "इस के बाद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यही आयत न० १६५ तिलावत फ़रमाई"। (अहसनुत्तफ़ासीर) मुस्लिम, नसाई और इब्ने माजा में हज़रत अबू ज़र आर जाबिर बिन समुरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा से फ़रमायाः "जिस प्रकार फ़रिश्ते अल्लाह के सामने सफ़ बाँधकर खड़े होते हैं, इसी प्रकार तुम लोग भी नमाज़ में सफें बाँधकर खड़े हो"। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम सहाबा परस्पर एक दूसरे से कंधे से कंधा और क़दम से क़दम मिला कर खड़े होते थे। (बुख़ारी शरीफ़ किताबुस्सलात, बाबु इलज़ाक़िल् मनकबि) इमाम नख़्ई फ़रमाते हैं कि सफ़ों और शाना को बराबर करो और चूने की दीवार की तरह गच करो। ऐसा न हो कि शैतान बकरी के बच्चे की तरह तुम्हारे दर्मियान दाख़िल हो जाये। इमाम मुहम्मद कहते हैं कि हम भी इसी को मानते हैं, सफ़ के दर्मियान ख़ाली जगह छोड़ना मुनासिब नही, उस को दुरुस्त कर लेना चाहिये। इमाम अबू हनीफ़ा रह० का भी यही मसलक है। (किताबुल आसार इमाम मुहम्मद, बाब इक़ामतिस्सुफ़ूफ़ पृष्ठ २१) ➲

इस तफ़सील के बावजूद आजकल नमाज़ में जमाअतों का जो हाल है वह हद दर्जा अफ़सोस नाक है। हर नमाज़ी अपने पैरों को समेट कर दूसरे नमाज़ी से इतनी दूर अलग रहने की कोशिश करता है, गोया दूसरा नमाज़ी बिच्छु है जो उसे डंक मार देगा।

عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٨﴾ وَّاَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٩﴾
سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٨٠﴾ وَسَلٰمٌ
عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٢﴾

१७८. और एक क़रीब वक़्त तक उन से मुंह मोड़ ले १७९. और देखता रह। पस वह भी देखलेंगे। १८०. तेरा पर्वरदिगार जो बड़ी इज्ज़त वाला है उन की बेहूदा बातों से पाक है। १८१. और रसूलों पर सलाम १८२. और तमाम तारीफ़ों का मालिक अल्लाह है जो तमाम जहान का पर्वरदिगार है।[२५]

....

२५. हज़रत अ़ली रज़ि० फ़रमाते हैं कि जो शख़्स यह चाहता हो कि क़ियामत के दिन उस को पूरा का पूरा बदला मिले, तो उस को चाहिये कि जब कभी मज्लिस से उठे तो इन्ही अन्तिम तीन आयतों को पढ़ लिया करे। अबू सअ़ीद से रिवायत है कि मैं ने एक-दो बार नहीं, बल्कि बहुत बार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नमाज़ के बाद यह तीन आयतें पढ़ते सुना है। इन आयतों के पढ़ने से सहाबा को मालूम हो जाता था कि आप नमाज़ से फ़ारिग़ हो चुके हैं। और यह भी फ़रमायाः फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद इन अन्तिम तीन आयतों के पढ़ने में बड़ा सवाब है (अहसनुत्तफ़ासीर, हदीसुत्तफ़ासीर)

सूरः स्वाद -(38)

سُوْرَةُ صٓ مَكِّيَّةٌ (٣٨)
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِي الذِّكْرِ ﴿١﴾ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ
عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ﴿٢﴾ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ
فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ ﴿٣﴾ وَعَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ
مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٤﴾
اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۖ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ﴿٥﴾
وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ

सूरः स्वाद मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी।[१] इसमें ८८ आयतें और ५ रुकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है।

१. स्वाद[२], क़सम है नसीहत वाले कुरआन की २. (बिशक अल्लाह का वादा सच्चा है) मगर काफ़िर लोग नाहक़ हेकड़ी और मुख़ालिफ़त में हैं ३. हम ने कई क़ौमें उन से पहले हलाक कर दीं तो वह (उस समय बड़े ज़ोर से) चिल्लाये, लेकिन खलासी (छुटकारे) का वक़्त बाक़ी न रहा था।

إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ يُرَادُ ۝ مَا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْآخِرَةِ إِنْ هَٰذَا إِلَّا اخْتِلَاقٌ ۝ أَأُنزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ

४.और उन को आश्चर्य होता है कि उन के पास उन्हीं में का एक आदमी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) समझाने वाला आया और मुन्किर कहते हैं कि यह जादूगर है, झूठा है। ५. उस ने तमाम माबूदों को छोड़ कर एक ही को ले लिया है कुछ शक नही कि (उस का यह ख़्याल) अजब बात है[३]। ६.(यह कह कर) उन में से एक जमाअ़त यह कहती हुयी चली जाती है कि चलो मियाँ अपने (पुराने) माबूदों पर जमे रहो, यह (उस का ख़्याल) तो केवल एक हवस है। ७. हम ने पहले लोगों (यानी अपने बाप-दोदों) में कभी यह नहीं सुना, निःसंदेह यह महज़ मनघड़त बात हे ८. क्या हम में से उसी पर नसीहत भरा कलाम नाज़िल हुआ है[४]?

....

१. शाने नज़ूल:- इमाम कुर्तुबी कहते हैं कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने फ़रमायाः यह सूरः मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। रिवायतों में आता है कि एक मर्तबा अबू तालिब बीमार हुये तो कुफ़्फ़ार अबू जेहल के साथ मिल कर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिकायत उन के पास लाये और कहा कि आप का भतीजा हमारे माबूदों को बुरा-भला कहता है, आप उसे समझा दीजिये। अबू तालिब ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बुला कर हालात मालूम किये तो आप ने फ़रमायाः मैं इन लोगों से केवल एक ही बात कहता हूँ, अगर यह लोग मान लें तो पूरा अरब इनके अधीन हो जाये और अज़मी लोग (अरब के अलावा लोग) इन को टेक्स और लगान (जिज़या) दें। सब लोगों ने एक आवाज़ में कहा कि अगर ऐसी बात है तो एक क्या हम दस बातें मानने को तैयार हैं। आप ने फ़रमायाः यह एक बात यह है तुम सब "लाइला-ह इल्लल्लाह" कहो। यह सुनना था कि सभी लोग नाराज़ हो कर कपड़े झाड़ते हुये उठ खड़े हुये और कहने लगे कि इसने तो तमाम माबूदों को एक माबूद कर दिया है, यह तो बड़ी अ़जीब बात है। इस पर इस सूरः के आरम्भ से आयत नं० ८ तक आयतें नाज़िल हुयीं (तिर्मिज़ी, नसई, अहमद इब्ने शैबा, हुमैद, हाकिम, जरीर, मुन्ज़िर। हक्क़ानी)

२. 'स्वाद' यह हर्फ़ "हुरूफ़ मुक़त्तआ़त" में से है। इस का हक़ीक़ी माना केवल अल्लाह ही को मालूम है। हमें भी इस पर ईमान लाना चाहिये।

३. अ़रब में हर क़बीले का अपना अलग-अलग बुत था और सब का अक़ीदा था कि यह बुत अपने पूजने वालों की सहायता करते हैं। यूनान और चीन के लोगों का भी यही अ़क़ीदा था और इसके साथ इन लोगों का यह भी ख़्याल था कि आसमान, ज़मीन, दरिया, पहाड़, आग, पानी वग़ैरह के खुदा अलग-अलग हैं। हिन्दुस्तान के मुश्रिकों का अ़क़ीदा है कि ब्रह्मा पैदा करता है, विष्णु खुदा पालण-पोषण करता है और शिव मारता है। मुश्रिकों का अक़ीदा है कि एक खुदा पूरे संसार की देख-भाल नहीं कर सकता, इसलिये ज़रूर ही हर-हर क्षेत्र का खुदा अलग अलग ही होगा। मुश्रिकों को इस बात पर बड़ा आश्चर्य था कि इस नबी ने तो सारे खुदा को मिला कर एक कर दिया (तफ़सीर वहीदी)

४. कुरआन को मुश्रिकीन झूठ मानते थे। और दलील में जहाँ और दीगर बातें पेश करते थे, यह भी कहते थे कि अगर कुरआन नाज़िल होता तो वलीद बिन मुग़ीरा या उर्वा बिन मस्ऊद जैसे धनवान लोगों पर नाज़िल होता (सूरः ज़ुख़रुफ़ ३१) इन धनवानों को छोड़ कर मुहम्मद जैसे फ़क़ीर और तंग हाथ पर नाज़िल होना

कुछ समझ में नहीं आता। उनके इस शुबहा का अल्लाह तआ़ला ने यह उत्तर दिया कि जब तक इन लोगों पर कोई आफ़त नहीं नाज़िल करेंगे, उस समय तक उन की समझ में नहीं आयेगा और इसी तरह शक व शुब्हे की बातें करते रहेंगे, और जब आफ़त आ जायेगी तो उन का शक व शुब्हा जाता रहेगा। आगे अल्लाह तआ़ला ने यह फ़रमाया कि अल्लाह की रहमत के ख़ज़ाने कुछ लोगों के हाथ में नही हैं कि आसमान पर चढ़ कर यह लोग जिस को चाहें नबुव्वत दे दें। यह लोग कान खोल कर सुन लें कि जिस प्रकार हज़रत नूह की क़ौम से ले कर फ़िरऔनियों तक सभी को उन की सरकशी के नतीजे में हलाक किया, इसी प्रकार यह लोग भी हलाक किये जायेंगे और फिर दूसरे सूर के बाद पुन: जीवित कर के उन के कर्मों के अनुसार दन्ड देगा।

'मा लहा मिन फ़वाक़' (उस आवाज़ में वक़्फ़ा न होगा।) इस का अर्थ है कि जिस प्रकार बाँसुरी बजाने वाले बीच में दम लेकर बजाते हैं, सूर में दम लेने की मुहलत न होगी, बल्कि एक ही सांस में फूंका जायेगा और तुरन्त यह जीवित हो कर हश्र के मैदान में हिसाब-किताब के लिये हाज़िर किये जायेंगे। ऊपर की आयत न० १२+१३ में नूह से लेकर फ़िरऔन की क़ौम तक की क़ौमों की तबाही का हवाला दे कर इन को भी हलाक करने की धमकी दी गयी है। चुनान्चे जब अल्लाह के वादा के पूरा होने का समय निकट आ गया तो एक रात अल्लाह ने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बतला दिया और आप ने सहाबा को भी सूचित कर दिया और सहाबाने सुब्ह को अपनी आँखों से देख लिया (अहसनुत्तफ़ासीर तीन तर्जुमा वाले कुरआन के हाशिया से लिया गया)

مِنۢ بَيۡنِنَا ۚ بَلۡ هُمۡ فِىۡ شَكٍّ مِّنۡ ذِكۡرِىۡ ۚ بَلۡ لَّمَّا
يَذُوۡقُوۡا عَذَابِ ؕ اَمۡ عِنۡدَهُمۡ خَزَآئِنُ رَحۡمَةِ رَبِّكَ
الۡعَزِيۡزِ الۡوَهَّابِ ۚ اَمۡ لَهُمۡ مُّلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا
بَيۡنَهُمَا ۚ فَلۡيَرۡتَقُوۡا فِى الۡاَسۡبَابِ‏ ﴿۱۰﴾ جُنۡدٌ مَّا هُنَالِكَ
مَهۡزُوۡمٌ مِّنَ الۡاَحۡزَابِ‏ ﴿۱۱﴾ كَذَّبَتۡ قَبۡلَهُمۡ قَوۡمُ نُوۡحٍ وَّعَادٌ
وَّفِرۡعَوۡنُ ذُو الۡاَوۡتَادِۙ‏ ﴿۱۲﴾ وَثَمُوۡدُ وَقَوۡمُ لُوۡطٍ وَّاَصۡحٰبُ
لْـئَيۡكَةِ ؕ اُولٰٓئِكَ الۡاَحۡزَابُ‏ ﴿۱۳﴾ اِنۡ كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ
الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ‏ ﴿۱۴﴾ وَمَا يَنۡظُرُ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا صَيۡحَةً
وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِنۡ فَوَاقٍ‏ ﴿۱۵﴾ وَقَالُوۡا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا
قِطَّنَا قَبۡلَ يَوۡمِ الۡحِسَابِ‏ ﴿۱۶﴾ اِصۡبِرۡ عَلٰى مَا يَقُوۡلُوۡنَ
وَاذۡكُرۡ عَبۡدَنَا دَاوٗدَ ذَا الۡاَيۡدِ ۚ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ‏ ﴿۱۷﴾ اِنَّا سَخَّرۡنَا
الۡجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحۡنَ بِالۡعَشِىِّ وَالۡاِشۡرَاقِۙ‏ ﴿۱۸﴾ وَالطَّيۡرَ

बल्कि (असल बात यह है कि) मेरे ज़िक्र (और नसीहत) से उन को इन्कार है, बल्कि अभी तक उन्होंने मेरा अ़ज़ाब नही चखा। ९. क्या तुम्हारा पर्वरदिगार जो बड़ा ग़ालिब और बड़ा सख़ी है, उस की रहमत के ख़ज़ाने उन के पास हैं? १०. क्या आसमानों और ज़मीनों और उन के दर्मियान की चीज़ों के इख़्तियारात उन ही को हासिल हैं? फिर तो आकाश की तरफ़ सीढ़ियों पर चढ़ जायें। ११. गुज़रे हुये गरोहों में से यह भी एक शिकस्त खाया हुआ (पराजित) गिरोह है। १२+१३. (जिस प्रकार) उन से पहले नूह की क़ौम ने, आ़द की क़ौम ने, बड़ी शक्ति वाले फ़िऔन ने, समूद की क़ौम, लूत की क़ौम ओर ऐका वालों ने झुठलाया था (यह भी झुठला रहे हैं। तो जिस प्रकार उन पर अ़ज़ाब आया था, इन पर भी आयेगा,

مَحْشُوْرَةً ۚ كُلٌّ لَّهٗٓ اَوَّابٌ ۝ وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ

क्योंकि) यही तो बर्बाद किये हुये गरोह हैं। १४. हर एक ने रसूलों को झुठलाया था इसलिये मेरा अ़ज़ाब उन पर वाजिब हो गया १५. यह भी तो केवल एक आवाज़ के इन्तिज़ार में हैं उस आवाज़ में वक़्फ़ा न होगा (यानी जब वह आयेगी तो एकदम बर्बाद कर देगी) १६. और कहते हैं कि ऐ हमारे पर्वरदिगार! जो कुछ हमारे भाग्य का लिखा है वह हिसाब के दिन से पूर्व जल्दी-जल्दी हम पर भेज दे। १७. जो कुछ भी यह लोग कहते हैं उस पर सब्र कर और हमारे नेक बन्दे दावूद को याद किया कर जो बड़ी शक्ति वाला आदमी था, बेशक वह अल्लाह की तरफ़ झुकने वाला था। १८. हमने बड़े-बड़े पहाड़ों को मुसख़्ख़र कर दिया था कि उस के साथ सुब्ह-शाम तस्बीहें पढ़ा करें। १९. और जानवर उसके सामने इकट्ठा होते सब के सब उस के फ़रमाँबर्दार थे। २०. और हम ने उस के मुल्क को मज़बूत किया।

الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ۝ وَهَلْ اَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ ۘ اِذْ
تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ۝ اِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوْا
لَا تَخَفْ ۚ خَصْمٰنِ بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا
بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَآ اِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ ۝ اِنَّ هٰذَآ
اَخِيْ ۗ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِيَ نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ ۗ
فَقَالَ اَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِيْ فِي الْخِطَابِ ۝ قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ
بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ اِلٰى نِعَاجِهٖ ۗ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ
لَيَبْغِيْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ ۗ وَظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ
وَخَرَّ رَاكِعًا وَّاَنَابَ ۩ ۝ فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ۗ وَاِنَّ لَهٗ
عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝ يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ
خَلِيْفَةً فِي الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ
الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ

और उस को अक़्लमन्दी (बुद्धिमानी) और फ़ैसला करने का सलीक़ा अ़ता किया २१. भला तुझे एक मुक़दमा वालों की ख़बर पहुंची है? जब वह (दावूद के मकान की) दीवार कूद गये थे २२. जिस वक़्त (मुक़दमा वाले) दावूद के पास जा पहुंचे तो वह उन (की इस अचानक हरकत) से घबराया। वे बोलेः हुज़ूर! खौफ़ न कीजिये! हम दोनों मुक़दमा के ताअ़ल्लुक़ से (आए) हैं। हम में से एक ने दूसरे पर अत्याचार किया है पस हुज़ूर! न्याय के साथ हमारा फ़ैसला फ़रमा दीजिये और किसी प्रकार का अन्याय न कीजिये और हम को सीधी राह की तरफ़ हिदायत फ़रमाइये २३. यह कह कर उन में से एक ने बयान दावा आरम्भ किया कि) यह शख़्स मेरा भाई है, उस के पास ९९ दुंबियाँ हैं और मेरी एक है, उस ने मुझ से कहा है कि यह एक भी मुझे दे दो और गुफ़्तगू में मुझ पर ग़ालिब आया। २४. दावूद ने कहा कि उस शख़्स ने तुम पर अत्याचार किया है जो तेरी दुंबी को अपनी दुंबियों के साथ मिलाने का सवाली है। और बहुत से शरीक एक-दूसरे पर अत्याचार किया

⊃करते हैं, मगर जो लोग ईमानदार और नेक आमाल वाले हैं उन की यह आदत नही (लेकिन) ऐसे बहुत कम लोग हैं। और उसने ख़्याल किया कि हम ने उसे जांचा है, पस उस ने अपने पर्वरदिगार से बख़्शिश माँगी और अल्लाह के सामने झुका और रुजूअ़ हुआ। २५. फिर हम ने उसे बख़्श दिया। निःसंदेह उस का हमारे नज़दीक बड़ा दर्जा और बड़ी इज़्ज़त थी। २६. (हम ने कहा) ऐ दावूद! (देख) हमने तुझे ज़मीन पर हाकिम बनाया है पस तू (इसी बात को ध्यान में रखा कर) लोगों में इन्साफ़ के साथ फैसला किया कर और अपनी ख़्वाहिश पर न चलना, वर्ना (यह नफ़्स की ख़्वाहिश) तुझे अल्लाह की राह से बहका देगी। बेशक जो लोग अल्लाह की राह से बहकते हैं।

....

५. इस आयत की तफ़सीर में एक रिवायत बयान की जाती है कि हज़रत दावूद अ़लै० ने ओरिया नाम के एक शख़्स की बीवी को कहीं देख लिया। चूंकि वह बहुत अधिक सुन्दर थी इसलिये उन की तबीयत उस पर आ गयी। चूंकि वह विवाहिता थी इसलिये यह तर्कीब सोची कि उस के पति को किसी जंग में भेज कर मरवा दिया जाये, लेकिन पहली मर्तबा वह बच गया तो दूसरी बार भेजा गया लेकिन इस बार भी वह बच गया तो तीसरी मर्तबा उसको कड़े संघर्ष में भेज दिया जिस में वह मारा गया। उस के मरने के उपरान्त (मरने के बाद) हज़रत दावूद अ़लै० ने उसकी पत्नी से विवाह कर लिया (मआ़लिमुत्तनज़ील)

कहा गया है कि हज़रत दावूद के पास मुक़दमा लाने वाले इन्सान की शक्ल में फ़रिश्ते थे और वह मुक़दमा फ़र्ज़ी बना कर ले गये थे। यह क़िस्सा यहूद की किताब बाइबल से लिया गया है। बाइबल में इस क़िस्से के दर्मियान यह भी लिखा है कि दावूद अलै० ओरिया की औ़रत से निकाह करने से पहले उससे हरामकारी कर चुके थे इसलिये नक़्ल करने वालों ने इस को छोड़ दिया है और बाक़ी क़िस्सा ले लिया। यह क़िस्सा बनाने वाले ने कितनी हिमाक़त की है कि एक नबी की शान में इतनी बड़ी गुस्ताख़ी करने से नहीं डरा। हालाँकि नबी को तो जाने दीजिये एक मामूली इन्सान के बारे में भी ऐसा कहना बड़ा पाप है। इमाम राज़ी० रह० ने इस क़िस्सा को दस दलीलों से ग़लत साबित किया है। इस क़िस्से के बारे में तफ़सील से मालूमात के लिये तफ़सीर सनाई का मुताला किया जाये। यही कारण है हज़रत अ़ली रज़ि० ने फ़रमाया था कि जो कोई बाइबल के हवाले से हज़रत दावूद का क़िस्सा बयान करेगा, मैं उस को ६० कोड़े लगाऊंगा जो नबियों पर झूठा इल्ज़ाम लगाने की हद (सज़ा) है (तफ़सीर कबीर)

इस सारी बहस का खुलासा यह है कि हज़रत दावूद के बारे में यह अनावश्यक क़िस्सा बिलकुल झूठा और बेहूदा है। इमाम अबू सअ़ीद लिखते हैं "हज़रत दावूद अ़लै० के तअ़ल्लुक़ से यह क़िस्सा बड़े गन्दे अन्दाज़ से गढ़ा गया है और यह बहुत बड़ी साज़िश रची गई है। कान इस को सुनने को तैयार नहीं और तबीअ़त इस से सख़्त नफ़रत करती है उस शख़्स पर लानत हो जिस ने इसे घड़ा और तबाही और बर्बादी हो उस इन्सान पर जो इस को नक़्ल कर के प्रसारित करे और फैलाए।" जैसा कि मालूम होता है कि पुराने और नये तमाम ही मुफ़स्सिरीन ने इस क़िस्से का हर प्रकार से रद्द किया गया हैं लेकिन हमारे ज़माने के एक मुहक़्क़िक़ मौलवी अब्दुल्लाह चकडालवी ने इस क़िस्से का रद्द करते हुये लिखा है कि पहले के मुफ़स्सिरों ने इस क़िस्सा को सच मान कर हज़रत दावूद की इज़्ज़त को बट्टा लगाया है। मौलाना ने ख़ाह-मख़ाह यह बात लिख कर शेख़ी बघारी है, हालाँकि किसी भी मुफ़स्सिर ने इस किस्सा को तस्लीम नहीं किया है। मौलाना का केवल मुफ़िस्सिरों पर इलज़ाम हैं। ⊃

➲हज़रत दावूद अ़लै० के मुतअ़ल्लिक़ क़िस्सा बाइबल की दूसरी किताब "समवील" के गयारहवें बाब में लिखा है। जो कुछ लिखा है उसे पढ़ कर ऐसा मालूम होता है कि हज़रत दावूद अ़लै० नबी तो जाने दीजिये, एक शरीफ़ और मुहज़्ज़ब इन्सान भी नज़र नहीं आते। हालाँकि नबी हर प्रकार की बदअख़्लाक़ी से पाक होते हैं और इसी एक दलील से साबित होता है कि बाइबल का बयान बिल्कुल झूठ और खुला इल्ज़ाम है। इस विषय पर विस्तार से मालूमात के लिये "तफ़्सीर हक़्क़ानी" का मुताला किया जाये। मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी ने लिखा है कि हज़रत दावूद अ़लै० की लग़ज़िश यही थी कि मुद्दई़ का बयान सुन कर ही फैसला सुना दिया और मुद्दआ़-अ़लैह को कोई सफ़ाई का मौक़ा नही दिया।

عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا نَسُوا يَوْمَ
الْحِسَابِ ﴿٢٦﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
بَاطِلًا ۚ ذَٰلِكَ ظَنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا
مِنَ النَّارِ ﴿٢٧﴾ أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ أَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ ﴿٢٨﴾
كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ لِّيَدَّبَّرُوا آيَاتِهِ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُو
الْأَلْبَابِ ﴿٢٩﴾ وَوَهَبْنَا لِدَاوُودَ سُلَيْمَانَ ۚ نِعْمَ الْعَبْدُ ۖ إِنَّهُ
أَوَّابٌ ﴿٣٠﴾ إِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصَّافِنَاتُ الْجِيَادُ ﴿٣١﴾
فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَن ذِكْرِ رَبِّي حَتَّىٰ
تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿٣٢﴾ رُدُّوهَا عَلَيَّ ۖ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ
وَالْأَعْنَاقِ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَأَلْقَيْنَا عَلَىٰ كُرْسِيِّهِ
جَسَدًا ثُمَّ أَنَابَ ﴿٣٤﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَّا
يَنبَغِي لِأَحَدٍ مِّنْ بَعْدِي ۖ إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٥﴾ فَسَخَّرْنَا

उन को सख़्त अज़ाब होगा इसलिये कि वह अपने हिसाब के दिन को भूल जाते हैं। २७. हम ने आसमान और ज़मीन और उन दोनों के दर्मियान की चीज़ों को बेनतीजा पैदा नही किया (ऐसा ख़्याल कि यह महज़ खेल है) यह तो काफ़िरों का ख़्याल है, आग के अ़ज़ाब की वजह से ऐसे काफ़िरों के हाल पर बहुत अफ़सोस है। २८. क्या ईमानदार और नेक काम करने वालों को हम मुल्क में फ़साद फ़ैलाने वालों की तरह कर देंगे? क्या परहेज़गारों को हम बदकारों की तरह बना देगें? (नहीं ऐसा होना तो साफ़ ख़िलाफ़े अ़क्ल है) २९. यह बर्कत वाली किताब हम ने तेरी तरफ़ इसलिये उतारी है कि लोग उस के अहकाम पर ग़ौर करें और अ़क्लमन्द नसीहत पाये। ३०. और दावूद को हम ने (एक होशियार लड़का) सुलैमान दिया जो बहुत ही अच्छा आदमी था। बेशक वह (अल्लाह की तरफ़) झुका हुआ था। ३१+३२. जब दोपहर के बाद ख़ास (अच्छी नस्ल के) असील घोड़े उस के सामने पेश किये गये तो उस ने कहा कि मैं ने उन बेहतरीन घोड़ों से प्रेम, अल्लाह के ज़िक्र के लिये किया है, यहाँ तक कि वह किसी ओट में छुप गये' ३३. तो उस ने कहाः उन को मेरी तरफ़ वापस लाओ, फिर उन की पिंडलियाँ और गर्दनें छूने लगा" ३४. और हम ने सुलैमान➲

को भी जाँचा और उस की कुर्सी (यानी तख़्त) पर हम ने एक बेजान जिस्म (यानी कच्चा गिरा हुआ बच्चा) डलवा दिया[८] (जो बच्चा उसी का था। वह समझ गया कि तमाम इख़्तियारात अल्लाह ही के हाथ में हैं) पस वह (अल्लाह की तरफ) मुतवज्जह हुआ। ३५. और बोलाः ऐ मेरे पर्वदिगार! मेरी ख़ता माफ़ फ़रमा और मुझ को ऐसी हुकूमत अ़ता कर जो मेरे बाद किसी को हासिल न हो, बेशक तू बड़ा फ़य्याज़ है।

....

६. हज़रत शाह वल्यिुल्लाह रह० ने भी वही तर्जुमा किया है जिस की तफ़सील हाशिया न ७ में हम ने दी है।

७. 'पिंडलियाँ और गर्दनें छूने लगा' और उन्हें ख़ूब ग़ौर से देखता रहा। फिर उनको यह ख़्याल आया कि हमारे इस प्रकार करने को लोग हंसी-मज़ाक़ समझ कर कहीं वह भी ऐसा ही न करने लगें, इसलिये सुलैमान अ़लै० ने कहा मैंने जो इन बेहतरीन घोड़ों से प्रेम किया और उन्हें ग़ौर से देखा है तो ऐसा करने से मेरा उद्देश्य अल्लाह का ज़िक्र करना था (यानी उस के आदेशों के अनुसार अ़मल करना था) और मेरी निय्यत ख़ालिस थी, इसलिये कि प्रथम तो मैं मुल्क का बादशाह हूँ, इसलिये यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि क़ौम की अमानत की देख-रेख करता रहूँ ताकि क़ौम की अमानत (यानी घोड़ों) को कोई नुक़्सान न पहुंचे। दूसरे मेरी निय्यत इस कारण भी ख़लिस थी कि यह घोड़े जिहाद का एक अहम ज़रीआ़ हैं जिन के ज़रीआ़ जिहाद कर के दीन को मज़बूती प्रदान होती है, इसलिये उन को देखता रहा। और वह चलते-चलते किसी ओट में छुप कर नज़र से ओझल हो गये तो फ़रमायाः उन को मेरे सामने लाओ और जब हाज़िर किये गये तो मुहब्बत से उन को देखने और छूने लगा ताकि इस प्रकार उन की ताक़त और तन्दुरुस्ती का अन्दाज़ा हो सके।

कुछ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत का तर्जुमा और तशरीह बड़े अ़जीब ढंग से की है। उन्होंने लिखा है कि घोड़ों को देखते-देखते उन की अ़स्र की नमाज़ फ़ौत हो गयी इसलिये उन्होंने कहा कि उन घोड़ों की प्रेम दीवांगी में अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल हो गया, पस उन घोड़ों को क़त्ल करना शुरू कर दिया और उन की गर्दनें और पिंडलियाँ काट डालीं। इन लोगों ने 'रुद्दूहा' में "हा" का सर्वनाम (ज़मीर) घोड़ों की तरफ़ की है कि उन घोड़ों को लौटा कर मेरे पास लाओ। लेकिन और कुछ उलमा ने "हा" से मुराद सूरज को लिया है। यानी सूरज को ऊपर लाओ ताकि अ़स्र की नमाज़ वक़्त पर अदा कर लूँ। अब आप ही बतायें कि आगे-पीछे जब सूरज का कहीं ज़िक्र ही नहीं है तो फिर उस की "हा" की ज़मीर सूरज की तरफ़ कैसे लौटेगी? फिर किस को इख़्तियार है कि डूबे हुये सूरज को वापस लौटा सके। बहरहाल 'रुद्दूहा' (घोड़ों को लौटाओ ताकि क़त्ल करूँ, या सूरज को लौटाओ ताकि अ़स्र की नमाज़ पढूँ) यह दोनों ही तर्जुमे दुरुस्त नहीं मालूम होते और एक पैग़म्बर की शान के ख़िलाफ़ भी हैं। यहाँ यह सवाल हो सकता है कि "मैंने उन बेहतरीन घोड़ों से मुहब्ब्त में अल्लाह का ज़िक्र के वास्ते की है" इस में "वास्ते" का तर्जुमा कहाँ से लगाया? तो इस का जवाब यह है कि "का-न" के माना "वास्ते" के भी आता है जैसा कि सूर: तौबा में हज़रत इब्राहीम के बयान में है "इब्राहीम का अपने बाप के वास्ते दुआ़ करना" यहाँ भी "का-न-" के माना वास्ते के है (तफ़्सीर सनाई) हज़रत मौलाना ने जो तौजीह और तशरीह की हैं वह दुरुस्त है (मु० इस्माईल गुजराँवाला)

८. या दोबारा तख़्त पर बैठा। दूसरे धड़ से मुराद एक शैतान है जिस का नाम सख़्र था। वाक़िआ़ यह हुआ कि हज़रत सुलैमान हाजत (शौच) के लिये बाहर जाते समय अपनी अंगूठी अपनी बीवी को दे गये। इस अंगूठी की तासीर से ही जिन्न व इन्सान ताबे थे। सख़्र नामी जिन्न ने हज़रत सुलैमान की शक्ल में आ कर उस अंगूठी को माँग लिया और उस को पहन कर हज़रत सुलैमान की जगह कुर्सी पर बैठ कर हुकूमत

➲करने लगा। हज़रत सुलैमान इस डर से कि कहीं मुझ को वह (जिन्न) क़त्ल न कर दे छुप गये। चालिस दिन के बाद वह अंगूठी वापस मिल गयी और वह दोबारा तख़्त पर बैठे और सख़ नामी जिन्न को क़ैद कर दिया। (वहीदी) हाफ़िज़ इब्ने कसीर वग़ैरह ने इस क़िस्से को मन घड़त और झूठ बतलाया है। और हक़ीक़त भी यही है। मौलाना अमृतसरी रह० ने 'ज-स-दन' से "कच्चा बच्चा" ही मुराद लिया है (राज)

'ज-स-दन्' (एक बेजान जिस्म यानी कच्चा गिरा हुआ बच्चा डलवा दिया) यह तर्जुमा मौलाना मर्हूम ने बुख़ारी, मुस्लिम की रिवायत की रोशनी में किया है। रिवायत में है कि हज़रत सुलैमान ने फ़रमाया था कि आज रात मैं अपनी सत्तर बीवियों से संभोग करूँगा, फिर हर पत्नी एक-एक मुजाहिद बच्चा जनेगी। आप उस समय इन्शाअल्लाह कहना भूल गये थे, जिस के नतीजे में सिर्फ़ एक ही पत्नी गर्भवती हो सकी और वह कच्चा हमल गिर गया यानी गर्भपात हो गया। (बुख़ारी, मुस्लिम)

---

३६. पस हम ने हवा को उस के ताबे कर दिया, जहाँ पर वह जाना चाहता उस के हुक्म से हवा आसानी के साथ चलती[१]। ३७. और जितने जिन्न, राजगीर और डुबकी लगाने वाले थे हम ने उस के ताबे कर दिये ३८. और कई एक को काबू में कर रखा था जो क़ैद में जकड़े हुये थे। ३९. यह हमारी देन है, पस तू बेहिसाब एहसान कर या रोक रख (यानी आवश्यकतानुसार तुझे हक़ हासिल है) ४०. उस का हमारे पास बड़ा दर्जा था और बड़ी अच्छी शान (थी) ४१. और हमारे बन्दे अय्यूब का ज़िक्र किया कर। जब उस ने अपने पर्वरदिगार से फ़रयाद की कि मेरे मौला! मुझ को शैतान ने बहुत दुःख और तकलीफ़ पहुंचाई है[२]। ४२.हम ने हुक्म दिया कि अपना पैर मार यह (तेरे लिये) ठन्डा स्नान घर और (पीने का) पानी मौजूद है। ४३. और उस के अहल व अ़याल (बाल-बच्चे) और उन के साथ उतने ही और अपनी रहमत से हम➲

لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُخَاءً حَيْثُ أَصَابَ ۝ وَالشَّيٰطِينَ
كُلَّ بَنَّاءٍ وَغَوَّاصٍ ۝ وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ۝
هٰذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ وَاِنَّ
لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝ وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ م
اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ۝
اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ۝ وَ
وَهَبْنَا لَهٗٓ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى
لِاُولِي الْاَلْبَابِ ۝ وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ
وَلَا تَحْنَثْ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا نِعْمَ الْعَبْدُ اِنَّهٗٓ
اَوَّابٌ ۝ وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِي
الْاَيْدِيْ وَالْاَبْصَارِ ۝ اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى
الدَّارِ ۝ وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ۝
وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ۝

ने दिये, ताकि अक़्लमन्दों के लिये नसीहत हो। ४४. और हुक्म दिया कि मुट्ठा अपने हाथ में ले कर उस के साथ मार दे और क़सम न तोड़। हम ने उसको सब्र करने वाला पाया। वह बहुत ही अच्छा बन्दा था। वह अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ था। ४५. और हमारे बन्दों इब्राहीम, इस्माईल और याक़ूब को याद कर जो बड़ी शक्ति वाले और बड़ी बीनाई वाले थे। ४६. हम ने उन को एक ख़ास बात यानी आख़िरत की याद के लिये चुन लिया था। ४७. और वह हमारे नज़दीक हमारे चुने हुये नेक बन्दों में से थे। ४८. इस्माईल, य-सअ़ और ज़ुल्किफ़्ल का भी ज़िक्र कर। उनमें का हरएक नेक बन्दों में से था।

....

९. यानी हमने वास्तव में उन को ऐसी बादशाहत अ़ता की थी जो उन के बाद किसी और को न दी। हवा को उन के मातहत कर दिया था और शैतान भी उन के अधीन थे। उन में कुछ निर्माण के कामों में लगे थे और कुछ समुद्र में ग़ोता लगा कर मोती-मूँगे निकालने का कार्य करते थे, बाक़ी क़ैद में पड़े रहते थे। हम ने सुलैमान से कह दिया था कि हमारी ओर से आपको बेशुमार नेमतें दी गयीं हैं, आप किसी को दें या न दें हर प्रकार से आप को इख़्तियार दिया गया है। (हक़्क़ानी)

१०. यह तीसरा क़िस्सा हज़रत अय्यूब अ़लै० का है। यह क़िस्सा सब्र दिलाने के लिये बयान किया गया है। क़िस्सा कुछ इस प्रकार है कि जब वह अधिक बीमार हो गये तो शैतान ने उन की पत्नी से कहा कि मैं हकीम हूँ, अगर अय्यूब को शिफ़ा मिल जाये तो कहना कि मैं (शैतान) ने शिफ़ा दी है। (अहमद) जब यह बात हज़रत अ़य्यूब को मालूम हुई तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ और अल्लाह से इस बात की शिकायत की कि उस ने मुझे बड़ा दुःख दिया है। अल्लाह ने उन्हें हुक्म दिया कि ज़मीन पर पैर मारो, चुनान्चे पैर का मारना था कि ठन्डे पानी का सोता जारी हो गया। उस में स्नान करने के बाद वह मुकम्मल स्वस्थ हो गये, उन की मुर्दा औलाद भी जीवित हो उठी और बाद में भी पैदा होते रहे। हज़रत अय्यूब ने क़सम खाई थी कि स्वस्थ होने के बाद अपनी पत्नी को १०० कोड़े मारूँगा, इसलिये कि उसने शैतान की बात सुनी। अल्लाह ने कहा कि ऐसा करो ताकि तुम्हारी क़सम भी हो जाये और औ़रत को कोड़े भी पड़ जायें (हालाँकि वह बेख़ता है) एक मुट्ठा झाडू का लो जिस में १०० तीलियां हों और फिर उसी से मार दो। (इस प्रकार १०० कोड़े मारने की तुम्हारी क़सम भी पूरी हो जायेगी और उस बेख़ता को चोटें भी नहीं आयेगी)

अल्लाह तआ़ला ने अय्यूब अ़लै० के सब्र की बड़ी तारीफ़ फ़रमाई है। आगे चल कर तीन और नबियों का बयान हो रहा है कि वह बड़ी शक्ति वाले थे। इबादत और नसीहत के लिये उन के दिल बड़े क़वी थे और बड़ी बीनाई वाले थे। यानी हर बात से अच्छा नतीजा निकालते और अल्लाह की आयात में ग़ौर-फ़िक्र करते थे। इल्मी और अ़मली दोनों प्रकार की ताक़त उन को हासिल थी। वह आख़िरत को ही हमेशा याद करते थे और दुनिया पर उन की नज़र बिल्कुल ही न थी। वह हमारे नज़दीक चुने हुये और नेक थे। इन बातों के अ़लावा उन की क़ौम वालों ने उन्हें बड़े दुःख और दन्ड दिये, लेकिन उन्होंने सब्र और शुक्र से काम लिया और कभी दिल छोटा न किया। इस जुम्ले से मालूम हुआ कि हज़रात अंम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम ख़ताओं से मासूम (सुरक्षित) होते हैं। इसलिये जो बेहूदा क़िस्से कहानियाँ उन की तरफ़ मन्सूब की गयी हैं, वह ख़ुराफ़ात, बकवास, बेहूदा और झूठ हैं। इन तीन पैग़म्बरों (इस्माईल य-सअ़ और ज़ुल् किफ़्ल) का बयान सूरः अंबिया में गुज़र चुका है। – कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन अ़ज़ाब के लिये जल्दी मचा रहे थे और अ़ज़ाब न आने पर उस को नबियों की झूठी धमकी समझते थे, इसी लिये अल्लाह तआ़ला ने यहाँ उन चन्द संदेष्टाओं का ज़िक्र कर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तसल्ली दी है। इस से यह भी मालूम हुआ कि यह लोग

➲आख़िरत के कितने हक़दार और चाहने वाले थे। (हक़्क़ानी-६/४७) दुनिया से नफ़रत और आख़िरत से मुहब्बत और उस के लिये तैयारी, यह नबियों की सुन्नत है। अल्लाह हम सब को भी इस सुन्नत पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ बख़्शे -आमीन!

هٰذَا ذِكْرٌ ۚ وَاِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٤٩﴾ جَنّٰتِ
عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ﴿٥٠﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ
فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ﴿٥١﴾ وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ
الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ﴿٥٢﴾ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٥٣﴾ اِنَّ
هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ﴿٥٤﴾ هٰذَا ۚ وَاِنَّ لِلطّٰغِيْنَ
لَشَرَّ مَاٰبٍ ﴿٥٥﴾ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٥٦﴾ هٰذَا ۙ
فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ ﴿٥٧﴾ وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖٓ اَزْوَاجٌ ﴿٥٨﴾
هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ۚ اِنَّهُمْ صَالُوا
النَّارِ ﴿٥٩﴾ قَالُوْا بَلْ اَنْتُمْ ۚ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ ۚ اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ
لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٦٠﴾ قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا
فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِى النَّارِ ﴿٦١﴾ وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى
رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ ﴿٦٢﴾ اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا
اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ ﴿٦٣﴾ اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ

४९+५० यह कुरआन एक नसीहत है और मुत्तक़ी लोगों के लिये (आख़िरत में) अव्वल ठिकाना है, यानी हमेशा रहने के लिये जन्नत जिन के दर्वाज़े उन के लिये खुले होंगे। ५१. उन में तकिए लगाये बैठे होंगे और बहुत से मेवे और पानी तलब किया करेंगे। ५२. और नीची निगाह रखने वाली हमउम्र बीवियाँ उन के पास होंगी। ५३. हिसाब के दिन इन्हीं नेमतों के मिलने का तुम को वादा दिया गया है। ५४. कुछ शक नहीं कि यह हमारा रिज़्क़ कभी ख़त्म न होगा। ५५+५६. मुत्तक़ी लोगों का इनाम तो यह है और बदमाशों का ठिकाना बहुत बुरा, यानी जहन्नम है जिस में वह दाख़िल होंगे, और वह बहुत बुरी जगह है।[११] ५७. लो यह सख़्त गर्म, खौलता हुआ पानी और पीप पियो ५८. और इसी प्रकार के कई और अ़ज़ाब होंगे। ५९. यह मुजरिमों की जमाअ़त फटकार की हालत में तुम्हारे साथ जहन्नम में दाख़िल होती है ६०. वह (यानी गुमराह चेले) कहेंगे बल्कि तुम लोगों पर फ़टकार हो, तुम ही लोगों ने तो हमारे लिये यह अ़ज़ाब आगे मुहय्या कराया, पस बहुत बुरा स्थान है। ६१. वह कहेंगेः ऐ हमारे पर्वदिगार! जिस शख़्स ने हमारे लिये यह अ़ज़ाब मुहय्या कराया तू उस को आग में दोगुना अ़ज़ाब दे। ६२. और कहेंगेः हमें क्या हो गया कि जिन लोगों को हम जानते थे उन को यहाँ नहीं देखते। ६३. क्या हम उन के साथ यूँही मख़ूल ही करते थे या हमारी निगाहें उन पर नही पड़तीं। ६४. इस में शक नहीं कि जहन्नमियों की यह तक़रार वास्तव में होगी

....

११. जहाँ फ़रमाबर्दार बन्दों के इनाम और सवाब का ज़िक्र हुआ तो तुरन्त बाद ही नाफ़र्मानों के अ़ज़ाब का भी ज़िक्र कर देना उचित था। बशारत के साथ धमकी और डरावा, सवाब के साथ अ़ज़ाब, जन्नत के साथ जहन्नम➲

और जज़ा के साथ सज़ा का बयान कर देना कुरआन की ख़सूसियत है ऊपर जन्नतियों के ज़िक्र के साथ ही यहाँ जहन्नमियों के बारे में चन्द बातें बयान फ़रमायीं (१) सरकशों के लिये बुरा ठिकाना है यानी जहन्नम जिनमें यह लोग दाख़िल होंगे बहुत बुरा स्थान है। दोज़ख़ की ज़मीन को बिछौने से तश्बीह दे कर फ़रमायाः वह आग के बिस्तर पर बैठेंगे। दुनिया की सरकशी और शहवत आग बन कर उन के सामने ज़ाहिर होगी। (२) 'हमीम' खौलता पानी और 'ग़स्साक़' घाव और पीप के धोवन को कहते हैं। जहन्नमियों को यही पानी पिलाया जायेगा। ज़ाहिर है जैसी बुरी जगह होगी, वैसा ही बुरा खान-पान होगा। इस के अलावा और भी बुरे क़िस्म के खान-पान होंगे। अब उन लोगों के मित्रों और चेलों-चपाटों का बयान हो रहा है। (३) दोज़ख़ के फ़रिश्ते उन लोगों से जो दुनिया में गुमराहों के अगुवा थे कहेंगे कि तुमहें अकेले ही नहीं, बल्कि तुम्हारे साथ तुम्हारे अनुयायी भी जायेंगे। यानी यह सर्दार अपने अनुयायियों से अप्रसन्न हो कर बद्दुआ का यह कलिमा कहेंगे। अ़रब के मुहावरा में एक प्रकार का यह कोसना है, जिस प्रकार हमारे मुहवारा में बोलते हैं कि "अल्लाह की मार हो" और खुशी के मौक़ा पर "मरहबा हो" बोलते हैं। यह सुन कर उन के चेले-चपाटे भी कहेंगे "तुम पर भी अल्लाह की मार हो," तुम ही ने मुझे इस स्थान पर पहुंचाया। दुनिया में कुफ़्र व शिर्क की शिक्षा दिया करते थे। इस के बाद अल्लाह तआ़ला से अनुरोध करेंगे कि जिन लोगों ने हमें यहाँ पहुंचाया उन को दोगुना दंड दे। एक तो उन को अपनी गुमराही का, दूसरे हम को गुमराह करने का। (४) यह जहन्नमी लोग दुनिया में जिन ग़रीब मुसलमानों को बेवकूफ़ और गुमराह कहा करते थे, जब उन को अपने साथ जहन्नम में न देखेंगे तो परस्पर बात-चीत करेंगे कि वह तो जहननम में नहीं हैं। यह देख कर उन को एक और रंज होगा। और जहन्नम में उन का झगड़ा बरहक़ है, ऐसा हो कर रहेगा। (हक्क़ानी)

اَهۡلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾ قُلۡ اِنَّمَاۤ اَنَا مُنۡذِرٌ ‌ۖ وَّمَا مِنۡ اِلٰهٍ اِلَّا
اللّٰهُ الۡوَاحِدُ الۡقَهَّارُ ﴿٦٥﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا
بَيۡنَهُمَا الۡعَزِيۡزُ الۡغَفَّارُ ﴿٦٦﴾ قُلۡ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيۡمٌ ۙ﴿٦٧﴾ اَنۡتُمۡ
عَنۡهُ مُعۡرِضُوۡنَ ﴿٦٨﴾ مَا كَانَ لِىَ مِنۡ عِلۡمٍۢ بِالۡمَلَاِ الۡاَعۡلٰٓى
اِذۡ يَخۡتَصِمُوۡنَ ﴿٦٩﴾ اِنۡ يُّوۡحٰٓى اِلَىَّ اِلَّاۤ اَنَّمَاۤ اَنَا نَذِيۡرٌ
مُّبِيۡنٌ ﴿٧٠﴾ اِذۡ قَالَ رَبُّكَ لِلۡمَلٰٓئِكَةِ اِنِّىۡ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنۡ
طِيۡنٍ ﴿٧١﴾ فَاِذَا سَوَّيۡتُهٗ وَنَفَخۡتُ فِيۡهِ مِنۡ رُّوۡحِىۡ فَقَعُوۡا
لَهٗ سٰجِدِيۡنَ ﴿٧٢﴾ فَسَجَدَ الۡمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمۡ اَجۡمَعُوۡنَ ﴿٧٣﴾ اِلَّاۤ
اِبۡلِيۡسَ ؕ اِسۡتَكۡبَرَ وَكَانَ مِنَ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ يٰۤاِبۡلِيۡسُ
مَا مَنَعَكَ اَنۡ تَسۡجُدَ لِمَا خَلَقۡتُ بِيَدَىَّ ؕ اَسۡتَكۡبَرۡتَ
اَمۡ كُنۡتَ مِنَ الۡعَالِيۡنَ ﴿٧٥﴾ قَالَ اَنَا خَيۡرٌ مِّنۡهُ ؕ خَلَقۡتَنِىۡ مِنۡ
نَّارٍ وَّخَلَقۡتَهٗ مِنۡ طِيۡنٍ ﴿٧٦﴾ قَالَ فَاخۡرُجۡ مِنۡهَا فَاِنَّكَ

६५. तू कह दे कि मैं केवल डराने वाला हूँ और अल्लाह अकेले ज़बर्दस्त के अ़लावा दूसरा कोई माबूद नही। ६६. वही आसमानों और ज़मीनों और जो कुछ उन के दर्मियान है सब का पर्वरदिगार है (वही) बख़्शने वाला है। ६७. तू कह! यह सूचना बहुत बड़ी है। ६८. तुम उस से मुंह मोड़ने वाले हो। ६९. मुझे तो उस समय भी आला जमाअ़त[१] के बारे में कोई इल्म नही होता जब वह परस्पर गुफ़तगू करते हैं। ७०. हाँ, मुझे यही पैग़ाम पहुंचता रहता है कि मैं केवल साफ़-साफ़ डराने वाला हूँ। ७१. जब तेरे पर्वरदिगार ने फ़रिश्तों से कहाः मैं मिट्टी से एक आदमी पैदा करने वाला हूँ। ७२. सो जब मैं उस को बना-सवाँर लूँ और उसमें अपनी कोई रूह डाल दूँ तो तुम उस के सामने सज्दा (ताज़ीमी) बजा लाना।

➲७३. तो सब के सब फ़रिश्ते (ताज़ीमी) सज्दा बजा लाये। ७४. लेकिन इबलीस ने तकब्बुर किया और काफ़िर हो गया। ७५. अल्लाह ने फ़रमायाः ऐ इबलीस! तू ने उस को सज्दा क्यों नहीं किया? जिस को मैंने अपने ख़ास हाथों से बनाया[13]। क्या तू तकब्बुर करने वाला है या वास्तव में बड़े लोगों में से है? ७६. उस ने कहाः मैं उस से अच्छा हूँ। तू ने मुझे आग से बनाया है और उस को मिट्टी से (और यह ज़ाहिर है कि आग मिट्टी से अफ़ज़ल है) ७७. अल्लाह ने फ़रमायाः पस तू इस (जन्नत) से निकल जा, क्योंकि तू मर्दूद है। ७८. और मेरी तरफ़ से क़ियामत तक तुझ पर लानत है

....

१२. 'म-ल-ए-आला' (ऊपर की मज्लिस) इस से मुराद नज़दीकी फ़रिश्तों वग़ैरह की बैठक है जिन के द्वारा से अल्लाह की तदबीर और दुनिया में होने वाले मामलात अन्जाम पाते हैं। यानी मल-ए आला में दुनिया के तअ़ल्लुक़ से जो ग़ौर-फ़िक्र, बहस-मुबाहसा और परस्पर प्रश्न व उत्तर होते हैं, मुझे उस की क्या ख़बर थी जो मैं तुम से बयान करता। अल्लाह ने जिन चीज़ों का मुझे इल्म दिया है, मैं उसी को बतला देता हूँ और जो कुछ कहता हूँ उस की वह्यि और इल्हाम से कहता हूँ। मुझको यही हुक्म हुआ है कि सब को उस आने वाले अज़ाब से आगाह कर दूँ। रहा यह प्रशन कि वह कब आयेगी? तो इस के बारे में न मुझे सूचना दी गयी है और न ही मुझे कुछ अनुमान है। एक हदीस शरीफ़ में है कि चन्द संदेष्टाओं की एक मजलिस में क़ियामत का ज़िक्र चला कि कब आयेगी? सब नबियों ने हज़रत इब्राहीम के हवाले इस मामला को कर दिया, उन्होंने कहा कि मुझे नहीं मालूम। फिर हज़रत मूसा से पूछा गया तो उन्होंने भी यही उत्तर दिया। फिर सभी नबियों ने हज़रत ईसा से पूछा तो उन्होंने कहा कि क़ियामत के बारे में तो मुझे नहीं मालूम, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने मुझ से यह वादा फ़रमाया है कि-----। एक दूसरी हदीस में है कि ईसा अ़लै० ने हज़रत जिब्रील अ़लै० से क़ियामत के बारे में पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया: मैं तुम से ज़्यादा नहीं जानता। इस से मालूम हुआ कि मल-ए-आला में क़ियामत के मुतअल्लिक़ इसी प्रकार की बहस होती रहती हे और इसके अ़लावा भी और बहुत से मसाइल में इसी प्रकार की बात चीत और क़ील-क़ाल होती रहती है। एक और हदीस में भी है कि अल्लाह तआ़ला ने आप से कई मर्तबा प्रश्न किया "मल-ए-आला में किस विषय पर गुफ़्तुगू हो रही है?" आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सललम ने हर मर्तबा यही उत्तर दिया कि मुझे नहीं मालूम। इससे मालूम हुआ कि वहां की बातचीत का इल्म अगर नबी को होगा तो केवल वह्यि के ज़रिये ही होगा, इसके अ़लावा और कोई ज़रीआ़ नहीं। यही एक सूत्र और ज़रीआ़ है जिसके ज़रीआ़ जहन्नम वालों के परस्पर लड़ाई झगड़े की आप को ख़बर हुई और इसी ज़रीआ़ से मल-ए-आला में बहस-मुबाहसा की सूचना और इबलीस का आदम को सज्दा करने से इन्कार के मामले की सूचना मिली जिसका बयान आगे की आयतों में आ रहा है। कहने का मतलब यह है कि नबियों को छोटे-बड़े जिन भी मामलात की सुचना होती है वह केवल वह्यि द्वारा ही होती है, इसके अ़लावा और दूसरा ज़रीआ़ नहीं। (मुवज़्ज़िहुल फ़ुरक़ान)

१३. 'दोनों हाथों से बनाया' यह आयत भी उन आयतों में से है जिस से अल्लाह के हाथ होने साबित होता है। ओर इसीलिये अहलेहदीस अल्लाह के हाथ-पाँव वग़ैरह मानते हैं और इस में किसी प्रकार की तावील नही➲

करते। एक हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह तआला ने तीन चीज़ों को ख़ास कर अपने हाथों से बनाया है (१) आदम का पुतला (२) तौरात को अपने हाथ से लिखा (३) जन्नत में पेड़-पौधे अपने हाथ से लगाए। (वहीदी, प्रष्ठ ५९५) हज़रत शाह वलिय्युल्लाह, आप के दोनों बेटे शाह अब्दुलक़ादिर और शाह अब्दुलअज़ीज़, मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी, मौलाना महमूदुल-हसन देवबन्दी वग़ैरह सब ही लोगों ने बिना किसी तावील के "अपने दोनों हाथों से बनाया" ही किया है (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान-५९३) मौलाना अमृतसरी मर्हूम का भी मसलक तावील न करना है, जैसे कि सूरः तहा में बयान हो चुका है। मौलाना मर्हूम ने इस विषय पर "फ़तावा सनाइया" भाग अव्वल, पृष्ठ ११३, ११४, ११५ पर विस्तार से लिखा है। (राज़)

قَالَ رَبِّ فَأَنظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٧٩﴾ قَالَ فَإِنَّكَ
مِنَ الْمُنظَرِينَ ﴿٨٠﴾ إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿٨١﴾ قَالَ
فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٨٢﴾ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ
الْمُخْلَصِينَ ﴿٨٣﴾ قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ أَقُولُ ﴿٨٤﴾ لَأَمْلَأَنَّ
جَهَنَّمَ مِنكَ وَمِمَّن تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَا
أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ﴿٨٦﴾ إِنْ
هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ﴿٨٧﴾ وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِينٍ ﴿٨٨﴾

७९. इबलीस ने कहाः ऐ मेरे मौला! जिस रोज़ मख़्लूक़ दोबारा उठाई जायेगी, उस रोज़ तक मुहलत दे दे ८०+८१. हुक्म हुआः ठीक है तुझे मुक़र्ररा वक़्त यानी क़ियामत तक मुहलत है। ८२. (इसके बाद) इबलीस ने कहाः मुझे हुज़ूर की इज़्ज़त की क़सम है कि मैं उन सब को बहकाऊँगा ८३. लेकिन उन में से तेरे ख़ालिस बन्दों पर मेरा प्रभाव नहीं होगा। ८४+८५. अल्लाह ने फ़रमयाः बेशक हक़ यही है (कि मेरे नेक बन्दों पर तेरा प्रभाव न होगा) और मैं भी सच कहता हूँ कि मैं तुझ से और उन में से जो तेरे ताबे होंगे उन तमाम से जहन्नम को भर दूँगा। ८६. तू कह दे कि मैं इस पर कोई बदला नही चाहता और न मैं तकल्लुफ़ करने वाला हूँ। ८७. (पस) यह (कुरआन शरीफ़) दुनिया वालों के लिये नसीहत है ८८. और तुम उस की बताई हुयी ख़बर (और भविष्य में होने वाले वाक़िआत) थोड़े ही समय बाद जान लोगे।

सूरः ज़ु-मर् —(39)

सूरः ज़ुमर (गुट गिरोह, टोलियाँ) मक्का में नाज़िल हुई। इसमें ७५ आयतें और ८ रुकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है।

१. (कुछ शक नही कि) यह किताब अल्लाह ग़लबा वाले की तरफ़ से नाज़िल हुयी है।

मِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ

➲२. बेशक हम ने इस किताब को सच्ची तालीम के साथ नाज़िल किया है पस तू (ऐ नबी!) अल्लाह ही की ख़ालिस इबादत किया कर। ३. सुनो! ख़ालिस इबादत अल्लाह ही के लिए (ज़ेबा) है[२]। और जो लोग उस के अ़लावा औरों को हाजतें पूरी करने वाला बनाते हैं वह (इस के उज़्र में) कहते हैं कि हम तो उन की इबादत इसलिये करते हैं कि यह लोग हम को दर्जे में अल्लाह के क़रीब कर दें[३]।

....

१. इस सूरः को सूरः "ग़ुरफ़" भी कहा जाता है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम रात को सोते समय सूरः बनी इस्राईल और इस सूरः की तिलावत फ़रमाया करते थे। (वहीदी) इस का दूसरा नाम "ग़ुरफ़" भी है। यह "ग़ुर्-फ़तुन" का बहुवचन है जिस का अर्थ है "कोठरी, कमरा"।

२. 'अद्दीनुल्-ख़ालिस' (ख़ालिस दीन) उस दीन को कहा जाता है जिस में ज़र्रा बराबर शिर्क की मिलावट न हो। "ख़ालिस दीन" को जानने के लिये अ़रबी भषा में पुस्तक "अद्दीनुल् ख़ालिस" और उर्दू भाषा जानने वालों के लिये "तक़वि-यतुल ईमान" (संपाकद शाह इस्माईल शहीद रह०) नामी किताबों का मुताला ज़रूरी है।(राज़)

३. यानी उन की इबादत के ज़रिये हम अल्लाह की नज़दीकी हासिल कर लें। अस्ल उद्देश्य उन की इबादत नही, बल्कि अस्ल मक़्सद तो अल्लाह की नज़दीकी है। गोया उन लोगों का उसूल यह था – बुत को बैठा के सामने यादे ख़ुदा करूँ– हालाँकि यह सब उनके बालित ख़्यालात हैं। (सनाई) आज-कल कुछ जाहिल मुसलमान क़ब्रों की पूजा-पाट करते और उन पर नज़्र व नियाज़ चढ़ाते हैं, और जब उन से पूछा जाता है तो बिल्कुल इन्ही मुश्रिकों की तरह उत्तर देते हैं कि हम उन की इबादत नही करते हैं, बल्कि अल्लाह तक पहुंचने का केवल वसीला बनाते हैं। अपने इन्ही बातिल ख़्यालात को बुनियाद बना कर यह लोग जम कर क़ब्रों की पूजाइ करते हैं, नज़्र-नियाज़ और चढ़ावे चढ़ाते हैं, उन से मन्नतें माँगते हैं, उन के सामने अपनी ज़रूरते पेश करते हैं, उन्हीं को अपना दुख-दर्द दूर करने वाला और ज़रूरतें पूरी करने वाला मानते हैं। इस प्रकार के नाम के मुसलमान कान खोल कर सुन लें कि इनका यह अ़मल शिर्क है और जो भी इस प्रकार के अ़मल करेगा चाहे वह अपने आप को कलिमा गो ही क्यों न कहता हो, उस का यह अमल मुश्रिकों के दफ़्तर में लिखा जायगा।

زُلْفَىٰ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَاذِبٌ كَفَّارٌ ۝ لَوْ أَرَادَ
اللَّهُ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا لَاصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ
سُبْحَانَهُ هُوَ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ يُكَوِّرُ اللَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ

जिन-जिन कामों में यह लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं अल्लाह ही उन में सहीह फ़ैसला करेगा। बेशक अल्लाह झूठे नाशुक्रों को समझ नही दिया करता। ४. अल्लाह अगर औलाद बनाने का इरादा करता है तो अपनी मख़्लूक़ में से जिस को चाहता चुन लेता[१], वह इस से पाक है, वह अकेला ही सब पर ज़बर्दस्त है। ५. उसी ने आसमान और➲

النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ
يَّجْرِىْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ۝ خَلَقَكُمْ
مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ
لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۗ يَخْلُقُكُمْ فِىْ بُطُوْنِ
اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْ بَعْدِ خَلْقٍ فِىْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ۗ
ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى
تُصْرَفُوْنَ ۝ اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِىٌّ عَنْكُمْ ۗ
وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ۗ

ज़मीन सच्चाई के साथ (यानी बाज़ाबता) पैदा किये हैं, रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल कर देता है और सूरज और चाँद को तुम्हारे काम में लगा रखा है। हर एक उन में का सुनिश्चित समयकाल तक चलता है। सुनो! वही अल्लाह बड़ा ज़बर्दस्त बख़्शने वाला है। ६. उस ने तुम को एक जान से पैदा किया उसी ने उस की बीवी (हव्वा) पैदा की, उसी ने तुम्हारे लिये चौपायों में से आठ प्रकार के हैवान पैदा किये[५]। वही तुम को तुम्हारी माओं के पेटों में एक हालत के बाद दूसरी हालत में तीन अंधेरों में पैदा करता है। यही अल्लाह तुम्हारा पर्वरदिगार है, तमाम हुकूमत उसी की है, उस के अ़लावा कोई इबादत के योग्य नहीं, पस तुम कहाँ फेरे जाते हो। ७. अगर तुम(अल्लाह का) इन्कार करोगे (तो अपना ही सब कुछ बिगाड़ोगे, क्योंकि) अल्लाह तुम से बेनियाज़ है[६] और वह अपने बन्दों से कुफ़्र पसन्द नही करता, और अगर तुम शुक्र करो तो वह उसे तुम्हारे हक़ में पसन्द करेगा।

....

४ 'जिस को चाहता है चुन लेता' मगर वह औलाद न ख़ालिक़ होती और न ख़ालिक़ का अंग, जैसे हक़ीक़ी औलाद होती है, बल्कि मख़लूक़ियत (रचना) के दर्जा में महबूबियत (प्रिय) के दर्जा तक पहुंचती है, जैस मुतबन्ना (लैपालक) होता है। मगर अल्लाह इस से भी पाक है। जो लोग किसी मख़्लूक़ को अल्लाह की औलाद, चाहे जिस दृष्टीकोण से, कहते हैं, वह लोग झूठे हैं (सनाई)

५. इन जानवरों की तफ़सील सूरः अनुआ़म आयत न० १४३, १४४ में गुज़र चुकी है, विस्तार से मालूमात के लिये वहाँ देखें। तीन अंधेरों से मुराद यह है (१) पेट का अंधेरा (२) बच्चादानी का अंधेरा (३) बच्चा दानी के अन्दर शिशु (बच्चे) के ऊपर एक झिल्ली लिपटी होती है उस का अंधेरा। इन सब अंधेरों के अन्दर तुम्हारी पैदाइश होती है। क्या ऐसा करने वाला कोई और भी है? और कोई नही है, बस यही अल्लाह है, इसलिये केवल उसी की इबादत करो और उसी के हो रहो। तुम लोग जो उसे छोड़ कर इधर-उधर जा रहे हो तो ऐसा करने से तुम्हारा ही नुक़्सान है (सनाई)

६. इस आयत से मोतज़िला फ़िर्क़ा ने यह दलील पकड़ी है कि बुराई का ख़ालिक़ बन्दा है। कोई बुराई अल्लाह की मर्ज़ी और इरादे से नही होती और न ही अल्लाह किसी को गुमराह करना चाहता है। (मोतज़िला, एक फ़िर्क़ा है जिस का अ़क़ीदा है नेकियां अल्लाह कराता है और बुराइयाँ बन्दा स्वयँ करता है, बुराई की निस्बत अल्लाह की तरफ़ करना जायज़ नहीं) मगर अहलेसुन्नत का अक़ीदा यह है कि दुनिया में जो कुछ हो रहा है और जो कुछ होगा, और नेकी और बदी सब का इल्म अल्लाह को अज़ल (आरंभ) ही से था। फिर दुनिया में भी अगर्चे बन्दे को उस के कामों में इख़्तियार और कुदरत अ़ता की है जिस से बुरे कामों पर पकड़ होती

➲है, मगर उन कुदरतों और दिल में वसवसों का सिलसिला जो उस को उभारने वाले हैं अल्लाह ही के इख़्तियार में है और उसी के इरादे से वाबस्ता है, क्योंकि वह संसार को पैदा कर देने के बाद निकम्मा और बेइख़्तियार नही हो बैठा है, जैसा कि हिन्दुमत का अक़ीदा है। इसलिये जो कुछ दुनिया में अच्छा या बुरा हो रहा है सब उस के इरादे और मर्ज़ी से अज़ल के इल्म के मुताबिक़ हो रहा है। और इस आयत में कुफ़्र पर नारज़ामन्दी ज़ाहिर की है। रज़ामन्दी और चीज़ है, इरादा और मर्ज़ी और चीज़। रज़ामन्दी न होने से इरादा का न होना नही साबित होता। मगर इस पर भी नासमझ यह कहा करते हैं कि जब सब कुछ उसी की कुदरत और इरादे से है तो अव्वल दिन से जिस प्रकार उसने हमारे बाप-दादा के लिये तरीक़ा और मज़हब बना दिया है, हम उसी के पाबन्द हैं, हमारा क्या गुनाह है? हमारी गुमराही के भी वही ज़िम्मदार हैं। इस का उत्तर यह है कि "कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा" कि जब हम ने एक बन्दे को अक़्ल व समय और अच्छे-बुरे को जानने समझने और उस को करने की कुदरत दे दी है, तो फिर अपनी नेकी व बदी का हर शख़्स आप ही ज़िम्मेदार है, बाप-दादा कोई किसी का बोझ नहीं उठायेगा (हक्क़ानी-६/१७७)

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ
مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ
بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ
دَعَا رَبَّهٗ مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ
نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْۤا اِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ
اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ
قَلِيْلًا ۖۗ اِنَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۝ اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ
اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا
رَحْمَةَ رَبِّهٖ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ
وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝
قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ
اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَاَرْضُ اللّٰهِ
وَاسِعَةٌ ؕ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

कोई किसी दूसरे का गुनाह नही उठायेगा। और तुम को अपने पर्वरदिगार की तरफ़ वापस जाना है, पस वह तुम को तुम्हारे किये हुये कामों की ख़बर देगा। वह सीनों के हालात से भी अवगत है। ८. और जब मनुष्य को तकलीफ़ पहुंचती है तो अपने पर्वरदिगार की तरफ़ झुक कर उसी को पुकारता है[१], फिर जब अल्लाह उसको अपने हाँ से कोई नेमत बख़्शाता है तो जिस तकलीफ़ के लिये पहले अल्लाह को पुकारता था वह बिल्कुल भूल जाता है और अल्लाह के शरीक बनाता है ताकि और लोगों को भी उस के रास्ते से गुमराह करे। तू कह! उसी कुफ़्र में चन्द रोज़ ज़िन्दगी गुज़ार लो, कुछ शक नहीं कि आख़िरकार तुम जहन्नमी हो[२]। ९. भला जो शख़्स रात के औक़ात (में भी) सज्दा और (अल्लाह के सामने) क़ियाम करते हुये गुज़ारे और आख़िरत से डरता हो और अपने रब की रहमत की आशा रखता हो (ऐसे शख़्स की तरह है जो अल्लाह से न डरे) तू कह कि भला इल्म वाले और बे इल्म बराबर हैं[१]? इसमें संदेह नहीं कि अक़्लमन्द लोग ही नसीहत हासिल करते हैं। १०. तू (मेरे बन्दों को मेरी तरफ़ से) कह! ऐ मेरे बन्दों! अपने पर्वरदिगार से डरते रहा करो। जिन्होंने नेक आमाल किये,➲

➲इसी दुनिया में उन के हिस्से में हर प्रकार की भलाई है। और अल्लाह की ज़मीन कुशादा है। निःसंदेह सब्र करने वालों को बे हिसाब बदला मिलेगा।

....

७. ऐ अल्लाह! तू मेरी कठिनाई को दूर फ़रमा दे, तू मेरे हाल पर रहम फ़रमा। ऐसा करने पर तो उस को मलामत नही, मलामत तो इस बात पर है कि जब अल्लाह उस को अपने हाँ से नेमत देता है तो वह भूल जाता है और फिर शरीक ठहराने लगता है। (सनाई)

८. आ़म लोगों में चूंकि तमीज़ नही इसलिये वह ज़ाहिरी हालत पर हुक्म लगाते हैं कि फ़लाँ शख़्स तो बड़े आराम से ज़िन्दगी काट रहा है, अगर उसके आमाल बुरे होते तो अल्लाह उसे क्यों आसूदा (मालदार) और अच्छी हालत में करता। इन लोगों को समझ लेना चाहिये कि अच्छे और बुरे आमाल को जांचने का यह तरीक़ा नहीं है, बल्कि इस के लिये कसौटी शरीअ़त का क़ानून है। (सनाई)

९. "तर्ग़ीब" में रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "क़ियामत के दिन सब लोग उठाये जायेंगे तो उन में से आ़लिम लोगों को अलग कर के अल्लाह फ़रमायेगा कि ऐ उलमा की जमाअ़त! मैं ने अपना इल्म तुम को इस वास्ते नही दिया था कि फिर तुम को अज़ाब में दाख़िल करूँ। जाओ! मैंने सब को बख़्श दिया"। (तर्ग़ीब-तर्हीब)

हज़रत अबू उमामा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "क़ियामत के दिन इबादत करने वाले नेक लोगों से कहा जायेगा कि तुम ठेहरो ताकि कि गुनाहगारों की शफ़ाअ़त करो"। हक़ीक़त यह है कि अगर नेक निय्यत से ख़ालिस अल्लाह की रज़ामन्दी के लिये दीन का इल्म हासिल किया तो इस से बड़ा कोई मर्तबा नही है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जो शख़्स इस्लाम की ख़ैरख़ाही की निय्यत से दीन का इल्म हासिल करने में उम्र भर लगा रहा तो उस को जन्नत में नबियों के बाद का दर्जा मिलेगा। और अगर दुनिया की शुहरत, रिया और नाम के लिये दीन का इल्म हासिल किया तो उससे बुरा कोई नहीं"। एक दूसरी हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "मुझे अपनी उम्मत पर तीन बातों का ख़ौफ़ है (१) दुनिया का माल बहुत अधिक मिल जाने की वजह से आपस में एक दूसरे से हसद करने लग जायेंगे (२) कुरआन मजीद में मुतशाबिह आयतों का मतलब निकालने की कोशिश में पड़ जायेंगे, हालाँकि उन का अर्थ अल्लाह ने किसी को नही बतलाया। पस जो आ़लिम होंगे वह तो क़ेवल यह कह देंगे कि हम तो बस इस पर ईमान लाते हैं, यह रब का कलाम है और इस का सही अर्थ वही जानता है। (३) लोग आ़लिमों की इज्ज़त नही करेंगे"। इस हदीस की रोशनी में अगर देखा जायेगा तो कीना, कपट और हसद का यह हाल है कि बड़े-बड़े बुजुर्ग और नेक लोग इस से पाक-साफ़ नही। कुरआन का यह हाल है कि लाखों मुसलमान उस को पढ़ना तो दूर की बात, उस को सुनने तक को तैयार नहीं। और जो लोग पढ़ते हैं वह आयतों में ऐसे-ऐसे आश्चर्यजनक शोशे निकालते और ऐसी दूर की कौड़ी लाते हैं, ताकि लोग यह समझें कि फ़लाँ आ़लिम तो बहुत पहुंचा हुआ है (आज-कल के दौर में जैसे मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ– ख़ालिद) और आ़लिमों की क़द्र और उन की इज्ज़त का यह हाल है कि जो आ़लिम कुरआन मजीद और अहादीस का सीधा-सादा सुन्नत के अनुसार मतलब बयान करे वह तो कठमुल्ला कहलाये और जो मन्तिक़, फ़ल्सफ़ा, गणित वग़ैरह में पूरी उम्र गंवा दे और कुरआन व हदीस के सीधे-सादे अहकाम में हेर-फेर कर के नये-नये गुल खिलाये वह सब से बड़ा मौलाना और अ़ल्लामा कहलाये। ऐ अल्लाह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की उम्मत➲

➲को हिदायत दे –आमीन (वहीदी)

قُلْ إِنِّيٓ أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ
الدِّيْنَ ﴿١١﴾ وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُوْنَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٢﴾
قُلْ إِنِّيٓ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ
عَظِيْمٍ ﴿١٣﴾ قُلِ اللّٰهَ أَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهُ دِيْنِيْ ﴿١٤﴾
فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ؕ قُلْ إِنَّ الْخٰسِرِيْنَ
الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ
أَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١٥﴾ لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ
ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ يُخَوِّفُ
اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَهٗ ؕ يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ﴿١٦﴾ وَالَّذِيْنَ
اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ أَنْ يَّعْبُدُوْهَا وَأَنَابُوْٓا إِلَى
اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿١٧﴾ الَّذِيْنَ
يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ أَحْسَنَهٗ ؕ أُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَأُولٰٓئِكَ هُمْ أُولُوا الْأَلْبَابِ ﴿١٨﴾

११. (ऐ नबी!) तू (इन को यह भी) कह दे कि मुझे हुक्म है कि मैं इख़्लास के साथ अल्लाह की इबादत करूँ १२. और मुझे यह भी हुक्म है कि मैं तमाम फ़रमाबर्दारों में अव्वल फ़रमाबर्दार बनूँ[10] १३.तू कह कि पर्वरदिगार की नाफ़र्मानी करने की सूरत में मुझे भी बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है। १४. तू कह कि मैं ख़ालिस अल्लाह ही की इबादत करता हूँ १५. तुम उस के सिवा जिस की चाहो इबादत करो। तू कह! सरासर नुक़सान वाले वही लोग हैं जो क़ियामत के दिन अपने आप को और अपने संबन्धियों को टोटे में डालेंगें। यही बड़ा खुला नुक़्सान है। १६. उन (बदकारों) के ऊपर और नीचे आग का साया होगा (फिर उन की क्या दुर्गत होगी? सुनो! और होशियार हो जाओ) अल्लाह इस अ़ज़ाब से अपने बन्दों को डराता है। ऐ मेरे बन्दो! मुझ से डरो। १७+१८. और जो लोग ग़ैरुल्लाह को पूजने से परहेज़ करते हैं और अल्लाह की तरफ़ झुके रहते हैं उन ही के लिये ख़ुशख़बरी है, पस तू मेरे उन बन्दों को ख़ुशख़बरी सुना जो हर क़िस्म की बातें सुन कर सब से अच्छी बात की पैरवी करते हैं (सब में अच्छा क़ौल अल्लाह का फ़र्मान कुरआन मजीद और उसके रसूल की सुन्नत है और बस!) यही लोग हैं जिन को अल्लाह ने हिदायत की है, और यही लोग अ़क्ल वाले हैं[11]।

....

१०. यानी मेरा फ़र्ज़ है और इस बात पर फ़ख़ भी है कि अल्लाह का बन्दा बन कर रहूँ और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराऊँ। (सनाई)

११. यानी वही दुनिया और आख़िरत में नजात पायेंगे। ऐसे लोगों में तौहीद और अल्लाह की तरफ़ झुकाव के अ़लावा एक और भी ख़ूबी है, वह यह कि यह लोग हर बात की तहक़ीक़ करते हैं और किसी बात को➲

सुनने से नफ़रत नही करते, हाँ, अ़मल करते वक़्त तहक़ीक़ से काम लेते हैं। (सनाई) मौलाना वहीदुज़्ज़मा मर्हूम ने इस आयत का तर्जुमा यह किया है "तू ऐ पैग़म्बर! मेरे उन बन्दों को खुश ख़बरी सुना जो बात को कान लगा कर सुनते हैं, फिर जो अच्छी बात होती है उस पर चलते हैं"। और मौलाना मर्हूम ने इस पर यह नोट लिखा है। "और बुरी बात पर तवज्जुह नही करते"। कुछ उलमा ने यूँ तर्जुमा किया है: "जो हक़ बात यानी कुरआन व हदीस को दिल लगा कर सुनते हैं और जो उन में सब से बेहतर हुक्म होता है उस पर चलते हैं"। यानी अफ़्ज़ल और बेहतर काम को इख़्तियार करते हैं और रुख़सत को तर्क करते हैं।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत सईद बिन ज़ैद, अबू ज़र और हज़रत सलमान, यह तीनों जाहिलिय्यत के ज़माने में भी अच्छी बात यानी "लाइला-ह-इल्लल्लाह" पर अक़ीदा रखते थे। अल्लाह तआ़ला ने इन्ही के बारे में यह आयत नाज़िल फ़रमाई। जब यह आयत नाज़िल हुयी तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक शख़्स को हुक्म दिया कि वह एलान कर दे "जो कोई इस हाल में मरे कि उस ने शिर्क न किया हो वह जन्नत में जायेगा"। वह शख़्स एलान करने के लिये निकला तो हज़रत उमर रज़ि० ने उसे वापस लौटा दिया और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहा कि मैंने उसको ऐलान करने से इस लिये मना किया कि कहीं ऐसा न हो लोग इसी पर भरोसा कर के बैठ जायें और नेक अ़मल करना छोड़ दें। (वहीदी)

अَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ۖ أَفَأَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ ۝ لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَبْنِيَّةٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَعْدَ اللَّهِ ۖ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ الْمِيعَادَ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۝ أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِنْ رَبِّهِ ۚ فَوَيْلٌ لِلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ مِنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُتَشَابِهًا مَثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ

१९. तो क्या जिन लोगों पर अ़ज़ाब का हुक्म लगा हो, तो ऐसे को जो आग में पड़े हुये हैं तू निकाल लेगा? २०. हाँ, जो लोग अपने पर्वरदिगार से डरते हैं उन के लिये बड़े-बड़े बालाख़ाने हैं जिन के ऊपर और बालाख़ाना बने हुये हैं उन के नीचे से नहरें जारी हैं। अल्लाह ने वादा कर रखा है। अल्लाह अपने वादे के कभी ख़िलाफ़ नहीं करेगा[१२]। २१. क्या तुम ने नही देखा कि अल्लाह आकाश से पानी उतारता है फिर ज़मीन से उस में चश्मे जारी कर देता है फिर उस के साथ मुख़्तलिफ़ क़िस्म के खेत पैदा करता है फिर वह लहलहाते हैं फिर तुम उस को पीला हुआ देखते हो फिर अल्लाह उस को चूरा-चूरा कर देता है। बेशक इस वाक़िआ में अक़्ल वालों के लिये (बड़ी) नसीहत है[१३]। २२. भला अल्लाह ने जिस शख़्स

का सीना इस्लाम (यानी शरीअ़त के अहकाम की पाबन्दी) के लिये खोल दिया,

फिर वह अपने पर्वरदिगार की रोशनी में चल रहा है[१४]। अफ़्सोस है उन लोगों पर जिन के दिल अल्लाह के ज़िक्र से सख़्त हो रहे हैं वह ही लोग खुली गुमराही में हैं। २३. अल्लाह ने सब कलामों से अच्छा कलाम नाज़िल किया है[१५], जो मिलती-जुलती किताब है बार-बार पढ़ी जाती है जो लोग अपने पर्वरदिगार से डरते हैं इस किताब से उन के बदन काँप उठते हैं और उन के चमड़े और दिल अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ झुकते हैं। यह अल्लाह की हिदायत है। इस के साथ जिस बन्दे को चाहता है हिदायत करता है।

....

१२. इस प्रकार की नेमतों का ज़िक्र सुन कर जो लोग नाक भौं चढ़ाते हैं उन से कहो कि क्या तुम लोगों ने दुनिया के निज़ाम पर ग़ौर नही किया? जबकि उस निज़ाम को अल्लाह ने ज़ाहिरी तौर पर ऐसा मुनज़्ज़म बना रखा है कि किसी प्रकार का ख़लल उस में नही आता। तो क्या उस के साथ बातिनी निज़ाम उस ने न किया होगा? बातिनी वही है जिस का नाम अच्छे बुरे कामों की जज़ा-सज़ा है। (राज़)

१३. यही कुछ हाल इन्सान का है। वह आरम्भ में बच्चा होता है, फिर जवान होता है, फिर पक कर कमज़ोर हो जाता है, फिर बूढ़ा हो कर मर जाता है। इसी प्रकार दुनिया का भी हाल है, इस में किसी बात को क़रार नही। एक क़ौम उभरती है फिर कमाल को पहुंचती है, फिर तबाह होने लगती है, और अन्त में बिल्कुल मिट जाती है, इस के बाद दूसरी क़ौम उभरने लगती है (मवाहिब)

१४. जो शख़्स अपने रब की रोशनी में चल रहा है क्या उस शख़्स के बराबर है जिस के दिल पर अल्लाह ने मुह्र लगा दी है उस में इस्लाम समा ही नही सकता। कहा गया है कि "जिस का सीना अल्लाह ने खोल दिया" इस से मुराद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० हैं। हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह आयत पढ़ी तो हम ने पूछा कि सीना खुलने का क्या अर्थ है? आप ने फ़रमायाः "जब ईमान का नूर दिल में समा जाता है तो सीना कुशादा हो कर फैल जाता है"। हम ने फिर पूछा कि इस की पहचान क्या है? आप ने फ़रमायाः "दिल आख़िरत की तरफ़ मुड़ जाता है और मौत आने से पहले उस की तैयारी करता है"। (वहीदी) अल्लाह ने नफ़्स को मुख़्तलिफ़ हालात में पैदा किया है। कुछ तो नूरानी और अल्लाह की तरफ़ झुकने वाली होती है और कुछ तारीक और जिस्म की तरफ़ झुकती है और दुनिया की लज़्ज़तों की तरफ़ लालच करती हैं। सब से ऊंचे मर्तबे वाले नफ़्स का नाम शर्हसद्र है। जिस में यह ख़ूबी होती है उन्हीं को नूरेइलाही नसीब होता है। और इस को बाक़ी रखने के लिये अल्लाह की याद से बढ़ कर और कोई दवा नहीं।

१५. सब से अच्छा क़ौल अल्लाह का फ़र्मान कुरआन मजीद है (यह आयत न० २३ की तरफ़ इशारा है) और बस! यानी उन के दीनी कामों का दार-मदार कुरआन पर है। यही लोग हैं जिन को अल्लाह ने हिदायत दी है और यही लोग अक़्ल वाले हैं। इन के मुक़ाबला में जो कुफ़्र और शिर्क और दूसरी बुरी चीज़ों में डूबे हुये हैं वह क्या मुक़ाबला कर सकते हैं। (सनाई)

مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٢٣﴾
اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ
وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٢٤﴾ كَذَّبَ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا
يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٥﴾ فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ
وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلَقَدْ
ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ
لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِيْ
عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٢٨﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا
فِيْهِ شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ۗ
هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ۗ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ اَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ
اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿٣١﴾

और जिस बन्दे को अल्लाह गुमराह कर दे उस को कोई हिदायत करने वाला नहीं[१६] २४. भला जो शख़्स अपने आप को क़ियामत के रोज़ (जहन्नम के) बड़े अज़ाब से बचा लेगा (यानी अपने नेक अ़मल की बर्कत से बच जायेगा ऐसे नाजुक वक़्त में ऐसा आदमी और जो ऐसा नहीं बल्कि बदकारियों की वजह से ज़ालिम हैं, बराबर होंगे?) और ज़ालिमों से कहा जायेगा कि जो कुछ तुम करते रहे हो उस का अ़ज़ाब चखो। २५. उन से पहले लोगों ने भी झुठलाया था, फिर ऐसे स्थान से उन पर अ़ज़ाब आया जहाँ से उन को गुमान भी न था। २६. फिर अल्लाह ने उन को दुनिया ही में ज़िल्लत का अ़ज़ाब चखाया, और आख़िरत का अज़ाब सब से बड़ा है। काश वह जानते होते। २७. और हम ने लोगों की हिदायत के लिये इस कुरआन में हर प्रकार की मिसालें बतलाई हैं ताकि वह नसीहत पायें। २८. कुरआन साफ़ अ़रबी भाषा में उतरा है ताकि लोग, परहेज़गार बनें। २९. अल्लाह एक मिसाल सुनाता है कि एक ग़ुलाम ऐसा है जिस में बहुत से शरीक बराबर के हिस्सेदार हैं और एक शख़्स केवल एक ही का ग़ुलाम है, क्या यह दोनों गुलाम हालत में एक से हैं? अल्हम्दु लिल्लाह! (कि इस्लाम हर तरफ़ से सहीह और दलाइल से भरपूर है) मगर बहुत से लोग (इसकी हक़ीक़त नही जानते) ३०. बेशक तू भी मर जायेगा और वह भी मर जायेंगे[१७]। ३१. फिर तुम (सब लोग) क़ियामत के रोज़ अपने पर्वरदिगार के सामने आपस में झगड़ोगे।

....

१६. यानी एक आयत दूसरी आयत से फ़साहत और बलाग़त में मिलती-जुलती है। कोई आयत रकीक और फ़साहत के ख़िलाफ़ नही है। बाज़ लोग कहते हैं कि इस आयत का मक़सद यह है कि इसकी आयतें अगली किताबों की आयतों से मिलती हैं यानी तौरात और इन्जील की आयतों से। कुछ उलमा ने कहा कि इस का यह मतलब है कि इस की आयतें विषय और अल्फ़ाज़ में एक दूसरे से मिलती हैं जिन में कुरआन के हाफ़िज़ को अक्सर धोका होता है। अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने हज़रत अस्मा बिन्त अबूबक्र से पूछा कि जब कुरआन पढ़ा जाता तो सहाबा रज़ि० का क्या हाल होता था? उन्होंने कहाः उन की आंखों में आँसू आ जाते और ➲

बदन के रोंगटे खड़े हो जाते। अ़ब्दुल्लाह ने कहा कि हमारे ज़माना में तो कुछ लोग ऐसे भी थे कि कुरआन सुन कर उन को ग़श (बिहोशी) आ जाती थी। हज़रत अस्मा कहती है कि शैतान से अल्लाह की पनाह! फिर अल्लाह की याद से उन के बदन के चमड़े और दिल नर्म हो जाते है और बड़ी आसानी और खुशी से अल्लाह की इबादत करते हैं। इमाम क़तादा फ़रमाते हैं कि अल्लाह के वलियों की सिफ़त यह है कि डर से उन के बदन के रोंगटे खड़े हो जायें और अल्लाह की याद में उन का दिल लग जाये, यह मतलब नही कि उन की अ़क्ल जाती रहे या उन को बेहोशी तारी हो जाये, जैसा कि आजकल बिद्अ़तियों का हाल होता है। तो मालूम होना चाहिये कि यह शैतान की तरफ़ से वस्वसा होता है।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० एक मर्तबा मुल्क इराक़ में एक शख़्स के पास से गुज़रे जो बेहोशी की हालत में पड़ा हुआ था। उन्होंने पूछा कि इस को क्या हो गया है? लोगों ने कहा कि जब यह कुरआन सुनता है तो इसकी यही कैफ़ियत हो जाती है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह ने कहा कि हम भी तो अल्लाह से डरते हैं लेकिन गिरते-पड़ते और बेहोश नहीं होते हैं। अस्ल में इन लोगों के अन्दर शैतान समा जाता है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सहाबा का यह हाल तो न था। इमाम मुहम्मद बिन सीरीन से पूछा गया कि कुछ लोग कुरआन सुन कर गिर पड़ते हैं और बेहोश हो जाते हैं, ऐसे लोगों के बारे में क्या ख़्याल है? उन्होंने कहा कि ऐसे लोगों को एक छत पर बैठाओ और उनके पांव फैला दो और कुरआन पढ़ कर सुनाओ। अगर वह नीचे गिर जायें तब तो सच्चे हैं वर्ना झूठे। इन बुजुर्गों के क़ौल से मालूम हुआ कि कुरआन की आयतों को सुन कर हाल आना, झूमने लगना, होश-हवास खो बैठना, सांस का रुक जाना और आंखे वग़ैरह उलट लेना, जैसे कि आज-कल बहुत से फ़क़ीरों को हो जाता है, यह तरीक़ा सुन्नत के ख़िलाफ़ है। किसी सहाबी से कभी भी यह साबित नहीं कि उन को कभी हाल आया हो और वह बे होश हो कर गिर पड़े हों (वहीदी)

१७. कुफ़्फ़ार आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मौत का हमेशा इन्तज़ार करते थे। अल्लाह ने फ़रमाया कि जीने और मरने में सब बराबर हैं। तुम लोग भी मरोगे और वह भी मरेंगे, तो फिर किसी के मरने का इन्तज़ार करना कितनी बड़ी नादानी है। कुछ उलमा का कहना है कि बाज़ सहाबा यह समझते थे कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम कभी न मरेंगे, उन के इस ख़याल के रद्द में यह आयत नाज़िल हुयी। जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का देहान्त हो चुका तो हज़रत उमर ने फ़रमाया आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मरे नहीं हैं, जो कोई कहेगा कि आप मर गये हैं, उसकी गर्दन अपनी नंगी तलवार से उड़ा दूंगा। इतने में अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० भी आ गये और हज़रत उमर से कहा कि अपनी तल्वार मियान में रख लो, फिर आप ने मिंबर पर चढ़ कर यही आयत तिलावत फ़रमाई और दुनिया ने जान लिया कि आप पर भी मौत आई है। क़ब्र और बरज़ख़ की ज़िन्दगी एक हक़ीक़त है, मगर कुछ बेवकूफ़ों का ख़्याल है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ब्र में दुनियावी ज़िन्दगी की तरह ही हयात और ज़िन्दा हैं, तो ऐसा सोचना उन की सरासर नादानी है। कुछ जाहिल उलमा ने बिला वजह इस विषय को गंभीर बना रखा है। (राज़)

नोट :- 'इन्न-क मय्यितुंव्वइन्नहुम मय्यितून' (निस:सन्देह स्वयँ आपको भी मौत आयेगी और यह सब भी मरने वाले हैं) इस आयत में यह बतलाया गया है कि नबी और उनके मुख़ालिफ़ सभी मर कर इस दुनिया से हमारे पास आख़िरत में आयेंगे। दुनिया में तो तौहीद औरा शिर्क का फैसला तुम्हारे दरमियान नहीं हो सका

और तुम इस बारे में परसपर झगड़ते ही रहे, लेकिन यहाँ आख़िरत में उसका फैसला मैं करूँगा और नेक लोगों को जन्नत में और बुरे लोगों को जहन्नम में दाख़िल करूँगा। इस आयत से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वफ़ात पा जाने का स्पष्ट तर्क है और इसी आयत की तिलावत करके हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने सहाबा को क़ाइल किया था कि आप सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम का देहान्त हो चुका है।

सूरः आले इमरान की आयत न० १४४ से भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के देहान्त पा जाने का सबूत निकलता है। इस आयत से यह ज़ाहिर होता है कि नबी का काफ़िरों के हाथों क़त्ल हो जाना, या उनको मौत आजाना कोई नयी बात नहीं है पिछले सन्देष्टा भी क़त्ल हुये हैं और मौत से दो चार हुये हैं। हज़रत उमर को क़ाबू में करने के लिये हज़रत अबू बक्र ने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई थी।

वह लोग जिनका अक़ीदा है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का देहान्त नहीं हुआ है बल्कि वह हम से पर्दा कर गये हैं और वह अपनी क़ब्र में जीवित हैं, इस आयत की रोशनी में उनका अक़ीदा बातिल है। इन दोनों आयतों में नबी की मौत के लिये वही शब्द का प्रयोग किया गया है जो और तमाम मरने वालों के लिये किया गया है, जिससे साफ़ ज़ाहिर है कि नबी भी उसी प्रकार मरते हैं जिस प्रकार उनकी उम्मत के आम लोग मरते हैं

------*ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी*

★★★★★

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

पारः फ़–मन् अज़्–लमु (24)

संक्षिप्त विषय सूची

फ़-मन् अज़्-लमु (24)

३२. पस जो शख़्स अल्लाह पर झूठ बांधे (कि नबुव्वत का दावा करे या बग़ैर अल्लाह के इल्हाम के ख़बर दे) या जब उस को सच पहुंचे तो उस को न माने, ऐसे ज़ालिम से बड़ा ज़ालिम कौन है? क्या ऐसे काफ़िरों का ठिकाना ज़हन्नम में न हो गा[१८]? ३३. और (उन के मुक़ाबला में) जो (ऐसा) शख़्स है कि (अल्लाह की तरफ़ से) सच्ची तालीम लाया है और सच की तस्दीक़ करता है, ऐसे लोग ही मुत्तक़ी हैं। ३४. जो चाहें गे उन के पर्वरदिगार के हाँ से उन को मिले गा, नेको कारों का यही बदला है। ३५. (उनके ऐसे आमाल का) नतीजा यह हो गा कि अल्लाह उन के बुरे आमाल को जो उन्हों ने किये हों गे दूर कर देगा और जो नेक कार्य किये हों गे उन में से बहुत अच्छे कामों के अन्दाज़ा से उन को बदला देगा। ३६. क्या अल्लाह अपने बन्दे को काफ़ी नहीं है[१९]? (सुनो! मुश्रिक) अल्लाह के अ़लावा और माबूदों से तुम को डराते हैं (बात यह है कि) जिस को अल्लाह ही धुत्कार दे उस के लिये कोई हिदायत करने वाला नहीं। (जो हिदायत कर सके[२०])। ३७.और अल्लाह जिस को हिदायत करे उस को कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या अल्लाह तआ़ला बड़ा ग़ालिब और बदला लेने पर क़ुदरत नहीं रखता है? ३८. और अगर तू उन से पूछे कि आकाश और ज़मीन किस ने पैदा किये? तो वह तुरन्त कह दें गे कि अल्लाह ने (पस जब इस बात को मानते हैं तो) तू कह! बताओ तो सही अल्लाह के सिवा जिन लोगों को तुम पुकारते हो अगर अल्लाह मुझको किसी प्रकार की तक्लीफ़ पहुंचानी चाहे तो क्या यह लोग अल्लाह की (तरफ़ से आयी हुयी) तक्लीफ़ को हटा सकते है? या अगर अल्लाह मेरे हक़ में रहमत चाहे तो यह लोग➲

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ
جَآءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِينَ ﴿٣٢﴾ وَالَّذِي
جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖٓ أُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿٣٣﴾
لَهُم مَّا يَشَآءُونَ عِندَ رَبِّهِمْ ۚ ذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٤﴾
لِيُكَفِّرَ اللهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُم
بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٥﴾ أَلَيْسَ اللهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ۖ
وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِن دُونِهٖ ۚ وَمَن يُضْلِلِ اللهُ فَمَا لَهٗ
مِنْ هَادٍ ﴿٣٦﴾ وَمَن يَهْدِ اللهُ فَمَا لَهٗ مِن مُّضِلٍّ ۗ أَلَيْسَ
اللهُ بِعَزِيزٍ ذِي انتِقَامٍ ﴿٣٧﴾ وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللهُ ۚ قُلْ أَفَرَءَيْتُم مَّا تَدْعُونَ
مِن دُونِ اللهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ
ضُرِّهٖٓ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ۚ
قُلْ حَسْبِيَ اللهُ ۖ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٣٨﴾ قُلْ يٰقَوْمِ

➲उस की रहमत को रोक सकते हैं? तू कह! मुझ को अल्लाह ही काफ़ी है और सब भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा किया करते हैं। ३९. (यह सीधी तालीम सुन कर तेरी मुख़ालिफ़त करें तो) तू कह: ऐ मेरे भाइयो!

....

१८. यानी अगर नबी ने झूठ-मूठ अल्लाह का नाम लिया है तो उस से बुरा कौन हो गा (मुवज़्ज़िहुल् कुरआन) हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि "जो सच्ची बात लाया" से मुराद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं और "उस को सच माना" से मुराद अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं (हमीदी) 'सद्-क़ बिही' से मुराद अबू बक्र सिद्दीक़, या हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं। लग-भग तमाम उलमा का यही कहना है। अगरचे यह दोनों सहाबा सर्वप्रथम इस सफ़ में शामिल हैं लेकिन इस आयत को आ़म माना जाए तो ज़्यादा बेहतर है और जो कोई कलिम-ए-तौहीद की तरफ़ बुलाये और इलाही अहकाम की तब्लीग़ करे और जो कोई इस्लाम कुबूल करे, वही मुत्तक़ी और परहेज़गार है। ऐसे लोगों के हक़ पर होने की साफ़-साफ़ गवाही दी गयी है। इस आयत से मालूम हुआ कि मुत्तक़ी और परहेज़गार होने के लिये केवल अक़ीदा ही की दुरूस्तगी काफ़ी नहीं, बल्कि इस के साथ अ़मल की इस्लाह भी शामिल है। और ज़ाहिर है कि कामिल तस्दीक़ उसी वक़्त हो सकती है जब क़ौल से तस्दीक़ करने के साथ-साथ उस पर अ़मल भी करे (हक़्क़ानी)

१९. शाने नुज़ूल:- जिन आयतों में मक्का के मुश्रिकों के बुतो की बुराई बयान की जाती, तो वह लोग उन आयतों को सुन कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अपने बुतों की तरफ़ से डराते थे कि उन मुश्रिकों के ठाकुर आप को हानि पहुचायें गे, इस पर अल्लाह तआ़ला ने इन आयतों को नाज़िल फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे और रसूल की सहायता के लिये काफ़ी है। अल्लाह की मर्ज़ी के बग़ैर कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकता। मक्का में सूखाकाल के समय मुश्रिकों को अपने बुतों की बेबसी और कमज़ोरी मालूम हो चुकी है। उन के बुत उन को सूखाकाल से नजात नही दिला सके। इस के बावजूद भी जो यह लोग अपने बुतों से सहायता की उम्मीद रखते हैं इस की वजह यह है कि अल्लाह के इ़ल्म में यह लोग गुमराह ठहर चुके हैं। फिर आगे फ़रमाया कि यह तो अपने बुतों से डरते ही रहें गे। अल्लाह तआ़ला के कारख़ाना में जब उन लोगों की ऐसी बातों की सज़ा का वक़्त आजाये गा तो वह ऐसा ज़र्बदस्त बदला लेने वाला है कि उस के बदला लेने के समय उन का कोई बुत उन के कुछ काम न आये गा (अहसनुत्तफ़ासीर)

२०. चन्द आयात पहले "अल्लाह ऐसे शख़्स की मिसाल बयान करता है जिन के बहुत से शरीक हैं" (आयत न० २९) में शिर्क का रद्द और मुश्रिकीन की जिहालत बयान की गयी है। यह सुन कर मुश्रिक लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अपने बुतों से डराते थे और कहते थे कि हमारे बुतों की तौहीन कर के उन को गुस्सा न दिलाओ वर्ना वह तुम को पागल और ख़बती बना देंगे। इसी का उत्तर दिया कि जो शख़्स एक ज़बर्दस्त ख़ुदा का बन्दा बन चुका, उस को भला इन आ़जिज़ और बेबस ख़ुदाओं (बुतों) से काहे को डर हो सकता है? यह भी उन मुश्रिकों की एक मुस्तक़िल गुमराही और पागलपन है कि अल्लाह के मानने वालों को इस प्रकार की धमकियों से डराते हैं। और सच तो यह है कि सीधी राह पर चलाना या न चलाना सब अल्लाह के क़ब्ज़े में है। और अल्लाह इस प्रकार के बुरे लोगों को हिदायत की राह नहीं दिखलाता है, इसी लिये वह पागल और ख़बती हो जाता है मोटी-मोटी बातों को समझने की भी सलाहियत (योग्यता) खो बैठते हैं। क्या इन कमअक़्लों को इतना भी नहीं मालूम कि जो बन्दा अल्लाह की पनाह में आ गया उस का कोई बालबीका नहीं कर सकता (मवाहिब)

اعْمَلُوا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّیْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾ مَنْ
يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٤٠﴾ اِنَّآ
اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى
فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنْتَ
عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٤١﴾ اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَ
الَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا
الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰٓى اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
شُفَعَآءَ ۚ قُلْ اَوَلَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٣﴾
قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ۚ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ
ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ
قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَاِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ
مِنْ دُوْنِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٥﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ

तुम अपने तरीक़े पर अ़मल किये जाओ मैं भी अ़मल करता हूँ, तुम को मालूम हो जाये गा ४०. कि (दुनिया ही में) सख़्त ज़लील करने वाली मुसीबत किस पर आती है और (आख़िरत में) हमेशा का अ़ज़ाब किस पर नाज़िल होगा? ४१. (इस के बाद हमारा आ़म एलान है कि) हम ने लोगों की हिदायत के लिये तुझ पर (ऐ नबी) सच्ची किताब नाज़िल की है। जो कोई हिदायत पाये गा वह अपने लिये पाये गा और जो गुमराह हो गा, उसी का नुक़्सान होगा (और तुझे बतलाने के क़ाबिल ख़ास बात यह है कि) तू उन का ज़िम्मा दार नहीं है। ४२. अल्लाह उन जानदारों की मौत के समय उन की रूहों को क़ब्ज़ कर लेता है और जो नहीं मरते उन की नींद के समय उन के नफ़्सों पर क़ब्ज़ा करता है, जिस की मौत का समय आ चुका हो उस को रोक लेता है और दूसरे को उस की मौत के मुक़र्रर वक़्त तक छोड़ देता है। बेशक इस में उन लोगों के लिये निशानियाँ हैं जो फ़िक्र किया करते हैं[२१]। ४३. क्या उन (मुशिरक) लोगों ने अल्लाह के अ़लावा औरों को (झूठा) शफ़ाअ़त करने वाला समझ रखा है? तू पूछ! क्या तुम उन को शफ़ाअ़त करने वाला समझते रहो गे चाहे उन को कुछ भी इख़्तियार न हो और वह कुछ न समझते हों? ४४. तू कह कि सिफ़ारिश तो सारी अल्लाह के क़ब्ज़े में है। आसमानों और ज़मीनों की तमाम हुकूमत उसी को हासिल है, फिर उसी की तरफ़ तुम वापस किये जाओ गे। ४५. जिस वक़्त अल्लाह अकेले का ज़िक्र होता है (यानी उस की तौहीद का बयान और अक़ीदा सिखाया जाता है) तो उन लोगों के दिल जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते भिंचते हैं और जब अल्लाह के अ़लावा और लोगों का ज़िक्र किया जाता है तो (यह लोग) तुरन्त प्रसन्न हो उठते हैं[२२]। ४६. तू (ऐ नबी!) कह: ऐ अल्लाह, आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले

....

२१. यानी नींद में हर रोज़ जान खींचना और फिर वापस कर देना, यह आख़िरत में दोबारा जी उठने की दलील है। इस से मालूम हुआ कि नींद में भी वैसे ही जान खिंचती है जैसे मौत में। अगर नींद में खिंच कर दोबारा नही लौटी तो इसी का नाम मौत है। मगर यह जान वह है जिस को होश है और एक जान जिस से दम चलता है और नब्ज़ उछलती है, खाना हज़्म होता है वह दूसरी है, वह मौत से पहले नही खिंचती (मुवज़्ज़िहु क़ुरआन)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब तुम अपने बिस्तरों पर सोने के लिये लेटो तो यह ➲

दुआ पढ़ लिया करो, "बिस्मि-क रब्बी व-ज़अ्तु जन्बी वाबि-क अर-फउहू इन अम्-सक्-त नफ़्सी फ़र-हमहा वइन अर्-सल्-तहा फ़ह्-फ़ज़हा बिमा तह-फ़ज़ु बिही इबा-द-कस्सालिहीन (मेरे मौला! तेरे नाम के साथ मैं ने अपनी कर्वट को बिस्तर पर लगाया है और तेरे ही नाम के साथ उठाऊँ गा। और अगर तू मेरी जान को रोक रखे यानी सोता ही रह जाऊँ तो मेरी जान पर रहम करना। और अगर मेरी तरफ़ वापस कर दे यानी मैं जाग जाऊँ तो मुझ को आफ़तों और बलाओं से बचाना जिस प्रकार तू अपने नेक बन्दों को बचाता है- बुख़ारी मुस्लिम) एक अन्य हदीस में हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सोते समय यह दुआ पढ़ते थे: "अल्लाहुम्म बिस्मि-क अमूतु व-अहया" (ऐ अल्लाह! मैं तेरे ही नाम के साथ मरता हूँ और तेरे ही नाम के साथ ज़िन्दा हूँ गा) और जब सो कर उठते, तो यह दुआ पढ़ते " अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह्या नफ़्सी बअ्-द मा अमा-तहा वइलैहिन्नुशूर" (तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिये हैं जिस ने मेरी जान को मरने के बाद ज़िन्दा कर दिया और फिर उसी की तरफ़ सब को लौटना है) एक अन्य हदीस में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स सोते समय तीन मर्तबा यह दुआ पढ़ लिया करे तो अल्लाह उस के तमाम गुनाह बख़्श देगा। दुआ यह है: " अस्-तग़्फ़िरुल्ला- हल्लज़ी लाइला-ह इल्लाहु-वल् हय्युल् क़य्यूम व-अतूबु इलैहि (मैं उस अल्लाह से मग़्फ़िरत तलब करता हूँ जिस के अ़लावा कोई इबादत का हक़दार नही। वह ज़िन्दा है, क़य्यूम है और उसी की तरफ़ झुकता हूँ- तिर्मिज़ी-२/१९५) इन दुआओं के अ़लावा और भी दुआयें हैं जिन के पढ़ने की बड़ी फ़ज़ीलत आयी है। (अहदीसुत्तफ़ासीर-२६२)

२२. यानी वह अपने झूठे देवताओं की मुहब्बत में इतने डूबे हुये हैं कि अल्लाह से मुहब्बत की उन के दिल में जगह ही नही रही। जहाँ कहीं भी अल्लाह का ज़िक्र आता है तो उन का दिल डूबने लगता है। आज-कल के ज़माने में कुछ कट्टर मुक़ल्लिदों का भी यही हाल है। (अल्लाह उन को हिदायत दे) जब उन के सामने क़ुरआन व हदीस को पढ़ा जाता है तो उसे बड़ी उदासी और बेमन चाहे सुनते हैं, लेकिन जब उन के सामने "हिदाया, क़ुदूरी," और इस के अ़लावा तब्लीग़ी जमाअ़त की प्रसिद्ध किताब "फ़ज़ाइले-आमाल" जैसी किताबें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो वह खुशी से फूले नहीं समाते, उन की बाछें खिल उठती हैं। इसी प्रकार जब अल्लाह की तौहीद और उस की क़ुदरत का बयान करो तो यह दिल लगाकर नही सुनते, लेकिन अगर किसी वली या पीर फ़क़ीर की झूठी करामत व कमालात का ज़िक्र किया जाये तो मारे प्रसन्नता के उछल पड़ते हैं और उन के अन्दर खुशी की लहर दौड़ जाती है। (वहीदी)

وَالْأَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ
عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ
ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا
بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ وَبَدَا لَهُمْ مِنَ
اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ﴿٤٧﴾ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا
كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٤٨﴾ فَإِذَا مَسَّ
الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ۖ ثُمَّ إِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِنَّا ۙ قَالَ
إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلٰى عِلْمٍ ۚ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ

ग़ाइब और हाज़िर के जानने वाले, तू ही अपने बन्दों के दर्मियान इन बातों में फ़ैसला करेगा जिन में वह इख़्तिलाफ़ करते हैं[२३] (बहर हाल तू सब का मुख़्तार है) ४७. और अगर ज़ालिमों को ज़मीन का तमाम माल और उस के साथ ही इसे जितना और मिल जाये तो क़ियामत के दिन के बुरे अ़ज़ाब का बदला दें (और चाहें कि यह सारा माल दे कर हमारा छुटकारा हो जाये) और उन को ऐसे अहवाल मालूम हो जायें गे जिन का वह गुमान भी न करते थे। ४८. और उन्हों ने जो कुछ बुरे काम किये थे वह उन के सामने आ जायें गे और जिस अ़ज़ाब (और

لَا يَعْلَمُونَ ۝ قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَآ أَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ فَأَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوا ۗ وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوا ۙ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ۝ أَوَلَمْ يَعْلَمُوٓا أَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۗ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُونَ ۝

जज़ा व सज़ा) की वह हँसी उड़ाते थे, वह उन पर नाज़िल होगा[२४] (फिर रोएं-चिल्लायें गे, मगर फ़ाइदा कुछ न होगा) ४९. और जब इन्सान को तक्लीफ़ पहुंचती है तो हम से दुआ माँगता है फिर जब हम उस को अपने पास से मेहरबानी का हिस्सा देते हैं तो कहता है: यह तो मेरी सूझ-बूझ से मुझे मिला है (नही, ऐसी बात नहीं है) बल्कि वह उस के लिये मुसीबत है (क्योंकि जिस नेमत का शुक्र न हो, वह अ़ज़ाब है) लेकिन बहुत से लोग नहीं जानते[२५]।५०. उन से पहले लोगों ने भी यही कहा था (मगर जब उन पर अ़ज़ाब आया तो) जो कारोबार करते थे वह उन को काम न आया। ५१. उन की बुराइयों का बदला उन को पहुंच गया और जो उन (मौजूदा) लोगों में ज़ालिम हैं उन को भी उन की बुराइयों की सज़ा पहुंचे गी और वह अल्लाह को आजिज़ (मजबूर, बेबस) नहीं कर सकें गे (कि अल्लाह अगर उन को पकड़ना चाहे तो वह न पकड़े जायें) ५२. क्या उन को मालूम नही कि अल्लाह जिस को चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिस को चाहता है तन्ग कर देता है। बेशक इस वाक़िआ में ईमानदार क़ौम के लिये बहुत से निशान हैं

....

२३. जब कोई शख़्स हक़ बात को न सुने और नाहक़ लड़ाई-झगड़ा, और बकवास करे तो आदमी को यही दुआ (यानी आयत न०४६) पढ़नी चाहिये, जो अल्लाह ने अपने नबी को सिखाई है। हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रह० फ़रमाते हैं कि इस आयत को पढ़ने के बाद जो दुआ की जाती है वह अवश्य कुबूल होती है। हज़रत रबीअ़ बिन ख़ैसम रह० लोगों से बहुत कम कलाम करते थे। लोगों ने उन को हज़रत हुसैन रज़ि० की शहादत की सूचना दी और समझा कि आज वह ज़रूर बात करें गे, लेकिन उन्हों ने सुन कर केवल इतना कहा "हाय, क्या लोगों ने ऐसा कर डाला?" और फिर यही आयत तिलावत फ़रमाई। (वहीदी)

२४. यानी जब क़ियामत के दिन उन मुश्रिकों के हक़ में अ़ज़ाब का फ़ैसला हो जाये गा तो उस समय उन का बुरा हाल होगा और अ़ज़ाब से छुटकारा पाने की हर संभव कोशिश करें गे। और अगर (मान लीजिये) उन के पास पूरी ज़मीन के ख़ज़ाने हों, या इस से भी अधिक उन के पास हों तो वह सब भी दे कर अ़ज़ाब से पीछा छुड़ाने की कोशिश करें गे। उस दिन की उन की सारी दुनियावी बदमाशियाँ उन के सामने हों गी और ऐसे-ऐसे भयानक अ़ज़ाब का स्वाद चखें गे जिन के बारे में वह ख़्याल भी नहीं कर सकते थे। ग़रज़ यह कि जो तौहीद और दीन इस्लाम का मज़ाक़ उड़ाते थे, उस की सज़ा उन को ज़रूर मिले गी और जिस अ़ज़ाब का वह मज़ाक़ उड़ाया करते थे वह उन्ही पर आ पड़े गा (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

२५. यहाँ पर बुरे इन्सान की फ़ितरत का चित्र ख़ीचा गया है। यह लोग जब मुसीबत में गिरिफ़्तार होते हैं तो अल्लाह को याद करने लगते हैं और जब अल्लाह उन की मुसीबत को दूर कर देता है तो उस से छुटकारा और नजात को अपनी अक़्ल और तक़दीर का नतीजा समझते हैं और यह नहीं समझ पाते हैं कि यह तदबीर आख़िर सुझाई किस ने? अगर अल्लाह मौक़े पर यह तदबीर न सुझाता तो कैसे उस आफ़त से बच सकते थे ऐसा न सोचना-समझना इन्सान की इन्तिहाई कमअक़्ली की दलील है। (राज़)

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝ وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ بَلٰى قَدْ جَاۗءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ۭ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝ وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ

५३. तू (ऐ नबी! मेरे बन्दों को मेरी तरफ़ से) कहः ऐ मेरे बन्दो! जिन्हों ने अपने नफ़्सों पर अत्याचार किये हैं तुम अल्लाह की रहमत से निराश न होना, अल्लाह तआ़ला तमाम गुनाह बख़्श देगा (तुम्हारे तौबा करने की देर है) बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है[२६]। ५४. और उसी की तरफ़ झुक जाओ और उसी के फरमाँ-बर्दार बने रहो इस से पहले कि तुम पर अ़ज़ाब आये फिर तुम को किसी प्रकार मदद न पहुंचेगी (इस लिये अभी से डरते रहो[२७]) ५५. और जो अच्छी-अच्छी बातें[२८] तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुयी हैं उन की पैरवी किया करो इस से पूर्व कि तुम्हारी बेख़बरी में तुम पर अचानक अ़ज़ाब आ जाये ५६. (तुम को इसी लिये अवगत किया जाता है) कि (अ़ज़ाब आने पर) कोई शख़्स यह न कहने लगे कि हाए मैं ने अल्लाह के मामले में कुसूर किया (और उस के हुकूक़ अदा न किये) और मख़ौल {हंसी-मज़ाक़} करने वालों में रहता रहा[२९] (सो आज यह उसी की सज़ा है जो मैं भुगत रहा हूँ) ५७. या कोई कहने लगे कि अगर अल्लाह मुझ को हिदायत करता तो मैं परहेज़गार बन जाता ५८. या जब वह अज़ाब देखे तो कहने लगे कि अगर मुझ को दुनिया में वापसी की अनुमति हो तो मैं भी भले मानुसों में हो जाऊँ (इस किताब को उतार कर उन शुब्हात को दूर कराया गया। अब अगर कहे गा तो उत्तर मिलेगा) ५९ हाँ तेरे पास हमारे अहकाम आये थे तो तू ने उस को झुठलाया और तकब्बुर किया और तू मुन्किरों में हो गया। ६० और (सुनो!) क़ियामत के रोज़ तुम देखोगे कि जिन लोगों ने अल्लाह के बारे में झूठ बाँधा होगा उन के मुह काले हों गे। क्या (उन्हों ने समझ रखा था कि) तकब्बुर करने वालों का ठिकाना जहन्नम में न हो गा? (अवश्य होगा) ६१. और अल्लाह परहेज़गारों को कामियाबी के साथ नजात देगा।

....

२६. यह आयत अल्लाह तआ़ला की अथाह रहमत और बेपनाह बख़्शिश व मग़्फ़िरत का एलान करती है और सख़्त इ़लाज से मायूस मरीज़ों के लिये शिफ़ा का हुक्म रखती है। मुश्रिक, मुलह़िद, मुर्तद, यहूदी, नस्रानी, मजूसी, बिदअ़ती, बदमाश, फ़ासिक़, फ़ाजिर ग़रज़ कि कोई भी हो, इस आयत के सुनने के बाद अल्लाह की रहमत से मुकम्मल तौर पर निराश हो जाने और आस तोड़ कर बैठ जाने की उस के लिये कोई वजह नहीं, क्योंकि अल्लाह जिस के चाहे सब गुनाह माफ़ कर सकता है, कोई उस का हाथ नहीं पकड़ सकता, फिर बन्दा निराश क्यों हो? हाँ यह ज़रूर है

➲कि उस ने एक स्थान पर स्पष्ट शब्दों में कह दिया है कि शिर्क का जुर्म बग़ैर तौबा के माफ़ नहीं करे गा। इस का मतलब यह हुआ कि इस आय न० ५३ में "अल्लाह तुम्हारे समस्त गुनाह माफ़ कर देगा" वाले वाक्य को सूरः निसा वाली आयत "शिर्क के अलावा जिस गुनाह को चाहे माफ़ कर दें" से मुक़य्यद(सीमित) माना जाये। इस क़ैद को लगाने से यह मतलब नहीं निकलता कि बग़ैर तौबा के अल्लाह तआला कोई छोटा-बड़ा गुनाह माफ़ ही नहीं करता और न यह मतलब है कि किसी गुनाह के लिये तौबा की ज़रूरत ही नहीं। बग़ैर तौबा के भी गुनाह माफ़ हो सकते हैं मगर शर्त है अल्लाह की मर्ज़ी की। अल्लाह ने अपनी मर्ज़ी सूरः निसा वाली आयत में बतला दी है कि कुफ़्र व शिर्क नही माफ़ करेगा। चुनान्चे इस आयत का शाने नुज़ूल भी इस पर दलील है जैसा कि अगली आयत से मालूम हो गा। माफ़ी की उम्मीद दिला कर यहाँ से तौबा की तरफ़ तवज्जुह दिलाई। यानी अपने गुनाहों पर शर्मिन्दा हो कर कुफ़्र की राह छोड़ दो और अपने आप को उसी के हवाले कर दो और उस के आदेश के सामने इख़्लास से गर्दन झुका कर समझलो कि नजात केवल उस की मेहरबानी से ही संभव है। (मवाहिब)

२७. अल्लाह की इताअ़त और उस की तरफ़ झुकने की तौफ़ीक़ अगर अन्तिम समय में भी नसीब हो जाये तो उम्र भर की तमाम ख़ताओं के लिये यह माफ़ी का हुक्म रखती है। अल्लाह पाक की रहमत उस के गुस्सा पर हमेशा ग़ालिब है (राज़)

२८. 'अच्छी-अच्छी बातों' से मुराद कुरआन मजीद है। यानी कुरआन के अहकाम पर अ़मल करके, अज़ाब आने से पहले अपने भविष्य की रोक-थाम कर लो, वर्ना अ़ज़ाब सामने आ जाने के बाद कुछ भी रोक-थाम न हो सके गा, और न कोई तदबीर काम आ सके गी। अ़ज़ाब अचानक इस प्रकर आ धमकेगा कि ख़बर भी न हो गी कि कहाँ से आया।

२९. यानी नफ़्स की ख़ाहिश, रस्म व रिवाज की तक़लीद और दुनियाँ के मज़ों में फंस कर अल्लाह को कुछ समझा ही नहीं, बल्कि उस के दीन, पैगंबर और कुरआन का मज़ाक़ उड़ाता रहा और उन बातों को कोई अहमिय्यत ही न दी। अफ़सोस! अल्लाह को पहचानने और उस का हक़ मानने में बड़ी कोताही की। यह इसी का नतीजा है कि आज मैं यह बुरा दिन देख रहा हूँ (यह बात काफ़िर हश्र के मैदान में कहें गे) और जब अफ़सोस और पछतावे से भी काम न चले गा तो अपने दिल को तसल्ली देने के लिये यह बहाना पेश करें गे कि अल्लाह ने मुझे हिदायत ही नही दीं इस लिये यह बुरे दिन देखने पड़ रहे हैं। अगर वह हिदायत देता तो मैं भी मुत्तक़ी और परहेज़गारों के साथ आज होता (इस का जवाब आगे की आयत न० ५९ में स्वँय दें गे)

यह भी संभव है कि उन का यह कलाम एतराज़ और विरोध के तौर पर न हो, बल्कि अपने अफ़सोस और नाउम्मीदी (निराश) को ज़ाहिर करने के लिये हो, तो फिर मतलब यह हो गा कि मैं अपनी शरारत और नालायक़ी की वजह से इस लायक़ न था कि अल्लाह मुझ को राह दिखा कर हिदायत करता। अगर मुझ में इस बात की योग्यता होती तो अवश्य ही अल्लाह मेरी राहनुमाई फ़रमाता और मैं भी आज मुत्तक़ियों की सफ़ में होता। जब यह सारी बातें बेकार साबित हों गी और दोज़ख़ का अ़ज़ाब सामने आ जाये गा उस समय मारे घबराहट के कहे गा कि अगर किसी प्रकार मुझे पुनः दुनिया में जाने का मौक़ा मिल जाता तो देखते कि मैं किस प्रकार नेक बन कर आता। लेकिन इस की सारी बातें बनावटी और झूठ हों गी। अल्लाह कहे गा कि मैंने तुझे राह दिखाई थी और इस के लिये मैं ने संदेष्टा भेजे थे, मगर तू ने एक न सुनी और गुरूर और तकब्बुर के नाते झुठलाता रहा, तेरी शेख़ी हिदायत की राह में रुकावट बनी। मुझे तेरी फ़ितरत (आरंभ) ही से मालूम है इस लिये तुझे हज़ार बार भी दुनिया में लौटाया जाये, फिर भी तू अपनी हरकतों से बाज़ न आयेगा (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

न उन को तकलीफ़ पहुंचे गी न वह ग़मगीन हों गे। ६२. अल्लाह ही सब चीज़ों का ख़ालिक़ {पैदा करने वाला} और हर चीज़ की देख➲

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٣﴾ قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٥﴾ بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِآْيْءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ

भाल करने वाला है[३०] । ६३. आसमानों और ज़मीनों की कुंजियाँ[३१] उसी के हाथ में हैं[३२] और जो लोग अल्लाह के अहकाम का इन्कार करते हैं वही लोग घाटे में हैं । ६४. (पस) तू (ऐ नबी! बुलन्द आवाज़ से) कह! ऐ (अ़रब के ना समझ) ना दानों! क्या तुम मुझे हुक्म देते हो कि अल्लाह के अ़लावा दूसरों की अ़िबाबत करूँ[३३]? ६५. हालाँकि तेरी तरफ़ और तुझ से पहले लोगों की तरफ़ वह्यि द्वारा आदेश भेजा जा चुका है कि अगर तुम (अल्लाह को छोड़ कर दूसरे की अ़िबादत कर के) शिर्क करो गे तो तुम्हारे आमाल बर्बाद हो जायें गे और तुम नुक़्सान उठाने वालों में हो जाओगे[३४] ।६६.बल्कि अल्लाह ही की अ़िबादत करो और तुम शुक्र गुज़ारों में रहो । ६७. और अल्लाह की शान के मुताबिक़ उस की क़द्र नहीं करते हालाँकि क़ियामत के रोज़ सारी ज़मीनउसकीमुट्ठी में हो गी और सारे आसमान उस के दाहिने हाथ में लिपटे हों गे। वह पाक है[३५] और उन लोगों के शिर्किया कामों से बहुत बुलन्द है[३६] । ६८. और सूर में फूंका जाये गा तो आकाश और ज़मीन वाले सब लोग बेहोश हो जायें गे मगर जिस को अल्लाह सुरक्षित रखना चाहे गा[३७] (वह बे होश न होगा) फिर उस में एक मर्तबा और फूंका जाये गा तो वह सब लोग खड़े देखते हों गे। ६९. ओर ज़मीन अपने पर्वरदिगार के नूर से रोशन हो जाये गी और अमलों {कर्मों} का दफ़्तर रखा जाये गा और अन्बिया और शहीद सब लाये जायें गे और उन में सच्चा फ़ैसला किया जाये गा

....

३०. वह जिस प्रकार चाहे उस में फेर-बदल, उलट-पलट और कमी-बेशी कर सकता है। इस आयत से अहले हदीस का मज़हब साबित होता है कि बुराई-भलाई सब का ख़ालिक़ अल्लाह ही है (वहीदी)

३१. मौलानाअमृतसरी मर्हूम ने यहाँ 'मक़ालीद' का मुरादी तर्जुमा "इख़्तियारात" किया है, लेकिन हज़रत शाह वलिय्युल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० ने अपने फ़ार्सी तर्जुमा में और उन के दोनों साहब ज़ादों (सुपुत्रों) ने अपने उर्दू तर्जुमा में तर्जुमा "कुंजियाँ" ही किया है। मैं ने शुब्हा को दूर करते हुय कुंजिया ही लिख दिया है। (राज़)

३२. यह आसमान के ख़ज़ाने वर्षा हैं और ज़मीन के ख़ज़ाने पैदावार। कुछ उलमा का कहना है कि ख़ज़ानों से मुराद यह कलिमे हैं "सुब्हा-नल्लाहि वबिहम्दिही, वल्-हम्दु लिल्लाहि वल्लाहु अक्-बर, वला इला-ह इल्लल्लाहु, वस्-तग़फ़िरूल्ला-ह वला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि"। इस बात की ताईद उस हदीस से भी होती है जिस में हज़रत उस्मान रज़ि० ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा कि आसमान व ज़मीन के ख़ज़ाने क्या हैं? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम ने तो ऐसी बात पूछ ली जो तुझ से पहले किसी ने नहीं पूछी। वह ख़ज़ाने यह हैं- "ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्-बरू वसुब्हा-नल्लाहि वल्-हम्दु लिल्लाहि

➲वस्-तग़फ़िरूल्ला-हल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-वल् अव्वलु वल् आख़िरू वज़्ज़ाहिरू वल्बातिनु युह्यी वयुमीतु वहु-व हय्युन् ला यमूतु बि-यदिहिल् ख़ैरू वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरुन'' (वहीदी)

३३. कुरैश के काफ़िरों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को यह सुझाव दिया कि अगर तुम भी बुतों की पूजा में शरीक हो जाओ तो हम भी तुम्हारे अल्लाह की इबादत में शरीक हो जायें गे, तुम्हें धन- दौलत से मालामाल कर दें गे ओर जिस किसी सुन्दर महिला से चाहो गे निकाह कर दें गे, उस समय यह आयत नाज़िल हुयी (वहीदी)

३४. इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को संबोधित कर के फ़रमाया कि शिर्क इतना बड़ा पाप है कि बिल्फ़र्ज़ (उदाहरणार्थ) अगर आप नें शिर्क किया तो बिला किसी लिहाज़ के आप का नाम भी ख़सारा पाने वालों में लिख दिया जाये गा और आप के भी समस्त आ़माल अकारत हो जायें गे। अफ़सोस है उन नाम के मुसलमानों पर जो दिन-रात शिर्क करते-कराते हैं, क़ब्रों की पूजा करते, उन पर चढ़ावे चढ़ाते और उन से मन्नतें मांगते हैं, और फिर भी इन कामों को जायज़ जानते हैं। अगर यह सब काम जायज़ हैं तो फिर शिर्क किस बला का नाम है? आज इस्लाम ऐसे ही दोस्तों के हाथों नालाँ (बदनाम) है- इस घर को आग लग गई, घर के चराग़ से।

३५. अल्लाह तआ़ला के फ़रमान के मुताबिक़ दायाँ हाथ कहिये, बायाँ न कहिये (मुवज़्ज़िहु कुरआन)

३६. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि से सहीह सनदों के साथ रिवायत है कि ज़मीनें सात हैं, जैसा कि ऊपर गुज़र चुका है। (पाराः२८, सूरः तलाक़,आयत १२ में भी बयान है "अल्लाह वह है जिसने सात आकाश बनाये और उसी प्रकार ज़मीने भी......" यानी सात आकाश की तरह सात ज़मीनें भी-ख़ालिद) एक अन्य सहीह हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जो कोई बालिश्त भर ज़मीन ज़ुल्म से छीन लेगा तो क़ियामत के दिन उसे सातों ज़मीनों का तौक़ पहनाया जाये गा"। बुख़ारी, मुस्लिम में हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि यहूदियों का एक आ़लिम नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आया और कहने लगा: ऐ मुहम्मद! (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हमारी किताबों में तो लिखा है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला आसमान को एक उंगली पर और बाक़ी तमाम मख़्लूक़ को एक उंगली पर उठा कर उन सब को हिलाये गा और फ़रमाये गा: मैं बादशाह हूँ। यह सुन कर आप हँसे और आप के दाँत दिखाई पड़ने लगे। आप ने उस यहूदी आ़लिम की बात को सच बताया, फिर आप ने यह आयत पढ़ी। बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: " अल्लाह क़ियामत के दिन ज़मीन को मुट्ठी में ले लेगा और आकाश को दायें हाथ में लपेट लेगा, फरमाये गा कि मैं बादशाह हूँ, अब ज़मीन के बादशाह कहाँ गये"?। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० की एक रिवायत में है: अल्लाह फ़रमाये गा: "अब कहाँ हैं ज़बर्दस्त बादशाह? कहाँ हैं तकब्बुर करने वाले ज़मीन के बादशाह"? इन आयतों और सहीह अहादीस की रौशनी में अहले हदीस अल्लाह के लिये उंगलियाँ और मुट्ठियाँ सब तस्लीम करते है, उन पर ईमान लाते हैं और उन की कैफ़ियत, बनावट को अल्लाह के हवाले करते हैं और यही तरीक़ा तमाम इमामों का भी है। लेकिन जहमिय्या फ़िर्क़ा इन बातों को नही मानता और इन आयतों का साफ़ इन्कार करता है। (वहीदी)

नोटः- जहमिय्या फ़िर्क़ा की बुनियाद जहम बिन सफ़वान नामक एक शख़्स ने डाली। इस के नाम की मुनासिबत से इस के बनाये हुये फ़िर्क़ा का नाम भी पड़ा। बनी उमय्या के शासनकाल में बिन अहवज़ मख़ानी ने इसे मौत के घाट उतार दिया क्योंकि इस ने तुरमुज़ के अ़लाक़ा में बड़ी गुमराहियाँ फैला रहा था। इस का अ़क़ीदा था कि कुरआन मख़्लूक है, अल्लाह ने हज़रत मूसा से कलाम नही किया, वह देखा नही जा सकता, उस के न अर्श है और न कुर्सी, इस लिये अर्श पर बैठना बेमाना है, अल्लाह के हाथ, पाँव, आँख, कान, नाक आदि कुछ नही है। इन के अ़लावा और बहुत से ख़ुराफ़ात फैला रखा था। ७२. फ़िर्कों की विस्तार से जानकारी के लिये अ़ल्लामा अ़ब्दुल करीम शहरिस्तानी की प्रसिद्ध पुस्तक "अल्मिलल् वन्नहल" और शैख़ अ़ब्दुल कादिर जीलानी रह० की "गुन-यतुत्तालिबीन" का अवश्य➲

➲मुताला फ़रमायें-ख़ालिद सिद्दीक़ी

३७. बयान किया गया है कि हज़रत जिब्रील, अ़िज़राईल (मलकुल मौत) रिज़्वान, अर्श को उठाने वाले, जन्नत के दारोग़ा और हूरें, यह सब बेहोश न हों गे। और कुछ उलमा ने कहा कि यह अल्लाह के नज़दीकी फ़रिश्ते हैं जो अगर्चे बेहोश न हों गे, लेकिन इस के पशचात् वह भी मर जायें गे, सब से आख़िर में मलकुल मौत मरें गे और अल्लाह की ज़ात के अ़लावा कोई बाक़ी न रहे गा। एक हदीस के मुताबिक़ फ़िर दूसरा सूर फूंकने पर सब से पहले मैं होश में आऊँ गा। (यानी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) और देखूँ गा कि हज़रत मूसा अर्श का एक पाया पकड़े खड़े हैं मुझे नहीं मालूम कि वह मुझ से पहले होश में लाये जाऐंगे, या वह उन लोगों में से हों गे जो बेहोश ही न हों गे। 'फिर उस में एक मर्तबा और फूंका जायेगा। आयत ६८ से मालूम हुआ कि सूर दो ही मर्तबा फूंका जाये गा। पहली बार में घबराहट हो गी, दूसरी बार में मौत होगी और तीसरी बार में सब जीवित हो उठें गे।

'सूर' यह है क्या? अल्लाह की बिगुल है। जैसे बिगुल बजा कर तमाम सिपाहियों को जमा किया जाता है। एक बार सूर फूंका जाये गा दुनिया फ़ना होने के लिये, दूसरी मर्तबा ज़िन्दा होने के लिये, तीसरी बार हश्र के बाद बेहोशी के लिये और चौथी बार ख़बरदार होने के लिये। इस के बाद अल्लाह के सामने हाज़िर हों गे।(मुवज़्ज़िहुल क़ुरआन)

بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٩﴾ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ
وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٧٠﴾ وَسِيقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ
جَهَنَّمَ زُمَرًا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا فُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ
لَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ
آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا قَالُوا
بَلَىٰ وَلَٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٧١﴾
قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا فَبِئْسَ
مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٢﴾ وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى
الْجَنَّةِ زُمَرًا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ
لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ ﴿٧٣﴾
وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَأَوْرَثَنَا
الْأَرْضَ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ فَنِعْمَ أَجْرُ
الْعَامِلِينَ ﴿٧٤﴾ وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِّينَ مِنْ حَوْلِ

और उन पर किसी प्रकार का अत्याचार न होगा ७०. और हर एक नफ़्स को उस के किये का पूरा बदला दिया जाये गा जो कुछ वह करते हैं अल्लाह को खूब मालूम है। ७१. और जो लोग मुन्किर हैं वह जहन्नम की तरफ़ मुख़्तलिफ़ टोलियों की सूरत में लाये जायें गे, यहाँ तक कि जब उस के पास आयें गे उस के दर्वाज़े खोले जायें गे और दोज़ख़ के दर्बान उन से कहें गे कि क्या तुम्हारे पास तुम में से रसूल न आये थे? जो तुम्हारे पर्वरदिगार के हुक्म तुम को सुनाते और इस दिन की मुलाक़ात से तुम को डराते? वह कहें गे कि हाँ, बेशक! मगर अ़ज़ाब का हुक्म इनकारियों पर लग गया। ७२. (पस उन से) कहा जाये गा कि जहन्नम के दर्वाज़ों में दाख़िल हो जाओ, हमेशा उसी में तुम को रहना होगा जो मुतकब्बिरों {घमंड़ियों} के लिये बहुत बुरी जगह है[३८] ७३. और जो लोग परहेज़गार हैं वह जन्नत की तरफ़ मुख़्तलिफ़ जमाअ़तों की शक्ल में ले जाये जायें गे। यहाँ तक कि जब उस के पास आयें गे और मुहाफ़िज़ {सुरक्षा कर्मी} उन को सलामुन् अ़लैकुम मरहबा कहें गे बस हमेशा के लिये दाख़िल हो जाइये[३९] ७४. और वह कहें गे: सब तारीफ़ अल्लाह के लिये➲

है जिस ने हम से अपना वादा सच्चा किया और हम को इस पाक ज़मीन का मालिक बनाया, हम इस जन्नत में जहाँ चाहते हैं, रहते हैं,पस {निक} काम करने वालों का का क्या ही अच्छा बदला है। ७५. तू देखे गा कि फ़रिश्ते अपने पर्वरदिगार की हम्द के गीत गाते हुये अर्श के इर्द गिर्द घेरा डाले हों गे

....

३८. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिस समय दोज़ख़ वालों को दोज़ख़ की तरफ़ हाँका जाये गा तो दोज़ख़ उन के सामने आये गी और उस में एक लपट ऐसी तेज़ और सख़्त निकल कर उन को लगे गी, जिस से तमाम गोश्त हड्डियों से छूट कर एड़ियों पर गिर पड़े गा"। एक और हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: " जो शख़्स तीन मर्तबा जन्नत की दुआ़ अल्लाह से माँगता है तो जन्नत भी कहती है: ऐ अल्लाह! उस को जन्नत में दाख़िल कर दे। और जो कोई तीन मर्तबा दोज़ख़ से बचने की दुआ़ करता है तो दोज़ख़ भी कहती है: ऐ अल्लाह! इस को दोज़ख़ से बचा ले" (हमीदी)

३९. यानी ईमान और तक़्वा के चूंकि मुख़्तलिफ़ (अलग-अलग) दर्जे हैं, इस लिये हर दर्जा के मोमिनों और मुत्तक़ियो की जमाअ़त अलग हो गी और उन सब जमाअ़तों को बड़ा शौक़ दिला कर जल्दी-जल्दी जन्नत की तरफ़ रवाना किया जाये गा। यानी जिस प्रकार मेहमानों के लिये उन के आगमन से पूर्व ही मेहमानख़ाना खुला रखा जाता है (इसी प्रकार जन्नत के दर्वाज़े भी खुले रखे जायें गे) जन्नती लोग वहाँ पहुंच कर जन्नत के दर्वाज़े खुले पायें गे (सूरः साद, रूकूअ़४) और अल्लाह के फ़रिश्ते बड़ी इज़्ज़त और एहतराम के साथ सलामती की दुआओं से उन का स्वागत करें गे और जन्नत में रहने की बशारत सुनायें गे।

और उन में सच्चा फ़ैसला किया जाये गा और कहा जाये गा कि सब तारीफ़ सारे जहान के रब के लिये है[४०]

....

४०. यानी अल्लाह तआ़ला जब हिसाब-किताब के लिये नाज़िल हो गा तो उस समय फ़रिश्ते अ़र्श के इर्द-गिर्द घेरा बाँधे अपने रब की हम्द व सना करते हों गे और तमाम बन्दों में ठीक-ठीक इन्साफ़ का फ़ैसला किया जाये गा। जिस पर हर तरफ़ से जोश के साथ "अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन" का नारा बुलन्द हो गा, यानी "सारी तारीफ़ें उस अल्लाह के लिये हैं जो सारे जहानों का पर्वरदिगार है (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)

सूरः मुअ्मिन्—(40)

सूरः मुअ्मिन मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[१]। इस में ८५ आयतें और ९ रूकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

१. हामीम[२] २. यह किताब अल्लाह, ग़ालिब और बड़े इ़ल्म वाले, की तरफ़ से उतरी है।

ذِي الطَّوْلِ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ إِلَيْهِ الْمَصِيرُ ﴿٣﴾ مَا يُجَادِلُ فِي آيَاتِ اللَّهِ إِلَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ﴿٤﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَالْأَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ ۖ وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ بِرَسُولِهِمْ لِيَأْخُذُوهُ ۖ وَجَادَلُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذْتُهُمْ ۖ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٥﴾ وَكَذَٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ﴿٦﴾ الَّذِينَ يَحْمِلُونَ

३. जो गुनाह बख़्शने वाला और तौबा कुबूल करने वाला, सख़्त अ़ज़ाब वाला और बड़ी सकत (सामर्थ्य) वाला है। उस के अ़लावा कोई माबूद नहीं, उसी की तरफ़ लौटना है। ४. जो लोग (हर एक सच्ची बात का) इन्कार करते हैं वही अल्लाह की आयात में झगड़ा करते हैं पस तू उन लोगों के इधर-उधर मुल्क में फिरने से धोका मत खा। ५. इस से पूर्व नूह की क़ौम और उन के बाद दूसरी क़ौमों ने {हमारी आयतों को} झुठलाया था और हर एक क़ौम ने अपने रसूल को गिरफ़्तार करने का इरादा किया था और बेहूदा तरीक़े से बहस करते रहे ताकि उस से सच्चाई को दबा दें फिर मैं ने उन को पकड़ा पस मेरा अ़ज़ाब क्या हुआ?[१] ६. इसी प्रकार पर्वरदिगार का हुक्म उन लोगों पर साबित हो चुका है जो काफ़िर हैं कि वह जहन्नमी हैं ७. जो लोग अ़र्श को उठाये हुये हैं

....

१. इस सूरः का नाम "ग़ाफ़िर" भी है। इमाम कुर्तुबी का फ़रमान है कि यह सूरः मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इमाम अ़ता, जाबिर और अ़िक्रमा का भी यही फ़रमाना है। इमाम हसन का कहना है कि आयत न०५५ में सुब्ह-शाम नमाज़ पढ़ने का ज़िक्र है और नमाज़ मदीना शरीफ़ ही में फ़र्ज़ हुयी है। इमाम क़तादा फ़रमाते हैं कि आयत न० ५६,५७, मदीना शरीफ़ में उतरीं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि० का कहना है कि यह सूरः मक्का में नाज़िल हुयी। हज़रत समुरा बिन् जुन्दुब रज़ि० कहते हैं कि कुरआन की वह तमाम सूरतें जिन का आरंभ "हामीम्" से होता है, मक्का में नाज़िल हुयी हैं। और यही बात दुरुस्त भी है। इमाम बैहक़ी रिवायत करते हैं कि पूरे कुरआन में "हामीम" के शब्द सात हैं और जहन्नम के दरवाज़े भी सात हैं। हर दर्वाज़े पर एक हामीम लटकी होगी और कहे गी: ऐ अल्लाह! जिस ने मुझे पढ़ा और मुझ पर ईमान लाया, उस को इस दर्वाज़े से दाख़िल न करना।

इस सूरः का अल्लाह की तरफ़ से उतारा जाना बयान करने के बाद अल्लाह तअ़ला की चन्द ख़ूबियाँ बयान की गयी हैं, ताकि पढ़ने वालों पर यह स्पष्ट हो जाये कि यह बड़े ज़बर्दस्त अ़िल्म वाले का ऐसा कलाम है कि जिस में बन्दों की तमाम मस्लिहतें (भलाइयाँ) रखी गयी हैं। फिर आगे फ़रमा दिया कि वह न केवल अ़िल्म वाला है बल्कि बड़ा ज़ंबर्दस्त भी है। जो न माने गा उस को सज़ा भी दे सकता है और नेक अ़मल पर इनाम व सवाब भी अ़ता कर सकता है। इस के बाद पुन: लौट कर उस के पास फिर जाना है। यहाँ पर अल्लाह की चन्द सिफ़तें बयान की गयी हैं। वह अ़ज़ीज़ (ज़बर्दस्त) है। २. वह अ़लीम (जानने वाला) है, तमाम उलूम और हिक्मतें उस के सामने हाज़िर हैं। ३. ग़ाफ़िर (गुनाहों को माफ़ करने वाला) है इताअ़त और फ़रमाँबर्रदारी करने वालों को बग़ैर तौबा के भी माफ़ कर देता है। अहले सुन्नत का यही अ़क़ीदा है। ४. वह तौबा कुबूल करने वाला है। अन्त में सभी को उस की तरफ़ हाज़िर होना है। मर कर भी उस की तरफ़ हाजत बाक़ी रहती है। ऐसी किताब और उसे नाज़िल करने वाले का जो इन्कार करते हैं, वह काफ़िर हैं।

जो लोग दुनिया भर की यात्रायें करते हैं और यह मक्का वाले जो मुल्क शाम तक तिजारत के लिये आते-जाते हैं, उन से ऐ रसूल! आप कह दीजिये कि वह हमारे क़ाबू से बाहर नहीं हैं, उन की जब चाहें गर्दन नाप सकते हैं। इन से पहले हज़रत नूह की क़ौम और इस के अ़लावा और दूसरी क़ौमों ने भी अपने-अपने नबियों के साथ दुर्व्यवहार

➲किया, इस लिये वह मिटा दी गयीं यही हाल इन का भी होना है (हक़्क़ानी-६/१९६)

'हामीम' शब्द "अलिफ़ लाम्मीम" की तरह अल्लाह पाक का एक राज़ है। कुछ उलमा का कहना है कि यह अल्लाह का एक नाम हैं और कुछ अलमा ने 'हामीम' का अर्थ "जो होना था वह हो चुका" बताया है।

२. 'हामीम' शब्द का मुरादी माना मौलाना अमृतसरी मर्हूम ने " अल्लाह बड़ा रहम करने वाला, बड़ा मेहरबान है" किया है। मगर सहीह बात यह है कि यह शब्द हुरूफ़ मुकत्तआत में से है, जिन का अर्थ अल्लाह ही बेहतर जानता है। (राज़)

३. शाने-नुज़ूलः- तफ़्सीर सुद्दी और तफ़्सीर इब्ने अबी हातिम में अबू मालिक से रिवायत है कि हारिस बिन क़ैस सहमी वग़ैरह काफ़िर लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कजबहसी करते और कुरआन मजीद के बारे में बेअदबी के शब्द मुँह से निकाला करते थे, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। इन आयतों में अल्लाह ने यह बताया कि यह लोग मुख़ालिफ़त करने के बावजूद जो अभी तक बचे हुये हैं, इस की वजह यह नही हैं कि हम उन का कुछ नहीं बिगाड़ पा रहे हैं, बल्कि वजह यह है कि हमारे यहाँ हर काम का एक समय मुक़र्रर है। उन पर अज़ाब लाना तो साबित हो चुका है, बस उस समय के आने का इन्तिज़ार है। हज़रत नूह से ले कर आज तक की क़ौमों का जो अन्जाम हुआ वही इन का भी हो गा। अल्लाह के कलाम में एक झगड़ा इन काफ़िरों का तो यह था कि उस को अल्लाह का कलाम मानते ही नहीं थे, ज़ाहिर है कि यह खुला कुफ़ है। लेकिन अल्लाह का कलाम मान कर उस के तर्जुभा और तफ़सीर में इस प्रकार गड़बड़ी करना जिस से इख़्तिलाफ़ को हवा मिले और शिर्क व बिद्अ़त और खुराफ़ात को फलने-फूलने और फैलने का मौक़ा मिले, यह भी इस आयत के तहत शामिल है और इस की भी सज़ा अ़ज़ाब है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक रोज़ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दो सहाबा को किसी आयत को ले कर इख़्तिलाफ़ करते और झगड़ते देखा तो आप ने नाराज़ हो कर फ़रमाया: पिछली उम्मतें भी इसी प्रकार के इख़्तिलाफ़ के कारण ग़ारत हुयीं" (मुस्लिम) इमाम नौवी रह० इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि किसी मस्अले में इख़्तिलाफ़ की वजह अगर हक़ बात मालूम करना और किसी सहीह नतीजे तक पहुंचना नियत हो, तो शरीअ़त में इस की इजाज़त है। लेकिन अगर निय्यत यह हो कि लोगों को शक व शुब्हा में डाल कर इख़्तिलाफ़ के बीज बोए जायें तो यह सरासर हराम है।

आगे की आयतों में उन नेक लोगों का ज़िक्र है जो अल्लाह और उस के रसूल के अहकाम में किसी प्रकार का इख़्तिलाफ़ नहीं करते हैं, बल्कि उन पर राज़ी-खुशी से अ़मल करते हैं, तो ऐसे नेक लोगों का मर्तबा यह है कि अल्लाह का अ़र्श उठाने वाले, अ़र्श के पास हाज़िर रहने वाले फ़रिश्ते उन के लिये दिन-रात दुआयें करते रहते हैं। एक अन्य रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "एक इन्सान, दूसरे इन्सान के हक़ में अगर पीठ के पीछे दुआ़ करे तो उस की दुआ़ को अल्लाह कुबूल फ़रमाता है"। (मुस्लिम, अबूदावूद, तिर्मिज़ी) अब यह ज़ाहिर बात है कि फ़रिश्तों ने पीठ पीछे दुआ़ की है तो यह दुआ कितनी कुबूल हो गी, इस में किसी शक व शुब्हे की कोई गुंजाईश नहीं (अहसनुत्तफ़ासीर) किसी मुसलमान मर्द- औरत के लिये पीठ पीछे दुआ़ की जाये तो उस पर फ़रिश्ते आमीन कहते हैं और दुआ भी करते हैं कि अल्लाह तुम्हें भी वह दे जो तुम अपने भाई के लिये माँग रहे हो। इस हदीस की रोशनी में इस को पढ़ने वालों से अनुरोध है कि वह तर्जुमा करने वाले, इस को तर्तीब देने वाले (हिन्दी अनुवादक को भी) और तमाम मुसलमानों को दुआओं में याद रखें, विशेष कर मौलाना अमृतसरी मर्हूम को तो अवश्य याद रखें, इस लिये कि वह इस के हक़दार हैं (राज़)

और जो उस के ईर्द-गिर्द हैं वह अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह पढ़ते हैं और उस पर ईमान रखते हैं और जो लोग अल्लाह पर ईमान➲

رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝ رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ِۨالَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ؕ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ ۝ قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ۝ ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗۤ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ۚ وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ؕ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ۝ هُوَ

लाये हुये हैं उन के लिये (इन शब्दों में) बख़्शिश माँगते हैं 'ऐ हमारे मौला! सब चीजों को तू ने अपनी रहमत और इ़ल्म में घेर रखा है, पस जिन लोगों ने तौबा की और तेरी राह पर चले हैं तू उन को बख़्श दे और उन को जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा। ८. हमारे मौला! उन को हमेशा की जन्नत में दाख़िल फ़रमा जिस का तू ने उन से वादा किया है और उन के बाप-दादा और उन की बीवियाँ और उन की औलाद में से जो नेक हों उन सब को भी बख़्श दे। बेशक तू बड़ा ग़ालिब और बड़ी हिक्मत वाला है। ९. और उन को बुरे अ़मलों की सज़ा से बचा। जिस को तू उस रोज़ बुरे आमाल की सज़ा से बचा दे गा तो तू उस पर बड़ा रहम फ़रमाये गा। और यही बड़ी कामियाबी है। १०. जो लोग अल्लाह के हुक्मों का इन्कार करते हैं उन को (इस विषय की) आवाज़ दी जाये गी कि जिस समय तुम को ईमान की तरफ़ बुलाया जाता था और तुम लोग इन्कार किया करते थे, तुम्हारी इस नाराज़गी से (आज) अल्लाह की नाराज़गी तुम लोगों पर बहुत अधिक है। ११. वह (इस के उत्तर में) कहें गे कि ऐ हमारे पर्वरदिगार! तू ने हम को दो मर्तबा मुर्दा किया और दो ही मर्तबा हम को ज़िन्दा किया पस हम अपने गुनाहों का इक़रार करते हैं, क्या अब निकलने के लिये कोई रास्ता है? १२. यह अ़ज़ाब तो तुम को इस लिये है कि जब अल्लाह वाहिद {अकेले} को पुकारा जाता था तो तुम लोग इंन्कार करते थे और जब उस के साथ (दूसरों को) शरीक किया जाता था तो तुम प्रसन्न होते थे[४]। पस आज केवल आ़लीशान अल्लाह बुर्ज़ुग का हुक्म है।

....

४. यानी जहाँ बुतपरस्ती, क़ब्रपरस्ती वग़ैरह होती है; वहां तो खुशी से शामिल होते हैं, लेकिन जहाँ तौहीद की तालीम दी जाती हो वहाँ से भागते हैं और तौहीद वालों को वहाबी 'दीन का दुश्मन' बेदीन और काफ़िर कहते हैं। (मवाहिब) 'जब अल्लाह वाहिद को पुकारा जाता है' इस आयत में ख़ालिस, साफ़-सुथरी, तौहीद की तरफ़ इशारा है। इस में इस बात की तरफ़ भी इशारा है कि मुश्रिकों को तौहीद कभी पसन्द नही आती। जहाँ तौहीद का ज़िक्र हो रहा हो वहाँ से दूर भागें गे और तौहीद को औलिया, पीरों और मज़ारों और देवी-देवताओं की तौहीद समझें.गे। हालाँकि उन का यह ख़याल सरासर बातिल है।

'उस के साथ शरीक किया जाये तो खुशी से झूम जाते हैं, इस आयत में बताया गया कि अगर अल्लाह के साथ ज़रा सी भी बुतों या पीरों-फ़क़ीरों की पूजा गवारा कर ली जाये तो इस शक्ल में अल्लाह पर ईमान लाने के लिये तय्यार हैं। कुरआन और हदीस की रोशनी में अल्लाह पाक शिर्क से इस क़दर पाक है कि अगर उस की

➲अ़िबादत भर पूर की जाये, लेकिन ज़रा सा शिर्क को भी शामिल कर लिया जाये, तो अल्लाह उस अपनी अ़िबादत के हिस्से को भी कुबूल नहीं फ़रमाता। (राज़)

ٱلَّذِى يُرِيكُمْ ءَايَٰتِهِۦ وَيُنَزِّلُ لَكُم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ رِزْقًا ۚ وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَن يُنِيبُ ﴿١٣﴾ فَٱدْعُوا۟ ٱللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ ٱلْكَٰفِرُونَ ﴿١٤﴾ رَفِيعُ ٱلدَّرَجَٰتِ ذُو ٱلْعَرْشِ يُلْقِى ٱلرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِۦ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦ لِيُنذِرَ يَوْمَ ٱلتَّلَاقِ ﴿١٥﴾ يَوْمَ هُم بَٰرِزُونَ ۖ لَا يَخْفَىٰ عَلَى ٱللَّهِ مِنْهُمْ شَىْءٌ ۚ لِّمَنِ ٱلْمُلْكُ ٱلْيَوْمَ ۖ لِلَّهِ ٱلْوَٰحِدِ ٱلْقَهَّارِ ﴿١٦﴾ ٱلْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ ۚ لَا ظُلْمَ ٱلْيَوْمَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ سَرِيعُ ٱلْحِسَابِ ﴿١٧﴾ وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ ٱلْءَازِفَةِ إِذِ ٱلْقُلُوبُ لَدَى ٱلْحَنَاجِرِ كَٰظِمِينَ ۚ مَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ﴿١٨﴾ يَعْلَمُ خَآئِنَةَ ٱلْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِى ٱلصُّدُورُ ﴿١٩﴾ وَٱللَّهُ يَقْضِى بِٱلْحَقِّ ۖ وَٱلَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِۦ لَا يَقْضُونَ بِشَىْءٍ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْبَصِيرُ ﴿٢٠﴾

१३. वही ज़ात पाक है तो तुम को अपनी निशानियाँ दिखाता है और आसमान से तुम्हारे लिये रोज़ी उतारता है[५]। और वही लोग नसीहत पाते हैं जो अल्लाह की तरफ़ झुकते हैं। १४. पस तुम (अपनी ज़रूरतों में) अल्लाह ही से ख़ालिस दुआ़ माँगा करो अगर्चे (तुम्हारे ऐसा करने को) काफ़िर लोग बुरा जानें[६]। १५. जो बड़े बुलन्द दर्जे का, तख़्त का अस्ली मालिक है। अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है अपने हुक्म से वह्यि भेजता है, ताकि वह (बन्दा) अल्लाह की मुलाक़ात के दिन (यानी क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब) से लोगों को डराये। १६. जिस रोज वह ख़ड़े हों गे उन में से कोई एक भी छुपा न हो गा। उस दिन हुकूमत किस की होगी? (सिवाए इस बात के कुछ जवाब है? कि) अकेले ज़बर्दस्त अल्लाह की हो गी १७. उस रोज़ हर नफ़्स को उस की कमाई का बदला दिया जाये गा उस दिन ज़ुल्म न हो गा। अल्लाह तआ़ला बहुत जल्द हिसाब करने वाला है। १८. और उन (मुश्रिकों) को (उस) क़रीब आने वाली मुसीबत के दिन से डरा जब (मारे ख़ौफ़ के) मख़्लूक़ के दिल मुँह को आये हों गे और वह ग़म व गुस्सा में भरे हों गे और उस रोज़ ज़ालिमों का कोई मददगार न हो गा और न कोई सिफ़ारिशी होगा। (जो उन की तकलीफ़ को दूर करवा सके) १९. अल्लाह उन की आँखों की ख़ियानत जानता हे और जो उन के सीनों में पोशीदा है वह भी जानता है। २०. अल्लाह हक़ के साथ फ़ैसला करे गा और जिन लोगों को उस के सिवा यह मुश्रिक पुकारते हैं वह कुछ नही कर सकते। अल्लाह बड़ा सुनने वाला सब कुछ देखने वाला है।

....

५. यहाँ पर हश्र का इन्कार करने वालों का हाल बयान किया जा रहा है कि उन की आँखों के सामने अल्लाह की कुदरत की बहुत सी निशानियाँ हैं जिन्हें देख कर यह हश्र का यक़ीन कर सकते हैं। जैसे एक निशानी वर्षा की ही है जो हश्र पर ईमान लाने के लिये ही काफ़ी है। यह अच्छी तरह जानते हैं कि पहले साल अनाज का दाना-दाना और हर फल और मेवा की गुठली सूख कर मुर्दा हो जाती हैं और दूसरे वर्ष उन्हीं दोनों को मुर्दा की तरह ज़मीन➲

में दफ़न कर देते हैं। फिर अल्लाह तआ़ला वर्षा करके उन मुर्दा दानों में जान डाल देता है और एक दाने से हज़ार दाने, एक गुठली से हज़ारों फल पैदा होते हैं। अल्लाह जो ऐसा कर सकता है, क्या वह इन के मुर्दा जिस्मों में वर्षा कर के जान नही डाल सकता है? जो माँ के पेट में इन के बेजान जिस्म में चार माह के बाद जान डाल सकता है, क्या वह इन के सड़े-गले जिस्म में जान नही डाल सकता? रहा यह प्रश्न कि जो लाशें जला कर उन की राख दरिया वग़ैरह में फेंक दी गयी हैं, या जिन को जानवरों और परिन्दों ने खा लिया है, उन में जान कैसे डाली जाये गी? तो इस का उत्तर यह है कि जिन के जिस्म का एक-एक रोयाँ जहाँ कहीं है वह अल्लाह की किताब (लौहे-महफ़ूज़) में लिखा हुआ है। उन सब को हुक्म दे कर बुला लेगा और सब को इकट्ठा कर के उन में जान डाल देगा। लेकिन इन मिसालों को वही लोग समझते हैं जो अल्लाह के फ़रमाबर्दार हैं।

६. ऊपर की आयतों में उन लोगों का बयान था जो कुरआन की आयतों का इन्कार करते थे और अल्लाह के हुक्म में तरह-तरह के कीड़े निकालते थे। अब यहाँ फ़रमाया गया कि कुरआन पाक की आयतों से वही नसीहत पा सकते हैं जो मुख़्लिस हो कर अल्लाह की अ़िबादत करते हैं इन आयतों में ऐसे ही तौहीद को मानने वालों और ख़ालिस दिल से अ़िबादत करने वालों को ख़िताब कर के फ़रमाया गया कि तुम लोग ख़ालिस दिल से अल्लाह की याद और उस की अ़िबादत किये जाओ और अल्लाह के हुक्म में झगड़ने वालों की नाराज़गी का कुछ ख़याल न करो। मुस्लिम, अबू दावूद और नसाई में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद कलिम-ए-तौहीद पढ़ा करते थे। (अहसनुत्तफ़ासीर)

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الَّذِينَ كَانُوا مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّ
آثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ وَمَا كَانَ
لَهُم مِّنَ اللَّهِ مِن وَاقٍ ﴿٢١﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَت تَّأْتِيهِمْ
رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ قَوِيٌّ
شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَ
سُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٢٣﴾ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا
سَاحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٢٤﴾ فَلَمَّا جَاءَهُم بِالْحَقِّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا
اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ ۚ
وَمَا كَيْدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ﴿٢٥﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ
ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَىٰ وَلْيَدْعُ رَبَّهُ ۖ إِنِّي أَخَافُ أَن
يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَن يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ ﴿٢٦﴾
وَقَالَ مُوسَىٰ إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُم مِّن كُلِّ مُتَكَبِّرٍ

२१. क्या उन्हों ने मुल्क में (घूम-फिर कर) सैर कर के नहीं देखा कि जो लोग उन से पहले गुज़रे हैं उन का अन्जाम कैसा (बुरा) हुआ? (सब तबाह-बर्बाद हो गये, हालाँकि) वह उन से अधिक कुव्वत वाले और मुल्क में मज़बूत निशान रखते थे पस अल्लाह ने उन के पापों की वजह से उन को पकड़ा फिर उन को अल्लाह के ग़ज़ब से बचाने वाला कोई न हुआ। २२. यह हालत उन की इस लिये हुयी कि उन के पास उन के रसूल खुले-खुले अहकाम ले कर आये थे फिर उन्हों ने उन का इन्कार ही किया पस अल्लाह ने उन को पकड़ा। बेशक अल्लाह बड़ी कुव्वत वाला और सख़्त अ़ज़ाब वाला है⁶। २३+२४. और हम ने फ़िरऔ़न और (उस के वज़ीर) हामान और (इस्राईली) क़ारून की तरफ़ मूसा को अपने निशानात और रौशन दलील के साथ रसूल बना कर भेजा तो उन सब ने कहा कि यह जादूगर है, झूठा है। २५. फिर जब सच्ची

➲तालीम उन को हमारे पास से पहुंची तो उन्हों ने कहा: मूसा के साथ ईमान लाने वाले मर्दों को क़त्ल कर डालो और उन की महिलाओं को जीवित रखो। और उन काफ़िरों की तदबीर वास्तव में ग़लती पर थी। २६. और फ़िरऔन ने कहा: तुम लोग मुझे मश्वरा दो कि मैं मूसा को क़त्ल कर दूँ और वह अपने रब को बुलाए। मुझे शंका है कि वह तुम्हारा दीन न बदल दे और (या इख़्तिलाफ़ डालने के सबब) मुल्क में फ़साद न फ़ैलाए। २७. और मूसा ने कहा: (मैं ऐसी गीदड़ भबकियों से नहीं डरता, क्योंकि) मैं हर एक तकब्बुर करने वाले की बुराई से

....

७. ऊपर की आयतो में अल्लाह ने कुरैश को आख़िरत के ख़ौफ़ से डराया था, अब इन आयात में बतलाया गया कि यह लोग नहीं जानते कि रसूलों की मुख़ालिफ़त के नतीजे में इन से पहले बहुत से लोग हलाक किये जा चुके हैं। और इन लोगों ने मुल्क शाम और यमन में तिजारती सफ़र के दर्मियान सुना और उन बर्बाद इलाक़ों को अपनी आँखों से देखा भी हो गा। अन्तिम क़ौमों में फ़िरऔनी हलाक किये गये थे, इन का भी ज़िक्र ऊपर बयान हो चुका है। और किसी को डराने और धमकाने के लिये क़रीब से क़रीब क़ौमों के हालात बयान करना अधिक से अधिक फ़ाइदेमन्द होता है, इसीलिये जगह-जगह कुरआन ने पिछली क़ौमों के हालात बयान फ़रमाये हैं।
मुफ़स्सिरीन ने नक़ल किया है कि फ़िरऔन ने ज्योतिशियों से हज़रत मूसा की पैदाइश का हाल सुन कर एक मर्तबा आप की पैदाइश से पहले बनी इस्राईल के लड़कों को क़त्ल किये जाने का हुक्म दिया था। बाद में उस के वज़ीरों ने मश्वरा दिया कि आप यह क़त्ल का सिलसिला बन्द करवा दें, इस लिये कि जब बनी इस्राइल के बूढ़े मर जायें गे और जवान और लड़के बचें गे ही नहीं, तो फिर हम फ़िरऔनियों की मज़दूरी कौन करेगा? यह राय सुन कर फ़िरऔन ने क़त्ल का सिलसिला बन्द करवा दिया। लेकिन जब हज़रत मूसा अलै० नबी हो कर मिस्र में आये तो पुन: क़त्ल का आदेश दे दिया।

पहली मर्तबा क़त्ल का आदेश इस लिये दिया था कि मूसा पैदा हो कर नबी न बन सकें और दूसरी मर्तबा इसलिये हुक्म दिया था कि बनी इस्राईल पर एक दबदबा क़ाइम रहे और इन की जनसंख्या भी बढ़ने न पाये। लेकिन अल्लाह की तक़्दीर के सामने किसी की तदबीर चल नहीं सकती। तक़्दीर के अनुसार जो कुछ होना था वह ज़ाहिर हो कर रहा। जब फ़िरऔन हज़रत मूसा से शिकस्त खा गया तो उस ने अपनी क़ौम के सर्दारों से मश्वरा कर के मूसा को क़त्ल कर डालने का प्रोग्राम बनाया, लेकिन उसी के ख़ान्दान के एक शख़्स ने (जो छुपे तौर पर मुसलमान था) आकर मूसा को बतला दिया और मूसा चुपके से मिस्र छोड़ कर मदयन चले गये.........(विस्तार से देखें सूरः क़-सस आयत न०२० ता ४२ का हाशिया)

لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝ وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ
مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ
يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ
وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا
يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ

जो हिसाब के दिन पर यक़ीन नही रखता, अपने और तुम्हारे पर्वरदिगार की पनाह में आ चुका हूँ। २८. फ़िरऔन के खानदान के एक आदमी ने जो अपने ईमान को छुपाता था कहा: (ऐ भाइयो!) तुम एक आदमी को इस जुर्म में क़त्ल करना चाहते हो कि वह यह कहता है कि मेरा पर्वरदिगार अल्लाह है और वह तुम्हारे पर्वरदिगार के हाँ से खुले निशान लाया है। और अगर➲

هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾ يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ
ظٰهِرِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۫ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ
اِنْ جَآءَنَا ۭ قَالَ فِرْعَوْنُ مَآ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَآ اَرٰى وَمَآ
اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٢٩﴾ وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ
اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْاَحْزَابِ ﴿٣٠﴾ مِثْلَ دَاْبِ
قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۭ وَمَا
اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿٣١﴾ وَيٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ
يَوْمَ التَّنَادِ ﴿٣٢﴾ يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ

➲वह झूठा है तो उस के झूठ बोलने का वबाल उसी पर हो गा (तुम्हारा कुछ न बिगड़े गा) और अगर वह सच्चा है तो जिन सज़ाओं से वह तुम को डराता है उन में से बाज़ तो तुम को पहुंच जाये गी। अल्लाह तआला सीमा से आगे बढ़ने वालों और झूठों को हिदायत नही किया करता। २९. भाइयो! आज शासन {हुकूमत} तुम्हारी है तुम मुल्क पर (क़ाबिज़ और) हाकिम हो फिर अगर (इस नाफ़र्मानी पर) अल्लाह का अज़ाब आ जाये तो उस से (छुड़ानेमें) कौनहमारीमदद करे गा? फ़िरऔन ने कहा: (ऐ मेरे दर्बारियो!) मैं तुम को वही राह दिखा देता (और समझा देता) हूँ जो खुद देखता हूँ तुम लोगों को दिहायात की राह दिखाता हूँ (बस मुझे माबूद समझो और मूसा की मत सुनो) ३०+३१ उस ने जो ईमान ला चुका था कहा: ऐ मेरे भाइयो। मैं तुम्हारे बारे में उन (साबिक़ा) क़ौमों के अ़ज़ाब से डरता हूँ, यानी नूह की क़ौम और आ़द और समूद और जो लोग उनके बाद हुये (दिखो तरह-तरह के अ़ज़ाब उन पर आये) और (वह अपने किये की सज़ा पा गये। यक़ीन जानो कि) अल्लाह बन्दों के हक़ में ज़ुल्म का इरादा नही करता। ३२. (उस मोमिन ने यह भी कहा कि) ऐ मेरे भाइयो! मैं तुम्हारे हाल पर पुकार के दिन से डरता हूँ९ ३३. जिस दिन तुम पीठ दे कर भागो गे (उस समय) कोई अल्लाह की पकड़ से तुम को बचाने वाला न हो गा

....

८. यानी वह शख़्स था तो फ़िरऔन ही के ख़ान्दान का और मुसलमान भी था, लेकिन अपने ईमान को पोशीदा रखा था। वह बोल उठा, क्या तुम एक ऐसे शख़्स का केवल इस वजह से खून करना चाहते हो कि वह केवल एक अल्लाह को अपना रब कहता है और दावे में स्पष्ट निशानियाँ भी दिखा चुका है। उस को क़त्ल करने का ख़याल छोड़ दो वर्ना संभव है कि यह क़त्ल तुम्हारे लिये उल्टा पड़ जाये। थोड़ी देर के लिए मान लेते हैं कि वह अपने दावे में झूठा है, तो इतने बड़े झूठ पर अल्लाह उसे अवश्य हलाक करके छोड़े गा, या ज़लील करे गा। अल्लाह तआ़ला इतने बड़े झूठे को बख़्श नहीं सकता। और अगर वह अपने दावे में सच्चा हुआ तो दुनिया और आख़िरत के जिस अ़ज़ाब से वह अपने झुठलाने वालों को डरा रहा है, यक़ीनन उस अज़ाब का कुछ न कुछ हिस्सा ज़रूर तुम को पहुंच कर रहे गा। नोट:- जब कोई झूठ घड़ने वाला स्पष्ट रूप से ज़ाहिर हो जाये और नबुव्वत का दावा करने वाला दलील से झूठा क़रार पाये तो नि: संदेह उसे क़त्ल कर देना चाहिये (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान) यानी इस्लामी हुकूमत में उस की सज़ा क़त्ल है। (राज़)

९. 'तनाद' इस से मुराद क़ियामत का दिन है। जब फ़रिश्ते पुकार लगायें गे और जन्नतियों को उन की अपनी-अपनी जगहों पर आने के लिये कहें गे, या जिस दिन काफ़िर एक दूसरे को मदद के लिये पुकारें गे, जिस प्रकार मुसीबत के समय पुकारा जाता है। और इस से मुराद दुनिया में मुसीबत और शिकस्त का दिन भी लिया जा सकता है जिस के आने की सूचना हज़रत मूसा ने पहले ही दे दी थी। यह भी हो सकता है कि उस मोमिन शख़्स को खुद ही अल्लाह की सुन्नत मालूम हो कि नबियों से मुक़ाबला करने वाले एक न एक दिन अवश्य ही आसमानी बला में गिरफ़्तार➲

➲होते हैं और उस मुसीबत के दिन अपने यार व मददगार को पुकारते हैं, इन पर भी वही दिन आने वाला है। वह कौन सा दिन है? जिस दिन तुम पीठ दे कर भागो गे और अल्लाह के अ़ज़ाब से तुम को कोई बचाने वाला न हो गा (चुनान्चे यह मामला बहरे कुल्ज़ुम (कुलज़ुम सागर में डूबने के दिन पेश आया) आगे नसीहत तमाम कर के उस मोमिन बन्दे ने यह भी फ़रमा दिया कि "जिसे अल्लाह गुमराह करता है उस को कोई हिदायत नहीं कर सकता। यानी अगर तुम ने मेरी नसीहत पर अ़मल न किया (और न करो गे, जैसा कि तुम्हारी हालत से मालूम होता है) तो समझ लो कि तुम को अल्लाह ही ने गुमराह कर दिया, तो फिर मेरी हिदायत तुम्हें कुछ भी लाभ नहीं पहुंचा सकती है।

आगे की आयत न०३४ यह भी उसी मोमिन की तक़रीर है। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि यह हज़रत मूसा अ़लै० का कलाम है इस लिये कि मूसा का नबी हो कर आना कोई नई बात नही है, इसलिये कि उन से पहले कई वर्ष पूर्व पहले के फ़िरऔ़न बादशाहों के ज़माना में हज़रत यूसुफ़ अ़लै० उनके पास दलाइल और चमत्कार लेकर आये थे। उन्होंने भी मिस्र वालों को बहुत कुछ समझाया और बुतों की पूजा से मना किया, मगर न माने, आख़िर जब उन का देहान्त हो गया तो कहने लगे कि अब इन के बाद अल्लाह तआ़ला किसी रसूल को न भेजे गा। उन की ज़िन्दगी में तो उन के मुन्किर रहे और उन के बाद और भविष्य में आने वाले रसूलों के मुन्किर हो गये और रिसालत के सिलसिले ही को काट दिया। यह बड़ी सख़्त सर्कशी और गुमराही थी। और केवल उन ही को नही बल्कि हर बेहूदा और सीमा से आगे बढ़ने वाले, और हर ज़ालिम शख़्स को अल्लाह तआ़ला इसी प्रकार गुमराह कर दिया करता है। और जो अल्लाह की आयतों में बग़ैर किसी सनद और दलील के नाहक़ झगड़ा किया करते हैं, जो अल्लाह और मोमिनों के नज़दीक बड़ी गन्दी बात है। और इसी प्रकार उनके दिलों पर भी मुहर कर दिया जाता है, फिर उन के दिलों में हक़ बात नहीं समाती। और ऐसा उन के घमंड और सरकशी के नतीजा में होता है। इस आयत में मक्का के काफ़िरों की तरफ़ इशारा है कि तुम्हारा हाल भी फ़िरऔ़न से कुछ कम नहीं है, इस लिये जो हाल फ़िरऔ़न का हुआ वही हाल तुम्हारा भी हो गा। अगर्चे मक्का के काफ़िर और मुश्रिक कुलज़ुम सागर में नहीं डूबे, मगर सूखा काल और बद्र के मैदान में क़त्ल की बला और मुसीबत के गहरे समुन्दर में ऐसे डूब गये कि अल्लाह की पनाह, अल्लाह की तौबा। (हक़्क़ानी-२/२०४)

हज़रत उर्वा बिन ज़ुबैर रज़ि० ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन आ़स रज़ि से एक मर्तबा पूछा कि सब से बड़ी तकलीफ़ मुश्रिकों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को क्या पहुंचाई थी? उन्हों ने उत्तर दिया कि एक रोज़ आप काबा शरीफ़ में नमाज़ पढ़ रहे थे। इतने में उक़्बा बिन मुअ़ीत आया और अपनी चादर को आप के गले में डाल कर इतना घसीटा कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का गला घुट गया और चादर के निशान पड़ गये।

مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾
وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ
فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ۖ حَتّٰٓى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ
يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ۚ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ
مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ۚ ﴿٣٤﴾ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ
اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۚ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَ

और जिस को अल्लाह गुमराह करे उस के लिये कोई समझाने वाला नहीं (पस तुम समझो)३४. (और ग़ौर करो कि आज से) पहले तुम्हारे पास यूसुफ़ खुले-खुले अहकाम लाये तो तुम उन की लायी हुयी तालीम से हमेशा शक में रहे (और न मानना था, न माने) यहाँ तक कि जब वह (यूसुफ़) फ़ौत हो गया तो तुम ने (यानी तुम्हारे बुज़ुर्गों ने) यह ख़याल किया कि आज के बाद अल्लाह कोई रसूल न भेजे गा॰ । इसी प्रकार➲

عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ قَلْبِ
مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿٣٥﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا هَامَانُ ابْنِ لِي
صَرْحًا لَّعَلِّي أَبْلُغُ الْأَسْبَابَ ﴿٣٦﴾ أَسْبَابَ السَّمَاوَاتِ
فَأَطَّلِعَ إِلَىٰ إِلَٰهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ كَاذِبًا ۚ وَكَذَٰلِكَ
زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوءُ عَمَلِهِ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَا
كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي تَبَابٍ ﴿٣٧﴾ وَقَالَ الَّذِي آمَنَ
يَا قَوْمِ اتَّبِعُونِ أَهْدِكُمْ سَبِيلَ الرَّشَادِ ﴿٣٨﴾ يَا قَوْمِ إِنَّمَا

अल्लाह उन लोगों को गुमराह कर देता है जो हद से बढ़ने वाले, शक करने वाले होते हैं। ३५. जो बग़ैर किसी दलील के जो उन के पास हो अल्लाह के अहकाम में झगड़ा किया करते हैं, यह बड़े ग़ज़ब की बात है अल्लाह के नज़दीक भी और ईमान दारों के नज़दीक भी (ऐसी बेजा हर्कतों से बाज़ आओ, वर्ना याद रखो) इसी प्रकार अल्लाह हर तकब्बुर करने वाले, सरकश के दिल पर मुहर् लगा दिया करता है।३६+३७ और फ़िरऔन बोला: ऐ हामान! तू मेरे लिये एक बुलन्द मकान बना ताकि मैं आसमान के रास्ते तै कर मूसा के खुदा को देखूँ (कि वास्तव में वह कुछ है भी, या यूँही मूसा हमारा समय बर्बाद कर रहा है) इस में शक नही कि मैं तो उस को बिल्कुल झूठा जानता हूँ। इसी प्रकार फ़िरऔन को उस के बुरे काम अच्छे दिखाई देते थे और वह सीधे रास्ते से रोका गया था[११]। (अस्ल में) फ़िरऔन की तदबीर तबाह करने वाली थी[१२]। ३८. और उस मोमिन ने कहा: ऐ मेरे भाइयो! तुम लागे तावेदारी करो, मैं तुम को हिदायत की राह दिखाऊँ गा। ३९. ऐ मेरे भाइयो!

....

१०. हज़रत यूसुफ़ अ़लै० मिस्र वालों को भी यही अहकाम पहुंचाते थे, चुनान्चे जेलखाना में उन की तब्लीग़ का तरीक़ा बयान किया गया है (दिखो सूरः यूसुफ़, आयत-३९+४०) कि वह अपने साथियों को वाज़- नसीहत फ़रमाते हैं जिस से उन की रविश का ज़िल्म होता है। जेलख़ाना से आज़ादी के बाद भी उन का तरीक़ा यही रहा। उसी की तरफ़ इस आयत में इशारा है (सनाई) यानी तुम्हारे बुज़ुर्गों ने यह ख़याल किया कि आज से बाद अल्लाह तआ़ला कोई रसूल न भेजे गा, यानी कोई शख़्स नबुव्वत का दावा कर के नही आये गा, बस हमारी जान छूटी। इस से मालूम होता है कि हमेशा से अल्लाह के अहकाम का मुक़ाबला करते आये हो, इस लिये तुम लोगों को अपना हानि-लाभ नही सूझता (सनाई)

११. उस पोशीदा मोमिन की तक़रीर जब फ़िरऔन तक पहुंची तो खिसयाना हो कर उसने अपने वज़ीर हामान से कहा: कि इस आये दिन के फ़साद को मैं ने मिटाने का इरादा कर लिया है और इस की शक्ल यह है कि तू मेरे लिये एक ऊँचा मकान बना दे ताकि मैं ऊपर चढ़ कर आसमान का रास्ता तै कर के मूसा के खुदा को देखूँ कि वास्तव में वह कुछ है भी? या मूसा ख़ाह-मख़ाह इन बखेड़ों में उल्झा कर हमारा बहुमूल्य समय नष्ट कर रहा है। इस में तनिक भर संदेह नही कि मैं उस को झूठा समझता हूँ, ताहम चाहता हूँ कि उस का भाँडा चौराहे पर फ़ोड़ दूँ यानी उस के मक्र और फ़रेब की पोल खोल दूँ। और अगर मूसा का ख़ुदा मिल गया तो एक मिनट में उस का काम तमाम कर दूँ गा। यह फ़िरऔन का एक बातिल ख़याल था (सनाई)

फ़िरऔन मिस्र का एक ज़ुबर्दस्त कुव्वत वाला बादशाह था। वह इतना बड़ा जाहिल न था कि महल पर चढ़ कर आसमान तक पहुंचने का ख़याल बाँधे। उस ने यह बातें केवल हंसी-मज़ाक़ उड़ाने के लिये और अपनी नादान और नासमझ क़ौम को झूठी तसल्ली देने के लिये कही थीं। कुछ उलमा का कहना है कि फ़िरऔन वास्तव में बड़ा नादान और नासमझ था (इसी लिये उस ने महल पर चढ़ कर मूसा के खुदा को देखने का इरादा किया था। जिन लोगों का कहना है कि अल्लाह आसमान पर नहीं है, वह फ़िरऔन के हमख़याल हैं)

बाक़ी तमाम अहले हदीस और इमामाने-दीन का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि अल्लाह तआ़ला आसमान के ऊपर

➲अपने अर्श पर मुस्तवी है। इमाम अबुल् हसन शारानी रह० जो अहले सुन्नत के इमाम हैं फ़रमाते हैं कि फ़िरऔन ने मूसा अलै० की इस बात को झुटलाया कि उन का खुदा आकाश पर है। शैतान ने फ़िरऔन की नज़र में उसके बुरे काम यानि कुफ़्र व शिर्क उस को अच्छे कर दिखाये थे। वह मक्कार चाहता था कि लोगों से अल्लाह की पूजा न कराये और अपनी पूजा कराता रहे। ऐसे शख़्स की तदबीर चल नहीं सकती, एक न एक दिन ज़रूर ज़लील होता है और उस का झूठ और फ़रेब खुल जाता है (वहीदी-६१८)

१२. क्योंकि वह प्रजा को ताक़त द्वारा क़ाबू में रखना चाहता था। जो बादशाह अपनी प्रजा को प्रेम से क़ाबू में करने के बजाए शक्ति और बल प्रयोग द्वारा क़ाबू में करना चाहे, वह कभी कामियाब नही हो सकता। इसी लिये फ़िरऔन अपनी तदबीर में कामियाब नही हो सका। बनी इस्राईल की तरफ़ से हज़रत मूसा ने बहुत-कुछ समझाया कि उन को तकलीफ़ न दो, लेकिन उस ने यही समझा कि दबाव में रखना ही सही है वर्ना क़ौम के लोग सर उठायें गे। उधर अल्लाह के ज़िल्म में वह समय आ गया था जिस में बनी इस्राईल की आज़ादी मुक़द्दर थी और फ़िरऔन पर तबाही आने वाली थी। इसीलिये उस पोशीदा मोमिन बन्दे ने कहा: ऐ मेरे भाइयो!............(सनाई)

هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَّ اِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ
الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا
وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَ هُوَ مُؤْمِنٌ
فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ
حِسَابٍ ﴿٤٠﴾ وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَ
تَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ ﴿٤١﴾ تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَ
اُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى
الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ﴿٤٢﴾ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ
لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ
مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٤٣﴾
فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْٓ اِلَى اللّٰهِ
اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٤٤﴾ فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا
مَكَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ﴿٤٥﴾

यह दुनिया की ज़िन्दगी तो बस चन्द रोज़ का गुज़ारा है (यहां किसी को क़रार नहीं हो गा) कुछ शक नही कि आख़िरत की ज़िन्दगी ही क़रार की जगह है। ४०. जिस ने बुरे कार्य किये हों गे उस को उन ही जितना बदला मिले गा और जिस ने ईमान की हालत में अच्छे अ़मल किये हों गे, चाहे वह पुरूष हो या महिला, वह लोग जन्नत में दाख़िल हों गे जिन में बग़ैर हिसाब के उन को रोज़ी मिले गी (यानी बेहिसाब खायें-पियें गे) ४१. मेरे भाइयो! क्या बात है कि तुम लोगों को मैं नजात की तरफ़ बुलाता हूँ और तुम लोग मुझ को आग की तरफ़ बुलाते हो। ४२. तुम लोग मुझे बुलाते हो कि मैं अल्लाह का इन्कार करूँ और उस के साथ उस चीज़ को शरीक मुक़र्रर करूँ जिस के बारे में मुझे ज़िल्म नहीं, और मैं तुम को अल्लाह ग़ालिब और बख़्शने वाले की तरफ़ बुलाता हूँ ४३. (फिर तुम लोग स्वयँ ही ग़ौर करो कि क्या) यह ठीक है कि जिस चीज़ की तरफ़ तुम मुझे बुलाते हो वह न दुनिया में पुकारे जाने के लायक़ है न आख़िरत में (यानी फ़िरऔन और उस के बनावटी माबूद) ओर इस में शक नही कि हमारा लौटना अल्लाह ही की तरफ़ है और इस में भी शक नही कि जो लोग हद से बढ़ने वाले हैं यही दोज़ख़ीहैं। ४४. (भाइयो!) मै जो तुम से कहता➲

हूँ (एक दिन आने वाला है कि) तुम उसे याद करो गे (अब तुम मेरी नही सुनते। मैं भी सब्र करता हूँ) और अपना मामला अल्लाह के सिपुर्द करता हूँ। बेशक अल्लाह तआला बन्दों को देख रहा है। ४५. पस अल्लाह ने उन के फ़रेब से उस को बचा लिया[13] और फ़िरऔन की क़ौम पर (उन की ज़िन्दगी ही में) बड़ा अ़ज़ाब नाज़िल हुआ।

....

१३. हज़रत मूसा के साथ वह दरिया से पार हो गया और फ़िरऔन और उस के लाव-लश्कर की बड़ी बुरी गत हुयी। सब के सब कुलज़ुम सागर में डूब गये। 'सुबह-शाम आग के सामने पेश किये जाते हैं' (आयत न० ४६) की तफ़्सीर बुख़ारी, मुस्लिम शरीफ़ में इस प्रकार है कि जब आदमी मर जाता है तो सुब्ह-शाम उस का ठिकाना उस को दिखाया जाता है। अगर जन्नती है तो जन्नत, और जहन्नमी है तो जहन्नम को दिखाया जाता है और उस से कहा जाता है कि यह क़ियामत में जी उठने के बाद तेरा ठिकाना है। इस आयत से क़ब्र का अ़ज़ाब साबित होता है और दूसरी आयत "वह लोग डुबो दिये गये और आग में दाख़िल किये गये" का भी यही विषय है जो नूह अ़लै० पर नाज़िल हुयी है।

क़ब्र के अ़ज़ाब के संबन्ध में इतनी अधिक हदीसें आयी हैं जिन को एक जगह इकट्ठा करना कठिन है। इमाम सुयूती रह० ने इन हदीसों को अपनी पुस्तक "शर्हुस्सुदूर" में जमा कर दिया है। जो कोई क़ब्र के अ़ज़ाब का इन्कार करे वह बिद्अ़ती, बल्कि काफ़िर है। (वहीदी)

ٱلنَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا ۖ وَيَوْمَ تَقُومُ
ٱلسَّاعَةُ أَدْخِلُوٓا۟ ءَالَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ ٱلْعَذَابِ ﴿٤٦﴾ وَ
إِذْ يَتَحَآجُّونَ فِى ٱلنَّارِ فَيَقُولُ ٱلضُّعَفَٰٓؤُا۟ لِلَّذِينَ
ٱسْتَكْبَرُوٓا۟ إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنتُم مُّغْنُونَ
عَنَّا نَصِيبًا مِّنَ ٱلنَّارِ ﴿٤٧﴾ قَالَ ٱلَّذِينَ ٱسْتَكْبَرُوٓا۟ إِنَّا
كُلٌّ فِيهَآ إِنَّ ٱللَّهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ ٱلْعِبَادِ ﴿٤٨﴾ وَقَالَ
ٱلَّذِينَ فِى ٱلنَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ٱدْعُوا۟ رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ
عَنَّا يَوْمًا مِّنَ ٱلْعَذَابِ ﴿٤٩﴾ قَالُوٓا۟ أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمْ
رُسُلُكُم بِٱلْبَيِّنَٰتِ ۖ قَالُوا۟ بَلَىٰ ۚ قَالُوا۟ فَٱدْعُوا۟ ۗ وَمَا
دُعَٰٓؤُا۟ ٱلْكَٰفِرِينَ إِلَّا فِى ضَلَٰلٍ ﴿٥٠﴾ إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَ
ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ ٱلْأَشْهَٰدُ ﴿٥١﴾
يَوْمَ لَا يَنفَعُ ٱلظَّٰلِمِينَ مَعْذِرَتُهُمْ ۖ وَلَهُمُ ٱللَّعْنَةُ
وَلَهُمْ سُوٓءُ ٱلدَّارِ ﴿٥٢﴾ وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا مُوسَى ٱلْهُدَىٰ

४६. (और मरने के बाद) वह (आज तक) सुब्ह-शाम आग के सामने पेश किये जाते हैं और जिस रोज़ क़ियामत क़ाइम हो गी उस दिन हुक्म हो गा: फ़िरऔन को बड़े सख़्त अ़ज़ाब में दाख़िल करो (सो वह उस में दाख़िल किये जायें गे और ख़ूब जलें गे[14]) ४७. और (एक वाक़िआ सुनो!) जब जहन्नमी आग में झगड़ें गे (एक दूसरे को दोष देते हुये) कमज़ोर लोग बड़े लोगों से कहें गे इस में शक नहीं कि हम आप लोगों के ताबे थे, तो क्या (आज) आप लोग थोड़ा सा अ़ज़ाब हम से हटा सकते हैं[15]? ४८. तो बड़े लोग (उत्तर में) कहें गे कि हम (ताबे और मतबूअ़-गुरू और चेले) सब इसी (दोज़ख़) में (पड़े सड़ रहे) हैं, (क्योंकि) अल्लाह ने अपने बन्दों के दर्मियान (जो फ़ैसला करना था उस का) हुक्म जारी कर दिया है। ४९. और जो लोग आग में हों गे वह जहन्नम के मुवक्किलों {दारोग़ा} से कहें गे कि अपने रब से आप (ही हमारे लिए) दुआ माँग दें कि वह किसी दिन

➲तो हम से अ़ज़ाब क़म करे। ५०. वह (उनके जवाब में) कहेंगे क्या तुम्हारे पास (अल्लाह की तरफ़ से) तुम्हारे रसूल (चमत्कार और) खुले अहकाम ले कर न आये थे? वह कहें गे: बेशक आये थे, तो वह कहें गे: फिर तो तुम स्वैंय ही दुआ कर लो (हम तो इस में दख़ील नहीं हो सकते) काफ़िरों की दुआ़ हमेशा बेकार होती है। ५१. हम दुनिया में भी अपने रसूलों और मोमिनों की मदद किया करते थे और जिस रोज़ (यानी क़ियामत के दिन) गवाह क़ाइम हों गे (उस रोज़ भी हम रसूलों की मदद करें गे यानी) ५२. जिस रोज़ ज़ालिमों को उन का उज़्र (माज़रत,माफी माँगना) कुछ फ़ाइदा न देगा (बल्कि वह अ़ज़ाब दिये जायें गे) और उन पर अल्लाह की लानत हो गी और उन के लिये बुरा घर हो गा। ५३ और हमने मूसा को हिदायत दी

....

१४. हदीस शरीफ़ में आया है कि मुसलमान हो या काफ़िर, जो कोई नेकी करता है उस को बदला मिलता है। लोगों ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! काफ़िर को क्या बदला मिलता है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: उस को दुनिया में दौलत मिलती है, तन्दुरूस्ती और औलाद अ़ता होती है। फिर लोगों ने मालूम किया कि आख़िरत में क्या मिले गा? आप ने फ़रमाया: आख़िरत का अ़ज़ाब भी कोई हल्का है और कोई सख़्त, फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहिं वसल्लम ने यही आयत न० ४६ तिलावत फ़रमाई।

एक सही हदीस के अनुसार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "सब से हल्का अ़ज़ाब क़ियामत के दिन अबू तालिब को हो गा। उन को आग की दो जूतियाँ पहनाई जायें गी जिस से उन का भेजा पकता रहे गा"। (वहीदी)

१५. जहन्नमी लोग, जहन्नम के और अ़ज़ाबों को बर्दाश्त करते हुये एक और अ़ज़ाब का भी शिकार हों गे जिस का बयान यहाँ हो रहा है। यह अ़ज़ाब फ़िरऔ़नियों को भी हो गा और दूसरे जहन्नमियों को भी। यानी आपस के लड़ाई-झगड़े। छोटे, बड़ों से कहें गे कि हम लोग तो आप के अधीन थे आप के कहने के अनुसार चलते थे, अब यहाँ हमें कुछ थोड़ी-बहुत तो मदद पहुंचाइये, और कुछ नहीं तो हमारे अ़ज़ाबों में ही से कुछ हिस्सा आप लोग अपने ऊपर उठा लीजिये। यह बड़े और मालदार लोग उत्तर दें गे कि हम भी तो तुम्हारे साथ जल-भुन रहे हैं, हमें जो अ़ज़ाब हो रहा है वह क्या कम है जो हम तुम्हारे अ़ज़ाब को भी उठायें। अल्लाह का हुक्म जारी हो चुका है और अल्लाह हर एक को उस के आमाल के अनुसार सज़ा दे चुका है, उस में किसी भी प्रकार की कमी संभव नहीं। जब दोज़ख़ी लोग यक़ीन कर लें गे कि अल्लाह ने उन की दुआ़ कुबूल नहीं फ़रमायी बल्कि उन्हें डांट दिया है और फ़रमा चुका है कि यहीं पड़े रहो और मुझ से बात भी न करो, तो वह दोज़ख़ के दारोग़ा से कहें गे कि तुम ही ज़रा अल्लाह से दुआ़ कर दो कि एक ही दिन के लिये वह हमारा अ़ज़ाब हल्का कर दे वह उत्तर दें गे कि क्या रसूलों द्वारा अल्लाह के अहकाम तुम तक नहीं पहुंचे थे? तो वह कहें गे कि ज़रूर पहुंचे थे। दारोग़ा कहे गा तो फिर अब तुम अल्लाह ही से कहसुन लो, हम तो तुम्हारी चीख़-पुकार की कोई पर्वा नहीं करने वाले। सुनो! हम तो तुम से साफ़-साफ़ कहे देते हैं कि चाहे तुम दुआ़ करो या न करो, या कोई और तुम्हारे लिये दुआ़ करे या न करे, तुम्हारे अ़ज़ाब में किसी प्रकार की कमी नामुम्किन है।

अब आयत न० ५१ में रसूलों की मदद करने का वादा है। कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसे तकलीफ़ पहुंचाने वालों से कुदरत ने ज़ब्बर्दस्त बदला न लिया हो और यही बदला लेना, नबी की मदद करना है, जो पहले से होता आया है और अब भी जारी है (इब्ने कसीर)

وَ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ ۙ هُدًى وَّ ذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ۝ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ اسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَ سَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَ الْاِبْكَارِ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِيْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝ لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَ مَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَ الْبَصِيْرُ ۙ۬ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ لَا الْمُسِيْٓءُ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝ اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَ قَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ ۝

और (उन के ज़रीआ) बनी इस्राईल को किताब दी ५४. जो अक़्ल मन्दों के लिये हिदायत और नसीहत थी। ५५. पस तू (ऐ नबी!) सब्र कर, कुछ शक नहीं कि अल्लाह का वादा सच्चा है (वह ज़रूर इस्लाम की मदद करे गा, तू उस की मदद का इन्तिज़ार कर) और अपने गुनाहों की माफ़ी माँगा कर[१६], और अपने पर्वरदिगार की तारीफ़ के साथ शाम और सुबह तस्बीह पढ़ा कर। ५६. जो लोग बग़ैर किसी क़वी दलील के जो उन के पास आयी हो अल्लाह के अहकाम में झगड़ते हैं उन के दिलों में सिवाए तकब्बुर के कुछ नही (वह अपने बातिल गुमान में अपना मर्तबा बहुत ऊँचा जानते हैं) जिस पर वह पहुंच नहीं सकते। पस तू अल्लाह की पनाह माँगा कर। बेशक वह सुनने वाला देखने वाला है। ५७. आसमानों और ज़मीनों का पैदा करना लोगों के दोबारा पैदा करने से बहुत बड़ा काम है, लेकिन बहुत से लोग (हालात की हक़ीक़त को) नही जानते (खुदाई कामों को देखने के लिये देखने वाली आँख चाहिये, जो उन में नही) ५८. और (यह तो आ़म बात है कि) अंधा और संवाखा (दिखने वाला) बराबर नही, ईमानदार और नेकोकार और बुरे आमाल करने वाले बराबर नही (मगर) तुम लोग बहुत कम समझते हो (तुरन्त एतराज़ पर कमर बाँध लेते हो। बड़ा एतराज़ तुम्हारा क़ियामत पर है, तो याद रखो) ५९. यक़ीनन क़ियामत की घड़ी आने वाली है उस (के आने) में कोई शक नही, लेकिन बहुत से लोग ईमान नही लाते। ६०. तुम्हारे रब ने कहा है कि मुझ से दुआ़ माँगा करो मैं तुम्हारी दुआ़ क़बूल करूँ गा। (बल्कि यह एलान भी कर दिया है कि) जो लोग मेरी अ़िबादत (यानी मुझ से दुआ़ करने से) तकब्बुर करते हैं वह ज़लील हो कर जहन्नम में दाख़िल हों गे[१७]

....

१६. अ़ीसाइयों का अ़क़ीदा है कि हज़रत अ़ीसा मसीह को छोड़ कर बाक़ी सब नबी गुनाहगार हैं। अपनी दलील में वह कुरआन की इस आयत और इस जैसी और आयतों को पेश करते हैं, क्योंकि इस के लफ़्ज़ी तर्जुमा से समझा जाता है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम गुनाहगार थे, इसलिये उन को गुनाहों से माफ़ी माँगने का हुक्म दिया है। अ़ीसाइयों की इस दलील में कोई दम नहीं है, इस लिये कि कुरआन मजीद के अ़लावा और दीगर किताबों में भी यह मुहावरा मिलता है कि नबी को मुख़ातब कर के उम्मत को हुक्म होता है। कुरआन मजीद की सूरः "अहज़ाब" में हुक्म हो रहा है 'ऐ नबी। अल्लाह से डर और किसी काफ़िर या मुनाफ़िक़ की ताबेदारी न कर'। इस आयत➲

और इस जैसी आयतों में मुख़ातब वाहिद है, मगर उस का हुक्म आम है, यानी नबी को मुख़ातब कर के आम लोगों को हुक्म दिया जा रहा है। बाइबल में भी इस प्रकार का मुहावरा मिलता है। चुनान्चे हुक्म दिया जा रहा है कि 'ऐ इस्राईल! सुन ले और उस के करने पर ध्यान रख ताकि तेरा भला हो''। दूसरे स्थान पर हुक्म होता है 'ऐ इस्राईल! खुदावन्द हमारा, खुदा अकेला खुदावन्द है। तू अपने सारे दिल और अपने सारे ज़ोर से अपने खुदा को दोस्त रख'' (किताब इस्तिस्ना, बाब६, आयत३) इन सब जगहों पर "इस्राईल" बोल कर बनी इस्राईल कौम मुराद हैं, क्योंकि इस्राईल (यानी हज़रत याकूब अ़लै०) तो तौरात के नाज़िल होने से बहुत पहले फ़ौत हो चुके थे। इसी प्रकार कुरआन मजीद में भी वाहिद का सेग़ा प्रयोग कर के तमाम उम्मत को मुराद लिया है। इस प्रकार इस आयत न०५५ का तर्जुमा यूँ हो गा " ऐ मुसलमानो! तुम अपने गुनाहों की माफ़ी माँगा करो"। इस से जो कुछ साबित हुआ वह यह कि आम मुसलमान गुनाह गार हैं, और इस से हमें भी इन्कार नहीं।

इसी विषय के साथ यह बहस भी छेड़ी जा सकती है कि अगर दीगर नबी गुनाहगार थे तो इन्जील के हवाले से हज़रत अ़ीसा अ़लै० भी बेगुनाह न थे। मगर चूंकि हमें इस से कोई ग़रज़ नहीं, इसलिए इस मस्अ़ले को नही छेड़ते।

हमारे इस जवाब पर एक और सवाल हो सकता है वह यह कि सूरः "मुहम्मद" में साफ़ लफ़्ज़ों में यह हुक्म मौजूद है "पस तू जानले कि अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नही और अपने गुनाहों के लिये और मोमिन मर्दों और औ़रतों के लिये बख़्शिश माँगा कर। अल्लाह तुम्हारे घर-बाहर के सभी हालात को जानता है" (सूरः मुहम्मद, पारः २६, आयत १९) कोई एतराज़ करने वाला कह सकता है कि इस आयत में तो नबी को स्पष्ट शब्दों में हुक्म दिया गया है कि तू अपने गुनाहों और मोमिनों के गुनाहों के लिये बख़्शिश माँगा कर। इस से मालूम हुआ कि यहाँ मुख़ातब ख़ास कर नबी हैं, न कि उम्मत के लोग। इस का उत्तर यह है कि यह आयत साफ़-साफ़ बतला रही है कि यहाँ भी मुराद उम्मत का हर-हर शख़्स है, क्योंकि इस का मतलब यह है कि "नबी के उन्वान से, या नबी के हवाले से" उम्मत के हर फ़र्द को हुक्म होता है कि तुम मुसलमान, इस्तिग़फ़ार में दूसरे मुसलमानों को भी शामिल कर लिया करो, चुनान्चे इस की दलील यह आयत है " ऐ अल्लाह! हम को बख़्श दे और पहले के तमाम हमारे इस्लामी भाइयों को बख़्श दे"। (सूरः हश्र, आय न० १०) इस से मालूम हुआ कि इस आयत की रोशनी में यहाँ ज़ेरे बहस आयत न० ५५ का हुक्म आम है, यानी यह मुराद है कि ऐ मुसलमानो! तुम में का हर फ़र्द अपनी दुआ में दीगर दुनिया के मुसलमानों को भी शामिल किया करे। (सनाई-७/५६-६१)

१७. अ़िबादत और बन्दगी की शर्त है केवल अपने रब से माँगना, न माँगना गुरूरऔर तकब्बुर है। हदीस शरीफ़ में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः " दुआ़ अ़िबादत है" और फिर आप ने यही आयत न०६० तिलावत फ़रमाई (तिर्मिज़ी) एक दूसरी हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः " जिस शख़्स को बहुत अधिक दुआ़ करने की आ़दत है, तो यूँ समझो कि उस के वास्ते रहमत के दर्वाज़े खुल गये। और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से यह दुआ़ माँगता है कि हमें माफ़ कर और अम्न से रख, तो अल्लाह तआ़ला उस से बहुत प्रसन्न होते हैं। बहर हाल कोई दुआ़ फ़ाइदा से ख़ाली नहीं, चाहे मुराद मिले या न मिले, पस ऐ बन्दो! अल्लाह से खूब दुआ़यें माँगा करो"। (तिर्मिज़ी) मतलब यह है कि अगर दुआ़ के जरीआ़ माँगी मुराद न भी मिले, तब भी उदास न हो और यूँ न समझो कि दुआ़ करने से कोई लाभ न हुआ। इसलिये कि अल्लाह ने फ़रमाया है कि "मुझ से माँगते रहो, यह मेरी अ़िबादत है और जो लोग मेरी अ़िबादत से बेपरवाही करते हैं वह लोग ज़लील हो कर दोज़ख़ में दाख़िल हो गे" (सूरः मोमिन-६०)। इस लिये बन्दों का काम दुआ़ करना है, चाहे कुबूल हो या न हो।

अ़िबादत का हुक्म दे कर इन आयतों में मिसाल के तौर पर समझाने के लिये रात-दिन को पैदा करने का फ़ज़्ल और एहसान जतलाया। फिर फ़रमायाः यह अल्लाह तुम्हारा रब है जिस ने यह सब चीज़ें पैदा कीं, इसलिये वह बड़ी बर्कत वाला और केवल वही अ़िबादत के लायक़ है। सहीह बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत मआ़ज़ बिन जबल रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह का हक़ बन्दों पर यह

है कि उस की अ़िबादत में किसी को शरीक न करें। इस हक़ के अदा हो जाने के बाद अल्लाह पर बन्दों का यह हक़ हो गा कि वह ऐसे बन्दों को दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले। (अहसतुत्तफ़ासीर) मुस्नद अबू याला में है कि अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से फ़रमाया: चार बातें हैं जिन में से एक मेरे लिए, एक तेरे लिये, एक तेरे और मेरे दर्मियान, एक तेरे और मेरे दूसरे बन्दों के दर्मियान है। जो ख़ास मेरे लिये है वह तो यह है कि तू केवल मेरी ही अ़िबादत कर और मेरे साथ किसी को शरीक न कर। और जो तेरा हक़ मुझ पर है वह यह है कि मैं तुझे तेरे हर अ़मल का भरपूर बदला दूँ गा। और जो मेरे और तेरे दर्मियान है वह यह है कि तू दुआ़ कर और मैं क़ुबूल किया करूँ। और चौथी बात जो तेरे और मेरे दूसरे बन्दों के दर्मियान है वह यह है कि तू उन के लिये वह पसन्द कर जो तू अपने लिये पसन्द करता है।

हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा अन्सारी रज़ि० के इन्तिक़ाल के बाद उन की तल्वार के मियान से एक काग़ज़ निकला जिस में लिखा हुआ था कि "तुम अपने रब की रहमतों के मौक़े को तलाश करते रहो बहुत संभव है कि किसी ऐसे समय तुम दुआ़ करो कि उस समय रब की रहमत जोश में हो और तुम्हें वह नेक बख़्ती हासिल हो जाये जिस के बाद कभी भी निराशा और अफ़सोस न करना पड़े। मुस्नद अहमद की एक हदीस में है कि क़ियामत के दिन तकब्बुर करने वाले लोग चीटियों की शक्ल में जमा किये जाएँगे, उन के ऊपर भड़कती आग शोले मारे गी, उन्हें दोज़ख़ियों का ख़ून, पीप और पाख़ाना-पेशाब पीने को दिया जाये गा। एक बुज़ुर्ग के बारे में आता है उन्हों ने सुना कि पहाड़ की चोटी पर से कोई बुलन्द आवाज़ से पुकार कर कह रहा है: "उस शख़्स पर आश्चर्य है जो तुझे (यानि अल्लाह को) जानते-पहचानते हुये भी दूसरे की ज़ात से आशायें और उम्मीदें रखता है। उस पर भी आश्चर्य है जो तुझे जानते-पहचानते हुये भी अपनी हाजतें और ज़रूरतें दूसरों के पास ले जाता है। फिर उस ने एक ज़ोरदार आवाज़ लगायी और कहा: बड़ा तअ़ज्जुब उस पर है जो तुझे जानते- पहचानते हुये दूसरों की रज़ामन्दी हासिल करने के लिये वह काम करता है जिस से तू नाराज़ हो (तफ़सीर मुहम्मदी)

६१. अल्लाह वही है जिस ने तुम्हारे लिये रात बनाई ताकिं तुम उस में आराम पाओ (दिन की मेहनत की थकान उतारो) और दिन को रोशन बनाया (ताकि तुम उस में रोज़ी-रोटी तलाश करो) कुछ शक नही कि अल्लाह तआ़ला [illegible] के हाल पर बड़ा मेहरबान है, लेकिन बहुत से लोग (उस की मेहरबानी का शुक्र अदा) नही करते। ६२. यह अल्लाह (ब्रह्माण्ड का रचयिता) तुम्हारा पर्वरदिगार है जो हर एक वस्तु का पैदा करने वाला है। उस को छोड़ कर कोई माबूद नहीं, फिर तुम लोग कहाँ को बहकाए जाते हो (जो ऐसे सच्चे माबूद को छोड़ कर बुतों, क़ब्रों और ताज़ियों बग़ैरह को सज्दा करते हो) ६३. जो लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे वह इसी प्रकार बहकाए जाते

اَللّٰهُ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَ النَّهَارَ
مُبْصِرًاؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦١﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ
شَىْءٍ ۘ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٦٢﴾ كَذٰلِكَ
يُؤْفَكُ الَّذِيْنَ كَانُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٦٣﴾ اَللّٰهُ
الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّ
صَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ
ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚۖ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٤﴾ هُوَ
الْحَىُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ؕ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٥﴾ قُلْ اِنِّىْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ

الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِيَ الْبَيِّنٰتُ مِنْ رَّبِّيْ وَ اُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ

थे। ६४. (यह लोग एक अल्लाह को छोड़ कर बुतों के पीछे फिरते हैं, हालाँकि) अल्लाह वह है जिस ने ज़मीन को तुम्हारे ठेहरने के लिये और आसमान को बुलन्द छत बनाया और तुम्हारी सूरतें बनायीं और कैसी अच्छी सूरतें बनायीं और तुम को अच्छी-अच्छी खाने की चीज़ें खाने को दीं। यही अल्लाह तुम्हारा पर्वरदिगार है, पस अल्लाह रब्बुल् आलमीन बड़ी बर्कत वाला है (उस की बर्कत की कोई इन्तिहा नहीं) ६५. वह ही ज़िन्दा है (इस लिये) उस के सिवा कोई माबूद नही पस तुम इख़्लास के साथ उसी को पुकारा करो। सब तारीफ़ें अल्लाह रब्बुल आलामीन ही के लिये मख़सूस हैं[१८]। ६६. (ए नबी तुझ को हुक्म होता है) तू (उन लोगों से बुलन्द आवाज़ से) कह दे कि जब कि मेरे पास रब की तरफ़ से खुली दलीलें आ चुकीं (तो भविष्य के लिये) मुझ को इस से रोका गया कि मैं उन लोगों की अिबादत करूँ जिन को तुम अल्लाह के अलावा पुकारते हो। और मुझ को हुक्म हुआ है कि मैं रब्बुल आलमीन की फ़रमाँ-बर्दारी करूँ ६७. (सुनो!) वही (पाक ज़ात) है जिस ने तुम को (यानी शुरु में तुम्हारे बाप आदम को) मिट्टी से पैदा किया, फिर (दुनिया का सिलसिला यूँ चलाया कि बच्चा को पानी के क़त्रा से

....

१८. इमाम इब्ने जरीर तब्री फ़रमाते हैं कि उलमा की एक जमाअत का कहना है कि "लाइला-ह इल्लल्लाह" पढ़ने के साथ ही "अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ-लमीन" भी पढ़ लेना चाहिये ताकि इस आयत पर भी अमल हो जाये। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० भी यही फ़रमाते हैं। हज़रत सईद बिन जुबैर फ़रमाते हैं कि जब तू "फ़द्उल्ला-ह मुख्लिसी-न लहुद्दीन" पढ़े तो "लाइला-ह इल्लल्लाह" भी पढ़ लिया कर और इस के साथ ही "अल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ-लमीन्" भी। अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के बारे में आता है कि वह नमाज़ के सलाम के बाद "लाइला-ह इल्लल्लाहु वह-दहू लाशरी-क लहु लहुल्मुल्कु व-लहुल्-हम्दु वहु-व अला कुल्लि शैइन क़दीरु न्+लाहौ-ल वला कुव्व- इल्ला बिल्लाहि, लाइला-ह इल्लल्लाहु वला नअ्बुदु इल्ला इय्याहु लहुन्निअ्-मतु व-लहुल् फ़ज़्लु व-लहुस्सनाउल् ह-सनु, ला इला-ह इल्लल्लाहु मुख़लिसी-न लहुद्दी-न वलौ करि- हल काफ़िरू-न" पढ़ा करते थे (तर्जुमाः "अल्लाह के अलावा कोई इलाह नही, वही अकेला है उस का कोई शरीक नहीं उसी के लिये बादशाहत है और उस के लिये हम्द है और वह हर वस्तु पर कुदरत रखने वाला है, नहीं है कुदरत और ताक़त मगर अल्लाह के पास, नही है कोई माबूद सिवाए अल्लाह के, हम केवल उस ही की अिबादत करते हैं, उसी के लिये नेमत, फ़ज़्ल और तारीफ़ है, उस के अलावा कोई माबूद नहीं, हम इख़्लास के साथ सिर्फ़ उसी की अिबादत करते हैं अगर्चे काफ़िरों को लाख भारी मालूम हो) हज़रत सईद यह भी फ़रमाया करते थे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन कालिमात को हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद पढ़ा करते थे (मुस्लिम, अबूदावूद, नसई)

फ़ाइदाः— कुरआन मजीद में पांच सूरतों की इब्तिदा "अलहम्दु लिल्लाह" से होती १ सूरः फ़ातिहा २. अन्आम ३. कहफ़ ४. सबा ५. फ़ातिर। और "अलहमदुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन" का जुम्ला पूरे कुरआन में २२ मर्तबा आया है। "लिल्लाहिल् हम्दु" एक बार और "लहुल् हम्दु" चार बार आया है। इस के अलावा अल्लाह की हम्द का बयान मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से बहुत से स्थानों पर आया है। हम्द के तस्बीह का बयान (साथ-साथ) कोई १३ स्थानों पर आया है।

'हम्द' की तारीफ़ (परिभाषा) यह है कि जिस की तारीफ़ की जा रही है उस की किसी अच्छी खूबी पर

ताज़ीम के इरादे से की जाये। और जो तारीफ़ किसी नेमत के मुक़ाबले में की जाये उसे 'शुक्र' कहते हैं। इस से मालूम हुआ कि हम्द, शुक्र के मक़ाबला में आम है। और शुक्र भी हम्द के मुक़ाबला में आम है, इसलिये 'हम्द' केवल ज़बान से होती है और यह शुक्र की एक शाख़ है। इसीलिये नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "अल्हम्दु लिल्लाह, यह शुक्र का कलिमा है" (मिश्कात) अल्हम्दु लिल्लाह, शुक्र का गूदा और सत है। जिस ने अल्लाह की हम्द नही की, उस ने उस का शुक्र भी नहीं किया। इसी माना में हज़रत इब्राहीम अलै० ने बुढ़ापे की आयु में बेटे के पैदा होने पर कहा था "सब तारीफ़ का मालिक अल्लाह है और वह हर प्रकार के शुक्र का अधिकारी है जिस ने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल और इस्हाक़ अता किये" (सूरः इब्राहीम) (वाज़िहुल बयान- मौलाना सियाल कोटी)

عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ
ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ
وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ هُوَ
الَّذِىْ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ
لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٦٨﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ
فِىْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۗ اَنّٰى يُصْرَفُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۟ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٠﴾
اِذِ الْاَغْلٰلُ فِىْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ۗ يُسْحَبُوْنَ ﴿٧١﴾
فِى الْحَمِيْمِ ۙ ثُمَّ فِى النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ﴿٧٢﴾ ثُمَّ قِيْلَ
لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٣﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ
قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَيْـًٔا ۗ
كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾ ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَفْرَحُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ

फिर लोथड़े से (पैदा किया) फिर तुम को बच्चा बना कर बाहर निकालता है (फिर तुम्हारी पर्वरिश करता है) ताकि तुम अपनी पूरी ताक़त को पहुँचों, फिर तुम को और बढ़ाता है ताकि तुम बूढ़े हो जाओ, और बाज़ तुम में से पहले ही मर जाते हैं और तुम में से बाज़ बढ़ते हैं ताकि तुम मुक़र्रर वक़्त तक पहुंचो और ताकि तुम समझो (कि तुम दुनिया में क्यों आये)। ६८. वही (ज़ात पाक) है जो ज़िन्दा करता है और मारता है, फिर जब वह किसी वस्तु को पैदा करना चाहता है तो बस केवल इतना कह देता है कि "हो जा" पस वह हो जाती है। ६९. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह के अहकाम में झगड़ते हैं (कोई झुठलाता है, तो कोई इन्कार करता है) कहाँ को बहकाए जाते हैं? ७०. (उन की कोई बात ठिकाने की भी है, यह) वही लोग हैं जो (पहले भी अल्लााह की) किताब को झुठला चुके हैं और उन वाक़िआत को झुठलाते रहे हैं जिन के साथ हम ने अप्ने रसूल भेजे, सो जान लें गे। ७१+७२. जिस समय तौक़ उन की गर्दनों में और ज़ंजीर (उन के पैरों में) हों गी (और इस ज़िल्लत के साथ) वह गर्म पानी में घसीटे जायें गे, फिरआग में झोंकेजायें गे ७३. फिर उन को कहा जाये गाः कहाँ हैं वह लोग जिन को अल्लाह के सिवा शरीक बनाया करते थे। ७४.वह कहें गेः वह तो हम से खो गये (क्योंकि वह आज हम को नज़र नही आते) बल्कि (अस्ल बात यह है कि) हम तो पहले ही से किसी चीज़ को पुकारते न थे। अल्लाह इसी प्रंकार काफ़िरों को बदहवास कर देगा (और उन को अपना किया भी याद न रहे गा) ७५. यह अ़ज़ाब इस वजह

से है कि जो तुम ज़मीन पर नाहक़ खुशियाँ मनाते और (चन्द दिन की नेमतों पर) इतराते थे (अपने मुक़ाबले में मुसलमानों को ज़लील समझते थे)

تَمْرَحُوْنَ ۝ اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۗ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ۝ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ ۖ فَاَيَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ ۝ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا

७६. (अच्छा लो अब) जहन्नम में दाख़िल हो जाओ हमेशा उसी में रहो गे, पस तकब्बुर करने वालों का ठिकाना बुरा है (जहाँ पहुंच कर अपने क़िये का फल पायें गे।) ७७. पस (ए नबी!) तू सब्र कर और यक़ीन रख कि अल्लाह का वादा (फ़तह और मदद के बारे में) सच है (ज़रूर हो कर रहे गा) जिन-जिन बातों का हम उन को वादा देते हैं उन में से बाज़ हम तुझ को दिखा दें[१९], या (उन के आने से पहले ही) तुझ को फ़ौत कर लें तो हमारी तरफ़ ही यह लोग फिर कर आयें गे। (उस समय हम उन को सब कुछ दिखा दें गे) ७८. जितने रसूल हम ने तुझ से पहले भेजे हैं उन में से बाज़ का बयान हम ने तुझे सुनाया है और बाज़ का नही सुनाया[२०] (जो अ़रब से दूर देशों में हुये) किसी रसूल का यह काम नही कि बग़ैर अल्लाह के हुक्म के कोई निशानी ला सके (जो कुछ वह लाये सब अल्लाह के हुक्म से हुआ और हो गा। अब आइन्दा) जब अल्लाह का हुक्म आये गा तो हक़ के साथ फ़ैसला किया जाये गा (और जो जिस सज़ा के लायक़ हो गा वह पाये गा) और झूठ को इख़्तियार करने वाले उस मौक़ा पर सख़्त नुक़्सान उठायें गे। ७९. अल्लाह वह है जिस ने तुम्हारे लिये चार पाये पैदा किये ताकि उन में से बाज़ पर तुम सवार हो और बाज़ को तुम खा जाओ। ८०. और तुम्हारे लिये उन में कई एक प्रकार के लाभ हैं और तुम उन पर सवार हो कर अपने दिली मक़ासिद को और उन चारपायों और कश्तियों पर तुम सवार हो कर फिरते हो[२१] (यह किस की क़ुदरत के निशान है? उसी एक अल्लाह की) ८१. और वह तुम को अपने निशान दिखाता है फिर तुम उस के निशानों में से किस निशान को इन्कार कर सकते हो? ८२ क्या उन्हों ने मुल्क में फिर कर देखा नही

....

१९. हमारे मुल्क हिन्दुस्तान के सूबा पंजाब में ग़ुलाम अहमद क़ादियानी नाम के एक शख़्स ने अपने आप को हज़रत **ईसा मसीह होने** का दावा किया। अपने दावे को सच्चा साबित करने के लिये उस ने बहुत सी भविष्यवाणियाँ कीं, जिनमें कुछ तो उस की अपनी ज़िन्दगी के मुतअ़ल्लिक़ थीं। जैसे, एक महिला से निकाह का एलान किया और खुले

➲शब्दों में पोस्टर प्रसारित किया कि वह मेरी ज़िन्दगी में मेरे निकाह में आये गी (शहादतुल् कुरआन पृष्ठ८१) बल्कि उस से औलाद भी पैदा हो गी (ज़मीमा अन्जामे आथम पृष्ठ ५३) इन के अ़लावा और भी वाक़िआत का अपनी ज़िन्दगी में आना बतलाया था। लेकिन यह सब भविष्यवाणियाँ उन की ज़िन्दगी में पूरी न हुयीं और मुख़ालिफ़ों की तरफ़ से एतराज़ शुरू हो गये तो उन के मुरीदों ने यह उत्तर दिया कि नबियों की भविष्यवाणियाँ उन की ज़िन्दगी ही में नही पूरी हो जातीं, बल्कि कुछ उन की ज़िन्दगी में और कुछ उन के मरने के बाद पूरी होती हैं। अपने दावा के सबूत में यह आयत और इस प्रकार की और दूसरी आयतें पेश कीं और दावा किया कि इस आयत में भी इसी बात की ओर इशारा है कि जिन बातों का अल्लाह ने मोमिनों से वादा लिया है उन में से नबी की ज़िन्दगी में बाज़ का पूरा होना ज़रूरी है, कुल का नहीं। इन की बातों का जवाब यह है कि उन लोगों ने धोखा खाया है, या जान बूझ कर उन्हों ने धोका दिया है। नबी की तरफ़ से मुख़ालिफ़ों को दो प्रकार के अ़ज़ाबों से डराया जाता है एक वह जो उन की ज़िन्दगी में आने वाले होते हैं और एक वह जो आख़िरत में पेश आने वाले होते हैं। चुनान्चे अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है: "हम उन काफ़िरों को बड़े अ़ज़ाब से पहले अदना (छोटा) अज़ाब भेजते हैं ताकि वह लोग सच्चाई की तरफ़ लौटें" (अलिफ़ लाम्मीम सज्दा-१२)

दूसरी जगह फ़रमाया: "उन काफ़िरों के लिये दुनिया में अ़ज़ाब है और आख़िरत में भी बड़ा सख़्त अ़ज़ाब है और उन के लिये कोई बचाने वाला नहीं" इस आयत में जो बाज़ अ़ज़ाबों का ज़िक्र है यह उन मजमुआ़ (समस्त) अ़ज़ाबों का हिस्सा हैं जो कुफ़्फ़ार को बताये गये थे, जिन में से बाज़ दुनिया से और बाज़ आख़िरत से तअ़ल्लुक़ रखने वाले थे। इस लिये इस के बारे में यह कहना सहीह है जो ऊपर आयत में बयान हुआ कि बाज़ तुम को दिखायें गे, क्योंकि बाज़ दूसरे के दिखाने की जगह दुनिया नही, बल्कि आख़िरत का घर है। यहाँ मिर्ज़ा साहब की जिन भविष्यवाणियों पर एतराज़ है वह तो ख़ास दुनिया ही से तअ़ल्लुक़ रखती हैं। क्योंकि निकाह का होना या किसी का नबी ही की ज़िन्दगी में मरना वग़ैरह यह ऐसे वाक़िआत हैं जो ख़ास कर नबी की ज़िन्दगी ही में पूरे होना चाहते हैं, इस लिये इस क़िस्म की भविष्यवाणियों का इस आयत से कोई संबन्ध नहीं (सनाई-७/६५,६६)

२०. कुरआन मजीद में केवल २५ संदेष्टाओं का हाल बयान है। इस के अ़लावा हर मुल्क और हर-हर क्षेत्रों में अल्लाह के संदेष्टा आ चुके हैं और लोगों को तौहीद और दीन इस्लाम की हिदायत कर चुके हैं। एक हदीस के अनुसार दुनिया में एक लाख चौबीस हज़ार पैगंबर आ चुके हैं। एक अन्य हदीस में आठ हज़ार का ज़िक्र है। इस में चार हज़ार तो बनी इस्राईल में और चार हज़ार बाक़ी दूसरी क़ौमों में आये। हमारे लिये लाज़िम है कि पहले के लोगों में से (जैसे, हिन्दुओं, पारसियों, चीनियों, यूनानियों, रूमियों, या इन के अ़लावा और क़ौमों में) से जो लोग गुज़रे हैं और उन के बारे में यह साबित है कि वह तौहीद परस्त थे, उन में से किसी की पैगंबरी का इन्कार न करें और पूरे यक़ीन के साथ इक़रार भी न करें, क्योंकि इन लोगों के नबी होने के लिये स्पष्ट सबूत नहीं इसलिये इजमाली (संक्षिप्त) ईमान काफ़ी है। और यूँ कहें कि हम अल्लाह के सब पैगंबरों पर ईमान लाये। मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान और मौलाना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ साहब ने फरमाया है कि हिन्दू धर्म के जो बुज़ुर्ग लोग गुज़रे हैं (जैसे कृष्ण चन्द्र, राम चन्द्र वग़ैरह) हम को उन की बुराई न करनी चाहिये, इसलिये कि शायद वह अल्लाह के पैगंबर हों (वहीदी-६१९)

मैं हिन्दी अनुवादक कहता हूँ कि राम चन्द्र बिल्कुल नबी नहीं था, उस ने घाघरा नदी में अयोध्या नगरी के तट पर डूब कर आत्महत्या (खुद कुशी) की थी और यह बात अपनी जगह पर बिलकुल तै है कि एक नबी क्या एक बुजुर्ग भी आत्महत्या नहीं कर सकता और न ही किसी धर्म में यह जायज़ है। इसके अलावा कृष्ण के गोपियों के साथ जो बदकारियों के क़िस्से मशहूर हैं जिसे 'लीला' कहा जाता है वे भी कृष्ण के नबी नहीं होने को स्पष्ट रूप से इन्कार करते है.............................. -ख़ालिद।

२१. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क़ियामत के दिन एक आदमी को अल्लाह तआ़ला के सामने पेश किया जायेगा तो वह उस से प्रश्न करेगा कि क्या मैं ने तुझ को आँख, कान, नाक, माल, औलाद वग़ैरह नहीं➲

दिये? और क्या, गाय, बैल, भेड़, बक्री, ऊँट वग़ैरह बहुत से चौपायों को तुम्हारे ताबे (अधीन) नहीं कर दिया? और क्या तुझ को दुनिया में लंबे समय तक हुकूमत और सुख-चैन नही दिया? फिर यह तमाम चीज़ें पाने के बाद क्या तुम को यक़ीन था कि मुझ से भी अल्लाह के पास लौट कर जाना है? बन्दा कहे गा कि मैं यह दिन तो भूल ही गया था। इस पर अल्लाह तआ़ला फ़रमाये गा कि जिस प्रकार तू ने दुनिया में लापरवाही की इसी प्रकार मैं भी आख़िरत में तुझ से लापरवाही बरतूंगा। यानी दुनिया में तू जिस प्रकार मेरी अ़िबादत और इताअ़त से लापरवाह रहा, इसी प्रकार मैं आज आख़िरत में भी तेरे रोने और चीख़ने-चिल्लाने की पर्वाह नही करूँ गा (वहीदी)

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ ۝ فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا ۭ سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ عِبَادِهٖ ۚ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ۝

किस प्रकार अन्जाम उन लोगों का हुआ जो इन से पहले थे, जो संख्या में उन से बहुत अधिक और कुव्वत और ज़मीनी आसार (यानी आबादी और खेती-बाड़ी वग़ैरह) के लिहाज़ से भी बहुत बढ़े हुये थे, फिर उन की दुनियावी कमाई ने जो वह कमाते थे कुछ काम न दिया (आख़िर कार अल्लाह के ग़ज़ब से तबाह हो गये) ८३ फिर जब उन के पास उन के रसूल खुले अहकाम ले कर आये तो वह अपने अ़िल्म पर जो उन के पास था घमंडी हुये (और उस अ़िल्म के मुक़ाबला में नबियों की तौहीन करते। इसी हाल में थे कि अल्लाह के ग़ज़ब ने उन पर धावा बोला और) जिन खबरों पर वह मख़ूल करते थे वही उन पर उलट पड़ी[२२] (यानी अ़ज़ाब ने उन को घेर लिया) ८४. फिर जब उन्हों ने हमारा अ़ज़ाब देख लिया तो बोले: हम अल्लाह वाहिद पर ईमान लाये और जिन-चीज़ों को हम अल्लाह का शरीक बनाते थे उन से हम मुन्किर हुये। ८५. जब उन्हों ने हमारा अ़ज़ाब देखा तो वह ईमान उन का उस इलाही क़ानून के मुताबिक़ जो उस के बन्दों में जारी है उन के हक़ में लाभ दायक न हुआ और उस मौक़ा पर (अन्बिया के मुनिकरों ने सख़्त नुक़्सान उठाया)

....

२२. यानी जिन बातों को वह अक़्लमन्दी समझते थे जैसे, दुनिया का बनाव-सिंगार और तदबीरें। या मज़ाक़ के तौर पर उन के अ़िल्म को अ़िल्म फ़रमाया, वर्ना हक़ीक़त में यह जेह्ल और मूर्खता थी। इमाम राज़ी रह० ने कहा कि शायद इस से मुराद फ़लसफ़ा और दहरिया लोगों का अ़िल्म है, क्योंकि यह लोग संदेष्टओं की बातों को हल्का और बेक़द्र समझते थे। चुनान्चे सुक़रात (फ़ल्सफ़ी) से किसी ने कहा कि मूसा अ़लै० से मिल कर उन से अ़िल्म हासिल कर, तो उस ने कहा कि हम लोगों को किसी की तालीम की ज़रूरत नही, खुद ही अपने अ़िल्म से अच्छाइयाँ-बुराइयाँ पहचानते और जानते हैं। (जामिउलबयान-४०९)

आजकल भी कुछ आज़ाद तबीअ़त उलमा का यही हाल है। अगर हदीसें उन की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हैं तो तुरन्त कह देते हैं कि यह हदीस सहीह नही है। यह लोग बड़े-बड़े मुहद्दिसों (जैसी इमाम बुख़ारी, मुस्लिम वग़ैरह)

➲को हक़ीर नज़रों से देखते हैं। यह लोग इतनी मेहरबानी ज़रूर करते हैं कि कुरआन को ग़लत नही कहते हैं, लेकिन जो आयत उन की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हो तो तुरन्त उस की तावील कर देते है, चाहे वह तावील सरासर कुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ ही क्यों न हो। यह लोग नबिय्यों के चमत्कारों को हक़ीक़ी नही मानते। इस बीमारी में तो हमारे बहुत से उलमा भी गिरफ़्तार हैं। इन लोगों का कहना है इस्लाम के दुश्मनों को पराजित करने में कुरआन व हदीस विवश (लाचार) हैं। उन को शिकस्त देने के लिये मन्तिक़, फ़लसफ़ा की ज़रूरत है। ऐसे ख़यालात रखने वालों को अल्लाह तआला हिदायत दे। (अहादीसुत्तफ़ासीर)

सूरः हामीम् सज्-दः-(41)

सूरः हामीम सज्दा मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[1]। इस में ५४ आयतें और छः रूकूअ़ हैं। शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है

१. हामीम[2] २. यह किताब रहमान-रहीम की तरफ़ से नाज़िल हुयी है। ३. यह ऐसी किताब है कि इस के अहकाम खोल-खोल कर बयान किये गये हैं, इस का नाम कुरआने अ़रबी है उन लोगों के लिये जो ज़िल्म रखते हैं।

....
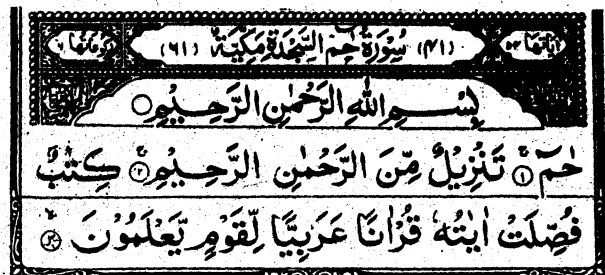
१. यह सूरः मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ५३/५४ आयतें हैं, इस पर सभी का इत्तिफ़ाक़ है। रिवायतों में आया है कि एक दिन मक्का के कुफ़्फ़ार ने परस्पर सलाह-मश्वरा कर के उत्बा बिन रबीआ़ को भेजा कि वह जा कर नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को समझा दे कि हमारे दर्मियान इख़्तिलाफ़ और फूट डालना बन्द कर दें। उत्बा ने जा कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा: तुम अच्छे हो या हमारे बाप-दादे अच्छे हैं? तुम को क्या हो गया है कि तुम ने हमारे दर्मियान फूट डाल कर हमारे दीन को बदनाम कर के रख दिया है। अब अगर तुम्हें माल की ज़रूरत हो तो हम तुम्हें माल-दौलत से मालामाल कर दें, अगर औ़रत की ख़ाहिश रखते हो तो एक नहीं, दस-दस औ़रतों से तुम्हारा विवाह कर दें। इस के जवाब में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह मुबारक सूरः पढ़नी आरंभ कर दी। जब आप आयत न०१३ तक पहुँचे तो उतबा ने कहा: बस करो, तुम्हारे पास ले-दे कर यही है और कुछ नहीं। फिर वह वापस लौट कर आया और अपनी क़ौम से कहा: मैं ने ऐसा कलाम सुना है, कि मेरे कानों ने ऐसा कलाम अभी तक नहीं सुना था। (सीरत इब्ने हिशाम) (वहीदी)

२. 'हामीम' यह हुरूफ़ मुक़त्तआ़त में से है। इस का सहीह माना व मुराद अल्लाह ही जानता है। हमें केवल इस पर ईमान लाना चाहिये। मौलाना मर्हूम ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० की तफ़्सीर की रोशनी में तर्जुमा यह किया है। "मैं रहमान और रहीम"। लेकिन दुरूस्त वही है जो ऊपर लिखा गया। (राज़०)

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ④
وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْۤ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَاۤ اِلَيْهِ وَ

४. यह किताब खुश्ख़बरी देने वाली और डराने वाली है, फिर भी उन में से बहुत से लोग उस से मुंह➲

فِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ
فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ
يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا
اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ۭ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ۝
الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ
كٰفِرُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝ قُلْ اَىِٕنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ
بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗٓ
اَنْدَادًا ۭ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَجَعَلَ فِيْهَا
رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ
اَقْوَاتَهَا فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ۭ سَوَاۗءً لِّلسَّاۗىِٕلِيْنَ ۝

मोड़कर उस को नहीं सुनते ५. और कहते हैं: जिस बात की तरफ़ तू हम को बुलाता है हमारे दिल उस से पर्दों में हैं और हमारे कानों में डाट है और हम में और तुझ में एक पर्दा है, पस तू अपना काम किये जा हम अपना करें गे (यह उन का उत्तर कितना ना माकूल है कि नसीहत को भी सुनना गवारा नही करते) ६. तू कह कि सिवाए इस के नहीं कि मैं तुम्हारी तरह का एक आदमी हूँ मेरी तरफ़ वह्यि की जाती है कि तुम्हारा सब का माबूद एक है, पस तुम उस की तरफ़ सीधे हो कर चलो और (गुनाहों पर) उस से माफ़ी माँगा करो। ७. और जो मुश्रिक लोग अपने आप को (शिर्क की नजासत से)पाक नही करते और आख़िरत की ज़िन्दगी के भी मुन्किर हैं उन के लिये (त'बाही व बर्बादी पर) अफ़सोस है[3]। (वह उस समय अफ़सोस करें गे मगर उन का अफ़सोस कुछ काम न आये गा) ८. हाँ, जो लोग ईमान ला कर नेक अ़मल किये हों गे उन के लिये ख़त्म न होने वाला अज्र हो गा (जो कभी समाप्त न हो गा और वह हमेशगी के ऐश में रहें गे।) ९. (ऐ नबी!) तू (उन को) कह: क्या तुम उस अल्लाह के मुन्किर हो जिस ने ज़मीन को दो दिन में पैदा किया[4] और तुम उस के लिये शरीक बनाते हो। यह अल्लाह तमाम जहानों का पर्वरदिगार है (यहाँ तक कि तुम्हारे बनावटी माबूदों का भी यही पर्वरदिगार है) १०. और उसी ने ज़मीन के ऊपर बड़े-बड़े पहाड़ पैदा कर दिये और ज़मीन में बड़ी बर्कत दी और हर एक जानदार की ख़ुराक उस में रखी, यह सब कुछ चार दिन में पैदा कर दिया (ज़मीन की रोज़ी) सब मुहताजों के लिये बराबर है।

....

३. कुछ उलमा कहते हैं कि यहाँ 'ज़कात' से कलिमा कहना मुराद है। ज़कात के माना हैं "सुथराई" (मुवज़्ज़िहुल कुरआन) जिन के नज़दीक ज़कात के माना "पाकीज़गी" और "सुथराई" के हैं, उन की दलील यह आयतें है। "कामियाबी को पहुंचा जिस ने अपने नफ़्स को पाक किया। (सूरः शम्स) और फ़लाह को पहुंचा वह शख़्स जो पाक हुआ (सूरः अअ्ला) या फिर माल की ज़कात मुराद है। बल्कि 'यूतू-न' के शब्द से तो यही मालूम होता है कि माल की ज़कात ही मुराद है। रहा यह शुब्हा, कि ज़कात तो मदीना शरीफ़ में फ़र्ज़ की गयी है और यह सूरः मक्की है, तो इस का उत्तर यह है कि अस्ल ज़कात, यानी माल में से थोड़ा-बहुत अल्लाह की राह में देना तो शुरू ही से फ़र्ज़ था, लेकिन मात्रा (चालीसवाँ) के हिसाब से निकालने का बाक़ायदा आदेश मदीना में नाज़िल हुआ। (हमीदी)

४. दो दिन में ज़मीन बनाई और दो दिन में पहाड़ और पेड़-पौधे जो मख़्लूक़ की ख़ूराक हैं। फिर आसमान सारा

➲का सारा धुँवा जैसा एक था , उन को सात हिस्सों में बाँटा और हर एक का कारख़ाना अलग-अलग ठहराया। फिर आसमान और ज़मीन को बुलाया और कहा: खुशी से आओ या नाखुशी से आओ। यानी यह इरादा किया कि उन दोंनो के मिलाप से दुनिया आबाद करे, तो वह दोनों खुशी से आ मिले। आसमान पर गर्मी पड़ी तो हवायें उठीं उन से गर्द और भाप ऊपर चढ़ी और पानी बन कर वर्षा हुयी। चार चीज़ें अगर ज़मीन में इकट्ठी हों (आग, हवा, पानी, मिट्टी) तो मख़्लूक़ के पैदा होने का ज़रीआ बनती हैं। ज़मीन के अन्दर पहले ही से ख़ूराक को जमा कर रखा था, पानी और ज़मीन के अन्दर ख़ूराक पैदा करने की सलाहियत रखी थी। यह अल्लाह को मालूम है कि कहाँ कौन सी मख़्लूक़ बस्ती है और उन का रहन-सहन कैसा है। (मुवज़्ज़िह)

इस आयत से यह मालूम होता है कि ज़मीन व आकाश वग़ैरह आठ दिन में बनाये। जब कि पारः२१, सूरः सज्दा की आयत न० ४ से ज़ाहिर है कि उन को छः दिनों में बनाया इस शुब्हे का उत्तर यह है कि इस आयत का मतलब यह नहीं कि ज़मीन को दो दिन में और खाने-पीने की चीज़ों को चार रोज़ में बनाया, बल्कि यह मतलब है कि ज़मीनों को दो दिनों में बनाया फिर पहाड़ और ख़ाने-पीने की चीजों को बनाया और यह सब चार दिन में हुये, फिर दो दिन में आसमानों को बनाया, यह कुल टोटल छः दिन हुये (ग़राइबुल् कुरआन) कुछ लोगों का यह कहना है कि सूरज की गर्मी से हवा चली, उस से गर्द और भाँप ऊपर उठी, फिर ठन्डा हो कर पानी की शक्ल में बारिश हुयी, तो यह फ़ल्सफ़ी लोगों के दिमाग़ की उपज है। सहीह बात यह है कि बारिश का पानी आसमानी दरिया में से बादलों में आता है और उन बादलों से ज़मीन पर बरसता है। चुनान्चे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से यही नक़ल है(अलजवाइज़ वस्सलात) हज़रत इब्ने अ़ब्बास वह शख़्स हैं जिन के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दुआ़ फ़रमाई थी 'ऐ अल्लाह! उन को कुरआन की समझ दे'' इस लिये कुरआन की तफ़्सीर में उन का क़ौल दूसरे मुफ़स्सिरों के क़ौल से मुक़द्दम है। इस के अ़लावा कअ़ब अहबार, ख़ालिद बिन मादान, अबू ज़रग़िफ़ारी रज़ि० आदि से भी ऐसी ही रिवायतें हैं (जवाइज़-२३०/वहीदी)

कुरआन मजीद में आसमान से वर्षा होने का बयान है, इस लिये हमें बस इसी पर ईमान लाना चाहिये, आगे मज़ीद कुरेदने की ज़रूरत नहीं। कुरआन मजीद कोई साइंस और फ़लसफ़ा की किताब नही है। कुरआन ने अक़ीदा और अ़मल व अख़्लाक़ पर ज़ोर दिया है और इन्सान को इन्सान बनने के लिये इन ही चीज़ों की ज़रूरत है (राज़)

ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ وَهِىَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ۭ قَالَتَآ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ۝ فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِىْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِىْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ۭ وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَحِفْظًا ۭ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ ۝ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ قَالُوْا لَوْ شَآءَ

११. फिर वह आसमान की तरफ़ मुतवज्जह हुआ जब कि वह अभी (पहली हालत में) धुवाँ था, फिर उस (धुवें) को और ज़मीन को (जो अभी पूरी तरह तय्यार न थी) कहा कि तय्यार हो जाओ चाहे खुशी से चाहे नाखुशी से (हर हाल में तुम को तय्यार होना पड़े गा) उन दोनों ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर! राज़ी-खुशी से तय्यार हैं"।

१२. पस उस (धुवाँ) को दो रोज़ में (तह ब तह) सात आसमान बना दिया और हर आसमान में अपना हुक्म नाफ़िज़ किया। और पहले आसमान को सितारों की क़िन्दीलों के साथ सजा दिया और (शयातीन और दूसरी ख़लल डालने वाली चीज़ों से) उस को सुरक्षित किया (क्या मजाल कि➲

رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ
كٰفِرُوْنَ ﴿١٤﴾ فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ
الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ؕ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ
اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَكَانُوْا

उस में कभी ख़लल आया हो, क्योंकि) यह बनावट और अनुमान बड़े गालिब और बड़े ज़िल्म वाले का हो है[६]। १३. अगर यह लोग मुँह मोड़ें तो तू कहः मैं तुम को आदियों और समूदियों जैसे अज़ाब से डराता हूँ १४.(वह अज़ाब उन पर उस समय आया था) जब उन के पास उन के आगे और पीछे से (कसरत से) पैग़ंबर आये और उन्हों ने यह संदेश सुनाया कि अल्लाह को छोड़ कर किसी की ज़िबादत न करो[७]। वह (उत्तर में) बोलेः हमारा पर्वरदिगार अगर चाहता तो फ़रिश्तों को रसूल बना कर के भेजता, सो हम तुम्हारी तालीम से जिस को तुम ले कर आये हो इन्कारी हैं। १५ आदियों (का तो यह हाल था कि उन्हों) ने ज़मीन पर नाहक़ घमंड किया (अगर्चे बहुत शक्तिशाली थे मगर जितने थे उस से भी आगे बढ़े और बहुत बड़े बने) और बोलेः बलबूते में हम से कौन बड़ा है? क्या उन्हों ने इस बात पर ग़ौर न किया कि जिस अल्लाह ने उन को पैदा किया वह उन से अधिक ताक़त वर है (जिस के क़ब्ज़े में सब कुछ है। लेकिन वह बदकार थे)

....

५. यानी इरादा किया कि दोनों (यानी आसमान और ज़मीन) के मिलाप से दुनियाँ बसाये, चाहे वह खुशी से मिलें या ना खुशी से मिलें (बहर हाल दोनों को मिला कर एक निज़ाम बनाना था) वह दोनों अपनी तबीअ़त से खुशी-खुशी आ मिले। आसमान से सूरज की किरणें आयीं, गर्मी पैदा हुयी, हवायें उठीं, उन से गर्द और भाप ऊपर चढ़ी, फिर पानी बन कर वर्षा हुयी, जिस से ज़मीन से तरह-तरह की चीज़ें पैदा हुयीं। ऊपर जो यह फ़रमाया था कि "ज़मीन में उस की ख़ूराकें रखीं" यानी उस के अन्दर उन चीज़ों के उगने की सलाहियत रख दी।

६. यानी चार दिन तो पहले के थे और दो दिन में आसमान बनाये, यह कुल छः दिन हो गये। जैसा कि दूसरी जगह "छः दिन" का बयान है। कुछ हदीसें इस प्रकार की भी आयी हैं कि फ़लाँ दिन अल्लाह ने यह पैदा किया और फ़लाँ दिन वह पैदा किया। इन में कोई भी हदीस सहीह नहीं है। यहाँ तक कि हज़रत अबू हुरैरा से जो सहीह मुस्लिम में रिवायत मौजूद है उस के बारे में हाफ़िज़ इब्ने कसीर रह० लिखते हैं "सहीह तो है लेकिन हददर्जा अ़जूबा है"। और "रूहुल मआ़नी" में इमाम शाफ़ई का यह नक़ल है कि " मुस्लिम तन्हा इस के रावी है और उस की सनद पर एतराज़ भी किया गया है"।

सूरः बक़रः की आयत न०२१ से मालूम होता है कि सात आसमान, ज़मीन की पैदाइश के बाद बनाये गये,जबकि सूरः नाज़िआ़त की आयत २८ में फ़रमाया गयाः " आसमान के बाद ज़मीन को बिछाया"। यानी ज़मीन आसमान के बाद पैदा की गयी। दोनों आयतों में देखने में तज़ाद (इख़्तिलाफ़) मालूम होता है। लेकिन ऐसी कोई बात नही है। 'सुम्म' और 'बा-द' यह दोनों अपने अस्ल माना से हट कर कभी तमाम बातों को एक साथ शामिल करने के लिये आते हैं जिन में तर्तीब की शर्त नही होती। यह बात अबूहय्यान ने लिखी है और इस पहलू से इख़्तिलाफ़ को दूर किया जा सकता है। इस प्रकार की बहुत सी मिसालें कुरआन में मौजूद हैं। हां, जहाँ नेमतों का ज़िक्र है वहाँ ज़मीन को और जहाँ अल्लाह की अ़ज़मत और बड़ाई का ज़िक्र है वहाँ आसमान को पहले बयान किया है। यह ऐसा नुक्ता है जिसे हर कोई आसानी से समझ सकता है। (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)

७. यानी जब तक इन्सान तमाम ग़ैरूल्लाह से नाता तोड़ कर केवल अल्लाह की ज़ात को न पुकारे और दूसरे लोगों से हर प्रकार से अलग हो कर अल्लाह से मदद न चाहे, उस वक़्त तक वह उस का परस्तार (बन्दा) नहीं कहला

सकता। यही तालीम 'लाइला-ह इल्लल्लाह' में दी गयी है, यानी इस कलिमे में तमाम ग़ैरूल्लाह का इन्कार कर के एक अल्लाह की अ़िबादत व इताअ़त का हुक्म दिया गया है। इस्लाम की सब से बड़ी विशेष्ता यही ख़ालिस तौहीद है जो हर प्रकार की मिलावट से पाक है। और मक्का के काफ़िर इसी तौहीद से चिढ़ते थे और कहते थे "इस ने तो तमाम माबूदों को एक करके एक माबूद बना दिया है, यह तो बड़े आश्चर्य की बात है" (सूरः स्वाद-५) (वाज़िहुल बयान सियालकोटी रह०)

بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿١٥﴾ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا
فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى
وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٦﴾ وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا
الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ
الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٧﴾ وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿١٨﴾ وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَاۗءُ
اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٩﴾ حَتّٰٓى اِذَا مَا
جَاۗءُوْهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ
بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ
عَلَيْنَا ۭ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ
وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمَا
كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَآ

और हमारी आयतों का इन्कार करते थे। १६ पस हम ने उन पर नहूसत के दिनों में (जो उन के हक़ में मन्हूस थे, उनपर) तेज़ हवा भेजी ताकि हम उन को दुनिया की ज़िन्दगी में ज़िल्लत का अज़ाब चखा दें और आख़िरत का अ़ज़ाब जो बहुत ज़लील करने वाला है (अभी बाक़ी है, जिस में वह बुरी तरह पकड़े जायें गे) और उन को (किसी तरह से) मदद न पहुंचे गी। १७. और समूद की क़ौम को हम ने राहनुमाई की, मगर उन्हों ने गुमराही को हिदायत पर तरजीह दी (वही बदमस्ती करते रहे जिस का अन्जाम यह हुआ कि) उन की बदअ़मली की वजह से ज़िल्लत से हलाक करने वाले अ़ज़ाब ने उन को आ दबाया (पस वह बर्बाद कर दिये गये) १८. और जो लोग इमानदार और परहेजगार थे हमने उन को बचा लिया (बाक़ी सब तबाह कर दिये गये) १९. और जिस रोज़ अल्लाह के (दीन के) दुश्मन आग की तरफ़ चलाये जायें गे फिर वह (जहन्नम की तरफ़) धकेले जायें गे। २०. यहाँ तक कि जब उस (दोज़ख़) में पहुंचें गे ते उन के कान, आँखें और उन के चमड़े जो कुछ वह करते रहे थे उस की गवाही देंगे (यानी हर एक जोड़ से जो उस ने किया होगा जुर्म के इक़रार की आवाज़ें निकलें गी, जैसे टेपरिकार्डर से निकलती है) २१. और वह लोग अपने चमड़े से कहें गे कि तुम ने क्यों हमारे ख़िलाफ़ गवाही दी? वह (हिस्से और जोड़) कहें गे: हम को अल्लाह ने बोलने को कहा है जिस ने सब चीज़ों को बोलने को कहा है (हम मख़्लूक़ और मजबूर हैं) और (वह हमारा ख़ालिक़ है) उस ने तुम को पहली मर्तबा पैदा किया था अब तुम उस की तरफ़ लाये जा रहे हो। २२. और तुम इस से न छुप सकते थे कि तुम्हारे कान, आँखें और तुम्हारे चमड़े तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही दें गे (क्योंकि उस की तुम्हें ख़बर भी न थी)

....

८. बज़्ज़ार की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक बार मुसकुराये या हँसे, फ़िर आपने

➲सहाबा से पूछा कि तुम लोग मेरे हँसने की वजह क्यों नहीं पूछते? सहाबा ने कहा: क्या वजह है कि आप हँसे? आप ने फ़रमाया: "क़ियामत के दिन बन्दा अपने रब से झगड़े गा और कहे गा कि तेरा वादा यह नहीं है कि तू अत्याचार करे गा। अल्लाह तआला कहेगा कि तुम ने बिल्कुल ठीक कहा है। बन्दा कहे गा मैं अपने गुनाहों पर किसी दूसरे की गवाही क़ुबूल न करूँ गा। अल्लाह तआला फ़रमाये गा: क्या मेरी और बुज़ुर्ग फ़रिशतों की गवाही काफ़ी नहीं? लेकिन बन्दा बार-बार अपनी ही बात कहता चला जाये गा। अन्त में अल्लाह तआला उस की ज़बान को बन्द कर दे गा और उस के बदन के हिस्सों से कहे गा कि उस ने जो कुछ किया है उस की गवाही दो, जब वह गवाही दें गे तो यह बन्दा उन्हें लानत-मलामत करते हुये कहे गा कि मैं तो तुम्हें बचाने के लिये लड़-झगड़ रहा था (मुस्लिम, नसई, आदि)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि क़ियामत के दिन एक समय तो वह हो गा कि किसी को किसी से बोलने की इजाज़त न हो गी और न कोई हीला-बहाना कर सकें गे। फिर जब अनुमति दी जाये गी तो बोलने लगें गे, झगड़ें गे और इन्कार करें गे, झूठी क़समें भी खायें गे। फिर गवाहों को ला कर उन की ज़बानें बन्द कर दी जायें गी और ख़ुद उन के बदन के जोड़ गवाही दें गे। फिर ज़बानें खोल दी जायें गी तो वह सर्वप्रथम अपने बदन के हिस्सों को मलामत करें गे, जवाब में वह कहें गे कि हमें अल्लाह ने बोलने की क़ुव्वत दी है इस लिये हमने जो कुछ बोला है सच-सच बोला है। और इस प्रकार ज़बानी इक़रार भी हो जाये गा।

इब्ने अबी हातिम में इमाम राफ़ेअ़ अबुल हसन से रिवायत है कि अपने बुरे कामों के इन्कार पर ज़बान इतनी मोटी हो जाये गी कि बोला न जाये गा, फिर जिस्म के हिस्सों को हुक्म हो गा कि तुम बोलो। यह सुन कर सभी हिस्से (आँख, कान, नाक, हाथ, पाँव वग़ैरह) सच-सच अपना अ़मल बता दें गे। (इब्ने कसीर) क़ुरआन मजीद में इस प्रकार की और भी आयतें आयी हैं। कुछ बेदीन और जाहिल क़िस्म के लोग इस बात पर आश्चर्य प्रकट करते हैं कि जिस्म के हिस्से कैसे बोलें गे? हालाँकि क़ुरआन मजीद ख़ुद कह रहा है कि इस में आश्चर्य की क्या बात है? जिस ने हर चीज़ को बोलना सिखाया उस ने जिस्म के इन हिस्सों को भी बोलना सिखा दिया"। अगर क़ुरआन पर ईमान हो तो इन्कार की कोई गुन्जाइश नहीं (राज़)

९. हदीस शरीफ़ में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुल्क शाम की तरफ़ इशारा किया और फ़रमाया: तुम्हारा हश्र वहीं हो गा, कुछ सवार हों गे और कुछ पैदल चलें गे और तुम्हारे मुँह में डाट लगी हो गी। सब से पहले तुम्हारे ख़िलाफ़ तुम्हारी रान और हथेली गवाही दे गी, फिर आप ने इस आयत (न० २२) की तिलावत फ़रमाई।

शाने-नुज़ूल:- हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० रिवायत करते हैं कि मैं काबा के पर्दे के पीछे छुपा हुआ था इतने में तीन आदमी आये। उन में से एक क़ुरैश और दो सक़ीफ़, या दो क़ुरैश और एक सक़ीफ़ क़बीले का था, उन के पेट बड़े थे लेकिन अक़्ल कम थी। उन्हों ने परस्पर कुछ बातें कीं जिन्हें मैं नहीं सुन सका। फिर उन में से एक बोला: क्या तुम समझते हो कि अल्लाह हमारी बातें सुनता है? दूसरा बोला: अगर हम बुलन्द आवाज़ से बोलें गे तो वह सुनता है, लेकिन धीमी आवाज़ को नहीं सुनता। तीसरा बोला: अगर वह सुनता है तो धीमी और बुलन्द आवाज़ सब को सुनता है। हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं ने यह क़िस्सा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बयान फ़रमाया, इस पर अल्लाह ने इस आयत २२ को नाज़िल फ़रमाया।

एक अन्य हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया" अल्लाह के साथ मरते समय तक नेक गुमान रखना चाहिये, इस लिये कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है: मैं अपने बन्दे के साथ उसी तरह हूँ जैसा वह मेरे साथ गुमान रखे" (वहीदी) यहाँ पर 'गुमान' के माना "ईमान और यक़ीन" है। मतलब यह है कि यक़ीन के साथ अल्लाह की रहमत पर भरोसा करना चाहिये।

اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ لَا
يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ
ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝
فَاِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا
فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ ۝ وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ
فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَ
حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ
مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ۝
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ
وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ۝ فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝ ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ
لَهُمْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ ۭ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا

तुम जो समझते थे कि अल्लाह तुम्हारे बहुत से कामों को नहीं जानता २३. यही तुम्हारा ख़याल था जो तुम ने अपने रब के हक़ में गुमान किया, इसी ने तुम को तबाह किया और तुम ने नुक़्सान उठाया २४. (और उन पर सज़ा का हुक्म ऐसा सख़्त लगा होगा कि) अगर वह सब्र करें गे तो भी उन का ठिकाना आग ही होगा। और अगर वह माफ़ी चाहें गे तो उन को माफ़ न किया जाये गा। २५. और हम ने शयातीन को उन का साथी बना दिया जिन्हों ने उन के आगे और पीछे की बदकारियों को ख़ूबसूरत बना कर दिखाया। जिन्नों और इन्सानों की जो जमाअ़तें उन से पहले गुज़र चुकी हैं, उन के साथ उन पर भी (अल्लाह के अ़ज़ाब का) हुक्म साबित हो चुका है (जिस प्रकार वह लोग तबाह हुये, यह भी हलाक हों गे) बेशक यह लोग नुक़्सान वाले हैं। २६. और मुन्किर लोग कहते हैं कि (अरे भाई) इस कुरआन की तरफ़ कान न झुकाना[१०] (उस की आवाज़ भी तुम्हारे कान में न आने पाये) और उस (के पढ़े जाने) में शोर किया करो ताकि तुम ग़ालिब रहो। २७. पस हम उन मुन्किरों को सख़्त अ़ज़ाब चखा दें गे और उन के बदतरीन कामों का जो यह करते रहे हैं, उन को बदला दें गे। २८. अल्लाह के (दीन के) दुश्मनों का बदला यही दोज़ख़ है, इसी में उन का हमेशगी का घर हो गा (पस सज़ा उन को) उस काम के बदले में मिले गी जो यह लोग हमारी आयतों से इन्कार करते रहे हैं।

....

१०. शाने नुज़ूलः- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तब्लीग़ करते हुये आ़म सभाओं में जब कुरआन मजीद पढ़ते तो इस से आ़म काफ़िर प्रभावित होते थे। चुनान्चे बड़े-बड़े लीडरों (निताओं) ने यह प्रोग्राम बनाया कि जब कुरआन की तिलावत की जाये तो उसे हर्गिज़ न सुनो, बल्कि और दंगा-शोर मचाओ, तालियाँ पीटो और सीटियाँ बजाओ, बेहूदा बातें बको और आवाज़ें कसो ताकि उन की क़िरात बेअसर हो जाये और इस प्रकार तुम अपने मक़्सद में कामियाब हो जाओ। कुफ़्फ़ार के इसी नापाक इरादे का पर्दा चाक करने के लिये यह आयत नाज़िल हुयी। फिर उन को हिदायत करते हुये फ़रमाया कि जब कुरआन की आयतें तिलावत की जायें तो तुम शोर न मचाओ बल्कि ग़ौर से सुनो और ख़ामोशी साध लो। चुनान्चे सूरः आराफ़ की आयत न० २०४ में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः "जब कुरआन की तिलावत की जाये तो ग़ौर से सुनो और ख़ामोश रहो, ताकि तुम पर रहम किया जाये"।

लेकिन "कहाँ की ईट कहाँ का रोड़ा, भानमती का कुंबा जोड़ा" वाली कहावत के मुताबिक़ मुक़ल्लिद लोगों ने इस आयत को इमाम के पीछे सूरः फ़ातिहा न पढ़ने पर चिपका दिया है। यह आयत और सूरः आराफ़ की आयत न० २०४ दोनों मक्की हैं और दोनों ही के मुख़ातब मक्का के काफ़िर हैं, तो यह कितना भोंडा मज़ाक़ है कि अभी तो वह ईमान ही नही लाये और न ही नमाज़ पढ़ते हैं, लेकिन इस के बावजूद पेशगी तौर पर उन्हें हुक्म दिया जा रहा है कि ऐ मक्का के काफ़िरो जब नमाज़ में सूरः फ़ातिहा पढ़ी जाये तो तुम लोग इमाम के पीछे सूरः फ़ातिहा न पढ़ो। इस प्रकार के शोशे और चुटकुले-लतीफ़े छोड़ कर कुरआन का मज़ाक़ उड़ाना नहीं है तो और क्या है? इन दोनों मक्की सूरतों में न सूरः फ़ातिहा का ज़िक्र है और नअ़ीदैन और जुम्अ़: वग़ैरह का। इस विषय में विस्तार से मालूमात के लिये मौलाना सियालकोटी की तफ़सीर "वाज़िहुल् बयान" का अवश्य मुताला किया जाये और सूरः आराफ़ की आयत २०४ का हाशिया अवश्य देख जाये। (राज़)

يَجْحَدُوْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ اَرِنَا
الَّذَيْنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ
اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ
قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ
الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ
الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝ نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ
اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ۝ نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ
رَّحِيْمٍ ۝ وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَ
عَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ وَلَا تَسْتَوِي
الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۚ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ
فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِيٌّ
حَمِيْمٌ ۝ وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا

२९. और जो लोग मुन्किर हैं (क़ियामत के रोज़) कहें गेः हमारे पर्वरदिगार! जिन लोगों ने हम को गुमराह किया जिन्न हों या इन्सान, उन्हें हम को दिखा दे ताकि हम (उन की गर्दनों पर चढ़ कर) उन को पैरों के नीचे रौंदें ताकि वह सब से नीचे हों। ३०. जो लोग कहते हैं कि अल्लाह ही मारा रब है, फिर वह इसी पर जम गये[११] (उसी के मुताबिक़ अ़मल करते रहे) उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं (यह कहते हुये) कि न डरो और न ग़म करो और जिस जन्नत का तुम को वादा दिया जाता था आज उस की खुशी मनाओ (कि वह तुम्हें मिलने वाली है) ३१. (फ़रिश्ते यह भी कहते हैं कि) हम दुनिया में भी तुम्हारे दोस्त थे और आख़िरत में भी (तुम्हारे दोस्त ही रहेंगे और उस में जो तुम्हारे जी चाहें गे तुम को मिले गा और जो तुम माँगो गे पाओ गे) (यह नही कि क़ीमत से, बल्कि) ३२. अल्लाह बख़्शाने वाले मेहरबान की तरफ़ से मेहमानी हो गी। ३३ (सुनों और ग़ौर से सुनो) जो शख़्स अल्लाह की तरफ़ बुलाये (न केवल बुलाये बल्कि) स्वयँ भी नेक काम करे और (ऐलान कर के) कहे कि मैं मुसलमानों की जमाअ़त में का एक फ़र्द हूँ उस की बात से अच्छी बात किस की हो गी[१२]। ३४. नेकी और बदी बराबर नही (जो तुम को बदी पहुचाये) तुम उस को बहुत ही अच्छे तरीक़े से दूर किया करो फिर[१३] (देखना) तुम्हारा दुश्मन भी तम्हारा गोया मुख़्लिस दोस्त हो जायेगा।

➲३५. (मगर बात यह है कि) यह ख़स्लत उन्हीं लोगों को मिलती है जो सब्र करते हैं और उन्हीं लोगों को मिलती है

....

११. यानी दिल से इक़रार किया और उसी पर जमे रहे। उस के साथ किसी को कभी शरीक न ठहराया और न ही मरते दम तक उन के ईमान और यक़ीन में कोई कमी आयी। जों कुछ ज़बान से इक़रार किया था उस पर अ़मली तौर पर भी जमे रहे। जो कुछ भी अ़मल किया केवल उस की खुश्नूदी के लिये किया। अपने रब के फ़र्ज़ किये हुये हुक़ूक़ और वाजिबात को जाना-समझा और उसे अदा किया। हर तरफ़ से मुंह मोड़ कर उसी से लौ लगाये रहे और उसी की राह पर चले। ----- ऐसे बन्दों पर मौत के क़रीब और क़ब्र में और क़ब्रों से उठने के बाद (तीन स्थानों पर) अल्लाह के फ़रिश्ते नाज़िल होते हैं जो उन्हें तसल्ली और जन्नत की बशारत देते हैं और कहते हैं कि तुम को डरने और घबराने की कोई बात नहीं। दुनिया के सब रंज व ग़म समाप्त हो गये और किसी आने वाली आफ़त का अन्देशा भी नहीं रहा। अब हमेशा के लिये हर प्रकार की जिस्मानी और रूहानी खुशी तुम्हारे लिये है। नबिय्यों की ज़बानी जो जन्नत के वादे किये गए थे, वह अब पूरे किये जाने वाले हैं। यह वह दौलत है जिस के मिलने का यक़ीन हो जाने के बाद कोई फ़िक्र और ग़म आदमी के पास नही फटक सकता। बहुत संभव है कि मुत्तक़ी लोगों पर इस दुनियावी ज़िन्दगी में भी एक क़िस्म का फ़रिश्तों का नुज़ूल होता हो जो अल्लाह के हुक्म से उस के दीनी और दुनियावी मामलात में बेहतरी की बातें इल्हाम करते हों, जो उन के लिये इतमीनान और दिली सुकून का कारण बन जाता हो। जिस प्रकार आय न० २५ में कुफ़्फ़ार पर शैतानों का मुसल्लत होना साबित है और यह भी साबित है कि बुरी चीज़ों को अच्छा बना कर उन्हे गुमराह करने की कोशिश करते हैं, इसी प्रकार फ़रिश्ते भी नेक लोगों के पास आ कर इतमिनान दिलाते हों गे। बहरहाल कुछ मुफ़स्सिरीन ने यह भी माना लिया है। और यह बात अगली आयत " हम दुनिया में भी तुम्हारे दोस्त थे" से साफ़ ज़ाहिर है। अल्लाह बेहतर जाने (मुवज़्ज़िहुल् कुरआन)

१२. इस से पहले की आयतों में उन मख़्सूस बन्दों का ज़िक्र था जिन्हों ने केवल एक अल्लाह को अपना रब माना और इसी अक़ीदा और यक़ीन पर जमे रहे। यहाँ पर उन के एक और बुलन्द मुक़ाम का ज़िक्र किया जारहा है, यानी बेहतरीन शख़्स वह है जो खुद अल्लाह का हो रहे, उस की आज्ञापालन का एलान करे, उस के बताये हुये रास्ते पर चले और दुनिया वालों को भी उसी तरफ़ आने की दावत दे, उस का क़ौल और अ़मल बन्दों को अल्लाह की तरफ़ खींचने में कारगर सिद्ध हो। जिस नेकी की तरफ़ लोगों को बुलाये, पहले उस नेकी को खुद करे। अपने आप को अल्लाह का दास और उस का फ़रमाबदार होने का हर मौक़े पर एलान करता रहे और कभी किसी समय इस एलान में झिझक और शर्मिन्दगी न महसूस करे। उस की क़ौमिय्यत (राष्ट्रीयता) केवल इस्लाम मज़हब हो। हर प्रकार की ज़ात-पात और फ़िर्क़ाबन्दी से ऊपर उठ कर अपने आप को केवल ख़ालिस मुस्लिम कहलवाए और उसी बुलन्द मुक़ाम की तरफ़ लोगों को बुलाये, जिस की दावत देने के लिये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तश्रीफ़ लाये थे और आप के बाद सहाबा रज़ि० ने उस की तब्लीग़ और प्रसार में अपनी ज़िंदगियाँ खपा दीं। (मुवज़्ज़िहुल् कुरआन)

१३. इस आयत में एक पक्के और सच्चे दाऊ़ी (मुबल्लिग़) के लिये जिन-जिन आचरण और स्वभाव की आवश्यक्ता है उन की शिक्षा दी गयी है। एक मोमिन और एक दाऊ़ी (इस्लाम की दावत देने वाले) का मसलक यह होना चाहिये कि बुराई का उत्तर बुराई से न दे, बल्कि जहाँ तक संभव हो बुराई के मुक़ाबला में भलाई ही से पेश आये। और अगर कोई उस से सख़्त बात कहे या बुरे तरीक़े से पेश आये, तो उस के मुकाबला में वह तरीक़ा अपनाये जो हर हाल में उस से बेहतर हो। अल्लाह की तरफ़ दावत देने वालों के पद पर पहुंचने के लिये बहुत अधिक सब्र, जमाव और अच्छे स्वभाव और अख़्लाक़ की जरूरत है। (मुवज़्ज़िहुल् कुरआन)

يُلَقّٰهَآ اِلَّا ذُوْحَظٍّ عَظِيْمٍ ۝٣٥ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ
الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ ۝٣٦ وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ
وَالْقَمَرُ ۭ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا
لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝٣٧
فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ
لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْــَٔمُوْنَ ۝٣٨ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ
اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا
الْمَاۗءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ۭ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ
الْمَوْتٰى ۭ اِنَّهٗ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٣٩ اِنَّ الَّذِيْنَ
يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ۭ اَفَمَنْ
يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ
اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٤٠ اِنَّ

السجدة

जो बड़े भाग्य शाली होते हैं। ३६. और अगर शैतान की तरफ़ से तुम्हें किसी प्रकार की छेड़ पहुंचे तो अल्लाह की पनाह लिया करो (यानी अपने आप को अल्लाह के हवाले किया करो और अऊज़ुबिल्लाह....पढ़ा करो) वह सुनता और जानता है[१४]। ३७. और उस की निशानियों में से रात और दिन हैं सूरज और चाँद (भी उस की कुदरत के निशान हैं) लोगो! न सूरज को सज्दा करो न चाँद को (बल्कि)उस अल्लाह को सज्दा किया करो जिस ने उन (सब चीज़ों) को पैदा किया, अगर तुम उस की ज़िबादत करते हो[१५] (तो इस का ख़याल रखो कि उस की ज़िबादत में किसी और को शरीक न करो, वर्ना वह ज़िबादत भी अकारत जाये गी) ३८. फिर अगर यह लोग मुंह मोड़ें तो जो लोग अल्लाह के हाँ मुक़र्रब हैं वह रात-दिन उस के नाम की तस्बीह पढ़ते रहते हैं और कभी उकताते नहीं[१६]। ३९. और उस की निशानियों में से यह है कि तुम ज़मीन को वीरान देखते हो, पस जब हम उस पर पानी उतारते हैं तो वह फल्ती और फूलती है। जो ज़ात पाक उस ज़मीन को हरी-भरी कर देता है वह मुर्दा लोगों को भी ज़िन्दा कर देगा (क्योंकि) वह हर काम पर कुदरत रखता है। ४०. जो लोग अल्लाह के अहकाम में कजरवी करते हैं (यानी बुरी निय्यत से उन पर ग़ालिब आने का ख़याली पुलाव पकाते हैं) वह हम से पोशीदा नहीं[१७] (हम उन को उल्टा जहन्नम में डालें गे। बतलाओ) क्या जो शख़्स क़ियामत के दिन आग में डाला जाये गा वह बेहतर हो गा या जो अम्न व शान्ति से पर्वरदिगार के पास आये गा? (पस) तुम जो चाहो अ़मल करो, बेशक वह अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहा है[१८]

....

१४. बुख़ारी, मुस्लिम में रिवायत है कि दो आदमियों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने गाली-गुलूच की। उन में से एक आपे से बाहर हो रहा था। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मुझे एक ऐसा कलिमा मालूम है कि अगर वह शख़्स इस कलिमे को पढ़ ले तो उस का गुस्सा जाता रहे, वह कलिमा यह है: "अऊज़ बिल्लाहि मिन-नशैतानिर्रजीम" (मैं शैतान रजीम से अल्लाह की पनाह पकड़ता हूँ) वह शख़्स कहने लगा कि क्या आप मुझे दीवाना समझते हैं? इस के उत्तर में आप ने यह आयत तिलावत फ़रमाई।

हक़ीक़त यह है कि गुस्सा में होने वाले आदमी के दीवाना होने में कोई शुब्हा नहीं। गुस्से के जोश में आदमी ➲

➲की अक़्ल जाती रहती है, और दीवाना वही कहलाता है जिस में अक़्ल न हो। गुस्सा के कई ि़लाज हैं १. अगर "अऊज़ुबिल्लाहि मि- नश्शैतानिर्रजीम" पढ़ ले तो गुस्सा ठन्डा हो जाता है २. जिस हालत में ख़ड़ा है उस हालत को बदल दे। बैठा है तो खड़ा हो जाये और ख़ड़ा है तो बैठ जाये। ३. गुस्सा की हालत में हो तो वज़ू कर के नमाज़ पढ़नी शुरू कर दे। ४. गुस्सा की हालत में है तो सर पर ठन्डा पानी डाल ले। ५. गुस्सा को रोकने पर जो सवाब है उस को याद किया करे। ६. यह ख़्याल करे कि दुनिया में हर काम अल्लाह की मर्ज़ी और उस के इरादे से होता है, और आदमी का तक़्दीर के मुक़ाबले में कुछ बस नही चलता। (वहीदी)

१५. इस आयत में उन मुश्रिकों का रद्द है जो सूरज, चाँद और सितारों की पूजा करते हैं। दिन-रात की कोई पूजा नहीं करता है, लेकिन चूँकि सूरज का प्रभाव दिन में और चाँद का रात में है, इस लिये इन को बयान किया। कुछ उलमा का कहना है कि इस में इस बात की ओर इशारा है कि जैसे रात और दिन अपने आप क़ाइम नही हैं, इसीं प्रकार चाँद और सूरज भी अपने आप क़ाइम नही हैं। उन को क़ाइम करने वाली, रोकने और ख़ड़ा रखने वाली अल्लाह की ज़ात है। अल्लाह ही की ज़ात क़य्यूम है अगर वह अपनी क़य्यूमियत (क़ाईम रखने की क्षमता) का साया उठा ले तो एक दम में सारा संसार फ़ना के घाट उतर जाये।

१६. इस आयत न० ३८ के अन्त पर सज्दा है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० इस आयत के अन्त पर सज्दा करते थे। इस आयत में सज्दे से मुराद ि़बादत का सज्दा है और यह सज्दा अल्लाह के अ़लावा को करना शिर्क है। लेकिन ताज़ीम और तहिय्यत के सज्दा में उलमा का इख़्तिलाफ़ है। कुछ उसे हराम और कुछ मक्रूह तहरीमी और कुछ मक्रूह तन्ज़ीही कहते हैं। लेकिन सहीह और हक़ यह है कि इस प्रकार के सज्दे भी हराम हैं। सज्दा के लायक़ ज़ात केवल अल्लाह की है और बस।

१७. इस प्रकार के आदमी हमेशा से चले आयें है और आज कल भी हैं। इन में सब से पेश-पेश आर्य समाजी हैं जो कुरआन की हर बात को केवल ज़िद की बुनियाद पर झुठलाते हैं। अल्लाह इन्हें हिदायत दे (सनाई)

१८. हर एक का तुम को पूरा बदला मिले गा। यह न समझो कि पर्वरदिगार हमारे कामों से गाफ़िल है। जिन लोगों ने कुरआन मजीद में इलहाद किया और अहादीस और सहाबा की तफ़्सीर को छोड़ कर मनमाने मतलब बयान करना आरंभ कर दिया, मरते समय उन का अन्त बहुत बुरा हुआ और जो लोग हदीस, सहाबा और सल्फ़ सालिहीन के तरीक़े पर चलते रहे, उन का अन्त बड़ा सुखद हुआ। मैं ने बहुत से लोगों पर इस को आज़माया है। ऐ अल्लाह! तू हम को हदीस की पैरवी पर क़ाइम रख और हदीस ही की पैरवी पर हमारा हश्र कर और क़ियामत के दिन भी तू हम को अहले हदीस (कुरआन व सुन्नत पर अ़मल करने वालों) के साथ रख-आमीन (वहीदी)

४१. जिन लोगों के पास नसीहत आयी और वह इस से मुन्किर हुये (अपना अन्जाम देख लें गे) और वह बड़ी ग़ालिब किताब है। ४२. न उस के आगे से झूठ आ सकता है और न पीछे से[१९]। यह उस अल्लाह के पास से उतरा हुआ है जो बड़ी हिक्मत वाला, बड़ी तारीफ़ वाला है। ४३. तुझे वही बातें कही जाती हैं जो तुझ से पहले रसूलों को कही गयी थीं। तेरा पर्वरदिगार बड़ी बख़्शिश वाला है और सख़्त अज़ाब वाला भी है[२०] ४४. और अगर हम इस कुरआन को➲

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ وَإِنَّهُ لَكِتَابٌ
عَزِيزٌ ﴿٤١﴾ لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا
مِنْ خَلْفِهِ ۖ تَنْزِيلٌ مِنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ﴿٤٢﴾ مَا
يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ۚ إِنَّ
رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ جَعَلْنَاهُ
قُرْآنًا أَعْجَمِيًّا لَقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ آيَاتُهُ ۖ أَأَعْجَمِيٌّ
وَعَرَبِيٌّ ۗ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ ۖ

وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ۭ اُولٰۗىِٕكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ۭ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ اَسَاۗءَ فَعَلَيْهَا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝

अ़जमी (ग़ैर अ़रबी) भाषा में उतारते फिर तो यह लोग कहते कि इस के अहकाम क्यों नहीं खोल-खोल कर बतलाये गये। कलाम तो अ़जमी और मुख़ातब अ़रबी[२१]? तू कह! यह मानने वालों के लिये हिदायत और शिफ़ा है (सो) जो लोग ईमान नही लाते (यानी इस कुरआन को महज़ ज़िद से नही मानते कुरआन के सुनने से) उन के कानों में डाट है और वह उन की आंखों से ओझल है। गोया यह लोग बड़ी दूर से बुलाये जाते हैं। ४५.हम ने मूसा को किताब दी थी फिर उसी में इख़्तिलाफ़ हुआ। और अगर तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से हुक्म न गुज़रा होता (कि जल्दी में सब को तबाह नही करूँ गा) तो उन में एक दम फ़ैसला किया जाता। वह लोग बहुत बड़े इन्कार पर अड़े हुये थे। ४६. जो कोई नेक काम करता है वह अपने लिये करता है और जो बुरा करता है वह भी उस की जान पर होता है। और तुम्हारा पर्वरदिगार बन्दों के हक़ में ज़ालिम नहीं[२२]

....

१९. पीछे से आने का मतलब यह है कि उस में कुछ बढ़ा दिया जाये और आगे से दाख़िल होने का मतलब यह कि उस में से कुछ घटा दिया जाये। कुरआन मजीद की यह ख़ुसूसिय्यत है जिस पर तमाम धर्म वालों को बड़ा आश्चर्य है कि इस के तमाम हुरूफ़, जुम्ले, नुक़्ते, ज़ेर, ज़बर, पेश सब के सब गिने हुये हैं और लाखों मुसलमानों के दिलों में महफ़ूज़ हैं। और सच पूछिये तो कुरआन शरीफ़ ही एक ऐसा चमत्कार है जो इन्साफ़ करने वालों के लिये इस्लाम की हक़ीक़त पहचानने को काफ़ी है। (वहीदी)

२०. यानी मुन्किरों का जो मामला आप के साथ है, यही मामला और भी पैगंबरों के साथ था। तो जिस प्रकार उन लोगों ने सब्र किया, आप भी सब्र कीजिये। इस का परिणाम यह निकलेगा कि कुछ लोग तौबा कर के सीधी राह पर आ जायें गे। लेकिन जिन के दिलों में कजी है वह दर्दनाक सज़ा भोगें गे (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)

२१. यानी बात न माननी हो तो आदमी हज़ार हीले-बहाने तलाश कर लेता है। मक्का के काफ़िरों ने और कुछ नही तो यही कहना शुरू कर दिया कि इस अ़रबी पैगंबर का चमत्कार तो हम उस वक़्त समझते जब कुरआन किसी और भाषा में नाज़िल होता। लेकिन अगर ऐसा होता (यानी दूसरी ज़बान में नाज़िल होता) तो यही लोग सब से पहले चीख़ने-चिल्लाने लगते कि इस से ज़्यादा बेजोड़ और बेतुकी बात क्या हो गी कि रसूल और उस की उम्मत तो अ़रबी हो, लेकिन उस पर नाज़िल होने वाली किताब अ़जमी (ग़ैर अ़रबी) जिसका एक हर्फ़ भी कोई न समझ सके। (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)

२२. चूंकि नेकी-बदी का पूरा-पूरा बदला क़ियामत के दिन मिले गा। कुफ़्फ़ार अक्सर यह प्रश्न किया करते थे कि क़ियामत कब आये गी? उन्हीं को जवाब देने के लिये आयत न० ४७ में इर्शाद हो रहा है कि.................।

★★★★★

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

पारः इलैहि यु-रद्दु (25)

संक्षिप्त विषय सूची

इलैहि यु-रद्दु-(25)

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرَاتٍ
مِّنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا
بِعِلْمِهِ ۚ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي قَالُوا
آذَنَّاكَ مَا مِنَّا مِن شَهِيدٍ ﴿٤٧﴾ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا
كَانُوا يَدْعُونَ مِن قَبْلُ ۖ وَظَنُّوا مَا لَهُم مِّن
مَّحِيصٍ ﴿٤٨﴾ لَّا يَسْأَمُ الْإِنسَانُ مِن دُعَاءِ الْخَيْرِ
وَإِن مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ ﴿٤٩﴾ وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ
رَحْمَةً مِّنَّا مِن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَٰذَا
لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِن رُّجِعْتُ إِلَىٰ
رَبِّي إِنَّ لِي عِندَهُ لَلْحُسْنَىٰ ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٠﴾
وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَىٰ بِجَانِبِهِ
وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو دُعَاءٍ عَرِيضٍ ﴿٥١﴾ قُلْ

४७. क़ियामत की घड़ी का ज्ञान उसी अल्लाह को है[२३] (उसी पर सब कुछ निर्भर है) जो-जो फल-फूल अपने गाभों से निकलते हैं और जो मादा गर्भवती होती और जनती है, यह सब वाक़िआ़त उस (अल्लाह)के ‍ज़िल्म से होते हैं। और जिस दिन (की बाबत यह प्रश्न करते हैं उस रोज़) उन (मुश्रिकों) को बुला कर पूछे गा: कहाँ हैं (आज) मेरे शरीक? वह कहें गे: हम आप की ख़िदमत में अ़र्ज़ करते हैं कि हम में से कोई भी उन के बारे में जानकार नही। ४८. और जिन-जिन चीज़ों को वह पहले पुकारा करते थे उन सब को वह भूल जायें गे और समझें गे कि हमारे लिये छुटकारा नही। ४९. इन्सान भलाई माँगने से नहीं थकता (किसी वक़्त यह कुछ चाहता है और अल्लाह कुछ, पस) अगर (अल्लाह की मस्लिहत से) उस को बुराई पहुंचती है, तो बिल्कुल निराश हो जाता है[२४]। ५०. और अगर बाद तक्लीफ़ पहुंचने के हम उस को अपनी तरफ़ से रहमत पहुंचाते हैं तो कहने लगता है: यह तो मेरा हक़ है (इस पर बस नही करता बल्कि घंमड़ में यह भी कह उठता है कि) मैं क़ियामत को क़ायम होने वाली नही जानता (यह सब मुल्लाओं के ढकोसले हैं) और अगर (फ़र्ज़ करो) मैं (मर कर) अपने रब के पास लौट कर गया भी तो वहाँ भी उस के पास मेरे लिये अच्छा स्थान होगा, पस हम काफ़िरों को उन के कामों की ख़बर दें गे और उन को सख़्त अ़ज़ाब चखायें गे। ५१. जब हम इन्सान पर इनाम करते हैं (यानी किसी प्रक़ार की खुशहाली इनाम देते हैं) तो (हमारे हुक्मों से) मुंह फेर लेता है और अकड़ कर चलता है और जब उस को तक्लीफ़ पहुंचती है तो बड़ी लंबी-चौड़ी दुआ़ करने लग जाता है[२५]

....

२३. क़ियामत कब आये गी? इस का ज्ञान अल्लाह के अ़लावा किसी को नही। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ➲

➲से हज़रत जिब्रील अलै० ने एक बार पूछा कि क़ियामत कब आये गी? आप ने फ़रमाया: जिस से पूछा जा रहा है वह पूछने वाले से अधिक जानकारी नही रखता। कुरआन मजीद की सूरः 'नाज़िआत' में फ़रमाया गया : "क़ियामत के आने का ज़िल्म तेरे रब के पास है"। एक और स्थान पर फ़रमाया: "क़ियामत के आने के समय को अल्लाह के अलावा और कोई नही जानता "।------ फिर आगे फ़रमाया: हर चीज़ को अल्लाह का ज़िल्म घेरे हुये है। यहाँ तक कि जो फल-फूल और शगूफ़ा खिल कर निकले और जिस महिला के गर्भ से बच्चे पैदा हों, यह सब उस के ज़िल्म में है। ज़मीन व आसमान का एक-एक ज़र्रा उस के ज़िल्म में है। चुनान्चे एक दूसरे स्थान पर फ़रमाया: "ज़मीन और आकाश में एक ज़र्रा के बराबर भी कोई चीज़ उस के ज़िल्म से पोशीदा नही"। और फ़रमाया: "कोई भी पत्ता ज़मीन पर नही गिरता मगर वह उस के ज़िल्म में होता है"। हर मादा के पेट में जो बच्चा है, वह कब पैदा हो गा? उस की उम्र क्या हो गी? यह सब बातें उस की किताब में पहले ही से लिखी हुयी हैं। ऐसा कोई काम नही जो अल्लाह के ज़िल्म से बाहर हो।

क़ियामत के दिन अल्लाह तआला मुश्रिकों को तमाम मख़्लूक़ के सामने बुला कर उन से प्रश्न करे गा कि जिन की तुम पूजा करते थे आज वह कहाँ हैं? वह उत्तर दें गे कि आज कोई भी यह तस्लीम न करे गा कि हम में से कोई शरीक ठहराता था। आज के दिन उन के मनघड़त माबूद नौ दो ग्यारह हो जायें गे, किसी को कहीं दूर-दूर तक पता न हो गा और न वह उन्हें किसी प्रकार का कुछ भी लाभ पहुचा सकें गे। उन को विश्वास हो जाये गा कि आज के दिन अज़ाब से उन को कोई नही बचा सके गा। 'ज़न्न' यहाँ पर "यक़ीन" के माना में है। इस प्रकार कुरआन में और भी स्थानों पर प्रयोग हुआ है। सूरः "कह्फ़" में काफ़िरों के बयान में है "मुज्रिम लोग आग को देखें गे पस उन्हें गुमान (यानी यक़ीन) हो जाये गा कि अब उस में गये और उस से बच निकलने की कोई राह न पायें गे"। (सूरः कहफ़ आयत ५३)

२४. यहाँ पर अल्लाह तआला इन्सान की कमज़ोरी का ज़िक्र फ़रमाता है कि वह माल-दौलत, स्वास्थ और दीगर फ़ाइदों के लिये दुआयें करते नही थकता, लेकिन अगर उस पर कोई बला और आफ़त या तन्गदस्ती आ जाये तो इतना अधिक घबरा जाता है गोया कि अब वह किसी भलाई का मुंह ही न देखे गा। (मुहम्मदी)

२५. अल्लाह तआला ने एक अहम मुद्दे को एक मुख़्तसर से जुम्ले में बयान कर के दरिया को कूज़े में बन्द कर दिया है और यह कुरआन की बहुत बड़ी विशेष्ता है। इसी विषय को सूरः यूनुस-१२ में यूँ बयान फ़रमाता है "जब इन्सान को मुसीबत पहुंचती है तो अपने पहलू पर लेट कर, बैठ कर और खड़े हो कर हर प्रकार से मुझे याद करता है, लेकिन जब वह मुसीबत दूर हो जाती है तो इस बेपर्वाही से चला जाता है गोया उस मुसीबत के वक़्त उस ने हमें पुकारा ही न था"। (मुहम्मदी) मगर अल्लाह के नेक बन्दे जो ईमान की दौलत से माला माल होते हैं वह हर हाल में अपने मौला को याद करते रहते हैं और रंज व ग़म या सुख और चैन, किसी भी हालत में उसे नहीं भूलते हैं। जब उन को तक्लीफ़ पहुंचती है तो वह केवल यह कहते हैं: इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन, यानि "हम अल्लाह के लिये हैं और उसी की तरफ़ हमें लौट कर जाना है"।

أَرَءَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ ٱللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُم بِهِۦ مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِى شِقَاقٍۭ بَعِيدٍ ۝ سَنُرِيهِمْ ءَايَٰتِنَا فِى ٱلْءَافَاقِ وَفِىٓ أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ ٱلْحَقُّ ۗ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُۥ

५२. (ऐ नबी!) तू (इन मुख़ालिफ़ों से) कहदेः बतलाओ तो सही! अगर यह कुरआन अल्लाह के पास से हो फिर भी तुम उस का इन्कार ही करो तो (तुम्हारी गुमराही में क्या शक है? पस बतलाओ) कौन उस शख़्स से बढ़ कर गुमराह है जो बहुत दूर की गुमराही में फंसा हुआ है।➲

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝ اَلَآ اِنَّهُمْ فِيْ مِرْيَةٍ
مِّنْ لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ۗ اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطٌ ۝

५३. हम उन को (इस्लाम की सच्चाई के लिये) उन के इर्द-गिर्द और खुद उन के अन्दर अपने निशान दिखा दें गे, यहाँ तक कि उन पर हक़ ज़ाहिर हो जाये गा (और यह खुद उस के मानने पर मजबूर हों गे) क्या तुम्हारा पर्वरदिगार (ऐसे काम करने को अकेला) काफ़ी नही है? इस वजह से कि वह हर चीज़ पर निग्राँ है[२६] ५४. (हाँ,) सुनो! यह (मुन्किर) लोग अपने रब की मुलाक़ात से शक में हैं (यानी उन को अल्लाह पर ईमान नही) सुनो! इस में कोई शक नही कि वह (पर्वरदिगार) हर चीज़ को घेरे हुये है।

....

२६. शाने नुज़ूल:- रिवायत में आता है कि एक बार अबूजेहल कहने लगा: ऐ मुहम्मद! (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) आसमान पर अगर कोई चमत्कार (मोजिज़ा) दिखाओ तो हम ईमान ले आयें। आप ने तुरन्त उंगली उठा कर चाँद की ओर इशारा किया और वह साफ़ दो टुकड़े हो गया। अबू जेहल कहने लगा कि यह तो नज़रबन्दी और जादू है। फिर उस ने खुद ही लोगों को दूर के अ़लाक़ों में भेज कर मालूम किया, तो हर तरफ़ लोगों ने गवाही दी कि चाँद दो टुकड़े हो गया था फिर भी वह अभागा यही कहता रहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का जादू इतना ज़बर्दस्त है कि वह दूर के क्षेत्रों में भी ज़ाहिर होता है, इस मौक़े पर यह आयत नाज़िल हुयी (सलफ़िय्या)

सूरः शूरा-(42)

सूरः शूरा (सलाह,मश्वरा) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ५३ आयतें और ५ रूकूअ़ है।

शुभ आरंभ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. हामीम्[१] २. अ़ैन सीन क़ाफ़ ३. जिस प्रकार यह सूरः अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाले ने तुझ पर वह्यि की है (इसी प्रकार भविष्य में भी वह तेरी तरफ़ वह्यि करे गा) और तुझ से पहले लोगों की तरफ़ भी वह्यि करता रहा है[२]। ४. जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है यह सब उसी (अल्लाह) की मिल्क {संपत्ति} है और वह सब से बड़ा, आ़ली शान है। ५. दूर नही कि उस की हैबत के ख़ौफ़ से सारे आसमान ऊपर की तरफ़ से फट जायें और फ़रिश्ते अपने पर्वरदिगार की तारीफ़ के गीत गाते हैं

....

१. 'हामीम' 'अ़ैन सीन क़ाफ़' इन का तर्जुमा मौलाना मर्हूम ने यह किया है "मैं हूँ अल्लाह, रहमान, रहीम, अलीम,

➲सत्तार और क़ुदरत रखने वाला"। लेकिन दुरूस्त बात यह है कि इन का शुमार "हुरूफ़ मुक़त्तआत" में होता है, जिन की मुराद अल्लाह ही बेहतर जानता है। हमें केवल इन पर इमान लाना चाहिये (राज़)

२. हज़रत हारिस बिन हिशाम रज़ि० ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से प्रश्न किया कि आप पर वह्यि किस प्रकार आती थी? आपने फ़रमाया: कभी तो घन्टी की लगातार आवाज़ की तरह, जो मुझ पर बहुत भारी पड़ती है। और जब यह असर समाप्त हो जाता है तो जो कुछ मुझ से कहा गया है वह सब कुछ याद हो जाता है। वह्यि आने की दूसरी शक्ल यह होती है कि फ़रिश्ता मनुष्य की सूरत में आता है और मुझ से बातें करता है और वह जो कुछ कहता है उसे मैं याद कर लेता हूँ।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० बयान फ़रमाती हैं कि जब आप पर कड़ाके की ठन्ड में वह्यि नाज़िल होती तो वह्यि के बोझ से आप पसीने में डूब जाते थे और पसीने की बूंदें आप के जिस्म से पानी के क़तरों की तरह टपकने लगती थीं। (बुख़ारी, मुस्लिम) मुस्नद अहमद में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है वह कहते हैं कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से वह्यि की कैफ़िय्यत पूछी तो आप ने फ़रमाया: मैं एक ज़ंजीर की सी खड़खड़ाहट की आवाज़ सुनता हूँ फिर कान लगा लेता हूँ। इस प्रकार की वह्यि में मुझपर इतनी शिद्दत होती है कि हर मर्तबा मुझे अपनी जान निकल जाने का गुमान होने लगता है। इस विषय में विस्तार से मालूमात के लिये सहीह बुख़ारी की शरह का मुताला फ़रमायें (तफ़्सीर मुहम्मदी)

وَيَسْتَغْفِرُونَ لِمَنْ فِي الْأَرْضِ ۗ أَلَا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ اللَّهُ حَفِيظٌ عَلَيْهِمْ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ۝ وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِتُنْذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ۝ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِنْ يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُمْ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ أَمِ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۖ فَاللَّهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۝

और जो लोग ज़मीन पर (ईमानदार) हैं उन के लिये (अल्लाह से वह) बख़्शिश माँगते हैं। सुनो! यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। ६. और जो उस के अ़लावा और लोगों को अपनी बिगड़ी बनाने वाला जानते हैं (वह अल्लाह की निगाह में हैं) अल्लाह उन का हाल देख रहा है (उन की हर्कतें उस से पोशीदा नही) और तू (ऐ नबी!) उन पर ज़िम्मादार नही। ७. और (सुनलो!) इसी प्रकार (जैसे हम पहले नबिय्यों को वह्यि भेजते रहे) हम ने तेरी तरफ़ यह अ़रबी कुरआन नाज़िल किया है ताकि तू (इस शह्र) मक्का वालों को और उस के आस-पास के लोगों को समझा दे[३] और जमा होने के दिन से डराये जिस में कोई शक नही (उसी दिन) एक जमाअ़त जन्नत में जाये गी और एक जमाअ़त दोज़ख़ में हो गी। ८. और अगर अल्लाह चाहता तो उन (तेरे मुख़ालिफ़ और मुवाफ़िक़) लोगों को एक गरोह (ईमानदार) बना देता[४] (और उस के इरादे को कोई रोक➲

➲नही सकता) लेकिन वह (अपने जारी किये हुए क़ानून से) जिस को चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल करता है और ज़ालिमों का कोई सहायोगी और सहायक न हो गा।९. क्या उन्हों ने अल्लाह के अ़लावा और लोगों को कारसाज़ {बिगड़ी बनाने वाला} बना रखा है? हालाँकि अल्लाह ही कारसाज़ है और वही मुर्दों को जीवित करे गा और वह हर काम पर क़ुदरत रखता है (तो उस को छोड़ कर दूसरों से आशायें रखना मूर्खता नही तो और क्या है?) १०. और जिस-जिस काम में तुम लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे हो उस का फ़ैसला अल्लाह ही के क़ब्ज़े में है। (ऐ नबी! तू कहः) यही अल्लाह मेरा पर्वरदिगार है, उसी पर मैं ने भरोसा कर रखा है और उसी की तरफ़ मैं रुजूअ़ {लौटता} हूँ।

....

३. आस-पास' से पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण हर दिशा मुराद है। मक्का शहर को "उम्मुल् कुरा" इस लिये कहा जाता है कि यह शहर समस्त शहरों से अफ़ज़ल और बेहतर है। इस पर बहुत सारी दलीलें हैं, लेकिन यहाँ केवल एक दलील संक्षिप्त में दी जाती है। अ़ब्दुल्लाह बिन अ़दी बिन हमरा ज़ुहरी फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने कानों से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना, आप मक्का शरीफ़ के बाज़ार हज़ूरा में खड़े हुये फ़रमा रहे थेः "ऐ मक्का! अल्लाह की क़सम! तू अल्लाह की सारी ज़मीन से अल्लाह के नज़दीक सब से अधिक प्रिय और अफ़्ज़ल है। अगर मैं तुझ में से न निकाला जाता तो अल्लाह की क़सम! मैं हर्गिज़ तुझे न छोड़ता"। (तिर्मिज़ी, नसई, इब्ने माजा, अहमद) इमाम तिर्मिज़ी ने इस हदीस को "सहीह" कहा है।

इस कुरआन को अ़रबी ज़बान में नाज़िल करने का उद्देश्य यह है कि तू क़ियामत के दिन से लोगों को डराये, जिस दिन तमाम लोग एक मैदान में इकट्ठा किये जायें गे। जिस दिन कुछ लोग जन्नती हों गे और कुछ जहन्नमी। यह वह दिन हो गा कि जन्नती लाभ में हों गे और जहन्नमी घाटे में। एक दूसरे स्थान पर फ़रमायाः "इन वाक़िआत में उस शख़्स के लिये बड़ी इ़बरत है जो आख़िरत के अ़जाब से डरता हो"। आख़िरत का दिन , वह दिन है जिस में तमाम लोग जमा किये जायें गे और सब की उपस्थिति (हाज़िरी) का दिन होगा (मुहम्मदी)

हदीस शरीफ़ में आया है कि एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हाथ में दो किताबें थीं, आप ने फ़रमायाः इस में जन्नती और जहन्नमी लोगों के नाम लिखे हुय हैं। फिर उस के बाद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम्हारा रब बन्दों से फ़ारिग़ हो चुका है (यानी पहले ही से सब के बारे मे फ़ैसला कर चुका है) (मिश्कात)

४. इस आयत में बज़ाहिर एक मुश्किल है, वह यह कि आयत से यह मतलब निकलता है कि अल्लाह ने तमाम लोगों का मुसलमान होना नही चाहा, बल्कि जिन को अपनी रहमत से हिस्सा देना चाहा उसी को ईमान की तौफ़ीक़ दी। यह तरीक़ा अल्लाह की शान और उस के न्याय से बहुत दूर है। इस मुश्किल को समझने के लिये पहले तो यह जान लें कि अल्लाह के इरादे (तक़्दीर) की दो क़िस्में है (१) जब्र, ज़ोर-ज़बर्दस्ती का (२) कानूने कुदरत के मातहत नतीजा। तक़्दीर की पहली क़िस्म का मतलब यह है कि उस में इन्सान के अ़मल का कोई दख़ल नही, वह अपनी मर्ज़ी से जो चाहता है, करता है। तक़्दीर की दूसरी क़िस्म का मतलब यह है कि अल्लाह इन्सान के अ़मल के मुताबिक़ उस के हक़ में फ़ैसला करता है। कुरआन मजीद में दोनों प्रकार की तक़्दीर का ज़िक्र है। सूरः बक़रः की आयत न०२५३ में अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमायाः "हम ने ई़सा को खुले-खुले निशान दिये और उन को रूहुल कुदुस द्वारा कुव्वत दी। और अगर अल्लाह चाहता तो उन नबिय्यों के बाद वाले लोग खुली निशानियाँ देखने के बाद आपस में न लड़ते, लेकिन वह आपस में मुख़्तलिफ़ हुये (इस लिये लड़ मरे) ताहम अगर अल्लाह चाहता तो न लड़ते, मगर अल्लाह जो इरादा करता है वही करता है"। (सूरः बक़रः आयः २५३) इस आयत से साफ़ ज़ाहिर होता है कि पहले के लोगों की परस्पर लड़ाई का कारण उन का आपसी इख़्तिलाफ़ था और उस इख़्तिलाफ़ के सबब अल्लाह की मर्ज़ी➲

➲और इरादा ज़ाहिर हुआ। दुनिया में जो हालात सामने आते हैं वह उसी हिसाब से अ़मल के नतीजे में आते हैं। जैसा अ़मल होगा उसी हिसाब से नतीजा भी पाया जाना आवश्यक है। चूंकि वह परस्पर लड़े इस लिये नतीजा भी उसी हिसाब से बुरा निकला।

कहने का मतलब यह हुआ कि इस आयत में अल्लाह की जब्र वाली तक़दीर का हर्गिज़ कोई अ़मल-दख़ल नही है। इस का मतलब भी ऊपर वाली आयत की तरह यह है कि अगर अल्लाह ज़बर्दस्ती मोमिन बनाना चाहता तो सब को एक उम्मते मुस्लिमा बना देता, लेकिन चूंकि उन्हों ने चाहा नही इस लिये अल्लाह ने भी ज़बर्दस्ती से काम नही लिया बल्कि "जो चाहे ईमान लाये और जो चाहे काफ़िर ही रहे" के मुताबिक बन्दों को उनके अपने अ़मल और इरादे पर डाल दिया। सो जो ईमान लाये गा उस को अल्लाह कुबूल करे गा और जो कुफ़्र करे गा वह स्वयं उसका नतीजा भोगे गा (सनाई-७/८३,८४)

नोटः- यह हाशिया तक़्दीर के तअ़ल्लुक़ से निहायत मुश्किल हाशिया है। मौलाना ने अपने मुनाज़िराना ज़ौक़ के मुताबिक़ बहस की है। इस में अ़रबी ग्रामर का भी बड़ा अमल-दख़ल है। मैं ने अपने तौर पर सहज अन्दाज़ मे हिन्दी भाषियों को सामने रखते हुये नक़ल किया है............ख़ालिद।

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ
اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ
يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ؕ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ
الْبَصِيْرُ ۝ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ۝ شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ
نُوْحًا وَّالَّذِيْۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖۤ
اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰۤى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ
وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ؕ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا
تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ؕ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْۤ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ
وَيَهْدِيْۤ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ۝ وَمَا تَفَرَّقُوْۤا اِلَّا
مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ؕ وَلَوْلَا
كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ

११. आसमानों और ज़मीनों का पैदा करने वाला है, उस ने तुम्हारे लिये तुम्हारी जिन्स की बीवियाँ बनायीं (और यही नही, बल्कि) चारपायों को भी जोड़े-जोड़े बनाया, और वही तुम को इस संसार में इधर-उधर फैलाता है। उस जैसी कोई चीज़ नही (न ज़ात में और न ही सिफ़ात में) और वह सुनता और देखता है। १२. तमाम आसमानों और ज़मीनों की कुंजियाँ उस के हाथ में हैं (इसी का परिणाम है कि) वह जिस को चाहता है कुशादा रोज़ी देता है और जिस को चाहता है तंग कर देता है। वह हर वस्तु को जानता है। १३. तुम्हारे लिये वही दीन मुकर्रर किया है जिस की बाबत नूह को हिदायत की थी और जो वह्यि द्वारा तुम्हारी तरफ़ हुक्म भेजा है (वह भी तुम्हारा दीन है) और जिस की इब्राहीम, मूसा और अ़ीसा को हिदायत की थी (उस का संक्षिप्त वर्णन) यह है कि अल्लाह के दीन को क़ाइम रखो और उस में फ़िर्क़ाबन्दी न करना। जिस मतलब की तरफ़ तुम लोगों को बुलाते हो वह (तालीम) उन मुश्रिकों पर (सख़्त) नागवार है (ताहम) अल्लाह जिस को चाहे गा (चुन कर के) अपनी तरफ़ ख़ींच ले गा और जो उस की तरफ़ झुकें गे उन को अपनी तरफ़ रास्ता➲

➲दिखाये गा[६]। १४. यह लोग जो पूरा इ़ल्म आ जाने के बाद जुदा-जुदा हैं, तो केवल आपस की ज़िद से हुये हैं[७]। और अगर तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से एक सुनिश्चित समय तक फ़ैसला का हुक्म न हो चुका होता तो उन में कब का फ़ैसला हो चुका होता (मगर ऐसा न करने में अल्लाह की मस्लिहत है)

....

५. दुनिया में अल्लाह के क़ानून उस की मर्ज़ी और इरादे की क़िस्में हैं। पहली क़िस्म तो वह है जिसमें हमारा कोई इख़्तियार नही, बल्कि हम मजबूर हैं जैसे, मौत, ज़िन्दगी, बीमारी, तन्दुरूस्ती वग़ैरह, बल्कि कुल दुनिया का निज़ाम। इस का नाम "क़ानूने कुदरत" भी है। दूसरी क़िस्म वह है जिन पर अ़मल करना और न करना हमारे इख़्तियार में है जैसे, शरीअ़त के तमाम अहकाम, नमाज़, रोज़ा, हज्ज, ज़कात और अख़्लाक़ के तअ़ल्लुक़ से तमाम मामलात। इस का दूसरा नाम "क़ानूने शरीअ़त" भी है। तक़्दीर की पहली क़िस्म "क़ानूने कुदरत" में मख़्लूक़ ताबेदार हैं और दूसरी क़िस्म "क़ानूने शरीअ़त" में आज़ाद हैं। इसी लिये दूसरी क़िस्म के मुतअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया: "जो चाहे माने और जो चाहे न माने"। इन दोनों क़िस्मों में बहुत फ़र्क़ है, लेकिन नासमझी से फ़र्क़ न करने की वजह से बड़ी ग़ल्त फ़हमियाँ पैदा हो जाती हैं (सनाई)

६. 'अल्लाह के दीन को क़ाइम रखो' अल्लाह का दीन क्या है? अल्लाह के एक होने का अ़क़ीदा रखना और इसी की जीवन भर तब्लीग़ व इशाअ़त करना, आपसी इख़्तिलाफ़ और मज़हबी गरोह बन्दी को समाप्त करना और कुफ़्र, शिर्क और बिदअ़त व खुराफ़ात से दुनिया को पाक-साफ़ करना। इसी का नाम है "दीन को क़ाइम करना"। समस्त संदेष्टओं, और उन के अनुयायियों का यही मिशन रहा है। (दावूद राज़)

७. फ़िर्क़ाबन्दी से शरीअ़त ने मना फ़रमाया है। कुरआन मजीद में इस संबन्ध में बहुत सी आयतें बयान की गई हैं, मगर आज़ के मुसलमान इस लानत में इस बुरी तरह गिरफ़्तार हुये कि यहूद व नसारा से भी दो जूती आगे निकल गये। हज़रत मौलाना अबुल कलाम आ़ज़ाद रह० ने मज़हबी गरोहबन्दी की लानत पर बहुत खूब लिखा है, आप लिखते है "पचास वर्ष हुये" मुल्क शाम में मुसलमानों के एक गरोह ने दूसरे गरोह की बस्तियाँ केवल इस लिये जला दी थीं कि एक कहता था हज़रत शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रह० सब से बड़े वली हैं और दूसरा कहता था कि नही, शैख़ अहमद रिफ़ाअ़ी। हिन्दुस्तान का यह हाल है कि आज तक मेरे पास बड़े गंभीर शब्दों में लिखे हुये पत्र आते हैं कि ज़ैद कहता है बड़े पीर साहब से बढ़ कर कोई नही और अ़मर कहता है कि मुजद्दिद अल्फ़ सानी से बढ़ कर कोई नही, नमाज़ किस के पीछे जायज़ है? एक मर्तबा मेरे जी में आया कि लिख दूँ दोनों के पीछे जायज़ नहीं। जब चारों इमामों के फ़िक़्ह की किताबें तय्यार हो गयीं और तक़्लीद शख़्सी का दौर शुरू हो गया तो प्रश्न उठा कि इन चारों इमामों में अफ़्ज़ल कौन है? हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा या इमाम शाफ़अ़ी? अब बहस शुरु हुयी और बहस ने जन्ग और क़त्ल की शक्ल इख़्तियार की। चुनान्चे हलाकू ख़ाँ को इस्लामी मुल्कों पर आक्रमण की सब से पहली तर्ग़ीब खुरासानियों के इसी झगड़े से मिली थी। हनफ़ियों ने शाफ़अ़ी लोगों की ज़िद में आ कर बुलावा भेजा और शहर के फाटक खोल दिये। जब तातारियों की तल्वार चल गयी तो उस ने न शाफ़अ़ी लोगों को छोड़ा न हनफ़ी लोगों को, वह आबादियों के अन्दर घुस गये और खूब तबाही मचाई (तर्जुमानुल कुरआन-२/५६४)

بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ
لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝ فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ
وَاسْتَقِمْ كَمَاۤ اُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ وَقُلْ

और उन लोगों के बाद जो लोग (आसमानी) क़िताब के वारिस हुये, वही उस शिक्षा से (जो ऊपर बयान हुयी है) सख़्त शक में हैं[८]। १५. पस (तू इस) (सच्ची तालीम) की तरफ़➲

اٰمَنْتُ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَ اُمِرْتُ لِاَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ؕ لَنَاۤ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ؕ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝ وَالَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِى اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۝ اَللّٰهُ الَّذِىْۤ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ؕ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ۝ يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا

(लोगों को) बुलाता रह और जैसा तुझे हुक्म है पुख़्ता रह और उन लोगों की ख़ाहिशों की पैरवी न कर और कह! मैं इस किताब पर ईमान लाया जो अल्लाह ने उतारी है और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं तुम लोगों में न्याय करूँ। अल्लाह हमारा और तुम्हारा रब है। हमारे काम हम को और तुम्हारे काम तुम को हों गे (इस लिये) हम में और तुम में तकरार की कोई वजह नही। अल्लाह हम को और तुम को एक स्थान पर एकत्रित करे गा और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। १६. (कभी इन्कार करते हैं और कभी शरीक बनाते हैं) उन की हुज्जतें अल्लाह के पास (बिल्कुल) बोदी हैं[८] और उन पर अल्लाह का ग़ज़ब है और उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब है। १७. (सुनो!) अल्लाह वह ज़ात है जिस ने यह किताब सच्ची तालीम के साथ उतारी और उसी ने न्याय का तराज़ू नाज़िल किया है[१०]। तुझे क्या मालूम क़ियामत की घड़ी शायद क़रीब हो? १८. जो लोग उस पर ईमान नही रखते वह उस के लिये जल्दी करते हैं (हाँ) जो लोग उस का यक़ीन रखते हैं वह उस से (हर हाल में) डरते रहते हैं और (दिल से) जानते हैं कि वह अवश्य हो गी

....

८. जब उन को इस किताब द्वारा सच्ची तालीम दी जाती है तो इन्कार कर जाते हैं। इस की मिसाल आजकल के मुसलमानों में भी पाई जाती है। कितने मुसलमान ऐसे मिलें गे कि अगर उन को किताब व सुन्नत की सच्ची तालीम दी जाती है तो सुनना और अ़मल करना तो दूर की बात, बुरा-भला कहते हैं और अपने कुफ़्र व शिर्क और बिदअ़त व खुराफ़ात में ही मगन रहते हैं। 'मिन्हु' की ज़मीर (सर्वनाम) किताब है जो उन्हें दी गयी थी। (सनाई)

९. बड़े दुःख की बात है कि आज-कल भी यह फ़िर्क़ाबन्दी बड़े ज़ोरों पर है और नाम के मुसलमानों ने इस को और बढ़ावा दे रखा है-- इस घर को आग लग गयी घर के चराग़ से-(राज़)

१०. अ़द्ल (न्याय और इन्साफ़) का तराज़ू ही एक ऐसी वस्तु है जो दुनिया को अच्छे अख़्लाक़ व आमाल से सजा-संवार सकती है। चनान्चे इसी अहमियत की वजह से फ़रमाया गया: "हर काम में अ़द्ल व इन्साफ़ किया करो, अ़द्ल ही तुम को बहुत जल्द तक़्वा की मन्ज़िल से क़रीब कर देगा"। सो तुम इस पर पूरा विश्वास रखो कि जिस अल्लाह ने यह किताब और यह मीज़ान (तराज़ू) उतारा है, वह इस को फैलाने का भी ज़िम्मेदार है। तुम्हारा काम केवल यह है कि जो आदेश तुम को दिया जाये उस पर अ़मल किये जाओ और इस की फ़िक्र मत करो कि क्या हो गा? (सनाई) अ़मल करना बन्दे का काम है और परिणाम अल्लाह पाक के हवाले -और बस!

الْحَقُّ ۗ أَلَا إِنَّ الَّذِينَ يُمَارُونَ فِي السَّاعَةِ
لَفِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝ اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ
مَنْ يَشَاءُ ۖ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۝ مَنْ كَانَ
يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ ۖ وَمَنْ
كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَا لَهُ فِي
الْآخِرَةِ مِنْ نَصِيبٍ ۝ أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا
لَهُمْ مِنَ الدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنْ بِهِ اللَّهُ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةُ
الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۗ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ تَرَى الظَّالِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا
كَسَبُوا وَهُوَ وَاقِعٌ بِهِمْ ۗ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ فِي رَوْضَاتِ الْجَنَّاتِ ۖ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ
عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝ ذَٰلِكَ الَّذِي
يُبَشِّرُ اللَّهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

१८. सुनो! जो लोग क़ियामत की घड़ी में शक करते हैं वह (हक़ से) दूर की गुमराही में हैं। १९. (मगर) अल्लाह भी अपने बन्दों पर बड़ा मेहरबान है जिस को चाहता है रोज़ी देता है, और वह (अपनी ज़ात में) बड़ी कुव्वत वाला और ग़ालिब है। २०. जो कोई आख़िरत की खेती चाहंता है हम (भी) उस की खेती में बर्कत देते हैं और जो कोई केवल दुनिया की खेती (यानी दुनियावी लाभ) चाहते हैं हम उन को भी (अपनी इच्छानुसार) दे देते हैं मगर आख़िरत में उन का कोई हिस्सा नही हो गा[११]। २१ क्या उन लोगों के (बनाये हुये शरीक अल्लाह की बादशाही में वास्तव में) शरीक हैं, जिन्हों ने उन को दीन में ऐसे कामों की अनुमति दे रखी है जिन् के बारे में अल्लाह ने हुक्म नही भेजा[१२]। अगर फ़ैसला का हुक्म न हुआ होता तो उन के दर्मियान फ़ैसला किया जाता और (अल्लाह से न डरने वाले) ज़ालिमों को सख़्त दुःख का अज़ाब हो गा। २२. (ऐ देखने वाले!) तू (उस समय) देखे गा कि ज़ालिम लोग अपने किये हुये से डरें गे और वह उन पर ज़रूर आन पड़े गा और जिन लोगों ने ईमान ला कर नेक कार्य किये हैं वह ऊँचे दर्जे के बाग़ों में हों गे। उन बाग़ों में जो वह चाहें गे उन के रब की तरफ़ से मिलेगा। यही तो अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल है। २३. यही नेमत है जिस की अल्लाह अपने ईमानदार और नेकोकार बन्दों को शुभ सूचना देता है।

....

११. 'आख़िरत में उस का हिस्सा नही हो गा' इस लिये कि नेक अ़मल से आख़िरत के सवाब की निय्यत नही रखता था, बल्कि उस से दुनिया का फ़ाइदा चाहता था। चुनान्चे अल्लाह ने दुनिया का फ़ाइदा दे दिया इसलिये आख़िरत में उसे कुछ न मिले गा। हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह आयत पढ़ी फिर फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है: ऐ आदमी! तू मेरी अ़िबादत में दिल लगा दे तो मैं तेरा सीना ग़िना, (बेनियाज़ी) क़नाअ़त और मालदारी से भर दूँ गा और तेरी मुहताजी को रोक दूँ गा। और अगर तू ऐसा न करे गा तो मैं तुझ पर ग़म और फ़िक्र डाल दूँगा और तेरी मुहताजी को कभी दूर न करूँ गा। हज़रत अ़ली रज़ि० फ़रमाते हैं: दुनिया की खेती माल और औलाद है और आख़िरत की ख़ेती वह नेक अ़मल हैं जिन का सवाब बाक़ी रहता है। (वहीदी)

१२. मक्का के मुश्रिकों ने कुछ जानवरों को अपनी इच्छा से अपने ऊपर हराम कर लिया था जैसे, वह जानवर जिस का कान चीर कर अपने बुतों के नाम पर छोड़ देते थे और उन को नही खाते थे। एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं ने अ़मर बिन लुहय्य बिन क़मुआ़ को देखा कि वह जहन्नम में अपनी आँतें घसीट

रहा। यही वह शख़्स है जिस ने सब से पहले ग़ैरूल्लाह के नाम पर जानवरों को छोड़ने का तरीक़ा ईजाद किया। यह शख़्स क़बीला बनू खुज़ाआ के ज़िम्मेदारों (प्रमुखों) में से था और इसी ही ने वह सारे तरीक़े ईजाद किये थे जो अ़रब में प्रचलित थे (इब्ने कसीर) इस आयत के संदर्भ में वह तमाम बिदअ़तें भी दाख़िल हैं जिन को बिदअ़तियों ने ईजाद कर के दीन का नाम दे रखा है। यह सब काम भी 'जिन के बारे में अल्लाह ने हुक्म नही भेजा' में दाख़िल हैं। (राज़)

قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى ؕ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ؕ وَيَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ وَهُوَ الَّذِىْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ۝ وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۝ وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِى الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ۝ وَهُوَ الَّذِىْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَهُوَ

(ऐ नबी!) तू कह: मैं इस काम पर तुम से कोई मज़दूरी नही माँगता, मगर रिश्तेदारी (के संबन्ध और क़राबत) की मुहब्बत का तो लिहाज़ रखा करो[१३]। और जो कोई नेक काम करे गा हम उस की नेकी में और नेकी बढ़ायें गे। अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला क़द्र करने वाला है। २४. क्या यह कहते हैं कि उस ने अल्लाह पर झूठ-मूट घड़ लिया है? अगर अल्लाह चाहे तो (ऐ नबी!) तेरे दिल पर मुहर लगा दे और बातिल को मिटा दे और अल्लाह हक़ को अपने कलिमात से साबित रखा करता है वह सीनों के भेदों से भी अवगत (वाक़िफ़) है (इस लिये उस से किसी का खोट और इख़्लास छुप नही सकता) २५. और वही है जो अपने बन्दों की तौबा क़ुबूल करता है[१४] और उन की बुराइयाँ माफ़ कर देता है और जो कुछ तुम करते हो उस को (भली भाँति) जानता है। २६. और जो लोग ईमान लाते और नेक अ़मल करते हैं अल्लाह उन को क़ुबूल करता है और अल्लाह उन को ज़्यादा अपने फ़ज़्ल से देता है (यह इसी इख़्लास का नतीजा है) और काफ़िरों के लिये सख़्त अ़ज़ाब है २७. अगर अल्लाह अपने बन्दों पर रोज़ी को कुशादा कर दे तो वे लोग ज़मीन में बग़ावत कर दें (यक़ीन जानो कि अल्लाह के पास तो सब कुछ है) मगर वह अनुमान के साथ जिस क़दर चाहता है नाज़िल करता है। बेशक वह अपने बन्दों के हाल से ख़बरदार और निग्राँ है[५/१]। २८. (क्या तुम्हें मालूम नही?) वह अल्लाह है जो लोगों की मायूसी के बाद वर्षा उतारता है और अपनी रहमत फैलाता है

....

१३. बाज़ लोगों ने, ख़ास कर शिया फ़िर्क़ा ने इस आयत के समझने में बहुत बड़ी ग़लती की है। उन का कहना है कि 'म-वद्द-त ज़िल्क़ुर्बा' (रिश्तेदारी की मुहब्बत) से मुराद आले नबी की मुहब्बत है। इन के मुताबिक़ आयत

➲का मतलब यह हुआ:ऐ रसूल तू उन काफ़िरों से कह दे कि मैं तुम से कुछ नही माँगता, मगर यह कि तुम लोग मेरे रिश्ते दारों (औलाद) से मुहब्बत करो। अहले बैत से मुहब्बत के मस्अले में किसी का इख़्तिलाफ़ नही है, इस पर सभी का इत्तिफ़ाक़ है। लेकिन आयत का जहाँ जो मतलब निकलता हो उसे वहीं लेना चाहिये, ज़बर्दस्ती अपना ख़याल नहीं ठूंसना चाहिये। इस आयत पर ग़ौर किया जाये तो साफ़ तौर पर मतलब निकलता है कि यहाँ मुसलमानों को आ़म हुक्म दिया जा रहा है कि अपने रिश्तेदारों को उन के हुक़ूक़ दिया करो। मिसाल के तौर पर अगर यह कहा जाये कि "मुसलमानो! क़राबत दारों के हुक़ूक़ दिया करो" तो इस से हर कोई अपना करीबी रिश्ते दार ही समझेगा न कि नसीहत करने वाले का रिश्तेदार। इसी प्रकार जब रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक आ़म हुक्म दे रहे हैं तो उससे रसूल के रिश्ते दार कैसे मुराद हो सकते हैं? कुफ़्फ़ार के अन्दर यह बहुत बड़ी बीमारी थी कि वह रिश्ते-नाते का पास-लिहाज़ नहीं करते थे, चुनान्चे फ़रमाया गया: "यह कुफ़्फ़ार मोमिनों के हक़ में न रिश्ता का लिहाज़ करते हैं और न किये गये वादे का"। ऐसे ही लोगों को इस आयत में हुक्म दिया गया है कि मैं तुम से कभी बदला नही माँगता, हाँ, इतना ज़रूर कहता हूँ कि मेरे और अपने रिश्तों के तअ़ल्लुक़ का ज़रूर लिहाज़ रखो। (सनाई-७/८८,८९)

१४. इस आयत में अल्लाह तआ़ला अपने गुनाहगार बन्दों की तौबा क़ुबूल करने की बशारत देता है। इस आयत में 'अ़िबादिही' (अपने बन्दों) कह कर यह बताया है कि तौबा केवल उन ही गुनाहगार बन्दों की क़ुबूल होती है जो अपने आप को अ़िबादत में मशग़ूल रखते और अल्लाह के सामने सच्चे दिल से वादा करते हैं। हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों से उस शख़्स से ज़्यादा प्रसन्न होता है जिस की ऊँटनी जन्गल में गुम हो गयी हो जिस पर उस का खाना पानी भी हो, यह उसे तलाश कर थक-हार कर एक दरख़्त के नीचे पड़ गया हो और अपनी ऊँटनी से भी मायूस हो गया हो कि अचानक वह देखता है कि ऊँटनी उस के पास खड़ी है। यह तुरन्त उठ कर खड़ा हो जाता है और उस की नकेल थाम लेता है। और मारे खुशी के आपे से बाहर हो कर उस की ज़बान से यह निकल जाता है "ऐ अल्लाह! तू मेरा बन्दा है और मैं तेरा रब हूँ"। वह अपनी खुशी में बेक़ाबू हो कर ग़लत कह बैठता है (मुस्लिम) हालाँकि वह कहना यह चाहता था "मैं तेरा बन्दा हूँ और तू मेरा रब है"।

१५/१. एक हदीस क़ुद्सी में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है: मेरे कुछ बन्दे ऐसे हैं जिन की भलाई उन की मालदारी में है, और उन को फ़क़ीर बना दूँ तो वह अपनी दीनदारी से हाथ धो बैठें गे। और मेरे कुछ बन्दे ऐसे हैं कि उन की भलाई फ़क़ीरी ही में है। अगर मैं उन को मालदार बना दूँ तो दौलत में फँस कर अपना दीन बर्बाद कर लेंगे और अगर ऐसा कर दूँ तो गोया मैं ने उन के दीन को ख़राब कर दिया (इब्ने कसीर)

आगे की आयत में इर्शाद है कि जब लोग निराश हो कर वर्षा की आशा छोड़ देते हैं तब मैं वर्षा करता हूँ। इस में इस बात की ओर संकेत है कि दुनिया की हालत हर समय एक जैसी नही रहती। इस लिये मुसीबत में गिरफ़तार हो कर निराश होने की आवश्यक्ता नही। अगर आज मुसीबत के बादल छाये हुये हैं तो कल यह बादल छंट भी जायें गे और मायूसी, खुशी में बदल जाये गी। अल्लाह का यही निज़ाम है। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० के पास एक शख़्स ने आ कर कहा: हज़रत! सूखाकाल फैल गया है और वर्षा से लोग अब बिलकुल निराश हो चुके हैं। आप ने फ़रमाया: तू जा, अब इनशाअल्लाह ज़रूर वर्षा हो गी, फिर आपने यही आयत तिलावत फ़रमाई। (इब्ने कसीर)

वही (अल्लाह सब मख़्लूक़ का) वाली और महमूद (तारीफ़ के लायक़) है। २९. और उस की निशानियों में से आसमानों और ज़मीन का पैदा करना है और जो जानदार[१५/२] उन में उस ने फैलायें हैं (सब उस की हस्ती के गवाह हैं)➲

الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ وَهُوَ عَلٰى
جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ۝ وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ

مُّصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ ۝ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۖ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۝ إِنْ يَشَأْ يُسْكِنِ الرِّيحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلَىٰ ظَهْرِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝ أَوْ يُوبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيرٍ ۝ وَيَعْلَمَ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيصٍ ۝ فَمَا أُوتِيتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝ وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ

और जब चाहे गा (मौत के बाद भी) उन को जमा कर लेगा ३०. और (सुनो!) जो कुछ तुम को तक्लीफ़ पहुंचती है (चाहे बदनी हो या रूहानी) यह सब तुम्हारे आमाल का नतीजा होता है[१६] और वह (तुम्हारे) क़ुसूर माफ़ भी कर देता है। ३१. और तुम अल्लाह को ज़मीन में आजिज़ नही कर सकते हो (कि वह न पकड़ सके) और न अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई वाली है और न कोई हिमायती (जो तुम को उस के अ़ज़ाब से बचाये) ३२. और (सुनो!) टीलों जैसे बड़े जहाज़ जो (अपनी बुलन्दी के बावजूद) पानी पर (साफ़) तैरते हैं यह सब उसी के निशानात में से हैं। ३३. अगर अल्लाह चाहे तो हवा को ठहरा दे फिर वह जहाज़ समुद्र में खड़े ही रह जायें[१७]। बेशक हर सब्र और शुक्र करने वाले के लिये इस में बड़े निशान हैं। ३४. या (चाहे तो) उन लोगों के बुरे आमाल की वजह से उन को डुबो दे और (चाहे तो) बहुत से गुनाहों से दरगुज़र कर दे। ३५. और जो लोग हमारे हुक्मों का मुक़ाबला करते हैं उन को मालूम हो जाये गा कि उन को कहीं भी पनाह नही। ३६. जो कुछ तुम को मिला है यह दुनिया की ज़िन्दगी का सामान है और जो (निक कामों का बदला) अल्लाह के पास है वह बहुत अच्छा और देरपा (अनंत) है, उन लोगों के लिये जो अल्लाह पर ईमान लाये और (अपने हर काम में) अपने रब पर (मुकम्मल) भरोसा रखते हैं ३७. और जो बड़े-बड़े गुनाहों और बेहयाई की बातों से बचते रहते हैं

....

१५/२. 'दाब्बह' (जानदार) इस का क्या अर्थ है? इमाम इब्ने कसीर रह० फ़रमाते हैं कि यह आम शब्द है जिस में फ़रिश्ते, इन्सान, जिन्नात और संसार के समस्त जीवधारी शामिल हैं। हर एक की तबीअ़त (स्वभाव) उन का रहन-सहन, उन की बोली-बानी और उन का खाना-पीना मुख़्तलिफ़ होने के बावजूद, उन्हें ज़मीन व आसमान में एक साथ फैला रखा है, यह अल्लाह की क़ुदरत की निशानी नही तो और क्या है? (इब्ने कसीर)

आसमानों पर किसी जानदार मख़्लूक़ का होना यह अल्लाह की क़ुदरत से दूर नही। यह क़ुरआन मजीद का बहुत बड़ा मोजिज़ा है कि उस ने बेधड़क चाँद, सितारों पर जानदार आबादी के मौजूद होने का दावा कर दिया, जब कि आज से १४०० वर्ष पूर्व जब कि दुनिया के बड़े-बड़े साइन्सदाँ (विज्ञानिक) इस को मानने के लिये तय्यार न थे। (तफ़्सीर कबीर, मदारिक, मुहीत, रूहुल मआ़नी, ग़राइबुल क़ुरआन) सुप्रसिद्ध इमाम मुजाहिद फ़रमाते हैं कि 'दाब्बह' (जानदार, जीवधारी) का वजूद ज़मीन और आसमान दोनों में है (रुहुलमआ़नी) आज के साइन्स दाँ (Scientists) जिस चीज़ पर फ़ख्र कर रहे हैं, क़ुरआन मजीद इस को १४०० वर्ष पूर्व ही बयान कर चुका है (विस्तार के लिये देखें: "सिद्क़ जदीद" लखनऊ-२१.८.५९) 'और जब चाहे गा उन को जमा करे गा' में भी अल्लाह की जिस क़ुदरत की तरफ़ इशारा है, वह भी अहले अ़िल्म के लिये क़ाबिले ग़ौर है। (राज़)

१६. कभी तो शरअ़ी आमाल में तुम से ग़लती होती है और कभी क़ुदरती क़ानून में। जैसे शराब पीना और ज़िना

➲करना। यह दोनों दो अलग-अलग काम हैं और दोनों ही गुनाह हैं मगर साथ ही कुदरती कानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी भी है। इसी लिये इस जुर्म पर दो तरह की सज़ायें होती हैं (१) शरई़ सज़ा। शरई़ सज़ा तो वह है जो हाकिम उस को दे, या आख़िरत में अल्लाह दे। (२) कुदरती सज़ा यह है कि इस प्रकार के पाप करने से आतशक और सोज़ाक की बीमारी हो जाती है, दिल व दिमाग़ और पट्ठे नाकारा हो जाते हैं। यह सज़ा कुदरती क़ानून के तहत मिलती है, यह सज़ा कोई बादशाह या हाकिम नही देता है। शरई़ सज़ा में तो गवाहों के न हो ने की वजह से बच भी सकता है लेकिन कुदरत की सज़ा से कोई नही बच सकता, वह हर चीज़ के अन्दर हुकूमत कर रही है और तुरन्त अपना हुक्म चला देती है।

अल्लाह की मेहरबानी देखो कि तुम ब्रहुत से शरीअ़त के ख़िलाफ़ काम भी कर जाते हो, जिन की तलाफ़ी का सामान उस ने महज़ अपनी कुदरत से तय्यार कर रखा है, लेकिन तुम लोग उस अल्लाह के हो कर नही रहते, बल्कि उस के क़ानून के ख़िलाफ़ करते हो और समझते हो कि अल्लाह की मुक़र्रर की हुयी सज़ा से बचे रहो गे? हर्गिज़ नही बच सकते, क्योंकि तुम उस को परास्त नही कर सकते (सनाई)

१७. यहाँ यह प्रश्न उठता है कि आज-कल के पानी के जहाज़ हवा से नही चलते, बल्कि इन्जन से चलते हैं फिर हवा के रूक जाने या न रूक जाने से उन पर क्या प्रभाव पड़े गा? इस का उत्तर यह है कि इन्जन का भाप भी हवा ही होती है। कुरआन मजीद में 'रीह' (हवा) का शब्द इस भाप को भी शामिल है। (सनाई)

كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۠ وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ ۠ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ۝ وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰۗئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ۝ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ اُولٰۗئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ۭ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ۝ وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ

और जब वह नाराज़ होते हैं तो (अल्लाह के डर से) तुरन्त बख़्श देते हैं। ३८. और जो अपने रब का हुक्म मानते हैं नमाज़ क़ाइम रखते (यानी जमाअ़त से पढ़ते) हैं और उन के (ज़ाती, ख़ास कर क़ौमी और सियासी) काम परस्पर मश्वरे से होते हैं[१८] और हमारे दिये में से ख़र्च करते हैं। ३९. और वह लोग कि जब उन पर (किसी तरफ़ से) अत्याचार होता है तो बदला ले लेते हैं[१९]। ४०. बुराई का बदला बुराई जितना है, जो कोई क्षमा कर दे और इसलाह करे तो उस का सवाब अल्लाह के पास है। निःसंदेह वह ज़ालिमों से मुहब्बत नही करता[२०] ४१. और जो अपनी मज़लूमी के बाद बदला लें तो उन लोगों पर इलज़ाम नही हो गा (कि उन्हों ने ज़ुल्म या नाजायज़ काम किया) ४२. अल्बत्ता इल्ज़ाम उन लोगों पर है जो (अकारण) लोगों पर अत्याचार करते हैं और मुल्क में नाहक़ फ़साद फैलाते हैं, इन्ही लोगों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। ४३. और जो (बदला लेने का➲

➲इख़्तियार रखने के बावजूद) सब्र करे और (मुजरिम) को बख़्श दे, तो बेशक यह बड़ी हिम्मत का काम है। ४४. और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे उस के लिये उस के सिवा कोई भी मददगार नही (जो उस की मदद कर सके)। (ऐ देखने वाले) ज़ालिम जब अल्लाह के अ़ज़ाब को देखेंगे तो तू उन को देखेगा (उस समय) कहते हों गे, क्या (इस अ़ज़ाब से निकल कर दुनिया की तरफ़) लौटने की कोई राह है? ४५. और जब दोज़ख़ के सामने पेश किये जायें गे तो तू उन को ज़िल्लत में ख़ौफ़ से डरा हुआ देखे गा

....

१८. मस्अल-ए-ख़िलाफ़त:- मुसलमानों के दो गरोह (शीआ और सुन्नी) के दर्मियान यह बहस हमेशा से चली आ रही है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के इन्तिक़ाल कर जाने के बाद तीनों ख़लीफ़ा (अबूबक्र, उ़मर, उ़स्मान) शरीअ़त के मुताबिक ख़लीफ़ा थे या ज़बर्दस्ती ख़िलाफ़त की कुर्सी पर क़ब्ज़ा जमा कर बैठ गये थे? सुन्नी हज़रात तो चारों ख़लीफ़ों को अपने-अपने स्थान पर एक के बाद दीगरे राशिद ख़लीफ़ा मानते हैं, लेकिन शीआ़ फ़िर्क़ा पहले के तीनों ख़लीफ़ों को ग़ासिब (कुर्सी हड़पने वाला) मानते हैं। अगर ग़ौर से देखा जाये तो यह इख़्तिलाफ़ वास्तव में एक उसूली इख़्तिलाफ़ है कि ख़लीफ़ा का चुनाव किस प्रकार हो? शीआ़ कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम स्वयँ ख़लीफ़ा मुक़र्रर करें, फिर वह ख़लीफ़ा अपना जानिशीन और वह अपना, इसी प्रकार सिलसिला जारी रहे गा। शीआ़ फ़िर्क़ा के अ़क़ीदा के अनुसार चूंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अ़ली को अपना ख़लीफ़ा चुना था इस लिय वह ख़लीफ़ा हुये और जिन्हों ने उन्हें हटा कर ख़िलाफ़त पर क़ब्ज़ा जमा लिया (अबूबक्र, उ़मर, उ़स्मान) वह ग़ासिब हैं।

अहले सुन्नत का कहना है कि ख़लीफ़ा का चुनाव ठीक उसी प्रकार होना चाहिये, जैसा कि इस आयत में बयान है यानी, परस्पर मश्वरा से होना चाहिये। इस आयत का हुक्म आ़म है जैसा कि हम अपनी तफ़्सीर में इशारा कर चुके हैं। मतलब यह है कि मुसलमानों को सियासत में जमहूरियत और मश्वरा से काम करना सिखाया गया है। बड़ी खुशी की बात यह है कि इस आयत का जो मतलब अहले सुन्नत बयान करते हैं यही मतलब स्वयँ हज़रत अ़ली रज़ि० भी बयान करते हैं। हम यहाँ पर हज़रत अ़ली रज़ि० के अल्फ़ाज़ शीआ़ रिवायत से नक़ल करते हैं, पाठक इस से अनुमान लगा सके गें कि ख़िलाफ़त का मस्अला पहले से तैशुदा है। हज़रत अ़ली रज़ि० के ख़ुत्बे और पत्र एक किताब की शकल में जमा किये हुये हैं जिस का नाम "निहजुल्बलागत" है। यह किताब शीआ़ फ़िर्क़ा के नज़दीक हालाँकि क़ुरआन नहीं है, लेकिन दर्जे और मर्तबे में उस से कम भी मही है। इस किताब में हज़रत अ़ली रज़ि० का एक ख़त भी शामिल है जिसे उन्हों ने हज़रत अमीर मुआ़विया रज़ि० के पास भेजा था और इस ख़त में अपनी ख़िलाफ़त मनवाने के लिये दलाइल दिये थे। पत्र तो अ़रबी भाषा में है जिस का हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है।

> "मुझ से उन लोगों ने बैअ़त की है जिन्हों ने अबूबक्र, उ़मर और उ़स्मान रज़ि० से बैअ़त की थी। और उस शर्त पर की जिस शर्त पर उन के साथ की थी। इसलिये न अब हाज़िर को इस के ख़िलाफ़ राय देने का हक़ है और न ग़ैरहाज़िर को रद्द करने की इजाज़त है। सिवाये इस के कोई बात नहीं कि शूरा और Executive Council (कार्यकारी परिषद) मुहाजिर और अन्सार की है। पस अगर वह किसी शख़्स पर इत्तिफ़ाक़ कर के उस का नाम इमाम (ख़लीफ़ा)" रखें, तो अल्लाह के हाँ वही पसन्दीदा हो गा, और अगर कोई ताना या बिद्अ़त की वजह से उन (Members of council)के फ़ैसला से निकल जाये तो वह शूरा के अर्कान (या Memebers of Council) उस को मजबूर कर के उसी हाल में वापस कर दें गे जिस से वह निकला है। अगर वह उस में आने से इन्कार करे तो उस से लड़ें गे, क्यों कि उस ने ग़ैरमुस्लिमों का रास्ता इख़्तियार किया➲

➲और जिधर गुमराही की तरफ़ वह फिरा, अल्लाह उस की तरफ़ फेरेगा।

इस पत्र में जो मुहाहिरीन के शूरा का ज़िक्र है वह इसी आयत के मातहत है। जिस में मुसलमानों को काम करने का तरीक़ा यह बतलाया गया है कि वह "आपस के मश्वरे से करते हैं"। अब यह कुरआन पाक की आयत और हज़रत अली रज़ि० का यह पत्र दोनों स्पष्ट शब्दों में बोल रहे हैं कि ख़लीफ़ा का चुनना और उन्हें हटाना, यह काम शूरा के अर्कान (Members of Council) के हाथ में है। चूंकि नियम यही है कि जिस किसी को शूरा के अर्कान अपना ख़लीफ़ा चुन लें वही ख़लीफ़ा राशिद है।, और चारों ख़लीफ़ों को शूरा ने चुना है इसलिये सभी ख़लीफ़ा राशीद थे- अल्हम्दु लिल्लाह (सनाई)

१९. सूरः "आले इम्रान" की आयत न० १३४ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: जन्नत उन मुत्तक़ी लोगों के लिये है जो आसानी और तंगी दोनों हालतों में अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं और ग़ुस्सा को पी जाते हैं और लोगों को माफ़ कर देते हैं। अल्लाह ऐसे ही नेक लोगों से मुहब्बत करता है"। इस आयत में "माफ़ करने वालों" की तारीफ़ फ़रमाई है और उन को परहेज़गारों के दर्जे में ला कर परहेज़गार क़रार दिया हैं और यहाँ इस आयत न० ४१ में बदला लेने वालों की भी तारीफ़ फ़रमाई है। इस से साबित होता है कि बदला भी प्रशंसा के क़ाबिल अमल है। इन दोनों आयतों को इस तरह जोड़ा जाये गा कि माफ़ करना तो अच्छा है ही, लेकिन कभी-कभी बदला लेना भी अच्छा होता है। शैख़ सअदी रह० अख़्लाक़ के सब से बड़े शिक्षक हैं, ऊँचे मर्तबा के अख़लाक़ की शिक्षा देते हुये फ़रमाते हैं कि सब से ऊँचा अख़्लाक़ यह है कि "बुराई का बदला लेना तो आसान काम है, लेकिन अगर तू बुराई करने वाले के साथ भलाई करे तो यह है सब से बड़ी बहादुरी"। (गुलिस्ताँ)

लेकिन शैख़ सअदी का यह उसूल हर जगह फ़िट नही बैठता, जहाँ लुहार के हथौड़े की ज़रूरत हो वहाँ सुनार की छोटी-मोटी हथौड़ी काम न दे गी, इसी लिये कहा गया है कि "कभी बुरे लोगों के साथ नेकी करना ऐसा ही गुनाह है जैसा कि किसी नेक आदमी के साथ बुराई करना गुनाह है"।

मतलब यह हुआ कि अख़्लाक़ के तअल्लुक़ से दो प्रकार की तालीम दी गयी है (१) बुराई का बदला नेकी से (२) बुराई का बदला बुराई से। दोनों ही तरीक़े अपनी-अपनी जगह पर दुरूस्त हैं, इस की वजह यह है कि आदमी बुराई को दो कारणों से करता है (१) एक शख़्स फ़ितरी तौर पर बुरा नही है लेकिन शैतान के बहकावे में आ कर उस ने ऐसा क़दम उठा दिया कि दूसरे को उस से तक्लीफ़ पहुंच गयी। ऐसी सूरत में जिस को तक्लीफ़ पहुची है वह माफ़ कर देता है तो तक्लीफ़ पहुंचाने वाले को इस बात का एहसास हो गा कि मैं ग़लती पर हूँ और यह शख़्स मेरा दुश्मन नही है, फिर भविष्य में उस के साथ नेकी ही करे गा फिर ऐसी ग़लती न करने की ठान लेगा (२) इस के उलट एक शख़्स पैदाइशी तौर पर शरीर और गन्दा होता है। अगर ऐसे शख़्स के साथ बुराई का बदला बुराई से न दिया जाये तो यह समझ बैठे गा कि उस ने डर कर और दब कर मेरे साथ नेकी है, इस लिये उस के साथ और बुराई करो ताकि और दब जाये। तो ऐसे लोगों के साथ बुराई का बदला बुराई से देना ही दुरूस्त है और जो ऐसे शख़्स से बदला लेना चाहे वह शौक़ से ले सकता है।

लेकिन क़ुरआन मजीद का उद्देश्य चूंकि मख़्लूक़ की इस्लाह और परस्पर अम्न व शन्ति को बहाल करना है इस लिये दूसरी क़िस्म पर सख़्ती के साथ अमल करने पर ज़ोर नही दिया और न ही आर्डर की शक्ल में निर्देश दिया, बल्कि केवल जायज़ क़रार दिया। बदला लेना भी कभी ज़रूरी होता है फिर भी माफ़ी को हाथ से जाने नही दिया और तुरन्त फ़रमा दिया "जो कोई माफ़ कर दे और इस्लाह करले तो उस का सवाब अल्लाह क पास है"।

यह क़ुरअन मजीद की बहुत बड़ी ख़ूबी है कि हर प्रकार के पहलू को सामने रख कर कोई फ़ैसला फ़रमाता है और दूसरी किताबों की तरह एक ही तरफ़ को नहीं झुक जाता। चुनान्चे इन्जील में लिखा है: "तुम सुन चुके हो कि कहा गया आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत। पर मैं तुम्हें कहता हूँ कि ज़ालिम का मुक़ाबला न करना, बल्कि जो तेरे गाल पर तमाचा मारे तो दूसरा भी उस की तरफ़ कर दे" (इन्जील मत्ती, बाब ५, आयत➲

३९) इस किताब के हुक्म के मुताबिक़ मुक़ाबला करना या बदला लेना हराम कहा गया है। मगर इन्सान की फ़ितरत और हुकूमत का मुतालबा क्या है? यह यूरोप के महायुद्ध से मालूम हो सकता है। अगर इन्जील के अहकाम पर अ़मल होता तो युद्ध की नौबत ही न आती। बल्कि यह होता कि दुश्मन ने किसी मुल्क के एक क्षेत्र पर क़ब्ज़ा कर लिया है तो वह उसे उस के हवाले कर देता बल्कि कुछ और क्षेत्र अपनी तरफ़ से और उसे सौंप देता (दूसरा गाल पेश कर देता) इस का परिणाम यह निकलता कि एक ही झटके में जंग बन्द हो जाती और लाखों सिपाहियों का क़त्ल भी न होता। इस इन्जील की शिक्षा पर अगर महायुद्ध में अ़मल होता, या आज इस पर अ़मल हो तो जानते हैं क्या परिणाम निकले गा? जिस की लाठी उस की भैंस, पूरी दुनिया में ज़ालिमों की हुकूमत हो गी और नेक लोग (अपना गाल पेश कर के) उन ज़ालिमों के मातहत हों गे और इस प्रकार दुनिया शर्र व फ़साद से भर जाये गी।

मगर क़ुर्बान जायें क़ुरआन मजीद की शिक्षा पर कि वह इस प्रकार की इन्जीली शिक्षा का हामी नही जो सरासर राजनीति और इन्सानी फ़ितरत के ख़िलाफ़ है। वह ऐसी शिक्षा देता हैं जिस से दुनिया की इस्लाह हो, ज़ालिमों के मुक़ाबला में मज़लूमों की हिफ़ाज़त हो और पूरा समाज और मुल्क अम्न-अमान, सुख-चैन और शान्ति का गहवारा बन जाये। (सनाई)

२०. अत्याचार का बदला लेने की बेशक इज़ाज़त दी गयी, मगर माफ़ कर देना और हालात को सुधारने की कोशिश करना बेहतर क़रार दिया गया और इस को बड़ी हिम्मत का काम बतलाया गया। सच है कि "सब्र का फल मीठा होता है। (दावूद राज़)

الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَ
اَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ
عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ۝ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ
يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ
فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ۝ اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ
قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ
مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ۝ فَاِنْ
اَعْرَضُوْا فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ اِنْ عَلَيْكَ
اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاِنَّآ اِذَآ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً
فَرِحَ بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ
فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ۝ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا

(ऐसे हों गे कि) नीची निगाह से देखें गे (उन के मुक़ाबला में) जो लोग ईमानदार (नेक बन्दे) हों गे वह (ज़ोर से) कहें गे कि टोटे वाले (बदनसीब) वही लोग हैं जिन्हों ने अपने आप को और अपने संबन्धियों को आज क़ियामत के दिन टूटे में डाला। सुनो! यह ज़ालिम लोग ज़रूर हमेशगी के अ़ज़ाब में फंसे रहें गे। ४६. (उस रोज़) अल्लाह के अ़लावा उन का कोई सहयोगी न हो गा जो उन की सहायता करे। और (सच तो यह है कि) जिस को अल्लाह ही गुमराह कर दे (यानी अपने पास से धुतकार दे) उस के लिये बेहतरी की कोई सूरत नहीं। ४७ अपने रब की तालीम को मानो इस से पहले कि वह क़ियामत का दिन आये जो अल्लाह की तरफ़ से हटने वाला नहीं। उस रोज़ तुम्हारे लिये कोई पनाह की जगह न हो गी और न तुम्हारी हालत को कोई बुरा समझने वाला हो गा।४८. फिर भी अगर यह लोग मुँह मोड़ें तो हम ने तुझे

उन पर ज़िम्मा-दार (दारोग़ा) बना कर नहीं भेजा। तेरे ज़िम्मा केवल पहुंचाना है। और जब हम इन्सान को अपनी रहमत से मज़ा चखाते हैं तो वह इस से प्रसन्न होता है, और जब उन के बुरे कर्मों की वजह से उन को किसी प्रकार की तक्लीफ़ पहुचती है तो (यह) इन्सान (पिछले सारे एहसानों को भूल कर) बड़ाना शुक्रा हो जाता है। ४९. आसमानों और ज़मीन की हुकूमत अल्लाह के क़ब्ज़े में है। वह जो चाहता है पैदा करता है। वही जिसे चाहता है लड़कियाँ देता है

وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ۝ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّ
اِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝
وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ
وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ
مَا يَشَآءُ ۭ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ۝ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ
اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ۭ مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ
وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ
نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ۭ وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝
صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ۝

जिसे चाहता है लड़के बख़्शता है (यह सब उसी का फ़ज़्ल है) ५०. और जिसे चाहता है लड़के-लड़कियाँ दोनों मिले- जुले बख़्शता है और जिसे चाहता है बाँझ (बिऔलाद) कर देता है (यह सब कुछ उस के ज़िल्म और क़ुदरत से होता है) बेशक वह बड़े ज़िल्म वाला और बड़ी क़ुदरत वाला है। ५१. कोई आदमी इस क़ाबिल नहीं कि अल्लाह उस के साथ कलाम करे मगर इल्हाम से, या पर्दे के पीछे से, या क़ासिद भेजे फिर वह अल्लाह के हुक्म से जो कुछ अल्लाह चाहे उस रसूल की तरफ़ वह्यि पहुंचाये। बेशक वह बहुत बुलन्द दर्जा और हकीम है[२१] ५२. और इसी प्रकार हम ने तेरी तरफ़ अपने हुक्म से रूह भेजी है (वर्ना इस से पहले) तू न जानता था कि किताब क्या होती है और न ईमान (की तफ़्सील) जानता था (और न यह मालूम था कि आसमानी किताब किस प्रकार की होती है) लेकिन हम ने उस को नूर बनाया (जिस से तू दुनिया को नूरानी कर रहा है) उस (नूर) के साथ हम अपने बन्दों में से जिसे चाहें गे हिदायत करेंगे। (हाँ,) इस में संदेह नही कि तू (सब को) सीधी राह की तरफ़ राहनुमाई करता है[२२] ५३. यानी (उस) अल्लाह की राह, आसमानों और ज़मीनों की सब चीज़ें जिस की मिल्क (संपत्ति) हैं। सुनो! तमाम मामलात अल्लाह की तरफ़ लौटते हैं।

....

२१. मख़्लूक़ चाहे जितनी बुलन्दी (शिखर) पर पहुंच जाये लेकिन उस के अन्दर अल्लाह की कोई एक सिफ़त भी नही पाई जा सकती, यहाँतक कि आमने-सामने कलाम करे। हाँ, बराहेरास्त, बिलवास्ता उस के दिल में बात डाल सकता और इल्हाम कर सकता है। इसी प्रकार पर्दा के पीछे से भी बात करता है (कि इन्सान अल्लाह के कलाम को तो सुने, मगर देखे नही) या फ़रिश्ता को क़ासिद बना कर भेजे और उस फ़रिशता के ज़रीआ अपना संदेश उस तक पहुंचाये (जैसे हज़रत जिब्रील अ़लै०) इन्सान पर वह्यि भेजने के यही तीन तरीक़े हैं और बस। यह तरीक़े इस प्रकार हैं, इसे पुनः समझ-लें (१) अल्लाह बिला वास्ता (Direct) किसी से कलाम करे या उस के दिल में बात डाल दे

१)(जैसे हज़रत मूसा की माँ को हुक्म दिया था - देखें सूरः क़सस, आयत न०७ का हाशिया) (२) पर्दे के पीछे से बात करे , जैसे हज़रत मूसा ने तूर पर्वत पर बात की। (३) दूत द्वारा, जैसे हज़रत जिब्रील द्वारा अपने आदेश नबी करीम स० और दूसरे संदेष्टाओं तक पहुंचाये।

सपने में किसी काम का खुल जाना, यह पहली क़िस्म में दाख़िल है। 'अपने हुक्म से रूह भेजी है' यानी रूहानी ज़िन्दगी बख़्शने वाली किताब हज़रत जिब्रील द्वारा भेजी है। इस से पहले मैं न किताब जानता था और न ईमान की तफ़्सील जानता था, अगर्चे मुझे अल्लाह पर ईमान था और शिर्क से पैदाइशी तौर पर नफ़रत थी, मगर ईमान की तफ़्सील का इ़ल्म न था। (सनाई)

२२. 'सिरात' यह "सीन" से था, सीन को "स्वाद" से बदल दिया। इस का अर्थ है "सीधा रास्ता" (लिसानुल अ़रब) 'मुस्-तक़ीम' का अर्थ है इधर-उधर की भाग-दौड़ से बच कर दर्मियान की सीधी राह पर चलना। हिदायत की कई क़िस्में हैं। (१) जो बिला किसी का असर (प्रभाव) क़ुबूल किये हुये आप ही आप इन्सान के अंदर पैदा हो। जैसे, फ़ितरी तौर पर बच्चे के अन्दर पैदा होते ही दूध पीने का शुऊर (समझ) पैदा होता है। (२) वह हिदायत जो दूसरों के असर से क़ुबूल करे, जैसे बड़ा हो कर एक-दूसरे के साथ रह कर क़ुबूल करता है। हिदायत की यह दोनों सूरतें इन्सानों और जानवरों में एक जैसी हैं। (३) तीसरी हिदायत अ़क्ल की हिदायत हैं जो इन्सान ही के लिये ख़ास है। (४) चौथी हिदायत वह्यि और इल्हाम की हिदायत है और यह हिदायत की तमाम क़िस्मों में सब से उत्तम है। यह हिदायत इन्सानों में केवल चन्द ही लोगों को नसीब है और बाक़ी तमाम लोगों को उन पाक-साफ़ इन्सानों (रसूलों) के अधीन रहने का हुक्म है। इस आयत में जिस हिदायत का बयान है इस से मुराद चौथी क़िस्म की हिदायत है। यहाँ पर "साधी राह" को "अल्लाह की राह" कहा गया है, यानी अल्लाह तक पहुंचने की यही राह है। (वाज़िहुल् बयान- सियालकोटी-२४७)

सूरः ज़ुख़्रुफ़ – (43)

(٤٣) سُورَةُ الزُّخْرُفِ مَكِّيَّةٌ (٦٣)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

حٰمٓ ۚ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۙ اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا

सूरः ज़ुख़रूफ़ (सोने के गहने) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ८९ आयतें और ७ रूकूअ़ हैं शुरू अल्लाह के नाम से जो बेहद मेहरबान, निहायत रह़म वाला है

(१) हामीम्[१] २. मुझे इस खुली किताब की क़सम है। ३. हम ही ने इस को अ़रबी भाषा में (लौहे- महफ़ूज़ पर) लिखा है ताकि तुम (इसे) समझो[२]

....
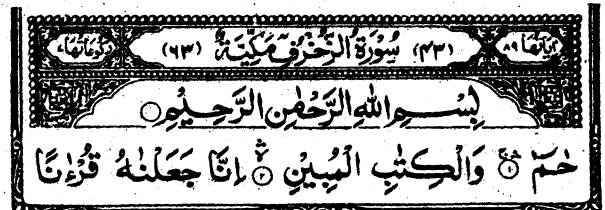
१. 'हामीम' यह हुरूफ़ मुक़त्तआ़त में से है। मौलाना अमृतसरी रह० ने इस का यह तर्जुमा किया है "मैं रहमान, रहीम हूँ"। मगर हक़ीक़त यह है कि इन के माना- मतलब को अल्लाह ही बेहतर जानता है। (राज़)

२. अहले हदीस के निकट क़ुरआन, अल्लाह का कलाम है। यह अ़रबी ज़बान में क़ुरआन, अल्लाह की और दूसरी सिफ़तों की तरह मख़्लूक़ नहीं है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से एक शख़्स ने पूछा: क़ुरआन अल्लाह का कलाम है, या अल्लाह की मख़्लूक़? उन्हों ने उत्तर दिया: अल्लाह का कलाम है। क्या तू ने यह आयत नही सुनी "हत्ता यस्-म-अ़ कला-मल्लाहि" (यहाँ तक कि अल्लाह का कलाम सुने- सूरः तौबः-६) फिर इस का अर्थ बतलाते हुये फ़रमाया: अल्लाह ने क़ुरआन को लौहे महफ़ूज़ पर अ़रबी भाषा में लिखा, जैसे कि अल्लाह फ़रमाता है: "यह तो➲

➲क़ुरआन मजीद है जो लौहे महफ़ूज़ में है" (सूरः बुरूज-२१,२२) उन लोगों पर बड़ा आश्चर्य होता है जिन्हों ने इस का तर्जुमा यूँ किया है "हम ने इस को अ़रबी भाषा का क़ुरआन बनाया"। चूंकि कश्शाफ़ मोतज़िली थे और क़ुरआन को मख़्लूक़ मानते थे, इसलिये उन के नज़दीक यह तर्जुमा दुरूस्त हो सकता है। (वहीदी)

मौलाना अमृतसरी रह० के नज़दीक भी क़ुरआन अल्लाह का कलाम है और ग़ैरमख़्लूक़ है। इस संबन्ध में विस्तार से देखें "फ़तावा सनाइया" भाग अव्वल, पृष्ठ ११९। हाँ मौलाना ने अहले बिद्अ़त का रद्द करते हुये एक स्थान पर क़ुरआन को मख़्लूक़ लिख गये हैं (देखें फ़तावा सनाइया -२/२२७) लेकिन इस को मौलाना के क़लम की चूक कहा जाये गा, इस लिये कि स्वयँ मौलाना भाग अव्वल के पृष्ठ ११९ पर ग़ैरमख़लूक़ लिख चुके हैं। इस तफ़्सील से मालूम हुआ कि मौलाना के नज़दीक भी क़ुरआन, अल्लाह का कलाम है और ग़ैरमख़्लूक़ है (राज़)

عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ وَإِنَّهُ فِيٓ أُمِّ الْكِتٰبِ
لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيمٌ ۝ أَفَنَضْرِبُ عَنكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا
أَن كُنتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ ۝ وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِن نَّبِيٍّ
فِي الْأَوَّلِينَ ۝ وَمَا يَأْتِيهِم مِّن نَّبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِءُونَ ۝ فَأَهْلَكْنَآ أَشَدَّ مِنْهُم بَطْشًا وَمَضٰى
مَثَلُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝ الَّذِي
جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا
لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً
بِقَدَرٍ فَأَنشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذٰلِكَ تُخْرَجُونَ ۝
وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ
الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ ۝ لِتَسْتَوُوا عَلٰى ظُهُورِهِ
ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَ

४. और वह (क़ुरआन) हमारे पास उम्मुल् किताब में बड़ी बुलन्द क़द्र और हिक्मत वाली (किताब) है। ५. तो फिर क्या हम नसीहत को तुम लोगों से हटा लें इस वजह से कि तुम एक बेहूदा लोग हो (हम अपनी रहमत को नही रोकें गे ६. और हम ने कई नबी पहली क़ौमों में भेजे ७. जब कभी कोई नबी आया तो वह लोग उस का (मज़ाक उड़ाते और) ठट्ठा करते रहे। ८. फिर हम ने उन में के बड़े ज़ोरआवर {शक्ति शाली} लोगों को हलाक किया और (पिछले लोगों में) पहले लोगों के अफ़साने चल पड़े। ९. और अगर तू उन से पूछे कि आकाश और ज़मीन किस ने पैदा किये हैं? तो तुरन्त कह दें गे कि अल्लाह बड़े ग़ालिब अ़िल्म वाले ने उन को पैदा किया है। १०. (वही है) जिस ने तुम लोगों के लिये ज़मीन को गहवारा {पालना की तरह} बनाया और तुम्हारे (चलने-फिरने के लिये) उस में रास्ते बनाये ताकि तुम (अपनी मन्ज़िल की तरफ़) हिदायत पाओ। ११. वही (सही) अन्दाज़ा के साथ आकाश से पानी उतार रहा है, फिर उस के साथ वह खुश्क स्थान को ताज़ा कर देता है[3], इसी प्रकार तुम लोग (क़ब्रों से) निकाले जाओ गे। १२. और जिस ने हर प्रकार की चीज़ें पैदा कीं और तुम्हारे लिये कश्तियाँ और चौपाए बनाये जिन पर तुम सवार होते हो। १३. तुम को चाहिये कि जब तुम उन पर सवार होने लगो तो उन की पीठ पर अच्छी तरह बैठ कर अपने पर्वरदिगार की नेमत को याद करो

....

३. ग़ाइब से मुतकाल्लिम, फिर तुरन्त ही ग़ाइब का सेग़ा उर्दू ज़ुबान के मुहावरा में नही मिलता, इस लिये मुतकल्लिम➲

➲के सेग़े का तर्जुमा हम ने ग़ाइब के सेग़े से किया है (सनाई) यानी "हम ख़ुश्क स्थान को ताज़ा कर देते हैं" को "वह ख़ुश्क स्थान को ताज़ा कर देता है" किया है।

تَقُولُوا سُبْحٰنَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِينَ ﴿١٣﴾ وَإِنَّا إِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ﴿١٤﴾ وَجَعَلُوا لَهٗ مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾ أَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنٰتٍ وَّأَصْفٰكُمْ بِالْبَنِينَ ﴿١٦﴾ وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيمٌ ﴿١٧﴾ أَوَمَنْ يُّنَشَّؤُا فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ﴿١٨﴾ وَجَعَلُوا الْمَلٰٓئِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ إِنَاثًا ۚ أَشَهِدُوا خَلْقَهُمْ ۚ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْئَلُونَ ﴿١٩﴾ وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُمْ ۗ مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٢٠﴾ أَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا مِّنْ قَبْلِهٖ فَهُمْ بِهٖ مُسْتَمْسِكُونَ ﴿٢١﴾ بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا اٰبَاءَنَا عَلٰى أُمَّةٍ وَّإِنَّا عَلٰى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُونَ ﴿٢٢﴾ وَكَذٰلِكَ مَا

और (ज़बान से) कहो कि हमारा अल्लाह पाक है जिस ने यह (शक्तिशाली जानवर) हमारे क़ाबू में कर रखा है, वर्ना हम तो उस के क़रीब भी न जा सकते। १४. और हम अपने पर्वरदिगार की तरफ़ लौटने वाले हैं[४]। १५. और उन लोगों ने अल्लाह के बन्दों से उस के हिस्से बनाये। बेशक इन्सान बड़ा ही खुला नाशुक्रा है[५]। १६. भला अल्लाह ने अपने लिये लड़कियाँ पसन्द कीं और तुम्हारे लिये लड़के? १७. हालाँकि जब उन में से किसी को उस चीज़ की ख़ुश्ख़बरी दी जाती है जो अल्लाह के हक़ में बयान करता है {यानी लड़की का बाप बनने की} तो उस का मुँह काला हो जाता है और वह ख़ुद गुस्सा में भर जाता है। १८. क्या (वह बेटी) जो ज़ेवर में पलती-बढ़ती है और मुक़ाबला की गुफ़्तगू में (पैदाइशी कमज़ोरी की वजह से) अच्छी तरह बयान नही कर सकती (वह तो अल्लाह के लिये और बेटे तुम्हारे लिये अहा हा!)१९. (कैसी उल्टी अक़्ल है कि) फ़रिश्तो को, जो अल्लाह रहमान के नेक बन्दे हैं, लड़कियाँ बताते हैं। क्या यह उन की पैदाइश के समय उपस्थित थे? (नही,नही, पस याद रखें) उन का यह बयान लिखा जाये गा और उन से पूछा जाये गा। २०. और कहते हैं कि अगर अल्लाह चाहता तो हम उन की इ़बादत न करते। इस बात का उन को इ़ल्म नही, केवल अटकलें उड़ाते हैं[६] २१ क्या हम ने उन को इस से पहले कोई किताब दी है जिस से यह लोग दलील पकड़ते हैं? (सच तो यह है कि न तो कोई किताब है और न ही कोई ग़ैबी शहादत है) २२. बल्कि (केवल इतना) कहते हैं कि हम ने अपने बाप-दादों को एक तरीक़ा पर चलते पाया है और हम उन के क़दम से क़दम मिला कर चलते हैं[७] (इस से अधिक हम नही कर सकते)

....

४. हज़रत अ़ली रज़ि० के बारे में आता है कि जब वह अपनी सवारी पर सवार होने लगे तो रकाब में पैर रखते ही फ़रमाया: "बिस्मिल्लाह" और जब जम कर बैठ गये तो फ़रमाया: "अल्-हम्दु लिल्लाहि, सुबहा-नल्लज़ी सख़्ख़-र लना हाज़ा वमा कुन्ना लहू मुक़रिनी-न वइन्ना इला रब्बिना लमुन् क़लिबू-न (अल्लाह की ज़ात पाक है जिस ने यह➲

➲शक्तिशाली जानवर हमारे क़ाबू में कर रखा है, वर्ना हम तो इस के क़रीब भी न जा सकते थे और हम अपने पर्वरदिगार की तरफ़ लौटने वाले हैं) फिर तीन मर्तबा "अल्-हम्दु लिल्लाह" कहा और तीन मर्तबा "अल्लाहु अक्-बर" कहा। फिर फ़रमाया "सुबहा-न-क लाइला-ह इल्ला अन्-त क़द् ज़-लम्तु नफ़्सी फ़ग़्फ़िरली" (ऐ अलाह! तू पाक है, तेरे अ़लावा कोई माबूद नही, मैं ने अपने ऊपर बड़ा अत्यचार किया है इस लिये तू मुझे माफ़ कर दे) फिर आप हँस पड़े। रावी कहते हैं कि मैं ने उन से हंसने का सबब पूछा तो फ़रमाया: "मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को भी देखा कि जब आप ने सब कुछ मुकम्मल कर लिया तो हंस पड़े। मैं ने भी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से जब पूछा तो आप ने उत्तर दिया था कि "जब बन्दे के मुख से अल्लाह पाक "रब्बिग़्फ़िरली" (ऐ अल्लाह मुझे माफ़ कर दे) के शब्द सुनता है तो बहुत प्रसन्न होता है और फ़रमाता है: मेरा बन्दा जानता है कि मेरे अ़लावा कोई गुनाहों को बख़्श नही सकता। (तिर्मिज़ी, अबू दावूद, नसई, अहमद- इमाम र्तिमिज़ी ने इस हदीस को "सहीह" कहा है)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब कभी अपनी सवारी पर सवार होते तो तीन तक्बीर कह कर क़ुरआन की आयतों को तिलावत कर के फिर यह दुआ़ माँगते "अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क फ़ी स-फ़री हा- ज़ल्बिर्रि वत्तक़्वा वमि-नल् अ़-मलि मा तर्ज़ा अल्लाहुम्म हव्विन अ़लैना सफ़रिना व-अत्वि लना-नल्बुअ़्-द अल्लाहुम्म अन् तस्साहिबु फ़िस्स-फ़रि वल्-ख़ली-फ़तु फ़िल्-अह्लि अल्लाहुम्म अस्-हबना फ़ी स-फ़रिना वख़्लुफ़ना फ़ी अह्लिना (तर्जुमा: ऐ अल्लाह मैं तुझसे इस सफ़र में नेकी और परहेज़गारी को माँगता हूँ और उन आमाल को माँगता हूँ जिन से तू प्रसन्न हो जाये+ ऐ अल्लाह! हम पर हमारा सफ़र सरल कर दे और हमारे लिये दूरी को समेट दे+ ऐ अल्लाह! तू ही सफ़र का साथी और बाल-बच्चों की देख-रेख करने वाला है। ऐ अल्लाह! हमारे सफ़र में हमारा साथ दे और हमारे घरों में हमारी जगह देख-भाल फ़रमा") और जब वापस लौटते तो फ़रमाते: आइबू-नताइबू-न इन्शा- अल्लाहु आ़बिदू-न लिरब्बिना हामिदू-न (हम वापिस लौटने वाले, तौबा करने वाले और इन्शाअल्लाह अ़िबादत करने वाले और अपने रब की तारीफ़ें करने वाले हैं- मुस्लिम, अबू दावूद, नसई)

५. यहाँ पर अल्लाह तआ़ला ने मुश्रिकों के उस आरोप का ज़िक्र फ़रमाया है जो उन्हों ने अल्लाह पर लगाया है। इन आरोपों का ज़िक्र सूरः "अन्आ़म" की आयत १०० में इस प्रकार किया है "और लोगों ने शयातीन को अल्लाह का शरीक बना रखा है हालाँकि उन को अल्लाह ने पैदा किया है। और उस अल्लाह के हक़ में बेटे-बेटियाँ बिना दलील के बना रखी हैं......")

६. इन का यह कहना कि अगर अल्लाह चाहता तो हम शिर्क न करते, ग़लत ह। अगर इन लोगों को अ़िल्म होता तो यह जान लेते कि अगर्चे हर काम उस की मर्ज़ी और इरादे से होते हैं, मगर उस की मर्ज़ी उसी को मालूम है, बन्दे को उस के बारे में कोई अ़िल्म नहीं। अल्लाह तआ़ला ने बन्दे को केवल ज़ाहिरी इख़्तियार दिया है कि वह अच्छी बात को इख़्तियार करे और बुरी बात को छोड़ दे। मशिय्यत, मर्ज़ी अलग बात है, रज़ामन्दी आलग बात है। कुफ़्र और शिर्क अगर्चे उस की मर्ज़ी से दुनिया में ज़ाहिर है, मगर अल्लाह उस से प्रसन्न नही है, इसी लिये फ़रमाया: "मैं बन्दों के कुफ़्र से राज़ी नही हूँ"। (वहीदी)

७. मतलब यह है कि यह लोग न तो ख़ुद समझ रखते हैं और न किसी किताब को मानते हैं, जब बहस में आ़जिज़ होते हैं तो अन्त में बाप-दादों की तक़्लीद का सहारा लेते हैं। जो शख़्स खुद ही अन्धा बन कर दूसरे की तक़्लीद करे, तो उस को राह पर लाना कठिन है। (वहीदी)

२३. (ऐ रसूल!) इसी प्रकार हम ने तुझ से पहले जिस किसी बस्ती में कोई समझाने वाला भेजा तो उस के खाते-पीते लोगों ने यही कहा: हम ने अपने बाप-दादा को एक तरीक़ा पर पाया है➲

أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ
مُتْرَفُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ

اَثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ۝ قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ۚ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖٓ اِنَّنِيْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ۝ اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ ۝ وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ۝ اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ

और हम उन के क़दम ब क़दम चलें गे[८] २४. (इस पर उन से) उस संदेष्टा ने कहा: क्या अगर्चे मैं तुम को इस रास्ता से जिस पर तुम ने अपने बाप-दादा को पाया है बहुत (अच्छा और) सीधा रास्ता बतलाऊँ[९]? उन्हों ने (इस के उत्तर में) यह कहा: तुम जिस दीन को लेकर आये हो हम उस का इन्कार करते हैं। २५. फिर हम ने उन से बदला लिया, पस तू देख! उन झुठलाने वालों का अन्जाम क्या हुआ। (यानी दुनिया से मिट गये और जहन्नम रसीद हुये) २६+२७. और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा था कि मैं तुम्हारे सारे माबूदों से जिन की तुम इ़बादत करते हो सिवाए उस पाक ज़ात के जिस ने मुझे पैदा किया[१०] बेज़ार हूँ, सो वही मुझे हिदायत करे गा २८. और अल्लाह ने उस के (इस) कलिमा को (जो उस ने मुश्रिकों के सामने कहा था) उस के पीछे मज़बूत किया[११] (यानी उस की ताईद में नबी, रसूल और वली भेजे, जिन्हों ने दुनिया को हज़रत इब्राहीम के दीन की तरफ़ दावत दी) ताकि वह लोग सच्चे दीन की तरफ़ रूजूअ़ करें। २९. मैं ने उन का और उन के बाप-दादा को रसाया-बसाया, यहाँतक कि उन के पास सच्ची शिक्षा और साफ़-साफ़ समझाने वाला रसूल आ गाय। ३०. और जब उन के पास हक़ की तालीम आयी तो उन्हों ने कहा: यह तो जादू है और हम इस का इन्कार करते हैं। ३१. और कहते हैं कि इन दो शहरों (मक्का और ताइफ़) में से किसी बड़े आदमी पर यह कुरआन क्यों नही उतरा?[१२] (उन से पूछना चाहिये) ३२. क्या पर्वरदिगार की रहमत को यह लोग बांटते हैं?

....

८. इमाम फ़ख़्रूद्दीन राज़ी रह० फ़रमाते हैं कि वैसे तो कुरआन में तक़्लीद के रद्द में बहुत सारी आयतें मौजूद हैं, लेकिन अगर केवल यही एक आयत ही होती तब भी काफ़ी था। अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में साफ़ बयान कर दिया है कि काफ़िर लोग न तो अक़्ली दलीलों पर चलते हैं और नही नक़्ली दलीलों पर' केवल अपने बाप-दादों की तक़्लीद पर मरते-मिटते हैं, और इस से साबित होता है कि तक़्लीद बातिल है।

तक़्लीद के बातिल होने की अक़्ली दलील यह है कि हर फ़िर्क़ा दावा करे गा कि हम अपने बुज़ुर्गों के मुक़ल्लिद हैं, फिर तो ग़ौर-फ़िक्र और तहक़ीक़ का दर्वाज़ा बन्द हो जाये गा। और अगर तक़्लीद हक़ हो तो फिर तमाम फ़रीक़ को हक़ मानना पड़े गा (और यह नामुमकिन है कि सभी हक़ पर हों) इस आयत से यह भी निकला कि दुनिया का माल-दौलत ही, जिहालत और तक़्लीद का सबब होता है, इसी कारण लोग सुस्त हो जाते हैं और अपनी ग़ौर-फ़िक्र, तहक़ीक़ पर ज़ोर देते हैं। (वहीदी)

९. यानी मैं चाहे कितना ही सीधा रास्ता तुम्हें दिखाऊँ मगर तुम मेरी एक न मानों गे और अपने पुराने ढेर पर

ही चलो गे। और यह तो बेकूफ़ों और जाहिलों का काम है कि अच्छी चीज़ को छोड़ कर बुरी चीज़ को अपना लें और किसी की न सुनें। इमाम शौकानी हर० फ़रमाते हैं: हमारे ज़माने में भी मुक़ल्लिदों का यही हाल है। जब उन को क़ुरआन और हदीस सुनाई जाती है तो यह भी अपने इमामों के फ़तवे पर जमे रहते हैं और उत्तर में यह कहते हैं कि हमारे इमाम साहब तुम से अधिक क़ुरआन और हदीस जानते थे। उन का अगर जवाब यह है कि उन के इमाम इस वजह से कि उन का ज़माना पहले है, क़ुरआन व हदीस का ज्ञान अधिक रखते थे, तो ताबेअ़ीन और सहाबा का ज़माना उन इमामों से भी पहले था तो फिर वह तुम्हारे इमामों से भी ज़्यादा हदीस और क़ुरआन जानते हों गे, तो फिर उन की तक़्लीद क्यों नही करते? और फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्ल्लम जो क़ुरआन और हदीस को सब से अधिक जानने वाले थे, उन की तक़्लीद तो सब से मुक़द्दम है। (वहीदी)

१०. यानी सिर्फ़ उस अल्लाह से मेरा तअ़ल्लुक़ है जिस ने मुझे पैदा किया और वह ही मुझे सीधी राह तक लेचले गा। यहाँ पर हज़रत इब्राहीम अ़लै० का ज़िक्र कर के यह बयान करना है कि देखो तुम्हारे बाप इब्राहीम ने अपने बाप की ग़लत राह छोड़ दी थी, इसलिये तुम लोग भी उन्ही की तक़्लीद करते हुये अपने बाप-दादों की तक़्लीद छोड़ दो और उस बाप की राह पर चलो जिस ने दुनिया में हक़ व इन्साफ़ का झन्डा गाड़ दिया था और अपनी औलाद को वसिय्यत कर गया था कि मेरे बाद एक अल्लाह के अ़लावा और किसी की पूजा न करना (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान) हज़रत इब्राहीम ने अपनी औलाद को जो नसीहत की थी उस का ज़िक्र सूरः बक़रः की आयत १३१ में है। (राज़)

११. 'उस के पीछे मज़बूत किया' यानी हज़रत इब्राहीम अ़लै ने तौहीद को इस प्रकार मज़बूत कर दिया कि बाप मरते समय अपने बेटों को नसीहत करता और शिर्क से डरा जाता है, चुनान्चे यही वजह है कि उन के ख़ान्दाद में तौहीद मुद्दत तक बाक़ी रही। यहाँ पर भी इस वाक़िआ को बयान कर के तक़्लीद का रद्द करना मक़्सूद हैं। अल्लाह तआ़ला ने मुश्रिकों से यह प्रश्न किया है कि तुम्हारे नज़दीक तक़्लीद हराम है या हलाल? अगर हराम है तो तुम्हारा बाप-दादों की तक़्लीद करनी हराम है। और अगर हलाल है तो फिर अपने सब से बड़े दादा इब्राहीम की क्यों तक़्लीद नही करते? उन की तक़्लीद करते हुये, तौहीदपरस्त बनो, इस लिये कि वह भी यही थे। फिर दूसरी बात यह कि तुम्हारे बड़े दादा इब्राहीम ने अपने बाप-दादाओं की तक़्लीद छोड़ दी। अगर तक़्लीद कोई अच्छी चीज़ होती तो वह हर्गिज़ तर्क न करते। (वहीदी)

जो मुसलमान भाई तक़्लीद को वाजिब मानते हैं उन से अनुरोध है कि उसे छोड़ दें, इसलिये कि जिन की यह तक़्लीद करते हैं उन इमामों ने स्वयँ अपनी तक़्लीद से मना फ़रमाया है और स्पष्ट शब्दों में कहा कि किसी इमाम या मुजतहिद की तक़्लीद न कर के केवल क़ुरआन हदीस से मस्अले निकालो, जैसे हम (इमामों) ने निकाले हैं। (वहीदी)

मैं (दावूद राज़) कहता हूँ कि यहूद, नसारा और मुसलमानों के दार्मियान जिस प्रकार हज़रत इब्राहीम की ज़ात क़ाबिले एहतराम (आदरणीय) है, इसी प्रकार मुक़ल्लिदों और अहले हदीस के दर्मियान आज हज़रत शाह वलिय्युल्लाह मुहद्दिस देहलवी की ज़ात क़ाबिले एहतराम है। इस लिये हम सब को उन के फ़ैसले को स्वीकार करना चाहिये। हज़रत शाह रह० ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक "हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा" और "इक़्दुल् जीद" में खुले शब्दों में शख़्सी तक़्लीद और जुमूद की मुख़ालिफ़त की है। इन अ़रबी किताबों का उर्दू में भी अनुवाद हो चुका है और उर्दू भाषी भी इस का मुताला कर के लाभप्रद हो सकते हैं। (राज़)

१२. मक्का के मुश्रिकों का कहना था कि अगर वास्तव में यह अल्लाह का कलाम है तो फिर मक्का और ताइफ़ शहर के धनवान और महामाने लोगों में से किसी पर क्यों नाज़िल नहीं हुआ? इन के इस एतराज़ का उत्तर देते हुये फ़रमाया: कि मेरी रहमत के यह लोग नही, बल्कि मैं मालिक हूँ, मैं जिसे चाहूँ नवाज़ दूँ इस में किसी का क्या दख़ल। यह तो मैं जानता हूँ कि मेरी इस नेमत (नबुव्वत) का मुस्तहिक़ कौन है? चुनान्चे अपनी नेमत को अपनी इच्छानुसार जिसे मैं ने इस लायक़ समझा, दिया अब तुम्हारा काम उस पर ईमान लाना है। (इब्ने कसीर)

نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُم مَّعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا وَ رَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُم بَعْضًا سُخْرِيًّا ۗ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٣٢﴾ وَلَوْلَا أَن يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَن يَكْفُرُ بِالرَّحْمَٰنِ لِبُيُوتِهِمْ سُقُفًا مِّن فِضَّةٍ وَمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُونَ ﴿٣٣﴾ وَلِبُيُوتِهِمْ أَبْوَابًا وَسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِئُونَ ﴿٣٤﴾ وَزُخْرُفًا ۚ وَإِن كُلُّ ذَٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْآخِرَةُ عِندَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٣٥﴾ وَمَن يَعْشُ عَن ذِكْرِ الرَّحْمَٰنِ نُقَيِّضْ لَهُ شَيْطَانًا فَهُوَ لَهُ قَرِينٌ ﴿٣٦﴾ وَإِنَّهُمْ لَيَصُدُّونَهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٣٧﴾ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَنَا قَالَ يَا لَيْتَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِينُ ﴿٣٨﴾ وَلَن يَنفَعَكُمُ الْيَوْمَ إِذ ظَّلَمْتُمْ أَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ

हम दुनिया की ज़िन्दगी में उन की मअ़ीशत (ज़िन्दगी के सामान) उन के दर्मियान तक़्सीम करते हैं और उन में से बाज़ को बाज़ पर दर्जा में बुलन्दी बख़्शी है ताकि एक-दूसरे को महकूम (अधीन) बना कर काम लें (और दुनिया का निज़ाम चलता रहे) और (हक़ीक़त यह है कि दुनिया की धन-दौलत कोई अस्ल मक़्सूद चीज़ नही, बल्कि) तुम्हारे रब की रहमत बहुत अच्छी है उन सब चीज़ों से जो दुनिया के लोग जमा करते हैं। ३३. और अगर यह ख़याल रूकावट न बनता कि सारे लोग एक ही गरोह (के काफ़िर) हो जायें गे तो जो लोग अल्लाह रहमान का इन्कार करते हैं हम उन के घरों की छतें सोने-चाँदी की बना देते और सीढ़ियाँ (भी) जिन पर वह चढ़ा करते।३४+३५. और (इस के अ़लावा) उन के घरों के किवाड़ और (बैठने के) तख़्त भी जिन पर वह बैठते हैं। चाँदी-सोने[१३] के बना देते (क्यों कि इन चीज़ों की अल्लाह के नज़दीक कुछ भी हक़ीक़त नही) यह तो केवल दुनिया की ज़िन्दगी का चन्द रोज़ा गुज़ारा है और आख़िरत तेरे पर्वरदिगार के पास (ख़ास) परहेज़गारों के लिये है[१४]। ३६+३७. जो कोई रहमान के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो कर ज़िन्दगी गुज़ारता है हम उस पर शैतान मुसल्लत कर देते हैं पस वह (हरदम) उस का साथी रहता है और वह (शयातीन) उन को सीधे रास्ते (पर चलने) से रोकते हैं और ख़याल करते हैं कि वह सीधे रास्ते पर जा रहे हैं। ३८. यहाँ तक कि जब वह (यानी अल्लाह की याद को भुला देने वाला, मरने के बाद) हमारे पास आये गा तो (उस शैतान से दोस्ती का नतीजा देख कर) कहे गाः ऐ काश! मुझ में और तुझ (शैतान मेरे साथी) में पूरब-पश्चिम जितना फ़ासला होता (क्योंकि) वह बहुत बुरा साथी है। ३९. और चूंकि तुम लोग ज़ालिम हो इसलिये अ़ज़ाब में तुम्हारा शरीक रहना तुम को कुछ फ़ाइदा न दे गा[१५]।

....

१३. 'ज़ुखरु-फ़न्' (सोना) यह शब्द आयत ३३ में "फ़िज़्ज़तिन" (चाँदी) से जुड़ा है, इसी लिये तर्जुमा एक साथ मिला कर "सोना-चाँदी" किया गया है। (सनाई)

१४. यानी अगर यह बात न होती कि लोग माल को मेरा फ़ज़्ल और फिर मेरी रज़ामन्दी की दलील जान कर मालदारों के मिस्ल बन जायें, तो मैं तो कुफ़्फ़ार को यह दुनिया इतनी दे दूँ कि उन के घरों की छतें, बल्कि उन के कोठों की सीढ़ियाँ भी चाँदी की होतीं। उन के घर, दर्वाज़े और उन के बैठने के तख़्त भी चाँदी और सोने के होते। मेरे नज़दीक

➲दुनिया कोई क़द्र की चीज़ नही है, बल्कि एक दिन आनी-जानी है। अगर सारी भी मिल जाये तो भी आख़िरत के मुक़ाबले में बहुत कम है। हदीस शरीफ़ में आया है कि अगर दुनिया की क़द्र अल्लाह के नज़दीक मच्छर के पर के बराबर भी होती तो किसी काफ़िर को पानी का एक घूंट भी न पिलाता। बुख़ारी और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया सोने और चाँदी के बर्तनों में न खाओ-पियो, यह दुनिया में काफ़िरों के लिये और आख़िरत में हमारे लिये हैं। यह चीज़ें दुनिया में उन के लिये इसीलिये हैं कि दुनिया अल्लाह की नज़रों में ज़लील है। (मुहम्मदी) इसलिये मोमिन की निगाह हमेशा आख़िरत पर होनी चाहिये, दुनिया चाहे जिस हाल में गुज़र रही हो।

१५. यानी यह एकजुटता तुम को कुछ लाभदायक न होगी क्योंकि यह लोग हमेशा नेक लोगों के ख़िलाफ़ रहे। तुम समझ गये हो गे कि मुत्तक़ी वह लोग हैं जो अल्लाह की याद को अपनी ज़िन्दगी का अस्ल उद्देश्य जानते हैं। और यह कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन जो कुछ नही समझते हैं तो इस में कोई तअ़ज्जुब की बात नही है, इसलिये कि अन्धे और बहरे हैं और तू (ऐ नबी!) बहरों को न तो सुना सकता है और न अन्धे को राह दिखा सकता है। यह अपने ख़यालात में इतने मगन हैं कि इन को कुछ सुझाई ही नही देता। और अगर कुछ सूझता भी है तो यही कहते हैं कि यह नबी बस चन्द दिन का मेहमान है, मर जाने के बाद इस का कोई नाम लेने वाला भी न होगा। हालाँकि इन को यह नही मालूम कि नबी का संबन्ध अल्लाह की ज़ात से है। अगर हम तुम्हें दुनिया से उठा भी लें तो इस से उन का कोई फ़ाइदा होने वाला नहीं, क्योंकि हम उन के कुकर्मों का बदला अवश्य ही लेंगे

हमारे मुल्क हिन्दुस्तान के राज्य पंजाब में मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी नाम के एक साहब ने नुबुव्वत के दावा के साथ-साथ कुछ भविष्यवाणियाँ (पेशीनगोइयाँ) भी की थीं। जब उन की भविष्यवाणियाँ पूरी न हुयीं तो उन्हों ने और उन के अनुयायियों ने इसी प्रकार की आयतों से दलील पकड़ कर यह कहना आरंभ कर दिया कि यह कोई ज़रूरी नही कि भविष्यवाणियाँ नबी की ज़िन्दगी ही में पूरी हों। हालाँकि उन का कहना ग़लत है। जो भविष्यवाणियाँ आ़म हों और नबी की ज़िन्दगी से संबन्ध न रखती हों, तो ठीक है, लेकिन जो नबी की ज़िन्दगी से तअ़ल्लुक़ रखती है तो उन का उस की ज़िन्दगी ही में पूरी होना आवश्यक है। जैसे, मिर्ज़ा साहब (नुबुव्वत के दावेदार) ने कहा कि "मुझ पर वह्यि आयी है कि फ़लाँ महिला का निकाह मुझ से हो गा" चूंकि इस का तअ़ल्लुक़ मिर्ज़ा की ज़िन्दगी ही से है इस लिये इस का ज़िन्दगी ही में पूरा होना ज़रूरी है। इसी प्रकार एक दूसरी भविष्यवाणी यह फ़रमायी: "फ़लाँ शख़्स मेरी ज़िन्दगी ही में मर जायेगा"। इस भविष्यवाणी का भी ऊपर की ही तरह का हाल है। अब अगर यह दोनों भविष्यवाणीयाँ न पूरी हों तो हर कोई मिर्ज़ा को झूठा समझे गा। मिर्ज़ा की यह दोनों पेशीनगोइयाँ पूरी न हुयीं, बल्कि दोनों के पूरी होने से पहले ही वह जहन्नम रसीद हो गये। मिर्ज़ा की इस प्रकार की और बहुत सारी ख़ुराफ़ाती भविष्यवाणियों का ज़िक्र हमारी पुस्तक "इल हामाते-मिर्ज़ा" में विस्तार से दर्ज हैं (सनाई)

مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٩﴾ أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ أَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ
وَمَنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٤٠﴾ فَإِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ
فَإِنَّا مِنْهُمْ مُنْتَقِمُونَ ﴿٤١﴾ أَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ
فَإِنَّا عَلَيْهِمْ مُقْتَدِرُونَ ﴿٤٢﴾ فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِي أُوحِيَ
إِلَيْكَ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٤٣﴾ وَإِنَّهُ لَذِكْرٌ لَكَ

४०. क्या तू (ऐ नबी!) बहरों को सुना सकता है, या अन्धों और खुली गुमराही में रहने वालों को हिदायत कर सकता है? (हर्गिज़ नही) ४१. भला अगर हम तुझे (मौत देकर दुनिया से) ले जायें (तो उन को इस से के कुछ लाभ पहुंचेगा? हर्गिज़ नही, क्योंकि) तो उन से बदला लेंगे। ४२. या तेरी ज़िन्दगी ही में वादा किया गया अ़ज़ाब दिखला दें तो हम इस पर भी क़ुदरत➲

وَلِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ تُسْـَٔلُوْنَ ۝ وَسْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا
مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَآ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ
اٰلِهَةً يُّعْبَدُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى
فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَقَالَ اِنِّىْ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝
فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰيٰتِنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ۝ وَمَا نُرِيْهِمْ
مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِىَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا ۫ وَاَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ
بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ۝ فَلَمَّا كَشَفْنَا

रखते है। ४३. (पस तू उन की बातों की तरफ़ कान मत लगा, बल्कि) जो कलाम तेरी तरफ़ वह्यि द्वारा भेजा गया है उस को मज़बूती से पकड़े रह। इस में शक नही कि तू सीधी राह पर है। ४४. और वह तेरे और तेरी क़ौम के लिये नसीहत है और तुम सब से इस के बारे में प्रश्न होगा[१६]। ४५. और तू उन रसूलों से पूछ जिन को हम ने तुझ से पहले (दुनिया की हिदायत के लिये) भेजा था (यानी उन की किताबों में देख और इन मुश्रिकों को दिखा कि) हम ने (अपनी ज़ात) रहमान के सिवा किसी और की ज़िबादत करने की भी अनुमति दी थी? ४६. और तहक़ीक़ हम ने मूसा को खुले-खुले निशान दे कर फ़िरऔन और उस के दर्बारियों की तरफ़ भेजा तो उन से कहा: मैं रब्बुल् आलमीन की तरफ़ से रसूल हूँ। ४७. फिर जब वह उन के पास हमारे निशान लाया तो उसी समय उस की हंसी उड़ाने लगे[१७]। ४८. और हम जो निशान उन को दिखाते थे वह पहले निशान से बड़ा होता था, और उन को सख़्त अ़ज़ाब में गिरफ़्तार किया ताकि वह लौटें। ४९.और उन्हों ने (हज़रत मूसा का मज़ाक़ उड़ाते हुये) कहा: ऐ जादूगर! जो तेरे रब ने तेरे साथ वादा किया हुआ है वह हमारे लिये उस से माँग, हम हिदायत पायें गे

....

१६. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "यह मामला (यानी ख़िलाफ़त और इमामत) क़ुरैश ही में रहे गा। जो उन से झगड़े गा और छीने गा, उसे अल्लाह औंधे मुँह उलट देगा, मगर जब तक कि यह दीन को क़ाइम रखें"। चूंकि यह क़ुरआन आप ही की ज़बान (भाषा) में उतरा है इस लिये इस में आप की भी क़ौमी शराफ़त है। और चूँकि क़ुरैश की ज़बान में नाज़िल हुआ है, तो ज़ाहिर है यही लोग इस को सब से अधिक समझें गे। इसी लिये इन की और भी ज़िम्मेदारी है कि सब से पहले इस पर मज़बूती के साथ अ़मल करें। इस में ख़ुसूसिय्यत के साथ मुहाजिरीन के लिये बड़ी भारी बुज़ुर्गी है। आगे फ़रमाया गया कि इस बारे में तुम से अवश्य प्रश्न हो गा कि कहाँ तक इस क़ुरआन पर अ़मल किया और कितना माना। (मुहम्मदी)

१७. हज़रत मूसा को अल्लाह पाक ने अपना रसूल बना कर फ़िरऔन और उस की प्रजा के पास भेजा और आप को बहुत सारे चमत्कार भी अ़ता किये। लेकिन उन लोगों ने अपने नबी की कोई क़द्र न की बल्कि उल्टा मज़ाक़ उड़ाया। अल्लाह ने भी इस जुर्म में उन को तरह-तरह के अ़ज़ाबों में पकड़ा। आज भी बहुत से फ़िरऔनी मिज़ाज वालों का यही हाल है कि वह आसमानी आदेशों का खुल कर मज़ाक़ उड़ाते हैं और संदेष्टाओं को झुठलाते हैं। ऐसे लोगों को मालूम होना चाहिये कि अल्लाह के अ़ज़ाब का क़ानून मन्सूख़ नही हुआ है और वह हर समय इस बात पर क़ुदरत रखता है कि वह ऐसे लोगों को तबाह-बर्बाद कर दे और वह ऐसा करता ही रहता है।

عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ۝ وَنَادٰى فِرْعَوْنُ
فِي قَوْمِهِ قَالَ يٰقَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَهٰذِهِ
الْأَنْهٰرُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِي ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ۝ أَمْ أَنَا
خَيْرٌ مِنْ هٰذَا الَّذِي هُوَ مَهِينٌ ۙ وَلَا يَكَادُ يُبِينُ ۝
فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِنْ ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ
الْمَلٰئِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ۝ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ فَأَطَاعُوهُ ۚ
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فٰسِقِينَ ۝ فَلَمَّا آسَفُونَا انْتَقَمْنَا
مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنٰهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا
لِلْآخِرِينَ ۝ وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ
مِنْهُ يَصِدُّونَ ۝ وَقَالُوا أَآلِهَتُنَا خَيْرٌ أَمْ هُوَ ۚ مَا
ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا جَدَلًا ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُونَ ۝
إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِبَنِي
إِسْرَاءِيلَ ۝ وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَلٰئِكَةً فِي

५०. फिर जब हमने उन से अ़ज़ाब दूर किया तो वह तुरन्त वादा तोड़ने लगे। ५१. फ़िरऔन ने अपनी क़ौम में एलान करा कर कहा: ऐ मेरी क़ौम के लोगो! क्या (इतना बड़ा) मुल्क मिस्र मेरा नही है? और यह दरिया जो मेरे महलों के नीचे चल रहे हैं क्या तुम देखते नही? (कि मेरे मुक़ाबला पर किसी और की अहमयित तुम्हारे दिल में क्यों आती है) ५२. क्या मैं अच्छा हूँ या यह शख़्स (मूसा) जो एक ज़लील आदमी है[१८] और (ज़बान में लुक्नत की वजह से) गुफ़्तगू भी ठीक-ठीक नहीं कर सकता। ५३. फिर सोने-चाँदी के कंगन उस को क्यों नही मिले, या फ़रिश्तों की जमाअ़त उस के साथ जमा हो कर आयी होती (जो लोगों को उस की तरफ़ बुलाती) ५४. सो फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को बेवकूफ़ बनाया फिर वह सारे उस के ताबेअ़ हुये, क्यों कि वह बदकार लोग थे। ५५. फिर जब उन्हों ने (अपनी बदआमाली से) हम को सख़्त रन्जीदा ही किया {यानि ग़ुस्सा दिलाया} तो हम ने उन से बदला लिया और उन सब को (उसी दरिया में) ग़र्क़ कर दिया। ५६. पस हम ने उन को गया गुज़रा और पिछलों के लिये मिसाल बनाया। ५७. और जब कभी इब्ने मरयम का ज़िक्र किया जाता है तो तेरी क़ौम के लोग (यानी अ़रब के बुतप्रस्त) उस से मुंह मोड़ लेते हैं[१९]। ५८. और कहते हैं: क्या हमारे माबूद अच्छे हैं या यह (मसीह) अच्छा है? यह लोग तेरे सामने सिर्फ़ झगड़े के तौर पर कहते हैं, बल्कि यह लोग फ़ितरी तौर पर झगड़ालू हैं। ५९. वह (मसीह) तो हमारा एक नेक बन्दा था जिस पर हम ने बहुत से इनाम किये थे और हम ने उस को बनी इस्राईल के लिये हादी {हिदायत करने वाला} बनाया। ६०. और अगर हम चाहते तो तुम्हारी जगह फ़रिश्ते पैदा कर देते

१८. फ़िरऔन अपने आप को हज़रत मूसा अ़लै० से बेहतर और अफ़्ज़ल साबित कर रहा है। लेकिन यह उस अभागे का झूठ है। फिर कहता है कि मूसा तो साफ़ बोल भी नही पाता और अपनी बात को समझा भी नही सकता। कहा जाता है कि बचपन में उन्हों ने आग का अंगारा मुँह में रख लिया था जिस की वजह से ज़बान में हकलाहट पैदा हा गयी थी। (इस विषय पर विस्तार से देखें सूरः ताहा आयत न० २७,२८ का हाशिया) फ़िरऔन का यह कहना मक्र और झूठ है। हज़रत मूसा बहुत साफ़ और दुरूस्त कलाम करते थे। उन की ज़बान में जो लुकनत थी वह दुआ के असर से ख़त्म हो गयी थी। अल्लाह ने गिरह खोल दी थी ताकि लोग बात को समझ सकें। दरअस्ल यह अभागा➲

खुद ही जाहिल और नासमझ था इसी लिये दूसरों को भी अपनी तरह जानता था। इस आयत में एक शब्द 'महीन्' आया है जिस का अर्थ है "हक़ीर, ज़ईफ़, बेमाल, बेनिशान, Valueless।

१९. 'यसिद्दून' (वह मुँह मोड़ते हैं) हज़रत इब्ने अब्बास, मुजाहिद, इक्रमा और ज़ह्हाक रह० ने तर्जुमा किया है कि "वह हंसने लगे" इस लिये उन्हें तअज्जुब हुआ। इमाम क़तादा फ़रमाते हैं "वह घबरा कर बोल पड़े"। इमाम नख़ई ने तर्जुमा किया है "वह मुंह फेरने लगे"। इस की वजह इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने अपनी सीरत की पुस्तक में यह बयान फ़रमाई है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वलीद बिन मुग़ीरा जैसे लोगों के पास बैठे परस्पर बातें कर रहे थे कि इतने में नज़्र बिन हारिस भी आ गया। उस ने आप से कुछ प्रश्न किये तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे लाजवाब कर दिया और यह आयः तिलावत फ़रमाई "तुम जिस किसी दूसरे की अल्लाह को छोड़ कर पूजा करते हो (दोनों ही) जहन्नम का ईंधन बनो गे"। आप फिर वहाँ से चले गये। इतने में अब्दुल्लाह बिन ज़ुहैर तमीमी भी पहुंच गया। वलीद बिन मुग़ीरा ने उस से कहा कि नज़्र बिन हारिस तो आज इब्ने अब्दुल मुत्तलिब (नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से शिकस्त खा गया और वह हमारे माबूदों को जहन्नम का ईंधन बना कर चलते बने। उस ने कहा कि अगर मैं होता तो उन्हें सवाल-जवाब में लाजवाब कर देता, ज़रा जा कर उन से पूछो तो सही कि हम जिन की पूजा करते हैं वह जहन्नमी हैं तो हम तो फ़रिश्तों की भी पूजा करते है।, हज़रत उज़ैर और हज़रत ईसा मसीह की भी पूजा की जाती है, तो फिर यह सब के सब भी जहन्नम में डाले जायें गे? सभा में बैठे हुये तमाम नेता मारे खुशी के उछल पड़े और यह प्रश्न आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुचाया। आप ने फ़रमाया: जो शख़्स ग़ैरुल्लाह की इबादत करे और जो अपनी इबादत ख़ुद करवाए, तो यह दोनों आबिद और माबूद (पूजने वाले और पूजे जाने वाले) जहन्नमी हैं। फ़रिश्तों और नबिय्यों ने न तो अपनी पूजा का हुक्म दिया और न ही अपनी पूजा और इबादत से प्रसन्न थे (इस लिये उन के जहन्नम में जाने का प्रश्न ही नहीं उठता) अस्ल में उन के नाम से यह लोग शैतान की पूजा करते हैं और शैतान ही उन से कुफ़्र व शिर्क के कार्य कराता है। इस पर यह आयत इन्नल्लज़ी-न स-ब क़त् लहुम् मिन्नल्......... नाज़िल हुयी।

कहने का मतलब यह है कि हज़रत ईसा और हज़रत उज़ैर अलै० और इन के अलावा दीगर जिन बुज़ुर्गों की यह लोग इबादत करते थे, वह लोग ख़ुद अल्लाह की इताअत पर थे और इन सब ख़ुराफ़ात से रोकते थे, लेकिन इन जाहिलों ने उन के बाद उन्हें अपना माबूद बना लिया, वह तो बेक़ुसूर (निर्दोष) हैं (मुहम्मदी) आज-कल भी यही कुछ हाल उन वलिय्यों और बुज़ुर्गों का है जिन की जाहिल मुसलमान पूजा करते हैं। वह लोग पूरी ज़िन्दगी तौहीद पर अमल करते और उसी की दावत देते रहे, मगर बाद में लोगों ने उन की क़ब्रों को पूजास्थल बना लिया और इस पर यह पुजारी लानत के मुस्तहिक़ ठहरे। (राज़)

जो ज़मीन पर एक-दूसरे के बाद रहते-सहते ६१. और वह मसीह क़ियामत की दलील और निशानी है[२०] पस तुम लोग उस (क़ियामत) में शक न करो और (जो तालीम मेरा रसूल देता है) उस में मेरी ताबेदारी करो, यही सीधी राह है। ६२. और शैतान तुम को इस से न रोके, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है (उस की दुश्मनी से होशियार रहना) ६३. और जब ईसा खुले अहकाम लाये (और लोगों को सुनाया) तो

الْأَرْضِ يَخْلُفُونَ ۝ وَإِنَّهُ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ
بِهَا وَاتَّبِعُونِ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ۝ وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ
الشَّيْطَانُ ۖ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝ وَلَمَّا جَاءَ عِيسَىٰ
بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُم بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُم
بَعْضَ الَّذِي تَخْتَلِفُونَ فِيهِ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝
إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ

مُّسْتَقِيمٌ ۝ فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنۢ بَيْنِهِمْ
فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ أَلِيمٍ ۝ هَلْ
يَنظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَن تَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا
يَشْعُرُونَ ۝ الْأَخِلَّاءُ يَوْمَئِذٍۢ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ
إِلَّا الْمُتَّقِينَ ۝ يَٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنتُمْ
تَحْزَنُونَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ۝
ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ۝ يُطَافُ

➲उन्हों ने कहा: मैं तुम लोगों के पास (रूहानी) हिक्मत लाया हूँ और इस लिये कि बाज़ बातें जिन में तुम लोग परस्पर इख़्तलाफ़ रखते हो वह तुम लोगों को पूरी तरह समझा दूँ, पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी पैरवी करो। ६४. बेशक अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा पर्वरदिगार है पस तुम उस की ज़िबादत करो (उस को छोड़ कर और किसी की मत करो) यही सीधा रास्ता है (जो अल्लाह तक तुम को पहुंचाये गा[२१]) ६५. फिर भी जो जमाअ़तें परस्पर मुख़्तलिफ़ हो गयीं, सो ऐसे ज़ालिमों के लिये दर्दनाक अज़ाब की वजह से अफ़सोस है। ६६. किसी मामले का इन्तिज़ार नही करते मगर इस बात का कि क़ियामत की घड़ी अचानक उन पर आ जाये, ऐसे हाल में कि यह लोग बिल्कुल बेख़बर हों। ६७. दोस्त सब (के सब) उस दिन एक दूसरे के दुश्मन हों गे, मगर परहेज़गार (यानी नेक लोगों की जमाअ़त के लोग ऐसे न हों गे, बल्कि एक दूसरे के दोस्त हों गे[२२])६८. (कहा जाये गा) ऐ अल्लाह के बन्दे! तुझ पर ख़ौफ़ नही और न तुम लोग ग़मगीन हो गे ६९. यानी (उन बन्दों से मुराद) वह लोग जो हमारे आदेशों को मान कर फ़रमाँबर्दार थे। ७०. (लो आज) तुम और तुम्हारी बीवियाँ जन्नत में दाख़िल हो जाओ, तुम ख़ुश किये जाओ गे।

....

२०. 'इन्नहू' (बेशक वह) इस से मुराद हज़रत ओ़सा अ़लै हैं। यानी हज़रत ओ़सा अ़लै० क़ियामत की एक निशानी हैं। इस लिये कि ऊपर ही से बयान चला आ रहा है। यह भी मालूम रहे कि उन का क़ियामत से पहले नाज़िल होना मुराद है जैसे कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "उन की मौत से पहले हर एक अहले किताब उन पर ईमान लाये गा" (सूरःनिसा-१५९) यानी हज़रत ओसा अ़लै की मौत से पहले क़ियामत के दिन यह उन पर गवाह हों गे। इस मतलब की पूरी वज़ाहत इसी की दूसरी क़िरात से होती है। जिस में फ़रमाया गया "बेशक वह अल्लाह की निशानी हैं क़ियामत के आने की"

अहादीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ख़बर दी है कि क़ियामत आने से पहले हज़रत ओ़सा इन्साफ़ करने वाले इमाम और हाकिम बन कर आसमान से उतरें गे (इब्ने कसीर) आज-कल के कुछ दहरिया मुसलमान भी ओ़सा अ़लै० के आसमान से उतरने का इन्कार करते हैं, हालाँकि अस्लाफ़ के दर्मियान कभी इस विषय में इख़्तिलाफ़ नही रहा और तमाम मुसलमानों का कुरआन की आयत और अहादीस की रोशनी में यही अ़क़ीदा रहा है कि क़ियामत के क़रीब हज़रत ओ़सा अ़लै० आसमान से नाज़िल हों गे, इस समय वह आसमान पर अल्लाह की क़ुदरत और हिक्मत से ज़िन्दा हैं। (राज़)

२१. चुनान्चे हज़रत ओ़सा की यह शिक्षा आज भी इन्जील यूहन्ना में मौजूद है "हमेशा की ज़िन्दगी यह है कि वे तुझ को अकेला सच्चा ख़ुदा यसूअ़ मसीह को जिसे तू ने भेजा है जानें" (यूहन्ना, बाब १७,वाक्य३) इस का मतलब स्पष्ट है कि आख़िरत में नजात केवल उन्हीं को हासिल हो गी जो अल्लाह की तौहीद और मसीह और बाक़ी दूसरे रसूलों की रिसालत पर ईमान रखते हों गे। ऐसा मालूम होता है कि हज़रत मसीह की इस तक़रीर को संक्षिप्त में➲

नक़्ल किया गया है, वर्ना इन्जील के ऊपर के जुम्ले का भी वही अर्थ है जो कुरआन में इस आयत में बयान हुआ है। (सनाई-७/११०)

२२. इब्ने हातिम में हज़रत अ़ली रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: दो ईमान्दार जो दुनिया में परस्पर दोस्त होते हैं जब उन में से एक मर जाता है और जन्नत की बशारत मिलती है तो वह दुनिया के अपने दोस्त को भी याद करता रहता और उस के हक में जन्नत की दुआ़यें करता रहता है। वह अल्लाह से कहता है कि उस को नेक राह पर चलने की तौफ़ीक़ दे जिस तरह तू ने मुझे दी और उस से इसी तरह राज़ी हो जा जिस तरह मुझ से राज़ी हुआ। अल्लाह तआ़ला उस को उत्तर देता है कि मैं ने उस के लिये जो कुछ जन्नत में तय्यार कर रखा है अगर तू देखेगा तो खुशी से उछल पड़े गा फिर जब यह दूसरा भी मर जाता है और दोनों की जानें एक साथ मिलती हैं, तो कहा जाता है कि परस्पर एक दूसरे का तअ़ल्लुक़ बयान करो, तो वह परस्पर एक दूसरे की प्रशंसा करते हुये कहें गे कि यह मेरा बड़ा अच्छा भाई और बड़ा नेक साथी और बड़ा अच्छा मित्र था। एक दूसरी हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिन दो आदमियों ने अल्लाह के लिये आपस में दोस्ती की और चाहे एक पूरब रहता हो और दूसरा पश्चिम (यानी उन के दर्मियान चाहे जितनी दूरी हो) लेकिन क़ियामत के दिन अल्लाह उन को जमा कर देगा और कहे गा कि यह है जिसे तू मेरी वजह से चाहता था।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि दोस्ती क़ियामत के दिन दुश्मनी से बदल जाये गी, मगर परहेज़गारों की दोस्ती नही बदलेगी। (इब्ने कसीर) एक और हदीस में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जो दो मुसलमान परस्पर अल्लाह के लिये मुहब्बत रखते हैं उस को हश्र में अल्लाह के अर्श का साया नसीब होगा।

عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّ اَكْوَابٍ ۚ وَفِيْهَا
مَا تَشْتَهِيْهِ الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْاَعْيُنُ ۚ وَاَنْتُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ۝٧١ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْٓ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ۝٧٢ لَكُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ كَثِيْرَةٌ مِّنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝٧٣
اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ۝٧٤ لَا
يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ۝٧٥ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ
وَلٰكِنْ كَانُوْا هُمُ الظّٰلِمِيْنَ ۝٧٦ وَنَادَوْا يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ
عَلَيْنَا رَبُّكَ ۚ قَالَ اِنَّكُمْ مّٰكِثُوْنَ ۝٧٧ لَقَدْ جِئْنٰكُمْ
بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ۝٧٨ اَمْ اَبْرَمُوْٓا
اَمْرًا فَاِنَّا مُبْرِمُوْنَ ۝٧٩ اَمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ
وَنَجْوٰىهُمْ ۭ بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُوْنَ ۝٨٠ قُلْ اِنْ
كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ ۖ فَاَنَا اَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ ۝٨١ سُبْحٰنَ
رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝٨٢

७१. सोने की रकाबियाँ और गिलास (उन को दिये जायें गे) जो उन में इधर-उधर फेरे जायें गे और जो कुछ तबीअ़त चाहती है और जो आँखों को भली मालूम होती हैं उन में मिलें गी और तुम उन में हमेशा रहो गे ७२. और यह बाग़ जो तुम को मिले हैं (यह तुम्हारे) नेक कामों के सबब से (तुम को मिले हैं) ७३. तुम्हारे लिये उन में बहुत अधिक फल हों गे, तुम उन्ही में से खाते रहो गे। ७४. बेशक मुजिरम लोग जहन्नम में हमेशा रहें गे[२३] ७५. जिस में उन के अ़ज़ाब में कभी भी नाग़ा न हो गा (न कभी उन में कमी की जाये गी) और वह उस में निराश हो जायें गे। ७६. हम ने उन पर (किसी प्रकार से) कोई अत्याचार न किया हो गा लेकिन वह खुद आप ही ज़ालिम हों गे। ७७. और (जहन्नम के दारोग़ा को) पुकारें गे कि ऐ मालिक! तेरा पर्वरदिगार हमारा काम तमाम कर दे, वह कहे गा (मत बोलो!) तुम लोग हमेशा इसी जगह

रहो गे। ७८. हम ने तुम्हारे पास सच्ची तालीम भेजी थी मगर तुम में से अक्सर लोग हक़ बात को नापसन्द जानते रहे। ७९. क्या उन्हों ने कोई तदबीर कर रखी है तो हम भी (मज़बूती से) फ़ैसला कर चुके हैं[२४]। (कि इस्लाम को ग़लबा होगा और कुफ़्र मिट जाये गा) ८०. क्या यह समझते हैं कि हम उन के पोशीदा भेद और पोशीदा मश्वरा नही जानते? हाँ, और हमारे भेजे हुये फ़रिश्ते भी उन के पास लिखते रहते हैं। ८१. तू कह कि अगर अल्लाह रहमान की औलाद हो तो सब से पहले मैं उस की बन्दगी करूँ। ८२. जो आसमानों और ज़मीनों और बड़े अ़र्श का पर्वरदिगार है वह उन के (इस बेहूदा) बयान से पाक है

....

२३. ऊपर की आयत में नेक लोगों का बयान था, अब यहाँ पर बुरे लोगों के दन्ड का ज़िक्र हो रहा है। यह पापी जहन्नम के अ़ज़ाब में हमेशा घिरे रहें गे, उस से एक क्षण के लिये भी छुटकारा न मिले गा। उस के अन्दर निराश हो कर हर भलाई से नाउम्मीद हो जायें गे। अन्त में वह जहन्नम के दारोग़ा को पुकार कर उस से अनुरोध करें गे कि आप मेरी मौत के लिये अल्लाह से दुआ़ कर दें। उन्हें उत्तर मिले गा कि तुम इसी में पड़े रहो। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि 'मक्स' से एक हज़ार वर्ष मुराद है। यानी न मरो गे, न भाग सको गे और न छुटकारा पा सको गे। बुख़ारी शरीफ़ में रिवायत के मुताबिक़ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रामाया: यह लोग मौत की इच्छा करें गे ताकि अ़ज़ाब से बच जायें, लेकिन अल्लाह की तरफ़ से फ़ैसला हो चुका है कि न उन्हे मौत आये गी और न ही अ़ज़ाब में कुछ कमी हो गी (इब्ने कसीर)

२४. अ़रब के काफ़िर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ हमेशा नुक़्सान पहुंचाने की तदबीरें करते थे लेकिन अल्लाह की पोशीदा तदबीर उन की चालों को नाकाम बना देती थी। एक बार काफ़िरों ने मिल कर मश्वरा किया कि भविष्य में जो कोई उस नबी पर ईमान लाये, तो उस का रिश्तेदार ख़ुद उसे मार-मार कर दीन से लौटा दे, और जो कोई बाहर का आये तो उस से कह दिया जाये कि उस नबी के पास मत उठो-बैठो। उन लोगों ने यह पोशीदा चाल चली और अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ज़लील और रूस्वा करने की ठानी और अपने दीन को बुलन्द करने की तदबीर की, अन्ततः अल्लाह ही की तदबीर ग़ालिब रही। हम उन के भेद को जानते हैं और उन की पोशीदा चालें समझते और उन के मश्वरे सुनते हैं और हुकूमत के इन्तिज़ामी ज़ाब्ता के मुताबिक़ हमारे फ़रिश्ते (किरामन कातिबीन) उन के तमाम आमाल को लिखते जाते हैं, यह आमाल नामा क़ियामत के दिन पेश हो गा।

'अगर अल्लाह रहमान की औलाद हो तो सर्वप्रथम मैं उस की बन्दगी करूँ (आयः८१) यानी इस से बड़ा अत्याचार क्या हो गा कि अल्लाह के लिये बेटे और बेटियाँ स्वीकार करते हैं। आप कह दें कि अगर थोड़ी देर के लिये औलाद मान भी लें, तो उस की पूजा करने वाला पहला शख़्स मैं हूँ गा, क्यों कि मैं दुनिया में सब से ज़्यादा अल्लाह की ख़िबादत करने वाला हूँ। और यह एक नियम है कि अल्लाह के साथ बन्दे का जितना तअ़ल्लुक़ होता है, अल्लाह का भी उस बन्दे के साथ उतना ही तअ़ल्लुक़ होता है। तो जब अल्लाह ने मुझ जैसे सब से ज़्यादा ख़िबादत करने वाले को अपनी औलाद नही बनाया, तो तुम कौन होते हो अपनी मर्ज़ी से उसके लिये औलाद बनाने वाले?

कुछ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत का मतलब यह लिया है कि अगर तम्हारे अ़क़ीदा के मुताबिक़ अल्लाह की कोई औलाद है तो याद रखो! मैं तुम्हारे मुक़ाबला में उस अकेले अल्लाह की ख़िबादत करने वाला हूँ जो औलाद से पाक है। कुछ उलमा ने 'आ़बिद' के माना "इन्कार करने वाला" लिया है। यानी तुम्हारे बातिल अ़क़ीदा का इन्कार करने वाला सब से पहला शख़्स मैं हूँ। कुछ उलमा ने 'इन्' (आयत ८१) को नफ़ी (इंकार) के माना में लिया है, फिर तर्जुमा यह हो गा "ऐ नबी तू कह! रहमान के कोई औलाद नहीं है", लेकिन इस तर्जुमा में कोई ज़्यादा वज़न नही है। (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान) इमाम क़तादा ने भी यही तफ़्सीर की है इस का मतलब यह हर्गिज़ नही कि अल्लाह

➲की ज़ात ज़मीन में है अल्लाह तो अर्श ही पर मुस्तवी है। उस की इबादत आसमान में और ज़मीन में हर जगह होती है और उस की बादशाहत हर जगह है। (वहीदी)

فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتّٰى يُلٰقُوا يَوْمَهُمُ
الَّذِي يُوعَدُونَ ۝٨٣ وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلٰهٌ
وَّفِي الْأَرْضِ إِلٰهٌ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۝٨٤ وَتَبٰرَكَ
الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ
وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝٨٥ وَلَا
يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا
مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝٨٦ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ
مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللّٰهُ فَأَنّٰى يُؤْفَكُونَ ۝٨٧ وَقِيلِهِ
يٰرَبِّ إِنَّ هٰٓؤُلَاءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُونَ ۝٨٨ فَاصْفَحْ عَنْهُمْ
وَقُلْ سَلٰمٌ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝٨٩

८३. पस तू उन को छोड़ दे ताकि बेहूदा खेल-कूद में लगे रहें, यहाँ तक कि उस दिन को पा लें जिस से उन को डराया जाता है। ८४. और वह अल्लाह वही है जो आसमानों में माबूद हैं और ज़मीम में भी वही माबूद है। और बड़ी हिक्मत वाला और बड़े इ़ल्म वाला है। ८५. और बड़ी बर्कत वाला है वह अल्लाह कि आसमान और ज़मीन और उन के बीच की सब चीज़ें उसी की मिल्क {संपति} हैं और क़ियामत की घड़ी का इ़ल्म भी उसी को है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओ गे। ८६. और जिन लोगों से यह दुआ़ए माँगते हैं वह सिफ़ारिश का इख़्तियार नही रखें गे[२५] हाँ, जिन लोगों ने इ़ल्म से हक़ बात की शहादत दी हो गी। ८७. और अगर तू (ऐ नबी!) उन से पूछे कि किसने उन को और उन के बनावटी माबूदों को बनाया है? तो (तुरन्त) कह दें गे "अल्लाह ने" फिर कहाँ को बहके चले जा रहे हैं? ८८. हमें उस (नबी) के "या रब, या रब" कहने की क़सम है कि यह लोग हर्गिज़ ईमान न लायें गे। ८९. पस तू उन की पर्वा न कर और तू कह दिया कर "तुम को सलाम" यह स्वयँ ही जान लें गे।

....

२५. इस आयत की रोशनी में वह लोग जो क़ब्रों, थानों, आस्तानों, शद्दे, मज़ारों, झन्डों, पीरों और फ़क़ीरों की पूजा करते हैं, जान लें, यह सब कुछ भी उनके काम न आ सकें गे। (वहीदी)

सूरः दुख़ान्- (44)

सूरः दुख़ान् (धुवाँ) मक्का में नाज़िल हुयी। इस में ५९ आयतें और ३ रुकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. हामीम् २. क़सम है उस किताब की जो➲

مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ۝٣ فِيْهَا يُفْرَقُ
كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ۝٤ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۚ اِنَّا كُنَّا
مُرْسِلِيْنَ ۝٥ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ ۝٦ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ
اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝٧ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ
رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٨ بَلْ هُمْ
فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ۝٩ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي السَّمَآءُ
بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ۝١٠ يَّغْشَى النَّاسَ ۚ هٰذَا عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ۝١١ رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ۝١٢
اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۝١٣
ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ۝١٤ اِنَّا
كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ ۝١٥
يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ۝١٦

बयान करने वाली है। ३. तहक़ीक़ हम ने वह किताब बर्कत वाली रात (यानी रमज़ान की लैलतुल् क़द्र) में उतारी है[2]। बेशक हम लोगों को डरायें गे ४. उसी रात में तमाम हिक्मत से भरपूर मामलात की तफ़्सील की जाती है। ५. हमारे हुक्म से हुवा है, हम ही उस किताब को भेज रहे हैं। ६. (इस कुरआन का नाज़िल होना) केवल तेरे पर्वरदिगार की रहमत से है। बेशक वह सब की सुनता और जानता है। ७+८. जो आसमानों और ज़मीनों और उन के दर्मियान की कुल चीज़ों का पर्वरदिगार है। अगर तुम यक़ीन करते हो (तो इस बात पर यक़ीन करो कि) उस के अ़लावा कोई बरहक़ माबूद नही, वह ज़िन्दा करता है और वही मारता है। वह तुम्हारे पहले बाप-दादों का पर्वरदिगार है। ९. लेकिन यह लोग शक में खेल रहे हैं। १०. पस तू उस रोज़ का इन्तिज़ार कर जिस रोज़ आसमान से एक नुमायाँ धुंवाँ ज़ाहिर होगा[3]। ११. वह तमाम लोगों पर छा जाये गा (उस वक़्त उन को मालूम हो जाये गा) कि यह तो दर्दनाक अ़ज़ाब है। १२. (फिर कहें गे) ऐ हमारे अल्लाह! यह अ़ज़ाब हम से दूर कर दे तो ईमान लायें गे। १३+१४. फिर भला उन को कैसे नसीहत हो गी? जिस सूरत में उन के पास बयान करने वाला रसूल आया वह उस से मुंह मोड़े रहे और कहने लगे कि यह (नबुव्वत का दावा करने वाला) किसी का सिखाया हुआ है, मजनून है।१५. (सुनो!) हम थोड़ी सी मुद्दत तक यह अ़ज़ाब टाल दें गे तुम लोग फिर (उधर ही को) लौट जाओ गे। १६. जिस रोज़ हम उन को बड़ी सख़्ती से पकड़े गें उस दिन हम उन से पूरा बदला लें गे[4]

....

१.'हामीम्' इस श्ब्द का तर्जुमा मौलाना मर्हूम ने यह किया है "मैं रहमान और रहीम हूँ"। मगर हक़ यह है कि इन हुरूफ़ मुक़त्तआत का माना और मुराद अल्लाह ही बेहतर जानता है। (राज़)

२. मुबारक रात:- इस आयत की तफ़्सीर में बड़ा इख़्तिलाफ़ है, मगर हम ने जो माना बयान किये हैं यह दोनों गरोह (मुहद्दिसीन और मुतकल्लिमीन) के नज़दीक मोतबर हैं। तफ़्सीर इब्ने कसीर में बयान है कि 'बर्कत वाली रात' से मुराद "लैलतुल क़द्र" है, जैसा कि अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान है "हम ने इस कुरआन को लैलतुल् क़द्र में उतारा" (सूरः क़द्र,पारः३०) और यह रात रमज़ान के महीने में है जैसा कि अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है "रमज़ान का महीना वह है जिस में क़ुरआन नाज़िल किया गया" (सूरः बक़रः, आयत १८५) यह बात ध्यान रहे कि इस के ख़िलाफ़ जो रिवायत

➲आयी है वह ज़ईफ़ है।

इमाम राज़ी रह० तफ़्सीर कबीर में लिखते है कि जो लोग "मुबारक रात" से पन्द्रह शाबान की रात मुराद लेते हैं, उन के पास कोई भी माक़ूल दलील नही है। यह बात मालूम रहे कि अ़ल्लामा राज़ी रह० का शुमार मुतकल्लिम (फ़लसफ़ी) उ़लमा में होता है और यह इस रात से लैलतुल् क़द्र ही मुराद लेते हैं।

'फ़ीहा युफ़्-रक़ु' (इस रात में तफ़्सील की जाये गी) इस के बारे में भी मुफ़स्सिरीन ने बहुत कुछ लिखा है। मैं ने जो तर्जुमा किया है, आगे-पीछे की आयत को सामने रख कर किया है, और यही तर्जुमा मेरे नज़दीक दुरूस्त है। सूरः के आरंभ से ले कर आयत न० ६ तक में क़ुरआन मजीद ही की तारीफ़ है। इस बात को सामने रख कर मैं ने जो तर्जुमा किया है वही दुरूस्त है (सनाई)

१८."लै-लतिम्मुबा-र-कतिन् (बाबर्कत रात) से मुराद "लैलतुलक़द्र" हैजैसा कि दूसरे स्थान पर कहा गया है "रमज़ान के महीने में क़ुरआन उतारा गया है (सूरः बक़रः-१८५) और एक दूसरे स्थान पर फ़रमाया "हम ने यह क़ुरआन शबे क़द्र में नाज़िल फ़रमाया" (सूरः क़द्र) यह शबे क़द्र रमज़ान के अन्तिम दहे की ताक़ रातों (२१,२३,२५,२७,२९) में से कोई होती है। यहाँ पर क़द्र की इस रात को बर्कत वाली रात क़रार दिया है। इस के बर्कत वाली रात होने में क्या संदेह हो सकता है कि एक तो इस रात मे क़ुरआन नाज़िल हुआ, दूसरे इस रात में फ़रिश्तों और ख़ास कर जिब्रील का नुज़ूल होता है। तीसरे यह कि इस में सारे साल में होने वाले वाक़िआ़त का फ़ैसला किया जाता है। (जैसा कि इसी सूरः में आयत न०४ में आ रहा है) चौथा यह कि इस रात की इ़बादत हज़ार महीने (८३ वर्ष, ४ माह) की इ़बादत से बेहतर है। शबे क़द्र या लैलतिम्मुबारकः में क़ुरआन के नाज़िल होने का अर्थ यह है कि इसी रात से नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर क़ुरआन मजीद नाज़िल होना आरंभ हुआ। यानी पहले-पहले उसी रात आप पर क़ुरआन नाज़िल हुआ, या यह मतलब है कि "लौहे महफ़ूज़" से इसी रात क़ुरआन "बैतुल इ़ज़्ज़त" में उतारा गया, जो पहले आसमान पर है। फिर वहाँ से आवश्यक्तानुसार २३ सालों तक मुख़्तलिफ़ वक़्तों में नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर उतरता रहा। कुछ लोगों ने "लैलतिम्मुबारकतिन" से शाबान की पन्द्रहवीं रात मुराद ली है। लेकिन यह सहीह नही हैं। जब क़ुरआन के नस्स से क़ुरआन का नाज़िल होना शबे क़द्र में साबित है, तो इस से शबे बराअत मुराद लेना किसी तरह भी सहीह नही। इस के अ़लावा शबे बराअत (शाबान की पन्द्रहवीं रात) की बाबत जितनी भी रिवायतें आयी हैं, जिन में उस की फ़ज़ीलत का बयान है या उन में उसे फ़ैसले की रात कहा गया है, तो यह सब रिवायतें सनद के एतिबार से ज़ईफ़ हैं, यह क़ुरआन की खुली नस्स का मुक़ाबला किस प्रकार कर सकती हैं?

नोटः- यह हाशिया सऊदी अ़रब से प्रकाशित उर्दू तर्जुमा के क़ुरआन से लिया गया है। हाशिया मौलाना सलाहुद्दीन यूसुफ़ साहब का है। चूंकि इस सूरः की तीसरी आयत की तश्रीह बहुत अहम है इस लिये यहाँ मैं ने शामिल कर देना उचित जाना। अगर यह इज़ाफ़ा ग़लत है तो इस के लिये क्षमा चाहता हूँ.......... ख़ालिद

३.'दुख़ान' (धुवाँ) यहाँ इस से क्या मुराद है? इस में उ़लमा के दो क़ौल हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि क़ियामत के क़रीब एक धुवाँ उठे गा जो तमाम ही लोगों को घेर लेगा। नेक लोगों को उस धुयें से मामूली तकलीफ़ पहुंचे गी और उन को हल्का सा ज़ुकाम हो जाये गा, लेकिन काफ़िर और मुनाफ़िक़ उस धुयें से बेहोश हो जायें गे। इस आयत से यही बेहोशी मुराद है। यह भी संभव है कि यह धुवाँ वही माद्दा हो जिस से आसमान को बनाया गया और क़ुरआन ने जिसे धुंवाँ कहा है, जैसा कि फ़रमाया गया:

"फिर अल्लाह आसमान की तरफ़ मुतवज्जह हुआ जब कि वह धुवाँ था" (हामीम सजदः-११) इस का मतलब यह हुआ कि आकाश घुलने लगे गा और अपनी पहली हालत (धुवाँ) की तरह होने लगे गा और यह उसकी इब्तिदा हो गी। लेकिन हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० का कहना है कि इस से मुराद वह धुंवाँ हर्गिज़ नही जिस का ऊपर बयान हुआ है। जो धुवाँ यहाँ मुराद है उस की तफ़्सील यह है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़ुरैश के➲

➲काफ़िरों की सर्कशी और शरारत से तंग आ कर दुआ फ़रमाई कि उन पर सात वर्ष तक सूखा काल को डाल दे, जैसे हज़रत यूसुफ़ अ़लै० के ज़माना में मिस्र वालों पर आया था। चुनान्चे इतना ज़बर्दस्त सूखा काल पड़ा कि मक्का वाले मुर्दार का चमड़ा और हड्डियाँ खाने लगे और मक्का वाले भूकों मरने लगे। आ़म तौर पर यह देखा गया है कि भूख-प्यास और क़हत की वजह से ज़मीन व आसमान के दर्मियान धुवाँ सा आँखों के सामने दिखाई देने लगता है और काफ़ी समय तक वर्षा न होने की वजह से गर्द-गुबार ऊपर चढ़ कर आसमान पर धुंवाँ सा मालूम होने लगता है, इसी को यहाँ कुरआन ने धुंवाँ कहा है और इब्ने मस्ऊद के नज़दीक इस आयत में यही धुंवाँ मुराद है। ऊपर यह मतलब मुराद लिया जाये तो फिर 'तमाम लोगों पर छा जाये गा' में तमाम लोगों से मुराद मक्का वाले हों गे। गोया यह एक भविष्यवाणी थी जो पूरी हुयी। (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

४. बड़ी सख़्ती से पकड़े गे' इस सख़्त पकड़ से बद्र की लड़ाई की तरफ़ इशारा है। इस में कोई शक नही कि बद्र की लड़ाई का दिन काफ़िरों के लिये निहायत सख़्त पकड़ का दिन साबित हुआ। उन के सत्तर नेता क़त्ल हुये और इतने ही बन्दी भी बनाये गये, इस प्रकार उन का सारा ग़ुरूर और तकब्बुर मिट्टी में मिल गया हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जो पाँच पेशीन गोइयाँ (भविष्यवाणियाँ) फ़रमाई थीं वह पूरी हुयीं (१) आसमान से धुंयें का उठना जो मक्का वालों पर सूखाक़ाल की शक्ल मे ज़ाहिर हुआ। (२) रूम वालों का पराजय के बाद पुनः विजय हासिल करना। (३) चन्द्रमा के दो टुकड़े होना (४) बद्र की लड़ाई में कुफ़्फ़ार का शिकस्त खाना। (५)..............?? (बुख़ारी, मुस्लिम, इब्ने कसीर)

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ
كَرِيْمٌ ﴿١٧﴾ أَنْ أَدُّوْٓا إِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ۖ إِنِّيْ لَكُمْ
رَسُوْلٌ أَمِيْنٌ ﴿١٨﴾ وَّأَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ۚ إِنِّيْٓ
اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٩﴾ وَإِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ
وَرَبِّكُمْ أَنْ تَرْجُمُوْنِ ﴿٢٠﴾ وَإِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ
فَاعْتَزِلُوْنِ ﴿٢١﴾ فَدَعَا رَبَّهٗٓ أَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ
مُّجْرِمُوْنَ ﴿٢٢﴾ فَأَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا إِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٢٣﴾
وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ۖ إِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٤﴾
كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٢٥﴾ وَّزُرُوْعٍ وَّ
مَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٢٦﴾ وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ﴿٢٧﴾
كَذٰلِكَ ۖ وَأَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿٢٨﴾ فَمَا
بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوْا
مُنْظَرِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ مِنَ

१७. और इस से पहले हम ने फ़िरऔ़नी क़ौम को जाँचा था और बड़े मतर्बे का रसूल (मूसा) उन के पास आया १८. (उस ने फ़िरऔ़न और उस के दर्बारियों से कहा) कि अल्लाह के बन्दों (यानी बनी इस्राईल) को मेरे हवाले कर दो, मैं तुम्हारे लिये अल्लाह की तरफ़ से अमानतदार रसूल हूँ १९. और यह कि अल्लाह के हुक्म के आगे सरकशी मत करो मैं तुम्हारे पास खुली दलील लाया हूँ। २०. और मैं अपने और तुम्हारे पर्वरदिगार की पनाह में हूँ इस बात से कि तुम मुझे मार सको। २१. और अगर तुम मेरी न मानो तो (ख़ैर) मुझे (मेरे हाल पर) छोड़ दो। २२. फिर मूसा ने अपने पर्वरदिगार से दुआ़ की (ऐ मेरे मौला!) यह (फ़िरऔ़नी) लोग बदकार हैं (इन से हमें नजात दे) २३. (पस वह्यि हुयी कि) मेरे बन्दों को रात के समय (निकाल कर) ले जा (मगर) तुम लोगों का पीछा किया जाये गा। २४. और दरिया को ख़ुश्क छोड़ कर➲

➲निकल जाना[५] वह (फ़िरऔनी) डुबो दिये जायें गे (चुनान्चे ऐसा ही हुआ) २५+२६+२७. वह बहुत से बाग़, मीठे चश्मे, लहलहाती खेतियाँ, बड़े शान्दार मकान और बड़ी-बड़ी नेमतें जिन में वह मज़े किया करते थे, सब कुछ छोड़ गये। २८ ऐसा ही हुआ[६] और हम ने (एक समय के बाद) उन चीज़ों का वारिस दूसरी क़ौम (बनी इस्राईल) को बनाया। २९. फिर उन पर आसमान और ज़मीन न रोए और न उन को (दुनिया में रहने की) मुहलत मिली (बल्कि हुक्म पहुंचते ही तबाह किये गये) ३०. और हम ने बनी इस्राईल को फ़िरऔन के सख़्त अ़ज़ाब से छुड़ाया

....

५. 'रह्वा' (सूखा रास्ता जो अपनी अस्ली हालत पर हो) मतलब यह है कि पार हो कर दरिया को रवानी का हुक्म न देना, यहाँ तक कि दुश्मनों में का एक-एक उस में न आ जाये। उन सब के आजाने के बाद उसे बह पड़ने का हुक्म मिलते ही सब को डुबो दिया जाये गा। आगे फ़रमाया गया कि वह इस प्रकार बर्बाद हुये कि बाग़ात, खेतियाँ, नहरें, मकानात और बैठकें वग़ैरह सब छोड़ गये। फ़िरऔनियों के यह बाग़ नील दरिया के किनारे-किनारे फैले हुये थे और इन का एक लंबा सिलसिला रुसवाँ से ले कर रशीद तक चला गया था। दरिया-ए-नील की नौ ख़लीजें थीं और यह सब एक दूसरे से मिली हुयी थीं (और सब के किनारे-किनारे तट पर बाग़ात थे) और पहाड़ों की वादी में जो मिस्र से ले कर दरिया तक बराबर चली आती थी, ज़बर्दस्त खेती होती थी। आख़िर कार यह सारी नेमतें छोड़-छाड़ कर तबाह-बर्बाद कर दिये गये और सारा माल-मव्वाल धरा का धरा रह गया। वह ऐसे मनहूस साबित हुये कि उन पर आसमान व ज़मीन भी न रोये।

मुस्नद अबू याला की एक रिवायत में है कि बन्दे के लिये आकाश में दो दर्वाज़े हैं, एक से उन की रोज़ी आती है और दूसरे से उस के आमाल और उस के कलाम चढ़ते हैं। जब यह मर जाता है और वह (दर्वाज़े) अ़मल और रोज़ी को गुम पाते हैं तो रोते हैं। यह हदीस बयान करने के बाद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यही आयत तिलावत फ़रमाई। इब्ने अबी हातिम की एक रिवायत में है कि "इस्लाम ग़रीबी की हालत में शुरू हुआ और फिर उसी हालत में हो जाये गा। याद रखो! मोमिन कहीं भी मुसाफ़िर की तरह नहीं। मोमिन जहाँ कहीं भी हो जिस हाल में हो, जहाँ उस पर कोई मरने के बाद ग़म करने वाला न हो, तो वहाँ उस पर रोने वाले आसमान व ज़मीन मौजूद हैं"। हज़रत अ़ली रज़ि० फ़रमाते हैं: हर बन्दे कि लिये ज़मीन में एक नमाज़ की जगह होती है और एक जगह आसमान में उस के अ़मल के चढ़ने की होती है। अब चूंकि फ़िरऔनियों के पास नेक आमाल ही न थे इसी वजह से न ज़मीन उन पर रोयी और न आसमान और न ही उन्हें नेक अ़मल करने की मुहलत दी गयी। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से भी इसी तरह रिवायत है। (इब्ने कसीर)

कुछ मुफ़स्सिरों ने आयत पर ग़ौर न करने की वजह से यह समझ लिया है कि बनी इस्राईल, फ़िरऔन और उस के लश्कर के हलाक होने के बाद नदी के उस पार ही से तुरन्त लौट आये और फ़िरऔनियों की हलाकत के बाद उन की छोड़ी हुयी संपत्ति के मालिक बन गये, मगर यह ख़याल दुरुस्त नहीं है। दरिया पार हो जाने के बाद बनी इस्राईल सैना पहाड़ की तरफ़ चले गये और तीह की वादी में ४० वर्ष तक भटकते रहे। इसी सफ़र में हज़रत मूसा और हारून का देहान्त हुआ। फिर बाद में यूशा बिन नून के समयकाल में बनी इस्राईल मुल्क शाम के वारिस बने, जहाँ मुल्क मिस्र के बाग़ों, चश्मों और भवनों के समान ही बाग़, चश्मे और मकानात मौजूद थे। 'क़ौ-मन् आ-ख़रीन' (दूसरी क़ौम) इस से मुराद डूब जाने वाले फ़िरऔनियों के अ़लावा और दूसरे मिस्र के वासी मुराद हैं, जो उन के खान्दान से न थे। (हक़्क़ानी)

६. 'एक समय के बाद' यह जुम्ला यहाँ बढ़ाना ज़रूरी है इस लिये कि बनी इस्राईल एक समय के बाद फ़लस्तीन में गये, फिर वहाँ उन्हों ने जंगी ताक़त हासिल करने के बाद दूसरे देश फ़तह किये (सनाई) और फिर बाद में वह➲

➲मिस्र के भी वारिस बने जैसा कि दूसरी जगह क़ुरआन की आयत "और मिस्र का हम ने वारिस बनाया" से ज़ाहिर है।

الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ۝ مِنْ فِرْعَوْنَ ۚ اِنَّهٗ كَانَ
عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى
عِلْمٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا
فِيْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ ۝ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَيَقُوْلُوْنَ ۝
اِنْ هِيَ اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِيْنَ ۝
فَاْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝
اَهُمْ خَيْرٌ اَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۙ وَّالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ
اَهْلَكْنٰهُمْ ۫ اِنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝ وَمَا
خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ۝
مَا خَلَقْنٰهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا
يَعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝
يَوْمَ لَا يُغْنِيْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْئًا وَّلَا هُمْ
يُنْصَرُوْنَ ۝ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللّٰهُ ۚ اِنَّهٗ هُوَ

३१. बेशक वह बड़ा सरकश था और बेहूदा लोगों में से था (इस लिये जब उस की सरकशी इन्तिहा को पहुंच गयी तो नतीजा भी वही हुआ जो ऐसे कामों का हुआ करता है, यानी तबाही) ३२. और हम ने उन (बनी इस्राईल) को अपने ज़ाती अ़िल्म से उस वक़्त के लोगों पर फ़ज़ीलत दी थी। ३३. और हम ने उन को ऐसे-ऐसे निशान दिये थे कि उन में खुली मेहरबानी थी। ३४. यह (अ़रब के मुश्रिक) कहते हैं कि यही हमारी पहली मौत हो गी ३५. और हम (क़ियामत के दिन) न उठाये जाऐंगे ३६. (यह कह कर आख़िरी कलाम के तौर पर कहते हैं) पस अगर तुम (मुसलमानो!) सच्चे हो तो हमारे बाप-दादा को (ज़िन्दा कर के) ले आओ। ३७. क्या यह लोग (अपनी क़ुव्वत में) अच्छे हैं या तुब्बअ़ की क़ौम[७] और जो उन से पहले थे (वह अच्छे थे)। हम ने सब को हलाक किया, बेशक वह लोग मुजरिम थे (इस लिये इन लोगों के साथ भी इसी तरह का बर्ताव किया जाये गा) ३८. और हम ने आसमान और ज़मीन और उन के दर्मियान की कुल चीज़ें खेल-तमाशा की निय्यत से पैदा नही कीं ३९. हम ने उन को हक़ के साथ पैदा किया है लेकिन बहुत से लोग (इस राज़ को) नही जानते। ४०. तहक़ीक़ फ़ैसला का दिन (यानी क़ियामत का दिन) उन सब के लिये मुक़र्रर वक़्त है। ४१. जिस रोज़ कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ काम न आये गा और न वह मदद किये जायें गे। ४२. मगर जिस पर अल्लाह रहम करे

....

७. तफ़्सीर "जामिउल बयान" में नक़ल है कि तुब्बअ़ और सबा की क़ौम दोनों एक ही हैं। अल्लाह ने उन को हलाक कर दिया उन के शहरों को टुक्ड़े-टुक्ड़े कर दिया और उखाड़ कर फेंक दिया। उस में जो बादशाह होता था उस को "तुब्बअ़" कहा जाता था, जैसे मिस्र के बादशाहों को "फ़िरऔन" और रूम के बादशाहों को "क़ैसर"। कुछ अहादीस से साबित है कि तुब्बअ़ को बुरा-भला मत कहो, वह मुसलमान हो गये थे। यही क़ौम थी जिस के लोग नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के नबी बनाये जाने से ७०० वर्ष पूर्व ही आप पर ईमान ला कर मदीना में आबाद हुये और एक➲

➲काग़ज़ (दस्तावेज़) पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का नाम लिख कर अपनी औलाद में छोड़ गये, वह काग़ज़ पुश्त-दर -पुश्त (पीढ़ी-दर-पीढ़ी) उन के दर्मियान चला आया और आख़िर में हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि० ने उसे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया।

तफ़्सीर "मआ़लिम" के मुताबिक़ यह "तुब्बा" जिस का यहाँ ज़िक्र है, यमन का बादशाह था। यह क़ौम शह्र हीरा, समुर और क़िन्दान में बसाई गयी थी। यह बादशाह पूरब की तरफ़ जाते हुये अपने लड़के को मदीना छोड़ गये उस को वहाँ के लोगों ने धोखे से मार डाला उन्हों ने इस इरादा से फ़ौजें इकट्ठी कीं कि मदीना को उजाड़ दूँ। मदीना वालों ने भी मुक़ाबला किया और लड़ाई होती रही। मदीना वाले दिन को तो जंग लड़ते और रात को उन्ही तुब्बा वालों की मेहमानी करते। यह देख कर तुब्बा वालों ने कहा कि यह लोग तो बड़े हौसला वाले हैं। इसी दर्मियान बनू कुरैज़ा के यहूदी आ़लिमों ने भी बादशाह से कहा: तू अपने इरादे से रूक जा! क्यों कि यह शहर अन्तिम नबी का शहर है जो मक्का में पैदा हों गे और उन का नाम मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हो गा। तुब्बअ़ की क़ौम ने उन यहूद आ़लिमों का दीन क़ुबूल कर लिया और उन को और उन के साथ और बहुत से लोगों को ले कर यमन की तरफ़ रवाना हो गया। राह में क़बीला बनी हुज़ैल के कुछ लोग मिले और कहा कि एक मकान में कुछ हीरे-जवाहिर दबे हुये हैं, उन्हें निकाल कर अपने क़ब्ज़े में ले लो। तुब्बा ने पूछा कहाँ हैं? उन्हों ने कहा कि मक्का में। बादशाह ने उन दोनों यहूदी आ़लिमों से मश्वरा किया तो उन्हों ने कहा कि वह अल्लाह का घर है और जिस ने भी उस पर चढ़ाई की वह हलाक होने से न बच सका। यह सुन कर तुब्बा ने बनू हुज़ैल के लोगों को मार डाला और मक्का में आ कर काबा का तवाफ़ किया और क़ुर्बानी की और बैतुल्लाह शरीफ़ पर यमन के बनाये हुये क़ीमती कपड़ों के पर्दे लटकाये। ख़ान-ए-काबा पर ग़िलाफ़ चढ़ाने का सिलसिला इसी के बाद से आरंभ हुआ। बादशाह तुब्बअ़ यह सब काम कर के जब अपने शहर यमन वापस लौटा तो क़ौम वालों ने उस से झगड़ा किया कि तू ने तो धर्म ही बदल डाला। बादशाह ने कहा कि हम लोगों का धर्म आग की पूजा था और यह ग़लत था, यह मज़हब सच्चा और अच्छा है। उन्हों ने कहा कि यह फ़ैसला आग से कराओ। चुनान्चे जो लोग बुतों को लेकर आग में कूदे वह तो जल कर मर गयें, लेकिन यहूद के यह दोनों आ़लिम अपनी किताब ले कर आग में कूद गये और ज़िन्दा सलामत रहे और आग ने उन्हें तनिक भर नुक़्सान न पहुंचाया। यह देख कर तमाम हिमयर क़बीला वालों ने उसी मज़हब को क़ुबूल कर लिया। (अहादीसुत्तफ़ासीर, मआ़मिल)

कुछ शक नही कि वह अल्लाह बड़ा ग़ालिब और बड़ा रहम करने वाला है। ४३. (सुनो!) थूहड़ का दरख़्त (जो निहायत बुरा है, वह)। ४४. मुजरिमों का खाना हो गा। ४५+४६. जो गर्म ताँबें की तरह हो गा और वह उन के पेटों में सख़्त खौलने वाले पानी की तरह जोश मारे गा। ४७.(हुक्म हो गा कि) इस मुजरिम को पकडो और घसीट कर जहन्नम के बीचों-बीच ले जाओ ४८. फिर उस के सर पर (सख़्त) अ़ज़ाब देने वाला गर्म पानी डालो (जिस का मज़ा उस को महसूस हो और कहो) ४९. ले मज़ा चख, तहक़ीक़ तू बड़ी क़द्र व मर्तबे➲

الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ۝ طَعَامُ
الْأَثِيمِ ۝ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ۝ كَغَلْيِ
الْحَمِيمِ ۝ خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝
ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ۝
ذُقْ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ۝ إِنَّ
هَٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ۝ إِنَّ الْمُتَّقِينَ
فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ۝ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝
يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَقَابِلِينَ ۝

كَذٰلِكَ ۗ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ۝ يَدْعُوْنَ
فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ ۝ لَا يَذُوْقُوْنَ
فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى ۚ وَوَقٰهُمْ
عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ۚ ذٰلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ
لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝ فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ۝

वाला था। ५०. यह वही है जिस में तुम लोग शक किया करते थे। ५१. (अब उन लोगों का भी हाल सुनो जो तक़्वा की वजह से कामियाब हो गये) परहेज़गार अम्न की जगह में हों गे ५२. यानी बाग़ों और चश्मों में रहें गे ५३. वह रेशमी कपड़े और मख़मलें (यानी उन का लिबास) पहनें गे और एक-दूसरे के आमने-सामने बैठें गे। ५४.वाक़िआ इसी तरह हो गा और हम उन की बड़ी-बड़ी आँखों वाली सुन्दर बीवियों (हूरों) से शादी कर दें गे ५५. वह हर प्रकार के मेवे मंगा-मंगा कर मज़े से खाया करें गे ५६. और सिवाए, पहली मौत के (जो पहली दफ़ा उन पर आ चुकी हो गी) फिर किसी क़िस्म की मौत न चखें गे[१०]। और (बड़ी बात यह कि) अल्लाह उन को जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा लेगा। ५७. (यह सब कुछ) अल्लाह के फ़ज़्ल से हो गा। बस यही बड़ी कामियाबी है ५८. (इसीलिये तो) हम ने इस (क़ुरआन) को तेरी बोली में आसान किया है ताकि यह लोग समझें ५९. पस तू (ऐ नबी!) इन्तिज़ार कर तहक़ीक़ वह भी इन्तिज़ार कर रहे हैं

....

८. 'ज़क्कूम' यह बरशूमी नाम का एक फल है जिसे अ़रब में लोग बड़े चाव से खाते हैं, यह ज़क्कूम दूसरे क़िस्म का है और दोज़ख़ में जो ज़क्कूम हो गा वह एक दूसरी ही क़िस्म है जो दोज़ख़ में पैदा हो गा। (राज़)

९. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक मर्तबा अबू जेहल से फ़रमाया: अल्लाह पाक ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुझ को कहूँ "औला ल-क फ़औला सुम्म औला ल-क फ़औला" (अफ़सोस है तुझ पर, ख़राबी है तेरे लिये+अफ़सोस और ख़राबी हे तेरे लिये) उस ने कहा कि तुम और तुम्हारा रब मेरा कुछ नही बिगाड़ सकते, मैं तो बत्हा वालों का सर्दार हूँ और बुज़ुर्ग और इ़ज़्ज़त वाला हूँ। अल्लाह ने उस को क़त्ल कर दोज़ख़ में डाल कर इन्ही कलिमों से उसे आ़र दिलाई और कहा: कि तू तो बड़ी इ़ज़्ज़त वाला था अब दोज़ख़ का मज़ा चख। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने 'मुह्ल' की तफ़्सीर में फ़रमाया: वह ज़ैतून की तलछट की तरह होगा और ऐसा गर्म होगा कि मुंह के निकट आते ही चेहरा की खाल झुलसा कर कोयला बना देगा और सारी खाल नीचे गिर जाये गी (हदीसुत्तफ़ासीर)

१०. यानी उन को वहाँ कभी मौत न आये गी, फिर आगे "इल्ला" मुस्तस्ना मुन्क़तिअ़ ला कर उस की ताकीद कर दी। बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत में है कि मौत को मेंढे की शक्ल में ला कर जन्नत और दोज़ख़ के दर्मियान ज़ब्ह कर दिया जाये गा और एलान कर दिया जाये गा कि ऐ जन्नत वालो! अब हमेशगी है और कभी मौत नही। और ऐ जहन्नम वालो! तुम्हारे लिये भी हमेशगी है और कभी मौत न आये गी। सहीह मुस्लिम वग़ैरह में है कि जन्नती लोगों से कह दिया जाये गा कि तुम हमेशा तंदुरूस्त रहो गे, कभी बीमार न पड़ो गे, कभी मरो गे नही और हमेशा की नेमतों में रहो गे जिस में कोई कमी न हो गी, हमेशा जवान बने रहो गे और कभी बूढ़े न हो गे। एक और हदीस में है कि जो अल्लाह से डरता है वह जन्नत में जाये गा जहाँ तमाम नेमतें पाये गा और कभी मुहताज न हो गा। जहाँ हमेशा जिये गा और कभी न मरे गा, जहाँ कपड़े मैले न हों गे और न जवानी समाप्त हो गी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा गया कि क्या जन्नती सोयें गे? आप ने फ़रमाया: नींद तो

➲मौत की बहन है (मौत ही की एक शक्ल है) वह सोयें गे नही, बल्कि हर समय आराम व चैन में रहें गे। इस अम्न और चैन के साथ यह भी बहुत बड़ी नेमत है कि अल्लाह ने उन को जहन्नम के दन्ड से नजात दे दी है। एक दूसरी हदीस में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम ठीक-ठीक रहो, क़रीब-क़रीब रहो और यकीन करो कि किसी के आमाल उसे जन्नत में नहीं ले जा सकते। लोगों ने कहा कि क्या आप के आमाल भी? फ़रमाया: हाँ मेरे आमाल भी, मगर यह कि अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रहमत मेरे साथ शामिल हो। आख़िर में फ़रमाया: यह क़ुरआन बेहद आसान नाज़िल किया गया है। इस के बावजूद भी जो लोग न मानें और झुठलायें तो उन्हें होशियार कर दे कि इन्तिज़ार करें और देखें कि अल्लाह की तरफ़ से किस की ताईद होती है। (तफ़सीर मुहम्मदी)

सूरः जासि-यः (45)

(٤٥) سُوْرَةُ الْجَاثِيَةِ مَكِّيَّةٌ (٦٥)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ۞ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۞ اِنَّ فِى السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۞ وَ فِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۞ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَ النَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۞ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَ اللّٰهِ وَ اٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۞ وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۞ يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا

सूरः जासिया मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[1]। इस में ३७ आयतें और ४ रूकूअ़ हैं

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. हामीम्[1] २. इस किताब का उतारना अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाले की तरफ़ से है। ३. आसमानों और ज़मीन में मानने वालों के लिये कई एक निशानियाँ हैं। ४. बल्कि ख़ुद तुम्हारी पैदाइश में और जितने जानदार उस ने (दुनिया में) फैलाये उन में भी यक़ीन करने वालों के लिये कई एक निशानियाँ हैं। ५. और रात और दिन के आने-जाने में और जो आकाश से अल्लाह रोज़ी उतारता है, फिर उस (पानी) के साथ (सूखी ज़मीन को) सूख जाने के बाद हरा-भरा करता है और हवाओं को इधर-उधर फेरने में बुद्धिमानों के लिये बहुत सी निशानियाँ हैं। ६. यह अल्लाह की निशानियाँ हैं जो हम सच्चाई के साथ सुनाते हैं। फिर यह लोग अल्लाह और उस के आदेशों को छोड़ कर किस बात पर ईमान लायें गे? ७+८. अफ़सोस है हर एक झूठे बदकार के हक़ में जिस को अल्लाह के अहकाम सुनाये जात हैं तो वह (उन को सुन कर अपनी गुमराही पर) तकब्बुर की वजह से अड़ा रहता है

....
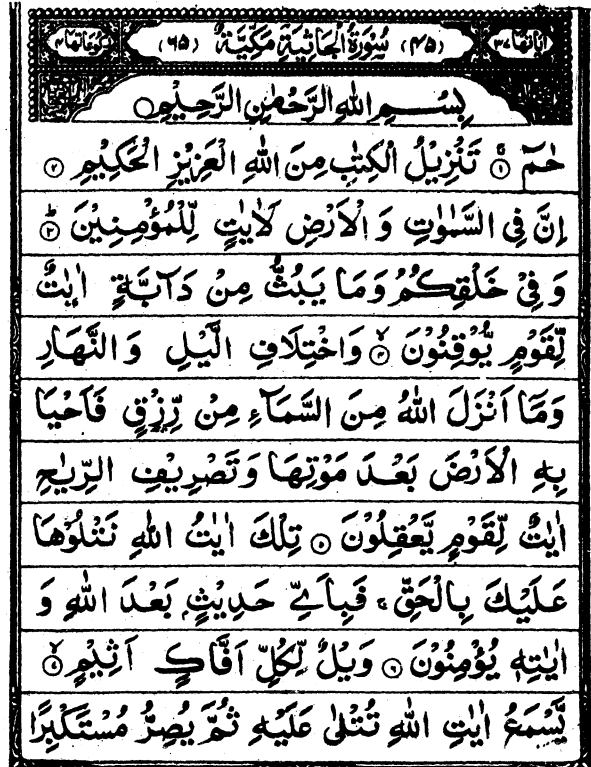
१. यह सूरः मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी, इस पर सभी का इत्तिफ़ाक़ है। इस सूरः में भी तीन अहम मुद्दों का बयान है (१) तौहीद (२) नुबुव्वत (३) आख़िरत। इस से पूर्व की सूरः "दुख़ान" में सब से पहले नुबुव्वत के मुद्दे पर बहस➲

की गयी थी, इस सूर: की शुरुआत भी नुबुव्वत ही की बहस से की गयी है।

सर्व प्रथम "हामीम्" कह कर किसी ख़ास बात की तरफ़ इशारा कर के, या अपनी ज़ात और सिफ़ात की क़सम खा कर यह बताया है कि यह किताब अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल की गयी है। जो बड़ा ग़लबे वाला और हिक्मत वाला है। चुनान्चे उस की हिक्मत का तक़ाज़ा था कि बन्दों को गुमराही से नजात देने के लिये नबी भेजे। इस के पश्चात् तौहीद और बारी तआला के मौजूद होने पर बहस की गयी है। चुनान्चे फ़रमाया गया कि आसमानों और ज़मीन में उस के वजूद और उस के एक होने के सबूत में बड़ी-बड़ी निशानियाँ हैं। उन की मात्रा, उन की हर्कत, उन के रंग और इन सब चीज़ों में कमी-ज़्यादती, हर एक बात एक निशानी है, इस लिये कि यह सब चीज़ें नष्ट होने से सुरक्षित नहीं। यह तमाम चीज़ें जब नष्ट हाने वाली हैं तो इन को बनाने और नष्ट करने वाला भी कोई ज़रूर है। दूसरे यह कि यह चीज़ें अलग-अलग हिस्सों से मिल कर बनी हैं, तो इन को जोड़ने वाला भी वही है जो इन्हें पैदा करने वाला है। ज़मीन पर हर क़िस्म के जानदारों को पैदा करना, रात-दिन को रोज़ाना बदलना, आसमान से वर्षा करना, फिर उस से हरियाली उगाना इन सब में अल्लाह के मौजूद होने और उस के ग़ालिब होने की निशानियाँ हैं।

आयत न० ६ से फिर नुबुव्वत के मुद्दे पर बहस की गयी है और इस के इन्कार व इक़रार पर जज़ा व सज़ा को बयान किया गया है। 'हामीम्' का तर्जुमा मौलाना मर्हूम ने यहाँ भी अपनी आदत के मुताबिक़ "वह अल्लाह, रहमान और रहीम है" किया है, लेकिन सच्ची बात यह है कि इस का हक़ीक़ी माना और मुराद केवल अल्लाह ही जानता है। इन्सान की पैदाईश, यह अल्लाह का इतना बड़ा कारनामा है, जिस पर उस की जितनी भी तारीफ़ की जाए कम है। आयत न० ४ में इसी तरफ़ इशारा है (राज़)

كَأَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝
وَإِذَا عَلِمَ مِنْ آيَاتِنَا شَيْئًا اتَّخَذَهَا هُزُوًا ۚ
أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝ مِّن وَرَائِهِمْ
جَهَنَّمُ ۖ وَلَا يُغْنِي عَنْهُم مَّا كَسَبُوا شَيْئًا وَلَا
مَا اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ
عَظِيمٌ ۝ هَٰذَا هُدًى ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ
رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رِّجْزٍ أَلِيمٌ ۝ اللَّهُ
الَّذِي سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ
فِيهِ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ۝ وَسَخَّرَ لَكُم مَّا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا
فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِّنْهُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ
لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ قُل لِّلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا

गोया उस ने सुना ही नही, पस तू उस को दुःख वाली मार की ख़बर दे। ९. और हमारे अहकाम में से कोई हुक्म उसे मालूम होता है तो उस की हंसी उड़ाता है, इन लोगों के लिये ज़िल्लत का अज़ाब है। १०. आगे जहन्नम का अज़ाब है। और न उन की कमाई उन को कुछ लाभ दे गी न उन की बिगड़ी बनाने वाले उन को कुछ लाभ पहुंचा सकें गे जिन को अल्लाह के अलावा उन लोगों ने मददगार बना रखा है (और जिन को मुसीबत के समय अपना मददगार जानते हैं) और उन को बहुत बड़ा अज़ाब हो गा। ११. यह हिदायत है, और जो लोग अपने रब के अहकाम से मुन्किर हैं उन के लिये बड़े दुःख की मार है १२. अल्लाह वह है जिस ने तुम्हारे लिये समुद्र को क़ाबू कर रखा है ताकि उस के हुक्म (यानी क़ानून) से उस में जहाज़ चलें और ताकि तुम लोग (तिजारत कर के) अल्लाह का फ़ज़्ल

لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا

हासिल करो और (अल्लाह का) शुक्र अदा करो। १३. और जो कुछ ज़मीन और आसमानों में है सब उसी अल्लाह ने अपने हुक्म से तुम्हारे लिये काम में लगा रखा है[२]। इस बयान में फ़िक्र करने वाले लोगों के लिये बहुत सी निशानियाँ हैं। १४. तू ईमान्दार बन्दों से कह दे कि जो लोग अल्लाह के दिनों (यानी आख़िरत) की उम्मीद नही रखते उन को माफ़ किया करें[३] (यानी उन से बहस न करें, बल्कि अल्लाह के हवाले कर दें)

....

२. यानी इस का उद्देश्य यह है कि तुझ को रोज़ी-रोटी मिल सके और तू उसे ग़फ़लत से न खाये। यह पूरा संसार तुम्हारे फ़ाइदे के किये अपने-अपने कामों में लगा हुआ है। इस बयान में कि तमाम संसार अल्लाह की मख़्लूक़ है और उस के हुक्म के मातहत है, इस में ग़ौर-फ़िक्र करने वालों के लिये बहुत सी निशानियाँ हैं। वह यह सोचने पर मजबूर हैं कि इन को एक नियम के अनुसार पैदा करना, फिर इन का निश्चित नियम के अनुसार अपने-अपने समय पर अपने-अपने काम करना, बेशक इस को किसी हिक्मत वाले ने बनाया है, जिस का मुक़ाबिला दुनियाँ में कोई नही कर सकता। इतने खुले हुये दलाइल के बावजूद भी लोग इधर-उधर बहक रहे हैं। (सनाई)

३. इस का मतलब यह है कि आप ईमानदारों से कह दीजिये कि वह भी बुर्दबारी (सनिशीलता)और माफ़ करना सीखें। जो लोग अल्लाह की निशानियों को नही मानते, उस के अ़ज़ाब से नही डरते, इस को वह झूठ समझते हैं ओर मोमिनों के साथ सख़्ती से पेश आते हैं, उन को गालियाँ देते और बुरा-भला कहते हैं, इन सब बातों को नज़रअन्दाज़ कर दें और बदला लेने की न सोचें। मक्का के कुफ़्फ़ार मुसलमानों को बहुत सताते थे, मुसलमान भी उन्हीं के देश और क़ौम में से थे इसलिये वह भी लड़ मरने और मारने की सोचते थे, मगर उन्हें सब्र करने का हुक्म दिया गया।

यह बात ध्यान में रहे कि यह आयत जिहाद के मुख़ालिफ़ नही है। इसलिये कि जिहाद तन्हा अपने दुश्मन से बदला लेने का नाम नही है, बल्कि यह एक मजमूई़ इस्लामी ताक़त का नाम है जो ज़रूरत पड़ने पर इस्तेमाल की जाती है। जहाँ नेक बात कहने और बुराई से रोकने पर फ़साद का भय हो, वहाँ ख़ामोश रहना ही बेहतर है, जैसा कि आयत न० १५ इशारा कर रही है। (हक़्क़ानी)

नोटः- मगर यह ईमान का सब से कमज़ोर दर्जा है। मोमिन मर्द का काम है बुराइयों को मिटाने की हर संभव चेष्टा करना (राज़)

بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَاۗءَ فَعَلَيْهَا ۡ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۭ اِنَّ رَبَّكَ

ताकि अल्लाह उस क़ौम को उन के किये हुये आमाल का पूरा बदला दे। १५. जिस ने कोई अच्छा काम किया होगा वह उस को मिले गा और जिस ने बुरा किया हो गा वह उस की गर्दन पर हो गा, फिर तुम लोग सब के सब अल्लाह की तरफ़ फेरे जाओ गे। १६. और बनी इस्राईल को हम ने किताब दी (और साथ ही) हुकूमत और नुबुव्वत अ़ता की और उन को उ़म्दा-उ़म्दा चीज़ें खाने को दीं और दुनिया के लोगों पर उन को फ़ज़ीलत दी[४]। १७. और उन को दीन के

يَقْضِىْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ
يَخْتَلِفُوْنَ ۝ ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ
فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝
اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاِنَّ
الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَ اللّٰهُ وَلِيُّ
الْمُتَّقِيْنَ ۝ هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَ هُدًى

खुले-खुले अहकाम दिये, फिर इ़ल्म के आ जाने के बाद वह लोग महज़ आपस की हसद की वजह से मुख़्तलिफ़ हुये। (सुनो!) तुम्हारा रब क़ियामत के दिन उन के इख़्तिलाफ़ात का फ़ैसला करे गा[५]। १८. फिर हम ने तुझ को (ऐ नबी!) दीन की राह पर लगाया है पस तुम उस की पैरवी किया करना और जो लोग (अल्लाह के अहकाम को) कुछ नहीं जानते उन की ख़्वाहिशात की पैरवी न करना[६]। १९. क्योंकि अल्लाह की पकड़ पर वह तुझे कुछ भी फ़ाइदा न दें गे। और निःसंदेह ज़ालिम एक दूसरे के हिमायती हैं और अल्लाह (निक बख़्तों और)परहेज़गारों का वाली है। २०. यह शिक्षा लोगों के लिये समझ-बूझ और हिदायत है

....

४. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि उस ज़माने में बनी इस्राईल से ज़्यादा अल्लाह के नज़दीक कोई क़ौम इ़ज़्ज़त वाली न थी। किताबें उन पर नाज़िल हुयीं, रसूल उन के पास आये, हुकूमत उन को दी गयी, अच्छे-अच्छे खाने उन को मिले, उस ज़माने के लोगों पर बड़ाई उन को दी (तफ़्सीर मुहम्मदी)

५. कहा गया है कि हक़ बात से मुराद हज़रत यू-शअ़ की मौत है, या नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नुबुव्वत। बनी इस्राईल ख़ूब जान गये थे कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वही संदेष्टा हैं जिन के आने की बशारत हज़रत मूसा ने दी थी। मगर यह लोग हसद और ज़िद की वजह से आप के मुख़ालिफ़ बन गये और इस तरह दुनिया और आख़िरत दोनों ही को तबाह कर लिया।

आज-कल भी यही हाल है। मुक़ल्लिद और बिद्अ़ती लोग ख़ूब समझते हैं कि अहले हदीस ही ठीक रास्ते पर हैं, लेकिन महज़ अना और ज़िद की वजह से इन के दुश्मन बने हुये हैं। हाये अफ़सोस! अहले हदीस से दुश्मनी करना गोया हदीस से दुश्मनी करना है और हदीस से दुश्मनी करना नबी से दुश्मनी करना है, और नबी से दुश्मनी करना अल्लाह से दुश्मनी करना है (और अल्लाह से दुश्मनी करना जहन्नम को ख़रीदना है) अल्लाह तआ़ला हम सब को नेक अ़मल की तौफ़ीक़ दे (वहीदी)

६. इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल को मुख़ातब कर के फ़रमाया कि हम ने तुम को एक शरीअ़त पर लगाया है, इस लिये तुम्हारा फ़र्ज़ है कि हर मामले में उसी की पैरवी करो और उस के ख़िलाफ़ जाहिलों की ख़्वाहिश की पैरवी न करो। ज़ाहिर है कि जब नबी को इतना ताकीदी हुक्म हो रहा है तो फिर हम और तुम किस शुमार में हैं।

وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ
اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ
وَمَمَاتُهُمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝ وَ خَلَقَ اللّٰهُ

और जो लोग इस पर यक़ीन करते हैं उन के लिये रहमत है। २१. भला जो लोग ढिठाइ से बद कारियाँ कर रहे हैं उन को यह ख़याल है कि हम उन्हें उन लोगों जैसा करें गे जो ईमान्दार और नेकोकार हैं? उन का जीना और मरना सब बराबर हो गा? बहुत बुरा ख़याल करते हैं[७]।

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ
نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾ اَفَرَءَيْتَ
مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ
وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ
غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا
تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَقَالُوْا مَا هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا
الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَاۤ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ
وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا
يَظُنُّوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ

२२. और अल्लाह ने आसमान और ज़मीन बाक़ायदा (इस लिये) बनाये हैं ताकि (दुनिया का निज़ाम बाक़ाइदा हो और) हर आदमी को उस के किये का बदला दिया जाये और उन पर किसी प्रकार का ज़ुल्म न हो। २३.क्या तुम ने ऐसा आदमी कभी देखा है जिस ने अपनी नफ़्सानी ख़ाहिश को अपना माबूद बना रखा है और ज़िल्म के बावजूद भी अल्लाह ने उस को गुमराह कर दिया है[८] और उस के कानों और दिल पर (ग़फ़लत और जिहालत की) मुहर कर दी है और उस की आँखों पर पर्दा डाल दिया है, फिर कौन है जो अल्लाह के बाद उस को हिदायत कर सके? क्या तुम समझते नहीं। २४. और यह लोग कहते हैं कि हमारी ज़िन्दगी सिर्फ़ पहली ही ज़िन्दगी है जिस में हम मरते-जीते हैं (इस के सिवा कुछ नही) और हम ज़माना की गर्दिश (चक्र) से मर जाते हैं[९] उन को इस बात का कोई ज़िल्म नहीं, केवल कमअक़्ली से अटकल के तीर चलाते हैं। २५. और जब उन को हमारे खुले-खुले अहकाम सुनाये जाते हैं

....

७. हज़रत अबू ज़र रज़ि० फ़रमाते हैं कि चार चीज़ों पर अल्लाह ने अपने दीन की बुनियाद रखी है। जो उन पर अ़मल न करे वह फ़ासिक़ हो कर अल्लाह से मिले गा। उन से पूछा गया कि वह चार चीज़ें क्या हैं? फ़रमाया: यह कामिल अ़क़ीदा रखे कि हलाल और हराम का हुक्म और मिनाही, यह चारों सिर्फ़ अल्लाह के इख़्तियार में हैं। उस के हलाल बतलायें हुये को हलाल और हराम बतलाये हुये को हराम मानना, उस के अहकाम को अ़मल के क़ाबिल मानना, उस के मना किये हुये कामों से रुक जाना और हलाल, हराम हुक्म और मिनाही का मालिक सिर्फ़ उसी को जानना, बस यही दीन की अस्ल है। (मुस्नद अबू याला) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फ़र्मान है: जिस प्रकार बबूल के दरख़्त से अंगूर पैदा नही हो सकते, इसी प्रकार बुरे लोग नेकों का दर्ज़ा नही पा सकते। (यह हदीस ग़रीब है) एक रिवायत में है कि काबा शरीफ़ की बुनियाद में से एक पत्थर निकला था जिस पर लिखा हुआ था कि तुम बराईयों को करते हुये नेकियों की उम्मीद रखते हो, यह बिल्कुल ऐसे ही है जैसे कोई कांटेदार दरख़्त में से अन्गूर हासिल करना चाहता हो (इस्हाक़) तबरानी की एक रिवायत में है कि हज़रत तमीम दारी रज़ि०रात भर तहज्जुद में बार-बार इस आयत को पढ़ते रहे यहाँ तक कि सुब्ह हो गयी। आगे की आयत में फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन और आसमन को अ़द्ल के साथ पैदा किया है और वह हर एक शख़्स को उस के किये का बदला दे गा और किसी पर उस की तरफ़ से ज़रा भी अत्याचार न किया जाये गा (तफ़्सीर मुहम्मदी)

८. इस आयत से मालूम हुआ कि अहले ज़िल्म का नफ़्स की ख़ाहिश के पीछे पड़ कर अल्लाह की शरीअ़त को छोड़ देना, यह इतना बुरा अ़मल है कि जिस के नतीजा में दिल टेढ़े हो जाते हैं, कानों से हक़ बात नही सुन पाता, ज़िल्म का ख़ज़ाना लिये हुये भी गुमराही का सबब बन जाता है। आजकल दुनिया के महाविद्वान इसी प्रकार के हैं जो दुनियावी

➲ड़िल्म में माहिर होने के साथ गुमराही और हक़ के इन्कार में भी माहिर होते हैं। इस प्रकार के लोग हक़ को और अहले हक़ को गिरी नज़रों से देखते हैं- अल्लाह हम सब को हिदायत दे।

९. इब्ने अबी हातिम में रिवायत है कि इब्ने आदम ज़माने को गालियाँ देता है हालाँकि ज़माना मैं स्वयँ हूँ, दिन-रात मेरे हाथ में हैं। एक दूसरी हदीस में है कि मैं ने अपने बन्दे से क़र्ज़ तलब किया तो उस ने मुझे न दिया। मुझे मेरे बन्दे ने गालियाँ दीं, वह कहता है कि हाए-हाए, ज़माना और ज़माना मैं हूँ। इमाम शाफ़ई और अबू उ़बैद वग़ैरह इस हदीस की शरह करते हुये लिखते हैं कि जाहिलिय्यत के ज़माना में अ़रबों को जब कोई बला और तक्लीफ़ पहुंचती तो उस की निस्बत ज़माना की तरफ़ करते और ज़माना को बुरा-भला कहते, दरअस्ल ज़माना तो ख़ुद कुछ करता नही, बल्कि हर काम का करता-धरता अल्लाह ही है, इस लिये उन का ज़माना को गाली देना हक़ीक़त में उस को बुरा कहना है, जिस के हाथ में और जिस के बस में ज़माना है जो दुःख-सुख का मालिक है और वह अल्लाह की ज़ात पाक है। पस वह गाली हक़ीक़ी करने वाले यानी अल्लाह तआ़ला पर पड़ती है, इस लिये इस हदीस में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया और उन लोगों को इस से रोक दिया। यही शरह बहुत ठीक और दुरूस्त है।

مَا كَانَ حُجَّتَهُمْ إِلَّآ أَنْ قَالُوا ائْتُوا
بِاٰبَآئِنَآ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ
يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ إِلٰى يَوْمِ
الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٢٧﴾
وَتَرٰى كُلَّ أُمَّةٍ جَاثِيَةً كُلُّ أُمَّةٍ تُدْعٰى
إِلٰى كِتٰبِهَا اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾
هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ إِنَّا
كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَأَمَّا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ
رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿٣٠﴾
وَأَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا أَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى

तो उन का उत्तर यही होता है कि अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप-दादा को ज़िन्दा कर के ले आओ?। २६. कह! अल्लाह ही ज़िन्दा करता है और वही मारता है, फिर तुम को क़ियामत के दिन जमा करे गा उस दिन में ज़रा भी शक नही, मगर अक्सर लोग (जिन को हक़ीक़त का ड़िल्म नहीं) नहीं जानते (और न समझ सकते हैं) २७. (सुनो!) तमाम ज़मीन और आसमानों की हुकूमत अल्लाह के क़ब्ज़े में है और जिस रोज़ क़ियामत क़ायम होगी उस रोज़ झूठ को इख़्तियार करने वाले बहुत घाटा पायें गे। २८. और तुम देखो गे कि हर एक गरोह (यानी इन्सानी नस्ल का हर फ़र्द) दोज़ानू (औंधा, घूटनों के बल) पड़ा हो गा[१०]। हर क़ौम अपने आमालनामे {कर्म पत्र} की तरफ़ बुलायी जाये गी। (कहा जाये गा कि लो जी!) जो कुछ तुम दुनिया में करते थे उस का पूरा-पूरा बदला आज तुम को दिया जाये गा २९. (देखो!) यह हमारी किताब (जिस में तुम्हारे आ़माल दर्ज हैं) तुम्हारे हालात सहीह बताती है,[११] क्यों कि जो कुछ तुम लोग करते थे हम उस को लिखा करते थे ३०. (पस देखो) जो लोग ईमान लाये और काम भी अच्छे किये अल्लाह उन को अपनी रहमत में दाख़िल करे➲

गा (और ग़ौर से सोचो तो) यही बड़ी कामियाबी है (जिस को नसीब हो) ३१. और उन के विपरीत जो लोग काफ़िर हैं उन से पूछा जाये गाः क्या तुम को मेरे अहकाम नही सुनाये गये थे?

....

१०. वह दिन ऐसा डरावना हो गा कि हर शख़्स घुटनों के बल गिरा हुआ हो गा। यह उस समय हो गा जब कि दोज़ख़ को सामने लाया जाये गा तो वह एक झुरझुरी लेगी जिस से हर शख़्स काँप उठे गा और अपने घुटनों पर गिर जाये गा, यहाँ तक कि हज़रत इब्राहीम और हज़रत अ़ीसा अ़लै० भी "नफ़्सी-नफ़्सी" पुकार उठें गे। इब्ने अबी हातिम की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं या कि मैं तुम्हें जहन्नम के पास ज़ानू पर झुके हुये देख रहा हूँ। एक दूसरी हदीस में जिस में सूर वग़ैरह का बयान है उस में यह भी है कि फिर लोग जुदा-जुदा कर दिये जायें गे और तमाम उम्मतें घुटनों के बल झुक पड़ें गी, इसी बात की तरफ़ इस आयत न० २८ में इशारा है। (इब्ने कसीर)

११. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि फ़रिश्ते बन्दों के आमाल लिखते हैं, फिर उन्हें ले कर आसमान पर चढ़ते हैं और दूसरे फ़रिश्ते उन को आमालनामा में लिख कर सुरक्षित कर लेते हैं और लौहे महफ़ूज़ में लिखी हुयी तक़्दीर से मिलाते हैं (यानी पैदाइश से पहले की तक़्दीर से मिलाते हैं) वह फ़रिश्ते देखते हैं तो तक़्दीर वाले पत्र में लिखे हुये के मुताबिक़ पाते हैं, कोई भी कमी-बेशी नही पाते हैं — फिर आप ने यह आयत तिलावत फ़रमाई। (इब्ने कसीर)

عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝ وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ السَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ۝ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ وَقِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّ غَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۝ فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۠ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

फिर तुम ने तकब्बुर किया और तुम मुजरिम हो। ३२. और (दिखो!) जब तुम्हें कहा जाता है कि अल्लाह का वादा सच्चा है और क़ियामत के आने में ज़रा भी शक नही, तो कहते हो हम नही जानते कि क़ियामत क्या (बला) है। (हाँ, तुम्हारे मुसलमानों के बार-बार कहने से) हम इस को गुमान सा जानते हैं और हम को इस बात का यक़ीन नही। ३३. (इस बुरे अ़क़ीदा में) जो कुछ वह कर चुके हों गे उस की बुराई उन के सामने ज़ाहिर हो जाये गी और जो कुछ वह हंसी-मज़ाक़ करते हैं उस का वबाल उन को घेर ले गा। ३४. और कहा जाये गा कि जैसे तुम उस दिन को भूले रहे थे हम आज तुम को भी भूल जायें गे, तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है (इस में सज़ा भुगतोगे) और तुम्हारा कोई मददगार न होगा[12]। ३५. इस लिये कि तुम ने अल्लाह की आयत को हंसी-मज़ाक़ समझा था और तुम दुनिया की ज़िन्दगी से धोका खा गये, वह उस रोज़ उस से बाहर नहीं निकाले जायें गे न उन

से तौबा कराई जाये गी ३६. (अल्लाह के हाँ किसी की हेरा-फेरी नही चल सकती, क्योंकि) सब तरह की तारीफ़ अल्लाह ही के लिए हैं जो आसमानों और ज़मीनों का बल्कि तमाम जहानों का पर्वरदिगार है। ३७. आसमानों और ज़मीनों में उसी की बड़ाई है और वही सब पर ग़ालिब और हिक्मत वाला है[13]।

१२. सहीह हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों में से कुछ से क़ियामत के दिन फ़रमाये गा कि क्या मैं ने तुम्हें बाल-बच्चे नही दिये थे? क्या मैं ने तुझे दुनिया में ऊटों और घोड़ों का मालिक नही बनाया था? क्या दुनिया में मैं ने तुम पर तरह-तरह के इनाम नही फ़रमाये थे? क्या मैं ने तुम्हें आज़ादी के साथ मकानात और हवेलियों में ज़िन्दगी गुज़ारने का मौक़ा नही दिया था? यह सुन कर बन्दा उत्तर दे गा कि ऐ मेरे मौला! यह सब कुछ सच है। बेशक यह तेरे तमाम एहसानात मुझ पर थे। अल्लाह फ़रमाये गा: अच्छा यह बता कि क्या तू मुझ से मुलाक़ात का यक़ीन रखता था? वह कहे गा कि नहीं। अल्लाह फ़रमाये गा: आज मैं भी तुझे इसी प्रकार भुला दूँ गा जिस प्रकार तू मुझे भूल गया था। (इब्ने कसीर)

मैं (राज़) कहता हूँ कि यूँ तो क़ुरआन की बहुत सी आयतों में इस हक़ीक़त का इज़्हार है, मगर इन आयतों में ख़ास तौर से क़ियामत के आने के बारे में बड़े अ़जीब व ग़रीब ढ़ंग से बयान किया गया है। इन आयतों से यह भी ज़ाहिर है कि जिस्म के साथ क़ियामत के दिन उठाया जाये गा। जो लोग जिस्म के साथ उठाये जाने के क़ाइल नहीं हैं और कहते हैं कि केवल रूह के साथ क़ियामत के दिन हाज़िर हों गे, ऐसे लोगों के रद्द में यह आयत निहायत खुली हुयी है। क़ुरआन मजीद ने निहायत ज़ोर दे कर जिस्म के साथ उठाये जाने पर ज़ोर दिया है और ऐसी तमाम कैफ़िय्यतें बयान की हैं जो जिस्म ही से मुतअ़ल्लिक़ हैं। दूसरी बात यह है कि अगर रूहानी तौर पर उठाये जाने का ही अ़क़ीदा होता तो कुफ़्फ़ार को यह कहने की ज़रूरत ही नहीं थी कि जब मर कर मिट्टी हो जाऐंगे तो दोबारा उठाने के लिए जिस्म कैसे बन सकेगा? इन के उत्तर में यही जवाब दिया गया कि जिस अल्लाह ने उन को जिस्म के साथ पैदा किया, वही क़ियामत के दिन भी उन के मिट्टी में मिले हुये जिस्म को दोबारा वजूद दे कर अपने सामने हाज़िर कर सके गा। जिस्म के साथ दोबारा उठाये जाने के संबन्ध में अधिक जानकारी के लिये हज़रत मौलाना सियालकोटी रह० की तफ़्सीर "वाज़िहुल बयान"-२०५ का मुताला किया जाये।

१३. हम्द, सना और बड़ाई सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल् आलमीन की ज़ात ही के लिये ख़ास है। इन्सान अगर इस हक़ीक़त को समझ जाये तो बहुत से झगड़े-फ़साद ख़त्म हो जायें और अहंकार, घमंड और ग़ुरूर का नाम-निशान दुनिया से मिट जाये (दावूद राज़)

★★★★★

بِسْــــمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْــــمِ

पारः हामीम् (26)

संक्षिप्त विषय सूची

पार : हामीम् –26

सूर : अह्क़ाफ़ (26)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾
مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا
بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ
اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ﴿٣﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ
اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ؕ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ
قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤﴾
وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ
لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ
دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٥﴾ وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ
اَعْدَآءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ﴿٦﴾ وَاِذَا تُتْلٰى

सूर अहक़ाफ़ (रेत के टीले) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[1]। इस में ३५ आयतें और ४ रूकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. हामीम्[2] २. (उसी की रहमत के तक़ाज़े से) यह किताब अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाले की तरफ़ से नाज़िल हुई है। ३. हम ने आसमान और ज़मीन और जो कुछ उन के दर्मियान है सच्चे क़ानून के साथ निश्चित समय तक (रखने को) पैदा किये हैं। और जो लोग इन्कारी हैं वह उन बातों से जो उन को नसीहत के तौर पर सुनाई जाती हैं मुंह मोड़ते हैं[3]। ४. तू उन से पूछ कि बताओ तो सही, अल्लाह को छोड़ कर जिन लोगों को तुम पुकारते हो उन्हों ने ज़मीन का कोई हिस्सा पैदा किया है? तो मुझे दिखाओ, या आसमानों के पैदा करने में उन की साझे-दारी है? इस (क़ुरआन) से पहले की कोई किताब लाओ, या कोई अ़िल्मी दलील पेश करो (जो किसी फ़ल्सफ़ी उसूल पर आधारित हो) अगर तुम सच्चे हो तो अवश्य ऐसा करो[4]। ५. फिर बताओ कि ऐसे लोगों से अधिक गुमराह कौन है जो अल्लाह को छोड़ कर ऐसे लोगों को पुकारें (और दुआयें माँगें) जो क़ियामत तक भी उन की न सुनें, बल्कि उन की आवाज़ से भी बेख़बर हैं। ६. और जब सब लोग
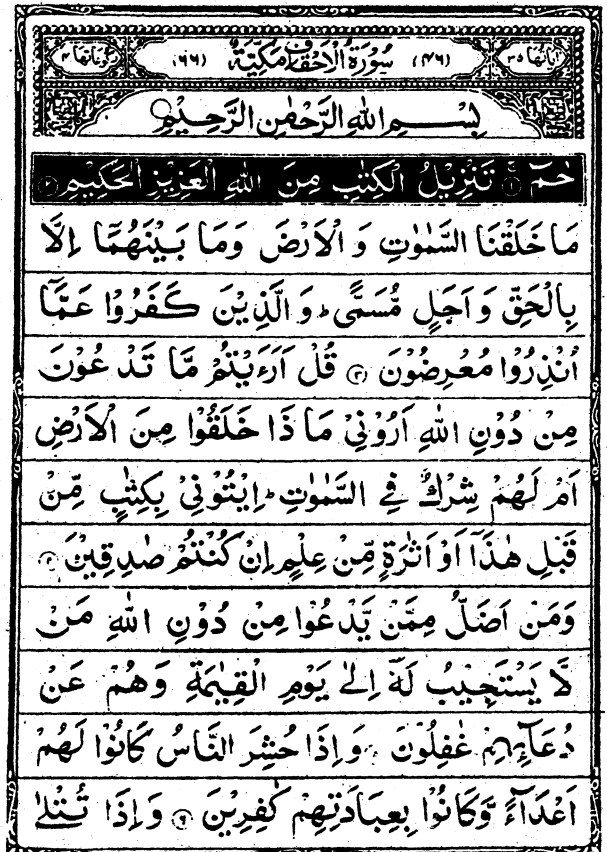
जमा किये जायें गे (तो) वह (यानी उन के माबूद जिन को यह पुकारते हैं) उन के दुश्मन हो जायें गे और उन की अ़िबादत से इन्कार कर दें गे"।

....

१. सूर: अहक़ाफ़ मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। अ़ल्लामा महल्ली का कहना है कि तीन आयतें (आयत नं० १०,१५,३४) मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयीं। हज़रत इब्ने मस्ऊ़द रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझे सूर: अहक़ाफ़ पढ़ाई जिसे मैं ने ग़ौर से सुना, फिर मैं ने एक दूसरे शख़्स को दूसरी तरह से पढ़ते हुये सुना तो मैं ने पूछा कि तू ने किस से सुना है? उस ने भी कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से। चुनान्चे हम दोनों नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आये। पहले मैं ने कहा कि क्या आप ने इसी तरह नहीं पढ़ कर सुनाई है? आप ने फ़रमाया: हाँ,। फिर दूसरे ने कहा कि क्या आप ने इसी तरह मुझे पढ़ कर नहीं सुनाई है? आप ने फ़रमाया: तुम दोनों ने जिस तरह मुझ से पढ़ा है उसी प्रकार पढ़ा करो, तुम से पहले के लोग इसी प्रकार के इख़्तिलाफ़ में पड़ कर तबाह हो गये।

'अहक़ाफ़' मुल्क यमन की एक वादी का नाम है, जिस में समूद की क़ौम आबाद थी। कुछ उलमा ने यह भी लिखा है कि यह 'ह-क़फ़' का बहुवचन है और इस का अर्थ है "रेत के टीले"।

२. बहुत सी सूरतों में इस प्रकार के शब्द हैं, इन का नाम "हुरुफ़ मुक़त्तआ़त" है। यह हुरुफ़ ऐसे हैं कि इन के माना व मतलब को केवल अल्लाह ही बेहतर तौर पर जानता है। कुछ उलमा ने इन का अर्थ बताया है मगर जमहूर उलमा का यही कहना है, इन के माना व मतलब अल्लाह के सिवा किसी को मालूम नहीं। (सलफ़िय्या) मौलाना अमृतसरी मर्हूम ने 'हामीम' का अर्थ "वह रहमान और रहीम है" बतलाया है।

३. अल्लाह तआ़ला ने अपनी ज़ात और अपनी सिफ़ात का सुबूत कितने सहल, सहज और सुन्दर तरीक़े से पेश किया है यह क़ुरआन ही की विशेष्ता है। अल्लाह अपनी ज़ात के मौजूद होने की दलील यह पेश करता है कि ज़मीन व आसमान और उन के दर्मियान की चीज़ों को मैं ने पैदा किया है। इस की दो दलीलें हैं १. पहली दलील तो यह है कि ज़मीन व आसमान चाँद, सूरज और सितारे जो चल-फिर रहे हैं इन को किसने क़ानून और ज़ाब्ते में जकड़ रखा है कि आज तक कोई भी आपस में नहीं टकराया। अगर मेरे अ़लावा और कोई बनाने वाला होता तो एक-आध बार तो आपस में टक्कर हो ही जाती। इसी को अल्लाह "हक़" (नपे-तुले क़ानून) से ताबीर करता है। २. दूसरी दलील यह है कि यह चीज़ें केवल एक निश्चित समय तक के लिये ही पैदा की गयी हैं। एक दिन इन सब को टूट-फूट कर बर्बाद हो जाना है। इस का सबूत यह है कि दुनियाँ की कितनी चीज़ें अब तक तुम्हारी नज़रों के सामने पली-बढ़ीं और समाप्त हो गयीं और उन का नाम व निशान तक न रहा, तो इसी प्रकार यह दुनिया क्यों न समाप्त हो गी?

आयत नं० ४ में बुतपरस्ती को बहुत बड़ी बुराई और लानत बयान करते हुये फ़रमाया जिन को तुम मेरे अ़लावा पूजते हो उन से ज़रा पूछो तो सही, कि उन्हों ने क्या पैदा किया है? अगर इस के सबूत में तुम्हारे पास उन की कोई बनाई हुयी चीज़ हो तो, या उन की कोई अ़क़्ली दलील हो तो, या किसी नबी की किताब में हो तो पेश करो।..................आगे बयान फ़रमाया कि उस से अधिक गुमराह कौन हो गा जो ऐसी बेकार वस्तुओं को पुकारते हैं जो क़ियामत तक उन का उत्तर ही न दे सकें। बल्कि जिन को यह पुकारते हैं वह क़ियामत के दिन उल्टे इन के दुश्मन हो जायें गे और कह दें गे कि हमें नहीं बल्कि शयातीन को पुकारते थे (हक़्क़ानी)·

४. यानी अगर मुझ से बहस करते हो तो किसी आसमानी किताब का हवाला दो, या कोई अ़क़्ली दलील ही पेश करो, वर्ना केवल ज़बानी कटहुज्जती करने से कुछ हासिल नहीं (सनाई)

५. क्योंकि अव्वल तो उन को ख़बर ही न होगी, दूसरे अगर हो गी भी तो वह समझें गे कि हाँ करने में हमारी ख़ैर नहीं, इसलिये वह साफ़-साफ़ इन्कार कर दें गे और यह इन्कार सही और दुरुस्त न हो गा। (सनाई)

عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۞ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ كَفٰى بِهٖ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۞ قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَآ اَدْرِيْ مَا يُفْعَلُ بِيْ وَلَا بِكُمْ ؕ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ وَمَآ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۞ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَكَفَرْتُمْ بِهٖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۞ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُوْنَآ اِلَيْهِ ؕ وَاِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ

७. और जब उन को हमारे खुले अहकाम सुनाये जाते हैं तो (यह) इन्कार करने वाले सच्ची किताब के आ जाने के बाद उस के हक़ में कहते हैं कि यह तो खुला जादू है। ८. क्या यह कहते हैं कि क़ुरआन को उस ने अपने पास से बना लिया है? तू कह: मैं ने अगर घड़ लिया है तो तुम मेरे मामला में अल्लाह के हाँ से कुछ ज़िम्मेदारी नहीं रखते। जो बातें तुम बनाते हो वह अल्लाह को ख़ूब मालूम है। मुझ में और तुम में (यानी मेरे और तुम्हारे मामले में) वह गवाह काफ़ी है। वह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है[६]। ९. तू कह दे कि मैं कोई अनोखा रसूल नहीं हूँ और (अल्लाह के क़ानून में न उन का कोई अ़मल-दख़ल था न मुझे है, बल्कि) मुझे तो यह भी ख़बर नहीं कि मुझ से क्या बर्ताव हो गा और तुम से क्या। मैं तो केवल उस कलाम की ताबेदारी करता हूँ जो मेरी तरफ़ वह्यि किया जाता है और अल्लाह के अ़ज़ाब से साफ़-साफ़ डराने वाला हूँ[७]। १०. तू कह: भला बतलाओ अगर यह क़ुरआन अल्लाह की तरफ़ से हो (जैसा कि मेरा दावा है) और तुम लोग उस से मुन्किर हो और बनी इस्राईल में से (भरोसे मन्द पढ़े-लिखे) गवाह उस की गवाही दे कर ईमान ला चुके[८] और तुम अकड़ रहे हो तो (बतलाओ तुम्हारा क्या हाल हो गा? यही होगा कि तुम लोग अल्लाह के हाँ ज़ालिम ठहरो गे और) अल्लाह ज़ालिमों की क़ौम को हर्गिज़ हिदायत नहीं दिया करता। ११. इन्कारी लोग मानने वालों से कहते हैं कि अगर यह क़ुरआन बेहतर होता (यानी इस में कोई ख़ूबी होती) तो यह (ग़रीब मुसलमान) लोग हम से पहले इसे क़ुबूल न करते। चूँकि उन लोगों ने इस से हिदायत नहीं पाई है इसलिये कह दें गे

....

६. अल्लाह की यह दो सिफ़तें तक़ाज़ा करती हैं कि मुजरिमों को गिरफ़्तार करने में जल्दी न की जाये, बल्कि थोड़ा मौक़ा दिया जाये, हो सकता है वह गुनाहों से तौबा करके नेक बन जायें।

७. तुम पर अभी अ़ज़ाब उतरे गा या कुछ समय के बाद? यह सब ग़ैब की बातें हैं जिन का अ़िल्म केवल अल्लाह को है। कुछ उ़लमा ने कहा है कि इस का अर्थ यह है कि मुझ को मालूम नहीं कि क़ियामत में हमारा क्या होना है और तुम्हारा क्या होना है?

बयान किया जाता है कि यह आयत उतरी तो काफ़िरों ने कहा: हम ऐसे पैग़ंबर पर क्यों ईमान लायें?

जिस को अपनी नजात की ख़बर नहीं, उसी समय अल्लाह ने सूर: फ़तह की आयत "अल्लाह ने तेरे अगले-पिछले गुनाह बख़्श दिये" नाज़िल फ़रमाई। इस आयत का सहीह अर्थ वही है जो हाशिया में सब से पहले बयान हुआ। इमाम अबू दावूद इस आयत को सूर: फ़तह की आयत नं० २ से मन्सूख़ मानते हैं। बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि जब उ़स्मान बिन मज़ऊन मर गये तो उम्मुल् अ़ला (संभवत: उन की पत्नी) ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हो कर कहा: मैं इस बात की गवाही देती हूँ कि आप अ़िज़्ज़तदार हैं अल्लाह के नज़दीक। यह सुन कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ऐ उम्मुल् अ़ला! तुम को कैसे मालूम (कि मैं अल्लाह के निकट अ़िज़्ज़त-दार हूँ) हाँलाकि मैं अल्लाह का रसूल होते हुये भी नहीं जानता कि मेरा और तेरा क्या हाल होना है? उम्मुल अ़ला कहती हैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से यह सुनने के बाद फिर मैं ने किसी के बारे में नहीं कहा कि फ़लाँ अच्छा है।

कुछ पादरी इस हदीस से यह दलील लाये हैं कि जब नबी को अपनी नजात के बारे में ही यक़ीन नहीं तो फिर वह अपनी उम्मत के लोगों को कैसे बचा सकते हैं? और ऐसे पैग़म्बर पर ईमान लाने से क्या फ़ायदा? उन पादरियों को मालूम होना चाहिये कि इस प्रकार का एतराज़ इन से बहुत पहले मक्का के मुश्रिक भी कर चुके हैं और इस एतराज़ का उत्तर उलमा बहुत पहले दे चुके हैं (१.) पहला उत्तर तो यह है कि यह सूर: बिल्कुल शुरू ज़माना में नाज़िल हुयी है और उस समय तक आप को नहीं बताया गया था कि आप की ख़तायें माफ़ की जा चुकी हैं। (२.) एक उसूल है कि जो आदमी अल्लाह का जितना क़रीबी होता है उतना ही अधिक ख़ौफ़ करता है, इसी लिये आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कि मुझे नहीं मालूम हमारा क्या हाल होगा। (३.) अल्लाह तआ़ला की बारगाह (दरबार) बड़ी अ़जीब बारगाह है, उस की बड़ाई और बेनियाज़ी को देख कर बड़ी-बड़ी शान वाले संदेष्टा भी थर्रा जाते हैं। अगर वह चाहे तो पैग़ंबरी छीन ले और गुनाह-गारों में शामिल कर दे और पैग़ंबरी का दर्जा गुनाहगारों को दे दे। इस प्रकार की आयत तो इस बात की दलील है कि आप सच्चे संदेष्टा थे। अगर आप बनावटी नबी होते तो अपनी शान बढ़ाते, न कि घटाते। आप ने आयत सुना कर बन्दगी का अर्थ लोगों को अच्छी तरह समझा दिया है कि हालाँकि मैं पैग़ंबर हूँ मगर अल्लाह का बन्दा हूँ, और बन्दे के साथ मालिक जो चाहे सुलूक कर सकता है, किसी बन्दे को यह ग़ुरूर नहीं होना चाहिये कि मैं अल्लाह का क़रीबी बन्दा हूँ, बल्कि हर समय उस के ग़ज़ब और प्रताप (जलाल) से काँपते रहना चाहिये।

यह आयत पेश करने का उद्देश्य यह भी है कि कहीं मुसलमान, नसारा की तरह गुमराह न हो जायें और जिस प्रकार इन्होंने ने अपने नबी को बन्दा से बढ़ा कर ख़ुदा बना दिया, इसी प्रकार मुसलमान भी अपने नबी को अल्लाह न बना दें (वहीदी)

८. गवाह से मुराद अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम हैं जो यहूद के बड़े आ़लिम थे और इन्हों ने क़ुरआन और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सच्चे होने की गवाही दी और ईमान ले आये। यह आयत मदीना में उतरी, लेकिन कुछ उ़लमा का कहना है कि मक्का में नाज़िल हुयी। 'गवाह' से मुराद वह लोग हैं जिन्हों ने मक्का ही में क़ुरआन के और रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सच्चे होने की गवाही दी थी।

هٰذَآ اِفْكٌ قَدِيْمٌ ﴿١١﴾ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى
اِمَامًا وَّرَحْمَةً ۭ وَهٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا
عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ڰ وَبُشْرٰى لِلْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا فَلَا خَوْفٌ

यह पुराना झूठ है। १२. और इस से पहले मूसा की किताब (तौरात अपने ज़माना में) इमाम और रहमत थी और यह किताब (क़ुरआन मजीद) अ़रबी भाषा में उस (पहले की नाज़िल की गयी किताब के संदेश) की तसदीक़ करती है ताकि उन लोगों को डराये जो ज़ालिम हैं

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ
خَالِدِينَ فِيهَا جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَ
وَصَّيْنَا الْإِنسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا حَمَلَتْهُ
أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ
ثَلَاثُونَ شَهْرًا حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ
سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي
أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا
تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي إِنِّي تُبْتُ
إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ

और नेको कारों के लिये ख़ुश्ख़बरी है। १३. जो लोग ज़बान से कहते हैं: हमारा पर्वरदिगार अल्लाह है फिर वह (उस पर) जम जाते हैं, पस उन को न ख़ौफ़ हो गा न वह ग़मगीन हों गे[९]। १४. यही लोग जन्नती हैं उस में हमेशा रहें गे, यह (इनाम) उन कामों के बदले में मिले गा जो वह किया करते थे। १५. और हम ने हर इन्सान को उस के माता-पिता के बारे में एहसान करने का हुक्म दिया है। उस की माँ ने उस को सख़्त तक्लीफ़ में उठाया और सख़्त तक्लीफ़ में उस को जना। उस के गर्भ (हमल) और दूध छुड़ाने की मुद्दत (कम से कम) तीस माह[१०] (ढाई वर्ष) होते हैं (और अधिक से अधिक पौने तीन वर्ष) फिर जब वह अपनी कुव्वत को पहुंचता है ख़ास कर (जवानी से गुज़र कर) चालीस वर्ष की आयु सीमा को जब पहुंच जाता है तो (अपनी औलाद को देख कर) कहता है ऐ अल्लाह! मुझ को तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी नेमत का शुक्र अदा करूँ जो तू ने मुझ पर और मेरे माता-पिता पर इनाम किया और ऐसे नेक कार्य करूँ कि तू उन को पसन्द करे (मेरे मौला!) तू मेरी औलाद को भी नेक बना। मैं तेरी तरफ़ झुका हूँ[११] और मैं फ़र्माबर्दार बन्दों में से हूँ[१२]।

....

९. 'इस्-तक़ामू' (वह जम जाते हैं) यह शब्द बड़ी तशरीह चाहता है। इस शब्द का अर्थ समझने के लिये हज़रत बिलाल, हज़रत सुहैब रूमी, हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हुम वग़ैरह मज़लूम सहाबा के सब्र को याद कर लेना चाहिये। (राज़)

१०. तीस महीने में कम से कम छ: महीने बच्चा माँ के पेट में रहता है और दो वर्ष तक दूध पीता है, यह कुल मिला कर तीस माह बनते हैं (वहीदी)

नोट:- गर्भ की कम से कम मुद्दत छ: माह कैसे साबित है इस को समझ लेना आवश्यक है। अधिकांश देखने में आया है कि जो महिला छ: माह में बच्चा जन्म देती है तो दूसरी महिलायें उस के चरित्र पर संदेह प्रकट करती हैं और यहाँ तक कह देती हैं कि बच्चा नौ माह का है और यह तीन माह का गर्भ मैके से लाई है।

कुरआन मजीद ने गर्भ और दूध पिलाने की मुश्तरका मुद्दत तीस माह बयान किया है जैसा कि इस आयत से स्पष्ट है। और सूर: ब-क़-र: की आयत न० २३३ में केवल दूध पिलाने की मुद्दत दो वर्ष (२४ माह) बयान है। अब अगर गर्भ और दूध पिलाने की मुश्तरका मुद्दत ३० माह मे केवल दूध पिलाने की मुद्दत २४ माह घटा दें तो बाक़ी छ: माह बचते हैं और यह हमल अर्थात गर्भ पर्सव की कम से कम मुद्दत हुयी। वैसे छ: माह में पैदा होने वाले शिशु कमज़ोर होने के नाते बहुत कम ही जीवित रहते हैं। छ: माह से कम मुद्दत में अगर पैदा हो तो वह इसक़ात (गर्भपात) ही कहा जाये गा। यह तो हुयी कम से कम मुद्दत की बात। अधिक से अधिक मुद्दत के बारे में कोई क़ैद और सीमा नही है, लेकिन आ़मतौर पर (Normaly) नौ महीने पूरा होने के बाद बच्चा होता है इसे

दुनिया जानती है।

हज़रत उसमान रज़ि के शासन काल में एक महिला पर ज़िना का आरोप लगाया गया था तो हज़रत अ़ली रज़ि० ने ऊपर की दोनों आयतों की रोशनी में उस महिला के छ: माह के गर्भ को जायज़ करार दिया था और उस पर हद जारी करने से मना फ़रमा दिया था................. ख़ालिद सिद्दीक़ी

११. मतलब यह है कि नेक आदमी हमेशा अपना और अपने क़रीबी लोगों की ख़ैर व भलाई के ख़ाहिशमन्द रहते हैं। हर इन्सान के वे रिश्तेदार (माँ-बाप और औलाद) नेक कहलाते हैं, जो अपनी और अपने माँ-बाप और अपनी औलाद की भलाई चाहते हैं। (सनाई)

१२. शाने- नुज़ूल:- बयान किया गया है कि यह आयत हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० की शान में उतरी। वह इस्लाम ले आये तो उन के साथ उन के माता-पिता और औलाद भी इस्लाम ले आयी और यह फ़ज़ीलत किसी और सहाबा को नहीं मिली। (हज़रत अबूबक्र की चार पुश्त (१.)क़हाफ़ा (२.) इनके बेटे अबूबक्र (३.) इनके बेटे अब्दुर्रहमान (४.) इनके बेटे मुहम्मद- यह फ़ज़ीलत संभवत: किसी को नसीब नहीं - ख़ालिद) इस आयत में इस बात की ओर भी इशारा है कि जब आदमी चालीस वर्ष की आयु सीमा को पार कर जाये तो नये सिरे से तौबा करे और अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह हो। एक हदीस शरीफ़ में है कि जिस की आयु चालीस वर्ष की हो जाये और उस की नेकियाँ, बुराइयों पर ग़ालिब न हों तो वह दोज़ख़ में जाने के लिये तय्यार रहे। उलमा का कहना है कि कोई नबी चालीस वर्ष से कम उम्र का नहीं बनाया गया। (वहीदी)

نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ فِيْٓ اَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ؕ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿۱۶﴾ وَالَّذِيْ قَالَ لِوَالِدَيْهِ اُفٍّ لَّكُمَآ اَتَعِدٰنِنِيْٓ اَنْ اُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُوْنُ مِنْ قَبْلِيْ ۚ وَهُمَا يَسْتَغِيْثٰنِ اللّٰهَ وَيْلَكَ اٰمِنْ ۖ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَيَقُوْلُ مَا هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۷﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۱۸﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۚ وَلِيُوَفِّيَهُمْ اَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ فِي

१६. उन लोगों के नेक आमाल हम क़ुबूल करते हैं और (उन के इख़्लास की वजह से) उन की बुराइयों से हम दरगुज़र करें गे, (क्योंकि) यह लोग जन्नती लोंगो में दाख़िल हैं। यह वादा जो उन को दिया जाता है (बिल्कुल) सच्चा है (इस लिये ज़रूर पूरा हो गा) १७. और जो लड़का (गुस्ताख़ी में) अपने माँ-बाप को हिक़ारत से उफ़ कहता है (और उन की नसीहत के मुक़ाबला में कहता है) क्या तुम मुझे इस से डराते हो कि मैं क़ब्र से निकाला जाऊँ गा? हालाँकि कई एक क़ौमें मुझ से पहले गुज़र चुकी हैं[१३] (वह तो पुन: ज़िन्दा न हुयीं और मैं ज़िन्दा हो कर उठूँ गा? यह तुम्हारा पागलपन है) वह दोनों (यानी उस के माँ-बाप मुहब्बत में) अल्लाह की दुहाई देते हैं कि तेरा नास हो, ईमान ला। बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है। वह कहता है कि यह तो पहले लोगों के अफ़साने हैं। १८. इन से पहले जिन्न और

इन्सान जो गुज़र चुके हैं उन्हीं में उन पर जुर्म का इल्ज़ाम लग चुका है (क्योंकि) यह सारे लोग (अपनी बदआमाली की वजह से) घाटे में थे। १९. और उन में से हर एक के लिये उन के कामों के मुताबिक़ दर्जे हैं ताकि अल्लाह उन के आमाल का पूरा-पूरा बदला उन को दे और किसी प्रकार उन पर अत्याचार न हो गा २०. और (सुनो!) जिस रोज़ काफ़िर लोग दोज़ख़ के सामने किये जायें गे (तो सब से पहले) उन से यह कहा जाये गा कि तुम दुनिया में लज़्ज़तें पा चुके और उस में ख़ूब फ़ाइदा उठा चुके, पस आज तुम को ज़िल्लत का अ़ज़ाब पहुंचाया जाये गा[१४] क्योंकि तुम लोग मुल्क में नाहक़ तकब्बुर और शरारतें करते थे (यानी ग़रीबों और कमज़ोरों को सताते थे और अत्याचार करते थे इसी की सज़ा तुम को भुगतनी हो गी[१५])

....

१३. यानी जो कोई मरा है वह दोबारा नहीं जिया है। यह तो सिर्फ़ पहले के लोगों की कही हुयी बातें हैं। कहा जाता है कि अमीर मुआ़विया ने जब मर्वान को हिजाज़ का हाकिम बनाया तो उस ने यज़ीद की प्रशंसा करनी शुरू कर दी ताकि लोग उस के हाथ पर बैअ़त कर लें। हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र रज़ि० ने इस पर एतराज़ किया तो मर्वान ने उन्हें गिरफ़्तार करने का हुक्म दे दिया। तो वह अपनी बहन हज़रत आ़इशा के घर में छुप गये। मर्वान की जब वहाँ दाल न गली तो कहने लगा कि यह आयत नं० १७ "जो लड़का (गुस्ताख़ी से) अपनी माँ-बाप को हिक़ारत से उफ़ कहता है" अ़ब्दुर्रहमान के बारे में उतरी है। हज़रत आ़इशा ने जब सुना तो फ़रमाया: क़ुरआन मजीद में हम लोगों की बुराई के तअ़ल्लुक़ से कोई आयत नहीं उतरी। हाँ, हमारी बराअत के तअ़ल्लुक़ से बेशक उतारी गयी (और झूठों का मुंह काला हुआ)

एक दूसरी रिवायत में है कि हज़रत मुआ़विया ने अपने बेटे यज़ीद की बैअ़त ली तो मर्वान कहने लगा कि यह अबू बक्र और उमर रज़ि० की सुन्नत है। यह सुन कर अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र रज़ि० ने कहा: यह तो हेरक़्ल और क़ैसर (बादशाहों) का तरीक़ा है। मर्वान ने कहा: यह आयत नं० १७ तुम्हारे ही बारे में नाज़िल हुयी है। हज़रत आ़इशा ने जब यह सुना तो फ़रमाया: मर्वान झूठा है, अल्बत्ता मर्वान के बाप पर नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ज़रूर लानत फ़रमाई है उस समय मर्वान अपने बाप की पीठ में था, तो मर्वान अल्लाह की लानत का एक टुकड़ा हुआ। सच्ची बात तो यह है कि मर्वान झूठा था। उस ने बड़े-बड़े फ़साद किये और हज़रत उस्मान की शहादत का कारण भी वही बना। यह शख़्स अहले बैत (नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के घराने) का और अबू बक्र व उमर रज़ि० का बड़ा मुख़ालिफ़ था, इस के क़ौल का कोई एतिबार नहीं। यह आयत आ़म है और इस के तहत हर वह लड़का दाख़िल है जो माँ-बाप की नाफ़र्मानी करे, कुफ़्र पर अड़ा रहे और माँ-बाप का कहना न माने (वहीदी)

१४. हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि ने जब यह आयत सुनी तो उन्हों ने मन पसन्द खाना-पीना तर्क कर दिया था और फ़रमाते थे कि मुझे इस बात का डर है कि मैं कहीं उन लोगों में से न हो जाऊँ जिन्हें अल्लाह डाँट-फटकार कर यह हुक्म फ़रमाये गा। हज़रत अबू जाफ़र फ़रमाते हैं कि कुछ लोग ऐसे भी हैं जो दुनिया में की हुयी अपनी नेकियाँ क़ियामत के दिन गुम पायें गे (इब्ने कसीर)

१५. इस आयत के तअ़ल्लुक़ से शेख़ सअ़दी रह० ने अपनी एक कविता में बड़ी प्यारी बात कही है "ऐ ताक़त रखने वाले! ग़रीब और कमज़ोर पर ज़ुल्म मत कर और समझ ले कि दुनिया के हालात हमेशा एक समान नहीं रहा करते। मुमकिन है कि किसी दिन आज के कमज़ोर, ताक़तवर बन जायें और तुम जैसे ताक़तवर कमज़ोर हो जायें" (सनाई) क़ुदरत का क़ानून भी यही है कि ज़ालिम और जाबिर हमेशा ऊँचे नहीं रहते। सूर: क़सस की आयत ५ में इसी तरफ़ इशारा है "और हम को यह मन्ज़ूर था कि जिन लोगों का मिस्र की ज़मीन में ज़ोर घटाया जा रहा था हम उन पर दीनी और दुनियावी एहसान करें और उन को दीन में पेशवा और दुनिया में उन को मुल्क का मालिक बना दें"।

الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ ۝ وَاذْكُرْ اَخَا عَادٍ ۭ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖٓ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۡ وَاُبَلِّغُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ۝ فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ ۙ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ۭ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ۭ رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍۢ بِاَمْرِ رَبِّهَا فَاَصْبَحُوْا لَا يُرٰٓى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَآ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّ

२१. और आ़दियों के भाई (हज़रत हूद अ़लै०) को याद करो[16] जब उसने अपनी क़ौम को (मैदाने) अहक़ाफ़ की सरज़मीन पर समझाया और उस से पहले और बाद में भी कई समझाने वाले आए (जिन में से हर एक ने यह पैग़ाम पहुँचाया) कि अल्लाह के अ़लावा किसी की भी अ़िबादत न करो, मैं तुम्हारे हाल पर बड़े दिन के अ़ज़ाब से डरता हूँ (कि कहीं तुम उसमें न पकड़ लिए जाओ) २२. वे बोले कि आप इस ग़र्ज़ से हमारे पास आए हैं कि इस को हमारे माबूदों से फिसला दें? पस अगर आप सच्चे हैं तो जिस अ़ज़ाब से हमें डराते हैं उसे ले आइये। २३. हज़रत हूद ने कहा कि सहीह अ़िल्म अल्लाह के पास है। मैं तो तुम को वह पैग़ाम पहुँचाता हूँ जो मुझे देकर भेजा गया है मगर मैं देखता हूँ कि तुम लोग बेसमझी (की बातें) करते हो। २४. पस जब उन्होंने उस (अ़ज़ाब) को (बादलों की शक्ल में) अपने मैदानों की तरफ़ आते हुए सामने देखा तो (सूखे के कारण मारे ख़ुशी के) बोले कि यह सामने आने वाला (बादल) हम पर बरसेगा। (नहीं) बल्कि यह वह अ़ज़ाब है जो तुम लोग जल्दी मांग रहे थे। तेज़ हवा थी उसमें सख़्त अ़ज़ाब था। २५. वह हवा अपने रब के हुक्म से हर चीज़ को तबाह करती थी। पस वह ऐसे तबाह हुए कि उनके मकामों के अ़लावा कोई चीज़ नज़र न आती थी। इसी तरह हम बदकार क़ौम को सज़ा दिया करते हैं। २६. हम ने उन आ़दियों और दूसरी तबाह की गई क़ौमों को वह-वह नेमतें दी थीं कि तुम (अ़रब वालों) को नहीं दीं और हम ने उन को कान और आँखें और दिल दिए थे।

....

१६. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तसल्ली के लिये अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि अगर आप की क़ौम आप को झुठलाये तो अगले संदेष्टाओं को याद कर लें, उन की क़ौम ने भी उन को झुठलाया। आयत नं० २१ में "आ़द के भाई" से मुराद हज़रत हूद अ़लै० हैं। इन्हें अल्लाह ने आ़द ऊला की तरफ़ भेजा था जो अहक़ाफ़ की वादी में आबाद थे। 'अहक़ाफ़' यह बहुवचन है 'हक़फ़' का, इस के कई अर्थ हैं "रेत का टीला, पहाड़ी, ग़ार, हिज़्रमूत की वह वादी जिस का नाम बरहूत है, जहाँ कुफ़्फ़ार की रूहें डाली जाती हैं"। इमाम क़तादा फ़रमाते हैं कि यमन में समुंद्र के तट पर रेत के टीलों में एक स्थान था जिस का नाम "शजर" था, यहीं पर यह लोग आबाद थे। इमाम इब्ने माजा ने अपनी किताब में एक बाब बाँधा है "जब दुआ़ माँगे तो अपने नफ़्स से शुरू करे" फिर इसी के

➲ज़िम्न में एक हदीस नक़ल की है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआ़ला हम पर और आ़दियों के भाई (हूद अ़लै०) पर रहम करे.............. । फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआ़ला ने उन के आस-पास के शहरों में भी अपने रसूल भेजे थे।

हज़रत हूद अ़लै० ने अपनी क़ौम से फ़रमाया: तुम लोग तौहीदपरस्त बन जाओ वर्ना बड़े भारी दिन के अ़ज़ाब को चखने के लिये तय्यार हो जाओ। क़ौम वालों ने कहा कि हम तुम्हारी धमकी से डरने वाले नहीं, जाओ जा कर अ़ज़ाब ले आओ। चूंकि यह लोग उन की बात को झूठ समझते थे इसी लिये बड़ी जल्दी अ़ज़ाब का मुतालबा किया। इस पर उन्हों ने उत्तर दिया कि अ़ज़ाब के आने का अ़िल्म केवल अल्लाह को है वह जब उचित समझे गा भेज दे गा। मेरी ज़िम्मे-दारी केवल इतनी है कि मैं उस का संदेश तुम लोगों तक पहुंचा दूँ। आख़िर उन पर अ़ज़ाब का बादल छा ही गया। इन लोगों ने उस को बारिश का बादल समझा और सूखाकाल की वजह से उसे देखते ही झूम उठे, लेकिन वह बादल की सूरत में अ़ज़ाब था, वह आया और उस ने तमाम चीज़ों को चूरा-चूरा कर के रख दिया, सब हलाक कर दिऐ गऐ और एक भी जीवित न बचा----आगे फ़रमाया गया: जो हमारे रसूलों को झुठलाते हैं हम उन के साथ ऐसा ही बर्ताव करते हैं (मुहम्मदी)

اَفْـِٕدَةً ۚ فَمَاۤ اَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَاۤ اَبْصَارُهُمْ
وَلَاۤ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَیْءٍ اِذْ كَانُوْا یَجْحَدُوْنَ ۙ بِاٰیٰتِ
اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ ۟۠ ﴿٢٦﴾ وَلَقَدْ
اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰی وَصَرَّفْنَا الْاٰیٰتِ
لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِیْنَ اتَّخَذُوْا
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ؕ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ
وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا یَفْتَرُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَاِذْ
صَرَفْنَاۤ اِلَیْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ یَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ
فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْۤا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِیَ وَلَّوْا
اِلٰی قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِیْنَ ﴿٢٩﴾ قَالُوْا یٰقَوْمَنَاۤ اِنَّا سَمِعْنَا
كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰی مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ
یَدَیْهِ یَهْدِیْۤ اِلَی الْحَقِّ وَاِلٰی طَرِیْقٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿٣٠﴾
یٰقَوْمَنَاۤ اَجِیْبُوْا دَاعِیَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا بِهٖ یَغْفِرْ لَكُمْ

पस उन के कान और आँख और दिल उन के कुछ भी काम न आये, क्योंकि वह अल्लाह के अहकाम को झुठलाते (बल्कि सख़्त मुक़ाबला करते) थे (परिणाम यह हुआ कि वह तबाह हो गये) और जिस अ़ज़ाब की हंसी उड़ाया करते थे उस ने उन को घेर लिया[१७]। २७. (ऐ मक्का वालो सुनो!) हम ने तुम्हारे आस-पास की कितनी बस्तियाँ तबाह कर दीं हम ने उन को अपने अहकाम फेर-फेर कर सुनाये ताकि वह (हमारी तरफ़) पलटें। २८. फिर जिन लोगों ने उन्हीं को अल्लाह की नज़दीकी हासिल करने के लिये माबूद बना रखा था उन्हों ने उन की मदद क्यों न की? (हमेशा नज़र-नियाज़ करते, मगर वह कुछ न कर सके) बल्कि उन से बिल्कुल ग़ाइब हो गये और यह उन का झूठ और इल्ज़ाम है। २९. और (ऐ पैग़ंबर!) जब हम ने तेरी तरफ़ चन्द जिन्नों को भेजा था कि वह कुरआन मजीद सुनें, फिर जब वह उस मौक़ा पर आये (जहाँ तू ऐ नबी! कुरआन पढ़ रहा था) तो वह (एक दूसरे को) कहने लगे कि चुप रहो[१८], फिर जब कुरआन की तिलावत ख़त्म हुयी तो वह (जिन्न अल्लाह के अ़ज़ाब से) डरने वाली जमाअ़त बन कर अपनी क़ौम की तरफ़➲

➲फिरे। ३०. कहा: ऐ भाइयो! हम ने ऐसी किताब सुनी है जो (अपने बयान के मुताबिक़) मूसा की किताब के बाद उतरी है, अपने से पहले की किताब की तस्दीक़ करती है और हक़ और सीधी राह की तरफ़ हिदायत करती है (यह बयान कर के खुले शब्दों में अपनी क़ौम को समझाते हैं) ३१. ऐ भाइयो! अल्लाह की तरफ़ बुलाने को कुबूल करो और उस पर ईमान लाओ, अल्लाह तुम को तुम्हारे गुनाह बख़्श दे गा

....

१७. यानी हम ने आ़द की क़ौम और दूसरी क़ौमों को इतनी कुव्वत और ताक़त अ़ता की थी, जो तुम्हें ऐ अ़रब वालो! नसीब नहीं। उन को आज के यूरोप वालों की तरह दूर की बातें सुनने के लिये कान, बारीक चीज़ें देखने के लिये आँखें और सोचने-समझने के लिये दिल दिये थे। वह अपनी कला में यूरोप की क़ौमों की तरह ऐसे कमाल वाले थे कि किसी दूर-दराज़ मुल्क में भी किसी कला का ज़िक्र सुनते या देखते, तो अपने दिल से सोच कर उस को ईजाद कर लेते। मगर अल्लाह से उन का लगाव न था और उसके अज़ाब का मज़ाक़ उड़ाया करते थे। आख़िर उन के आ़ज़ाब ने घर दबोचा तो यह अ़रब वाले जो आ़दियों के मुक़ाबले में कुछ भी हैसिय्यत नहीं रखते, भला कैसे अ़ज़ाब से बच सकते हैं?

१८. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के नबी बनाये जाने से पहले तक जिन्नों को कुछ आसमानी ख़बरें मिल जाया करती थीं, लेकिन जब आप पर वह्यि का सिलसिला जारी हुआ तो उन लोगों का ऊपर जाने का सिलसिला लग-भग बन्द हो गया, जो कोई ऊपर जाने की कोशिश भी करता तो उसे आग बरसाने वाले सितारों की मार पड़ती। जिन्नों को ख़याल हुआ कि ज़रूर कोई नयी घटना घटी है जिस के कारण यह सब कुछ हो रहा है, चुनान्चे तहक़ीक़ के लिये जिन्नों के गरोह चारों तरफ़ फैल गये। इत्तिफ़ाक़ से एक गरोह का गुज़र "बत्ने नख़्ला" (नख़्ला की वादी) की तरफ़ से हुआ उस समय नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सहाबा के साथ फ़ज्र की नमाज़ अदा फ़रमा रहे थे। जिन्नों का गरोह रुक कर कुरआन सुनने लगा। चुनान्चे उस कुरआन की तासीर और हैबत व जलाल से वह काँपने लगे और एक दूसरे से कहने लगे कि चुप-चाप, ख़ामोशी से कलाम सुनो। अब उन की समझ में आ गया कि इसी कारण ऊपर जाने पर प्रतिबन्ध लगाया गया है। जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम नमाज़ से फ़ारिग़ हुये तो यह लोग अपने दिलों में ईमान व यक़ीन ले कर वापस लौटे और अपनी क़ौम को नसीहत की (इस विषय पर तफ़्सील से सूर: जिन्न में लिखा जाये गा)

उन जिन्नों के आने और कुरआन के सुनने की ख़बर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नहीं लगी, अल्बत्ता एक दरख़्त ने कुछ मामूली सा इशारा अल्लाह के हुक्म से किया। बाद में वह्यि के ज़रिआ आप को बताया गया। इसी वाक़िए का ज़िक्र सूर: जिन्न की पहली आयत में बयान हुआ है। इस के बाद बहुत बड़ी तादाद में जिन्नों के आने-जाने और सुनने-सुनाने का सिलसिला चल पड़ा। ख़िफ़ज़ी ने मुख़्तलिफ़ रिवायतों की रोशनी में यह दावा किया है कि छ: मर्तबा आप ने जिन्नों से मुलाक़ात की (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)

مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣١﴾ وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ ۭ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ

और सख़्त अ़ज़ाब से तुम को बचाये गा। ३२. और जो कोई अल्लाह के पुकारने वाले की न माने गा वह अल्लाह को ज़मीन में आ़जिज़ नहीं कर सकता और उस के लिये अल्लाह के अ़लावा कोई वारिस नहीं। ऐसे लोग➲

مُّبِيۡنٌ ۝ اَوَلَمۡ يَرَوۡا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالۡاَرۡضَ وَلَمۡ يَعۡىَ بِخَلۡقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنۡ
يُّحۡیِۦَ الۡمَوۡتٰى ؕ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ۝
وَيَوۡمَ يُعۡرَضُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا عَلَى النَّارِ ؕ اَلَيۡسَ
هٰذَا بِالۡحَـقِّ ؕ قَالُوۡا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوۡقُوا
الۡعَذَابَ بِمَا كُنۡتُمۡ تَكۡفُرُوۡنَ ۝ فَاصۡبِرۡ كَمَا
صَبَرَ اُولُوا الۡعَزۡمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسۡتَعۡجِلۡ
لَّهُمۡ ؕ كَاَنَّهُمۡ يَوۡمَ يَرَوۡنَ مَا يُوۡعَدُوۡنَ ۙ لَمۡ
يَلۡبَثُوۡۤا اِلَّا سَاعَةً مِّنۡ نَّهَارٍ ؕ بَلٰغٌ ۚ فَهَلۡ يُهۡلَكُ
اِلَّا الۡقَوۡمُ الۡفٰسِقُوۡنَ ۝

(निःसंदेह) खुली गुमराही में हैं। ३३. क्या यह लोग जानते नहीं? कि जिस अल्लाह ने आसमान और ज़मीन पैदा किये और उन के पैदा करने से उस को किसी प्रकार की थकावट न हुयी[१९] वह इस बात पर क़ुदरत रखता है कि मुर्दों को ज़िन्दा कर दे? हाँ, बेशक हर काम पर क़ुदरत रखता है। (जो चाहे कर सकता है) ३४. और (सुनो!) जिस रोज़ काफ़िरों को आग के सामने किया जाये गा (उन से पूछा जाये गा) क्या यह अ़ज़ाब हक़ीक़त में नहीं है? वह कहें गे: अल्लाह की क़सम! यह हक़ीक़त में है। (और सच्चा) फ़रिश्ता कहे गा तो अब तुम अपने कुफ़्र की बद आमाली की वजह से इस अ़ज़ाब को चखो। ३५. पस तू सब्र किया कर जैसा बड़ी हिम्मत (और साबित क़दम रहने) वाले संदेष्टाओं ने सब्र किया और उन के हक़ में जल्दी अ़ज़ाब तलब न कर[२०]। जिस दिन वह अ़ज़ाब को देखें गे जिस का उन को वादा दिया जाता है तो वह समझें गे कि दुनिया में हमारा क़ियाम केवल एक घड़ी भर हुआ है। यह (कुरआन अल्लाह के अहकाम की) तब्लीग़ है, सो नफ़र्मान लोग ही तबाह हों गे।

....

१९. यहूदियों और ई़साइयों की तौरात की दूसरी किताब (अध्याय) "खुरूज" में लिखा है "छः दिन मे खुदावन्द ने आसमान व ज़मीन को पैदा किया और सातवें दिन विश्राम किया और ताज़ादम हुआ" (बाब,३१ बाक्य१७) ताज़ादम वह होता है जो थक जाये, और थकना एक ऐ़ब और कमज़ोरी है। चूँकि अल्लाह तआ़ला में किसी प्रकार की कमज़ोरी और ऐब नहीं है इस लिये तौरात के इस वाक्य की इस्लाह और यहूद व नसारा के अ़क़ीदे की ग़लती का इज़्हार करने के लिये कुरआन की इस आयत में फ़रमाया: "उस को किसी प्रकार की थकावट न हुयी" (सनाई) इस आयत में उन लोगों का भी रद्द है जो कुरआन मजीद को केवल तौरात और इन्जील की नक़्ल बताते है। और उस के इल्हामी होने का इन्कार करते हैं (राज़)

२०. इस आयत में अल्लाह तआ़ला अपने रसूल को तसल्ली दे रहा है कि अगर आप की क़ौम आप को झुठला रही है तो यह कोई आश्चर्य की बात नही है। अगले हिम्मत वाले पैगंबरों को भी झुठलाया और उन को तक्लीफ़ें दी गयी, लेकिन उन्होंने सब्र के साथ बर्दाश्त किया। इन पैगंबरों के नाम यह हो सकते हैं हज़रत नूह, इब्राहीम, मूसा,ई़सा और मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। यह भी संभव है कि "हिम्मत वाले" रसूलों से मुराद सभी पैगंबर हों, तो फिर "मि-नर्रूसुलि" तफ़्सील और बयान के लिये माना जाये गा।

इब्ने अबी हातिम की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने रोज़ा रखा और भूके रहे, फिर रोज़ा रखा और फिर भूके ही रहे, फिर रोज़ा रखा और फ़रमाया: ऐ आ़इशा! मुहम्मद और आले मुहम्मद के लायक़ तो दुनिया है ही नहीं। ऐ आइशा! दुनिया की बलाओं पर सब्र करने और दुनिया की ख़ाहिश की चीज़ों

➲से अपने को बचाये रखने का हुक्म हिम्मत वाले रसूलों को दिया गया और वही तक्लीफ़ें मुझे भी दी गयीं जो उन बुलन्द हिम्मत वाले रसूलों को दी गयीं। अल्लाह की क़सम! मैं भी उन्ही की तरह भरसक अपनी हिम्मत और ताक़त से काम लूँ गा, और अल्लाह की ताक़त के भरोसे में यह बात ज़बान से निकाल रहा हूँ (इब्ने कसीर) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जलाल और जमाल का पैकर (प्रतिमूर्ति) थे, सब्र, तहम्मुल और नर्मी आप के अन्दर कूट-कूट कर भरी हुयी थी, अल्लाह ने अपनी रहमत से ख़ास तौर पर आप के अन्दर बर्दाश्त और नर्मी डाल दी थी, इस के बावजूद शरीअ़त के ख़िलाफ़ बर्दाश्त न कर सकते थे। चुनान्चे अहादीस में शरीअ़त की मुख़ालिफ़त पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नाराज़गी का ज़िक्र मौजूद है। एक जगह हदीस में यूँ है आप आगबगूला हो कर खड़े हो गये और फ़रमाने लगे कि "हमारे सामने ही अल्लाह की किताब के हुक्मों से खिलवाड़ किया जा रहा है"। (बुलूग़ुल मराम) एक दूसरे स्थान पर फ़रमाया: "ऐ मआ़ज़! तू बर्बाद हो जाये......"। (मिश्कात) (तफ़्सीर मौलाना सियाल कोटी) मतलब यह है कि सब्र और बर्दाश्त का मक़्सद अपनी ज़ाती तक्लीफ़ों और मुसीबतों को हंसी-ख़ुशी बर्दाश्त करना है, न कि शरीअ़त के ख़िलाफ़ कामों को देख कर चुप्पी साध लेना।

सूरः मुहम्मद- (47)

آياتها ٣٨ (٤٧) سُورَةُ مُحَمَّدٍ مَدَنِيَّةٌ (٩٥) ركوعاتها ٤

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ أَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ۝١
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآمَنُوا بِمَا نُزِّلَ عَلَىٰ
مُحَمَّدٍ وَهُوَ الْحَقُّ مِن رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ
وَأَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝٢ ذَٰلِكَ بِأَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا
الْبَاطِلَ وَأَنَّ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِن رَّبِّهِمْ ۚ
كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ لِلنَّاسِ أَمْثَالَهُمْ ۝٣ فَإِذَا
لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَضَرْبَ الرِّقَابِ حَتَّىٰ إِذَا
أَثْخَنتُمُوهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ فَإِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَإِمَّا
فِدَاءً حَتَّىٰ تَضَعَ الْحَرْبُ أَوْزَارَهَا ۚ ذَٰلِكَ ۛ وَلَوْ
يَشَاءُ اللَّهُ لَانتَصَرَ مِنْهُمْ وَلَٰكِن لِّيَبْلُوَ بَعْضَكُم
بِبَعْضٍ ۗ وَالَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَلَن

सूरः मुहम्मद (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ३८ आयतें और ४ रुकूअ़ हैं

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है

१. जो लोग काफ़िर हैं और लोगों को अल्लाह की राह से रोकते हैं उन के आ़माल (नेक जो किसी समय उन से हुये हों गे) अल्लाह सब बर्बाद कर दे गा २. और जो लोग ईमान्दार हैं और अच्छे कार्य करते हैं (ख़ासकर) उस कलाम पर उन का ईमान है जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर उतारा गया है और वह बरहक़ है, उन लोगों के पर्वरदिगार के हाँ से आया हुआ, अल्लाह उन के गुनाह उन से दूर कर दे गा और उन की हालत संवार दे गा। ३. यह फ़र्क़ इस लिये है कि जो लोग काफ़िर हैं वह बातिल के पैरोकार हैं और जो ईमान्दार हैं वह हक़ के पैरोकार हैं जो उन के रब के हाँ से आया है इसी प्रकार अल्लाह लोगों के लिये मिसालें बयान करता है (ताकि वह हिदायत पायें) ४. पस (जंग के मैदान में) जब तुम उन➲

➲काफ़िरों से मिलो तो उन की गर्दनें मारा करो यहाँ तक कि जब तुम उन (दीन के दुश्मनों) को ख़ूब क़त्ल कर चुको तो तुम उन को मज़बूती के साथ क़ैद कर लिया करो, इस के बाद उन को या तो एहसान कर के या फ़िद्या ले कर आज़ाद कर दिया करो यहाँ तक कि लड़ाई समाप्त हो जाये यही हुक्म है[२]। (इस को याद रखो) और (सुनो!) अल्लाह चाहता तो ख़ुद उन से बदला ले लेता लेकिन उस को मन्ज़ूर है कि तुम में से बाज़ को बाज़ के हक़ में जाँचे। और जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किये जाते हैं अल्लाह उन के आमाल हर्गिज़ बर्बाद नहीं करे गा।

....

१. इस सूर: में और इस के अ़लावा ज़्यादातर मदनी सूरतों में भी जिहाद के अहकाम और मुनाफ़िक़ों की बदकिर्दारी और उस के बुरे परिणाम बयान किये गये हैं और अच्छे अख़्लाक़ पर क़ाइम रहने का ताक़ीदी हुक्म दिया गया है। सूर: अहक़ाफ़ के अन्त में फ़रमाया था कि फ़ासिक़ लोग ही हलाक होते हैं। इस पर यह ख़याल गुज़रता था कि उन के बाज़ आमाल (जैसे सद्क़ा ख़ैरात) अच्छे भी होते हैं, तो फिर उन के इन आमाल का क्या होगा? इस के जवाब में फ़रमाया कि जिन लोगों ने इन्कार किया और अपने आप को और साथ ही दूसरों को नेक राह से रोका, उन के सारे आमाल बर्बाद हो गये। दीन से बग़ावत की वजह से वह काम न आयें गे। 'उन की गर्दनें मारा करो' इस आयत के बारे इमाम मुजाहिद फ़रमाते हैं: यह एक ख़ास जंग में हुक्म हुआ था, और ज़ाहिर है जंग गर्दन मारने के लिये ही हुआ करती है, वह कोई फूल और पान नहीं बाटा करते हैं। मतलब यह है कि यह हुक्म हर समय के लिये नहीं है, बल्कि जब कुफ़्फ़ार से बाक़ायदा शरअ़ी जंग छिड़ जाये उस मौक़े पर यह हुक्म लागू हो गा। यह कोई आ़म हुक्म नहीं है कि जहाँ कोई काफ़िर और फ़ासिक़ मिल जाये उस की गर्दन मार दो। इस्लाम इस प्रकार की सफ़्फ़ाकी (ख़ूनख़राबे) की तालीम नहीं देता है और जिस ने इस आयत से यही मतलब निकाला है यह उस की समझ का क़ुसूर है।

'या तो एहसान कर के या बदला ले कर आज़ाद कर दिया करो' इस आयत के बारे में आज के कुछ उलमा का कहना है कि यह आयत जंग बद्र और जंग बनी मुस्तलिक़ के बाद नाज़िल हुयी है, इस में केवल दो ही ~ क़रार दी हैं। (हक़्क़ानी)

२. इमाम मुजाहिद के नज़दीक हज़रत ई़सा अ़लै० नाज़िल हो जायें। हो सकता है उन की नज़र उस हदीस पर हो जिस में फ़रमाया गया कि मेरी उम्मत हमेशा हक़ के साथ ज़ाहिर रहे गी, यहाँ तक कि उन का आख़िरी शख़्स दज्जाल से लड़े गा। मुस्नद अहमद और नसई की रिवायत में है कि हज़रत सल्मा बिन नुफ़ैल रज़ि० आप की सेवा में हाज़िर हुये और कहने लगे मैं ने घोड़ों को छोड़ दिया, हथियार अलग कर दिये और लड़ाई से भी अपने हथियार रख दिये और मैं ने कह दिया कि अब लड़ाई है ही नहीं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन्हें फ़रमाया: अब लड़ाई आ गयी, मेरी उम्मत में एक जमाअ़त हमेशा लोगों पर ज़ाहिर रहे गी, जिन लोगों के दिल टेढ़े हो जायें गे यह उन से लड़ाई करे गी और अल्लाह उन लड़ने वालों को उस लड़ाई से रोज़ी (माले ग़नीमत) भी दे गा यहाँ तक कि अल्लाह का फ़ैसला आ जाये और वह उसी हालत पर हों गे। मोमिनों की ज़मीन शाम में है और घोड़ों के अयाल (गर्दन के बाल) में क़ियामत तक के लिये अल्लाह ने ख़ैर रख दी है। हज़रत इमाम क़तादा फ़रमाते हैं: लड़ाई के हथियार रख देने से मुराद शिर्क का मिट जाना है। यह आयत बिल्कुल उस आयत की तरह है जिस में हुक्म दिया गया है: "उन से लड़ते रहो यहाँ तक कि फ़ित्ना (शिर्क) समाप्त हो जाये और दीन अल्लाह के लिये हो जाये" (सूर: बक़र:-१९३)

'अल्लाह उन के आमाल हर्गिज़ बर्बाद नहीं करे गा' इस का अर्थ यह है कि शहीदों के आमाल अकारत नहीं जायें गे और कुछ को तो क़ियामत तक सवाब मिले गा। मुसनद अहमद की एक रिवायत में है कि शहीद को छः इनाम मिलते हैं (१) उस के ख़ून का पहला क़तरा ज़मीन पर गिरते ही उस के कुल गुनाह माफ़ हो जाते हैं (२) उस को जन्नत में रहने वाला घर दिखाया जाता है (३) निहायत सुन्दर हूरों से उस का निकाह कर दिया जाता➲

है (४) वह बड़ी घबराहट से अम्न में रहता है (५) क़ब्र के दंड से सुरक्षित रहता है (६) ईमान के ज़ेवर से सजाया जाता है। (अहमद) एक दूसरी हदीस में इतना और भी है: (७) उस के सर पर इ़ज़्ज़त का ताज रखा जाता है जो याकूत और मोतियों से बना होता है। उस में का एक याकूत दुनिया और उस की तमाम चीज़ों से भी मंहगा है। (८) उसे हूरें मिलें गी (९) उसके ख़ान्दान के ७० आदमियों के बारे में उस की शफ़ाअत कुबूल की जाये गी (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

يُضِلَّ أَعْمَالَهُمْ ﴿٤﴾ سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ﴿٥﴾ وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ﴿٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَنصُرُوا اللَّهَ يَنصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ﴿٧﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَأَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ﴿٨﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴿٩﴾ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۖ دَمَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۖ وَلِلْكَافِرِينَ أَمْثَالُهَا ﴿١٠﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَأَنَّ الْكَافِرِينَ لَا مَوْلَىٰ لَهُمْ ﴿١١﴾ إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ﴿١٢﴾ وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً مِّن قَرْيَتِكَ الَّتِي أَخْرَجَتْكَ

५. बल्कि उन को हिदायत करे गा और उन का हाल संवार दे गा। ६. और उन को उस जन्नत में दाख़िल करे गा जिसकी पहले से उन को पहचान करा रखी है[३]। ७. मुसलमानो! अगर तुम अल्लाह (के दीन) की मदद करो गे तो अल्लाह तुम्हारी मदद करे गा और (तक्लीफ़ और जंग के मौक़ा पर) तुम्हारे क़दम मज़बूत करे गा। ८. और जो लोग मुन्किर हैं उन की तबाही हो गी और अल्लाह उन के किये-कराए आमाल सब नष्ट कर दे गा (किसी अच्छे काम का बदला उन को नहीं मिले गा) ९. यह इस लिये कि उन्हों ने अल्लाह की उतारी हुयी किताब को नापसन्द किया तो अल्लाह ने उन के नेक काम सब बर्बाद कर दिये। १०. क्या यह लोग मुल्क में फिरे नहीं? ताकि देखें कि इन से पहले लोगों का अन्जाम क्या हुआ? (सुनो!) अल्लाह ने उन को तबाह कर दिया और इन काफ़िरों के लिये उस से कई गुना ज़्यादा है। ११. यह फ़र्क़ (कि मोमिनों को कामियाबी और इन्कार करने वालों को नाकामी) इस लिये है कि अल्लाह ईमान्दारों का हिमायती है और काफ़िरों का कोई हामी मददगार नहीं[४]। १२. (सुनो) अल्लाह ईमान्दारों और नेक अ़मल करने वालों को जन्नतों में दाख़िल करे गा जिन के नीचे नहरें जारी हों गी। और जो लोग काफ़िर (यानी बेईमान और बद आमाल) हैं (यह बे फ़िक्री से) मज़े करते और खाते हैं जैसे जानवर खाते हैं (इस लिये उन का अन्त बुरा हो गा) और आग में उन का ठिकाना हो गा। १३. जिस बस्ती वालों ने तुझ को तेरे घर से निकाला था उस बस्ती से बहुत ज़्यादा शक्ति वाली कई बस्तियाँ गुज़र चुकी हैं

....

३. सहीह बुख़ारी की मर्फ़ूअ़ रिवायत में है कि जब मोमिन बन्दे आग से छूट जायें गे तो जन्नत और दोज़ख़ के

दर्मियान एक पुल पर रोक लिये जायें गे और एक दूसरे पर किये गये अत्याचार का बदला दे दिला कर पाक-साफ़ कर के जन्नत में जाने की अनुमति मिल जाये गी। अल्लाह की क़सम! जिस प्रकार तुम में से हर एक शख़्स अपने दुनियावी घर की राह जानता और घर को पहचानता है, इस से कहीं ज़्यादा जन्नत में अपने घर और उस की राह को जानें गे (इब्ने कसीर)

४. उहुद के मैदान में अबू सुफ़ियान कुफ़्र की हालत में थे और अपने लश्कर की कमान्डिंग कर रहे थे। इन्हों ने इस्लाम के ख़िलाफ़ अश्आर (कवितायें) पढ़ते हुये "हुबल की जै हो, हुबल की जै हो" का नारा लगाया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि तुम भी उत्तर दो "अल्लाह ही बुलन्द और इ़ज़्ज़त वाला है"। अबू सुफ़यान ने फिर नारा मारा "हमारा तो उज़्ज़ा बुत है और तुम्हारा तो कोई नहीं"। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम लोग भी उत्तर में यह कहो "अल्लाह हमारा मौला है और तुम्हारा तो कोई मौला नहीं" (इब्ने कसीर) नतीजा क्या हुआ? यह भी दुनिया ने अपनी आँखों से देख लिया। अल्लाह का दीन ग़ालिब हुआ और लात-मनात और उज़्ज़ा व हुबल सब समाप्त हो गये। और भविष्य में भी ऐसा ही हो गा, मायूसी की कोई बात नहीं, ग़ैरुल्लाह की पूजा करने वाले, क़ब्रों पर चढ़ावे चढ़ाने वाले सब पुजारी निश्चित रूप से एक दिन समाप्त हो जायें गे।

أَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ﴿١٣﴾ أَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوْٓا أَهْوَآءَهُمْ ﴿١٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۖ فِيْهَآ أَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَأَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ۚ وَأَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ وَأَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۖ وَلَهُمْ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ۖ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ أَمْعَآءَهُمْ ﴿١٥﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۚ حَتّٰٓى إِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ أُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۗ أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْٓا أَهْوَآءَهُمْ ﴿١٦﴾ وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّاٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ﴿١٧﴾ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ

उन को हम ने तबाह कर दिया फिर उन का कोई मददगार नहीं हो सका १४. भला जो शख़्स अपने रब की तरफ़ से हिदायत पर है क्या वह उन की तरह है जिन को अपने बुरे काम भले मालूम होते हैं और वह अपने मन की ख़्वाहिश के पैरू बन रहे हैं? १५. (सुनो!) जिस जन्नत का मुत्तक़ियों को वादा दिया गया है उस में कई एक ऐसे पानी की नहरें हों गी जो सड़े गा नहीं और कई एक दूध की नहरें हों गी जिन का स्वाद नहीं बदले गा और कई एक अन्गूर के निचोड़ (जूस) की नहरें हों गी जो पीने वाले को लज़्ज़त दें गी और कई एक साफ़ (सुथरी-निथरी) मुसफ़्फ़ा शहद की नहरें हों गी। और उन लोगों के लिये उन में हर प्रकार के फल हों गे और पर्वरदिगार की तरफ़ से बख़्शिश हो गी। क्या भला यह उन लोगों की तरह हों गे जो हमेशा आग में रहें गे और उन को सख़्त गर्म पानी पिलाया जाये गा जो उन की आँतों को काट दे गा। १६. और उन में से कुछ ऐसे भी हैं जो तेरी तरफ़ कान लगाते हैं और जब तेरे पास से बाहर निकल जाते हैं तो मुसलमान आ़लिमों से कहते हैं: उस ने अभी क्या कहा था? यही लोग हैं जिन के दिलों पर

➲अल्लाह ने मुहर कर दी है (क्योंकि) यह लोग (बड़े ग़ाफ़िल और) अपनी ख़ाहिशों के पुजारी हैं[५]। १७. और जो लोग हिदायत पर हैं अल्लाह उन को अधिक हिदायत देता है और उन को तक़्वा (परहेज़गारी) की तौफ़ीक़ बख़्शता है[८]। १८. यह लोग बस क़ियामत ही के मुन्तज़िर हैं की तुरन्त उन पर आ जाये (तो सीधे हो जायें)

....

५. उन को अल्लाह की भेजी हुयी सनद यानी कुरआन व हदीस से कोई ग़रज़ नहीं। यह आयत उन मुक़ल्लिदों पर भी फ़िटहोती हैजोकुरआन और हदीस की दलीलों को भी सुन कर अ़मल नहीं करते और इधर-उधर की बे-सर-पैर की बातें मान लेते हैं (वहीदी) वह अपने नफ़्स के पुजारी हैं इसी वजह से खुल्लम-खुल्ला बदकारियाँ करते हैं क्योंकि नफ़्स उन के बुरे कामों को भला कर के पेश करता है। अब उन दोनों को कौन बराबर कहे गा? हर्गिज़ नहीं, पहला गरोह अल्लाह का मक़्बूल बन्दा है और दूसरा मर्दूद। पहले गरोह का नाम अल्लाह ने मुत्तक़ी रखा है और उन के लिये अल्लाह की तरफ़ से जन्नत का वादा है........(सनाई) सहीह हदीस में है कि जन्नत में दूध, पानी, शहद और शराब के दरिया हैं... ऐ अल्लाह हमें जन्नतुल् फ़िर्दौस की तौफ़ीक़ दे- आमीन।

६. 'उस ने अभी क्या कहा था?' इस वाक्य में कितनी हिक़ारत है यह किसी से पोशीदा नहीं। गोया यह कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मज़ाक़ उड़ाते हैं और आ़लिमों से पूछते हैं कि इस का क्या मतलब है? जिन आ़लिमों से यह पूछते थे वह हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० थे। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुझ से भी यह लोग मज़ाक़ के तौर पर पूछा करते थे। हज़रत अ़िक्रमा फ़रमाते हैं कि उस समय इन की आयु बहुत कम थी, लेकिन इस छोटी सी उम्र में भी अल्लाह ने उन को अ़िल्म व फ़ज़्ल से नवाज़ा था, कि लोग उन से दीनी मसाइल पूछते थे, (वहीदी)

७. यानी उन को नबी के कलाम से तसल्ली नहीं होती इस लिये दूसरों से पूछ कर तसल्ली करते हैं, लानत है ऐसे जाहिलों पर। जब कुरआन या हदीस मिल जाये तो फिर दूसरे किसी के कलाम को सुनने की ज़रूरत नहीं। अगर पूरी दुनिया के उलमा एक तरफ़ हो जायें और अल्लाह का रसूल एक तरफ़, जो कोई पक्का मुसलमान हो गा वह रसूल के फ़र्मान को आंख मूंद कर तस्लीम करे गा और उन नीम मुल्लाओं के कलाम को दीवार पर दे मारे गा। (वहीदी)

८. 'तक्वाहुम' इस का तर्जुमा कुछ लोगों ने यह किया है "उन की परहेज़गारी का सवाब उन को अ़ता करता है"। अ़ल्लामा सय्यद वहीदुज़्ज़माँ रह० लिखते हैं कि तक़्वा का मर्तबा यह है कि अल्लाह की मुहब्बत में आदमी डूब जाये और उस के सिवा किसी का ख़याल न रहे। (वहीदी)

فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ۝ فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ۝ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ

यह लो इस की निशानियाँ तो आ गयीं[९], फिर जब वह आ मौजूद हो गी तो उस समय उन को क्या (ख़ाक) नसीहत हो गी? १९. पस तुम (दिल से) जा . रखो कि अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं और अपने गुनाहों और तमाम मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों के लिये बख़्शिश माँगा करो[१०]। अल्लाह (तुम्हारी दौड़-धूप करना और किसी जगह) आना-जाना और ठहराना सब जानता है। २०. जिन लोगों➲

مَّرَضٌ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ
الْمَوْتِ ؕ فَاَوْلٰى لَهُمْ ﴿٢٠﴾ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ۫
فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ ۫ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا
لَّهُمْ ﴿٢١﴾ فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي
الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾ اَفَلَا
يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰى قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾ اِنَّ

➲को ईमान है वह कहते हैं: क्यों नहीं कोई ऐसी सूरत उतरती? (जिस में जिहाद का हुक्म हो) फिर जब साफ़ (और बेलाग) सूरत नाज़िल होती है जिस में जिहाद का ज़िक्र होता है (तो ऐ नबी!) तू देखता है कि जिन लोगों के दिलों में (कमज़ोरी की) बीमारी है (वह उन ईमानदारों से अलग हो जाते हैं और) वह तुझे यूँ ताकते हैं जैसे कोई मौत की बेहोशी में ताकता है। २१. पस हुक्म की ताबेदारी करनी और माकूल बात कहनी उन के हक़ में अच्छी होती। अगर किसी काम (यानी जिहाद वग़ैरह) का समय आ जाये, उस समय यह लोग अल्लाह के साथ किया हुआ वादा सच्चा करें तो उन के लिये बेहतर हो। २२. पस (अब तो तुम जैसे लोगों का यह हाल है कि) अगर तुम को हुकूमत मिल जाये तो निःसंदेह मुल्क में फ़साद करो और रिश्तों के संबन्धों को काट डालो[११] (क्योंकि तुम खुदग़रज़ हो) २३. यही (मतलबी और फ़सादी) लोग हैं जिन पर अल्लाह की लानत है और उन को अल्लाह ने बहरा और उन की आँखें बेनूर कर दी हैं। २४. क्या यह कुरआन पर ग़ौर नहीं करते या उन के दिलों पर (ग़फ़्लत के) ताले लगे हुये हैं।

....

९. यानी जब निशानियाँ आ चुकीं तो कियामत के आने में क्या शुब्हा रहा। सब से बड़ी कियामत की निशानी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का तशरीफ़ लाना था, यह निशानी आ चुकी, चाँद फट चुका, धुवाँ ज़ाहिर हो चुका। कुछ उलमा ने निशानियों से माल की बहुतात और तिजारत की ज़्यादती, झूठी गवाही, रिश्ता-नाता तोड़ना, अच्छे लोगों का कम होना और बुरे लोगों का अधिक होना मुराद लिया है। (वहीदी)

१०. 'बख़्शिश की दुआ माँगा करो' हालाँकि पैग़ंबर होते हैं। मगर उन की शान इतनी बड़ी होती है कि जो बातें हमारे हक़ में गुनाह नहीं वह उन के हक़ में गुनाह समझी जाती हैं। कुछ उलमा ने कहा कि उम्मत की शिक्षा के लिये इस प्रकार कहा गया है। हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मैं सौ बार इस्तिग़फ़ार करता हूँ और मेरे दिल पर भी ग़फ़्लत का पर्दा आ जाता है"। एक दूसरी रिवायत में फ़रमाया: "हर रोज़ सत्तर बार इस्तिग़फ़ार करता हूँ"। (वहीदी) नबियों का ख़ता से पाक होना अपनी जगह पर दुरूस्त है और इस आयत से कोई टकराव नहीं है, केवल ग़ौर-फ़िक्र और ईमान की ज़रूरत है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इन शब्दों के साथ इस्तिग़फ़ार किया करते थे: "अस्-तग़फ़िरुल्ला-हल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-वल् हय्युल् क़य्यूमु व-अतूबु इलैहि"। (राज़)

११. बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि जब अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ को पैदा कर चुका तो रहम खड़ा हुआ और रहमान (अल्लाह) से चिमट गया। पूछा गया: क्या बात है? उस ने कहा: यह स्थान है टूटने से तेरी पनाह में आने का। इस पर अल्लाह ने फ़रमाया: क्या तू इस बात से राज़ी नहीं कि तेरे मिलाने वाले को मैं मिलाऊँ और तेरे काटने वाले को मैं काट दूँ? उस ने कहा कि मैं इस पर बहुत प्रसन्न हूँ। इस हदीस को बयान करने के बाद हज़रत अबू हुरैरा रज़ि (जो इस हदीस के रावी हैं) ने फ़रमाया: अगर तुम चाहो तो यह आय: नं० २२ पढ़ लो।➲

➲एक दूसरी सनद से हदीस में है कि यह बात हज़रत अबू हुरैरा ने नहीं, बल्कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने खुद फ़रमाई। अबू दावूद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा वग़ैरह में है कि सरकशी, बग़ावत और संबन्ध तोड़ने के मुक़ाबला में कोई गुनाह इतना बड़ा और इतना बुरा नहीं जिस की बहुत जल्दी सज़ा दुनियाँ में और फिर इस की बुराई आख़िरत में बहुत बड़ी पहुंचती हो।

मुस्नद अहमद की एक रिवायत में है कि जो शख़्स चाहे कि उस की उम्र लम्बी हो और रोज़ी कुशादा हो वह संबन्धों का लिहाज़ करे। एक दूसरी हदीस में एक शख़्स ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा: मेरे नज़दीकी रिश्तेदार मुझ से रिश्ता तोड़ते हैं और मैं उन्हें माफ़ करता रहता हूँ, वह मुझ पर अत्याचार करते रहते हैं और मैं उन के साथ एहसान करता हूँ, वह मेरे साथ बुराइयाँ करते हैं क्या मैं उन से बदला न लूँ? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: नहीं, अगर ऐसा करो गे तो तुम सब के सब छोड़ दिये जाओ गे। तू रिश्तों को जोड़ने ही में लगा रह और याद रख! जब तक उस पर बाक़ी रहे गा अल्लाह की तरफ़ से तेरे साथ हर समय मदद करने वाला रहे गा। बुख़ारी शरीफ़ के अ़लावा दूसरी किताबों में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सिला रहमी (रिश्ते दारों के साथ नेक बर्ताव) अर्श के साथ लटकी हुयी है। वास्तव में नेक बर्ताव करने वाला वह नहीं जो किसी एहसान के बदले एहसान करे, बल्कि सही मानों में वह है जो रिश्तों को जोड़ने वाला हो, तू उस को तो काटता जाये और वह जोड़ता जाये"। मुस्नद अहमद की रिवायत में है कि रिश्ते-नाते क़ियामत के दिन रखे जायें गे उन को रानें हों गी हिरनी की रान के समान और वह बहुत तेज़ और साफ़-साफ़ शब्दों में बोले गी। पस वह जो उसे काटता था खुद ही काट दिया जाये गा और जो उसे मिलाता था मिलाया जाये गा। मुस्नद अहमद ही की एक अन्य हदीस में है कि रहम करने वालों पर रहमान भी रहम करता है। तुम ज़मीन वालों पर रहम करो, आसमान वाला भी तुम पर रहम करे गा। रहम, रहमान की तरफ़ से है। उस के मिलाने वाले को अल्लाह मिलाता है और उस के तोड़ने वाले को अल्लाह तोड़ता है। यह हदीस इमाम तिर्मिज़ी ने भी सहीह और हसन सनदों के साथ रिवायत की है।

हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ि० की अ़यादत (हाल-चाल पूछने) के लिये जब लोग गये तो आप फ़रमाने लगे: तुम लोग रिश्ते-नाते का लिहाज़ करो। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है: अल्लाह फ़रमाता है कि मैं रहमान हूँ और रहम का नाम मैं ने अपने नाम पर रखा है। इसे जोड़ने वाले को मैं जोड़ूँ गा और इस के तोड़ने वाले को मैं तोड़ूँ गा। एक दूसरी हदीस में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: रूहें मिली-जुली हैं जो अज़ल (आरंभ) ही से मेल कर चुकी हैं, वह भाई-चारा करती हैं। और जिन में वहाँ नफ़रत रही है यहाँ भी दूरी रहती है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया: "ज़बानी दावे बढ़ जायें और काम घट जायें" ज़बानी तो मेल-जोल हो, लेकिन दिल में कीना और नफ़रत हो, एक रिश्ते-दार, रिश्ते-दारों से बुरा व्यवहार करे, उस समय ऐसे लोगों पर अल्लाह की लानत होती है और उन के कान, बहरे और आँखें अन्धी कर दी जाती हैं। इस संबन्ध में और भी हदीसें मौजूद हैं। (मुहम्मदी)

إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِم مِّن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ﴿٢٥﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأَمْرِ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾

२५. जो लोग हिदायत मालूम हो जाने के बाद भी उल्टे पाँव (गुमराही के कुएँ में) जाते हैं, शैतान ने उन को धोका दे रखा है और उन को बेहतरी की उम्मीदें दिला रखी हैं। (यह इस हद तक पहुंचे हैं) कि जो लोग अल्लाह के उतारे हुये कलाम को नापसन्द करते हैं, २६. यह लोग (मुरतद लोगों से, जिन का ज़िक्र➲

فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ
وَأَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ أَسْخَطَ
اللّٰهَ وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾ أَمْ
حَسِبَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ أَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ
اللّٰهُ أَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ نَشَآءُ لَأَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ
بِسِيْمٰهُمْ ۭ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ الْقَوْلِ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ
مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَا۟ أَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾ إِنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَآقُّوا

इस आयत में है) उन से कहते थे कि हम कुछ बातों में तुम्हारी ही माना करें गे, और अल्लाह उन की काना फूसियों को ख़ूब जानता है। २७. भला उस समय क्या करें गे जब फ़रिश्ते उन को फ़ौत करते हुये उन के मुँह और पीठों पर चोट पहुंचायें गे। २८. यह इस लिये कि जो रास्ता अल्लाह को नापसन्द है यह उस पर चलते रहे हैं और अल्लाह की ख़ुश्नूदी को नापसन्द करते रहे तो अल्लाह ने भी उन के आमाल बर्बाद कर दिये। २९. क्या जिन के दिलों में बीमारी है वह समझते भी हैं कि अल्लाह उन की अ़दावतें निकाल नहीं फेंके गा[१२]? (यानी यह लोग या तो इस्लाम में आ जायें गे या मारे गुस्से और मौत के फ़ना हो जायें गे) ३०. और अगर हम चाहते तो तुझ को वह दिखा देते फिर तू उन के निशानों से उन को पहचान लेता। अब भी तू उन की बात-चीत के अन्दाज़ से उन को पहचान लेता है और अल्लाह को तुम्हारे आमाल सब मालूम हैं। ३१. हम तुम्हारी अवश्य जाँच करें गे यहाँ तक कि हम तुम में मुजाहिदीन और सब्र करने वालों को (आ़म जनता में) तमीज़ करा दें गे और तुम्हारे हालात पर सूचित करा दें गे। ३२. जो लोग (अल्लाह के अहकाम का) इन्कार करते हैं और अल्लाह की राह से (लोगों को) रोकते हैं और हिदायत की राहें उन को मालूम हो जाने के बाद रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की सख़्त मुख़ालिफ़त करते हैं।

....

१२. यानी क्या इन मुनाफ़िक़ों का यह ख़याल है कि उन की मक्कारी और चालबाज़ी का इज़्हार अल्लाह तआ़ला मुसलमानों पर नहीं करे गा? उन का यह ख़याल बातिल है। अल्लाह तआ़ला उन की मक्कारी इस प्रकार खोल दे गा कि हर अक़्ल रखने वाला उन्हें पहचान लेगा और उन की शरारतों से बच सके गा। इन की बहुत कुछ मक्कारियाँ सूरः तौबा (बराअत) में बयान हो चुकी है और बहुत हद तक उन के निफ़ाक़ का भी पोल खोल दिया गया है, यही कारण है कि उस सूरः (तौबा) का दूसरा नाम ही "फ़ाज़िहा" (लानत-मलामत करने वाली) रख दिया गया है।

'अज़ग़ान' का अर्थ है "दिली हसद, कीना-कपट, बुग़ज़-अ़दावत" इस के बाद अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है कि ऐ नबी! अगर हम चाहें तो उन का लेखा-जोखा तुम्हारे सामने रख दें ताकि तुम उन को ख़ूब अच्छी तरह से जान लो, लेकिन मैं ऐसा इस लिये नहीं करता कि अभी उन के ऊपर पर्दा पड़ा रहे, उन के अ़ैब ढके-छुपे रहें, हर एक की नज़र में ज़लील न हों। इस्लामी मामलात ज़ाहिर पर हैं और बातिन का हिसाब-किताब मेरे ज़िम्मा है। लेकिन अगर तुम कोशिश करो तो उन के बात-चीत के अन्दाज़ से उन्हें पहचान लो। तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि० फ़रमाते हैं: जो शख़्स अपने किसी अ़ैब को छुपाने की कोशिश करता है तो अल्लाह तआ़ला उस के चेहरे और उस की ज़बान से उसे ज़ाहिर कर देता है। एक हदीस शरीफ़ में है: जो शख़्स किसी राज़ को पर्दा में रखता है अल्लाह उसे उस पर ज़ाहिर कर देता है (अच्छा है तो अच्छा और बुरा है तो बुरा) इस की तफ़्सील

➲बुख़ारी शरीफ़ की शरह में बिल्कुल आरंभ में गुज़र चुकी है, अ़मल और अक़ीदे के निफ़ाक़ के बारे में वहाँ तफ़्सील मुलाहिज़ा करें।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने एक खुत्बे में हम्द व सना के बाद फ़रमाया: तुम में से कुछ लोग मुनाफ़िक़ हैं जिस का नाम लूँ वह खड़ा हो जाये। फिर आप ने फ़रमाया: फ़लाँ, फ़लाँ खड़े हो जायें यहाँ तक कि ३६ आदमियों के नाम गिनाये, फिर फ़रमाया: तुम लोग या तुम में से मुनाफ़िक़ हैं, अल्लाह से डरो। इस के बाद उन लोगों में से एक के सामने से हज़रत उमर रजि० गुज़रे। वह उस समय कपड़े से अपना मुहँ लपेटे हुए था। आप उसे खूब अच्छी तरह पहचानते थे। पूछा, क्या बात है? उस ने ऊपर वाली हदीस बयान फ़रमाई तो हज़रत उमर ने फ़रमाया अल्लाह तुझे बर्बाद करे।.........फिर आगे अल्लाह फ़रमाता है कि हम अहकाम भेज कर रोक-टोक कर के अच्छी तरह आज़मा लें गे कि तुम में से कौन मुजाहिद है और कौन सब्र करने वाला है? यह तो हर कोई जानता है कि अल्लाह को सारी बातों का इ़ल्म है (वह आज़माये या न आज़माये) तो आज़माने का मतलब यह है कि दुनिया के सामने खोल दे ताकि लोग अपनी आँखों से देख लें। इसी लिये हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० "ताकि हम जान लें" का तर्जुमा "ताकि हम देख लें" करते हैं। (तफ़्सीर मुहम्मदी)

الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ ۙ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَسَيُحْبِطُ أَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾ فَلَا تَهِنُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلْمِ وَأَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَتِرَكُمْ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾ إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۚ وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ أُجُورَكُمْ وَلَا يَسْأَلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾ إِنْ يَسْأَلْكُمُوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوا وَيُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾ هَا أَنْتُمْ هَٰؤُلَاءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَمِنْكُمْ مَنْ يَبْخَلُ ۖ وَمَنْ يَبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَفْسِهِ ۚ وَاللَّهُ الْغَنِيُّ وَأَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ ۚ وَإِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوا أَمْثَالَكُمْ ﴿٣٨﴾

वह अल्लाह (के दीन) को तनिक भर हानि नहीं पहुंचायें गे और उन के आमाल अल्लाह बर्बाद कर दे गा। ३३. ऐ मुसलमानो! तुम अल्लाह की और उस के रसूल की ताबेदारी (दिल से) किया करो और अपने आमाल बर्बाद न किया करो। ३४. जो लोग इन्कार करने वाले हैं और अल्लाह की राह से रोकते हैं, फिर वह कुफ़्र ही की हालत में मर जाते हैं तो उन लोगों को अल्लाह हर्गिज़ न बख़्शे गा। ३५. पस तुम सुस्त न हो और उन को सुलह की तरफ़ मत बुलाओ (बल्कि हमेशा मुक़ाबला पर डटे रहो) और तुम ही बुलन्द रहो गे, और अल्लाह तुम्हारे साथ है और वह तुम्हारे आमाल बर्बाद नहीं करे गा[१३]। ३६. हाँ, अगर दुनियावी ऐ़श व आराम ही पर लोभी हो (तो सुन लो कि) यह दुनिया की ज़िन्दगी खेल-तमाशा के अ़लावा कुछ नहीं। और अगर तुम ईमानदार बन जाओ और (बुरे कामों से) बचते रहो तो अल्लाह तुम को पूरा बदला दे गा और वह तुम से माल नहीं माँगे गा। ३७. (हाँ, इस में संदेह नहीं कि) अगर वह तुम से माल माँगे और➲

➲तुम को चिमट कर भी माँगे तो भी तुम बुख़्ल करो गे और तुम्हारे छुपे राज़ वह ज़ाहिर कर दे गा। ३८. ऐ (मुसलमान) लोगो! तुम को बतलाया जाता है कि अल्लाह की राह में ख़र्च करो फिर भी तुम में से कुछ लोग बुख़्ल करते हैं और जो बुख़्ल करता है वह अपने नफ़्स से बुख़्ल करता है (उस का वबाल उस की गर्दन पर हो गा) और अल्लाह (दुनिदा से) बेनियाज़ है। और तुम (हर समय उस के) मुहताज हो और अगर तुम (दीन से) मुँह मोड़ो गे तो वह तुम्हारे स्थान पर और कोई क़ौम ले आये गा (जो दीन की सेवा करें गे) फिर वह तुम्हारे जैसे (नालायक़) न हों गे।

....

१३. 'बर्बाद नहीं करे गा' इस लिये तुम हर तरह से क़ौमी काम में लगे रहो। दुनिया मुक़ाबला का मैदान है, जो जितनी चेष्टा करे गा उतना ही फल पाये गा। दुनिया में इ़ज़्ज़त के साथ रहने का यही एक रास्ता है कि आदमी हर प्रकार के क़ौमी मुक़ाबले में मज़बूत रहे। तुम्हारी किसी प्रकार की कमज़ोरी को देख कर दुश्मन हमला करने की न सोचे। (सनाई)

'अल्लाह तुम्हारे साथ है' (आयत ३५) यानी अल्लाह स्वयँ अपनी ज़ात के साथ तुम्हारे साथ मौजूद है, यह नहीं मुराद है, बल्कि उस की सहायता और सहयोग, और उस का फ़ज़्ल व करम हर हाल में शामिल रहना मुराद है। 'वह तुम्हारे साथ है' इस जुम्ले पर ऐसे ही ईमान लाना फ़र्ज़ है जैसे कि उस के अर्श पर मुस्तवी होने पर ईमान लाना फ़र्ज़ है। इस के माना व मुराद में खोज-कुरेद करना ठीक नहीं उस के साथ होने की कैफ़िय्यत अल्लाह ही जानता है। और इस के बारे में सवाल व जवाब करना बिद्अ़त और गुमराही है। (राज़)

सूरः फ़त्ह— (48)

सूरः फ़तह (विजय) मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में २९ आयतें और ४ रुकूअ़ हैं। शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. (ऐ नबी अ़लैहिस्सलाम) हम ने तुझे खुली फ़तह दी हुयी है' (जो बहुत जल्द ज़ाहिर हो गी) २. ताकि अल्लाह तुझ पर ज़ाहिर करे कि उस ने तेरे अगले-पिछले सारे गुनाह बख़्शे हुये हैं और (ताकि अल्लाह) तुझ पर अपनी (मुक़द्दर की हुयी) नेमत पूरी करे तुझे सीधे रास्ते पर पहुंचाये। ३. और तेरी ज़बर्दस्त मदद करे (यह सब यक़ीन जानों हो कर रहे गा) ४. वह अल्लाह ही था जिस ने ईमानदारों के दिलों में तसल्ली नाज़िल की थी ताकि (वह➲

अल्लाह की तरफ़ झुकें और) उन के (पहले) यक़ीन में तरक़्क़ी हो (काफ़िरों की कसरत तो ऐसी है कि पिद्दी क्या और पिद्दी का शूर्बा क्या) और ज़मीनों की सेनायें अल्लाह के क़ब्ज़े में हैं (उस के हुक्म की मुख़ालिफ़त करना संभव नही) और अल्लाह बड़े ऌिल्म वाला और हिक्मत वाला है। ५. (यह सब कुछ जो हुदैबिय्या में हुआ इस लिये) ताकि अल्लाह ईमानदार मर्दों और औरतों को जन्नतों में दाख़िल करे जिन के नीचे (पानी की) नहरें जारी हैं, हमेशा उन में रहें गे और इस लिये हुआ कि अल्लाह उन से गुनाह दूर कर दे और अल्लाह के नज़दीक बड़ी कामियाबी है[२] (जिस को नसीब हुई उस का बेड़ा पार)

....

१. 'खुली फ़तह दी है' आज कल के कट्टर बिद्अती इस आयत के तर्जुमा में गुलू करते हुये यूँ करते हैं "ऐ हबीब! हम ने ज़मीन व आकाश और कुल काइनात (ब्रहमान्ड) की कुंजियाँ अब आप के हवाले कर दीं" अब आप ही दुनिया के कुल मुख़्तार हैं। इस आयत का यह तर्जुमा सरासर खुली हुयी तहरीफ़ और फेर बदल है- अल्लाह इन से निपटे, यह कहाँ बहके जा रहे हैं (राज़)

२. शाने-नुज़ूलः- हुदैबिय्या की सुलह बज़ाहिर ज़िल्लत और पराजय की सुल्ह नज़र आती है और सुल्ह की शर्तों को पढ़ने के बाद ज़ाहिर में तो यही महसूस होता है कि तमाम मुद्दों पर फ़ैसला कुफ़्फ़ारे मक्का के ही हक़ में हुआ। चुनान्चे हज़रत उमर और दूसरे चन्द सहाबा सुल्ह की ज़ाहेरी सतह को देख कर बड़े ग़मगीन और बेचैन हुये। उन का कहना था कि चौदह-पंद्रह सौ बहादुर मुसलमान सिपाहियों के सामने कुरैश और उन के अनुयायियों की भीड़ कोई चीज़ नहीं, इस लिये तमाम मुद्दों का फ़ैसला तल्वार द्वारा होना चाहिये था। मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की आँखें उन हालात और अन्जाम को देख रही थीं जो दूसरे की निगाहों से ओझल थे। अल्लाह ने आप का सीना सख़्त से सख़्त विपरीत परिस्तिथयों में भी बर्दाशत के लिये खोल दिया था, इस लिये आप बेपनाह सब्र और तवक्कुल के साथ उन की हर शर्त को कुबूल फ़रमाते रहे और अपने सहाबा को "अल्लाह और उस का रसूल बेहतर जाने" कह कर तसल्ली देते रहे, यहाँ तक कि इस सूरः का नुज़ूल हुआ और अल्लाह ने इस सुल्ह और फ़ैसला का नाम "फ़त्हे मुबीन" (खुली जीत) रखा। लोग इस पर भी आश्चर्य प्रकट करते थे कि या रसूलुल्लाह! क्या यह फ़तह है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हाँ, बहुत बड़ी फ़त्ह और विजय।

हक़ीक़त यह है कि सहाबा की जिहाद पर बैअ़त और मामूली छेड़-छाड़ के बाद कुफ़्फ़ार का डर कर और घबरा कर सुलह की तरफ़ झुकना और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का जंग पर पूरी कुदरत रखने के बावजूद माफ़ कर देना और महज़ बैतुल्लाह की ताज़ीम की ख़ातिर उन के बेहूदा मुतालबों पर कुछ भी नाराज़ न होना, यह वाक़िआत एक तरफ़ अल्लाह की खुसूसी मदद और रहमत के जल्द आने का ज़रीआ बनते थे और दूसरी तरफ़ दुश्मनों के दिल पर इस्लाम की अख़्लाक़ी और रूहानी ताक़त और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शाने पैग़ंबरी का सिक्का बिठा रहे थे। अगर्चे मुआ़हिदा लिखते समय ज़ाहिर तौर पर देखने में कुफ़्फ़ार की जीत नज़र आती थी, लेकिन ठन्डे दिल से सोचने वाले ख़ूब समझते थे कि वास्तव में तमाम फ़ैसले नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पक्ष में हो रहे हैं। अल्लाह तआ़ला ने इसी वजह से इस का नाम "फ़तहे मुबीन" (खुली जीत) रख कर आगाह कर दिया यह सुल्ह इस वक़्त भी फ़तह है और भविष्य के लिये भी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिये बेशुमार कामियाबी के दर्वाज़े खोलती है। इस के बाद काफ़िरों और मुसलमानों को एक दूसरे के साथ उठने-बैठने और मिलने-मिलाने का मौक़ा हाथ आया। कुफ़्फ़ार मुसलमानों की ज़बान से इस्लाम की बातें सुनते और उन के चाल-ढाल देखते तो खुदबखुद इस्लाम की तरफ़ झुकते। नतीजा यह हुआ कि हुदैबिय्या की सुल्ह और फ़तह तक (यानी लग-भग दो वर्ष की मुद्दत में) इतनी अधिक मात्रा में लोग इस्लाम लाये कि कभी भी इतनी मात्रा में नहीं

लाये थे। ख़ालिद बिन वलीद और अ़मर बिन आ़स जैसे नामी ग्रामी सहाबी उसी दौरान ईमान लाये। यह जिस्मों के बजाए दिलों को फ़तह कर लेना इसी सुल्ह हुदैबिय्या की अ़ज़ीम बर्कत थी। और अब इस्लामी जमाअ़त चारों तरफ़ इस क़दर फैल गयी थी कि मक्का को फ़तह कर के हमेशा के लिये शिर्क की गन्दगी से पाक कर देना बिल्कुल सरल हो गया।

हुदैबिय्या के मौक़े पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ केवल डेढ़ हज़ार सहाबा थे, लेकिन दो वर्ष के बाद मक्का की फ़तह के समय दस हज़ार सहाबा का लश्कर आप के साथ था। सच तो यह है कि न सिर्फ़ फ़तह मक्का और फ़तह ख़ैबर, बल्कि आइन्दा की जंगों में विजय प्राप्त करने में सुल्ह हुदैबिय्या की ज़बर्दस्त भूमिका रही है। और उस सब्र व तहम्मुल, बर्दाश्त और बैतुल्लाह शरीफ़ की इ़ज़्ज़त की बदौलत जो सुल्ह के मौक़ा पर देखने में आयी जिस से ख़ैर का दर्वाज़ा खुला, इस का कौन अन्दाज़ा कर सकता है। हाँ, थोड़ा सा इशारा अल्लाह तआ़ला ने इन आयतों में बयान फ़रमाया है यानी, जैसे दुनिया के बादशाह किसी बहुत बड़े जनरल को ख़ुसूसी तम्ग़ों से नवाज़ते हैं, तो अल्लाह तआ़ला ने भी इस खुली जीत के बदले में आप को चार चीज़ें अ़ता फ़रमायीं

(१) हमेशा तक की सब कोताहियाँ (जो आप के बुलन्द मर्तबे के एतिबार से कोताही समझी जायें) बिल्कुल माफ़ हैं। ख़ुसूसी बात अल्लाह ने आप के अ़लावा और किसी बन्दे के लिये नहीं फ़रमायी। मगर हदीस शरीफ़ में आता है कि इस आयत के नाज़िल होने के बाद तो आप की इ़बादत और ज़िक्र में और अधिक इज़ाफ़ा हो गया। आप इतनी ज़्यादा इ़बादत करते थे कि रातों को खड़े-खड़े पाँव सूज जाते थे और लोगों को देख कर रहम आता था। सहाबा आप से अनुरोध करते कि अल्लाह ने जब्कि आप की अगली-पिछली ख़तायें माफ़ कर दी हैं, फिर आप इतनी ज़्यादा मेहनत क्यों करते हैं? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उत्तर देते: क्या मैं उस का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूँ? ज़ाहिर बात है अल्लाह तआ़ला भी ऐसी बशारत उसी बन्दे को सुनायें गे। जो सुन कर निडर न हो जाये, बल्कि और अधिक अल्लाह से डरने लगे।

(२) आप को शफ़ाअ़त का मर्तबा अ़ता फ़रमाया। एक लंबी हदीस में है कि जब तमाम मख़्लूक़ जमा हो कर हज़रत ई़सा मसीह अ़लै० के पास जमा हों गे तो वह कहें गे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास जाओ जो अन्तिम नबी हैं और जिन की अगली-पिछली ख़तायें अल्लाह माफ़ कर चुका है। (यानी इस शफ़ाअ़त में अगर मान भी लिया जाये कि कोई कोताही हो जाये तो वह भी पहले ही माफ़ हो चुकी है) इस लिये उन के अ़लावा और कोई शफ़ाअ़त नहीं कर पाये गा। (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

नोटः- ऊपर बयान फ़रमाया कि आप को चार चीज़ों से नवाज़ा गया, लेकिन हाशिया में केवल दो ही का बयान है...................... ख़ालिद।

عَظِيمًا ۙ وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَ
الْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّآنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ
السَّوْءِ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَ غَضِبَ اللّٰهُ
عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ
مَصِيْرًا ۝ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ

६. और ताकि मुनाफ़िक़ मर्दों और महिलाओं और मुश्रिक मर्दों और महिलाओं को जो अल्लाह के हक़ में बदगुमानी करते हैं अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब करे उन पर बुरी गर्दिश आने वाली है और अल्लाह ने उन पर ग़ज़ब किया है और लानत की है और उन के लिये जहन्नम तय्यार कर रखी है, जो बहुत ही बुरा स्थान है। ७. और आसमानों और ज़मीनों की तमाम फ़ौजें अल्लाह के क़ब्ज़े में हैं और अल्लाह बड़ा

شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيرًا ۝٨ لِّتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَ
رَسُولِهِ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ ۚ وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً
وَّأَصِيلًا ۝٩ إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ
اللَّهَ ۚ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ ۚ فَمَن نَّكَثَ
فَإِنَّمَا يَنكُثُ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِمَا عَاهَدَ
عَلَيْهُ اللَّهَ فَسَيُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝١٠ سَيَقُولُ
لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا

ग़ालिब और बड़ी हिक्मत वाला है। ८. (ऐ रसूल!) हम ने तुझ को (उन लोगों के हाल पर) गवाह[३] (बना कर भेजा है) और शुभसूचना सुनाने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है। ९. ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उस के रसूल पर ईमान लाओ और उस की मदद करो और उस की इ़ज़्ज़त करो और उस (अल्लाह को) सुबह-शाम पाकी से याद किया करो। १०. जो लोग तुझ से (इताअ़त की) बैअ़त करते हैं (इस का अर्थ) इस के अ़लावा कुछ नहीं कि गोया वह अल्लाह से बैअ़त करते हैं (हक़ीक़त में) अल्लाह का हाथ उन के हाथों पर होता है[४], पस अब (भविष्य में) जो इस (बैअ़त के) वादे को तोड़ेगा (वह समझ ले कि) इस (तोड़ने) का वबाल उसी की ज़ात पर होगा, और जो कोई इस वादा को पूरा करे गा जो अल्लाह के साथ उस ने किया है तो ऐसे शख़्स को अल्लाह बहुत बड़ा अज्र दे गा। ११. पीछे रहने वाले दीहाती लोग तेरे सामने कहें गे कि हमारे माल और अ़याल {बीवी-बच्चों} ने हम को (दीनी ख़िदमत से) रोक रखा

....

३. गवाह इस लिये भेजा ताकि ऐ बनी आदम! तुम उस की और अल्लाह की तस्दीक़ करो और ईमान लाओ। और अल्लाह और उस के रसूल की इ़ज़्ज़त व एहतराम करो। कुछ उ़लमा का कहना है कि दोनों की ज़मीरें (सर्वनाम) अल्लाह की तरफ़ लौटती हैं और कुछ का कहना है कि रसूल की तरफ़ (यानी, "अल्लाह की मदद करो और उस अल्लाह की इ़ज़्ज़त करो") या "रसूल की मदद करो और उस रसूल की इ़ज़्ज़त करो"। इन लोगों का कहना है कि इस के पश्चात् वक़्फ़ (विराम) है और आगे से दूसरा जुम्ला शुरू होता है। दीगर अन्य मुफ़स्सिरों का कहना है कि "मदद और इ़ज़्ज़त" से मुराद यह है कि उस के दीन की मदद करे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की इ़ज़्ज़त और उन का एहतिराम वाजिब और फ़र्ज़ है। ज़रा भी अगर कोई तौहीन करे गा तो वह हमेशा के लिये महरूम रहे गा। आगे फ़रमाया: अल्लाह की सुब्ह-शाम तस्बीह बयान करो यानी "सुब्हा-नल्लाहि वबिहम्दिही" कहो। इस से कुछ लोगों ने नमाज़ पढ़ना मुराद लिया है। (हक़्क़ानी)

४. हुदैबिय्या के स्थान से जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मक्का में हज़रत उसमान ग़नी रज़ि० को संदेश दे कर भेजा तो क़ुरैश ने उन को वहीं क़ैद कर लिया, लेकिन यह ख़बर फैल गयी कि क़त्ल कर दिये गये। यह सुन कर मुसलमानों के अन्दर जोश पैदा हो गया और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने लोगों से बैअ़त लेना शुरू कर दिया। आप सायादार दरख़्त के नीचे तशरीफ़ रखते थे, सहाबा आते और आप के हाथ पर हाथ रख कर यह वादा करते थे कि हम भागें गे नहीं, बल्कि लड़ाई लड़ें गे। अनुमानतः चौदह सौ आदमियों ने बैअ़त की, इस को "बैअ़त रिज़वान" कहते हैं। इन आयतों में इसी वाक़िए का ज़िक्र है और आगे भी इस का ज़िक्र आये गा।

इस क़िस्म के मुआ़हिदा को इस लिये बैअ़त कहते हैं कि बैअ़त करने वाला अपनी जान व माल को अल्लाह की राह में बेच देता है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से जिहाद के लिये भी बैअ़त होती थी और कभी हिजरत करने या बुराइयों के छोड़ने और कभी अल्लाह की याद में मुस्तहकम रहने पर भी। अहादीस की किताबों

➲में इस प्रकार के बहुत से वाक़िए मौजूद हैं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बाद बादशाहों की ख़िलाफ़त के लिये बैअ़त का दस्तूर जारी रहा। आज कल जो पीरज़ादे ख़ान्दानी पेशा समझ कर खाने-कमाने के लिये बैअ़त कर लेते हैं और शरीअ़त की राह से हट कर चलते हैं, यह बिल्कुल बेअस्ल और बेबुनियादी काम हैं (हक़्क़ानी) ऐसे झूठे और मक्कार पीरों से अल्लाह मुसलमानों को नजात दे-- आमीन! कुछ मौलाना टाइप के लोगों ने एक बैअ़त "बैअ़ते इमामत" के नाम से भी चला रखी है, काश यह "हक़ीक़ी इमामत" का मफ़्हूम समझ पाते तो इस का ऐसा मज़ाक़ न बनाते। (राज़)

وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ
مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۚ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ
مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ
بِكُمْ نَفْعًا ۚ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝
بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ
اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ
وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۖ وَكُنْتُمْ قَوْمًا ۢ بُوْرًا ۝
وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا
لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ۝ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ
يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ
غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ
اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ
يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ۗ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا

पस आप हमारे लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ फ़रमायें, यह लोग ज़बानों से ऐसी बातें कहते हैं जो दिलों में न हो। तू उन से कहः अगर अल्लाह तुम्हारे हक़ में नुक़्सान चाहे या फ़ाइदा का इरादा करे तो कौन है जो उसे रोके तुम्हारे लिये कुछ इख़्तियार रखे। हाँ, अ़ल्लाह को तुम्हारे आमाल की ख़बर है (अस्ल में बात कुछ न थी, न तुम को घर में मश्ग़ूली थी और न खेतों में काम था) १२. बल्कि तुम ने ख़याल किया था कि (इस मुसीबत के समय में) रसूल और मुसलमान कोई भी अपने बाल-बच्चों की तरफ़ कभी भी वापस नहीं आयें गे और यह ख़याल बड़ी सुन्दरता से तुम्हारे दिलों में जगह पकड़ चुका था और भी तुम (लोगों) ने बड़ी-बड़ी बदगुमानियाँ (दिल में की थीं) और तुम लोग बर्बाद होने वाले हो[५]। १३. (तुम ही से क्या ख़ुसूसिय्यत है) जो कोई अल्लाह और रसूल पर ईमान न लाये गा हम ने ऐसे काफ़िरों के लिये भड़कती हुयी आग तय्यार कर रखी है। १४. और तमाम आसमानों और ज़मीनों की हुकूमत अल्लाह ही के क़ब्ज़े में है, जिस को चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अ़ज़ाब करे (जिस की विस्तार से सूचना वह्यि द्वारा कर दी है) और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है। १५. जब तुम लोग (जिहाद की लड़ाई में) ग़नीमतें हासिल करने को निकलो गे तो पीछे रहने वाले लोग तुम से कहें गे कि हम को अनुमति दीजिये कि हम भी तुम्हारे (साथ नहीं तो पीछे) पीछे चलें, यह लोग अल्लाह के कलाम को बदलना चाहें गे (पस ऐ नबी!) तुम उन से कह दो कि तुम हर्गिज़-हर्गिज़ (काम में शरीक होने की ग़रज़ से) हमारे साथ न चलो गे

....

५. शाने-नुज़ूलः- मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम लग-भग चौदह सौ➲

➲आदमियों के साथ हिजरत के छठे साल उम्रा के इरादे से मक्का के लिये रवाना हुये और तमाम क़बीलों को भी चलने का आम एलान कर दिया, इस लिये कि कुरैश और दूसरे क़बीलों के बारे में डर था कि वह मुक़ाबला करें गे। अरब के चन्द क़बीले जैसे, बनू ग़िफ़ार, मुज़ैना और अश्जअ वग़ैरह जो मदीना के आस-पास में आबाद थे और ज़ाहिर में मुसलमान और इस्लाम पर अमल करने वाले थे, यह लोग इस डर से साथ नहीं गये कि दुश्मनों के हाथ से बच कर वापस न आयें गे, इस लिये साथ नहीं निकले और अपने घरों में ही बैठे रहे। चूंकि उन की यह बदगुमानी और वक़्त पर आँखें चुराना ईमान और तवक्कुल के ख़िलाफ़ था इस लिये इन पर डाँट-फटकार नाज़िल हुयी। और राह ही में यह सूरः नाज़िल कर के पहले से ही आप को सूचित कर दिया गया कि मदीना पहुंचो गे तो शरीक न होने वाले लोग आ-आ कर झूठे हीले बहाने करें गे।

चुनान्चे ऐसे ही हुआ, जब आप मदीना शरीफ़ पहुंचे तो उन्हों ने आ-आ कर झूठे हीले-बहाने पेश किये। सुब्हानल्लाह! अल्लाह का कलाम भी क्या कलाम है। सज़ा के वक़्त भी अन्जाम का ख़याल रहता है। चूंकि यह क़बीले अन्त में सच्चे दिल से मुसलमान और इस्लाम के सहयोगी होने वाले थे इस लिये इन के बारे में जहाँ यह फ़रमाया "अगर तुम्हें नुक़्सान पहुंचाना चाहे" तो तुरन्त बाद "और अगर फ़ाइदा भी पहुंचाना चाहे" का ज़िक्र कर दिया, क्योंकि आख़िर में इस्लामी बर्कत से यह भी लाभांवित हुये। और आयत के अन्त में "अल्लाह ग़फ़ूर और रहीम है" फ़रमा कर तौबा की तरफ़ आमादा फ़रमाया और बतला दिया कि तौबा का दर्वाज़ा खुला हुआ है। यहाँ पर धमकी के साथ तर्ग़ीब और वह भी एक ही कलाम में यह क़ुरआन का मोजिज़ा है।

'पीछे रहने वाले कहें गे' (आयत १५) यह पहले कलाम का ततिम्मा (Rejoinder Supplement) है। यानी जब तुम ग़नीमत हासिल करने जाओ गे तो यह पीछे रह जाने वाले तुम्हारे साथ जाने को कहें गे तो तुम उन को साथ न ले जाना और कह देना कि अल्लाह का हुक्म नहीं है, फिर वह हसद की वजह से तुम पर इल्ज़ाम रखें गे। दरअस्ल वह नादान हैं। हुदैबिय्या से लौटते हुये नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को यह शुभसूचना सुनाई थी कि बहुत जल्द तुम्हें एक और फ़तह और ग़नीमत हासिल होगी और उस में भी वही लोग शरीक हों गे जो हुदैबिय्या में थे। चुनान्चे जब आप मदीना वापस आये तो मुहर्रम सन् ७ हिज्री में ख़ैबर पर चढ़ाई की (ख़ैबर, मदीना शरीफ़ से उत्तर की तरफ़ चार मन्ज़िल की दूरी पर है) इस जंग में हुदैबिय्या में न शरीक होने वाले भी शरीक होना चाहते थे, लेकिन उन को शामिल होने से रोक दिया गया। 'कलामुल्लाह' से मुराद उस का वादा और हुक्म है जो ख़ास अहले हुदैबिय्या के शरीक करने का था। यह पीछे रहने वाले भी अगर शरीक होते तो इस में फ़र्क़ आ जाता।

अगली आयत में 'एक बड़ी जंगी क़ौम' से मुराद फ़ारस और रूम हैं, जिन से हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर फ़ारूक़ की ख़िलाफ़त के ज़माना में जंग हुयी थी और अरब के यह क़बीले भी बुलाये गये थे और उन्हों ने दिल खोल कर जंग की थी और लगातार फ़तह हासिल की थी। 'औ युस्लिमू-न' से इस्लाम लाना मुराद नहीं, बल्कि फ़र्माबर्दारी क़ुबूल कर लेना, जिज़्या देना मुराद है। इस आयत से हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर की ख़िलाफ़त का सच होना अच्छी तरह से साबित हो गया। चूंकि पीछे रह जाने वालों पर डाँट-फटकार नाज़िल हुयी थी इस लिये जिन के लिये वास्तव में किसी मजबूरी की वजह से जंग में शरीक न होने से कोई इल्ज़ाम नहीं, उन का भी बयान कर दिया गया कि अन्धा, लंगड़ा, और बीमार शरीक न हो तो उस पर कुछ गुनाह नहीं। इन के अलावा और भी लाचार और मजबूर हैं जिन की तफ़्सीर फ़िक़ह की किताबों में मौजूद है। इस के बाद फ़रमा दिया कि जो अल्लाह और रसूल का कहना माने गा वह जन्नत में जाये गा और जो नहीं माने गा वह सख़्त अज़ाब में गिरफ़्तार हो गा (हक़्क़ानी)

६. यह मत समझो कि ऐसे लोगों की मात्रा बहुत अधिक है। अल्लाह की क़ुदरत और क़ुव्वत के सामने कुछ भी नहीं, क्योंकि अल्लाह की हुकूमत की यह कैफ़िय्यत है कि तमाम आसमानों और ज़मीनों की हुकूमत.......(सनई)

كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُولُونَ بَلْ
تَحْسُدُونَنَا ۚ بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٥﴾
قُلْ لِلْمُخَلَّفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ إِلَىٰ
قَوْمٍ أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ تُقَاتِلُونَهُمْ أَوْ يُسْلِمُونَ ۖ
فَإِنْ تُطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ أَجْرًا حَسَنًا ۖ وَإِنْ
تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا
أَلِيمًا ﴿١٦﴾ لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ
حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ ۗ وَمَنْ يُطِعِ اللّٰهَ
وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ ۖ وَمَنْ يَتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٧﴾
لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ
تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ
السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ﴿١٨﴾ وَمَغَانِمَ

अल्लाह ने हम को ऐसा ही पहले से बताया हुआ है, फिर कहें गे बल्कि तुम हम से हसद करते हो, बल्कि वह लोग बात भी कम समझते हैं। १६. तू पीछे रह जाने वाले दीहातियों से कह दे कि बहुत जल्द तुम को एक बड़ी जंगी क़ौम की तरफ़ बुलाया जाये गा तुम उन से लड़ो गे फिर या तो वह मुसलमान हो जायें गे (यानी बाज़ वह लोग अन्तिम समय तक लड़ते रहें गे और बाज़ फ़र्मांबर्दारी इख़्तियार कर जायें गे) फिर तुम अगर इताअ़त करो गे तो अल्लाह तुम को अच्छा बदला देगा और अगर मुंह फेर चुके हो तो अल्लाह तुम को सख़्त अ़ज़ाब करे गा (दुनिया में दुश्मनों की ज़िल्लत में रहो गे) १७. अन्धा, लंगड़ा और बीमार उन पर कोई गुनाह नहीं (क्योंकि वास्तव में यह लोग माज़ूर हैं। और अल्लाह के हाँ यह आ़म क़ानून है कि किसी आदमी को उस की क़ुव्वत से अधिक हुक्म नहीं दिया जाता) और जो कोई अल्लाह और रसूल की ताबेदारी करे गा अल्लाह उस को बहिश्तों में दाख़िल करे गा जिन के तले नहरें जारी हैं और जो कोई मुंह फेरे गा अल्लाह उस को सख़्त अज़ाब करे गा। १८. अल्लाह ईमानदारों से राज़ी हुआ जब वह (हुदैबिय्या के स्थान पर) एक पेड़ के नीचे तुझ से बैअ़त करते थे उन के दिलों में (हक़ की हिमायत का जोश) था अल्लाह को सब मालूम था (अल्लाह ने उन को दुश्मनों के नर्ग़े {घेरे} से बचा लिया) और उन पर तसल्ली उतारी और उन को एक क़रीब फ़तह दी[७]।

....

७. इमाम इब्ने जरीर रह० लिखते हैं कि हुदैबिय्या वाले साल नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम काबा की ज़ियारत (उम्रा) की नीयत से रवाना हुये, साथ में क़ुर्बानी के जानवर भी थे। लग-भग चौदह सौ सहाबा आप के साथ थे। कुफ़्फ़ार को जब इस की सूचना मिली तो उन्हों ने जंग की तय्यारी आरंभ कर दी। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हुदैबिय्या के स्थान पर डेरा डाल दिया और उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि० को कुफ़्फ़ार के ज़िम्मेदारों के पास यह संदेश दे कर भेजा कि हम लोग लड़ने के लिये नहीं बल्कि काबा का तवाफ़ करने की निय्यत से निकले हैं इस लिये हमें तवाफ़ की अनुमति दी जाये। कुरैश वालों ने हज़रत उ़स्मान को क़ैद कर लिया। सहाबा में यह समाचार फैल गया कि उन्हें शहीद कर डाला ग्या। यह सुन कर आप ने सहाबा से बैअ़त लेनी शुरू कर दी। बैअ़त के लिये आप जिस पेड़ के नीचे तशरीफ़ रखते थे वह कीकर (बबूल) का था। किसी ने बेरी का और किसी ने केले ➲

➲का बताया है। तमाम ही सहाबा ने मुआ़हिदा किया कि हम उन से जंग करें गे और पीठ नहीं फेरें गे।

इमाम बैहक़ी ने सहीह सनदों के साथ रिवायत की है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ऐ अल्लाह! उ़स्मान, अल्लाह और रसूल के काम के लिये भेजे गये थे उन की तरफ़ से आप ने अपना एक हाथ रख कर उस पर दूसरा हाथ रखा और बैअ़त की। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का हाथ हज़रत उ़स्मान के हाथ से बेहतर था। इस को बैअ़ते-रिज़्वान इसलिए कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने उन बैअ़त करने वालों से अपनी रज़ामन्दी ज़ाहिर फ़रमाई। सहीह अहादीस में इस बैअ़त में शरीक होने वालों की बड़ी फ़ज़ीलत आयी है। इमाम अहमद ने हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह से रिवायत की है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिस ने यह बैअ़त की उन में से कोई भी जहन्नम में न जाये गा"। और भी बहुत सी हदीसों में उन के जन्नती होने की बशारत दी गयी है और बद्र की लड़ाई में शरीक होने वालों के बाद इन्हीं का मर्तबा बतलाया गया है। तमाम इतिहास कारों का इत्तिफ़ाक़ है कि इस बैअ़त में चारों ख़लीफ़ा शरीक थे, हज़रत उ़स्मान शरीक नहीं थे तो उन की तरफ़ से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बैअ़त फ़रमाई, इस मुद्दे पर किसी का भी इख़्तिलाफ़ नहीं है। जब यह बात साबित हो गयी तो इस में अब किसी शक व शुब्हे की गुन्जाइश नहीं रही कि वह जन्नती नहीं हैं और यह कि अल्लाह उन से राज़ी नहीं है। उन की बशारत के लिये आसमानी और क़ुरआनी दस्तावेज़ काफ़ी है। इस बात पर बड़ा अफ़सोस है कि कुछ लोगों ने कमज़ोर रिवायतों का सहारा ले कर (फ़िदक वग़ैरह के मामलात में) अबू बक्र और उ़मर फ़ारूक़ को अहले बैत का दुश्मन बता कर उन्हें बुरे नामों से याद करते हैं और फिर इस बद कलामी को अहले बैत से मुहब्बत का नाम देते हैं। आप ग़ौर करें कि उन की अच्छाइयाँ तो क़ुरआन में मौजूद हैं और उन की बुराइयाँ कमज़ोर, ज़ओ़फ़ और मौज़ूअ़ हदीसों में। फिर यह कैसे जायज़ हो सकता है कि क़ुरआन के नस्स को छोड़ कर मौज़ूअ़ और ज़ओ़फ़ हदीसों को बुनियाद बनाया जाये? जो शख़्स ज़रा भी अ़क़्ल रखता है वह सरलता से इस बात को समझ सकता है। सहीह बुख़ारी में है कि जिस पेड़ के नीचे बैअ़त ली गयी थी लोगों ने उसे बड़ा बर्कत वाला मान कर वहाँ आना-जाना शुरू कर दिया था, और इस बात की शंका ज़ाहिर होने लगी थी कि लोग उस पेड़ की पूजा-पाट आरंभ कर दें गे, इस लिये अल्लाह ने उस दरख़्त को ग़ाइब कर दिया। मुसन्निफ़ इब्ने अ़बू शैबा की रिवायत में है उस पेड़ को कटवा दिया गया (हक़्क़ानी-२९२)

नोटः- हज़रत उ़मर फ़ारूक़ रज़ि० ने अपने शासन काल में इस बबूल (कीकर) के पेड़ को जड़ से खोद कर फेंक दिया..................... ख़ालिद-

---

كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ⑲
وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ
لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ
اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ⑳
وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ۗ
وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ㉑ وَلَوْ قٰتَلَكُمُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا
وَّلَا نَصِيْرًا ㉒ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ مِنْ

१९. (इस के अ़लावा) और कई ग़नीमतें जिन को मुसलमान लेते रहे। और अल्लाह बड़ा ग़ालिब और बड़ी हिक्मत वाला है। २०. (सुनो!) अल्लाह ने तुम से बहुत सी (जीत और) ग़नीमतें देने का वादा किया है जिन को तुम हासिल करो गे, फिर (उसी) अल्लाह ने (अपनी मेहरबानी से) यह ग़नीमत (ख़ैबर की फ़तह) तुम को जल्दी दिलवा दी और लोगों को तुम से रोक दिया (और अधिक संख्या में होने के बावजूद वह तुम पर ग़ालिब न आ सके) ताकि यह वाक़िआ़ ईमानदारों के लिये सहीह➲

قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۝ وَهُوَ
الَّذِیْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ
بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۝ هُمُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْیَ

निशानी हो और तुम को सीधी राह पर पहुंचा दे। २१. (इन के अ़लावा) और फ़तह भी हैं जिन पर तुम ने अभी क़ाबू नहीं पाया, मगर अल्लाह के ज़िल्म में (मुसलमानों के लिये) मुक़द्दर हैं (वह ज़रूर मिलें गी) और अल्लाह हर एक काम पर क़ुदरत रखता है। २२. काफ़िर लोग (लड़ने ही पर आमादा हो कर) अगर तुम से लड़ने लगते तो वह पीठ फेर कर भाग जाते (ऐसे भागते कि) फिर किसी को न अपना सहयोगी पाते और न सहायक। २३. (तुम लोग हमेशा) अल्लाह के क़ानून को सामने रखा करो जो पहले क़ौमों में गुज़रा है (और आइन्दा भी जारी रहे गा) और अल्लाह के क़ानून में तुम कभी भी तब्दीली न पाओ गे। २४ (सुनो!) वही अल्लाह (तुम्हारा मदद गार है) उन (मुख़ालिफ़ों) के हाथों को मक्का के मैदान में तुम से रोक दिया (उन को तुम पर आक्रमण करने की हिम्मत न हुयी) और उन पर क़ाबू देने के बाद तुम को उन से हटा लिया (यानी हुदैबिय्या के मैदान में जंग न होने दी) और जो कुछ तुम कर रहे थे अल्लाह सब को देखता था। २५. (वह लोग) वही तो हैं जो काफ़िर हैं और तुम को मस्जिदे हराम से उन्हों ने रोका और क़ुर्बानियों को क़ुर्बान गाह में पहुंचने से रोक रखा

مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ؕ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ
وَنِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَئُوْهُمْ
فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ
اللّٰهُ فِیْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ اِذْ جَعَلَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ
الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰی رَسُوْلِهٖ
وَعَلَی الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰی وَكَانُوْٓا
اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمًا ۝
لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ
الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ
رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ ؕ فَعَلِمَ مَا لَمْ

वह अपने स्थान पर खड़ी की खड़ी रह गयीं। अगर मोमिन मर्द और मोमिन औ़रत न होते जिन को तुम (मुसलमान लोग) नहीं जानते थे (इस अन्जाने में कहीं) तुम उन को पाँव तले न रौंद देते फिर इस बेख़बरी (के अ़मल) से तुम को उन की वजह से (अल्लाह के हाँ से) नुक़्सान पहुंचता (सो अगर यह बात रुकावट न होती कि पोशीदा तौर पर ईमान लाने वाले मुसलमानों की जानें अकारण बर्बाद हों गी) तो अल्लाह तुम को (जंग करने की) अनुमति दे देता ताकि अल्लाह (उन काफ़िरों में से) जिस को चाहे अपनी रहमत (दीन इस्लाम) में दाख़िल करे। अगर वह छंटे हुये होते तो हम उन में से काफ़िरों को सख़्त अ़ज़ाब पहुंचाते २६. जब काफ़िरों ने अपने दिलों में जाहिलिय्यत की ज़िद पैदा कर ली थी तो (ऐसे हाल में)

تَعۡلَمُوۡا فَجَعَلَ مِنۡ دُوۡنِ ذٰلِكَ فَتۡحًا قَرِيۡبًا ۝٢٧

➲अल्लाह ने अपने रसूल और ईमान्दारों पर तसल्ली नाज़िल की और उन को अल्लाह ने कलिम-ए-तक़्वा (यानी हक़ गोई) पर जमाये रखा (क्योंकि रसूल की सुहबत से) वह इस पद के बहुत ज़्यादा हक़दार और योग्य थे और (सुरक्षित रखा क्योंकि) अल्लाह हर चीज़ को जानता है। २७. अल्लाह ने अपने रसूल का सपना बिल्कुल सच कर दिया[८/१] (जिस का विषय यह था) कि तुम लोग मस्जिदे हराम (काबा शरीफ़) में अवश्य दाख़िल हो गे इन् शाअल्लाह! इस हाल में कि तुम सर मुंडाये और बाल कटाये हुये हो गे किसी का ख़ौफ़ तुम को न हो गा (मगर चूंकि अल्लाह का इ़ल्म बड़ा कुशादा है और तुम्हारा इ़ल्म नाक़िस है) अल्लाह के ज्ञान में वह बात थी जो तुम्हारे (नाक़िस) इ़ल्म में न थी, पस अल्लाह ने (उस सपने के ज़ाहिर होने से पहले) एक क़रीबी फ़तह तुम को दी (जिस का नाम ख़ैबर है[८/२])

....

८/१. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ख़ाब में देखा कि आप मक्का तशरीफ़ ले गये और काबा शरीफ़ का तवाफ़ किया। आप ने इस का ज़िक्र सहाबा से मदीना ही में कर दिया था। हुदैबिय्या वाले वर्ष जब आप उ़म्रा के इरादे से चले तो इस ख़ाब की बिना पर सहाबा को यक़ीन था कि इस सफ़र में हम कामयाबी के साथ इस ख़ाब की ताबीर देख लें गे। लेकिन जब वहाँ के हालात बदले हुये देखे गये और बग़ैर बैतुल्लाह की ज़ियारत के वापस होना पड़ा तो उन सहाबा को बहुत भारी मालूम हुआ। चुनान्चे हज़रत उ़मर रज़ि० ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से फ़रमा दिया कि आप ने तो फ़रमाया था कि हम बैतुल्लाह जायें गे और तवाफ़ करें गे? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उत्तर दिया कि यह सहीह है लेकिन मैं ने तारीख़ तो नहीं बताई थी कि इसी वर्ष करें गे। हज़रत उ़मर ने कहा: हाँ, आप ने तारीख़ तो नहीं बताई थी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: फिर जल्दी क्या है? तुम बैतुल्लाह जाओ गे और तवाफ़ करो गे। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० को भी यही उत्तर दिया गया। इस आयत में जो 'इन् शअल्लाह' आया है, यह तहक़ीक़ और ताकीद के माना में है। यानी यह काम हो कर रहे गा। आख़िर एक समय आया जब सहाबा ने सन् ७ हिज्री मे उ़म्रा किया और सर मुंडाये, बाल कटाये। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह उ़म्रा ज़ीक़ादा सन् ७ हिज्री में फ़रमाया। हुदैबिय्या से आप ज़ीक़ादा के महीने में लौटे। ज़िल हिज्जा और मुहर्रम तो मदीना शरीफ़ में ही रहे, सफ़र के महीने में ख़ैबर पर आक्रमण किया और उस का कुछ हिस्सा फ़तह हुआ और कुछ हिस्सा सुल्ह पर क़ाबू में लिया गया (तफ़्सीर मुहम्मदी)

८/२. 'जिस का नाम ख़ैबर है' यह ख़ैबर मुल्क अ़रब में है। (सनाई)

هُوَ الَّذِيۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَهٗ بِالۡهُدٰى وَدِيۡنِ الۡحَقِّ لِيُظۡهِرَهٗ عَلَى الدِّيۡنِ كُلِّهٖ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيۡدًا ۝٢٨ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيۡنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الۡكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيۡنَهُمۡ تَرٰٮهُمۡ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبۡتَغُوۡنَ فَضۡلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضۡوَانًا سِيۡمَاهُمۡ فِىۡ وُجُوۡهِهِمۡ

२८. उसी अल्लाह ने अपना रसूल हिदायत और दीने हक़ के साथ भेजा है ताकि उस (नबी) को (ग़ैर इस्लाम) सब (अहले) मज़ाहिब पर ग़ालिब करे। (यक़ीन जानो कि ऐसा ही हो गा) अल्लाह गवाह काफ़ी है[१]। २९. मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वास्तव में) अल्लाह के रसूल हैं। और जो ईमान्दार उन के साथ हैं वह कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में डटे हुये हैं, आपस➲

مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِی التَّوْرٰىةِ ۖۛۚ وَ
مَثَلُهُمْ فِی الْاِنْجِیْلِ ۚ۫ۛ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْئَهٗ فَاٰزَرَهٗ
فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰی عَلٰی سُوْقِهٖ یُعْجِبُ الزُّرَّاعَ
لِیَغِیْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِیْمًا ۠

में एक दूसरे पर बड़े मेहरबान हैं उन को रूकूअ़ और सज्दा करते देखते हो वह (उस नमाज़ में) अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की ख़ुशनूदी चाहते हैं, उन की (निक बख़्ती की) निशानी उन की नमाज़ों के असर से उन के चेहरों में (मालूम होती) है। यही विशेष्तायें उन (भले मुसलमानों) की तौरात में लिखी हैं और इन्जील में उन की विशेष्तायें एक खेती की तरह लिखी हैं जिससे (पहले) एक सूई (की तरह की बारीक अनकुरी) कली, फिर वह (सूई) मज़बूत हुयी फिर मोटी हुयी और फिर वह अपनी पिंडली (ताल) पर सीधी (ऐसी) खड़ी हुयी कि किसानों को भली लगती है, कुफ़्फ़ार (नालाइक़) उन की (तरक़्क़ी की) वजह से जलते हों गे। अल्लाह ने इमान्दारों से और जो उन में से नेक आमाल करते हैं उन से बख़्शिश और बड़े बदला का वादा किया हुआ है

....

९. हमारे सूबा पंजाब में एक साहब मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी हुये हैं (जिन का देहान्त २६ मई १९०८, सन् १३२६ हिज्री में हुआ है) इन्हों ने आरंभ में नबी होने का दावा किया, फिर बाद में मसीह मौऊद तक का दावा कर डाला। उन्हों ने अपने नबी होने के दावा में एक किताब "बराहीने अहमदिय्या" लिखी और दावा किया कि यह किताब अल्लाह ने लिखवाई है। इस किताब में उन्हों ने इस आयत नं० २८ के बारे में लिखा है कि यह आयत जिस्मानी और मुल्की सियासत के तौर पर हज़रत मसीह के हक़ में भविष्यवाणी है और जिस ग़लबा का वादा दिया गया है वह ग़लबा मसीह अ़लै० के ज़रिअ़ा ज़ाहिर हो गा और जब हज़रत मसीह पुन: इस दुनिया में तशरीफ़ लायें गे तो उन के हाथ से दीन इस्लाम तमाम दुनिया में फैल जाये गा (बराहीने अहमदी-४९८,४९९) इस कथन का मतलब बिल्कुल साफ़ है। मिर्ज़ा साहब का कहना है कि इस आयत में जिस इस्लाम के ग़लबा का ज़िक्र है वह दो तरह से हो गा (१) दीनी (२) सियासी। यानी मसीह मौऊद जो उम्मते इस्लामिय्या के लीडर बन कर दोबारा इस दुनिया में आयें गे उन की इस्लामी हुकूमत तमाम दुनिया में हो गी और वह इस्लामी हुकूमत की तब्लीग़ करें गे, यहाँ तक कि सारी दुनिया में इस्लाम ही इस्लाम फैल जाये गा। मिर्ज़ा साहब ने इस के बाद खुद मसीह मौऊद और मेहदी मौऊद होने का दावा किया और फ़रमाया कि मैं ही दोनों पदों का मालिक हूँ। चुनान्चे अपनी मश्हूर किताब "इज़ालतुलऔहाम" में अपने मसीह मौऊद होने का दावा कई पन्नों में पेश किया है (देखें पृष्ठ-६६५)

उन के दावे में तब्दीली हुयी, लेकिन शुक्र है कि इस आयत की तफ़्सीर के मुतअ़ल्लिक़ कोई तब्दीली नहीं की, बल्कि अपने अन्तिम लेख में भी अपनी पहली राय को बड़ी ताकीद से ज़ाहिर किया है। चुनान्चे मिर्ज़ा साहब लिखते हैं "चूंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुव्वत का ज़माना क़ियामत तक फैला हुआ है और ख़ातमुल् अन्बिया हैं इस लिये अल्लाह ने यह चाहा कि क़ौमी वहदत नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में ही कमाल तक पहुंच जाये। क्यों कि यह सूरत आप के ज़माने के ख़ातमा पर दलालत करती थी, यानी शुब्हा गुज़रता था कि आप का ज़माना वहीं ख़त्म हो गया। क्यों कि जो अन्तिम काम आप का था वह उसी ज़माना में अन्जाम तक पहुंच गया, इसलिये अल्लाह ने इस काम की तक्मील की ताकि तमाम क़ौमें एक क़ौम की तरह बन जायें और एक ही मज़हब पर हो जायें, मुहम्मदी ज़माना के आख़िरी हिस्सा में डाल दी जो क़ियामत के क़रीब का ज़माना

है। और इस तक्मील के लिये इसी उम्मत में से एक नायब मुक़र्रर किया जो मसीह मौऊ़द के नाम से जाना जाता है और उसी का नाम ख़ातमुल् खुलफ़ा है। पस मुहम्मदी ज़माना के सर पर नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं और उस के आख़िर में मसीह मौऊ़द हैं। और ज़रूरी था कि यह सिलसिला दुनिया का न टूटे जब तक वह पैदा न हो, क्यों कि क़ौमी वहदत की ख़िदमत इसी नायाब नबी के ज़माना से वाबस्ता की गयी है और इस की तरफ़ यह आयत इशारा करती है और वह आयत सूरः फ़तह की यही आयत नं० २८ है (चश-म-ए-मारिफ़त-८२,८३) इस किताब के **Title** पर इस किताब के प्रकाशित होने की तिथि १५ मई १९०८ दर्ज है और मिर्ज़ा साहब का इन्तिक़ाल २६ मई १९०८ को हुआ है, इस लिये यह किताब आप की अन्तिम किताब है।

मिर्ज़ा की किताब से ऊपर जो टुकड़ा नक़ल किया गया है उस का अर्थ बिल्कुल स्पष्ट है यानी मसीह मौऊ़द के आने पर दुनिया में सियासी और दीनी ग़लबा इस्लाम ही का हो गा, इस्लाम ही की हुकूमत हो गी, इस्लाम ही तमाम क़ौमों का दीन हो गा, हर प्रकार के क़ानून इस्लाम ही के लागू हों गे। आप हज़रात मिर्ज़ा साहब की किताब "बराहीने-अहमदिय्या" और "चश्म-ए-मारिफ़त" के दोनों हवालों को ग़ौर से पढ़ें और देखें कि दोनों में कितनी यकसानियत है। दोनों ही का मतलब वही है जो हम ने बताया, यानी मसीह मौऊ़द के ज़माना में दुनिया में इस्लाम ही का बोल बाला हो गा। लेकिन हक़ीक़त यह है कि मसीह मौऊद (मिर्ज़ा) आयें और चले गये मगर यह बात किसी से पोशीदा नहीं कि इस्लाम की हालत पहले से बदतर बल्कि बदतरीन हो गयी। इस बात का सबूत (कि मुसलमान पहले से कहीं ज़्यादा नीचे चले गये) देने की ज़रूरत नहीं। जब ब्रिटिश हुकूमत के बादशाह का वली अ़हद (राजकुमार) वेल्ज़ सन् १९०२ ई० में हिन्दुस्तान आया तो मिर्ज़ा के सुपुत्र मियाँ महमूद (जो मिर्ज़ा के मरने के बाद ख़लीफ़ा हैं) ने उन को एक किताब तुहफ़ा में पेश की जिस का नाम "तुहफ़-ए-शहज़ादा विल्ज़" है। इस किताब में क्या कुछ लिखा हुआ है, दो-एक जुम्ले सुन लीजिये। क़ादियान के ख़लीफ़ा राजकुमार को मुख़ातब कर के लिखते हैं: "ऐ शहज़ादा मुकर्रम! यह तुहफ़ा इस जमाअ़त अहमदिय्या की तरफ़ से आप की सेवा में पेश हो रहा है जिस ने तीस वर्ष से अधिक समय तक आप की दादी आँजहानी मल्का विक्टोरिया और उन के बाद आप के दादा आँजहानी ऐडवर्ड VII और फिर आप के मुकर्रम व मुहतरम वालिद मौजूदा बादशाह की वफ़ादारी और इताअ़त में अपनों और ग़ैरों से हर प्रकार की बड़ी तक्लीफ़ें उठाई हैं, और इस के बदले में हुकूमत से कभी भी बदला नहीं चाहा। इस जमाअ़त का आरंभ से ही यह दस्तूर रहा है कि इस जमाअ़त की बुनियाद डालने वाले ने यह शर्त रखी थी कि मौजूदा हुकूमत की पूरी फ़र्माबर्दारी की जाये" (पृष्ठ-५०४) मतलब यह है कि क़ादियानी उम्मत अपनी ज़बान से कह रही है कि हम ने आप की ऐसी इताअ़त की है कि किसी ने नहीं की हो गी। हम इस जुम्ले को नक़ल कर के यह दिखाना चाहते हैं कि सियासत और हुकूमत कहाँ? खुद मिर्ज़ा साहब और उन का ख़ान्दान भी अभी तक पस्ती में (प्रजा की हैसियत से) हैं, और दूसरों की तो बात ही छोड़िये। जब यह प्रश्न मिर्ज़ा साहब के मुरीदों के सामने रखा गया और बताया गया कि वह काम जिस के लिये मिर्ज़ा आये थे, चूंकि वह उन के आने से पूरा तो कौन कहे, आधा भी नहीं हुआ (रिसाला शहादते मिर्ज़ा) तो उन्हों ने उत्तर दिया कि मसीह मौऊ़द का ज़माना ३०० वर्ष तक फैला हुआ है। मतलब यह कि जब तक ३०० वर्ष समाप्त न हो जायें, यह एतराज़ नहीं उठाया जा सकता। (तिर्याक़ुल क़ुलूब- ३७८)

मिर्ज़ा क़ादियानी ने खुद उस किताब (चश्मए-मारिफ़त) में इस उत्तर को गोया ग़लत बताया हुआ है। चुनान्चे उन के अल्फ़ाज़ इस बारे में यह हैं: "(कामिल ग़लबा) नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना में मुकम्मल तौर पर ज़ाहिर होना असंभव था, क्योंकि इस के लिये यह शर्त थी कि दुनिया की तमाम क़ौमों को जो पूरब, पश्चिम और उत्तर, दक्षिण में रहती हैं, यह मौक़ा मिल सके कि वह एक दूसरे के मुक़ाबिला पर अपने मज़हब की ताईद में अल्लाह से चाहें, जो आसमानी निशानों से इस मज़हब की सच्चाई पर गवाही दे। मगर जिस दावत में एक क़ौम, दूसरी क़ौम से ऐसी पोशीदा और पर्दे में थी, गोया एक दूसरी दुनिया में रहती थी, तो यह मुक़ाबला असंभव था। और इस ज़माना में भी इस्लाम की तक्ज़ीब इन्तिहा तक नहीं पहुंची थी और अभी वह वक़्त नहीं

➲आया था कि अल्लाह की ग़ैरत तक़ाज़ा करे कि इस्लाम की ताईद में आसमान से निशानों की वर्षा हो। मगर हमारे ज़माना में गन्दी तहरीरों के ज़रीआ से इतनी ज़्यादा नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और इस्लाम की तौहीन की गयी है कि कभी किसी ज़माना में किसी नबी की तौहीन नहीं हुयी। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना में तो साबित नहीं होता कि किसी ओ़साई या यहूदी ने इस्लाम की रद्द और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तौहीन में दो या तीन पन्ने का रिसाला भी लिखा हो, मगर अब इसी क़द्र नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तौहीन और इस्लाम की रद्द में किताबें लिखी गयी हैं और पोस्टर प्रकाशित किये गये हैं और अख़्बार में तमाम संसार में फैलाई गयीं कि अगर वह तमाम जमा की जायें तो एक बड़े पहाड़ के बराबर अंबार होता है, बल्कि इस से ज़्यादा उन अन्धों ने इस्लाम को हर एक बर्कत से वन्चित किया है। और दावा किया है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कोई आसमानी निशान नहीं दिखाया और इस बात पर ज़ोर दिया है कि दुनिया में इस्लाम का नाम-निशान न रहे। और एक आजिज़ इन्सान की खुदाई साबित करने के लिये अल्लाह के पाक दीन और पाक रसूल की वह तौहीन की गयी है जो इब्तिदा से आज तक किसी दीन और किसी रसूल की ऐसी तौहीन नहीं हुयी और वास्तव में यह ऐसा ज़माना आ गया है कि शैतान अपने चेलों के साथ पूरा ज़ोर लगा रहा है कि इस नाम को मिटा दिया जाये। और चूंकि निःसंदेह सच्चाई की झूठ के साथ यह अन्तिम लड़ाई है इस लिये ज़माना भी इस बात का हक़ रखता था कि इस की इस्लाह के लिये कोई अल्लाह का नामवर आये। पस वह मसीह मौऊ़द है जो मौजूद है और ज़माना हक़ रखता था कि इस नाजुक समय में आसमानी निशानों के साथ अल्लाह तआ़ला की दुनिया पर हुज्जत पूरी हो। सो आसमानी निशान ज़ाहिर हो रहे हैं और आसमान जोश में है कि इस क़द्र आसमानी निशान ज़ाहिर करे कि इस्लाम की विजय का डंका हर एक मुल्क में और दुनिया के कोने-कोने में बज जाये। ऐ क़ुदरत रखने वाले ख़ुदा! तू जल्द वह दिन ला कि जिस का फ़ैसला करने का तू ने इरादा किया है वह ज़ाहिर हो जाये और दुनिया में तेरा जलाल चमके और तेरे दीन और तेरे रसूल की फ़तह हो। आमीन (चश्मए मारिफ़त- ८६, ८७)

यह जुम्ला पुकार-पुकार कर कह रहा है कि मसीह मौऊ़द जिस ज़माना में मौजूद हो गा उस ज़माना में इस्लाम का ग़ल्बा होना मुक़द्दर है, जो अफ़्सोस कि पूरा नहीं हुआ। पस नतीजा साफ़ है कि मिर्ज़ा साहब खुद इक़रार करते हैं कि वह मसीह मौऊ़द नहीं, बल्कि केवल झूठा दावा कर रहे हैं और एक नंबर के झूठे हैं। (सनाई- ७/१६१)

सूरः हुजुरात- (49)

सूरः हुजुरात (हुजरे, कमरे) मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी[1]। इस में १८ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. ऐ ईमान वालो! (सुनो!) अल्लाह और उस के रसूल से आगे न बढ़ा करो, मतलब यह कि (शरीअ़त के मामलात में) अल्लाह और रसूल की अनुमति के बग़ैर कोई काम खुद से न किया करो[2] (वर्ना तुम नाफ़र्मान बिद्अ़ती बन जाओ गे) और अल्लाह ही से डरते रहो।➲

لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٢﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ
عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ
قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ۚ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٣﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ
اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ
فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًاۢ بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى
مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ﴿٦﴾ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ
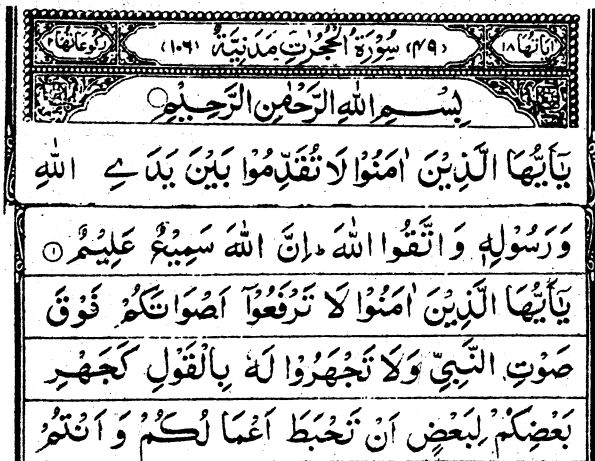
अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। २. ऐ ईमान वालो! अपनी आवाज़ों को नबी की आवाज़ पर बुलन्द न किया करो और (नबी का अदब यहाँ तक किया करो कि) उन के सामने ऐसे ज़ोर से नहीं बोला करो जैसे आपस में एक-दूसरे के सामने बोला करते हो, कहीं तुम्हारे आमाल बर्बाद न हो जायें और तुम को ख़बर भी न हो[२]। ३. (सुनो!) जो लोग (इस डर से कि हमारे आमाल बर्बाद न हो जायें) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं उन लोगों को अल्लाह ने तक़्वा (और परहेज़गारी) में जाँच लिया है (वह इस परीक्षा में पास हो गये, अल्लाह के निकट) उन के लिये बख़्शिश और बड़ा बदला है। ४. वह लोग जो (ऐ नबी!) तेरे मकान के बाहर से (या मुहम्मद! या रसूलुल्लाह! कह कर) तुझे बुलाते हैं (वह सब मुख़्लिस हैं, मगर) उन में से बहुत से बेअक़्ल हैं।[४] ५. और अगर वह सब्र करते (यानी आवाज़ें न देते) यहाँ तक कि तू स्वयं ही उन के पास आ निकलता तो यह उन के लिये बेहतर होता। और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। ६. ऐ ईमान वालो! (नुबुव्वत के आदाब सीखने के बाद आ़म अदब भी सुनो) और कोई बदकार तुम्हारे पास कोई सूचना लाये तो तुम उस बात की तहक़ीक़ कर लिया करो, ऐसा न हो कि बेख़बरी में तुम किसी क़ौम से उलझ पड़ो फिर तुम ख़ुद भी अपने किये पर शर्मिन्दा हो जाओ[५]। ७. और तुम जान रखो कि तुम में (कोई मामूली अफ़्सर नहीं है बल्कि) अल्लाह का रसूल है

....

१. यह सूरः समाजी और ख़ान्दानी (परिवारिक) ज़िन्दगी के आदाब पर मुश्तमिल है। इस की एक-एक आयत इस क़ाबिल है कि बार-बार पढ़ी जाये और शरीअ़त के आदाब सीखे जायें। (राज़)

नोटः-सूरः हुजुरात, यह "तिवाले मुफ़स्सल" की पहली सूरत है। इस सूरः से नाज़िआ़त तक की सूरतें "तिवाले मुफ़स्सल" कहलाती हैं। कुछ उ़लमा सूरः क़ाफ़ से शुमार करते हैं (इब्ने कसीर, फ़त्हुल् क़दीर) इन सूरतों का फ़ज्र की नमाज़ में पढ़ना सुन्नत है। सूरः अ़-बस से सूरः शम्स तक की सूरतों को "औसाते-मुफ़स्सल" कहा जाता है। इन सूरतों को ज़ुह्र और इ़शा की नमाज़ों में पढ़ना मुसतहब है। सूरः ज़ुहा से लेकर सूरः नास तक की सूरतों को "क़िसारे-मुफ़स्सल" कहा जाता है और इन को मग़रिब की नमाज़ में पढ़ना सुन्नत है (ऐसरूत्तफ़सीर)

२. 'अल्लाह और उस के रसूल से आगे न बढ़ा करो' इस का अर्थ यह है कि दीन के मामले में अपने तौर पर कोई फ़ैसला न करो और न अपनी समझ और राय व क़ियास को तर्जीह दो, बल्कि अल्लाह और उस के रसूल की इताअ़त करो। उन्हों ने जो कुछ कह दिया है उसे स्वीकार करो अगर्चे उन का फ़र्मान तुम्हारी राय और क़ियास के ख़िलाफ़ ही क्यों न हो। इस आयत से साफ़ तौर पर यह स्पष्ट हो गया कि अपनी तरफ़ से दीन में कमी-बेशी करना, दीन में बिदअ़त का ईजाद करना अल्लाह और उस के रसूल से आगे बढ़ना है जो मोमिन का काम नहीं है।

➲इस आयत से यह भी मालूम हुआ कि अगर कोई मुफ़्ती या इमाम किसी मसले में फ़तवा दे और बाद में मालूम हो कि वह फ़तवा कुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ है, तो उस को तुरन्त अपने फ़तवे को वापस ले लेना चाहिये। अगर वह अपने फ़तवे पर अड़ जाये तो कुरआन की इस आयत की रोशनी में सरासर हराम और नाजायज़ है। एक मुसलमान की शान यह है कि अल्लाह और उस के रसूल के आदेश के सामने अपनी गर्दन झुका दे, न कि उन के मुक़ाबला में अपने राय, क़ियास और फ़तवे पर अड़ जाये।

३. इस आयत न० २ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिये उस अदब, ताज़ीम और एहतराम का बयान है जो हर मुसलमान पर वाजिब है। पहला अदब तो यह है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उपसितिथ में जब तुम परस्पर बात-चीत करो तो तुम्हारी आवाज़ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की आवाज़ से हर्गिज़ बुलन्द न हो। दूसरा अदब यह कि जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बात-चीत करो तो बड़े अदब, एहतराम और संजीदगी से करो, इस प्रकार ऊँची आवाज़ से गुफ़्तगू न करो, जिस प्रकार तुम परस्पर एक दूसरे के साथ करते हो। कुछ उ़लमा का कहना है कि इस आयत का यह मतलब है कि तुम "या मुहम्मद" "या अहमद" न कहो, इस लिये कि इस में बेअदबी है, बल्कि "या रसूलल्लाह" कहा करो।

शाने नुज़ूल:- इस आयत का शाने- नुज़ूल यह है कि एक मर्तबा क़बीला बनी तमीम के कुछ लोग आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आये उस समय हज़रत उमर और अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि भी मौजूद थे। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन दोनों से मालूम किया कि इस क़बीला का हाकिम किस को बनाया जाये? हज़रत अबू बक्र ने क़अ़क़ाअ़ बिन मअ़बद का नाम पेश किया तो हज़रत उमर ने उन की मुख़ालिफ़त करते हुये अक़रा बिन हाबिस का नाम पेश किया। दोनों में बात-चीत लम्बी हो गयी और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मौजूदगी में उन दोनों की आवेज़ें नागवार हद तक ऊंची हो गयीं, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। इस आयत के नाज़िल होने के बाद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मिज्लस में इतनी पस्त आवाज़ से बोलते थे कि अक्सर साफ़ सुनाई नहीं देता कि क्या कह रहे हैं और आवाज़ बुलन्द करने को कहा जाता।

४. शाने नुज़ूल:- क़बीला बनी तमीम के कुछ लोग (जिन के बारे में ऊपर बयान हुआ) आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मिलने के लिये आये। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस समय अपने घर में तशरीफ़ रखते थे। यह लोग अ़रब के दीहाती और बद्दू थे कुछ कम पढ़े-लिखे थे इस लिये बजाए इन्तिज़ार करने के बाहर ही से बुलन्द आवाज़ से आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का नाम ले कर पुकारना आरंभ कर दिया। इन्ही लोगों के बारे में यह आयत नाज़िल हुयी। (मुस्नद अहमद)

लेकिन इस आयत का हुक्म आ़म है। केवल इन्ही लोगों को यह आदेश नही दिया गया, बल्कि तमाम लोगों के लिये यह हुक्म है।

५. शाने-नुज़ूल:- अक्सर मुफ़स्सिरीन के नज़दीक यह आयत हज़रत वलीद बिन उक़्बा बिन मुऐ़त रज़ि० के बारे में नाज़िल हुयी। वाक़िआ़ यूँ है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इन्हें क़बीला बनी मुस्तलिक़ के लोगों से ज़कात की उसूली के भेजा। हज़रत वलीद की उस क़बीला के चन्द लोगों से जाहिलिय्यत के ज़माना में (इस्लाम लोने से पहले) किसी मामले में दुश्मनी थी, इस लिये यह वहाँ जाने से डर गये कि संभवत: वह लोग पुरानी दुश्मनी की बुनियाद पर क़त्ल न कर दें, इस लिये यह राह ही से वापस लौट आये ओर कह दिया वह लोग इस्लाम के मुख़ालिफ़ हो गये हैं और ज़कात देने से इन्कार कर दिया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० की सरदारी में तहक़ीक़ के लिये एक लश्कर भेजा, उन्हों ने तहक़ीक़ के बाद वलीद बिन उक़्बा के ख़िलाफ़ रिपोर्ट दी और कहा कि वह तो वहाँ तक पहुंचे ही नही, इन्ही सहाबी के बारे में यह आयत नाज़िल हुयी।

लेकिन यह बात याद रहे कि यह रिवायत सनद और वाक़िआ़ हर दोनों एतबार से सही नहीं है, इस लिये इस वाक़िआ़ को एक सहाबी के साथ जोड़ना दुरूस्त नही -लेकिन शाने- नुज़ूल की बहस से हट कर इस आयत➲

➲ में एक निहायत ही अहम उसूल बयान किया गया है कि हर शख़्स और हुकूमत की यह ज़िम्मेदारी है कि उन के पास जो भी सूचना आये, विशेष कर ऐसे लोगों की तरफ़ से जो बुरी और एतबार के क़ाबिल न हों, पहले उस सूचना की तहक़ीक़ और छान-बीन करली जाये, इस के पश्चात् ही कोई कार्यवाही की जाये, ताकि नाहक़ किसी पर अत्याचार न हो।

नोटः- हाशिया न० १ से ५ तक अलग से बढ़ाया गया है..............................ख़ालिद सिद्दीक़ी

اللّٰهِ ۭ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ
وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ
قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ۭ
اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۙ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ
نِعْمَةً ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَاِنْ طَاۗىِٕفَتٰنِ
مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ
بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَي الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ
تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْۗءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَاۗءَتْ
فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ۭ اِنَّ
اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ
فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُوْنَ ۝ۧ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ
مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا

और बहुत से कामों में तुम्हारा कहा मानता जाये तो (नतीजा इस का यह होगा कि) तुम तक्लीफ़ में पड़ जाओ गे मगर अल्लाह ने तुम को ईमान की मुहब्बत दी हुयी है और तुम्हारे दिलों में उस (ईमान) को मुज़य्यन (सजा हुआ) कर दिखाया है और कुफ़्, फ़िस्क़ और नाफ़र्मानी से तुम को नफ़रत दिलायी है (जो लोग ऐसा करें) वही लोग (अल्लाह के हाँ) हिदायत पर हैं ८. (उन ही लोगों को) अल्लाह से फ़ज़्ल और (कुशादा) नेमत मिले गी। और अल्लाह बड़े इ़ल्म वाला और बड़ी हिक्मत वाला है। ९. और अगर (दो मुसलमान शख़्सों या दो) गरोहों में लड़ाई हो जाये (जो कि इन्सानी फ़ितरत है) तो तुम लोग उन दोनों में इस्लाह (कर के फ़साद दूर) कर दिया करो, फिर अगर कोई फ़रीक़ दूसरे पर ज़्यादती करता है तो तुम लोग ज़्यादती करने वाले (फ़रीक़) का मुक़ाबला करो (जितनी तुम में ताक़त हो) यहाँ तक कि वह अल्लाह के हुक्म (और शर्ई फ़ैसला) की तरफ़ झुके, फिर अगर वह (बाग़ी फ़रीक़ अपनी शरारत से) बाज़ आ जाये तो अ़द्ल के साथ उन दोनों में इस्लाह कर दिया करो और इन्साफ़ किया करो। अल्लाह इन्साफ़ करने वालों से मुहब्बत करता है। १०. ईमान्दार सब भाई-बन्धु हैं, पस तुम लोग अपने भाइयों में इस्लाह करो और अल्लाह से डरते रहा करो ताकि तुम पर रहम किया जाये। ११. मुसलमानो! कोई क़ौम किसी से मस्ख़री (जिस में उस की ज़िल्लत हो) न किया करे, दूर नहीं कि वही क़ौम (अल्लाह के नज़दीक नेक कार्यों की वजह से) उन से अच्छी हो

نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١١﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿١٣﴾ قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا

और (विशेष कर) औ़रतें दूसरी (क़ौम की) औ़रतों से मस्ख़री (और तौहीन) न किया करें, अ़जब नहीं कि वही (अल्लाह के नज़दीक) उन से बेहतर हों और एक दूसरे को ताने न दिया करो और न परस्पर एक दूसरे के बुरे-बुरे अल्क़ाब (नाम) रखा करो। ईमान्दारी के बाद (किसी के हक़ में बुरा नाम रखना या इस्तेमाल करना) बहुत बुरा है, जो लोग तौबा न करें, वही ज़ालिम हों गे। १२. मुसलमानो! तुम बहुत (मौक़ा पर) बदगुमानी करने से परहेज़ किया करो (क्योंकि) बाज़ बदगुमानियाँ गुनाह हैं और (सुनो!) तुम एक-दूसरे की टोह में न रहा करो (कि उस का कोई पोशीदा अ़ैब मिले तो पकड़ करें) और न तुम में से कोई किसी को पीठ पीछे बुराई से याद किया करे, क्या तुम में से कोई चाहता है कि अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाये? उसे तो यक़ीनन बुरा समझोगे और अल्लाह से डरते रहो। बेशक अल्लाह बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला, मेहरबान है। १३. ऐ लोगो! (सुनो!) हम ने तुम को एक मर्द और एक ही औरत से पैदा किया है और हम ने तुम लोगों को मुख़्तलिफ़ क़ौमें और क़बीलों में इस लिये बनाया है कि तुम एक दूसरे को पहचान लिया करो। अल्लाह के नज़दीक सब से अधिक इ़ज़्ज़त वाला बड़ा परहेज़गार है। अल्लाह (सब कुछ) जानता है और (हर चीज़ से) ख़बर दार है। १४. दीहाती लोग (झूठ-मूट) कहते हैं कि हम ईमान ला चुके हैं, तू (ऐ नबी!) कह कि तुम हर्गिज़ ईमान नहीं लाये (ईमान तो दिल से होता है) हाँ यह कहो कि हम ज़ाहिरी मुसलमान हैं

....

६. बुख़ारी शरीफ़ में एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा गया कि सब से ज़्यादा बुज़ुर्ग कौन है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो सब से अधिक परहेज़गार हो। लोगों ने कहा कि हम आप की बात नहीं पूछते हैं। फिर फ़रमाया: सब से ज़्यादा बुज़ुर्ग हज़रत यूसुफ़ अ़लै० हैं। जो स्वंय नबी थे, उन के पिता नबी थे, उन के परदादा (हज़रत इब्राहीम) तो ख़लीलुल्लाह थे। उन्हों ने कहा कि हम यह भी नहीं पूछते। आप ने फ़रमाया: फिर क्या अ़रब के बारे में पूछते हो? उन में जो लोग जाहिलिय्यत के ज़माना में अच्छे थे वही अब इस्लाम में भी पसन्दीदा हैं, मगर शर्त यह है कि दीन की समझ हासिल कर लें।

मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि अल्लाह तुम्हारी सूरतों और मालों को नहीं देखता है। मुस्नद➲

➲अहमद में है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ह़ज़रत अबू ज़र से फ़रमाया: जान लो कि तुम किसी भी काले-गोरे पर कोई फ़ज़ीलत नहीं रखते हो। हाँ, तक़्वा में बढ़ जाओ तो फ़ज़ीलत वाले हो जाओ गे। तबरानी की एक रिवायत में है कि मुसलमान सब आपस में भाई हैं, किसी को किसी पर कोई फ़ज़ीलत नहीं मगर तक़्वा के आधार पर। मुस्नद बज़्ज़ार में है कि तुम सब आदम की औलाद हो और आदम मिट्टी से पैदा किये गए हैं। लोगो! अपने बाप-दादाओं के नाम पर फ़ख़्र करने से बाज़ आ जाओ, वर्ना अल्लाह के नज़दीक रेत के टीलों और पानी के परिन्दों से भी ज़्यादा हल्के हो जाओ गे। इब्ने हातिम की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़त्ह मक्का वाले दिन अपनी ऊँटनी (क़स्वा) पर सवार हो कर तवाफ़ किया और अर्कान को आप अपनी छड़ी से छू लेते थे, फिर चूंकि मस्जिद में उस के बिठाने की जगह न मिली तो लोगों ने आप को हाथों हाथ उतारा और ऊँटनी को दूसरी जगह ले जा कर (सैल की वादी में) बिठाया, इस के बाद आप ने ख़ुत्बा सुनाया: "लोगो! अल्लाह तआ़ला ने तुम से जाहिलिय्यत का लुबादा उतार फेंका है, इस लिये अब इन्सान दो ही प्रकार के हैं (१) नेक काम करने वाले जो अल्लाह के नज़दीक बुलन्द मर्तबा हैं (२) बुरे काम करने वाले जो अल्लाह की नज़र में ज़लील और बुरे हैं" (मुहम्मदी)

يَدْخُلِ الْإِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۭ وَاِنْ تُطِيْعُوا
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ۭ
اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا
بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ
هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۝ قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ۭ
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ
وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ
اَنْ اَسْلَمُوْا ۭ قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ ۚ
بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ
غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ ۝

और ईमान तुम्हारे दिलों में अभी नहीं घुसा। और अगर तुम अल्लाह और रसूल की ताबेदारी करो गे तो वह भी तुम्हारे आमाल में से कुछ काटा-पीटी न करे गा। (बल्कि और अधिक देगा, क्योंकि यक़ीनन) अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला, मेहरबान है। १५. ईमानदार वह लोग हैं जो अल्लाह (की ख़ालिस तौहीद पर ईमान लाते हैं और उस के रसूल की रिसालत) पर, (अल्लाह के अहकाम में कभी) शक व शुब्हा नहीं करते और अपने मालों और जानों के ज़रीआ़ अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं (सच तो यह कि) यही लोग (अपने दावे में) सच्चे हैं। १६. तू (ऐ नबी! उन से) कह: क्या तुम अल्लाह को अपना दीन बताते हो (जो वह नहीं जानता, क्योंकि) अल्लाह तो आसमानों और ज़मीन की कायनात (सब को) जानता है और अल्लाह हर चीज़ को जानता है (उस का ज़िल्म इतना कुशादा है कि सब कुछ उस में समाया हुआ है) १७. (ऐ नबी!) तुझ पर एहसान जताते हैं कि हम मुसलमान हैं, तू (उन से) कह दे कि मुझ पर अपने इस्लाम का एहसान न जताओ बल्कि अगर तुम (ईमान के दावे में) सच्चे हो तो अल्लाह तुम पर एहसान जतलाता है➲

कि उस ने तुम को ईमान की हिदायत की है[७]। १८. (सुनो!) निःसंदेह अल्लाह आसमानों और ज़मीन की छुपी बातें सब जानता है और जो तुम कर रहे हो अल्लाह देख रहा है।

....

७. जो आराबी (बद्दू, दीहाती) इस्लाम लाते वह अपने ईमान का बढ़ा-चढ़ा कर दावा करते थे, हालाँकि दरअस्ल उन के दिलों में ईमान अभी घर नहीं किये हुये होता था, ऐसे लोगों को अल्लाह तआला ने मना फ़रमाया है। यह दावा करते थे कि हम ईमान लाये और अल्लाह तआला अपने रसूल द्वारा कहलवाता है कि अभी ईमान तुम्हारे दिलों में नहीं दाख़िल हुआ है। तुम न कहो कि हम ईमान लाये, बल्कि यह कहो कि हम मुसलमान हुये, यानी इस्लाम के दायरे में दाख़िल हुये और नबी की इताअत में आये। इस आयत से मालूम हुआ कि ईमान, इस्लाम से मख़्सूस चीज़ है, जैसा कि अहले सुन्नत वल् जमाअत का मज़हब है। हज़रत जिब्रील वाली हदीस भी इसी बात की ताईद करती है। हज़रत जिब्रील ने एहसान, इस्लाम और ईमान के बारे में ३ अलग-अलग प्रश्न किये इस का मतलब ही यह हुआ कि सब अलग-अलग चीज़ें हैं। और यह भी मालूम हुआ कि ईमान सब से ऊँचा दर्जा है। मुस्नद अहमद की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ लोगों को अतिय्या दिया और एक शख़्स को कुछ भी न दिया। हज़रत सअद ने फ़रमाया: आप ने फ़लाँ-फ़लाँ को तो दिया और फ़लाँ को कुछ न दिया, हालाँकि वह मोमिन है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: वह मुसलमान है, मुसलमान है, मुसलमान है? (तीन मर्तबा फ़रमाया) हज़रत सअद ने फिर कहा और आप ने जवाब में फिर वही कहा, फिर फ़रमाया: ऐ सअद! मैं लोगों को देता हूँ और जो मुझे ज़्यादा महबूब होता है उसे नहीं देता हूँ। उन्हें इस डर से देता हूँ कि कहीं वह औंधे मुंह आग में न गिर पड़ें। यह हदीस बुख़ारी और मुस्लिम में भी है।

इस हदीस में भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मोमिन और मुस्लिम में फ़र्क़ कर दिया और यह भी मालूम हुआ कि इस्लाम के मुक़ाबला में ईमान ज़्यादा ख़ास है। (मुहम्मदी)

सूरः क़ाफ़- (50)

सूरः क़ाफ़ ('क़ाफ़' अक्षर) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयीं। इस में ४५ आयतें और ३ रुकूअ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है।

१. क़ाफ़[२] (ऐ नबी!) मुझे क़ुरआन मजीद की क़सम है। २. मगर उन (अरब के मुश्रिकों) को तअज्जुब इस बात पर है कि उन में से एक डराने वाला आया, पस काफ़िर कहते हैं कि यह अजीब तालीम है (कि मर कर फिर ज़िन्दा हों गे) ३. भला जब हम मर कर मिट्टी हो जायें गे तो फिर जी उठें गे? यह दोबारा ज़िन्दगी तो अक़्ल से दूर है। ४. जितनी

(٥٠) سُورَةُ قٓ مَكِّيَّةٌ (٣٤)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

قٓ ۚ وَالْقُرْآنِ الْمَجِيدِ ﴿١﴾ بَلْ عَجِبُوا أَن جَاءَهُم مُّنذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكَافِرُونَ هَٰذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ﴿٢﴾ أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۖ ذَٰلِكَ رَجْعٌ بَعِيدٌ ﴿٣﴾ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ ۖ وَعِندَنَا كِتَابٌ حَفِيظٌ ﴿٤﴾ بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي أَمْرٍ مَّرِيجٍ ﴿٥﴾ أَفَلَمْ يَنظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَزَيَّنَّاهَا وَمَا لَهَا مِن

فُرُوۡجٍ ۞ وَالۡاَرۡضَ مَدَدۡنٰهَا وَاَلۡقَيۡنَا فِيۡهَا رَوَاسِىَ وَاَنۡۢبَتۡنَا فِيۡهَا مِنۡ كُلِّ زَوۡجٍۢ بَهِيۡجٍ ۞ تَبۡصِرَةً وَّذِكۡرٰى لِكُلِّ عَبۡدٍ مُّنِيۡبٍ ۞ وَنَزَّلۡنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنۡۢبَتۡنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ

कुछ ज़मीन उन से खा कर कम कर रही है, हम सब को जानते हैं (हर वस्तु का ज़र्रा-ज़र्रा हमारे ज़िल्म में है) और हमारे पास एक दफ़्तर सुरक्षित है। ५. मगर हक़ बात जब उन के पास आयी तो उन्हों ने झुठला दिया पस यह लोग एक बे बुनियाद बात पर जमे हुये हैं। ६. क्या उन्हों ने अपने ऊपर आकाश को नहीं देखा कि हम ने किस प्रकार उस को बनाया फिर हम ने उस को सजाया और उस में किसी तरह की दराज़ नहीं ७. और (देखो) ज़मीन को हम ने फैला दिया और उस पर कई भारी-भारी पहाड़ पैदा कर दिये और उस में हर प्रकार की सुन्दर वस्तुयें पैदा कीं ८. (देख सकने वाली आँख) के देखने के लिये और अल्लाह की तरफ़ झुकने वाले बन्दों की नसीहत के लिये (क्योंकि वह एक-एक पत्ता से नसीहत हासिल करते हैं) ९. और हम आकाश से बर्कत वाला पानी उतारते हैं, फिर उस के साथ बाग़ उगाते हैं और खेत में दाने पैदा करते हैं

....

१. जिन सूरतों को "मुफ़स्सल" की सूरतें कहा जाता है उन में सब से पहली सूरत यही है, हालाँकि एक क़ौल यह भी है कि सूरः हुजुरात से इब्तिदा होती है। यह बात आम लोगों में मशहूर हो गयी है कि "मुफ़स्सल" की सूरतों की इब्तिदा पारः अम्म से होती है, यह बिल्कुल बे-सर पैर की बात है, उलमा में से किसी ने भी नहीं कहा है। बहर हाल मुफ़स्सल की सूरतों का आरंभ इसी सूरः से होता है। मुस्लिम शरीफ़ में है कि हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० ने हज़रत अबू वाक़िद लैसी से पूछा कि ईदैन की नमाज़ में नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम क्या पढ़ते थे? उन्हों ने कहा: सूरः "क़ाफ़:" और सूरः "क़मर"। मुस्लिम शरीफ़ में यह भी है कि हज़रत उम्मे हिशाम बिन्त हारिस रज़ि० फ़रमाती हैं हमारा और रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का तन्नूर (चूलहा) दो वर्ष या एक वर्ष कुछ माह तक एक ही रहा। मैं ने सूरः क़ाफ़ आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़बान से सुन-सुन कर याद कर ली, इसलिये कि आप हर जुमा को जब खुत्बा देने के लिये मिंबर पर आते तो पहले इसी सूरः की तिलावत फ़रमाते। मतलब यह है कि बड़े-बड़े जल्सों में, जैसे ईदैन और जुमा वग़ैरह में आप इस की तिलावत फ़रमाया करते थे, क्यों कि इस सूरः में पैदाइश से ले कर मरने के बाद ज़िन्दा होने, अल्लाह के सामने खड़े होने, हिसाब-किताब, जन्नत-दोज़ख़, सवाब-अ़ज़ाब, बशारत, धमकी वग़ैरह तमाम ही बातों का ज़िक्र मौजूद है (मुहम्मदी)

मक्का के काफ़िरों को तौहीद को समझने में कठिनाई पेश आती थी, लेकिन क़ियामत और दोबारा जी उठने को ले कर और ज़्यादा कठिनाई होती थी। इन्ही को समझाने-बुझाने के लिये यह सूरः नाज़िल हुयी। (सनाई)

२. 'क़ाफ़' यह हुरूफ़ मुक़त्तआ़त में से है, जिस का माना व मुराद अल्लाह ही बेहतर जानता है। मौलाना मर्हूम ने कुछ रिवायतों की बुनियाद पर इस का मफ़हूम यूँ लिखा है "मैं अल्लाह क़ादिर हूँ" (राज़)

الۡحَصِيۡدِ ۞ وَالنَّخۡلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلۡعٌ نَّضِيۡدٌ ۞ رِّزۡقًا لِّلۡعِبَادِ ۙ وَاَحۡيَيۡنَا بِهٖ بَلۡدَةً مَّيۡتًا ؕ كَذٰلِكَ الۡخُرُوۡجُ ۞ كَذَّبَتۡ قَبۡلَهُمۡ قَوۡمُ نُوۡحٍ وَّاَصۡحٰبُ الرَّسِّ

१०. और लंबी खजूरें (पैदा करते हैं) जिन के गाभे (फल) तह-ब-तह होते हैं ११. (यह सब सामान) बन्दों को रोज़ी देने के लिये हैं, और हम उस (पानी) के साथ सूखी ज़मीन को ज़िन्दा कर देते हैं[1] इसी प्रकार मुर्दों का

وَثَمُودُ ۝ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطٍ ۝ وَأَصْحٰبُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۚ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدِ ۝ أَفَعَيِينَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ ۖ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ۝ إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ۝ مَّا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ۝ وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۖ ذَٰلِكَ مَا كُنتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ ۝ وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ

निकलना होगा। १२+१३+१४. इन से पहले नूह की क़ौम ने, रस्स (कुयें) वालों ने, समूद की क़ौम ने, आदियों ने, फ़िरऔन ने (और फ़िऔनियों ने), लूत की बिरादरी ने, वन के रहने वाले (हज़रत शुऐब की क़ौम ने) और तुब्बअ् की क़ौम ने भी (अल्लाह के अहकाम को) झुठलाया था उन सब ने रसूलों को झुठलाया था[४] पस मेरे अ़ज़ाब का हुक्म उन पर लग गया। १५. क्या हम पहली मर्तबा पैदा कर के थक गये हैं[५]? बल्कि यह लोग नई पैदाइश से इन्कार में हैं। १६. हम ने हर इन्सान को पैदा किया और जिस-जिस प्रकार के ख़यालात उस के दिल में आते हैं, हम ख़ूब जानते हैं[६] और (क्यों न जानें) हम तो उस की शहे रग से भी अधिक क़रीब हैं। १७. जब (हमारे भेजे हुये) ज़ब्त करने वाले दो फ़रिश्ते ज़ब्त कर जाते हैं, उस के दायें-बायें बैठे हुये (यानी हर समय मौजूद रहते हैं) १८. वह इन्सान जो भी लफ़्ज़ बोलता है उस के पास एक हाल की निग्रानी करने वाला मुस्तइद होता है[७]। १९. और मौत की सख़्ती वाकेअ़ी (शक्ल) में आये गी। यह वह मौत है जिस से तू भागता था[८] (लेकिन आख़िर तुझे फन्दे में फंसना पड़ा) २०. और (मरने के बाद उठने के समय) सूर में फूंका जाये गा वह दिन डरावे का हो गा २१. (उस रोज़) हर शख़्स आये गा (इस हाल में कि) उस के साथ एक चलाने वाला और एक गवाह हो गा[९]

....

३. क्या मेरी क़ुदरत की यह निशानी नहीं बतलाती कि जिस ज़ात ने उसे ज़िन्दा किया है वह मुर्दों के जिलाने पर बिला शक व शुब्हा क़ुदरत रखने वाला है? यक़ीनन वह तमाम चीज़ों पर क़ुदरत रखता है।

४. अल्लाह तआला मक्का वालों को उन अ़ज़ाबों से डरा रहा है जो इन जैसे झुठलाने वालों पर इन से पहले आ चुके हैं, जैसे कि नूह की क़ौम जिन्हें अल्लाह ने पानी में डुबो कर मार डाला। रस्स वालों का वाक़िआ सूरः फ़ुर्क़ान की आयः नं० ३८ के हाशिया में गुज़र चुका है। समूद, आद और लूत की क़ौम वग़ैरह को ज़मीन में धंसा दिया और उस ज़मीन को सड़ा हुआ दलदल बना दिया। यह सब क्यों हुआ? उन के कुफ़्र और सर्कशी और हक़ की मुख़ालिफ़त का नतीजा था। 'असहाबे ऐकह' से मुराद शुऐब अ़लै० की क़ौम और 'तुब्बअ़' से मुराद यमन वाले हैं। इन तमाम उम्मतों ने अपने रसूल को झुठलाया था इसी वजह से हलाक किये गये। और अल्लाह का यही दस्तूर है कि ऐसे लोगों के साथ अल्लाह यही बर्ताव करता है। यह बात याद रहे कि एक रसूल का झुठलाने वाला तमाम रसूलों का मुन्किर होता है, यही वजह है कि अल्लाह ने फ़रमाया: "नूह की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया"। यहाँ "रसूलों" बहुवचन है। चूंकि यह लोग ऐसे थे ही कि अगर तमाम रसूल भी आ जाते तो यह सब को झुठला देते, चुनान्चे उन सब पर अ़ज़ाब का वादा उन के कर्तूतों की वजह से सिद्ध हो गया और अन्ततः हलाक कर दिये गये। इस लिये मक्का वालों को भी सोच लेना चाहिये कि अगर वह भी बाज़ न आये तो उन पर भी अ़ज़ाब का कोड़ा

➲बरसे गा।

५. सहीह हदीस में है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: मुझे बनी आदम तक्लीफ़ देता है और कहता है कि अल्लाह मुझे पुनः नहीं पैदा कर सकता, हालाँकि पहली बार का पैदा करना दोबारा पैदा करने के मुक़ाबला में कहीं ज़्यादा मुश्किल है।

६. यह हक़ीक़त आज मुशाहिदा में आ चुकी है कि इन्सान जो कुछ मुंह से निकालता है वह फ़िज़ा में नक़्श हो जाता है इसी उसूल पर रोज़ नये-नये अविष्कार हो रहे हैं। क़ुरआन ने इस को आज से चौहद सौ वर्ष पूर्व ही दुनिया के सामने पेश कर दिया है। बिल्कुल इसी प्रकार किरामन कातिबीन का लिखना-पढ़ना भी खुली हक़ीक़त है, आज कल जिस प्रकार की मशीनें ईजाद हो रही हैं इन को सामने रखते हुये इन्कार तो मह़ा बेवकूफ़ी है।

७. इमाम हसन बसरी रह० इस आयत की तिलावत कर के फ़रमाया करते थे कि ऐ बनी आदम! तेरे लिये दफ़्तर खोल दिया गया है और दो बुज़ुर्ग फ़रिश्ते तुझ पर मुक़र्रर कर दिये गये हैं। एक तेरे दायें तरफ़ और दूसरा तेरे बायें तरफ़। दायें तरफ़ वाला तो तेरी नेकियों की हिफ़ाज़त करता है और बायें तरफ़ वाला बुराइयों को नज़र में रखता है। अब तू जो चाहे अ़मल कर, कमी या ज़्यादती, लेकिन जब तू मरे गा तो यह दफ़्तर लपेट दिया जाये गा और तेरे साथ तेरी क़ब्र में रख दिया जाये गा। और जब तू क़ियामत के दिन अपनी क़ब्र से उठाया जाये गा तो यही तेरे सामने पेश कर दिया जाये गा। इसी को अल्लाह तआ़ला इन लफ़्ज़ों में बयान करता है "हम ने हर इन्सान का आमाल उस के गले में लटका दिया है" और क़ियामत के दिन उस के सामने आमाल नामा की एक किताब डाल दें गे जिसे वह खुली हुयी किताब की शक्ल में पाये गा। फिर उस से कहा जाये गा कि ले आज अपना आमाल नामा पढ़ ले। आज तू स्वयं ही अपना हिसाब लेने को काफ़ी है" (बनी इस्राईल- १३,१४)

हज़रत इमाम हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं: अल्लाह की क़सम! उस ने बड़ा ही इन्साफ़ किया जिस ने खुद तुझे ही तेरा मुहासिब बना दिया। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने फ़रमाया: जो बुरा-भला कलिमा तू ज़बान से निकालता है वह सब लिखा जाता है, यहाँ तक कि तेरा यह कहना भी लिखा जाता है कि "मैं ने खाया, मैं ने पिया" वग़ैरह। फिर जुमेरात के दिन उस के आमाल पेश किये जाते हैं, उस में बुराई और भलाई के तअ़ल्लुक़ से बातें तोली जाती हैं और बाक़ी सब मिटा दिया जाता है, इसी बात को अल्लाह तआ़ला ने यूँ फ़रमाया है "अल्लाह "मिटा देता है और जो चाहता है बाक़ी रखता है, उस के पास उम्मुल किताब है" (सूरः रअ़द- ३९)

८. मोजम तबरानी की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "उस शख़्स की मिसाल जो मौत से घबराता है उस लोमड़ी जैसी है जिस से ज़मीन अपना क़र्ज़ माँगने लगी और यह उस से बचने के लिये भागने लगी। भागते-भागते जब थक हार गयी तो अपने बिल में जा घुसी। ज़मीन चूंकि वहाँ भी मौजूद थी इस लिये ज़मीन ने वहाँ भी उस से मुतालबा किया। यह वहाँ से भी भागी लेकिन दौड़ते-दौड़ते साँस फूला और मर गयी। मतलब यह कि जिस प्रकार उस लोमड़ी के लिये चारों तरफ़ से राहें बन्द थीं, इसी प्रकार इन्सान के लिये भी मौत से बचने के सारे रास्ते बन्द हैं (इब्ने कसीर)

९. एक हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं किस प्रकार आराम और चैन से बैठूँ, जब कि सूर फूंकने वाला फ़रिश्ता मुंह से सूर लिये हुये है और गर्दन झुकाये हुये अल्लाह के हुक्म का इन्तिज़ार कर रहा है कि कब हुक्म मिले और वह सूर फंक दे। सहाबा ने कहा कि या रसूलुल्लाह! फिर हम क्या कहें? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम कहो "हसबु-नल्लाहु वनिअ़-मल् वकीलु" (हमारे लिये अल्लाह ही काफ़ी है और वह बेहतरीन बिगड़ी बनाने वाला है)-- आगे फ़रमाया: हर शख़्स के साथ एक फ़रिशता हो गा जो उसे महशर की तरफ़ ले जाये गा और एक दूसरा फ़रिश्ता भी साथ हो गा जो उस के आमाल की गवाही दे गा। आयत नं० २१ का ज़ाहिरी मफ़हूम यही है और इमाम जरीर ने भी इसी को पसन्द किया है। एक मर्तबा हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० ने मिंबर पर इस आयत की तिलावत फ़रमाई और फिर फ़रमाया: एक फ़रिशता तो➲

चलाने वाला हो गा जिस के साथ बन्दा हश्र के मैदान में जाये गा और एक फ़रिश्ता उस के आमाल की गवाही देने वाला भी साथ हो गा। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि 'साइक़' से मुराद "फ़रिश्ता" है और "शहीद" से मुराद उस का अ़मल है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि 'साइक़' से मुराद फ़रिश्ते हैं और 'शहीद' से मुराद इन्सान है जो अपने ऊपर आप गवाही दे गा। इस के बाद वाली आयत नं० २२ में उलमा के तीन क़ौल है (१) यह ख़िताब काफ़िरों से हो गा (२) इस से मुराद आ़म इन्सान हैं (३) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुराद हैं। दूसरे क़ौल का मतलब यह होगा कि आख़िरत और दुनिया में वही संबंध है जो बेदारी (जागृत अवस्था) और ख़्वाब (सपने) में है। तीसरे क़ौल का यह मतलब है कि तू क़ुरआन की वह्यि से पहले ग़फ़्लत में था हम ने यह क़ुरआन नाज़िल कर के तेरी आँखों पर से पर्दा हटा दिया और तेरी नज़र क़वी हो गयी। लेकिन अल्फ़ाज़ पर ग़ौर करने से यही ज़ाहिर होता है कि यह आयत आ़म है। यानी हर शख़्स से कहा जाये गा कि तू इस दिन से ग़ाफ़िल था। इस लिये कि क़ियामत के दिन हर शख़्स की आँखें खुल जायें गी, यहाँ तक कि काफ़िर भी उस समय हक़ीक़त को समझने लगे गा, लेकिन इस समय का समझना कुछ काम न आये गा। इसी बात को दूसरी आयत में यूँ बयान फ़रमाया "काश कि तू देखता जब पापी लोग अपने रब के सामने सर झुकाए हुये कह रहे हों गे कि ऐ मेरे मौला! हम ने देख लिया और सुन लिया, अब हमें लौटा दे तो हम नेक अ़मल करें गे और पूरा यक़ीन करें गे" लेकिन क़ियामत के दिन आँख खुलना, देखना, सुनना, समझना और यक़ीन करना किसी काम का न हो गा। (मुहम्मदी)

२२. तू उस दिन से ग़फ़्लत (और बेपर्वाही) में था, ले अब तो हम ने तेरा पर्दा (जो ग़फ़्लत का था) उठा दिया है, पस तेरी निगाह आज बड़ी तेज़ है। २३. और उस का साथी (यानी दुनियावी गुरू, पीर, मित्र जिस ने गुमराह किया होगा तुरन्त) कहे गा कि यह है (इस का कच्चा-चिट्ठा) जो मेरे पास रहता था। २४+२५. (हुक्म हो गा: ऐ फ़रिश्तो! सुनो) हर एक काफ़िर सर्कश, भलाई से रोकने वाले, (बन्दगी की) हद से बढ़ने वाले (मुतकब्बिर को और) शक में डालने वाले को तुम जहन्नम में डालते जाओ २६. वह (शख़्स) जिस ने अल्लाह के साथ और माबूद बनाया (किसी ने बुत को, किसी ने क़ब्र को) पस तुम ऐसे (मुश्रिक, काफ़िर) शख़्स को सख़्त अ़ज़ाब में झोंक दो। २७. उस का (गुमराह करने वाला) साथी कहे गा: ऐ अल्लाह! मैं ने तो उस को गुमराह न किया था लेकिन वह स्वयँ खुली गुमराही में था (इस लिये मेरी रिहाई होनी चाहिये) २८.

وَّشَهِيْدٌ ۝ لَقَدْ كُنْتَ فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا
عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ۝ وَقَالَ
قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيْدٌ ۝ اَلْقِيَا فِيْ جَهَنَّمَ
كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ ۝ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبِ ۝
الَّذِيْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ فِي الْعَذَابِ
الشَّدِيْدِ ۝ قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَآ اَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ
كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ ۝ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَيَّ
وَقَدْ قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ ۝ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ
لَدَيَّ وَمَآ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝ يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ
هَلِ امْتَلَاْتِ وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ۝ وَاُزْلِفَتِ
الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ۝ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ
لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيْظٍ ۝ مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ
وَجَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبِ ۝ ادْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ذٰلِكَ يَوْمُ

➲अल्लाह कहे गा: मेरे सामने मत झगड़ा करो मैं तुम को पहले ही से (बुरे कामों पर) अज़ाब की सूचना दे चुका हूँ। २९. मेरे हाँ से जो बात कही जाये वह बदलती नहीं और मैं बन्दों के हक़ में ज़ालिम नहीं हूँ। ३०. जिस दिन हम जहन्नम से पूछें गे क्या तू (अभी) भरी नहीं? वह कहे गी: (मेरे हिस्से में से अभी) कुछ और भी है[10]? (तो डाल दीजिये) ३१. और जन्नत परहेज़गारों के क़रीब लायी जाये गी, बिल्कुल नज़दीक हो गी। ३२. यह वही है जिस का तुम को वादा दिया जाता था हर एक (अल्लाह की तरफ़) झुकने वाले (अल्लाह के अहकाम की) हिफ़ाज़त करने वालों के लिये (हो गी) ३३. जो रहमान से बिन देखे डरता था और झुकने वाला दिल ले कर (यहाँ) आया है। ३४. (ऐसों को हुक्म हो गा कि) सलामती के साथ उस में दाख़िल हो जाओ

....

१०. बुख़ारी, मुस्लिम और तिर्मिज़ी वग़ैरह की रिवायत में है कि जहन्नम "अभी कुछ और भी है?" कहती रहे गी, यहाँ तक कि अल्लाह तआला उस में अपना पाँव रखे गा तो वह कहे गी: बस, बस! इस हदीस को ज़ाहिर माना पर ही तस्लीम करना अनिवार्य है। इस में किसी प्रकार की क़ील-क़ाल और कुरेदने की आवश्यक्ता नहीं (राज़)

الْخُلُودِ ﴿٣٤﴾ لَهُم مَّا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ﴿٣٥﴾
وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُم
بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِن مَّحِيصٍ ﴿٣٦﴾ إِنَّ
فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى
السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَ
الْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا مَسَّنَا
مِن لُّغُوبٍ ﴿٣٨﴾ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ
رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ﴿٣٩﴾
وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ﴿٤٠﴾ وَاسْتَمِعْ
يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٤١﴾ يَوْمَ يَسْمَعُونَ
الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ﴿٤٢﴾ إِنَّا نَحْنُ
نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ﴿٤٣﴾ يَوْمَ تَشَقَّقُ
الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ﴿٤٤﴾
نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِجَبَّارٍ

यह हमेशगी का दिन है, ३५. वह जो कुछ चाहें गे उन में उन को मिले गा और हमारे पास बढ़ कर है। ३६. और हम ने उन से पहले कितनी क़ौमें तबाह कर दीं जो बल-बूते में उन से ज़्यादा थे वह (अपने आस-पास) तमाम शहरों में फिर निकले। क्या उन को कोई भागने की राह मिली? ३७. बेशक इस घटना में बड़ी नसीहत है उन लोगों को जो (समझ-दार) दिल रखते हैं या किसी बात को दिल की हाज़िरी से सुनते हैं। ३८. हम ने आसमान-ज़मीन (उस के तमाम पर्तों के साथ) और जो कुछ उन दोनों के दर्मियान है (सब कुछ) छः दिनों मुद्दत में पैदा किया और हम को किसी क़िस्म की कोई तक्लीफ़ न पहुंची[11]। ३९. पस जो कुछ यह लोग (तेरे बारे में गन्दे शब्द) कहते हैं तू उस पर सब्र किया कर और सूरज निकलने से पहले और डूबने से पहले अल्लाह की तारीफ़ के साथ उस की तस्बीह किया कर (और सुब्ह-शाम सुब्हानल्लाहि वबिहमदिही कसरत से पढ़ा कर) ४०. और➲

रात में भी और नमाज़ के बाद भी तस्बीह पढ़ा कर[१२] ४१. और कान लगाये रहा कर जिस रोज़ पुकारने वाला (फ़रिश्ता) पास ही से पुकारे गा ४२. जिस रोज़ सच्ची आवाज़ को लोग सुनें गे वह दिन (क़ब्रों से) निकलने का हो गा। ४३. इस में कुछ शक नहीं कि हम ही दुनिया को ज़िन्दगी बख़्शते हैं और हम ही मार देते हैं और हमारी तरफ़ ही सब को लौटना है। ४४. जिस दिन यह लोग ज़मीन को फाड़ कर तुरन्त निकल पड़ें गे यह जमा कर लेना हम पर बहुत आसान है। ४५. जो कुछ यह लोग कहते रहते हैं हम ख़ूब जानते हैं। और तू उन पर जाबिर {ज़ालिम} दारोग़ा नहीं है पस जो शख़्स मेरे अज़ाब से डरे तू उस को क़ुरआन पढ़ कर समझा दे[१३]।

فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ

....

११. शाने-नुज़ूल:- यहूद कहते थे कि छ: रोज़ में मख़्लूक़ को पैदा कर के सातवें रोज़ अल्लाह ने आराम किया और यह दिन सनीचर का था, इसी लिये उन लोगों ने उस दिन का नाम "यौमुर्राहत" (विश्राम का दिन) रखा हुआ था। अल्लाह तआला ने यहूद के इस बातिल ख़याल के रद्द में यह आयत नाज़िल फ़रमाई (इब्ने कसीर)

१२. सूरज निकलने से पहले और डूबने से पहले मुराद फ़ज्र और अस्र की नमाज़ है। मुस्नद अहमद की एक रिवायत में है कि हम नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसललम की सेवा में उपस्तिथि थे। आप ने चौदहवीं रात के चाँद को देखा और फ़रमाया: तुम अपने रब के सामने पेश किये जाओ गे और उसे इस तरह देखो गे जैसे इस चाँद को देख रहे हो जिस के देखने में कोई रूकावट नहीं। इसलिये अगर तुम से हो सके तो सूरज निकलने से पहले की और सूरज डूबने से पहले की नमाज़ से ग़ाफ़िल न हो जाया करना, फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह आयत तिलावत फ़रमाई। यह हदीस बुख़ारी, मुस्लिम में भी है।

'और रात को भी' से मुराद तहज्जुद की नमाज़ अदा करना और 'नमाज़ के बाद' से मुराद, हर नमाज़ के बाद तस्बीह और हम्द व सना पढ़ना है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क्या मैं तुम को ऐसा अ़मल न बतलाऊँ कि अगर उस को करो तो सब से आगे निकल जाओ और तुम से अफ़्ज़ल कोई न हो? (सुनो! वह अ़मल यह है) हर नमाज़ के बाद ३३-३३ मर्तबा सुबहा-नल्लाह, अल-हमदु लिल्लाह, अल्लाहु अक्बर पढ़ लिया करो। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने 'नमाज़ के बाद भी' की तफ़्सीर मग़्रिब के बाद की दो रकअ़त नफ़्ल से की है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक मर्तबा फ़ज्र से पहले दो हल्की रकअ़तों को पढ़ कर फ़रमाया कि फ़ज्र से पहले की यह दो रकअ़तें 'इदबा-रन्नुजूम' हैं और मग़्रिब की बाद दो रकअ़तें "इदबा-रस्सुजूद" हैं। (इब्ने कसीर)

१३. हज़रत क़तादा रह० इस आयत को सुन कर यह दुआ़ पढ़ते थे: "अल्लाहुम्मज्-अ़ल्ना मिम्मन यख़ाफ़ु वअ़ीदु-क व-यर्जू वअ़्-द-क या बार्रू या रहीमु" (ऐ अल्लाह! तू हमें उन में से कर जो तेरी सज़ाओं के डरावे से डरते हैं और तेरी नेमतों के वादे की आशा लगाये हुये हैं, ऐ बहुत अधिक एहसान करने वाले और ऐ बहुत अधिक रहम करने वाले) (इब्ने कसीर)

सूरः ज़ारियात-(51)

(٥١) سُورَةُ الذّٰرِيٰتِ مَكِّيَّةٌ (٦٧) — اٰيَاتُهَا ٦٠ — رُكُوْعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ۝١ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ۝٢ فَالْجٰرِيٰتِ
يُسْرًا ۝٣ فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ۝٤ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ
لَصَادِقٌ ۝٥ وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ۝٦ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ
الْحُبُكِ ۝٧ اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۝٨ يُّؤْفَكُ عَنْهُ
مَنْ اُفِكَ ۝٩ قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ۝١٠ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ
غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ۝١١ يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ۝١٢
يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ۝١٣ ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ؕ هٰذَا
الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝١٤ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ
جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝١٥ اٰخِذِيْنَ مَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ؕ اِنَّهُمْ

सूरः ज़ारियात (उड़ाने वाली हवाऐं) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ६० आयतें और ३ रूकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है।

१. क़सम है उड़ाने वाली हवाओं की २. क़सम है बादलों को उठाने वाली हवाओं की ३. क़सम आसानी से चलने वाली हवाओं की ४. क़सम है काम तक़्सीम करने वाली हवाओं की[1] ५. जो तुम लोगों को वादा दिया जाता है वह बिल्कुल सच है। ६. और (अच्छे-बुरे कामों का) अवश्य बदला मिलने वाला है। ७+८. हमें ज़ीनत दार आसमान की क़सम है, कि तुम लोग बिल्कुल एक ख़ाम (झूठे) ख़याल में हो ९. जो बहकने वाला होता है वह उस (तुम्हारे कहने से) बहक जाता है। १०+११. ऐसी अटकल पच्चू रायें लगाने वाले लानती हैं जो ग़फ़लत में (अन्जाम) भूले हुये हैं १२. (मज़ाक़ में) पूछते हैं कि बदला का दिन कब हो गा[2]? १३. (हाँ, वह दिन हो गा) जिस दिन उन को आग में सेंका जाये गा। १४. (फ़रिश्ते कहें गे) लो अ़ज़ाब चखो। यही है जो तुम (दुनिया में) जल्दी माँगते थे। १५. (सुनो! उन के मुक़ाबला में) कुछ शक नहीं कि परहेज़ गार बाग़ों और चश्मों में हों गे। १६. जो कुछ उ़न को उन का पर्वरदिगार अ़ता करे गा उस को लिये हुये (जो जी में आये गा करें गे)

....

१. हज़रत अ़ली रज़ि० फ़रमाते हैं कि 'ज़ारियात' से मुराद हवा और 'हामिलात' से बादल, 'जारियात' से कश्ती और 'मुक़स्सिमात' से फ़रिश्ते हैं। 'हामिलात' से मुराद बादल होने का मुहावरा उस कविता के छन्द में भी है जिस का तर्जुमा यह है "मैं अपने तयीं उस अल्लाह की फ़र्माबर्दारी करता हूँ जिस के फ़र्माबर्दार वह बादल हैं जो साफ़ और मीठे और हल्के पानी को उठा कर ले जाते हैं"। 'ज़ारियात' से कुछ लोगों ने सितारे मुराद लिये है जो आसमान में चलते फिरते हैं।

इन क़समों के खाने में इस बात की तरफ़ इशारा है कि दुनिया के नियमों को जिस ज़ात ने इन सब से बाँध रखा है, जो इन्सान की अक़्ल में समाने वाली नहीं, वह ज़ात इन्सान के अलग-अलग टुक्ड़ों को भी जमा करने की क्षमती रखता है। 'हुबुक' यह जमा है "हबीका" की जिस का अर्थ है "रास्ता"। लेकिन सहीह यह है कि

➲आकाश में जो सितारों से मुख़्तलिफ़ राहें सी नज़र आया करती हैं, उन्ही का नाम "हुबुक" है। यह रास्ते जाल की तरह पड़े हुये दिखाई दिया करते हैं। इस आयत का मक़्सद यह बतलाना है कि ऐ कुफ़्फ़ार! जिस प्रकार आकाश में सितारों से मुख़्तलिफ़ रास्ते और जाल से नज़र आते हैं, इसी प्रकार तुम्हारी बातें मुख़्तलिफ़ हैं। 'यू-फ़कु' यानी कुरआन या नबी से वही शुब्हा करता है जिस को तक़्दीर ने शुब्हे की तारीकी में डाल रखा है (मुहम्मदी, हक़्क़ानी)
२. यह लोग हंसी-मज़ाक़ के तौर पर पूछते हैं कि तुम मुसलमान जो कहते फिरते हो कि इन्साफ़ और बदले का एक दिन है, तो वह दिन कब आये गा, ज़रा उस की तारीख़, महीना और साल तो बताओ? मगर उन को मालूम होना चाहिये कि उस की तिथि बताना अभी उचित नहीं है इस लिये अल्लाह ने इसे राज़ में रखा हुआ है। हाँ, इतना बता दिया जाता है कि जिस दिन उन को आग में सेंका जाये गा तो उस आग में यह कबाब की तरह जलें और भुनें गे और तड़पें गे। फ़रिश्ते उन से कहें गे कि यह जो कुछ तुम्हें मिल रहा है बदला के तौर पर है। दुनिया में जिस के लिये तुम जल्दी मचा रहे थे यह वही चीज़ है।

इन के मुक़ाबला में मुत्तक़ी और परहेज़गार बाग़ों में हों गे और दुनिया में जो भी ऐश-आराम का तसव्वुर करें गे वह जन्नत में उन को मिले गा और जो कुछ उन के ख़याल में भी न आया हो गा वह भी दिया जाये गा। यह सारी नेमतें उन्हें इस लिये दी जायें गी कि वह लोग नेक थे, रातों को इ़बादत के लिये जागा करते थे, तहज्जुद के बाद, या रातों में जाग कर या सुब्ह के समय अल्लाह से दुआयें करते थे उस से माफ़ी माँगते थे। यानी सुब्ह से पहले थोड़ी रात रहे उठते और अल्लाह की जितनी भी याद हो सके कर के सुब्ह-सवेरे अपने लिये और अपने माँ-बाप के लिये मग़फ़िरत की दुआयें माँगते थे। 'यह-जऊन' (आयत नं०१७) का अर्थ है "रात की नींद"। मतलब यह है कि रात को थोड़ा सा समय नींद से जाग जाते थे। वह थोड़ा सा वक़्त तहज्जुद का भी हो सकता है, या इ़शा की नमाज़ का भी। मतलब यह है कि यह तो उन के इ़बादत के काम थे।इसकेअलावा भी वह कई प्रकार की नेकियाँ करते थे। मालदार होने की सूरत में इतना ख़र्च करते थे कि देखने वाला देखे कि उन के माल में हाजत मन्दों के लिये और न माँगने वालों के लिये सब का हक़ है, क्योंकि यह लोग हर ज़रूरत-मन्द को उस की आवश्यक्ता नुसार दिया करते थे, इस लिये जो लोग नहीं जानते थे उन को ख़याल गुज़रता था कि उन लोगों की उन के मालों में साझे दारी है जभी तो देख कर इन्कार नहीं करते हैं और तुरन्त दे देते हैं। ऊपर इ़बादत का और यहाँ अमल का तरीक़ा बयान हुआ। यह लोग इ़ल्म और ग़ौर-फ़िक्र में भी बहुत आगे थे। हर वाक़िआ को इ़ब्रत की नज़र से और होश-हवास से देखते-सुनते थे। वह हर दम इस बात को जानते थे कि कोई ताक़त है जो इस दुनिया को अदलती-बदलती रहती है (सनाई-१८३,१८४)

كَانُوا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِينَ ۝ كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ
مَا يَهْجَعُونَ ۝ وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ۝ وَفِي
أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۝ وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ
لِّلْمُوقِنِينَ ۝ وَفِي أَنفُسِكُمْ ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ۝ وَفِي
السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ۝ فَوَرَبِّ السَّمَاءِ
وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَا أَنَّكُمْ تَنطِقُونَ ۝ هَلْ
أَتَاكَ حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ الْمُكْرَمِينَ ۝ إِذْ دَخَلُوا

यह लोग इस से पहले नेको कार थे। १७+१८. (उन की नेकियों का नमूना यह है कि) यह लोग रातों को (इ़बादत की ग़रज़ से) किसी क़द्र जागा करते, और सुब्ह के समय अल्लाह से बख़्शिश माँगा करते थे १९. और उन के मालों में (ज़रूरत-मन्द) माँगने वालों और न माँगने वालों (सब का) हक़ था २०. यक़ीन करने वालों के लिये ज़मीन में कई तरह की निशानियाँ हैं २१. और स्वयं तुम्हारे अन्दर भी! क्या तुम देखते नहीं हो? २२. और तुम्हारी रोज़ी और➲

عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ۚ قَالَ سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ۝٢٥
فَرَاغَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ۝٢٦ فَقَرَّبَهٗٓ اِلَيْهِمْ
قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ۝٢٧ فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ۚ قَالُوْا لَا
تَخَفْ ۚ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ۝٢٨ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِيْ
صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ ۝٢٩ قَالُوْا
كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ۚ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ۝٣٠

तुम्हारा बदला जिस का तुम को वादा दिया जाता है आसमानों में है। २३. पस ज़मीन और आकाश के पर्वरदिगार की क़सम है कि यह ऐसा सच है जैसे तुम ख़ुद बोल रहे हो। २४. क्या तुम को इब्राहीम के इज़्ज़तदार मेहमानों का क़िस्सा पहुंचा है? जब वह उन के पास आये तो सलाम अर्ज़ किया। २५. इब्राहीम ने भी (उत्तर में) सलाम कहा (और ख़याल किया कि) यह लोग बिल्कुल अजनबी हैं। २६+२७. अपने घर वालों की तरफ़ जल्दी गये और मोटे बछड़े का भुना गोश्त ले आये[३], ला कर उन के निकट रख दिया और कहा: क्या तुम लोग खाया नहीं करते? २८. और उन से इब्राहीम दिल में डरे। फ़रिश्तों ने कहा: चिन्ता न कीजिये और उन्हों ने उन को एक अ़िल्म वाले लड़के की शुभ सूचना दी[४]। २९. सो उन की बीवी बोलती हुयी आगे आयी और माथे को पीट कर बोली: मैं तो बूढ़ी बाँझ हूँ। ३०. फ़रिश्तों ने कहा: वाक़िआ़ तो यही है आप के पर्वरदिगार ने फ़रमाया है कि मैं बड़ी हिक्मत वाला और अ़िल्म वाला हूँ।

....

३. 'मोटा बछड़ा' सूरः इब्राहीम में 'हनीज़' (भुना हुआ) का शब्द आया है। यानी वह बछड़ा मोटा-ताज़ा था और ख़ूब भुना हुआ था।

४. हमारे मुल्क हिन्दुस्तान के राज्य पंजाब में नुबुव्वत का दावा करने वाला मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी ने भी दावा किया था कि अल्लाह ने मुझ पर वह्यि की है कि मेरे घर लड़का पैदा हो गा जो दुनिया की हिदायत और राहनुमाई करे गा और उसे नूर से भर दे गा। जब लड़का पैदा हुआ तो मिर्ज़ा साहब ने एलान कर दिया कि यह वही बच्चा है। मगर वह चन्द दिन के बाद मर गया, उस से दुनिया को न तो हिदायत पहुंची और न ही वह उसे नूर से भर सका-- इस मुद्दे पर विस्तार से हमारी किताब "तारीख़े मिर्ज़ा" का मुताला करें। (सनाई)

नोट:- यहाँ इस सूरः में हज़रत इब्राहीम और हज़रत लूत अ़लै० के क़िस्से को संक्षिप्त में बयान किया गया है। इस की तफ़सील क़ुरआन में और दूसरे स्थानों पर भी बयान हुई है। हम उचित समझते हैं कि पूरे क़िस्से को यहाँ इकट्ठा कर दिया जाये ताकि पाठकों को पूरी जानकारी एक ही स्थान पर प्राप्त हो जाये............ख़ालिद सिद्दीक़ी सूरः हूद में इस क़िस्सा को अल्लाह तआ़ला ने तफ़सील से बयान करते हुये फ़रमाया: "और हमारे भेजे हुये संदेष्टा इब्राहीम के पास शुभ सूचना ले कर पहुँचे और सलाम कहा, उन्हों ने भी उत्तर में सलाम कहा और बिना किसी देरी के गाय का भुना हुआ बछड़ा ले आये। अब जो देखा कि उन के तो हाथ भी उस की तरफ़ नहीं पहुंच रहे, तो उन को अजनबी समझ कर दिल ही दिल में उन से ख़ौफ़ करने लगे............" (पारः१२, सूरः हूद- आय न० ६९,७०,७१,७२,७३,) हज़रत इब्राहीम और फ़रिश्तों के इसी क़िस्से को सूरः हिज्र में इस प्रकार बयान किया गया है। और इस में भी फ़रिश्तों का हज़रत लूत की क़ौम पर अ़ाज़ाब नाज़िल करने से पूर्व हज़रत इब्राहीम के पास से हो कर जाने का ज़िक्र है "उन्हें इब्राहीम के पाहुनों का हाल सुना दो कि जब उन्हों ने उन के पास आ कर सलाम किया तो उन्हों ने कहा कि हम को तो तुम से डर लगता है। उन्हों ने कहा: डरो नही, ..."(पारः१४, सूरः

हिज्र-५७,५८,५९,६०) हज़रत लूत अ़लै० की कौम का वाक़िआ़ कुरआन में जहाँ भी ज़िक्र है उन से पहले हज़रत इब्राहीम का बयान अवश्य है। प्रश्न यह है कि फ़रिश्ते तो हज़रत लूत की क़ौम पर अज़ाब डालने के लिये भेजे गये थे फिर हज़रत इब्राहीम के पास क्योंकर पहुंचे? इस का उत्तर यह है कि फ़रिश्तों के ज़िम्मा दो कार्य थे (१) हज़रत इब्राहीम को बुढ़ापे में बेटे की शुभसूचना देना (२) लूत की क़ौम को हलाक करना इस लिये उन्हें हलाक करने के लिये आते हुये रास्ते में हज़रत इब्राहीम को बशारत भी दे दी।

हज़रत लूत अ़ैल०, हज़रत इब्राहीम के चचा जाये भाई थे। हज़रत इब्राहीम अ़लै० मेहमानों की बहुत सेवा करने वाले थे। वह यह नही समझ पाये कि हमारे मेहमान इन्सान की सूरत में फ़रिश्ते हैं, इस लिये इन्सान समझ कर तुरन्त उन की मेहमानी के लिये भुना हुआ बछड़ा लाकर उन की सेवा में पेश कर दिया। इस से यह भी मालूम हुआ कि मेहमान से पूछने की आवश्यक्ता नहीं, बल्कि जो भी फ़ौरी तौर पर मौजूद हो उन की ख़िदमत में पेश कर देना चाहिये, इस में बहुत अधिक तकल्लुफ़ से काम ले कर अपने आप को परेशानी में नही डालना चाहिये।

फ़रिश्तों ने हज़रत इब्राहीम को जिस लड़के की बशारत दी थी वह हज़रत इसहाक़ थे और उन की माँ हज़रत सारा थीं। हज़रत इब्राहीम और पत्नी हज़रत सारा दोनों ही ६० वर्ष की आयुसीमा को पार कर गये थे। चुनान्चे पूरः हूद की आयत न० ७१ में है "उन की पत्नी जो पास ही खड़ी थीं हंस पड़ीं तो हम ने उस को इसहाक़ की शुभ सूचना दी"। हज़रत सारा हंस क्यों पड़ीं? कुछ उलामा का कहना है कि हज़रत लूत की क़ौम के कुकर्मों के बारे में उन को भी जानकारी थी और वह भी चाहती थीं कि यह क़ौम समाप्त हो जाये, इस लिये मारे प्रसन्नता के हंस पड़ीं। कुछ उलमा का कहना है कि हंसने का संबन्ध लड़के की शुभ सूचना से है यानी बुढ़ापे की आयु में बशारत सुन कर मारे ख़ुशी के उछल पड़ीं और हंसने लगीं।

हज़रत इब्राहीम को जब पूरा विश्वास हो गया कि यह मनुष्य नही, बल्कि फ़रिश्ते हैं जो हज़रत लूत की क़ौम को हलाक करने के लिये आये हैं, तो हज़रत लूत की उस बस्ती में मौजूदगी के नाते क़ौमे लूत के बारे में सिफ़ारिश के तौर पर झगड़ना आरंभ कर दिया। फ़रिश्तों ने कहा कि हमें पता है कि इस बस्ती में लूत और उन के कुछ मानने वाले भी हैं, इस लिये हम उन सब को बचा लेंगे और वह दन्ड से सुरक्षित रहें गे

हज़रत लूत की पत्नी का बयान सूरः तहरीम की आयत न० १० में आ रहा है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: "अल्लाह ने काफ़िरों के लिये नूह की और लूत की पत्नी की मिसाल बयान फ़रमाई है। यह दोनों हमारे बन्दों में से दो नेक बन्दों के घर में थीं फिर उन की उन्हों ने ख़ियानत की..........(पारः २८, सूरः तहरीम-१०) रिवायतों में आता है कि हज़रत लूत की पत्नी ईमान नही लायी थी और यह अपनी काफ़िर क़ौम ही के मज़हब पर थी। अपने पति को मजनून, पागल और दीवाना कहती और हज़रत लूत के पास आने-जाने वाले नेक लोगों की सूचना काफ़िर नेताओं को देती थी और क़ौम के लोगों से चुग़ली खाती फिरती थी

सुरः हिज्र में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: "सुब्ह की पौ फटते ही एक धमाकेदार चीख़ ने उन को हलाक कर दिया (कि उस आवाज से उन के जिगर फट गये) फिर हमने उस बस्ती के ऊपर को नीचे की तरफ़ कर दिया और उन पर पकी हुयी मिट्टी के पत्थों की वर्षा करदी" (सूरः हिज्र- ७३,७४,७५-पारः १४) इमाम मुजाहिद फ़रमाते हैं कि हज़रत जिब्रील अ़लै० ने उन सब को जमा कर के उन के मकानों और जानवरों समेत इतनी ऊंचाई पर ले गये कि उन के कुत्तों के भूंकने की आवाज़ आसमान के फ़रिश्तों ने भी सुन ली, फिर वहीं से उन्हें उलट दिया और इस प्रकार इस लूती और कुकर्मी क़ौम का दुनिया से नाम निशान मिट गया।

..............................*ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी*

★★★★★

بِسْــــمِ اللّٰهِ الرَّحْـمٰنِ الرَّحِيْــمِ

पारः का—ल फ़मा ख़त्बुकुम् (27)

संक्षिप्त विषय सूची

का़–ल फ़मा ख़त्बुकुम् (27)

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣١﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ
اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً
مِّنْ طِيْنٍ ﴿٣٣﴾ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣٤﴾
فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٥﴾ فَمَا
وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٦﴾ وَتَرَكْنَا
فِيْهَآ اٰيَةً لِّلَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٣٧﴾
وَفِيْ مُوْسٰٓى اِذْ اَرْسَلْنٰهُ اِلٰى فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ
مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾ فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٣٩﴾
فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿٤٠﴾
وَفِيْ عَادٍ اِذْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ ﴿٤١﴾ مَا
تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ اَتَتْ عَلَيْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ ﴿٤٢﴾
وَفِيْ ثَمُوْدَ اِذْ قِيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٤٣﴾ فَعَتَوْا
عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿٤٤﴾

३१. इब्राहीम ने कहाः (ऐ अल्लाह के भेजे हुये) रसूलो! अस्ल काम तुम्हारा क्या है? (जिस के लिये तुम आये हो) ३२. वह बोलेः हम एक बदकार क़ौम (लूतियों) की तरफ़ भेजे गये हैं ३३+३४. ताकि उन पर मिट्टी के जमे हुये पत्थर बरसायें जो तेरे पर्वरदिगार के पास बेहूदा लोगों के लिये मुक़र्रर हो चुके हैं ३५. तो जो लोग उस में ईमान वाले थे हम ने उन को (तबाह होने वालों में से) निकाल लिया (और बाक़ी लोगों को हलाक कर दिया)। ३६. मगर सारी बस्ती में हम ने एक घर से अधिक कोई मुसलमान न पाया ३७. और जो लोग (बुरे कामों की सज़ा में) दर्दनाक अ़ज़ाब से डरा करते हैं उन के लिये हम ने उस बस्ती में एक बहुत बड़ी निशानी बाक़ी रखी। ३८. और मूसा के वाक़िए में निशान हैं जिस समय हम ने उस को फ़िरऔन की तरफ़ रौशन दलील के साथ भेजा। ३९ तो फ़िरऔन ने अपने ज़ोर के घमन्ड से मुंह मोड़ा और बोलाः यह तो बड़ा जादूगर या पागल है। ४०. पस हम ने उस को और उस की फ़ौज को पकड़ कर दरिया में डुबो दिया ऐसे हाल में कि वह शर्मिन्दा था। ४१. और आ़द क़ौम के वाक़िआ़त में भी निशान हैं (ख़ास कर) जिस समय हम ने उन पर एक तेज़-तुन्द हवा चलाई। ४२.(उस की ख़ासियत थी कि) जिस चीज़ को छू जाती उस में से रूह निकाल कर उसे चूरा कर देती। ४३. और (सुनो!) समूद क़ौम में भी कई निशान हैं। जब उन को कहा गया कि तुम लोग एक ख़ास वक़्त तक फ़ायदा उठा लो ४४. पस वह अपने पर्वरदिगार के हुक्म से सरकश हो गये फिर अल्लाह के क़हर ने उन को आ दबाया जब कि वह (अपनी आँखों से) देखते थे

....

५. यानी ऐसे लोगों की सज़ा जो पत्थराव की सूरत में अल्लाह के हाँ मुक़र्रर है वह उन को देने के लिये हम दुनिया➲

➲में ले आये हैं। हज़रत इब्राहीम अ़लै० ने यह सुन कर उन से कुछ प्रश्न किये जिस का उन्हें उत्तर भी दिया गया। फिर वह फ़रिश्ते हज़रत इब्राहीम अ़लै० से फ़ारिग़ हो कर हज़रत लूत की बस्ती में आये। (सनाई)

इन आयतों में यह बयान है कि हज़रत इब्राहीम ने फ़रिश्तों से कहा कि आप लोग किस वास्ते तशरीफ़ लाये हैं? उस के उत्तर में फ़रिश्तों ने कहा: हम क़ौमे लूत को हलाक करने के लिये भेजे गये हैं, लेकिन उन को हलाक करने से पहले नेक लोगों को वहाँ से निकाल दें गे और वहाँ पर हज़रत लूत अ़लै० के घराने के अ़लावा और कोई था भी नहीं। 'वतरकना' (आयत३७) यह अल्लाह तआ़ला अपनी तरफ़ से इर्शाद फ़रमाता है कि इस बस्ती में अब तक हमारे ग़ुस्सा की निशानियाँ मौजूद हैं, जिन को अल्लाह के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ है वह इस से नसीहत हासिल करते हैं। आयत न० ३८ से हज़रत मूसा, हूद और नूह अ़लै० की क़ौमों का ज़िक्र है और इन पर जो अ़ज़ाब नाज़िल हुये उन का संक्षिप्त में ज़िक्र है। इन क़ौमों के वाक़िआ़त को बता कर मक्का के काफ़िरों को यह पाठ पढ़ाया है कि जिस प्रकार तुम से पहली उम्मतें सर्कशी और नार्फ़मानी की वजह से हलाक की गयीं इसी प्रकार तुम भी हलाक कर दिये जाओ गे, वर्ना अपनी सर्कशी से बाज़ आ जाओ। फिर इस के बाद अपनी क़ुदरत का इज़हार करते हुये फ़रमाया: आकाश को हम ने अपने हाथों से बनाया, ज़मीन को हम ने पानी पर बिछाया, और तमाम चीज़ें हम ने पैदा कीं, इन सब के बनाने में हम ने किसी से कोई मदद नहीं ली और न ही मदद के मुहताज थे- इसलिय केवल हमारी ही इ़बादत और बन्दगी करो और कुफ़्र - शिर्क से दूर रहो। इस के बाद अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को तसल्ली देते हुये फ़रमाया: तुम उन की लग़्व और बेहूदा बातों को नज़र अन्दाज़ कर दिया करो, लेकिन उन को समझाने-बुझाने और नसीहत करने से बाज़ न आओ। अगर तुम्हारी नसीहत उन को फ़ाइदा न करे लेकिन मुसलमानों को तो करे गी ही (तफ़्सीर मिर्ज़ा हैरत)

६. जादूगरी तो इस में यह है कि जो उस के पास जाता है उसी का हो जाता है और पागलपन उस में यह है कि ऐसे शक्तिशाली बादशाह की मुख़ालिफ़त करता है जो एक हुक्म देकर उस को फ़ना कर दे। बस उस का यह कहना था कि हमारा ग़ज़ब जोश में आया और उस को और उस के लाव-लश्कर को दरिया में डुबो दिया और उस की सारी शेख़ी धरी की धरी रह गयी। (सनाई)

فَمَا اسْتَطَاعُوا مِن قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُنتَصِرِينَ ﴿٤٥﴾
وَقَوْمَ نُوحٍ مِّن قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٤٦﴾
وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ﴿٤٧﴾ وَالْأَرْضَ
فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْمَاهِدُونَ ﴿٤٨﴾ وَمِن كُلِّ شَيْءٍ
خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٤٩﴾ فَفِرُّوا إِلَى
اللَّهِ ۖ إِنِّي لَكُم مِّنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥٠﴾ وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ
اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۖ إِنِّي لَكُم مِّنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥١﴾ كَذَٰلِكَ
مَا أَتَى الَّذِينَ مِن قَبْلِهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ
أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٥٢﴾ أَتَوَاصَوْا بِهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٥٣﴾

४५. फिर (तो ऐसे मर मिटे कि) न तो वह (अपने स्थानपर) खड़े रह सके और न अपनी मदद कर सके। ४६. और (सुनो!) उन से (बहुत मुद्दत) पहले नूह की क़ौम को हम ने तबाह किया था (क्योंकि) वह बदकार लोग थे। ४७. आसमान हम ने अपने हाथों से बनाया है और हम (बहुत बड़ी कुशादगी वाले हैं।) ४८. हम ही ने यह ज़मीन बिछा दी है और हम कैसे अच्छे फ़र्राश {बिछाने वाले} हैं। ४९. और हम ने हर चीज़ की दो-दो क़िस्में पैदा की हैं ताकि तुम (क़ुदरत के निशान देख कर) नसीहत पाओ। ५०. पस तुम लोग अल्लाह की तरफ़ लपक कर आओ मैं उसी की तरफ़ से तुम को साफ़-साफ़➲

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ أَنْتَ بِمَلُوْمٍ ۝ وَّذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ۝ مَآ أُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ أُرِيْدُ أَنْ يُّطْعِمُوْنِ ۝ إِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ۝

डराने वाला हूँ ५१. और अल्लाह के साथ कोई और माबूद मुक़र्रर न करो (न किसी नबी को, न वली को, न किसी बुत को) मैं निःसंदेह तुम को उस की तरफ़ से साफ़-साफ़ डराने वाला हूँ। ५२. इसी प्रकार उन से पहले लोगों के पास भी जब कभी कोई रसूल आया तो उन्हों ने कहा: यह जादूगर है या मजनून। ५३. क्या उन्हों ने परस्पर (एक दूसरे को) इस काम की वसिय्यत कर रखी है? बल्कि यह लोग सर्कश क़ौम हैं। ५४. पस तू उन से मुंह फेर ले (तब्लीग़ के बाद) तुझ को किसी तरह की मलामत नही ५५. हाँ, तू नसीहत करता रह क्योंकि नसीहत ईमान्दारों को फ़ाइदा करती है[८]। ५६. और हम ने जिन्नों और इन्सानों को इसी लिये पैदा किया है कि वह मेरी अ़िबादत करें[९]। ५७. और मैं उन से रोज़ी का चाहने वाला नहीं हूँ और न यह चाहता हूँ कि वह मुझे खाना खिलायें। ५८. अल्लाह ही बड़ा रोज़ी {आजीविका} देने वाला, शक्तिमान एवँ ज़बर्दस्त है।

....

७. उन की बदकारी का सबूत इस से ज़्यादा और क्या हो गा कि हज़रत नूह अ़लै० ने उन को एक हज़ार वर्ष के क़रीब समझाया मगर सीधी राह पर न आये, हमारी निशानियों को देख कर भी अपने कुफ़्र ही पर अड़े रहे। अब भी ग़ौर करने के लिये इस में काफ़ी निशानियां हैं। ज़रा देखोतो यह आसमान जो इतना बड़ा बुलन्द और असीमित मालूम होता है, यह सब हम ने अपने हाथों से बनाया है। हमारी क़ुदरत के सामने यह आसमान और ज़मीन भी कुछ नहीं हैं, जिन लोगों ने दुनिया के निज़ाम पर ग़ौर किया है वह हमारी अथाह शक्ति का अनुमान लगा सकते हैं। (सनाई)

८. इस आयत में इस बात की ओर इशारा है कि किसी सर्कश गरोह की सर्कशी या मुख़ालिफ़ शख़्स की मुख़ालिफ़त की बुनियाद पर तबलीग़ व इस्लाह का काम तर्क नहीं करना चाहिये। बल्कि यह सोच कर करते रहना चाहिये कि अगर यह नही मानते हैं तो जो सन्जीदा और ठन्डे मिज़ाज के हैं वह तो सुनें गे और वह अ़मल करें गे। मेरे और अल्लाह के निकट वही लोग मोमिन हैं और वही लोग कायनात की पैदाइश का उद्देश्य हैं, क्योंकि मैं (अल्लाह) तो अपनी ज़ात में ग़नी हूँ, मैं ने जो कुछ पैदा किया है उस से मेरी ज़ाती कोई ग़रज़ नही है और न ही उन चीज़ों से मैं अपनी कोई कमी पूरी करता हूँ।

९. लेकिन एक बात है और वह यह कि बिना किसी उद्देश्य के किसी चीज़ को पैदा करना हिक्मत से ख़ाली है, इस लिये जिन्नों और इन्सानों को मैं ने पैदा किया है कि वह मेरी अ़िबादत करें। और इस अ़िबादत करने में मेरा कोई लाभ नहीं है, बल्कि उन्ही का लाभ हो गा। और मैं उन को पैदा करके उन से रोज़ी का तालिब नहीं हूँ और न यह चाहता हूँ कि तंगी और भूख के वक़्त मुझे खाना खिलायें। अगर किसी के दिल में इस प्रकार का कोई शुब्हा है तो वह जान ले कि मैं बड़ा रोज़ी देने वाला, ज़र्बदस्त क़ुदरत वाला हूँ।

فَإِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ أَصْحٰبِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُوْنِ ۝ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ يَّوْمِهِمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ۝

५९. इन ज़ालिमों के ज़िम्मा बहुत से गुनाह लगे हुये हैं[१०] जैसे इन से पहले लोगों के ज़िम्मा थे (जो एक दिन उन को भुगतने हों गे) पस यह लोग मुझ से जल्दी न करें। ६०. फिर जिस दिन के अ़ज़ाब से उन को डराया जाता है उस दिन

मुन्किरों के लिये (बिहद) अफ़सोस हो गा।

....

१०. 'ज़नूब' का लफ़्ज़ी अर्थ है "बड़ा डोल" और मुरादी माना है "अ़ज़ाब का हिस्सा"। मौलाना मर्हूम ने यहाँ बामुहावरा तर्जुमा किया है जो कि निहायत बेहतरीन है।

सूरः तूर- (52)

سُوْرَةُ الطُّوْرِ مَكِّيَّةٌ (٥٢) (٧٦)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالطُّوْرِ ﴿١﴾ وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ﴿٢﴾ فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ﴿٣﴾
وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ﴿٤﴾ وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ﴿٥﴾ وَالْبَحْرِ
الْمَسْجُوْرِ ﴿٦﴾ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾ مَّا لَهٗ
مِنْ دَافِعٍ ﴿٨﴾ يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ﴿٩﴾ وَّتَسِيْرُ
الْجِبَالُ سَيْرًا ﴿١٠﴾ فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١١﴾
الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ﴿١٢﴾ يَوْمَ يُدَعُّوْنَ
اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ﴿١٣﴾ هٰذِهِ النَّارُ الَّتِيْ كُنْتُمْ
بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٤﴾ اَفَسِحْرٌ هٰذَآ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ﴿١٥﴾

सूरः तूर मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[1]। इस में ४९ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. क़सम है तूर पर्वत की २+३. और (इल्हामी) किताब की जो बड़े-बड़े काग़ज़ों में लिखी हुयी है ४. और आबाद घर की[2] ५. और ऊँची छत (की तरह आसमानों) की ६. और जोश मारने वाले समुन्दर की ७. (इन क़समों का उत्तर सुनो) तुम्हारे पर्वरदिगार का अ़ज़ाब अवश्य नाज़िल होगा[3] ८. उस को कोई दफ़ा करने वाला नही होगा ९. (वह उस दिन हो गा) जिस दिन आकाश बड़ी तेज़ हर्कत करेगा १०. और पहाड़ बड़ी तेज़ी से फिरें गे (उस दिन का नाम क़ियामत है) ११. फिर उस दिन झुठलाने वालों के लिये बड़ी ख़राबी हो गी १२. जो बेहूदा बक्वास और खेल-तमाशा करते रहते हैं। १३. जिस दिन यह लोग (बड़ी ज़िल्लत से) जहन्नम की तरफ़ धकेले जायें गे १४. (कहा जाये गा) यही (वह जहन्नमी) आग है जिस को तुम लोग झुठलाया करते थे १५. भला यह जादू है या तुम देखते नहीं? (ज़रा आँखें खोल कर देखो तो सही तुम्हारे सामने क्या हो रहा है?)

....

१. हज़रत जुबैर बिन मुत्इम रज़ि फ़रमाते हैं कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मग़्रिब की नमाज़ में सूरः तूर को पढ़ते हुये सुना है, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से ज़्यादा अच्छी आवाज़ और अच्छी क़िरात के साथ तिलावत करने वाला किसी को नही सुना। (मु-अत्ता इमाम मालिक) हज़रत उम्मे सलमा फ़रमाती हैं कि हज्ज के ज़माने में मैं बीमार थी, मैं ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अपना हाल बयान फ़रमाया तो आप ने मुझ से कहा कि तुम सवार हो कर लोगों के पीछे तवाफ़ करलो, चुनान्चे मैं ने सवारी पर बैठ कर तवाफ़ किया उस समय आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बैतुल्लाह के एक कोने में नमाज़ पढ़ रहे थे (मुहम्मदी) 'तूर' का शब्द आ़म पहाड़ के लिये भी बोला जाता है और वादी सैना के एक पर्वत का भी नाम है। आज कल के इतिहासकारों का कहना है

कि वादी सैना के तूर पहाड़ से मुराद "जबले मूसा" (मूसा का पर्वत) है जिस की ऊँचाई ७३५९ फुट है।
२. 'बैतुलमामूर' के बारे में मेराज वाली हदीस में रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सातवें आसमान से आगे बढ़ने के बाद मुझे बैतुलमामूर दिखाया गया। इस घर में सत्तर हज़ार फ़रिशते अल्लाह की ि़बादत के लिये जाते हैं, फिर दूसरे दिन इतने ही जाते हैं। इस प्रकार रोज़ ही इतने फ़रिश्ते उस घर में जाते हैं, और जो एक बार जाता है फिर उस की बारी क़ियामत तक नही आती। जिस प्रकार ज़मीन में बैतुल्लाह का तवाफ़ होता है इसी प्रकार आसमान में तवाफ़ और ि़बादात करने की वह जगह है। इसी हदीस में आगे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बयान फ़रमाया कि मैं ने हज़रत इब्राहीम अ़लै० को देखा कि आप बैतुलमामूर से कमर लगाये हुये बैठे हैं। इस में एक ख़ास अहम बात यह है चूंकि बैतुल्लाह का निर्माण करने वाले यही थे इस लिये आसमान पर भी वहाँ के काबे से लगे हुये आप को देखा तो गोया इस दुनिया में बैतुल्लाह के निर्माण का नेक बदला इस तरह आसमान में उन को दिया गया। यह बैतुलमामूर ठीक बैतुल्लाह शरीफ़ के ऊपर सातवें आसमान पर है। वैसे तो हर आसमान पर बैतुल्लाह शरीफ़ के ठीक ऊपर एक-एक ि़बादत घर है जिस में हर आसमान के फ़रिश्ते ि़बादत करते हैं। पहले आसमान पर ठीक बैतुल्लाह शरीफ़ के ऊपर जो ि़बादत घर है उस का नाम "बैतुलअ़िज़्ज़त" है (मुहम्मदी)
३. इन क़समों के बाद जिस चीज़ पर यह क़समें खाई गयी थीं उन का बयान हो रहा है कि काफ़िरों पर अ़ज़ाब आने वाला है और यह यक़ीनी तौर पर आने वाला है। और जब वह आ जाये गा तो कोई रोकने वाला न होगा। इब्ने अबी दुनिया में रिवायत है कि एक रात हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० शहर की देख-भाल करने के लिये निकले तो किसी मकान से कुरआन पढ़ने की आवाज़ सुनाई दी, वह सूरः तूर पढ़ रहा था। आप ने सवारी रोक ली और ठहर कर सुनने लगे। जब तिलावत करने वाला आयत न०७ पर पहुंचा तो आप की ज़बान से तुरन्त निकल गया "काबा के रब की क़सम सच्ची" है। फिर अपने गधे से उतर कर दीवार से टेक लगा कर बैठ गये, उठ कर खड़े होने और चलने-फिरने की ताक़त ख़त्म हो गयी। इसी हालत में बड़ी देर तक बैठे रहे फिर जब ज़रा होश ठिकाने लगे तब घर वापस आये (इब्ने अबी दुनिया) लेकिन अल्लाह के कलाम का डर और दहशत इतना दिल में घर कर गया था कि मुसलसल एक महीना तक बीमार पड़े रहे। लोग उन की ख़ैरियत मालूम करने के लिये आते तो किसी को पता ही न चलता था कि उन को कौन सी बीमारी है।

एक अन्य रिवायत में है कि एक मर्तबा आप की तिलावत में यह आयत आयी तो उसी समय रोते-रोते हिचकी बंध गयी और इतने प्रभावित हुये कि बीमार हो गये और २० दिन तक लोगों के आने-जाने का सिलसिला बंधा रहा। (मुहम्मदी)

اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ؕ
اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ
فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَعِيْمٍ ۙ﴿۱۷﴾ فٰكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَوَقٰهُمْ
رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿۱۸﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـئًۢا بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۙ﴿۱۹﴾ مُتَّكِئِيْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ ۚ وَ
زَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿۲۰﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ
ذُرِّيَّتُهُمْ بِاِيْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ اَلَتْنٰهُمْ

१६. इस में दाख़िल हो जाओ (और दाख़िल हो जाने के बाद तक्लीफ़ों पर) सब्र करना या न करना तुम्हारे हक़ में सब बराबर है। इस के सिवा कोई बात न होगी कि तुम लोगों को वही बदला मिले गा जो तुम करते रहे। १७.१८. (सुनो!) परहेज़गार बाग़ों और नेमतों में हैं, जो कुछ उन के पर्वरदिगार ने उन को दिया है उस के साथ मज़े कर रहे हैं और उन को उन के रब ने जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा लिया है १९. २०. (उन को इजाज़त है कि) नेक कामों के

مِّنْ عَمَلِهِم مِّن شَيْءٍ ۚ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ﴿٢١﴾ وَأَمْدَدْنَاهُم بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢٢﴾ يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَّا لَغْوٌ فِيهَا وَلَا تَأْثِيمٌ ﴿٢٣﴾ وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُونٌ ﴿٢٤﴾ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٥﴾ قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ﴿٢٦﴾ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا

➡बदले में मज़े से खाओ-पियो बिछे हुये तख़्तों पर (आराम से) बैठ कर। और हम ने सफ़ेद रंग की मोटी आँखों वाली महिलाओं से उन का जोड़ा बना दिया है। २१. और जो ईमानदार हैं और उन की औलाद भी उन के ताबे है तो हम ने उन की औलाद को उन के साथ मिला दिया है[४] (उन को क़रीब-क़रीब जगह दे दी गयी है) और उन के आमाल से हम ने कोई कमी नही की। हर एक आदमी अपने किये (आमाल की सज़ा) में फंसा है। २२. (हाँ, जन्नती लोग हर प्रकार की बन्दिश से आज़ाद हैं) और हर प्रकार के फल-फूल और हर क़िस्म के गोश्त से जो भी वह चाहते हैं हम ने उन को बढ़ा रखा है। वह उस में एक दूसरे को प्याले भर-भर कर दे रहे हैं, २३. उस में न (नशा और नशा के असर से) बेहूदा हर्कत और न गुनाह का काम है[५]। २४. और उन के छोटे बच्चे उन के आस-पास (ऐसे) फिर रहे हैं गोया वह चमकते हुये मोती हैं[६]। २५. और एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह हो कर परस्पर प्रश्न करें गे (कि इतनी बड़ी नेमत हम को कौन से अमल के बदले में मिली है) २६. वह कहें गे: हम तो इस से पहले अपने बाल-बच्चों में डरते रहते थे (कि कहीं अल्लाह हम से नाराज़ न हो जाये) २७. अल्लाह ने हम पर एहसान किया

....

४. जब जन्नती शख़्स जन्नत में जाये गा और अपने माँ-बाप और बीवी-बच्चों को न पाये गा तो पूछे गा कि वह कहाँ हैं? उत्तर मिले गा कि वह तुम्हारे मर्तबा तक नही पहुंचे, यह कहे गा कि मैं ने तो अपने लिये और उन के लिये नेक आमाल किये थे। चुनान्चे हुक्म दिया जाये गा और उन्हें भी उन के दर्जे में पहुंचा दिया जाये। यह भी रिवायत है कि जन्नतियों में जिन की औलाद ने ईमान कुबूल किया और नेक कार्य किये वह तो उन के साथ शामिल कर दी जायेगी, लेकिन उन के जो छोटे बच्चे बचपने ही में देहान्त कर गये थे वह भी उन के पास पहुंचा दिये जायें गे (मुहम्मदी)

५. इस आयत में उन लोगों के ख़याल की तर्दीद की गयी है जो जन्नत में दुनिया जैसी शराब-कबाब का ताना दिया करते हैं। चुनान्चे रद्द करते हुये फ़रमाया: वहाँ की शराब निहायत पाकीज़ा हो गी जिस में तनिक भर नशा न होगा बस केवल खुशी और आराम का सामान हो गा। जब उस में नशा ही न हो गा तो फिर वहाँ दुनियावी नापाक नशाबाज़ों की तरह बेहूदा और वाहियात हर्कत का क्या काम। (राज़)

६. 'बच्चे आस-पास घूम रहे हों गे' यह बच्चे कहाँ के हों गे? दुनिया के या आख़िरत के? नवाब सिद्दक़ हसन ख़ाँ रह० अपनी तफ़्सीर "फ़तहुल बयान" में सूरः दहर की तफ़सीर में लिखते हैं " कुछ मुफ़स्सिरों का यह भी ख़याल है कि वह बच्चे जन्नत वालों के दुनियावी बच्चे हों गे। जमहूर उलमा का यह कहना है कि वह जन्नत में ख़ास उन की सेवा के लिये पैदा हुये बच्चे हों गे। मौलाना मर्हूम ने तफ़्सीर सनाई में दोनों पहलू बयान कर दिये हैं।

وَوَقَانَا عَذَابَ السَّمُومِ ﴿٢٧﴾ إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلُ نَدْعُوهُ ۖ

और (केवल अपने फ़ज़्ल व करम से) हम को दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लिया। २८. हम तो➡

إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْبَرُّ ٱلرَّحِيمُ ﴿٢٨﴾ فَذَكِّرْ فَمَآ أَنتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ﴿٢٩﴾ أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهِۦ رَيْبَ ٱلْمَنُونِ ﴿٣٠﴾ قُلْ تَرَبَّصُوا۟ فَإِنِّى مَعَكُم مِّنَ ٱلْمُتَرَبِّصِينَ ﴿٣١﴾ أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَٰمُهُم بِهَٰذَآ ۚ أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٣٢﴾ أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُۥ ۚ بَل لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٣﴾ فَلْيَأْتُوا۟ بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِۦٓ إِن كَانُوا۟ صَٰدِقِينَ ﴿٣٤﴾ أَمْ خُلِقُوا۟ مِنْ غَيْرِ شَىْءٍ أَمْ هُمُ ٱلْخَٰلِقُونَ ﴿٣٥﴾ أَمْ خَلَقُوا۟ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ ۚ بَل لَّا يُوقِنُونَ ﴿٣٦﴾ أَمْ عِندَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ ٱلْمُصَيْطِرُونَ ﴿٣٧﴾ أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ ۖ فَلْيَأْتِ مُسْتَمِعُهُم بِسُلْطَٰنٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾ أَمْ لَهُ ٱلْبَنَٰتُ وَلَكُمُ ٱلْبَنُونَ ﴿٣٩﴾ أَمْ تَسْـَٔلُهُمْ أَجْرًا فَهُم مِّن مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ﴿٤٠﴾ أَمْ

पहले ही से उसी को पुकारते थे। बेशक वह बड़ा एहसान करने वाला, मेहरबान है। २९. पस तू (लोगों को उन बातों की) नसीहत किया कर, तू अल्लाह के फ़ज़्ल से न तो काहिन है[७]और न मजनून है। ३०. क्या यह लोग (तेरी निस्बत यह भी) कहते हैं कि यह कवि है, हम उस के हाल पर (ज़माना के) इन्क़िलाब का इन्तिज़ार करते हैं। ३१. तू (उन से) कह: तुम इन्तिज़ार कर रहे हो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ (तुम देख लो गे कि ऊँट किस कर्वट बैठता है)३२. क्या उन की अक़्लें उन को यह राहनुमाई करती हैं। या वास्तव में यह सरकश लोग हैं[८]। ३३. क्या यह कहते हैं कि उस (नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने इस को स्वयँ ही बना लिया है? बल्कि यह लोग स्वयँ मानने वाले नहीं। ३४. पस अगर यह सच्चे हैं तो उस जैसा कोई कलाम ले आयें[९]। ३५. क्या यह लोग बग़ैर किसी चीज़ के पैदा हो गये हैं? या खुद ही अपने ख़ालिक़ हैं? ३६. क्या उन्हों ने आसमान और ज़मीन बनाये हैं? बल्कि (अस्ल बात यह है कि) यह लोग यक़ीन नहीं करते। ३७. क्या तेरे पर्वरदिगार के ख़ज़ाने उन के पास हैं? या यह (इस पैगंबरी के बांटने पर) मुक़र्रर किये गये (हाकिम) हैं (कि उन की राए लेनी भी ज़रूरी थी) ३८. क्या उन के पास कोई सीढ़ी है जिस पर चढ़ कर सुन पाते हैं? अच्छा फिर उन में का सुनने वाला अपनी खुली दलील ले आये। ३९. क्या अल्लाह के हिस्से में लड़कियाँ और तुम्हारे हिस्से में लड़के हैं? ४०. क्या तू उन से मज़दूरी माँगता है कि वह उस क़र्ज़ से दबे जाते हैं?

....

७. 'काहिन' का अर्थ है "ग़ैब की बातें बताने वाला" कुरआन मजीद में जो भविष्यवाणी की जाती और वह ज़ाहिर हो जाती तो काफ़िर लोग हसद और ज़िद की वजह से यह कह देते कि यह शख़्स काहिन है। इन ही लोगों के बारे में फ़रमाया गया कि इस कुरआन को काहिन की बात कह देना ज़िद और ग़ुस्सा की वजह से है। दिल में तो वह भी जानते हैं कि तुम न तो काहिन हो और न मजनून। तुम्हारे काहिन या मजनून होने की कोई दलील नही है, बल्कि अक्सर-बेश्तर काफ़िरों ने भी इस का इक़रार किया है और भरी सभाओं में बयान दिया है कि यह कलाम काहिनों का कलाम नही है, बल्कि यह तो ऐसा कलाम है जो बेजोड़ है। बड़े-बड़े काहिन, अक़्लमन्द, कवि इस कलाम को सुन कर हैरान हैं और इस जैसा कहने से आ़जिज़ हैं। इन तमाम शवाहिद (गवाहियों) की बुनियाद पर उस को जुनून, कहानत कहना केवल हसद औद ज़िद की बुनियाद पर है (हमीदी)

८. यानी ऐसी बातें कहने या करने की अगर उन को किसी ने राय दी है तो अ़क़्ल ऐसी वाहियात और लीचड़ बात की राय नही दे सकती। आयत ४१ में फ़रमाया कि उन के पास ग़ैब का अ़िल्म नही है जो उन्हों ने लौहे-महफ़ूज़

में लिखा हुअ देख लिया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन से पहले फ़ौत हों गें जिस से वह कहने लगे हैं कि हम उन के फ़ौत होने का इन्तिज़ार कर रहे हैं। (हमीदी)

९. यानी इस कलाम में ग़ौर करो और अगर क़ुबूल करने के लाइक़ हो तो क़ुबूल करो। और अगर कुछ अ़ैब बतला सकते हो तो दिखाओ। तुम सब इकट्ठे हो कर एक दूसरे की मदद करो गे तब भी हर्गिज़ उस के समान कोई कलाम नही ला सको गे। और फिर ऐसा ही हुआ कि जलते रहे ओर दाँत पीसते रहे, लेकिन यह न हो सका कि इस मामले में उस का मुक़ाबला कर सकते, या उस के अन्दर कोई अ़ैब दिखला सकते हो तो दिखलाओ। और तुम सब मिल कर इस जैसा बनाने की कोशिश करो तो भी नहीं बना सकते हो।

बैहक़ी और हाकिम की रिवायतों में है कि वलीद बिन मुग़ीरा ने हरम शरीफ़ के अन्दर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़बान मुबारक से कुछ आयतें तिलावत करते हुये सुनी तो वह उस की फ़साहत और बलाग़त पर हैरान रह गया और अपने साथियों से कहने लगा कि अल्लाह की क़सम! मैं ने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की ज़बान से ऐसा कलाम सुना है जो न तो इन्सान का कलाम है और न ही जिन्नों का। उस में तो बड़ी मिठास है...........। वलीद के इस क़ौल से पूरे शहर में हलचल मच गयी और कुछ न बन पड़ा तो यह कहना शुरू कर दिया कि यह भी अपने बाप-दादा के दीन से फिर गया है और इस की देखा-देखी और लोग भी फिर जायें गे। अबू जेहल ने वलीद से कहा कि तुम्हारी यह बात मश्हूर हो गयी है, इस लिये तुम क़ुरआन के ख़िलाफ़ एक बयान दे डालो ताकि लोगों की ग़लतफ़हमी दूर हो जाये। उस ने कहा कि मैं ऐसा नहीं करूँ गा। अबू जेहल ने कहा कि अगर सख़्त बयान नहीं तो हल्का-फुल्का ही दे डालो। तब वलीद ने कहा कि उस को जादू कहना चाहिये, क्योंकि इस किताब के आने के बाद आपस के रिश्ते टूट गये, रिश्तेदार-रिश्तेदार से जुदा हो गये, खान्दान में फूट पट़ गयी। जादू से भी अक्सर ऐसा ही होता है।

मतलब यह है कि इस कलाम से नफ़रत के बावजूद उस की फ़साहत-बलाग़त का मख़्लूक़ की ताक़त से बाहर होना मान लिया। इस हदीस को इमाम अहमद, तिर्मिज़ी, इब्ने मुन्ज़ुर और इब्ने अबी हातिम ने रिवायत किया है- (हमीदी)

४१. या उन के पास ग़ैब का ज्ञान है कि उस को लिखते हैं (कुछ नही) ४२. तो क्या यह कोई मक्र व धोका करना चाहते हैं? बल्कि बेईमान लोग स्वयँ पकड़ में आ जायें गे[१०] ४३. क्या उन के लिये अल्लाह के अ़लावा कोई और माबूद है? (अल्लाह की पनाह:) अल्लाह उन के शिर्क से पाक है।४४. और अगर कोई टुक्ड़ा आसमान से गिरा हुआ पालें तो (यही) कहें गे कि यह तो जमा हुआ बादल है(इस में अ़ज़ाब वग़ैरह कुछ नहीं) ४५. तू (ऐ नबी!) उन को छोड़ दे यहाँ तक कि अपने उस दिन को पायें जिस में यह लोग बेहोश हो जायें गे[११] ४६. जिस दिन न उन की चालबाज़ी कुछ काम आये गी और न उन को मदद ही पुहँचे गी। ४७. जो लोग ज़ालिम हैं उन के लिये इस से पहले एक

عِندَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٤١﴾ أَمْ يُرِيدُونَ
كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ ﴿٤٢﴾ أَمْ لَهُمْ
إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٣﴾ وَإِن
يَرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ
مَّرْكُومٌ ﴿٤٤﴾ فَذَرْهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ
يُصْعَقُونَ ﴿٤٥﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا
وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٦﴾ وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا
دُونَ ذَٰلِكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٧﴾ وَاصْبِرْ
لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا ۖ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ
تَقُومُ ﴿٤٨﴾ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ﴿٤٩﴾

अ़ज़ाब है (जो दुनिया ही में उन को पहुंचे गा) मगर उन में से बहुत से लोग नहीं जानते (पस तू अपने काम में लगा रह) ४८. और अपने पर्वरदिगार के आदेशनुसार सब्र किये जा, कुछ शक नही कि तू हमारे सामने है और जब उठा कर तो अपने पर्वरदिगार की हम्द के साथ तस्बीह पढ़ा कर[१२]। ४९. और रात को भी तस्बीह पढ़ा कर और सितारों के डूबने के बाद भी तस्बीह पढ़।

....

१०. 'कैद्' के बहुत से अर्थ हैं, जैसे धोका, मक्र, जंग, कै करना, मुशक्कत व मेहनत करना, मर जाना, इरादा करना, सख़्ती करना वग़ैरह (मुन्तहल इर्ब) जब इस शब्द के बेशुमार माना हैं तो आर्य धर्म के लोगों का यह कहना कि कुरआन अल्लाह को मक्कार कहता है ग़लत है। (हमीदी)

११. इन आयतों में अल्लाह तआ़ला ने कुरआन पर एतराज़ करने वालों से पूछा है कि अगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इसे अपने तौर पर बनाया है तो इस ज़बान के जानने वाले एक से बढ़ कर एक पड़े हैं क्यों नहीं इस के मुक़ाबले में बना लाते? आख़िर कौन सी चीज़ रूकावट है? फिर ज़मीन, आसमान और तुम को किस न पेदा किया है?अगर आप से आप पैदा हो गये हैं तो इस की कौन सी दलील तुम्हारे पास है? और अगर दलील है तो पेश करो वर्ना यह जिहालत और नादानी की बात है। (हमीदी)

१२. हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब सभा (मज्लिस) से उठते तो यह दुआ़ पढ़ते: "सुब्हा-न-कल्लाहुम्म वबि-हम्दि-क अश्-हदु अल्लाइला-ह इल्ला अन्-त अस्-तग़्फ़िरू-क व-अतूबु इलै-क" नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो कोई मज्लिस से उठते हुये इस दुआ़ को पढ़ ले और अगर उस मज्लिस में उसने नेकी की हो गी तो अल्लाह के हाँ से उस पर मुह्र लग कर महफ़ूज़ हो जाये गी। और अगर बुराई की होगी तो उस के गुनाह माफ़ हो जायें गे। संभवत: आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इस दुआ़ को पढ़ना इस आयत के हुक्म के मुताबिक़ है (सनाई)

सूरः नज्म्-(53)

सूरः नज्म (सुरय्या सितारा) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ६२ आयतें और ३ रूकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है।

१. बड़े सितारे की क़सम है जब वह झुकता है[१] २. तुम्हारा साथी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) न गुमराह हुआ और न बहका है ३. वह अपनी नफ़्सानी ख़ाहिश से नही बोलता ४. (बल्कि) वह अल्लाह की तरफ़ से वह्यि है जो उस की तरफ़ भेजी गयी है ५+६.उस को बड़े क़वी ज़बरदस्त (फ़रिश्ते) ने शिक्षा दी है तो

عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَأْوٰى ﴿١٥﴾ إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ﴿١٦﴾
مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ﴿١٧﴾ لَقَدْ رَأٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ
الْكُبْرٰى ﴿١٨﴾ أَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ﴿١٩﴾ وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ
الْأُخْرٰى ﴿٢٠﴾ أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنْثٰى ﴿٢١﴾ تِلْكَ إِذًا قِسْمَةٌ
ضِيْزٰى ﴿٢٢﴾ إِنْ هِيَ إِلَّآ أَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَآ أَنْتُمْ وَ
اٰبَآؤُكُمْ مَّآ أَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۭ إِنْ يَّتَّبِعُوْنَ
إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ

➲वह तय्यार हो गया ७. और वह बुलन्द चोटी पर था ८. फिर वह लगा और झुका ९. फिर वह कमान के दो कनारों के बराबर बल्कि उस से भी बहुत क़रीब हो गया १०. पस अल्लाह ने अपने बन्दे की तरफ़ जो कुछ वह्‌यि करना था कर दिया ११. जो कुछ उस ने देखा उस के दिल ने उस को झुठ न समझा १२+१३ क्या फिर भी तुम लोग उस से झगड़ते हो उस वाक़िआ़ पर जो वह देख रहा है १४.हालाँकि उस ने उस को एक दफ़ा सिदरतुल्-मुन्तहा के पास दुबारा देखा १५. उस (सिदरा)के पास जन्नतुल्मावा है[२] १६. (यह उस समय की घटना है) जिस समय सिद्रा पर अ़जीब कैफ़िय्यत छा रही थी। १७. (उस के देखने से रसूल की) आँख न बहकी न उचट गयी १८. उस (देखने वाले नबी) ने अपने रब की बहुत बड़ी-बड़ी निशानियाँ देखीं[३] (फिर तुम लोग कैसे उस नबी की बात को रद्द कर सकते हो) १९+२०. भला तुम ने लात-उज़्ज़ा और तीसरे मनात पर भी कभी ग़ौर किया[४] (जो तुम्हारे हाथों के बनाये हुये हैं) २१. क्या तुम्हारे लिये बेटे और अल्लाह के लिये बेटियाँ? २२. (सुब्हानल्लाह! सच तो यह है कि) यह बटवारा बड़े नुक़्सान वाला है। २३. यह तुम्हारे माबूद सिर्फ़ नाम ही नाम हैं जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिये हैं अल्लाह ने उन नामों पर कोई दलील नाज़िल नहीं फ़रमाई, यह लोग सिर्फ़ अपने गुमान की और अपनी ख़ाहिशों की पैरवी कर रहे हैं हालाँकि उन के पास उन के पर्वरदिगार के हाँ से (हिदायत के लिये कुरआन द्वारा) राहनुमाई आ चुकी है

....

१. 'नज्म' से मुराद सुरय्या सितारा है, या आ़म सितारा मुराद है जो शैतानों को मारने के लिये तैनात हैं। इन की क़सम इस लिये खाई गयी है कि यह अल्लाह पाक की कुदरत और उस के जलाल और मर्तबे पर दलालत करते हैं। एक क़ौल यह भी है कि 'नज्म' से मुराद कुरआन मजीद की आयतें हैं जो थोड़ी-थोड़ी कर के २३ वर्ष की मुद्दत में नाज़िल होती रहीं (जामिउल बयान-४५०) इमाम जाफ़र सादिक़ फ़रमाते हैं कि इस से मुराद नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं जो मेराज से वापसी में आसमान से ज़मीन पर बड़े अ़िज़्ज़त व एहतराम के साथ उतारे गये (मआ़लिम) इस सूरत में इन आयतों से आप के मेराज की तस्दीक़ होती है। अगर आ़म लोगों के क़ौल के मुताबिक़ सितारा ही मुराद हो तो वह सितारा मुराद हो गा जो हर नबी के नुबुव्वत मिलने के समय निकलता था। इस सूरत में आयत का मतलब यह हुआ कि अल्लाह तआ़ला काफ़िरों को याद दिला रहा है कि तुम जिस सितारे का इन्तिज़ार करते थे वह निकल चुका है और जिस की नुबुव्वत के लिये निकला है वह यही नबी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हैं। एक मतलब यह भी बयान किया गया है कि जब कभी आसमान पर सितारे बहुत अधिक टूटते तो अ़रब के काहिन किसी बड़ी हस्ती के पैदा होने का गुमान करते थे। चुनान्चे जिस वर्ष नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पैदा हुये उस साल भी बहुत अधिक सितारे टूटे थे, जिस से एक हलचल मच गयी। इस का मतलब यही हुआ कि वह कैफ़िय्यत याद दिलाई गयी कि तारों का टूटना अगर्चे अल्लाह के अ़िल्म में किसी हिक्मत के वास्ते हो लेकिन➲

➲तुम्हारे ख़याल के मुताबिक़ ती उस साल में बहुत बड़े इन्सान के पैदा होने की दलील हो चुकी, फिर तुम क्यों इन्कार करते हो (इब्ने कसीर) (तफ़्सीर हमीदी)

२. यानी जिब्रील अ़लै० अपने अस्ली ठहरने की जगह से तअ़ल्लुक़ रखने के बावजूद नीचे उतरे और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इतना ज़्यादा क़रीब हो गये कि दोनों के दर्मियान दो हाथ या दो कमानों से ज़्यादा का फ़ासिला न था। उस समय अल्लाह ने अपने ख़ास बन्दे पर वह्यि भेजी। आयत न०९ की अ़रबी तर्कीब, ताकीद के साथ ज़्यादा की नफ़ी के लिये होती है यानि पूरी ताकीद के साथ यह बताया जा रहा है कि जिब्रील अ़लै० और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दर्मियान दो कमानों से ज़्यादा की दूरी हर्गिज़ नहीं थी। (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

३. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अल्लाह पाक को ज़ाहिर तौर पर आँखों से देखा या नही? इस मस्अले में इख़्तिलाफ़ है। हज़रत आ़इशा रज़ि से जब पूछा गया तो उन्होने फ़रमाया: इन आयतों का मतलब यह है कि हज़रत जिब्रील को उन की अस्ली सूरत में देखा और अस्ली सूरत में उन को नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दो बार देखा है। पहली बार नबुव्वत के शुरू में हिरा के ग़ार में और दूसरी बार मेराज में सिद्रतुल्र मुन्तहा के पास (जिस का इन आयतों में बयान है) यहाँ पर यह मुराद हर्गिज़ नही कि अल्लाह को देखा। हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० का भी यही कहना है (तिर्मिज़ी-किताबुत्तफ़सीर) हज़रत अनस बिन मालिक, हसन बसरी और अ़िक्रमा वग़ैरह का यह मज़हब है कि अल्लाह को देखा।

एक हदीस शरीफ़ के मुताबिक़ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं ने अल्लाह तआ़ला को दिल की आँखों से दो मर्तबा देखा। यानी ज़ाहिरी आँखों से नही देखा (जामिउल बयान) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० का यह क़ौल है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अल्लाह को देखा (तिर्मिज़ी-२/१७९) इस सिलसिले में ज़्यादा खोज-कुरेद करने की ज़रूरत नहीं है। दिल से देखना फ़ज़ीलत तो है ही, आँख से देखना और ज़्यादा फ़ज़ीलत है। और अगर हज़रत जिब्रील को देखना मुराद है तो यह भी फ़ज़ीलत ही है, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अ़लावा और किसी को यह फ़ज़ीलत नहीं हासिल है। दीन के अहम मसाइल जैसे, हलाल, हराम और फ़राइज़ वग़ैरह में अगर शक हो जाये तो इन मसाइल में बहस ज़रूरी है, लेकिन वह मस्अले जो इतने अहम नही हैं उन में इतनी ज़्यादा छान-फटक करने की ज़रूरत नहीं है, बस इतना कह देना काफ़ी है कि हक़ीक़त को अल्लाह ही बेहतर जानता है।

'सिद्रतुलमुन्तहा' छटे और सातवें आसमान पर एक बेरी का दरख़्त है। ज़मीन से बन्दों के आमाल वग़ैरह जो आसमान पर भेजे जाते हैं इस से ऊपर नहीं जाते। और अर्श से जो अहकाम जारी होते हैं वह भी इसी स्थान पर फ़रिश्तों को मिलते हैं, इस से ऊपर किसी को जाने की अनुमति नहीं है। केवल नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ही मेराज के मौक़े पर सिद्रा से ऊपर गये हैं (तिर्मिज़ी शरीफ़) सिद्रतुल् मुन्तहा को नूरानी चीज़ों ने ढाँक रखा है, किसी की निगाह उस पर नही ठहर सकती (तफ़्सीर हमीदी)

४. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि 'लात' एक शख़्स था जो हाजियों के वास्ते सत्तू घोल-घोल कर पिलाया करता था। अ़रबी भाषा में 'लत्त' किसी चीज़ को घोलने और गूंधने को कहते हैं, इसलिये इस का नाम "लात" पड़ गया। इब्ने जरीर फ़रमाते हैं कि वह बड़ा नेक आदमी था इसलिये उस के मरने के बाद उस की क़ब्र पर जमघटा लगने लगा फिर धीरे-धीरे उस का स्टेचू (मूर्ति) बना कर उस की पूजा होने लगी। 'उज़्ज़ा' खजूर के एक पेड़ का नाम था उस पर चमड़े वग़ैरह फैलाया करते थे। 'मनात' एक पत्थर था। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ख़ालिद बिन वलीद को भेजा उज़्ज़ा नामक कि उस पेड़ को जड़ से खोद कर फेंक दो। जब खोदा गया तो उस के नीचे से एक महिला निकली जिस के बाल खुले हुये थे, वह अपने सर पर हाथ रख कर रोने-चिल्लाने लगी। हज़रत ख़ालिद ने उस को क़त्ल कर डाला। वापस आ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सारा हाल बयान किया। आप ने फ़रमाया: यह उज़्ज़ा थी, अब इस की पूजा कभी न हो गी (हमीदी) आज-कल नाम के मुसलमानों की बहुत सी ज़ियारतगाहें (दरगाहें,आस्ताने) भी लात-मनात ही का नमूना हैं।➲

➲नोटः- इन बुतों के बारे में विस्तार से जानकारी आवश्यक है। 'लात' कुछ उल्मा के नज़दीक यह "अल्लाह" शब्द से लिया गया है। कुछ उलमा का कहना है कि "लत्रा" "यलित्रु" से बना है, जिस का अर्थ है मोड़ना। चूंकि इस बुत के पुजारी अपनी गर्दनें-इस की तरफ़ मोड़ते और तवाफ़ करते थे इस लिये इस बुत का नाम "लात" पड़ गया। कुछ लोगों का कहना है कि लात का अर्थ है "सत्तू घोलने वाला"। जाहिलिय्यत के समय-काल में एक नेक आदमी सत्तू घोल कर हाजियों की सेवा किया करता था, जब वह मर गया-तो लोगों ने उस का बुत बना कर असकी पूजा आंरभ कर दी। लात बुत ताइफ़ शहर में क़बीला बनी सक़ीफ़ वालों का था।

'उज़्ज़ा' यह क़बीला बनी ग़ितफ़ान के खजूर के एक पेड़ का नाम था। इस पेड़ की क़बीला वाले पूजा-पाट करते थे। कुछ लागों का कहना है कि यह एक भूतनी थी (जैसे हिन्दु धर्म में कालीमाई और कालिका भवानी आदि) जो पेड़ों के ऊपर ज़ाहिर होती थी। कुछ के निकट यह एक उजले रंग का पत्थर था जिस की पूजा की जाती थी। यह उज़्ज़ा बुत क़बीला बनी कनाना और कुरैश का बहुत बड़ा माबूद था।

'मनात' का अर्थ है "बहाना"। चूंकि मक्का वाले इस बुत के पास अपने जानवर ज़ब्ह कर के उस का रक्त इस बुत पर बहाते थे, इसलिये इस का नाम "मनात" पड़ गया। यह बुत मक्का और मदीना के दर्मियान स्थित था (फ़त्हुल क़दीर) यह बुत बनी खुज़ाआ का था। क़बीला औस और ख़ज़रज के लोग कुफ़्र की हालत में यहीं से हज्ज के लिये एहराम बांधते थे और हज्ज से पूर्व उस का तवाफ़ आवश्यक समझते थे। (इब्ने कसीर)

ऊपर उज़्ज़ा खजूर के पड़े के नीचे से महिला के निकलने और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद के उसे क़त्ल करने का जो वाक़िआ बयान हुआ है उस का ज़िक्र विस्तार से थोड़े से अन्तर के साथ इब्ने कसीर ने सूरः नज्म् की तफ़्सीर के ज़ैल (संदर्भ) में ज़िक्र किया है। देखें तफ़्सीर इब्ने कसीर सूरः नज्म्......................ख़ालिद सिद्दीक़ी

رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ﴿٢٣﴾ اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ﴿٢٤﴾ فَلِلّٰهِ
الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى ﴿٢٥﴾ وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِى السَّمٰوٰتِ لَا
تُغْنِىْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ
لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ﴿٢٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ
لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى ﴿٢٧﴾ وَمَا لَهُمْ بِهٖ
مِنْ عِلْمٍ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ الظَّنَّ لَا
يُغْنِىْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ﴿٢٨﴾ فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ
عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ
مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ
عَنْ سَبِيْلِهٖ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ﴿٣٠﴾ وَلِلّٰهِ مَا
فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ
اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ﴿٣١﴾

२४. क्या कोई इन्सान मनमानी ख़्वाहिश पा सकता है? २५. (हर्गिज़ नही क्योंकि) अव्वल-आख़िर (सब) अल्लाह ही के इख़्तियार में है। २६. और आसमानों में कई फ़रिश्ते हैं उन की सिफ़ारिश भी (जो अल्लाह को मन्जूर न हो) किसी काम नही आयी, लेकिन अल्लाह के इजाज़त देने और पसन्द करने के बाद (फ़ायदा देती है इसलिये अल्लाह की ख़ालिस तौहीद पर ईमान लाओ) २७. (और सुनो!) जो लोग आख़िरत का इन्कार करते हैं वह फ़रिश्तों को औरतें कहते हैं (और उन का नाम अल्लाह की लड़कियाँ रखते हैं) २८. हालाँकि उन को इस बारे में कोई अ़िल्म नही सिवाए अटकल पच्चू बातों के और (यह तो अक़्ली क़ानून है कि) हक़्क़ानियत के मौक़े पर गुमान के काम कुछ फ़ाइदा नहीं दे सकते। २९: पस जो कोई➲

हमारी हिदायत से मुँह मोड़े और सिवाए दुनिया (के फ़ाइदों) के कुछ न चाहे ऐसे लोगों से तू भी मुँह मोड़ ले ३०. (क्यों कि) उन के ज़िल्म की इन्तिहा यही हैं[5]। अल्लाह की राह से जो बहके हुये हैं वह उन को ख़ूब जानता है और जो उस की राह पर हैं उन को भी ख़ूब जानता है (उस का ज़िल्म सब को शामिल है) ३१. और (क्यों कर शामिल न हो जब कि) जो कुछ आसमान और ज़मीन में है सब अल्लाह ही की मिल्क (संपत्ति) है, बुरे काम करने वालों को उनके कामों का बुरा बदला देगा और नेक काम करने वालों को नेक बदला अ़ता करे गा। ३२. जो लोग बड़े-बड़े गुनाह और फ़हश कामों से बचते रहते हैं, मगर छोटी-छोटी लग़ज़िशें उन से हो जाती हैं[6]

....

५. यानी तुम उन को क्या समझाओ गे, तुम्हारे और उन के बीच में बड़ा इख़्तिलाफ़ है। तुम्हारा उसूल तो यह है कि ज़िल्म का नतीजा देरपा और अन्जाम बेहतर होता है और उन का उसूल यह है कि नक़द, अधार से बहर-हाल बेहतर है, इसी लिये वह हर काम का तुरन्त लाभ चाहते हैं और आख़िरत के हमेशा के फ़ाइदे से ग़ाफ़िल हैं, यह उन के ज़िल्म की आख़िरी सीमा है। चाहिये तो यह था कि ज़िल्म से हमेशा का और पायदार फ़ायदा हासिल करते। जिस ज़िल्म से पायदार फ़ाइदा नही वह ज़िल्म नहीं, बल्कि जिहालत है। (सनाई)

६. 'ल-मम्' से छोटे-मोटे गुनाह मुराद हैं। एक हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ऐ पर्वरदिगार! अगर तू बख़्श दे तो बहुत बख़्श सकता है। कौन सा बन्दा तेरा ऐसा है जिस ने छोटे-मोटे गुनाह नही किये हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि अगर बन्दा तौबा कर लेता है तो कोई गुनाह कबीरा नही है, लेकिन अगर अड़ा रहे तो कोई गुनाह छोटा नही हैं। यानी इस्रार और अड़े रहने से छोटा गुनाह भी बड़ा बन जाता है। अ़ल्लामा वहीदुज़्ज़माँ फ़रमाते हैं कि अगर कोई कबीरा गुनाह पर इसरार करे तब भी वह काफ़िर न हो गा। अहले हदीस का भी यही मज़हब है और इस पर उम्मत का इजमाअ़ और इत्तिफ़ाक़ है। 'शिर्क' कबीरा गुनाह से भी बड़ा है इस लिये शिर्क करने वाला दीन से ख़ारिज हो जाता है और अगर बग़ैर तौबा किये मर जाये तो उस पर जन्नत हराम है। (राज़)

إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۚ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنشَأَكُم
مِّنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنتُمْ أَجِنَّةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ ۖ
فَلَا تُزَكُّوا أَنفُسَكُمْ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَىٰ ﴿٣٢﴾ أَفَرَأَيْتَ
الَّذِي تَوَلَّىٰ ﴿٣٣﴾ وَأَعْطَىٰ قَلِيلًا وَأَكْدَىٰ ﴿٣٤﴾ أَعِندَهُ
عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَىٰ ﴿٣٥﴾ أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِي صُحُفِ
مُوسَىٰ ﴿٣٦﴾ وَإِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّىٰ ﴿٣٧﴾ أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ
وِزْرَ أُخْرَىٰ ﴿٣٨﴾ وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ﴿٣٩﴾

(तो ऐसे परहेज़गारों के लिये) तुम्हारे पर्वरदिगार की बख़्शिश बड़ी कुशादा है। वह तुम्हारे हाल से उसी वक़्त से ख़ूब जानकार है जब उस ने तुम को ज़मीन से पैदा किया था और जब तुम अपनी माओं के गर्भ में बच्चे थे पस तुम अपने आप को पाक न समझा करो। अल्लाह मुत्तक़ी लोगों को ख़ूब जानता है[7] (उस से कोई छुपा नहीं है) ३३+३४ क्या तू ने उस आदमी को देखा जो मुंह मोड़ता है और बहुत थोड़ा देता है और सख़्तदिल हो जाता है। ३५. क्या उस

وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ۝٤٠ ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰى ۝٤١
وَاَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ۝٤٢ وَاَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى ۝٤٣
وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ وَاَحْيَا ۝٤٤ وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ
الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۝٤٥ مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ۝٤٦ وَاَنَّ عَلَيْهِ
النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى ۝٤٧ وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى ۝٤٨ وَاَنَّهٗ
هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰى ۝٤٩ وَاَنَّهٗ اَهْلَكَ عَادًا الْاُوْلٰى ۝٥٠

के पास ग़ैब का अ़िल्म है कि उसे देखता है। ३६+३७. क्या उस (ख़याल करने वाले) को मूसा और इब्राहीम के सहीफ़ों की ख़बर नहीं जिन्होंने (अल्लाह के अहकाम की वफ़ादारी) पूरी (तरह) की थी। ३८. (उन सहीफ़ों में) यह (लिखा था) कि कोई किसी का बोझ नहीं उठाये गा ३९. और यह (उन सहीफ़ों में दर्ज है) कि इन्सान जो कुछ मेहनत करेगा वही पायेगा[८]। ४०. और यह (भी उन में दर्ज है) कि इन्सान अपनी चेष्टाओं को देख लेगा। ४१. फिर अपने किये का पूरा-पूरा बदला पायेगा। ४२. और यह (भी उन किताबों में लिखा है) कि सब की इन्तिहा तुम्हारे पर्वरदिगार की ज़ात पर है। ४३. और यह कि वही अल्लाह दुनिया को हंसाता और रुलाता है ४४. और वही मारता और वही जिलाता है। ४५+४६. उसी ने मनी की बूंद से जो तुम में डाला जाता है दो क़िस्म, मर्द और औ़रत, पैदा किये। ४७. और (जज़ा व सज़ा की ग़रज़ से) वह दुनिया को दोबारा ज़रूर पैदा करे गा। ४८. और तहक़ीक़ वही (लोगों को) मालदार कर देता है और गुज़ारा तंग कर देता है। ४९. और (सुनो! उसी किताब में) यह (भी लिखा है) कि सितारा शिअ़्रा का पर्वरदिगार भी वही है[९]। ५०. और उसी ने पहले क़ौम आ़द को हलाक कर दिया।

....

७. यानी अपनी तारीफ़ अपने मुंह से न करो और अपने आप को दूसरों से अच्छा मत समझो, क्योंकि कुछ नहीं मालूम कि अन्जाम क्या होने वाला है। सय्यद अल्लामा फ़रमाते हैं कि यह मिनाही उस वक़्त है जब आदमी ग़ुरूर या तकब्बुर की वजह से अपनी तारीफ़ करे। लेकिन अगर अल्लाह के एहसान के शुक्र के तौर पर अपनी भलाइयाँ बयान करे तो जायज़ है। अ़िबादत कर के प्रसन्न होना भी अ़िबादत है और उस का बयान करना शुक्र है, इसलिये अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है: "अपने रब की नेमतों को बयान किया करो" सूरः ज़ुहा) (वहीदी)

८. यह आयत क़ुदरत के एक अटल क़ानून को बयान कर रही है और वह क़ानून यह है कि दुनिया अ़मल करने का घर है, यहाँ हर्कत में बर्कत है। इसलिये इन्सान अगर दुनिया व आख़िरत में तरक़्क़ी चाहता है तो उस का फ़र्ज़ है कि इस दुनिया में अल्लाह के आदेश के अनुसार काम करे, अल्लाह का यह वादा है कि जो हर्कत करता है उस की कोशिश को कभी बर्बाद नहीं करता। इमाम शाफ़ेई रह० ने इस आयत से यह मतलब निकाला है कि क़ुरआन पढ़ने का सवाब मुर्दे को नहीं पहुंच सकता। शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमिय्या रह० ने फ़रमाया: जो यह समझे कि आदमी को दूसरे के अ़मल से फ़ायदा नहीं होता है उस ने इजमाअ़ के ख़िलाफ़ किया। और बहुत सी आयतों और हदीसों से साबित है कि मुर्दे को ज़िन्दों की दुआ़ से फ़ाइदा पहुंचता है और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शफ़ाअ़त से फ़ाइदा पहुंचे गा। फ़रिश्ते भी मोमिन बन्दों के लिये दुआ़ और इस्तिग़फ़ार करते हैं और इस से मोमिन बन्दों को फ़ाइदा पहुंचता है..............वग़ैरह। शैख़ुल इस्लाम रह० ने इस प्रकार से २१ दलीलें दे कर फ़रमाया: कि हम दूसरी आयत और अहादीस के ख़िलाफ़ इस आयत की तफ़्सीर क्योंकर बयान कर सकते हैं। अल्लामा सय्यद नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ाँ रह० फ़रमाते हैं कि इस आयत से वह बातें ख़ास कर ली जायें गी जो दूसरी आयतों का हदीसों में स्पष्ट

तौर पर बयान हैं जिन का विषय यह है कि दूसरों के काम से लाभ या हानि होता है जैसे, यह हदीस कि जो कोई अच्छी बात को निकाले उस को उस का सवाब और क़ियामत तक जो कोई उस पर अ़मल करे उस को भी सवाब पहुंचे गा............(वहीदी) यही हाल बुराई ईजाद करने वाले का है कि उस को भी क़ियामत तक उस का अ़ज़ाब हो गा।

९. 'शिअ़रा' (Sirius) एक बहुत बड़े सितारा का नाम है। मक्का के कुफ़्फ़ार इस की पूजा करते थे। उन का गुमान था कि इस के अन्दर नफ़ा- नुक़्सान पहुंचाने वाली बड़ी शक्ति है। अल्लाह तआ़ला ने इस के बारे में खोल कर बता दिया कि इस सितारे का भी पैदा करने वाला मैं ही हूँ, इस लिये मुझे छोड़ कर उस की अ़िबादत करना कोई माना नहीं रखता। वह सितारा भी दूसरे सितारों की तरह हमारे आदेशों का पालन करता है और उस के अन्दर कोई शक्ति नहीं है (मुवज़्ज़िहल फुर्क़ान) आजकल के साइन्सदानों का कहना है कि यह सितारा सूरज से सौ गुना बड़ा है।

وَثَمُودَا فَمَآ أَبْقَىٰ ﴿٥١﴾ وَقَوْمَ نُوحٍ مِّن قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ وَأَطْغَىٰ ﴿٥٢﴾ وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَىٰ ﴿٥٣﴾ فَغَشَّىٰهَا مَا غَشَّىٰ ﴿٥٤﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكَ تَتَمَارَىٰ ﴿٥٥﴾ هَٰذَا نَذِيرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْأُولَىٰ ﴿٥٦﴾ أَزِفَتِ الْآزِفَةُ ﴿٥٧﴾ لَيْسَ لَهَا مِن دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ﴿٥٨﴾ أَفَمِنْ هَٰذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ﴿٥٩﴾ وَتَضْحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ ﴿٦٠﴾ وَأَنتُمْ سَامِدُونَ ﴿٦١﴾ فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ﴿٦٢﴾

५१. और क़ौमे-समूद को फ़ना किया कि उन में से कोई न छोड़ा। ५२. और क़ौमे-नूह को बहुत पहले उसी ने तबाह किया, क्यों कि वह बड़े ज़ालिम और बड़े सर्कश थे। ५३. और (क़ौमे-लूत की) उल्टी बस्तियों को गिरा दिया ५४. फिर उन को (पत्थरों की बारिश से) खूब ढाँप दिया। ५५. पस बताओ कि अपने रब की कौन सी मेहरबानी में तुम शक करते हो। ५६. यह समझाने वाला भी पहले समझाने वालों में से एक है। ५७. वह आज़िफ़ा (की घड़ी) भी आने वाली है[१०] ५८. उस को प्रकट करने वाला अल्लाह के अ़लावा कोई नहीं (पस वही उस को प्रकट करेगा) ५९. क्या तुम इस बात से आश्चर्य करते हो। ६०. और (इस बात पर तुम) हंसते हो और रोते नही हो? ६१. और तुम बड़े ग़ाफ़िल हो[११] ६२. पस अल्लाह को सज्दा किया करो और उसी की अ़िबादत में लगे रहो।

....

१०. फिर तुम लोग उस आने वाली घड़ी का क्यों इन्कार करते हो? क्या यही चाहते हो कि दुनिया में गुमराही फैली रहे और उस के रोकने का इन्तिज़ाम न किया जाये? और न उस के लिये सज़ा का कोई वक़्त मुक़र्रर हो? यह बात जान लो कि अल्लाह बन्दों के हाल पर बड़ा मेहरबान है। उस की मेहरबानी का तक़ाज़ा है कि जिस प्रकार वह बन्दों को रोज़ी देने के लिये पानी बरसाता है, इसी प्रकार बन्दों को गुमराही से निकालने के लिये अन्बिया भेजता है और न मानने वालों को सज़ा देने के लिये एक वक़्त मुक़र्रर करता है जिस का नाम 'आज़िफ़ा' है। (सनाई)क़ियामत का एक नाम 'आज़िफ़ा' भी है। यानी "नज़दीक आने वाली"। उस के नज़दीक पहुंचने का यह मतलब है कि वह बहुत ही निकट है। (वहीदी)

११. यानी अक़्ल रखने वाले के लिये उचित नही कि अन्जाम से ग़ाफ़िल हो कर नसीहत की बातों पर हंसे। सूरः नज्म पढ़ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और सब मुसलमानों और मुश्रिकों ने सज्दा किया। केवल एक

अभागा था जिस ने ज़मीन से थोड़ी सी मिट्‌टी उठा कर पेशानी पर लगाई और कहा कि बस मेरे लिये इतना ही काफ़ी है।

सूरः क़-मर- (54)

सूरः क़मर (चन्द्रमा) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[1]। इस में ५५ आयतें और ३ रूकूअ़ हैं। शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है-।

१.(सुनोजी!) क़ियामत निकट आ गयी और चन्द्रमा फट चुका[2] २. (मगर इन मुश्रिकों की हालत यह है कि) अगर कोई (नुबुव्वत का) निशान देखते हैं[3] तो मुंह फेर जाते हैं और कहते हैं कि यह पुराना जादू है। ३. और झुठलाते हैं और अपनी ख़ाहिशों के पीछे चलते हैं और हर काम अपने समय पर क़ायम होता है। ४. और उन के पास (गुज़रे हुये ज़माना की) ख़बरें आ चुकी हैं जिन में काफ़ी डॉट-डपटैं (और तंबीह) है। ५. जो कामिल हिक्मत है

....

१. सूरः क़मर मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ईदुल्-अज़्हा के दोगाना में सूरः क़ाफ़ और सूरः क़मर तिलावत फ़रमाते थे। एक ज़ईफ़ रिवायत में है कि जो कोई हर रात यह सूरः पढ़े गा, क़ियामत के दिन उस का चेहरा चौदहवीं रात के चाँद के समान चमके गा (वहीदी)

२. शाने-नुज़ूलः- मुश्रिकों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से चमत्कार का मुतालबा किया तो आप ने अल्लाह के हुक्म से चाँद के फटने का मोजिज़ा दिखाया। इस की शक्ल यह थी कि चाँद का एक हिस्सा पहाड़ के ऊपर और दूसरा हिस्सा उस से ज़रा नीचे आया। यह देखने के बाद बजाए यह कि ईमान लाते, कहने लगे कि इस ने हम पर जादू कर दिया है, मगर यह तमाम लोगों पर असर नही करे गा। चुनान्चे आने वाले मुसाफ़िरों से जब उन्हों ने पूछा तो उन लोगों ने इस बात की तस्दीक़ की। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः लोगो! तुम इस मोजिज़ा पर गवाह रहो (बुख़ारी) इस मौक़ा पर यह सूरः नाज़िल हुयी।

३. क़ुरआन में 'आयत' का शब्द तीन मानों में आया है। १. शरीअ़त का हुक्म २. कुदरत का निशान ३.नुबुव्वत की निशानी। शरीअ़त के हुक्म की मिसाल यह आयत हैः "अल्लाह तुम्हारे लिये अपने हुक्म बयान करता है"। इस आयत में 'आयात' से मुराद अहकामे-शरीअ़त है। कुदरत के निशान की मिसाल जैसे, "ज़मीन में यक़ीन करने वालों के लिये निशान हैं"। इस आयत में 'आयत' से मुराद कुदरत के निशान हैं। नुबुव्वत की निशानी की मिसाल, "यह ऊँटनी तुम्हारे लिये नुबुव्वत की निशानी है"।

अब प्रश्न यह है कि यहाँ 'आयत' का क्या अर्थ हो गा? तो यहाँ पर 'आयत' से मुराद नुबुव्वत का निशान है। नुबुव्वत का निशान हर उस जगह भी माना जाये गा जहाँ 'आयत' के साथ कुफ़्फ़ार की तरफ़ से उसे जादू कहा

जाये। यहाँ पर 'आयत' से कुदरत के निशान मुराद लेना ग़लत है, इसलिये कि सुब्ह से शाम तक वह कुदरत के निशान देखते थे- सूरज का निकलना और डूबना, धूप, पानी, साया, सितारे, बादल, हवा और स्वयं इन्सान की ज़ात यह सब कुदरत के निशान हैं, लेकिन इन को देखने के बाद कभी इन को जादू नही कहा। इस आयत में मुश्रिकीन का बयान ज़िक्र है कि वह निशान देख कर उस का इन्कार करते और उस को जादू कहते हैं, तो यहाँ पर आयत से मुराद नबुव्वत की निशानी ही है। यानी वह निशान जो ज़माना के नबी की नबुव्वत पर दलालत करे। इस आयत का मतलब यह हुआ कि मुश्रिकीन जब कोई ऐसी आयत और निशानी देखते हैं जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुव्वत पर दलालत करते हैं तो मुंह फेर लेते हैं और उस को जादू कहते हैं। इस तहक़ीक़ के बाद यह बात स्पष्ट हो जाती है कि चाँद के फटने की क्या हक़ीक़त है। इस बात में कोई शक नही कि चाँद का फटना नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुव्वत की निशानियों में से एक निशानी है और इस से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुव्वत का सबूत मिलता है।

हाँ, यह एतराज़ किया जा सकता है कि यूनानी फ़ल्सफ़ियों का कहना है कि आसमान और आसमान की चीज़ें न फटती हैं और न मिलती हैं, तो फिर चाँद कैसे फट गया? इस का उत्तर यह है कि यूनान का फ़लसफ़ा अपनी जगह पर है जो सहीह भी हो सकता है और ग़लत भी। इन फ़लसफ़ियों के ख़यालात और उसूल बदलते रहते हैं। कल की तहक़ीक़ को आज की तहक़ीक़ ग़लत क़रार देती है। आज की तहक़ीक़ यह बता रही है कि चाँद का फटना संभव है और अल्लाह की कुदरत के मातहत है और उस की ज़ात से सब कुछ मुमकिन है (सनाई)

सहीह अहादीस से साबित है कि मक्का के काफ़िरों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से नबुव्वत की कोई निशानी माँगी तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने चाँद की तरफ़ इशारा किया और वह दो टुकड़े हो गया, एक टुकड़ा एक पहाड़ पर और दूसरा टुकड़ा दूसरे पहाड़ पर नज़र आया। यह देख कर कुछ मुश्रिक कहने लगे कि इन्हों ने हम पर जादू कर दिया है। एक शख़्स ने उन्हीं में से कहा कि तमाम लोगों पर जादू कर दे, यह तो नामुमकिन है। मतलब यह है कि आप का दुनिया में आना क़ियामत की एक निशानी है तो चाँद का फटना भी क़ियामत की निशानी हुआ। शाह वलिय्युल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० ने अपनी प्रसिद्ध किताब "तफ़हीमाते इलाहिय्या" में लिखा है कि चाँद का फटना हमारे नज़दीक मोजिज़ों में से नही है, बल्कि क़ियामत की निशानियों में से है। इस का यही मतलब है कि यह उन मोजिज़ों में से नही है जो केवल पैगंबरी के दलाइल के लिये ज़ाहिर किये जाते हैं, बल्कि मोजिज़ा भी है और क़ियामत की निशानी भी है"।

जिस शख़्स ने शाह साहब का मतलब नही मसझा उस ने अपनी नासमझी से उन पर एतराज़ों की बौछार कर दी। हालाँकि शाह साहब अहले हदीस के पेशवा और हिन्दुस्तान में उन के इमाम हैं और हम सब उन के शागिर्द हैं। उन्हीं के ज़रीआ हदीस का अ़िल्म हिन्दुस्तान में फैला है। क्या वह बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी जैसी मश्हूर किताबों की हदीसों से अवगत नहीं थे जिन में यह साफ़-साफ़ मौजूद है कि कुफ़्फ़ार ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से निशानी माँगी तो आपने निशानी दिखा दी।

कुछ जाहिल इस मोजिज़े में शुब्हा करते हैं और कहते हैं कि अगर चाँद फटा होता तो तमाम दुनियाँ के लोगों को इस की ज़रूर ख़बर होती और हर क़ौम की तारीख़ों में इस वाक़िआ का ज़िक्र मिलता। लेकिन यह कोई ज़रूरी नही कि जिस समय चाँद फटा हो उस समय तमाम दुनियाँ वालों की निगाहें चाँद ही पर लगी हों। यह वाक़िआ तो पल भर का था और लोग अपने काम -काज में मश्गूल रहे हों गे। और ऐसा बहुत देखने में आया है कि चाँद-सूरज में ग्रहण लगता है और बहुत से लोगों का मालूम नही होता। और ऐसा भी संभव है कि उस समय कुछ मुल्कों के ऊपर बादल रहा हो। ऐसा भी होता हैं कि कहीं सूरज पहले डूब जाता है इसलिये वहाँ के लोनों ने न देखा हो इस लिये कि वह सो रहे हों गे। ऐसा भी हो सकता है कि उस समय कुछ देशों में दिन रहा हो और सूरज की रोशनी में न देख पाये हों। यह लोग इतना भी नही समझ सकते कि अगर चाँद न फटा होता और कुरआन में इस आयत को पढ़ा जाता कि चाँद फट गया तो सब के सब इस्लाम से फिर जाते और कुरआन और संदेष्टा दोनों को झूठा क़रार देते।

➲कुछ उलमा ने यह तर्जुमा किया है "क़ियामत नज़दीक आ पहुंची और चाँद फटेगा" (यानी अभी फटा नही है भविष्य में कभी फटे गा) उस्मान बिन अ़ता अपने पिता से और इमाम क़ुर्तुबी ने हसन से ऐसा ही नक़ल किया है। अ़ल्लामा नवाब सिद्दीक़ हसन फ़रमाते हैं कि यह क़ौल बातिल है यह कहने वाले न के बराबर हैं। तमाम मुफ़स्सिरीन ने इस के ख़िलाफ़ कहा है। सहीह अहादीस से साबित है कि चाँद नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना ही में फट चुका, इस लिये मुस्तक़बिल (भविष्य) का तर्जुमा करना (फटेगा) बिल्कुल बेमाना है और कुरआन के तर्जुमे में तहरीफ़ करना है।

अगर तर्जुमा यूँ भी करें कि चाँद फटे गा तो चाँद फटना जायज़ हुआ और जो चीज़ जायज़ और संभव है वह अगर माज़ी के ज़माना (भूत काल) में हो चुकी हो तो कौन सी बुराई लाज़िम आती है जब कि सहाबा की रिवायतों से साबित है कि चाँद फट चुका है। और जिन जाहिलों ने यह कहा है कि चाँद न फट सकता है और न जुड़ सकता है, उन के पास कोई दलील ही नही है। और जो जाहिल इन फ़लसफ़ियों की पैरवी करते हुये इस को ग़लत कहता है, तो जैसे माज़ी में फटना असंभव है इसी प्रकार भविष्य में भी असंभव है इस लिये उन से घबरा कर "फटेगा" का तर्जुमा करने की क्या ज़रूरत है, उस को तो चाहिये कि पूरे मोजिज़े ही का सिरे से इन्कार कर दे और न क़ियामत को माने न कुरआन को और न ही नबी को। ज़ाहिर में मुसलमान बनना और बातिन में बेदीन, यह मुनाफ़िक़ों की पहचान है।

खुलासा यह कि चाँद नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना में फट चुका है, इस में तनिकभर शक व शुब्हा की गुन्जाइश नही। जिन फ़लसफ़ियों ने यह कहा है कि यह असंभव है वह झूठे हैं, इस लिये कि जिस ज़ात ने चाँद को पैदा किया और टिका दिया है, वह उस के दो टुकड़े भी कर सकता है। और जिन लोगों ने भविष्य का तर्जुमा किया है वह भी जाहिल हैं। भला जो अल्लाह भविष्य में करे गा क्या उस ने माज़ी (भूतकाल) में नही कर दिया हो गा। इस प्रकार दीन के दुश्मनों से डर कर तर्जुमा को बदलना सख़्त नादानी और ईमानी कमज़ोरी की निशानी है।

تُغْنِ النُّذُرُ ۝ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى
شَيْءٍ نُّكُرٍ ۝ خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ
الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ۝ مُّهْطِعِيْنَ اِلَى
الدَّاعِ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۝ كَذَّبَتْ
قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ
وَّازْدُجِرَ ۝ فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ۝
فَفَتَحْنَاۤ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ۝ وَّفَجَّرْنَا
الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰۤى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝
وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ۝ تَجْرِيْ بِاَعْيُنِنَا
جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ۝ وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَاۤ اٰيَةً فَهَلْ
مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ

(फिर भी) यह डरावने वाक़िआ़त (उन लोगों को) फ़ाइदा नहीं देते। ६. पस तू उन से मुँह फेर ले। जिस रोज़ बुलाने वाला एक नापसन्दीदा काम (यानी आमाल के फ़ैसला) की तरफ़ बुलाये गा ७. उन की आंखें शर्मिन्दगी से झुकी हों गी (इस कसरत से) क़ब्रों से निकलें गे गोया वह फैली हुयी टिड्डियाँ हों गे ८. बुलाने वाले (इस्राफ़ील) की आवाज़ की तरफ़ भागे गें (उस रोज़) काफ़िर कहें गे: यह दिन बहुत नागवार है। ९. इन से पहले नूह की क़ौम ने इन्कार किया, यानी उन्हों ने हमारे बन्दे को झुठलाया और कहने लगे कि यह तो मजनून है (बल्कि हमारे माबूदों की तरफ़ से) झिड़का हुआ है। १०. नूह ने अपने पर्वरदिगार से दुआ़ माँगी कि मैं कमज़ोर हूँ मेरी मदद कर ११. पस हम ने ज़ोरदार पानी➲

يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ
عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ

के साथ आकाश के दरवाज़े खोल दिये १२. और ज़मीन को चश्मों की तरह बहा दिया (यानी ज़मीन के ऊपर पानी फूट पड़ा) फिर तो पानी अपने अन्दाज़े पर पहुंच गया। १३. और हम ने उस (नूह) को तख़्तों और खूँटों से बनी हुयी कश्ती पर सवार किया। १४. वह हमारे आदेश से हमारे सामने चलती थी। (यह वाक़िआ) उस शख़्स के (सब्र) के बदले में हुआ जिस की बेक़द्री की गयी थी। १५. और उस को दुनिया के लिये नुबुव्वत की निशानी बनाया, पस है कोई नसीहत पाने वाला? १६. फिर मेरा अ़ज़ाब और डर क्या हुआ (जो मैं ने वादा किया था वह हर्फ़ ब हर्फ़ पूरा हुआ) १७. हम ने नसीहत के लिये कुरआन को आसान किया है फिर क्या कोई है नसीहत पाने वाला। १८. आ़द की क़ौम ने भी झुठलाया था। फिर मेरा अ़ज़ाब और मेरा डर क्या हुआ १९. (सुनो) हम ने एक बुरे वक़्त में उन पर बड़ी तेज़ हवा भेजी

رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ۝ تَنْزِعُ النَّاسَ
كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَ
نُذُرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ
مُّدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ۝ فَقَالُوْٓا اَبَشَرًا مِّنَّا
وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ۝ ءَاُلْقِيَ
الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْۢ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ ۝
سَيَعْلَمُوْنَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْاَشِرُ ۝ اِنَّا مُرْسِلُوا
النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ۝ وَنَبِّئْهُمْ
اَنَّ الْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ ۚ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ۝ فَنَادَوْا
صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَ
نُذُرِ ۝ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَكَانُوْا
كَهَشِيْمِ الْمُحْتَظِرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ
فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطٍۢ بِالنُّذُرِ ۝

जो इन्सानों को उठा-उठा कर मारती थी २०. (वह यूँ मालूम होते थे) गोया खजूरों के उखड़े हुये तने थे। २१. फिर मेरा अ़ज़ाब और ख़ौफ़ किस प्रकार आया? २२. हमने कुरआन को नसीहत के लिये आसान किया है, क्या कोई है समझने वाला? (कि इस पर तवज्जुह करे) २३. (एक और तारीख़ी वाक़िआ सुनो) समूद ने भी समझाने वाले रसूलों को झुठलाया था २४. वह कहते थे क्या हम अपने में से एक आदमी की पैरवी करें (अगर हमने ऐसा किया तो) हम बड़ी गुमराही और सख़्त अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हों गे २५. क्या हम सब में मुन्तख़ब हो कर उसी पर अल्लाह की तरफ़ से नसीहत का संदेश आना था बल्कि यह झूठा खुदपसन्द है २६. (हम ने सालेह को तसल्ली दी कि बहुत जल्द) कल ही उन को मालूम हो जाये गा कि झूठा और खुदपसन्द कौन है? २७. हम एक ऊँटनी उन के जाँचने को भेजने वाले हैं पस तू (ऐ सालेह) उन की तबाही का इंतिज़ार कर और सब्र कर २८. और उन को बता दे कि (उस ऊँटनी के आने पर उन का) पानी उन में तक़सीम हो जाये गा,

➲हर हिस्सा पानी का तक़्सीम किया हुआ होगा (जिस पर दोनों की हाज़िरी हो गी) २९. पस उन्हों ने अपने साथी को बुलाया तो उस ने उस ऊंटनी को पकड़ा और उस की कूचें काट दीं ३०. फिर मेरा अ़ज़ाब और मेरा डराना कैसा हुआ? ३१. हम ने उन पर ज़ोर की एक चीख़ भेजी पस वह (खेती पर) बाड़ बांधने वाले की रौंदी हुयी बाढ़ की तरह (पामाल) हो गये। ३२. और हम ने क़ुरआन को नसीहत की ग़रज़ से आसान किया है, क्या तुम में से कोई नसीहत पाने वाला है? ३३. लूत की क़ौम ने भी समझाने वालों को झुठलाया

....

४. हज़रत सालेह की ऊँटनी को भी 'आयत' कहा गया है। यहाँ भी इस से मुराद नुबुव्वत की निशानी है, क़ुदरत की निशानी मुराद नही हो सकती। इसलिये कि क़ुदरत की निशानी में पहाड़ भी है और एक तिन्का भी, तो नुबुव्वत की दलील में पहाड़ को नही पेश किया जा सकता। उदाहरण यह समझें कि एक शख़्स ने नुबुव्वत का दावा किया और निशानी माँगने पर कह दिया कि यह पहाड़ जो सामने खड़ा है, या यह जो सामने वाला पेड़ है, तो यह नुबुव्वत की दलील नही बन सकते। नुबुव्वत के सबूत के लिये अलग से निशान पेश करना हो गा और ऐसी चीज़ दिखानी हो गी जो मौजूद न हो।
हज़रत सालेह अलै० को ऊँटनी निशानी के तौर पर दी गयी थी। चुनान्चे दूसरे स्थान पर बयान किया गया: तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी आ गयी यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिये (नुबुव्वत की)निशानी के तौर है" (सूरः आराफ़, रूकूअ़ १७) एक और स्थान पर फ़रमाया: "हम ने समूद को ऊँटनी खुली निशानी के तौर पर दी"। इस आयत में उस ऊँटनी को "स्पष्ट चिन्ह" कहा गया है। इस प्रकार की और भी कई आयतें हैं जिन से साबित होता है कि ऊँटनी, हज़रत सालेह अ़लै० की नुबुव्वत की निशानी थी (न कि महज़ क़ुदरत का निशान जो नुबुव्वत के सुबूत का स्थान न ले सके) मेरे ख़याल में उस ऊँटनी के मोजिज़ा होने की ख़ास पहचान यह थी कि एक दिन में वह अकेले पानी पीती थी और दूसरे दिन तमाम जानवर। और यह बात उस ऊँटनी की बहुत बड़ी विशेष्ता थी।

इِنَّآ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّآ ءَالَ لُوطٍ ۖ نَّجَّيْنَٰهُم
بِسَحَرٍ ﴿٣٤﴾ نِّعْمَةً مِّنْ عِندِنَا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِى مَن
شَكَرَ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ أَنذَرَهُم بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِٱلنُّذُرِ ﴿٣٦﴾
وَلَقَدْ رَٰوَدُوهُ عَن ضَيْفِهِۦ فَطَمَسْنَآ أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا
عَذَابِى وَنُذُرِ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ
مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣٨﴾ فَذُوقُوا عَذَابِى وَنُذُرِ ﴿٣٩﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا
ٱلْقُرْءَانَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٤٠﴾ وَلَقَدْ
جَآءَ ءَالَ فِرْعَوْنَ ٱلنُّذُرُ ﴿٤١﴾ كَذَّبُوا بِـَٔايَٰتِنَا كُلِّهَا
فَأَخَذْنَٰهُمْ أَخْذَ عَزِيزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾ أَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ

३४. फिर हम ने उन पर पत्थराव किया (जिस से सब तबाह हो गये) मगर लूत के मानने वालों को हम ने सुब्ह के वक़्त अपनी मेहरबानी से बचा लिया (और उन को ज़रा भी आँच न आने पायी) ३५. हम इसी प्रकार शुक्र अदा करने वालों को बदला दिया करते हैं। ३६. लूत ने उन को हर चन्द हमारी पकड़ से डराया फिर वह उस के डराने में हुज्जतें करते रहे। ३७. और उस को उस के मेहमानों की देख-भाल से फिसलाना चाहा (ताकि उन के साथ मन मानी कार्यवाही करें) फिर हम ने उन को अन्धा कर दिया (और कहा) लो अब मेरा अ़ज़ाब और डरावा का मज़ा चखो। ३८. और सुबह-सवेरे उन पर हमेशगी➲

أُولَٰئِكُمْ أَمْ لَكُم بَرَاءَةٌ فِي الزُّبُرِ ۝ أَمْ يَقُولُونَ
نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَصِرٌ ۝ سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ۝
بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَىٰ وَأَمَرُّ ۝
إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ۝ يَوْمَ يُسْحَبُونَ

का अ़ज़ाब नाज़िल हुआ (जिस से मर कर भी उन को रिहाई न हुयी। हमने कहा कि लो) ३९. हमारे अ़ज़ाब और डरावे का मज़ा चखो ४०. और हम ने नसीहत के लिये कुरआन को आसान किया है, क्या कोई नसीहत पाने वाला है? ४१+४२. और फ़िरऔ़नियों के पास समझाने वाले आये मगर उन्हों ने तमाम निशानात को झुठलाया, सो हम ने बड़ी कुदरत वाले की तरह उन को पकड़ा (और तबाह कर डाला) ४३. भला तुम कुफ़्फ़ार लोग उन (गुज़रे हुये) लोगों से अच्छे हो या क्या (तुम्हारी बदकारियों के बावजूद) इल्हामी नविश्तों में तुम्हारा छुटकारा (तहरीर) हो चुका है। ४४. क्या यह कहते हैं कि हम एक दूसरे के सहायक हैं ४५. बहुत जल्द यह लोग भगा दिये जायें गे और पीठें फेर जायें गे[५] ४६.बल्कि अ़स्ल वादा का स्थान उन के लिये क़ियामत का दिन है और वह दिन बहुत दहशतनाक और कड़ा है। ४७. मुजरिम लोग (जो) गुमराही में हैं वह (उस गुमराही के बदले में) जहन्नम में पड़ें गे ४८. जिस रोज़ यह लोग मुँहों के बल आग में खींचे जायें गे

....

५. कुरआन मजीद की तमाम भविष्यवाणियों में यह सब से बड़ी भविष्यवाणी है। पूरा देश मुख़ालिफ़ है और हर शख़्स जंग के लिये तय्यार खड़ा है, कोई मुसलमान विजय हासिल करने के बारे में सोच भी नही सकता था, ऐसे मौक़े पर यह भविष्यवाणी की जाती है। बद्र की लड़ाई में जबकि मुसलमांनों की तादाद बहुत कम थी, उन के मुक़बाला में कुफ़्फ़ार लश्कर कई गुना अधिक था और आधुनिक हथियारों से लैस था। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अलग हो कर बड़ी लंबी दुआ़ फ़रमाई और वापस आते हुये यही आयत नं० ४५ तिलावत फ़रमा रहे थे। (बुख़ारी) हज़रात पैग़ंबर जो कुछ अल्लाह के बताने से ग़ैब की बातें बताते थे, वह बातें नुबुव्वत की खुली निशानी होती थीं। क्यों कि जो कुछ वह फ़रमाते थे मुकम्मल तौर पर पूरा हो जाता था, इस लिये अपने और पराए सब उसे तस्लीम करते थे। हमारे सूबा पंजाब के नुबुव्वत के दावा करने वाले मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी भी इस उसूल को मानते हैं, बल्कि पेश करते हैं कि पेशीनगोइयाँ सच और झूठ की कसौटी होती हैं। इसी उसूल को उन्हों ने अपनी किताबों में भी बयान किया है। एक स्थान पर लिखते हैं "हमारा सच और झूठ जाँचने के लिये हमारी भविष्यवाणी से बढ़ कर और कोई चीज़ कसोटी नही है" (दाफ़िउ़ल वस्वास) लेकिन उन का नबुव्वत का दावा और उन की भविष्यवाणीयाँ सब झूठी हैं। तफ़्सील के लिये "इलहामाते मिर्ज़ा" का मुताला करें। (सनाई)

فِي النَّارِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ ۝ إِنَّا
كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ۝ وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ
كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ۝ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ
مِن مُّدَّكِرٍ ۝ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ۝ وَكُلُّ

(हुक्म हो गा कि) जहन्नम का अ़ज़ाब चखो। ४९. (सुनो!) हम ने हर एक चीज़ को अन्दाज़ा के साथ पैदा किया है। ५०. (क़ियामत क़ाइम करने के लिये) हमारा हुक्म आँख की झपक के बराबर है[६]। ५१.और हम ने तुम जैसी कई क़ौमें पहले तबाह कर दीं, फिर क्या कोई नसीहत

صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ۝ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّ
نَهَرٍ ۝ فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ۝

पाने वाला है? ५२. (सुनो!) उन लोगों ने जो काम किये हैं सब आमालनामों में दर्ज हैं ५३. और हर बड़ा-छोटा उन में लिखा हुआ है। ५४. (उस के अनुसार फ़ैसले का नतीजा यह होगा कि) परहेज़गार लोग इ़ज़्ज़त के मर्तबे में बाग़ों और नहरों में सब से बड़े बादशाह के पास हों गे[७]

....

६. 'आँख की झपक के बराबर है' बल्कि इस से भी कम है। यह "औ हु-व अक़्-रबु" की तरफ़ इशारा है (सनाई)

७. 'परहेज़गार लोग इ़ज़्ज़त के मर्तबे में बाग़ों और नहरों में हों गे। और जो काफ़िर और मुश्रिक हैं वह हमेशा की सज़ा में रहें गे। (सनाई)

सूरः रह्मान – (55)

(٥٥) سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ مَدَنِيَّةٌ (٩٧)
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلرَّحْمٰنُ ۝ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۝ عَلَّمَهُ
الْبَيَانَ ۝ اَلشَّمْسُ وَ الْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۝ وَّالنَّجْمُ وَ
الشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ۝ وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ۝
اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ ۝ وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا
تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ۝ وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۝

सूरः रहमान मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयीं[1]। इस में ७८ आयतें और तीन रूकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है

१+२. रहमान ने क़ुरआन पढ़ाया है ३. (दिखो) उस ने इन्सान को पैदा किया ४. और उस को बोलना सिखाया ५. सूरज और चाँद हिसाब से चलते हैं (यह अल्लाह की मख़्लूक़ हैं फिर माबूद कैसे हो सकते हैं?) ६. (इसी प्रकार) जड़ी-बूटियाँ और तनादार दरख़्त अल्लाह को सज्दा करते हैं[2] ७. इसी प्रकार अल्लाह ने आसमान को बुलन्द किया और मीज़ान (इन्साफ़ का क़ानून) बनाया[3]। ८. (और लोगों को हुक्म दिया कि) इन्साफ़ करने में बेएतेदाली (बिउसूली) न करो। ९. और तुम इन्साफ़ के साथ वज़न और माप पूरा किया करो। और (माप) तौल कम न किया करो १०. और अल्लाह ने यह ज़मीन इन्सानों के (रहने-सहने के) लिये बनाई है

....
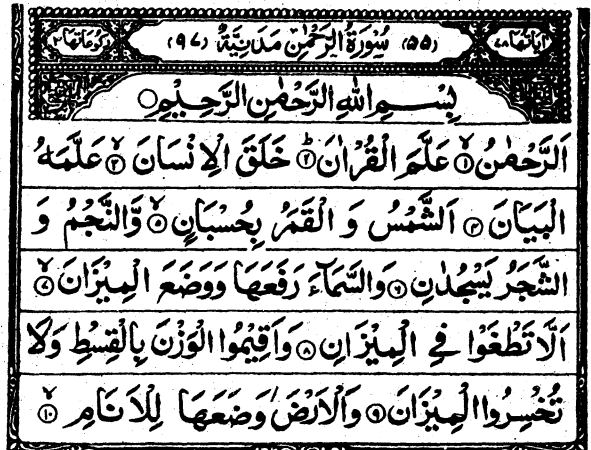
१. हज़रत ज़र्र रह० से रिवायत है कि एक शख़्स ने कहा कि क़ुरआन में जो लफ़्ज़ "आसिन" आया है वह सहीह क्या है? उन्हों ने कहा कि क्या इस शब्द को छोड़ कर बाक़ी पूरा क़ुरआन तू ने समझ लिया? उस ने कहा कि जी हाँ। मैं मुफ़स्सल की तमाम सूरतों को एक रकात में पढ़ लिया करता हूँ। आप ने फ़रमाया: "कविता पढ़ने की तरह जल्दी -जल्दी पढ़ लेता हो गा? मुझे अच्छी तरह मालूम है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुफ़स्सल की कौन-कौन सी दो-दो सूरतों को मिलाया करते थे। हज़रत इब्ने मस्ऊ़द रज़ि० की क़िरात में मुफ़स्सल की सब से

➲प्रथम सूरः यही सूरः रहमान है। (मुस्नद अहमद)

२. हज़रत जाबिर रज़ि फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सहाबा के दर्मियान तश्रीफ़ लाये और सूरः रह्मान अव्वल से आख़िर तक तिलावत फ़रमाई, सहाबा रज़ि० चुप-चाप सुनते रहे। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तुम से तो जिन्नात ही उत्तर देने में अच्छे हैं। मैं ने जब उन के सामने इस सूरः की तिलावत फ़रमाई और फ़बि-अय्यि आलाई........ पढता, तो वह उत्तर देते "ला बिशैइम् मिन् नि-अ़मि-क रब्बना नु-कज़्ज़िबु फ़-ल-कल-हम्दु" (ऐ पर्वरदिगार! हम तेरी नेमतों में से किसी नेमत को नही झुठलाते। तेरे ही लिये हर प्रकार की तारीफ़ हैं) (तिर्मिज़ी) यह हदीस ग़रीब है और यही रिवायत इब्ने जरीर में भी मर्वी है, उस में है कि या तो आप ने यह सूरत पढ़ी, या आप के सामने इस की तिलावत की गयी, उस समय सहाबा की ख़ामोशी पर आप ने यह फ़रमाया और जवाब के अल्फ़ाज़ यह हैं "ला बिशैइम् मिन् नि-अ़मि रब्बिना नु-कज़्ज़िबु"(मुहम्मदी) एक रिवायत में "नि-अ़मि-क" भी आया है यानी चाहे "नि-अ़मि रब्बिना" या "नि-अ़-मिक" पढ़े। इस से साबित हुआ कि क़ुरआन मजीद पढ़ने वाले के अ़लावा सुनने वालों को भी उत्तर देना चाहिये।

नोटः- नमाज़ में उत्तर देने का सबूत नही है इस लिये नमाज़ में उत्तर न दें। तफ़सील से देखें मौलना सलाहुद्दीन यूसुफ़ साहब का हाशिया वाला कुरआन ऊपर की हदीस में जो उत्तर देने का ज़िक्र है वह नमाज़ के अ़लावा तिलावत के दर्मियान क़ी बात है.................... ख़ालिद सिद्दीक़ी

३. लोगों को हुक्म दिया कि क़ानून के मुताबिक़ इन्साफ़ किया करो। इन्साफ़ यह हैं कि "जब बोलो तो इन्साफ़ से बोलो, चाहे कोई फ़रीक़ तुम्हारा कितना ही क़रीबी क्यों न हो"। (सूरःमाइदा) अल्लाह की ज़ात और सिफ़ात के मुतअ़ल्लिक़ तो विशेष कर इन्साफ़ किया करो। कोई बात ग़लत मुंह से न निकालो और न दिल में जगह दो, वर्ना पकड़ में आ जाओ गे। इसी लिये इन्साफ़ का क़ानून बनाया और हुक्म दिया कि इन्साफ़ में मुंह देखी न करो। इन्साफ़ दो तरह का होता है (१) दो फ़रीक़ के दर्मियान फ़ैसला करना (२) कारोबार और लेन-देन में फ़ैसला करना। यहाँ पर दोनों ही क़िस्म के मामलात में इन्साफ़ का हुक्म किया गया है। लेन-देन और दुकानदारी के तअ़ल्लुक़ से यह हुक्म है कि तुम इन्साफ़ के साथ वज़न और माप पूरा किया करो और नाप-तोल कम न किया करो। यहाँ पर एक चीज़ की मिसाल दे कर समझाया है, वर्ना यही हुक्म तमाम कामों में जारी हो गा। किसी की नौकरी करो तो अपने ज़िम्मा लगाए गए काम को पूरी ईमानदारी से अदा करो। अगर मालिक हो तो नौकर की ख़िदमत की क़द्र करो। छोटे हो तो बड़ों की बड़ाई की क़द्र करो और बड़े हो तो छोटों के साथ हमदर्दी का ख़याल रखो। मतलब यह कि हर काम में इस उसूल को सामने रखो। इसी का नाम मीज़ान और इसी का नाम इन्साफ़ है (सनाई)

فِيهَا فَاكِهَةٌ وَالنَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ ﴿١١﴾ وَالْحَبُّ
ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ﴿١٢﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ﴿١٣﴾ خَلَقَ الْإِنسَانَ مِن صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ﴿١٤﴾
وَخَلَقَ الْجَانَّ مِن مَّارِجٍ مِّن نَّارٍ ﴿١٥﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿١٦﴾ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ﴿١٧﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿١٨﴾ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ
يَلْتَقِيَانِ ﴿١٩﴾ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيَانِ ﴿٢٠﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ

११.इस में (कई प्रकार के) फल हैं और गिलाफ़दार खजूरें (जो अ़रब की ख़ूराक हैं) १२. और (आ़म तौर की ख़ूराक गेहूँ वग़ैरह) भूसीदार दाने और ख़ुश्बूदार फूल (भी इसी ज़मीन में होते हैं) १३. फिर तुम अल्लाह की किस-किस नेमत को झुठलाते (और इन्कार करते)हो? १४. (देखो!) उस ने इन्सान को गली-सड़ी, पपड़ी की तरह ख़ुश्क मिट्टी से पैदा किया १५. और जिन्नों को आग के भड़कते हुये शोले से १६. फिर तुम दोनों अपने रब की किस नेमत को झुठलाते➲

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢١﴾ يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٣﴾ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿٢٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٥﴾ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿٢٦﴾ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿٢٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٨﴾ يَسْـَٔلُهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

हो। १७. (सुनो!) वह अल्लाह दोनों मश्रिक़ों और मग़्रिबों का पर्वरदिगार है। १८. फिर तुम किस नेमत का इन्कार करते हो? । १९. (सुनो!) उस अल्लाह ने दो दरिया जारी कर रखे हैं जो आपस में मिलते हैं २०. उन के बीच में एक रूकावट है, एक- दूसरे में घुसते नहीं[४] । २१. फिर तुम अपने पर्वरदिगार की किस नेमत को झुठलाते हो? २२. उन दोनों (दरियाओं) में से मोती और मूंगे निकलते हैं[५] (जो तुम लोगों के काम आते हैं) २३. फिर तुम किस नेमत का इन्कार करते हो? २४. (सुनो! यह समुन्दर में) बड़े-बड़े टीलों जैसे जहाज़ में चलने-फिरने वाले भी उसी के क़ब्ज़ा में हैं। २५. फ़िर तुम अपने रब की किस-किस नेमत को झुठलाओ गे? २६. (अल्लाह के क़ानून को ग़ौर से सुनो) जितनी मख़्लूक़ इस ज़मीन पर हैं सब फ़ना हो जाये गी। २७. और तुम्हारे पर्वरदिगार की इ़िज़्ज़त और जलाल वाली ज़ात बाक़ी रहे गी[६] (क्योंकि वह हमेशा बाक़ी रहने वाली और कभी फ़ना न होने वाली ज़ात है) २८. फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओ गे? २९. कुल आसमान वाले और ज़मीन वाले सब लोग अपनी ज़रूरतें उसी से माँगते हैं[७]

....

४. यानी मीठे दरिया और खारी जारी कर रखे हैं। मीठे पानी का मीठा और कड़वे पानी का कड़ुवा, बराबर-बराबर चला जाता है (सनाई)

५. हालाँकि मोती और मूंगा खारी समुन्दर से निकलता है मगर जब दोनों खारी और मीठा एक स्थान पर मिल गये तो गोया दोनों में से निकले। कुछ उलमा ने कहा कि मोती तब पैदा होता है जब आसमान से पानी बरसे और सीपी उस को पिये, तो इस से आसमान और ज़मीन का पानी मुराद है। (वहीदी)

६. इस आयत में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मुख़ातब कर के कहा गया कि ऐ महम्मद! तुम इस बात को समझते हो कि तुम्हारा रब हमेशा से बाक़ी रहने वाला है और उस के अ़लावा सब को एक न एक दिन फ़ना होना है। दुनिया का फ़ना होना भी एक बड़ी नेमत है, क्योंकि उस के फ़ना होने के बाद हमेशा बाक़ी रहने वाली जगह पर जाना होगा और वह भी बड़ी नेमत है। (हक़्क़ानी)

७. मख़्लूक़ दो तरह से माँगती है १. फ़ितरी तौर पर २. हाजत के तौर पर। यानी जिस वक़्त किसी मख़्लूक़ को किसी प्रकार की हाजत होती है तो वह फ़ितरी तौर पर अपने ख़ालिक़ की तरफ़ झुकती है। दूसरी क़िस्म ज़बान से माँगने की है। इन दोनों प्रकार की हाजतों को पूरा करने वाली अल्लाह ही की ज़ात है। वह हर लम्हा मख़्लूक़ की ज़रूरत को पूरी करने में बुलन्द शान के साथ लगा हुआ है। कोई लम्हा ऐसा नही बीतता जिस में वह दुनिया के इन्तिज़ाम और निग्रानी से बेख़बर हो, या इन्तिज़ाम किसी के हाथ में देदे। अगर एक लम्हे के लिये भी इन्तिज़ाम दूसरे के हाथ में चला जाये तो दुनिया हमेशा के लिये समाप्त हो जाये (सनाई)

एक हदीस शरीफ़ में है कि सहाबा ने पूछा किस काम में पर्वरदिग़ार लगा हुआ है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: किसी का गुनाह माफ़ करता है, किसी की मुसीबत को दूर करता है, किसी क़ौम को तरक़्क़ी

देता है, किसी को पस्त करता और किसी की दुआ़ कुबूल करता है। इस आयत में उन काफ़िरों का रद्द होता है जो कहते हैं कि अल्लाह ने आसमान और ज़मीन पैदा कर के उन का इन्तिज़ाम दूसरों के सिपुर्द कर दिया है और स्वयं आराम से बैठा हुआ है। इस आयत में उन यहूदियों का भी रद्द है जो कहते थे कि अल्लाह हफ़्ते के दिन काम नही करता (वहीदी) आयत न० २९ में फ़रमाया गया कि ज़मीन व आसमान की तमाम मख़्लूक़ हर प्रकार से उसी से अपनी ज़रूरतें तलब करती हैं। किसी के लिये एक लम्हा भर के लिये गुन्जाइश नहीं है कि वह अल्लाह से बेनयाज़ हो जाये। और अल्लाह भी अपनी हिक्मत के मुताबिक़ उन की ज़रूरतें पूरी करता है। हर समब उस का एक काम और हर समय उस की एक नई शान है। किसी को मारना, किसी को जिलाना, किसी को बीमार करना, किसी को तन्दुरूस्त करना, किसी को बढ़ाना, किसी को घटाना, किसी को देना और किसी से लेना उस की शान में दाख़िल है। (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ﴿٢٩﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٠﴾
سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيُّهَ الثَّقَلَانِ ﴿٣١﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ﴿٣٢﴾ يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ
أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
فَانْفُذُوا لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ ﴿٣٣﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٤﴾ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِنْ
نَارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرَانِ ﴿٣٥﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ﴿٣٦﴾ فَإِذَا انْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً
كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٨﴾
فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌّ ﴿٣٩﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٠﴾ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمَاهُمْ
فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ ﴿٤١﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٢﴾ هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا

वह अल्लाह हर दिन (बल्कि हर लम्हा) एक बुलन्द शान में है। ३०. फिर तुम अल्लाह की किस नेमत का इन्कार करते हो? ३१. (देखो!) हम (आमाल का फ़ैसला करने के लिये) मुतवज्जह होने वाले हैं[६]। ३२. फिर तुम किस नेमत का इन्कार करते हो? ३३. ऐ जिन्नो और इन्सानो! अगर तुम में ताक़त है कि तुम आसमानों और ज़मीनों के कनारों से (यानी पर्वरदिगार के शासन से) निकल सको (और निकल कर अम्न-चैन से ज़िन्दगी बसर कर सको) तो बेशक निकल जाओ (यह तुम को नोटिस है, लेकिन) तुम लोग नही निकलो गे मगर (अल्लाह पर) ग़लबा करने से[९] (और यह असंभव है) ३४. फिर तुम अल्लाह की किन-किन नेमतों का इन्कार करते हो? ३५. तुम दोनों पर (यानी जो तुममें से मुस्तहिक़ हो गा उस पर) आग के शोले और धुवाँ फेंके जायें गे, फिर तुम दोनों एक दूसरे की मदद न कर सको गे। ३६. फिर तुम अपने पर्वरदिगार की किस नेमत को झुठलाते हो[१०]? ३७. फिर जब आसमान फट कर गुलाब के फूल के समान लाल चमड़े की तरह हो जाये गा (उस समय हर एक को अपने किये का बदला मिले गा) ३८. फिर तुम अपने रब की किस नेमत का इन्कार करते हो? ३९. उस दिन इन्सानों और जिन्नों से उन के गुनाहों के बारे में प्रश्न न हो गा (बल्कि उन के काम उन के चेहरों से खुदबखुद ज़ाहिर हों गे) ४०. फिर तुम किस नेमत को झुठलाते हो? ४१. (और सुनो!) उस रोज़ मुजरिम लोग अपने चेहरों के निशानों से

पहचाने जायें गे और पेशानी और क़दमों से पकड़े जायें गे ४२. पस (बताओ) अल्लाह की किस नेमत को झुठलाते हो? ४३. (उन से कहा जाये गा) यही वह जहन्नम है जिस को मुजरिम लोग झुठलाते थे

....

८. इस आयत से यह मतलब हर्गिज़ नही निकलता कि वह अल्लाह और कामों में मश्ग़ूल था और अब उस से फ़ारिग़ हुआ है और फ़ुरसत पाई है अल्लाह की ज़ात को किसी काम में मेहनत करने या मश्ग़ूल होने की ज़रूरत नही पड़ती है इसलिये कि यह आजिज़ी (मजबूरी) की अलामत है और अल्लाह की ज़ात इस से पाक है। इस आयात में इस प्रकार का जुम्ला ला कर पापियों को यही बतलाना है कि आगाह हो जाओ! अब हम तुम्हारा हिसाब लेने वाले हैं। (वहीदी)

९. यानी अल्लाह की हुकूमत से कोई निकल कर भागना चाहे तो बिना क़ुव्वत और ताक़त के कैसे भाग सकता है? और अल्लाह से ज़्यादा है कौन ताक़तवर है-जो उस की पकड़ से निकल भागे। और कौन सी दूसरी हुकूमत है जहाँ भाग कर पनाह लेगा? दुनिया की मामूली सी हुकूमतें अपने शासन से किसी को निकलने नहीं देतीं तो फिर अल्लाह अपनी हुकूमत से किसी को क्यों निकलने देगा? (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

१०. आयत फ़बिअय्यि आलाई.......... पूरी सूरः में ३१ मर्तबा आयी है। आठ बार तो उन आयतों के बाद आयी है जिन में मख़्लूक़ की पैदाइश की कारीगरी, पैदाइश की इब्तिदाई (आरंभिक) हालत, मख़्लूक़ के लिये जीवन-यापन के सामान का ज़िक्र है। सात बार उन आयतों के बाद ज़िक्र है जिन में दोज़ख़ की शिद्दत और दोज़ख़ के अज़ाब का बयान है। आठ जगह उन आयतों के बाद है जिन में जन्नत की नेमतों का बयान है। और इन सब के बाद फिर आठ स्थानों पर यह आयत आयी है। आप ग़ौर करें कि जहन्नम के दर्वाज़े भी आठ हैं और जन्नत के दर्वाज़े भी आठ। यह आयत ३१ बार आयी है और इस से पहले जिन बातों का ज़िक्र हैं उन में से हर एक के बाद इस आयत का आना निहायत उचित है। कोई भी मामूली से मामूली अक़्ल रखने वाला भी इस को फ़ज़ूल और वाहियात नही कह सक्ता (हमीदी)

४४. (उस समय वह मुजरिम लोग) उस में और खौलते हुये पानी में घूमते हों गे। ४५. फिर तुम (बताओ) पर्वरदिगार की किस नेमत का इन्कार करते हो? ४६. जो कोई पर्वरदिगार के सामने खड़े होने से डरता है उस के लिये (अल्लाह के हाँ) दो बाग़ हों गे[११]। ४७. फिर तुम किस नेमत को झुठलाते हो? ४८. दोनों बाग़ शाख़ो वाले हों गे ४९. फिर तुम कौन सी नेमत को झुठलाते हो? ५०. (और सुनो!) उन (दोनों) बाग़ों में दो चश्मे जारी हों गे ५१. फिर तुम अपने पर्वरदिगार की किस नेमत को झुठलाते हो? ५२. (और सुनो!) उन दोनों (बाग़ों) में हर मेवे की दो क़िस्में हों गी (रंगत में भी मुख़्तलिफ़ और लज़्ज़त में भी मुख़्तलिफ़) ५३. फिर तुम

الْمُجْرِمُونَ ﴿٤٣﴾ يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ آنٍ ﴿٤٤﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٥﴾ وَلِمَنْ خَافَ
مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ ﴿٤٦﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٧﴾
ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٩﴾
فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرِيَانِ ﴿٥٠﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ﴿٥١﴾ فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَانِ ﴿٥٢﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٥٣﴾ مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ فُرُشٍ
بَطَائِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ ۚ وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٥٥﴾ فِيهِنَّ قَاصِرَاتُ
الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ﴿٥٦﴾

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٥٧ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ
وَالْمَرْجَانُ ۝٥٨ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٥٩
هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ۝٦٠ فَبِاَیِّ

पर्वरदिगार की किस नेमत को झुठलाते हो? ५४. तख़्तों के ऊपर ऐसे बिछोनों पर बैठे हों गे जिन के अन्दर की जानिब का कपड़ा मख़्मल होगा (बाहर का बहुत अच्छा) और दरख़्तों के फल झुके हों गे (उन के उतारने में उन को तक्लीफ़ न हो गी) ५५. फिर तुम अल्लाह की किस नेमत के झुठलाते हो? ५६. उन बागों में ऐसी बीवियाँ हों गी जो शर्म से नीची निगाह रखे हों गी। उन से पहले न उन को किसी इन्सान ने छुवा होगा न किसी जिन्न ने (यानी बिल्कुल कोरी हों गी) ५७. फिर तुम अपने रब की किस नेमत को झुठलाते हो? ५८. (वह ऐसी सुन्दर हों गी) गोया वह याकूत और मूँगा हों गी ५९. फिर तुम अपने पर्वरदिगार की किस नेमत को झुठलाते हो? ६०. (हमारे हाँ तो आम नियम यह है कि) नेकी का बदला तो नेक (ही) होता है (इसलिये जो नेक हों गे उन का बदला भी अच्छा हो गा)

....

११. इब्ने शौज़ब और अ़ता ख़ुरासानी फ़रमाते हैं कि आयत न० ४६ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि के बारे में नाज़िल हुयी। हज़रत अ़तिय्या बिन् क़ैस रज़ि० फ़रमाते हैं कि यह आयत उस शख़्स के बारे में नाज़िल हुयी जिस ने कहा था कि मेरे मरने के बाद मुझे जला देना ताकि मैं अल्लाह को ढूंडे से भी न मिलूँ। उस शख़्स ने यह कहने के बाद एक रात और दिन तौबा की तो अल्लाह ने उस की तौबा क़ुबूल फ़रमाई और उसे जन्नत अ़ता फ़रमाई। लेकिन सहीह बात यह है कि यह आयत आ़म है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० का क़ौल भी यही है।

मतलब यह है कि जो शख़्स क़ियामत के दिन अपने रब के सामने ख़ड़े होने का डर अपने दिल में रखता है और अपने आप को नफ़्स की ख़ाहिशों से बचाता है और सर्कशी नही करता, दुनिया के पीछे पड़ कर आख़िरत को नही भूलता, बल्कि आख़िरत की फ़िक्र ज़्यादा करता है और उसे बेहतर समझता है, फ़र्ज़ को आदा करता है, बुराइयों से बचता है, ऐसे शख़्स को दो जन्नतें मिलें गी। सहीह बुख़ारी की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं वह दोनों जन्नतें चाँदी की हों गी और उन का कुल सामान भी चाँदी का ही होगा। और दो जन्नतें सोने की हों गी और उन के बर्तन और जो कुछ उन में है सब ही सोने का होगा। उन जन्नतियों और अल्लाह के दर्मियान देखने में कोई चीज़ रूकावट न होगी, सिवाए उस की बड़ाई के पर्दे के जो उस के चेहरे पर है। यह लोग जन्नत अद्न में हों गे। यह हदीस सिहाह की और अन्य किताबों में भी है। हदीस के रिवायत करने वाले रावी हज़रत हम्माद फ़रमाते हैं कि मेरे ख़याल में यह हदीस मर्फ़ूअ़ है और आयत न० ४६ और ६२ की तफ़्सीर भी है।

हज़रत अबू दर्दा रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने आयत न० ४६ की तिलावत फ़रमाई तो मैं ने कहा: अगर्चे उस ने ज़िना भी किया हो? और चोरी भी की हो? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फिर यही आयत तिलावत फ़रमाई तो फिर मैं ने अपना प्रश्न दुहराया, इस बार आप ने फ़रमाया: अगर्चे अबूदर्दा की नाक मिट्टी में मिले (नसई) दूसरी और सनदों से यह रिवायत मौक़ूफ़ भी मर्वी है। हज़रत अबू दर्दा से यह भी रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिस दिल में अल्लाह के सामने ख़ड़े होने का डर हो गा, तो उस से नामुमकिन है कि ज़िना हो या चोरी करे।

यह आयत आ़म है और जिन्नों और इन्सानों दोनों को शामिल है। इन्सानों की तरह जिन्नात में भी जो ईमान लायें गे और तक़्वा इख़्तियार करें गे वह जन्नत में दाख़िल हों गे। इसी लिये जिन्न और इन्सान को इस के बाद ख़िताब कर के फ़रमाया है "तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओ गे"। इस के बाद उन दोनों जन्नतों

➲की ख़ूबियाँ बयान फ़रमाता है कि यह निहायत ही हरे-भरे हों गे, उन के फल निहायत मीठे और स्वादिष्ट हों गे, जिस समय भी खाने का ख़याल आयेगा तुरन्त तय्यार मिलें गे। इस लिये तुम्हें अपने रब की नेमतों का इन्कार न करना चाहिये। 'अफ़नान' के माना "शाख़ और "डाली" के हैं। यानी उन पेड़ों में इतनी शाखें हों गी कि एक-दूसरे से मिली-जुली हों गी इसी लिये इन का साया भी घना हो गा यहाँ तक कि दीवारों पर भी चढ़ा हो गा।

इमाम इ़क्रमा यही तफ़्सीर बयान करते हैं और किसी शायर का एक शेर भी दलील में पेश करते हैं। जन्नत के दरख़्तों की शाख़े फ़ैली हुयी हों गी और सीधी हों गी, रंग-रंग की हों गी। एक मतलब यह भी बयान किया गया है कि उन में तरह-तरह के मेवे हों गे, उन की शाख़ें कुशादा और साये घनेरे हों गे। यह तमाम बातें जो जन्नत की सिफ़तों के तअ़ल्लुक़ से बयान हुयी हैं दुरूस्त हैं। (मुहम्मदी)

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦١﴾ وَمِنْ دُوْنِهِمَا
جَنَّتٰنِ ﴿٦٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٣﴾
مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿٦٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٥﴾
فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿٦٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٧﴾ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٩﴾ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ
حِسَانٌ ﴿٧٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧١﴾ حُوْرٌ
مَّقْصُوْرٰتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٣﴾ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٧٤﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٥﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى
رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٧﴾ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلٰلِ
وَالْاِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

६१. फिर तुम अपने रब की कौन सी नेमत का इन्कार करते हो? ६२. इन दो के अ़लावा भी दो बहिश्त और हैं (जो जन्नत वालों को मिलें गी[१२]) ६३. फिर अपने पर्वरदिगार की कौन सी नेमत को झुठलाओ गे? ६४. (वह दरख़्त दूर से देखने में) सियाही मायल (यानि काले दिख़ाई दें गे) ६५. फिर अपने रब की कौन से नेमतों को झुठलाते हो? ६६. (सुनो!) उन में दो-दो चश्में जोश मारते हों गे (जैसे उंचे पहाड़ से पानी का चश्मा ज़ोर से बहता है।) ६७. फिर तुम दोनों गरोह अपने रब की किन-किन नेमतों का इन्कार करते हो? ६८. उन दोनों में फल, खजूरें और अनार हों गे। ६९. फिर तुम अपने रब की कौन सी नेमतों को झुठलाते हो? ७०. उन में नेक और सुन्दर महिलायें हों गी (जिन से वह ज़रूरत के मुताबिक़ मानूस रहें गे) ७१. फिर तुम लोग अपने रब की किन-किन नेमतों का इन्कार करते हो? ७२. वह गोरे रंग की हूरें ख़ेमों में पर्दा में बैठी होंगी ७३. फिर तुम अपने रब की कौन सी नेमत का इन्कार करते हो? ७४. उन मर्दों से पहले उन को न किसी इन्सान ने छुवा होगा और न किसी जिन्न ने। (बल्कि जवान और कुंवारी हों गी) ७५. फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों का इन्कार करते हो? ७६. वह (जन्नती) लोग हरी क़ालीनों और सुन्दर बिछौनों पर तकिए लगाये बैठे होंगे। ७७ फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों का इन्कार करते हो? ७८. (सुनो) तुम्हारे पर्वरदिगार, बड़ी बुलन्दी, मतर्बा और अ़िज़्ज़त वाले का नाम बड़ी बर्कत वाला है?

....

१२. यह नेक लोगों के मक़ाम (स्थान) की और ज़्यादा तशरीह है कि उस अल्लाह से डरने वालों को दो और➲

➲बाग़ मिलें गे। हकीम तिर्मिज़ी "नवादिरूल् उसूल" में लिखते हैं: यह दोनों जन्नतें, उन जन्नतों से, जिन का हपले ज़िक्र हुआ है, बढ़ कर हैं। 'दूनिहिमा' का अर्थ है कि यह अर्श से ज़्यादा क़रीब हैं और पहले के मुक़ाबले में अधिक बेहतर हैं (हक़्क़ानी)

जन्नत में जिस्मानी नेमतें मिलने की वजह जिस्मानी तौर पर ज़िन्दा किया जाना है। जिस बदन ने अ़ज़ाब और सवाब का काम किया है, बदला के दिन उसे रूह के साथ होना चाहिये। सिर्फ़ रूह शर्ओ़ अहकाम की मुकल्लफ़ (ज़िम्मेदार) नही होती और न जिस्म बग़ैर रूह के मुकल्लफ़ है। पस जब जिस्म के साथ ज़िन्दा किया जाये गा तभी जिस्मानी नेमतों का फ़ाइदा हासिल हो गा। 'जन्नत' के कई नाम हैं (१) जन्नतुल् फ़िरदौस (२) जन्नते अ़द्न (३) ज़न्नतुल् मावा (४) दारूल ख़ुल्द (५) दारूस्सलाम (६) जन्नतुल् मक़ामह। अहले जन्नत को हमेशगी की ज़िन्दगी नसीब हो गी और उन को फ़ना नसीब न हो गा और न ही उस की नेमतें ख़त्म हों गी (तबसीरूर्रहमान- १/५८,५९)

सूरः वाकि-अः- (56)

सूरः वाक़िआ मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[1]। इस में ९६ आयतें और ३ रूकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है-।

१. (लोगो सुनो!) जब क़ियामत (की घड़ी) वाक़े हो जाये गी २. जिस के वाक़े (घटित) होने में किसी प्रकार का शक व शुब्हा नही ३. वह पस्त करे गी और बुलन्द करे गी ४. (यह वाक़िआ उस रोज़ होगा) जब ज़मीन को हर्कत दी जाये गी ५+६ (और उस हर्कत के साथ) पहाड़ों को टुक्ड़े-टुक्ड़े कर दिया जाये गा। ऐसे कि ख़ाक-धूल हो कर उड़ें गे ७. और तुम (दुनिया के लोग उस रोज़)तीन क़िस्म हो जाओ गे[2] ८. पस (उन तीनों की हालत सुनो) दाऐं हाथ वाले (वाह) कैसे (मज़े में) अच्छे (मर्तबे पर) हों गे ९. और बायें हाथ वाले कैसे बुरे (दर्जे में) हों गे १०. (अब रहे) साबिक़ लोग (उन का क्या कहना) वह जन्नत की तरफ़ (सब से पहले) साबिक़ हों गे[3] ११+१२. (वही आला दर्जे में) अल्लाह के क़रीबी होंगे (जो) बड़ी नेमतों के बागों में (ऐ़श करते) हों गे १३. पहले लोगों में से एक (ख़ास तादाद की) जमाअ़त हो गी १४. और पिछलों (यानी तुम मुसलमानों) में से भी थोड़े से[4] (उन➲

(٥٦) سُورَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ (٤٦) — آياتها ٩٦ — ركوعاتها ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝١ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۝٢
خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۝٣ إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا ۝٤
وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۝٥ فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْبَثًّا ۝٦
وَّكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ۝٧ فَأَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝
مَآ أَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝٨ وَأَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ۝
مَآ أَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ۝٩ وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۝١٠
أُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝١١ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝١٢
ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ۝١٣ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۝١٤
عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۝١٥ مُّتَّكِـِٔيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ۝١٦
يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۝١٧ بِأَكْوَابٍ
وَّأَبَارِيْقَ ۝ وَكَأْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۝١٨ لَا يُصَدَّعُوْنَ

➲साबिक़ीन में) हों गे १५.+१६ जड़ाऊ तख़्तों पर तकिये लगाये हुये आमने-सामने बैठे हों गे १७+१८. कम उम्र बहिश्त में हमेशा रहने वाले बच्चे[3] (उन जन्नतियों के पास) गिलास और (बिल्लौरी) लुटिया और (ऐसी) शराब के प्याले ले कर आस-पास फिरें गे[4] १९. जिस से न उन को सर का दर्द हो गा

....

१. एक मर्तबा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा: ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! आप बूढ़े हो गये। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाया: मुझे सूर: हूद, वाक़िअ: मुरसलात, नबा और तक्वीर ने बूढ़ा कर दिया। इमाम तिर्मिज़ी ने इस हदीस को हसन और ग़रीब कहा है। इस सूर: के तअ़ल्लुक़ से हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० की एक रिवायत आयी है जिस से मालूम होता है कि फ़ाक़ा को दूर करने वाली सूर: है, (लेकिन अ़ल्लामा अल्बानी ने इस रिवायत को हद दर्जा ज़ओ़फ़ बल्कि मौज़ूअ़ कहा है। बहर हाल फ़क्र-फ़ाक़ा के दूर होने के तअ़ल्लुक़ से जितनी भी रिवायतें इस की फ़ज़ीलत में आई है वह सब ज़ओ़फ़ हैं। इस सूर: की भी आ़म सूरतों की तरह ख़ैर-बर्कत के लिये तिलावत करनी चाहिये और बस...... ख़ालिद) मुस्नद अहमद में हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम नमाज़ें इसी तरह पढ़ते थे जिस तरह आज तुम पढ़ते हो, लेकिन आप की नमाज़ ज़रा हल्की होती थीं। फ़ज्र की नमाज़ में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सूर: वाक़िआ और इस जैसी सूरतें तिलावत फ़रमाया करते थे (मुहम्मदी)

२. लोग उस दिन तीन हिस्सों में बट जायें गे (१) एक जमाअ़त अर्श के दायें तरफ़ हो गी। (२) एक जमाअ़त अर्श के बायें तरफ़ हो गी (३) एक जमाअ़त अल्लाह के सामने हो गी। पहली जमाअ़त वाले वह लोग हों गे जो हज़रत आदम अ़लै० के दायीं करवट से निकले थे। इन को आमाल नामा दायें हाथ में दिया जाये गा और दायें तरफ़ चलाये जायें गे। यह जन्नतियों का आ़म गरोह हो गा। दूसरी जमाअ़त अर्श के बायें तरफ़ हो गी। यह वह लोग हों गे जो हज़रत आदम अ़लै० के बायें कर्वट से निकले हों गे। इन्हें आमाल नामा बायें हाथ में दिया जाये गा और बायें तरफ़ चलाये जायें गे, यह सब जहन्नमी हों गे। तीसरी जमाअ़त अल्लाह के सामने हो गी यह निहायत मख़्सूस लोग हों गे। यह पहले गरोह से भी अधिक अल्लाह के क़रीबी हों गे यह जन्नतियों के सर्दार हों गे। इन में अम्बिया, रसूल, सिद्दीक़ और शुहदा हों गे। इन की मात्रा पहले गरोह के लोगों के मुक़ाबला में बहुत कम हो गी। हश्र के मैदान में तमाम लोगों को मिला कर यही तीन गरोह बनें गे और इन्ही तीनों से जन्नत और जहन्नम आबाद हो गी। इस सूर: के अन्त में भी इन्ही तीनों की मुख़्तसर तक़्सीम की गयी है। (मुहम्मदी)

३. 'साबिकून' से कौन लोग मुराद हैं? इस बारे में उलामा के कई क़ौल हैं। जैसे, इस से मुराद अम्बिया हैं, हज़रत यूशा बिन नून हैं जो हज़रत मूसा पर सब से पहले ईमान लाये थे। वह मोमिन मर्द मुराद है जिस का ज़िक्र सूर: यासीन में है। वह लोग मुराद हैं जो हज़रत ई़सा पर ईमान लाये थे। हज़रत अ़ली रज़ि० मुराद हैं जो बच्चों में सब से पहले नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाये थे। या वह लोग मुराद हैं जिन्हों ने दोनों क़िब्लों की तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ी है। वह मुराद हैं जो अपने-अपने नबी पर पहले-पहल ईमान लाये हैं। वह जो मस्जिद में सब से पहले जाते हैं, वह जो जिहाद में सब से पहले आगे निकलते हैं बगैरह-बग़ैरह। यह सब क़ौल अपनी अपनी जगह पर सहीह हैं और यह सब 'साबिकून' में शामिल हैं, और अल्लाह के फ़र्मानों को दूसरों से बढ़ कर सब से पहले क़ुबूल करने वाले सब इस में दाख़िल है। (मुहम्मदी)

४. इस से मुराद कौन सा गरोह हैं? इस में भी बहुत से अक़्वाल हैं। एक क़ौल यह है कि अगली उम्मतों में से और इस उम्मत में सें कुछ थोड़े लोग मुराद हैं। इमाम इब्ने जरीर रह० ने इसी क़ौल को पसन्द फ़रमाया है दलील में उस हदीस को पेश करते हैं जिस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हम पिछले हैं लेकिन क़ियामत के दिन पहले हों गे। इस क़ौल की ताईद इब्ने अबी हातिम की सहीह और मर्फ़ूअ़ रिवायत से भी हो सकती➲

➲है कि जब यह आयत नाज़िल हुयी तो सहाबा को बड़ा भारी पड़ा इस पर यह आयत सुल्लतुम्मि-नल अव्वलीन. ..... नाज़िल हुयी। इस के बाद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मुझे उम्मीद है कि कुल जन्नती लोगों के चौथाई तुम हो, बल्कि तिहाई तुम हो, बल्कि आधों-आध तुम हो, आधी जन्नत के मालिक तुम हो गे और आधी में बाक़ी तमाम उम्मत हो गी जिन में तुम भी शरीक हो। मुस्नद अहमद की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: एक जमाअ़त मेरी उम्मत में से हमेशा हक़ पर रहे गी उन के दुश्मन उन्हें कुछ भी नुक्सान न पहुंचा सकें गे और उन के मुख़ालिफ़ उन्हें रूस्वा और पस्त भी न कर सकें गे, यहाँ तक कि क़ियामत आ जाये गी और वह उसी तरह हों गे।

मतलब यह है कि यह मिल्लत बाक़ी तमाम उम्मतों से अफ़ज़ल और बढ़ कर है और इस उम्मत में अल्लाह के मुक़र्रब बन्दे और उम्मतों के मुक़ाबले में अधिक हों गे। एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार लोग बिला हिसाब जन्नत में दाख़िल हों गे और हर हज़ार के साथ सत्तर हज़ार और भी हों गे। यह हदीस तवातुर के साथ साबित है। एक दूसरी रिवायत में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है मेरी उम्मत में से एक जमाअ़त क़ियामत के दिन इनती बड़ी तादाद में हाज़िर हो गी कि उस को देख कर ऐसा मालूम होगा कि गोया रात आ गयी। यह जमाअ़त ज़मीन के तमाम कनारों को घेर ले गी। इस को देख कर फ़रिश्ते कहें गे कि तमाम उम्मतों में सब से बड़ी नबी की उम्मत यही जमाअ़त हो गी (तब्रानी)

५. यह बच्चे वह हों गे जो दुनिया में छुट्पने में मर गये हैं, या जन्नत में पैदा किये गये हों गे? कुरआन और हदीस में इस बाबत बिल्कुल ख़ामोशी है। बहरहाल चाहे दुनिया के हों या आख़िरत में पैदा किये गये हों, दोनों ही सूरतों में हमें एतराज़ करने का कोई हक़ नहीं है और इस बाबत ज़्यादा कुरेदने की भी ज़रूरत नहीं है (तर्जुमानुल कुरआन नवाब सिद्दीक़ ख़ाँ)

६.दुनिया में किसी स्थान के पानी को नमूना के तौर पर नही पेश किया जा सकता। हाँ, श्रीनगर के शाली मार बाग़ में एक हल्की सी झलक देखी जा सकती है। जब इस स्थान का ऐसा है तो जन्नत का पानी कैसा हो गा, आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं।

عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُونَ ﴿١٩﴾ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ﴿٢٠﴾
وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢١﴾ وَحُورٌ عِينٌ ﴿٢٢﴾
كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ﴿٢٣﴾ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَّلَا تَأْثِيمًا ﴿٢٥﴾
إِلَّا قِيلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ﴿٢٦﴾ وَأَصْحٰبُ الْيَمِينِ ۙ مَآ
أَصْحٰبُ الْيَمِينِ ﴿٢٧﴾ فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ﴿٢٨﴾ وَّطَلْحٍ
مَّنْضُودٍ ﴿٢٩﴾ وَّظِلٍّ مَّمْدُودٍ ﴿٣٠﴾ وَّمَآءٍ مَّسْكُوبٍ ﴿٣١﴾ وَّ
فَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ﴿٣٢﴾ لَّا مَقْطُوعَةٍ وَّلَا مَمْنُوعَةٍ ﴿٣٣﴾

और न वह (नशा की वजह से) बक्वास करें गे। (क्यों कि वह नशा केवल लज़ीज़ चीज़ हो गी) २०+२१. और जिस-जिस क़िस्म के फल और जानवरों का गोश्त वह चाहें गे, ले कर उन के पास आयें गे। २२+२३. और उन के लिये बड़ी सुन्दर और मोटीं आँखों वाली बीवियां सुरक्षित मोतियों की तरह हों गी २४. यह (सब कुछ) उन को उन के कामों के बदले में मिले गा जो वह (दुनिया में नेक काम) करते थे। २५+२६. वह किसी प्रकार की वाहियात या गुनाह की बात उस में न सुनें गे, सिवाए सलाम-सलाम के (यह तो अन्जाम होगा साबिक़ून का)➲

وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ﴿٣٤﴾ اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ﴿٣٥﴾
فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ﴿٣٦﴾ عُرُبًا اَتْرَابًا ﴿٣٧﴾ لِّاَصْحٰبِ
الْيَمِيْنِ ﴿٣٨﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَثُلَّةٌ مِّنَ
الْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَاَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ
الشِّمَالِ ﴿٤١﴾ فِيْ سَمُوْمٍ وَّحَمِيْمٍ ﴿٤٢﴾ وَّظِلٍّ مِّنْ

➲२७+२८. (अब) दायें हाथ के क्या कहने? (बड़े मज़े में हों गे बागों की बारादरियों में) बे काँटे की बैरियों और तह ब तह केलों में २९+३०+३१+३२+३३. और लम्बी छाँव में और गिरते पानी में और बहुत से फलों में जो न ख़त्म हों गे, न उन से उन को रोक-टोक होगी। ३४. और ऊँचे बिस्तरों पर मज़े ले रहे हों गे। ३५+३६. (उन के लिये वहाँ बीवियां भी हों गी) हम ने उन बीवियों को पैदा किया है और कुंवारी रखा है। ३७+३८. (पति की निगाहों में) महबूबा, दायें हाथ वालों की हम उम्र बनाया है।३९+४०. उस जमाअ़त में बहुत से लोग पहले लोगों में से हों गे और बहुत से लोग पिछले लोगों में से हों गे। ४१. (बाक़ी रहे उन सब के मुक़ाबिल) बायें हाथ वाले लोग (हाये! कैसे बदनसीब हों गे[७]) ४२. सख़्त और गर्म हवा में रहें गे और सख़्त गर्म पानी में ४३. और सख़्त सियाह साये के धुयें में हों गे

....

७. दायें हाथ वालों के ज़िक्र के बाद बायें हाथ वालों का बयान हो रहा है। उन का क्या हाल है? यह किस अ़ज़ाब में हैं? इन सब का बयान हो रहा है। यह गर्म हवा के थपेड़ों और गर्म और खौलते हुये पानी में हों गे और धुँवे के सख़्त काले साये में। (इस की और तफ़्सील सूरः मुर्सलात में है) मतलब यह है कि जिन को आमालनामा (कर्मपत्र) बायें हाथ में दिया जाये गा यह सख़्त धुयें में हों गे, जो न जिस्म को अच्छा लगे गा और न आँखों को भला मालूम हो गा। यह अ़रब का एक मुहावरा है कि जिस चीज़ की ज़्यादा बुराई करनी हो, वहाँ उस की तमाम बुराईयाँ बयान करने के बाद "वला करीम" कह देते हैं - फिर आगे फ़रमाया कि यह लोग इन सज़ाओं के मुस्तिहक़ आज इस लिये हैं कि दुनिया में जो नेमतें उन्हें मिली थीं उन में यह मस्त हो गये, बदकारियों में पड़ गये। 'हिन्सिल् अ़ज़ीम' से मुराद कुफ़्र, शिर्क और झूठी क़सम है। (मुहम्मदी)

يَّحْمُوْمٍ ﴿٤٣﴾ لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ﴿٤٤﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْا
قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ
عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ﴿٤٦﴾ وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۙ اَئِذَا
مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٤٧﴾
اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَ
الْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٩﴾ لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ
مَّعْلُوْمٍ ﴿٥٠﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ﴿٥١﴾
لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ﴿٥٢﴾ فَمَالِـُٔوْنَ

४४. जो न ठन्डा हो गा और न ज़िज़्ज़त की जगह। ४५. यह लोग पहले (दुनिया में) आसूदा थे ४६. और बड़े कबीरा गुनाह (शिर्क, कुफ़्र और गुनाह के तमाम काम) हमेशा किया करते थे[८]। ४७+४८. (अगर उन को कोई समझाता तो उस के उत्तर में) कहते थे कि क्या जब हम मर कर मिट्टी और हड्डी हो जायें गे तो क्या हम और हमारे बाप-दादा हिसाब-किताब के लिये उठाये जायें गे? ४९+५०. (ऐ नबी!) तू कह दे कि इस में (कुछ भी) शक नही कि तुम्हारे पहले और पिछले➲

مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۞ فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ۞ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ۞ هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ۞ نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ۞ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ۞ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ۞ نَحْنُ قَدَّرْنَا

➲सब लोग एक मुक़र्रर दिन में जमा किये जायें गे (चाहे तुम मानो या न मानो होगा यही) ५१. फिर तुम ऐ भूले हुये झुठलाने वाले लोगो! ५२. (पिट भरने को) ज़क़्क़ूम के दरख़्त से खाओ गे ५३. फिर उसी से पेट भरोगे ५४+५५. फिर उस पर (मज़ीद यह कि) प्यासे ऊँटों की तरह मुँह से गर्म पानी पियो गे ५६. (इन्साफ़ के रोज़ उन जहन्नमियों) की यह मेहमानी हो गी। ५७. हम ही ने तुम को पैदा किया फिर तुम तस्दीक़ क्यों नही करते? ५८+५९. बताओ, जो पानी तुम (गर्भ में) टपकाते हो वह (औलाद, बल्कि वह पानी भी) तुम पैदा करते हो, या हम पैदा करते हैं? ६०. (और) हम ही ने तुम्हारे हक़ में मौत मुक़र्रर कर रखी है

....

८. यानी यह लोग दिन-रात बुराइयों ही में लिप्त रहते और जब उन से कहा जाता कि भई, अल्लाह का ख़ौफ़ खाओ, मरने के बाद पुन: जीवित हो कर अपने कर्मो का फल भोगना है, तो जवाब में यह कहते कि यह कैसे संभव है? जब हम मर जायें गे, सड़-गल कर हड्डी हो जायें गे फिर दोबारा कोई ज़िन्दा नही होता है। इन के जवाब में अल्लाह जवाब देता है कि तुम्हें पुन: ज़िन्दा होना है, इस की दलील यह है कि हम ने तुम को पैदा किया, कहाँ से कहाँ तक तुम ने तरक़्क़ी की, इस का सबूत तुम्हारे हालात बता रहे हैं। क्या तुम्हारी जवानी की हालत उस इब्तिदाई हालत से मुशाबिहत नही रखती है जो तुम को माँ के पेट में और उस के बाद हासिल होती है। इस हालत में देखने वाला तुम को अगर जवानी में देखे तो क्या ख़्याल कर सकता है कि तुम वही हो? हर्गिज़ नहीं। - तो जिस प्रकार अल्लाह तआला ने मुख़्तलिफ़ मर्हलों से गुज़ार कर तुम को इस अन्तिम मर्हले तक पहुंचाया है, इसी प्रकार फ़ना के बाद दूसरी सूरत में तुम को पैदा करे गा। अब इतने सबूत मिल जाने के बाद भी तुम को यक़ीन न हो तो किस का क़ुसूर है? आओ ज़रा इस मुद्दे को विस्तार से बयान करें और ग़ौर से सुनो। जो पानी माँ के पेट में टपकाते हो और उस से बच्चा बनता है उस बच्चा को तुम बनाते हो या हम बनाते हैं? इन्साफ़ से और ईमान से जवाब देना। अगर तुम यह कहो कि हम पैदा करते हैं तो यह बतलाओ कि जिन के हाँ टपकाने के बाद भी औलाद नही होती, उन के हाँ क्यों नही पैदा कर लेते? इस से मालूम हुआ कि तुम्हारा ख़याल ग़लत है। पैदा करने वाले हम हैं और हम ही ने तुम्हारे लिये मौत मुक़र्रर कर रखी है, और वह समय आने पर तुम्हें खुद मालूम हो जाये गा। और अगर तुम्हारा यह ख़याल है कि छुप-छुपा कर बच जाओ गे और हम तुम को पकड़ न सकें गे, तो तुम्हारा यह ख़याल भी बातिल है। हम हर स्थान पर और हर समय तुम्हें गिरफ़्तार करने पर कुदरत रखते हैं। (सनाई)

९. क़ियामत और हश्र-नश्र को साबित करने के लिये मनी (वीर्य)को दलील के तौर पर पेश किया है। मनी से बच्चा पैदा करना भी एक तरह की खेती है। जिस प्रकार ज़मीन में बीज डाल कर खेती उगाई जाती है इसी प्रकार माँ के पेट में पानी का क़तरा डाल कर बच्चों को पैदा किया जाता है। जिस प्रकार फ़स्ल के लिये ज़मीन खेती है इसी प्रकार बच्चे के लिये माँ का पेट खेती है। दोनों में बड़ी मुनासिबत है। चूँकि पानी के डालने से दोनों की पैदाइश होती है इसी मुनासिबत से तीसरी दलील पानी का ज़िक्र किया है जो ऊपर से बरसता है और हरियाली पैदा करता हैं। माँ का पेट और ज़मीन दोनों की खेती पानी से होती है, मगर उन की पर्वरिश बग़ैर गर्मी के नही हो सकती इस लिये चौथी दलील में आग का ज़िक्र किया। उस आग का ज़िक्र कर दिया और उस को अपनी कामिल कुदरत➲

साबित करते हुये इन्सान के लिये कारआमद बना दिया। और ऐसा बना दिया कि सफ़र में, घर में, हर स्थान पर उस से फ़ाइदा उठाता है।

इस आयत में इस बात की तरफ़ भी इशारा है कि वह हरारत गर्मी और चिन्गारी, जिस से दुनिया के कारोबार चलते हैं, यह सूखे पेड़ों से नही ज़ाहिर होती, यानी यह हरारत ज़िन्दा दिल रखने वाले इन्सानों में रखी हैं। इसी हरारत और गर्मी ने जो अ़रब के हरे-भरे पेड़ों में रखी थी आकर दीनी व दुनियावी मक़ासिद के आला दर्जे पर पहुचाया और उन के मुसाफ़िरों के लिये जो तरक़्क़ी की राह तै करने के लिये सफ़र करते थे राहबर बन गयी। इन दलीलों पर ग़ौर करने के बाद हर ज़िन्दादिल इन्सान तुरन्त विश्वास कर सकता है कि अल्लाह पाक दोबारा भी इन्सान को पैदा कर के हश्र के दिन अ़दालत में खड़ा कर सकता है (हक़्क़ानी)

بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿٦٠﴾ عَلَىٰ أَن نُّبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٢﴾ أَفَرَأَيْتُم مَّا تَحْرُثُونَ ﴿٦٣﴾ أَأَنتُمْ تَزْرَعُونَهُ أَمْ نَحْنُ الزَّارِعُونَ ﴿٦٤﴾ لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ﴿٦٥﴾ إِنَّا لَمُغْرَمُونَ ﴿٦٦﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٦٧﴾ أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ﴿٦٨﴾ أَأَنتُمْ أَنزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنزِلُونَ ﴿٦٩﴾ لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ﴿٧٠﴾ أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ﴿٧١﴾ أَأَنتُمْ أَنشَأْتُمْ شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ الْمُنشِئُونَ ﴿٧٢﴾ نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذْكِرَةً وَمَتَاعًا لِّلْمُقْوِينَ ﴿٧٣﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾ فَلَا أُقْسِمُ بِمَوَاقِعِ النُّجُومِ ﴿٧٥﴾

और हम इस से भी आ़जिज़ नहीं कि (इसी दुनिया में इसी हालत में)। ६१. तुम्हारी शक्लें बदल दें और तुम को एक ऐसी सूरत में पैदा कर दें जो तुम नहीं जानते हो ६२. और तुम पहली पैदाइश को जान चुके हो (ग़ौर करो क़ि किस प्रकार तुम बने) फिर तुम नसीहत क्यों नही पाते? ६३. भला बताओ तुम लोग जो खेती-बाड़ी करते हो। (इस से जो पैदा होता है)। ६४. वह तुम उगाते हो या हम उगाते हैं? ६५. (सुनो! आज तुम जो ग़ल्ला खा रहे हो) अगर हम चाहते तो उस को चूरा-चूरा कर देते, फिर बातें बनाते रह जाते ६६. (और यही कहते) कि हाये हम मक़्रूज़ हो गये। ६७. बल्कि हम बड़े ही बदनसीब हैं। ६८. (अब तीसरा प्रश्न सुनो!) भला बतलाओ तो जो पानी तुम पीते हो (कुओं, चश्मों और दरियाओं का) ६९. उसे बादलों से तुम उतारते हो या हम उतारते हैं ७०. (सुनो! अगर) हम चाहें तो उस को कड़वा कर दें फिर तुम शुक्र क्यों नही करते। ७१. (आओ एक और प्रश्न सुनो) भला बताओ तो तुम लोग जो आग जलाते हो ७२. क्या उस के पेड़ (जो उस का इंधन बनते हैं) तुम ने पैदा किये हैं या हम बनाते हैं[१०]। ७३. हम ही ने उन को नसीहत[११] के लिये और ख़ास कर ग़रीबों के गुज़ारे के लिये बनाया है ७४. पस तुम अपने आ़लीशान पर्वरदिगार के नाम की तस्बीह पढ़ा करो[१२]। ७५. मुझे सितारों की गुज़रगाहों की क़सम है

....

१०. यहाँ पर मौलाना अमृतसरी मर्हूम ने ईंधन बनने वाले दरख़्त मुराद लिये हैं, यह भी मतलब सही है। लेकिन

➲आयत न० ७३ से साफ़ ज़ाहिर है कि वह ख़ुसूसी दरख़्त मुराद हैं जिन को देख कर अल्लाह की याद आये। यह अल्लाह की क़ुदरत ही है कि हरे-भरे होने के बावजूद उन को रगड़ने से आग निकलती है। चुनान्चे अ़रब में एक प्रकार का दरख़्त है जब उस की शाख़ों को आपस में रगड़ा जाता है या हवा के झोंको से आपस में रगड़ खाती है तो आग निकल आती है। अ़रब वाले जंगलों में जहाँ आग नही मिलती थी इस आग को काम में लाते थे। हमारे देश हिन्दुस्तान में भी हिमालय पर्वत के बाँसों को परस्पर रगड़ने से आग पैदा हो जाती है।

'ग़रीबों के गुज़ारा के लिये' यह लोग जंगलों से लकड़ियां ला कर बेच कर के अपना गुज़ारा चलाते हैं। यह तफ़्सीर, मौलाना मर्हूम के तर्जुमा की रोशनी में है। मौलाना ने ग़ुरबा के साथ यहाँ तर्जुमा बतौर वाक्य के निचोड़ के किया है। 'मुक़्वीन' उन मुसाफ़िरों के लिये बोला जाता है जिन के रास्ता का सफ़रख़र्च ख़त्म हो गया हो (बयानुल्लिसान) इसी लिये अक्सर तर्जुमा करने वालों ने यहाँ तर्जुमा मुसाफ़िरों ही के साथ किया है। मौलाना वहीदु ज़्ज़माँ लिखते हैं: "अगर्चे आग की आवश्यक्ता मुक़ीम और मुसाफ़िर दोनों ही को है, मगर मुसाफ़िरों को इस की बहुत ज़रूरत पड़ती है। सर्दी से बचने, दरिन्दों को भगाने और रात को उजाला करने के लिये"।

कुछ उलमा ने 'मुक़ावीन' का तजुर्मा यूँ किया है: "फ़ाइदा उठाने वालों के लिये"। कुछ न यूँ किया है "भूकों के लिये कि वह उस से खाना पका कर खायें"। सहीह हदीस में है कि यह दुनिया की आग जहन्नम की आग के सत्तर हिस्सों में से एक हिस्सा है, यानी दोज़ख़ की आग इस दुनियावी आग से ६९ गुना ज़्यादा तेज़ है। (वहीदी)

११. 'तज़किरा' और 'मताअ़' के अल्फ़ाज़ आज कल की उन तमाम ईजाद को शामिल हैं जो किसी न किसी शक्ल में आग से तअ़ल्लुक़ रखती हैं। इस में कोई शक नही कि वह नसीहत और अ़िब्रत हैं और 'मताअ़' यानी फ़ाइदा उठाने की चीज़ हैं (राज़०)

१२. हदीस शरीफ़ में आया है कि जब यह आयत नाज़िल हुयी तो आपने फ़रमाया: इस को रूकूअ़ में रखो यानी रूकूअ़ में सुबहा-न रब्बि-यल् अ़ज़ीम कहा करो (वहीदी)

---

७६. और अगर तुम (अल्लाह का तर्ज़े कलाम) जानते हो तो यह बहुत बड़ी क़सम है[१३]। ७७. बेशक यह (क़ुरआन) बड़ी अ़िज़्ज़त की किताब है ७८.(यह दरअस्ल उस) पोशीदा किताब में (महफ़ूज़) है (जिस का नाम लौहे महफ़ूज़ है) ७९. इस (क़ुरआन पाक) को पाक लोग ही छूते हैं[१४] ८०. (ऐसे लोग इस पर यक़ीन रखते हैं कि यह) रब्बुल आ़लमीन की तरफ़ से उतारा हुआ है ८१. क्या फिर भी तुम इस कलाम को मानने में सुस्ती करते हो। ८२. और तुम अपना हिस्सा (क़िस्मत) यही बनाते हो कि (इस कलामे पाक को) झुठलाते हो। ८३. भला जब रूह गले में आ पहुंचती है ८४. और तुम सब उस समय (उस मरने वाले का हाल) देखा करते हो ८५. और हम स्वयँ उस के पास तुम से ज़्यादा क़रीब हैं,➲

وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ﴿٧٦﴾ إِنَّهُ لَقُرْآنٌ
كَرِيمٌ ﴿٧٧﴾ فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ﴿٧٨﴾ لَّا يَمَسُّهُ إِلَّا
الْمُطَهَّرُونَ ﴿٧٩﴾ تَنزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨٠﴾
أَفَبِهَٰذَا الْحَدِيثِ أَنتُم مُّدْهِنُونَ ﴿٨١﴾ وَتَجْعَلُونَ
رِزْقَكُمْ أَنَّكُمْ تُكَذِّبُونَ ﴿٨٢﴾ فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ
الْحُلْقُومَ ﴿٨٣﴾ وَأَنتُمْ حِينَئِذٍ تَنظُرُونَ ﴿٨٤﴾ وَنَحْنُ
أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنكُمْ وَلَٰكِن لَّا تُبْصِرُونَ ﴿٨٥﴾ فَلَوْلَا
إِن كُنتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ﴿٨٦﴾ تَرْجِعُونَهَا إِن كُنتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٨٧﴾ فَأَمَّا إِن كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٨٨﴾
فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتُ نَعِيمٍ ﴿٨٩﴾ وَأَمَّا إِن
كَانَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٩٠﴾ فَسَلَامٌ لَّكَ مِنْ

➲लेकिन तुम लोग (हम को) नही देखते ८६+८७. फिर अगर तुम लोग किसी (मालिक) से दबे हुए नहीं हो तो उस (प्यारे क़रीबी की रूह) को वापस क्यों नही लाते, अगर तुम (अपने ख़याल में) सच्चे हो (कि हम किसी के दबाव में नहीं) ८८+८९. फिर अगर वह (मुर्दा अल्लाह के) मुक़र्रबों में से होता है तो उस के लिये ऐ़श व आराम और नेमतों के बहिश्त हैं। ९०+९१. और अगर वह (मुर्दा) दायें हाथ वालों में से है तो उन दायें हाथ वालों की तरफ़ से भी तुझ को सलाम (यानी तसल्ली) हो[15] ९२+९३. हाँ, वह झुठलाने वाले गुमराहों में से हो गा तो (बस) सख़्त खौलते हुये पानी से उस की मेहमानी हो गी ९४. और जहन्नम में दाख़िल हो गा। ९५. बेशक यह वाक़े होना बिल्कुल सहीह है (ऐसा ही हो कर रहे गा) ९६. पस तुम अपने अ़ज़मत और जलालत वाले पर्वरदिगार के नाम की तस्बीह पढ़ा करो।

....

१३. इस आयत में कुरआन और सितारों के दर्मियान मुशाबिहत (समानता) पाई जाती है। अगर सितारे रोशनी देते हैं तो कुरआन भी दिल को रोशन करता है (सनाई) इमाम मुबरद कहते हैं कि 'मवाक़िअ़' इस जगह मसदर है। यानी सितारों के डूबने या टूटने की क़सम खाता है। टूटने से क्या मुराद है? पिछली रात को जब चमक-दमक दिखा कर डूबने को होते हैं वह भी एक अ़जीब वक़्त होता है। गोया नसीहत हासिल करने वाले की नज़र में सितारों का डूबना यह साबित कर रहा है कि यह उस सूरज बनाने वाले पर कुर्बान हुये जाते हैं। और यह कि इस दुनिया की बेसबाती (अस्थिरता) और इसी तरह यके बाद दीगरे इन्सानों का डूबना (यानी मरना) याद दिलाते हैं (हक़्क़ानी)

१४. इस आयत की रोशनी में कुछ उलमा बग़ैर वजू के कुरआन पाक को छूना जायज़ नही जानते, अक्सर उलमा यह मुराद लेते हैं कि कुरआन से वही लोग फ़ाइदा उठाते हैं जिन का बातिन पाक है और इस से मुराद लौहे-महफ़ूज़ भी है तो फिर "पाक लोग" से मुराद फ़रिश्ते हों गे।

१५. आज-कल के दस्तूर के मुताबिक़ यूँ समझो कि क़रीबी लोग रेलगाड़ी के पहले दर्जे में हैं और अस्हाबुल् यमीन (दाँये तरफ़ वाले) सिकंड किलास दर्जे में। दोनों के दर्मियान केवल पहले और दूसरे दर्जे का ही फ़र्क़ है, वर्ना जन्नत की नेमतों में दोनों फ़रीक़ मज़े से गुज़र-बसर करें गे, जैसे Frist class वाले और Second class वाले दोनों एक ही गाड़ी में यात्रा करते हैं।

सूरः हदीद- (57)

सूरः हदीद (लोहा) मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में २९ आयतें और ४ रूकूअ़ हैं। शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है-।

१. आसमानों और ज़मीन की सब चीज़ें➲

الْحَكِيْمُ ① لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ② هُوَ الْاَوَّلُ وَ الْاٰخِرُ وَ الظَّاهِرُ وَ الْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ③ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ۚ وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۚ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ④ لَهٗ

अल्लाह के नाम की तस्बीह पढ़ती हैं और वह बड़ा ग़ालिब और बड़ी हिक्मत वाला है[1]। २. आसमानों और ज़मीनों का मुल्क उसी के क़ब्ज़े में है। वही ज़िन्दगी बख़्शता है और वही मौत देता है और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। ३. वही (सब से) अव्वल था (वही सब से) आख़िर हो गा, और वही ज़ाहिर है और वही पोशीदा है और वह हर चीज़ को जानता है[2] ४. वही अल्लाह है जिस ने आसमान और ज़मीन को छः दिनों की मुद्दत में पैदा किया, फिर वह अ़र्श के ऊपर मुस्तवी हुआ[3]। जो कुछ ज़मीन में दाख़िल होता है उस को और जो उस से निकलता है उस को और जो आकाश से उतरता है उस को और जो उस की तरफ़ चढ़ता है उस को भी जानता है। वह तुम्हारे साथ है जहाँ तुम हो और अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहा है।

....

१. अबू दावूद की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सोने से पहले उन सूरतों को पढ़ा करते थे जिस का शुरू 'सब्ब-ह' या 'यु-सब्बिहु' से होता है और फ़रमाते कि इन में एक आयत ऐसी है जो एक हज़ार आयतों से ज़्यादा अफ़्ज़ल है। जिस आयत की फ़ज़ीलत इस हदीस में बयान हुयी है वह संभवतः आयत न०३ है। इस आयत पर तफ़्सील से बयान आगे आये गा(मुहम्मदी)

२. यह आयत न०३ एक हज़ार आयतों से अफ़्ज़ल है। हज़रत अबू ज़ुमैल रह० हज़रत इब्ने अ़ब्बास से रिवायत करते हैं कि मेरे दिल में एक खटका है लेकिन ज़बान पर लाने को जी नही चाहता। इस पर हज़रत अ़ब्बास रज़ि० ने हंस कर फ़रमाया: शायद शक से कोई न बचा हो गा, इसी लिये क़ुरआन मजीद में बयान हुआ है: "अगर तुम को उस चीज़ में शक हो जो तुम पर नाज़िल की गयी है, तो तुमसे पहले जो किताब पढ़ते हैं, उन से पूछ लो" (सूरः यूनुस-९४) फिर फ़रमाया: जब तुम्हारे दिल में कोई शक हो तो इस आयत न०३ को पढ़ लिया करो। इमाम बुख़ारी रह० फ़रमाते हैं कि इमाम यहया का कहना है कि 'बातिन' से मुराद हर चीज़ पर ज़ाहिर और पोशीदा होना है। यह यहया साहब, ज़ियाद फ़र्राका के पुत्र है। उन की लिखी हुयी एक किताब भी है जिस का नाम "मआ़निल क़ुरआन" है।

मुस्नद अहमद की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सोते समय यह दुआ़ पढ़ते थेः अल्लाहुम्म रब्बस्समावातिस्सब्ई़ व-रब्बल् अ़ज़ीमि रब्बना व-रब्ब कुल्लि शैइन् मुन्ज़ि- लत्तौराति वल्इन्जीलि फ़ालि-क़ल् हब्बि वन्नवा लाइला-ह इल्ला अन्-त अऊज़ुबि-क मिन् शर्रि कुल्लि शैइन् अन्-त आख़िज़ुम् बिनासि-यतिही अन्-तल अव्वलु फ़लै-स क़ब् ल-क शैइन व-अन्-तल् आख़िरू फ़लै-स बा-द-क शैइन व-अन्-तज़्ज़ाहिरू फ़लै-स फ़ौ-क़-क शैइन व-अन् तल् बातिनु लै-स दू-न-क शैइन इक़्ज़ि अ़न्नद्-दै वग़्निना मि-नल् फ़क़्रि (ऐ अल्लाह! ऐ सातों आसमानों के, बड़े अर्श के रब, ऐ रब! ऐ हमारे और हर चीज़ के रब, ऐ तौरात और इन्जील के उतारने वाले, ऐ दानों और गुठलियों को उगाने वाले, तेरे अ़लावा कोई इ़बादत के लायक़ नहीं, मैं तेरी पनाह में आता हूँ हर उस चीज़ की बुराई से कि उस की चोटी तेरे हाथ में है। तू अव्वल है कि तुझ से पहले कुछ न था, तू ही आख़िर है कि तेरे बाद कुछ नहीं। तू ज़ाहिर है कि तुझ से ऊँची कोई चीज़ नही। तू बातिन है कि तुझ से छुपी कोई चीज़

नहीं। हमारे क़र्ज़ अदा कर दे और हमें फ़क़ीरी से मालदारी दे) हज़रत अबू सालेह अपने मुरीदों को यह दुआ़ सिखाते और फ़रमाते कि सोते समय दाहिनी कर्वट पर लेट कर यह दुआ़ पढ़ लिया करो। कुछ थोड़े से अल्फ़ाज़ के फ़र्क़ के साथ यह दुआ़ मुस्लिम वग़ैरह में भी है। (मुहम्मदी)

३. अबू दावूद और तिर्मिज़ी में रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तले ऊपर सात आसमान हैं। फिर सातवें आसमान पर एक दरिया है उस के ऊपर आठ फ़रिश्ते बकरियों की सूरत के हैं। उन की पीठ पर अर्श है। अर्श की मोटाई इतना है जैसे एक आसमान से दूसरा आसमान। और अर्श के ऊपर अल्लाह की ज़ात है जिस से आदमियों के कोई काम पोशीदा नही हैं। तफ़्सीर वहीदी में है कि बहुत सी आयतों और हदीसों से यह साबित है कि अल्लाह की ज़ात पाक अपने अर्श पर है। तमाम बुज़ुर्गों का यही अ़क़ीदा है, इस के अ़लावा और जो कुछ बयान किया गया है वह सब खुराफ़ात है (वहीदी) इस स्थान पर जो 'मुस्तवी' का तर्जुमा किया गया है बस यही दुरूस्त है। इस में कुरेद करना कि किस तरह बैठा है, उस का रूख़ किधर है, अर्श की ऊँचाई कितनी है, वह कितना ऊँचा है, उस का वज़न कितना है, वग़ैरह-वग़ैरह इन बातों के बारे में कुरेद करना शैतानी अ़मल और गुनाह हैं। बस वह बैठा है। किस प्रकार? वही बेहतर जाने। (राज़)

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ
الْاُمُوْرُ ۝ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ
فِى الَّيْلِ ۚ وَهُوَ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ اٰمِنُوْا
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ
فِيْهِ ۚ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ
كَبِيْرٌ ۝ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ
يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى
عَبْدِهٖٓ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ
اِلَى النُّوْرِ ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَمَا
لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ
مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ۚ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً

५. (और सुनो!) आसमानों और ज़मीनों पर हुकूमत उसी की है (दुनिया के) कुल काम उसी की तरफ़ लौटते हैं ६. वही रात को दिन में दाख़िल कर देता है और दिन को रात में दाख़िल कर देता है। और वह सीनों के भेदों को भी जानता है। ७. (पस) तुम लोग अल्लाह पर, उस के रसूल पर यक़ीन करो अल्लाह की राह में वह चीज़ें ख़र्च करो जिन का तुम को उस अल्लाह ने मालिक किया है। पस जो लोग तुम में से ईमान लाये और ख़र्च करते हैं उन के लिये यक़ीनन बहुत बड़ा अज्र है ८. और तुम्हारा कोई उज़्र है जो तुम लोग अल्लाह पर ईमान नही लाते? हालाँकि अल्लाह का रसूल तुम को इस ग़रज़ के लिये बुला रहा है कि तुम अपने रब पर ईमान लाओ और उस ने (ईमान लाने का) तुम से पक्का वादा लिया हुआ है (जिस रोज़ तुम को पैदा किया था) अगर तुम को (उस रोज़ का) यक़ीन है। ९. वही अल्लाह अपने बन्दे पर खुले-खुले अहकाम नाज़िल करता है ताकि तुम को अंधेरे से निकाल कर नूर की तरफ़ ले जाये। और अल्लाह तुम्हारे हाल पर बड़ा मेहरबान, बड़ा रहम करने वाला है[४] । १०. और तुम्हारा उस में क्या उज़्र है कि तुम अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं

करते? आसमानों-ज़मीनों की कुल मालिकी अल्लाह ही के लिये है (फिर तुम्हें ख़र्च करने में क्या उज़्र है, (सुनो!) जिस ने फ़ुतूहात (मुहम्मदिया) जारी होने से पहले (तंगी) में ख़र्च किया है और जिहाद किया है, बराबर नही हो सकते[५]। यह लोग उन लोगों से ज़्यादा दर्जे वाले हैं जिन्हों ने पीछे ख़र्च किया

....

४. उस पर किसी की कुछ मजाल नहीं, मगर यह कि उस की तुम पर बड़ी मेहरबानी है कि उस ने तुम्हारी क़ौम में से संदेष्टा भेजा और उस पर अपना कलाम उतारा, उस के तुफ़ैल से तुम को हमेशा के अज़ाब से नजात मिली। या अल्लाह क़ुर्बान तेरी शफ़्क़त और मेहरबानी पर, तू लाखों माँ-बाप से ज़्यादा हम पर मेहरबान है (वहीदी)

५. चूंकि मक्का फ़तह होने से पहले मुसलमान बहुत दबे-दबाये और कमज़ोर थे, और काफ़िरों का ज़ोर और ग़लबा अधिक था, उन्हों ने ऐसे सख़्त वक़्त में अल्लाह और उस के रसूल की मदद की और मक्का फ़तह हो जाने के बाद तो इस्लाम को बड़ा ग़लबा हो गया था, काफ़िरों की कमर टूट गयी थी, इस लिये उस समय लड़ना और ख़र्च करना फ़ज़ीलत में अगले लोगों के लड़ने और ख़र्च करने के बराबर नहीं हो सकता। हदीस शरीफ़ में है कि कुछ लोग क़रीब में पैदा हों गे जो अपने आमाल के सामने तुम्हारे आमाल को हक़ीर जानें गे। सहाबा ने कहा कि या रसूलल्लाह! वह अफ़्ज़ल हैं या हम। आप ने फ़रमाया: अगर वह पहाड़ बराबर सोना अल्लाह की राह में ख़र्च करें तो तुम्हारे आध सेर अनाज के बराबर उन को सवाब नही निल सकता, तुम में और उन में यही फ़र्क़ है, फिर आप ने यह आयत पढ़ी। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ जो पहले-पहले हिज्रत करने वालों में थे, इन में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद में झगड़ा हो गया। ख़ालिद ने कहा कि तुम लोग ज़रा चन्द दिन पहले ईमान लाये हो इस लिये इतनी ज़बान चल रही है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को जब इस बात की सूचना मिली तो आप ने फ़रमाया: मेरे असहाब का नाम न लो, मेरे असहाब को बुरा न कहो। अल्लाह की क़सम! अगर तुम उहुद पर्वत के बराबर भी सोना ख़र्च करो गे तो भी उन के आमाल के बराबर नहीं पहुंच सकते, या उन के आधे सेर अनाज के बराबर नही पहुंच सकते। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सहाबा को बुरा न कहो, तुम्हारी पूरी उम्र की अ़िबादत के मुक़ाबला में उन का नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ एक घड़ी भर रहना ही काफ़ी है। कोई चाहे जितना बड़ा वली क्यों न हो, एक मामूली सहाबी के बराबर नही हो सकता, अहले हदीस उलमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है। (वहीदी)

مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْ بَعْدُ وَ قٰتَلُوْا ۭ وَكُلًّا
وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٠﴾
مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ
لَهٗ وَلَهٗٓ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿١١﴾ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ
الْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ
بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٢﴾ يَوْمَ
يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا

और (अल्लाह की राह में कुफ़्फ़ार से) लड़े। और अल्लाह ने हर एक से नेक वादा किया हुआ है (यानी ज़र्रा बराबर नेकी का बदला भी अल्लाह के हाँ मिले गा) और अल्लाह तुम्हारे कामों के बारे में ख़बर रखता है। ११. फिर कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़े ह-स-न: दे (यानी नेक कामों पर अल्लाह की राह में ख़र्च करे) फिर अल्लाह उस को कई दर्जे बढ़ा कर देगा और उस के लिये बड़ी अ़िज़्ज़त का बदला हो गा।[६] १२. जिस रोज़ तुम देखो गे कि ईमानदार मर्दों और औरतों का ईमानी नूर उन के आगे और दायें चलता हो

انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ۗ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ۗ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۝ يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۗ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ

गा (उन से कहा जाये गा) तुम लोगों को आज के दिन ख़ुश्ख़बरी हो कि तुम्हारे लिये बहिश्त हैं जिन के नीचे नहरें जारी हैं हमेशा-हमेश उन में रहो गे (कभी नही निकाले जाओ गे) यही बड़ी कामियाबी है[७]। १३. उस रोज़ मुनाफ़िक़ मर्द औरतें (वह) ईमानदार मुसलमानों को (जब वह जन्नत की तरफ़ जा रहे हों गे) कहें गे, ज़रा हमारा भी इन्तिज़ार करो हम तुम्हारी रोशनी से कुछ फ़ाइदा उठायें। कहा जायेगा: तुम पीछे को चले जाओ, फिर (वहाँ दुनिया में जा कर) नूर तलाश करो[८]। पस (वह ज़रा मुँह मोड़ें गे कि तुरन्त) उन के (और मोमिनों के) दर्मियान एक दीवार बनादी जाये गी उस में एक दर्वाज़ा हो गा जिस के अन्दर की तरफ़ (जिधर मोमिन हों गे) रहमतें हों गी और बाहर की तरफ़ (जिधर मुनाफ़िक़ हों गे), अज़ाब हो गा[९]। १४.वह उन को बुलायें गे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे? मोमिन कहें गे: हाँ, लेकिन तुम ने अपने आप को फ़ित्ना में डाल रखा था

....

६. 'क़रज़े ह-स-नः' का अर्थ है "ख़ुशी के साथ ख़ालिस अल्लाह की रज़ामन्दी के लिये ख़र्च करना"। इस के लिये दस बातें शर्त हैं (१) हलाल माल में से ख़र्च करे (२) बेहतर माल दे (३) जिस चीज़ को दे उस का स्वयं भी ज़रूरतमन्द हो (४) अपने से ज़्यादा दूसरे को ज़रूरतमन्द जाने (५) छुपा कर ख़र्च करे (६)दे कर एहसान न जताये (७) ख़ालिस अल्लाह के लिये दे, दिखावा हगिर्ज़ न हो (८) जो माल दे रहा है उस को बहुत ज़्यादा समझ कर न फूले (९) वह माल दे जो सब से अधिक प्यारा हो (१०) जिस को दे रहा है उसे अपने से ज़लील न समझे। इन दस बातों को ध्यान में रखते हुये जो माल ख़र्च किया जायेगा उस का नाम "कर्ज़े ह-स-नः" होगा (वहीदी)

७. इमाम क़तादा रह० फ़रमाते हैं कि कुछ मोमिनों का नूर इतनी दूर तक पहुंचे गा जैसे अदन से सन्आ शहर तक, और कुछ मोमिन ऐसे हों गे कि उन का नूर उन के पाँव से आगे न बढ़े गा। हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि बाज़ का नूर पहाड़ के बराबर हो गा और बाज़ का दरख़्त के बराबर। सब से कम दर्जे का नूर केवल उस के अंगूठे के बराबर हो गा जो कभी तो रोशनी देगा और कभी बुझ जाये गा (वहीद्री) जैसे रेलगाड़ी के इंजन की लालटेन, जो रात को आगे रोशनी डालती है और जो गाड़ी में भी दायें-बायें रोशनी देती है, इसी तरह उस दिन मोमिन को भी रोशनी हासिल हो गी ताकि उनको चलने में राहनुमाई करे। फ़रिश्तों द्वारा उन को कहा जाये गा कि आज तुम्हें बशारत हो कि तुम्हारे लिये जन्नत है। (सनाई)

८. मतलब यह हैं कि यहाँ तुम को रोशनी मिलने वाली नही। यह रोशनी तो ईमान और उन आमाल की है जो हम ने दुनिया में किये थे। अब अगर पुन: दुनिया में जा सकते हो तो जाओ और वहाँ से रोशनी कमा लाओ। यह बात उन से मज़ाक़ में कही जाये गी। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते है कि यह लोग क़ियामत के दिन तारीकी में हों गे और केवल एक ही नूर चमके गा ईमानदार उस की तरफ़ लपक जायें गे, तो मुनाफ़िक़ भी उन की देखा-देखी उधर चले जायें गे, लेकिन अल्लाह तआला उन पर अंधेरा करदेगा, उस समय ईमानदारों को पुकारें गे कि ज़रा ठहरो, हम तुम्हारे साथ दुनिया में रहते थे तो यहाँ भी हमें अपनी रोशनी में ले चलो। ईमानदार उत्तर दें गे कि तुम वापस

अंधेरे में लौट जाओ और प्रकाश तलाश करो।

हदीस शरीफ़ में आया है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला लोगों को उन की माँ की तरफ़ निस्बत दे कर बुलाये गा। ऐसा इस लिये ताकि बन्दों की पर्दापोशी हो, क्यों कि कुछ लोग हराम से पैदा हुये हों गे। और पुलसिरात के नज़दीक हर ईमानदार को नूर मिले गा और मुनाफ़िक़ को भी। लेकिन जब पुलसिरात पर पहुंचे गे तो मुनाफ़िक़ का नूर मिट जाये गा तब वह मोमिनों को पुकारें गे कि ज़रा ठहर जाओ ताकि हम भी तुम्हारी रोशनी में चल लें । ईमानदार यह दुआ़ करें गे कि "हमारे मौला! हमारे नूर को मुकम्मल करदे...... " (वहीदी)

९. उलमा का कहना है कि यह दीवार आराफ़ की हो गी। शैखुल इस्लाम इमाम इब्ने तैमिया रह० को जब क़ैद ख़ाना में बन्द कर दिया गया तो आप ने जेल के अन्दर जाते हुये यही दुआ़ पढ़ी थी। आप ने जेल खाने में भी कई किताबें लिख डालीं जो लोगों के हाथों में पहुंच जातीं। दुश्मनों ने क़लम-दवात भी उन से छीन ली, तो आप कुरआन की तिलावत में मशग़ूल हो गये और उसी हालत में पाँच दिन के बाद इन्तिक़ाल फ़रमाया। इन्तिक़ाल के बाद दोस्त और दुश्मन सभी ग़म में डूब गये कि हाए अफ़सोस दीन के अ़िल्म का चराग़ बुझ गया। (वहीदी)

وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ
بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿١٤﴾ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ
وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ؕ هِيَ
مَوْلٰىكُمْ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٥﴾ اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ
مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ
وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿١٦﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ
يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ
الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١٧﴾ اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ
وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ
لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿١٨﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖ وَالشُّهَدَآءُ

और तुम लोग इन्तिज़ार करते थे और शक में पड़े रहे और तुम्हारी ग़लत तमन्नाओं ने धोका दे रखा था यहाँ तक कि अल्लाह का आदेश आ पहुंचा और उस बड़े धोकेबाज़ (शैतान) ने अल्लाह के बारे में तुम को धोका दिया, १५. पस आज के रोज़ तुम से और न दूसरे काफ़िरों से माली बदला लिया जाये गा। तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है और यही (जहन्नम गोया) तुम्हारा साथी है और बहुत बुरी जगह है। १६. क्या मुसलमानों के लिये भी अभी समय नही आया कि अल्लाह के ज़िक्र से और सच्ची किताब से जो अल्लाह के हाँ से उतरी है उस के पढ़ने-सुनने से उन के दिल काँप जायें और उन लोगों की तरह न हों जिन को पहले किताब दी गयी फिर उन पर लंबी मुद्दत गुज़र गयी पस उन के दिल सख़्त हो गये[१०] और बहुत से लोग उन में सख़्त बदकार हैं। १७. तुम यक़ीन जानो कि अल्लाह तआ़ला ज़मीन के सूख जाने के बाद उसे हराभरा कर देता है। हम ने तुम्हारे लिये कुदरत के निशानात बयान कर दिये हैं ताकि तुम समझो। १८. इस में शक नही कि सदक़ा-ख़ैरात करने वाले मर्द और औरतें और जो लोग अल्लाह को नेक क़र्ज़ देते हैं[११] ऐसे लोगों के लिये बहुत ज़्यादा बदला हो गा और उन को बहुत अ़िज़्ज़त का अज्र मिले गा। १९. और जो लोग अल्लाह पर और उस के

➲रसूलों पर ईमान लाये, वही लोग अपने रब के नज़दीक सिद्दीक़ और शहीद हैं[१२] (यानी क़ियामत के दिन इन्कार करने वालों पर गवाह हों गे)

....

१०. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मस्जिद में आये तो देखा कि कुछ लोग हंस रहे हैं। आप ने फ़रमाया: क्या आप लोगों को अमान मिल गयी है? और फिर आप ने यह आयत सुनाई। सहाबा ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! इस हंसने का क्या कफ़्फ़ारा है? आपने फ़रमाया: जितना हंसे हो उतना ही रोओ। हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० ने फ़रमाया: इस्लाम लाने के चार वर्ष के बाद यह आयत नाज़िल हुयी। लेकिन इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब से कुरआन उतरना शुरू हुआ उस के १३ या १५ वर्ष के बाद यह आयत उतरी और इस से साबित होता हैं कि यह आयत मदनी है। बाज़ मुफ़स्सिरीन का कहना है कि यह आयत उस समय नाज़िल हुयी जब सहाबा ने आप से कहा कि कुछ बयान फ़रमाइये तो अल्लाह ने सूर: "यूसुफ़" उतारी, और जब फिर उक्ता गये तो यह आयत नाज़िल फ़रमाई। कुछ उलमा का कहना है कि इस आयत में ईमानदार से वह लोग मुराद हैं जो हज़रत मूसा और ईसा पर ईमान लाये थे लेकिन नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान नही लाये थे।

हज़रत फुज़ैल बिन अ़याज़ के बारे में आता है कि वह दिन-रात बुरे कामों में लगे रहते थे। एक रात कहीं जा रहे थे कि किसी ने आयत न० १६ की तिलावत फ़रमाई, बस सुन कर काँप गये और उसी समय तौबा कर के वलिय्यों में शामिल हो गये। (वहीदी)

११. यानी हाजतमन्द इन्सानों को ज़रूरत पड़ने पर बिला सूद लिये क़र्ज़ देते हैं। (सनाई)

१२.इस आयत में सच्चे मोमिनो के लिये बहुत बड़ी बशारत है। अल्लाह के नज़दीक उन का दर्जा शहीदों और सिद्दीक़ों के बराबर हो गा, चाहे वह अपने बिस्तरों पर ही क्यों न मरें। अगर दुनिया में उन्हों ने ईमान, यक़ीन और सच्चाई की ज़िन्दगी गुज़ारी है तो अल्लाह उन को शहीदों और सिद्दीक़ों में शामिल फ़रमाये गा और उन को बहुत बड़े अज्र व सवाब और न समाप्त होने वाले नूर से नवाज़े गा।

उन को अज्र मिले गा और उन का नूर उन के आगे चमकता हो गा। और जो लोग मुन्किर हैं और हमारे अहकाम को झुठलाते हैं वही जहन्नमी हैं। २० (पस तुम मुसलमानो) यक़ीन जान रखो कि दुनिया की ज़िन्दगी खेल-तमाशा है और एक का दूसरे पर फ़ख़्र करना, माल और औलाद में बड़ाई का इज़हार करना है[१३]। इस दुनिया की मिसाल वर्षा की सी है (जिस से हरियाली पैदा होती है) किसानों को उन की अंकुरियाँ बहुत भली लगती हैं, फिर सूख कर खुश्क हो जाती हैं फिर उन को पीली पड़ी देखते हो, फिर वह तिन्का-तिन्का हो जाती हैं और आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब हैं, या अल्लाह की तरफ़ से मग़्फ़िरत और रज़ा है। और दुनिया➲

عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ
كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
الْجَحِيْمِ ۝١٩ اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ
وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي
الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ
نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ
حُطَامًا ؕ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ
مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ
اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝٢٠ سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ

وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ
رُسُلِهٖ ۭ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ
وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝ مَآ اَصَابَ مِنْ

की ज़िन्दगी तो महज़ धोका का सामान है २१. (पस मुसलमानो!) अपने पर्वरदिगार की बख़्शिश और जन्नत की तरफ़ लपको जिस का फैलाव आसमान और ज़मीन के फैलाव जैसा है (जिस में हर प्रकार के आराम के सामान हों गे) वह उन लोगों के लिये तय्यार की गयी है जो अल्लाह पर और उस के रसूलों पर ईमान लाये हैं। यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, वह जिसे चाहे गा दे गा और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।

....

१३. "बादशाहों का कलाम, कलाम का बादशाह होता है" यह एक मुहावरा है। यानी बादशाह मुख़्तसर बातों में सब कुछ कह जाते है, यही हाल इस आयत का भी है। इस आयत में दुनियादारों के सारे मतलब चार बातों में आ गये हैं (१) बचपन में खेल-कूद और दीवाने होते हैं (२) जवानी में बनाव-सिंगार और सज-धज का भूत सवार रहता है और हर समय इसी में गुज़ारता है कि सब से जवान और सुन्दर दिखाई दें और महिलायें देखते ही आ़शिक़ हो जायें। (३) माल दौलत, कुव्वत-ताक़त पर नाज़ होता है (४) बुढ़ापे में माल और औलाद की लालच बढ़ जाती है। इसी वाहियात चक्कर में सारी उम्र गुज़र जाती है और यकायक मौत अपने पंजे गाड़ देती है। (वहीदी) हदीस शरीफ़ में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: वह बन्दा बहुत बुरा है जो अपने आप में बढ़ता चला जाता है और अल्लाह से नही डरता। बुरा है वह बन्दा जो ग़फ़लत और फ़ुज़ूल बातों में फँसा हुआ है और मौत और क़ब्र से नही डरता। बुरा है वह बन्दा जो अकड़ता और सर्कशी करता है और अपनी इब्तिदाई हालत को नही सोचता कि कितना कमज़ोर पैदा हुआ था और एक दिन मिट्टी में मिल जाना है। बुरा है वह बन्दा जो दीन की आड़ में दुनिया कमाता है। बुरा है वह बन्दा जो लालच के पीछे-पीछे फिरता है। बुरा है वह बन्दा जो ख़ाहिशों और बिदअ़तों के पीछे-पीछे फिरता है, बुरा है वह बन्दा जिस को लालच ने ज़लील कर रखा है"।

एक दूसरी हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिन के पास माल-दौलत और हुकूमत हाथ में आ जाती है तो परस्पर दुश्मनी,बर्बादी का सबब बन जाता है। (अहादीसुत्तफ़ासीर)

'कुफ़्र' का अर्थ है "किसी चीज़ को ढाँक देना, छुपा देना"। चूंकि किसान बीज को ज़मीन में छुपा कर मिट्टी से ढाँप देता है। इसलिये किसान को भी "कुफ़्फ़ार" कहा जाता है। शरीअ़त की परिभाषा में कुफ़्फ़ार उन लोगों को कहा जाता है जो हक़ बात को नही मानते और हक़ बात को छुपा लेते हैं और उस का इन्कार कर देते हैं। आयत में दुनिया को खेती की फ़स्ल से तश्बीह दी है। जिस प्रकार खेती आरंभ में हरी-भरी ताज़ा होती है, फिर एक दिन पक कर पीली हो जाती है और अन्ततः सूख जाती है, बिल्कुल यही उदाहरण दुनिया का है, आरंभ में बचपन है उस के बाद सुन्दर और आकर्षक जवानी है, फिर धीरे-धीरे ज़वाल शुरू होता है और फिर एक दिन पकी हुयी खेती की तरह पक कर इन्सान भी पीला पड़ जाता है और उम्र समाप्त हो जाती है। फिर इस के पश्चात् आख़िरत का मामला आरंभ होता है, जहाँ अपने-अपने कार्मों का फल भोगना होगा-----

अगली आयत २१ में अल्लाह पाक ने जन्नत की दावत दी है जो दुनियावी ज़िन्दगी का एक मोमिन के लिये हक़ीक़ी फल है। चुनान्चे एक दूसरी आयत में अल्लाह पाक ने फ़रमाया: जो दोज़ख़ से बच कर जन्नत में दाख़िल हो गया वह मुराद को पहुंच गया।

مُصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنفُسِكُمْ إِلَّا
فِي كِتَابٍ مِّن قَبْلِ أَن نَّبْرَأَهَا ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ
عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٢٢﴾ لِّكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا
فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ ۗ وَاللَّهُ لَا
يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿٢٣﴾ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ
وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۗ وَمَن يَتَوَلَّ
فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٤﴾ لَقَدْ أَرْسَلْنَا
رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ
وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۖ وَأَنزَلْنَا
الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ
وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَنصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ ۚ
إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَ
إِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ

२२. जो भी मुसीबत आती है ज़मीन पर हो (जैसे खेती का नुक़्सान) या खुद तुम्हारे नफ़्सों पर हो, यह सब कुछ हमारी किताब में उस के पैदा करने से पहले लिखा है। इस में संदेह नही कि यह कार्य अल्लाह पर सरल है २३. इसलिये कि तुम किसी बर्बाद हुयी चीज़ पर रंजीदा न हो और जो तुम को अल्लाह ने दी है उस पर इतराओ नही और अल्लाह तकब्बुर करने वाले, शेख़ी बाज़ों से मुहब्बत नही करता। २४. जो बुख़्ल करते हैं और लोगों को भी बुख़्ल का हुक्म देते हैं (और नही समझते कि) जो कोई भी मुंह फेरे गा। (अल्लाह का कुछ नुक़्सान नही हो गा) अल्लाह बेपर्वाह तारीफ़ के लायक़ है। २५. हम ने अपने रसूल खुले निशान दे कर भेजे थे और उन के साथ अहकाम की किताब उतारी और तराज़ू, ताकि लोग इन्साफ़ को क़ायम करें और (सकर्श लोगों को सज़ा देने के लिये जंगी हथियार बनाने को) लोहा पैदा किया, जिस में बड़ा सामाने जंग है और लोगों के लिये बड़े फ़ाइदे हैं ताकि अल्लाह उन लोगों को नुमायाँ (उजागिर) कर दे जो उस के और उस के रसूलों के दीन की ग़ैब में मदद करते हैं। अल्लाह तो क़वी और ग़ालिब है[१४]। २६. हम ने नूह और इब्राहीम को रसूल बना कर भेजा और उन की औलाद को नुबुव्वत अ़ता की

....

१४. अगर इस आयत का ग़ौर से मुताला किया जाये तो मालूम हो जाये गा कि अल्लाह पाक ने निहायत बेहतरीन ढंग से चन्द बातों को बयान फ़रमाया है। सब से पहले रिसालत और उस के साथ आसमानी किताब का ज़िक्र है, इस के बाद मीज़ान और अ़द्ल का बयान है। मतलब यह है कि रसूलों और आसमानी किताबों के भेजने का उद्देश्य दुनिया में न्याय, इन्साफ़ और अ़द्ल क़ाइम करना है। इस के तुरन्त बाद लोगों का ज़िक्र कर के इस ओर संकेत किया है कि दुनिया में अम्न और इन्साफ़ क़ायम करने के लिये हथियार की शक्ल में लोहा को काम में लाया जा सकता है। लोहे को अगर अल्लाह के भेजे हुये रसूलों और उस की नाज़िल की हुयी किताबों की शिक्षा के अनुसार अगर काम में लाया जाये तो अ़द्ल व इन्साफ़ बाक़ी रहे गा। और इस से यह भी ग़रज़ है कि देखें कौन ऐसा नेक शासक और हाकिम है जो लोहे को हथियार की शक्ल में पैग़ंबरों की मदद और दीने-हक़ की सहायता के लिये प्रयोग करता है।

فَمِنْهُم مُّهْتَدٍ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ
قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى

फिर कुछ उन में से हिदायत की राह पर आये और बहुत से उन में बदकार हैं। २७. फिर हम ने उन रसूलों के पीछे और रसूल भेजे और उन के बाद ईसा बिन मरयम को रसूल बना कर ➲

ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ۙ وَجَعَلْنَا فِيْ
قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ۭ وَرَهْبَانِيَّةَ
ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَاۗءَ رِضْوَانِ
اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٧﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ
يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا
تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٨﴾
لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰي شَيْءٍ
مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ
مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾

भेजा और हम ने उसे इन्जील दी और जो लोग उस के पैरू होते थे उन के दिलों में हम ने रहम और नर्मी पैदा की थी। और उन्हों ने रहबानियत (सन्यास) इख़्तियार कर ली जिस का हम ने उन को आदेश न दिया था मगर उन्हों ने अल्लाह की रज़ामन्दी हासिल करने को उसे इख़्तियार किया फिर उन्हों ने उस के लायक़ उस की रिआयत का लिहाज़ न रखा[१५], पस उन में से जो अस्ल ईमान पर मज़बूत रहे थे उन को हम ने उन का पूरा बदला दिया और बहुत से उन में अवज्ञा कार थे। २८. ऐ ईमानदारो! अल्लाह से डरते रहना और उस के रसूल (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) पर ईमान रखना, अल्लाह तुम को अपनी रहमत से दुगना हिस्सा देगा और तुम्हारे लिये नूर पैदा करे गा जिस के साथ चलते फिरो गे और तुम को बख़्श देगा। और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है[१६] २९. अहले किताब (तुम्हारी अ़िज़्ज़त और तरक़्क़ी देख कर) समझ लें कि अल्लाह के फ़ज़्ल में से किसी चीज़ पर उन को इख़्यार नहीं है (वर्ना वह तुम को कभी न लेने देते) और (यह भी जान लेना कि) फ़ज़्ल और रहमत सब अल्लाह के हाथ में है, जिसे चाहता है देता है। वह बड़े फ़ज़्ल का मालिक है।

....

१५. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अ़ीसा अ़लै० के बाद जब लोग गुनाह और नाफ़र्मानी में बहुत बढ़ गये तो दीनदार लोग उन के मुख़ालिफ़ हो गये और उन के दर्मियान जम कर लड़ाइयाँ हुयीं। ज़ालिम लोग, दीनदारों पर ग़ालिब आ गये और दीनदार लोग बुरी तरह मारे-पीटे गये। यह हालत देख कर कुछ लोगों ने जंगलों में पनाह लेना मुनासिब समझा और उन्हों ने यह तै कर लिया कि जब तक वह नबी न आ जाये जिस की बशारत हज़रत अ़ीसा ने दी थी, उस समय तक जंगलों और वीरानों में ही कुटिया बना कर रहें गे। चुनाँचे उन्हों ने ऐसा ही किया, घर-बार छोड़ दिया, शादी-विवाह तर्क कर दिया, दुनिया की लज़्ज़तों से मुंह मोड़ लिया। धीरे-धीरे यही उन का अ़क़ीदा और धर्म बन गया। इस मज़्मून (विषय) को अ़ब्द बिन हुमैद, तिर्मिज़ी, अबू याला और इब्ने जरीर वग़ैरह ने भी रिवायत किया है (हमीदी)

१६. 'लि-अल्ला यअ्-ल-म' (ताकि जान लें) यानी वह अहले किताब (जो ईमान नही लाते) जान लें कि अल्लाह के फ़ज़्ल, उस की बख़्शिश और मेहरबानी पर उन को कोई इख़्तियार नहीं है। यह सब अल्लाह के हाथ में हैं और वह जिस को चाहे गा, दे गा (मुवज़्ज़िहुल कुरआन)

★★★★★

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पारः क़द समि-अ़ल्लाहु (28)

संक्षिप्त विषय सूची

क़द समि-अ़ल्लाहु (28)

सूरः मुजादला - (58)

آياتها ٢٢ سورة المجادلة مدنية (٥٨) (١٠٥) ركوعاتها ٣

بسم الله الرحمن الرحيم

قد سمع الله قول التي تجادلك في زوجها
وتشتكي إلى الله والله يسمع تحاوركما إن الله
سميع بصير ① الذين يظهرون منكم من نسائهم
ما هن أمهاتهم إن أمهاتهم إلا الائي ولدنهم و
إنهم ليقولون منكرا من القول وزورا وإن الله
لعفو غفور ② والذين يظهرون من نسائهم
ثم يعودون لما قالوا فتحرير رقبة من قبل أن
يتماسا ذلكم توعظون به والله بما تعملون
خبير ③ فمن لم يجد فصيام شهرين متتابعين
من قبل أن يتماسا فمن لم يستطع فإطعام ستين
مسكينا ذلك لتؤمنوا بالله ورسوله وتلك حدود

सूरः मुजादिला (झगड़ा करने वाली महिला) मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में २२ आयतें और ३ रूकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है।

१. बेशक अल्लाह ने उस महिला की बात सुन ली है जो अपने पति के बारे में तुझ से झगड़ रही थी और अल्लाह के सामने अपनी तक्लीफ़ की शिकायत कर रही थी और तुम दोनों की गुफ़्तुगू अल्लाह सुनता था। बेशक अल्लाह बड़ा सुनने वाला, देखने वाला है[1]। २. जो लोग अपनी पत्नियों से ज़िहार करते हैं (यानी उन को माँ की पीठ की तरह कहते हैं हक़ीक़त में) वह उन की मायें नहीं। उन की मायें वही हैं जिन्हों ने उन को जना है (इस लिये उन का ऐसा कहना ग़लत है) और वह बहुत मक्रूह शब्द बल्कि झूठ कहते हैं। और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला बख़्शने वाला है। ३. (भविष्य में नियम यह है कि) जो लोग अपनी औ़रतों को माओं से तश्बीह देते हैं फिर वह अपने कहे के ख़िलाफ़ करना चाहते हैं[2] तो ऐसे लोगों पर वाजिब है कि परस्पर (पत्नी और पति की तरह) मिलने से पहले एक ग़ुलाम आज़ाद करें। इस बात की तुम को नसीहत की जाती है। और जो कुछ तुम लोग करते हो अल्लाह को उस की सब ख़बर है। ४. हाँ, जो ग़ुलाम न पाये तो (इस सूरत में उन पर) मिलाप करने से पूर्व दो माह पै दर पै
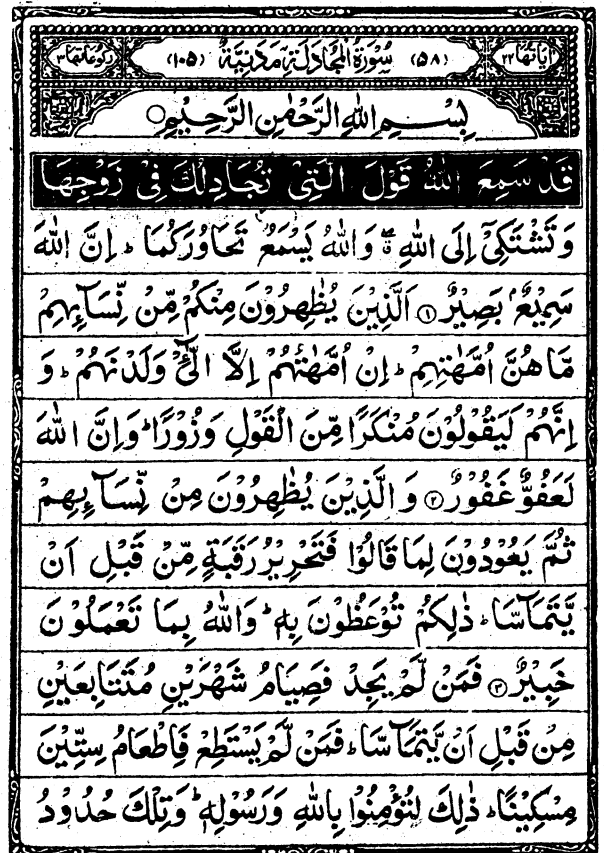
➲ {मुसलसल} रोज़े रखने ज़रूरी हैं (ताकि ऐसे लोगों को ऐसे ग़लत शब्द कहने की सज़ा तो मिले) फिर जो इस काम की ताक़त न रखे उस पर वाजिब है कि साठ मिस्कीनों को खाना खिलाए[३]। यह आदेश इस लिये है कि तुम लोग अल्लाह और रसूल के हक़ में पक्के ईमानदार हो जाओ। और यह अल्लाह के आदेश हैं।

....

१. शाने-नुज़ूल:- अ़रब में यह आ़म चलन था कि मर्द नाराज़ हो कर अपनी पत्नी से कह देता कि तेरी पीठ मुझ पर मेरी माँ की पीठ की तरह है। इस प्रकार कह देने के बाद पत्नी, पति से हमेशा के लिये जुदा हो जाती थी। एक सहाबी (हज़रत औस बिन सामित रज़ि०) ने अपनी पत्नी ख़ौला (बिन्त मालिक बिन सालबा) को ऐसा ही कह दिया और अ़रब के दस्तूर के अनुसार उस को तलाक़ जान कर पत्नी से जुदा हो गये। पत्नी ख़ौला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हो कर बड़ी मन्नत-समाजत की, लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दस्तूर के अनुसार जुदा होने का हुक्म दे दिया, मगर ख़ौला आप से बराबर प्रार्थना करती रहीं, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। इस आयत को आयते ज़िहार भी कहा जाता है। इस्लाम ने ज़िहार को तलाक़ नहीं कहा। हाँ, इस से रोकने के लिये कुछ सज़ायें अवश्य मुक़र्रर कीं, जिस का ज़िक्र आयत न० ३+४ में है। (सनाई/मआ़लिम)

२. इस आयत का तर्जुमा और तफ़्सीर आ़म राये के मुताबिक़ है। मेरी राय इस बारे में यह है कि 'यऊदू-न लिमा क़ालू' का अर्थ है "एक दफ़ा माँ कह कर फिर दोबारा कहने पर यह सज़ा है"। यानी एक दफ़ा कहने पर सज़ा नहीं है। अ़रबी की परिभाषा में भी इस का अर्थ यही है कि "अपनी कही हुयी बात को दोबारा कहना" या "अपने किये हुये हराम को दोबारा करना"। चुनान्चे क़ुरआन मजीद में यह मुहावरा बहुत से स्थानों पर आया है, जैसे "अल्लाह तुम को आगाह करता है कि दोबारा ऐसी हर्कत न करना" दूसरी जगह है "क्या तुम ने उन्हें नहीं देखा जिन्हें कानाफूसी करने से मना किया गया था लेकिन दोबारा वही किया जिस से मना किया गया था"। इस प्रकार क़ुरआन में और दीगर मिसालें भी मिल जायें गी "यऊदू-न लिमा" के माना हैं एक काम कर लेने के बाद फिर वही काम दोबारा करना।

अब आयत का तर्जुमा यह हुआ "जो लोग एक मर्तबा माँ कह कर बाज़ नहीं आते, दोबारा फिर कहते हैं उन की यह सज़ा है कि----"। इस माना में पहली बार का कहना माफ़ है। मगर जैसा कि मैं ने ऊपर भी कहा कि आ़म उ़लमा की राय यही है कि पहली मर्तबा भी कहना माफ़ नहीं है। अब आप लोगों को जो अच्छा मालूम हो उसे इख़्तियार करें। (सनाई)

३. एक मर्तबा हज़रत उ़मर फ़ारूक़ रज़ि० अपने ख़िलाफ़त के समयकाल में घोड़े पर सवार हो कर कहीं जा रहे थे कि हज़रत ख़ौला ने उन की सवारी रोक ली। लोगों ने कहा: आप एक बुढ़िया के इशारे पर रुक गये? उन्हों ने कहा: तुम क्या जानो यह कौन हैं? यह ख़ौला बिन्त मालिक बिन-सालबा हैं जिन की प्रार्थना अल्लाह ने सात आसमानों पर सुनी, तो भला उ़मर की क्या मजाल कि उन की न सुने? सुब्हानल्लाह! कैसे ख़लीफ़ा थे हज़रत उ़मर रज़ि० और कैसे नेक ख़ियालात थे-- रज़ियल्लाहु अ़न्हु। (वहीदी)

बयान किया जाता है कि जब यह आयतें नाज़िल हुयीं तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत ख़ौला को सुनाया और कहा कि अपने पति महोदय से कहो कि एक ग़ुलाम आज़ाद करें। उन्होंने उत्तर दिया कि वह तो बिल्कुल फ़क़ीर आदमी हैं। आप ने फ़रमाया: तो फ़िर दो माह मुसलसल रोज़े रखें। उन्होंने उत्तर दिया कि वह कमज़ोर और बूढ़े हैं। आप ने फ़रमाया: तो फिर साठ फ़क़ीरों को खाना खिलायें। ख़ौला ने कहा: उन के पास ख़ुद ही खाने को नहीं है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं एक अ़िर्क़ (लग-भग पाँच किलो) खजूरें दे कर उन की सहायता करूँगा। हज़रत ख़ौला ने कहा: मैं भी एक वसक़ खजूरें देकर उन की मदद करूँ गी। ➲

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: यह बेहतर है जाओ अपने चचा के बेटे के साथ अच्छा सुलूक करो। (दहीदी) इस वाक़िआ में सख़्त फ़तवा देने वाले मुफ़्तियों के लिये बड़ी नसीहत है। काश अल्लाह समझने की तौफ़ीक़ दे। (राज़)

اللّٰهِ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ
اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝
يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ
اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ
مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ
اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ
مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا
عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ
بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ؗ وَاِذَا جَآءُوْكَ
حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَيَقُوْلُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ

और मुन्किरों के लिये सख़्त अ़ज़ाब है[४]। ५. जो लोग अल्लाह और उस के रसूल (के हुक्मों) की मुख़ालिफ़त करें गे वह नाकाम हों गे जैसे इन से पहले लोग नाकाम हुये और हम ने अहकाम नाज़िल कर दिये हैं। और इन्कारियों के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है। ६. (दुनिया में और ख़ास कर) उस रोज़ जब अल्लाह सब को जमा करे गा, फिर उन को उन के किये हुये आमाल की सूचना दे गा जो अल्लाह को ख़ूब मालूम हैं और यह उन को भूल गये हों गे। अल्लाह हर चीज़ पर हाज़िर है। ७. क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ आसमानों और ज़मीनों में है अल्लाह सब को जानता है (इस का नतीजा है कि) जहाँ कहीं भी तीन आदमियों की कानाफूसी होती है चौथा उन में अल्लाह होता है और पाँच का मश्वरा होता है तो छठा उन में अल्लाह होता है और जो उस से कम या ज़्यादा हों उन सब के साथ अल्लाह होता है जहाँ (कहीं) भी हों फिर उन को उन के किये हुये आमाल से क़ियामत के दिन ख़बरें दे गा (क्योंकि) अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को जानता है। ८. क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन को कानाफूसी करने से मना किया गया था फिर भी वही काम करते हैं जिस से उन को रोका गया था और गुनाह, बेजा अत्याचार ज़्यादती और अल्लाह के रसूल की नाफ़र्मानी की कानाफूसी करते हैं और ऐ रसूल! जब तेरे पास (यह मुख़ालिफ़ मुनाफ़िक़) आते हैं तो तुझे सलाम का तुहफ़ा बरख़िलाफ़ उस के देते हैं जो अल्लाह ने तुझे दिया है[१]

....

४. इस आयत में सूचना दी गयी है कि अल्लाह और रसूल की मुख़ालिफ़त करने वालों का अन्जाम नाकामी ही होता है। इन्सानी दुनिया की तारीख़ (इतिहास) गवाह है कि ऐसे लोगों का अन्जाम हमेशा नाकामी और रुसवाई हुआ है। शुरू में उन की सरगर्मियाँ ज़रूर होती हैं और धन-दौलत होने की वजह से बज़ाहिर अपने मिशन में कामियाब नज़र आते हैं, मगर आख़िरकार उन की कोशिशें सर्द पड़ जाती हैं और सारी माली ताक़तें नाकारा हो जाती हैं।

➲और अल्लाह के इन्साफ़ का क़ानून ऐसी पकड़ पकड़ता है कि दुनिया की तारीख़ में केवल उन की कहानियाँ ही बाक़ी रह जाती हैं।

५. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के समय में मुनाफ़िक़ और यहूदी चुपके-चुपके परस्पर कानाफूसी करते थे, मुसलमानों को इस फ़ितने में गिरफ़तार हो जाने का अन्देशा हुआ, इस लिये उन्हें इस बात से सख़्ती से मना कर दिया गया। यह नालायक़ मुनाफ़िक़ और यहूदी जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आते तो "अस्सामु अ़लैकुम" (तुम पर मौत आये) कहते। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम भी उन के जवाब में केवल इतना कहते "अ़लैकुम" (यानी तुम मेरे लिये जो चाहते हो वही तुम्हारे लिये भी हो) बुख़ारी और मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि एक यहूदी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हो कर "अस्सामु अ़लैकुम" कहा: तो आप ने फ़रमाया: जब कोई अहले किताब तुम को सलाम करे तो तुम जवाब में "अ़लै-क मा क़ुल्-त (जो तू ने कहा वह तेरे ऊपर हो) कहा करो। हज़रत आ़इशा रज़ि० ने एक मर्तबा उस के उत्तर में लानत का शब्द भी बढ़ा दिया, इस पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ऐ आ़इशा! अल्लाह बद ज़बानी को पसन्द नहीं करता। हज़रत आ़इशा ने कहा: आप ने सुना नहीं कि उस ने "अस्सामु अ़लै-क" कह कर मौत की तमन्ना की? आप ने फ़रमाया: मैं ने भी तो "अ़लै-क" (तेरे ऊपर भी) से जवाब दे दिया (वहीदी) सुब्हानल्लाह! नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अख़्लाक़ पर क़ुर्बान जाइये कि एक दुश्मन तो सरासर ज़्यादती करता है और बुरा-भला कहता है, लेकिन आप ज़रा भी ज़्यादती को पसन्द नहीं फ़रमाते हैं-- अल्लाह तआ़ला हम लोगों को अख़्लाक़े-मुहम्मदी पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ दे-आमीन!

لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ۭ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ
فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا
تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ
وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ
تُحْشَرُوْنَ ۝ اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَاۗرِّهِمْ شَيْـــًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ
وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا
اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ
اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ۭ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا
اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ
صَدَقَةً ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ۭ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا

और अपने दिलों में कहते हैं: अल्लाह हमारे ऐसा कहने पर हमें अ़ज़ाब क्यों नहीं करता[५]? उन के लिये जहन्नम काफ़ी है उस में दाख़िल हों गे और वह बड़ी बुरी जगह है। ९. ऐ ईमान वालो! जब तुम आपस में कानाफूसी करने लगो तो गुनाह, ज़्यादती और रसूल की नाफ़र्मानी की कानाफूसी न करना, बल्कि नेकी और परहेज़गारी की बात एक दूसरे के कान में कह दिया करना और अल्लाह से डरते रहना जिस के पास तुम जमा किये जाओ गे[६]। १०. यह कानाफूसी केवल शैतान की तरफ़ से है ताकि ईमानदार (इस की वजह से) ग़मगीन हों[७] हालाँकि यह उन को बग़ैर अल्लाह के हुक्म के कुछ भी नुक़्सान नहीं दे सकता। और ईमानदारों को चाहिये कि अल्लाह पर भरोसा करें। ११. मुसलमानो! जब तुम से कहा जाये कि मज्लिस {सभा} में खुल कर बैठो (ताकि और लोग भी मज्लिस में शरीक हो सकें)➲

तो तुरन्त खुल जाया करो अल्लाह तुम पर फ़राख़ी करे गा, और जब तुम से कहा जाये कि (बस) अब जाओ, तो तुरन्त चले जाया करो (इस के बदले में) अल्लाह तुम ईमानदारों और अ़िल्म वालों के दर्जे बुलन्द करे गा (यानी दुनिया में वह मुहज़्ज़ब और आख़िरत में नजात पाने वालों में हों गे) और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को सब की ख़बर है[९]। १२. ऐ ईमान वालो! जब तुम रसूल से कानाफूसी करना चाहो (यानी बग़ैर इस के तुम को चारा न हो) तो अपनी सरगोशी से पहले कुछ सदक़ा दे दिया करो। यह (तरीक़ा) तुम्हारे लिये बेहतर और पाक है। फिर अगर तुम लोग न पाओ (यानी ग़रीबी की वजह से सदक़ा न दे सको)

....

६. यानी यह शख़्स अगर वास्तव में अल्लाह का रसूल है और हम उस की बेइज़्ज़ती करते हैं, तो हमें तो तुरन्त अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हो जाना चाहिये। लेकिन उन की यह ग़लत फ़हमी है, उन पर तो अ़ज़ाब आ ही जाना चाहिये, लेकिन हमारी हलीमी और बुर्दबारी (सहनशीलता) आड़े आती है, इसी लिये ज़रा सी ढील है। लेकिन यह लोग जान लें कि जब तक ढील है तो ढील है, वर्ना जब हम पकड़ते हैं तो बुरी तरह पकड़ते हैं जिस से निकलना असंभव है। (सनाई)

७. ऊपर की आयतों में कानाफूसी की बुराई बयान की गयी थी, अब यहाँ मुसलमानों को मश्वरे का हुक्म दिया गया है। पोशीदा तौर पर राय-मश्वरा करना बिल्कुल मना नहीं है, अगर नेकी, परहेज़गारी और रसूल की इताअ़त की बाबत हो तो कोई हर्ज नहीं। और हमेशा यह बात ज़ेहन में रहे कि अल्लाह के पास जाना है और हिसाब-किताब देना है। (हक़्क़ानी)

यह आयत आज-कल भी जमाअ़तों और अन्जुमनों की राहनुमाई करती है। अगर इन के काम परस्पर राय और मश्वरा से अन्जाम पाते हैं और उन के अन्दर इख़्लास और तक़्वा है तो निहायत मुबारक काम है, लेकिन अगर ज़ुल्म, ज़्यादती, अल्लाह और रसूल की नाफ़र्मानी के काम के लिये जो राय-मश्वरा हो गा, चाहे वह बन्द कमरे ही में क्यों न हो, बहरहाल उस को नाकाम होना है और ऐसी शूरा के सदस्यों और उहदेदारों (पदभारियों) को नाकामियाब और नाकाम होना है।

८. मुनाफ़िक़ों की कानाफूसी का उद्देश्य यह था कि इस से मुसलमानों को तक्लीफ़ पहुंचे और वह घबरा जायें और हरदम उन के दिल में यह शंका बनी रहे कि न जाने क्या-क्या मन्सूबे बनाये जा रहे हैं। यह काम उन से शैतान करा रहा था। मगर मुसलमानों का अक़ीदा यह होना चाहिये कि शैतान उन का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। अहादीस में इस बात की सख़्त मिनाही आई है कि मज्लिस में एक आदमी को छोड़ कर हर शख़्स कानाफूसी करे। ऐसा इस लिये है कि तीसरा रन्जीदा न हो। यह मस्अला भी एक तरह से इस आयत के संदर्भ में दाख़िल हो सकता है। (मुवज़्ज़िहुल क़ुरआन)

९. इस आयत में मुसलमानों को मज्लिस के आदाब सिखाये गये हैं। उन्हें आदेश दिया गया है कि उठक-बैठक में भी एक दूसरे का ख़याल रखा करें। चुनान्चे हुक्म दिया कि मज्लिस में बैठे हुये हो और कोई आ जाये तो ज़रा हट कर इधर-उधर से उसे जगह दे दो और मज्लिस में कुशादगी रखो, इस के बदले में अल्लाह तुम्हें कुशादगी दे गा। एक हदीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के लिये मस्जिद बनाये गा तो अल्लाह तआ़ला भी उस के लिये जन्नत में घर बना दे गा। एक दूसरी हदीस में है कि जो शख़्स किसी परेशानहाल के साथ आसानी करे गा तो अल्लाह तआ़ला भी उस पर दुनिया और आख़िरत में आसानी करे गा। और जो शख़्स अपने किसी मुसलमान भाई की मदद में लगा रहता है तो अल्लाह तआ़ला भी उस बन्दे की मदद पर रहता है। इस प्रकार की और भी बहुत सी हदीसें हैं जो इस की फ़ज़ीलत में आयी हैं। हज़रत क़तादा रह० फ़रमाते हैं कि यह आयत ज़िक्र की मज्लिस के बारे में नाज़िल हुयी है। जैसे कहीं वाज़-नसीहत हो रही है लोग बैठे सुन रहे हैं, इसी दर्मियान एक और शख़्स

आ गया, तो पहले से बैठे हुये लोगों को चाहिये कि ज़रा-ज़रा से इधर-उधर दब जायें, ताकि उस को भी बैठने की जगह मिल जाये। कुरआन पाक इसी बात की तालीम देता है। (मुहम्मदी)

فَإِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾ ءَأَشْفَقْتُمْ أَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ
يَدَيْ نَجْوٰكُمْ صَدَقٰتٍ ۚ فَإِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ
عَلَيْكُمْ فَأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَأَطِيْعُوا اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٣﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى
الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۖ مَا هُمْ مِّنْكُمْ
وَلَا مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤﴾
أَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۖ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾ اِتَّخَذُوْا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٦﴾ لَنْ تُغْنِيَ
عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْئًا ۖ
أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾ يَوْمَ
يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ
وَيَحْسَبُوْنَ أَنَّهُمْ عَلٰى شَيْءٍ ۖ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٨﴾

तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है[१०]। १३. क्या तुम इस हुक्म से डर गये कि अपनी कानाफूसी से पहले सदक़ा दे लो फिर जब तुम ने ऐसा नहीं किया और अल्लाह ने तुम्हारे हाल पर मेहरबानी की नज़र की है तो (अब) तुम नमाज़ पढ़ते रहो और ज़कात अदा करते रहो और अल्लाह और रसूल की ताबेदारी करते रहो और (याद रखो) अल्लाह तुम्हारे कामों की ख़बर रखता है। १४. क्या तुम ने उन लोगों को देखा जिन्हों ने उस क़ौम से तअ़ल्लुक़ पैदा कर रखा है जिन पर अल्लाह ने ग़ज़ब किया हुआ है। न वह तुम में से हैं, न उन में से और महज़ झूठ पर क़सम उठाते हैं, हालाँकि वह जानते हैं (कि वह झूठे हैं[११]) १५. अल्लाह ने उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है। बेशक यह लोग बुरा काम करते हैं। १६. उन लोगों ने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है और (उन क़समों के साथ) लोगों को अल्लाह की राह से रोकते हैं पस उन के लिये ज़लील करने वाला अ़ज़ाब है। १७. न उन के माल उन को अल्लाह के अ़ज़ाब से कुछ बचायें गे न उन की औलाद (ही उन के कुछ काम आ सके गी) यह लोग जहन्नमी हैं उस में हमेशा रहें गे। १८. जिस रोज़ (यानी क़ियामत के दिन) अल्लाह उन को क़ब्रों से उठाये गा तो उस के सामने (भी अपनी बेगुनाही पर) क़समें खायें गे जिस तरह वह तुम्हारे सामने क़समें खाते हैं वह समझें गे कि उन का एतिबार है। लोगो! वास्तव में वह झूठे हैं

....

१०. इस आयत में मोमिन बन्दों को हुक्म दिया जा रहा है कि मेरे नबी से जब तुम कोई राज़ की बातें करना चाहो तो इस से पहले मेरी राह में कुछ ख़ैरात कर दिया करो, ताकि तुम पाक हो जाओ और इस क़ाबिल बन जाओ कि मेरे नबी से मश्वरा कर सको। हाँ, अगर कोई ग़रीब और फ़क़ीर शख़्स हो और ख़ैरात करने की पोज़ीशन में न हो तो माफ़ है। यानी यह हुक्म सिर्फ़ उन लोगों के लिये है जो मालदार हैं।--फिर आगे फ़रमाया गया कि तुम्हें इस हुक्म के बाक़ी रह जाने का आदेश था तो मालूम हो कि जब तुम ने उसे न किया और अल्लाह ने भी तुम्हें माफ़

फ़रमा दिया तो अब आइन्दा इस फ़र्ज़ की अदायगी का पूरा ख़याल रखो।

बयान किया जाता है कि सब से पहले सदक़ा निकालने का शर्फ़ केवल हज़रत अ़ली को हासिल है। उन्हों ने एक दीनार सदक़ा कर के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दीन के दस मसाइल मालूम किये। बाद में यह हुक्म मन्सूख़ हो गया। हज़रत अ़ली रज़ि० फ़रमाते हैं कि इस आयत पर न मुझ से पहले किसी ने अ़मल किया और न मेरे बाद। जब यह आयत नाज़िल हुयी तो उस समय मेरे पास एक दीनार था जिसे भुना कर मैं ने दस दिर्हम ले लिया। फिर उस में से एक दिर्हम एक फ़क़ीर को दे कर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हो कर मसाइल मालूम किये, फिर यह हुक्म ही मन्सूख़ हो गया और किसी को इस आयत पर अ़मल करने की नौबत ही नहीं आयी। (मुहम्मदी)

११. शानि-नुज़ूलः- इब्ने अ़बी हातिम की एक रिवायत के मुताबिक़ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपने किसी हुजरे के साये में तशरीफ़ रखते थे और सहाबा रज़ि० भी आप के पास बैठे हुये थे। साया की जगह कम थी, लोग मुश्किल से उस साये के नीचे बैठे हुये थे कि इसी दर्मियान आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः देखो! अभी एक शख़्स आये गा जो शैतानी आँखों से देखता है, उस से कोई बात-चीत न करे गा। थोड़ी देर के बाद कैरी आँखों वाला एक शख़्स आया, आप ने उसे बुला कर फ़रमाया कि तुम और फ़लाँ-फ़लाँ क्यों मुझे गालियाँ देते हो? वह शख़्स वहाँ से चला गया और जिन-जिन का नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने नाम लिया था, सब को बुला कर ले आया, और फिर क़समों का ताँता बाँध दिया कि हम ने आप की कभी भी बेअदबी नहीं की है, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी कि सब के सब झूठे हैं (मुहम्मदी) आप को वह्यि द्वारा उन मुनाफ़िक़ों का हाल बता दिया गया था। और जो बात वह्यि और इल्हाम से मालूम हो उस को ग़ैब की बात जानना नहीं कहा जा सकता।

اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ؕ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اُولٰٓئِكَ فِى الْاَذَلِّيْنَ ﴿۲۰﴾ كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِىْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِىٌّ عَزِيْزٌ ﴿۲۱﴾ لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْۤا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۲۲﴾

१९. शैतान ने उन पर ग़लबा पा कर उन को अल्लाह का ज़िक्र भुला दिया है, यह शैतान की जमाअ़त हैं। सुन रखो! शैतानी गरोह ही आख़िरत में नुक़्सान पाये गा। २०. जो लोग अल्लाह और रसूल की मुख़ालिफ़त करते हैं वही सब से अधिक ज़लील लोगों में हों गे। २१. अल्लाह ने लिख रखा है कि मैं और मेरे रसूल ही ग़ालिब हों गे[१२], बेशक अल्लाह क़वी और ग़ालिब है[१३]। २२. तू ऐसी कोई क़ौम न पाये गा जो अल्लाह पर और पिछले दिनों पर ईमान रखते हैं वह उन लोगों से प्रेम करें जो अल्लाह और रसूल से दुश्मनी करते हैं, चाहे वह उन के बाप-दादा हों, या बेटे-पोते हों, या भाई-बन्द, या कुटंब और बिरादरी के हों[१४]। यही लोग हैं जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान बख़्श रखा है और उन को अपनी रूह से कुव्वत बख़्शी है। और उन को बाग़ों में दाख़िल करे गा जिन के नीचे नहरें जारी हों गी (यह मोमिन लोग) उन (बाग़ों) में हमेशा-हमेशा रहें गे,

➲अल्लाह उन से राज़ी हो गा और यह उस से राज़ी (पस मुख़्तसर कलाम यह कि) यही लोग अल्लाह वाले हैं (सुनो लो!) अल्लाह वाले ही (अज़ाब से) नजात पायें गे[१५]

....

१२. 'मेरे रसूल ही ग़ालिब हों गे' यानी अल्लाह का दीन फैले गा और कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िक़ों के सारे मन्सूबे धरे के धरे रह जायें गे, बेशक अल्लाह सब पर ग़ालिब है।

१३. इन आयात में अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया है कि दीने-इस्लाम के दुश्मन ज़लील हों गे और मुसलमानों का ग़लबा हो गा। चुनान्चे ऐसा ही हुआ और बद्र की लड़ाई के छ: माह के बाद ही बनू नज़ीर निकाल बाहर किये गये, और बनू क़ुरैज़ा से मुआहिदा की ख़िलाफ़वर्ज़ी के जुर्म में जिहाद में शिकस्त खा कर क़िला के अन्दर नज़र बन्द हो गये। अन्त में हज़रत सअद बिन मआज़ के हुक्म से क़िले से बाहर निकले, फिर हज़रत सअद ने उन के मर्दों को क़त्ल करवा कर उन की औरतों और बच्चों को लौंडी-ग़ुलाम बना लिया। साथ ही बनू क़युन्क़ाअ और बनू हारिसा वग़ैरह तमाम यहूदी जिलावतन हुये (फ़त्हुलबारी)

इस के बाद तमाम अरब, रूम, ईरान, मिस्र, काबुल, अद्न, बल्ख़, बुख़ारा, चीन, अफ़्रीक़ा वग़ैरह दूरदराज़ के मुल्कों में इस्लाम का डन्का बज गया और आज तक बराबर यह पेशीनगोई अपना जल्वा दिखा रही है कि अफ़रीक़ा के दूरदराज़ इलाक़ों, अमरीका और लन्दन में भी अल्लाह के फ़ज़्ल से इस्लाम फैलता जा रहा है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि एक समय ऐसा आये गा कि कोई इलाक़ा बाक़ी न बचे गा जहाँ दीन इस्लाम न पहुंच जाये, आप की यह भविष्यवाणी पूरी हो कर रही

आज कल इस्लाम दुश्मन यह प्रचार करते नहीं थकते कि इस्लाम तल्वार के ज़ोर से फैला है। आख़िर यह लोग किस तहख़ाना में सोते और किस नींद में बेहोश हैं। ज़रा बतलायें तो सही कि किस-किस मुल्क में जिहाद हो रहा है? कहाँ-कहाँ इस्लाम और कुफ़्र की लड़ाई चल रही है? (सिवाय कुछ गिने-चुने मुल्कों के) इस का नाम है भविष्यवाणी और इस का नाम है सदाक़त और सच्चाई। (वहीदी)

१४. चूँकि इन के अन्दर अल्लाह और उस के रसूल की मुहब्बत कूट-कूट कर भरी हुयी है इस लिये वह इस्लाम दुश्मनों से मुहब्बत नहीं रख सकते, क्यों कि एक दिल में दो बाहममुख़ालिफ़ (परस्पर विरोधी) मुहब्बतें जमा नहीं हो सकतीं (सनाई) "ईमान वालों के दिल में अल्लाह की मुहब्बत सब से ज़्यादा होती है" यह आयत भी इस हक़ीक़त का एलान है।

१५. शाने-नुज़ूल:- यानी कोई भी हो, जब अल्लाह और उस के रसूल के दुश्मन हुये तो मुसलमान उन का दोस्त नहीं हो सकता। यह सहाबा रज़ि० की शान में नाज़िल हुयी। हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह ने अपने बाप अब्दुल्लाह बिन जर्राह को बद्र की लड़ाई में क़त्ल कर दिया, हज़रत अबू बक्र ने अपने बेटे मुहम्मद का मुक़ाबला किया, मुसअब बिन उमैर ने अपने भाई उबैद बिन उमैर को उहुद के दिन मार डाला, हज़रत उमर ने अपने मामू आस बिन हिशाम को बद्र की लड़ाई में क़त्ल किया, हज़रत अली, हम्ज़ा और उबैदा ने अपने चचा के बेटों उतबा, शैबा और वलीद बिन उतबा को क़त्ल किया। ग़रज़ इन लोगों ने अल्लाह और उस के रसूल के मुक़ाबले में, बाप, बेटे, भाई, क़बीला, ख़ान्दान किसी का लिहाज़ न किया। इसी का नाम इस्लाम है और यही लोग मुसलमान कहलाने के मुस्तहिक़ हैं।

सहीह हदीस में रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम में से कोई भी उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के नज़दीक उस के बाप, बेटे और तमाम लोगों से अधिक महबूब न हो जाऊँ। जो अभागे ऐसे पक्के सच्चे ईमानदार मुसलमानों को बुरा-भला कहते हैं उन को अल्लाह से शर्म आनी चाहिये। 'रूह' के कई माना बयान किये गये हैं "नूर, दिल, कुरआन, विजय," इन सब को "रूह" कहा जाता है। इमाम सुद्दी ने इस का तर्जुमा यूँ किया है "उन के रूह की ईमान से मदद की"। रूह से मुराद "रूहुल➲

➲ क़ुदुस" भी हैं जिन के द्वारा अल्लाह अपने नेक बन्दों की मदद करता है, जैसा कि दूसरे स्थान पर फ़रमाया गया "हम ने रूहुल् क़ुदुस के ज़रीआ़ उस की मदद की" और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत हस्सान के हक़ में फ़रमाया था "ऐ अल्लाह रूहुल् क़ुदुस के ज़रीआ़ उन की मदद फ़रमा"। (वहीदी, हक़्क़ानी)

सूरः हश्र्– (59)

آياتها ٢٤ (٥٩) سورة الحشر مدنية (١٠١) ركوعاتها ٣

بسم الله الرحمن الرحيم

سبح لله ما في السموت وما في الارض وهو العزيز الحكيم ① هو الذي اخرج الذين كفروا من اهل الكتب من ديارهم لاول الحشر ما ظننتم ان يخرجوا وظنوا انهم مانعتهم حصونهم من الله فاتهم الله من حيث لم يحتسبوا وقذف في قلوبهم الرعب يخربون بيوتهم بايديهم وايدي المؤمنين فاعتبروا يأولي الابصار ② ولولا ان كتب الله عليهم الجلاء لعذبهم في الدنيا ولهم في الاخرة عذاب النار ③ ذلك بانهم شاقوا الله ورسوله ومن يشاق الله فان الله شديد العقاب ④ ما قطعتم من لينة او تركتموها قائمة على اصولها فباذن الله وليخزي الفسقين ⑤ وما افاء الله على رسوله منهم فما اوجفتم عليه من خيل ولا ركاب ولكن الله يسلط رسله على من يشاء والله على

सूरः हश्र मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में २४ आयतें और ३ रूकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है।

१. जितनी मख़्लूक़ात आसमानों में और जितनी चीज़ें ज़मीन पर हैं सब अल्लाह की पाकी बयान करती हैं और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। २. वह ही अल्लाह है जिस ने अहले-किताब में से मुन्किरों को पहले धक्के में उन के घरों से निकाल दिया[1] (और तुम लोगों को उन पर ग़ालिब किया) तुम्हें इस बात का गुमान न था कि वह (अपने वतन से) निकलें गे, उन्हों ने समझा था कि उन के क़िले उन को अल्लाह (की पकड़) से बचा लें गे (मगर न बचा सके) पस अल्लाह का अ़ज़ाब उन पर ऐसी जगह से आया कि उन को इस का गुमान न था और अल्लाह ने उन के दिलों में (मुसलमानों का) रोब डाल दिया (ऐसे डरे कि) अपने घरों को अपने हाथों से और मुसलमानों के हाथों से गिरा रहे थे (ताकि उन की चोखटें और दर्वाज़ों की पट साथ ले जा सकें) पस ऐ अक़्ल वालो! नसीहत हासिल करो। ३. और अल्लाह ने उन की तक़्दीर में जिलावतनी न लिखी होती तो दुनिया ही में उन को अ़ज़ाब करता और आख़िरत में उन के लिये जहन्नम की आग का अ़ज़ाब है[2]। ४.इस वजह से कि उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल की ज़िद में आ कर मुख़ालिफ़त की है और जो कोई अल्लाह (और उस के रसूल) की मुख़ालिफ़त करे (तो उस के हक़ में) अल्लाह सख़्त ➲

➲अ़ज़ाब वाला है। ५. जो (उन भगौड़े यहूदियों के) दरख़्त तुम ने काटे या उन को सालिम छोड़ा यह सब कुछ अल्लाह के हुक्म से हुआ, ताकि ऐसे (बद अ़ह्द) फ़ासिक़ों को रुसवा करे। ६. और अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल को जो कुछ उन (यहूदियों) से दिलवाया है तुम लोगों ने उस पर घोड़े या ऊँट नहीं दौड़ाये (यानी तुम्हारे फ़ौजी दस्ते ने आक्रमण कर के उसे फ़तह नहीं किया) लेकिन अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है ग़लबा देता है। और अल्लाह तआ़ला हर काम पर क़ुदरत रखता है।

....

१. शाने-नुज़ूल:- मुसलमानों के साथ सुलह-सफ़ाई का मुआ़हिदा किया था, लेकिन उन्हों ने उसे तोड़ दिया। इस पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन पर फ़ौजी आक्रमण कर के उन को उन के इलाक़ों से निकाल दिया और इस बात की अनुमति दे दी कि जो कुछ भी तुम साथ ले जाना चाहो, ले जा सकते हो। चुनान्चे घर की सारी पूंजी साथ ले गये, यहाँ तक कि घरों के चौखट-दरवाज़े तक उखाड़ ले गये, इसी मौक़े पर यह आयत नाज़िल हुयी। (सनाई)
२. इस का मुख़्तसर क़िस्सा यह है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हिज्रत कर के मदीना शरीफ़ तशरीफ़ लाये तो इन यहूदियों से समझौता कर लिया। समझौते में एक अहम मुद्दा यह था कि न तुम मुसलमानों से लड़ाई करना और न मुसलमान तुम से लड़ाई करें गे। लेकिन यहूद ने समझौते को तोड़ दिया जिस की वजह से उन पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल हुआ। अल्लाह ने रसूल की सहायता की और रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन्हें निकाल बाहर किया। मुसलमान यह सोच भी नहीं सकते थे कि हम उन पर विजय पा भी सकते हैं। ख़ुद यहूद भी इसी ख़ुशफ़हमी में थे कि उन के क़िले उन्हें सुरक्षा प्रदान करें गे, लेकिन अल्लाह की पकड़ के सामने सब तरकीबें धरी की धरी रह गयीं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन्हें मदीना शरीफ़ से बाहर निकाल दिया। उन में से कुछ मुल्क शाम और कुछ ख़ैबर चले गये। उन को इजाज़त दे दी गयी कि अपने ऊँटों पर जो कुछ ले जा सको, ले जा सकते हो, चुनान्चे जो ले जा सकते थे ले गये, बाक़ी को अपने हाथों से तोड़-फोड़ दिया। जो चीज़ें बाक़ी बचीं वह मुसलमानों के हाथ लगीं।

इस क़िस्सा को बयान कर के मुश्रिकों को आगाह करना मक़सद है कि जिस ने अल्लाह और उस के रसूल की मुख़ालिफ़त की उस का अन्जाम बुरा हुआ। वह अल्लाह की पकड़ से न बच सके और तबाह व बर्बाद कर दिये गये। दुनिया में तो यह हाल हुआ और आख़िरत में तो ज़िल्लत का अज़ाब है ही।

अबू दावूद की रिवायत में है कि मुश्रिकों ने अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि और उस के मुश्रिक साथियों को ख़त लिखा कि तुम लोगों ने अपने शहर मदीना में नबी और उस के साथियों को ठहरने की जगह दे रखी है, सो या तो तुम उन्हें अपने शहर से निकाल बाहर करो वर्ना हम तुम पर हम्ला कर के तुम्हें क़त्ल कर दें गे और तुम्हारे बीवी-बच्चों को लौंडी-ग़ुलाम बना लें गे। अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि और उस के साथी चुपके-चुपके मुसलमानों के साथ जंग का प्रोग्राम बना ही रहे थे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को इस बात की ख़बर लग गयी तो आप ने स्वंय उन के पास जा कर फ़रमाया: मुझे मालूम हुआ है कि काफ़िरों का ख़त काम कर गया है, तुम लोग अपनी मौत का सामान करने में जुटे हुये हो, अपनी औलाद और अपने भाइयों को अपने हाथों ज़ब्ह करना चाहते हो, मैं तुम्हें फिर एक मर्तबा मौक़ा देता हूँ कि भली-भाँति सोच लो और इस बुरे इरादे से बाज़ आ जाओ। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के इस इर्शाद ने उन्हें प्रभावित किया और वह लोग सभा समाप्त कर के अपने-अपने घरों को लौट आये।

लेकिन क़ुरैश ने बद्र से लौट कर उन्हें पुन: एक ख़त लिखा और पहले की तरह धमकाया और मुनाफ़िक़ों को उन की शक्ति उन की जन्संख्या, उन के मज़बूत क़िले याद दिलाये। चुनान्चे यह लोग फिर क़ुरैश के झांसे में➲

➲आ गये और बनू नज़ीर ने तो साफ़ तौर पर समझौते को तोड़ दिया। और इतने ही पर बस नहीं किया, बल्कि एक पत्र नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को लिखा कि तुम तीस आदमी भेजो, हमारे भी तीस आदमी आयें गे और मिल-बैठ कर बात-चीत कर लें। अगर हमारे तीस आदमी आप पर ईमान ले आते हैं तो हम सब भी ईमान ले आयें गे। समझौता तोड़ने की वजह से दूसरे दिन नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने लश्कर के साथ उन को घेर लिया और उन से नये सिरे से समझौता करने को कहा, लेकिन उन्हों ने साफ़ इन्कार कर दिया और लड़ने मरने पर आमादा हो गये। चुनान्चे दिन भर लड़ाई चलती रही। दूसरे दिन आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बनू क़ुरेज़ा को भी नये सिरे से समझौता कर लेने का मश्वरा दिया, उन्हों ने आप का मश्वरा तस्लीम कर लिया और समझौता पर राज़ी हो गये। आप ने उन से समझौता कर के बनू नज़ीर पर आक्रमण कर दिया और उन्हें शिकस्त दे कर मदीना से निकल जाने का हुक्म दिया, उन्हें अपना सामान भी ले जाने की अनुमति दे दी, चुनान्चे वे सारा सामान यहाँ तक कि दर्वाज़े और खिड़कियाँ भी अपने साथ ले गये। उन के खजूरों के बाग़ ख़ास तौर पर नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की संपत्ति हो गये। चुनान्चे आयत ७ में साफ़ लफ़्ज़ों में फ़रमा दिया कि उन के ख़जूरों के बाग़ नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़ाती मिलकिय्यत (संपत्ति) हैं इस में और किसी का हिस्सा नहीं हो गा। लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने हिस्से का अक्सर-बेश्तर हिस्सा मुहाजिरों को दे दिया और अन्सार में से केवल दो ज़रूरतमन्दों को दिया। बाक़ी जो बच गया वह वही माल था जो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का सदक़ा था और जो बनू फ़ातिमा के हाथ लगा (मुहम्मदी)

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۞ مَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ
الْقُرَىٰ فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَ
الْمَسَاكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ كَيْ لَا يَكُونَ دُولَةً بَيْنَ
الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ ۚ وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا
نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ۞ لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا
مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ
وَرِضْوَانًا وَيَنْصُرُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ
الصَّادِقُونَ ۞ وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ
مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ
فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰ
أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَنْ يُوقَ شُحَّ
نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۞ وَالَّذِينَ جَاءُوا

७. बल्कि जो कुछ अल्लाह ने बिना लड़े-भिड़े उन बस्तियों के रहने वालों से अपने रसूल को अ़ता किया है वह (वास्तव में) अल्लाह का, उस के रसूल का और (रसूल और मुजाहिदों के) रिश्तेदारों का, यतीमों का, मिस्कीनों का, ग़रीब मुसाफ़िरों का (हक़) है (यह तक़्सीम इस लिये है) ताकि यह माल तुम में से माल्दारों ही के दर्मियान घूम फिर कर न रहे[3] (बल्कि ग़रीबों को भी हिस्सा रसदी पहुंचे) और (सुनो! बावजूद ऊपर बयान किये गये हुक़ूक़ के) जो कुछ रसूलुल्लाह तुम को दे दें वह क़ुबूल किया करो और जिस से रोकें उस से रुक जाया करो और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह तआ़ला सख़्त अ़ज़ाब वाला है। ८. देखो, उन फ़क़ीरों और मुहाजिरों को जो अपने घरों और मालों से निकाले गये (महज़ इस जुर्म में कि) वह (अ़िबादत द्वारा) अल्लाह का फ़ज़्ल और ख़ुश्नूदी चाहते हैं और (अपनी कोशिश भर) अल्लाह और रसूल के दीन की मदद करते➲

हैं। यही लोग (ईमान में) सच्चे हैं। ९. और (वह भी कैसे बाकमाल मुख़्लिस हैं) जिन्हों ने उन (मुहाजिरों के) पहुंचने से पहले (मदीना शरीफ़ में) दारुल्-ईमान बनाया जो लोग उन की तरफ़ हिजरत कर के आते हैं वह लोग उन से दिली मुहब्बत करते हैं और जो कुछ उन को अल्लाह की तरफ़ से (माल) मिला है (मुहाजिरों की ज़रूरत के मुकबाला में) अपने दिलों में उस (माल) की हाजत नहीं पाते और उन की ज़रूरतों को अपनी ज़रूरतों पर तर्जीह देते हैं अगर्चे उन को सख़्त हाजत हो। और जो लोग अपने नफ़्स के बुख़्ल से बच जायें वही नजात पाने वाले हों गे।

....

३. इस आयत में "फ़ै" के माल की तक़्सीम और उस के ख़र्च का तरीक़ा बयान फ़रमाया है। चुनान्चे हदीस शरीफ़ में है कि बनू नज़ीर के माल "फ़ै" के तौर पर ख़ास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिये मख़्सूस थे। आप उस में से अपने घर वालों को साल भर तक ख़र्च देते थे और जो बच जाता था उसे जंग के सामान की ख़रीदारी में ख़र्च करते थे (यह रिवायत सुनन और मुस्नद की दूसरी रिवायतों में है) अबू दावूद की रिवायत में हज़रत मालिक बिन औस से रिवायत है कि हज़रत उ़मर फ़ारूक़ रज़ि० ने मुझे दिन चढ़े बुलाया, मैं जब उन के पास पहुंचा तो देखा कि हज़रत एक नंगी चौकी पर बैठे हुये हैं। मुझे देख कर फ़रमाया: तुम्हारी क़ौम के कुछ लोग आये हैं मैं ने उन्हें कुछ दिया है, तुम उन के दर्मियान तक़्सीम कर दो। मैं ने उन से अनुरोध किया कि यह कार्य अगर किसी और को सौंप देते तो अच्छा होता। उन्हों ने कहा कि तुम ही यह काम अन्जाम दो। इतने में आप के दारोग़ा (गेटकीपर) यरफ़ा आ गये और कहा कि हज़रत उ़स्मान, अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़, ज़ुबैर बिन अ़व्वाम और सअ़द बिन वक़्क़ास रज़ि० तशरीफ़ लाये हैं, तो क्या उन्हें अन्दर आने की अनुमति दे दूँ? आप ने फ़रमाया आने दो। जब यह लोग आ गये तो यरफ़ा फिर आये और कहा कि हज़रत अ़ब्बास और हज़रत अ़ली भी अन्दर आना चाहते हैं, आप ने फ़रमाया उन्हें भी आने दो। जब यह लोग भी आ गये तो अ़ब्बास रज़ि० ने कहा: ऐ अमीरुल मोमिनीन! हमारे और अ़ली के दर्मियान फ़ैसला फ़रमाइये! मौजूद लोगों ने कहा कि इन दोनों हज़रात के दर्मियान फ़ैसला कर दीजिये। हज़रत मालिक फ़रमाते हैं कि मेरे दिल में तुरन्त यह ख़याल आया कि हो न हो इन्ही अ़ली और अ़ब्बास ने ही उन लोगों को पहले यहाँ भेज दिया है। हज़रत उ़मर ने कहा: ज़रा ठेहर जाओ, फिर थोड़ी देर के बाद फ़रमाया: तुम्हें उस रब की क़सम जिस के हुक्म से आसमान और ज़मीन खड़े हैं, तुम्हें मालूम ही है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमा दिया है "हमारी मीरास और तर्का बाँटा नहीं जाता, हम जो छोड़ जायें वह सदक़ा है"। उन चारों हज़रात ने इस बात का इक़रार किया, तो आप हज़रत अ़ली और हज़रत अ़ब्बास रज़ि० की तरफ़ मुतवज्जह हुये और इसी प्रकार क़सम दे कर उन से भी यही कहा और उन दोनों ने भी इक़रार किया। फिर उ़मर फ़ारूक़ ने फ़रमाया: अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल के लिये जो कुछ मख़्सूस किया था वह और किसी के लिये न था, फिर आप ने यही आयत न० ७ तिलावत फ़रमाई और कहा कि बनू नज़ीर का माल अल्लाह ने "फ़ै" के तौर पर अपने रसूल को दिया था। (मुहम्मदी)

مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا
الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا
غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ اَلَمْ

१०. और वह लोग (भी प्रशंसा के क़ाबिल हैं) जो उन के बाद आयें गे (जो दुआ़यें) करते हों गे कि हमारे पर्वरदिगार! हम को और हमारे उन भाइयों को बख़्श दे जो हम से पहले ईमानदार गुज़रे हैं, और हमारे दिलों

تَرَ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِنْ قُوتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكٰذِبُونَ ﴿١١﴾ لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِنْ قُوتِلُوا لَا يَنْصُرُونَهُمْ وَلَئِنْ نَصَرُوهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْأَدْبٰرَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُونَ ﴿١٢﴾ لَأَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ﴿١٣﴾ لَا يُقٰتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرًى مُحَصَّنَةٍ أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا

में ईमानदारों के लिये किसी प्रकार का कीना पैदा न कर, ऐ हमारे पर्वरदिगार! तू बड़ा मेहरबान, रहम करने वाला है[४]। ११. क्या तुम ने उन मुनाफ़िक़ों की तरफ़ नहीं देखा जो (कुफ़्र में अपने हमख़याल) अहले-किताब भाइयों को जो (उन की तरह) काफ़िर हैं कहते हैं (कि) अगर (फ़र्ज़ करो कि) तुम लोग निकाले जाओ गे तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जायें गे और तुम्हारे हक़ में कभी भी किसी की बात न सुनें गे और अगर तुम्हारे साथ जंग आरंभ की गयी तो हम अवश्य तुम्हारी सहायता करें गे। अल्लाह गवाही देता है कि यह लोग झूठे हैं। १२. अगर वह (अहले-किताब बग़ावत के जुर्म में) जिलावतन किये गये तो यह लोग हर्गिज़ उन के साथ न निकलेंगे और अगर उन से लड़ाई हो पड़ी तो यह उन की सहायता न करें गे, और अगर उन्हों ने उन की कुछ सहायता की भी तो. (अल्लाह की मदद के सामने) तुम को पीठ दिखा जायेंगे फिर उन को भदद न पहुंचे गी। १३. तुम मुसलमानों का ख़ौफ़ उन के दिलों में अल्लाह के ख़ौफ़ से ज़्यादा है। यह उन का ख़याल इस लिये है कि यह लोग (हक़ीक़ते-हाल को) समझते नहीं १४. यह लोग तुम मुसलमानों से सामने हो कर न लड़ें गे। हाँ, क़िलाबन्द बस्तियों में रक्षित रह कर) या दीवारों के पीछे से लड़ें गे। उन की परस्पर जंग बहुत सख़्त है[१]। तुम मुसलमान निश्चिंत रहो यह तुम पर फ़तहयाब न हो सकें गे, तुम उन को एकजुट जानते हो

....

४. इस आयत में उन मुख़्लिस मोमिनों के लिये बशारत है जो क़ियामत तक पैदा होते रहें गे और इधर-उधर की बातों से बच कर बीच की राह इख़्तियार करें गे और उम्मत के लिये ख़ैर की दुआयें करते रहें गे।

'रब्ब-नग़्फ़िर लना............इस आयत को पढ़ कर राफ़िज़ी और ख़ारिजी फ़िर्क़ा के लोगों को शर्म आनी चाहिये जो अगले मुसलमानों, मुहाजिरों और अन्सार से दुश्मनी रखते हैं। इस आयत में अल्लाह तआ़ला मोमिनों की यह सिफ़त बयान कर रहा है कि वह यूँ दुआ करते हैं "ऐ हमारे मौला! हमारे दिलों में मुसलमानों की तरफ़ से कीना-कपट न आने दे"। और सच्चा मुसलमान वही है जो अगले मुसलमानों का ख़ैरख़ाह हो। यह सिफ़त अल्लाह ने अहले-हदीसों के अन्दर रखी है कि वह तमाम सहाबा, ताबेईन और अहले-बैत रज़ि० सब से बराबर की मुहब्बत रखते हैं और उन के क़दम पर चलना चाहते हैं। वह पिछले लोगों की निकाली हुयी बिदअ़त से दूर भागते हैं और हर संभव कोशिश यही होती है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम, खुलफ़ा-ए-राशिदीन के तरीक़े पर बाक़ी रहें (यही वजह है कि वह अन्धी तक़लीद के फन्दों में नहीं फंसते) और वह मनघड़त मज़हबों के बन्धनों में अपने आपको बाँधना पसन्द नहीं करते, इसलिये कि पहले ज़माना में लोग न हनफ़ी थे और न शाफ़ई और न मालिकी या हंबली, वह केवल मुसलमान थे। यह तक़लीद और जुमूद का सिलसिला उन लोगों के सैकड़ों वर्ष के

➲बाद ईजाद हुआ है, और इसी कारण उम्मते मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद पारा-पारा हो गया और यह उम्मत मुख़्तलिफ़ ख़याल के मज़हबों में बट गयी।

हज़रत आ़इशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने गोया उम्मत को आदेश दिया है कि वह सहाबा के लिए दुआ़एँ करें। मगर उम्मत के एक फ़िर्क़ा का हाल यह है कि दुआ़ देने के बजाए बुरा-भला कहने लगे। हज़रत सओ़द बिन मुसय्यिब रह० से पूछा गया कि आप का उ़स्मान, तल्हा और ज़ुबैर रज़ि० के बारे में क्या ख़याल है? उन्हों ने कहा कि मैं वही कहता हूँ जो अल्लाह ने मुझे कहने का हुक्म दिया है, फिर आप ने यही आयत तिलावत फ़रमाई। हज़रत इब्ने उ़मर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जो मुहाजिर और अन्सार को बुरा भला कहते हैं वह उन तीसरे लोगों में दाख़िल नहीं हैं। (वहीदी) यह आयत अपने मतलब में बिल्कुल साफ़ है कि किसी मोमिन का अपने मोमिन भाई से कीना रखना इस आयत के हुक्म के ख़िलाफ़ है। आप अनुमान लगायें कि आ़म लोगों के बारे में जब यह हुक्म है तो सहाबा का तो मर्तबा बहुत बुलन्द है और उन से कीना रखना तो और भी महापाप है। (सनाई)

५. यह भविष्यवाणी मदीना के यहूद के सिलसिला में है कि वह खुल कर मुसलमानों से मुक़ाबला करने की हिम्मत नहीं रख सकें गे, वह क़िलों में बन्द हो कर या दीवार की आड़ में छुप-छुपा कर हम्ला करें गे। कुफ़्फ़ार और दूसरे लोगों का आज तक यही हाल है कि यह लोग मुसलमानों पर अपने मकानों में छुप कर ईंटे बरसाते हैं और ख़ुद दीवार की आड़ में छुपे रहते हैं। देखने में तो वह मुसलमानों के मुक़ाबला में एक ज़बान हो जाते हैं, मगर बाहमी तौर पर आपस में उन के दिल एक दूसरे से बिल्कुल जुदा हैं।

وَّقُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۴﴾ كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۵﴾ كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۶﴾ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۷﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ اَنْفُسَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۱۹﴾ لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ؕ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿۲۰﴾ لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ

हालाँकि दिल उन के जुदा-जुदा हैं, यह हालत इस लिये है कि यह लोग बेअक़्ल हैं[6] १५. उन की हालत उन लोगों की सी है जो उन से पहले क़रीब ही गुज़रे हैं, जिन्हों ने अपने किये का फल (दुनिया ही में) चखा था और (अभी) आख़िरत में उन के लिये दुःख की मार बाक़ी है। १६. उन की मिसाल शैतान की सी है जब वह इन्सान को कहता है कि कुफ़्र कर, फिर जब वह कुफ़्र करता है तो कहता है कि तहक़ीक़ मैं तुझ से बेज़ार हूँ, मैं अल्लाह रब्बुल-आ़लमीन से डरता हूँ। १७. पस अन्जाम उन दोनों का यह होता है कि वह दोनों जहन्नम में जाते हैं जिस में वे हमेशा रहें गे। और यही ज़ालिमों का बदला है। १८. ऐ मुसलमानो! (तुम शैतान और उस के चेलों की बातों में मत आओ, और) अल्लाह से डरते रहो, और हर शख़्स सोचा करे कि कल के दिन[*] के लिये उस ने आगे क्या भेजा और अल्लाह से डरते रहो।➲

➲यक़ीन जानो कि अल्लाह तुम्हारे कामों की ख़बर रखता है। १९. और उन की तरह न बनो जो अल्लाह को भूल बैठे (गोया अल्लाह को जानते ही नहीं) अल्लाह ने उन के नफ़्स उन को भुला दिये। यही लोग बदकार हैं। २०. (सुनो!) जन्नती और जहन्नमी (अल्लाह के नज़दीक) बराबर नहीं हैं (क़ानून यह है कि) जन्नती लोग ही कामियाब (यानी बड़ी इ़िज़्ज़त से पास) हैं। २१. अगर हम इस क़ुरआन (कलामुल्लाह) को पहाड़ पर उतारते तो तुम उसे देखते कि वह अल्लाह के ख़ौफ़ से डर जाता[८] (बल्कि) फट जाता

....

६. इस आयत के मज़मून (विषय) को देखें और मुसलमानों की अन्दरूनी हालत को देखें तो यह कहने पर मजबूर होना पड़े गा कि यह आयत हम मुसलमानों ही के हक़ में उतरी है। आज मुसलमानों का यह हाल है कि अव्वल तो एक स्थान पर जमा नहीं हो सकते, और अगर जमा हो भी जायें तो अन्त में बिखर जाते हैं। अल्लाह का यह फ़ैसला हक़ और बजा है-- या अल्लाह! मुसलमानों को नेक समझ अ़ता फ़रमा।

७. आने वाले कल से "मौत का दिन" और फिर "क़ियामत का दिन" मुराद है, जिस से कोई बच नहीं सकता। आज की ज़िन्दगी दुनियावी ज़िन्दगी और कल की ज़िन्दगी आख़िरत की ज़िन्दगी कहलाती है और यह ज़िन्दगी कभी समाप्त न होने वाली है। (राज़)

८. क्योंकि पर्वत जानता है कि ऐसे कलाम पर अ़मल करना मेरे ज़िम्मे डाला गया है जिस का भेजने वाला ऐसी क़ुदरत वाला है कि उस के पकड़े हुये को कोई छुड़ा नहीं सकता, अगर मुझ से कोई ग़लती हो गयी तो मेरी क्या हालत हो गी। हक़ीक़त में यहाँ पर पहाड़ों का ज़िक्र मिसाल के तौर पर है, वर्ना पहाड़ पर कुरआन या अल्लाह का कलाम उतारने का कोई मतलब नहीं। क्योंकि वह मुकल्लफ़ नहीं, इसलिये यह फ़र्ज़ी मिसाल समझाने की ग़रज़ से है। इस कुरआन की अस्ल तालीम यह है कि बन्दों को अल्लाह की राह दिखाये, चुनान्चे पहला पाठ यह है कि अल्लाह, जिस की तरफ़ तुम को बुलाया जाता है, वही अकेला माबूद है। (सनाई)

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ
عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيمُ ﴿٢٢﴾
هُوَ اللّٰهُ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ
السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ
سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ
الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنٰى ۚ يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٤﴾

(हक़ीक़त में) यह (पहाड़ का ज़िक्र) तमसील {उदाहरण} के तौर पर है जो हम लोगों के लिये बयान करते हैं ताकि वह फ़िक्र करें २२. (वह अल्लाह जिस की तरफ़ तुम्हें बुलाया जाता है) वही अल्लाह है जिस को छोड़ कर कोई माबूद (पूजा के योग्य) नहीं, हाज़िर और पोशीदा (सब को) जानने वाला है, वही सब से बड़ा रहम करने वाला, मेहरबान है। २३. (और सुनो! उस की पहचान यह है कि) वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं वह दुनिया का (हक़ीक़ी) बादशाह है, पाक है, सलामती वाला है, अम्न देने वाला, सब की निग्रानी करने वाला, वही सब पर ग़ालिब, बिगड़ी बनाने वाला, बहुत बड़ाई वाला है। जिन-जिन➲

बातों में लोग शिर्क करते हैं अल्लाह उन से पाक है। २४. वह ही अल्लाह बनाने वाला, पैदा करने वाला[९], सब की तस्वीरें बनाने वाला है, नेक नाम उसी के लिये हैं[१०]। आसमान व ज़मीन की कुल चीज़ें उस (के नाम) की पाकी बयान करती हैं, और वह सब पर ग़ालिब, बड़ी हिक्मत वाला है।

....

९. वह सब चीज़ों का बनाने वाला और माद्दा (पदार्थ) के बग़ैर माद्दा का पैदा करने वाला है। यहाँ पर दो शब्द "ख़ालिक़" और "बारी" का इस्तेमाल हुआ है, इसी लिये दोनों का तर्जुमा अलग-अलग किया गया है। 'ख़ालिक़' का अ़मल माद्दा (पदार्थ) से तअ़ल्लुक़ रखता है और 'बारी' का तअ़ल्लुक़ माद्दा और ग़ैरमाद्दा दोनों से है। और इस्लाम का यह बुनियादी तक़ाज़ा है कि अल्लाह माद्दा और बग़ैरमाद्दा दोनों तरीक़ों से पैदा करता है। यही वजह है कि दूसरे स्थान पर फ़रमाया गया: "अल्लाह ही सब चीज़ों का (माद्दा और बग़ैर माद्दा के) पैदा करने वाला है। वह अकेला और सब पर ग़ालिब है"। बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "एक समय केवल अल्लाह था, उस के अ़लावा कोई चीज़ न थी"। (सनाई)

१०. यहाँ पर बयान किये गये अल्लाह के नामों पर क़ुर्बान होने को जी चाहता है। एक हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह पाक के ९९ नाम हैं, जो कोई उन को याद करे वह जन्नत में जाये गा"। एक हदीस के मुताबिक़ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक शख़्स को सोते समय सूरः हश्र की अन्तिम आयतों को पढ़ने का हुक्म दिया और फ़रमाया: "तू शहीद हो कर मरे गा"। इब्ने मरदूया की रिवायत में है कि जो शख़्स तीन मर्तबा अऊज़ुबिल्लाहि. ....पढ़ कर सूरः हश्र की अन्तिम आयतों की तिलावत करे गा तो उस पर अल्लाह ७० फ़रिश्तों को मुक़र्रर कर दे गा जो शैतानों को उस के पास आने से रोकें गे, वह शैतान चाहे जिन्नों में से हों या इन्सानों में से। अगर रात को पढ़े गा तो सुब्ह तक, और सुब्ह को पढ़े गा तो शाम तक उस को सुरक्षा प्रदान की जाये गी। तिर्मिज़ी और बैहक़ी की रिवायत में है कि जो शख़्स तीन बार अऊज़ुबिल्लाहि..........पढ़ कर सूरः हश्र की अन्तिम आयतों को पढ़ता है तो उस की हिफ़ाज़त के लिये सत्तर हज़ार फ़रिश्ते (सुरक्षा कर्मी की शक्ल में) लगा दिये जाते हैं जो शाम तक उस के लिये दुआयें करते रहते हैं। और अगर उस रात को वह मर जाये तो शहीद हो कर मरे"। इमाम बैहक़ी की एक रिवायत के मुताबिक़ जो शख़्स सूरः हश्र की अन्तिम आयतों को दिन या रात में पढ़े और उस दिन या रात को मर जाये तो अल्लाह पाक उस पर जन्नत को वाजिब कर देता है (वहीदी) ऊपर की रिवायतों में जो इन आयतों की फ़ज़ीलत बयान की गयी है इन में प्रभाव (तासीर) उसी समय पैदा होगी जब कि अक़ीदा और अ़मल दुरुस्त हो। बग़ैर अक़ीदा और अ़मल की इस्लाह के पढ़ने से कुछ भी लाभ न हो गा।

सूरः मुम्-तहि-नः (60)

सूरः मुम्तहिना मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी[१]। इस में १३ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है।

१. ऐ मुसलमानो! (दिल के कानों से सुनो!) मेरे (दीन के) दुश्मनों (काफ़िरों) को दोस्त न बनाना। तुम उन की तरफ़ मुहब्बत
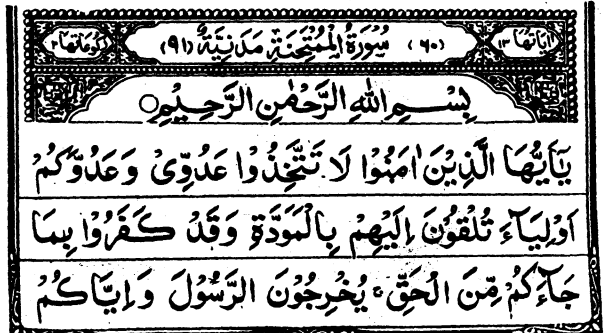
➲के पैग़ाम भेजते हो[२] और वह उस हक़्क़ानी तालीम के मुन्किर हैं जो तुम्हारे पास आयी है (यानी वह क़ुरआन को नहीं मानते) वह लोग रसूल को और तुम को (मक्का से तंग कर के) निकालते थे

....

१.शाने-नुज़ूलः- सूर मुम्तहिना मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी, इस बात पर सभी का इत्तिफ़ाक़ है। इस में १३ आयतें हैं। हाँ, कुछ उ़लमा यह कहते हैं कि "मुम्तहिना" उस महिला का नाम है जिस के बारे में यह आयत उतरी। आयत न० १० में जिस महिला का बयान है वह उम्मे कुल्सूम नामी एक महिला थी जो उ़क़्बा बिन अबू मुऐ़त की बेटी और हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ की पत्नी थी।

२. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जब मक्का को फ़तह करने का इरादा फ़रमाया तो लोगों को सख़्त ताकीद फ़रमा दी कि ख़बर बाहर न निकलने पाये और मक्का वालों को कानोंकान ख़बर न होने पाये। लेकिन एक सहाबी हातिब बिन बल्तआ़ नामी ने मक्का वालों को ख़बर देने के लिये एक महिला को एक पत्र लिख कर भेज दिया। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को वह्यि द्वारा इस की सूचना दे दी गयी। आप ने तुरन्त हज़रत अ़ली और अ़म्मार, या अ़ली, ज़ुबैर और मिक़्दाद रज़ि० को उस औ़रत का पीछा करने के लिये दौड़ाया। इन लोगों ने उस महिला से पत्र को छीन लिया और पकड़ कर आप की सेवा में पेश किया। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हातिब को बुलवाया। हज़रत उ़मर ने कहा कि यह मुनाफ़िक़ है इस लिये आप हुक्म दें ताकि मैं इस की गर्दन मार दूँ। हातिब ने कहा कि आप जल्दी न करें और मेरी भी कुछ सुन लें। सच्ची बात यह है कि मेरे बाल-बच्चे मक्का में काफ़िरों के पास हैं, मैं ने यह चाहा कि किसी बहाने से उन को बुला लूँ। और दूसरे मुहाजिरीन के वहाँ रिश्तेदार हैं जो उन के बाल-बच्चों को बचा सकते हैं लेकिन मेरा तो कोई भी वहाँ नहीं है। बस इतनी सी बात थी, वर्ना मैं न तो काफ़िर हूँ और न दीन इस्लाम से मुर्तद हुआ हूँ। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हातिब सच कहता है। उ़मर ने कहा कि यह तो मुनाफ़िक़ है और गर्दन मारने का काम किया है। आप ने फ़रमाया: क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हातिब जंग बद्र में शरीक थे और अल्लाह ने बद्री सहाबा के बारे में फ़रमा दिया है कि वह कैसे भी काम करें हम ने उन्हें बख़्श दिया है। यह हदीस सहीह है और इस को बुख़ारी मुस्लिम ने भी रिवायत किया है। यह आयत इन्हीं सहाबी के बारे में नाज़िल हुयी है। (वहीदी)

इस घटना में उम्मते मुस्लिमा के लिये बहुत सी नसीहतें हैं और साथ ही इस्लामी अख़्लाक़ की पूरी झलक भी मौजूद है। इस घटना से उन जल्दबाज़ लोगों को सबक़ हासिल करना चाहिये जो किसी गुनहगार को तुरन्त इस्लाम से ख़ारिज कर देते हैं। हालाँकि कुफ़्र और इस्लाम का मामला शरीअ़त में बहुत अहम है इसीलिये अहले सुन्नत का यह उसूल है कि कबीरा पाप करने वाला उस समय तक इस्लाम से ख़ारिज नहीं होता, जब तक वह गुंनाह को गुनाह समझता है और इन्सान होने के नाते यह काम कर बैठा है।

أَنْ تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ رَبِّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِي
سَبِيلِي وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي تُسِرُّونَ إِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ
وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَنْتُمْ وَمَنْ يَفْعَلْهُ
مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ إِنْ يَثْقَفُوكُمْ

इस वजह से कि अल्लाह पर जो तुम सब का पर्वरदिगार है ख़ालिस ईमान लाये हो, अगर तुम मेरी राह में जिहाद करने को और मेरी रज़ा हासिल करने को निकलते हो तो तुम उन की तरफ़ मुहब्बत और प्यार के सन्देश भेजते हो हालाँकि मैं ख़ूब जानता हूँ जो कुछ तुम लोग छुपाते हो और प्रकट करते हो। और➲

يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوٓا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ
وَأَلْسِنَتَهُم بِالسُّوٓءِ وَوَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ ۝٢ لَن تَنفَعَكُمْ
أَرْحَامُكُمْ وَلَآ أَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ۚ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝٣ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ
حَسَنَةٌ فِىٓ إِبْرَٰهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُۥٓ إِذْ قَالُوا
لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَءَٰٓؤُا مِنكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِن
دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ
الْعَدَٰوَةُ وَالْبَغْضَآءُ أَبَدًا حَتَّىٰ تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحْدَهُۥٓ
إِلَّا قَوْلَ إِبْرَٰهِيمَ لِأَبِيهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَآ

तुममें से जो कोई भी इस काम को करे गा तो यह समझो कि वह सीधी राह से बहक जाये गा। २. अगर वह तुम पर क़ाबू पाते हैं तो तुम्हारे दुश्मन हो जाते हैं और तुम्हारी तरफ़ हाथ और ज़बान लंबी करते हैं और चाहते हैं कि तुम इस्लाम को छोड़ कर काफ़िर हो जाओ। ३. (याद रखो!) तुम्हारे रिश्तेदार और तुम्हारी औलाद (तुम को) क़ियामत के दिन (अल्लाह के हाँ) कुछ काम न दें गे, वही अल्लाह तुम्हारे दर्मियान सच्चा फ़ैसला करे गा। और अल्लाह तुम्हारे आमाल को देख रहा है। ४. (तुम्हारे बुज़ुर्ग हज़रत) इब्राहीम और उन के साथियों की (जो साफ़ दिल और तौहीदपरस्त थे) ज़िन्दगी में तुम्हारे लिये नेक मिसाल मौजूद है[३], जब उन्हों ने अपनी क़ौम से कह दिया था कि हम तुम से और अल्लाह को छोड़ कर जिन की तुम अ़िबादत करते हो उन सब से अलग-थलग हैं, हम तुम्हारा इन्कार करते हैं और हम में और तुम में हमेशा के लिये दुश्मनी और कीना पैदा हो गया जब तक अल्लाह अकेले पर ईमान न लाओ। हाँ, इब्राहीम का अपने बाप को यह कहना कि मैं तुम्हारे लिये बख़्शिश माँगू गा।

....

३. यानी ऐ मुसलमानो! तुम को इब्राहीम और उन के साथियों की पैरवी करनी चाहिये जब उन्हों ने अपनी बुतपरस्त क़ौम से साफ़ कह दिया कि हम तुम से और तुम्हारे उन माबूदों से जिन को तुम अल्लाह के अ़लावा पूजते हो, बेज़ार हैं। हज़रत इब्राहीम अ़लै० के ज़माना में नैनवा और बाबुल के बादशाह, उन की क़ौम और सर्दार सभी बुतपरस्त थे।.केवल इब्राहीम अ़लै०, उन के भतीजे लूत अ़लै० और हज़रत इब्राहीम की बीवी ही ईमान लाये थे। ऐसे माहौल में जहाँ राजा से लेकर प्रजा तक सभी बुतपरस्त हों, इस प्रकार खुल कर उन की मुख़ालिफ़त करना कोई आसान काम न था। यह हिम्मत अल्लाह जिस को दे उसी को मिलती है। चुनान्चे अल्लाह तआ़ला मुसलमानों को हुक्म देता है कि तुम भी हज़रत इब्राहीम की तरह उन से बेज़ारी का एलान कर दो, यह मुश्रिक तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते हैं। सच्चे ईमान और अल्लाह से सच्ची मुहब्बत का तक़ाज़ा यह है कि दीन के दुश्मनों, बद-दीनों, मुल्हिदों (अल्लाह का इन्कार करने वालों) और काफ़िरों से रिश्ता-नाता तोड़ लिया जाये। अल्लाह से मुहब्बत के साथ काफ़िर और बेदीन से मुहब्बत, एक दिल में दोनों इकट्ठे नहीं हो सकते। हाँ, उन से बेज़ार होते हुये, अच्छे अख़्लाक़ और साथ रहन-सहन की मिनाही नहीं है। हाँ, इस बात में इब्राहीम अ़लै० की पैरवी नहीं हो गी जो उन्हों ने अपने बाप के लिये कही थी कि मैं तुम्हारे लिये अल्लाह से बख़्शिश माँगू गा, क्यों कि उन का यह अ़मल उस समय का है जब उन को अपने बाप के बारे में अ़िल्म नहीं था। चुनान्चे जब उन पर यह ज़ाहिर हो गया कि उन का बाप अल्लाह का दुश्मन है तो उन्हों ने अपने बाप से भी बेज़ारी का एलान कर दिया। (विस्तार से जानकारी के लिये सूरः तौबःकी आयत न०११४ का तर्जुमा अवश्य मुलाहिज़ा करें-ख़ालिद)

اَمۡلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنۡ شَىۡءٍؕ رَبَّنَا عَلَيۡكَ تَوَكَّلۡنَا وَاِلَيۡكَ اَنَبۡنَا وَاِلَيۡكَ الۡمَصِيۡرُ ۝ رَبَّنَا لَا تَجۡعَلۡنَا فِتۡنَةً لِّلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَاغۡفِرۡ لَنَا رَبَّنَاۚ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ۝ لَقَدۡ كَانَ لَكُمۡ فِيۡهِمۡ اُسۡوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنۡ كَانَ يَرۡجُوا اللّٰهَ وَالۡيَوۡمَ الۡاٰخِرَ ؕ وَمَنۡ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الۡغَنِىُّ الۡحَمِيۡدُ ۝ عَسَى اللّٰهُ اَنۡ يَّجۡعَلَ بَيۡنَكُمۡ وَبَيۡنَ الَّذِيۡنَ عَادَيۡتُمۡ مِّنۡهُمۡ مَّوَدَّةً ؕ وَاللّٰهُ قَدِيۡرٌ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ۝ لَا يَنۡهٰٮكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيۡنَ لَمۡ يُقَاتِلُوۡكُمۡ فِى الدِّيۡنِ وَلَمۡ يُخۡرِجُوۡكُمۡ مِّنۡ دِيَارِكُمۡ اَنۡ تَبَرُّوۡهُمۡ وَتُقۡسِطُوۡۤا اِلَيۡهِمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الۡمُقۡسِطِيۡنَ ۝ اِنَّمَا يَنۡهٰٮكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيۡنَ قٰتَلُوۡكُمۡ فِى الدِّيۡنِ وَاَخۡرَجُوۡكُمۡ مِّنۡ دِيَارِكُمۡ وَظٰهَرُوۡا عَلٰٓى اِخۡرَاجِكُمۡ اَنۡ تَوَلَّوۡهُمۡ ۚ

और मैं तुम्हारे लिये ख़ुद कोई इख़्तियार नहीं रखता[४] ऐ हमारे पर्वरदिगार! हम ने तुझ पर भरोसा किया और तेरी तरफ़ हम झुकते हैं। और तेरी ही तरफ़ हमें लौटना है। ५. तू हम को काफ़िरों के लिये अ़ज़ाब का ज़रीआ़ न बना, ऐ हमारे पर्वरदिगार! हम को बख़्श दे। बेशक तू ही बड़ा ग़ालिब और बड़ी हिक्मत वाला है। ६. ऐ मुसलमानो! यह (इब्राहीमी) लोग तुम्हारे लिये उम्दा नमूना हैं, तुम में से ख़ास कर उन लोगों के लिये जो अल्लाह से मिलने की और आख़िरत की बेहतरी की ख़ाहिश रखते हैं। फिर जो कोई मुंह फेरे गा तो अल्लाह बेनियाज़ और बड़ी तारीफ़ के लाइक़ है[५]। ७. क़रीब है कि अल्लाह तुम में और तुम्हारे दुश्मनों में मुहब्बत पैदा कर दे गा (यानी उन को इस्लाम की तौफ़ीक़ देगा तो वह ख़ुद तुम से मुहब्बत करें गे) और अल्लाह बड़ी क़ुदरत वाला, बड़ा बख़्शने वाला और मेहरबान है[६]। ८. अल्लाह तुम को उन लोगों के साथ नेक सुलूक करने से मना नहीं करता जो दीन की वजह से तुम से नहीं लड़े और न उन्हों ने तुम को तुम्हारे घरों से निकाला, ऐसे लोगों से अच्छा व्यवहार करने से नहीं रोकता, न उन के हक़ में इन्साफ़ करने से तुम को मना करता है[७]। अल्लाह तआ़ला इन्साफ़ करने वालों से मुहब्बत करता है। ९. जो लोग तुम से दीन की वजह से लड़े और तुम को तुम्हारे घरों से निकाला और उन्हों ने तुम्हें मुल्कबदर करने पर तुम्हारे दुश्मनों की मदद की, बस ऐसे लोगों को दिलीदोस्त बनाने से अल्लाह तुम को मना करता है।

....

४. बाप चूँकि मुश्रिक था और मुश्रिक की बख़्शिश नहीं है इस लिये शरीअ़त में यह नियम है कि मोमिन, अपने मुश्रिक संबन्धियों के लिये दुआ़ न माँगे। इस जुम्ला के अ़लावा उन की यह दुआ़ बेशक तुम्हारे लिये अ़मल के क़ाबिल है जो उन सब लोगों ने माँगी थी। यहाँ कुरआन की आयत "नबी और मोमिनों को मुश्रिक के हक़ में बख़्शिश न माँगनी चाहिये, चाहे क़रीबी ही क्यों न हों, जब उन को मालूम हो जाये कि वह जहन्नमी हैं" (सूर: तौब:- ११४) इस आयत की तरफ़ मैं ने इशारा किया है। क्योंकि इस में नबिय्यों और ईमानदारों का मुश्रिकों के हक़ में बख़्शिश माँगना नाजायज़ क़रार दिया है। बहुत संभव है कि हज़रत इब्राहीम को अभी यह ख़बर न लगी हो, जैसे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक मुनाफ़िक़ का जनाज़ा पढ़ा, लेकिन पढ़ने के बाद वह्यि नाज़िल हुई कि "उन में ➲

➲से कोई मर जाये तो उस के जनाज़ा की नमाज़ हर्गिज़ न पढ़ें, और न उस की क़ब्र पर खड़े हों" (सूरः तौबः ८४) जब हज़रत इब्राहीम को ख़बर मिल गयी और बाप का अन्त भी शिर्क पर होना मालूम हो गया, तो बेज़ार हो गये। दूसरे स्थान पर फ़रमाया: "जब इब्राहीम को मालूम हो गया कि उन का बाप अल्लाह के दीन का दुश्मन है (यानी शिर्क पर है, या शिर्क पर मर गया है) तो वह उस से बेज़ार हो गया" (सूरः तौबः ११४) (सनाई)

५. शाने-नुज़ूलः- जब अगली आयतें उतरीं तो मुसलमानों ने अपने उन रिश्तेदारों से जो काफ़िर थे रिश्ता-नाता तोड़ लिया, तो अल्लाह ने उन की तसल्ली के लिये यह आयत नाज़िल फ़रमाई और फ़रमाया कि अल्लाह की रहमत से निराश न हो, हो सकता है कि अल्लाह उन को इस्लाम की तौफ़ीक़ दे दे और तुम्हारे जानी दुश्मन, तुम्हारे दोस्त बन जायें और अल्लाह तआ़ला का यह वादा पूरा हुआ। अबू सुफ़्यान जो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के जानी दुश्मन थे, इस्लाम लाये और मुसलमानों के दोस्त बन गये। और सब से पहले अबू सुफ़्यान ही ने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद मुर्तदों को क़त्ल किया और उन के ख़िलाफ़ जिहाद किया। (वहीदी)

६. शाने-नुज़ूलः- हज़रत अस्मा बिन्त अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० की माँ जिन का नाम "क़तीला" या "राग़िबा" था, यह ईमान नहीं लायी थीं। यह अपनी बेटी से मिलने को आयीं तो कुछ तुहफ़ा भी साथ लायीं, लेकिन हज़रत अस्मा ने तुहफ़ा लेने से इन्कार कर दिया और घर में भी दाख़िल नहीं होने दिया। जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मालूम हुआ तो उन्हें हुक्म दिया कि अपनी मुश्रिक माँ को घर में आने दें उन की ख़ातिर (स्वागत) करें और तुहफ़ा भी क़ुबूल करें। (वहीदी)

अगर ग़ौर करें तो इस आयत में इस्लाम के एक बुनियादी नियम और उसूल का एलान है। इस्लाम किसी फ़र्द या क़ौम से किसी हालत में भी तअ़ल्लुक़ ख़त्म करने का हुक्म नहीं देता है (मगर शर्त यह है कि इस्लाम से टकराव नहीं ले रहा है और इस्लाम दुश्मनी में सरगर्म नहीं है) इस लिये कि इस्लाम, इन्सानों के दर्मियान अम्न, शान्ति, प्रेम और मुहब्बत, भाई-चारा की शिक्षा देता है। धर्म और मज़हब के इख़्तिलाफ़ की बुनियाद पर इस्लाम अम्न और शान्ति के ख़िलाफ़ हुक्म नहीं देता। जो लोग इस्लाम को एक ख़ूनी और लड़ाकू मज़हब क़रार देते हैं वह महज़ जिहालत की बुनियाद पर ऐसा कहते हैं। अगर वह इन्साफ़ की नज़र से इस्लाम का मुताला करें तो यक़ीनन उन को अपनी राय बदलनी हो गी।

७. यह लोग चाहे तुम्हारे दीन से मुन्किर हों और कुफ़्र पर हों, तो भी तुम्हें इन से कुछ लेना देना नहीं। इस्लाम और कुफ़्र का मामला अल्लाह के साथ हर एक का ज़ाती मामला है, तुम को इस में दख़ल देने की कोई ज़रूरत नहीं। तुम ऐसे लोगों के साथ इन्साफ़ से ही पेश आया करो और दिल में जान रखो कि अल्लाह हर बात में इन्साफ़ से काम लेने वालों से मुहब्बत करता है। इस ख़याल से कि फ़लाँ शख़्स इस्लाम को या अल्लाह को नहीं मानता, इस लिये उस के साथ अन्याय करना और उस का हक़ मार लेना जायज़ है, शरीअ़त इस की इजाज़त नहीं देती। शरीअ़त केवल उन लोगों से दोस्ताना तअ़ल्लुक़ रखने से मना करती है जो इस्लाम के ख़िलाफ़ सरगर्म हों और खुल कर इस्लाम दुश्मनी पर आमादा हों (सनाई)

وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۞ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ
فَامْتَحِنُوْهُنَّ ۗ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ
مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ۗ لَا هُنَّ حِلٌّ

इस लिये जो लोग उन से दोस्ती करें गे वही लोग ज़ालिम हों गे (क्योंकि वह क़ौमी हुक़ूक़ को पामाल करने वाले हों गे) १०. पस मुसलमानो! तुम को हुक्म दिया जाता है कि मोमिन औ़रतें मुहाजिर बन कर तुम्हारे पास आयें तो उन का (भी) इम्हिान ले लिया करो➲

لَهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ۚ وَاٰتُوْهُمْ مَّآ اَنْفَقُوْا ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۚ وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْـَٔلُوْا مَآ اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْـَٔلُوْا مَآ اَنْفَقُوْا ۚ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ۚ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَاِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ اِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَآ اَنْفَقُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ

अल्लाह उन के ईमान को ख़ूब जानता है। फिर अगर तुम उन को मोमिन पाओ (यानी यह जान लो कि वास्तव में वह इस्लाम के अ़क़ीदा के मुताबिक़ हिज्रत कर के आयीं हैं) तो उन को काफ़िरों की तरफ़ वापस न करो[८]। न वह (मोमिन) औ़रतें उन (कुफ़्फ़ार) के लिये हलाल हैं, न वह (कुफ़्फ़ार) उन के लिये (हलाल हैं) जितना माल उन्हों ने ख़र्च किया है तुम उन को दे दिया करो, और तुम को उन के मह्‌र दे कर उन से निकाह करने में कोई गुनाह नहीं है और (अगर तुम्हारी औ़रतें काफ़िर हों तो) काफ़िर औ़रतों को निकाह में मत रखो[९] (बल्कि तलाक़ दे कर छोड़ दो, ऐसी औ़रतों पर) जो तुम ने ख़र्च किया है तलब कर लो और जो कुछ उन कुफ़्फ़ार ने ख़र्च किया था वह तलब कर लें। यह अल्लाह का हुक्म है जो तुम में जारी करता है। और अल्लाह बड़े अ़िल्म वाला, बड़ी हिक्मत वाला है। ११. और अगर तुम्हारी कोई औ़रत कुफ़्फ़ार[१०] की तरफ़ चली जाये फिर अगर कभी तुम्हारा पाला पड़ जाये तो उन मुसलमान लोगों को उन के ख़र्च किये हुये माल जितना बदला दिया करो, जिन की बीवियाँ (कुफ़्फ़ार की तरफ़) चली गयी हैं (बहरहाल उन का ख़र्च पूरा करो) और अल्लाह से डरते रहो जिस पर तुम ईमान रखते हो। १२. ऐ नबी! जब तुम्हारे पास ईमान्दार औ़रतें इस निय्यत से आयें कि वह इस शर्त पर बैअ़त करें[११] कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक न करें गी

....

८. शाने-नुज़ूलः- बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़ुरैश के काफ़िरों से हुदैबिय्या के दिन समझौता कर लिया तो कई औ़रतें जिन्हों ने इस्लाम लाने का दावा किया था आप के पास चली आयीं, उस समय यह आयत नाज़िल हुयी। एक रिवायत के अनुसार उक़्बा बिन मुअ़ीत की बेटी उम्मे कुल्सूम नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास चली आयीं और वह कुंवारी थीं, उन के माँ-बाप जब उसे लेने आये तब यह आयत नाज़िल हुयी।

'उन का इम्तिहान लो' इस से मुराद यह है कि उन से क़सम ली जाये कि उन्हों ने इस्लाम को सच्चा दीन समझ कर क़ुबूल किया हैं, न कि अपने शौहरों से लड़ाई-झगड़ा कर के, या खान-पान की तंगी से घबरा कर, या घूमने-फिरने की निय्यत से आयी हैं। कुछ उ़लमा के नज़दीक आज़माने से मुराद यह है कि वह इस बात की गवाही दें कि अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अन्तिम संदेष्टा और आदर्श हैं। अगर वह इन बातों की गवाही देती हैं तो उन के पहले शौहर का महर वापस कर दिया जाए और उस का पुनः किसी मुसलमान मर्द से निकाह कर दिया जाये।

इस आयत से मालूम हुआ कि मुसलमान महिला का काफ़िर मर्द से निकाह नहीं हो सकता। अगर काफ़िर

➲की पत्नी इस्लाम ले आये तो उस को उस के काफ़िर शौहर से जुदा कर दिया जाये गा, लेकिन अगर वह भी इस्लाम ले आये तो दोनों ही को पुराने निकाह पर (जो कुफ़्र की हालत में हुआ था) बाक़ी रखा जाये गा (और नए निकाह की आवश्यक्ता नहीं होगी) अगर्चे औ़रत पहले हिजरत कर के आई हो और मर्द बाद में। इस का सबूत नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बेटी हज़रत ज़ैनब हैं। यह अपने शौहर से पूर्व हिजरत कर के मदीना आ गयी थीं और उन के शौहर अबुल आ़स कई वर्ष के बाद इस्लाम लाये थे, लेकिन फिर भी दोनों को पुराने निकाह ही पर बाक़ी रखा गया। और अगर मर्द ईमान लाये, लेकिन उस की पत्नी ईमान न लाये, तो उस को छोड़ देना चाहिये, उस का रखना जायज़ नहीं। जब यह आयत नाज़िल हुयी उस समय हज़रत उ़मर के पास दो बीवियाँ थीं जो ईमान नहीं लायी थीं, तो हज़रत उ़मर ने दोनों को छोड़ दिया। हाँ, अगर औ़रत यहूदी या नस़्रानी मज़हब की हो तो उस के रखने में कोई हर्ज नहीं, क्योंकि अहले-किताब औ़रतों से मुसलमान का निकाह दुरुस्त है। (वहीदी)

९. पहले हुक्म के मुक़ाबले में दूसरी तरफ़ यह हुक्म कि मुसलमान की औ़रत काफ़िर रह गयी है वह उस को छोड़ दे, फिर जो काफ़िर उस से निकाह करे उसे मुसलमान का ख़र्च किया हुआ महर वापस कर दे। इसी प्रकार दोनों फ़रीक़ एक दूसरे से अपना हक़ तलब करें। जब यह आ़देश नाज़िल हुआ तो मुसलमान देने को भी तय्यार हुये और लेने को भी, लेकिन काफ़िरों ने देना स्वीकार न किया तब यह आयत नाज़िल हुयी कि जिस मुसलमान की औ़रत काफ़िर ही रह गयी और जिस काफ़िर ने उस से निकाह किया उस मुसलमान को उस का ख़र्च किया नहीं फेरते, तो जिस काफ़िर की औ़रत ईमान लाये तो जो मुसलमान उस से निकाह करे वह भी उस काफ़िर मर्द को उस का ख़र्च किया हुआ वापस न करे, बल्कि उस मुसलमान को दे दे जिस का हक़ मारा गया है। हाँ, उस मुसलमान को दे कर जो हक़ बचे वह वापस कर दे। कुछ उ़लमा का यह भी कहना है कि अगर कोई मुसलमान काफ़िर का ख़र्च किया हुआ वापस नहीं कर सकता तो बैतुल-माल से दिया जाये गा-- अल्लाहु अक्बर! किस क़द्र अ़द्ल और इन्साफ़ की शिक्षा दी गयी है। लेकिन इस शिक्षा पर वही अ़मल करे गा जिस के दिल में अल्लाह का डर है और उस पर ठीक-ठीक ईमान भी रखता है। (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)

१०. 'कुफ़्फ़ार की तरफ़ चली जाये' यहाँ पर वह काफ़िर मुराद हैं जो 'हरबी' हों, यानी जिन से मुसलमानों की जंग हो। (सनाई)

११. इस्लाम की मज़बूती के लिये इस प्रकार की बैअ़त नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम औ़रतों के अ़लावा मर्दों से भी लिया करते थे। इस्लामी परिभाषा में इस को तौबा की बैअ़त कहा जाता है।

बैअ़त की कई क़िस्में हैं (१) जिहाद की बैअ़त। इस का बयान सूरः फ़तह की आयः न० १८ में है। (२) तौबा की बैअ़त, इस का ज़िक्र इस आयत में हैं। (३) ख़िलाफ़त की बैअ़त, जो चारों ख़लीफ़ों के हाथ पर सहाबा रज़ि० ने की थी। आजकल की रस्मी, पीरी-मुरीदी की बैअ़त का सुबूत शरीअ़त में कहीं नहीं है। कुछ जाहिल मौलवी इमामत और ख़िलाफ़त का ढोंग रचाते हैं। यह सब सीधे-सादे मुसलमानों को लूटने-खाने की बातें हैं। हाँ, ख़लीफ़ा बरहक़ जो इमामत और ख़िलाफ़त की शर्तें पूरी करने वाला हो उस के हाथ पर बैअ़त करना अनिवार्य हैं। अल्लाह पाक मुसलमानों को अक़्ल और समझ अ़ता फ़रमाये। (राज़)

بِاللّٰهِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ وَلَا يَقْتُلْنَ
اَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ
وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَ

न चोरी करें गी और न ज़िनाकारी करें गी, न (अ़रब के जाहिलों की तरह अपनी ज़नाना) औलाद को क़त्ल करें गी, न अपने पास से गढ़ कर दूसरे पर आरोप लगायें गी, और न दीनी काम में तुम्हारी नाफ़र्मानी करें गी, फिर तुम➲

اسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَىِٕسُوْا
مِنَ الْاٰخِرَةِ كَمَا يَىِٕسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ﴿١٣﴾

(ऐ नबी! इन शर्तों के बाद) बैअ़त क़ुबूल कर लिया करो[१२] और उन के लिये अल्लाह से बख़्शिश माँगा करो। अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है। १३. ऐ मुसलमानो! इस (नालाइक़) क़ौम से कभी दोस्ती न लगाना जिन पर अल्लाह ने ग़ज़ब किया है वह आख़िरत से ऐसे ही निराश हैं जैसे काफ़िर लोग क़ब्र वालों (की ज़िन्दगी से निराश हैं[१३]। क्योंकि उन का कहना है कि सब कुछ यही दुनिया है और बस)

....

१२. ऊपर बतला दिया है कि मुसलमान औ़रतों की जो हिज्रत कर के आयें, जांच की जाये। यहाँ बतला दिया कि उन का जाँचना यही है कि जो अहकाम इस आयत में हैं वह क़ुबूल कर लें तो उस का ईमान साबित जानो। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास औ़रतें आ कर बैअ़त करती थीं तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन से यही इक़रार लेते थे, लेकिन बैअ़त के समय आप ने कभी किसी औ़रत का हाथ न छुवा। (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

१३. यानी आख़िरत पर यक़ीन न रखने वालों को यह आशा नहीं कि क़ब्र से कोई उठे गा और फिर क़ब्र की ज़िन्दगी में एक दूसरे से मिलें गे, यह काफ़िर भी वैसे ही निराश हैं।

नोटः- कुछ मुफ़स्सिरीन के नज़दीक 'क़ब्र वाले' यह 'कुफ़्फ़ार' का बयान और तशरीह है। यानी जिस प्रकार काफ़िर जो क़ब्र में पहुंच चुके, वहाँ का हाल देख कर अल्लाह की मेहरबानी और रज़ा से बिल्कुल ही निराश हो चुके हैं, इसी प्रकार यह काफ़िर भी आख़िरत की तरफ़ से मायूस हैं। (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

सूरः सफ़्फ़- (61)

سُوْرَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ (٦١) (١٠٩)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ﴿١﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا
تَفْعَلُوْنَ ﴿٢﴾ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا
تَفْعَلُوْنَ ﴿٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ
سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ﴿٤﴾ وَاِذْ

सूरः सफ़्फ़ (पंक्ति) मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में १४ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. आसमान और ज़मीन की सारी मख़्लूक़ अल्लाह के नाम की तस्बीह करती हैं, और वह बड़ा ग़ालिब हिक्मत वाला है। २. ऐ मुसलमानो! क्यों ऐसी बात कहते हो जिस पर अ़मल नहीं करते (ईमान है तो इस्लाम भी हासिल करो, अल्लाह के अहकाम की ताबेदारी करो) ३. यह बात कि तुम लोग जो कहो

उस पर अ़मल न करो अल्लाह के नज़दीक बड़े ग़ज़ब की बात है। ४. अल्लाह उन लोगों को दोस्त रखता है जो उस की राह में सफ़ें (पक्तियाँ) बाँध कर लड़तें हैं गोया वह सीसा पिलाई हुई दीवार हैं।

....

१. शाने-नुज़ूलः- मुसलमान जिहाद की ख़्वाहिश रखते थे, लेकिन अ़ैन मौक़ा पर कुछ कमज़ोर दिल मुसलमान दिल चुराने लगे। उन्हीं के दिलों को मज़बूत करने के लिये यह सूरः नाज़िल हुयी। (सनाई)

قَالَ مُوسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِىْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ
اَنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ۖ فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ
قُلُوْبَهُمْ ۖ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ وَاِذْ
قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّىْ رَسُوْلُ
اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَىَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ
وَمُبَشِّرًاۢ بِرَسُوْلٍ يَّاْتِىْ مِنْۢ بَعْدِى اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ۖ
فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰٓى
اِلَى الْاِسْلَامِ ۖ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ ۖ وَاللّٰهُ
مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِىْٓ اَرْسَلَ
رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى
الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ

५. और जब मूसा ने अपनी क़ौम को कहा था कि क्यों मुझे तक्लीफ़ देते हो[२], हालाँकि तुम जानते हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ (और रिसालत की तस्दीक़ के बाद रसूल के फ़र्मान पर अ़मल करना चाहिये न कि नाफ़र्मानी) फिर जब वह टेढ़े होते गये तो अल्लाह ने भी उन (नाफ़र्मानों) के दिलों को टेढ़ा कर दिया। और अल्लाह बदकार लोगों को हिदायत की तौफ़ीक़ नहीं दिया करता[२] ६. और जब अ़ीसा बिन मरयम ने कहा था कि ऐ इस्राईल के बेटो! मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल (हो कर अया) हूँ, मैं अपने से पहली किताब तौरात की तस्दीक़ करता हूँ और एक रसूल की शुभ सूचना सुनाता हूँ, जो मेरे बाद आये गा उस का नाम अहमद (यानि बड़ी तारीफ़ वाला) हो गा[३]। फिर जब वह (रसूल) उन बनी इस्राईल के पास (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सूरत में) आ गया तो बोले: यह खुला जादू है[४]। ७. और जो अल्लाह पर झूठा इल्ज़ाम लगाये हालाँकि वह इस्लाम की ओर बुलाया जाता हो उस से बड़ा ज़ालिम कौन है? और अल्लाह ज़ालिम लोगों को ख़ैर की तौफ़ीक़ नहीं दिया करता। ८. यह लोग चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुंह की फूंकों से बुझा दें और अल्लाह अपना नूर पूरा करे गा चाहे काफ़िर लोग बुरा जानें। ९. वही अल्लाह है जिस ने अपना रसूल भेजा ताकि उस (की तालीम) को सब दीनों (की तालीम पर) ग़ालिब करे चांहे मुश्रिक लोग (इस्लाम और तौहीद की इशाअ़त को) बुरा जानें।

....

२. बनी इस्राईल बड़े गुस्ताख़ और बेअदब थे। हज़रत मूसा की मुख़ालिफ़त करते और बेहूदा आरोप सिद्ध करते

यहाँ तक इल्ज़ाम लगाया कि आप को बर्स (कोढ़ सफ़ेद दाग) की बीमारी है। इस आयत में इन्हीं बातों की तरफ़ इशारा है। (सनाई)

३. इस आयत में 'अहमद' शब्द पर बड़ी बहस की गयी है। इस में शक नहीं कि इस पेशीनगोई से मुराद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं। मगर आप का नाम मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) है। दादा ने आप का नाम "मुहम्मद" और माँ ने ख़ाब में बशारत पा कर "अहमद" रखा। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि मेरा नाम मुहम्मद भी है और अहमद भी (राज़) इन्जील, यूहन्ना बाब १४-२५-२६ और इन्जील यहून्ना बाब १६-७ में इस बशारत का ज़िक्र है, जहाँ पैराक्लीत (Paraclete)का लफ़्ज़ लिखा हुआ है दरअस्ल फ़ारक़लीत यानी अहमद के माना में है। विस्तार से गलमात के लिये "खुत्बाते अहमदिय्या" का मुताला करें। (राज़)

प्रश्न यह है कि आप का नाम मुहम्मद है लेकिन यहाँ अहमद आया है, इस का क्या कारण है? इस का जवाब जानने के लिये शब्द "अहमद" की तहक़ीक़ होनी चाहिये। तो यह मालूम रहे कि इस आयत में अहमद शब्द मफ़ऊल (कर्म) है यानी "बहुत तारीफ़ किया गया"। अब आयत का अर्थ यह होगा "हज़रत मसीह ने फ़रमाया: मैं ऐसे रसूल की तुम को शुभसूचना देता हूँ ज़िस का नाम बड़ी तारीफ़ वाला होगा"। यह अर्थ शब्द "मुहम्मद" का भी है। इस बहस से फ़ारिग़ हो कर हज़रत मसीह अ़लै० के इर्शाद का पता चलाते हैं कि उन का फ़रमान क्या है? इस में कोई शक नहीं कि हमारे सामने जो अंग्रेज़ी, उर्दू, अ़रबी भाषा में है यह सब इन्जील नहीं हैं, बल्कि उस का तर्जुमा हैं। इन तर्जुमों में भी आपस में इख़्तिलाफ़ है। तर्जुमा करने वाले आँख मूंद कर तर्जुमा कर जाते हैं और मारिफ़ा और नकिरा संज्ञा (Common noun-proper noun) का ध्यान नहीं देते हैं, इसलिये इस प्रकार की भविष्यवाणियों के हू-बहू अल्फ़ाज़ का मिलना कठिन है, लेकिन इस शब्द का मफ़हूम ज़रूर मिल जाता है। चुनान्चे हज़रत ईसा मसीह के अल्फ़ाज़ यह हैं "मैं तुम्हें सच कहता हूँ कि तुम्हारे लिये मेरा मर जाना ही लाभदायक है, क्योंकि अगर मैं न जाऊँ तो तसल्ली देने वाला तुम्हारे पास न आये गा, पर अगर मैं जाऊँ तो मैं उसे तुम्हारे पास भेजूँ गा और वह आ कर दुनिया को गुनाह से और इन्साफ़ से और 'अ़दालत से' कुसूरवार ठहराये गा,"। गुनाह से................. इस लिये कि मुझ पर ईमान नहीं लाये। 'रास्ती से'..........इस लिये कि मैं अपने बाप के पास जाता हूँ और तुम मुझे फिर न देखो गे। अ़दालत से............ इस लिये कि इस जहान के सर्दार पर हुक्म लिया गया है। मेरी और बहुत सी बातें हैं कि मैं तुम्हें कहूँ। पर अब तुम उन को बर्दाशत नहीं कर सकते, लेकिन जब वह यानी रूहे-हक़ आये तो वह तुम्हें सारी सच्चाई की राह बता दे गी इस लिये कि वह अपनी न कहे गी, लेकिन जो कुछ वह सुने गी और तुम्हें भविष्य में ख़बरें दे गी वह मेरी बुज़ुर्गी करे गी"। (यूहन्ना बाब १६, वाक्य ७-१३)

इस भविष्य वाणी में हज़रत मसीह ने आने वाले मुक़द्दस रसूल की बाबत चन्द बातें कही हैं। (१) तसल्ली देने वाला (२) हुकूमत वाला (३) मसीह की तस्दीक़ करने वाला। इन तीनों विशेष्ताओं पर ग़ौर करने से मालूम होता है कि इन से मुराद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़ात के अ़लावा हज़रत मसीह के बाद दूसरा कोई नहीं। जैसे, "तसल्ली देने वाला," इस से मुराद यह है कि गुनाहगारों को अल्लाह की रहमत का उम्मीदवार बनाये गा। चुनान्चे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तालीम में साफ़ तौर पर मिलता है कि "अल्लाह की रहमत से निराश न हो, अल्लाह सब गुनाह बख़्श दे गा," (सूरः ज़ु-मर) 'हुकूमत वाला' से मुराद केवल दुनयावी हुकूमत ही नहीं है बल्कि दीनी हुकूमत की भी बादशाही मुराद है। चुनान्चे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बारे में दोस्त-दुश्मन सभी का इत्तिफ़ाक़ है कि आप शरअ़ी हुकूमत के हाकिम हैं, इसी वजह से आप ने मसीह अ़लै० की अ़िज़्ज़त व एहतराम का हुक्म दिया और उन के मुन्किरों को काफ़िर क़रार दिया। 'मसीह को सच्चा साबित करने वाला' यह बात इतनी स्पष्ट है कि इस पर कुछ लिखने की आवश्यक्ता ही नहीं है। हज़रत मसीह अ़लै० के एक तरफ़ यहूदी सब से बड़े दुश्मन थे जो आप को बुरा भला कहते थे, और दुश्मन आप के ओसाई भी थे जो

➲आप को बन्दा से ख़ुदा के मर्तबे तक पहुंचा दिया था। इन दोनों कट्टर दुश्मन जमाअ़तों के दर्मियान हक़ीक़ी न्याय करना पैग़ंबर का काम था, चुनान्चे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अल्लाह के हुक्म से इस मुश्किल को साफ़ शब्दों में हल कर दिया और कहा: "मसीह न तो अल्लाह की अल्लाही में कुछ शरीक हैं और न ही आम इन्सानों की तरह हैं बल्कि दुनिया और आख़िरत में बड़ी इ़ज़्ज़त और मर्तबे वाले, बनी इस्राईल के नबी थे"। चौथी बात भी बिल्कुल साफ़ है कि आप ने जो कुछ फ़रमाया और किया वह अल्लाह के हुक्म से किया। चुनान्चे अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान है: "यह क़ुरआन तो केवल अल्लाह की वह्यि है"। नबी का कलाम नहीं है। नतीजा बिल्कुल साफ़ है कि इन विशेष्ताओं का मालिक वह ज़ात है जो बहुत तारीफ़ वाला (मुहम्मद) है। (सनाई)

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी ने इस पेशीनगोयी को अपनी ज़ात के लिये सिद्ध किया है यह उस की निहायत नापाक साज़िश है। इस दावे की हैसिय्यत किसी दीवाने की बड़बोल से ज़्यादा नहीं है। उस शख़्स के दावे और बयानात की पूरी हक़ीक़त मालूम करने के लिये तफ़्सीर सनाई- ८/५८ का मुताला फ़रमायें।

اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ
اَلِيْمٍ ﴿١٠﴾ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ
لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١﴾ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ
وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَ
مَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ﴿١٢﴾ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ۭ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ
قَرِيْبٌ ۭ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ
لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ
نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّاۗىِٕفَةٌ مِّنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ
وَكَفَرَتْ طَّاۗىِٕفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰي
عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ﴿١٤﴾

१०. ऐ ईमान वालो! मैं तुम को एक ऐसी तिजारत बताऊँ जो तुम लोगों को दुःख के दन्ड से छुड़ा दे (पस सुनो!) ११. तुम अल्लाह और रसूल पर यक़ीन रखो और (ज़रूरत के समय) अल्लाह की राह में मालों और जानों के ज़रीआ़ से जिहाद किया करो, यह काम तुम्हारे हक़ में बेहतर है अगर तुम जानते हो। १२. (ऐसा करने पर) अल्लाह तुम्हारे गुनाह बख़्श दे गा और तुम को ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे गा जिन के नीचे नहरें जारी हों गी और हमेशा के बाग़ों में बेहतरीन महल दे गा (हक़ीक़त यह है कि) यही बड़ा (बाइ़ज़्ज़त) पास है १३. और एक ऐसी चीज़ दे गा कि तुम उस को पसन्द करते हो, वह अल्लाह की मदद और क़रीबी फ़तह है। और ईमान्दारों को (उन दोनों वादों की) ख़ुशख़बरी सुना दे १४. (पस) ऐ ईमान वालो! तुम सब अल्लाह के दीन के सहयोगी बन जाओ जैसे हज़रत अ़ीसा बिन मर्यम ने (अपने मानने वालों को) कहा था (अल्लाह की राह में) कौन मेरा मदद गार है[४]? हवारियों ने (जवाब में) कहा: हम (अल्लाह की तौफ़ीक़ के मुताबिक़) अल्लाह के दीन के मददगार हैं, पस बनी इस्राईल की एक जमाअ़त (यानी हवारी लोग) ईमान में पक्के रहे और एक जमाअ़त इन्कार करती रही, फिर हम ने इन ईमान्दारों को उन दुश्नमों पर मदद दी, तो वह उन पर ग़ालिब आ गये।

....

४. हज्ज के दिनों में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि है कोई जो मुझे जगह दे ताकि➲

➲मैं अल्लाह की रिसालत को पहुंचा दूँ? कुरैश मक्का मुझे अपने रब का सन्देश पहुंचाने से रोक रहे हैं। चुनान्चे मदीना शरीफ़ के क़बीले औस और ख़ज़रज को अल्लाह तआला ने यह तौफ़ीक़ दी और उन्हों ने आप की दावत पर "नह्नु अनसारुल्लाह" का नारा बुलन्द कर के इस्लाम में एक बुलन्द स्थान प्राप्त कर लिया। चुनान्चे क़ियामत तक उन का नाम बद्र के चाँद की तरह चमकता रहे गा-- रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् अजमअ़ीन!

सूरः जुमु-अः –(62)

آياتها ١١ سُورَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ (١١٠) (٦٢) رُكُوعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَلِكِ
الْقُدُّوسِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ (١) هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي
الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ
وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِن كَانُوا مِن قَبْلُ
لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ (٢) وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (٣) ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ
مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ (٤) مَثَلُ
الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرَاةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ
يَحْمِلُ أَسْفَارًا بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا
بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ (٥)
قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا إِن زَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ أَوْلِيَاءُ

सूरः जुमुअः ( ) मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी[1]। इस में ११ आयतें और २ रुकूअ़ हैं। शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. आसमानों और ज़मीनों की जो चीज़ें हैं वह अल्लाह को पाकी से याद करती हैं जो (हक़ीक़ी) बादशाह, पाक ज़ात, ग़ालिब और बड़ी हिक्मत वाला है। २. उसी ने उन (क़ुरैश के) अशिक्षित लोगों में से रसूल भेजा है जो उस के अहकाम पढ़ कर उन को सुनाता है और उन को पाक करता है और उन को किताब और हिक्मत सिखाता है। वर्ना इस से पहले तो यह लोग खुली गुमराही में थे[2] ३. और पिछले लोग जो अभी तक उन को नहीं मिले उन के लिये भी यही रसूल भेजा है। और वह अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। ४. यह (नबुव्वत) अल्लाह का फ़ज़्ल है जिस को चाहता है (नुबुव्वत) देता है। और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। ५. जिन लोगों को तौरात मिली थी फिर उन्हों ने उस पर अ़मल न किया, उन की मिसाल बिल्कुल गधे की सी है जो किताबें महज़ बोझ की सूरत में उठाता है[3]। (वास्तव में) उस क़ौम की बुरी मिसाल है जो अल्लाह की आयतों को झुठलाती है। और अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को ख़ैर की तौफ़ीक़ नहीं देता (यहाँ तक कि वह अपने ज़ुल्म तर्क न करें) ६. तू कह! ऐ यहूदियो! अगर तुम को इस बात का घमन्ड है कि तमाम लोगों में से तुम ही अल्लाह के वली हो

१. शाने-नुज़ूलः- सूरः जुमु-अः मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी, इस पर तमाम उलमा का इत्तिफ़ाक़ है। हदीस➲

शरीफ़ में आता है कि आप जुमुअ़ः की नमाज़ में यह सूरः और सूरः "मुनाफ़िक़ून" पढ़ा करते थे। एक रिवायत में यह भी है कि आप मग़्रिब की नमाज़ में जुमेरात को सूरः काफ़िरून और इख़्लास पढ़ते और इशा की नमाज़ में सूरः जुमुअ़ः और मुनाफ़िक़ून पढ़ते थे। इस सूरः में ११ आयतें हैं।

२. बुतों की पूजा करना, शराब पीना और हर प्रकार की बदकारियाँ करना काफ़िरों का आ़म चलन था। आज जो उन में ईमान का नूर और हिदायत की जो झलक दिखाई देती है वह उसी रसूल की बर्कत से है। इन मौजूदा लोगों के अ़लावा, पिछले लोग भी जो अभी तक उन को नहीं मिले उन के लिये भी अल्लाह ने यही रसूल भेजा है। यानी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के देहान्त के बाद से क़ियामत तक जो लोग हों गे उन सब के लिये यही नुबुव्वत राहनुमाई करे गी।

इस आयत पर भी हमारे क़ादियानी झूठे नबी ने क़ब्ज़ा कर लिया और आयत न० ३ में "पिछले लोग" से मुराद मिर्ज़ा अपने आप को लेते हैं। वह कहते हैं कि इस आयत में जिन की तरफ़ इशारा है वह मैं हूँ और मेरा वजूद उस (नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का वजूद हो गया। जो मेरी जमाअ़त में दाख़िल हुआ वह नबी के सहाबा की जमाअ़त में दाख़िल हुआ। इस झूठे मिर्ज़ा के दावे इतने लम्बे-चौड़े हैं और हाल यह है कि पूरी उम्र ग़ैरमुस्लिम अंग्रेज़ी हुकूमत की ख़िदमत में गुज़ारी। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने सहाबा को गढ़े से निकाल कर अ़िज़्ज़त के तख़्त पर बिठा दिया और मिर्ज़ा जी अपने सहाबा समेत बर्तानिया हुकूमत पर निछावर हो गये (देखिये मिर्ज़ा की किताब "तुहफ़ा शहज़ादा विल्ज़") मिर्ज़ा का मुहम्मद सानी होने की हैसिय्यत से उन का जो काम था वह उन से नहीं हुआ, इस लिये वह अपने दावा में झूठा है।

'दूसरे लोगों' से मुराद समस्त संसार के लोग हैं जो क़ियामत तक पैदा हों गे। कुछ मुफ़स्सिरीन का कहना है कि इस से ताबअ़ीन मुराद हैं। एक हदीस शरीफ़ में रिवायत है कि आप ने यह सूरत सुनाई तो एक शख़्स ने पूछा वह दूसरे लोग कौन हैं? आप ने अपना हाथ सल्मान फ़ार्सी के ऊपर रखा, यानी ईरान वाले मुराद हैं। एक अन्य रिवायत के अनुसार मेरे सहाबा की नस्ल में से कुछ लोग ऐसे पैदा हों गे जो बेहिसाब जन्नत में जायें गे, फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह आयत तिलावत फ़रमाई (वहीदी)

३. इस आयत में यहूद की शरारतों का ज़िक्र है। और इसी आयत के संदर्भ में वह उ़लमा भी आते हैं जो क़ुरआन व हदीस का अ़िल्म रखते हुये भी उस के ख़िलाफ़ धड़ल्ले से अ़मल करते हैं। हक़ीक़त यही है कि एक गधे पर अ़िल्म व हिक्मत की सैकड़ों किताबें लाद दो, लेकिन उस गधे को बोझ में दबने के अ़लावा कोई फ़ाइदा नहीं पहुंचता।

لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗٓ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۗ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ فَاِذَا قُضِيَتِ

तो अल्लाह से मौत माँगो[४] अगर सच्चे हो। ७. (मगर हम बताये देते हैं कि) यह लोग अपने बुरे आमाल के सबब मौत न चाहें गे। और अल्लाह ज़ालिमों के हाल से ख़ूब वाक़िफ़ है। ८. तू कह कि जिस मौत से तुम लोग भागते हो वह मौत तुम्हें पा ले गी (पस तुम ज़रूर मरो गे) फिर तुम पोशीदा और हाज़िर जानने वाले अल्लाह की तरफ़ फेरे जाओ गे, फिर वह तुम्हारे किये हुये कामों की तुम्हें ख़बर दे गा। ९. ऐ ईमान वालो! जुम्अ़ः के दिन

الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا ۨانْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَآئِمًا ۚ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۚ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝

जब नमाज़ के लिये अज़ान दी जाये (यानी अज़ान के ज़रीआ़ तुम को बुलाया जाये) तो तुम (बिला ताख़ीर) अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ चला करो और सौदा-सुल्फ़ (और दीगर कारोबार) छोड़ दिया करो यह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम जानते हो[५]। १०. और जब नमाज़ ख़त्म हो जाये तो (मस्जिद से निकल कर) बिखर जाया करो और (कारोबार के ज़रीआ़) अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश किया करो और अल्लाह का ज़िक्र बहुत-बहुत किया करो ताकि तुम मक़्सद में कामियाब हो ११. और जब यह लोग तिजारत या खेल-तमाशा देखते हैं तो उस की तरफ़ चले जाते हैं और तुझे (ए रसूल! ख़ुत्बे की हालत) में ख़ड़ा छोड़ जाते हैं। तू कह: जो अल्लाह के पास है वह खेल-तमाशे और तिजारत से बेहतर है। और अल्लाह सब से अच्छा रोज़ी देने वाला है[६]।

....

४. बाज़ उलमा के नज़दीक मौत की तमन्ना का मतलब मुबाहिला था। यानी मुख़ालिफ़ यहूद से कहा गया कि अगर वास्तव में वह अपने आप को हक़ पर और मुसलमानों को बातिल पर समझते हैं, तो तमन्ना करें कि दोनों फ़रीक़ में जो झूठा हो वह मर जाये, लेकिन वह कभी ऐसा न करें गे, क्योंकि उन को अपने झूठे होने का यक़ीन है। इब्ने कसीर और इब्ने क़य्यिम रह० ने यही तावील की है (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान) किताब व सुन्नत के ज़ाहिरी-बातिनी अ़िल्म पर अ़मल करने से नफ़्स की इस्लाह होती है। उन की सुरक्षा के लिये अल्लाह तआ़ला उलमा की जमाअ़त को पैदा करता रहे गा। बेअ़मल उलमा की मिसाल यहूदी आ़लिमों से दी गयी है। अल्लाह पाक समझने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये- आमीन (राज़)

५. जुम्अ़: की फ़ज़ीलत में बहुत सी हदीसें आयी हैं। अबू दावूद शरीफ़ की रिवायत में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हर मुसलमान पर जुमअ़: की नमाज़ जमाअ़त के साथ फ़र्ज़ है, मगर ग़ुलाम औ़रत, नाबालिग़, बच्चे और बीमार इस हुक्म में दाख़िल नहीं हैं। मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि जिन लोगों को जुम्अ़ तर्क कर देने की आ़दत हो, तो या तो वह इस आ़दत को छोड़ दें वर्ना अल्लाह उन के दिलों पर मुह्र लगा दे गा और वह ग़ाफ़िल लोगों में से हो जायें गे (यानी मुनाफ़िक़ों में से हो जायें गे) एक सहीह रिवायत के अल्फ़ाज़ यह हैं कि जुम्अ़: का तर्क करने वाला मुनाफ़िक़ों में लिख दिया जाता है और ऐसे दफ़्तर में उस का नाम लिख लिया जाता है कि फिर न तो बदला जाये गा और न ही नाम काटा जाये गा। एक और हदीस में है कि जिस का अल्लाह पर और क़ियामत पर ईमान हो उस पर लाज़िम है कि जुम्अ़: की नमाज़ कभी न तर्क करे, जिस ने सौदागरी या किसी वाहियात काम में लग कर लापर्वाही बर्ती तो अल्लाह भी उस से बेपर्वाह हो जाता है।

कुछ उलमा ने इस बात का फ़तवा दिया है कि जुम्अ़: की नमाज़ दीहात में दुरुस्त नहीं यह फ़तवा ग़लत है, क्योंकि इस आयत में आ़म हुक्म दिया गया है, इस लिये सब मुसलमानों पर और सब जगह फ़र्ज़ है। हदीस शरीफ़ में नाबालिग़, बीमार, लौंडी और ग़ुलाम को इस हुक्म से अलग कर दिया गया है। कुछ रिवायतों में मुसाफ़िर को भी अलग किया गया है। (मुस्लिम) किसी कमज़ोर हदीस में भी जुमअ़: के लिये शह्र या हाकिम वग़ैरह की क़ैद नही लगायी गयी है, तो फिर आज कल की फ़िक़ह की कुछ रिवाजी किताबों को सहीह मान कर दीहात में जुम्अ़: का तर्क करना बड़ी दिलेरी की बात है। दीहात में जुम्अ़: की नमाज़ पढ़ने के तअ़ल्लुक़ से बहुत सी दलीलें मौजूद

➲हैं, उन सब को नक़ल करने की यहाँ गुन्जाइश नहीं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि मस्जिदे नबवी में जुम्अ़: की नमाज़ होती थी, बहरैन के एक गाँव "जवासा" में भी जुम्अ़: की नमाज़ पढ़ी जाती थी (बुख़ारी शरीफ़)

कुछ मोलवियों ने हिन्दुस्तान को दारुलहर्ब कह कर एहतियाती जुह्र पढ़ने का हुक्म दिया है, यह बात बिल्कुल बेबुनियाद और बातिल है। हिन्दुस्तान को दारुलहर्ब कहना भी ग़लत और एहतियाती जुह्र भी ग़लत है। केवल अहादीस में जिन लोगों को नमाज़ जुम्अ़: से रुख़्सत दी गयी है उन को छोड़ कर हर मुसलमान पर और हर स्थान पर जुम्अ़: की नमाज़ फ़र्ज़ है। (हुमैदी)---जुम्अ़: की नमाज़ इस्लाम की तरक़्क़ी का सबब है, इसलिये जहाँ भी मुसलमानों की जमाअ़त हो वहाँ जुम्अ़: और जमाअ़त का क़ाइम करना बहुत ज़रूरी है। तहक़ीक़ के बाद यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि शहर की कोई शर्त नहीं है। (राज़)

६. शाने-नुज़ूलः- मदीना शरीफ़ में जुम्अ़: के दिन तिजारती माल के आ जाने की वजह से जो लोग ख़ुत्बा छोड़ कर ख़रीदने चले गये थे उन लोगों के बारे में यह आयत नाज़िल हुयी। केवल १२ आदमी बचे थे, बाक़ी सब लोग तिजारती क़ाफ़िले की घन्टी की आवाज़ सुन कर मस्जिद से चले गये थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अगर यह १२ आदमी भी न रहते तो तुम पर यह वादी आग बन कर भड़क उठती। न जाने वालों में अबू बक्र व उ़मर भी शामिल थे। इस आयत से जुम्अ़: का ख़ुत्बा खड़े हो कर पढ़ना भी साबित हुआ। (इब्ने कसीर)

सूरः मुनाफ़िकून- (63)

सूरः मुनाफ़िक़ून मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी इस में ११ आयतें और २ रुकूअ़ हैं

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. (ऐ रसूल!) मुनाफ़िक़ लोग (जो दिल से तेरे मुन्किर हैं) तेरे पास आ कर कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि तू अल्लाह का रसूल है। अल्लाह भी ख़ुद गवाही देता है कि बेशक तू अल्लाह का रसूल है। और अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ लोग झूठे हैं (वह दिल से गवाही नहीं देते) २. उन्हों ने अपनी क़समों को (बचाव की) ढालें बना रखा है (इस दोस्ती के ढोंग से न जानने वालों को) अल्लाह की राह से रोकते हैं। यह लोग बहुत बुरा करते हैं। ३. यह इस लिये कि यह लोग पहले ईमान लाये थे फिर (दुनियावी फ़ाइदे के सबब) इन्कारी हो गये, पस उन के दिलों पर मुहर लगा दी गयी वह समझते नहीं। ४. (ऐ नबी!) जब➲

سُورَةُ الْمُنٰفِقُونَ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

إِذَا جَاءَكَ الْمُنٰفِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ ۗ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنٰفِقِينَ لَكٰذِبُونَ ۝ اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ۝ وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۖ وَإِنْ يَقُولُوا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ۖ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُسَنَّدَةٌ ۖ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۚ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۚ قَاتَلَهُمُ اللّٰهُ ۖ أَنّٰى يُؤْفَكُونَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ۝

➲तू उन को देखता है तो तुझे उन के बदन हैरान करते हैं। जब वह बात करते हैं तो तू उन की बात सुनता है गोया वह बड़े लकड़ी के खंबे हैं जिन के साथ लोग तकिया लगाते हैं। हर एक ज़ोरदार आवाज़ को अपने ही ख़िलाफ़ जानते हैं। पस तुम ऐ पैग़ंबर! उन दुश्मनों से बचते रहो। उन को अल्लाह की मार हो, यह कहाँ को बहके जा रहे हैं। ५. और जब उन को कहा जाता है कि (दीने इस्लाम में) आओ ताकि तुम्हारे लिये रसूलुल्लाह (अल्लाह से) बख़्शिश माँगें तो यह लोग (सुन कर) सर फेर लेते हैं और तू उन को देखता है (कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास हाज़िर होने से) तकब्बुर करते हुये रुकते हैं[१]।

....

१. बख़्शिश की दो शक्लें हैं। या तो बन्दा ख़ुद तौबा कर के अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह हो, या अल्लाह की मेहरबानी और तौफ़ीक़ ख़ुद उस का साथ दे। ख़ुद तो तौबा करने के बजाए अकड़ते हैं, न तौबा करते हैं और न ही कराते हैं। अल्लाह की तौफ़ीक़ और रहमत से भी दूर हैं। यानी हिदायत और राहनुमाई के दोनों रास्ते इन पर बन्द हैं। (सनाई)

سَوَآءٌ عَلَيۡهِمۡ اَسۡتَغۡفَرۡتَ لَهُمۡ اَمۡ لَمۡ تَسۡتَغۡفِرۡ لَهُمۡ ؕ لَنۡ يَّغۡفِرَ اللّٰهُ لَهُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ الۡفٰسِقِيۡنَ ۝ هُمُ الَّذِيۡنَ يَقُوۡلُوۡنَ لَا تُنۡفِقُوۡا عَلٰى مَنۡ عِنۡدَ رَسُوۡلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنۡفَضُّوۡا ؕ وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَلٰكِنَّ الۡمُنٰفِقِيۡنَ لَا يَفۡقَهُوۡنَ ۝ يَقُوۡلُوۡنَ لَئِنۡ رَّجَعۡنَاۤ اِلَى الۡمَدِيۡنَةِ لَيُخۡرِجَنَّ الۡاَعَزُّ مِنۡهَا الۡاَذَلَّ ؕ وَلِلّٰهِ الۡعِزَّةُ وَلِرَسُوۡلِهٖ وَلِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَلٰكِنَّ الۡمُنٰفِقِيۡنَ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تُلۡهِكُمۡ اَمۡوَالُكُمۡ وَلَاۤ اَوۡلَادُكُمۡ عَنۡ ذِكۡرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنۡ يَّفۡعَلۡ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡخٰسِرُوۡنَ ۝ وَاَنۡفِقُوۡا مِنۡ مَّا رَزَقۡنٰكُمۡ مِّنۡ قَبۡلِ اَنۡ يَّاۡتِىَ اَحَدَكُمُ الۡمَوۡتُ فَيَقُوۡلَ رَبِّ لَوۡلَاۤ اَخَّرۡتَنِىۡۤ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيۡبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنۡ مِّنَ الصّٰلِحِيۡنَ ۝ وَلَنۡ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفۡسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ؕ

६. ऐ नबी! उन के हक़ में बराबर है कि तू बख़्शिश माँगे या न माँगे अल्लाह उन को हर्गिज़ नहीं बख़्शे गा (उस के हाँ यह क़ानून है कि) अल्लाह पाक बदकार क़ौम को हिदायत नहीं दिया करता। ७. यह वही लोग हैं जो कहा करते हैं कि ऐ मदीना वालो! जो लोग (मुहम्मद) रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के पास (इधर-उधर से आकर रहते) हैं उन पर माल ख़र्च न किया करो[२] यहाँ तक कि बिखर जायें और (हालाँकि) आसमानों के ख़ज़ाने अल्लाह ही के क़ब्ज़े में हैं लेकिन मुनाफ़िक़ समझते नहीं ८. यही लोग (जंग के मौक़ा पर) कहते थे कि अगर इस मर्तबा हम शहर (मदीना) में गये तो इ़ज़्ज़तदार लोग इन ज़लील लोगों को शहर से निकाल देंगे। अस्ल इ़ज़्ज़त अल्लाह की है और रसूल की और ईमान्दारों की है मगर मुनाफ़िक़ लोग जानते नहीं (कि इ़ज़्ज़त क्या चीज़ है[३]) ९. मुसलमानो! तुम्हारे माल व औलाद तुम को अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करें (जैसे कि➲

وَاللّٰهُ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝

उन लोगों को किया है) जो लोग यह काम करें गे वही हानि उठायें गे (पस तुम ऐ मुसलमानो! ऐसे बुरे कामों से बचते रहा करो)
१०. और हमारे दिये में से ख़र्च किया करो इस से पहले कि तुम में से किसी को मौत आ जाये तो कहने लगे कि (हाए) ऐ मेरे अल्लाह! तू मुझे थोड़े दिनों की मुहलत देता तो मैं तेरी राह में सदक़ा-ख़ैरात करता और मैं नेक लोगों में दाख़िल हो जाता। ११. जब कभी किसी नफ़्स की मौत का समय आ जाता है तो अल्लाह उसे मुहलत नही दिया करता। और अल्लाह तुम्हारे कामों से बाख़बर है।

....

२. शाने-नुज़ूलः- एक सफ़र में दो शख़्स लड़ पड़े। एक मुहाजिरीन में से था और दुसरा अन्सार का था। दोनों ने अपनी हिमायत (सहायता) के लिये अपनी जमाअ़त को पुकारा जिस पर अच्छा-ख़ासा हंगामा हो गया। यह ख़बर अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि को पहुंची तो कहने लगा कि अगर हम उन मुहाजिरीन को अपने शहर में जगह न देते तो हम से मुक़ाबला क्यों करते, तुम ही लोगों ने तो जगह दी है इस लिये यह लोग रसूल के साथ जमा रहते हैं। अगर इन को देना-लेना छोड़ दो तो ख़र्च से तंग आ कर खुद बिखर जायें गे। उस ने यह भी कहा कि इस सफ़र से वापस हो कर हम मदीना पहुंचे तो जिस का इस शहर में ताक़त व ज़ोर है वह इन्हें निकाल बाहर करे गा। (यानी जो अ़िज़्ज़तदार हैं वह ज़लील मुसलमानों को निकाल दें गे) एक सहाबी हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म ने यह बातें सुन कर नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बतला दीं। आप ने अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि वग़ैरह से पूछा तो झूठी क़समें खाने लगे और ऊपर से यह आरोप भी लगा दिया कि इब्ने अर्क़म ने हमारी दुश्मनी से झूठ कह दिया है। लोगों ने हज़रत ज़ैद को तंग करना शुरू कर दिया उस वक़्त यह आयतें नाज़िल हुयीं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ज़ैद से फ़रमाया कि अल्लाह ने यह आयतें नाज़िल कर के तुम्हें सच्चा कर दिखाया है।

रिवायतों में आता है कि अ़ब्दुल्लाह के अल्फ़ाज़ "अ़िज़्ज़त वाला ज़लील को निकाल दे गा" जब उस के मुख़्लिस बेटे अ़ब्दुल्लाह रज़ि० के कान में पहुंची तो बाप के सामने तल्वार ले कर खड़े हो गये और बोलेः जब तक तू इक़रार न करे गा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अ़िज़्ज़त वाले हैं और तू ज़लील है, मैं तुझे ज़िन्दा नहीं छोडूँ गा और न मदीना में घुसने दूँ गा। आख़िर जब उस ने इक़रार कर लिया तब जा कर पीछा छोड़ा। (मुवज़्ज़िहुल्र फ़ुर्क़ान)
३. इस आयत में यह बताया गया कि इन को अ़िज़्ज़त और ज़िल्लत का उसूल ही नहीं मालूम है। अस्ल अ़िज़्ज़त तो वह है जो कभी ख़त्म न हो। माल-दौलत, तिजारत और नौकरी यह सब आनी-जानी चीज़ें हैं, आज है तो कल नहीं है, इस लिये यह अ़िज़्ज़त अस्ली अ़िज़्ज़त नहीं है। अस्ल अ़िज़्ज़त अल्लाह की है, उस के रसूल की है और नेक लोगों की है। इन लोगों को जो अ़िज़्ज़त मिली है वह ईमान की वजह से मिली है। इस्लाम में अमीरी, ग़रीबी, अ़िज़्ज़त की कसौटी नहीं है, बल्कि ईमान की दौलत अ़िज़्ज़त की कसौटी है, मगर मुनाफ़िक़ लोग नहीं जानते। आगे की आयतों में अल्लाह ने मुनफ़िक़ों के घमन्ड का यह कारण बतलाया है कि अव्वल तो इन के पास माल-दौलत है। दूसरे इन के साथी-बराती अधिक हैं। यह समझते हैं कि इन दो चीज़ों की वजह से हमारा मर्तबा बहुत बुलन्द है, इसी कारण यह ग़ुरूर में मुब्तिला हैं। अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को हिदायत फ़रमाई कि तुम लोग माल औा औलाद पर घमन्ड न करो, क्योंकि यह आने जाने वाली चीज़ें हैं। हर हाल में अल्लाह का शुक्र अदा करना, बड़ी गुनाह की बातों से बचते रहना और मुनाफ़िक़ों की तरह बुख़्ल और कंजूसी न करना (सनाई) एक हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः नाजायज़ ख़ाहिशों के पीछे लगना, हर समय बुख़्ल करना, ख़ुदपसन्दी ज़ाहिर करना ऐसी आ़दतें हैं जो लोगों को हलाक कर के छोड़ती हैं।

सूरः तग़ाबुन्-(64)

सूरः तग़ाबुन मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी[1]। इस में १८ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है।

१. जो चीज़ें आसमानों में और जो चीज़ें ज़मीनों में हैं वह सब अ़ल्लाह के नाम की तस्बीह पढ़ती हैं। तमाम मुल्क उसी का है और हर प्रकार की तारीफ़ें उसी अल्लाह के लिये हैं और वह हर काम पर क़ुदरत रखता है। २. वही तो है जिस ने तुम को पैदा किया, फिर तुम में से बाज़ इन्कारी हैं और बाज़ मोमिन हैं। और अल्लाह तुम्हारे कामों को देखता है। ३. उसी ने आकाश और ज़मीन को अटल क़ानून के साथ पैदा क़िया। उसी ने तुम्हारी माओं के पेटों में तुम्हारी सूरतें बनायीं और तुम्हारी सूरतें बहुत अच्छी बनायीं और उसी की तरफ़ तुम्हें लौटना है। ४. जो कुछ आसमानों और ज़मीनों के अन्दर है वह अल्लाह सब को जानता है और जो कुछ तुम छुप कर करते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो वह भी जानता है और अल्लाह सीनों के भेदों से भी वाक़िफ़ है। ५. क्या तुम्हें उन काफ़िरों के कामों की सूचना नहीं मिली जो तुम से पहले गुज़रे हैं, उन्हों ने अपने बुरे कामों का मज़ा चखा था और आख़िरत में उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है[2]।

آياتها ١٨ سُورَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ (٦٤) (١٠٨) ركوعاتها ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۖ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ① هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَمِنْكُمْ مُؤْمِنٌ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ② خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ③ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ④ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ ۫ فَذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ

....

१. 'यु-सब्बिहु' से शुरू होने वाली सूरतों में यह सब से अन्तिम सूरः है। दुनिया की तमाम मख़्लूक़ अल्लाह की तस्बीह बयान करती हैं, मुल्क व हम्द वाला अल्लाह ही है, हर चीज़ पर उस की हुकूमत है, हर चीज़ का उस ने अन्दाज़ा मुक़र्रर किया है, वही तारीफ़ का हक़दार है, वह जिस चीज़ का इरादा करता है उसे पूरा करता है, उस के पूरा होने में कोई रुकावट नहीं बन सकता, वह अगर न चाहे तो कुछ भी न हो, वही तमाम मख़्लूक़ का पैदा करने वाला है, उस के इरादा से कुछ काफ़िर हुये और कुछ मोमिन, वह भली भांति जानता है कि हिदायत का हक़दार कौन है और गुमराही का कौन? वह अपने बन्दों के आमाल को देख रहा है और उसी के अनुसार पूरा-पूरा बदला देगा, उस ने अ़द्ल और इन्साफ़ के साथ आसमान और ज़मीन को पैदा किया है, उसी ने हमें पाकीज़ा चेहरा अ़ता किया है। फिर सब को उसी की तरफ़ लौटना है, आसमान, ज़मीन और समस्त संसार का उसे ज्ञान है, यहाँ ➲

तक कि दिल के इरादों और पोशीदा बातों से वह वाक़िफ़ है। (मुहम्मदी)

२. इस आयत में काफ़िरों को आगाह किया जा रहा है कि तुम से पहले के लोग तुम से कहीं अधिक माल-दौलत और लाव-लश्कर वाले थे, मगर अल्लाह की नाफ़र्मानी करने पर वह हलाक कर दिये गये और उन की दौलत और लश्कर कुछ काम न आया, तो ऐ मक्का के काफ़िरो! अगर तुम लोग भी उन्हीं के तौर-तरीक़े पर अ़मल करोगे, तो तुम्हारा हाल भी उन्हीं जैसा हो गा, अर्थात तुम भी हलाक कर दिये जाओ गे। अल्लाह का क़ानून तमाम ग़द्दारों के लिये एक सा है।

اَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۡ فَكَفَرُوْا وَ
تَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝ زَعَمَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ۭ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ
لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۭ وَذٰلِكَ عَلَى
اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ
اَنْزَلْنَا ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ
لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۭ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ
بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ
وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ وَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ
النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ مَآ اَصَابَ

६. यह अ़ज़ाब उन को इस लिये हो गा कि उन के पास अल्लाह के रसूल खुले अहकाम ले कर आते रहे तो उन्हों ने कहा: क्या एक इन्सान हमें हिदायत करना चाहता है[3]? पस वह मुन्किर हो गये और मुंह फेर गये और अल्लाह ने भी उन की पर्वाह न की। अल्लाह बेनियाज़ है और ख़ुद ही तारीफ़ वाला और ख़ूबियों का मालिक है। ७. काफ़िरों का गुमान है कि वह न उठाये जायें गे। तू कह: हाँ मेरे रब की क़सम! अवश्य उठाये जाओ गे फिर तुम को तुम्हारे किये हुये कामों की ख़बर दी जाये गी। और यह काम अल्लाह पर सरल है। ८. पस तुम अल्लाह और उस के रसूल पर यक़ीन रखो और उस नूर (क़ुरआन) पर ईमान लाओ जो हम ने उतारा है और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है[4] ९. (उस समय तुम्हें ख़बर दी जाये गी) जब इकट्ठा होने के दिन अल्लाह तुम को जमा करे गा वह हार-जीत का दिन हो गा। और जो कोई अल्लाह पर ईमान लाया हो गा और नेक अ़मल किये हों गे अल्लाह उस की ग़लतियाँ दूर कर दे गा और उस को जन्नतों में दाख़िल करे गा जिन के नीचे नहरें जारी हैं हमेशा वह उन में रहें गे यही बड़ी कामियाबी है। (अच्छे भाग्य वाला है जिसे अल्लाह यह नसीब करे) १०. और जिन्हों ने इन्कार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वह जहन्नमी हों गे हमेशा उस में रहें गे, वह जहन्नम बहुत बुरी जगह है।

....

३. हमारे राज्य पंजाब में ऐसे भी लोग हैं जो कहने को तो हनफ़ी कहलाते हैं मगर उन का अक़ीदा यह है कि किसी रसूल को और ख़ास कर हमारे अन्तिम रसूल को बशर (मानव) जानना कुफ़्र है और बशर कहने वाला काफ़िर है,

और अपने दावें में इसी आयत को दलील के तौर पर पेश करते हैं। उन का कहना है कि इस आयत से साबित होता है कि रसूल को बशर (इन्सान) कहने वाला काफ़िर है। हालाँकि यह आयत साफ़ लफ़्ज़ों में बतला रही है कि महज़ बशर कहना कुफ़्र नहीं, बल्कि बशर मान कर नुबुव्वत का इन्कार करने वाला काफ़िर है। चुनान्चे एक मौक़ा पर काफ़िरों का यह क़ौल क़ुरआन नक़ल करता है "तुम हमारी ही तरह के बशर हो, हम को हमारे बाप-दादा के माबूदों से हटाना चाहते हो" (पारः १३, रुकूअ़ १४) इन के उत्तर में नबी का यह क़ौल बयान हुआ "बेशक हम तुम्हारी तरह ही बशर हैं मगर अल्लाह जिस पर चाहता है एहसान करता है"। इस आयत से मालूम हुआ कि नबिय्यों का बशर होना इख़्तिलाफ़ और झगड़े का सबब न था, बल्कि बशर होते हुये रसूल होना यह बात काफ़िरों को अ़जीब लगती थी। (और आज भी लगती है)। नबिय्यों ने अपने बशर होने का एतराफ़ कर के रिसालत को अल्लाह का फ़ज़्ल बताया है। इस से मालूम हुआ कि रसूलों को बशर कहना कुफ़्र नहीं, बल्कि मुकम्मल ईमान है (सनाई)

४. इन आयात में बतलाया गया है कि कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन कहते हैं कि मरने के बाद हम दोबारा ज़िन्दा न हों गे। ऐ नबी! उन से कह दो कि तुम्हें दोबारा ज़िन्दा होना है फिर तुम्हें अपने तमाम छोटे-बड़े कामों का हिसाब देना है। सुनो! तुम्हारा दोबारा पैदा होना और तुम्हारा हिसाब-किताब लेना अल्लाह पर बहुत सरल है। यह तीसरी आयत है जिस में अल्लाह तआ़ला अपने नबी को क़सम खा कर क़ियामत के आने का ज़िक्र करने को कह रहा है। पहली आयः सूरः यूनुस में है जिस का तर्जुमा यह है "यह लोग तुझ से पूछते हैं कि क्या यह हक़ है? तू कहः मेरे रब की क़सम! वह हक़ है और तुम अल्लाह को हर्गिज़ कच्चा नहीं कर सकते"। (यूनुस-५३) दूसरी आयत सूरः सबा में है जिस का तर्जुमा यह है "काफ़िर कहते हैं कि हम पर क़ियामत नहीं आये गी, तू कह दे कि मेरे रब की क़सम! वह ज़रूर आये गी" (सूरः सबा-३) तीसरी आयत यही सूरः तग़ाबुन की आयत न० ७ है।

आगे इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह, रसूल, नूर (क़ुरआन) पर ईमान लाओ। तुम्हारा कोई भी अ़मल अल्लाह से पोशीदा नहीं है, क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला सब को इकट्ठा करे गा, और इसी लिये उस का नाम "यौमुल् जमा" (जमा होने का दिन) है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० बयान फ़रमाते हैं कि "यौमुत्तग़ाबुन" क़ियामत का एक नाम है। इस नाम की वजह यह है कि अहले जन्नत, अहले दोज़ख़ को नुक़्सान में डालें गे। इमाम मुजाहिद फ़रमाते हैं कि इस से अधिक 'तग़ाबुन' क्या होगा कि उन के सामने उन को जन्नत में और उन को जहन्नम में डाला जाये गा। इस का मतलब यह हुआ कि इस आयत की तफ़्सीर इस की बाद वाली आयत में है कि "ईमान्दार लोगों के गुनाह माफ़ कर दिये जायें गें और बहती नहरों वाली हमेशा की जन्नत में दाख़िल किया जाये गा। और काफ़िरों को जहन्नम की आग में डाला जाये गा जिस में वह जलते रहें गे और उन को मौत न आये गी। भला इस से अधिक बुरा ठिकाना और क्या हो सकता है?" (मुहम्मदी)

مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ
يَهْدِ قَلْبَهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۱﴾ وَ اَطِيْعُوا
اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا
عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۲﴾ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ
وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۳﴾ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَ اَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا

११. जो कुछ मुसीबत (दुनिया में) पहुंचती है वह अल्लाह के हुक्म (मुक़र्ररा क़ानून) से पहुंचती है (इस में किसी अमीर, फ़क़ीर वग़ैरह को दख़ल नहीं) जो कोई अल्लाह पर ईमान रखता है अल्लाह उस के दिल को हिदायत करता है और अल्लाह हर चीज़ को जानता है[1]। १२. और अल्लाह और रसूल की ताबेदारी किया करो और (इसी में तुम्हारी नजात है) फिर अगर तुम मुंह मोड़े ही रहो गे तो हमारे

لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ ۚ وَإِنْ تَعْفُوا وَتَصْفَحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٤﴾ إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَاللَّهُ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٥﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوا وَأَطِيعُوا وَأَنْفِقُوا خَيْرًا لِأَنْفُسِكُمْ ۗ وَمَنْ يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٦﴾ إِنْ تُقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضَاعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٧﴾ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٨﴾

संदेष्टा पर केवल स्पष्ट शब्दों में बयान कर देना है।१३. अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं और ईमान्दारों को चाहिये कि वह अल्लाह ही पर भरोसा किया करें १४. ऐ ईमान वालो! तुम्हारी बीवियों और औलाद में से बाज़ तुम्हारे दुश्मन हैं[६] (वह तुम को अल्लाह के ख़िलाफ़ ले जाते हैं) पस तुम उन से बचते रहो। और अगर (उन के क़ुसूर) माफ़ करो और नज़रअन्दाज़ करते रहो और बख़्श दिया करो, तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। १५. सिवाए इस के नहीं कि तुम्हारे माल और औलाद तुम्हारे लिये जान का वबाल हैं और अल्लाह के नज़दीक बड़ा अच्छा बदला है। १६. पस जितना डर सकते हो अल्लाह से डरा करो और (अल्लाह के अहकाम दिल से) सुना करो और अल्लाह और रसूल की इताअ़त किया करो और पाक माल ख़र्च किया करो। और जो लोग अपने नफ़्स के बुख़्ल से बच जायें गे वही नजात के हक़दार हैं। १७. अगर तुम अल्लाह को नेक क़र्ज़ दो गे तो अल्लाह उसे बढ़ा कर तुम्हें दे गा और तुम्हारे गुनाह बख़्श दे गा। और अल्लाह बड़ा क़द्र करने वाला सहनशील है। १८. वह ग़ाइब और हाज़िर को जानता है, बड़ा ज़बर्दस्त और बड़ी हिक्मत वाला है।

....

५. हज़रत अल्क़मा से जब इस आयत का मतलब पूछा गया तो उन्हों ने फ़रमाया: इस का मतलब यह है कि बन्दा पर जब कोई मुसीबत आये तो वह इस बात का अ़क़ीदा रखे कि यह सब अल्लाह की तरफ़ से है, फिर हंसी-खुशी उस को सहन करे। यह भी मतलब है कि वह "इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलैहि राजिऊ़न" पढ़े। बुख़ारी, मुस्लिम की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मोमिन की हर-हर बात में बेहतरी पोशीदा होती है। दुःख-तक्लीफ़ और हानि पर सब्र कर के और नफ़ा व भलाई पर अल्लाह का शुक्र अदा कर के बेहतरी और भलाई समेटता है। यह दोतरफ़ा भलाई और नेकी मोमिन के अ़लावा और किसी के हिस्से में नहीं आती।

मुस्नद अहमद की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा गया कि सब से अफ़्ज़ल अ़मल कौन सा है? आप ने उत्तर दिया: अल्लाह पर ईमान लाना, उस की तस्दीक़ करना, उस की राह में जिहाद करना। उस ने कहा कि मैं कोई आसान मगर अफ़्ज़ल काम मालूम करना चाहता हूँ। आप ने फ़रमाया: तेरी क़िस्मत में जो कुछ लिख दिया गया तू उस पर वावेला न कर और उस फ़ैसले पर राज़ी हो जा, यह पहले के कामों से कहीं ज़्यादा आसान काम है। (मुहम्मदी)

६. मुस्नद अहमद की रिवायत में है एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ख़ुत्बा दे रहे थे कि हज़रत हसन, हुसैन रज़ि० लंबे कुर्ते पहने हुये आ रहे थे। उन के कुर्ते इतने लंबे थे कि वह उन में उलझ-उलझ कर गिर पड़ते थे, वह लाल रंग के थे। जब नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नज़र उन पर पड़ी तो मिंबर से उतर कर

➲उन्हें उठा लाये और अपने पास बिठा कर फ़रमाया: अल्लाह तआ़ला सच्चा है और उस के रसूल ने भी सच फ़रमाया कि तुम्हारे माल और औलाद फ़ितना (आज़माइश) हैं, उन दोनों को गिरता-पड़ता देख कर मैं सब्र न कर सका और आख़िर ख़ुत्बा छोड़ कर उन्हें उठा लेना पड़ा। (मुहम्मदी)

सूरः तलाक़- (65)

(٦٥) سُوْرَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ (٩٩)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۚ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ① فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا

सूरः तलाक़ मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में १२ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. ऐ नबी! जब तुम औ़रतों को (ज़रूरत की वजह से) तलाक़ देना चाहो तो उन की इ़द्दत (यानी तुह्र की हालत) में तलाक़ दिया करो और (तलाक़ के बाद) इ़द्दत शुमार किया करो[१] और अपने पर्वरदिगार से डरते रहा करो (तलाक़ के बाद इ़द्दत के दिनों में) तुम उन को उन के मकानों से न निकाला करो और न ख़ुद निकला करो। हाँ, जिस समय वह खुली बदकारी करें तो निकाल दो। और यह अल्लाह की हदें हैं। जो कोई अल्लाह की हदों से आगे बढ़े गा उस ने अपने ऊपर बड़ा अत्याचार किया (तुम उस की हिक्मत नहीं जानते) शायद अल्लाह इस (तलाक़) के बाद कोई राह पैदा कर दे (यानी बनाव की सूरत पैदा हो जाये) २. फिर जब अपनी इ़द्दत को पहुंचने लगें तो इ़ज़्ज़त के साथ उन को रोक लिया करो, या (शरीअ़त के) दस्तूर के अनुसार उन को अलग कर दिया करो और दो सच्चे गवाह बना लिया करो[२]

....
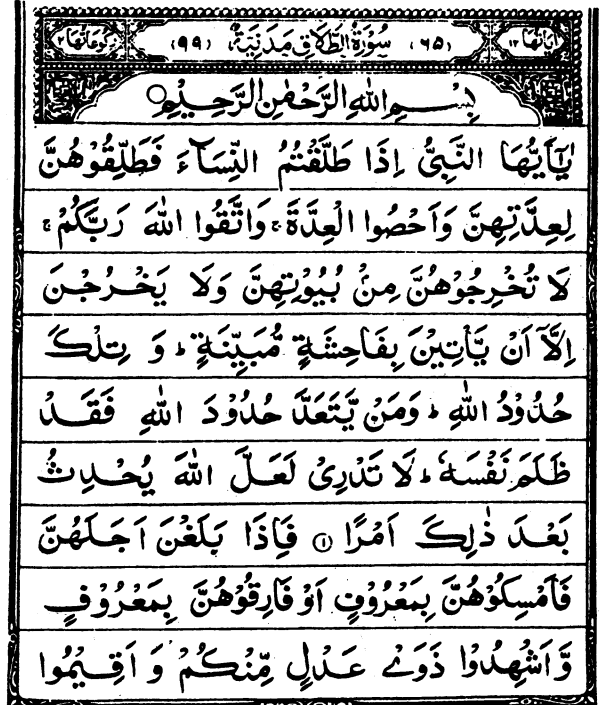
१. हज़रत इब्ने उ़मर रज़ि० (हज़रत उ़मर फ़ारूक़ के सुपुत्र) फ़रमाते हैं कि मैं ने अपनी बीवी को हैज़ की हालत में तलाक़ दे दी। हज़रत उ़मर ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इस का ज़िक्र किया तो आप ने फ़रमाया: अ़ब्दुल्लाह से कह दो कि रुजूअ़ कर लें यहाँ तक कि वह हैज़ से पाक हो जाये, फिर उस से संभोग न करे और उस को दूसरा हैज़ आ जाये, फिर वह पाक हो जाये तब अगर तलाक़ देनी हो तो तलाक़ दे दे। (यानी बग़ैर संभोग के तलाक़ दे दे और तुह्र में भी संभोग न करे) इसी पहली आयत में तलाक़ का यही शरई़ नियम बयान किया गया है। इस हदीस से मालूम हुआ कि हैज़ की हालत में तलाक़ दुरुस्त नहीं और जिस तुह्र (पाकी) में हम-बिस्तरी कर ली हो उस तुह्र में भी दुरुस्त नहीं। अगर इन दोनों सूरतों में से किसी सूरत में (यानी हैज़ की हालत में, या उस तुह्र में जिस में संभोग कर लिया हो) अगर तलाक़ दे दी हो तो रुजूअ़ कर लेना वाजिब है। बाक़ी रहा मस्अ़ला➲

➲कि ऐसी हालत में जो तलाक़ दी गयी है वह तलाक़ में शुमार हो गी या नहीं? तो इस का उत्तर यह है कि वह तलाक़ मानी जाएगी गी। और इस की दलील यह है कि हज़रत यूनुस बिन जुबैर ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (जिन्हों ने अपनी बीवी को हैज़ की हालत में तलाक़ दी थी) से खुद मालूम किया तो उन्हों ने उत्तर दिया कि अगर्चे इस हालत में तलाक़ दे कर बुरा किया, लेकिन शुमार की जाये गी। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो उस को तलाक़ में नहीं शुमार करते, तो इन के बारे में इमाम अबू दावूद फ़रमाते हैं कि एक सहाबी अबू ज़ुबैर हैं जो इस क़िस्म की रिवायत करते हैं, इन को छोड़ कर बाक़ी तमाम लोगों ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर से यही रिवायत किया है कि वह तलाक़ में शुमार हो गी (ज़ाहिर है कई रिवायत करने वालों के ख़िलाफ़ एक रावी की रिवायत पर अ़मल नहीं हो गा) इमाम दारु कुतनी की एक रिवायत में है कि ख़ुद अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ही ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इस बारे में पूछा तो आप ने कहा: हाँ, वह तलाक़ शुमार की जाये गी (दारु कुतनी)

इस आयत में एक दूसरा मस्अला यह बयान फ़रमाया गया कि तलाक़ देते समय या रुजूअ़ करते समय गवाह बना लेना चाहिये। इस की दलील यह है कि हज़रत अ़िम्रान बिन हुसैन से पूछा गया कि अगर किसी ने तलाक़ दे दी और रुजूअ़ भी कर लिया और किसी को गवाह न बनाया तो उस का क्या मस्अला है? उन्हों ने उत्तर दिया: ऐसी तलाक़ भी सुन्नत के ख़िलाफ़ है और रुजूअ़ भी सुन्नत के ख़िलाफ़ है। दोनों काम पर गवाह कर लिया करो और इस आयत में भी गवाह कर लेने का हुक्म है।

रुजूअ़ करने का क्या तरीक़ा है? यह तरीक़ा है कि बीवी से संभोग कर ले, या ख़्वाहिश के साथ उस को छू ले, या ज़बान से कह दे कि मैं ने रुजूअ़ कर लिया।

मस्अला:- जुनून या नशे की हालत में या ज़ोर-ज़बर्दस्ती की बुनियाद पर तलाक़ दी जाये, तो तलाक़ नहीं पड़े गी। इसी प्रकार एक मज्लिस की तीन तलाक़ भी एक ही मानी जाये गी। इसी प्रकार जिस पाकी में हम-बिस्तरी नहीं की है या हमल ज़ाहिर है और इन दोनों हालतों में तलाक़ दी है तो यह तलाक़ दुरुस्त है। और अगर तलाक़ का लफ़्ज़ साफ़ तौर पर न कहे, इसी प्रकार की गिन्ती भी साफ़ तौर पर न कहे जैसे, बीवी से यह कहे: "मुझ से अलग हो जा" या यह कहे: "अपने बाप के घर चली जा" या यह कह दे "मैं तुझ से कोई मतलब नहीं रखता" तो इस को "कनाया" कहा जाता है। इन सूरतों में शौहर से उस की निय्यत मालूम की जाये गी। अगर उस की निय्यत तलाक़ की थी तो तलाक़ मानी जाये गी, वर्ना नहीं। और अगर शौहर यह कहे कि "मैं ने क़तअ़ी तलाक़ दे दी" तो उस से पूछा जाये गा कि कितनी तलाक़ की निय्यत की थी? वह जितनी बतलाये उतनी ही मानी जाये गी। अगर कोई शख़्स अपनी बीवी को बहन कह दे, तो उस का यह क़ौल बातिल है और ज़िहार का हुक्म नहीं लगाया जाये गा।

इस आयत में तीसरा नियम यह बतलाया गया है कि निकाह, तलाक़ और रुजूअ़ में शरीअ़त के नियमों का पालन किया जाये गा और शरीअ़त में जो दस्तूर और तरीक़ा बतलाया गया है उस की पाबन्दी लाज़िम है। (हमीदी)

२. इस में यह बतलाया गया है कि तलाक़ की दो किस्में में १. रजअ़ी २. मुग़ल्लज़ा। पहली क़िस्म यह है कि एक या दो तलाक़ दी जाये। दूसरी क़िस्म यह है कि तीन दी जाये। पहली शक्ल में रुजूअ़ की गुन्जाइश रहती है और दूसरी यानी मुग़ल्लज़ा में रुजूअ़ की गुन्जाइश नहीं रहती है। (सनाई)

और गवाही अल्लाह के (ख़ौफ़ और अपनी नजात के) लिये दिया करो। जो लोग अल्लाह पर और पिछले दिन पर ईमान रखते हैं उन को यह नसीहत की जाती है जो शख़्स अल्लाह से डरे और उस से डर कर काम करे तो अल्लाह उस के लिये राह निकाल दे गा।➲

الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ۚ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ
يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ
يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا
يَحْتَسِبُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ۚ

إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِهِ ۚ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝ وَاللَّائِي يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيضِ مِن نِّسَائِكُمْ إِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلَاثَةُ أَشْهُرٍ وَاللَّائِي لَمْ يَحِضْنَ ۚ وَأُولَاتُ الْأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ أَن يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ وَمَن يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَل لَّهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ۝ ذَٰلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنزَلَهُ إِلَيْكُمْ ۚ وَمَن يَتَّقِ اللَّهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُعْظِمْ لَهُ أَجْرًا ۝ أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنتُم مِّن وُجْدِكُمْ وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا

३. और अल्लाह उस को ऐसी जगह से रोज़ी दे गा[३] जहाँ से उसे गुमान भी न हो गा जो कोई अल्लाह पर भरोसा करे वह उस के लिए काफ़ी हो गा। अल्लाह (अपनी इच्छा के अनुसार) अपना काम कर दिया करता है। अल्लाह ने हर चीज़ के लिये अन्दाज़ा मुक़र्रर कर रखा है। ४. जो तुम्हारी औ़रतें हैज़ आने से निराश हो चुकी हैं और जिन को अभी हैज़ आया ही नहीं और तलाक़ की नौबत आ जाये तो उन की तीन महीने की मीआ़द है और जो हमल वाली औ़रतें हैं उन की इ़द्दत उन के बच्चा जनने तक है[४]। जो कोई अल्लाह से डरे तो अल्लाह उस के लिये आसानी पैदा कर देता है। ५. यह ख़ुदाई आदेश है जो उस ने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किया है। और जो कोई अल्लाह से डरता है अल्लाह उस की ग़लतियाँ माफ़ कर दे गा और उस को बहुत बड़ा अज्र दे गा। ६. उन तलाक़ दी हुयी औ़रतों को अपनी पहुंच के मुताबिक़ रखा करो जहाँ तुम ख़ुद रहते हो और उन को तक्लीफ़ न देना ताकि उन को तंग करो[५]।

....

३. इस आयत में अल्लाह से डरने और उस पर भरोसा करने वालों के लिये बड़ी अहम बशारत है कि अल्लाह पाक उन को तंगी से निकाल दे गा और ऐसी जगह से उन को रोज़ी देगा जहाँ से वह सोच भी नहीं सकता है। 'तक़्वा' और 'तवक्कुल' (भरोसा) इस बात का नाम है कि अल्लाह पर कामिल भरोसा करते हुये शरीअ़त के अहकाम को सामने रखते हुये दीनी व दुनियावी कामों को हासिल करने के लिये कोशिश करना। हाथ-पैर तोड़ कर बेकार बैठ जाना और कुछ न करना इस का नाम तवक्कुल नहीं है।

४. बच्चे का ख़र्च बाप के ज़िम्मा है। बच्चा पेट में हो तो माँ को खिलाना-पहनाना हो गा। अगर बच्चा माँ का दूध पी रहा है तो दूध पिलाने की मज़दूरी माँ को देनी पड़े गी। शरीअ़त का उसूल यह है कि दूध का पिलाना माँ के ज़िम्मा नहीं है, अगर माँ दूध न पिलाये तो उसे मजबूर नहीं किया जाये गा। लेकिन जब तक माँ पिलाने पर राज़ी है वही दूध पिलाये और उस को दूध पिलाई की मज़दूरी दी जाये। अगर माँ पिलाने पर राज़ी न हो तब जहाँ चाहे दूध पिलवाए। इ़द्दत गुज़ारने तक औ़रत को रहने के लिये मकान देना ज़रूरी है (चाहे वह हमल से हो या न हो, या दूध पिला रही हो) (मुवज़्ज़िहुल् कुरआन) इ़द्दत के दर्मियान रहने के लिये मकान और खाने का ख़र्चा शौहर के ज़िम्मा उस वक़्त है जब कि तलाक़ रजई़ की इ़द्दत गुज़ार रही हो। अगर तलाक़ बायिन (वह तलाक़ जो वापस नही ली जा सकती) वाली हमल से हो तब भी ख़र्च शौहर के ऊपर है, जैसा कि इस आयत से ज़ाहिर है।

फ़ातिमा बिन्ते क़ैस को जब उन के शौहर ने तीनों तलाक़ें पूरी करा दीं तो उन्हों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से यह शिकायत की कि उन्हों ने जो ख़र्चा मुझे दिया है वह थोड़ा है। इस पर आप ने फ़रमाया: तेरा ख़र्चा तेरे शौहर के ज़िम्मा नहीं है, हाँ अगर तू गर्भवती होती तब था। फिर उन्हों ने पूछा कि इ़द्दत कहाँ

गुज़ारूँ? फ़रमायाः अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम (नेत्रहीन) के घर में, तब फ़ातिमा ने अ़िद्दत उन के घर में बितायी। इस हदीस से मालूम हुआ कि तलाक़ बाइन वाली औ़रत का ख़र्चा और आवास दोनों चीज़ें शौहर के ऊपर नहीं हैं (मुस्लिम शरीफ़)

जिस औ़रत का पति मर जाये उस के लिये अनिवार्य है कि जिस मकान में इन्तिक़ाल के समय थी उसी में अ़िद्दत भी गुज़ारे। इस की दलील यह है कि फ़रीआ़ बिन्त मालिक को जिस समय उन के पति का देहान्त हुआ था आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यही हुक्म दिया था। हालाँकि उन्हों ने यह भी कहा था कि मेरे पति ने अपना कोई ज़ाती मकान नहीं छोड़ा है। इस हदीस को तिर्मिज़ी ने भी रिवायत किया है और सहीह कहा है।

मस्अलाः- अ़िद्दत गुज़ारने वाली औ़रत के लिये, ख़ुश्बू लगाना, रंगे हुये कपड़े पहनना, मेंहदी या वसमा लगाना, सुर्मा लगाना और हर प्रकार का बनाव-सिंगार करना मना है। हाँ, अगर आँखें दुःख रही हैं तो रात को लगा सकती है, लेकिन सुब्ह को धो डाले। किसी भी प्रकार का ज़ेवर न प्रयोग करे। हाँ, सूसी वग़ैरह का रंगा हुआ कपड़ा पहन सकती है। यह सारी पाबन्दियाँ केवल अ़िद्दत बिताने तक हैं, अ़िद्दत बीत जाने के बाद जायज़ है। अक्सर विधवा महिलायें ज़ेवर को हमेशा के लिये तर्क कर देती हैं, यह ग़लत है। दूसरे निकाह को ग़लत समझना गुनाह है, अगर उ़म्र दूसरे निकाह के योग्य नहीं है तो औ़रतों की पहचान यह ज़ेवर, चूड़ी, नाख़ूनी और मेंहदी वग़ैरह ज़रूर लगानी चाहिये। (तफ़्सीर हमीदी)

५. इस से फ़ाइदा यह हो गा कि एक दूसरे को देखते रहने से आपसी रन्जिश दूर हो जाये गी और अल्लाह ने चाहा तो सुल्ह-सफ़ाई के बाद रुजूअ़ कर ले गा। यह हुक्म उन तलाक़ दी हुई औ़रतों के लिये है जिन को एक या दो तलाक़ें दी गयी हों, जिन के बाद अ़िद्दत के अन्दर रुजूअ़ जायज़ है, क्यों कि शुरू सूरः से बात तलाक़ रजअ़ी की चल रही है।

عَلَيْهِنَّ ؕ وَإِنْ كُنَّ أُولَاتِ حَمْلٍ فَأَنْفِقُوا عَلَيْهِنَّ
حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَآتُوهُنَّ
أُجُورَهُنَّ ۚ وَأْتَمِرُوا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوفٍ ۖ وَإِنْ
تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗ أُخْرٰى ۞ لِيُنْفِقْ ذُو سَعَةٍ
مِنْ سَعَتِهٖ ؕ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ
مِمَّا آتَاهُ اللّٰهُ ؕ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا ؕ
سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ۞ وَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ
عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنَاهَا حِسَابًا
شَدِيدًا وَعَذَّبْنَاهَا عَذَابًا نُكْرًا ۞ فَذَاقَتْ
وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ۞
أَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ فَاتَّقُوا

और अगर वह हमल से हैं तो बच्चा जनने तक उन को ख़र्च दिया करो फिर अगर वह तुम्हारी औलाद को दूध पिलायें (तो इस हाल में) उन की (दूध पिलवाई की) मज़दूरी उन को दिया करो और परस्पर मश्वरे के साथ नेक दस्तूर के मुवाफ़िक़ कारबन्द हुआ करो और अगर तुम हर्ज समझो तो उस मर्द की ज़िम्मेदारी पर उस के लिये कोई और औ़रत बच्चे को दूध पिलाये ७. जो कुशादगी वाला है वह अपनी कुशादगी के मुताबिक़ ख़र्च करे। और जिस की रोज़ी तंग है वह भी अल्लाह के दिये हुये माल में से ख़र्च करे। अल्लाह तआ़ला हरशख़्स को उतना ही हुक्म देता है जितनी उस को ताक़त दी है। अल्लाह तंगी के बाद आसानी कर दे गा। ८. कई बस्तियों ने अपने रब के हुक्म से और उस के रसूलों के हुक्म से सरकशी की थी फिर

اللهَ يٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ ۖ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ قَدْ اَنْزَلَ اللهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۙ رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا

हम ने बड़ी सख़्ती से उन के आमाल का मुहासबा किया और (उन के बुरे आमाल की सज़ा दी) उन को सख़्त अ़ज़ाब किया। ९. पस उन्हों ने अपने (बुरे) काम का मज़ा चखा और (उन का) परिणाम नुक़्सान हुआ। १०+११. और (आख़िरत में) अल्लाह ने उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है। पस तुम ऐ अ़क़्लमन्द ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो (देखो!) उसी ने एक नसीहत करने वाला रसूल तुम्हारी तरफ़ भेजा[६], जो अल्लाह के खुले-खुले अहकाम तुम को सुनाता है

....

६. 'ज़िक्र' से मुराद क़ुरआन शरीफ़ है। कुछ उ़लमा ने यहाँ रसूल मुराद लिया है। चूंकि क़ुरआन के पहुंचाने वाले नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ही हैं, इस लिये इस मुनासिबत से आप को 'ज़िक्र' शब्द से याद किया गया, इमाम इब्ने जरीर भी इसी को पसन्द फ़रमाते हैं (इब्ने कसीर)

عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۗ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ قَدْ اَحْسَنَ اللهُ لَهٗ رِزْقًا ۞ اَللهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۗ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّاَنَّ اللهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۞

ताकि जो लोग ईमान ला कर नेक अ़मल करते हैं उन को (कुफ़्र, शिर्क और हिर्स वग़ैरह की) तारीकी से निकाल कर (हिदायत के) नूर की तरफ़ ले जाये (यह आ़म ख़ुदाई क़ानून है कि) जो कोई अल्लाह पर ईमान लाये और नेक कार्य करे तो अल्लाह उस को जन्नतों में दाख़िल करे गा जिन के नीचे नहरें जारी हों गी, हमेशा-हमेशा उन में रहें गे। अल्लाह ने उन (नेक लोगों) के लिये इ़ज़्ज़त की रोज़ी अच्छी तरह तय्यार कर रखी है। १२. अल्लाह वह ज़ात है जिस ने सात आसमान तह ब तह पैदा किये और उन ही की तरह ज़मीनों को बनाया[७]। (हर समय) अल्लाह का हुक्म उन पर उतरता है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह ही हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है (क्यों कि दुनिया में तकवीनी हुक्म उसी का जारी है) और (यह भी जान लो कि) हर चीज़ अल्लाह के इ़ल्म के घेरे में है।

....

७. बुख़ारी, मुस्लिम की रिवायत में है कि जो शख़्स अत्याचार कर के एक गज़ ज़मीन किसी की लेगा तो उसे सातों ज़मीनों का तौक़ पहनाया जाये गा। बुख़ारी की रिवायत में है कि "उसे सातों ज़मीनों तक धंसा दिया जाये गा"। इस से कुछ लोगों ने सातों आसमान मुराद लिये हैं, उन्हों ने बिला वजह भाग-दौड़ की है और इख़्तिलाफ़ में फंस

कर रह गये हैं और बिला दलील क़ुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ किया है। एक अन्य हदीस में है "सातों आसमान और जो कुछ उन के दर्मियान है और सातों ज़मीनें और जो कुछ उन के दर्मियान है, कुर्सी के मुक़ाबले में ऐसे हैं जैसे किसी लंबे-चौड़े बहुत बड़े चटियल मैदानों में एक छल्ला पड़ा हो"।

बैहक़ी की "किताबुल् अस्मा वस्सिफ़ात" में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० का क़ौल है कि सातों ज़मीनों में से हर एक में नबी हैं तुम्हारे नबी की तरह, और आदम हैं तुम्हारेआदम की तरह, और नूह हैं तुम्हारे नूह की तरह, और इब्राहीम हैं तुम्हारे इब्राहीम की तरह, और ई़सा हैं तुम्हारे ई़सा की तरह। (इब्ने कसीर)

सूरः तह्रीम्- (66)

سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ مَدَنِيَّةٌ (١٠٧) (٦٦)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ
تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝١ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ
وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝٢ وَ
اِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ
فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ
بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ
قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ؕ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ
الْخَبِيْرُ ۝٣ اِنْ تَتُوْبَاۤ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ
قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ
مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ
بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ۝٤ عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ
اَنْ يُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ
مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ

सूरः तहरीम मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी[1]। इस में १२ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. ऐ (हमारे प्यारे) नबी! जिस चीज़ को अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल किया है तुम क्यों उसे हराम करते हो[2] तुम अपनी बीवियों की ख़ुशी चाहते हो। अल्लाह बख़्शनहार, मेहरबान है २. तुम्हारी क़समों के तोड़ने का तरीक़ा तुम्हारे लिये मुक़र्रर कर रखा है और अल्लाह तुम्हारा वली है और वह बड़ा इ़ल्म वाला और हिक्मत वाला है। ३. जब नबी ने अपनी बीवियों में से किसी बीवी को राज़ की बात बताई[3] (और मना भी कर दिया कि किसी से मत कहना) फिर जब उस (बीवी) ने (दूसरे को) वह (राज़) बता दिया और अल्लाह ने उस (नबी) पर वह (अ़मल) ज़ाहिर कर दिया तो[4] नबी ने (उस बीवी को) कुछ समझाया और कुछ टाल दिया, फिर जब नबी ने उस बीवी को यह बताया तो बीवी ने कहा: आप को किस ने बताया? नबी ने कहा: अल्लाह जानने वाले और ख़बर रखने वाले ने मुझे यह बताया है[5]। ४. तुम दोनों अगर तौबा करो (तो तुम को मुनासिब है) तुम्हारे दिल (इस ग़लतकारी से) बिगड़ चुके हैं, और अगर (फ़र्ज़ कर लो) उस

➲(रसूल) की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ साज़िशें करो गी (तो उस का कुछ न बिगाड़ सको गी, क्योंकि) अल्लाह ख़ुद और जिब्रील और समस्त नेक मुसलमान उस के चाहने वाले हैं इस के अ़लावा तमाम फ़रिश्ते उस के सहयोगी हैं। ५. (फ़र्ज़ कर लो) अगर पैग़ंबर तुम को तलाक़ दे दे तो तुम्हारे बदले में अल्लाह बहुत जल्द उस को ऐसी बीवियाँ दे गा जो तुम से बेहतर हों गी--फ़र्माबर्दार--ईमानदार--आजिज़ी करने वालियाँ--तौबा करने वालियाँ--अ़िबादत करने वालियाँ--रोज़ा रखने वालियाँ--बेवा (विधवा)--और कुंवारी।

....

१. शाने-नुज़ूलः- इस सूरः की इब्तिदाई आयतों के शाने नुज़ूल में मुफ़स्सिरीन के कई क़ौल हैं (१). यह हज़रत मारिया क़िबातिय्या के बारे में नाज़िल हुयी है। उन को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने ऊपर हराम कर लिया था। नसई शरीफ़ की एक रिवायत में है कि हज़रत आ़इशा और हज़रत हफ़्सा के कहने-सुनने से ऐसा हुआ था। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कफ़्फ़ारा अदा कर के अपनी क़सम तोड़ दी और उस लौंडी से मिले (२). सहीह बात यह है कि हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश के घर आप शहद पिया करते थे, इस शहद का वाक़िआ़ नीचे शाने-नुज़ूल में आ रहा है, इसी बाबत यह आयत नाज़िल हुयी। इसी घटना को दलील बना कर हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० का फ़त्वा है कि जो शख़्स कहे कि फ़लाँ चीज़ मुझ पर हराम है तो उस पर क़सम का कफ़्फ़ारा है। एक शख़्स ने आप से मस्अला पूछा कि मैं ने अपनी बीवी अपने ऊपर हराम कर ली है। आप ने फ़रमायाः वह तुझ पर हराम नहीं है। सब से ज़्यादा सख़्त कफ़्फ़ारा ग़ुलाम आज़ाद करना है। इमाम हंबल और उ़लमा का फ़तवा है कि जो शख़्स अपनी बीवी या लौंडी को, या किसी खाने-पीने की चीज़ को अपने ऊपर हराम कर ले, तो उस पर कफ़्फ़ारा वाजिब हो जाता है। इमाम शाफ़ई़ का फ़तवा है कि अगर हराम करने की निय्यत से मुराद तलाक़ है, तो तलाक़ पड़ जाये गी। इसी तरह अगर लौंडी को हराम करने से मुराद उस को आज़ाद करना निय्यत है, तो वह आज़ाद हो जाये गी (इब्ने कसीर)

२. शाने नुज़ूलः- नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी बीवी हज़रत ज़ैनब के घर जाते तो वह आप को शहद पिलातीं। दूसरी बीवियों ने इस पर नाराज़ हो कर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहाः आप के मुंह से मोम की बदबू आती है। आप को यक़ीन हो गया कि यह बदबू शहद पीने के असर से है। आप को तो बदबू से फ़ितरी तौर से नफ़रत थी ही, इस लिये आप ने फ़रमायाः मैं क़सम खाता हूँ कि भविष्य में कभी शहद न पियूँ गा, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (बुख़ारी)

३. शाने-नुज़ूलः- इस आयत के शाने नुज़ूल में शीआ़ की मोतबर तफ़्सीर "अस्करी" में एक रिवायत यूँ दर्ज है "नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जो पोशीदा बात अपनी पत्नी हज़रत हफ़्सा को बताई थी वह यह थी कि मेरे बाद अबू बक्र ख़िलाफ़त के वली हों गे, फिर तुम्हारे बाप (उ़मर) ख़लीफ़ा हों गे। यह एक राज़ की बात थी जो बीवी ने ज़ाहिर कर दी थी जिस के हक़ में यह आयत नं ३ नाज़िल हुयी। इस की ताईद दूसरी तफ़्सीर से यूँ होती है "नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी बीवी हफ़्सह को पोशीदा तौर पर बताया था कि मेरे बाद अबू बक्र और उ़मर ख़िलाफ़त के वली हों गे" (तफ़्सीर मजमउ़ल् बयान शीआ़, ईरान से प्रकाशित)

यह दोनों रिवायतें शीआ़ फ़िर्क़ा की मोतबर तफ़्सीर से ली गयी हैं। इन दोनों रिवायतों ने यह फ़ैसला कर दिया है कि अबू बक्र और उ़मर की ख़िलाफ़त बरहक़ है (सनाई)

४. शाने-नुज़ूलः- 'तुझ से जो ख़ता हुयी उस की गिरिफ़्त नहीं हो गी' बयान किया गया है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत हफ़्सह के घर में हज़रत मारिया से हमबिस्तरी (संभोग) कर ली थी। हज़रत हफ़्सह ने एतराज़ किया तो आप ने फ़रमायाः आज से मारिया मेरे ऊपर हराम है, लेकिन इस का ज़िक्र आ़इशा से मत करना। लेकिन हफ़्सह ने आ़इशा से बयान कर दिया इस पर आप को बड़ा गुस्सा आया यहाँ तक कि आप ने क़सम खा➲

ली कि अब मारिया के पास कभी न जाऊँ गा, उस समय यह आयत नाज़िल हुयी। बाज़ उ़लमा यह नक़ल करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी बीवी ज़ैनब के घर शहद पिया। आइशा और हफ़्सा ने आपस में तै किया कि जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हमारे पास आयें तो कह दिया जाये कि आप के मुँह से गोंद की बू आती है। चूंकि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को इस से नफ़रत थी कि आप के बदन, लिबास से कोई बुरी बू आये। चुनान्चे जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन के पास आये तो दोनों ने बारी-बारी यही कहा। आप ने कहा कि मैं ने तो हज़रत ज़ैनब के घर केवल शहद पिया है, तो अब कभी शहद न पियूँ गा, इस मौक़े पर यह आयत उतरी।

कुछ उ़लमा लिखते हैं कि हज़रत उम्मे सलमा के पास आप ने सफ़ेद शहद पिया था। हज़रत आइशा ने कहा कि इस शहद की मक्खी तो अ़रफ़ज (एक फूल) चूसती है, इस पर आप ने फ़रमाया कि अब मैं इस को नहीं पियूँ गा, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी (वहीदी)

बुरी बात पर अगर कोई क़सम खा ले तो अल्लाह ने इस का कफ़्फ़ारा मुक़र्रर किया है जिस का ज़िक्र सूरः माइदा की आयत नं० ८९ में बयान हो चुका है। इस लिये ऐसी क़समों को तोड़ डालना चाहिये और कफ़्फ़ारा देना चाहिये। पैग़ंबर को भी चाहिये कि अपनी क़सम को तोड़ दें और हलाल चीज़ को हलाल जानें। कुछ उ़लमा ने इस आयत से यह मतलब निकाला है कि हलाल चीज़ को अपने ऊपर हराम कर लेना क़सम ही की तरह है जिस में कफ़्फ़ारा वाजिब होता है। कुछ उ़लमा ने कहा है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कफ़्फ़ारा नहीं दिया था इस लिए कि आप के अगले-पिछले गुनाह माफ़ हो चुके हैं (वहीदी)

५. मुहद्दिसीन ने "हद्दसना" और "अंबाना" की पीरभाषा इसी आयत से निकाली है; इसलिए हदीस का इन्कार करने वाला क़ुरआन का मुन्किर है (राज़)

ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ
وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ
لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا
يُؤْمَرُوْنَ ۝٦ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا
الْيَوْمَ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٧
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً
نَّصُوْحًا ؕ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ
سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللّٰهُ النَّبِيَّ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ

६. ऐ मुसलमानो! तुम अपने आप को और अपने संबन्धियों को (दोज़ख़ की) आग से बचाओ[६] जिस का ईंधन (बुरे) आदमी और पत्थर हैं, उस पर फ़रिश्ते सख़्त मिज़ाज हों गे जो अल्लाह की नाफ़र्मानी न करें गे और जो उन को हुक्म हो गा वही करें गे ७. (उन को जवाब में उन ही फ़रिश्तों की ज़बानी कहा जाये गा) ऐ काफ़िरो! आज तुम उज़्र-माज़रत न करो। जो कुछ तुम किया करते थे उसी का बदला तुम को मिले गा ८. (पस) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के सामने साफ़ दिल से मुतवज्जह रहो[७] बहुत जल्द तुम्हारा पर्वरदिगार तुम्हारी ग़लतियाँ तुम से दूर कर दे गा और तुम को बाग़ों में दाख़िल करे गा जिन के नीचे नहरें जारी हों गी (यह सब कुछ उस रोज़ हो गा) जिस रोज़ अल्लाह अपने नबी को और

اَيۡدِيۡهِمۡ وَبِاَيۡمَانِهِمۡ يَقُوۡلُوۡنَ رَبَّنَاۤ اَتۡمِمۡ لَنَا نُوۡرَنَا وَاغۡفِرۡ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ۝۸

➲उस के साथ वाले ईमान्दारों को शर्मिन्दा नहीं करे गा, उन का नूर उन के आगे-आगे (दायें-बायें) चलता हो गा, वह कहें गे: हमारा नूर पूरा कर और हमारे गुनाह हम को माफ़ फ़रमा, बेशक तू हर काम पर क़ुदरत रखता है।

....

६. अपने बीवी-बच्चों को जहन्नम की आग से बचाओ का अर्थ यह है कि उन को दीन के रास्ते पर चलाओ, उन को तौहीद की शिक्षा दो। इसी लिए हदीस में आया है कि बच्चा ७ वर्ष का हो जाये तो उस को नमाज़ का हुक्म दो और जब दस वर्ष का हो जाये और नमाज़ न पढ़े तो उसे मार कर नमाज़ बाताओ। तुम्हारे ऐसा करने से वह मरने के बाद नजात पायें गे और जहन्नम की आग से बच जायें गे जिस का ईंधन आदमी और पत्थर हों गे।

७. ख़ालिस तौबा का यह है कि इन्सान गुनाह की माफ़ी चाहे और फिर उस गुनाह के करने का इरादा तक न करे और अगर गुनाह किसी इन्सान का हक़ मारना हो तो वह हक़ बाक़ाइदा अदा करे। गुनाह पर नादिम होना अल्लाह से माफ़ी चाहना और फिर उस गुनाह की तरफ़ न झुकना, इसी का नाम "तौ-बतुन्नसूह" है। (इब्ने कसीर)

يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ جَاهِدِ الۡكُفَّارَ وَالۡمُنٰفِقِيۡنَ وَاغۡلُظۡ عَلَيۡهِمۡ ؕ وَمَاۡوٰٮهُمۡ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئۡسَ الۡمَصِيۡرُ ۝۹ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيۡنَ كَفَرُوا امۡرَاَتَ نُوۡحٍ وَّامۡرَاَتَ لُوۡطٍ ؕ كَانَتَا تَحۡتَ عَبۡدَيۡنِ مِنۡ عِبَادِنَا صَالِحَيۡنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمۡ يُغۡنِيَا عَنۡهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيۡـًٔا وَّقِيۡلَ ادۡخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيۡنَ ۝۱۰ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيۡنَ اٰمَنُوا امۡرَاَتَ فِرۡعَوۡنَ ۘ اِذۡ قَالَتۡ رَبِّ ابۡنِ لِىۡ عِنۡدَكَ بَيۡتًا فِى الۡجَـنَّةِ وَنَجِّنِىۡ مِنۡ فِرۡعَوۡنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِىۡ مِنَ الۡقَوۡمِ الظّٰلِمِيۡنَ ۝۱۱ وَمَرۡيَمَ ابۡنَتَ عِمۡرٰنَ الَّتِىۡۤ اَحۡصَنَتۡ فَرۡجَهَا فَنَفَخۡنَا فِيۡهِ مِنۡ رُّوۡحِنَا وَصَدَّقَتۡ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتۡ مِنَ الۡقٰنِتِيۡنَ ۝۱۲

९. ऐ नबी! तुम काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद किया करो और उन के सामने मज़बूत रहा करो और उन का ठिकाना जहन्नम है वह बहुत बुरी जगह है। १०. अल्लाह काफ़िरों के लिये नूह (नबी) और लूत (नबी) की औरतों को उदाहरण के तौर पर पेश करता है वह दोनों हमारे नेक बन्दों के मातहत (बीवी के तौर पर) थीं, फिर उन्हों ने उन की (शरीअ़त के अहकाम में) नाफ़र्मानी की, पस वह दोनों (नबी) उन से अल्लाह का प्रकोप कुछ भी न हटा सके और उन को कहा गया कि आग में दाख़िल होने वालों के साथ तुम भी दाख़िल हो जाओ ११. अल्लाह ईमान्दारों के लिये फ़िऱ्औन की बीवी की मिसाल पेश करता है। जब उस ने कहा: ऐ मेरे रब! जन्नत में मेरे लिये घर बना और मुझे (अत्याचारी) फ़िऱ्औन और उस के (ज़ालिम) वज़ीरों से नजात दे और मुझ को उस ज़ालिम क़ौम से छुड़ा। १२. और मरयम बिन्त इ़म्रान को उदाहरण के तौर पर पेश करता है जिस ने अपनी इ़ज़्ज़त को सुरक्षित रखा तो हम ने उस के अन्दर अपनी तरफ़ से रूह➲

फूँकी' और उस ने अपने रब के अहकाम और किताबों की तस्दीक़ की और वह फ़रमा-बर्दारों में थी।

....

८. यानी किसी तरह तुम से सुस्ती देखने में न आये और उन से हर्गिज़ मुंह न फेरो, बल्कि यह समझो कि वह तुम्हारे मातहत हैं। इस आयत में गोया "ला तहिनू वला तह-ज़नू........की तरफ़ इशारा है। 'वग़लुज़' के माना सख़्त बात करना, या बुरे अल्फ़ाज़ निकालना नहीं, क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस प्रकार के जुम्ले अपनी ज़बान से कभी नहीं निकाले। वैसे जंग में इस प्रकार की बेतुकी बातें कुछ भी फ़ाइदेमन्द नहीं। इसी लिये दूसरी आयत में फ़रमाया: "तुम मुसलमान इस प्रकार एक जुट हो कर जिहाद किया करो कि ग़ैरमुस्लिम तुम में पुख़्तगी पायें"। इस आयत में भी यही माना मुराद है। (सनाई)

९. यानी उस के गर्भ में अपनी कुदरत से बच्चा पैदा किया। चुनान्चे हज़रत मरयम ने मुख़ालिफ़ों के एतराज़ के जवाब में उसी बच्चे की तरफ़ इशारा कर के फ़रमाया था कि खुद इस बच्चे से पूछ लो कि वह कैसे पैदा हुआ है? उस बच्चे ने ऐसा माकूल उत्तर भी दिया कि सब ख़ामोश हो गये (देखें, सूरः मरयम आयत २७-से-३२) इस लिये यहूद के आरोपों को बिल्कुल निराधार समझना चाहिये और हज़रत मरयम अ़लै० को पाक दामन। यहूद ने हज़रत मरयम पर ज़िना का आरोप लगाया और हज़रत ईसा को नाजायज़ औलाद कहा। कुरआन ने उन के इस आरोप को बातिल और बहुत बड़ा इल्ज़ाम कहा है। यहूद के इस इल्ज़ाम से नाराज़ हो कर अल्लाह तआ़ला ने उन पर लानत फ़रमाई।

आज-कल हमारे मुल्क के राज्य पंजाब में एक नया फ़िर्क़ा पैदा हुआ है जो कुरआन को अल्लाह का कलाम मानता है और अपना नाम अहमदी मुसलमान रखा हुआ है। इस का भी अ़क़ीदा यही है कि हज़रत मसीह अ़लै० नाजायज़ औलाद थे। चुनान्चे इस फ़िर्क़ा के राहनुमा मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी अपनी किताब "अय्यामुस्सुल्ह" में फ़ार्सी भाषा में लिखते हैं "यहूदियों में यह चलन था कि निकाह से पूर्व केवल मंगनी के बाद भी दूल्हा-दुल्हन मिलाप कर लिया करते थे"। मरयम की भी हालत कुछ ऐसी ही थी जो अपने होने वाले शौहर (यूसुफ़ नज्जार) के साथ मंगनी की हालत में निकाह से पूर्व हम-बिस्तर हुई, इस से हमल ठहर गया जो मसीह के नाम से पैदा हुआ। इस विषय में और भी विस्तार से अपनी किताब "कश्ति-ए-नूह" में लिखते हैं "मरयम को निकाह से पहले ही हमल ठहर गया था, इस लिये पर्दा डालने की ग़रज़ से निकाह किया गया, जैसा कि आजकल भी किसी लड़की का नाजायज़ हमल छुपाने के लिये तुरन्त निकाह कर दिया जाता है। मिर्ज़ा जी की दोनों पुस्तकों के जुम्लों से साफ़ साबित होता है कि हज़रत ईसा मसीह शरीअ़त की परिभाषा में नाजायज़ औलाद थे नऊ़ज़ुबिल्लाह-- लानत हो ऐसे शख़्स पर और अल्लाह मुसलमानों को इस बातिल अ़क़ीदे से सुरक्षित रखे (सनाई)

बयान किया गया है कि फ़िर्औ़न मर्दूद ने अपनी बीवी आसिया के ईमान लाने की ख़बर पा कर उस के हाथ-पैर बंधवा दिये और लोहे की कीलें गाड़ दीं,। उसी समय हज़रत आसिया ने यह आयत न० ११ वाली दुआ़ की थी। चुनान्चे तुरन्त अल्लाह तआ़ला ने पर्दा हटा कर उन को जन्नत का मकान दिखा दिया। वह देख कर हंसने लगीं तो फ़िर्औ़न ने कहा: यह तो पागल हो गयी है, चुनान्चे इसी प्रकार यातनायें दे कर उन को शहीद कर दिया। हदीस शरीफ़ में आया है कि बहिश्त की सब औ़रतों में चार औ़रतें सब से अफ़्ज़ल हैं १. हज़रत ख़दीजा २. हज़रत फ़ातिमा ३. हज़रत आसिया ४. हज़रत मरयम। दूसरी हदीस में है कि मर्दों में तो बहुत से कामिल गुज़रे हैं और औ़रतों में यही कामिल हैं यानी हज़रत आसिया, ख़दीजा, फ़ातिमा और मरयम। और आ़इशा की फ़ज़ीलत दूसरी औ़रतों पर ऐसी है, जैसे सरीद खाने की फ़ज़ीलत और खानों पर--या अल्लाह! उन नेक माओं की हम गुनहगार औलाद हैं इस लिये हम पर भी रहम फ़रमा! आमीन! (वहीदी)

नोटः- इस सूरः की अन्तिम तीन आयतों में विशेष कर चार महिलाओं (१) हज़रत नूह की पत्नी (२) हज़रत लूत की पत्नी (३) फ़िरऔ़न की पत्नी और (४) मरयम बिन्त इ़मरान का बयान है। इन चारों में प्रथम दो तो

➲काफ़िर और नाफ़रमान हैं और अन्तिम दो मोमिन और फ़रमाबर्दार।

दोनों काफ़िर महिलाओं के बारे में फ़रमाया कि यह ख़ियानत करती थीं अपने पैग़बर शौहरों पर ईमान नहीं लायी थीं। इन का हाल यह था कि अपने पतियों को पागल और दीवाना कहती थीं। इन के पतियों के पास जो लोग दीन हासिल करने आते थे उन के बारे में काफ़िरों को सूचनायें देती थीं...................इन दोनों काफ़िर महिलाओं की मिसाल पेश कर के आजकल की उन्हीं जैसी महिलाओं को अल्लाह ने धमकी दी है कि जिस प्रकार हम ने कुफ़्, शिर्क अवज्ञा और सरकी के नतीजा में नूह और लूत की बीवियों को हलाक कर दिया, इसी प्रकार तुम सब भी हलाक और बर्बाद कर दी जाओ गी और तुम्हें बचाने वाला कोई न हो गा।

दो मोमिन और फ़रमाबर्दार महिलाओं की मिसाल पेश कर के आज कल की मोमिन और फ़रमाबर्दार, लेकिन मज़लूम महिलाओं को अल्लाह शुभसूचना दे रहा है कि जिस प्रकार वह दोनों महिलायें कुफ़् व शिर्क के माहौल में भी दीन इस्लाम पर क़ायम रहीं और हर प्रकार के कष्ट झेलती रहीं, तुम भी उन्हीं की राह को इख़्तियार करो और तनिक भर दिल में मलाल न लाओ। हम तुम्हारा भी मर्तबा दुनिया और आख़िरत में उसी प्रकार बुलन्द करें गे जिस प्रकार उन दोनों का किया।

इस सूरः की अन्तिम तीन आयतों में आजकल की मौमिन और काफ़िर महिलाओं को बड़ी ज़बर्दस्त शिक्षा दी गयी है। अल्लाह हम सब सब को नेकी की तौफ़ीक़ बख़्शे--आमीन ....*ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी*

*****

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पारः तबा-र-कल्लज़ी (29)

संक्षिप्त विषय सूची

तबा-र-कल्लज़ी -(29)

सूरः मुल्क - 67

सूरः मुल्क् (बादशाहत) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[1]। इस में ३० आयतें और २ रूकूअ़ हैं। शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।
१. बड़ी बर्कत वाला है वह अल्लाह जिस के हाथ में तमाम मुल्क की हुकूमत है और वह हर एक काम पर कुदरत रखता है। २. वही है जिस ने मौत और ज़िन्दगी पैदा की[2] ताकि अल्लाह तुम को जाँचे कि तुम में से कौन अच्छे कार्य करने वाला है। और वह अल्लाह बड़ा ग़ालिब और बड़ी बख़्शिश वाला है। ३. वही अल्लाह है जिस ने सात आकाश तह ब तह पैदा किये। तुम रहमान की पैदाइश में कुछ फ़ुतूर {कमी,अ़ैब} पाते हो? (ज़रा) अपनी नज़र लौटाओ और देखो क्या तुम्हें कुछ नुक़्स नज़र आता है? ४. फिर बार-बार नज़र लौटाओ। नज़र तुम्हारी तरफ़ थकी (माँदी,मतलब दूसरी बारी में) हारी वापस आये गी। ५. हम ने चरागों (यानी सितारों) के साथ पहले आसमान को सजाया है और हम ने उन को शैतानों के लिये धुतकार बनाया है और हम ने उन के लिये आग का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है[3] ६. और जो अपने रब का इन्कार करते हैं उन के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब है और वह बुरा स्थान है। ७. जब वह लोग उस में डाले जायें गे तो उस की बड़े ज़ोर की आवाज़ सुनें गे और वह जोश मारती हो गी[4] ८. ऐसी कि मारे जोश के फट न जाये

....
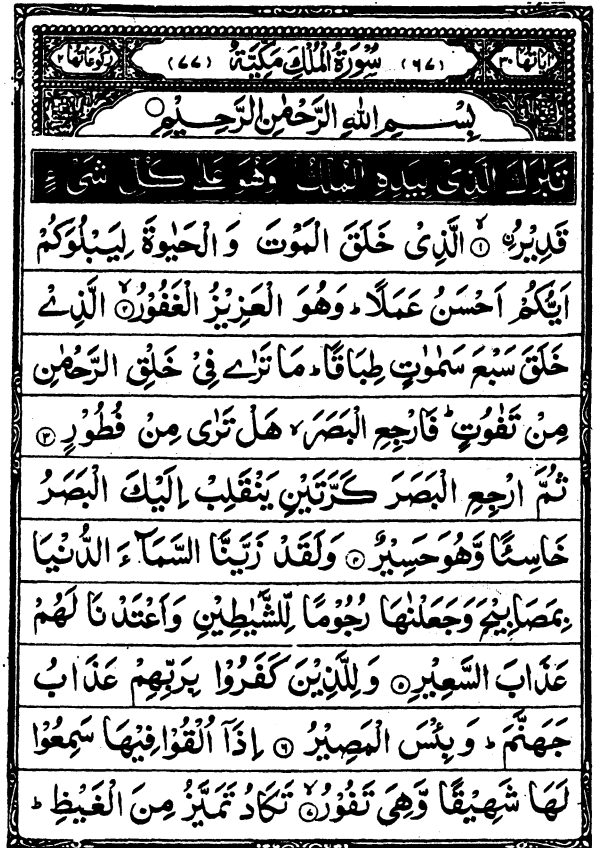
१. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कुरआन मजीद में एक सूरः ३० आयात की है जो अपने पढ़ने ➲

➲वाले की सिफ़ारिश करती रहे गी, यहाँ तक कि उसे बख़्शा दिया जाये गा, वह सूरः मुल्क है। (तिर्मिज़ी, अबूदावूद, नसई, इब्ने माजा) एक दूसरी हदीस में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि कुछ लोगों ने अन्जाने में किसी क़ब्र के ऊपर ख़ेमा गाड़ दिया, उन लोगों ने क़ब्र के अन्दर सूरः मुल्क के पढ़ने की आवाज़ सुनी यहाँ तक कि उस ने पूरी सूरः समाप्त कर ली। उन लोगों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूरा क़िस्सा बयान फ़रमाया तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: यह सूरः अ़ज़ाब से बचाने वाली और नजात दिलाने वाली है (चूंकि वह दुनिया में इस सूरः को पढ़ता था) इस लिये अल्लाह के अ़ज़ाब से नजात दिलाये गी। ग़िशा की नमाज़ के बाद इस सूरः की तिलावत करनी चाहिये।

नोटः- पढ़ने वाला तो आ़लमे अर्वाह में था मगर आवाज़ क़ब्र से आती थी, जैसे फ़ोन में बात करने वाला तो कहीं दूर होता है मगर आवाज़ पास में सुनाई देती है अल्लाह बेहतर जाने (सनाई) इस सूरः का हर रात तिलावत करना क़ब्र के अ़ज़ाब से बचने के लिये बेहतरीन अ़मल है।

२. मौत भी अल्लाह तआ़ला की मख़्लूक़ है, जैसे ज़िन्दगी। अ़हले हदीस का यही कहना है। मोतज़िला फ़िर्क़ा का कहना है कि मौत नाम है ज़िन्दगी न होने का। अहले हदीस कहते हैं कि हम ज़िन्दगी से पहले भी मौजूद थे जैसे अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: "तुम क्यों कर अल्लाह का इन्कार करो गे जब कि तुम मौत की हालत में थे फिर तुम को ज़िन्दगी की हालत में लाये"। (सूरः बक़रः आयत न० २७) इस आयत से मालूम हुआ कि मौत भी एक मख़्लूक़ है। एक अन्य हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क़ियामत के दिन मौत एक मेंढे की शक्ल में लायी जाये गी फिर उस को जन्नत और दोज़ख़ के दर्मियान काट डाला जाये गा (वहीदी)

३. सितारे तीन फ़ाइदों के लिये पैदा किये गये हैं (१) आसमान की ज़ीनत (खूबसूरती) के लिये (२) शैतानों को मारने के लिये (३) राह पाने वालों के लिये। जो शख़्स इन तीन के अ़लावा कोई और फ़ायदा सोचता है जैसे ज्योतिष आदि, वह ग़लती पर है और राय की पैरवी कर रहा है और सीधी राह से हटा हुआ है (इब्ने जरीर)

४. जब यह कुफ़्फ़ार उस में डाले जायें गे तो जहन्नम की डरावनी आवाज़ सुनें गे जो उस के जोश मारने से निकलती होगी। देखा भी यही गया है कि जब आग ज़्यादा गर्म और तेज़ हो जाती तो उस की लपटों में से एक प्रकार को आवाज़ निकलती है, बिल्कुल इसी प्रकार जहन्नम की आवाज़ हो गी। (हक़्क़ानी)

كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ⑧ قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ⑨ وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ⑩ فَاعْتَرَفُوا بِذَنْبِهِمْ فَسُحْقًا لِأَصْحَابِ السَّعِيرِ ⑪ إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ⑫ وَأَسِرُّوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ⑬

जब कभी कोई जमाअ़त उस में डाली जाये गी तो उस के दारोग़ा उन से पूछें गे: क्या तुम्हारे पास कोई समझाने वाला न आया था? ९. कहें गे कि हाँ, मगर हमने उन को झुठलाया और हम ने कहा कि अल्लाह ने कोई किताब नही उतारी (ऐ समझने वालो) तुम बहुत बड़ी ग़लती में हो। १०. और कहें गे कि अगर हम सुनते या अक़्ल से काम लेते तो आज हम आग वालों में से न होते। ११. पस उन्हों ने अपने गुनाहों को स्वीकार किया, सो ऐसे जहन्नमियों के लिये रहमत से दूरी हो। १२. हाँ, जो लोग अपने रब से (बिना देखे हुए) डरते हैं उन के लिये➲

الَا یَعۡلَمُ مَنۡ خَلَقَ ؕ وَ هُوَ اللَّطِیۡفُ الۡخَبِیۡرُ ۝ هُوَ الَّذِیۡ جَعَلَ لَکُمُ الۡاَرۡضَ ذَلُوۡلًا فَامۡشُوۡا فِیۡ مَنَاکِبِهَا وَ کُلُوۡا مِنۡ رِّزۡقِهٖ ؕ وَ اِلَیۡهِ النُّشُوۡرُ ۝ ءَاَمِنۡتُمۡ مَّنۡ فِی السَّمَآءِ اَنۡ یَّخۡسِفَ بِکُمُ الۡاَرۡضَ فَاِذَا هِیَ تَمُوۡرُ ۝ اَمۡ اَمِنۡتُمۡ مَّنۡ فِی السَّمَآءِ اَنۡ یُّرۡسِلَ عَلَیۡکُمۡ

बख़्शिश और बड़ा (अच्छा) बदला है[७] १३. और तुम अपनी बात आहिस्ता कहो या पुकार कर कहो वह सीनों के राज़ भी जानता है। १४. सुनो! जो पैदा करने वाला है वह सब कुछ जानता है और वह बहुत बारीक देखने वाला और ख़बर रखने वाला है[८] १५. वह अल्लाह वही है जिस ने ज़मीन को नर्म (बराबर) किया पस तुम उस के किनारों पर फिरो और उसी अल्लाह का दिया हुआ रिज़्क़ खाओ, और तुम को उसी की तरफ़ जाना है। १६. क्या तुम उस (ज़ात पाक) से बेख़ौफ़ हो जो आसमानों में है कि तुम सब को ज़मीन में धंसा दे फिर वह (ज़मीन) तेज़ी के साथ हिलने लग जाये? १७. क्या तुम उस (ज़ात पाक) से बेख़ौफ़ हो जो आसमानों में है[९] इस बात से कि वह तुम पर पथराव कर दे? फिर तुम जान लो कि मेरा डराना कैसा है।

....

५. हर डराने वाले को झुठलाने का यह मतलब है कि उन के अह्काम व हिदायत को क़ुबूल न करना और उन के नायब यानी उ़लमा और तब्लीग़ करने वालों को झुठलाना और उन का मज़ाक़ उड़ाना है। डराने वाले को झुठलाने का यह मतलब है कि अल्लाह की निशानियों पर ग़ौर-फ़िक्र न करना, तौहीद और खुदापरस्ती पर न चलना, रस्म व रिवाज और नफ़्स की ख़ाहिश की पैरवी करना, बुतपरस्ती और बुरे कामों में लगे रहना। हमारे रिश्तेदार और निकट संबन्धी हमारे सामने रोज़ मरते हैं यह भी हमें डराते और आगाह करते हैं कि तुम्हें भी एक दिन हमारी तरह मरना है और दुनिया की माल-दौलत यूँ ही छोड़ कर चले जाना है।

६. अपने गुनाहों को स्वीकार करना अल्लाह पाक को बहुत पसन्द है। चुनान्चे हदीस शरीफ़ में आया है कि बन्दा जब अल्लाह के सामने हाथ फैला कर अपने गुनाहों को स्वीकार करता है तो अल्लाह की रहमत जोश में आ जाती है और वह उस के गुनाह माफ़ कर देता है। हज़रत आदम अ़लै० का अपनी ग़लती को स्वीकार करना ही था जिस के तुफ़ैल अल्लाह ने उन की ख़ता माफ़ फ़रमा दी। और अपनी ग़लती को स्वीकार न करना ही था कि इबलीस को मरदूद क़रार दिया गया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं जब तक लोग अपने आप का जाइज़ा लेते रहें गे और अपनी बुराइयों पर नज़र रखें गे कभी हलाक न हों गे (अहमद) एक दूसरी हदीस में फ़रमाया: क़ियामत के दिन इस तरह दलील दी जाये गी कि बन्दा ख़ुद ही समझ लेगा कि मैं जहन्नम में जाने के क़ाबिल हूँ (इब्ने कसीर/अहमद) इस आय: में इसी ग़लती के स्वीकार कर लेने का ज़िक्र है मगर उस समय ग़लती को तस्लीम करना बेकार हो गा। जरूरत इस बात की है कि इन्सान दुनिया ही में बेदार हो और अपने गुनाहों को स्वीकार कर के तौबा करे और अल्लाह से बख़्शिश माँगे।

७. बुख़ारी, मुस्लिम की रिवायत में है कि जिन सात आदमियों को क़ियामत के दिन अल्लाह अपने अर्श के साये के नीचे जगह देगा उन में एक वह शख़्स भी हो गा जिसे कोई माल और सुन्दरता रखने वाली महिला ज़िना की तरफ़ बुलाये और वह कह दे कि मैं अल्लाह से डरता हूँ। और उस शख़्स को भी अर्श के साया के नीचे जगह देगा जो इस प्रकार पोशीदा तौर पर सदक़ा करे कि दायें हाथ के ख़र्च करने की ख़बर बायें हाथ को न हो। मुस्नद बज़्ज़ार की एक रिवायत में है कि सहाबा ने एक मर्तबा कहा कि एक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! हमारे दिलों की जो हालत आप के सामने होती है आप से अलग होने के बाद वह नहीं रहती। आप ने फ़रमाया: यब बताओ

➲कि रब के साथ तुम्हारा क्या ख़याल रहता है? उत्तर दिया कि ज़ाहिर-बातिन हर हाल में हम उसी ही को अपना रब मानते हैं। आपने फ़रमाया: जाओ, फिर यह निफ़ाक़ नहीं है (इब्ने कसीर)

८. इस आयत में अल्लाह तआला उन बेवक़ूफ़ आलिमों का रद्द कर रहा है जो समझते हैं कि अल्लाह को कुल्लियात (बड़ी-बड़ी चीज़ों) का ज़िल्म है मगर जुज़ियात(छोटी मोटी, मामूली चीज़ों) का ज़िल्म नही है। जैसे दुनिया कुल है और दुनया की तमाम चीज़ें जुज़ हैं। यानी अल्लाह को ज़मीन के अन्दर की हर-हर चीज़ का ज़िल्म नही है। या यूँ समझें कि एक सन्दूक़ है। और उस के अन्दर हर प्रकार की चीज़ें रखी हुयी हैं तो अल्लाह सन्दूक़ को तो जानता है मगर उस के अन्दर की तमाम चीज़ों का उसे ज़िल्म नही है।

इस आयत में इस बात की तरफ़ भी इशारा है कि बन्दों के क़ौल और अ़मल सब अल्लाह की मख़्लूक़ हैं और यही मज़हब अहले हदीस का है। (वहीदी)

९. इस आयत से मालूम होता है कि अल्लाह तआ़ला ऊपर की जानिब है। अल्लाह का अर्श पर होना और आसमान पर होना, दोनों का एक ही मतलब है। अहले सुन्नत, उलमा, इमाम अबू हनीफ़ा, मालिक, अहमद वग़ैरह का यही मज़हब है कि अल्लाह अर्श पर है मगर उस की कैफ़ियत मालूम नहीं।

حَاصِبًا ۚ فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرِ ﴿١٧﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿١٨﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا
إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَافَّاتٍ وَيَقْبِضْنَ ۚ مَا يُمْسِكُهُنَّ
إِلَّا الرَّحْمَٰنُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ﴿١٩﴾ أَمَّنْ هَٰذَا
الَّذِي هُوَ جُنْدٌ لَكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِنْ دُونِ الرَّحْمَٰنِ ۚ
إِنِ الْكَافِرُونَ إِلَّا فِي غُرُورٍ ﴿٢٠﴾ أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي
يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ ۚ بَلْ لَجُّوا فِي عُتُوٍّ وَ
نُفُورٍ ﴿٢١﴾ أَفَمَنْ يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ أَهْدَىٰ
أَمَّنْ يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٢٢﴾ قُلْ هُوَ
الَّذِي أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ
وَالْأَفْئِدَةَ ۖ قَلِيلًا مَا تَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾ قُلْ هُوَ الَّذِي
ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾ وَيَقُولُونَ
مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾ قُلْ

१८. और उन (झुठलाने वालों) से पहले लोगों ने भी झुठलाया था , फिर मेरी नाराज़गी उन पर कैसी हुयी (ऐसी कि सब तबाह हो गये) १९. क्या यह लोग अपने ऊपर परिन्दों को नहीं देखते जो सफ़ें बाँध कर परों को बन्द किये हुये चलते हैं रहमान उन को गिरने से रोकता है। बेशक अल्लाह हर चीज़ को देख रहा है[१०] २०.कौन शख़्स है जो अल्लाह के मुक़ाबला में तुम्हारा हिमायती बन कर तुम्हारी मदद करे (सच तो यह है कि कोई भी ऐसा नहीं) पस यह इन्कार करने वाले सरासर धोके में हैं (और पत्थरों, ईंटों की बनी हुयी चीज़ों की पूजा करते हैं) २१. (इन से पूछो कि) भला बताओ तो सही। अगर अल्लाह अपनी रोज़ी तुम से बन्द कर ले तो कौन है जो तुम को रोज़ी दे। बल्कि यह लोग सरकशी और नफ़रत पर अड़े हुये हैं[११]।२२. क्या वह शख़्स जो अपने मुँह के बल औंधा चलता है वह अधिक हिदायत पर है, या वह जो सीधी राह पर चल रहा है[१२]। २३. तुम कहो! मेरा माबूद वही है जिस ने तुम को पैदा किया और तुम्हारे लिये सुनने और देखने की क़ुव्वत पैदा की और दिल बनाये (जिन से उन की ज़िन्दगी है, लेकिन) तुम लोग बहुत कम शुक्र करते हो २४. (ऐ नबी! उन➲

से) कहो: वही मेरा माबूद है जिस ने तुम को ज़मीन पर आबाद किया और (क़ियामत के दिन) तुम लोग उस के पास जमा किये जाओ गे। २५. और कहते हैं कि यह वादा कब पूरा हो गा? अगर तुम सच्चे हो तो बताओ?

....

१०. उन परिन्दों के अन्दर अल्लाह ने ऐसा हल्कापन रखा है कि पर समेटने के बावजूद भी हवा में उड़ते चले जाते हैं। दूसरे बदन जो उन से छोटे होते हैं वह इस प्रकार हवा में नही ठहर सकते।इस से मालूम हुवा कि हवा और फ़ज़ा दोनों में अल्लाह की बादशाहत है। इमाम नह्हास कहते हैं कि जब परिन्दे अपने पर खोल कर हवा में उड़ते हैं तो उन को "साफ़्फ़ात" कहा जाता है और जब समेट लेते हैं तो "क़ाबिज़" कहा जाता है। 'साफ़्फ़ात' के मुक़ाबला में 'यक़्बिज़ू-न' मुज़ारेअ़ (भविष्यकाल) का सेग़ा इस्तेमाल किया गया है ताकि यह मालूम हो जाये कि परिन्दों में उड़ते समय पर फैलाये रहना अक्सर बात है और समेट लेना और पर मार कर उड़ना कभी-कभी। (हक़्क़ानी)
११. 'लजाज' (अकड़ना) इन्सान में दो ताक़तें हैं (१) अ़मलिय्या (२) अ़िलमिय्या। और इन दोनों ताक़तों को नुफ़ूर और उ़तुव्व बातिल करती हैं। 'उ़तुव्व' दुनिया की हि़र्स और लालच के सबब पैदा होता है जो अ़मलिय्या क़ुव्वत को बातिल करता है। और 'नुफ़ूर' हक़ को न पहचान पाने की वजह से पैदा होता है जो अ़िल्मिय्या क़ुव्वत को रद्द करता है। यानी इन्हों ने अपनी दोनों क़ुव्वतों को ख़राब कर दिया। (हक़्क़ानी)
१२. यहाँ पर अल्लाह ने मोमिन और काफ़िर की मिसाल बयान फ़रमायी है कि काफ़िर की मिसाल उस के कुफ़्र में इस तरह है जैसे कोई टेढ़ा हो कर औंधे मुँह चले और उस को यह मालूम न हो कि किधर चलता है और कहाँ जाता है, बल्कि हैरान-परेशान हो कर रास्ता भूल जाये, तो क्या ऐसा शख़्स कभी रास्ता पा सकता है? हर्गिज़ नहीं। और मोमिन की मिसाल ऐसी है जैसे कोई शख़्स सीधा हो कर खुले रास्ते पर चलता है। वह स्वयँ भी सीधा है और जिस राह पर चल रहा है वह भी सीधी है, तो ऐसा शख़्स अवश्य ही सीधी राह पाये गा। दुनिया में उन की यह मिसाल है और आख़िरत में भी उन का यही हाल होगा कि मोमिन सीधा "सिरात" पर चले गा और वह उस को जन्नत में पहुंचा देगी और काफ़िर मुँह के बल चलता हुआ जहन्नम में जा गिरे गा।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि लोगों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा कि लोग क़ियाभत के दिन मुँह के बल किस तरह चलें गे? आपने फ़रमाया: जिस ने उन को पाँव के बल चलाया है वह उन को मुंह के बल भी चला सकता है। (सलफ़िय्या)

إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝
فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سِيئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا
وَقِيلَ هٰذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَدَّعُونَ ۝ قُلْ
أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَمَنْ مَعِيَ أَوْ رَحِمَنَا
فَمَنْ يُجِيرُ الْكٰفِرِينَ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ قُلْ هُوَ
الرَّحْمٰنُ آمَنَّا بِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُونَ
مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ
أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَأْتِيكُمْ بِمَاءٍ مَعِينٍ ۝

२६. तुम कहो कि इस के अ़लावा कुछ नही कि इस का ज्ञान अल्लाह ही को है और इस के अ़लावा कुछ नही कि मैं साफ़-साफ़ डराने वाला हूँ। २७. जब यह लोग उस को निकट देखें गे तो जो लोग इन्कार करने वाले हों गे उन के चेहरे (मारे ग़म के) झुलस जायें गे और कहा जाये गा कि यही वादा है जो तुम माँगा करते थे। २८. तुम कहो: बताओ तो सही, अगर अल्लाह मुझे और मेरे साथियों को हलाक कर दे या रहम फ़रमाये (जो उस का जी चाहे करे, वह हमारा मालिक है) यह बताओ कि

➲ काफ़िरों को सख़्त अ़ज़ाब से कौन छुड़ाये गा[१३]? २९. तुम कह दो (कि हमारा ईमान है) कि वह अल्लाह बड़ा रहम करने वाला है, हम उस पर विश्वास रखते हैं, और उसी पर हमारा भरोसा है, पस तुम्हें मालूम हो जाये गा कि कौन खुली गुमराही में है। ३०. तुम पूछो कि अगर तुम्हारा पानी (ज़मीन में) धंस कर सूख जाये तो कौन है जो तुम्हारे लिए बहते पानी (के चश्मे) ले आये?[१४]

....

१३. कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन मुसलमानों की तबाही और बर्बादी का इन्तिज़ार करते थे, उन से कहा गया कि हम तबाह हों या बचें (इस से तुम को कुछ लेना-देना नही) यह बताओ कि तुम क़ियामत के दिन कैसे बचो गे? कुछ उ़लामा इस की यूँ तश्रीह करते हैं कि हम अल्लाह पर ईमान लाये, लेकिन ईमान के साथ अल्लाह से डरते भी हैं। लेकिन तुम बताओ कि तुम क्यों कर अ़ज़ाब से बचो गे? (वहीदी)

१४. एक शख़्स ने यह आयत सुन कर ग़ुरूर में आ कर कहा कि हम कुदाल और फावड़े द्वारा पानी ले आयें गे, यानी उन से खोद कर पानी निकाल लें गे। अल्लाह की क़ुदरत से उस की आँख का पानी ही सूख गया और वह आँख से अंधा हो गया। अल्लाह की आयतों की बेअदबी की यही सज़ा मिलती है, उस मर्दूद को चाहिये कि पहले अपनी आखों का पानी फ़ावड़े से निकाले फिर ज़मीन खोद कर निकाले (सलफ़िय्या)

सूरः क़-लम्- (68)

सूरः क़लम मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ५२ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. नून्, क़सम है क़लम की और हर उस चीज़ की जो लोग लिखते हैं[१] २. तू अपने रब के फ़ज़्ल से मजनून नहीं है ३. और तेरे लिये (ऐसा) हमेशगी का बदला है (जो ख़त्म न हो गा) ४. और तू बुलन्द अख़्लाक़ पर क़ायम है तू भी देखे गा और यह लोग भी देख लें गे

....
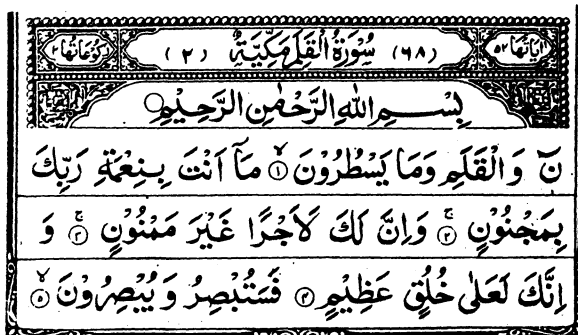
१. 'नून्' यह हुरूफ़ मुक़त्तआ़त में से है। इस का माना व मुराद अल्लाह ही बेहतर तौर पर जानता है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास ने इस से मुराद "दवात" लिया है। फ़रमाते हैं कि अल्लाह ने दवात को पैदा किया, फिर क़ियामत तक जो कुछ होने वाला है उसे लिखने का हुक्म दिया। मुफ़स्सिरीन ने इस क़लम से वह क़लम मुराद लिया है। जिस ने क़ुदरती तौर पर तक़्दीर को लिखा, और यह सब कुछ ज़मीन व आसमान की पैदाइश से पचास हज़ार साल पहले ही लिख दिया था। इमाम सुद्दी फ़रमाते हैं कि इस से फ़रिश्तों का बन्दों के आमाल लिखना मुराद है।

हज़रत आ़इशा रज़ि० से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अख़्लाक़ के बारे में पूछा गया तो उन्हों ने कहा: नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का अख़्लाक़ क़ुरआन पाक था। आप की पैदाइश ही अल्लाह ने बेहतरीन अख़्लाक़ पर फ़रमाई थी। आप का क़ुरआन पाक पर ऐसा अ़मल था कि क़ुरआन के अहकाम का सरापा नमूना थे।➲

➲हज़रत अनस बिन मालिक फ़रमाते हैं कि मैं ने दस वर्ष तक आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा की, लेकिन कभी आप ने उफ़ तक न की और न कभी डाँट पिलाई। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सब से ज़्यादा अख़्लाक़ वाले थे। आप की हथेली रेशम से भी ज़्यादा नर्म और आप का पसीना खुश्बू से भी अधिक सुगन्धित था। आप सब से ज़्यादा सुन्दर और सब से अधिक ख़लीक़ (अच्छे अख़्लाक़ वाले) थे। आप ने अपने हाथ से कभी भी किसी ग़ुलाम और लौंडी को न मारा (इब्ने कसीर)

بِاَیِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ۝٦ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ
عَنْ سَبِیْلِهٖ ۪ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِیْنَ ۝٧ فَلَا تُطِعِ
الْمُكَذِّبِیْنَ ۝٨ وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَیُدْهِنُوْنَ ۝٩ وَلَا
تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِیْنٍ ۝١٠ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ بِنَمِیْمٍ ۝١١
مَّنَّاعٍ لِّلْخَیْرِ مُعْتَدٍ اَثِیْمٍ ۝١٢ عُتُلٍّ بَعْدَ ذٰلِكَ
زَنِیْمٍ ۝١٣ اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِیْنَ ۝١٤ اِذَا تُتْلٰی عَلَیْهِ
اٰیٰتُنَا قَالَ اَسَاطِیْرُ الْاَوَّلِیْنَ ۝١٥ سَنَسِمُهٗ عَلَی
الْخُرْطُوْمِ ۝١٦ اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَاۤ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ
اِذْ اَقْسَمُوْا لَیَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِیْنَ ۝١٧ وَلَا یَسْتَثْنُوْنَ ۝١٨
فَطَافَ عَلَیْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ ۝١٩
فَاَصْبَحَتْ كَالصَّرِیْمِ ۝٢٠ فَتَنَادَوْا مُصْبِحِیْنَ ۝٢١
اَنِ اغْدُوْا عَلٰی حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِیْنَ ۝٢٢
فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ یَتَخَافَتُوْنَ ۝٢٣ اَنْ لَّا یَدْخُلَنَّهَا

६. कि तुम (फ़रीक़ैन) में से किस को जुनून है। ७. यक़ीनन तेरा पर्वरदिगार उन लोगों को ख़ूब जानता है जो उस की (सीधी) राह से भटके हुये हैं, और वह हिदायत पाने वालों से ख़ूब वाक़िफ़ है। ८. पस तुम झुठलाने वालों का कहा न मानना ९. (क्योंकि वह) चाहते हैं कि (अहकाम की तब्लीग़ में) तू थोड़ा सा नर्म हो जाये तो वह भी नर्म पड़ जायें गे १०+११+१२+१३. क़समें खाने वाले, ज़लील, उकसाने वाले, इधर-उधर की लगाने वाले, ख़ैर के काम को रोकने वाले, हद से आगे बढ़ने वाले, बदकार (तबीअ़त के) अक्खड़ और इस के अ़लावा बदख़मीर (हरामी) की मत मानना[२] १४+१५. जब उस को हमारे अहकाम सुनाये जाते हैं तो मालदार होने और औलाद वाला होने के नाते कहता है कि यह तो पहले लोगों की कहानियाँ हैं। १६. ऐसे शख़्स को हम (उस की) नाक पर दाग़ लगायें गे। १७. कुछ शक नही कि हम ने उन को जाँचा है जैसे एक बाग़ वालों को जांचा था, जब उन्हों ने पक्का इरादा किया कि सुब्ह सवेरे ही इस बाग़ के फल तोड़ लें गे[१] १८. और वह किसी तरह का इस्तिस्ना न करते थे (यानि इन-शाअल्लाह न कहते थे) १९. तो उन के सोते-सोते ही तेरे रब की तरफ़ से तबाह करने वाला पहुंच गया। २०. पस वह (उन के पहुंचने से पहले ही) सुब्ह को बर्बाद हो चुका था (मगर उन को ख़बर न थी) २१+२२. फिर उन लोगों ने सुब्ह-सवेरे एक-दूसरे को बुलाया कि अपनी खेती पर चलो अगर उस को काटने का इरादा रखते हो (तो यह समय सब से उचित है) २३. पस वह इस ख़ौफ़ से छुप-छुप कर सुब्ह सवेरे चले

....

२. इन लोगों की मत मानना, इस लिये कि यह लोग अपनी गन्दी तबीअ़त के अनुसार ही कहें गे और वह कहें गे जो यह अपनी मनमानी करें गे। और जैसा कि आज के काल में इस प्रकार के लोग हैं भविष्य में भी पैदा होते रहें➲

➲गे और हमेशा इस प्रकार के लोग रहें गे। इस आयत में इस बात की तरफ़ इशारा है कि क़ुरआन मजीद में जो अल्फ़ाज़ आये हैं यह तमसील के तौर पर हैं जो हर ज़माना में इस प्रकार के लोगों पर फ़िट हों गे। उस की नाक पर निशान लगाने से मुराद उन की नाकामी और नामुरादी है। यानी जो षड़यंत्र वह दीन इस्लाम के और नबी के ख़िलाफ़ रच रहा है, उस में वह नाकाम हो गा। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना में ऊपर की बयान की गयी बुराइयाँ केवल वलीद बिन मुग़ीरा के अन्दर पायी जाती थीं। बाद के ज़माना में भी ऐसे लोग पैदा होते रहे हैं और आइन्दा भी पैदा होते रहें गे (सनाई)

इस्लाम दुश्मन शक्तियाँ हर ज़माना में अपनी चालें चलती रही हैं और इस ज़माना में तो विशेष रूप से इस्लाम के ख़िलाफ़ मुख़्तलिफ़ साज़िशों का जाल फैला हुआ है, मगर क़ुरआन मजीद हर ज़माना के दुश्मनों से पुकार-पुकार कर कह रहा है कि इस्लाम के चराग़ को नहीं बुझा सकते।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा गया कि 'ज़नीम' (हरामी) से कौन मुराद है? आप ने फ़रमाया: बद-अख़्लाक़, बहुत खाने वाला, ज़ालिम, पेटू, मुराद है। अल्लाह तआ़ला ने जिसे खाने-पीने के लिये दिया और वह खा-पी कर मोटा-ताज़ा हो कर लोगों पर अत्याचार करता है तो आकाश उस पर मातम करता है। 'उतुल्ल' उस शख़्स को कहा जाता है जो ख़ूब खाने वाला, तन्दुरूस्त (स्वस्थ) और ताक़तवर हो। 'ज़नीम' उस को कहा जाता है जिस का हसब-नसब सीह न हो, यानी हरामी हो। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि ऐसे शख़्स पर शैतान का क़ाबू अधिक होता है। चुनान्चे एक हदीस शरीफ़ के अनुसार हरामी जन्नत में नही जाये गा। और एक हदीस के अनुसार ज़िना क़ी औलाद तीन बुराइयों का मजमूआ़ होती है और वह भी अपने माँ-बाप का सा कार्य करती है। 'उस की नाक पर निशान लगा दें गे' का मतलब यह है कि हम उसे इतना अधिक रूस्वा करें गे कि उस की बुराई किसी से छुपी न हो गी, हर एक उसे जान ले गा।

इब्ने अबी हातिम की एक रिवायत में है कि एक बन्दा ज़माने तक नेक काम करता रहता है लेकिन अन्त में बुरों के काम करता है, यहाँ तक कि उस की मौत अल्लाह की नाराज़गी पर होती है। इसी प्रकार एक बन्दा बुरे काम करता रहता है, लेकिन आख़िर में नेकियां करता है और उस का अन्त अल्लाह की रज़ा और ख़ुश्नूदी पर होता है। एक अन्य हदीस में फ़रमाया: जो शख़्स ग़ीबत और चुग़ली करता है और लोगों को बदनाम करता है, क़ियामत के दिन उस की नाक पर दोनों होटों की तरफ़ निशान लगा दिया जाये गा, जो दूर से उस के चुग़लख़ोर होने की गवाही दे गा (इब्ने कसीर)

३. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि यह बाग़ यमन मुल्क के एक दीनदार और नेक आदमी का था। उस के मरने के बाद उस के बेटे वारिस हुये। बाप अपने ज़माना में ग़रीबों को भी हक़ देता था लेकिन उस के बेटों ने हक़ देना बन्द कर दिया। और एक रात चुपके से खेती काटने के लिये गए तो बाग़ को इस हाल में पाया जिस का बयान क़ुरआन मजीद में है। (सनाई/ मआ़लिम) इस वाक़िआ़ से आज के किसानों को नसीहत हासिल करनी चाहिये। आज भी बहुत से किसान ऐसे हैं जो इन्हीं बाग वालों की तरह ग़रीबों का हक़ नही निकालते हैं।

اَلْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّسْكِيْنٌ ﴿٢٤﴾ وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ ﴿٢٥﴾
فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْٓا اِنَّا لَضَآلُّوْنَ ﴿٢٦﴾ بَلْ نَحْنُ
مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا
تُسَبِّحُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾

२४. कि उस बाग़ में आज भी कोई मिस्कीन तुम्हारे पास न पहुंच जाये। २५. (चुनान्चे) वह सुब्ह सवेरे फल काटने के लिये पूरे ज़ोर के साथ निकले २६. पस अब उन्हों ने उस बाग़ को (उज़ड़ा हुआ) देखा तो बोले कि (यक़ीनन) हम राह भूल गये हैं (यह बाग़ तो वह नही है)➲

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ۝ قَالُوْا
يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ۝ عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا
خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ۝ كَذٰلِكَ
الْعَذَابُ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا
يَعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ
النَّعِيْمِ ۝ اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ۝
مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ۝ اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ
تَدْرُسُوْنَ ۝ اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ۝ اَمْ لَكُمْ
اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ

२७. (फिर कहा) बल्कि हम महरूम किये गये हैं। २८. उन में अच्छी समझ वाला बोला: क्या मैं ने तुम से न कहा था कि सुब्ह सवेरे उठते हुये अल्लाह की तस्बीह क्यों नहीं करते? २९. (उस के याद दिलाने पर) सब ने कहा: सुब्हानल्लाह! बेशक हम ही ज़ालिम हैं[४]। ३०. वह एक दूसरे पर मुतवज्जह हो कर शर्मिन्दा करने लगे ३१. बोले: हाये हमारा दुर्भाग्य! हम तो वाक़ई सर्कश हैं। ३२. (चूंकि दिल से ईमानदार थे, इस लिये कहा) बहुत जल्द इस बाग़ से अच्छा बाग़ अल्लाह हम को देगा। हम यक़ीनन अल्लाह की तरफ़ रूजूअ़ करते हैं। ३३. अ़ज़ाब (जब आता है तो) इसी प्रकार आता है और आख़िरत का अ़ज़ाब इस से भी बड़ा है। काश कि लोग (उस अ़ज़ाब को) जानें। ३४. जो लोग परहेज़गार हैं उन के लिये उन के रब के हाँ नेमतों के बाग़ हैं ३५. क्या हम फ़रमाँबरदार को नाफ़रमानों जैसा कर दें? ३६. तुम्हें क्या हो गया? तुम लोग कैसी-कैसी रायें लगाते हो? ३७+३८. क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिस में तुम लोग पढ़ते हो? कि तुम जो चाहो वह तुम्हें मिलेगा (चाहे तुम कैसे ही बदअ़मल और मुश्रिक हो) ३९. क्या हमारे हाँ तुम्हारे (हक़ में) अ़हद व पैमान हैं जो क़ियामत तक तुम्हारे लिये पट्टा हैं कि जो तुम (अपने हक़ में) फ़ैसला करो वह तुम को बिला शुब्हा मिल जाये गा?

....

४. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि यह अंगूर का बाग़ था। यह लोग अपने-अपने घरों से चुपके-चुपके बातें करते हुये चले ताकि किसी मिस्कीन को इस की ख़बर न लग सके। जब बाग़ में पहुंचे तो हक्का-बक्का रह गये। क्या देखते हैं कि पूरे बाग़ पर आँधी फिर गयी है। सारा बाग़ बर्बाद हो गया है और केवल दरख़्तों के तने खड़े हैं। पहले तो इन लोगों को ख़याल हुआ कि हम किसी और बाग़ में चले आये हैं, फिर ग़ौर से देखने पर यक़ीन हो गया कि बाग़ तो है हमारा ही, लेकिन हम अभागों के भाग्य में इस का फल खाना नही लिखा है। अब एक दूसरे को मलामत करने लगे कि हम ने बहुत ही बुरा क्रिया कि मिस्कीनों का हक़ मारना चाहा और अल्लाह की फ़रमाबरदारी से रूक गये इसी कारण अल्लाह का अ़ज़ाब आया जिस ने अस्ली माल भी तबाह कर दिया और बिल्कुल ख़ाली हाथ रह गये। आगे फ़रमाया गया कि जो भी अल्लाह के आदेशों का पालन करे गा और अल्लाह की दी हुयी नेमतों में बुख़्ल करेगा और मुहताजों को उन का हक़ न देगा और अल्लाह की नेमतों की नाशुक्री करेगा उस पर इसी प्रकार अल्लाह का अ़ज़ाब नाज़िल हो गा,। और यह तो दुनिया का अ़ज़ाब है, आख़िरत का अ़ज़ाब तो इस से भी सख़्त है (इब्ने कसीर)

لَمَا تَحْكُمُوْنَ ۝ سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ۝
اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ ۚ فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ اِنْ كَانُوْا
صٰدِقِيْنَ ۝ يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ
اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝ خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ
تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۚ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ
وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ۝ فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا
الْحَدِيْثِ ۚ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَ
اُمْلِيْ لَهُمْ ۚ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ۝ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا
فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ۝ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ
فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ۝ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ
كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ اِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ ۝ لَوْلَآ
اَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ
مَذْمُوْمٌ ۝ فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝

४०. (ऐ रसूल!) तू उन से पूछः कौन इस बात का ज़िम्मेदार है। ४१. क्या उन (मुशिरकों) के (बनाये हुये माबूद अल्लाह के) शरीक हैं? अगर यह सच्चे हैं तो शरीकों को पेश करें। ४२. (उस दिन क्या करें गे) जिस दिन सख़्त घबराहट हो गी[5] और उन को सज्दा करने को बुलाया जाये गा तो न कर सकें गे ४३. उन की आँखें डरी हुयी हों गी और उन (के चेहरों) पर ज़िल्लत बरसती हो गी। और (यह इस लिये कि) जब यह लोग सहीह सालिम थे उस हालत में सज्दे की तरफ़ बुलाये जाते थे तो सज्दा न करते थे[6] ४४. जो लोग इस कलाम को झुठलाते हैं उन को हमारे हवाले कर (फिर देख) उन के अनजाने में हम उन को कहाँ-कहाँ ले जायें गे। ४५. हम उन को थोड़ी सी मुहलत दे रहे हैं, हमारा दाँव मज़बूत है। ४६. क्या तू उन से कोई मज़दूरी माँगता है जिस के दबाव में यह लोग दबे जाते हैं। ४७. फिर क्या उन के पास ग़ैब (का इ़ल्म) है? जिस से यह लोग (मतलब की बातें) लिख लेते हैं। ४८. पस तू अपने रब के हुक्म से सब्र कर (ख़बरदार!) मछली वाले (यूनुस नबी) की तरह न हो जाना। जब उस ने सख़्त रंज में अल्लाह को पुकारा था[7] ४९. अगर उस के रब की मेहरबानी से उस की मदद न होती तो (मुर्दा हो कर) ज़लील-ख़ार जंगल मे डाला जाता (या मछली के पेट में रहता[8]) ५०. फिर अल्लाह ने उस को पसन्द किया और उस को नेक लोगों में दाख़िल किया।

....

५. मौलाना मर्हूम ने यह तर्जुमा हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० की तफ़्सीर के मुताबिक किया है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि यह दिन सख़्त तक्लीफ़, दुःख, दर्द और सख़्ती का हो गा। (इब्ने जरीर) इब्ने जरीर ही ने इस तफ़्सीर को दूसरी सनद से शक के साथ बयान किया है कि इब्ने मस्ऊद से इस आयत के तअ़ल्लुक़ से बहुत बड़ी मुसीबत रिवायत है। इमाम मुजाहिद भी इसी प्रकार की रिवायत करते हैं। यह सारी तफ़्सील तफ़्सीर इब्ने कसीर में मौजूद है। मगर आयत की सहीह तफ़्सीर वह है जो सहीह अहादीस से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से रिवायत है। मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मर्हूम इस आयत के संदर्भ में लिखते हैं कि उन की पीठ की हड्डियाँ जुड़ कर एक तख़्त की तरह हो जायें गी और सज्दे में झुक न सकें गे। यह तफ़्सीर सहीह अहादीस में रिवायत है। इमाम बुख़ारी और मुस्लिम ने हज़रत अबू सईद के वास्ते से रिवायत किया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम➲

ने फ़रमाया: जिस दिन अल्लाह अपनी पिंडली खोले गा तो हर मोमिन मर्द और महिला सज्दे में गिर जायें गे, लेकिन वह लोग जो दुनिया में लोगों को दिखावे और नामनुमूद की ख़ातिर सज्दा करते थे (लेकिन उन के दिल में ईमान न था) उन की पीठ एक तख़्त की तरह हो जाये गी। इसी आयत की तफ़्सीर दूसरी हदीस में इस तरह है कि एक बहुत बड़ा नूर ज़ाहिर होगा जिसे देखते ही लोग सज्दे में गिर पड़ें गे।

कुछ नये पढ़े-लिखे फ़ल्सफ़ी उलमा ने अपनी आदत के अनुसार इस आयत की तावील की है और तर्जुमा यूँ किया है कि "जिस दिन सख़्त दिन हो गा" लेकिन अहले हदीस तावील नही करते और आँख, कान नाक की तरह अल्लाह के लिये पिंडली भी साबित करते हैं। मगर वह पिंडली किस तरह की है? जैसा अल्लाह है वैसी ही उस की शान के मुताबिक़ पिंडली भी हो गी, और मख़्लूक़ की पिंडली से उस की कोई मुशाबहत नही। तफ़्सीर मदारिक,बैज़ावी और कश्शाफ़ के मुफ़स्सिरों ने इस की तावील की है जो बिल्कुल ग़लत और हदीस के ख़िलाफ़ है। शाह वलिय्युल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० फ़रमाते हैं कि आयत की तावील करने वाले उलमा स्वयँ ग़लती पर हैं और अहले हदीस को बदमज़हब कहते हैं (वहीदी)

६. दुनिया में सज्दा करने से इन्कार की सज़ा यह मिली कि क़ियामत के दिन उन को सज्दे से रोक दिया गया। यह लोग खुद अज़ान और तक्बीर सुन कर भी नमाज़ के लिये नहीं आते थे। कअ़ब अहबार कहते हैं कि अल्लाह की क़सम! यह आयत उन लोगों के बारे में नाज़िल हुयी है जो जमाअ़त में शरीक नही होते थे (वहीदी) जमाअ़त की नमाज़ छोड़ने वालों को अल्लाह से डरना चाहिये कि कहीं ऐसा न हो कि हश्र के मैदान में यही ज़िल्लत सहनी पड़े। अल्लाह तआ़ला समस्त मुसलमानों को जमाअ़त के साथ नमाज़ अदा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये।

७. 'अल्लाह को न पुकारता' इस में इशारा "लाइला-ह इल्ला अन्-त सुबहा-न-क इन्नी कुन्तु मि-नज़्ज़ालिमीन" की तरफ़ है। सूरः साफ़्फ़ात में यूँ फ़रमाया: "अगर वह तस्बीह न पढ़ते तो क़ियामत तक उसी मछली के पेट में रहते, फिर हम ने उस को चटियल मैदान पर डाल दिया और वह बीमार था"। देखने में तो इस आयत और सूरः मआ़रिज की आयतों में इख़्तिलाफ़ मालूम होता है, क्यों कि इस आयत में यह बयान है कि "अगर वह तस्बीह न पढ़ते तो मछली के पेट ही में रहते, यानी उन को अल्लाह की रहमत सहायता न करती। और इस आयत की तफ़्सीर में यह बयान है कि अगर अल्लाह की रहमत उस की मदद न करती तो वह जंगल में ज़लील हालत में डाल दिये जाते। हालाँकि सूरः" साफ़्फ़ात में खुद फ़रमाया है कि उस के तस्बीह पढ़ने पर हम ने उस को जंगल में डाल दिया यानी जंगल में डालना नजात भी हुआ और अ़ज़ाब भी। इस इख़्तिलाफ़ को इस तरह दूर किया जा सकता है कि अगर तस्बीह न पढ़ते तो दो सज़ा मिलती। या तो मछली के पेट में रहते या जंगल में डाले जाते। दूसरे एतराज़ का जवाब यह है कि जंगल में डाला जाना दो प्रकार है (१) ज़िल्लत की हालत में (२) बीमारी की हालत में। ज़िल्लत की हालत में डाला जाता तो बेशक नाराज़गी की पहचान है, मगर बीमारी की हालत में डाला जाना यह नजात का सबब है। (सनाई)

८. मगर चूँकि हज़रत यूनुस अ़लै० ने अपना कुसूर तस्लीम कर लिया और अल्लाह की अ़ज़मत, बड़ाई और पाकी का एतराफ़ कर लिया इस लिये वह मछली के पेट से निकाल कर मैदान मे डाल दिये गये, लेकिन आसमान और ज़मीन वालों के नज़दीक ज़लील न हुए, हाँ मच्छली के पेट में रहने की वजह से बीमार ज़रूर हो गये थे। फिर अल्लाह ने उन्हें नबी बना कर उसी क़ौम की तरफ़ पुनः भेजा लेकिन वह क़ौम पहले ही ईमान ला चुकी थी। चुनान्चे सूरः यूनुस की आयत न० ९८ में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: "सिवाए यूनुस की क़ौम के किसी भी क़ौम का ईमान लाना लाभदायक न हुआ"। इस आयत में यूनुस की क़ौम का, ईमान लाने की वजह से, अ़ज़ाब से बच जाने का ज़िक्र है। (सनाई)

وَإِنْ يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ﴿٥١﴾

وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٥٢﴾

५१. और तेरा इन्कार करने वाले जब नसीहत सुनते हैं तो क़रीब है कि (घूर-घूर कर) अपनी (नीली-नीली) आँखो से तुझे फिसला दें और कहते हैं कि तहक़ीक़ यह मजनून है। ५२.

➲हालाँकि वह क़ुरआन (जिस की तू शिक्षा दे रहा है) तमाम दुनिया के लोगों के लिये नसीहत है[१]।

....

१०. इस में कोई अक़्ल के ख़िलाफ़ बात नही और न ही नक़्ल के ख़िलाफ़ है। हाँ, उन की गन्दी तबीअ़त के ज़रूर ख़िलाफ़ है। और वह दवा ही क्या जो मरीज़ की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ न हो। दवा वही काम करती है जो कड़वी हो। (सनाई) आयत ५१ में इस बात की दलील है कि नज़र का लगना और उस की तासीर का अल्लाह के हुक्म से पैदा होना हक़ है। चुनान्चे अहादीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हज़रत हसन और हुसैन के लिए इन अल्फ़ाज़ में पनाह माँग ते थे: "उओ़ीज़ुकुमा बि-कलिमातिल्लाहित्ताम्मति मिन् कुल्लि शैतानिन् व हाम्मतिन् वमिन् कुल्लि अ़ैनिन् लाम्मतिन्"। रिवायतो में आता है कि हज़रत इब्राहीम अ़लै० भी अपने बेटों को इन्ही अ़ल्फ़ाज़ से अल्लाह की पनाह में दिया करते थे। बुरी नज़र को दूर करने के लिये हदीस में यह दुआ़ भी आयी है: "अल्लहुम्म ज़स्सुलतानिल् अ़ज़ीमि, ज़ल्-मन्निल् क़दीमि, ज़ल्-वज्हिल् करीमि वलिय्यल् कलिमातित्ताम्मति वद्दअ़वाति लमुस्-तजाबति आ़फ़ि (फुलाँ बिन फुलाँ) मिन् अन्फ़ुसिल् जिन्नि व-अअ़युनिल् इन्सि। "फ़लाँ बिन फ़लाँ" के स्थान पर मरीज़ का नाम लिया जाये। (इब्ने कसीर) कुछ बिदअ़ती लोगों ने हदीस के ख़िलाफ़ बुरी नज़र लग जाने का इन्कार किया है। इमाम हसन बसरी फ़रमाते हैं कि बुरी नज़र की बीमारी में इस आयत का दम करना बेहतर है। (वहीदी)

सूरः हाक़्क़ः :– (69)

सूरः हाक़्क़ः मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ५२ आयातें और २ रूकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. (क़ियामत की) सच्ची घड़ी[१] (आने वाली है) २. कैसी घड़ी है? (ऐ सुनने वाले) ३. तुम्हें क्या मालूम वह कैसी घड़ी है? ४. इस क़ारिअ़ः (यानी कानों को फ़ाड़ डालने वाली) को क़ौमे-समूद और आ़द ने न माना था ५. (नतीजा यह हुआ कि) समूद तो सख़्त अ़ज़ाब से (जो हैबतनाक आवाज़ की सूरत में था) हलाक किये गये ६. और क़ौमे-आ़द (बड़े ज़ोर की) सख़्त हवा से हलाक किये गये ७. जो उन पर सात रातें और आठ दिन बराबर मुसल्लल रही थी, पस तू (अगर उस वक़्त होता) तो उस क़ौम (आ़द) को देखता कि औंधे पड़े हैं, वह गोया ख़जूरों के उख़ड़े हुये तने थे। ८.पस क्या तू उन में से किसी को बाकी देखता है? ९. और (सुनो! इसी प्रकार) फ़िरऔ़न और उस से पहले के लोग और उल्टी हुयी बस्तियों वाले लोग (यानी लूत की क़ौम भी) बद अ़मली➲

اٰياتها ٥٢ — سُوْرَةُ الْحَاقَّةِ مَكِّيَّةٌ (٦٩) (٧٨) — ركوعاتها ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَآقَّةُ ۙ ﴿١﴾ مَا الْحَآقَّةُ ۚ ﴿٢﴾ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ؕ ﴿٣﴾
كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾ فَاَمَّا ثَمُوْدُ
فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾ وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ
صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ۙ ﴿٦﴾ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ
اَيَّامٍ ۙ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى ۙ كَاَنَّهُمْ
اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ۚ ﴿٧﴾ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ
بَاقِيَةٍ ﴿٨﴾ وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ
بِالْخَاطِئَةِ ۚ ﴿٩﴾ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً

➲करते रहे १०. फिर वह अपने रब के रसूल की नाफ़रमानी करते रहे तो अल्लाह ने उन को सख़्त पकड़ा।

....

१. सूरः हाक़्क़ः मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस पर तमाम उलमा का इत्तिफ़ाक़ है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस सूरः को फ़ज्र की नमाज़ में पढ़ा करते थे। क़ियामत के नामों में एक नाम "हाक़्क़ः" (हक़ होने वाली) भी है और "क़ारि-अ़" (खड़खड़ाने वाली) भी (वहीदी)

رَّابِيَةً ﴿١٠﴾ إِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَاءُ حَمَلْنَاكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ﴿١١﴾
لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَا أُذُنٌ وَاعِيَةٌ ﴿١٢﴾
فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ﴿١٣﴾ وَحُمِلَتِ
الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ﴿١٤﴾
فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١٥﴾ وَانشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ
يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ﴿١٦﴾ وَالْمَلَكُ عَلَىٰ أَرْجَائِهَا ۚ وَيَحْمِلُ
عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَانِيَةٌ ﴿١٧﴾ يَوْمَئِذٍ
تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾ فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ
كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَيَقُولُ هَاؤُمُ اقْرَءُوا كِتَابِيَهْ ﴿١٩﴾
إِنِّي ظَنَنتُ أَنِّي مُلَاقٍ حِسَابِيَهْ ﴿٢٠﴾ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ
رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾ فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾ قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾
كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ
الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾ وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ

११. जब (हमारे हुक्म से) पानी जोश में आया[२] तो हम ने तुम (बनी आदम) को कश्ती पर बिठाया १२. ताकि हम उस को तुम्हारे लिये नसीहत का ज़रीआ़ बनायें और कान (यानी पिछली नस्लें सुन कर) याद रखें। १३. (यह तो हुआ दुनियावी हाल) फिर जब (सूर में) एक ही आवाज़ से फूँका जाये गा १४ और ज़मीन पहाड़ों के साथ उठा कर (दोनों एक बार में) तोड़ दिये जायें गे १५. तो उस रोज़ होने वाली (घड़ी जिस को हाक़्क़ः कहा गया है) ज़ाहिर हो जाये गी १६ और उस रोज़ आसमान भी (अल्लाह के हुक्म से फट कर) फुसफुसा हो जाये गा[३]। १७. फ़रिश्ते उस (आसमान) के कनारे पर खड़े हों गे और (उन की) आठ जमाअ़तें तेरे रब की हुकूमत का तख़्त उठाये हों गी १८. उस रोज़ तुम (सब लोग) पेश किये जाओगे, तुम्हारी कोई हर्कत छुपी न रहे गी[४] १९. फिर जिस को आमालनामा दायें हाथ में मिले गा वह कहेगा कि मेरे साथियो! आओ मेरा आमालनामा पढ़ो (देखो इस में मेरी नजात का ज़िक्र है) २०. मैं पहले ही अपने हक़ में अच्छा गुमान करता था कि मुझे मेरा हिसाब (यानी मेरे कामों का पूरा बदला) मिले गा २१. पस यह मनपसन्द अ़ैश में रहे गा २२. वह बड़ी आ़लीशान बहिश्त में रहे गा २३. जिस के फ़ल नीचे को झुके हुये हों गे २४. (कि उन फलों को) खूब मज़े से खाओ-पियो उस के बदले में जो तुम ने पहले ज़माना में (अच्छे) आमाल यहाँ भेजे थे २५. (और उन के मुक़ाबला में) जिस को आमालनामा (कर्मपत्र) बायें हाथ में मिले गा

....

२. यानी पानी हद से गुज़र गया, कहीं कोई स्थान बाक़ी न बचा, उस समय हम ने तुम को कश्ती पर चढ़ा लिया। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब नूह की क़ौम ने अपने नबी को झुठलाया और अल्लाह को छोड़ कर➲

➲दूसरों की पूजा-पाट करने लगे, तो उस समय उन पर तूफ़ान नाज़िल हुआ। उस तूफ़ान में जो लोग कश्ती पर सवार थे उन को छोड़ कर कोई भी ज़िन्दा न बचा। हज़रत अ़ली रज़ि० फ़रमाते हैं पानी की एक-एक बूँद अल्लाह की अनुमति से पानी का फ़रिश्ता बरसाता है, इसी प्रकार हवा का झोंका भी बिना नाप-तौल के नही चलता। लेकिन क़ौमे-आ़द पर जो तूफ़ानी हवायें चलीं और क़ौमे-नूह पर जो पानी तूफ़ान आया वह बिला नाप-तौल के था। अल्लाह की इजाज़त से पानी और हवा ने वह ज़ोर बाँधा कि निग्रानी करने वाले फ़रिश्तों की एक न चली। इसलिये क़ुरआन में "सरकश हवा" का शब्द, प्रयोग किया गया है। (इब्ने कसीर)

३. हज़रत अ़ली रज़ि० फ़रमाते हैं कि आकाश हर खुलने के स्थान से फट जाये गा। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि आकाश में सूराख़ और गड्ढा बन जाये गा, अर्श पाक उस के सामने हो गा, फ़रिश्ते उस के कनारों पर हों गे। फिर आगे फ़रमाया: क़ियामत के दिन आठ फ़रिश्ते अल्लाह का अ़र्श अपने ऊपर उठाये हों गें। यह कौन सा अर्श हो गा? इस अर्श से मुराद या तो वह अ़र्श है जिस पर अ़ल्लाह मुस्तवी है, या वह आर्श मुराद है जिस पर क़ियामत के दिन अ़ल्लाह तआ़ला फैसले के लिये बैठे गा। हज़रत अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि यह फ़रिश्ते पहाड़ी बकरों की शक्ल में हों गे। इब्ने अबी हातिम की एक मर्फ़ूअ़ रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मुझे इस बात की इजाज़त दी गयी है कि तुम्हें अ़र्श के फ़रिश्तों में से एक फ़रिश्ते के बारे में बताऊँ। उस फ़रिश्ते की गर्दन और कान के नीचे की लौ के दर्मियान इतना फ़ासला है कि उड़ने वाला परिन्दा सात सौ वर्ष तक बेतकान उड़ता चला जाये (अबू दावूद ने भी अपनी सुनन में इसी प्रकार रिवायत की है।)

'यौ- मइज़िन् तू-रज़ू-न' की तफ़्सीर में हज़रत उमर रज़ि० से रिवायत है कि लोगो! अपनी जानों का हिसाब कर लो, इस से पहले कि उन का आमाल तौला जाये, ताकि कल क़ियामत वाले दिन तुम पर आसानी हो, जिस दिन तुम्हारा पूरा-पूरा हिसाब लिया जाये गा और बड़ी पेशी के लिये अल्लाह के सामने पेश किये जाओ गे। मुस्नद अहमद की रिवायत में नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क़ियामत के दिन तीन मर्तबा अल्लाह के सामने पेश किये जाओ गें। पहली और दूसरी मर्तबा तो झगड़ा-बखेड़ा और टन्टा करते रहेगे, लेकिन तीसरी मर्तबा जो पेशी होगी उस वक्त आमाल नामे (कर्मपत्र) पेश किये जाये गें, किसी के दायें हाथ में और किसी के बायें हाथ में, जैसा कि इन आयात से ज़ाहिर है। (इब्ने कसीर)

४. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हन्ज़ला रिवायत करते हैं कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को क़ियामत के दिन खड़ा करे गा और उस की बुराईयाँ जो उस के आमालनामे में लिखी हों गी ज़ाहिर कर दी जायें गी, तो अल्लाह तआ़ला बन्दे से प्रश्न करे गा कि क्या तू ने यह बुराईयाँ की हैं? बन्दा स्वीकार कर लेगा, तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाये गा कि जिस प्रकार मैं ने तुम्हें दुनिया में नहीं रूस्वा किया इसी प्रकार यहाँ भी न करूँ गा और तुम्हारे गुनाह माफ़ करूँगा, उस वक्त बन्दा अपने आमालनामे को ले कर मारे प्रसन्नता के एक दूसरे को दिखाता फिरे गा। हज़रत उमर वाली सहीह हदीस में भी इसी प्रकार की रिवायत है। (इब्ने कसीर)

فَيَقُولُ يٰلَيْتَنِي لَمْ أُوتَ كِتٰبِيَهْ ۝٢٥ وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ۝٢٦ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۝٢٧ مَا أَغْنٰى عَنِّي مَالِيَهْ ۝٢٨ هَلَكَ عَنِّي سُلْطٰنِيَهْ ۝٢٩ خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ۝٣٠ ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ ۝٣١ ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ۝٣٢

वह कहे गा: हाये अफ़सोस! मुझे यह आमालनामा न मिला होता २६. और मैं अपना हिसाब न जानता (तो कम से कम भलाई की उम्मीद तो रहती, अब तो सारा हाल खुल गया)। २७. ऐ काश! पहली मौत मेरा फ़ैसला कर देती (ताकि मैं दोबारा न पैदा किया जाता) २८. मेरे माल ने भी मुझे कुछ न फ़ाइदा दिया २९. मेरा ज़ोर➲

إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ۝ وَلَا يَحُضُّ
عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۝ فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هَاهُنَا
حَمِيمٌ ۝ وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِينٍ ۝ لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا
الْخَاطِئُونَ ۝ فَلَا أُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُونَ ۝ وَمَا لَا
تُبْصِرُونَ ۝ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝ وَمَا هُوَ
بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۚ قَلِيلًا مَا تُؤْمِنُونَ ۝ وَلَا بِقَوْلِ
كَاهِنٍ ۚ قَلِيلًا مَا تَذَكَّرُونَ ۝ تَنْزِيلٌ
مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ

भी सब जाता रहा ३०. (फ़रिश्तों को आदेश होगा) इस को पकड़ो और गले में तौक़ डालो ३१. फिर उस को जहन्नम में दाख़िल करो ३२. सत्तर हाथ की लंबी ज़न्जीर में उस को जकड़ कर दोज़ख़ में डालो (उस की यही सज़ा है) ३३. क्यों कि यह अल्लाह अ़ज़ीम पर यक़ीन न रखता था। ३४. (अ़क़ीदा ग़लत होने के अ़लावा अ़मली ग़लती यह थी कि) न ग़रीब-ग़ुरबा को खिलाने पर उभारता था ३५+३६. पस उस के लिये (भी आज क़ियामत में) न कोई सहयोगी है और न ज़ख्मों के धोवन के सिवा उन के लिया खाना है ३७. जिस को बुरे लोगों के अ़लावा और कोई नहीं खाएगा ३८+३९. पस मैं (अल्लाह)हर उस चीज़ की क़सम खाता हूँ जो तुम देखते हो और जो तुम नही देखते ४० यह (कलाम) रसूले करीम (का क़ौल यानी नबी होने की हैसिय्यत से उन) का सन्देश है (जो अल्लाह की तरफ़ से वह सुनाते हैं) ४१. और किसी कवि का क़ौल नहीं है (जैसा कि तुम मुन्किर लोग कहते हो) मगर तुम लोग बहुत कम यक़ीन करते हो। ४२. न वह किसी रमली-जोगी का क़ौल है, मगर तुम लोग बहुत कम समझते हो ४३. (अस्ल हक़ीक़त यह है कि) यह क़ुरआन अल्लाह का उतारा हुआ है। ४४. यह रसूल अगर कोई बात अपनी तरफ़ से गढ़ कर हम पर लगा दे⁵

---

५. आयत न० ४४. के संदर्भ में मौलाना अमृतसरी रह० ने मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी के नुबुव्वत के दावे के रद्द में एक बहुत क़ीमती हाशिया लिखा है जिस का ख़ुलासा यह है कि मिर्ज़ा जी का दावा है कि अगर नुबुव्वत का दावा करने वाला२३ वर्ष तक ज़िन्दा रहे (जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पैगंबराना ज़िन्दगी की मुद्दत है) तो वह अपने दावे में सच्चा माना जाये गा, और वह झूठा है तो २३ वर्ष से पहले ही हलाक हो जाये गा। मिर्ज़ा क़ादियानी मनघड़त उसूल बना कर अपनी मुद्दत को २३ वर्ष से अधिक बता कर अपने को सच्चा साबित करना चाहते हैं लेकिन मौलाना अमृतसरी रह० ने उन की मुद्दत २३ वर्ष से कम साबित कर के उस को झूठा साबित किया है। मौलाना मर्हूम अपने मक़ाला (लेख) के अन्त मे लिखते हैं कि "हमें इस मौक़ा पर मिर्ज़ा की नुबुव्वत पर बहस करने की आवश्यक्ता नही कि वह सच्ची थी या झूठी, बल्कि केवल यह साबित करना है कि मिर्ज़ा ने आयत न०४४ का जो तर्जुमा तफ़्सीर बयान की है उस के मुताबिक़ मिर्ज़ा की नुबुव्वत का ज़माना सात वर्ष छः माह की होती है जो नवंबर १९०१ से आरंभ हो कर २६ मई १९०८ तक संपन्न हो जाती है। कोई प्रथम कक्षा का छात्र भी इस हिसाब को सरलता से जोड़ सकता है। इस का अर्थ यह हुआ कि मिर्ज़ा ने नुबुव्वत के दावे के बाद २३ वर्ष की आयु नही पायी, बल्कि इस से पूर्व ही दुनिया से कूच कर गये। मौलाना ने इस आयत के तहत तफ़्सीर सनाई के उर्दू एडिशन में बहुत कुछ लिखा है, मिर्ज़ा की ख़बर लेने वालों से अनुरोध है कि वहाँ मुताला फ़रमायें

मौलाना मर्हूम ने इस मौक़ा पर मिर्ज़ा साहब का वह अन्तिम फ़ैसला भी लिखा है जो ख़ुद मिर्ज़ा की ज़बान और क़लम से उन के झूठे होने के लिये एक अनमिट सुबूत बन गया। मिर्ज़ा जी स्पष्ट शब्दों में एलान घोषित करते

हैं कि जो झूठा हो गा वह सच्चे की ज़िन्दगी में मर जाये ग। चुनान्चे मिर्ज़ा अपने एलान के मुताबिक़ चूंकि झूठे थे इस लिये मौलाना मर्हूम की ज़िन्दगी ही में २६. मई १९०८ ई० को लाहौर में लग-भग एक दर्जन बीमारियों में मुबतला हो कर मर गये और मौलाना अमृतसरी मर्हूम ने उस के मरने के पश्चात ४० वर्ष से भी अधिक समय तक ज़िन्दा रह कर १५ मार्च १९४८ ई० को इन्तिक़ाल फ़रमाया।

मिर्ज़ा जी के इस अन्तिम फ़ैसले का पूरा हाल दर्ज करने और मिर्ज़ा के मरने की तिथि नोट करने के बाद मौलाना सनाउल्लाह अमृतसरी मर्हूम लिखते हैः "मिर्ज़ा के इन्तिक़ाल के बाद जब शोर उठा कि मिर्ज़ा अपने इल्हाम और एलान के अनुसार झूठे साबित हुये तो मिर्ज़ा के मानने वालों ने इस इल्ज़ाम को दूर करने के लिये मुझ से मुनाज़रा करना चाहा जिस में फ़ैसला करने के लिए एक ग़ैर मुस्लिम को चुना और ३०० रूपये मुनाज़िरा जीतने वाले के लिये इनाम के तौर पर देने का एलान किया। चुनान्चे मुनाज़िरा अप्रेल १९१२ ई० में लुधियाना शहर में होना तै हुआ। सालिस (जज्ज) सर्दार बच्चन सिंघ...... लुधियाना वाले मुक़र्रर हुये। उन्हों ने फ़ैसला मेरे हक़ में सुनाया और तीन सौ रूपये भी मुझे इनाम के मिले।

इस सारी तफ़्सीर का निचोड़ यह है कि मिर्ज़ा साहब के नुबुव्वत के दावा का रद्द आसमानी भी है और ज़मीनी भी (सनाई)

الْاَقَاوِيْلِ ﴿٤٤﴾ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ﴿٤٥﴾ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾ وَاِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَاِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾ وَاِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٥١﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٥٢﴾

४५+४६. तो हम उस को (बड़ी क़ुव्वत से) दाँए हाथ से गिरफ़्तार कर के उस की जान की रग काट दें[६] ४७. फिर तुम में से कोई भी उस की तरफ़ से (इस सज़ा में) रूकावट न हो सके (क्योंकि वह अगर्चे रसूल है, ताहम हमारा बन्दा तो है) ४८. और वह क़ुरआन बेशक परहेज़गारों के लिये नसीहत है ४९. और हम ख़ूब जानते हैं कि तुम में से बाज़ लोग (उस कुरआन को) झुठलाने वाले हैं। ५०. और यह (क़ुरआन, यानी उस का इन्कार करना) मुन्किरों पर हसरत हो गा ५१. इस में शक नही कि यह क़ुरआन बिला शुब्हा सहीह है। ५२. पस तुम (इस के मानने वालो) अपने बड़े रब की तस्बीह पढ़ा करो (यानी उस को पाकी से याद किया करो)

....

६. मौलाना वहीदुज़्ज़माँ रह० ने इस आयत का यह तर्जुमा किया है "तो हम गुनाहगारों की तरह उस का दायाँ हाथ पकड़ लेते"। मौलाना मुहम्मद जूना गढ़ी रह० ने यह तर्जुमा किया है "तो अल्बत्ता हम उस का दाहिना हाथ पकड़ कर.............."

सूरः मआरिजः– (70)

सूरः मआरिज (सीढ़ियाँ) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[१]। इस में ४४ आयतें और २ रूकूअ़ हैं। शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१+२+३. एक पूछने वाले ने उस अ़ज़ाब का हाल पूछा है जो (मरने के बाद) काफ़िरों पर आने वाला है[२] जिस का हटाने वाला अल्लाह, बड़े कमाल व मर्तबे वाले, के अ़लावा कोई नही[३]।

४. फ़रिश्ते और रूह उसी की तरफ़ चढ़ते हैं। वह अ़ज़ाब उस दिन होगा जिस की मुद्दत पचास हज़ार वर्ष है। ५. पस तू (उन की बेहूदा बातों पर) अच्छी तरह (अच्छे अख़्लाक़ से) सब्र किया कर। ६+७. यह लोग उस (अ़ज़ाब) को दूर जानते हैं, और हम उस को क़रीब देखते हैं।

....
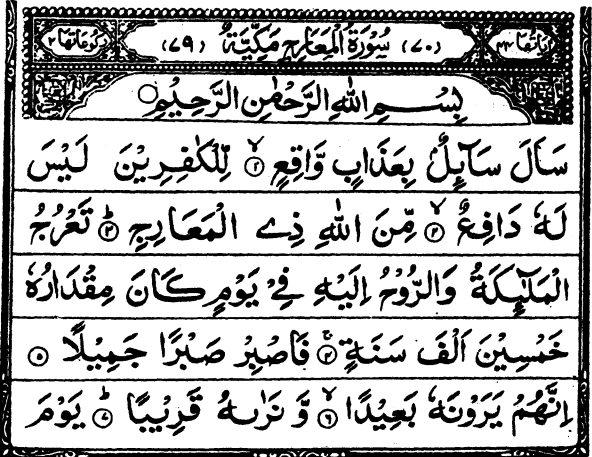
१. यह सूरः मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में अल्लाह पाक को "ज़िल्मआ़रिज" कहा गया है, इस लिये इस सूरः का नाम "मआ़रिज" हुआ। इस का अर्थ हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने "दर्जो वाला, बुलन्दियों वाला," किया है। इमाम मुजाहिद के नज़दीक इस से आसमान की सीढ़ियाँ मुराद हैं। वह कहते हैं कि उस की तरफ़ फ़रिश्ते और रूह चढ़ते हैं। (इब्ने कसीर)

२. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जब अल्लाह के अ़ज़ाब से डराया तो कुफ़्फ़ार ने पूछा कि यह आ़ज़ाब किस पर आये गा? उन्हीं को जवाब देने के लिये यह सूरः नाज़िल हुयी। (ख़ाज़िन)

३. इस आयत न० ३ का तर्जुमा बड़ा कठिन है, इस लिये यहाँ पर चन्द और उ़लमा के तर्जुमे दिये जाते हैं। आप इस से अनुमान लगा सकें गे कि इस आयत का तर्जुमा कितना कठिन है।

शाह अ़ब्दुल क़ादिर का तर्जुमा: "माँगा एक माँगने वाले ने अ़ज़ाब पड़ने वाला मुन्किरों के वास्ते कोई नही हटाने वाला। अल्लाह की तरफ़ से चढ़ते दर्जो का साहब। उस की तरफ़ फ़रिश्ते और रूह उस दिन में जिस का लंबाव (लंबाई) पचास हज़ार बरस है"। डिप्टी नज़ीर अहमद का तर्जुमा: "अल्लाह जो आकाश की सीढ़ियों का मालिक है जिन की राह फ़रिश्ते और जिब्रील उस की राह चढ़ते हैं उस के हुक्म से क़ियामत के दिन, जिस का अन्दाज़ा पचास हज़ार वर्ष का हो गा। काफ़िरों को अ़ज़ाब होना है और कोई उस को टाल नही सकता"। शीआ़ मज़हब का तर्जुमा मौलाना मक़्बूल अहमद लखनवी: "एक प्रश्न करने वाले ने बड़े दर्जो वाले अल्लाह से ऐसे अ़ज़ाब का सवाल किया जो काफ़िरों के लिये वाक़े होता है और उस का दफ़ा करने वाला कोई नही हो सकता, फ़रिश्ते और रूह उस के सामने हाज़िर होने के लिये एक दिन में जिस का अनुमान पचास हज़ार वर्ष हो गा चढ़ जायें गे"। तर्जुमा मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी: "एक दर्ख़ास्त करने वाला उस अ़ज़ाब की दर्ख़ास्त करता है जो कि काफ़िरों पर आने वाला➲

➲है जिस को कोई दफ़ा करने वाला नही जो अल्लाह की तरफ़ से वाके़ होगा जो कि सीढ़ियों का मालिक है। फ़रिश्ते और रूहें उस के पास चढ़ जाती हैं, ऐसे दिन में होगा जिस की मिक्दार (मात्रा) पचास हज़ार वर्ष है"।

ऊपर हम ने चार तर्जुमे पेश किये हैं जिस से आप अनुमान लगा सकते हैं कि उन तर्जुमों के दर्मियान कितना बड़ा इख़्तिलाफ़ है। इस के बावजूद उलमा ने अपने तौर पर हक़ अदा करने की कोशिश की है, अल्लाह उन की कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाये- आमीन (सनाई)

अज़ाब का माँगने वाला नज़्र बिन हारिस या अबू जेहल था। उस ने यह दुआ की कि ऐ अल्लाह! अगर यह क़ुरआन सच्चा है और तेरी तरफ़ से है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा, या और कोई दूसरा अज़ाब हम पर नाज़िल कर। चुनान्चे यह दोनों अभागे बद्र की लड़ाई में जहन्नम रसीद हुये। कुछ उलमा यह भी कहते हैं कि माँगने वाले से हज़रत नूह या नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुराद हैं। 'ज़िल् मआरिज' यानी दर्जो वाला, जिन पर फ़रिश्ते चढ़ कर उस के पास जाते हैं। कुछ उलमा का कहना है कि "ख़ूबियों वाला" तर्जुमा हो गा। (वहीदी)

يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ۝٨ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۝٩
وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ۝١٠ يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ؕ يَوَدُّ
الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِيْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍۭ بِبَنِيْهِ ۝١١
وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ۝١٢ وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِيْ تُـْٔوِيْهِ ۝١٣
وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِ ۝١٤ كَلَّا ؕ
اِنَّهَا لَظٰى ۝١٥ نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ۝١٦ تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ
وَتَوَلّٰى ۝١٧ وَجَمَعَ فَاَوْعٰى ۝١٨ اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ
هَلُوْعًا ۝١٩ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا ۝٢٠ وَّاِذَا مَسَّهُ
الْخَيْرُ مَنُوْعًا ۝٢١ اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ ۝٢٢ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى
صَلَاتِهِمْ دَآئِمُوْنَ ۝٢٣ وَالَّذِيْنَ فِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ
مَّعْلُوْمٌ ۝٢٤ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۝٢٥ وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ
بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۝٢٦ وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ
مُّشْفِقُوْنَ ۝٢٧ اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ۝٢٨

८. जिस रोज़ आसमान पिघले हुये ताँबे की तरह हो जाये गा ९. और पहाड़ धुनी हुयीं ऊन की तरह हो जायें गे। १०. (उस रोज़) कोई गहरा दोस्त भी किसी दोस्त को न पूछे गा ११. हालाँकि आपस में (एक दूसरे को) देखें गे। बुरा आदमी चाहे गा कि उस दिन के अज़ाब से यह अपने बेटों १२. बीवी, सगे भाई, १३. कुँबा-बिरादरी को जो उसे पनाह देती थी १४. और दुनिया के सब लोगों को अपने फ़िदये में देदे, फिर यह फ़िद्या उस को अज़ाब से छुड़ा ले। १५. हर्गिज़ ऐसा न हो गा। बेशक वह लपटें मार रही हो गी १६. चमड़े जला कर उतार दे गी १७. जिस ने (हिदायत क़ुबूल करने से) पीठ और मुँह फेरा हो गा १८. और (नाजायज़ तरीक़े से) माल जमा किया और महफ़ूज़ रखा ऐसे लोगों को बुलाये गी। १९. बेशक इन्सान पैदाइशी थुड़दिला है[४]। २०. जब उस को तकलीफ़ पहुंचती है तो घबरा उठता है २१. और जब उसे ख़ैर पहुंचती है तो रोक लेता है २२+२३. मगर जो लोग नमाज़ों पर हमेशगी करते हैं (वह ऐसे नही) २४+२५ और जिन के मालों में माँगने वालों और न माँगने वालों के लिये हक़ मुक़र्रर हैं (वह उन को बराबर देते हैं) २६. और जो लोग बदले के दिन यानी क़ियामत की तस्दीक़ करते हैं (वह भी ऐसे थुड़दिले नही हैं) २७. और जो लोग अपने पर्वरदिगार के अज़ाब से डरते रहते हैं २८. क्योंकि उन को यक़ीन है कि उन के पर्वरदिगार का अज़ाब बेख़ौफ़➲

होने की चीज़ नही।

....

४. 'थुड़ दिला' यानी थोड़े दिल वाला है। तबीअ़त के खिलाफ़ बात देख कर उस का दिल थोड़ा हो जाता है, हिम्मत हार बैठता है। और जब कोई भलाई पहुंचती है तो फिर कन्जूसी और रोक लेने पर उतर आता है। मगर जो हक़ीक़ी नमाज़ी हैं वह थोड़े दिलवाले नही होते, वह अ़ल्लाह के वास्ते अपने जान-माल से हर समय हाज़िर रहते हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ﴿٢٩﴾ إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣٠﴾ فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ﴿٣١﴾ وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ﴿٣٢﴾ وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَاتِهِمْ قَائِمُونَ ﴿٣٣﴾ وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٣٤﴾ أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُكْرَمُونَ ﴿٣٥﴾ فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا قِبَلَكَ مُهْطِعِينَ ﴿٣٦﴾ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ﴿٣٧﴾ أَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيمٍ ﴿٣٨﴾ كَلَّا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِمَّا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾ فَلَا أُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشَارِقِ وَالْمَغَارِبِ إِنَّا لَقَادِرُونَ ﴿٤٠﴾ عَلَىٰ أَنْ نُبَدِّلَ خَيْرًا مِنْهُمْ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿٤١﴾ فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ

२९. और वह लोग भी (थुड़दिले नही हैं) जो अपनी शर्मगाहो की सुरक्षा करते हैं ३०. मगर जो लोग (ज़रूरत के समय) अपनी बीवियों या लौंडियों से मिलते हैं, उन को (ऐसा करने में) मलामत नहीं। ३१. हाँ, जो लोग इस (ऊपर के तरीक़े) के अ़लावा (कोई और) तरीक़ा इख़्तियार करें गे वह हद से बाहर निकले हों गे[५] ३२. और वह लोग (भी जल्दबाज़ और थुड़दिले नही) जो अपनी अमानतों और वादों की देख-भाल करते हैं ३३. और वह लोग भी जो अपनी शहादत पर क़ायम रहते हैं ३४. और वह लोग भी (थुड़दिले नही) जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं[६] ३५. यही लोग जन्नतों में अ़िज़्ज़त के साथ रहें गे। ३६+३७. फिर क्या कारण है कि मुन्किर लोग टोली-टोली हो कर तेरी तरफ़ से दायें-बायें भाग जाते हैं[७] (यूँ भागते हैं गोया जंगली गधे हैं)[८] ३८. क्या (इन हालात के बावजूद) उन में से हर एक यही चाहता है कि नेमतों के बाग़ों में दाख़िल किया जाये गा? ३९. हर्गिज़ नही! हम ने उन को ऐसी चीज़ से पैदा किया है जिसे यह जानते नही। (फिर इतनी बदमिज़ाजी क्यों?) ४०+४१. हमें मुश्रिक़ों और मग़्रिबों के पर्वरदिगार की क़सम है कि (यह तो क्या) हम क़ुदरत रखते है कि उन से अच्छी मख़्लूक़ पैदा कर दें[९]। और (ऐसा करने में) हम आ़जिज़ नहीं। ४२. पस तू उन को छोड़ दे कि बेहूदा बातें बनायें और खेल-कूद में लगे रहें, यहाँ तक कि उन पर वह समय आ जाये जिस का उन को वादा दिया जाता है

....

५. यानी अपनी पत्नी या लौंडी के अ़लावा दूसरी महिला से, या लड़कों से, या किसी और तरीक़े से शहवत निकालना यह सब नाजायज़ है। अ़ल्लामा वहीदुज़्ज़माँ रह० लिखते हैं कि इस आयत से मुत्अ़ा, निश्चित दिन के लिये शादी

कर के) लौंडे बाज़ी, (समलैंगिक) जानवर से कुकर्म करना, ज़िना और जल्क़ (हस्तमैथुन) का हराम होना साबित होता है। (वहीदी)

६. ऊपर की आयत में नमाज़ की हिफ़ाज़त के लिये "दाइमून" (पाबन्दी से अदा करते हैं) का प्रयोग किया है और यहाँ "युहाफ़िज़ून" (नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं) इस्तेमाल हुआ है। अस्ल में ठहरे हुये पानी के लिये "दाइम" बोला जाता हैं इस से साबित हुआ कि नमाज़ में इतमिनान वाजिब है। जो शख़्स अपने रूकूअ़, सज्दे पूरी तरह ठहर कर इतमिनान के साथ अदा नही करता वह अपनी नमाज़ पर "दाइम" नही है। न वह सुकून करता है और न इतमिनान, बल्कि कौए की तरह ठोगें मार लेता है। ऐसी नमाज उसे नजात नही दिलवा सकती। इस का अर्थ "हमेशगी करना" भी आता है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह को सब से अधिक वह अ़मल पसन्द है जिस को हमेशा पाबन्दी के साथ किया जाये, चाहे वह अ़मल थोड़ा ही क्यों न हो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्लम की यह आ़दत थी कि जिस काम को करते, उसे बराबर करते। हज़रत दानियाल अ़लै० पैगंबर ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उम्मत की प्रशंसा करते हुये बयान किया है कि यह उम्मत इस प्रकार नमाज़ पढ़े गी कि अगर इस प्रकार नूह अ़लै० की उम्मत पढ़ती तो न डूबती और आ़द क़ौम अगर ऐसी नमाज़ पढ़ती तो उन पर ऐसी बरबादी वाली हवायें न चलतीं और अगर समूद की क़ौम इस उम्मत की तरह नमाज़ पढ़ती तो उन को चीख़ के द्वारा हलाक किया जाता। ऐ लोगो! नमाज़ को अच्छी तरह पाबन्दी के साथ पढ़ा करो यह मोमिन का ज़ेवर है और उस के बेहतरीन अख़्लाक़ का सबूत है। (इब्ने कसीर)

७. यानी इन काफ़िरों को क्या हो गया कि यह नफ़रत से तेरे पास से दायें बायें भागे जा रहे हैं। अहलेहदीस के इमाम हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० फ़रमाते हैं इन लोगों से मुराद नफ़्स की पैरवी करने वाले हैं जो कुरआन के मुख़ालिफ़ होते हैं और परस्पर भी एक-दूसरे के मुख़ालिफ़ होते हैं, लेकिन किताबुल्लाह की मुख़ालिफ़त में सब एक ज़बान हो जाते हैं – फिर आगे फ़रमाया: क्या उन की इच्छा नेमतों वाली जन्नत में जाने की है? तो उन को मालूम होना चाहिये कि उन की यह इच्छा कभी पूरी न होगी, इस लिये कि उन की यह हालत है कि किताबुल्लाह और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत के दुश्मन हैं, उन से कतरा कर निकल जाते हैं, फिर क्यों कर उन की क़ामना पूरी हो गी, बल्कि यह लोग जहन्नमी हैं। (मुहम्मदी)

८. आ़म तौर पर इस आयत का तर्जुमा और तफ़्सीर यूँ की गयी है "टोलियाँ तेरी तरफ़ चली आती हैं" ।मैं ने अपनी अ़रबी भाषा की तफ़सीर में यही इख़्तियार किया है लेकिन यहाँ मैं ने यह तर्जुमा न कर के यह तर्जुमा किया है "तेरी तरफ़ से भागते हैं"। इस तर्जुमा की दलील सूरः मुद्दस्सिर की आयत न० ४९ है "उन को क्या हो गया है कि नसीहत से मुँह मोड़ते हैं"। (सनाई)

९. यानी उन के स्थान पर उन से बेहतर जब ला सकते हैं तो खुद उन को पुन: जीवित क्यों नही कर सकते। क्या वह हमारे क़ाबू से निकल कर कहीं जा सकते हैं? या "ख़ै-रम्मिनहुम"से मुराद उन ही को दोबारा पैदा करना हो, क्यों कि अ़ज़ाब हो या सवाब, दूसरी ज़िन्दगी इस ज़िन्दगी से बहरहाल कहीं ज़्यादा मुकम्मल होगी। या यह मतलब हो कि उन कुफ़्फ़ार को हंसी-मज़ाक़ उड़ाने दीजिये, हम इस्लाम की सेवा के लिये इन से बेहतर क़ौम ले आयें गे। चुनान्चे कुरैश के स्थान पर उस ने मदीना के अन्सार को खड़ा कर दिया और मक्का वाले फिर भी उन के क़ाबू से निकल कर कहीं न जा सके और अन्त में अपनी शरारतों का फल भोगना पड़ा।

'मश्रिक़ों और मग़्रिबों की क़सम' शायद इस लिये खाई कि अल्लाह हर रोज़ उस को बदलता रहता है, तो फिर तुम्हें बदल देना उस के लिये क्या कठिन है। चूंकि सूरज हर रोज़ नये स्थान से निकलता और नये स्थान पर डूबता है इस लिये उस के निकलने और डूबने के कई स्थान हुये, इसीलिये बहुवचन का इस्तेमाल किया गया है (मुवज़्ज़िहुल फुर्क़ान)

الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٤٢﴾ يَوْمَ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ
سِرَاعًا كَأَنَّهُمْ إِلَىٰ نُصُبٍ يُوفِضُونَ ﴿٤٣﴾ خَاشِعَةً
أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۚ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي
كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٤٤﴾

४३. जिस रोज़ यह लोग (ज़िन्दा होकर) क़ब्रों से जल्दी-जल्दी निकलेंगे (ऐसे जल्दी कि) गोया वह निशाना की तरफ़ भागे जाते होंगे ४४. उन की आँखें शर्म के मारे झुकी होंगी, ज़िल्लत उन पर छाई होगी। यही वह दिन है जिस का इन्सानों को वादा दिया जाता था।

सूरः नूहः-(71)

(٧١) سُورَةُ نُوحٍ مَكِّيَّةٌ (٧١)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنذِرْ قَوْمَكَ مِن
قَبْلِ أَن يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١﴾ قَالَ يَا قَوْمِ
إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢﴾ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ
وَأَطِيعُونِ ﴿٣﴾ يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰ
أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ ۖ
لَوْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي
لَيْلًا وَنَهَارًا ﴿٥﴾ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِي إِلَّا فِرَارًا ﴿٦﴾

सूरः नूह (नूह नबी अलै०) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में २८आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है।

१. हम (अल्लाह) ने नूह को उस की क़ौम कुफ़्फ़ार की तरफ़ (इस सन्देश के साथ) भेजा था कि अपनी क़ौम को डराए इस से पहले कि दर्दनाक अ़ज़ाब उन पर आजाये २. नूह ने कहा: ऐ मेरे भाईयो! बेशक मैं स्पष्ट शब्दों में तुम को डराने वाला हूँ ३. तुम लोग अल्लाह ही की बन्दगी करो और उसी से डरते रहो और मेरी इताअ़त करो। ४. अल्लाह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा[1] और तुम को एक मुक़र्रर समय देगा। अल्लाह का मुक़र्रर किया हुआ समय जब आ जाता है तो पीछे नही हटता। काश तुम लोग जानो। ५. (क़ौम की तरफ़ से सदियों तक इन्कार ही करने पर)नूह ने कहा: मेरे मौला! मैं ने अपनी क़ौम को रात-दिन दीन की तरफ़ बुलाया[2] ६.मगर मेरी दावत पर यह लोग फ़रार ही करते रहे।

....

१. यानी वह बड़े-बड़े गुनाह जिन पर सज़ा का वादा है, अगर तुम ने यह तीनों काम किये हैं तो वह माफ़ हो जायें गे और अल्लाह तआ़ला अ़ज़ाब को भी हटा लेगा और तुम्हारी उम्र बढ़ा दे गा। इस आयत से साबित हुआ कि अल्लाह की इताअ़त, नेकी, सुलूक और रहम-करम से उम्र बढ़ जाती है। हदीस शरीफ़ में भी आया है कि रहम-करम से उम्र बढ़ जाती है।

२: हज़रत नूह अ़लै० ९५० वर्ष तक अपनी क़ौम को हिदायत की तरफ़ बुलाते रहे और उन को सीधी राह पर लाने के लिये हर संभव कोशिश की, मगर उन की क़ौम ने न सिर्फ़ यह कि इन्कार किया, बल्कि हज़रत नूह को ज़लील किया और तकब्बुर में साफ़ उन से मुंह मोड़ लिया। जब हज़रत नूह उन से बिल्कुल निराश हो गये तो फिर अल्लाह से दुआ़ की जैसा कि आगे की आयतों में बयान है।

وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ
فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا وَاسْتَكْبَرُوا
اسْتِكْبَارًا ﴿٧﴾ ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ﴿٨﴾ ثُمَّ إِنِّي
أَعْلَنتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ﴿٩﴾ فَقُلْتُ
اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ﴿١٠﴾ يُرْسِلِ السَّمَاءَ
عَلَيْكُم مِّدْرَارًا ﴿١١﴾ وَيُمْدِدْكُم بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَ
يَجْعَل لَّكُمْ جَنَّاتٍ وَيَجْعَل لَّكُمْ أَنْهَارًا ﴿١٢﴾ مَّا لَكُمْ
لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ﴿١٣﴾ وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ﴿١٤﴾
أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا ﴿١٥﴾
وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿١٦﴾
وَاللَّهُ أَنبَتَكُم مِّنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ﴿١٧﴾ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ
فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ﴿١٨﴾ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ
الْأَرْضَ بِسَاطًا ﴿١٩﴾ لِّتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ﴿٢٠﴾

७. और मैं ने जब उन को बुलाया कि (अपनी बदकारी से तौबा करें) ताकि तू उन को बख़्श दे तो उन्हों ने अपने कानों में उंगलियाँ दे ली और अपने कपड़े ओढ़ लिये (ताकि मेरी शक्ल भी न देख सकें, सुनना तो दूर की बात) और अड़े रहे और तकब्बुर ही करते रहे ८. फिर मैं ने उन को बुलन्द आवाज़ से बुलाया (तो भी मुतवज्जह न हुये) ९. फिर मैं ने उन को खुले और छुपे बुलाया (यानी तन्हाई में और महफिल में तौहीद की दावत दी) १०. फिर मैं ने (यह भी) कहा: अपने रब से बख़्शिश माँगो, बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला है ११. (इस्तिग़फ़ार करने से) अल्लाह तुम पर मूसलाधार मेंह बरसा दे गा १२. और माल, मवेशी, औलाद के साथ तुम्हारी मदद करे गा और तुम्हारे लिये बाग़ पैदा करे गा और तुम्हारे लिये पानी के चश्मे जारी कर दे गा[३] १३. तुम्हें क्या हो गया कि तुम अल्लाह की इ़ज़्ज़त नही करते १४. हालाँकि उसी ने तुम सब को मुख़्तलिफ़ हालात में पैदा किया है[४] १५. क्या तुम ने कभी ग़ौर किया कि अल्लाह ने सात आसमान तह ब तह कैसे पैदा किये १६. और चाँद को उन में रोशन चीज़ बनाया और सूरज को रोशन चराग़ पैदा किया[५] १७. (और आरंभ में) अल्लाह ने तुम को ज़मीन से पैदा किया १८. फिर तुम सब को उसी में लौटा देता है, फिर तुम को (क़ियामत के दिन उसी से) निकाले गा १९. और अल्लाह ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछा दिया २०. ताकि उस में खुले रास्तों पर चलो

....

३. इस आयत से इस्तिग़फ़ार की बड़ी फ़ज़ीलत साबित होती है। अगर बन्दा सच्चे दिल से मौला के सामने अपनी ग़लतियों को स्वीकार करते हुये माफ़ी चाहे तो न केवल अल्लाह उस के गुनाहों को माफ़ कर देता है, बल्कि अपनी रहमत के दर्वाज़ों को और खोल देता है। इस्तिग़फ़ार की बर्कत से सूखाकाल दूर हो जाता है, रोज़ी कुशादा हो जाती है और माल और औलाद में अल्लाह बर्कत देता है। 'इस्तिग़फ़ार' के माना दिल के साथ अपने गुनाहों का इक़रार करते हुये अल्लाह से बख़्शिश माँगना और भविष्य में गुनाहों के न करने का पक्का इरादा करना। दुआ किस प्रकार माँगी जाये? हदीस शरीफ़ में इस के लिये यह दुआ मौजूद है: "अस्-तग़फ़िरुल्ला-हल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-वल् हय्युल् क़य्यूमु व-अतूबु इलैहि"। एक दूसरी हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: लोगो! अपने रब से गुनाहों की बख़्शिश माँगो, मैं भी रोज़ाना ७०-७० मर्तबा इस्तिग़फ़ार पढ़ता हूँ।

४. यानी पहले तुम मनी (वीर्य) की एक बूँद थे, फ़िर जमा हुआ खून बने, फिर लोथड़े बने, फिर बेरूह जिस्म बने, ➲

➲फिर तुम में रूह फूँकी, फिर एक बेहोश बच्चे की तरह तुम को माँ के पेट से बाहर निकाला, फिर तुम को अक़ल और समझ अ़ता की (सनाई) 'अंत्वारा' इस से यही मुख़्तलिफ़ दौर मुराद हैं, जिन से हो कर आदमी को मौत तक गुज़रना पड़ता है। 'मा लकुम् लातरजू-न -----' (आयात १३)का तर्जुमा कुछ उ़लमा ने यूँ किया है "तुम को क्या बला हो गयी, तुम अल्लाह से यह आशा नही रखते कि वह तुम को इ़िज़्ज़त दे"। यानी उस पर ईमान क्यों नही लाते? ईमान लाओ गे तो अल्लाह के नज़दीक तुम्हारी इ़िज़्ज़त हो गी । हदीस शरीफ़ में आया है कि कुछ लोग नंगे स्नान कर रहे थे कि आप ने उन को पुकार कर फ़रमाया: मा लकुम् ला तरजू-न ....यानी तुम अल्लाह की अ़ज़मत से क्यो नही डरते? (वहीदी)

५. सूर्य की रोशनी तेज़ और गर्म होती है जिस के आते ही रात समाप्त हो जाती है। शायद इसी लिये उस को जलते चराग़ से तश्बीह दी गयी है। चंद्रमा के प्रकाश को उसी सूरज की रेशनी का फैलाव समझना चाहिये जो चाँद के सामने आ जाने से ठन्डी और धीमी हो जाती है (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)

قَالَ نُوحٌ رَّبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَن لَّمْ
يَزِدْهُ مَالُهُ وَوَلَدُهُ إِلَّا خَسَارًا ۝٢١ وَمَكَرُوا
مَكْرًا كُبَّارًا ۝٢٢ وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا
تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا ۥ وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ
وَنَسْرًا ۝٢٣ وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۖ وَلَا تَزِدِ
الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ۝٢٤ مِّمَّا خَطِيئَاتِهِمْ أُغْرِقُوا
فَأُدْخِلُوا نَارًا فَلَمْ يَجِدُوا لَهُم مِّن دُونِ
اللَّهِ أَنصَارًا ۝٢٥ وَقَالَ نُوحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى
الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ۝٢٦ إِنَّكَ إِن
تَذَرْهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا
كَفَّارًا ۝٢٧ رَّبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَن دَخَلَ
بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۖ وَلَا تَزِدِ
الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ۝٢٨

२१. (यह सब सुन कर भी वह इन्कार ही करते रहे, इस लिये) नूह ने कहा: ऐ मेरे पर्वरदिगार! उन्हों ने मेरी अवज्ञा की है और जिन मालदारों को उन के माल और औलाद ने सिवाए टूटे के कुछ लाभ नही पहुचाया, उन के पैरोकार हो गए हैं। २२. और उन्हों ने (मुझे तक्लीफ़ पहुंचाने में) बड़े-बड़े मक्र किये हैं २३. और उन के बड़े लोगों ने कहा: अपने माबूदों को मत छोड़ना और कहा कि न वद्द को छोड़ना, न सुवाअ़ को, न यग़ूस को, न यऊ़क़ को, न नस्र को[६] २४. (सर्कार!) उन्हों ने बहुत सी मख़्लूक़ को गुमराह किया है, ऐ मेरे पर्वरदिगार! उन ज़ालिमों को गुमराही में बढ़ाते जा २५. (इस मज़लूमाना दुआ़ का परिणाम यह हुआ कि) वह लोग अपने गुनाहों की वजह से ग़र्क़ किये गये, फिर जहन्नम की आग में दाख़िल किये गये, उन्हों ने अल्लाह के अ़लावा कोई सहयोगी न पाया। २६. और नूह ने कहा कि ऐ मेरे पर्वरदिगार! उन (काफ़िरों की शरारत हद से बढ़ गयी इस लिये उन) में से किसी आबाद घर को न छोड़। २७. अगर तू उन को छोड़े रखेगा तो तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और जो भी बच्चा जनेंगे बदकार और काफ़िर ही जनेंगे। २८. ऐ मेरे पर्वरदिगार! मुझे और मेरे माँ-बाप को बख़्श दे और हर उस चीज़ को बख़्श➲

➲दे जो ईमान्दार हो कर मेरे घर में दाख़िल हो (या मेरी बात मानती हो) और सब मोमिन मर्दों तथा औरतों को बख़्श दे और ज़ालिमों पर तबाही डाल।

....

६. कहा जाता है कि यह सब लोग हज़रत नूह के ज़माना से पहले नेक लोग थे उन के मरने के बाद शैतान ने लोगों को बहका कर कहा कि उन की मूर्तियाँ बना कर ज़िबादत के समय सामने रख लिया करो तो तुम्हारा जी ज़िबादत में खूब लगे गा। चुनान्चे उन्हों ने ऐसा ही किया। जब यह लोग मर गये तो उन की औलाद को यूँ बहकाया कि तुम्हारे बाप-दादा उन मूर्तियों की पूजा किया करते थे, इसलिय तुम भी उन की पूजा करो। इस तरह बुतपरस्ती आरंभ हो गयी। कहा जाता है कि "वद्द" बनी कल्ब का, और "सुवाअ़" बनी हुज़ैल का, "यग़ूस" बनू ग़तीफ़ और ग़ितफ़ान का, "यऊक़" बनी हमदान का और "नस्र" बनी ज़ी कलाअ़ का माबूद था। वाक़िदी की एक रिवायत में है कि "वद्द" एक मर्द की सूरत का बुत था और "सुवाअ़" औरत की सूरत की थी, "यग़ूस" बाघ की शक्ल का, और "यऊक़" घोड़े की सूरत का, और "नस्र" गिद्ध की सूरत का था।

बुख़ारी,मुस्लिम की एक रिवायत में है कि हज़रत उम्मे हबीबा और उम्मे सलमा ने एक गिर्जा का ज़िक्र किया जिस को उन्हों ने मुल्क हब्शा में देखा था, उस में औरतें रखी थीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: उन लोगों का उसूल था कि जब कोई आदमी उन में का मर जाता तो उस की क़ब्र पर मस्जिद बना लेते और उस में महिला की सूरत की मूर्ति रख देते थे। यह लोग क़ियामत के दिन अल्लाह के हाँ सब से बुरे लोगों में शुमार होंगे।

बुतपरस्ती की रस्म हज़ारों वर्ष पुरानी है और आज भी करोड़ों इन्सान बुतपरस्ती का शिकार है। और उन में बहुत से लोग ज़िल्म और अ़क्ल वाले भी हैं। क्या वह इतना भी नही समझते कि पत्थर और लक्ड़ी में कहाँ जान है और उन को पूजने से क्या लाभ है? मैं ने ऐसे लोगों से बात-चीत की तो उन्हों ने उत्तर दिया कि यह बेजान बुत जो हैं इन को हम खुदा नही समझते। खुदा तो वही है जो आसमानों और ज़मीनों का पैदा करने वाला है। यह बुत तो उन लोगों की मूर्तियाँ हैं जो अगले ज़माना में नेक गुज़रे हैं। हम उन की पूजा नही करत हैं, बल्कि उन की सूरतें पूजा के समय बर्कत के लिये सामने रख लेते हैं और समझते हैं कि इन के वसीला से हमारी मुरादें पूरी हों गी। क्योंकि हमारी पहुंच अल्लाह तक नही है। शरीअ़ते मुहम्मदी में ऐसे ही लोगों को मुश्रिक कहा गया है और बहुत सारे स्थानों पर कुरआन पाक में इस प्रकार के अ़मल को शिर्क बतलाया है।

शरीअ़त में अल्लाह तआ़ला तक हर शख़्स की पहुंच है। जो कोई भी उस को पुकारे या उस से फ़रियाद करे तो वह सब की सुनता है और बग़ैर अल्लाह के हुक्म के कोई शख़्स अगर्चे कैसा ही बुज़ुर्ग और नेक क्यों न हो, कुछ भी नही कर सकता। तौहीद इसी का नाम है कि अल्लाह के अ़लावा किसी की पूजा न की जाये, न ही पूजा के समय किसी को ध्यान में रखा जाये, न किसी और की नज़र-नियाज़ और मन्नत मानी जाये। उठते-बैठते पर्वरदिगार ही का नाम लिया जाये, मुश्किल के समय उसी को याद किया जाये, उस के सिवा सब को मजबूर और अल्लाह के हुक्म के ताबे समझा जाये, और यह विश्वास रहे कि जब तक अल्लाह न चाहे कोई हम को हानि-लाभ नही पहुंचा सकता, अल्लाह के सामने सब आ़जिज़ और मुहताज हैं, सब उस के गुलाम और बन्दे हैं, वह आक़ा और मालिक है, वह हाकिम और राज़िक़ है, उस को किसी की कुछ पर्वाह नहीं, वह चाहे तो दम भर में बड़ों को छोटा और छोटों को बड़ा कर दे, उस के कारख़ाने में कोई दम नहीं मार सकता। (वहीदी)

सूरः जिन्न —(72)

(٧٢) سُوْرَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ (٤٠)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا
اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۝١ يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ
فَاٰمَنَّا بِهٖ ۭ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۝٢ وَّاَنَّهٗ
تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۝٣
وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۝٤
وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا ۝٥ وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ
بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۝٦ وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا
كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۝٧ وَّاَنَّا لَمَسْنَا
السَّمَاۗءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ۝٨
وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۭ فَمَنْ

सूरः जिन्न (जिन्न) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में २८ आयतें और २ रूकूअ़ हैं। शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. (ऐ नबी!) तू कह: मेरी तरफ़ अल्लाह की वह्यि आयी है कि जिन्नों की एक बड़ी जमाअ़त ने क़ुरआन सुना तो सुन कर कहा कि हम ने अ़जीब क़ुरआन सुना है[1]। २. (जो सुनते ही) नेकी की तरफ़ राहनुमाई करता है, सो हम तो उस को मान गये, हम भविष्य में अपने रब के साथ किसी को भी शरीक न ठहरायें गे। ३. और हमारे रब की शान बहुत बुलन्द है, उस ने (अपने लिये) न बीवी बनाई है और न औलाद[2] ४. और बिला शुब्हा हम में से बेकूफ़ लोग अल्लाह पर ग़लत बातें कहा करते थे[3]। ५. और हम समझते थे कि इन्सान और जिन्न अल्लाह पर झूठ नही कहते (मगर दरअस्ल साबित हुआ कि यह शिर्क और कुफ़्र की बातें करने वाले सारे ही झूठे हैं) ६. और (इस क़ुरआन के उतरने से पहले) कई इन्सान (जंगलों में चलते हुये) जिन्नों की पनाह लिया करते थे। फिर वह जिन्न उन को हानि पहुंचाते[4]। ७. उन इन्सानों ने भी तुम्हारी तरह यही समझ रखा था कि अल्लाह कदापि किसी को पुन: जीवित न करेगा। ८. और हम ने आकाश को छुवा तो बड़ी सख़्त सुरक्षा और आग की लपटों से घिरा हुआ पाया ९. और हम (आज से पहले) आसमान से (वरे) आवाज़ पहुंचने की जगह बैठा करते थे (और सुना करते थे)

....
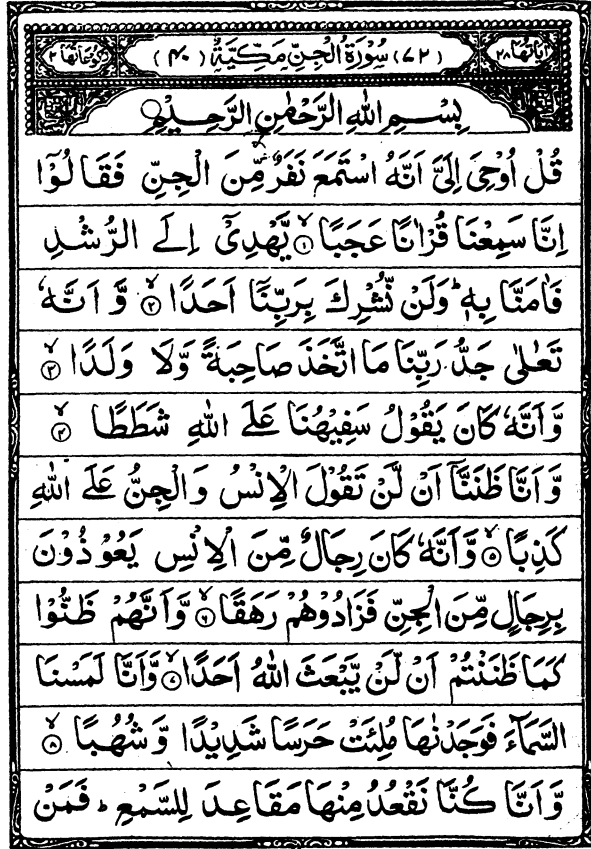
१. कहा गया है कि यह जिन्न सात, या नौ की मात्रा में थे और "नसीबीन" क्षेत्र के रहने वाले थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब अपने सहाबा के साथ बत्ने नख़्ला में फ़ज्र की नमाज़ में क़ुरआन की तिलावत फ़रमा रहे थे तो इन्हों ने सुना और वापस अपने वतन जा कर बताया कि आसमानों पर जाने की जो पाबन्दी लगी है उस का यही कारण है कि अन्तिम संदेष्टा पैदा हो चुके हैं और उन पर क़ुरआन पाक नाज़िल हुआ है। इन आयत से➲

➲जिन्नों का अलग एक मख़्लूक़ की हैसिय्यत से वजूद साबित है। कुछ फ़लसफ़ियों ने जो जिन्नों का इन्कार किया है वह ग़ल्त है। (वहीदी)

२. इस सूरः में "अन्न" (बेशक) का शब्द बहुत स्थानों पर आया है, जिस की वजह से ग्रामर की पाबन्दी में बड़ी मुश्किल पैदा होती है। हज़रत शाह बलिय्युल्लाह मुहद्दिस देहलवी ने अपने फ़ार्सी तर्जुमा में इस का कुछ भी लिहाज़ नही किया है, मैं ने भी उर्दू तर्जुमे में "अन्न" का कुछ ख़ास ध्यान नही किया है। (सनाई)

३. यानी उन के ग़लत ख़याल में पड़ कर हम ने उन की बात मान ली और शिर्क में गिरफ़्तार हो गये थे। अब मालूम हुआ कि वह झूठे और बेवकूफ़ थे।

४. अ़रब के कुछ मुश्रिकों का यह तरीक़ा था कि सफ़र करते हुये जब किसी स्थान पर उतरते तो पुकार कर यूँ कहते थे, "हम इस स्थान के सर्दार की पनाह में आते हैं" (यहाँ पर सर्दार से मुराद जिन्न हैं) इमाम मुक़ातिल फ़रमाते हैं कि सब से पहले यमन वालों ने जिन्नों की पनाह लेनी शुरू की, फिर बनी हनीफ़ा ने, फिर पूरे अ़रब के लोगों में यही तरीक़ा प्रचलित हो गया। और जब इस्लाम आया तो लोगों ने यह तरीक़ा छोड़ कर अल्लाह की पनाह लेनी शुरू कर दी (मवाहिब)

يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ﴿٩﴾ وَّاَنَّا لَا
نَدْرِيْٓ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ
رَبُّهُمْ رَشَدًا ﴿١٠﴾ وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ
ذٰلِكَ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ﴿١١﴾ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ
نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِي الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ﴿١٢﴾ وَّاَنَّا
لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ ؕ فَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِرَبِّهٖ
فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ﴿١٣﴾ وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ
وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ؕ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا
رَشَدًا ﴿١٤﴾ وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ﴿١٥﴾
وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً
غَدَقًا ﴿١٦﴾ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ
يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ﴿١٧﴾ وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا
تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ﴿١٨﴾ وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ

अब जो कोई कान लगाये तो आग की लपट तय्यार पाता है १०. और हम नही जानते कि ज़मीन वालों के हक़ में अल्लाह की तरफ़ से बुराई का इरादा किया गया है या पर्वरदिगार ने उन के लिये बेहतरी का इरादा किया है[५] ११. और हम में से तो कुछ लोग नेक हैं और बाज़ उन के सिवा कुछ और तरह के भी हैं। हम मुख़्तलिफ़ क़िस्मों के थे। १२. और अब हम यह जान चुके हैं कि हम अल्लाह को ज़मीन पर आजिज़ नही कर सकते और नही भाग कर उसे आजिज़ कर सकते हैं १३. और जब हम ने हिदायत को सुना तो हम ने उस पर विश्वास कर लिया, सो जो कोई अपने रब पर ईमान लायेगा उसे न हानि का डर होगा और न अत्याचार का (यानी उस का कोई काम बर्बाद न होगा) १४. और हम में से कुछ लोग अल्लाह के फ़रमाँबर्दार हैं और कुछ बदकार हैं[६] पस जो लोग अल्लाह के हो रहे उन्हों ने ही हिदायत की तलाश की। १५. और जो (सीधी राह से) टेढ़े हैं वह जहन्नम का इंधन होंगे। १६. और (ऐ नबी! हम तुम्हें सूचित करते हैं कि) अगर यह लोग (यानी अ़रब के मुश्रिक लोग) सीधे रास्ते पर रहते तो हम उन को काफ़ी पानी पिलाते। ➲

➲१७. (लेकिन अब जो पानी रूक जाने की वजह से सूखाकाल पड़ा हुआ है) इस लिये है ताकि हम (अल्लाह) उन को अ़ज़ाब में गिरफ़तार करें। और कोई अपने रब की नसीहत से मुँह फेरे तो अल्लाह उस को सख़्त अ़ज़ाब में दाख़िल करेगा। १८. और तमाम मस्जिदें अल्लाह के लिये हैं पस उन में अल्लाह के साथ किसी और को मत पुकारा करो १९. और जब कभी अल्लाह का बन्दा खड़ा हो कर अल्लाह को पुकारता

....

५. इमाम सुद्दी फ़रमाते हैं कि शैतान इस से पहले आसमानी बैठकों में बैठ कर फ़रिश्तों की आपस की बातें उड़ा लाया करते थे। जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैग़ंबर बनाये गये तो एक रात उन शैतानों पर आग की वर्षा होने लगी जिसे देख कर ताइफ़ के लोग घबरा गये कि शायद आसमान वाले हलाक हो गये। उन्हों ने देखा कि लगातार सितारे टूट रहे हैं, शोले उठ रहे हैं और दूर-दूर तक तेज़ी के साथ चले जा रहे हैं। चुनान्चे उन्होंने अपने-अपने ग़ुलाम और जानवर अल्लाह की राह में आज़ाद करना शुरू कर दिया। आख़िर अ़ब्द या लैल ने उन से कहा कि ऐ ताइफ़ वालो! तुम क्यों अपने माल बर्बाद कर रहे हो? तुम देखो कि अगर सितारे अपने-अपने स्थान पर हैं तो समझ लो कि आसमान वाले तबाह नही हुये हैं, बल्कि यह सारे इन्तिज़ाम अन्तिम रसूल के लिये हो रहे हैं। और अगर तुम देखो कि वास्तव में सितारे अपने-अपने स्थान पर नही हैं तो आसमान वालों को हलाक मान लो। उन्हों ने सितारों को देखा तो सब अपने-अपने स्थान पर नज़र आये तब उन्हें इतमिनान हुआ। शैतानों में भी भागदौड़ मच गयी। यह लोग अपने सर्दार इब्लीस के पास गये तो उस ने कहा कि मेरे पास चारों तरफ़ की मिट्टी लायी जाये, जब मिट्टी लायी गयी तो उस ने सूँघ कर बताया कि इस की वजह मक्का में है। चुनान्चे नसीबीन के ७ जिन्न मक्का में पहुंचे, उस समय नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़ज्र की नमाज़ में क़ुरआन की तिलावत फ़रमा रहे थे। तिलावत को सुन कर इन के दिल नर्म पड़ गये वह इस्लाम ले आये और इस्लाम की दूसरे लोगों को भी दावत दी (मुहम्मदी)

६. यहाँ पर जिन्नात अपनी क़ौम के इख़्तिलाफ़ बयान करते हैं और कहते हैं कि हम में नेक लोग भी हैं और बुरे भी। इमाम आमश रह० फ़रमाते हैं कि एक जिन्न मेरे पास आया करता था, मैं ने उस से एक मर्तबा मालूम किया कि तमाम खानों में सब से बेहतर कौन सा खाना है? उस ने कहा कि चावल। मैं ने देखा कि लुक़्मा तो बराबर उठ रहा है लेकिन उठाने वाला दिखाई नही पड़ रहा है। मैं ने पूछा कि जो ख़ाहिश हम इन्सानों में है क्या तुम में भी है? उस ने कहा कि हाँ, मैं ने पूछा कि तुम में राफ़ज़ी का कहाँ शुमार होता है? उस ने कहा कि बुरा शुमार होता है। हाफ़िज़ मुज़-नी फ़रमाते हैं कि इस की सनद सहीह है (इब्ने कसीर)

يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾ قُلْ إِنَّمَا
أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ﴿٢٠﴾ قُلْ إِنِّي
لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾ قُلْ إِنِّي لَن
يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ وَلَنْ أَجِدَ مِن دُونِهِ
مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾ إِلَّا بَلَاغًا مِّنَ اللَّهِ وَرِسَالَاتِهِ وَمَن

तो लोग (ऐसें बेज़ार होते कि) उस पर टूट पड़ने को तय्यार होते। २०. (ऐ नबी!) तू कह! मैं (अल्लाह के हुक्म से) केवल अपने रब को पुकारता हूँ और उस के साथ किसी एक को शरीक नही करता। २१. तू कह! बिला शुब्हा मैं तुम्हारे लिये क़िसी प्रकार के नुक़्सान या लाभ पहुंचाने का इख़्तियार नही रखता[७]। २२. तू कह दे! स्वयँ मुझे भी अल्लाह के सिवा कोई पनाह➲

يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَآ اَبَدًا ﴿٢٣﴾ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ
مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٤﴾ قُلْ اِنْ
اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَهٗ
رَبِّيْٓ اَمَدًا ﴿٢٥﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ
اَحَدًا ﴿٢٦﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ
يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ﴿٢٧﴾
لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ
بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾

नहीं देगा और उस के सिवा मैं कहीं पनाह नहीं पाऊँगा। २३. हाँ, मुझे अल्लाह का सिर्फ़ पैग़ाम पहुंचाने का इख़्तियार है और जो अल्लाह और उस के रसूल की अवज्ञा करेगा उस के लिये जहन्नम का दन्ड होगा, वह हमेश उसी में रहेगा। २४. और जब यह लोग वादा दिये गये अ़ज़ाब को देखेंगे तो उन को मालूम हो जायेगा कि किस फ़रीक़ का सहयोगी कमज़ोर है और गिनती में कम है। २५. तू कह! मैं नहीं जानता कि तुम्हारा वादा किया हुआ अ़ज़ाब क़रीब है या मेरा पर्वरदिगार उस को दूर कर देगा २६. वह ग़ैब का जानने वाला है, वह अल्लाह अपने ग़ैब पर किसी को सूचित नही करता २७. मगर नबिय्यों में से जिस रसूल को जितना देना पसन्द करता है[८], सूचित करता है (यानी हज़रत जिब्रील के ज़रीआ़ जब सन्देश भेजता है) तो उस के आगे और पीछे (फ़रिश्तों की) फ़ौज का पहरा भेजता है २८. ताकि अल्लाह ज़ाहिर कर दे कि उन फ़रिश्तों ने अपने रब के सन्देश पहुंचा दिये और अल्लाह ने उन के पास की सारी चीज़ों पर अहाता किया हुआ है और हर चीज़ को गिन रखा है

....

७. यह आयत तौहीद की अस्ल बुनियाद है,इसलिये इस स्थान पर एक उदाहरण से तौहीद के मसला को समझने की ज़रूरत है। हिन्दुस्तान में (१९४७ से पहले की) हुकूमत का सिलसिला यह था कि सब से ऊंचा हाकिम वाइस राय (Viceroy) होता जो बादशाह का नायब होता था, इस के नीचे सूबों के गवर्नर होते थे, इन के नीचे कमिश्नर, फिर इन के मातहत जिला हाकिम, इन के मातहत तहसीलदार होते थे। इस सारे सिलसिला में ग़ौर करने की बात यह है कि जिस काम का इख़्तियार वाइसराय को न हो, उस का इख़्तियार उस के मातहतों को हासिल नही हो सकता (बल्कि ऐसा हो तो यह वाइसराय की तौहीन है) मुसलमानों का अ़कीदा है कि मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मर्तबा तमाम मख़्लूक़ में सब से बड़ा है, बल्कि दूसरे सहाबा, औलिया और उ़लमा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मातहत हैं। तो अब ऊपर बयान किये गये उसूल के मुताबिक़ हमें सोचना चाहिये कि जिस सूरत में अल्लाह तआ़ला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आदेश दिया कि आप अपने बारे में एलान कर दें कि हमारे अन्दर किसी को हानि-लाभ पहुंचाने की ताक़त नही है, सो फिर आप के मातहतों को यह इख़्तियार क़हाँ से हासिल हो जाये गा? फिर जो लोग औलिया और उ़लमा के बारे में यह गुमान करते हैं कि उन को यह ताक़त हासिल है, वह लोग ग़लत ख़याल ही में मुबतिला नही हैं, बल्कि इस ख़याल से नबी की तौहीन लाज़िम आती है। इस लिये कि जब नबी को यह इख़्तियार नही प्राप्त है तो फिर उन के मातहतों को कैसे प्राप्त होगा। इस लिये अल्लाह के वलियों को हाजतरवा (आवश्यक्तयें पूरी करने वाला) और मुश्किलकुशा (समास्सियाओं को दूर करने वाला) समझना किसी तरह सहीह नही है। (सनाई)

८. तमाम उलमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि ग़ैब का अ़िल्म अल्लाह के अ़लावा किसी को हासिल नहीं, न वहबी न कसबी और न ज़ाती। लेकिन आजकल कुछ उलमा का कहना है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ग़ैब

का अ़िल्म हासिल था। इल्मे ग़ैब से मुराद सारे संसार की बातों का अ़िल्म और जानकारी है। आजकल के उलमा का कहना है कि इस आयत से मालूम होता है कि अल्लाह अपने रसूलों को ग़ैब का अ़िल्म अ़ता करता है तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चूंकि तमाम नबिय्यों के सर्दार हैं इसलिये उन को कुल ग़ैब का अ़िल्म दिया गया है। लेकिन इन लोगों की यह दलील बातिल है, क़ुरआन मजीद में अल्लाह का इर्शाद है, "ऐ नबी तुम कह दो कि मैं तुम से तो यह नही कहता कि अल्लाह के ख़ज़ाने मेरे पास हैं और न मैं ग़ैब जानता हूँ और न मैं तुम से यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, मैं तो केवल अल्लाह के हुक्म की पैरवी करता हूँ" (सूरः अन्ज़ाम-५०) अल्लाह तआ़ला ने कितनी साफ़ सुथरी बात नबी की ज़बान से कहलवा कर झगड़ा ही समाप्त कर दिया। क़ुरआन मजीद की इस स्पष्ट हिदायत के बाद भी अगर कोई यह अ़क़ीदा रखता है कि नबी आ़लिमे ग़ैब होता है, तो यह उस की जिहालत की दलील है। (इस के अ़लावा अहादीस और उ़लमा व इमामों के अक़्वाल और फ़तावे नबी के आ़लिमुल् ग़ैब होने की नफ़ी करते हैं) लेकिन यहाँ पर क़ुरआनी आयत की रोशनी ही में दलाइल दे कर बहस को संपन्न करते हैं। (सनाई)

नबी, रसूल, पीर, वली, बुज़ुर्ग या किसी और बन्दे के लिये अ़िल्मे ग़ैब साबित करना सरासर ग़लती है। हनफ़ी उ़लमा ने ऐसे लोगों पर कुफ़्र का फ़तवा दिया है। लेकिन अफ़सोस तो उन लोगों पर है जो हनफ़ी कहला कर भी अपने इमामों के अ़क़ीदा के ख़िलाफ़ अ़क़ीदा रखते हैं और नबी को तो जाने दीजिये, अपने छोटे-छोटे मौलवियों को भी आलिमूल्-ग़ैब समझते हैं। (राज़)

सूरः मुज़्ज़म्मिल्– (73)

सूरः मुज़्ज़म्मिल (कपड़ा ओढ़ने वाला) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में २० आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है

१. ऐ कमली पोश नबी! २. रात को (नमाज़ के लिये) खड़े हुआकर मगर (कुछ हिस्स रात का) ३. आधा या इस से कुछ कम ४. या इस से कुछ ज़्यादा (सो कर आराम कर लियाकर) और क़ुरआन मजीद (भी) ठहर-ठहर कर पढ़ाकर ५. हम (अल्लाह) तुझ पर बहुत भारी हुक्म भेजेंगे (यानी समस्त लोगों को तब्लीग़ करना तेरे ज़िम्मे किया जायेगा, पस तू अपने आप को इस भार का सभांलने वाला बना) ६. रात का उठना बड़ी सख़्त कोफ़्त और अल्लाह की याद के लाइक़ है। ७. दिन में तुझे बहुत काम है (पस तू अल्लाह से सहायता माँग) ८. और अपने रब

(٧٣) سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ مَكِّيَّةٌ (٣)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۙ﴿۱﴾ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ﴿۲﴾ نِّصْفَهٗۤ
اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ۙ﴿۳﴾ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ
الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ؕ﴿۴﴾ اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ﴿۵﴾
اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ؕ﴿۶﴾
اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ؕ﴿۷﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ
وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ؕ﴿۸﴾ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ
لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ﴿۹﴾ وَاصْبِرْ عَلٰى مَا
يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ﴿۱۰﴾ وَذَرْنِيْ وَ
الْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ﴿۱۱﴾ اِنَّ لَدَيْنَاۤ
اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ۙ﴿۱۲﴾ وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا

का नाम जपा कर और उसी से जुड़ जा। ९. (क्योंकि) वह पूरब और पश्चिम का पर्वरदिगार है, उस के अ़लावा कोई माबूद नही पस तू उसी को सहायक समझ १०. और जो कुछ यह लोग कहेंगे तुम उस पर सब्र करना और उन को बड़ी सुन्दरता से नज़र अन्दाज़ कर देना। ११. और धनवान झुठलाने वालों को मेरे हवाले कर के थोड़े से समय उन को मुहलत देना १२+१३. (जल्द देखोगे कि) हमारे पास मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अ़ज़ाब हैं, उन में तपती हुयी जहन्नम है और गला घोंटने वाला खाना और दर्दनाक अ़ज़ाब है (यह कब?)

اَلِيْمًا ﴿۱۳﴾ يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَ الْجِبَالُ وَ كَانَتِ
الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ﴿۱۴﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْكُمْ
رَسُوْلًا ۥ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ
رَسُوْلًا ﴿۱۵﴾ فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا
وَّبِيْلًا ﴿۱۶﴾ فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا
يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبًا ﴿۱۷﴾ السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌ بِهٖ ؕ
كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ﴿۱۸﴾ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ
شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿۱۹﴾ اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ
تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ الَّيْلِ وَ نِصْفَهٗ وَ ثُلُثَهٗ وَ
طَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ ؕ وَ اللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَ
النَّهَارَ ؕ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ
فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ؕ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ
مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَ اٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِى الْاَرْضِ

१४. जिस रोज़ ज़मीन और पहाड़ हिल जायें गे और पहाड़ भुरभुरे हो जायें गे १५. हम ने तुम्हारी तरफ़ रसूल भेजा जो तुम पर निग्राँ है जैसे पहले हम ने फ़िरऔन की तरफ़ रसूल भेजा था। १६. फिर फ़िरऔन ने उस रसूल की नाफ़र्मानी की तो हम (अल्लाह) ने उस को बुरी तरह पकड़ा १७. पस अगर तुम लोग इन्कार ही करते रहो तो उस दिन से कैसे बच सकोगे जो बच्चों को बूढ़ा करदेगा १८. आकाश उस रोज़ फट जायेगा यह उस का वादा किया हुआ है जो पूरा हो कर रहेगा १९. बेशक यह आयतें नसीहत हैं, पस जो कोई चाहे अपने रब की तरफ़ जाने की राह इख़्तियार करे २०. तेरा रब ख़ूब जानता है कि तू कभी दो तिहाई रात के निकट, और कभी आधी (रात) के लग-भग, और कभी दो तिहाई के क़रीब अ़िबादत में लगा रहता है, तेरे साथियों में से मोमिनों की एक जमाअ़त भी अ़िबादत में लगी रहती है। और अल्लाह को रात और दिन का अन्दाज़ा ख़ूब मालूम है[1]। उसे मालूम है कि तुम लोग हर्गिज़ उस को निभा नही सकोगे तो उस ने तुम पर मेहरबानी की नज़र की है, पस जितनी मात्रा में क़ुरआन पढ़ना तुम्हें आसान हो पढ़ा करो[2]। अल्लाह को मालूम है कि कुछ तुम में बीमार होंगे[3] और कई एक मुल्क में सफ़र करें गे अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करें गे[4]

१. उसी को ख़ूब मालूम है कि तुम कितनी रात सोते हो और कितनी अ़िबादत करते हो। उस समय लोगों के पास घड़ी-घन्टाल न थे, कुछ सहाबा इस ख़याल से कि मालूम नही कितनी रात गुज़र गयी और कितनी बाक़ी है, सारी रात नमाज़ में खड़े रहते, यहाँ तक कि उन के पाँव सूज जाते। एक रिवायत के अनुसार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के पाँव भी सूज गये, तब अल्लाह की मेहरबानी जोश में आयी और यह आदेश नाज़िल हुआ (वहीदी)

२. हनफ़ी उलमा ने इस आयत से यह दलील पकड़ी है कि नमाज़ में सूरः फ़ातिहा का पढ़ना कोई तै नही है, चाहे जहाँ से .क़ुरआन पढ़ ले काफ़ी है। लेकिन यह दावा जमहूर उलमा के मज़हब के ख़िलाफ़ है। जमहूर उलमा के पास सूरः फ़ातिहा के पढ़ने के सिलसिले में अहादीस से क़वी दलीलें हैं। चुनान्चे बुख़ारी, मुस्लिम की रिवायत में हज़रत उ़बादा बिन सामित रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बग़ैर सूरः फ़ातिहा पढ़े कोई नमाज़ नही है। मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है हि वह नमाज़ जिस में सूरः फ़ातिहा न पढ़ी जाये बिल्कुल अधूरी, नाक़िस और नातमाम है। सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा में भी रिवायत है कि जो शख़्स नमाज़ में सूरः फ़ातिहा नहीं पढ़ता उस की नमाज़ नही होती। इन तमाम दलाइल की रोशनी में जमहूर उलमा ही का मज़हब हक़ है, यानी हर नमाज़ की हर रकात में चाहे इमाम हो या मुक़्तदी, सूरः फ़तिहा पढ़ना अनिवार्य। है (मुहम्मदी)

३. हज़रत इब्ने अ़ब्बास, अ़िक्रमा, मुजाहिद, हसन, क़तादा रह० वग़ैरह का कहना है कि इस आयत ने इस से पहले के हुक्म दिये गये रात के क़ियाम को मन्सूख़ कर दिया है, अब केवल सुन्नत है। कुछ उलमा का कहना है कि नबी करीम पर रात का क़ियाम (तहज्जुद) फ़र्ज़ थी, लेकिन उम्मत पर फ़र्ज़ नही है।

४. चूँकि सफ़र कर के अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करें गे इस लिये उन को जिहाद की मुशक़्क़त के साथ रात की इ़बादत बहुत कठिन गुज़रे गी। कहा जाता है कि इस आयत में अल्लाह ने हलाल तरीक़ा से रोज़ी हासिल करने वालों को जिहाद करने वालों के बराबर दर्जा दिया है। हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि फ़रमाते हैं कि जो कोई मुसलमान की बस्ती में कुछ तिजारत का माल ले कर आये और उस की निय्यत सवाब की हो तो वह अल्लाह के हाँ शहीदों में लिखा जाये गा। एक दूसरी हदीस में है कि जो कोई विधवा और मुहताजों के लिये कमाये तो वह अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले के बराबर है। हज़रत इब्ने उ़मर रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह की राह में शहीद होने के बाद कोई मौत मुझ को इस से ज्यादा पसन्द नही कि मैं ऊँट पर सवार हो कर सौदागरी करता फिरूँ और इसी हाल में मर जाऊँ। (वहीदी)

يَبْتَغُونَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ ۙ وَآخَرُونَ يُقَاتِلُونَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۚ وَأَقِيمُوا
الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا ۚ
وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنْفُسِكُمْ مِنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ
اللَّهِ هُوَ خَيْرًا وَأَعْظَمَ أَجْرًا ۚ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۖ
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٠﴾

और कई लोग ऐसे होंगे जो अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, पस जितना कुछ क़ुरआन पढ़ना तुम को सरल हो, उतना पढ़ लिया करो और नमाज़ पढ़ते रहो और ज़कात अदा करते रहो और अल्लाह को नेक क़र्ज़ (यानी ज़रूरत मन्दों को बिला सूद) दियाकरो[५]। और जो भी नेक काम आगे भेजोगे उस को अल्लाह के नज़दीक बेहतर और अच्छे बदले की सूरत में पाओगे (और उस को पा कर तुम लोग ख़ुश होगे) और अल्लाह से बख़्शिश माँगा करो। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

....

५. यह क़र्ज़ के अ़लावा चीज़ है। इस से मुराद नफ़्ली सदक़ा, ख़ैरात है और 'क़र्ज़े ह-स-नह' से बिला सूद क़र्ज़ा देना मुराद है।

सूरः मुद्दस्सिर- (74)

सूरः मुद्दस्सिर (कपड़ा ओढ़ने वाला) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ५६ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।
शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. ऐ (नुबुव्वत का) वस्त्र ओढ़ने वाले[1]! २. उठ! और अ़ज़ाब से डरा ३. और अपने रब की बड़ाई बयान कर ४. और अपने कपड़े (और दिल[2]) को पाक-साफ़ रख ५. (यानी) शिर्क (वग़ैरह) की नजासत दिल से दूर रख ६. और इस निय्यत से एहसान न किया कर कि उस से अधिक हासिल करे। ७. और अपने रब के लिये सब्र कर ८+९. जब सूर में फूंका जायेगा तो वह दिन बड़ा कष्ट दायक होगा १०. काफ़िरों पर (किसी प्रकार से) आसांन न होगा ११. जिस-जिस इन्सान को मैं ने पैदा किया है उन को मेरे हवाले कर। (मैं उन को संभाल लूँगा)

....

१. सूरः मुद्दस्सिर और मुज़्ज़म्मिल में कौन सी सूरः पहले नाज़िल हुयी? इस में उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है। कुछ उ़लमा सूरः मुद्दस्सिर को प्रथम मानते हैं और कुछ मुज़्ज़म्मिल को। बहरहाल क़ुरआन में चूंकि पहले मुज़्ज़म्मिल है, इस लिये हम भी इसी को पहले मानते हैं। 'मुद्दस्सिर' का जो तर्जुमा हम ने किया है वह तफ़्सीर कबीर के हवाला से किया है। (सनाई)
२. अ़रब के कवि लोग 'सियाब' से मुराद दिल लेते हैं। अ़रब का सुप्रसिद्ध जाहिल कवि इम्र-रउल् क़ैस ने भी अपनी कविता में इस का प्रयोग किया है और अर्थ दिल ही लिया है (अमर ऐ महबूबा! तुझको मेरी कुछ आ़दतें बुरी लगती हैं तो अपने कपड़े को मेरे कपड़े से (अपने दिल को मेरे दिल से) अलग करले, ताकि दोनों को तसल्ली हो जाये-छंद का तुजर्मा - ख़ालिद) यहाँ इस आयत में भी दिल ही मुराद लेना उचित है। क्योंकि कपड़ों का पाक रखना नमाज़ के दुरूस्त होने के लिये शर्त है, मगर दिल का पाक-साफ़ रखना हर हाल में लाज़िमी है। हदीस शरीफ़ में आया है कि इन्सान के बदन में एक टुकड़ा है जब वह दुरूस्त हो तो सारा बदन दुरूस्त है, लेकिन जब वह बिगड़ जाये तो सारा बदन बिगड़ जाता है, सुनलो! वह दिल है दिल। (सनाई)

لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ۙ﴿۱۲﴾ وَّبَنِيْنَ شُهُوْدًا ۙ﴿۱۳﴾ وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ
تَمْهِيْدًا ۙ﴿۱۴﴾ ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ ۙ﴿۱۵﴾ كَلَّا ؕ اِنَّهٗ
كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ؕ﴿۱۶﴾ سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ؕ﴿۱۷﴾ اِنَّهٗ

१२. (क्योंकि) मैं ने उस को बहुत-बहुत माल दिया है। १३. और बेटे चाक़- चौबन्द हाज़िर दिये १४. और हर प्रकार का सामान भी दिया है १५. फिर भी वह आशावान है कि मैं उस को ज़्यादा दूँ गा? १६. हर्गिज़ नही! (क्योंकि) वह➲

فَكَّرَ وَقَدَّرَ ﴿١٨﴾ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿١٩﴾ ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ
قَدَّرَ ﴿٢٠﴾ ثُمَّ نَظَرَ ﴿٢١﴾ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ أَدْبَرَ وَ
اسْتَكْبَرَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْثَرُ ﴿٢٤﴾ إِنْ
هَٰذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿٢٥﴾ سَأُصْلِيهِ سَقَرَ ﴿٢٦﴾ وَمَا
أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ ﴿٢٧﴾ لَا تُبْقِي وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾ لَوَّاحَةٌ
لِّلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾ وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ
النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً ۙ وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا
فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتَابَ وَيَزْدَادَ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا ۙ وَلَا يَرْتَابَ
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ ۙ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ

हमारे आदेशों का मुख़ालिफ़ है १७. हम उस को (तरक़्क़ी देने के बजाए) सख़्त अज़ाब (यानि सऊद पहाड़ की चढ़ाई) में गिरफ़्तार करें गे[३] १८. उस ने फ़िक्र किया और ग़ौर किया १९. उस पर फटकार हो, उस ने कैसा (ग़लत) ग़ौर किया २०. फिर उस पर फटकार हो, उस ने कैसा (ग़लत) ग़ौर और फ़िक्र किया २१. फिर देखा २२. फिर तेवरी चढ़ाई और मुंह बिसोरा २३. फिर पीठ फेर गया और तकब्बुर किया[४] २४. आख़िरकार कहा तो यह कहा: क़ुरआन महज़ जादू है जो पहले लोगों से नक़ल चला आ रहा है २५. यह महज़ आदमी का कलाम है (जो जी में आये कह ले) २६. मैं उसे जहन्नम में दाख़िल करूँ गा २७. तुझे क्या मालूम वह जहन्नम क्या है? (वह बदन का कोई भाग) न बाक़ी रखे गी, न छोड़े गी २८. चमड़े को जला देगी ३०. उस पर उन्नीस फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं ३१. हम ने जहन्नम के सुरक्षा कर्मी फ़रिश्ते ही बनाये हैं और हम ने उन की गिन्ती इतनी मुक़र्रर की है ताकि मुन्किरों के लिये परेशानी हो[५] (वह अपने ग़ुरूर में इस मात्रा को कम जानते हैं कि उन पर हंसते हैं) और अहले किताब इस बात पर यक़ीन करें (क्योंकि वह फ़रिश्तों की क़ुव्वत को जानते हैं,) और ईमान्दार (मुसलमान) ईमान में तरक़्क़ी करें, और अहलेकिताब और मुसलमान किसी प्रकार का शक न करें

....

३. 'सऊदा' नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: 'सऊद' दोज़ख़ में एक पर्वत का नाम है जिस पर चढ़ने का हुक्म होगा, वह जब उस पर हाथ रखेगा तो उस का हाथ उस पर रखते ही गल जायेगा और जब उठायेगा तो फिर दुरूस्त हो जायेगा। इस प्रकार जब पाँव रखेगा तो वह गल जायेगा और जब हटायेगा तो तुरन्त दुरूस्त हो जायेगा। इस पर सात वर्ष की चढ़ाई होगी और उतने ही वर्ष उस पर से उतरने में लगेगा। (हदीसुत्तफ़सीर)

४. शाने नुज़ूल:- वलीद बिन मुग़ीरा ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बान से क़ुरआन मजीद की तिलावत सुन कर बड़ी प्रशन्सा की तो क़ुरैश ने उस को बड़ी लानत-मलामत की, आख़िरकार उसे फेर लिया, तब उस ने कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कवि नही हैं और न ही पागल हैं, लेकिन जादूगर ज़रूर हैं अैर यह क़ुरआन उस का जादू है। उस के जादूगर होने का सुबूत यह है कि वह बाप को बेटे से, बीवी को पति से जुदा कर देता है, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी। (सनाई)

५. जब यह आयत नाज़िल हुयी कि दोज़ख़ पर १९ सुरक्षा कर्मी हैं तो काफ़िर मज़ाक़ उड़ाने लगे और कहने लगे कि हम हज़ारों की संख्या में होंगे तो १९ हमारा क्या बिगाड़ेंगे। इस पर उन्हें उत्तर दिया कि वह होंगे १९ ही, लेकिन वह इन्सान थोड़े ही होंगे, वह तो फ़रिश्ते होंगे उन में एक ही सब पर भारी होगा। और यह १९ की जो गिन्ती बताई गयी है, अगली किताबों के अनुसार है ताकि उन के सच होने की दलील बने। (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

➲फ़रिश्तों के अन्दर इतनी शक्ति होती है कि तमाम जिन्नात और इन्सान भी मिल कर उस एक का मुक़ाबला नही कर सकते। केवल एक फ़रिश्ता हज़रत जिब्रील अ़लै० की शक्ति का इस बात से अनुमान लगाया जा सकता है कि जब उन्हें लूत अ़लै० की क़ौम को तबाह करने का हुक्म हुआ तो उन्हों ने अपना एक पैर ज़मीन के नीचे लगा कर उन की आबादी वाली ज़मीन को इस तरह काट कर उठा लिया कि पानी के बर्तन तक न हिले और इतनी ऊँचाई तक ले गये कि कुत्तों के भूंकने की आवाज़ ऊपर तक सुनाई देती थी। फिर वहाँ से उस को ज़मीन पर दे पटका। वह पाँच शहर थे और लाखों की आबादी थी, जो सब की सब तबाह हो गयी। हज़रत जिब्रील की शक्ति की दूसरी मिसाल यह है कि उन की एक चीख़ से सब के जिगर फट गये और हलाक हो गये।

यह तो १९ फ़रिश्तों में से केवल एक फ़रिशते ज़िब्रील की शक्ति का हाल है, फिर १९ की शक्ति का भला कौन अन्दाज़ा लगा सकता है? फिर यह मख़्लूक़ की क़ुव्वत का हाल है, तो इस के ख़ालिक़ की क़ुव्वत का क्या हो गा और कौन उस से मुक़बला कर सकता है? (वहीदी)

فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُونَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ
بِهٰذَا مَثَلًا ۭ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَ
يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا
هُوَ ۭ وَمَا هِيَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ﴿٣١﴾ كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿٣٢﴾
وَالَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ﴿٣٣﴾ وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ﴿٣٤﴾ اِنَّهَا لَاِحْدَى
الْكُبَرِ ﴿٣٥﴾ نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ﴿٣٦﴾ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ
يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ ﴿٣٧﴾ كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ﴿٣٨﴾
اِلَّآ اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ﴿٣٩﴾ فِيْ جَنّٰتٍ ڛ يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٤٠﴾ عَنِ
الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٤١﴾ مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ﴿٤٢﴾ قَالُوْا لَمْ
نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ﴿٤٣﴾ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ﴿٤٤﴾
وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآىِٕضِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَكُنَّا نُكَذِّبُ
بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٤٦﴾ حَتّٰىٓ اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ﴿٤٧﴾ فَمَا
تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ﴿٤٨﴾ فَمَا لَهُمْ عَنِ

और जिन लोगों के दिलों में बीमारी है और जो काफ़िर हैं वह कहें गे कि यह बात बताने में अल्लाह की क्या ग़रज़ है? इसी प्रकार अल्लाह जिस को चाहता है गुमराह कर देता है और जिस को चाहता है हिदायत देता है। और तेरे रब की फ़ौज को स्वयँ वही जानता है[६] और वह (यानी जहन्नम की याद) इन्सानों के लिये सिर्फ़ नसीहत है। ३२. सच-मुच हमें चाँद की क़सम है ३३. और रात की क़सम है जब जाने लगे ३४. और सुब्ह की क़सम है जब रोशन हो। ३५. बेशक वह जहन्नम बहुत बड़ी निशानी है ३६+३७. इन्सानों को डराने वाली ख़ास कर उन लोगों को जो (नेक काम में) आगे बढ़ना या (बुरे काम से) पीछे हटना चाहें ३८. हर आदमी अपने आमाल में गिरवी होगा ३९. लेकिन दायें हाथ वाले (ईमान्दार लोग) ४०+४१. बाग़ों में होंगे आपस में एक दूसरे से मुजरिमों के बारे में पूछें गे ४२. तुम दोज़ख़ में किस कारण दाख़िल हुए ४३. वह कहें गे हम नमाज़ अदा न करते थे[७] ४४. और हम ग़रीबों को खाना न खिलाते थे ४५. और (हम बेहूदा) कामों में लगे रहते थे। ४६. और हम बदले के दिन का इन्कार करते रहे ४७. यहाँ तक कि हमें (मौत की वजह से) इस का यक़ीन हो गया। ४८. पस किसी सिफ़ारिशी की सिफ़ारिश भी उन के लिए लाभदायक न होगी। ४९. भला उन लोगों को क्या हुआ है कि नसीहत की बात से मुंह फेंर रहे हैं।

....

६. यानी तेरे रब के लश्करों की गिन्ती और उन की सहीह मात्रा का ज्ञान किसी को भी नहीं केवल वही बेहतर जानता➲

है। यह न समझो कि केवल १९ ही हैं। कुछ जाहिल फ़लसफ़ियों ने यह समझ लिया है कि इस से मुराद उ़क़ूल अशरह हैं, हालाँकि यह केवल उन का दावा है जिस पर उन के पास कोई दलील नही। बड़े दुःख की बात है कि आयत के अव्वल पर तो उन की नज़र है, लेकिन आख़िरी हिस्सा के साथ वह कुफ़्र कर रहे हैं, जहाँ साफ़ अल्फ़ाज़ मौजूद हैं कि तेरे रब के लश्करों को उस के सिवा कोई नही जानता, फिर १९ हर्फ़ के क्या माना? बुख़ारी, मुस्लिम की हदीस में बैतुल-मामूर के बयान में है कि रोज़ाना सत्तर हज़ार फ़रिश्ते वहाँ आते हैं और फिर ज़्यादा मात्रा में होने की वजह से क़ियामत तक उन की बारी न आ सकेगी (इब्ने कसीर) कुछ रिवायतो में आता है कि काबा शरीफ़ ज़मीन वालों का जिस प्रकार क़िबला है इसी प्रकार बैतुलमामूर आसमान वालों का क़िब्ला है।

७. यहाँ पर सिर्फ़ "नमाज़ पढ़ने वालों" का ही बयान है मगर हम ने (तश्रीह में नमाज़ वग़ैरह ज़रूरी वाजिबात) को आ़म कर दिया है, क्योंकि इस्लामी शरीअ़त में नमाज़ के अ़लावा भी और अहकाम फ़र्ज़ हैं। चूँकि नमाज़ सब से प्राथमिक है अहम होने की बुनियाद पर उस को हम ने ज़िक्र कर दिया। चुनाँचे नमाज़ का तर्क करना इतना बड़ा पाप हैं कि उस की सज़ा जहन्नम है। इसलिये जो मुसलमान होने का दावा करके नमाज़ भी तर्क करने के आ़दी हैं उन्हें इस आयत से नसीहत पकड़नी चाहिये। (सनाई)

अल्लाह तआ़ला ने सूचित कर दिया है कि हर शख़्स अपने आ़माल में क़ियामत के दिन बँधा होगा लेकिन जिन के दायें हाथों में आ़माल नामा होगा वह जन्नत के बाला ख़ानों में चैन से बैठ कर जहन्नम वालों के बुरे हाल को देख कर पूछें गे कि तुम यहाँ कैसे आ गये? वह उत्तर दें गे कि हम ने न तो रब की इ़बादत की और न मख़्लूक़ के साथ एहसान किया, बग़ैर इ़ल्म के जो कुछ ज़बान पर चढ़ा, बकते रहे। जहाँ किसी को एतराज़ करते सुना हम भी साथ हो गये और बातें बनाने लगे और क़ियामत को झुठलाते ही रहे, यहाँ तक कि मौत आ गयी। इस आयत में भी यक़ीन का अर्थ मौत है। सो ऐसे लोगों का क़ियामत के दिन न कोई सिफ़ारिशी हो गा। और जिन की जान ही कुफ़्र की हालत में निकली हो उन के लिये सिफ़ारिश कहाँ? वह हमेशा के लिये जहन्नम में जायें गे (इब्ने कसीर)

التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِينَ ﴿٤٩﴾ كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ﴿٥٠﴾ فَرَّتْ
مِنْ قَسْوَرَةٍ ﴿٥١﴾ بَلْ يُرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَنْ
يُؤْتَىٰ صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿٥٢﴾ كَلَّا ۖ بَلْ لَّا يَخَافُونَ
الْآخِرَةَ ﴿٥٣﴾ كَلَّا إِنَّهُ تَذْكِرَةٌ ﴿٥٤﴾ فَمَنْ شَاءَ ذَكَرَهُ ﴿٥٥﴾
وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ هُوَ أَهْلُ التَّقْوَىٰ
وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾

५०+५१. ऐसे कि गोया यह लोग वह्शी (जन्गली) गधे हैं जो शेर से भागते हों[८]। ५२. (हाँ,) उन में से हर एक चाहता है कि आमालनामा खुला उस को मिल जाये। ५३. हर्गिज़ नहीं, बल्कि यह तो आख़िरत से बिल्कुल डरते ही नही (अगर डरते हों तो क़ुरआंन मजीद पर तुरन्त ग़ौर करें) ५४. बेशक वह (क़ुरआन) नसीहत की बात है। ५५. जो चाहे उस से नसीहत पाये। ५५. (मगर बात यह है कि) यह लोग अल्लाह की मर्ज़ी के बग़ैर नसीहत नही पा सकते। वह इस लायक़ है कि उस से डरा जाये और वह इस लायक़ है कि (डरने वालों को) बख़्शे[९]

....

८. यानी यह काफ़िर तेरी दावत से मुँह फेर रहे हैं और क़ुरआन और हदीस से इस तरह भागते हैं, जैसे जंगली गधे शेर से भागा करते हैं। 'क़स्-व-रः' हब्शी भाषा में बाघ को कहते हैं।

९. यानी उस की ज़ात इस क़ाबिल है कि उस से डरा जाये और वही ज़ात ऐसी है जो तौबा करने वाले की तौबा

➲को कुबूल करती है। मुस्नद अहमद की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस आयत की तिलावत फ़रमाई और फिर कहा कि तुम्हारा रब फ़रमाता है मैं इस "बात" का हक़दार हूँ कि मुझ से डरा जाये और मेरे साथ दूसरा माबूद न ठहराया जाये। जो मेरे साथ शरीक ठहराने से बच गया वह मेरी माफ़ी का मुस्तिहक़ हो गया। इब्ने माजा, नसई और तिर्मिज़ी में भी यह हदीस मौजूद है, इमाम तिर्मिज़ी ने इस हदीस को हसन, ग़रीब कहा है।

सूरः क़िया-मः (75)

सूरः क़ियामः (क़ियामत) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ४० आयतें और २ रूकूअ़ हैं। शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. क़सम है क़ियामत के दिन की २. और क़सम हे (गुनाह पर) मलामत करने वाले नफ़्स की[1] (हमारा वादा सच्चा है) ३. क्या इन्सान समझता है[2] कि हम (उस के मरने के बाद) उस की हड्डियाँ जमा न करेंगे ४. बेशक (करेंगे) हम इस बात पर क़ुदरत रखते हैं कि उस के हर पोर को बराबर कर दें। ५. बल्कि (यह मुन्किर) इन्सान यही चाहता है क़ि भविष्य में बदकारी ही करता जाये। ६. (अगर उसे कोई समझाये तो) पूछता है कि क़ियामत का दिन कब होगा? ७. (सुन ले! क़ियामत उस रोज़ होगी) जब आँखें पत्थरा जायेंगी ८. और चाँद बेनूर होगा ९. और सूरज और चाँद एक स्थान पर जमा कर दिये जायेंगे[3]।

....
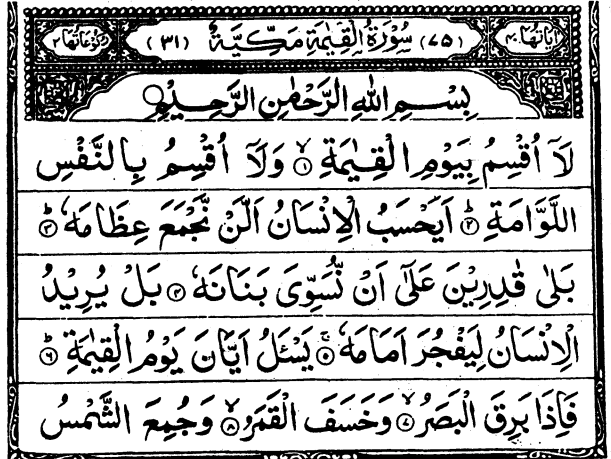
१. जिस चीज़ पर क़सम खाई जाये अगर वह रद्द करने की चीज़ हो तो क़सम से पहले "ला" कलिमा नफ़ी (इंकार) का ताईद के लिये लाना जाइज़ होता है। यहाँ क़ियामत के होने पर और जाहिलों के उस क़ौल के रद्द में कि क़ियामत न होगी, क़सम खाई जा रही है।

'नफ़्स लव्वामा' से मुराद मोमिन का नफ़्स है। वह हर समय अपने आप पर मलामत करता रहता है कि यूँ क्यों कह दिया? यह क्यों खा लिया? यह ख़याल दिल में क्यों आया? लेकिन बदकार ग़ाफ़िल होता है इस लिये उसे कुछ पर्वा ही नही होती है (इब्ने कसीर)

२. यह आयतें साफ़ शब्दों में बता रही हैं कि इन्सान क़ियामत के दिन अपने जिस्म और बदन के साथ उठाया जाये गा। जो लोग हश्र को एक रूहानी चीज़ कहते हैं और जिस्म से उस का कोई तअ़ल्लुक़ नही मानते, वह ग़लती पर हैं और यह ख़याल भी क़ियामत के इन्कार ही की एक शक्ल है जो सरासर गुमराही है। अफ़सोस है उन उ़लमा पर जो इस्लाम का दावा करने के बावजूद न सिर्फ़ यह कि जिस्म के साथ हश्र के मुन्किर हैं, बल्कि इस का प्रचार भी कर रहे हैं। अल्लाह तआ़ला मुसलमानों को इस गुमराही से सुरक्षित रखे। आमीन

३. यानी सूरज और चाँद का चलना रोक दिया जाये गा, क्यों कि दुनिया के बाक़ी रहने का समय समाप्त हो चुका➲

➲हो गा। उस दिन इन्सान कहेगा कि अब कहाँ भाग कर जाऊँ? कहीं भी तो जान बचाने की राह नही है। उस दिन अल्लाह जिस को पनाह दे गा केवल उसी को ही पनाह मिले गी, और जिस को अम्न न देगा वह कहीं भी अम्न और पनाह नही पा सकेगा। उस दिन इन्सान को उस के ज़िन्दगी भर के किये हुये आमाल और मरने के बाद के छोड़े हुये सदक़-ए-जारिया या गुनाहे-जारिया की पूरी ख़बर दी जाये गी, और ऐसी दलील के साथ कि इंकार न कर सके गा। और सच्ची बात तो यह है कि अब भी यह मुन्किर इन्सान अपने हाल से पूरी तरह ख़बरदार है। वह लाख अपने अ़ैब को छुपाने की कोशिश करे मगर उस का दिल उसे मलामत करता है, और यह भी जानता है कि क़ियामत के दिन हिसाब-किताब के मौक़े पर ख़ैर नही। (सनाई)

وَالْقَمَرُ ﴿٩﴾ يَقُولُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ﴿١٠﴾
كَلَّا لَا وَزَرَ ﴿١١﴾ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ﴿١٢﴾
يُنَبَّأُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ﴿١٣﴾ بَلِ
الْإِنسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ﴿١٤﴾ وَلَوْ أَلْقَىٰ مَعَاذِيرَهُ ﴿١٥﴾
لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ﴿١٦﴾ إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ
وَقُرْآنَهُ ﴿١٧﴾ فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ ﴿١٨﴾ ثُمَّ إِنَّ
عَلَيْنَا بَيَانَهُ ﴿١٩﴾ كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ﴿٢٠﴾ وَتَذَرُونَ
الْآخِرَةَ ﴿٢١﴾ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿٢٢﴾ إِلَىٰ رَبِّهَا
نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾ وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ﴿٢٤﴾ تَظُنُّ أَن
يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿٢٥﴾ كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿٢٦﴾
وَقِيلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ﴿٢٧﴾ وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿٢٨﴾ وَ
الْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿٢٩﴾ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ
الْمَسَاقُ ﴿٣٠﴾ فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلَّىٰ ﴿٣١﴾ وَلَٰكِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٣٢﴾

१०. उस रोज़ इन्सान कहेगा कि अब किधर भागूँ? ११. हगिर्ज़ कहीं पनाह नही। १२. उस रोज़ तुम्हारे रब ही के पास ठिकाना होगा १३. उस रोज़ इन्सान को पहले किये हुये आ़माल और पीछे छोड़े हुये कामों की ख़बर दी जायेगी[४]। १४. बल्कि इन्सान अपने हाल पर पूरा जानकार है १५. चाहे कितनी ही हुज्जतें करे[५] १६. तुम उस (क़ुरआन के नाज़िल होने) के साथ अपनी ज़बान न हिलाया करो ताकि उसे जल्दी (जल्दी याद) करो। १७. उस का जमा कर देना और उस को पढ़ा देना हमारे ज़िम्मा है १८. पस जब हम पढ़ें तो उस की क़िरात की पैरवी किया करो। १९. फिर बयान कर देना हमारे ज़िम्मा है। २०. बिला शुब्हा तुम लोग जल्दी का लाभ पसन्द करते हो। २१. और आख़िरत को पीठ पीछे डालते हो। २२+२३. बहुत से मुँह उस रोज़ अपने रब की तरफ़ ताकते हुये तरोताज़ा हों गे[६] २४. और कई मुंह उस रोज़ बुरे बन रहे होंगे। २५. वह समझते होंगे कि उन के साथ बड़ी सख़्ती की जाने वाली है। २६. हर्गिज़ मुनासिब नही, जब रूह हंसुली तक पहुंचती है[७] २७. और (घर में) कहा जाता है दम झाड़ने वाला कोई है? २८. और वह स्वयँ जानता है कि यह समय जुदाई का है। २९. और (दम निकलने की हालत में) पिंडली, पिंडली से लड़खड़ाती है। ३०. उस रोज़ तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ ही कूच होता है ३१. वह न तो तस्दीक़ करता है, न नमाज़ पढ़ता है ३२. हाँ, झुठलाता और मुंह मोड़ता है

....

४. यानी जो अच्छे बुरे काम कर के वह मरा, या जो यादगार अपने बाद छोड़ी, यानी वह आमाल जिन का सवाब और अ़ज़ाब मरने के बाद भी पहुंचा करता है। जैसे कोई नेक बात निकाले, उस को अपना भी सवाब और क़ियामत➲

तक उस पर चलने वालों का भी सवाब मिलता रहेगा। या कोई दीनी मदरसा (पाठशाला) बना जाये, या नेक औलाद छोड़ जाये, या सराये, पुल, कुँआ आदि आम लोगों के लिये बना जाये, यह सब उन में दाख़िल हैं जिन को पीछे छोड़ा। (वहीदी)

५. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिब्रील अलै० के साथ-साथ क़ुरआन पढ़ा करते थे, ताकि याद कर लें। इस मौक़ा पर यह आयत नाज़िल हुयी। (सनाई)

६. अल्लाह को देखने के तअल्लुक़ से क़ुरआन की आयतों के अलावा इतनी अधिक हदीसें मौजूद हैं जिन को तवातुर का दर्जा दिया जा सकता है। बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कि तुम अपने रब को खुल्लम-खुल्ला अपने सामने देखो गे"। बुख़ारी और मुस्लिम ही में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि क़ियामत के दिन अपने रब को इस तरह देखोगे जैसे चौदहवीं रात के चाँद और सूरज को देखते हो जब उन पर बादल वग़ैरह न हो"। सहीह मुस्लिम में हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला अपने बन्दों पर मुसकुराता हुआ तजल्ली फ़रमाये गा"। मतलब यह है कि अल्लाह को देखने के तअल्लुक़ से सहाबा, ताबेईन और तमाम उलमा का इत्तिफ़ाक़ है। जो लोग इस की तावील करते हैं वह हक़ से हट कर हैं। (इब्ने कसीर)

७. 'तराक़ी' यह बहुवचन है। उन हड्डियों को कहते हैं जो सीने पर और मोंढों के दर्मियान हैं। इस को हाँस (हँसुली) की हड्डी भी कहा जाता है। जान निकलते समय जब वहाँ तक जान आ जाती है तो हाई- दुहाई देने लगती है और झाड़-फूंक करने और दवा-इलाज के लिये डाक्टर की तलाश होती है, लेकिन सब बेकार। पिंडली से पिंडली रगड़ खाने का मतलब हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० यूँ बयान फ़रमाते हैं कि दुनिया और आख़िरत उस पर जमा हो जाती है। और उन ही से यह भी रिवायत है कि कफ़न के समय पिंडली से पिंडली का परस्पर मिल जाना मुराद है। अब लौटने और ठहरने की जगह अल्लाह ही की तरफ़ है। रूह आसमान की तरफ़ चढ़ जाती है, तो हुक्म होता है कि उस को ज़मीन ही की तरफ़ ले जाओ। मैं ने उसी मिट्टी से उस को पैदा किया है और उसी में लौटाऊँगा और उसी ही से पुनः निकालूँगा। (इब्ने कसीर)

ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰٓ أَهْلِهِۦ يَتَمَطَّىٰٓ ﴿٣٣﴾ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ﴿٣٤﴾ ثُمَّ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰٓ ﴿٣٥﴾ أَيَحْسَبُ ٱلْإِنسَٰنُ أَن يُتْرَكَ سُدًى ﴿٣٦﴾ أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّن مَّنِىٍّ يُمْنَىٰ ﴿٣٧﴾ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوَّىٰ ﴿٣٨﴾ فَجَعَلَ مِنْهُ ٱلزَّوْجَيْنِ ٱلذَّكَرَ وَٱلْأُنثَىٰٓ ﴿٣٩﴾ أَلَيْسَ ذَٰلِكَ بِقَٰدِرٍ عَلَىٰٓ أَن يُحْـِۧىَ ٱلْمَوْتَىٰ ﴿٤٠﴾

३३. फिर वह अपने घर वालों की तरफ़ अकड़ता हुआ जाता है। ३४+३५. तेरे हाल पर अफ़सोस दर अफ़सोस है (क्योंकि तुम ने न समझा कि जिस राह पर तू चल रहा है वह ग़लत है) ३६. इन्सान ख़याल करता है कि वह यूँही (बिला नकेल के) छोड़ा जायेगा? ३७. क्या वह पहले नुत्फ़ा (की सूरत में) न था जो डाला जाता है ३८. फिर वह (चन्द दिन के बाद उसी जगह) लोथड़ा बना ३९. फिर उसी (लोथड़े) से अल्लाह दो क़िस्म (प्रजातियाँ) नर और मादा बना देता है (बाज़ दफ़ा एक ही नुत्फ़े से दो बच्चे पैदा कर देता है) ४०. क्या वह अल्लाह इस बात पर क़ुदरत नही रखता कि मुर्दों को ज़िन्दा कर दे? (ईमानदार तो यही उत्तर देगा कि हाँ, वह क़ुदरत रखता है)

....

८. इब्ने अबी हातिम की रिवायत में है कि एक सहाबी अपनी छत पर क़ुरआन शरीफ़ बुलन्द आवाज़ से तिलावत

कर रहे थे, जब इस सूरः की आन्तिम आयत तिलावत फ़रमाई तो फ़रमाया: "सुब्हा-न-कल्लाहुम्म फ़-बला" (या अल्लाह! तू पाक है और बेशक तू क़ुदरत रखने वाला है) लोगों ने उन सहाबी से इस को पढ़ने के बारे में पूछा तो फ़रमाया: मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस आयत के पढ़ने के बाद इस दुआ को पढ़ते सुना है। अबूदावूद में भी इसी प्रकार की रिवायत है। और एक रिवायत में केवल "बला" कहना भी आया है। (इब्ने कसीर)
नोटः- सूरः के अन्त में "सुब्हा-न-कल्लाहुम्म फ़-बला" पढ़ना बहुत मशहूर है, लेकिन यह रिवायत ज़ईफ़ है, इस कारण नहीं पढ़ा जायेगा। विस्तार से अल्लामा अलबानी की पुस्तक देखें - ख़ालिद सिद्दीक़ी

सूरः दह्र- (76)

सूरः दह्र (समय) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[1]। इस में ३१ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।
शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।
१. इन्सान पर एक समय ज़रूर आ चुका है कि वह कुछ न था (जिस की आयु इस समय २० वर्ष है वह २० वर्ष पहले कुछ न था[2]) २. हम ने इन्सान को मिले-जुले नुत्फ़े से पैदा किया, मुख़्तलिफ़ हालात में उस को तबदील करते रहे, फिर हम ने उस को सुनने वाला और देखने वाला बनाया। ३. हम ने उस को नेक-बद की राह बताई, इन्सान के कुछ लोग शुक्र गुज़ार हो गये और कुछ नाशुकरे हो गये ४. हम ने नाशुक्रे लोगों के लिये ज़न्जीर और तौक़ और आग तय्यार कर रखी है। ५. नेक लोग गिलास में ऐसा शर्बत पियेंगे जिस की मिलावट काफ़ूर की होगी

....
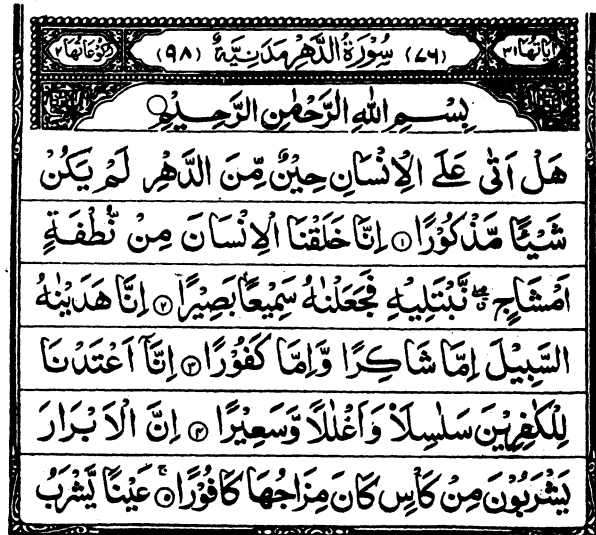
१. यह सूरः मक्का शरीफ़ में उतरी। इस का दूसरा नाम "इन्सान" भी है। जुम्अः के दिन फ़ज्र की नमाज़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहली रकात में अलिफ़ लाम्मीम सज्दा (२१ वाँ पारः) और दूसरी रकात में इस सूरः को पढ़ते थे (मुस्लिम शरीफ़) एक रिवायत में है कि जब यह सूरः नाज़िल हुयी और आप ने इस की तिलावत की तो उस समय आप के सामने एक सांवले रंग के सहाबी भी बैठे हुये थे। जब जन्नत का बयान आया तो उन के मुँह से एक चीख़ निकली और रूह निकल गयी। इस पर आप ने फ़रमाया: तुम्हारे भाई और साथी की रूह जन्नत के शौक़ में निकल गयी। (इब्ने कसीर)

२. बेशक इन्सान पर एक वक़्त गुज़र चुका है जब उस का कुछ नाम व निशान तक न था, फिर कितने ही दौर तै करने के बाद वीर्य (मनी) की शक्ल में आया। वह हालत भी उस की मौजूदा शराफ़त व करामत के देखते हुये इस क़ाबिल नही कि ज़बान पर लायी जाये।

'इन्ना ख़-लक़्-नल् इनसा-न ...." यानी मर्द और औरत के दोरंगे पानी से पैदा किया। 'अम्शाज' के

माना "मिले-जुले" के हैं। नुत्फ़ा (वीर्य) जिन खाने-पीने के सत से मिल कर बना है जैसे, दाल, चावल, फल, दूध, घी, वग़ैरह। तो इस प्रकार 'अम्शाज' (मर्द- औरत के मिले जुले पानी) के बजाये (मुख़्तलिफ़ खान-पान के सत के मिश्रण) भी तर्जुमा किया जा सकता है। 'नब्-तलीह' यानी उस नुतफ़े को उलट-फेर करने के बाद इस दर्जा पर पहुंचा दिया कि सुनने और देखने वाला बना दिया। इस का एक अर्थ उलमा ने "इम्तिहान" और "आज़माइश" के भी लिये हैं। यानी आदमी को इस लिये बनाया था कि उस को आदेश दे कर कुछ कामों के करने और कुछ के न करने का ज़िम्मा सौंप कर आज़माया जाये कि वह कहाँ तक अल्लाह के आदेशों का पालन करता है? इसी लिये उस को सुनने, समझने, देखने की ताक़त दी गयी। (मवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)

मौलाना अमृतसरी मर्हूम ने "मुख़्तलिफ़ क़ुव्वतों से मिले-जुले" तर्जुमा कर के सागर को गागर में बन्द कर दिया है और आगे-पीछे के बयान को सामने रख कर निहायत उचित है। "मुवज़्ज़िहु क़ुर्आन" में यह तर्जुमा है "हम पलटते रहे उस को"। इम्तिहान और आज़माइश का अर्थ भी अपनी जगह उचित है और अक्सर उलमा ने इसी को पसन्द फ़रमाया है।

بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ۞ يُوْفُوْنَ
بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ۞ وَ
يُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّ يَتِيْمًا
وَّاَسِيْرًا ۞ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ
جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ۞ اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا
عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ۞ فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ
وَلَقّٰىهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ۞ وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا
جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ۞ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا
يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ۞ وَ دَانِيَةً
عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ۞ وَ
يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّ اَكْوَابٍ
كَانَتْ قَوَارِيْرَا۠ ۞ قَوَارِيْرَا۟ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا
تَقْدِيْرًا ۞ وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا

६. ऐसे चश्मे से जिस पर अल्लाह के (मक़्बूल) बन्दे पीते होंगे (अपनी इच्छानुसार) उन को फेर लिया करेंगे। ७. यह लोग शरीअ़त के वाजिबात अदा किया करते हैं और उस रोज़ से डरते हैं जिस की तक्लीफ़ बहुत लंबी है। ८. खाने की इच्छा होने पर भी अपना खाना मिसकीन, यतीम और क़ैदियों को खिलाया करते हैं[३] ९. (इस ख़याल से कि) हम तुम को केवल अल्लाह के लिये खिलाते हैं, न तुम से बदला और न शुक्रिया चाहते हैं १०. हम अपने रब (के हुक्म) से आने वाले उस दिन से डरते हैं जो त्योरी चढ़ाने वाला होगा ११. अल्लाह उन को उस दिन की तक्लीफ़ से बचायेगा और उन को ताज़गी और ख़ुशी नसीब होगी १२. और उन के सब्र करने से अल्लाह उन को जन्नत में बसाएगा और रेशमी वस्त्र पहनायेगा १३. उन बाग़ों में लगे तख़्तों पर तकिया लगाये हों गे, न सूरज देखेंगे और न सख़्त सर्दी महसूस करेंगे। १४. और उन (बाग़ों में दरख़्तों) की टहनियाँ उन पर झुकी होंगी[४] और उन के गुच्छे उन के इख़्तियार में दिये गये होंगे १५+१६. और उन पर चाँदी के बर्तन और गिलास फेरे जायेंगे जो चाँदी के बने होंगे (मगर सफ़ाई में) गोया शीशे होंगे, उन को (अपनी ज़रूरत के) अन्दाज़ा का पायेंगे। १७. और उन्हें ऐसे प्याले भरे हुये पिलाये जायेंगे जिन की मिलावट

सोंठ की होगी।

....

३. यानी अल्लाह की मुहब्बत के जोश में अपना खाना ख़ाहिश के बावजूद बड़े शौक़ और इख़्लास से मिसकीनों, यतीमों और क़ैदियों को खिला देते हैं। क़ैदी का शब्द आम है मुस्लिम हो या काफ़िर। हदीस शरीफ़ में है कि बद्र के क़ैदियों के मुतअ़ल्लिक़ नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हुक्म दिया था कि जिस मुसलमान के पास कोई क़ैदी रहे तो उस के साथ अच्छा बर्ताव करे। चुनान्चे सहाबा रज़ि० इस हुक्म पर अ़मल करते हुये क़ैदियों को अपने से बेहतर खाना खिलाते थे, हालाँकि वह क़ैदी मुसलमान न थे। मुसलमान का हक़ तो इस से भी अधिक है और अगर 'असीर' शब्द के माना को ज़रा फैला दिया जाये तो यह आयत ग़ुलाम और प्रजा को भी शामिल हो सकती है कि वह भी एक तरह से क़ैद में हैं। (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

४. इस आयत में ज़रा सी कठिनाई है कि पहले लफ़्ज़ों में सूरज की नफ़ी है उस के तुरन्त बाद ही "ज़िलाल" (साए) का शब्द आया है। हालाँकि यह शब्द बहुवचन है और एक बात यह कि साया का वजूद सूरज ही से होता है, जब सूरज नही तो साया नही, इस लिये ज़िलाल का तर्जुमा "टेहन" किया गया है। (सनाई)

'टेहन' से मुराद टहनियाँ हैं। यह जन्नती लोगों के ऊपर झुकी हुयी होंगी। 'अराइक' छपरखट (मसेहरी) को कहते हैं। आगे एक और नेमत का बयान हो रहा है कि वहाँ न तो गर्मी की सख़्ती होगी और न सख़्त ठन्ड हो गी, बल्कि हर समय बहार का सा मौसम हो गा। जन्नत के पेड़- पौधों की डालियाँ उन पर झूमती रहें गी और फल उन के बिल्कुल निकट हों गे। इमाम मुजाहिद फ़रमाते हैं कि जन्नत की ज़मीन चाँदी की और उस की मिट्टी मुश्क की हो गी। उस के दरख़्तों के तने सोने-चाँदी के हैं और डालियाँ हीरे-मोती और जवाहरात की। जन्नती लोगों का वस्त्र हरे रंग का महीन और बारीक रेशम हो गा। 'सुन्दुस' निहायत क़ीमती (बहुमूल्य) और नर्म रेशम जो बदन से चिपका हो गा। 'इस्तबरक़' क़ीमती रेशम जिस में चमक होगी और ऊपर से पहना जाये गा। इस के साथ-साथ इनके हाथों में चाँदी के कंगन हों गे। यह तमाम चीज़ें अबरार (निकों) को मिलें गी। अल्लाह के ख़ास नज़दीकी बन्दों के बारे में एक दूसरे स्थान पर फ़रमाया गया "उन्हें सोने के कंगन जिन में हीरे का जड़ाव हो गा और रेशम के कपड़े हों गे" (सूरः हज्ज) इन ज़ाहिरी जिस्मानी नेमतों के साथ उन्हें बेहतरीन शराब पिलाई जाये गी उस के पीने से तमाम ज़ाहिरी बातिनी हसद, कीना और बुराई दूर हो जाये गी।

हज़रत अ़ली रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब जन्नती लोग जन्नत के दर्वाज़े पर पहुंचें गे तो उन्हें दो नहरें नज़र आयें गी और उन्हें ख़ुद से ख़्याल पैदा हो गा कि एक नहर का जब वह पानी पियें गे तो उन के दिलों में जो कुछ था सब दूर हो जाये गा। दूसरी नहर में स्नान करें गे तो उन का चेहरा तरोतज़ा हो जाये गा ओर ज़ाहिरी -बातिनी सुन्दरता प्राप्त हो गी। फिर उन से उन के दिल ख़ुश करने को और ख़ुशी दोबाला करने को कहा जाये गा और यह कहा जाये गा कि यह तुम्हारे नेक आमाल का बदला और तुम्हारी भली कोशिशों की क़द्रदानी है, जैसा कि सूरः ज़ुमर में फ़रमाया: "एलान किया जाये गा कि तुम्हें नेक कर्मों की बुनियाद पर उन जन्नतों का वारिस बनाया गया है" (आयः- ७४)

زَنْجَبِيلًا ﴿١٧﴾ عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّىٰ سَلْسَبِيلًا ﴿١٨﴾ وَ
يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ۚ إِذَا رَأَيْتَهُمْ
حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنثُورًا ﴿١٩﴾ وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ

१८. उस चश्मे से जिस का नाम सलसबील है। १९. (और उस ज़िन्दगी के मज़ा के अ़लावा) उन के छोटे बच्चे हमेशा उन के क़रीब-क़रीब फिरते रहेंगे, तू उन को देखेगा तो बिखरे हुये मोती समझेगा। २०. और जब तू उस जन्नत में

➲नज़र करेगा तो वहाँ एक बहुत बड़ी आबादी देखेगा। २१. हरे रंग के बारीक और मोटे कपड़े होंगे और उन को चाँदी और सोने के कंगन पहनाये जायें गे, और उन का पर्वरदिगार उन को (बिनशा) पाक शराब पिलायेगा। २२. (अल्लाह की तरफ़ से कहा जायेगा) यह तुम्हारा नेक बदला है और (नेक आमाल में) तुम्हारी कोशिश क़ुबूल है। २३. ऐ रसूल! हम ही ने तुझ पर वह क़ुरआन आहिस्ता-अहिस्ता नाज़िल किया है[५] २४. तू अपने रब के हुक्म के मुवाफ़िक़ सब्र कर और किसी बदकार या काफ़िर की बात न मान। २५. सुब्ह-शाम अपने रब का नाम याद किया कर २६. और रातों को उस के सामने सज्दा किया कर और रात को बहुत देर तक अल्लाह को पाकी से याद किया कर। २७. यह लोग जल्दी की चीज़ को पसन्द करते हैं और अपने आगे सख़्त दिन के लिये (नेक आमाल) को छोड़े हुये हैं (यानी अपने खेल-कूद में क़ियामत के दिन को भूले हुये हैं) २८. हालाँकि हम ने उन को पैदा किया और उन की पैदाइश मज़बूत की और जब हम चाहें उन की शक्लें बदल देंगे

نَعِيمًا وَّمُلْكًا كَبِيرًا ﴿٢٠﴾ عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ
خُضْرٌ وَّإِسْتَبْرَقٌ ۖ وَّحُلُّوٓا أَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰىهُمْ
رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ﴿٢١﴾ إِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّ
كَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُورًا ﴿٢٢﴾ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ
الْقُرْاٰنَ تَنْزِيلًا ﴿٢٣﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ
مِنْهُمْ اٰثِمًا أَوْ كَفُورًا ﴿٢٤﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً
وَّأَصِيلًا ﴿٢٥﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ
لَيْلًا طَوِيلًا ﴿٢٦﴾ إِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَ
يَذَرُونَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ﴿٢٧﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ
وَشَدَدْنَآ أَسْرَهُمْ ۚ وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ أَمْثَالَهُمْ

....

५. सो इस का लाज़िमी नतीजा यह होना चाहेये कि उस के अनुयायी जन्नत हासिल करें और तू भी कुफ़्फ़ार की तरफ़ से पहुंचाई जाने वाली तक्लीफ़ों पर सब्र किया कर। उस तक्लीफ़ में कोई काफ़िर या फ़ासिक़ तुझे सीधी राह से फिसलाने की कोशिश करे तो उन का कहना मत मानना। और जब किसी तक्लीफ़ पर दिल घबराये तो सुब्ह-शाम अपने रब्ब का नाम लिया कर और "सुब्हानल्लाहि वबिहम्दिही, अस्-तग़्फ़िरूल्लाह" पढ़ा कर। अल्लाह ने चाहा तो तेरा काम बड़ी ख़ूबी के साथ संपन्न हो जाये गा (सनाई) इस आयत में इस बात की तरफ़ इशारा है कि अल्लाह की याद हर प्रकार की मुसीबतों और परेशानियों में निहायत हीं लाभदायक है। इस से दिल को सुकून मिलता है ओर सब्र-शुक्र की आदत पैदा होती है।

२९. यह सूर: नसीहत है, पस जो कोई चाहे अपने रब की तरफ़ राह इख़्तियार करे। ३०. तुम (किसी काम को) नही चाहते मगर जिस वक़्त अल्लाह चाहे (इस लिये उस से तौफ़ीक़ माँगा करो) बेशक अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला और हिक्मत वाला है। ३१. जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल कर लेता है और➲

تَبْدِيلًا ﴿٢٨﴾ إِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ
اتَّخَذَ إِلٰى رَبِّهٖ سَبِيلًا ﴿٢٩﴾ وَمَا تَشَآءُونَ إِلَّآ
أَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۚ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٣٠﴾
يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِي رَحْمَتِهٖ ۚ وَالظّٰلِمِينَ
أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٣١﴾

➲उस ने ऐसे ज़ालिमों के लिये दु:खदाई अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है[६]।

....

६. इस आयत के माना की और बहुत सी आयतें हैं और सब में एक ही मस्अला हल करने के क़ाबिल है वह यह कि अल्लाह की मर्ज़ी से काम होते हैं। यहाँ तक कि ईमान भी उसी की मर्ज़ी से हासिल होता है तो फिर ईमान न लायें या नेक कर्म न करें तो उन का क्या क़ुसूर है?

इस प्रश्न का उत्तर यह है कि क़ुरआन की आयतों पर ग़ौर करने से मालूम होता है कि इन्सान की मर्ज़ी और अल्लाह की मर्ज़ी और काम के होने के दर्मियान एक संबंध और तअ़ल्लुक़ है। पहले इन्सान की ख़ाहिश होती है कि यह काम करूँ, इस पर अल्लाह की तौफ़ीक़ उस का साथ देती है, इस के बाद इन्सान में फिर एक ख़ाहिश पैदा होती है जो उस काम को करने के बिल्कुल क़रीब कर देती है, बल्कि वह काम करवा देती है। इस का सुबूत क़ुरआन की आयात से सुनिये। बीवी और शौहर के दर्मियान सुलह-सफ़ाई के लिये जो कमीशन मुक़र्रर होता है उस के बारे में फ़रमाया गया: "शौहर और बीवी के दर्मियान सुल्ह-समझौता कराने वाले अगर वास्तव में इस्लाह का इरादा करें गे तो अल्लाह उन को तौफ़ीक़ देगा"। (सूरः निसा-३५) इस आयत में इन्सानी इरादा के मुताबिक़ अपनी तौफ़ीक़ को भी बताया गया। चुनान्चे दूसरे स्थान पर फ़रमाया: "जो चाहे ईमान लाये और जो चाहे कुफ़्र करे" (पारः १५, रूकूअ़१६) इस आयत में इन्सान की मर्ज़ी पर ईमान और कुफ़्र का दारोमदार रखा गया। ऊपर की इन दो आयतों से दो बातें साबित हुयीं (१) इन्सान की मर्ज़ी और इरादे पर ईमान और कुफ़्र का दारोमदार है। (२) अल्लाह की मदद और तौफ़ीक़ के बग़ैर कोई काम नही होता। नतीजा यह निकला कि इन्सान की ख़ाहिश ओर इरादे के बाद अल्लाह की तौफ़ीक़ उस का साथ देती है और इन्सान का इरादा एवँ ख़ाहिश और अधिक पुख़्ता हो जाती है, इसी बारे में अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है "तू किसी काम पर पक्का इरादा नही कर सकता मगर जिस समय अल्लाह तौफ़ीक़ दे"। इस से पहली मश्य्यित और मर्ज़ी की नफ़ी नहीं होती। (सनाई)

सूरः मुर-सलात्- (77)

सूरः मुरसलात मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयीं[१]। इस में ५० आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. क़सम है उन हवाओं की जो दस्तूर के अनुसार चलती हैं[२]। २. और जो तेज़ी से चलती हैं ३. और (उन की जो बादलों को फैला देती हैं) ४. और जो (बादलों को) फाड़ देती हैं ५+६. और उन (फ़रिश्तों की) जमाअ़तों की क़सम है ज़ो (नबिय्यों पर) नसीहत पहुंचाती हैं ताकि उज़्र दूर करें और डरायें। ७. जिस अ़ज़ाब से तुम को डराया जाता है वह अवश्य वाक़े (घटित) होगा ८. जब सितारे बेनूर हो जायेंगे ९. और जब आकाश फट जायेगा १०. और जब पहाड़ उड़ा दिये जायेंगे➲
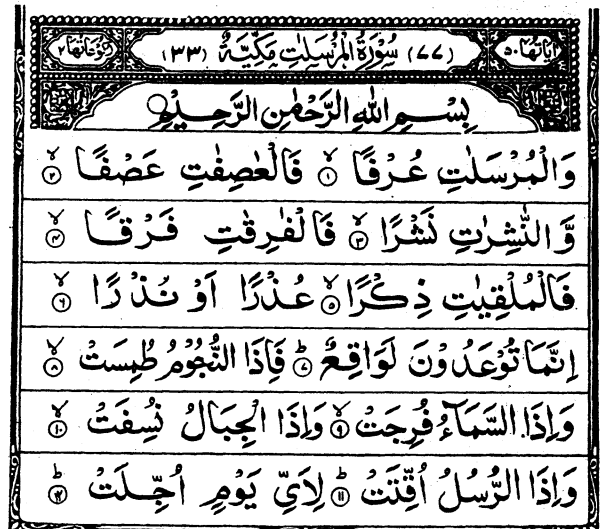
➲११. और जब रसूल जमा किये जायेंगे १२+१३. किस रोज़ के लिये उन को मुल्तवी रखा गया था? फ़ैसले के दिन के लिये।

....

१. हज़रत इब्ने मस्ऊ़द रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब यह सूरः नाज़िल हुयी उस समय हम मिना के ग़ार में थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस की तिलावत फ़रमा रहे थे और मैं सुन कर याद कर रहा था कि इतने में अचानक एक साँप हम पर कूद पड़ा। आप ने उसे मारने का हुक्म दिया, हम लोग उस पर लपके लेकिन वह निकल गया, आप ने फ़रमाया: तुम्हारी सज़ा से वह बच गया, जैसे तुम उस की बुराई से महफ़ूज़ रहे (बुख़ारी, मुस्लिम) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कभी-कभार मग़्रिब की नमाज़ में इस सूरः की तिलावत फ़रमाया करते थे। (अहमद, बुख़ारी, मुस्लिम)
२. 'मुरसलात' से मुराद या तो फ़रिश्ते हैं या हवायें। ज़ाहिर में तो यही मालूम होता है कि इस से मुराद हवायें ही हैं, जैसे कि दूसरे स्थानों पर हवायें मुराद हैं। 'आ़सिफ़ात' से भी हवायें ही मुराद हैं, वह हवायें जो तेज़ झोकों के साथ चलती हैं। 'नाशिरात' से भी हवायें ही मुराद हैं जो बादलों को आसमान में चारों तरफ़ फैला देती हैं। 'फ़ारिक़ात' और 'मुलक़ियात' से मुराद फ़रिश्ते हैं जो अल्लाह की वह्यि रसूलों पर लाते हैं, ताकि लोगों के उ़ज़्र समाप्त हो जायें और हक़-बातिल, हराम-हलाल, हिदायत-गुमराही में फ़र्क़ ज़ाहिर हो जाये।

इन तमाम क़समों के बाद फ़रमाया कि जिस क़ियामत का तुम से वादा किया गया है वह बिलाशुब्हा हक़ है और लाज़िमी तौर पर पूरा होने वाला है। उस दिन तुम सब के सब पहले और आख़िर वाले अपनी-अपनी क़ब्रों से पुनः ज़िन्दा किये जाओ गे। (इब्ने कसीर)

१४. तुम्हें क्या मालूम कि वह फ़ैसले का दिन क्या है? १५. झुठलाने वालों के लिये उस रोज़ अफ़सोस होगा १६. क्या हम ने पहले मुज्रिमों को तबाह नही किया? १७. और उन के बाद और लोगों को लाते हैं १८. इसी प्रकार हम मुज्रिमों के साथ करते रहते हैं १९. उस दिन झुठलाने वालों के लिये अफ़सोस होगा। २०. क्या हम ने तुम को एक हक़ीर पानी से पैदा नहीं किया? २१ फिर हम ने उस को एक मज़बूत मकान (गर्भाशय) में एक निश्चित समय तक ठहराये रखा २२. फिर हम ने समय सुनिश्चित कर दिया २३. हम बड़ी अच्छी क़ुदरत वाले हैं २४ उस रोज़ झुठलाने वालों के हक़ में अफ़सोस हो गा २५+२६. क्या हम ने ज़मीन को ज़िन्दा इन्सानों और मुर्दों के लिये रहने की जगह नही बनाया?[3] और हम ही ने उस पर बड़े मज़बूत और बुलन्द पहाड़ पैदा किये हैं और हम ही➲

لِيَوْمِ الْفَصْلِ ﴿١٣﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ﴿١٤﴾
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿١٥﴾ أَلَمْ نُهْلِكِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٦﴾
ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْآخِرِينَ ﴿١٧﴾ كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ
بِالْمُجْرِمِينَ ﴿١٨﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿١٩﴾ أَلَمْ
نَخْلُقْكُمْ مِنْ مَاءٍ مَهِينٍ ﴿٢٠﴾ فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ
مَكِينٍ ﴿٢١﴾ إِلَىٰ قَدَرٍ مَعْلُومٍ ﴿٢٢﴾ فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ
الْقَادِرُونَ ﴿٢٣﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٤﴾ أَلَمْ
نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾ أَحْيَاءً وَأَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾
وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شَامِخَاتٍ وَأَسْقَيْنَاكُمْ مَاءً
فُرَاتًا ﴿٢٧﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٨﴾ انْطَلِقُوا
إِلَىٰ مَا كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٩﴾ انْطَلِقُوا إِلَىٰ
ظِلٍّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾ لَا ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِي

مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾ إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾

तुम को मीठा पानी पिलाते हैं। २८. उस रोज़ झुठलाने वालों के लिये अफ़सोस होगा २९. उसी की तरफ़ चलो जिस अ़ज़ाब को झुठलाते थे। ३०.धुयें के तीन शाखों वाले साये की तरफ़ चलो ३१. जो न तो (ठन्डा) साया है और न गर्मी में फ़ाइदामन्द, बल्कि सख़्त अ़ज़ाब का ज़रीआ़ होगा ३२ वह बड़े-बड़े मकानों जैसे शरारे (शोले) फेंके गी

....

३. कि वह तुम्हे ज़िन्दगी में भी अपनी पीठ पर चलाती रहे और मरने के बाद भी अपने पेट में छुपा रखे। फिर ज़मीन को हिलने न देने के लिये हम ने मज़बूत और वज़नी बुलन्द पहाड़ उस में गाड़ दिये और बादलों से बरसता हुआ और चश्मों से निकलता हुआ हल्का और स्वादिष्ट पानी तुम्हें पिलाया। इन नेमतों के बावजूद भी अगर तुम मेरी बातों को झुठलाते हो तो याद रखो वह समय आ रहा है जब अफ़सोस के साथ गुज़री हुयी उम्र को याद करो गे, मगर उस समय अफ़सोस करना कुछ काम न आये गा। (इब्ने कसीर) फिर पछिताये क्या हुवत जब चिड़ियाँ चुग गयीं खेत।

كَأَنَّهُ جِمَالَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٤﴾
هَٰذَا يَوْمُ لَا يَنطِقُونَ ﴿٣٥﴾ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ﴿٣٦﴾
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٧﴾ هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۖ
جَمَعْنَاكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾ فَإِن كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ
فَكِيدُونِ ﴿٣٩﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٠﴾ إِنَّ
الْمُتَّقِينَ فِي ظِلَالٍ وَعُيُونٍ ﴿٤١﴾ وَفَوَاكِهَ مِمَّا
يَشْتَهُونَ ﴿٤٢﴾ كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٤٤﴾
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٥﴾ كُلُوا وَتَمَتَّعُوا
قَلِيلًا إِنَّكُم مُّجْرِمُونَ ﴿٤٦﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ
لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٧﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا
يَرْكَعُونَ ﴿٤٨﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾ فَبِأَيِّ
حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٠﴾

३३. गोया पीले रंग के ऊँट हों गे ३४. उस दिन झुठलाने वालों के लिये अफ़सोस हो गा ३५+३६. उस रोज़ वह न बोलें गे और न उन को अनुमति होगी कि वह माज़रत करें ३७. उस रोज़ झुठलाने वालों के लिये अफ़सोस हो गा। ३८. फ़ैसला का दिन होगा[४] जिस में हम तुम को और तुम से पहले के सब लोगों को जमा करेंगे[५] ३९. फिर अगर तुम को मेरे मुक़ाबला में कोई चाल चलने की ताक़त हो तो चला लेना ४०. उस रोज़ झुठलाने वालों के लिये अफ़सोस होगा ४१+४२. मुत्तक़ी लोग (बड़ी) नेमतों की छाँव, ठन्डे चश्मों और मन-पसंद फलों में होंगे ४३. (उन को कहा जाये गा कि) अपने किये हुये आमाल की बर्कत से मज़े से खाओ-पियो ४४ नेक लोगों को हम इसी प्रकार बदला दें गे ४५. उस रोज़ झुठलाने वालों के लिये अफ़सोस होगा ४६. चन्द दिन और मज़े उड़ा लो इस में शक नही कि तुम लोग मुजरिम हो ४७. उस रोज़ झुठलाने वालों के लिये अफ़सोस हो गा ४८. जब उन को कहा जाता है कि अल्लाह की इताअ़त करो तो इताअ़त नहीं करते[६]। ४९. उस

दिन झुठलाने वालों के लिये अफ़सोस होगा ५०. (कुरआन मजीद तो मानते नही) फिर इस के सिवा किस कलाम पर विश्वास और यक़ीन करें गे?

....

४. हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन अल्लाह पाक तमाम अगलों और पिछलों को एक चटियल और साफ़ मैदान में जमा करे गा, फिर एक पुकारने वाला आवाज़ लगा कर सब को होशियार करे गा। फिर अल्लाह पाक फ़रमाये गा आज का दिन फ़ैसले का दिन है, तुम सब अगलों और पिछलों को मैं ने जमा कर दिया है, अब मैं तुम सब को इख़्तियार देता हूँ कि अगर मेरे साथ कोई दग़ा, धोका-धड़ी, हीला और चाल चल सकते हो तो चल लो। सुनो! तकब्बुर करने वाला, सरकश, मुन्किर और झुठलाने वाला आज मेरी पकड़ से नही बच सकता और न कोई नाफ़र्मान शैतान मेरे अ़ज़ाब से नजात पा सकता है। एक हदीस शरीफ़ में आया है कि उस दिन दोज़ख़ अपनी गर्दन लम्बी कर के लोगों के दर्मियान आ कर बुलन्द आवाज़ से कहे गी कि ऐ लोगो! तीन प्रकार के लोगों को अभी तुरन्त ही मुझे पकड़ लेने का हुक्म मिला है और मैं उन को अच्छी तरह पहचानती हूँ, आज वह मुझसे छुप कर नही बच सकते। (१) जिस ने अल्लाह के साथ किसी को शरीक किया हो (२) जो क़ियामत का मुन्किर और तकब्बुर करने वाला हो (३) जो नाफ़र्मान और शैतान हो। फिर वह उस भीड़ में से एक-एक को चुन-चुन कर छाँट लेगी और फिर उन को पकड़ कर निगल जाये गी। यह दिन वह हो गा कि न तो कोई बोल सके गा और न कोई हीला-बहाना कर सके गा और न किसी को बातें बनाने का मौक़ा दिया जायेगा। (इब्ने कसीर)

बज़्ज़ार की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक मर्तबा हँसे फिर फ़रमाया: तुम लोग जानते हो कि क्यों हँसा? सहाबा रज़ि॰ ने फ़रमाया: हमें भी इस बारे में बताएँ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया क़ियामत के दिन बन्दा अपने रब से झगड़े गा और कहे गा कि ऐ अल्लाह! क्या तूने वादा नहीं किया था कि अपने बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करे गा? अल्लाह पाक फ़रमाए गा कि बेशक मैं ने वादा किया था। यह सुन कर बन्दा कहे गा कि मैं अपने गुनाहों पर दूसरों की गवाही को तस्लीम नहीं करूँ गा। अल्लाह तआ़ला फ़रमाये गा कि क्या मेरी और मेरे फ़रिश्तों की भी गवाही काफ़ी नहीं? बन्दा उत्तर में अपनी ही बात बार-बार कहता चला जाए गा। यह हालत देख कर अल्लाह तआ़ला उस की ज़बान को बन्द कर दे गा और उस के बदन के समस्त हिस्सों से कहे गा कि इस बन्दे ने दुनिया में जो कुछ किया-धरा है उस को बयान कर दो। यह हुक्म सुनते ही बदन के तमाम हिस्से उस के ख़िलाफ़ गवाही देने लगें गे। बन्दा यह देख कर अपने बदन के हिस्सों को लानत-मलामत करे गा और कहे गा कि मैं तो तुम्हारे बचाव के लिये लड़-झगड़ रहा हूँ और तुम मेरे ही ख़िलाफ़ गवाही दे रहे हो? (मुस्लिम)

एक अन्य रिवायत में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन एक समय किसी को भी बोलने की अनुमति न हो गी, फिर कुछ समय के लिये बोलने की अनुमति दे दी जाये गी। यह मौक़ा पाते ही लोग बोलने और परस्पर झगड़ने लगें गे। कोई झूठी क़समें खायें गा तो कोई झूठी बनायें गा। इस के बाद उन की ज़बानें बन्द कर दी जायें गी और उन के बदन के तमाम हिस्से गवाही देने लगें गे। इस के बाद ज़बान भी खोल दी जाये गी तो वह भी उन के ख़िलाफ़ गवाही देगी और कहे गी कि अ़ल्लाह तआ़ला ने हमें बोलने की क्षमता दे रखी है इस लिये मैं सच-सच तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही दे रही हूँ।

५. इस आयत में 'ज-मअ़ना' माज़ी का सेग़ा (Past Tense) है मगर मैं ने आगे-पीछे के मतलब को सामने रख कर मुस्तक़्बिल (Future Tense) का तर्जुमा किया है। क्योंकि क़ियामत के मैदान में तमाम लोग एक साथ पुकारे जायें गे इस लिये पहले और बाद के लोगों में फ़र्क़ न हो गा। हाँ, बात करते समय या कुरआन के नाज़िल होने के समय यह फ़र्क़ किया जा सकता है कि "तुम" से मुराद मौजूदा लोग और "पहले लोगों" से मुराद तुम से पहले पैदा होने वाले लोग हैं, जैसा कि फ़रमाया गया: "तुम कह दो! तुम से पहले और पिछले सब जमा लिये जायें गे" (सनाई)

६. कुरआन मजीद में बहुत सी आयतों में रूकूअ, सुजूद का शब्द आया है। चुनान्चे सूरः फुर्कान की आयत न० ६० में फ़रमाया: "जब उन से सज्दा करने को कहा जाता है तो कहते हैं......."। इस प्रकार की आयतों में रूकूअ और सज्दे से मुराद इताअ़त और फ़रमाबर्दारी है, इस लिये इस आयत ने साफ़ कह दिया है: "जब काफ़िरों पर कुरआन पढ़ा जाता है तो सज्दा (इताअ़त) नही करते, बल्कि झुठलाते हैं" (पारः २०, रूकूअ९) इस लिये हम ने यहाँ पर 'इरकऊ' का तर्जुमा "इताअ़त" किया है। (सनाई)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जो शख़्स इस सूरः की इस आयत को पढ़े तो इस के उत्तर में "आ मनतु बिल्लाहि वमा अन्-ज़-ल" (मैं अल्लाह पर और जो कुछ उसने उतारा उस पर ईमान लाया) पढ़ना चाहिये। (इब्ने कसीर)

नोटः- एक ज़ईफ़ रिवायत के अनुसार जो सूरः तीन की अन्तिम आयत पढ़े तो उत्तर में "बला व-ना ज़ालि-क मि-नश्शाहिदी-न" पढ़े। और सूरः क़ियामतः के अन्त की आयत पढ़ने के पश्चात उत्तर में "बला" पढ़े। इसी प्रकार इस सूरः मुरसलात की आयत पढ़ने के बाद "आमन्ना बिल्लाहि" पढ़े (अबू दावूद-बाबु मिदारिर्रुकूअिवस्सुजूदि) लेकिन जैसा कि पहले भी लिखा जा चुका है कि यह हदीस ज़ईफ़ है और मुहद्दिसीन के बनाये हुये उसूल के अनुसार ज़ईफ़ हदीसों पर अ़मल दुरुस्त नहीं है चाहे उस का तअ़ल्लुक़ फ़ज़ाइल ही से क्यों न हो।..................ख़ालिद सिद्दीक़ी

★★★★★

بِسْــــمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْــمِ

पारः अम्म् (30)

संक्षिप्त विषय सूची

पारः अम्म — (30)

सूरः नबा—(78)

सूरः नबा (बड़ी ख़बर) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी इस में ४० आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है

१. यह लोग आपस में किसबात के बारे में प्रश्न करते हैं?[1] २+३. (हम उन को बताते हैं कि) बड़ी ख़बर (क़ियामत) के बारे में प्रश्न करते हैं। जिस में यह लोग मुख़्तलिफ़ राय रखते हैं ४. उन को अस्ल हाल मालूम हो जाये गा ५. (फिर सुन रखें!) अवश्य ही जान लेंगे। ६. क्या हम ने ज़मीन को बिछौना नही बनाया? ७. और पहाड़ों को खूँटा नही बनाया? ८. और हम ने तुम को मुख़्तलिफ़ क़िस्म बनाया[2] ९. और हम ने तुम्हारी नींद को आराम का सबब बनाया १०. और हम ने रात को तुम्हारे लिये पर्दा बनाया ११. और हम ने दिन को तुम्हारी रोज़ी (कमाने) के लिये बनाया १२. और तुम्हारे ऊपर सात सख़्त आसमान बनाये (जिन को तुम देख रहे हो) १३. और हम ने चमकीला चिराग़

(٧٨) سُورَةُ النَّبَإِ مَكِّيَّةٌ (٨٠)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ۚ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ۙ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ
مُخْتَلِفُوْنَ ؕ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۙ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۝ اَلَمْ نَجْعَلِ
الْاَرْضَ مِهٰدًا ۙ وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ۙ وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ۙ
وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۙ وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ۙ وَّجَعَلْنَا
النَّهَارَ مَعَاشًا ۪ وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۙ وَّجَعَلْنَا
سِرَاجًا وَّهَّاجًا ۪ وَّاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ۙ
لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ۙ وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ؕ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ
كَانَ مِيْقَاتًا ۙ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ۙ وَّ
فُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ۙ وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ
سَرَابًا ؕ اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۙ لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ۙ
لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ۚ لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ۙ

(सूरज) बनाया[3] १४. और हम बादलों से ज़ोर का पानी उतारते हैं १५+१६. ताकि हम उस के साथ (ग़ल्ला के) दाने और सबज़ियाँ और घने-घने बाग़ पैदा करें १७. (तुम को समझाया जाता है कि) क़ियामत का दिन आ़म फ़ैसले का दिन है जिस का वक़्त मुक़र्रर है १८. जिस रोज़ सूर में आवाज़ फूँकी जाये गी पस तुम गिरोह-गिरोह बन कर आ जाओ गे[4] १९. और (उस रोज़ यह) आसमान (फट कर) दर्वाज़े-दर्वाज़े हो जाये गा २०. और पहाड़ चलाये जायें गे तो ग़ुबार (धूल-मिट्टी) हो जायें ➲
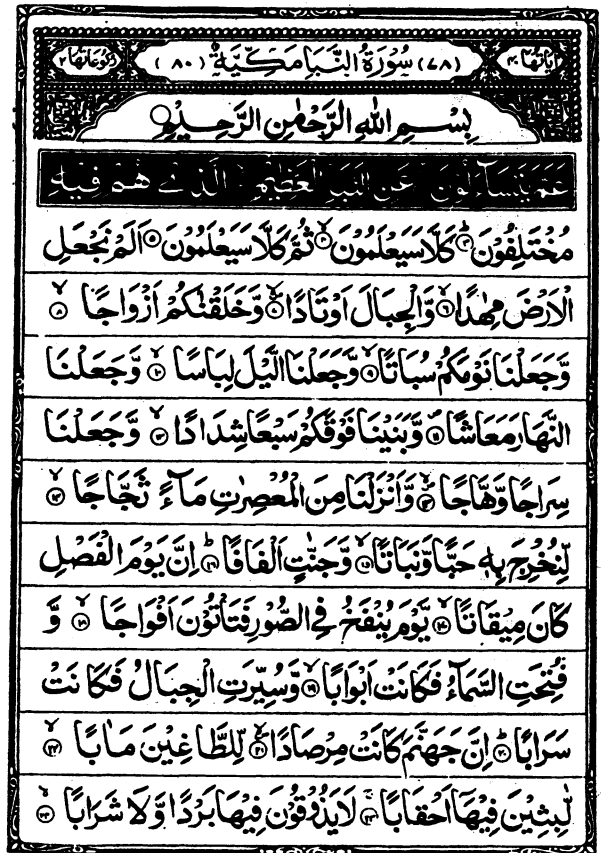
गे २१. (उस दिन काफ़िरों के लिये) जहन्नम घात (बनी हुयी)होगी २२. (मुश्रिकों और बदकारों और) काफ़िरों के लिये ठिकाना होगी २३. जिस में वह लंबे समय तक ठहरे रहें गे[4] २४. उस में न ठन्डक चखें गे, न पीने को पानी

....

१. शाने-नुज़ूल:- नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जब काफ़िरों को दावत देनी शुरू की और उन को क़ियामत के दिन से डराने लगे तो वह आपस में ठट्ठा मारते और मज़ाक़ में एक दूसरे से पूछते कि क़ियामत क्या बला है और कब अयेगी?, उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुयी। (वहीदी) क़ुरआन मजीद में अक़ीदा के तअ़ल्लुक़ से जो मसाइल बयान किये गये हैं उन में एक दोबारा ज़िन्दा होने का भी है। यानी क़ियामत पर यक़ीन रखना, ईमान की शर्तों में दाख़िल है। मुश्रिकीने मक्का इस के सख़्त मुन्किर थे, इस लिये आपस में एक दूसरे से सवालिया अन्दाज़ में या तन्ज़ और चिढ़ाने की ग़रज़ से सवाल किया करते थे कि हम कब ज़िन्दा हों गे? उन को मालूम होना चाहिये कि यह लोग बड़ी गंभीर ख़बर के बारे में यानी क़ियामत के मुतअ़ल्लिक़ प्रश्न पूछ रहे हैं। सुन लें जल्दी ही उन का अस्ल हाल मालूम हो जाये गा (सनाई)

२. यानी कोई गोरा, कोई काला और मर्द-औ़रत के जोड़े बनाये। हमारी क़ुदरत का चमत्कार देखो कि हम ने तुम्हारे दिमाग़ों की थकावट को दूर करने के लिये और तुम को आराम पहुंचाने के लिये तुम्हारी नींद को आराम का ज़रीआ़ बनाया। सोना तो ज़ाहिर में वक़्त बर्बाद करना है, लेकिन हक़ीक़त में यह एक बहुत बड़ी नेमत है। जिन लोगों को किसी बीमारी से नींद नही आती उन से नींद की क़द्र पूछिये। यह हमारी क़ुदरत की एक बहुत बड़ी निशानी है। (सनाई)

३. जिस की रोशनी बिजली की रोशनी से भी अच्छी है। देखो! जब से हम ने यह दीपक जलाया है, तुम ने कभी इस में तेल नही डाला और न इस की लौ तेज़ की, क्यों कि यह सब काम तुम इन्सानों के अ़मल से बाहर हैं। यह तो तुम्हारे कमाने के सामान हैं जो हक़ीक़त में कुछ नहीं। क्योंकि तुम चार पैसे कमा लो तो क्या करो गे? जब तक हम तुम्हारे लिये ग़ल्ला न पैदा करें, क्या खाओगे? इस लिये हम ने यह भी इन्तिज़ाम कर रखा है कि तुम्हारे लिये ज़रूरत के समय बादलों से ज़ोर का पानी उतारते हैं ताकि हम उस के साथ दाने और सबज़ियाँ और बाग़ पैदा करें (यह अ़जीब इत्तिफ़ाक़ है कि इस समय जब कि मैं यह हाशिया लिख रहा हूँ ख़ूब वर्षा हो रही है जिस की सख़्त ज़रूरत थी-२१ सितंबर १९३०। (सनाई)

४. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: दोनों सूर के दर्मियान चालीस हों गे। लोगों ने पूछा कि चालीस दिन? रावी कहते हैं कि मुझे नही मालूम कि आप ने चालीस दिन कहा या चालीस महीना, या चालीस वर्ष। फिर अल्लाह वर्षा करे गा और उस पानी से लोग ऐसे उगें गे जैसे कि पौधे उगते हैं। अस्ल में बात यह है कि इन्सान का सारा बदन गल जाता है लेकिन रीढ़ की हड्डी बाक़ी रहती है, इसी से क़ियामत के दिन इन्सान ज़िन्दा किये जायें गे (बुख़ारी/ इब्ने कसीर)

५. हज़रत इमाम हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि 'अहक़ाब' से मुराद हमेशा दोज़ख़ में रहना है। इमाम क़तादा फ़रमाते हैं कि अहक़ाब कभी समाप्त न हों गे, एक हक़ब ख़त्म होते ही दूसरा आरंभ हो जाये गा। इन अहक़ाब का सहीह अनुमान केवल अल्लाह पाक ही को है। इन जहन्नमी लोगों को न तो कलेजे की ठंडक नसीब हो गी और न कोई अच्छा पानी ही पीने को मिले गा, बल्कि ठन्डक के बदले गर्म खौलता हुआ पानी मिले गा और खाने-पीने की चीज़ के बदले में पीप और धोवन मिले गा। 'हमीम' खौलते हुये पानी को कहते हैं। वह पानी इतना खौले कि इस से अधिक खौलना संभव न हो। 'ग़स्साक़' जहन्नम में रहने वालों के ख़ून, पीप, ज़ख़्मों से बहने वाले ख़ून को कहते हैं। गर्म पानी के मुक़ाबले में यह चीज़ हद से ज़्यादा ठन्डी और बदबूदार हों गी। आगे फ़रमाया गया कि यह उन के आमाल का पूरा-पूरा बदला है। यह लोग क़ियामत को और हमारी क़ुदरत की निशानियों को झुठलाया करते थे। अल्लाह तआ़ला अपनी मेहरबानी से हमें अपने अ़ज़ाबों से सुरक्षित रखे-आमीन! (इब्ने कसीर)

إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ﴿٢٥﴾ جَزَاءً وِفَاقًا ﴿٢٦﴾ إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ
حِسَابًا ﴿٢٧﴾ وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ
كِتَابًا ﴿٢٩﴾ فَذُوقُوا فَلَن نَّزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾ إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ
مَفَازًا ﴿٣١﴾ حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا ﴿٣٢﴾ وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ﴿٣٣﴾ وَكَأْسًا
دِهَاقًا ﴿٣٤﴾ لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَّابًا ﴿٣٥﴾ جَزَاءً مِّن رَّبِّكَ عَطَاءً
حِسَابًا ﴿٣٦﴾ رَّبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمَٰنِ لَا يَمْلِكُونَ
مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾ يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلَائِكَةُ صَفًّا لَّا يَتَكَلَّمُونَ
إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَن
شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ مَآبًا ﴿٣٩﴾ إِنَّا أَنذَرْنَاكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَوْمَ يَنظُرُ
الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكَافِرُ يَا لَيْتَنِي كُنتُ تُرَابًا ﴿٤٠﴾

२५. मगर सख़्त गर्म पानी और घाव का पीप पियें गे २६. (यह) पूरा-पूरा बदला हो गा २७. (दुनिया में) वह लोग (ऐसे ग़ाफ़िल हैं कि) हिसाब का यक़ीन नहीं रखते। २८. और खुल्लम-खुल्ला झुठलाते हैं। २९. और हम ने हर एक चीज़ को नोट कर रखा है ३०. पस (उन से कहा जाये गा कि) अ़ज़ाब का स्वाद चखो और हम तुम को सिवाए अ़ज़ाब के कुछ न बढ़ायें गे[६]।३१. बेशक परहेज़गार लोगों को मुराद मिले गी ३२+३३+३४. (यानी रहने को) बाग़ और खाने को अंगूर और नौजवान हमउम्र औ़रतें और शराब के भरे हुये प्याले ३५. वह लोग बेहूदा बात या झूठ न सुनें गे ३६+३७. यह तेरे रब की तरफ़ से, जो आसमानों और ज़मीनों और उन के दर्मियान की सब चीज़ों का मेहरबान पर्वरदिगार है। पूरा-पूरा बदला होगा (उस की रहमत के बावजूद प्रताप का यह हाल होगा कि) वह (दुनिया के सारे) लोग उस (अल्लाह) से बात करने की ताक़त न रखें गे। ३८. जिस दिन रूह (जिब्रील) और फ़रिश्ते सफ़ें बाध कर ख़ड़े हों गे, मगर वही बोल सके गा जिस को रहमान ने अनुमति दी हो और उस ने बात सहीह कही हो। ३९. बस वह दिन वास्तव में होने वाला है पस जो कोई चाहे अपने रब की तरफ़ जाने का रास्ता इख़्तियार करे। ४०. हम ने तुम को निकट के (मौत के बाद) अ़ज़ाब से डराया है जो उस रोज़ होगा जिस रोज़ हर आदमी अपने हाथों की कमाई अपनी आँखों से स्वयँ देखे गा। और उन को देख कर काफ़िर कहे गा कि ऐ काश! मैं आज मर कर मिट्टी में मिट्टी हो जाता[७]

....

६. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जहन्नमियों कि लिये इस से ज़्यादा सख़्त और निराशाजनक आयत कोई नहीं। उन के अ़ज़ाब हर समय बढ़ते ही रहें गे। इस आयत से उन लोगों के ख़याल का रद्द होता है जो कहते हैं कि अन्तत: जहन्नम वालों का अ़ज़ाब समाप्त हो जाये गा और वह आराम से रहने लगें गे (मुहम्मदी/वहीदी) यानी यह ख़्याल दिल से निकाल दो कि कभी तुम अ़ज़ाब से छूटो गे। हर्गिज़ नही, हर समय तुम को अ़ज़ाब ही अ़ज़ाब हो गा। यह तो हुआ उन ज़ालिमों का हाल। अब इन के मुक़ाबिले में नेक लोगों का हाल सुनिये! उन परहेज़गारों के लिये जो शरीअ़त के आदेशानुसार जीवन यापन करते हैं, आख़िरत में उन को बड़ा इनाम मिले गा, यानी रहने के लिये बाग़ और खाने के लिये अंगूर और दिल को प्रसन्न करने को हमउम्र मोतियों जैसी सुन्दर महिलायें और साफ़ शराब से भरे हुये प्याले हों गे। उस शराब में नशा न हों गा, केवल लज़्ज़त हो गी। यह मत समझो कि दुनिया में जहाँ ऐसे बाग़ों (जैसे शालीमारबाग़, लाहौर एवं कश्मीर आदि) में ऐसे लोगों का जमाव होता है वहाँ बेहयाई और लुच्चे पने की बातें होती हैं, जन्नत में भी हो गी। हर्गिज़ नही, वह मुत्तक़ी लोग उन जन्नतों में न तो किसी

प्रकार की बेहूदा बातें करें गे और न सुनें गे, बल्कि बड़ी शराफ़त और इ़ज़्ज़त की ज़िन्दगी गुज़ारें गे। (सनाई)
७. जब जानवरों का फ़ैसला हो गा और उन से बदला लिवाया जाये गा। यहाँ तक कि बेसींग वाली बकरी को अगर सींग वाली बकरी ने अकारण मारा हो गा, तो उस से भी बदला दिलावाया जाये गा, फिर उन से कहा जाये गा कि मिट्टी हो जाओ, चुनान्चे वह मिट्टी हो जायें गे। उस समय यह काफ़िर इन्सान भी कहे गा कि हाये! मैं भी जानवर होता और हिसाब-किताब के बाद मिट्टी हो जाता। (इब्ने कसीर)

सूरः नाज़िआत-(79)

सूरः नाज़िआत (खीचनें वाले) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ४६ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।
शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है।
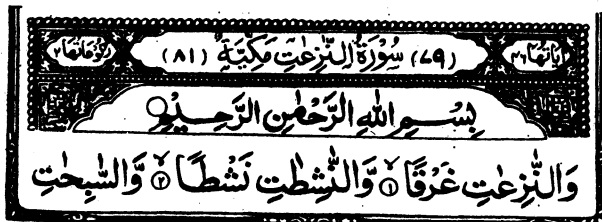
१. क़सम है उन जमाअ़तों की जो बड़ी सख़्ती से जानें निकालती हैं। २. और उन जमाअ़तों की क़सम है जो नेक रूहें खुशी के साथ निकालती हैं[1]। ३. तेज़ चलने वाली सवारियों की क़सम है[2]।

....

१. इस से मुराद वह फ़रिश्ते हैं जो कुछ लोगों की जानें सख़्ती से निकालते हैं और कुछ की जानें बड़ी आसानी से निकालते हैं, जैसे किसी के बन्द खोल दिये जायें, या गूँधे हुये आटे में से बाल खींच लिये जायें। काफ़िरों की जानें जब खींची जाती हैं तो फिर बन्द खोल दिये जाते हैं और जहन्नम में डुबोए जाते हैं। यह ज़िक्र मौत के बाद का है। 'मुदब्बिरात' से मुराद अल्लाह के आदेशों का पालन करने वाले फ़रिश्ते हैं। हज़रत अ़ली रज़ि० का क़ौल है कि फ़रिश्ते आसमान से ज़मीन की तरफ़ अल्लाह के हुक्म से तदबीर करते हैं। (इब्ने कसीर)
२. 'साबिहात' यह बहुवचन है "साबिहा" का। इस से मुराद वह घोड़ा है जो दौड़ने में निहायत तेज़ रफ़तार हो। (सनाई)

سَبْحًا ۙ فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۙ فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۘ يَوْمَ
تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۙ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ۗ قُلُوْبٌ
يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۙ اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۘ يَقُوْلُوْنَ
ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِي الْحَافِرَةِ ۗ ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ۗ
قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۘ فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۙ
فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ۗ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۘ
اِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۚ اِذْهَبْ اِلٰى
فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۖ فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰٓى اَنْ تَزَكّٰى ۙ وَ

४. और नेकियों में बढ़ने वालों की क़सम है ५. और सियासी (और दीनी) काम की तदबीर करने वालों की क़सम है। ६. जिस रोज़ हिला देने वाला हिला देगा[1] ७. तो उस के पीछे आने वाला (दूसरा सूर) आये गा। ८. (उस दिन) कई दिल मारे ख़ौफ़ के धड़क रहे हों गे ९. उन की आँखें झुकी हों गी १०. कहते हैं कि क्या हम पहली ज़िन्दगी में लौटाये जायें गे? ११. क्या जब हमारी हड्डियाँ-गल जायें गी (तो हम उठाये जायें गे?) १२. कहते हैं कि यह वापसी तो बहुत हानिकारक हो गी। १३. वह तो बस एक

أَهْدِيَكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَتَخْشَىٰ ﴿١٩﴾ فَأَرَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَىٰ ﴿٢٠﴾
فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ﴿٢١﴾ ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَىٰ ﴿٢٢﴾ فَحَشَرَ فَنَادَىٰ ﴿٢٣﴾
فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ ﴿٢٤﴾ فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْآخِرَةِ
وَالْأُولَىٰ ﴿٢٥﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَىٰ ﴿٢٦﴾
أَأَنتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ ۚ بَنَاهَا ﴿٢٧﴾ رَفَعَ سَمْكَهَا

आवाज़ होगी[४] १४. पस वह (यानी मुर्दे हश्र के मैदान में) ज़मीन के ऊपर आ जायें गे १५. क्या तुझे मूसा की ख़बर पहुंची है? १६. जब उस के पर्वरदिगार ने पाकीज़ा जंगल तुवा में उस को बुलाया[५] १७. (और आदेश दिया कि) फ़िऔन के पास जा, वह सरकश हो गया है। १८. पस तू उस से कह कि क्या तुझे इस बात की ख़ाहिश है कि तू पाक-साफ़ हो जाये? १९. और मैं तुझे (अल्लाह के बताने से) हिदायत करूँ तो तू डर जाये? २०. पस उस ने उस को बड़ी निशानी दिखाई २१. फिर भी उस ने झुठलाया और नाफ़र्मानी ही की २२. और पीठ फेर कर कोशिश (संघर्ष) करने लगा २३. फिर उस ने अपने लोगों को जमा किया २४. और बुलन्द आवाज़ से कहाः मैं तुम्हारा सब से बड़ा रब हूँ २५. पस अल्लाह ने उस को आख़िरत और दुनिया दोनों के अ़ज़ाब में पकड़ा[६] २६. बेशक इस में डरने वालों के लिये बड़ी ज़िब्रत है २७. क्या तुम्हारा पैदा करना बड़ा सख़्त काम है, या आकाश का बनाना २८. अल्लाह ने उस को बनाया और उस की छत को ख़ूब ऊँचा किया

....

३. मुस्नद अहमद की हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः काँपने वाली आये गी उस के साथ मौत अपनी तमाम आफ़तों को लिये हुये आये गी। एक सहाबी ने कहा कि मैं अपना कुल समय हमेशा आप पर दरूद पढ़ने में गुज़ारूँ तब भी आये गी? आप ने फ़रमायाः फिर तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें दुनिया और आख़िरत के तमाम रन्ज व ग़म से बचा ले गा। तिर्मिज़ी शरीफ़ की एक रिवायत में है कि दो तिहाई रात गुज़रने के बाद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम खड़े होते और फ़रमातेः लोगो! अल्लाह को याद करो, क्योंकि कपकपाने वाली आ रही है और उस के पीछे मौत भी अपने साथ तमाम आफ़तों को लिये हुये चली आ रही है। उस दिन बहुत से दिल डर रहे हों गे, ऐसे लोगों की निगाहें ज़िल्लत और हिक़ारत के साथ पस्त हों गी, क्योंकि वह अपने पापों के साथ अल्लाह के अ़ज़ाब को देख चुके हैं। मुश्रिक लोग तो आज अपनी इस ज़िन्दगी को रूस्वाई और बुराई के साथ अपनी आँखों से देख लें गे। (इब्ने कसीर)

४. यह अन्तिम सूर हो गा जिस के फूंकने के साथ ही तमाम लोग ज़मीन के ऊपर आ जायें गे। 'साहिरा' ज़मीन को कहते हैं और साफ़ चटियल मैदान को भी। लोग जिस ज़मीन पर जमा हों गे वह सफ़ेद हो गी और बिल्कुल साफ़-चिकनी होगी, जैसे मैदे की रोटी। उस में न तो मोड़-तोड़ हो गा और न ऊबड़-खाबड़। वह बिल्कुल एक नई ही ज़मीन हो गी जिस पर न कोई गुनाह का काम हुआ हो गा और न कोई पाप। (इब्ने कसीर)

५. हज़रत मूसा को उस के रब ने आवाज़ दी उस समय वह तुवा नामी एक पाक मैदान में थे। अल्लाह ने फ़रमायाः ऐ मूसा! फ़िरऔ़न ने सरकशी इख़्तियार कर रखी है, तुम उस के पास जा कर मेरा यह सन्देश पहुंचा दो कि क्या तू इस बात को पसन्द करता है कि मेरी बात मान ले और नेकी और पाकी की राह चले? अगर तू मेरी बात मान लेगा तो सलामती के साथ पाकी हासिल कर लेगा। मैं तुझे अल्लाह की ज़िबादत के वह तरीक़े बतलाऊँ गा जिस से तेरा दिल नर्म पड़ जाये गा और उस में ईमान की रोशनी पैदा हो गी। चुनान्चे हज़रत मूसा अ़लै० ने फ़िरऔ़न के पास पहुंच कर उस को अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाया और अपने सच्चे नबी होने के चमत्कार भी दिखाये, लेकिन वह बराबर ही इन्कार करता और झुठलाता रहा। चूंकि दिल में कुफ़्र जड़ पकड़ चुका था इस लिये हर समय इन्कार

ही करता रहा और हक़ स्पष्ट हो जाने के बाद भी ईमान व यक़ीन नसीब न हुआ। यह और बात है कि दिल से जानता था कि यह सच्चे नबी हैं और उन की दावत और सन्देश हक़ है। दिल के यक़ीन के साथ अ़मल करने का नाम ही ईमान है, यानी यह कि हक़ को हक़ स्वीकार कर के उस के अनुसार अ़मल करे और अल्लाह और रसूल की आज्ञापालन करे। (मुहम्मदी)

६. 'आख़िरत' और 'ऊला' से मुराद दुनिया और आख़िरत है। कुछ उ़लमा का कहना है कि इस से मुराद उस के दोनों क़ौल हैं। यानी उस का यह कहना कि मेरे ज़िल्म में मेरे अ़लावा तुम्हारा कोई खुदा नही है, फिर यह कहना कि तुम्हारा सब से बड़ा रब मैं ही हूँ। कुछ लोगों का कहना है कि इस से मुराद कुफ़्र और नाफ़र्मानी है। लेकिन सहीह क़ौल पहला ही है और इस में कोई संदेह नही कि इस में उन लोगों के लिये नसीहत है जो नसीहत हासिल करें और बुरे आमाल से बाज़ आ जायें। (इब्ने कसीर)

فَسَوّٰىهَا ﴿٢٨﴾ وَاَغْطَشَ لَيْلَهَا وَاَخْرَجَ ضُحٰىهَا ﴿٢٩﴾ وَالْاَرْضَ بَعْدَ
ذٰلِكَ دَحٰىهَا ﴿٣٠﴾ اَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعٰىهَا ﴿٣١﴾ وَالْجِبَالَ
اَرْسٰىهَا ﴿٣٢﴾ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ﴿٣٣﴾ فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ
الْكُبْرٰى ﴿٣٤﴾ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى ﴿٣٥﴾ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ
لِمَنْ يَّرٰى ﴿٣٦﴾ فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ﴿٣٧﴾ وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾ فَاِنَّ
الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿٣٩﴾ وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى
النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ﴿٤٠﴾ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿٤١﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ
عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ﴿٤٢﴾ فِيْمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰىهَا ﴿٤٣﴾
اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا ﴿٤٤﴾ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰىهَا ﴿٤٥﴾
كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰىهَا ﴿٤٦﴾

२९. उस के नीचे रात को सियाह बनाया और उस के नीचे रोशनी पैदा कर दी ३०. (तो) इस के बाद ज़मीन को (मौजूदा सूरत में) बिछा दिया[७]। ३१. उस (के चश्मे की जगह से उस) का पानी निकाला और चारा पैदा किया ३२. और पहाड़ गाड़ दिये ३३. यह सब तुम्हारे गुज़ारे और तुम्हारे चौपायों के लिये किया ३४. जब बड़ी मुसीबत आ जाये गी ३५. जिस दिन इन्सान अपनी की हुयी कोशिश को याद करे गा ३६. और दोज़ख़ देखने वाले के सामने की जाये गी[८] ३७+३८+३९. जिस ने सरकशी की और आख़िरत पर दुनिया को तर्जीह दी थी, तो ऐसे लोगों के लिये जहन्नम ही ठिकाना हो गा ४०+४१. और जो कोई अल्लाह के मुक़ाम से डरा हो गा और जिस ने अपने नफ़्स को नाजायज़ ख़ाहिशों से रोका होगा तो उस का ठिकाना जन्नत हो गा ४२. (ऐ नबी!) तुझ से क़ियामत की घड़ी के बारे में पूछते हैं कि वह कब ज़ाहिर हो गी? ४३. (उन को यह सोचना चाहिये कि) उस के संबन्ध में तेरा क्या फ़र्ज़ है? ४४. उस का इन्तिहाई ज़िल्म अल्लाह ही को है ४५. (तेरा मर्तबा इतना है कि) जो उस से डरे तू उसे समझा दे ४६. (आज तो यह प्रश्न करते हैं) मगर जिस दिन उस को देखें गे तो ऐसे हो जायें गे कि गोया वह दुनिया में दिन का अन्तिम व़क्त रहे हों गे या नाश्ता का वक़्त[८]।

....

७. सूरः हामीम् सज्दा में गुज़र चुका है कि ज़मीन की पैदाइश, आकाश से पूर्व हुयी है। लेकिन उस की बर्कतें (फ़ाइदे) आसमानों की पैदाइश के बाद ज़ाहिर हुयी हैं, जिन का बयान यहाँ हो रहा है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास और बहुत से

➲ उलमा का यही कहना है। इमाम इब्ने जरीर तबरी भी इसी को पसन्द फ़रमाते हैं। और पहाड़ों को मज़बूती से गाड़ दिया। मुस्नद अहमद की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब अल्लाह ने ज़मीन को पैदा किया तो वह हिलने लगी इस लिये पहाड़ों को पैदा कर के ज़मीन पर गाड़ दिया, जिस से उस का हिल्ना-डोलना बन्द हो गया। फ़रिश्तों को इस पर बड़ा आश्चर्य हुआ और पूछा कि मेरे मौला! तेरी मख़्लूक़ में पहाड़ों से भी ज़्यादा कोई सख़्त चीज़ है? अल्लाह ने फ़रमाया: हाँ, लोहा इस से भी अधिक सख़्त है। फ़रिश्तों ने फिर पूछा कि इस से भी सख़्त कोई चीज़ है? फ़रमाया: आग। फिर पूछा कि इस से भी सख़्त और कोई चीज़ है? फ़रमाया: पानी। फिर पूछा कि इस से भी सख़्त कोई चीज़? फ़रमाया: हवा। फिर पूछा इस से भी सख़्त और कोई चीज़? फ़रमाया: इब्ने आदम है कि अपने दायें हाथ से ख़र्च करता है और उस की ख़बर उस के बायें हाथ को भी नही होती (इब्ने कसीर) इस से मुराद रिया, नुमूद से बचना और अल्लाह की रज़ामन्दी और ख़ुशी के लिये ख़ैरात करना है। न कि दे कर एहसान जतलाना और नाम कमाना। यही सदक़ा और ख़ैरात अल्लाह के नज़दीक मक़बूल है।

८. इस आयत का तर्जुमा शैख़ सादी रह० ने अपनी फ़ार्सी कविता में यूँ किया है जिस का उर्दू में तर्जुमा यह है: "मैंने एक बुद्धिमान से दुनिया के बारे में पूछा तो उस ने बतलाया कि यह दुनिया सपना है, या आँधी का झोंका है, या केवल एक अफ़साना (बिहक़ीक़त चीज)है"।

सूर: अ़-ब-स- (80)

सूर: अ़-ब-स मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ४२ आयतें और एक रुकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१+२. (रसूल ने एक)नाबीना {नेत्रहीन} के आने से त्योरी चढ़ाई और मुँह फेर लिया[1] ३. तुम्हें क्या ख़बर शायद वह पाक हो जाता ४. या नसीहत पा जाता और वह नसीहत उसे लाभ देती[2] ५. जो शख़्स बेपरवाह है ६. तू उस के पीछे पड़ता है ७. हालाँकि तुझ पर गुनाह नही कि वह पाक न हो ८. और जो तेरे पास कोशिश करता हुआ आता है ९+१०. और वह डरता भी है तो तू उस से बेरूख़ी करता है ११. ऐसा हर्गिज़ न चाहिये, वास्तव में यह आयतें नसीहत हैं १२. जो चाहे इस को याद कर ले १३. (यह क़ुरआन नबिय्यों के) इ़ज़्ज़त वाले सहीफ़ों में से है[3] १४+१५+१६. बड़े बुलन्द मर्तबा, इ़ज़्ज़त दार, नेकोकार लिखने वालों के हाथों में रहता है[4] ➲

وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًا ﴿٢٩﴾ وَّحَدَآئِقَ غُلْبًا ﴿٣٠﴾ وَّفَاكِهَةً وَّاَبًّا ﴿٣١﴾
مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ﴿٣٢﴾ فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ﴿٣٣﴾
يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ ﴿٣٤﴾ وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ ﴿٣٥﴾ وَصَاحِبَتِهٖ

➲१७. इन्सान को अल्लाह की मार कैसा ना शुक्रा है १८. (नही देखता कि) अल्लाह ने उस को किस चीज़ से पैदा किया १९. मनी (वीर्य) की बूँद से पैदा किया, अल्लाह ने उस को बनाया, फिर उस का अन्दाज़ा बाँध दिया २०. फिर उस के लिये रास्ता आसान कर दिया २१. फिर उस को मार कर क़ब्र में दाख़िल कर देता है २२. फिर जब अल्लाह चाहे गा उस को उठा ले गा २३. इन्सान ने अपना फर्ज़ अदा नही किया २४. इन्सान अपने खाने की तरफ़ नज़र करे (यह गोल-गोल रोटी कहाँ से आई?) २५. हम ने ऊपर से पानी डाला २६. फिर उस के साथ ज़मीन को फाड़ा २७. फिर उस में वह दाने पैदा किये (जो यह नाशुक्रा इन्सान इस समय खा रहा है) २८+२९. और अंगूर, सबज़ियाँ और ज़ैतून और खजूरें ३०. और घने बाग़ ३१. और (तरह-तरह के) मेवे और चारा पैदा किया ३२. तुम्हारे गुज़ारा के लिये और तुम्हारे चौपायों के गुज़ारा के लिये ३३. फिर जब वह डरावनी आवाज़ आ जाये गी ३४. जिस रोज़ हर आदमी अपने भाई से ३५. अपनी माँ से और अपने बाप से ३६. अपनी बीवी से और अपने बेटों से भाग जाये गा

....

१. शाने नुज़ूल:- अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम रज़ि० (एक नेत्रहीन सहाबी) एक मर्तबा ऐसे समय नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मज्लिस में आ पहुंचे जब कुरैश के बड़े-बड़े नेता आप के पास बैठ कर दीनी बातें कर रहे थे और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन को समझाने-बुझाने का भरसक प्रयत्न कर रहे थे। सहाबी चूंकि नाबीना थे इस लिये मज्लिस के रंग व रूख़ को न भाँप सके और आप को बार-बार अपनी ओर मुतवज्जह करने लगे। मगर नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन की तरफ़ कोई ध्यान न दिया। सहाबी रज़ि० चूंकि अल्लाह के मुक़र्रब बन्दे थे इस लिये उन के इस क़िस्सा में यह आयत नाज़िल हुयी। (सनाई/ख़ज़िन)

शीआ़ फ़िक़्ह के अनुसार उन की तफ़सीर "साफ़ी" में इस प्रकार तर्जुमा किया गया है "एक शख़्स ने (उस से) त्योरी चढ़ाई और मुंह फेर लिया कि नबी के पास एक अन्धा आ गया" (तर्जुमा मौलवी मक़्बूल अहमद) फिर इस स्थान पर हाशिया में यह लिखा है "त्योरी चढ़ाने वाला उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान था" (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) अगर ग़ौर किया जाये तो यह तर्जुमा ही सहीह नही है। क्योंकि इस में दो सर्वनाम (ज़मीरें) तो उ़स्मान की तरफ़ लौटती हैं लेकिन तीसरी ज़मीर (सर्वनाम) "जाअहू" यह रसूल की तरफ़ लौटती है, और यह अ़रबी भाषा में बहुत बुरा समझा जाता है (सनाई) शीआ़ अनुवादक का हज़रत उ़स्मान रज़ि० पर मुंह फेरने का आरोप लगाना, बिल्कुल सफेद झूट है जो केवल दुश्मनी पर आधारित है, वर्ना तर्जुमा से और वाक़िआ़ (घटना) से हज़रत उ़स्मान रज़ि० का कोई भी तअ़ल्लुक़ नहीं।

२. हम जानते हैं कि ऐ रसूल! (इस मुंह फेरने में) तेरी निय्यत नेक थी; मगर हक़ीक़त का तुझे क्या इ़ल्म, शायद वह नाबीना पूछ कर अ़मल कर के गुनाहों की नजासत से पाक हो जाता, इसलिये आइन्दा को यह ख़याल रखा कर कि ....(सनाई)

३. "या पहले के सहीफ़ों में यानी इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में से है" (सूरः आला) इसी आयत की तरफ़ यहाँ इशारा है।

४. नेकोकारों के हाथों में रहता है' फिर उस को किसी दुनियादार इ़ज़्ज़तदार की क्या हाजत? बल्कि दुनिया वालों को इ़ज़्ज़त हासिल करने के लिये उस की ज़रूरत है। बड़े दुःख की बात है कि दुनिया में ऐसे इन्सान भी हैं जो➲

➲कुरआन जैसी नेमत की क़द्र नही करते। ऐसे इन्सानों पर अल्लाह की मार हो कि वह बड़े नाशुक्रे हैं जो अल्लाह की मेहरबानी की क़द्र नही करते हैं (सनाई)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि इन्सान पर लानत हो, यह बड़ा नाशुक्रा है, बिना जाने-बूझे झट से अल्लाह की बातों का इन्कार कर देता है। 'अक़्-ब-रः' का मतलब यह है कि अल्लाह ने अब उसे क़ब्र वाला बना दिया है, फिर जब चाहे गा उसे पुनः जीवित करे गा। इस ज़िन्दगी का दूसरा नाम "नुशूर" और "ब-अ़स्" भी है इब्ने अबी हातिम की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: इन्सान के तमाम बदन को मिट्टी खा जाती है मगर रीढ़ की हड्डी को नही खाती। लोगों ने पूछा कि वह क्या है? आप ने फ़रमाया: वह एक राई के दाने के बराबर होती है, उसी से फिर तुम्हारी दोबारा पैदाइश होगी। बुख़ारी, मुस्लिम की एक रिवायत में है कि इन्सान मरने के बाद गल-सड़ जाता है मगर रीढ़ की हड्डी नही सड़ती, इसलिये कि उसी से पैदा किया गया है और उसी से फिर पैदा किया जाये गा। क़ब्र, ज़मीन का पेट और ज़मीन समस्त मख़्लूक़ की माँ है। तमाम मख़्लूक़ पैदा होने के बाद फिर मरने के बाद क़ब्रों में चली जाये गी, उस वक़्त दुनिया का सिलसिला ख़त्म हो जाये गा (इब्ने कसीर)

وَبَنِيهِ ۝٣٦ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ۝٣٧
وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ۝٣٨ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ۝٣٩
وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۝٤٠ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ۝٤١
أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ۝٤٢

३७. हर एक इन्सान को अपनी फ़िक्र हो गी जो उस को (दूसरों से) बेख़बर कर देगी। ३८+३९. उस रोज़ कई चेहरे तरोताज़ा, चमकते, हंसते और प्रसन्न मुद्रा में हों गे ४०+४१. और कितने चेहरों पर मिट्टी पड़ी हो गी, जिन पर सियाही (कालक) छाई होगी ४२. (सच तो यह है कि) यही लोग काफ़िर और बदकार हों गे

सूरः तक्वीर-(81)

(٨١) سُورَةُ التَّكْوِيرِ مَكِّيَّةٌ (٧)
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝١ وَإِذَا النُّجُومُ انكَدَرَتْ ۝٢ وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝٣ وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝٤ وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۝٥ وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝٦ وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۝٧ وَإِذَا الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ ۝٨ بِأَيِّ ذَنبٍ قُتِلَتْ ۝٩ وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝١٠ وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۝١١ وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ۝١٢ وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ۝١٣ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ۝١٤ فَلَا أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ۝١٥ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ۝١٦ وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ۝١٧

सूरः तक्वीर मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[1]। इस में २९ आयतें और एक रूकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. जब सूरज लपेट दिया जाये गा २. और जब सितारे बेनूर हो जायें गे ३. और पहाड़ों को चलाया जाये गा[2] ४ और जिस समय गाभिन ऊंटनियाँ बेकार छोड़ी जायें गी[3] ५. और जब जंगली जानवर जमा किये जायें गे ६. और जब दरिया गर्म किये जायें गे ७. और जब जानें मिला दी जायें गी[4] ८+९. जब जीवित गाड़ी गई लड़की के बारे में प्रश्न हो गा कि वह किस जुर्म में➲

मारी गयी थी"। १०. और जब आमालनामे (कर्म पत्र) सब के सामने फैला दिये जायें गे ११. और जब आसमान की खाल खींची जाये गी १२. और जब जहन्नम तेज़ की जाये गी १३. और जिस समय बहिश्त निकट की जाये गी १४. तो हर व्यक्ति ने जो-जो काम हाज़िर किये हों गे जान ले गा। १५+१६. पस हमें क़सम है छुप-छुप कर चलने वाले सय्यारों (नक्षत्रों) की' १७. और क़सम है रात की जब यह खूब तारीक हो जाती है।

....

१. सूरः तक्वीर मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस सूरः में सब से पहले तो क़ियामत के डरावने हालात और वाक़िआत बयान किये गये हैं। जिन के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "मुझे इस सूरः ने बूढ़ा कर दिया है"। एक दूसरी हदीस में फ़रमायाः जिस को क़ियामत के हालात अपनी आँखों से देखने हों तो उस को चाहिये कि इस सूरः की तिलावत करे।

२. जिस रोज़ यह होना है उस के दो हिस्से हैं। पहला हिस्सा फ़ना का है, जब सूरज का सारा सिस्टम गड़बड़ा जाये गा, ज़मीन को बिल्कुल साफ़-चिकना कर दिया जाये गा,गाभिन (गर्भवती) ऊँटनियाँ आज़ाद छोड़ दी जायें गी, वहशी (जंगली) जानवर मारे भय के एक स्थान पर एकत्र हो जायें गे.......... यह वह घटनायें हैं जो क़ियामत से पहले हों गी। दूसरा हिस्सा वह है जब हर प्रकार की जानें अपनी-अपनी...... के साथ मिला दी जायें गी, जब आमाल नामे (परिणाम पत्र) सब के सामने फैला दिये जायें गे ताकि सब लोग स्वयँ ही पढ़ लें......... यह सब घटनायें जब हश्र के मैदान में हों गी तो हर इन्सान की नेकी और बदी जो उस ने की है उस के सामने आ जाये गी। (सनाई)

३. हमारे राज्य पंजाब के नबुव्वत के दावेदार मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी ने इस आयत को अपने हक़ में लिया है। वह कहते हैं कि इस आयत का मतलब यह है कि ऊँटनियों पर सवारी बन्द कर दी जाये गी तो मसीह मौऊद आये गा। मिर्ज़ा ने रेल की वजह से ऊँटों की सवारी को तर्क कर देने को मसीह के आने का चिन्ह बताया है। जो लोग उन की इस दलील को नही मानते उन पर बड़ी नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया है, तफ़्सील के लिये देखें इश्तिहार "तिर्याकुल् कुलूब"-८। हम मिर्ज़ा को कुरआन ही से उत्तर देते हैं। इस सूरः में १२ मर्तबा "इज़ा" (जब) का शब्द आया है और आगे आयत न० १४ उस का जवाब है। यानी जब ऊपर की सारी घटनायें घटें गी तब हर आदमी ने जो-जो आमाल हाज़िर किये हों गे, जान लेगा। अगर इस से मिर्ज़ा की मसीहिय्यत मुराद होती तो "इज़ा" का जवाब यह होना चाहिये था "जब यह घटनायें घटें गी तब मसीह मौऊद आये गा"। इसलिये मिर्ज़ा का दावा बिल्कुल बातिल है और वह नबुव्वत के दावे में झूठा और मक्कार है। (सनाई)

४. शाने नुज़ूलः- अ़रब मे एक सब से घिनावनी परंपरा यह थी कि वह लड़कियों से बड़ी नफ़रत करते थे और मौक़ा हाथ लगते ही ज़िन्दा गाड़ देते थे। कुरआन मजीद चूंकि हर प्रकार की बुराइयों को मिटाने के लिये आया था, इस लिये इस बुरी रस्म की इस्लाह फ़रमाने को भी यह आयत नाज़िल हुयी (सनाई)

५. क़ैस बिन आ़सिम रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा कि जाहिलिय्यत के समयकाल में मैं ने अपनी कई बेटियों को जीवित ही ज़मीन में गाड़ दिया है, अब मैं क्या करूँ? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः हर एक के बदले में एक गुलाम आज़ाद करो, अगर गुलाम न हों तो हर एक के बदले में एक ऊँट अल्लाह के नाम पर ज़ब्ह करो (अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़, इब्ने कसीर वग़ैरह)

६. कई सय्यारों (जैसे, ज़ुहल, मुश्तरी, ज़हरा, उतारद) की चाल इस ढंग की है कि कभी पश्चिम से पूरब को चलती हैं और कभी ठिठुक का उलटे चलती हैं और कभी सूरज के पास आ कर बहुत दिनों तक ग़ाइब हो जाती हैं। आयत न० १८. की तफ़्सीर में हज़रत शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रह० लिखते हैं कि गोया सूरज को दरिया में तैरने वाली मछली से तश्बीह दी है और निकलने से पहले उस के नूर के बिखरने को मछली के दुम से। जैसे मछली दरिया में आँखों

से पोशीदा गुज़रती है और उस के सांस लेने से पानी उड़ता और फैलता है, इसी प्रकार सूरज की हालत सूरज निकलने से पहले और रोशनी के फैलने से पहले की तरह है। कुछ उलमा का कहना है कि सुब्ह की दुम यह कनाया ओर इशारा है नसीम हवा से जो सुब्ह के ज़ाहिर होने के समय बहार के मौसम में चलती है।

नोटः- इन क़समों की मुनासिबत आइन्दा मज़मून से यह है कि इन सितारों का चलना, ठहरना, लौटना, छुप जाना, यह सब एक नमूना है जैसे अगले नबिय्यों पर बार-बार वह्यि लाने और एक लंबे समय तक उस के निशान बाक़ी रहने और सिलसिला टूट कर छुप जाने और ग़ाइब हो जाने की तरह। 'रात का आना' उस तारीक ज़माना का नमूना है जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पैदाइश से पूर्व दुनिया पर गुज़रा। 'सुब्ह का सांस लेना' नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इस दुनिया में तश्रीफ़ लाना और कुरआन का नाज़िल होना है। अगले पैग़ंबरों के नूर की मिसाल सितारों की तरह और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के नूर की मिसाल सूरज की रोशनी की तरह थी।

कुछ उलमा का कहना है कि सितारों का सीधा चलना, लौटना और छुप जाना, फ़रिश्तों के आने, वापस जाने और आ़लमे-मलकूत (आसमानों पर विशेष स्थान) में जा छुपने की तरह हैं। और रात का गुज़रना, सुब्ह का आना, कुरआन के आने से तारीकी और कुफ़्र के दूर हो जाने की तरह है। - अगली आयत में हज़रत जिब्रील अ़लै० की विशेष्तायें बयान हुयी हैं। मतलब यह है कि कुरआन करीम जो अल्लाह के पास हम तक पहुंचा है इस के पहुँचने में दो वास्ते है (१) वह्यि लाने वाले फ़रिश्ते जिब्रील का (२) जिन पर वह्यि नाज़िल हुयी है यानी नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का। इन दोनों वास्तों के मालूभ हो जाने के बाद किसी को भी कुरआन के सच्चे और अल्लाह की तरफ़ से भेजे जाने पर शुब्हा नही हो सकता। किसी रिवायत के सहीह होने के लिये शर्त यह है कि उस का रिवायत करने वाला सब से ज़्यादा सच्चा, आ़दिल, हाफ़िज़ और अमानतदार हो। जिस से रिवायत करे उस के पास अ़िज़्ज़त और एहतराम से रहता हो। बड़े-बड़े मुहद्दिसीन उस की अमानत, सच्चाई और ईमानदारी को तस्लीम करते हों- और यह तमाम सिफ़तें हज़रत जिब्रील के अन्दर मौजूद हैं। अब आगे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का हाल सुन लीजिये। नबी बनाये जाने से पहले चालीस वर्ष तक तुम्हारे साथ रहे। इस मुद्दत में तुम ने उन के हालात का जाइज़ा लिया। हमेशा उन को सच्चा, अमानतदार, अक़्लमन्द, दाना-बीना और होशियार जाना। कभी किसी ने भी भूल कर झूठा या बेईमान होने का इल्ज़ाम न लगाया। तो अब बिलावजह उसे झूठा और दीवाना क्यों कहते हो। क्या यह वही तुम्हारा साथी नही है जिस के रत्ती-रत्ती भर के हालात का तुम अ़िल्म रखते हो? फिर उस को दीवाना और पागल कहने वाला, खुद पागल और दीवाना नही तो और क्या है? (मुवज़्ज़िहुल् फुर्क़ान)

१८. और क़सम है दिन की जब वह ख़ूब रोशन होता है १९. बेशक यह करीम रसूल का सन्देश है। २०. वह क़ुव्वत और ताक़त वाला है, अल्लाह मालिकुल्-मुल्क के पास बड़ी अ़िज़्ज़त वाला है २१. रईस व मोतबर अमीन (अमानतदार) भी है २२. यह तुम्हारे साहब (मुहम्मद) मजनून नही हैं। २३ यह तो उस (जिब्रील) को रोशन कनारे पर देख चुका है। २४. और वह ग़ैब के अ़िल्म पर बख़ील नही (जो उसे बताया जाता है) २५. और न वह शैतान मर्दूद का क़ौल है। २६. फिर तुम लोग कहाँ चले जाते हो

وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿١٩﴾ ذِي
قُوَّةٍ عِندَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ﴿٢٠﴾ مُّطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ﴿٢١﴾
وَمَا صَاحِبُكُم بِمَجْنُونٍ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأُفُقِ الْمُبِينِ ﴿٢٣﴾
وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ﴿٢٤﴾ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ
رَّجِيمٍ ﴿٢٥﴾ فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ﴿٢٦﴾ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ﴿٢٧﴾
لِمَن شَاءَ مِنكُمْ أَن يَسْتَقِيمَ ﴿٢٨﴾ وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا
أَن يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٩﴾

२७. यह तो दुनिया के सब लोगों के लिये नसीहत है। २८. (मगर हाँ, उस के लिये) जो सीधी राह पर सीधा चलना चाहे। २९. और तुम चाह कर भी कामियाबी नही हासिल कर सकते, मगर जिस समय अल्लाह ही (उस काम को) चाहे।

सूरः इन्फ़ितार—(82)

सूरः इन्फ़ितार (फटना) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में १९ आयतें और एक रुकूअ़ है।
शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।
१. जब आकाश फट जाये गा २. और सितारे बेनिज़ाम हो जायें गे ३. और जब दरिया चीर दिये जायें गे[1] (उन का पानी इधर-उधर फैलने दिया जाये गा) ४. और जब क़ब्रों वाले जमा किये जायें गे ५. तो हर नफ़्स जो (काम) पहले कर चुका हो गा और पीछे छोड़ गया हो गा, सब जान लेगा। ६. ऐ इन्सान! तुझे अपने करीम रब से किस चीज़ ने हटा रखा है ७. जिस ने तुझे पैदा किया फिर दुरूस्त किया, फिर तुझे मोतदिल बनाया ८. जिस शक्ल-सूरत में चाहा तुझे जोड़-गाँठ दिया

....
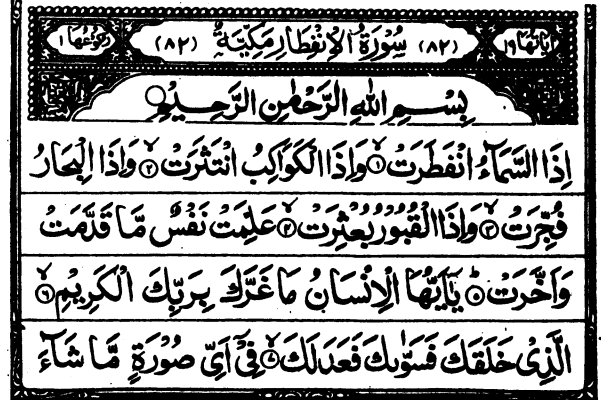
१. 'नस्र' यह विलोम है 'नज़्म' का। 'नस्र' का अर्थ है "बिखरा होना" और 'नज़्म' का अर्थ है "जुड़ा, मिला होना"।

ركبك ۝ كلا بل تكذبون بالدين ۝ وان عليكم
لحفظين ۝ كراما كاتبين ۝ يعلمون ما تفعلون ۝
ان الابرار لفي نعيم ۝ وان الفجار لفي جحيم ۝
يصلونها يوم الدين ۝ وما هم عنها بغائبين ۝ وما
ادرىك ما يوم الدين ۝ ثم ما ادرىك ما يوم الدين ۝
يوم لا تملك نفس لنفس شيئا والامر يومئذ لله ۝

९. हर्गिज़ नही, बल्कि तुम लोग जज़ा व सज़ा के दिन को झुठलाते हो १०+११. हालाँकि मोतबर लिखने वाले तुम पर निग्राँ हैं १२. जो कुछ तुम लोग करते हो वह जानते हैं[2] १३. नेक लोग नेमतों में हों गे १४. और बदकार लोग जहन्नम में हों गे १५. फ़ैसले के दिन उस में दाख़िल हों गे १६. और वह उस से दूर न हो सकें गे १७. तुम्हें क्या मालूम कि वह फ़ैसले का दिन क्या है १८. फिर तुम्हें क्या मालूम कि वह फ़ैसले का दिन क्या है ? १९. (वह ऐसा दिन है कि) उस दिन कोई शख़्स किसी दूसरे के लिये कुछ भी इख़्तियार न रखे गा, और इख़्तियार उस रोज़ केवल अल्लाह ही को हो गा।

....
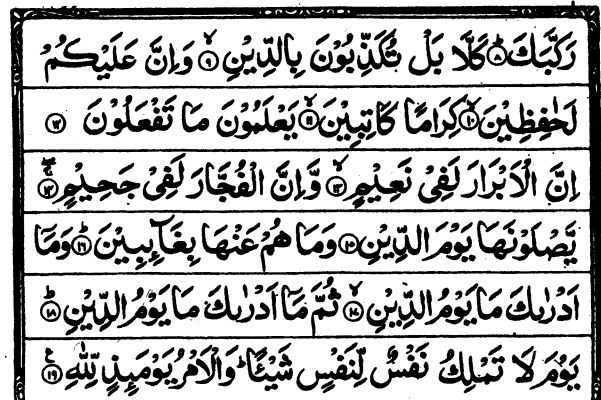
२. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अल्लाह के यह बुज़ुर्ग फ़रिश्ते तुम से जनाबत (संभोग

➲की नापाकी) की हालत को छोड़ कर किसी भी समय अलग नही होते। तुम उन का एहतराम करो और स्नान के समय भी पर्दा कर लिया करो। एक हदीस शरीफ़ में है कि जब फ़रिश्ते, बन्दे का रोज़ का आमालनामा (किया-धरा) अल्लाह के सामने पेश करते हैं तो अगर आरंभ और अन्त में इस्तिग़फ़ार हो तो अल्लाह फ़रमाता है कि मैं ने अपने उस ग़ुलाम के उस के दर्मियान के सब गुनाह बख़्श दिये (इब्ने कसीर)

सूरः ततफ़ीफ़ – (83)

सूरः ततफ़ीफ़ मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ३६ आयतें और एक रूकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. उन कम देने वालों के लिये अफ़सोस है[१] २. जो लोगों से लेते समय तो पूरा-पूरा (बल्कि दाँव चले तो ज़्यादा भी) लेते हैं ३. और जब नाप या वजन से देते हैं तो कम देते हैं ४+५. क्या यह लोग जानते नही कि वह एक बड़े दिन में (जो हिसाब का दिन है) उठाये जायें गे? ६ जिस दिन सब लोग रब्बुल्-आ़लमीन के सामने खड़े हों गे[२] ७. बदकारों के (बुरे) आमाल "सिज्जीन" में हैं।

....
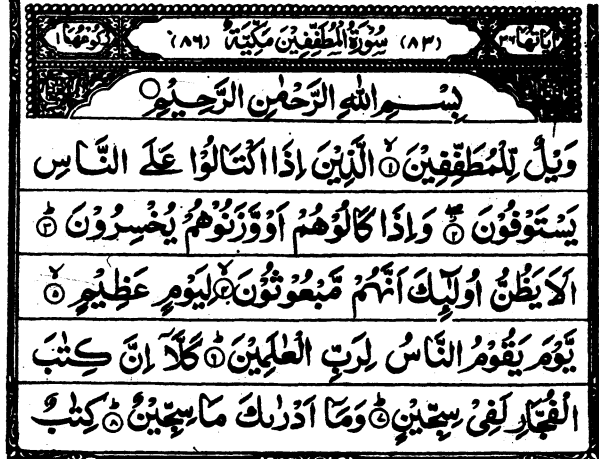
१.शाने नुज़ूल:- और इब्ने माजा में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब मदीना में तशरीफ़ लाये उस समय मदीना वाले नाप-तौल में अच्छे नही थे। जब यह आयत नाज़िल हुयी तो उन्हों ने अपने नाप-तौल दुरूस्त कर लिये। अन्य रिवायतों के अनुसार मदीना में एक शख़्स अबू जुहैना नामी एक दुकानदार दो प्रकार के माप (बाँट) रखता था। एक से माल लेता और एक से देता था, इस के बारे में यह आयत नाज़िल हुयी। हदीस शरीफ़ में है कि जो मुआ़हिदा को तोड़ें गे अल्लाह उन पर दुश्मन को ग़ालिब कर देगा, और जो लोग नाप-तोल में कमी-बेशी करें गे उन पर सूखाकाल आये गा (वहीदी)

२. 'जिस दिन अल्लाह के सामने खड़े हों गे तो कानों तक पसीने में डूबे हों गे। एक रिवायत में है कि लोगो! उस दिन तुम्हारा क्या हाल गा जब अल्लाह तुम को इस तरह इकट्ठा करे गा जैसे तीर तरकश में जमा किये जाते हैं। वह पचास हज़ार वर्ष तक तुम्हारी तरफ़ देखे गा भी नही। लेकिन मोमिनों पर यह दिन आसानी से गुज़र जाये गा। हज़रत इब्ने मस्ऊ़द रज़ि० फ़रमाते हैं कि चालीस वर्ष तक लोग बराबर खड़े रहें गे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि० ने जब यह सूरः पढ़ी तो मारे डर के ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे। मुस्नद अहमद की एक रिवायत में है कि उस दिन अल्लाह की अ़ज़मत और प्रताप के सामने सब खड़े काँप रहे हों गे। दूसरी हदीस में है कि उस दिन बन्दों से सूरज इतना क़रीब हो जाये गा कि एक या दो नेज़े के बराबर ऊंचा होगा और सख़्त तेज़ हो गा। हर शख़्स अपने-अपने कर्मपत्र के अनुसार पसीने में डूबा हो गा।

'सिज्जीन' यह निहायत सख़्त मुसीबत और परेशानी का स्थान है और यह स्थान सातों ज़मीन के नीचे है। 'कल्ला बल्‌रा-न' की तफ़्सीर में तिर्मिज़ी और इब्ने माजा में रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम➲

ने फ़रमाया: बन्दा जब गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक काला बिन्दु (नुक़्ता) बन जाता है, अगर तौबा कर लेता है तो उस की सफ़ाई हो जाती है और अगर गुनाह करता है तो वह बिन्दु और फैल कर बड़ा हो जाता है। इस में कोई सन्देह नही कि गुनाह पर गुनाह करते रहने से दिल अन्धा और मुर्दा हो जाता है। ऐसे लोग हश्र के दिन अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हो कर अल्लाह को न देख पायें गे, जब कि अहले ईमान अल्लाह को देख सकें गे।

'ञ़िल्लीयीन' की तफ़्सीर में हज़रत इब्ने अ़ब्बास से कअ़ब बिन अहबार का बयान नक़ल है कि जब मोमिन की रूह बदन से निकलती है तो फ़रिश्ते उस को आकाश पर ले ज़ाते हैं तो उस के लिये आकाश के पट खोल दिये जाते हैं और वहाँ के फ़रिश्ते उस का स्वागत करते हैं, यहाँ तक कि वह अर्श तक पहुंच जाती है। फिर अर्श के नीचे से एक किताब निकाली जाती है और उस पर लिख कर मुहर लगा दी जाती है जो उस की नजात पाने की अ़लामत है। 'ञ़िल्लीयीन' का शब्द "उ़लू" से बना है जिस का अर्थ है "बुलन्दी"। कोई वस्तु जितनी ऊंची और बुलन्द हो गी उसी क़दर बड़ी और कुशादा हो गी। इसी लिये उस की बड़ाई को ज़ाहिर करने के लिये फ़रमाया गया: तुम्हें उस की हक़ीक़त मालूम ही नहीं वह क्या है? फिर उस की ताकीद यूँ की गयी कि यह यक़ीनी चीज़ है जो किताब में लिखी जा चुकी है कि यह लोग ञ़िल्लीयीन में जायें गे, जिस के पास हर आसमान के फ़रिश्ते जाते हैं। इस का मतलब यह समझें कि यह एक किताब घर है, जिस में किसी का आमालनामा (कर्मपत्र) होना उस की नजात की पहचान है। (इब्ने कसीर)

مَّرْقُومٌ ﴿٩﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿١٠﴾ الَّذِينَ يُكَذِّبُونَ بِيَوْمِ
الدِّينِ ﴿١١﴾ وَمَا يُكَذِّبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ﴿١٢﴾ إِذَا تُتْلَىٰ
عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾ كَلَّا ۖ بَلْ ۜ رَانَ
عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾ كَلَّا إِنَّهُمْ عَن رَّبِّهِمْ
يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوبُونَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُو الْجَحِيمِ ﴿١٦﴾ ثُمَّ
يُقَالُ هَٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿١٧﴾ كَلَّا إِنَّ كِتَابَ
الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ﴿١٨﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا عِلِّيُّونَ ﴿١٩﴾ كِتَابٌ
مَّرْقُومٌ ﴿٢٠﴾ يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ﴿٢١﴾ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿٢٢﴾
عَلَى الْأَرَائِكِ يَنظُرُونَ ﴿٢٣﴾ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ
النَّعِيمِ ﴿٢٤﴾ يُسْقَوْنَ مِن رَّحِيقٍ مَّخْتُومٍ ﴿٢٥﴾ خِتَامُهُ مِسْكٌ ۚ وَفِي
ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ ﴿٢٦﴾ وَمِزَاجُهُ مِن تَسْنِيمٍ ﴿٢٧﴾
عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ﴿٢٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ
الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ ﴿٢٩﴾ وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ﴿٣٠﴾

८+९. और तुम्हें क्या मालूम कि सिज्जीन क्या है? वह एक (बहुत बड़ी) लिखी हुयी किताब है १०. उस दिन झुठलाने वालों के लिये अफ़सोस हो गा ११. जो (इस दुनिया में) बदले के दिन को नही मानते १२. और उस को अल्लाह के मुक़र्रर किये हुये हदों से गुज़र जाने वाले बदकार ही झुठलाते हैं १३. जब कभी उन पर हमारे हुक्म पढ़े जाते हैं तो वह कहते हैं कि यह तो पहले लोगों की कहानियाँ हैं १४. नही, बल्कि उन के दिलों पर उन के किये हुये कामों ने ज़ंग (मूर्चा) लगा दिया है १५. बेशक यह लोग उस दिन अपने रब से पर्दे में किये जायें गे (यानी ऐसों को अल्लाह की ज़ियारत नसीब न होगी) १६.फिर यह जहन्नम में दाख़िल हों गे १७. फिर उन से कहा जाये गा कि यह वही दिन है जिस को तुम लोग झुठलाया करते थे १८. बेशक नेक लोगों के आमालनामे "ञ़िल्लीयीन" में हैं १९. तुम्हें क्या मालूम कि ञ़िल्लीयीन क्या है? २०. वह (भी एक बड़ी) लिखी हुयी किताब है २१. जिस में अल्लाह के महबूब बन्दे आते रहते हैं (यानी वह भी एक किताबघर है) २२. नेक लोग बड़ी नेमतों में हों

गे २३. तख़्तों पर बैठे हुये ताकते हों गे २४. तू उन के चेहरों पर नेमतों की तरोताज़गी मालूम करेगा २५. उन को मुहरबन्द (ख़ालिस) अंगूर की शराब पिलाई जाये गी[3] २६. उस की मुहर कस्तूरी की हो गी। पस नजात चाहने वालों को चाहिये कि उस में रग़बत करें। २७. और उस की मिलावट तस्नीम के ख़ालिस पानी से हो गी २८. वह एक चश्मा हो गा जिस पर अल्लाह के महबूब बन्दे पानी पियें गे[4] २९. (उन के मुक़ाबले में) वह लोग जो बदकार हैं ईमानदारों से हंसी करते हैं (कहते हैं कि यह लोग मज़हबी पागल हैं) ३०. और जब उन के पास से गुज़रते हैं तो इशारे करते हैं[5]

....

३. 'रहीक़' जन्नत में एक प्रकार की शराब का नाम है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो मुसलमान किसी प्यासे मुसनमान को पानी पिलाये गा तो अल्लाह तआ़ला उसे "रहीक़े मख़्तूम" यानी जन्नत की मुह्र बन्द शराब पिलाये गा। और जो किसी भूखे मुसलमान को खाना खिलाये गा तो अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत के मेवे खिलाये गा। और जो कोई किसी नंगे मुसलमान भाई को कपड़ा पहनाये गा, अल्लाह तआ़ला उसे जन्नती हरे रेशम के जोड़े पहनाये गा (मुस्नद अहमद) 'तस्नीम' जन्नत की बेहतरीन शराब का नाम है जिस की एक नहर है जिस से साबिक़ लोग तो बराबर पिया करते हैं और दायें हाथ वाले अपनी शराब, रहीक़ में मिला कर पीते हैं। (इब्ने कसीर)

४. उस की मिठास और स्वाद यहाँ किसी की समझ में नही आ सकती। जन्नत में पीने के बाद ही उस का अनुमान लगाया जा सकता है। (सनाई)

५. इशारे इस बात को ले कर करते हैं कि देखो यहाँ यही लोग जन्नत के वारिस हैं। उन की हैसिय्यत और उन की सूरत देखिये, क्या कहते हैं। मसल मश्हूर है कि "ज़ात की छिपकली और शहतीरों से पकड़" यह इन ही लोगों पर फ़िट होती है। और यह लोग इशारे कर के मज़े लेते हैं, जैसे हंसी-मज़ाक करने वाले खुश होते हैं। और यह लोग जब अपने घरों को वापस जाते हैं तो बड़े खुश-खुश जाते हैं कि आज हम ने उन मज़हबी पागलों से ख़ूब मज़ाक़ किया। पस क़ियामत के दिन ईमानदार लोग भी काफ़िरों से हंसी करें गे और कहें गे कि क्यों जी? अल्लाह ने जो हम से वादे किये थे वह पूरे हुये या नही? देखो तो सही! हम किस बहार में हैं और तुम किस अ़ज़ाब में। (सनाई)

وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمُ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ۝ وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا
إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَالُّونَ ۝ وَمَا أُرْسِلُوا عَلَيْهِمْ حَافِظِينَ ۝ فَالْيَوْمَ
الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ۝ عَلَى الْأَرَائِكِ
يَنْظُرُونَ ۝ هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

३१. और जब अपने घर वालों की तरफ़ जाते हैं तो बड़े ख़ुश हो कर जाते हैं। ३२. और जब मुसलमानों को देखते हैं तो कहते हैं यह लोग भूले हुये हैं ३३. (हालाँकि यह कुफ़्फ़ार) उन (मुस्लिमों) पर ज़िम्मेदार बना कर नही भेजे गये। ३४. पस उस रोज़ ईमानदार लोग काफ़िरों पर हंसें गे ३५. (वह ईमानदार) बाग़ों में तख़्तों पर बैठे हों गे (और कहें गे कि क्यों जी!) ३६. इस्लाम के मुन्किरों को उन के किये हुये आमाल का बदला मिला? (या नही?)

सूरः इन्शिक़ाक़ :— (84)

سُوْرَةُ الْاِنْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ (٨٣) (٨٤) — اٰياتها ٢٥ — رُكُوعها ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ﴿١﴾ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٢﴾ وَاِذَا
الْاَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾ وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ﴿٤﴾ وَاَذِنَتْ
لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٥﴾ يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ
كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ﴿٦﴾ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ﴿٧﴾
فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ﴿٨﴾ وَّيَنْقَلِبُ اِلٰۤى اَهْلِهٖ
مَسْرُوْرًا ﴿٩﴾ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ﴿١٠﴾ فَسَوْفَ
يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ﴿١١﴾ وَّيَصْلٰى سَعِيْرًا ﴿١٢﴾ اِنَّهٗ كَانَ فِيْۤ اَهْلِهٖ

सूरः इनशिक़ाक़ मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में २५ आयात और एक रूकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. जब आसमान फट जायेगा[1] २. और अपने पर्वरदिगार का हुक्म सुनने को कान लगायेगा और वह उसी लायक़ किया गया है ३. और जब ज़मीन तान दी जायेगी ४. और उस में जो कुछ हो गा वह बाहर फेंक देगी और ख़ाली हो जायेगी ५. और अपने रब की तरफ़ कान लगायेगी और वह उसी लायक़ की गयी है ६. ऐ इन्सान! इस में शक नही कि तू अपने पर्वरदिगार की तरफ़ जा रहा है फिर उस से तू मिलेगा ७+८. (फिर वहाँ) जिस शख़्स को आमालनामा उस के दायें हाथ में मिलेगा उस का हिसाब सरल होगा[2] ९. और वह अपने घर वालों की तरफ़ ख़ुशी-ख़ुशी लौटेगा १०+११. और जिस शख़्स को पीठ के पीछे से किताब मिलेगी वह मौत माँगेगा १२. और (जहन्नम की) भड़कती आग में दाख़िल होगा १३. बेशक वह अपने घर वालों में बड़ा प्रसन्न था

....

१. मुअत्ता इमाम मालिक में रिवायत है कि हज़रत अबू हुरैरा ने लोगों को नमाज़ पढ़ाई और उस में सूरः इन्शिक़ाक़ की तिलावत फ़रमाई और सज्दा किया। फिर नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर फ़रमाया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने भी इस सूरः की तिलावत कर के सज्दा किया था। यह हदीस मुस्लिम और नसई में भी है।

'मुद्दत' की तफ़्सीर के बारे में हदीस शरीफ़ में आया है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला ज़मीन को चमड़े की तरह खींच लेगा, यहाँ तक कि हर इन्सान को केवल दो क़दम टिकाने की जगह भी न मिले गी। सब से पहले मुझे बुलाया जाये गा और हज़रत जिब्रील अल्लाह के दायें जानिब हों गे, मैं शफ़ाअ़त के लिये प्रार्थना करूँ गा तो मुझे मक़ामे-महमूद पर खड़े हो कर शफ़ाअ़त करने की अनुमति मिल जाये गी, मैं कहूँ गा कि ऐ मेरे मौला! तेरे इन मोमिन बन्दों ने ज़मीन के गोशे-गोशे पर तेरी अ़िबादत की है। (इस लिये तू उन को बख़्श दे)

'मुलाक़ीह' की तफ़सीर में अबू दावूद तयालसी में है कि हज़रत जिब्रील अ़लै० ने फ़रमाया: ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! आप जी लीजिये जब तक अल्लाह चाहे, आख़िरकार मौत आने वाली है। जिस से चाहें दिल लगा लें, एक दिन जुदाई हो कर रहे गी। जो चाहिये अ़मल कर लीजिये, एक दिन वह तुम्हारे सामने हाज़िर होगा। 'मुलाक़ीहि' का तर्जुमा कुछ उ़लमा ने यह किया है "तू अपने रब से मुलाक़ात करे गा" कुछ उ़लामा ने यह क्रिया है "तू अपने ➲

आमाल से मुलाक़ात करे गा"

इमाम क़तादा फ़रमाते हैं कि ऐ बनी आदम! तू अपनी कोशिशों में कमज़ोर है, फिर भी जितना कुछ हो सके कोशिश कर के नेकियाँ कर ले। और हक़ीक़त यह है कि नेकी करने की क़ुदरत और बुराईयों से बचने की ताक़त बग़ैर अल्लाह की मदद के हासिल नही हो सकती। (इब्ने कसीर) ऐ अल्लाह! हम सब को नेकियों के करने और बुराईयों से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा- आमीन!

२. 'उस का हिसाब आसान हो गा' इस का मतलब यह है कि उस से झगड़ा न करें गे, केवल उस के गुनाह उस को बतला दें गे और ज़्यादा छान-बीन नही की जाये गी। चुनान्चे हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम नमाज़ में यूँ दुआ़ किया करते थे "ऐ अल्लाह! मुझ से आसानी से हिसाब ले"। एक दूसरी हदीस में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिस के अन्दर तीन बातें दुनिया में पायी जायें गी उन का हिसाब आसान लिया जाये गा और वह जन्नत में जाये गा (१) जो उसे न दे, वह उसे दे, (२) जो उस पर अत्याचार करे वह उसे माफ़ कर दे (३) जो उस से कटे, वह उस से जुड़े (वहीदी)

مَسْرُورًا ۝ إِنَّهُ ظَنَّ أَن لَّن يَحُورَ ۝ بَلَىٰ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ۝ فَلَا أُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ۝ وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ۝ وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ۝ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَن طَبَقٍ ۝ فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ۝ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ ۝ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ۝ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝

१४. उस ने समझ रखा था कि वह वापस नही हो गा १५. हाँ, उस का पर्वरदिगार! उस को देखता था। १६. पस (सुनो!) क़सम है डूबने के समय की रोशनी की[३] १७. और क़सम है रात की और हर उस चीज़ की जिस को रात ढाँकती है १८. और क़सम है चाँद की जब वह पूरा होता है १९. तुम ज़रूर दर्जा ब दर्जा चढ़ोगे २०. पस इन को क्या हो गया है कि यह लोग ईमान नही लाते २१+२२. और जब क़ुरआन उन पर पढ़ा जाता है तो उस की इताअ़त नही करते, बल्कि (उल्टे) काफ़िर लोग झुठलाते हैं २३. हालाँकि जो कुछ यह लोग दिलों में छुपाते हैं अल्लाह को उस की ख़ूब ख़बर है २४. पस तू उन को दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुना २५. जो लोग ईमानदार हैं और नेक अ़मल किया करते हैं उन के लिये बेइन्तिहा बदला है।

....

३. 'शफ़क़' से मुराद वह लाली है जो सूरज के डूब जाने के पश्चात् पश्चिम की ओर आसमान के किनारों पर ज़ाहिर होती है। यह लाली रात के शुरू होने से लेकर अ़िशा के वक़्त तक रहती है। सहीह मुस्लिम की हदीस में है कि मग़्रिब का वक़्त लाली (शफ़क़) के ग़ायब होने तक रहता है। 'वसक़' का अर्थ है जमा करना। यानी रात के सितारों और रात के जानवरों की क़सम! इस प्रकार रात के अंधेरे में तमाम चीज़ों का अपनी-अपनी जगह चले जाना। 'ल-तर्-कबुन्न' (तुम लोग ज़रूर चढ़ोगे) इमाम जरीर तबरी फ़रमाते हैं कि ऐ मुहम्मद! (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) आप सख़्त कामों में एक के बाद एक में पड़ने वाले हैं। यहाँ पर ख़िताब अगर्चे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से है, लेकिन इस से मुराद पूरी उम्मत के लोग हैं, वह सब लोग क़ियामत की एक के बाद एक हौलनाकी देखें गे। (इब्ने कसीर)

सूरः बुरूज –(85)

सूरः बुरूज मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[१] इस में २२ आयतें और एक रूकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. क़सम है बुलन्द आसमान की २. और यौमे-मौऊ़द की (जिस का हर नबी ने वादा किया है) ३. और क़सम है शाहिद की और मशहूद की ४+५. दहकती हुयी आग की ख़न्दक़ों वाले लानत किये गये (थे) ६+७. जब वह उन (ख़न्दक़ों) पर बैठे होते और ईमानदारों से जो कुछ (तकलीफ़ देने के काम उन के मातहत लोग) करते थे, वह उस को देखते थे। ८. उन मोमिनों का यही एक काम उन को बुरा मालूम हुआ कि एक अल्लाह, ग़ालिब और हमीद पर ईमान लाये थे

....

१. मुस्नद अहमद की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अ़िशा की नमाज़ में सूरः बुरूज और सूरः तारिक़ की तिलावत फ़रमाते थे। 'बूरूज' से मुराद बड़े-बड़े सितारे हैं। इब्ने ख़ुज़ैमा का कहना है कि इस से मुराद सूरज और चन्द्रमाँ की मन्ज़िलें है जो बारह हैं। चाँद उन में से हर एक में दो और एक तिहाई दिन चलता है, यह कुल २८ दिन हुये और २९ वीं रात को डूबा रहता है। 'मौऊ़द' से मुराद क़ियामत का दिन है। 'शाहिद' से मुराद "जुम्अ़" और "मशहूद" से अरफ़ः का दिन है। – इन सब की क़समें खाने बाद फ़रमाया: ख़न्दक़ वालों पर लानत हो। यह कुफ़्फ़ार की एक क़ौम थी जिन्हों ने ईमानदारों को ज़ोर-जबर्दस्ती दीन से हटाने की कोशिश की, जब कामियाब न हुये तो भड़कती आग के ख़न्दक़ से डराया, लेकिन इस में भी कामियाब न हुये तो उन को दहकती हुयी आग में डाल कर शहीद कर दिया। यह ज़ालिम स्वयँ ख़न्दक़ के किनारों पर बैठकर जलने का तमाशा देख रहे थे।

मुस्नद अहमद की एक रिवायत के अनुसार अगले ज़माना में एक बादशाह के हाँ एक जादूगर रहता था। जब वह बूढ़ा हो गया तो उसे एक लड़के को जादू सिखाने के लिये सौंपा गया, लड़का बड़ा बुद्धिमान था। लड़का रोज़ाना जादूगर के पास आता-जाता तो रास्ता में एक राहिब (अ़ीसाई आ़लिम) के घर के पास से गुज़रता और कुछ समय उस के पास भी बिताता। धीरे-धीरे उस ने जादू के फ़न के साथ-साथ दीन की बातें भी सीख लीं। एक दिन जब कि वह जादू सीखने के लिये अपने गुरू के घर की ओर जा रहा था कि राह में बड़ा भयानक जानवर मिल गया जो लोगों की राह को रोके हुये था। उस लड़के ने एक पत्थर लिया और यह दुआ़ करते हुये कि ऐ अल्लाह अगर तेरे नज़दीक राहिब का दीन सच्चा और उस की शिक्षा जादूगर से ज़्यादा महबूब है तो तू इस जानवर को इस पत्थर से हलाक कर दे, फिर उस पर पत्थर दे मारा, चुनान्चे वह तुरन्त ही हलाक हो गया और रास्ता खुल गया। राहिब को जब सूचना मिली तो उस ने अपने शागिर्द को मुबारकबाद दी, साथ ही इम्तिहान और आज़माइश से भी आगाह कर दिया।

अब उस बच्चे के पास लोगों का तौंता लग गया, उस की दुआ़ से पैदाइशी अन्धे तैफ अच्छे होने लगे।

➲बादशाह का एक नेत्रहीन वज़ीर भी उस की दुआओं से चंगा हो कर इस्लाम ले आया। जब बादशाह पर उन मोमिनों का राज़ खुला तो उस ने उन को मार-पीटकर लड़के का पता लगा लिया और उस को बुलाकर पूछा कि तुम मेरे अलावा किसी दूसरे को रब मानते हो? लड़के ने उत्तर दिया: हाँ, मेरा और तेरा रब अल्लाह पाक है। बादशाह ने यह सुन कर उस लड़के को भी मारना आरंभ कर दिया और उस के उस्ताद राहिब को भी पता लगा कर उसे आरी से चीर कर दो टुकड़े कर दिया। लड़के को भी चीर डालने की धमकी दी, लेकिन उस ने इन्कार कर दिया तो उस को पहाड़ की चोटी पर से ढकेल दिया। लड़के ने दुआ की कि ऐ अल्लाह जिस प्रकार तू चाहे मुझे उन से नजात दे। इस दुआ के साथ ही पहाड़ हिला और सारे सुरक्षा कर्मी लुढ़क कर हलाक हो गये और लड़का वहाँ से भी सही सलामत बच गया।

आख़िर लड़के ने कहा: कि मैं इसी सूरत में हलाक हो सकता हूँ कि तमाम लोगों को एक मैदान में जमा कर के मुझ को सूली पर लटका दे और "बिस्मिल्लाहि रब्ब हाज़ ल् ग़ुलामि" (इस लड़के के रब के नाम से) पढ़ कर मेरी तरफ़ तीर फेंका जाये। चुनान्चे उस ने ऐसा ही किया और वह लड़का शहीद हो गया। यह देख कर मौजूद लोग कालिमा पढ़ कर अल्लाह पर ईमान ले आये। इस स्थिति को देख कर बादशाह ने ख़न्दक़ में आग जलवा कर सब को उस में डाल कर जला दिया और लोग खुशी-खुशी उस में कूद कर जान देने लगे। एक महिला जिस की गोदी में दूध मुँहा शिशु था, वह अपने दूध पीते बच्चे की जान की ख़ातिर कूदने से झिझकी तो अल्लाह ने उस बच्चे को ज़बान देदी। उस ने कहा: अम्मी जान तुम हक़ पर हो इस लिये सब्र करो और उस में कूद पड़ो।

एक दूसरी रिवायत में उस लड़के का नाम अ़ब्दुल्लाह बिन तामर बयान हुआ है। इस मौके पर लग-भग बीस हज़ार मुसलमान (जो उस समय ईसा अ़लै० की सहीह शिक्षा की पैरवी करते थे) शहीद हुये थे। इस आयत में उन ही नेक बन्दों का ज़िक्र है। इतिहास में इस प्रकार के और भी वाक़िआ़त बयान हुये हैं। विस्तार से जानकारी के लिये तफ़्सीर इब्ने कसीर का अवश्य मुताला करें।

بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ﴿٨﴾ الَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيْقِ ﴿١٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ﴿١١﴾ اِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ﴿١٢﴾ اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ﴿١٣﴾ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ﴿١٤﴾ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ ﴿١٥﴾ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ﴿١٦﴾ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ ﴿١٧﴾ فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ﴿١٨﴾ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِىْ تَكْذِيْبٍ ﴿١٩﴾ وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِيْطٌ ﴿٢٠﴾ بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ﴿٢١﴾ فِىْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ﴿٢٢﴾

९. आसमानों और ज़मीनों की हुकूमत जिस के क़ब्ज़ा में है। और अल्लाह हर वस्तु पर हाज़िर (वाक़िफ़) है। १०. जो लोग ईमानदार मर्दों और महिलाओं को केवल ईमान की वजह से तक्लीफ़ दिया करते हैं फिर वह तौबा भी नही करते, उन के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब और जलाने वाली तक्लीफ़ है ११.और जो ईमान ला कर नेक काम करते हैं उन के लिये बाग़ात हैं जिन के नीचे नहरें जारी हैं। (जहाँ बे फ़िक्र हो कर रहें गे) यही तो बड़ी कामियाबी है। १२. तेरे पर्वरदिगार की पकड़ सख़्त है १३. वही पैदा करता है फिर उस को (फ़ना की तरफ़) लौटा देता है १४+१५. और वह बड़ा बख़्शने वाला, बड़ा मेहरबान, तख़्त का मालिक, बड़ी बुज़ुर्गी वाला है। १६ जो काम करना चाहे उसे कर गुज़रने वाला है।➲

➲१७+१८. क्या तुम को उन फ़ौजों की सूचना मिली है, (यानी) फ़िरऔ़न और समूद वग़ैरह के अनुयायियों की (आयी तो अवश्य हो गी) १९. मगर काफ़िर लोग झुठलाने ही में लगे हुये हैं २०. और अल्लाह उन को हर तरफ़ से घेरे हुये है २१+२२. बल्कि (हक़ीक़त यह है कि) वह क़ुरआन बड़ी बुज़ुर्गी वाली किताब है। (जिस का अस्ल माख़ज़ {स्रोत}) लौहे-महफ़ूज़ में है।

सूरः तारिक़ —(86)

(٨٦) سُورَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ (٣٦)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ① وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ② النَّجْمُ الثَّاقِبُ ③ إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ④ فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ⑤ خُلِقَ مِنْ مَاءٍ دَافِقٍ ⑥ يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ⑦ إِنَّهُ عَلَىٰ رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ⑧ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ⑨ فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ⑩ وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ⑪ وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ⑫ إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ⑬ وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ⑭ إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ⑮ وَأَكِيدُ كَيْدًا ⑯ فَمَهِّلِ الْكَافِرِينَ أَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ⑰

सूरः तारिक़ (चमकदार सितारा) मक्का शरीफ़ मे नाज़िल हुयी। इस में १७ आयतें और एक रूकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१.क़सम है आकाश की और क़सम है (रात को आने वाले) तारिक़ की २. तुझे किस ने बताया कि तारिक़ क्या? है[1] ३. (हम बताते हैं) वह चमकने वाला सितारा है ४. (हमारी क़सम का जवाब यह है कि) हर एक नफ़्स पर अल्लाह तआ़ला मुहाफ़िज़ (निग्राँ) है। ५.इन्सान ग़ौर करे कि वह किस चीज़ से बनाया गया है ६. वह उछल कर निकलने वाले पानी से पैदा हुआ है ७. वह सीना और पिसुलियों के बीच में से आता है ८. बेशक वह (अल्लाह) उस को पुनः ज़िन्दगी देने पर क़ुदरत रखता है ९. (मगर यह काम) उस रोज़ हो गा जिस रोज़ तमाम पोशीदा बातें खुल जायें गी[2] १०. फिर उस के लिए न कोई क़ुव्वत होगी, न कोई मददगार हो गा[3] ११. क़सम है गर्दिश करने वाले आकाश की १२. और फटने वाली ज़मीन की १३. (क़ुरआन का पैग़ाम) तै शुदा बात है १४. और मख़ूल {हँसी-मज़ाक़} नहीं १५. निःसंदेह यह लोग चालें चलते हैं १६. मैं भी पोशीदा हुक्म जारी करता हूँ। १७. पस तू उन काफ़िरों को मुहलत दे और कुछ समय उन्हें छोड़ दे।

....
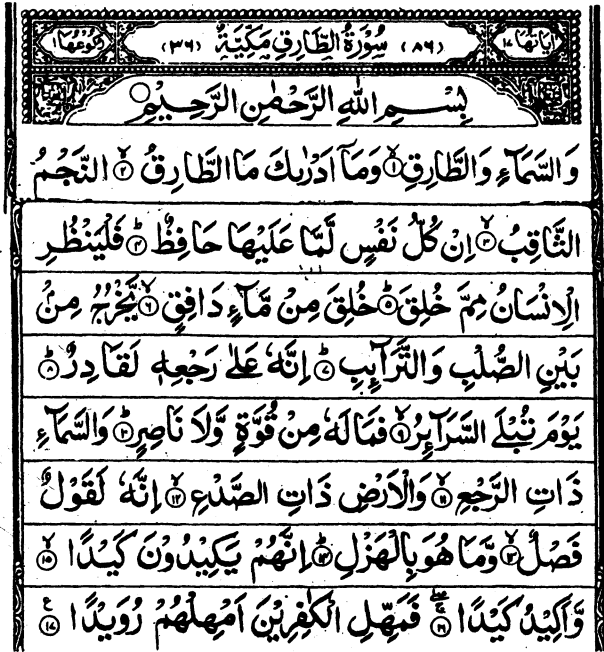
१. मुस्नद अहमद में है कि ख़ालिद बिन अ़बू जेहल अ़दवी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को इस की तिलावत करते सुना, उस समय आप लकड़ी पर टेक लगाये हुये थे। आप क़बीला बनू सक़ीफ़ से मदद माँगने की ग़रज़ से आये थे। ख़ालिद ने उसी समय इस सूरः को याद कर लिया और वापस बनू सक़ीफ़ में आ कर बड़ी प्रशंसा की तो क़ुरैश ने कहा कि अगर यह हक़ होता तो हम लोग बहुत पहले मान लेते।

'तारिक़' की तफ़्सीर चमकते तारे से की गयी है। 'साक़िब' चमकीले और रोशन सितारे को कहते हैं जो➲

➲शैतान पर टूट कर गिरता है और उसे जला देता है। आगे यह बयान हो रहा है कि अल्लाह की तरफ़ से हर शख़्स पर एक निग्राँ मुक़र्रर है जो उसे आफ़तों से बचाता है। चुनान्चे एक दूसरे स्थान पर फ़रमाया "इन्सान के आगे-पीछे से बारी-बारी आने वाले फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जो अल्लाह के हुक्म से बन्दे की हिफ़ाज़त करते हैं। आगे इन्सान की कमज़ोरी का बयान हो रहा है कि देखो उस की क्या अस्ल है? गोया इस आयत में निहायत बारीकी के साथ क़ियामत का यक़ीन दिलाया गया है कि जो अल्लाह आरंभ में पैदा करने पर क़ुदरत रखता है वह लौटाने पर भी क़ुदरत रखता है। चुनाँचे दूसरे स्थान पर फ़रमाया: "जिस ने पहले पैदा किया वह ही पुन: लौटाये गा और यह उस पर बहुत आसान है"। (इब्ने कसीर)

२. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि हर ग़द्दार की रानों के दर्मियान उस के ग़दर का झन्डा गाड़ दिया जाये गा और एलान हो गा कि यह फ़लाँ बिन फ़लाँ की ग़द्दारी है। उस दिन न तो स्वयँ इन्सान को क़ुव्वत हासिल हो गी और न ही उस का कोई मददगार खड़ा होगा जो उसे अल्लाह के अ़ज़ाब से बचा सके। (इब्ने कसीर)

सूरः अअ़ला-(87)

سُورَةُ الْأَعْلَىٰ مَكِّيَّةٌ (٨٧) (٨) آياتها ١٩ ركوعها ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى ﴿١﴾ الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّىٰ ﴿٢﴾ وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَىٰ ﴿٣﴾ وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَىٰ ﴿٤﴾ فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَىٰ ﴿٥﴾ سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنسَىٰ ﴿٦﴾ إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَىٰ ﴿٧﴾ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرَىٰ ﴿٨﴾ فَذَكِّرْ إِن نَّفَعَتِ الذِّكْرَىٰ ﴿٩﴾ سَيَذَّكَّرُ مَن يَخْشَىٰ ﴿١٠﴾ وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ﴿١١﴾ الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرَىٰ ﴿١٢﴾ ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ﴿١٣﴾ قَدْ أَفْلَحَ مَن تَزَكَّىٰ ﴿١٤﴾ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّىٰ ﴿١٥﴾ بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿١٦﴾ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ﴿١٧﴾ إِنَّ هَٰذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ﴿١٨﴾ صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ ﴿١٩﴾

सूरः आला (बहुत बुलन्द) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में १९ आयतें और एक रूकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. तू अपने बहुत बुलन्द पर्वरदिगार का नाम पाकी से याद किया कर[1] २. जिस ने हर चीज़ को पैदा किया और ठीक-ठीक पैदा किया ३. जिस ने हर वस्तु को अन्दाज़ा से बनाया फिर हिदायत की[2]। ४. जिस ने चारा पैदा किया ५. फिर उस को ख़ुश्क सियाह कर दिया। ६. (ऐ रसूल!) तुझे हम पढ़ायें गे फिर तू उसे न भूले गा ७. लेकिन जो कुछ अल्लाह चाहे गा, होगा। बेशक, पोशीदा और ज़ाहिर को वही जानता है ८. और हमतुमपरआसानी करें गे ९. पस तू नसीहत किया कर, अगर नसीहत फ़ाइदा दे सके[3] १०. जो शख़्स डरे गा वह नसीहत पाये गा ११. और बदबख़्त उस से हटा रहे गा १२. जो बड़ी आग में दाख़िल हो गा १३. फिर उस में न मरे गा और न ज़िन्दा रहे गा। १४+१५. जो पाक-साफ़ हो कर अपने रब का नाम याद करता है और नमाज़ अदा करता है, वह मुराद (लक्ष्य) पा जाये गा १६. मगर तुम लोग दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत पर तर्जीह देते हो[4] १७. हालाँकि आख़िरत बेहतर और हमेशा रहने वाली है १८. यह विषय पहले➲

➲की किताबों में भी दर्ज है[5] १९. (यानी) इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों (वग़ैरह) में भी है।

....

१. मुस्नद अहमद की रिवायत में है कि यह सूरः नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बहुत प्यारी थी। आप अ़ीदैन (अ़ीदुलफ़ित्र, अ़ीदुल्अज़्हा) के नमाज़ दोगाना की पहली रक्अ़त में यह सूरः और दूसरी में सूरः ग़ाशियः पढ़ा करते थे। (इब्ने कसीर) जुम्अ़ः की नमाज़ में भी अक्सर इन ही दोनों सूरतों को पढ़ा करते थे। (इब्ने कसीर)

मुस्नद अहमन में उ़क्बा बिन आ़मिर जुहनी की रिवायत है कि जब यह सूरः नाज़िल हुयी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः इसे अपने सज्दा में कर लो और जब 'फ़-सब्बिह् बिस्मि रब्बि-कल् अ़ज़ीम' नाज़िल हुयी तो फ़रमायाः इसे अपने रूकूअ़ में करलो। अबू दावूद की रिवायत में है कि जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस सूरत की पहली आयत तिलावत फ़रमाते तो "सुब्हा-न रब्बि-यल् आला" कहते। बुलन्द आवाज़ से जिस प्रकार आजकल लोग पढ़ते हैं, दुरूस्त नही है। और सही बात यह है कि पढ़ने के तअ़ल्लुक़ से तमाम हदीसें ज़अ़ीफ़ हैं इस लिये कहीं भी न पढ़ना ही दुरूस्त है। विस्तार से देखें अ़ल्लःमा अल्बानी की नमाज़ के विषय पर पुस्तक "सलातुन्नबी"................ (ख़ालिद)

२. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि ज़मीन व आकाश की पैदाइश से पचास हज़ार वर्ष पूर्व अल्लाह ने अपनी मख़्लूक़ की तक़्दीर लिखी जब कि उस का अर्श पानी ही पर था, जिस ने हर प्रकार के नबातात और खेत पैदा किये फिर उन हरे-भरे चारों को पका कर ख़ुश्क कर के काला रंग कर दिया, फिर फ़रमायाः ऐ रसूल! (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हम तुझे ऐसा पढ़ायें गे कि तू बिल्कुल नही भूले गा। हाँ, अगर अल्लाह स्वयँ ही कोई आयत भुला देनी चाहे तो और बात है। अल्लाह पर बन्दों के सब काम ज़ाहिर हैं। (इब्ने कसीर)

३. इस आयत की तफ़्सीर में हज़रत अ़ली रज़ि० फ़रमाते हैं: अगर तुम दूसरों के साथ वह बातें करो गे जो उन की समझ से बाहर हों, तो परिणाम यह निकले गा कि तुम्हारी भली बातें भी उन के लिये फ़ित्ना बन जायें गी, इसलिये लोगों से उन की समझ के अनुसार बातें करो ताकि लोग अल्लाह और रसूल को न झुठलायें (इब्ने कसीर)

इस आयत की रोशनी में कुछ लोग वाज़-नसीहत करना छोड़ देते हैं और कहते हैं कि नसीहत अगर फ़ाइदा मन्द है तो नसीहत का हुक्म है, लेकिन जहाँ गुमराह लोग इतने बढ़ जायें कि किसी की भी न सुनें तो फिर नसीहत करने का हुक्म नही है, यह उन की बहुत बड़ी भूल है। इसलिये कि जबतक किसी क़तअ़ी दलील से मालूम न हो जाये उस समय तक तब्लीग़ व नसीहत से नही रूकना चाहिये। और यह बात सिर्फ़ वह्यि ही से मालूम हो सकती है, इस का मतलब यह हुआ हर समय और हर हाल में नसीहत का हुक्म बाक़ी है। तुम्हारा काम नसीहत किये जाना है और बस। लेकिन नसीहत करने का क़ुरआन ने जो तरीक़ा और ढंग सिखाया है उस के अनुसार होना चाहिये। चुनान्चे फ़रमायाः "ऐ रसूल आप मेरे बन्दों से कह दीजिये कि जो कुछ भी दूसरों से कहें निहायत अच्छे और सुथरे अन्दाज़ में कहें"। इस से फ़साद का डर नही रहता है और क़ुबूल कर लेने की उम्मीद होती है। (सनाई)

४. इन आयात का मतलब उस समय ख़ूब समझ में आता है जब लोग कमेटी या कौन्सिल (Councle)की मिंबरी हासिल करने के लिये हर जायज़ और नाजायज़ तरीक़े को जायज़ क़रार दे लेते हैं (सनाई)

५. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस ने दुनिया से प्रेम किया उस ने आख़िरत का सत्तियानास किया और जिस ने आख़िरत से प्रेम किया उस ने दुनियाँ को नुक़्सान पहुंचाया। इस लिये ऐ लागो! बाक़ी रहने वाली को फ़ना हो जाने वाली पर तर्जीह दो (अहमद) आगे की आयत में फिर फ़रमायाः इब्राहीम और मूसा अ़लै० की किताबों में भी यही नसीहत की गयी थी। (कि बाक़ी रहने वाली को मिट जाने वाली पर तर्जीह दो)

नसई की रिवायत में हज़रत अ़ली रज़ि० फ़रमाते हैं: जब आयत "इब्राही-मल्लज़ी वफ़्फ़ा" नाज़िल हुयी तो फ़रमायाः इस से मुराद एक का बोझ दूसरे का न उठाना है। पारः २७, सूरः नज्म आयत ३५,३६ की आयतों➲

➲ में भी इसी बात को बयान किया गया है कि यह अहकाम तमाम अगली किताबों में भी मौजूद थे। (इब्ने कसीर)

सूर: ग़ाशि य:-(८८)

سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ (٨٨)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ (١) وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ (٢)
عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ (٣) تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً (٤) تُسْقٰى مِنْ
عَيْنٍ اٰنِيَةٍ (٥) لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ (٦) لَّا يُسْمِنُ
وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ (٧) وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ (٨)
لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ (٩) فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ (١٠) لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا
لَاغِيَةً (١١) فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ (١٢) فِيْهَا سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ (١٣)
وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ (١٤) وَّنَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ (١٥) وَّزَرَابِيُّ
مَبْثُوْثَةٌ (١٦) اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ (١٧) وَ
اِلَى السَّمَآءِ كَيْفَ رُفِعَتْ (١٨) وَاِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ
نُصِبَتْ (١٩) وَاِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ (٢٠) فَذَكِّرْ اِنَّمَآ
اَنْتَ مُذَكِّرٌ (٢١) لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ (٢٢) اِلَّا مَنْ
تَوَلّٰى وَكَفَرَ (٢٣) فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ (٢٤) اِنَّ
اِلَيْنَآ اِيَابَهُمْ (٢٥) ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ (٢٦)

सूर: ग़ाशि य: (ढाँक लेने वाली) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में २६ आयातें और एक रूकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. ऐ रसूल! तुझे मुसीबत वाली घड़ी की ख़बर पहुंची है[1] २. कई लोग उस रोज़ रूस्वा होंगे ३. (दुनिया में) काम करते -करते थके हुये ४. भड़कती आग में दाख़िल होंगे ५. उन को खौलते हुये चश्मों से पानी पिलाया जायेगा ६. खाना उन का कड़ुवा थूहड़ के आ़लावा कुछ न होगा ७. न वह मोटा करेगा और न भूख से बचायेगा (बल्कि वह खाया भी न जायेगा) ८. कई लोग उस दिन अच्छी हालत में मनपसन्द ऐ़श में होंगे ९+१०. अपनी कोशिश पर राज़ी-खुशी, आ़लीशान बाग़ों में होंगे ११. जिन में किसी प्रकार की वाहियात बात न सुनेंगे १२. उस बाग़ में चश्मे जारी हों गे[2] १३. उन में बड़े बुलन्द तख़्त होंगे १४. और प्याले सजे होंगे १५. और (जन्नत के मकानात में) बराबर लगे हुये तकिये होंगे १६. और बिछी हुयी मस्नदें (यह नेमतें जन्नत वालों को मिलेंगी) १७. क्या उन्हों ने ऊँट को नही देखा कि वह कैसा पैदा किया गया है[3]? १८. और आकाश की तरफ़ भी नही देखा कि वह कैसा बुलन्द किया गया है? १९. और पर्वतों की तरफ़ भी नही देखा कि वह कैसे पृथ्वी पर गाड़े गये हैं? २०. और पृथ्वी को भी उन्हों ने नही देखा कि वह कैसी बिछायी गयी है २१. पस तू उन को नसीहत किया कर, तू केवल नसीहत करने वाला है २२. तू उन पर दारोग़ा मुक़र्रर नही है २३+२४. हाँ, जो कोई मुँह फेरेगा और इन्कार करेगा, तो अल्लाह उस को बहुत बड़ा अ़ज़ाब देगा। २५. निः संदेह हमारी ही तरफ़ उन सब का आना है २६ फिर उन से हिसाब लेना भी हमारा काम है।

....

१. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस सूर: को जुम्अ़: की दूसरी रक्अ़त में पढ़ा करते थे और पहली रक्अ़त ➲

➲में सूरः आला। और कभी सूरः जुम्अः और मुनाफ़िक़ून पढ़ा करते थे (इब्ने कसीर/ मुस्लिम, इब्ने माजा, नसई) इब्ने अबी हातिम की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे कि एक औ़रत की क़ुरआन पढ़ने की आवाज़ आयी तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम खड़े हो कर सुनने लगे। उस ने सूरः ग़ाशियः की पहली आयत पढ़ी तो आपने उत्तर दिया "न-अ़म् क़द जा-अनी" (हाँ, मेरे पास पहुंच चुकी है) उस दिन बहुत से चेहरे ऐसे होंगे जिन पर ज़िल्लत और ख़ारी बरस रही हो गी, उन के आमाल बर्बाद हो चुके हों गे और भड़कती हुयी आग में दाख़िल होंगे।

बयान किया गया है कि हज़रत उ़मर रज़ि० एक मर्तबा किसी गिर्जाघर के पास से गुज़रे और वहाँ के राहिब (ई़साई आ़लिम) को बुलवाया। उसे देख कर रोने लगे। लोगों ने रोने का कारण पूछा तो फ़रमायाः इसे देख कर मुझे यह आयतें याद आ गयीं कि यह लोग बड़ी इ़बादत करते हैं, लेकिन अन्ततः जहन्नम ही में डाले जायें गे। इमाम इ़क्रमा और सुद्दी फ़रमाते हैं कि यह लोग दुनिया में गुनाह के कार्य करते रहे इस लिये आख़िरत में यह लोग अ़ज़ाब झेलेंगे और भड़कती हुयी आग में दाख़िल हों गे, जहाँ 'ज़रीअ़' के अ़लावा और कुछ कभी खाने को न मिलेगा। 'ज़रीअ़' के बारे में आता है कि यह आग का एक पेड़ है, या जहन्नम का पत्थर है, अ़फ़ूर की एक बेल है जिस में काँटे-दार फल लगते हैं, यह निहायत ही बुरा खाना है, जिस से न तो पेट भरे गा और न कुछ भी फ़ाइदा पहुंचे गा। (इब्ने कसीर)

२. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जन्नत की नहरें मुश्क के पहाड़ों और टीलों से निकलती हैं, उस में ऊँचे-ऊँचे, बुलन्द तख़्त हैं जिन पर बेहतरीन बिछौने बिछे हैं, उन के पास हूरें बैठी हुयी हैं, नेक बन्दों के लिये उन की इच्छानुसार यह तख़्त झुक जाया करें गे। एक दूसरी हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः कोई है जो तहबन्द चढ़ाले (बिल्कुल तय्यार हो जाये) और जन्नत की तय्यारी कर ले। उस जन्नत की लम्बाई और चौड़ाई बेहिसाब है। काबा के रब की क़सम! वह एक चमक्ता हुआ नूर है, वह एक लहलहाता हुआ सबज़ा है, वह बुलन्दबाला महल्लात हैं। यह सुन कर सहाबा ने कहा कि हम ज़रूर उस के लिये तय्यारी करें गे- इन्शाअल्लाह (इब्ने माजा)

३. यहाँ उन चीज़ों का ज़िक्र है जो इन आयतों के मुख़ातब मुश्रिकों के सामने हमेशा रहा करती थीं। हक़ीक़त यह है कि ऊँटों, आसमानों, पहाड़ों और ज़मीनों में इ़बरत हासिल करने वालों के लिये बेशुमार नसीहतें हैं, लेकिन देखने वालों के लिये खुली आँख चाहिये।

सूरः फ़ज्र- (89)

सूरः फ़ज्र (सुबह) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ३० आयात और एक रूकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. क़सम है फ़ज्र की २. और क़सम है दस रातों की ३. और क़सम है हर जुफ़्त (even number) चीज़ की और क़सम है हर ताक़ (odd number) चीज़ की ४. और क़सम है रात की➲

مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ﴿٨﴾ وَثَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿٩﴾
وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ﴿١٠﴾ الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ﴿١١﴾
فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ﴿١٢﴾ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ
عَذَابٍ ﴿١٣﴾ إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ﴿١٤﴾ فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا
مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ﴿١٥﴾
وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ فَيَقُولُ رَبِّي
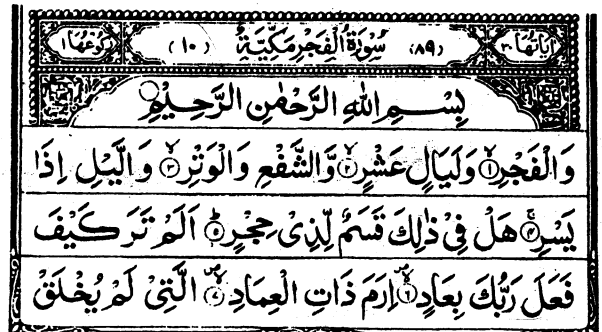
➲जब चलती है ५. ज़रूर इस क़सम में अक़्लमन्द के लिये एतिबार है ६+७. क्या तू ने कभी सोचा नही कि तुम्हारे पर्वरदिगार ने उस बड़ी शक्तिशाली इरमकी क़ौम आद के साथ क्या बर्ताव किया[2] ८. उन जैसी ज़ोरदार क़ौम कोई दुनिया में पैदा नही हुयी। ९. और समूद को भी तबाह कर दिया, जिन्हों ने पहाड़ खोद कर घर बनाये थे १०. और बड़ी क़ुव्वत वाले फ़िऔन को हलाक कर दिया[3] ११. उन्हों ने मुल्क में सर उठाया था १२. यानी उन में बड़ा फ़साद फैलाया था १३. सो तुम्हारे पर्वरदिगार ने उन पर अ़ज़ाब का कोड़ा मारा १४. तुम्हारा पर्वरदिगार बेशक घात में है। १५. जब इन्सान को उस का पर्वरदिगार (किसी धन्धे में फँसा कर) इनाम करता है तो कहता है: मेरे पर्वरदिगार ने मुझ पर मेहरबानी की है १६. और जब (किसी और धन्धे में फँसा कर) उस पर रोज़ी तंग कर देता है तो कहता है: मेरे रब ने मुझे ज़लील किया

....

१. इन रातों से मुराद ज़िल्हिज्जा का पहला दहा हैं। बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत में है कि इन दस रातों में की गई अ़िबादत से अफ़्ज़ल कोई अ़िबादत नही। लोगों ने पूछा कि क्या जिहाद भी नहीं? आप ने फ़रमाया: हाँ, जिहाद भी नही, मगर वह शख़्स जो जान-माल ले कर निकला और फिर कुछ भी साथ ले कर न लौटा। मुस्नद अहमद की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया· 'अश्र' से मुराद अ़ीदुलअज़्हा के दस दिन हैं और 'वित्र' से मुराद अरफ़: का दिन है और 'शफ़्अ़' से मुराद कुर्बानी का दिन है। इस रिवायत की सनद में तो कुछ कमी नही, लेकिन मत्न में कमी है। 'वित्र' से मुराद अ़रफ़ात का दिन है और यह नवीं तारिख़ है, तो 'शफ़्अ़' से मुराद दसवीं तारीख़, यानी क़ुर्बानी का दिन है। वह ताक़ है और यह जुफ़्त है। (इब्ने कसीर)

शीआ़ की एक रिवायत में 'शफ़्अ़' से मुराद हसन-हुसैन हैं और 'वत्र' से मुराद हज़रत अ़ली हैं। बड़े आश्चर्य की बात है कि हज़रत फ़ातिमा का नाम ही नही। इस प्रकार की क़समें खाने का अ़रब में आ़म दस्तूर था। अ़रब का प्रसिद्ध कवि क़ैस आ़मिरी के एक शेर का तर्जुमा यह है कि "लैला कहती है कि मैं उस से प्रेम नहीं करता, लेकिन क़सम है दस रातों की और जुफ़्त और ताक़ की" (मैं उस से प्रेम करता हूँ)। क़ुरआन मजीद चूँकि अ़रब के मुहावरे में नाज़िल हुआ है, इस लिये इस प्रकार की क़समों का इस में ज़िक्र आता है (सनाई)

२. उन सब को इस प्रकार तबाह-बर्बाद किया कि आज कोई उन का नाम लेने वाला भी न रहा। वह बड़े शक्ति शाली थे, मगर जब उन पर अल्लाह का अ़ज़ाब आया तो सब मौत के घाट उतर गये। आ़द के साथ क़ौमे-स़मूद भी दुनिया से मिट गये। 'इरम' के बारे में कई क़ौल हैं। मैं ने इस क़ौल को पसन्द किया है कि 'इरम' क़ौमे-आ़द का बानी था, इस लिये इरम आ़द ही का दूसरा नाम है। जैसे क़ुरैश, जो अ़रब के बानी का नाम था लेकिन अब क़ौम पर बोला जाता है। (सनाई)

३. 'औताद' का माना हज़रत इब्ने अ़ब्बास ने "लश्करों वाले" मुराद लिया है। उस के लश्करी (फ़ौज के कर्मचारी) उस के कामों को मज़बूत करते-रहते थे। यह भी बयान किया जाता है कि फ़िरऔन, ग़ुस्से के समय लोगों के हाथ-पैर में कीलें गाड़ कर मार देता था, इस लिये उस का नाम 'ज़ुल-औताद' यानि "मेख़ोंवाला" पड़ा। एक और कारण➲

यह भी बयान किया गया है कि उस ने अपनी पत्नी को जो हज़रत मूसा पर ईमान ले आयीं थीं, ज़मीन पर लेटा कर उन के हाथों और पैरों में कीलें गाड़ दी थीं और चक्की का एक भारी पत्थर मार कर उन की जान लेली। (इब्ने कसीर)

أَهَانَنِ ۝١٦ كَلَّا بَل لَّا تُكْرِمُونَ الْيَتِيمَ ۝١٧ وَلَا تَحَاضُّونَ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۝١٨ وَتَأْكُلُونَ التُّرَاثَ أَكْلًا لَّمًّا ۝١٩ وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝٢٠ كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۝٢١ وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝٢٢ وَجِيءَ يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ ۚ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ الذِّكْرَىٰ ۝٢٣ يَقُولُ يَا لَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ۝٢٤ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ ۝٢٥ وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ۝٢٦ يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۝٢٧ ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۝٢٨ فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ۝٢٩ وَادْخُلِي جَنَّتِي ۝٣٠

१७. हर्गिज़ (बि वजह) नहीं, बल्कि (उस का कारण एक यह भी है कि) तुम यतीम लोगों की इ़ज़्ज़त नही करते[४] १८. और मिसकीनों को खाना खिलाने की तरफ़ उभारते भी नहीं थे १९. और मुर्दों का तर्का (सारा) खा जाते हो २०. और माल की मुहब्बत तुम लोगों को बहुत अधिक है[५] २१. ऐसा हर्गिज़ न चाहिये (इस बदअ़मली का बदला तुम को उस वक़्त मिलेगा) जब ज़मीन अपनी मौजूदा शक्ल में बिल्कुल तोड़ दी जायेगी २२. और तुम्हारे रब का हुक्म आ पहुंचेगा और फ़रिशते सफ़ें बाँध कर आ मौजूद होंगे २३. और जहन्नम ला मौजूद की जायेगी[६]। उस रोज़ इन्सान नसीहत पा जाये गा, मगर उस को नसीहत का फ़ाइदा कहाँ होगा २४. कहेगा: काश! मैं नेअपनीइस ज़िन्दगी के लिये कुछ भेजा होता[७] २५. पस उस रोज़ न तो कोई अल्लाह जैसा अ़ज़ाब करेगा २६. और न उस जैसा कोई क़ैद करेगा[८]। २७. ऐ (अल्लाह के मातहत) तसल्ली पाने वाले नफ़्स[९] २८. अपने रब की तरफ़ (ख़ुशी-ख़ुशी) चल, तू उस से राज़ी, वह तुझ से राज़ी। २९. पस मेरे बन्दों में दाख़िल होजा ३०. और मेरी जन्नत में दाख़िल होजा[१०]

....

४. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सब से अच्छा घर वह है जिस में अनाथ हो और उस की भली-भाँति देख-रेख हो रही हो। और सब से बुरा वह है जिस में यतीम (अनाथ) हो और उस के साथ बुरा बर्ताव किया जाता हो। फिर आप ने उंगली उठा कर फ़रमाया: मैं और अनाथ का पालने वाला जन्नत में इतने ही क़रीब होंगे, जितनी क़रीब यह दोनों उंगलियाँ हैं। (इब्ने कसीर)

५. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: शैतान कहता है कि माल वाला आदमी मेरे तीन हथकन्डों में से किसी एक हथकन्डे में फंस जाता है, मैं सुब्ह-शाम उस पर दाँव करता रहता हूँ (१) नाजायज़ तौर पर कमाना (२) नाजायज़ तौर पर ख़र्च करना (३) माल की मुहब्बत में फँस जाना कि हक़दारों को उन का हक़ नादेना (हदीसुत्तफ़ासीर)

६. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क़ियामत के दिन जहन्नम को इस तरह लाया जाये गा कि उस की नाक में सत्तर हज़ार नकेलें लगी हों गी और हर एक को एक-एक फ़रिश्ता पकड़े हुये होगा और उस को घसीट कर लाता होगा (मुस्लिम)

७. मुस्नद अहमद की रिवायत में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अगर कोई बन्दा अपने पैदा

होने से लेकर मरते दम तक सज्दा में पड़ा रहे और अल्लाह की इताअ़त करता रहे तो भी अपनी उस अ़िबादत को क़ियामत के दिन हक़ीर और नाचीज़ समझे गा और चाहे गा कि मैं दुनिया की तरफ़ लौटा दिया जाऊँ, ताकि ज़्यादा से ज़्यादा सवाब के काम कर सकूँ। (इब्ने कसीर)

८. यानी अल्लाह तआ़ला मुजरिमों को ऐसी सख़्त सज़ा दे गा और ऐसी सख़्त क़ैद में रखे गा कि आदमी किसी दूसरे की तरफ़ से इस प्रकार की सख़्ती किसी मुजरिम के हक़ में सोच भी नही सकता। (मुवज़्ज़िल् फ़ुर्क़ान)

९. उलमा का कहना है कि नफ़्स तो एक ही चीज़ है, लेकिन उस की तीन हालत है इस लिये तीन नाम हैं (१) "मुत्-मइन्ना" उस नफ़्स को कहते हैं जो अल्लाह की अ़िबादत और फ़र्माबरदारी में ख़ुशी महसूस करे और शरीअ़त की पैरवी में सुकून और चैन महसूस हो। (२) "अम्मारा" अगर नफ़्स बुराइयों की तरफ़ झुक जाये, दुनिया की लज़्ज़तों और ख़ाहिशों में फंस कर शरीअ़त की पैरवी से जी चुराये, उस नफ़्स को "अम्मारा" कहते हैं (३) अगर नफ़्स शह्वत और ग़ज़ब में गिरिफ़्तार हो जाये, फिर कभी होश में आ कर उन बुराइयों से नफ़रत करने लगे और उनसे दूर भागे, अगर कोई कोताही या बुराई हो जाये तो शर्मिन्दा हो, ऐसे नफ़्स को "लव्वामा" कहते हैं। (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)

१०. शाने-नुज़ूलः- यह आयतें हज़रत हम्ज़ा रज़ि० की शान में नाज़िल हुयीं। कुछ उलमा का कहना है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बीररूमा (एक कुआँ का नाम) के बारे में सहाबा से कहा कि जो कोई इस को ख़रीद कर आ़म कर दे मैं उस को जन्नत की ज़मानत देता हूँ। यह सुन कर हज़रत उस्मान रज़ि० ने तुरन्त ख़रीद कर मुसलमानों के लिये आ़म कर दिया, उन के हक़ में यह आयत नाज़िल हुयी (लुबाब)

सूरः ब-लद्-(90)

सूरः ब लद (शहर) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में २० आयतें और एक रूकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१+२. मुझे इस शह्र की क़सम है जब तू (ऐ नबी!) इसी शह्र में उतरे गा[१+२] ३. और क़सम है वालिद (आदम) की और क़सम है उस के मौलूद (औलाद) की ४. बेशक हम ने इन्सान को तक्लीफ़ में पैदा किया है[३] ५. क्या इन्सान (इस पर भी) गुमान करता है कि उस पर कोई क़ाबू न पाये गा? ६. (फ़ख़्र के तौर पर) कहता है: मैं ने बहुत माल ख़र्च किया ७. क्या वह ख़याल करता है कि उस को किसी ने देखा नही? ८. क्या हम ने उस के लिये दो आँखें नही बनायीं? ९. और ज़बान और दो होंट नही बनाये? १०. और उस को दोनों रास्ते सुझा

(٩٠) سُوْرَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ (٣٥)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝١ وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝٢ وَ
وَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ۝٣ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ۝٤
اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ ۝٥ يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا
لُّبَدًا ۝٦ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗٓ اَحَدٌ ۝٧ اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ
عَيْنَيْنِ ۝٨ وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ ۝٩ وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ۝١٠
فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۝١١ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ۝١٢
فَكُّ رَقَبَةٍ ۝١٣ اَوْ اِطْعٰمٌ فِيْ يَوْمٍ ذِيْ مَسْغَبَةٍ ۝١٤ يَّتِيْمًا
ذَا مَقْرَبَةٍ ۝١٥ اَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۝١٦ ثُمَّ كَانَ مِنَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۝١٧
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝١٨ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا
هُمْ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۝١٩ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ۝٢٠

दिये ११. फिर वह अपनी घाटी से नही गुज़रा (यानी फ़र्ज़ अदा नही किया) १२. तुम्हें क्या मालूम कि वह घाटी क्या है? १३. ग़ुलामों की गर्दन आज़ाद करना १४+१५+१६. और तक्लीफ़ के ज़माना में क़रीबी रिश्तेदार यतीमों को और मिट्टी में मिले हुये मिसकीनों को खाना खिलाना। १७. और अल्लाह पर ईमान रखने वालों एक दूसरे को सब्र की नसीहत करने वालों और मेहरबानी की हिदायत करने वालों में हो गा १८. यही लोग बर्कत वाले हैं १९. और जो हमारी आयतों का इन्कार करते हैं वही लोग मनहूस हैं २०. उन पर आग तह ब तह हो गी

....

१+२. यह ख़बर कि तुम पर यह शहर (मक्का) हलाल हो जाये गा इतनी सच्ची है कि यह शहर आज १४०० वर्ष तक मुसलमानों के क़बज़ा में है और आजतक किसी प्रकार का ख़तरा भी महसूस नही हुआ। इस दर्मियान मुसलमानों की हुकूमतें बदलीं, मगर उस शहर ने अपना मर्कज़ कभी नही बदला । इस्लाम दुश्मन मुल्क अपने हाँ इस प्रकार की मिसाल नही पेश कर सकते कि उन की हुकूमत का मर्कज़ (केन्द्र) न बदला हो। यह केवल मक्का शहर ही की फ़ज़ीलत और ख़ूबी है। (हदीसुत्तफ़ासीर)

आयत न० २ से यह भी साबित होता है कि मक्का में रहने की हालत में फ़तह मक्का की भविष्यवाणी है। (सनाई)

३. यानी इन्सान शुरू से आख़िर तक दुःख, तक्लीफ़ और रंज में गिरिफ़्तार है और हर प्रकार की सख़्तियाँ झेलता रहता है। कभी किसी बीमारी में गिरिफ़्तार है तो कभी किसी रंज में, शायद ही पूरी उम्र में कभी ऐसा लम्हा आता है कि इन्सान तमाम फ़िक्र से आज़ाद हो कर ज़िन्दगी का एक लम्हा गुज़ार सके। वास्तव में इन्सान की पैदाइश ही कुछ इस प्रकार की है कि वह इन बखेड़ों से नजात नही पा सकता। (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)

सूरः शम्श् – (91)

सूरः शम्श् (सूरज) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में १५ आयतें और एक रूकूअ है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. क़सम है सूरज की और उस की रोशनी की[1] २. और क़सम है चाँद की जब वह उस के पीछे आता है ३. और क़सम है दिन की जब वह उस से रोशनी लेता है ४. और क़सम है रात की जब वह सूरज को ढाँप लेती है। ५. और क़सम है आसमान की और जिस ने उस को बनाया है ६. और क़सम है ज़मीन की और जिस ने उसे फैलाया है ७. और क़सम है हर नफ़्स की और जिस ने उसे ठीक किया ८. फिर उस को बुराई और भलाई की सूझ दी[2] ९. जो कोई नफ़्स को

(٩١) سُورَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ (٢٦)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ۝١ وَالْقَمَرِ إِذَا تَلٰهَا ۝٢ وَالنَّهَارِ
إِذَا جَلّٰهَا ۝٣ وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشٰهَا ۝٤ وَالسَّمَاءِ وَمَا
بَنٰهَا ۝٥ وَالْأَرْضِ وَمَا طَحٰهَا ۝٦ وَنَفْسٍ وَمَا سَوّٰهَا ۝٧
فَأَلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوٰهَا ۝٨ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا ۝٩
وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰهَا ۝١٠ كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوٰهَا ۝١١
إِذِ انْبَعَثَ أَشْقٰهَا ۝١٢ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ
اللَّهِ وَسُقْيٰهَا ۝١٣ فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا ۝ فَدَمْدَمَ
عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْبِهِمْ فَسَوّٰهَا ۝١٤ وَلَا يَخَافُ
عُقْبٰهَا ۝١٥

➲पाक करे वह निःसंदेह कामयाब हो गा १०. और जो उस को बिगाड़ देगा वह नामुराद रहे गा। ११. समूदियों ने अपनी सरकशी की वहज से झुठलाया १२. जब उन में एक बड़ा शरीर ख़ड़ा हुआ[३]। १३. उन से रसूलुल्लाह (हज़रत सालेह अ़लै०) ने कहा: अल्लाह की ऊँटनी और उस का पीने का हिस्सा छोड़ दो १४. उन्हों ने उस को झुठलाया और उस (ऊँटनी)की कूचें काट दीं, पस उन के पर्वरदिगार ने उन के गुनाहों की वजह से उन को तबाह कर दिया। ऐसा कि सब का सफ़ाया कर दिया १५. और (वह अल्लाह) उन से बदला लेने से डरता न था[४]

....

१. सूर: शम्श मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अ़िशा की नमाज़ में इस सूर: को और इस के बराबर की किसी सूर: को पढ़ा करते थे।

'चाँद जब उस के पीछे आता है' यानी सूरज छुप जाये और चाँद चमकने लगे। फिर दिन की क़सम खाई कि जब वह रोशन हो जाये। इमाम जरीर फ़रमाते हैं कि शुरू की चार आयतों के अन्त में जो सर्वनाम है इस से मुराद सूरज है, क्योंकि सूरज ही का बयान चल रहा है। इब्ने अबी हातिम की एक रिवायत में है कि जब रात आती है तो अल्लाह फ़रमाता है मेरे बन्दों को मेरी एक बहुत बड़ी मख़्लूक़ ने छुपा लिया, पस मख़्लूक़ रात से डरती है, तो उस के पैदा करने वाले से और ज़्यादा डरना चाहिये। फिर आसमान की क़सम खाता है। आयत न० ५,६,७ में "मा" का शब्द आया है यह दो मानों में आता है। अगर मस्दर के माना में हो तो अर्थ हो गा "ज़मीन आसमान और नफ़्स की बनावट की क़सम"। और अगर 'मन्' के माना हो तो अर्थ हो गा "आसमान की क़सम और उसके बनाने वाले की क़सम"। (मौलाना रह० ने यही दूसरा तर्जुमा इख़्तियार किया है।) (इब्ने कसीर)

२. तबरानी की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने आयत न० ८ पढ़ कर यह दुआ़ पढ़ी: "अल्लाहुम्म आति नफ़्सी तक़्वाहा व ज़क्काहा अन्-त ख़ैरू मन् ज़क्काहा अन्-त वलिय्युहा व मौलाहा"(इब्ने कसीर)

३. यह ख़ड़ा होने वाला शख़्स कुदार बिन सालिफ़ था जिस ने ऊँटनी पर आक्रमण कर के उस की कूचें काट दीं। एक बार आप ने हज़रत अ़ली को संबोधित करते हुये फ़रमाया: मैं तुम को बतलाता हूँ कि लोगों में सब से बदबख़्त दो शख़्स हैं (१) जिस ने ऊँटनी की कूचें काट कर उसे मार डाला (२). दूसरा वह है जो तेरे सर पर मारे गा और तेरी दाढ़ी ख़ून से लत-पत हो जाये गी। यह शख़्स इब्ने मुल्जिम था जिस ने नमाज़ की हालत में नेज़ा मारा। इस हदीस में आप ने जो भविष्यवाणी की थी वह सौ फ़ीसद सही साबित हुयी, इसे इमाम अबू नअ़ीम ने अपनी किताब "दलाइलुन्नुबुव्वत" में रिवायत किया है (वहीदी)

४. यानी उन की तबाही और बर्बादी की अल्लाह को ज़रा भी पर्वाह नही, इस लिये कि अल्लाह दुनिया के बादशाहों की तरह अन्जाम से नही डरता। अल्लाह तो मालिक है जो चाहे करे, भला उस को डर काहे का (वहीदी)

सूर: लैल् –(92)

सूर: लैल (रात) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[१]। इस में २१ आयतें और एक रूकूअ़ है।
शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।
१. क़सम है रात की जब छा जाती है २. और➲

الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ۝ إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّىٰ ۝ فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ
وَاتَّقَىٰ ۝ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ ۝ فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَىٰ ۝ وَ
أَمَّا مَن بَخِلَ وَاسْتَغْنَىٰ ۝ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَىٰ ۝ فَسَنُيَسِّرُهُ
لِلْعُسْرَىٰ ۝ وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدَّىٰ ۝
إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَىٰ ۝ وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَىٰ ۝
فَأَنذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّىٰ ۝ لَا يَصْلَاهَا إِلَّا الْأَشْقَى ۝
الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝ وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ۝ الَّذِي
يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ ۝ وَمَا لِأَحَدٍ عِندَهُ مِن
نِّعْمَةٍ تُجْزَىٰ ۝ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلَىٰ ۝
وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ ۝
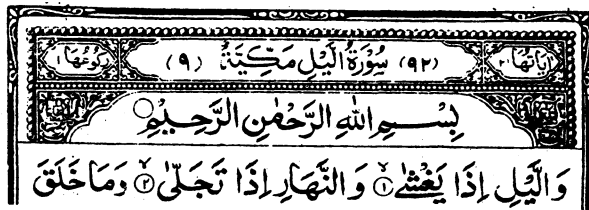
क़सम है दिन की जब रोशन होता है ३. और क़सम है (हमें अपनी ज़ात की) जिस ने नर और मादा पैदा किये। ४. बेशक तुम्हारी कोशिश मुख़्तलिफ़ है ५+६. जो अल्लाह के नाम पर देता है और परहेज़गारी करता है और हर एक अच्छी बात की तस्दीक़ करता है ७. हम उस की मुश्किलों में आसानी करें गे[२] ८+९. और जो कोई कन्जूसी करे और अपने आप को बेनियाज़ जाने और सच्ची तालीम न माने १०. तो हम उस को मुश्किल में फंसायें गे ११. वह जब मरे गा तो उसे उस का माल कुछ काम न आये गा १२. हिदायत पहुँचाना हमारे ज़िम्मा है १३. दुनिया की इब्तिदा और इन्तिहा हमारे क़ब्ज़ा में है १४. (अल्लाह) ने तुम सब लोगों को जहन्नम की आग से डराया है[३] १५+१६. जिस में सिवाए बड़े बदबख़्त के जिस ने झुठलाया और मुंह फेरा हो गा कोई दूसरा दाख़िल न हो गा १७+१८. और परहेज़गार जो अपना माल पाक होने की ग़रज़ से देता है, उसे बचाया जाये गा[४] १९. और किसी इन्सान का उस अल्लाह के पास कोई नेक काम बदला के क़ाबिल नही, जिस का उसे बदला दिया जाये २०. मगर जो काम उस ने अपने पर्वरदिगार बुलन्द शान वाले की रज़ामन्दी के लिये किया हो गा (उस का बदला उसे मिले गा) २१. और वह राज़ी हो जाये गा।

....

१. शाने-नुज़ूलः- हदीस शरीफ़ में आया है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ज़ुह्र और अ़स्र की नमाज़ों में इस सूर: को पढ़ा करते थे। इमाम राज़ी रह० फ़रमाते हैं कि यह सूर: हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और उन की सख़ावत की फ़ज़ीलत में और उमय्या बिन ख़ल्फ़ की बख़ीली की आलोचना में नाज़िल हुयी। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने उमय्या बिन ख़ल्फ़ से हज़रत बिलाल को ख़रीद कर आज़ाद कर दिया था उस समय अल्लाह पाक ने यह सूर: नाज़िल फ़रमाई। (वहीदी)

२. आयत न० ७ और १० का तर्जुमा शाह अ़ब्दुल क़ादिर ने इस प्रकार किया है: "हम सहज-सहज आसानी में पहुंचायें गे" "हम उस को सहज-सहज सख़्ती में पहुंचायें गे"। यानी वह कार्य उस से करायें गे जिस से दुनिया और आख़िरत दोनों में तकलीफ़ हो। सहीह हदीस में है कि सहाबा रज़ि० किसी जनाज़ा में आप के साथ थे, आप ने उन से फ़रमाया: तुम में से हर शख़्स का ठिकाना दोज़ख़ या जन्नत में लिखा जा चुका है। सहाबा ने कहा कि फिर हम उसी लिखे हुये पर भरोसा क्यों न कर लें? आप ने फ़रमाया: नही, बल्कि अ़मल किये जाओ, हर शख़्स को वही आसान किया जायेगा जिस के लिये वह पैदा किया गया है। अगर नेकों में से है तो नेक अ़मल उस के लिये आसान हो गा और अगर बुरे लोगों में से है तो बुरा अ़मल उस के लिये आसान हो गा। फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यही आयत न० ७ और १० की तिलावत फ़रमायी (वहीदी)

३. मुस्नद अहमद में हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक रोज़ ख़ुत्बा देते हुये बुलन्द आवाज़ में फ़रमाया: लोगो! मैं तुम्हें जहन्नम की आग से डरा चुका। लोगो! मैं तुम्हें जहन्नम की आग से डरा चुका। आप बार-बार बुलन्द आवाज़ से यही फ़रमाते रहे और आप की आवाज़ बाज़ार में पहुँच रही थी। एक दूसरी हदीस में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सब से हल्के अ़ज़ाब वाला क़ियामत के दिन वह होगा जिस के दोनों तलुवों के नीचे दो अन्गारे रख दिये जायें गे जिस से उस का दिमाग़ पक रहा हो गा (यही अ़ज़ाब आप के चचा अबू तालिब को होगा जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ में है............ ख़ालिद)

४. शाने-नुज़ूलः- अक्सर मुफ़स्सिरीन का कहना है कि यह आयतें हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ की शान में नाज़िल हुयीं। इस में तनिक भर संदेह नही कि हज़रत अबू बक्र रज़ि॰ ही इस आयत पर पूरे उतरते थे, सब से आगे और सब से बढ़-चढ़ कर आप ही थे। आप सिद्दीक़ थे, परहेज़गार थे, बुज़ुर्ग थे, सख़ी थे। अपने मालों को मौला की इताअ़त में और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सहायता में भर पूर ख़र्च करते थे। हर एक के साथ एहसान और सुलूक करते थे, यह सब काम सिर्फ़ अल्लाह और रसूल को खुश रखने के लिये करते थे। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ के बाद वह तमाम मुसलमान भी शामिल हैं जो अबू बक्र रज़ि॰ की तरह अ़मल करते हों। (इब्ने कसीर)

सूरः ज़ुहा – (93)

सूरः ज़ुहा (दिन चढ़ने का समय) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[1]! इस में ११ आयतें और एक रूकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. क़सम है ज़ुहा (के समय) की २. और क़सम है रात की जब वह छा जाती है ३. (ऐ नबी!) तेरे पर्वरदिगार ने तुझ को छोड़ा नही, न तुझ पर नाराज़[2] हुआ ४. और तेरी हर आख़िरी घड़ी तेरे लिये पहली घड़ी से अच्छी हो गी ५. और अल्लाह तुझे इतना दे गा कि तू राज़ी हो जाये गा ६. क्या अल्लाह ने तुझे यतीम पा कर ठिकाना न दिया ?७. और तुझे (दीनी मसाइल की तफ़्सील से) बेख़बर पाया तो राहनुमाई न की? ८. और तुझे बेमाल पाया तो ग़नी न कर दिया? (बिशक कर दिया) ९. पस (अब तुम) किसी यतीम पर ज़बर्दस्ती न करना १०. और माँगने वालों को कभी न झिड़कना ११. और अपने रब की नेमत का इज़्हार करते रहना

....

१. शाने-नुज़ूलः- हज़रत उबय्यि बिन कअ़ब रज़ि॰ रिवायत करते हैं कि यहाँ से अब हर सूरः के अन्त में तक्बीर के नारे कहा करो। क़िरात के इमाम हज़रत अबुल् हसन भी इसी प्रकार की रिवायत करते है। (इब्ने कसीर)

२. मुस्नद अहमद की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बीमार हो गये और एक या दो रात
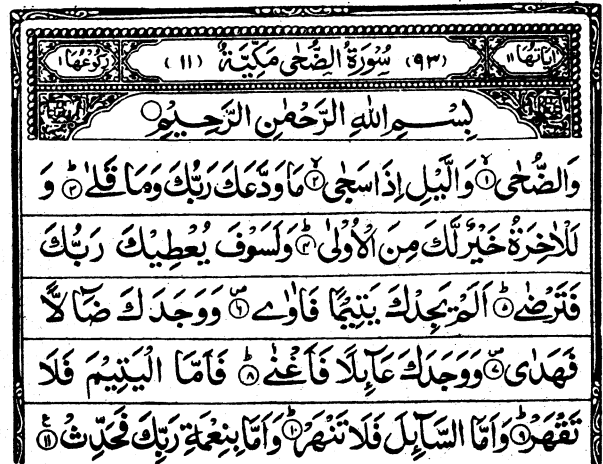
➲आप तहज्जुद की नमाज़ के लिये न उठ सके, तो एक काफ़िर महिला कहने लगी कि तुझे तेरे शैतान ने छोड़ दिया है, इस पर यह आयतें नाज़िल हुयीं (बुख़ारी, मुस्लिम) कुछ दूसरी रिवायतों में है कि आप पर वह्यि का आना चन्द दिनों के लिये बन्द हो गया था, इस पर मुश्रिक आप को ताना देने लगे थे, इन के ताना के उत्तर में यह आयतें नाज़िल हुयीं।

सूरः इन्शिराह – (94)

सूरः इन्शिराह मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ८ आयतें और एक रूकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. क्या हम ने तेरा सीना कुशादा नही किया?[1] २. और हम ने तुझ से तेरा (तब्लीग़ी) बोझ (अनुयायियों द्वारा) हल्का कर नही दिया है? ३. जिस ने तेरी पीठ तोड़ी हुयी थी ४. और हम ने तेरा ज़िक्र बहुत बुलन्द कर दिया है[2] ५. (यह) इसलिये कि (सब्र करने की हालत में) तंगी के साथ आसानी अवश्य होती है ६. ज़रूर ही तंगी के साथ आसानी है ७. पस जब तू मुकम्मल तौर पर फ़ारिग़ हो जाये तो ज़्यादा मेहनत किया कर[3] ८. और अपने पर्वरदिगार की तरफ़ मुतवज्जह हो जा।

---
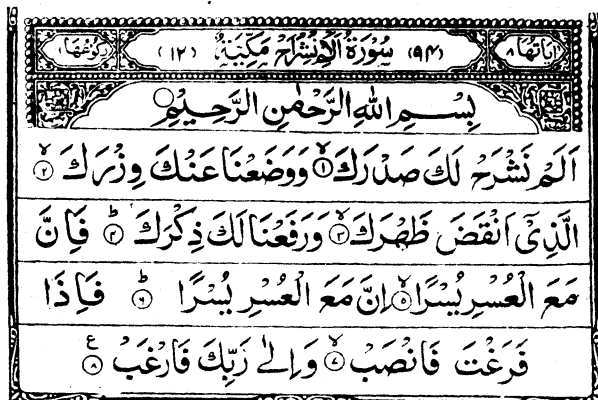
१. कहा गया है कि इस से मुराद मेराज वाली रात को सीना का चाक किया जाना है। इमाम तिर्मिज़ी ने मेराज वाली हदीस को यहीं नक़्ल किया है। लेकिन यह याद रहे कि मेराज का वाक़िआ और सीना को चाक करके अल्लाह का ख़ज़ाना बना देना, यह दोनों दो अलग-अलग वाक़िए मुराद हो सकते हैं। (इब्ने कसीर)

२. हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि० प्रसिद्ध इस्लामी कवि की कविता का तर्जुमा यह है "अल्लाह ने मुहरे नुबुव्वत को अपने पास का एक नूर बना कर आप को चमका दिया जो आप की रिसालत की गवाह है। अपने नाम के साथ अपने नबी का नाम मिला लिया, जबकि पांचों वक़्त मुअ़ज़्ज़िन "अश्-हदु" कहता है आप की इ़ज़्ज़त व जलाल को ज़ाहिर करने के लिये अपने नाम में से आप का नाम निकाला। देखो वह अर्श वाला महमूद है और आप मुहम्मद हैं" (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) (मुहम्मदी)

३. आयत का मज़मून यह है कि जब आप तब्लीग़ के अहम फ़र्ज़ को पूरा कर चुकें तो मुकम्मल तौर पर इ़बादत के लिये अल्लाह की तरफ़ लग जायें। शीआ़ फ़िर्क़ा के आ़लिम मौलवी मुहम्मद मक़बूल ने यह तर्जुमा किया है: "जब तुम फ़ारिग़ हो चुको तो अपना नायब मुक़र्रर करो"। मतलब आप का यह है कि ख़िलाफ़त के लिये हज़रत अ़ली रज़ि को मुक़र्रर करने का अल्लाह की तरफ़ से हुक्म था। चुनान्चे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अ़ली को अपना नायब बनाया, मगर सहाबा ने न माना। शीआ़ आ़लिम की तफ़सीर का जवाब यह है कि इन की तफ़्सीर का हक़ीक़त से कोई तअ़ल्लुक़ नही है। इस मस्अले को समझने के लिये हम एक छोटी सी बात पेश करते हैं। मदीना➲

➲के अन्सार ने जब कहा कि अमीर हम में से हो गा, उन के जवाब में हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने हदीस पेश की "अमीर क़ुरैश में से हो गा"। चूँकि यह फ़रमान नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का था इसलिये सब ने मान लिया और सर्दारी का दावा छोड़ दिया, मगर किसी ने हज़रत अ़ली वाली दलील न पेश की जिस में (शीआ़ फ़िर्क़ा के मुताबिक़) हज़रत अ़ली मुर्तज़ा को अपना नायब बनाया था। कम से कम मदीना के अन्सार को ख़ामोश करने के लिये हज़रत अ़ली और उन का ख़ान्दान तो यह रिवायत पेश कर ही सकता था कि ऐ अबू बक्र आप को नही मालूम, नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तो हज़रत अ़ली को बहुत पहले अपना नायब बना चुके हैं, हमारे पास फ़लाँ-फ़लाँ गवाह मौजूद हैं। लेकिन न अ़ली और न ही अ़ली के खान्दान के किसी शख़्स ने यह दलील पेश की। इस का मतलब यह हुआ कि इस प्रकार की कोई हदीस नही है (जिसे शीआ़ फ़िर्क़ा पेश करते हैं) अल्बत्ता अहले सुन्नत का दावा हज़रत अबू बक्र के तअ़ल्लुक़ से क़वी और दुरूस्त है। और विस्तार से मालूमात के लिये सूरः तहरीम पारः २८ का मुताला करें। (सनाई)

सूरः तीन — (95)

सूरः तीन (इन्जीर) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ८ आयतें हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत, रहम वाला है।

१. क़सम है हम को इन्जीर की और ज़ैतून की[1] २. और तूरे सैना की ३. और उस अम्न वाले शहर की (जो मक्का शरीफ़ है) ४. बेशक हम ने इन्सान को अच्छे ढाँचे पर बनाया (मगर उस अभागे ने हमारी दी हुई ताक़तों को बर्बाद कर दिया) ५. फिर हम ने उस को निचलों से नीचे गिरा दिया ६. मगर जो लोग ईमान ला कर नेक आमाल करते हैं उन के लिये हमेशा का बदला है ७. अब भी ऐ इन्सान! तुझे क्या चीज़ झुठलाने को कहती है? ८. क्या अल्लाह-अहकमुल् हाकिमीन (हाकिमों का हाकिम) नही है? (बेशक है)

....

१. इन्जीर और ज़ैतून दोनों चीज़ें बहुत ही लाभदायक हैं और साथ ही इन्सान की हक़ीक़त के साथ ख़ुसूसी मुशाबिहत रखते हैं। इसी लिये आयत न०४ (हम ने इन्सान को......) इन दोनों चीज़ों की क़सम खाने के बाद तुरन्त ही शुरू कर दिया। कुछ उ़लामा का कहना है कि इस आयत में 'तीन, ज़ैतून' से दो पहाड़ों की तरफ़ इशारा है जिन के निकट ही बैतुलमुक़द्दस मौजूद है। गोया उन दो पेड़ों की क़सम नही खाई गयी है बल्कि बैतुलमुक़द्दस की कसम खाई गयी है, जहाँ यह दोनों दरख़्त अधिकांश पाये जाते हैं, और वही स्थान हज़रत मसीह अ़लै० की पैदाइश और नबी बनाये जाने का है।

'तूरे सीनीन' वह पहाड़ है जिस पर हज़रत मूसा से अल्लाह ने कलाम किया। 'अम्न व शान्ति वाला शहर' से मुराद मक्का शरीफ़ है जहाँ पूरी दुनिया के नबी मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम नबी बनाये गये और अल्लाह की सब से बड़ी और अन्तिम अमानत क़ुरआन करीम अव्वल-अव्वल इसी शहर में उतारा गया। तौरात➲
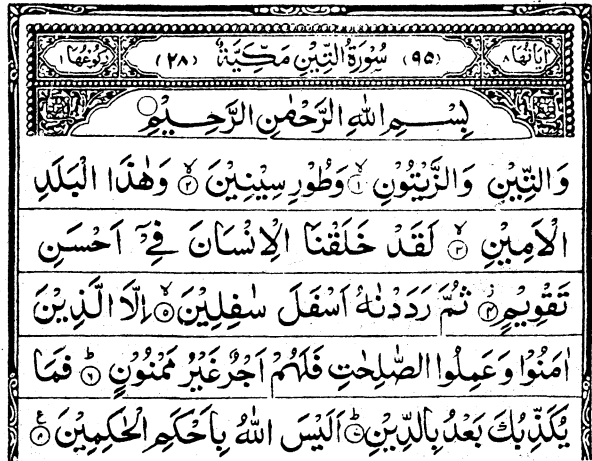
के आख़िर में यह लिखा है कि अल्लाह तूरे सैना से आया और सअ़ीर से चमका (जो बैतुल-मुक़द्दस का एक पहाड़ है) और फ़ारान की चोटी से बुलन्द हो कर फैला। 'फ़ारान' मक्का के पहाड़ों का नाम है।

खुलासा यह कि सब बर्कत वाले स्थान जहाँ से ऐसे-ऐसे बुज़ुर्ग पैगंबर बनाये गये, गवाह हैं कि हम ने इन्सान को कितने अच्छे साँचे में ढाला और कैसी कुछ क़ुव्वतें और ज़ाहिरी व बातिनी खूबियाँ उस के वजूद में जमा की हैं। अगर यह अपनी हक़ीक़त को पहचान कर अ़मल करे तो फ़रिश्तों से भी आगे बढ़ जाये, मगर यही इन्सान जब इन्कार पर आमादा हो तो जानवरों से भी बदतर हो जाये (मुवज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)

सूरः अ़-लक़ – (96)

सूरः अ़लक़ (जमा हुआ खून) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में १९ आयते और एक रूकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. (ऐ रसूल!) तू अपने रब का नाम पढ़ा कर जिस ने सब कुछ बनाया है २. इन्सान को अल्लाह ने जमे हुये ख़ून से पैदा किया ३. अपने रब का नाम पढ़ा कर, तेरा पर्वरदिगार बड़ी अ़िज़्ज़त वाला है। ४. जिस ने क़लम के ज़रीअ़ा लिखना सिखाया[1] ५. इन्सान जो न जानता था उस को सिखाया ६. बेशक इन्सान गुमराह हो जाता है ७. इस कारण कि अपने आप को (अल्लाह से) बेनियाज़ समझता है ८. तेरे पर्वरदिगार की तरफ़ लौटना है (क्यों कि दुनिया की तमाम हकर्तों का पावरहाऊस वही है) ९+१० क्या तू ने उस को भी देखा जो एक बन्दे को जब वह नमाज़ पढ़ता है तो रोकता है ११+१२. और वह हिदायत पर हो और लोगों को भी परहेज़गारी के काम बताता हो १३. अगर यह रोकने वाला सच को झुठलाने वाला और हक़ से मुँह मोड़ने वाला हो १४. क्या वह नही जानता कि अल्लाह देख रहा है १५+१६. हर्गिज़ उसे न (करना) चाहिये, और अगर वह बाज़ न आया तो हम ज़रूर उसे झूठी बदकार पेशानी से पकड़ कर खींचें गे १७. पस वह अपनी मज्लिस के सदस्यों को बुला ले १८. हम भी जहन्नम के फ़रिश्तों को बुला लें गे १९. (उसे) हगिर्ज़ ऐसा न करना चाहिये, उस का कहना न मान और (अल्लाह के सामने) सज्दा कर के उस की नज़दीकी चाह।

آیاتها ١٩ — سُوْرَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ (٩٦) — ركوعها ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِىْ خَلَقَ ﴿١﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ
عَلَقٍ ﴿٢﴾ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ﴿٣﴾ الَّذِىْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ﴿٤﴾
عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ﴿٥﴾ كَلَّاۤ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰۤى ﴿٦﴾
اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ﴿٧﴾ اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ﴿٨﴾ اَرَءَيْتَ الَّذِىْ
يَنْهٰى ﴿٩﴾ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ﴿١٠﴾ اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى
الْهُدٰۤى ﴿١١﴾ اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ﴿١٢﴾ اَرَءَيْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿١٣﴾
اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ﴿١٤﴾ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ لَنَسْفَعًۢا
بِالنَّاصِيَةِ ﴿١٥﴾ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ﴿١٦﴾ فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ﴿١٧﴾
سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ﴿١٨﴾ كَلَّا ؕ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ﴿١٩﴾

....

१. इस सूरः की पांच आयतें क़ुरआन की तमाम आयतों और सूरतों से पहले उतरीं। आप हिरा पर्वत के ग़ार में

➲अल्लाह की ड़िबादत में लगे थे कि अचानक हज़रत जिब्रील अ़लै० वह्यि ले कर आये और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा: पढ़िये! आप ने फ़रमाया: मैं पढ़ा हुआ नही हूँ। जिब्रील ने आप को दबाया और फिर कहा: पढ़िये! आप ने फिर वही उत्तर दिया कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ। जिब्रील ने तीसरी मर्तबा ज़ोर से दबा कर फ़रमाया: पढ़िये "इक़रअ् बिस्मि रब्बि क........।

मतलब यह है कि जिस रब ने पैदाइश से ले कर इस समय तक आप की पर्वरिश फ़रमाई, जो इस बात का पता देती है कि आप से कोई बहुत बड़ा काम लिया जाने वाला है, तो क्या वह आप को अधर में छोड़ देगा? हर्गिज़ नही, उसी के नाम पर आप की तालीम हो गी जिस की मेहरबानी से तर्बियत हुयी है। (मुवाज़्ज़िहुल् फ़ुर्क़ान)

सूरः क़द्र – (97)

सूरः क़द्र मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में पांच आयतें और एक रूकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. बेशक हम ने इस को लैलतुल्-क़द्र में नाज़िल (करना आरंभ) किया[१] २. तुम्हें क्या मालूम लैलतुल् क़द्र क्या है? (सुनो हम बताते हैं) ३. लैलतुल् क़द्र हज़ार महीनों से अफ़्ज़ल है ४. उस में फ़रिश्ते और रूह अपने रब के हुक्म से नाज़िल होते हैं (दुनिया में नेक व बद बन्दों के आमाल देखाते हैं) ५. वह रात सुब्ह के ज़ाहिर होने तक हर प्रकार से सलामती वाली है[२]।

....
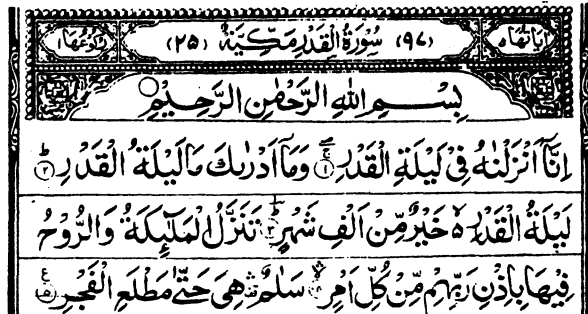
१. लैल्तुल-क़द्र के बारे में बहुत सी हदीसों में ज़िक्र है। (१) हज़रत आ़इशा फ़रमाती हैं कि लैलतुल-क़द्र को रमज़ान के अन्तिम दहे की ताक़ रातों में तलाश करो। (बुख़ारी) (२) हज़रत इब्ने उ़मर रज़ि० फ़रमाते हैं कि चन्द सहाबा को यह रात रमज़ान के अन्तिम सप्ताह में ख़ाब में दिखाई गयी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मेरा ख़याल है कि तुम्हारा ख़ाब रमाज़ान के आख़िरी हिस्से में पूरा हो गा, पस जो कोई क़द्र वाली रात की तलाश करना चाहे वह अन्तिम दस दिनों में करे (बुख़ारी मुस्लिम) (३) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क़द्र की रात को रमज़ान के अन्तिम दहे में तलाश करो यानी २१,२३,२५,२७, और २९ की रात को। इन रिवायतों के अ़लावा और भी रिवायतें हैं जो ऊपर बयान की गयी तीनों हदीसों की ताईद करती हैं। इसी लिये उम्मते-मुस्लिमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि क़द्र की रात रमज़ान के अन्तिम दहे की ताक़ रातों में से किसी एक ताक़ रात में है।

लेकिन हमारे राज्य पंजाब के झूठे नबी मिर्ज़ा क़ादियानी क़द्र की रात के तअ़ल्लुक़ से कुछ और ही कहते हैं। मौलाना अमृतसरी मर्हूम ने उन की बातों को नक़ल कर के उन का ज़बर्दस्त रद्द भी फ़रमाया है। तफ़्सील के लिये तफ़्सीर सनाई उर्दू एडीशन के भाग ८ का पृष्ट १७३ पढ़ें।

मैं (राज़) कहता हूँ कि आजकल एक फ़िर्क़ा हदीस के मुन्किरों का भी है जिस ने क़द्र की हदीसों का इन्कार किया है और बड़े भोंडे अन्दाज़ से जुम्हूर के मसलक का मज़ाक़ उड़ाया है। यह उस फ़िर्क़े की जिहालत और कम➲

अ़िलमी की दलील है। इस फ़िर्के के दलाइल क्या हैं और हदीस से उन दलाइल का कैसे रद्द होता है? तफ़सील के लिये हमारी किताब "ख़ालिस इस्लाम" का मुताला किया जाये। (राज़)

२. यानी वह अम्न, सलामती और चैन की रात है। इस रात जिब्रील और फ़रिश्ते अ़िबादत और ज़िक्र करने वालों पर दरूद भेजते हैं। शाम से सुब्ह तक यही सिलसिला जारी रहता है। इस प्रकार वह रात मुकम्मल रूप से मुबारक रात होती है। क़ुरआन से मालूम होता है कि वह रात रमज़ान शरीफ़ में है और अहादीस से मालूम होता है कि वह रात रमज़ान शरीफ़ के अन्तिम दहे की ताक़ रातों में है। क़द्र की रात हमेशा के लिये किसी एक ही ताक़ रात में नहीं है। ऐसा भी हो सकता है कि एक रमज़ान में कोई रात हो और दूसरे रमज़ान में कोई दूसरी रात हो।

शाने-नुज़ूलः-बनी इस्राईल के एक आ़बिद ने एक हज़ार माह तक अल्लाह की अ़िबादत की जिस का ज़िक्र सुन कर सहाबा को बड़ा आश्चर्य हुआ, इस पर अल्लाह ने यह सूरः नाज़िल फ़रमायी कि तुम्हारे लिये इस एक रात की अ़िबादत हज़ार महीने की अ़िबादत से अफ़्ज़ल है। क़द्र वाली रात में यह दुआ़ पढ़नी चाहिये "अल्लाहुम्म इन्न-क अ़फुव्वुन् तुहिब्बुल् अ़फ़-व फ़अ़्फु अ़न्नी (मेरे मौला! तू माफ़ करने वाला है और माफ़ी को पसन्द करता है, इस लिये मुझे माफ़ फ़रमा)(मुवज़्ज़िहुल् फुर्क़ान)

सूरः बय्यि-नः – (९८)

सूरः बय्यिनः (रौशन दलील) मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ८ आयतें और एक रूकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. अहले-किताब[1] में से काफ़िर लोग और मुशिरकीन (अपनी बिदअ़ात और खुराफ़ात से) हटने वाले न थे, जब तक कि उन के पास खुली बात बताने वाला रसूल अल्लाह की तरफ़ से न आये २+३. जो पाक (इल्हामी) सहीफ़े (पढ़कर) उन को सुनाये जिन में मुहकम मसाइल दर्ज हों ४. और जिन को पहले किताब मिली थी वह बाद आ जाने इस बय्यिनः (वाले) नबी के (मानने और न मानने में) मुख़्तलिफ़ होगये। ५. और उन को यही हुक्म किया गया कि (कुफ़्-शिर्क छोड़ कर) एक रूख़ हो कर अल्लाह ही की मुख़्लिसाना अ़िबादत किया करें और नमाज़ पढ़ें और ज़कात अदा करें। (हमारे नज़दीक) दीने-क़य्यिम (मुहकम तरीक़ा) यह है। ६. जो लोग अहले-किताब में से और मुश्रिकों में

اٰيَاتُهَا ٨ (٩٨) سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ (١٠٠) رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ
حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝١ رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۝٢
فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۝٣ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝٤ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا
لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۵ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ۝٥ اِنَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝٦ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝٧ جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ
جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا
رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ ۝٨

➲से (इस्लाम के) मुन्किर हैं (उन की सज़ा यह है कि) वह दोज़ख़ की आग में हमेशा रहेंगे। वह सब लोगों में से बदतरीन लोग हैं। ७. (इन के विपरीत) जो लोग ईमान ला कर नेक अ़मल करते हैं, वही लोग सब लोगों में अच्छे हैं[२]। ८. (इस लिये) उन का बदला उन के पर्वरदिगार के पास हमेशा रहने के बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें जारी होंगी हमेशा उन में रहेंगे। (आराम के अ़लावा बड़ी नेमत उन को यह मिलेगी कि) अल्लाह उन से राज़ी और वह अल्लाह से राज़ी, यह उन लोगों को मिलेगा जो अपने रब से डरते रहे होंगे।

....

१. अहले-किताब से मुराद यहूद और नसारा हैं, और 'मुश्रिकीन' से मुराद बुतों और आग की पूजा करने वाले अ़रब और अ़जम के लोग हैं। यह लोग बग़ैर दलील के अपनी आ़दतों को छोड़ने वाले न थे। दलील नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं जो पाक सहीफ़ा यानी क़ुरआन मजीद पढ़ कर सुनाते हैं। आगे फ़रमाया कि अगली किताबों वाले अल्लाह की हुज्जत क़ायम हो जाने के बाद अहकाम व मसाइल में इख़्तिलाफ़ कर के अलग-अलग राहों में बट गये। चुनान्चे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: यहूद ७१ फ़िर्क़ों में बटे और नसारा ७२ में और हमारी उम्मत के अन्दर ७३ फ़िर्क़े हो जायें गे। और इन में एक फ़िर्क़े को छोड़ कर बाक़ी सब जहन्नमी हों गे। लोगों ने पूछा वह एक जन्नती फ़िर्क़ा कौन सा है? आप ने फ़रमाया: "जिस पर मैं और मेरे सहाबा हैं" (इब्ने कसीर)

अल्लाह का शुक्र है कि जमाअ़त अहलेहदीस इस उसूल पर क़ाइम है। यानी क़ुरआन और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत पर अ़मल करने वाली है। (राज़)

२. हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि मोमिन का दर्जा अल्लाह के नज़दीक क़ियामत के दिन फ़रिश्तों से भी अधिक होगा, अगर तुम्हें शुब्हा हो तो इस आयत की तिलावत करो। हज़रत आ़इशा रज़ि० ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा कि अल्लाह के नज़दीक तमाम मख़्लूक़ में सब से अफ़्ज़ल कौन है? आप ने फ़रमाया: क्या तू ने यह आयत नही पढ़ी? मुस्नद अहमद की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं तुम्हें बताता हूँ कि सब से बेहतर कौन है। सहाबा ने कहा: अवश्य बताइये, आप ने फ़रमाया: वह शख़्स सब से बेहतर है जो घोड़े की लगाम थामे हुये हैं कि जिहाद का हुक्म हो और कूद कर पीठ पर सवार हो कर दुश्मन की फ़ौज में घुस जाऊँ और अल्लाह की राह में लड़ मरूँ। एक और भी मख़्लूक़ है जो सब से अफ़्ज़ल है। वह है जो अपनी बकरियों को चराता है और न एक वक़्त की नमाज़ छोड़ता है न रोज़ा। बहुत से उलमा का कहना है कि इस सूरः की आयत न० ५ से साफ़ ज़ाहिर है कि अ़मल ईमान में दाख़िल है, क्योंकि इस आयत में तौहीद ख़ालिस के साथ नमाज़, रोज़ा को दीन कहा गया है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सब से बुरी मख़्लूक़ वह है जो अल्लाह के नाम से सवाल करे और न दिया जाये (इब्ने कसीर)

सूरः ज़िल्ज़ाल् – (99)

सूरः ज़िल्ज़ाल् (भूकंप) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[१]। इस में ८ आयतें और एक रूकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. जब ज़मीन ज़ोर से हिलाई जायेगी २. और➲
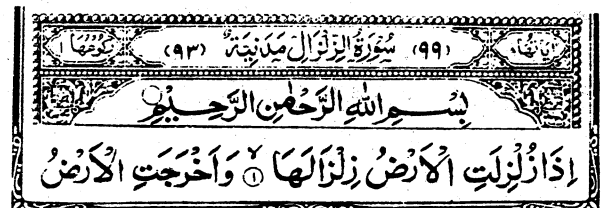
➲ज़मीन अपने अन्दर के दफ़ीने सब बाहर फेंक देगी ३. और इन्सान कहेगा कि उस को क्या हो गया ४. उस रोज़ ज़मीन (अपने ऊपर गुज़रे हुये वाक़िआत की) तमाम ख़बरें बतायेगी ५. कि तेरे पर्वरदिगार ने उस को समझा दिया होगा[२] ६. उस रोज़ इन्सान मुख़्तलिफ़ हालतों में से निकलेंगे ताकि उन के आमाल दिखाए जायें ७. पस जिस शख़्स ने ज़र्रा जितना भी अच्छा काम किया होगा वह उसे देखलेगा ८. और जिस ने ज़र्रा जितना बुरा[३] काम किया होगा वह भी उसे देख लेगा[४]

....

१. तिर्मिज़ी शरीफ़ में है कि एक शख़्स ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! मुझे कोई निहायत ठोस मगर मुख़्तसर सूरः का सबक़ दे दीजिये? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसे यही सूरः बतलाई। जब वह सहाबी जाने लगे तो आप ने फ़रमाया: वह मर्द कामियाब हो गया। कुछ अन्य रिवायतो में इस सूरः को सवाब में आधे क़ुरआन के बराबर कहा गया है। (इब्ने कसीर)

२. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस आयत को तिलावत करने के बाद फ़रमाया जो-जो काम इन्सान ने ज़मीन के ऊपर किये हों गे वह तमाम ज़ाहिर कर देगी। यानी वह कहेगी कि फलाँ-फ़लाँ इन्सान ने फ़लाँ-फ़लाँ बुराई फ़लाँ-फ़लाँ स्थान पर की है। (इब्ने कसीर)

३. अगर तौबा न करे, या उस बुरे काम से अच्छा नेक काम न करने से उस के ज़िम्मा से उतरा न हो गा तो वह भी उसे.........(सनाई)

४. हज़रत अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि० ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से यह आयत सुन कर पूछा कि क्या मुझे अपने सारे काम देखने पड़ें गे? आप ने फ़रमाया: हाँ, यहाँ तक कि छोटे से छोटे और बड़े से बड़े भी। मैं ने कहा कि यह तो बड़े अफ़सोस की बात है। आप ने फ़रमाया: अबू सअ़ीद! प्रसन्न हो जाओ, नेकी तो दस गुना से ले कर सात सौ गुना, बल्कि इस भी ज़्यादा अल्लाह कर दे गा, मगर गुनाह बुराई के बराबर ही लिखा जायेगा, या अल्लाह चाहे गा तो इस बुराई को भी माफ़ करदेगा। सुनो! किसी शख़्स को सिर्फ़ उस के आमाल नजात न दे सकें गे। मैं ने कहा कि क्या आप को भी? फ़रमाया कि हाँ मुझे भी नहीं, मगर यह कि अल्लाह की ज़ात अपनी रहमत से मुझे ढाँप ले (इब्ने कसीर)

सूरः आ़दियात- (100)

सूरः आ़दियात (दौड़ने वाला) मक्का में नाज़िल हुयी। इस में ११ आयतें और एक रूकूअ़ है। शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. क़सम है सरपट दौड़ने वाले घोड़ों की[१] ➲

صُبْحًا ﴿٣﴾ فَأَثَرْنَ بِهِ نَقْعًا ﴿٤﴾ فَوَسَطْنَ بِهِ جَمْعًا ﴿٥﴾
إِنَّ الْإِنسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ ﴿٦﴾ وَإِنَّهُ عَلَىٰ
ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ ﴿٧﴾ وَإِنَّهُ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيدٌ ﴿٨﴾
أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ ﴿٩﴾ وَحُصِّلَ
مَا فِي الصُّدُورِ ﴿١٠﴾ إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ
لَّخَبِيرٌ ﴿١١﴾

२. और क़सम है आग चमकाने वालों की ३. और क़सम है सुब्ह के समय हमला करने वालों की ४+५. जो ग़ुबार उड़ाते हैं और उसी के साथ जमाअ़त में घुस जाते हैं ६. इन्सान अपने रब का बड़ा ही नाशुक्रा है ७. हालाँकि वह (पर्वरदिगार हर समय) उस पर निग्राँ है ८. और यह (नाशुक्रा इन्सान अपने हक़ में) ख़ैर का हर समय ख़ाहिश मन्द है ९. क्या यह जानता नहीं कि जिस समय क़ब्रों में रखे हुये मुर्दे उठाये जायेंगे १०. और जो उन के दिलों में है उसे ज़ाहिर किया जायेगा ११. उस रोज़ उन का पर्वरदिगार उन के हाल से ख़बरदार होगा।

....

१. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास से एक सहाबी ने इस आयत की तफ़्सीर पूछी तो आप ने फ़रमाया: इस से मुराद जिहाद करने वालों के घोड़े हैं। जिहाद के समय दुश्मनों पर धावा बोलते हैं, फिर रात के समय यह मुजाहिद अपने ठिकानों में आ कर खाने-पकाने के लिये आग जलाते हैं। यह भी मतलब हो सकता है कि घोड़े अपने टापों की ठोकरों से चिंगारियाँ निकालते हैं। इमाम जरीर रह० ने इसी क़ौल को पसन्द फ़रमाया है।

चार क़समें खाने के बाद वह विषय बयान हो रहा है जिस पर क़समें खाई गयी थीं। यानी इन्सान अपने रब की नेमतों की क़द्र करने वाला नही है। अबू बक्र बज़्ज़ार की एक रिवायत के अनुसार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मजाहिदों का एक लश्कर भेजा था। उस की एक माह तक कोई ख़बर नही आयी, इस पर यह सूरः नाज़िल हुयी और अल्लाह ने उन के बारे में सूचना दी। कुछ उ़लमा मिना से मुज़दलिफ़ा की तरफ़ जाना और सफ़र में ऊँटों का ग़ुबार उड़ाना भी मुराद लेते हैं। (इब्ने कसीर)

सूरः क़ारि-अ़ः- (101)

सूरः क़ारिअ़ः (खड़खड़ाने वाली) मक्का में नाज़िल हुयी। इस में ११ आयतें और एक रूकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. ख़ड़ख़ड़ाने वाली घड़ी २. कैसी ख़ड़ख़ड़ाने वाली है? ३. तुम्हें क्या मालूम वह ख़ड़ख़ड़ाने वाली क्या चीज़ है? ४. (वह उस दिन होगी) जिस रोज़ इन्सान फैले हुये पतिन्गों की तरह होंगे ५. और पहाड़ धुनी हुयी ऊन की तरह हो जायेंगे ६+७. फिर जिस के नेक आमाल

سُورَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ (١٠١) (٣٠)
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
الْقَارِعَةُ ﴿١﴾ مَا الْقَارِعَةُ ﴿٢﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ ﴿٣﴾
يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ﴿٤﴾ وَتَكُونُ
الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنفُوشِ ﴿٥﴾ فَأَمَّا مَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ﴿٦﴾
فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٧﴾ وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ﴿٨﴾
فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ﴿٩﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَهْ ﴿١٠﴾ نَارٌ حَامِيَةٌ ﴿١١﴾

ग़ालिब होंगे, वही मज़े के ऐश में होंगे ८+९. और जिन के आमाल (वज़न में) हल्के होंगे, उन का ठिकाना हावि यः हो गा[२] १०. तुझे क्या मालूम हावि यः क्या है? ११. वह दहकती हुयी तेज़ आग है

....

१. यानी धुनी हुयी रूई की तरह उड़ते हुये नज़र आयें गे, यहाँ तक कि सब ज़मीन बराबर हो जाये गी जिस में कोई ऊँचाई-नीचाई न हो गी। क़ियामत के दिन का यह पहला हिस्सा है, इस के बाद फिर पैदाइश होगी और सब हश्र के मैदान में एकत्रित होंगे (सनाई)

२. 'हावि-यः' दोज़ख़ के नीचे के तबक़ा (स्थान) का नाम है। हदीस शरीफ़ में आया है कि जब कोई मोमिन मर जाता है तो दूसरे मोमिनों की रूहें उस से मिल कर पूछती हैं कि फ़लाँ-फ़लाँ लोग कहाँ हैं? वह कहता है कि वह तो मर चुके, और क्या तुम से मुलाक़ात नहीं हुयी? तब वह कहते हैं कि संभवतः वह हाविया में चले गये (वर्ना अवश्य मुलाक़ात होती) (वहीदी)

सूरः तकासुर – (102)

सूरः तकासुर मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी[१]। इस में ८ आयतें और एक रूकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम से, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. लालच की कस्रत ने तुम को (अल्लाह की याद से) ग़ाफ़िल कर दिया २. यहाँ तक कि तुम ने क़ब्रें भी देखीं[२] ३. हर्गिज़ ऐसा न करना चाहिये, तुम जान लोगे ४. फिर हगिर्ज़ ऐसा न करना चाहिये, ५.तुम यक़ीनी तौर पर जानते (तो ऐसी ग़फ़्लत न करते) ६. ज़रूर तुम जहन्नम देखोगे ७. फिर (तुम से कहते हैं कि ज़रूर) उसे देखोगे ८. फिर उस रोज़ तुम से नेमतों (पर शुक्र गुज़ारी) के बारे में प्रश्न होगा[३]

....
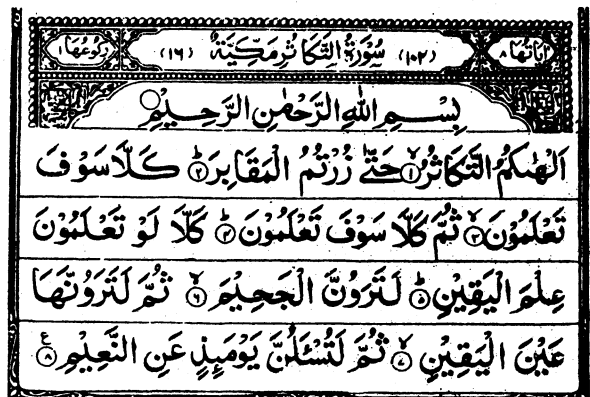
१. यह सूरः मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। हदीस शरीफ़ में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क्या तुममें से कोई हज़ार आयतें नही पढ़ सकता? सहाबा ने कहाः हज़ार आयतें कोई कैसे पढ़ सकता है? आप ने फ़रमायाः क्या तुममें से कोई सूरः तकासुर नहीं पढ़ सकता? वह हज़ार आयतों के बराबर है।

जब यह सूरः नाज़िल हुयी तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आदमी कहता है कि मेरा माल, मेरा माल। हालाँकि उस का माल केवल उतना है जो उस ने खाया-पिया और पहना-ओढ़ा, या अल्लाह की राह में सदक़ा कर दिया और अपने लिये आख़िरत में जमा कर लिया। इस के अ़लावा वह सब दूसरों के लिये छोड़ जाने वाला है। एक दूसरी रिवायत में है कि तुम को सूरः तकासुर पढ़ कर सुनाता हूँ, फिर जो कोई रोये उस के लिये जन्नत है और जिस को रोना न आये वह रोनी सी सूरत बनाये। (वहीदी)

२. शाने-नुज़ूलः- यानी मरते दम तक इसी फ़िक्र में रहते हैं। कहा जाता है कि क़ुरैश के दो ख़ान्दानों ने यहाँ

➲तक फ़ख्र किया कि अपने-अपने मुर्दों की जनसंख्या पर भी नाज़ करने लगे, उस वक़्त यह सूरः नाज़िल हुयी।
३. स्वास्थ्य, ख़ैरियत, अम्न व शान्ति, खाने-पीने, और तमाम लज़्ज़तों के बारे में पूछ-ताछ हो गी कि उन को इस्तेमाल कर के शुक्र अदा किया या नही? एक हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सहाबा के साथ ताज़ी खजूरें खा कर ठंडा पानी पिया फिर फ़रमाया: यह दुनिया का मज़ा है जिस के बारे में तुम से प्रश्न हो गा। (वहीदी)

सूरः अस्र – (103)

सूरः अस्र (समय) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ३ आयतें और एक रूकूअ़ है।
शुरू अ़ल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।
१. क़सम है ज़माना की २. बेशक इन्सान (सरासर) नुक़्सान में है ३. लेकिन जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल कर के नेक अ़मल किये और दूसरे को हक़ पसन्दी की नसीहत करते रहे (वह नुक़्सान या घाटे में नहीं)[1]

....
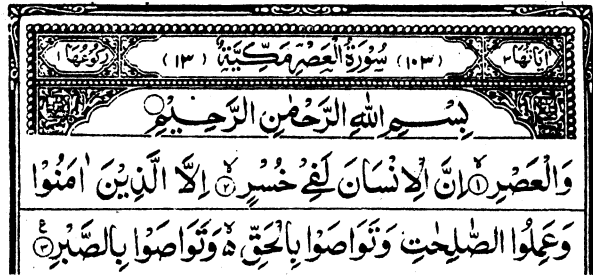
१. तबरानी की रिवायत में है कि दो सहाबा का यह दस्तूर था कि जब दोनों आपस में मिलते तो उन में का एक इस सूरः की तिलावत करता और दूसरा सुनता, फिर सलाम कर के अलग-अलग हो जाते। हज़रत इमाम शाफ़ई रह० फ़रमाते हैं कि अगर लोग इस सूरः को ग़ौर कर के पढ़ें तो यही एक सूरः ही काफ़ी है।
इस सूरः में इस हक़ीक़त पर रोशनी डाली गयी है कि इस फ़ना हो जाने वाली दुनियाँ में आ कर जो लोग ईमान और नेक अ़मल की ज़िन्दगी गुज़ारें गे और क़ौम और मिल्लत के फ़ाइदे के लिये हर संभव कोशिश के साथ एक दूसरे को हक़ और सब्र पर जमे रहने की नसीहत और वसिय्यत करते रहें गे, उन का नाम दुनियाँ में ज़िन्दा रहे गा और उन के कारनामे क़ौमों और नस्लों के लिये हिदायत का ज़रीआ़ हों गे, और इस दुनिया से जाने के बाद भी बराबर उन को सवाब मिलता रहे गा।

सूरः हु-म-ज़ः – (104)

सूरः हु-म-ज़ः मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी इस में ९ आयतें और एक रूकूअ़ है।
शुरू अ़ल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।
१. हर अ़ैब तलाश करने वाले ताना देने वाले के लिये अफ़सोस है[2] २. जिस ने माल जमा किया है और उस को (बड़े फ़ख्र से) शुमार करता रहता है। ३. समझता है कि यह माल उस के➲
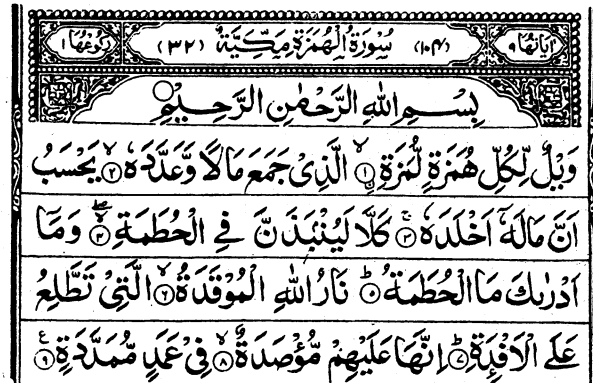
पास हमेशा रहेगा ४. हर्गिज़ (सहीह) नहीं, भस्म करने वाली आग में डाला जायेगा ५. तुम्हें क्या मालूम कि वह भस्म करने वाली क्या है? ६. वह अल्लाह (की तरफ़ से सज़ा के तौर पर मुक़र्रर) की (हुयी) तेज़ आग है ७. जो (बदन से गुज़र कर) दिलों तक जा चढ़ेगी। ८+९. तहक़ीक़ वह (आग) बड़े-बड़े सुतूनों की सूरत में उन (जहन्नमी बदकारों) के लिये मख़्सूस होगी।

....

१. यह सूरः बिला इख़्तिलाफ़ मक्का में नाज़िल हुयी। इस से पहली सूरः अस्र में बयान हुआ कि इन्सान घाटे में है। अब इस सूरः में घाटे में डालने वाली चीज़ों को बताया जा रहा है। उमय्या बिन ख़ल्फ़ और दूसरे कुफ़्फ़ार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बुराइयाँ बयान करते थे और ग़रीब सहाबा की नमाज़ों की नक़्लें उतार कर लोगों को हँसाया करते और नफ़रत दिलाया करते थे, ऐसे ही लोगों के रद्द में यह सूरः नाज़िल हुयी। (हक़्क़ानी)
२. 'हु-म-ज़ः' उस को कहते हैं जो सामने, मुँह पर बुराई बयान करे और 'लुमज़ा' उस को कहते हैं जो पीठ पीछे बुरा कहे, या आँख, हाथ वग़ैरह के इशारों से किसी को बेइ़ज़्ज़त करे। बड़े दुःख की बात है कि कुफ़्फ़ार की यह आ़दतें आज कल के मुसलमानों में भी पाई जाने लगी हैं। हर मज्लिस में एक-दूसरे की बुराई और ताने कसे जा रहे हैं। धनवान लोगों को ख़ुश करने के लिये आज कल लुच्चों, शुहदों और भाँडों ने पेशा बना लिया है। दीन के आ़लिम भी वाज़-नसीहत की मज्लिसों में भी आवाज़े कसते हैं।

इमाम बुख़ारी रह० फ़रमाया करते थे कि क़ियामत के दिन अल्लाह मुझ से ग़ीबत के बारे नें न पूछे गा, मैं ने पूरी उ़म्र किसी की ग़ीबत न की। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि ख़राबी हो उस के लिये जो लोगों को हंसाने के लिये झूठी बातें बयान करता है। उस के लिये ख़राबी है, उस के लिये ख़राबी है, उस के लिये ख़राबी है (अहमद, तिर्मिज़ी, दार्मी) एक दूसरी हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अपने भाई के अ़ैब को बयान कर के ताने न कसो , इस लिये कि अल्लाह नाराज़ हो कर उस के अ़ैब दूर कर के वह अ़ैब तुम्हारे अन्दर पैदा कर दे गा (र्तिमिज़ी)

'हु-म-ज़ा' और 'लु-म-ज़ः' यह मुबालग़े के लिये अ़रब में बोला जाता है। मुबालग़ा का सेग़ा इस लिये प्रयोग किया गया है क्यों कि यह बीमारी बहुत आ़म हो गयी है और हर शख़्स इस बीमारी में गिरिफ़्तार है...... इल्ला माशा अल्लाह! (हक़्क़ानी)

सूरः फ़ील् — (105)

सूरः फ़ील (हाथी) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ५ आयतें और एक रूकूअ़ है। शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. क्या तुम ने इस पर ग़ौर नही किया कि तुम्हारे पर्वरदिगार ने हाथियों वाले लोगों के साथ क्या बर्ताव किया था' २. क्या उन की चाल को (जो काबा शरीफ़ के गिराने के बारे में थी) बे असर न कर दिया था? (बिशक किया था) ३. और उन पर दल के दल परिन्दे भेजे ४. जो उन पर पथरीली
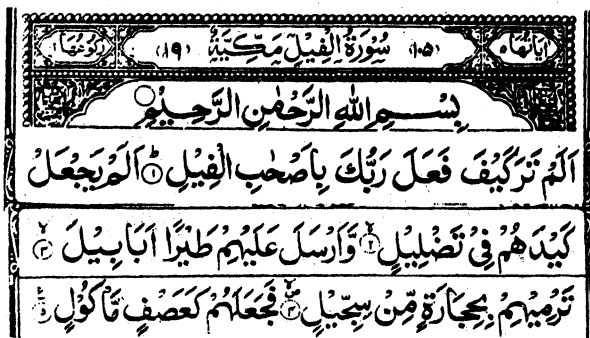
मिट्टी की कंकरियाँ मारते थे ५. पस (उन ही कंकारियों के साथ) अल्लाह ने उन को चबाये हुये भूसे की तरह (बेकार) कर दिया

....

१. जाहिलिय्यत के ज़माना में यमन के सूबा पर अहमक़ अब्रहा नामी गर्वनर था। उस ने देखा कि अ़रब के लोग मक्का हर वर्ष हज्ज के लिये जाते हैं। चुनान्चे उस ने भी वैसा ही एक घर बनाया और एलान कर दिया कि भविष्य में वहाँ जाने के बजाये इसी घर का हज्ज किया करें। लेकिन एक शख़्स ने उस घर में जा कर पाख़ाना कर के पूरे घर को गन्दा कर दिया। यह देख कर बादशाह आपे से बाहर हो गया और मक्का पर आक्रमण बोल दिया। मक्का के क़रीब पहुंच कर मक्का के सर्दार अ़ब्दुल मुत्तलिब से कहा कि मैं तुम लोगों के साथ लड़ने के इरादे से नही, बल्कि काबा को गिराने के इरादे से आया हूँ। उन्हों ने कहा कि काबा जिस का घर है वह स्वयँ उस की सुरक्षा करे गा। यह उत्तर दे कर अ़ब्दुल मुत्तलिब ने काबा में जा कर अल्लाह से दुआ़ की। उन की दुआ़ अल्लाह ने क़ुबूल फ़रमाई। अबरहा ने जब आक्रमण किया तो अल्लाह ने काबा शरीफ़ की सुरक्षा के लिये छोटी-छोटी चिड़ियाँ भेज दीं। यह लश्कर वालों के ऊपर छोटी-छोटी कन्कारियाँ मारती थीं। चुनान्चे वह सब तबाह बर्बाद हो गये, (कुछ पीठ फेर कर भाग गये) (सनाई)

सूरः कुरैश – (106)

सूरः क़ुरैश (क़ुरैश गोत्र) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में चार आयतें और एक रूकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१+२. क़ुरैश को सर्दी, गर्मी के सफ़र से उल्फ़त रखने पर आश्चर्य है ३. पस (अब) उन को चाहिये कि (ज़िन्दगी के अस्ल मक़सद की तरफ़ तवज्जुह करें कि) इस ख़ान-ए-काबा के पर्वरदिगार की इ़बादत किया करें ४. जो उन को भूक में खाना देता है और जिस ने ख़ौफ़ से उन को अम्न में रखा है

....

१. क़ुरैशे मक्का की आ़दत थी कि जाड़ों में यमन की तरफ़ और गर्मियों में शाम की तरफ़ तिजारत करते थे। लोग उन को बैतुल्लाह का सेवक समझ कर इ़ज़्ज़त की नज़रों से देखते थे। उन को अच्छा-ख़ासा लाभ भी प्राप्त होता था। इसी इनाम को यहाँ याद दिलाया जा रहा है कि इस घर के तुफ़ैल तुम को रोज़ी दी और हाथी वालों के आक्रमण से सुरक्षित रखा, फिर उस घर वाले की बन्दगी क्यों नही करते? और उस के रसूल की इताअ़त क्यों नही करते? (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान)

सूरः माऊन – (107)

सूरः माऊन मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ७ आयतें और एक रूकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. क्या तू ने उस इन्सान को देखा है जो दीने-इलाही को झुठलाता है २. यह वही है जो यतीम को धक्के देता है ३. और मिसकीन को खाना खिलाने की रग़बत भी नही देता ४+५. पस उन नमाज़ियों के लिये अफ़सोस है जो अपनी नमाज़ की शान(और हैसिय्यत) से ग़ाफ़िल हैं ६. जो लोगों को (नमाज़ें) दिखाते हैं ७. और (उन की कंजूसी का यह हाल है कि मामूली) बर्तावा (इस्तेमाल) की चीज़ें (किसी को) नही देते¹

....
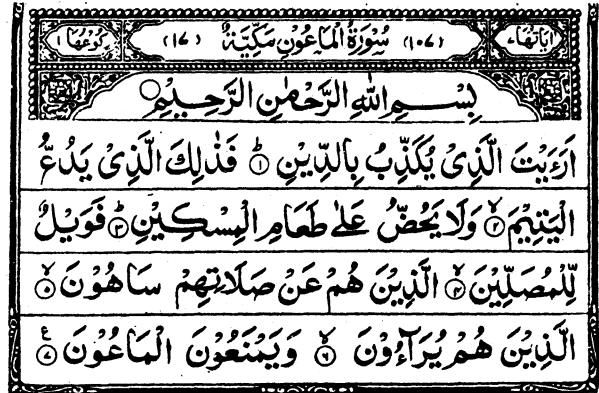
१. दीने-इस्लाम में तहज़ीबे-अख़्लाक़ की बड़ी अहमिय्यत है। यह मुल्क, मिल्लत और हुकूमत की तरक्क़ी की बुनियाद है। इन्सान को सब से पहले इस बात पर यक़ीन करना है कि इन्सान को जज़ा सज़ा (बदले) से दोचार होना है। यह अक़ीदा इस्लाम का एक हिस्सा है। अख़्लाक़ का मर्तबा यह है कि अल्लाह के बन्दों पर रहम किया जाये। अगर स्वयं नेक सुलूक नही कर सकता तो ज़बान ही से दूसरों को रग़बत दिलाये। यह अख़्लाक़ी तहज़ीब वह थी जिस का तअ़ल्लुक़ लोगों से था। अख़्लाक़ का सब से अहम पहलू अपने अल्लाह के साथ इख़्लास और तअ़ल्लुक़ पैदा करना है। इन तमाम मज़ामीन को इस सूरः में बन्द कर दिया गया है। इस विषय पर तफ़सील से मुताला करने के किये तफ़्सीरे हक़्क़ानी का मुताला किया जाये।

सूरः कौ–सर – (108)

सूरः कौसर(हौज़े कौसर खै़र-बर्कत)मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ३ आयतें और एक रूकूअ़ है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. हमने तुझ को बहुत सी ख़ैर-बर्कत दे रखीं है २. (पस अल्लाह की अ़िबादत यानी) नमाज़ पढ़ा कर और क़ुर्बानी किया कर ३. (यक़ीन रख) तेरा दुश्मन वही अब्तर हो गा¹

....
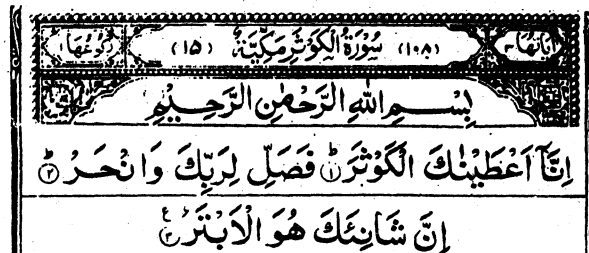
१. 'कौसर' का माना "बहुत बड़ी भलाई" के हैं। यहाँ क्या मुराद है? इस के संबन्ध में २६ क़ौल हैं, लेकिन तमाम ➲

➲क़ौल में सब से बेहतर क़ौल ऊपर का ज़िक्र किया हुआ है। इस माना में दीन व दुनिया की तमाम नेमतें पोशीदा हैं। उन नेमतों में एक बहुत बड़ी नेमत वह होज़े-कौसर है जिस के पानी से आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी उम्मत को क़यामत के मैदान में पिलायेंगे। हौज़े-कौसर के तअ़ल्लुक़ से बहुत सारी हदीसें बयान की गयी हैं, इस लिये हर मुसलमान को इस पर एतिक़ाद रखना चाहिये (मुवज़्ज़िहुल फ़ुर्क़ान) अल्लाह तआ़ला हम सब मुसलमानों को हश्र में हौज़े-कौसर अ़ता फ़रमाये।

शाने-नुज़ूलः-एक अभागे ने एक रोज़ नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को 'अब्-तर' कह दिया। 'अबतर' उस शख़्स को कहते हैं जिस की कोई औलाद न हो। उस के कहने का मतलब यह था कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बेहैसिय्यत और बेक़द्र हैं, उस के जवाब में यह सूरः नाज़िल हुयी। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने भी 'कौसर' के माना "बड़ी नेकी और भलाई" बयान किये हैं। (संनाई/ मआ़लिम)

सूरः काफ़िरून – (109)

सूरः काफ़िरून (काफ़िर लोग)मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ६ आयतें और एक रूकूअ़ है। शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. तू उन को कहः ऐ इन्कार करने वालो! २ मैं उन चीज़ों की अ़िबादत नही करता जिन की तुम लोग अ़िबादत करते हो[1] ३. और न तुम उस की अ़िबादत करते हो जिस की मैं करता हूँ ४. और न आइन्दा को मैं उन को पूजने वाला हूँ जिन को तुम पूजते हो ५. और तुम लोग भी उस की अ़िबादत करने को तय्यार नही जिस की मैं करता हूँ ६. (पस) तुम्हारा दीन तुम्हारे लिये है और मेरा दीन मेरे लिये है[2]

....
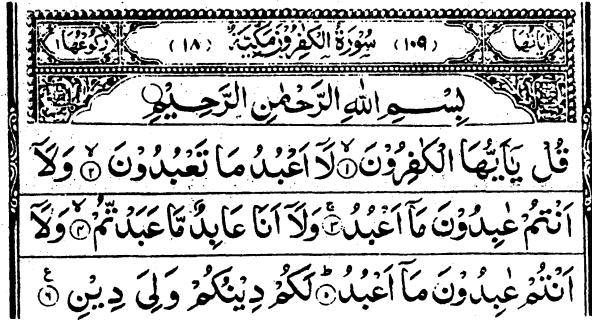
१. शाने-नुज़ूलः- मक्का के काफ़िरों की एक जमाअ़त ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० द्वारा संदेश भेजा कि आप हमारे माबूदों की बुराई करना छोड़ दें तो हम आप को अपना सर्दार तस्लीम कर लें गे और बहुत सारा माल भी दें गे.......। आपने फ़रमायाः मुझे उन चीज़ों में से किसी की भी हाजत नहीं है। जब कुफ़्फ़ार अपने इस दाँव में चित हो गये तो यह संदेश भेजा कि आप हमारे माबूदों की पूजा करें तो हम भी आप के माबूद की पूजा करें गे, और ऐसा करने से परस्पर इख़्तिलाफ़ भी समाप्त हो जाये गा। और अगर ऐसा नही किया तो फिर हमारे माबूदों को बुरा कहने पर बड़ी मुसीबतें झेलनी पड़ें गी और तौहीद को फैलाने का सपना चूर हो जाये गा। उन के जवाब में यह सूरः नाज़िल हुयी । (हक़्क़ानी)

२. यानी हम दोनों लड़ाई दंगा छोड़ कर अपने-अपने धर्म पर अ़मल करें, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला सच्चे धर्म को झूठे धर्म पर ग़ालिब कर दे । चुनान्चे ऐसा ही हुआ। (सनाई)

सूरः नस्र — (110)

सूरः नस्र (सहायता) मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ३ आयतें और एक रूकूअ़ है।
शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।
१. जब अल्लाह की मदद और विजय आ पहुंचे गी २. और तू लोगों को अल्लाह के दीन में फ़ौज दर फ़ौज दाख़िल होते हुये देखे गा ३. तो तुम अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह पढ़ते रहना और बख़्शिश माँगने में लग जाना। वह बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला है।[1]

....
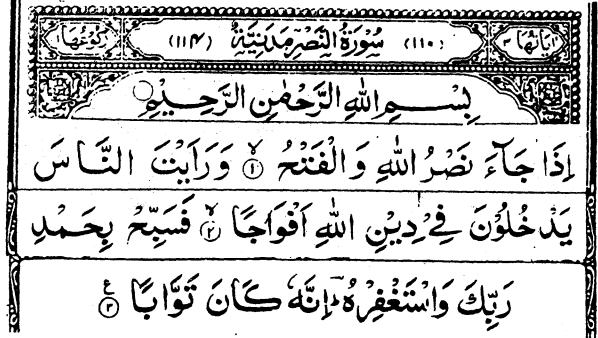
१. यह सूरः जमहूर उ़लमा के नज़दीक मदीना शरीफ़ में नाज़िल हुयी। कुछ रिवायतों में आया है कि यह मिना के मैदान में अन्तिम हज्ज के मौक़ा पर नाज़िल हुयी, इस के बाद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जान लिया कि अब ज़्यादा दिन तक दुनिया में नही रहना है। इसी बात पर अहले अ़िल्म का इत्तिफ़ाक़ है कि यह सूरः नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के इन्तिक़ाल से कुछ माह पूर्व नाज़िल हुयी। (हक़्क़ानी)

सूरः ल-हब् — (111)

सूरः ल-हब मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ५ आयतें और एक रूकूअ़ है।
शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।
१. जोश वाले (दुश्मन) के हाथ टूट जायें, और टूट ही चुके[1] २. न उस का माल उस के काम आया न उस की कमाई ३. (बल्कि मरते ही) जोश वाली आग में दाख़िल होगा ४. उस की औ़रत भी ईंधन उठाये हुये जहन्नम में दाख़िल हो गी ५. उस की गर्दन में मूँज की रस्सी हो गी (जिस से बन्दरिया की तरह खींची हुयी दोज़ख़ में दाख़िल हो गी)।

....
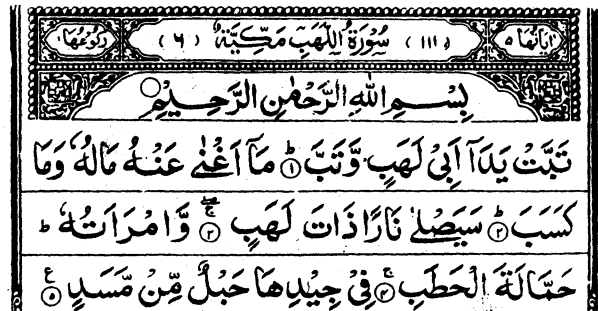
१. 'अबू लहब' का अस्ली तर्जुमा "जोशीला" है। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के चचा को अबू लहब इसी लिये➲

कहा गया है कि उस में बड़ा जोश था। (सनाई) उस का अस्ली नाम अब्दुल्ल् उज़्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब था, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सगा चचा था, लेकिन अपनी बदमाशी की वजह से आप का कट्टर दुश्मन था। एक मर्तबा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सफ़ा पहाड़ पर चढ़ कर लोगों को पुकारा और इस्लाम की दावत दी तो इस ने हाथ झटक कर कहा: "तेरा सत्तियानास हो, हम लोगों को क्या इसी के लिये एकत्र किया था।"?

उस की पत्नी का नाम "उम्मे जमील" था। यह भी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कट्टर दुश्मन थी। अबू लहब दुश्मनी की आग भड़काता और उस की पत्नी भी उस का साथ देती। इस सूर: में इन्ही दोनों का बयान है। अबू लहब बड़ा मक्कार था। हीला-बहाना कर के बद्र की जंग में न गया, लेकिन घर ही पर एक फोड़ा निकल आया जिस ने उस की जान ले कर छोड़ा। तीन दिन तक उस की लाश घर में पड़ी सड़ती रही। आख़िर मज़दूरों ने लकड़ी से धक्का दे कर एक गड्ढे में गिरा कर ऊपर से पत्थर डाल कर उस को ज़मीन में दबा दिया, इस तरह अल्लाह के पाक कलाम की तस्दीक़ हुयी।

नोट:-अबूलहब की पत्नी का नाम "अर्वा"और कुन्नियत "उम्मे जमील" थी। यह हज़रत अबू सुफ़यान रज़ि० की सगी बहन और हज़रत अमीर मुआविया रज़ि० की फूफी थी। एक आँख की कानी थी। नबी करीम स० के साथ दुश्मनी में अपने पति से किसी प्रकार कम न थी। रात को जंगल से काँटे ला कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरवाज़े पर डाल दिया करती थी, इसी लिये इस सूर: में उसे लकड़ियाँ ढोने वाली कहा गया है। लोगों में फ़साद डलवाने के लिये लगाई-बुझाई में एक नम्बर की माहिर थी। यह इतनी ख़बीस थी कि एलान कर के कहती थी कि "लात और उज़्ज़ा की क़सम! मैं अपना यह बहुमूल्य हार बेच कर इस की क़ीमत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मिटाने पर ख़र्च करुगी।

इस की हराम मौत की कहानी भी बड़ी अजीब है। इमाम ज़हहाक रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक बार वह जंगल से काँटे रस्सी में बाँध कर सर पर रख कर ला रही थी। जल्दी की वजह से बोझा कुछ ढीला बंधा था। राह में उस का सर उसी काँटे के बोझ में धंस कर पीछे गर्दन की तरफ़ लुढ़क गया और रस्सी उस के गले में फंस गयी, इस प्रकार दम घुट कर जहन्नम रसीद हुयी (फ़तहुल क़दीर)

नोट:- अबू लहब का अस्ली नाम "अब्दुल उज़्ज़ा" था। चूँकि यह बड़ा गोरा-चिट्टा, चमकदार और सफ़ेद व लाल रंग का था इस लिये इस का नाम "लहब" पड़ा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चचा था। बड़ा ख़बीस, अय्यार और मक्कार था। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ दुश्मनी में हमेशा उधार खाये बैठा रहता था। बड़ा धनवान था। कुरैश के उन चार आदमियों में से था जिन के पास ६५० तोला सोना मौजूद था। मालदार होने के नाते जान बड़ी प्यारी थी इसलिये बड़ा डरपोक था। बद्र की जंग में जब उस के धर्म का फ़ैसला होने वाला था, जिस में कुरैश के समस्त सर्दार शरीक हुये लेकिन यह नही गया। इस को पूरा विश्वास था कि जो इस जंग में शामिल हो गा वह मारा जाये गा, इस लिये अपने स्थान पर बहानाबाज़ी से आस बिन हिशाम नामी व्यक्ति को भेज दिया। यह शख़्स चूंकि इस का उधार खाये हुये था और दीवालिया हो चुका था इसलिये क़र्ज़ को चुकाने के लिये चला गया।

इस प्रकार अबूलहब ने अपनी जान बचा तो ली, लेकिन बद्र के बाद ७ दिन से अधिक जीवित न रह सका। उसे अ-द-स: (MALIGNANT PUSTULE) की बीमारी हो गयी जिस के कारण घर वालों ने छूत के डर से छोड़ दिया और असहाय तड़प-तड़प कर मर गया। तीन दिन तक कोई इस के निकट न आया। उस का शव सड़-गल कर बदबू करने लगा और लोगों ने ताने देने आंरभ कर दिये, तब घर वालों ने कुछ हब्शी मज़दूरों को मज़दूरी दें कर उस की लाश फेंकवा दी। एक दूसरी रिवायत के अनुसार घर ही में गड्ढा खोद कर लकड़ी से उस का शव उस में ढकेल कर मिट्टी और पत्थर से पाट दिया।............. खालिद सिद्दकी

सूरः इख़्लास – (112)

सूरः इख़लास मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ४ आयतें और एक रूकूअ़ है।
शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।
१. (ऐ रसूल!) तू कह कि (बात यह है कि) अल्लाह एक है २. अल्लाह बेनियाज़ है ३. न उस ने किसी को जना और न किसी से वह जना गया ४. और न उस का कोई (दूसरा) बराबरी का है

....
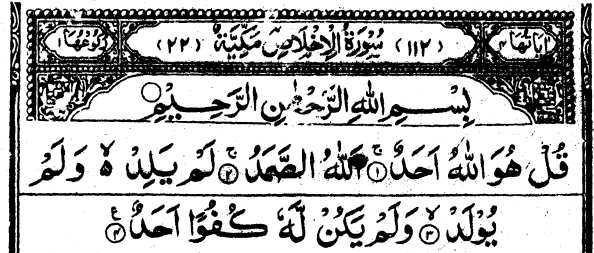
१. शाने-नुज़ूलः- मुसनद अहमद की रिवायत में हैं कि मुश्‍रिकों ने आप से कहा कि अपने रब की कुछ ख़ूबियाँ बयान करो, उन के इस प्रश्न जवाब में यह सूरः नाज़िल हुयी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम क़सम खा कर फ़रमाते हैं कि यह सूरः सवाब में एक तिहाई क़ुरआन के बराबर है। (बुख़ारी शरीफ़) एक सहाबी इस सूरः को हर रक्अ़त की क़िरात के बाद मारे मुहब्बत के पढ़ा करते थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: उन से जा कर कह दो कि अल्लाह भी उन से मुहब्बत रखता है (बुख़ारी शरीफ़)

हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर रज़ि० से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया था: क्या मैं तुम को ऐसी सूरतें न सिखाऊँ जिन के मिस्ल (समान) न तो तौरेत और इन्जील में नाज़िल हुआ और न क़ुरआन ही में कोई सूरः उन के समान है। फिर आप ने उन को सूरः "इख़्लास" और मुअ़व्वज़तैन (फ़लक़, नास) पढ़ायीं और फ़रमाया: देखो ऐ उक़्बा! इन को मत भुलाना और हर रात इन्हें पढ़ लिया करना। (इब्ने कसीर)

सूरः फ़-लक़ – (113)

सूरः फ़लक़ (सुब्ह की सफ़ेदी) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ५ आयतें और एक रूकूअ़ है।
शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।
१. (ऐ रसूल!) कहः मैं सुब्ह की सफ़ेदी के मालिक की पनाह में आता हूँ। २. हर उस चीज़ की बुराई से जो उस ने पैदा की है[२] ३. और अंधेरे से जब छा जाता है ४. और गिरहों पर फूँकने वाली टोलियों की बुराई से भी पनाह माँगता हूँ ५. और हसद करने वाले के हसद से, जब वह हसद करे[३]
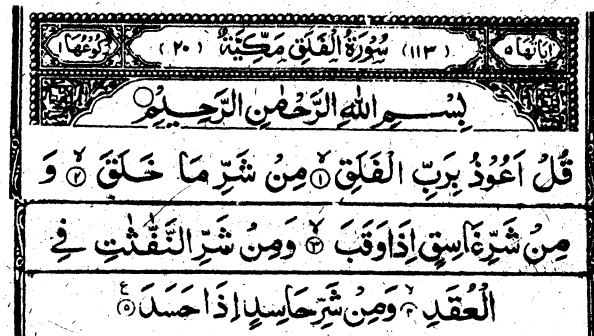
सूरः नास – (114)

सूरः नास (मनुष्य) मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुयी। इस में ६ आयतें और एक रूकूअ़ है। शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

१. (ऐ रसूल!) कहः कि मैं सब इन्सानों के पर्वरदिगार २. हक़ीक़ी बादशाह ३. सब इन्सानों के हक़ीक़ी माबूद से उस की पनाह लेता हूँ ४. छुप-छुपा कर वसवसे डालने वालों की बुराई से ५. जो लोगों के सीने में वसवसे डालते हैं ६. चाहे जिन्नों में से हों, या इन्सानों में से, उन से भी मैं (अल्लाह की) पनाह में आता हूँ।

....
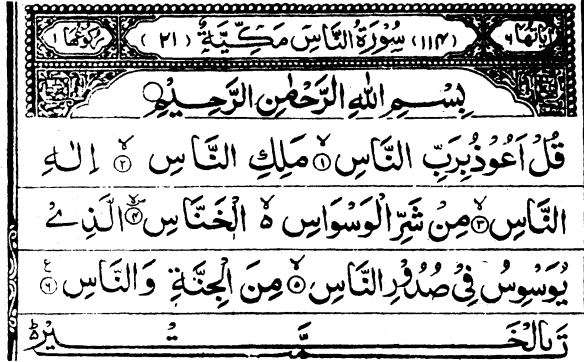
१. सहाबा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि यह दोनों सूरतें क़ुरआन में दाख़िल हैं। एक रिवायत के अनुसार एक यहूदी ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर जादू किया तो हज़रत जिब्रील ने आप को इस की सूचना दी। आप ने हज़रत अ़ली को भेज कर जादू का सारा सामान कुँये से निकलवाया। उस ने एक बाल पर चन्द गाँठें दी थीं। आप इन दोनों सूरतों को पढ़ने लगे, चुनान्चे हर आयत से एक-एक गिरह खुलने लगी और इस प्रकार तमाम गाँठें खुल गयीं और आप ठीक-ठाक हो गये, जैसे कोई बँधी हुयी रस्सी से आज़ाद कर दिया जाये। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दुआ़ और इस्तिग़फ़ार में बहुत ही अधिक से इन्ही दोनों सूरतों की तिलावत फ़रमाया करते थे (वहीदी)

२. क्यों कि दुनिया में कोई ऐसी वस्तु नही जिस में किसी न किसी वजह से बुराई न हो। खाना चाहे जितना अच्छा क्यों न हो, कभी उस से भी तक्लीफ़ पैदा हो जाती है। औलाद कितनी ही प्यारी क्यों न हो, कभी न कभी उस से भी तक्लीफ़ पहुंच जाती है। (सनाई)

३. यानी आजिज़ी से दुआ़ करता हूँ कि मेरे मौला! मुझ से हसद करने वाले को तौबा की तौफ़ीक़ दे और मुझे उस के धोका और फ़रेब से मुझे सुरक्षित रख। अल्लाहुम्म अज़िज्नी मिन् शर्रि हासिदिन् वमिन् ख़न्नासिन्- आमीन!

अल्लाह तआ़ला का मुझ गुनाहगार पर शुक्र, एहसान, करम, बख़्शिश, मेहरबानी और फ़ज़्ल है कि क़ुरआन मजीद बनाम "तर्जुमा सनाई वाला" के उर्दु तर्जुमा और हाशिया का हिन्दी अनुवाद दिनाक ७ रबीउस्सानी सन् १४२० हि०/२१ जुलाई सन १९९९ ई०, बुधवार, बाद नमाज़ फ़ज्र ६ बजे सुबह सम्पूर्ण रूप से अपने पैदाइशी घर बेतनार, पो० रमवा पुर जगत, जन्पद सिद्धार्थ नगर में संपन्न हुआ - वआख़िरु दअ़वाना अनिल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़-लमीन् +व-सल्लल्लाहु तआ़ला अ़ला ख़ैरि ख़लक़िही मु-हम्मदिव्वबारिक् व-सल्लिम

Khalid Haneef Siddiqi Falahi
AT. Beat nar, P.O: Ramwa Pur Jagat
Distt, Siddharth Nagar (U.P)

ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी फ़लाही
ग्राम :बेतनार, पो० रमवा पुर जगत
जन्पदः सिद्वार्थ नगर यू.पी

तम्मत् बिल्ख़ैर

●●●●●

कितबा	:	हिन्दी अनुवाद वाला कुरआन मजीद
उर्दु तर्जुमा	:	शैखुल इस्लाम मौलाना सनाउल्लाह अमृतसरी रह०
मुन्तखब़ हवाशी	:	मौलाना दावूद राज़ रह०
हिन्दी अनुवाद	:	ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी (फ़लाही)
पृष्ठ	:	1444
मात्र	:	1100
एडीशन	:	तेरहवाँ एडीशन जुलाई 2014 पन्द्रह रमज़ानुल मुबारक 1435 हिजरी
प्रकाशक	:	**मर्कज़ी जमीअ़त अहले हदीस हिन्द, दिल्ली-6**
मुद्रक		एम. एस. प्रिन्टरस
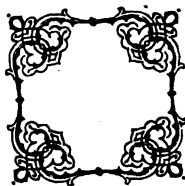
मिलने के पते

1. मदरसा अरबिय्या सलफ़िय्या हिदायतुल उलूम, मकराना (राजस्थान)
2. दारूल कुतुबिल् इस्लामिया, उर्दु मार्किट-419, मटिया महल जामा मस्जिद, दिल्ली -110006 Tel. (O) 3269123 (R) 3511274
3. एस0 एन0 पब्लिशर्स, बटला हाउस, जामिया नगर, नई दिल्ली-25

बिसमिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

सनाई तर्जुमा व मुन्तख़ब हवाशी वाला हिन्दी

कुरआन मजीद

तर्जुमा

शैख़ुल् इस्लाम मौलाना सनाउल्लाह अमृतसरी रह0

मुन्तख़ब हवाशी

मौलाना दावूद राज़ रह०

हिन्दी अनुवाद

ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी

प्रकाशक

मकतबा तर्जुमान

4116 अहले हदीस मन्ज़िल उर्दु बाजार, जामा मस्जिद, दिल्ली–6